२-झंझट। बखेड़ा।
चकवँड पुं० (हि) १-कुम्हार का चाक के पास द्द-भिगोने के लिए रक्खा हुआ पात्र। २-एक बरसाती कीड़ा।
चकवा पुं० (हि) १-एक पक्षी। सुर्खाब। २-लड़कों का एक खिलौना।
चकवाना क्रि० (हि) चकपकाना।
चकवार पुं० (हि) कछुआ।
चकवाह पुं० (हि) चकवा।
चकवै पुं० (हि) १-चक्रवर्त्ती राजा। २-चकोर।
चकहा पुं० (हि) पहिया।
चका पुं० (हि) १-चकवा पक्षी। २-पहिया।
चकाचक वि० (हि) १-चटकीला। २-मजेदार। ३-तरबतर। क्रि० वि० बहुत। भरपूर। स्त्री० तलवार आदि के लगातार आघात का शब्द।
चकाचौंध स्त्री० (हि) प्रकाश या चमक के कारण दृष्टि का स्थिर न रह सकना। तिलमिली।
चकाना क्रि० (हि) चकित होना।
चकाबू पुं० (हि) १-चक्रव्यूह। २-भूलभुलैयाँ।
चकासना क्रि० (हि) चमकना।
चकित वि० (स) १-विस्मित। घबराया हुआ। २-सशंकित।
चकिताई स्त्री० (हि) आश्चर्य।
चकुला पुं० (देश) चिड़िया का बच्चा।
चकृत वि० (हि) चकित।
चकेंड़ी स्त्री० (हि) कुम्हार की वह हाँडी जिसमें बरतन बनाते समय पानी रखता है।
चकेवा पुं० (हि) चकवा।
चकैवै वि० (हि) चक्रवर्त्ती राजा।
चकैया स्त्री० (हि) चकई। वि० चकई या चाक के समान गोल।
चकोटना क्रि० (हि) चुटकी काटना।
चकोतरा पुं० (हि) एक तरह का नींबू।
चकोर,चकोरक पुं० (सं) तीतर की तरह का एक पक्षी।
चकौंध स्त्री० (हि) चकाचौंध।
चक्क पुं० (हि) १-चकवा। २-कुम्हार का चाक। ३-दिशा। ४-दे० 'चक'। वि० (हि) १-अत्याधिक २-बहुत बढ़िया।
चक्कर पुं० (हि) १-पहिये के समान गोल वस्तु। २-चाक। चक्र। घेरा। ३-वृत्ताकार मार्ग। ४-फेरा। ५-पहिये के समान अक्ष पर घूमना। ६-हैरानी। ७-बखेड़ा। ८-सिर घूमना।
चक्कवई वि० (हि) चक्रवर्त्ती।
चक्का पुं० (हि) १-पहिया। २-पहिये के समान कोई गोल वस्तु। ३-ठोस बड़ा टुकड़ा। ३-ईंट या पत्थरों के नापने के लिए लगाया गया ढेर।
चक्की स्त्री० (हि) आटा पीसने का यन्त्र। जांता।
चक्कीरहा पुं० (हि) चक्की के पाट को टाँकी से कूट-कर खुरदरी करने वाला कारीगर।
चक्खी स्त्री० (हि) १-चखाने का भाव। २-खाने की चटपटी वस्तु।
चक्र पुं० (सं) १-पहिया। २-कुम्हार का चाक। ३-चक्की। जांता। ४-तेल पेलने का कोल्हू। ५-पहिये जैसी गोल वस्तु। ५-फेरा। चक्कर। ६-पहिये के आकार का एक अस्त्र। ७-योग के अनुसार शरीर की विशिष्ट ग्रन्थियाँ। ८-पानी का भँवर। ९-संख्या के विचारानुसार बन्दूक से गोली चलाने की क्रिया। (राउण्ड)। १०-उतना समय जितने समय में कुछ विशिष्ट घटनायें किसी क्रम से होती हैं और उतने ही समय उनकी पुनरावृत्ति होती है। (साइकिल) ११-सैनिकों द्वारा वीरतापूर्ण कार्य करने पर दिया जाने वाले राजकीय पदक। जैसे—वीर-चक्र, परम-वीर-चक्र। (क्रास)।
चक्र-क्रम पुं० (सं) चक्र के समान होने वाली पुनरावृत्ति या क्रम। (साइक्लिक आर्डर)।
चक्रधर, चक्रधारी पुं० (स) १-विष्णु। श्रीकृष्ण।
चक्रपाणि पुं० (सं) विष्णु।
चक्रपानि पुं० (हि) चक्रपाणि। विष्णु।
चक्र-पूजा स्त्री०(सं) तांत्रिकों द्वारा की जाने वाली एक प्रकार की पूजा।
चक्रबंध पुं०(स)एक चित्र काव्य जिसमें पहिये अथवा चक्र के चित्र में पद्य के अक्षर अंकित होते हैं।
चक्रबंधु, चक्रबांधव पुं० (स) सूर्य।
चक्र-मुद्रण पुं०(स) चक्र-लेखित्र यंत्र की सहायता से प्रतियाँ छापने का काम। (साईक्लोटाइप)।
चक्रलेखन, चक्रलेखित्र पुं० (सं) एक विशेष प्रकार के कागज की सहायता से चक्र के समान घूमकर बहुत सारी प्रतियाँ छापने वाला यंत्र (साइक्लोस्टाइल)।
चक्रवर्ती वि० (सं) [स्त्री० चक्रवर्तिनी] एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक राज्य करने वाला। सार्वभौम।
चक्रवाक पुं० (सं) चकवा नामक पक्षी।
चक्रवात पुं० (स) बवंडर।
चक्र-वृद्धि स्त्री० (स) सूद-दर-सूद।
चक्रव्यूह पुं० (सं) १-प्राचीन काल के युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिए की जाने वाली एक प्रकार की सैनिक मोरचाबन्दी।
चक्रांक पुं० (स) चक्र का चिह्न जिसे वैष्णव लोग अपने शरीर पर दगवाते हैं।
चक्रानुक्रम वि० (सं) चक्र के समान बारी-बारी से या एक के बाद दूसरे समुचित अनुक्रम से (इन-रोटेशन)।
चक्रित वि० (हि) चकित।
चक्री पुं० (हि) १-(चक्र धारण करने वाला)।

चढ़त, चढ़न स्त्री० (हि) १-चढ़ने की क्रिया या भाव २-देवता पर चढ़ाई वस्तु अथवा धन ।
चढ़ना क्रि० (हि) १-नीचे से ऊपर की ओर जाना । २-ऊपर उठना । ३-उन्नति करना । ४-चढ़ाई करना ५-स्वर का ऊँचा होना । ६-किसी देवता को भेट होना । ७-सवार होना । ८-कर्ज होना । ६-बुरा असर होना । १०- अङ्कित होना । ११-पकाने के लिए चूल्हे पर रखा जाना । १२-लेप होना । १३-वर्ष मास आदि का आरम्भ होना ।
चढ़वाना क्रि० (हि) चढ़ने अथवा चढ़ाने का काम अन्य से कराना ।
चढ़ाई स्त्री० (हि) १-चढ़ने की क्रिया । २-ऊँचाई की ओर जाने वाली भूमि । ३-आक्रमण । धावा ।
चढ़ा-उतरी, चढ़ा-ऊपरी, चढ़ा-चढ़ी स्त्री० (हि) होड़ा प्रतियोगिता ।
चढ़ाना क्रि० (हि) १-नीचे से ऊपर की ओर लेजाना २-चढ़ने में प्रवृत्त करना । ३-उन्नति कराना । ४-चढ़ाई कराना । ५-संगीत में स्वर ऊँचा करना । ६-देवता को अर्पण करना । ७-एकदम पी जाना । ८-सवार कराना । ६-दर्ज करना । १०-पकने के लिए आँच में रखना ।
चढ़ाव पुं० (हि) १-चढ़ाई । २-वृद्धि । ३-देवता की भेंट ।
चढ़ावा पु० (हि) १-विवाह के अवसर पर वर की ओर से वधू को दिये जाने वाले गहने । २-पुजापा ३-उत्साह । बढ़ावा ।
चढ़ैत पुं० (हि) सवार होने वाला । चढ़ने वाला ।
चढ़ैता पुं० (हि) सवार ।
चढ़ैया वि० (हि) चढ़ने वाला ।
चणक पुं० (सं) चना ।
चणकात्मज पुं० (सं) चाणक्य ।
चतर पुं० (हि) छत्र ।
चतुःसीमा स्त्री० (सं) किसी भवन या क्षेत्र आदि के चारों ओर की सीमा या हद । चौहद्दी । (एब्यटल)
चतुरंग पुं० (सं) १-सेना के चार अंग हाथी, घोड़े, रथ और पैदल । २-शतरंज का खेल । ३-चतुरंगणी सेना । ४-एक प्रकार का हलका गाना ।
चतुरंगिणी स्त्री० (सं) वह सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल, यह चार अंग हों ।
चतुरंगिनी स्त्री० (हि) दे० 'चतुरंगिणी' ।
चतुर वि० (सं) [स्त्री० चतुरा] १-बुद्धिमान् । २-व्यवहार-कुशल । ३-निपुण । दक्ष । ४-धूर्त । ५-चालाक ।
चतुरई स्त्री० (हि) चतुराई ।
चतुरा वि० (हि) चतुर । पुं० एक प्रकार का नायक (साहित्य) ।
चतुराई स्त्री० (हि) १-चतुरता । चालाकी ।
चतुरात्मा पुं० (सं) १-ईश्वर । २-विष्णु ।
चतुरानन पुं० (सं) चार मुख वाला, ब्रह्मा ।
चतुर्थ वि० (सं) चौथा ।
चतुर्थक पुं० (सं) हर चौथे दिन चढ़ने वाला बुखार ।
चतुर्थांश पुं० (सं) चौथाई ।
चतुर्थाश्रम पुं० (सं) संन्यास ।
चतुर्थी स्त्री०(सं) १-किसी पक्ष की चौथी तिथि । चौथ २-विवाह के चौथे दिन होने वाला विशिष्ट कर्म ।
चतुर्दशी स्त्री० (सं) चौदस ।
चतुर्दिक पुं० (सं) चारों दिशायें । क्रि० वि० (सं) चारों ओर ।
चतुर्भुज वि० (सं) [स्त्री० चतुर्भुजा] चार भुजाओं वाला । पुं० (सं) १-विष्णु । २-चार भुजाओं वाला क्षेत्र ।
चतुर्भुजी वि० दे० 'चतुर्भुज' ।
चतुर्मास पु० (सं) चातुर्मास ।
चतुर्मुख पु० (सं) ब्रह्मा । क्रि० वि० चारों ओर ।
चतुर्युगी स्त्री० (सं) चारों युगों का समूह अथवा समय
चतुर्वर्ग पुं०(सं) अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष यह चार पदार्थ ।
चतुर्वर्ण पुं० (सं) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यह चार वर्ण ।
चतुर्वेदी पु०(सं) १-चारों वेदों का ज्ञाता । २-ब्राह्मणों की एक जाति ।
चतुष्कल वि० (सं) चार मात्राओं वाला ।
चतुष्कोण वि० (सं) चार कोनों वाला । पुं० (सं) चार भुजाओं वाला क्षेत्र । (क्वाड्रैंगिल) ।
चतुष्टय पुं०(सं) १-चार की संख्या । २-चार वस्तुओं का समूह ।
चतुष्पथ पुं० (सं) चौराहा ।
चतुष्पद वि०(सं) चार पैरों वाला । पुं० (सं) चौपाया
चतुष्पदी स्त्री० (सं) १-चार पदों वाली कविता या छन्द । २-चौपाई (छन्द) ।
चत्वर वि० (सं) १-चौरस्ता । २-चबूतरा । ३-चौकोर स्थान ।
चदरा पुं० (हि) चादर ।
चद्दर स्त्री० (हि) १-किसी धातु का पत्तर । २-चादर ३-तेज बहाव में नदी के ऊपरी तल की समतल अवस्था ।
चनक पुं० (हि) चणक । चना ।
चनकट पुं० (हि) थप्पड़ ।
चनकना क्रि० (हि) चटकना ।
चनन पु० (हि) चन्दन । सन्दल ।
चना पु० (हि) एक अन्न । चणक ।
चपकन स्त्री० (हि) एक प्रकार का अंगरखा ।
चपकना क्रि० (हि) चिपकना ।
चपकुलिश स्त्री० (तु) १-झंझट । अड़चन । २-भीड़-

भाव। असमंजस।
चपटना क्रि० (हि) चिपकना।
चपटी वि० दे० 'चपटी'।
चपटी-तख्ती स्त्री० (हि) गत्ते की वह दफ्ती जिसपर कागज की नलियाँ रखकर बाँधी जाती हैं। (फ्लैट-फाइल)।
चपड़ा पु० (हि) १-साफ की हुई लाख। २-एक कीड़ा।
चपत स्त्री० (हि) १-तमाचा। २-(आर्थिक) नुकसान
चपना क्रि० (हि) १-कुचल जाना। दबना। २-झेंपना। ३-चौपट होना।
चपनी स्त्री० (हि) १-छोटी छिछली कटोरी। २-दरियाई नारियल का कमण्डल। ३-हाँडी का ढक्कन। ४-घुटने की हड्डी।
चपरगट्टू पुं० (हि) १-अभागा। २-गुथमगुथा।
चपरना क्रि० (हि) १-चुपड़ना। २-परस्पर मिलाना। ३-जल्दी मचाना। ४-खिसक जाना।
चपरास स्त्री० (हि) चौकीदार, अरदली आदि की वह पेटी जिस पर बिल्ला लगा रहता है।
चपरासी पुं० (हि) १-चपरास धारण करने वाला नौकर। २-कार्यालय के कागज-पत्र लाने ले जाने वाला नौकर।
चपरि क्रि० वि० (हि) चपलता से। फुरती से।
चपल वि० (सं) १-स्थिर न रहने वाला। चंचल। २-उतावला। जल्दबाज। ३-चालाक।
चपलता स्त्री० (सं) १-चंचलता। २-अस्थिरता। ३-जल्दबाजी।
चपला वि० स्त्री० (सं) चचल। स्त्री० (सं) १-बिजली। २-लक्ष्मी। ३-जीभ। ४-दुश्चरित्रा स्त्री।
चपलाई स्त्री० (हि) चपलता।
चपलाना क्रि० (हि) १-चलना। २-हिलना-डोलना। ३-चलाना। हिलाना।
चपली स्त्री० (हि) चप्पल।
चपाक क्रि० वि० (हि) १-अचानक। २-चटपट।
चपाती स्त्री० (हि) पतली रोटी। फुलका।
चपाना क्रि० (हि) १-किसी को चपने में प्रवृत्त करना। २-लज्जित करना।
चपेट स्त्री० (हि) १-तमाचा। थप्पड़। २-धक्का। ३-झोंका। ४-संकट।
चपेटना क्रि० (हि) १-दबोचना। २-बलपूर्वक भगाना। ३-फटकार बताना।
चपेटा पुं० दे० 'चपेट'।
चपेड़ स्त्री० (हि) थप्पड़। तमाचा।
चपेरना क्रि० (हि) चाँपना। दबाना।
चप्पड़ पु० दे० 'चिप्पड़'।
चप्पल पु० (हि) पट्टियों लगा चपटी एड़ी का जूता।
चप्पा पु० (हि) १-चौथा भाग। २-थोड़ा टुकड़ा। ३-थोड़ा भूमिखण्ड।
चप्पी स्त्री० (हि) १-हाथ पैर दबाने की सेवा। २-दे० 'चिप्पी'।
चप्पू पुं० (हि) नाव का वह डाँड जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी।
चबक स्त्री० (देश) रह रह कर उठने वाला दर्द। चिलक।
चबकना क्रि० (हि) टीसना। पीड़ा उठना।
चबाई पु० (हि) चबाई।
चबाना क्रि० (हि) १-दाँतों से कुचलकर खाना। २-दाँतों से काटना।
चबाव, चबावन पु० (हि) दे० 'चबाव'।
चबूतरा पुं० (हि) चौतरा।
चबेना पुं० (हि) १-चबाकर खाने की चीज। २-भुना हुआ अन्न। चबैना।
चबेनी स्त्री० (हि) चबेना।
चभना क्रि० (हि) १-चबाकर खाया जाना। २-दबना या पिसना।
चभाना क्रि० (हि) खिलाना। भोजन कराना।
चभोकना, चभोरना क्रि० (हि) १-डुबोना। २-भिगोना।
चमक, चमकताई स्त्री० (हि) १-प्रकाश। २-आभा। कान्ति। ३-चिलक। चसक। ४-चमकने की क्रिया या भाव। चौंक।
चमक-दमक स्त्री० (हि) १-तड़क-भड़क। २-आभा।
चमकदार वि० (हि) चमकीला।
चमकना क्रि० (हि) १-प्रकाशित होना। जगमगाना। २-कीर्ति लाभ करना। ३-तरक्की पर होना। ४-चौंकना। ५-स्त्रियों की तरह मटकना। ६-झटका लगने से सहसा कहीं दर्द होना।
चमकाना क्रि० (हि) १-चमकीला करना। २-झलकाना। ३-चौंकाना। ४-उँगलियाँ आदि मटकाना।
चमकारा वि० (हि) चमकीला।
चमकारी स्त्री० (हि) चमक।
चमकी स्त्री० (हि) कारचोबी में लगाने के सितारे।
चमकीला वि० (हि) चमकने वाला। चमकदार।
चमकीपन, चमकीलापन पु० (हि) स्त्रियों के समान चमकने का भाव।
चमगादड़ पु० (हि) एक उड़ने वाला जन्तु, जिसकी आकृति चूहे के समान होती है।
चमचम स्त्री० (देश) एक छेने की मिठाई। क्रि० वि० दे० 'चमाचम'।
चमचमाना क्रि० (हि) चमकना या चमकाना।
चमचा पुं० दे० 'चम्मच'।
चमड़ा पुं० (हि) १-खाल। त्वचा। २-छाल। ऊपरी आवरण।
चमड़ी स्त्री० (हि) 'चमड़ा' का स्त्री०।

चमत्कार पुं० (सं) १-आश्चर्य। विस्मय। २-करामात। ३-विचित्रता।
चमत्कारक, चमत्कारी वि०-जिसमें कोई चमत्कार हो।
चमत्कृत वि० (सं) विस्मित। चकित।
चमत्कृति स्त्री० (सं) चमत्कार।
चमन पुं० (फा) १-फुलवारी। छोटा बगीचा। २-रौनक की जगह।
चमर पुं०(स) [स्त्री० चमरी] १-सुरागाय। २-चँवर
चमरख स्त्री० (हि) १-चमड़े की चकती जिसमें होकर चर्खे का तकला घूमता है।
चमरा पुं० (हि) १-चमार। २-चमड़ा।
चमरी स्त्री० (हि) १-सुरागाय। २-चँवर।
चमरौट पु० (हि) चमारों को उनके काम के एवज में दिया जाने वाला उपज का भाग या अंश।
चमरौधा पुं० (हि) चमड़े से सिला भद्दा जूता।
चमाऊ पुं० (हि) चँवर।
चमाचम वि० (हि) खूब चमकता हुआ।
चमार पुं० (हि) [स्त्री० चमारी] एक जाति। चर्मकार
चमारी स्त्री० (हि) १-चमार जाति की स्त्री। २-चमार का कार्य।
चमू स्त्री० (स) १-सेना। २-सेना का एक भाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे।
चमूचर पुं० (स) १-सैनिक। २-सिपाही।
चमूनाथ, चमूनायक, चमूपति पुं० (सं) सेना-नायक
चमेलिया पुं० (हि) चमेली के फूल के रंग का।
चमेली स्त्री० (हि) एक लता जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं।
चमोटा पुं० (हि) चमड़े का वह टुकड़ा जिस पर नाई उस्तरे की धार तेज करते हैं।
चमोटी स्त्री० (हि) १-चाबुक। २-पतली छड़ी। ३-चमोटा।
चमौवा पुं० (हि) चमरौधा जूता।
चम्मच पु० (हि) वह पात्र जिससे भोजन परसते हैं चमचा।
चय पुं० (सं) १-समूह। २-टीला। ३-किला। ४-चहारदीवारी। ५-चबूतरा।
चयन पुं० (सं) १-संचय। संग्रह। २-चुनने का कार्य। ३-यज्ञ के निमित्त अग्नि का एक संस्कार।
चयनक पुं० (सं) विशेष कार्य को करने के लिए नियुक्त व्यक्तियों का समूह। (पैनल)।
चयनिका स्त्री० (स) चुनी हुई कविता, कहानियों आदि का संग्रह।
चयनीय वि० (सं) चयन किये जाने लायक। चेष्टा।
चयित वि० (सं) जिसका चयन हुआ हो।
चर पुं० (स) १-स्वराष्ट्र या पराराष्ट्र की गुप्त बातों का पता लगाने के लिए नियुक्त व्यक्ति। गुप्तचर भेदिया। २-किसी कार्य विशेष के निमित्त भेजा हुआ आदमी। दूत। ३-नदी तट की भूमि। ४-नदियों के बीच का टापू। रेता। वि० (स) १-चलने वाला। २-चल। जङ्गम। पुं० (हि) कागज या कपड़े के फटने का शब्द।
चरई स्त्री० (हि) १-पशुओं के जल पीने का हौज। २-चरनी।
चरक पुं० (सं) १-दूत। २-पथिक। ३-भिक्षुक। ४ श्वेतकुष्ठ। ५-आयुर्वेद के एक प्राचीन आचार्य या उनके द्वारा प्रणीत ग्रन्थ।
चरकटा पुं० (हि) १-चारा काटने वाला व्यक्ति। २-तुच्छ व्यक्ति।
चरकना क्रि० (हि) तड़कना।
चरका पुं० (हि) १-हलका घाव। २-हानि। ३-धोखा।
चरख पुं० (फा) १-घूमने वाला गोल चक्र। २-खराद। ३-ढेलावाँस। ४-तोप ढोने वाली गाड़ी ५-एक शिकारी चिड़िया। ६-लकड़बग्घा।
चरखा पुं० (हि) १-हाथ से सूत कातने का एक यन्त्र। २-कुएँ से पानी निकालने का एक यन्त्र। ३-सूत लपेटने की चरखी। ४-खड़खड़िया (गाड़ी) ५-झंझट का काम।
चरखी स्त्री० (हि) १-पहिये के समान घूमने वाली कोई वस्तु। २-छोटा चरखा। ३-कपास ओटने का यन्त्र। ४-कुएँ से पानी खींचने की गड़ारी। ५-चक्कर खाने वाली एक आतिशबाजी।
चरखुला पुं० (हि) सूत कातने का चरखा।
चरग पुं० (हि) १-एक तरह की शिकारी चिड़िया १-लकड़बग्घा।
चरचना क्रि० (हि) १-शरीर में चन्दन आदि का लेप करना। २-पोतना। ३-भाँपना। ४-पूजा करना।
चरचराना क्रि० (हि) १-'चरचर' शब्द के साथ टूटना या जलना। २-शरीर के अङ्ग का तनाव या रगड़ से दर्द करना। चर्राना।
चरचा स्त्री० दे० 'चर्चा'।
चरचारी पुं० (हि) १-चर्चा करने वाला। २-निन्दक
चरज पुं० (हि) चरख नामक पक्षी।
चरजना क्रि० (हि) १-बहकाना। २-अन्दाज लगाना
चरण पुं० (सं) १-पैर। पग। २-पद्य, छंद आदि का एक पद। ३-चौथाई भाग। ४-आचरण। ५-सूर्य आदि की किरण। ६-जाना। ७-खाना।
चरणचिह्न पु० (स) १-पैरों के तलुए की रेखा। २-पैर का निशान।
चरण-दासी स्त्री० (सं) १-पत्नी। २-जूती।
चरण-पादुका स्त्री० (सं) १-खड़ाऊँ। २-पत्थर आदि पर बना पैर का निशान।

चरणपीठ पु० (सं) खड़ाऊँ।
चरण-सेवा स्त्री० (सं) १-पैर दबाना। २-सुश्रूषा।
चरणामृत, चरणोदक पु० (सं) १-पूज्य व्यक्ति के पैरों की धोवन। २-दूध, दही, घी, चीनी और शहद का वह मिश्रण जिसमें किसी देव मूर्ति को स्नान कराया गया हो या उसके चरण धोये गये हों
चरत पुं० (हि) उपवास के दिन अन्न खाना। स्त्री० (हि) एक पक्षी।
चरन पुं० (हि) चरण।
चरनदासी स्त्री० (हि) जूती।
चरनपीठ पुं० (सं) खड़ाऊँ।
चरना क्रि० (हि) १-पशुओं का घास आदि खाना। २-घूमना। फिरना। ३-आचरण करना।
चरनि स्त्री० (हि) चाल। गति।
चरनी स्त्री० (हि) १-चरागाह। २-वह नांद जिसमें पशुओं को चारा खिलाया जाता है।
चरपट वि० (हि) १-उचक्का। २-धूर्त। पुं० १-चपत। २-एक प्रकार का छंद।
चरपरा वि० (हि) [स्त्री० चरपरी] तीखे स्वाद वाला। मजेदार।
चरपराहट स्त्री० (हि) स्वाद का तीखापन।
चरफराना क्रि० (हि) तड़फड़ाना।
चरबा पुं० (फा) १-खाका। २-प्रतिलिपि।
चरबी स्त्री० (हि) वह चिकना पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में पाया जाता है। मेद। वसा।
चरम वि० (सं) १-अन्तिम। २-पराकाष्ठा का। ३-सबसे आगे।
चरमपथ पुं० (सं) राजनैतिक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि सब प्रकार के दोष तुरंत और चाहे जैसे हों उनका निराकरण होना चाहिए। (एक्स्ट्रीमिज्म, रैडिकलिज्म)।
चरम-पंथी वि० (सं) चरम पंथ सिद्धान्त का अनुयायी या पक्षपाती। (रैडिकल, एक्स्ट्रीमिस्ट)।
चरम-पत्र पु० (सं) वसीयतनामा।
चरमप्रत्यय पुं० (सं) विभक्ति।
चरमर पुं० (हि) दबने से उत्पन्न शब्द।
चरमराना क्रि० (हि) चरमर शब्द होना या करना।
चरमवती स्त्री० (हि) चंबल नदी।
चरमावस्था स्त्री० (सं) चरम या अन्तिम अवस्था।
चरमोत्पादन पुं० (सं) अधिक से अधिक मात्रा में किया गया उत्पादन। (पीक प्रोडक्शन)।
चरवाई स्त्री० (हि) १-चराने का काम या भाव। २-चराने की उजरत।
चरवाना क्रि० (हि) चराने का काम कराना।
चरवारा, चरवाहा पुं०(हि) गाय, भैंस, आदि चराने वाला।
चरवाही स्त्री० दे० 'चरवाई'।
चरवैया वि० (हि) १-चरने वाला। चराने वाला।
चरस पुं०(हि) १-वह चमड़े का थैला जिससे सिंचाई करते हैं। २-भूमि की एक नाप। गांजे के वृक्ष का गोंद जिसे नशेबाज पीते हैं।
चरसा पुं० (हि) १-गाय, भैंस आदि का चमड़ा। २-चमड़े का बना बड़ा थैला। ३-भूमि का एक परिमाण। ३-चरस।
चरसिया, चरासी पु०(हि) चरस का नशा करने वाला
चराई स्त्री० (हि) १-चरने का काम। २-चराने का काम। ३-चराने की उजरत।
चरागाह पु० (फा) पशुओं के चरने की भूमि। चरनी
चराचर वि० (सं) स्थावर और जंगम। जड़ और चेतन। पु० जगत। संसार।
चराना क्रि०(हि)१-चौपायों को चरने के लिए छोड़ना २-बहकाना।
चरावर स्त्री० (हि) बकवास।
चरिंदा पुं० (फा) चरने वाला जीव।
चरित पु०(स) १-आचरण। २-कार्य। ३-जीवनी।
चरित-कार, चरितलेखक पु० (स) जीवन चरित का लेखक।
चरित-नायक पु० (स) किसी कथा या कहानी का प्रधानपात्र।
चरितार्थ वि० (स) १-कृतार्थ। २-सार्थक।
चरितावली स्त्री०(स)वह पुस्तक जिसमें बहुत से लोगों की जीवन कथाएँ हों।
चरित्तर पुं० (हि) १-बुरा चरित्र। २-छलपूर्ण आचरण। ३-नखरेबाजी।
चरित्र पु०(स) १-स्वभाव। २-जीवन में किये जाने वाले काम या आचरण। ३-इस प्रकार किये गये कामों या आचरणों का स्वरूप जो किसी की योग्यता आदि का सूचक होता है। ४-करनी। करतूत। ५-दे० 'चरित'।
चरित्र-गठन पुं० (सं) शील अथवा सदाचार-वृत्ति का का निर्माण।
चरित्र-दोष पु० (सं) आचरण या चाल-चलन की खराबी।
चरित्र-नायक पु० (सं) चरितनायक।
चरित्र-पंजी स्त्री० (स) आचरण पंजी।
चरित्रवान् वि० (हि) सदाचारी।
चरित्रहीन वि० (सं) खराब आचरण वाला। दुश्चरित्र।
चरी स्त्री० (हि) १-चरागाह। २-हरी ज्वार का चारा कड़बी। ३-दूती। ४-दासी।
चरु पु० (स) १-हविष्यान्न। २-वह बरतन जिसमें हविष्यान्न पकाया जाय। ३-यज्ञ।
चरुआ पुं० (हि) १-चौड़े मुँह का मिट्टी का बरतन। २-वह पात्र जिसमें प्रसूता के [illegible]

किया जाय।
चरखला पुं० (हि) सूत कातने का चरखा।
चरू पुं० दे० 'चरु'।
चरेरा वि० (हि) [स्त्री० चरेरी] १-कड़ा और खुरदुरा २-रूखा।
चरेरू पुं० (हि) १-चिड़िया पक्षी। २-चरने वाला प्राणी।
चरैया पुं० (हि) १-चरने वाला। २-चराने वाला।
चर्चक पुं० (सं) चर्चा करने वाला।
चर्चन पुं० (सं) १-चर्चा। २-लेपन। पोतना।
चर्चरिका स्त्री० (सं) नाटक में दो अंकों के मध्य के समय में गाया जाने वाला गायन। इस बीच में पात्र तैयार होते हैं और दर्शकों का मनोरंजन होता है।
चर्चरी स्त्री० (सं) १-करतल ध्वनि। २-होली का हुल्लड़। ३-आमोद-प्रमोद। ४-एक वर्णवृत्त।
चर्चा स्त्री० (सं) १-जिक्र। वर्णन। २-वार्त्तालाप। ३-अफवाह। ४-लेपन। पोतना।
चर्चित वि० (सं) १-लगाया गया। पोता हुआ। २-जिसकी चर्चा की गई हो।
चर्पट पुं० (सं) चपत। तमाचा।
चर्म पुं० (सं) १-चमड़ा। २-ढाल।
चर्मकार पुं० (सं) चमड़े का काम करने वाला। चमार।
चर्मचक्षु पुं० (सं) १-सामान्य दृष्टि का मनुष्य। २-नेत्र। नयन।
चर्मण्वती स्त्री० (सं) चम्बलनदी।
चर्मदंड पुं० (सं) चमड़े का चाबुक।
चर्म-दृष्टि स्त्री० (सं) आँख की दृष्टि।
चर्म-पादुका स्त्री० (सं) जूती।
चर्म-प्रसाधक पुं० (सं) वह कारीगर जो पशु पक्षियों की खाल में भूसा भरकर सजाने के लिए तैयार करता है। (टेक्सिडरमिस्ट)।
चर्ममय वि० (सं) जिसमें सब चमड़ा ही हो। (ऑल-लेदर)।
चर्म-वाद्य पुं० (सं) १-ढोल। २-नगाड़ा।
चर्म-शोधन पुं० (सं) चमड़े को कमाना। चमड़े को विशेष घोलों में डालकर सिझाना या अन्य प्रक्रिया द्वारा मुलायम बनाना। (टैनिंग)।
चर्म-शोधनालय पुं० (सं) चमड़ा कमाने का स्थान। वह स्थान या कारखाना जहाँ विशेष प्रक्रिया द्वारा चमड़े को सिझाकर मुलायम बनाया जाता है। (टैनरी)।
चर्म-सार पुं० (सं) खाए हुए पदार्थों से बनने वाला रस जो चमड़े के भीतर रहता है।
चर्मोदय पुं० (सं) एक प्रकार का लसीला पदार्थ जो जो जख्म या चमड़े से निकलता है। (लिम्फ)।
चर्या स्त्री० (सं) १-कार्य। २-आचरण। ३-रहन-सहन। ४-प्रतिदिन का कार्यक्रम। ५-जीविका। ६-सेवा। ६-चलना।
चर्राना क्रि० (हि) १-लकड़ी का टूटते समय 'चर-चर' शब्द करना। २-शरीर में हलकी पीड़ा होना ३-चमड़े का रूखा होने के कारण चड़चड़ाना। ४-तीव्र अभिलाषा होना।
चर्री स्त्री० (हि) लगने वाली बात।
चर्वण पुं० (सं) १-चबाना। २-चबाई जाने वाली वस्तु। ३-चबेना।
चर्वित वि० (सं) चबाया हुआ।
चर्वित-चर्वण पुं० (सं) १-चबाये हुए को चबाना। २-कही हुई बात को फिर से कहना।
चल वि० (सं) १-अस्थिर। चंचल। चलायमान। २-चलता हुआ। ३-जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता हो। जंगम। (मूवेबल)। पुं० (सं) १-पारा। २-शिव। ३-विष्णु।
चलक पुं० (सं) माल। असबाब।
चल-चित्र पुं० (सं) चलते-फिरते चित्र दिखाने वाला यन्त्र जिसमें तसवीरदार फिल्म एक अत्यन्त प्रकाशमान लालटेन के सामने दौड़ाई जाती हैं और आकार-वृद्धि-समर्थ ताल के द्वारा चित्रों का प्रतिबिम्ब परदे पर पड़ता है और ऐसा प्रतीत होता है मानो वे गति कर रही हों। (सीनेमेटोग्राफ)।
चल-चित्र पुं० (सं) वे चित्र जो परदे पर जीवित प्राणियों के समान कार्य करते दिखाये जाते हैं। (सिनेमा)।
चल-चित्रण पुं० (सं) चल-चित्र बनाने की सम्पूर्ण क्रिया। (सिनेमेटोग्राफी)।
चल-चित्रपट पुं० (सं) किसी कथानक या दृश्यों का चल-चित्रण पद्धति द्वारा तैयार किया गया पट। (सिनेमेटोग्राफ-फिल्म)।
चल-चित्रालय पुं० (सं) नाट्यशाला के समान वह घर या भवन जिसमें चलचित्र प्रकाशित किये जाते हैं। (सिनेमा-हाउस)।
चल-रूपित्र पुं० (सं) चलती-फिरती तसवीरें दिखाने वाला यंत्र। (सिनेमेटोग्राफ)।
चलचूक स्त्री० (हि) धोखा। छल। कपट।
चलता वि० (हि) [स्त्री० चलती] १-गतियुक्त। २-प्रचलित। ३-चालू। जारी। ४-काम चलाने या करने योग्य। ५-व्यवहार में निपुण। चालाक। पुं० (देश) १-एक बड़ा वृक्ष। २-कवच।
चलता-खाता पुं० (हि) बैंक आदि का वह खाता जिसमें लेन देन बराबर जारी रहे। (करेंट-अका-उंट)।
चलता-गाना पुं० (हि) सरल संगीत।
चलती स्त्री० (हि) अधिकार अथवा प्रभुत्व चलना।

चलनू वि० (हि) १-दे० 'चलना'। २-कोई खोटी जाने वाली (भूमि)। आवाद।

चलन्दम पु० (सं) पीतल।

चलद्रव्य पु० (सं) माल। असबाब। (सुश्रुत)।

चलन पु० (हि) १-चलने का भाव। चाल। २-प्रथा। ३-प्रचलन। रिवाज।

चलन-कलन पु० (सं) ज्योतिष का एक गणित जिसके द्वारा दिन मान का घटना-बढ़ना जाना जाता है।

चलन-समीकरण पुं० (सं) गणित की एक विशेष क्रिया जिसके द्वारा ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि निकाली जाती है।

चलनसार वि० (हि) १-व्यवहार में प्रचलित। २-टिकाऊ।

चलना क्रि०(हि)१-जाना। गमन करना। २-हिलना डोलना। ३-प्रयुक्त होना। ४-प्रचलित होना। ५-तीर, गोली आदि का छूटना। ६-शील वाला होना ७-अधिकार या वश में होना। ८-उपयोग में आना ९-निभना। १०- आरंभ होना। छिड़ना। ११-पढ़ा जाना। पु० (हि) १-बड़ी चलनी या छलनी। २-हलवाई का बड़ा छन्ना।

चलनी स्त्री० (हि) आटा छानने की छलनी।

चलन-पत्र पु० (सं) १-पीपल। २-कागज के रूप में प्रचलित वह धन जो सिक्के की जगह काम आता है। (करेंसी-नोट)।

चलदल पुं० (हि) पैदल सिपाही।

चलवाना क्रि० (हि) चलाने का काम कराना।

चलविचल वि० (हि) १-अस्तव्यस्त। २-अस्थिर। पु० व्यतिक्रम।

चलवैया पु० (हि) चलने या चलाने वाला।

चलसम्पत्ति स्त्री० (सं) वह सम्पत्ति जो एक स्थान से उठा कर दूसरी जगह ले जाई जा सके। (मूवेबल प्रापर्टी)।

चलाऊ वि० (हि) अधिक दिन चलने वाला। टिकाऊ

चलाक वि० (हि) चालाक।

चलाका स्त्री० (हि) बिजली।

चलाचल वि० (सं) १-चल और अचल दोनों। २-चंचल। स्त्री० (हि) १-चलाचली। २-चाल। गति।

चलाचली स्त्री० (हि) १-चलने के समय की व्यग्रता। घबराहट। २-प्रस्थान (मरने) का समय निकट होना।

चलान स्त्री० (हि) १-माल या सामान का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाने का कार्य। २-अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करना। ३-भेजा हुआ माल। ४-भेजे या भेजे गये हुए माल की सूची। रवन्ना।

चलाना क्रि० (हि) १-चलने में लगाना। २-गति देना। ३-अस्त्र-शस्त्र आदि व्यवहार में लाना। ४-व्यवहार या आचरण करना। ५-काम आदि को ऐसी व्यवस्था करना कि वह भलीभांति चलता रहे। (कन्डक्ट)।

चलानी वि० (हि) चलान सम्बन्धी। चलान का। स्त्री० माल बाहर भेजने का व्यवसाय।

चलायमान वि० (सं) १-चलता हुआ। २-चंचल। ३-विचलित।

चलार्थ पु० (सं) वह सिक्का या मुद्रा जिसका व्यवहार नित्य होता रहता हो, जो एक आदमी के हाथ से दूसरे के हाथ में जाता हो। (करेंसी)।

चलार्थ-पत्र पु० (सं) दे० 'चल-पत्र'।

चलावना क्रि० (हि) दे० 'चलाना'।

चलावा पु० (हि) १-रीति। रस्म। २-द्विरागमन। गौना।

चलित वि० (सं) १-चलायमान। २-प्रचलित।

चलित्र पु० (सं) रेलगाड़ी खींच कर ले जाने वाला इंजन। (लोकोमोटिव)।

चलीसा पुं० (हि) चालीसा।

चलैया पुं० (हि) चलने वाला।

चलौआ पु० (हि) चाला।

चवन्नी स्त्री० (हि) चार आने का सिक्का।

चवपैया पु० (हि) चौपाया।

चवा स्त्री० (हि) चारों ओर से बहने वाली हवा।

चवाई पु० (हि) (स्त्री० चवाइन) १-निन्दक। २-झूठा। ३-चुगलखोर।

चवाव पु० (हि) १-अफवाह। २-बदनामी। ३-निन्दा।

चवैया स्त्री० दे० 'चवाव'।

चश्म स्त्री० (फा) नेत्र। आँख।

चश्मदीद वि० (फा) १-आँखों से देखा हुआ। २-प्रत्यक्षदर्शी। (गवाह)।

चश्मा पु० (फा) १-ऐनक। २-सोता। स्रोत।

चष पु० (हि) आँख।

चषक पु० (सं) १-मद्य पीने का पात्र। २-शहद। ३-एक तरह की शराब।

चष-चोल पु० (हि) आँख का पलक।

चसका पु० (हि) १-शौक। २-लत। व्यसन।

चसना क्रि० (हि) १-चिपकना। २- मरना। ३-खिंच या दबकर (रगड़े का) फट जाना।

चसम स्त्री० दे० 'चश्म'।

चसमा पु० दे० 'चश्मा'।

चस्पाँ वि० (फा) चिपकाया हुआ।

चस्म स्त्री० दे० 'चश्म'।

चह पु० (हि) १-नाव पर चढ़ने के लिए बनाया हुआ मचान। २-[illegible] स्त्री० गड्ढा।

चहक स्त्री० (हि) पक्षियों का कलरव। चहचहा

चहकना क्रि० १-पक्षियों का मधुर शब्द करना। २-उमङ्ग में या प्रसन्न होकर अधिक बोलना। ३-चमकना।
चहका पु'० (हि) १-जलती हुई लकड़ी। २-बनेठी। ३-चहला।
चहकार स्त्री० (हि) चहक।
चहकारना क्रि० (हि) चहकना।
चहचहा पु'० (हि) १-चहक। २-हँसी। वि० १-उल्लास युक्त। आनन्द उत्पन्न करने वाला। २-सुन्दर।
चहचहाना क्रि० (हि) चहकना।
चहटा पु'० (हि) पंक। कीचड़।
चहता पु'० (हि) (स्त्री० चहती) चहेता। प्यारा।
चहलना क्रि० (हि) चहलना। रौंदना।
चहना क्रि० (हि) चाहना।
चहनि स्त्री० (हि) १-चाह। २-दृष्टि।
चहबच्चा पु'० (हि) १-पानी जमा करने का हौद। २-धन छिपाकर रखने का छोटा तहखाना।
चहर स्त्री० (हि) १-चहल। २-चिड़िया।
चहरना क्रि०(हि) आनन्दित होना।
चहल स्त्री० (हि) १-आनन्दोत्सव। २-चहल-पहल। ३-चिड़ियों का कलरव। ४-कीचड़।
चहलकदमी स्त्री० (फा) धीरे-धीरे टहलना, घूमना या चलना।
चहल-पहल स्त्री० (हि) १-किसी जगह अधिक आदमियों के इकट्ठे होने या आने जाने से वायुमंडल में पैदा हुई सजीवता। २-रौनक।
चहला पु'० (हि) पंक। कीचड़।
चहलुम पु'० दे० 'चेहलुम'।
चहचहारा वि० (हि) चहचहाने वाला (पक्षी)।
चहा पु'० (हि) बगले जैसा एक पक्षी। चाहा।
चहार-दिवारी स्त्री० (फा) चारों ओर की दीवार।
चहारम वि० (फा) चौथाई। चतुर्थांश।
चहाचही पु'० (हि) एक दूसरे को देखना।
चहुँ वि० (हि) चारों।
चहुँकना क्रि० (हि) चौंकना।
चहूँ वि० दे० 'चहुँ'।
चहुँघा क्रि० वि० (हि) चारों ओर।
चहेटना क्रि० (हि) सटना। मिलाना। लगाना।
चहेटना क्रि० (हि) १-निचोड़ना। २-खदेड़ना।
चहेता वि० (हि) (स्त्री० चहेती) प्यारा। प्रिय।
चहोरना क्रि० (हि) १-पौधा रोपना। २-सहेजना। ३-कोई काम अच्छी तरह करना।
चाँई पु'० (देश) १-ठग। धूर्त।
चाँक पु'० (हि) खलियान के अन्न के ढेर के चारों ओर लगाया जाने वाला चिह्न।
चाँकना क्रि० (हि) १-खलियान में अनाज के ढेर पर चिह्न लगाना। २-सीमा बाँधने के लिए चिह्नित करना। हद बाँधना। ३-पहचानने के लिए किसी प्रकार का चिह्न लगाना।
चाँका पु'० दे० 'चौंक'।
चाँगला वि० (हि) (स्त्री० चाँगली) १-अच्छा। बढ़िया। २-हृष्ट। पुष्ट। ३-स्वस्थ। ४-धूर्त। चालाक।
चाँचर, चाँचरी स्त्री० (हि) १-एक राग जो बसंत में गाया जाता है। २-हल्ला-गुल्ला। ३-होली में होने वाले खेल तमाशे।
चाँचल्य पु'० (सं) चंचलता। चपलता।
चाँचिया पु'० (हि) १-लूटपाट करने वाली एक जाति। २-डाकू।
चाँचियागीरी स्त्री० (हि) लुटेरापन।
चाँचु पु'० (हि) चंचु। चोंच।
चाँटा स्त्री० (हि) १-थप्पड़। २-च्यूँटा।
चाँटी स्त्री० (हि) १-चींटी। २-तबले पर तर्जनी उँगली का आघात पड़ने का शब्द।
चाँड़ वि० (हि) १-प्रबल। २-उद्धत। ३-श्रेष्ठ। ४-प्रचंड। स्त्री० (हि) १-टेक। थूनी। २-अत्यंत आवश्यकता। ३-प्रबल इच्छा।
चाँड़ना क्रि० (हि) १-खोदकर गिराना। २-उखाड़ना। ३-उजाड़ना।
चांडाल पु'० (सं) [स्त्री० चांडाली, चांडालिन] १-डोम। श्वपच। २-पतित मनुष्य। (गाली)।
चाँड़िला वि० दे० 'चाँड़'।
चाँद पु'० (हि) १-चन्द्रमा। २-एक गहना। ३-निशाने का लक्ष्य। स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग।
चाँद-तारा स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की बूटीदार मलमल। २-एक प्रकार की पतंग।
चांदना पु'० (हि) १-प्रकाश। उजाला। २-चाँदनी।
चांदनी स्त्री० (हि) १-चाँद का उजाला। ज्योत्स्ना। कौमदी। २-सफेद चादर जो बिछाई जाती है।
चाँद-बाला पु'० (हि) एक चन्द्राकार कान का गहना।
चाँदमारी स्त्री० (हि) बन्दूक से निशाना लगाने का अभ्यास।
चाँदा पु'० (हि) १-छप्पर का पाख। २-छोटे-छोटे चिह्नों वाला पटरा जिस पर अभ्यास के लिए निशाना लगाते हैं। ३-अर्धवृत्त के आकार की एक प्रकार की (पीतल या सींग की) पटरी जिससे भूमिति के लिए कोण आदि नापे जाते हैं। (प्रोट्रैक्टर)।
चाँदी स्त्री० (हि) १-रजत। रौप्य। २-[illegible] ३-खोपड़ी का मध्य भाग। चाँद।
चांद्र, चांद्रमस वि० (सं) १-चन्द्रमा सम्बन्धी। २-जो चन्द्रमा के विचार से हो।
चांद्र-मास पु'० (सं) उतना समय जितना चन्द्रमा

जो पृथ्वी की परिक्रमा करने में लगता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा तक का महीना।

चांद्रायण पुं० (सं) १-महीने भर का एक व्रत जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं। २-एक मात्रिक छन्द।

चांप पुं० (हि) १-दे० 'चाप'। २-चम्पा का फूल। स्त्री० (हि) १-दबाव। २-पैर की आहट।

चांपना क्रि० (हि) दबाना। मोड़ना।

चांयचांय, चांवचांव स्त्री० (हि) व्यर्थ की बकबक।

चा स्त्री० (हि) चाय।

चाइ, चाउ पुं० (हि) चाव।

चाउर पुं० (हि) चावल।

चाए क्रि० वि० (हि) चाव से। चाह से।

चाक पुं० (हि) १-पहिया। २-कुम्हार का बर्तन बनाने का गोल पत्थर। ३-पानी खींचने की घिरनी रोपने के समय पेड़ की जड़ में लगा हुआ गोलाकार मिट्टी का पिंड। पुं० (फा) दरार। चीर। वि० (तु) १-दृढ़। २-हृष्ट-पुष्ट। पुं० (सं) खड़िया मिट्टी।

चाकचक वि० (हि) मजबूत। २-दृढ़।

चाकचक्य स्त्री० (सं) १-चमक-दमक। २-शोभा।

चाकना क्रि० (हि) १-हद बनाना। २-अनाज की राशि पर मिट्टी या गोबर से छाप लगाना। ३-पहिचान के लिए चिह्न बनाना।

चाकर पुं० (फा) [स्त्री० चाकरानी] नौकर। सेवक।

चाकरी स्त्री० (फा) १-सेवा। २-नौकरी।

चाकलेट पुं० (अं) एक तरह की मिठाई।

चाकसू पुं० (हि) वनकुलथी।

चाका पुं० (हि) चक्का। पहिया।

चाकी स्त्री० (हि) १-चक्की। २-बिजली।

चाकू पुं० (तु) छुरी।

चाक्षुष वि० (सं) १-चक्षु सम्बन्धी। २-दिखाई देने वाला दृश्य। न्याय में प्रत्यक्ष प्रमाण का एक भेद।

चाख पुं० (हि) नीलकण्ठ नामक पक्षी।

चाखना क्रि० (हि) चखना।

चाखुर स्त्री० (देश) १-निराकर निकाली हुई खेत की घास। २-गिलहरी।

चाचर, चाचरि स्त्री० (हि) १-होली का एक गीत। २-होली का स्वांग। ३-हल्ला-गुल्ला।

चाचरी स्त्री० (हि) एक प्रकार की मुद्रा (योग)।

चाचा पुं० (हि) [स्त्री० चाची] पिता का छोटा भाई। काका।

चाट स्त्री० (हि) १-इच्छा। २-व्यसन। ३-लालसा। ४-चटपटी वस्तु।

चाटक पुं० (हि) जादू। इन्द्रजाल।

चाटना क्रि० (हि) १-जीभ से चखना। २-पोंछकर खा लेना। ३-किसी वस्तु पर प्यार से जीभ फेरना ४-पतंग कागज आदि का कीड़ों द्वारा खाया जाना।

चाटी पुं० (हि) चेला। शिष्य।

चाटुकार पुं० (सं) खुशामदी। चापलूस।

चाटुकारी स्त्री० (हि) चापलूसी। खुशामद।

चाड़ स्त्री० दे० 'चांड़'।

चाढ़ा वि० (हि) [स्त्री० चाढ़ी] प्यारा। प्रिय।

चाणक्य पुं० (सं) एक नीतिज्ञ जो सम्राट चन्द्रगुप्त का मन्त्री था। कौटिल्य।

चाणूर पुं० (सं) कंस का एक योद्धा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

चातक पुं० (सं) [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी।

चातुरन्त वि० (सं) (वह देश अथवा राज्य) जिसके चारों ओर प्राकृतिक सीमाएं हों।

चातुर वि० (सं) चतुर।

चातुरी स्त्री० (हि) १-चतुरता। २-चालाकी। ३-धूर्तता।

चातुर्मासिक वि० (सं) चार महीने में होने वाला (व्रत या कर्म)।

चातुर्मास्य पुं० (सं) चौमासा। (आषाढ़ शुक्ला द्वादशी से कार्तिक शुक्ला द्वादशी तक का समय)।

चातुर्य पुं० (सं) चतुरता।

चातुर्वर्ण्य पुं० (सं) चारों वर्ण।

चात्रिक, चात्रिग पुं० (हि) चातक।

चादर स्त्री० (फा) १-ओढ़ने और बिछाने का बड़ा कपड़ा। २-धातु का चौरस पत्तर। ३-दुपट्टा। ४-पहाड़ या चट्टान से गिरने वाली बड़ी धार। ५-पवित्र स्थान पर चढ़ाये जाने वाले फूल। ६-(दे०) चद्दर।

चान पुं० (हि) चन्द्रमा।

चानक क्रि० वि० (हि) अचानक। सहसा।

चानन पुं० (हि) चन्दन।

चाना क्रि० (हि) चाव या उमंग में आना।

चाप पुं० (सं) १-कमान। धनुष। २-गणित में आधा वृत्त क्षेत्र। ३-वृत्त की परिधि का कोई भाग ४-धनुराशि। स्त्री० (हि) १-दबाव। २-पैर की आहट।

चापकर्ण पुं० (सं) वह सरल रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक होती है। जीवा। (कॉर्ड)।

चापट स्त्री० (हि) आटे का चोकर। वि० १-चौपट। २-चिपटा।

चापड़ वि० (हि) १-चिपटा। २-समतल

चापना क्रि० (हि) दबाना। मोड़ना।

चापर वि० (हि) चापड़।

चापल पुं० (सं) चपलता। वि०

चापलता स्त्री० (सं) चपलता।

चापलूस वि० (फा) खुशामदी।

चापलूसी स्त्री० (फा) खुशामद।

चालित वि० (स) चलाया हुआ।
चालिया वि० (हि) चालबाज।
चाली वि० (हि) १-चालबाज। २-चंचल। ३-नट खट।
चालीस पुं० (हि) चालीस वर्षों का समूह।
चालुक्य पु० (स) दक्षिण भारत का एक राजवंश।
चालू वि० (हि) प्रचलित।
चाल्हू स्त्री० (देश) चेल्हवा नामक मछली।
चाव पु०(हि) १-इच्छा। २-शौक। ३-वासना। ४-अनुराग। ५-उत्साह।
चावड़ी स्त्री० (देश) पथिकों के ठहरने का स्थान। पड़ाव।
चावना क्रि०(हि) चाहना।
चावल पुं०(हि) १-एक प्रसिद्ध अन्न। तंदुल। २-

[illegible]

अपने पास रखता है।
चाष पुं० (स) १-नीलकंठ नामक पक्षी। २-चाहा पक्षी।
चाशनी स्त्री० (हि) खाँड का पका शर्बत।

[illegible]

समाचार। ६-आहट। टोह। ७-रहस्य।
चाहक पु० (हि) १-चाहने वाला। २-प्रेमी।
चाहत स्त्री० (हि) चाह। प्रेम।
चाहना क्रि० (हि) १-इच्छा करना। २-प्रेम करना। ३-माँगना। ४-देखना। ५-ढूंढना। स्त्री० दे० 'चाह'।
चाहा पु० (हि) एक जल पक्षी जो बगले जैसा होता है।
चाहि अव्य० अपेक्षाकृत।
चाहिए अव्य०(हि)१-उचित है। २-आवश्यकता है।
चाही वि० स्त्री० (हि) १-चाहेती। प्यारी। २-कुएं से सींची जाने वाली (भूमि)।
चाहे अव्य० (हि) १-यदि इच्छा हो। २-यदि उचित हो। ३-अथवा। या।
चिआँ पु० (हि) इमली का बीज।
चिउंटी स्त्री० (हि) च्यूँटी। पिपीलिका।
चिगना पु० (देश) छोटा बच्चा।
चिंगारी स्त्री० (हि) चिनगारी।
चिंगुड़ना, चिंगुरना क्रि० (हि) सिकुड़ना।

का चिल्लाना।
चिंचिनी स्त्री० (हि) १-इमली का पेड़। २-इमली का फल।
चिंज, चिंजा पु० (हि) [स्त्री० चिंजी] लड़का। पुत्र।
चिंजी स्त्री० (हि) कन्या। लड़की।
चिंड पु० (स) नृत्य का एक ढंग।
चिंत स्त्री० (हि) चिन्ता।
चिंतक वि० (स) १-चिंतन करने वाला। २-सोचने वाला।
चिंतन पु० (स) १-ध्यान। २-विचार। विवेचना।
चिंतना क्रि० (हि) १-चिंतन करना। २-सोचना। स्त्री० (हि) १-ध्यान। स्मरण। २-चिंता। सोच।
चिंतनीय वि० (स) १-चिन्ता करने के योग्य। २-सोचने विचारने योग्य।
चिंतवन पु० (हि) चिंतन।

[illegible] २-सोच। फिकर। ३-

। चिंता से व्याकुल या

[illegible]
चिंतामणि पु०(सं) १-सब मनोरथ पूर्ण करने वाला रत्न। २-ब्रह्मा। ३-ईश्वर। ४-सरस्वती का एक मंत्र।
चिंतामनि पु० दे० 'चिंतामणि'।
चिंतित वि० (स) [स्त्री० चिंतिता] जिसे चिन्ता हो।
चिंत्य वि० (स) चिन्तनीय।
चिंदी स्त्री० (देश) बहुत छोटा टुकड़ा।
चिंधरना क्रि० (हि) चीथना।
चिंपांजी पु० (स) एक तरह का वनमानुस।
चि० हिन्दी में चिरंजीव का संक्षिप्त रूप।
चिउड़ा पुं० (हि) हरे धान को कूटकर बनाया हुआ चिपटा चावल।
चिक स्त्री० (तु) बांस की तीलियों का परदा। चिलमन।
चिक्कट वि० (हि) दे० 'चीकट'।
चिकटना क्रि० (हि) जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना।
चिकटा वि० दे० "चीकट"।
चिकन पु० (फा) एक तरह का सूती कपड़ा जिसपर सुई से बेल-बूटे बने होते हैं।
चिकना वि० (हि) १-जो खुरदरा न हो। २-स्निग्ध। ३-खुशामदी। ४-प्रेमी। पु० तेल, घी आदि स्निग्ध पदार्थ।
चिकनाई स्त्री० (हि) चिकनाहट। स्निग्धता।
चिकनाना क्रि० (हि) १-चिकना करना। २-स्निग्ध [illegible] ४-चिकना या स्निग्ध होना

। चिकना होने का

भाव। चिकनाई।
चिकनिया वि० (हि) छैला।
चिकनी-मिट्टी स्त्री० (हि) एक प्रकार की लसीली मिट्टी।
चिकनी-सुपारी स्त्री० (हि) उबाली हुई चिपटी सुपारी
चिकन पु० (हि) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
चिकरना क्रि० (हि) चिंघाड़ना।
चिकवा पु० (हि) १-बकरकसाब। कसाई। २-चिक ३-एक तरह का रेशमी कपड़ा।
चिकार पु० (हि) चिंघाड़।
चिकारना क्रि० (हि) १-जोर से बोलना। गरजना। २-हाथी का चिंघाड़ना।
चिकारा पु० (हि) [स्त्री० चिकारी] १-सारंगी जैसा एक बाजा। २-हिरन की जाति का एक पशु।
चिकारी स्त्री० (हि) चीत्कार।
चिकित्सक पु० (सं) इलाज करने वाला। वैद्य।
चिकित्सन वि० (सं) चिकित्सा या चिकित्सक से सम्बद्ध। (मेडिकल)।
चिकित्सन-प्रमाणक पु० (सं) अस्वस्थता आदि का चिकित्सक द्वारा दिया गया प्रमाण-पत्र। (मेडिकल-सार्टिफिकेट)।
चिकित्सन-वैचारिक-विज्ञान पु० (सं) चिकित्सा सम्बन्धी मूल सिद्धान्तों या तत्वों का विवेचन न करने वाला। शास्त्र या विज्ञान। (मेडिकल-ज्यूरिस-प्रूडेन्स)।
चिकित्सा स्त्री० (सं) १-रोग निवारण के उपाय। इलाज। २-औषधोपचार।
चिकित्सा-अधिकारी पु० (सं) राजकीय विभाग या नगरपालिका आदि में लोगों की चिकित्सा की व्यवस्था करने वाला अधिकारी। (मेडिकल-आॅफी-सर)।
[illegible]लय पु० (सं) रोगियों की चिकित्सा का [illegible] अस्पताल।
[illegible]वकाश पु० (सं) किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के निमित्त मिलने वाली छुट्टी।
चिकित्साशास्त्र पु० (सं) चिकित्सा के सब अंगों का विवेचन करने वाला शास्त्र। आयुर्वेद।
चिकित्सित वि० (सं) जिसकी चिकित्सा की गई हो।
चिकित्स्य वि० (सं) चिकित्सा के योग्य। साध्य।
चिकुटी स्त्री० (हि) चिकोटी। चुटकी।
चिकुर पु० (सं) १-सिर के बाल। केश। २-पर्वत। ३-रेंगने वाले जन्तु। ४-गिलहरी। ५-छछूँदर।
चिकोटी स्त्री० दे० 'चुटकी'।
चिक्क-बाक वि० (हि) चमकीला।
चिक्कट वि० दे० 'चीकट'। पु० जमा हुआ मैल।
चिक्कण वि० (सं) चिकना।
चिक्कणी स्त्री० (सं) चिकनी सुपारी।
चिक्करना क्रि० (हि) चिंघाड़ना।
चिक्कार पु० (हि) चिंघाड़।
चिखना पु० (हि) शराब पीते समय खाई जाने वा[illegible] चाट।
चिखाई स्त्री० (हि) १-चीखने की क्रिया या भाव २-चखने की क्रिया या भाव। ३-चीखने या चख[ने] की उजरत।
चिखुरन स्त्री० (हि) वह घास जो खेत को साफ कर[ने] के लिए निकाली जाती है।
चिखुरना क्रि० (देश) जोते हुए खेत में से घास निकाल कर बाहर करना।
चिखुरा पु० (हि) (स्त्री० चिखुरी) गिलहरी।
चिचड़ा पु० (हि) लटजीरा नामक पौधा। अपामार्ग
चिचड़ी स्त्री० (हि) किलनी।
चिचान पु० (हि) बाज नामक पक्षी।
चिचाना क्रि० (हि) चिल्लाना।
चिचोड़ना क्रि० (हि) चचोड़ना।
चिजारा पु० (हि) राज। मेमार।
चिट स्त्री० (हि) १-कागज का छोटा टुकड़ा। पुरज[ा]। २-कपड़े की धज्जी।
चिटकना क्रि० (हि) १-रूखता या गरमी के कारण ऊपरी तल का तड़कना। २-जगह-जगह से फटना ३-गठीली लकड़ी का जलते समय 'चिट-चिट' शब्द उत्पन्न करना। ४-चिढ़ना। ५-कली का फूट-कर खिलना।
चिटक वि० (हि) चीकट। स्त्री० (हि) चीकटने की क्रिया या भाव
चिटका पु० (हि) चिता।
चिटकाना क्रि० (हि) १-तड़काना। २-चिढ़ाना। ३-'चिट-चिट' शब्द उत्पन्न करना।
चिट-नवीस पु० (हि) लेखक। मुहर्रिर।
चिटनीस पु० दे० 'चिट-नवीस'।
चिट्की स्त्री० (हि) चुटकी।
चिट्टा वि० (हि) [स्त्री० चिट्टी] सफेद। पु० झूठा बढ़ावा।
चिट्ठा पु० (हि) १-आय-व्यय का हिसाब। लेखा। २-सालभर की हानि लाभ का पत्रक। ३-सिलसिले-वार सूची या विवरण। ४-मजदूरी या वेतन में बाँटा जाने वाला धन।
चिट्ठी स्त्री० (हि) १-खत। पत्र। २-पुरजा। रुक्का।
चिट्ठी-पत्री स्त्री० (हि) पत्र-व्यवहार।
चिट्ठीरसां पु० (हि) चिट्ठी बाँटने वाला। डाकिया।
चिड़चिड़ा वि० (हि) जो जरासी बात पर चिढ़ जाय।
चिड़चिड़ाना क्रि० (हि) १-चिढ़ना। झुँझलाना। २-चिटकना।
चिड़चिड़ापन पु० (हि) तुनकमिजाजी।
चिड़वा पु० (हि) चिउड़ा।
चिड़ा पु० (हि) गौरवा। चटक।

चिड़िया स्त्री० (हि) परों से उड़ने वाला दो पैर का पक्षी। पक्षी। पखेरू।

चिड़िया-खाना, चिड़िया-घर पुं० (हि) वह स्थान जहाँ नाना प्रकार के पशु-पक्षी देखने के लिए रखे जाते हैं।

[illegible]

चिढ़ स्त्री० १-चिढ़ने का भाव। खीझ। २-नाराजगी ३-नफरत।

चिढ़कना क्रि० (हि) चिढ़ना।

चिढ़ना क्रि० (हि) १-नाराज होना। २-द्वेष रखना।

चिढ़वाना क्रि० (हि) दूसरे से चिढ़ाने का काम कराना।

चिढ़ाना क्रि० (हि) १-नाराज करना। २-किसी को खिजाने के लिए मुँह बनाना। ३-उपहास करना।

चित् स्त्री० (सं) चैतन्य। ज्ञान।

चित वि० (स) चुनकर इकट्ठा किया हुआ। पु० (हि) १-चित्त। मन। २-चितवन। वि० (हि) मुँह के बल पड़ा हुआ। क्रि० वि० (हि) पीठ के बल।

चितउन स्त्री० (हि) चितवन।

चितउर पु० (हि) चित्तौड़।

चितकबरा वि० (हि) (स्त्री० चितकबरी) दूसरे-दूसरे रंग के धब्बों वाला। चितला।

चितकूट पु० (हि) चित्रकूट।

चितगुपित पु० (हि) चित्रगुप्त।

चित-चोर पु० (हि) चित्त को चुराने वाला। मन-भावना। प्रिय। मनोहर।

चितभंग पुं० (हि) १-जी न लगना। उचाट। २-मतिभ्रम।

चितरना क्रि० (हि) चित्रित करना। चित्र बनाना।

चितरवा, चितरोरव पु० (हि) एक लाल रङ्ग की चिड़िया।

चितला वि० (हि) चितकबरा। कबरा।

चितवन स्त्री० (हि) किसी की ओर देखने का ढंग। दृष्टि।

चितवना क्रि० (हि) देखना।

चितवनि स्त्री० (हि) चितवन। दृष्टि।

चितसार, चितसारी स्त्री० (हि) चित्र-शाला।

चिता स्त्री० (स) १-चुनी हुई लकड़ियों का ढेर जिस पर मुरदा जलाया जाता है। २-श्मशान।

चिताना क्रि० (हि) १-सचेत करना। २-याद दिलाना ३-आत्मबोध कराना। ४-आग सुलगाना। ५-चित्रित होना या करना।

चितारना क्रि० (हि) १-चित्रित करना। २-ध्यान में लाना।

चितावन, चितावनी स्त्री० (हि) चेतावनी।

चिति स्त्री० (स) १-चिता। २-समूह। ३-चयन। ४-चैतन्य। ५-चित्शक्ति। ६-दुर्गा।

चितेरा पुं० (हि) (स्त्री० चितेरन, चितेरी) चित्रकार। वि० चित्रित।

[illegible]

चित्कार पुं० (हि) चीत्कार।

चित्त पु० (स) अन्तःकरण। मन। दिल।

चित्तज, चित्तजन्मा पु०(स) कामदेव।

चित्त-निर्वृत्ति स्त्री० (स) १-सुख। २-संतोष।

चित्त-भंग पु० (स) चित्त की चंचलता जिससे मन एकाग्र नहीं होता।

चित्तभू पुं० (सं) कामदेव।

चित्तभूमि स्त्री० (स) चित्त की (क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध) अवस्थाएँ।

चित्तर पुं० (हि) चित्र।

चित्तरसारी स्त्री० (हि) चित्रशाला।

चित्त-विकृति स्त्री० (स) मानसिक सदोषता।

चित्तविक्षेप पु०(स) चित-भंग। चित्त की अस्थिरता।

चित्त-विभ्रश, चित्त-विभ्रम पु० (हि) १-भ्रांति। २-उन्माद।

चित्त-वृत्ति स्त्री० (स) चित्त की अवस्था या गति।

चित्त-वृत्ति-निरोध पु० (सं) चित्त को बाह्य विषयों से हटाकर अन्तर्मुख करना।

चित्त-विश्लेषण पु० (स) चित्त की अवस्था का पता लगाना।

चित्त-विश्लेषण-विज्ञान पु० (स) मनोविज्ञान।

चित्ताकर्षक वि० (सं) मन को खींचने या लुभाने वाला।

चित्ती स्त्री० (हि) १-छोटा धब्बा। २-जूआ खेलने की एक प्रकार की चिपटी कौड़ी।

चित्तौड़, चित्तौर पुं० (हि) उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी।

चित्र पुं० (सं) १-रेखाओं अथवा रंगों द्वारा बनी हुई किसी वस्तु की आकृति। तसवीर। २-प्रतिकृति (फोटो)। ३-मस्तक पर चन्दन आदि का चि[illegible] ४-सजीव और विस्तृत विवरण। ५-अलंका[illegible] भेद। ६-काव्य का एक भेद जिसमें व्यंग [illegible] प्रधानता नहीं रहती। ७-आकाश। वि० १-अ[illegible] २-रंग-बिरंगा।

चित्रक पुं० (सं) १-तिलक। [illegible] ४-चीता नामक औषध। [illegible]

चित्रकला स्त्री० (स) चित्र [illegible]

चित्रकार पु० (सं) चित्र [illegible]

चित्रकारी स्त्री० (हि) [illegible]

चित्रकाव्य पुं० (सं) एक प्रकार का काव्य जिसके अक्षरों को क्रम विशेष से लिखने से कोई चित्र बन जाता है।
चित्रकूट पुं० (सं) बांदा जिले का एक पर्वत जिसपर वनवास काल में राम सीता कई वर्ष रहे।
चित्रगुप्त पुं० (सं) प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखने वाला एक यम।
चित्रजल्प पुं० (सं) वह अभिप्रायगर्भित वाक्य जो नायक और नायिका रूठ कर एक दूसरे के प्रति कहते हैं।
चित्रण पुं० (सं) चित्र या तस्वीर बनाना।
चित्रतल पुं० (सं) वह तल (सतह) जिस पर चित्र अंकित हो।
चित्रना क्रि० (हि) चित्र बनाना।
चित्रपट पुं० (सं) (स्त्री० चित्रपटी) १-वह कपड़ा, कागज आदि जिसपर चित्र बनाये जाते हैं। चित्राधार। २-सिनेमा की फिल्म।
चित्र-पुत्री स्त्री० (सं) पुतली।
चित्र-फलक पुं० (सं) काठ, हाथी दाँत आदि की पटिया जिस पर चित्र अंकित किया जाय।
चित्रमय वि० (सं) सचित्र।
चित्रल वि० (सं) चितकबरा।
चित्र-लिखित वि०(हि) १-चित्रित। २-गतिहीन। ३-मूक।
चित्र-लिपि स्त्री० (सं) वह लिपि जिसमें अक्षरों के स्थान पर सांकेतिक चित्र काम में लाये जायँ।
चित्रलेखक, चित्रवंत पुं० = चित्रकार।
चित्रलेखा स्त्री०(सं) १-एक वर्ण वृत्त। २-चित्र बनाने की कूँची। ३-बाणासुर की कन्या।
चित्र-वर्धक पुं० (सं) छोटी प्रतिकृतियों (फोटो) से बड़े चित्र तैयार करने का यंत्र। (एनलारजर)।
चित्र-विचित्र वि० (सं) १-रंग-बिरंगा। २-बेलबूटेदार। ३-अनेक प्रकार का।
चित्र-विद्या स्त्री० (सं) चित्रकला।
चित्र-शाला स्त्री० (सं) १-वह भवन या मंडप जिसमें (चित्र कला का प्रदर्शन करने के लिए) बहुत सारे चित्र लगाकर रक्खे गये हों। (पिक्चर-गैलरी)। २-वह स्थान जहाँ चित्र बनाये जायँ। (स्टूडियो)। ३-रङ्गशाला। ४-चित्रों से सजा हुआ घर।
चित्रसभा स्त्री० (सं) चित्रशाला।
चित्र-सामग्री स्त्री० (सं) चित्र बनाने में काम आने वाली सामग्री।
चित्रसारना क्रि० (हि) १-चित्रित करना। २-रङ्ग भरना। ३-बेल बूटे बनाना।
चित्रसारी स्त्री० (हि) १-चित्रशाला। २-रङ्गमहल। ३-चित्रकारी।
चित्रस्थल वि० (सं) १-चित्र में बनाया हुआ। २-चित्रित वस्तु के समान निस्तब्ध या निश्चल।
चित्रांगद पुं० (सं) १-गंधर्व का नाम। २-राजा शान्तनु के एक पुत्र।
चित्रा स्त्री० (सं) १-सत्ताईस नक्षत्रों में से एक। २-ककड़ी या खीरा।
चित्राधार पुं० (सं) १-चित्र-पट। २-चित्र सुरक्षित रखने की किताब। (एलबम)।
चित्रालङ्कार स्त्री० (हि) एक अलंकार।
चित्रालय पुं०(सं) दे० 'चित्रशाला' (१)।
चित्रिणी स्त्री० (सं) कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक।
चित्रित वि० (सं) १-चित्र में खींचा हुआ। २-जिसपर चित्र बना हो। ३-वर्णित। ४-अंकित।
चित्रोक्ति स्त्री० (सं) अलंकृत भाषा में कही हुई बात
चित्रोत्तर पुं० (सं) एक अलंकार जिसमें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर हो या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर हो।
चिथड़ा पुं० (हि) फटा-पुराना कपड़ा।
चिथड़िया वि० (हि) चिथड़े वाला। गूदड़िया।
चिथाड़ना क्रि० (हि) १-चीरना। फाड़ना। २-अपमानित करना।
चिद पुं० (हि) चैतन्य। जीवधारी।
चिदाकाश पुं० (सं) १-चैतन्य। २-आकाश। ३-परमात्मा।
चिदात्मा, चिदानंद पुं०(सं) ब्रह्म।
चिदाभास पुं० (सं) १-चैतन्यस्वरूप परब्रह्म का प्रतिबिम्ब जो मनुष्य के अन्तःकरण पर पड़ता है। २-जीवात्मा। ३-ज्ञान। ४-ज्ञान का प्रकाश।
चिद्रूप पुं० (सं) ज्ञानमय परमात्मा। ईश्वर।
चिद्विलास पुं० (सं) चैतन्यस्वरूप ईश्वर की माया।
चिन पुं० (देश) एक सदाबहार वृक्ष।
चिनक पुं० (हि) जलन-युक्त पीड़ा।
चिनग पुं० (हि) मूत्र नाली की जलन और पीड़ा। जलन।
चिनगटा पुं० (हि) चिथड़ा।
चिनगना क्रि० (हि) १-टीसना। २-जलन होना। ३-चिल्लाना।
चिनगारी स्त्री० (हि) आग का छोटा कण या टुकड़ा
चिनकी स्त्री० (हि) १-चिनगारी। २-नटखट लड़का
चिनचिनाना क्रि (हि) चीखना। चिल्लाना।
चिनना क्रि० (हि) चुनना।
चिनाना क्रि० (हि) चुनवाना। जोड़ाई कराना।
चिनिया वि० (हि) १-चीनी का बना। २-चीनी के रंग का। सफेद। ३-छोटा। ४-चीन सम्बन्धी।
चिनिया-केला पुं० (हि) एक तरह का छोटा केला।
चिनिया-बादाम पुं० (हि) मूंगफली।
चिनिया-बेगम स्त्री० (हि) अफीम।

चिनौटिया वि० (हि) १-चुनट पड़ा हुआ। २-चुना हुआ।
चिन्मय वि० (सं) ज्ञानमय। पुं० (सं) ईश्वर।
चिन्ह पुं० दे० 'चिह्न'।
चिन्हवाना क्रि० (हि) पहचान कराना।
चिन्हाना क्रि० (हि) पहचनवाना। परिचित कराना
चिन्हानी स्त्री० (हि) १-निशानी। २-स्मारक। ३-रेखा लकीर।
चिन्हार वि० (हि) परिचित।
चिन्हारी स्त्री० (हि) परिचय।
चिपकना क्रि० (हि) १-दो वस्तुओं का आपस में जुड़ना या सटना। २-चिपटना।
चिपकाना क्रि० (हि) १-चस्पाँ करना। चिपटाना। २-लिपटाना।
चिपचिप पुं० (हि) लसदार वस्तु के छूने से चिपकने का शब्द।
चिपचिपा वि० (हि) चिपकने वाला। लसदार।
चिपचिपाना क्रि० (हि) लसदार जान पड़ना।
चिपचिपाहट स्त्री० (हि) लसीलापन।
चिपटना क्रि० (हि) चिमटना। चिपटना।
चिपटा वि० (हि) (स्त्री० चिपटी) जिसकी सतह उठी हुई न हो।
चिपटाना क्रि० (हि) १-चिपकाना। २-लिपटाना। आलिंगन करना।
चिपड़ा, चिपड़ाहा वि० (हि) जिसकी आँख में कीचड़ हो।
चिपड़ी, चिपरी स्त्री० (हि) गोबर का उपला।
चिप्पक वि० (हि) छिछला। पुं० एक तरह का पक्षी।
चिप्पड़ पुं० (हि) १-छोटा चिपटा टुकड़ा। २-सूखी लकड़ी आदि के ऊपर की छाल।
चिप्पा पुं० (हि) पैबन्द। जोड़।
चिप्पिका स्त्री० (सं) एक तरह की चिड़िया।
चिप्पी स्त्री० (हि) १-छोटा टुकड़ा। २-उपली। गोहरी। ३-वह पत्थर जिससे सीसा तोला जाता है।
चिबावना पुं० (हि) अड़कान।
चिबिल्ला वि० (हि) चिलबिला। नटखट।
चिबुक पुं० (सं) ओठ के नीचे का भाग। ठोड़ी।
चिमगादड़ पुं० दे० 'चमगादड़'।
चिमकिया पुं० (हि) तेल का मैल।
चिमटना क्रि० (हि) १-चिपकना। सटना। २-आलिंगन करना। लिपटना। ३-गुथना। ४-पीछा न छोड़ना।
चिमटा पुं० (हि) [स्त्री० चिमटी] एक धातु की पट्टी को मोड़कर बनाया हुआ औजार जिससे अंगारे आदि उठाये जाते हैं।
चिमटाना क्रि० (हि) १-चिपटाना। चिपकाना। २-लिपटाना।
चिमटी स्त्री० (हि) छोटा चिमटा।
चिमड़ा वि० (हि) चीमड़। कड़ा।
चिमड़ी स्त्री० (हि) शुष्क। कड़ी।
चिमनी स्त्री० (अं) १-लैम्प या लालटेन का शीशा। २-किसी मकान के ऊपर का वह छेद जिससे धुआं बाहर निकलता है।
चिमिकना क्रि० (हि) चमकना।
चिमोटी स्त्री० (हि) १-चमोटी। २-चिमटी।
चिरंजीव, चिरंजीवी वि० = दीर्घायु हो (आशीर्वाद का शब्द)।
चिरटी वि० (सं) युवती।
चिरंतन वि० (सं) १-पुरातन। पुराना। २-हमेशा बना रहने वाला। शाश्वत।
चिर वि० (सं) दीर्घ (काल) बहुत (समय)। क्रि० वि० (हि) बहुत दिनों तक।
चिरई स्त्री० (हि) चिड़िया।
चिरकना क्रि० (हि) थोड़ा सा पर पतला मल निकलना।
चिरकाल पुं० (सं) दीर्घकाल।
चिरकालिक, चिरकालीन वि० (सं) बहुत दिनों का। पुराना।
चिरकुट पुं० (हि) चिथड़ा।
चिरगा पुं० (हि) एक तरह का घोड़ा।
चिरचिटा पुं० (देश) चिचड़ा। अपामार्ग। एक तरह की घास।
चिरचिरा वि० (हि) चिड़चिड़ा। पुं० (हि) चिचड़ा।
चिर-जीवक पुं० (सं) १-जीवजीवी। २-एक वृक्ष।
चिर-जीवन पुं० (सं) सदा बना रहने वाला जीवन। अमर-जीवन।
चिरजीवी वि० (सं) १-दीर्घायु। २-अमर।
चिरता पुं० (हि) चिलता (कवच)।
चिरना क्रि० (हि) १-सीध में कटना। २-लकीर के रूप में घाव होना।
चिर-निद्रा स्त्री० (सं) मृत्यु। मौत।
चिर-परिचित वि० (सं) १-जिससे पहले से परिचय हो। २-जाना-बूझा।
चिरम, चिरमिटी, चिरमी स्त्री० (देश) घुँघची। गुंजा।
चिरवाई स्त्री० (हि) १-चिरवाने का काम उजरत। २-पानी बरसने के बाद खेत की पहली जुताई।
चिरवाना क्रि० (हि) चीरने का काम कराना।
चिर-स्थायी वि० (हि) बहुत दिनों तक बना रहने वाला।
चिर-स्मरणीय वि० (सं) १-बहुत दिनों तक रखने योग्य। २-पूजनीय।
चिरहँटा पुं० (हि) बहेलिया।

चिर-समाधि स्त्री० (स) मृत्यु।
चिराई स्त्री० (हि) चिराने का काम या मजदूरी।
चिराक, चिराग पुं०=दीपक। दीया।
चिरागदान पुं० (फा) दीवट।
चिरातन वि० (हि) पुरातन। पुराना।
चिराना क्रि०(हि)१-चीरने का काम दूसरे से कराना। २-चिरना। वि० (हि) १-पुराना। २-जीर्ण।
चिरायंध स्त्री० (हि) चमड़े या मास के जलने से होने वाली बदबू।
चिरायता पु० (हि) एक पौधा जो दवा के काम में आता है।
चिरायु वि० (हि) दीर्घायु।
चिरारी स्त्री० (हि) चिरौंजी।
चिरिया स्त्री० (हि) १-चिड़िया। २-वर्षा का नक्षत्र।
चिरिहार पुं० (हि) चिड़ीमार।
चिरी स्त्री० (हि) चिड़िया।
चिरैया वि० (हि) चीरने वाला। स्त्री० (हि) चिड़िया
चिरौंजी स्त्री०(हि) पायल नामक वृक्ष के फलों के बीजों की गिरी।
चिरौरी स्त्री० (हि) अनुनय-विनय। खुशामद।
चिर्री स्त्री० (हि) वज्र। बिजली।
चिलक स्त्री० (हि) १-आभा। कांति। २-टीस। चमक
चिलकई स्त्री० (हि) चमक।
चिलकना क्रि० (हि) १-चमचमाना। २-टीसना।
चिलकाई स्त्री० (हि) १-चमक। २-उतार-चढ़ाव। ३-उत्तेजना।
चिलकाना क्रि० (हि) चमकाना।
चिलकी वि० (हि) बहुत चमकता हुआ।
चिलगोजा पुं० (फा) एक तरह का मेवा।
चिलचिल पु० (हि) अभ्रक। भोड़ल।
चिलचिलाना क्रि० (हि) शोर मचाना।
चिलड़ा पु० (देश) एक नमकीन पकवान।
चिलता पुं० (हि) एक तरह का कवच।
चिलबिल पुं० (हि) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
चिलबिला, चिलबिल्ला वि० (हि) [स्त्री० चिलबिली, चिलबिल्ली]। चपल। चंचल।
चिलम वि० (फा) मिट्टी का वह बरतन जिसमें हुक्का रखकर तम्बाकू पीते हैं।
चिलमची स्त्री० (तु०) हाथ धोने का देग के आकार का पात्र।
चिलमन, चिलवन स्त्री० (फा) बाँस की तीलियों का परदा। चिक।
चिलमबरदार पुं० (फा) चिलम भरने वाला नौकर।
चिलमबरदारी स्त्री० (फा) चिलम भरने का काम।
चिलवाँस पुं० (हि) चिड़िया फंसाने का फंदा।
चिल्लुला वि० (हि) [illegible]। [illegible]।
चिल्होरना क्रि० (हि) [illegible]। [illegible]।
चिलिक, चिलिग स्त्री० (हि) चिलक। दर्द।
चिल्लड़ पुं० (हि) जूँ की तरह का एक सफेद कीड़ा।
चिल्ल-पों स्त्री० (हि) चिल्लाहट।
चिल्ला पुं० (फा) १-चालीस दिन का समय। २-चालीस दिन का मुसलमानी व्रत। ३-प्रत्यञ्चा।
चिल्लाना क्रि० (हि) हल्ला करना।
चिल्लाहट स्त्री० (हि) १-चिल्लाने का भाव। २-हल्ला
चिल्लिका स्त्री०(हि) १-दोनों भौंहों के मध्य का स्थान २-झिल्ली। झींगुर। धूम।
चिल्ली स्त्री०(स)१-झिल्ली नामक कीड़ा। २-बिजली
चिल्ही स्त्री० (हि) चील (पक्षी)।
चिवि स्त्री० (सं) चिबुक। ठोढ़ी।
चिविट पु० (सं) चिउड़ा। चिड़वा।
चिहुंकना क्रि० (हि) चिकना।
चिहुंटना क्रि० (हि) १-चुटकी काटना। २-चिमटना। लिपटना।
चिहुंटी स्त्री० (हि) चुटकी।
चिहुर पु० (सं) चिकुर। केश। बाल।
चिह्न पु० (स) १-निशान। २-पताका। ३-दाग। धब्बा।
चिह्नित वि० (सं) चिह्न किया हुआ।
चीं-चपड़ स्त्री० (हि) विरोध में कुछ कहना।
चींटवा, चींटा पुं० (हि) चिउँटा। च्यूँटा।
चींटी स्त्री० (हि) चिउँटी।
चींतना क्रि० (हि) १-चित्रना। २-चिंतन करना।
चींथना क्रि० (हि) नोचकर फाड़ना।
चीक स्त्री० (हि) १-चिल्लाहट। २-चीत्कार। पुं० (हि) १-कसाई। २-कीचड़।
चीकट पुं० (हि) १-तेल का मैल। २-एक प्रकार का कपड़ा। वि० (हि) बहुत मैला।
चीकड़ पुं० (हि) कीचड़।
चीकन वि० (हि) चिकना।
चीकना क्रि० (हि) १-जोर से चिल्लाना। २-जोर से बोलना।
चीकर पुं० (देश) कुएँ के ऊपर बना हुआ स्थान।
चीकू पु० (देश) एक गूदेदार मीठा फल।
चीख स्त्री० (हि) चीत्कार। चिल्लाहट।
चीखना क्रि० (हि) चिल्लाना। २-चखना।
चीखर, चीखल पुं० (हि) कीचड़।
चीखुर पुं० (हि) (स्त्री० चीखुरी) गिलहरी।
चीज स्त्री० (फा) १-वस्तु। पदार्थ। द्रव्य। २-गीत। ३-अलंकार। गहना। ४-अद्भुत या महत्व की वस्तु या बात।
चीठ स्त्री० (हि) मैल। मैला।
चीठा पुं० (हि) चिट्ठा।
चीठी स्त्री० (हि) चिट्ठी।
चीड़ पुं० (हि) एक वृक्ष का नाम।

चिर-समाधि स्त्री० (स) मृत्यु ।
चिराई स्त्री० (हि) चिराने का काम या मजदूरी ।
चिराक, चिराग पुं०=दीपक । दीया ।
चिरागदान पुं० (फा) दीयट ।
चिरातन वि० (हि) पुरातन । पुराना ।
चिराना क्रि०(हि)१-चीरने का काम दूसरे से कराना। २-चिरना । वि० (हि) १-पुराना । २-जीर्ण ।
चिरायँध स्त्री० (हि) चमड़े या मास के जलने से होने वाली बदबू ।
चिरायता पुं० (हि) एक पौधा जो दवा के काम में आता है ।
चिरायु वि० (हि) दीर्घायु ।
चिरारी स्त्री० (हि) चिरौंजी ।
चिरिया स्त्री० (हि) १-चिड़िया । २-वर्षा का नक्षत्र ।
चिरिहार पुं० (हि) चिड़ीमार ।
चिरी स्त्री० (हि) चिड़िया ।
चिरैया वि० (हि) चीरने वाला । स्त्री० (हि) चिड़िया
चिरौंजी स्त्री०(हि) पायल नामक वृक्ष के फलों के बीजों की गिरी ।
चिरौरी स्त्री० (हि) अनुनय-विनय । खुशामद ।
चिर्री स्त्री० (हि) वज्र । बिजली ।
चिलक स्त्री० (हि) १-आभा । कांति । २-टीस । चमक
चिलकई स्त्री० (हि) चमक ।
चिलकना क्रि० (हि) १-चमचमाना । २-टीसना ।
चिलकाई स्त्री० (हि) १-चमक । २-उतार-चढ़ाव । ३-उत्तेजना ।
चिलकाना क्रि० (हि) चमकाना ।
चिलकी वि० (हि) बहुत चमकता हुआ ।
चिलगोजा पुं० (फा) एक तरह का मेवा ।
चिलचिल पुं० (हि) अभ्रक । भोड़ल ।
चिलचिलाना क्रि० (हि) शोर मचाना ।
चिलड़ा पुं० (देश) एक नमकीन पकवान ।
चिलता पुं० (हि) एक तरह का कवच ।
चिलबिल पुं० (हि) एक प्रकार का जंगली वृक्ष ।
चिलबिला, चिलबिल्ला वि० (हि) [स्त्री० चिलबिली, चिलबिल्ली] । चपल । चंचल ।
चिलम वि० (फा) मिट्टी का वह बरतन जिसमें हुक्का रखकर तम्बाकू पीते हैं ।
चिलमची स्त्री० (तु०) हाथ धोने का देग के आकार का पात्र ।
चिलमन, चिलवन स्त्री० (फा) बाँस की तीलियों का परदा । चिक ।
चिलमबरदार पुं० (फा) चिलम भरने वाला नौकर ।
चिलमबरदारी स्त्री० (फा) चिलम भरने का काम ।
चिलबाँस पुं० (हि) चिड़िया फँसाने का फंदा ।
चिलहुआ वि० (हि) [illegible] । [illegible] ।
चिलहोरना क्रि० (हि) [illegible] । [illegible] ।

चिलिक, चिलिग स्त्री० (हि) चिलक । दर्द ।
चिल्लड़ पुं० (हि) जूँ की तरह का एक सफेद कीड़ा ।
चिल्ल-पों स्त्री० (हि) चिल्लाहट ।
चिल्ला पुं० (फा) १-चालीस दिन का समय । २-चालीस दिन का मुसलमानी व्रत । ३-प्रत्यंचा ।
चिल्लाना क्रि० (हि) हल्ला करना ।
चिल्लाहट स्त्री० (हि) १-चिल्लाने का भाव । २-हल्ला
चिल्लिका स्त्री०(हि) १-दोनों भौंहों के मध्य का स्थान २-झिल्ली । झींगुर । धूम ।
चिल्ली स्त्री०(स)१-झिल्ली नामक कीड़ा । २-बिजली
चिल्हो स्त्री० (हि) चील (पक्षी) ।
चिवि स्त्री० (सं) चिबुक । ठोढ़ी ।
चिविट पुं० (सं) चिउड़ा । चिड़वा ।
चिहुँकना क्रि० (हि) चिकना ।
चिहुँटना क्रि० (हि) १-चुटकी काटना । २-चिमटना । लिपटना ।
चिहुँटी स्त्री० (हि) चुटकी ।
चिहुर पुं० (सं) चिकुर । केश । बाल ।
चिह्न पुं० (स) १-निशान । २-पताका । ३-दाग । धब्बा ।
चिह्नित वि० (सं) चिह्न किया हुआ ।
चीं-चपड़ स्त्री० (हि) विरोध में कुछ कहना ।
चींटवा, चींटा पुं० (हि) चिउँटा । च्यूँटा ।
चींटी स्त्री० (हि) चिउँटी ।
चींतना क्रि० (हि) १-चित्रना । २-चिंतन करना ।
चींथना क्रि० (हि) नोचकर फाड़ना ।
चीक स्त्री० (हि) १-चिल्लाहट । २-चीत्कार । पुं० (हि) १-कसाई । २-कीचड़ ।
चीकट पुं० (हि) १-तेल का मैल । २-एक प्रकार का कपड़ा । वि० (हि) बहुत मैला ।
चीकड़ पुं० (हि) कीचड़ ।
चीकन वि० (हि) चिकना ।
चीकना क्रि० (हि) १-जोर से चिल्लाना । २-जोर से बोलना ।
चीकर पुं० (देश) कुएँ के ऊपर बना हुआ स्थान ।
चीकू पुं० (देश) एक गूदेदार मीठा फल ।
चीख स्त्री० (हि) चीत्कार । चिल्लाहट ।
चीखना क्रि० (हि) चिल्लाना । २-चखना ।
चीखर, चीखल पुं० (हि) कीचड़ ।
चीखुर पुं० (हि) (स्त्री० चीखुरी) गिलहरी ।
चीज स्त्री० (फा) १-वस्तु । पदार्थ । द्रव्य । २-गीत । ३-अलंकार । गहना । ४-अद्भुत या महत्व की वस्तु या बात ।
चीठ स्त्री० (हि) मैल । मैला ।
चीठा पुं० (हि) चिट्ठा ।
चीठी स्त्री० (हि) चिट्ठी ।
चीड़ पुं० (हि) एक वृक्ष का नाम ।

चोआ पुं० (हि) काँच की गुरिया या मनका।
चोढ़ पुं० (हि) एक वृक्ष। चीढ़।
चीत पुं० (हि) १-चित्त। मन। २-चित्रा नक्षत्र। स्त्री० (हि) चेतना।
चीतना क्रि० (हि) १-मन में सोचना या २-चेतना।
चीतर पुं० (हि) १-चीतल। २-चित्र।
चीता पुं० (हि) १-एक हिंसक पशु जिसकी खाल पर काली और पीली धारियाँ होती हैं। २-औषध के प्रयोग में आने वाला एक वृक्ष। वि० सोचा हुआ।
चीतावनी स्त्री० (हि) १-यादगार। २-स्मारक चिह्न। निशानी।
चीत्कार पुं० (सं) चीख। चिल्लाहट।
चीथड़ा पुं० (हि) चिथड़ा।
चीथना क्रि० (हि) फाड़ना। टुकड़े-टुकड़े करना।
चीथरा पुं० (हि) चिथड़ा।
चीन पुं० (स) १-एशिया का एक प्रसिद्ध देश। २-झंडी। पताका। ३-एक तरह का रेशमी कपड़ा।
चीन की दीवार स्त्री० (हि) १-चीन देश की डेढ़ हजार मील लम्बी दीवार जिसका निर्माण दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था और जो विश्व की सात आश्चर्य जनक वस्तुओं में गिनी जाती है। २-बहुत बड़ी बाधा या अड़चन।
चीनना क्रि० (हि) चीन्हना। पहचानना।
चीनांशुक पुं० (सं) १-चीन देश में बनाने या चीन से आने वाला रेशमी वस्त्र। २-रेशमी कपड़ा।
चीना वि०(हि) चीनदेश का। पुं० एक तरह का कपूर
चीना-बादाम पुं० (हि) मूँगफली।
चीनिया वि० (हि) चीन का। चीन सम्बन्धी।
चीनी स्त्री० (हि) १-दानेदार शक्कर। २-चीन देश की भाषा। पुं० चीन देश का निवासी। वि० चीन देश का।
चीनी-चंपा पुं० (देश) एक प्रकार का उत्तम केला।
चीनी-मिट्टी स्त्री० (हि) एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिससे बरतन बनाये जाते हैं।
चीन्हना क्रि० (हि) पहचानना।
चीन्हा पुं० (हि) १-चिह्न। २-परिचय।
चीप पुं० (हि) १-चिमड़। २-चेप।
चीपर पुं० (हि) आँख का कीचड़।
चीफ जस्टिस पुं०(अं) उच्च न्यायालय का न्यायाधीश
चीमड़, चीमर वि० (हि) जो खींचने या मोड़ने से न टूटे। चिमड़ा।
चीयाँ पुं० (हि) इमली का बीज।
चीर स्त्री०(हि) १-चीरने का काम या भाव। २-चीरने से बनी दरार। पुं० (स) १-वस्त्र। २-पेड़ की छाल ३-चिथड़ा। ४-भिक्षुओं का पहनावा।
चीरक पुं०(सं) १-लेख्य। २-मुट्ठे जैसा लपेटा हुआ लम्बा कागज।
चीर-घर पुं० (हि) वह स्थान जहाँ दुर्घटना में मृत व्यक्तियों के शव को चीर फाड़कर उनकी मृत्यु का — — किया जाता है। (मॉर्च्युअरी)।

र्ण करना।
चीर-फाड़ स्त्री० (हि) १-चीरने फाड़ने का काम। २-अस्त्र-चिकित्सा। शल्यक्रिया।
चीरवासा पुं० (हि) १-शिव। २-यक्ष।
चीरा पुं० (हि) १-चीरने का घाव। २-लहरियादार कपड़ा। ३-गाँव की सीमा पर गड़ा पत्थर।
चीरिका स्त्री० (स) झिल्ली। झींगुर।
चीरी स्त्री० (हि) १-चिड़िया। २-चिट्ठी। पत्र।
चीर्ण वि० (स) चिरा हुआ। फटा हुआ।
चील स्त्री० (हि) बाज की जाति की एक चिड़िया।
चील-झपट्टा पुं० (हि) १-किसी वस्तु को चील के समान झपट्टा मार कर छीन लेना। २-बच्चों का एक खेल।
चीलड़, चीलर पुं० दे० 'चिल्लड़'।
चीलिका स्त्री० (सं) झींगुर। झिल्ली।
चीलू पुं० (स) एक पहाड़ी मेवा जो आड़ू के समान होता है।
चील्ह स्त्री० (हि) चील नामक पक्षी।
चील्हो स्त्री० (देश) एक प्रकार का मंत्रोपचार। टोटका
चीवर पुं० (सं) साधु, सन्यासियों के पहनने का वस्त्र
चीस स्त्री० (हि) टीस।
चीह स्त्री० (हि) चीत्कार। चिल्लाहट।
चुंगना क्रि० (हि) चुगना।
चुंगल पुं० (हि) दे० 'चंगुल'।
चुंगी स्त्री० (हि) १-चुटकी या चुटकी भर वस्तु। २-वह महसूल जो बाहरी माल पर शहर में प्रवेश करने पर लिया जाता है।
चुंगी-घर पुं० (हि) नगर के बाहर बनी वह चौकी जहाँ पर बाहर से आने वाले माल पर कर लिया जाता है।
चुंघाना क्रि० (हि) चुसाना।
चुंडा पुं० (हि) १-सिर के बाल। २-चोटी। पुं० (स) कूँआ।
चुंडित वि० (हि) चुटिया या चुन्दी वाला।
चुंडी स्त्री० (हि) चुन्दी। चुटिया।
चुंदरी स्त्री० (हि) चुनरी।
चुंदी स्त्री० (हि) शिखा। चोटी। चुटिया।
चुंधलाना क्रि० (हि) चौंधियाना।
चुंधा वि० (हि) [स्त्री० चुंधी] १-क्षीण दृष्टि वाला। २-छोटी आँखों वाला।
चुंधियाना क्रि० (हि) चौंधना। चौंधियाना।
चुंबक पुं० (स) १-चुम्बन करने वाला। २-मच्छ)

को इधर-उधर उलटने वाला। ३-वह धातु जो लोहे को अपनी ओर खींचता है।
चुंबकत्व पुं० (सं) १-चुम्बक का गुण। २-आकर्षण शक्ति।
चुंबकीय वि० (सं) १-जिसमें चुम्बक का गुण हो। २-चुम्बक सम्बन्धी।
चुंबन पुं० (स) १-चूमना। २-चुम्मा। बोसा। ३-स्पर्श।
चुंबना क्रि० (हि) चूमना।
चुंबित वि० (स) १-चूमा हुआ। २-जो किसी से छुआ हो। स्पृश्य।
चुंबी वि० (हि) १-चूमने वाला। २-छूने वाला।
चुभना क्रि० (हि) चुभना।
चुअना क्रि० (हि) चूना। रिसना।
चुआई स्त्री० (हि) चूने या चुआने का काम, भाव या उजरत।
चुआना क्रि० (हि) १-टपकाना। २-भभके से अर्क खींचना। ३-चुपड़ना। पुं० १-पानी का गड्ढा। २-नहर या खाई।
चुआव पुं० (हि) चुआने का काम या भाव।
चुकंदर (फा) गाजर जैसा एक कन्द।
चुक पुं० (हि) चूक।
चुकचुकाना क्रि० (हि) १-पसीजना। २-किसी द्रव पदार्थ का रसकर बाहर आना।
चुकटा, चुकटी स्त्री० (हि) चुटकी।
चुकता, चुकती वि० (हि) बेबाक। निःशेष। अदा।
चुकना क्रि० (हि) १-समाप्त होना। २-अदा या बेबाक होना। ३-निबटना। ४-चूकना। ५-लक्ष्य पर न पहुंचना।
चुकरैंड पुं० (देश) दो मुँहा साँप।
चुकवाना क्रि० (हि) चुकता या बेबाक कराना।
चुकाई स्त्री० (हि) चुकता होने का भाव।
चुकाना क्रि० (हि) १-अदा करना। २-निपटाना।
चुकाव पुं० (हि) चुकने या चुकाये जाने का भाव।
चुकौता पुं० (हि) ऋण का परिशोध। निपटारा।
चुक्कड़ पुं० (हि) कुल्हड़। पुरवा।
चुक्का पुं० (हि) चूक। भूल।
चुक्की स्त्री० (हि) धोखा। धूर्तता।
चुक्र पुं० (सं) १-एक तरह की खटाई। २-एक साग
चुक्षा स्त्री० (सं) हिंसा।
चुखाना क्रि० (हि) दुहते समय बछड़े को दूध पिलाना। चोखाना।
चुगत स्त्री० (हि) चुगने का भाव।
चुगद पुं० (फा) १-उल्लू (पक्षी)। २-मूर्ख।
चुगना क्रि० (हि) चोंच से दाना बीनकर खाना।
चुगल, चुगलखोर पुं० (फा) वह जो पीठ पीछे शिकायत करे।
चुगलखोरी स्त्री० (फा) चुगली करने का काम।
चुगलाना क्रि० (हि) चुभलाना।
चुगली स्त्री० (फा) पीठ पीछे की शिकायत।
चुगा पुं० (हि) १-चिड़ियों का चारा। २-चोगा।
चुगाई स्त्री० (हि) चुगने या चुगाने की क्रिया।
चुगाना क्रि० (हि) चिड़ियों को दाना खिलाना।
चुगुल पुं० (हि) चुगलखोर।
चुग्गा पुं० (हि) दे० 'चुगा'।
चुग्घी स्त्री० (हि) चखने के लिए थोड़ी सी वस्तु। चाट
चुचकारना क्रि० (हि) पुचकारना।
चुचकारी स्त्री० (हि) चुचकारने या पुचकारने की क्रिया।
चुचाना क्रि० (हि) चूना। टपकाना।
चुचुआना क्रि० (हि) चूना। टपकना।
चुचुक पुं० (स) कुच या स्तन का अग्र भाग। कुचाग्र
चुटक पुं० (हि) कोड़ा। चाबुक। स्त्री० चुटकी।
चुटकना क्रि० (हि) १-चाबुक मारना। २-चुटकी से तोड़ना। ३-साँप का काटना।
चुटकला पुं० (हि) दे० 'चुटकुला'।
चुटका पुं० (हि) १-बड़ी चुटकी। २-चुटकी भर आटा।
चुटकारी स्त्री० (हि) चुटकी बजाना या बजाने से उत्पन्न शब्द।
चुटकी स्त्री० (फा) १-अँगूठे या उँगली से पकड़ना या दबाना। २-चुटकी बजने का शब्द। ३-थोड़ा अन्न या आटा। ४-एक गहना। ५-पेंचकस।
चुटकुला, चुटकला पुं० (हि) १-छोटी विनोदपूर्ण बात। २-दवा का गुणकारी नुसखा। लटका।
चुटफुट स्त्री० (हि) फुटकर वस्तु।
चुटला पुं० (हि) १-एक प्रकार का गहना। २-वेणी। वि० दे० 'चुटीला'।
चुटाना क्रि० (हि) चोट खाना।
चुटिया स्त्री० (हि) चोटी। शिखा।
चुटीलना क्रि० (हि) चोट पहुँचाना।
चुटीला वि० (हि) १-चोट खाया हुआ। २-चोटी पर सिरे का। पुं० छोटी चोटी या शिखा।
चुटैल वि० (हि) १-जिसे चोट लगी हो। २-चोट करने वाला।
चुट्टा पुं० (हि) सिर की गुथी हुई चोटी या वेणी।
चुड़िया स्त्री० (हि) चूड़ी।
चुड़िहारा पुं० (हि) (स्त्री० चुड़िहारिन) चूड़ी बनाने या बेचने वाला।
चुड़ैल स्त्री० (हि) १-डायन। प्रेतनी। २-कुरूपा स्त्री। ३-क्रूर स्त्री। दुष्टा।
चुन पुं० (हि) चून। आटा।
चुनचुना क्रि० (हि) १-जिसके छूने या खाने से चुनचुनाहट उत्पन्न हो। पुं० बच्चों के पेट से मल के

म । निकलने वाले कीड़े।
चुनचुनाना क्रि० (हि) कुछ जलन लिये हुए चुभने की सी पीड़ा होना।
चुनचुनाहट स्त्री० (हि) शरीर पर कुछ जलन लिये चुभने के समान पीड़ा।
चुनचुनी स्त्री० (हि) १-चुनचुनाहट। २-चुनचुना (कीड़ा)।
चुनट, चुनत, चुनन स्त्री० (हि) सिलवट। शिकन।
चुनना क्रि० (हि) १-छाँट-छाँटकर अलग करना। २-बीनना। ३-सजाना। ४-कपड़े में शिकन डालना। निर्वाचित करना।
चुनरी स्त्री० (हि) १-बुंदकीदार रंगीन वस्त्र। २-चुन्नी नामक रत्न।
चुनवट स्त्री० (हि) चुनट। सिलवट।
चुनवाँ पुं० (हि) १-लड़का। २-शिष्य। वि० बढ़िया
चुनवाना क्रि० (हि) चुनने का काम कराना।
चुनाई स्त्री० (हि) १-चुनने की क्रिया या भाव। २-दीवार की जोड़ाई का ढंग। ३-चुनने की मजदूरी
चुनाना क्रि० (हि) चुनवाना।
चुनाव पुं० (हि) १-चुनने या चुने जाने की क्रिया या भाव। २-बहुतों में से किसी काम के लिए किसी व्यक्ति को चुनना। निर्वाचन। (इलेक्शन)। ३-वह जिसे किसी काम के लिए चुना जाय। (सलेक्शन)।
चुनावट स्त्री० (हि) चुनट। तह। परत।
चुनिंदा वि० (हि) १-चुना हुआ। निर्वाचित। २-बढ़िया।
चुनी स्त्री० (हि) चुन्नी।
चुनौटिया वि० (हि) चिनौटिया।
चुनौटी स्त्री० (हि) पान का चूना रखने की डिबिया।
चुनौती स्त्री० (हि) १-उत्तेजना। बढ़ावा। प्रतिद्वंदी को दी जाने वाली ललकार।
चुन्न पुं० (हि) चून। आटा।
चुन्नट, चुन्नत स्त्री० दे० 'चुनट'।
चुन्ना पुं० (हि) चून।
चुन्नी स्त्री० (हि) १-बहुत छोटा नग। रत्नकण। २-अन्न या लकड़ी का चूरा। ३-चमकी। सितारा। ४-ओढ़नी।
चुप वि० (हि) १-खामोश। मौन।
चुपका वि० (हि) [स्त्री० चुपकी] मौन।
चुपकाना क्रि० (हि) चुप कराना।
[illegible]
चुपड़ना क्रि० (हि) १-गीली वस्तु से पोतना। २-दोष छिपाना। ३-चापलूसी करना।
चुपना क्रि० (हि) चुप होना।
चुपरना क्रि० (हि) चुपड़ना।
चुपाना क्रि० (हि) १-चुप होना। २-चुप कराना।
चुप्पा वि० (हि) [स्त्री० चुप्पी] प्रायः चुप रहने तथा कम बोलने वाला।
चुप्पी स्त्री० (हि) मौन।
चुबलाना क्रि० (हि) धीरे-धीरे स्वाद लेना।
चुभकना क्रि० (हि) पानी में रह-रह कर गोता खाना।
चुभकी स्त्री० (हि) गोता। डुबकी।
चुभना क्रि० (हि) १-गड़ना। धँसना। २-मन में पीड़ा उत्पन्न करना। ३-मन में बैठना।
चुभलाना क्रि० (हि) मुख में किसी वस्तु को रखकर धीरे-धीरे आस्वादन करना। चुबलाना।
चुभाना, चुभोना क्रि० (हि) धँसाना। गड़ाना।
चुमकार स्त्री० (हि) चूमने जैसा प्यार का शब्द। पुचकार।
चुमकारना क्रि० (हि) पुचकारना। दुलारना।
चुमकारी स्त्री० (हि) चुमकार। पुचकार।
चुम्मक पुं० (हि) चुंबक।
चुम्मा पुं० (हि) चुंबन।
चुर पुं० (देश) जङ्गली पशुओं के रहने का स्थान। वि० (हि) बहुत अधिक। प्रचुर।
चुरकट वि० (हि) १-चोरकट। २-चुराया हुआ।
चुरकना क्रि० (हि) १-चहकना। (व्यंग) २-चटकना। टूटना।
चुरकी स्त्री० (हि) शिखा। चुटिया।
चुरकुट, चुरकुस वि० (हि) चकनाचूर। चूरचूर।
चुरगना क्रि० (हि) दे० 'चुरकना'।
चुरचुरा वि० (हि) जरासे दबाव के कारण 'चुरचुर' शब्द करके टूट जाने वाला।
चुरचुराना क्रि० (हि) चुरचुर शब्द होना या करना।
चुरना क्रि० (हि) १-सीझना। २-गुप्त मंत्रणा होना।
चुरमुर पुं० (हि) खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।
चुरमुरा वि० (हि) चुरचुरा।
चुरमुराना क्रि० १-चुरचुर शब्द सहित टूटना या तोड़ना। २-खरी चीज चबाना।
चुरवाना क्रि० १-पकाने का काम कराना। २-चोरवाना।
चुरस स्त्री० (हि) चुनट।
चुरा पुं० (हि) १-चूरा। बुरादा। २-चूड़ा।
चुराई स्त्री० (हि) १-चुराने की क्रिया। २-पकाने का [illegible]।
[illegible] क्रि० (हि) १-दूसरे की वस्तु को उसके [illegible] के परोक्ष अथवा अनजान में वापस न करने के अभिप्राय से ले लेना। अपहरण करना। २-छिपाना। ३-देने या करने में कसर रखना। ४-पकाना।

चुरिहारा पुं० (हि) चुड़ीहारा।
चुरी स्त्री० (हि) चूड़ी।
चुरु पुं० (हि) चुल्लू।
चुरुगना क्रि० (हि) चहचहाना। चकना।
चुरुट पुं० (अ) तम्बाकू के पत्ते को लपेट कर बनाई हुई बत्ती जिसे जलाकर धूम्रपान करते हैं। सिगार
चुरू पुं० (हि) चुल्लू।
चुल स्त्री० (हि) १-किसी अंग के मले या सहलाये जाने की प्रबल इच्छा। २-किसी कार्य को करने की तीव्र आकांक्षा।
चुलचुल पुं० (हि) चंचलता। चपलता।
चुलचुलाना क्रि० (हि) १-खुजलाहट होना। २-चुलबुलाना।
चुलचुलाहट, चुलचुली स्त्री० दे० 'चुल'।
चुलबुल स्त्री० (हि) चपलता।
चुलबुला वि० (हि) [स्त्री० चुलबुली] १-चंचल। २-नटखट।
चुलबुलाना क्रि० (हि) चंचल होना।
चुलबुलापन पुं० (हि) चञ्चलता।
चुलबुलाहट स्त्री० (हि) चञ्चलता। चपलता।
चुलबुलिया वि० (हि) चञ्चल।
चुलाना क्रि० (हि) चुआना। टपकाना।
चुलाव पुं०(हि) १-चुलाने का भाव। २-बिना मांस का पुलाव।
चुलियाला पुं० (हि) एक मात्रिक छन्द।
चुल्ला पुं० (हि) १-कॉंच का छोटा छल्ला। २-चूल्हा वि० चुलबुला।
चुल्ली वि० (हि) नटखट। स्त्री० १-चूल्हा। चिता।
चुल्लू पुं० (हि) जल लेने या पीने के लिए की हुई गहरी हथेली। अंजुली।
चुल्हौना पुं० (हि) चूल्हा।
चुवना क्रि०(हि) चूना। रिसना।
चुवा पुं० (देश) हड्डी की नली में का गूदा। पुं० (हि) पशु। चौपाया।
चुवाना क्रि० (हि) चुआना। टपकाना।
चुसकी स्त्री० (हि) १-सुड़क कर पीने की क्रिया। २-घूँट। ३-प्याला (मदिरा का)।
चुसना क्रि० (हि) १-ओंठ से खिंचकर पीया जाना। २-निचल जाना। ३-सारहीन होना। ४-धन-रहित होना।
चुसनी स्त्री० (हि) १-बच्चा के चूसने का खिलौना। २-दूध पिलाने की शीशी।
चुसवाना, चुसाना क्रि० (हि) चूसने में प्रवृत्त करना।
चुसौअल, चुसौवल स्त्री० (हि) बार-बार या अधिक चूसने की क्रिया या भाव।
चुस्त वि० (फा) १-कसा हुआ। तंग। २-फुरतीला। ३-दृढ़। मजबूत।
चुस्ती स्त्री० (फा) १-फुरती। २-तेजी। ३-कसाव। तंगी। ३-दृढ़ता।
चुस्सी स्त्री० (हि) किसी फल का रस।
चुहँटी स्त्री० (हि) चुटकी।
चुहचुहा वि० (हि) [स्त्री० चुहचुही] १-रसीला। मनोहर। चटकीला।
चुहचुहाता वि० (हि) १-सरस। रसीला। २-चटक
चुहचुहाना क्रि० (हि) १-रसना। २-चिड़ियों बोलना।
चुहचुही स्त्री० (हि) एक तरह की काली चिड़ि फूल-सुँघनी।
चुहँट स्त्री० (हि) १-चुहटने या चिमटने की कि या भाव। २-कसक। पीड़ा।
चुहँटना क्रि० (हि) चिमटना।
चुहड़ा पुं० (देश) भंगी। महतर।
चुहना क्रि० (हि) चूसना।
चुहल स्त्री० (हि) हँसी। ठठोली।
चुहिया स्त्री० (हि) १-चूहे की मादा। २-छोटा चूहा।
चुहिल वि० (हि) रमणीक (स्थान)।
चुहुँटना क्रि० (हि) १-चिमटना। २-चिकोटी काटना। ३-तंग करना।
चुहुँटनी स्त्री० (देश०) घुँघची।
चुहुकना क्रि० (हि) चूसना।
चुहुल वि० दे० 'चुहल'।
चूँ स्त्री० (हि) १-एक छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। २-बहुत धीमा शब्द।
चूँकि क्रि० वि० (फा) क्योंकि। अतः। इसलिए।
चूँचूँ पुं० (हि) चिड़ियों की बोली।
चूँदर स्त्री० (हि) चूनरी।
चूक स्त्री० (हि) १-भूल। त्रुटि। २-भ्रम। ३-कसूर। पुं० (सं) १-एक खट्टा पदार्थ। २-एक तरह की खटाई का सत।
चूकना क्रि० (हि) १-भूल करना। २-सुअवसर खो-देना।
चूका पुं० (हि) एक तरह का खट्टा साग।
चूखना क्रि० (हि) चूसना।
चूची स्त्री० (हि) कुच। स्तन।
चूचुक स्त्री० (सं) कुचाग्र।
चूजा पुं० (फा) मुरगी का बच्चा।
चूड़, चूड़क पुं० (सं) १-छोटा कुँआ। २-मोर के सिर के ऊपर की चोटी। ३-घुंघची। ४-शिखा। ६-बांह में पहनने का एक गहना। ७-मस्तक।
चूड़ांत वि० (सं) चरम सीमा का। क्रि० वि० बहुत अधिक। पुं० पराकाष्ठा।
चूड़ा पुं० (हि) १-कंकण। कड़ा। २-हाथ में पहनने की चूड़ियाँ। ३-दे० 'चूहड़ा'। ४-दे० 'चिउड़ा'। स्त्री० (सं) १-शिखा। चोटी। २-मोर की कलगी।

३-घुँघची। ४-चूडाकरण संस्कार।
चूडाकरण, चूडाकर्म पु० (सं) बच्चों का मुंडन संस्कार।
चूडा-पाश पु० (सं) १-स्त्रियों के सिर के बालों का जूड़ा। २-प्राचीन काल की स्त्रियों का एक तरह का केशविन्यास।
चूडाभरण पु० (हि) १-प्राचीन काल की स्त्रियों का एक प्रकार का केश विन्यास। २-सिर का एक गहना।
चूडा-मणि पु० (सं) १-शीशफूल नामक सिर का गहना। २-सर्वोत्कृष्ट। श्रेष्ठ। ३-प्रधान। मुखिया। ४-घुंघची। गुंजा।
चूड़ी स्त्री० (हि) १-स्त्रियों का कलाई पर पहनने का एक मण्डलाकार गहना। २-छल्ला। ३-कोई वृत्ताकार वस्तु। ४-ग्रामोफोन बाजे का तवा जिससे गाना सुनते हैं।
चूड़ीदार वि० (हि) जिसमें चूड़ी या छल्ले पड़े हों।
चूतड़ पु० (हि) नितम्ब।
चून पुं० (हि) १-आटा। पिसान। २-चूर्ण। चूरा।
चूनर, चूनरी स्त्री० (हि) छोटी-छोटी बुंदकियों वाला रङ्गीन वस्त्र।
चूना पु० (हि) कङ्कड़, पत्थर आदि को फूंक कर बनाया जाने वाला पदार्थ जिससे मकान पोता जाता है। क्रि० (हि) १-टपकना। २-किसी वस्तु का ऊपर से नीचे गिरना। ३-द्रव पदार्थ बूंद-बूंद कर रिसना।
चूनी स्त्री० (हि) दे० 'चुन्नी'।
चूनेदानी स्त्री० (हि) पान का चूना रखने की डिबिया चुनौटी।

[illegible] । चक-

[illegible]

चूरना क्रि० (हि) १-चूर करना। टुकड़े करना। २-तोड़ना।
चूरमा पुं० (हि) एक पकवान जो रोटी, बाटी या पूरी [illegible]

[illegible] । २-

चूड़ामणि, चूरामनि स्त्री० दे० 'चूड़ामणि'।
चूर्ण पु० (सं) १-चूरा। बुकनी। २-पाचक औषधियों का बारीक सफूफ। चूरन। वि० १-चूर। २-टूटा-फूटा।
चूर्णक पुं० (सं) [illegible]

शब्दमय गद्य।
चूर्णकुन्तल पुं० (सं) अलक। जुल्फ। लट।
चूर्णिका स्त्री० (सं) १-सत्तू। २-गद्य का एक भेद। ३-कठिन पदों की व्याख्या बताने वाली पुस्तक।
चूर्णित वि० (सं) चूर्ण किया हुआ।
चूर्णी स्त्री० (हि) १-भाष्य, व्याख्या, टीका आदि जिससे कठिन बातें सहज में समझी जा सकें। २-दे० 'चूर्ण'।
चूल पु० (सं) १-शिखा। २-बाल। स्त्री० (देश) किसी छेद में बैठाने के लिए उसी नाप का कटा हुआ लकड़ी का सिरा।
चूलक पुं० (सं) १-नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना। २-हाथी के कान का मैल। ३-हाथी की कनपटी का ऊपरी भाग।
चूलिका स्त्री० (सं) दे० 'चूलक'।
चूल्हा पुं० (हि) भोजन पकाने की भट्ठी।
चूषण पु० (सं) चूसना।
चूष्य वि० (सं) चूसने के योग्य।
चूसना क्रि० (हि) १-किसी को धीरे-धीरे सुड़क कर पीना। २-किसी वस्तु का सार भाग ले लेना। ३-रस खींच लेना। ४-अनुचित रूप से [illegible] धीरे-धीरे रुपया वसूल करना।
चूसनी स्त्री० (हि) चूसने वाली वस्तु।
चूहड़, चूहड़ा पुं० (हि) [स्त्री० चूहड़ी] भंगी। [illegible]
चूहा पुं० (हि) [स्त्री० चुहिया] मूसा। मूषक।
चूहादंती स्त्री० (हि) एक प्रकार की पहुँची जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं।
चूहादान पु० (हि) [स्त्री० चूहेदानी] चूहों को फंसाने का पिंजड़ा।
चेंगड़ा पु० (हि) [स्त्री० चेंगड़ी] बालक। बच्चा।
चेंचें स्त्री० (हि) १-चिड़ियों की बोली। २-बक-बक। बकवाद।
चेंटुआ पुं० (हि) चिड़िया का बच्चा।
चेंपें स्त्री० (हि) चिल्लाहट।
चेंफ पुं० (देश) ऊख का छिलका।
चेक पु० (अ) १-बैंक से रुपया निकालने का कागज [illegible]

[illegible] हुआ।
चेजा पुं० (हि) छेद। सुराख।
चेट पुं० (सं) [स्त्री० चेटी, चेटिका] १-दास। २-पति। ३-भड़ुआ। ४-भाँड़।
चेटक पुं० (सं) [स्त्री० चेटकी] १-[illegible]। [illegible]। २-चटक-मटक। ३-दूत। ४-[illegible]। [illegible]। [illegible]

चेटकनी स्त्री० (हि) चेटी। दासी।
चेटका स्त्री० (हि) १-चिता। २-श्मशान।
चेटकी पुं० (सं) १-जादूगर। २-कौतुकी। स्त्री० १-दासी। २-नायिका विशेष।
चेटिया पुं० (हि) १-शिष्य। चेला। २-दास।
चेटी स्त्री० (सं) दासी।
चेटुआ, चेटुवा पुं० (हि) चिड़िया का बच्चा।
चेत् अव्य० (सं) १-कदाचित्। २-यदि।
चेत पुं० (हि) १-चेतना। होश। २-ज्ञान। बोध। ३-सावधानी। ४-सुध। स्मृति।
चेतक वि० (सं) १-चेताने वाला। २-चेतना उत्पन्न करने वाला। पुं० किसी सभा या समिति के सदस्यों को सचेत या स्मरण कराने वाला वह अधिकारी कि अमुक कार्य में आपकी उपस्थिति आवश्यक है। (व्हिप)। पुं० (हि) १-राणा प्रताप के घोड़े का नाम। २-चेतन। चैतन्य।
चेतकी स्त्री० (सं) १-हरीतकी। २-चमेली का पौधा ३-एक रागिनी का नाम।
चेतता स्त्री० (हि) चेतना।
चेतन वि० (सं) जिसमें चेतना हो। पुं० १-आत्मा। २-प्राणी। ३-परमेश्वर।
चेतनता स्त्री० (सं) चैतन्य। सज्ञानता। ज्ञान होना।
चेतना स्त्री० (सं) १-बुद्धि। २-मनोवृत्ति। ३-ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। क्रि० (हि) १-ध्यान देना। २-सावधान होना। ३-होश में आना।
चेतवनि स्त्री० (हि) १-चेतावनी। २-चितवन।
चेता वि० (सं) १-जिसे चेतना हो। जिसे ज्ञान हो। २-दृढ़ चित्त वाला।
चेताना क्रि० (हि) १-सावधान करना। २-याद कराना। ३-उपदेश करना। ४-(आग) सुलगाना।
चेतावनी स्त्री० (हि) १-सतर्क होने की सूचना। २-शिक्षा। उपदेश।
चेतिका स्त्री० (हि) चिता।
चेतौनी स्त्री० (हि) चेतावनी।
चेदि पुं० (सं) १-भारत का एक प्राचीन प्रदेश। २-इस देश का राजा या निवासी।
चेदिराज पुं० (सं) शिशुपाल।
चेना पुं० (हि) १-एक अन्न। २-एक साग। ३-चीनी कपूर।
चेप पुं० (हि) १-चिप-चिपा या लसदार कोई रस। २-चिड़ियों के फंसाने का लासा। ३-चाव। उत्साह
चेपदार वि० (हि) चिपचिपा।
चेपना क्रि० (हि) चिपकाना।
चेय वि० (सं) चयन या संग्रह करने योग्य।
चेर, चेरा पुं० (हि) (स्त्री० चेरी) १-सेवक। २-चेला
चेराई स्त्री० (हि) १-दासत्व। २-नौकरी। ३-चेला होने की अवस्था या भाव।
चेरी स्त्री० (हि) १-चेली। शिष्या। २-सेविका। दासी।
चेल पुं० (सं) वस्त्र। कपड़ा।
चेलकाई स्त्री० (हि) १-शिष्यता। २-चेलकाई।
चेलहाई स्त्री० (हि) १-चेलों का समूह। २-शिष्यता
चेला पुं० (हि) (स्त्री० चेलिन, चेली) १-शिष्य। २-शागिर्द।
चेलिकाई स्त्री० दे० 'चेलहाई'।
चेल्हवा, चेल्हा स्त्री० (?) एक छोटी मछली।
चेष्टा स्त्री० (सं) १-शरीर के अङ्गों की गति। २-अङ्गों की गति या अवस्था जिससे मन का भाव प्रगट। ३-उद्योग। प्रयत्न। ४-काम। कार्य। ५-श्रम। परिश्रम। ६-इच्छा। कामना।
चेहरई स्त्री० (हि) चित्र या मूर्त्ति में चेहरे की रंगत
चेहरा पुं० (फा) १-मुखड़ा। वदन। २-मुख पर पहनने की कोई मुखाकृति। ३-किसी वस्तु का अग्रभाग। आगा।
चेहलुम पुं० (फा) मुहर्रम से चालीसवें दिन होने वाली एक रसम।
चैंटी स्त्री० (हि) चींटी। पिपीलिका।
चैंप पुं० (हि) चेप।
चै पुं० (हि) चयन। समूह।
चैकित्सक वि० (सं) चिकित्सा से सम्बन्धित।
चैत पुं० (हि) फागुन के बाद का महीना। चैत्र।
चैतन्य पुं० (सं) १-जीवात्मा। २-ज्ञान। चेतन। ३-ब्रह्म। ४-परमेश्वर। ५-प्रकृति। ६-सचेत। ७-एक वैष्णव महात्मा जो बंगाल में हुए थे।
चैती स्त्री० (हि) १-चैत्र मास में काटी जाने वाली फसल। रबी। २-चैत्र में गाया जाने वाला गीत वि० चैत-सम्बन्धी। चैत का।
चैत्त वि० (सं) चित्त सम्बन्धी। चित्त का।
चैत्य पुं० (सं) १-मकान। घर। २-मन्दिर। देवालय ३-यज्ञशाला। ४-किसी देवी देवता का चबूतरा। ५-बुद्ध की मूर्त्ति। ६-बौद्धमठ। विहार। ७-चिता ८-अश्वत्थ का पेड़।
चैत्र पुं० (सं) १-चैत का महीना। २-बौद्ध भिक्षु ३-यज्ञभूमि। देवालय।
चैत्री स्त्री० (सं) चैत्र की पूर्णिमा।
चैन पुं० (हि) सुख। आराम।
चैपला पुं० (?) एक तरह की चिड़िया।
चैयाँ स्त्री० (हि) बाँह।
चैल पुं० (हि) कपड़ा। वस्त्र।
चैला पुं० (हि) (स्त्री० चैली) चीरी हुई जलाने की लकड़ी।
चोंक स्त्री० (देश) चूमने पर दांत लगने का चिह्न।
चोंगा पुं० (स्त्री० चोंगी) बाँस, टीन आदि की बनी नाली जिसका उपयोग कागज लपेट कर रखने के

लिए किया जाता है।

चोंचना क्रि० (हि) चुगना।

चोंच स्त्री० (हि) १-पक्षी के मुख का अग्र भाग। २-मुँह (व्यंग)।

चोंटना क्रि० (हि) नोचना।

चोंटा पु० (हि) १-स्त्रियों के सिर के बाल। २-सिर

चोंड़ा पु० (हि) छोटा कच्चा कुआँ।

चोंथ पु० (हि) एक बार में गिरने वाला (गाय या भैंस का) गोबर।

चोंथना क्रि० (हि) नोचना। खसोटना।

चोंधर, चोंधरा वि० (हि) १-बहुत छोटी आँख वाला। २-मूर्ख।

चोंप पु० (हि) १-उत्साह। इच्छा। २-दाँत का सोने का खोल।

चोंहरा पु० (हि) दूध दुहने से पहले बछड़े को चुसाया जाने वाला थोड़ा सा दूध।

चोआ पु० (हि) १-एक सुगन्धित द्रव पदार्थ। २-बाँट के अभाव में रखा जाने वाला कंकड़ या पत्थर आदि।

चोई स्त्री० (हि) १-धोई हुई दाल का छिलका। २-पककर गिरा हुआ फल।

चोकर पु० (हि) भूसी। असार।

चोका पु० (हि) १-चूसने की क्रिया। २-स्तन। छाती।

चोख स्त्री० (हि) १-तेजी। २-वेग। फुरती। ३-उत्सुकता। वि० दे० 'चोखा'। पु० भेद। अंतर।

चोखना क्रि० (हि) चूसकर पीना।

चोखनी स्त्री० (हि) चूसकर पीने की क्रिया।

चोखा वि० (हि) १-शुद्ध। २-उत्तम। ३-पैना। पु० आलू या बैंगन का भरता।

चोखाई स्त्री० (हि) १-चोखापन। शुद्धता। २-चुसाई।

चोगा पु० (तु) पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा। लबादा। पु० (हि) चारा (चिड़ियों का)

चोगान पु० दे० 'चौगान'।

चोचला पु० (हि) १-हावभाव। २-नाज। नखरा।

चोज पु० १-दूसरे को हँसाने वाली चमत्कारपूर्ण मनोविनोद करने वाली उक्ति। २-व्यंगपूर्ण उपहास।

चोट स्त्री० (हि) १-आघात। प्रहार। २-घाव। जख्म ३-वार। आक्रमण। ४-मानसिक व्यथा। ५-किसी को हानि पहुँचाने के निमित्त चली जाने वाली चाल ६-विश्वासघात। धोखा। ७-बार। मरतबा।

चोटइल वि० (हि) १-चोट करने वाला। घायल।

चोटहा वि० (हि) [स्त्री० चोटही] जिस पर चोट का निशान हो।

चोटा पु० (हि) राब का पसेव जो छानने से निकलता है। चोआ।

चोटार वि० (हि) चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना क्रि० (हि) चोट करना।

चोटिया स्त्री० (हि) चोटी।

चोटियाना क्रि० (हि) १-चोट मारना। घायल करना २-चोटी पकड़ना। वश में करना।

चोटी स्त्री० (हि) १-खोपड़ी के मध्य के वह थोड़े से बाल जिन्हें लोग धार्मिक (या अपने सम्प्रदाय का) चिह्न समझते हैं। शिखा। चुंदी। २-स्त्रियों के सिर के गुथे हुए बाल। ३-सिर के बाल बाँधने का डोरा ४-जूड़े में पहनने का एक आभूषण। ५-पक्षियों के सिर की कलगी। ६-ऊपरी भाग। शिखर।

चोटी-पोटी स्त्री० (हि) १-चिकनी चुपड़ी बात। २-झूठी या बनावटी बात।

चोट्टा पु० (हि) [स्त्री० चोट्टी] चोर।

चोड़ पु० दे० 'चोल'।

चोढ़ पु० (हि) उमाह। उमंग।

चोप पु०(हि) १-इच्छा। २-शौक। चाव। ३-उमाह उमंग। ४-चेप। स्त्री० दे० 'चोब'।

चोपना क्रि० (हि) मोहित होना। रीझना।

चोपी वि० (हि) १-इच्छुक। २-उत्साही।

चोब पु० (फा) १-तम्बू या शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। २-नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। ३-सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा। ४-छड़ी। सोटा।

चोबकारी स्त्री० (फा) कलाबत्तू का काम।

चोबदार पु० (फा) १-आसाबरदार। दरबान।

चोबदारी स्त्री० (फा) चोबदार का काम या पद।

चोवा पु० (हि) १-दे० 'चोआ'। २-भात।

चोर पु० (हि) १-चोरी करने वाला। तस्कर। मन में दुर्भाव आना। ३-घाव का अंदर ही अंदर बढ़ने वाला विकार। ४-संधि। दरार। ५-खेल में वह लड़का जिसमें दूसरे लड़के दाँव लेते हैं। ६-आन्तरिक भावों को छिपाने वाला।

चोरकट पु० (हि) उचक्का।

चोरटा पु० (हि) चोट्टा। चोर।

चोरदरवाजा पु० (हि) गुप्त द्वार।

चोरना क्रि० (हि) चोरी करना। चुराना।

चोरपेट पु० (हि) ऐसा पेट जिसमें गर्भ का जल्दी पता न चले।

चोरबत्ती स्त्री० (हि) बैटरी से जलने वाला छोटा लैंप। (टार्च)।

चोर-बाजार पु० (हि) क्रय विक्रय का वह स्थान या बाजार जिसमें चोरी से वस्तुएँ बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर खरीदी और बेची जाती है। वह स्थान जहाँ वस्तुएँ निर्धारित मूल्य से अधिक पर बेची जाती हैं। (ब्लैक मार्केट)।

वाला। गोड़ैत।

चौकीदारी स्त्री० (हि) १-पहरा देने का काम। रख-वाली। २-चौकीदार की उजरत।

चौकोन, चौकोना वि० (हि) चार कोनों वाला। चौखूंटा।

चौकोर वि० (हि) जिसके चारों कोने या पार्श्व समान हों।(स्क्वेयर)।

चौखण्डा पुं० (हि) १-चार खण्ड या मंजिल वाला मकान। २-जिसके चार भाग हों। ३-चौमंज़िले मकान का ऊपरी भाग। ४-चार आँगन वाला मकान।

चौखट स्त्री० (हि) १-लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले जड़े रहते हैं। २-देहली। चौकठ

चौखटा पुं० (हि) चार लकड़ी का चौकोर ढाँचा। (फ्रेम)।

चौखना पुं० (हि) चार खण्ड या मंजिल वाला।

चौखानि स्त्री० (हि) अण्डज, पिण्डज, स्वेदज और उद्भिज यह चार प्रकार के जीव।

चौखूंटा वि० (हि) चौकोना।

चौगड़ा पुं० (हि) दे० 'चौघड़ा'। २-दे० 'चौगोड़ा'

चौगड्डा पुं० (हि) चार वस्तुओं का समूह।

चौगान पुं० (फा) १-मैदान। २-गेंद बल्ले का खेल ३-किसी प्रकार की प्रतियोगिता। ४-नगाड़ा पीटने की लकड़ी।

चौगिर्द क्रि० वि० (हि) चारों ओर।

चौगुना वि० (हि) [स्त्री० चौगुनी] चार बार। चार गुना।

चौगून क्रि० (हि) १-चौगुना होने की अवस्था या भाव। २-आरम्भ की गति से चौगुनी गति में गाया जाने वाला गाना।

चौगोड़ा वि० (हि) चार पैर वाला। पुं० (हि) खर-गोश।

चौगोड़िया स्त्री० दे० 'चौघड़िया'।

चौगोशिया वि० (फा) १-चार कोनों वाला। स्त्री० एक तरह की टोपी। पुं० तुरकी घोड़ा।

चौघड़ पुं० (हि) दाढ़ का चौड़ा और चिपटा दाँत।

चौघड़ा पुं० (हि) १-पान, इलायची आदि रखने का चार खानों वाला डिब्बा। २-मसाला आदि रखने का चार खानों वाला बरतन। ३-पत्ते में बँधे हुए चार बीड़े पान। ४-दे० 'चौडोल'।

चौघड़िया स्त्री० (हि) चार पायों वाली ऊँची चौकी।

चौघड़ी स्त्री० (हि) वह जिसमें चार तह हों।

चौघर पुं० (हि) घोड़े की सरपट चाल।

चौघोड़ी स्त्री० (हि) वह गाड़ी जिसमें चार घोड़े जुतें

चौचंद पुं० (हि) १-बदनामी की चर्चा। निन्दा। २-शोर। हल्ला।

चौचंदहाई वि० स्त्री० (हि) बदनामी करने वाली।

चौजुगी स्त्री० (हि) चार युगों का काल।

चौड़ा वि० (हि) [स्त्री० चौड़ी] १-लम्बाई से भिन्न दिशा में। २-विस्तृत।

चौड़ाई, चौड़ान स्त्री० (हि) फैलाव। अर्ज। विस्तार

चौड़ाना क्रि० (हि) चौड़ा करना। फैलाना।

चौड़े क्रि० वि० (हि) सबके सामने। खुले आम।

चौडोल पुं० (हि) १-एक तरह का बाजा। २-एक प्रकार की पालकी। चण्डोल। ३-चौपालिया।

चौतनियाँ, चौतनी स्त्री० (हि) चार बुन्दों वाली बच्चों की टोपी।

चौतरा पुं० (हि) १-चबूतरा। २-सितार की तरह का चार तार वाला एक बाजा।

चौतहा वि० (हि) [स्त्री० चौतही] चार तह वाला।

चौतही स्त्री० (हि) चार तह करके बिछाने की मोटी चाँदनी।

चौतारा पुं० (हि) चार तारों वाला एक बाजा।

चौताल पुं० (हि) १-मृदङ्ग का एक ताल विशेष। २-होली में गाया जाने वाला एक गीत।

चौताला वि० (हि) चार ताल वाला।

चौतुका पुं० (हि) वह छन्द जिसमें चारों पदों की तुक मिलती हो। वि० जिसमें चार तुक हों।

चौथ स्त्री० (हि) १-प्रतिपक्ष की चौथी तिथि। २-चतुर्थांश। ३-आमदनी का चौथा भाग जो मराठे कर के रूप में लेते थे। वि० चौथा।

चौथपन पुं० (हि) मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था। बुढ़ापा।

चौथा वि० (हि) [स्त्री० चौथी] तीसरे के बाद का।

चौथाई पुं० (हि) चतुर्थांश। चौथा भाग।

चौथि स्त्री० दे० 'चौथ'।

चौथिआई पुं० (हि) चौथाई।

चौथिया पुं० (हि) चौथे दिन आने वाला ज्वर।

चौथी स्त्री० (हि) १-विवाह के चौथे दिन की एक रस्म जिसमें वर और कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं। २-ज़मींदार को मिलने वाला फसल का चौथाई अंश।

चौथैया पुं० (हि) चौथाई। चतुर्थांश।

चौदंता वि० (हि) १-चार दाँत वाला। २-उद्दण्ड।

चौदंती स्त्री० (हि) १-उद्दण्डता। २-धृष्टता।

चौदस स्त्री० (हि) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि। चतुर्दशी।

चौदान पुं० (हि) दो हाथियों की लड़ाई।

चौधराई स्त्री० (हि) चौधरी का काम या पद।

चौधरात, चौधराना संज्ञा (हि) १-चौधरी का काम या पद। २-चौधरी को उसके काम के बदले में मिलने वाला धन।

चौधराहट स्त्री० दे० [illegible]

चौधरी पुं० (हि) किसी [illegible]

चौधारी स्त्री० (हि) चारखाना।
चौनई स्त्री० (हि) पन्द्रह मात्राओं का एक छन्द जिसके अन्त में गुरु लघु होते हैं।
चौपला पुं० (हि) चहारदीवारी।
चौपग पुं० (हि) चौपाया।
चौपट क्रि० वि० (हि) चारों ओर से (खुला)। वि० नष्ट। भ्रष्ट। बरबाद।
चौपटहा, चौपटा पुं० (हि) चौपट करने वाला।
चौपड़ स्त्री० (हि) चौसर।
चौपत पुं० (हि) १-वह पत्थर जिसमें लगी हुई कील पर कुम्हार का चाक टिका रहता है। २-कपड़े की तह।
चौपताना क्रि० (हि) कपड़े की तह लगाना।
चौपतिया स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का साग। २-एक तरह की घास। ३-चार पन्नों की पोथी। ४-करौंदे की चार पत्तियों वाली बूटी।
चौपथ पुं० (हि) चौराहा।
चौपद पुं० (हि) चौपाया।
चौपदा पुं० (हि) १-चार चरणों वाला छन्द विशेष २-चौपाया।
चौपर स्त्री० (हि) चौपड़। चौसर।
चौ-पहरा वि० (हि) (स्त्री० चौपहरी) १-चार पहरों से सम्बद्ध। २-दिन के चार पहरों में, प्रत्येक पर होने वाला।
चौ-पहल वि० (हि) चार पहल वाला। घनात्मक।
चौ-पहिया वि० (हि) जिसके चार पहिये हों। स्त्री० चार पहियों वाली गाड़ी।
चौपा पुं० (हि) चौपाया।
चौपाई स्त्री० (हि) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं।
चौपाड़ पुं० (हि) चौपाल।
चौपाया पुं० (हि) चार पैरों वाला (गाय, भैंस, बैल आदि) पशु।
चौपर, चौपाल स्त्री० (हि) १-चारों ओर से खुली हुई बैठक जिसमें गाँव के लोग पञ्चायत करते हैं। २-एक प्रकार की पालकी।
चौपेजी वि० (हि) चार पेजों या पृष्ठों वाली (पुस्तक)
चौपैया पुं० (हि) चार चरण वाला एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १०, ८ और १२ के विश्राम से ३० मात्राएँ होती हैं।
चौफेर क्रि० वि० चारों तरफ।
चौबंदी स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की छोटी चुस्त मिर-जई। २-राजस्व। कर।
चौबंसा पुं० (हि) एक वर्णवृत्त।
चौबगला पुं० (हि) कुरता, फतुही इत्यादि में बगल के नीचे और कली के ऊपर का भाग।
चौबच्चा पुं० दे० 'चहबच्चा'।
चौबरसी स्त्री० (हि) १-किसी घटना के चौथे बरस होने वाला उत्सव या क्रिया। २-मरने से चौथे बरस किया जाने वाला श्राद्ध।
चौबाई स्त्री० (हि) चारों ओर से बहने वाली हवा।
चौबाछा पुं० (हि) मुगलों के राजत्व काल में लिया जाने वाला कर विशेष जो घर के प्रत्येक प्राणी पर लगता था।
चौबार, चौबारा पुं० (हि) १-छत के ऊपर का कमरा २-खुली हुई बैठक। क्रि० वि० चौथीबार।
चौबे पुं० (हि) (स्त्री० चौबाइन) ब्राह्मणों की एक उपजाति। चतुर्वेदी।
चौबोला पुं० (हि) एक मात्रिक छन्द।
चौभड़ पुं० दे० 'चौघड़'।
चौ-मंजिला वि० (हि) (स्त्री० चौ-मंजिली) चार खण्ड या मञ्जिल वाला (मकान)।
चौमसिया वि० (हि) वर्षा ऋतु के चार मासों में होने वाला। स्त्री० चार माशे का बटखरा।
चौमार्ग पुं० (हि) चौराहा।
चौमास, चौमासा पुं० (हि) १-वर्षा के चार महीने चतुर्मास। २-खरीफ की फसल उगने का समय। ३-वर्षा ऋतु सम्बन्धी गीत या कविता।
चौमुखा वि० (हि) (स्त्री० चौमुखी) चार मुहों वाला क्रि० वि० चारों ओर।
चौमुहानी स्त्री० (हि) चौराहा। चौरस्ता।
चौमेखा पुं० (हि) प्राचीन काल में दिया जाने वाला एक कठोर दण्ड जिसमें अपराधी को लिटा कर चार मेखें ठोक दी जाती थी।
चौरंग पुं० (हि) तलवार चलाने का एक हाथ। वि० खंग या तलवार के आघात से खंड-खंड।
चौरंगा वि० (हि) चार रंग वाला।
चौर पुं० (सं) १-चोर। तस्कर। २-एक गंध द्रव्य।
चौरस वि०(हि) १-समतल। जो ऊँचा नीचा न हो २-चौपहल।
चौरसाई स्त्री०(हि) चौरस या समतल करने की क्रिया भाव या मजदूरी।
चौरसाना क्रि० (हि) चौरस या समतल करना।
चौरस्ता पुं० (हि) चौराहा।
चौरा पुं० (हि) [स्त्री० चौरी] १-वेदी। चबूतरा। २-वह चबूतरा जो किसी देवी, देवता, सती, मृत महात्मा आदि के स्थान पर हो। ३-चौपाल। ४-चौबारा।
चौराई स्त्री० (हि) १-चौलाई नामक साग। २-एक प्रकार की चिड़िया।
चौरासी पुं० (हि) १-अस्सी और चार की संख्या। २-जीवों की चौरासी लक्ष योनियाँ। ३-वे घुंघरू जो नाचते समय पैरों में बाँधते हैं।
चौराहा पुं० (हि) वह स्थान जहाँ चार रास्ते मिलें

या दो सड़कें एक दूसरे को काटें। चौमुहानी।

छग पुं० (हि) गोद।

पजे की सब

चौर्य पुं० (स) चोरी।

चौर्य-वृत्ति स्त्री० (स) चोरी की आदत।

चौर्योन्माद पु० (सं) चुरा लेने अथवा छिपाकर रखने की खोटी आदत। (क्लेप्टोमेनिया)।

चौल-कर्म पुं० (सं) चूडाकर्म। मुण्डन।

चौ-लड़ा वि० (हि) चार लड़ियों वाला।

चौलाई स्त्री० (हि) एक साग।

चौलावा पु० (हि) ऐसा कुआँ जिसमें एक साथ चार मोट चल सकें।

चौवर वि० दे० 'चौहरा'।

चौवा पुं० दे० 'चौआ'।

चौसर स्त्री० (हि) १-एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार-चार गोटियों से खेला जाता है। चौपड़ २-इस खेल की बिसात। ३-चार लड़वाला हार।

चौहट, चौहट्ट, चौहट्टा पुं० (हि) १-वह चौकोर बाजार जिसमें चारों ओर दूकानें हों। चौक। २-चौमुहानी

चौहद्दा पुं० (हि) वह स्थान जहाँ चार गाँवों की सीमाएँ मिलती हों।

चौहद्दी स्त्री० (हि) किसी स्थान या मकान आदि की चारों सीमाएँ।

चौहरा वि०(हि) १-चार परत वाला। २-चौगुना।

चौहान पुं० (हि) क्षत्रियों की एक शाखा।

चौहैं क्रि० वि० (हि) चारों ओर। चारों तरफ।

च्यवन पुं० (स) १-चूने, टपकने या झरने की क्रिया या भाव। (लीकेज)। २-एक ऋषि का नाम।

च्यवनप्राश पु० (स) आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध अवलेह

च्युत वि० (सं) १-गिरा या झड़ा हुआ। २-भ्रष्ट। ३-विमुख।

च्युत-संस्कारता, च्युतसंस्कृति स्त्री० (सं) काव्य का व्याकरण सम्बन्धी दोष।

च्युति स्त्री० (सं) १-पतन। झड़ना। उपयुक्त स्थान से हटना। ३-विमुखता। ४-भूल। चूक।

च्यूँटा पुं० (हि) चींटा। एक कीड़ा।

च्यूँटी स्त्री० (हि) चींटी। कीड़ी।

च्यूड़ा पुं० (हि) चिउड़ा।

च्योना पुं० (हि) पटिया।

[शब्दसंख्या—१४३१४]

छ

छ हिन्दी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन, इसका उच्चारण तालु से होता है।

छगला स्त्री० (हि) 'छनछन' का शब्द (नूपुरों का शब्द)।

छछाल पुं० (हि) हाथी।

छछोरी स्त्री० (हि) छाछ से बनाया जाने वाला एक पकवान।

छँटना क्रि० (हि) १-अलग होना। छिन्न होना। २-बिछुड़ना। ३-समूह से अलग होना। ४-चुना जाना। ५-साफ होना। मैल निकालना। ६-क्षीण होना।

छँटनी स्त्री० (हि) १-छँटाई। २-(नौकरी से) हटाने या अलग करने के लिये छांटने का काम। (रिट्रेंच-मेंट)।

छँटवाना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु का अनावश्यक भाग कटवा देना। २-चुनवाना। ३-छिलवाना।

छँटाई स्त्री० (हि) १-छांटने का काम। २-चुनने की क्रिया। ३-साफ करने का काम। ४-छांटने की मजदूरी।

छँटाना क्रि० (हि) छँटवाना।

छँटुआ वि० (हि) १-छाँटकर या चुनकर निकाला हुआ। २-छाँटने के बाद बचा हुआ।

छँटैल वि० (हि) १-छाँटा या चुना हुआ। २-धूर्त। चालाक।

छँटौनी स्त्री० (हि) १-छँटाई। २-छँटनी।

छँडना क्रि० (हि) १-त्यागना। २-अन्न कूटना। छाँटना। ३-कै करना।

छँड़ाना क्रि० (हि) १-छुड़ाना। २-छीन लेना।

छँडुआ वि० (हि) जो छोड़ दिया गया हो। [illegible] हुआ। छूटा।

छंद पुं० (हि) १-अक्षरों की गणना के [illegible] भेदों के वाक्यों का भेद। २-वेद। ३-[illegible]। [illegible] बन्ध। ५-छन्दशास्त्र। ६-अभिलाषा। [illegible] चार। ८-बन्धन। ९-संघात। समूह। [illegible] ११-युक्ति। चाल। १२-रंग-ढंग। १३-[illegible] अभिप्राय। १४-एकांत। १५-विष। १६-[illegible] १७-पत्ती। १-चूड़ियों के बीच में पहना जाने वाला एक आभूषण।

छंदक पु० (स) १-छल। २-गुप्त मतदान, [illegible] (बैलट)।

छंदक-दान पु० (स) निर्वाचन के सम्बन्ध [illegible] देने की क्रिया या भाव। मतदान।

छंदकपत्र पु० (स) मतपत्र। (वोट)।

छंदक-पेटिका स्त्री० (स) वह सन्दूक जिसमें [illegible] डाले जाते हैं। (बैलट बॉक्स)।

छदना क्रि० (हि) उलझना। बँधना।
छदबद पुं० (हि) छलबल। कपट।
छंदशास्त्र पुं० (स) वह शास्त्र जिसमें छन्दों के लक्षण आदि का विवेचन हो। (प्रोसोडी)।
छंदोगति स्त्री० (सं) छन्द में शब्दों आदि की वह योजना जिससे उसके पढ़ने में एक विशेष प्रकार की गति या लय का अनुभव हो।
छंदोबद्ध वि० (स) जो छन्द या पद्य के रूप में हो। पद्यात्मक।
छंदोभग पुं० (सं) दोषपूर्ण छंद रचना।
छः वि० (हि) गिनती में पाँच से एक अधिक।
छ पुं० (सं) १-काटना। २-ढाँकना। ३-घर। ४-खंड। टुकड़ा। वि० (सं) १-साफ। २-चंचल।
छई स्त्री० (हि) क्षयरोग।
छकड़ा पुं० (हि) बैलगाड़ी। वि० जिसके अंजर-पंजर ढीले हों।
छकड़ी स्त्री० (हि) १-छः का समूह। २-वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हैं।
छकना क्रि० (हि) १-अघाना। तृप्त होना। २-नशे में चूर होना। ३-चकराना।
छकाई स्त्री० (हि) तृप्ति। सन्तोष।
छकाछक वि० (हि) १-तृप्त। सन्तुष्ट। २ अघाया। ३-नशे में चूर।
छकाना क्रि० (हि) १-खिला-पिलाकर तृप्त करना। २-मद्य आदि से उन्मत्त करना। ३-अचम्भे में डालना।
छकौला वि० (हि) १-छका हुआ। तृप्त। २-मस्त। मस्त।
छकौहाँ वि० (हि) १-अघाया हुआ। तृप्त। २-छकाने या तृप्त करने वाला।
छक्करा पुं० (हि) छल-कपट।
छक्का पुं० (हि) १-छः का समूह। २-छः अवयवों वाली वस्तु। ३-जुए का वह दाँव जिसमें छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें। ४-छः बूटियों वाला ताश। ५-होश-हवास। सुध।
छगड़ा पुं०(हि) [स्त्री० छगड़ी] बकरा।
छगन पुं० (हि) छोटा बच्चा। (प्यार का शब्द)।
छगन-मगन पुं० (हि) छोटे-छोटे प्यारे बच्चे।
छगुनी स्त्री० (हि) छगुली। कनिष्ठिका।
छगोड़ा वि० (हि) [स्त्री० छगोड़ी] जिसके छः पैर हों। पुं० मकड़ा।
छछिया स्त्री० (हि) छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र
छछूंदर पुं० (हि) १-चूहे की जाति का एक जन्तु। २-एक प्रकार की आतिशबाजी।
छछौरी स्त्री० दे० 'छकौरी'।
छजना क्रि० (हि) १-शोभा देना। सजना। २-ठीक जँचना।
छज्जा पुं० (हि) १-छत का दीवार के बाहर निकला हुआ भाग। बारजा। २-दीवार के बाहर निकली हुई पत्थर की पट्टी। ३-ओलती। ओरी।
छटंकी स्त्री० (हि) छटाँक भर तौल का बटखरा। वि० (हि) छोटा और हलका।
छटकना क्रि० (हि) १-भार या धक्के से किसी वस्तु का वेग सहित दूर जाना। २-दूर या अलग रहना। ३-बन्धन से निकल जाना। ४-कूदना।
छटकाना क्रि० (हि) १-छुड़ाना। २-झटका देकर बन्धन से छुड़ाना। ३-बलपूर्वक अलग करना।
छटपटाना क्रि० (हि) १-तड़फड़ाना। २-बेचैन होना
छटपटी स्त्री० (हि) १-बेचैनी। २-आकुलता।
छटाँक स्त्री० (हि) सेर का सोलहवें भाग की एक तौल
छटा स्त्री० (हि) १-कान्ति। प्रभा। २-प्रकाश। झलक ३-शोभा। वि० दे० 'छठा'।
छटुआ वि० (हि) छँटुआ।
छट्ठी स्त्री० (हि) छठी।
छठ स्त्री० (हि) प्रतिपक्ष की छठी तिथि।
छठा वि० (हि) गिनती ६ के स्थान आने वाला।
छठी स्त्री० (हि) जन्म से छठे दिन का संस्कार।
छड़ स्त्री० (हि) धातु या लकड़ी आदि का पतला टुकड़ा।
छड़ना क्रि० (हि) अन्न को ओखली में कूटकर साफ करना।
छड़ा पुं० (हि) १-पैर में पहनने का एक गहना। २-मोतियों की लड़ी। ३-हाथ का पंजा।
छड़िया वि० [स्त्री० छड़ी] अकेला। पुं० (हि) द्वारपाल
छड़ियाना क्रि० (हि) छड़ी मारना।
छड़ी स्त्री० (हि) १-पतली लकड़ी। २-हाथ में लेकर चलने की पतली लकड़ी। ३-झण्डी जिसे मुसलमान, पीरों पर चढ़ाते हैं। वि० अकेली।
छड़ीबरदार पुं० (हि) चोबदार।
छड़ीला पुं० दे० 'छरीला'।
छत स्त्री० (हि) १-घर की छाजन। पाटन। २-ऊपर का ढका भाग। पुं० क्षत। घाव। क्रि० वि० (हि) जिसका अस्तित्व हो।
छतगीर, छतगीरी स्त्री० (हि) ऊपर तानी हुई चाँदनी
छतना पुं० (हि) बड़े पत्तों का छाता।
छतनार वि० (हि) [स्त्री० छतनारी] छाते के समान फैला हुआ। छायादार (वृक्ष)।
छतराना क्रि० (हि) छत्रक अथवा खुमी के रूप में उत्पन्न होकर फैलाना या बढ़ाना। (फंगेट)।
छतरी स्त्री० (हि) १-छाता। २-कबूतरों के बैठने का बाँस की फट्टियों का टट्टर। ३-खुमी। ४-कुकुरमुत्ता ५-एक बड़े आकार का छाता, जिसके सहारे सैनिक वायुयान से भूमि पर उतरते हैं। (पैराशूट)।
छतरी-फौज स्त्री० (हि) छतरियों के सहारे वायुयान

से उतरने वाली सेना।

छतिया स्त्री० (हि) छाती।

छतियाना क्रि० (हि) छाती से लगाना।

छतिवन पु० (हि) वृक्ष विशेष जिसके कुछ अंग दवा के काम आते हैं।

छतीसा वि० (हि) [स्त्री० छतीसी] १-चालाक। २-धूर्त।

छतौना क्रि० (हि) छाना।

छन स्त्री० (हि) छत।

छत्तर पु० (हि) १-छत्र। २-छत्र।

छत्ता पु० (हि) छाता। छतरी। २-मधुमक्खियों का घर। ३-छाते के समान दूर तक फैली हुई वस्तु। ४-रास्ते के ऊपर की छत या पटाव। ५-कमल का बीजकोश।

छत्ती स्त्री० (हि) चमड़े या रबर की वह मशक जिसमें हवा भरकर नदी पार करते हैं।

छत्तीसा वि० (हि) [स्त्री० छत्तीसी] धूर्त।

छत्तेदार वि० (हि) १-छत्ते वाला। २-मधुमक्खियों के छत्ते के आकार का।

छत्र पुं० (स) १-छाता। छतरी। २-राजचिह्न के रूप में राजाओं के ऊपर लगने वाला छाता।

छत्रक पु० (स) १-कुकुरमुत्ता। २-छाता। ३-तालमखाने की जाति का एक पौधा। ४-मन्दिर। ५-मण्डप। ६-शहद की मक्खियों का छत्ता। ७-मिश्री का कूजा।

छत्रकायमान वि० (सं) छत्रक या कुकुरमुत्ता के रूप में होने या फैलाने वाला। (फंगेटिङ्ग)।

छत्रच्छाया, छत्रछांह, छत्रछाया स्त्री० १-छत्र की छाया। २-आश्रय।

छत्रधनी पुं० (हि) छत्रधारी।

छत्रधर, छत्रधार पुं० (स) १-छत्र धारण करने वाला व्यक्ति। २-राजाओं के ऊपर छत्र लगाने वाला सेवक।

छत्रधारी वि० (हि) छत्र धारण करने वाला।

छत्रपति पुं० (स) राजा।

छत्रपन पुं० (हि) क्षत्रियत्व।

[illegible]

३-ज्योतिष का एक योग जिसमें राजा का नाश होता है।

छत्राक पुं० (सं) १-खुमी। २-कुकुरमुत्ता।

छत्री वि० (हि) जो छतरी लगाये हो। छत्रयुक्त। पुं० दे० 'क्षत्रिय'।

छद, छदन पुं० (सं) १-आवरण। २-चिड़िया का पंख। ३-पत्ता।

छदम पुं० दे० 'छद्म'।

छदाम पु० (हि) रुपये का २५६ वाँ भाग।

छद्म पुं०(स) १-छिपाव। गोपन। २-व्याज। बहाना। ३-कपट। धोखा।

छद्म-नाम पुं० (स) लेखक का बनावटी नाम। उपनाम। (स्यूडोनिम)।

छद्म-युद्ध पुं० (स) नकली या केवल अभ्यास के लिए किया गया युद्ध। दिखाऊ युद्ध। (शैम-फाइट)।

छद्म-वेश, छद्म-वेष पुं०(स) बदला हुआ कृत्रिम भेस।

छद्मावरण पुं० (सं) शत्रु पक्ष को भ्रम में डालने के लिए विमानों, तोपों आदि को वृक्षों की पत्तियों या धूम पटल आदि से ढक देना। छलावरण। (कैमूफ्लेज)।

छद्मी वि० (स) १-छद्मवेशधारी। २-कपटी।

छन पु० (हि) क्षण।

छनक स्त्री०(हि) १-झनकार। २-जलती वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न शब्द। ३-भड़क। पु० एक क्षण।

छनकना क्रि०(हि)१-'छन-छन' शब्द करना। २-दे० 'छनछनाना'। ३-भड़कना।

छनछनक स्त्री० (हि) १-गहनों की झनकार। २-सजधज। ३-ठमक। ४-नखरा। चोंचला।

छनकाना क्रि० (हि) १-'छन-छन' शब्द करना। २-भड़काना। ३-चलकाना।

छनछनाना क्रि० (हि) १-'छन-छन' शब्द होना या करना। २-झनकार होना।

छनि-छबि स्त्री० (हि) क्षणप्रभा। बिजली।

छनदा स्त्री० (हि) १-रात। २-बिजली।

छनना क्रि० (हि) १-छोटे-छोटे छिद्रों से होकर निकलना। २-छाना जाना। ३-मादक पदार्थ का सेवन किया जाना। पु० (हि) छानने का साधन। छनने की वस्तु।

छनभंगु वि० दे० 'क्षणभंगुर'।

छनिक वि० दे० 'क्षणिक'।

छन्न पु०(हि) १-किसी तपी हुई वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न शब्द। २-झनकार।

छन्ना पुं० (हि) छानने का साधन।

छन्ना-पत्र पुं० (हि) मसिशोषपत्र के समान एक पत्र [illegible] आकाश [illegible] आदि हुआ द्रव पदार्थ। (फिल्टर)।

छप स्त्री०(हि) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।

छपक पु० (हि) तलवार आदि से काटने का शब्द।

छपकना क्रि० (हि) १-पतली कमची से किसी को मारना। २-तलवार से किसी वस्तु को काट डालना।

छपका पु० (हि) १-सिर का एक गहना। २-पतली कमची। ३-पानी की छींट। ४-[illegible] [illegible] बात।

छपछपाना क्रि० (हि) 'छप-छप' शब्द होना या करना।
छपटना क्रि०(हि) १-चिपकना। २-आलिंगित करना
छपटाना क्रि० (हि) १-चिपकाना। २-आलिंगन करना।
छपद पुं० (हि) भौंरा।
छपन वि० (हि) गुप्त। गायब। पुं० विनाश। संहार
छपना क्रि० (हि) १-छापा जाना। २-चिह्नित या अंकित होना। ३-मुद्रित होना। ४-दे० 'छिपना'।
छपर-खट, छपर-खाट स्त्री० (हि) वह पलङ्ग जिसमें मसहरी लग सके।
छपरा पु० (हि) १-पत्तों से मढ़ा हुआ पान रखने का टोकरा। २-दे० 'छप्पर'।
छपरी स्त्री० (हि) झोंपड़ी।
छपवाई स्त्री० (हि) छपाई।
छपवाना क्रि० (हि) छपाना।
छपा स्त्री० (हि) १-क्षपा। रात। २-हल्दी।
छपाई स्त्री० (हि) १-छापने का काम। मुद्रण। २-छापने का ढंग। ३-छापने की मजदूरी।
छपाकर पुं० (हि) क्षपाकर। चन्द्रमा। २-कपूर।
छपाका पुं० (हि) १-पानी में किसी वस्तु के तेजी से गिरने का शब्द। २-वेग से फैंका हुआ पानी का छींटा।
छपाना क्रि० (हि) १-छापने का काम कराना। २-चिह्नित कराना। ३-मुद्रित कराना। ४-छिपाना। ५-छिपना।
छपानाथ पुं० (हि) क्षपानाथ।
छपाव पुं० (हि) छिपाव।
छप्पय पुं० (हि) छः चरणों का एक मात्रिक छन्द।
छप्पर पुं० (हि) घर के ऊपर का छाजन। छान।
छप्परबंद पुं० (हि) छप्पर छाने वाला।
छब स्त्री० (हि) छवि।
छब-तखत स्त्री० (हि) शरीर की सुन्दर बनावट।
छबि स्त्री० (हि) छवि।
छबिकारी वि० (हि) सौन्दर्यवर्धक।
छबिधर, छबिमान वि० (हि) छबीला। सुन्दर।
छबीला क्रि० (हि) (स्त्री० छबीली) सुन्दर। सजीला।
छब्बीसी स्त्री० (हि) छब्बीस वस्तुओं का समूह।
छम स्त्री० (हि) १-घुङ्घरू का शब्द। २-पानी बरसने का शब्द। पुं० (हि) क्षम।
छमक स्त्री० (हि) छमकने की क्रिया या भाव। ठसक।
छमकना क्रि० (हि) १-घुंघुरुओं या गहनों की झनकार होना। २-चमकना। ३-सुन्दर वस्त्राभूषण पहन कर (स्त्रियों का) इधर-उधर इठलाते हुए फिरना।
छमछम स्त्री० (हि) १-नूपुर, पायल, घुँघरू आदि का बजने का शब्द। २-मेह बरसने का शब्द।
छमछमाना क्रि० (हि) १-छम-छम शब्द करना। २-'छम-छम' शब्द करते हुए चलना।
छमता स्त्री० (हि) क्षमता।
छमना क्रि० (हि) क्षमा करना।
छमा, छमाई स्त्री० (हि) क्षमा।
छमाछम क्रि० वि० (हि) निरन्तर 'छम-छम' श[illegible] सहित।
छमावान वि० (हि) सहनशील। क्षमावान।
छमासी स्त्री० (हि) १- मृत्यु के छः महीने बाद ह[illegible] वाला श्राद्ध। २-छः माशे का बाट।
छमिच्छा स्त्री०(हि) १-समस्या। २-संकेत। इशा[illegible]
छमी वि० (हि) क्षमी।
छमुख पुं० (हि) षडानन। कार्त्तिकेय।
छय पुं० (हि) क्षय। नाश।
छयना क्रि० (हि) २-क्षीण होना। छीजना। छाना।
छयल वि० (हि) छैला।
छर पुं० (हि) १-छल। २-क्षर। वि० (हि) भारी।
छरकना क्रि० (हि) १-छिटकना या छिटकाना। छलकना।
छरछंद पुं० (हि) छलछन्द।
छरछंदी वि० (हि) धूर्त्त। कपटी।
छरछराना क्रि० (हि) १-घाव पर नमक आ[illegible] लगने से जलन होना। २-कणों का वेग से कि[illegible] वस्तु पर गिरना।
छरद स्त्री० (हि) वमन। कै।
छरना क्रि० (हि) १-चूना। बहना। २-छलन[illegible] मोहित करना। ३-अनाज आदि छाँटा या फट[illegible] जाना।
छरबर पुं० (हि) छलबल।
छरभार पुं० (हि) १-कार्यभार। २-झंझट। बखे[illegible]
छरहरा वि० (हि) (स्त्री० छरहरी) १-इकहरे बदन [illegible] दुबला-पतला और हलका। २-तेज। फुर्तीला।
छरा पुं० (हि) १-छड़ा। २-लड़ी। लर। ३-रस्स[illegible] ४-नारा। इजारबन्द।
छरिदा वि० (हि) छरीदा।
छरिया पुं० (हि) चोबदार।
छरी स्त्री० (हि) १-छड़ी। २-छली। ३-अप्सरा।
छरीदा वि० (हि) १-अकेला। एकाकी। २-जिस[illegible] पास बोझ या सामान न हो (यात्री)।
छरीदार पुं० (हि) छड़ीदार। चोबदार।
छरीला पुं० (हि) एक सुगन्धित वनस्पति जिस[illegible] व्यवहार मसालों में होता है।
छरुभार पुं० दे० 'छरभार'।
छरोरा पु० (हि) खरोंच।
छर्रा पुं० (स) १-छोटी कंकड़ी। कण। २-बन्दूक [illegible] गोली।
छलंक, छलंग स्त्री० दे० 'छलाँग'।

छल पुं० (सं) १-धोखा। २-मिस। बहाना। ३-कपट। ४-धूर्तता। ५-युद्ध नियमों के विरुद्ध शत्रु पर प्रहार। वि० छलपूर्वक बना हुआ।
छलक, छलकन स्त्री० (हि) छलकने की क्रिया या भाव। २-भरे होने के कारण बाहर उमड़ पड़ना।
छलकना क्रि० (हि) १-बरतन हिलने से किसी तरल पदार्थ का उछलकर बाहर निकलना। २-भरे होने के कारण उमड़ना।
छलकपट पुं० (सं) धोखेबाजी।
छलकाना क्रि० (हि) किसी भरे हुए पात्र के द्रव पदार्थ को हिलाकर बाहर गिराना।
छलछंद पुं० (हि) कपट का व्यवहार। धूर्तता।
छलछंदी वि० (हि) छलछंद करने वाला। कपटी।
छलछिद्र पुं० (सं) कपट-व्यवहार। धोखेबाजी।
छलछिद्री पुं० (हि) छली। धोखेबाज।
छलन पुं० (सं) छलने का काम।
छलना क्रि० (हि) १-धोखा देना। २-मोहित करना। स्त्री० (सं) छल। धोखा।
छलनी स्त्री० (हि) आटा छानने का पात्र। चलनी।
छल-बल पुं० (सं) काम साधने के लिए किया जाने वाला कपटपूर्ण व्यवहार तथा बल प्रयोग।
छलबल स्त्री० (हि) १-चटकमटक। २-छवि।
छलमलना क्रि० (हि) छलकना।
छलमलाना क्रि० (हि) १-छलकाना। २-छलकना।
छलयोजन पुं० (सं) चतुराई से बनावटी रूप दे देना। ऐसी चाल चलना जिसमें कोई वस्तु मनोनुकूल रूप ग्रहण करले। (मैनिपुलेशन)।
छलहाया वि० (हि) [स्त्री० छलहाई] छली। कपटी।
छलांग स्त्री० (हि) उछाल। कुदान। चौकड़ी।
छलांगना क्रि० (हि) छलांग मारना।
छला पुं० (हि) छल्ला।
छलाई स्त्री० (हि) छल।
छलाना क्रि० (हि) धोखे में डलवाना। प्रतारित कराना।
छलावरण पुं० (हि) दे० 'छद्मावरण'।
छलावा पुं० (हि) १-भूतप्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर गायब हो जाती है। २-अगियाबैताल। ३-जादू।
छलित वि० (सं) छला हुआ। ठगा हुआ।
छलिया, छली वि० (हि) कपटी। धोखेबाज।
छल्ला पुं० (हि) १-मुँदरी। २-वलय। कड़ा।
छल्ली स्त्री० (सं) १-छाल। २-लता। ३-अनाज की बोरियों का क्रमानुसार लगा हुआ ढेर।
छल्लेदार वि० (हि) १-जिसमें छल्ले लगे हों। २-जिसमें मंडलाकार चिह्न हों।
छवना पुं० (हि) [स्त्री० छवनी] १-बच्चा। २-सूअर का बच्चा।
छवा पुं० (हि) पशु का बच्चा।
छवाई स्त्री० (हि) १-छाने का काम। २-छाने की मजदूरी।
छवि स्त्री० (सं) १-शोभा। सौंदर्य। २-कांति। चमक। स्त्री० (हि) प्रतिकृति। चित्र। (फोटो)।
छविगृह पुं० (सं) १-चलचित्रालय। २-घर का वह कमरा जिसमें जाकर स्त्रियाँ अपने वस्त्राभूषण पहनती हैं।
छवि-लोक पुं० (सं) वह स्थान या वातावरण जिसमें चल-चित्र तैयार होते हैं।
छवि-संग्रह पुं० (सं) चित्र, फोटो आदि सुरक्षित रखने की किताब या खोली। (एलबम)।
छवी पुं० (हि) चाकू के आकार की एक छोटी कृपाण जिसे सिक्ख लोग अपने पास रखते हैं।
छवैया वि० (हि) (छप्पर) छाने वाला।
छह वि० (हि) छः (संख्या)।
छहरना क्रि० (हि) बिखरना। छितरना।
छहराना क्रि० (हि) बिखरना या बिखराना।
छहरीला वि० (हि) बिखरने वाला।
छाँहियाँ, छाँ, छाँईं स्त्री० (हि) छाँह।
छाँक पुं० (हि) टुकड़ा।
छाँगना क्रि० (हि) काटना। छाँटना।
छाँगुर पुं० (हि) छः उंगलियों वाला।
छाँछ स्त्री० (हि) छाछ।
छाँट स्त्री० (हि) १-छाँटने की क्रिया या ढंग। २-छाँटकर अलग की हुई वस्तु। ३-वमन। कै।
छाँट-छिड़का पुं० (हि) साधारण वर्षा। बूँदाबाँदी।
छाँटना क्रि० (हि) १-काटकर अलग करना। २-किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना। ३-अनाज में से कन या भूसी अलग करना। ४-चुनना या पृथक करना। ५-दूर करना। हटाना। ६-साफ करना। ७-अनावश्यक रूप से अपनी योग्यता दिखाना। छोटा या संक्षिप्त करना।
छाँटा पुं० (हि) १-छाँटने की क्रिया या भाव। २-किसी को छल से अलग करना।
छाँड़ना क्रि० (हि) १-छोड़ना। २-कै करना। ३-सूप से अनाज फटकना।
छाँद स्त्री० (हि) पशुओं के पैर बाँधने की छोटी रस्सी। नोई। पगहा। नाथ।
छाँदना क्रि० (हि) १-बाँधना। २-पशु के पिछले पैर सटाकर बाँधना।
छाँदा पुं० (हि) १-वह भोजन जो ज्योनार आदि में से अपने घर लाया जाय। परोसा। २-भाग। हिस्सा।
छांदोग्य पुं० (सं) एक उपनिषद्।
छाँपना क्रि० (हि) छाँटना।
छाँव स्त्री० (हि) छाँह।

छाँवड़ा पुं० (हि) [स्त्री० छाँवड़ी, छौंड़ी] १-पशु का छोटा बच्चा। छौना। २-बालक।
छाँह स्त्री० (हि) १-जहाँ धूप न हो। छाया। २-ऊपर से छाया हुआ स्थान। ३-रक्षा का स्थान। शरण। ४-परछाँई। ५-प्रतिबिम्ब। ६-भूत-प्रेत का प्रभाव।
छाँहगीर पुं० (हि) १-चँदोआ। २-राजछत्र।
छाँही स्त्री० (हि) छाँह।
छाई स्त्री० (हि) १-राख। २-खाद।
छाउँ स्त्री० (हि) छाँह।
छाक स्त्री० (हि) १-तृप्ति। इच्छा-पूर्ति। २-दोपहर का भोजन। ३-नशा। मद। ४-माठ।
छाकना क्रि० (हि) दे० 'छकना'।
छाग पुं० (सं) [स्त्री० छागी] बकरा।
छागर पुं० (हि) छागल। बकरा।
छागल पुं० (सं) १-बकरा। २-बकरे की खाल की बनी वस्तु। स्त्री० (सं) बकरे के खाल की मशक। स्त्री० (हि) पैर का एक गहना।
छाछ स्त्री० (हि) वह मथा हुआ दही जिसमें से मक्खन निकाल लिया हो। मट्ठा।
छाछठ वि० (हि) छासठ, (६६)।
छाछरी स्त्री० (हि) मछली।
छाज पुं० (हि) १-अनाज फटकने का उपकरण। सूप। २-छाजन। छप्पर। ३-छज्जा। ४-शोभा। ५-मार्ग।
छाजन पुं० (हि) १-आच्छादन। वस्त्र। २-छप्पर। ३-छाने का काम या ढंग। छवाई। ४-एक चर्म।
छाजना क्रि० (हि) छजना।
छाजा पुं० (हि) १-छाज। २-छज्जा।
छात स्त्री० (हि) छत। पुं० छत्र।
छाता पुं० (हि) [स्त्री० छतरी] १-वर्षा, धूप से बचाव के लिए बनाया हुआ एक प्रसिद्ध आच्छादन। २-मंडप। ३-कबूतरों के बैठने का अड्डा। ४-छतरी। (पैराशूट)। ५-ताल में पानी पर छाये हुए फूल पत्तों का समूह।
छाती स्त्री०(हि) १-सीना। वृक्षःस्थल। २-स्तन। कुच ३-हिम्मत। साहस।
छात्र पुं० (सं) [स्त्री० छात्रा] १-विद्यार्थी। शिक्षार्थी। २-शिष्य।
छात्र-नायक पुं०(सं)कक्षा या श्रेणी का प्रमुख विद्यार्थी जिसका कर्तव्य कक्षा में अनुशासन की रक्षा करना आदि होता है। (मॉनिटर)।
छात्र-वृत्ति स्त्री० (सं) विद्या अर्जन करने के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता। (स्कॉलरशिप)।
छात्राभिरक्षक पुं० (सं) छात्रों पर छात्रावास में निगरानी रखने वाला शिक्षा-अधिकारी। (वार्डन)
छात्रालय, छात्रावास पुं० (सं) विद्यार्थियों के सामूहिक रूप से रहने का स्थान। (बोर्डिंग हाउस)।
छात्रावासीय-विश्वविद्यालय पुं० (सं) वह विश्वविद्यालय जिसके विद्यार्थी प्रायः निकटवर्ती छात्रालयों में विश्वविद्यालय के वातावरण में ही रहते हों (रेजिडेंशल-युनिवर्सिटी)।
छादक वि० (सं) १-आच्छादित करने वाला। २-कपड़े आदि देने वाला।
छादन पुं० (सं) १-छाने या ढकने का कार्य। २ आवरण। आच्छादन। ३-छिपाव। ४-कपड़ा।
छादित वि० (सं) ढका या छाया हुआ। आच्छादित
छादी वि० (सं) [स्त्री० छादिनी] आच्छादन करने वाला।
छाद्मिक वि० (सं) १-पाखंडी। मक्कार। २-बहुरूपिया ३-वह जिसने भेस बदला हो।
छान स्त्री०(हि)१-छप्पर। २-छनने की क्रिया या भाव
छानना क्रि० (हि) १-आटा, चूरन आदि को कपड़े या चलनी में से निकालना। २-नशा पीना। ३-खोजबीन करना। ४-छादन।
छानबीन स्त्री० (हि) १-पूरी जाँच-पड़ताल। गहरी खोज। १-पूर्ण विवेचना।
छाना क्रि० (हि) १-आच्छादित करना। २-छाया करने के निमित्त कोई वस्तु ऊपर तानना या फैलाना। ३-फैलना। ४-डेरा डालना। टिकना।
छानी स्त्री० (हि) छप्पर।
छाने क्रि० वि० (हि) चुपके। चोरी से। छिपकर।
छाप स्त्री० (हि) १-मुहर का चिह्न। २-किसी उभरे या खुदे हुए ठप्पे का चिह्न। ३-धार्मिक चिह्न जिसे वैष्णव अपने अंगों पर अंकित कराते हैं। ४-ठप्पेदार अंगूठी। ५-कवियों का उपनाम। ६-अंगूठे का का चिह्न। ७-मुद्रण। छपाई। ८-थाँट का चिह्न विशेष।
छापना क्रि० (हि) १-निशान डालना। १-अंकित करना। २-छापे की कल से मुद्रित करना।
छापा पुं० (हि) १-साँचा। ठप्पा। २-मुहर। मुद्रा। ३-ठप्पे या मुहर का चिह्न या अक्षर। ४-पंजे का निशान। ५-अचानक आक्रमण। धावा।
छापाखाना पुं० (हि) वह स्थान जहाँ छपाई का काम होता है। मुद्रणालय। (प्रिंटिंग प्रेस)।
छापामार पुं० (हि) अचानक छापा मारने वाला। (सैनिक या हवाई जहाज)।
छाबड़ी स्त्री० (देश) वह वस्तु जिसमें खाने-पीने की वस्तुएँ रखकर बेची जाती हैं। खोनचा।
छाम वि० दे० 'क्षमा'।
छामोदरी वि० (हि) छोटे पेट वाला।
छाय स्त्री० (हि) छाया।
छायल पुं० (हि) स्त्रियों की एक प्रकार की कुरती।
छायांक पुं० (स) चन्द्रमा।

छिछयाना क्रि० (हि) १–मारे-मारे फिरना। २–निन्दा करना।
छिछला,छिछिल वि० (हि) कम गहरा। उथला।
छिछोरपन पुं० (हि) छिछोरा होने का भाव। ओछापन।
छिछोरा वि० (हि) ओछा। क्षुद्र।
छिजना क्रि० (हि) छीजना। घटना।
छिटकना क्रि० (हि) १–चारों ओर फैलना। बिखरना। २–उजाला छाना।
छिटकाना क्रि० (हि) चारों ओर फैलाना। बिखराना।
छिटकी स्त्री० (हि) छींटा।
छिड़कना क्रि० (हि) १–पानी आदि के छींटे डालना। २–न्योछावर करना।
छिड़कवाना क्रि० (हि) छिड़कने का काम दूसरे से कराना।
छिड़का पु० (हि) छिड़काव।
छिड़काई स्त्री० (हि) १–छिड़काने का काम या भाव। २–छिड़काने की मजदूरी।
छिड़काव स्त्री० (हि) पानी छिड़काने की क्रिया या भाव।
छिड़ना क्रि० (हि) आरम्भ होना।
छिण पुं० (हि) क्षण।
छितनी स्त्री० (हि) बांस की बनी छिछली टोकरी।
छितरना क्रि० (हि) बिखरना। फैलाना।
छितरबितर वि० (हि) दे० 'तितर-बितर'।
छितराना क्रि० (हि) १–बिखराना। २–फैलाना। ३–दूर-दूर करना। ४–तितर-बितर करना।
छितराव पुं० (हि) छितराने या बखेरने का भाव।
छिति स्त्री० (हि) १–भूमि। पृथ्वी। २–एक का अंक
छितिकंत पुं० (हि) क्षितिकन्त। राजा।
छितिज पु० (हि) क्षितिज।
छितिपाल वि० (हि) राजा।
छितिरुह पुं० (हि) वृक्ष। पेड़।
छितीस पुं० (हि) क्षितीश। राजा।
छिदना क्रि० (हि) १–छेददार होना। २–घायल होना। ३–सहारे के लिए पकड़ लेना।
छिदवाना क्रि० (हि) छेदने का कार्य अन्य से कराना
छिदाना क्रि० (हि) छेदने का काम दूसरे से कराना
छिद्र पुं० (सं) १–छेद। २–सूराख। ३–विवर। बिल ३–दोष। ऐब। ४–अवकाश।
छिद्रदर्शी वि० (सं) पराया दोष देखने वाला।
छिद्रात्मा पुं० (सं) खल। दुष्ट।
छिद्रान्वेषण पुं० (सं) दूसरे के दोष ढूँढ़ना।
छिद्रान्वेषी वि० (सं) [स्त्री० छिद्रान्वेषिणी] पराये दोष देखने वाला।
छिद्रित वि० (सं) १–जिसमें छेद हो। २–दूषित।
छिन पुं० (हि) क्षण।
छिनक क्रि० वि० (हि) क्षणभर। तनिक।
छिनकना क्रि० (हि) जोर से सांस निकालकर नाक साफ करना।
छिनछवि स्त्री० (हि) बिजली।
छिनदा स्त्री० (हि) क्षणदा। रात।
छिनना क्रि० (हि) १–छीन लिया जाना। हरण होना। २–(छेनी या टाँकी के) आघात से कटना। ३–कुटना।
छिनभंग वि० (हि) क्षणभंगुर।
छिनरा वि० (हि) छिनाल।
छिनवाना, छिनाना क्रि० (हि) छेदने का काम दूसरे से कराना।
छिनार, छिनाल वि० (हि) स्त्री०= १–कुलटा। २–व्यभिचारिणी।
छिनाला पुं० (हि) व्यभिचार। बदकारी।
छिनौछवि स्त्री० (हि) छिनछवि। बिजली।
छिन्न वि० (सं) कटा हुआ। खंडित।
छिन्न-भिन्न वि० (सं) १–नष्टभ्रष्ट। २–तितरबितर। ३–कटा हुआ।
छिन्नमस्ता स्त्री० (सं) एक देवी।
छिपकली स्त्री० (हि) गृहगोधिका। बिस्तुइया।
छिपना क्रि० (हि) आड़ में होना। दिखाई न देना।
छिपाना क्रि० (हि) १–आँख से ओझल करना। २–प्रकट न करना।
छिपा-रुस्तम पुं० (हि) १–वह व्यक्ति जो गुणों से पूर्ण हो पर विख्यात न हो। २–गुप्त गुंडा।
छिपाव पुं० (हि) भेद को छिपाने का भाव।
छिप्र क्रि० वि० दे० 'क्षिप्र'।
छिमा स्त्री० (हि) दे० 'क्षमा'।
छिया स्त्री० (हि) १–घृणित वस्तु। २–मल। मैला।
छियाज पुं० (हि) कडुआँ ब्याज।
छिरकना क्रि० (हि) छिड़कना।
छिरकाना क्रि० (हि) छिड़काना।
छिरना क्रि० (हि) छिलना।
छिरहा वि० (हि) हठी। जिद्दी।
छिरियाना क्रि० (हि) १–छिड़कना। २–छिटकना।
छिलक पुं० (हि) तिलक नामक पौधा।
छिलकना क्रि० (हि) छिड़कना।
छिलका पुं० (हि) १–फल आदि का आवरण। २–ऊपरी परत।
छिलछिला वि० (हि) छिछला।
छिलन स्त्री० (हि) १–छिलने की क्रिया या भाव। २–खरोंच।
छिलना क्रि० (हि) चमड़े या छिलके का कटकर अलग हो जाना या छिलकर अलग हो जाना।
छिलवाई स्त्री० (हि) छिलवाने की क्रिया या मजदूरी।
छिलवाना क्रि० (हि) छीलने का काम दूसरे से कराना।

छिक्कड़ पु० (हि) छिलका।
छिवना क्रि० (हि) छूना।
छिहरना क्रि० (हि) छितराना।
छिहानी स्त्री० (हि) श्मशान।
छींक स्त्री० (हि) वेगसहित नाक तथा मुँह से एकाएक निकलने वाला वायु का झोंका।
छींकना क्रि० (हि) छींक निकलना।
छींका पु० दे० 'छीका'।
छींट स्त्री० (हि) १-जलकण। सीकर। २-रंगीन बेल बूटे का छपा हुआ कपड़ा।
छींटना क्रि० (हि) छितराना।
छींटा पुं० (हि) १-जलकण। सीकर। २-हलकी वर्षा बौछार। ३-बून्द जैसा चिह्न या दाग। ४-व्यंगपूर्ण उक्ति। ५-चंडू की एक मात्रा।
छींबी स्त्री० (हि) १-मटर की फली। २-गाय का स्तन।
छी अव्य० (अ) घृणासूचक शब्द।
छीछना क्रि० (हि) छूना।
छीका पु० (हि) १-वस्तुओं को रखने का वह गोल जाल जो रस्सियों का बना होता है और छत से लटका रहता है। २-जालीदार खिड़की या झरोखा। ३-बैलों के मुँह पर बाँधा जाने वाला जाल। ४-रस्सियों का बना झूलने वाला पुल। झूला।
छीछड़ा पुं० (हि) मांस का बेकाम लच्छा।
छीछालेदर स्त्री० (हि) दुर्दशा।
छीज, छीजन स्त्री० (हि) कमी। घाटा।
छीजना क्रि० (हि) कम होना।
छीड़ स्त्री० (हि) आदमियों की कमी। भीड़ का उलटा
छीनना क्रि० (हि) १-कट्ट मारना। २-कूटना।
छीनि स्त्री० (हि) १-हानि। २-बुराई।
छीनोछान वि० (हि) तितर-बितर।
छीदा वि० (हि) १-जिसकी बुनावट घनी न हो। २-जो घना न हो।
छीन वि० (हि) क्षीण।
छीनता स्त्री० (हि) क्षीणता।
छीनना क्रि० (हि) १-काटना। २-बलपूर्वक लेना। ३-रेहना।
छीना-खसोटी, छीना-छीनी, छीना-झपटी स्त्री० (हि) किसी वस्तु को छीनकर लेने की क्रिया या भाव।
छीप वि० (हि) तीव्र। स्त्री० १-सीप। २-छाप।
छीपना क्रि० (हि) मछली को फँसाकर जल के बाहर फेंकना।
छीपा पु० (हि) [स्त्री० छीपी] १-थाली। २-कपड़े पर बेल-बूटा छापने वाला।
छीपी पु० (हि) [स्त्री० छीपिन] छींट छापने वाला।
छीर पु० (हि) १-क्षीर। २-कपड़े की लम्बाई वाले सिरे का किनारा।
छीरज पुं० (हि) दधि। दही।
छीरधि पु० (हि) क्षीर सागर।
छीरप पु० (हि) दूध पीता बच्चा।
छीरफेन पुं० (हि) दूध की मलाई।
छीरसागर पु० (हि) दूध का सागर।
छीलना क्रि० (हि) १-छिलका या छाल उतारना। २-खुरच कर अलग करना।
छीलर पुं० (हि) छिछला गड्ढा। तलैया।
छीव पु० (हि) क्षीव। उन्मत्त।
छीवना क्रि० (हि) छूना।
छुँगुनी स्त्री० (हि) कँगुली।
छुँगुली स्त्री० (हि) एक तरह की घुंघरूदार अँगूठी
छुआना क्रि० (हि) छुलाना।
छुआनू पु० (हि) घुँघरू।
छुच्छा वि० (हि) छूँछा।
छुच्छी स्त्री० (हि) पतली नली।
छुछन्द वि० (हि) मूर्ख और तुच्छ।
छुछु मछली स्त्री० (हि) मेंढक का वह प्रारम्भिक रूप जो लम्बे कीड़े अथवा मछली की तरह का होता है।
छुछहँड स्त्री० (हि) वह हाँडी जिसमें कुछ भी न हो।
छुट अव्य० (हि) अतिरिक्त। सिवाय।
छुटकाना क्रि० (हि) १-छोड़ना। २-छुड़ाना। छुटकारा देना।
छुटकारा पु० (हि) १-मुक्ति। २-निस्तार। ३-किसी कार्यभार से मुक्ति।
छुटना क्रि० (हि) छूटना।
छुटपन पु० (हि) १-छोटाई। लघुता। २-बचपन
छुटभैया पु० (हि) जो छोटे आदमियों में गिना जाता हो, बड़ों में नहीं।
छुट्टा वि० (हि) [स्त्री० छुट्टी] १-जो बँधा न हो। खुला और अलग। २-एकाकी। ३-स्वतन्त्र। ४-फुटकर
छुट्टी स्त्री० (हि) १-मुक्ति। २-अवकाश। ३-तातील ४-चलने या जाने की अनुमति।
छुड़वाना क्रि० (हि) छोड़ने के निमित्त प्रेरित या उद्युत करना।
छुड़ाई स्त्री० (हि) १-छोड़ने की क्रिया। २-छोड़ने के बदले में दिया जाने वाला धन।
छुड़ाना क्रि० (हि) १-बंधन या उलझन से मुक्त कराना। २-दूसरे के अधिकार से अलग करना। बरखास्त करना। ४-किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर करना।
छुड़ैया वि० (हि) छुड़ाने वाला। स्त्री० दे० 'छुड़ाई'
छुड़ौती स्त्री० (हि) १-बंधन से मुक्त कराने के निमित्त दिया जाने वाला धन। २-देनदार या आसामी से पावना छोड़ देने की क्रिया। ३-ऋण शेष जो छोड़ दिया जाय। छूट।
छुत स्त्री० (हि) क्षुधा। भूख।

छुतहा वि० (हि) १-संक्रामक। २-छूत वाला। ३-अछूत।
छुतिहा वि० (हि) १-छूतवाला। २-अस्पृश्य।
छुद्र वि० दे० 'क्षुद्र'।
छुद्रघंटिका, छुद्र-घंट, छुद्रावलि संज्ञा = क्षुद्रघंटिका।
छुधा स्त्री० (हि) क्षुधा। भूख।
छुधित वि० (हि) भूखा।
छुप पु० (हि) क्षुप।
छुपना क्रि० (हि) छिपना।
छुपाना क्रि० (हि) छिपाना।
छुभित वि० (हि) क्षुब्ध।
छुभिरना क्रि० (हि) क्षुब्ध होना।
छुरधार स्त्री० (हि) छुरे की धार।
छुरहँड़ी स्त्री० (हि) किसबत।
छुरा पुं० (हि) [स्त्री० छुरी] १-बड़ी छुरी। २-उस्तरा
छुरित पुं० (सं) लास्य नृत्य का एक भेद जिसमें नृत्य करने वाले नायक-नायिका दोनों रस पूर्ण हो परस्पर प्रेम-प्रदर्शनपूर्वक चुम्बनादि करते हुए नृत्य करते हैं। २-बिजली की चमक।
छुरी स्त्री० (हि) १-लोहे का तेज धार वाला हथियार २-चाकू।
छुरीधार स्त्री०(हि) छुरे के आकार का एक हाथी दाँत का औजार।
छुलछुलाना क्रि० (हि) थोड़ा-थोड़ा करके मूतना।
छुलाना क्रि० (हि) स्पर्श कराना।
छुवना क्रि० (हि) छूना।
छुवाना क्रि० (हि) छुलाना।
छुहना क्रि० (हि) १-छू जाना। २-छुआ जाना।
छुहारा पुं० (हि) १-एक तरह का खजूर। २-खजूर की तरह का एक पेड़ और उसका फल। खुरमा। ३-पिण्डखजूर।
छुही स्त्री० (हि) खड़िया मिट्टी।
छूछा वि० दे० 'छूछा'।
छू पु० (हि) मन्त्र पढ़कर फूंक मारने का शब्द।
छूआछूत स्त्री० (हि) अछूत या अस्पृश्य को न छूने अथवा उससे बचने का विचार या प्रथा।
छूईमूई स्त्री० (हि) लजालू नामक पौधा।
छूचक पुं० (हि) अशौच। सूतक।
छूछ वि० (हि) मूर्ख।
छूछा वि० (हि) [स्त्री० छूछी] १-खाली। २-निःसार ३-निर्धन।
छूट स्त्री० (हि) १-छूटने की क्रिया या भाव। छुटकारा। २-अवकाश। ३-अपवाद। ४-बाकी रुपया छोड़ देना। ५-किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव। ६-स्वतन्त्रता। ७-तलाक। ८-गाली-गलौज
छूटना क्रि० (हि) १-अलग होना। २-मुक्त होना। ३-रवाना होना। ४-साफ होना। ५-मूल से रह जाना। ६-बिछुड़ना। ७-किसी नियम या परम्परा का भङ्ग होना। ८-वेग के साथ निकलना।
छूटा स्त्री० (हि) एक तरह की बरछी।
छूत स्त्री० (हि) १-छूने का भाव। संसर्ग। २-रोग संचारक वस्तु का स्पर्श। ३-अपवित्र वस्तु को छूने का दोष। ४-अशुद्धता।
छूतछात स्त्री० (हि) छूआछूत का विचार या भाव।
छूना क्रि० (हि) १-स्पर्श होना या करना। २-हाथ लगाना। ३-पोतना। ४-दौड़ की बाजी में किसी को पकड़ना।
छेंकन स्त्री० (हि) १-छेंकने की क्रिया या भाव। २-मकान आदि की रूपरेखा निश्चित करना।
छेंकना क्रि० (हि) १-स्थान घेरना। २-जाने से रोकना। ३-लकीरों से घेरना। २-काटना। मिटाना।
छेक पुं० (सं) छेद।
छेकानुप्रास पुं० (स) शब्दालंकार के अन्तर्गत एक अनुप्रास।
छेकापह्नुति स्त्री० (सं) अपह्नुति अलंकार का एक भेद
छेकोक्ति,स्त्री० (हि) १-वह उक्ति जिससे दूसरे अर्थ की भी ध्वनि निकलती हो। २-साहित्य में एक अलंकार।
छेड़ स्त्री० (हि) १-छेड़ने की क्रिया या भाव। २-किसी को चिढ़ाने वाली बात। चुटकी। ३-रगड़ा। झगड़ा। ४-कार्यारम्भ।
छेड़खानी, छेड़छाड़ स्त्री० (हि) किसी को तंग करने के लिए छेड़ने की क्रिया या भाव।
छेड़ना क्रि० (हि) १-चिढ़ाना। २-तंग करना। ३-चुटकी लेना। ४-कोई काम या बात आरम्भ करना ५-बजाने के लिए बाजे में हाथ लगाना।
छेड़वाना क्रि० (हि) छेड़ने का काम दूसरे से कराना
छेड़ी स्त्री० (बुंदेली) छोटी और तंग गली।
छेति स्त्री० (हि) बाधा।
छेत्र पुं० दे० 'क्षेत्र'।
छेद पुं० (सं) १-छेदन। काटना। २-विनाश। पुं० (हि) १-छिद्र। सुराख। २-बिल। विवर। ३-दोष।
छेदक वि० (सं) १-छेदने वाला। २-काट कर अलग करने वाला।
छेदन पुं० (सं) १-छेदने या काटने का काम। २-ध्वंस। नाश। ३-काटने या छेदने का अस्त्र।
छेदनहार वि० (हि) १-छेदने वाला। २-नष्ट करने या मिटाने वाला।
छेदना क्रि० (हि) १-छेद करना। २-घाव करना। ३-काटना।
छेदा पुं० (हि) घुन नामक कीड़ा।
छेद्य वि० (सं) छेदे जाने योग्य।
छेना पु० (हि) फटे हुए दूध का खोया। पनीर। क्रि०

ज

ज हिंदी वर्णमाला का आठवाँ व्यंजन जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है। इसका उच्चारण स्थान तालु है।

जंग स्त्री० (फा) युद्ध। लड़ाई। पुं० लोहे का मुरचा

जंगम वि० (हि) १-चलने फिरने वाला। चर। २-जो एक जगह से दूसरी जगह लाया या लेजाया जा सके। चल। (मूवेबुल)।

जंगल पुं० (सं) वन। अरण्य।

जंगल-वाड़ी स्त्री० (हि) एक तरह की मलमल।

जंगला पुं० (हि) १-वह खिड़की या दरवाजा जिसमें लोहे के छड़ लगे हों। २-छड़ लगी हुई चौखट।

जंगली वि० (हि) १-जङ्गल में होने या मिलने वाला २-बिना लगाये आप से आप उगने वाला (पौधा) ३-जङ्गल में रहने वाला। ४-घरेलू या पालतू न हो।

जंगा पुं० (हि) घुङ्गरू का दाना।

जंगार पुं० (फा) तूतिया।

जंगारी वि० (फा) नीले रङ्ग का। नीला।

जंगाल पुं० दे० 'जंगार'।

जंगी वि० (फा) १-लड़ाई से सम्बन्ध रखने वाला २-सैनिक। सेना सम्बन्धी। ३-बहुत बड़ा।

जंगी-कानून पुं० दे० 'फौजी-कानून'।

जंगी-जहाज पुं० (हि) युद्धपोत।

जंगी-लाट पुं० (हि) प्रधान सेनापति।

जंघा स्त्री० (सं) जाँघ। रान।

जंचना क्रि० (हि) १-जाँचा जाना। २-जाँच में पूरा उतरना। ३-जाँच पड़ना।

जंजर, जंजल वि० (हि) जर्जर। पुराना और कमजोर

जंजार, जंजाल पुं० (हि) १-झंझट। बखेड़ा। २-उलझन। ३-पानी का भँवर। ४-एक तरह की तोप ५-मछलियाँ पकड़ने का बहुत बड़ा जाल।

जंजीर स्त्री० (फा) १-कड़ियों की लड़ी। साँकल। २-बेड़ी। ३-किवाड़ की कुण्डी। सिकड़ी।

जंजीरा पुं० (हि) जंजीर के समान सिलाई। वि० (हि) जिसमें जंजीर या सिकड़ी लगी हो।

जंजीरी स्त्री० (हि) १-गले में पहनने की सिकड़ी। २-एक गहना जो हथेली के पिछले भाग में पहना जाता है। नेवर।

जंड पुं० (देश) एक जंगली वृक्ष, जिसकी फलियों का अचार बनता है।

जंतर पुं० (हि) १-यन्त्र। कल। औजार। २-तांत्रिक यन्त्र। ताबीज। कठुला। ३-बीणा।

जंतर-मंतर पुं० (हि) १-जादू। टोना। २-वेधश

जंतरी स्त्री० (हि) १-छोटा जंता जिसमें सोनार बढ़ाते हैं। २-पत्रा। पंचांग। ३-जादूगर। ४-ब बजाने वाला।

जंतसर पुं० (हि) चक्की पीसते समय गाया वाला गीत।

जंतसार स्त्री० (हि) जाँता या चक्की गाड़ने स्थान।

जंता पुं० (हि) [स्त्री० जंती, जंतरी] १-यन्त्र। सोनार और तार कशों का एक औजार। यन्त्रणा देने वाला।

जंताना क्रि० (हि) जांते या चक्की में पिस जान

जंती स्त्री० (हि) १-छोटा जंता। २-जननी। म

जंतु पुं० (सं) १-जन्म लेने वाला। २-जीव। ३-पशु। जानवर।

जंतुघ्न, जंतु-घातक वि० (हि) कीड़ों का नाश वाला।

जंतु-विज्ञान पुं० (सं) जन्तुओं या प्राणियों उत्पत्ति, विकास, स्वरूप और विभागों आदि विवेचन करने वाला विज्ञान या शास्त्र।

जंतैत पुं० (हि) जाँता या चक्की पीसने

जंत्र पुं० (हि) यन्त्र।

जंत्रना स्त्री० (हि) यन्त्रणा। क्रि० (हि) ता

जंत्र-मंत्र पुं० दे० 'जंतर-मंतर'।

जंत्रित वि० (हि) १-यन्त्रित। २-बन्द। अधीन।

जंत्री स्त्री० दे० 'जंतरी'। पुं० (हि) बा वाला।

जंद पुं० (फा) १-पारसियों का धर्मग्रंथ भाषा जिसमें यह धर्मग्रन्थ है।

जंदरा पुं० (हि) १-यन्त्र। कल। २-जाँता

जंपना क्रि० (हि) बोलना।

जंपर पुं० (अं) एक तरह का जनाना कुरत

जंबीर, जंबीर-नीबू पुं० (हि) एक प्रकार नीबू।

जंबु पुं० (सं) जामुन नामक फल।

जंबुक पुं० (सं) १-बड़ा जामुन। २-गीद

जंबुखंड, जंबुद्वीप, जंबुध्वज पुं० (सं) सात द्वीपों में से एक।

जंबुर पुं० (दे) 'जबूरा'।

जंबू पुं० (सं) जामुन फल।

जंबूर पुं० दे० 'जम्बूर'।

जंबूरची पुं० (फा) तोपची।

जंबूरा पुं० (फा) १-वह गाड़ी जिसपर जाती है। २-एक प्रकार की छोटी तोप कली। ४-एक प्रकार की बड़ी चिमटी।

जंबूरी स्त्री० (फा) एक तरह का जालीदार

कीला।
जगमगाना क्रि० (हि) चमकना। दमकना।
जगमगाहट स्त्री० (हि) चमक।
जगद्माता स्त्री० (सं) १-संसार की माता। २-दुर्गा। ३-लक्ष्मी। ४-सरस्वती।
जग-मोहन पुं० (सं) देव मन्दिरों में गर्भगृह के सामने का स्थान।
जगमोहिनी स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-महामाया।
जगरनाथ पुं० (हि) जगन्नाथ।
जगरमगर वि० (हि) जगमग।
जगरा स्त्री० (हि) खजूर की खाँड।
जगवाना क्रि० (हि) जगवाने का काम दूसरे से कराना।
जगत्तूर पुं० (हि) राजा।
जगह पुं० (हि) १-स्थान। २-अवसर। ३-पद। ओहदा।
जगहर स्त्री० (हि) जागरण।
जगात पुं० (हि) जकात।
जगाती पुं० (हि) कर उगाहने वाला अधिकारी। वि० जिस पर जकात या कर लगता या लग सकता हो।
जगाना क्रि० (हि) १-सोते से उठाना। २-सचेत करना। ३-आग को तेज करना। ४-यन्त्र-मन्त्र का साधन करना।
जगार स्त्री० (हि) जागरण।
जगोत स्त्री० (हि) जगत्।
जगीला वि० (हि) उनींदा।
जगौंहा वि० (हि) जगाने की प्रवृत्ति रखने वाला। वि० (सं) जगमगाता हुआ।
जग्य पुं० (हि) यज्ञ।
जघन पुं० (सं) १-पेड़ू। २-नितम्ब। चूतड़।
जघन-चपला स्त्री० (सं) १-कामुक स्त्री। २-कुलटा। ३-आर्या छन्द के सोलह भेदों में से एक।
जघन्य वि० (सं) १-बहुत बुरा या निन्दनीय। [illegible]। २-अन्तिम। चरम। ३-क्षुद्र। नीच।
जचना क्रि० (हि) दे० 'जँचना'।
जच्चा स्त्री० (फा) प्रसूता स्त्री।
जच्चाखाना पुं० (फा) प्रसवगृह। सौरी।
जच्छ पुं० (हि) यक्ष।
जज पुं० (अं) १-निर्णायक। २-न्यायाधीश।
जजन पुं० (हि) यजन।
जजमान पुं० दे० 'यजमान'।
जजाति पुं० दे० 'ययाति'।
जजिया पुं० (अ) १-एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य के समय में दूसरे धर्म वालों पर लगता था। २-दण्ड।
जजी स्त्री० (हि) १-जज की कचहरी। २-जज का काम या पद।
जजीरा पुं० (फा) टापू। द्वीप।
जज्ञ पुं० (हि) यज्ञ।
जज्ञ-उपवीत पुं० (हि) यज्ञोपवीत।
जज्ञागिनी स्त्री० (हि) यज्ञ की अग्नि जो शुभ स[illegible] जाती है।
जज्ञेय पुं० (हि) यज्ञेश।
जटना क्रि० (हि) १-ठगना। २-जड़ना।
जटल स्त्री० (हि) गप्प।
जटा स्त्री० (सं) १-लट के रूप में गुथे हुए सि[illegible] बड़े बाल। २-वृक्ष के पतले सूत। झकरा। ३-पटसन।
जटाजूट पुं० (सं) १-जटा का समूह। २-शि[illegible] जटा।
जटाधर पुं० (सं) शिव।
जटाधारी पुं० (सं) शिव। वि० जिसके जटा हो[illegible]
जटाना क्रि०(हि) ठगा जाना।
जटामासी स्त्री० (हि) एक वनस्पति की सुगंधित[illegible]
जटायु पुं० (सं) १-रामायण का एक प्रसिद्ध गि[illegible] २-गुग्गुल।
जटाव पुं० (हि) १-ठगे जाने की क्रिया या भा[illegible] २-कुन्हौटी।
जटित वि० (सं) जड़ा हुआ।
जटिल वि० (हि) १-जटाधारी। २-दुरूह। दु[illegible] ३-क्रूर। हिंसक।
जटिलता स्त्री० (सं) १-पेचीदगी। उलझन। २-[illegible]नाई।
जट्टा पुं० (हि) जाट। (जाति)।
जठर पुं० (सं) १-पेट का भीतरी भाग। पेट। २[illegible] देश का नाम। ३-उदर का एक रोग। वि० १[illegible] २-कठिन।
जठर-अगिनी स्त्री० दे० 'जठराग्नि'।
जठराग्नि स्त्री० (सं) पेट की वह अग्नि या [illegible] जिससे अन्न पचता है।
जठरानल पुं० (सं) जठराग्नि।
जठेरा वि० (हि) [स्त्री० जठेरी] जेठा। बड़ा।
जड़ वि० (सं) १-चेतना रहित। २-मूर्ख। ३-[illegible] से ठिठुरा या अकड़ा हुआ। ३-निश्चेष्ट। पुं० १-वृक्ष का वह भाग जो भूमि में रहता है। [illegible] नींव। बुनियाद। ३-कारण। ४-आधार। आ[illegible]
जड़कना क्रि० (हि) स्तब्ध हो जाना।
जड़ता स्त्री० (सं) १-अचेतनता। २-मूर्खता। ३[illegible] होने का भाव। ४-एक संचारी भाव।
जड़ताई स्त्री० दे० 'जड़ता'।
जड़त्व पुं० (सं) दे० 'जड़ता'।
जड़ना क्रि० (हि) १-एक वस्तु को दूसरी में बैठ[illegible] २-मारना। ३-ठोंकना। ४-चुगली खाना।

जड़-भरत पु० (सं) अंगिरस गोत्र के एक ब्राह्मण जो जड़वत रहते थे।
जड़वाना क्रि० (हि) १-जड़ने का काम कराना। २-कील आदि गड़वाना।
जड़हन पु० (देश) शालिधान।
जड़ाई स्त्री० (हि) १-जड़ने का काम। २-जड़ने की मजदूरी।
जड़ाऊ वि० (हि) जिस पर नगीने या रत्न जड़े हों।
जड़ान स्त्री० (हि) जड़ने की क्रिया या भाव।
जड़ाना क्रि० (हि) जड़वाना।
जड़ित वि० (हि) १-जड़ा हुआ। जड़ाऊ।
जड़िमा स्त्री० (सं) जड़ता।
जड़िया पुं० (हि) नग जड़ने का काम करने वाला।
जड़ी स्त्री० (हि) वनौषधि। बूटी।
जड़ीकृत परिसंपद् स्त्री० (सं) वह परिसंपद् जिसके बेचने या हस्तांतरण की मनाही करदी गई हो। (फ्रोजन एसेट्स)।
जड़ीबूटी स्त्री० (हि) वनौषधि।
जड़ीभूत वि० (सं) निस्पंद। सुन्न।
जड़ीला वि० (हि) जड़वाला।
जड़ैया पु० (हि) जड़िया। स्त्री० (हि) जाड़ा देकर आने वाला ज्वर। जूड़ी।
जत वि० (हि) जितना।
जतन पुं० (हि) यत्न।
जतनी वि० (हि) १-यत्न या प्रयत्न करने वाला। २-चतुर।
जतलाना क्रि० (हि) जताना।
जताना क्रि० (हि) १-बताना। अवगत कराना। २-आगाह करना।
जति पुं० (हि) यति।
जतु पुं० (सं) १-गोंद। २-लाख। ३-शिलाजीत।
जतुक पु० (सं) चमगादड़।
जतुगृह पु० (सं) १-झोंपड़ी। २-लाक्षागृह, जिसे पांडवों को मार डालने के लिए बनवाया था।
जतेक क्रि० वि० (हि) जितना।
जत पुं० (हि) १-जगत। २-यति।
जथा पुं० (हि) झुंड। यूथ। स्त्री० पूँजी। धन।
जथाबन्दी स्त्री० (हि) दलबन्दी।
जथेदार पुं० (हि) दलनायक।
जथारथ वि० (हि) यथार्थ।
जदपि क्रि० वि० (हि) यद्यपि।
जदवार स्त्री० (फा) निर्विषी (औषध)।
जदु पुं० (हि) यदु।
जदुकुल पुं० (हि) यदुकुल।
जदुनाथ, जदुपति, जदुपाल पुं० (हि) श्रीकृष्ण।
जदुपुर पुं० (हि) यदुपुर। मथुरा।

जदुबंसी पु० (हि) यदुवंशी।
जदुराज पु० (हि) श्रीकृष्ण।
जदुराम पु० (हि) बलराम।
जदुराय, जदुवर, जदुवीर पु० (हि) श्रीकृष्ण।
जद्द वि० (हि) १-अधिक। २-प्रबल।
जद्यपि क्रि० वि० (हि) यद्यपि।
जद्द-बद्द स्त्री० (हि) अनुचित बात।
जद्दी वि० (अ) पुरखों के समय का। वि० बहुत बड़ा अथवा भारी।
जन पु० (सं) १-लोक। लोग। २-प्रजा। ३-अनुयायी ४-समूह। ५-सात लोकों में से पाँचवाँ लोक।
जन-अभिशासक पु० (सं) सरकार की ओर से चलाया गया अभियोग। (पब्लिक-प्रोसीक्यूटर)।
जन-आंदोलन पुं० (सं) किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए जनता या सर्वसाधारण की ओर से चलाया गया आन्दोलन। (मास-मूवमेंट)।
जनक पुं० (सं) १-जन्मदाता। २-पिता। ३-सीताजी के पिता का नाम।
जनकजा, जनकनन्दनी स्त्री० (सं) सीता।
जन-कल्याण केंद्र पु० (सं) जनता की उन्नति और भलाई के लिए चलाया जाने वाला केन्द्र। (वैल-फेयर-सेन्टर)।
जनकात्मजा स्त्री० (सं) सीताजी।
जनकौर पु० (हि) १-जनकपुर। २-राजा जनक के परिवार के लोग।
जनखा वि० (फा) १-हीजड़ा। २-स्त्रियों के समान हाव-भाव करने वाला।
जनगणना स्त्री० (सं) किसी स्थान या देश के निवासियों की होने वाली गणना या गिनती। (सेंसस)
जन-जागरण पुं० (हि) सर्वसाधारण में अपने हिता-हित और अधिकार का ज्ञान होना।
जन-जाति स्त्री० (सं) जंगलों और पर्वतीय स्थानों आदि में रहने वाले वह लोग जो शिक्षा, सभ्यता आदि में निकटवर्ती लोगों मे पिछड़े हुए हों और जो मुखियों के आदेशों के अनुसार चलने वाले हों। (ट्राइब)।
जन-जाति-क्षेत्र पु० (सं) वह स्थान जहाँ जन-जातीय लोग रहते हैं। (ट्राइबल-एरिया)।
जन-जाति-परिषद् स्त्री० (सं) जनजाति के चुने हुए अथवा नियुक्त किये हुए सदस्यों की सभा या परिषद्। (ट्राइबल-काउँसिल)।
जनतंत्र पु० (सं) वह शासन प्रणाली जिसमें प्रजा या जनता ही समय-समय पर अपने प्रतिनिधि, और प्रधान शासक चुनती है। (डेमोक्रेसी)।
जनतंत्रवाद पुं० (सं) जनतन्त्र या प्रजातन्त्री सिद्धान्त प्रजातन्त्रवाद। (डेमोक्रेटिज्म)।
जनतंत्रवादी वि० (सं) १-जनतन्त्र

सम्बन्धी। २-जनतन्त्र सिद्धान्त के अनुसार। ३-जनतन्त्र का पक्षपाती। (डेमोक्रेट)।
जनतंत्रात्मक वि० दे० 'जनतंत्रवादी'।
जनतंत्री पुं० (सं) वह जो जनतन्त्री सिद्धान्त का पोषक हो। वि० (सं) दे० 'जनतंत्रवादी'।
जनतंत्रीकरण पुं० (सं) १-जनतन्त्री राज्य होने का भाव। २-जनतन्त्री सिद्धान्तों के अनुसार राज्य।
जनतांत्रिक वि० (सं) जनतन्त्रवादी।
जनता स्त्री० (सं) १-जन का भाव। २-जन-समूह। ३-सर्वसाधारण। किसी देश या स्थान के सब निवासी। (पब्लिक)।
जनता-जनार्दन पुं० (सं) जनता रूपी जनार्दन या भगवान।
जनन पुं० (सं) १-उत्पत्ति। २-जन्म। ३-आविर्भाव ४-वंश। कुल। ५-पिता।
जनन-गति स्त्री० (सं) आबादी के प्रति सहस्र व्यक्तियों के पीछे होने वाले बच्चों के जन्म की गति। (बर्थ-रेट)।
जनना क्रि० (हि) १-जन्म देना। उत्पन्न करना। २-ब्याना।
जननाशौच पुं० (सं) जन्म होने पर अशुचि।
जननि स्त्री० (हि) जननी।
जन-निर्देश पुं० (सं) संसद् में पुरस्थापित किसी महत्व के विवादग्रस्त विषय को सर्वसाधारण के सम्मुख मतदान द्वारा निर्णय करने के निमित्त रखना। (रिफरेंडम)।
जननेंद्रिय स्त्री० (सं) १-भग। योनि। २-शिश्न।
जनपद पुं० (सं) बस्ती। आबादी।
जनपदी वि० (हि) जनपद सम्बन्धी। जनपद का।
जन-प्रवाद पुं० (सं) अफवाह।
जनप्रिय वि० (सं) लोकप्रिय।
जनबल स्त्री० (सं) सेना के रूप में प्राप्य व्यक्ति। जो किसी राष्ट्र का बल सूचित करते हैं। (मैन पावर)।
जनम पुं० (हि) १-जन्म। २-सारा जीवन काल। जिंदगी।
जनम-घुट्टी, जनमघूँटी स्त्री० (हि) जन्म के समय से लेकर दो वर्ष तक के बच्चे को पिलाई जाने वाली औषध।
जनमत पुं० (सं) जनसाधारण की राय। लोकमत।
जनमधरती स्त्री० (हि) जन्मभूमि।
जनमना क्रि० (हि) जन्म लेना।
जनमनोभाव पुं० (सं) सर्वसाधारण के मन में उत्पन्न होने वाला भाव या प्रकृति (मॉस मेण्टेलेटी)।
जनमसंघाती पुं० (हि) १-जिसका साथ जन्म से हो २-वह जिसका साथ जन्म भर रहे।
जनमाना क्रि० (हि) प्रसव कराना।
जनयात्रा स्त्री० (सं) जलूस।
जनयिता पुं० (हि) [स्त्री० जनयित्री] पिता।
जनयित्री स्त्री० (सं) माता।
जन-रंजन वि० (सं) सर्वसाधारण को सुख या आनन्द देने वाला।
जन-रक्षा-अधिनियम पुं० (सं) वह अधिनियम जो सर्वसाधारण की सुरक्षा की दृष्टि से बनाया गया हो (पब्लिकसेफ्टी-एक्ट)।
जनरव पुं० (सं) १-अफवाह। २-बदनामी। ३-कोलाहल।
जनलोक पुं० (सं) सात लोकों में से एक लोक (पुराण)
जनवाई स्त्री० (हि) जनाई।
जनवाद पुं० (सं) वह वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार जनता अपने लिए अपना राज्य अपने मत या वोटों से बनाती है। (डेमोक्रेसी)।
जनवादिक वि० (सं) जनवाद सम्बन्धी। जनवाद का डेमोक्रेटिक।
जनवादी पुं० (सं) जनवाद सिद्धांत का पक्षपाती।
जनवाना क्रि० (हि) १-प्रसव कराना। २-किसी दूसरे के द्वारा सूचित करवाना।
जनवास पुं० (हि) १-सर्वसाधारण के ठहरने का स्थान २-बरातियों के ठहरने का स्थान।
जनवासा पुं० (हि) बरातियों के ठहरने का स्थान।
जन-वास्तु-विभाग पुं० (सं) वह राजकीय विभाग जिसके अधीन सार्वजनिक निर्माण कार्य होता है। (पब्लिक-वर्कस-डिपार्टमेंट)।
जनश्रुत वि० (सं) विख्यात। प्रसिद्ध।
जनश्रुति स्त्री० (सं) अफवाह। किंवदंती।
जन-संकट पुं० (सं) किसी राष्ट्र या राज्य पर महामारी, अकाल, बाढ आदि का संकट जो सार्वजनिक होता है।
जनसंख्या स्त्री० (सं) किसी नगर या देश के लोगों की संख्या या गिनती। आबादी। (पॉपुलेशन)।
जनसंज्ञप्ति स्त्री० (सं) राज पत्र द्वारा या राजकीय परिपत्र द्वारा सर्वसाधारण को सूचित करने का भाव (पब्लिक नोटीफिकेशन)।
जनसंपर्काधिकारी पुं० (सं) सरकार का जनता से सम्बन्ध बनाये रखने वाला अधिकारी। (पब्लिक-रिलेशन आफीसर)।
जन-संभरण-विभाग पुं० (हि) सरकार या राज्य की ओर से सचालित वह विभाग जिसके द्वारा जनता के दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं के मूल्यों का निश्चय और वितरण का उचित प्रबन्ध किया जाता है। (डिपार्टमेंट-आफ-सिविल सप्लाइज)।
जनसेवक पुं० (सं) १-सार्वजनिक कार्यकर्ता। २-राजकर्मचारी। सरकारी नौकर।
जन-सेवा स्त्री० (सं) १-ऐसा काम जो सर्वसाधारण के हित के लिए हो। २-सरकारी नौकरी।

जन-सेवा-आयोग, जन-सेवा-समितक पु० (सं) लोक-सेवा आयोग। (पब्लिक सर्विस कमीशन)।
जन-स्थान पु० (सं) १-मनुष्यों का निवासस्थान। २-दण्डकारण्य का एक पुराना प्रदेश।
जन-स्वास्थ्य सञ्चालक पु० (सं) स्वास्थ्य विभाग का वह अधिकारी जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए उचित निर्देश आदि देता रहता है। (डायरेक्टर आफ-पब्लिक-हैल्थ)।
जनहरण पुं० (सं) एक दण्डक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ३० लघु और एक गुरु होता है।
जन-हितैषी राज्य पु० (सं) ऐसा राज्य जहाँ जनता के स्वास्थ्य, शिक्षा, सुख-सुविधा आदि को विशेष व्यवस्था हो तथा जीविका दिलाने एवं असमर्थता-वृत्ति आदि का आयोजन हो। (वेलफेयर-स्टेट)।
जनांतिक पुं० (सं) दो व्यक्तियों में परस्पर वह सांके-तिक बातचीत जिसे दूसरे उपस्थित लोग न समझ सकें।
जना पुं० (हि) [स्त्री० जनी] मनुष्य। आदमी। वि० उत्पन्न किया हुआ। पुं० जन्म। उत्पत्ति।
जनाई स्त्री० (हि) १-बच्चा जनाने वाली स्त्री।
जनाउ पुं० (हि) दे० 'जनाव'।
जनाचार पुं० (हि) देश या समाज की प्रचलित रीति लोकाचार।
जनाजा पुं०(फा) १-मृतक शरीर। २-अरथी।
जनानखाना पुं० (फा) घर का वह भाग जिसमें स्त्रियाँ रहती हैं। अन्तःपुर।
जनाना वि० (फा) [स्त्री० जनानी] १-स्त्रियों का। स्त्री सम्बन्धी। २-स्त्रियों का सा। क्रि० (हि) १-सन्तान प्रसव कराना। २-जताना। पुं० (फा) १-हीजड़ा। २-जनानखाना। ३-पत्नी।
जनाब पुं० (अ) महाशय। महोदय।
जनार्दन पुं० (सं) विष्णु।
जनाव पु०(हि) जानकारी या परिचय प्राप्त करना।
जनाश्रनी स्त्री० दे० 'सुनाश्रनी'।
जनावर पुं० (हि) जानवर।
जनाश्रय पुं० (सं) १-धर्मशाला। २-सराय। ३-घर।
जनि स्त्री० (सं) १-नारी। स्त्री। २-माता। ३-पुत्र-वधू। ४-जन्म। ५-जन्मभूमि। ६-पत्नी। ७-एक गन्धद्रव्य। अव्य० न। नहीं। मत।
जनित वि० (सं) [स्त्री० जनिता] १-जन्मा हुआ। उत्पन्न। २-उत्पन्न किया हुआ।
जनिता स्त्री० (सं) माता।
जनित्र पुं० (सं) जन्मस्थान। जन्मभूमि।
जनित्री स्त्री० (सं) माता। माँ।
जनिय पुं० (सं) जन्मस्थान।
जनिया स्त्री० (हि) प्रियतमा। प्रिया।
जनी स्त्री० (हि) १-दासी। २-स्त्री। ३-माता। ४-कन्या। ५-एक गन्धद्रव्य। वि० उत्पन्न या पैदा की हुई।
जनु क्रि० वि० (हि) मानो (उत्प्रेक्षावाचक)।
जनुक अव्य० (हि) मानो। जानो। (उपमावाचक)।
जनून पुं० (अ) उन्माद। पागलपन।
जनूनी पुं० (अ) पागल।
जनेंद्र पुं० (सं) राजा।
जनेऊ पु० (हि) १-यज्ञोपवीत। २-यज्ञोपवीत संस्कार
जनेत स्त्री० (हि) बरात।
जनेता पुं० (हि) पिता।
जनेव पु० (हि) जनेऊ।
जनेवा पुं० (हि) १-जनेऊ के समान पड़ी हुई धारी या लकीर। २-तलवार का वह वार जो कंधे पर पड़ कर तिरछे बल पर कमर तक काट गये।
जनेश पु० (स) १-ईश्वर। २-राजा।
जनेस पु० (हि) १-ईश्वर। २-राजा।
जनैया क्रि० (हि) जानकार।
जनोपयोगी सेवा स्त्री० (सं) वह सेवा कार्य या व्यव-स्था जो मनुष्य साधारण के लिए विशेष उपयोगी या आवश्यक हो। (पब्लिक-युटिलिटी-सर्विस)।
जनौं क्रि० वि० (हि) मानो। गोया।
जन्नत स्त्री० (अ) स्वर्ग।
जन्म पु० (सं) १-उत्पत्ति। पैदाइश। २-आविर्भाव ३-जीवन। जिन्दगी। ४-आयु। जीवनकाल।
जन्म-कुण्डली स्त्री० (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार वह चक्र जिसमें किसी के जन्म समय के ग्रहों की स्थिति लिखी रहती है।
जन्मग्रहण पु० (सं) जन्म लेना। उत्पत्ति।
जन्मज वि० (सं) जन्मजात। जन्मसिद्ध।
जन्मन-रोग पु० (हि) पैतृक रोग।
जन्मजात वि० (सं) जन्म से ही प्राप्त (अधिकार आदि)।
जन्म-तिथि स्त्री० (सं) जन्म दिन।
जन्मदिन पु० (हि) जन्म का दिन। वर्षगाँठ।
जन्मना क्रि० (हि) १-जन्म लेना। २-अस्तित्व में आना।
जन्मपत्री स्त्री० (सं) स्थानिक निकायों की वह पञ्जी जिसमें किसी क्षेत्र में जन्मने वाले शिशुओं का जन्म समय, पिता का नाम, पता आदि बातें लिखी जाती हैं। (बर्थ रजिस्टर)।
जन्म-पत्री स्त्री० (सं) वह पत्र जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति, दशा तथा अन्तर्दशा आदि दिये हों।
जन्म-प्रमाणक पुं० (सं) वह प्रमाणपत्र जिसमें यह प्रमाणित हो कि अमुक व्यक्ति की जन्मतिथि यह है। (बर्थ-सार्टिफिकेट)।
जन्मभूमि स्त्री० (सं) वह स्थान अथवा देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।

सम्बन्धी। २-जनतन्त्र सिद्धान्त के अनुसार। ३-जनतन्त्र का पक्षपाती। (डेमोक्रेट)।
जनतंत्रात्मक वि० दे० 'जनतंत्रवादी'।
जनतंत्री पुं० (सं) वह जो जनतन्त्री सिद्धान्त का पोषक हो। वि० (सं) दे० 'जनतंत्रवादी'।
जनतंत्रीकरण पुं० (सं) १-जनतन्त्री राज्य होने का भाव। २-जनतन्त्री सिद्धान्तों के अनुसार राज्य।
जनतांत्रिक वि० (सं) जनतन्त्रवादी।
जनता स्त्री० (सं) १-जन का भाव। २-जन-समूह। ३-सर्वसाधारण। किसी देश या स्थान के सब निवासी। (पब्लिक)।
जनता-जनार्दन पुं० (सं) जनता रूपी जनार्दन या भगवान।
जनन पुं० (सं) १-उत्पत्ति। २-जन्म। ३-आविर्भाव ४-वंश। कुल। ५-पिता।
जनन-गति स्त्री० (सं) आबादी के प्रति सहस्र व्यक्तियों के पीछे होने वाले बच्चों के जन्म की गति। (बर्थ-रेट)।
जनना क्रि० (हि) १-जन्म देना। उत्पन्न करना। २-ब्याना।
जननाशौच पुं० (सं) जन्म होने पर अशुचि।
जननि स्त्री० (हि) जननी।
जन-निर्देश पुं० (सं) संसद् में पुरस्थापित किसी महत्व के विवादग्रस्त विषय को सर्वसाधारण के सम्मुख मतदान द्वारा निर्णय करने के निमित्त रखना। (रिफरैंडम)।
जननेंद्रिय स्त्री० (सं) १-भग। योनि। २-शिश्न।
जनपद पुं० (सं) बस्ती। आबादी।
जनपदी वि० (हि) जनपद सम्बन्धी। जनपद का।
जन-प्रवाद पुं० (सं) अफवाह।
जनप्रिय वि० (सं) लोकप्रिय।
जनबल स्त्री० (सं) सेना के रूप में प्राप्य व्यक्ति। जो किसी राष्ट्र का बल सूचित करते हैं। (मैन पावर)।
जनम पुं० (हि) १-जन्म। २-सारा जीवन काल। जिंदगी।
जनम-घुट्टी, जनमघूँटी स्त्री० (हि) जन्म के समय से लेकर दो वर्ष तक के बच्चे को पिलाई जाने वाली औषध।
जनमत पुं० (सं) जनसाधारण की राय। लोकमत।
जनमधरती स्त्री० (हि) जन्मभूमि।
जनमना क्रि० (हि) जन्म लेना।
जनमनोभाव पुं० (सं) सर्वसाधारण के मन में उत्पन्न होने वाला भाव या प्रकृति (मॉस मेण्टेलेटी)।
जनमसँघाती पुं० (हि) १-जिसका साथ जन्म से हो २-वह जिसका साथ जन्म भर रहे।
जनमाना क्रि० (हि) प्रसव कराना।
जनयात्रा स्त्री० (सं) जलूस।
जनयिता पुं० (हि) [स्त्री० जनयित्री] पिता।
जनयित्री स्त्री० (सं) माता।
जन-रंजन वि० (सं) सर्वसाधारण को सुख या आनन्द देने वाला।
जन-रक्षा-अधिनियम पुं० (सं) वह अधिनियम जो सर्वसाधारण की सुरक्षा की दृष्टि से बनाया गया हो (पब्लिकसेफ्टी-एक्ट)।
जनरव पुं० (सं) १-अफवाह। २-बदनामी। ३-कोलाहल।
जनलोक पुं० (सं) सात लोकों में से एक लोक (पुराण)
जनवाई स्त्री० (हि) जनाई।
जनवाद पुं० (सं) वह वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार जनता अपने लिए अपना राज्य अपने मत या वोटों से बनाती है। (डेमोक्रेसी)।
जनवादिक वि० (सं) जनवाद सम्बन्धी। जनवाद का डेमोक्रेटिक।
जनवादी पुं० (सं) जनवाद सिद्धांत का पक्षपाती।
जनवाना क्रि० (हि) १-प्रसव कराना। २-किसी दूसरे के द्वारा सूचित करवाना।
जनवास पुं० (हि) १-सर्वसाधारण के ठहरने का स्थान २-बरातियों के ठहरने का स्थान।
जनवासा पुं० (हि) बरातियों के ठहरने का स्थान।
जन-वास्तु-विभाग पुं० (सं) वह राजकीय विभाग जिसके अधीन सार्वजनिक निर्माण कार्य होता है। (पब्लिक-वर्कस-डिपार्टमेंट)।
जनश्रुत वि० (सं) विख्यात। प्रसिद्ध।
जनश्रुति स्त्री० (सं) अफवाह। किंवदंती।
जन-संकट पुं० (सं) किसी राष्ट्र या राज्य पर महामारी अकाल, बाढ आदि का संकट जो सार्वजनिक होता है।
जनसंख्या स्त्री० (सं) किसी नगर या देश के लोगों की संख्या या गिनती। आबादी। (पॉपुलेशन)।
जनसंज्ञाप्ति स्त्री० (सं) राज पत्र द्वारा या राजकीय परिपत्र द्वारा सर्वसाधारण को सूचित करने का भाव (पब्लिक नोटीफिकेशन)।
जनसंपर्काधिकारी पुं० (सं) सरकार का जनता से सम्बन्ध बनाये रखने वाला अधिकारी। (पब्लिक रिलेशन आफीसर)।
जन-संभरण-विभाग पुं० (हि) सरकार या राज्य की ओर से सचालित वह विभाग जिसके द्वारा जनता के दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं के मूल्यों का निश्चय और वितरण का उचित प्रबन्ध किया जाता है। (डिपार्टमेंट-आफ-सिविल सप्लाइज)।
जनसेवक पुं० (सं) १-सार्वजनिक कार्यकर्ता। २-राजकर्मचारी। सरकारी नौकर।
जन-सेवा स्त्री० (सं) १-ऐसा काम जो सर्वसाधारण के हित के लिए हो। २-सरकारी नौकरी।

जन्मसिद्ध वि० (सं) जिसकी सिद्धि जन्म से हो। जन्म से ही प्राप्त।
जन्मस्थान पुं० (सं) १-जन्मभूमि। २-स्वदेश।
जन्मांतर पुं० (सं) दूसरा जन्म।
जन्मा पु० (सं) वह जिसका जन्म हुआ हो। वि० उत्पन्न।
जन्माना क्रि० (हि) उत्पन्न करना। जन्म देना।
जन्माष्टमी स्त्री० (सं) भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म आधी रात के समय हुआ था।
जन्मेजय पुं० (सं) १-विष्णु। २-कुरु वंश के राजा परीक्षित का नाम। ३-एक नाग का नाम।
जन्मोत्सव पुं० (हि) किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव। वर्षगाँठ।
जन्य पुं०(सं) [स्त्री० जन्या] १-साधारण मनुष्य। २-अफवाह। ३-राष्ट्र। ४-पुत्र। ५-दामाद। ६-पिता। ७-जन्म। वि० १-जन सम्बन्धी। २-किसी जाति, देश या राष्ट्र से सम्बन्ध रखने वाला। ३-राष्ट्रीय। जातीय। ४-जो उत्पन्न हुआ हो। उद्भूत।
जन्या स्त्री० (सं) १-माता की सखी। २-वधू की सखी ३-वधू। बहू।
जन्हु पु० दे० 'जह्नु'।
जप पु० (सं) १-किसी मंत्र नाम या वाक्य का बार-बार किया जाने वाला उच्चारण। २-जपने वाला।
जपतप पुं० (सं) पूजापाठ।
जपन पुं० (सं) जपने का काम। जप।
जपना क्रि० (हि) १-जप करना। २-खाजाना। ले लेना
[illegible] स्त्री० (हि) १-माला। २-गोमुखी।
[illegible] स्त्री० (सं) जप करने की माला।
[illegible] (सं) जवा। अड़हुल। पु० जप करने वाला [illegible]।
[illegible] क्रि० (हि) जप कराना।
जपिया, जपी वि० (हि) जप करने वाला।
जप्त वि० दे० 'जब्त'।
जफील स्त्री० (य) १-सीटी का शब्द। २-वह जिससे सीटी बजाई जाय।
जफीलना क्रि० (हि) सीटी बजाना।
जब क्रि० वि० (हि) जिस समय। जिस वक्त।
जबड़ा पु० (हि) मुँह के ऊपर नीचे की वह हड्डियाँ जिनमें दाँत उगे होते हैं।
जबर वि० (अ) १-बलवान। बली। २-पक्का। दृढ़।
जबरई स्त्री० (हि) जबरदस्ती।
जबरजंग वि० (फा) १-बहुत बड़ा या बलवान। २-उच्च। श्रेष्ठ।
जबरदस्त वि० (फा) १-बलवान। २-दृढ़। मजबूत।
जबरदस्ती स्त्री० (फा) १-बल प्रयोग। २-अत्याचार। जुल्म। क्रि० वि० (हि) बलपूर्वक।
जबरा वि० (हि) जबरदस्त। बलवान। घोड़े की [illegible] का एक पशु।
जबह पुं० (अ) गला काटकर प्राण लेने की क्रि[illegible] हिंसा।
जबहा पुं० (हि) जीवट। साहस।
जबाँ स्त्री० दे० 'जबान'।
जबान स्त्री० (फा) १-जीभ। जिह्वा। २-बात। बो[illegible] ३-प्रतिज्ञा। ४-भाषा।
जबानदराज वि० (फा) धृष्टतापूर्वक अनुचित [illegible] करने वाला।
जबान-बंदी स्त्री० (फा) १-लिखा जाने वाला इ[illegible] २-मौन। चुप्पी। ३-चुप रहने या न बोलने [illegible] आज्ञा।
जबानी वि०(हि) १-मौखिक। २-जो कहा तो ग[illegible] पर लिखित न हो।
जब्त वि० (अ) १-राज्य द्वारा किया हुआ कब्जा। अपनाया हुआ।
जब्ती स्त्री० (अ) जब्त होने की क्रिया।
जब्र पुं० (अ) कठोर व्यवहार। ज्यादती।
जब्रन क्रि० वि० (अ) बलात्।
जभी क्रि० वि० (हि) १-ज्यों ही। २-जिस समय
जम पुं० (हि) यम।
जमई वि० (हि) जो जमा हो। नकदी।
जमक पुं० (हि) यमक।
जम-कात, जमकातर पुं०(हि) पानी का भँवर। (हि) १-यम का खाँडा। २-खाँडा।
जमकाना क्रि० (हि) चमकाना।
जमघंट पुं० (हि) यमघंट।
जमघट पुं० (हि) भीड़। जमावड़ा।
जमडाढ़ स्त्री० (हि) कटारी जैसा एक हथियार।
जमदग्नि पुं० (सं) एक प्राचीन ऋषि जो परश[illegible] के पिता थे।
जमदीया पुं० (हि) यमदीपक जो कार्तिक कृष्णा [illegible] दशी को यम के नाम पर घर के बाहर रख देते
जमदूत पुं० (हि) मृत्यु के दूत। यमदूत।
जमधर पुं० (हि) जमडाढ़ नामक कटार।
जमन पुं० दे० 'यवन'।
जमना क्रि० (हि) १-तरल पदार्थ का ठोस या [illegible] हो जाना। २-दृढ़तापूर्वक बैठना। ३-स्थिर [illegible] ४-एकत्र होना। ५-पूरा-पूरा अभ्यास होना। [illegible] कोई काम उत्तमता से होना। ७-किसी व्य[illegible] अथवा कार्य का अच्छी प्रकार चलने योग्य हो। [illegible] ८-उपजना।
जमनिका स्त्री० (हि) १-यवनिका। परदा। २-[illegible] ३-मैल।
जमनौता पुं० (हि) [illegible]

जमराज पु० (हि) यमराज।
जमवट स्त्री० (हि) कुएँ की नींव में डाली जाने वाली पहिये के तरह की लकड़ी।
जमद्वार पु० (हि) यम का द्वार या न्यायसभा।
जमा वि० (अ) १-एकत्र। इकट्ठा। २-सब मिलाकर। ३-खाते के आयपक्ष में लिखित (धन)। ४-स्त्री० १-मूलधन। पूँजी। २-रुपया-पैसा। ३-भूमिकर। जोड़।
जमाई पुं० (हि) दामाद। स्त्री० १-जमने या जमाने की क्रिया या भाव। २-जमने या जमाने की मजदूरी।
जमाखर्च पु० (फा) १-आय और व्यय।
जमाजथा स्त्री० (हि) धन-संपत्ति। नगदी और माल।
जमात स्त्री० (हि) १-मनुष्यों का समूह। २-कक्षा। श्रेणी।
जमादार पुं० (फा) सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान।
जमानत स्त्री० (अ) किसी व्यक्ति की जिम्मेदारी जो न्यायालय में कुछ रुपये जमा कराकर या कागज पर लिख कर दी जाती है। जामिनी।
जमानतदार पु० (अ) जमानत लेने वाला।
जमानतनामा पुं० (अ+फा) वह कागज जो किसी की जमानत लेते समय लिखा जाता है।
जमानती वि० (अ) जमानत सम्बन्धी। जमानत का पुं० दे० 'जामिन'।
जमाना पुं० (फा) १-समय। काल। युग। २-बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३-प्रताप या सौभाग्य का समय। ४-दुनिया। संसार।
जमाना-साज वि० (फा) अपना मतलब गाँठने के लिए दूसरों को प्रसन्न करने वाला।
जमा-बंदी स्त्री० (फा) पटवारी का एक कागज जिसमें आसामियों के नाम की रकमें लिखी रहती हैं।
जमा-मार वि० (हि) अनुचित रूप से दूसरे का धन दबा लेने वाला।
जमाल पुं० (अ) सौन्दर्य।
जमालगोटा पुं० (हि) एक पौधा जिसके बीज अत्यन्त रेचक होते हैं।
जमाव पुं० (हि) २-जमने या जमाने का भाव। २-इकट्ठा होना। भीड़। ३-समूह। समुदाय।
जमावट स्त्री० (हि) जमने की क्रिया या भाव।
जमावटी वि० दे० 'जमौआ'।
जमावड़ा पुं० (हि) बहुत से लोगों की भीड़। जमघट
जमींकंद पुं० (सं) कन्द विशेष। सूरन।
जमींदार पु० (फा) वह जो जमीन का स्वामी हो और किसानों को लगान पर जोतने-बोने लिए के खेत देता हो।
जमींदारी स्त्री० (फा) १-जमींदार की जमीन। २-जमींदार का पद। ३-जमीन का लगान वसूल करने की एक व्यवस्था, जिसके अनुसार जमीन का मालिक सरकार को जमीन का निश्चित लगान दे और दूसरों को वही जमीन खेती के लिए देकर अधिक वसूल करता था। (स्वाधीन भारत में इस प्रथा का अन्त हो गया)।
जमी स्त्री० (हि) यमी।
जमींदोज वि० (हि) १-तोड़ फोड़कर जमीन के बराबर किया हुआ। २-जमीन के भीतर का। जैसे—जमींदोज नालियाँ।
जमीन स्त्री० (फा) १-पृथ्वी। २-भूमि। धरती। ३-सम्पत्ति। ४-सतह। ५-भूमिका। आयोजन।
जमीमा पु० दे० 'क्रोड़पत्र'।
जमुआ पुं० (हि) जामुन (फल या पेड़)।
जमुआर पु० (हि) जामुन का वन।
जमुकना क्रि० (हि) सटना। पास-पास होना।
जमुना स्त्री० (हि) यमुना।
जमुहाना क्रि० (हि) जँभाना।
जमूरक पुं० (हि) एक तरह की छोटी तोप।
जमोग पु० (हि) १-स्वीकार करने या कराने की क्रिया। २-समर्थन। ३-देहाती लेन-देन की एक रीति।
जमोगना क्रि० (हि) १-आय-व्यय की जाँच करना। २-दूसरे को भार सौंपना। सहेजना। ३-तसदीक करना। ४-बात की जाँच करना।
जमौआ वि० (हि) जमाकर बनाया हुआ।
जम्हाई स्त्री० दे० 'जँभाई'।
जम्हाना क्रि० (हि) जँभाना।
जयंत वि० (सं) [स्त्री० जयंती] १-विजयी। २-बहुरूपिया।
जयंती स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-पार्वती। ३-ध्वजा। ४-किसी महापुरुष की जन्मतिथि पर होने वाला उत्सव। ५-जैंत नामक वृक्ष। ६-बैजन्ती का पौधा। ७-ज्योतिष का एक योग। ८-जई।
जय स्त्री० (स) जीत। विजय। पुं० १-विष्णु के एक द्वारपाल का नाम। २-महाभारत का पूर्व नाम।
जयजयकार पु० (स) किसी की जय मनाने का शब्द
जय-जयवती स्त्री० (हि) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।
जयजीव पुं० (हि) एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है=जय हो और जीवो।
जयति अव्य० (स) जय हो।
जयद्रथ पुं० (सं) दुर्योधन के बहनोई का नाम (महाभारत)।
जयना क्रि० (हि) जीतना।
जयपत्र पु० (सं) १-वह पत्र जो पराजित व्यक्ति अपनी पराजय के प्रमाणस्वरूप लिखकर देता है।

विजय-पत्र। २-वह पत्र जो किसी के किसी विवाद में विजय होने पर लिखा जाता है। डिगरी।
जयफर पुं० (हि) जायफल।
जयमार, जयमाल, जयमाला स्त्री० (हि) १-विजयी को पहनाई जाने वाली माला। २-कन्या द्वारा वर के गले में डाली जाने वाली माला।
जयश्री स्त्री० (सं) १-विजय। २-एक रागिनी।
जयस्तंभ पुं० (सं) विजय का स्मारक स्तम्भ।
जया स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-पार्वती। ३-हरी दूब। ४-पताका। ध्वजा। वि० (सं) जय दिलाने वाली।
जयी वि० (हि) विजयी।
जय्य वि० (सं) जिसे जीता जा सके।
जर पुं० (सं) बुढ़ापा। पुं० (हि) ज्वर। पुं० (फा) १-स्वर्ण। सोना। २-धन। दौलत।
जरई स्त्री० (हि) १-धान के बीज जिसमें अंकुर फूटे हों। २-दे० 'जई'।
जरकंबर पुं० (हि) जरी के काम का दुशाला।
जरकटी स्त्री० (देश) एक शिकारी चिड़िया।
जरकस, जरकसी वि० (फा) जिस पर सोने के तार लगे हों।
जरखरीद वि० (फा) मूल्य चुका कर खरीदा हुआ।
जर-छार वि० (हि) १-भस्मीभूत। २-नष्ट।
जरठ पुं० (सं) १-कठिन। कर्कश। २-जीर्ण। पुराना। ३-वृद्ध। बुड्ढा।
जरत् वि० (सं) [स्त्री० जरती] १-वृद्ध। २-प्राचीन।
जरतार पुं० (फा) सोने, चाँदी आदि का तार। जरी
[illegible] पुं० दे० 'जरदुश्त'।
[illegible] वि० (फा) जर्द। पीला।
[illegible] पुं० (फा) १-पान में खाने की तम्बाकू। २-[illegible] भोज्य पदार्थ जो चावलों से बनता है। ३-पीले रंग का घोड़ा।
जरदालू पुं० (फा) खुबानी नामक मेवा।
जरदी स्त्री० (फा) १-पीलापन। २-अण्डे के अन्दर का पीला गूदा।
जरदुश्त पुं० (फा) पारसी धर्मप्रवर्तक एक आचार्य।
जरदोज पुं० (फा) जरदोजी का काम करने वाला।
जरदोजी स्त्री० (फा) वह काम जो कपड़े पर सलमे-सितारे आदि से किया जाता है।
जरन स्त्री० (हि) जलन।
जरना क्रि० (हि) १-जलना। २-जड़ना।
जरनि स्त्री० दे० 'जलन'।
जरब स्त्री० (अ) १-आघात। २-गुणा। (गणित)।
जरबफ्त पुं० (फा) रेशमी वस्त्र जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे बने होते हैं।
जरबाफ पुं० (फा) जरदोज।
जरबाफी वि० (फा) जरबाफ के काम का। स्त्री० जरदोजी।
जरबीला वि० (हि) भड़कीला और सुन्दर।
जरमन पुं० (अं) १-जरमनी देश का निवासी। २-जरमनी देश की भाषा। वि० (अं) जरमनी देश की भाषा।
जरमन-सिलवर पुं० (अं) एक सफेद और चमकीली धातु जो जस्ते, ताँबे और निकल को मिलाकर बनती है।
जरमनी पुं० (अं) मध्य यूरोप का एक देश।
जरमुआ वि० (हि) [स्त्री० जरमुई] जलने वाला। ईर्षा करने वाला।
जरर पुं० (अ) १-हानि। क्षति। २-आघात। चोट।
जरल स्त्री० दे० 'जलन'।
जरवारा वि० (हि) धनी। संपन्न।
जरा स्त्री० (सं) बुढ़ापा। वि० (अ) थोड़ा। कम।
जराऊ वि० (हि) जड़ाऊ।
जराग्रस्त वि० (सं) वृद्ध।
जराना क्रि० (हि) जलाना।
जरायम पुं० जुर्म का बहुवचन।
जरायम-पेशा पुं० १-डाका डालकर व अपराध कर-करके जीवन निर्वाह करने वाला। २-इस पेशे पर जीवन निर्वाह करने वाली जाति।
जरायु पुं० (सं) १-गर्भ की वह झिल्ली जिसमें बँधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है। आँवल। उल्व। २-गर्भाशय।
जरायुज पुं० (सं) गर्भ से उत्पन्न प्राणी। पिंडज।
जराव पुं० (हि) १-जड़ाव। २-चलाव। वि० जड़ाऊ
जरासंध पुं० (सं) मगध देश का एक राजा।
जरित वि० (हि) जटित।
जरिमा स्त्री० (सं) वृद्धावस्था।
जरिया पुं०(अ)१-सम्बन्ध। लगाव। २-हेतु। कारण ३-साधन। वि० (हि) जो जला कर बनाया गया हो पुं० दे० 'जड़िया'।
जरी स्त्री० (फा) १-सुनहले तारों से बना कपड़ा। करचोबी। २-सोने का तारों आदि का काम। वि० (हि) वृद्ध। बुड्ढा।
जरीब स्त्री० (फा) १-भूमि नापने की ६० गज लम्बी जञ्जीर। २-लाठी। छड़ी।
जरीवाना, जरीमाना पुं० दे० 'जुरमाना'।
जरूर क्रि० वि० (अ) अवश्य। निःसंदेह।
जरूरत स्त्री० (अ) आवश्यकता। प्रयोजन।
जरूरी वि० (फा) १-जिसके बिना काम न चले। २-आवश्यक।
जरौट वि० (हि) जड़ाऊ।
जर्जर, जर्जरित वि० (सं) १-जीर्ण। २-टूटा फूटा। ३-वृद्ध।
जर्द वि० (फा) पीला।
जर्दा पुं० दे० 'जरदा'।

जर्दी स्त्री० (फा) पीलापन।
जर्रा पुं० (फा) १-अणु। २-बहुत छोटा खंड या टुकड़ा।
जर्राह पुं० (फा) शल्य चिकित्सक।
जलंधर पुं० (सं) १-एक पौराणिक असुर। २-एक प्राचीन ऋषि। ३-योग का एक बंध। पुं० (हि) जलोधर।
जल पुं० (सं) १-पानी। २-उशीर। खस। ३-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र। ४-(ज्योतिष) जन्मकुण्डली में चौथा स्थान।
जल-अलि पुं० (सं) १-पानी का भँवर। २-जल भौंरा।
जलकर पुं० (सं) १-जलाशयों में होने वाले पदार्थ। २-ऐसे पदार्थों पर लगने वाला कर।
जलकल स्त्री० (हि) १-पानी का नल। २-आग बुझाने का दमकला।
जलकल विभाग पुं० (सं) नगरपालिका का वह विभाग जो नगर के सब भागों में नल अथवा कल के द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करता है। (वाटर वर्क्स)।
जलकवच वि० (सं) जल में भीगे रहने अथवा उसके प्रभाव में न आने वाला (पदार्थ)। (वाटर प्रूफ)।
जलकुंभी स्त्री० (सं) जल के तल पर होने वाली एक वनस्पति।
जलकुकुही स्त्री० (हि) एक प्रकार का पौधा जो जल में होता है।
जलक्रीड़ा स्त्री० (सं) जलाशय में किये जाने वाले खेल या क्रीड़ा।
जलखई स्त्री० (हि) जलपान।
जलखावा पुं० (हि) जलपान।
जलघड़ी स्त्री० (हि) समय का ज्ञान कराने वाला एक प्राचीन यंत्र।
जलघुमर पुं० (हि) पानी का भँवर।
जलचर पुं० (सं) (स्त्री०जलचरी) जल में रहने वाले जीवजन्तु।
जलचादर पुं० (हि) प्रपात।
जलचारी पुं० दे० 'जलचर'।
जलचिकित्सा स्त्री० (सं) चिकित्सा की एक प्रणाली जिसमें जल की भाप, स्नान आदि द्वारा चिकित्सा या इलाज किया जाता है। (हाइड्रोपेथी)।
जलजंतु पुं० (सं) जलचर।
जलज वि० (सं) जल में उत्पन्न होने वाला। पुं० (सं) १-कमल। २-शङ्ख। ३-मछली। ४-सेवार। ५-जलजन्तु। ६-मोती।
जलजन पुं० (सं) एक गन्धहीन, वर्णहीन, अदृश्य गैस जिससे पानी का निर्माण होता है। उदजन। (हाइड्रोजन)।
जलजला पुं० (अ) भूकम्प।
जलजात वि० (सं) जलज। पुं० (सं) कमल।
जल-जान पुं० (हि) जलयान।
जल-जान्त पुं० (सं) समुद्र।
जलजावलि स्त्री० (सं) एक तरह की मोतियों की माला।
जलडमरूमध्य पुं० (सं) दो बड़े समुद्रों को मिलाने वाला समुद्र का पतला भाग। (स्ट्रेट)।
जलतरंग पुं० (सं) एक प्रकार का बाजा जो जल की भरी कटोरियों पर आघात करके बजाया जाता है।
जलतरोई, जलतोरी स्त्री० (हि) मछली।
जलत्रास पुं० (सं) जल से लगने वाला भय जो कुत्ते के काटने पर विष का असर होने की अवस्था में होता है।
जलथंभ पुं० (हि) १-मन्त्रों द्वारा जल को रोकने या बाँधने की क्रिया। २-दे० 'जलस्तम्भ'।
जलद वि० (सं) जल देने वाला। पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-मोथा। ३-कपूर।
जलदस्यु पुं० (सं) समुद्री डाकू। (पाइरेट)।
जलदागम पुं० (सं) १-वर्षाकाल का आगमन। २-आकाश में बादलों का घिरना।
जलधर पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-समुद्र।
जलधर-माला स्त्री० (सं) १-बादलों की पंक्ति। २-एक वर्णवृत्त।
जलधरी स्त्री० (सं) जलहरी।
जल-धारक वि० (सं) जल धारण करने वाला। पुं० (सं) बादल।
जलधि पुं० (सं) समुद्र।
जलन स्त्री० (हि) १-जलने की पीड़ा या दाह। २-ईर्ष्या के कारण होने वाला-मानसिक कष्ट।
जलना क्रि० (हि) १-दग्ध होना। २-अग्नि के कारण भाप या कोयला होना। ३-झुलसना। ४-ईर्ष्या के कारण मन में कुढ़ना।
जलनाथ पुं० (सं) १-इन्द्र। २-वरुण। ३-समुद्र।
जल-निकास-योजना स्त्री० (हि) नगर के गन्दे पानी को निकालने के लिए नालियों आदि की योजना। (ड्रेनेज-स्कीम)।
जलनिधि पुं० (सं) समुद्र।
जलनिर्गम पुं० (सं) पानी का निकास।
जलपक वि० दे० 'जल्पक'।
जलपक्षी पुं० (सं) जल के आस-पास रहने वाले पक्षी।
जलपति पुं० (सं) १-वरुण। २-समुद्र। ३-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।
जलपथ पुं० (सं) १-जल बहने का मार्ग। २-नदी। ३-नहर।
जलपना क्रि० (हि) १-लम्बी-चौड़ी बातें करना। २-बकवाद करना।
जलपान पुं० (सं) पूरे भोजन से पहले किया जा

पानी और थोड़ा भोजन। कलेवा।
जलपान-गृह पुं० (सं) वह स्थान जहाँ जलपान (मिठाई, चाय आदि) का सामान मिले या जहाँ बैठकर जलपान किया जा सके। (रेस्तराँ)।
जलपाना क्रि० (हि) किसी को बोलने या जलपने में प्रवृत्त करना।
जल-पोत पुं० (सं) पानी में चलने वाला बड़ा जहाज
जल-प्रणाली स्त्री० (सं) दो समुद्रों के मध्य में पड़ने वाला लम्बा सा जलमार्ग जो जलडमरूमध्य से अधिक चौड़ा होता है। (वाटर-चैनल)।
जलप्रपा पु० (सं) प्याऊ। सबील।
जलप्रपात पुं० (सं) १-किसी नदी आदि के स्रोत का ऊपर से नीचे गिरना। २-वह स्थान जहाँ किसी ऊँचे पहाड़ से जलस्रोत नीचे गिरता हो।
जलप्रलय पुं०(सं) संपूर्ण-सृष्टि का जलमग्न होजाना।
जलप्रवाह पुं०(सं) १-पानी का बहाव। २-कोई वस्तु नदी में डालकर बहाना।
जल-प्रस्फोट पु०(सं) वह प्रस्फोट या बम जो पनडुब्बी आदि को डुबाने के उद्देश्य से पानी में गिराया जाय। (डेप्थचार्ज)।
जलप्रांगण पुं० (सं) किसी देश की सीमा का वह भाग जिस पर उस देश का अधिकार होता है। (टेरिटोरियल वाटर्स)।
जलप्राय पुं० (सं) वह स्थान जहाँ जल का आधिक्य हो।
जलप्लावन पुं०(सं) १-पानी की बाढ़। २-दे० 'जल-प्रलय'।
जलप्लावित वि० (सं) पानी में डूबा हुआ। जलमग्न
जलबम पुं० दे० 'जल-प्रस्फोट'।
जलभौंरा पु० (हि) एक प्रकार का काला कीड़ा जो पानी पर बड़ी शीघ्रता से दौड़ता है।
जलमय वि०(सं) १-जल से परिपूर्ण। २-जल के जैसा
जलमापक पुं० (सं) द्रवों का घनत्व नापने का यंत्र। (हाइड्रोमीटर)।
जलमापन-यंत्र पुं० (सं) जल को नापने का यंत्र।
जल-मानुष पुं० (सं) [स्त्री० जल-मानुषी] एक कल्पित जल-जन्तु जिसकी नाभी के ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली के समान होता है।
जल-मार्ग पुं०(सं) नदियों आदि के रूप में बना जल-मार्ग। जलपथ। (वाटर-वेज)।
जल-यंत्र पु० (सं) १-फुहारा। २-जलघड़ी। ३-कुएँ आदि से पानी निकालने का यंत्र। (वाटर-पंप)। ४-एक विद्युत यंत्र जिसके द्वारा समुद्र में एक जहाज को दूसरे जहाज के आने का पता चल जाता है। (हाइड्रोफोन)।
जल-यंत्र-गृह, जल-यंत्र-मन्दिर पुं०(सं) १-वह मकान जिसमें या जिसके आस-पास फुहारे हो। २-वह जिसके चारों ओर पानी हो।
जल-यात्रा स्त्री० (सं) १-जलमार्ग से नाव आदि द्वारा यात्रा। २-तीर्थ जल लाने के लिए यजमान की सविधि यात्रा।
जलयान पुं० (सं) १-जल में चलने वाला यान या सवारी। २-जहाज। ३-नाव।
जलराशि पुं० (सं) समुद्र।
जलरुह पुं० (सं) कमल।
जलवाना क्रि० (हि) जलाने का काम दूसरे से कराना
जलवायु स्त्री० (सं) किसी स्थान की वह प्राकृतिक स्थिति जिसका प्राणियों आदि के विकास एवं स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। हवा-पानी। (क्लाइमेट)
जलविद्युत स्त्री० (सं) जल शक्ति से यंत्रों की सहायता से तैयार की गई बिजली। (हाईड्रो-इलेक्ट्रिसिटी)।
जल-विमान पुं० (सं) वह विमान या वायुयान जो जल और नभ दोनों में समान रूप से विचरण करता है। (हाईड्रोप्लेन)।
जल-विश्लेषण पुं० (सं) कुछ लवणों का पानी में घुलने पर अम्ल तथा क्षार के रूप में विच्छेदन। (हाईड्रोलिसिस)।
जलविश्लेषक पुं०(सं) कुछ लवणों का पानी में घुलने पर अम्ल तथा क्षार के रूप में विच्छेदन करने वाला (हाइड्रोलेटिक)।
जलविहार पुं० (सं) १-नदी तालाब आदि में नाव पर घूम कर सैर करना। २-दे० 'जल-क्रीड़ा'।
जलव्याघ्र पुं० (सं) सील जाति का एक बड़ा क्रूर और हिंसक जल जन्तु।
जलशिलि स्त्री० (सं) सिलिका का एक गाढ़ा और चिकना रूप। (हाइड्रोजन)।
जलशायी पुं० (सं) विष्णु।
जलसंत्रास पुं० (सं) दे० 'जलातंक'।
जल-समाधि स्त्री० (सं) १-जल में डूब कर प्राण-त्यागना। २-किसी वस्तु का जल में डूब कर नष्ट होना।
जलसा पुं० (अ) १-समारोह। २-बैठक।
जलसाई पुं० (हि) श्मशान।
जलसिंह पुं० (सं) [स्त्री० जलसिंही] एक प्रकार का हिंसक जलजन्तु।
जलसेना पुं० (सं) नौसेना।
जल-सेनापति पुं० (सं) नौसेनाध्यक्ष।
जलस्तंभ पुं० (सं) एक प्राकृतिक घटना जिसमें जलाशय या समुद्र का जल कुछ समय के लिए ऊपर उठकर स्तम्भ का रूप धारण कर लेता है।
जलस्तंभन पुं० (सं) मन्त्र बल से जल की गति रोकना। पानी बाँधना।
जलहर वि० (हि) पानी से भरा हुआ। पुं० जलाशय

जलहरण पु० एक वर्णवृत्त या दण्डक छन्द।
जलहरी स्त्री० (हि) १-अर्घा जिसमें शिवलिङ्ग स्थापित किया जाता है। २-शिवलिंग के ऊपर पानी टपकाने वाला घड़ा।
जलहल वि० (हि) जलमय। पु० जलाशय।
जलहस्ती पुं० (सं) एक बड़ा जन्तु जिसकी चर्बी की मोमबत्तियाँ बनाई जाती हैं।
जलहार पु० (सं) पानी भरने वाला। पनिहारा।
जलांक पु० (सं) कागज की बनावट में जल की सहायता से एक विशिष्ट प्रकार से बनाया हुआ चिह्न जो कागज को प्रकाश में देखने से मालूम पड़ता है। (वाटरमार्क)।
जलांकन पुं० (सं) जल की सहायता से प्रक्रिया विशेष की सहायता से उसमें जलांक या कुछ अक्षर, चिह्न आदि बनाना। (वाटर-मार्किंग)।
जलांकित वि० (सं) जलांक बनाया हुआ (कागज)। (वाटर मार्कड)।
जलाऊ वि० (हि) जो जलाया जा सके।
जलाक स्त्री० (हि) जलाने वाली हवा। लू।
जलाजल वि० दे० 'झलाझल'।
जलातंक पुं० दे० 'जल-संत्रास'।
जलातन स्त्री० (हि) अत्यधिक कष्ट देने या संतप्त करने की क्रिया या भाव। वि० (हि) संतप्त।
जलाद पुं० (हि) जल्लाद।
जलाधिप पुं० (सं) वरुण देवता।
जलाना क्रि० (हि) १-प्रज्वलित करना। २-झुलसाना ३-ईर्ष्या उत्पन्न करना।
जलापा पुं० (हि) ईर्ष्या की जलन। द्वेष। डाह।
जलाभ्यंतर-वाहिनी-नौका स्त्री० (सं) एक तरह का युद्धपोत जो पानी की सतह के नीचे डुबकी लगाकर भी अपना काम जारी रख सके और जो टारपीडो, गोलों, तोपों आदि से सज्जित हो। पनडुब्बी। (सबमेरीन)।
जलार्णव पु० (सं) वर्षाकाल। बरसात।
जलाल पु० (अ) १-तेज। प्रकाश। २-आतङ्क।
जलाव पुं० (हि) १-जलाने की क्रिया या भाव। २-जलने के कारण कम होने वाला अंश।
जलावतन वि० (अ) [स्त्री० जलावतनी] देश निकाले का दण्ड पाया हुआ। निर्वासित।
जलावतरण पुं० (सं) १-जल में उतरना। २-नवीन जलपोत का तैयार होने के उपरान्त सर्वप्रथम जल अथवा समुद्र में उतरना या पहुँचना।
जलावन पुं० (हि) १-ईंधन। २-किसी वस्तु का जलने वाला अंश।
जलावर्त पु० (सं) १-पानी का भँवर। २-एक प्रकार का मेघ।
जलाशय पुं० (सं) वह स्थान जहाँ पानी जमा हो।
जलाहल वि० (हि) जलमय।
जलीय वि० (सं) १-जल सम्बन्धी। जल का। २-जल या पानी में होने वाला। ३-जिसमें पानी का कुछ अंश हो।
जलीय-क्षेत्र पु० (सं) किसी देश के किनारे के आसपास का समुद्र जिस पर उसकी सत्ता हो। (टेरीटोरियल-वाटर्स)।
जलीय-रंग पुं० (सं) पानी मिलाकर तैयार किया गया रङ्ग। (वाटर-कलर)।
जलूस पु० (अ) जनयात्रा। शोभायात्रा।
जलूसी वि० (अ) १-जलूस सम्बन्धी। २-(सन् या संवत्) जिसका आरम्भ किसी राजा या बादशाह के सिंहासन पर बैठने के दिन या वर्ष से हुआ है।
जलेंद्र पु० (सं) १-वरुण देवता। महासागर।
जलेबी स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की पेंचदार मिठाई २-गोल घेरा। कुण्डली।
जलोढ़-भूमि स्त्री० (सं) बाढ़ आदि के द्वारा बहाकर लाई हुई भूमि। (एल्यूवियल-सॉइल)।
जलोत्तोलन-यंत्र पु० (सं) पानी को नीचे से ऊपर खींचने वाला यंत्र। (वाटरपम्प)।
जलोदर पु० (सं) एक रोग जिसमें नाभी के पास पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्र होता है जिससे पेट फूल जाता है।
जलोद्वहन-यंत्र पु० दे० 'जलोत्तोलन-यंत्र'।
जलोत्सारण-योजना स्त्री० (सं) दे० 'जल-निकास-योजना'।
जलौका स्त्री० (सं) जोंक।
जल्द क्रि० वि० (अ) १-शीघ्र। २-अविलंब।
जल्दबाज वि० (फा) हर काम में जल्दी मचाने वाला।
जल्दबाजी स्त्री० (फा)-किसी काम में आवश्यकता से अधिक जल्दी करना।
जल्दी स्त्री० (अ) शीघ्रता। क्रि० वि० (अ) १-शीघ्र। २-तेजी से।
जल्प पु० (सं) १-कथन। कहना। बकवाद। डींग
जल्पक वि० (सं) बकवादी। वाचाल।
जल्पना क्रि० (हि) १-व्यर्थ बकवाद करना। २-डींग मारना।
जल्पित वि० (सं) १-मिथ्या। २-कथित। कहा हुआ
जल्ला पु० (हि) १-ताल। २-झील। ३-हौज।
जल्लाद पु० (हि) १-प्राण दण्ड पाये हुए व्यक्ति के प्राण लेने वाला व्यक्ति। वधिक। क्रूर व्यक्ति।
जव पु० १-दे० 'जौ'। २-दे० 'जवा'। पुं० (सं) १-तेजी। २-जल्दी।
जवन पुं० दे० 'यवन'। सर्व० दे० 'जो'।
जवनिका स्त्री० दे० 'यवनिका'।
जवाँ वि० दे० 'जवान'।
जवा स्त्री० दे० 'जपा'। पुं० (हि) लहसुन का दाना।

लड़ाका।
जहेज पु० (अ) दहेज।
जह्नु पु० (सं) १-विष्णु। २-एक राज ऋषि का नाम जिन्होंने गंगा को पीकर कान से निकाला था। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।
जह्नु-कन्या, जह्नु-तनया, जह्नु-नन्दिनी स्त्री०(सं) गंगा
जाँ वि० (हि) उचित। स्त्री० जान। प्राण।
जाँगड़ा पु० (देश) यशोगान करने वाला भाट।
जाँगर पु० (हि) १-शरीर का बल। बूता। २-देह।
जाँगरा पुं० दे० 'जाँगड़ा'।
जांगल पु० (सं) वह प्रदेश जहाँ वर्षा कम होती हो। ऊसर प्रदेश।
जांगलिक वि० (सं) साँप पकड़ने तथा विष दूर करने वाला व्यक्ति।
जांगलू वि० (हि) गंवार। अनाड़ी।
जाँघ स्त्री० (हि) कमर और घुटने के बीच का अंग।
जाँघिया पु० (हि) घुटनों तक पहनने का एक पहनावा। कच्छा।
जाँघिल पु०(हि) पिछले पैर से लंगड़ाता हुआ चलने वाला बैल। वि० लचकती चाल चलने वाला (पशु)
जाँच स्त्री०(हि) १-परीक्षा। परख। २-गवेषणा। खोज
जाँचक पुं० (हि) १-दे० 'याचक'। २-जाँच करने वाला।
जाँचकता स्त्री० दे० 'याचकता'।
जाँच-घर पुं० (हि) पूछताछ का कार्यालय या दफ्तर (एनक्वारी-ऑफिस)।
जाँचना क्रि० (हि) १-परखना। परीक्षा करना। २-माँगना।
जाँजरा वि० (हि) दे० 'जाजरा'।
जाँझ स्त्री० (हि) तेज हवा के साथ आने वाली वर्षा
जाँत पुं० दे० 'जाँता'।
जांतव वि० (सं) १-जीव जन्तुओं सम्बन्धी। २-जीव-जन्तुओं से उत्पन्न या प्राप्त।
जाँता पुं० (हि) आटा पीसने की बड़ी चक्की।
जाँ-पनाह पुं० दे० 'जहाँपनाह'।
जाँब पु० (हि) जामुन। जंबुफल।
जांबव पु० (सं) १-जामुन का वृक्ष या फल। २-जामुन का सिरका या शराब।
जांबवती स्त्री० (सं) जाम्बवान् की कन्या जिसका विवाह श्रीकृष्ण से हुआ था।
जाँबाज वि० (फा) प्राणों की बाजी लगाने वाला।
जांबवान पुं० (सं) सुग्रीव के एक मन्त्री का नाम जिसने राम की ओर से रावण से युद्ध किया था।
जांबुवत्, जांबुवान पुं० दे० 'जाम्बवान'।
जाँवत अव्य० दे० 'जावत'।
जाँवर पुं० (हि) जाना। प्रस्थान।
जा स्त्री०(सं) १-माँ। माता। २-देवरानी। वि० [स्त्री० प्र०] उत्पन्न। सर्व० (हि) जो जिस। वि० (फा) उचित। मुनासिब।
जाइ वि० (हि) १-व्यर्थ। निष्प्रयोजन। २-उचित।
जाई स्त्री० (हि) पुत्री। बेटी।
जाउनि स्त्री० दे० 'जामुन'।
जाउर स्त्री० (हि) खीर। दूध-भात।
जाक पुं० (हि) यक्ष। स्त्री० जकने की क्रिया या भाव
जाकड़ पुं० (हि) १-इस शर्त पर माल लाना कि यदि पसंद न होगा तो लौटा दिया जायगा। २-इस प्रकार लाया हुआ माल।
जाकेट स्त्री० [(अ०) जैकेट] फतुही की तरह का एक प्रकार का अंगरेजी पहनावा। सदरी।
जाखिनी स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।
जाग पुं० (हि) यज्ञ। स्त्री० १-जागने की क्रिया, भाव या अवस्था। २-जागरण। ३-जगह। स्थान।
जागता वि० (हि) १-अपनी शक्ति का परिचय देने वाला। २-प्रकाशमान्।
जागतिक वि० (सं) जगत सम्बन्धी। सांसारिक।
जागती-कला, जागती-ज्योती स्त्री०(हि) १-किसी देवी या देवता का प्रत्यक्ष चमत्कार। २-चिराग। दीपक
जागना क्रि० (हि) १-सोकर उठना। २-जाग्रत अवस्था में होना। ३-सजग होना। ४-चमक उठना। उदित होना। ५-समृद्ध होना। ६-प्रसिद्ध होना। ७-प्रज्वलित होना। जलना।
जागर पुं०(सं) १-जागने की क्रिया। जागरण। आग २-मन, बुद्धि, अहंकार आदि अंतःकरण की वृत्तियों के जागृत होने का भाव या अवस्था। कवच।
जागरण पुं० (सं) १-निद्रा का अभाव। जागना। २-किसी उत्सव या पर्व आदि पर सारी रात जागना। ३-किसी वर्ग अथवा जाति का गिरी हुई अवस्था से निकल कर उन्नत होने का यत्न करना। (अवेकनिंग)।
जागरित वि० (सं) जागता हुआ।
जागरूक पु० (सं) १-वह जो जाग्रत अवस्था में हो। चैतन्य।
जागरूप वि० (हि) जो बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।
जागर्ति स्त्री० (सं) १-जागरण। २-चेतनता।
जागा स्त्री० दे० 'जगह'। पुं० दे० 'जागरण' (२)।
जागी पु० (हि) भाट। चारण।
जागीर स्त्री० (फा) राज्य की ओर से प्राप्त भूमि या प्रदेश।
जागीरदार पुं० (फा) जागीर प्राप्त व्यक्ति। जागीर का मालिक।
जागीरी स्त्री० (फा) १-जागीरदार होने का भाव। २-अमीर। रईस।
जागृत वि० दे० 'जागृत'।
जाग्रत वि० (सं) १-जो जाग रहा हो। २-सजग।

सावधान । पुं० वह अवस्था जिसमें सब भावों का परिज्ञान होता रहता है ।
जाग्रति स्त्री० (सं) जाग्रत होने का भाव । जागरण ।
जाचक पुं० (हि) याचक ।
जाचकता स्त्री० (सं) १-मांगने की क्रिया या भाव । २-भिखमंगी ।
जाचन पुं० (हि) १-याचना । २-याचक ।
जाचना क्रि० (हि) मांगना । स्त्री० यातना ।
जाजम स्त्री० दे० 'जाजिम' ।
जाजरा वि० जीर्ण । जर्जर ।
जाजरी पुं० (देश) चिड़ीमार ।
जाजिम स्त्री० (तु०) दरी के ऊपर बिछाने की चादर ।
जाज्वल्य,जाज्वल्यमान वि०(सं) १-प्रज्वलित । दीप्तिमान । २-तेजस्वी ।
जाट पुं० (हि) भारत देश की एक प्रसिद्ध जाति ।
जाटव पुं० (?) चमारों की एक जाति ।
जाटू स्त्री० (हि) हरियाना की बोली ।
जाट ० (हि) १-वह लट्ठा जो कोल्हू की कूण्डी के बीच में लगा रहता है । २-तालाब के बीच में गड़ा हुआ ऊँचा मोटा लट्ठा ।
जाठर पुं० (सं) १-उदर । पेट । २-जठराग्नि । ३-भूख । वि० (सं) १-जठर से सम्बन्ध रखने वाली ३-जठर से उत्पन्न ।
जाड़ पुं० (हि) दे० 'जाड़ा' । स्त्री० दे० 'दाढ़' । वि० (हि) बहुत अधिक ।
जाड़ा पुं० (हि) १-शीतकाल । २-शीत । सरदी ।
जाड्य वि० (सं) जड़ता ।
जात पुं० (सं) १-जन्म । २-पुत्र । ३-जीव । प्राणी ४-वह पुत्र जिसमें अपनी मां के से गुण हों । वि० (सं) १-जन्मा हुआ । २-व्यक्त । प्रकट । ३-प्रशस्त स्त्री० (सं) शरीर । स्त्री० (हि) जाति ।
जातक पुं० (सं) १-बच्चा । २-महात्मा बुद्ध के पूर्व-जन्म की कथाएँ । ३-फलित ज्योतिष का एक भेद
जात-कर्म पुं० (सं) पुत्र जन्म के अवसर पर किया जाने वाला एक संस्कार ।
जातक्रिया स्त्री० (सं) जातकर्म ।
जातना, जातनाई स्त्री० (हि) यातना ।
जातपांत स्त्री० (हि) बिरादरी ।
जातरूप पुं० (सं) स्वर्ण । सोना ।
जाता स्त्री० (सं) कन्या । पुत्री । वि० उत्पन्न पुं० (हि) आटा पीसने की चक्की । जाँता ।
जाति स्त्री० (सं) १-हिन्दुओं में मानव समाज का वह विभाग जो सर्वप्रथम कर्मानुसार किया गया था, पर अब जन्मानुसार माना जाता है । (कास्ट) २-मानव समाज का वह विभाग जो निवास-स्थान या देश परम्परा की दृष्टि से किया गया हो ।(रेस) ३-गुण, धर्म, आकृति आदि की दृष्टि से पदार्थों या जीव-जन्तुओं में हुआ विभाग । कोटि । वर्ग । (जेनस) । ४-वर्ण । ५-कुल । ६-गोत्र । ७-जन्म । ८-सामान्य ।
जातिच्युत वि० (सं) जाति से निकाला हुआ ।
जातित्व पुं० (सं) जाति का भाव । जातीयता ।
जाति-धर्म पुं० (सं) १-जाति या वर्ण का धर्म । २-जातियों का अलग-अलग कर्त्तव्य ।
जाति-पाँति स्त्री० (हि) बिरादरी ।
जाति-वध पुं० (सं) किसी जाति के लोगों का वह वध जो प्रायः राजनीतिक कारणों या जाति-गत द्वेष के कारण होता है ।
जाति-वैर पुं० (सं) स्वाभाविक शत्रुता । सहज वैर ।
जाति-संघ पुं०(सं) राजनीति के अनुसार वह राष्ट्र-विधान जिसमें किसी जाति के प्रमुख लोगों के द्वारा शासन होता है ।
जातिस्वभाव पुं० (सं) वह अलङ्कार जिसमें आकृति तथा गुण का वर्णन किया जाता है ।
जाती स्त्री० (सं) १-चमेली । २-मालती । स्त्री० (हि) दे० 'जाति' पुं० (हि) हाथी । वि० (सं) १-व्यक्तिगत । २-अपना । निज का ।
जातीय वि० (सं) १-जाति सम्बन्धी । २-सारी जाति या राष्ट्र सम्बन्धी ।
जातीयता स्त्री० (सं) १-जाति होने का भाव । कौमियत । २-अपनी जाति का अभिमान । राष्ट्रीयता ।
जातुधान पुं० (सं) राक्षस ।
जातुधानी वि० दे० 'राक्षसी' ।
जात्य वि० (सं) १-कुलीन । २-श्रेष्ठ । ३-सुन्दर ।
जात्यत्रिभुज पुं० (सं) एक समकोण वाला त्रिभुज ।
जात्यारोह पुं० (सं) खगोल के अक्षांश की गिनती में वह दूरी जो मेष से पूर्व की ओर प्रथम अंश से लेजाती है ।
जात्रा स्त्री० (हि) यात्रा ।
जायका स्त्री० (हि) राशि । ढेर ।
जाद वि० (फा) किसी से उत्पन्न । जात । (यौगिक के अन्त में) ।
जादव पुं० (हि) यादव ।
जादव-पति, जादवराय पुं० (हि) श्रीकृष्ण ।
जादसपति, जादसपती पुं० (हि) वरुण ।
जादा वि० दे० 'ज्यादा' ।
जादू पुं० (फा) १-ऐसा आश्चर्यजनक कृत्य जिसका रहस्य लोगों की समझ में न आवे । इन्द्रजाल । २-टोना । टोटका । ३-दूसरे को मोहित करने वाली शक्ति । मोहिनी-शक्ति ।
जादूगर पुं० (फा) [स्त्री० जादूगरनी] जादू जानने या करने वाला ।
जादूगरी स्त्री० (फा) जादू करने की क्रिया या काम ।
जादो पुं० (हि) यादव ।

जासूस पुं० (अ) गुप्तचर। भेदिया।
जासूसी स्त्री० (हि) गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाने का काम।
जाहर वि० दे० 'जाहिर'।
जाहिर वि० (अ) १-प्रकट। २-विदित।
जाहिरा क्रि० वि० (अ) प्रकट रूप में।
जाहिरी वि० (अ) प्रकट।
जाहिल वि० (अ) १-मूर्ख। २-अशिक्षित।
जाही स्त्री० (हि) चमेली की जाति का एक सुगन्धित पौधा या फूल।
जाह्नवी स्त्री० (सं) गंगा नदी।
जिन पुं० (अ) भूत। प्रेत। स्त्री० दे० जिन्दगी।
जिन्दगानी स्त्री० (फा) जीवन। जिन्दगी।
जिन्दगी स्त्री० (फा) १-जीवन। २-जीवनकाल। आयु।
जिन्दा वि० (फा) जीवित।
जिन्दादिल वि० (फा) विनोदप्रिय।
जिवाना क्रि० (हि) जिमाना।
जिस स्त्री० (फा) १-प्रकार। किस्म। २-चीज। वस्तु

का नाम लिखता है।
जिमरा पुं० (हि) जिगरा।
जिमाना क्रि० (हि) खिलाना।
जिउ पुं० (हि) जीव।
जिउका स्त्री० (हि) जीविका।
जिउरिया पुं० (हि) १-जीविका के ... करने वाला। रोजगारी। २-वे ... जंगलों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ ... में बेचते हैं।
जिउतिया स्त्री० (हि) जिताष्टमी। ... का एक व्रत।
जिक्र पुं० (अ) चर्चा।
जिगर पुं० (फा) १-कलेजा। २-चित्त। मन। ३-साहस। ४-पुत्र (स्नेह में)।
जिगरा पुं० (हि) साहस। हिम्मत।
जिगरी वि० (फा) १-दिली। भीतरी। २-अभिन्न हृदय।
जिगीषा स्त्री० (सं) १-विजय प्राप्त करने की कामना। २-उद्यम। उद्योग।
जिगीषु वि० (सं) विजय प्राप्त करने की कामना रखने वाला।
जिच, जिच्च स्त्री० (?) बेबसी। मजबूरी। २-शतरंज के खेल में वह अवस्था या स्थिति जब किसी पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह हो। ३-पारस्परिक विवाद में वह अवस्था जब दोनों पक्ष अपनी बातों पर अड़े रहें और समझौते की सूरत नजर न आये। (डेडलाक)। वि० विवश। मजबूर।
जिजिया स्त्री० (हि) बहिन। पुं० (फा) जजिया।
जिज्ञासन पुं० (सं) जानने की इच्छा से पूछना।
जिज्ञासा स्त्री० (सं) १-जानने की इच्छा। २-पूछताछ।
जिज्ञासु वि० (सं) जानने की इच्छा रखने वाला।
जिठाई स्त्री० (हि) जेठापन। बड़प्पन।
जिठानी स्त्री० (हि) जेठानी।
जित् वि० (सं) जीतने वाला।
जित क्रि० वि० (हि) जिधर। जिस ओर।
जितना वि० (हि) (स्त्री० जितनी) जिस मात्रा या परिमाण का। क्रि० वि० जिस मात्रा में जिस परिमाण में
क्रि० (हि) जीतना।
जितवना क्रि०(हि) जताना। प्रकट करना।
जितवाना क्रि० (हि) जीतने में समर्थ करना। जीतने देना।
जितवार, जितवैया वि० (हि) विजयी। जीतने वाला।
जितात्मा वि० (सं) जितेंद्रिय।
जिताना क्रि० (हि) जीतने में सहायता देना।
जितामित्र पुं० (सं) १-विष्णु। २-विजयी।
— — (—) जिसने आहार या भोजन पर

का एक व्रत जिसे पुत्रवती स्त्रियाँ आश्विन ... अष्टमी के दिन करती हैं।
जिति स्त्री० (सं) जीत। विजय।
जितेंद्रिय, जितेंद्री वि० (सं) १-जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो। २-शांत। ३-तीर्थंकर।
जिते वि० (हि) जितने (संख्यासूचक)।

जित्वरी स्त्री० (सं) काशीपुरी का एक प्राचीन नाम।
जिद स्त्री० (अ) हठ। दुराग्रह।
जिद्दी वि० (फा) हठी। दुराग्रही।
जिधर क्रि० वि० (हि) जिस ओर। जहाँ।
जिन पुं० (सं) १-विष्णु। २-सूर्य। ३-बुद्ध। ४-जैनों के तीर्थंकर। वि० सर्व० (हि) 'जिस' का बहुवचन। पुं० (अ) (मुसलमान) भूत।
जिना पुं० (अ) व्यभिचार।
जिनि अव्य० (हि) मत। नहीं।
जिनिस स्त्री० दे० 'जिन्स'।
जिन्स स्त्री० (फा) १-प्रकार। तरह। २-वस्तु। चीज। ३-सामग्री। सामान। ४-गेहूँ, चावल आदि अन्न।
जिन्सवार पुं० (फा) पटवारियों का वह

जामि स्त्री० (सं) १-बहिन । २-लड़की । ३-पुत्रवधू । ४-अपने सम्बन्ध या गोत्र की स्त्री ।
जामिक पुं० (हि) पहरेदार ।
जामिन, जामिनदार पुं० (अ) जमानत करने वाला । प्रतिभू ।
जामिनी स्त्री०(हि) यामिनी । रात । स्त्री०(फा) जमानत
जामी स्त्री० (हि) जमीन ।
जामुन पुं० (हि) एक वृक्ष जिसके फल बैंगनी रंग के होते हैं ।
जामुनी वि० (हि) जामुन के रंग का ।
जामेय पुं० (सं) भानजा ।
जामेवार पुं० (हि) १-एक तरह का दुशाला जिसमें सब जगह बेलबूटे कढ़े होते हैं । इस तरह की छींट जो दुशाले के समान दीख पड़े ।
जाय अव्य० (फा) वृथा । बेफायदा । वि० (फा) उचित
जायका पुं० (अ) स्वाद ।
जायकेदार वि० (फा) स्वादिष्ट ।
जायज वि० (अ) उचित ।
जायजा पुं० (अ) १-जाँच-पड़ताल । २-हाजिरी । ३-गिनती ।
जायद वि० (फा) अधिक । ज्यादा ।
जायदाद स्त्री० (फा) भूमि या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो ।
जायपत्री स्त्री० दे० 'जावित्री' ।
जायफल पुं० (हि) औषध तथा मसाले के काम में आने वाला एक सुगंधित फल ।
जायस पुं० रायबरेली जिले का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ कई सूफी फकीर हुए हैं ।
जायसवाल पुं०(हि) १-जायस नामक स्थान का रहने वाला । २-कुरमियों, कलवारों की उपजाति ।
जायसी वि०(हि) राय बरेली जिले के जायस नगर का रहने वाला ।
जाया स्त्री० (सं) पत्नी । पुं० (हि) [स्त्री० जाई] १-वह जो प्रसव द्वारा उत्पन्न किया हो । २-पुत्र । वि०(फा) नष्ट । खराब ।
जार पुं०(सं) १-पराई स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति । २-उपपति । यार । वि० मारने वाला
जारकर्म पुं० (सं) व्यभिचार ।
जारज पुं० (सं) जार से उत्पन्न सन्तान ।
जारज-योग पुं० (सं) बालक के जन्म काल में पड़ने वाला एक योग जिसके द्वारा उत्पन्न बालक को जारज सिद्ध किया जाता है ।
जारण पुं० (सं) जलाना ।
जारन स्त्री० (हि) १-जलाने की क्रिया या भाव । २ जलाने की लकड़ी । ईंधन ।
जारना क्रि० (हि) जलाना ।
जारिणी स्त्री० (सं) दुश्चरित्रा स्त्री ।
जारी वि० (अ) १-प्रवाहित । प्रचलित । स्त्री०(हि) पर स्त्री-गमन । छिनाला ।
जालंधर पुं० (सं) १-एक प्राचीन ऋषि । २-एक दैत्य
जालंधरी-विद्या स्त्री० (सं) जादू । इन्द्रजाल ।
जाल पुं० (सं) १-एक में बुने अथवा गुथे हुए बहुत से डोरों का समूह । २-चिड़िया, मछली आदि फँसाने के लिए तार सूत आदि का बना हुआ पट । ३-किसी को वश में करने या फँसाने का षड्यंत्र । ४-समूह । ५-एक तरह की तोप । ६-गवाक्ष । ७-क्षार । ८-मकड़ी का जाला । ९-अहंकार । पुं० (हि) फरेब । धोखा ।
जालक पुं० (सं) १-जाल । २-कली । ३-समूह । ४-गवाक्ष । झरोखा । ५-एक आभूषण । ६-केला । ७-घोंसला । ८-अभिमान ।
जालदार वि० (हि) जिसमें जाल के समान छोटे-छोटे छेद हों ।
जालना क्रि० (हि) जलाना ।
जालरंध्र पुं० (सं) गवाक्ष । छोटी खिड़की ।
जालसाज पुं० (अ) वह जो दूसरों को धोखा देने के लिए किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करे । धोखेबाज ।
जालसाजी स्त्री० (फा) दगाबाजी ।
जाला पुं० (हि) १-मकड़ी का जाल । २-आँख का एक रोग । ३-घास-भूसा आदि बाँधने का जाल । ४-पानी रखने का एक बरतन ।
जालिक पुं० (सं) १-जाल बुनने वाला । २-धीवर । ३-मकड़ी । ४-मदारी ।
जालिका स्त्री० (सं) १-पाश । फन्दा । २-जाली । ३-मकड़ी । ४-समूह ।
जालिम वि० (अ) जुल्म करने वाला । अत्याचारी ।
जालिमा वि० (हि) जालिम । अत्याचारी ।
जालिया वि० (हि) जालसाज । फरेबी ।
जाली स्त्री० (हि) १-किसी वस्तु में बने छोटे-छोटे छेदों का समूह । २-एक प्रकार का कपड़ा जिसमें छोटे-छोटे छेद बने होते हैं । ३-कच्चे आम के अन्दर का तन्तु । वि० (अ) नकली । बनावटी ।
जाली-मत पुं० (हि) सही आदमी या मतदाता के स्थान पर नकली या बनावटी व्यक्ति द्वारा दिया जाने वाला मत या वोट ।
जाल्म पुं० (सं) शिव । महादेव ।
जावक पुं० (हि) महावर ।
जावत अव्य० दे० 'यावत्' ।
जावन पुं० दे० 'जामन' ।
जावित्री स्त्री० (हि) जायफल के ऊपर का सुगन्धित छिलका ।
जाविनी स्त्री० (हि) यवनी ।
जासु वि० (हि) जिसका ।

जासूस पुं० (अ) गुप्तचर । भेदिया ।
जासूसी स्त्री० (हि) गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाने का काम ।
जाहर वि० दे० 'जाहिर' ।
जाहिर वि० (अ) १-प्रकट । २-विदित ।
जाहिरा क्रि० वि० (अ) प्रकट रूप में ।
जाहिरी वि० (अ) प्रकट ।
जाहिल वि० (अ) १-मूर्ख । २-अशिक्षित ।
जाही स्त्री० (हि) चमेली की जाति का एक सुगन्धित पौधा या फूल ।
जाह्नवी स्त्री० (सं) गंगा नदी ।
जिंद पु० (अ) भूत । प्रेत । स्त्री० दे० जिन्दगी ।
जिंदगानी स्त्री० (फा) जीवन । जिन्दगी ।
जिंदगी स्त्री० (फा) १-जीवन । २-जीवनकाल । आयु ।
जिंदा वि० (फा) जीवित ।
[illegible] जितेन्द्रिय ।
[illegible]
का नाम लिखता है ।
जियरा पु० (हि) जियरा ।
जियाना क्रि० (हि) जिलाना ।
जिउ पुं० (हि) जीव ।
जिउका स्त्री० (हि) जीविका ।
जिउकिया पु० (हि) १-जीविका के [illegible] करने वाला । रोजगारी । २-वे [illegible] जंगलों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ ला कर बेचते हैं ।
जिउतिया स्त्री० (हि) जिताष्टमी । [illegible] का एक व्रत ।
जिक्र पुं० (अ) चर्चा ।
जिगर पु० (फा) १-कलेजा । २-चित्त । मन । ३-साहस । ४-पुत्र (स्नेह से) ।
जिगरा पु० (हि) साहस । हिम्मत ।
जिगरी वि० (फा) १-दिली । भीतरी । २-अभिन्न हृदय ।
जिगीषा स्त्री० (स) १-विजय प्राप्त करने की कामना । २-उद्यम । उद्योग ।
जिगीषु वि० (स) विजय प्राप्त करने की कामना रखने वाला ।
जिच, जिच्च स्त्री० (?) बेबसी । मजबूरी । २-शतरंज के खेल में वह अवस्था या स्थिति जब किसी पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह हो । ३-व्यावहारिक विवाद में वह अवस्था जब दोनों पक्ष अपनी बातों पर अड़े रहें और समझौते की सूरत नजर न आये । (डेडलाक) । वि० विवश । मजबूर ।
[illegible]
जितासु वि० (स) [illegible]
जिटाई स्त्री० (हि) जेठापन । बड़प्पन ।
जिठानी स्त्री० (हि) जेठानी ।
जित् वि० (सं) जीतने वाला ।
जित क्रि० वि० (हि) जिधर । जिस ओर ।
जितना वि० (हि) [स्त्री० जितनी] जिस मात्रा या परिमाण का । क्रि० वि० जिस मात्रा में जिस परिमाण में क्रि० (हि) जीतना ।
जितवना क्रि०(हि) जताना । प्रकट करना ।
जितवाना क्रि० (हि) जीतने में समर्थ करना । जीतने देना ।
जितवार, जितवैया वि० (हि) विजयी । जीतने वाला ।
[illegible] वि० (सं) जितेंद्रिय ।
[illegible] मन पर [illegible] से पुत्र- [illegible] करती हैं ।
[illegible]
जित्वरी स्त्री० (स) काशीपुरी का एक प्राचीन नाम ।
जिद स्त्री० (फ) हठ । दुराग्रह ।
जिद्दी वि० (फा) हठी । दुराग्रही ।
जिधर क्रि० वि० (हि) जिस ओर । जहाँ ।
जिन पुं० (स) १-विष्णु । २-सूर्य । ३-बुद्ध । ४-जैनों के तीर्थंकर । वि० सर्व० (हि) 'जिस' का बहुवचन । पु० (अ) (मुसलमान) भूत ।
जिना पु० (अ) व्यभिचार ।
जिनि अव्य० (हि) मत । नहीं ।
जिनिस स्त्री० दे० 'जिन्स' ।
जिन्स स्त्री० (फा) १-प्रकार । तरह । २-वस्तु । चीज ३-सामग्री । सामान । ४-गेहूँ, चावल आदि अन्न ।
जिन्सवार पु० (फा) पटवारियों का वह कागज

जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं।
जिन्सी वि० (फा) १-जिन्स सम्बन्धी। जिन्स का। गेहूँ, चावल आदि अन्नों के रूप में होने वाला। (इनकाइन्ड)।
जिन्सी-लगान पुं० (फा+हि) गेहूँ, चावल आदि अन्नों के रूप में लिया जाने वाला लगान। (रेंट-इन काइंड)।
जिन्ह सर्व० (हि) दे० 'जिन'।
जिबह पुं० दे० 'जबह'।
जिब्भा, जिभ्या स्त्री० दे० 'जिह्वा'।
जिमाना क्रि० (हि) भोजन कराना। खिलाना।
जिमि क्रि० वि० जैसे। यथा।
जिमींदार पुं० दे० 'जमींदार'।
जिमी स्त्री० (हि) जमीन। पृथ्वी।
जमीकंद पुं० दे० 'सूरन'।
जिम्मा पु० (अ) १-भार ग्रहण। २-सुपुर्दगी। संरक्षा। देख-रेख।
जिम्मादार, जिम्मावार पुं० दे० 'जिम्मेदार'।
जिम्मावारी स्त्री० (फा) १-उत्तरदायित्व। २-संरक्षा
जिम्मेदार, जिम्मेवार पुं० (फा) उत्तरदायी। जवाबदेह।
जिम्मी पुं० (अ) इसलामी राज्य में गैर-मुसलिम प्रजा।
जिय पुं० (हि) मन। चित्त।
जियन पुं० (हि) जीवन।
जियन-बधा पु० (हि) हत्यारा।
जियरा पुं० (हि) जीव।
जियाजंतु पुं० (हि) जीव-जन्तु।
जियान पु० (अ) १-घाटा। टोटा। २-हानि।
जियाना क्रि० (हि) जिलाना।
जियाफत स्त्री० (अ) १-आतिथ्य। २-भोज। दावत
जियारत स्त्री० (अ) १-दर्शन। २-तीर्थदर्शन।
जियारी स्त्री० (?) १-जीवन। २-जीविका। ३-जीवट।
जिरगा पुं० (फा) १-झुण्ड। गिरोह। २-मण्डली। दल। ३-पठानों आदि में कई दलों के लोगों की सभा।
जिरह स्त्री० (हि) हुज्जत। २-ऐसी पूछताछ जो सत्यता की जाँच के लिए की जाये। स्त्री० (फा) कवच। बख्तर।
जिरही वि० (हि) कवचधारी।
जिराअत स्त्री० (अ) खेती।
जिराफ पुं० (अ) एक अफ्रीकी पशु जिसकी गरदन लम्बी होती है।
जिराफा पुं० दे० 'जुराफा'।
जिला स्त्री० (अ) १-चमक-दमक। २-माँजकर अथवा रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का काम। पुं० (अ) १-प्रदेश। प्रान्त। २-किसी प्रान्त का वह भाग जो एक कलक्टर के प्रबन्ध में हो। ३-किसी इलाके का विभाग या अंश।
जिला-गण पुं० (अ+स) जिले के निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा। (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड)।
जिला-जज पुं० (अ+अ) वह न्यायाधीश जिसे जिलेभर की दीवानी और फौजदारी मुकद्दमों की अपीलें सुनने का अधिकार होता है। (डिस्ट्रिक्ट-जज)।
जिलाट पुं० (स) प्राचीन काल का एक बाजा।
जिलादार पुं० (फा) १-जमींदार की ओर से नियुक्त अफसर जो लगान वसूल करता है। २-किसी इलाके में काम करने वाला छोटा अफसर।
जिलाधीश पुं० (अ+स) जिला मजिस्ट्रेट।
जिलाना क्रि० (हि) १-जीवित करना। २-मरने से बचाना। ३-पालना। पोसना।
जिला-निधि स्त्री० (अ+सं) जिले में सफाई, शिक्षा आदि कार्यों के लिए कर आदि के रूप में इकट्ठा किया हुआ धन। (डिस्ट्रिक्ट-फण्ड)।
जिला-न्यायालय पुं० (अ+सं) जिले भर के लोगों के झगड़ों का निपटारा करने वाली अदालत। (डिस्ट्रिक्ट-कोर्ट)।
जिला-परिषद स्त्री० (अ+सं) जिले के निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा। (डिस्ट्रिक्ट-काउंसिल)।
जिला-बोर्ड पुं० (अ+सं) जिले के निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह संस्था जिसके जिम्मे जिलेभर के ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षा, स्वास्थ्य, निर्माण आदि की व्यवस्था करती है। (डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड)।
जिला-मंडली स्त्री० दे० 'जिला-गण'।
जिला-मजिस्ट्रेट पुं० (अ+अं) जिले का सबसे बड़ा अधिकारी। (कलक्टर)।
जिलासाज पुं० (फा) सिकलीगर।
जिलाह पुं० (हि) अत्याचारी।
जिलेदार पुं० दे० 'जिलादार'।
जिल्द स्त्री० (अं) १-खाल। चमड़ा। २-ऊपर का चमड़ा। त्वचा। ३-किताब की रक्षा के निमित्त चढ़ाई हुई दफ्ती। ४-पुस्तक की एक प्रति। ५-पुस्तक का एक भाग। खण्ड।
जिल्दबंद पुं० (फा) पुस्तकों की जिल्द बाँधने वाला
जिल्दबंदी स्त्री० (फा) जिल्द बाँधने का काम।
जिल्दसाज पुं० दे० 'जिल्दबंद'।
जिल्दसाजी स्त्री० (फा) जिल्दबंदी।
जिल्लत स्त्री० (अ) १-अपमान। २-दुर्दशा।
जिव पुं० (हि) जीव।
जिवन पुं० (हि) जीवन।
जिवाना क्रि० (हि) १-जिलाना। २-जिमाना।
जिवादा वि० दे० 'ज्यादा'।
जिष्णु वि० (अ) सदा जीतने वाला। पु० १-इन्द्र।

२-सूर्य। ३-अर्जुन। ४-विष्णु। ५-कृष्ण।

जिस त्रि० (हि) विभक्ति युक्त 'जो' का एक रूप। सर्व० 'जो' का वह रूप, जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

जिल्ता पु० १-दे० 'जल्ला'। २-दे० 'दस्ता' (कागज का)।

जिस्म पु० (फा) शरीर। देह।

जिह स्त्री० (हि) धनुष की डोरी। चिल्ला।

जिहाद पुं० (अ) १-मजहबी लड़ाई। २-वह युद्ध जो मुसलमान लोग दूसरे धर्म वालों से अपने धर्म के प्रचार के निमित्त करते हैं।

जिह्म वि० (सं) १-दुष्ट। कपटी। २-वक्र। टेढ़ा। ३-अप्रसन्न। खिन्न। ४-मन्द।

जिह्वा स्त्री० (स) जीभ।

[illegible]

जींगन पुं० (हि) जुगनू।

जी पुं० (हि) १-मन। दिल। २-साहस। जीवट। ३-संकल्प। विचार। अव्य० १-नामों के पीछे लगने वाला आदरसूचक शब्द। २-किसी के कुछ पूछने पर आदरसूचक प्रत्युत्तर।

जीअ पुं० (हि) १-दे० 'जी'। २-दे० 'जीव'।

जीअन पु० (हि) जीवन।

जीगन पुं० (हि) जुगनू।

जीजना क्रि० (हि) जीवित रहना। जीना।

जीजा पुं० (हि) [स्त्री० जीजी] बड़ी बहिन का पति।

जीजी स्त्री० (हि) बड़ी बहिन।

जीत स्त्री० (हि) १-विजय। फतह। २-किसी ऐसे काम में सफलता, जिसमें दो या अधिक प्रतिद्वन्द्वी हों।

जीतना क्रि० (हि) १-विजय प्राप्त करना। २-प्रतियोगिता में सफलता मिलना।

[illegible]

काठी। २-एक तरह का कपड़ा। वि० (हि) जीर्ण।

जीन-पोश पुं० (फा) जीन के ऊपर ढकने का कपड़ा

जीन-सवारी स्त्री० (फा) घोड़े पर जीन रखकर सवार होने का काम।

जीन-साज वि० (फा) जीन बनाने वाला।

जीना क्रि० (हि) १-जीवित रहना। २-प्रसन्न होना वि० (हि) १-जीर्ण। २-झीना। पु० (फा) सीढ़ी।

जीभ स्त्री० (हि) १-मुख के भीतर का वह मांस पिण्ड जिसके द्वारा रसों का आस्वादन और शब्दों का उच्चारण होता है। रसना। जिह्वा। २-कलम के अग्रभाग में लगने वाला धातु का टुकड़ा। निब। ३-जीभ के आकार की कोई वस्तु।

जीभा पु० (हि) १-जीभ के आकार की कोई वस्तु। २-चौपायों का एक रोग।

जीभी स्त्री० (हि) १-धातु की धनुषाकार पतली पत्तर जिससे जीभ साफ करते हैं। २-कलम के अग्रभाग में लगने वाला धातु का टुकड़ा। निब। ३-छोटी जीभ।

जीमना क्रि० (हि) भोजन करना।

जीमूत पु० (सं) १-पर्वत। २-बादल। ३-इन्द्र। ४-सूर्य।

जीमूत-मुक्ता स्त्री० (स) मेघ से उत्पन्न मोती।

जीमूत-वाहन पु० (स) इन्द्र।

जीमूतवाही पुं० (हि) धूम। धुआँ।

जीय पुं० (हि) जीव। जी।

[illegible] पुं० (हि) जीवट।

[illegible] स्त्री० (हि) जीवन। जिन्दगी।

[illegible] पु० (हि) जीवनदान। प्राणदान।

जीर पु०(हि) कवच। वि० जीर्ण। पुराना। पु० (स) १-जीरा। २-फूलों का केसर। ३-तलवार। वि० जल्दी चलने वाला।

जीरण पु० (स) जीरा वि० (हि) जीर्ण।

जीरना क्रि० (हि) १-जीर्ण या पुराना होना। २-मुरझाना। ३-फटना।

जीरा पुं० (हि) १-एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम में लाये जाते हैं। २-इस प्रकार की कोई छोटी महीन, लम्बी वस्तु। ३-फूलों का केसर।

जीरी पुं० (हि) अगहन में पकने वाला एक प्रकार का धान।

जीर्ण वि० (सं) १-बुढ़ापे से दुर्बल और क्षीण। २-टूटा-फूटा और पुराना। ३-बहुत पुराना। ४-पचा हुआ। हजम।

जीर्ण-ज्वर पुं० (स) पुराना बुखार।

[illegible]

वस्तुओं का फिर से सुधार।

जील स्त्री० (हि) १-धीमा या मध्यम स्वर। २-सारंगी आदि का तार। ३-तबले के साथ का बाजा।

जीला वि० (हि) [स्त्री० जीली] १-झीना। पतला। २-महीन।

जीवत वि० दे० 'जीवित'।

जीवती स्त्री० (स) १-एक लता। २-शमी। ३-गुडूची

जीव पुं० (सं) १-प्राणियों का चेतन तत्व। आत्मा। प्राण। जान। ३-जीवधारी। प्राणी।

जीवक पुं० (स) १-जीव। प्राणी। २-सपेरा। ३-

एक प्रकार का पौधा ।
जीव-जंतु पुं०(सं) पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े आदि
जीवट पुं० (हि) साहस । हिम्मत ।
जीवड़ा पुं० (हि) प्राणी ।
जीवंत वि० (हि) जीविका । जिन्दा ।
जीवद पुं० (सं) १-जीवनदाता । २-वैद्य । ३-शत्रु
जीवदया स्त्री० (सं) प्राणियों पर उनके जीवन रक्षा के विचार से की जाने वाली दया ।
जीवन-दान पुं०(सं) १-प्राणदान । मरने से बचाना
जीव-धन पुं० (सं) १-पशुओं या जीवों के रूप में संपत्ति । २-जीवनधन ।
जीव-धातु स्त्री० (सं) एक प्रकार का पारदर्शक, वर्णहीन, सजीव जीवाणु जो पशु या वनस्पति जीवन का आधार है । (प्रोटोप्लाज्म) ।
जीवधारी पुं० (सं) प्राणी । जानवर ।
जीवन पुं० (सं) १-जीवित रहने की अवस्था । २-जीवित रहने का भाव । प्राणधारण । ३-जीवित रखने वाली वस्तु । ४-परम प्रिय । ५-जीविका । ६-पानी । ७-वायु । ८-ईश्वर । ९-पुत्र । १०-मज्जा । ११-मक्खन । १२-गंगा । १३-प्राणाधार ।
जीवन-काल पुं० (सं) जन्म और मृत्यु के बीच का समय । (लाइफ-टाइम) ।
जीवन-क्रिया स्त्री० (सं) जीवन की प्रवृत्ति । जीवन क्रम ।
जीवन-चरित, जीवन-चरित्र पुं०(सं) १-सारे जीवन में किये हुए कार्यों का विवरण या वृतांत । (बायोग्राफी) । २-वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन भर का वृतांत हो ।
जीवन-धन पुं०(सं)१-जीवन में सब से अधिक प्रिय २-प्राणाधार । प्राणप्रिय ।
जीवन-नौका स्त्री० (हि) बड़े जहाजों या जलपोतों पर रहने वाली छोटी नाव जो जहाज डूबने की अवस्था में लोग उस पर सवार हो कर प्राण रक्षा करते हैं । (लाइफ-बोट) ।
जीवन-प्रमाणक पुं० (सं) वह सिद्ध करने वाला प्रमाण-पत्र कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था या इस समय जीवित है (लाइफ-सार्टिफिकेट) ।
जीवन-बूटी स्त्री० (हि) मरे हुए को जिलाने वाली बूटी संजीवनी ।
जीवनमूरि स्त्री० (हि) १-संजीवन बूटी । २-प्राणप्रिया
जीवन-यापन पुं० (सं) जीवननिर्वाह ।
जीवन-यापन-व्यय पुं० (सं) भोजन, वस्त्र, और निवास सम्बन्धी वह व्यय जो जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक होता है । (कॉस्ट ऑफ लिविंग) ।
जीवन-रक्षक-नौका स्त्री० (दे) 'जीवन-नौका' ।
जीवन-वृत्त, जीवन-वृत्तांत पुं० (सं) जीवनचरित ।
जीवन-वृत्ति स्त्री० (सं) १-जीविका । रोजी । २-जीवन निर्वाह के निमित्त मिलने या दी जाने वाली वृत्ति । (लिविंग-अलाउंस) ।
जीवन-संग्राम, जीवन-संघर्ष पुं० (सं) प्रतिकूल परिस्थितियों में रहकर या प्रबल शक्तियों का सामना करते हुए अपना अस्तित्व बनाये रखने के निमित्त किया जाने वाला घोर प्रयत्न । (स्ट्रगल-फॉर एग्जिस्टेन्स) ।
जीवन-हेतु पुं० (सं) रोजी । जीविका ।
जीवना क्रि० (हि) जीना ।
जीवनाघात पुं० (सं) विष ।
जीवनी स्त्री० (हि) १-जीवन-चरित । २-जीवन । जिन्दगी । वि० १-जीवन से सम्बन्ध रखने वाली । २-जीवन देने वाली ।
जीवनोपाय पुं० (सं) जीविका ।
जीवन्मुक्त वि० (सं) जो जीवन काल में आत्मज्ञान होने के कारण, सांसारिक बन्धन से छूट गया हो ।
जीवन्मुक्ति स्त्री० (सं) जीवन्मुक्त होने की अवस्था या भाव ।
जीवन्मृत वि० (सं) जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो ।
जीव-बन्धु पुं० (सं) गुलदुपहरिया । बन्धूक ।
जीव-मन्दिर पुं० (सं) शरीर । देह ।
जीवयोनि स्त्री० (सं) जानवर ।
जीवरा पुं० (हि) जीव-प्राण ।
जीवरि स्त्री० (हि) प्राणधारण की शक्ति । जीवन ।
जीवरी पुं० (हि) जीवन ।
जीवलोक पुं०(सं) भूलोक । पृथ्वीतल ।
जीव-विज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास, वर्गों आदि का विवेचन होता है ।
जीव-हत्या, जीव-हिंसा स्त्री०(सं) प्राणियों का वध । हत्या ।
जीवांतक पुं० (सं) १-जीवों की हत्या करने वाला । २-व्याध । बहेलिया ।
जीवा पुं० (सं) १-धनुष की डोरी । २-जीविका । ३-जीवन ।
जीवाजून पुं० (हि) जीव-जन्तु ।
जीवाणु पुं० (सं) १-विकार से उत्पन्न होने वाले अति सूक्ष्म एक कोषीय शाकाणु जिनमें से कितने ही तो रोगों की उत्पत्ति के कारण माने जाते हैं और कुछ शरीर के लिए लाभप्रद होते हैं । (बैक्टीरिया) । २-जीवयुक्त अणु या अणु के समान छोटे जीव जो प्रायः अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं । (जर्म) । ३-सेन्द्रिय जीवों का वह मूल और अतिसूक्ष्म रूप जो विकसित होकर एक नये जीव का रूप धारण करता है ।

जीवात्मा पुं० (सं) जीव। आत्मा। प्राण।
जीवाधार पुं० (सं) जीवन का आधार। हृदय।
जीवावशेष पुं० (सं) भूमि खुदाई में निकलने वाले प्राचीन काल के जीव-जन्तुओं के अवशिष्ट रूप। (फॉसिल)।
जीवाश्म पुं० दे० 'जीवावशेष'।
जीविका स्त्री० (स) रोजी। वृत्ति।
जीवित वि० (स) जीता हुआ। जिन्दा।
जीवितेश पुं० (सं) १-ईश्वर। २-प्रियतम।
जीह, जीहा स्त्री० (हि) जीभ। जिह्वा।
जुंबिश स्त्री० (फा) हिलना-डोलना। गति।
जु वि० दे० 'जो'। क्रि० वि० दे० 'जो'। स्त्री० दे० 'जूं'
जुआ पुं० (हि) १-बाजी लगाकर खेला जाने वाला [illegible]

जुआर पु० दे० 'ज्वार'।
जुआरी पुं० (हि) जुआ खेलने वाला।
जुआल स्त्री० (हि) ज्वाला। पुं० दे० 'जवाल'।
जुई पु० (हि) करछी के आकार का हवन करने का एक पात्र।
जुकाम पु० (अ) सरदी से होने वाला एक रोग, जिसमें नाक तथा मुख से कफ निकलता है।
जुक्ति स्त्री० दे० 'युक्ति'।
जुग पुं० (हि) १-युग। २-युग्म। जोड़ा। ३-चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही घर में इकट्ठा होना। ४-पुश्त। पीढ़ी।
जुगजुगाना क्रि० (हि) १-टिमटिमाना। २-उभरना।
जुगनू स्त्री० (हि) १-एक गहना जो गले में पहना जाता है। २-शकरखोरा नामक एक चिड़िया।
जुगत स्त्री० (हि) युक्ति। उपाय।
जुगति स्त्री० (हि) युक्ति। तरकीब।
जुगती पु० (हि) १-अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने वाला व्यक्ति। २-चतुर। चालाक।
जुगनी स्त्री० (हि) जुगनूँ।
जुगनूँ पु० (हि) १-खद्योत। पट-बीजना। २-पान के आकार का एक गहना।
जुगम वि० (हि) युग्म। जोड़ा।
जुगराफिया पुं० (अ) भूगोलविद्या।
जुगल वि० दे० 'युगल'।
जुगवना क्रि० (हि) १-सञ्चित करना। २-यत्नपूर्वक सुरक्षित रखना।
जुगाड़नी वि० (हि) बहुत पुराना।
जुगाना क्रि० दे० 'जुगवना'।
जुगार पु० (हि) जुगाली।

जुगालना क्रि० (हि) सींग वाले चौपायों का जुगाली करना।
जुगाली स्त्री० (हि) सींग वाले पशुओं द्वारा निगले चारे को थोड़ा-थोड़ा निकाल कर फिर से चबाना। पागुर।
जुगुत स्त्री० दे० 'जुगत'।
जुगुप्सक वि० (सं) निन्दक।
जुगुप्सा स्त्री० (स) १-निन्दा। बुराई। २-घृणा। ३-अश्रद्धा।
जुज पुं० (फा) १-अंश। अंग। २-कागज के आठ या सोलह पृष्ठों का समूह।
जुजबंदी स्त्री० (फा) किताब की सिलाई जिसमें आठ-आठ पन्ने सीए जाते हैं।
[illegible]

जुझाऊ वि०(हि) १-युद्ध सम्बन्धी। २-दे० 'जुझार'
जुझार पुं० (हि) १-लड़ाका। २-वीर। ३-युद्ध।
जुट स्त्री० (हि) १-दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। २-थोक। लाट। ३-गुट। दल। ४-बल और कद में समान दो मनुष्य। ५-जोड़ का साथी या वस्तु।
जुटक पु० (सं) सिर के उलझे हुए बाल।
जुटना क्रि० (हि) १-जुड़ना। २-गुथना। चिपटना। ३-सम्भोग करना। ४-एकत्र होना। ५-काम में सम्मिलित होना। ६-मिलना।
जुटला वि० (हि) [स्त्री० जुटली] लम्बे बालों की जटा रखने वाला।
जुटाना क्रि० (हि) १-दो या अधिक वस्तुओं को दृढ़तापूर्वक जोड़ना। २-सटाना। भिड़ाना। ३-इकट्ठा करना।
जुटाव पु० (हि) जुटने की क्रिया या भाव। जमावड़ा।
जुठारना क्रि० (हि) जूठा या उच्छिष्ट करना।
जुठिहारा पुं०(हि) [स्त्री० जुठिहारी] जूठा या उच्छिष्ट खाने वाला।
जुड़ना क्रि० (हि) १-सम्बद्ध होना। २-इकट्ठा होना। ३-किसी काम में सहयोग देने को उपस्थित होना। ४-उपलब्ध होना। ५-जुतना।
जुड़पित्ती स्त्री० (हि) शीत और पित्त से उत्पन्न एक प्रकार की खुजली।
जुड़वाँ वि० (हि) जुड़े हुए। यमज। (शिशु)।
जुड़वाई स्त्री० दे० 'जोड़वाई'।
जुड़वाना क्रि० (हि) १-शीतल कर[illegible] करना। २-दे० 'जोड़वाना'।
[illegible]
[illegible]

एक प्रकार का पौधा ।
जीव-जंतु पुं०(सं) पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े आदि
जीवट पुं० (हिं) साहस । हिम्मत ।
जीवड़ा पुं० (हिं) प्राणी ।
जीवंत वि० (हिं) जीविका । जिन्दा ।
जीवद पुं० (सं) १-जीवनदाता । २-वैद्य । ३-शत्रु
जीवदया स्त्री० (सं) प्राणियों पर उनके जीवन रक्षा के विचार से की जाने वाली दया ।
जीवन-दान पुं०(सं) १-प्राणदान । मरने से बचाना।
जीव-धन पुं० (सं) १-पशुओं या जीवों के रूप में संपत्ति । २-जीवनधन ।
जीव-धातु स्त्री० (सं) एक प्रकार का पारदर्शक, वर्णहीन, सजीव जीवाणु जो पशु या वनस्पति जीवन का आधार है । (प्रोटोप्लाज्म) ।
जीवधारी पुं० (सं) प्राणी । जानवर ।
जीवन पुं० (सं) १-जीवित रहने की अवस्था । २-जीवित रहने का भाव । प्राणधारण । ३-जीवित रखने वाली वस्तु । ४-परम प्रिय । ५-जीविका । ६-पानी । ७-वायु । ८-ईश्वर । ९-पुत्र । १०-मज्जा ११-मक्खन । १२-गंगा । १३-प्राणाधार ।
जीवन-काल पुं० (सं) जन्म और मृत्यु के बीच का समय । (लाइफ-टाइम) ।
जीवन-क्रिया स्त्री० (सं) जीवन की प्रवृत्ति। जीवन क्रम ।
जीवन-चरित, जीवन-चरित्र पुं०(सं) १-सारे जीवन में किये हुए कार्यों का विवरण या वृतांत । (बायोग्राफी) । २-वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन भर का वृतांत हो ।
जीवन-धन पुं०(सं)१-जीवन में सब से अधिक प्रिय २-प्राणाधार । प्राणप्रिय ।
जीवन-नौका स्त्री० (हिं) बड़े जहाजों या जलपोतों पर रहने वाली छोटी नाव जो जहाज डूबने की अवस्था में लोग उस पर सवार हो कर प्राण रक्षा करते हैं । (लाइफ-बोट) ।
जीवन-प्रमाणक पुं० (सं) यह सिद्ध करने वाला प्रमाण-पत्र कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था या इस समय जीवित है (लाइफ-सार्टिफिकेट) ।
जीवन-बूटी स्त्री० (हिं) मरे हुए को जिलाने वाली बूटी संजीवनी ।
जीवनमूरि स्त्री० (हिं) १-संजीवन बूटी । २-प्राणप्रिया
जीवन-यापन पुं० (सं) जीवननिर्वाह ।
जीवन-यापन-व्यय पुं० (सं) भोजन, वस्त्र, और निवास सम्बन्धी वह व्यय जो जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक होता है । (कॉस्ट ऑफ लिविंग) ।
जीवन-रक्षक-नौका स्त्री० (दे) 'जीवन-नौका' ।
जीवन-वृत्त, जीवन-वृत्तांत पुं० (सं) जीवनचरित ।
जीवन-वृत्ति स्त्री० (सं) १-जीविका । रोजी । २-जीवन निर्वाह के निमित्त मिलने या दी जाने वाली वृत्ति । (लिविंग-अलाउंस) ।
जीवन-संग्राम, जीवन-संघर्ष पुं० (सं) प्रतिकूल परिस्थितियों में रहकर या प्रबल शक्तियों का सामना करते हुए अपना अस्तित्व बनाये रखने के निमित्त किया जाने वाला घोर प्रयत्न । (स्ट्रगल-फॉर एग्जिस्टेन्स) ।
जीवन-हेतु पुं० (सं) रोजी । जीविका ।
जीवना क्रि० (हि) जीना ।
जीवनाघात पुं० (सं) विष ।
जीवनी स्त्री० (हि) १-जीवन-चरित । २-जीवन जिन्दगी । वि० १-जीवन से सम्बन्ध रखने वाली २-जीवन देने वाली ।
जीवनोपाय पुं० (सं) जीविका ।
जीवन्मुक्त वि० (सं) जो जीवन काल में आत्मज्ञानी होने के कारण, सांसारिक बन्धन से छूट गया हो ।
जीवन्मुक्ति स्त्री० (सं) जीवन्मुक्त होने की अवस्था या भाव ।
जीवन्मृत वि० (सं) जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो ।
जीव-बन्धु पुं० (सं) गुलदुपहरिया । बन्धूक ।
जीव-मन्दिर पुं० (सं) शरीर । देह ।
जीवयोनि स्त्री० (सं) जानवर ।
जीवरा पुं० (हि) जीव-प्राण ।
जीवरि स्त्री० (हि) प्राणधारण की शक्ति । जीवन ।
जीवरी पुं० (हि) जीवन ।
जीवलोक पुं०(सं) भूलोक । पृथ्वीतल ।
जीव-विज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें जीव जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की उत्पत्ति, स्वरूप विकास, वर्गों आदि का विवेचन होता है ।
जीव-हत्या, जीव-हिंसा स्त्री०(सं) प्राणियों का वध । हत्या ।
जीवांतक पुं० (सं) १-जीवों की हत्या करने वाला २-व्याध । बहेलिया ।
जीवा पुं० (सं) १-धनुष की डोरी । २-जीविका ३-जीवन ।
जीवाजून पुं० (हि) जीव-जन्तु ।
जीवाणु पुं० (सं) १-विकार से उत्पन्न होने वाले अति सूक्ष्म एक कोषीय शाकाणु जिनमें से कितने ही तो रोगों की उत्पत्ति के कारण माने जाते हैं और कुछ शरीर के लिए लाभप्रद होते हैं । (बैक्टीरिया) । २-जीवयुक्त अणु या अणु के समान छोटे जीव जो प्रायः अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं । (जर्म) । ३-सेन्द्रिय जीवों का वह मूल और अतिसूक्ष्म रूप जो विकसित होकर एक नये जीव का रूप धारण करता है ।

जीवात्मा पुं० (सं) जीव। आत्मा। प्राण।
जीवाधार पुं० (सं) जीवन का आधार। हृदय।
जीवावशेष पुं० (सं) भूमि खुदाई में निकलने वाले प्राचीन काल के जीव-जन्तुओं के अवशिष्ट रूप। (फ़ॉसिल)।
जीवाश्म पुं० दे० 'जीवावशेष'।
जीविका स्री० (सं) रोज़ी। वृत्ति।
जीवित वि० (सं) जीता हुआ। जिन्दा।
जीवितेश पुं० (सं) १-ईश्वर। २-प्रियतम।
जीह, जीहा स्री० (हि) जीभ। जिह्वा।
जुंबिश स्री० (फा) हिलना-डोलना। गति।
जु वि० दे० 'जो'। क्रि० वि० दे० 'जो'। स्री० दे० 'जू'
जुआ पुं० (हि) १-बाज़ी लगाकर खेला जाने वाला खेल। द्यूत। २-छलकपट। ३-चक्की की मूठ। ४-वह लकड़ी जो बैल के कन्धे पर रखी जाती है।
जुआठा पुं० (हि) लकड़ी का वह ढाँचा, जो बैलों के कन्धों पर रखा जाता है।
जुआर पुं० दे० 'ज्वार'।
जुआरी पुं० (हि) जुआ खेलने वाला।
जुआल स्री० (हि) ज्वाला। पुं० दे० 'जवाल'।
जुई पुं० (हि) करछी के आकार का हवन करने का एक पात्र।
जुकाम पुं० (अ) सरदी से होने वाला एक रोग, जिसमें नाक तथा मुख से कफ निकलता है।
जुक्ति स्री० दे० 'युक्ति'।
जुग पुं० (हि) १-युग। २-युग्म। जोड़ा। ३-चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही घर में इकट्ठा होना। ४-पुश्त। पीढ़ी।
जुगजुगाना क्रि० (हि) १-टिमटिमाना। २-उभरना
जुगजुगी स्री० (हि) १-एक गहना जो गले में पहना जाता है। २-शकरखोरा नामक एक चिड़िया।
जुगत स्री० (हि) युक्ति। उपाय।
जुगति स्री० (हि) युक्ति। तरकीब।
जुगती पुं० (हि) १-अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने वाला व्यक्ति। २-चतुर। चालाक।
जुगनी स्री० (हि) जुगनूँ।
जुगनूँ पुं० (हि) १-खद्योत। पट-बीजना। २-पान के आकार का एक गहना।
जुगम वि० (हि) युग्म। जोड़ा।
जुगराफ़िया पुं० (अ) भूगोलविद्या।
जुगल वि० दे० 'युगल'।
जुगवना क्रि० (हि) १-सञ्चित करना। २-यत्नपूर्वक सुरक्षित रखना।
जुगादरी वि० (हि) बहुत पुराना।
जुगाना क्रि० दे० 'जुगवना'।
जुगार स्री० (हि) जुगाली।

जुगालना क्रि० (हि) सींग वाले चौपायों का जुगाली करना।
जुगाली स्री० (हि) सींग वाले पशुओं द्वारा निगले चारे को थोड़ा-थोड़ा निकाल कर फिर से चबाना पागुर।
जुगुत स्री० दे० 'जुगत'।
जुगुप्सक वि० (सं) निन्दक।
जुगुप्सा स्री० (सं) १-निन्दा। बुराई। २-घृणा। ३-अश्रद्धा।
जुज़ पुं० (फा) १-अंश। अंग। ३-कागज़ के आठ या सोलह पृष्ठों का समूह।
जुज़बंदी स्री० (फा) किताब की सिलाई जिसमें आठ-आठ पन्ने सीए जाते हैं।
जुधीष्ठल पुं० (हि) युधिष्ठिर।
जुझ स्री० (हि) युद्ध। लड़ाई।
जुझवाना क्रि० (हि) १-लड़ने को प्रोत्साहित करना। २-लड़ाकर मरवा देना।
जुझाऊ वि०(हि) १-युद्ध सम्बन्धी। २-दे० 'जुझार'
जुझार पुं० (हि) १-लड़ाका। २-वीर। ३-युद्ध।
जुट स्री० (हि) १-दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। २-थोक। लॉट। ३-गुट। दल। ४-बल और कद में समान दो मनुष्य। ५-जोड़ का साथी या वस्तु।
जुटक पुं० (सं) सिर के उलझे हुए बाल।
जुटना क्रि० (हि) १-जुड़ना। २-गुथना। चिपटना। ३-सम्भोग करना। ४-एकत्र होना। ५-काम में सम्मिलित होना। ६-मिलना।
जुटला वि० (हि) [स्री० जुटली] लम्बे बालों की जटा रखने वाला।
जुटाना क्रि० (हि) १-दो या अधिक वस्तुओं को दृढ़तापूर्वक जोड़ना। २-सटाना। भिड़ाना। ३-इकट्ठा करना।
जुटाव पुं० (हि) जुटने की क्रिया या भाव। जमावड़ा।
जुठारना क्रि० (हि) जूठा या उच्छिष्ट करना।
जुठिहारा पुं०(हि) [स्री० जुठिहारी] जूठा या उच्छिष्ट खाने वाला।
जुड़ना क्रि० (हि) १-सम्बद्ध होना। २-इकट्ठा होना ३-किसी काम में सहयोग देने को उपस्थित होना। ४-उपलब्ध होना। ५-जुतना।
जुड़पित्ती स्री० (हि) शीत और पित्त से उत्पन्न एक प्रकार की खुजली।
जुड़वाँ वि० (हि) जुड़े हुए। यमज। (शिशु)।
जुड़वाई स्री० दे० 'जोड़वाई'।
जुड़वाना क्रि० (हि) १-शीतल करना। २-शान्त करना। ३-दे० 'जोड़वाना'।
जुड़ाई स्री० (हि) दे० 'जोड़ाई'।
जुड़ाना क्रि० (हि) १-ठण्डा होना या करना। २-

एक प्रकार का पौधा ।
जीव-जंतु पुं०(सं) पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े आदि
जीवट पुं० (हिं) साहस । हिम्मत ।
जीवड़ा पुं० (हिं) प्राणी ।
जीवंत क्रि० (हिं) जीविका । जिन्दा ।
जीवद पुं० (सं) १-जीवनदाता । २-वैद्य । ३-शत्रु
जीवदया स्त्री० (सं) प्राणियों पर उनके जीवन रक्षा के विचार से की जाने वाली दया ।
जीवन-दान पुं०(सं) १-प्राणदान । मरने से बचाना।
जीव-धन पुं० (सं) १-पशुओं या जीवों के रूप में संपत्ति । २-जीवनधन ।
जीव-धातु स्त्री० (सं) एक प्रकार का पारदर्शक, वर्ण-हीन, सजीव जीवाणु जो पशु या वनस्पति जीवन का आधार है । (प्रोटोप्लाज्म) ।
जीवधारी पुं० (सं) प्राणी । जानवर।
जीवन पुं० (सं) १-जीवित रहने की अवस्था । २-जीवित रहने का भाव । प्राणधारण । ३-जीवित रखने वाली वस्तु । ४-परम प्रिय । ५-जीविका । ६-पानी । ७-वायु । ८-ईश्वर । ९-पुत्र । १०-मज्जा ११-मक्खन । १२-गंगा । १३-प्राणाधार ।
जीवन-काल पुं० (सं) जन्म और मृत्यु के बीच का समय । (लाइफ-टाइम)।
जीवन-क्रिया स्त्री० (स) जीवन की प्रवृत्ति। जीवन क्रम ।
जीवन-चरित, जीवन-चरित्र पुं०(सं) १-सारे जीवन में किये हुए कार्यो का विवरण या वृतांत । (बायोग्राफी) । २-वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन भर का वृतांत हो ।
जीवन-धन पुं०(सं)१-जीवन में सब से अधिक प्रिय २-प्राणाधार । प्राणप्रिय ।
जीवन-नौका स्त्री० (हिं) बड़े जहाजों या जलपोतों पर रहने वाली छोटी नाव जो जहाज डूबने की अवस्था में लोग उस पर सवार हो कर प्राण रक्षा करते हैं । (लाइफ-बोट) ।
जीवन-प्रमाणक पुं० (सं) वह सिद्ध करने वाला प्रमाण-पत्र कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था या इस समय जीवित है (लाइफ-सार्टिफिकेट) ।
जीवन-बूटी स्त्री० (हिं) मरे हुए को जिलाने वाली बूटी संजीवनी ।
जीवनमूरि स्त्री० (हिं) १-संजीवन बूटी । २-प्राणप्रिया
जीवन-यापन पुं० (सं) जीवननिर्वाह ।
जीवन-यापन-व्यय पुं० (सं) भोजन, वस्त्र, और निवास सम्बन्धी वह व्यय जो जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक होता है । (कॉस्ट ऑफ लिविंग) ।
जीवन-रक्षक-नौका स्त्री० (दे) 'जीवन-नौका' ।
जीवन-वृत्त, जीवन-वृत्तांत पुं० (सं) जीवनचरित ।
जीवन-वृत्ति स्त्री० (सं) १-जीविका । रोजी । २-जीवन निर्वाह के निमित्त मिलने या दी जाने वाली वृत्ति । (लिविंग-अलाउंस) ।
जीवन-संग्राम, जीवन-संघर्ष पुं० (सं) प्रतिकूल परिस्थितियों में रहकर या प्रबल शक्तियों का सामना करते हुए अपना अस्तित्व बनाये रखने के निमित्त किया जाने वाला घोर प्रयत्न । (स्ट्रगल-फॉर एक्जिस्टेन्स) ।
जीवन-हेतु पुं० (स) रोजी । जीविका ।
जीवना क्रि० (हिं) जीना ।
जीवनाघात पुं० (सं) विष ।
जीवनी स्त्री० (हिं) १-जीवन-चरित । २-जीवन । जिन्दगी । वि० १-जीवन से सम्बन्ध रखने वाली। २-जीवन देने वाली ।
जीवनोपाय पुं० (सं) जीविका ।
जीवन्मुक्त वि० (सं) जो जीवन काल में आत्मज्ञान होने के कारण, सांसारिक बन्धन से छूट गया हो ।
जीवन्मुक्ति स्त्री० (सं) जीवन्मुक्त होने की अवस्था या भाव ।
जीवन्मृत वि० (सं) जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो ।
जीव-बन्धु पुं० (सं) गुलदुपहरिया । बन्धूक ।
जीव-मन्दिर पुं० (सं) शरीर । देह ।
जीवयोनि स्त्री० (सं) जानवर ।
जीवरा पुं० (हि) जीव-प्राण ।
जीवरि स्त्री० (हि) प्राणधारण की शक्ति । जीवन ।
जीवरी पुं० (हि) जीवन ।
जीवलोक पुं०(स) भूलोक । पृथ्वीतल ।
जीव-विज्ञान पुं० (स) वह विज्ञान जिसमें जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास, वर्गों आदि का विवेचन होता है ।
जीव-हत्या, जीव-हिंसा स्त्री०(सं) प्राणियों का वध । हत्या ।
जीवांतक पुं० (सं) १-जीवों की हत्या करने वाला। २-व्याध । बहेलिया ।
जीवा पुं० (सं) १-धनुष की डोरी । २-जीविका । ३-जीवन ।
जीवाजून पुं० (हि) जीव-जन्तु ।
जीवाणु पुं० (सं) १-विकार से उत्पन्न होने वाले अति सूक्ष्म एक कोषीय शाकाणु जिनमें से कितने ही तो रोगों की उत्पत्ति के कारण माने जाते हैं और कुछ शरीर के लिए लाभप्रद होते हैं । (बैक्टीरिया) । २-जीवयुक्त अणु या अणु के समान छोटे जीव जो प्रायः अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न [illegible] हैं । (जर्म) । ३-सेन्द्रिय जीवों का [illegible] अतिसूक्ष्म रूप जो [illegible] का रूप धारण करता [illegible] ।

शान्त होना। ३-तृप्त करना।
जुड़ावना क्रि० (हि) दे० 'जुड़ाना'।
जुत वि० (हि) युक्त। युत।
जुतना क्रि० (हि) १-किसी काम में पूरी ताकत के साथ लगना। २-जोता जाना (खेत)। २-बैल, घोड़े आदि का गाड़ी या हल आदि में लगना।
जुतवाना क्रि० (हि) दूसरे से जोतने का काम कराना।
जुताई स्त्री० दे० 'जोताई'।
जुताना क्रि० (हि) दे० 'जोताना'।
जुतियाना क्रि० (हि) १-जूतों से मारना। २-अपमानित करना।
जुत्थ पुं० (हि) यूथ।
जुदा वि० (फा) १-पृथक्। अलग। २-भिन्न।
जुदाई स्त्री० (फा) वियोग।
जुदायगी स्त्री० दे० 'जुदाई'।
जुदेन वि० (हि) जुदा।
जुद्ध पु० (हि) युद्ध।
जुनब्बा स्त्री० (हि) एक तरह की तलवार।
जुन्हाई स्त्री० (हि) १-चन्द्रिका। चाँदनी। २-चन्द्रमा
जुन्हार स्त्री० (हि) दे० 'जोंधरी'।
जुन्हैया स्त्री० (हि) १-चाँद। २-चाँदनी।
जुपना क्रि० (हि) जलना। (दीपक का)।
जुबराज पुं० (हि) युवराज।
जुबली स्त्री० (अ) जबन्ती।
जुबाद पुं० (अ) एक प्रकार का तरल गन्ध द्रव्य।
जुबान स्त्री० दे० 'जबान'।
जुमकना क्रि० (हि) किसी स्थान पर दृढ़तापूर्वक खड़े रहना। डटना।
जुमला वि० (फा) सब। कुल। पुं० पूरा वाक्य।
जुमा पुं० (अ) शुक्रवार।
जुमामसजिद स्त्री० (अ) वह मसजिद जहाँ मुसलमान लोग जुमे के दिन नमाज पढ़ते हैं।
जुमिल पुं० (?) एक तरह का घोड़ा।
जुमुकना क्रि० (हि) १-पास आजाना। २-जुड़ना।
जुमेरात स्त्री० (अ) बृहस्पतिवार।
जुम्मा पु० १-दे० 'जुमा'। २-दे० 'जिम्मा'।
जुर पु० (हि) ज्वर।
जुरअत स्त्री० (फा) साहस।
जुरझना क्रि० (हि) झुलसना।
जुरझुरी स्त्री० (हि) १-ज्वरांश। हरारत। २-शीतकंप
जुरना क्रि० (हि) जुड़ना।
जुरमाना क्रि० (फा) अर्थदंड।
जुरवाना क्रि० (हि) जुरमाना।
जुरा स्त्री० (हि) जरा। बुढ़ापा।
जुराना क्रि० (हि) जुड़ाना।
जुराफा पुं० (अ) एक अफरीकी जंगली पशु जिसकी टांगें और गरदन ऊँट के समान और सिर हिरन की तरह होता है।
जुरी स्त्री० (हि) हलका ज्वर।
जुरूर वि० क्रि० वि० दे० 'जरूर'।
जुर्म पुं० (अ) अपराध।
जुर्माना पुं० दे० 'जुरमाना'।
जुर्रा पुं० (फा) नरबाज जो पक्षियों का शिकार करता है।
जुर्राफा पुं० दे० 'जुराफा'।
जुर्राब स्त्री० (तु०) मोजा।
जुल पुं० (अं) धोखा। झांसा।
जुलकरन पुं० (अ) प्राचीन काल की एक उपाधि जो प्रथम बार सिकन्दर महान के नाम के साथ लगाई गई तथा बाद में बादशाहों के नाम के पीछे लगाई जाती थी।
जुलकरनैन पुं०(अ) सिकन्दर महान के नाम के साथ लगने वाली एक उपाधि।
जुलना क्रि० (हि) १-मिलना। सम्मिलित होना। २-मिलना। भेंट करना।
जुलम पुं० (हि) जुल्म। अन्याय। अत्याचार।
जुलहा पु० दे० 'जुलाहा'।
जुलाई स्त्री० (अ) अंग्रेजी वर्ष का सातवां महीना जो ३१ दिन का होता है।
जुलाब पुं० (फा) १-रेचन। दस्त। २-रेचक औषध
जुलाहा पुं० (हि) (स्त्री जुलाहिन)। कपड़े बुनने वाला। तन्तुवाय।
जुलुफ स्त्री० (दे) 'जुल्फ'।
जुलुम पुं० (दे) 'जुल्म'।
जुलूस पुं० (दे) 'जलूस'।
जुल्फ स्त्री० (फा) सिर के लम्बे बाल। पट्टा। कुल्ला।
जुल्फी स्त्री० (फा) जुल्फ। पट्टा।
जुल्म पुं० (अ) अत्याचार।
जुल्मी वि० (अ) अत्याचारी। अन्यायी।
जुल्लाब पुं० (दे) 'जुलाब'।
जुव, जुवक पुं० (हि) युवक।
जुवती स्त्री० (हि) युवती।
जुवा पुं० (हि) १-युवा। २-जूआ।
जुवार स्त्री० (दे) 'ज्वार'।
जुहाना क्रि० (हि) १-सञ्चित करना। २-इमारत के काम में पत्थर आदि यथा स्थान बैठाना। ३-चित्र को प्रभावशाली बनाने के निमित्त आकृतियों को यथा स्थान बैठाना। संयोजन।
जुहार स्त्री० (हि) नमस्कार। प्रणाम।
जुहारना क्रि० (हि) १-नमस्कार करना। २-सहायता मांगना। ३-एहसान लेना।
जुहावना क्रि० (दे) 'जुहाना'।
जुहू स्त्री० (दे) 'जूही'।
जुहोता पु० (हि) यज्ञ में आहुति डालने वाला।

जूँ स्त्री० (हि) एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो सिर के बालों में पाया जाता है।
जूठ वि० (दे) 'जूठा'।
जूठन स्त्री० (दे) 'जूठन'।
जू अव्य० (हि) (एक आदरसूचक शब्द) जी। वि० जो क्रि० वि० ज्यों (जैसे)।
जूआ पुं० (हि) १-गाड़ी के आगे की वह लकड़ी जो बैलों के कंधों पर रहती है। २-जुआठा। ३-चक्की फिराने की मूठ। ४-हारजीत का खेल। द्यूत। जुआ।
जूआ-घर पुं० (हि) द्यूतशाला। जूआ खेलने का स्थान।
जूआ-चोर पुं० (हि) भारी धूर्त और ठग।
जूआ चोरी स्त्री० (हि) किसी का धन हड़पने के लिए की जाने वाली धूर्तता या छल।
जूजू पुं० (हि) एक कल्पित जीव जिससे बच्चों के मन में भय उत्पन्न करते हैं। हौआ।
जूझ स्त्री० (हि) लड़ाई।
जूझना क्रि० (हि) १-लड़ना। २-लड़कर मरना।
जूट पुं० (सं) १-जटा की गाँठ। जूड़ा। २-जटा। लट। ३-शिव की जटा। ४-पटसन।
जूठ पुं० दे० 'जूठन'। वि० दे० 'जूठा'।
जूठन स्त्री० (हि) १-खाये हुए भोजन का शेष। उच्छिष्ट भोजन। २-एक दो बार पहले काम में लाया जा चुका पदार्थ। भुक्त पदार्थ।
जूठा वि० (हि) [स्त्री० जूठी] किसी के खाने से बचा हुआ (भोजन) उच्छिष्ट। २-जिसका पहले किसी ने उपभोग कर लिया हो। भुक्त। ३-जिसका स्पर्श मुख या किसी जूठे पदार्थ से हुआ हो। पुं० (हि) जूठन। उच्छिष्ट भोजन।
जूड़ वि० (हि) ठण्डा। शीतल। पुं० दे० 'जूड़ा'।
जूड़ा पुं० (हि) १-सिर के बालों को लपेट कर बनाई हुई गाँठ या ग्रन्थि। २-चोटी। कलगी। ३-मूँज आदि का पूला। ४-पगड़ी का पिछला भाग। ५-घास की बनी गेंडुरी जिस पर घड़ा रखा जाता है।
जूड़ी स्त्री० (हि) जाड़ा देकर चढ़ने वाला बुखार।
जूत पुं० (हि) जूता।
जूता पुं० (हि) पैर में पहनने का उपकरण जो पैर के ढाँचे की तरह होता है। पादत्राण। उपानह।
जूताखोर वि० (हि) १-जूते खाने वाला। २-निर्लज्ज
जूती स्त्री० (हि) १-जूता। २-स्त्रियों का जूता।
जूतीपैजार स्त्री० (हि) १-जूतों की मारपीट। २-लड़ाई झगड़ा।
जूथ पुं० (हि) यूथ।
जूथका, जूथिका स्त्री० (हि) जूही का पौधा अथवा फूल।
जून पुं० (हि) १-समय। काल। २-तृण। घास।
जूप पुं० (हि) १-जुआ। द्यूत। २-दे० 'यूप'।
जूमना क्रि० (हि) एकत्र होना। जुटना।
जूर पुं० (हि) जोड़। संचय।
जूरना क्रि० (हि) १-जोड़ना। २-एक पर एक रख कर गड्डी लगाना।
जूरा पुं० दे० 'जूड़ा'।
जूरी स्त्री० (हि) १-घास या पत्तों का पूला। जुट्टी। २-एक प्रकार का पकवान। ३-सूरन आदि के नये कल्ले। पुं० (अं) वह नागरिक परामर्शदाता जो न्यायालय में जज के साथ बैठकर अभियोगों के फैसलों के निर्णय में सहायता करते हैं।
जूष पुं० (सं) १-शोरबा। झोल। २-पकाई हुई दाल का पानी।
जूस पुं० (हि) १-पकी हुई दाल अथवा उबली हुई वस्तु का रस। २-सम संख्या। युग्म संख्या।
जूसी स्त्री० (हि) राँड का पसेव। चोटा।
जूह पुं० दे० 'यूथ'।
जूहर पुं० दे० 'जौहर'।
जूही स्त्री० (हि) १-एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूल चमेली से मिलते हैं। २-एक तरह की आतिशबाजी।
जृंभ पुं० (सं) [स्त्री० जृंभा] १-जँभाई। २-आलस्य
जृंभक वि० (सं) जमाँई लेने वाला। पुं० (सं) निद्रा लाने वाला एक अस्त्र।
जृंभा, जृंभिका स्त्री० (सं) १-जँभाई। २-आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जड़ता। ३-एक शक्ति का नाम।
जेउ क्रि० वि० दे० 'ज्यों'।
जेगना पुं० (हि) जुगनू।
जेना क्रि० दे० 'जेवना'।
जेंवन पुं० (हि) १-खाना। २-भोजन करना। ३-खाद्य पदार्थ। ३-ज्योनार।
जेंवना क्रि० (हि) भोजन कराना।
जे सर्व० (हि) 'जो' का बहुवचन।
जेइ, जेउ, जेऊ सर्व० १-दे० 'जो'। २-जिसने।
जेट पुं० (हि) १-समूह। राशि। २-बरतनों का समूह जिसमें वे एक दूसरे के ऊपर रखे हों। ३-रोटियों की तह।
जेटी स्त्री० (अं) वह स्थान जहाँ जहाज पर माल चढ़ता या उतरता है।
जेठ पुं० (हि) १-वैशाख और आषाढ़ के बीच का महीना। ज्येष्ठ। २-[स्त्री० जेठानी] पति का बड़ा भाई। भसुर। वि० अग्रज। बड़ा।
जेठवा वि० (हि) १-ज्येष्ठ या जेठ मास में होने वाला २-दे० 'जेठा'। पुं० एक प्रकार की कपास जो जेठ के महीने में होती है।
जेठरा वि० (हि) दे० 'जेठा'।
जेठा वि० (हि) [स्त्री० जेठी] १-बड़ा। अग्रज। २-सबमें उत्तम।

जेठाई स्त्री० (हि) बड़ाई। जेठापन।
जेठानी स्त्री० (हि) पति के बड़े भाई की पत्नी।
जेठी वि० (हि) जेठ सम्बन्धी। जेठ का। स्त्री० (हि) जेठ में पकने या फूटने वाली कपास।
जेठी-मधु स्त्री० (हि) मुलेठी।
जेठौत, जेठौता पु० (हि) [स्त्री० जेठौती] जेठ का लड़का।
जेतव्य वि० (सं) जो जीता न जा सके। जेय।
जेता पुं० (हि) जीतने वाला। विजयी। वि० [स्त्री० जेती] जितना।
जेतार पुं० १-दे० 'जेता'। २-जीतने वाला।
जेतिक, जेते, जेतो क्रि० वि० (हि) जितना।
जेना क्रि० (हि) जीमना। भोजन करना।
जेन्य वि०(सं)१-उच्च कुलोत्पन्न। २-असली। सच्चा।
जेब पुं०(फा) खीसा। खरीता। स्त्री० शोभा। सौन्दर्य।
जेबकट, जेबकतरा पु० (हि) जेब काट कर रुपया, पैसा निकालने वाला व्यक्ति।
जेबखर्च पुं० (फा) निज के खर्च के लिए धन।
जेबघड़ी स्त्री० (हि) जेब में रखने की घड़ी।
जेबी वि० (फा) १-जेब में रखने योग्य। २-बहुत छोटा।
जेमन पुं० (हि) भोजन करना।
जेय वि० (सं) जीतने योग्य।
जेर स्त्री० (हि) वह झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है। आँवल। वि० (फा) १-परास्त। पराजित २-जो बहुत दिक किया जाए।
जेरबार वि० (फा) १-जो किसी विपत्ति के कारण अत्यन्त दुखी हो। २-जिसकी बहुत हानि हुई हो।
जेरबारी स्त्री० (फा) १-तङ्गी। २-परेशानी।
जेरी स्त्री०(हि) १-जेर। आँवल। २-वह लाठी जिसे चरवाहे कँटीली झाड़ियाँ आदि हटाने या दबाने के लिए अपने पास रखते हैं।
जेल पुं० (अ) कारागार। बन्दीगृह। पुं० (हि) जंजाल। परेशानी।
जेलखाना पुं० (फा) कारागार।
जेलर पु० (अं) जेल का अधिकारी।
जेलाटिन पुं० (अं) सरेस की तरह का एक पदार्थ।
जेवड़ा पुं० (हि) [स्त्री० जेवड़ी] रस्सा। डोर।
जेवना क्रि० (हि) जीवना। जीमना। भोजन करना।
जेवनार स्त्री० (हि) १-दे० 'ज्योनार'। २-रसोई। भोजन।
जेवर पु० (फा) आभूषण। गहना।
जेवरी स्त्री० (हि) रस्सी।
जेष्ठ पुं० (हि) १-जेठ मास। २-जेठ। वि० अग्रज। बड़ा।
जेह स्त्री० (हि) धनुष का चिल्ला।
जेहन पु० (अ) बुद्धि। धारणशक्ति।
जेहर स्त्री० (हि) पाजेब (गहना)।
जेहरि स्त्री० (हि) आँवल (खेड़ी)।
जेहल स्त्री० (हि) हठ। जिद। पुं० (हि) जेल। कारागार।
जेहलो वि० (हि) हठी। जिद्दी।
जेहाद पुं० दे० 'जहाद'।
जेहि सर्व० (हि) १-जिसे। जिसको। २-जिससे।
जै स्त्री० (हि) जय। वि० (हि) जितने। जिस संख्या में।
जैकार स्त्री० (हि) जयकार।
जै-जैकार स्त्री० (हि) जय-जयकार।
जैजैवंती स्त्री० (हि) एक रागिनी।
जैत स्त्री० (हि) विजय। जीत।
जैतपत्र पुं० (हि) जयपत्र।
जैतवार पुं० (हि) विजयी। विजेता।
जैतश्री स्त्री० (हि) एक रागिनी।
जैतून पुं० (अ) एक सदाबहार वृक्ष जिसके फल और बीज दवा के काम में आते हैं।
जैन पुं० (सं) १-भारत का एक धर्म-सम्प्रदाय। २-जैनी।
जैनी पुं० (हि) जैनमतावलम्बी।
जैनू पुं० (हि) आहार। भोजन।
जै-पत्र पु० (हि) जय-पत्र।
जैबो क्रि० (हि) जाना।
जैमाल स्त्री० दे० 'जयमाला'।
जैमिनी पुं० (सं) पूर्व मीमांसा के प्रवर्तक एक ऋषि
जैव वि० (सं) १-जीव या जीवन से सम्बन्ध रखने वाला। २-जीवों अथवा उनके शारीरिक अंगों से सम्बन्ध रखने वाला। ३-जिसमें जीवनदायिनी शक्ति तथा शारीरिक अवयव या इन्द्रियां हों। (ऑर्गेनिक)।
जैस वि० (हि) जैसा।
जैसा वि० (हि) [स्त्री० जैसी] १-जिस प्रकार का। २-जितना। ३-समान। तुल्य। क्रि० वि० जितना। जिस परिमाण अथवा मात्रा में।
जैसी वि० (हि) 'जैसा' का स्त्रीलिङ्ग।
जैसे क्रि० वि० (हि) जिस प्रकार। जिस तरह।
जैसो वि० दे० 'जैसा'। क्रि० वि० दे० 'जैसा'।
जों क्रि० वि० (हि) जैसे। जिस भाँति।
जोंक स्त्री० (हि) १-पानी में रहने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपक कर उनका रक्त चूसता है। २-वह व्यक्ति जो अपना मतलब गाँठने के लिए पीछे पड़ जाये।
जोंकी स्त्री० (हि) १-लोहे का वह काँटा जो दो तख्तों को परस्पर जोड़ता है। २-दे० 'जोंक'।
जोंधरी स्त्री० (हि) १-छोटी ज्वार। २-बाजरा।
जोधैया स्त्री० (हि) ज्योत्स्ना। चाँदनी।

जो सर्व० (हि) एक सम्बन्ध वाचक सर्वनाम। जिसमें कही हुई संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ और वर्णन की योजना की जाती है। अव्य० यदि। अगर।

जोअना क्रि० (हि) दे० 'जोवना'।

जोइ स्त्री० (हि) जोरू। पत्नी। सर्व० 'जो'।

जोइनि स्त्री० (हि) १-योनि। २-आकर। खान।

जोइसी पु० (हि) ज्योतिषी।

जोउ सर्व० (हि) जो

जोख स्त्री० (हि) तौल।

जोखना क्रि० (हि) तौलना। वजन करना।

जोखा पु० (हि) लेखा। हिसाब।

जोखिउ स्त्री० (हि) जोखिम।

जोखिता स्त्री० (हि) योषिता।

जोखिम स्त्री० (हि) १-भारी अनिष्ट या विपत्ति की आशङ्का। २-वह पदार्थ अथवा काम जिससे भारी विपत्ति आ सकती है।

जोखैया, जोखुवा पु० (हि) तौलने वाला।

जोखों स्त्री० (हि) जोखिम।

जोगंधर पु० (हि) एक युक्ति जिसके द्वारा शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था। योगन्धर।

जोग पु० दे० 'योग'। वि० दे० 'योग्य'।

जोगड़ा पु० (हि) बना हुआ योगी। पाखण्डी।

जोगता स्त्री० (हि) योग्यता।

जोगन स्त्री० (हि) जोगिन।

जोगनिया स्त्री० (हि) जोगिन। साधुनी।

जोगमाया स्त्री० (हि) दे० 'योगमाया'।

जोगवना क्रि० (हि) १-हिफाजत से रखना। २-इकट्ठा करना। ३-आदर करना। ४-जाने देना। ५-पूरा करना।

जोगवीर पु० दे० 'जोगीड़ा'।

जोग-साधन पु० (हि) तपस्या।

जोगानल स्त्री० (हि) योग से उत्पन्न आग।

जोगिंद्र पु० (हि) १-योगीराज। २-महादेव।

जोगिन स्त्री० (हि) १-जोगी स्त्री या जोगी की स्त्री। २-पिशाचनी। ३-एक रणदेवी।

जोगिनी स्त्री० (हि) १-योगिनी। २-जोगिन।

जोगिया वि० (हि) १-जोग का। २-जोगी का। ३-गेरू के रंग का। भगवा।

जोगी पु० (हि) [स्त्री० जोगिन] १-योगी। २-एक प्रकार के भिक्षुक, जो सारंगी पर गाते हैं।

जोगीड़ा पु० (हि) १-एक प्रकार का गाना जो वसन्त में गाया जाता है। २-इस प्रकार का गाना गाने वालों का समाज।

जोगेसर, जोगेश्वर पु० दे० 'योगेश्वर'।

जोगौटा पु० (हि) जोगी की वह चादर जो योग साधन के समय सिर से पैर तक ओढ़ते हैं।

जोग्य वि० (हि) योग्य।

जोजन पु० (हि) योजन।

जोट पु० (हि) १-जोड़। जोड़ी। २-साथी। संघाती।

जोटा पु० (हि) १-जोड़ा। युग। २-गौन। सुरजी

जोटिंग पु० (म) शिव।

जोटी स्त्री० दे० 'जोड़ी'।

जोड़ पु० (हि) १-जोड़ने की क्रिया। २-कई संख्याओं को जोड़ने से आने वाली संख्या। योगफल। ३-वह स्थान जहाँ दो वस्तुएँ या दो टुकड़े जुड़ें। सन्धि-स्थान। ४-वह टुकड़ा जो किसी वस्तु में जोड़ा जाय। ५-एक ही प्रकार की अथवा साथ-साथ उपयोग में आने वाली दो वस्तुएँ। जोड़ा। ६-बराबरी। समानता। ७-शरीर के दो अवयवों का सन्धि-स्थान। ८-वह जो किसी की बराबरी का हो। ९-पूरी पोशाक। १०-दाव-पेंच। ११-दे० 'जोड़ा'।

जोड़ती स्त्री० (हि) कई संख्याओं का जोड़। योग।

जोड़तोड़ पु० (हि) १-(किसी काम के लिए की जाने वाली) विशेष युक्ति या उपाय। तरकीब। २-दाँव-पेंच। छल-कपट।

जोड़न स्त्री० (हि) जामन। जामन।

जोड़ना क्रि० (हि) १-दो वस्तुओं को सीकर, मिलाकर, चिपका कर या अन्य उपाय द्वारा एक करना। २-टूटे हुए पदार्थों के टुकड़ों को मिलाकर एक करना। ३-वस्तुएँ अथवा सामग्री, क्रम में लगाना या रखना। ४-संचित करना। ५-संख्याओं का योगफल निकालना। जोड़ लगाना। ६-वाक्यों अथवा पदों को यथास्थान करना। ७-(दीपक या आग) जलाना।

जोड़ला, जोड़वाँ वि० (हि) जुड़वाँ। यमज।

जोड़वाई स्त्री० (हि) जोड़वाने की क्रिया या भाव।

जोड़वाना क्रि० (हि) जोड़ने का काम दूसरे से कराना।

जोड़ा पु० (हि) १-एक प्रकार के दो पदार्थ। २-एक साथ पहने जाने वाले दो कपड़े। ३-एक आकार की वस्तु। ४-स्त्री और पुरुष या नर और मादा का युग्म। ५-पैरों के जूते। ६-वह जो बराबर का हो।

जोड़ाई स्त्री० (हि) १-जोड़ने का काम या भाव। २-जोड़ने की उजरत।

जोड़ी स्त्री० (हि) १-जोड़ा। २-घोड़ों या बैलों का युग्म। ३-एक साथ पहनने के दो कपड़े। ४-मजीरा (बाजा)।

जोड़ीदार वि० (हि) १-बराबर

जड़ीवाल पु० (हि) गायक बजाने वाला।

जोड़ू स्त्री० (हि) जोरू।

जोत स्त्री० (हि) १-काश्तकारी

गई भूमि। २-जोते जाने वाले पशुओं के गले की रस्सी जिसका एक छोर पशु के गले में बंधा रहता है और दूसरा उस वस्तु से बंधा होता है जिससे पशु जोता जाता है। ३-तराजू के पलड़े में बंधी हुई रस्सी। ४-दे० 'ज्योति'।

जोतदार पुं० (हि) काश्तकार।

जोतना क्रि० (हि) १-गाड़ी आदि को चलाने के लिए उसके आगे घोड़े, बैल आदि पशु बांधना। २-किसी को जबरदस्ती किसी काम में लगाना। ३-खेत में हल चलाना।

जोता पुं०(हि) १-जुआठे में बंधी हुई रस्सी जिसमें बैलों की गरदन फँसाई जाती है। २-बहुत बड़ी शहतीर। ३-खेत जोतने वाला।

जोताई स्त्री० (हि) जोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी

जोतिहा पुं० (हि) खेत जोतने वाला आसामी।

जोति स्त्री० (हि) १-घी का दीपक जो किसी देवी-देवता के आगे जलाया जाता है। २-दे० 'ज्योति' ३-जोतने-बोने योग्य भूमि।

जोतिक क्रि० वि० (हि) जैसा।

जोतिसी पुं० दे० 'ज्योतिषी'।

जोतिलिंग पुं० दे० 'ज्योतिर्लिंग'।

जोतिष पुं० (हि) ज्योतिष।

जोतिषी पुं० (हि) ज्योतिषी।

जोतिस पुं० (हि) ज्योतिष।

जोतिसी पुं० (हि) ज्योतिषी।

जोती स्त्री० (हि) जोतने लायक भूमि।

जोत्सना, जोत्स्ना स्त्री० (हि) ज्योत्सना।

जोध, जोधा पुं० (हि) योद्धा।

जोन स्त्री० (हि) योनि।

जोना क्रि० (हि) १-ताकना। देखना। २-प्रतीक्षा करना। ३-तलाश करना।

जोनि स्त्री० (हि) योनि।

जोन्ह, जोन्हाई, जोन्हैया, जोन्हि स्त्री० (हि) चाँदनी

जोप पुं० (हि) यूप।

जो-पै अव्य० (हि) १-यदि। अगर। यद्यपि। अगरचे

जोफ पुं० (अ) कमजोरी। निर्बलता।

जोबन पुं० (हि) १-जवानी। यौवन। २-यौवन-जनित सुन्दरता। ३-स्तन। छाती। ४-शोभा। बहार।

जोबना क्रि० (हि) जोवना। देखना।

जोम पुं०(अ) १-गर्व। घमण्ड। २-धारणा। ख्याल

जोय स्त्री० (हि) १-पत्नी। २-स्त्री। सर्व० १-जो। २-जिस।

जोयना क्रि० (हि) १-जलाना। २-जोवना। देखना।

जोयसी पुं० (हि) ज्योतिषी।

जोर पुं० (फा) १-बल। शक्ति। २-प्रबलता। तेजी ३-उन्नति। ४-वश। अधिकार। ५-वेग। ६-भरोसा। ७-व्यायाम। वि० (हि) जोड़।

जोरदार वि० (फा) जोर वाला। बलवान।

जोरन पुं० (हि) जोड़न। जामन।

जोरना क्रि० (हि) १-जोड़ना। २-जोतना।

जोर-शोर पुं० (फा) बहुत अधिक जोर पर।

जोरा पुं० (हि) जोड़ा।

जोराजोरी स्त्री० (हि) जबरदस्ती। बलपूर्वक।

जोरावर वि० (फा) बलवान।

जोरी स्त्री० (हि) १-जोड़ी। २-जबरदस्ती।

जोरू स्त्री० (हि) पत्नी।

जोलहा पुं० (हि) जुलाहा।

जोलाहल स्त्री० (हि) ज्वाला।

जोली स्त्री० (हि) बराबरी।

जोवना क्रि० (हि) जोहना। प्रतीक्षा करना।

जोश पुं० (फा) १-उबाल। उफान। २-मनोवेग ३-आवेश। ४-उत्साह।

जोशन पुं० (फा) १-बाँह पर पहनने का एक गहना २-कवच।

जोशांदा पुं० (फा) काढ़ा। क्वाथ।

जोशी पुं० दे० 'जोषी'।

जोशीला वि० (हि) [स्त्री० जोशीली] आवेशपूर्ण ओजपूर्ण।

जोष स्त्री० (हि) १-जोख। २-स्त्री।

जोषा, जोषित, जोषिता स्त्री० (सं) स्त्री। नारी।

जोषी पुं० (हि) १-गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों की एक उपजाति। २-ज्योतिषी।

जोस पुं० (हि) जोष। जोख।

जोह स्त्री० (हि) १-खोज। २-प्रतीक्षा। ३-कृपा-दृष्टि

जोहड़ पुं० (देश) कच्चा तालाब।

जोहन स्त्री० (हि) १-देखने की क्रिया। २-खोज। ३ प्रतीक्षा।

जोहना क्रि०(हि) १-देखना। २-खोजना। ३-प्रतीक्षा करना।

जोहर पुं० (देश) कच्चा तालाब।

जोहार स्त्री० (हि) जुहार। अभिवादन। पुं० (हि) जौहर।

जोहारना क्रि० (हि) अभिवादन करना।

जौं अव्य० (हि) यदि। जो। क्रि० वि० दे० 'ज्यों'।

जौरा-भौरा पुं० (हि) खजाना रखने का तहखाना।

जौरे क्रि० वि० (हि) निकट। पास।

जौ पुं० (हि) १-गेहूँ की तरह का एक अन्न। यव २-छः राई (खरदल) के बराबर का तौल। अव्य० यदि। अगर। क्रि० वि० जब।

जौक, जौख पुं० (हि) १-समूह। झुण्ड। २-सेना।

जौजा स्त्री० (फा) पत्नी। भार्या।

जौतुग पुं० दे० 'यौतुक'।

जौधिक पुं० (सं) तलवार के बत्तीस हाथों में एक।

जौन सर्व० दे० 'जो'। पु० दे० 'यवन'।
जौन्ह स्त्री० (हि) जुन्हाई। चाँदनी।
जौं अव्यय (हि) यदि।
जौवति स्त्री० (हि) युवती।
जौवन पुं० (हि) यौवन।
जौम पुं० दे० 'ओम'।
जौर पु० (फा) अत्याचार।
जौरा पुं० (हि) वह अन्न जो गृहस्थ लोग नाई-बारी को काम की मजदूरी के रूप में देते हैं।
जौशन पु० (फा) जोशन। गहना।
जौहर पु०(अ) १-रत्न। बहुमूल्य पत्थर। २-सार वस्तु तत्व। ३-हथियार का ओप। ४-उत्तमता। खूबी। पुं० (हि) १-राजपूतों में युद्ध समय की एक प्रथा, जिसके अनुसार शत्रु की विजय निश्चित हो जाने पर राजपूत स्त्रियाँ चिता में जल जाती थीं। २-इस कार्य के लिए बनाई गई चिता। ३-आत्महत्या
जौहरी पुं० (फा) १-रत्न परखने वाला। २-रत्न-व्यवसायी। ३-गुण दोष पहचानने वाला। गुण-ग्राहक।
ज्ञ = 'ज' और 'ञ' के योग से बना संयुक्त अक्षर। पुं० (सं) १-ज्ञानबोध। २-ज्ञानी। ३-मंगलग्रह।
ज्ञपित, ज्ञप्त वि० (सं) जाना हुआ।
ज्ञप्ति स्त्री०(सं) १-जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव। २-वह बात जो बताई जाय। (इनफॉर-मेशन)। ३-जानकारी। ४-बुद्धि।
ज्ञा स्त्री० (सं) ज्ञान। जानकारी।
ज्ञात वि० (सं) विदित। जाना हुआ।
ज्ञात-यौवना स्त्री०(सं) वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो।
ज्ञातव्य वि० (सं) १-जानने योग्य। ज्ञेय। २-बोध-गम्य।
ज्ञाता वि० (सं) [स्त्री० ज्ञात्री] जानकार।
ज्ञाति पु० (सं) एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य। गोती।
ज्ञातृत्व पुं० (सं) जानकारी।
ज्ञान पु० (सं) १-जानना। बोध। यथार्थ या सम्यक् ज्ञान। तत्वज्ञान।
ज्ञान-कांड पुं० (सं) वेद का एक कांड जिसमें ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों का विचार है।
ज्ञान-गम्य, ज्ञान-गोचर वि० (सं) जो जाना जा सके। ज्ञेय।
ज्ञानता स्त्री० (सं) ज्ञान होने की अवस्था या भाव।
ज्ञानतः क्रि० वि० (सं) जानबूझकर।
ज्ञान पिपासा स्त्री० (सं) ज्ञान प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा।
ज्ञानमय वि० (सं) १-ज्ञान से परिपूर्ण। २-ज्ञानरूप ३-चिन्मय।

ज्ञान-यज्ञ पु० (सं) ज्ञानद्वारा अपनी आत्मा को आहुति के रूप में अर्पित करके ईश्वर या ब्रह्म में मिलाना।
ज्ञान-योग पु० (सं) शुद्ध ज्ञान के द्वारा मोक्ष का साधन।
ज्ञानवान् वि० (सं) ज्ञानी।
ज्ञानवृद्ध पुं० (सं) वह जो ज्ञान में बड़ा या पूज्य है
ज्ञानाकर पुं० (सं) बुद्ध।
ज्ञानापन्न वि० (सं) ज्ञानी।
ज्ञानासन पुं० (सं) योग का एक आसन जिसके द्वारा योगाभ्यास में शीघ्र सिद्धि होती है।
ज्ञानी वि० (सं) १-जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवान्। जानकार। २-आत्मज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।
ज्ञानेंद्रिय स्त्री० (सं) वे पाँच इन्द्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है। यथा-नाक, कान, आँख, जीभ और स्पर्शेन्द्रिय।
ज्ञानोदय पु० (सं) ज्ञान का उदय या उत्पत्ति।
ज्ञाप वि० (सं) वह पत्र जिस पर स्मृति के निमित्त अथवा सूचना आदि के रूप में कोई बात लिखी हो। (मेमो)।
ज्ञापक वि० (सं) १-जताने वाला। सूचक। २-स्मृति-पत्र या ज्ञापन भेजने वाला (व्यक्ति)।
ज्ञापन पु० (सं) १-जताने या बताने का काम। २-वह पत्र, पुस्तकादि जिसमें याद दिलाने के लिए आवश्यक बातें संक्षेप में लिख दी गयी हों। ३-घटनाओं का वह संक्षिप्त अभिलेख जो बाद में प्रयोग के लिए हो। स्मारक। (मेमोरेंडम-उपरोक्त २, ३ के लिए)।
ज्ञापनीय वि० (सं) जो बतलाने के योग्य हो।
ज्ञापयिता वि० (सं) ज्ञापक।
ज्ञापित वि० (सं) १-जताया हुआ। सूचित। २-प्रकाशित।
ज्ञास स्त्री० (हि) ग्यारस। एकादशी तिथि।
ज्ञेय वि० (सं) १-जानने योग्य। २-जो जाना जा सके।
ज्ञेयता स्त्री० (सं) बोध।
ज्या स्त्री० (सं) १-धनुष की डोरी। २-चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा। ३-पृथ्वी। ४-माता।
ज्यादती स्त्री० (फा) १-अधिकता। २-अत्याचार।
ज्यादा वि० (फा) १-अधिक।
ज्यान पु० (हि) १-हानि। २-घाटा।
ज्याना क्रि० (हि) जिलाना।
ज्यामिति स्त्री० (सं) रेखागणित। (ज्यामेट्री)।
ज्यामितिक वि० (सं) ज्यामिति सम्बन्धी। ज्या-मि-
का।
ज्ञा

ज्यारा वि० (हि) [स्त्री० ज्यारी] जीवन देने वाला। जिलाने वाला।
ज्यावना क्रि० (हि) जिलाना।
ज्यूँ अव्य० दे० 'ज्यों'।
ज्येष्ठ वि० (सं) (स्त्री० ज्येष्ठा) १-बड़ा। २-वृद्ध। ३-वय, पद, मर्यादा आदि में बड़ा। (सीनियर)। पु० १-जेठ का महीना। २-परमेश्वर।
ज्येष्ठक पु० (सं) किसी नगर का शासक या अधिकारी। कुलिक। (अल्डरमैन)।
ज्येष्ठता स्त्री० (सं) १-श्रेष्ठ का भाव। २-पद, मर्यादा वय आदि में बड़ा होने की अवस्था या भाव। (सीनीयॉरटी)।
ज्येष्ठांश पु० (सं) पपौती में बड़ा भाग पाने का हक।
ज्येष्ठा स्त्री० (सं) १-अठारहवाँ नक्षत्र। २-बड़ी बहन ३-वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा अपने पति को अधिक प्यारी हो। ३-छिपकली। ४-मध्यमा उँगली ५-गंगा। वि० बड़ी।
ज्यों क्रि० वि० (हि) जिस प्रकार। जैसे।
ज्योति स्त्री० (सं) १-प्रकाश। उजाला। २-लपट। लौ। ३-अग्नि। ४-सूर्य। ५-नक्षत्र। ६-दृष्टि। ७-परमात्मा।
ज्योतिक पु० दे० 'ज्योतिषी'।
ज्योतित वि० (हि) चमकता हुआ। द्युतिमान्।
ज्योतिमान वि० दे० 'ज्योतिर्मय'।
ज्योतिरिंग, ज्योतिरिंगण पु० (सं) जुगनू।
ज्योतिर्मय वि० (सं) [स्त्री० ज्योतिर्मयी] जगमगाता हुआ। प्रकाशमय।
ज्योतिर्मान वि० दे० 'ज्योतिर्मय'।
ज्योतिर्लिंग पु० (सं) १-शिव। २-शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं।
ज्योतिर्लोक पु० (सं) १-ध्रुवलोक। २-परमेश्वर।
ज्योतिर्विद पु० (सं) ज्योतिषी।
ज्योतिर्विद्या स्त्री० (सं) ज्योतिष।
ज्योतिष पु० (सं) १-वह विद्या या शास्त्र जिसके द्वारा आकाश स्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है। (एस्ट्रॉनोमी)। ग्रह, नक्षत्रों आदि का शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र। (एस्ट्रोलोजी)।
ज्योतिषिक वि० (सं) ज्योतिष सम्बन्धी।
ज्योतिष्क पु० (सं) ग्रह, नक्षत्र, तारागण आदि आकाश में रहने वाले पिण्ड।
ज्योतिष्मान वि० (सं) प्रकाशमान। पु० (सं) सूर्य।
ज्योत्सनी स्त्री दे० 'ज्योत्स्ना'।
ज्योत्स्ना स्त्री० (सं) १-चाँदनी। २-चाँदनी रात।
ज्योनार स्त्री० (हि) १-भोज। दावत। २-पका हुआ भोजन। रसोई।
ज्योरी स्त्री० (हि) रस्सी।
ज्योहत, ज्योहर पु० (हि) १-आत्महत्या। २-जौहर
ज्यो पु० (हि) १-जीव। २-जी। मन।
ज्योतिष वि० (सं) ज्योतिष सम्बन्धी।
ज्योतिषिक पु० (सं) ज्योतिषी।
ज्योनार स्त्री० दे० 'ज्योनार'।
ज्वर पु० (सं) बुखार।
ज्वरा स्त्री० (सं) ज्वर। स्त्री० (सं) मृत्यु।
ज्वरित वि० (सं) जिसे ज्वर चढ़ा हो।
ज्वर्रा पु० दे० 'जुर्रा'।
ज्वलंत वि० (सं) १-चमकता हुआ। २-अत्यन्त स्पष्ट
ज्वलन पु० (सं) १-जलने की क्रिया या भाव। २-जलन। दाह। ३-अग्नि। आग। ४-लपट।
ज्वलनशील वि० (सं) १-जो सरलतापूर्वक, थोड़े में ही जल उठे या भड़क उठे। २-ज्वलनीय। ज्वल्य।
ज्वलित वि० (सं) १-जलता हुआ। २-चमकता हुआ ३-उज्ज्वल।
ज्वल्य वि० (सं) जल उठने या भभक उठने योग्य। (कम्बरिटबिल)।
ज्वान पु० (हि) जवान।
ज्वानी स्त्री० (हि) जवानी।
ज्वाब पु० (हि) जवाब।
ज्वार स्त्री० (हि) १-खरीफ की फसल का एक मोटा अन्न। २-समुद्र के जल की तरङ्ग का चढ़ाव।
ज्वार-भाटा पु० (हि) समुद्र के जल की तरङ्ग का चढ़ाव उतार जो चन्द्रमा के आकर्षण से होता है।
ज्वारी पु० (हि) जुआरी।
ज्वाल पु० (सं) १-अग्निशिखा। लौ। लपट। २-ज्वाला।
ज्वालक वि० (सं) जलाने वाला। पु० लैम्प अथवा दीपक का वह भाग जो बत्ती के जलने वाले अंश के नीचे रहता है तथा जिसके कारण दीपशिखा नीचे के तेल वाले भाग तक नहीं पहुँच पा[illegible] (बर्नर)।
ज्वाला स्त्री० (सं) १-आग की लपट। अग्निशिखा २-गरमी। ताप। दाह।
ज्वालामुखी स्त्री० (सं) १-वह स्थान जिससे ज्व[illegible] निकलती हो। २-कांगड़ा जिला में एक पीठ स्था[illegible] ३-लावा।
ज्वालामुखी पर्वत पु० (सं) वह पहाड़ जिसकी च[illegible] के गड्ढे में से धुआं, राख और पिघले या[illegible] पदार्थ बराबर या समय-समय पर निकला करते

[शब्दसंख्या—१६६१६]

झ (झ)

झ हिन्दी वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

झंखना क्रि० दे० 'झीखना'।

झंखाड़ पुं० दे० 'झंखाड़'।

झंकार स्त्री० दे० 'झनकार'।

[illegible]

झंकारना क्रि० (हि) झंकारना।

झंकोरा पुं० (हि) झकोरा।

[illegible] झाड़ी या [illegible] गये हों।

[illegible]

झंगा पु० दे० 'झगा'।

झंगुला पु० (हि) [स्त्री० झगुली] दे० 'झगा'।

झंगुली स्त्री० दे० 'झगा'।

झंगूला पु० (हि) झगा।

[illegible]क स्त्री० (हि) १-झाँझ। १-झाँझर।

[illegible]झट पु० (हि) झगड़ा। झमेला।

[illegible]झर स्त्री० (हि) झज्झर। पानी की सुराई।

[illegible]झरा पुं० (हि) [स्त्री० झंझरी] जालीदार ढकना जिसमें छोटे-छोटे छेद हों।

[illegible]झरी स्त्री०(हि) १-जाली। २-झरोखा। ३-छलनी। [illegible]-आग उठाने या रखने का बरतन।

[illegible]झा वि०(सं) तेज। प्रबल। स्त्री०(सं) १-तेज आँधी [illegible]। २-वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी आवे।

[illegible]झानिल पुं० दे० 'झंझावात'।

[illegible]झार पुं० (हि) वह आग की लपट जिसमें धुआँ और चिनगारियों के साथ कुछ अव्यक्त शब्द भी निकले।

[illegible]झावात पु० (सं) वर्षा के साथ चलने वाली तेज हवा।

[illegible]झी स्त्री०(देश) १-फूटी कौड़ी। २-दलाली का धन

[illegible]झोड़ना क्रि० (हि) १-झकझोरना। २-झटका देना।

[illegible]डा पु० (हि) [स्त्री० झंडी] ध्वजा। पताका। [illegible]

[illegible]अभिवादन पु० (हि) किसी संस्था या राज्य की ओर से इनके अपने झण्डे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए वन्दना करने की रस्म।

झंडा-दिवस पु० (हि) किसी संस्था या राज्य की ओर से झण्डे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए निर्धारित किया हुआ दिन। (फ्लेग-डे)।

झंडी स्त्री० (हि) छोटा झण्डा।

झंडूला वि० (हि) १-जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों। २-जिसका मुण्डन संस्कार न हुआ हो। ३-घनी पत्तियों वाला।

झंडोत्तोलन पुं० (हि) झण्डा फहराने या लहराने की क्रिया या रस्म।

झंप पुं० (सं) उछाल। फलाँग। पुं० (देश) घोड़ों के गले का गहना।

झंपकना क्रि० (हि) झपकना। ऊँघना।

झंपना क्रि० (हि) १-आड़ में होना। छिपना। २-उछलना-कूदना। ३-टूट पड़ना। ४-लज्जित होना। झेंपना। ५-एकदम से जा पहुचना।

झंपरिया, झंपरी स्त्री० (हि) पालकी को ढकने की खोली। ओहार।

झंपान पु० (हि) पहाड़ी सवारी के लिए एक प्रकार की खटोली। झप्पान।

झंपित वि० (हि) ढका हुआ।

झंपिया स्त्री० (हि) छोटा झाँपा। पिटारा।

झंपोला पु० (हि) [स्त्री० झंपोली] टोकरी।

झंब पुं० (हि) गुच्छा।

झंबकार, झंबकारा वि० (हि) स्याह। श्यामवर्ण।

झंवन स्त्री० (हि) १-झँवाने की क्रिया। २-वह अंश जो किसी वस्तु के झँवाने अथवा किंचित जल जाने के कारण कम हो जाय।

झंवराना क्रि० (हि) १-काला पड़ना। २-मुरझाना।

झंवा पु० दे० 'झाँवाँ'।

झंवाना क्रि० (हि) १-कुछ काला पड़ना। २-मुरझाना। ३-अग्नि का मन्द होजाना। ४-घट जाना ५-झाँवे से रगड़ा जाना। ६-झाँवे के रंग का कर देना। ७-आग ठण्डी करना। ८-घटना। ९-कुम्हला देना। १०-झाँवे से रगड़ना।

झंवैला वि० (हि) [स्त्री० झँवैली] झाँवे से (पैर आदि) रगड़ा हुआ।

झंसना क्रि० (हि) १-सिर आदि में धीरे धीरे तेल मलना। २-किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना।

झ पुं० (सं) १-झंझावात। २-झँझड़। तेज हवा के साथ वृष्टि। ४-झनझन का शब्द। ५-बृहस्पति। ६-दैत्यराज।

झई, झंई स्त्री० (हि) झाँई।

झक स्त्री० (हि) १-सनक। खब्त। २-दे० 'झख'। वि० चमकीला। ३-उज्जवल।

झककेतु पुं० दे० 'झषकेतु'।

झकझक स्त्री० (हि) १-कहासुनी। व्यर्थ की हुज्जत। २-तकरार।
झकझका वि० (हि) चमकीला।
झकझकाहट स्त्री० (हि) चमक।
झकझेलना क्रि० दे० 'झकझोरना'।
झकझोर स्त्री० (हि) १-झूलने या बारम्बार हिलने या डोलने की क्रिया या भाव। २-झटका।
झकझोरना क्रि० (हि) पकड़कर जोर से हिलाना। झटका देना।
झकझोरा पु० (हि) झटका। धक्का।
झकड़ पु० दे० 'झक्कड़'।
झकना क्रि० (हि) १-बकवाद करना। २-बड़बड़ाना ३-झगड़ना।
झकर पु० दे० 'झक्कड़'।
झका वि० (हि) चमकीला। साफ।
झकाझक वि० (हि) साफ और चमकता हुआ। चमकीला।
झकुराना क्रि० (हि) १-झूमने में प्रवृत्त करना।
झकोर पु० (हि) हवा का झोंका। झोंका।
झकोरना क्रि० (हि) झोंका मारना। हिलाना। कँपाना।
झकोरा पु० (हि) हवा का झोंका।
झकोल पु० दे० 'झकोर'।
झक्क वि० (स) साफ और चमकीला। स्त्री० दे० 'झक'।
झक्कड़ पु० (हि) अंधड़। तेज आँधी। वि० दे० 'झक्की'।
झक्का पु० (हि) १-तेज हवा का झोंका। २-आँधी
झक्की वि० (हि) सनकी।
झखना क्रि० दे० 'झीखना'।
झख स्त्री० (हि) झीखने की क्रिया या भाव।
झखना क्रि० (हि) झीखना।
झखिया स्त्री० (हि) मछली।
झखी स्त्री० (हि) मछली।
झगड़ना क्रि० (हि) लड़ना। विवाद करना।
झगड़ा पु० (हि) लड़ाई। हुज्जत। तकरार।
झगड़ालू वि० (हि) कलहप्रिय। लड़ाका।
झगड़ी वि० (हि) अपने अधिकार या लेन के लिए झगड़ने वाला।
झगड़ू वि० (हि) झगड़ालू। लड़ाका।
झगर पु० (हि) १-एक चिड़िया। २-झगड़ा। तकरार
झगरना क्रि० (हि) झगड़ना।
झगरा पु० (हि) झगड़ा।
झगराऊ वि० (हि) झगड़ालू।
झगरी वि० स्त्री० (हि) झगड़ालू।
झगरू वि० (हि) झगड़ालू।
झगला, झगा पु० (हि) छोटे बच्चों के पहनने का ढीला कुरता।
झगुला, झगुलिया, झगुली स्त्री० (हि) झगा।
झज्झर पु० (हि) मिट्टी की सुराही।
झज्झी स्त्री० दे० 'झंझी'।
झझक, झझकन स्त्री० (हि) १-झिझकने की क्रिया व भाव। २-झुंझलाहट। ३-अप्रिय गंध। ४-सनक
झझकना क्रि० (हि) १-ठिठकना। २-झुंझलाना ३-चौंक पड़ना।
झझकाना क्रि० (हि) १-भड़काना। २-चौंका देना
झझकारना क्रि० (हि) १-डाँटना। २-दुरदुराना ३-तुच्छ समझना।
झट क्रि० वि० (हि) तुरन्त। तत्काल।
झटकना क्रि० (हि) १-झटका देना। २-जोर से हिलाना। ३-जबरदस्ती छीन लेना। ऐंठना। ४-रोग या दुःख के कारण क्षीण होना।
झटका पु० (हि) १-झोंके के साथ दिया हुआ धक्का २-एक ही प्रहार में पशु को काटने का एक ढंग। ३-विपत्ति रोग, शोक आदि का आघात।
झटकारना क्रि० (हि) झटकना।
झटपट अव्य० (हि) तुरंत। फौरन।
झटाका क्रि० वि० (हि) जल्दी से। चटपट। पु० दे० 'झड़ाका'।
झटास स्त्री० (दे) वर्षा की बौछार।
झटिका स्त्री० (दे) १-झाड़ी। २-भुईआँवला।
झटिति क्रि० वि० (सं) १-चटपट। झट। २-बिन समझे-बूझे।
झट्ट क्रि० वि० (हि) झट। तुरंत।
झड़ स्त्री० दे० 'झड़ी'।
झड़कना क्रि० (हि) झिड़कना।
झड़ुआ पु० दे० 'झड़ाका'।
झड़झड़ाना क्रि० (हि) झिड़कना। २-झँझोड़ना।
झड़न स्त्री० (हि) १-झड़ने की क्रिया। २-झड़ी हुई वस्तु।
झड़ना क्रि० (हि) १-गिरना। २-टपकना। ३-साफ किया जाना।
झड़प स्त्री० (हि) १-दो प्राणियों की सामान्य मुठभेड़। लड़ाई। २-क्रोध। ३-आवेश। ४-आग की लपट।
झड़पना क्रि० (हि) १-आक्रमण करना। वेग से किसी पर टूट पड़ना। २-लड़ना। झगड़ना। ३-बलपूर्वक किसी से कुछ छीन लेना।
झड़पाझड़पी स्त्री० (हि) हाथापाई।
झड़पान स्त्री० (हि) झड़प।
झड़पाना क्रि० (हि) दो प्राणियों को लड़ाना।
झड़बेर पु० (हि) झड़बेरी पर लगने वाला फल। जंगली बेर।

झुकराना क्रि० (हि) झोंका खाना।
झुकवाना क्रि० (हि) झुकने का काम दूसरे से कराना।
झुकाई स्त्री० (हि) झुकने की क्रिया या भाव। झुकाने की उजरत।
झुकाना क्रि० (हि) १–नवाना। २–किसी पदार्थ को किसी ओर घुमाना। ३–प्रवृत्त करना। ४–विनीत बनाना। ५–नीचा दिखाना।
झुकामुखी स्त्री० दे० 'झुटपटा'।
झुकार पुं० (हि) (हवा का) झोंका।
झुकाव पुं० (हि) १–झुकने की क्रिया या भाव। २–ढाल। ३–प्रवृत्ति। ४–चाह।
झुकावट स्त्री० दे० 'झुकाव'।
झुगिया, झुग्गी स्त्री० (हि) झोंपड़ी।
झुटपुटा पुं० (हि) ऐसा समय जब कुछ अँधेरा और कुछ उजाला हो।
झुटुंग वि० (हि) झोंटे वाला। जटाधारी। पुं० भूत-प्रेत।
झुठकाना, झुठलाना क्रि० (हि) १–झूठा बनाना। २–झूठा कहकर धोखा देना।
झुठवना क्रि० (हि) झूठा बनाना।
झुठाई स्त्री० (हि) असत्यता।
झुठाना क्रि० (हि) झुठलाना।
झुनक स्त्री० (हि) नुपुर का शब्द।
झुनकना क्रि० (हि) झुन-झुन बजना।
झुनकारा वि० (हि) झीना।
झुनझुन पुं० (हि) नुपुर, पैजनी आदि के बजने का शब्द।
झुनझुना पुं० (हि) बच्चों का एक खिलोना जिसे हिलाने से झुन-झुन शब्द होता है।
झुनझुनाना क्रि० (हि) झुनझुन शब्द होना या करना
झुनझुनियाँ स्त्री० (हि) १–झुनझुन शब्द करने वाला गहना। २–झाँझर या पायल नामक गहना। ३–हथकड़ी, बेड़ी आदि।
झुनझुनी स्त्री० (हि) हाथ-पैर आदि के एक ही अवस्था में देर तक रहने अथवा दबने से पैदा होने वाली सनसनाहट।
झुपरी स्त्री० (हि) झोंपड़ी।
झुप्पा पुं० (हि) झब्बा।
झुबझुबी स्त्री० (हि) कान में पहनने का एक गहना।
झुमका पुं० (हि) कान का एक गहना। कर्णफूल।
झुमाना क्रि० (हि) किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।
झुमिरना क्रि० (हि) झूमना।
झुरझुरी स्त्री० (हि) कँपकँपी।
झुरना क्रि० (हि) १–सूखना। २–दुःखी होना। घुलना।
झुरमुट पुं० (हि) १–आस-पास उगे क्षुप। २–बहुत से लोगों का समूह
कपड़े से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया
झुरसना क्रि० (हि) झुलसना।
झुरसाना क्रि० (हि) झुलसाना।
झुरहुरी स्त्री० (हि) झुरझुरी। कँप-कँपी
झुराना क्रि० (हि) सूखना या सुखाना।
झुरावन पुं० (हि) सूखने के कारण कम होने वाला अंश।
झुर्री स्त्री० (हि) त्वचा की सिकुड़न। शिकन।
झुलका पुं० (हि) झुनझुना।
झुलना पुं० (हि) १–झूला। २–ढीला कुरता।
झुलनी स्त्री० (हि) १–मोतियों का वह गुच्छा जो स्त्रियाँ नथ में लगाती हैं। नथुनी। २–झूमर।
झुलझुली स्त्री० (हि) कान का एक गहना।
झुलमुला वि०(हि) [स्त्री० झुलमुली] झिलमिला।
झुलमुलाना क्रि० (हि) १–सिर में चक्कर आने जैसा होना। २–झिलमिलाना।
झुलमुली स्त्री० (हि) १–झुमका। २–झालर। ३–झिलमिली।
झुलसर स्त्री० (हि) १–झुलसने की क्रिया या भाव। २–शरीर को झुलसाने वाली गरमी।
झुलसना क्रि० (हि) १–थोड़ा जल जाना। झौंसना। २–मुरझा जाना। भुनना। ३–अधजला कर देना
झुलसवाना, झुलसाना क्रि० (हि) झुलसने का काम दूसरे से कराना।
झुलाना, झुलावना क्रि० (हि) १–झूले को हिलाना। २–किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। ३–अटकाये रखना। आजकल करते रहना।
झुलौआ, झुलौवा पुं० दे० 'झूला'।
झुल्ला पुं० (देश) एक तरह का कुरता।
झुहिरना क्रि० (हि) लदना। लादा जाना।
झूंक पुं० दे० 'झोंका' (हवा का)। स्त्री० दे० 'झोंक'
झूंका पुं० दे० 'झोंका'।
झूंखना क्रि० (हि) झीखना।
झूंझल स्त्री० (हि) झुंझलाहट।
झूंसना क्रि० (हि) १–ठगना। २–झुलसना।
झूक पुं० दे० 'झोंका'।
झूकटी स्त्री० (देश) १–झाड़ी। २–छोटा पेड़।
झूकना क्रि० (हि) १–झोंकना। २–किसी वस्तु में पड़ना।
झूझना क्रि० (फा) जूझना। युद्ध करना।
झूठ पुं० (हि) असत्य। मिथ्या।
झूठमूठ क्रि० [illegible] बिना किसी वास्तविक आधार [illegible]

झूठों क्रि० वि० (हि) १-झूठमूठ। २-योंही। व्यर्थ

झूना वि० दे० 'झीना'।

झूम स्त्री० (हि) १-झूमने की क्रिया या भाव। २-ऊँघ झपकी।

झूमक पु० (हि) १-एक प्रकार का देहाती गीत। झूमर। २-इस गीत के साथ होने वाला नृत्य। ३-गुच्छा। ४-मोतियों का गुच्छा। ५-झुमका (कान का गहना)।

झूमक-साड़ी स्त्री० (हि) झब्बेदार साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि के गुच्छे टँके हों।

झूमका पु० १-दे० 'झुमका'। २-दे० 'झूमक'।

झूमड़ पु० दे० 'झूमर'।

झूमड़झामड़ पु० (हि) झूठा प्रपञ्च। ढकोसला।

झूमना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु का बारबार इधर-उधर हिलना या झोंके खाना। २-लहराना। ३-मस्ती या मद में झूलना।

झूमर पु० (हि) १-एक प्रकार का सिर पर पहनने का गहना। २-झूमक नामक गीत और नाच। ३-एक प्रकार का काठ का खिलौना। ४-एक जैसी कई वस्तुओं का एक स्थान पर एकत्र होना। ५-एक प्रकार का ताल।

झूर वि० (हि) १-सूखा। भुरभुरा। २-खाली। ३-व्यर्थ। ४-दे० 'जूठा'। स्त्री० (हि) १-जलन। दाह २-परिताप। दुःख।

झूरना क्रि० (हि) १-सूखना। २-मुरझाना।

झूरा वि० (हि) (स्त्री० झूरी) १-सूखा। २-नीरस। फीका। पु० १-वर्षा का अभाव। २-सूखी जमीन

झूरें क्रि० वि० (हि) १-यों ही झूठमूठ। २-व्यर्थ। वि० १-व्यर्थ। २-सूखा। ...

झूल स्त्री० (हि) १-चौपायों ... डालने का चौकोर वस्त्र। ... ३-झूला।

झूलन पु० (हि) वर्षाऋतु का एक उत्सव। हिंडोला।

झूलना क्रि० (हि) १-लटक कर आगे पीछे होना। २-झूले पर बैठ कर पेंग लेना। ३-किसी काम के होने की आशा में अधिक समय तक पड़े रहना। वि० झूलने वाला। पु० १-एक छन्द। २-झूला। हिंडोला।

झूलनी, झूलरि स्त्री० (हि) झूलने वाली कोई छोटी वस्तु जैसे—गुच्छा, झुमका आदि।

झूला पु० (हि) १-झूलने का साधन। हिंडोला। २-पलना। ३-स्त्रियों की कुरती। ४-झोंका। झटका।

झेंपना क्रि० (हि) लजाना। शर्मिन्दा होना।

झेंपू वि० (हि) झेंपने वाला। लज्जाशील।

झेंरना क्रि० (हि) झेंपना। लजाना।

झेंपू वि० (हि) लज्जाशील।

झेर स्त्री० (हि) १-विलम्ब। देर। २-झंझट। बखेड़ा

झेरना क्रि० (हि) १-झेलना। सहना। छेड़ना। २-तैरने आदि में हाथ पैर से पानी हटाना। ४-हलका झटका या झोंका खाना।

झेरा पु० दे० 'झेर'।

झेल स्त्री० (हि) १-झेलने की क्रिया या भाव। २-हिलोर। ३-धक्का। ३-विलम्ब। देर।

झेलना क्रि० (हि) १-सहना। बरदाश्त करना। २-ठेलना। ३-तैरने में पानी को हाथ पैर से हिलाना। ४-मानना।

झेलनी स्त्री० (हि) वह चाँदी या सोने की जंजीर जो कान के गहनों का बोझ सँभालने के लिए बालों में अटकाते हैं।

झेला-झेली स्त्री० (हि) १-खींचतान। २-संसार में जीवों का आवागमन।

झेमिक-झेला पु० दे० 'झेला-झेली'।

झोंक स्त्री०(हि) १-झुकाव। प्रवृत्ति। २-बोझ। भार ३-वेग। तेजी। ४-किसी काम को धूमधाम से ठान। ५-ठाट। सजावट। ६-आघात। ७-पानी की हिलोर। ८-दे० 'झोंका'।

झोंकदार वि० (हि) झुका हुआ।

झोंकना क्रि० (हि) १-कोई वस्तु जलाने के लिए आग में फेंकना। २-बलपूर्वक आगे की ओर या संकट की स्थिति में ढकेलना। ३-किसी कार्य में अधाधुंध खर्च करना।

झोंका पु०(हि)१-झटका। धक्का। २-पानी का हिलोरा। ३-इधर से उधर हिलने या झुकने की क्रिया। ४-वायु का प्रवाह। झकोरा।

झोंकाई स्त्री०(हि) १-झोंकने की क्रिया या भाव। २-...

झोंझ पु० (देश) १-घोंसला। २-कुछ पक्षियों के गले के नीचे लटकता हुआ मांस। ३-कोलाहल। हल्ला।

झोंझल पु० (हि) झुंझलाहट।

झोंट पु० (हि) १-झाड़ी। २-झाड़। झुरमुट। ३-समूह। ३-दे० 'झोंटा'।

झोंटा पु० (हि) [स्त्री० झोंटी] १-सिर के बड़े-बड़े बालों का समूह।

झोंटा-झोंटी स्त्री० (हि) दो स्त्रियों का परस्पर बाल खसोटते हुए लड़ना।

झोंटी स्त्री० दे० 'झोंटा'।

झोंपड़, झोंपड़ा पु०(हि) [स्त्री० झोंपड़ी] ... की दीवार बनाकर घासफूस से छाया कुटिया। पर्णशाला।

झोंपड़ी स्त्री० (हि) छोटा झों...

झोंपा पुं०.(हि) झब्बा। गुच्छा।
झोंटिंग पुं० (हि) झोंटे वाला। जटाधारी।
झोरना क्रि० (हि) १-जोर से हिलाना। झकझोरना २-झटका देकर तोड़ना। ३- इकट्ठा करना।
झोरा पुं० (हि) [स्त्री० झोरि, झोरी] झोला।
झोरि स्त्री० (हि) झोली।
झोरी स्त्री० (हि) १-झोली। २-एक तरह की रोटी।
झोल पुं० (हि) १-तरकारी आदि का रसा। शोरबा २-चावल का माँड़। पीच। ३-धातु पर का मुलम्मा ४-झंझट, बखेड़ा या धोखे की बात। ५-कपड़े का वह अंश जो ढीला होने के कारण लटक जाय ६-आँचल। पल्ला। ७-परदा। ८-आड़। ९-भूल गलती। १०-वह झिल्ली या थैला जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे अण्डे रहते हैं। ११-गर्भ। १२-राख। भस्म। १३-दाह। जलन। वि० (हि) १-ढीला-२-निकम्मा।
झोलझाल वि० (हि) ढीलाढाला। पुं० हीलाहवाला
झोलदार वि० (हि) १-जिसमें रसा हो। रसेदार। २-जिस पर मुलम्मा किया गया हो। ३-जिसमें झोल पड़ता हो। ढीला।
झोलना क्रि० (हि) १-जलाना। २-दुखी करना।
झोला पुं० (हि) (स्त्री० झोली) १-कपड़े की बड़ी थैली। थैला। २-ढीला ढाला गिलाफ। खोली। ३-साधुओं का ढीला कुरता। चोला। ३-एक वात-रोग। ४-झोंका। ५-इशारा।
झोली स्त्री० (हि) १-छोटा झोला। २-घास बाँधने का जाल। ३-मोट। चरसा। ४-खलिहान में अन्न ओसाने का कपड़ा। ५-कुश्ती का एक पेंच। ६-राख। भस्म।
झौंद पुं० (हि) पेट। उदर।
झौंर पुं० (हि) १-झुण्ड। समूह। २-फल पत्तियों या छोटे छोटे फलों का गुच्छा। ३-एक प्रकार का आभूषण। झब्बा। ४-पेड़ों या झाड़ियों का घना समूह। कुञ्ज।
झौंरना क्रि० (हि) १-गूँजना। गुञ्जार करना। २-झौरना।
झौंरा पुं० (?) झुण्ड। दल।
झौंराना क्रि० (हि) १-झूमना। २-काला पड़ जाना ३-कुम्हलाना। ४-इधर उधर हिलना या झूलना
झौंसना क्रि० (हि) झुलसना।
झौआ पुं०(हि) खँचिया।
झौनो स्त्री० (देश) टोकरी।
झौर पुं० (हि) १-झंझट। विवाद। २-डाँट। फट-कार।
झौरना क्रि० (हि) झपटकर दबोच लेना।
झौरा पुं० (हि) विवाद। हुज्जत।
झौरे क्रि० वि० (हि) १-निकट। पास। २-संग। साथ।
झौलना क्रि० (हि) जलाना।
झौवा पुं० (हि) खँचिया।
झौहाना क्रि० (हि) १-गुर्राना। २-गुस्से में आ बोलना।

ञ

ञ हिन्दी वर्णमाला दसवाँ व्यञ्जन जो च का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थ तालु और नासिका है।

[शब्दसंख्या—१७२६५]

ट

ट हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

टंक पुं० (सं) १-चार माशे का एक तौल। २-सिक्का ३-पत्थर काटने या गढ़ने की टाँकी। छेनी। ४-कुल्हाड़ी। ५-सुहागा। पुं० (अं० टैंक) १-तालाब। २-पानी का हौज या खजाना। ३-एक तरह की लोहे की बनी गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है।
टंकक पुं० (सं) १-रुपया। चाँदी का सिक्का। २-टंकण-यंत्र पर काम करने वाला। (टाइपिस्ट)।
टंकक-शाला स्त्री० (सं) १-वह स्थान जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं। टकसालघर। (मिण्ट)। २-वह स्थान जहाँ टंकण यन्त्र पर टंकण-यन्त्र चलाना सीखते हों।
टंकण पुं० (सं) १-सुहागा। २-धातु की वस्तु में टाँका अथवा जोड़ लगाना। ३-ताँबे, चाँदी आदि धातु खण्डों पर यन्त्र या ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने का कार्य। (कॉइनेज) ४-टङ्कण यन्त्र की सहायता से कागज पर कुछ लिखने, मुद्रित करने या अक्षर अंकित करने का कार्य। (टाइप-राइटिङ्ग)।
टंकण-यंत्र पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा पत्र आदि छापे की कल के समान लिखे, मुद्रित या अंकित किये जाते है।
टंकन पुं० दे० 'टंकण'।
टंकना क्रि० (हि) १-टाँका जाना। सिलना। २-लिखा जाना। ३-सिल, चक्की आदि का खुरदरा

क्रिया उगना।

टंकमार स्त्री० (हि) टँकी पर मढ़ी हुई पशुओं की मोटी खालों को तोड़ने वाली एक प्रकार की तोप।

टँकवाना क्रि० वि० (हि) टँकाना।

टंक-विज्ञान पु० (सं) विभिन्न देशों की प्राचीन मुद्राओं या सिक्कों के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की विद्या।

टक-शाला स्त्री० (सं) टकसाल।

टँका पु० (हि) १-एक धेले की तौल। २-ताँबे का

टकाना क्रि० (हि) सिक्के को जाँच करना।

ध्वनि। २-वह टन-टन का शब्द जो कसे हुए डोरे या तार आदि पर उँगली आदि का आघात करने से होता है। ३-झनकार।

टंकारना क्रि० (हि) धनुष की डोरी तानकर शब्द उत्पन्न करना।

टंकिका स्त्री० (सं) टाँकी। छेनी।

टंकी स्त्री० (हि) पानी भरने का बनाया हुआ छोटा सा कुण्ड या बड़ा बरतन। चौबच्चा। टाँका।

टँकुआ वि० (हि) [स्त्री० टकुई] जिस पर कोई अन्य वस्तु टाँक कर लगाई गई हो।

टंकोर पु० दे० 'टंकार'।

टंकोरना क्रि० (हि) टंकारना।

टकोरी, टकोरी स्त्री० (हि) छोटा काँटा या तराजू।

टँगड़ी स्त्री० (हि) टाँग। पैर।

टँगना क्रि० (हि) १-लटकना। २-फाँसी पर चढ़ना। पु० अलगनी।

टंगा पु० (हि) मूँज।

टँगाना क्रि०(हि) १-टाँगने का काम दूसरे से कराना। २-दे० 'टँगना'।

टँगारी स्त्री० (हि) कुल्हाड़ी।

टच वि० (हि) १-कंजूस। २-निष्ठुर। ३-धूर्त। ४-चँवार। दुलैर।

टट-घट पु० (हि) १-घड़ी-घण्टा आदि ... पूजा करने का झूठा ढोंग। २

टंटा पु० (हि) १-व्यर्थ की झ... झगड़ा।

टँडिया स्त्री० (हि) बाँह पर पहनने का एक गहना।

टँडैल पु० (हि) मजदूरों का मेठ या सरदार।

ट पु० (सं) १-नारियल का खोपड़ा। २-वामन। ३-शब्द। ४-चौथाई भाग।

टई स्त्री० (हि) १-टट्टी। ३-टहल।

टक स्त्री० (हि) १-बिना पलक गिराये एक ही ओर देखना। २-स्थिर दृष्टि।

टकटका पु० (हि) [स्त्री० टकटकी] स्थिर दृष्टि। टकटकी। वि० (हि) एक जगह स्थिर (दृष्टि)।

टकटकाना क्रि० (हि) १-एकटक देखना। २-'टकटक' शब्द करना।

टकटकी स्त्री० (हि) निर्निमेष दृष्टि। स्थिर दृष्टि।

टकटोना क्रि० (हि) १-टटोलना। २-ढूँढना।

...-टकटकी लगाकर देखना।

... स्पर्श से पता लगाना या जाँचना।

... टटोल कर देखने का काम।

... १-जोर से भिड़ना। टक्करें फिरना। ३-एक वस्तु का ...ना।

टकसार स्त्री० दे० 'टकसाल'। वि० दे० 'टकसाली'।

टकसाल स्त्री० (हि) १-वह स्थान जहाँ सिक्के बनाये या ढाले जाते हैं। २-असली और निर्दोष वस्तु।

टकसाली वि० (हि) १-टकसाल सम्बन्धी। टकसाल का। २-खरा। चोखा। ३-सर्वसम्मत। ४-प्रामाणिक। परीक्षित।

टकसाली-बात स्त्री० (हि) ठीक और पक्की बात।

टकसाली-बोली स्त्री० (हि) शिष्ट भाषा।

टकहाई वि० (हि) [स्त्री० प्र०] टके-टके में व्यभिचार कराने वाली।

टका पु० (हि) १-चाँदी का एक पुराना सिक्का। रुपया। २-दो पैसे का एक सिक्का। अधन्ना। ३-धन।

टकाई वि० (हि) [स्त्री० प्र०] टकहाई। स्त्री० टकासी।

टकातोप स्त्री० (देश) एक प्रकार की तोप जो जहाजों पर रहती है।

टकासी स्त्री० (हि) १-टके रुपये का ब्याज। २-प्रति व्यक्ति टके के हिसाब से लिया गया कर।

टकाही वि० दे० 'टकहाई'। स्त्री० दे० 'टकासी'।

टकी स्त्री० दे० 'टकटकी'।

टकुआ पु० (हि) १-चरखे का तकला। २-वह तार जो छोटी तराजू में बाँधा जाता है।

... टाँकी। २-

टकोर पु० (हि) १-हलकी चोट। आघात। २-डंके का शब्द। ३-धनुष की टंकार। ४-दवा की गरम पोटली द्वारा किया जाने वाला सेंक। ५-चरपराहट ६-दाँतों का गुठला होने का भाव।

टकोरना क्रि० (हि) १-टक्कर लगना। २-चोट

झोंपा पुं० (हि) मब्बा । गुच्छा ।

झोंटिंग पुं० (हि) झोंटे वाला । जटाधारी ।

झोरना क्रि० (हि) १-जोर से हिलाना । झकझोरना २-झटका देकर तोड़ना । ३- इकट्ठा करना ।

झोरा पुं० (हि) [स्त्री० झोरि, झोरी] झोला ।

झोरि स्त्री० (हि) झोली ।

झोरी स्त्री० (हि) १-झोली । २-एक तरह की रोटी ।

झोल पुं० (हि) १-तरकारी आदि का रसा । शोरबा २-चावल का माँड़ । पीच । ३-धातु पर का मुलम्मा ४-झंझट, बखेड़ा या धोखे की बात । ५-कपड़े का वह अंश जो ढीला होने के कारण लटक जाय ६-आँचल । पल्ला । ७-परदा । ८-आड़ । ९-भूल गलती । १०-वह झिल्ली या थैला जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे अण्डे रहते हैं । ११-गर्भ । १२-राख । भस्म । १३-दाह । जलन । वि० (हि) १-ढीला-२-निकम्मा ।

झोलझाल वि० (हि) ढीलाढाला । पुं० ढीलाढवाला

झोलदार वि० (हि) १-जिसमें रसा हो । रसेदार । २-जिस पर मुलम्मा किया गया हो । ३-जिसमें झोल पड़ता हो । ढीला ।

झोलना क्रि० (हि) १-जलाना । २-दुखी करना ।

झोला पुं० (हि) (स्त्री० झोली) १-कपड़े की बड़ी थैली । थैला । २-ढीला ढाला गिलाफ । खोली । २-साधुओं का ढीला कुरता । चोला । ३-एक वात-रोग । ४-झोंका । ५-इशारा ।

झोली स्त्री० (हि) १-छोटा झोला । २-घास बाँधने का जाल । ३-मोट । चरसा । ४-खलिहान में अन्न ओसाने का कपड़ा । ५-कुश्ती का एक पेंच । ६-राख । भस्म ।

झोंद पुं० (हि) पेट । उदर ।

झौंर पुं० (हि) १-झुण्ड । समूह । २-फल पत्तियों या छोटे छोटे फलों का गुच्छा । ३-एक प्रकार का आभूषण । झब्बा । ४-पेड़ों या झाड़ियों का घना समूह । कुञ्ज ।

झौंरना क्रि० (हि) १-गूँजना । गुञ्जार करना । २-झौरना ।

झौंरा पुं० (?) झुण्ड । दल ।

झौंराना क्रि० (हि) १-झूमना । २-काला पड़ जाना ३-कुम्हलाना । ४-इधर उधर हिलना या झूलना

झौंसना क्रि० (हि) झुलसना ।

झौआ पुं०(हि) खँचिया ।

झौंनी स्त्री० (देश) टोकरी ।

झौर पुं० (हि) १-झंझट । विवाद । २-डाँट । फट-कार ।

झौरना क्रि० (हि) झपटकर दबोच लेना ।

झौरा पुं० (हि) विवाद । हुज्जत ।

झौरे क्रि० वि० (हि) १-निकट । पास । २-संग । साथ ।

झौलना क्रि० (हि) जलाना ।

झौवा पुं० (हि) खँचिया ।

झौहाना क्रि० (हि) १-गुर्राना । २-गुस्से में आकर बोलना ।

ञ

ञ हिन्दी वर्णमाला दसवाँ व्यञ्जन जो च वर्ग का पाँचवाँ वर्ण है । इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है ।

[शब्दसंख्या—१७२६५]

ट

ट हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है । इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है ।

टंक पुं० (सं) १-चार माशे का एक तौल । २-सिक्का ३-पत्थर काटने या गढ़ने की टाँकी । छेनी । ४-कुल्हाड़ी । ५-सुहागा । पुं० (अं० टैंक) १-तालाब । २-पानी का हौज या खजाना । ३-एक तरह की लोहे की बनी गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है ।

टंकक पुं० (सं) १-रुपया । चाँदी का सिक्का । २-टंकण-यन्त्र पर काम करने वाला । (टाइपिस्ट) ।

टंकक-शाला स्त्री० (सं) १-वह स्थान जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं । टकसालघर । (मिण्ट) । २-वह स्थान जहाँ टंकण यन्त्र पर टंकण-यन्त्र चलाना सीखते हों ।

टंकण पुं० (सं) १-सुहागा । २-धातु की वस्तु में टाँका अथवा जोड़ लगाना । ३-ताँबे, चाँदी आदि धातु खण्डों पर यन्त्र या ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने का कार्य । (कॉइनेज) ४-टङ्कण यन्त्र की सहायता से कागज पर कुछ लिखने, मुद्रित करने या अक्षर अंकित करने का कार्य । (टाइप-राइटिङ्ग) ।

टंकण-यंत्र पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा पत्र आदि छापे की कल के समान लिखे, मुद्रित या अंकित किये जाते हैं ।

टंकन पुं० दे० 'टंकण' ।

टंकना क्रि० (हि) १-टाँका जाना । सिलना । २-लिखा जाना । ३-सिल, चक्की आदि का खुरदरा

लगना। ३-टकोर अथवा सेंक करना।
टकोरा पुं० (हि) १-छोटा आम। अंबिया। २-नौबत की आवाज। ३-एक प्रकार का छपा मोटा कपड़ा।
टकोरी स्त्री० (हि) हलकी चोट या आघात। ठेस।
टकोरी स्त्री० (हि) चाँदी, सोना तौलने की छोटी तराजू।
टक्कर स्त्री० (हि) १-धक्का। ठोकर। २-मुकाबला। मुठभेड़। ३-घाटा। हानि।
टखना पुं० (हि) एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ। गुल्फ।
टगण पुं० (सं) छः मात्राओं का एक गण।
टघरना क्रि० (हि) पिघलना।
टचटच क्रि० वि० (हि) चिनगारियों से उत्पन्न शब्द। धायँधायँ।
टटका वि० (हि) [स्त्री० टटकी] १-ताजा। २-कोरा। ३-नया।
टटकाई स्त्री० (हि) ताजगी।
टटल-बटल वि० (हि) बे सिरपैर का। ऊटपटाँग।
टटावली स्त्री० (हि) टिटहरी नामक चिड़िया।
टटिया स्त्री० (हि) बाँस आदि की टट्टी।
टटीबा पुं० (हि) घिरनी। चक्कर।
टटुआ पुं० (हि) [स्त्री० टटुई] टट्टू।
टटोरना क्रि० (हि) टटोलना।
टटोल स्त्री० (हि) टटोलने की क्रिया या भाव। तलाश।
टटोलना क्रि०(हि) १-मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना या दबाना। २-ढूंढ़ने के लिए इधर उधर हाथ फैलाना। ३-बोलचाल से ही किसी के मन के भाव जानना। थाह लेना। ४-परखना।
टटोहना क्रि० (हि) टटोलना।
टट्टर पुं० (हि) बाँस आदि की फट्टियों का पल्ला।
टट्टी स्त्री० (हि) १-बाँस आदि की फट्टियों का बना छोटा टट्टर। २-चिक। चिलमन। ३-पतली दीवार। ४-पाखाना। ५-बाँस की फट्टियों की वह दीवार या छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती है।
टट्टू पुं० (हि) छोटे आकार का घोड़ा।
टड़िया स्त्री० (हि) बांह में पहनने का एक गहना।
टन स्त्री०(हि) घण्टा बजने का शब्द। पुं० धातु आदि पर आघात से उत्पन्न शब्द। वि० दे० 'टन्न' पुं० (अ) लगभग अट्ठाईस मन का एक तौल।
टनकना क्रि० (हि) १-टनटन बजना। २-धूप लगने आदि के कारण सिर में दर्द होना। रह-रह कर पीड़ा होना।
टनटन स्त्री० (हि) घण्टा बजाने का शब्द।
टनटनाना क्रि० (हि) १-घण्टा बजना। २-टन-टन बजना। ३-धातु पर आघात कर 'टन-टन' शब्द करना।
टनमन पुं० (हि) जादूटोना। वि० दे० 'टनमना'।
टनमना वि० (हि) स्वस्थ। चंगा।
टनाटन स्त्री० (हि) लगातार होने वाला टन-टन शब्द क्रि० वि० (हि) 'टन-टन' शब्द सहित।
टन्न वि० (हि) नशे आदि में चूर।
टप स्त्री० (हि) १-बूँद के टपकने का शब्द। २-किसी वस्तु पर से गिर पड़ने का शब्द। पुं० (हि) १-ताँगे टम-टम आदि पर लगा कपड़े आदि का छाजन। २-पानी रखने का एक बड़ा खुला बरतन। ३-कानका एक गहना।
टपक स्त्री० (हि) १-टपकने की क्रिया या भाव। २-बूंद-बूंद करके गिरने का शब्द।
टपकना क्रि० (हि) १-बूंद-बूंद करके गिरना। २-पके हुए फल का आप-से-आप गिरना। ३-किसी भाव का आभासित होना। झलकना। ४-मुग्ध होना। ५-टीस मारना। चिलकना।
टपका पुं० (हि) १-बूँद-बूँद गिरने का भाव। २-टपकी हुई वस्तु। ३-पककर आप-से-आप गिरा हुआ फल। ४-रह-रहकर उठने वाला दर्द। टीस।
टपका-टपकी स्त्री० (हि) १-वर्षा की हलकी झड़ी। बूँदा-बाँदी। २-फलों का लगातार गिरना। वि० भूला-भटका।
टपकाना क्रि० (हि) १-बूँद-बूँद गिराना। २-भबके से अर्क खींचना। चुआना।
टपकाव पुं० (हि) १-टपकने की क्रिया या भाव। २-टपकने की अवस्था।
टपना क्रि० (हि) १-बिना कुछ खाये-पीये पड़ा रहना २-व्यर्थ आसरे में बैठा रहना। ३-लाँघना। कूदना।
टपरना क्रि० (हि) टाँकी के आघात से पत्थर की सतह खुरदरी करना।
टपरा पुं०(हि) [स्त्री० टपरी] १-झोंपड़ा। २-छप्पर।
टपरी स्त्री० (हि) झोंपड़ी।
टपाटप क्रि० वि० (हि) १-टपटप की आवाज के साथ। २-लगातार। ३-शीघ्रता से। ४-एक-एक करके।
टपाना क्रि० (हि) १-बिना खिलाये-पिलाये पड़ा रहने देना। २-व्यर्थ आसरे में रखना। ३-फँदाना। कुदवाना।
टप्पर पुं० (हि) छप्पर। छाजन।
टप्पा पुं० (हि) १-दो स्थानों के बीच की विस्तृत भूमि। २-उछाल। फलाँग। ३-उतनी दूरी जितनी कोई फेंकी हुई वस्तु पार करे। ४-भूमि का छोटा भाग। ५-अन्तर। फरक। ६-दूर-दूर की सिलाई। ७-पाल पर वेग से चलने वाला नाव का बेड़ा। ८-एक प्रकार का हुक या काँटा। ९-वह ठहराव

जहाँ पालकी के कहार बदले जाते हैं। १०-नियत दूरी। ११-उछल-उछल कर जाती हुई वस्तु का बीच-बीच में टिकान। १२-एक प्रकार का पंजाबी गाना।

टप्पैत वि० (हि) १-टप्पा नामक गान से सम्बद्ध। २-टप्पा गाने वाला।

टब पुं० (अं०) १-पानी रखने का बड़ा बरतन। २-एक तरह का लम्प।

टब्बर पुं० (हि) कुटुम्ब। परिवार।

टमक स्त्री० (हि) १-पीड़ा। वेदना टीस। २-पानी में गिरने का शब्द।

टमकना क्रि० (हि) टीस होना।

टमकी स्त्री० (हि) डुग्गी। डुगडुगिया।

टमटम स्त्री० (अं० टैंडेम) ऊँचे पहियों की एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

टमटी स्त्री० (देश) एक प्रकार का बरतन।

टमाटर पुं० (अं० टोमैटो) एक फल जिसकी तरकारी बनती है।

टर स्त्री० (हि) १-कर्कश शब्द। २-मेंढक की बोली। ३-ऐंठ। अकड़। ४-हठ। जिद। ५-तुच्छ बात। ६-ईद के दूसरे दिन का मेला।

टरकना क्रि० (हि) टलना।

टरकाना क्रि० (हि) टालना।

टरकी पुं० (तु०) एक तरह का मुरगा जिसका मांस खाने में स्वादिष्ट होता है।

टरकुल वि० (हि) घटिया। रद्दी।

टरटराना क्रि० (हि) १-बकबक करना। २-ढिठाई से बोलना।

टरना क्रि० (हि) टलना।

टरनि स्त्री० (हि) टलने की अवस्था या भाव।

टर्रा वि० (हि) १-ऐंठकर बात करने वाला। २-धृष्ट

टर्राना क्रि० (हि) ऐंठकर बात करना।

टर्रापन पुं० (हि) बात करने की कठोरता।

टलना क्रि० (हि) १-खिसकना। सरकना। २-अनुपस्थित होना। ३-दूर होना। ४-अन्यथा होना। ५-उल्लंघित होना या पूरा न किया जाना। ६-समय बीतना। ७-(किसी काम के लिए) निश्चित समय में आगे आगे का समय नियत करना।

टलाटली स्त्री० (हि) टालमटोल। बहानेबाजी।

टल्ला पुं० (हि) धक्का। आघात।

टल्ली स्त्री० (हि) छोटी टहनी।

टवर्ग पुं० (सं) ट, ठ, ड, ढ, ण इन पाँच वर्णों का समूह।

टवाई स्त्री० (हि) व्यर्थ घूमना। आवारगी।

टस स्त्री० (हि) १-भारी वस्तु के खसकने का शब्द। २-कपड़े आदि के फटने का शब्द।

टसक स्त्री० (हि) कसक। टीस।

टसकना क्रि० (हि) १-खिसकना। सरकना। २-टीस मारना। ३-बात मानने को उद्यत होना। प्रभावित होना।

टसकाना क्रि० (हि) खिसकाना। हिलाना।

टसर पुं० (हि) एक तरह का घटिया मोटा रेशम।

टसुआ पुं० (हि) आँसू। अश्रु।

टहक स्त्री० (हि) रह-रह कर उठने वाली पीड़ा। चसक

टहकना क्रि० (हि) १-रह-रहकर दर्द करना। चसकना। २-पिघलना।

टहकाना क्रि० (हि) आँच से पिघलाना।

टहना पुं० (हि) (स्त्री० टहनी) वृक्ष की शाखा या डाल।

टहनी स्त्री० (हि) वृक्ष की पतली शाखा। डाली।

टहरना क्रि० (हि) टहलना।

टहल स्त्री० (हि) १-सेवा-सुश्रुषा। २-चाकरी।

टहलना क्रि० (हि) १-मन्दगति से भ्रमण करना। २-व्यायाम या मनबहलाव की दृष्टि से इधर-उधर घूमना। ३-मर जाना।

टहलनी स्त्री० (हि) टहल करने वाली। दासी।

टहलाना क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे चलना। घुमाना। २-सैर कराना।

टहलुआ पुं० (हि) (स्त्री० टहलुई, टहलनी) टहल करने वाला। सेवक। खिदमतगार।

टहलुई स्त्री० दे० 'टहलनी'।

टहलुवा पुं० दे० 'टहलुआ'।

टहलू पुं० (हि) सेवक। चाकर।

टहो स्त्री० (हि) मतलब निकालने की बात। युक्ति। जोड़तोड़।

टहूमाटोरी स्त्री० (देश) चुगलखोरी।

टहोका पुं० (हि) हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।

टाँक स्त्री०(हि) १-चार माशे की एक तौल। २-कूत। आँक। ३-लिखावट। ४-कलम की नोक। ५-एक तरह की सिलाई।

टाँकना क्रि०(हि) १-सिलाई करके जोड़ना। सीना। २-बही पर चढ़ाना। सिल, चक्की आदि को टाँकी से खुरदरा करना। रेहना। ४-रेती के दाँतों को तेज या नुकीला करना।

टाँका पुं० (हि) १-वह वस्तु जिससे दो वस्तुएँ जोड़ी या टाँकी जावें। २-धातु जोड़ने का मसाला। ३-सीवन। सिलाई। ४-थिगली। पैबन्द। ५-[स्त्री० टाँकी] पानी रखने का बड़ा बरतन।

टाँकी स्त्री० (हि) पत्थर गढ़ने का औजार। छेनी।

टाँग स्त्री० (हि) [illegible]

टाँगा पु० (हि) १-एक प्रकार की दुपहिया घोड़ा-

लगना। ३-टकोर अथवा सेंक करना।
टकोरा पुं० (हि) १-छोटा आम। अंबिया। २-नौबत की आवाज। ३-एक प्रकार का रूपा गोटा पट्टा।
टकोरी स्त्री० (हि) हलकी चोट या आघात। ठेस।
टकौरी स्त्री० (हि) चाँदी, सोना तौलने की छोटी तराजू।
टक्कर स्त्री० (हि) १-धक्का। ठोकर। २-मुकाबला। मुठभेड़। ३-घाटा। हानि।
टखना पुं० (हि) एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ। गुल्फ।
टगण पुं० (सं) छः मात्राओं का एक गण।
टघरना क्रि० (हि) पिघलना।
टचटच क्रि० वि०(हि) चिनगारियों से उत्पन्न शब्द। धाँयधाँय।
टटका वि० (हि) [स्त्री० टटकी] १-ताजा। २-कोरा। नया।
टटकाई स्त्री० (हि) ताजगी।
टटल-बटल वि० (हि) बे सिरपैर का। ऊटपटाँग।
टटावली स्त्री० (हि) टिटहरी नामक चिड़िया।
टटिया स्त्री० (हि) बाँस आदि की टट्टी।
टटीबा पुं० (हि) घिरनी। चक्कर।
टटुआ पुं० (हि) [स्त्री० टटुई] टट्टू।
टटोरना क्रि० (हि) टटोलना।
टटोल स्त्री० (हि) टटोलने की क्रिया या भाव। तलाश।
टटोलना क्रि०(हि) १-मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना या दबाना। २-ढूंढ़ने के लिए इधर उधर हाथ फैलाना। ३-बोलचाल से ही किसी के मन के भाव जानना। थाह लेना। ४-परखना।
टटोहना क्रि० (हि) टटोलना।
टट्टर पुं० (हि) बाँस आदि की फट्टियों का पल्ला।
टट्टी स्त्री० (हि) १-बाँस आदि की फट्टियों का बना छोटा टट्टर। २-चिक। चिलमन। ३-पतली दीवार। ४-पाखाना। ५-बाँस की पट्टियों की वह दीवार या छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती है।
टट्टू पुं० (हि) छोटे आकार का घोड़ा।
टड़िया स्त्री० (हि) बाँह में पहनने का एक गहना।
टन स्त्री०(हि) घण्टा बजाने का शब्द। पुं० धातु आदि पर आघात से उत्पन्न शब्द। वि० दे० 'टन्न' पुं० (अ) लगभग अट्ठाईस मन का एक तौल।
टनकना क्रि० (हि) १-टनटन बजना। २-धूप लगने आदि के कारण सिर में दर्द होना। रह-रह कर पीड़ा होना।
टनटन स्त्री० (हि) घण्टा बजाने का शब्द।
टनटनाना क्रि० (हि) १-घण्टा बजना। २-टन-टन बजना। ३-धातु पर आघात कर 'टन-टन' शब्द करना।
टनमन पुं० (हि) जादूटोना। वि० दे० 'टनमना'।
टनमना वि० (हि) स्वस्थ। चंगा।
टनाटन स्त्री० (हि) लगातार होने वाला टन-टन शब्द क्रि० वि० (हि) 'टन-टन' शब्द सहित।
टन्न वि० (हि) नशे आदि में चूर।
टप स्त्री० (हि) १-बूँद के टपकने का शब्द। २-किसी वस्तु पर से गिर पड़ने का शब्द। पुं० (हि) १-ताँगे टम-टम आदि पर लगा कपड़े आदि का छाजन। २-पानी रखने का एक बड़ा खुला बरतन। ३-कान का एक गहना।
टपक स्त्री० (हि) १-टपकने की क्रिया या भाव। २-बूंद-बूंद करके गिरने का शब्द।
टपकना क्रि० (हि) १-बूंद-बूंद करके गिरना। २-पके हुए फल का आप-से-आप गिरना। ३-किसी भाव का आभासित होना। झलकना। ४-चुआ होना। ५-टीस मारना। चिलकना।
टपका पुं० (हि) १-बूँद-बूँद गिरने का भाव। २-टपकी हुई वस्तु। ३-पककर आप-से-आप गिरा हुआ फल। ४-रह-रहकर उठने वाला दर्द। टीस।
टपका-टपकी स्त्री० (हि) १-वर्षा की हलकी झड़ी। बूँदा-बाँदी। २-फलों का लगातार गिरना। वि० भूला-भटका।
टपकाना क्रि० (हि) १-बूंद-बूंद गिराना। २-भभके से अर्क खींचना। चुआना।
टपकाव पुं० (हि) १-टपकने की क्रिया या भाव। २-टपकने की अवस्था।
टपना क्रि० (हि) १-बिना कुछ खाये-पीये पड़ा रहना २-व्यर्थ आसरे में बैठा रहना। ३-लाँघना। कूदना।
टपरना क्रि० (हि) टाँकी के आघात से पत्थर की सतह खुरदरी करना।
टपरा पुं०(हि) [स्त्री० टपरी] १-झोंपड़ा। २-छप्पर।
टपरी स्त्री० (हि) झोंपड़ी।
टपाटप क्रि० वि० (हि) १-टपटप की आवाज के साथ। २-लगातार। ३-शीघ्रता से। ४-एक-एक करके।
टपाना क्रि० (हि) १-बिना खिलाये-पिलाये पड़ा रहने देना। २-व्यर्थ आसरे में रखना। ३-फँदाना। कुदवाना।
टप्पर पुं० (हि) छप्पर। छाजन।
टप्पा पुं० (हि) १-दो स्थानों के बीच की विस्तृत भूमि। २-उछाल। फलाँग। ३-उतनी दूरी जितनी कोई फेंकी हुई वस्तु पार करे। ४-भूमि का छोटा भाग। ५-अन्तर। फरक। ६-दूर-दूर की सिलाई। ७-पाल पर वेग से चलने वाला नाव का बेड़ा। ८-एक प्रकार का हुक या काँटा। ९-पद्य [illegible]

जहाँ सवारी के घोड़े बदले जाते हैं। १०-निश्चित दूरी। ११-उछल उछल कर जाती हुई वस्तु का बीच-बीच में टिकना। १२-एक प्रकार का पंजाबी गाना।

टप्पैत वि० (हि) १-टप्पा नामक गान से सम्बद्ध। २-टप्पा गाने वाला।

टब पुं० (अं०) १-पानी रखने का बड़ा बरतन। २-एक तरह का लम्प।

टब्बर पुं० (हि) कुटुम्ब। परिवार।

टमक स्त्री० (हि) १-पीड़ा। वेदना टीस। २-पानी में गिरने का शब्द।

टमकना क्रि० (हि) टीस होना।

टमकी स्त्री० (हि) डुग्गी। डुगडुगिया।

टमटम स्त्री० (अं० टैंडेम) ऊँचे पहियों की एक प्रकार की घोड़गाड़ी।

टमटी स्त्री० (देश) एक प्रकार का बरतन।

टमाटर पुं० (अं० टोमैटो) एक फल जिसकी तरकारी बनती है।

टर स्त्री० (हि) १-कर्कश शब्द। २-मेंढक की बोली। ३-ऐंठ। अकड़। ४-हठ। जिद। ५-तुच्छ बात। ६-ईद के दूसरे दिन का मेला।

टरकना क्रि० (हि) टलना।

टरकाना क्रि० (हि) टालना।

टरकी पुं० (तु०) एक तरह का मुरगा जिसका मांस खाने में स्वादिष्ट होता है।

टरुन वि० (हि) घटिया। रद्दी।

टरटराना क्रि० (हि) १-टरटर करना। २-ढिठाई से बोलना।

टरना क्रि० (हि) टलना।

टरनि स्त्री० (हि) टलने की अवस्था या भाव।

टर्रा वि० (हि) १-ऐंठकर बात करने वाला। २-धृष्ट।

टर्राना क्रि० (हि) ऐंठकर बात करना।

टर्रापन पुं० (हि) बात करने की कठोरता।

टलना क्रि० (हि) १-खिसकना। सरकना। २-अनुपस्थित होना। ३-दूर होना। ४-अन्यथा होना। ५-उल्लंघित होना या पूरा न किया जाना। ६-समय बीतना। ७-(किसी काम के लिए) निश्चित समय में आगे का समय नियत करना।

टलाटली स्त्री० (हि) टालमटोल। बहानेबाजी।

टल्ला पुं० (हि) धक्का। आघात।

टल्ली स्त्री० (?) छोटी टहनी।

टवर्ग पुं० (सं) ट, ठ, ड, ढ, ण इन पाँच वर्णों का समूह।

टवाई स्त्री० (हि) व्यर्थ घूमना। आवारगी।

टस स्त्री० (हि) १-भारी वस्तु के खसकने का शब्द। २-कपड़े आदि के फटने का शब्द।

टसक स्त्री० (हि) कसक। टीस।

टसकना क्रि० (हि) १-खिसकना। सरकना। २-टीस मारना। ३-बात मानने को उद्यत होना। प्रभावित होना।

टसकाना क्रि० (हि) खिसकाना। हिलाना।

टसर पुं० (हि) एक तरह का घटिया मोटा रेशम।

टसुआ पुं० (हि) आँसू। अश्रु।

टहक स्त्री० (हि) रह-रह कर उठने वाली पीड़ा। कसक

टहकना क्रि० (हि) १-रह-रहकर दर्द करना। कसकना। २-पिघलना।

टहकाना क्रि० (हि) आँच से पिघलाना।

टहना पुं० (हि) (स्त्री० टहनी) वृक्ष की शाखा या डाल।

टहनी स्त्री० (हि) वृक्ष की पतली शाखा। डाली।

टहरना क्रि० (हि) टहलना।

टहल स्त्री० (हि) १-सेवा-सुश्रूषा। २-चाकरी।

टहलना क्रि० (हि) १-मन्दगति से भ्रमण करना। २-व्यायाम या मनबहलाव की दृष्टि से इधर-उधर घूमना। ३-मर जाना।

टहलनी स्त्री० (हि) टहल करने वाली। दासी।

टहलाना क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे चलाना। घुमाना। २-सैर कराना।

टहलुआ पुं० (हि) (स्त्री० टहलुई, टहलनी) टहल करने वाला। सेवक। खिदमतगार।

टहलुई स्त्री० दे० 'टहलनी'।

टहलुवा पुं० दे० 'टहलुआ'।

टहलू पुं० (हि) सेवक। चाकर।

टहो स्त्री० (हि) मतलब निकालने की घात। युक्ति। जोड़तोड़।

टहूकाटारी स्त्री० (देश) चुगलखोरी।

टहोका पुं० (हि) हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।

टाँक स्त्री०(हि) १-चार माशे की एक तौल। २-कूत। आँक। ३-लिखावट। ४-कलम की नोक। ५-एक तरह की सिलाई।

टाँकना क्रि०(हि) १-सिलाई करके जोड़ना। सीना। २-बही पर चढ़ाना। सिल, चक्की आदि को टाँकी से खुरदरा करना। रेहना। ४-रेती के दाँतों को तेज या नुकीला करना।

टाँका पुं० (हि) १-वह वस्तु जिससे दो वस्तुएँ जोड़ी या टाँकी जाएँ। २-धातु जोड़ने का मसाला। ३-सीवन। सिलाई। ४-थिगली। पैबन्द। ५-[स्त्री० टाँकी] पानी रखने का बड़ा बरतन।

टाँकी स्त्री० (हि) पत्थर गढ़ने का औजार। छेनी।

टाँग स्त्री० (हि) पैर। जाँघ से एड़ी तक का भाग।

टाँगन पुं० (हि) छोटा घोड़ा। टट्टू।

टाँगना क्रि०(हि) १-लटकाना। २-फाँसी पर चढ़ाना

टाँगा पुं० (हि) १-एक प्रकार की दुपहिया घोड़ा-

लगना। ३–टकोर अथवा सेंक करना।

टकोरा पुं० (हि) १–छोटा आम। अंबिया। २–नौबत की आवाज। ३–एक प्रकार का छपा मोटा कपड़ा।

टकोरी स्त्री० (हि) हलकी चोट या आघात। ठेस।

टकौरी स्त्री० (हि) चाँदी, सोना तौलने की छोटी तराजू।

टक्कर स्त्री० (हि) १–धक्का। ठोकर। २–मुक़ाबला। मुठभेड़। ३–घाटा। हानि।

टखना पुं० (हि) एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ। गुल्फ।

टगण पुं० (सं) छः मात्राओं का एक गण।

टघरना क्रि० (हि) पिघलना।

टचटच क्रि० वि०(हि) चिनगारियों से उत्पन्न शब्द। धायँधायँ।

टटका वि० (हि) [स्त्री० टटकी] १–ताजा। २–कोरा। ३ नया।

टटकाई स्त्री० (हि) ताजगी।

टटल-बटल वि० (हि) बे सिरपैर का। ऊटपटाँग।

टटावली स्त्री० (हि) टिटहरी नामक चिड़िया।

टटिया स्त्री० (हि) बाँस आदि की टट्टी।

टटीवा पुं० (हि) घिरनी। चक्कर।

टटुआ पुं० (हि) [स्त्री० टटुई] टट्टू।

टटोरना क्रि० (हि) टटोलना।

टटोल स्त्री० (हि) टटोलने की क्रिया या भाव। तलाश।

टटोलना क्रि०(हि) १–मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना या दबाना। २–ढूंढ़ने के लिए इधर उधर हाथ फैलाना। ३–बोलचाल से ही किसी के मन के भाव जानना। थाह लेना। ४–परखना।

टटोहना क्रि० (हि) टटोलना।

टट्टर पुं० (हि) बाँस आदि की फट्टियों का पल्ला।

टट्टी स्त्री० (हि) १–बाँस आदि की फट्टियों का बना छोटा टट्टर। २–चिक। चिलमन। ३–पतली दीवार। ४–पाखाना। ५–बाँस की फट्टियों की वह दीवार या छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती है।

टट्टू पुं० (हि) छोटे आकार का घोड़ा।

टड़िया स्त्री० (हि) बांह में पहनने का एक गहना।

टन स्त्री०(हि) घण्टा बजने का शब्द। पुं० धातु आदि पर आघात से उत्पन्न शब्द। वि० दे० 'टन्न' पुं० (अ) लगभग अट्ठाईस मन का एक तौल।

टनकना क्रि० (हि) १–टनटन बजना। १–धूप लगने आदि के कारण सिर में दर्द होना। रह-रह कर पीड़ा होना।

टनटन स्त्री० (हि) घण्टा बजाने का शब्द।

टनटनाना क्रि० (हि) १–घण्टा बजना। २–टन-टन बजना। ३–धातु पर आघात कर 'टन-टन' शब्द करना।

टनमन पुं० (हि) जादूटोना। वि० दे० 'टनमना'।

टनमना वि० (हि) स्वस्थ। चंगा।

टनाटन स्त्री० (हि) लगातार होने वाला टन-टन शब्द क्रि० वि० (हि) 'टन-टन' शब्द सहित।

टन्न वि० (हि) नशे आदि में चूर।

टप स्त्री० (हि) १–बूँद के टपकने का शब्द। २–किसी वस्तु पर से गिर पड़ने का शब्द। पुं० (हि) १–ताँगे टम-टम आदि पर लगा कपड़े आदि का छाजन। २–पानी रखने का एक बड़ा खुला बरतन। ३–कानका एक गहना।

टपक स्त्री० (हि) १–टपकने की क्रिया या भाव। २–बूंद-बूंद करके गिरने का शब्द।

टपकना क्रि० (हि) १–बूंद-बूंद करके गिरना। २–पके हुए फल का आप-से-आप गिरना। ३–किसी भाव का आभासित होना। झलकना। ४–मुग्ध होना। ५–टीस मारना। चिलकना।

टपका पुं० (हि) १–बूँद-बूँद गिरने का भाव। २–टपकी हुई वस्तु। ३–पककर आप-से-आप गिरा हुआ फल। ४–रह-रहकर उठने वाला दर्द। टीस।

टपका-टपकी स्त्री० (हि) १–वर्षा की हलकी झड़ी। बूँदा-बाँदी। २–फलों का लगातार गिरना। वि० भूला-भटका।

टपकाना क्रि० (हि) १–बूंद-बूंद गिराना। २–भबके से अर्क खींचना। चुआना।

टपकाव पुं० (हि) १–टपकने की क्रिया या भाव। २–टपकने की अवस्था।

टपना क्रि० (हि) १–बिना कुछ खाये-पीये पड़ा रहना २–व्यर्थ आसरे में बैठा रहना। ३–लाँघना। कूदना।

टपरना क्रि० (हि) टाँकी के आघात से पत्थर की सतह खुरदरी करना।

टपरा पुं०(हि) [स्त्री० टपरी] १–झोंपड़ा। २–छप्पर।

टपरी स्त्री० (हि) झोंपड़ी।

टपाटप क्रि० वि० (हि) १–टपटप की आवाज के साथ। २–लगातार। ३–शीघ्रता से। ४–एक-एक करके।

टपाना क्रि० (हि) १–बिना खिलाये-पिलाये पड़ा रहने देना। २–व्यर्थ आसरे में रखना। ३–फँदाना। कुदवाना।

टप्पर पुं० (हि) छप्पर। छाजन।

टप्पा पुं० (हि) १–दो स्थानों के बीच की विस्तृत भूमि। २–उछाल। फलाँग। ३–उतनी दूरी जितनी कोई फेंकी हुई वस्तु पार करे। ४–भूमि का छोटा भाग। ५–अन्तर। फरक। ६–दूर-दूर की सिलाई। ७–पाल पर वेग से चलने वाला नाव का बेड़ा। ८–एक प्रकार का हुक या काँटा। ९–चद ठहराव

जहाँ पालकी के कहार बदले जाते हैं। १०-नियत दूरी। ११-उछल उछल कर जाती हुई वस्तु का बीच-बीच में टिकान। १२-एक प्रकार का पंजाबी गाना।

टप्पैत वि० (हि) १-टप्पा नामक गान से सम्बद्ध। २-टप्पा गाने वाला।

टब पुं० (अं०) १-पानी रखने का बड़ा बरतन। २-एक तरह का खम्भ।

टब्बर पुं० (हि) कुटुम्ब। परिवार।

टमक स्त्री० (हि) १-पीड़ा। वेदना। टीस। २-पानी में गिरने का शब्द।

टमकना क्रि० (हि) टीस होना।

टमकी स्त्री० (हि) डुग्गी। डुगडुगिया।

टमटम स्त्री० (अं० टैंडेम) ऊँचे पहियों की एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

टमटो स्त्री० (देश) एक प्रकार का बरतन।

टमाटर पुं० (अं० टोमैटो) एक फल जिसकी तरकारी बनती है।

टर स्त्री० (हि) १-कर्कश शब्द। २-मेंढक की बोली। ३-ऐंठ। अकड़। ४-हठ। जिद। ५-तुच्छ बात। ६-ईद के दूसरे दिन का मेला।

टरकना क्रि० (हि) टलना।

टरकाना क्रि० (हि) टालना।

टरकी पुं० (तु०) एक तरह का मुरगा जिसका मांस खाने में स्वादिष्ट होता है।

टरकुन वि० (हि) घटिया। रद्दी।

टरटराना क्रि० (हि) १-बकबक करना। २-ढिठाई से बोलना।

टरना क्रि० (हि) टलना।

टर्रनि स्त्री० (हि) टलने की अवस्था या भाव।

टर्रा वि० (हि) १-ऐंठकर बात करने वाला। २-धृष्ट

टर्राना [illegible] (हि) ऐंठकर बात करना।

टर्रापन पुं० (हि) बात करने की कठोरता।

टलना क्रि० (हि) १-खिसकना। सरकना। २-अनुपस्थित होना। ३-दूर होना। ४-अन्यथा होना। ५-उल्लंघित होना या पूरा न किया जाना। ६-समय बीतना। ७-(किसी काम के लिए) निश्चित समय से आगे आगे का समय नियत करना।

टलाटली स्त्री० (हि) टालमटोल। बहानेबाजी।

टल्ला पुं० (हि) धक्का। आघात।

टल्ली स्त्री० (?) छोटी टहनी।

टवर्ग पुं० (सं) ट, ठ, ड, ढ, ण इन पाँच वर्णों का समूह।

टवाई स्त्री० (हि) व्यर्थ घूमना। आवारगी।

टस स्त्री० (हि) १-भारी वस्तु के सरकने का शब्द। २-कपड़े आदि के फटने का शब्द।

टसक स्त्री० (हि) कसक। टीस।

टसकना क्रि० (हि) १-खिसकना। सरकना। २-टीस मारना। ३-बात मानने को उद्यत होना। प्रभावित होना।

टसकाना क्रि० (हि) खिसकाना। हिलाना।

टसर पुं० (हि) एक तरह का घटिया मोटा रेशम।

टसुआ पुं० (हि) आँसू। अश्रु।

टहक स्त्री० (हि) रह रह कर उठने वाली पीड़ा। चसक

टहकना क्रि० (हि) १-रह-रहकर दर्द करना। चसकना। २-पिघलना।

टहकाना क्रि० (हि) आँच से पिघलाना।

टहना पुं० (हि) (स्त्री० टहनी) वृक्ष की शाखा या डाल।

टहनी स्त्री० (हि) वृक्ष की पतली शाखा। डाली।

टहरना क्रि० (हि) टहलना।

टहल स्त्री० (हि) १-सेवा सुश्रूषा। २-चाकरी।

टहलना क्रि० (हि) १-मन्दगति से भ्रमण करना। २-व्यायाम या मनबहलाव की दृष्टि से इधर-उधर घूमना। ३-मरजाना।

टहलनी स्त्री० (हि) टहल करने वाली। दासी।

टहलाना क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे चलाना। घुमाना। २-सैर कराना।

टहलुआ पुं० (हि) (स्त्री० टहलुई, टहलनी) टहल करने वाला। सेवक। खिदमतगार।

टहलुई स्त्री० दे० 'टहलनी'।

टहलुवा पुं० दे० 'टहलुआ'।

टहलू पुं० (हि) सेवक। चाकर।

टहो स्त्री० (हि) मतलब निकालने की घात। युक्ति। जोड़तोड़।

टहुआटारी स्त्री० (देश) चुगलखोरी।

टहोका पुं० (हि) हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।

टाँक स्त्री०(हि) १-चार माशे की एक तौल। २-कूत। आँक। ३-लिखावट। ४-कलम की नोक। ५-एक तरह की सिलाई।

टाँकना क्रि०(हि) १-सिलाई करके जोड़ना। सीना। २-बही पर चढ़ाना। सिल, चक्की आदि को टाँकी से खुरदरा करना। रेहना। ४-रेती के दाँतों को तेज या नुकीला करना।

टाँका पुं० (हि) १-वह वस्तु जिससे दो वस्तुएँ जोड़ी या टाँकी जायँ। २-धातु जोड़ने का मसाला। ३-सीवन। सिलाई। ४-थिगली। पैवन्द। ५-[स्त्री० टाँकी] पानी रखने का बड़ा बरतन।

टाँकी स्त्री० (हि) पत्थर गढ़ने का औजार। छेनी।

टाँग स्त्री० (हि) पैर। जाँघ से एड़ी तक का भाग।

टाँगन पुं० (हि) छोटा घोड़ा। टट्टू।

टाँगना क्रि०(हि) १-लटकाना। २-फाँसी पर चढ़ाना

टाँगा पुं० (हि) १-एक प्रकार की दुपहिया घोड़ा-

गाड़ी। २-बड़ी कुल्हाड़ी।
टाँगो स्त्री० (हि) कुल्हाड़ी।
टाँच स्त्री०(हि) १-दूसरे का काम बिगाड़ने वाली बात भाँजी। २-टाँका। ३-सिलाई। ४-पैबन्द। ५-काट-छाँट।
टाँचना क्रि० (हि) १-टाँकना। सीना। २-काटना। तराशना।
टाँट, टाँटर स्त्री० (हि) खोपड़ी। कपाल।
टाँठ वि० (हि) १-करारा। कड़ा। कठोर। २-बली।
टाँड़ स्त्री० (हि) १-लकड़ी के खंभों पर बनाई हुई पाटन जिस पर सामान रखते हैं। परछत्ती। २-वह मञ्च जिस पर से खेत की रखवाली करते हैं। मचान। ३-बाहु में बाँधने का एक गहना। पुं०१-ढेर। अटाला। २-पंक्ति। ३-घरों की पंक्ति।
टाँडी स्त्री० (हि) टिड्डी।
टाँयटाँय स्त्री० (हि) १-कर्कश शब्द। २-बक-बक।
टाँस स्त्री० (हि) हाथ पैर के नसों की सिकुड़न।
टाँसना क्रि० (हि) १-दे० टाँचना। २-दे० टाँकना।
टाइटिल पुं० (अं) १-आगम। २-उपाधि। ३-शीर्षनामा। ४-आवरण-पत्र।
टाइप पुं० (अं) सीसे के ढले हुए अक्षर जिनसे छपाई होती है।
टाइप-राइटर पुं० (अं) वह यन्त्र जिसमें कागज रखकर टाइप के अक्षर छापे जाते हैं।
टाइफाइड पुं० (अं) मियादी बुखार।
टाइम पुं० (अं) समय।
टाइम-टेबुल पुं० (अं) समयसारिणी।
टाइमपीस स्त्री० (अं) मेज पर रखने की घड़ी।
टाइल पुं० (अं) चौकोर टुकड़े जिनसे फर्श बनता है।
टाई स्त्री० (अं) १-गले में बाँधने की कपड़े की पट्टी जो शोभा के लिए बाँधी जाती है। २-प्रतियोगिता आदि में होने वाली जिच।
टाउन पुं० (अं) कसबा।
टाउन-हाल पुं० (अं) बड़े-बड़े नगरों में नगर-पालिका की ओर से बनाया जाने वाला सार्वजनिक भवन जिसमें नागरिक सभाएँ करते हैं।
टाट पुं० (हि) १-सन का बना मोटा कपड़ा। २-मोटा कपड़ा। ३-महाजनी गद्दी। ४-बिरादरी।
टाटक वि० दे० 'टटका'।
टाटर पुं० (हि) १-टट्टर। टट्टी। २-खोपड़ी। कपाल।
टाटिका स्त्री० (हि) टट्टी।
टाटी स्त्री० (हि) छोटा टट्टर। टट्टी।
टाठ पुं० (हि) [स्त्री० टाठी] १-बड़ी थाली। थाल। २-बटुआ या बटलोई नामक बरतन।
टाठा वि० (हि) [स्त्री० टाठी] १-बलवान तथा हृष्ट-पुष्ट। २-जो सूखकर कड़ा हो गया हो। कठोर।
टाठी स्त्री० (हि) थाली।
टाड़ स्त्री० (देश) भुजा पर पहनने का एक गहना।
टान स्त्री० (हि) १-तनाव। खिंचाव। २-खींचने की क्रिया। ३-सितार बजाने का एक ढंग। पुं० मचान
टानना क्रि० (हि) १-तानना। २-खींचना। ३-छापना।
टाप स्त्री० (हि) १-घोड़े के पैर का वह भाग जो भूमि पर पड़ता है। सुम। खुर। २-घोड़े के पैरों का जमीन पर पड़ने का शब्द। ३-दे० 'टापा'।
टापना क्रि० (हि) घोड़ों का पैर पटकना। २-किसी वस्तु के लिए हैरान होना। ३-बिना दाना, पानी के समय बिताना। ४-पछताना। ५-उछलना। कूदना। ६-दे० 'टपना'।
टापर पुं० (हि) १-ओढ़ने का मोटा कपड़ा। चादर। २-दे० टापा।
टापा पुं० (हि) १-लम्बा चौड़ा मैदान। २-उजाड़ मैदान। ३-भाबा। टोकरा। ४-उछाल।
टापू पुं० (हि) वह भूखंड जो चारों ओर पानी से घिरा हो द्वीप।
टाबर पुं० (हि) बच्चा। बालक।
टामक पुं० (हि) डुग्गी। डिमडिमि।
टामन पुं० (हि) टोटका। तंत्रविधि।
टारन पुं० (हि) १-सरकाने की वस्तु। २-कोल्हू में पड़ा हुआ लकड़ी का डंडा।
टारना क्रि० (हि) टालना।
टारपीडो, टारपेडो पुं० (अं) पानी के भीतर स्वतः चलने वाला एक जंगी जहाज या विध्वंसक जो दूसरे जहाज से टकराते ही फट जाता है। और टकराने वाले जहाज में छेद कर देता है।
टाल स्त्री० (हि) १-ऊँचा ढेर। अटाला। २-लकड़ी, भूसे आदि की दुकान। ३-टलने की क्रिया या भाव पुं० कुटना।
टालटूल स्त्री० दे० 'टालमटूल'।
टालमटूल स्त्री० (हि) बहाना।
टाला वि० (हि) [स्त्री० टाली] आधा। अर्द्ध।
टाली स्त्री० (देश) १-गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घन्टी। २-बछिया या जवान गाय। ३-एक प्रकार का बाजा। ४-अठन्नी। धेली।
टाहली पुं० (हि) सेवक। टहलुआ।
टिंचर पुं० (अं) एक तरल औषध जो स्पिरिट के योग से बनती है।
टिंड, टिंडा पुं० (हि) ककड़ी की जाति की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है।
टिकट पुं० (अं) १-कागज, गत्ते आदि का छोटा टुकड़ा जो किसी कार्य विशेष का अधिकार पाने के लिए मूल्य से मिलती है। २-चिप्पी। ३-कर। महसूल।

टीड़ी स्त्री० (हि) टिड्डी।
टीक स्त्री० (हि) गले या सिर का एक आभूषण।
टीकना क्रि० (हि) टीका या निशान लगाना।
टीका पुं० (हि) १-तिलक। २-विवाह की एक रीति जिसमें कन्या पक्षवालों का वर के मस्तक पर तिलक लगा कर विवाह निश्चित करना। तिलक। ३-श्रेष्ठ पुरुष। ४-राजतिलक। ५-राज्य का उत्तराधिकारी। युवराज। ६-किसी रोग को रोकने के लिए उस रोग का चेप अथवा रस सूई के द्वारा प्रविष्ट करने की क्रिया। ७- माथे का एक गहना। ८-दाग। ९-घोड़े के माथे के बीच का वह भाग जहाँ भंवरी होती है। १०-वह भेंट जो आसामी राजा को देता है। स्त्री० (सं) व्याख्या।
टीकाकार पुं० (सं) किसी ग्रन्थ की व्याख्या करने वाला।
टीका-टिप्पणी स्त्री० (सं) कोई प्रसङ्ग छिड़ने अथवा बात सामने आने पर उसके गुण दोष आदि के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करना।
टीकी स्त्री० (हि) १-टिकुली। २-टिकिया।
टीड़ी स्त्री० (हि) टिड्डी।
टीन पुं० (अं) १-कलई की हुई लोहे की चादर। ऐसी चादर का बना डिब्बा या बरतन।
टीप पुं० (हि) १-दाब। दबाव। २-हलके-हलके ठोकने की क्रिया या भाव। ३-गच कूटने का काम गाने में खींची हुई लम्बी तान। ५-धनुष की टङ्कार ६-स्मरण के लिए किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया। ७-दस्तावेज। ८-जन्मपत्री।
टीपटाप स्त्री० (हि) १-बनावटी या दिखावटी सज-धज। २-आडम्बर।
टीपन स्त्री० (हि) १-जन्मपत्री। २-गांठ।
टीपना क्रि० (हि) १-दबाना। चाँपना। २-धीरे-धीरे ठोंकना। ३-निचोड़ना। ४-बिन्दी लगाना। ५-ऊँचे स्वर से गाना। ६-लिखना। ७-टाँकना। स्त्री० जन्मपत्री।
टीबा पुं० (हि) टीला।
टीमटाम स्त्री० (हि) बनाव-सिङ्गार। तड़क-भड़क।
टीला पुं० (हि) १-मिट्टी, पत्थर आदि का उभरा हुआ भूभाग। २-मिट्टी या बालू का ढेर। धुस। ३-छोटी पहाड़ी।
टीस स्त्री० (देश) रह-रहकर दर्द उठने वाला दर्द। चसक।
टीसना क्रि० (हि) रह-रहकर दर्द उठना।
टुंटा वि० (हि) जिसका हाथ कटा हो।
टुंडा वि० (हि) [स्त्री० टुंडी] १-ठूंठा। २-लूला। लुंजा। ३-जिसका कोई अंग खण्डित हो।
टुंडियाना क्रि० (हि) मुश्क कसना।
टुंडी स्त्री० (हि) १-नाभि। २-भुजा। वि० लूली।
टुइयाँ स्त्री० (देश) तोता। वि० (हि) नाटा। बौना।
टुक वि० (हि) थोड़ा। तनिक। जरा।
टुकड़गदा पुं० (हि) भिखारी। मंगता।
टुकड़गदाई पुं० (हि) भिखमंगा। वि० १-तुच्छ। २-दरिद्र। ३-टुकड़ा माँगने का काम।
टुकड़-तोड़ पुं० (हि) दूसरे का दिया खाकर निर्वाह करने वाला व्यक्ति।
टुकड़ा पुं० (हि) [स्त्री० टुकड़ी] १-कटा हुआ अंश। छिन्न अंश। २-चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश। भाग। ३-रोटी का तोड़ा हुआ अंश। ग्रास। कौर।
टुकड़ी स्त्री० (हि) १-छोटा टुकड़ा। २-दल। जत्था। ३-सेना का छोटा विभाग। ४-समुदाय। मण्डली। ५-पशु पक्षियों का दल। गोल। झुण्ड। ६-स्त्रियों का लंहगा।
टुक्क पुं० (हि) १-टुकड़ा। २-चतुर्थांश।
टुच्चा वि० (हि) १-लुच्चा। ओछा। २-कमीना। दुष्ट।
टुट-पुंजिया वि० (हि) जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।
टुटरूँ पुं० (हि) छोटी पेंडुकी।
टुटरूँटूँ स्त्री० (हि) पेंडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द। वि० (हि) १-अकेला। २-दुबला-पतला।
टुनगा पुं० (हि) [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।
टुनहाया पुं० (हि) [स्त्री० टुनहाई] दे० 'टोनहा'।
टुभकना क्रि० (हि) १-हलका डङ्क मारना। २-आहिस्ता से कोई चुभती या व्यंगपूर्ण बात कहना।
टुलकना क्रि० (हि) ढुलकना।
टूंक पुं० (हि) टूक। टुकड़ा।
टूंगना क्रि० (हि) थोड़ा-थोड़ा काट कर खाना।
टूंड पुं० (हि) [स्त्री० टूँडी] १-कीड़ों के मुँह के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिन्हें धँसाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। २-जौ, गेहूँ आदि की बाल में दाने के सिरे पर निकला हुआ नुकीला भाग। ३-सींग।
टूअर वि० (हि) बिना माँ का (बच्चा)।
टूक पुं० (हि) टुकड़ा। खण्ड।
टूकर पुं० दे० 'टुकड़ा'।
टूका पुं० (हि) १-टुकड़ा। खण्ड। २-रोटी का चौथाई हिस्सा। ३-भिक्षा।
टूट क्रि० (हि) टूटा हुआ। खण्डित। स्त्री० १-टूटकर अलग हुआ अंश। खण्ड। २-टूटने का भाव। ३-भूल से छूटा हुआ वह शब्द अथवा वाक्य जो पुस्तक के किनारे पर पीछे से लिखा जाता है।
टूटना क्रि० (हि) १-टुकड़े-टुकड़े होना। २-किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३-सिलसिला बन्द हो

जाना। ४-किसी वस्तु पर सहसा झपटना। ५-एकबारगी बहुत सा आ पड़ना। ६-अचानक धावा करना। ७- अकस्मात् प्राप्त होना। ८-पृथक होना। ९-सम्बन्ध छूटना। १०-चलता न रहना। ११-युद्ध में किले का शत्रु के हाथ में आना। १२-शरीर में ऐंठन या तनाव के लिए पीड़ा होना। १३-टोटा

के लिए थामना। २-उठने-बैठने में सहारा देना।
टेकनो स्त्री० (हि) पहिये को रोकने की लोहे की कील
टेकी पु० (हि) १-दृढ़-प्रतिज्ञ। २-हठी। जिद्दी।
टेकुआ पुं० (हि) चरखे का तकला।
टेकुरी स्त्री० (हि) तकली।
टेटका पुं० (हि) कान का एक गहना।

टूटना क्रि० (हि) सन्तुष्ट होना या करना।
टूटनि स्त्री० (हि) सन्तोष।
टूना पुं० (हि) टोना।
टूम स्त्री० (हि) आभूषण। गहना।
टूल स्त्री० (अं० स्टूल) छोटी तिपाई जो बैठने या छोटी मोटी चीजें रखने के काम में आती है।
टूसा पुं० (हि) १-सूत। २-पाकर का फूल। ३-टुकड़ा
टूसी स्त्री० (हि) बिना खिला हुआ फूल। कली।
टें स्त्री० (हि) तोते की बोली।

टेढ़ापन पु० (हि) टेढ़ा होने का भाव। वक्रता।
टेढ़ामेढ़ा वि० (हि) १-कुटिल। वक्र। २-मुश्किल। कठिन।
टेढ़े क्रि० वि० (हि) घुमाव-फिराव के साथ। तिरछे
टेना क्रि० (देश) १-हथियार से तेज करना। २-मूंछ के बालों को उमेठकर खड़ा करना।
टेनी स्त्री० (देश) छोटी उँगली।
टेबुल पुं० (अं) १-मेज। २-सारिणी।

टेटी स्त्री० (हि) करील का फल। वि० १-झगड़ालू। २-चिड़चिड़ा।
टेटुआ पुं० (हि) १-गला। अँगूठा।
टेंटें स्त्री० (हि) १-व्यर्थ की बात। बकवाद। २-तोते की बोली।
टेक स्त्री० (हि) १-चाँड़। थूनी। २-सहारा। अवलम्ब। ३-बैठने का स्थान। ४-ऊँचा टीला। ५-हठ। जिद। ६-बान। आदत। ७-गीत का पहला पद। स्थायी।
टेकड़ी स्त्री० (हि) टीला।
टेकन पुं० (हि) (स्त्री० टेकनी) रोक। सहारा। थूनी।
टेकना क्रि० (हि) १-सहारे के लिए की गई वस्तु पर भार रखना। २-सहारा लेना। ३-सहारे के लिए थामना या पकड़ना। ४-हाथ का सहारा लेना। ५-हठ करना।
टेकर, टेकरा स्त्री० (हि) (स्त्री० टेकरी) १-टीला। २-छोटी पहाड़ी।
टेकना स्त्री० (हि) रट। धुन।
टेकान स्त्री० (हि) १-टेक। चाँड़। २-आड़। ३-वह ऊँचा स्थान जहाँ बोझ रखने वाले बोझ रखकर सुस्ताते हैं।
टेकाना क्रि० (हि) १-उठाकर लेजाने में सहारा देने

ध्वनि से दूर देश में समाचार भेजा जाता है।
टेलिग्राम पुं० (अं) तार द्वारा भेजी हुई खबर।
टेलिप्रिंटर पु० (अं) यन्त्र विशेष जिसमें तार द्वारा आए हुए समाचार स्वयं टंकण-यन्त्र द्वारा मुद्रित हो जाते हैं। दूर-मुद्रक।
टेलिफोन पुं० (अ) वह यन्त्र जिसके द्वारा स्थान से कही हुई बात दूसरे स्थान पर सुनाई पड़ती है। दूर-भाष।
टेलिविजन पुं० (अं) वह यन्त्र जिसके द्वारा दूरस्थ पदार्थों अथवा व्यक्तियों के रूप या प्रतिबिंब दिखाई देता है। दूरप्रतिभास।
टेलिस्कोप पुं० (अं) एक तरह की दूरबीन जिससे दूर की चीजें बड़े आकार की दिखाई देती है।
टेव स्त्री० (हि) आदत। बान।
टेवना क्रि० दे० 'टेना'।
टेवा पुं० (हि) जन्मकुण्डली।
टेवैया वि० (हि) १-टेने वाला। हथियार पर धार लगाने वाला।
टेमुआ, टेसू पुं० (हि) १-पलाश का फूल। २-मनुष्य की आकृति का एक खिलौना जिसे लड़के शारदीय नवरात्र के दिनों में लेकर गाते फिरते हैं। ३-इस उत्सव में गाया जाने वाला गीत।

टैंक पुं० (अं) १-पानी का हौज। २-छोटा तालाव। ३-युद्ध कार्य में काम आने वाली मोटरकार जैसी गाड़ी जिसपर तोपें लगी रहती हैं।
टैंटी वि०, स्त्री० पुं० दे० 'टेंटी'।
टैक्स पुं०(अं) कर। महसूल।
टैक्सी स्त्री० (अं) किराये पर चलने वाली मोटरकार।
टोंच स्त्री० (हि) १-सिलाई। २-सिलाई का टाँका।
टोंचना क्रि० (हि) १-सीना। २-चुभाना।
टोंट स्त्री० (हि) चोंच।
टोंटा पुं० (हि) [स्त्री० टोंटी] १-जलपात्र में लगी हुई टोंटी। २-कारतूस।
टोंटी स्त्री० (हि) १-जल-पात्र विशेष जिसमें टोंटी लगी हो। २-नाली। मोरी। ३-पशुओं का थूथन।
टोक स्त्री० (हि) १-टोकने की क्रिया या भाव। २-किसी के टोकने से नजर का होने वाला अनिष्ट परिणाम। ३-उक्त प्रकार से कही हुई कोई ऐसी बात जो किसी कार्य में बाधक होने अथवा नजर लगने की समझी जाती है।
टोकन पुं० (अं) धातु या गत्ते का संकेतसूचक टुकड़ा जिसे दिखा कर किसी को कोई वस्तु पाने अथवा कार्य करने का अधिकार प्राप्त होता है।
टोकना क्रि० (हि) १-चलते समय यात्रा के विषय में पूछताछ करना। २-किसी बात की याद दिलाना। ३-अशुद्धि पर बोल उठना। ४-एतराज करना। पुं० [स्त्री० टोकनी] १-टोकरा। झाबा। २-एक तरह का हँडा (बरतन)।
टोकरा पुं० (हि) [स्त्री० टोकरी] बड़ी टोकरी। खांचा झाबा।
टोकरी स्त्री० (हि) छोटा टोकरा। झलोली।
टोट स्त्री० (हि) १-कमी। त्रुटि। २-अभाव।
टोटक-हाया पुं० (हि) [स्त्री० टोटकहाई] जादू-टोना करने वाला।
टोटका पुं० (हि) कोई दैवी बाधा दूर करने या मनोरथ सिद्ध करने के लिए कार्य। टोना।
टोटा पुं० (हि) १-खंड। टुकड़ा। २-घाटा। हानि। ३-कमी। त्रुटि। ३-अभाव।
टोड पुं० (हि) उदर। पेट।
टोडिक पुं० (हि) पेटू।
टोडिस वि० (?) उपद्रवी। नट-खट।
टोडी पुं० (अं) नीच और तुच्छ प्रकृति का व्यक्ति। स्त्री० (हि) एक रागिनी।
टोनहा वि० (हि) [स्त्री० टोनही] जादू का टोना करने वाला।
टोनहाई स्त्री० (हि) १-जादू-टोना करने की वृत्ति या भाव। ३-जादू-टोना करने वाली स्त्री।
टोनहाया पुं० (हि) [स्त्री० टोनहाई] जादू-टोना करने वाला व्यक्ति।
टोना पुं० (हि) १-मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग। जादू। २-विवाह में गाया जाने वाला एक गीत। क्रि० (हि) उँगलियों से दबाकर मालूम करना। टटोलना।
टोप पुं० (हि) १-बड़ी टोपी। २-लड़ाई में पहनने की लोहे की टोपी। शिरस्त्राण। ३-खोद। कूंड। ४-खोल। गिलाफ। ५-बूँद। कतरा।
टोपरी स्त्री० (हि) टोकरी।
टोपा पुं० (हि) १-बड़ी टोपी। २-टोकरा। ३-टाँका
टोपी स्त्री० (हि) १-सिर का पहनावा। २-ताज। ३-टोपी के आकार की गोल और गहरी वस्तु। ४-शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाने की थैली।
टोभ पुं० (हि) टाँका।
टोर स्त्री० (देश) कटारी। (हथियार)।
टोरना क्रि० (हि) तोड़ना।
टोल स्त्री० (हि) १-मण्डली। समूह। २-पाठशाला। पुं० सम्पूर्ण जाति का एक राग। पुं०(अं) मार्ग-कर
टोला पुं० (हि) छोटी बस्ती। मुहल्ला।
टोली स्त्री० (हि) १-छोटा मुहल्ला। २-समूह। झुण्ड ३-पत्थर की चौकोर पटिया या सिल।
टोवना क्रि० (हि) टोना। टटोलना।
टोह स्त्री० (हि) १-खोज। टटोल। २-खबर। देख-भाल।
टोहक-विमान पुं० (हि) वह विमान या वायुयान जो शत्रु की गति-विधियों का पता लगाने, सैनिक आवश्यकता अथवा पुल आदि बनाने के विचार से आस-पास के भूक्षेत्र का पर्यवेक्षण करने का कार्य करता हो। (रिकानेसेंस-प्लेन)।
टोहना क्रि० (हि) १-खोजना। तलाश करना। २-छूना।
टोहाटाई स्त्री० (हि) १-खोज। छान-बीन। २-देख-भाल।
टोहिया वि० (हि) १-टोह लगाने वाला। २-जासूस
टोहियाना क्रि० (हि) टोहना।
टौंस स्त्री० (हि) तमसा नदी।
टौनहाल पुं० दे० 'टाउनहाल'।
टौरना क्रि० (हि) १-परखना। २-पता लगाना।
ट्रंक पुं० (अं) लोहे की सफरी सन्दूक।
ट्रंककाल पुं० (अं) टेलीफोन द्वारा एक नगर से दूसरे नगर में बातचीत का काम।
ट्रस्ट पुं० (अं) न्यास।
ट्रस्टी पुं० (अं) न्यासी।
ट्राम स्त्री० (अं) बड़े-बड़े नगरों में बिजली की सहायता से सड़कों पर बिछी लाइनों पर चलने वाली गाड़ी।
ट्रामगाड़ी स्त्री० दे० 'ट्राम'।
ट्रेडमार्क पुं० (अं) बने हुए माल पर लगाये जाने का चिह्न।

सजना।
ठटनि स्त्री० (हि) बनाव। रचना।
ठटरी स्त्री० (हि) १-शरीर का ढाँचा। २-ढाँचा। ३-अरथी।
ठट्ठ पुं० दे० 'ठाट'।
ठट्ट पुं० दे० 'ठट'।
ठट्टी स्त्री० दे० 'ठठरी'।
ठट्ठई स्त्री० (हि) हँसी। परिहास।
ठट्ठर पुं० दे० 'ठठरी'।
ठट्ठा पुं० (हि) परिहास।
ठठई स्त्री० दे० 'ठट्ठई'।
ठठकना क्रि० (हि) १-ठिठकना। २-स्तम्भित होजाना।
ठठकोला वि० (हि) भड़कदार। ठाठदार।
ठठना क्रि० (हि) १-ठहराना। निश्चित करना। २-सजाना। ३-अड़ना। डट जाना। ४-सुसज्जित होना।
ठठनि स्त्री० (हि) १-रचना। बनावट। २-ठाट। सजावट।
ठठरी स्त्री० दे० 'ठटरी'।
ठठाना क्रि० (हि) १-मारना। पीटना। २-जोर से हँसना।
ठठेर-मंजरिका स्त्री० (हि) ठठेरे की बिल्ली।
ठठेरा पुं० (हि) (स्त्री० ठठिरिन, ठठेरिन, ठठेरी) धातु के बरतन बनाने वाला। कसेरा।
ठठेरी स्त्री० (हि) १-ठठेरे की स्त्री। २-ठठेरा जाति की स्त्री। ३-ठठेरे का काम।
ठठोल पुं० (हि) [स्त्री० ठठोलिनी] १-विनोदप्रिय। मसखरा। २-हँसी। ठठोली।
ठठोली स्त्री० (हि) मजाक। परिहास।
ठड़ा, ठढ़ा वि० (हि) खड़ा।
ठढ़ियाना क्रि० (हि) खड़ा करना।
ठन स्त्री० (हि) धातुखंड पर आघात का शब्द।
ठनक स्त्री० (हि) १-तबला, मृदंग आदि की ध्वनि। २-टीस। चसक।
ठनकना क्रि० (हि) १-ठन-ठन शब्द होना। २-टीस मारना।
ठनका पुं० (हि) १-धातु पर आघात पड़ने या बजने का शब्द। २-आघात। ठोकर। ३-हलकी पीड़ा होना।
ठनकाना क्रि० (हि) आघात करके शब्द उत्पन्न करना
ठनकार पुं० (हि) ठन-ठन शब्द।
ठन-गन स्त्री० (हि) मङ्गल अवसरों पर नेगियों या पुरस्कार पाने वालों का अधिक पाने के लिए हठ।
ठनठन-गोपाल पुं०(हि) १-निःसार वस्तु। २-निर्धन मनुष्य।
ठनठनाना क्रि० (हि) ठन-ठन शब्द उत्पन्न करना या बजना।
ठनना क्रि० (हि) (किसी कार्य का) तत्परता व संकल्प सहित आरम्भ करना। छिड़ना। मन में स्थिर होना। ३-जमना। लगन। ४-उद्यत
ठनाक, ठनाका पुं० (हि) ठनकार।
ठनाठन क्रि० वि० (हि) ठन-ठन शब्द सहित।
ठप वि० (हि) बन्द या रुका हुआ।
ठपका पुं० (हि) धक्का। ठेस। ठोकर।
ठपना क्रि० (हि) १-ठप्पा लगाना। २-प्रयुक्त करना ३-मन में दृढ़ होना।
ठप्पा पुं० (हि) १-साँचा या छापा जो चिह्न विशेष लगाने के काम आता है। २-साँचे से उभड़ी हुई छाप।
ठमक स्त्री०(हि) १-चलते-चलते रुक जाने का भाव। रुकावट। २-चलने की ठसक।
ठमकना क्रि० (हि) चलते-चलते ठहर जाना। ठिठकना। २-अंग मरोड़ते या मटकते हुए लचक के साथ चलना।
ठमकाना, ठमकारना क्रि०(हि) चलते-चलते रोकना। ठहरना।
ठयऊ पुं० (हि) ठौर। स्थान।
ठयना क्रि० (हि) १-ठानना। २-पूरी तरह से करना ३-निश्चित करना। ४-स्थापित करना। ५-नियोजित करना। लगाना। ६-दृढ़ संकल्प सहित आरंभ करना। ७-मन में दृढ़ होना। ८-ठहरना। जमना ९-प्रयुक्त होना।
ठरगजी स्त्री० (हि) बहन की ननद।
ठरना क्रि० (हि) १-शीत से ठिठुरना। २-बहुत अधिक ठण्ड पड़ना।
ठराना क्रि० (हि) १-ठहराना। २-ठरना।
ठरुआ वि० (हि)-जिसे पाला मार गया हो (फसल)।
ठर्रा पुं० (हि) १-मोटा सूत। २-बड़ी अधपकी ईंट ३-एक तरह की सस्ती शराब।
ठलाना क्रि० (हि) १-गिराना। २-निकलवाना।
ठवन स्त्री० (हि) १-अंग संचालन का ढङ्ग। २-बैठने या खड़े होने का ढंग। (पोज)।
ठवना क्रि० दे० 'ठयना'।
ठवनि स्त्री० दे० 'ठवन'।
ठवर पुं० दे० 'ठौर'।
ठस वि० (हि) १-ठोस। कड़ा। २-जो भीतर से पोला या खाली न हो। ३-घनी या गफ बुनावट (कपड़ा) ४-दृढ़। मजबूत। ५-भारी। वजनी। ६-सुस्त। ७-(रुपया) जिसमें झनकार ठीक न हो। ८-सम्पन्न। ९-कृपण। कंजूस। १०-हठी। जिद्दी।
ठसक स्त्री० (हि) १-अभिमानपूर्ण भाव। नखरा। २-दर्प। शान।
ठसकदार वि०(हि) १-घमण्डी। २-तड़क-भड़क वाला
ठसकाना क्रि० (हि) पटकना। ठूलना।

ठसका पुं० (हि) १-सूखी खांसी। २-धक्का। ठोकर
ठसाठस क्रि० वि० (हि) ठूंस ठूंसकर भरा हुआ।
ठस्सा पु० (देश) १-ठसक। २-घमण्ड। अहङ्कार। ३-शान। ठाटबाट।
ठहक स्त्री० (हि) नगाड़े का शब्द।
ठहना क्रि० (हि) १-घोड़े का हिनहिनाना। २-घण्टे का बजना। ३-बनाना। संवारना।
ठहर पु० (हि) १-स्थान। जगह। २-लीपा हुआ रसोई का स्थान। चौका।
ठहरना क्रि० (हि) १-रुकना। थमना। २-टिकना। डेरा डालना। ३-स्थिर रहना। ४-नीचे न गिरना ५-नष्ट न होना। ६-कुछ दिन काम देने लायक रहना। ७-घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ होकर ऊपर रहना। ८-धीरज रखना। ९-प्रतीक्षा करना। १०-निश्चित होना।
ठहराई स्त्री० (हि) १-ठहराने की क्रिया या मजदूरी। २-कब्जा।
ठहराऊ वि० (हि) १-ठहरने वाला। मजबूत।
ठहराना क्रि०(हि) १-चलने से रोकना। [illegible] ३-अड़ना। ४-स्थिर रखना। ५-किसी होने हुए काम को रोकना। ६-निश्चित या तै करना।
ठहराव पुं० (हि) १-ठहराने की क्रिया या भाव। [illegible] लेन-देन का निश्चय या करार।
ठहाका पुं० (हि) अट्टहास। कह-कहा।
ठहियाँ स्त्री० (हि) स्थान। जगह।
ठाँ स्त्री० (हि) ठाँव। स्थान। पुं० (हि) बन्दूक की आवाज।
ठाँई स्त्री० (हि) स्थान। जगह। वि० पास। समीप। अव्य० किसी की ओर। प्रति।
ठाँउ स्त्री० (हि) ठाँव। स्थान। वि० समीप। पास।
ठाँय पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-समीप। पास ३-बन्दूक छूटने का शब्द।
ठाँयठाँय स्त्री० (हि) १-बन्दूक छूटने का शब्द। २-वाक्युद्ध।
ठाँव स्त्री० (हि) स्थान। जगह।
ठाँसना क्रि० (हि) दबाकर प्रविष्ट करना। २-[illegible] घुसेड़ना। ३-रोकना। मना करना। ४-ठन-ठन शब्द करते हुए खाँसना।
ठाए, ठाऊँ पु० (हि) ठाँव। जगह।
ठाकुर पु० (हि) [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी] १-देवता। देवमूर्ति। २-ईश्वर। [illegible]। ३-पूज्य व्यक्ति। ४-किसी प्रदेश का नायक या [illegible]। सरदार। ५-जमींदार। ६-क्षत्रियों की उपाधि। ७-स्वामी। मालिक। ८-नाइयों की उपाधि।
ठाकुर-द्वारा पुं० (हि) मंदिर। देवालय।
ठाकुर-बाड़ी स्त्री० (हि) देवस्थान। मंदिर।
ठाकुर-सेवा स्त्री० (हि) १-देवता का पूजन। २-किसी मंदिर के नाम उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति।
ठाकुरी स्त्री० (हि) १-स्वामित्व। आधिपत्य। २-शासन। ३-दे० 'ठकुराई'।
ठाट पु० (हि) १-फूँस और घास का बना ढाँचा जो आड़ करने या छाने के काम आता है। २-ढाँचा। पंजर। ३-रचना। बनावट। ४-तड़क-भड़क। ५-मजा। आराम। ६-ढङ्ग। शैली। ७-आयोजन। समारम्भ। अनुष्ठान। ८-माल। सामान ९-उपाय। युक्ति। १०-सितार का तार। ११-[स्त्री० ठाटी] समूह। झुण्ड। १२-अधिकता। बहुतायत।
ठाटना क्रि० (हि) १-बनाना। रचना। २-अनुष्ठान करना। ३-सयोजित करना। ४-सवारना। सजाना।
ठाटबाट पुं० (हि) १-सजधज। २-तड़क-भड़क।
ठाटी स्त्री० (हि) ठट। समूह।
ठाठ पु० दे० 'ठाट'।
ठाठना क्रि० (हि) १-निर्मित करना। बनाना। २-[illegible] ३-[illegible]मान। ४-वेष बनाना।
ठाड़ा वि० (हि) [स्त्री० ठाड़ी] १-खड़ा। २-पूरा। समूचा।
ठाड़ेश्वरी पुं० (हि) खड़ी तपस्या करने वाले साधु।
ठादर पुं० (देश) झगड़ा। लड़ाई।
ठान स्त्री० (हि) १-अनुष्ठान। समारम्भ। २-छेड़ा हुआ काम। ३-दृढ़ निश्चय। ४-चेष्टा। अन्दाज।
ठानना क्रि० (हि) १-करने का दृढ़-निश्चय करना। २-तत्परता के साथ कार्य आरम्भ करना। ३-पक्का करना।
ठाना क्रि० (हि) १-ठानना। २-मन में ठहराना। ३-स्थापित करना।
ठाम स्त्री० (हि) १-स्थान। जगह। २-मुद्रा। अन्दाज
ठायँ स्त्री० (हि) ठाँव। स्थान।
ठार पुं० (हि) १-कड़ा जाड़ा। २-हिम। पाला।
ठाल स्त्री० (हि) १-काम-धन्धे का अभाव। २-बेरोजगारी। ३-अवकाश। फुरसत। वि० खाली। निठल्ला
ठाली वि० (हि) १-निठल्ला। २-खाली। रिक्त।
ठावना क्रि० दे० 'ठाना'।
ठाह स्त्री० (हि) १-ठहरने की क्रिया या भाव। २-[illegible] विलम्बित (सङ्गीत)। [illegible]

ठाहना क्रि० (हि) मन में दृढ़ निश्चय करना।
ठाहर पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान डेरा।
ठाहरना क्रि० (हि) ठहरना।
ठाहरु पुं० दे० 'ठाहर'।
ठाहरुपक पुं० (हि) सात मात्राओं का एक मृदङ्ग का ताल।
ठिगना वि० (हि) छोटे कद का। नाटा।
ठिक वि० (हि) दे० 'ठीक'। स्त्री० (हि) स्थिरता।
ठिक-ठान पुं० (हि) ठौर-ठिकाना।
ठिक-ठैन, ठिक-ठैना पुं० (हि) १-ठाटबाट। शोभा। प्रबन्ध।
ठिकना क्रि० (हि) १-ठिठकना। ठहरना। रुकना।
ठिकरा पुं० दे० 'ठीकरा'।
ठिकरौर पुं० (हि) वह भूमि जहाँ बहुत से खपड़े, ठीकरे आदि पड़े हों।
ठिकाई स्त्री० (हि) ठीक होने की अवस्था या भाव।
ठिकाना क्रि० (हि) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान। ३-जीविका का स्थान। ४-यथार्थ की सम्भावना। प्रमाण। ५-आयोजन। ६-पारावार। क्रि० ठहरना।
ठिकानेदार पुं० (हि) वह व्यक्ति जिसे रियासत की ओर से ठिकाना या जागीर मिली हो।
ठिठक स्त्री० (हि) अचम्भित होना।
ठिठकना क्रि० (हि) १-चलते-चलते एकबारगी रुक जाना। २-स्तम्भित होना।
ठिठरना, ठिठुरना क्रि० (हि) सरदी से ऐंठना या सिकुड़ना।
ठिनकना क्रि० (हि) १-छोटे बालकों का ठहर-ठहर कर रोना। २-रोने का नखरा करना।
ठिया पुं० (हि) १-गाँव की सीमा का चिह्न। हद का पत्थर। २-चाँड़। थूनी। ३-दे० 'ठीहा'।
ठिर स्त्री० (हि) कठिन सरदी या शीत।
ठिरना क्रि० (हि) १-सरदी से ठिठुरना। २-अत्यन्त ठंढ पड़ना।
ठिलना क्रि० (हि) १-ठेला या ढकेला जाना। २-बलपूर्वक बढ़ना। ३-बैठना।
ठिलाठिल क्रि० वि० (हि) एक दूसरे पर धक्का देते हुए।
ठिलिया स्त्री० (हि) छोटा घड़ा। गगरी।
ठिलुआ वि० (हि) निठल्ला। बेकाम।
ठिल्ला पुं० (हि) [स्त्री० ठिलिया, ठिल्ली] मिट्टी का घड़ा।
ठिहार वि० (हि) विश्वास करने योग्य।
ठिहारी स्त्री० (हि) निश्चय। ठहराव। वि० १-पक्की। स्थायी। २-न टूटने वाली।
ठीक वि० (हि) १-जैसा हो वैसा। यथार्थ। २-उचित। उपयुक्त। ३-शुद्ध। सही। ४-जो अच्छी दशा में हो। अच्छा। ५-जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ६-सीधे रास्ते पर आया हुआ। ७-स्थिर। पक्का। क्रि० वि० (हि) जैसा चाहिये वैसा। उचित रीति से। पुं० १-स्थिर और असंदिग्ध बात। २-पक्का आयोजन। स्थिर प्रबन्ध ३-जोड़। योग।
ठीक-ठाक पुं० (हि) १-निश्चित प्रबन्ध। आयोजन २-जीविका का प्रबन्ध। ३-ठौर-ठिकाना। ४-निश्चय। वि० अच्छी तरह दुरुस्त या तैयार। कामलायक।
ठीकरा पुं० (हि) [स्त्री० ठीकरी] १-मिट्टी के बरतन का टूटा-फूटा टुकड़ा। २-बहुत पुराना बरतन। ३-भिक्षा-पात्र।
ठीकरी स्त्री० (हि) १-छोटा ठीकरा। २-चिलम पर रखने का मिट्टी का तवा।
ठीका पुं० (हि) १-कुछ धन आदि के बदले में किसी का कोई काम निर्धारित समय में पूरा करने का जिम्मा लेना। (कंट्रैक्ट)। २-कुछ समय के लिए किसी वस्तु को इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता रहेगा। पट्टा।
ठीका-पत्र पुं० (हि) वह लेख्य जिसमें किसी ठीके से सम्बद्ध ऐसी शर्तें लिखी हों जिनका पालन दोनों ओर (पक्षों) के लिए आवश्यक हो। सम्विदापत्र। (कंट्रैक्ट डीड)।
ठीकेदार पुं० (हि) [स्त्री० ठीकेदारिन]। ठीका लेने वाला व्यक्ति। (कंट्रैक्टर)।
ठीकेदारी स्त्री० (हि) ठीकेदार का काम।
ठीगना, ठीनना क्रि० (हि) निन्दा करना।
ठीलना क्रि० दे० 'ठेलना'।
ठीवन पुं० (हि) थूक। श्लेष्मा।
ठीहँ स्त्री० (हि) घोड़े के हिनहिनाने का शब्द।
ठीहा पुं० (हि) १-भूमि में वह लकड़ी का गड़ा हुआ कुन्दा जिस पर रखकर लोहार, बढ़ई आदि कोई चीज पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २-दूकानदार के बैठने का स्थान। ३-हद। सीमा।
ठुंठ पुं० दे० 'ठूँठ'।
ठुकना क्रि० (हि) १-ठोका जाना। पिटना। आघात पाकर धँसना। गड़ना। ३-मारखाना। ४-कुश्ती आदि में हारना। ५-हानि होना। ६-काठ में ठोका जाना। ७-दाखिल होना।
ठुकराना क्रि० (हि) १-ठोकर या लात मारना। २-पैर से मार कर किनारे करना।
ठुकवाना क्रि० (हि) १-ठोकने का काम अन्य से कराना। २-गड़वाना। धँसवाना।
ठुड्डी स्त्री० (हि) १-चिबुक। ठोढ़ी। २-भूना हुआ

टनकना।
दाना जो फूटकर सिंघाना हो।
ठुनकना क्रि० (हि) १-बच्चों के समान रोना। २-

ठुमकना क्रि० (हि) १-बच्चों का उमग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २-नाचने में पैर पटकते हुए चलना। (जिससे घुंघरू बजे)।
ठुमका वि० स्त्री० [ठुमकी] दे० 'ठिगना'।
ठुमकारना क्रि० (हि) पतंग की डोर में झटका देना।
ठुमकी स्त्री० (देश) १-हाथ या उंगली से खींचकर दिया हुआ झटका (पतंग)। २-ठिठक। रुकावट। ३-छोटी खारी पूरी।
ठुमरी स्त्री० (हि) एक प्रकार का चलता गाना।
ठुरियाना क्रि० (हि) सर्दी से ठिठुर जाना।
ठुर्री स्त्री० (हि) भूनने पर न खिलने वाला दाना।
ठुसकना क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे रोना। २-'ठुस' शब्द सहित पादना। ३-दूसरों की बात में टोकना।
ठुसकी स्त्री० (हि) १-शब्द रहित पाद। २-धीरे-धीरे रोना।
ठुसना क्रि० (हि) कसकर भरा जाना।
ठुसाना क्रि० (हि) १-कसकर भरवाना। २-खूब पेट-भर खिलाना।
ठूंग स्त्री० (हि) १-चोंच। ठोर। २-चोंच से मारने या प्रहार करने की क्रिया।
ठूंठ पु० (हि) वह पेड़ जिसकी डाल-पत्तियाँ टूट या कट गई हों। सूखा पेड़। २-कटा हुआ हाथ। ३-एक तरह का कीड़ा।
ठूंठा वि० (हि) १-टहनियों और पत्तियों रहित (पेड़)। २-बिना हाथ का।
ठूंठिया वि० (हि) १-लूला-लंगड़ा। २-नपुंसक।
ठूंसना क्रि० (हि) १-कसकर भरना। बलपूर्वक घुसाना। ३-खूब पेट भरकर खाना।
ठेंगना वि० (हि) स्त्री० ठेंगनी] ठिगना। नाटा।
ठेंगा पु० (हि) अँगूठा।
ठेंठी स्त्री० (देश) १-कान की मैल। २-शीशी बोतल आदि की डाट। काग।
ठेक स्त्री० (हि) १-टेक। चाँड़। २-थम देकर टिकाने की वस्तु। सहारा। ३-हला। पेंदा। ४-घोड़ों की एक प्रकार की चाल। ५-छड़ी या लाठी की सामी।
ठेकना क्रि० (हि) १-सहारा लेना। टेकना। २-ठहरना या टिकना।
ठेका पु० (हि) १-सहारे की वस्तु। टेक। २-ठहरने का स्थान। बैठक। ३-ढोल या तबला बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाता है। ४-तबले के साथ बजाया जाने वाला बाँयाँ। ५-ठेका टोकर। ६-दे० 'ठीका'।
[illegible] (हि) कपड़े के किनारे की छपाई। २-ठहरने की जगह।

ठेगड़ी पुं० (देश) कुत्ता।
ठेगना क्रि० (हि) १-टेकना। सहारा लेना। २-रोकना मना करना।
ठेघना क्रि० (हि) १-ठहराना। रोकना। २-ठहरना। रुकना।
ठेघा पुं० (हि) थूनी। खंभ।
[illegible] (हि) १-टेकना। २-टिकना।

ठेठर पु० दे० 'थिएटर'।
ठेपी स्त्री० (देश) डाट। काग।
ठेल स्त्री० (हि) ठेलने की क्रिया या भाव।
ठेल-ठाल स्त्री० दे० 'ठेल'।
ठेलना क्रि० (हि) ढकेलना।
ठेलम-ठेल स्त्री० (हि) एक दूसरे को ठेलने की क्रिया या भाव (बहुत से लोगों का)। क्रि० वि० कसमकस के साथ। एक दूसरे को ठेलते हुए।
ठेला पु० (हि) १-ठेलने की क्रिया या भाव। २-आघात। टक्कर। ३-ठेलकर चलाने की गाड़ी या बैलों द्वारा ठेली जाने वाली गाड़ी। ४-भीड़भाड़।
ठेलाठेल, ठेलाठेली स्त्री० (हि) धक्कम-धक्का। रेला-पेल।
ठेस स्त्री० (हि) १-साधारण धक्के की चोट। २-आघात। चोट।
ठेसना क्रि० (हि) १-सहारा लेना। २-ठूंसना। दबाकर भरना।
ठैन, ठैयाँ स्त्री० (हि) स्थान। जगह।
ठैरना क्रि० (हि) ठहरना।
ठैलपैल स्त्री० (हि) धक्कमधक्का। रेलपेल।
ठोंक स्त्री० (हि) १-ठोंकने की क्रिया या भाव। २-आघात। प्रहार। २-वह औजार जिससे दरी बुनने वाले सूत को ठोंककर ठस करते हैं।
ठोंकना क्रि० (हि) १-पीटना। २-मारना-पीटना। ३-धँसाना या गाड़ना। ४-(नालिश, अर्जी आदि) दाखिल करना। ५-बेड़ियों से जकड़ना। ६-थप-थपाना। ७-हाथ से मारकर बजाना। ८-ठप्पा लगाना। जड़ना। ६-खटखटाना।
ठोंकपीट स्त्री० (हि) ठोंकने, पीटने आदि की क्रिया या भाव।

ठाहना क्रि०(हि) मन में दृढ़ निश्चय करना।
ठाहर पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान डेरा।
ठाहरना क्रि० (हि) ठहरना।
ठाहरु पुं० दे० 'ठाहर'।
ठाहरूपक पुं० (हि) सात मात्राओं का एक मृदङ्ग का ताल।
ठिगना वि० (हि) छोटे कद का। नाटा।
ठिक वि० (हि) दे० 'ठीक'। स्त्री० (हि) स्थिरता।
ठिक-ठान पुं० (हि) ठौर-ठिकाना।
ठिक-ठैन, ठिक-ठैना पुं० (हि) १-ठाटबाट। शोभा। प्रबन्ध।
ठिकना क्रि० (हि) १-ठिठकना। ठहरना। रुकना।
ठिकरा पुं० दे० 'ठीकरा'।
ठिकरौर पुं० (हि) वह भूमि जहाँ बहुत से खपड़े, ठीकरे आदि पड़े हों।
ठिकाई स्त्री० (हि) ठीक होने की अवस्था या भाव।
ठिकाना क्रि० (हि) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान। ३-जीविका का स्थान। ४-यथार्थ की सम्भावना। प्रमाण। ५-आयोजन। ६-पारावार। क्रि० ठहरना।
ठिकानेदार पुं० (हि) वह व्यक्ति जिसे रियासत की ओर से ठिकाना या जागीर मिली हो।
ठिठक स्त्री० (हि) अचम्भित होना।
ठिठकना क्रि० (हि) १-चलते-चलते एकबारगी रुक जाना। २-स्तम्भित होना।
ठिठरना, ठिठुरना क्रि० (हि) सरदी से ऐंठना या सिकुड़ना।
ठिनकना क्रि० (हि) १-छोटे बालकों का ठहर-ठहर कर रोना। २-रोने का नखरा करना।
ठिया पुं० (हि) १-गाँव की सीमा का चिह्न। हद का पत्थर। २-चाँड़। थूनी। ३-दे० 'ठीहा'।
ठिर स्त्री० (हि) कठिन सरदी या शीत।
ठिरना क्रि० (हि) १-सरदी से ठिठुरना। २-अत्यन्त ठंड पड़ना।
ठिलना क्रि० (हि) १-ठेला या ढकेला जाना। २-बलपूर्वक बढ़ना। ३-बैठना।
ठिलाठिल क्रि० वि० (हि) एक दूसरे पर धक्का देते हुए।
ठिलिया स्त्री० (हि) छोटा घड़ा। गगरी।
ठिलुआ वि० (हि) निठल्ला। बेकाम।
ठिल्ला पुं० (हि) [स्त्री० ठिलिया, ठिल्ली] मिट्टी का घड़ा।
ठिहार वि० (हि) विश्वास करने योग्य।
ठिहारी स्त्री० (हि) निश्चय। ठहराव। वि० १-पक्की। स्थायी। २-न टूटने वाली।
ठीक वि० (हि) १-जैसा हो वैसा। यथार्थ। २-उचित। उपयुक्त। ३-शुद्ध। सही। ४-जो अच्छी दशा में हो। अच्छा। ५-जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ६-सीधे रास्ते पर आया हुआ। ७-स्थिर। पक्का। क्रि० वि० (हि) जैसा चाहिये वैसा। उचित रीति से। पुं० १-स्थिर और असंदिग्ध बात। २-पक्का आयोजन। स्थिर प्रबन्ध ३-जोड़। योग।
ठीक-ठाक पुं० (हि) १-निश्चित प्रबन्ध। आयोजन २-जीविका का प्रबन्ध। ३-ठौर-ठिकाना। ४-निश्चय। वि० अच्छी तरह दुरुस्त या तैयार। काम-लायक।
ठीकरा पुं० (हि) [स्त्री० ठीकरी] १-मिट्टी के बरतन का टूटा-फूटा टुकड़ा। २-बहुत पुराना बरतन। ३-भिक्षा-पात्र।
ठीकरी स्त्री० (हि) १-छोटा ठीकरा। २-चिलम पर रखने का मिट्टी का तवा।
ठीका पुं० (हि) १-कुछ धन आदि के बदले में किसी का कोई काम निर्धारित समय में पूरा करने का जिम्मा लेना। (कंट्रैक्ट)। २-कुछ समय के लिए किसी वस्तु को इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता रहेगा। पट्टा।
ठीका-पत्र पुं० (हि) वह लेख्य जिसमें किसी ठीके से सम्बद्ध ऐसी शर्तें लिखी हों जिनका पालन दोनों ओर (पक्षों) के लिए आवश्यक हो। संविदापत्र। (कंट्रैक्ट डीड)।
ठीकेदार पुं० (हि) [स्त्री० ठीकेदारिन]। ठीका लेने वाला व्यक्ति। (कंट्रैक्टर)।
ठीकेदारी स्त्री० (हि) ठीकेदार का काम।
ठीलना, ठीनना क्रि० (हि) निन्दा करना।
ठीलना क्रि० दे० 'ठेलना'।
ठीवन पुं० (हि) थूक। श्लेष्मा।
ठीहँ स्त्री० (हि) घोड़े के हिनहिनाने का शब्द।
ठीहा पुं० (हि) १-भूमि में वह लकड़ी का गड़ा हुआ कुन्दा जिस पर रखकर लोहार, बढ़ई आदि कोई चीज पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २-दूकानदार के बैठने का स्थान। ३-हद। सीमा।
ठुंठ पुं० दे० 'ठूँठ'।
ठुकना क्रि० (हि) १-ठोका जाना। पिटना। आघात पाकर धँसना। गड़ना। ३-मारखाना। ४-कुश्ती आदि में हारना। ५-हानि होना। ६-काठ में ठोका जाना। ७-दाखिल होना।
ठुकराना क्रि० (हि) १-ठोकर [illegible] मारना। २-पैर से मार कर किनारे [illegible]
ठुकवाना क्रि० (हि) १-ठो[illegible] कराना। २-गड़वाना।
ठुड्डी स्त्री० (हि) १-[illegible]

बाला।

डँड़ियाना क्रि० (हि) दो कपड़ों को लम्बाई की ओर से सीना।

डंडी स्त्री० (हि) १-छोटी, सीधी और पतली छड़ी। २-किसी वस्तु का वह लम्बा पतला भाग, जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। मुठिया। हत्था। ३-तराजू की लकड़ी। जिसमें पलड़े बँधे जाते हैं। डाँड़ी। ४-लम्बा डण्ठल जिसमें फल-फूल लगा होता है। नाल ५-आरसी नामक गहने का वह छल्ला जो उँगली में पड़ा रहता है। ६-झप्पान नामक एक पहाड़ी सवारी। ७-दण्ड धारण करने वाला सन्यासी। दण्डी। वि० चुगलखोर।

डँडोरना क्रि० (हि) ढूँढ़ना। खोजना।

डंकना क्रि० (हि) जोर से चिल्लाना या रोना।

डंबर पुं० (सं) १-आडम्बर। ढकोसला। २-विस्तार ३-एक तरह का चँदवा।

डँबरुआ पुं० (हि) गठिया नामक वात रोग।

डँवाडोल वि० (हि) १-अस्थिर। डगमगाता हुआ। २-बेचैन।

डंस पुं० (हि) १-एक तरह का मच्छर। डाँस। २-दे० 'दंश'।

ड पुं० (हि) १-शब्द। २-एक प्रकार का नगाड़ा। ३-बड़वाग्नि।

डक पुं० (हि) १-एक प्रकार का पतला सफेद टाट। २-एक तरह का मोटा कपड़ा। (अं० डेक) जहाज की ऊपरी छत।

डकइत पुं० दे० 'डकैत'।

डकरना क्रि० (हि) १-डकार लेना। २-खाकर तृप्त होना।

डकराना क्रि० (हि) बैल या भैंस का बोलना।

डकवाहा पुं० (हि) डाकिया।

डकार स्त्री० (हि) १-मुख से निकला हुआ वायु का उद्गार। २-बाघ, सिंह आदि की गरज।

डकारना क्रि० (हि) १-डकार लेना। पेट की वायु को मुख से निकालना। २-किसी का माल लेना। हजम करना। ३-बाघ, सिंह आदि का दहाड़ना।

डकैत पुं० (हि) डाका डालने वाला। डाकू। लुटेरा।

डकैती स्त्री० (हि) डाका मारने का काम। डाका।

डक्क पुं० (हि) बीणा। बीन।

डग पुं० (हि) १-एक जगह से पैर उठा कर दूसरी जगह रखना। कदम। २-चलने में उतनी दूरी जितनी कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर पड़ता है।

डगर पुं० (हि) एक या दो डग या कदम।

डगडाना क्रि० (हि) हिलना।

डगडोलना क्रि० (हि) डगमगाना। हिलना।

डगडौर वि० (हि) डाँवाडोल। चलायमान।

डगण पुं० (सं) पिङ्गल में चार मात्राओं का एक गण

डगना क्रि० (हि) १-हिलना। २-भूल करना। चूकना।

डगमग वि० (हि) १-लड़खड़ाता हुआ। २-विचलित।

डगमगाना क्रि० (हि) १-इधर-उधर हिलना। डोलना २-विचलित होना। ३-डोलाना। ४-विचलित करना।

डगर स्त्री० (हि) मार्ग। रास्ता।

डगरना क्रि० (हि) चलना।

डगरा पुं०(देश) मार्ग। रास्ता। पुं० (हि) छाबड़ा। छिछला डला।

डगराना क्रि० (हि) १-रास्ते पर लेजाना। चलाना ३-हाँकना।

डगरिया स्त्री० (हि) मार्ग।

डगा पुं० (हि) डुग्गी आदि बजाने की लकड़ी।

डगाना क्रि० दे० 'डिगाना'।

डगार पुं० (हि) १-कुत्ते या भेड़िये के समान एक हिंसक पशु। २-लम्बी टाँगों वाला दुबला घोड़ा।

डटना क्रि० (हि) १-जमकर खड़ा होना। अड़ना। २-भिड़ना। लग जाना। ३-ताकना। देखना।

डटाना क्रि० (हि) १-सटाना। भिड़ाना। २-जोर से भिड़ाना। ३-खड़ा करना। जमाना।

डट्टा पुं० (हि) १-हुक्के का नेचा। २-काग। डाट। ३-बड़ी मेख। ४-छींट छापने का ठप्पा।

डड़कना क्रि०(हि) १-जोर से शब्द करना। २-दमकना

डड़ा पुं० (?) एक गहना जो बाँह पर पहना जाता है

डढ़ियार वि० (हि) १-बड़ी डाढ़ी रखने वाला। २-साहसी।

डढ़ना क्रि० (हि) जलना। सुलगना।

डढ़ार, डढ़ारा वि० (हि) १-जिसके दाढ़ हों। २-दाढ़ी वाला।

डढ़ियल वि० (हि) जिसके बड़ी दाढ़ी हो।

डढ़ना क्रि० (हि) जलाना।

डढ़ोरा वि० (हि) दाढ़ी वाला।

डपट स्त्री० (हि) १-डाँट। झिड़की। २-घोड़े की सरपट चाल।

डपटना क्रि० (हि) १-डाँटना। २-तेज दौड़ाना।

डपेट स्त्री० दे० 'डपट'।

डपेटना क्रि० दे० 'डपटना'।

डपोरसंख, डपोरसंख पुं० (हि) १-जो कहे बहुत, पर करे कुछ भी न। डींग मारने वाला। २-जड़ मनुष्य।

डफ पुं० (हि) १-चमड़ा मढ़ा एक प्रकार का बाजा। डफला। २-चंग बाजा जिसे बजाकर लावनी गाते हैं। चंग।

डफला पुं० (स) [स्त्री० डफली] डफ नामक बाजा।

ठोंग स्त्री० (हि) १-चोंच। २-चोंच की मार। ३-उँगली को मोड़कर मारी हुई ठोकर।
ठोंगना क्रि० (हि) १-चोंच मारना। २-उँगली को मोड़कर मारना।
ठोंगा पुं० (देश) कागज का बना हुआ एक तरह का दोना या पात्र।
ठो अव्य० (हि) संख्यावाचक शब्दों के साथ लगने वाला एक शब्द। अदद।
ठोकना क्रि० (हि) ठोंकना।
ठोकर पुं० (हि) १-वह चोट या आघात जो किसी अंग विशेषतः पैर में किसी कड़ी वस्तु के जोर से टकराने से लगे। २-रास्ते में पड़ा हुआ उभरा पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता है। ३-पैर या जूते के पंजे से किया जाने वाला आघात। ४-कड़ा आघात। धक्का। ५-जूते का अगला भाग।
ठोट वि० (हि) जड़। मूर्ख। गावदी।
ठोठरा वि० (हि) [स्त्री० ठोठरी] भीतर से खाली। पोला।
ठोड़ी, ठोढ़ी स्त्री०(हि) होठों के नीचे का गोलाई लिया हुआ भाग।
ठोर पुं० (देश) एक प्रकार की मिठाई। पुं० (हि) चोंच। २-कीड़े मकोड़े का वह अङ्ग जिससे वे काटते हैं।
ठोली स्त्री० दे० 'ठठोली'। स्त्री० (देश) रखेल स्त्री।
ठोस वि० (हि) जो भीतर से पोला या खाली न हो। ठस।
ठोसा पुं० (देश) अँगूठा। ठेंगा।
ठोहना क्रि० (हि) खोजना। पता लगाना।
ठौनि स्त्री० दे० 'ठवनि'।
ठौर पुं० (हि) १-स्थान। जगह। अवसर। मौका। २-उपयुक्त स्थान।
ठौर-ठिकाना पुं०(हि) १-पता-ठिकाना। २-रहने का स्थान। ३-बात में दृढ़ता या निश्चय।

[शब्दसंख्या—१७६६०]

ड

ड हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यञ्जन और टवर्ग का तीसरा वर्ण इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप और दो उच्चारण हैं। प्रथम 'डगण' का 'ड' और दूसरा 'लड़का' का 'ड़'।
डंक पुं० (हि) वह विषैला कांटा जो भिड़ मधुमक्खी के पीछे रहता है, जिसे धंसाकर जीवों के शरीर में जहर पहुँचाते हैं। २-कलम की जीभ (निब)। ३-दे० 'डंका'।
डंकना क्रि० (हि) गरजना।
डंका पुं० (हि) एक तरह का बड़ा नगाड़ा।
डंका-निशान पुं० (हि) वह डंका और झण्डा जो राजाओं की सवारी के आगे चलता है।
डंकिनी स्त्री० दे० 'डाकिनी'।
डंकिनी-वन्दोवस्त पुं० दे० 'दवामी-वन्दोवस्त'।
डंख पुं० दे० 'डंक'।
डंगर पुं० (देश) पशु। चौपाया।
डँगरी स्त्री० (हि) १-लम्बी ककड़ी। २-एक प्रकार की चुड़ैल।
डँगवारा पुं० (हि) हल, बैल आदि की वह सहायता जिसे किसान लोग आपस में एक दूसरे को देते हैं
डेंगू-ज्वर पुं०[ग्रं० डेंगू] ज्वर विशेष जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।
डँटैया वि० (हि) घुड़कने वाला। डांटने वाला।
डँठल पुं० (हि) छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।
डँठी स्त्री० (हि) १-डंठल। २-किसी वस्तु में लगा हुआ कोई लम्बा अंश।
डंड पुं० (हि) १-सोटा। डंडा। २-बाँह। हाथ-पैर के पंजों के सहारे पेट के बल की जाने वाली कसरत ४-सजा। जुरमाना। ५-घाटा। ६-समय का परिमाण जो २४ मिनट का होता है।
डंडक पुं० दे० 'दंडक'।
डंडना क्रि० (हि) दंड देना।
डंडपेल पुं० (हि) अधिक डंड लगाने वाला पहलवान
डंडवत पुं० दे० 'दंडवत्'।
डंडवा पुं० (हि) कमर। कटि।
डंडवारा पुं० (हि) [स्त्री० डंडवारी] १-खुली हुई नीची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिए बनाई जाती है। २-दक्षिण की वायु।
डँडवी पुं० (देश) दण्ड का जुरमाना देने वाला।
डँड़हरा स्त्री० (देश) एक प्रकार की मछली। पुं० (स्त्री० डँड़हरी) रोक के लिए लगाया हुआ लकड़ी का लम्बा डण्डा।
डंडा पुं० (हि) १-लकड़ी या बाँस का सीधा लम्बा टुकड़ा। २-मोटी और बड़ी छड़ी। सोटा। ३-चार-दीवारी। डाँड।
डंडाकरन पुं० (हि) दण्डक वन।
डंडा-डोली स्त्री० (हि) लड़कों का एक खेल।
डंडा-बेड़ी स्त्री० (हि) एक प्रकार की बेड़ी जो अपराधी के पैरों में डाली जाती है।
डंडाल पुं० (हि) नगारा। दुन्दुभी।
डँड़िया स्त्री० (हि) १-ऐसी साड़ी जिसमें धारियों के रूप में गोटे टँगे हों। २-गेहूँ के पौधे की लम्बी सींक जिसमें बाल लगी हो। पुं० महसूल उगाहने

लिया।

डहडहाना क्रि० (हि) १-पेड़-पौधों का हरा-भरा होना। २-प्रफुल्लित होना।

डहडहाव पुं० (हि) हरा-भरा होने का भाव। प्रफुल्लता।

डहन पुं०(हि) १-पर। पङ्ख। २-डैना। स्त्री० जलन। सन्ताप।

डहना क्रि० (हि) १-जलना। भस्म होना। २-द्वेष करना। ३-जलाना। ४-सन्तप्त करना।

डहर स्त्री० (हि) १-डगर। पथ। २-आकाशगंगा।

डहरना क्रि० (हि) चलना। घूमना।

डहराना क्रि० (हि) चलाना। घुमाना।

डहरिया, डहरी स्त्री० (हि) वह मिट्टी का बरतन जिसमें अनाज रखते हैं। डुलिया।

डहार पुं० (हि) कष्ट देने वाला। तंग करने वाला।

डा स्त्री० (हि) डाइन। डाकिन। पु० सितार की गत का एक बोल।

डाँक स्त्री० (हि) १-ताँबे या चाँदी का महीन पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाया जाता है। २-वमन। कै। ३-दे० 'डाक'। पुं० दे० 'डंका'।

डाँकना क्रि० (हि) १-लाँघना। फाँदना। २-वमन करना।

डाँग पुं० (हि) १-घना जंगल। २-बड़ा डंडा। लाठी ३-डंका। ४-छलाँग।

डाँगर पुं० (देश) १-चौपाया। ढोर। २-दुबला-पतला। क्रि० (हि) १-दुबला-पतला। २-मूर्ख।

डाँट स्त्री० (हि) १-डाँटने या झिड़कने की क्रिया या भाव। २-डपट। ३-दबाव।

डाँट-डपट स्त्री० (हि) (आवेश में) डाँटकर कही जाने वाली बात।

डाँटना क्रि० (हि) घुड़कना। डपटना।

डाँट-फटकार स्त्री० (हि) डाँट-डपट।

डाँड पुं० (हि) १-डंडा। २-गदका। ३-चप्पू। नाव खेने का बल्ला। ४-सीधी लकीर। ५-ऊँची मेंड़। ६-छोटा टीला। ७-सीमा। हद। ८-अर्थदण्ड। जुरमाना। ९-नुकसान। १०-पीठ की हड्डी। रीढ़। ११-मेंट के नीचे का वह भाग जहाँ धोती आदि बाँधते हैं।

डाँडना क्रि०(हि) १-अर्थ दण्ड देना। जुरमाना करना २-डाँड़ या हरजाना लेना। ३-दण्ड देना। ४-डाँटना।

डाँडा पुं० (हि) १-दण्ड। डंडा। २-गदका। ३-नाव खेने का डाँड़। ४-हद। सीमा।

डाँड़ामेड़ा पुं० (हि) १-आपस की अति समीपता या लगाव। २-झगड़ा। अनबन। ३-दो सीमाओं के बीच की मेंड़।

डाँड़ी स्त्री०(हि) १-लम्बी पतली लकड़ी। २-लम्बा हत्था या दस्ता। ३-तराजू की डंडी। ४-टहनी। ५-नाल डंठल। ६-डाँड़ खेने वाला आदमी। ७-सीधी लकीर। ८-लीक। मर्यादा। ९-चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०-पालकी। ११-झप्पान नामक पहाड़ी सवारी। १२-हिंडोले में की वे चारों लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिन पर बैठने की पटरी रखी जाती है।

डाँबरी स्त्री० (हि) भूनी हुई मटर की फली।

डाँवरा पुं० (हि) [स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

डाँवरी स्त्री० (हि) लड़की। बेटी।

डाँवरू पुं० (हि) बाघ का बच्चा।

डाँवाडोल वि० (हि) चञ्चल। विचलित।

डाँस पुं० (हि) १-बड़ा मच्छड़। २-कुकरौंधा।

डाँसर पुं० (देश) इमली का बीज। चियाँ।

डा पुं० (हि) सितार की गति का एक बोल।

डाइन स्त्री० (हि) १-चुड़ैल। भुतनी। २-जादू करने वाली स्त्री। ३-डरावनी स्त्री।

डाइरेक्टरी स्त्री० (अं) वह पुस्तक जिसमें किसी देश या नगर के प्रधान व्यक्तियों की सूची अकारादि-क्रम से छपी हो।

डाक पुं० (हि) १-सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान बदले जाते हैं। २-सरकार की ओर से चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था के अनुसार भेजे जाने वाले कागज-पत्र। स्त्री० वमन। कै।

डाकखाना पु० (हि) वह सरकारी दफ्तर जहाँ से लोग चिट्ठी पत्री आदि भेजते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ वितरित की जाती हैं। डाकघर। (पोस्ट-आफिस)।

डाक-गाड़ी स्त्री० (हि) वह रेलगाड़ी जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है और जिसमें डाक जाती है।

डाकघर पुं० (हि) डाकखाना।

डाक-चौकी स्त्री० (हि) वह स्थान जहाँ सवारी के लिए घोड़े आदि बदले जाते हैं।

डाकना क्रि०(हि) १-वमन या कै करना। २-फाँदना लाँघना।

डाकबँगला पुं० (हि) वह बँगला या मकान जो सरकार की ओर से परदेशियों या राज्य के अधिकारियों के ठहरने के लिए बना हो।

डाक-महसूल पुं० (हि) डाक द्वारा भेजी जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाला खर्च।

डाकर पुं० (देश) १-तालाबों की सूखी मिट्टी। नदी के किनारे की वह भूमि जिस पर बरसात में नदी में बहकर आई हुई चिकनी मिट्टी जम जाती है। दीमनी।

डाकव्यय पुं० (हि) डाक का खर्च। डाक-महसूल।

डफली स्त्री० (हि) छोटा डफ (बाजा)।
डफार स्त्री०(हि) जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिंघाड़।
डफारना क्रि० (हि) जोर से रोना या चिल्लाना।
डफालची, डफाली पुं० (हि) डफला बजाने वाला।
डफोरना क्रि० (हि) चिल्लाना। ललकारना। गरजना।
डब स्त्री० (हि) १-जेब। थैला (छोटा)। २-कुप्पा बनाने का चमड़ा। ३-धोती का कमर पर पड़ने वाला वह भाग जिसमें रुपये-पैसे खोंसकर रखते हैं।
डबकना क्रि० (हि) पीड़ा करना। २-आँखों में आँसू भर आना।
डबकौंहाँ वि० (हि) [स्त्री० डबकौंही] आँखों में आँसू भरा हुआ।
डबडबाना क्रि० (हि) (आँखें) अश्रुपूर्ण होना।
डबरा पुं० (हि) [स्त्री० डबरी] १-छिछला गड्ढा। २-जोतने से खेत का छूटा हुआ कोना। ३-वह नीची भूमि का भाग जिसमें पानी लगता हो तथा जिसमें जड़हन के कई खेत हों।
डबरी स्त्री० (हि) छोटा गड्ढा या ताल।
डबल वि० (अं) १-दोहरा। २-मोटा। पुं० (हि) पुरानी चाल का पैसा।
डबल-रोटी स्त्री० दे० 'पाव रोटी'।
डबा पुं० (हि) डिब्बा। डब्बा।
डबिया, डबी स्त्री० (हि) छोटा डिब्बा। डिब्बी।
डबोना क्रि० (हि) १-डुबोना। गोता देना। २-नष्ट या चौपट करना।
डब्बा पुं० (हि) [स्त्री० डब्बी, डिबिया] १-ढकनदार छोटा गहरा बरतन। सम्पुट। २-रेलगाड़ी का एक भाग।
डब्बू पुं० (हि) खाने की चीजें (दाल आदि) परोसने का एक प्रकार का कटोरा।
डभकना क्रि० वि० (हि) १-पानी में डूबना। चुभकी लेना। २-आँखों में आँसू भर आना।
डभका पुं० (हि) १-कुएँ से ताजा निकाला हुआ पानी। २-भुना हुआ मटर या चना जो फूटा न हो। कोंहरा।
डभकाना क्रि० (हि) डुबोना। चुभकी दिलाना।
डभकौंहाँ वि० दे० 'डबकौंहाँ'।
डमरू पुं० (हि) १-चमड़ा मढ़ा छोटा बाजा जो बीच में पतला और दोनों सिरों पर मोटा होता है। २-एक प्रकार का दण्डकवृत्त।
डमरूमध्य पुं० (हि) भूमि का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूखण्डों को मिलाता है।
डमरू-यंत्र पुं० (सं) एक यन्त्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ का पारा, कपूर, नौसादर आदि उड़ाये जाते हैं।

डयन पुं० (सं) १-उड़ने की क्रिया। उड़ान। पंख।
डर पुं० (हि) १-अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होने वाला भाव। भय। खौफ। २-आशंका।
डरना क्रि० (हि) १-भयभीत होना। २-आशंका करना।
डरपना क्रि०(हि) डरना। भयभीत होना।
डरपाना क्रि० (हि) डराना। भयभीत करना।
डरपोक वि० (हि) बहुत डरने वाला। भीरु।
डरपोकना वि० दे० 'डरपोक'।
डरवाना क्रि० (हि) १-डराना। २-डलवाना।
डरा पुं० (हि) [स्त्री० डरी] डला।
डराडरी स्त्री० (हि) डर। भय।
डराना क्रि० (हि) डर दिखाना।
डरावना वि० (हि) [स्त्री० डरावनी] जिसको देखने से डर लगे। भयानक। क्रि० (हि) डराना।
डरावा पुं० (हि) १-डराने के लिए कही हुई बात। २-वह लकड़ी जो पेड़ों में चिड़िया उड़ाने के लिए बँधी रहती है। खटखटा। धड़का।
डराहुक वि० (हि) डरपोक।
डरिया स्त्री० (हि) डार। डाल।
डरीला वि० (हि) डाल या शाखा वाला। ट
डरेला, डरैला वि० (हि) डरावना।
डल पुं० (हि) १-खंड। टुकड़ा। २-झील। काश्मीर की एक झील।
डलना क्रि० (हि) डाला जाना। पड़ना।
डलवाना क्रि० (हि) डालने का काम कराना।
डला पुं० (हि) [स्त्री० डली] १-टुकड़ा। २-(स्त्री० डलिया) बड़ी डलिया। टोकरा।
डलिया स्त्री० (हि) १-छोटा डला। टोकरी। २-... तरह की तश्तरी।
डली स्त्री० (हि) १-छोटा टुकड़ा। २-सुपारी। ३-दे० 'डलिया'।
डवा पुं० (हि) थैला।
डसन स्त्री० (हि) १-डसने की क्रिया या भाव। २-डसने या काटने का ढंग।
डसना क्रि० (हि) १-विषैले कीड़े का दाँत से काटना। २-डंक मारना।
डसाना क्रि० (हि) दाँत से कटवाना।
डहकना क्रि० (हि) १-छलना। २-ललचाकर न देना। ३-बिलखना। ४-दहाड़ मारना। ५-छितराना। फैलाना।
डहकाना क्रि० (हि) १-खोना। गँवाना। २-धोखे में आना। ३-ललचाकर देना। ४-ठगना।
डहडहा वि० (हि) [स्त्री० डहडही] १-हरा-भरा। ताजा। प्रसन्न। प्रफुल्लित।
डहडहाट स्त्री० (हि) १-हरापन। ताजगी। २-प्र

डाही वि० (हि) डाह या ईर्ष्या करने वाला।

डिंगर पुं० (सं) १-मोटा आदमी। २-दुष्ट। पाजी ३-दास।

डिंगल वि० (हि) नीच। बुरा। स्त्री० राजस्थानी चारणों या भाटों की काव्य भाषा।

डिंडिम पुं० (सं) १-एक तरह का ढोल (प्राचीन)। २-डुग्गी। डुगडुगी।

डिंडी पुं० (सं) दीवारों आदि पर भद्दे चित्र बनाने वाला चितेरा।

डिंब, डिंबाणु पुं० (सं) १-हलचल। डमर। २-दंगा। लड़ाई। ३-अंडा। ४-फेफड़ा। ५-प्लीहा। ६-कीड़े का छोटा बच्चा। जीव जंतुओं में स्त्री जाति का जीवाणु जो पुरुष जाति के वीर्य के के संयोग से अथवा यों ही स्वतः बढ़कर नये जीव का रूप धारण करता है। (ओवम)।

डिंबाशय पुं०(सं) स्त्री के गर्भाशय की वे दो ग्रंथियाँ जिनमें डिंब रहते तथा परिपक्व होते हैं। (ओव्हरी)

डिंभ पुं० (सं) १-छोटा बच्चा। २-जड़ मनुष्य। पुं० (हि) १-पाखंड। २-घमंड।

डिंभिया वि० (हि) १-पाखंडी। २-घमंडी।

डिक्री स्त्री० (अं) १-हुक्म। आज्ञा। २-न्यायालय की वह आज्ञा जिसके द्वारा लड़ने वाले पक्षों में से किसी पक्ष को किसी संपत्ति का अधिकार दिया जाय।

डिगना क्रि० (हि) १-हिलना। टलना। २-किसी बात पर स्थिर न रहना।

डिगरी स्त्री० (अं) १-विश्वविद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की पदवी। २-अंश। कला। स्त्री० 'डिक्री'।

डिगरीदार वि० (हि) वह जिसके पक्ष में अदालत का हक दिलाने वाला फैसला हुआ हो।

डिगमगाना क्रि० (हि) डगमगाना।

डिगाना क्रि० (हि) १-हटाना। २-खसकाना। ३-विचलित करना।

डिग्गी स्त्री० (हि) पोखर। तालाब।

डिठार, डिठियार वि० (हि) (स्त्री० डिठियारी) आँख वाला। जिसे सुझाई दे।

डिठौना, डिठौरा पुं० (हि) काजल का टीका जिसे स्त्रियाँ दृष्टि न लगने के लिए बच्चों के सिर पर लगाती हैं।

डिडकार स्त्री० (हि) डिडकारने की क्रिया या भाव।

डिडकारना क्रि० (हि) बछड़े का गाय के लिए चिल्लाना।

डिढ़ वि० (हि) दृढ़। मजबूत।

डिढ़कारी स्त्री० (हि) ढाड़ मारकर रोना।

डिढ़ाना क्रि० (हि) १-दृढ़ करना। २-मन में पक्का निश्चय करना।

डिढ्यो स्त्री० (देश) अत्यधिक लालच। लालसा।

डिबिया स्त्री० (हि) छोटा डिब्बा।

डिब्बा पुं० दे० 'डब्बा'।

डिब्बी स्त्री० (हि) छोटा डिब्बा। डिबिया।

डिमगना क्रि० (देश) १-मोहना। २-छलना।

डिम पुं० (सं) वह नाटक या दृश्यकाव्य जिसमें माया, इन्द्रजाल, लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश विशेष रूप से होता है।

डिमडिमी स्त्री० (हि) डुग्गी। डुगडुगिया।

डिमाई स्त्री० (अ) बाईस इञ्च लम्बे और अठारह इञ्च चौड़े कागज की एक नाप।

डिल्ला पुं० (हि) बैल के कन्धे पर उठा हुआ कूबड़ कूजा।

डींग स्त्री० (हि) लम्बी चौड़ी बात। शेखी।

डीकरी स्त्री० (हि) कन्या। बेटी।

डीठ स्त्री० (हि) दृष्टि। नजर। २-देखने की शक्ति ३-ज्ञान। सूझ।

डीठना क्रि० (हि) दिखाई देना।

डीठबंध पुं० (हि) १-नजरबन्दी। इन्द्रजाल। २-जादूगर।

डीठि स्त्री० दे० 'डीठ'।

डीठिमूठि स्त्री० (हि) नजर। टोना। जादू।

डील पुं० (हि) १-शरीर का विस्तार। कद। २-देह। शरीर। ३-प्राणी। व्यक्ति।

डीली स्त्री० (हि) दिल्ली नगर।

डीह पुं० (हि) १-छोटा गाँव। २-उजड़े हुए गाँव का टीला। ३-ग्रामदेवता।

डुंग पुं० (हि) १-ढेर। अटाला। २-टीला।

डुंगवा पुं० दे० 'डुंग'।

डुंड पुं० (हि) पेड़ की सूखी हुई शाखा। ठूँठ।

डुक, डुक्का पुं० (हि) घूँसा। मुक्का।

डुकियाना क्रि० (हि) घूँसों से मारना।

डुगडुगी स्त्री० (हि) डुग्गी (बाजा)।

डुग्गी कि० (हि) चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा

डुपट्टा पुं० दे० 'दुपट्टा'।

डुबकनी स्त्री० (हि) पानी के भीतर चलने वाली नाव। पनडुब्बी। (सब-मेरिन)।

डुबकी स्त्री०(हि) १-जल में डूबने की क्रिया या भाव। गोता। २-पीठी की बनी हुई बिना तली बरी। ३-एक तरह की बटेर।

डुबवाना क्रि० (हि) डुबाने का काम कराना।

डुबाना क्रि० (हि) १-गोता देना। २-चौपट या नष्ट करना।

डुबाव पुं० (हि) पानी में डूबने भर की गहराई।

डुबोना क्रि० दे० 'डबोना'।

डुब्बा पुं० दे० 'पनडुब्बा'।

डुब्बी स्त्री० दे० १-'डुबकी'। २-दे० 'डुबकनी'।

डाका पुं०(हि) धन लूटने के लिए निमित्त दल बांधकर किया जाने वाला धावा।
डाकाजनी स्त्री० (हि) डाका मारने का काम।
डाकिन स्त्री० दे० 'डाकिनी'।
डाकिनी स्त्री० (सं) डायन। चुड़ैल।
डाकिया पुं० (हि) डाक लेजाने वाला। (पोस्टमैन)।
डाकी स्त्री० (हि) वमन। कै। पुं० बहुत खाने वाला व्यक्ति। पेटू। वि० सबल। प्रचंड।
डाकीय-आदेश पुं० (हि) पत्रालयिक-आदेश। (पोस्टल-ऑर्डर)।
डाकीय-प्रमाणपत्र पुं० (हि) पत्रालयीय-प्रमाणपत्र। (पोस्टल-सार्टीफिकेट)।
डाकू पुं० (हि) डाका डालने वाला। लुटेरा।
डाकेट पुं० (अं) किसी पत्र आदि का सारांश। चिट्ठी का खुलासा।
डाकोर पुं० (हि) ठाकुर। विष्णु भगवान।
डाक्टर पुं० (अं) १-किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान। २-अंग्रेजी ढङ्ग का चिकित्सक। ३-एक प्रकार की उपाधि जो बहुत बड़े विद्वानों को कोई उच्च परीक्षा पारित करने पर या योंही उनके सम्मा-
...ाती है।
१ ... १-पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्र।
...न, पद, भाव अथवा उपाधि।
१ ...क। पलाश।
१ ...भूखा सिंह।
१ ...डण्डा जिससे डुग्गी, ढोल आदि

२ ...रा बजाने का डण्डा। चोब।
२ ...गाटों की एक उपजाति।
२ ...ई'।
२ ...ोझ सँभालने के लिए नीचे लगाई
...टेक। २-छेद बन्द करने की
...शीशी आदि का मुँह बन्द
...ग। डट्टा। ४-मेहराब को रोके
...की जुड़ाई। पुं० दे० 'डॉट'।
ड ...-एक वस्तु को दूसरी पर कस-
...क या चाँड़ लगाना। ३-छेद या
...४-कसकर या ठूँसकर भरना।
...। ६-ठाट से वस्त्राभूषण आदि
...ा।
ड ...ाने के चौड़े दाँत। चौभड़।
...र वृक्षों की जटा।
डा ...लाना। भस्म करना।
ड ...दावानल। २-आग। ३-ताप।

डा ...ठोढ़ी। चिबुक। २-चिबुक और
...ल। दाढ़ी।

डाबर पुं० (हि) १-नीची जमीन। २-गड्ढी। पोखरी ३-चिलमची। ४-कच्चा नारियल।
डाभ पुं० (हि) १-कुश जाति की घास। २-कुश। ३-कच्चा नारियल। ४-आम की मंजरी।
डामर पुं० (सं) १-शिव प्रणीत माना जाने वाला एक तन्त्र। २-हलचल। ३-आडम्बर। ४-चमत्कार पुं० (देश) १-साल वृक्ष का गोंद। राल। २-राल बनाने वाली मक्खी।
डामल स्त्री० (हि) १-उमर कैद। २-देश-निकाले का दण्ड।
डामाडोल वि० दे० 'डाँवाडोल'।
डायन स्त्री० दे० 'डाइन'।
डायरी स्त्री० (अं) दिनचर्या लिखने की पुस्तक। दैनिकी।
डायल पुं० (अं) घड़ी या टेलीफोन के सामने का गोल भाग जिसके ऊपर अङ्क बने होते हैं।
डार स्त्री० (हि) १-डाल। शाखा। २-एक प्रकार की खूंटी जो फानूस जलाने के लिए दीवार में लगाई जाती है। ३-डलिया। चंगेर। डाली।
डारना क्रि० (हि) डालना।
डारा पुं० (हि) वह लकड़ी या रस्सी जिस पर कपड़े लटकाते हैं।
डारी स्त्री० दे० 'डाल'।
डाल स्त्री० (हि) शाखा। डाली। २-फानूस जलाने के लिए दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी। ३-तलवार का फल। ४-डलिया। ५-वे गहने और कपड़े जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधु को दिये जाते हैं।
डालना क्रि० (हि) १-नीचे गिराना। छोड़ना। २-एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कुछ दूर से गिराना। ३-मिलाना। ४-प्रविष्ट करना। घुसाना। ५-फैलाना। बिछाना। ६-पहनना। ७-गर्भ गिराना (चौपायों के लिए)। ८-कै करना। ९-(किसी स्त्री को) पत्नी बनाकर रखना। १०-बिछाना।
डालर पुं० (अं) अमेरिकन देश का सिक्का।
डाला पुं० (हि) बड़ी चँगेर। डला।
डाली स्त्री० (हि) १-डलिया। २-फल, फूल और मेवे जो डलिया में सजाकर किसी बड़े के पास उसके सम्मानार्थ भेजे जाते हैं। ३-दे० 'डाल'।
डाव पु० (हि) १-दाँव। बाजी। २-अवसर। मौका
डावरा पुं० (हि) [स्त्री० डावरी] पुत्र। बेटा।
डावरी स्त्री० (हि) पुत्री। बेटी।
डासन क्रि० (हि) १-बिछाना। २-डसना। पु० दे० 'बिछौना'।
डाह स्त्री० (हि) ईर्ष्या। जलन।
डाहना क्रि० (हि) १-किसी के मन में डाह उत्पन्न करना। २-जलाना। ३-कष्ट पहुँचाना।

डुभकौरी स्त्री० (हि) पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।
डुलना क्रि० दे० 'डोलना'।
डुलाना क्रि० (हि) १-हिलाना। चलायमान करना। २-हटाना। भगाना। ३-चलाना। फिराना।
डूंगर पुं० (हि) १-पहाड़ी। २-टीला। ३-बस्ती। आबादी।
डूंगा पुं० (हि) १-चम्मच। २-डोंगा। ३-रस्से का गोल लच्छा।
डूंज स्त्री० (देश) आँधी।
डूंडा वि० (हि) जिसका एक सींग टूट गया हो। (बैल)
डूबना क्रि० (हि) १-पानी या किसी द्रव पदार्थ में समाना। गोता खाना। २-सूर्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना। ३-ऋण दिया हुआ या व्यापार में लगा हुआ धन घटना या नष्ट होना। ४-चौपट या नष्ट होना। ५-चिन्तन में मग्न होना। ६-लीन होना।
डेड़सी स्त्री० (हि) ककड़ी के समान एक तरकारी।
डेग पुं० १-दे० 'देग'। २-दे० 'डग'।
डेगची स्त्री० दे० 'देगची'।
डेड़हा पुं० (हि) पानी का साँप जो विषरहित होता है
डेढ़ वि० (हि) एक और आधा।
डेढ़ा वि० (हि) डेढ़ गुना। डेवढ़ा। पुं० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़ गुनी संख्या बताई जाती है।
डेबरी स्त्री० (हि) टीन या शीशे आदि का बना दीपक
डेमरेज पुं० (अं) बन्दरगाह या रेल के गोदाम में निश्चित अवधि के बाद पड़े रहने वाला माल का अतिरिक्त किराया जो माल छुड़ाने वाले को देना पड़ता है।
डेरा पुं० (हि) १-टिकान। ठहराव। २-खेमा। तम्बू। ३-ठहरने का स्थान। छावनी। ४-नाच-गाने वालों का दल या मण्डली। ५-ठहरने या रहने के लिए फैलाया हुआ सामान। ६-घर। मकान। वि० (स्त्री० डेरी) बायां। सव्य।
डेराना क्रि० १-दे० 'डराना'। २-दे० 'डरना'।
डेल पुं० (हि) १-झाबा। बड़ी डलिया। २-वह झाबा जिसमें बहेलिया चिड़ियाँ बन्द करके रखते हैं।
डेलटा पुं० (अं) नदियों के मुहाने या सङ्गम स्थान पर उनके द्वारा लाये हुए कीचड़ और बालू के जमने के कारण बनी हुई वह भूमि जो धारा के कई शाखाओं में विभक्त होने के कारण तिकोनी होती है।
डेला पुं० (हि) १-आँख का कोया। डला। २-ढेला रोड़ा।
डेली स्त्री० (हि) डलिया। बाँस की बनी झाँपी।
डेवढ़ वि० (हि) डेढ़ गुना। पुं० १-क्रम। सिल-सिला। २-विकट परिस्थिति में भी काम निकालने या ठीक करने की व्यवस्था। (एडजस्टमेंट)।
डेवढ़ना क्रि० (हि) १-आँच पर रोटी का फूलना। २-कपड़े को मोड़ना या तह लगाना।
डेवढ़ा वि० (हि) डेढ़ गुना। पुं० वह पहाड़ जिसमें क्रम से प्रत्येक अंक की डेढ़ गुनी संख्या बढ़ा दी जाती है।
डेवढ़ी स्त्री० दे० 'ड्योढ़ी'।
डेस्क पुं० (अं) लिखने का ढालुआँ मेज।
डेहरी स्त्री० (हि) अन्न रखने के लिए कच्ची मिट्टी का ऊँचा बरतन।
डैन पुं० (हि) डैना। पक्ष। बाजू।
डैना पुं० (हि) चिड़ियों के एक ओर के परों का समूह पक्ष।
डैश पुं० (अं) विरामसूचक आड़ी लकीर।
डोंगर पुं० (हि) [स्त्री० डोंगरी] १-पहाड़ी। टीला।
डोंगा पुं० (हि) [स्त्री० डोंगी] १-बिना पाल की नाव २-नाव।
डोंगी स्त्री० (हि) छोटी नाव।
डोंड़ा पुं० (हि) १-बड़ी इलायची। टोंटा। करतूस।
डोंड़ी स्त्री० (हि) १-पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है। २-टोंटी। ३-डोंगी। ४-दे० 'डौंड़ी'।
डोआ पुं० (हि) काठ का चम्मच।
डोई स्त्री० (हि) एक तरह की काठ की कलछी जिससे दूध आदि चलाते हैं।
डोकरा पुं० (हि) [स्त्री० डोकरी] १-बूढ़ा आदमी। २-(वृद्ध) पिता।
डोका पुं० (हि) [स्त्री० डोकी] काठ का छोटा कटोरा।
डोकी स्त्री० (हि) काठ की कटोरी।
डोड़ा पुं० (हि) १-कपास, सेमल आदि का बीज। २-पोस्त की फली।
डोब, डोबा पुं० (हि) गोता। डुबकी।
डोबना क्रि० (हि) गोता देना। डुबना।
डोभ पुं० (हि) सिलाई का टाँका।
डोम पुं० (हि) [स्त्री० डोमनी, डोमिनी] १-एक जाति विशेष। २-ढाढ़ी। मिरासी।
डोम-कौआ पुं० (हि) काला और बड़े आकार का कौआ।
डोमनी, डोमिन स्त्री० (हि) १-डोम पत्नी। २-डोम जाति की स्त्री।
डोर स्त्री० (सं) पतला तागा। डोरा। धागा। २-सहारा
डोरना क्रि० (हि) किसी की डोर या सहारे पर चलना
डोरा पुं० (हि) १-मोटा सूत या तागा। धागा। २-धारी। लकीर। ३-आँख की वह पतली लाल नसें जो नशे अथवा यौवन की उमंग में दिखाई देती हैं ४-तलवार की धार। ५-तपे हुए घी की धारा। ६-प्रेम का बन्धन। स्नेह का सूत्र। ७-काजल या

खुलने की रेखा। ८-नापने में सीधा संचालन का भाव।
डोरियाना क्रि० (हि) १-डोरा बाँध कर लेजाना। २-प्रेम जाल में बाँधने का यत्न करना।
डोरिया पुं० (हि) लम्बी धारी वाला कपड़ा।
डोरियाना क्रि० (हि) गले में रस्सी बाँध कर पशुओं को ले जाना।
डोरिहार पुं० (हि) [स्त्री० डोरिहारिनी] पटवा।
डोरी स्त्री० (हि) १-रस्सी। २-धारा। बन्धन। ३-डंडीदार कटोरा।

चलना। फिरना। टहलना। ३-हटना। चला जाना। ४-(चित्त) विचलित होना।
डोला पुं० (हि) [स्त्री० डोली] १-बन्द पालकी जिसमें स्त्रियाँ बैठती हैं। २-झूले का झोंका। पेंग।
डोलाना क्रि० (हि) डोलने में प्रवृत्त करना। चलाना।
डोली स्त्री० (हि) एक तरह की सवारी जिसे कहार कन्धों पर उठा कर चलते हैं।
डोली-डंडा पुं० (हि) लड़कों का एक खेल।
डौंडी स्त्री० (हि) घोषणा। मुनादी।
डौर पुं० दे० 'डौल'।
डौल पुं० (हि) १-ढाँचा। २-बनावट का ढंग। ३-तरह। प्रकार। ४-युक्ति। उपाय। ५-रंग-ढंग। लक्षण।
डौलना क्रि० (हि) गढ़ना। दुरुस्त करना।
डौलियाना क्रि० (हि) १-ढंग पर लाना। २-गढ़ कर दुरुस्त करना।
ड्योढ़ा वि०(हि) डेढ़गुना। पुं० दे० 'डेवढ़ा'।
ड्योढ़ी स्त्री० (हि) १-द्वार के पास की भूमि। चौखट २-मकान में घुसने का स्थान।
ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान पुं० (हि) ड्योढ़ी पर रहने वाला सिपाही। द्वारपाल। दरबान।

[शब्दसंख्या—१८२६४]

ढ

ढ हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप होते हैं प्रथम—ढगण का ढ और दूसरा 'चढ़ना' का 'ढ़'।
ढँकना क्रि० (हि) ढकना।
ढंख पुं० (हि) ढाक। पलाश।
ढंग पुं० (हि) १-क्रिया। प्रणाली। शैली। रीति। पद्धति। तर्ज। २-प्रकार। भाँति। तरह। ३-रचना। बनावट। गढ़न। ४-युक्ति। उपाय। ५-आचरण। व्यवहार। ६-धोखा देने की युक्ति। ७-लक्षण। आसार। ८-स्थिति। अवस्था।
ढंगलाना क्रि० (हि) लुढ़काना।
ढंगी वि० (हि) १-चालबाज। २-चतुर। चालाक।

व्यक्ति।

ढँपना क्रि० (हि) ढकना।
ढ पुं० (सं) १-बड़ा ढोल। २-कुत्ता। ३-कुत्ते की पूँछ। ४-साँप।
ढकना पुं० (हि) ढाँकने की वस्तु। ढक्कन। क्रि० १-छिपना या छिपाना। २-आच्छादित होना या करना।
ढकनियाँ, ढकनी स्त्री० (हि) ढक्कन।
ढका पुं० (हि) तीन सेर के बराबर की एक तौल या बाट।
ढकिल स्त्री० (हि) चढ़ाई। आक्रमण। धावा।
ढकेलना क्रि० (हि) १-ठेलकर आगे की ओर गिराना २-धक्के से हटाना या सरकाना।
ढकोसना क्रि० (हि) एकबारगी पीना। बड़े-बड़े घूँट पीना।
ढकोसला पुं०(हि) १-प्रयोजन सिद्धि के लिए बनाया हुआ झूठा रूप। आडम्बर। पाखंड।
ढक्कन पु० (हि) ढकना। ढाँकने की वस्तु।
ढक्का पुं० (स) बड़ा ढोल।
ढखनी स्त्री० (हि) ढक्कन। ढकना।
ढगण पु० (स) पिंगल में एकमात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।
ढचर पुं० (हि) १-किसी वस्तु को बनाने या ठीक करने का सामान। ढांचा। २-झूठा ठाट-बाट। आडम्बर।
ढट्ठी स्त्री० (हि) डाढ़ी बाँधने की पट्टी।
ढड्ढा वि० (देश) आवश्यकता से अधिक विस्तार वाला और बेढंगा।
ढड्ढो स्त्री० (हि) बुड्ढी स्त्री। (व्यंग)।
ढनमना क्रि० (हि) १-लुढ़कना। २-चक्कर खाकर गिरना।
ढनमनाना क्रि० (हि) लुढ़कना।

डुभकौरी स्त्री० (हि) पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।
डुलना क्रि० दे० 'डोलना'।
डुलाना क्रि० (हि) १-हिलाना। चलायमान करना। २-हटाना। भगाना। ३-चलाना। फिराना।
डूंगर पुं० (हि) १-पहाड़ी। २-टीला। ३-बस्ती। आबादी।
डूंगा पुं० (हि) १-चम्मच। २-डोंगा। ३-रस्से का गोल लच्छा।
डूंज स्त्री० (देश) आँधी।
डूंडा वि० (हि) जिसका एक सींग टूट गया हो। (बैल)
डूबना क्रि० (हि) १-पानी या किसी द्रव पदार्थ में समाना। गोता खाना। २-सूर्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना। ३-ऋण दिया हुआ या व्यापार में लगा हुआ धन घटना या नष्ट होना। ४-चौपट या नष्ट होना। ५-चिन्तन में मग्न होना। ६-लीन होना।
डेंड़सी स्त्री० (हि) ककड़ी के समान एक तरकारी।
डेग पुं० १-दे० 'देग'। २-दे० 'डग'।
डेगची स्त्री० दे० 'देगची'।
डेड़हा पुं० (हि) पानी का साँप जो विषरहित होता है
डेढ़ वि० (हि) एक और आधा।
डेढ़ा वि० (हि) डेढ़ गुना। डेवढ़ा। पुं० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़ गुनी संख्या बताई जाती है।
डेबरी स्त्री० (हि) टीन या शीशे आदि का बना दीपक
डेमरेज पुं० (अं) बन्दरगाह या रेल के गोदाम में निश्चित अवधि के बाद पड़े रहने वाला माल का अतिरिक्त किराया जो माल छुड़ाने वाले को देना पड़ता है।
डेरा पुं० (हि) १-टिकान। ठहराव। २-खेमा। तम्बू। ३-ठहरने का स्थान। छावनी। ४-नाच-गाने वालों का दल या मण्डली। ५-ठहरने या रहने के लिए फैलाया हुआ सामान। ६-घर। मकान। वि० (स्त्री० डेरी) बायां। सव्य।
डेराना क्रि० १-दे० 'डराना'। २-दे० 'डरना'।
डेल पुं० (हि) १-भाबा। बड़ी डलिया। २-वह भाबा जिसमें बहेलिया चिड़ियाँ बन्द करके रखते हैं।
डेलटा पुं० (अं) नदियों के मुहाने या सङ्गम स्थान पर उनके द्वारा लाये हुए कीचड़ और बालू के जमने के कारण बनी हुई वह भूमि जो धारा के कई शाखाओं में विभक्त होने के कारण तिकोनी होती है।
डेला पुं० (हि) १-आँख का कोया। ढला। २-ढेला रोड़ा।
डेली स्त्री० (हि) डलिया। बाँस की बनी भाँपी।
डेवढ़ वि० (हि) डेढ़ गुना। पुं० १-क्रम। सिल-सिला। २-विकट परिस्थिति में भी काम निकालने या ठीक करने की व्यवस्था। (एडजस्टमेंट)।
डेवढ़ना क्रि० (हि) १-आँच पर रोटी का फूलना। २-कपड़े को मोड़ना या तह लगाना।
डेवढ़ा वि० (हि) डेढ़ गुना। पुं० वह पहाड़ जिसमें क्रम से प्रत्येक अंक को डेढ़ गुनी संख्या पढ़ी दी जाती है।
डेवढ़ी स्त्री० दे० 'ड्योढ़ी'।
डेस्क पुं० (अं) लिखने का ढालुआँ मेज।
डेहरी स्त्री० (हि) अन्न रखने के लिए कच्ची मिट्टी का ऊँचा बरतन।
डैन पुं० (हि) डैना। पर। बाजू।
डैना पुं० (हि) चिड़ियों के एक ओर के परों का समूह पर।
डैश पुं० (अं) विरामसूचक आड़ी लकीर।
डोंगर पुं० (हि) [स्त्री० डोंगरी] १-पहाड़ी। टीला।
डोंगा पुं० (हि) [स्त्री० डोंगी] १-बिना पाल की नाव २-नाव।
डोंगी स्त्री० (हि) छोटी नाव।
डोंड़ा पुं० (हि) १-बड़ी इलायची। टोंटा। कारतूस।
डोंड़ी स्त्री० (हि) १-पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है। २-टोंटी। ३-डोंगी। ४-दे० 'डौंड़ी'।
डोआ पुं० (हि) काठ का चम्मच।
डोई स्त्री० (हि) एक तरह की काठ की कलछी जिससे दूध आदि चलाते हैं।
डोकरा पुं० (हि) [स्त्री० डोकरी] १-बूढ़ा आदमी। २-(वृद्ध) पिता।
डोका पुं० (हि) [स्त्री० डोकी] काठ का लोटा कटोरा।
डोकी स्त्री० (हि) काठ की कटोरी।
डोड़ा पुं० (हि) १-कपास, सेमल आदि का बीज। २-पोस्त की फली।
डोब, डोबा पुं० (हि) गोता। डुबकी।
डोबना क्रि० (हि) गोता देना। डुबना।
डोभ पुं० (हि) सिलाई का टाँका।
डोम पुं० (हि) [स्त्री० डोमनी, डोमिनी] १-एक जाति विशेष। २-ढाढ़ी। मिरासी।
डोम-कौआ पुं० (हि) काला और बड़े आकार का कौआ।
डोमनी, डोमिन स्त्री० (हि) १-डोम पत्नी। २-डोम जाति की स्त्री।
डोर स्त्री० (सं) पतला तागा। डोरा। धागा। २-सहारा
डोरना क्रि० (हि) किसी की डोर या सहारे पर चलना
डोरा पुं० (हि) १-मोटा सूत या तागा। धागा। २-धारी। लकीर। ३-आँख की वह पतली लाल नसें जो नशे अथवा यौवन की उमंग में दिखाई देती हैं ४-तलवार की धार। ५-तपे हुए घी की धारा। ६-प्रेम का बन्धन। स्नेह का सूत्र। ७-काजल का

सुरमे की रेखा। ८-नाचने में ग्रीवा संचालन का भाव।

ढोरिआना क्रि० (हि) १-डोरा बाँध कर लेजाना। २-प्रेम जाल में बाँधने का प्रयत्न करना।

डोरिया पुं० (हि) लम्बी धारी वाला कपड़ा।

डोरियाना क्रि० (हि) गले में रस्सी बाँध कर पशुओं का ले जाना।

डोरिहार पुं० (हि) [स्त्री० डोरिहारिनी] पटवा।

डोरी स्त्री० (हि) १-रस्सी। २-धारा। बन्धन। ३-डंडीदार कटोरा।

डोरे क्रि० वि० (हि) संग-संग। साथ-साथ।

डोल पुं० (हि) १-लोहे का गोल बरतन जिससे कुएँ से पानी आदि निकालते हैं। २-झूला। हिंडोला। ३-पालकी। ४-हलचल। वि० (हि) चंचल।

[illegible]

४-(चित्त) विचलित होना।

डोला पु० (हि) [स्त्री० डोली] १-बन्द पालकी जिसमें स्त्रियाँ बैठती हैं। २-झूले का झोंका। पेंग।

डोलाना क्रि० (हि) डोलने में प्रवृत्त करना। चलाना

डोली स्त्री० (हि) एक तरह की सवारी जिसे कहार कन्धों पर उठा कर चलते हैं।

डोली-डंडा पुं० (हि) लड़कों का एक खेल।

डौंडी स्त्री० (हि) घोषणा। मुनादी।

डौर पुं० दे० 'डौल'।

डौल पुं० (हि) १-ढाँचा। २-बनावट का ढंग। ३-तरह। प्रकार। ४-युक्ति। उपाय। ५-रंग-ढंग। लक्षण।

डौलना क्रि० (हि) गढ़ना। दुरुस्त करना।

डौलियाना क्रि० (हि) १-ढंग पर लाना। २-गढ़ कर दुरुस्त करना।

ड्योढ़ा वि०(हि) डेढ़गुना। पुं० दे० 'डेवढ़ा'।

ड्योढ़ी स्त्री० (हि) १-द्वार के पास की भूमि। चौखट २-मकान में घुसने का स्थान।

ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान पुं० (हि) ड्योढ़ी पर रहने वाला सिपाही। द्वारपाल। दरबान।

[शब्दसंख्या—१८३६४]

ढ

ढ हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप होते हैं प्रथम— ढगण का ढ और दूसरा 'चढ़ना' का 'ढ़'।

ढँकना क्रि० (हि) ढकना।

ढंख पुं० (हि) ढाक। पलाश।

ढंग पुं० (हि) १-क्रिया। प्रणाली। शैली। रीति।

[illegible]

ढगलाना क्रि० (हि) लुढ़काना।

ढंगी वि० (हि) १-चालबाज। २-चतुर। चालाक। ढोंगी।

ढंढोर पु० (हि) आग की लपट। लौ।

ढंढोरची पुं० (हि) मुनादी करने वाला व्यक्ति।

ढंढोरना क्रि० (हि) टटोलकर ढूँढ़ना।

[illegible]

ढ पुं० (स) १-बड़ा ढोल। २-कुत्ता। ३-कुत्ते की पूँछ। ४-साँप।

ढकना पुं० (हि) ढाँकने की वस्तु। ढक्कन। क्रि० १-छिपना या छिपाना। २-आच्छादित होना या करना।

ढकनियाँ, ढकनी स्त्री० (हि) ढक्कन।

ढका पुं० (हि) तीन सेर के बराबर की एक तौल या बाट।

ढकिल स्त्री० (हि) चढ़ाई। आक्रमण। धावा।

ढकेलना क्रि० (हि) १-ठेलकर आगे की ओर गिराना २-धक्के से हटाना या सरकाना।

ढकोसना क्रि० (हि) एकबारगी पीना। बड़े-बड़े घूँट पीना।

ढकोसला पुं०(हि) १-प्रयोजन सिद्धि के लिए बनाया हुआ झूठा रूप। आडम्बर। पाखंड।

ढक्कन पु० (हि) टकना। ढाँकने की वस्तु।

ढक्का पु० (सं) बड़ा ढोल।

ढखनी स्त्री० (हि) ढक्कन। ढकना।

ढगण पु० (स) पिंगल में एकमात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।

ढचर पुं० (हि) १-किसी वस्तु को बनाने या ठीक करने का सामान। ढांचा। २-झूठा ठाट-बाट। आडम्बर।

ढट्ठी स्त्री० (हि) दाढ़ी बाँधने की पट्टी।

ढड्ढा वि० (देश) आवश्यकता से अधिक विस्तार वाला और बेढंगा।

ढड्ढो स्त्री० (हि) बुड्ढी स्त्री। (व्यंग)।

ढनमना क्रि० (हि) १-लुढ़कना। २-चक्कर खाकर गिरना।

ढनमनाना क्रि० (हि) लुढ़कना।

ढुरना क्रि० (हि). १-गिरकर यहना। ढलना। २-इधर-उधर डोलना। ३-लहराना। ४-फिसलपड़ना ५-भुकना। प्रवृत होना। ६-प्रसन्न होना।
ढुरहुरी स्त्री० (हि) १-लुढ़कने की क्रिया या भाव। २-पगडण्डी। पतला रास्ता। ३-नथ से लगी सोने की गोल दानों की पंक्ति।
ढुराना, ढुरावना क्रि० (हि) १-ढरकाना। २-लुढ़काना। ३-गिराना।
ढुलकना क्रि० दे० 'ढुलकना'।
ढुर्री स्त्री० (हि) पगडण्डी।
ढुलकना क्रि० (हि) निरन्तर ऊपर-नीचे चक्कर खाते हुए गिरना। लुढ़कना।
ढुलकाना क्रि० (हि) लुढ़कना।
ढुलना क्रि० (हि) १-गिरकर बहना। ढरकना। २-लुढ़कना। झुकना। प्रवृत्त होना। ४-कृपालु होना। ५-इधर से उधर डोलना। ६-लहराना।
ढुलमुल वि० (हि) अस्थिर।
ढुलवाई स्त्री० (हि) १-ढोने का काम या मजदूरी। २-ढुलाने की क्रिया या मजदूरी।
ढुलवाना क्रि० (हि) १-ढोने का काम कराना। २-ढुलाने का काम कराना।
ढुलाई स्त्री० दे० 'ढुलवाई'।
ढुलाना क्रि० (हि) १-गिराकर बहाना। २-गिराना। ३-लुढ़काना। ४-प्रवृत्त करना। झुकाना। ५-कृपालु करना। ६-इधर-उधर घुमाना। ७-चलाना-फिराना। ८-पोतना। ९-ढोने का काम कराना।
ढूकना क्रि० (हि) ढुकना।
ढूँढ़ स्त्री० (हि) खोज। तलाश।
ढूँढ़ना क्रि० (हि) खोजना। तलाश करना।
ढूकना क्रि० (हि) ढुकना।
ढूका पुं० (हि) किसी की दृष्टि से बचकर कहीं खड़े होने की अवस्था या भाव।
ढूह, ढूहा पुं० (हि) १-ढेर। अटाला। २-टीला।
ढेक स्त्री० (हि) लम्बी चोंच और गरदन वाली एक चिड़िया जो पानी के किनारे रहती है।
ढेकली स्त्री० (हि) १-एक यन्त्र जिसके द्वारा सिंचाई के लिए पानी निकाला जाता है। २-धान कूटने का एक यन्त्र। ढेंकी। ३-अर्क निकालने का एक यन्त्र
ढेका पुं० (हि) १-कोल्हू में लगा हुआ बाँस। २-बड़ी ढेंकी।
ढेकी स्त्री० दे० 'ढेंकली'।
ढेढ पुं० (हि) १-कौआ। २-एक जाति। ३-मूर्ख।
ढेढर पुं० दे० 'टेंटर'।
ढेढा पुं० दे० 'ढेंढ'।
ढेढी स्त्री० दे० 'डोडा'।
ढेपी स्त्री० (देश) १-टहनी से लगा फल या पत्ते के छोर का भाग। २-कुच का अग्र भाग।
ढेउआ पुं० (देश) १-पैसा। २-धन।
ढेपनी स्त्री० दे० 'ढेंप'।
ढेबरी स्त्री० दे० 'ढिबरी'।
ढेबुआ पुं० (हि) १-पैसा। धन।
ढेबुक पुं० (हि) पैसा।
ढेमनी स्त्री० (हि) रखेली। सुरेतिन।
ढेर पुं० (हि) राशि। अटाला। वि० बहुत। अधिक।
ढेरा पुं० (देश) चकई नामक खिलौना।
ढेरी स्त्री० (हि) ढेर। राशि।
ढेलवाँस पुं० (हि) ढेला फेंकने की रस्सी का फंदा। गोफन।
ढेला पुं० (हि) मिट्टी पत्थर आदि का टुकड़ा। २-एक तरह का धान।
ढेला-चौथ स्त्री० (हि) भादों सुदी चौथ।
ढेवा पुं० (हि) १-खेप। २-गीली मिट्टी का ढेर जो कच्ची दीवार बनाते समय उस पर डाला जाता है।
ढैया पुं० (हि) १-ढाई सेर का बाट। २-ढाई गुने का पहाड़ा।
ढोंका पुं० (देश) १-पत्थर आदि का अनगढ़ा टुकड़ा २-कोल्हू का बाँस।
ढोंग पुं० (हि) ढकोसला। पाखंड।
ढोंगबाज, ढोंगी वि० (हि) ढोंग करने वाला। पाखंडी
ढोंढ़ पुं० (हि) १-कपास, पोस्त आदि का डोडा। २-कली।
ढोंढ़ी स्त्री० (हि) १-नाभि। २-दे० 'ढोंढ़'।
ढोआई स्त्री० दे० 'ढुलाई'।
ढोटा पुं० (हि) [स्त्री० ढोटी] १-पुत्र। बेटा। बालक।
ढोटौना पुं० दे० 'ढोटा'।
ढोठा पुं० (हि) [स्त्री० ढोठी] दे० 'ढोटा'।
ढोना क्रि० (हि) १-बोझा लाद कर ले जाना। २-उठा लेजाना।
ढोर पुं० (हि) चौपाया। पशु। स्त्री० १-दे० 'ढुरन' २-अदा। छटा।
ढोरना क्रि० (हि) १-ढलना। ढरकाना। २-लुढ़काना। ३-हिलाना।
ढोल पुं० (सं) १-चमड़े से मढ़ा लंबोतरा बाजा जो दोनों हाथों से बजाया जाता है। २-कान के भीतर का परदा।
ढोलक स्त्री० (हि) छोटा ढोल।
ढोलकिया पुं० (हि) ढोलक बजाने वाला। स्त्री० (हि) छोटा ढोल।
ढोलकी स्त्री० (हि) छोटा ढोल।
ढोलन पुं० (हि) १-पति। २-वर। दूल्हा।
ढोलना पुं०(हि) १-ढोलक के आकार का छोटा जन्तर। २-सड़क के कङ्कर दाबने का बड़ा बेलन। ३-पालना। ४-पलङ्ग। क्रि० (हि) १-ढालना। ढरकाना। २-डुलाना।

ढोलनी स्त्री० (हि) छोटा पालना।

ढोला पु० (हि) १-एक तरह का कीड़ा जो सड़े हुए फलों में होता है। २-हद का निशान। ३-गोल महराब बनाने की डाट। ४-पति। प्रियतम। ५-एक प्रकार का गीत। ६-मूर्ख व्यक्ति। ७-पिण्ड। शरीर।

ढोलिनी स्त्री० (हि) ढोल बजाने वाली।

ढोलिया पु० दे० 'ढोलकिया'।

ढोली स्त्री० (हि) १-दो सौ पानों की एक गड्डी। २-परिहास। हँसी।

ढोव पु० (हि) मांगलिक अवसर पर राजा आदि को भेंट की जाने वाली वस्तु।

ढोवा पु० (हि) १-ढोये जाने की क्रिया। ढुलाई। २-दूसरों का माल अनुचित रूप से उठा ले जाना। लूट। ३-दे० 'ढोव'।

ढोवाई स्त्री० दे० 'ढुलाई'।

ढोहना क्रि० (हि) १-ढोना। २-ढूँढ़ना।

ढौंचा पु० (हि) एक पहाड़ा जिसमें क्रम से अंकों की साढ़े चार गुनी संख्या पढ़ी जाती है।

ढौंसना क्रि० (हि) १-धूम-धाम मचाना। २-हर्ष-ध्वनि करना।

ढौर पु० (सं) ढंग।

ढौरना स्त्री० (देश) इधर-उधर घुमाना।

ढौरी स्त्री० (देश) रट। धुन। स्त्री० (हि) ढंग। तरीका।

ण (ण)

ण हिन्दी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन और टवर्ग का अन्तिम अक्षर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

ण पु० (सं) १-भूषण। २-निर्णय। ३-ज्ञान। ४-पिंगल के एक गण का नाम।

णगण पु० (सं) दो मात्राओं का एक गण।

[शब्दसंख्या—१८६३]

त

त हिन्दी वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर। इसका उच्चारण स्थान दन्त है।

तंग वि० (फा) १-विस्तार में कम। संकीर्ण। २-चुस्त। ३-कसा हुआ। ४-दिक। परेशान। पु० घोड़े के जीन कसने की पेटी। कसन।

तंगी स्त्री० (फा) १-तंग होने का भाव। २-संकरापन। संकीर्णता। ३-परेशानी। ४-गरीबी।

तंजेब स्त्री० (फा) एक तरह की महीन और बढ़िया मलमल।

तंडुल पु० (सं) चावल।

तत पु० (हि) १-दे० 'तंतु'। २-दे० 'तत्व'। ३-दे० 'तंत्र'। स्त्री० आतुरता। वि० जो तौल में ठीक हो।

तंतमंत पु० (हि) तन्त्र-मन्त्र।

तंतरी पु०(हि) १-तार वाला बाजा। २-तार वाला बाजा बजाने वाला।

तंतु पु० (हि) १-सूत। धागा। डोरा। २-सन्तान। ३-विस्तार। फैलाव। ४-ताँत।

तंतुवाय पु० (सं) १-कपड़ा बुनने वाला। २-मकड़ी

तंत्र पु० (सं) १-तन्तु। तांत। २-सूत। ३-जुलाहा। ४-कपड़ा बुनने का सामान। ५-कुटुम्ब का भरण-पोषण। ६-निश्चित सिद्धान्त। ७-झाड़ने फूँकने का मन्त्र या सिद्धान्त। ८-अधीनता। ९-पद या कार्य करने का स्थान। १०-हिन्दुओं का उपासना सम्बन्धी एक शास्त्र जिसके सिद्धान्त गुप्त रखे जाते हैं। ११-राज्य या किसी अन्य कार्य का प्रबन्ध

तंत्रकार पु० (सं) बाजा बजाने वाला।

तंत्रण पु०(सं) शासन अथवा प्रबन्ध आदि का कार्य

तंत्र-संस्था पु० (सं) राज्य का शासन अथवा प्रबन्ध करने वाली संस्था। (गवर्नमेण्ट)।

तंत्री स्त्री० (सं) १-सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २-वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों। ३-शरीर की नस। ४-रस्सी। वि० १-जिसमें तार लगे हों। २-तन्त्र से सम्बन्ध रखने वाला। पु० १-बृहस्पति। २-वह जो बाजा बजाता हो।

तंदरा स्त्री० दे० 'तन्द्रा'।

तंदुरुस्त वि० (फा) निरोग। स्वस्थ।

तंदुरुस्ती स्त्री० (फा) १-निरोगता। २-स्वास्थ्य।

तंदुल पु० (हि) १-चावल। २-आठ सरसों के बराबर एक तौल जिससे हीरे तौले जाते थे।

तंदूर पु० (फा) मिट्टी की एक प्रकार की बड़ी भट्टी जिसमें रोटियाँ पकाई जाती हैं।

तंदूरी पु० (देश) एक तरह का रेशम। वि० (हि) १-तन्दूर पर बना या पका। २-तन्दूर सम्बन्धी।

तदेही स्त्री० (हि) १-परिश्रम। मेहनत। २-तपन। कोशिश। ३-ताकीद। ४-चेतावनी।

तंद्रा स्त्री० (सं) १-ऊँघ। ऊँघाई। २-हल्की बेहोशी

तंद्रालस पु० (हि) तन्द्रा या ऊँघ के कारण होने

तंद्राल, तंद्रिल वि० (सं) जिसे तन्द्रा या ऊँघ आती हो।
तंबाकू पुं० दे० 'तमाखू'।
तंबिका स्त्री० (सं) गौ। गाय।
तंबिया पुं० (हि) १-तांबे का छोटा बरतन। २-तांबे का छोटा तसला।
तंबियाना क्रि० (हि) १-ताँबे के रंग का होना। २-तांबे के पात्र में किसी पदार्थ को रखने के कारण इसमें ताँबे का स्वाद या गन्ध आ जाना।
तंबीह स्त्री(अ) १-शिक्षा। नसीहत। २-दण्ड। सजा
तंबू पुं० (हि) खेमा। शामियाना।
तंबूर पुं० (फा) एक तरह का ढोल।
तंबूरची पुं० (फा) तम्बूरा बजाने वाला।
तंबूरा पुं० (हि) सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।
तंबूल पुं० दे० 'तांबूल'।
तंबोल पुं० (हि) १-दे० 'तांबूल'। २-एक प्रकार का पेड़। ३-ब्याह के समय वर को दिया जाने वाला टीका।
तंबोलिन स्त्री० (हि) पान बेचने वाली स्त्री। तमोलिन
तंबोली पुं० (हि) [स्त्री० तंबोलिन] पान बेचने वाला
तंभ, तंभन पुं० (हि) शृङ्गार रस में स्तम्भ नामक भाव।
तंवार पुं० (हि) १-ताप। गर्मी। २-मूर्च्छा।
तः प्रत्य० (सं) एक संस्कृत प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लग कर यह अर्थ देता है— (क) रूप या आकार से, जैसे—साधारणतः। (ख) के अनुसार, जैसे—नियमतः।
त पुं० (सं) १-नौका। २-पुण्य। ३-चोर। ४-झूठ ५-पूँछ। ६-गोद। ७-म्लेच्छ। ८-गर्भ। ९-शठ। १०-रत्न। ११-अमृत। १२-बुद्ध। क्रि० वि० (हि) तो।
तअज्जुब पुं० (अ) आश्चर्य।
तअल्लुक पुं० (अ) सम्बन्ध।
तअल्लुकेदार पुं० (अ० तअल्लुकःदार) तअल्लुके का मालिक।
तअस्सुब पुं० (अ) पक्षपात। तरफदारी।
तइसा वि० दे० 'तैसा'।
तई प्रत्य० (हि) से। अव्य० वास्ते। लिए।
तई स्त्री० (हि) छोटा तवा।
तउ अव्य० (हि) १-तब। २-त्यों।
तऊ अव्य (हि) तथापि। तिस पर भी। तो भी।
तक अव्य० (हि) किसी वस्तु या व्यापार की सीमा या अवधि सूचित करने वाली एक विभक्ति। पर्यंत स्त्री० (हि) १-तराजू। २-तराजू का पल्ला। ३-दे० 'टक'।
तकदमा पुं० (हि) तखमीना। अन्दाज। कूत।
तकदीर स्त्री० (अ) भाग्य। प्रारब्ध।
तकदीरवर वि० (अ) भाग्यवान्।
तकदीरी वि० (अ) भाग्य सम्बन्धी।
तकना क्रि० (हि) १-देखना। २-ताक में रहना। ३-आश्रय लेना।
तकब्बर पुं० [अ० तकब्बुर]। अभिमान।
तकमा पुं० १-दे० 'तमगा'। २-दे० 'तुकमा'।
तकरार स्त्री० (अ) १-हुज्जत। विवाद। २-लड़ाई झगड़ा। ३-कविता में किसी वर्णन को दोहराना।
तकरीर स्त्री० (अ) १-बातचीत। २-भाषण।
तकला पुं० (हि) [स्त्री० तकली] १-चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर कता हुआ सूत लपेटते हैं। टेकुआ। २-एक औजार जिससे रस्सी बटते हैं।
तकली स्त्री० (हि) छोटा तकला। टेकुरी।
तकलीफ स्त्री० (अ) १-कष्ट। क्लेश। २-विपत्ति। मुसीबत।
तकल्लुफ पुं० (अ) (दिखावटी)। शिष्टाचार।
तकवाना क्रि० (हि) दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना।
तकसा स्त्री० (?) १-नाश। २-दुर्दशा।
तकसीम स्त्री० (अ) १-बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। २-भाग (गणित)।
तकसीर स्त्री०(अ) १-दोष। अपराध। २-भूल। चूक।
तकाजा पुं० (अ) १-ऐसी वस्तु माँगना जिसके प्राप्त करने का अधिकार हो। २-ऐसा काम करने के लिए किसी से कहना। ३-किसी प्रकार की उत्तेजना अथवा प्रेरणा।
तकाना क्रि० (हि) किसी को ताकने में प्रवृत्त करना दिखाना।
तकाव पुं० (हि) ताकने की क्रिया या भाव।
तकावी स्त्री० (अ) वह ऋण जो बीज, बैल आदि खरीदने के लिए किसानों को सरकार की ओर से दिया जाता है।
तकिया पुं० (फा) १-रुई आदि का भरा वह थैला जो सोने के समय सिर के नीचे रखते हैं। २-रोक या सहारे के लिए प्रयुक्त होने वाली पत्थर की पटिया। ३-विश्राम करने का स्थान। ४-आश्रय। सहारा। ५-मुसलमान फकीर या पीर का निवास-स्थान जो प्रायः कब्रिस्तान के पास होता है।
तकिया-कलाम पुं० दे० 'सखुन-तकिया'।
तकुआ पुं० (हि) तकला।
तक्कर वि० दे० 'तगड़ा'।
तक्र पुं० (सं) छाछ। मट्ठा।
तक्रसार पुं० (सं) मक्खन।
तक्षक पुं० (सं) १-राजा परीक्षित को काटने वाला एक नाग। २-भारत की एक प्राचीन अनार्य जाति ३-सर्प। ४-बढ़ई। ५-सूत्रधार। वि० छेदने वाला। छेदक।

तक्षण पुं० (सं) १-लकड़ी को रेद कर साफ करने का काम। २-बढ़ई। ३-पत्थर, लकड़ी आदि खोद-कर बेल-बूटे बनाने का काम।
तक्षणी स्त्री० (सं) बढ़इयों का लकड़ी साफ करने का रन्दा।
तक्षशिला स्त्री० (सं) भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी का नाम जो रावलपिंडी (पाकिस्तान प्रदेश के अन्तर्गत) के पास था।
तखमीना पुं० (अ) अनुमान। अटकल।
तखल्लुस पुं० (अ) उपनाम।
तख्त पुं० (फा) १-राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। २-तख्तों की बनी बड़ी चौकी।
तख्त-गाह पुं० (फा) राजधानी।
तख्त-ताऊस पुं० (फा+अ) छः करोड़ रुपये की लागत से बना एक प्रसिद्ध राजसिंहासन।
तख्तनशीन वि० (फा) सिंहासनारूढ़।
तख्तपोश, तख्तपोस पुं० (फा) तख्त पर बिछाने की चादर।
तख्तबन्दी स्त्री० (फा) तख्तों की बनी हुई दीवार।
तख्ता पुं० (फा) १-लकड़ी का कम चौड़ा और लम्बा पल्ला। २-लकड़ी की बड़ी चौकी। ३-कागज का ताव। ४-अरथी।
तख्ती स्त्री० (फा) १-छोटा तख्ता। २-लिखने की पट्टी। पटिया।
तगड़ा वि० (हि) (स्त्री० तगड़ी) १-बलवान। २-खूब हृष्टपुष्ट।
तगण पुं० (सं) पिंगल के अनुसार वह गण जिसमें पहले दो गुरु और (ऽऽ।) अन्तिम लघु होता है।
तगदमा पुं० (अ) अनुमान। तखमीना।
तगना क्रि० (हि) सीना। सिलाई करना।
तगनी स्त्री० (हि) तागने की क्रिया या भाव। तगाई।
तगमा पुं० दे० 'तमगा'।
तगर पुं० (सं) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है।
तगा पुं० (हि) तागा।
तगाई स्त्री०(हि) तागने का काम या उजरत। सिलाई।
तगादा पुं० दे० 'तकाजा'।
तगाना क्रि० (हि) तागने का काम कराना। सिलवाना।
तगार, तगारी स्त्री० (हि) १-उखली गाड़ने का गड्ढा। २-चूना या गारा ढोने का तसला। ३-वह स्थान जहाँ चूना या गारा बनाया जाय।
तगीर पुं० (अ० तगय्युर) परिवर्तन।
तच्छ पुं० दे० 'तक्ष'।
तचना क्रि० (हि) १-तपना। अत्यन्त तप्त होना। २-दुखी होना।
तचा स्त्री० दे० 'त्वचा'।
तचाना क्रि० (हि) १-तप्त करना। २-गरम करना ३-दुखी करना।
तचित वि० (हि) १-तपा हुआ। तप्त। २-दुखी।
तच्छक पुं० दे० 'तक्षक'।
तच्छिन क्रि० वि० (हि) तत्क्षण।
तज पुं० (हि) १-दारचीनी जाति का एक सदाबहार वृक्ष जिसके पत्ते 'तेजपात' कहलाते हैं। २-इस वृक्ष की सुगन्धित छाल या लकड़ी।
तजन पुं० (हि) १-त्याग। २-कोड़ा। चाबुक।
तजना क्रि० (हि) त्यागना।
तजरबा पुं० (अ) १-अनुभव। २-प्रयोग।
तजरबाकार वि० (अ) अनुभवी।
तजवीज स्त्री० (अ) १-सम्मति। राय। २-निर्णय। ३-प्रबन्ध। बन्दोबस्त।
तजवीजसानी स्त्री० (अ) किसी निर्णय का उसी अदालत में फिर से विचार किया जाना।
तज्जनित, तज्जन्य वि० (सं) उससे उत्पन्न।
तज्जातीय वि० (सं) उस जाति का।
तज्ञ वि० (सं) १-जानकार। २-तत्त्वज्ञ।
तटंक पुं० (हि) कर्णफूल नामक कान का गहना।
तट पुं० (सं) १-प्रदेश। २-क्षेत्र। ३-किनारा। कूल। क्रि० वि० निकट। पास।
तटनी स्त्री० (हि) नदी।
तट-पाल पुं० (सं) समुद्र के तटवर्ती प्रदेश या बन्दरगाह क्षेत्र का रक्षक। (कोस्ट-गार्ड)।
तट-यान-पोतक पुं० (सं) समुद्र के तटवर्ती प्रदेश का रक्षक जंगी जहाज या युद्धपोत। (कोस्ट-गार्ड-मॉनिटर)।
तटरक्षा पुं० (सं) तटवर्ती प्रदेश या बन्दरगाह की रक्षा। (कोस्ट-डिफेंस)।
तटरक्षा-वाहिनी स्त्री० (सं) तटवर्ती प्रदेश की रक्षा करने वाली सेना। (कोस्टल-कमांड)।
तटवर्ती वि० (सं) किनारे का। तट के पास वाला। (कोस्टल)।
तटस्थ वि० (सं) १-तट या किनारे रहने वाला। २-पास रहने वाला। ३-परस्पर विरोधी पक्षों से अलग रहने वाला। निरपेक्ष। उदासीन। (न्यूट्रल)
तटस्थ-उदतीर्थ पुं० (सं) वह बन्दरगाह जो किसी भी राष्ट्र से कोई अपेक्षा अथवा कामना न रखे। निरपेक्ष बन्दरगाह। (न्यूट्रल-पोर्ट)।
तटस्थता स्त्री० (सं) तटस्थ या निरपेक्ष रहने का भाव। निरपेक्षता। उदासीनता। (न्यूट्रलिटी)।
तटस्थ-राज्य पुं०(सं) तटस्थ या निरपेक्ष रहने वाला राज्य या देश। (न्यूट्रल-स्टेट)।
तटस्थीकरण पुं० (सं) १-किसी देश अथवा स्थान को तटस्थ घोषित करने या बना देने की क्रिया। २-किसी वस्तु का कोई गुण हटाकर उस गुण का फल अथवा प्रभाव नष्ट करने की क्रिया या भाव।

(न्यूट्रलाइजेशन)।
तटिनी स्त्री० (सं) नदी।
तटिनी-पति पुं० (सं) समुद्र।
तटी स्त्री० (सं) नदी।
तठ अव्य० (हि) वहाँ। उस जगह।
तड़ पुं० (हि) १-एक ही जाति के अलग-अलग विभाग। २-स्थल। ३-थप्पड़ मारने से उत्पन्न शब्द। ४-लाभ या आयोजन।
तड़क स्त्री० (हि) १-तड़कने की क्रिया या भाव। २-तड़कने के कारण पड़ने वाला चिह्न। ३-अचार, चटनी आदि चटपटे पदार्थ। चाट। ४-वह लकड़ी जो दीवार से बाहर तक लगाई जाती है।
तड़कना क्रि० (हि) १-तड़ शब्द सहित टूटना या फटना। २-किसी वस्तु का सूख कर फट जाना। ३-जोर का शब्द करना। ४-बिगड़ना। झुंझलाना ५-तड़पना। ६-तड़का देना। छौंकना।
तड़क-भड़क स्त्री० (हि) चमकदमक।
तड़का पुं० (हि) १-प्रातःकाल। सवेरा। २-छौंक। बघार।
तड़काना क्रि० (हि) १-किसी (सूखी) वस्तु को 'तड़' शब्द सहित तोड़ना। २-जोर का शब्द उत्पन्न करना ३-फाड़ना। ४-खिजाना।
तड़कीला वि० (हि) १-चमकीला। २-तड़कने वाला
तड़क्का क्रि० वि० (हि) शीघ्र। झटपट।
तड़तड़ाना क्रि० (हि) १-तड़-तड़ शब्द होना। २-तड़-तड़ शब्द उत्पन्न करना।
तड़तड़ाहट स्त्री० (हि) तड़तड़ाने की क्रिया या भाव।
तड़प स्त्री० (हि) १-तड़पने की क्रिया या भाव। २-चमक। आभा।
तड़पना क्रि० (हि) १-छटपटाना। तलमलाना। २-गरजना। घोर शब्द करना।
तड़पवाना क्रि०(हि) किसी को तड़पाने में प्रवृत्त करना।
तड़पाना क्रि०(हि) १-शारीरिक या मानसिक वेदना पहुँचाकर व्याकुल करना। २-किसी को गरजने के लिए बाध्य करना।
तड़फड़ाना क्रि० (हि) १-छटपटाना। तलमलाना। २-तड़पाना।
तड़फना क्रि० दे० 'तड़पना'।
तड़बन्दी स्त्री० (हि) दलबन्दी।
तड़ाक स्त्री० (हि) तड़ाके का शब्द। क्रि० वि० १-तड़ या तड़ाक शब्द सहित। २-जल्दी से। तुरन्त।
तड़ाक-पड़ाक, तड़ाक-फड़ाक क्रि० वि० (हि) चट-पट, फौरन।
तड़ाका पुं० (हि) 'तड़' शब्द। क्रि०वि० तुरन्त। चट-पट।
तड़ाग स्त्री० (सं) सरोवर। तालाब।
तड़ागना क्रि० (हि) १-डींग मारना। २-उछल कूद करना।
तड़ातड़ क्रि० वि० (हि) तड़-तड़ शब्द सहित।
तड़ाना क्रि० (हि) ताड़ने में प्रवृत्त करना। झँपाना।
तड़ाया स्त्री० (हि) १-ऊपरी तड़कभड़क। २-धोखा
तड़ित स्त्री० (सं) विद्युत। बिजली।
तड़ित-पति पुं० (सं) बादल। मेघ।
तड़ित-प्रभा स्त्री० (सं) बिजली की चमक।
तड़िद्दाम पुं० (हि) कौंधने वाली बिजली की रेखा
तड़िपाना क्रि० दे० 'तड़पाना'।
तड़ी स्त्री० (हि) १-चपत। २-छल। धोखा। ३-
तड़ीत स्त्री० (हि) तड़ित। बिजली।
तत् पुं० (सं) १-परमात्मा। २-वायु। हवा। स उस।
तत पुं० (सं) १-वायु। २-विस्तार। ३-पिता। पुत्र। ५-वह बाजा जिसमें तार लगे हों। वि० (हि) तपा हुआ। गरम। पुं० दे० 'तत्व'।
ततकार पुं० (हि) नृत्य या नाच का बोल।
ततच्छन क्रि० वि० (हि) तत्क्षण।
तततायेई स्त्री० (हि) नाच के बोल।
ततबाउ पुं० दे० 'तन्तुवाय'।
ततबीर स्त्री० 'तदबीर'।
ततसार स्त्री० (हि) तापने की जगह।
तताई स्त्री० (हि) तप्त होने की क्रिया या भाव।
ततु पुं० दे० 'तत्व'।
ततुबाऊ पुं० दे० 'तन्तुवाय'।
ततैया स्त्री० (हि) १-बर्रे। भिड़। ३-जाया मिर्च। वि० १-तेज। फुरतीला। २-चतुर। चालाक।
ततोधिक वि० (सं) उनसे बढ़कर।
तत्काल क्रि० वि० (सं) तुरन्त। फौरन।
तत्कालिक वि० दे० 'तात्कालिक'।
तत्कालीन क्रि० वि० (सं) उसी समय का।
तत्क्षण क्रि० वि० (सं) तुरन्त उसी समय।
तत्त पुं० दे० 'तत्व'।
तत्ता वि० (हि) गरम। उष्ण।
तत्तायेई स्त्री० (हि) नाचते समय पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द।
तत्तोथंबो पुं० (हि) १-दम-दिलासा। बहलावा। बीचबचाव।
तत्त्व पुं० (सं) १-वास्तविकता। यथार्थता। २-जगत का मूल कारण। ३-पंचभूत। ४-परमात्मा। ५-सार वस्तु। सारांश।
तत्त्वज्ञ पुं० (सं) १-ब्रह्मज्ञानी। २-दार्शनिक।
तत्त्वज्ञान पुं० (सं) ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के सम्बन्ध का यथार्थ ज्ञान। ब्रह्मज्ञान।
तत्त्वज्ञानी पुं० दे० 'तत्त्वज्ञ'।
तत्त्वतः क्रि० वि० (सं) १-महत्वपूर्ण गुण या तत्व के विचार से। (सब्स्टेन्शली)। २-यथार्थ रूप में

वास्तव में।
तत्त्वदर्शी पु० दे० 'तत्त्वज्ञ'।
तत्त्वदृष्टि स्त्री० (सं) तत्त्वज्ञान प्राप्त करने वाली दृष्टि
तत्त्वनिष्ठ वि० (सं) सिद्धांत का पक्का।
तत्त्वमसी पद(सं) 'तू वही अर्थात् ब्रह्म है' (वेदांत)।
तत्त्ववित् पु० (सं) १-तत्त्वज्ञ। २-परमेश्वर।
तत्त्वविद्या स्त्री० (सं) दर्शनशास्त्र। अध्यात्मविद्या।
तत्त्ववेत्ता पुं० (सं) तत्त्वज्ञ।
तत्त्व-शास्त्र पुं० (सं) दर्शनशास्त्र।
तत्त्वावधान पु० (सं) देखरेख।
तत्त्वावधायक पुं० (सं) देखरेख करने वाला व्यक्ति
तत्पर वि० (सं) १-उद्यत। सन्नद्ध। मुस्तैद। दक्ष। निपुण। ३-चतुर। होशियार।
तत्परता स्त्री०(सं) १-सन्नद्धता। मुस्तैदी। २-दक्षता निपुणता। होशियारी।
तत्पुरुष पुं० (सं) १-ईश्वर। परमेश्वर। २-एक कल्प का नाम। ३-व्याकरण में एक समास।
तत्र क्रि० वि० (सं) वहाँ। उस स्थान पर।
तत्रक पुं० (देश) एक वृक्ष विशेष।
तत्र-भगवान पु० (सं) परम पूज्य (धार्मिक गुरु के लिए)। (हिज होलीनैस)।
तत्र-भवती स्त्री०(हि) पूज्यनीय। माननीय महारानी (हर-हाईनैस)।
तत्र भवान पु० (सं) माननीय महाराज। हिज-हाईनैस)।
तत्र-महती स्त्री० (हि) राज्यराजेश्वरी। (महाराज्ञी (हर-मैजेस्टी)।
तत्र-महान् पुं० (सं) राज्यराजेश्वर। हिज-मैजेस्टी)।
तत्र-श्रीमान् पुं० (सं) महामहिम। (हिज-एक्सलेंसी)
तत्सम्बन्धी वि०(सं) उससे सम्बन्ध रखने वाला।
तत्सम पु० (सं) संस्कृत का वह शब्द जिसका प्रयोग भाषा में उसकी शुद्धि में या ज्यों का त्यों हो।
तत्सामयिक वि० (सं) उस समय का।
तत्स्थानीय वि० (सं) मेल मिलाने या मेल रखने वाला। तदनुरूप। (कारेस्पाडिंग)।
तत्स्वरूप वि० (सं) उसके समान।
तथा अव्य० (सं) १-और। व। २-ऐसे ही।
तथाकथित, तथाकथ्य वि० (सं) जो कहा जाय पर उसके सम्बन्ध में कोई प्रमाण न हो। कहा जाने वाला।
तथागत पुं० (सं) गौतम बुद्ध।
तथापि अव्य० (सं) तो भी। तिस पर भी।
तथास्तु अव्य० (सं) ऐसा ही हो। एवमस्तु।
तथैव अव्य० (सं) उसी प्रकार।
तथोक्त वि० (सं) तथाकथित।
तथ्य पुं० (सं) १-सचाई। यथार्थता। २-कोई ऐसी बात जो किसी विशेष अवस्था में वस्तुतः हुई हो
३-वह अनुभूति जो किसी विशेष अवस्था में हुई हो
तथ्यक वि० (सं) तथ्य सम्बन्धी।
तथ्यक-साक्ष्य स्त्री० (सं) वास्तविक घटनाओं या तथ्यों से सम्बन्ध रखने वाली साक्ष्य। (इवी-आफ-फैक्टस)।
[illegible]
स्पॉडिङ्ग)।
तदनुसार क्रि० वि०, वि० (सं) जो हो अथवा हुआ हो उसके अनुसार।
तदपि अव्य० (सं) १-वह भी। २-तो भी। तथापि
तदबीर स्त्री० (अ) युक्ति। उपाय। यत्न।
तदर्थ अव्य० (सं) १-उसके लिए। २-उस या किसी विशेष काम के लिए। (एडहाक)।
तदर्थ-समिति स्त्री० (सं) किसी विशेष काम के लिए बनी हुई समिति जो कार्य सम्पादन के पश्चात् स्वतः विघटित होजाती है। (एडहाक कमिटी)।
तदर्थीय वि० (सं) (कोई शब्द या पद) जो किसी दूसरी भाषा के शब्द का अर्थ सूचित करने के लिए उसके अनुकरण पर बना हो।
तदा अव्य० (सं) उस समय। तब।
तदाकार वि० (सं) उसके आकार का। उसकी तरह का।
तदारुक पुं० (अ) १-अभियुक्त या खोई हुई वस्तु की खोज। २-दुर्घटना की जाँच। ३-दुर्घटना रोकने के निमित्त पहले से किया जाने वाला प्रबन्ध या उपाय।
तदीय वि० (सं) उसका।
तदुपरांत क्रि० वि० (सं) उसके पीछे। उसके बाद।
तदुपरि क्रि० वि० (सं) उसके ऊपर।
तदेक वि० (सं) उसके समान।
तदेकात्मा वि० (सं) उसके जैसा।
तद्गुण पुं० (सं) एक अर्थालङ्कार।
तद्देशीय वि० (सं) उस देश का।
तद्धित पुं० (सं) १-व्याकरण में वह प्रत्यय जिसे संज्ञा के अन्त में लगाकर भाव-वाचक संज्ञाएँ या विशेषण बनाते हैं। जैसे—मित्रता का 'ता'। २-वह शब्द जो इस प्रकार प्रत्यय लगा कर बनाया जाय।
तद्भव पुं० (सं) भाषा में प्रयुक्त होने वाला संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप कुछ विकृत अथवा परिवर्तित होगया हो।
तद्यपि अव्य० (सं) तथापि। तिस पर भी।
तद्रूप वि० (सं) किसी के रूप के समान। सदृश। पुं० रूपक अलङ्कार का एक भेद।

तद्वत् वि० (सं) वैसा। उसके समान। अव्य० उसी प्रकार।
तन पुं० (हि) शरीर। देह। क्रि० वि० तरफ। ओर। वि० तनिक।
तनक वि० दे० 'तनिक'।
तनकना क्रि० दे० 'तिनकना'।
तनकीह स्त्री० (अ) १-जाँच। तहकीकात। २-किसी मुकदमे की वह मूल बातें जिनका विचार और फैसला करना बाकी हो।
तनखाह स्त्री० (फा) वेतन। तलब।
तनख्वाह स्त्री० (फा) वेतन। तलब।
तनगना क्रि० दे० 'तिनकना'।
तनज पुं० (अ) १-ताना। मजाक।
तनजेब स्त्री० (फा) महीन चिकनी मलमल।
तनज्जुल वि० (अ) अवनत।
तनज्जुली स्त्री० (फा) अवनति।
तनतना क्रि० (हि) १-रोबदाब। २-क्रोध।
तनतनाना क्रि० (हि) १-दम-दबा दिखलाना। २-क्रोध करना।
तनत्राण पुं० दे० 'तनुत्राण'।
तनना क्रि० (हि) १-खिंचाव आदि के कारण अपने पूरे विस्तार पर पहुँचाना। २-ताना जाना। ३-अकड़ कर सीधा खड़ा होना। ४-अभिमान पूर्वक रुष्ट होना।
तनपात पुं० दे० 'तनुपात'।
तनमय वि० दे० 'तन्मय'।
तनमात्र स्त्री० दे० 'तन्मात्र'।
तनय पुं० (सं) पुत्र। बेटा।
तनया स्त्री० (सं) कन्या। पुत्री।
तनरुह पुं० दे० 'तनूरुह'।
तनवाना क्रि० (हि) दूसरे को तानने में प्रवृत्त करना। तानना।
तनसुख पुं० (हि) एक तरह का बढ़िया फूलदार कपड़ा
तनहा वि० (फा) एकाकी। अकेला।
तनहाई स्त्री० (फा) १-अकेलापन। २-एकान्त स्थान
तना पुं० (फा) वृक्ष का नीचे वाला भाग जिसमें डालियाँ नहीं होती। क्रि० वि० (हि) ओर। तरफ।
तनाई स्त्री० (हि) तानने का काम, भाव या मजदूरी
तनाऊ पुं० दे० 'तनाव'।
तनाकु क्रि० वि० दे० 'तनिक'।
तनाजा पुं० (अ) १-झगड़ा। २-बैर।
तनाना क्रि० दे० 'तनवाना'।
तनाब स्त्री० (अ) १-खेमे की रस्सी। २-बाजीगरों का रस्सा।
तनाय, तनाव पुं० (हि) १-तानने की क्रिया या भाव। २-वह रस्सी जिस पर धोबी कपड़े सुखाते हैं। ३-रस्सी।
तनि, तनिक क्रि० वि० (हि) जरा। टुक। वि० १-थोड़ा। अल्प। २-छोटा।
तनिमा स्त्री० (सं) १-शरीर का दुबलापन। कृशता। २-सुकुमारता।
तनियाँ, तनिया स्त्री० (हि) १-लंगोट। २-कछनी। जाँघिया। ३-चोली।
तनी स्त्री० (हि) १-डोरी के समान बटा हुआ कपड़ा जो पहनने के कपड़ों में उनके पल्ले बाँधने के लिए लगाया जाता है। बन्द। बन्धन। २-दे० 'तनिया' क्रि० वि० दे० 'तनिक' वि० दे० 'तनु'।
तनु वि० (सं) १-दुबला-पतला। कृश। २-थोड़ा। अल्प। कम। ३-कोमल। ४-सुन्दर। (अव्य०) ओर तरफ। स्त्री० १-शरीर। देह। २-चमड़ा। खाल। ३-स्त्री। औरत। ४-केंचुली। ५-जन्मकुण्डली में लग्न स्थान।
तनुक वि० दे० 'तनिक'। क्रि० वि० दे० 'तनिक'। पुं० दे० 'तनु'।
तनुज पुं० (सं) १-पुत्र। बेटा। २-जन्मकुण्डली में लग्न से पाँचवाँ स्थान।
तनुजा स्त्री० (सं) पुत्री। बेटी।
तनुता स्त्री० (सं) १-लघुता। छोटाई। २-दुर्बलता।
तनुत्व पुं० (सं) दे० 'तनुता'।
तनुत्राण पुं० (सं) १-वह वस्तु जिससे शरीर की रक्षा हो। २-कवच। बख्तर।
तनुधारी वि० (सं) शरीरधारी। देहधारी।
तनुमध्यमा वि० स्त्री० (सं) पतली कमर वाली।
तनुमध्या स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त।
तनुरस पुं० (सं) पसीना।
तनू पुं० (सं) १-बेटा। २-शरीर। ३-प्रजापति।
तनूज पुं० (सं) पुत्र। बेटा।
तनूजा स्त्री० (सं) बेटी। पुत्री।
तनूरुह पुं० (सं) १-रोम। रोआँ। २-पुत्र। बेटा।
तने अव्य० (हि) की ओर। की तरफ।
तनेना वि० (हि) [स्त्री० तनेनी] १-तानने वाला। २-टेढ़ा। तिरछा। ३-क्रुद्ध। नाराज।
तनै पुं० (हि) दे० 'तनय'।
तनैना पुं० दे० 'तनेना'।
तनैया स्त्री० (हि) बेटी। वि० तानने वाला।
तनोआ पुं० (हि) ऊपर ताना जाने वाला कपड़ा। चँदोआ।
तनोज पुं० (हि) १-रोम। रोआँ। २-पुत्र। बेटा।
तनोरुह पुं० दे० 'तनूरुह'।
तन्ना पुं० (हि) ताने का सूत।
तन्नी स्त्री० (हि) वह रस्सी जिससे तराजू का पलड़ा बंधा होता है।
तन्मनस्क वि० (सं) तन्मय। तल्लीन।
तन्मय वि० (सं) दत्तचित्त। तल्लीन।

तन्मात्र पुं०(सं) सांख्य के मतानुसार पंचभूत अर्थात् शब्द, रूप, रस और गन्ध का सूक्ष्म मिश्रित रूप।
तन्मात्रा स्त्री० दे० 'तन्मात्र'।
तन्यक वि० (सं तन्य) १-खींचने पर लम्बा हो जाने वाला। २-(वह धातु) जिसका तार खींचा जा सके।
तन्यता स्त्री० (सं) १-ठोस वस्तुओं का तार के रूप में खींचे जा सकने का गुण। (डक्टिलिटी)। २-वस्तुओं का खिंचने और फिर वैसे ही सुकड़ने का गुण। (एलास्टिसिटी)।
तन्वंग वि० (हि) [स्त्री० तन्वंगी] दुबले-पतले अंगों वाला।
तन्वी वि० स्त्री० (सं) दुबली या कोमल अंगों वाली। स्त्री० १-पतली सुकुमार स्त्री। २-एक वर्णवृत्त।
तप पुं० (सं) १-शरीर को कष्ट देने वाले वह धार्मिक व्रत और नियम आदि कृत्य जो चित्त को भोग विलास से हटाने के लिए किये जाएँ। तपस्या। २-शरीर अथवा इन्द्रिय को वश में रखना। ३-नियम ४-ताप। गरमी। ५-ग्रीष्म ऋतु। ६-ज्वर। बुखार
तपकना क्रि० (हि) १-धड़कना। उछलना। २-टपकना।
तपन पुं० (सं) १-तपने की क्रिया या भाव। जलन। ताप। २-सूर्य। ३-सूर्यकांतमणि। ४-गरमी। ५-धूप। ६-नायक-वियोग में नायिका द्वारा किये जाने वाले हावभाव। स्त्री० (हि) ताप। गरमी।
तपना क्रि० (हि) १-अधिक या तेज गरमी के कारण खूब गरमी होना। २-प्रभुत्व या अधिकार दिखाना। ३-बुरे कामों में बहुत अधिक खर्च करना। ४-तपस्या करना।
तपनि पुं०, स्त्री० दे० 'तपन'।
तपरितु स्त्री० (हि) गरमी की ऋतु या मौसम।
तपशील पुं० (हि) तपस्वी। तपस्या करने वाला।
तपश्चरण पुं० (सं) तप। तपस्या।
तपश्चर्या स्त्री० (सं) तप। तपस्या।
तपस पु० दे० 'तपस्या'।
तपसा स्त्री० (हि) १-तप। तपस्या। २-तापती नदी।
तपसी पुं० (हि) तपस्वी।
तपसील पुं० (हि) तपस्वी। स्त्री० दे० 'तफसील'।
तपस्या स्त्री० (सं) दे० 'तप'।
तपस्विता स्त्री० (सं) तपस्वी होने की अवस्था या भाव
तपस्विनी स्त्री० (सं) १-तपस्या करने वाली स्त्री। २-तपस्वी की स्त्री। ३-पतिव्रता। सती स्त्री। ४-पति मरजाने के उपरांत केवल अपनी सन्तान के पालन के निमित्त सती न होने वाली स्त्री।
तपस्वी पुं० (सं) [स्त्री० तपस्विनी] १-तपस्या करने वाला। २-दीन। ३-दया करने योग्य।
तपा पुं० (हि) तपस्वी। वि० जो तपस्या में मग्न हो।
तपाक पुं० (फा) १-प्रेम। २-उत्साह।
तपाकर पुं० (सं) १-सूर्य। २-बहुत बड़ा तपस्वी।
तपाना क्रि० (हि) १-गरम करना। २-दुःख देना
तपावंत पुं० (हि) तपस्वी।
तपाव पु० (हि) ताप। गरमाहट।
तपित वि० (सं) तपा हुआ। गरम।
तपिया पुं० दे० 'तपस्वी'।
तपिश स्त्री० (फा) तपन। गरमी।
तपी पु० (हि) तपस्वी।
तपेदिक पुं० (फा) राजयक्ष्मा नामक रोग।
तपेला पुं० (हि) १-एक तरह का पानी गरम करने का बरतन। २-भट्टी।
तपोधन पुं० (सं) १-ऋषि,मुनि, जिनका तपस्या ही धन है। २-तपस्वी।
तपोधर्म, तपोनिधि, तपोनिष्ठ पुं० (सं) तपस्वी।
तपोबन पु० दे० 'तपोवन'।
तपोबल पुं० (सं) तप का प्रभाव या शक्ति।
तपोभूमि स्त्री० (सं) तप करने का स्थान।
तपोमय वि० (सं) १-तप वाला। तपस्या करने वाला। पु० परमेश्वर।
तपोमूर्त्ति पु० (सं) १-तपस्वी। २-परमेश्वर।
तपोलोक पु० (सं) ऊपर के सात लोकों में छठा लोक
तपोवन पु० (सं) वह वन जो तपस्वियों के रहने अथवा तपस्या करने के योग्य हो।
तपोवृद्ध वि० (सं) जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।
तपोव्रत पु० (सं) तपस्या सम्बन्धी व्रत।
तपौनी स्त्री० (हि) ठगों की रसम जो लूट के माल में से कुछ अंश देवी को अर्पित करते हैं।
तप्त वि० (सं) १-तपा या तपाया हुआ। गरम। उष्ण २-जिसमें गरमी, आवेश या उग्रता हो। (हीटेड)। ३-दुःखित।
तप्तकुण्ड पुं० (सं) गर्म पानी का सोता या कुंड (प्राकृतिक)।
तप्तमुद्रा स्त्री०(सं) शंख, चक्र आदि के लोहे या पीतल के छापे जिनको तपाकर वैष्णव लोग अपने शरीर पर दागते हैं।
तप्प पुं० दे० 'तप'।
तप्य वि० (सं) जो तपने अथवा तपाने योग्य हो। पुं० शिव।
तफरीक स्त्री० (अ) १-जुदाई। २-घटाना (गणित)। ३-फरक। अन्तर। ४-बटवारा।
तफरीह स्त्री० (अ) १-प्रसन्नता। २-दिलबहलाव। ३-हवाखोरी। ४-ताजगी।
तफरीहन् अव्य० (अ) १-मन बहलाव के रूप में। २-हँसी से।
तफसील स्त्री० (अ) १-अलग करना। ब्यौरा।
तब अव्य० (हि) १-उस समय। इस कारण।

तबक पुं० (अ) १-लोक। तल। २-परत। तह। ३-सोने, चाँदी आदि धातुओं के पत्तरों को पीट कर कागज के समान बनाया हुआ पतला वरक। ४-चौड़ी और छिछली थाली।
तबकगर पुं० (अ+फा) सोने, चाँदी आदि को पीट कर पतला वरक बनाने वाला व्यक्ति। तबकिया।
तबका पुं० (अ) भूमि का वह खण्ड या विभाग। २-लोक। तल। ३-आदमियों का समूह।
तबकिया पुं० दे० 'तबकगर'। वि० जिसमें परत हों।
तबदील वि०(अ) १-परिवर्तित। २-एक पद या स्थान से दूसरे पद या स्थान पर जाना।
तबर पुं० (फा) कुल्हाड़ी।
तबल पुं० (अ) १-बड़ा ढोल। २-नगाड़ा।
तबलची पुं० (हि) तबला बजाने वाला।
तबला पु० (हि) ताल देने का एक चमड़ा मढ़ा प्रसिद्ध बाजा।
तबलिया पुं० दे० 'तबलची'।
तबलीग स्त्री० (अ) १-धर्म प्रचार। २-एक धर्म से दूसरे धर्म में जाना।
तबादला पुं० (अ) १-परिवर्त्तन। २-अन्तरण।
तबाशीर पुं० (हि) तबखीर। वंशलोचन।
तबाह वि० (फा) नष्ट। बरबाद।
तबाही स्त्री० (फा) नाश। बरबादी।
तबीअत स्त्री० (अ) १-चित्त। मन। जी। २-बुद्धि। समझ। ज्ञान।
तबीअतदार वि० (अ+फा) १-समझदार। २-भावुक
तबीब पुं० (अ) चिकित्सक।
तबीयत स्त्री० दे० 'तबीअत'।
तबेला पुं० (अ० तवेल) अस्तबल।
तब्बर पुं० १-दे० 'तबर'। २-दे० 'टाबर'।
तभी अव्य (हि) १-उसी समय। २-इसी कारण।
तमंचा पुं० (फा) १-पिस्तौल। २-वह लम्बा खड़ा पत्थर जो दरवाजे के बगल में लगाया जाता है।
तम पुं० (सं) १-अन्धकार। अंधेरा। २-पाप। ३-राहु। ४-क्रोध। ५-अज्ञान। ६-कालिख। ७-नरक। ८-मोह। ९-दे० 'तमोगुण'। प्रत्य० एक प्रत्यय जो किसी विशेषण के अन्त में लगने से 'सबसे बढ़कर' का अर्थ बताता है। जैसे-श्रेष्ठतम।
तमक स्त्री० (हि) १-आवेश। उद्वेग। तेजी। तीव्रता २-क्रोध।
तमकना क्रि० (हि) १-आवेश में आना। २-रुष्ट होना। ३-क्रोध का आधिक्य दिखलाना।
तमकाना क्रि० (हि) १-किसी को तमकने में प्रवृत्त करना। २-क्रोध के आवेश में (हाथ आदि) उठाना।
तमका पुं० (हि) आवेश। जोश।
तमगा पुं० (तु०) पदक।
तमचर पुं० (हि) १-निशाचर। २-उल्लू।
तमचुर, तमचूर, तमचोर पुं० (हि) कुक्कुट। मुर्गा।
तमच्छन्न वि० दे० 'तमाच्छन्न'।
तमतमाना क्रि० (हि) क्रोध या धूप से चेहरे का लाल हो जाना।
तमन्ना स्त्री० (अ) इच्छा। कामना।
तमयी स्त्री० (सं) रात।
तमस पुं० (सं) १-अन्धकार। २-पाप।
तमसा स्त्री० (सं) टौंस नामक नदी।
तमस्विनी स्त्री० (सं) अँधेरी रात।
तमस्वी वि० (सं) अन्धकारपूर्ण।
तमस्सुक पुं० (अ) दस्तावेज। ऋणपत्र।
तमहाया वि० (हि) १-अँधेरा। २-तमोगुण से युक्त
तमा [पुं० सं० तमस्] राहु। स्त्री० रात्रि। रात। स्त्री० (हि) लोभ। लालच।
तमाई स्त्री० (हि) अन्धकार। अंधेरा।
तमाकू पुं०[पुर्त० टुबैको] १-तमाखू। २-सुरती।
तमाखू पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक प्रकार से हलके नशे के लिए प्रयोग में आते हैं। सुरती। २-इन पत्तों से बना एक विशेष पदार्थ जिसे चिलम में भरकर धूम्रपान करते है।
तमाचा पुं० (फा) हथेली और उँगलियों से गाल पर किया हुआ प्रहार। थप्पड़।
तमाच्छन्न, तमाच्छादित वि०(सं) अन्धकार से घिरा या भरा हुआ।
तमादी स्त्री० (अ) १-अवधि बीत जाना। २-मियाद खतम हो जाना। ३-उस अवधि का समाप्त हो जाना जिसमें कोई कानूनी कार्यवाही हो सकती हो
तमाम वि० (अ) १-सम्पूर्ण। पूरा। २-समाप्त। खतम।
तमारि पुं० (हि) सूर्य। वि० अन्धकार दूर करने वाला। स्त्री० १-दे० 'तँवार'। २-दे० 'तमादी'।
तमाल पुं० (सं) १-सदाबहार वृक्ष। २-एक तरह की तलवार। ३-तेजपत्ता। ४-तमाखू।
तमाशबीन पुं० (अ+फा) १-तमाशा देखने वाला। २-ऐयाश।
तमाशा पुं० (फा) १-मनोरञ्जक दृश्य। २-विलक्षण कार्य।
तमाशाई पुं० (अ) तमाशा देखने वाला।
तमासा पुं० दे० 'तमाशा'।
तमिस्र पुं० (सं) १-अँधेरा। २-क्रोध। वि० (स्त्री० तमिस्रा।) अन्धकारपूर्ण।
तमिस्रा स्त्री० (सं) अँधेरी रात।
तमी स्त्री० (सं) रात। पुं० १-निशाचर। २-राक्षस।
तमीचर पुं० (सं) १-निशाचर। राक्षस।
तमीज स्त्री० (अ) १-भले और बुरे की परख करने की शक्ति। विवेक। २-पहचान। ३-ज्ञान। ४-

अन्त ।

तमोनाथ, तमोपति, तमोश पुं० (सं) चन्द्रमा।

तम पुं० दे० 'तम'।

तमोगुण पुं० (सं) प्रकृति के तीन गुणों में से अन्तिम

तमोगुणी वि० (सं) अधम या निकृष्ट वृत्ति वाला।

तमोघ्न पुं० (सं) १-अज्ञान या अन्धकार को हरने वाला। २-सूर्य। ३-चन्द्रमा। ४-विष्णु। ५-शिव वि० जिससे अँधेरा दूर हो।

तमोज्योति, तमोभिद्, तमोमणि पुं० (सं) जुगनू।

तमोमय वि० (सं) १-तमोगुण से भरा हुआ। २-अन्धकार से परिपूर्ण। ३-अज्ञानी। ४-क्रोधी।

तमोर पुं० (हि) ताम्बूल। पान।

तमोरी पुं० दे० 'तमोली'।

तमोल पुं०(हि) पान का बीड़ा।

तमोली पुं० (हि) (स्त्री० तमोलिन) सादे पान या बीड़े लगे पान बेचने वाला। पनवाड़ी।

तमोहर पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-अग्नि। ४-ज्ञान। वि० अज्ञान या अन्धकार को दूर करने वाला।

तय वि० (अ) १-पूरा किया हुआ। समाप्त। २-निश्चित ठहराया हुआ। ३-निर्णीत। निपटाया हुआ।

तयना क्रि० (हि) १-तपना बहुत गरम होना। २-दुखी होना। सन्तप्त होना।

तयार वि० दे० 'तैयार'।

तयारी स्त्री० दे० 'तैयारी'।

तरंग स्त्री० (सं) १-पानी की हिलोर। लहर। २-प्राकृतिक अथवा कृत्रिम कारण के द्वारा उत्पन्न होने वाली किसी वस्तु की लहर। (वेव)। ३-सङ्गीत के स्वरों का उतार-चढ़ाव। स्वरलहरी। ४-चित्त की उमङ्ग। ५-घोड़े की फलाँग। ६-सोने के तारों को उमेठ कर बनाई हुई हाथ की चूड़ी।

तरंग-दैर्घ्य पुं० (सं) आकाश में प्रसारित भिन्न-भिन्न विद्युत-चुम्बकीय लहरों का विस्तार या लम्बाई (वेवलेंग्थ)।

तरंगवती स्त्री० (सं) नदी।

तरंगायित वि० (सं) १-तरङ्गयुक्त। जिसमें तरङ्गें उठती हों। २-तरङ्गों के समान। लहरदार।

तरंगिणी स्त्री० (सं) नदी। वि० जिसमें तरंगें हों।

तरंगिणी-नाथ पुं० (सं) समुद्र।

तरंगित वि० (सं) १-जिसमें तरंगें उठ रही हों। २-ऊपर-नीचे उठता हुआ।

तरंगी वि० (सं) (स्त्री० तरङ्गिणी) १-जिसमें लहरें या तरंगें हों। २-मनमौजी।

तर वि० (फा) १-गीला। २-शीतल। ३-हरा। ४-धनवान। क्रि० वि० तले। नीचे। प्रत्य० (सं) एक प्रत्यय जो गुणाधिक्य प्रकट करने के लिए लगाया जाता है जैसे—स्थूलतर।

तरई स्त्री० (हि) तारा। नछत्र।

तरक पुं० (हि) १-सोच-विचार। उधेड़बुन। २-उक्ति। तर्क। ३-अड़चन। बाधा। ४-व्यतिक्रम। स्त्री० १-दे० 'तड़क'। २-पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरम्भ का शब्द सूचित करने के लिए लिखा जाने वाला शब्द

तरकना क्रि० (हि) १-तड़कना। २-तर्क करना। ३-मन में सोच-विचार करना।

तरकश पुं० (फा) तूणीर। तीर रखने का चोंगा।

तरकश-बन्द पुं० (फा) तरकश रखने वाला व्यक्ति।

तरकस पुं० दे० 'तरकश'।

तरकसी स्त्री० (हि) छोटा तरकश।

तरका पुं०[अ० तर्क] उत्तराधिकारी को मिलने वाली सम्पत्ति।

तरकारी स्त्री० (फा) १-भाजी। सब्जी। २-खाने के लिए पकाया हुआ फल-फूल, पत्ता आदि। शाक।

तरकी स्त्री० (हि) कान का एक तरह का गहना।

तरकीब स्त्री० (अ) १-मिलावट। २-उपाय। ३-ढङ्ग। तरीका।

तरकुला पुं० (हि) तरकी नामक कान का गहना।

तरकुली स्त्री० (हि) तरकी नामक कान का गहना।

तरक्की स्त्री० (अ) १-वृद्धि। बढ़ती। २-उन्नति।

तरखा पुं० (हि) १-नदी या जल का तेज बहाव। २-तृष्णा।

तरखान पुं० (हि) बढ़ई।

तरघल क्रि० वि० (हि) नीचे की ओर।

तरछाना क्रि० (हि) १-तिरछी निगाह से देखना। २-आँख से इशारा करना।

तरज पुं० दे० 'तर्ज'।

तरजन पुं० दे० 'तर्जन'।

तरजना क्रि० (हि) डाँटना। डपटना।

तरजनी स्त्री० (हि) १-अँगूठे के पास वाली उँगली। २-भय। डर।

तरजीला वि० (हि) १-क्रोधपूर्ण। गुस्सैल। २-उग्र।

तरजीह स्त्री० (अ) १-प्रधानता। २-किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं से अच्छा समझना।

तरजुई स्त्री० (हि) छोटी तराजू।

तरजुमा पुं० (अ) भाषान्तर। अनुवाद।

तरजौहाँ वि० दे० 'तरजीला'।

तरण पुं० (सं) १-नदी आदि पार करने की क्रिया। तरना। २-तैरना। ३-पार जाना।

तरणि पुं० (सं) १-नाव। नौका। २-सूर्य। ३-किरण।

तरणिजा स्त्री० (सं) १-यमुना। २-[illegible]

तरणि-तनूजा स्त्री० (सं) यमुना नदी।

तरणी स्त्री० (स) नौका। नाव।
तरतराना क्रि० (हि) १-तड़-तड़ाना। तोड़ने के समान शब्द करना। २-घी आदि में बिलकुल तर करना।
तरतीब स्त्री० (अ) वस्तुओं का ठीक स्थानों पर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।
तरदीद स्त्री० (अ) १-रद्द करना। खण्डन। २-प्रत्युत्तर।
तरद्दद पुं० (अ) १-चिन्ता। सोच। २-अन्देशा। खटका।
तरन पुं० दे० 'तरण'। २-दे० 'तरौना'। ३-नाव ४-बेड़ा। ५-उद्धार। निस्तार।
तरन-तारन पुं० (हि) १-उद्धार। निस्तार। २-भव-सागर से पार करने वाला। (ईश्वर)।
तरना क्रि० (हि) १-तैरना। २-नाव से या तैरकर पार करना। ३-तलना। ४-मुक्त होना (भव-सागर से)।
तरनि स्त्री० (हि) १-तरणी। २-तलना। पुं० सूर्य।
तरनिजा स्त्री० (हि) तरणिजा। यमुना।
तरनी स्त्री० (हि) १-नाव। नौका। २-दे० 'तन्नी'। पुं० सूर्य।
तरन्नि स्त्री० (हि) तरणि।
तरप स्त्री० (हि) तड़प।
तरपट पुं० (?) भेद। अन्तर। फरक।
तरपना क्रि० (हि) १-तड़पाना। २-तर्पण करना।
तर-पर क्रि० वि० (हि) १-नीचे-ऊपर। २-एक के पीछे दूसरा।
तरपरिया वि० (हि) १-नीचे-ऊपर का। २-क्रम में पहले और पीछे का।
तरपीला वि० (हि) चमकदार। भड़कीला।
तरफ स्त्री० (अ) १-ओर। २-बगल। ३-पक्ष।
तरफदार वि० (अ+फा) समर्थक। हिमायती।
तरफदारी स्त्री० (अ+फा) पक्षपात।
तरफराना क्रि०(हि) तड़फड़ाना।
तर-बतर वि० (फा) भीगा हुआ। आर्द्र।
तरबूज पुं० (फा) कुम्हड़े की तरह का एक गोल फल।
तरबूजा पुं० (?) ताजा फल।
तरबूजिया वि० (हि) तरबूज के छिलके के रंग का। गहरा हरा।
तरबोना क्रि० (हि) तर करना। भिगोना।
तरभर स्त्री० (हि) १-तड़ातड़ का शब्द। २-खलबली
तरमीम स्त्री० (अ) संशोधन। हेरफेर।
तरराना क्रि० (हि) ऐंठना। मरोड़ना।
तरल वि० (सं) १-चंचल। २-बहने वाला। द्रव। ३-क्षणभंगुर। ४-चमकीला। ५-कोमल।
तरलाई स्त्री० (हि) तरलता। द्रवत्व।
तरलायित वि० (सं) काँपता हुआ। हिलता हुआ।
तरलित वि० (सं) १-अस्थिर। २-प्रवाहशील।
तरवन पुं० (हि) एक प्रकार का कान का गहना।
तरवर पुं० दे० 'तरुवर'।
तरवरिया वि० (हि) तलवार चलाने वाला।
तरवरिहा वि० (हि) तरवरिया।
तरवार स्त्री० (हि) तलवार। पुं० तरुवर।
तरवारि स्त्री० (सं) तलवार।
तरस पुं० (हि) दया। रहम।
तरसना क्रि० (हि) १-किसी पदार्थ के अभाव का दुःख सहना। २-तराशना। काटना।
तरसाना क्रि० (हि) १-अभाव का दुःख देना। २-व्यर्थ ललचाना।
तरसौंहा वि० (हि) तरसने वाला।
तरह स्त्री० (अ) १-प्रकार। भाँति। २-ढँग। ३-बना-वट। ४-स्थिति।
तरहदार वि० (फा) १-सजीला। २-शौकीन।
तरहर, तरहारि, तरहुँड़ क्रि० वि० (हि) नीचे। तले
तरहेल वि० (हि) १-पराजित। २-वशीभूत।
तराई स्त्री० (हि) १-पहाड़ के नीचे का वह मैदान जहाँ तरी रहती है। २-तारा।
तराजू पुं० (फा) २-तोलने का उपकरण। तुला। २-दे० 'काँटा'।
तराटक पुं० दे० 'त्राटिका'।
तराना पुं० (फा) १-एक तरह का चलता गाना। २-गीत। गान। क्रि० (हि) १-तैरने में प्रवृत्त करना। १-उद्धार करना।
तराप स्त्री० (हि) बन्दूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द
तरापा पुं० (हि) हाहाकार। कुहराम।
तराबोर वि० (फा) पूर्णतया भीगा हुआ। तरबतर।
तराभर स्त्री० (हि) १-जल्दी-जल्दी में काम करना। २-धूम। ३-'तड़ातड़' की आवाज।
तरायला वि० (हि) तरल। २-चपल। चंचल।
तरारा पुं०(हि) १-उछाल। छलाँग। लगातार गिरने वाली जल की धार।
तरावट स्त्री० (हि) १-गीलापन। नमी। २-शीतलता ठंडक। ३-शरीर की गरमी शांत करने वाली चीजें ४-स्निग्ध भोजन।
तराश स्त्री० (फा) १-तराशने या काटने का ढंग या भाव। २-बनावट।
तराशना क्रि० (फा) काटना। कतरना।
तरास पुं० दे० 'त्रास'।
तरासना क्रि० (हि) १-जस्त करना। २-तराशना।
तराही क्रि० वि० (हि) नीचे। तले।
तरि स्त्री० (सं) १-नौका। २-कपड़े का किनारा। दामन।
तरिका स्त्री० (हि) बिजली। तड़ित। स्त्री० १-नाव। २-कान का एक गहना।

तरिणी स्त्री० (सं) तरणी।
तरिता स्त्री० दे० 'तड़ित'।
तरिया पु० (हि) तिरने वाला।
तरियाना क्रि० (हि) १-नीचे कर देना। २-टाँकना। ३-तह में जमना। ४-चेर या गोला करना।
तरिवन पु० (हि) १-तरकी नामक कान का गहना। २-कर्णफूल।
तरिवर पु० दे० 'तरुवर'।
तरिहँत क्रि० वि० (हि) नीचे। तले।
तरी स्त्री० (सं) १-नाव। नौका। २-गदा। ३-धुआँ धूम। स्त्री० (हि) १-कछार। २-तराई। ३-तरवन स्त्री० (फा० तर) १-आर्द्रता। नमी। २-शीतलता। ठण्डक।
तरीका पु० (अ) १-रीति। ढङ्ग। २-व्यवहार। चाल ३-युक्ति। उपाय।
तरौनि स्त्री० (हि) तराई। तलहटी।
तरु वि० (सं) वृक्ष। पेड़।
तरुण वि० (सं) (स्त्री० तरुणी) १-सोलह वर्ष से ऊपर की उमर वाला। युवा। जवान। २-नया। नवीन
तरुणाई स्त्री० (हि) युवावस्था। जवानी।
तरुणाना क्रि० (हि) तरुण होना। युवावस्था में प्रवेश करना।
तरुणिमा स्त्री० (सं) यौवन। जवानी।
तरुणी स्त्री० (सं) युवती। जवान स्त्री।
तरुन पुं० दे० 'तरुण'।
तरुनई, तरुनाई स्त्री० (हि) तरुणाई। युवावस्था।
तरुनापा पुं० (हि) युवावस्था।
तरुनि स्त्री० दे० 'तरुणी'।
तरुवाँही स्त्री० (हि) शाखा। डाल।
तरु-रोपण पुं० (सं) १-वृक्ष लगाने का काम। २-वृक्ष लगाने, पढ़ाने और उनकी रक्षा करने की कला सिखाने वाली विद्या। (आरबोरी कल्चर)।
तरुवर पु० (सं) श्रेष्ठ या बड़ा वृक्ष।
तरेंदा पुं० (हि) १-पानी में तैरता हुआ काठ। बेड़ा २-पानी पर तिरने वाली वस्तु जिसकी सहायता से पार हो सके।
तरे क्रि० वि० (हि) तले। नीचे।
तरेटी स्त्री० (हि) तलहटी। तराई।
तरेरना क्रि० (हि) क्रोध या असन्तोष की दृष्टि से देखना। आँख के इशारे से डाँट बताना।
तरेरा पुं० (हि) १-क्रोधपूर्ण दृष्टि। २-लगातार डाली जाने वाली पानी की धार। ३-जल की लहरों का आघात। थपेड़ा।
तरैया स्त्री० (हि) तारा। नक्षत्र। वि० १-तरने वाला। २-तारने वाला।
तरोई स्त्री० (हि) तुरई नामक एक तरकारी।
तरोवर, तरोवर पुं० दे० 'तरुवर'।
तरौंछ स्त्री० दे० 'तलछट'।
तरौटा पुं० (हि) आटा पीसने की चक्की के नीचे वाला पाट या पल्ला।
तरौस पुं० (हि) तट। तीर। किनारा।
तरौना पु० (हि) तरकी नामक कान में पहनने का गहना।
तर्क पु० (सं) १-हेतुपूर्ण युक्ति। दलील। २-चमत्कारपूर्ण युक्ति। ३-व्यंग। ताना। पुं० (फा) छोड़ना। त्याग।
तर्कक पुं० (सं) १-तर्क करने वाला। २-याचक। मङ्गिता।
तर्कण पु० (सं) तर्क या बहस करना।
तर्कणा स्त्री० (सं) १-विवेचना। विचार। २-युक्ति दलील।
तर्कना स्त्री० दे० 'तर्कणा'। क्रि० (हि) तर्क या बहस करना।
तर्क-वितर्क पु० (सं) १-इस प्रकार सोचना कि यह होगा या नहीं। ऊहापोह। विवेचना। २-वाद-विवाद।
तर्क-विद्या स्त्री० (सं) १-वह विद्या जिसमें विवेचना [illegible]
नियम, सिद्धान्त आदि निरूपित हों। २-न्याय-शास्त्र।
तर्क-सगत वि० (सं) १-जो तर्क के सिद्धान्तों के अनुसार ठीक हो। (लॉजिकल)। २-जो युक्ति या बुद्धि के अनुसार ठीक मालूम दे। (रीजनेबुल)।
तर्क-सिद्ध क्रि० (सं) जो तर्क की दृष्टि से बिलकुल ठीक हो।
तर्कसी स्त्री० दे० 'तरकसी'।
तर्काभास पुं० (सं) ऐसा तर्क जो वस्तुतः ठीक न हो या यों ही देखने पर ठीक जान पड़े।
तर्की पुं० (सं) [स्त्री० तर्किनी] तर्क करने वाला। मीमांसक।
तर्क्य वि० (सं) जिस पर कुछ सोच विचार करना आवश्यक हो। विचारणीय। चिन्तनीय।
तर्ज पुं० (अ) १-रीति। शैली। ढग। २-बनावट।
तर्जन पु० (हि) १-भय प्रदर्शन। धमकाना। २-क्रोध। ३-तिरस्कार। फटकार।
तर्जना क्रि० (हि) १-धमकाना। २-डाँटना। डपटना
तर्जनी स्त्री० [सं० तर्जनी] अंगूठे के पास की उँगली
तर्जनी-मुद्रा स्त्री० (सं) तन्त्र के अनुसार एक मुद्रा।
तर्जुमा पुं० (अ) भाषान्तर। उल्था। अनुवाद।
तर्पण पु०(सं) १-तृप्त करने की क्रिया। २-हिन्दुओं में होने वाले कर्मकाण्ड का वह कृत्य जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तृप्त करने के लिए उनके

तरणी स्त्री० (स) नौका। नाव।
तरतराना क्रि० (हि) १-तड़-तड़ाना। तोड़ने के समान शब्द करना। २-घी आदि में बिलकुल तर करना।
तरतीब स्त्री० (प्र) वस्तुओं का ठीक स्थानों पर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।
तरदीद स्त्री० (प्र) १-रद्द करना। खण्डन। २-प्रत्युत्तर।
तरद्दुद पुं० (अ) १-चिन्ता। सोच। २-अन्देशा। खटका।
तरन पुं० दे० 'तरण'। २-दे० 'तरौना'। ३-नाव ४-बेड़ा। ५-उद्धार। निस्तार।
तरन-तारन पुं० (हि) १-उद्धार। निस्तार। २-भव-सागर से पार करने वाला। (ईश्वर)।
तरना क्रि० (हि) १-तैरना। २-नाव से या तैरकर पार करना। ३-तलना। ४-मुक्त होना (भव-सागर से)।
तरनि स्त्री० (हि) १-तरणी। २-तलना। पुं० सूर्य।
तरनिजा स्त्री० (हि) तरणिजा। यमुना।
तरनी स्त्री० (हि) १-नाव। नौका। २-दे० 'तन्नी'। पुं० सूर्य।
तरन्नि स्त्री० (हि) तरणि।
तरप स्त्री० (हि) तड़प।
तरपट पुं० (?) भेद। अन्तर। फरक।
तरपना क्रि० (हि) १-तड़पाना। २-तर्पण करना।
तर-पर क्रि० वि० (हि) १-नीचे-ऊपर। २-एक के पीछे दूसरा।
तरपरिया वि० (हि) १-नीचे-ऊपर का। २-क्रम में पहले और पीछे का।
तरपोला वि० (हि) चमकदार। भड़कीला।
तरफ स्त्री० (अ) १-ओर। २-बगल। ३-पक्ष।
तरफदार वि० (अ+फा) समर्थक। हिमायती।
तरफदारी स्त्री० (अ+फा) पक्षपात।
तरफराना क्रि०(हि) तड़फड़ाना।
तर-बतर वि० (फा) भीगा हुआ। आर्द्र।
तरबूज पुं० (फा) कुम्हड़े की तरह का एक गोल फल।
तरबूजा पुं० (?) ताजा फल।
तरबूजिया वि० (हि) तरबूज के छिलके के रंग का। गहरा हरा।
तरबोना क्रि० (हि) तर करना। भिगोना।
तरभर स्त्री० (हि) १-तड़ातड़ का शब्द। २-खलबली
तरमीम स्त्री० (अ) संशोधन। हेरफेर।
तरराना क्रि० (हि) ऐंठना। मरोड़ना।
तरल वि० (सं) १-चंचल। २-बहने वाला। द्रव। ३-क्षणभंगुर। ४-चमकीला। ५-कोमल।
तरलाई स्त्री० (हि) तरलता। द्रवत्व।
तरलायित वि० (सं) काँपता हुआ। हिलता हुआ।
तरलित वि० (सं) १-अस्थिर। २-प्रवाहशील।
तरवन पुं० (हि) एक प्रकार का कान का गहना।
तरवर पुं० दे० 'तरुवर'।
तरवरिया वि० (हि) तलवार चलाने वाला।
तरवरिहा वि० (हि) तरवरिया।
तरवार स्त्री० (हि) तलवार। पुं० तरुवर।
तरवारि स्त्री० (सं) तलवार।
तरस पुं० (हि) दया। रहम।
तरसना क्रि० (हि) १-किसी पदार्थ के अभाव का दुःख सहना। २-तराशना। काटना।
तरसाना क्रि० (हि) १-अभाव का दुःख देना। २-व्यर्थ ललचाना।
तरसौंहाँ वि० (हि) तरसने वाला।
तरह स्त्री० (अ) १-प्रकार। भाँति। २-ढँग। ३-बना-वट। ४-स्थिति।
तरहदार वि० (फा) १-सजीला। २-शौकीन।
तरहर, तरहरि, तरहुँड़ क्रि० वि० (हि) नीचे। तले
तरहेल वि० (हि) १-पराजित। २-वशीभूत।
तराई स्त्री० (हि) १-पहाड़ के नीचे का वह मैदान जहाँ तरी रहती है। २-तारा।
तराजू पुं० (फा) १-तोलने का उपकरण। तुला। २-दे० 'काँटा'।
तराटक पुं० दे० 'त्राटिका'।
तराना पुं० (फा) १-एक तरह का चलता गाना। २-गीत। गान। क्रि० (हि) १-तैरने में प्रवृत्त करना। १-उद्धार करना।
तराप स्त्री० (हि) बन्दूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द
तरापा पुं० (हि) हाहाकार। कुहराम।
तराबोर वि० (फा) पूर्णतया भीगा हुआ। तरबतर।
तराभर स्त्री० (हि) १-जल्दी-जल्दी में काम करना। २-धूम। ३-'तड़ातड़' की आवाज।
तरायला वि० (हि) तरल। २-चपल। चंचल।
तरारा पुं०(हि) १-उछाल। छलाँग। लगातार गिरने वाली जल की धार।
तरावट स्त्री० (हि) १-गीलापन। नमी। २-शीतलता ठंडक। ३-शरीर की गरमी शांत करने वाली चीजें ४-स्निग्ध भोजन।
तराश स्त्री० (फा) १-तराशने या काटने का ढंग या भाव। २-बनावट।
तराशना क्रि० (फा) काटना। कतरना।
तरास पुं० दे० 'त्रास'।
तरासना क्रि० (हि) १-त्रस्त करना। २-तराशना।
तराहीं क्रि० वि० (हि) नीचे। तले।
तरि स्त्री० (सं) १-नौका। २-कपड़े का किनारा। दामन।
तरिका स्त्री० (हि) बिजली। तड़ित। स्त्री० १-नाव। २-कान का एक गहना।

तरिणी स्त्री० (सं) तरणी
तरिता स्त्री० दे० 'तड़ित'।
तरिया पु० (हि) तिरने वाला।
तरियाना क्रि० (हि) १-नीचे कर देना। २-ढाँकना। ३-तह में जमना। ४-तर या गीला करना।
तरिवन पु० (हि) १-तरकी नामक कान का गहना। २-कर्णफूल।
तरिवर पु० दे० 'तरुवर'।
तरिहँत क्रि० वि० (हि) नीचे। तले।
तरी स्त्री० (सं) १-नाव। नौका। २-गदा। ३-धुआँ धूम। स्त्री० (हि) १-कछार। २-तराई। ३-तरबन स्त्री० (फा० तर) १-आर्द्रता। नमी। २-शीतलता। ठण्डक।
तरीका पु० (अ) १-रीति। ढंग। २-व्यवहार। चाल ३-युक्ति। उपाय।
तरौनि स्त्री० (हि) तराई। तलहटी।
तरु पु० (सं) वृक्ष। पेड़।
तरुण वि० (सं) (स्त्री० तरुणी) १-सोलह वर्ष से ऊपर की उमर वाला। युवा। जवान। २-नया। नवीन
तरुणाई स्त्री० (हि) युवावस्था। जवानी।
तरुणाना क्रि० (हि) तरुण होना। युवावस्था में प्रवेश करना।
तरुणिमा स्त्री० (सं) यौवन। जवानी।
तरुणी स्त्री० (सं) युवती। जवान स्त्री।
तरुन पु० दे० 'तरुण'।
तरुनई, तरुनाई स्त्री० (हि) तरुणाई। युवावस्था।
तरुनापा पु० (हि) युवावस्था।
तरुनि स्त्री० दे० 'तरुणी'।
तरुवाँही स्त्री० (हि) शाखा। डाल।
तरु-पोषण पु० (सं) १-वृक्ष लगाने का काम। २-वृक्ष लगाने, बढ़ाने और उनकी रक्षा करने की कला सिखाने वाली विद्या। (आरबोरी कल्चर)।
तरुवर पु० (सं) श्रेष्ठ या बड़ा वृक्ष।
तरेंदा पु० (हि) १-पानी में तैरता हुआ काठ। बेड़ा २-पानी पर तैरने वाली वस्तु जिसकी सहायता से पार हो सके।
तरे क्रि० वि० (हि) तले। नीचे।
तरेटी स्त्री० (हि) तलहटी। तराई।
तरेरना क्रि० (हि) क्रोध या असन्तोष की दृष्टि से

का आघात। थपेड़ा।
तरैया स्त्री० (हि) तारा। नखत्र। वि० १-तरने वाला। २-तारने वाला।
तरोई स्त्री० (हि) तुरई नामक एक तरकारी।
तरोवर, तरोवर पु० दे० 'तरुवर'।

तरौंछ स्त्री० दे० 'तलछट'।
तरौटा पु० (हि) आटा पीसने की चक्की के नीचे वाला पाट या पल्ला।
तरौंत पु० (हि) तट। तीर। किनारा।
तरौना पु० (हि) तरकी नामक कान में पहनने का गहना।
तर्क पु० (सं) १-हेतुपूर्ण युक्ति। दलील। २-चमत्कारपूर्ण युक्ति। ३-व्यंग। ताना। पु० (अ) छोड़ना। त्याग।
तर्कक पु० (सं) १-तर्क करने वाला। २-याचक। मंगिता।
तर्कण पु० (सं) तर्क या बहस करना।
तर्कणा स्त्री० (सं) १-विवेचना। विचार। २-युक्ति दलील।
तर्कना स्त्री० दे० 'तर्कणा'। क्रि० (हि) तर्क या बहस करना।
तर्क-वितर्क पु० (सं) १-इस प्रकार सोचना कि यह होगा या नहीं। ऊहापोह। विवेचना। २-वाद-विवाद।
तर्क-विद्या स्त्री० (सं) १-वह विद्या जिसमें विवेचना करने के नियम आदि निरूपित हों। २-न्याय-शास्त्र
तर्कश पु० (फा) तीर रखने का चोंगा। तूणीर।
तर्क-शास्त्र पु० (सं) १-वह शास्त्र जिसमें तर्क के नियम, सिद्धान्त आदि निरूपित हों। २-न्याय-शास्त्र।
तर्क-संगत वि० (सं) १-जो तर्क के सिद्धान्तों के अनुसार ठीक हो। (लॉजिकल)। २-जो युक्ति या बुद्धि के अनुसार ठीक मालूम दे। (रीजनेबुल)।
तर्क-सिद्ध वि० (सं) जो तर्क की दृष्टि से बिलकुल ठीक हो।
तर्कसी स्त्री० दे० 'तरकसी'।
तर्काभास पु० (सं) ऐसा तर्क जो वस्तुतः ठीक न हो या यों ही देखने पर ठीक जान पड़े।
तर्की पु० (सं) [स्त्री० तर्किनी] तर्क करने वाला। मीमांसक।
तर्क्य वि० (सं) जिस पर कुछ सोच विचार करना आवश्यक हो। विचारणीय। चिन्तनीय।
तर्ज़ पु० (अ) १-रीति। शैली। ढंग। २-बनावट।
तर्जन पु० (हि) १-भय प्रदर्शन। धमकाना। २-

तर्जनी-मुद्रा स्त्री० (सं) तन्त्र के अनुसार एक मुद्रा।
तर्जुमा पु० (अ) भाषान्तर। उल्था। अनुवाद।
तर्पण पु० (सं) १-तृप्त करने की क्रिया। २-हिन्दुओं में होने वाले कर्मकाण्ड का वह कृत्य जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तृप्त करने के लिए उनके

नाम से जल दिया जाता है।
तर्पित वि० (सं) तृप्त या सन्तुष्ट किया हुआ।
तर्रौना पुं० दे० 'तरौना'।
तर्ष पुं० दे० तृष्णा।
तल पुं०(सं) १-नीचे का भाग। पेंदा। २-वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो। ३-जलाशय के नीचे की भूमि। ४-पैर का तलवा। ५-हथेली। ६-किसी वस्तु का ऊपर या बाहरी फैलाव। ७-सात पातालों में से प्रथम।
तलक अव्य० (हि) तक। पर्यन्त।
तल-कर पुं० (स) वह कर जो तालाब में होने वाली वस्तुओं पर लगता है।
तल-गृह पुं० (सं) तहखाना।
तल-घर पुं० (हि) जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। तहखाना।
तल-छट स्त्री० (हि) पानी या किसी तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल। गाद। तलौंछ।
तलतल क्रि० वि० दे० 'तिल-तिल'।
तलना क्रि० (हि) कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना।
तलप पुं० दे० 'तल्प'।
तल-पट पुं०(सं) आय और व्यय का संक्षिप्त विवरण बताने वाला पट या फलक। तुला-पत्र। (बैलेंस-शीट)।
तल-पद पुं० (सं) १-असल चीज। मूल। जड़। २-मूलधन। पूँजी।
तल-प्रहार पुं० (सं) थप्पड़। तमाचा।
तलफ वि० (अ) नष्ट। बरबाद।
तलफना क्रि० दे० 'तड़पना'।
तलब स्त्री० (अ) १-इच्छा। चाह। २-खोज। तलाश ३-आवश्यकता। ४-बुलावा। ५-वेतन।
तलबगार वि० (अ) माँगने या चाहने वाला।
तलबाना पुं० (फा) वह खर्चा जो गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में जमा किया जाता है।
तलबी स्त्री० (अ) १-माँग। २-बुलाहट।
तलबेली स्त्री० (हि) अत्यधिक उत्कंठा। छटपटी।
तलमलाना क्रि० दे० 'तिलमिलाना'।
तलवा पुं० (हि) पैर के नीचे का भाग जो खड़े होने पर जमीन पर टिकता है। पाद-तल।
तलवार स्त्री० (हि) धारदार लम्बा हथियार जिसके आघात से चीजें काटी जाती हैं। खंग। असि।
तलवारिया पुं० (हि) तलवार चलाने में दक्ष।
तलवारी वि० (हि) तलवार सम्बन्धी। तलवार का।
तलवाही-पोत स्त्री० (सं) समुद्र की सतह या तल पर चलने वाला पोत या जहाज। (सरफेस क्राफ्ट)।
तलहटी स्त्री० (हि) पहाड़ के नीचे की भूमि।
तला पुं० (हि) १-नीचे का भाग। पेंदा। २-जूते के नीचे का चमड़ा।
तलाई स्त्री० (हि) छोटा ताल। तलैया।
तलाक पुं० (अ) विधि के अनुसार पति-पत्नी का सम्बन्ध-त्याग।
तलाची स्त्री० (सं) चटाई।
तलातल पुं० (स) सात पातालों में से एक।
तलाबेली, तलामली स्त्री० दे० 'तलबेली'।
तलाव पुं० (हि) ताल। तालाब।
तलाश स्त्री० (तु०) १-खोज। २-आवश्यकता। चाह
तलाशना क्रि० (हि) खोजना। ढूंढना।
तलाशी स्त्री० (फा) छिपाई हुई वस्तु के लिए खोज।
तलिच्छद पुं० (सं) पलंगपोश।
तलित वि० (सं) तला हुआ।
तली स्त्री०(हि)१-पेंदी। तलछट। २-हाथ की हथेली। ३-तलवार।
तलीय वि० (सं) १-तल या पेंदे से सम्बन्ध रखने वाला। २-ऊपर वाले अंश निकाल लेने, हटा देने या बाँट देने के पश्चात् नीचे बच रहने वाला। (रेसीडुअरी)।
तलीय-अधिकार पुं० (सं) वह स्वत्व या अधिकार जो प्रांतीय शासनों को बाँट देने के उपरांत सुरक्षा, कार्य संचालन के सुभीते आदि की दृष्टि से केंद्रीय-शासन अपने हाथ में रखता है। (रेसीडुअरी-पावर)।
तलुआ पुं० दे० 'तलवा'।
तले क्रि० वि० (हि) ऊपर का उलटा। नीचे।
तलेटी स्त्री० (हि) १-पेंदी। २-तलहटी।
तलैया स्त्री० (हि) छोटा ताल।
तलौंछ स्त्री० (हि) नीचे जमी हुई मैल। तलछट।
तल्ख वि० (फा) १-कड़ुवा। २-स्वाद में बुरा।
तल्प पुं० (सं) १-शय्या। सेज। २-अटारी। अट्टालिका।
तल्पक पुं० (सं) बिछौना करने वाला या शैय्या सजाने वाला नौकर।
तल्पकीट पुं० (सं) खटमल।
तल्ला पुं० (हि) १-जूते के नीचे का चमड़ा। २-मंजिल। ३-कपड़े के नीचे का अस्तर। भितल्ला। निकटता।
तल्लीन वि० (सं) किसी विषय या काम में लीन। निमग्न। तन्मय।
तल्लीनता स्त्री० (सं) तन्मयता। एकाग्रता।
तव सर्व० (सं) तुम्हारा।
तवक्षीर पुं० (स) १-तवाखीर। तीखुर। २-वंशलोचन।
तवज्जह स्त्री० (अ) १-ध्यान। २-कृपादृष्टि।
तवन स्त्री०(हि) १-तपे हुए होने की अवस्था या भाव २-ताप। गरमी। ३-अग्नि।

तपना क्रि० (हि) १-तपना। गरम होना। २-ताप या दुःख से पीड़ित होना। ३-गुस्से से लाल होना। कुढ़ना।
तवर्ग पुं० (सं) त, थ, द, ध, और न, यह पाँच अक्षर।
तवा पुं० (हि) १-लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिस पर रोटी सेकते हैं। २-चिलम में तमाखू पर रखने का मिट्टी का गोल टुकड़ा।
तवाई स्त्री० (हि) १-ताप। गरमी। २-गरम हवा। लू।
तवालोर पुं० (हि) वरलोचन।
तवाजा स्त्री०(प) १-आदर। आवभगत। २-मेहमानदारी।
तवाना क्रि० (हि) गरम करना। वि० (फा) मोटा-ताजा।
तवायफ स्त्री० (प) वेश्या। रंडी।
तवारा पुं० (हि) जलन। दाह।
तवारीख स्त्री० (प) इतिहास।
तवारीखी वि० (प) ऐतिहासिक।
तवालत स्त्री० (प) १-लम्बाई। २-अधिकता। ३-झंझट।
तवी स्त्री० (हि) १-छोटा तवा। २-दे० 'तई'।
तवेला पुं० दे० 'तबेला'।
तवक्कोह स्त्री० (प) १-इज्जत। महत्त्व। २-सम्मानित व्यक्तित्व।
तश्त पुं० (फा) १-परात (बरतन)। २-पाखाने का गमला।
तश्तरी स्त्री० (फा) थाली जैसा बरतन। रिकाबी।
तष्ट वि० (सं) १-छिला हुआ। २-कटा या दला हुआ ३-पीस कर दो दालों में किया हुआ। ४-पीटा हुआ।
तष्टा पुं० (सं) १-छीलने वाला। विश्वकर्मा। पुं० (हि) [स्त्री० तष्टी] तांबे की छोटी तश्तरी।
तस वि० (हि) तैसा। वैसा।
तसदीक स्त्री० (प) १-सचाई। २-प्रमाणों द्वारा पुष्टि ३-साक्ष्य। गवाही।
तसदीह स्त्री०(हि) १-सिर का दर्द। २-दुःख। क्लेश
तसबी, तसबीह स्त्री० (हि) जप-माला। सुमिरनी।
तसमा पुं०(फा) चमड़े या कपड़े का फीता जो बाँधने के काम आता है।
तसला पुं० (देश) [स्त्री० तसली] एक तरह का बड़ा और गहरा बरतन।
तसलीम स्त्री० (प) १-प्रणाम। सलाम। २-किसी बात की स्वीकृति। मान्यता।
तसल्ली स्त्री० (प) १-आश्वासन। सान्त्वना। २-धैर्य। धीरज।
तसवीर स्त्री० (प) चित्र।
तसो स्त्री० (देश) तीन बार जोता हुआ खेत।
तसू पुं० (हि) एक तरह की माप जो १। इञ्च की होती है।
तस्कर पुं० (सं) चोर।
तस्करता स्त्री० (सं) चोरी।
तस्करी स्त्री० (हि) १-चोरी। २-चोर स्त्री। ३-चोर की पत्नी।
तस्मात् अव्य० (सं) इसलिए।
तस्य सर्व० (सं) उसका।
तस्सू पुं० (हि) लम्बाई का नाप जो १। इञ्च का होता है।
तहँ क्रि० वि० (हि) उस स्थान पर। वहाँ।
तहँई क्रि० वि० (हि) उसी जगह। वहीं।
तहँवा क्रि० वि० (हि) वहाँ।
तह स्त्री० (फा) १-परत। २-तल। पेंदा। ३-तल। थाह। ४-वरक झिल्ली।
तहकीक स्त्री० (प्र) यथार्थता। सत्य। २-सचाई की जाँच। खोज। ३-जिज्ञासा।
तहकीकात स्त्री० (प) किसी घटना की जाँच। अनुसन्धान।
तहखाना पुं०(फा) जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। तलगृह।
तहजीब स्त्री० (प) सभ्यता। शिष्टाचार।
तहदरज वि० (फा) जिसकी तह तक न खुली हो। बिलकुल नया।
तहना क्रि० (हि) १-तपना। २-बहुत क्रोध करना।
तहबाजारी स्त्री (फा) वह महसूल जो बाजार के चौक या पटरी पर सौदा बेचने वालों से लिया जाता है।
तहमत पुं० (फा) कमर में लपेट कर पहना जाने वाला एक तरह का कपड़ा।
तहरी स्त्री० (देश) १-पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी। २-मटर की खिचड़ी।
तहरीर स्त्री० (प) १-लेख। लिखावट। २-लेख-शैली। ३-लिखी हुई बात। ४-लिखा हुआ प्रमाण-पत्र। ५-लिखने की उजरत। लिखाई।
तहरीरी वि० (फा) लिखा हुआ। लिखित।
तहलका पुं० (प) १-मौत। मृत्यु। २-नाश। ३-धूम। हलचल।
तहवील स्त्री० (प) १-सुपुर्दगी। २-अमानत। ३-किसी मद की आय का रुपया जो किसी के पास जमा हो। ४-खजाना।
तहवीलदार पुं० (प) खजानची।
तहस-नहस वि० (देश) पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट। बरबाद।
तहसील स्त्री० (प) १-लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया या भाव। वसूली। उगाही। २-वह कार्यालय जहाँ जमींदार सरकारी मालगुजारी जमा कराते हैं।
तहसीलदार पुं० (प+फा) १-कर वसूल [illegible] २-वह अधिकारी जो जमींदारों से [illegible]

गुजारी वसूल करता है और माल के छोटे-छोटे मुकद्मों का फैसला करता है।
तहसीलदारी पुं० (हि) १-तहसीलदार का काम। २-तहसीलदार का पद।
तहसीलना क्रि०(हि) मालगुजारी आदि वसूल कराना।
तहाँ क्रि० वि० (हि) वहाँ। उस स्थान पर।
तहाना क्रि० (हि) तह करना।
तहिया क्रि० वि० (हि) तब। उस समय।
तहियाना क्रि० (हि) तह लगाकर लपेटना।
तहियो अव्य (हि) तथापि। तोभी।
तहीं क्रि० वि० (हि) वहीं। उस जगह।
ताँई क्रि० वि० (हि) १-तक। २-के लिए। वास्ते। पास।
ताँकना क्रि० (हि) ताकना।
ताँगा क्रि० (हि) एक तरह का घोड़ागाड़ी। टांगा।
ताँगी स्त्री० (हि) किसी वस्तु को कसकर बांधने वाली डोरी। बन्द।
ताँडव पुं० (सं०) १-शिव का नृत्य। २-पुरुषों का नृत्य (स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते हैं)। ३-वह नाच जिसमें बहुत कुछ उछल-कूद हो।
ताँत स्त्री० (हि) १-चमड़े या पशुओं के नस से बनी हुई डोरी। २-धनुष की डोरी। ३-सारंगी आदि का तार। ४-जुलाहों का एक उपकरण। ५-सूत। डोरी।
ताँता पुं० (हि) १-अटूट पंक्ति। २-कतार।
ताँतिया वि० (हि) ताँत जैसा दुबला-पतला।
ताँती स्त्री० दे० 'ताँता'। पुं० (हि) जुलाहा।
ताँत्रिक वि० (सं) तन्त्र सम्बन्धी। तन्त्र का। पुं० [स्त्री० तांत्रिका] तन्त्रशास्त्र का ज्ञाता और प्रयोग-कर्त्ता।
ताँबा पु० (हि) एक लाल रंग की धातु।
ताँबूल पुं० (सं) १-पान। २-पान का बीड़ा।
ताँबूलिक पुं० (सं) तमोली।
ताँवर पुं० (हि) ताप।
ताँवरना क्रि० (हि) १-गरम होना। २-क्रोध आदि के आवेश में आना।
ताँवरा पुं० (हि) १-जलन। ताप। २-जूड़ी। बुखार ३-सिर का चक्कर। ४-मूर्छा।
ताँसना क्रि० (हि) १-डाँटना। २-धमकाना। ३-सताना।
ता प्रत्य० (सं) एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा के अन्त में लगता है। अव्य०(फा) तक। पर्यन्त। वि० (हि) १-उस। २-उसे।
ताई अव्य० (हि) १-तक। पर्यन्त। २-निकट। पास ३-(किसी के) प्रति। को। ४-लिए। वास्ते।
ताउ पुं० दे० 'ताव'।
ताऊ पुं० (हि) बाप का बड़ा भाई। ताया।
ताऊन पुं० (अ) एक संक्रामक रोग जिसमें गिलटी निकलती और बुखार आता है। प्लेग।
ताऊस पुं० (अ) १-मोर। मयूर। २-सितार की तरह का एक बाजा जिस पर मोर की शक्ल बनी होती है
ताक स्त्री० (हि) १-अवलोकन। २-टकटकी। ३-घात अवसर की प्रतीक्षा। पुं० [अ० ताक] आला (दीवार में का)। वि० १-दो सम भागों विभक्त न होने वाला। २-अनुपम। बेजोड़।
ताक-झाँक स्त्री० (हि) १-कुछ जानने के लिए बार-बार ताकने या झाँकने की क्रिया। २-छिपकर देखने की क्रिया। ३-निरीक्षण। देखभाल। ४-खोज। अन्वेषण।
ताकत स्त्री० (अ) १-जोर। बल। शक्ति। २-सामर्थ्य।
ताकतवर वि० (फा) १-बलवान। २-शक्तिवान।
ताकना क्रि० (हि) १-देखना। २-मन में सोचना। ३-ताड़ना। समझाना। ४-पहले से देखकर स्थिर करना। ५-अवसर की प्रतीक्षा या घात में रहना।
ताकरी स्त्री० (हि) मुण्डे या लुण्डे अक्षरों वाली लिपि
ताका वि० (हि) भेंगा।
ताकि अव्य० (फा) जिससे। इसलिए कि।
ताकीद स्त्री०(अ) किसी काम के लिए बार-बार चेताने का काम।
ताख पु० (हि) ताक। आला।
ताखड़ा वि० (हि) तगड़ा।
ताखा पु० (हि) १-ताक। आला। गत्ते पर लपेटा हुआ कपड़े का थान।
ताग स्त्री० (हि) तागने की क्रिया। पुं० दे० 'तागा'।
तागड़ी स्त्री० (हि) करधनी।
तागना क्रि० (हि) दूर-दूर पर मोटी सिलाई करना।
तागा पुं० (हि) १-सूत। धागा। २-प्रति व्यक्ति के हिसाब से लिया जाने वाला कर।
ताछन पुं० (हि) १-शत्रु के दाव से बचने और उस पर प्रत्याक्रमण करने के लिए बगल से होते हुए आगे बढ़ना। कावा। २-घोड़े का कावा काटना।
ताछना क्रि० (हि) आक्रमण के लिए बगल से होकर बढ़ना।
ताज पुं० (फा) १-राज-मुकुट। २-कलगी। ३-दीवार की कँगनी या छज्जा। ४-मकान के सिरे पर शोभा के लिए बनी हुई बुर्जी। ५-आगरे का ताजमहल।
ताजक पुं० (फा) १-एक ईरानी जाति। २-ज्योतिष का ग्रंथ विशेष।
ताजगी स्त्री०(फा)१-हरापन। ताजापन। २-प्रफुल्लता स्वस्थता।
ताजदार वि० (फा) ताज की तरह का। पुं० बादशाह
ताजन, ताजना पुं० (हि) कोड़ा। चाबुक।
ताज-पोशी स्त्री० (फा) राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव।

[illegible]

से तोड़ा गया हो। ४-स्वस्थ और प्रसन्न। ५-बिलकुल नया।

ताज़िया पुं० (अ) मकबरे के आकार का कमचियों का रङ्ग-बिरंगे कागज आदि चिपका कर बनाया हुआ मंडप जिसे मुहर्रम में शिया लोग दस दिन तक रख कर गाड़ते हैं।

ताज़ियाना पुं० (फा) चाबुक। कोड़ा।

ताज़ी वि० (फा) अरब देश का। अरब देश सम्बन्धी पुं० १-अरब का घोड़ा। २-शिकारी कुत्ता। स्त्री० अरब देश की भाषा।

ताज़ीम स्त्री० (अ) सम्मान-प्रदर्शन।

ताज़ीर स्त्री० (अ) दंड। जुर्माना।

ताज़ीरात पुं० (अ) दण्ड सम्बन्धी कानूनों का संग्रह

ताज़ीरात हिन्द पुं० (अ) भारतीय दण्ड विधान।

ताज़ीरी वि० (अ) दण्ड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ।

ताज़ीरी-कर पुं० (अ+फ) किसी स्थान पर दण्ड रूप में पुलिस नियत होने पर उसका खर्चा निकालने के लिए लगाया हुआ कर।

ताज़ीरी पुलिस स्त्री० (अ+अ) उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र में रखे हुए पुलिस के दस्ते जिनका खर्चा वहां के लोगों से दण्डस्वरूप लिया जाता है।

ताज्जुब पुं० (अ) आश्चर्य।

ताटंक पुं० (सं) कान का करनफूल नामक गहना।

ताटस्थ्य पुं० (सं) तटस्थ या निरपेक्ष होने का भाव। समीक्षा।

ताड़ पुं० (हि) १-एक सीधा और लम्बा वृक्ष जिसकी चोटी पर पत्ते होते हैं। २-ताड़न। प्रहार।

ताड़का स्त्री० (सं) एक राक्षसी जिसका संहार श्रीरामचन्द्र ने किया था।

ताड़न पुं० (सं) १-मार। आघात। २-डाँट-डपट। ३-दण्ड। शासन। ४-अनुशासन।

ताड़ना स्त्री० (हि) १-मारने-पीटने की क्रिया। मार आघात। २-डाँटडपट। क्रि० (हि) १-भाँपना। २-जान या समझ लेना। ३- मारना। ४-सजा देना। ५-कष्ट देना। ६-दुर्वचन कहना।

ताड़नीय वि० (सं) दण्डनीय।

ताड़ित वि० (सं) १-जिस पर मार पड़ी हो। २-जिसे दण्ड दिया गया हो।

ताड़ी स्त्री० (हि) ताड़ के डंठलों से निकाला हुआ रस जो खट्टा होने की अवस्था में नशीला हो जाता है

तात पुं० (सं) १-पिता। बाप। २-पूज्य व्यक्ति। गुरु ३-एक प्यार का सम्बोधन। वि० (हि) तपा हुआ। गरम।

तातार पुं० (फा) मध्य एशिया का एक देश।

तातारी वि० (फा) तातार देश का। तातार देश सम्बन्धी। पुं० तातार देश का निवासी।

ताती स्त्री० (हि) दूध।

तातील स्त्री० (अ) छुट्टी का दिन।

तात्कालिक वि० (सं) १-तत्काल का। २-उसी समय का। (इमिजिएट)।

तात्पर्य पुं० (सं) १-आशय। अभिप्राय। मंशा। २-तत्परता। ३-किसी के सम्बन्ध में मन में रहने वाला आन्तरिक भाव। हेतु।

तात्पर्य-वृत्ति स्त्री० (सं) पूरे वाक्य का अर्थ बताने वाली वृत्ति। (साहित्य)।

तात्पर्यार्थ पुं० (सं) वाक्यार्थों से भिन्न अर्थ जो वाक्य विशेष में वक्ता का अभिप्राय समझा जाय।

तात्त्विक वि० (सं) १-तत्त्व-सम्बन्धी। तत्त्वज्ञान युक्त। २-यथार्थ। वास्तविक।

तात्त्विक-विज्ञान पुं० (सं) विज्ञान की दो शाखाओं में से एक जिसमें कार्यों और कारणों के पारस्परिक सम्बन्ध बताने वाले तथा कार्यों का यथार्थ स्वरूप या तत्त्वों का विवेचन करने वाले विज्ञान आते हैं (पॉजिटिव-साइन्स)।

तायेई स्त्री० दे० 'तातायेई'।

तादर्थ्य पुं० (सं) १-उद्देश्य की एकरूपता। २-अर्थों की समानता। ३-उद्देश्य।

तादात्म्य पुं० (सं) १-दो वस्तुओं के परस्पर अभिन्न होने का भाव। अभिन्नता। २-देख समझ कर यह प्रमाणित करना कि यह वही है। पहचानना। (आइडेंटिफिकेशन)।

तादाद स्त्री० (अ) संख्या। गिनती।

तादृश वि० (सं) उसके समान। वैसा।

ताधा स्त्री० दे० 'तानाथेई'।

तान स्त्री० (हि) १-सङ्गीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार। २-तानने की क्रिया या भाव। खिंचाव।

तानता स्त्री० (सं) वह गुण अथवा शक्ति जिसके द्वारा वस्तुएँ अथवा उनके अङ्ग आपस में दृढ़तापूर्वक जुड़े रहते हैं। (टैनेसिटी)।

तानना क्रि० (हि) १-फैलाने के लिए खींचना। २-ऊपर फैलाकर बाँधना। ३-मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना। ४-जेलखाने भेजना।

तानपूरा पुं० (हि) सितार की तरह का एक बाजा। तम्बूरा।

तानवान पुं० (हि) तानाबाना।

ताना पुं० (हि) १-कपड़े की बुनावट में लम्बाई के बल के सूत। २-दरी या कालीन बुनने का करघा।

क्रि० (हि) १-ताव देना। गरम करना। २-पिघलाना। ३-तपाकर परीक्षा करना। ४-जाँचना। ५-मूँदना। पुं० (अ०) व्यंगपूर्ण चुटीली बात।

ताना-पाई, ताना-पाही स्त्री० (हि) व्यर्थ बार-बार आना-जाना।

ताना-बाना पुं० (हि) कपड़े की बुनावट में लम्बाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत।

तानारीरी स्त्री० (हि) नौसिखिये का गाना। साधारण गाना।

तानाशाह पुं० (फा) अपने अधिकारों का मनमाना प्रयोग करने वाला। अनियन्त्रित-शासक।

तानाशाही स्त्री० (फा) १-अधिकारों का मनमाना उपयोग। स्वेच्छाचारिता। २-वह राज्य व्यवस्था जिसमें सारे अधिकार एक ही व्यक्ति के अधिकार में हों।

तानी स्त्री० (हि) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लम्बाई के बल हो।

ताप पुं० (सं) १-अग्नि, विद्युत आदि से उत्पन्न वह शक्ति जिससे वस्तुएँ गरम हो जाती हैं तथा अधिक गरम होने पर पिघलने या वाष्प के रूप में परिणित होने लगती हैं। ऊष्णता। गरमी। (हीट) २-ज्वर। ३-दुःख। ४-आँच। लपट।

तापक वि० (सं) १-ताप उत्पन्न करने वाला। कष्ट पहुँचाने वाला। पुं० विद्युत-शक्ति से चलने वाला एक प्रकार का यन्त्र जिससे कमरे आदि में गरमी पहुँचाते हैं।

तापक्रम पुं० (सं) शरीर या वायुमण्डल की ऊष्णता का उतार-चढ़ाव। (टैंपरेचर)।

ताप-क्रम-यंत्र पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा किसी स्थान के घटने-बढ़ने वाले ताप-क्रम का पता चलता है। (थैरामीटर)।

ताप-चालक पुं० (सं) वह पदार्थ जिसमें ताप एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँच सकता हो। जैसे-धातु।

ताप-चालकता स्त्री० (सं) पदार्थों का वह गुण जिससे ताप एक छोर से दूसरे छोर तक जाता है।

ताप-तरंग स्त्री० (सं) गरमी की वह लपट या हवा की लहर जो एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवाहित होती जान पड़े। (हीट-वेव)।

ताप-तिल्ली स्त्री० (हि) तिल्ली बढ़ने और सूजने का रोग।

तापती स्त्री० (सं) १-सूर्य की कन्या। २-सतपुड़ा पहाड़ से निकलने वाली एक पवित्र नदी।

ताप-त्रय पुं० (सं) तीन प्रकार के ताप या दुःख-आध्यात्मिक, अधिदैविक और अधिभौतिक।

तापद वि० (सं) कष्टकारक।

तापन पुं० (सं) १-ताप देने वाला। २-सूर्य। ३-कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४-शत्रु को पीड़ा पहुँचाने की एक विधि (तन्त्र)।

तापना क्रि० (हि) १-आग की आँच से अपने को गरम करना। २-तपाना। ३-फूँकना। ४-उड़ाना।

ताप-नियंत्रण पुं० (सं) कमरे आदि के भीतर की हवा को कृत्रिम रूप से समशीतोष्ण बनाये रखने की क्रिया। (एयरकंडीशनिंग)।

ताप-नियंत्रित वि० (सं) जिसके भीतर का तापमान कृत्रिम उपायों से सम-स्थिति में रखा गया हो।

तापमान पुं० (सं) वस्तु, शरीर आदि की वह गरमी अथवा सरदी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है।

तापमान-यंत्र, तापमापक-यंत्र पुं० (सं) एक यन्त्र जिसके द्वारा ज्वर के समय शरीर का ताप नापकर देखा जा सकता है। (थरमामीटर)।

ताप-विकिरण पुं० (सं) ताप की लहरों का किसी एक स्थान से चारों दिशाओं में प्रसारित किया जाना। (रेडियेशन)।

तापस पुं० (सं) [स्त्री० तापसी] तपस्वी।

तापसी स्त्री० (सं) १-तपस्या करने वाली स्त्री। २-तपस्वी की पत्नी।

तापहर वि० (सं) तापनाशक। ज्वर को दूर करने वाला।

तापित वि० (सं) १-जो तपाया गया हो। २-दुःखित। पीड़ित।

तापी वि० (सं) ताप देने वाला।

ताफ्ता पुं० (फा) धूप-छाँह नामक रेशमी कपड़ा।

ताब स्त्री० (फा) १-ताप। २-चमक। ३-सामर्थ्य।

ताबड़तोड़ क्रि० वि० (हि) लगातार। बराबर।

ताबूत पुं० (अ) वह सन्दूक जिसमें मुरदा रखकर गाड़ा जाता है।

ताबे वि० (अ) १-वशीभूत। अधीन। २-आज्ञाकारी

ताबेदार वि० (अ+फा) १-आज्ञाकारी। २-सेवक।

ताबेदारी स्त्री० (फा) १-नौकरी। २-सेवा। टहल।

ताम पुं० (सं) १-दोष। विकार। २-बेचैनी। ३-दुःख। ४-इच्छा। ५-थकावट। वि० १-डरावना। २-व्याकुल। पुं० (हि) १-क्रोध। २-अंधेरा।

तामजान, तामजाम पुं० (हि) एक तरह की छोटी पालकी।

तामड़ा वि० (हि) ताँबे के रंग का।

तामरस पुं० (सं) १-कमल। २-सोना। ३-ताँबा। ४-धतूरा।

तामलेट, तामलोट पुं० [अं० टंबलर] टीन का बना गिलास।

तामस वि० (सं) [स्त्री० तामसी] तमोगुण वाला। तमोगुण युक्त। पुं० १-साँप। २-दुष्ट। ३-क्रोध। ४-अपकार। ५-अज्ञान।

तामसी वि० स्त्री० (सं) तमोगुण वाली।

तामिल स्त्री० (देश) १-दक्षिण भारत की एक जाति का नाम। २-इस जाति के लोगों की भाषा।

तामिस्र पुं० (स) १-क्रोध। २-द्वेष। ३-अविद्या। ४-अन्धकारमय एक नरक विशेष।

तामीर स्त्री० (प) भवन निर्माण का काम।

तामील, तामीली स्त्री० (प) १-आज्ञा का पालन। २-सूचना आदि का अभीष्ट स्थान पर पहुँचाया जाना।

तामोर, तामोल पुं० (हि) ताम्बूल (पान)।

ताम्र पुं० (सं) १-ताँबा। २-एक प्रकार का कोढ़।

ताम्रचूड़ पुं० (सं) मुर्गा।

ताम्र-पट्ट, ताम्र-पत्र पुं० (स) १-दानपत्र खुदवाने का ताँबे का पत्तर। २-ताँबे की चद्दर।

ताम्रपर्णी स्त्री० (स) १-दक्षिण भारत की एक नदी। २-बावली। ३-तालाब।

ताम्र युग पुं० (स) इतिहास का वह प्रारम्भिक काल *जब लोग ताँबे के औजार, पात्र आदि प्रयोग में* लाते थे। (ताम्रएज)।

ताम्रलिप्त पुं० (स) बङ्गाल का तामलुक नामक भूखण्ड।

ताम्र-लेख पुं० दे० 'ताम्र-पत्र'।

तायँ क्रि० वि० (हि) से। तक।

ताय पुं० दे० 'ताप'। सर्व० दे० 'ताहि'।

तायना क्रि० (हि) तपाना।

तायनि स्त्री० (हि) १-तपन। जलन। २-पीड़ा।

तायफा स्त्री० (फा) १-वेश्या। २-वेश्या और उसके समाजियों की मण्डली।

ताया पुं० (हि) [स्त्री० ताई] पिता का बड़ा भाई। वि० तपाया हुआ। तपाकर पिघलाया हुआ।

तार पुं० (सं) १-रूपा। चाँदी। २-तनी धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा। ३-धातु-कार वह तार जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता है। (टेलिग्राफ)। ४-इस प्रणाली द्वारा भेजा या आया हुआ समाचार। (टेलिग्राम)। सूत। तागा ६-अखण्ड परम्परा। क्रम। ७-कार्य सिद्ध का योग युक्ति। ८-सङ्गीत में एक सप्तक। ९-अट्ठारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। वि० निर्मल। स्वच्छ। पुं० (हि) १-करताल (बाजा)। २-तल। सतह। ३-तालाब। कान की मीमक ध्वन का गहना। ५-तारा। ६-ताल। ७-डर। भय। ८-ताड़ना। अन्य० लेशमात्र। नाम को भी।

तारक पुं० (स) १-तारा। नक्षत्र। २-आँख। ३-आँख की पुतली। ४-भवसागर से पार करने वाला ५-कर्णधार। ६-वह जो पार उतरे। ७-एक वर्णवृत्त। ८-राम का षडक्षर मन्त्र जिसे गुरु शिष्य के कान में कहता है। (श्री रामायनमः)। ९-छपाई में तारे के समान चिह्न। (*)। (स्टार,एस्टरिस्क)।

तारक-चिह्न पुं० (सं) तारे का चिह्न या निशान जो पादटिप्पणी अथवा अभिनिर्देश के निमित्त या महत्व प्रदर्शित करने के लिए छापा या लिपि में प्रयुक्त किया जाता है। जैसे—(*) चिह्न। (एस्टरिस्क)।

तारका स्त्री०(सं)१-नक्षत्र। तारा। २-आँख की पुतली ३-बृहस्पति की स्त्री। ४-चलचित्रों में अभिनय करने वाली स्त्री। (स्टार)। ५-'तारक चिह्न'।

तारकासुर पुं० (सं) एक असुर का नाम।

तारकित वि० (सं) नक्षत्रों या तारों से भरा हुआ।

तारकेश पुं० (सं) चन्द्रमा।

तारकेश्वर पुं० (सं) शिव।

तारकोल पुं० दे० 'अलकतरा'।

तारख पुं० (हि) गरुड़।

तारखी पुं० (हि) घोड़ा।

तार-घर पुं० (हि) वह सरकारी जगह जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजे जाते हैं।

तार-घाट पुं० (हि) व्यवस्था। आयोजन।

तारण पुं० (स) १-पार उतारने की क्रिया। २-उद्धार निस्तार। ३-तारने वाला। उद्धार करने वाला। ४-विष्णु। ५-साठ संवत्सरों में से एक।

तारणि स्त्री० (स) नाव। नौका।

तारतम्य पुं० (सं) १-एक दूसरे से कमी-बेशी का हिसाब। न्यूनाधिक। २-तरतीब। ३-गुण, परिमाण आदि का परस्पर मिलान।

तारतार वि० (हि) जिसकी धज्जियाँ अलग-अलग होगई हों।

तारतोड़ पुं० (हि) कारचोबी का काम।

तारन पुं० दे० 'तारण'।

तारना क्रि० (हि) १-पार लगाना। २-डूबते हुए को बचाना। ३-सांसारिक क्लेशों से मुक्त करना।

तारपीन पुं० (हि) एक प्रकार का तेल जो चीड़ के पेड़ से निकलता है।

तारबर्की पुं० (उर्दू) बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचाने वाला तार।

तारल्य पुं० (स) १-तरल या प्रवाहशील होने का गुण। द्रवत्व। २-चंचलता। ३-कामुकता।

तार-हीन वि० (हि) १-बिना तार के। २-तार-हीन प्रणाली से आने वाला (समाचार)। पुं० बिना तार के या विद्युत की सहायता से समाचार भेजने की प्रणाली या प्रक्रिया। (वायरलैस)।

तारांकित वि० (स) (वह वाक्य, शब्द या प्रश्न) जिसके साथ तारे का चिह्न दिया गया हो। (स्टार्ड) बहुवचन।

तारांकित-प्रश्न पुं० (सं) संसद् या विधान सभा आदि के सदन में प्रश्नोत्तर-काल में मौखिक उत्तर

तितेक वि० (हि) उतना।
तितै क्रि० वि० (हि) १-वहाँ। वहीं। २-उधर।
तितो वि० (हि) उतना।
तिथ पु० (सं) १-अग्नि। आग। २-कामदेव। ३-काल। ४-वर्षाकाल।
तिथि स्त्री० (सं) १-मिती। तारीख। दिनांक। २-पंद्रह की संख्या।
तिथिक्षय पुं०(सं) किसी तिथि की गिनती में न आना।
तिथि-पत्र पुं० (सं) पंचांग। पत्रा।
तिथिवृद्धि स्त्री० (सं) जो तिथि दो सूर्योदय तक चले
तिथि-संक्रामी वि० (सं) निर्धारित तिथि का संक्रमण करने वाला (न्यायालय में उपस्थित न होने या किस्त न चुकाने वाला)। (डिफाल्टर)।
तिथित वि० (सं) जिस (पत्र) पर तिथि या तारीख लिखी हो। दिनांकित। (डेटेड)।
तिदरा पुं० (हि) [स्त्री० तिदरी] १-तीन दर वाला दालान। २-ऐसा कमरा जिसमें तीन द्वार हों। वि० तीन दर या द्वार वाला।
तिधर क्रि० वि० (हि) उधर। उस ओर।
तिन सर्व० (हि) 'तिस' शब्द का बहुवचन। पुं० तिनका। तृण।
तिनउर पुं० (हि) तिनकों का ढेर।
तिनकना क्रि० (हि) चिड़चिड़ाना। झल्लाना।
तिनका पुं० (हि) तृण। सूखी घास का टुकड़ा।
तिनका-तोड़, तिनका-तोर पुं० (हि) आपसी सम्बन्ध का इस तरह टूटना कि फिर न जुड़ सके।
तिनगना क्रि० (हि) तिनका। झल्लाना।
तिनगरी स्त्री० (हि) एक पकवान।
तिन-पहला वि० (हि) तीन पहलों वाला।
तिनुका, तिनूका पुं० (हि) तृण। तिनका।
तिन्नी स्त्री० (हि) एक प्रकार का जंगली धान।
तिन्ह सर्व० (हि) तिन।
तिपति स्त्री० दे० 'तृप्ति'।
तिपाई स्त्री० (हि) तीन पायों की छोटी और ऊँची चौकी।
तिबाई स्त्री० (देश) आटा माड़ने का बड़ा और छिछला बरतन।
तिबारा वि० (हि) तीसरी बार। पु० [स्त्री० तिबारी] तीन द्वार वाला घर।
तिबासी वि० (हि) तीन दिन का बासी (खाना)।
तिब्बर वि० (हि) तीसरी बार। तिबारा।
ति-मंजिला वि० (हि) [स्त्री० ति-मंजली] तीन खण्डों या मंजिलों वाला मकान।
तिमिंगिल पुं०(सं) समुद्र में रहने वाला एक विशालकाय जन्तु। (ह्वेल)।
तिमि अव्य० (हि) उस प्रकार। वैसे। स्त्री० (सं) तिमिंगिल नामक जल-जन्तु।
तिमिर पुं० (सं) १-अन्धकार। अंधेरा। २-आँखों से धुंधला दिखाई देना।
तिमिरनुद, तिमिरभिद्, तिमिररिपु, तिमिरहर पुं० (सं) सूर्य।
तिमिरांत पुं० (सं) १-तिमिर का अन्त। उजाला। प्रभात।
तिमिरारी स्त्री० (हि) अन्धकार। अंधेरा।
तिय स्त्री० (सं) १-स्त्री। २-पत्नी।
तिया स्त्री० (हि) १-तिक्की (ताश)। २-स्त्री।
तियाग पुं० (हि) त्याग।
तिरंगा वि० (हि) तीन रङ्गों वाला। पुं० १-राष्ट्रीय ध्वज। २-भारतीय कांग्रेस दल का झण्डा।
तिरंगा-झंडा पुं० (हि) १-तीन रङ्गों वाला झण्डा। २-भारत देश की राष्ट्र पताका। ३-भारतीय कांग्रेस दल का झण्डा।
तिर वि० (हि) 'त्रि' का बिगड़ा हुआ रूप जो समास में व्यवहृत होता है।
तिरक पु० (हि) रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ दोनों कूल्हों की हड्डियाँ मिलती है। २-दोनों टाँगों के ऊपर वाले जोड़ का स्थान। ३-हाथी के शरीर का पिछला भाग जहाँ से दुम निकलती है।
तिरकना क्रि० (हि) १-तिड़कना। २-बाल सफेद होना।
तिरखा स्त्री० (हि) तृषा।
तिरखित वि० (हि) तृषित।
तिरखूँटा वि० (हि) तिकोना।
तिरगुन पुं०, वि० दे० 'त्रिगुण'।
तिरछई स्त्री० (हि) तिरछापन।
तिरछा वि० (हि) [स्त्री० तिरछी] १-जो सीधा न हो २-टेढ़ा। वक्र। ३-अस्तर के काम का एक तरह का रेशमी वस्त्र।
तिरछाई स्त्री० (हि) तिरछापन।
तिरछाना क्रि० (हि) तिरछा होना।
तिरछापन पुं० (हि) तिरछा होने का भाव।
तिरछौहाँ वि० (हि) [स्त्री० तिरछौंही] जो कुछ तिरछापन लिए हुए हो।
तिरछौंहे क्रि० वि० (हि) तिरछापन लिए हुए।
तिरतिराना क्रि० (हि) बूँद-बूँद करके टपकना।
तिरना क्रि० (हि) १-पानी की सतह पर रहना। २-पानी पर तैरना। ३-भवसागर से पार होना।
तिरनी स्त्री० (हि) १-घाँघरा बाँधने की डोरी। नीवी। २-घाघरा या धोती का नाभि के नीचे लटकता हुआ भाग।
तिरप स्त्री० (हि) नृत्य में एक ताल।
तिरपट वि० (देश) १-तिरछा। टेढ़ा। २-कठिन। विकट।
तिरपाई स्त्री० (हि) तीन पायों वाली ऊँची चौकी।

तिरपाल पु० (हि) १-रोगन फेरा हुआ एक ... का टाट जिससे वर्षा या धूप से बचाव होता । २-छाजन के नीचे लगाया जाने वाला सर० ... का मुट्ठा ।
तिररित वि० (हि) चूप ।
तिरला पु० दे० 'त्रिरला' ।
तिरवेनी स्त्री० दे० 'त्रिवेणी' ।
तिरमिरा पु० (हि) १-दुर्बलता के कारण होने वाला आँखों का एक रोग जिससे कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देता है । २-तीव्र प्रकाश या तेज रोशनी में नजर न ठहरना । चकाचौंध । ३-चिकनाई के छींटे जो पानी दूध आदि द्रव पदार्थ के ऊपर तैरते दिखाई देते हैं ।
तिरमिराना क्रि० (हि) प्रकाश या चमक से आँखों का चौंधियाना ।
तिरमुहानी स्त्री० (हि) वह स्थान जहाँ तीन रास्ते मिलते हों ।
तिरलोक पुं० दे० 'त्रिलोक' ।
तिर विक्रम पु० दे० 'त्रिविक्रम' ।
तिरवाहीं पुं० (हि) नदी का किनारा ।
तिरस्कार पुं० (सं) १-अपमान । २-भर्त्सना । ३-अनादर या उपेक्षा-पूर्वक त्याग । ४-साहित्य में अलङ्कार ।
तिरस्कृत वि० (सं) [स्त्री० तिरस्कृता] जिसका तिरस्कार किया गया हो । अनादृत ।
तिरस्क्रिया स्त्री० (सं) १-तिरस्कार । अनादर । २-आच्छादन । ३-वस्त्र । पहरावा ।
तिरहुत पुं० (हि) मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा के आसपास के प्रदेश का पुराना नाम । मिथिला प्रदेश ।
तिराना क्रि० (हि) १-पानी के ऊपर तैराना । २-पार करना । ३-उबारना । उद्धार करना ।
तिराहा पुं० (हि) वह स्थान जहाँ से तीन ओर को तीन रास्ते गये हों ।
तिराहे क्रि० वि० (हि) नीचे ।
तिरिन पु० (हि) तृण । तिनका ।
तिरियक पु० दे० 'तिर्यक' ।
तिरिया स्त्री० (हि) स्त्री । औरत ।
तिरीछा वि० दे० 'तिरछा' ।
तिरेंदा पु० (हि) १-समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो सङ्केत के लिए छिछले पानी या चट्टान पर रखा रहता है । २-मछली मारने की वंसी के काँटे के कुछ ऊपर बँधी हुई एक लकड़ी, जिसके डूबने से मछली फसने का पता चलता है ।
तिरोधान, तिरोभाव पु० (सं) १-अन्तर्धान । २-छिपाव ।
तिरोहित वि० (सं) १-छिपा हुआ । अन्तर्धान । २-छिपाव ।

तिर्यक वि० (हि) ...

तिर्यग्योनि स्त्री० (सं) पशु-पक्षी आदि जीव तथा उनकी जीवन दशा ।
तिर्यग्रेखा स्त्री० (सं) वह रेखा जो दो या दो से ...

तिलगाना पुं० (हि) तेलङ्ग देश ।
तिलगी वि० (हि) तिलङ्गाने का निवासी । तैलङ्ग । स्त्री० (हि) एक तरह की पतङ्ग ।
तिल पुं० (सं) १-एक तरह का धान्य जिसे पेर कर तेल निकाला जाता है । २-शरीर पर काले रङ्ग का छोटा दाग । ३-काली बिन्दी के आकार का गोदना ४-आँख की पुतली के बीच की बिन्दी ।
तिलक पुं० (सं) १-चन्दन, केसर आदि से मस्तक बाहु आदि पर अङ्कित किया जाने वाला सम्प्रदायिक चिह्न । टीका । २-राज्याभिषेक । ३-स्त्रियों के माथे का एक गहना । टीका । ४-विवाह सम्बन्धी ...

...था । पुं० लोकमान्य बालगङ्गाधर तिलक जिनका जन्म १८५६ में हुआ और मृत्यु सन् १६२० में हुई
तिलक-कामोद पुं० (स) सङ्गीत में एक राग ।
तिलकना क्रि० (हि) फिसलना ।
तिलकमुद्रा स्त्री० (सं) चन्दन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि की छाप ।
तिलकहार पुं० (हि) वह व्यक्ति जो कन्या की ओर से वर को तिलक चढ़ाने के लिए लेजाते हैं ।
तिलका पु० (सं) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं । २-कण्ठ में पहनने का एक आभूषण ।
तिलकालक पुं० (सं) १-शरीर पर का तिल के आकार का काला चिह्न । २-सुश्रुत के अनुसार एक व्याधि ।
तिल-कुट पुं० (हि) तिल को कूट कर चीनी मिलाकर बनाई हुई एक तरह की मिठाई ।
तिलकोढ़ा पुं० (हि) जङ्गली कुन्दरू । ... का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं ।
तिलचटा पुं० (हि) १-एक तरह का

पपड़ा।
तिलचाँवरी स्त्री० (हि) तिल और चावल की खिचड़ी
तिल-चावला वि० (हि) काला और सफेद मिला हुआ।
तिल-चावली स्त्री० (हि) तिल और चावल की खिचड़ी
तिलछना क्रि० (हि) बेचैन रहना।
तिलठी स्त्री० (हि) तिल का पौधा या डण्ठल।
तिलड़ी स्त्री० (हि) तीन लड़ों वाली माला।
तिलपट्टी, तिलपपड़ी स्त्री० (हि) खाँड या गुड़ से पगे पगे हुए तिलों की पपड़ी।
तिलभर क्रि० वि० (हि) थोड़ा सा भी। स्वल्प-मात्र।
तिलमिल स्त्री० (हि) तिलमिलाहट। चकाचौंध।
तिलमिलाना क्रि० (हि) कष्ट या पीड़ा से बेचैन होना
तिलमिलाहट स्त्री० (हि) चकाचौंध।
तिलवट पुं० (हि) तिलपट्टी।
तिलवा पुं० (हि) तिल का लड्डू।
तिलस्म पुं० दे० 'तिलिस्म'।
तिलहन पुं० (हि) फसल के रूप में बोये जाने वाले तेल के पौधे।
तिलांजलि स्त्री० (सं) १-किसी के मरने पर अँगुली में जल और तिल लेकर मृतक के नाम पर छोड़ना। सर्वदा के लिए परित्याग का संकल्प।
तिला पुं० (य) नपुन्सकता नष्ट करने वाला एक तेल
तिलाक पुं० दे० 'तलाक'।
तिलान्न पुं० (सं) तिल की खिचड़ी।
तिलाम पुं० (हि) गुलाम का गुलाम। दासानुदास।
तिलिस्म पुं० (य) १-जादू। चमत्कार। करामात।
तिलिस्मी वि० (य) १-जिसमें तिलिस्म के चमत्कारी का वर्णन हो। २-तिलिस्म सम्बन्धी।
तिलेदानी स्त्री० (हि) वह थैली जिसमें सिलाई की सुई के धागे रखे जाते हैं।
तिलोत्तमा स्त्री० (सं) एक परम रूपवती अप्सरा। (पुराण)।
तिलोदक पुं० (सं) तिलाञ्जलि।
तिलोना वि० दे० 'तेलोना'।
तिलौंछना क्रि० (हि) तेल से चिकनाना।
तिलौंछा वि० (हि) तेल के मेल, स्वाद, गन्ध या रङ्ग वाला।
तिलौरी स्त्री० (हि) तिल मिलाकर बनाई हुई बरी।
तिल्ला पुं० (हि) १-कलाबत्तू आदि का काम। २-पगड़ी दुपट्टे या साड़ी आदि का व अञ्चल जिस पर कलाबत्तू का काम हो।
तिल्लाना पुं० (हि) पानी के ऊपर ठहराना। तराना
तिल्ली स्त्री० (हि) १-पेट के भीतरी भाग का वह छोटा अवयव जो मांस की पोली गुठली के आकार का होता है। प्लीहा। २-तिल। ३-एक रोग जिसमें प्लीहा में सूजन होजाती है।
तिल्लेदार वि० (हि) बदले या कलाबत्तू के अञ्चल वाला (कपड़ा)।
तिवई स्त्री० (हि) स्त्री।
तिवान पुं० (?) चिन्ता। फिक्र।
तिवाड़ी, तिवारी स्त्री० (हि) त्रिपाठी। (ब्राह्मण)।
तिशाना पुं० (फा) बाना। स्त्री० (हि) तृष्णा।
तिष्ट वि० (हि) बनाया हुआ। रचित।
तिष्टना क्रि० (हि) बनाना। रचना।
तिष्ठना क्रि० (हि) १-टिकना। ठहरना। २-बैठाना।
तिष्पन वि० (हि) तीक्ष्ण।
तिस सर्व० (हि) 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है।
तिसखुट, तिसखुर स्त्री० (हि) तीसी के पौधों के छोटे छोटे डण्ठल जो फसल काटने के उपरान्त खड़े रहते हैं।
तिसपर क्रि० वि० (हि) १-उसके बाद। २-ऐसी स्थिति में। ३-तथापि। इतना होने पर भी।
तिसना स्त्री० (हि) तृष्णा।
तिसरा वि० (हि) तीसरा। दो के बाद का।
तिसराय क्रि० वि० (हि) तीसरी बार।
तिसरायत स्त्री० (हि) तीसरा होने का भाव।
तिसरैत पुं० (हि) १-झगड़ा करने वाले से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २-तीसरे हिस्से का मालिक।
तिसाना क्रि० (हि) प्यासा होना।
तिसार पुं० दे० 'अतिसार'।
तिसूती स्त्री० (हि) तीन सूत के डोरे का बना कपड़ा वि० तीन सूत वाला।
तिहरा वि० दे० 'तेहरा'।
तिहराना क्रि० (हि) तीसरी बार किसी बात या काम को करना।
तिहरी वि० (हि) तीन परत की। तेहरी। स्त्री० १-तीन लड़ वाली माला। २-दही जमाने का मिट्टी का छोटा पात्र।
तिहवार पुं० (हि) त्योहार।
तिहवारी स्त्री० (हि) त्योहारी।
तिहाई स्त्री०(हि) १-तृतीयांश। तीसरा भाग। २-खेत की उपज। फसल। ३-संगीत में सम पर का बोल उसके ठीक पहले वाले दो ताल या उनके खण्ड।
तिहाउ पुं० (हि) १-क्रोध। २-बिगाड़।
तिहायत पुं० दे० 'तिसरैत'।
तिहार, तिहारा, तिहारो सर्व० (हि) [स्त्री० तिहारी] तुम्हारा।
तिहाव पुं० (हि) १-क्रोध। कोप। २-बिगाड़।
तिहिं सर्व० दे० 'तेहि'।
तिहूँ वि० (हि) तीनों।
ती स्त्री० (हि) १-स्त्री। औरत। २-पत्नी।
तीक्षण, तीक्षन वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीक्ष्ण वि० (सं) १-तेज नोक वाला। २-तेज। तीव्र प्रखर। ३-उग्र। प्रचंड। ४-तेज या तीखे स्वाद वाला। ५-सुनने में अप्रिय। कर्णकटु। ६-जो सहन न हो सके।
तीक्ष्णता स्त्री० (सं) तीक्ष्ण होने का भाव। तेजी। तीव्रता।
तीक्ष्ण-दृष्टि वि० (सं) जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर पड़ती हो। सूक्ष्म दृष्टि।
तीक्ष्ण-धार वि०(सं) जिसकी धार बहुत तेज हो। पुं० खंग। तलवार।
तीक्ष्ण-बुद्धि वि० (सं) कुशाग्र बुद्धि वाला।
तीक्ष्णांशु पुं० (सं) सूर्य।
तीख, तीखन, तीखा वि० (हि) तीक्ष्ण।
तीखुर, तीखुल पुं० (हि) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ से आरारूट तैयार किया जाता है।
तीखन, तीखा वि० (हि) तीक्ष्ण।

[illegible]

का पुंय विशेष। वि० [स्त्री० तीजी] तीसरा। तृतीय
तीजिया स्त्री०(हि) श्रावण शुक्ला-तृतीया का त्योहार।
तीजै वि० (हि) तीसरा। तृतीय।
तीत वि० दे० 'तीता'।
तीतर पुं० (हि) एक पक्षी जिसे लोग लड़ाने के लिए पालते हैं।
तीता वि० (हि) १-तीखे और चरपरे स्वाद वाला। तिक्त। २-कड़ुवा। कटु। ३-नम। गीला।
तीतुर पुं० दे० तीतर।
तीतुरी स्त्री० दे० 'तितली'।
तीतुन पुं० दे० 'तीतर'।
तीन वि० (हि) दो और एक। पुं० तीन की संख्या।
तीनि वि० (हि) तीन।
तीमार पुं० (फा) सेवा-शुश्रूषा। हिफाजत।
तीमारदार पुं० (फा) रोगी की सेवा करने वाला।
तीमारदारी स्त्री० (फा) रोगी की सेवा।
तीय, तीया स्त्री० (हि) स्त्री। औरत।
तीरदाज पुं० (फा) तीर चलाने वाला।
तीरबाजी स्त्री० (फा) तीर चलाने की विद्या या क्रिया
तीर पुं० (सं) १-नदी का किनारा। कूल। तट। २-स्थान। जगह। क्रि० वि० पास। निकट। पुं० (फा) बाण। शर।
तीरथ पुं० दे० 'तीर्थ'।
तीरवर्ती वि० (सं) १-तट पर रहने वाला। २-किनारे पर रहने वाला। पड़ोसी।
तीरस्थ पुं० (सं) नदी के तीर पर पहुँचा हुआ या मरणासन्न व्यक्ति। वि० तीर या किनारे पर रहने वाला।
तीरथ पुं० दे० 'तीर्थ'।
तीर्थंकर पुं० (सं) तैरने के उपाय देव।
तीर्थ पुं० (सं) १-वह पवित्र स्थान जहाँ धर्मभाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान के लिए जाते हैं। २-कोई पवित्र स्थान। ३-शास्त्र। ४-यज्ञ। ५-सन्यासियों की एक उपाधि। ६-गुरु। ७-हाथ में के कुछ विशिष्ट स्थान। वि० मोक्ष देने वाला
तीर्थक वि० (सं) १-तीर्थों की यात्रा करने वाला। २-तीर्थों पर धार्मिक कृत्य कराने वाला (पंडा)।
तीर्थंकर पुं० (सं) १-विष्णु। २-जिन।
तीर्थ-पति पुं० (सं) तीर्थराज। प्रयाग।
तीर्थ-पुरोहित पुं० (सं) तीर्थ का पंडा।
तीर्थ-यात्रा स्त्री० (सं) पवित्र या धार्मिक स्थानों में दर्शन स्नानादि के निमित्त जाना। तीर्थाटन।

[illegible]

१-साक। पतला तिनका। २-धातु का पतला पर कड़ा तार। ३-रेशम लपेटने की पतली गड़ारी। ४-सूत साफ करने की जुलाहे की कूँची।
तीलीकारी स्त्री० (हि) कपड़े की करघे पर डाली हुई फूल पत्तियों वाली बुनावट।
तीव, तीवई स्त्री० (हि) औरत।
तीवन पुं० (हि) १-पकवान। २-रसेदार तरकारी।
तीवर पुं० (सं) १-समुद्र। २-व्याध। शिकारी। ३-मछुआ।
तीव्र वि० (सं) १-अतिशय। अत्यंत। २-तीक्ष्ण। तेज। ३-बहुत गरम। ४-नितांत। बेहद। ५-कटु कड़वा। तीता। ६-असह्य। ७-प्रचंड। ८-वेग-युक्त। ९-कुछ ऊँचा स्वर।
तीव्रता स्त्री० (सं) तीक्ष्णता। तेजी। तीखापन।
तीसर वि० (हि) तीसरा। स्त्री० खेत की तीसरी जुताई
तीसरा वि०(हि) १-गिनती या क्रम में तीन के स्थान पर पड़ने वाला। २-जिसके प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई सम्बन्ध न हो। तटस्थ।
तीसरा-पहर पुं० (हि) दोपहर के बाद का समय। अपराह्न।
तीसी स्त्री० (हि) अलसी नामक तिलहन।
तुंग वि० (सं) १-उन्नत। ऊँचा। २-उग्र। ३-प्रधान। मुख्य। पुं० पर्वत। पहाड़।
तुंगारण्य पुं०(सं) बेतवा तट ...
तुंगारन्न पुं० दे० 'तुंगारण्य'।
तुंड पुं०(सं) १-मुख। २- ...

तुम्हारो सर्व० दे० 'तुम्हारा'।
तुमुर वि० पुं० दे० 'तुमुल'।
तुमुल वि० (सं) १-जिसमें घोर-गुल हो। २-कई प्रकार की ध्वनियों के मेल से उत्पन्न (ध्वनि)। ३-भयंकर। ४-घबराया हुआ। पुं० घोर युद्ध। घमासान लड़ाई।
तुम्ह सर्व० दे० 'तुम'।
तुम्हरा सर्व० (हि) [स्त्री० तुम्हरी] तुम्हारा।
तुम्हारा
का।
तुम्हें सर्व० (हि) 'तुम' का विभक्तियुक्त रूप, जो उसे कर्म और सम्प्रदान में प्राप्त होता है। तुमको।
तुरंग, तुरंगम पुं० (सं) १-घोड़ा। २-चित्त। ३-सात की संख्या।
तुरंग-मुख पुं० (सं) किन्नर।
तुरंग-शाला स्त्री० (सं) अस्तबल।
तुरंग-स्थान पुं०(सं) घुड़साल। अस्तबल।
तुरंज पुं० (फा) १-चकोतरा नीबू। २-बिजौरा नीबू
तुरंजबीन स्त्री० (फा) नीबू के रस का शर्बत।
तुरत क्रि० वि० (हि) १-जल्दी से। चटपट। २-तत्काल।
तुर क्रि० वि० (हि) जल्दी से। शीघ्र। स्त्री० शीघ्रता।
तुरई स्त्री० (हि) एक बेल जिसके लम्बोतरे फलों की तरकारी बनाई जाती है। तोरी।
तुरकटा, तुरकड़ा पुं० (फा० तुर्क) मुसलमान (उपेक्षासूचक)।
तुरकाना पुं० (फा० तुर्क) [स्त्री० तुरकानी] १-तुर्किस्तान। २-तुर्कों का मोहल्ला या बस्ती। ३-मुसलमान। वि० तुर्कों का सा।
तुरकिन स्त्री० (फा० तुर्क) १-तुर्क स्त्री। २-मुसलमान स्त्री।
तुरकी वि० (फा) तुर्क देश का। स्त्री० तुर्किस्तान की भाषा।
तुरग पुं० (सं) घोड़ा।
तुरत अव्य० (हि) तुरन्त। चटपट।
तुरपन स्त्री०(हि) १-तुरपने की क्रिया। २-एक प्रकार की सिलाई।
तुरपना क्रि० (हि) सिलाई करना।
तुरमती स्त्री० (हि) एक तरह की शिकारी चिड़िया।
तुरय पुं० (हि) [स्त्री० तुरी] घोड़ा।
तुरस वि० दे० 'तुर्श'।
तुरसि स्त्री० (हि) १-वेग। तेजी। २-जल्दबाजी। ३-फुरती।
तुरसी स्त्री० दे० 'तुर्शी'।
तुरसीला वि० (फा० तुर्शी) १-तीखा। तीक्ष्ण। २-मधुर। ३-मनोहर।
तुरही स्त्री० (हि) एक प्रकार का बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।
तुरा स्त्री० दे० 'त्वरा'।
तुराइ क्रि० वि० (हि) आतुरता के साथ।
तुराई स्त्री० (हि) १-गद्दा। २-तुलाई। ३-शीघ्रता। जल्दी।
तुराट पुं० (हि) घोड़ा।
तुराना क्रि० (हि) १-आतुर होना। घबराना। २-
अथवा चढ़ने वाली।
तुरावान वि० (हि) वेगयुक्त। वेग वाला।
तुरित वि० दे० 'त्वरित'। क्रि० वि० दे० 'तुरंत'।
तुरिया वि० स्त्री० दे० 'तुरीय'।
तुरी स्त्री०(सं) १-जुलाहों का वेढ़िया नामक औजार २-जुलाहों की कूँची। वि० (सं) वेग वाली। वेगयुक्त। स्त्री० (हि) १-घोड़ी। २-तुरही नामक बाजा ३-फूलों का गुच्छा। ४-मोती की लड़ों का भब्बा। पुं० (हि) १-घोड़ा। २-अश्वारोही।
तुरीय वि० (सं) चौथा। चतुर्थ। स्त्री० १-वाणी का वह रूप या अवस्था जब वह मुख में आकर उच्चरित होती है। २-प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अन्तिम। पुं० निर्गुण ब्रह्म।
तुरीय-यन्त्र पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा सूर्य की गति जानी जाती है।
तुरुक पुं० [स्त्री० तुरकिन, तुरकी] तुर्क।
तुरुप पुं० (हि) ताश का एक खेल जिसमें कोई एक रङ्ग प्रधान माना जाता है। (ट्रम्प)।
तुरुष्क पुं० (सं) तुर्किस्तान का रहने वाला मनुष्य। २-तुर्किस्तान देश। ३-इस देश का घोड़ा।
तुर्क पुं० (फा) १-तुर्किस्तान का निवासी। २-मुसलमान। ३-टर्की या रूम का रहने वाला।
तुर्कमान पुं० (फा) १-तुर्क जाति का मनुष्य। २-तुर्की घोड़ा।
तुर्की वि० [फा० तुर्क] तुर्किस्तान का। स्त्री० १-तुर्किस्तान की भाषा। २-तुर्किस्तान का घोड़ा। ३-तुर्कों जैसा अकखड़पन या अभिमान।
तुर्की-टोपी स्त्री० (हि) फुंदना लगी ऊँची गोल टोपी।
तुर्रा पुं० (अ) १-घुंघराले बालों की लट। काकुल। २-कलँगी। ३-टोपी में का फुँदना। ४-पक्षियों के सिरों पर निकला परों का गुच्छा। चोटी। शिखा। ५-कोड़ा। चाबुक। ६-जटाधारी। वि० (अ) अनोखा। अद्भुत।
तुर्श वि० (फा) १-खट्टा। २-रूखा। ३-क्रुद्ध।
तुर्शाना क्रि० (हि) खट्टा हो जाना।
तुर्शी स्त्री० (फा) १-खटाई। खट्टापन। रुखाई।
तुल वि० दे० 'तुल्य'।

चार आदि हथियार की नोंक। ५-शिव। महादेव
तुंडि स्त्री० (सं) १-मुँह। २-चोंच ३-नाभि।
तुंडी वि० (सं) १-मुख वाला। २-चोंच। वाला। स्त्री० नाभि। पुं० गणेश।
तुंद पुं० (सं) पेट। उदर। वि० (फा) तेज। प्रचंड। विकट।
तुंदिल वि० (सं) तोंद वाला।
तुंदैत, तुंदैला वि० (हि) बड़े पेट वाला।
तुंबर पुं० दे० 'तुंबुरु'।
तुंबा पुं० दे० 'तूँबा'।
तुंबुरु पुं० (सं) १-धनिया। २-धनिये के आकार का एक पौधा।
तुअ सर्व० (हि) १-दे० 'तुव'। २-दे० 'तव'।
तुअना क्रि०(हि) १-चूना। टपकना। २-गिर पड़ना। गर्भपात होना।
तुअर पुं० (हि) तूअर। अरहर।
तुक स्त्री०(हि) १-किसी पद या गीत का कोई खण्ड। कड़ी। २-पद्य के चरण का अन्तिम अक्षर। ३-कविता के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल। काफिया। ४-दो बातों या कामों का पारस्परिक सामंजस्य। ५-किसी बात की उपयोगिता से गति।
तुकबंदी स्त्री० (हि) १-केवल तुक मिलाकर बनाई कविता जिसमें काव्य के गुण न हों। २-भद्दी कविता
तुकमा पुं० (फा० तुक्मः) वह फन्दा जिसमें पहनने के कपड़ों की घुण्डी फँसाई जाती है।
तुकांत पुं० (हि) अन्त्यानुप्रास। काफिया।
तुका पुं० दे० 'तुक्का'।
तुकार स्त्री० (हि) 'तू' 'तू' करके बोलना जो अशिष्ट माना जाता है।
तुकारना क्रि० (हि) तू-तू करके सम्बोधन करना।
तुक्कड़ पुं० (हि) वह जो तुकबन्दी करता हो।
तुक्कल स्त्री० (फा० तुकः) बड़ी पतङ्ग।
तुक्का पुं० (फा० तुकः) १-वह तीर जिसमें गाँसी या फल के स्थान पर घुण्डी बनी होती है। २-छोटी पहाड़ी। ३-सीधी खड़ी वस्तु।
तुख पुं० (सं) १-भूसी। छिलका। २-अंडे के ऊपर का छिलका।
तुखार पुं० (सं) १-हिमालय के उत्तर-पश्चिम का एक देश। २-इस देश का निवासी। ३-इस देश का घोड़ा। पुं० दे० 'तुषार'।
तुख्म पुं० (अ) बीज।
तुच, तुचा स्त्री० दे० 'त्वचा'।
तुचार वि० (हि) पैना।
तुच्छ वि० (सं) १-हीन। २-थोछा। नीच। ३-अल्प। ४-खोखला।
तुच्छातितुच्छ वि०(सं) छोटे से छोटा। अत्यन्त तुच्छ
तुच्छार्थक वि० (सं) तुच्छतासूचक अर्थ देने वाला।
तुजुक पुं० (तु०) १-शान। २-नियम। कायदा। ३-प्रथा। दस्तूर। ४-अभिनन्दन।
तुझ सर्व० (हि) 'तू' का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त अन्य विभक्तियाँ लगने से पूर्व प्राप्त होता है।
तुझे सर्व० (हि) 'तू' का कर्म और सम्प्रदान रूप। तुझको।
तुट वि० (हि) बहुत थोड़ा।
तुट्ठना क्रि० (हि) १-तुष्ट या प्रसन्न करना। २-प्रसन्न होना।
तुड़वाना क्रि० (हि) तोड़ने में प्रवृत्त करना।
तुड़ाना क्रि० (हि) १-तुड़वाना। २-सम्बन्ध न रखना। अलग करना। ३-बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना।
तुतरा वि० दे० 'तुतला'।
तुतराना क्रि० दे० 'तुतलाना'।
तुतरौहाँ वि० (हि) तोतला।
तुतला वि० दे० 'तोतला'।
तुतलाना क्रि० (हि) शब्दों और वर्णों का रुक-रुककर या अस्पष्ट उच्चारण करना। साफ न बोलना।
तुत्थ पुं० (सं) तूतिया।
तुन पुं० (हि) एक वृक्ष जिसके फूलों से बसन्ती रङ्ग निकलता है।
तुनक वि० (फा) १-दुर्बल। कमजोर। २-कोमल।
तुनक-मिजाज वि० (फा) चिड़चिड़ा।
तुनक-मिजाजी स्त्री० (फा) चिड़चिड़ापन।
तुनीर पुं० दे० 'तूणीर'।
तुनुक वि० दे० 'तुनक'।
तुपक स्त्री० [तु० तोप] १-छोटी तोप। २-बन्दूक।
तुपकची पुं० (तु) तुपक चलाने वाला। गोलन्दाज।
तुपकिया स्त्री०(हि) छोटी तुपक। पुं० बन्दूक चलाने वाला।
तुफंग स्त्री० (फा) १-हवाई बन्दूक। २-एक तरह की लम्बी नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूँक के जोर से चलाते हैं।
तुफान पुं० दे० 'तूफान'।
तुभना क्रि० (हि) स्तब्ध रहना। ठक रह जाना।
तुम सर्व० (हि) 'तू' शब्द का बहुवचन रूप जिसका प्रयोग उस पुरुष के लिए होता है जिसे सम्बोधित करके कुछ कहा जाता है।
तुमड़ी स्त्री० (हि) १-छोटा तूँबा। तुंबी। २-सूखे कद्दू का बनाया हुआ बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं। ३-सूखे कद्दू का बनाया हुआ साधुओं का जलपात्र।
तुमरा सर्व० दे० 'तुम्हारा'।
तुमरी स्त्री० दे० 'तुमड़ी'। सर्व० (हि) तुम्हारी।

तुमरो सर्व० दे० 'तुम्हारा'।
तुमुर वि० पुं० दे० 'तुमुल'।
तुमुल वि० (सं) १-जिसमें शोर-गुल हो। २-कई प्रकार की ध्वनियों के मेल से उत्पन्न (ध्वनि)। ३-भयंकर। ४-घबड़ाया हुआ। पुं० घोर युद्ध। घमासान लड़ाई।
तुम्ह सर्व० दे० 'तुम'।
तुम्हरा सर्व० (हि) [स्त्री० तुम्हरी] तुम्हारा।
तुम्हारा सर्व० (हि) 'तुम' शब्द का सम्बन्धकारक रूप।
तुम्हें सर्व० (हि) 'तुम' का विभक्तियुक्त रूप, जो उसे कर्म और सम्प्रदान में प्राप्त होता है। तुमको।
तुरग, तुरगम पुं० (सं) १-घोड़ा। २-चित्त। ३-सात की संख्या।
तुरग-मुख पुं० (सं) किन्नर।
तुरंग-शाला स्त्री० (सं) अस्तबल।
तुरंग-स्थान पुं०(सं) घुड़साल। अस्तबल।
तुरंज पुं० (फा) १-चकोतरा नीबू। २-बिजौरा नीबू
तुरंजबीन स्त्री० (फा) नीबू के रस का शर्बत।
तुरंत क्रि० वि० (हि) १-जल्दी से। चटपट। २-तत्काल।
तुर वि० वि० (हि) जल्दी से। शीघ्र। स्त्री० शीघ्रता।
तुरई स्त्री० (हि) एक बेल जिसके लम्बोतरे फलों की तरकारी बनाई जाती है। तोरी।
तुरकटा, तुरकड़ा पुं० (फा० तुर्क) मुसलमान (उपेक्षासूचक)।
तुरकाना पुं० (फा० तुर्क) [स्त्री० तुरकानी] १-तुर्किस्तान। २-तुर्कों का मोहल्ला या बस्ती। ३-मुसलमान। वि० तुर्कों का सा।
तुरकिन स्त्री० (फा० तुर्क) १-तुर्क स्त्री। २-मुसलमान स्त्री।
तुरकी वि० (फा) तुर्क देश का। स्त्री० तुर्किस्तान की भाषा।
तुरग पुं० (सं) घोड़ा।
तुरत अव्य० (हि) तुरन्त। चटपट।
तुरपन स्त्री०(हि) १-तुरपने की क्रिया। २-एक प्रकार की सिलाई।
तुरपना क्रि० (हि) सिलाई करना।
तुरमती स्त्री० (हि) एक तरह की शिकारी चिड़िया।
तुरय पुं० (हि) [स्त्री० तुरी] घोड़ा।
तुरस वि० दे० 'तुर्श'।
तुरसि स्त्री० (हि) १-तेज। तेजी। २-जल्दबाजी। ३-फुरती।
तुरसी स्त्री० दे० 'तुर्शी'।
तुरसीला वि० (फा० तुर्श) १-तीखा। तीक्ष्ण। २-चतुर। ३-मनोहर।
तुरही स्त्री० (हि) एक प्रकार का बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।
तुरा स्त्री० दे० 'त्वरा'।
तुराइ क्रि० वि० (हि) आतुरता के साथ।
तुराई स्त्री० (हि) १-गद्दा। २-तुलाई। ३-शीघ्रता। जल्दी।
तुराट पुं० (हि) घोड़ा।
तुराना क्रि० (हि) १-आतुर होना। घबराना। २-तुड़ाना।
तुराय क्रि० वि० (हि) आतुरता के साथ।
तुरावती वि० स्त्री० (हि) वेगवती। शीघ्रगति से चलने अथवा बहने वाली।
तुरावान वि० (हि) वेगयुक्त। वेग वाला।
तुरित वि० दे० 'त्वरित'। क्रि० वि० दे० 'तुरंत'।
तुरिया वि० स्त्री० दे० 'तुरीय'।
तुरी स्त्री०(सं) १-जुलाहों का ढोढ़िया नामक औजार २-जुलाहा की कूँची। वि० (सं) वेग वाली। वेगयुक्त। स्त्री० (हि) १-घोड़ी। २-तुरही नामक बाजा ३-फूलों का गुच्छा। ४-मोती की लड़ों का झब्बा। पुं० (हि) १-घोड़ा। २-अश्वारोही।
तुरीय वि० (सं) चौथा। चतुर्थ। स्त्री० १-वाणी का वह रूप या अवस्था जब वह मुख से आकर उच्चरित होती है। २-प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अन्तिम। पुं० निर्गुण ब्रह्म।
तुरीय-यन्त्र पुं० (स) वह यन्त्र जिसके द्वारा सूर्य की गति जानी जाती है।
तुरुक पुं० [स्त्री० तुरकिन, तुरकी] तुर्क।
तुरुप पुं० (हि) ताश का एक खेल जिसमें कोई एक रङ्ग प्रधान माना जाता है। (ट्रम्प)।
तुरुष्क पुं० (सं) तुर्किस्तान का रहने वाला मनुष्य। २-तुर्किस्तान देश। ३-इस देश का घोड़ा।
तुर्क पुं० (फा) १-तुर्किस्तान का निवासी। २-मुसलमान। ३-टर्की या रूम का रहने वाला।
तुर्कमान पुं० (फा) १-तुर्क जाति का मनुष्य। २-तुर्की घोड़ा।
तुर्की वि० [फा० तुर्क०] तुर्किस्तान का। स्त्री० १-तुर्किस्तान की भाषा। २-तुर्किस्तान का घोड़ा। ३-तुर्कों जैसा अक्खड़पन या अभिमान।
तुर्की टोपी स्त्री० (हि) फुन्दा लगी ऊँची गोल टोपी।
तुर्रा पुं० (फा) १-घुंघराले बालों की लट। काकुल। २-कलँगी। ३-टोपी में का फुँदना। ४-पक्षियों के सिरों पर निकला परों का गुच्छा। चोटी। शिखा। ५-कोड़ा। चाबुक। ६-पटापारी। अनोखा। अद्भुत।
तुर्श वि० (फा) १-खट्टा। २-रूखा।
तुर्शाना क्रि० (हि) खट्टा हो जाना।
तुर्शी स्त्री० (फा) १-खटाई। खट्टापन।
तुल वि० दे० 'तुल्य'।

तुलना क्रि० (हि) १-तराजू पर तोला जाना। २-तौल या मान में बराबर उतरना। ३-किसी आधार पर ठहरना। ४-नियमित होना। बँधना। ५-गाड़ी के पहिये का औंगा जाना। ६-उद्यत होना। स्त्री० (सं) १-दो या अधिक वस्तुओं के गुण-दोष का विचार। मिलन। २-तारतम्य। ३-सादृश्य। समता। ४-उपमा।

तुलनात्मक वि०(सं) जिसमें किसी से तुलना की जाय

तुलवाई स्त्री० (हि) तौलने का काम या मजदूरी।

तुलवाना क्रि० (हि) १-वजन कराना। २-गाड़ी के पहिये में तेल दिलाना।

तुलसिका स्त्री० दे० 'तुलसी'।

तुलसी स्त्री० (सं) एक पौधा जिसे पवित्र माना जाता है।

तुलसीदल पुं० (सं) तुलसी के पौधे का पत्ता।

तुलसीदास पुं० (सं) उत्तर-भारत के प्रसिद्ध भक्त कवि जिन्होंने रामचरितमानस बनाया था।

तुलसी-पत्र पुं० (सं) तलसीदल।

तुलसीवन पुं० (सं) वृन्दावन।

तुला स्त्री० (सं) १-तुलना। मिलान। २-तराजू। काँटा। ३-मान। तौल। ४-बारह राशियों में से सातवीं राशि।

तुलाई स्त्री० (हि) १-तौलने का काम या भाव। २-तौलने की मजदूरी। २-तूलने या औंधने (गाड़ी के पहिये की धुरी में तेल देने) का काम या मजदूरी ३-दुलाई।

तुला-दंड पुं० (सं) तराजू की डण्डी।

तुला-दान पुं० (सं) दान विशेष जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान होता है

तुलाधार पुं० (सं) १-तुला राशि। २-बनिया। वणिक्। ३-तराजू की डोरी। ४-काशी के एक वणिक का नाम। ५-काशी निवासी एक व्याध।

तुलाना क्रि० (हि) १-आ पहुँचना। समीप होना। २-पूरा उतरना। ३-नष्ट होना। ४-बराबर होना। ५-तुलवाना।

तुला-पत्र पुं० (सं) दे० 'तलपट'।

तुला-परीक्षा स्त्री० (सं) अभियुक्तों की वह परीक्षा जिसमें उन्हें बार-बार तौलते थे और दोनों बार तौल समान न होने की अवस्था में निर्दोष मानते थे

तुलामान पुं० (सं) तौलकर किया जाने वाला मान। बाँट।

तुलायंत्र पुं० (सं) तराजू।

तुल्य वि० (सं) १-समान। बराबर। २-सदृश।

तुल्यता स्त्री० (सं) १-समता। २-सादृश्य।

तुल्य-योगिता स्त्री० (सं) साहित्य में एक अलङ्कार।

तुल्ययोगी वि० (सं) समान सम्बन्ध रखने वाला।

तुव सर्व० दे० 'तव'।

तुवर वि० (सं) १-कसैला। २-बिना दाढ़ी मूँछ का। पुं० १-कषाय रस। २-अरहर।

तुष पुं० (सं) १-अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी। २-अण्डे के ऊपर का छिलका।

तुषानल पुं० (सं) १-भूसी की आग। २-भूसी या घास-फूस में जल-मरने की क्रिया जो प्रायश्चित्त रूप में की जाती है।

तुषार पुं० (सं) १-हवा में मिली भाप जो जमकर पृथ्वी पर गिरती है। पाला। २-हिम। बरफ। ३-हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ४-इस देश में बसने वाली जाति।

तुषार-कण पुं० (सं) हिम-कण।

तुषारकर, तुषार-किरण, तुषार-मूर्त्ति, तुषार-रश्मि पुं० (सं) हिमकर। चन्द्रमा।

तुषार-रेखा स्त्री०(सं) पर्वतों पर की वह कल्पित रेखा, जिसके ऊपरी भाग पर बरफ बराबर जमी रहती है तथा नीचे के भाग का बरफ ग्रीष्मकाल में गल जाता है। (स्नो-लाइन)।

तुष्ट वि० (सं) १-तृप्त। २-राजी। प्रसन्न।

तुष्टता स्त्री० (सं) सन्तोष। प्रसन्नता।

तुष्टना क्रि० (हि) प्रसन्न होना।

तुष्टि स्त्री० (सं) १-सन्तोष। तृप्ति। २-प्रसन्नता।

तुष्टिकरण पुं० (सं) किसी क्रुद्ध या झगड़ालू व्यक्ति को अधिक रियायत देकर अनुनय विनय द्वारा सन्तुष्ट करना। मनुहार। (अपीजमेंट)।

तुष्टिकरण-नीति स्त्री० (सं) एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य को खुश करने की नीति।

तुस पुं० (सं) तुष।

तुसार पुं० (सं) तुषार।

तुसी स्त्री० (हि) तुष। भूसी। सर्व०, वि० (पंजाबी) आप।

तुहमत स्त्री० दे० 'तोहमत'।

तुहि सर्व० (हि) तुझको।

तुहिन पुं० (सं) १-पाला। कुहरा। तुषार। २-हिम। बरफ। ३-चाँदनी। ४-शीतलता।

तुहिनकण पुं०(सं) हिमकण। बरफ का छोटा टुकड़ा

तुहिन-कर, तुहिन-किरण, तुहिन-दीधित, तुहिन-द्युति, तुहिनरश्मि पुं० (सं) चन्द्रमा।

तुहिन-गिरि, तुहिन-शैल पुं० (सं) हिमालय।

तुहिनांशु, तुहिनाभ्रु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर

तुहिनाचल, तुहिनाद्रि पुं० (सं) हिमालय पर्वत।

तुहें सर्व० (हि) तुम्हें।

तू सर्व० (हि) तू।

तूँबड़ा, तूँबा पुं० (हि) (स्त्री० तूँबड़ी, तूँबी) १-कड़ुवा गोल कद्दू। २-कद्दू का खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे साधु लोग साथ रखते है। कमंडल।

तू

तू सर्व० (हि) मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम (अशिष्ट)
तूअर पुं० (हि) अरहर का पौधा, दाने या बीज।
तूका पुं० (हि) तिनके का टुकड़ा। सींक। खरका।
तूठना क्रि० (हि) प्रसन्न होना या करना।
तूटना क्रि० (हि) टूटना।
तूठना क्रि० (हि) १-तुष्ट होना। अघाना। २-प्रसन्न होना।
तूण पुं० (सं) १-तीर रखने का चोंगा। तरकश। २-निषंग। ३-एक वृक्ष विशेष।
तूणीर पुं० (सं) तीर रखने का चोंगा। निषङ्ग।
तूतिया पुं० (हि) नीलाथोथा।
तूती स्त्री० (फा) १-एक छोटे आकार का तोता। २-एक तरह की छोटी चिड़िया। ३-एक प्रकार का छोटा बाजा।
तूदा पुं० (फा) १-राशि। ढेर। २-सीमा का चिह्न।

... ध्यान करना।
तूनीर पुं० (हि) तूणीर। निषङ्ग।
तूफान पुं० (प) १-भीषण आँधी तथा वर्षा का एक साथ होना। २-आँधी। ३-आपत्ति। आफत। ४-हल्ला-गुल्ला। ५-झगड़ा। बखेड़ा। दङ्गा। ६-दोषारोपण।
तूफानी वि० (फा) १-तूफान की तरह का। २-उपद्रवी। ३-उग्र। प्रचण्ड। ४-झूठी तोहमत लगाने वाला।
तूमड़ा पुं० (हि) [स्त्री० तुमड़ी] तूँबा।
तूमड़ी स्त्री०(हि) १-तूँबी। २-तूँबी का बना बाजा। मजीरे की बीन।
तूमना क्रि० (हि) १-तनना। रुई धुनना। २-रुई में से बिनौला निकालना। ३-भरजी करना। ४-हाथ से मसलना। ५-रहस्य खोलना।
तूमरी स्त्री० (हि) तूँबी।

तूरा पुं० (हि) तुरहा। दुन्दुभ।
तूरन, तूरन क्रि० वि० (हि) तुरंत।
तूरान पुं० (फा) मध्य एशिया महाद्वीप का फारस के उत्तर का सारा भाग।
तूरानी वि० (फा) तूरान देश का। पुं० तूरान देश का निवासी।
तूर्ण क्रि० वि० (सं) शीघ्र। तुरन्त।
तूर्णक पुं० (सं) एक तरह का चावल।
तूर्य पुं० (सं) तुरही नामक बाजा।
तूल पुं० (सं) १-आकाश। २-शहतूत। ३-कपास, सेमल आदि के डोडों के अन्दर का धूआ। ४-रुई।
पुं० (हि) १-चटकीले लाल रङ्ग का सूती कपड़ा। २-गहरा लाल रङ्ग। वि० तुल्य। समान। पुं० विस्तार। लम्बाई।
तूलता स्त्री० (हि) सादृश्य।
तूलना क्रि० (हि) पहिये की धुरी में चिकनाई डालना।
तूलमतूल अव्य० (हि) आमने-सामने।
तूला स्त्री० (सं) १-कपास। २-दीपक की बत्ती।
तूलि स्त्री० (सं) १-तकिया। २-तूलिका।
तूलिका स्त्री० (सं) चित्र अंकित करने या रङ्ग भरने की कलम या कूँची।
तूष्णीं वि० (हि) मौन। स्त्री० (हि) खामोशी।
तूष्णीक वि० (सं) मौन साधने वाला।
तूष्णीभूत वि० (सं) मौन।
तूस पुं०(हि) १-भूसा। २-एक उत्तम प्रकार का ऊन जो पहाड़ी बकरी के शरीर पर होता है। ३-इस ऊन की बनी चादर।

... अथवा प्रसन्न होना।

तृजग वि० दे० 'तिर्यक'।
तृण पुं० (सं) १-तिनका। २-घास।
तृण-कुटी स्त्री० (सं) झोंपड़ी।
तृण-कुटीर, तृण-कुटीरक पुं० (सं) फूँस की झोंपड़ी
तृणमय वि० (सं) घास का बना।
तृण-मणि पुं० (सं) कपूर मणि। कहरुवा।
तृतीय वि० (सं) तीसरा।
तृतीयांश पुं० (सं) तीसरा भाग।
तृतीया स्त्री० (सं) १-प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। तीज। २-व्याकरण में करण कारक।
तृन पुं० (हि) तृण। तिनका।
तृपति स्त्री० दे० 'तृप्ति'।
तृपित वि० दे० 'तृप्त'।
तृप्त वि० (सं) १-जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो। सन्तुष्ट। २-प्रसन्न। खुश।
तृप्ति स्त्री० (सं) १-इच्छा पूर्ण होने से प्राप्त शांति और आनन्द। सन्तोष। २-प्रसन्नता। खुशी।
तृषा स्त्री० (सं) १-प्यास। २-इच्छा। अभिलाषा। ३-लोभ। लालच।
तृषावंत, तृषावान् वि० (सं) प्यासा।
तृषित वि० (सं) १-प्यासा। २-अभिलाषी। इच्छुक
तृष्ण वि० (सं) १-प्यासा। २-किसी तरह की इच्छा या कामना रखने वाला।
तृष्णा स्त्री० (सं) १-प्यास। २-अप्राप्त वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा। ३-लोभ।
तृस्ना स्त्री० दे० 'तृष्णा'।
तें प्रत्य० (हि) से।
तेंदुआ पुं० (देश०) चीते की जाति का एक हिंसक

पशु।
तेंदू पुं० (हि) वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी आबनूस कहलाती है।
ते अव्य० (हि) से। सर्व० (सं) वे। वे लोग।
तेइ सर्व० (हि) उसे। वे ही।
तेऊ सर्व० (हि) वे भी।
तेखना क्रि० (हि) रुष्ट या नाराज होना।
तेग स्त्री० (अ) तलवार।
तेगा पुं० [अ० तेग] तलवार। खड्ग।
तेज पुं०(सं) १-दीप्ति। चमक। २-पराक्रम। वीर्य। ४-सार भाग। ताव। ५-ताप। गरमी। ६-तेजी। प्रखरता। ७-प्रताप। रोबदोब। ८-अग्नि। वि० (फा) १-तीक्ष्ण या पैनी धार वाला। २-चलने में शीघ्रगामी। ३-फुरतीला। ४-तीक्ष्ण। तीता। ५-महँगा। ६-तुरन्त अधिक प्रभाव दिखाने वाला। ७-प्रखर या तीव्र बुद्धि वाला। ८-बहुत अधिक चपल या चंचल।
तेजना क्रि० (हि) तजना। छोड़ना।
तेजपत्ता, तेजपत्र, तेजपात पुं० (हि) दारचीनी की जाति का एक वृक्ष या उसका पत्ता जो मसाले में काम आता है।
तेजमान, तेजवंत वि० (हि) तेजवान।
तेजवान् वि० (सं) १-जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २-वीर्यवान। ३-बलशाली।
तेजस् पुं० दे० 'तेज'।
तेजसी वि० दे० 'तेजस्वी'।
तेजस्वी वि० (सं) १-तेज वाला। २-प्रतापी। ३-शक्तिशाली। ४-प्रभावशाली।
तेजाब पुं० (फा) किसी क्षार पदार्थ का अम्ल जिसमें अन्य वस्तुओं को गलाने की शक्ति रहती है। (एसिड)।
तेजाबी वि० (फा) तेजाब सम्बन्धी।
तेजाबी-सोना पुं०[फा०+हि०] तेजाब से साफ किया हुआ सोना।
तेजायतन पुं० (हि) परम तेजस्वी।
तेजी स्त्री० (फा) १-तेज होने का भाव। २-तीव्रता। ३-उग्रता। प्रचंडता। ४-शीघ्रता। ५-महँगी।
तेजोन्वेष पुं० (सं) एक वैज्ञानिक यन्त्र जिसकी सहायता से यह जाना जाता है कि आकाश, जल या स्थल पर किसी दिशा में और कितनी दूरी पर शत्रु के जलयान या सैनिक महत्व के संगठन हैं तथा उन पर अचूक प्रहार किया जा सकता है या नहीं।
तेजोमय वि० (सं) १-तेज से पूर्ण। २-जिसके शरीर में तेज फूटता हो। ज्योतिर्मय।
तेजोमूर्त्ति पुं० (सं) सूर्य। वि० जिसमें अधिक तेज हो।
तेजोहत वि० (सं) जिसका तेज नष्ट होगया हो।
तेड़ाना क्रि० (हि) बुलाना।
तेता, तेतिक, तेतो वि० (हि) [स्त्री० तेती] उतना। उसी परिमाण का।
तेपि पद० दे० 'तेऊ'।
तेरस स्त्री० दे० 'त्रियोदशी'।
तेरह वि० (हि) दस और तीन। पुं० दस और तीन के योग से बनने वाली संख्या।
तेरही स्त्री० (हि) मरने की तिथि से तेरहवीं तिथि जिसमें पिण्डदान और ब्राह्मण-भोजन कराकर घर के लोग शुद्ध होते हैं।
तेरा सर्व० (हि) (स्त्री० तेरी) मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम जो 'तू' का सम्बन्धकारक रूप है।
तेरुस पुं० दे० 'त्योरस'। स्त्री० (हि) तेरस। त्रियोदशी
तेरे अव्य० (हि) से।
तेरो सर्व० (हि) तेरा।
तेल पुं० (हि) १-वह तरल स्निग्ध-पदार्थ जो बीजों और वनस्पतियों से निकलता है। २-विवाह की एक रीति। ३-औषध रूप में प्रयुक्त होने वाली पिघलाई हुई चर्बी।
तेलगू स्त्री० (हि) तैलङ्ग देश की भाषा।
तेलहन पुं० (हि) वे बीज जिनसे तेल निकलता है।
तेलहा वि० (हि) (स्त्री० तेलही) १-तेल से सम्बद्ध। २-तेल का। तेल में बना हुआ। ३-जिसमें तेल हो।
तेलिया वि० (हि) १-तेल जैसा चिकना। २-तेल के रङ्ग जैसा। पुं० १-काला रङ्ग। २-इस रङ्ग का घोड़ा। ३-एक विष।
तेलिया-पखान पुं० (हि) एक प्रकार का काला और चिकना पत्थर।
तेलिया-मसान पुं० (हि) भारी कञ्जूस आदमी।
तेलिया-मैना स्त्री० (हि) एक तरह की मैना।
तेलिया-सुहागा पुं० (हि) एक तरह का सुहागा।
तेली पुं० (हि) (स्त्री० तेलिन) तेल पेरने और बेचने का धन्धा करने वाली एक जाति।
तेलौना वि० (हि) १-तेल से युक्त। स्निग्ध। जिसमें सुगन्धित तेल लगा हो।
तेवन पुं० (हि) १-घर के आगे का बगीचा। नजरबाग। २-आमोद-प्रमोद का स्थान या वन। ३-क्रीड़ा।
तेवर पुं० (हि) १-कुपित दृष्टि। २-देखने का ढङ्ग। ३-भौंह। भृकुटी। ४-स्त्रियों के तीनों (साड़ी, चोली और ओढ़नी) कपड़े।
तेवरी स्त्री० दे० 'त्योरी'।
तेवहार पुं० दे० 'त्योहार'।
तेवान पुं० (हि) सोच। चिन्ता।
तेवाना क्रि० (हि) सोच या चिन्ता में पड़ना।
तेह पुं० (हि) १-क्रोध। रोस। २-घमण्ड। ३-तेजी ४-तीखापन।

फुसला लेना।
तोड़-फोड़ पुं० (हि) १-किसी वस्तु को नष्ट करने की क्रिया या भाव। २-जान-बूझकर राष्ट्रीय सम्पत्ति या कल-कारखानों को क्षति पहुँचाना। ध्वंसन। (सैबोटेज)।
तोड़र पुं० (हि) १-तोड़ा। २-पैर का एक गहना।
तोड़वाना क्रि० (हि) दे० 'तुड़वाना'।
तोड़ा पुं०(हि) १-सोने या चाँदी की चौड़ी लच्छेदार सिकड़ी जो हाथों या पैरों में पहनी जाती है। २-रुपया रखने की टाट की थैली। ३-नदी का किनारा। तट। ४-नदी के संगम पर बना हुआ वह मैदान जो बालू मिट्टी जमा होने के कारण बन जाता है। ४-कमी। घाटा। ५-रस्से का टुकड़ा। ६-नाच का एक भाग। ७-हरिस (हल का) ८-फलीता।
तोड़ाई स्त्री० दे० 'तुड़ाई'।
तोड़ाना क्रि० दे० 'तुड़ाना'।
तोण पुं० (हि) निषङ्ग। तरकश।
तोत पुं० (हि) ढेर। समूह।
तोतई वि० (हि) तोते के से रङ्ग का। धानी।
तोतक पुं० (हि) पपीहा।
तोतर, तोतरा वि० (हि) तोतला।
तोतराना क्रि० (हि) तुतलाना।
तोतला वि० (हि) १-तुतलाकर बोलने वाला। २-तुतलाने का सा।
तोतलाना क्रि० (हि) तुतलाना।
तोता पुं० (हि) शुक नामक पक्षी। सूआ।
तोता-चश्म पुं० (फा) १-बेवफा। २-बे-मुरव्वत।
तोता-चश्मी स्त्री० (फा) १-बे-वफाई। २-बे-मुरव्वती
तोता-परी पुं० (हि) एक प्रकार का आम।
तोती स्त्री० (हि) १-तोता पक्षी की मादा। २-उप-पत्नी।
तोद पुं० (सं) १-व्यथा। पीड़ा। २-हाँकना।
तोदन पुं० (सं) १-चाबुक। कोड़ा। २-व्यथा। पीड़ा
तोप स्त्री० (तु) एक प्रकार का बड़ा आग्नेय अस्त्र जो युद्ध में प्रहार करने के काम आता है।
तोप-खाना पुं० (तु+फा) १-वह स्थान जहाँ तोपें रहती हैं। २-युद्ध के निमित्त सुसज्जित तोपों का समूह।
तोपची पुं० (हि) तोप चलाने वाला। तोप चलाने पर नियुक्त व्यक्ति।
तोपना क्रि० (हि) ढाँकना। छिपाना।
तोपवाही-नौका स्त्री० (हि) एक या एक से अधिक तोप वाला छोटा जहाज। (गन-बोट)।
तोप-विद्या स्त्री० (हि) बड़ी-बड़ी तोपों के निर्माण और प्रबन्ध आदि का कार्य। (गनेरी)।
तोप-सैनिक पुं० (हि) तोप चलाने पर नियुक्त सैनिक। तोपची। (आर्टिलरी-मैन)।
तोपा पुं० (देश) एक टाँके भर की सिलाई।
तोफा वि० (हि) १-तोहफा। २-बढ़िया।
तोबड़ा पुं० (फा) चमड़े या टाट का वह थैला जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाने के लिए उसके मुख पर बाँधते हैं।
तोबा पुं० (अ० तौबः) भविष्य में अनुचित कार्य करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।
तोम पुं० (हि) समूह। ढेर।
तोमड़ी स्त्री० (हि) तूँबड़ी।
तोमर पुं० (सं) १-भाले की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। २-एक देश का नाम। ३-उस देश का निवासी। ४-राजपूत क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश। ५-बारह मात्राओं का एक छन्द।
तोमरी स्त्री० (हि) तूँबड़ी।
तोय पुं० (सं) १-जल। पानी। २-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।
तोयधर, तोयधार पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-मोथा।
तोयधि, तोयनिधि पुं० (सं) सागर। समुद्र।
तोय-यंत्र पुं० (सं) १-जलघड़ी। २-फौवारा।
तोर पुं० दे० 'तोड़'। वि० दे० 'तेरा'।
तोरई स्त्री० (हि) तुरई।
तोरण पुं० (सं) १-किसी घर या नगर का बाहरी फाटक। २-सजावट के लिए लटकाई जाने वाली मालाएँ, पत्तियाँ आदि। वन्दनवार।
तोरन पुं० दे० 'तोरण'।
तोरना क्रि० (हि) तोड़ना।
तोरा सर्व० दे० 'तेरा'।
तोराई अव्य० (हि) १-वेग पूर्वक। २-तेजी से। शीघ्रतापूर्वक।
तोराना क्रि० (हि) तोड़ाना। तुड़ाना।
तोरावन् वि० (हि) [स्त्री० तोरावती] वेगवान्। तेज।
तोरी स्त्री० (हि) १-तुरई। २-काले रङ्ग की सरसों।
तोल स्त्री० (हि) तौल। वि० दे० 'तुल्य'।
तोलन पुं०(सं) १-तौलने की क्रिया। २-ऊपर उठाना
तोलना क्रि० (हि) १-तौलना। २-पहिये की धुरी में तेल देना। ३-धनुष आदि संभालना। ४-उठाना।
तोला पुं० (हि) १-बारह माशे की तौल। २-इस तौल का बाट।
तोशक स्त्री० (तु) बिछाने का रूई भरा गद्दा।
तोशदान पुं० (फा० तोशःदान) १-मार्ग के लिए जलपान अथवा दूसरी आवश्यक वस्तुएँ रखने का पात्र आदि। २-कारतूस रखने की चमड़े की थैली।
तोशा पुं० (फा० तोशः) १-पाथेय। २-साधारण खाने-पीने की वस्तु।
तोशाखाना पुं० (फा) वह स्थान जहाँ अमीरों के

बहुमूल्य आदि रक्खे रहते हैं।
तोष पु० (सं) १-तुष्टि। सन्तोष। तृप्ति। २-प्रसन्नता। आनन्द।
तोषक वि० (सं) सन्तुष्ट करने वाला।
तोषण पु० (सं) १-सन्तुष्ट करने की क्रिया या भाव २-तृप्ति। सन्तोष। वि० सन्तुष्ट या प्रसन्न करने वाला।
तोषणिक पु० (सं) किसी को तुष्ट करने के लिए दिया जाने वाला धन। वि० तोष सम्बन्धी।
तोषन पुं० वि० दे० 'तोषण'।
तोषना क्रि० (हि) सन्तुष्ट होना या करना।
तोसार पु० (हि) घोड़ा (तुखार देश का)।
तोस पु० दे० 'तोष'।
तोसा पु० दे० 'तोशा'।
तोसाखाना पु० दे० 'तोशाखाना'।
तोहफा पुं० (फ) उपहार। सौगात। वि० बढ़िया।
तोहमत स्त्री० (फ) झूठा आरोप। मूठा कलंक।
तोहमती वि० (फ) मिथ्या आरोप करने वाला।
तोहार सर्व० (हि) तुम्हारा।
तोहिं, तोहीं सर्व० (हि) तुझे। तुम्हें।
तौंस स्त्री० दे० 'तौंस'।
तौंसना क्रि० दे० 'तौंसना'।
तौंस स्त्री० (हि) १-ताप। गरमी। २-उमस।
तौंसना क्रि० (हि) १-गरमी से भुलसना। २-उमस होना।
तौ क्रि० वि० दे० 'तो'। क्रि० (हि) था। सि० तेरा। तुम्हारा। अव्य० हाँ। ठीक है।
तौक पुं० (प) १-गले में पहनने का एक गहना। २-अपराधी या पागल के गले में पहनाने की पटरी या मेंडरा। ३-पक्षियों के गले का प्राकृतिक चिह्न। हँसुली।
तौकी स्त्री० (हि) गले में पहनने का गहना।
तौन सर्व० (हि) वह। सो।
तौनी स्त्री० (हि) छोटा तवा। तई। तवी।
तौबा स्त्री० दे० 'तोबा'।
तौर पु० (प) १-ढंग। तरीका। २-प्रकार। भाँति। तरह। ३- चाल-चलन।
तौरि स्त्री० (हि) घुमटा। चक्कर।
तौरेत स्त्री० (इब्रा०) यहूदियों का धर्मग्रन्थ।
तौल स्त्री० (हि) तौलने की क्रिया। २-मान। बोझ। वजन। ३-परख।
तौलना क्रि० (हि) १-वजन करना। २-निशाना लगाने के लिए हाथ ठीक करना। साधना। २-३-विचार करना। ४-गाड़ी के पहिये में तेल देना ओंगना।
तौलवाना क्रि० (हि) तौलने का काम अन्य से कराना।
तौला पु० (हि) अनाज तोलने वाला। बया।
तौलाई स्त्री०(हि) तौलने की क्रिया, भाव या उजरत।
तौलाना क्रि० (हि) तौलवाना।
तौलिया पु० (हि) शरीर पोंछने का विशेष प्रकार का अँगोछा।
तौसना क्रि० (हि) १-दे० 'तौंसना'। ताप या गरमी पहुँचा कर बेचैन करना।
तौहीन स्त्री० (अ) अनादर। अपमान।
तौहीनी स्त्री० दे० 'तौहीन'।
त्यक्त वि० (सं) त्यागा या छोड़ा हुआ।
त्यजन पुं० (स) छोड़ने या त्यागने की क्रिया।
त्याग पु० (स) १-उत्सर्ग। दान। २-कोई बात, काम या सम्बन्ध छोड़ने की क्रिया। ३-विरक्ति आदि के कारण सांसारिक विषयों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया।
त्यागना क्रि० (हि) तजना। छोड़ना।
त्याग पत्र पु० (स) इस्तीफा।
त्याग-शील वि० (स) उदार। त्यागी।
त्यागी वि० (हि) स्वार्थ अथवा सांसारिक सुखों को को छोड़ने वाला। विरक्त।
त्याजना क्रि० (हि) त्यागना। छोड़ना।
त्याज्य वि० (स) छोड़ने या त्यागने योग्य।
त्यार वि० दे० 'तैयार'।
त्यूं क्रि० वि० दे० 'त्यों'।
त्यों क्रि० वि० (हि) १-उस प्रकार। २-उसी समय। पुं० ओर। तरफ।
त्योनार पुं० (हि) ढंग। तरीका।
त्योर पुं० दे० 'त्योरी'।
त्योरस पु० (हि) १-पिछला तीसरा वर्ष। २-आगे आने वाला तीसरा वर्ष।
त्योराना क्रि० (हि) सिर में चक्कर आना।
त्योरी स्त्री० (हि) १-माथे का बल या सिकुड़न। २-निगाह। दृष्टि।
त्योरुस पु० (हि) बीता हुआ या आने वाला तीसरा वर्ष।
त्योहार पुं० (हि) धार्मिक अथवा जातीय उत्सव मनाने का दिन। पर्व-दिन।
त्योहारी स्त्री०(हि) त्योहार के दिन छोटों या आश्रितों को दिया जाने वाला धन।
त्यौं क्रि० वि० दे० 'त्यों'। स्त्री० (हि) ओर। तरफ।
त्यौनार पुं० (हि) ढंग। तर्ज।
त्यौनारा वि० (हि) अच्छे रंग ढंग वाला। बढ़िया।
त्यौर पु० दे० 'त्योरी'।
त्यौराना क्रि० (हि) सिर में चक्कर आना।
त्यौरी स्त्री० दे० 'त्योरी'।
त्यौरुस पुं० दे० 'त्योरुस'।
त्यौहार पु० दे० 'त्योहार'।

त्रंवाल पुं॰ (हि) नगाड़ा। धौंसा।
त्र 'त' और 'र' के योग से बना एक संयुक्त अक्षर जो कुछ शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर यह 'एक स्थान पर' का अर्थ देता है।
त्रय वि॰ (सं) १-तीन। २-तीसरा।
त्रय-ताप पुं॰ (सं) तीन प्रकार के ताप या कष्ट।
त्रयोदशी स्त्री॰ (सं) तेरस।
त्रसन पुं॰ (सं) १-भय। २-चिन्ता। ३-व्याकुलता।
त्रसना क्रि॰ (हि) १-भय से काँप उठना। २-कष्ट पाना। ३-डराना। ४-कष्ट देना।
त्रसरेणु स्त्री॰(सं) वह चमकता सूक्ष्म कण जो छेद में से आती हुई धूप में दिखाई देता है। सूक्ष्मकण।
त्रसरैनि स्त्री॰ (हि) त्रसरेणु।
त्रसाना क्रि॰ (हि) डराना। भय दिखाना।
त्रसित वि॰ दे॰ 'त्रस्त'।
त्रस्त वि॰ (सं) १-भयभीत। २-पीड़ित। ३-व्याकुल
त्रहकना क्रि॰ (हि) बजना।
त्राटक पुं॰ (सं) हठयोग में किसी विंदु पर दृष्टि जमाने की क्रिया।
त्राटिका स्त्री॰ दे॰ 'त्राटक'।
त्राण पुं॰ (सं) १-रक्षा। बचाव। २-रक्षा का साधन। ३-कवच।
त्राता, त्रातार पुं॰ (हि) रक्षक।
त्रास पुं॰ (सं) १-भय। डर। २-कष्ट। तकलीफ।
त्रासक पुं॰ (सं) १-डराने वाला। २-कष्ट देने वाला ३-निवारक।
त्रासना क्रि॰ (हि) १-डराना। भय दिखाना। २-कष्ट देना।
त्रासमान वि॰ (हि) भयभीत।
त्रासा स्त्री॰ (हि) १-भय। २-आशंका।
त्रासित वि॰ (हि) त्रस्त।
त्राहि अव्य॰ (सं) बचाओ। रक्षा करो।
त्रिंबक पुं॰ दे॰ 'त्र्यंबक'।
त्रि वि॰ (सं) तीन।
त्रिक पुं॰ (सं) १-तीन वस्तुओं का समूह। २-रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं। ३-कमर।
त्रिकटु, त्रिकटुक पुं॰ (सं) सोंठ, मिर्च और पीपल इन तीन कटु वस्तुओं का समूह।
त्रिकाल पुं॰ (सं) १-भूत, वर्त्तमान और भविष्य। २-प्रातः मध्याह्न और सायं।
त्रिकालज्ञ, त्रिकाल-दर्शक, त्रिकालदर्शी पुं॰ (सं) तीनों काल की बातें जानने वाला। सर्वज्ञ।
त्रिकुटी स्त्री॰ (सं) दोनों भौंहों के मध्य का स्थान।
त्रिकूट पुं॰ (सं) १-तीन चोटियों वाला पहाड़। २-वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई मानी जाती है। ३-योग में मस्तक के छः चक्रों में से पहला चक्र।
४-सेंधा नमक।
त्रिकोण पुं॰ (सं) १-वह क्षेत्र जिसके तीन कोन हों। त्रिभुज। २-तीन कोनों वाली कोई वस्तु।
त्रिकोण-मिति स्त्री॰ (सं) त्रिकोण मापने की विद्या (गणित)।
त्रिखा स्त्री॰ दे॰ 'तृषा'।
त्रिगर्त्त पुं॰ (सं) उत्तर भारत के प्रदेश का नाम जिसमें आजकल जालंधर और कांगड़ा आदि नगर हैं।
त्रिगुण पुं॰(सं) सत्व, रज और तम, इन तीन गुणों का समूह। वि॰ तीन गुना। तिगुना।
त्रिगुणातीत पुं॰ (सं) परमेश्वर। वि॰ जो सत्वादि तीन गुणों से परे हो।
त्रिगुणात्मक वि॰ (सं) सत्व, रज और तम-इन तीन गुणों से युक्त।
त्रिगुणित वि॰ (सं) तिगुना किया हुआ।
त्रि-चक्र-यान पुं॰ (सं) तीन पहियों वाली गाड़ी जो पैडल मारने से चलती है। (ट्राइसिकिल)।
त्रिचक्षु पुं॰ (सं) शिव।
त्रिजग पुं॰ (हि) १-तिर्यक्। २-त्रिलोक।
त्रिजगती, त्रिजगत पुं॰ (सं) तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।
त्रिजामा स्त्री॰ दे॰ 'त्रियामा'।
त्रिजीवा, त्रिज्या स्त्री॰ (सं) वृत्त के केन्द्र से परिधि तक की रेखा। (रेडिअस)।
त्रिण पुं॰ (हि) तृण। तिनका।
त्रिताप पुं॰ (सं) दैहिक, दैविक और भौतिक यह तीन ताप या कष्ट।
त्रिदेव पुं॰ (सं) तीन देवता। (ब्रह्मा, विष्णु और महादेव)।
त्रिदोष पुं॰ (सं) तीन दोष (वात, पित्त और कफ)
त्रिदोषज वि॰ (सं) तीनों दोषों से उत्पन्न। पुं॰ सन्निपात।
त्रिदोषना क्रि॰ (हि) १-तीनों दोषों के कोप में पड़ना २-काम, क्रोध और लोभ के फन्दों में पड़ना।
त्रिधा क्रि॰ वि॰ (सं) तीन प्रकार से। वि॰ तीन प्रकार का।
त्रिन पुं॰ (हि) तृण। तिनका।
त्रिनयन पुं॰ (सं) शिव।
त्रिनयना स्त्री॰ (सं) दुर्गा।
त्रि-पथ पुं॰ (सं) कर्म, ज्ञान और उपासना, इन तीनों मार्गों का समूह।
त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी स्त्री॰ (सं) गङ्गा।
त्रिपद पुं॰ (सं) १-तिपाई। २-त्रिभुज। ३-तीन पद या चरण वाला।
त्रिपदस्तम्भ पुं॰ (सं) एक प्रकार की तिपाई जिस पर रख कर वस्तुएँ गर्म की जाती हैं। (ट्राइपॉड)।

त्रिपदी स्त्री० (सं) १-गायत्री। २-तिपाई। ३-हंसपदी।
त्रिपाठी पुं० (सं) १-तीनों वेदों को जानने वाला। त्रिवेदी। तिवारी। ब्राह्मणों की एक उपजाति।
त्रिपाद पुं० (सं) १-ज्वर। २-परमेश्वर।
त्रिपिटक पुं० (सं) भगवान बुद्ध के उपदेशों का संग्रह
त्रिपिताना क्रि० (हि) तृप्त होना या करना।
त्रिपुंड्र पुं० (सं) तीन आड़ी रेखाओं का तिलक।
त्रिपुरारि पुं० (सं) शिव।
त्रिपोलिया पुं० (हि) सिंहद्वार।
त्रिफला स्त्री० (सं) हड़ बहेड़ा और आँवले का मेल।
त्रिबली स्त्री० (सं) पेट पर पड़ने वाले तीन बल, जिसकी गणना स्त्री के सौन्दर्य में होती है।
त्रिविक्रम पुं० (सं) वामन का विराट रूप।
त्रिबेनी स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।
त्रिभंग वि० (सं) तीन जगह से झुका या मुड़ा हुआ पुं० खड़े होने की वह मुद्रा जिसमें गरदन, कमर और दाहिने पाँव में बल पड़ता है। (श्रीकृष्ण के वंशी बजाने का वर्णन इसी रूप में मिलता है)।
त्रिभंगी वि० (सं) जो खड़े होने में तीन जगह से बल खाये हुए हो।
त्रिभुज पुं० (सं) वह समक्षेत्र जो तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हो (ट्राइएङ्गिल)।
त्रिभुजलम्ब पुं० (सं) त्रिभुज के शीर्ष से खींची जाने वाली वह रेखा जो आधार पर लम्ब बनाती हुई जाये। (आल्टीट्यूड)।
त्रिभुवन पुं० (सं) स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल यह तीनों लोक।
त्रिमात्र वि० दे० 'त्रिमात्र'।
त्रिमात्र, त्रिमात्रिक वि० (सं) जिसमें तीन मात्राएँ हों प्लुत।
त्रिमास पुं० (सं) १-तीन मास का समय। २-वर्ष की तीन-तीन मासों के चार विभागों में से कोई एक।
त्रिमुहानी स्त्री० दे० 'तिमुहानी'।
त्रिमूर्ति पुं० (सं) ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता।
त्रिय, त्रिया स्त्री० (सं) स्त्री। नारी।
[illegible]

... का भेद।
त्रियामा स्त्री० (सं) १-रात्रि। २-यमुना नदी। ३-हल्दी।
त्रिलोक पुं० (सं) स्वर्ग, मृत्यु और पाताल यह तीनों लोक।
त्रिलोक-नाथ, त्रिलोक-पति पुं० (सं) तीनों लोकों का स्वामी। ईश्वर।
त्रिलोकी स्त्री० दे० 'त्रिलोक'।
त्रिलोकी-नाथ पुं० दे० 'त्रिलोक-नाथ'।
त्रिलोचन पुं० (सं) शिव।
त्रिलोचना स्त्री० (सं) दुर्गा।
त्रिवर्ग पुं० (सं) १-धर्म, अर्थ और काम। २-त्रिफला। ३-त्रिकुटा। ४-ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यह तीन जातियाँ।
त्रिवर्षात्मक वि० (सं) त्रैवार्षिक। तीन साल का।
त्रिवली स्त्री० दे० 'त्रिबली'।
त्रिवाचा स्त्री० (सं) कोई बात जोर देने के लिए तीन बार कहने की क्रिया।
त्रिविक्रम पुं० (सं) १-वामन अवतार। २-विष्णु।
त्रिविध वि० (सं) तीन प्रकार का। क्रि० वि० तीन प्रकार से।
त्रिविध-बहिष्कार पुं० (सं) तीन प्रकार से अथवा तीन वस्तुओं का बहिष्कार। (ट्रिपिल बॉयकॉट)।
त्रिवेणी स्त्री० (सं) १-तीन नदियों का संगम। २-गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम स्थान जो प्रयाग में है। ३-इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना, इन तीनों नाड़ियों का संगम स्थान (हठयोग)।
त्रिवेद पुं० (सं) ऋक, यजु, और साम, ये तीनों वेद।
त्रिवेदी पुं० (सं) १-त्रिवेद का जानने वाला। २-ब्राह्मणों का एक भेद। त्रिपाठी।
त्रिवेनी स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।
त्रिशंकु पुं० (सं) एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो सशरीर स्वर्ग जाना चाहते थे। और देवताओं के विरोध के कारण बीच आकाश में ही रुक गये।
त्रिशाल पुं० (सं) वह मकान जिसमें तीन कमरे हों।
त्रिशूल पुं० (सं) तीन फलों वाला एक अस्त्र विशेष
त्रिषित वि० दे० 'तृषित'।
त्रिसंध्य पुं० (सं) प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।
त्रिसंध्या स्त्री० (सं) प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों सन्धिकाल।
त्रिसना पुं० (हि) तृष्णा।
त्रिसित वि० दे० 'तृषित'।
त्रुटि स्त्री० (सं) १ [illegible]

त्रुटी स्त्री० दे० 'त्रुटि'।
त्रेता पुं० (सं) चार युगों में से दूसरा।
त्रेतायुग पुं० (सं) चार युगों में से दूसरा जो १२९६००० वर्ष का था।
त्रै वि० (हि) तीन।
त्रैकालिक पुं० (सं) तीनों कालों में बराबर सदा होने वाला।
त्रैलोकिक वि० (सं) १-तीन लोकों [illegible]

थकाना क्रि० (हि) १-थकना। २-थकने में प्रवृत्त करना।
थक्को स्त्री० (हि) हथेली का हलका आघात।
थकोड़ी स्त्री० (हि) ताली। करतल ध्वनि।
थंपथपी स्त्री० (हि) थपकी।
थपन पु० (हि) स्थापित करने की क्रिया। स्थापन।
थपनहार पु० (हि) प्रतिष्ठापक।
थपना क्रि० (हि) १-स्थापित होना। जमना। २-स्थापित करना। जमाना।
थपाना क्रि० (हि) स्थापित कराना।
थपेड़ना क्रि० (हि) १-थप्पड़ जमाना। २-आघात करना।
थपेड़ा पु० (हि) १-थप्पड़। चपेटा। २-धक्का। टक्कर
थपोड़ी, थपोरी स्त्री० (हि) करतल ध्वनि। ताली।
थप्पड़ पु० (हि) तमाचा। झापड़।
थप्पन वि० (हि) स्थापित करने वाला।
थम पु० (हि) १-स्तंभ। २-केले की पेड़ी।
थमकारी वि० (हि) रोकने वाला। थामने वाला।
थमना क्रि० (हि) १-रुकना। २-प्रतीक्षा करना। ३-ठहरा रहना। ४-धैर्य रखना।
थर स्त्री०(हि) तह। परत। पु० १-स्तर। २-बाघ की माँद। ३-राजस्थान के उत्तरीय भाग का एक रेगिस्तान।
थरकना क्रि० (हि) डर से काँपना। थर्राना।
थरकाना क्रि० (हि) भय से काँपना।
थरकौंहाँ वि० (हि) काँपता या हिलता हुआ।
थरथर स्त्री० (हि) भय से काँपने का भाव या मुद्रा। क्रि० वि० डर से काँपते हुए।
थरथराना क्रि० (हि) १-भय से काँपना। २-काँपना। हिलना। ३-थरथराने में प्रवृत्त करना।
थरथराहट स्त्री० (हि) कँपकँपी।
थरथरी स्त्री० (हि) भय या शीत के कारण होने वाली कँपकँपी।
थरसना क्रि० (हि) त्रस्त होना। कष्ट भोगना।
थरसाल वि० (हि) स्वच्छ। हृष्ट-पुष्ट।
थरहर स्त्री० (हि) थरथरी।
थरहराना क्रि० (हि) थरथराना।
थरहरी स्त्री० (हि) थरथरी।
थरहाई स्त्री० (हि) निहोरा। धराई।
थरि स्त्री० (हि) बाघ, सिंह आदि की माँद।
थरिया स्त्री० (हि) थाली।
थरी स्त्री० (हि) १-गुफा। २-बाघ या सिंह की माँद
थरु पु० (हि) स्थल। जगह।
थर्राना क्रि० (हि) १-डर के मारे काँपना। २-दहलना।
थल पु० (हि) १-स्थान। जगह। २-जल से रहित भूमि। ३-स्थल-मार्ग। ४-दे० 'थरी'।

थलकना क्रि० (हि) १-मोटा होने के कारण ऊपर-नीचे हिलना। २-मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलना।
थलचर पु० (हि) पृथ्वी पर रहने वाले जीव।
थलज पु० (हि) १-स्थल पर उत्पन्न वस्तु। २-गुलाब
थलथल वि० (हि) मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।
थलथलाना क्रि० (हि) मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलना।
थलपति पु० (हि) राजा। भूपति।
थलपद्म पु० (हि) गुलाब।
थलबेड़ा पु० (हि) नाव या जहाज के ठहरने का स्थान।
थलरुह वि० (हि) पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले वृक्ष आदि।
थलिया स्त्री० (हि) थाली।
थली स्त्री० (हि) १-स्थान। जगह। २-जल के नीचे का तल। ३-ठहरने अथवा बैठने का स्थान। बैठक ४-बालू का मैदान। टीला।
थवई पु० (हि) राज। तक्षगीर। मेमार।
थसर वि० (हि) शिथिल।
थसरना क्रि० (हि) शिथिल होना।
थहना क्रि० (हि) थाह लेना।
थहरन स्त्री० (हि) थरथरी।
थहरना क्रि० (हि) १-भय या कमजोरी के कारण काँपना। २-थर्राना।
थहराना क्रि० (हि) १-भय से काँपना। २-हिलना।
थहाना क्रि० (हि) थाह लेना। गहराई का पता लगाना।
थाँग पु० (हि) १-चोरों या डाकुओं का गुप्त रूप से रहने का स्थान। २-खोज। तलाश।
थाँगी पु० (हि) १-चोरों का मुखिया। २-चोरी का माल लेने या अपने पास रखने वाला। ३-चोरी का पता निकालने वाला। भेदिया।
थाँभ पु० (हि) खम्भा।
थाँभना क्रि० (हि) थामना। पकड़ना।
थाँवला पु० (हि) थाला।
था क्रि० (हि) होना क्रिया का भूतकालिक रूप।
थाई वि० (हि) स्थायी।
थाकना क्रि० (हि) थकना।
थाक पु० (हि) ढेर। समूह।
थान वि० (हि) बैठा या ठहरा हुआ। स्थिर।
थाति स्त्री० (हि) १-स्थायित्व। स्थिरता। २-ठहरने या स्थिर रहने की क्रिया। ३-थाती।
थाती स्त्री० (हि) १-संचित धन। २-धरोहर। अमानत। ३-कठिन समय के लिए बचा कर रखा हुआ धन।

थान पु० (हि) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान। ३-किसी देवी अथवा देवता का स्थान। ४-चौपायों को बाँधने का स्थान। ५-कपड़े गोटे आदि का निश्चित लम्बाई का टुकड़ा। ६-संख्या। अदद।
थाना पुं० (हि) १-टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २-पुलिस की चौकी। ३-बाँस की कोठी।
थानु पुं० (हि) शिव।
थानुसुत पुं (हि) गणेशजी।
थानेदार पुं० (हि) पुलिस थाने का प्रधान अधिकारी
थानैत पुं०(हि) १-किसी चौकी या अड्डे का स्वामी २-ग्राम देवता।
थाप स्त्री०(हि) १-तबले आदि पर हथेली का आघात २-थप्पड़। ३-निशान। ४-स्थिति। ५-प्रतिष्ठा। धाक। ६-मान। कदर। ७-पंचायत। ८-शपथ। सौगन्ध।
थापन पुं० (हि) स्थापित करने की क्रिया या भाव।
पना क्रि० (हि) १-स्थापित करना। २-गीली वस्तु को हाथ या साँचे में पीटकर बनाना। स्त्री० १-थापन। २-नवरात्र में दुर्गा पूजा के लिए घट थापना।
पड़, थापर पुं० दे० 'थप्पड़'।
पा पु० (हि) १-हाथ का छापा। २-पूजा का चन्दा। ३-चिह्न डालने का छापा। ४-साँचा। ५-राशि।
पी स्त्री० (हि) गच पीटने की चपटी मुँगरी।
म पुं० (हि) १-स्तम्भ। खम्भा। २-मस्तूल। स्त्री० १-थामने या पकड़ने की क्रिया। २-अवरोध।
मना क्रि० (हि) १-रोकना। २-ग्रहण करना। ३-गिरने न देना। ४-ग्रहण करना। ५-सँभालना। ६-कार्यभार अपने ऊपर लेना।
यी वि० (हि) स्थायी।
यीभाव पुं० (हि) स्थायी-भाव।
र पुं० (हि) थाल।
रा सर्व० [स्त्री० थारी] तुम्हारा।
री स्त्री० (हि) थाली।
ल पुं० (हि) बड़ी थाली।
ला पुं० (हि) थावँला। आल-बाल।
लिका स्त्री० (हि) थाला।
ली स्त्री० (हि) भोजन का छिछला बरतन।
वर वि० (हि) १-स्थावर। २-शनिवार।
वस स्त्री० (हि) स्थिरता।
ह स्त्री० (हि) १-गहराई का अन्त या हद। २-गहराई का पता। ३-अन्त। पार। ४-कम गहरा जिसकी थाह मिल सके।
हना क्रि० (हि) गहराई का पता लगाना।
हर पुं० (हि) थर। माँद।
हच वि० (हि) कम गहरा। छिछला।
एटर पुं० (अं) १-रंग-मंच। २-नाटक।

थिगली स्त्री० (हि) पैवन्द।
थित वि० (हि) स्थित।
थिति स्त्री० (हि) स्थिति।
थिति-भाव पुं० (हि) स्थायी भाव।
थिर वि० (हि) स्थिर।
थिरक स्त्री० (हि) नाच में पैरों की चंचल गति।
थिरकना क्रि० (हि) नृत्य में अंग संचालन भाव।
थिरकौंहाँ वि० (हि) १-थिरकने वाला। स्थिर।
थिरजीह पुं० (हि) मछली।
थिरता, थिरताई स्त्री० (हि) १-स्थिरता। २-शान्ति। ३-स्थायित्व।
थिरथानी वि० (हि) एक जगह स्थिर रहने वाला।
थिरना क्रि० (हि) १-द्रव पदार्थ का हिलना बन्द होना। २-निथरना। ३-घुली वस्तु का तले में बैठना।
थिरा स्त्री० (हि) पृथ्वी।
थिराना क्रि० (हि) १-निथारना। २-स्थिर करना। ३-जल को स्थिर होने देना। ४-थिरना।
थी क्रि० (हि) 'है' के भूतकाल का स्त्रीलिङ्ग रूप।
थीता पुं० (हि) १-स्थिरता। शान्ति। २-चैन।
थीती स्त्री० दे० 'थीता'।
थीर, थीरा वि० (हि) स्थिर।
थुकाना क्रि० (हि) १-थूकने में प्रवृत्त करना। २-उगलवाना। ३-निन्दा कराना।
थुक्कम-फजीहत स्त्री० (हि+अ) धिक्कार और तिरस्कार।
थुड़ी स्त्री० (हि) धिक्कार। लानत।
थुथकार पुं० (हि) थूकने की क्रिया या शब्द।
थुथकारना क्रि० (हि) १-थू-थू करना। २-किसी वस्तु पर बारम्बार थूकना। ३-घोर घृणा प्रकट करना।
थुनी, थुन्नी स्त्री० (हि) थूनी। खम्भा।
थुरहथा वि० (हि) [स्त्री० थुरहथी] १-छोटे हाथ वाला। २-जिसकी हथेली में कम वस्तु आ सके।
थुलमा पुं० (हि) एक प्रकार का कम्बल।
थू अव्य० (हि) १-घृणा सूचक शब्द। छि। २-थूकने का शब्द।
थूक पुं० (हि) लसीला मुख से निकलने वाला पदार्थ
थूकना क्रि० (हि) १-मुख से थूक निकालना। २-उगलना। ३-धिक्कारना।
थूथन, थूथना पुं० (हि) लम्बा निकला हुआ मुँह।
थून पु० (हि) १-स्तम्भ। खम्भा। २-चाँड़। टेक।
थूनी स्त्री० (हि) चाँड़। टेक।
थूरना क्रि० (हि) १-कूटना। २-मारना। पीटना। २-कसकर भरना। ३-ठूँस-ठूँस कर खाना।
थूल वि० (हि) स्थूल।
थूला वि० (हि) मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट।

थूहा पुं० (हि) ढूह। टीला।
थूहड़, थूहर पुं० (हि) विषैले दूध का छोटा कँटीला पेड़। सेंहुड़।
थेईथेई स्त्री० (हि) थिरक-थिरक कर नाचने की मुद्रा और ताल।
थेगली स्त्री० (हि) थिगली।
थेथर वि० (देश) १-बहुत थका हुआ। २-परेशान।
थैला पुं० (हि) [स्त्री० थैली] कपड़े, टाट आदि का सी कर बनाया हुआ बड़ा बटुआ।
थैली स्त्री० (हि) १-छोटा थैला। २-इस तरह का रुपये रखने का थैला।
थोक पुं० (हि) १-ढेर। राशि। २-समूह। ३-इकट्ठा बेचने की वस्तु। ४-इकट्ठी वस्तु।
थोड़ा वि० (हि) [स्त्री० थोड़ी] न्यून। अल्प। कम।
थोथरा वि० (हि) निःसार। बेकाम।
थोथा वि० (हि) १-निःसार। २-खोखला। ३-निकम्मा। ४-भोथरा।
थोपड़ी, थोपी स्त्री० (हि) चपत।
थोपना क्रि०(हि) १-गीली वस्तु की मोटी तह जमाना २-एकत्रित करना। ३-मत्थे मढ़ना। ४-आक्रमण आदि से रक्षा करना। ५-दे० 'छोपना'। ६-दे० 'थापना'।
थोबड़ा पुं० (हि) १-थूथन। २-तोबड़ा।
थोर, थोरा वि० (हि) थोड़ा। पुं० थूहर।
थोरिक वि० (हि) थोड़ा सा। तनिक सा।
थोरी स्त्री० (हि) १-हीन। २-थोड़ी।
थौंद स्त्री० (हि) तोंद।
थ्यावस स्त्री० (हि) १-स्थिरता। २-धैर्य।

[शब्दसंख्या—२०७४६]

द

द हिन्दी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यञ्जन जो 'तवर्ग' का तीसरा वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान दन्त है।
दंग वि० (फा) चकित। स्तब्ध। पुं० भय। २-दंगा।
दंगई वि० (हि) १-फसादी। २-उग्र।
दंगल पुं० (फा) १-कुश्ती आदि की प्रतिद्वन्द्विता। २-अखाड़ा। ३-जमावड़ा। समूह। ४-मोटा गद्दा वि० बहुत बड़ा।
दंगली वि० (फा) १-दंगल सम्बन्धी। २-बहुत बड़ा।
दंगा पुं० (हि) उपद्रव। झगड़ा-फसाद।
दंगाई पुं० (हि) दंगा करने वाला।

दंड पुं० (सं) १-डण्डा। २-डण्डे जैसी कोई वस्तु। ३-एक प्रकार की कसरत। ४-दण्डवत। ५-सजा। ६-अर्थ-दण्ड। जुरमाना। ७-शासन। दमन। ८-साठ पल का काल या समय। घड़ी।
दंडक पुं० (सं) १-डण्डा। २-शासक। ३-२६ से अधिक संख्या वाले वर्णों के छन्द।
दंड-कर पुं० (सं) दण्डात्मक-कर। (प्यूनिटिव-टैक्स)
दंडक-वन, दंडकारण्य पुं० (सं) विन्ध्य पर्वत से गोदावरी के तट का फैला हुआ वन।
दंड-धर पुं० (सं) १-यमराज। २-शासक। ३-संन्यासी। ४-चोबदार। ५-दे० 'दंडनायक'।
दंडधर-गण पुं० (सं) पुलिस के सिपाहियों का समूह। (कान्स्टेबुलरी)।
दंडना पुं० (हि) दण्ड देना।
दंड-नायक पुं० (सं) १-सेनापति। २-न्यायाधीश।
दंड-निगड़ स्त्री० (सं) डण्डा-बेड़ी।
दंड-नीति स्त्री० (सं) दण्ड के द्वारा शासन में रखने की नीति।
दंडनीय वि० (सं) [स्त्री० दण्डनीया] दण्ड देने योग्य
दंड-न्यायालय पुं०(सं) फौजदारी अदालत। (क्रिमिनल-कोर्ट)।
दंडपाणि पुं० (सं) १-यमराज। २-भैरव की एक मूर्ति का नाम।
दंडपाल, दंडपालक पुं० (सं) १-दण्ड-नायक। २-दरबान।
दंड प्रणाम पुं० (सं) साष्टांग प्रणाम।
दंडमान वि० दे० 'दंडनीय'।
दंड-यंत्र पुं० (सं) यन्त्र विशेष जिसमें अपराधी के पट्ठों को जकड़ कर सजा दी जाती है। (मशीनरी-आफ पनिशमेंट)।
दंडवत् पुं० (सं) १-साष्टांग-प्रणाम। २-प्रणाम।
दंड-विज्ञान पुं० (सं) अपराध के अनुसार दण्ड देने और कारागार की व्यवस्था सम्बन्धी विद्या। (पैनालॉजी)।
दंड-विधान पुं० (सं) दण्ड की व्यवस्था, जुर्म और सजा का कानून।
दंड-विधि स्त्री० दे० 'दंडविधान'।
दंडविधि-संग्रह पुं० (सं) अपराधिक दण्डों से सम्बन्ध रखने वाले कानूनों का संग्रह। (क्रिमिनल-प्रोसीड्योर कोड)।
दंडसंग्रह पुं० (सं) अपराधों के दण्ड से सम्बद्ध नियमों का संग्रह। (पेनल-कोड)।
दंड संहिता स्त्री० दे० 'दंडविधान'।
दंडारन पुं० दे० 'दंडकारण्य'।
दंडात्मक वि० (सं) १-दण्ड [illegible] देने के विचार से लगाया [illegible] निटिव)।

दंडात्मक-कर पुं० (सं) दण्ड स्वरूप लगाया गया कर। (प्लूनिटिव-टैक्स)।
दंडादेश पुं० (सं) न्यायाधीश द्वारा अपराधी को दण्ड देने का आदेश या निर्णय। (सेंटेंस)।
दंडादेशित वि० (सं) जिसे किसी अपराध के कारण न्यायालय ने दण्ड का आदेश दिया हो। (सेंटेंस्ड)
दंडाधिकारी पुं० (सं) वह राजकीय अधिकारी जिसे फौजदारी के मुकदमे सुनने और शासन-प्रबन्ध का अधिकार होता है। (मजिस्ट्रेट)।
दंडायमान पुं० (सं) खड़ा।
दंडित वि० (सं) (स्त्री० दण्डिता) जिसे दण्ड मिला हो।
दंडी पुं० (सं) १-दण्ड धारण करने वाला व्यक्ति। संन्यासी। २-यमराज। ३-राजा। ४-द्वारपाल। ५-शिव।
दंडोपबंध पुं० (सं) किसी अधिनियम अथवा अन्तर-राष्ट्रीय समझौते या सन्धि से सम्बद्ध वह उप-बन्ध कि उसका पालन न करने की अवस्था में उल्लं-घन करने वाले को क्या दण्ड मिलेगा। (सैंक्शन)
दंड्य वि० दे० 'दंडनीय'।
दंड्य-षड्यंत्र पुं० (सं) ऐसा षड्यन्त्र जो देश की विधि व्यवस्था के अनुसार दंड के योग्य हो। (क्रिम-नल-कॉन्सपिरेसी)।
दंत पुं० (सं) १-दाँत। २-बत्तीस की संख्या।
दंतकथा स्त्री० (सं) किंवदन्ती। जनश्रुति।
दंतकार पुं० (सं) दाँतों की चिकित्सा करने वाला। (डेन्टिस्ट)।
दंत-धावन पुं० (सं) दँतून।
दंतबीज, दंतबीजक, दंतबीज पुं० (सं) अनार।
दंतमूलीय वि० (सं) दाँतों के मूल से उच्चारण किया जाने वाला।
दंतार वि० (हि) बड़े दाँतों वाला। पुं० हाथी।
दंति पुं० (हि) हाथी।
दँतिया स्त्री० (हि) छोटा दाँत।
दंती वि० (सं) दाँतों वाला।
दंती-चक्र पुं० (सं) किसी यन्त्र या साइकिल आदि का दाँतों वाला पहिया। (गिअर)।
दँतुरिया स्त्री० (हि) बच्चों के छोटे-छोटे दाँत।
दँतुला वि० (हि) (स्त्री० दँतुली) बड़े और आगे निकले हुए दाँतों वाला।
दंतोद्भेद पुं० (सं) दाँतों का निकलना।
दंतोद्भेद काल पुं० (सं) बच्चों के दाँत निकलने का समय। (टीथिंग-पीरियड)।
दंतोष्ठ्य वि० (सं) दाँत और होठों से उच्चरित। (वर्ण)।
दंत्य वि० (सं) (वर्ण) जिसका उच्चारण दन्त हो।
दंद पुं० (हि) झगड़ा। उपद्रव। स्त्री० गरमी।
दंदन वि० (हि) [स्त्री० दंदनी] दमन करने वाला।
दंदाना क्रि० (हि) गरमाना। पुं० (फा) आरा कंघी आदि का दाँत।
दंदी वि० (हि) झगड़ालू। उपद्रवी।
दंपति, दंपती पुं० (सं) पति-पत्नी का जोड़ा।
दंपा स्त्री० (हि) बिजली।
दंभ पुं० (सं) १-पाखंड। २-अभिमान।
दंभान पुं० (हि) १-पाखंड। घमंड।
दंभी वि० (सं) [स्त्री० दंभिनी] १-दंभ करने वाला। २-पाखंडी। ३-घमंडी।
दँवरी स्त्री० (हि) फसल की बालों को रौंदकर दा[ने] निकालने का काम।
दँवारि स्त्री० (हि) दावानल।
दंश पुं० (सं) १-दाँत से काटने या डंक मारने [की] क्रिया। २-दाँत से काटने या डंक मारने से हो[ने] वाला घाव। ३-डाँस। ४-दाँत।
दंशक पुं० (सं) १-काटने वाला। २-डंक मारने वा[ला]
दंशन पुं० (सं) काटने या डंक मारने की क्रिया।
दंसना क्रि० (हि) दाँत से काटना या डंक मारना।
दंष्ट्र स्त्री० (सं) दाढ़। चौभर।
दंस पुं० दे० 'दंश'।
द वि० (सं) (समास में) देने या उत्पन्न करने वाला
दइत पुं० (हि) दैत्य।
दइमारा वि० (हि) दईमारा। हतभाग्य।
दई पुं० (हि) दैव। भाग्य।
दईमारा वि० (हि) दैव का मारा। हतभाग्य।
दए क्रि० (हि) दिये।
दकन पुं० (हि) दक्खिन। दक्षिण भारत।
दकनी वि० (हि) दक्षिण भारत का। पुं० दक्षि[ण] भारत का निवासी। स्त्री० दक्षिण भारत की भाषा
दकियानूस पुं० (अ) १-एक रोमन सम्राट। २-पुरा[नी] विचारधारा का रूढ़िवादी व्यक्ति।
दकियानूसी वि० (अ) १-पुराना। २-पुराण पंथी।
दक्खिन पुं० (हि) १-उत्तर के सामने की दिशा। २[-] दक्षिण प्रदेश।
दक्खिनी वि० (हि) १-दक्षिण का। २-दक्षिण दिश[ा] में स्थित। ३-दक्षिण देश का।
दक्ष वि० (हि) १-कुशल। निपुण। २-चतुर। ३-दाहिना। पुं० एक प्रजापति का नाम।
दक्ष-कन्या स्त्री० (सं) १-दक्ष प्रजापति की कन्या। २-सती। ३-दुर्गा।
दक्षता-अर्गल पुं० (सं) प्रगुणता अर्गल। (एफिशि-एंसी बार)।
दक्षिण वि० (सं) १-दाहिना। २-अनुकूल। ३-निपुण ४-चतुर। पुं० १-उत्तर के सामने की दिशा। २-सब नायिकाओं पर समान भाव से प्रेम करने वाला नायक। ३-प्रदक्षिणा।

दक्षिण-मार्ग पुं० (सं) १-वाम मार्ग। २-एक तंत्रोक्त आचार। ३-वैधानिक और शांत उपायों द्वारा विकास चाहने का मार्ग जो उग्र विचारों का विरोधी हो। (आधुनिक राजनीति)। (राइटविंग)।
दक्षिणा स्त्री० (सं) १-दक्षिण दिशा। २-दान के रूप में दिया हुआ धन जो ब्राह्मणों आदि को दिया जाय।
दक्षिणापथ पुं० (सं) भारत का दक्षिणी भाग।
दक्षिणायन पुं०(सं) १-सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति। २-वह छः मास, जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर बढ़ता है।
दक्षिणावर्त वि०(सं) जिसका घुमाव दक्षिण की ओर हो। पुं० एक शंख विशेष जिसका घुमाव दक्षिण की ओर होता है।
दक्षिणी पुं० (सं) दक्षिणी देश का निवासी। वि० दक्षिण देश का।
दखिन पुं० दे० 'दक्षिण'।
दखिनी वि० दे० 'दक्षिणी'।
दखमा पुं० (?) वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुर्दे रखते हैं।
दखल पुं० (अ) १-अधिकार। हस्तक्षेप। २-प्रवेश। पहुँच।
दखल-दिहानी स्त्री० (अ+फा) अदालत से किसी को किसी सम्पत्ति पर दखल या अधिकार दिलाने का कार्य।
दखिन पुं० दे० 'दक्षिण'।
दखील वि० (अ) जिसके अधिकार में हो।
दखीलकार पुं० (अ+फा) वह आसामी जिसने खेत लेकर बारह वर्ष तक अपने अधिकार में रखा हो।
दखीलकारी स्त्री० (फा) १-दखीलकार का काम, भाव या पद। २-वह भूमि जिस पर दखीलकार का अधिकार हो।
दगड़ पुं० (?) बड़ा ढोल।
दगदगा पुं० (अ) १-भय। २-संदेह।
दगदगी स्त्री० दे० 'दगदगा'।
दगध पुं० दे० 'दाह'। वि० दे० 'दग्ध'।
दगधना क्रि० (हि) १-जलना। २-जलाना। ३-दुःख देना।
दगना क्रि० (हि) १-(बन्दूक आदि का) छूटना। चलना। २-जलना। ३-दागा जाना। ४-प्रसिद्ध होना। ५-दे० 'दागना'।
दगर, दगरा पुं० (हि) १-देर। विलंब। २-डगर। रास्ता।
दगल, दगला पुं० (?) १-रूई भरा अंगरखा। २-लबादा।
दगवाना क्रि० (हि) दागने का काम दूसरे से कराना।
दगहा वि० (हि) १-दागवाला। २-मृतक संस्कार किया हुआ। ३-दाग किया हुआ। ४-दागा या चिह्न किया हुआ।
दगा स्त्री० (फा) छलकपट।
दगादार, दगाबाज वि० (फा) धोखेबाज। छली।
दगैल वि० (हि) १-दागदार। २-बुरे काम में कारागार का दण्ड भोगा हुआ।
दग्ध वि० (सं) १-जला या जलाया हुआ। २-पीड़ित
दग्धाक्षर पुं० (सं) छन्दशास्त्र के अनुसार झ, ह, र, भ और ष जिनका छन्द के आरम्भ में आना अशुभ समझा जाता है।
दग्धित वि० दे० 'दग्ध'।
दचक स्त्री० (हि) दचकने की क्रिया या भाव।
दचकना क्रि० (हि) १-धक्का या ठोकर खाना या लगना। २-झटका खाना। ३-दबजाना। ४-दबाना
दचका पुं० दे० 'दचक'।
दच्छ पुं० दे० 'दक्ष'।
दच्छकुमारी, दच्छसुता स्त्री० दे० 'दक्षकन्या'।
दच्छना स्त्री० दे० 'दक्षिणा'।
दच्छिन वि० (हि) दक्षिण।
दच्छिना स्त्री० दे० 'दक्षिणा'।
दच्छिनायन वि० दे० 'दक्षिणायन'।
दझना क्रि० (हि) दग्ध होना। जलना।
दड़ना क्रि० (हि) जलाना।
दढ़ियल वि० (हि) दाढ़ी वाला।
दतना क्रि० (हि) मग्न होना।
दतवन, दतुअन, दतुवन, दतून, दतौन स्त्री० (हि) १-दातुन। २-दाँत और मुँह साफ करने की क्रिया।
दत्त पुं० (सं) १-दत्तात्रेय। २-दत्तक पुत्र। ३-दान वि० १-दिया हुआ। २-दान किया हुआ। ३-सुरक्षित।
दत्तक पुं० (सं) गोद लिया हुआ पुत्र।
दत्तकग्रहण पुं० (सं) दत्तक पुत्र लेने की क्रिया या विधान। (एडॉप्शन)।
दत्तक ग्राही वि० (सं) दत्तक लेने वाला। (एडॉप्टिव)
दत्तचित्त वि० (सं) जिसका किसी कार्य में खूब जी लगा हो।
दत्त-विधान पुं० (सं) गोद लेना। (एडॉप्शन)।
दत्ता पुं० दे० 'दत्तात्रेय'।
दत्तात्रेय पुं० (सं) एक प्राचीन ऋषि जो अवतार माने जाते हैं।
ददा पुं० दे० 'दादा'।
ददिऔरा, ददियाल, ददिहाल पुं० (हि) दादा ... कुल या घर।
ददोड़ा, ददोरा पुं० (हि) ... होने वाला चकत्ता
दद्रु, दद्रू पुं० (सं)

दरन वि० पुं० दे० 'दलन'।
दरना क्रि० (हि) १-दलना। २-नष्ट करना। ३-शरीर में लगाना।
दरप पुं० दे० 'दर्प'।
दरपक पुं० (हि) कामदेव।
दरपन पुं० (हि) दर्पण।
दरपना क्रि० (हि) १-क्रोध करना। २-घमंड करना।
दरबंदी स्त्री० (फा) १-अलग-अलग दर या विभाग बनाना। वस्तुओं के भाव या दर निश्चित करना।
दरब पुं० (हि) धन। दौलत।
दरबर स्त्री० (हि) आतुरता। उतावली।
दरबा पुं० (फा) कबूतरों आदि के रहने के लिए काठ का खानेदार सन्दूक।
दरबान पुं० (फा) द्वारपाल।
दरबार पुं० (फा) राजसभा।
दरबारदारी स्त्री० (फा) किसी के यहाँ बार-बार जाकर बैठना और खुशामद करना।
दरबार-विलासी पुं० दे० 'दरबान'।
दरबारी पुं० (फा) दरबार में बैठने वाला व्यक्ति। वि० १-दरबार का। २-दरबार के योग्य।
दरबी स्त्री० (हि) कलछी।
दरभ पुं० १-दे० 'दर्भ'। २-बन्दर।
दर-माहा पुं० (फा) मासिक वेतन।
दरमियान पुं० (फा) मध्य। बीच। क्रि० वि० बीच में मध्य में।
दरमियानी वि० (फा) बीच का।
दररना क्रि० (हि) दरेरना।
दरराना क्रि० (हि) वेग सहित आना।
दर-लोहा पुं० (हि) हथियार।
दरवाजा पुं० (फा) १-द्वार। २-किवाड़।
दरवी स्त्री० (हि) १-कलछी। २-सांप का फन।
दरवेश पुं० (फा) १-फकीर। २-भिखारी।
दरशन पुं० दे० 'दर्शन'।
दरशनी स्त्री० (हि) दर्पण।
दरशनी-हुण्डी स्त्री० दे० 'दर्शनी-हुंडी'।
दरशाना क्रि० (हि) १-दिखलाना। २-बतलाना। ३-समझाना। ४-देख पड़ना।
दरस पुं० (हि) १-दर्शन। २-भेंट। ३-शोभा।
दरसन पुं० (हि) दर्शन।
दरसना क्रि० (हि) १-देखना। २-दिखाई पड़ना।
दरसनिया पुं० (हि) शीतला की शांति की पूजा और उपचार करने वाला व्यक्ति।
दरसनी स्त्री० (हि) १-दर्पण। २-दर्शन।
दरसनीय वि० (हि) १-देखने लायक। २-मनोहर।
दरसनी-हुण्डी स्त्री० दे० 'दर्शनी-हुंडी'।
दरसाना क्रि० (हि) १-दिखाना। २-दृष्टिगत होना।
दरांती स्त्री० (हि) हँसिया।

दराज वि० (फा) १-दरार। २-मेज में लगा हुआ खाना। ३-लम्बा। दीर्घ। ४-अत्यधिक।
दरार स्त्री० (हि) सन्धि। दरज।
दरारना क्रि० (हि) फटना। विदीर्ण होना।
दरारा पुं० (हि) दरेरा। धक्का। रगड़ा।
दरिंद, दरिंदा पुं० (फा) हिंस्र जन्तु।
दरिद्र वि० (सं) निर्धन। कंगाल।
दरिद्रता स्त्री० (सं) निर्धनता।
दरिद्र-नारायण पुं० (सं) गरीबों और दीन दुखियों के रूप में रहने वाला भगवान्।
दरिद्रावसति स्त्री० (सं) गरीब लोगों की गंदी बस्ती (स्लम)।
दरिद्री वि० दे० 'दरिद्र'।
दरिया पुं० (फा) १-नदी। २-समुद्र।
दरियाई वि० (फा) १-नदी या समुद्र सम्बन्धी। २-नदी के पास या किनारे का। स्त्री० एक तरह का रेशमी कपड़ा।
दरियाई-घोड़ा पुं० (हि) अफ्रीका की नदियों के किनारे पाया जाने वाला एक तरह का जानवर।
दरियाई-नारियल पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसका कमंडल बनता है।
दरियादिल वि० (फा) [स्त्री० दरियादिली] उदार।
दरियाफ्त वि० (फा) मालूम। ज्ञात।
दरियाबरार पुं० (फा) नदी की धार हट जाने निकली भूमि।
दरियाबुर्द पुं० (फा) वह भूमि जिसे कोई नदी काट कर बहादे।
दरियाव पुं० दे० 'दरिया'।
दरिया-शिकस्त पुं०(फा) वह भूमि जिसे कोई नदी काट कर लेगई हो।
दरी स्त्री० (सं) १-गुफा। २-वह नीचा पहाड़ी स्थान जहाँ कोई नदी या नाला गिरता हो। स्त्री० (हि) मोटे सूतों का बिछावन।
दरीखाना पुं० (हि) अनेक दरवाजों वाली बैठक।
दरीचा पुं० (फा) [स्त्री० दरीची] खिड़की।
दरीबा पुं० (हि) पानों का बाजार।
दरेर स्त्री० (हि) १-दरेरा। २-दबाव। ३-पानी का बहाव। ४-किसी तरह का प्रवाह या वेग।
दरेरना क्रि० (हि) १-रगड़ना। पीसना। २-रगड़ते हुए धक्का देना।
दरेरा पुं० (हि) १-रगड़ा। धक्का। २-बहाव का जोर
दरेस स्त्री० (हि) १-एक तरह का कपड़ा। २-पोशाक। वि० बना हुआ। तैयार।
दरेसी स्त्री०(हि) ऊबड़खाबड़ भूमि को समतल करना।
दरैया स्त्री० (हि) १-दलने वाला। २-घातक।
दरोग पुं० (अ) असत्य। झूठ।
दरोग-हलफी स्त्री० (अ) झूठा हलफ।

दरोगा पु० दे० 'दारोगा'।
दर्ज सी० दे० 'दरज'। वि० (फा) १-लिखा हुआ। २-उल्लिखित।
दर्जन वि० (हि) बारह। पुं० (हि) बारह वस्तुओं का समाहार।
दर्जा पु० (प) दरजा।
दर्जी पुं० दे० 'दरजी'।
दर्द पुं० (फा) १-व्यथा। २-दुःख। करुणा।
दर्दनाक वि० (फा) करुणाजनक।
दर्दमंद, दर्दी वि० (फा) १-पीड़ित। २-दयावान्।
दर्दुर पुं० (सं) मेंढक।
दर्प पुं० (सं) १-घमंड। गर्व। २-मान। ३-उद्दण्डता। ४-आतङ्क।
दर्पण पुं० (सं) आइना। आरसी।
दर्पित, दर्पी वि० (सं) अहङ्कारी। घमण्डी।
दर्व पुं० (हि) द्रव्य।
दर्वी स्त्री० दे० 'दरवी'।
दर्भ पुं० (सं) कुश। डाभ।
दर्याव पुं० (हि) दरिया।
दर्रा पुं० (फा) घाटी।
दर्श पुं० (सं) १-दर्शन। २-अमावस्या तिथि। ३-अमावस्या के दिन होने वाला यज्ञ विशेष।
दर्शक पुं० (सं) देखने वाला। द्रष्टा।
दर्शन पुं० (सं) १-देखना। साक्षात्कार। २-भेंट। ३-वह शास्त्र जिसमें तत्व ज्ञान हो। ४-दिखाई देने वाला आकार या रूप। ५-किसी देवता, देव-मूर्ति अथवा बड़े में होने वाला साक्षात्कार।
दर्शन-प्रतिभू पुं० (सं) हाजिर-जामिन।
दर्शन-शास्त्र पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत के नियामक धर्म और जीवन के अन्तिम लक्ष्य आदि का निरूपण होता होता है। (फिलॉसफी)।
दर्शनीय वि० (सं) १-देखने योग्य। २-सुन्दर।
दर्शनीहुंडी स्त्री० (हि) वह हुंडी जिसे देखते ही उसमें लिखित धन का भुगतान करना पड़े।
दर्शाना क्रि० (हि) दरसाना।
दर्शित वि० (सं) १-दिखाया हुआ। २-प्रकटित। ३-प्रमाणित। ४-स्पष्ट। पुं० प्रमाणस्वरूप न्याया-लय में उपस्थित किये जाने वाले पत्र, लेख्य या अन्य वस्तुएँ।
दर्शी वि० (सं) देखने वाला।
दल पुं० (सं) १-किसी वस्तु के दो सम-खंडों में से एक। २-पौधे का पत्ता। ३-फूल की पखुड़ी। ४-समूह। झुंड। ५-किसी एक कार्य की सिद्धि के लिए बना हुआ लोगों का गुट। (पार्टी)। ६-सेना। ७-परत की तरह फैली हुई किसी लम्बी चीज की मोटाई। ८-पकवान विशेष बनाने के काम आने वाला भुना हुआ मैदा।
दलक, दलकन स्त्री० (हि) १-दलकने की क्रिया या भाव। २-थर्राहट। ३-टीस। चसक।
दलकना क्रि० (हि) १-फटना। चिरना। २-काँपना ३-चौंकना। ४-विकल होना। ५-डराना।
दलदल स्त्री० (हि) १-कीचड़। पङ्क। २-वह जमीन जिस पर चलने से पैर धँस जाता हो।
दलदार वि० (हि) मोटे दल या परत वाला।
दलन पुं० (सं) १-दलने की क्रिया या भाव। २-पीस कर टुकड़े करने की क्रिया। ३-विनाश। वि० संहार करने वाला।
दलना क्रि० (हि) १-पीस कर छोटे-छोटे टुकड़े करना। २-कुचलना। ३-मसलना। ४-ध्वस्त करना ५-तोड़ना।
दल-नेता पुं० (सं) १-संसद् या विधान सभाओं में दल विशेष का नेता। (लीडर)। २-खिलाड़ी के दो दलों में से किसी एक का नेता। (कैप्टिन)। ३-सेना की टुकड़ी का नायक।
दलपति पु० (सं) १-मुखिया। २-सेना-पति।
दलबंदी स्त्री० (हि) किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपने पक्ष के लोगों का पृथक दल बनाना।
दलबल पु० (सं) १-लाव-लश्कर। फौज। २-साथ रहने वाले गिरोह।
दलबादल पु० (हि) १-भारी सेना। २-बहुत बड़ा शामियाना।
दलमलना क्रि० (हि) १-मसल डालना। २-रौंदना। ३-मार डालना।
दलमलाना क्रि० (हि) १-मलना। २-कुचलना। ३-नष्ट करना। ४-किसी को दलमलने के लिए प्रवृत्त करना।
दलवाल पु० (हि) १-दल-पति। २-सेनानी।
दलवैया पु० (हि) दलने वाला।
दलहन पु० (हि) वह अन्न जिसकी दाल बनती है।
दलाई स्त्री० (हि) १-दलने की क्रिया या भाव। २-दलने की उजरत।
दलाधिनायकता स्त्री० (सं) किसी दल या गुट की सर-दारी या अधिनायकी। (पार्टी-डिक्टेटरशिप)।
दलान पु० दे० 'दालान'।
दलाल पु० (प) १-कुछ पारिश्रमिक लेकर सौदा खरीदने या बेचने में सहायता देने वाला व्यक्ति। २-मध्यस्थ। ३-कुटना। ४-जाटों की एक जाति।
दलाली स्त्री० (हि) १-दलाल का कार्य। २-इस कार्य की उजरत।
दलित वि० (सं) [स्त्री० दलिता] १-मसला, कुचला या रौंदा हुआ। २-नष्ट किया हुआ।
दलित-वर्ग पुं० (सं) अनुसूचक जाति या समूह। (डिप्रेस्ड-क्लास)।

दलिद्र पुं० (हि) दरिद्र।
दलिया पुं० (हि) दरदरा पिसा अन्न।
दली वि० (हि) १-दल-वाला। २-पत्तों वाला।
दलीय वि० (सं) दल या गुट्ट सम्बन्धी।
दलील स्त्री० (अ) १-युक्ति। तर्क। २-बहस।
दलेल स्त्री० (हि) सिपाहियों की वह कवायद जो सजा के तौर पर हो।
दलैया वि० (हि) १-दलने वाला। २-नाश करने वाला।
दवँगरा पुं० (हि) वर्षाऋतु की पहली झड़ी।
दव पुं० (सं) १-वन। २-दावानल।
दवन पुं० (हि) नाश।
दवना पुं० दे० 'दौना' क्रि० (हि) जलाना।
दवनी स्त्री० (हि) दँवरी।
दवरि स्त्री० दे० 'दाँवरी'।
दवरिया स्त्री० (हि) दावानल।
दवा स्त्री० (फा) १-औषध। २-चिकित्सा। ३-शमन का उपाय। ४-रास्ते पर लाने का उपाय।
दवाई स्त्री० (हि) दवा।
दवाईखाना, दवाखाना पुं०=औषधालय।
दवागि, दवागिन, दवागी स्त्री० (हि) दावाग्नि। दावानल।
दवाग्नि स्त्री० (सं) वन में आप से आप लगने वाली आग। दावानल।
दवात स्त्री० (अ) स्याही रखने का छोटा पात्र। मसि-पात्र।
दवान पुं० (हि) एक तरह का हथियार।
दवानल पुं० (सं) दवाग्नि।
दवामी वि० (अ) स्थायी।
दवामी काश्तकार पुं० (अ०+फा) वह काश्तकार जिसे जमींदार से हमेशा के लिए काश्त करने का हक मिल गया हो। (परमानेन्ट-टेन्योर होल्डर)।
दवामी पट्टा पुं० (हि) इस्तमरारी पट्टा। (परमानेन्ट-लीज)।
दवामी बन्दोबस्त पुं० (अ०+फा) जमीन का वह प्रबन्ध जिसमें मालगुजारी सदा के लिए स्थिर कर दी जाय। (परमानेन्ट सेटलमेन्ट)।
दवार, दवारि स्त्री० (हि) १-दवाग्नि। २-संताप।
दशकंठ पुं० (स) दशानन। रावण।
दशकंठजहा, दशकंठजित, दशकंठारि पुं०=राम।
दशकंधर पुं० (सं) रावण।
दशक पुं० (स) १-दस का समाहार। २-दशाब्द। दस वर्षों का समूह। (डिकेड)।
दशगात, दश-गात्र पुं० १-शरीर के मुख्य दस अंग २-मृत्यु से दस दिनों तक होने वाला पिंडदान आदि।
दशन पुं० (सं) १-दाँत। २-कवच।
दशना स्त्री० (सं) दाँतों वाली।
दशनाम पुं० (सं) दस प्रकार के संन्यासी यथा—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।
दशनामी पुं० (हि) शंकराचार्य के दस शिष्यों द्वारा चला एक संन्यासियों का संप्रदाय विशेष। वि० दशनाम सम्बन्धी।
दशनावरण पुं० (सं) होंठ।
दशनावली स्त्री० (हि) दाँतों की पंक्ति।
दशभुज पुं० (सं) वह आकृति जिसमें दस भुजाएँ हों। (डेकेगॉन)।
दशम वि० (सं) दसवाँ।
दशम अवस्था स्त्री० (सं) मृत्यु।
दशमलव पुं० (सं) गणित में भिन्न का एक भेद जिसमें हर दश या उसका कोई घात होता है।
दशमांश पुं० (सं) दसवाँ भाग।
दशमिक वि० (सं) दसवें से सम्बन्ध रखने वाला। (डेसिमल)।
दशमिक-प्रणाली स्त्री० (सं) वह नवीन प्रणाली जिसमें हर मान अपने से निकटस्थ बड़े मान का दसवाँ भाग तथा निकटस्थ छोटे मान का दस गुना होता है। (डेसिमल सिस्टम)।
दशमी स्त्री० (सं) चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की दसवीं तिथि।
दशमुख पुं० (सं) रावण।
दशरथ पुं० (सं) अयोध्या के राजा और श्री राम के पिता।
दशशीश पुं० (सं) रावण।
दशहरा पुं० (सं) १-गङ्गा दशहरा। २-विजया-दशमी।
दशांग पुं० (सं) दस सुगंधित द्रव्यों के मेल से बना धूप जो पूजा के काम में आता है।
दशा स्त्री० (सं) १-अवस्था। २-फलित ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक ग्रह का नियत भोग काल। ३-साहित्य में रस के अन्तर्गत विरह की दशा।
दशानन पुं० (सं) रावण।
दशाब्द पुं० (सं) दस वर्षों का समय। दशक। (डिकेड)।
दशार्ण पुं० (सं) १-विन्ध्य पर्वत के पूर्व दक्षिण का एक प्राचीन देश। २-उक्त देश का निवासी।
दशाह पुं० (हि) १-दस दिनों का समाहार। २-मृत्यु के बाद आने वाला दसवाँ दिन।
दशिका स्त्री० (सं) कपड़े के थान का छोर या सिरा।
दशी स्त्री० (सं) दशाब्द। दशक।
दष्ट वि० (सं) १-कटा हुआ। २-काटा हुआ।
दस वि० (हि) गिनती में नौ के बाद का।
दसखत पुं० (हि) दस्तखत। हस्ताक्षर।

दस-गात्र पुं० दे० 'दशगात्र'।
दसधा क्रि० वि० (हि) दसों दिशाओं में। सब ओर। स्त्री० दस तरह की भक्ति।
दसन पुं० (हि) दशन।
दसना क्रि० (हि) १-बिछाना या बिछाया जाना (बिछौना)। पुं० बिछौना। बिस्तर।
दसबदन, दसमाथ पुं० (हि) रावण।
दसमी स्त्री० (हि) दशमी।
दसमौलि पुं० (हि) रावण।
दसवाँ पुं० (हि) दशम। पुं० किसी मृत्यु के दसवें दिन होने वाला कृत्य।
दसस्यंदन पुं० (स) दशरथ जो अयोध्या के राजा थे।
दसा स्त्री० (हि) दशा।
दसाना क्रि० (हि) बिछाना।
दसौंधी पुं० (हि) भाटों की एक जाति। भाट।
दस्तदराजी स्त्री० (फा) हस्तक्षेप।
दस्त पुं० (फा) १-हाथ। २-विरेचन।
दस्तक स्त्री० (फा) १-खटखटाना। २-बुलाने के लिए हाथ से दरवाजा खटखटाने की क्रिया। ३-मालगुजारी वसूल करने अथवा माल ले जाने का परवाना। ४-कर। महसूल।
दस्तकार पुं० (फा) कारीगर। शिल्पी।
दस्तकारी स्त्री० (फा) शिल्प।
दस्तखत पुं० (फा) हस्ताक्षर।
दस्तबरदार वि० (फा) किसी वस्तु पर से अपना स्वत्व छोड़ देने वाला।
दस्तबरदारी स्त्री० (फा) १-त्याग। २-त्याग-पत्र।
दस्तरखान पुं० (फा) चौकी पर बिछाई हुई वह चादर जिस पर थाली रखकर मुसलमान लोग भोजन करते हैं।
दस्ता पुं० (फा) १-मूठ। बेंट। २-सिपाहियों का छोटा दल। गारद। ३-कागज के २४ या २५ तावों की गड्डी।
दस्ताना पुं० (फा) १-हाथ की अँगुलियों या हथेली में पहनने का मोजा। २-एक तरह की सीधी तलवार।
दस्तावर वि० (फा) विरेचक।
दस्तावेज स्त्री० (फा) लेन-देन की लिखा-पढ़ी का कागज। तमस्सुक।
दस्ती वि० (फा) हाथ का। स्त्री० १-मशाल। २-छोटी मूठ। ३-छोटा कलमदान।
दस्तूर पुं० (फा) १-रीति। २-नियम। ३-पारसियों का पुरोहित।
दस्तूरी स्त्री० (फा) वह धन जो सौदा खरीदने पर दुकानदार की ओर से पुरस्कार के रूप में मिले।
दस्यु पुं० (सं) १-डाकू। लुटेरा। २-असुर। ३-म्लेच्छ। ४-दास।

दस्युज पुं० (सं) [स्त्री० दस्युजा] १-दस्यु की सन्तान। २-नीच। कमीना।
दस्युवृत्ति स्त्री० (सं) डाकू पेशा। लुटेरापन।
दस्सी स्त्री० (हि) थान का छोर।
दह पुं० (हि) १-नदी का गहरा स्थान। हौज। स्त्री० ज्वाला। लपट। वि० दस।
दहकना क्रि० (हि) १-धधकना। २-तपना। ३-संतप्त होना।
दहकाना क्रि० (हि) १-धधकाना। २-भड़काना।
दहन पुं० (सं) १-दाह। २-आग।
दहना क्रि० (हि) १-जलना या जलाना। २-क्रोध से संतप्त होना या करना। ३-भड़काना। ४-धँसना। वि० दे० 'दाहिना'।
दहनि स्त्री० (हि) जलने की क्रिया। जलन।
दहपट वि० (हि) १-ध्वस्त। २-रौंदा या कुचला हुआ।
दहपटना, दहपट्टना क्रि० (हि) १-ढाना। ध्वस्त करना। २-रौंदना।
दहर पुं० दे० 'दह'।
दहरना क्रि० (हि) १-दहलना। २-दहलाना।
दहरौरा पुं० (हि) [स्त्री० दहरौरी] १-दही-बड़ा। २-एक तरह का गुलगुला।
दहल स्त्री० (हि) डर से काँप उठना।
दहलना क्रि० (हि) डर से स्तम्भित होकर रुक जाना।
दहला पुं० (फा) दस बूटियों वाला ताश का पत्ता।
दहलाना क्रि० (हि) भयभीत करना।
दहलीज स्त्री० (फा) चौखट के नीचे की लकड़ी जो जमीन से सटी रहती है। देहली।
दहवाट वि० (हि) छिन्न-भिन्न।
दहशत स्त्री० (फा) भय। खौफ।
दहाई स्त्री० (फा) १-दस का मान या भाव। २-अंकों की गिनती करते समय दाहिनी ओर से दूसरा स्थान।
दहाड़ स्त्री० (हि) १-गरज। २-आर्त्तनाद।
दहाड़ना क्रि० (हि) १-गरजना। २-जोर से डराने वाली आवाज में बोलना। ३-चिल्ला-चिल्लाकर रोना।
दहाना पुं० (फा) १-चौड़ा मुँह। २-वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है। मुहाना। ३-मोरी।
दहिना वि० (हि) [स्त्री० दहिनी] अपसव्य। दाहिना।
दही पुं० (हि) खटाई के योग से जमाया हुआ दूध।
दहुँ वि० (हि) [illegible]।
दहु वि० (हि) १-[illegible]। [illegible]
दहेड़ी स्त्री० (हि) दही रख[illegible]
दहेज पुं० (हि) वह धन [illegible] विवाह में कन्या पक्ष का [illegible] दायजा।

दहेला वि० (हि) [स्त्री० दहेली] १-जला हुआ। २-संतप्त। ३-गीला।
दह्य वि० (सं) जलने के योग्य। (कम्वसचिबुल)।
दह्यमान वि० (सं) जलता हुआ।
दह्यो पुं० (हि) दही।
दाँ पुं० (हि) दफा। वार। पुं० (फा) ज्ञाता। जानकार।
दाँकना क्रि० (हि) गरजना। दहाड़ना।
दाँग पुं० (हि) १-नगाड़ा। २-टीला।
दाँज स्त्री० (हि) समानता। बराबरी।
दाँड़ना क्रि० (हि) दण्ड देना।
दाँत पुं० (हि) १-मुँह में चबाने के लिए निकली हुई हड्डियाँ। दशन। २-दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु। दँता।
दांत वि० (सं) १-दबाया हुआ। २-संयमी।
दाँता पुं० (हि) दाँत के जैसा कोई उभरा हुआ भाग।
दाँता-किटकिट, दाँता-किलकिल स्त्री० (हि) १-रोज-रोज की तकरार और कहासुनी। २-गाली-गलौज।
दांति स्त्री० (सं) १-इन्द्रियनिग्रह। २-विनयशीलता।
दाँती स्त्री० (हि) १-हँसिया। दराती। २-दन्तावलि। छोटा दाँत। ४-दर्रा।
दाँना क्रि० (हि) फसल के डण्ठलों में से दाने अलग करना।
दांपत्य वि० (सं) पति-पत्नी सम्बन्धी। पुं० पति-पत्नी का सम्बन्ध।
दांभिक वि० (सं) १-पाखण्डी। २-अहङ्कारी।
दाँव पुं० (हि) १-बार। दफा। २-पारी। ३-मौका। उपयुक्त अवसर। ४-पैंच। चाल। ५-स्थान। ६-पासे या जुए की कौड़ियों का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो। ७-वह धन जो ऐसे समय खिलाड़ी सामने रखते हैं।
दाँवरी स्त्री० (हि) रस्सी। डोरी।
दा सर्व० (पंजाबी) का।
दाइ पुं० दे० 'दाय'।
दाइज, दइजा पुं० (हि) दायजा। दहेज।
दाईं वि० स्त्री० (हि) दाहिनी। स्त्री० (हि) बार। दफा।
दाई स्त्री०(हि) १-उपमाता। धाय। २-बच्चा जनाने वाली स्त्री। ३-दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलाने वाली। ४-दासी। मजदूरनी। वि० (हि) दायाँ।
दाउँ पुं० दे० 'दाँव'।
दाउ स्त्री० (हि) १-दावानल। २-दाँव (बाजी)।
दाऊ पुं० (हि) १-बड़ा भाई। २-श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम। बलदेव।
दाऊदखानी पुं० (हि) चावल या धान विशेष।
दाक्षायण वि० (सं) दक्ष सम्बन्धी।
दाक्षायणी स्त्री० (सं) १-दक्ष की कन्या। सती। २-दुर्गा।
दाक्षिणात्य वि० (सं) दक्षिण का। पुं० १-दक्षिण-भारत। २-इस देश का निवासी।
दाक्षिण्य पुं० (सं) १-अनुकूलता। २-निपुणता। ३-उदारता। ४-सरलता। वि० १-दक्षिण का। २-दक्षिण सम्बन्धी।
दाख, दाखि स्त्री०(हि) १-अंगूर। २-मुनक्का। ३-किशमिश।
दाखिल वि० (फा) १-प्रविष्ट। २-शामिल।
दाखिल-खारिज पुं० (फा) सरकारी कागज पर से किसी सम्पत्ति के अधिकारी के नाम काटकर उसके उत्तराधिकारी या किसी अन्य अधिकारी का नाम लिखा जाना।
दाखिल-दफ्तर वि० (फा) बिना विचार के दफ्तर में डालकर रखा हुआ (कागज)।
दाखिला पुं० (फा) प्रवेश।
दाग पुं० (हि) १-दाह। २-मृतक का दाह-कर्म। ३-जले होने का चिह्न। पुं० (फा) १-धब्बा। २-चिह्न। ३-दोष।
दागदार वि० (फा) दाग या धब्बे वाला।
दागना क्रि० (हि) १-जलाना। २-तोप बन्दूक आदि का छोड़ना। ३-अंकित करना। ४-तपाये हुए धातु आदि की मुद्रा से किसी के शरीर पर चिह्न विशेष अंकित करना।
दाग-बेल स्त्री० (हि) फावड़े से खोदकर लगाया हुआ निशान।
दागर वि० (हि) नाशक।
दागी वि० (हि) १-दाग या धब्बे वाला। २-कलंकित। ३-लांछित। ४-जेल की सजा पाया हुआ।
दाघ पुं० (सं) ताप। दाह।
दाजन स्त्री० (हि) १-जलन। २-पीड़ा।
दाजना क्रि०(हि) १-जलना या जलाना। २-संतप्त होना या करना। ३-ईर्षा करना।
दाझन स्त्री० दे० 'दाजन'।
दाझना क्रि० दे० 'दाजना'।
दाट स्त्री० दे० 'डाट'।
दाटक वि० (हि) १-पक्का। दृढ़। २-मजबूत। ३-बलवान।
दाटना क्रि० (हि) १-जान पड़ना। २-डाँटना।
दाड़िम पुं० (सं) अनार का वृक्ष या फल।
दाढ़ स्त्री० (हि) जबड़े के भीतर के मोटे और चौड़े दाँत। चौभर।
दाढ़ना क्रि० (हि) १-जलना। २-संतप्त करना।
दाढ़ा पुं० (हि) १-दाढ़। २-दावानल। ३-आग। ४-लम्बी दाढ़ी।
दाढ़िका स्त्री० (सं) १-दाढ़ी। २-दाँत।

दाढ़ी स्त्री० (हि) १-ठुड्डी के ऊपर के बाल। डाढ़ी।
दाढ़ीजार पुं० (हि) एक गाली जो स्त्रियाँ पुरुषों को देती हैं।
दात पुं० (हि) १-दान। २-दाता। स्त्री० शुभ अवसर पर प्रसन्न होकर दान रूप में दिया गया पदार्थ वि० १-विभक्त। २-मार्जित।
दातव्य वि० (सं) १-देने योग्य। २-दान से चलने वाला। ३-लौटाया जाने वाला। ४-जहाँ दान-स्वरूप कोई वस्तु दी जाती है।
दातव्य-चिकित्सालय पुं० (सं) वह औषधालय जहाँ बिना मूल्य दिये दवा मिलती हो। (फ्री-डिस्पेंसरी)
दाता पुं० (सं) १-दानशील। २-देने वाला।
दातार पुं० (हि) दाता।
दाती स्त्री० (हि) देने वाली।
दातुन स्त्री० (हि) दतौन। दतुअन।
दातुरी स्त्री० (हि) दातृत्व।
दातून स्त्री० (हि) दातौन।
दातृत्व पुं० (सं) दानशीलता।
दात्र पुं० (सं) हँसिया। दराँती।
दात्री स्त्री० (हि) १-देने वाली। २-दराँती।
दाद पुं० (हि) एक चर्म रोग।
दादनी स्त्री० (फा) १-दातव्य। देन। २-अग्रिम।
दादरा पुं० (हि) एक तरह का चलता गाना।
दादस स्त्री० (हि) सास की सास।
दादा पुं० (हि) [स्त्री० दादी] १-पिता का पिता। २-बड़ा भाई।
दादि स्त्री० (फा) १-न्याय। २-दाद।
दादी स्त्री० (हि) पिता की माता।
दादुर पुं० (हि) मेंढक।
दादू पुं० (हि) १-एक पंथ-प्रवर्तक साधु। २-दादा शब्द का संबोधनकारक रूप।
दादूपंथी पुं० (हि) दादू मत को मानने वाला।
दादूदयाल पुं० दे० 'दादू (१)'।
दाध स्त्री० (हि) जलन। दाह।
दाधना क्रि० (हि) जलाना।
दान पुं० (सं) १-देने का कार्य। देना। २-खैरात ३-वह वस्तु जो किसी को सदा के लिए दी जाय ४-हाथी का मद। ५-राजनीति में धन संपत्ति आदि देकर शत्रु अथवा विरोधी को दबाने तथा अपना कार्य साधने की नीति।
दानपत्र पुं० (सं) वह लेख अथवा पत्र जिसमें किसी वस्तु के दान रूप में दिये जाने का उल्लेख हो।
दानपात्र पुं० (सं) दान पाने के उपयुक्त व्यक्ति।
दान प्रतिष्ठा स्त्री० (सं) दक्षिणा।
दान लेख पुं० (सं) वह लेख जिसमें किसी किये हुए दान का उल्लेख हो।
दानव पुं० (सं) [स्त्री० दानवी] असुर। राक्षस।
दानवारि पुं० (हि) १-विष्णु। २-देवता। ३-इन्द्र ४-हाथी का मद।
दानवी स्त्री० (सं) दानव की स्त्री। राक्षसी। वि० दानव का।
दानवीर पुं० (सं) बहुत बड़ा दानी।
दानशील, दानशूर वि० (सं) स्वभाव से दानी।
दाना वि० (फा) बुद्धिमान। पुं० (हि) १-अन्न कण २-भोजन। ३-छोटा बीज जो गुच्छे, बाल या फली में लगा हो। ४-छोटा फल या बीज। ५-कोई छोटी गोल वस्तु। ६-संख्या का सूचक शब्द अदद। ७-कोई छोटा गोल उभार। ८-शरीर में उभड़ा छोटा गुल्म।
दानाई स्त्री० (फा) बुद्धिमत्ता।
दानादेश पुं० (सं) वह पत्र अथवा आदेश जिसके द्वारा किसी को कुछ दिया जाय। (गिफ्ट आर्डर)।
दानाध्यक्ष पुं० (सं) दान का प्रबंध करने वाला कर्मचारी।
दानापानी पुं० (हि) १-खानपान। अन्नजल। २-जीविका। ३-रहने का संयोग।
दानि वि० पुं० दे० 'दानी'।
दानी वि० (हि) [स्त्री० दानिनी] दान करने वाला। उदार। पुं० (हि) कर उगाहने वाला। स्त्री० (हि) एक शब्द जो शब्दों के अन्त में लगकर पात्र का अर्थ देता है।
दानेदार वि० (फा) जिसमें दाना हो।
दानौ पुं० दे० 'दानव'।
दाप पुं० (हि) १-अभिमान। २-शक्ति। ३-उत्साह ४-दबदबा। ५-क्रोध। ६-जलन।
दापना क्रि० (हि) १-दबाना। २-रोकना।
दाब पुं० (हि) १-दबने या दबाने की क्रिया या भाव। दबाव। २-शासन। ३-नियन्त्रण। ४-प्रभुत्व। रोब।
दाबना क्रि० (हि) १-दबाना। २-गाड़ना। ३-परास्त करना। ४-नष्टभ्रष्ट करना।
दाबा पुं० (हि) कलम लगाने के लिए पौधे की टहनी को जमीन में दाबना या गाड़ना।
दाभ पुं० (हि) कुश। दाभ।
दाम पुं० (सं) १-रस्सी। २-माला। हार। समूह। पुं० (फा) जाल। पाश। फंदा। पुं० (हि) १-प्राचीन सिक्का। २-मूल्य। ३-रुपया। पैसा। स्त्री० (हि) दामिनी।
दामन पुं० (फा) पल्ला। २-आँचल। [illegible] नीचे की भूमि।
दामर, दामरि [illegible]
दाना स्त्री० [illegible] चिड़िया।
दामाद पुं० [illegible]

दामिन, दामिनि, दामिनी स्त्री० (सं) १-बिजली। विद्युत्। २-बेंदी। बिंदिया।
दामी वि० (हि) कीमती।
दामोदर पुं० (सं) १-कृष्ण। २-नारायण।
दायँ पुं० दे० 'दाँव'। स्त्री० दे० 'दाँज'।
दाय पुं० (सं) १-देने योग्य धन। दातव्य। २-दान, दहेज आदि के रूप में दिया जाने वाला धन। ३-वह पैतृक धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो सके। पुं० (हि) १-दाव। २-दाँव। ३-दायित्व जिम्मेदारी। ४-उत्तरदायित्व।
दायक पुं० (सं) [स्त्री० दायिका] दाता। देने वाला।
दायकर पुं० (सं) उत्तराधिकार में प्राप्त धन पर लगने वाला कर। रिक्थकर। (इनहेरिटेंस-टैक्स)।
दायज, दायजा पुं० (हि) दहेज।
दायभाग पुं० (सं) १-पैतृक धन का विभाग। २-बाप दादे या सम्बन्धी की संपत्ति का पुत्रों या सम्बन्धियों में बाँटे जाने की व्यवस्था।
दायमुलहब्स पुं० (अ) आजन्म कारावास की सजा। कालापानी।
दायमी वि० (अ) १-सदा रहने वाला। २-स्थायी।
दायर वि० (फा) १-चलने वाला। २-जो निर्णय के लिए न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया गया हो।
दायरा पुं० (अ) १-गोल घेरा। वृत्त। ३-कार्य या अधिकार का क्षेत्र।
दायाँ वि० (हि) दाहिना।
दाया स्त्री० (हि) दया। स्त्री० (फा) दाई। धाय।
दायद पुं० (सं) [स्त्री० दायदा] वह जो दाय भाग के नियमों के अनुसार किसी की संपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी हो।
दायादा, दायादी स्त्री० (सं) १-कन्या। २-दाय की अधिकारिणी।
दायाधिकार पुं० (सं) वह अधिकार जिसके अनुसार कोई किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी संपत्ति या उसके हटने पर उसका पद अथवा स्थान पाता है। (सक्सेशन)।
दायाधिकार-राज्य पुं० (सं) वह राज्य जिसके राजा के मरने, किन्हीं कारणों से हटाये जाने अथवा पद त्याग करने पर उसके उत्तराधिकारी को राज्य मिले (सक्सेशन-स्टेट)।
दायाधिकार-विधान पुं० (सं) वह विधान अथवा कानून जिसके द्वारा किसी को अधिकार दिलाए जायँ। (लॉ ऑफ सक्सेशन)।
दायाधिकार-व्यवस्था पुं० दे० 'दायाधिकार-विधान'
दायाधिकारी पुं० (सं) वह जो किसी के हट जाने अथवा न रहने पर उसके पद या स्थान का अधिकारी हो। (सक्सेसर)।
दायाधिकारी होना क्रि० (हि) किसी की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पाने का अधिकारी होना। (सक्सीड)
दायप्रवर्तन पुं० (सं) उत्तराधिकारी में प्राप्त जायदाद की जब्ती।
दायित्व पुं० (सं) १-जिम्मेदारी। २-दायी होने का भाव।
दायी वि० (सं) [स्त्री० दायिनी] १-दायक। देने वाला २-जिस पर किसी तरह का दायित्व या भार हो। (लायबुल)।
दायें क्रि० वि० (हि) दाहिनी ओर।
दार स्त्री० (सं) पत्नी। पुं० (हि) दारु। प्रत्य० (फा) रखने वाला। (यौगिक के अन्त में) स्त्री० (फा) १-सूली। २-फाँसी। स्त्री० (हि) दाल।
दारचीनी स्त्री० (हि) एक वृक्ष जिसकी सुगन्धित छाल दवा और मसाले के काम में आती है।
दारण पुं० (सं) १-चीरफाड़। २-चीरने-फाड़ने के औजार। ३-फोड़ा आदि चीरने का काम।
दारना क्रि० (हि) १-फाड़ना। २-नष्ट करना। ३-मार डालना।
दार-परिग्रह पुं० (सं) विवाह।
दारमदार (फा) १-आश्रय। २-कार्य का भार।
दारा स्त्री० (हि) पत्नी।
दारि स्त्री० (सं) विदारण। छेदन। स्त्री० (हि) दाल
दारिउँ पुं० (हि) दाड़िम।
दारिका स्त्री० (सं) १-पुत्री। २-बालिका।
दारिद, दारिद्र पुं० दे० 'दरिद्र्य'।
दारिद्र्य पुं० (सं) निर्धनता। गरीबी।
दारिम पुं० दे० 'दाड़िम'
दारी स्त्री० (हि) १-दासी। २-कुलटा स्त्री।
दारी-जार पुं० (हि) दासी का पति या पुत्र। (गाली)
दारु पुं०(सं) १-काठ। काष्ठ। २-देवदारु। ३-बढ़ई। ४-पीतल। ५-कारीगर।
दारुक पुं० (सं) सारथी।
दारुन वि० दे० 'दारुण'।
दारुजोपित् स्त्री० (हि) दारुयोषित्। कठपुतली।
दारुनटी, दारुनारी, दारुपुत्रिका, दारुपुत्री, दारुयोष, दारुयोषित, दारुयोषिता स्त्री० (सं) कठपुतली।
दारुहलदी स्त्री० (हि) एक सदाबहार झाड़ जिसकी जड़ और डण्ठल दवा के काम में आते हैं।
दारू स्त्री० (फा) दवा। औषध। पुं० १-मद्य। २-बारूद।
दारों पुं० (हि) दाड़िम।
दारो पुं० (हि) अनार का दाना या बीज।
दारोगा पुं० (फा) १-हिफाजत करने वाला। २-निगरानी करने वाला। ३-थानेदार।
दारयों पुं० (हि) १-अनार। २-अनार का दाना।
दार्शनिक पुं० (सं) दर्शन-शास्त्र का ज्ञाता। वि० दर्शन-शास्त्र सम्बन्धी।

दाल स्त्री० (हि) १-दली हुई अरहर, मूँग आदि। २-पकायी हुई दाल। ३-फुरहर।
दालचीनी स्त्री० दे० 'दारचीनी'।
दालना क्रि० (हि) दलना।
दालमोठ स्त्री० (हि) १-घी, तेल आदि में नमक मिर्च के साथ तली हुई दाल।
दालान पुं० (फा) बरामदा। श्रोसारा।
दालिद पुं० (हि) दरिद्रता।
दालिम पु० (हि) दाड़िम।
दावँ पु० दे० 'दाँव'।
दाव पु० (सं) १-वन। २-वन की आग। ३-आग ४-जलन। पुं० (हि) १-बड़े हथकड़ आदि काटने का एक तरह का औजार। २-दाँव।
वत स्त्री० (अ० दअवत) १-भोज का निमन्त्रण। २-बुलावा।
वन पुं० (हि) १-दमन। २-संहार। ३-हँसिया। ४-दामन। वि० नाश करने वाला।
वना क्रि० (हि) १-दमन करना। २-नष्ट करना। दौना।
वनी स्त्री० (हि) स्त्रियों का एक शिरोभूषण। वि० नष्ट करने वाली।
वरी स्त्री० (हि) दाँवरी।

[illegible]

वात स्त्री० दे० 'दवात'।
वानल पुं० (सं) वन में वृक्षों की परस्पर रगड़ से आप से आप उत्पन्न होने वाली आग।
वेदार पुं० (अ+फा) अपना हक जताने वाला।
शमिक वि० (सं) १-दशम। [illegible]
सम्बन्ध प्रत्येक दस या [illegible]
दशमलव के अनुसार क्रम [illegible]
शरथि पुं० (सं) श्रीराम आदि दशरथ के पुत्र।
स पुं० (सं) [स्त्री० दासी] १-गुलाम। २-नौकर। सेवक। ३-दूसरे के अधीन या वश में रहने वाला। ४-शूद्रों की एक उपाधि। पु० दे० 'दामन'।
सता स्त्री० (सं) गुलामी। परतन्त्रता।
सन पुं० दे० 'दामन'।
सपन पुं० (हि) दासता। गुलामी।
सा पुं० (हि) १-दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता। २-द्वार या दीवार की कुरसी के ऊपर लगाई हुई लकड़ी या पत्थर।
सानुदास पु० (सं) १-दासों का दास। २-विनम्र सेवक।
सिका, दासी स्त्री० (सं) सेवा करने वाली स्त्री।

टहलनी।
दासेय पुं० (सं) १-दासी पुत्र। २-दास।
दास्तान स्त्री० (फा) १-कहानी। २-वृत्तान्त। ३-विवरण।
दास्य पु० (सं) १-दासता। २-भक्ति के नौ भेदों में से एक।
दाह पुं० (सं) १-मुर्दा जलाना। २-जलन। ताप। ३-एक रोग जिससे शरीर में जलन होती है। ४-शोक। ५-डाह। ईर्ष्या।
दाहक वि० (सं) १-जलाने वाला। २-जलन पैदा करने वाला।
दाहकर्म पुं० (सं) शव-संस्कार। अन्त्येष्टि-क्रिया।
दाहन पुं० (सं) जलाना।
दाहना क्रि० (हि) १-जलाना। २-दुःख पहुँचाना। वि० दे० 'दाहिना'।
दाहिन वि० (हि) १-दाहिना। २-अनुकूल।
दाहिना वि० (हि) [स्त्री० दाहिनी] १-बायाँ का उलटा। २-दाहिने हाथ की ओर। ३-अनुकूल।
दाहिनावर्त वि० दे० 'दक्षिणावर्त'।
दाहिने क्रि० वि० (हि) दाहिनी ओर।
दाही वि० दे० 'दाहक'।
दिश्रना पुं० (हि) दीया। दीपक।

[illegible]

पु० (हि) [illegible]
दिक्कत स्त्री० (अ) १-परेशानी। २-तकलीफ। ३-कठिनता।
दिक्करी पुं० दे० 'दिग्गज'।

[illegible]

की विधि या उपाय।
दिखना क्रि० (हि) दिखाई देना।
दिखराना, दिखरावना क्रि० (हि) दिखलाना।
दिखरावनी स्त्री० (हि) १-दिखाने का काम या भाव २-मुँह देखने का नेग।
दिखलाई स्त्री० (हि) दिखलाने का काम या उजरत।
दिखलाना क्रि० (हि) १-दूसरे को देखने में लगाना। २-प्रदर्शित करना।
दिखलावा पुं० (हि) दिखावा।
दिखवैया पुं० (हि) १-दिखलाने वाला। २-देखने वाला।
दिखहार पु० (हि) देखने वाला।

दिखाई स्त्री० (हि) १-दिखाने की क्रिया या भाव। २-दिखाने की उजरत। ३-देखने की क्रिया या भाव। ४-देखने के बदले में दिया जाने वाला धन
दिखाऊ वि० (हि) १-देखने या दिखाने योग्य। २-जो केवल देखने भर के लिए हो।
दिखाना क्रि० (हि) दिखलाना।
दिखाव पुं० (हि) १-देखने की क्रिया या भाव। २-दृश्य।
दिखावट स्त्री० (हि) १-दिखाने का भाव या तर्ज। २-बाह्य आडम्बर।
दिखावटी वि० (हि) १-जो केवल देखने भर को हो पर काम न आ सके। दिखौआ। २-ऊपरी।
दिखावा पुं० (हि) आडम्बर। ऊपरी तड़कभड़क।
दिखैया पुं० (हि) १-देखने वाला। २-दिखाने वाला।
दिखौआ, दिखौवा वि० (हि) दिखावटी।
दिग् स्त्री० दे० 'दिक्'।
दिगंगना स्त्री० (सं) दिशारूपिणी स्त्री।
दिगंत पुं० (सं) दिशा का अन्त। छोर। क्षितिज। पुं० (हि) आँख का कोना।
दिगंतर पुं०(सं) दो दिशाओं के बीचकी दिशा। कोण
दिगंबर पुं० (सं) १-शिव। २-नंगा रहने वाला। जैन। ३-दिशाओं का वस्त्र। ४-अंधेरा।
दिगंश पुं० (सं) क्षितिज वृत्त का तीन सौ साठवाँ भाग या अंश।
दिगांगना स्त्री० (सं) दिशा रूपी अंगना या स्त्री।
दिगदंति पुं० (हि) दिग्गज।
दिगीश, दिगीश्वर पुं० (सं) दिक्पति। दिक्पाल।
दिक्कन्या स्त्री० (सं) दिशारूपी कन्या या लड़की।
दिग्गज पुं० (सं) पुराणानुसार आठों दिशाओं के आठ हाथी जो पृथ्वी को दबाये रखते हैं और उसकी रक्षा करते हैं। वि० (सं) बहुत बड़ा या भारी।
दिग्गयंद पुं० (हि) दिग्गज।
दिग्घ वि० (हि) दीर्घ।
दिग्दंत पुं० (हि) दिग्गज।
दिग्दर्शक पुं० (स) १-दिशाओं का ज्ञान कराने वाला २-जानकारी कराने वाला।
दिग्दर्शक-यंत्र पुं० (सं) घड़ी जैसा वह यन्त्र जिसके द्वारा दिशा का पता चलता है। कुतुबनुमा।
दिग्दर्शन पुं० (सं) १-सामान्य परिचय या ज्ञान। २-दिशा का ज्ञान कराना।
दिग्दाह पुं० (स) एक अशुभ दैवी घटना जिसमें समय दिशाएँ लाल हो जाती और जलती हुई दृष्टिगोचर होती हैं।
दिग्देवता, दिग्पति, दिग्पाल पुं० (सं) दिशाओं के रक्षक देवता। दिक्पाल।
दिग्भ्रम पुं० (सं) दिशाओं के सम्बन्ध में भ्रम होना दिशा भूल जाना।
दिग्मंडल पुं० (सं) सब दिशाओं का समूह।
दिग्वधू स्त्री० (सं) दिशारूपी वधू या सुहागिन स्त्री।
दिग्वसन, दिग्वस्त्र, दिग्वासा पुं० (सं) दिगंबर।
दिग्विजय स्त्री० (सं) १-देश-देशांतरों को जीतना। २-अपने गुणों के द्वारा आसपास के देशों में अपना महत्व स्थापित करना।
दिग्विजयी वि० (सं) दिग्विजय करने वाला।
दिग्विभावित वि० (सं) जिसकी ख्याति सभी दिशाओं में फैली हो।
दिग्शूल पुं० दे० 'दिक्शूल'।
दिच्छा स्त्री० (हि) दीक्षा।
दिच्छित, दिछित वि० दे० 'दीक्षित'।
दिज पुं० (हि) द्विज।
दिजराज पुं० (हि) द्विजराज।
दिजोत्तम पुं० (हि) द्विजोत्तम।
दिठवन स्त्री० दे० 'देवोत्थान' (एकादशी)।
दिठादिठी स्त्री० (हि) देखादेखी। साक्षात्कार।
दिठाना क्रि० (हि) बुरी दृष्टि या नजर लगना अथवा लगाना।
दिठियार वि० (हि) १-जिसे दिखाई देता हो। २-समझदार। ३-जो दिखाई देता हो।
दिठौना पुं० (हि) बच्चों के माथे या गाल आदि पर नजर से बचाने के लिए लगाई हुई काली बिंदी।
दिढ़ वि० (हि) दृढ़।
दिढ़ता, दिढ़ाई स्त्री० (हि) दृढ़ता।
दिढ़ाना क्रि० (हि) १-दृढ़ या मजबूत करना। २-निश्चित या पक्का करना। ३-दृढ़ या पक्का होना।
दिढ़ाव पुं० (हि) दृढ़ता।
दिति स्त्री० (हि) अदिति।
दितिज, दितितनय, दितिपुत्र, दितिसुत पुं० (सं) असुर। दैत्य।
दित्सा स्त्री० (सं) १-देने अथवा दान की इच्छा। २-वसियत।
दित्सा-जोड़ पुं० (सं) १-स्पष्टीकरण के लिए दित्सा-पत्र के अन्त में परिशिष्ट रूप में लिखी टिप्पणी। २-दित्सा-पत्र का वह अंश जिसमें उक्त टिप्पणी होती है। (कोडिसिल)।
दित्सा-पत्र पुं० (सं) वसियतनामा (विल)।
दित्सा-प्रस्ताव पुं० (सं) किसी को किसी प्रकार की सहायता देने को उद्यत होना, जिसे स्वीकार करना या न करना उसकी इच्छा पर निर्भर हो। (ऑफर)
दिदार पुं० दे० 'दीदार'।
दिन पुं० (सं) १-सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। २-आठ पहर या चौबीस घण्टे का समय। ३-समय। काल। ४-निश्चित या उचित समय।

४-वह समय जिसके बीच कोई विशेष बात हो। अव्य० १-नित्य-प्रति। २-सदा। निरन्तर।
दिनकर, दिनकृत, दिनकर, दिनकार पु०=सूर्य।
दिन-चर्या स्त्री० (सं) सारे दिन किया जाने वाला काम-धन्धा।
दिनदानी पु० (हि) बड़ा दानी।
दिनदीप, दिननाथ, दिननायक, दिननाह पु०=सूर्य।
दिन-पत्री स्त्री० (सं) दैनन्दिनी। (डायरी)।
दिन-पत्र पु० (सं) तिथियों को बताने वाला पत्र। (कलेंडर)।
दिनपति, दिनपाल, दिनबन्धु, दिनमणि, दिनमनि पु० (सं) सूर्य।
दिनमान पु० (सं) १-सूर्योदय से सूर्यास्त तक का मान। २-सूर्य।
दिनराइ, दिनराउ पु० (हि) सूर्य।
दिनरात, दिनरैन अव्य० (हि) सदैव। सर्वदा।
दिन स्थिति-विवरण पु० (सं) मौसम का विवरण। (वैदर-रिपोर्ट)।
दिनांक पु० (सं) तारीख। तिथि। (डेट)।
दिनांकित वि० (सं) तिथित। (डेटेड)।
दिनांत पु० (सं) संध्या। शाम।
दिनांध वि० (सं) दिनौंधा। पु० उल्लू नामक पक्षी।
दिनाई स्त्री० (हि) १-वह विषैली वस्तु जिसके खाने से तुरन्त मृत्यु हो जाय। २-मृत्यु का दिन लाने वाली वस्तु या बात। स्त्री० (हि) दाद का रोग।
दिनागम पु० (सं) प्रातःकाल। सवेरा।
दिनातीत वि० (सं) आधुनिक रुचि, प्रचलन आदि के विचार से पिछड़ा हुआ। (आउट आफ डेट)।
दिनान्त वि० (सं) आदिनांक। (अप्टुडेट)।
दिनार पु० दे० 'दीनार'।
दिनार्द्ध पु० (सं) मध्याह्न।
दिनिका स्त्री० (सं) एक दिन की मजदूरी।
दिनियर, दिनियर पु० (हि) दिनकर। सूर्य।
दिनी वि० (हि) बहुत दिनों का। प्राचीन।
दिनी, दिनेश, दिनेस पु०=सूर्य।
दिनौंधी स्त्री० (हि) एक रोग जिसमें दिन के समय कम दिखाई देता है।
दिपति स्त्री० (हि) दीप्ति।
दिपना क्रि० (हि) चमकना।
दिपाना क्रि० (हि) १-चमकना। २-चमकाना।
दिब पु० (हि) दिव्य।
दिमाक पु० दे० 'दिमाग'।
दिमाग पु० (अ) १-सिर के अन्दर का गूदा या भेजा। २-समझ। बुद्धि। ३-घमण्ड।
दिमाग-चाट वि० (हि) बहुत बकबक करके दूसरों का सिर खाने वाला। बकवादी।
दिमागदार वि० (अ+फा) १-बुद्धिमान। २-घमण्डी।
दिमागी वि०(अ) १-दिमाग से सम्बन्धित। २-दिमागदार।
दिमात्र वि०, पु० (हि) १-दो मात्राओं वाला। २-दो मात्राओं वाला।
दिमान पु० (हि) दीवान।
दिमाना वि० (हि) दीवाना।
दियट स्त्री० (हि) दीयट। दीवट।
दियना, दियरा, दियला, दिया पु० (हि) दीया। दीपक।
दियाबत्ती स्त्री० (हि) (सन्ध्या समय) दीपक जलाने का काम।
दियारा पु० (हि) १-कछार। २-प्रदेश। ३-सूखा।
दियासलाई स्त्री० (हि) सिर पर मसाला लगी तीली जिसे रगड़कर आग जलाते हैं।
दिरद पु० दे० 'द्विरद'।
दिरमान पु० (हि) १-औषध। २-चिकित्सा।
दिरमानी पु० (हि) चिकित्सक। स्त्री० चिकित्साशास्त्र।
दिरानी स्त्री० (हि) देवरानी।
दिरिम पु० (हि) द्रव्य।
दिल पु० (फा) १-हृदय। कलेजा। २-मन। चित्त। जी। ३-साहस। ४-प्रवृत्ति। इच्छा।
दिलगरी, दिलगीरी स्त्री०=दुःखी।
दिल-चला वि० (हि) मनचला।
दिलचस्प वि० (फा) मनोरंजक।
दिलचस्पी स्त्री० (फा) १-चित्त को आकर्षित करने वाला गुण या बात। २-किसी वस्तु में गहरा अनुराग।
दिल-जमई स्त्री० (फा+अ) इत्मीनान। तसल्ली।
दिल-जला वि० (हि) जिसे मानसिक कष्ट पहुँचा हो।
दिल-जोई स्त्री० (हि) किसी का मन रखने के लिए उसे प्रसन्न करना।
दिलदार वि० (फा) १-उदार। २-रसिक। ३-प्रेमी। ४-प्रिय।
दिलबर वि० (फा) प्यारा। प्रिय।
दिलवाना क्रि० (हि) दिलाना।
दिलवैया पु० (हि) दिलाने वाला।
दिलह पु० दे० 'दिल्ला' (किवाड़ का)।
दिलाना क्रि० (हि) देने का काम अन्य से कराना।
दिलावर वि० (फा) [स्त्री० दिलावरी] साहसी।
दिलासा पु० (हि) सान्त्वना। आश्वासन।
दिली वि० (फा) १-हार्दिक। २-बहुत घनिष्ठ।
दिलेर वि० (फा) साहसी।
दिलेरी स्त्री० (फा) १-हिम्मत। २-बहादुरी।
दिल्लगी स्त्री० (हि) मजाक। परिहास।
दिल्लगीबाज पु० (हि) ठठोल। मसखरा।
दिल्ला पु० (देश) किवाड़ के पल्ले में वे चौकोर टुकड़े जो शोभा के लिए लगाये जाते हैं।

दिवंगत वि० (सं) [स्त्री० दिवंगता] १-मरा हुआ। २-जिसे मरे कुछ समय हुआ हो।
दिव पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-आकाश। ३-दिन।
दिवदाह पुं० (सं) आकाश का जलना (प्रबल आन्दोलन अथवा क्रान्ति)।
दिवस पुं० (सं) दिन। रोज।
दिवस्पति पुं० (सं) सूर्य।
दिवांध वि० (सं) जिसे दिन में दिखाई न दे। पुं० १-उल्लू। २-दिन में दिखाई न देने का रोग।
दिवा पुं० (सं) दिन। दिवस। पुं० (हि) दीपक। दीया।
दिवाकर पुं० (सं) सूर्य।
दिवान पुं० दे० 'दीवान'।
दिवाना पुं० दे० 'दीवाना'। क्रि० (हि) दिलाना।
दिवाभिसारिका स्त्री० (सं) दिन में अभिसार करने वाली नायका।
दिवार स्त्री० (हि) दीवार।
दिवारी स्त्री० (हि) दीवाली।
दिवाल स्त्री० (हि) दीवाल। वि० देने वाला।
दिवाला पुं० (हि) १-पूँजी न रहने की अवस्था में ऋण चुकाने में असमर्थता। २-किसी वस्तु का सर्वथा अभाव हो जाना।
दिवालिया वि० (हि) जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ न बचा हो।
दिवाली स्त्री० दे० 'दीवाली'।
दिवा-स्वप्न पुं० (सं) १-दिन में निद्रा लेना। २-हवाई किले बनाना।
दिवैया वि० (हि) देने वाला।
दिव्य वि० (सं) १-स्वर्गीय। २-अलौकिक। ३-प्रकाशमान। ४-स्वच्छ। पुं० १-तीन प्रकार के नायकों में श्रेष्ठ। २-एक प्रकार की परीक्षा जिसमें प्राचीन काल में अपराधी की सदोषता या निर्दोषता का निर्णय करते थे। ३-शपथ।
दिव्य-चक्षु, दिव्य-दृष्टि स्त्री०(सं) १-ज्ञान चक्षु। २-सुन्दर आँखों वाला। ३-बहुत दूर के या छिपे हुए पदार्थों या बातों को देखने या समझने वाला। (क्लेयरवाएंस)।
दिव्य-पुरुष पुं० (सं) वह व्यक्ति जो लौकिक न हो, बल्कि जिसके स्वर्गीय होने की कल्पना की गई हो
दिव्यांगना स्त्री० (सं) १-अप्सरा। २-देववधू।
दिव्या स्त्री० (सं) १-तीन प्रकार की नायिकाओं में से वह जो स्वर्ग में रहने वाली या अलौकिक हो। २-ब्राह्मी जड़ी।
दिव्यास्त्र पुं० (सं) मन्त्रों द्वारा चलने वाला हथियार
दिश स्त्री० (सं) दिशा।
दिशा स्त्री० (सं) १-ओर। तरफ। २-क्षितिज-वृत्त के किए हुए चार कल्पित विभागों में से एक। ३-दस की संख्या।
दिशा-भ्रम पुं० दे० 'दिग्भ्रम'।
दिशाशूल पुं० दे० 'दिक्शूल'।
दिशि स्त्री० दे० 'दिशा'।
दिश्य वि० (सं) दिशा सम्बन्धी। वि० (हि) निर्दिष्ट।
दिष्ट वि० (सं) १-निश्चित। निर्दिष्ट। २-दिखलाया या बतलाया हुआ।
दिष्टबंधक पुं० दे० 'दृष्टबंधक'।
दिष्टि स्त्री० दे० 'दृष्टि'।
दिसंतर पुं० (हि) देशान्तर। विदेश। अव्य० बहुत दूर तक।
दिस स्त्री० दे० 'दिशा'।
दिसट स्त्री० (हि) दृष्टि। नजर।
दिसना क्रि० (हि) दिखना।
दिसा स्त्री० (हि) दिशा।
दिसाहार पुं० (हि) दिग्दाह।
दिसावर पुं० (हि) परदेस। विदेश।
दिसावरी वि० (हि) विदेशी (माल)।
दिसासूल पुं० (हि) दिक्शूल।
दिसि स्त्री० (हि) दिशा।
दिसिट स्त्री० दे० 'दृष्टि'।
दिसिदुरद पुं० (हि) दिग्गज।
दिसिनायक, दिसिप, दिसिराज पुं० (हि) दिक्पाल।
दिसैया पुं० (हि) १-देखने वाला। २-दिखाने वाला।
दिस्टि स्त्री० (हि) दृष्टि।
दिस्टिबंध पुं० (हि) दृष्टिबंध।
दिस्ता पुं० (हि) दस्ता।
दिहंदा वि० (फा) देने वाला।
दिहकानियत स्त्री० (हि) देहातीपन।
दिहरा पुं० (हि) देवस्थान।
दिहल क्रि० (हि) दिया।
दिहली स्त्री० (हि) दहलीज।
दिहा, दिहाड़ा पुं० (हि) सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय। दिन।
दिहाड़ी स्त्री० (हि) १-दिन। २-दिन भर की मजदूरी
दिहात स्त्री० (हि) देहात।
दिहाती वि० (हि) देहाती।
दिहातीपन पुं० (हि) देहातीपन।
दीअट स्त्री० (हि) दीयट।
दीआ पुं० (हि) दीया।
दीक्षक पुं० (सं) १-दीक्षा देने वाला। गुरु। २-शिक्षक।
दीक्षण पुं० (सं) दीक्षा देने की क्रिया।
दीक्षांत पुं० (सं) १-वह यज्ञ जो किसी यज्ञ की त्रुटि आदि के दोष की शांति के लिए हो। २-किसी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय के अध्यापन की सफल समाप्ति।

दीक्षांत-भाषण पुं० (सं) विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि या प्रमाण पत्र आदि देने के समय किसी विद्वान् या आदरणीय नेता द्वारा दिया जाने वाला भाषण। (कॉन्वोकेशन-एड्रेस)।
दीक्षा स्त्री० (सं) १-यजन। २-गुरुमंत्र।
दीक्षा-गुरु पुं० (सं) मंत्र देने वाला गुरु।
दीक्षित वि० (सं) १-जिसने संकल्प करके यज्ञ किया हो। २-जिसने गुरु से दीक्षा या मंत्र लिया हो। पुं० ब्राह्मणों की एक जाति।
दीखना क्रि० (हि) दिखाई देना।
दीघी स्त्री० (हि) दीर्घिका। तालाब।
दीच्छा स्त्री० (हि) दीक्षा।
दीठ स्त्री० (हि) १-दृष्टि। २-कुप्रभाव उत्पन्न करने वाली निगाह।
दीठबंदी स्त्री० (हि) नजर बाँधने की क्रिया।
दीठवंत वि० (हि) १-दृष्टियुक्त। २-समझदार।
दीठना क्रि० (हि) देखना।
दीठि स्त्री० (हि) दीठ।
दीत पुं० (हि) सूर्य।
दीना क्रि० (हि) दिया।
दीदा पुं० (हि) १-दृष्टि। २-आँख।
दीदार पुं० (फा) दर्शन।
दीदी पुं० (हि) बड़ी बहन।
दीधिति स्त्री० (सं) सूर्य या चन्द्रमा की किरण। २-उँगली।
दीन वि० (सं) [स्त्री० दीना] १-दरिद्र। २-दुखी। ३-संतप्त। ४-विनीत। पुं० (अ) मत। मजहब। पंथ
दीनता स्त्री० (सं) १-गरीबी। २-नम्रता।
दीनताई स्त्री० (हि) दीन होने की क्रिया या भाव।
दीनदयालु वि० (सं) दीनों पर दया करने वाला।
दीनदुनिया स्त्री० (हि) यह लोक तथा परलोक।
दीनबंधु पुं० (सं) १-दीनों की सहायक। २-ईश्वर।
दीनानाथ पुं० (हि) १-दीन दुखियों का रक्षक या नाथ। २-ईश्वर।
दीनार पुं० (सं) १-सोने का गहना। २-एक तरह का सोने का प्राचीन सिक्का।
दीप पुं० (सं) दीया। चिराग। पुं० (हि) द्वीप।
दीपक पुं० (सं) १-दीया। २-एक अर्थालंकार। ३-संगीत के छः रागों में से दूसरा। वि० [स्त्री० दीपिका] १-प्रकाश करने वाला २-पाचन शक्ति बढ़ाने वाला। ३-उत्तेजक।
दीपकर, दीपज्वालक पुं० (सं) दीपक जलाने वाला
दीपन, दीपति स्त्री० (हि) १-चमक। २-शोभा। ३-प्रताप।
दीप-दान पुं० (सं) १-देवता के सामने दीप जलाना। २-मरते हुए व्यक्ति से आटे के जलते हुए दीये का दान या संकल्प करना।
दीपन पुं० (सं) १-दीप्त या प्रज्वलित करना। २-भूख तेज करना। ३-उत्तेजन। वि० १-पाचन-शक्ति बढ़ाने वाला। २-उत्तेजना उत्पन्न करने वाला।
दीपना क्रि० (हि) चमकना या चमकाना।
दीप-माल; दीप-मालिका स्त्री० (सं) दीवाली।
दीप-शिखा स्त्री० (सं) दीये की लौ।
दीप-स्तंभ पुं० (सं) १-दीपाधार। दीवट। २-प्रकाश-स्तम्भ। (लाइट-हाउस)।
दीपा वि० (हि) १-मद्धिम। फीका। २-मन्दा।
दीपाधार पुं० (सं) दीवट।
दीपाराधन पुं० (सं) आरती उतारना।
दीपालि, दीपाली, दीपावलि, दीपावली स्त्री० (सं) दीवाली।
दीपिका स्त्री० (सं) १-छोटा दीपक। २-एक रागिनी। ३-किसी ग्रन्थ का अर्थ स्पष्ट करने वाली पुस्तक। वि० उजाला करने वाली।
दीपित वि० (सं) १-दीप्त। २-उत्तेजित।
दीपोत्सव पुं० (सं) दीवाली।
दीप्त वि० (सं) १-प्रज्वलित। २-चमकीला।
दीप्ति स्त्री० (सं) १-प्रकाश। २-कान्ति। ३-ज्ञान का प्रकाश।
दीप्तिमान् वि० (सं) [स्त्री० दीप्तिमती] १-चमकीला हुआ। २-कान्तियुक्त।
दीप्ति-प्रसारण, दीप्तिविकीरण पुं० (सं) चारों ओर प्रकाश की किरणें फैलाना। (रेडियेशन)।
दीबो पुं० (हि) देने की क्रिया या भाव।
दीमक स्त्री० (फा) च्यूँटी जैसा एक सफेद कीड़ा जो लकड़ी कागज आदि को नष्ट कर देता है। वल्मीक
दीयट स्त्री० (हि) दीपक रखने का लकड़ी या पीतल का आधार। चिरागदान।
दीया पुं० (हि) १-दीपक। चिराग। २-मिट्टी का छोटा वह पात्र जिसमें बत्ती जलाते हैं।
दीयासलाई स्त्री० दे० 'दियासलाई'।
दीरघ वि० दे० 'दीर्घ'।
दीर्घ वि० (सं) १-लम्बा। २-बड़ा। विशाल। पुं० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण। ह्रस्व का उलटा।
दीर्घ-काय वि० (सं) बड़े डीलडौल वाला।
दीर्घ-जीवी वि० (सं) चिरजीवी।
दीर्घ-सूत्र पुं० (सं) बहुत दिनों तक चलने वाला यज्ञ।
दीर्घ-सूत्रता स्त्री० (सं) १-प्रत्येक काम में देर करने का स्वभाव। २-सार्वजनिक कार्यों के [illegible] राज कीय कर्मचारियों द्वारा [illegible] के कारण किया जाने वाला [illegible]
दीर्घ-सूत्री वि० (सं) [illegible]
दीर्घा स्त्री० (सं) १-[illegible] और ऊपर से छाया [illegible]

दर्शकों के बैठने का स्थान। (गैलरी)।
दीर्घायु वि० (सं) दीर्घजीवी। लम्बी उमर वाला।
दीर्घावकाश पुं० (सं) विद्यालयों में अथवा न्यायालयों के दो सत्रों के मध्य की लम्बी छुट्टी या अवकाश। (वैकेशन)।
दीर्घिका स्त्री० (सं) छोटा तालाब।
दीर्ण वि० (सं) १-फटा हुआ। २-टूटा हुआ।
दीवट स्त्री० (हि) दीयट। चिरागदान।
दीवा पुं० दे० 'दीया'।
दीवान पु० (अ) १-राजसभा। २-राज्य का मंत्री। ३-वह पुस्तक जिसमें गजलें संग्रहीत हों।
दीवान-आम पुं० (अ) राजा या बादशाह का वह दरबार जिसमें सर्वसाधारण प्रवेश पा सके।
दीवानखाना पुं० (फा) बैठक।
दीवानखास पु० (फा०+अ०) खास दरबार।
दीवाना वि० (फा) [स्त्री० दीवानी] पागल।
दीवानी स्त्री० (फा) १-दीवान का पद। २-वह न्यायालय, जो सम्पत्ति आदि सम्बन्धी स्वत्वों का निर्णय करे।
दीवानी-अदालत, दीवानी-कचहरी, दीवानी-न्यायालय पुं० =वह न्यायालय जो सम्पत्ति आदि के मामलों का निर्णय करता है।
दीवार स्त्री० (फा) १-दीवाल। भीत। २-किसी वस्तु का ऊपर उठा हुआ घेरा।
दीवारगीर पुं० (फा) दीया आदि रखने का वह आधार जो दीवार में लगाया जाता है।
दीवाल स्त्री० (फा) मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का बना हुआ परदा या घेरा।
दीवाली स्त्री०(हि) एक प्रसिद्ध उत्सव जो कार्त्तिक की अमावस्या को होता है, इस दिन रात को दीप जलाये जाते हैं और लक्ष्मीपूजन किया जाता है।
दीवी स्त्री० (हि) दीवट।
दीसना क्रि० (हि) दिखाई पड़ना।
दीह वि० (हि) १-लम्बा और बड़ा। २-बहुत ऊँचा। पुं० चहारदीवारी।
दुंद पुं०(हि) १-द्वंद। २-उपद्रव। ३-झगड़ा-बखेड़ा
दुंदुभ पुं० (सं) नगाड़ा। पुं० (हि) जन्म-मरण आदि का कष्ट या क्लेश।
दुंदुभि स्त्री० (सं) धौंसा। नगाड़ा।
दुंदुभी स्त्री० (हि) नगाड़ा।
दुंदुह पुं० (हि) पानी का साँप। डिंडिम।
दुंबा पुं० [सं० दुम्बक] बहुत मोटी और भारी दुम वाला मेढ़ा।
दुःकुंत पुं० (हि) दुष्यंत।
दुःख पु० (सं) कष्ट। क्लेश। तकलीफ।
दुःखकर वि० (सं) दुःखद। कष्टप्रद।
दुःखद, दुःखदायक, दुःखदायी, दुःखप्रद वि० (सं) [स्त्री० दुःखदायिका] दुःख पहुँचाने वाला। कष्टप्रद
दुःखमय वि० (सं) दुःखों से भरा हुआ। दुःखपूर्ण।
दुःखवाद पुं० (स) निराशावाद।
दुःखांत वि० (सं) जिसका अन्त दुःखमय हो। पुं० १-वह नाटक जिसकी समाप्ति दुःखमयी घटना से हो। २-दुःख का अन्त या नाश।
दुःखार्त वि० (सं) दुखी।
दुःखित वि० (सं) दुखी।
दुःखी वि० (सं) जिसे दुःख हो।
दुःशासन पुं० (सं) दुर्योधन का छोटा भाई। वि० जिस पर शासन करना कठिन हो।
दुःशील वि० (सं) दुष्ट स्वभाव वाला। उद्धत।
दुःसह वि० (स) असह्य।
दुःसाध्य वि० (सं) १-जिसका साधन कठिन हो। २-जिसका करना कठिन हो। ३-असाध्य।
दुःसाहस पुं० (सं) १-दुष्कर या असंभव काम को करने के लिए किया जाने वाला साहस। २-अनुचित साहस। ३-धृष्टता।
दुःस्वभाव वि० (स) दुष्ट स्वभाव का। पुं० बुरा स्वभाव।
दु वि० (हि) 'दो' शब्द का संक्षिप्त रूप। उप० दे० 'दुर'।
दुअन पु० दे० 'दुवन'।
दुअन्नी स्त्री०(हि) दो आने वाला सिक्का।
दुअरवा पु० (हि) द्वार।
दुअरिया स्त्री० (हि) छोटा द्वार।
दुआ स्त्री० (अ) १-बिनती। प्रार्थना। २-आशीर्वाद
दुआदस वि० (हि) द्वादश।
दुआब, दुआबा पुं० (हि) दो नदियों के बीच का भू-भाग।
दुआर, दुआरा पुं० (हि) द्वार।
दुआरी स्त्री० (हि) छोटा द्वार।
दुआल स्त्री० (हि) दुवाल।
दुआह पुं० (हि) दूसरा विवाह।
दुइ वि० (हि) दो (संख्या)।
दुइज स्त्री०(हि) दूज। पुं० (हि) दूज का चन्द्रमा।
दुई स्त्री० (हि) १-अपने को दूसरों से अलग समझना २-द्वैत।
दुऊ, दुओ वि० (हि) दोनों।
दुकड़ा पुं० (हि) (स्त्री० दुकड़ी) १-जोड़ा। २-छदाम
दुकड़ी स्त्री० (हि) १-दो रुपया। २-धोतियों आदि का जोड़ा।
दुकना क्रि० (देश) छिपना।
दुकान स्त्री० (फा) १-सौदा बेचने का स्थान। २-बहुत सी वस्तुओं को इधर-उधर फैलाकर रख देना
दुकानदार पुं० (फा) १-दुकान का मालिक। २-जीविका के लिए ढोंग रचने वाला।

दुकानदारी स्त्री० (फा) १-दुकान पर माल बेचने का काम। २-ढोंग रचकर रुपया पै...

दुकाल पुं० (हि) अन्नकष्ट का स...

दुकूल पुं० (सं) १-वस्त्र। २-साड़ी...

दुकूलिनी स्त्री० (हि) नदी।...

दुकेला पुं० (हि) (स्त्री० दुकेली) ... एक और साथी हो।

दुक्कड़ पुं० (हि) १-तबले जैसा एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २-एक में बंधी हुई दो नावों का जोड़ा।

दुक्का वि० (हि) (स्त्री० दुक्की) जो एक साथ दो हों।

दुक्की स्त्री० (हि) दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।

दुख पुं० दे० 'दुःख'।

दुखड़ा पुं० (हि) १-दुःखों का वर्णन। २-विपत्ति।

दुखदाई, दुखदानि वि० (हि) दुःखद।

दुखदुंद पुं० (हि) दुःख और आपत्ति।

दुखना क्रि० (हि) पीड़ा होना।

दुखरा पुं० (हि) दुखड़ा।

दुखहाया वि० (हि) दुःखित।

दुखार, दुखारी वि० (हि) दुःखी।

दुखित, दुखिया वि० (हि) दुःखित।

दुखी वि० (हि) १-दुःख में पड़ा हुआ। २-खिन्न। ३-रोगी।

दुखीला वि० (हि) दुःख अनुभव करने वाला।

दुखौंहा वि० (हि) (स्त्री० दुखौंही) दुःख देने वाला।

दुखौंही वि० (हि) दुःख देने वाली।

दुग वि० (हि) दो।

दुगई स्त्री० (?) दालान।

दुगध वि० (हि) दुर्गम।

दुगदुगी स्त्री० (हि) धुकधुकी।

दुगना वि० (हि) दूना।

दुगम वि० (हि) दुर्गम।

दुगाड़ा पुं० (हि) दो नाली बन्दूक।

दुगुण, दुगुन, दुगुना वि० (हि) द्विगुण। दूना।

दुग्ग पुं० (हि) दुर्ग।

दुग्ध पुं० (सं) दूध।

दुघड़िया वि० (हि) १-दो घड़ी का। २-दो घड़ी के हिसाब से निकाला हुआ।

दुघड़िया मुहूर्त पुं० (हि) दो-दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त।

दुघरी वि० (हि) दुघड़िया।

दुचन्द वि० (हि) दूना। दुगना।

दुचित वि० (हि) १-जिसका मन किसी बात पर जमता न हो। २-अनमना। चिन्ताग्रस्त।

दुचितई, दुचिताई स्त्री० (हि) १-द्विविधा। २-खटका।

दुचित्ता वि० (हि) दुचित।

दुज पुं० (हि) द्विज।

... समझता। दुई।

दुजीह पुं० (हि) द्विजिह्व।

दुटूक वि० (हि) जिसके दो टुकड़े कर दिये गये हों।

दुत अव्य० (हि) १-उपेक्षापूर्वक दूर हटाने के लिए प्रयुक्त शब्द। २-बच्चों के लिए प्यार का शब्द।

दुतकारना क्रि० (हि) १-'दुत-दुत' शब्द कहकर किसी को अपने पास से हटाना। २-धिक्कारना।

दुतारी स्त्री० (हि) एक प्रकार की तलवार।

दुति स्त्री० (हि) द्युति। चमक।

दुतिमान वि० (हि) द्युतिमान। चमकदार।

दुतिय स्त्री० (हि) द्वितीय।

दुतिया स्त्री० (हि) द्वितीया। दूज।

दुतिवत वि० (हि) १-चमकीला। २-सुन्दर।

दुतीय वि० (हि) द्वितीय।

दुतीया स्त्री० (हि) द्वितीया। दूज।

दुदलाना क्रि० (हि) दुतकारना।

दुदिला वि० (हि) १-दुचित्ता। चिन्तित।

दुद्धी स्त्री० (हि) १-खड़िया मिट्टी। २-एक घास।

दुधमुहाँ, दुधमुँहा वि० (हि) १-दूध के दाँत वाला। २-दूध पीता।

दुधार वि० (हि) १-दूध देने वाली। २-जिसमें दूध हो।

दुधारा वि० (हि) दो धार वाला। पुं० एक तरह का चौड़ा खाँडा।

दुधारी, दुधारू वि० दे० 'दुधार'।

दुधिया वि० (हि) १-दूध मिला। २-जिसमें दूध हो। ३-दूध के रंग का। स्त्री० (हि) खड़िया मिट्टी।

दुधैल वि० (हि) दुधार।

दुनना क्रि० (हि) १-कुचलना। २-नष्ट करना।

दुनरना, दुनरवना क्रि० (हि) १-झुककर दोहरा सा हो जाना। २-लचक कर दोहरा सा करना।

दुनाली वि० (हि) दो नालियों वाली (बन्दूक)।

दुनियाँ स्त्री० (फा) १-संसार। जगत। २-इस जगत के लोग।

दुनियादार पुं० (फा) १-गृहस्थ। २-व्यवहार कुशल। ३-युक्ति से अपना कार्य साधने वाला व्यक्ति।

दुनियाई वि० (हि) सांसारिक।

दुनी स्त्री० (हि) संसार। दुनिया।

दुपटा पुं० (हि) दुपट्टा। वि० दो पुट का।

दुपटी स्त्री० (हि) चादर। दुपट्टा।

दुपट्टा पुं० (हि) १-ओढ़ने की चादर। २-कन्धे पर रखने का कपड़ा।
दुपट्टी स्त्री० (हि) चादर। दुपट्टा।
दुपद वि०, पुं० दे० 'द्विपद'।
दुपहर स्त्री० (हि) दोपहर। मध्याह्न।
दुपहरिया स्त्री० (हि) १-मध्याह्न। दोपहर। २-एक छोटा फूल वाला पौधा।
दुपहरी स्त्री० (हि) दोपहर। मध्याह्न।
दुपी पुं० (हि) हाथी।
दु-फसली वि० (हि) रबी और खरीफ दोनों फसलों में होने वाली।
दुबकना क्रि० दे० 'दबकना'।
दुबधा स्त्री० (हि) १-मन का निश्चय अथवा अस्थिरता का भाव। २-संशय। सन्देह। ३-असमञ्जस ४-चिन्ता।
दुबरा वि० (हि) [स्त्री० दुबरी] दुबला।
दुबराना क्रि० (हि) दुबला होना।
दुबला वि० (हि) [स्त्री० दुबली] १-कृश। २-अशक्त कमजोर।
दुबारा क्रि० वि० (हि) दोबारा।
दुबाह पुं० (हि) दो तलवारें दोनों हाथों में लेकर चलाने का भाव।
दुबाहना क्रि० (हि) दोनों हाथों से तलवार चलाना।
दुबिधा स्त्री० (हि) दुबधा।
दुभाषिया, दुभाषी पुं० (हि) दो भाषाओं में बातचीत करने वालों का अभिप्राय समझाने वाला व्यक्ति।
दुमंजिला वि० (फा) [स्त्री० दो मञ्जिली] दो खण्ड वाला (मकान)।
दुम स्त्री० (फा) १-पूँछ। २-पूँछ जैसी कोई वस्तु या पीछे लगा कोई व्यक्ति। ३-किसी कार्य का अन्तिम तथा सूक्ष्म अंश।
दुमची स्त्री० (फा) १-घोड़े के साज का वह चमड़े का तसमा जो उसकी दुम के नीचे दबा रहता है। २-दोनों नितम्बों के बीच की हड्डी।
दुमदार वि० (फा) १-पूँछ वाला। २-जिसके पीछे पूँछ जैसी कोई वस्तु लगी हो।
दुमन, दुमना वि० (हि) दुचित्ता।
दुमाता स्त्री० (हि) विमाता। सौतेली माँ।
दुमाहा वि० (हि) प्रति दो मास में होने वाला।
दुमुँहा वि० (हि) दो मुँह वाला।
दुरंग पुं० (हि) किला। वि० दे० 'दुरंगा'।
दुरंगा वि० (हि) [स्त्री० दुरङ्गी] १-जिसमें दो रङ्ग हों २-दो प्रकार का। ३-दोहरी चाल चलने वाला।
दुरंगी स्त्री० (हि) कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में होजाना।
दुरंत वि० (सं) १-बहुत भारी। २-दुस्तर। कठिन। ३-घोर। भीषण। ४-जिसका परिणाम बुरा ५-दुष्ट।
दुरंतर वि० (हि) कठिन। दुर्गम।
दुरंधा वि० (हि) १-जिसमें दो छेद हों। २-आर छेद वाला।
दुर् उप (सं) एक उपसर्ग, जिससे निषेध या दूष सूचक अर्थ निकलते हैं।
दुर पुं० (फा) १-नथ का मोती। २-कान की छो वाली। अव्य० (हि) दूर हो। (तिरस्कारपूर्वक)।
दुरजन पुं० (हि) दुर्जन।
दुरथल पुं० (हि) बुरी जगह।
दुरद पुं० (हि) द्विरद। हाथी।
दुरदाम वि० (हि) कठिन। कष्टसाध्य।
दुरदाल पुं० (हि) द्विरद। हाथी।
दुरदुराना क्रि० (हि) तिरस्कारपूर्वक दूर करना।
दुरदृष्ट पुं० (सं) १-दुर्भाग्य। २-अभागा। ३-पाप
दुरधिगम वि० (सं) १-दुर्लभ। २-दुर्जेय। ३-जो समझ से बाहर हो। दुर्बोध।
दुरध्व वि० (सं) जिस (मार्ग) पर चलना कठिन हो पुं० विकट या बीहड़ मार्ग।
दुरना क्रि० (हि) १-छिपना। २-आँखों के आगे से दूर होना।
दुरपदी स्त्री० (हि) द्रौपदी।
दुरभिसंधि स्त्री० (सं) बुरी नीयत से गुट बनाकर किया हुआ विचार।
दुरभियोजन पुं० (सं) हानि पहुँचाने के विचार से की जाने वाली गुप्त कार्रवाई (प्लॉट)।
दुरभेव पुं० (हि) १-बुरा भाव। २-मनमुटाव।
दुरमति स्त्री० वि० (हि) दुर्मति।
दुरमुट पुं० (हि) सड़क के कंकर पीटने का औजार।
दुरलभ वि० (हि) दुर्लभ।
दुरवस्था स्त्री० (सं) १-बुरी अवस्था या दशा। २-दुःख, कष्ट आदि की दशा।
दुराग्रहपुं० (सं) १-अनुचित हठ। २-अपने मत के ठीक सिद्ध न होने की अवस्था में उसपर डटे रहना
दुराचरण पुं० (सं) बुरा चालचलन।
दुराचार पुं० (सं) दुष्ट आचरण।
दुराचारी वि० (सं) [स्त्री० दुराचारिणी] दुष्ट आचरण वाला।
दुराज पुं० (हि) १-बुरा राज्य या शासन। २-एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन। ३-वह स्थान जिस पर दो राजाओं का राज्य हो।
दुराजी वि० (हि). जिसमें दो राजा हों। पु० दे० 'दुराज'।
दुरात्मा वि० (सं) नीचाशय।
दुरादुरी स्त्री० (हि) छिपाव। गोपन।
दुराना क्रि० (हि) १-दूर होना या करना। २-छिपना।

या छिपाना। २-(आँख, हाथ आदि अंगों को) नचाना। मटकाना।
दुराप वि० (सं) कठिनता से मिलने वाला।
दुराराध्य वि० (सं) १-जिसको पूजना या करना कठिन हो। २-असहृत।
दुराव पु०(हि) १-छिपाव। भेदभाव। २-छल।
दुराशय पुं० (सं) दुष्ट आशय। बुरी नीयत। वि० नीच। खोटा।
दुराशा स्त्री० (सं) झूठी आशा।
दुराषा स्त्री० (हि) दुराशा।
दुरित पु० (सं) पाप। वि० [स्त्री० दुरिता] पापी।
दुरियाना क्रि० (हि) १-दूर करना। २-दुरदुराना।
दुरूपा वि० (हि) दो रूप वाला।
दुरुत्साहन पुं० (सं) किसी को बुरे काम के लिए उकसाना।
दुरुत्साहित वि०(सं) बुरे काम के लिए उकसाया हुआ।
दुरुपयोग पुं० (सं) किसी वस्तु को बुरी तरह से काम में लाना।
दुरुपयोजन पु० (सं) दुरुपयोग करना। (मिसएप्रोप्रिएशन)।
दुरुस्त वि०(फा) १-ठीक। २-उचित। ३-यथार्थ। ४-जिसमें कोई त्रुटि न हो।
दुरुस्ती स्त्री० (फा) १-सुधार। २-संशोधन।
दुरूह वि० (सं) कठिन।
दुरूहता स्त्री० (सं) कठिनता।
दुर्गंध स्त्री० (सं) बदबू।
दुर्ग वि० (सं) जिसमें पहुँचना कठिन हो। पुं० कोट। किला।
दुर्गत, दुर्गति स्त्री० (सं) दुर्दशा।
दुर्गपति, दुर्गपाल पुं० (सं) किलेदार।
दुर्गम वि० (सं) १-औघट। २-दुर्ज्ञेय। ३-विकट। कठिन।
दुर्गा स्त्री० (सं) १-आदि शक्ति। देवी। २-नौ वर्ष की कन्या।
दुर्गोत्सव पुं० (सं) नवरात्र में होने वाला दुर्गापूजा का उत्सव।
दुर्घट वि० (सं) कष्टसाध्य। जिसका होना कठिन हो।
दुर्घटना स्त्री० (सं) अशुभ तथा बुरी घटना। वारदात (एक्सीडेन्ट)।
दुर्घात पु० (सं) १-बुरी तरह से किया जाने वाला घात। धोखे-बाजी।
दुर्जन पुं० (सं) खल। खोटा आदमी।
दुर्जर, दुर्जीव वि० (सं) जो शीघ्रता से जीता न जा सके।
दुर्ज्ञेय वि० (सं) जो कठिनता से जाना जा सके। दुर्बोध।
दुर्दम, दुर्दमनीय, दुर्दम्य वि० (सं) जिसका दमन करना या दबाना कठिन हो।
दुर्दर वि० दे० 'दुर्द्धर'।
... किया
दुर्दैव पुं० (हि) दुर्भाग्य। बदकिस्मती।
दुर्धर्ष वि० (सं) जिसे वश में करना कठिन हो। उग्र। प्रचंड।
दुर्द्धर वि (सं) जिसे पकड़ना कठिन हो। प्रचंड।
दुर्नाम पुं० (हि) १-बदनामी। २-गाली।
दुर्निवार, दुर्निवार्य वि० (सं) १-जो सहज न रोका जा सके। २-जिसका होना प्रायः निश्चित हो।
दुर्नीति स्त्री० (सं) १-बुरी नीति। २-बुरा आचरण। ३-अन्याय।
दुर्बल वि० (सं) १-शक्तिहीन। कमजोर। २-क्षीण-काय। ३-कृश।
दुर्बलता स्त्री० (सं) १-कमजोरी। २-दुबलापन।
दुर्बुद्धि वि० (सं) १-दुष्ट बुद्धि वाला। २-मूर्ख।
दुर्बोध वि० (सं) जो जल्दी समझ में न आवे। गूढ़।
दुर्भाग्य पुं० (हि) बदकिस्मती। वि० भाग्यहीन।
दुर्भाव पुं० (सं) १-बुरा भाव। २-भीतरी द्वेष।
दुर्भावना स्त्री० (सं) १-बुरी भावना। २-आशङ्का। कुविचार।
दुर्भाषा स्त्री० (सं) गाली-गलौज।
दुर्भिक्ष पुं० (सं) अकाल।
दुर्भिच्छ पुं० (हि) दुर्भिक्ष। अकाल।
दुर्भेद, दुर्भेद्य वि० (सं) १-जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २-जिसे जल्दी पार न कर सकें।
दुर्मति वि० (सं) १-मन्द बुद्धि। २-मूर्ख। ३-दुष्ट। स्त्री० कुमति।
दुर्मद वि० (सं) १-अभिमानी। २-मदमत्त।
दुर्मर वि० (सं) १-जिसका मरना कठिन हो। २-उदार विचारों का घोर विरोध करने वाला। (डाईहार्ड)।
दुर्रा पुं० (फा० दुर्रः) चाबुक।
दुर्लंघ्य वि० (सं) जिसे लांघना या पार करना कठिन हो।
दुर्लक्ष्य वि० (सं) १-जो कठिनता से दिखाई पड़े। २-जिसका निशाना लगाना कठिन हो। ३-बुरी नीयत।
दुर्लभ वि० (सं) १-जिसे पाना सहज न हो। २-अनोखा। ३-प्रिय।
दुर्लभ-मुद्रा स्त्री० (सं) किसी देश विशेष की मुद्रा जिसके माल की मांग होनेपर भी व्यापार तुला उनके पक्ष में न होने के कारण उक्त मुद्रा पर्याप्त संख्या में प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करें।

(हाई-करेंसी)।
दुर्लभ-मुद्रा-क्षेत्र पुं० (सं) वह देश या देशों का क्षेत्र जिनकी मुद्रा सहज प्राप्त न हो सके। (हाई-करेंसी ऐरिया)।
दुर्ललित वि० (सं) १-जिसका रंग ढंग अच्छा न हो। २-बुरा।
दुर्लेख्य पुं० (सं) विधिक विचार से अप्रामाणिक या नियम विरुद्ध माना जाने वाला लेख। (इनवैलिड-डीड)।
दुर्वचन पुं० (सं) गाली।
दुर्वह वि० (स) जिसे वहन करना बहुत कठिन हो।
दुर्वाद पुं० (सं) १-गाली। २-बदनामी।
दुर्विनीत वि० (सं) उद्दंड। अशिष्ट।
दुर्विपाक पुं० (सं) १-अशुभ और दुःखदायी घटना। २-बुरा परिणाम या फल।
दुर्वृत्त वि० (सं) दुराचारी।
दुर्वृत्त-फलक पुं० (सं) दुश्चरित्र व्यक्ति के कारनामों का लेखा। (हिस्ट्री-शीट)।
दुर्वृत्त-सूची स्त्री० (सं) कुख्यात लोगों की सूची। (ब्लैक-लिस्ट)।
दुर्व्यवस्था स्त्री० (सं) कुप्रबन्ध।
दुर्व्यवहार पुं० (सं) १-बुरा बर्ताव। २-दुष्ट आचरण
दुर्व्यसन पुं० (सं) बुरा व्यसन। लत।
दुलकना क्रि० (हि) १-बारबार बतलाना। २-कहकर मुकरना।
दुलकी स्त्री० (हि) घोड़े की एक चाल।
दुलखना क्रि० दे० 'दुलकना'।
दुलड़ी स्त्री० (हि) दो लड़ वाली माला या हार।
दुलत्ती स्त्री० (हि) चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।
दुलदुल पुं० (प) वह खच्चरी जिसे असकन्दरिया (मिस्र) के हाकिम ने मोहम्मदसाहब को भेंट की थी
दुलना क्रि० (हि) डोलना।
दुलभ वि० (हि) दुर्लभ।
दुलरा वि० (हि) दुलारा।
दुलराना क्रि० (हि) १-बच्चों को बहलाकर प्यार करना। २-दुलारे बच्चों का सा व्यवहार या आचरण करना।
दुलरी स्त्री० (हि) दुलड़ी।
दुलहन स्त्री० (हि) नव-वधू।
दुलहा पुं० (हि) १-वर। २-पति।
दुलही स्त्री० (हि) दुलहन।
दुलहेटा पुं० (हि) १-दुलारा बेटा। २-दुलहा।
दुलाई स्त्री० (हि) हलकी रूईदार रजाई।
दुलाना क्रि० (हि) डुलाना।
दुलार पुं० (हि) बच्चों को प्रसन्न करने की स्नेहपूर्ण चेष्टा। लाड़।
दुलारना क्रि० (हि) लाड़ करना।
दुलारा वि० (हि) (स्त्री० दुलारी) लाड़ला।
दुलारी वि० (हि) लाड़ली। स्त्री० एक रोग।
दुलीचा, दुलैचा पुं० (हि) गलीचा। कालीन।
दुलोही स्त्री० (हि) दो टुकड़ों के जोड़ से बनने वाली एक प्रकार की तलवार।
दुल्लभ वि० (हि) दुर्लभ।
दुव वि० (हि) दो।
दुवन पुं० (हि) १-दुर्जन। २-राक्षस। वि० बुरा। खराब।
दुवाज पुं० (हि) एक तरह का घोड़ा।
दुवादस वि० (हि) द्वादश।
दुवादस-बानी वि० (हि) बारह बानी का। खरा।
दुवार पुं० (हि) द्वार।
दुवारिका स्त्री० (हि) द्वारका।
दुवाल स्त्री० (फा) १-चमड़े का तसमा। २-रिकाब में लगाने का तसमा।
दुविद पुं० (हि) द्विविद।
दुवो वि० (हि) दोनों।
दुशवार वि० (फा) १-कठिन। २-दुःसह।
दुशाला पुं० (हि) दोहरी ऊनी चादर।
दुश्चक्र पुं० (सं) १-षड्यन्त्र। २-वह चक्र या क्षेत्र जिसके दोष बराबर बढ़ते चलें तथा जिससे छुटकारा पाना कठिन हो। (विशस-सर्किल)।
दुश्चरित्र वि० (सं) [स्त्री० दुश्चरित्रा] बदचलन।
दुश्चिन्ता स्त्री० (सं) भारी फिक्र।
दुश्मन पुं० (फा) शत्रु।
दुश्मनी स्त्री० (फा) शत्रुता।
दुष्कर वि० (सं) दुःसाध्य।
दुष्कर्म पुं० (स) अनुचित कार्य।
दुष्कीर्त्ति स्त्री० (सं) अपयश।
दुष्ट वि० (सं) [स्त्री० दुष्टा] खल। दुर्जन।
दुष्टात्मा वि० (सं) मन में मैल रखने वाला। दुराशय
दुष्पार वि० (सं) १-जिसे पार करना कठिन हो। २-जिसका पार या थाह पाना कठिन हो।
दुष्प्रयोग पुं० (सं) दुरुपयोग।
दुष्प्रवृत्ति स्त्री० (सं) दूषित प्रवृत्ति वाला व्यक्ति।
दुष्प्राप्य वि० (सं) सुगमता से न मिलने वाला।
दुष्प्रेक्ष वि० (सं) १-सुगमता से न दिखाई देने वाला। २-भीषण। भयंकर।
दुष्यंत पुं० (सं) एक पुरु वंशी राजा का नाम।
दुसराना क्रि० (हि) दुहराना।
दुसरिहा वि० (हि) १-साथी। संगी। २-प्रतिद्वन्द्वी।
दुसह वि० (हि) असह्य।
दुसाध पुं० (हि) एक जाति का नाम।
दुसार, दुसाल पुं० (हि) आर-पार किया हुआ छेद। क्रि० वि० इस पार से उस पार तक। वि० कष्टदायक

दुसाला पुं० (हि) दुशाला।
दुसूती स्त्री०(हि) दोहरे सूत का बना कपड़ा या चादर
दुसेजा पुं० (हि) बड़ी खाट। पलङ्ग।
दुस्कर वि० (हि) दुष्कर।
दुस्तर वि० (हि) दुस्तर।
दुस्तर वि० (स) १-जिसे पार करना कठिन हो। २-विकट।
दुस्तर्य वि० (सं) १-जिसके सम्बन्ध में तर्क करना। कठिन हो। २-जिसे तर्क द्वारा सिद्ध करना कठिन हो।
दुस्सह वि० (हि) दुःसह।
दुस्सेवा स्त्री०(सं) हानि या अपकार करने वाला कार्य
दुहना पुं० (हि) [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। नाती
दुहत्था क्रि० वि० (हि) दोनों हाथों से [illegible]

[illegible]

धन संचय करना।
दुहनी स्त्री० (हि) वह पात्र जिसमें दूध दुहा जाता है

[illegible]

दुहाग पुं० (हि) १-दुर्भाग्य। २-वैधव्य।
दुहागिन स्त्री०(हि) विधवा।
दुहागिल वि० (हि) १-अभागा। २-अनाथ। ३-सूना। खाली।
दुहाना क्रि० (हि) दूध निकलवाना।
दुहावनी स्त्री० (हि) दूध दुहने की मजदूरी।
दुहिता स्त्री० (हि) बेटी।
दुहूँघा क्रि० वि० (हि) दोनों ओर से।
दुहूँ वि० (हि) दोनों।
दुहेल पुं० (हि) दुख।
दुहेला वि० (हि) [स्त्री० दुहेली] १-कष्टकर। २-कठिन ३-दुःखी। ४-दुःखपूर्ण। पुं० दुःख देने वाला काम
दुहैया वि० (हि) दूध दुहने वाला। स्त्री० दे० 'दुहाई'
दुहोतरा वि० (हि) दो अधिक।
दूँद पुं० दे० 'दुंद'।
दूँदना क्रि० (हि) १-उपद्रव या ऊधम करना। २-घोर शब्द करना।
दूँदर वि० (हि) शक्तिशाली।
दूँदि स्त्री० दे० 'दुंद'।
दू वि० (हि) दो (संख्या)।
दूआ पुं० (हि) १-दुक्की (तारा)। २-दुई। ३-दो से सम्बद्ध दाँव। वि० दूसरा।
दूइज स्त्री० (हि) दूज।
दूक वि० (हि) दो-एक। कुछ।

दूकान पुं० दे० 'दुकान'।
दूख पु० (हि) दुःख।
दूखना क्रि० (हि) १-दोष लगाना। २-दुखना। ३-नष्ट होना।
दूखित वि० (हि) १-दूषित। २-दुःखित।
दूगन वि० (हि) दुगना।
दूज स्त्री० (हि) प्रति पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया।
दूजा वि० (हि) दूसरा।
दूत पु० (स) १-किसी कार्य या सन्देशा पहुँचाने वाला व्यक्ति। २-इधर-उधर की बातें लगाकर झगड़ा कराने वाला व्यक्ति।
दूत-कर्म पु० (सं) दूत का कार्य।
दूतता स्त्री० (स) दूत का कार्य या भाव।
[illegible]

[illegible] के लिए भेजे हुए

दूभर वि० (हि) दुस्तर। कठिन।
दूताधिष्ठान, दूतायन, दूतावास पुं० (स) किसी देश [illegible]

दूध पु० (स) १-पय। दुग्ध। क्षीर। गोरस। २-अनाज के हरे बीजों का रस।
दूधचढ़ी वि० (हि) जिसके स्तनों में दूध पहले से चढ़ गया हो।
दूधपिलाई स्त्री० (हि) १-दूध पिलाने वाली। दाई। २-विवाह में माता पिता की ओर से वर को दूध पिलाने की एक रस्म। ३-दूध पिलाने का नेग।
दूधपूत पुं० (हि) जन-धन।
दूधभाई पु० (हि) (स्त्री० दूध-बहन) एक ही स्त्री के स्तन का दूध पीने वाले अलग-अलग माता-पिता की सन्तान।
दूधमुँहा, दूधमुख वि० (हि) १-दूध पीने वाला (बच्चा) २-जिसके दूध के दाँत भी न टूटे हों। अल्पवयस्क।
दूधाभाती स्त्री० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू दोनों अपने-अपने हाथ से एक दूसरे को भात खिलाते हैं।
दूधिया वि० (हि) १-दूध मिला या दूध से बना। २-दूध के रङ्ग का। सफेद। पुं० १-एक प्रकार का सफेद, मुलायम और चिकना पत्थर। २-खड़िया मिट्टी। ३-दुद्धि नामक एक घास।
दून स्त्री० (हि) १-दुगने का भाव। २-गाने की गति अपेक्षाकृत दुगनी तेज हो जाना। (सङ्गीत)।
दूनर वि० (हि) लचकदार दोहरा हो जाने वाला।
दूना वि० (हि) दुगुना।

(हार्ड-करेंसी)।

दुर्लभ-मुद्रा-क्षेत्र पुं० (सं) वह देश या देशों का क्षेत्र जिनकी मुद्रा सहज प्राप्त न हो सके। (हार्ड-करेंसी ऐरिया)।

दुर्ललित वि० (सं) १-जिसका रंग ढंग अच्छा न हो। २-बुरा।

दुर्लेख्य पुं० (सं) विधिक विचार से अप्रामाणिक या नियम विरुद्ध माना जाने वाला लेख। (इन-वैलिड-डीड)।

दुर्वचन पुं० (सं) गाली।

दुर्वह वि० (सं) जिसे वहन करना बहुत कठिन हो।

दुर्वाद पुं० (सं) १-गाली। २-बदनामी।

दुर्विनीत वि० (सं) उद्दंड। अशिष्ट।

दुर्विपाक पुं० (सं) १-अशुभ और दुःखदायी घटना। २-बुरा परिणाम या फल।

दुर्वृत्त वि० (सं) दुराचारी।

दुर्वृत्त-फलक पुं० (सं) दुश्चरित्र व्यक्ति के कार-नामों का लेखा। (हिस्ट्री-शीट)।

दुर्वृत्त-सूची स्त्री० (सं) कुख्यात लोगों की सूची। (ब्लैक-लिस्ट)।

दुर्व्यवस्था स्त्री० (सं) कुप्रबन्ध।

दुर्व्यवहार पुं० (सं) १-बुरा बर्ताव। २-दुष्ट आचरण

दुर्व्यसन पुं० (सं) बुरा व्यसन। लत।

दुलकना क्रि० (हि) १-बारबार बतलाना। २-कहकर मुकरना।

दुलकी स्त्री० (हि) घोड़े की एक चाल।

दुलखना क्रि० दे० 'दुलकना'।

दुलड़ी स्त्री० (हि) दो लड़ वाली माला या हार।

दुलत्ती स्त्री० (हि) चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलदुल पुं० (अ) वह खच्चरी जिसे असकन्दरिया (मिस्र) के हाकिम ने मोहम्मदसाहब को भेंट की थी

दुलना क्रि० (हि) डोलना।

दुलभ वि० (हि) दुर्लभ।

दुलरा वि० (हि) दुलारा।

दुलराना क्रि० (हि) १-बच्चों को बहलाकर प्यार करना। २-दुलारे बच्चों का सा व्यवहार या आचरण करना।

दुलरी स्त्री० (हि) दुलड़ी।

दुलहन स्त्री० (हि) नव-वधू।

दुलहा पुं० (हि) १-वर। २-पति।

दुलही स्त्री० (हि) दुलहन।

दुलहेटा पुं० (हि) १-दुलारा बेटा। २-दुलहा।

दुलाई स्त्री० (हि) हलकी रूईदार रजाई।

दुलाना क्रि० (हि) डुलाना।

दुलार पुं० (हि) बच्चों को प्रसन्न करने की स्नेहपूर्ण चेष्टा। लाड़।

दुलारना क्रि० (हि) लाड़ करना।

दुलारा वि० (हि) (स्त्री० दुलारी) लाड़ला।

दुलारी वि० (हि) लाड़ली। स्त्री० एक रोग।

दुलीचा, दुलैचा पुं० (हि) गलीचा। कालीन।

दुलोही स्त्री० (हि) दो टुकड़ों के जोड़ से बनने वाली एक प्रकार की तलवार।

दुल्लभ वि० (हि) दुर्लभ।

दुव वि० (हि) दो।

दुवन पुं० (हि) १-दुर्जन। २-राक्षस। वि० बुरा। खराब।

दुवाज पुं० (हि) एक तरह का घोड़ा।

दुवादस वि० (हि) द्वादश।

दुवादस-बानी वि० (हि) बारह बानी का। खरा।

दुवार पुं० (हि) द्वार।

दुवारिका स्त्री० (हि) द्वारका।

दुवाल स्त्री० (फा) १-चमड़े का तसमा। २-रिकाब में लगाने का तसमा।

दुविद पुं० (हि) द्विविद।

दुवो वि० (हि) दोनों।

दुशवार वि० (फा) १-कठिन। २-दुःसह।

दुशाला पुं० (हि) दोहरी ऊनी चादर।

दुश्चक्र पुं० (सं) १-षड्यन्त्र। २-वह चक्र या क्षेत्र जिसके दोष बराबर बढ़ते चलें तथा जिससे छुट-कारा पाना कठिन हो। (विशस-सर्किल)।

दुश्चरित्र वि० (सं) [स्त्री० दुश्चरित्रा] बदचलन।

दुश्चिंता स्त्री० (सं) भारी फिक्र।

दुश्मन पुं० (फा) शत्रु।

दुश्मनी स्त्री० (फा) शत्रुता।

दुष्कर वि० (सं) दुःसाध्य।

दुष्कर्म पुं० (सं) अनुचित कार्य।

दुष्कीर्त्ति स्त्री० (सं) अपयश।

दुष्ट वि० (सं) [स्त्री० दुष्टा] खल। दुर्जन।

दुष्टात्मा वि० (सं) मन में मैल रखने वाला। दुराशय

दुष्पार वि० (सं) १-जिसे पार करना कठिन हो। २-जिसका पार या थाह पाना कठिन हो।

दुष्प्रयोग पुं० (सं) दुरुपयोग।

दुष्प्रवृत्ति स्त्री० (सं) दूषित प्रवृत्ति वाला व्यक्ति।

दुष्प्राप्य वि० (सं) सुगमता से न मिलने वाला।

दुष्प्रेक्ष वि० (सं) १-सुगमता से न दिखाई देने वाला। २-भीषण। भयंकर।

दुष्यंत पुं० (सं) एक पुरु वंशी राजा का नाम।

दुसराना क्रि० (हि) दुहराना।

दुसरिहा वि० (हि) १-साथी। संगी। २-प्रतिद्वन्दी।

दुसह वि० (हि) असह्य।

दुसाध पुं० (हि) एक जाति का नाम।

दुसार, दुसाल पुं० (हि) आर-पार किया हुआ छेद। क्रि० वि० इस पार से उस पार तक। वि० कष्टदायक

दुसाला पुं० (हि) दुशाला।
दुसूती स्त्री०(हि) दोहरे सूत का बना कपड़ा या चादर
दुसेजा पुं० (हि) बड़ी खाट। पलङ्ग।
दुस्कर वि० (हि) दुष्कर।
दुस्तम वि० (हि) दुस्तर।
दुस्तर वि० (स) १-जिसे पार करना कठिन हो। २-विकट।
दुस्तर्क्य वि० (सं) १-जिसके सम्बन्ध में तर्क करना कठिन हो। २-जिसे तर्क द्वारा सिद्ध करना कठिन हो।
दुस्सह वि० (हि) दुःसह।
दुस्सेवा स्त्री०(सं) हानि या अपकार करने वाला कार्य
दुहता पुं० (हि) [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। नाती
दुहत्थड़ क्रि० वि० (हि) दोनों हाथों से (मारना)। पुं० दो हाथों से किया जाने वाला प्रहार।
दुहना क्रि० (हि) १-चौपाये के स्तन से दूध निचोड़कर निकालना। २-सत्व या सार खींचना। ३-खूब धन वसूल करना।
दुहनी स्त्री० (हि) वह पात्र जिसमें दूध दुहा जाता है
दुहरा वि० (हि) दोहरा।
दुहाई स्त्री० (हि) १-घोषणा। पुकार। २-किसी को अपनी सहायता या रक्षा के लिए चिल्लाकर बुलाना ३-शपथ। ४-दूध दोहने का काम या मजदूरी।
दुहाग पुं० (हि) १-दुर्भाग्य। २-वैधव्य।
दुहागिन स्त्री०(हि) विधवा।
दुहागिल वि० (हि) १-अभागा। २-अनाथ। ३-सूना। खाली।
दुहाना क्रि० (हि) दूध निकलवाना।
दुहावनी स्त्री० (हि) दूध दुहने की मजदूरी।
दुहिता स्त्री० (हि) बेटी।
दुहूँधा क्रि० वि० (हि) दोनों ओर से।
दुहूँ वि० (हि) दोनों।
दुहेल पुं० (हि) दुःख।

दूँ पु० दे० 'दुंद'।
दूँदना क्रि० (हि) १-उपद्रव या ऊधम करना। २-घोर शब्द करना।
दूँदर वि० (हि) शक्तिशाली।
दूँदि स्त्री० दे० 'दुंद'।
दू वि० (हि) दो (संख्या)।
दूआ पु० (हि) १-दुक्की (ताश)। २-दुई। ३-दो से सम्बद्ध दाँव। वि० दूसरा।
दूइज स्त्री० (हि) दूज।
दूएक वि० (हि) दो-एक। कुछ।

दूकान पुं० दे० 'दुकान'।
दूख पु० (हि) दुःख।
दूखना क्रि० (हि) १-दोष लगाना। २-दुखना। ३-नष्ट होना।
दूखित वि० (हि) १-दूषित। २-दुःखित।
दूगन वि० (हि) दुगना।
दूज स्त्री० (हि) प्रति पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया
दूजा वि० (हि) दूसरा।
दूत पु० (स) १-किसी कार्य या सन्देशा पहुँचाने वाला व्यक्ति। २-इधर-उधर की बातें लगाकर झगड़ा करने वाला व्यक्ति।
दूत-कर्म पु० (सं) दूत का कार्य।
दूतता स्त्री० (स) दूत का कार्य या भाव।
दूतत्व पुं० (सं) दूतता।
दूतपन पु० (हि) दूतता।
दूतमण्डल पुं० (स) किसी काम के लिए भेजे हु[ए] दूतों का समूह या दल।
दूतर वि० (हि) दुस्तर। कठिन।
दूताधिष्ठान, दूतायन, दूतावास पुं० (सं) किसी दे[श] के राजदूत का निवासस्थान और उसका कार्याल[य]
दूति, दूतिका, दूती स्त्री० (स) वह स्त्री जो प्रेमी औ[र] प्रेमिका का समाचार पहुंचाती है। कुटनी।
दूदुह पु० (हि) दुन्दुभ।
दूध पुं० (सं) १-पय। दुग्ध। क्षीर। गोरस। २-अनाज के हरे बीजों का रस।
दूधचढ़ी वि० (हि) जिसके स्तनों में दूध पहले से च[ढ़] गया हो।
दूधपिलाई स्त्री० (हि) १-दूध पिलाने वाली। दाई २-विवाह में माता पिता की ओर से वर को दू[ध] पिलाने की एक रस्म। ३-दूध पिलाने का नेग।
दूधपूत पुं० (हि) जन-धन।
दूधभाई पु० (हि) (स्त्री० दूध-बहन) एक ही स्त्री [के] स्तन का दूध पीने वाले अलग-अलग माता-पि[ता]

और वधू दोनों अपने-अपने हाथ से एक दूसरे को भात खिलाते हैं।
दूधिया वि० (हि) १-दूध मिला या दूध से बना। २-दूध के रङ्ग का। सफेद। पुं० १-एक प्रकार का सफेद, मुलायम और चिकना पत्थर। २-खड़िया मिट्टी। ३-दुद्धि नामक एक घास।
दून स्त्री० (हि) १-दुगने का भाव। २-गाने की गति अपेक्षाकृत दुगनी तेज हो जाना। (सङ्गीत)।
दूनर वि० (हि) लचकदार दोहरा हो जाने वाला।
दूना वि० (हि) दुगना।

दूनी वि० (हि) दूना का स्त्रीलिङ्ग। स्त्री० दुनिया।
दूनौ वि० (हि) दोनों।
दूब स्त्री० (हि) एक घास।
दू-बदू क्रि० वि० (हि) आमने-सामने। मुक़ाबले में।
दूबर, दूबरा, दूबला वि० (हि) (स्त्री० दूबरी) दुबला
दूबा स्त्री० (हि) दूब नामक घास।
दूभर वि० (हि) कठिन। दुःसाध्य।
दूमना क्रि० (हि) हिलाना। कँपाना।
दूमुहाँ वि० (हि) दो मुख वाला।
दूरंदेश वि० (फा) दूर की सोचने वाला।
दूर क्रि० वि० (सं) १-विस्तार, काल, सम्बन्ध आदि के विचार से बहुत अन्तर पर। २-फासले पर।
दूरगामी वि० (सं) दूर तक जाने वाला।
दूरता स्त्री० (सं) दूरी। फासला।
दूरत्व पुं० (सं) दूर होने का भाव। दूरी।
दूरदर्शक वि० (सं) दूर तक देखने वाला। पुं० पण्डित
दूरदर्शक-यंत्र पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा दूर देश स्थित पदार्थों अथवा व्यक्तियों के रूप या प्रतिबिम्ब का प्रतिभान हो। (टेलीवीजन)।
दूरदर्शिता स्त्री० (सं) १-दूर तक की बात सोचने का गुण या शक्ति। २-दूरदर्शी होने का भाव। दूरंदेशी
दूरदर्शी वि० (सं) अग्रसोची। दूरंदेश।
दूर-पूर्व पुं० (सं) एशिया के पूर्वी भाग के प्रदेश, जिसमें चीन, जापान, कोरिया आदि देश आते हैं (फार-ईस्ट)।
दूर-प्रतिभास पुं० (सं) दूर दर्शक-यन्त्र।
दूर-प्रभावी वि० (सं) जिसका प्रभाव दूर तक पड़े। (फार-रीचिङ्ग)।
दूर-प्रहारी-तोप स्त्री० (हि) दूर तक मार करने वाली तोप। (लांगरेंज-गन)।
दूर-प्रेषक पुं० (सं) दूर-विक्षेपक।
दूर-प्रेषण पुं० (सं) दूर-विक्षेपण।
दूरबा स्त्री० (हि) दूब नामक घास।
दूरबीन स्त्री० (फा) वह यन्त्र जिसके द्वारा दूर की वस्तुएँ बहुत पास और स्पष्ट और बड़ी दिखाई देती हैं।
दूरभाष-मिलान-केन्द्र पुं० (सं) किसी नगर का दूरभाष कार्यालय जहाँ स्थानीय लोगों का परस्पर या बाहर के व्यक्तियों के साथ दूरभाष यन्त्र द्वारा बातचीत करने के निमित्त दोनों ओर के यन्त्रों में सम्बन्ध स्थापित करने की व्यवस्था होती है। (टेलीफोन एक्सचेञ्ज)।
दूरमार-तोप स्त्री० दे० 'दूर-प्रहरी-तोप'।
दूरमुद्र, दूरमुद्रक पुं०(सं) वह यन्त्र जिसमें तार द्वारा प्राप्त संदेश स्वयम् टंकित (टाइप) हो जाते हैं। (टेलीप्रिंटर)।
दूरवर्ती वि० (सं) दूर का। जो दूर हो।
दूर-विक्षेपक पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा एक स्थान पर उत्पन्न की गयी ध्वनि, गति आदि विद्युत तरंगों या प्रकाश लहरी आदि की सहायता से दूर-दूर तक फैलाता है।
दूर-विक्षेपण पुं० (सं) दूर विक्षेपक यन्त्र की सहायता से एक स्थान पर उत्पन्न ध्वनि आदि को प्रसारित करने या पहुँचाने की क्रिया। (ट्रांसमिशन)।
दूर-विक्षेपण-केंद्र पुं० (सं) वह स्थान जहाँ से दूर विक्षेपक यन्त्र द्वारा कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। (ट्रांसमीटिंग-स्टेशन)।
दूर-विक्षेपण-यंत्र पुं० (सं) दूर-विक्षेपक।
दूरवीक्षण, दूरवीक्षण-यंत्र पुं०(सं) १-दूरबीन। २-टेलीविजन।
दूरस्थ, दूरस्थित वि० (सं) दूर का। दूर पर स्थित।
दूरागत वि० (सं) दूर से आया हुआ।
दूरि क्रि० वि० (हि) दूर।
दूरी स्त्री० (हि) अन्तर। फासला।
दूरीकरण पुं० (सं) दूर करना।
दूरीप्रदर्शक, दूरी-मापक-यंत्र पुं० (सं) वह यन्त्र जिसकी सहायता से लक्ष्य या निशाने की दूरी का का अनुमान किया जाता है। (रेंज-फाइंडर)।
दूर्वा स्त्री० (सं) दूब नामक घास।
दूर्वा-क्षेत्र पुं० (सं) घर या बंगले आदि के आगे वह खुला भाग जिसमें घास आदि लगी हो। (लॉन)।
दूलन पुं० दे० 'दोलन'।
दूलह पुं० दे० 'दूल्हा'।
दूलित वि० दे० 'दोलित'।
दूल्हा पुं० (हि) १-वर। २-पति।
दूषक वि० (सं) १-दूसरों पर दोष लगाने तथा उनकी निंदा करने वाला। २-दोष उत्पन्न करने वाला। (पदार्थ)।
दूषण पुं० (सं) १-दोष। ऐब। २-दोष या ऐब लगाना।
दूषन पुं० (हि) दूषण।
दूषना क्रि० (हि) दोष लगाना।
दूषित वि० (सं) १-जिसमें दोष हो। २-बुरा। खराब
दूसना क्रि० (हि) दोष लगाना।
दूसर, दूसरा वि० (हि) १-द्वितीय। २-अपर। अन्य।
दूहना क्रि० (हि) दुहना।
दूहनी स्त्री० (हि) दोहनी।
दूहा पुं० (हि) दोहा।
दृक् पुं० (सं) १-आँख। दृष्टि। २-देखना।
दृक्क्षेप पुं० (सं) दृष्टिपात।
दृक्पथ पुं० (सं) दृष्टिपथ।
दृगंचल पुं० (सं) १-पलक। २-चितवन।
दृगंबु पुं० (सं) आँसू।
दृग पुं० (हि) दृक्। आँख। दृष्टि।

दृगमिचाव पुं० (हि) आँखमिचौनी।
दृगोचर वि० (सं) दृष्टिगोचर।
दृढ़ वि० (सं) १-अगाढ़। २-पुष्ट। ३-ठोस। ४-बलवान। ५-हृष्टपुष्ट। ६-स्थायी। ७-निश्चित।
दृढ़चेता वि० (हि) पक्के विचारों वाला।
दृढ़ता स्त्री० (सं) दृढ़ होने का भाव। मजबूती।
दृढ़प्रतिज्ञ वि० (हि) अपनी प्रतिज्ञा पर डटे रहने वाला।
दृढ़ाई स्त्री० (हि) दृढ़ता।
दृढ़ाना क्रि० (हि) दृढ़ या पक्का होना या करना।
दृढ़ायन पुं० (सं) १-दृढ़ करना। २-पहले का काम, नियुक्ति आदि को पक्का करना। (कन्फर्मेशन)।
दृढ़ाव पुं० (हि) दृढ़ता।
दृप्त वि० (सं) १-गर्वित। २-तेजोयुक्त। ४-प्रज्वलित।
दृप्ति स्त्री० (सं) १-चमक। २-तेजस्विता। ३-प्रखरता ४-गर्व। ५-उग्रता।
दृश्य पुं० (सं) १-नजारा। २-तमाशा। ३-वह काव्य जो अभिनय के द्वारा दिखाया जाय।
दृश्य-काव्य पुं० (सं) वह काव्य जो अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया ...
दृश्य-जगत पुं० (सं) संसार का वास्तविक रूप जो हमको दिखाई देता है। (फिनामिनल-वर्ल्ड)।
दृश्यमान वि० (सं) दिखाई देने वाला।
दृश्याधार पुं० (सं) १-वह जो किसी दृश्य का आधार हो। २-वह जिसमें कुछ देखा जाय।
दृश्याभास पुं० (सं) किसी दृश्य या चित्र का प्रतिबिम्ब अथवा आभास जो आँखें मूँद लेने पर सम्मुख विद्यमान सा प्रतीत होता है। (स्पेक्ट्रम)।
दृश्यालेख्य पुं० (सं) किसी घटना आदि के स्थान का रेखा चित्र। (साइट-प्लान)।
दृष्ट वि० (सं) १-देखा हुआ। २-जाना हुआ। ३-प्रत्यक्ष।
दृष्टकूट पुं० (सं) १-पहेली। २-वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ से नहीं, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से निकलता हो।
दृष्टबंधक पुं० (हि) रेहन का वह ढङ्ग जिसमें साहूकार को रेहन रखी वस्तु के भोग अधिकार न हो।
दृष्टमान वि० (हि) प्रकट। व्यक्त।
दृष्टवाद पुं० (सं) प्रत्यक्ष को मानने वाला सिद्धान्त।
दृष्टव्य वि० (सं) देखने योग्य।
दृष्टसार वि० (सं) जिसका बल देखा गया हो।
दृष्टांत पुं० (सं) १-उदाहरण। मिसाल। २-एक अर्थालङ्कार।
दृष्टार्थ पुं० (सं) १-वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो २-वह शब्द जिसके श्रवण से श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता है।
दृष्टि स्त्री० (सं) १-आँख की ज्योति। २-नजर। निगाह। ३-देखने में प्रवृत्त नेत्र।
दृष्टिकूट पुं० दे० 'दृष्ट-कूट'।
दृष्टि-कोण पुं० (सं) देखने, सोचने, विचारने का पहलू।
दृष्टि-क्रम पुं० (सं) चित्रित वस्तुओं में वह अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को यथाक्रम प्रत्येक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर तथा ठीक मान में दिखाई [illegible]

[illegible]

दृष्टिबंध पुं० (सं) नजरबन्दी।
दृष्टि-बंधक पुं० (हि) बन्धक रखने का वह ढङ्ग जिसमें रुपये देने वाले को केवल सूद मिलता है, सम्पत्ति की आमदनी अथवा देख-रेख से उसका [illegible] मास [illegible] हो।
[illegible] भ्रान्ति। (हेलुसिनेशन)।
दृष्टि-मांद्य पुं० (सं) आँखों से कम दिखाई देना।
दृष्टिवान वि० (हि) १-बुद्धिमान्। २-दृष्टि वाला।
दे स्त्री० (हि) स्त्रियों के लिए आदर-सूचक शब्द। देवी का संक्षिप्त रूप।
देई स्त्री० (हि) देवी।
देउर पुं० (हि) देवर।
देउरानी स्त्री० (हि) देवरानी।
देख स्त्री० (हि) अवलोकन।
देखन स्त्री० (हि) १-देखने की क्रिया या भाव। २-देखने का ढङ्ग।
देखनहारा वि० [स्त्री० देखनहारी] देखने वाला।
देखना क्रि० (हि) १-अवलोकन करना। २-निरीक्षण करना। ३-खोजना। ४-आजमाना। ५-निगरानी रखना। ६-समझना। ७-अनुभव करना ८-पढ़ना। ९-भोगना।
देखभाल स्त्री० (हि) १-जाँच-पड़ताल। २-देखरेख। निगरानी।
देखराना, देखरावना क्रि० (हि) दिखलाना।
देखरेख स्त्री० (हि) १-देखभाल। २-निरीक्षण।
देखाऊ वि० (हि) १-जो केवल देखने के लिए हो। २-बनावटी।
देखादेखी स्त्री० (हि) साक्षात्कार। क्रि० वि० अन्य को करते देखकर उसी के अनुकरण पर कोई कार्य करना।

दूनी वि० (हि) दूना का स्त्रीलिङ्ग। स्त्री० दुनिया।
दूनौ वि० (हि) दोनों।
दूब स्त्री० (हि) एक घास।
दू-बदू क्रि० वि० (हि) आमने-सामने। मुक़ाबले में।
दूबर, दूबरा, दूबला वि० (हि) (स्त्री० दूबरी) दुबला
दूबा स्त्री० (हि) दूब नामक घास।
दूभर वि० (हि) कठिन। दुःसाध्य।
दूमना क्रि० (हि) हिलाना। कँपाना।
दूमुहाँ वि० (हि) दो मुख वाला।
दूरंदेश वि० (फा) दूर की सोचने वाला।
दूर क्रि० वि० (सं) १-विस्तार, काल, सम्बन्ध आदि के विचार से बहुत अन्तर पर। २-फ़ासले पर।
दूरगामी वि० (सं) दूर तक जाने वाला।
दूरता स्त्री० (सं) दूरी। फ़ासला।
दूरत्व पुं० (सं) दूर होने का भाव। दूरी।
दूरदर्शक वि० (सं) दूर तक देखने वाला। पुं० पण्डित
दूरदर्शक-यंत्र पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा दूर देश स्थित पदार्थों अथवा व्यक्तियों के रूप या प्रतिबिम्ब का प्रतिभान हो। (टेलीवीजन)।
दूरदर्शिता स्त्री० (सं) १-दूर तक की बात सोचने का गुण या शक्ति। २-दूरदर्शी होने का भाव। दूरंदेशी
दूरदर्शी वि० (सं) अग्रसोची। दूरंदेश।
दूर-पूर्व पुं० (सं) एशिया के पूर्वी भाग के प्रदेश, जिसमें चीन, जापान, कोरिया आदि देश आते हैं (फार-ईस्ट)।
दूर-प्रतिभास पुं० (सं) दूर दर्शक-यन्त्र।
दूर-प्रभावी वि० (सं) जिसका प्रभाव दूर तक पड़े। (फार-रीचिङ्ग)।
दूर-प्रहारी-तोप स्त्री० (हि) दूर तक मार करने वाली तोप। (लांगरेज-गन)।
दूर-प्रेषक पुं० (सं) दूर-विक्षेपक।
दूर-प्रेषण पुं० (सं) दूर-विक्षेपण।
दूरबा स्त्री० (हि) दूब नामक घास।
दूरबीन स्त्री० (फा) वह यन्त्र जिसके द्वारा दूर की वस्तुएँ बहुत पास और स्पष्ट और बड़ी दिखाई देती हैं।
दूरभाष-मिलान-केन्द्र पुं० (सं) किसी नगर का दूरभाष कार्यालय जहाँ स्थानीय लोगों का परस्पर या बाहर के व्यक्तियों के साथ दूरभाष यन्त्र द्वारा बातचीत करने के निमित्त दोनों ओर के यन्त्रों में सम्बन्ध स्थापित करने की व्यवस्था होती है। (टेलीफ़ोन एक्सचेञ्ज)।
दूरमार-तोप स्त्री० दे० 'दूर-प्रहरी-तोप'।
दूरमुद्र, दूरमुद्रक पुं०(सं) वह यन्त्र जिसमें तार द्वारा प्राप्त संदेश स्वयम् टंकित (टाइप) हो जाते हैं। (टेलीप्रिंटर)।
दूरवर्त्ती वि० (सं) दूर का। जो दूर हो।
दूर-विक्षेपक पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा एक स्थान पर उत्पन्न की गयी ध्वनि, गति आदि विद्युत तरंगों या प्रकाश लहरी आदि की सहायता से दूर-दूर तक फैलाता है।
दूर-विक्षेपण पुं० (सं) दूर विक्षेपक यन्त्र की सहायता से एक स्थान पर उत्पन्न ध्वनि आदि को प्रसारित करने या पहुँचाने की क्रिया। (ट्रांसमिशन)।
दूर-विक्षेपण-केंद्र पुं० (सं) वह स्थान जहाँ से दूर विक्षेपक यन्त्र द्वारा कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। (ट्रांसमीटिंग-स्टेशन)।
दूर-विक्षेपण-यंत्र पुं० (सं) दूर-विक्षेपक।
दूरवीक्षण, दूरवीक्षण-यंत्र पुं०(सं) १-दूरबीन। २-टेलीविजन।
दूरस्थ, दूरस्थित वि० (सं) दूर का। दूर पर स्थित।
दूरागत वि० (सं) दूर से आया हुआ।
दूरि क्रि० वि० (हि) दूर।
दूरी स्त्री० (हि) अन्तर। फ़ासला।
दूरीकरण पुं० (सं) दूर करना।
दूरीप्रदर्शक, दूरी-मापक-यंत्र पुं० (सं) वह यन्त्र जिसकी सहायता से लक्ष्य या निशाने की दूरी का का अनुमान किया जाता है। (रेंज-फाइंडर)।
दूर्वा स्त्री० (सं) दूब नामक घास।
दूर्वा-क्षेत्र पुं० (सं) घर या बंगले आदि के आगे वह खुला भाग जिसमें घास आदि लगी हो। (लॉन)।
दूलन पुं० दे० 'दोलन'।
दूलह पुं० दे० 'दूल्हा'।
दूलित वि० दे० 'दोलित'।
दूल्हा पुं० (हि) १-वर। २-पति।
दूषक वि० (सं) १-दूसरों पर दोष लगाने तथा उनकी निंदा करने वाला। २-दोष उत्पन्न करने वाला। (पदार्थ)।
दूषण पुं० (सं) १-दोष। ऐब। २-दोष या ऐब लगाना।
दूषन पुं० (हि) दूषण।
दूषना क्रि० (हि) दोष लगाना।
दूषित वि० (सं) १-जिसमें दोष हो। २-बुरा। ख़राब
दूसना क्रि० (हि) दोष लगाना।
दूसर, दूसरा वि० (हि) १-द्वितीय। २-अपर। अन्य।
दूहना क्रि० (हि) दुहना।
दूहनी स्त्री० (हि) दोहनी।
दूहा पु० (हि) दोहा।
दृक् पुं० (सं) १-आँख। दृष्टि। २-देखना।
दृक्क्षेप पुं० (सं) दृष्टिपात।
दृक्पथ पुं० (सं) दृष्टिपथ।
दृगंचल पुं० (सं) १-पलक। २-चितवन।
दृगंबु पुं० (सं) आँसू।
दृग पु० (हि) दृक्। आँख। दृष्टि।

देखाना, देखावना क्रि० (हि) दिखाना।
देखिबो क्रि० (हि) देखना है।
देखौआ वि० (हि) १-दिखावटी। २-बनावटी।
देग पुं० (फा) चौड़े मुँह और चौड़े पेट वाला एक तरह का बड़ा बरतन।
देगचा पुं० (फा० देगचः) [स्त्री० देगची] छोटा देग।
देदिप्यमान वि० (सं) चमकता हुआ।
देन स्त्री० (हि) १-देने की क्रिया या भाव। २-प्रदत्त या प्राप्त वस्तु। ३-वह धन जो देने को हो। बाकी रकम। (लायबिलिटी)।
देनदार पुं०(हि) १-ऋणी। २-वह जिसके जिम्मे कुछ देना बाकी हो। (लायबुल)।
देनलेन पुं० (हि) कुछ लेने देने का व्यवहार।
देनहार, देनहारा वि० (हि) देने वाला।
देना क्रि० (हि) १-दान करना। २-सौंपना। ३-भोगना। ४-रखना, लगाना या डालना। ५-प्रहार करना। ६-किसी प्रकार पूरा करना। पुं० कर्ज।
देनान पुं० (हि) दीवान।
देय वि० (हि) १-जो दिया जा सके। २-दातव्य। ३-वह वस्तु जो किसी दूसरे को दी जा सकती हो (अलीनिएबुल)।
देयक पुं० (सं) वह पत्र जिससे बैंक से उसमें लिखित रुपया मिलता है। (चैक)।
देयादेय-फलक पुं० (सं) देना-पावना का संक्षिप्त लेखा। चिट्ठा। (बैलैंस-शीट)।
देयादेश पुं०(सं) धन देने का आदेश। (पे-आर्डर, पेमेंट आर्डर)।
देयासी वि० (हि) [स्त्री० देयासिन, देयासिनि] झाड़-फूँक करने वाला। ओझा।
देर स्त्री० (फा) १-विलम्ब। २-समय।
देरानी स्त्री० (हि) देवरानी।
देरी स्त्री० (हि) देर।
देव पुं० (सं) [स्त्री० देवी] १-देवता। सुर। २-पूज्य व्यक्ति। ३-बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द या सम्बोधन। ४-ब्राह्मणों की एक उपाधि। पुं० (फा) दैत्य।
देवऋण पुं० (सं) देवताओं के ऋण से मुक्त होने के लिए किये जाने वाले यज्ञादि धार्मिक कृत्य।
देवऋषि पुं० (सं) नारद, अत्रि, मरीचि, भृगु आदि जो ऋषि होने पर भी देवता समझे या माने जाते हैं।
देव-कन्या स्त्री० (सं) देवता की पुत्री।
देवकपास स्त्री० (हि) एक तरह की कपास। नरमा।
देवकर्म, देवकार्य पुं० (सं) देवताओं की तुष्टि के लिए किये जाने वाले हवन, पूजन आदि धार्मिक कृत्य।
देवकी स्त्री० (सं) श्रीकृष्ण की माता का नाम।
देवकीनंदन पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
देवगज पुं० (सं) ऐरावत नामक हाथी।
देवगांधार पुं० (हि) संपूर्ण जाति का एक राग।
देवगुरु पुं० (सं) वृहस्पति।
देवगृह पुं० (सं) मन्दिर।
देवठान पुं० दे० 'देवोत्थान'।
देवता पुं० (सं) सुर।
देवत्व पुं० (सं) देवता होने का भाव।
देवदार पुं० (हि) वृक्ष विशेष जिसमें अलकतरा और तारपीन जैसा तेल निकलता है।
देवदासी स्त्री० (सं) १-देवालय की नृर्तकी। २-वेश्या
देवदूत पुं० (सं) पैगम्बर।
देवधरा पुं० (हि) देवालय। मन्दिर।
देवधुनि स्त्री० (सं) गंगानदी।
देवनागरी स्त्री०(सं) वह लिपि जिसमें संस्कृत, मराठी, हिन्दी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।
देवपथ पुं० (सं) आकाश।
देवपुर पुं० (सं) [स्त्री० देवपुरी] अमरावती।
देवबधू स्त्री० (सं) १-देवांगना। २-अप्सरा।
देवभाषा स्त्री० (सं) संस्कृतभाषा।
देवभू-देवभूमि स्त्री० (सं) स्वर्ग।
देवमंदिर पुं० (सं) देवालय।
देवयज्ञ पुं०(सं) वह हवन जो गृहस्थों के पाँच नैत्यिक यज्ञों में एक है।
देवयानी स्त्री० (सं) शुक्राचार्य की कन्या का नाम।
देवयोनि स्त्री० (सं) देवताओं की कोटि गिने जाने वाले विद्याधर, अपसरा आदि जो दस उपदेव माने जाते हैं।
देवर पुं० (सं) [स्त्री० देवरानी] १-पति का छोटा भाई। २-पति का भाई।
देवरा पुं० (सं) १-छोटा देवता। २-देवालय।
देवराज पुं० (सं) इन्द्र।
देवरानी स्त्री० (हि) देवर की स्त्री।
देवराय पुं० (हि) देवराज। इन्द्र।
देवर्षि पुं० (सं) दे० 'देव-ऋषि'।
देवल पुं० (हि) १-देवालय। मन्दिर। २-एक तरह का धान या चावल।
देव-लोक पुं० (सं) स्वर्ग।
देववधू स्त्री० (सं) १-देवी। २-अप्सरा।
देववाणी स्त्री० (सं) १-संस्कृत भाषा। २-आकाश-वाणी।
देवसभा स्त्री० (सं) १-देवताओं की सभा या समाज राज-सभा।
देवस्थान पुं० (सं) मन्दिर।
देवांगना स्त्री० (सं) १-अप्सरा। २-देवता की स्त्री।
देवाधिदेव पुं० (सं) १-विष्णु। २-शिव।

देवान पु० (हि) १-दीवान। २-राजदरबार।
देवानांप्रिय पु० (स) १-देवताओं को प्रिय। २-राजा अशोक की एक उपाधि। ३-बकरा।
देवाना वि० (हि) दीवाना।
देवानीक पु० (स) देवताओं की सेना।
देवायतन पु० (स) १-स्वर्ग। २-मन्दिर।
देवाराधन, देवार्चन पु० (स) देवता का पूजन।
देवार्पण पु० (सं) देवता के निमित्त किसी वस्तु का अर्पण।
देवाल पु० (हि) १-देने वाला। २-बेचने वाला।
देवालय पु० (सं) १-स्वर्ग। २-देवमन्दिर।
देवी स्त्री० (सं) १-देवता की पत्नी। २-पटरानी। ३-सदाचारिणी और सुशील स्त्री। ४-स्त्रियों के नाम के आगे लगने वाली एक आदर-सूचक उपाधि।

माना जाता है।
देश पु० (स) १-जनपद। २-स्थान। ३-राष्ट्र।
देशज वि० (सं) देश में उत्पन्न। पु० वह शब्द जो किसी भाषा से न निकला हो बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोलचाल से उत्पन्न हो गया हो।
देश-द्रोह पु० (स) १-देश को हानि पहुँचाने की वृत्ति। २-देश से द्रोह या वैर करने का भाव।
देश द्रोही वि० (सं) देश से द्रोह करने या हानि पहुँचाने वाला।
देश-धर्म पु०(हि) १-किसी देश में प्रचलित आचार-विचार। २-देश के अनुरूप धर्म।
देश निकाला पु० (हि) देश से निकाले जाने का दंड। निर्वासन।
देशभक्त पु० (सं) देश का हित-चिंतन करने वाला व्यक्ति।
देश-भक्ति स्त्री० (सं) देशप्रेम।
देशभाषा स्त्री० (सं) प्रादेशिक भाषा।
देशरक्षक-सेना स्त्री० (सं) जानपद सैन्य। (मिलीशिया)।
देशान्तर पु० (सं) १-विदेश। २-उत्तर और दक्षिण ध्रुव को मिलाने वाली रेखा से पूर्व या पश्चिम की की दूरी (भूगोल)।
देशान्तर-गमन पु० (स) बीच के देश या समुद्र आदि लाँघकर दूसरे देश में चले जाना। (ट्रांसमाइग्रेशन)।
देशाचार पु० (सं) किसी देश में प्रचलित रीति-रिवाज।

देशाटन पु०(स) दूर-दूर के देशों में भ्रमण।
देशी वि० (हि) १-देश का। २-स्वदेश सम्बन्धी। ३-स्वदेश में उत्पन्न या बना हुआ।
देशीय वि० (स) देशी।
देशीराज्य पु० (सं) परतंत्र भारत में राजाओं की रियासतें।
देसन्तर पु० (हि) देशान्तर।
देस पु० (हि) देश।
देसवाल वि० (हि) अपने देश का।
देसवार पु० (हि) विदेश। परदेश।
देसावरी वि० (हि) दूसरे देश से आया हुआ। विदेशी।
देसी वि० (हि) देशी।
देह स्त्री० (स) १-शरीर। २-शरीर का कोई अंग।
देहज पु० (स) (स्त्री० देहजा) पुत्र।
देहत्याग पु० (स) देहावसान। मृत्यु।
बन रहा।
शरीर धारण

देहरा पु० (हि) १-देवालय। २-मानव शरीर। ३-देहरादून नगर।
देहरी स्त्री० (हि) देहली (घर की)।
देहली स्त्री० (स) १-दरवाजे में चौखट के नीचे की वह लकड़ी या पत्थर जिसे लाँघते हुए लोग भीतर घुसते हैं। दहलीज। २-भारत देश की राजधानी।
देहली-दीपक पु० (स) १-देहली पर रखा दीपक जो भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है। २-एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर लगाया जाता है।
देहली-दीपक-न्याय पु० (स) देहली पर रखे दीपक के समान दोनों ओर लगने वाली बात।
देहवत, देहवान वि० = शरीर वाला।
देहांत पु० (स) मृत्यु। मरण।
देहांतर पु० (स) दूसरा शरीर।
देहांतर-प्रवेश पु० (स) (आत्मा का) एक देह त्याग कर अन्य देह धारण करना। (ट्रांसमाइग्रेशन)।
देहांतर-प्राप्ति स्त्री० (सं) देहांतर-प्रवेश।
देहात पु० (हि) गाँव।
देहाती पु० (हि) ग्रामीण। ग्रामवासी। वि० १-देहात का। २-गँवार।
देहातीपन पु० (हि) देहाती या ग्रामीण होने का भाव।
देहात्मवाद पु० (स) शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धांत।
देहाध्यास पु० (सं) देह धर्म को ही आत्मा समझने का भ्रम।

देहावरण पुं० (सं) १-जिरह। २-वस्त्र।
देहावसान पुं० (सं) देहांत। मृत्यु।
देहियां, देही स्त्री० (हि) शरीर। पुं० देहधारी जीव।
दै अव्य० (हि) से।
दैअ पुं० (हि) दैव।
दैआ स्त्री० (हि) दैया।
दैउ पुं० (हि) दैव।
दैत्य पुं० (सं) १-असुर। राक्षस। २-अत्यन्त बल-शाली एवं भीमकाय।
दैत्यारि पुं० (सं) १-विष्णु। २-इन्द्र। ३-देवता।
दैनंदिन वि० (हि) प्रतिदिन होने वाला। नित्य का।
दैनंदिनी स्त्री० (सं) दिनभर के कार्य लिखने की पुस्तिका। (डायरी)।
दैन वि० (हि) दायक।
दैनंदिन क्रि० वि० (सं) १-प्रतिदिन। २-दिनोदिन। वि० नित्य का।
दैनिक वि० (सं) १-प्रतिदिन का। २-प्रतिदिन होने या निकलने वाला। ३-दिन-सम्बन्धी।
दैनिक-पंजी स्त्री० (सं) १-दैनन्दिनी। डायरी। २-रोजनामचा।
दैनिक-पत्र पुं० (सं) प्रतिदिन निकलने वाला समाचार-पत्र।
दैनिकी स्त्री० (सं) १-प्रतिदिन होने वाली घटनाओं का विवरण। (डेली-रिपोर्ट)। २-दैनन्दिनी। (डायरी)।
दैन्य पुं० (सं) १-दीनता। २-कातरता। ३-एक संचारी भाव।
दैयत पुं० (हि) दैत्य।
दैया पुं० (हि) दैव। ईश्वर। स्त्री० माता।
दैव वि० (सं) १-देवता सम्बन्धी। २-देवता या ईश्वर का किया हुआ। पुं० १-प्रारब्ध। भाग्य। २-होनहार। ३-ईश्वर। ४-आकाश।
दैवकृत वि० (सं) ईश्वर का किया हुआ।
दैवगति स्त्री० (सं) १-ईश्वरीय प्रेरणा। २-भाग्य।
दैवज्ञ पुं० (सं) ज्योतिषी।
दैवत वि० (सं) १-देवता सम्बन्धी। २-देवता या ईश्वर का किया हुआ।
दैवयोग पुं० (सं) संयोग। इत्तिफाक।
दैववश, दैववशात् क्रि० वि० (सं) अकस्मात्।
दैववाणी स्त्री० (सं) १-आकाशवाणी। २-संस्कृत।
दैववाद पुं० (सं) १-नियतिवाद। २-'सब कुछ भाग्य के अनुसार होता है' इस प्रकार मानने वाला सिद्धान्त।
दैववादी वि० (सं) १-दैव को ही प्रधान करता मानने वाला। २-भाग्य के भरोसे रहने वाला।
दैव-विवाह पुं० (सं) आठ प्रकार के विवाह में से वह जिसमें यज्ञ करने वाला पुरोहित को अपनी कन्या देता है।
दैवहीन वि० (सं) भाग्यहीन।
दैवागत वि० (सं) आकस्मिक।
दैवात् क्रि० वि० (सं) दैवयोग से। अकस्मात्।
दैविक वि० (सं) १-देवता सम्बन्धी। २-देवता के लिए किया हुआ। ३-देवकृत्य।
दैशिक वि० (सं) १-देश सम्बन्धी। २-देश-जनित।
दैहिक वि० (सं) १-देह सम्बन्धी। २-देह से उत्पन्न
दोंकना क्रि० (देश) गुर्राना।
दोंच स्त्री० (हि) १-असमंजस। २-कष्ट। ३-दबाये जाने का भाव।
दोंचन स्त्री० (हि) दोंचना।
दोंचना क्रि० (हि) १-दबाव में डालना। २-दबा-डालकर पिटाई करना।
दो वि० (हि) एक और एक। '२'।
दो-अमली स्त्री० (हि) द्वैध शासन।
दोआब, दोआबा पुं० (फा) आपस में मिलने वाली दो नदियों के बीच की भूमि या प्रदेश।
दोउ, दोऊ वि० (हि) दोनों।
दोख पुं० (हि) दोष।
दोखना क्रि० (हि) दोष लगाना।
दोखिल वि० (हि) १-दोषी। २-दूषित।
दोखी पुं० (हि) दोषी।
दोगला वि० [फा० दोगलः] [स्त्री० दोगली] वर्ण-सङ्कर।
दोगा पुं० (देश) १-छप हुए मोटे कपड़े का लिहाफ। २-पानी में घोला हुआ चूना जिससे मकान की दीवारों पर कलई या सफेदी की जाती है।
दोगाना पुं० (हि) दो व्यक्तियों द्वारा गाया जाने वाला गाना, जिसमें गाने का कुछ अंश एक व्यक्ति द्वारा और कुछ अन्य द्वारा क्रमानुसार गाया जाता है। (डूएट)।
दोगुना वि० (हि) दुगना।
दोघड़िया, दोघड़िया महूर्त्त पुं० (हि) बहुत जल्दी होने की अवस्था में तुरन्त निकाला जाने वाला मुहूर्त्त।
दोच स्त्री० दे० 'दोंच'।
दोचन स्त्री० दे० 'दोंचना'।
दोचना क्रि० दे० 'दोंचना'।
दोचंद वि० (हि) दुगना।
दोचित्ता वि० (हि) [स्त्री० दो चित्ती] जिसका ध्यान इधर-उधर लगा हो।
दोज स्त्री० (हि) द्वितीय। दूज।
दोजख पुं० (फा) नरक।
दोजखी पुं० (फा) पापी। नारकी।
दोजग पुं० (हि) दोजख। नरक।
दोटूक वि० (हि) खरा। साफ-साफ।

दोतरफा क्रि० वि० (फा) दोनों ओर से। वि० १-दोनों ओर होने वाला। २-दोनों ओर लगने वाला।

दो-तला, दो-तल्ला वि० (सं) १-दो तल्लों वाला। २-दो मंज़िला।

दोतारा पुं० (हि) एक तरह का बाजा।

दोधक पुं० (सं) बन्धु नामक छन्द का एक नाम।

दोधारा वि० (हि) जिसमें दोनों तरफ धार हों।

दोन पुं० (हि) १-तराई। दून। २-दोआबा।

दो-नली वि० (हि) (वह बन्दूक) जिसमें दो नालें

[illegible]

...भाय। उभय।

दोपहर पुं० (हि) मध्याह्न काल।

दोपहरिया स्त्री० (हि) दोपहर। मध्याह्न। वि० (हि) दोपहर का। दोपहर से सम्बन्ध रखने वाला।

दोपहरी स्त्री० (हि) दोपहर। मध्याह्न।

दोपोटा वि० (हि) १-दो-रुखा। २-दोनों ओर लिखा या छपा कागज़।

दो-फसली वि० (हि) जिसमें दो फसलें पैदा की जायें

दोबन पुं० (हि) दोष। लाञ्छन।

दोबा पुं० (हि) दो स्थितियों के मध्य की अवस्था। [illegible]

[illegible]

दोमुँहा वि० (हि) जिसके दो मुँह हों।

दो-मुँहा-साँप पुं० (हि) १-एक प्रकार का साँप जो छः मास तक एक मुँह की ओर से और छः मास तक दूसरे मुँह की ओर से चलता है। २-वह व्यक्ति जो दो प्रकार बातें करे। कपटी मनुष्य।

दोय वि० (हि) १-दोनों। २-दो।

दोयम वि० (फा) दूसरे दर्जे या श्रेणी का।

दो-रंगा वि० (हि) [स्त्री० दो रंगी] १-दो रंगों वाला। २-दुरङ्गा।

दोर पुं० (हि) द्वार। दरवाजा। स्त्री० दौड़।

दोरुख वि० (हि) दुरंगा।

दो-रसा वि० (हि) दो तरह के रस या स्वाद वाला।

दोराहा पुं० (हि) वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।

दोरी स्त्री० (हि) डोरी। रस्सी।

दो-रुखा वि० (फा) (स्त्री० दो-रुखी) १-जिसके दोनों ओर एक जैसे रङ्ग या बेल-बूटे हों। २-जिसके एक तरफ एक रङ्ग और दूसरी ओर दूसरा रङ्ग हो। ३-कभी एक तरह का कभी दूसरी तरह का। (व्यवहार आदि में)।

दोल पुं० (सं) १-झूला। २-डोली।

दोलत्ती स्त्री० (हि) दुलत्ती।

दोलन पुं० (सं) झूलना।

दोला स्त्री० (सं) १-झूला। २-डोली।

दोलायमान वि० (सं) झूलता हुआ।

दोलायित, दोलित वि० (सं) [स्त्री० दोलिता] १-झूलता हुआ। २-अस्थिर।

दोष पुं० (सं) १-अवगुण। खराबी। २-अपराध। ३-पाप। ४-शरीर में के वात, पित्त और कफ जिनके बिगड़ने या कुपित होने से व्याधि उत्पन्न होती है।

[illegible] (हि) द्वेष।

[illegible] । २-अपराध

दोषकर, दोषकारी, दोषकृत वि० (सं) अनिष्ट करने वाला।

दोष-पत्र पुं० (सं) वह पत्र जिस पर अपराधी के अपराधों का विवरण लिखा होता है।

दोष-प्रमाणित वि० (सं) जिसका अपराध न्यायालय द्वारा प्रमाणित हो गया हो। (कॉनविक्टेड)।

दोषमार्जन पुं० (सं) दोष या अपराध से मुक्त करने का भाव। (एक्सक्लपेट)।

दोष-मार्जन-पत्र पुं० (सं) वह पत्र या कागज जिस पर किसी अपराधी के दोषों से मुक्त करने का विव- [illegible]

[illegible] दि में [illegible] ...म या भाव। (सेंसर)।

दोष-वेचन पुं० (सं) पत्र, पुस्तक, फिल्म आदि में निरीक्षण के बाद आपत्तिजनक अंश निकालना। (सेंसर-शिप)।

दोष-सिद्ध वि० (सं) दोष-प्रमाणित।

दोष-सिद्धि स्त्री० (सं) अपराधी का दोष प्रमाणित हो जाना। (कॉनविक्शन)।

दोषा स्त्री० (सं) रात्री।

दोषाकर पुं० (सं) चन्द्रमा।

दोषारोपण पुं० (सं) दोष लगाना।

दोषिल वि० (हि) दोषयुक्त।

दोषिन स्त्री० (हि) १-अपराधिनी। २-पाप करने वाली स्त्री।

दोषित वि० (हि) दूषित।

दोषी पुं० (सं) १-जिसमें दोष हो। २-अपराधी। ३-पापी। अभियुक्त।

दोस पुं० (हि) दोष।

दोसदारी स्त्री० (हि) दोस्ती। मित्रता।

दोसा स्त्री० (हि) १-रात्री। २-

दोस्त पुं० (फा) मित्र।

दोस्ताना पुं० (फा) १-मित्रता। २-मित्रता का व्यवहार। वि० मित्रता का।
दोस्ती स्त्री० (फा) मित्रता।
दोह पुं० (हि) द्रोह।
दोहग पुं० (हि) दुर्भाग्य।
दोहता पुं० (हि) [स्त्री० दोहती] नाती।
दोहत्थड़ स्त्री० (हि) दोनों हाथों से मारा जाने वाला प्रहार।
दोहद स्त्री० (सं) १-गर्भवती स्त्री की इच्छा। २-गर्भावस्था। ३-गर्भ। ४-गर्भ का चिह्न।
दोहद-लक्षण पुं० (सं) गर्भ के लक्षण।
दोहदवती स्त्री० (सं) गर्भवती।
दोहन पुं० (सं) १-दुहना। २-दोहनी।
दोहना क्रि० (हि) १-दोष निकालना। २-तुच्छ ठहराना। ३-दुहना।
दोहनी स्त्री० (सं) १-दूध दूहने का पात्र। २-दूध निकालने की क्रिया।
दोहर स्त्री० (हि) दो परतों वाली चादर।
दोहरना क्रि० (हि) १-दोहराना। २-दुहरा करना।
दोहरा वि० (हि) [स्त्री० दोहरी] १-दो तह या परत वाली। २-दुगना। पुं० दोहा।
दोहराई स्त्री० (हि) १-दोहराने की क्रिया या भाव। २-दोहराने की मजदूरी।
दोहराना क्रि० (हि) १-पुनरावृत्ति करना। २-किसी कृतकार्य को जाँचने के विचार से पुनः देखना। ३-कपड़े कागज आदि की तहें करना।
दोहा पुं० (हि) एक प्रसिद्ध मात्रिक छंद।
दोहाई स्त्री० (हि) दुहाई।
दोहाक, दोहाग पुं० (हि) दुर्भाग्य।
दोहित पुं० (हि) दौहित्र। नाती।
दोहिला वि० (हि) [स्त्री० दोहिली] कठिन।
दोही स्त्री० (हि) दुहाई।
दौं अव्य० (हि) १-या। अथवा। २-दे० 'धौं'।
दौंकना क्रि० (हि) दमकना।
दौंचना क्रि० (हि) दौंचना।
दौंरी स्त्री० (हि) दँवरी। दाँय।
दौ स्त्री० (हि) १-आग। २-दावानल। ३-सन्ताप। ४-जलन।
दौड़ स्त्री० (हि) १-दौड़ने या भागने की क्रिया या भाव। २-धावा। ३-प्रयत्न में इधर उधर फिरने की क्रिया। ४-दौड़ने की प्रतियोगिता। ५-प्रयत्न में इधर-उधर फिरने की क्रिया। ६-पहुँच। ७-विस्तार। ८-अपराधियों को पकड़ने के लिए सिपाहियों का तीव्र गति से जाना।
दौड़धूप स्त्री० (हि) १-वह प्रयत्न या उद्योग जिसमें इधर-उधर दौड़ना पड़े। २-जोरदार प्रयत्न।
दौड़ना क्रि० (हि) १-भागना। द्रुतगति से जाना। २-उद्योग करना।
दौड़हा पुं० (हि) हरकारा।
दौड़ादौड़ क्रि० वि० (हि) बिना रुके हुए। दौड़ते हुए।
दौड़ान स्त्री० (हि) १-दौड़। २-दौड़ने का क्रम।
दौड़ाना क्रि० (हि) किसी को दौड़ने में प्रवृत्त करना।
दौतिक वि० (सं) कूटनीतिक। (डिप्लोमेटिक)।
दौतिक-प्रत्यावेदन पुं० (सं) कूटनीतिक प्रतिनिधित्व (डिप्लोमेटिक-रिप्रेजेंटेशन)।
दौतिक-संवाददाता पुं० (सं) राजनैतिक संवाददाता।
दौतिक-समवाय पुं० (सं) अन्तर्राज्यनैतिक संस्था। (डिप्लोमेटिक-बॉडी)।
दौतिक-सेवा स्त्री० (सं) अन्तर्राज्यनैतिक सेवा। (डिप्लोमेटिक-सर्विस)।
दौत्य पुं० (सं) १-दूत का काम। २-दूत का। दूत-सम्बन्धी।
दौन पुं० (हि) दमन।
दौना पुं० (हि) १-एक पौधा। २-दे० 'दोना'। क्रि० दमन करना।
दौनागिरि, दौनाचल पुं० दे० 'द्रोणाचल'।
दौर पुं० (अ) १-चक्कर। भ्रमण। फेरा। २-उन्नति या वैभव के दिन। ३-बारी। ४-दे० 'दौरा'।
दौरना क्रि० (हि) दौड़ना।
दौरा पुं० (अ) १-चक्कर। भ्रमण। २-इधर-उधर आना जाना। ३-निरीक्षण आदि के लिए अधिकारी का अपने क्षेत्र में घूमना। ४-समय-समय पर होने या उभरने वाले रोग का आक्रमण। पुं० (हि) टोकरा।
दौराजज पुं० (हि) सत्र-न्यायालय का प्रमुख विचारपति।
दौरात्म्य पुं० (सं) दुरात्मा होने का भाव या काम।
दौरादौर क्रि० वि० (हि) १-लगातार। २-तेजी से।
दौरादौरी स्त्री० (हि) दौड़ादौड़ी।
दौरान पुं० (फा) १-दौरा। चक्र। २-दो घटनाओं के मध्य का समय। ३-भाग्य। ४-हेरफेर।
दौराना क्रि० (हि) दौड़ाना।
दौरी स्त्री० (हि) छोटी टोकरी।
दौर्गन्ध्य वि० (सं) बदबू।
दौर्जन्य पुं० (सं) दुर्जनता।
दौर्बल्य पुं० (सं) दुर्बलता।
दौर्भाग्य पुं० (सं) दुर्भाग्य।
दौर्मनस्य पुं० (सं) मन का खोटापन।
दौर्हार्द पुं० (सं) शत्रुता।
दौलत स्त्री० (अ) धन। संपत्ति।
दौलतखाना पुं० (फा) घर। निवासस्थान।
दौलतमंद वि० (सं) धनवान।
दौलति स्त्री० (हि) दौलत। धन। सम्पत्ति।
दौवारिक पुं० (सं) [स्त्री० दौवारिकी] द्वारपाल।

दौष्यिक पु० (स) कपड़ा बेचने वाला। बजाज।

दौहित्र पु०(सं) [स्त्री० दौहित्री] पुत्री का पुत्र। नाती।

द्याना, द्यावना क्रि० (हि) दिलाना।

द्यु पु० (स) १-दिन। २-आकाश। ३-स्वर्ग। ४-अग्नि। ५-सूर्यलोक।

द्युति स्त्री० (सं) १-चमक। २-शोभा।

द्युतिमान वि० (स) [स्त्री० द्युतिमती] चमकीला।

द्युलोक पु० (सं) स्वर्गलोक।

द्यूत पु० (स) जूआ।

द्यूतकार, द्यूतकारक पु० (स) १-जूआ खिलाने वाला। २-जुआरी।

द्यूतक्रीडा स्त्री० (सं) जुए का खेल।

द्यूतवृत्ति स्त्री० (स) जूआ खेलने की लत।

द्योतक पु० (सं) १-प्रकाशक। २-सूचक।

द्योतन पु० (स) १-प्रकाश। २-प्रकाशन। ३-प्रकाशक। ४-सूचित करना।

द्योस पु० (हि) दिवस। दिन।

द्योहरा पु० (हि) देवालय।

द्यौ पु०(सं) १-स्वर्ग। २-आकाश।

द्यौस पु० (हि) दिवस। दिन।

द्रग पु० (हि) दृग। नेत्र।

द्रव वि० (स) १-तरल। २-गीला। ३-गला या पिघला हुआ।

द्रवण पु० (स) १-पिघलना। २-बहना। ३-रिसना। ४-दयार्द्र होना।

द्रवणशील वि० (सं) पिघलने वाला।

द्रवणांक पु० (स) ताप की वह सीमा जिस पर ठोस वस्तुएँ पिघलने लगती हैं। (मेल्टिंग पॉइंट)।

द्रवना क्रि०(हि) १-पिघलना। २-पसीजना। ३-तरल होना।

द्रविड़ पु० (स) १-दक्षिण भारत का एक प्रदेश जो उड़ीसा के दक्षिण पूर्वीय सागर के किनारे रामेश्वर तक है। २-इस प्रदेश का रहने वाला। ३-ब्राह्मणों का एक वर्ग।

द्रवित, द्रवीभूत वि० (सं) १-पिघला हुआ। २-जो द्रव होगया हो। ३-दयार्द्र। पसीजा हुआ।

द्रव्य पु० (स) १-वस्तु। पदार्थ। २-सामग्री। सामान। उपादान। ३-धन। दौलत।

द्रव्यवाचक वि० (स) जिससे द्रव्य का बोध हो।

द्रव्यमय वि० (स) १-किसी द्रव्य का बना हुआ। २-धन-संपत्ति से परिपूर्ण।

द्रष्टव्य वि० (स) १-दर्शनीय। २-विचारणीय। ३-जो दिखाया जाने को हो। ४-नयनाभिराम।

द्रष्टा पु० (स) आत्मा।

द्राक्षा-शर्करा स्त्री० (सं) दे० 'द्राक्षा-शर्करा'।

द्राक्षा स्त्री० (सं) १-दाख। अंगूर। २-मुनक्का।

द्राक्षा-शर्करा स्त्री०(स) दाख या अंगूर के रस की बनी चीनी। (ग्लुकोज)।

द्राव पु० (सं) १-गमन। २-गलने या पिघलने की क्रिया।

द्रावक वि० (सं) [स्त्री० द्राविका] १-तरल बनाने वाला। २-गलाने या पिघलाने वाला। ३-दया या करुणा उत्पन्न करने वाला।

द्रावण पु० (सं) १-गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव। २-वह पारदर्शी या समरूप जो पानी मद्यसार आदि में किसी स्थूल या अन्य द्रव पदार्थ के घुलमिल जाने से बनता है। (सॉल्यूशन)। ३-मिश्रण। घोल।

द्राविड़ वि० (स) [स्त्री० द्राविड़ी] १-द्रविड़ सम्बन्धी। २-द्रविड़ देश का।

द्राविड़-प्राणायाम पु० (स) सरल और सीधे ढंग से किये जाने वाले काम को टेढ़ा बनाकर करना।

द्राविड़ी वि० (स) द्रविड़ सम्बन्धी।

द्रुत वि०(स) १-शीघ्रगामी। तेज। २-द्रवीभूत। पु० १-सङ्गीत में ताल की मात्रा का आधा। २-संगीत में मध्यम से कुछ तेज लय।

द्रुत-गति वि० (स) तीव्र गति वाला।

द्रुतगामी वि० (सं) तेज चलने वाला।

द्रुतविलंबित पु० (स) एक वर्णवृत्त।

द्रुतै क्रि० वि० (हि) शीघ्रता से।

द्रुम पु० (स) वृक्ष।

द्रोण पु० (स) १-कठवत। २-सोलह सेर की एक प्राचीन तौल। ३-बड़ी नाव। ४-पत्तों का दोना। ५-दे० 'द्रोणाचार्य'।

द्रोणगिरि पु० (स०) द्रोणाचल।

द्रोणाचार्य पु० (स) कौरवों और पाण्डवों को अस्त्र-विद्या की शिक्षा देने वाले गुरु।

द्रोणाचल पु० (स) वह पर्वत जिस पर हनुमानजी को संजीवनीबूटी लाने के लिए भेजा गया था।

द्रोणि, द्रोणी स्त्री० (स) १-डोंगी। नाव। २-छोटा दोना। ३-काठ का थाल। कठवत। ४-दो पहाड़ों के मध्य की भूमि। दून। ५-दर्रा।

द्रोन पु० (हि) द्रोण।

द्रोह पु० (स) वैर। द्वेष।

द्रोही वि० (स) [स्त्री० द्रोहिणी] १-द्रोह करने वाला। २-विद्रोह करने वाला।

द्रौपदी स्त्री० (सं) राजा द्रुपद की कन्या। पाञ्चाली।

द्वंद्व पु० (स) १-युग्म। जोड़ा। २-प्रतिद्वन्द्वी। ३-द्वन्द्वयुद्ध। ४-झगड़ा। कलह। ५-उलझन। ६-[illegible] ७-उपद्रव। ८-गुप्त बात। ९-[illegible]

द्वंदर वि० (हि) झगड़ा करने वाला।

द्वद्व पु० (स) १-दे० द्वं[illegible]

द्वद्व-युद्ध पु० (सं) कुश्ती

द्वय वि० (स) दो।

द्वयता स्त्री० (सं) १-दो का भाव । द्वैत । २-भेदभाव ।
द्वात स्त्री० (हि) दावत ।
द्वादश वि० (सं) १-बारह । २-बारहवाँ ।
द्वादशवानी वि० (हि) बारहवानी ।
द्वादशाह पुं०(सं) १-बारहवें दिन होने वाला श्राद्ध २-बारह दिनों का समुदाय ।
द्वादशी स्त्री० (सं) प्रत्येक पक्ष की बारहवी तिथि ।
द्वादस-बानी वि० दे० 'बारहबानी' ।
द्वापर पुं० (सं) चार युगों में से तीसरा युग ।
द्वार पुं० (सं) १-मुख । २-दरवाजा । ३-उपाय । साधन । ४-इन्द्रियों के मार्ग या छेद, जैसे, नाक, आँख, कान आदि ।
द्वारका स्त्री० (सं) गुजरात काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी जो हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ-स्थान है ।
द्वारकाधीश, द्वारकानाथ पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण । २-द्वारका के मन्दिर में स्थित उनकी मूर्त्ति ।
द्वाराचार पुं० (सं) द्वारपूजा ।
द्वारपटी स्त्री० (सं) दरवाजे का परदा ।
द्वारपाल पुं० (सं) दरबार ।
द्वारपूजा स्त्री० (सं) विवाह की एक रस्म ।
द्वारा पुं० (हि) द्वार । दरवाजा । अव्य० जरिये से । साधन से ।
द्वारावती स्त्री० (सं) द्वारकापुरी ।
द्वारी स्त्री० (हि) छोटा द्वार । पुं० द्वारपाल ।
द्वि वि० (सं) दो ।
द्विक वि० (सं) जिसमें दो हों ।
द्विकर्मक वि० (सं) (वह क्रिया) जिसके दो कर्म हों
द्विकल पुं० (सं) दो मात्राओं का समूह (छन्दशास्त्र)
द्विगु पुं० (सं) वह कर्मधारय समास जिसका पहला पद संख्यावाचक होता है ।
द्विगुण वि० (सं) दुगना ।
द्विगुणित वि० (सं) १-दो से गुणा किया हुआ । २-दूना ।
द्विगूढ़ पुं०(सं) रस और भावयुक्त वह गीत जिसके पद सम और सुन्दर हों । (नाट्यशास्त्र) ।
द्वि-घर वि० (सं) दोहरा ।
द्विज वि० (सं) जिसका जन्म दो बार हुआ हो । पुं० १-हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के लोग । २-ब्राह्मण । ३-चन्द्रमा । ४-दाँत (दूसरी बार निकले हुए) । ५-अंडज प्राणी । जैसे—साँप, चिड़िया आदि ।
द्विजन्मा वि०, पुं० (सं) द्विज ।
द्विजपति, द्विजराज पुं० (सं) १-ब्रा[illegible]
द्विजाति पुं० दे० 'द्विज' ।
द्विजेंद्र, द्विजेश पुं० (सं) १-ब्राह्म[illegible]
द्विजोत्तम पुं० (सं) ब्राह्मण ।

द्वितक पुं० (सं) १-रसीद । पावती । २-प्रतिलिपि जो पुनः दी जाय । (डुप्लिकेट) ।
द्वितीय वि० (सं) [स्त्री० द्वितीया] दूसरा ।
द्वितीयक वि० (सं) पहले से बाद का । दूसरे स्थान का । (सैकेंडरी) ।
द्वितीया स्त्री० (सं) दूज (तिथि) । वि० (हि) दूसरा ।
द्वित्व पुं० (सं) दोहरापन ।
द्विदल वि०(सं) १-दो दलों वाला । २-दो पत्तों वाला पुं० वह अन्न जिसमें दो दल हों । जैसे – चना मटर आदि ।
द्विधा क्रि० वि० (सं) १-दो तरह से । २-दो भागों में
द्वि-धातुता स्त्री० (सं) सोना और चाँदी, दोनों ही धातुओं की मुद्रा का समान-विधि-ग्राह्यमुद्रा के रूप में प्रचलन । (बाइमेटलिज्म) ।
द्विधातुत्व पुं० (सं) द्विधातुता ।
द्विधात्वीय-प्रणाली स्त्री० (सं) सोना या चाँदी दोनों धातुओं के सिक्कों की निश्चित अनुपात के साथ, विधि ग्राह्य मुद्रा मानने की प्रणाली । (बाइमेटलिक-सिस्टम) ।
द्विपक्षी वि० (सं) दो पक्षों या पार्श्वों से सम्बन्धित । (बाईलेटरल) ।
द्विपक्षीय-प्रसंविदा स्त्री०(सं) वह करार या समझौता जो दो पक्षों के मध्य हो । (बाइ-लेटरल-कांट्रैक्ट) ।
द्विपथ पुं० (सं) दोराहा ।
द्विपद वि० (सं) १-दो पैरों वाला । २-जिसमें दो पद या शब्द हों । पुं० मनुष्य ।
द्विपार्श्विक वि० (सं) १-दोरुखा । २-द्विपक्षी ।
द्विबाहु वि० (सं) दो बाहों वाला ।
द्विभाषी वि० (सं) दो भाषाओं वाला । पुं० १-दुभाषिया । २-वह (प्रदेश या राज्य) जिसमें दो भाषा बोली जाती हों । (बाइलिंगुअल) ।
द्विभाषी-राज्य पुं० (सं) वह राज्य जिसके निवासी दो भाषा बोलते हों । (बाइ-लिंगुअल-स्टेट) ।
द्विरद वि० (सं) [स्त्री० द्विरदा] दो दाँतों वाला । पुं० हाथी ।
द्विरसन पुं०(सं) [स्त्री० द्विरसना] सर्प । साँप । वि० दो जीभों वाला । २-कभी एक और कभी दूसरी बात कहने वाला ।
द्विरागमन पुं० (सं) गौना ।
द्विरुक्त वि० (सं) १-दो बार कहा हुआ । २-दो प्रकार से कहा हुआ । ३-अनावश्यक ।
द्विरुक्ति वि० (सं) पहले कही हुई बात को फिर से कहना ।
द्विरेफ [illegible] भ्रमर । भौंरा ।
[illegible] करण में दो का बोध कराने
[illegible] क्रि० वि० दो प्रकार

की ओर करना।
धंसाव पु० (हि) १-धँसने की क्रिया। २-दलदल।
धउरहर पु० (हि) धरोहर।
धक स्त्री० (हि) १-भय आदि के कारण हृदय गति तीव्र होने का भाव या शब्द। २-उमंग। उल्लास क्रि० वि० अचानक। सहसा।
धकधकना क्रि० (हि) १-भय या घबड़ाहट के कारण कलेजे का जल्दी से धड़कना। २-धधकना। ३-धमकना।
धकधकाना क्रि० (हि) १- दे० 'धकधकना'। २-दहकना। सुलगना।
धकधकाहट स्त्री० (हि) १-धड़कन। २-आशंका।
धकधकी स्त्री० (हि) १-धड़कन। २-धुकधुकी। ३-खटका। ४-अंदेशा।
धकना क्रि० (हि) दहकना।
धकपक स्त्री० (हि) १-धड़कन। २-आशंका।
धकपकाना क्रि० (हि) १-भय खाना। २-आतंकित होना।
धकपेल स्त्री० (हि) धक्कमधक्का। रेलपेल।
धका पु० (हि) धक्का।
धकाधूम स्त्री० (हि) रेलपेल। चढ़ा-ऊपरी।
धकापेल स्त्री० (हि) धक्कमधक्का। रेलपेल।
धकाना क्रि० (हि) जलाना। दहकाना।
धकारा पु० (हि) १-धकधकी। २-खटका। अंदेशा।
धकियाना, धकेलना क्रि० (हि) धक्का देना।
धकैत वि० (हि) धक्का देने वाला।
धक्कमधक्का पु० (हि) १-भीड़ में रेलपेल। ठेलाठेली २-ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से धक्के खाते हों।
धक्का पुं० (हि) १-किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ वेगपूर्ण स्पर्श। टक्कर। २-झोंका। ३-कशमकश। बहुत भीड़। ४-धकेलने की क्रिया या भाव। ५-हानि, दुःख, शोक आदि का आघात।
धक्काड़ वि० (हि) जिसकी खूब धाक जमी हो।
धक्कामुक्की स्त्री० (हि) परस्पर धकेलना और मुक्के मारना।
धगधगाना क्रि० (हि) धकधकाना।
धगड़, धगड़ा पुं० (हि) उपपति। जार।
धगा पु० (हि) धागा।
धचका पु० (हि) धक्का। झोंका।
धचना क्रि० दे० स्थिर रहना।
धज स्त्री० (हि) १-बनाव। सजावट। २-सुन्दर ढंग ३-ठसक। ४-रूप रंग।
धजा स्त्री० (हि) ध्वजा।
धजी स्त्री० (हि) धज्जी।
धजीला वि० (हि) [स्त्री० धजीली] सजीला। सुन्दर।
धज्जी स्त्री० (हि) १-कागज, कपड़े, चमड़े आदि की पतली और लम्बी पट्टी। २-लोहे की चद्दर आदि की लम्बी पट्टी।
धड़ंग वि० (हि) नङ्गा।
धड़ पु० (हि) १-शरीर का भुजा रहित मध्य भाग २-पेड़ का तना। स्त्री० सहसा गिरने का गम्भीर शब्द।
धड़क स्त्री० (हि) १-हृदय का स्पन्दन। २-दिल की धड़कन। तड़प। ३-भय, आशंका आदि के कारण दिल की बढ़ी हुई धड़कन। ३-आशंका। अन्देशा
धड़कन स्त्री० (हि) हृदय का स्पन्दन।
धड़कना क्रि० (हि) १-दिल का धक-धक करना। २-धड़-धड़ शब्द होना।
धड़का पुं०(हि) १-दिल की धड़कन। २-दिल धड़कने का शब्द। ३-खटका। अन्देशा। ३-चिड़ियों को डराने का पुतला। धोखा।
धड़काना क्रि० (हि) १-दिल में धड़क पैदा करना। २-जी दहलाना। ३-धड़धड़ शब्द उत्पन्न करना।
धड़की स्त्री० (हि) १-कलेजा धड़कने का रोग। २-
धड़धड़ाना क्रि० (हि) भारी वस्तु गिरने का सा शब्द होना।
धड़ल्ला पुं० (हि) १-धड़-धड़ शब्द। २-गहरी भीड़ ३-भीड़-भाड़ और धूम-धाम।
धड़हर पु० (देश) लुकाट का पेड़ या फल।
धड़ा पुं० (हि) १-बाट। २-पाँच सेर की तौल। ३-तुला। तराजू।
धड़ाका पुं० (हि) धमाका।
धड़ा-बंदी स्त्री० (हि) १-धड़ा करना या बाँधना। २-दलबन्दी करना।
धड़ाम पु० (हि) ऊपर से एकबारगी कूदने या गिरने का शब्द।
धड़ी स्त्री० (हि) १-चार सेर की एक तौल। २-वह लकीर जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ जाती है। ३-पाँचसौ रुपये की रकम।
धणी वि०, पुं० दे० 'धनी'।
धत् अव्य० (हि) १-दुतकारने का शब्द। २-तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।
धतकारना क्रि०(हि) १-दुतकारना। २-धिक्कारना।
धता वि० (हि) दूर भगाया हुआ।
धतूरा पु० (हि) एक तरह का पौधा जिसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।
धधकना क्रि० (हि) १-दहकना। २-भड़कना।
धधाना क्रि० (हि) धधकना।
धनंजय वि० (सं) धन को जीतने वाला। पुं० १-अर्जुन का एक नाम। २-विष्णु। ३-एक तरह की वायु जिससे शरीर का पोषण होता है।
धनंतर पु० (हि) धन्वंतरी।
धन पुं० (सं) १-द्रव्य। दौलत। २-सम्पत्ति। जाय-

दार। ३-अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। ४-गणित में जोड़ का (+) चिह्न। ५-मूल। पूँजी। वि० १-महत्व की दृष्टि जो श्रेष्ठ, मान्य या ग्राह्य हो। २-हिसाब-किताब, लेखे आदि में जो किसी के यहाँ से आया और उसके नाम से जमा हो। स्त्री० (हि) १-युवती स्त्री या वधू। २-नायिका या प्रेमिका। वि० (हि) धन्य।

धनकुबेर पुं० (सं) अत्यन्त धनी।

धनतर पुं० (हि) धन्वंतरि।

धनतेरस स्त्री० (हि) कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी।

धनद वि० (सं) १-धन देने वाला। २-उदार। पुं० कुबेर।

धनधान्य पुं० (सं) धन और अन्न जो सम्पन्नता या समृद्धि के सूचक माने जाते हैं।

धनधाम पुं० (सं) घरबार और रुपया-पैसा।

धनधारी पुं० (हि) १-कुबेर। २-बहुत बड़ा अमीर

धनपक्ष पुं० (सं) १-बहीखाते में वह पक्ष जिसमें आमद की रकम जमा की जाती है। (क्रेडिट-साइड)। २-वह पक्ष जिसमें पूँजी लाभ या उपयोगी बातों का उल्लेख हो।

धनपति पुं० (सं) १-कुबेर। २-धनी।

धनपत्र पुं० (सं) हिसाब लिखने का बहीखाता। २-कागज का सिक्का। (करेंसी-नोट)।

धन-पिशाच पुं० (सं) अर्थ-पिशाच।

धनप्रेषणादेश पुं० (सं) मनीआर्डर।

धनमद पुं० (सं) धन का गर्व।

धनराशि स्त्री० (सं) १-धन का ढेर या अत्याधिक धन। २-देय धन। रकम। (अमाउण्ट, सम)।

धनवंत वि० (हि) धनवान्। धनी।

धनवान् वि० (सं) [स्त्री० धनवती] धनी। अमीर।

धन-विद्युदणु पुं० (सं) धन-विद्युत् शक्ति की वह इकाई जिसे परमाणु का मध्य बिन्दु मानते हैं तथा जिसके चारों तरह ऋण विद्युदणु चक्कर लगाते हैं। (प्रोटोन)।

धन-विधेयक पुं० (सं) वित्त-विधेयक। (मनी-बिल)।

धन-संपत्ति स्त्री० (सं) दौलत। (वैल्थ)।

धन-हीन वि० (सं) निर्धन। गरीब।

धनांक पुं० (सं) लेन-देन में किसी राशि विशेष को सूचित करने वाला शब्द। रकम। (अमाउण्ट)।

धना स्त्री० (हि) पत्नी। वधू। पुं० दे० 'धनिया'।

धनाढ्य वि० (सं) धनवान्। धनी।

धनाणु पुं०(सं) वह अणु जो सदा धनात्मक विद्युत् से अवशिष्ट रहता है। (पॉजिटिव)।

धनात्मक वि० (सं) १-धन वाले तत्व से युक्त। २-धन पक्ष सम्बन्धी। (पॉजिटिव)।

धनादेश पुं० (सं) १-वह पर्ची जिसके द्वारा बैंक से रुपया मिलता है। (चैक)। २-डाक द्वारा भेजे जाने वाले धन का सूचक-पत्र। (मनिआर्डर)।

धनासी स्त्री० (हि) १-पत्नी। २-प्रेमिका।

धनि स्त्री० (हि) १-युवती। २-वधू। वि० धन्य।

धनिक वि० (सं) १-धनी। २-पति।

धनिक-तंत्र पुं० (सं) वह शासन व्यवस्था जिसमें धनिकों की प्रधानता हो। ('लूटार्की')।

धनिक-लोकतंत्र पुं० (सं) वह लोक-तन्त्री शासन-व्यवस्था जिसमें शासनसत्ता प्रायः धनवानों के प्रतिनिधियों के हाथ में हो। (प्लुटोक्रैटिक-डिमोक्रेसी)

धनिया पुं० (सं) १-एक छोटा पौधा जिसके दाने मसाले के काम में आते हैं। २-एक तरह का धान या उसका चावल। स्त्री० (हि) १-युवती स्त्री। २-वधू।

धनी वि० (सं) १-धनवान्। दौलतमंद। २-स्वामी। मालिक। ३-रक्षक। स्त्री० (सं) १-युवती। २-वधू।

धनु पुं० (सं) १-धनुष। २-बारह राशियों में से एक

धनुआ पुं० (हि) १-धनुष। २-रूई धुनने का औजार

धनुक पुं० (हि) १-धनुष। २-इन्द्रधनुष।

धनुकार पुं० (हि) धनुर्धर।

धनुर्धर, धनुर्धारी पुं० (सं) १-धनुष धारण करने वाला व्यक्ति। २-धनुष चलाने में निपुण व्यक्ति।

धनुर्वात पुं० (सं) एक वातरोग।

धनुर्विद्या स्त्री० (सं) धनुष चलाने की विद्या। तीरन्दाजी।

धनुर्वेद पुं० (सं) यजुर्वेद का उपवेद।

धनुष पुं० (सं) १-चाप। कमान। २-चार हाथ की एक माप।

धनुष-टंकार स्त्री० (सं) धनुष पर बाण खींचने से उत्पन्न 'टन' शब्द। पुं० एक वात रोग।

धनुष-यज्ञ पुं० (सं) एक यज्ञ जिसे सीता के लिए वर चुनने के वास्ते जनक ने किया था।

धनुस पुं० (हि) धनुष। चाप।

धनुहाई स्त्री० (हि) धनुष की लड़ाई।

धनुहिया, धनुही स्त्री० (हि) लड़कों के खेलने का धनुष।

धनेश, धनेश्वर पुं० (सं) १-कुबेर। खजांची। ३-विष्णु।

धनैषणा स्त्री० (सं) धन की इच्छा।

धनैषी वि० (सं) धन चाहने वाला।

धनोष्मा स्त्री० (सं) धन की गरमी।

धन्न वि० (हि) धन्य।

धन्ना पुं० (हि) धरना। वि० धन वाला।

धन्नासेठ पुं० (सं) बहुत धनी व्यक्ति।

धन्य वि० (सं) (स्त्री० धन्या) १-कृतार्थ। २-प्रशंसनीय। ३-भाग्यशाली। ४-पुण्यवान्।

धन्यवाद पुं० (सं) १-साधुवाद। [illegible] कृतज्ञता-सूचक शब्द। शुक्रिया।

धर्मशास्त्र पुं० (सं) १-वह ग्रन्थ जिसमें समाज के शासन के लिए नीति तथा सदाचार सम्बन्धी नियम लिखे हों। २-किसी धर्म विशेष की निजी विधि। (परसनल-लॉ)।
धर्मशास्त्री पुं० (सं) धर्मशास्त्र का ज्ञाता पण्डित।
धर्मशील वि० (सं) धार्मिक।
धर्म-संकट पुं० (सं) ऐसी स्थिति जिसमें दोनों पक्ष संकट का अनुभव करें। उभय संकट। (डिलेम्मा)।
धर्म-सभा वि० (सं) न्यायालय।
धर्मसारी स्त्री० (हि) धर्मशाला।
धर्मस्व पुं० (सं) किसी मंदिर का खर्च चलाने या किसी धार्मिक कृत्य आदि के निर्वाहार्थ की जाने वाली व्यवस्था के निमित्त दी जाने वाली संपत्ति (एंडाउमेंट्स)।
धर्मांतर वि० (सं) अन्य धर्म।
धर्मांध वि० (सं) धर्म में अंध श्रद्धा रखने वाला।
धर्माचरण पुं० (सं) धार्मिक या पुण्य कार्य करना।
धर्माचार्य पुं० (सं) धार्मिक शिक्षा देने वाला गुरु।
धर्मात्मा वि० (सं) धर्म करने वाला। धर्मनिष्ठ।
धर्मादा पुं० (हि) धर्मार्थ निकाला हुआ धन।
धर्माधिकरण पुं० (सं) १-न्यायालय। २-न्यायाधीश
धर्माधिकरणिक, धर्माधिकारी पुं० (सं) न्यायाधीश
धर्माधिकृत, धर्माध्यक्ष पुं० (सं) न्यायाधीश।
धर्मार्थ क्रि० वि० (सं) धर्म या परोपकार के लिए।
धर्मावतार पुं० (सं) परम धर्मात्मा व्यक्ति।
धर्मासन पुं० (सं) न्यायाधीश के बैठने का आसन या स्थान।
धर्मिणी स्त्री० (सं) पत्नी।
धर्मिष्ठ वि० (सं) अत्यन्त धार्मिक। पुण्यात्मा।
धर्मी वि० (सं) [स्त्री० धर्मिणी] १-धर्म करने वाला। २-धर्म विशेष से युक्त। ३-धर्म का अनुयायी। पुं० धार्मिक व्यक्ति।
धर्मोन्मत्त वि० (सं) धर्मांध।
धर्मोन्माद पुं० (सं) १-एक प्रकार का उन्माद रोग। २-धर्मांध होकर कार्य करना।
धर्मोपदेश पुं० (सं) धर्म का उपदेश। धर्म की शिक्षा
धर्मोपदेशक पुं० (सं) धर्म विषयक उपदेश देने वाला व्यक्ति।
धर्षक पुं० (सं) १-ढिठाई करने वाला। २-अपमान करने वाला। व्यभिचारी। ४-नट। अभिनेता।
धर्षण पुं० (सं) १-अनादर। २-दबोचना। ३-आक्रमण। ४-दमन करना।
धर्षणी स्त्री० (सं) कुलटा।
धव पुं० (सं) १-एक जंगली वृक्ष जो औषध रूप में प्रयुक्त होता है।
धवनी स्त्री० (हि) धौंकनी। भाथी।
धवर वि० (हि) धवल। सफेद।
धवरा वि० (हि) [स्त्री० धवरी] धवल।
धवरी स्त्री० (हि) सफेद रंग की गाय।
धवल वि० (सं) १-श्वेत। उजला। सफेद। २-निर्मल ३-सुन्दर।
धवलगिरि पुं० (सं) हिमालय की एक चोटी।
धवलपक्ष पुं० (सं) १-शुक्लपक्ष। २-हंस।
धवलना क्रि० (हि) उज्ज्वल करना।
धवलश्री पुं० (सं) एक रागिनी।
धवला वि० (सं) सफेद। उजले रंग की। स्त्री० सफेद रंग की गाय।
धवलाई स्त्री० (हि) सफेदी।
धवलागिरि पुं० (हि) हिमालय पर्वत की एक प्रसिद्ध चोटी।
धवलित वि० (सं) १-सफेद। २-उज्ज्वल।
धवलिमा स्त्री० (सं) १-सफेदी। २-उज्ज्वलता।
धवली स्त्री० (सं) सफेद गाय।
धवाना क्रि० (हि) १-दौड़ना। २-शब्द होना। ३ ध्वनित होना।
धस पुं० (हि) १-डुबकी। गोता। २-जल आदि में पैठना।
धसक स्त्री० (हि) १-सूखी खाँसी। २-धसकने की क्रिया या भाव। ३-डर। भय। ४-ईर्ष्या।
धसकना क्रि० (हि) १-नीचे की ओर बैठना। २-डाह करना।
धसना क्रि० (हि) ध्वस्त होना। नष्ट होना। २-दे० 'धँसना'। ३-मिटाना। नष्ट करना।
धसमसना क्रि० (हि) धँसना।
धसमसाना क्रि० (हि) धँसना। २-धँसाना।
धसान स्त्री० दे० 'धँसान'।
धांधना क्रि० (हि) १-बन्द करना। २-बहुत अधिक खा लेना।
धांधल, धांधली स्त्री० (हि) १-शरारत। उत्पात। २-फरेब। धोखा। ३-बहुत अधिक जल्दी। ४-जबरदस्ती अपनी गलत बात आगे रखना।
धांस स्त्री० (हि) सूखी तम्बाकू अथवा मिर्च आदि की तेज गंध जिससे खाँसी और छींक आने लगती है।
धांसना क्रि० (हि) पशुओं का खाँसना।
धांसी स्त्री० (हि) घोड़े की खाँसी।
धा प्रत्य० (सं) तरह। भाँति। पुं० (हि) १-संगीत में धैवत स्वर का संकेत या सूक्ष्म रूप। ध। २-मृदंग, तबले आदि का एक बोल।
धाइ, धाई स्त्री० (हि) धाय।
धाऊ पुं० (हि) हरकारा।
धाक स्त्री० (हि) १-दबदबा। आतंक। २-ख्याति। पुं० ढाक। पलाश।
धाकड़ पुं० (हि) १-जिसकी बहुत अधिक धाक बंधी

होना। २-विशेष शक्ति वाला।
धाकना क्रि० (हि) १-धाक जमाना। २-आतंकित होना।
धाकरा पुं० दे० 'धाकड़'।
धागा पुं० (हि) डोरा। तागा।
धाड़ स्त्री० (हि) १-चिल्लाकर रोने का शब्द। २-दहाड़। ३-दाढ़। ४-डाकुओं का धावा।
धातविक, धातवीय वि० (सं) १-धातु से बना। २-धातु सम्बन्धी।
धाता पुं० (हि) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-महादेव। ४-विधाता। वि० १-पालक। २-रक्षक। ३-धारक।
धातु स्त्री० (सं) १-वह अपारदर्शक चमकीला खनिज विशुद्ध द्रव्य जिससे बरतन, तार, गहने, शस्त्र आदि बनाये जाते हैं। २-शरीर को बनाये रखने वाले भीतरी तत्व या पदार्थ।
धातुपुष्ट वि०(सं)वीर्य को गाढ़ा करने वाली (औषध)
धातुमल पुं० (सं) धातुओं को गलाने पर निकलने वाला मैल। (स्लैग)।
धातुवर्द्धक वि०(सं) धातुपुष्ट।
धातु-विज्ञान पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें धातु तैयार करने उन्हें परिष्कृत या शुद्ध करने आदि की विवेचना होती है। (मेटलर्जी)।
धात्र वि० दे० 'धाता'।
धात्री स्त्री० (सं) १-माता। २-धाय। ३-गंगा। ४-गाय। ५-पृथ्वी। ६-गायत्रीस्वरूपणी भगवती।
धात्रिका स्त्री० (सं) दाई। (नर्स)।
धात्री-विद्या स्त्री० (सं) प्रसव कराने की विद्या।
धात्वर्थ पु० (सं) धातु से निकलने वाला अर्थ।
धात्विक-मूल्य पु० (सं) किसी सिक्के का उसकी धातु के बाजार भाव के विचार से मूल्य। (इण्ट्रिंजिक-वैल्यू)।
धान पुं० (हि) १-शालि जिसमें से चावल निकलता है। २-अन्न। ३-किसी का दिया हुआ भोजन
धानक पुं० दे० 'धानुक'।
धान-पान वि० (हि) १-दुबला-पतला। २-कोमल।
धाना क्रि० (हि) १-दौड़ना। २-दौड़-धूप करना। ३-ध्यान।
धानी स्त्री० (सं) १-वह जिसमें कोई वस्तु रक्खी जाय। २-स्थान। वि० हलके हरे रङ्ग का। स्त्री०(हि) १-हलका हरा रङ्ग। २-भुना हुआ जौ या गेहूँ। ३-धान्य।
धानुक पुं० (हि) १-धनुर्धर। २-धनिया। ३-एक जाति।
धान्य पु० (सं) १-एक तौल। २-अन्न मात्र। ३-धनिया। ४-धान। ५-एक प्राचीन अस्त्र।
धाप पुं० (हि) १-आधा कोस की दूरी। २-लम्बा-चौड़ा मैदान। स्त्री० तृप्ति। सन्तोष।

धापना क्रि० (हि) १-अघाना। २-तृप्त करना। ३-दौड़ना।
धाबा पु० (देश) १-मकान की समतल छत। २-ऐसी छत वाला मकान। ३-अटारी। ४-वह स्थान जहाँ कच्ची या पक्की रसोई बिकती है।
धा-भाई पु० (हि) दूधभाई।
धाम पुं० (स) १-गृह। मकान। २-किसी वस्तु के रहने का स्थान। ३-शरीर। ४-शोभा। ५-पवित्र तीर्थ।
धामश्री स्त्री० (सं) एक प्रकार की रागिनी।
धामिन स्त्री० (हि) एक तरह का साँप।
धायँ स्त्री० (हि) १-तोप, बन्दूक आदि छूटने का शब्द। २-किसी पदार्थ के जोर से गिरने का शब्द
धायना क्रि० (हि) दौड़ना।—
धार पुं० (सं) १-जोर की वर्षा। २-ऋण। स्त्री० (हि) १-जल आदि के बहने या गिरने का क्रम। २-पानी का सोता। ३-किसी काटने वाले हथियार का तेज सिरा या किनारा। ५-तलवार। ६-सिरा। किनारा। ७-सेना। ८-समूह। ९-रेखा। १०-दिशा। ११-पर्वत की कोई छोटी श्रेणी। १२-दे० 'धाड़'। वि० (स) गहरा। गम्भीर।
धारक वि० (स) १-धारण करने वाला। २-रोकने वाला। ३-ऋण लेने वाला। पु० कलश। घड़ा।
धारण पु० (सं) १-थामना। २-पहनना। ३-सेवन करना। ४-अंगीकार करना। ५-ऋण लेना।
धारणा स्त्री० (सं) १-धारण करने की क्रिया या भाव २-पक्का विचार। समझ। ३-याद। स्मृति। ४-योग के आठ अंगों में से एक।
धारणावधि स्त्री० (स) वह समय या अवधि जिसमें कोई पद, सम्पत्ति आदि धारण की जाय अथवा उसका उपभोग किया जाय। (टेन्यूर)।
धारणाशक्ति स्त्री० (सं) मस्तिष्क में ग्रहण करने की शक्ति।
धारणिक पु० (सं) १-ऋणी। २-वह व्यक्ति जिसके पास अथवा वह कोठी जहाँ धन जमा किया जाय
धारणीय वि० (सं) धारण करने योग्य।
धारना क्रि० (हि) १-धारण करना। २-मन में निश्चय करना। ३-रखना। ४-ऋण लेना।
धारा स्त्री० (सं) १-प्रवाह। २-किसी दिशा में किसी वस्तु या तत्व का निरन्तर प्रवाहित होना। ३-निरंतर चलने रहने वाला क्रम। ४-किसी विधेयक या अधिनियम का स्वतन्त्र अंग अथवा भाग। दफा। (सेक्शन)।
धाराधार पु० (स) बादल।
धारानिपात, धारापात पु० (सं) १-जलधारा का गिरना। २-भारी वर्षा।
धाराप्रवाह वि० (स) अविराम गति से बहने या

चलने वाला।
धारायंत्र पुं० (सं) १-फव्वारा। २-पिचकारी।
धारावाहिक, धारावाही वि० (सं) १-अबाध गति से बढ़ने या चलने वाला। २-निरन्तर कुछ समय तक क्रमानुसार चलने वाला।
धारासभा स्त्री० (सं) व्यवस्थापिका सभा।
धारि स्त्री० दे० 'धार'।
धारिणी स्त्री० (सं) धरणी। पृथ्वी। वि० धारण करने वाली।
धारी वि०(सं) [स्त्री० धारिणी] १-धारण करने वाला २-पहनने वाला। स्त्री० (हि) १-सेना। २-समूह। ३-रेखा।
धारोष्ण वि० (सं) तुरन्त का दुहा हुआ (दूध)।
धार्तराष्ट्र पुं० (सं) धृतराष्ट्र के वंशज।
धार्मिक वि० (सं) १-धर्मशील। २-धर्म सम्बन्धी।
धार्मिकता स्त्री० (सं) धार्मिक होने का भाव।
धार्य वि०(सं) ग्राह्य। धारण करने के योग्य।
धार्यत्व पु० (सं) १-धार्य का भाव। २-देन।
धावक पुं० (सं) हरकारा।
धावन पुं० (सं) १-दौड़ना। २-हमला करना। ३-धोना। ४-शुद्ध करना। ५-हरकारा। ६-वह जिससे कोई वस्तु धोई या साफ की जाय।
धावन-मार्ग पुं० (सं) अवतरण-पथ। (रन-वे)।
धावन-स्थली स्त्री० (सं) क्रिकिट के डण्डों के मध्य का स्थान जिसके मध्य दौड़कर रन बनाते हैं। (पिच)
धावना क्रि० (हि) तेजी से चलना। दौड़ना।
धावनि स्त्री० (हि) धावा। चढ़ाई।
धावरा वि० (हि) धवल। सफेद।
धावरी स्त्री० (हि) सफेद रङ्ग की गाय। धवरी।
धावल्य पु० (सं) सफेदी। श्वेतता।
धावा पु० (हि) १-आक्रमण। चढ़ाई। २-दौड़।
धावित वि० (सं) १-दौड़ता हुआ। २-दौड़ा हुआ। ३-मार्जित।
धाह स्त्री० (हि) १-चिल्लाकर रोना। धाढ़। २-आग की गरमी।
धाही स्त्री० (हि) १-धाय। २-छाया। ३-आग की गरमी।
धिंग स्त्री० (हि) धींगा-धींगी। उपद्रव। शरारत।
धिंगाई स्त्री० (हि) १-ऊधम। २-कुटिलता।
धिआन पु० (हि) ध्यान।
धिआना क्रि० (हि) ध्याना।
धिक्, धिक स्त्री० (हि) धिक्कार।
धिकना क्रि० (हि) दहकना। तपना।
धिकाना क्रि० (हि) तपाना।
धिक्कार स्त्री० (सं) लानत। फटकार।
धिक्कारना क्रि० (हि) लानत-मलामत करना। फटकारना।
धिग स्त्री० (हि) धिक्। धिक्कार।
धिठाई (हि) (हि) धृष्टता।
धिन वि० (हि) धन्य।
धिय, धिया स्त्री० (हि) १-पुत्री। २-बालिका।
धिरन, धिरवना, धिरावना क्रि० (हि) १-धमकी देना। २-डाँटना।
धिराना क्रि० (हि) १-धमकाना। २-धीमा या मन्द होना। ३-धैर्य्य रखना।
धींग, धींगड़ा, धींगरा पुं० (हि) [स्त्री० धींगड़ी, धींगरी] १-हट्टाकट्टा। मजबूत। २-लुच्चा। ३-पापी। वि० दुष्ट। खल।
धींगाधींगी, धींगामुश्ती स्त्री० (हि) शरारत। दुष्टता।
धींद्रिय स्त्री० (सं) ज्ञानेन्द्रिय।
धींवर पुं० (हि) धीवर। मल्लाह।
धी स्त्री० (सं) १-बुद्धि। २-मन। ३-समझ। स्त्री० (हि) बेटी। लड़की।
धीआ स्त्री० (हि) बेटी। लड़की।
धीजना क्रि० (हि) १-धैर्य धरना। २-सन्तुष्ट हो ३-विश्वास करना।
धीठ वि० (हि) ढीठ।
धीमर पु० (हि) धीवर।
धीमा वि० (हि) [स्त्री० धीमी] १-धीरे चलने वा[ला] २-मन्द (स्वर)।
धीमान पुं०(सं) [स्त्री० धीमती] बुद्धिमान। समझ[दार]
धीय, धीया स्त्री०(हि) १-बेटी। २-बालिका। ल[ड़की]
धीर वि० (सं) १-जो शीघ्र विचलित न हो। २-गम्भीर। ३-उत्साही। ४-नम्र। पुं० १-धीर २-सन्तोष।
धीरक, धीरज पुं० (हि) धैर्य।
धीरजमान पु० (हि) धैर्यवान्।
धीरता स्त्री० (सं) १-चित्त की स्थिरता। २-स्थि[रता] ३-सन्तोष।
धीरना क्रि० (हि) धीरज धराना।
धीर-प्रशांत पुं० (सं) वह नायक जो अनेक गुणों[से] युक्त उत्तम वर्ण का हो। (साहित्य)।
धीर-ललित पुं० (सं) वह नायक जो सदा खूब ब[न] ठना और प्रसन्नचित्त रहता हो।
धीर-शांत पुं० (सं) धीर-प्रशान्त।
धीरा स्त्री० (सं) ताने से अपना क्रोध प्रकट क[रने] वाली नायिका (साहित्य)। वि० (हि) मन्द। धी[मा]
धीराधीरा स्त्री० (सं) साहित्य में वह नायिका [जो] अपने नायक में पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कु[छ] गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध प्र[कट] कर दे।
धीरे क्रि० वि० (हि) १-मन्द गति से। २-धीमे [स्वर] से। ३-चुपके से।
धीरोदात्त पु० (सं) १-आत्मश्लाघा से रहित, क्ष[मा]

शील, धीर, विनम्र और दृढ़व्रत नायक।
धीरोद्धत पु० (सं) वह नायक जो बहुत साहसी और वीर हो और सदा अपने ही गुणों का बखान करे।
धीवर पु० (सं) [स्त्री० धीवरी] मछुआ। मल्लाह।
धुँआँ पु० दे० 'धुआँ'।
धुँआरा वि० (हि) धूमिल।
धुँगार स्त्री० (हि) बघार। छौंक।
धुँगारना क्रि० (हि) बघारना। छौंकना।
धुँज वि० (हि) १-धुँधला। २-मन्द ज्योति वाला।
धुंद स्त्री० (हि) धुंध।
धुंध स्त्री० (हि) १-आकाश में बहुत अधिक गर्द या भाप के छा जाने के कारण होने वाला अँधेरा। २-आँख का एक रोग जिसमें चीजें धुंधली दिखाई देती है।
धुंधकार पु० (हि) २-अंधकार। २-गर्जन।
धुंधर, धुंधरि स्त्री० (सं) १-धूल, धुएँ आदि के कारण होने वाला अंधकार। २-गर्द। ३-अंधेरा।
धुंधला वि० (हि) १-कुछ कुछ अँधेरा। २-धुएँ के रंग का। ३-अस्पष्ट।
धुंधलाई स्त्री० (हि) धुंधलापन।

धुंधा स्त्री० (हि) १-आँधी। २-अँधेरा। ३-आँधी के समय आकाश में उड़ने वाली धूल।
धुंधुआना क्रि० (हि) धुँधाना।
धुँधुरि स्त्री० (हि) धुएँ, धूल आदि के कारण छाया हुआ अंधकार।
धुँधरित वि० (हि) १-धूमिल। २-दृष्टिहीन।
धुंधरी स्त्री० (हि) १-धुँध। २-धुँधलापन। ३-धुन्ध नामक आँख का रोग।
धुँधुवाना क्रि० (हि) १-धुआँ देना। २-धुआँ देकर जलना।
धुँधूरी स्त्री० (हि) गर्द गुब्बार से उत्पन्न होने वाला अँधेरा। धुन्ध।
धुप पु० (हि) धूप।
धुआँ पु० (हि) धुआँ।
धुआँकश पु० (हि+फा) १-भाप की शक्ति से चलने वाली नाव या जहाज। (स्टीमर)। २-धुआँ निकलने के लिए छत में बनाया हुआ छेद। चिमनी।

धुआँधार वि० (हि) १-बड़े जोर का। २-धुएँ से भरा। ३-काला। क्रि० वि० (हि) बहुत अधिक या बहुत जोर से।
धुआँना क्रि० (हि) धुआँ लगने से दूध, पकवान आदि का स्वाद और गंध बिगड़ जाना।
धुआँयँध स्त्री० (हि) धुएँ की सी गन्ध।
धुआँरा पु० (हि) धुआँ निकलने की चिमनी।
धुआँस स्त्री० (हि) उरद का आटा।
धुआँसा पु० (हि) वह कालिख जो आग लगने के कारण छत में जम जाती है। वि० धुआँ लगने से बिगड़ा हुआ स्वाद या गन्ध।
धुआ पु० (?) शव। लाश।
धुकड़पुकड़ पु० (हि) १-भय आदि के कारण होने वाली चित्त की व्याकुलता। घबराहट। २-असमंजस।
धुकधुकी स्त्री० (हि) १-पेट और छाती के बीच का भाग जो गहरा होता है। २-कलेजा। हृदय। ३-कलेजे की धड़कन या कंप। ४-भय। ५-एक गहना जुगनू।
धुकना क्रि० (हि) १-झुकना। २-गिर पड़ना। ३-झपटना। ४-धनी देना।

धुजा स्त्री० (हि) ध्वजा।
धुजानी, धुजिनी स्त्री० (हि) सेना। फौज।
धुड़ंगा वि० (हि) [स्त्री० धुड़ङ्गी] १-नङ्गा। २-जिस पर धूल पड़ी हो।
धुतकार स्त्री० (हि) दुतकार।
धुतकारना क्रि० (हि) दुतकारना।
धुताई स्त्री० (हि) धूर्त्तता।
धुतारा वि० (हि) धूर्त्त।
धुधुकार स्त्री० (हि) १-'धू-धू' का शब्द। २-भयानक आवाज।
धुधुकारी, धुधुकी स्त्री० दे० 'धुधुकार'।
धुन स्त्री० (हि) १-लगन। २-मन की तरङ्ग। मौज। ३-चसका। ४-चिन्ता। ५-गाने की तर्ज। ६-ध्वनि
धुनकना क्रि० (हि) धुनना।
धुनकी स्त्री० (हि) १-धनुष के आकार का औजार जिससे रुई धुनते हैं। २-छोटा धनुष।
धुनना क्रि० (हि) १-धुनकी से रुई साफ करना। २-खूब मारना-पीटना। ३-दूसरे की बात किना

सुने अपनी बात बराबर कहते जाना। ४-कोई काम लगातार करते जाना। ५-बहुतायत होना। ६-चारों ओर से घिर जाना। छाना।
धुनवाना क्रि० (हि) दूसरे को धुनने में प्रवृत्त करना।
धुनि स्त्री० (सं) नदी। स्त्री० (हि) ध्वनि।
धुनियाँ पुं० (हि) रूई धुनने वाला। स्त्री० धुनकी।
धुनी स्त्री० (सं) नदी। स्त्री० (हि) धूनी। २-ध्वनि वि० (हि) जिसे किसी बात की धुन हो।
धुपधुप वि० (हि) १-साफ। स्वच्छ। २-उज्ज्वल।
धुपना क्रि० (हि) धुलना।
धुपेली स्त्री० (हि) गरमी में पसीने से निकलने वाली फुंसी।
धुप्पस स्त्री० (हि) किसी को डराने या धोखा देने के लिए किया जाने वाला कार्य। धौंस।
धुमिला वि० (हि) धूमिल।
धुमिलाना क्रि० (हि) धूमिल होना।
धुमैला वि० (हि) धुएँ के रङ्ग का।
धुरंधर वि० (सं) १-जो सबमें बहुत बड़ा भारी या बली हो। २-भार उठाने वाला। ३-श्रेष्ठ। प्रधान।
धुर पुं० (हि) १-रथ या गाड़ी का धुरा। अक्ष। २-उच्च स्थान। ३-आरम्भ। ४-भार। बोझ। ५-जूआ, जो बैलों के कन्धे पर रखा जाता है। वि० (हि) १-दृढ़। २-सीधे। ३-बहुत दूर।
धुरजटी पुं० दे० 'धूर्जटी'।
धुरना क्रि० (हि) १-मारना। २-बजाना।
धुरपद पुं० दे० 'ध्रुपद'।
धुरवा पुं० (हि) बादल।
धुरा पुं० (हि) [स्त्री० धुरी] लोहे का वह डण्डा जिसके दोनों सिरों पर गाड़ी आदि के पहिए लगे रहते हैं। अक्ष।
धुरी स्त्री० (हि) छोटा धुरा।
धुरी-देश, धुरीराष्ट्र पुं० (हि) द्वितीय महायुद्ध के पूर्व जरमनी, इटली और जापान इन तीन राष्ट्रों का गुट। (एक्सिस-कन्ट्रीज)।
धुरीण वि० (सं) १-बोझ सँभालने वाला। २-मुख्य प्रधान। ३-धुरन्धर।
धुरीन वि० दे० 'धुरीण'।
धुरेटना क्रि० (हि) धूल लगाना।
धुर्रा पुं० (हि) धूल।
धुलना क्रि० (हि) १-धोया जाना। २-पानी पड़ने से कट कर बह जाना।
धुलवाना वि० (हि) धोने का काम दूसरे से कराना।
धुलाई स्त्री० (हि) धोने का काम भाव या मजदूरी।
धुलेंडी स्त्री० (हि) होली के दूसरे दिन का त्यौहार जो अबीर और रङ्ग से खेला जाता है।
धुव पुं० (हि) ध्रुव।
धुवाँ पुं० (हि) धूआँ।
धुवाँस स्त्री० (हि) उरद का पिसान।
धुस्स पुं० (हि) १-टीला। २-नदी का बाँध।
धुस्सा पुं० (हि) मोटे ऊन की लोई।
धूंध स्त्री० (सं) धुन्ध।
धूंधर, धूँधुर वि० (हि) धुँधला। धुन्ध।
धूंसना क्रि० (हि) घोर शब्द करना।
धू पुं० (हि) ध्रुव। ध्रुवतारा।
धूआँ पुं० (हि) १-आग से निकलने वाली काली भाप। धूम। २-भारी समूह।
धूआँकश पुं० (हि) अग्निबोट। (स्टीमर)।
धूआँधार वि०, क्रि० वि० दे० 'धूआँधार'।
धूई स्त्री० (हि) धूनी।
धूकना क्रि० (हि) ढूकना।
धूजट पुं० (हि) धूर्जटि।
धूजना क्रि० (हि) १-काँपना। २-हिलना।
धूत वि० (हि) १-धूर्त। २-दगाबाज। वि० (सं) १-हिलता या काँपता हुआ। २-छोड़ा हुआ। त्यक्त ३-चारों ओर से रुका या घिरा हुआ।
धूतना क्रि० (हि) १-धूर्तता करना। २-छलना।
धूताई स्त्री० (हि) धूर्तता।
धूतुक, धूतू पुं० (हि) २-तुरही। २-धूधू शब्द करने वाला बाजा।
धूधू पुं० (हि) आग दहकने या जलने का शब्द।
धूनना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु को जलाकर उसका धुआँ उठाना। धूनी देना। २-धुनना।
धूनी स्त्री० (हि) १-आग में डाले गये गुग्गुल आदि का धुआँ। २-साधुओं के तापने की आग।
धूप पुं० (सं) १-सुगन्धित धूप। २-सुगन्ध के लिए गन्ध द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। ३-एक सुगन्धित द्रव्य। स्त्री० १-आतप। घाम। सूर्य प्रकाश।
धूप-घड़ी स्त्री० (हि) सूर्य के प्रकाश में समय बताने वाली घड़ी।
धूप-छाँह स्त्री० (हि) एक प्रकार का कपड़ा।
धूपदान पुं० (हि) [स्त्री० धूपदानी] वह पात्र जिसमें गंध द्रव्य रख कर जलाये जाते हैं।
धूपना क्रि० (हि) १-धूप देना। २-सुगन्धित धुएँ से बसाना। ३-दौड़ना।
धूपबत्ती स्त्री० (हि) धूप आदि गन्ध द्रव्यों से बनी बत्ती जिसे जलाने से सुगन्धित धुआँ निकलता है
धूपायित, धूपित वि० (सं) १-सुगन्धित धूएँ से बसा हुआ। २-चलने आदि से थका हुआ।
धूम पुं० (सं) १-धूआँ। २-अपच से उठने वाली डकार। स्त्री०(हि) १-तैयारी के साथ किये जानेवाले किसी बड़े काम या उत्सव का हल्ला-गुल्ला। २-हल-चल। ३-ऊधम। ४-समारोह। ५-प्रसिद्धि।
धूमकेतु पुं० (सं) १-अग्नि। २-पुच्छलतारा।

धूमधड़क्का पुं० (हि) धूम-धाम। चहल पहल।
धूमधाम स्त्री० (सं) समारोह। धूमधड़क्का।
धूम-धामी वि० (हि) १-जिसमें धूमधड़क्का हो। २-उपद्रवी।
धूम-ध्वज पुं० (सं) अग्नि।
धूमपट पुं० (सं) धूमावरण। (स्मोक-स्क्रीन)।
धूम-पान पुं० (सं) बीड़ी आदि का धुआँ पीना।
धूमपोत पुं० (सं) धुआँकश।
धूमयान पुं० (सं) रेलगाड़ी।
धूमयोनि पुं० (सं) बादल।
धूमर, धूमरा वि० (हि) [स्त्री० धूमरी] धूमिल।
धूमाभ वि० (सं) धुएँ के रङ्ग का।
धूमायमान वि० (सं) धुएँ से परिपूर्ण।
धूमावरण पुं० (सं) धुएँ के बादल, जिनसे सैनिक गतिविधि छिपाते हैं। (स्मोक स्क्रीन)।
धूमिल वि० (हि) १-धुएँ के रङ्ग का। २-धुँधला।
धूम्र वि० (सं) धुएँ के रङ्ग का। पुं० धुआँ। धूम।
धूम्र-पट पुं० (सं) धूमपट।
धूम्र-पान पुं० (सं) धूमपान।
धूम्रीकरण पुं० (सं) [illegible]
[illegible]
स्तान)।
धूर स्त्री० (हि) धूल। पुं० एक बिस्वे का बीसवाँ भाग।
धूरजटी पुं० दे० 'धूर्जटि'।
धूरत वि० दे० 'धूर्त'।
धूरधुरेटा पुं० (हि) वह स्थान जहाँ धूल और गर्द हो। वि० धूल में लिपटा हुआ।
धूरा पुं० (हि) १-धूल। २-चूर्ण।
धूरि स्त्री० (हि) धूल।
धूर्जटि पुं० (सं) शिव। महादेव।
धूर्त वि० (सं) १-छली। २-वंचक। ३-चालबाजी से काम साधने वाला।
धूल स्त्री० (हि) १-रेणु। रज। गर्द। २-धूल के समान साधारण वस्तु।
धूल-धूसरित वि० (सं) धूल लगने से जो भूरे रङ्ग का हो गया हो।
धूलि स्त्री० (सं) धूल। गर्द।
धूलि-चित्र पुं० (सं) चूर्ण रंगों के जमीन पर भुरककर बनाये हुए चित्र।
धूसर, धूसरित वि० (सं) १-मटमैला। २-धूल भरा।
धूसना वि० (हि) धूसर।
धूक, धृग पुं० (हि) धिक्। धिक्कार।
धृत वि० (सं) [स्त्री० धृता] १-पकड़ा हुआ। २-धारण किया हुआ। ३-ग्रहण किया हुआ। ४-स्थिर किया हुआ।
धृति स्त्री० (सं) १-धैर्य। धीरज। २-धारण। ३-मन की दृढ़ता। ४-ठहराव।
धृती वि० धैर्यवान्।
धृष्ट वि० (सं) (स्त्री० धृष्टा) १-निर्लज्ज। २-उद्दण्ड। पुं० ढीठ नायक (साहित्य)।
धेनु स्त्री० (सं) १-थोड़े दिन की ब्याई हुई गाय। २-गाय।
धेनुमुख पुं० (सं) नरसिंहा नामक बाजा।
धेयना क्रि० (हि) ध्यान करना।
धेरी स्त्री० (हि) पुत्री।
धेला पुं० (हि) आधा पैसा। अधेला।
धेली स्त्री० (हि) अठन्नी।
धैना स्त्री० (हि) १-धन्धा। २-आदत।
धैर्य पुं० (सं) १-धीरज। २-सब्र। ३-निर्विकार।
धैवत पुं० (सं) सङ्गीत के सात स्वरों में से छठा।
धोंकना क्रि० (हि) १-कोंसना। २-दे० 'धौंकना'।
धोंधा वि० (हि) १-मूर्ख। २-बेडौल। पुं० बे-डौल, भद्दा या टेढ़ा-मेढ़ा पिण्ड।
धोंधावसन्त पुं० (हि) निरा गँवार।
[illegible] धोने की क्रिया।
[illegible]) धोकर, छिलका अलग की हुई दाल।
[illegible] 'धोखा'।
धोखा पुं० (हि) १-भुलावा। छल। २-भ्रान्ति। ३-भ्रम उत्पन्न करने वाली बात या वस्तु। ४-अज्ञान से होने वाली भूल। ५-अनिष्ट की सम्भावना। ६-विजूखा। ७-खटखटा। ८-एक पकवान।
धोखेबाज वि० (हि) कपटी।
धोटा पुं० दे० 'ढोटा'।
धोती स्त्री० (हि) १-कमर पर पहनने का एक वस्त्र। २-दे० 'धौति'।
धोना क्रि० (हि) १-मैल दूर करना। २-पानी से साफ करना। ३-मिटाना।
धोप स्त्री० (हि) तलवार।
धोपना क्रि० (हि) मार-पीट करना।
धोब पुं० (हि) धुलाई।
धोबी पुं० (हि) [स्त्री० धोबन, धोबिन] मैले कपड़े धोने का काम करने वाला। रजक।
धोम पुं० (हि) धूम। धुआँ।
धोरी पुं० (हि) १-धुरे को उठाने वाला। २-[illegible] ३-बैल। ४-मुखिया। ५-श्रेष्ठ पुरुष।
धोरे क्रि० वि० (हि) पास। समीप।
धोवत पुं० (हि) धोबी।
धोवनी स्त्री० (हि) धोनी।
धोवन स्त्री० (हि) १-धोने की क्रिया या भाव। २-वह पानी जिसमें कोई वस्तु धोई गई हो।
धोवना क्रि० (हि) धोना।
धोवा पुं० (हि) १-धोवन। २-पानी।

धोवाना क्रि० (हि) धुलना या धुलाना।
धौं अव्य० (हि) १-न जाने क्या। २-अथवा। ३-भला। तो। ४-विधि, आदेश आदि वाक्यों के पहले केवल जोर देने के निमित्त आने वाला शब्द
धौंकना क्रि० (हि) १-आग दहकाने के लिए हवा देना। २-ऊपर डालना। ३-दण्ड आदि देना या लगाना।
धौंकनी स्त्री० (हि) १-आग दहकाने की लोहे या बाँस की नली। २-भाथी।
धौंकी स्त्री० (हि) १-धौंकनी। २-भाथी।
धौंज स्त्री० (हि) १-दौड़-धूप। २-घबराहट।
धौंजना क्रि० (हि) १-दौड़-धूप करना। २-कुचलना।
धौंताल वि० (हि) १-जिसे असाधारण धुन हो। २-फुरतीला। ३-चालाक। ४-साहसी। ५-हेकड़। ६-शरारती।
धौंस स्त्री० (हि) १-धमकी। २-रोब। ३-झाँसापट्टी।
धौंसना क्रि० (हि) १-दबाना। २-धमकी देना। ३-मारना-पीटना।
धौंसपट्टी स्त्री० (हि) भुलावा। दम-दिलासा।
धौंसर वि० (हि) धूसर। पुं० किसी वस्तु के ऊपर पड़ी हुई धूल।
धौंसा पुं० (हि) १-बड़ा नगाड़ा। २-सामर्थ्य।
धौंसिया पुं०(हि) १-धौंसा बजाने वाला। २-धोखेबाज। ३-धौंस जमाने वाला।
धौ-कांदय पुं० (हि) धान विशेष या उसका चावल।
धौत वि० (स) १-धोया हुआ। २-उजला। पुं० चाँदी। रूपा।
धौति, धौती स्त्री० (सं) १-शुद्धि। २-हठयोग की एक क्रिया। ३-इस क्रिया में काम आने वाली पट्टी
धौर वि० (हि) धवल। श्वेत।
धौरहर, धौरहा पुं० दे० 'धरहरा'।
धौरा वि० (हि) [स्त्री० धौरी] श्वेत। उजला। पुं० १-सफेद बैल। २-एक पक्षी।
धौराहर पुं० दे० 'धरहरा'।
धौरिय पुं० (हि) बैल।
धौरी स्त्री० (हि) १-धवल रंग की गाय। कपिला। २-एक चिड़िया।
धौरे क्रि० वि० (हि) निकट। पास।
धौल स्त्री० (हि) १-हाथ के पंजे का भारी आघात। २-हानि। वि० (हि) उजला। सफेद।
धौलहर, धौलहरा पुं० दे० 'धरहरा'।
धौला वि० (हि) [स्त्री० धौली, धौलता, धौलाई] सफेद। उजला।
धौलागिरि पुं० दे० 'धवलगिरि'।
ध्यात वि० (सं) विचारा हुआ। चिन्तित।
ध्यातव्य वि० (सं) ध्येय।
ध्याता वि० (सं) [स्त्री० ध्यात्री] ध्यान करने वाला।
ध्यान पुं० (सं) १-किसी के स्वरूप का चिंतन। २-विषय विशेष में चित्त की एकाग्रता। ३-विचार। खयाल। ४-समझ। ५-स्मृति। याद। ६-चित्त की ग्रहण वृत्ति। ७-योग का सातवाँ तथा समाधि के पूर्व का अङ्ग।
ध्यानना, ध्याना क्रि० (हि) ध्यान करना।
ध्यानावस्थित वि० (सं) ध्यान में लगा हुआ।
ध्यानी वि० (हि) १-ध्यानयुक्त। २-ध्यान करने वाला। समाधि लगाने वाला।
ध्येय वि० (सं) १-ध्यान करने योग्य। २-जिसका ध्यान किया जाय। ३-उद्देश्य। लक्ष्य।
ध्रुपद पुं० (हि) एक तरह का पक्का गाना।
ध्रुपदिया पुं० (हि) ध्रुपद गाने वाला।
ध्रुव वि०(सं) १-स्थिर। अचल। २-निश्चित। पक्का पुं० १-आकाश। २-शंकु। कील। पर्वत। ३-ध्रुपद ४-एक प्रसिद्ध बाल तपस्वी। ५-ध्रुवतारा।
ध्रुवता स्त्री० (सं) १-ध्रुव होने का भाव। २-दृढ़ता। ३-निश्चय।
ध्रुवताई स्त्री० (हि) ध्रुवता।
ध्रुवतारा पुं० (सं) उत्तर दिशा में एक स्थान पर स्थित रहने वाला तारा।
ध्रुव-दर्शक पुं० (सं) १-सप्तर्षि मंडल। २-कुतुबनुमा
ध्रुवपद पुं० (सं) ध्रुपद।
ध्रुव-लोक पुं० (सं) पुराणानुसार भक्त ध्रुव के रहने का स्थान।
ध्रुवीय वि०(सं) १-ध्रुव सम्बन्धी। २-ध्रुव प्रदेश का
ध्वंस पुं० (सं) १-विनाश। नाश। २-मकान आदि का ढहना।
ध्वंसक वि० (सं) १-नाश करने वाला। २-ढहाने वाला।
ध्वंसन पुं० (सं) १-विनाश। २-तोड़-फोड़।
ध्वंसावशेष पुं० (सं) १-खंडहर। २-किसी वस्तु के टूट-फूट जाने पर बचे हुए टुकड़े।
ध्वंसी वि० (हि) (स्त्री० ध्वंसिनी) ध्वंसक।
ध्वज पुं० (स) १-चिह्न। २-झण्डा। पताका।
ध्वज-पोत पुं० (सं) बेड़े में नौसेनापति का जहाज जिस पर उसका झण्डा फहराता है।
ध्वज-यष्टि स्त्री० (सं) झण्डे का डण्डा।
ध्वज-विस्फरण पुं०(सं) ध्वज को सिकुड़ी हुई स्थिति से निकालकर खोलना।
ध्वज-स्तंभ पुं० (सं) वह स्तंभ जिस पर झण्डा फहरता है। (फ्लैग स्टाफ)।
ध्वजा स्त्री० (सं) पताका।
ध्वजारोपण पुं० (सं) झण्डा लगाना।
ध्वजारोहण पुं० (स) फहराने के लिए झण्डा चढ़ाना
ध्वजी वि० (सं) १-ध्वज वाला। २-जिसका कोई विशेष चिह्न हो।

ध्वजोत्तोलन पु० (सं) झण्डा ऊपर चढ़ाकर फहराना।

ध्वनि स्त्री० (सं) १-शब्द। आवाज। २-आवाज की गूँज। ३-वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ का अधिक चमत्कार होता है। ४-छलकता हुआ अर्थ।

ध्वनि काव्य पु० (सं) उत्तम प्रकार का काव्य।

ध्वनि संचक, वि० (सं) ध्वनि को चारों ओर फैलाने वाला।

ध्वनि-संचक-यंत्र पु० (सं) वह यन्त्र जिसकी सहायता से किसी एक स्थान पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि विद्युत शक्ति से चारों ओर बहुत दूर-दूर तक पहुँचाई या फैलाई जाती है। (माइक्रोफोन)।

ध्वनि संचरण पुं० (सं) विद्युत यन्त्र की सहायता से ध्वनि को चारों ओर दूर तक फैलाना।

ध्वनित वि० (सं) १-जो ध्वनि के रूप में व्यक्त हुआ हो। २-जिसकी ध्वनि हुई हो। ३-शब्दित।

ध्वनि-तरंग स्त्री० (सं) ध्वनि होने पर उठने वाली वह तरंग जो हवा में चारों ओर फैलकर कानों तक पहुँचती है जिससे उस ध्वनि का भान होता है। (साउण्डवेव)।

ध्वनिवर्धक पु० (सं) ध्वनिविस्तारक। (लाउडस्पीकर)।

ध्वनिविक्षेपक पु० (सं) दूर विक्षेपक। (ट्रांसमीटर)।

ध्वनिविक्षेपण पुं० (सं) दूर-विक्षेपण। (ट्रांसमीशन)

ध्वनि विज्ञान पुं० (सं) बोलते समय मनुष्य के गले से किस तरह ध्वनि निकलती है और उसे किस तरह बोला या लिखा जाता है ऐसा विवेचन करने वाला विज्ञान। (फोनेटिक्स)।

ध्वनि-विस्तारक पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा ध्वनि की तीव्रता बढ़ती है। (लाउडस्पीकर)।

ध्वनि-संग्राहक, ध्वन्यभिलेखक पुं० (सं) वह यन्त्र या साधन जिससे ध्वनि का संग्रहण अथवा अभिलेखन होता है। (साउण्ड-रिकार्डर)।

ध्वन्यात्मक वि० (सं) १-ध्वनियुक्त। २-जिसमें व्यंग्य अर्थ प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ पुं० (सं) वह अर्थ जिसका बोध व्यञ्जना शक्ति से होता है।

ध्वन्यालेखन पु० (सं) चित्रपट में वह प्रक्रिया जिसके द्वारा ध्वनि अङ्कित की जाती है और चित्र पट दिखाने के समय चित्र के [illegible]।

ध्वांत पु० (सं) १-[illegible] ४-[illegible]।

ध्वान पु० (सं) [illegible]।

ध्वांतचर पुं० (सं) राक्षस।

ध्वांतधाम पु० (सं) नरक।

{शब्दसंख्या—२३४४३}

न

न हिन्दी वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दन्त है।

नंग पु० (हि) १-वस्त्रहीनता। नङ्गापन। २-स्त्री या पुरुष के गुप्ताङ्ग। वि० १-बदमाश और बेहया। २-व्यर्थ में आगे से सिर फुड़ध्यान करने वाला।

नंग-धड़ंग वि० (हि) दिगम्बर। निवस्त्र।

नंगा वि० (हि) १-जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो। २-जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। ३-निर्लज्ज। ४-पाजी।

नंगाझोरी, नंगाझोली स्त्री० (हि) पहने हुए कपड़ों की तलाशी।

नंगा-नाच पु० (हि) निरंकुश होकर निर्लज्जतापूर्वक अनुचित कार्य करना।

नंगा-बुच्चा, नंगा-बूचा पु० (हि) कङ्गाल। अकिंचन

नंगा-लुच्चा वि० (हि) नीच और दुष्ट। बदमाश।

नंगियाना, नंग्याना क्रि० (हि) १-नंगा करना। २-सब कुछ छीन लेना।

नंघना क्रि० (हि) नाघना।

नंद पुं० (सं) १-आनन्द। हर्ष। २-परमेश्वर। ३-श्रीकृष्ण के पालक पिता। ४-पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ५-एक तरह का मृदङ्ग। ६-एक राग।

नंदकिशोर, नंदकुँवर, नंदकुमार, नंदनंदन पुं० = कृष्ण

नंदनंदिनी स्त्री० (सं) योगमाया।

नंदन पु० (सं) १-राजा इन्द्र का उद्यान। २-विष्णु ३-पुत्र। ४-मेघ। वि० आनन्द देने वाला।

नंदन-कानन, नंदन-वन पु० (सं) स्वर्ग में इन्द्र का उद्यान।

नंदना स्त्री० (सं) पुत्री। क्रि० (हि) १-आनन्दित होना। २-प्रसन्न करना।

नंदनी स्त्री० दे० 'नंदिनी'।

नंदरानी स्त्री० (हि) यशोदा।

विग्रह

नंदादेवी स्त्री० (सं) हिमालय की एक चोटी का नाम।

नंदि पुं० (सं) १-आनन्द। २-परमेश्वर। ३-नंदी

नंदिकेश, नंदिकेश्वर पुं० (सं) नंदी (शिव का वाहन)।

नंदित वि० (सं) आनन्दित। वि० (हि) बजता हुआ।

नंदिन स्त्री० (हि) पुत्री।
नंदिनी स्त्री० (सं) १-पुत्री। २-दुर्गा। ३-गंगा। ४-ननद। ५-वसिष्ठ की कामधेनु।
नंदी पुं० (हि) १-शिव के गण विशेष। २-शिव का वाहन, बैल। ३-शिव के नाम पर दाग कर उत्सर्ग किया हुआ बैल। ४-वह बैल जिसके शरीर पर गाँठें हों। ५-विष्णु। वि० प्रसन्न।
नंदी-गण पुं० (हि) १-शिव का वाहन, बैल। २-छोड़ा हुआ बैल। साँड।
नंदीपति पुं० (सं) शिव।
नंदीमुख पुं० दे० 'नांदीमुख'।
नंदीश, नंदीश्वर पुं० (सं) १-शिव। २-शिव का एक गण।
नंदेऊ, नंदोई पुं० (हि) ननद का पति।
नंबर पुं० (य) १-संख्या। २-अङ्क। वि० बढ़िया।
नंबरदार पुं० (हि) १-मालगुजारी वसूल करने वाला व्यक्ति। २-मुखिया।
नंबरवार क्रि० वि० (हि) क्रमानुसार।
नंबरी वि० (हि) १-नंबर वाला। २-कुख्यात।
नंबरी-गज पुं० (हि) ३६ इंच का कपड़ा नापने का गज।
नंबरी-चोर पुं० (हि) कुख्यात चोर जिसका उल्लेख पुलिस के अभिलेखों में मिलता है।
नंबरी-तह स्त्री० (हि) गज गज पर छाप लगाकर बनाई हुई तह।
नंबरी-नोट पुं०(हि) सौ या सौ से अधिक मूल्य का नोट।
नंबरी-सेर पुं० (हि) ८० रुपयों के बराबर की तौल का सेर।
नंस वि० (हि) नष्ट।
नई वि० (हि) नीतिज्ञ। स्त्री० १-नदी। २-नया का स्त्रीलिंग रूप।
नउंजी स्त्री० (हि) लीची।
नउ वि० (हि) १-नव। २-नौ।
नउआ पुं० (हि) नाई।
नउका स्त्री० (हि) नौका।
नउज प्रत्य० (हि) नौज।
नउत वि० (हि) नत।
नउल वि० (हि) नवल।
नउलि वि० (हि) १-नया। २-ताजा।
नओढ़ स्त्री० (हि) नवोढ़ा।
नक स्त्री० (हि) (समस्त शब्दों में प्रयुक्त होने वाला) नाक का संक्षिप्त रूप।
नक-कटा वि० (हि) [स्त्री० नक कटी] १-जिसकी नाक कट गई हो। २-निर्लज्ज। ३-जिसकी बहुत दुर्दशा हुई हो। ४-जिसके कारण अप्रतिष्ठा हुई हो।
नकघिसनी स्त्री० (हि) १-भूमि पर नाक घिसने की क्रिया। २-अत्यधिक दीनता प्रकट करना।
नक-चढ़ा वि० (हि) [नकचढ़ी] १-चिड़चिड़ा। २-घृणा करने वाला।
नकछिकनी स्त्री० (हि) एक घास।
नकटा वि० (हि) [स्त्री० नकटी] १-दे० 'नक-कटा'। २-एक गीत जिसे स्त्रियाँ मङ्गल अवसरों पर गाती हैं।
नकद वि०, पुं० दे० 'नगद'।
नकदी स्त्री० (हि) नगद।
नकना क्रि० (हि) १-लाँघना। २-त्यागना। ३-हैरान होना। ४-दे० 'नाकना'।
नकब स्त्री० (य) सेंध।
नकबजनी स्त्री० (य) सेंध लगाना।
नक-बानी स्त्री० (हि) नाक में दम। परेशानी।
नक-बेसर स्त्री० (हि) छोटी नथ।
नक-मोती पुं० (हि) नाक में पहनने का मोती।
नकल स्त्री०(य) १-अनुकृति। २-अनुकरण। ३-प्रतिलिपि। कापी। ४-अभिनय। ५-चुटकुला। ६-अद्भुत और हास्यजनक आकृति।
नकलची पुं० (य) नकल करने वाला।
नकल-नवीस पुं० (य) लेखों आदि की नकल करने वाला कर्मचारी।
नकल-बही स्त्री० (हि) वह बही जिस पर चिट्ठियों, हुण्डियों आदि की नकल होती है।
नकली वि० (य) १-नकल करके बनाया हुआ। २-बनावटी।
नकवानी स्त्री० (हि) नाक में दम।
नकशा पुं० दे० 'नक्शा'।
नकशा-नवीस पुं० दे० 'नक्शानवीस'।
नकसीर पुं० (हि) गरमी के दिनों में नाक से आप-से-आप रक्त बहने का रोग।
नका पुं० दे० 'निकाह'।
नकाना क्रि० (हि) नाक में दम करना या होना।
नकाब स्त्री० (य) १-चेहरा छिपाने के लिए मुख पर डाला हुआ कपड़ा। २-स्त्रियों के मुख पर का घूँघट
नकार पुं० (सं) १-न या नहीं का बोध कराने वाला शब्द। २-अस्वीकृति। ३-'न' अक्षर।
नकारना क्रि० (हि) १-अस्वीकृत करना। २-'नहीं' कहना या करना।
नकारा वि० (हि) निकम्मा।
नकारात्मक वि० (सं) १-इनकार किया हुआ। २-जिसमें 'हाँ' का अभाव हो।
नकाशना क्रि० (हि) नकाशी करना।
नकाशी स्त्री० दे० 'नक्काशी'।
नकियाना क्रि० (हि) १-नाक से बोलना। २-नाक में दम आना।
नकीब पुं० (य) १-चारण। २-कड़खैत।

नकुआ, नकुरा पु० (हि) १-नाक। २-नथना।
नकुल पु०(सं) १-नेवला नामक जन्तु। २-पाण्डुराज के चौथे पुत्र का नाम।
नकेल स्त्री० (हि) ऊँट, बैल आदि के नाक में बंधी हुई रस्सी।
नखना क्रि० (हि) लाँघना।
नक्कार पु० (हि) १-सूई का वह छेद जिसमे डोरा पिरोया जाता है। २-ताश का पत्ता। ३-कौड़ी।
नक्कारखाना पु० (फा) नौबतखाना।
नक्कारची पु० (फा) नक्कारा या नगाड़ा बजाने वाला।
नक्कारा पु० (अ) १-नगाड़ा। २-डुगडुगी।
नक्काल पु०(अ) १-नकल करने वाला। २-भाँड। ३-बहुरूपिया।
नक्काश पु० (अ) नक्काशी करने वाला। २-चित्रकार।
नक्काशी स्त्री० (अ) बेल-बूटे खोदने या चित्र बनाने का काम।
नक्की वि० (देश) १-दृढ़। २-ठीक। ३-निश्चित। स्त्री० गाने का एक ढङ्ग।
नक्की-मूठ स्त्री० (हि) कौड़ियों से खेला जाने वाला एक तरह का जूआ।
नक्कू वि० (हि) १-बड़ी नाक वाला। २-बदमाश। ३-सबसे अलग और उलटा काम करने वाला।
नक्द पु० (अ) वह धन जो सिक्कों के रूप में हो।
नक्दी स्त्री० (अ) रोकड़।
नक्दो-चिट्ठा पु० (हि) रोकड़बही।
नक्र पु०(सं) १-नाक नाम का जल-जन्तु। २-मगर
नक्श वि० (अ) १-अङ्कित। २-चित्रित। ३-लिखित पु० १-चित्र। २-खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटे आदि का काम। ३-मुहर। ४-तावीज
नक्शा पु० (अ) १-रेखा-चित्र। २-आकृति। ३-चाल-ढाल। ४-अवस्था। ५-दशा। ६-ढाँचा। ७-पृथ्वी के किसी भाग या खगोल का चित्र। मानचित्र। ८-भवन आदि का रेखा चित्र।
नक्शा नवीस पु० (अ+फा) नक्शा बनाने वाला व्यक्ति।
नक्शाबंद पु०(अ) साड़ियों आदि की छपाई के बेल-बूटों के ठप्पों के नक्शे बनाने वाला व्यक्ति।
नक्शी वि० (अ) जिस पर बेल-बूटे बने हों।
नक्षत्र पु० (सं) १-तारा। २-तारों के अश्विनी, भरणी आदि सत्ताईस समूह।
नक्षत्र दान पु० (सं) एक तरह का दान।
नक्षत्र-नाथ पु० (सं) चन्द्रमा।
नक्षत्र-पथ पु० (सं) नक्षत्रों के चलाने का मार्ग।
नक्षत्र-पति, नक्षत्र-राज पु० (सं) चन्द्रमा।
नक्षत्र-लोक पु० (सं) १-वह लोक जिसमें नक्षत्र स्थित हैं। २-आकाश।
नक्षत्र-विद्या स्त्री० (सं) ज्योतिषविद्या।
नक्षत्री पु० (सं) चन्द्रमा। वि० भाग्यशाली।
नख पु० (सं) १-नाखून। २-एक प्रसिद्ध गन्धद्रव्य। स्त्री० (फा) १-पतंग उड़ाने की डोर। २-बटा हुआ रेशमी धागा।
नख-क्षत पु० (सं) नाखून का निशान।
नखच्छेदन, नखछोलिया पु० (हि) नहरना।
नखत, नखतर पु० (हि) नक्षत्र।
नखतराज, नखतराय, नखतेस पु० (हि) चन्द्रमा।
नखत्र पु० (हि) नक्षत्र।
नखना क्रि० (हि) १-नष्ट करना। २-पार करना या फिरा जाना।
नखबान पु० (हि) नाखून।
नखरा पु० (फा) १-नाज। चोचला। २-बनावटी चेष्टा। ३-बनावटी इनकार।
नखरा-तिल्ला पु० (हि) नखरा। नाज़।
नखरीला वि० (हि) नखरा करने वाला।
नखरेल स्त्री० (हि) नखरबाज।
नखरेबाज वि० (फा) बहुत नखरा करने वाला।
नखरौट, नखरौटा पु० (हि) नखक्षत।
नखलेखक पु० (सं) नाखून रंगने वाला।
नखशिख पु० (सं) १-पैर के नाखून से लेकर सिर तक के सब अंग। २-शरीर के सब अंगों का बयान
नखांक पु० (सं) १-नख नामक गन्ध द्रव्य। २-नाखून गड़ने या चुभने का चिह्न।
नखायुध पु० (सं) १-शेर। २-चीता। ३-कुत्ता।
नखास पु० (अ) १-वह बाजार जहाँ पशु बिकते हों, विशेषत. घोड़े। २-बाजार।
नखियाना क्रि० (हि) नाखून गड़ाना।
नखी पु०(हि) नखायुध। स्त्री०(सं) नख (गन्धद्रव्य)
नखेद पु० (हि) निषेध।
नखोटना क्रि० (हि) नाखून से खरोंचना या नोचना
नग पु० (सं) १-पर्वत। २-वृक्ष। ३-सात की संख्या ४-सूर्य। ५-सर्प। वि० अचल। स्थिर। पु० (हि) १-नगीना। २-संख्या। अदद।
नगज पु० (सं) हाथी। वि० पर्वत से उत्पन्न।
नगण पु० (सं) तीन लघु अक्षरों वाला गण (।।।)
नगण्य वि० (सं) इतना कम या गया बीता जिसकी गिनती तक न की जा सके। तुच्छ।
नगद पु० (हि) नकद। वि० बढ़िया।
नगदी क्रि० वि० (हि) नकदी। वि० नगद। बढ़िया
नगन वि० (हि) नग्न।
नगधर, नगधरन पु० = कृष्ण।
नगपति पु० (सं) १-हिमालय। २-चन्द्रमा। ३-शिव ४-सुमेरु।
नगफनी स्त्री० (हि) नागफनी।

नगमा पुं० (फा) १-सङ्गीत। २-राग।
नगर पुं० (सं) गाँव और कस्बे से बड़ी मनुष्यों की बस्ती। शहर।
नगर-आयोजन पुं० (सं) नगर के लिए वह योजना जिसमें सब नागरिक सुविधा होना आवश्यक है। जैसे— चौड़ी सड़कें, नालियाँ, उद्यान, खेल के मैदान, पाठशाला, विद्यालय, चिकित्सालय आदि
नगरकीर्तन पुं० (सं) नगर के मुहल्लों में घूमघूमकर होने वाला धर्मप्रचार।
नगर-क्षेत्र पुं० (सं) किसी नगरपालिका के अधिकार में आने वाला क्षेत्र।
नगरजन पुं० (सं) नागरिक।
नगरनायिका, नगरनारि स्त्री० (सं) वेश्या।
नगर-ट्रामवे स्त्री० दे० 'नगर-रथ्यायान'।
नगरद्वार पुं० (सं) शहरपनाह का फाटक।
नगर-निगम पुं० (सं) राज्य के किसी बड़े नगर की नागरिक सुविधायें पहुँचाने वाली संस्था। (कारपोरेशन)।
नगरनिगमाध्यक्ष पुं० (सं) नगर निगम का अध्यक्ष या प्रधान। (मेयर)।
नगरपति पुं० (सं) नगर का अध्यक्ष।
नगरपार्षद पुं०(स) नगरपालिका का सदस्य। (मेम्बर म्यूनिसिपल कमेटी)।
नगरपाल पुं० (सं) १-किसी नगर की नगर-पालिका का प्रशासक। (म्यूनिसिपल-कमिश्नर)।
नगरपालिका स्त्री० (सं) जन-निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह संस्था जो नगर में सफाई, रोशनी, सड़कों और जल आदि की व्यवस्था करती है। (म्यूनिसिपल कमेटी)।
नगरपाली स्त्री० (सं) नागरिक सुख सुविधा पहुँचाने वाली संस्था। (म्यूनिसिपल कौंसल)।
नगरपिता पुं० (सं) नगर-पालिका का सदस्य जिसका कर्त्तव्य नागरिकों की पितृ तुल्य सेवा करना होता है। (सिटी फादर)।
नगरप्रदक्षिणा स्त्री० (सं) जलूस के रूप में मूर्त्ति आदि का नगर के चारों ओर ले जाना।
नगर-बाह्य पुं० (सं) नगर से बाहर होने का भाव। (आउट-स्टेशन)।
नगरभवन पुं० (स) नगर-पालिका की ओर से बना सार्वजनिक भवन। (टाउन हाल)।
नगर-बोर्ड पुं० (हि) नागरिकों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह परिषद् जो नगर-पालिका के सब कार्यों की व्यवस्था करती है। (म्यूनिसिपल-बोर्ड)।
नगर-भाग पुं० (सं) नगरपालिका के प्रशासन की दृष्टि से विभाजित किया हुआ नगर का एक भाग (वार्ड)।
नगररथ्यायान स्त्री० (सं) बड़े-बड़े नगरों में सड़कों पर बिछी लाइनों पर विद्युत शक्ति से चलने वाली गाड़ी। (ट्राम-वे)।
नगर-वृद्ध पुं० (सं) नगर निगम में नगर-निगमाध्यक्ष से छोटा पदाधिकारी। (एल्डरमैन)।
नगर-शुल्क स्त्री० (सं) चुङ्गी।
नगराई स्त्री० (हि) १-नागरिकता। २-चतुराई।
नगराज पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
नगराधिप, नगराधिपति पुं० (सं) १-पुलिस का मुख्य अधिकारी। २-किसी कसबे का शासक।
नगराधीक्षक पुं० (सं) वह अधिकारी जिसका काम नगर की रक्षा तथा व्यवस्था करना होता है। (सिटी सुपरिन्टेंडेंट)।
नगराध्यक्ष पुं० (सं) किसी नगर की नगर-पालिका का अध्यक्ष।
नगरी स्त्री० (स) छोटा नगर। पुं० नागरिक। वि० नागर।
नगरी-क्षेत्र पुं० (सं) किसी कस्बे और उसके आस-पास का स्थान जो स्थानिक संस्था के अधीन हो। (टाउन एरिया)।
नगरीय वि० (सं) १-नगर सम्बन्धी। २-नगर का रहने वाला।
नगरेतर-क्षेत्र पुं० (सं) किसी केन्द्रस्थ नगर के आस-पास के स्थान। (मोफसिल)।
नगरोपांत पुं० (सं) उपनगर।
नगला पुं० (हि) छोटी बस्ती।
नगवास पुं० (हि) नाग-पाश।
नगवासी स्त्री० (हि) नाग-पाश।
नगवाहन पुं० (सं) शिव।
नगस्वरूपणी स्त्री० (सं) एक वर्ण वृत्त।
नगाड़ा पुं० (हि) धौंसा। डङ्का।
नगाधिप, नगाधिपति, नगाधिराज पुं० (सं) १-हिमालय। २-सुमेरु पर्वत।
नगारा पुं० (हि) नगाड़ा।
नगारि पुं० (सं) इन्द्र।
नगिचाना क्रि० (हि) पास आना।
नगी पुं० (हि) १-रत्न। २-छोटा रत्न। ३-पार्वती। ४-पहाड़िन।
नगीच क्रि० वि० (हि) नजदीक।
नगीना पुं० (फा) १-पत्थर आदि का वह रङ्गीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिए आभूषण, अँगूठी आदि में जड़ा जाता है।
नगेंद्र, नगेश पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
नगेसरि पुं० (हि) नागकेसर।
नग्न वि० (सं) १-जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो। नङ्गा। २-आवरण रहित। ३-सुनसान।
नग्नतावाद, नग्नवाद पुं० (सं) एक आधुनिक पश्चिमी सिद्धान्त जिसमें कहा जाता है कि निरो

रहने के लिए कुछ समय के लिए प्रतिदिन विवाह रहना चाहिए। (मुस्लिम)।
नग्नवादी पुं० (स) नग्नवाद सिद्धान्त का समर्थक।
नग्ना पुं० (स) दस वर्ष से कम आयु की बालिका।
नग्मा पुं० दे० 'नगमा'।
नघ पुं० दे० 'नगर'।
नघना क्रि० (हि) लाँघना।
नघाना क्रि० (हि) पार कराना।
नचना क्रि०(हि) १–नाचना। २–इधर-उधर भटकना। वि० [स्त्री० नचनी] नचाने या हिलाने वाला।
नचनि स्त्री० (हि) नाच।
नचनियाँ पुं० (हि) नर्तक।
नचवैया पुं०(हि) १–नाचने वाला। २–नचाने वाला।
नचाना क्रि० (हि) १–नाचने में प्रवृत्त करना। २–हैरान करना। ३–किसी से तरह-तरह के काम कराना। ४–चक्कर देना। ५–इधर-उधर दौड़ाना।
नचौला वि० (हि) चंचल।
नचैया पुं० (हि) नचवैया।
नचौहा वि० (हि) चपल।
नछत्र पुं० (हि) नक्षत्र।
नछत्री वि० (हि) नक्षत्री।
नजदीक वि० (फा) पास।
नजदीकी वि० (फा) पास का। पुं० निकट का सम्बन्धी।
नजर स्त्री० (अ) १–दृष्टि। २–कृपादृष्टि। ३–निगरानी। ४–ध्यान। ५–परख। ६–दृष्टि का बुरा प्रभाव ७–उपहार। भेंट।
नजरना क्रि० (हि) १–देखना। २–नजर लगाना।
नजरबंद वि० (हि) १–जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय जहाँ से वह कहीं आ-जा न सके। २–जिसे नजरबन्दी का दण्ड दिया गया हो। पुं० जादू का खेल।
नजरबंदी स्त्री० (हि) १–सरकार की ओर से दिया गया वह दण्ड जिसमें दण्डित व्यक्ति किसी सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है। २–नजरबन्द होने की दशा। ३–जादूगरी।
नजर-बाग पुं० (अ) महलों के सामने या चारों ओर का बाग।
नजरसानी स्त्री० (अ) जाँचने के विचार से किसी देखी हुई बात को फिर ... ।
नजरहाया ... जाता।
नजरा वि० ... से हो अच्छे-बुरे या सस्ते-महँगे की पहचान कर ले।
नजराना क्रि० (हि) १–भेंट में देना। २–नजर लगाना।
नजराना पुं० (अ) उपहार। क्रि०(हि) नजर लगाना

या लग जाना।
नजरि स्त्री० (हि) नजर।
नजला पुं० (अ) जुकाम।
नजाकत स्त्री० (फा) सुकुमारता।
नजात स्त्री० (अ) मुक्ति।
नजामत स्त्री० (अ) १–नाजिम का पद। २–नाजिम का महकमा या विभाग। ३–प्रबन्ध।
नजारा, नज्जारा पुं० (अ) १–दृश्य। २–नजर। ३–देखना।
नजिकाना क्रि० (हि) नजदीक या पास आना।
नजीक क्रि० वि० (हि) नजदीक।
नजीर स्त्री० (अ) १–दृष्टान्त। २–किसी एक निर्णय को अन्य अभियोग में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करना।
नजूम पुं० (अ) ज्योतिष।
नजूल पुं० (अ) सरकारी जमीन।
नट पुं० (स) [स्त्री० नटी] १–अभिनेता। २–एक जाति।
नटई स्त्री० (हि) १–गला। २–गले की घंटी।
नटखट वि० (हि) १–उपद्रवी। २–धूर्त। ३–चंचल।
नटन पुं० (स) १–नृत्य। २–अभिनय करना।
नटना क्रि० (हि) १–नाट्य करना। २–नाचना। ३–इनकार करना। ४–नष्ट होना या करना।
नटनागर पुं० (स) श्रीकृष्ण।
नटनारायण पुं० (स) एक राग का नाम।
नटनि स्त्री० (हि) १–नृत्य। २–इनकार।
नटनी स्त्री० (हि) १–नट की स्त्री। २–नट जाति की स्त्री।
नटराज पुं० (स) महादेव।
नटवना क्रि०(हि) १–अभिनय करना। २–नृत्य करना करना।
नटवर पुं० (सं) १–नटकला में प्रवीण व्यक्ति। २–श्रीकृष्ण। वि० चतुर।
नटवा पुं० (हि) [स्त्री० नटिया] १–छोटे कद या कम उमर का बैल। २–नट।
नटसार, नटसारा स्त्री० (हि) नाट्यशाला।
नटसारी स्त्री० (हि) बाजीगरी।
नटसाल स्त्री० (?) १–काँटे का वह भाग, जो टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २–कसक।
...
नटेश, नटेश्वर पुं० (सं) शिव।
नटैया स्त्री० (हि) १–गला। २–गरदन।
नट्या स्त्री० (सं) १–एक रागिनी। २–अभिनय करने वाले नटों का समुदाय।
नट्ना क्रि० (हि) नष्ट होना या करना।

नढ़ना क्रि० (हि) १-गूँथना। २-कसना। ३-बाँधना।
नत वि० (सं) १-झुका हुआ। २-विनीत। ३-प्रणाम करता हुआ। ४-उदास। क्रि० वि० दे० 'नतु'।
नतन पुं० (सं) झुकाव।
नत-पाल वि० (सं) शरणागत प्रतिपालक।
नतमस्तक वि० (सं) जिसका सिर झुका हुआ हो।
नतमाथ वि० (हि) १-नतमस्तक। २-विनीत।
नतर, नतरक, नतरु, नतरुक क्रि० वि० (हि) नहीं तो।
नतांग वि० (सं) १-बदन झुकाये हुए। २-प्रणाम करने वाला।
नतांगी स्त्री० (सं) नारी। स्त्री।
नतांश पुं० (सं) वह वृत्त जिसका केन्द्र भू-केन्द्र पर होता है। और जो विषुवत रेखा पर लम्बा हो। इस वृत्त का उपयोग ग्रहों की स्थिति निश्चित करते समय होता है।
नति स्त्री० (सं) १-झुकाव। २-नमस्कार। ३-विनय ४-नम्रता। ५-प्रणाम करने के लिए शरीर झुकाना। ६-ज्योतिष में एक प्रकार की गुणा।
नतीजा पुं० (फा) १-परिणाम। २-परीक्षा-फल।
नतु क्रि० वि० (हि) नहीं तो।
नतुवा अव्य० (सं) नहीं तो क्या ?
नतैत पुं० (हि) नातेदार।
नतैती स्त्री० (हि) रिश्तेदारी।
नतोदार वि० (सं) जिसका ऊपरी भाग चारों ओर से झुका हुआ हो। (कॉन्केव)।
नत्थी स्त्री० (हि) १-कई कागजों को एक में गूँथना। २-एक में गुँथे हुए कागज आदि के टुकड़े। ३-मिसल।
नत्वर्थक वि०(सं) १-जिसमें किसी बात का अस्तित्व न माना गया हो। २-जिसमें कोई प्रस्ताव या सुझाव अमान्य किया गया हो। (नेगेटिव)।
नथ स्त्री० (हि) नाक में पहनने का एक गहना।
नथना क्रि० (हि) १-नत्थी होना। २-छेदा जाना। पुं० नाक का अग्रभाग जिसमें दोनों छेद होते हैं।
नथनी स्त्री० (हि) १-छोटी नथ। २-बैल आदि के नाक में पहनाई जाने वाली रस्सी। ३-नथ की तरह की कोई चीज। ४-तलवार की मूठ के ऊपर का छल्ला।
नथिया स्त्री० (हि) नथ।
नथुना पुं० (हि) नथना।
नथुनी स्त्री० (हि) छोटी नथ।
नद पुं० (स) बड़ी नदी।
नदन पुं० (सं) १-शब्द करना। २-बोलना।
नदना क्रि० (हि) १-पशुओं की आवाज करना। २-रँभाना। ३-बजना। ४-गरजना।
नदर वि० (सं) १-नदी के पास वाला (देश)। २-निडर। ३-निर्भय।
नदवान पुं० (?) क्षत्रियों की एक शाखा।
नदान वि० (हि) नादान।
नदारद वि० (फा) गायब।
नदित वि० (सं) १-नाद या शब्द करता हुआ। २-बजता हुआ।
नदिया स्त्री० (हि) नदी।
नदी स्त्री० (सं) किसी बड़े पर्वत, झील या जलाशय आदि से निकलकर किसी निश्चित मार्ग से बहकर समुद्र या अन्य नदी में गिरने वाली जल की बड़ी धारा। दरिया। सरिता। २-किसी तरल पदार्थ का बड़ा प्रवाह।
नदी-कूल पुं० (सं) नदी का तट।
नदी-घाटी-योजना स्त्री० (सं) उपर्युक्त स्थानों पर बाँधों के निर्माण करने तथा नहरों द्वारा सिंचाई करने की व्यवस्था सम्बन्धी योजना (रिवर-वैली-स्कीम)।
नदीधर पुं० (सं) शिव।
नदीपति पुं० (सं) समुद्र। २-वरुण।
नदी-प्रवाह-विज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें नदी के प्रवाह या जल आदि के प्रवाह के नियन्त्रण सम्बन्धी उल्लेख हो।
नदीमुख पुं० (सं) वह स्थान जहाँ समुद्र में नदी गिरती हो।
नदीश पुं० (सं) समुद्र। २-वरुण।
नदीशनंदिनी स्त्री० (सं) लक्ष्मी।
नद्द पुं० (सं) १-नद। २-नाद।
नद्दना क्रि० दे० 'नदना'।
नद्युत्सृष्ट पुं० (सं) वह भूमि जो नदी के हट जाने के कारण निकल आई हो।
नधना क्रि० (हि) १-जुतना। २-जुड़ना। ३-किसी काम का आरम्भ होना।
ननंद स्त्री० (सं) पति की बहन। ननद।
ननकारना क्रि० (हि) अस्वीकार करना।
ननद, ननदी स्त्री० पति की बहन।
ननदोई स्त्री० (हि) स्त्री के लिए पति का बहनोई।
ननसार पुं० (हि) ननिहाल।
ननिआउर पुं० (हि) ननिहाल।
ननियाउर पुं० (हि) ननिहाल।
ननिया-ससुर पुं० (हि) पत्नी का नाना।
ननिया-सास स्त्री० (हि) स्त्री या पति की नानी।
ननिहाल पुं० (हि) नाना का घर।
नन्ना पुं० (हि) नाना। वि० नन्हा।
नन्यौरा पुं० (हि) ननिहाल।
नन्हा वि० (हि) [स्त्री० नन्ही] छोटा।
नन्हाई स्त्री० (हि) १-छोटापन। २-अप्रतिष्ठा।
नन्हिया स्त्री० (हि) एक प्रकार का धान।
नन्हैया वि० (हि) नन्हा।

नपन, नपाई स्त्री० (हि) नापने की क्रिया, भाव या उजरत।
नपना क्रि० (हि) नापा जाना। पुं० [स्त्री० नपनी] नापने का पात्र।
नपाक वि० (हि) नापाक। अपवित्र।
नपाकी स्त्री० (हि) अपवित्रता।
नपाना क्रि० (हि) नापने का कार्य अन्य से कराना।
नपुंस पुं० (स) हिजड़ा।
नपुंसक पुं० (स) हिजड़ा। नामर्द। वि० कायर।
नपुंसकता स्त्री० (सं) १-हीजड़ापन। २-नामर्दी।
नपुंसकत्व पुं० (स) हीजड़ापन।
नपुंसीकरण पुं० (स) नपुंसक बनाना।
नपुआ पुं० (हि) नापने का पात्र।
नपुरी वि० दे० 'निपुरी'।
नफर पुं० (फा) १-सेवक। २-व्यक्ति।
नफरत स्त्री० (अ) घृणा।
नफरी स्त्री० (अ) १-मजदूर के पूरे एक दिन की मजदूरी। २-मजदूर का एक दिन का काम। ३-मजदूरी का दिन।
नफा पुं० (अ) लाभ।
नफासत स्त्री० (अ) नफीस होने का भाव या अवस्था। उम्दापन।
नफीरी स्त्री० (फा) तुरही नामक बाजा।
नफीस वि० (अ) १-बढ़िया। २-स्वच्छ। ३-सुन्दर।
नबी पुं० (अ) पैगम्बर।
नबेड़ना, नबेरना क्रि० (हि) १-निपटाना। २-चुनना।
नबेड़ा पुं० (हि) निपटारा।
नबेला वि० दे० 'नवेला'।
नब्ज स्त्री० (अ) नाड़ी।
नभ पुं० (सं) १-आकाश। २-बादल। ३-जल। ४-वर्षा।
नभग पुं० (स) पक्षी।
नभगनाथ पुं० (स) १-चन्द्रमा। २-गरुड़।
नभगामी पुं० (सं) १-पक्षी। २-बादल। ३-तारा। ४-सूर्य। ५-चन्द्रमा। ६-देवता। वि० आकाश में उड़ने वाला।
नभगेश पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-गरुड़।
नभचर पुं० (स) १-पक्षी। २-बादल। वि० नभगामी
नभधूम पुं० (हि) मेघ।
नभश्चर पुं० (सं) १-पक्षी। २-बादल। ३-देव। वि० नभगामी।
नभसार पुं० (हि) शिव। महादेव।
नभ सेना स्त्री० (सं) वायुयानों द्वारा बम गिराकर लड़ाई करने वाली फौज।
नभस्थल पुं० (सं) आकाश।
नभोगति स्त्री० (सं) उड़ना।
नभोधूम, नभोध्वज पुं० (स) बादल।
नभोमण्डल पुं० (स) मण्डलाकार आकाश।
नभोमणि पुं० (सं) सूर्य।
नभोवाणि स्त्री० (स) रेडियो।
नभोवीथी स्त्री० (स) छाया-पथ।
नम पुं० (फा) सील। आर्द्र।
नमक पुं० (फा) १-लवण। २-लावण्य।
नमकख्वार वि० (फा) नमक खाने वाला।
नमकदान पुं०(हि) [स्त्री० नमकदानी] पिसे हुए नमक को रखने का पात्र।
नमकसार पुं० (फा) नमक निकालने या बनाने का स्थान।
नमक-हराम पुं० (फा+अ) कृतघ्न।
नमक-हरामी स्त्री० (फा+अ) कृतघ्न।
नमक-हलाल पुं० (फा+अ) स्वामिनिष्ठ।
नमक-हलाली स्त्री० (फा+अ) स्वामिनिष्ठा।
नमकीन वि० (फा) १-जिसमें नमक पड़ा हो। २-जिसमें नमक जैसा स्वाद हो। ३-सलोना। पुं० नमक डालकर बनाया हुआ पकवान।
नमदा पुं०(फा) जमाया हुआ ऊनी कम्बल या कपड़ा
नमन पुं० (स) १-झुकने की क्रिया या भाव। २-नमस्कार। ३-झुकाव।
नमना क्रि० (हि) १-झुकना। २-प्रणाम करना।
नमनि स्त्री० (स) १-दे० 'नमन'। २-नम्रता।
नमनीय वि०(स) १-नमस्कार करने योग्य। पूजनीय। २-जो झुक सके या झुकाया जा सके।
नमनीयता स्त्री० (स) लचीलापन।
नमश स्त्री० (फा) दूध का जमा हुआ फेन जिसे जाड़े के दिनों में बेचते हैं।
नमस्कारना क्रि० (हि) नमस्कार करना।
नमस्कार पुं० (स) झुक कर सादर अभिवादन करना।
नमस्क्रिया स्त्री० (स) नमस्कार।
नमस्ते पुं० (सं) (एक वाक्य जिसका अर्थ है) आपको नमस्कार है।
नमाज स्त्री० (फा) मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना।
नमाजगाह स्त्री० (फा) मसजिद में वह स्थान जहाँ नमाज पढ़ी जाती है।
नमाजी पुं० (फा) १-नमाज पढ़ने वाला। २-वह वस्त्र जिस पर नमाज पढ़ी जाती है।
नमाना क्रि० (हि) १-झुकाना। २-झुका या दबाकर अधीन करना।
नमामि पद (स) मैं नमस्कार करता हूँ।
नमित वि० (स) झुका हुआ।
नमिश स्त्री० दे० 'नमिश'।
नमि स्त्री० (फा) गीलापन। वि० (हि) झुकने वाला।
नमूदार वि० (फा) प्रकट।
नमूना पुं० (फा) १-बानगी। २-ढाँचा। ३-वह जिसके द्वारा इसके समान दूसरी वस्तुओं के

स्वरूप तथा गुण आदि का ज्ञान हो जाय। ३-उदाहरण। ४-आदर्श।
नम्य वि० (सं) जो झुक सके।
नम्यता स्त्री० (सं) मोड़े जाने या झुकाये जाने पर उसी अवस्था में रहने का गुण। (प्लायेबिलिटी)।
नम्र वि० (सं) १-नत। २-विनीत। ३-वक्र।
नम्रता स्त्री० (सं) नम्र होने का भाव।
नय पुं० (सं) १-नीति। २-नम्रता। स्त्री० (हि) नदी।
नयकारी पुं० (हि) नाचने वाला।
नयन पुं० (सं) १-आँख। २-लेजाना।
नयन-गोचर वि० (सं) दृष्टिगोचर।
नयनच्छद पुं० (सं) आँख की पलक।
नयन-जल पुं० (सं) आँसू।
नयन-पट पुं० (सं) पलक।
नयन-पथ पुं० (सं) जितनी दूरी तक दृष्टि जा सके आँख के आगे या सामने का स्थान।
नयन-वारि, नयन-सलिल पुं० (सं) आँसू।
नयना क्रि० (हि) १-झुकना। २-नम्र होना। पुं० आँख।
नय-नागर वि० (सं) नीति-निपुण।
नयनाभिराम वि० (सं) देखने में सुन्दर।
नयनी स्त्री० (सं) आँख की पुतली। वि० आँखों वाली
नयनूं पुं० (हि) १-मक्खन। २-एक तरह की मलमल जो बूटीदार होती है।
नयनोत्सव पुं० (सं) १-दीपक। २-कोई भी मनोहर वस्तु।
नयनोपांत पुं० (सं) आँख का किनारा या कोर।
नयर पुं० (हि) नगर।
नयवाद पुं० (सं) दर्शनशास्त्र के अनुसार वह सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि आत्मा एक भी है और अनेक भी।
नयविद, नयविशारद पुं० (सं) राजनीति का ज्ञाता।
नयशील वि० (सं) १-विनयी। २-नीतिज्ञ।
नया वि० (हि) १-नवीन। २-ताजा। ३-आधुनिक ४-अनुभवहीन। ५-नौ-सिखुआ।
नयापन पुं० (हि) नवीनता।
नर पुं० (सं) १-पुरुष। आदमी। २-विष्णु। ३-शिव। ४-सेवक। ५-कपूर। वि० जो पुरुष जाति का हो। पुं० दे० 'नरकट'।
नर स्त्री० (हि) १-गेहूँ के बाल का डंठल। २-एक घास।
नरकंत पुं० (हि) नृप।
नरक पुं० (सं) १-वह स्थान जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा को अपने किये हुए पाप का फल भोगना पड़ता है। दोजख। २-बहुत अधिक ही गन्दा स्थान। ३-वह स्थान जहां बहुत पीड़ा हो। ४-नरकासुर।
नरक-गामी वि० (सं) नरक में जाने वाला।
नर-कचूर पुं० दे० 'कचूर'।
नरकट पुं० (हि) बेंत की तरह का एक पौधा।
नरकल, नरकस पुं० (हि) नरकट।
नरकांतक, नरकारि पुं० (सं) कृष्ण।
नरकासुर पुं० (सं) एक असुर का नाम।
नरकुल पुं० (हि) नरकट।
नरकेशरी, नरकेसरी, नरकेहरी पुं० = १-नृसिंह नामक विष्णु का अवतार। २-सिंह के समान पराक्रमी मनुष्य।
नरगा पुं० (तू० नर्ग) १-पशुओं के शिकार के लिए डाला हुआ आदमियों का घेरा। २-भीड़भाड़। ३-विपत्ति।
नरगिस स्त्री० (फा) सफेद रङ्ग के गोल फूलों वाला एक पौधा।
नरजना क्रि० (हि) १-नाराज होना। २-नापना या तौलना।
नरजी पुं०(हि) तोलने वाला व्यक्ति। बया।
नरतक पुं० (हि) नर्तक।
नरताल पुं० (हि) राजा।
नरद स्त्री० (हि) १-चौसर खेलने की गोटी। २-ध्वनि
नरदमा, नरदवां, नरदा पुं०(हि) नाबदान। पनाला
नरदेव पुं० (हि) राजा।
नरनाथ, नरनायक पुं० (सं) राजा।
नरनारायण पुं० (सं) १-नर और नारायण जो अर्जुन और कृष्ण के रूप में अवतरित हुए। २-श्रीकृष्ण का एक नाम। ३-मनुष्य और भगवान।
नरनारि, नरनारी स्त्री० (सं) १-द्रौपदी। २-पुरुष और स्त्री।
नरनाह पुं० (हि) राजा।
नर-नाहर पुं० (हि) नरकेशरी।
नरपति पुं० (सं) राजा।
नरपद पुं० (सं) १-नगर। २-देश।
नरपशु पुं० (सं) १-नृसिंह। २-मनुष्य होने पर भी पशुओं के से आचरण करने वाला।
नरपाल पुं० (सं) राजा।
नरपिशाच पुं० (सं) १-पिशाच के समान क्रूर स्वभाव वाला मनुष्य। २-बहुत दुष्ट और नीच व्यक्ति।
नरपुंगव पुं० (सं) मनुष्यों में श्रेष्ठ।
नरबलि पुं० (सं) देवता की पूजा के निमित्त की जाने वाली मनुष्य की हत्या।
नरभक्षी पुं० (सं) मनुष्यों को खाने वाला।
नरम वि० (फा) १-कोमल। २-लचीला। ३-मन्दा। ४-धीमा। ५-आलसी। ६-शीघ्र पचने वाला। ७-जिसमें पौरुष का अभाव हो।

नरमट स्त्री० (हि) मुलायम मिट्टी वाली जमीन।

नरमा स्त्री० (हि) १-एक तरह की कपास। २-सेमर की रुई। ३-कान के नीचे का भाग। लोल। पुं० एक तरह का रङ्गीन कपड़ा।

नरमाई क्रि० (हि) १-कोमलता। २-नम्रता।

नरमाना क्रि०(हि) १-नरम या मुलायम होना अथवा करना। २-नम्र होना। ३-शान्त करना।

नरमाहट, नरमी स्त्री० (हि) १-कोमलता। २-नम्रता

नरमेध पु० (स) प्राचीनकाल में एक प्रकार का यज्ञ।

नरयन्त्र पुं० (स) एक प्रकार का शङ्कुयन्त्र जो धूप में समय बताने के काम आता था। धूपघड़ी।

नरयान, नररथ पु० (सं) १-एक तरह की हलकी गाड़ी जिसमें मनुष्य जुतकर दौड़ता है। रिक्शा। २-पालकी। ३-हाथठेला।

नरलोक पु० (सं) संसार।

नरवध पु० (सं) किसी कारण से या जान-बूझकर किसी मनुष्य को मार डालना। (मर्डर)।

नर-वाहन पुं० (सं) १-पालकी। २-रिक्शा।

नरसल पुं० (हि) नरकट।

नरसिंगा पुं० (हि) नरसिंघा नामक बाजा।

नरसिंघ पु० दे० 'नृसिंह'।

नरसिंघा पु० (हि) तुरही जैसा एक बाजा जिसे फूँक कर बजाते हैं।

नरसिंह पु० दे० 'नृसिंह'।

नरसों पुं० (हि) बीता हुआ या आने वाला चौथा दिन।

नरहत्या पुं० (स) साधारण चोट से होने वाली मानव-मृत्यु। (होमी-साइड)।

नरहरि पुं० (सं) नृसिंह, जो दस में से चौथे अवतार माने जाते हैं।

नरहरी पुं० (स) एक मात्रिक छन्द।

नरान्तक पु० (सं) रावण के एक पुत्र का नाम।

नराच पु० (हि) तीर। बाण। पु० (स) एक वर्णवृत्त जिसे नागराज और पञ्चचामर भी कहते हैं।

नराज वि० दे० 'नाराज'।

नराजना क्रि० (हि) नाराज होना या करना।

नराट पुं० (हि) राजा।

नराधम पुं० (सं) नीच व्यक्ति।

नराधिप, नराधिपति पु० (सं) राजा।

नरायण, नरायन पुं० दे० 'नारायण'।

नरिन्द पुं० (हि) राजा।

नरियर पु० (हि) नारियल।

नरियरी स्त्री० (हि) नारियल की खोपड़ी का आधा भाग।

नरियार पुं० (हि) १-नारियल। २-नरिया।

नरिया स्त्री० (हि) अर्द्धवृत्ताकार खपड़ा।

नरियाना क्रि० (हि) जोर से चिल्लाना।

नरी स्त्री० (फा) १-बकरी या बकरे का कमाया हुआ चमड़ा जो लाल रङ्ग का होता है। २-करघे की सूत लपेटने की नली। स्त्री० (हि) १-स्त्री। २-नली।

नरु पुं० (हि) नर।

नरुआ पु० (हि) [स्त्री० नरुई] अनाज के पौधों की पोली डंडी।

नरेंद्र पुं० (स) राजा।

नरेंद्र मंडल पुं० (स) अंगरेजों के शासन काल में बनी भारतीय नरेशों की संस्था। (चेम्बर ऑफ प्रिंसेस)।

नरेली स्त्री० (हि) नारियल की खोपड़ी या उसका बना हुक्का।

नरेश, नरेश्वर पुं० (सं) राजा।

नरेस पु० (हि) राजा।

नरोत्तम पुं० (सं) १-श्रेष्ठ मनुष्य। २-श्रीकृष्ण।

नर्तक पुं० (स) [स्त्री० नर्तकी] १-नाचने वाला। २-अभिनेता। ३-शिव।

नर्तकी स्त्री० (स) १-नाचने वाली स्त्री। २-वेश्या।

नर्तन पु० (स) १-नृत्य। २-नृत्य करना।

नर्तन गृह पु० (स) नाचघर।

नर्तनशाला स्त्री० (स) नाचघर।

नर्तनप्रिय पु० (स) १-शिव। २-मोर। वि० जिसे नृत्य प्रिय हो।

नर्तना क्रि० (हि) नाचना।

नर्तित वि० (सं) नाचता हुआ।

नर्द वि० (स) गरजने वाला। स्त्री० (फा) चौसर की गोटी।

नर्दन स्त्री० (स) गरज।

नर्म पुं० (स) १-परिहास। २-साहित्य में नायक को हँसाने वाला सखा। वि० (हि) नरम।

नर्म-गर्म वि० (फा) १-सस्ता महँगा। २-बुरा-भला।

नर्मद पुं० (स) मसखरा। २-भाँड। वि० सुख देने वाला।

नर्म-दिल वि० (फा) कोमल हृदय।

नर्मदेश्वर पु० (स) स्फटिक का शिवलिंग जो नर्मदा नदी से निकलता है।

नर्मसचिव, नर्मसुहृद पु० (स) वह मनुष्य जो राजा के पास हँसाने के लिए रहे। विदूषक।

नर्मी स्त्री० (फा) नर्म होने का भाव।

नल पुं० (स) १-नरकट। २-कलम। ३-निषध देश का राजा जिसका विवाह दमयन्ती से हुआ था ४-श्रीराम की सेना का एक बन्दर। पुं० (हि) १-पोली लम्बी गोल वस्तु। २-धातु, काठ, मिट्टी आदि का बना हुआ पोला गोल खण्ड जो लम्बा होता है ३-पेड़ू की एक नाड़ी। ४-मनुष्य।

नलकार पुं० (सं) वह कारीगर जो बेत से पलंग, चौकी आदि बुनता है।

नलकूप पुं० (हि) खेतों में पानी देने के लिए जमीन में गहराई तक पहुँचाया हुआ नल। (ट्यूब-वैल)।
नलनी स्त्री० दे० 'नलिनी'।
नलिन पुं० (सं) १-कमल। २-जल। ३-सारस। ४-नीली कुमुदिनी।
नलिनी स्त्री० (सं) १-कमलिनी। २-वह प्रदेश जहाँ कमल बहुत हों। ३-नदी।
नलिया पुं० दे० 'बहेलिया'।
नली स्त्री० (हि) १-एक छोटा या पतला नल। २-नल की तरह की हड्डी जिसमें मज्जा भरी रहती है। ३-पैर की हड्डी। ४-बन्दूक का अगला भाग जिसमें से होकर गोली निकलती है। ५-जुलाहों की नाल।
नलुआ पुं० (हि) १-पशुओं को होने वाला एक रोग २-छोटा नल।
नल्लिका स्त्री० (सं) वह छोटी नली जिसके द्वारा एक पात्र से दूसरे पात्र में तरल पदार्थ डाला या गिराया जाता है। (पिपेट)।
नव वि० (सं) नया। नूतन।
नवक पुं० (सं) एक जैसी नौ वस्तुओं का समूह। वि० नया। २-अनोखा।
नव-कलेवर पुं० (सं) जगन्नाथपुरी में रथयात्रा के समय पुरानी मूर्त्ति के स्थान पर नई मूर्त्ति स्थापित करने के अवसर पर होने वाला उत्सव।
नवका स्त्री० (हि) नौका।
नवकारिका, नवकालिका स्त्री० (स) १-नवयौवना। २-वह युवती जो प्रथम बार रजस्वला हुई हो।
नवकुमारी पुं० (सं) नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ।
नवखंड पुं० (सं) पृथ्वी के नौखण्ड या विभाग।
नवग्रह पुं० (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रह—सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु।
...छावरि स्त्री० (हि) न्योछावर।
नवजात वि० (सं) जो अभी पैदा हुआ हो।
नवतन वि० (हि) नवीन।
नवदुर्गा स्त्री० (सं) नौरात्र में पूजी जाने वाली नौ-दुर्गाएँ।
नवद्वार पुं०(सं) शरीर के नाक, कान आदि नौ द्वार
नवधा अव्य० (सं) १-नौ प्रकार से। २-नौ भागों या खण्डों में।
नवधा-भक्ति स्त्री० (स) नौ प्रकार की भक्ति। यथा—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, ... सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।
नवन पुं० (हि) नमन।
नवना क्रि० (हि) १-झुकना। २-नम्र...
नवनि स्त्री० (हि) १-नवने या झुकने...

नवनिधि स्त्री० (सं) १-कुबेर का खजाना। ... प्रकार की निधियाँ—पद्म, महापद्म, शंख, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द और नील।
नवनी स्त्री० (सं) ताजा मक्खन।
नवनीत पुं० (सं) मक्खन।
नवनीतक पुं० (सं) १-घृत। २-मक्खन।
नव-प्रसूत वि० (सं) नव-जात।
नव-प्रसूता स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके गर्भ हुआ हो।
नव-भुज पुं० (सं) रेखागणित में वह क्षेत्र ... नौ भुजाएँ हों। (नौनेगन)।
नवम वि० (हि) गिनती में नौ के स्थान पर आने वाला
नवमल्लिका स्त्री० (सं) चमेली।
नवमांश पुं० (सं) नवाँ भाग।
नवमालिका स्त्री० (स) १-एक वर्णवृत्त। २-एक तरह की चमेली।
नवमालिनि स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त।
नवमी स्त्री० (हि) किसी पक्ष की नवीं तिथि।
नव-युग पुं० (सं) ऐसा समय जिसमें पुरानी बातें प्रायः समाप्त होकर नवीन बातें प्रचलित हो रही हों।
नवयुवक पुं० (सं) [स्त्री० नवयुवती] तरुण।
नव-यौवन पुं० (सं) चढ़ती जवानी।
नव-यौवना स्त्री० (सं) युवती। चढ़ती जवानी वाली स्त्री।
नवरंग क्रि०(हि) १-सुन्दर। २-नये ढङ्ग का। नवेला
नवरत्न पुं० (सं) १-मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। २-गले में पहनने का उक्त नौ रत्नों का हार। ३-नौ मसालों से युक्त चटनी।
नवरस पुं० (सं) काव्य के नौ रस-शृङ्गार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त।
नवरात्र पुं० (सं) १-प्राचीन काल का एक यज्ञ, जो नौ दिन में समाप्त होता था। २-चैत्र सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें लोग नवदुर्गा का व्रत, घट स्थापन और पूजन आदि करते हैं।
नवल वि० (सं) [स्त्री० नवला] १-नया। २-सुन्दर। ३-नवयुवक। ४-शुद्ध।
नवल-किशोर पुं० (सं) श्रीकृष्णचन्द्र।
नवल-वधू स्त्री० (सं) मुग्धा नायका के चार भेदों में से एक।
... स्त्री० ... स्त्री।
नवल... ...वर।
... २-जिसने

नव-सत पु० (हि) सोलह शृङ्गार (नव और सात)।
नवसर वि० (हि) नयी उम्र का। पु० नौ लड़ों का हार।
नव-शशि पु० (सं) दूज का चाँद। नया चाँद।
नव-सात पु० (हि) सोलह शृङ्गार।
नवा वि० (हि) नया।
नवाई वि० (हि) नया। स्त्री० नम्रता।
नवागत वि० (स) नया-नया आया हुआ।
नवाज वि० (फा) कृपालु।
नवाजना क्रि० (हि) कृपा करना।
नवाजिश वि० (फा) कृपा।
नवाड़ा पु० (देश) १-एक तरह की छोटी नाव। २-धारा के बीच में नाव ले जाकर चक्कर देने की झकझोर। नावर।
नवाना क्रि० (हि) १-झुकाना। नम्र करना।
नवान्न पु० (सं) घर में आया हुआ नया अन्न।
नवाब पु० (अ० नव्वाब) १-मुसलमानों के शासन काल में किसी बड़े प्रदेश या सूबे के शासन के लिए नियुक्त राज्याधिकारी। २-मुसलमान रईसों की एक उपाधि। वि० १-बड़े ठाठबाट से रहने वाला। २-अपव्ययी।
नवाबी स्त्री० (हि) १-नवाब का पद या काम। २-नवाबों का शासन काल। ३-नवाबों के समान अमीरी।
नवाभ्युत्थान पु० (सं) १-पुनः फिर से होने वाला उत्थान। २-कलाकौशल और विद्याओं का आधुनिक ढंग पर होने वाला उत्थान। (रिनैसेन्स)।
नवाह वि० (स) नौ दिन में समाप्त किया जाने वाला।
नवीकरण पु० (स) १-फिर से नया कर देना। (रिनोवेशन)। २-जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो, उसे फिर से आगे के लिए वैध या नियमित करना। (रिन्यूअल)।
नवीन वि० (स) १-नया। २-अपूर्व। ३-जो पहले-पहल या मूल रूप में बना हो। (ओरिजनल)।
नवीनतम वि० (सं) जो अभी बना, निकला, प्रस्तुत या विदित हुआ हो। (लेटेस्ट)।
नवीनता स्त्री० (सं) नवीन या नया होने का भाव। नूतनता।
नवीनभाव पु० (सं) नवीन या नया होने का भाव
नवीनीकरण पु० (सं) नवीन या नई विचारधारा के अनुसार करने की क्रिया।
नवीस पु० (फा) लिखने वाला।
नवीसी स्त्री० (फा) लिखाई।
नवेद स्त्री० (हि) निमन्त्रण।
नवेला वि० (हि) [स्त्री० नवेली] १-नया। २-युवक
नवोढ़ा स्त्री० (सं) १-वधू। २-युवती स्त्री। ३-लज्जा तथा भय के कारण नायक के पास जाने में संकोच करने वाली नायिका।
नवोत्थान पु० (स) नवाभ्युत्थान।
नवोत्थित वि० (स) जिसका अभी उत्थान हुआ हो।
नवोदक पु० (स) १-प्रथम वर्षा का पानी। २-खोदते समय धरती में से पहले पहल निकलने वाला पानी।
नवोदित वि० (स) १-जो अभी हाल में उत्पन्न हुआ हो। २-जो अभी अस्तित्व में आया हो।
नवोद्भाव, नवोद्भावन पु० (स) उद्भावन। (इनवेशन)।
नव्य वि० (स) नया।
नशना क्रि० (हि) नष्ट होना।
नशा पु० (अ) १-वह मानसिक अवस्था जो शराब, भाँग आदि पीने से होती है। २-मादक द्रव्य। ३-धन, विद्या, प्रभुत्व (अधिकार) आदि का घमंड।
नशाखोर पु० (फा) किसी तरह के नशे का सेवन करने वाला।
नशाना क्रि० (हि) १-नष्ट होना या करना। २-खोजना।
नशावन वि० (हि) नाशक।
नशीन वि० (फा) बैठने वाला।
नशीनी स्त्री० (फा) बैठने की क्रिया या भाव।
नशीला वि० (फा) १-मादक। २-जिस पर नशे का प्रभाव हो।
नशेड़ी वि० (हि) नशा करने वाला।
नशेबाज पु० (फा) नशाखोर।
नशोहर वि० (हि) नाशक।
नश्तर पु० (फा) फोड़े चीरने का एक प्रकार का छोटा और तेज चाकू।
नश्वर वि० (सं) नष्ट हो जाने वाला।
नश्वरता स्त्री० (स) नश्वर होने का भाव।
नष पु० (हि) नख।
नषत पु० (हि) नक्षत्र।
नष-शिष पु० (हि) नखशिख।
नष्ट वि० (स) १-जिसका नाश हो गया हो। २-जो दिखाई न दे। ३-अधम। ४-निष्फल। ५-मृत। ६-छन्दशास्त्र में मात्रिक छन्दों या वर्ण प्रस्तार में यह जानने की प्रक्रिया कि उनके किसी अथवा कौन से भेद का क्या रूप है।
नष्ट चेतन, नष्टचेष्ट वि० (स) मूर्छित।
नष्ट-निधि पु० (स) दिवालिया।
नष्ट-प्रभा वि० (स) तेजरहित। कांतिहीन।
नष्टभ्रष्ट वि० (स) बरबाद। चौपट।
नष्टा स्त्री० (स) १-वेश्या। २-व्यभिचारिणी।
नसंक वि० (हि) निःशङ्क।
नस स्त्री० (हि) स्नायु। नाड़ी।

नलकूप पुं० (हि) खेतों में पानी देने के लिए जमीन में गहराई तक पहुँचाया हुआ नल। (ट्यूब-वैल)।
नलनी स्त्री० दे० 'नलिनी'।
नलिन पुं० (सं) १-कमल। २-जल। ३-सारस। ४-नीली कुमुदिनी।
नलिनी स्त्री० (सं) १-कमलिनी। २-वह प्रदेश जहाँ कमल बहुत हों। ३-नदी।
नलिया पुं० दे० 'बहेलिया'।
नली स्त्री० (हि) १-एक छोटा या पतला नल। २-नल की तरह की हड्डी जिसमें मज्जा भरी रहती है। ३-पैर की हड्डी। ४-बन्दूक का अगला भाग जिसमें से होकर गोली निकलती है। ५-जुलाहों की नाल।
नलुआ पुं० (हि) १-पशुओं को होने वाला एक रोग २-छोटा नल।
नल्लिका स्त्री० (सं) वह छोटी नली जिसके द्वारा एक पात्र से दूसरे पात्र में तरल पदार्थ डाला या गिराया जाता है। (पिपेट)।
नव वि० (सं) नया। नूतन।
नवक पुं० (सं) एक जैसी नौ वस्तुओं का समूह। वि० नया। २-अनोखा।
नव-कलेवर पुं० (सं) जगन्नाथपुरी में रथयात्रा के समय पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति स्थापित करने के अवसर पर होने वाला उत्सव।
नवका स्त्री० (हि) नौका।
नवकारिका, नवकालिका स्त्री० (सं) १-नवयौवना। २-वह युवती जो प्रथम बार रजस्वला हुई हो।
नवकुमारी पुं० (सं) नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ।
नवखंड पुं० (सं) पृथ्वी के नौखण्ड या विभाग।
नवग्रह पुं० (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रह—सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु।
नवछावरि स्त्री० (हि) न्योछावर।
नवजात वि० (सं) जो अभी पैदा हुआ हो।
नवतन वि० (हि) नवीन।
नवदुर्गा स्त्री० (सं) नौरात्र में पूजी जाने वाली नौ-दुर्गाएँ।
नवद्वार पुं०(सं) शरीर के नाक, कान आदि नौ द्वार
नवधा अव्य० (सं) १-नौ प्रकार से। २-नौ भागों या खण्डों में।
नवधा-भक्ति स्त्री० (स) नौ प्रकार की भक्ति। यथा—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।
नवन पुं० (हि) नमन।
नवना क्रि० (हि) १-झुकना। २-नम्र होना।
नवनि स्त्री० (हि) १-नवने या झुकने की क्रिया या भाव। २-नम्रता।
नवनिधि स्त्री० (सं) १-कुबेर का खजाना। २-नौ प्रकार की निधियाँ—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द और नील।
नवनी स्त्री० (सं) ताजा मक्खन।
नवनीत पुं० (सं) मक्खन।
नवनीतक पुं० (सं) १-घृत। २-मक्खन।
नव-प्रसूत वि० (सं) नव-जात।
नव-प्रसूता स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके अभी बच्चा हुआ हो।
नव-भुज पुं० (सं) रेखागणित में वह क्षेत्र जिसमें नौ भुजाएँ हों। (नौनेगन)।
नवम वि० (हि) गिनती में नौ के स्थान पर आने वाला
नवमल्लिका स्त्री० (सं) चमेली।
नवमांश पुं० (सं) नवाँ भाग।
नवमालिका स्त्री० (स) १-एक वर्णवृत्त। २-एक तरह की चमेली।
नवमालिनि स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त।
नवमी स्त्री० (हि) किसी पक्ष की नवीं तिथि।
नव-युग पुं० (सं) ऐसा समय जिसमें पुरानी बातें प्रायः समाप्त होकर नवीन बातें प्रचलित हो रही हों
नवयुवक पुं० (सं) [स्त्री० नवयुवती] तरुण।
नव-यौवन पुं० (सं) चढ़ती जवानी।
नव-यौवना स्त्री० (सं) युवती। चढ़ती जवानी वाली स्त्री।
नवरंग क्रि०(हि) १-सुन्दर। २-नये ढङ्ग का। नवेला
नवरत्न पुं० (सं) १-मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। २-गले में पहनने का उक्त नौ रत्नों का हार। ३-नौ मसालों से युक्त चटनी।
नवरस पुं० (सं) काव्य के नौ रस-शृङ्गार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शान्त।
नवरात्र पुं० (सं) १-प्राचीन काल का एक यज्ञ, जो नौ दिन में समाप्त होता था। २-चैत्र सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें लोग नवदुर्गा का व्रत, घट स्थापन और पूजन आदि करते हैं।
नवल वि० (सं) [स्त्री० नवला] १-नया। २-सुन्दर। ३-नवयुवक। ४-शुद्ध।
नवल-किशोर पुं० (सं) श्रीकृष्णचन्द्र।
नवल-वधू स्त्री० (सं) मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक।
नवला स्त्री० (सं) नवयुवती स्त्री।
नववर, नववरि स्त्री० (हि) न्योछावर।
नव-वर्ष पुं० (सं) नया साल।
नवशिक्षित पुं० (सं) १-नौसिखुआ। २-जिसने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की हो।

नव-सत पुं० (हि) सोलह शृङ्गार (नव और सात)।
नवसर वि० (हि) नयी उम्र का। पुं० नौ लड़ों का हार।
नव ससि पुं० (स) दूज का चाँद। नया चाँद।
नव-सात पुं० (हि) सोलह शृङ्गार।
नवा वि० (हि) नया।
नवाई वि० (हि) नया। स्त्री० नम्रता।
नवागत वि० (स) नया नया आया हुआ।
नवाज वि० (फा) कृपालु।
नवाजना क्रि० (हि) कृपा करना।
नवाजिश वि० (फा) कृपा।
नवाड़ा पुं० (देश) १-एक तरह की छोटी नाव। २-धारा के बीच में नाव ले जाकर चक्कर देने की कलाबाज़ी। नावर।
नवाना क्रि० (हि) १-झुकाना। नम्र करना।
नवान्न पुं० (सं) घर में आया हुआ नया अन्न।
नवाब पुं० [अ० नव्वाब] १-मुसलमानों के शासन काल में किसी बड़े प्रदेश या सूबे के शासन के लिए नियुक्त राज्याधिकारी। २-मुसलमान रईसों की एक उपाधि। वि० १-बड़े ठाठबाट से रहने वाला। २-अपव्ययी।
नवाबी स्त्री० (हि) १-नवाब का पद या काम। २-नवाबों का शासन काल। ३-नवाबों के समान अमीरी।
नवाभ्युत्थान पुं० (सं) १-पुनः फिर से होने वाला उत्थान। २-कलाकौशल और विद्याओं का आधुनिक ढंग पर होने वाला उत्थान। (रिनैसेन्स)।
नवाह वि० (स) नौ दिन में समाप्त किया जाने वाला।
नवीकरण पुं० (स) १-फिर से नया कर देना। (रिनोवेशन)। २-जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो, उसे फिर से आगे के लिए वैध या नियमित करना। (रिन्यूअल)।
नवीन वि० (स) १-नया। २-अपूर्व। ३-जो पहले-पहल या मूल रूप में बना हो। (ओरिजनल)।
नवीनतम वि० (स) जो अभी बना, निकला, प्रस्तुत या विदित हुआ हो। (लेटेस्ट)।
नवीनता स्त्री० (सं) नवीन या नया होने का भाव। नूतनता।
नवीनभाव पुं० (स) नवीन या नया होने का भाव
नवीनीकरण पुं० (सं) नवीन या नई विचारधारा के अनुसार करने की क्रिया।
नवीस पुं० (फा) लिखने वाला।
नवीसी स्त्री० (फा) लिखाई।
नवेद स्त्री० (हि) निमन्त्रण।
नवेला वि० (हि) [स्त्री० नवेली] १-नया। २-युवक
नवोढ़ा स्त्री० (सं) १-बहू। २-युवती स्त्री। ३-लज्जा तथा भय के कारण नायक के पास जाने में संकोच करने वाली नायिका।
नवोत्थान पुं० (स) नवाभ्युत्थान।
नवोत्थित वि० (स) जिसका अभी उत्थान हुआ हो।
नवोदक पुं० (स) १-प्रथम वर्षा का पानी। २-खोदते समय धरती में से पहले पहल निकलने वाला पानी।
नवोदित वि० (स) १-जो अभी हाल में उत्पन्न हुआ हो। २-जो अभी अस्तित्व में आया हो।
नवोद्भाव, नवोद्भावन पुं० (स) उद्भावन। (इनवेशन)।
नव्य वि० (स) नया।
नशना क्रि० (हि) नष्ट होना।
नशा पुं० (स) १-वह मानसिक अवस्था जो शराब, भाँग आदि पीने से होती है। २-मादक द्रव्य। ३-धन, विद्या, प्रभुत्व (अधिकार) आदि का घमंड।
नशाखोर पुं० (फा) किसी तरह के नशे का सेवन करने वाला।
नशाना क्रि० (हि) १-नष्ट होना या करना। २-खोजना।
नशावन वि० (हि) नाशक।
नशीन वि० (फा) बैठने वाला।
नशीनी स्त्री० (फा) बैठने की क्रिया या भाव।
नशीला वि० (फा) १-मादक। २-जिस पर नशे का प्रभाव हो।
नशेड़ी वि० (हि) नशा करने वाला।
नशेबाज पुं० (फा) नशाखोर।
नशोहर वि० (हि) नाशक।
नश्तर पुं० (फा) फोड़े चीरने का एक प्रकार का छोटा और तेज चाकू।
नश्वर वि० (स) नष्ट हो जाने वाला।
नश्वरता स्त्री० (स) नश्वर होने का भाव।
नष पुं० (हि) नख।
नषत पुं० (हि) नक्षत्र।
नष-शिष पुं० (हि) नखशिख।
नष्ट वि० (स) १-जिसका नाश हो गया हो। २-जो दिखाई न दे। ३-अधम। ४-निष्फल। ५-मृत। ६-छन्दशास्त्र में मात्रिक छन्दों या वर्ण प्रस्तार में यह जानने की प्रक्रिया कि उनके किसी अवयव का कौन से भेद का क्या रूप है।
नष्ट चेतन, नष्टचेष्ट वि० (स) मूर्च्छित।
नष्ट निधि पुं० (स) दिवालिया।
नष्ट प्रभा वि० (स) तेजरहित। कांतिहीन।
नष्टभ्रष्ट वि० (स) बरबाद। चौपट।
नष्टा स्त्री० (स) १-वेश्या। २-व्यभिचारिणी।
नसंक वि० (हि) निःशङ्क।
नस स्त्री० (हि) स्नायु। नाड़ी।

नसकटा पुं० (हि) नपुंसक।
नसतरग पुं० (हि) शहनाई जैसा एक बाजा।
नसना क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-भागना।
नसल स्त्री० (अ) वंश।
नसवार स्त्री० (हि) सुँघनी।
नसा स्त्री० (सं) नाक।
नसाना क्रि० (हि) १-नष्ट करना। २-दे० 'नसना'।
नसावन वि० (हि) १-भगाने वाला। २-नष्ट करने वाला।
नसी वि० (हि) नाक वाला।
नसीत स्त्री० (हि) नसीहत।
नसीब पु० (अ) भाग्य।
नसीब-जला वि० (अ+हि) अभागा।
नसीबवर वि० (अ) भाग्यशाली।
नसीबा पुं० (हि) नसीब। भाग्य।
नसीहत स्त्री० (अ) १-सीख। २-उपदेश। ३-अच्छी राय।
नसेनी स्त्री० (हि) सीढ़ी।
नस्तित वि० (सं) नत्थी किया हुआ। (फाइल्ड)।
नस्तित-पत्रसमूह पुं० (सं) किसी तार या स्थान पर नत्थी कर रखे गये पत्र आदि। (फाइलें)।
नस्तिपंजी स्त्री० (सं) वह पंजी जिसमें नत्थी करके पत्र आदि रखते हैं।
नस्तिपत्री स्त्री० (सं) वह दोहरा मोटा कागज जिसमें नत्थी करके महत्वपूर्ण कागज पत्र रखे जाते हैं। (फाइल)।
नस्ती स्त्री० दे० 'नत्थी'।
नस्य पुं० (स) सुँघनी।
नस्याधार पुं० (सं) नासदानी।
नस्ल स्त्री० (अ) १-कुल। २-जाति।
नस्वर वि० (हि) नश्वर।
नहँ, नह पु० (हि) नख।
नहछू पुं० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते और मँहदी आदि लगाई जाती है।
नहन पुं० (देश) पुरवट खींचने की मोटी रस्सी।
नहना क्रि० (हि) काम में तत्पर करना। जोतना।
नहनि स्त्री० (हि) नहन।
नहनी स्त्री० (हि) नख काटने का औजार।
नहर स्त्री० (फा) सिंचाई या यातायात के विचार से किसी नदी या जलाशय से निकाला गया जलमार्ग
नहरनी स्त्री० (हि) नाखून काटने का औजार।
नहरी स्त्री० (फा) नहर के पानी से सींची जाने वाली भूमि। वि० नहर सम्बन्धी।
नहरुआ, नहरुवा, नहरू पुं०(देश) एक रोग जिसमें घाव में से सूत जैसा लम्बा कीड़ा निकलता है।
नहला पुं० (हि) नौ बूटियों वाला ताश का पत्ता।
नहलाई स्त्री० (हि) १-नहलाने की क्रिया या भाव २-नहलाने का नेग या मजदूरी।
नहलाना, नहवाना क्रि० (हि) किसी को स्नान में प्रवृत्त करना।
नहान पुं० (हि) १-स्नान। २-स्नान का पर्व।
नहाना क्रि० (हि) १-स्नान करना। २-किसी तरल पदार्थ से शरीर का तर होना।
नहानी स्त्री० (हि) १-रजस्वला स्त्री। २-स्त्री का रजस्वला होना।
नहार वि०(फा) सवेरे से बिना खाया-पीया। बासी-मुँह।
नहारी स्त्री० (फा) १-जलपान। कलेवा। २-शोरबे-दार सालन (मुसलमान)।
नहारू पु० (हि) सिंह।
नहिं, नहिन अव्य० (हि) नहीं।
नहिअन पुं० (हि) पैर की छोटी उँगली में पहनने का एक प्रकार का गहना जो बिछिया की तरह का होता है।
नहिक वि०(हि) १-न मानने वाला। २-किसी वस्तु, तत्व या बात से रहित। ३-अवरोधक। ४-जिसमें मूल में छाया की जगह आकाश और प्रकाश के स्थान पर छाया हो। पुं० १-नकारात्मक बात। २-सकारात्मक पक्ष का खंडन या विरोध। ४-छाया-चित्र में उलटा प्रतिबिम्ब जिससे सीधी प्रतिकृतियां बनती हैं।
नहीं अव्य० (हि) एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृत सूचित करने के लिए होता है।
नहूसत स्त्री० (अ) मनहूसी।
नाँ अव्य० (हि) नहीं।
नाँउँ पुं० (हि) नाम।
नाँउँगाँउँ पुं० (हि) नाम और पता।
नांगा वि० (हि) नङ्गा। पुं० नागा साधु। स्त्री० छुट्टी
नांघना क्रि० (हि) लाँघना।
नांट स्त्री० (हि) इनकार।
नांटना क्रि० (हि) इनकार करना।
नांठना क्रि० (हि) नष्ट होना।
नांद स्त्री० (हि) चौड़े मुँह का मिट्टी का बड़ा बरतन।
नांदना क्रि० (हि) १-शब्द करना। २-छींकना। ३-प्रसन्न होना।
नांदी स्त्री० (सं) १-अभ्युदय। २-मङ्गलाचरण।
नांदीघोष पुं० (सं) भेरी आदि का घोष।
नांदीमुख, नांदीश्राद्ध पुं० (सं) १-एक प्रकार का श्राद्ध जो विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाता है। २-वे पूर्वज, जिनका श्राद्ध किया जाय या जिनके लिए तर्पण किया जाय।
नांयँ पुं० (हि) नाम। अव्य० नहीं।
नाँवँ पु० (हि) नाम।

नाँह पुं० (हि) स्वामी। नाथ। अव्य० नहीं।
ना अव्य० (सं) नहीं।
नाइँ पु० (हि) नाम।
नाइक पु० (हि) नायक।
नाइन स्त्री० (हि) १-नाई की पत्नी। २-नाई जाति की स्त्री।
नाइब पु० (हि) नायब।
नाईं स्त्री० (हि) की भाँति। की तरह।
नाई पु० (हि) हज्जाम।
नाउँ पु० (हि) नाम।
नाउ स्त्री० (हि) नाव।
नाउन स्त्री० (हि) नाइन।
नाऊ पु० (हि) नाई।
नाक स्त्री० (हि) १-नासिका। २-रेंट। ३-प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु। ४-प्रतिष्ठा। पुं० (हि) १-एक जल-जन्तु। २-नाका। पु० (सं) १-स्वर्ग। २-आकाश। ३-इन्द्र।
नाकड़ा पु० (हि) नाक का एक रोग।
नाकना क्रि० (हि) १-लाँघना। २-मात करना।
नाकपति पुं (स) इन्द्र।
नाका पुं० (हि) १-मुहाना। २-वह प्रमुख स्थान जहाँ से किसी बस्ती में जाने के मार्ग का आरम्भ होता होता है। ३-किसी नगर, दुर्ग, क्षेत्र आदि का प्रवेश स्थल। ४-चौकी। ५-सुई का छेद।
नाकाबंदी स्त्री० (हि) १-किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट। २-फाटक आदि का छेका जाना।
नाकुल पु० (हि) नकुल। नेवला।
नाकेदार पु० (हि) १-नाके या फाटक पर रहने वाला पहरेदार या सिपाही। २-वह अधिकारी या कर्मचारी जो आने-जाने के प्रधान-प्रधान स्थानों पर किसी प्रकार का कर आदि वसूल करने के लिए नियुक्त हो।
नाकेबंदी स्त्री० (हि) नाकाबन्दी।
नाकेश, नाकेश्वर पु० (सं) इन्द्र।
नाक्षत्र, नाक्षत्रिक वि० (सं) नक्षत्र सम्बन्धी।
नाखना क्रि० (हि) १-नष्ट करना। २-फेंकना। ३-डालना। ४-चलाना। ५-रखना। ६-लाँघना।
नाखुश वि० (फा) नाराज। अप्रसन्न।
नाखून पु० (फा) उँगलियों के सिरे पर चिपटा और कड़ा आवरण। नख।
नाखून-तराश पुं० (फा) नाखून काटने का औजार।
नाखूना पु० (फा) आँख का एक रोग जिसमें सफेद झिल्ली पड़ जाती है।
नाग पु० (स) [स्त्री० नागिन] १-साँप। २-मनुष्याकृति पातालवासी सर्प जिनकी गणना देवयोनि में होती है। ३-हिमालय की एक प्राचीन जाति। ४-हाथी। ५-राँगा। ६-सीसा नामक धातु। ७-पान। ८-बादल। ९-आठ की संख्या। १०-शरीर के वायुओं में से तीसरे वायु का नाम।
नागकन्या स्त्री० (सं) नाग जाति की कन्या, जो बहुत सुन्दर मानी गई है।
नागकेसर पु० (हि) वृक्ष विशेष जिसके फूल औषध, मसाले, रंग आदि के काम आते हैं।
नाग झाग पुं० (हि) अफीम।
नागदंत, नागदंतक पुं० (सं) १-हाथी दाँत। २-दीवार में गड़ी हुई खूँटी।
नागधर पुं० (सं) शिव।
नागनग पुं० (सं) गजमुक्ता।
नागना क्रि० (हि) नागा करना।
नागपंचमी स्त्री० (सं) श्रावण शुक्ला पचमी।
नागपति पुं० (स) १-वासुकी। २-ऐरावत।
नागपर्णी स्त्री० (सं) पान।
नागपाश पुं० (सं) १-ऐन्द्रिजालिक फन्दा जो युद्ध-काल में शत्रुओं को फँसाने के लिए व्यवहृत किया जाता था। २-वरुण के अस्त्र या फन्दे का नाम। ३-वह कठिन सकट जिससे सहज छुटकारा न हो। ४-शत्रुओं को बाँधने का एक प्राचीन अस्त्र।
नागफनी स्त्री० (हि) थूहर की जाति का एक पौधा जिसके काँटेदार पत्ते होते हैं।
नागफाँस पु० (हि) नागपाश।
नागबंध पु० (सं) साँप के समान लिपटाकर बाँधने का एक ढङ्ग।
नागबल पु० (सं) भीम। वि० हाथी के समान बल वाला।
नागबेल स्त्री० (हि) पान।
नागयज्ञ पु०(सं) एक यज्ञ जिसमें जनमेजय ने नागों का पूर्ण विनाश किया था (महाभारत)।
नागर वि० (सं) १-नगर सम्बन्धी। २-नगर-निवासियों से सम्बन्ध रखने वाला। ३-चतुर। पु० [स्त्री० नागरि, नागरी] १-नगर का निवासी। २-भला आदमी।
नागरता स्त्री० (स) १-नागरिकता। २-सभ्यता। ३-चतुराई।
नागरनट पु० दे० 'नट-नागर'।
नागर-मोथा पु० (हि) एक तरह की घास।
नागरयुद्ध पु०(स) किसी देश के लोगों में होने वाली आपसी लड़ाई। गृहयुद्ध। (सिविल-वार)।
नागर-विवाह पु० (स) नागरिक के [illegible] विवाह, जो धार्मिक बन्धनों के [illegible] (सिविल-मैरेज)।
नागराज पु० (सं) १-[illegible]
नागरिक वि० (स) १-[illegible] रहने वाला।

नागरिक-उड्डयन-विभाग पु० (सं) नागरिकों की हवाई यात्रा आदि की देख-रेख करने वाला विभाग (सिविल-ऐवियेशन-डिपार्टमेंट)।
नागरिकता स्त्री० (सं) नगर के या नागरिक अधिकारों से युक्त होने की अवस्था। (सिटीज़नशिप)
नागरिकताधिगम पु० (सं) नागरिक अधिकारों में वृद्धि करने की अवस्था।
नागरिकतापहार पु० (सं) नागरिक या सार्वजनिक अधिकारों की क्षति। (लॉस-ग्राफ-सिटीजन-शिप)।
नागरिकतावाप्ति पु० (सं) नागरिकताधिगम।
नागरिकत्व पु० (सं) नागरिकता।
नागरिकत्व-प्रदान पु० (सं) नागरिक प्रदान करने या देने की क्रिया, भाव या अवस्था। (डिनाईजेशन)।
नागरिक-शास्त्र पु० (सं) वह शास्त्र जिसमें व्यक्ति समाज तथा देश के हित के विचार से, संस्कृति, परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए वास्तविक उत्तम और सद्जीवन व्यतीत करने का विचार होता है। (सिविक्स)।
नागरिकाधिकार पु० (सं) नागरिकता। २-नगर-निवासियों से सम्बन्ध रखने वाले सार्वजनिक स्वत्व या अधिकार। (सिविल-राइट्स)।
नागरिकाधिकार-विषय पु० (सं) नागरिक अधिकार का प्रश्न। (सिविल राइटस केस)।
नागरिकापादन पु० (सं) नागरिक अधिकार देने की क्रिया या अवस्था। (डिनाईजेशन)।
नागरिकीकरण पु० (सं) १-नागरिक या देशीय बनाने की क्रिया। २-राष्ट्रीयकरण। (नेशनलाईजेशन)।
नागरी स्त्री० (सं) १-नगर की रहने वाली स्त्री। २-भारत की वह प्रमुख लिपि जिसमें संस्कृत और हिन्दी लिखी जाती है। ३-चतुर स्त्री।
नागलोक पु० (सं) पाताल।
नागवल्लरी, नागवल्ली स्त्री० (सं) पान।
नागवार वि० (फा) १-असह्य। २-अप्रिय।
नागा पु० (हि) १-नग्न। २-नंगे रहने वाले साधु ३-दसनामी गुसाइयों की एक शाखा। ४-वैरागियों की एक शाखा। ५-एक जंगली जाति जो आसाम की पहाड़ियों में रहती है। ६-अन्तर। बीच। ७-अनुपस्थिति।
नागारि पु० (सं) १-गरुड़। २-मयूर। ३-नेवला।
नागार्जुन पु० (सं) एक बौद्ध महात्मा।
नागाशन पु० (सं) १-गरुड़। २-मयूर। ३-सिंह।
नागिन स्त्री० (हि) १-साँप की मादा। सर्पिणी। २-रोयें की वह लम्बी भौंरी जो पीठ या गरदन पर होती है। ३-इस तरह की भौंरी वाली स्त्री।
नागेंद्र पु० (सं) १-शेष, वासुकी आदिनाग। २-सर्पों का राजा। ३-गजेंद्र।
नागेसर पु० (हि) नागकेसर।
नागौर पु० (हि) राजस्थान का एक नगर।
नागौरी वि०(हि)१-नागौर का। २-नागौर का अच्छी नस्ल की (गाय या बैल)। स्त्री० एक तरह की खस्ता पूरी।
नाघना क्रि० (हि) लाँघना।
नाच पु० (हि) १-नाचने की क्रिया या भाव। २-नाचने का उत्सव।
नाचकूद स्त्री० (हि) १-उछलकूद। २-नाच-तमाशा।
नाचघर पु० (हि) वह स्थान जहाँ नाच होता हो। नृत्यशाला।
नाचना क्रि० (हि) १-नृत्य करना। २-प्रसन्नतापूर्वक उछलना-कूदना। ३-चक्कर लगाना। ४-दौड़ना धूपना। ५-काँपना। ६-क्रोध में आकर उछलना-कूदना।
नाच-महल पु० (हि) नाचघर।
नाचरंग पु० (हि) आमोदप्रमोद।
नाचीज वि० (फा) १-तुच्छ। २-निकम्मा।
नाज पु० (फा० नाज़) १-नखरा। २-घमंड। पु० (हि) अन्न। अनाज।
नाजनी स्त्री० (फा) सुन्दर स्त्री।
नाजबरदारी स्त्री० (फा) नाज-नखरे सहना।
नाजायज वि० (अ) १-अवैध। २-अनुचित।
नाजिम पु० (अ) १-मुसलमानों के शासनकाल में किसी देश का प्रबन्धकर्त्ता। २-आजकल किसी न्यायालय सम्बन्धी किसी कार्यालय का प्रबन्धकर्त्ता वि० प्रबन्धकर्त्ता।
नाजिर पु० (अ) १-निरीक्षक। २-कचहरी के लिपि का अधिकारी। ३-वेश्याओं का दलाल।
नाजी पु० [जर० नात्सी] १-जर्मनी का राष्ट्रीय साम्यवादी दल जिसका नेता हिटलर था। २-इस दल का सदस्य।
नाजीवाद पु० (हि) जर्मनी का राष्ट्रीय साम्यवादी दल जिसकी यह घोषणा है कि जर्मनी इस देश की पवित्र आर्य सन्तति के लिए है और देश के प्रत्येक व्यक्ति की निजी संपत्ति देश के हित के लिए समर्पण है। (नाजीइज्म)।
नाजुक वि० (फा) १-कोमल। २-पतला। सूक्ष्म। ४-गूढ़। ५-तनिक से आघात से टूट-फूट जाने वाला ५-जोखिम का।
नाजुक-खयाल वि० (फा) अच्छे विचारों वाला।
नाजुक-दिमाग वि० (फा) १-चिड़चिड़ा। २-घमंडी
नाजुक-बदन वि० (फा) कोमल और सुकुमार शरीर का।
नाजुक-मिजाज वि० (फा) १-तुनक-मिजाज। २-घमंडी।

नाजो, नाजो स्त्री० (हि) १-लाड़ली। दुलारी। २-प्रियतमा। ४-कोमलांगी।

नाट पु० (सं) १-नृत्य। २-नकल। स्वांग। ३-एक राग। पुं० (हि) काँटे या वाण के फल की वह फाँस जो शरीर में टूट-टूट कर रह जाती है और दर्द करती है।

नाटक पु० (सं) १-रङ्गशाला में घटनाओं का प्रदर्शन २-अभिनय-ग्रन्थ। दृश्यकाव्य।

नाटककार पुं० (सं) किसी दृश्यकाव्य या नाटक का लिखने वाला।

नाटकशाला स्त्री० (फा) वह स्थान जहाँ नाटक होता है।

नाटकावतार पु० (सं) किसी नाटक के अभिनय के बीच अन्य नाटक का अभिनय। अन्तर्नाटक।

नाटकिया, नाटकी पुं० (हि) १-नाटक या अभिनय करने वाला व्यक्ति। २-नाटक करके जीविका चलाने वाला।

नाटकीय वि० (सं) १-नाटक सम्बन्धी। २-नाटक अथवा नटों जैसा।

नाटना क्रि० (हि) १-कह कर मुकर जाना। २-अस्वीकार करना।

नाटा वि० (हि) [स्त्री० नाटी] कम ऊँचा।

नाटिका स्त्री० (सं) चार अङ्कों वाला दृश्य-काव्य।

नाट्य पुं० (सं) १-अभिनय। २-अभिनय कला। ३-नृत्य। ४-नृत्यकला। ५-अभिनेता की वेशभूषा।

नाट्यकार पुं० (सं) १-नाटक करने वाला नट। २-नाटककार।

नाट्यमंदिर पुं० (सं) नाट्यशाला।

नाट्यरासक पुं० (सं) एक प्रकार का दृश्य-काव्य या रूपक जिसमें केवल एक अङ्क होता है। एकांकी नाटक।

नाट्यशाला स्त्री० (सं) अभिनय करने का स्थान या घर

नाट्यशास्त्र पु० (सं) वह शास्त्र जिसमें अभिनय आदि का विवेचन हो।

नाट्यागार पुं० (सं) नाट्यशाला।

नाट्याचार्य पुं० (सं) नृत्य, अभिनय आदि की शिक्षा देने वाला।

नाट्योचित वि० (सं) अभिनय करने योग्य।

नाठ पुं० (हि) १-नाश। २-अभाव।

नाठना क्रि० (हि) नष्ट होना या करना।

नाठा वि० (हि) नष्ट।

नाड़ स्त्री० (हि) गर्दन। ग्रीवा।

नाड़ा पु० (हि) १-इजारबन्द। नीवी। २-मौली। ३-मलवाली आँत।

नाड़ी स्त्री० (हि) १-शरीर में की रक्तवाहिनी नलियाँ २-नब्ज़। ३-काल का एक मान। ४-हठ-योग में अनुभूति और श्वास-प्रश्वास सम्बन्धी नालियाँ। ५-हॉरी।

नाड़ीचक्र पु० (सं) हठयोग के मतानुसार नाभि-देश में स्थित मुर्गी के अण्डे के आकार का चक्र विशेष।

नाड़ीपरीक्षा स्त्री० (सं) नब्ज़ देखना।

नाड़ीमण्डल पुं० (सं) विषुवत् रेखा।

नाड़ीयन्त्र पु० (सं) शल्य चिकित्सा में एक चीर फाड़ का औज़ार जो शरीर की नाड़ियों अथवा स्रोतों में घुसी हुई वस्तु को बाहर निकालने के काम में आता था।

नाड़ीव्रण पु० (सं) नासूर।

नाड़ीसंस्थान पु० (सं) नाड़ियों का जाल।

नात स्त्री० (अ० नअत) १-प्रशंसा। २-स्तुति-गीत। पु० (हि) १-नाता। २-सम्बन्ध। २-नातेदार।

नातरु, नातरु अव्य० (हि) नहीं तो। अन्यथा।

नाता पुं० (हि) सम्बन्ध। रिश्ता।

नातिन, नातिनी स्त्री० (हि) लड़की की लड़की।

नाती पु० (हि) [स्त्री० नातिनी, नातिन] लड़की का लड़का। दोहता।

नाते क्रि० वि० १-सम्बन्ध से। २-वास्ते। लिए।

नातेदार वि० (हि) सम्बन्धी। रिश्तेदार।

नात्सी पु० (अ) नाज़ी।

नाथ स्त्री (हि) १-नाथने की क्रिया या भाव। २-नकेल। ३-(नाक की) नथ। पु० (सं) १-प्रभु। २-स्वामी। ३-पति। ४-गोरखपन्थी साधुओं की एक उपाधि।

नाथना क्रि० (हि) १-बैल आदि की नाक छेदकर रस्सी डालना। २-किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या धागा डालना। ३-नत्थी करना। ४-लड़ी के रूप में जोड़ना।

नाथद्वारा पुं० (हि) राजस्थान राज्य के उदयपुर प्रदेश के अंतर्गत वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है।

नाद पुं० (सं) १-शब्द। २-संगीत। ३-वर्णों के उच्चारण में एक तरह का बाह्य प्रयत्न। ४-अव्यक्त शब्द।

[illegible]

नादारी स्त्री० (फा) गरीबी।

नादित वि० (सं) जिसमें नाद या शब्द उत्पन्न हो रहा हो।

नादिम वि० (फा) लज्जित।

नादिया पु० (हि) १-नन्दी। २-वह बैल जिसका प्रदर्शन करके जोगी भीख मांगते है।

नादिर वि० (फा) अद्भुत।

नादिरशाही स्त्री० (फा) १-मनमाने आदेश प्रचलित

नागरिक-उड्डयन-विभाग पु० (सं) नागरिकों की हवाई यात्रा आदि की देख-रेख करने वाला विभाग (सिविल-ऐवियेशन-डिपार्टमेंट)।
नागरिकता स्त्री० (सं) नगर के या नागरिक अधिकारों से युक्त होने की अवस्था। (सिटीजनशिप)
नागरिकताधिगम पु० (सं) नागरिक अधिकारों में वृद्धि करने की अवस्था।
नागरिकतापहार पु० (सं) नागरिक या सार्वजनिक अधिकारों की क्षति। (लॉस-आफ-सिटीजन-शिप)।
नागरिकतानाप्ति पु० (सं) नागरिकताधिगम।
नागरिकत्व पु० (सं) नागरिकता।
नागरिकत्व-प्रदान पु० (सं) नागरिक प्रदान करने या देने की क्रिया, भाव या अवस्था। (डिनाईजेशन)।
नागरिक-शास्त्र पु० (सं) वह शास्त्र जिसमें व्यक्ति समाज तथा देश के हित के विचार से, संस्कृति, परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए वास्तविक उत्तम और सद्जीवन व्यतीत करने का विचार होता है। (सिविक्स)।
नागरिकाधिकार पु० (सं) नागरिकता। २-नगर-निवासियों से सम्बन्ध रखने वाले सार्वजनिक स्वत्व या अधिकार। (सिविल-राइटस)।
नागरिकाधिकार-विषय पु० (सं) नागरिक अधिकार का प्रश्न। (सिविल राइटस केस)।
नागरिकापादन पु० (सं) नागरिक अधिकार देने की क्रिया या अवस्था। (डिनाईजेशन)।
नागरिकीकरण पु० (सं) १-नागरिक या देशीय बनाने की क्रिया। २-राष्ट्रीयकरण। (नेशनलाईजेशन)।
नागरी स्त्री० (सं) १-नगर की रहने वाली स्त्री। २-भारत की वह प्रमुख लिपि जिसमें संस्कृत और हिन्दी लिखी जाती है। ३-चतुर स्त्री।
नागलोक पु० (सं) पाताल।
नागवल्लरी, नागवल्ली स्त्री० (सं) पान।
नागवार वि० (फा) १-असह्य। २-अप्रिय।
नागा पु० (हि) १-नग्न। २-नंगे रहने वाले साधु ३-दसनामी गुसाइयों की एक शाखा। ४-वैरागियों की एक शाखा। ५-एक जंगली जाति जो आसाम की पहाड़ियों में रहती है। ६-अन्तर। बीज। ७-अनुपस्थिति।
नागारि पु० (सं) १-गरुड़। २-मयूर। ३-नेवला।
नागार्जुन पु० (स) एक बौद्ध महात्मा।
नागाशन पु० (सं) १-गरुड़। २-मयूर। ३-सिंह।
नागिन स्त्री० (हि) १-साँप की मादा। सर्पिणी। २-रोयें की वह लम्बी भौंरी जो पीठ या गरदन पर होती है। ३-इस तरह की भौंरी वाली स्त्री।
नागेंद्र पु० (सं) १-शेष, वासुकी आदिनाग। २-सर्पों का राजा। ३-गजेंद्र।
नागेसर पु० (हि) नागकेसर।
नागौर पु० (हि) राजस्थान का एक नगर।
नागौरी वि०(हि)१-नागौर का। २-नागौर का अच्छी नस्ल की (गाय या बैल)। स्त्री० एक तरह की खस्ता पूरी।
नाघना क्रि० (हि) लाँघना।
नाच पु० (हि) १-नाचने की क्रिया या भाव। २-नाचने का उत्सव।
नाचकूद स्त्री० (हि) १-उछलकूद। २-नाच-तमाशा।
नाचघर पु० (हि) वह स्थान जहाँ नाच होता हो। नृत्यशाला।
नाचना क्रि० (हि) १-नृत्य करना। २-प्रसन्नतापूर्वक उछलना-कूदना। ३-चक्कर लगाना। ४-दौड़ना धूपना। ५-काँपना। ६-क्रोध में आकर उछलना-कूदना।
नाच-महल पु० (हि) नाचघर।
नाचरंग पु० (हि) आमोदप्रमोद।
नाचीज वि० (फा) १-तुच्छ। २-निकम्मा।
नाज पु० (फा० नाज़) १-नखरा। २-घमंड। पु० (हि) अन्न। अनाज।
नाजनी स्त्री० (फा) सुन्दर स्त्री।
नाजबारदारी स्त्री० (फा) नाज-नखरे सहना।
नाजायज वि० (अ) १-अवैध। २-अनुचित।
नाजिम पु० (अ) १-मुसलमानों के शासनकाल में किसी देश का प्रबन्धकर्त्ता। २-आजकल किसी न्यायालय सम्बन्धी किसी कार्यालय का प्रबन्धकर्त्ता वि० प्रबन्धकर्त्ता।
नाजिर पु० (अ) १-निरीक्षक। २-कचहरी के लिपि का अधिकारी। ३-वेश्याओं का दलाल।
नाजी पु० [जर० नात्सी] १-जर्मनी का राष्ट्रीय साम्यवादी दल जिसका नेता हिटलर था। २-इस दल का सदस्य।
नाजीवाद पु० (हि) जर्मनी का राष्ट्रीय साम्यवादी दल जिसकी यह घोषणा है कि जर्मनी इस देश को पवित्र आर्य सन्तति के लिए है और देश के प्रत्येक व्यक्ति की निजी संपत्ति देश के हित के लिए समर्पण है। (नाजीइज्म)।
नाजुक वि० (फा) १-कोमल। २-पतला। सूक्ष्म। ४-गूढ़। ५-तनिक से आघात से टूट-फूट जाने वाला। ५-जोखिम का।
नाजुक-खयाल वि० (फा) अच्छे विचारों वाला।
नाजुक-दिमाग वि० (फा) १-चिड़चिड़ा। २-घ
नाजुक-बदन वि० (फा) कोमल और सुकुमार श का।
नाजुक-मिजाज वि० (फा) १-तुनक-मिजाज। घमंडी।

नाजो, नाजो स्त्री० (हि) १-लाड़ली। दुलारी। २-प्रियतमा। ४-कोमलांगी।

नाट पु० (सं) १-नृत्य। २-नकल। स्वांग। ३-एक राग। पु० (हि) काँटे या शस्त्र के फल की वह फाँस जो शरीर में टूट-टूट कर रह जाती है और दर्द करती है।

नाटक पु० (सं) १-रङ्गशाला में घटनाओं का प्रदर्शन २-अभिनय-ग्रन्थ। दृश्यकाव्य।

नाटककार पुं० (सं) किसी दृश्यकाव्य या नाटक का लिखने वाला।

नाटकशाला स्त्री० (फा) वह स्थान जहाँ नाटक होता है।

नाटकावतार पु० (सं) किसी नाटक के अभिनय के बीच अन्य नाटक का अभिनय। अन्तर्नाटक।

नाटकिया, नाटकी पुं० (हि) [illegible] करने वाला व्यक्ति। २-न[illegible] बताने वाला।

नाटकीय वि० (सं) १-नाटक सम्बन्धी। २-नाटक अथवा नटों जैसा।

नाटना क्रि० (हि) १-कह कर मुकर जाना। २-अस्वीकार करना।

नाटा वि० (हि) [स्त्री० नाटी] कम ऊँचा।

नाटिका स्त्री० (सं) चार अङ्कों वाला दृश्य-काव्य।

नाट्य पुं० (सं) १-अभिनय। २-अभिनय कला। ३-नृत्य। ४-नृत्यकला। ५-अभिनेता की वेशभूषा।

नाट्यकार पुं० (सं) १-नाटक करने वाला नट। २-नाटककार।

नाट्यमंदिर पुं० (सं) नाट्यशाला।

नाट्यरासक पुं० (सं) एक प्रकार का दृश्य-काव्य या रूपक जिसमें केवल एक अङ्क होता है। एकांकी नाटक।

नाट्यशाला स्त्री० (सं) अभिनय करने का स्थान या घर

नाट्यशास्त्र पु० (सं) वह शास्त्र जिसमें अभिनय आदि का विवेचन हो।

नाट्यागार पु० (सं) नाट्यशाला।

नाट्याचार्य पुं० (सं) नृत्य, अभिनय आदि की शिक्षा देने वाला।

नाट्योचित वि० (सं) अभिनय करने योग्य।

नाठ पु० (हि) १-नाश। २-अभाव।

नाठना क्रि०(हि) नष्ट होना या करना।

नाठा वि० (हि) नष्ट।

नाड़ स्त्री० (हि) गर्दन। ग्रीवा।

नाड़ा पु० (हि) १-इजारबन्द। नीवी। २-मौली। ३-मजबूत मोटी डोर।

नाड़ी स्त्री० (हि) १-शरीर में की रक्तवाहिनी नलियाँ २-नली। ३-काल का एक मान। ४-हठ-योग में अनुभूति और श्वास-प्रश्वास सम्बन्धी नालियाँ। ५-हंडी।

नाड़ीचक्र पु० (सं) हठयोग के मतानुसार नाभि-देश में स्थित मुर्गी के अण्डे के आकार का चक्र विशेष।

नाड़ीपरीक्षा स्त्री० (सं) नब्ज देखना।

नाड़ीमंडल पु० (सं) विषुवत् रेखा।

नाड़ीयंत्र पु० (सं) शस्त्र चिकित्सा में एक थोर प्रकार का औजार जो शरीर की नाड़ियों अथवा स्रोतों में घुसी हुई वस्तु को बाहर निकालने के काम में आता था।

नाड़ीव्रण पु० (सं) नासूर।

नाड़ीसंस्थान पु० (सं) नाड़ियों का जाल।

नात स्त्री० (अ० नअत) १-प्रशंसा। २-स्तुति-गीत। पु० (हि) १-नाता। ३-सम्बन्ध। २-नातेदार।

नातर, नातरु अव्य० (हि) नहीं तो। अन्यथा।

[illegible]

लड़का। दोहता।

नाते क्रि० वि० १-सम्बन्ध से। २-वास्ते। लिए।

नातेदार वि० (हि) सम्बन्धी। रिश्तेदार।

नात्सी पु० (ज) नाजी।

नाथ स्त्री (हि) १-नाथने की क्रिया या भाव। २-नकेल। ३-(नाक की) नथ। पु० (सं) १-प्रभु। २-स्वामी। ३-पति। ४-गोरखपन्थी साधुओं की एक उपाधि।

नाथना क्रि० (हि) १-बैल आदि की नाक छेदकर रस्सी डालना। २-किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या धागा डालना। ३-नत्थी करना। ४-लड़ी के रूप में जोड़ना।

नाथद्वारा पुं० (हि) राजस्थान राज्य के उदयपुर प्रदेश के अंतर्गत वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है।

नाद पु० (सं) १-शब्द। २-संगीत। ३-वर्णों के उच्चारण में एक तरह का बाह्य प्रयत्न। ४-अव्यक्त शब्द।

नादना क्रि०(हि) १-बजना या बजाना। २-गरजना।

नादली स्त्री० (हि) हौलदिली।

नादान वि० (फा) १-नासमझ। २-मूर्ख।

नादारी स्त्री० (फा) गरीबी।

नादित वि० (सं) जिसमें नाद का शब्द उत्पन्न हो रहा हो।

नादिम वि० (अ) लज्जित।

नादिया पु० (हि) १-नंदी। [illegible] बैल जिसको [illegible] प्रदर्शन करके जोगी भीख [illegible]

नादिर वि० (फा) अद्भुत। [illegible]

नादिरशाही स्त्री० (फा) १-[illegible]

करना। २-भारी अंधेर या अत्याचार। ३-निरंकुश शासन। वि० बहुत कठोर। अत्यन्त उग्र।
नादिहंद स्त्री० (फा) न देने वाला।
नादी वि० (हि) [स्त्री० नादिनी] १-शब्द करने वाला। २-बजाने वाला।
नादोट स्त्री० (हि) एक तरह की तलवार।
नाध स्त्री० (हि) १-नाधने की क्रिया या भाव। २-किसी बड़े काम का आयोजन और आरंभ।
नाधना क्रि० (हि) १-जोतना। २-लगाना। ३-गूँथना। ४-ठानना। ५-नाथना।
नान स्त्री० (फा) १-रोटी। २-तंदूर में पकाई जाने वाली एक तरह की मोटी खमीरी रोटी।
नानक पु० सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक महात्मा।
नानकपंथी, नानकशाही पु० (हि) गुरु नानक के मत का अनुयायी।
नान-खताई स्त्री० (फा) टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।
नान-बाई पु० (फा) रोटियाँ पका कर बेचने वाला।
नानस स्त्री० (हि) सास की माता।
नानसरा पु० (हि) सास का पिता।
नाना वि० (स) १-अनेक प्रकार के। २-अनेक। बहुत। पु० (हि) [स्त्री० नानी] माता का पिता। मातामह। क्रि० १-नम्र करना। २-नीचा करना। ३-डालना। ४-घुसाना। पु० (अ) पुदीना।
नानात्मवादी पु० (सं) सांख्यदर्शन का वह सिद्धांत जो आत्मा को अनेक मानता है।
नानिहाल पु० (हि) नाना-नानी का घर।
नानी स्त्री० (देश) माता की माता। मातामही।
ना-नुकर पु० (हि) इनकार।
ना-नुसारी वि० (हि) अनुसरण करने वाला।
नान्ह वि० (हि) १-नन्हा। छोटा। २-नीच। ३-महीन।
नान्हरिया वि० (हि) छोटा। नन्हा।
नान्हा वि० (हि) नन्हा। पु० छोटा बच्चा।
नाप स्त्री० (हि) १-परिमाण। माप। २-नापने का काम। ३-मानदंड।
नापजोख, नापतौल स्त्री० (हि) १-नापने तथा तौलने की क्रिया। २-नापकर या तौलकर निर्धारित की गयी मात्रा या परिमाण।
नापना क्रि० (हि) १-मापना। २-किसी स्थान या वस्तु की लम्बाई-चौड़ाई निश्चित करना।
नापसंद वि० (फा) १-जो पसंद न हो। २-अप्रिय।
नापाक वि० (फा) १-अशुद्ध। २-मैलाकुचैला।
नापित पु० (सं) बाल बनाने वाला। नाई।
नापित-शाला, नापितशालिका स्त्री० (स) वह स्थान जहाँ नाई से बाल बनवाये या छटवाये जाते हैं। चौरालय। (सैलून)।
नापैद वि० (हि) १-जो पैदा न हुआ हो। २-अप्राप्य ३-दुर्लभ। ४-क्लिष्ट।
नाफा पु० (फा) कस्तूरी की थैली जो मृग की नाभी में होती है।
ना-फ़रमाँ वि० (हि) बड़ों की बात न मानने वाला। बड़ों की आज्ञा का उल्लंघन करने वाला।
नाबदान पु० (फा) गन्दे पानी की नाली।
नाबदानी वि० (फा) १-नाबदान सम्बन्धी या नाबदान का। २-नाबदान जैसा गन्दा, त्याज्य और अस्पृश्य।
नाबदानी-पत्र पु० (फा+सं) वह समाचारपत्र जिसमें दूषित, अशिष्ट और अश्लील विचार हों और लोगों पर कीचड़ उछाला जाता हो। (गटर-प्रेस)।
ना-बालिग वि० (अ+फा) अ-वयस्क।
नाबूद वि० (फा) नष्ट। ध्वस्त।
नाभ स्त्री० (हि) नाभि।
नाभि स्त्री० (हि) १-पहिए का मध्य भाग। नाह। २-ढोंढी। धुन्नी। ३-कस्तूरी। ४-चक्रमध्य में वह भाग जिसमें सब ओर दूसरे भाग, अंग या वस्तुएँ आकर एकत्रित होती अथवा मिलती हैं। (न्यूक्लिअस)।
ना-मंजूर वि० (फा) अस्वीकृत। अमान्य।
नाम पु० (हि) १-किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध कराने वाला शब्द। संज्ञा। आख्या। (नेम)। २-ख्याति। यश। कीर्ति। ३-बहीखाते में का वह विभाग जिसमें किसी को दिया हुआ धन या माल लिखा जाता है।
नामक वि० (सं) नाम से प्रसिद्ध। नाम धारण करने वाला।
नामकरण पु० (स) नाम रखने का काम या संस्कार
नाम-कीर्तन पु० (सं) भगवान के नाम का जप या भजन।
नाम-कोष पु० (सं) नामवाचक संज्ञाओं का उल्लेख करने वाला कोष।
नामचढ़ाई स्त्री० (हि) दाखिल-खारिज। (म्यूटेशन)।
नामजद वि० (फा) १-नामांकित। २-प्रसिद्ध।
नामजदगी स्त्री० (फा) किसी चुनाव या काम आदि के लिए किसी का नाम निश्चित किया जाना।
नामतः क्रि०वि० (सं) नाम अथवा नाम के उल्लेख से
नामदार वि० (फा) प्रसिद्ध। नामी।
नामदेव पु० (सं) १-एक गुजराती प्रसिद्ध भक्त। २-एक महाराष्ट्र के प्रसिद्ध कवि।
नामधन पु० (सं) एक सङ्कर राग। (सङ्गीत)।
नामधराई स्त्री० (हि) बदनामी।
नामधातु स्त्री० (सं) व्याकरण में वह नाम या संज्ञा जो कुछ क्रियाओं में धातु का काम देती है।
नाम-धाम पु० (हि) नाम और पता।

नामधारी वि० (हि) नाम धारण करने वाला। नामक पु० सिक्ख साम्प्रदाय की एक शाखा।

नामधेय पु० (स) १-नामकरण। २-नाम। वि० नाम का।

नामनाथित पुं० (सं) परमेश्वर।

नामनिर्देश पुं० (स) नाम लेकर बतलाना।

नाम-निर्देशन-पत्र पु० (स) चुनाव में उम्मीदवार की हैसियत से भरा जाने वाला पत्र। (नॉमिनेशन-पेपर)।

नाम-निवेश पुं० (सं) किसी का नाम किसी कार्य विशेष के लिए नामावली या बही में लिखा जाना। (एनरोलमेंट)।

नाम निशान पु० (फा) चिह्न।

नाम-पट्ट पुं० (सं) वह पट्ट या तख्ता जिस पर किसी व्यक्ति, दुकान या संस्था आदि का नाम लिखा जाता है। (साइनबोर्ड)।

नाम-पत्र पुं० (सं) कागज का वह टुकड़ा जो किसी शीशी, बोतल या डिब्बे पर चिपका होता है जिससे यह जाना जाता है कि इस डिब्बे में क्या है? (लेबल)।

नामपत्रित वि० (सं) जिस पर नाम पत्र लगा हो।

नामबद्ध वि० (सं) नाम लिखा हुआ।

नामबोला पु० (हि) नाम जपने वाला।

नाममात्र वि० (हि) केवल नाम के लिए।

नाम-माला स्त्री० (सं) १-नामों की तालिका। २-एक प्रकार का कोष।

नाम-मुद्रा स्त्री० (सं) १-अंगूठी पर खोदा हुआ नाम २-नाम खुदी या लिखी हुई मुहर।

नामयज्ञ पु० (सं) नाम या धूम-धाम के लिए किया जाने वाला यज्ञ।

नाम राशि पुं० (स) एक ही नाम के दो व्यक्ति।

नामरासी पु० (हि) नामराशि।

नामर्द वि० (फा) १-नपुंसक। २-डरपोक।

नामर्दी स्त्री० (फा) १-नामर्द होने की अवस्था या भाव। २-नपुंसक होने का रोग। ३-कायरता।

नाम लिखाई स्त्री० (हि) १-किसी तालिका या पंजी में नाम लिखाना। (एनरोलमेंट)। २-इस प्रकार नाम लिखाने के लिए लिया या दिया जाने वाला धन।

नाम लेखन पुं० (सं) किसी तालिका, पंजी आदि में नाम लिखना।

नाम-लेखन शुल्क पुं० (स) वह धन या शुल्क जो नाम लिखने, भरती करने सदस्य बनाने में दिया जाए। (एनरोलमेंट फी)।

नामलेवा पु० (हि) १-नाम लेने वाला। २-उत्तराधिकारी।

नामवाचक वि०(सं) नाम बताने वाला। पु० व्यक्तिवाचक संज्ञा।

नामशेष वि० (स) १-जिसका केवल नाम रह गया हो। २-नष्ट। ३-मृत।

नामसत्य पु० (स) गुण रहित होने पर भी गुण-द्योतक नाम का कथन।

नामहँसाई स्त्री० (हि) बदनामी।

नामांक पु० (स) नामावली में प्रत्येक नाम के साथ लगा हुआ उसका क्रमांक। (रोल-नम्बर)।

नामांकन पुं० (स) किसी काम में या किसी निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए किसी का नाम लिखा जाना। (नॉमिनेशन)।

नामांकन-पत्र पु० (सं) किसी चुनाव में उम्मीदवार की हैसियत से दिया जाने वाला आवेदन पत्र। (नॉमिनेशन-पत्र)।

नामांकित वि० (सं) १-जिस पर नाम लिखा या खुदा हो। २-नामजद। (नॉमिनेटेड)। ३-प्रसिद्ध

नामांकिती पु० (हि) चुनाव, पद, कार्य आदि के लिए नामांकित किया गया व्यक्ति। (नॉमिनी)।

नामांतर पु०(स) एक ही व्यक्ति या वस्तु का दूसरा नाम। पर्याय।

नामांतरण पु० (स) दाखिल-खारिज। (म्यूटेशन)।

नामांतरण-करलिक पु०(स) दाखिल-खारिज करने वाला लिपिक या कर्मचारी। (म्यूटेशन-क्लर्क)।

ना-माकूल वि० (फा+अ) १-अयोग्य। २-अनुचित।

ना-मालूम वि० (फा) अज्ञात।

नामावली स्त्री० (स) १-नामों की सूची या तालिका २-रामनामी कपड़ी।

नामिक वि० (सं) नाममात्र का। (नॉमिनल)।

नामी वि० (हि) १-नाम वाला। २-प्रसिद्ध।

नामीगिरामी वि० (हि) प्रसिद्ध।

ना-मुनासिब वि० (फा) अनुचित।

ना-मुमकिन वि० (फा+अ) असम्भव।

नामूसी स्त्री० (अ) निन्दा।

नामोल्लेख पु० (सं) अ-संसदीय कार्य अथवा व्यवहार के विचार से अध्यक्ष द्वारा सदन में सदस्य के नाम का उल्लेख किया जाना।

नाम्ना वि० (सं) [स्त्री० नाम्नी] नाम वाला।

नाम्य वि० (स) १-झुकाने योग्य। २-लचीला।

नाय पुं० (हि) नाम। अव्य० (हि) नाव।

नायक पु० (सं) [स्त्री० नायिका] १-नेता। अगुआ २-स्वामी। ३-सरदार। ४-किसी काव्य या नाटक आदि का प्रमुख पात्र। ५-संगीतज्ञ। ६-एक वर्णवृत्त।

नायक-पोत पु० (सं) सेनापति की पताका धारण करने वाला तथा नेतृत्व करने वाला जहाज।

जो जहाजी बेड़े को समादिष्ट करता है। (फ्लैग-शिप।

नायका स्त्री० (हि) १–नायिका। २–वह वृद्धा स्त्री जो किसी वेश्या को अपने पास रख कर उससे पेशा कमवाती हो ३–कुटनी। दूती।

नायकी स्त्री० (सं) एक राग का नाम।

नायकी-कान्हड़ा पुं० (?) एक राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

नायकी-मल्लार पुं० (हि) संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

नायडू स्त्री० (?) कोचीन के उत्तर भाग में रहने वाली एक जाति।

नायन स्त्री० (हि) १–नाई या नापित की पत्नी। २–नाई जाति की स्त्री। ३–संपन्न या राज-घरानों में महिलाओं की वेणी गूंथने वाली स्त्री।

नायब वि० (फा) १–स्थानापन्न। २–सहायक। पुं० १–सहायक। २–मुनीम। मुख्त्यार।

नायाब पुं० (फ) १–दुष्प्राप्य। २–बहुत बढ़िया।

नायिका स्त्री० (सं) १–रूप-गुण सम्पन्न स्त्री। २–वह स्त्री जिसका चरित किसी काव्य में मुख्य रूप से वर्णित हो।

नायिकाधिप पुं० (सं) राजा।

नारंगी स्त्री० (हि) नीबू की जाति का एक पेड़ का फल। वि० पीलापन लिये कुछ लाल रङ्ग का।

नार स्त्री० (हि)) १–नाड़। गरदन। २–जुलाहों की ढरकी। नाल। ३–नारी। पुं० १–आँवल नाल। २–नाल। नाड़ा। ३–जूआ जोड़ने की रस्सी। ४–नर-समूह।

नारकी वि० (हि) १–नरक-भोगी। २–नरक में जाने योग्य।

नारकीय वि० (स) १–नरक सम्बन्धी। २–नरक-भोगी जैसा। ३–अति निकृष्ट।

नारद पुं० (सं) एक प्रसिद्ध देवर्षि।

नारना क्रि० (हि) ताड़ना। भाँपना।

नारा पुं० [अ० नअ्रः] अपनी माँग, शिकायत आदि की ओर ध्यान दिलाने के लिए बार बार बुलन्द की जाने वाली आवाज। (स्लोगन)। पुं० (हि) १–नाड़ा। इजारबन्द। २–नाला।

नाराइन पुं० (हि) नारायण। विष्णु।

नाराच पुं० (सं) १–लोहे का बाण। २–एक वर्णवृत्त

नाराज वि० (फा) अप्रसन्न। रुष्ट।

नाराजगी स्त्री० (फा) अप्रसन्नता।

नाराजी स्त्री० (फा) नाराजगी। अप्रसन्नता। वि० जो राजी न हो।

नारायण पुं० (सं) १–विष्णु। २–परमात्मा।

नारायणी स्त्री० (सं) १–दुर्गा। २–लक्ष्मी। गङ्गा। ४–श्रीकृष्ण की सेना का नाम। वि० नारायण सम्बन्धी।

नारि स्त्री० दे० नारी। स्त्री०(हि) १–समूह। २–भंडार आगार।

नारिकेर, नारिकेल पुं० (सं) नारियल।

नारिदा, नारिदान पुं० (हि) नाबदान।

नारियल पुं०(हि) १–खजूर की जाति का एक वृक्ष या उसका गोल फल। २–इस गोल फल का बना हुक्का

नारी स्त्री० (सं) स्त्री। स्त्री० (हि) १–नाड़ी २–नाली ३–हरिस में जूआ बाँधने की रस्सी या तसमा।

नारीत्व पुं० (सं) नारी या स्त्री होने का भाव। स्त्री-धर्म।

नारीधर्म पुं० (सं) १–स्त्रियों का धर्म। २–रजोदर्शन

नारू पुं० (देश) १–जूँ। २–नहरुआ नामक रोग।

नालंद, नालंदा पुं० विहार राज्य के अन्तर्गत एक प्राचीन स्थान जो बड़ा विश्वविद्यालय था।

नालंब वि० (हि) निरवलंब। असहाय।

नाल स्त्री०(सं) १–कलम आदि की डंडी। २–पौधे का डंठल। ३–जौ, गेहूँ आदि की लम्बी डंडी जिसमें बाल लगती है। ४–नली। नाल। ५–सुनारों की फूँकनी। ६–बन्दूक की नाल। ७–कलमों के भीतर से निकलने वाला रेशा। ८–रस्सी के आकार की वह नली जो एक ओर गर्भाशय से मिलती है तथा दूसरे गर्भस्थ बच्चे की नाभि से। स्त्री० (म) १–घोड़ों की टाप और जूतों की एड़ी में लगने वाला अर्ध चन्द्राकार लोहा। २–पत्थर का वह भारी कुण्डलाकार टुकड़ा जिसे कसरत करनेवाले उठाते हैं। ३–लकड़ी का वह चक्कर जो कूएँ की नींव में रखा जाता है। ४–वह धन जो जूए के अड्डे का मालिक जीतने वाले से अपने अंश रूप में लेता है।

नालकी स्त्री० (हि) एक तरह की खुली पालकी।

नालत, नालति स्त्री० (हि) लानत। धिक्कार।

नालबंद पुं० (हि) घोड़े की टाप या जूते की एड़ी में नाल जड़ने वाला आदमी।

नाला पुं० (हि) [स्त्री० नाली] १–वह प्रणाली अथवा जलमार्ग जिसमें वर्षा का पानी बहता है। २–गंदे जल के बहने का मार्ग। ३–नाड़ा।

ना-लायक वि० (फा०+अ) अयोग्य।

ना-लायकी स्त्री० (फा०+अ) अयोग्यता।

नालिश स्त्री० (फा) फरियाद। अभियोग।

नाली स्त्री० (हि) १–छोटा नाला। २–गंदा पानी बहने की मोरी। (ड्रेन)। ३–गहरी लकीर। ४–पतला नल। नली।

नावँ पुं० (हि) नाम।

नाव स्त्री० (हि) नौका। किश्ती। पोत।

नावक पुं० (फा) एक तरह का छोटा बाण। पुं०(हि) केवट। मांझी।

नावघाट पुं० (हि) नावों के ठहरने का स्थान।

वर मवाद निकलता रहता है। नाड़ीव्रण। (केन्सर)
नास्ति अव्य० (सं) अविद्यमानता। नहीं।
नास्तिक पुं० (सं) ईश्वर, वेद और परलोक को न मानने वाला। देवनिन्दक। (एथीस्ट)।
नास्तिकता पुं० (सं) ईश्वर और परलोक आदि में अविश्वास का सिद्धान्त। (एथीइज्म)।
नास्तिकदर्शन पुं० (सं) नास्तिकों का दर्शन-शास्त्र।
नास्तिक्य पुं० (सं) नास्तिकता।
नास्तिनद पुं० (सं) आम का पेड़। आम्रवृक्ष।
नास्तिमंत वि० (हि) निर्धन। गरीब। अकिञ्चन। निःस्व। (हैव-नॉट)।
नास्तिवाद पुं० (सं) नास्तिकों का तर्क। वह सिद्धान्त जिसमें ईश्वर का होना नहीं माना जाता।
नास्य वि० (सं) नासिका सम्बन्धी। नाक से उत्पन्न। पु० (सं) नकेल।
नाहु पुं० (हि) १-स्वामी। नाथ। २-स्त्री का पति। ३-पहिये का छेद। ४-बन्धन। फन्दा।
नाहक क्रि० वि० (फा, अ) निष्प्रयोजन। व्यर्थ। वृथा
नाहर पु० (हि) १-शेर। सिंह। २-नारु या नहरुवा नामक एक रोग।
नाहिनें अव्य० (हि) कभी नहीं। नहीं (है)।
नाहीं अव्य० (हि) कदापि नहीं।
नाहुष पुं० (सं) ययाति राजा की उपाधि। २-नहुषराज के पुत्र।
निंडिका स्त्री० (सं) मटर।
निंत क्रि० वि० (हि) दे० 'नित्य'।
निंद वि० (हि) दे० 'निंद्य'।
निंदक पुं० (सं) निन्दा करने वाला।
निंदन पुं० (सं) निन्दा करने का कार्य।
निंदना क्रि० (हि) निन्दा करना।
निंदनीय वि० (सं) १-निन्दा करने योग्य। २-बुरा। खराब। गर्ह्य।
निंदरिया स्त्री० (हि) निद्रा। नींद।
निंदा स्त्री० (सं) किसी की कल्पित या वास्तविक बुराई या दोष बतलाना। २-बदनामी। अपकीर्ति।
निंदाई स्त्री० (हि) दे० 'निराई'।
निंदाना क्रि० (हि) दे० 'निराना'।
निंदाप्रस्ताव पुं० (सं) शासन-सम्बन्धी किसी कार्य अथवा नीति के प्रति असन्तोष प्रकट करने तथा उसकी निन्दा करने के उद्देश्य से राज्य के प्रधान-मन्त्री या किसी सभा के अध्यक्ष के विरुद्ध लाया जाने वाला प्रस्ताव। प्रतिनिन्दन मत। (वोट आफ सेंशर)।
निंदासा वि० (हि) जिसे नींद आ रही हो। उनींदा।
निंदास्तुति स्त्री० (सं) निन्दा के बहाने स्तुति। व्याज-स्तुति।
निंदित वि० (सं) १-जिसकी निन्दा की गई हो। २-दूषित। बुरा।
निंदिया स्त्री० (हि) नींद। निद्रा। ऊँघ।
निंद्य वि० (सं) निन्दनीय। निन्दा करने योग्य।
निंब पुं० (सं) नीम का वृक्ष।
निंबरिया स्त्री० (हि) केवल नीम के पेड़ों का कुञ्ज।
निंबू, निंबुक पुं० (सं) कागजी नीबू।
निः अव्य० (सं) एक उपसर्ग दे० 'नि' 'निस्'।
निःकासित वि० (सं) बहिष्कृत।
निःक्षिप्त वि० (सं) फेंका हुआ। प्रक्षिप्त।
निःक्षेप पु (सं) १-रहने। २-अर्पण।
निःशंक वि० (सं) निर्भय। निडर।
निःशब्द वि० (सं) १-जिसमें और जहाँ शब्द न हो। २-जो शब्द न करे।
निःशलाक वि० (सं) एकान्त। निर्जन। सुनसान।
निःशल्या वि० (सं) प्रतिबन्धरहित। निष्कण्टक।
निःशुल्क वि० (सं) १-जिस पर फीस न ली जाय। २-जिससे शुल्क न लिया जाय। (फ्री ऑफ चार्ज-टैक्स)।
निःशरण वि० (सं) अरक्षित।
निःशेष वि० (सं) १-जिसमें कुछ भी शेष न हो। २-समाप्त। पूरा।
निःशोध्य वि० (सं) शोधा या साफ किया हुआ।
निःश्रयणी स्त्री० (सं) बाँस या काठ की सीढ़ी।
निःश्रेयस पुं० (सं) १-मोक्ष। २-कल्याण। ३-भक्ति ४-विज्ञान।
निःश्वसन पुं० (सं) साँस बाहर निकालना।
निःश्वास पुं० (सं) १-नाक से साँस बाहर निकालना। २-नाक से निकली हुई वायु।
निःषंधि वि० (सं) १-जिसमें कहीं छेद इत्यादि न हो। २-दृढ़।
निःषम अव्य० (सं) १-निन्दा। २-शोक। चिन्ता।
निःसंकल्प वि० (सं) इच्छारहित।
निःसंकोच क्रि० वि० (सं) बेधड़क। बिना किसी संकोच के।
निःसंग वि० (सं) १-जो मेल या सम्पर्क न रखता हो। २-निर्लिप्त। किसी से लगाव न रखने वाला ३-अकेला। जिसके साथ दूसरा कोई और न हो।
निःसंज्ञ वि० (सं) बेहोश। संज्ञाहीन।
निःसंतान वि० (सं) जिसके कोई बाल-बच्चा न हो।
निःसंदेह वि० (सं) सन्देहरहित। जिसमें कोई सन्देह न हो। अव्य० (सं) १-बिना किसी सन्देह के। २-जिसमें कोई सन्देह नहीं। बेशक। ठीक है।
निःसंधि वि० (सं) जिसमें कहीं दरार या छिद्र न हो। सन्धिरहित। मजबूत। दृढ़।
निसंपात वि० (सं) जहां अथवा जिसमें आना-जाना न हो। गमनागमन शून्य। २-रात।

निःसंशय वि० (सं) शंकारहित। सन्देहरहित।
निःसत्त्व वि० (सं) जिसमें कुछ भी सार न हो। निःसार।
निःसरण पुं० (सं) [वि० निःसृत] १-निकलना। २-निकास। निकलने का मार्ग। ३-कठिनाई से निकलने का उपाय। ४-निर्वाण। ५-मरण।
निःसार वि० (सं) दे० 'निःसत्त्व'।
निःसारण पुं० (सं) १-निकलना। २-निकलने का मार्ग। निकास।
निःसारा पुं० (सं) केले का पेड़।
निःसारित वि० (सं) बाहर निकला हुआ।
निःसीम वि० (सं) १-जिसकी कोई हद या सीमा न हो। २-बहुत अधिक। बहुत बड़ा।
निःसृत वि० (सं) निकला हुआ।
निःस्नेह स्त्री० (सं) अलसी। तीसी। वि० (सं) अनुराग रहित।
निःस्नेहा वि० (सं) १-प्रेमरहित। २-रसहीन। ३-जिसमें चिकनाहट न हो।
निःस्पन्द वि० (सं) स्पन्दनरहित। निश्चल।
निःस्पृह वि० (सं) १-जिसे कोई आकांक्षा न हो। २-जिसे कुछ पाने की इच्छा न हो। निर्लोभ।
निःस्वदन वि० (सं) जो रस रहित हो। निरस।
निःस्रव पुं० (सं) निकास। बचत। अवशेष।
निःस्राव पुं० (सं) १-निकाल। २-व्यय। खर्च।
निःस्व पुं० (सं) धनहीन। जिसके पास कुछ भी न हो। दरिद्र।
निःस्वन वि० (सं) निःशब्द। पुं०(सं) शब्द। ध्वनि।
निःस्वार्थ वि० (सं) १-जो अपने स्वार्थ या लाभ का ध्यान न रखता हो। २-(काम या बात) जो अपने लाभ के लिये न हो।
नि अव्य० (सं) एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगा कर निम्नार्थों में प्रयुक्त होता है १-समूह या समुदाय जैसे—निकाय, निकर। २-नीचपन जैसे-निपात। ३-आधिक्य जैसे—निकाम। ४-आज्ञा आदेश जैसे—निर्देश। ५-सामीप्य जैसे—निकट। ६-आश्रय जैसे—निलय। ७-अन्तर्भाव जैसे—नियोग। ८-नित्यता जैसे—निवेश। ९-दर्शन जैसे—निदर्शक इत्यादि। पुं० (सं) संगीत में निषादस्वर का संकेत।
निअर अव्य० (हि) [सं० निकट] पास। निकट। वि० (हि) तुल्य। समान।
निअराना क्रि०(हि) समीप पहुँचना। निकट आना।
निआऊ पुं० दे० 'न्याव'।
निआन पुं० दे० अन्त। निदान। परिणाम। अव्य० अन्त में। आखीर।
निआमत स्त्री० (अ) बहुमूल्य पदार्थ। अलभ्य पदार्थ
निआयी वि० (हि) निर्धनता। गरीबी।

निऊ अव्य० दे० 'निज'।
निकंटक वि० (हि) दे० 'निष्कंटक'।
निकंदन पुं० (सं) १-नाश। विनाश। २-वध।
निकंदना क्रि० (सं) बरबाद करना। नष्ट करना।
निकंद-रोग पुं० (सं) एक योनि सम्बन्धी रोग।
निकट वि० (सं) १-समीप का। पास का। २-संबन्ध जिसमें विशेष अन्तर न हो। क्रि० वि० नजदीक समीप। पास।
निकटता स्त्री० (सं) समीपता।
निकटपना पुं० (हि) निकटता।
निकट-पूर्व पुं० (सं) योरप वालों की दृष्टि के अनुसार एशिया महाद्वीप का पश्चिमी भाग। (नीयर-ईस्ट)
निकटवर्ती वि० (सं) समीपस्थ। नजदीक का। पास वाला।
निकटसंबंधी वि० (सं) नजदीकी रिश्तेदार।
निकटस्थ वि० (सं) १-पास का। २-सम्बन्ध के विचार से पास का। (नियरेस्ट)।
निकम्मा वि० (हि) जो काम धन्धा न करता हो। निरर्थक।
निकर पुं० (सं) १-समूह। २-राशि। ढेर। ३-कोष निधि। (अं) जाँघिया। एक प्रकार का अंग्रेजी पहनावा। (हाफ पैन्ट)।
निकरना क्रि० दे० 'निकलना'।
निकर्तन पुं० (सं) काट कर नीचे गिराना।
निकर्मा वि० (हि) जो काम-धन्धा न करता हो। आलसी।
निकर्षण वि० (सं) १-मैदान जो नगर के निकट हो। २-घर के पास खुली जगह। ३-पड़ोस। ४-अनजुती भूमि का टुकड़ा।
निकलंक वि० (हि) दोष-रहित। बेदाग। निर्दोष।
निकलंकी पुं० (हि) विष्णु का दसवाँ अवतार। कल्कि अवतार।
निकल स्त्री० (अं) चाँदी के रङ्ग की एक चमकीली धातु जिसके सिक्के आदि बनते हैं।
निकलना क्रि० अ० (हि) १-भीतर से बाहर आना। निर्गत होना। २-सटी हुई वस्तु का अलग होना। ३-एक ओर से दूसरी ओर चला जाना। पास होना। ४-गमन करना। उदय होना। उत्पन्न होना। प्रकट होना। ५-निश्चित होना। उद्भावित होना। ६-प्राप्त होना। सिद्ध होना। हल होना। ७-ईजाद करना। ८-प्रचलित होना। प्रवर्तित होना। प्रकाशित होना। ९-शरीर से उत्पन्न होना। (किसी को फंसाकर) अलग हो जाना। अपने को बचा जाना। १०-कह कर मुकरना। ११-बिकना। खपना। १२-हिसाब होने पर धन किसी के जिम्मे ठहराना। १३-दूर होना या मिट जाना। १४-व्यतीत होना। १५-घोड़े, बैल आदि का गाड़ी लेकर चलना आदि

सीखना। १६-किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। १७-अपने उद्गम स्थान से प्रादुर्भूत होना।
निकलवाना क्रि० (हि) निकलने का काम दूसरे से करवाना।
निकष पुं० (सं) १-कसौटी। २-कसौटी पर सोने की रेखा। ३-हथियारों पर सान रखने का पत्थर।
निकषण पुं० (सं) घिसने या सान पर चढ़ाने का काम।
निकषा स्त्री० (सं) १-विश्रवा की पत्नी जिसके गर्भ से रावण उत्पन्न हुआ था। २-प्रेतिनी। ३-पिशाचिन।
निकषात्मज पुं० (सं) राक्षस।
निकषोपल पुं० (सं) १-सान का पत्थर। २-कसौटी
निकस पुं० (सं) दे० 'निकष'।
निकसना क्रि० (प) (हि) दे० 'निकलना'।
निकाई पुं०(हि) दे० 'निकाय'। स्त्री०(हि) १-अच्छापन। भलाई। २-सुन्दरता। खूबसूरती।
निकाज वि० (हि) बेकाज। निकम्मा। रद्दी। क्रि०वि० बेफायदा। व्यर्थ।
निकाना क्रि० (हि) देखो 'निराना'।
निकाम वि० (हि) १-निकम्मा। २-बुरा। खराब। क्रि० वि० (हि) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। वि०(सं) प्रचुर बहुत अधिक। पुं० (सं) अभिलाषा। कामना। अव्य० (सं) १-इच्छानुसार। अत्यधिक।
निकाय पुं० (सं) १-समूह। झुण्ड। २-ढेर। राशि। ३-समाज। संस्था। ४-आवास-स्थान। ५-कुछ लोगों का समूह जो मिलकर नगर इत्यादि की स्वच्छता आदि सम्बन्धी बातों की देख भाल करता है। (बॉडी)।
निकाय-समाजवाद पुं० (सं) एक प्रकार का संघ-समाजवाद जिसका सिद्धान्त था कि श्रम-संघों के बनाये जाएँ और उनको कारखानों आदि नियन्त्रण सौंप दिया जाय पर राज्य के अन्य विभागों का नियन्त्रण संसद के आधीन रहे। (गिल्ड-सोशलिज्म)।
निकार पुं०(सं)१-अनाज फटकना। २-ऊपर उठाना। ३-वध। ४-तिरस्कार। ५-द्वेष। विरोध। पुं० (हि) १-निष्कासन। २-निकलने का द्वार। ३-ईख का रस पकाने का कड़ाहा।
निकारण पुं० (सं) वध। हत्या।
निकारना क्रि० (हि) दे० 'निकालना'।
निकाल पुं० (हि) १-निकास। २-कुश्ती का एक पेंच ३-कुश्ती में एक पेंच का काट या तोड़।
निकालना क्रि० (सं) (हि) १-अन्दर से बाहर लाना या करना। २-दूसरी वस्तुओं में मिली वस्तु को अलग करना। ३-गाजे-बाजे के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना। ४-किसी को आगे बढ़ा ले जाना। ५-पैदा करना। शरीर पर उत्प[न्न] करना। ६-शिक्षा समाप्त करके अलग करना। ७-स्थिर करना। सोचना। निश्चित करना। ८-[प्र]थित करना। ६-स्पष्ट या व्यक्त करना। सब सम्मुख लाना। १०-आरम्भ करना। छोड़ना। १[१-] नौकरी से हटाना। घटाना। कम करना। छुड़ा[ना।] १२-बेचना। दूर हटाना। १३-सिद्ध करना। फल[ी]भूत करना। १४-निर्वाह करना। १५-हल करना। निर्माण करना। १६-(नदी आदि को) बहाना। आरम्भ करना। १७-आविष्कृत करना। १८-रक[म] जिम्मे ठहराना। १६-ढूंढकर सामने रखना। २[०-] किसी व्यक्ति या पशु को शिक्षा देकर आगे निक[ा]लना। २१-गमन करना। २२-सूई के कपड़े पर बे[ल-]बूटे काढ़ना। २३-निभाना। बिताना। (इश्यू)।
निकाला पुं० (हि) १-किसी स्थान से निकाले जा[ने] का दण्ड। निर्वासन। २-निकालने की क्रिया।
निकाश पुं० (सं) १-आकृति। समानता। २-आक[ाश] ३-पड़ोस। ४-क्षितिज।
निकाष पुं० (सं) खरोंच। रगड़।
निकास पुं० (सं) दे० 'निकाश'। पुं० (हि) १-निकलने का भाव या क्रिया। २-निकलने का स्थान मार्ग। ३-सामने की खुली जगह। सहन। उद्गम मूलस्रोत। ५-निर्वाह का उपाय। आमदनी आय।
निकासना क्रि० (हि) दे० 'निकालना'।
निकास-पत्र पुं०(हि)जमा खर्च और बचत के हिस[ाब] की पञ्जी।
निकासी स्त्री०(हि)१-निकलने या निकालने की क्रि[या] या भाव। (इश्यू)। २-यात्रा के निमित्त प्रस्थान ३-वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या वस्तु कहीं से निकाल कर बाहर भेजी जा स[के] (ट्रान्जिट-पास)। ४-लाभ। बिक्री के माल का बा[हर] जाना। लदाई। ५-माल की खपत। रवाना। चु[ंगी] ६-आय। आमदनी।
निकाह पुं० (अ) मुसलमानी पद्धति के अनुसार हो[ने] वाला विवाह।
निकाह-नामा पुं० (अ) वह दस्तावेज जिस[में] निकाह की शर्तें लिखी जाती हैं।
निकाही वि० (अ) १-मुसलमानी विवाह-पद्धति [के] अनुसार विवाह करके लाई हुई। २-जिसने खेच[्छा] से विवाह कर लिया हो।
निकियाना क्रि०(दे)१-नोच कर धज्जी-धज्जी अल[ग] करना। २-चमड़े पर लगे माल इत्यादि नोच [क]र अलग करना।
निकिल्वष पुं० (सं) पाप का अभाव।
निकिष्ट वि० (हि) दे० 'निकृष्ट'।
निकुंचित वि० (स) संकुचित। सुकड़ा हुआ।

सीखना। १६-किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। १७-अपने उद्गम स्थान से प्रादुर्भूत होना।

निकलवाना क्रि० (हि) निकलने का काम दूसरे से करवाना।

निकष पुं० (सं) १-कसौटी। २-कसौटी पर सोने की रेखा। ३-हथियारों पर सान रखने का पत्थर।

निकषण पुं० (सं) घिसने या सान पर चढ़ाने का काम।

निकषा स्त्री० (सं) १-विश्रवा की पत्नी जिसके गर्भ से रावण उत्पन्न हुआ था। २-प्रेतिनी। ३-पिशाचिन।

निकषात्मज पुं० (सं) राक्षस।

निकषोपल पुं० (सं) १-सान का पत्थर। २-कसौटी

निकस पुं० (सं) दे० 'निकष'।

निकसना क्रि० (अ) (हि) दे० 'निकलना'।

निकाई पुं०(हि) दे० 'निकाय'। स्त्री०(हि) १-अच्छापन। भलाई। २-सुन्दरता। खूबसूरती।

निकाज वि० (हि) बेकाज। निकम्मा। रद्दी। क्रि०वि० बेफायदा। व्यर्थ।

निकाना क्रि० (हि) देखो 'निराना'।

निकाम वि० (हि) १-निकम्मा। २-बुरा। खराब। क्रि० वि० (हि) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। वि०(सं) प्रचुर बहुत अधिक। पुं० (सं) अभिलाषा। कामना। अव्य० (सं) १-इच्छानुसार। अत्यधिक।

निकाय पुं० (सं) १-समूह। झुण्ड। २-ढेर। राशि। ३-समाज। संस्था। ४-आवास-स्थान। ५-कुछ लोगों का समूह जो मिलकर नगर इत्यादि की स्वच्छता आदि सम्बन्धी बातों की देख भाल करता है। (बॉडी)।

निकाय-समाजवाद पुं० (सं) एक प्रकार का संघ-समाजवाद जिसका सिद्धान्त था कि श्रम-संघों के निकाय बनाये जाएँ और उनको कारखानों आदि का नियन्त्रण सौंप दिया जाय पर राज्य के अन्य विभागों का नियन्त्रण संसद के अधीन रहे। (गिल्ड-सोशलिज्म)।

निकार पुं०(सं)१-अनाज फटकना। २-ऊपर उठाना ३-वध। ४-तिरस्कार। ५-द्वेष। विरोध। पुं० (हि) १-निष्कासन। २-निकलने का द्वार। ३-ईख का रस पकाने का कड़ाहा।

निकारण पुं० (सं) वध। हत्या।

निकारना क्रि० (हि) दे० 'निकालना'।

निकाल पुं० (हि) १-निकास। २-कुश्ती का एक पेंच ३-कुश्ती में एक पेंच का काट या तोड़।

निकालना क्रि० (स) (हि) १-अन्दर से बाहर लाना या करना। २-दूसरी वस्तुओं में मिली वस्तु को अलग करना। ३-गाजे-बाजे के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना। ४-किसी को आगे बढ़ा ले जाना। ५-पैदा करना। शरीर पर उत्पन्न करना। ६-शिक्षा समाप्त करके अलग करना। ७-स्थिर करना। सोचना। निश्चित करना। ८-उपस्थित करना। ९-स्पष्ट या व्यक्त करना। सबके सम्मुख लाना। १०-आरम्भ करना। छोड़ना। ११-नौकरी से हटाना। घटाना। कम करना। छुड़ाना १२-बेचना। दूर हटाना। १३-सिद्ध करना। फलीभूत करना। १४-निर्वाह करना। १५-हल करना। निर्माण करना। १६-(नदी आदि को) बहाना या आरम्भ करना। १७-आविष्कृत करना। १८-रकम जिम्मे ठहराना। १९-ढूंढकर सामने रखना। २०-किसी व्यक्ति या पशु को शिक्षा देकर आगे निकालना। २१-गमन करना। २२-सूई के कपड़े पर बेल बूटे काढ़ना। २३-निभाना। बिताना। (इश्यू)।

निकाला पुं० (हि) १-किसी स्थान से निकाले जाने का दण्ड। निर्वासन। २-निकालने की क्रिया।

निकाश पुं० (सं) १-आकृति। समानता। २-आकाश ३-पड़ौस। ४-क्षितिज।

निकाष पुं० (सं) खरोंच। रगड़।

निकास पुं० (सं) दे० 'निकाश'। पुं० (हि) १-निकलने का भाव या क्रिया। २-निकलने का स्थान या मार्ग। ३-सामने की खुली जगह। सहन। ४-उद्गम मूलस्रोत। ५-निर्वाह का उपाय। ६-आमदनी आय।

निकासना क्रि० (हि) दे० 'निकालना'।

निकास-पत्र पुं०(हि)जमा खर्च और बचत के हिसाब की पञ्जी।

निकासी स्त्री०(हि)१-निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। (इश्यू)। २-यात्रा के निमित्त प्रस्थान। ३-वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या वस्तु कहीं से निकाल कर बाहर भेजी जा सके (ट्रांजिट-पास)। ४-लाभ। बिकी के माल का बाहर जाना। लदाई। ५-माल की खपत। रवाना। चुंगी ६-आय। आमदनी।

निकाह पुं० (अ) मुसलमानी पद्धति के अनुसार होने वाला विवाह।

निकाह-नामा पुं० (अ) वह दस्तावेज जिस पर निकाह की शर्तें लिखी जाती हैं।

निकाही वि० (अ) १-मुसलमानी विवाह-पद्धति के अनुसार विवाह करके लाई हुई। २-जिसने स्वेच्छा से विवाह कर लिया हो।

निकियाना क्रि०(दे)१-नोच कर धज्जी-धज्जी अलग करना। २-चमड़े पर उगे बाल इत्यादि नोच कर अलग करना।

निकिल्विष पुं० (सं) पाप का अभाव।

निकिष्ट वि० (हि) दे० 'निकृष्ट'।

निकुंचित वि० (स) संकुचित। सुकड़ा हुआ।

निकुंज पुं० (सं) घनी लताओं से या वृक्षों से घिरा हुआ स्थान । लताकुञ्ज ।
निकुम्भ पुं० (सं) १-शिव के एक अनुचर का नाम । २-कुम्भकर्ण का एक पुत्र जो रावण का मंत्री था ३-दन्तीवृक्ष । ४-जमालगोटा ।
निकुरंब पुं० (सं) समूह । झुण्ड । गिरोह ।
निकृंतन पुं० (सं) १-छेदन । खंडन । २-काटने का औजार ।
निकृंतनी वि० (सं) काटने वाली । स्त्री० छुरी । तलवार ।
निकृत वि० (सं) १-अपमानित । २-प्रवंचित । ३-दुःखी । ४-बहिष्कृत ।
निकृति स्त्री० (सं) १-अपमान । २-नीचता । ३-कपट
निकृत्त वि० (सं) १-जड़ से काटा हुआ ।
निकृष्ट वि० (सं) नीच । अधम । तुच्छ ।
निकृष्टत्व पुं० (सं) नीचता । बुराई । निकृष्टता ।
निकेत पुं० (सं) मकान । घर । आवास । भवन । चिह्न ।
निकेतन पुं० (सं) घर । वास-स्थान । प्याज ।
निकौनी स्त्री० (हि) १-निराई । २-निराने की मज़दूरी ।
निक्का वि० (हि) छोटा । नन्हा ।
निक्की वि० (हि) छोटी । नन्हीं ।
निक्रमण पुं० (सं) जगह । स्थान ।
निक्रीड़ पुं० (सं) १-कौतुक । क्रीड़ा । २-सामवेद ।
निक्वण पुं० (सं) ध्वनि ।
निक्षा स्त्री० (सं) लीख । जूँ का अण्डा ।
निक्षिप्त वि० (सं) १-फेंका हुआ । २-त्यक्त । ३-भेजा हुआ । (कन्साइन्ड) । ४-[illegible]

[illegible] (सं) ध्वनि ।
निक्षिप्ती पुं० (हि) वह जिसके नाम कोई वस्तु (विशेषतः पोस्ट, पारसल इत्यादि) भेजी गई हो । (कन्साइनी) ।
निक्षुभा स्त्री० (सं) १-ब्राह्मणी । २-सूर्य की एक पत्नी
निक्षेप पुं० (सं) १-फेंकने, चलाने, डालने आदि की क्रिया या भाव । २-भेजने की क्रिया या भाव ३-वह वस्तु जो कहीं भेजी जानी हो । ४-वह राशि जो कहीं जमा की जाय । (डिपोजिट) । ५-धरोहर
निक्षेपक पुं० (सं) १-कहीं बाहर माल भेजने वाला व्यक्ति । (कन्साइनर) । २-वह जो बैंक आदि में रुपया जमा करे । (डिपाजिटर) ।
निक्षेपकारण पुं० (सं) दे० 'न्यास-पत्र' ।
निक्षेपण पुं० (सं) १-फेंकना । २-छोड़ना । चलाना ३-धरोहर रखना ।

निक्षेप-निधि स्त्री० (सं) ऋणपरिशोध कोष । (सिंकिंग-फंड) कर्ज-अदाई-कोश ।
निक्षेप-निर्णय पुं० (सं) सिक्के को उछाल कर उसके नीचे गिरने की स्थिति से कोई निश्चय करना । (टॉस) ।
निक्षेपी वि० (हि) १-फेंकने वाला । धरोहर रखने वाला । (डिपोजिटर) ।
निक्षेप्ता पुं० (सं) दे० 'निक्षेपक' ।
निक्षेप्य वि० (सं) फेंकने योग्य । छोड़ने योग्य ।
निखंग पुं० (हि) दे० 'निषंग' ।
निखंगी वि० (हि) दे० 'निषंगी' ।
निखद्द वि० (हि) ठीक मध्य या बीच का । सटीक ।
निखट्टू वि० (हि) जमकर कोई काम न करने वाला निकम्मा । आलसी ।
निखनन पुं० (सं) १-खोदन । गाड़ना । २-मिट्टी ।
निखरना क्रि० (हि) १-मैल छूट जाने पर साफ या निर्मल होना । २-रंग का खुलना या साफ होना ।
निखरवाना क्रि० (हि) साफ करवाना । धुलवाना ।
निखरी स्त्री० (हि) घी में तलकर बनाई हुई रसोई । सखरी का उल्टा ।
निखर्व वि० (सं) १-दस हजार करोड़ । २-बौना । वामन । नाटा ।
निखालस वि० (हि) सब । पूरा । क्रि० वि० बिलकुल पूरा ।
निखात वि० (सं) १-खोदा हुआ । २-खोद कर जमाया हुआ । ३-खोद कर गाड़ा हुआ ।
निखात-निधि स्त्री० (सं) वह खजाना जो जमीन को खोद कर निकाला गया हो । भूनिधि । (ट्रेजर ट्रोव)
[illegible]

[illegible] बेध करना ।

निखालिस वि० (हि) विशुद्ध । जिसमें कोई मिलावट न हो ।
निखिद्ध वि० (हि) दे० 'निषिद्ध' ।
निखिल वि० (सं) सारा । सम्पूर्ण । तमाम ।
निखुटना क्रि० (हि) खतम होना । समाप्त होना ।
निखेध वि० (हि) दे० 'निषेध' ।
निखेधना क्रि० (हि) मना करना ।
निखोट वि० (हि) १-खोटाई या दोष रहित । २-साफ या खुला हुआ । क्रि० वि० बिना सङ्कोच के । बे-धड़क ।
निखोटना क्रि० (हि) नाखून से नोचना । उचाड़ना ।
निखोड़ा वि० (दे०) कठोर चित्त वाला । निर्दय ।
निखोरना क्रि० (हि) दे० 'निखोटना' ।
निगंद पुं० (हि) एक रक्त-शोधक बूटी ।
निगंदना क्रि० (हि) रुई से भरे कपड़े में मोटी और

लम्बी सिलाई करना।
निगंध वि० (हि) गन्ध-रहित।
निगंधक पुं० (सं) सोना। सुवर्ण।
निगड स्त्री० (सं) १-हथकड़ी। २-बेड़ी। जंजीर।
निगडन पुं० (सं) बेड़ी या जञ्जीर से बाँधने का काम।
निगडित वि० (सं) बेड़ी पड़ा हुआ। जञ्जीर से बांधा हुआ।
निगण पुं० (सं) होम से निकलने वाला काला धूँआ
निगद पुं० (सं) १-स्तुति-पाठ। २-भाषण। कथन।
निगदन पुं० (सं) भाषण। सम्वाद। व्याख्यान।
निगदित वि० (सं) कहा हुआ। कथित। उक्त।
निगम पुं० (सं) १-वेद। वेद का कोई अवतरण। २-मार्ग। पथ। बाजार। ३-वणिक्-पथ। ४-मेला पैठ। बनजारा। फेरी वाला सौदागर। ५-निश्चय न्याय। ६-कायस्थों का एक भेद। ७-वह संस्था जिसे कानून के द्वारा एक व्यक्ति की तरह काम करने के लिए बनाया गया हो। (कारपोरेशन)। ८-व्यवसाय। व्यापार।
निगम-कर पुं० (सं) व्यापारिक या औद्योगिक संस्थाओं या निगमों पर लगाया गया महसूल या कर। (कारपोरेशन-टैक्स)।
निगमन स्त्री० (सं) न्याय में वह कथन जो कोई प्रतिज्ञा सिद्ध कर चुकने पर उसके फिर से उल्लेख के रूप में होता है। सिद्ध की हुई बात का अन्तिम कथन। २-वेद का अवतरण। ३-अन्दर आना। ४-किसी संस्था को निगम का सा रूप देने की क्रिया (इनकॉर्पोरेशन)।
निगमनात्मक वि० (सं) अलग करने वाला। वियोजक।
निगम-निकाय पुं० (हि) मिलकर कार्य करने का सुसङ्गठित रूप से बना कुछ लोगों का समूह। (बॉडी-कॉर्पोरेट)।
निगम-निवासी पुं० (सं) विष्णु। नारायण।
निगमनीय वि० (सं) निष्कर्ष योग्य।
निगमबोध पुं० (सं) दिल्ली के पास जमुना के किनारे एक पवित्र स्थान।
निगमागम पुं० (सं) वेद-शास्त्र।
निगमित वि० (सं) (संस्था) जिसे निगमरूप में परिणत कर दिया गया हो। (इनकॉर्पोरेटेड)।
निगमीकरण पुं० (सं) किसी संस्था को निगमरूप में परिणित करना। (इनकॉर्पोरेशन)।
निगमीकृत वि० (सं) निगमित।
निगर पुं० (सं) १-निगलने या भक्षण करने की क्रिया। भोजन। २-होम का धूँआ। वि० (हि) सारे। सब। पुं० (हि) दे० 'निकर'।
निगरण पुं० (सं) भोजन। गला। होम का धूँआ।
निगरना क्रि० (हि) निगलना।
निगरां पुं० (फा) निगरानी करने वाला। निरीक्षक रक्षक।
निगरा वि० (हि) खालिस। (ईख का रस) जिसे जल मिलाकर पतला न किया गया हो।
निगरानी स्त्री० (फा) देखरेख। निरीक्षण।
निगरु वि० (हि) हलका।
निगलना क्रि० (हि) १-मुँह में रखकर पेट में नीचे उतारना। लीलना। २-दूसरे का धन मार बैठना
निगह स्त्री० (फा) निगाह। दृष्टि।
निगहबान पुं० (फा) रक्षक।
निगहबानी स्त्री० (फा) चौकसी। देख-रेख।
निगार पुं० (सं) निगलने की क्रिया। पुं० (फा) १-चित्र। बेल-बूटा। नक्काशी। २-एक फारसी राग का नाम।
निगाल पुं० (सं) १-निगलना। २-घोड़े की गरदन पुं० (दे०) एक प्रकार का बाँस।
निगाली स्त्री० (हि) १-बाँस की नली। २-हुक्के की नली जिससे धूँआ खींचते हैं।
निगाह स्त्री० (फा) १-नजर। दृष्टि। २-चितवन। ३-कृपादृष्टि। ४-परख। पहचान।
निगिभि वि० (हि) अत्यन्त गोपनीय। बहुत प्यारी।
निगीर्ण वि० (सं) जिसका अन्तर्भाव होगया हो। निगला हुआ।
निगु पुं० (सं) १-मन। अन्तःकरण। २-मूल। भ्रम
निगुण, निगुन, निगुना वि० (देश) दे० 'निर्गुण'।
निगुनी वि० (हि) गुणरहित।
निगुरा वि० (हि) अदीक्षित। जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो।
निगूढ़ वि० (सं) छिपा हुआ। अत्यन्त गुप्त।
निगूढ़ार्थ वि० (सं) जिसका अर्थ छिपा न हो।
निगृहीत वि०(सं) १-घेरा हुआ। २-जिस पर आक्रमण किया गया हो। पीड़ित। पराजित।
निगृह्य वि० (सं) दण्ड देने योग्य।
निगोड़ा वि० (हि) १-निराश्रय। २-अभागा। ३-दुष्ट कमीना।
निगोद वि० (हि) बीच में छिपा हुआ।
निग्रंथन पुं० (सं) वध। हत्या।
निग्रह पुं० (सं) १-अवरोध। रोक। २-वश में लाना गिरफ्तार करना। ३-पराजय। नाश। ४-रोग की रोक थाम। ५-(न्याय में) तर्क-सम्बन्धी दोष विशेष ६-दण्ड। (कन्ट्रोल)।
निग्रहण पुं० (सं) १-रोक थाम। २-दण्ड देने का कार्य। ३-पराजय। हार।
निग्रहना क्रि० (हि) १-रोकना। २-दण्ड देना। ३-पकड़ना।
निग्रही वि० (हि) १-रोकने वाला। २-दमन करने

वाला । २-दण्ड देने वाला ।
निग्राहक वि० (सं) गिरफ्तार करने वाला ।
निग्राह्य वि० (सं) ग्रहण करने योग्य ।
निघण्टु पु० (सं) वैदिक शब्दों का संग्रह । शब्द संग्रह मात्र ।
निघ वि०(सं) समान लम्बाई-चौड़ाई वाला । पु०(सं) पाप । गेंद ।
निघटना क्रि० (हि) दे० 'घटना' ।
निघरघट वि० (हि) १-जिसका कहीं ठौर ठिकाना न हो । २-निर्लज्ज । ३-ढीठ ।
निघरा वि० (हि) १-बिना घर-बार का । २-नीच । कमीना ।
निघर्ष पुं० (सं) रगड़ । मथन ।
निघर्षण पुं० (सं) रगड़ना । घिसना ।
निघात पु (सं) प्रहार । घात ।
निघाती वि० (सं) मारने वाला । प्रहार करने वाला ।
निघ्न वि० (सं) १-आधीन । आज्ञाकारी । नम्र । २-अवलंबित ।
निचमन पुं० (सं) थोड़ा-थोड़ा पीना ।
निचय पुं० (सं) १-ढेर । समुदाय । २-संचय । ३-किसी विशेष कार्य के लिए संचित धन । (फंड) ।
निचल वि० (हि) दे० 'निश्चल' ।
निचला वि० (हि) १-नीचे वाला । २-अचल । ३-स्थिर । शान्त । (इन्फीरियर) ।
निचाई स्त्री० (हि) १-नीचापन । २-नीचे की ओर विस्तार या दूरी । ३-नीचता । ओछापन ।
निचान स्त्री०(हि) १-निचाई । २-ढलान ३-नीचापन
निचिंत वि० (हि) चिन्तारहित । बेफिक्र ।
निचिकी स्त्री० (सं) अच्छी गाय ।
निचिर पुं० (सं) अत्यन्त प्राचीन काल ।
निचुम्पुण पुं० (सं) गरज । गड़गड़ाहट ।
निचुड़ना क्रि० (हि) १-दबाने से रस निकलना । गिरना । २-सारहीन होना । ३-दुबला होना ।
निचुल पु० (सं) १-बेंत । २-ऊपर से ओढ़ने का कपड़ा ।
निचेता वि० (सं) प्राप्त वस्तु का संचय करने वाला ।
निचेय वि० (सं) संग्रह करने योग्य ।
निचै पु० (हि) दे० 'निचय' ।
निचोड़ पुं० (हि) १-वह अंश जो निचोड़ने से निकले । २-सार । ३-कथन का सारांश । खुलासा । मुख्य तात्पर्य ।
निचोड़ना क्रि० (हि) १-रस वाली वस्तु को दबाकर पानी या रस निकालना । २-सार निकालना । ३-धन हरण लेना ।
निचोना क्रि० (हि) निचोड़ना ।
निचोर पु० (देश) दे० 'निचोड़' ।
निचोरना क्रि० (देश) निचोड़ना ।
निचोल पुं० (सं) १-आच्छादन वस्त्र । २-स्त्रियों की ओढ़नी ।
निचोलक पुं० (सं) चोली । कंचुक । कवच ।
निचोवना क्रि० (हि) दे० 'निचोड़ना' ।
निचौहाँ वि० (हि) नीचे की ओर झुका हुआ ।
निचौहें क्रि० वि० (हि) नीचे की ओर ।
निच्छवि स्त्री० (सं) तीरभुक्त देश । तिरहुत ।
निछक्का पुं० (हि) एकान्त या निर्जन स्थान ।
निछत्र वि० (हि) १-छत्रहीन । २-राज-चिह्न रहित ।
निछनियाँ क्रि० वि० (हि) दे० 'निछान' ।
निछद्म पु० (हि) एकान्त स्थान जहाँ कोई पराया न हो । २-अवकाश का समय ।
निछल वि० (हि) छलहीन । छलरहित ।
निछान वि०(हि) बिना मिलावट का । विशुद्ध । क्रि० वि० (हि) बिलकुल । एक दम ।
निछावर स्त्री० (हि) १-मंगल कामना के लिए किसी वस्तु को सिर पर से घुमा कर दान करने का टोटका । वारफेर । २-भेंट । उत्सर्ग । इनाम ।
निछावरि स्त्री० (हि) दे० 'निछावर' ।
निछोह वि० (हि) १-जिसमें प्रेम न हो । २-निर्दय ।
निछोही वि० (हि) दे० 'निछोह' ।
निज वि०(सं)१-अपना । स्वकीय । २-प्रधान । पक्का खास । अव्य० निश्चय । ठीक । यथार्थ ।
निजकाना क्रि० (हि) निकट पहुँचना । समीप आना
निजकारी स्त्री० (हि) बटाई की फसल ।
निजत्व पुं० (सं) अपनापन । मौलिकता ।
निजन वि० (सं) निर्जन । सुनसान ।
निजवर्ती वि० (सं) आश्रय में रहने वाला ।
निजस्व पु० (सं) अपनापन ।
निज-सचिव पुं० (सं) किसी राज्यपाल अथवा राज्य मन्त्री आदि के साथ रहकर उसका पत्र व्यवहार करने वाला सचिव । (प्राइवेट सेक्रेटरी) ।
निजाम पुं० (अ) १-व्यवस्था । बन्दोबस्त । २-हैदराबाद के नवाब की उपाधि ।
निजी वि०(हि) १-अपना । २-व्यक्तिगत । (प्राइवेट) ।
निजी-सहायक पु० (सं) किसी नेता या बड़े आदमी के साथ रहकर सहायता देने वाला । (पर्सनल-असिस्टेन्ट) ।
निजु अव्य० (?) दे० 'निज' ।
निजोर वि० (हि) निर्बल । कमजोर ।
निझरना क्रि० (हि) १-अच्छी तरह झड़ जाना । २-वस्तु से रहित हो जाना । ३-सफाई देना । ४-सार-हीन हो जाना ।
निझोल पु० (हि) हाथी का एक नाम ।
निठि क्रि० वि० (हि) दे० 'नीठि' ।
निठल्ला वि० (हि) जिसके पास कोई काम न हो । खाली । बेकार । निकम्मा ।

निठल्लू वि० (हि) दे० 'निठल्ला'।
निठाला पुं० (हि) १-खाली समय। २-जीविका का अभाव।
निठुर वि० (हि) दे० 'निष्ठुर'।
निठुरई स्त्री० (हि) निर्दयता। निष्ठुरता।
निठुरता स्त्री० (हि) निर्दयता।
निठौर पुं० (हि) बुरी जगह। बुरी दशा।
निडर वि० (हि) १-निर्भय। निःशङ्क। २-साहसी। ३-ढीठ।
निडीन पुं० (सं) पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना या झपट्टा।
निड़ँ क्रि० वि० (हि) समीप। निकट। पास।
निढाल वि० (हि) थकामाँदा। शिथिल। पस्त।
निढिल वि० (हि) जो ढीला न हो। कसा हुआ। सख्त।
निणय वि० (सं) लापता। गायब।
नितंत क्रि० वि० (हि) दे० 'नितांत'।
नितंत्र-अनुज्ञा स्त्री० (सं) (रेडियो) बेतार का यन्त्र रखने की अनुमति। (वायरलैस लाइसेंस)।
नितंब पुं० (सं) १-स्त्रियों की कमर का पिछला उभरा हुआ भाग। चूतड़। २-नदी या पर्वत का ढलुवाँ किनारा। ३-कन्धा। ४-खड़ी चट्टान।
नितंब-बिंब पुं० (सं) गोलाकार नितम्ब।
नितंबिनी स्त्री० (सं) बड़े और सुन्दर नितम्ब वाली स्त्री। सुन्दर स्त्री।
नित अव्य० (सं) प्रति-दिन। सदा। नित्य।
नितनित अव्य० (सं) प्रतिदिन। कभी पुराना न पड़ने वाला। अनुदिन।
नितराम् अव्य० (सं) हमेशा। सदा। सर्वदा।
नितल पुं० (सं) सात पातालों में से एक।
नितांत अव्य० (सं) बहुत अधिक। एक दम। परम
निति अव्य० (सं) दे० 'नित'।
नित्य वि० (सं) जिसका कभी नाश न हो। शाश्वत। अविनाशी। अव्य० (सं) हर रोज। सर्वदा।
नित्यकर्म पुं० (सं) दे० 'नित्यकृत'।
नित्यकृत पुं० (सं) दैनिक विहित कर्म जैसे सन्ध्या, स्नान आदि।
नित्यगति पुं० (सं) हवा। वायु।
नित्यता पुं० (सं) नित्य होने का भाव। अनश्वरता।
नित्यत्व पुं० (सं) दे० 'नित्यता'।
नित्यनर्त्त पुं० (सं) महादेव। शिव।
नित्य-नियम पुं० (सं) प्रति-दिन का बँधा हुआ काम।
नित्यप्रति अव्य० (सं) प्रति-दिन। हर-रोज।
नित्यमय वि० (सं) अनन्त।
नित्ययुक्त वि० (सं) सदा काम में लगा रहने वाला पुं० (सं) परमात्मा।
नित्यशः अव्य० (सं) सदैव। प्रतिदिन। सर्वदा।
नित्यानंद पुं० (सं) जो सदैव आनन्द से रहे।
नित्यानुबद्ध वि० (सं) रक्षा करने वाला।
निथंभ पुं० (हि) खम्भा। स्तम्भ।
निथरना क्रि० (हि) किसी तरल पदार्थ या पानी का स्थिर होना जिससे उसमें मिट्टी या मैल नीचे बैठ जाय। पानी छन जाना।
निथार पुं० (हि) घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने से अलग हुआ स्वच्छ पानी।
निथारना क्रि० (हि) किसी तरल पदार्थ या पानी को स्थिर करना जिससे मैल इत्यादि नीचे बैठ जाय।
निद पुं० (सं) विष। जहर। वि० (सं) निन्दा करने वाला।
निदई वि० (हि) दे० 'निर्दयी'।
निदद्रु पुं० (सं) मनुष्य। मानव।
निदरना क्रि० (हि) १-निरादर करना। २-तिरस्कार करना। ३-मात करना। दबाना। तुच्छ ठहराना।
निदर्शक वि० (सं) १-देखने वाला। जानने वाला। निर्देश करने वाला।
निदर्शन पुं० (सं) १-प्रदर्शन। २-दृष्टान्त। उदाहरण (इलस्ट्रेशन)।
निदर्शना स्त्री० (सं) एक अर्थालङ्कार जिसमें दो बातों में भिन्नता होते हुए भी उपमा देकर उनके सम्बन्ध की कल्पना की जाय।
निदलन पुं० (हि) दे० 'निर्दलन'।
निदहना क्रि० (हि) जलाना।
निदाघ पुं० (सं) १-ताप। गरमी। धूप। २-ग्रीष्म-ऋतु। ३-पसीना।
निदाघकर पुं० (सं) सूर्य। सूरज।
निदान पुं० (सं) १-कारण। आदि कारण। २-रोग निर्णय। रोग की पहचान। (डायगनोसिस)। ३-रोग पहचानने की विद्या या शास्त्र। (ईटियोलोजी) अन्त। अवसान। अव्य० (सं) अन्त में। इसलिए। आखिर। गयागुजरा। तुच्छ।
निदारुण वि० (सं) १-कठिन। भयानक। २-निर्दय कठोर।
निदाह पुं० (हि) दे० 'निदाघ'।
निदिग्ध वि० (सं) लेप किया हुआ। जमा किया हुआ
निदिग्धा स्त्री० (सं) छोटी इलायची।
निदिध्यासन पुं० (सं) बार-बार स्मरण करना।
निदेश पुं० (सं) १-आज्ञा। शासन। २-किसी कार्य को करने की विधि बतलाना। (डायरेक्शन)। ३-किसी आज्ञा, निश्चय या नियम के साथ लगाई हुई गई कोई शर्त। (प्रोवीजन)।
निदेशक पुं० (सं) १-आज्ञा देने वाला। निदेश देने वाला। २-चल-चित्रों में कहानी, पात्रों की वेशभूषा तथा संवाद आदि निर्धारित करने वाला। निर्देशक (डायरेक्टर)।
निदेशिका स्त्री० (सं) किसी प्रदेश, नगर आदि के

व्यापारियों या प्रमुख नागरिकों का नाम आदि का ब्योरा देने वाली पुस्तिका। (डायरेक्टरी)।
निदेशी वि० (सं) आज्ञा देने वाला।
निदेस पुं० (हि) दे० 'निदेश'।
निदोष वि० (हि) दे० 'निर्दोष'।
निद्धि स्त्री० (हि) दे० 'निधि'।
निद्र पुं० (सं) एक शस्त्रसंहारक अस्त्र।

निधिपति पुं० (सं) धनेश्वर। कुबेर।
निधिपाल पुं० (सं) १-कुबेर। २-वह जिसको देख-रेख के लिए सम्पत्ति धन आदि सौंपी गई हो। (कस्टोडियन)।
निधीश्वर पुं० (सं) कुबेर।
निधुवन पुं० (सं) १-मैथुन। २-हँसी ठट्ठा। ३-कम्प
निधेय वि० (सं) स्थापनीय। रखने योग्य।

निद्रागार पुं० (सं) सोने का कमरा।
निद्रान्वित वि० (सं) सोया हुआ।
निद्राचार, निद्रा-भ्रमण पुं० (सं) नींद में चलना फिरना या अन्य कार्य करना। (सोमनैम्बुलिज्म)।
निद्रा भंग पुं० (सं) जागरण। नींद टूटना।
निद्रायमान वि० (सं) जो नींद में हो। सोता हुआ।
निद्रालु वि० (सं) निद्राशील। सोने वाला। स्त्री० १-बैंगन। २-वबरी। वन-तुलसी। नली नामक गन्ध-द्रव्य।

निकृष्ट।
निनाया पुं० दे० खटमल।
निनार, निनारा वि० (हि) १-अलग। भिन्न। न्यारा २-दूर। हटा हुआ।
निनावाँ पुं० दे० मुंह के अन्दर निकलने वाले लाल रङ्ग के दाने।
निनावीं स्त्री० (हि) १-बिना नाम की अशुभ वस्तु। २-चुड़ैल। भूतनी।

निधनकारी वि० (सं) घातक। नाशक।
निधनक्रिया स्त्री०(सं) अन्त्येष्टि क्रिया।
निधनी वि० (सं) दरिद्र। गरीब।
निवमन पुं० (सं) नीम का पेड़।
निधान पुं० (सं) १-आधार। आश्रय। २-निधि। कोष। ३-जिसमें किसी गुण की परिपूर्णता हो- जैसे-कृपानिधान।
निधि स्त्री० (सं) १-गाड़ा हुआ खजाना। २-कुबेर के नौ प्रकार के रत्न। ४-नौ की संख्या-सूचक शब्द ५-किसी विशेष कार्य के लिए अलग जमा किया हुआ धन। (एन्डाउमेंट)। ५-किसी संस्था आदि के लिए इकट्ठा किया हुआ धन। (फन्ड)। ६-अनेक गुणों से भूषित व्यक्ति। ७-विष्णु-पद। (नेदम)। ८-समुद्र। ९-घर। आगार। विष्णु।
निधिनाथ पुं० (सं) निधियों का स्वामी। कुबेर।
निधिप पुं० (सं) कुबेर।

पकना। ३-तैयार होना।
निपजी स्त्री० (हि) १-उपज। २-लाभ। मुनाफा।
निपट अव्य० (हि) १-विशुद्ध। निरा। एक मात्र। २-सरासर। नितांत।
निपटना क्रि० (हि) १-निवृत्त होना। समाप्त होना। २-निर्णित होना। ३-शौच आदि क्रिया से निवृत्त होना।
निपटारा पुं० (हि) दे० 'निबटारा'।
निपटेरा पुं० (हि) दे० 'निबटेरा'।
निपठ पुं० (सं) पढ़ना। पाठ करना।
निपतन पुं० (सं) नीचे गिरना। अधःपतन। गिराव
निपतित वि० (सं) गिरा हुआ। पतित।
निपत्या स्त्री० (सं) बंजर भूमि। रणक्षेत्र।
निपत्र वि० (हि) पत्रहीन। ठूँठा।
निपरन पुं० (सं) प्रेम का अभाव।
निपांगुर वि० (हि) अपाहिज। पंगु।

निपात पुं० (सं) १-पतन। २-अधःपतन। ३-विनाश मृत्यु। ४-व्याकरण के सूत्र के अनुसार वह शब्द जिसके बनने के नियम का पता न हो। वि० (हि) बिना पत्तों का (वृक्ष या पौधा)।
निपातन पुं० (सं) १-गिरने का कार्य। २-नाश। ३-वध।
निपातना क्रि० (हि) नीचे गिराना। नष्ट करना। वध करना।
निपातित वि० (सं) जो गिरा दिया गया हो।
निपाती वि० (हि) १-बिना पत्ते का। २-घातक। ३-गिरा हुआ। पुं० (हि) शिव।
निपाद पुं० (सं) नीचा प्रदेश।
निपान पुं० (सं) १-पीने की क्रिया। २-तालाब। ३-कूप। ४-दूध दूहने का पात्र। ५-कूप के समीप का हौद जिसमें पशु पानी पीते हैं।
निपीड़क वि० (सं) १-अत्यधिक दुःखदायक या पीड़ा देने वाला। २-दबाने या मलने वाला। ३-पेरने वाला। निचोड़ने वाला।
निपीड़न पुं० (सं) १-पीड़ित करना। २-मलना या दबाना। ३-पेरना। ४-घायल करने की क्रिया।
निपीड़ना क्रि० (हि) १-दबाना। मलना। २-कष्ट पहुँचाना।
निपीड़ित वि० (सं) १-दबाया हुआ। २-अत्यधिक पीड़ित। ३-निचोड़ा हुआ।
निपीत वि० (सं) जिसका पान किया गया हो। शोषित।
निपुण वि० (सं) १-दक्ष। प्रवीण। २-योग्य। ३-अनुभवी। ४-दयालु। ५-सम्पूर्ण।
निपुणता स्त्री० (सं) कुशलता। दक्षता।
निपुणाई स्त्री० (हि) दे० 'निपुणता'।
निपुत्री वि० (हि) निःसन्तान। निपूता।
निपुन वि० (हि) दे० 'निपुण'।
निपुनई स्त्री० (हि) दे० 'निपुणता'।
निपुनाई स्त्री० (हि) दे० 'निपुणता'।
निपूत वि० (हि) पुत्रहीन।
निपूता वि० (हि) पुत्रहीना। निःसन्तान (गाली)।
निपोड़ना क्रि० (हि) दांत खोलना या उघारना।
निफल वि० (सं) दे० 'निष्फल'।
निफाक पुं० (अ) विरोध। फूट। अनबन।
निफालन पुं० (सं) दृष्टि।
निफेन पुं० (सं) अफीम।
निबंध पुं० (सं) १-अच्छी तरह बाँधने का भाव या क्रिया। २-किसी विषय का सविस्तार विवेचन। (एस्से)। ३-उक्त प्रकार का एक छोटा लेख। ४-रोकथाम। ५-सहारा। अधीनता। ६-आधार। उद्देश्य। ७-स्थापना। ८-वाक्य रचना। टीका। ९-नीम का पेड़। १०-पेशाब रुक जाने का रोग। ११-वह वस्तु जिसे देने का वायदा किया गया हो।
निबंधक पुं० (सं) दे० 'पंजीयक'। (रजिस्ट्रार)।
निबंधन पुं० (सं) १-बाँधना। बन्धन। २-बन्धेज। नियम। ३-आश्रय। ४-लेखों आदि का प्रमाणिक सिद्ध करने के लिए राजकीय पंजी में चढ़ाया जाना। (रजिस्ट्रेशन)। ५-नियत काल जिसमें कोई कार्यकर्त्ता या प्रतिनिधि अपना काम करता है। (टर्म)।
निबंधित वि० (सं) जिसका नियन्धन किया गया हो (रजिस्टर्ड)।
निब स्त्री० (अं) लोहे या पीतल की बनी चोंच जो कलम में ऊपर से खोंची जाती है।
निबकौरी स्त्री० (हि) नीम का फल। निबौली।
निबटना क्रि० (हि) १-निवृत होना। २-समाप्त होना। भुगतना। ३-तै होना।
निबटाना क्रि० (हि) १-निबटेरा। २-झगड़े का फैसला। ३-निर्णय।
निबटारा पुं० (हि) १-झगड़े का फैसला। २-पूरा होना। (सैटलमेंट)। (डिस्पोजल)।
निबटेरा पुं० (हि) १-निबटने की क्रिया। छुट्टी। २-झगड़े का फैसला। निर्णय।
निबड़ना क्रि० (हि) दे० 'निबटना'।
निबड़ा पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा घड़ा।
निबद्ध वि० (सं) १-बँधा हुआ। गुँथा हुआ। २-अवरुद्ध। ३-जड़ा हुआ। सम्बद्ध। ४-पञ्जीबद्ध। (रजिस्टर्ड)। पुं० (सं) ठीक ताल, लय, रस आदि में नियमानुसार गाया हुआ गीत।
निबर वि० (हि) दे० 'निर्बल'।
निबरना क्रि० (हि) १-बँधी हुई वस्तु का अलग होना। छूटना। २-उद्धार पाना। मुक्त होना। ३-अवकाश पाना। ४-निबटना। ५-उलझन दूर होना। सुलझना। ६-न रह जाना।
निबर्हण वि० (सं) नाशक। पु० (सं) नाश। वध। हत्या।
निबल वि० (हि) दे० 'निर्बल'।
निबलाई स्त्री० (हि) दुर्बलता। निर्बलता।
निबह पुं० (हि) दे० 'निर्वह'।
निबहना क्रि० (हि) १-छुटकारा पाना। २-गुजारा होना। ३-वैसा ही बना रहना। नष्ट न होना। ४-बराबर होते रहना। ५-पालन करना। निभाना।
निबहुर पुं० (हि) जहाँ से कोई लौटकर वापिस न आ सके। यमद्वार।
निबहुरा वि० (हि) जो फिर वापिस न आये।
निबाह पुं० (हि) १-निर्वाह। गुजारा। २-परम्परा आदि का पालन करना। ३-पालन।
निबाहक वि० (हि) निभाने वाला।

निमेख पुं० (हिं) दे० 'निमेष' ।
निमेट पुं० (हिं) अमिट । न मिटने वाला ।
निमेष पुं० (सं) १-पलक झपकना । २-पल । क्षण । ३-आंखों के फड़कने का एक प्रकार का रोग ।
निमेषक पुं० (सं) १-पलक । २-जुगनू ।
निमोना पुं० (हिं) पिसे हुए हरे चने या मटर के दानों को पीस कर बनाई हुई स्वादिष्ट दाल ।
निमौनी स्त्री० (हिं) फसल की पहले-पहल कटाई का दिन ।
निम्न वि० (सं) नीचा । गहरा । नीचे । (फोलोइङ्ग) । (लोअर) ।
निम्नग पुं० (सं) नीचे जाने वाला ।
निम्नगा स्त्री० (सं) नदी ।
निम्न-मध्य-वर्ग पुं० (सं) निम्नश्रेणी के ऊपर और मध्यम श्रेणी के रहन-सहन के स्तर से गिरा हुआ परिश्रम-भोगी वर्ग । (लोअर मिडिल क्लास) ।
निम्न-लिखित वि० (सं) नीचे लिखा हुआ । (फोलोइंग) ।
निम्न-वर्ग वि० (सं) समाज का वह वर्ग जो बहुत गरीब होता है और मजदूरी करके अपनी जीविका चलाता है । (लोअर क्लास) ।
निम्न-सदन पुं० (सं) अवरागार । (लोअर हाउस) ।
निम्नोक्त वि० (सं) नीचे कहा हुआ ।
निम्नांकित वि० (सं) नीचे लिखा हुआ ।
निम्नोन्नत वि० (सं) ऊबड़-खाबड़ । ऊँचा-नीचा । विषम ।
निम्लोच पुं० (सं) सूर्यास्त ।
नियंता पुं० (सं) १-नियम बनाने वाला । २-नियन्त्रक । ३-शासक । ४-संचालक ।
नियंत्रक पुं० (सं) १-व्यवस्था करने वाला । शासक २-कार्य चलाने वाला ।
नियंत्रक-महालेखा-परीक्षक पुं० (सं) आय-व्यय के लेखे का परीक्षण करने वाला । बड़ा पदाधिकारी जो साधारण परीक्षकों पर नियन्त्रण रखता है । (कौम्पट्रालर एण्ड एडिटर जनरल) ।
नियंत्रण पुं० (सं) १-नियम या किसी बन्धन में रखना । २- अपनी देख रेख में काम चलाना । ३-व्यवस्थित करना । (कन्ट्रोल) ।
नियंत्रित वि० (सं) १-नियम-बद्ध । नियन्त्रण में रखा हुआ । (कन्ट्रोल्ड) ।
निय वि० (हिं) निज ।
नियत स्त्री० (सं) १-नियम प्रथा आदि के अनुसार किया हुआ । २-ठहराया हुआ । ३-आज्ञा द्वारा स्थिर किया हुआ । नियुक्त । पुं० (सं) शिव । महादेव ।
नियतकालिक-पलीता पुं० (सं) निर्धारित समय के बाद जल उठने वाला पलीता । (टाइम-फ्यूज) ।
नियत-कालिक प्रस्फोट पुं० (सं) दे० 'साविधिक प्रस्फोट' । (टाइम-बम) ।
नियत तिथि स्त्री० (सं) वह तिथि जो काम पूरा करके देने के लिए नियत हो । (ड्यू-डेट) ।
नियतन पुं० (सं) किसी को कोई मकान आदि देने का कार्य । (अलाटमेंट) ।
नियतन-आदेश पुं० (सं) वह पत्र जिसमें किसी मकान इत्यादि के नियत किये जाने का अधिकार दिया गया हो । (अलाटमेंट-लैटर) ।
नियत-भोगी पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसको सरकार द्वारा कोई मकान आदि दिया गया हो । (अलौटी)
नियतांश पुं० (सं) समूची-राशि का एक अंश जो किसी को देने के लिए निर्धारित किया गया हो ।
नियतात्मा वि० (सं) अपने आप को वश में रखने वाला । संयमी ।
नियताप्ति स्त्री० (सं) नाटक में अनेक उपायों को छोड़ कर केवल एक ही उपाय से फल-प्राप्ति का निश्चय ।
नियति स्त्री० (सं) १-नियत होने की क्रिया या भाव २-होनी । अदृश्य । भाग्य । ३-निश्चित पद्धति या व्यवस्था । ४-आत्मसंयम ।
नियति-वाद पुं० (सं) भाग्यवाद । यह सिद्धान्त कि जो कुछ होता है वह पहले से ही ईश्वर द्वारा नियत रहता है ।
नियम पुं० (सं) धर्म, विधि आदि के द्वारा निश्चित व्यवहार या आचरण के निश्चित सिद्धांत । विधान के अनुसार नियन्त्रण । कायदा । (रूल) । २-वह निश्चित आधार जिनके अनुसार किसी संस्था का काम चलाया जाता है । ३-परम्परा । दस्तूर । ४-योग के आठ अंगों में से एक । ५-कवियों की वर्णन करने की एक पद्धति । ६-शर्त । ७-विष्णु । ८-लक्षण । परिभाषा ।
नियमतः क्रि० (सं) नियम या कानून के अनुसार ।
नियमन पुं० (सं) १-नियमबद्ध रखने का कार्य । अनुशासन । २-शासन । दमन । ३-निग्रह । (रेगुलेटिंग) ।
नियमनिष्ठा स्त्री० (सं) नियम के अनुसार कार्य करने की श्रद्धा ।
नियम-पत्र पुं० (सं) शर्तनामा । प्रतिज्ञा-पत्र । (डीड-ऑफ एग्रीमेन्ट) ।
नियमबद्ध वि० (सं) नियमों के अनुकूल ।
नियमबद्ध-विक्रय पुं० (सं) नियमानुसार बिक्री करना । (कोन्ट्रैक्ट ऑफ सेल) ।
नियमवती स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका मासिक स्राव ठीक तरह से होता हो ।
नियम-स्थिति स्त्री० (सं) संन्यास । तपस्या ।
नियमापत्ति स्त्री० (सं) किसी सभा-समिति में किसी

परम्परा या माने हुए नियमों के विरुद्ध कार्यप्रणाली की कोई बात होने पर की गई आपत्ति। (पॉइन्ट ऑफ ऑर्डर)।

नियमावली स्त्री० (सं) किसी संस्था का कार्यप्रणाली या उसके संचालन आदि के बारे में बनाए हुए नियम।

नियमित वि० (सं) नियमबद्ध। निश्चित। नियमानुसार।

नियमित-चमू स्त्री० (सं) वह व्यवस्थित सैन्यदल जो स्थायीरूप से किसी राज्य के लिए बनी हो। (रेगुलर-ट्रूप)।

नियमित-सेना स्त्री० (सं) हर समय तैयार रहने वाली सेना। (रेगुलर-आर्मी)।

नियमी वि० (सं) नियम का पालन करने वाला।

नियम्य वि० (सं) १-नियमित करने योग्य। २-शासित होने योग्य।

नियर अव्य० (हि) पास। निकट। समीप।

नियराई स्त्री० (हि) निकटता। सामीप्य।

नियराना क्रि० (हि) निकट आना या पहुँचना।

नियरे अव्य० (हि) दे० 'नियर'।

नियाज़ स्त्री० (फा) १-इच्छा। २-भेंट। ३-दीनता। ४-मृतक के लिये गरीबों को बाँटा जाने वाला भोजन (मुसल०)। चढ़ावा। प्रसाद।

नियातन पुं० (सं) विनाश करने का कार्य।

नियान पुं० (सं) गोशाला। पुं० (हि) परिणाम। अन्त। अव्य० (हि) दे० 'निदान'।

नियाम पुं० (हि) नियम। कायदा।

नियामक पुं० (सं) १-नियम बनाने वाला। २-विधान या व्यवस्था करने वाला। ३-नाशक। दूर करने वाला। ४-माँझी। ५-सारथी। (रेगुलेटर)।

नियामक-गण पुं० (सं) रसायनिक पारे को मारने वाली औषधियों का एक समूह।

नियामत स्त्री० (अ) दे० 'नेमत'।

नियार पुं० (हि) सुनारों या जौहरी की दुकान का कूड़ा-करकट।

नियारना क्रि० (हि) दूर करना। अलग करना।

नियारा वि० (हि) अलग। जुदा।

नियारिया पुं० (हि) १-मिश्रित वस्तुओं को अलग करने वाला। २-नियार में से छाँट कर माल निकालने वाला। ३-चतुर व्यक्ति।

नियारे अव्य० (हि) दे० 'न्यारे'।

नियाव पुं० (हि) दे० 'न्याव'।

नियुक्त वि० (सं) १-नियोजित। किसी काम पर लगाया हुआ। (एप्वॉइन्टेड)। २-आदिष्ट। आज्ञाप्त जिसे आज्ञा दी गई हो। ३-नियोग करने वाला। जिससे नियोग कराया जाय। ४-संलग्न। लगा हुआ। ५-अधिष्ठापित। अधिकृत। ६-प्रेरित।

नियुक्तक पुं० (सं) किसी संस्था की ओर से उसके प्रतिनिधि के रूप में काम करने वाला व्यक्ति। (एटार्नी)।

नियुक्तक-पत्र पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा किसी की ओर किसी व्यक्ति को कोई काम करने के लिये साधिकार नियुक्त किया गया हो। (पावर ऑफ एटार्नी)।

नियुक्तक-पद पुं० (सं) किसी की ओर से उसके नियुक्तक के रूप में प्राप्त स्थान। (एटार्नीशिप)।

नियुक्तक-शक्ति स्त्री० (सं) किसी की ओर कोई काम करने के लिए दिया गया अधिकार। (पावर-ऑफ-एटार्नी)।

नियुक्ति स्त्री० (सं) १-नियुक्त होने की क्रिया या भाव। २-काम पर नियोजित की अवस्था। तैनाती (एप्वॉइन्टमेन्ट)।

नियुक्ति-कर्त्ता पुं० (सं) किसी काम पर किसी को नियोजित करने वाला व्यक्ति। (एप्वॉइन्टर)।

नियुक्ति-पत्र पुं० (सं) वह पत्र जिससे किसी को काम पर नियुक्त करने की सूचना दी जाती है। (एप्वॉइन्टमेन्ट-लैटर)।

नियुक्ति विभाग पुं० (सं) वह सरकारी विभाग जिसका काम सरकारी विभाग की नौकरी के लिए पदाधिकारी आदि को नियुक्त करना होता है (एप्वॉइन्टमेन्ट डिपार्टमेन्ट)।

नियोक्ता पुं० (सं) १-नियोग करने वाला। २-लोगों को कारखाने आदि में काम के लिए वेतन देकर काम पर लगाने वाला। ३-नियुक्त करने वाला। (एम्प्लायर)।

नियोग पुं० (सं) १-काम में लगाना। २-प्रेरण। प्रवर्तन। ३-आर्यों में किसी स्त्री के पति द्वारा सन्तान न होने पर किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा सन्तान उत्पन्न करवाने की प्रथा। ४-राजाज्ञा से किसी कार्य विशेषतः सैनिक कार्य के लिये होने वाली नियुक्ति। (कमीशन) ५-आज्ञा। ६-निश्चय।

नियोगस्थ वि० (सं) १-जिसका नियोग हुआ हो। २-जो सरकार की आज्ञा से किसी कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो। (कमीशन्ड)।

नियोगार्थ पुं० (सं) नियुक्त करने का उद्देश्य।

नियोगी पुं० (सं) १-वह व्यक्ति जिसका नियोग हुआ हो। २-जो सरकार द्वारा किसी विशेष कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो। (कमीशन-होल्डर)

नियोजक पुं० (सं) नियुक्त-कर्त्ता। नियोक्ता। (एम्प्लॉयर)।

नियोजक-उत्तरदायित्व स्त्री० (सं) मालिक का दायित्व (एम्प्लायर-लायबिलिटी)।

नियोजक-दायित्व पुं० (सं) मालिक द्वारा किसी को कोई कार्य देने का दायित्व। (एम्प्लायर-लाय-

विलिटी)।
नियोजन पुं० (सं) १-किसी काम पर नियुक्त करने की क्रिया या भाव। २-सेवा-योजना। मजदूरी देकर किसी काम पर लगाना। (एम्पलॉयमैंण्ट)। ३-किसी व्यक्ति को किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त करना। (कमीशन)।
नियोजन-केन्द्र पुं० (सं) वेकार व्यक्तियों को नौकरी दिलवाने का सरकारी कार्यालय। (एम्पलॉयमैंण्ट-एक्सचेंज)।
नियोजनालय पुं० (सं) वेकारों को काम दिलाने का दफ्तर। काम-दिलाऊ दफ्तर। (एम्पलायमैन्ट-ब्यूरो)
नियोज्य वि० (सं) जो नियुक्त करने योग्य हो। पुं० (सं) अधिकारी। अफसर।
नियोजित वि० (सं) नियुक्त किया हुआ। व्यापृत। एम्पलॉयड)। पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसे किसी कार्यालय या कारखाने में वेतन देकर रखा गया हो (एम्पलाई)।
निर् अव्य० (सं) वाहर। दूर। विना। रहित।
निरंक-धनादेश पुं० (सं) वह धनादेश (चैक) जिस पर रुपये की संख्या न लिखी गई हो। (ब्लैंकचैक)
निरंकार पुं० (सं) दे० 'निराकार'।
निरंकुश वि० (सं) जिसके लिए कोई रुकावट न हो या जो कोई अंकुश न माने। स्वेच्छाचारी।
निरंग वि० (सं) १-अङ्ग-रहित। खाली। वदरङ्ग।
निरंग-रूपक पुं० (सं) रूपक अलङ्कार का भेद जिसमें उपमानों के सब अङ्गों की चर्चा न आये।
निरंजन वि० (सं) अञ्जन-रहित। जिसमें काजल न हो। २-निर्दोष।
निरंजना स्त्री० (सं) १-पूर्णिमा। दुर्गा का नाम।
निरंजनी पुं० (सं) साधुओं के अनेक सम्प्रदायों में से एक।
निरंतर वि० (सं) १-जिसमें फासला या अन्तर न पड़े। अन्तरहित। अविछिन्न। २-घना। निविड़ ३-स्थायी। अविचल। ४-जिसमें भेद न हो। ५-अन्तर्धान न हो। क्रि० वि० (सं) लगातार। सदा। वरावर।
निरंतराभ्यास पुं० (सं) लगातार किया जाने वाला अभ्यास।
निरंवर वि० (सं) दिगम्बर। नङ्गा।
निरंश वि० (सं) १-जिसे उसका भाग न मिला हो। २-विना अक्षांश का। पुं० (सं) संक्रान्ति।
निरकार वि० (हि) दे० 'निराकार'।
निरक्ष वि० (सं) जो पृथ्वी के वीच के भाग में हो। विना पासे का।
निरक्षदेश पुं० (सं) भूमध्यरेखा के उत्तर या दक्षिण के वह देश जहाँ रात-दिन वरावर होते हैं।
निरक्षन पुं० (सं) दे० 'निरीक्षण'।
निरक्षर वि० (सं) अनपढ़।
निरख स्त्री० (हि) भाव। दर।
निरखना क्रि० (हि) देखना। ताकना। अवलोकन करना।
निरग पुं० (हि) दे० 'नृग'।
निरगुन वि० (हि) दे० 'निर्गुण'।
निरगुनिया वि० (हि) मूर्ख। निरगुन पन्थ का अनुयायी।
निरगुनी वि० (हि) गुणरहित। अनाड़ी।
निरग्नि वि०(सं) ब्राह्मण जो अग्निहोत्र न करता।
निरच्छ वि० (हि) अक्षरहित। अन्धा।
निरजर वि० (हि) जो कभी पुराना न हो।
निरजिन पुं० (सं) जिसके चमड़ा न हो।
निरजोस पुं० (सं) १-निचोड़। सार। २-निर्णय।
निरझर पुं० (हि) दे० 'निर्झर'।
निरझरनी स्त्री० (हि) दे० 'निर्झरिणी'।
निरझरी स्त्री० (हि) दे० 'निर्झरी'।
निरत वि० (सं) लीन। काम में लगा हुआ।
निरतना क्रि० (हि) नाचना। नृत्य करना।
निरति स्त्री० (सं) अत्यन्त रति। अधिक प्रीति।
निरतिशय वि० (सं) परम। सबसे बढ़कर। पुं० (सं) परमेश्वर।
निरत्यय वि० (सं) खतरे से सुरक्षित। दोष-शून्य। निस्वार्थी।
निरदई वि० (हि) दे० 'निर्दय'।
निरदोषी वि० (हि) दे० 'निर्दोषी'।
निरधार पुं० (हि) निश्चय करना। निर्धारण। वि० (हि) विना आधार का। अव्य० (हि) अनिश्चय-पूर्वक।
निरधारना क्रि० (हि) तय करना। निश्चय करना।
निरध्व वि० (सं) गुमराह। जो मार्ग भूल गया हो।
निरनउ पुं० (हि) दे० 'निर्णय'।
निरनुनासिक वि० (सं) जिसका उच्चारण नाक से न हो।
निरनुमोदन करना क्रि० (हि) किसी प्रस्ताव नीति आदि का समर्थन न करना। (टु डिसऐप्रूव)।
निरने पुं० (हि) दे० 'निर्णय'।
निरन्न वि० (सं) निराहार। जो अन्न न खाए हुए हो
निरप वि० (सं) जलहीन पुं० (हि) दे० 'नृप'।
निरपना वि० (हि) जो आत्मीय न हो। विराना। गैर।
निरपराध वि० (सं) निर्दोष। अपराध-रहित। वेकसूर क्रि० वि० (सं) विना अपराध के।
निरपराधी वि० (हि) दे० 'निरपराध'।
निरपवाद वि० (सं) अपवाद-रहित। निर्दोष।
निरपेक्ष वि० (सं) १-जिसे किसी की कामना न हो। २-जो किसी भी पक्ष में न हो। ३-जो किसी पर

आश्रित न हो। विरक्त। उदासीन।
निरपेक्षा स्त्री० (सं) उदासीनता। उपेक्षा।
निरपेक्षित वि० (सं) जिसकी अपेक्षा या चाह न की गई हो।
निरपेक्षी वि०(सं) उदासीन। अपेक्षा करने वाला।
निरफल वि० (सं) दे० 'निष्फल'।
निरबन्ध वि० (सं) बिना किसी बन्धन का।
निरबंसी वि० (हि) सन्तानरहित।
निरबर्ती वि० (हि) त्यागी। विरागी।
निरबल वि० (हि) दे० 'निर्बल'।
निरबहना क्रि० (हि) निर्वाह होना।
निरबान पु० (हि) दे० 'निर्वाण'।
निरबाहना क्रि० (हि) दे० 'निबाहना'।
निरबिसी स्त्री० (हि) दे० 'निर्विषी'।
निरबैरा पु० (हि) दे० 'निर्वैर'।
निरभय वि० (हि) दे० 'निर्भय'।
निरभर वि० (हि) दे० 'निर्भर'।
निरभिमान वि० (सं) गर्व रहित। जिसे अभिमान न हो।
निरभिलाष वि० (सं) निरीह। जिसे किसी वस्तु की अभिलाषा न हो।
निरभ्र वि० (सं) मेघ रहित।
निरमना क्रि० (हि) बनाना। निर्माण करना।
निरमल वि० (हि) दे० 'निर्मल'।
निरमली स्त्री० (हि) दे० 'निर्मली'।
निरमान पु० (हि) दे० 'निर्माण'।
निरमायल पु० (हि) दे० 'निर्माल्य'।
निरमित्र वि० (सं) शत्रु रहित। पु० (सं) नकुल के एक पुत्र का नाम।
निरमूल वि० (हि) दे० 'निर्मूल'।
निरमूलना क्रि० (हि) नष्ट करना। उन्मूलन करना।
निरमोल वि० (हि) दे० 'अनमोल'।
निरमोलिक वि० (हि) बहुमूल्य। अनमोल।
निरमोही वि० (हि) दे० 'निर्मोही'।
निरय पु० (सं) नरक। दोजख।
निरयण पु० (सं) एक प्रकार की ज्योतिष की गणना।
निरर्गल वि०(सं) १-बिना चटखनी का। २-बे रोक-टोक।
निरर्थ वि० (सं) दे० 'निरर्थक'।
निरर्थक वि० (सं) व्यर्थ। हानिकर। निष्प्रयोजन। न्याय में एक निग्रह स्थान।
निरर्थक किया हुआ वि० (हि) मन्सूख किया हुआ। (वायड)।
निरवकाश वि० (सं) जिसमें अवकाश या गुंजायश न हो।
निरवच्छिन्न वि० (सं) निरन्तर। जिसका क्रम न टूटा हो।
निरवद्य वि० (सं) विशुद्ध। उत्कृष्ट। दोषरहित।
निरवधि वि० (सं) निःसीम। जिसकी कोई सीमा न हो।
निरवयव वि० (सं) निराकार। अंगरहित। जिसमें हिस्से न हों।
निरवलम्ब वि० (सं) बिना सहारे का। आधार रहित।
निरवशेष वि० (सं) समूचा। पूर्ण। समाप्त।
निरवसाद वि० (सं) अवसाद रहित। जिसे चिन्ता न हो।
निरवाना क्रि० (हि) निराने का कार्य करना।
निरवारना क्रि० (हि) १-बाधा डालने वाली वस्तु को हटाना। २-मुक्त करना। छुड़ाना। २-छोड़ना। त्यागना। ३-बंधन खोलना। ४-सुलझाना। फैसला करना। अलग करना।
निरवाह पु० (हि) दे० 'निर्वाह'।
निरवाहना क्रि० (हि) दे० 'निबाहना'।
निरवेद पु० (हि) दे० 'निर्वेद'।
निरशन वि० (सं) जिसने भोजन न किया हो। जिसे भोजन से परहेज हो। पु० (सं) लंघन। उपवास।
निरसक वि० (हि) दे० 'निःशंक'।
निरस वि० (सं) १-रसहीन। २-बे स्वाद। फीका। ३-निस्तत्व। ४-रसासूखा। ५-विरक्त।
निरसन पु० (सं) १-पहली आज्ञा या निश्चय को रद्द करना। (केन्सलेशन, रिवोकेशन)। २-दूर हटना। ३-निराकरण। ४-परिहार। नाश। ५-वध। ६-बाहर करना। निकाल देना। (डिस्चार्ज)। ७-किसी कानून को अधिकारपूर्वक रद्द कर देना। (रिपील)।
निरसनाधार पुं० (सं) वह आधार जिस पर (वायुयान आदि को) उतारा न जा सके। स्थापन न करने का आधार। (ग्राउन्ड ऑफ सैटिंग एसाइड)।
निरस्त वि० (सं) १-जो रद्द कर दिया गया हो। (रिजेक्ट, कैन्सल्ड)। २-निकाला हुआ। त्याग किया हुआ। ३-वर्जित। ४-उगला हुआ। ५-शीघ्र उच्चारित।
निरस्त्र वि० (सं) निहत्था। अस्त्रहीन।
निरस्त्रीकरण पु० (सं) १-शस्त्रास्त्रों आदि की संख्या कम करना। २-अस्त्र छीन लेना। (डिसआर्मामेन्ट)
निरस्त्रीकरण सम्मेलन पुं० (सं) शत्रु को पराजित करने के बाद किया गया वह सम्मेलन जिसमें उस देश को निरस्त्र करने के सम्बन्ध में विचार-विनमय किया जाय। (डिसआर्मामेन्ट कॉन्फरेंस)।
निरस्त्रीकृत वि० (सं) जिसके शस्त्रास्त्र छीन लिये गये हों। (डिसआर्म्ड)।
निरस्थि वि० (सं) जिसमें हड्डी न हो। जिसकी हड्डी निकाल ली गई हो। पुं० (सं) बिन हड्डी का मांस।
निरस्यमान वि० (सं) अलग किया हुआ।

निरहंकार वि० (सं) अभिमानरहित। घमंडरहित।
निरहंकृत वि० (सं) अहंकारशून्य।
निरहंकृति स्त्री० (सं) निरहंकार। निरभिमान।
निरहंक्रिय वि० (सं) जिसका अभिमान नष्ट हुआ हो।
निरहम् वि० (सं) अहंकार रहित।
निरहेतु वि० (हि) दे० 'निर्हेतु'।
निरहेल वि० (हि) जिसकी कदर न हो।
निरा वि० (हि) १-विशुद्ध। खालिस। २-एक मात्र। केवल। ३-निपट। एक दम। बिलकुल।
निराई स्त्री० (हि) १-निराने का कार्य। २-निराने की मजदूरी। (वीडिंग)।
निराकरण पुं० (सं) १-प्रथक् करने या छांटने की क्रिया। २-निवारण। ३-सोच विचार कर ठीक निर्णय करना। ४-दूर हटाना। मिटाना। रद्द करना। ५-किसी युक्ति का खण्डन करना। (एब्रोगेशन)।
निराकांक्ष वि० (सं) इच्छा-रहित। कामनाशून्य। निरपेक्ष।
निराकार वि० (सं) १-बिना आकार का। कुरूप। भद्दा। २-विनम्र। लज्जालु। पुं० (सं) परमात्मा। आकाश।
निराकुल वि०(सं) १-आकुल या क्षुब्ध न होने वाला। २-अनुद्विग्न। ३-बहुत घबराया हुआ।
निराकृत वि० (सं) १-रद्द की हुई। दूर की हुई। २-खण्डन की हुई।
निराकृति वि० (सं) आकृति रहित।
निराक्रिया स्त्री० (सं) प्रतिबन्ध।
निराक्रोश वि० (सं) जिसे दोषी न ठहराया गया हो।
निराखर वि० (हि) १-बिना अक्षर का। मौन। २-अपढ़। जिसे अक्षर-बोध न हो। मूर्ख।
निराग वि० (सं) निरपराध। निष्पाप।
निरागस् वि० (सं) दोषरहित।
निराग्रह वि० (सं) आग्रह-रहित।
निराचार वि० (हि) आचारहीन।
निराजी स्त्री० (हि) जुलाहों के करघों में लगने वाली एक लकड़ी।
निराट वि० (हि) निरा। अकेला। निपट। एक मात्र अव्य० (हि) बिलकुल।
निराटा वि० (हि) अनोखा। निराला।
निराडंबर वि०(सं) १-आडम्बर रहित। जिसके ठाठ-बाट न हों। २-ढोलों से रहित।
निरातपा स्त्री० (सं) रात। रजनी।
निरात्मक वि० (सं) आत्माशून्य।
निरादर पुं० (सं) अपमान। आदर रहित।
निराधार वि० (सं) १-बे बुनियाद। मिथ्या। २-निराश्रय। असहाय।
निराधि वि० (सं) नीरोग। चिन्ता रहित।
निरानन्द वि० (सं) आनन्द रहित। पुं० (सं) दुःख। आनन्द का अभाव।
निराना क्रि० (हि) फसल के पौधों के आसपास उ[गी] हुई अनावश्यक घास आदि को खोद कर हटाना।
निरापद वि० (सं) १-निर्विघ्न। २-जिस पर को[ई] आपत्ति न हो। ३-सुरक्षित।
निरापुन वि० (हि) पराया। बेगाना। जो अपना हो।
निरामय वि० (सं) १-स्वस्थ। रोग रहित। २-दो[ष] शून्य। शुद्ध। निष्कलंक। ३-सम्पूर्ण। ४-अभ्रांत पुं० (सं) १-जंगली बकरा। २-सूअर।
निरामाल पुं० (सं) कैथ का पेड़।
निरामिष वि० (सं) १-मांस रहित (भोजन)। २-[जो] मांस न खाता हो। (वेजिटेरियन)।
निरामिषभोजी वि० (सं) जो मांस न खाता हो (वेजिटेरियन)।
निराय वि०(सं) जिससे कुछ भी लाभ या आय न।
निरायास वि० (सं) चेष्टारहित।
निरायुध वि० (सं) निरस्त्र। बिना हथियार के।
निरार वि० (हि) पृथक। अलग।
निरारा वि० (हि) दे० 'निरार'।
निरालंब वि० (सं) दे० 'निरवलम्ब'।
निराला पुं० (सं) एकान्त स्थान। वि० (सं) १ निर्जन। एकान्त। २-विलक्षण। अनूठा। अनोखा।
निरावना क्रि० (हि) दे० 'निराना'।
निरावर्ष वि० (सं) वर्षा से निवारित।
निरावरण वि० (सं) बिना आवरण का खुला हुआ।
निरावृत वि० (सं) बिना ढका हुआ।
निराश वि० (सं) हताश। हतोत्साह। नाउम्मीद।
निराशा स्त्री० (सं) नाउम्मीदी। आशा का अभाव।
निराशावाद पुं० (सं) १-यह सिद्धान्त कि संसा[र] केवल बुराइयों से ही परिपूर्ण है। २-केवल सं[सार] की बुरी अवस्था को ही देखना। (पेस्सीइज्म)।
निराशावादी वि०(सं) आशा या सफलता में विश्वा[स] न रखने वाला। (पेस्सीमिस्ट)।
निराशिष वि० (सं) आशीर्वादशून्य।
निराशी वि० (हि) हताश। उदासीन। विरक्त।
निराश्रय वि० (सं) १-आश्रयरहित। आधारहीन। असहाय। २-निर्लिप्त।
निरास वि० (हि) दे० 'निराश'। पुं०(हि) निराकर[ण] खण्डन। दूर करना।
निरासा पुं० (हि) दे० 'निराशा'।
निरासी वि० (हि) हताश। विरक्त। उदास।
निराहार वि० (सं) १-आहार रहित। जिसने कुछ न खाया या पीया हो। २-जिसके अनुष्ठान भोजन न किया जाता हो (व्रत)।
निरिंग वि० (सं) निश्चय। अचल।
निरिंगिणी स्त्री० (सं) चिक। पर्दा। झिलमिली।

निरहंकार वि० (सं) अभिमानरहित। घमंडरहित।
निरहंकृत वि० (सं) अहंकारशून्य।
निरहंकृति स्त्री० (सं) निरहंकार। निरभिमान।
निरहंक्रिय वि० (सं) जिसका अभिमान नष्ट हुआ हो।
निरहम् वि० (सं) अहंकार रहित।
निरहेतु वि० (हि) दे० 'निर्हेतु'।
निरहेल वि० (हि) जिसकी कदर न हो।
निरा वि० (हि) १-विशुद्ध। खालिस। २-एक मात्र। केवल। ३-निपट। एक दम। बिलकुल।
निराई स्त्री० (हि) १-निराने का कार्य। २-निराने की मजदूरी। (वीडिंग)।
निराकरण पुं० (सं) १-पृथक् करने या छांटने की क्रिया। २-निवारण। ३-सोच विचार कर ठीक निर्णय करना। ४-दूर हटाना। मिटाना। रद्द करना। ५-किसी युक्ति का खण्डन करना। (एब्रोगेशन)।
निराकांक्ष वि० (सं) इच्छा-रहित। कामनाशून्य। निरपेक्ष।
निराकार वि० (सं) १-बिना आकार का। कुरूप। भद्दा। २-विनम्र। लज्जालु। पुं० (सं) परमात्मा। आकाश।
निराकुल वि०(सं) १-आकुल या क्षुब्ध न होने वाला। २-अनुद्विग्न। ३-बहुत घबराया हुआ।
निराकृत वि० (सं) १-रद्द की हुई। दूर की हुई। २-खण्डन की हुई।
निराकृति वि० (सं) आकृति रहित।
निराक्रिया स्त्री० (सं) प्रतिबन्ध।
निराक्रोश वि० (सं) जिसे दोषी न ठहराया गया हो।
निराखर वि० (हि) १-बिना अक्षर का। मौन। २-अपढ़। जिसे अक्षर-बोध न हो। मूर्ख।
निराग वि० (सं) निरपराध। निष्पाप।
निरागस् वि० (सं) दोषरहित।
निराग्रह वि० (सं) आग्रह-रहित।
निराचार वि० (हि) आचारहीन।
निराजो स्त्री० (हि) जुलाहों के करघों में लगने वाली एक लकड़ी।
निराट वि० (हि) निरा। अकेला। निपट। एक मात्र अव्य० (हि) बिलकुल।
निराटा वि० (हि) अनोखा। निराला।
निराडंबर वि०(सं)१-आडम्बर रहित। जिसके ठाठ-बाट न हों। २-ढोलों से रहित।
निरातपा स्त्री० (सं) रात। रजनी।
निरात्मक वि० (सं) आत्माशून्य।
निरादर पुं० (सं) अपमान। आदर रहित।
निराधार वि० (सं) १-बे बुनियाद। मिथ्या। २-निराश्रय। असहाय।
निराधि वि० (सं) नीरोग। चिन्ता रहित।
निरानन्द वि० (सं) आनन्द रहित। पुं० (सं) दुःख। आनन्द का अभाव।
निराना क्रि० (हि) फसल के पौधों के हुई अनावश्यक घास आदि को खो
निरापद वि० (सं) १-निर्विघ्न। २-ि आपत्ति न हो। ३-सुरक्षित।
निरापुन वि० (हि) पराया। बेगाना। हो।
निरामय वि० (सं) १-स्वस्थ। रोग र शून्य। शुद्ध। निष्कलंक। ३-सम्पूर् पुं० (सं) १-जंगली बकरा। २-सुअ
निरामाल पुं० (सं) कैथ का पेड़।
निरामिष वि० (सं) १-मांस रहित (मं मांस न खाता हो। (वेजिटेरियन)
निरामिषभोजी वि० (सं) जो मांस न (वेजिटेरियन)।
निराय वि०(सं) जिससे कुछ भी लाभ
निरायास वि० (सं) चेष्टारहित।
निरायुध वि० (सं) निरस्त्र। बिना ह
निरार वि० (हि) पृथक। अलग।
निरारा वि० (हि) दे० 'निरार'।
निरालंब वि० (सं) दे० 'निरवलम्ब'
निराला पुं० (सं) एकान्त स्थान। निर्जन। एकान्त। २-विलक्षण। अ
निरावना क्रि० (हि) दे० 'निराना'।
निरावर्ष वि० (सं) वर्षा से निवारित
निरावरण वि० (सं) बिना आवरण
निरावृत वि० (सं) बिना ढका हुआ
निराश वि० (सं) हताश। हतोत्साह।
निराशा स्त्री० (सं) नाउम्मीदी। आ
निराशावाद पुं० (सं) १-यह सिद केवल बुराइयों से ही परिपूर्ण है। की बुरी अवस्था को ही देखना।
निराशावादी वि०(सं) आशा या सफ न रखने वाला। (पेसीमिस्ट)।
निराशिष वि० (सं) आशीर्वादशून्य
निराशी वि० (हि) हताश। उदासीन
निराश्रय वि० (सं) १-आश्रयरहित असहाय। २-निर्लिप्त।
निरास वि० (हि) दे० 'निराश'। पु खण्डन। दूर करना।
निरासा पुं० (हि) दे० 'निराशा'।
निरासी वि० (हि) हताश। विरक्त।
निराहार वि० (सं) १-आहार रहित न खाया या पीया हो। २-जिस भोजन न किया जाता हो (व्रत)।
निरिंग वि० (सं) निश्चय। अचल।
निरिंगिणी स्त्री० (सं) चिक। पर्दा।

निरिंद्रिय वि० (सं) १-इन्द्रिय रहित। (इनॉर्गेनिक)। २-जिसका कोई इन्द्रिय काम न करती हो।
निरिच्छ वि० (सं) इच्छा रहित। निरीह।
निरिच्छन पुं० (सं) दे० 'निरीक्षण'।
निरिच्छना क्रि० (सं) देखना। निरीक्षण करना।
नेरी वि० (हि) दे० 'निरा'।
निरीक्षक पुं० (सं) १-अच्छी प्रकार देखने वाला। २-निरीक्षण करने वाला। (विज़ीटर, इन्सपेक्टर)। ३-परीक्षा भवन में परीक्षार्थियों की देख-रेख करने वाला। (इनविजिलेटर)।
निरीक्षण पुं०(सं) १-गौर करके देखना। मुआइना करना। (इनपेक्शन)। २-देखने का ढंग। चितवन नेत्र।
निरीक्षणाधिकारी पुं० (सं) निरीक्षण के सम्बन्ध में पूर्ण अधिकार प्राप्त अधिकारी।
निरीक्षणपुस्त स्त्री० (सं) वह पन्नी जिसमें निरीक्षक अपने विचार लिखता है। (विज़ीटर्स बुक)।
निरीक्षणशुल्क पुं० (सं) निरीक्षण करने की फीस। (इन्पेक्शन फी)।
निरीक्ष्यमाण वि० (सं) जिसको देखते हों। जिसका निरीक्षण किया गया हो।
निरीक्षा स्त्री० (सं) देखना। दर्शन।
निरीक्षित वि० (सं) देखा हुआ। जांच किया — देखाभाला हुआ।
निरीश वि० (सं) १-बिना स्वामी का। २-नास्ति पुं० (सं) हलका फल।
निरीश्वर वि० (सं) ईश्वर से रहित।
निरीश्वरवाद पुं०(सं) ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न करने वाला सिद्धान्त।
निरीश्वरवादी पुं० (सं) ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाले सिद्धान्त का अनुयायी।
निरीह वि० (सं) १-जो क्रियाशील न हो। विरक्त उदासीन। २-निर्दोष। बेचारा। ३-शान्ति-प्रिय। तटस्थ।
निरीहता स्त्री० (सं) निरीह होने का भाव।
निरीहा स्त्री० (सं) चेष्टाहीनता। चाह का न होना।
निरवार पुं० (हि) दे० 'निरुवार'।
निरवारना क्रि० (हि) दे० 'निरुवारना'।
निरुक्त वि० (सं) १-निश्चित रूप से कहा गया। निश्चित किया हुआ। २-नियोग कराने वाला। पुं०(सं) १-छः वेदांगों में एक। २-यास्क मुनि द्वारा रचित एक ग्रन्थ जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या की गई है। ३-व्याकरण की वह शाखा जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति और उनके रूपों के विकास आदि का विवेचन होता है। (एटिमोलोजी)।
निरुक्तकार पुं० (सं) निरुक्त ग्रन्थ के रचयिता यास्क मुनि।

निरुक्ति स्त्री० (सं) किसी वाक्य या पद की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का विवेचन हो। एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का प्रचलित अर्थ छोड़ कर युक्तिपूर्वक कोई मनमाना अर्थ किया जाय।
निरुच्छ्वास वि०-(सं) जहाँ बहुत से लोग न आ सकें (स्थान)। संकीर्ण। जहाँ खड़े होने की जगह न हो।
निरुज वि० (हि) दे० 'नीरुज'।
निरुत्तर वि० (सं) १-जिसका कोई उत्तर न हो। लाजवाब। २-जो उत्तर न दे पाये। जो कायल हो जाय।
निरुत्सव वि० (सं) बिना उत्सवों का। धूमधामरहित
निरुत्साह वि० (सं) उत्साह हीन। पुं० (सं) उत्साह का अभाव।
निरुत्सुक वि० (सं) जो उत्सुक न हो।
निरुदक वि० (सं) जलहीन। बिना जल का।
निरुदन पुं० (सं) रासायनिक तत्वों या वनस्पतियों में से जल या उसका अंश निकालना या सुखाना। (डी हाइड्रेशन)।
निरुदित वि० (सं) जिसमें रासायनिक तत्वों आदि का अंश या जल सुखाया ... [illegible]

[illegible] ... प्रकार की मनोवृत्तियों में से एक।
निरुद्यम वि० (सं) उद्योगरहित। बेकार। [illegible]
[illegible]

निरुपद्रव वि०(सं) १-जिसमें कोई उपद्रव न हो। २-जो उपद्रव न करता हो। मंगलकारी।
निरुपधि वि० (सं) पवित्र। विशुद्ध। निश्छल।
निरुपभोग वि० (सं) जिसका कोई उपभोग न हो।
निरुपम वि० (सं) उपमा रहित। बेजोड़। जिसकी कोई उपमा न हो। अतुलनीय।
निरुपयोग वि० (सं) जो उपयोग या काम में न आवे। व्यर्थ का।
निरुपयोगी वि० (सं) निरर्थक। बेकार।
निरुपाधि वि० (सं) दे० 'निरुपधि'।
निरुपाय वि० (सं) जो कोई उपाय न कर सके। जिसका कोई भी उपाय न हो सके।
निरुपेक्ष वि० (सं) उपेक्षारहित। जिसमें उपेक्षा न हो
निरुवरना क्रि० (हि) सुलझना। कठिनता दूर होना
निरुवार पुं० (हि) १-छुटकारा। बचाव। २-

निर्घंट पुं० (सं) शब्द या ग्रन्थ-सूची। फ़ेहरिस्त।
निर्घंट पुं० (सं) वह बाजार या हाट जिस पर कोई राजकर न लगता हो। सबके लिए खुला बाजार।
निर्घात पुं० (सं) वायु के तेज झोकों से उत्पन्न शब्द २-बिजली की कड़क। तूफान। ३-ध्वंश। नाश। ४-भूकम्प। ५-प्रहार।
निर्घोरणी स्त्री० (सं) पानी का सोता।
निर्घृण वि० (सं) १-जिसे घृणा न हो। २-जिसे बुरे कामों से लज्जा या घृणा न हो। ३-निष्ठुर। संगदिल। ४-निर्लज्ज।
निर्द्वन्द्व वि० (हि) निरङ्कुश। कष्टरहित।
निर्जन वि० (सं) जहाँ कोई भी न हो। सुनसान। एकान्त। पुं० (सं) लाभ, ब्याज आदि के रूप में प्राप्त धन।
निर्जनता स्त्री०(सं) एकान्तता। सूनापन। जनहीनता
निर्जनीकरण पुं० (सं) किसी बसे हुए स्थान को युद्ध आदि के कारण वहाँ बसे हुए लोगों को हटा देना। किसी स्थान की आबादी हटा देना। (डीपॉपुले-

[illegible]

निर्जलएकादशी स्त्री० (सं) जेठ सुदी एकादशी जिस दिन हिन्दू लोग व्रत रखते हैं और पानी तक नहीं पीते।
निर्जलीकरण पुं०(सं) रसायनिक प्रक्रिया द्वारा वनस्पतियों आदि का जल निकाल कर सुखा देना। (डीहाइड्रेशन)।
निर्जित वि० (सं) जिसे जीत लिया गया हो।
निर्जीव वि० (सं) १-जीव रहित। बेजान। २-अशक्त उत्साहहीन।
निर्ज्वर वि० (सं) जिसको ज्वर न हो।
निर्झर पुं० (सं) १-पानी का झरना। सोता। चश्मा २-सूर्य का एक घोड़ा।
निर्झरिणी स्त्री० (सं) नदी। सोता। झरना।
निर्झरी स्त्री० (सं) झरना। पानी का सोता। पुं०(सं) पर्वत। पहाड़।
निर्णय पुं० (सं) १-औचित्य तथा अनौचित्य आदि का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक को उचित ठहराना। निश्चय। २-किसी विषय में कोई सिद्धान्त स्थिर करना। ३-फैसला। निपटारा (जजमेंट)।
निर्णयन पुं० (सं) निपटारा या फैसला करना।
निर्णयोच्चार पुं० (सं) निर्णय या फैसला सुनाना। (टु डिलीवर जजमेंट)।
निर्णायक पुं० (सं) निर्णय या फैसला करने वाला।
निर्णायक-मत पुं० (सं) किसी सभा, संस्था आदि में सभापति का वह मत (वोट) जो वह उस समय देता है जब जो किसी विषय पर, उपस्थित सदस्यों के मत दान के समय, मत बराबर होने पर फैसला न होता हो। (कास्टिंग वोट)।
निर्णीत वि० (सं) जिसका फैसला हो चुका हो।
निर्णेता पुं० (सं) निर्णायक। साक्षी।
निर्त पुं० (सं) नृत्य।
निर्तक पुं० (हि) नर्तक। भांड। नट।
निर्तना क्रि० (हि) नाचना।
निर्दंत वि० (सं) जिसके दाँत न हों।
निर्दंभ वि० (सं) जिसे अभिमान न हो।
निर्दई वि० (हि) दे० 'निर्दय'।
निर्दय वि० (सं) दयारहित। बेरहम। निष्ठुर।
निर्दयता पुं० (सं) निष्ठुरता।

[illegible] हो। २- [illegible] जो किसी

[illegible] बताया हुआ। ठहराया हुआ। २-किसी को दिया या सौंपा हुआ। ३-निर्णीत। (एसाइन्ड)।
निर्दिष्टि स्त्री० (सं) १-किसी के लिये कोई वस्तु या उसका भाग निर्दिष्ट करने का काम। निर्धारण। २-वह वस्तु जिसे निर्दिष्ट किया गया हो। (एलोकेशन, एप्वाइंटमेंट, स्पेसिफ़िक)।
निर्दूषण वि० (हि) दे० 'निर्दोष'।
निर्देश पुं० (सं) १-किसी कार्य का आकार या विधि बतलाना। (डाइरेक्शन) २-आज्ञा। हुक्म। आदेश ३-उल्लेख। कथन। (रेफरेन्स)। ४-कोई वस्तु किसी को काम के लिए सौंपना। (एसाइन्मेंट)। ५-वृत्तान्त।
निर्देशक पुं० (सं) दे० 'निदेशक' (डाइरेक्टर)। वि० (सं) जो निर्देश करता हो।
निर्देशन पुं० (सं) निर्देश करने की क्रिया या भाव। अन्य स्थान पर आई हुई बात का उल्लेख। (रेफरेन्स)।
निर्देशिका स्त्री०(सं) दे० 'निदेशिका'। (डाइरेक्टरी)
निर्देष्टा पुं० (सं) निर्देश करने वाला।
निर्दोन्ध वि० (सं) सुखी।
निर्दोष वि० (सं) १-जिसमें कोई दोष न हो। बे-ऐब

२-निरपराध। निष्कलंक।
निर्दोषता स्त्री० (सं) दोष विहीनता। शुद्धता। अकलंकता।
निर्दोषी वि० (सं) दे० निर्दोष।
निर्द्वंद वि० (सं) जिसका विरोध करने वाला कोई न हो।
निर्धंधा वि० (हि) जिसके हाथ में काम न हो। बेरोजगार।
निर्धन वि० (सं) धनहीन। गरीब। दरिद्र। कंगाल।
निर्धनता स्त्री० (सं) दरिद्रता। गरीबी। कंगाली।
निर्धातु वि० (सं) वीर्यहीन। जिसका वीर्य क्षीण हो गया हो।
निर्धार पुं० (सं) दे० 'निर्धारण'।
निर्धारक पुं० (सं) वह जो किसी बात का निर्धारण करने वाला हो।
निर्धारण पुं० (सं) १-ठहराना या निश्चित करना। २-न्याय में समान पदार्थों में से गुण आदि की समानता के विचार से कुछ का वर्गीकरण। ३-वह निश्चित करना कि किसी का मूल्य या महत्व क्या है और उस पर क्या कर लगाना चाहिए। (एसेस्मेंट)।
निर्धारणीय वि० (सं) कर लगाने योग्य। (एसेस्बल)
निर्धारना क्रि० (हि) निश्चित करना। ठहराना।
निर्धारित वि० (सं) निश्चित किया हुआ।
निर्धारिती पुं०(हि) वह जिसके विषय में यह निश्चय किया जाय कि उससे कितना कर लिया जाय। (एसेसी)। करदाता।
निर्धूत वि० (सं) १-धोया हुआ। २-खंडित। ३-जिसका त्याग कर दिया गया हो।
निर्धूम वि० (सं) जहाँ धूँआ न हो। धूमरहित।
निर्धूम-विस्फोट पुं० (सं) एक प्रकार का विस्फोटक जिसमें धूँआ नहीं होता। 'कर्डाइट'।
निर्पोत वि० (हि) साफ किया हुआ। धुला हुआ।
निर्नर वि० (सं) जिसको मनुष्यों ने त्याग दिया हो। नर-रहित।
निर्निमेष क्रि० वि० (सं) एकटक। बिना पलक झपकाये। वि० (सं) जो पलक न गिरावे या जिसमें पलक न गिरे।
निर्पक्ष वि० (हि) दे० 'निष्पक्ष'।
निर्फल वि० (हि) दे० 'निष्फल'।
निर्बंध पुं० (सं) अड़चन। रुकावट। हठ। आग्रह। (रेस्ट्रिक्शन)। वि० (सं) बन्धन-रहित।
निर्बंधन पुं० (सं) दे० 'निर्बंध'। २-शर्तें लगाकर किसी व्यक्ति आदि को नियन्त्रित रखना। (रेस्ट्रिक्शन)।
निर्बंधित वि० (सं) जिसमें बाधा डाली गई हो। (रेस्ट्रिक्टेड)।
निर्बहर्ण पुं० (सं) दे० 'निर्वहण'।
निर्बल वि० (सं) कमजोर। बलहीन।
निर्बलता स्त्री० (सं) कमजोरी। बलहीनता।
निर्बहना क्रि० (हि) १-अलग होना। २-पार होना ३-निभना।
निर्बाध वि० (सं) १-बाधारहित। २-निरुपद्रव। ३-निर्जन।
निर्बाधित वि० (सं) बाधारहित।
निर्बुद्धि वि० (सं) मूर्ख। बेवकूफ, बुद्धिहीन।
निर्बोध वि० (सं) अनजान। जिसे अच्छे बुरे का बोध न हो। अज्ञान।
निर्भय वि० (सं) निडर। निरापद्।
निर्भयता स्त्री० (सं) निडरपन। निडर होने की अवस्था या भाव।
निर्भर वि० (सं) १-पूर्ण। भरा हुआ। २-बहुत अधिक। तीव्र। गाढ़। ३-अवलम्बित।
निर्भीक वि० (सं) दे० 'निर्भय'।
निर्भुज वि० (सं) जिसका एक छोर मुड़ा हुआ हो।
निर्भेद्य वि० (सं) विभेद करने योग्य।
निर्भ्रम वि० (सं) जिसमें कोई सन्देह न हो। भ्रम-रहित। अव्य० (सं) बे-धड़क। बे-खटके। बिना संकोच के।
निर्भ्रान्त वि० (सं) दे० 'निर्भ्रम'।
निर्मक्षिक वि० (सं) मक्खियों तक से रहित। एकाकी एकान्त।
निर्मज्ज वि० (सं) मज्जारहित।
निर्मद वि० (सं) जो नशे में न हो।
निर्मना क्रि० (सं) उत्पन्न करना। बनाना।
निर्मन्यु वि० (सं) सांसारिक सम्बन्धों से मुक्त। निस्वार्थी। क्रोधरहित।
निर्मल वि० (सं) १-जिसमें कोई दोष या मल न हो शुद्ध। पवित्र। २-साफ। स्वच्छ। पुं० (सं) अभ्रक निर्मली।
निर्मलता स्त्री० (सं) सफाई। स्वच्छता। शुद्धता। पवित्रता।
निर्मला पुं० (हि) एक नानकपन्थी सम्प्रदाय या इस सम्प्रदाय का कोई व्यक्ति।
निर्मली स्त्री० (सं) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके फल गदला पानी साफ करने तथा औषधि के रूप में काम में लाया जाता है।
निर्मशक वि० (सं) मच्छर-रहित।
निर्मा स्त्री० (सं) १-दाम। मूल्य। २-परिमाण।
निर्माण पुं० (सं) १-किसी वस्तु को बनाना। रचना बनाने का काम। रूप। संसार। (फोर्मेशन)। २-वह वस्तु जो बन कर तैयार हुई हो। (मैन्यूफेक्चर) भवन। मापन।
निर्माण-विद्या स्त्री० (सं) वास्तु-विद्या। मकान, पुल

आदि बनाने की विद्या। (इन्जीनियरिङ्ग)।
निर्माणी स्त्री० (सं) वह कारखाना या निर्माण-शाला जिसमें मशीनों या यन्त्रों की सहायता से कपड़ा आदि तैयार किया जाता है। (मिल)। (फैक्टरी)।
निर्माणी-अधिनियम पु० (सं) कारखाने या मिल सम्बन्धी कानून या विधि। (फैक्टरी-ऐक्ट)।
निर्माता पु० (सं) निर्माण करने वाला। बनाने वाला (मैन्युफेक्चरर, प्रोड्यूसर)।
निर्मात्रिक वि० (सं) बिना मात्रा का। जिसमें मात्रा न हो।
निर्मान वि० (हि) १-अपार। अत्यधिक। २-अभिमान-रहित।
निर्माना क्रि० (हि) रचना। बनाना। उत्पन्न करना।
निर्मायल पु० (हि) दे० 'निर्माल्य'।
निर्मार्जन पुं० (सं) साफ करना। धोना।
निर्माल्य स्त्री० (सं) किसी देवता पर चढ़ाया हुआ पदार्थ। देवार्पित वस्तु।
निर्मित वि० (सं) बनाया हुआ। रचित। (मैन्युफैक्चर्ड)।
निर्मिति स्त्री० (सं) दे० 'निर्माण'।
निर्मुक्त वि० (सं) १-जो मुक्त हो गया हो। २-बन्धन-रहित। पु० (सं) अभी हाल ही में केंचुली छोड़ा हुआ सर्प।
निर्मुक्ति स्त्री० (सं) १-छुटकारा। मुक्ति। २-अपराधियों या राजनैतिक कैदियों को क्षमा करके छोड़ देना। (एम्नेस्टी)। ३-मोक्ष।
निर्मूल वि० (सं) १-बिना मूल या जड़ का। २-जड़-सहित उखाड़ा हुआ। ३-निराधार। ४-जो मूल-सहित नष्ट हो गया हो।
निर्मेट पुं० (सं) १-सूर्य। २-गुरुवा। ३-पैठ या बाजार।
निर्मूलन पु० (सं) निर्मूल करना या होना। विनाश।
निर्मेघ वि० (सं) बिना बादलों का। मेघरहित।
निर्मेध पुं० (सं) बुद्धिहीन। मूर्ख।
निर्मोक पुं० (सं) १-सर्प की केंचुली। २-शरीर की ऊपरी खाल। कवच। ३-आकाश। ४-... के एक पुत्र।
निर्मोक्ता वि० (सं) मुक्त करने वाला।
निर्मोक्ष पुं० (सं) १-पूर्ण मोक्ष। २-त्याग
निर्मोल वि० (हि) दे० 'अनमोल'।
निर्मोह वि० (सं) १-मोह या ममता रहित। २-निष्ठुर। बेदर्द। पुं० (सं) रैवत मनु का एक पुत्र।
निर्मोहिनी वि० (हि) निर्दय। कठोर हृदय।
निर्मोहिया वि० (हि) दे० 'निर्मोहिनी'।
निर्मोही वि० (हि) दे० 'निर्मोह'।
निर्यन्त्रण वि० (सं) १-जो वश में न रह सके। उद्दंड।

निर्याण पु० (सं) १-बाहर निकलना। २-यात्रा। प्रस्थान (विशेषतः मेला का)। ३-अदृश्य होना। ४-मृत्यु। ५-पशुओं के पैर में बाँधने की रस्सी। ६-हाथी की आँख का बाहरी कोना।
निर्यात वि० (सं) निकाला हुआ। निर्गत। पु० (सं) १-बाहर भेजना या जाना। २-देश से बाहर भेजा जाने वाला माल। (एक्सपोर्ट)।
निर्यातक वि० (सं) निर्यात करने वाला। पुं० (सं) देश से बाहर बिक्री के लिये माल भेजने वाला व्यापारी या व्यक्ति। (एक्सपोर्टर)।
निर्यातकर पु० (सं) देश से बाहर भेजे जाने वाले माल पर लगाया गया कर। (एक्सपोर्ट ड्यूटी)।
निर्यातन पु० (सं) १-प्रतिशोध। बदला चुकाना। प्रतिकार। २-मार डालना। किसी का ऋण चुकाना।
निर्यातशुल्क पुं० (सं) दे० 'निर्यातकर'।
निर्याता पुं० (सं) किसान। कृषक। बाहर माल भेजने वाला।
निर्याति स्त्री० (सं) रवानगी। कूच। प्रस्थान।
निर्याम पु० (सं) नाविक। मल्लाह।
निर्यास पुं० (सं) १-वृक्षों या पौधों में से निकलने वाला रस। गोंद। दूध। २-कोई गाढ़ी तरल वस्तु काढ़ा। क्वाथ। सार। ३-झरना या बहना।
निर्योग पु० (सं) सजावट। अलंकार।
निर्योग्यता स्त्री० (सं) असमर्थता। अयोग्यता। (डिस्एबिलिटी)।
निर्लज्ज वि० (सं) बेशर्म। बेहया। जिसे लज्जा न हो
निर्लिंग वि० (सं) जिसमें कोई निश्चित चिह्न न हो।
निर्लिप्त वि० (सं) जो राग द्वेष आदि किसी विषय में आसक्त न हो।
निर्लेखन पु० (सं) १-किसी वस्तु पर जमे हुए मैल की खुरचना। २-खुरचने का औजार।
निर्लेप वि० (सं) दे० 'निर्लिप्त'।
निर्लोभ वि० (सं) जिसे लालच न हो। सन्तोषी।
निर्वंश वि० (सं) जिसके वंश को आगे चलाने वाला कोई न हो। जिसका वंश नष्ट हो गया हो।
निर्वक्तव्य वि०(सं) दे० 'निर्वचनीय'।

निर्वचनीय वि० (सं) १-जो समझाई जा सके। २-जिसका निर्वचन हो सके।
निर्वसन वि० (सं) नग्न। वस्त्रहीन।
निर्वसीयत स्त्री० (हि) जिसने वसीयत न लिखा हो इच्छापत्रहीन। (इन्टेस्टेट)।
निर्वसीयता स्त्री० (हि) इच्छापत्रहीनता। (इन्टेस्टेसी)
निर्वसु वि० (सं) दरिद्र। गरीब।

निर्वहण पुं० (सं) १-निर्वाह। निबाहना। गुजर। २-समाप्ति।
निर्वहण-संधि स्त्री० (सं) नाटक में प्रयुक्त होने वाली पांच सन्धियों में से एक।
निर्वाक् वि० (सं) चुप। मौन।
निर्वाक्य वि० (सं) गूंगा। जो बोल न सकता हो।
निर्वाचक पुं० (सं) जो निर्वाचन करे या चुने। चुनने वाला। जिसे मताधिकार प्राप्त हो। (इलेक्टर)।
निर्वाचक-गण पुं०(सं) निर्वाचकों का वर्ग या समूह निर्वाचन वर्ग। (इलक्टोरेट, इलेक्टोरल कॉलेज)
निर्वाचक-नामावली स्त्री०(सं) वह सूची जिसमें निर्वाचकों के नाम पते आदि लिखे रहते हैं। (इलेक्टोरल रोल)।
निर्वाचक-मंडल पुं० (सं) मतदाताओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों का वह समूह जो फिर लोक-सभा आदि में निर्दिष्ट संख्यक सदस्यों का अप्रत्यक्ष निर्वाचन करती है। (इलेक्टोरल कॉलेज, इलेक्टोरल-डिस्ट्रिक्ट)।
निर्वाचक-मतपत्र पुं० (सं) निर्वाचकों द्वारा किसी के पक्ष में डालने का श्लाकापत्र। (इलेक्टोरल बैलेट)।
निर्वाचक-वर्ग पुं० (सं) दे० 'निर्वाचन-गण'।
निर्वाचक-संघ पुं० (सं) निर्वाचक-गण। (इलेक्टोरेट)
निर्वाचक-समूह पुं०(सं) दे० 'निर्वाचक-गण'। (इलेक्टोरेट)।
निर्वाचक-सूची स्त्री० (सं) दे० 'निर्वाचक-नामावली' (इलेक्टोरल रोल)।
निर्वाचन पुं०(सं) श्लाका-पत्र या वोट द्वारा चुनाव। वरण। (इलेक्शन)।
निर्वाचन-अधिकरण पुं० (सं) वह अधिकरण या न्यायालय जिसमें निर्वाचन से सम्बन्धित झगड़ों या मामलों का निर्णय होता है। (इलेक्शन-ट्रिब्यूनल)।
निर्वाचन-अधिकार पुं० (सं) निर्वाचन मताधिकार। निर्वाचन अधिकारी को दिये गए निर्वाचन व्यवस्था सम्बन्धी अधिकार। निर्वाचन सम्बन्धी स्वत्व। (इलेक्टोरल राइट)।
निर्वाचन-अधिकारिक पुं० (सं) मतदान की देखरेख करने वाला पदाधिकारी। (पोलिंग ऑफीसर)।
निर्वाचन-अधिकारी पुं० (सं) चुनाव अधिकारी। किसी निर्वाचन केन्द्र में मतदान आदि की व्यवस्था तथा मतों की गणना करवाने के बाद चुनाव का परिणाम प्रकट करने के लिए नियुक्त अधिकारी। (रिटर्निंग ऑफीसर)।
निर्वाचन-अधिष्ठान पुं० (सं) वह स्थान जहाँ मतदाता मतदान करते हैं। (पोलिंग-स्टेशन)।
निर्वाचन-अभियान पुं० (सं) चुनाव में मतदाताओं को अपने पक्ष के उम्मीदवार को मत देने का अभियान। (इलेक्शन कम्पेन)।
निर्वाचन-आयुक्त पुं० (सं) राज्याज्ञा से चुनाव सम्बन्धी मामलों के लिए अधिकारी नियुक्त करने वाला मुख्य पदाधिकारी। (इलेक्शन कमिश्नर)।
निर्वाचन-केन्द्राध्यक्ष पुं० (सं) निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव की निगरानी करने वाला अधिकारी। (प्रिजाइडिंग ओफीसर)।
निर्वाचन-क्षेत्र पुं० (सं) वह स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो। (इलेक्टोरल कोनटीच्यूएन्सी)।
निर्वाचन-घटक पुं०(सं) चुनाव लड़ने वाले की ओर से प्रतिनिधि रूप में नियुक्त व्यक्ति। (पोलिंग-एजेन्ट)
निर्वाचन-मताधिकार पुं० (सं) अपने मत या वोट का स्वतंत्रता पूर्वक बिना किसी दबाव के चुनाव करने का अधिकार। (इलेक्टोरल फ्रेंचाइज)।
निर्वाचन-विभाग पुं० (सं) वह विभाग जिसकी देखरेख में समस्त चुनाव का कार्य हो। (इलेक्टोरल-डिवीजन)।
निर्वाचित वि० (सं) जिसका मतदान द्वारा चुनाव किया गया हो। (इलेक्टेड)।
निर्वाचित-शासन पुं० (सं) प्रजासत्तात्मक राज्य-शासन। (इलेक्टेड-गवर्नमेंट)।
निर्वाच्य वि० (सं) जो कहने योग्य न हो। निर्दोष।
निर्वाण वि० (सं) १-अस्त। बुझा हुआ। (दीपक)। २-शान्त। ३-मृत। निश्चल। शून्यता को प्राप्त। मुक्त। पुं० (सं) १-ठण्डा होना। बुझना। २-डूबना। अस्त। ३-शान्ति। ४-मुक्ति। मोक्ष।
निर्वात वि० (सं) १-जहाँ हवा का झोंका न लगे। वायुरहित। २-जो चञ्चल न हो। स्थिर।
निर्वार्य वि० (सं) जिसका निवारण न हो सके।
निर्वाह पुं० (सं) १-निबाह। किसी परम्परा का चलता रहना। २-किसी कार्य को पूरा करना। निष्पादन। ३-समाप्ति। ४-पालन (प्रतिज्ञा आदि) पूरा करना।
निर्वाहक वि० (सं) १-निर्वाह करने वाला। निभाने वाला। २-किसी आज्ञा का पालन करने वाला। (एक्जीक्यूटर)।
निर्वाहण पुं० (सं) १-निभाना। पूरा करना। २-कोई ऐसी वस्तु देश में आना जिसके आयात पर प्रतिबन्ध लगा हो।
निर्वाहना क्रि० (हि) निर्वाह करना।
निर्वाह-भृति स्त्री० (सं) मजदूरी या वेतन जिस पर मजदूर या उसका परिवार सुख से निर्वाह कर सके (लिविंग वेज)।
निर्वाह-व्यय पुं० (सं) भोजन, वस्त्रादि जीवन निर्वाह

की वस्तुओं पर खर्च होने वाला व्यय। (कॉस्ट आफ मेण्टेनेन्स)।

निर्विकल्प वि० (सं) १-जिसमें परिवर्तन या भेद न हो। (एब्सोल्यूट)। २-स्थिर। निश्चित। पु० (सं) वह अवस्था जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय में भेद नहीं रह जाता और दोनों एक हो जाते हैं।

निर्विकल्पक वि० (सं) दे० 'निर्विकल्प'।

निर्विकल्प समाधि स्त्री० (सं) वह समाधि जिसमें ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं पड़ता।

निर्विकार वि० (सं) विकार-रहित। उदासीन। पु० (सं) परब्रह्म।

निर्विकास वि० (सं) अविकसित। जो खिला न हो।

निर्विघ्न वि० (सं) जिसमें बाधा या विघ्न न हो। अव्य० (सं) बिना बाधा के।

निर्विचार वि० (सं) बिना विचार का। विचार-रहित पु० (सं) समाधि का एक योग।

निर्विण्ण वि० (सं) विरक्त। नम्र। निश्चित। ज्ञात खिन्न।

निर्विद्य वि० (सं) विद्याहीन। जो पढ़ा लिखा न हो

निर्विभाग वि० (सं) जिसके पास कोई विभाग या महकमा न हो। (विदाउट पोर्टफोलियो)।

निर्विभाग-मन्त्री पु० (सं) मन्त्री या सचिव जिसके आधीन कोई विभाग नहीं होता। (मिनिस्टर विदा-उट पोर्टफोलियो)।

निर्विवाद वि० (सं) जिसमें कोई झगड़े की बात न हो

निर्विवेक वि० (सं) विवेकशून्य।

निर्विशेष वि० (सं) जो किसी से भेद-भाव न करे। समान। तुल्य। पुं० (सं) परमात्मा। परब्रह्म।

निर्विषी स्त्री० (सं) एक प्रकार की विष-नाशक घास। अविषा।

निर्बीज वि० (सं) १-जिसमें बीज न हो। २-अकारण ३-नपुंसक।

निर्बीज समाधि स्त्री० (सं) समाधि की वह अवस्था जब चित्त का निरोध करते-करते उसका अवलम्बन भी विलीन होजाता है और मनुष्य मोक्ष को प्राप्त होता है। (योग)।

निर्वीजा स्त्री० (सं) किशमिश। (मेवा)।

निर्वीरा वि० (सं) जिसके पति या पुत्र न हो।

निर्वीर्य वि० (सं) बल-रहित। अशक्त। नपुंसक। वीर्यहीन

निर्वृत वि० (सं) सुखी। प्रसन्न।

निर्वृति स्त्री० (सं) १-मृत्यु। २-मोक्ष। ३-शान्ति। आनन्द।

निर्वृत्त वि० (सं) जो पूरा होगया हो।

निर्वृत्ति स्त्री० (सं) मोक्ष। निष्पत्ति।

निर्वेग वि० (सं) शान्त। स्थिर। गति या वेगरहित।

निर्वेतन वि० (सं) अवैतनिक। जो वेतन न लेता हो। अव्य० (सं) बिना तनखा या वेतन लिए।

निर्वेद पुं० (सं) १-स्वयं का अपमान। वैराग्य। २-खेद। दुःख। वि० (सं) नास्तिक।

निर्वेष्टन वि० (सं) बिना ढकने का। वेष्टन-रहित। पुं० (सं) जुलाहों की सूत लपेटने की ढरकी या नली

निर्वैर वि० (सं) द्वेष-रहित। जिसमें वैर न हो।

निर्व्याज वि० (सं) १-ईमानदार। सच्चा। २-छल-शून्य। ३-बाधारहित।

निर्व्याधि वि० (सं) रोग व्याधि से मुक्त।

निर्व्रण वि०(सं) बिना घाव का। घावरहित।

निर्हरण पुं० (सं) १-शव को जलाने के लिये ले जाना। २-नाश करना। ३-जलाना।

निर्हारक पुं० (सं) वह जो शव को जलाने के लिये ले जाता है।

निर्हेतु वि० (सं) जिसका कोई कारण न हो।

निलंब-खाता पु० (सं) वह खाता जिसमें दी गई रकम अस्थाई रूप से डाल दी जाती है और हिसाब प्राप्त होने पर ठीक खाते में डाल दी जाती है। उचित खाता। (सस्पेंस अकाउण्ट)।

निलंबन पु० (सं) १-किसी कर्मचारी के कोई अपराध करने पर उसे तब तक पद से हटा देना जब तक उसके अपराध की छानबीन समाप्त न हो जाय। २-अधिवेशन कार्य आदि को कुछ समय के लिये उठा रखना। ३-अनुलम्बन। (सस्पेंशन)।

निलंबित वि०(सं) १-वह (कर्मचारी) जिसे कोई अपराध करने पर उसके अन्तिम निर्णय होने तक पद से हटा दिया गया हो। मुअत्तल। २-कुछ समय के लिये रोका हुआ। (सस्पेंड)।

निलज वि० (हि) दे० 'निर्लज्ज'।

निलजता स्त्री० (हि) निर्लज्जता। बेशर्मी।

निलजी वि०, स्त्री० (हि) बेशर्म।

निलज्ज वि० (हि) दे० 'निर्लज्ज'।

निलय पु० (सं) १-घर। मकान। २-मांद। घोंसला। ३-सब नष्ट होजाना। लोप।

निलयन पुं० (सं) १-आवास-स्थान। घर। २-किसी जगह बस जाना। ३-उतरना। बाहर जाना।

निलहा वि० (हि) नील वाला। नील का व्यापार करने वाला।

निलाम पुं० (हि) दे० 'नीलाम'।

निलीन वि० (सं) १-अत्यधिक लीन। २-पिघला हुआ। ३-नष्ट।

निवना क्रि० (हि) झुकना। नवना।

निवर्तक वि० (सं) १-वापिस लाने वाला। २-हटाने वाला। पकड़ने वाला। ३-लौटाकर लाने वाला

निवर्तन पुं० (सं) वापसी। २-लौटाना। ३-वि [illegible] ४-पश्चात्ताप।

निवर्ती वि० (सं) १- [illegible]

२-जो भाग आया हो।
निवहण पुं०(सं) पार होना। पालन होना। निभना।
निवसना क्रि० (हि) रहना। आवास करना।
निवह पुं० (सं) १-समूह। समुदाय। २-फलित ज्योतिष में सात पवनों में से एक।
निवाई वि० (हि) नया। नवीन। अनोखा।
निवाज वि० (फा) कृपा या अनुग्रह करने वाला।
निवाजना क्रि० (हि) कृपा करना।
निवाजिश स्त्री० (हि) कृपा। दया।
निवाड़ स्त्री० (हि) दे० 'निवार'।
निवाड़ा पुं० (दे०) १-छोटी नाव। २-नाव में बैठकर करने की एक जलक्रीड़ा।
निवाड़ी स्त्री० (दे०) एक प्रकार जूही की जाति का फूल या उसका पौधा।
निवान पुं० (हि) नीची भूमि जहाँ कीचड़ या पानी भरा रहता है। जलाशय। तालाब।
निवाना क्रि० (हि) झुकाना। नीचे की ओर करना।
निवाप पुं० (सं) १-बीज। दाना। २-दान। भेंट। पितरों के उद्देश्य से किसी वस्तु का दान।
निवार स्त्री० (हि) मोटे सूत की बनी हुई पट्टी जिससे पलंग आदि बुने जाते हैं। २-कुएँ की नींव में बैठाने की लकड़ी जिस पर चिनाई की जाती है। जाखन। जमवट। पुं० (सं) १-रोक। बचाव। निषेधकरण। २-तिन्नी का धान। ३-एक प्रकार की मोटी मूली।
निवारक वि० (सं) १-रोकने वाला। २-दूर करने वाला।
निवारक-निरोध अधिनियम पुं० (सं) वह अधिनियम जिसके अनुसार किसी समाज विरोधी कार्य करने वाले व्यक्ति का निरोध किया जा सके। (प्रिवेन्टिव डिटेन्शन एक्ट)।
निवारण पुं० (सं) १-रोकने की क्रिया। २-हटाना। दूर करना। ३-निवृत्ति।
निवारन पुं० (हि) दे० 'निवारण'।
निवारना क्रि० (हि) १-रोकना। २-हटाना। ३-दूर करना।
निवारी स्त्री० (हि) दे० 'निवाड़ी'।
निवाला पुं० (फा) कौर। ग्रास। लुकमा।
निवास पुं० (सं) १-रहना। रिहाइश। २-रहने का स्थान। घर। मकान। ३-वस्त्र। कपड़ा।
निवासन पुं० (सं) गृह। घर। कुछ समय तक के लिये ठहराना।
निवासी स्त्री० (सं) रहने वाला। बसने वाला। वासी।
निविड़ वि० (सं) १-घना। घोर। २-गहरा। ३-चपटी या टेढ़ी नाक वाला।
निविष्ट वि० (सं) १-एकाग्र। २-लपेटा हुआ। ३-स्थापित। ४-बांधा हुआ। घुसा हुआ। ५-कहीं लिखा या दर्ज किया हुआ। (एन्टर्ड)।
निविष्टि स्त्री० (सं) १-बही खाते में दर्ज करने का काम। २-इस प्रकार चढ़ाई हुई रकम। ३-प्रवेश। (एन्ट्री)।
निवीत पुं० (सं) चादर। ओढ़ने का कपड़ा।
निवृत वि० (सं) घेरा हुआ। लपेटा हुआ।
निवृत्त वि० (सं) १-छूटा हुआ। जो अलग हो गया हो। विरक्त। ३-जो छुट्टी पा गया हो। खाली। ४-जिसने काम से अवकाश ग्रहण कर लिया हो। (रिटायर्ड)।
निवृत्त आत्मा वि० (सं) विषयों से विरत।
निवृत्ति स्त्री० (सं) १-छुटकारा। मुक्ति। मोक्ष। २-सेवा से अवकाश ग्रहण करना। (रिटायरमेंट)।
निवृत्ति-पूर्व छुट्टी स्त्री० (हि) सेवा से अवकाश ग्रहण करने से ठीक पहले ली हुई छुट्टी। (लीव बिफोर रिटायरमेंट)।
निवृत्ति-वेतन स्त्री० (सं) सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद दिया जाने वाला वेतन। (पेन्शन)।
निवेद पुं० (हि) दे० 'नैवेद्य'।
निवेदक पुं० (सं) निवेदन करने वाला।
निवेदन पुं० (सं) १-नम्रतापूर्वक कुछ कहना। प्रार्थना। विनती। २-समर्पण।
निवेदना क्रि० (हि) १-प्रार्थना करना। २-नैवेद्य चढ़ाना। ३-अर्पित या भेंट करना।
निवेदित वि०(सं) अर्पित किया हुआ। निवेदन किया हुआ।
निवेरना क्रि० (हि) १-फैसला करना। समाप्त करना। २-छांटना। ३-दूर करना। हटाना।
निवेरा वि० (हि) १-चुना हुआ। २-नया। नवीन। अनोखा।
निवेश पुं० (सं) १-डेरा। खेमा। सेना का पड़ाव २-प्रवेश। ३-विवाह। ४-स्थापन। ५-किसी विधि या अधिनियम में पड़ने वाली कठिनाई को दूर करने के लिये निकला हुआ मार्ग या शर्त। (प्रोवीजन)।
निवेशन पुं० (सं) १-प्रवेश। द्वार। २-डेरा। पड़ाव ३-विवाह। ४-घर। डेरा। ५-नगर। ६-घोंसला।
निवेष्ट पुं० (सं) ढकने या लपेटने का कपड़ा या चादर।
निवेष्टन पुं० (सं) ढकना। चादर।
निश् स्त्री० (सं) १-रात्री। रात। २-हल्दी।
निशचर पुं० (हि) दे० 'निशाचर'।
निशमन पुं० (सं) देखना। सुनना।
निशांत पुं० (सं) रात का अन्त। तड़का। प्रभात।
निशांध वि० (सं) जिसको रात में न सूझे। रतौंधी रोग से पीड़ित।

निशा स्त्री० (सं) रात। रात्रि। हल्दी।

निशागृह पुं० (सं) सोने का कमरा। शयनागार।

निशाचर पुं० (सं) १-राक्षस। २-शृगाल। उल्लू। सर्प। ३-भूत-प्रेत। ४-चोर।

निशाचर-पति पुं० (सं) १-महादेव। २-रावण।

निशाचर-मुख पुं० (सं) संध्याकाल।

निशाचरी स्त्री० (सं) १-राक्षसी। २-अभिसारिका नायिका। वेश्या। ३-कुलटा। व्यभिचारिणी।

निशाचर्म पुं० (सं) अंधेरा। अंधकार।

निशाचारी पुं० (सं) दे० 'निशाचर'।

निशाजल पुं० (सं) ओस। कुहरा। पाला।

निशाट पुं० (सं) १-उल्लू। २-निशाचर।

निशाटन पुं० (सं) १-रात के समय भ्रमण। २-[illegible]

निशात वि० (सं) तेज किया हुआ। चमकाया

निशाद वि० (सं) केवल रात को ही खाने वाला

निशादि पुं० (सं) संध्याकाल।

निशादर्शी पुं० (सं) उल्लू।

निशाधीश पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

निशान पुं० (फा) १-ऐसा चिह्न जिससे कोई वस्तु पहचानी जाय। २-लक्ष्य जिस पर कोई अस्त्र चलाया जाय। ३-हस्ताक्षर के स्थान पर अशिक्षित लोगों द्वारा लगाया गया चिह्न। ४-पता। ठिकाना। ५-शरीर पर बना हुआ कोई चिह्न। ६-यादगार। ७-वह चिह्न या जो किसी विशेष कार्य या पहचान के लिये नियत किया जाय। ८-समुद्र या पहाड़ पर मार्ग-दर्शन के लिये बना हुआ स्थान। ९-ध्वजा। झण्डा।

निशानकोना पुं० (हि) उत्तर और पूर्व का कोण।

निशानची पुं० (फा) वह व्यक्ति जो किसी राजा के दल या सेना के आगे झण्डा लेकर चलता हो। [illegible]ान-बरदार।

निशानदेही स्त्री० (फा) आसामी को सम्मन आदि तामील करवाने तथा उसका पता बताने का काम।

निशानपट्टी स्त्री० (फा) चेहरे की बनावट आदि का वर्णन। हुलिया।

निशान-बरदार पुं०(फा) दे० 'निशानची'।

[illegible]

निशानाथ पुं० (सं) चन्द्रमा।

निशानी स्त्री० (फा) १-यादगार। स्मृति चिह्न। २-निशान। पहचान।

निशापति पुं० (सं) चन्द्रमा।

[illegible]

लने पर प्रतिबन्ध जिसको तोड़ने पर दण्ड दिया जाता है। (कर्फ्यू)।

निशारोधादेश पु० (सं) सूर्यास्त के बाद नियत समय तक बाहर न निकलने की सरकारी आज्ञा (कर्फ्यू-ऑर्डर)।

निशावन पु० (सं) सन का पौधा।

निशावसान पु० (सं) प्रातःकाल। रात्रि का अवसान।

निशावेदी पु० (सं) कुक्कुट। मुर्गा।

निशास्ता पुं० (फा) गेहूँ का जमाया हुआ गूदा। कलफ। माड़ी।

निशाहस पु० (सं) कुमोदनी।

निशाह्वा स्त्री० (सं) हल्दी।

[illegible]

निशित वि० (सं) तेज। तीखा। सान पर चढ़ा हुआ पु० (सं) लोहा।

निशिता स्त्री० (सं) रात्रि। रात।

निशिदिन क्रि० वि० (सं) रात-दिन। सदा। हमेशा

निशिनाथ पुं० (सं) दे० 'निशानाथ'।

निशिनायक पुं० (सं) दे० 'निशानाथ'।

निशिपति पुं० (सं) दे० 'निशापति'।

निशिपाल पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-एक छन्द।

निशिपालक पुं० (सं) १-पहरी। द्वारपाल। रात को पहरा देने वाला। २-एक प्रकार का छन्द।

निशिवासर क्रि० वि०(सं) रात दिन। सर्वदा। हमेशा

निशीथ पु० (सं) रात। आधी रात।

निशीथिनी स्त्री० (सं) रात्रि। रात।

निशीथिनीश पु० (सं) चन्द्रमा।

निशुंभ पुं०(सं) १-हत्या। वध। २-हिंसा। ३-झुकाने की क्रिया। ४-एक असुर का नाम जिसे दुर्गादेवी ने मारा था।

निशुंभन पु० (सं) वध। मार डालना।

निशुंभमर्दनी स्त्री० (सं) भगवती। दुर्गा।

निशांत पु० (सं) सवेरा। प्रभात।

निशोत्सर्ग पु० (सं) प्रभात। सवेरा।

निश्चुम्ना वि० (सं) अपने कुल से बहिष्कृत (स्त्री)

निश्चंद्र वि० (सं) १-चन्द्रमा रहित। २-[illegible]

न हो।

निश्चक्षु वि० (सं) अन्धा। नेत्रहीन।

निश्चय पु० (सं) १-भ्रम या संशय रहित ज्ञान। २-विश्वास। यकीन। ३-दृढ़संकल्प। ४-निर्णय। जाँच फैसला। ५-एक अर्थालङ्कार जिसमें यथार्थ विषय का स्थापन होता है।

निश्चयात्मक वि० (सं) असंदिग्ध। पक्का। ठीक। पूर्णतया। निश्चित।

निश्चल वि० (सं) स्थिर। अटल। अचल। जो अपने स्थान से न हिले।

निश्चला स्त्री० (सं) पृथ्वी। शालपर्णी।

निश्चायक पु० (सं) निश्चयकर्ता। निर्णायक।

निश्चित वि० (सं) चिन्तारहित। बेफिक्र।

निश्चितई स्त्री० (हि) बेफिक्री। चिन्तारहित होने का भाव।

निश्चित वि० (सं) १-निर्णीत। जिसका निर्णय हो चुका हो। २-अपरिवर्तनशील। दृढ़। पक्का। ३-जिसके मिथ्या होने की सम्भावना न हो। (डेफिनिट)। ४-जो विधि अनुसार पक्का कर दिया गया हो। (फिक्स्ड)।

निश्चेतन वि० (सं) १-बेसुध। बदहवास। २-जड़।

निश्चेष्ट वि० (सं) अचेत। मूर्छित। जड़।

निचै पु० (हि) दे० 'निश्चय'।

निश्छंद वि० (सं) जिसने वेद आदि का अध्ययन न किया हो।

निश्छल वि० (सं) कपट-रहित। सच्चा। सीधा।

निश्छेद पु० (सं) गणित में वह राशि जिसका किसी गुणक द्वारा भाग न दिया जा सके। अविभाज्य।

निश्रम पु० (सं) अध्यवसाय।

निश्वास पु० (सं) लंबी सांस। नाक या मुँह से बाहर आने वाला श्वास।

निश्शंक वि० (सं) दे० 'निःशंक'।

निश्शील वि० (सं) बुरे स्वभाव वाला। शील रहित

निश्शेष वि० (सं) दे० 'निःशेष'।

निषंग पु० (सं) तरकश। तलवार। खड्ग।

निषंगी वि० (सं) जिसके पास तरकश या तलवार हो। पु० (सं) धनुर्धर। तलवारधारी।

निषण्ण वि० (सं) १-बैठा हुआ। २-प्रस्थानित। ३-उदास। पीड़ित।

निषक्त पु० (सं) पिता। बाप। जनक।

निषदन पु० (सं) घर। मकान।

निषध पु० (सं) १-निषाद स्वर (संगीत)। २-एक देश विशेष जहाँ राजा नल राज करते थे। ३-निषध देश का राजा। ४-राजा रामचन्द्र जी के पुत्र कुश के पौत्र का नाम। ५-महाराज जनमेजय के पुत्र का नाम।

निषाद पु० (सं) १-आर्यों के भारत में आने से पहले की एक अनार्य जाति। २-एक प्राचीन देश जिसका उल्लेख रामायण आदि में मिलता है। ३-(संगीत में) सरगम का सबसे ऊँचा स्वर 'नि'।

निषादी पु० (सं) महावत।

निषावत पु० (सं) वीर्य से उत्पन्न-गर्भ। वि० (सं) अन्दर पहुँचाया हुआ।

निषिद्ध वि० (सं) १-वर्जित। मना किया हुआ। २-दूषित। खराब।

निषिद्धि स्त्री० (सं) मनाही। निषेध।

निषेक पु० (सं) १-सींचना। चुयोना। टपकना। २-भबके से अरक निकालने की क्रिया। ३-गर्भाधान। (इम्प्रेग्नेशन)।

निषेचन पु० (सं) सींचना। चुयोना।

निषेध पु० (सं) १-वर्जन। मनाही। रोक। न करने का आदेश। २-रुकावट। बाधा। ३-अभाव। (नेगेशन)।

निषेधक वि० (सं) निषेध करने वाला। मना करने वाला। (प्रोहिबीटरी)।

निषेधन पु० (सं) मनाही। वर्जन।

निषेध-पत्र पु० (सं) वह लिखित आदेश जिसके द्वारा किसी बात की मनाही की गई हो। (प्रोहिबीशन आर्डर)।

निषेधाज्ञा स्त्री० (सं) दे० 'निरोधाज्ञा'।

निषेधाधिकार पु० (सं) दे० 'प्रतिषेधाधिकार'। (वीटो)।

निषेवण पु० (सं) १-सेवा। पूजा। २-अभ्यास। अभिनय। ३-अनुराग। ४-परिचय। उपयोग।

निषेवित वि० (सं) जिसकी सेवा की गई हो। पूजित अनुष्ठित।

निष्कंटक वि० (सं) जिसमें किसी प्रकार की बाधा या झंझट न हो। निर्विघ्न।

निष्कंप वि० (सं) कम्पन-रहित। अचल।

निष्क पु० (सं) १-वैदिक-काल का एक सोने का सिक्का। २-एक प्राचीन तौल जो ४ माशे के बराबर होती थी। ३-सोना। स्वर्ण। ४-स्वर्ण का आभूषण

निष्कपट वि० (सं) छल रहित। सीधा। सरल।

निष्कर पु० (सं) वह भूमि जिसका कर न देना पड़ता हो।

निष्करुण वि० (सं) निष्ठुर। बेरहम। निर्दय।

निष्कर्म वि० (सं) जो कर्मों में लिप्त न हो।

निष्कर्मा वि० (सं) दे० 'निष्कर्म'।

निष्कर्ष पु० (सं) १-खुलासा। सारांश। सार। तत्व। २-विवेचन के बाद में परिणाम निकालना। निःसारण।

निष्कलंक वि० (सं) कलंक रहित। निर्दोष। बे-ऐब। बे-दाग।

निष्काम वि० (सं) १-कामना या सब प्रकार की

इच्छाओं से रहित । २-वह काम जो बिना किसी कामना के किया जाय ।

निष्काम-कर्म पुं० (सं) फल की इच्छा न रख कर किया जाने वाला कर्म ।

निष्कामी वि० (सं) दे० 'निष्काम' ।

निष्कारण वि० (स) बिना कारण का । व्यर्थ । क्रि० (स) अकारण । व्यर्थ ।

निष्कारण-बंधु पुं० (स) बिना स्वार्थ के बन्धुता रखने वाला बन्धु ।

निष्कारण-वैरी पुं० (स) जो बिना किसी कारण के वैर-भाव रखे ।

निष्कास पुं० (स) १-निकालना । २-किसी भवन आदि का बाहर निकला हुआ भाग । बरामदा ।

निष्कास पुं० (हि) दे० 'निष्कास' ।

निष्कासन पुं० (स) १-बाहर करना । निकालना । २-किसी को दण्ड देकर या उसके रूप में किसी देश आदि से बाहर भेजना ।

निष्कासित वि० (सं) १-बाहर निकला हुआ । २-भर्त्सना किया हुआ ।

निष्किंचन वि० (सं) धनहीन । दरिद्र ।

निष्कित्विष वि० (स) पाप रहित ।

निष्कीटन पुं० (स) किसी वस्तु को रसायनिक प्रक्रिया द्वारा कीटाणुओं से रहित करना । (स्टेरिलाइजेशन)

निष्कीटित वि० [illegible]

[illegible]

निष्कुल वि० (सं) नीचे कुल का ।

निष्कृत वि० (स) मुक्त । हटाया हुआ । निकाला हुआ । बर्जित ।

निष्कृति स्त्री० (सं) १-निस्तार । छुटकारा । २-निःशेष प्राप्ति । ३-बचाव । ४-असावधानी । ५-गुण्डापन । बदमाशी । ६-प्रायश्चित्त ।

निष्कृति-धन पुं० (स) किसी को छुटकारा पाने के लिये दबाव डाल कर वसूल किया हुआ धन । (रैन्सम) ।

निष्कृप वि० (स) तीक्ष्ण धार वाला । निष्ठुर । निर्दय

निष्क्रम वि० (सं) बिना सिलसिले का या क्रम का । पुं० (सं) १-बाहर निकलना । २-निष्क्रमण की रीति । ३-अधिच्युति ।

निष्क्रमण पुं० (सं) दे० 'निष्क्रम' ।

निष्क्रम-पत्र पुं० (स) पारपत्र । (पासपोर्ट) ।

निष्क्रम-मार्ग पुं० (स) बाहर निकलने का मार्ग ।

निष्क्रय पुं० (स) १-वेतन । भाड़ा । मजदूरी । २-विनिमय । ३-किसी पदार्थ के बदले में दिया जाने वाला धन । (कम्पनसेशन) । ४-बिक्री ।

निष्क्रयण पुं० (सं) मुक्ति के लिये दिया जाने वाला धन ।

निष्क्रांत वि०(सं) मुक्त । निकला या निकाला हुआ । निर्गत ।

निष्क्रान्तों की संपत्ति स्त्री० (हि) अपनी जान-माल के संकट से बचने के लिये बाहर गये हुए लोगों की छोड़ी हुई सम्पत्ति । (इवेक्यूई प्रॉपर्टी) ।

निष्क्रिय वि० (सं) सब प्रकार की क्रिया या चेष्टा से रहित । निश्चेष्ट । (इनएक्टिव) ।

निष्क्रियता स्त्री० (सं) निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था । (इनएक्टिविटी) ।

निष्क्रिय-प्रतिरोध पुं० (सं) किसी अनुचित आज्ञा का वह विरोध जिसमें दण्ड की परवाह नहीं जाती (पैसिव रेसिस्टैंस) । (सिविल-डिसओबीडियन्स) ।

निष्क्रीत वि० (सं) १-जिसके लिए निष्क्रय दिया गया हो । (कम्पन्सेटेड) । २-(ऋण का) जिसका विमोचन हुआ हो । (रिडीम्ड) ।

निष्ठ वि० (स) १-ठहरा हुआ । स्थित । २-तत्पर । ३-किसी के प्रति श्रद्धा-भाव रखने वाला । (लॉयल)

निष्ठा स्त्री० (स) १-आधार । एकाग्रता । २-तत्परता ३-निश्चय । विश्वास । ४-श्रद्धा । समाप्ति । ५-नाश । क्लेश । सन्ताप । ६-बड़ों के प्रति अनुराग । (फेथ, लॉयल्टी) । ७-राज्य के प्रति प्रजा का श्रद्धा-

[illegible] १-खखार । थूक । २-थूक बाहर निकालने की दवा ।

निष्ठीवन पुं० (सं) दे० 'निष्ठीव' ।

निष्ठुर वि० (सं) कठिन । निर्दय । क्रूर । निर्लज्ज । सख्त ।

निष्प्युत वि० (सं) बाहर निकला हुआ । थूका हुआ तक । उगला हुआ ।

निष्ण वि० (स) १-निपुण । पटु । २-विशेषज्ञ । पारंगत । पण्डित । (एक्सपर्ट) ।

निष्णात वि० (स) दे० 'निष्ण' ।

निष्पंक वि० (सं) जिसमें पङ्क न हो । स्वच्छ । साफ ।

निष्पंद वि० (स) कम्पन-रहित । गतिहीन । स्थिर ।

निष्पक्ष वि० (स) पक्षपात-रहित । तटस्थ । (इम्पार्शल)

निष्पक्षता पुं० (स) निष्पक्ष होने की अवस्था या भाव (इम्पार्शेलिटी) ।

निष्पत्ति स्त्री० (सं) १-समाप्ति । अन्त । २-निश्चय । ३-निर्वाह । ४-परिपाक ।

निष्पत्र वि० (सं) बिना पत्तों का । पत्रहीन ।

निष्पन्न वि० (सं) जो पूरा या समाप्त हो चुका । जो आज्ञा और नियम के अनुसार पूरा किया चुका हो । (एक्जिक्यूटेड) ।

निष्पादक पुं० (स) नियमानुसार

आदि में किसी आज्ञा को पूरा करने वाला व्यक्ति (एक्ज़ीक्यूटर)।
निष्पादन पुं० (सं) तामील। निष्पन्न करने का भाव या दशा। (एक्ज़ीक्यूशन)।
निष्पादित वि० (सं) दे० 'निष्पन्न'।
निष्पाप वि० (सं) जो पापों से दूर रहे। पापरहित।
निष्पुत्र वि० (सं) पुत्रहीन।
निष्प्रभाव वि० (सं) जिसका कोई प्रभाव न रह गया हो। अप्रभावशाली।
निष्प्रभ वि० (सं) प्रभारहित। जिसमें चमक न हो।
निष्प्रयोजन वि० (सं) बिना किसी प्रयोजन या मतलब का। व्यर्थ। अव्य० (सं) बिना किसी मतलब के। वृथा।
निष्प्रेही वि० (हि) दे० 'निस्पृह'।
निष्फल वि० (सं) १-जिसका कोई फल या परिणाम न हो। व्यर्थ। (इनफ़ेक्टिव)। २-अण्डकोषरहित।
निष्फला स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका रजोधर्म होना बन्द होगया हो।
निस् अव्य० (सं) यह शब्द निषेध, निश्चय आदि के अर्थों में प्रयोग होता है।
निसंक वि० (हि) दे० 'निःशंक'।
निसंग वि० (हि) दे० 'निःसंग'।
निसंठ वि० (हि) गरीब। निर्धन।
निसंस वि० (हि) दे० 'नृशंस'।
निसेस वि० (सं) दे० 'निसासा'।
निसंसना क्रि० (हि) हांफना।
निस स्त्री० (हि) दे० 'निशा'।
निसक वि० (हि) अशक्त। दुर्बल।
निसकर पुं० (हि) चन्द्रमा।
निसचय पुं० (हि) दे० 'निश्चय'।
निसत वि० (हि) असत्य। मिथ्या।
निसतरना क्रि० (हि) छुटकारा पाना। निस्तार पाना।
निसतार पुं० (हि) दे० 'निस्तार'।
निसतारना क्रि० (हि) मुक्त करना। छुटकारा दिलाना।
निसद्योस क्रि० (हि) रात-दिन। नित्य। सदा।
निसबत स्त्री० (फा) १-सम्बन्ध। लगाव। २-मंगनी। ३-तुलना। अपेक्षा। अव्य० (फा०) संबन्ध में।
निसयाना वि० (हि) जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।
निसर वि० (सं) खूब चलने वाला।
निसरना क्रि० (हि) बाहर होना। निकलना।
निसराना क्रि० (हि) निकलवाना। निकालना।
निसरावन पुं० (हि) ब्राह्मण को दिया जाने वाला सीधा (कच्चा अन्न)।
निसर्ग पुं० (सं) १-स्वभाव। प्रकृति। २-दान। ३-आकृति। रूप। ४-सृष्टि।
निसर्गज वि० (सं) स्वाभाविक। जन्म से।
निसर्गत वि० (सं) स्वभाव से।
निसर्गसिद्ध वि० (सं) स्वाभाविक। जन्म से।
निसवादिल वि० (हि) स्वादहीन। जिसमें कोई स्वाद न हो। फीका।
निस-बासर क्रि० वि० (हि) दे० 'निसद्योस'।
निसास वि० (हि) श्वासरहित। अचेत।
निसहाय वि० (हि) दे० 'निस्सहाय'।
निसांक वि० (हि) निर्भय। बेखटके।
निसांस पुं० (हि) ठंढी सांस। लम्बी सांस। वि० (हि) मृतप्राय। बेदम।
निसांसा पुं० (हि) निश्वास। बेदम। मृतप्राय।
निसा स्त्री० (हि) तृप्ति। सन्तोष। स्त्री० (हि) दे० 'नशा'।
निसाकर पुं० (हि) दे० 'निशाकर'।
निसाचर पुं० (हि) दे० 'निशाचर'।
निसाद पुं० (हि) भंगी। मेहतर।
निसान पुं० (हि) १-दे० 'निशान'। २-नगाड़ा।
निसानन पुं० (हि) संध्या। प्रदोष।
निसाना पुं० (सं) दे० 'निशाना'।
निसानाथ पुं० (हि) दे० 'निशानाथ'।
निसानी स्त्री० (हि) दे० 'निशानी'।
निसाफ पुं० (हि) न्याय। इन्साफ।
निसार पुं० (अ) १-निछावर। २-मुगल-कालीन सिक्का जो चार आने के बराबर होता था। पुं० (सं) समूह। समुदाय। वि० (हि) दे० 'निस्सार'।
निसारना क्रि० (हि) बाहर करना। निकालना।
निसास पुं० (हि) दे० 'निश्वास'।
निसासी वि० (हि) दे० 'निसांसा'।
निसि स्त्री० (हि) रात।
निसिकर पुं० (हि) दे० 'निशिकर'।
निसिचर पुं० (हि) दे० 'निशाचर'।
निसिचारी पुं० (हि) निशाचर। राक्षस।
निसिदिन क्रि० वि० (हि) रात दिन। आठों पहर। सर्वदा। हमेशा।
निसिनाथ पुं० (हि) दे० 'निशानाथ'।
निसिमनि पुं० (हि) निशामणि। चांद। चन्द्रमा।
निसिमुख पुं० (हि) दे० 'निशामुख'।
निसिवर पुं० (हि) दे० 'निशाकर'।
निसि-बासर क्रि० वि० (हि) रातदिन। सर्वदा। नित्य
निसीठा वि० (हि) दे० 'निःसार'।
निसीठी वि० (हि) निःसार। निरस। जिसमें कुछ तत्व न हो।
निसीथ पुं० (हि) दे० 'निशीथ'।
निसुंभ पुं० (हि) दे० 'निशुंभ'।
निसु स्त्री० (हि) दे० 'निशा'।
निसुका वि० (हि) निर्धन। गरीब। बेचारा।
निसूदक वि० (सं) हिंसक। वध करने वाला।
निसूदन पुं० (सं) हिंसा करना। वध करना।

निसृत वि० (हि) दे० 'निःसृत'।
निसृष्ट वि० (सं) १-छोड़ा हुआ। निकाला हुआ। २-दिया हुआ। प्रदत्त। ३-बीच में पड़ा हुआ। मध्यस्थ।
निसृष्टार्थ पुं० (सं) १-तीन प्रकार के दूतों में से एक। २-वह दूत जो दोनों पक्षों के अभिप्राय को समझ कर स्वयं प्रश्नों का उत्तर ही उत्तर देता है और कार्य सिद्ध कर लेता है। ३-व्यापार या धन सम्पत्ति की निगरानी करने के लिए नियुक्त व्यक्ति। ४-अपने मालिक के कार्य को स्वतन्त्रता से करने वाला व्यक्ति।
निसृष्टार्थ दूतिका स्त्री०(सं) वह दूती जो नायक और नायिका की बात समझ कर अपनी बुद्धि से कार्य के मनोरथ को पूरा करे।
निसेनी स्त्री० (हि) सीढ़ी। जीना। सोपान।
निसेष वि० (हि) दे० 'निःशेष'।
निसेस पुं० (हि) चांद। चन्द्रमा।
निसैनी स्त्री० (हि) दे० 'निसेनी'।
निसोग वि० (हि) चिन्ता या शोकरहित।
निसोच वि० (हि) निश्चिन्त। पवित्र।
निसोत वि० (हि) जिसमें मिलावट न हो। शुद्ध।
निसोथु वि० (हि) शुद्ध। स्वच्छ। सन्तुसा। सम्वाद।
निस्केवल वि० (हि) शुद्ध खालिस (बेमेलवाला)।
निस्तंद्र वि० (सं) निरालस्य। जागृत। जिसे नींद न आई हो।
निस्तत्व वि० (सं) निस्सार। जिसमें कोई सार न हो।
निस्तब्ध वि० (सं) जड़वत। निश्चेष्ट। जड़त्व। अत्यधिक स्तब्ध।
निस्तर पुं० (सं) दे० 'निस्तार'।
निस्तरण पुं० (सं) १-उद्धार होना। पार होना। २-सामने आये हुए कार्य को नियमित रूप से पूरा करना। (डिसपोज़ल)।
निस्तरना क्रि० (हि) छुटकारा पाना। निस्तार पाना।
निस्तल वि० (सं) १-जिसका तल न हो। बहुत गहरा। २-गोलाकार। ३-नीचा।
निस्तार पुं० (हि) १-छुटकारा। उद्धार। २-काम पूरा करके छुट्टी पाना। ३-रोगमोचन।
निस्तारक पुं० (सं) निस्तार करने वाला। उद्धारक।
निस्तारण पुं० (सं) मुक्त करना। पार करना। छुड़ाना। जीतना। काम पूरा करना। (डिस्पोज़ल)
निस्तारना क्रि० (हि) छुड़ाना। उद्धार करना।
निस्तारा पुं० (हि) दे० 'निस्तार'।
निस्तीर्ण वि० (सं) १-जो पार कर चुका हो। २-जिसका निस्तार हो चुका हो। मुक्त।
निस्तुष वि० (सं) जिसमें भूसी तुष न हो। निर्मल।
निस्तेज वि० (सं) जिसमें तेज न हो। अधम। मलिन।
निस्तैल वि० (सं) बिना तेल का। जिसमें तेल न हो।
निस्पंद वि० (सं) स्थिर। निश्चल। जो हिलता न हो। (स्टेडी)।
निस्पृह वि० (सं) निर्लोभ। जिसमें कोई लोभ या वासना न हो।
निस्पृही वि०(हि) दे० 'निस्पृह'।
निस्फ वि० (अ) आधा। दो बराबर भागों में से एक।
निस्बत स्त्री० (हि) दे० 'निसबत'।
निस्यंद पुं० (सं) रिसना। चूना। परिणाम।
निस्यंदी वि० (सं) चूने वाला। बहने वाला।
निस्रव पुं० (सं) १-चावल का माँड़। बहना। चूना।
निस्वन पुं० (सं) शब्द। ध्वनि।
निस्संकोच वि० (सं) संकोच रहित। क्रि० वि० बिना किसी संकोच के।
निस्संग वि० (सं) १-बिना साथी का। संग रहित। २-वासनाओं से दूर। ३-एकान्त। अकेला। निष्काम।
निस्संतान वि० (सं) जिसके कोई संतान न हो। संतति रहित। अव्यय (सं) बिना किसी सन्देह के। अवश्य। बेशक।
निस्सत्व वि० (सं) असार। दुर्बल। तुच्छ। सत्व रहित।
निस्सरण पुं० (सं) निकलने का रास्ता। निकलना। (डिस्चार्ज)।
निस्सहाय वि०(सं) असहाय। जिसका कोई मददगार न हो।
निस्सार वि० (सं) १-सार रहित। जिसमें कोई सार या काम की बात न हो। निरर्थक।
निस्सारण पुं० (सं) १-निकलने का भाव या क्रिया २-शरीर या वनस्पतियों की गांठों में से कोई तरल अंश बाहर निकलना जो पदार्थों को ठीक स्थान के लिये आवश्यक होते हैं। ३-इस प्रकार निकले वाला पदार्थ। (सीक्रिशन) (डिस्चार्ज)।
निस्सारित वि० (सं) निकाला हुआ। बेदखल किया हुआ।
निस्सीम वि० (सं) १-जिसकी कोई सीमा न हो। असीम। (एब्सोल्यूट)। २-बहुत। अपार।
निस्स्नेह वि० (सं) जिसे प्रेम या स्नेह न हो।
निस्स्व वि० (सं) गरीब। धनहीन। दरिद्र।
निस्स्वक वि० (सं) दे० निस्स्व।
निस्स्वादु वि० (सं) बिना स्वाद का। अस्वादिष्ट। स्वादरहित।
निस्स्वार्थ वि० (सं) जिसे या जिसमें अपने हित का कोई विचार न हो। स्वार्थरहित।
निहंग वि० (हि) १-अकेला। एकाकी। २-स्त्री आदि से सम्बन्ध न रखने वाला (साधु)। ३-निर्लज्ज। नंगा। बेशर्म। पु० (हि) १-अकेला रहने वाला साधु। २-सिक्खों का एक संप्रदाय।

निहंगम वि० (हि) दे० 'निहंग' ।
निहंग-लाडला वि० (हि) जो माता पिता के अधिक दुलार के कारण बिगड़ गया हो ।
निहंता वि० (हि) १-मारने वाला । २-विनाशक । नाश करने वाला ।
निहकर्मा वि० (हि) दे० 'निष्कर्मा' ।
निहकलङ्क वि० (हि) दे० 'निष्कलंक' ।
निहकाम वि० (हि) दे० 'निष्काम' ।
निहकामी वि० (हि) दे० 'निष्कामी' ।
निहचक पुं० (हि) पहिए के आकार का काठ का चक्कर जो कुएँ की नींव में लगाया जाता है । निवार । जाखिम ।
निहचय पुं० (हि) दे० निश्चय' ।
निहचल वि० (हि) दे० 'निश्चल' ।
निहचित वि० (हि) दे० 'निश्चित' ।
निहत वि० (सं) १-नष्ट । मारा हुआ । २-फेंका हुआ ।
निहतार्थ पुं० (सं) किसी दो अर्थ वाले शब्द को उसके अप्रचलित अर्थ में प्रयुक्त करना ।
निहत्था वि० (हि) १-जिसके हाथ न हो । २-जिसके हाथ में कोई अस्त्र न हो ।
निहनन पुं० (हि) वध । हत्या ।
निहनना क्रि० (हि) वध करना । मार डालना ।
निहपाप वि० (हि) दे० 'निष्पाप' ।
निहफल वि० (हि) दे० 'निष्फल' ।
निहाई स्त्री० (हि) पक्के लोहे का टुकड़ा जिस पर रख कर धातु को पीटा जाता है ।
निहाउ पुं० (हि) दे० 'निहाई' ।
निहानी स्त्री० (हि) बारीक खुदाई का काम करने की एक प्रकार की रुखानी ।
निहाय पुं० (हि) दे० 'निहाई' ।
निहायत अव्य० (घ) अत्यन्त । अधिक । बहुत ।
निहार पुं० (सं) कुहरा । ओस । हिम । वि० (हि) निहाल । लट्टू ।
निहार-जल पुं० (सं) ओस ।
निहारना क्रि० (हि) ध्यानपूर्वक देखना । ताकना ।
निहारिका स्त्री० (सं) दे० 'नीहारिका' ।
निहाल वि० (फा) हर प्रकार से । जिसके सब कार्य पूर्ण हो चुके हों ।
निहाली स्त्री० (फा) गद्दा । रजाई । तोशक ।
निहिचय पुं० (हि) दे० 'निश्चय' ।
निहिचित वि० (हि) दे०'निश्चित' ।
निहित वि० (सं) १-स्थापित । २-कहीं रखा या दिया हुआ । (वेस्टेड) ।
निहित-स्वार्थ पुं० (सं) व्यापार या भूमि आदि में रुपया लगा कर प्राप्त किया हुआ स्वार्थ । (वेस्टेड इन्टरेस्ट) ।
निहुकना क्रि० (हि) झुकना ।
निहुड़ना क्रि० (हि) दे० 'निहुरना' ।
निहुरना क्रि० (हि) नवना । झुकना ।
निहुराई स्त्री० (हि) दे० 'निठुराई' ।
निहुराना क्रि० (हि) झुकाना । नवाना ।
निहोर पुं० (हि) दे० 'निहोरा' ।
निहोरना क्रि० (हि) प्रार्थना । विनय । उपकार । कृ
निहोरे (घ) (हि) वास्ते । कारण से ।
नींद स्त्री० (हि) निद्रा ।
नींदड़ी स्त्री० (हि) दे० 'नींद' ।
नींदना क्रि० (हि) नींद लेना । सोना । निराना ।
नींदर स्त्री० (हि) नींद । निद्रा ।
नींदरी स्त्री० (हि) नींद ।
नींव स्त्री० (हि) नीम ।
नींव स्त्री० (हि) दे० 'नीवँ' ।
नीअर अव्य० (हि) निकट ।
नीक वि० (हि) अच्छा । सुन्दर । भला । पुं० (हि) भलाई । अच्छाई ।
नीका वि० (हि) दे० 'नीक' ।
नीके अव्य० (हि) भलीभांति । सकुशल ।
नीगने वि० (हि) बेशुमार । अगणित ।
नीग्रो पुं० (घ) हबशी ।
नीच वि० (सं) १-जाति, कर्म, गुण आदि या किसी दूसरी बात में घट कर । तुच्छ । अधम । २-बुरा । निकृष्ट ।
नीच-ऊँच वि० (हि) १-अच्छा-बुरा २-हानि-लाभ ३-सुख-दुख ।
नीचग वि० (सं) नीचे जाने वाला । ओछा । खोटा
नीचगा स्त्री० (सं) १-नदी । २-नीचगामिनी स्त्री ।
नीच-गामी वि० (हि) दे० 'नीचग' ।
नीचट वि० (हि) पक्का । दृढ़ ।
नीचता स्त्री० (सं)१-नीच होने का भाव । २-अध-मता । खोटाई । कमीनापन ।
नीचत्व पुं० (स) दे० 'नीचता' ।
नीचा वि० (हि) १-जिसके आस-पास का तल ऊँचा हो । जो गहराई पर हो । २-ऊंचाई में सामान्य से की अपेक्षा कम । ३-नत । झुका हुआ । ४-धीमा । मंदा । ५- जो गुण, जाति, पद आदि में घटकर हो ६-छोटा । ओछा । बुरा ।
नीचायक वि० (सं) अधिक चाहने वाला ।
नीचाशय वि० (सं) तुच्छ विचार का । ओछा । क्षुद्र ।
नीचू वि० (हि) जो टपकता न हो । क्रि० वि० (हि) दे० 'नीचे' ।
नीचे क्रि० वि० (हि) निम्नतल की ओर । अधोभाग में । ऊपर का उल्टा । अव्यवस्थित ।
नीचे-ऊपर (घ) (हि) अव्यवस्थित । अस्त-व्यस्त ।
नीजन वि० (हि) दे० 'निर्जन' । पुं० (हि) एकान्त स्थान ।

नीरे क्रि० वि० (हिं) निकट। पास में। नियरे।
नीरोग वि० (सं) स्वस्थ। रोगरहित।
नीरोह पुं० (सं) अंकुरित होना।
नील वि० (सं) आसमान के रंग का। नीले रंग का। पुं० (सं) १-नीला रंग। २-एक पौधा जिससे नीला रंग निकलता है। ३-इस पौधे से निकलने वाला रंग। ४-शरीर पर पड़ा हुआ चोट का नीले या काले रंग का चिह्न। ५-लांछन। कलंक। ६-राम की सेना का एक वानर। ७-नव निधियों में से एक। ८-एक यम का नाम। ९-एक पर्वत। १०-नीलम। ११-सौ-खरब की एक संख्या।
नीलकंठ वि० (सं) जिसका कंठ नीला हो। पुं० (सं) १-मोर। २-एक प्रकार की चिड़िया जिसके डैने और कंठ नीले होते हैं और जिसके विजयादशमी को दर्शन करते हैं। चापपक्षी। ३-महादेव।
नीलकंठक पुं० (सं) चातक पक्षी। पपीहा।
नील कमल पुं० (सं) नीले रंग का कमल।
नीलकांत पुं० (सं) नीलम। एक पहाड़ी पक्षी।
नीलगाय स्त्री० (हि) एक जंगली जानवर जिसकी आकृति गाय जैसी होती है।
नीलगिरि पुं० (सं) दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।
नीलग्रीव पुं० (सं) महादेव। शिव।
नीलतरु पुं० (हि) ताड़वृक्ष। नारियल।
नीलपत्र पुं० (सं) नीलकमल।
नीलपद्म पुं० (सं) नीलकमल।
नीलपिंगला स्त्री० (सं) नीलगाय।
नीलपुष्पी स्त्री० (सं) १-नीली कोयल। २-अलसी।
नीलपृष्ठ पुं० (सं) आग। अग्नि।
नीलभ पुं० (सं) १-बादल। चन्द्रमा। २-मधुमक्खी
नीलम पुं० (फा) नील-मणि। नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न।
नीलमंडल पुं० (फा) फालसा।
नीलमणि पुं० (सं) नीलम।
नीलरत्न पुं० (सं) नीलम।
नील-वसन पुं० (सं) १-नीला कपड़ा। २-शनिग्रह। वि० (सं) नीला या काला वस्त्र धारण करने वाला।
नीलवासा वि० (सं) दे० 'नील वसन'।
नीलांजन पुं० (सं) १-नीला सुरमा। २-नीला-थोथा। तूतिया।
नीलांबर पुं० (सं) नीला वस्त्र। बलदेव। वि० (सं) नीले वस्त्र पहनने वाला।
नीलांबुज पुं० (सं) नील कमल।
नीला वि० (हि) नीले रंग का। आकाश के रंग का।
नीलाचल पुं० (सं) नीलगिरि।
नीलाथोथा पुं० (हि) तूतिया।
नीलाम पुं० (हि) बोली बोलकर माल बेचने का ढंग। (ऑक्शन)। (सेल)।
नीलामघर पुं० (हि) वह स्थान जहां पर वस्तु नीलाम होती है।
नीलामी वि० (हि) नीलाम में मोल लिया हुआ।
नीलाश्मज पुं० (सं) नीलाथोथा।
नीलाश्मन् पुं० (सं) नीलम।
नीलि पुं० (सं) एक प्रकार का जल जंतु।
नीलिका स्त्री० (सं) १-एक नेत्र रोग। २-चोट के कारण पड़ा नीला दाग। नील। ३-नील का पौधा
नीलिनी स्त्री० (सं) नील का पेड़।
नीलिमा स्त्री० (हि) नीलापन।
नीली वि० (हि) नीले रंग की। आसमानी।
नीलू स्त्री० (हि) एक प्रकार की घास।
नीलोत्पल पुं० (सं) नील कमल।
नीलोत्पली पुं० (सं) १-शिव का एक अंश। २-बौद्ध महात्मा मंजुश्री का नाम।
नीलोद पुं० (सं) वह नदी या समुद्र जिसका पानी नीला हो।
नीलोफर पुं० (फा) नील कमल।
नीवँ स्त्री० (हि) १-मकान आदि बनाने के समय उसका वह मूल भाग जो नली की तरह भूमि में खोद कर और उसमें चिनाई करके, उसकी दीवारों को दृढ़ बनाने के लिए बनाया जाता है। २-आधार। जड़। मूल। ३-किसी वस्तु या कार्य का आरम्भ का भाग।
नीवर पुं० (सं) १-व्यवसाय। २-साधु। ३-व्यवसायी। ४-जल। कीचड़।
नीवार पुं० (सं) तिन्नीधान।
नीवि स्त्री० (सं) दे० 'नीवी'।
नीवीँ स्त्री० (हि) नींव।
नीवी स्त्री० (सं) १-कमर में लपेटी हुई धोती की गांठ। २-सूत की डोरी जिससे स्त्रियां धोती की गांठ बांधती हैं। नारा। इजारबन्द। ३-पूंजी। बारदाना। ४-दांव। ५-धोती।
नीव्र पुं० (सं) १-पहिये का घेरा। २-चन्द्रमा। ३-रेवती-नक्षत्र।
नीशार पुं० (सं) १-कंबल। गर्म कपड़ा। २-हवा से बचाव के लिए लगाया हुआ परदा। कनात। ३-मसहरी।
नीस पुं० (दे) सफेद धतूरा।
नीसक वि० (हि) निर्बल। कमजोर। असमर्थ।
नीसान पुं० (हि) दे० 'निशान'।
नीसू पुं० (हि) गंड़ासे से चारा काटने का काठ का कुन्दा जो भूमि में गड़ा होता है। नीसुआ।
नीहार पुं० (सं) कुहरा। पाला। हिम।
नीहार-जल पुं० (सं) ओस।
नीहार-स्फोट पुं० (सं) बरफ का बड़ा टुकड़ा।

नीहारिका स्त्री० (सं) आकाश में दूर तक कुहरे की तरह फैला हुआ वह प्रकाशपुञ्ज जो अँधेरी रात में सफेद धारी की तरह दिखाई देता है।

नु अव्य० (सं) सन्देह या अनिश्चितता सूचक अव्यय जो सम्भवतः तथा अवश्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है। पु० (सं) अनुस्वार।

नुकता पु० (अ) १-बिन्दु। २ फबती। लगती हुई उक्ति। ३-दोष। ४-घोड़े के माथे पर बाँधने का पट्टा। बिन्दकी।

नुकता-चीं वि० (अ) ऐब या दोष ढूँढने या निकालने वाला। छिद्रान्वेषी।

नुकता-चीनी स्त्री० (अ) छिद्रान्वेषण।

नुकती स्त्री० (फा) बेसन की बनी छोटी छोटी मीठी बुन्दिया। एक प्रकार की मिठाई।

नुकना क्रि० (अ) लुकना। छिपना।

नुकरा पु० (अ) १ चान्दी। २-घोड़े का श्वेत रङ्ग। वि० (अ) सफेद रङ्ग का (घोड़ा)।

नुकरी स्त्री० (देश०) जलाशयों के पास रहने वाली सफेद पर वाली एक चिड़िया।

नुकसान पु० (अ) १-कमी। घाटा। २-हानि। ३ बिगाड़। दोष।

नुकाना क्रि० (अ) छिपाना।

नुकीला वि० (हि) १-नोकदार। २-बाँका। तिरछा। सजीला।

नुकीलो वि० (हि) दे० 'नुकीला'।

नुक्कड़ पु० (हि) गली, मकान या रास्ते पर आगे निकला हुआ कोना। २-कोना। ३-पतला सिरा।

नुक्का पु० (हि) नोक।

नुक्स पु० (अ) १-दोष। ऐब। बुराई। २-कसर।

नुचना क्रि० (हि) नाखून आदि से छिलना। खरोंचा जाना।

नुचवाना क्रि० (हि) नोचने में प्रवृत्त करना। नोचने देना।

नुत वि० (सं) प्रशंसित। वंदित। स्तुत।

नुति स्त्री० (सं) वंदना। स्तुति।

नुत्त वि० (सं) १-चलाया हुआ। २-प्रेरित।

नुत्फा पु० (अ) १-वीर्य। शुक्र। २-औलाद। संतति

नुनखरा वि० (हि) नमकीन। स्वाद में नमक की तरह खारा।

नुनखारा वि० (हि) दे० 'नुनखरा'।

नुनना क्रि० (हि) खेत काटना। लुनना।

नुनाई स्त्री० (हि) लावण्य। सलोनापन। सुन्दरता।

नुनेरा पु० (हि) खारी मट्टी आदि से नमक निकालने या इसका रोजगार करने वाला। लोनिया।

नुमा वि० (फा) दिखाने वाला। प्रकट करने वाला। सदृश।

नुमाइन्दगी स्त्री० (फा) प्रतिनिधित्व।

नुमाइन्दा पु० (फा) प्रतिनिधि।

नुमाइश स्त्री० (फा) १-प्रदर्शन। दिखावा। २-सजधज। तड़कभड़क। ३-वह मेला जहाँ अनूठी वस्तुएँ प्रदर्शनार्थ अनेक स्थानों से आती हैं।

नुमाइशगाह स्त्री० (फा) प्रदर्शनी।

नुमाइशी वि० (फा) जो केवल दिखावट के लिये हो २-जिसमें केवल ऊपरी तड़कभड़क हो और भीतरी कुछ सार न हो। ३-सुन्दर।

नुसखा पु० (अ) वह कागज की पर्ची जिस पर रोगी के लिए औषध और उसकी सेवन विधि लिखी होती है। ग्रन्थ का योग। नकल। कापी।

नूहरना क्रि० (हि) दे० 'निहुरना'।

नूत वि०(सं) १-नूतन। नया। २-अनूठा। अनोखा

नूतन वि० (सं) १-नवीन। नया। २-हाल का। ताजा।

नूतनता स्त्री० (सं) नवीनता। नयापन। नूतन होने का भाव।

नूतनत्व पु० (सं) दे० 'नूतनता'।

नूतनीकरण पु० (सं) नवीकरण। (रिनोवेशन)।

नूद पु० (सं) शहतूत।

नून पु० (?) १-गाल। २-एक प्रकार की लता। पु० (हि) नमक। वि० (हि) दे० न्यून।

नूनताई स्त्री० (हि) दे० 'न्यूनता'।

नूनतेल पु० (हि) गृहस्थी की सामग्री।

नूपुर पु० (सं) पैंजनी। घुंघरू। पैरों में पहनने का एक गहना।

नूर पु० (अ) १-ज्योति। आभा। २-कांति। शोभा। श्री। ३-ईश्वर का एक नाम। (सूफी)।

नूरचश्म पु० (अ) प्रिय पुत्र।

नूरबाफ पु० (फा) जुलाहा।

नूरा पु० (?) एक ही अखाड़े के पहलवानों में लड़ी जाने वाली कुश्ती। (पहलवानों की बोली)। वि० (?) नूरवाला। तेजस्वी।

नूह पु० (अ) शामी या इबरानी (यहूदी, ईसाई, मुसलमान आदि) मतानुसार एक पैगम्बर।

नृ पु० (सं) १-मनुष्य। आदमी। २-शतरंज की गोट ३-मनुष्य जाति।

नृ-कपाल पु० (सं) मनुष्य की खोपड़ी।

नृ-कुक्कुर पु० (सं) कुत्ते के समान व्यवहार करने वाला मनुष्य।

नृ-केसरी पु० (सं) १-नृसिंह अवतार। २-सिंह के समान पराक्रमी पुरुष।

नृग पु० (सं) महाभारत के अनुसार एक राजा जो एक ब्राह्मण के शाप से गिरगिट की योनि को प्राप्त हुए थे।

नृघ्न वि० (सं) नर-घातक।

नृचक्षु वि० (सं) नर-भक्षक।

नृ-जल पु० (सं) मनुष्य का मूत्र।

नीरे क्रि० वि० (हि) निकट। पास में। नियरे।
नीरोग वि० (सं) स्वस्थ। रोगरहित।
नीरोह पु० (सं) अंकुरित होना।
नील वि० (सं) आसमान के रंग का। नीले रंग का। पु० (सं) १-नीला रंग। २-एक पौधा जिससे नीला रंग निकलता है। ३-इस पौधे से निकलने वाला रंग। ४-शरीर पर पड़ा हुआ चोट का नीले या काले रंग का चिह्न। ५-लांछन। कलंक। ६-राम की सेना का एक वानर। ७-नव निधियों में से एक। ८-एक वृक्ष का नाम। ९-एक पर्वत। १०-नीलम। ११-सौ-खरब की एक संख्या।
नीलकंठ वि० (सं) जिसका कंठ नीला हो। पु० (सं) १-मोर। २-एक प्रकार की चिड़िया जिसके डैने और कंठ नीले होते हैं और जिसके विजयादशमी को दर्शन करते हैं। चापपक्षी। ३-महादेव।
नीलकंठक पु० (सं) चातक पक्षी। पपीहा।
नील कमल पु० (सं) नीले रंग का कमल।
नीलकांत पु० (सं) नीलम। एक पहाड़ी पक्षी।
नीलगाय स्त्री० (हि) एक जंगली जानवर जिसकी आकृति गाय जैसी होती है।
नीलगिरि पु० (सं) दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।
नीलग्रीव पु० (सं) महादेव। शिव।
नीलतरु पु० (हि) ताड़वृक्ष। नारियल।
नीलपत्र पु० (सं) नीलकमल।
नीलपद्म पु० (सं) नीलकमल।
नीलपिंगला स्त्री० (सं) नीलगाय।
नीलपुष्पी स्त्री० (सं) १-नीली कोयल। २-अलसी।
नीलपृष्ठ पु० (सं) आग। अग्नि।
नीलभ पु० (सं) १-बादल। चन्द्रमा। २-मधुमक्खी
नीलम पु० (फा) नील-मणि। नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न।
नीलमंडल पु० (फा) फालसा।
नीलमणि पु० (सं) नीलम।
नीलरत्न पु० (सं) नीलम।
नील-वसन पु० (सं) १-नीला कपड़ा। २-शनिग्रह। वि० (सं) नीला या काला वस्त्र धारण करने वाला।
नीलवासा वि० (सं) दे० 'नील वसन'।
नीलांजन पु० (सं) १-नीला सुरमा। २-नीला-थोथा। तूतिया।
नीलांबर पु० (सं) नीला वस्त्र। बलदेव। वि० (सं) नीले वस्त्र पहनने वाला।
नीलांबुज पु० (सं) नील कमल।
नीला वि० (हि) नीले रंग का। आकाश के रंग का।
नीलाचल पु० (सं) नीलगिरि।
नीलाथोथा पु० (हि) तूतिया।
नीलाम पु० (हि) बोली बोलकर माल बेचने का ढंग। (अॉक्शन)। (सेल)।
नीलामघर पु० (हि) वह स्थान जहां पर वस्तुएं नीलाम होती हैं।
नीलामी वि० (हि) नीलाम में मोल लिया हुआ।
नीलाश्मज पु० (सं) नीलाथोथा।
नीलाश्मन् पु० (सं) नीलम।
नीलि पु० (सं) एक प्रकार का जल जंतु।
नीलिका स्त्री० (सं) १-एक नेत्र रोग। २-चोट के कारण पड़ा नीला दाग। नील। ३-नील का पौधा
नीलिनी स्त्री० (सं)नील का पेड़।
नीलिमा स्त्री० (हि) नीलापन।
नीली वि० (हि) नीले रंग की। आसमानी।
नीलू स्त्री० (हि) एक प्रकार की घास।
नीलोत्पल पु० (सं) नील कमल।
नीलोत्पली पु० (सं) १-शिव का एक अंश। २-बौद्ध महात्मा मंजुश्री का नाम।
नीलोद पु० (सं) वह नदी या समुद्र जिसका पानी नीला हो।
नीलोफर पु० (फा) नील कमल।
नींव स्त्री० (हि) १-मकान आदि बनाने के समय उसका वह मूल भाग जो नाली की तरह भूमि में खोद कर और उसमें चिनाई करके, उसको दीवारों को दृढ़ बनाने के लिए बनाया जाता है। २-आधार। जड़। मूल। ३-किसी वस्तु या कार्य का आरम्भ का भाग।
नीवर पु० (सं) १-व्यवसाय। २-साधु। ३-व्यवसायी। ४-जल। कीचड़।
नीवार पु० (सं) तिन्नीधान।
नीवि स्त्री० (सं) दे० 'नीवी'।
नीवीं स्त्री० (हि) नींव।
नीवी स्त्री० (सं) १-कमर में लपेटी हुई धोती की गांठ २-सूत की डोरी जिससे स्त्रियां धोती की गांठ बांधती हैं। नारा। इजारबन्द। ३-पूंजी। बारदाना। ४-दांव। ५-धोती।
नीव्र पु० (सं) १-पहिये का घेरा। २-चन्द्रमा। ३-रेवती-नक्षत्र।
नीशार पु० (सं) १-कंबल। गर्म कपड़ा। २-हवा से बचाव के लिए लगाया हुआ परदा। कनात। ३-मसहरी।
नीस पु० (दे) सफेद धतूरा।
नीसक वि० (हि) निर्बल। कमजोर। असमर्थ।
नीसान पु० (हि) दे० 'निशान'।
नीसू पु० (हि) गंडासे से चारा काटने का काठ का कुन्दा जो भूमि में गड़ा होता है। नीसुआ।
नीहार पु० (सं) कुहरा। पाला। हिम।
नीहार-जल पु० (सं) ओस।
नीहार-स्फोट पु० (सं) बरफ का बड़ा टुकड़ा।

नीहारिका स्त्री० (सं) आकाश में दूर तक कुहरे की तरह फैला हुआ वह प्रकाश-पुंज जो अँधेरी रात में सफेद धारी की तरह दिखाई देता है।

नु अव्य० (सं) सन्देह या अनिश्चितता सूचक अव्यय जो सम्भावना तथा अवश्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है। पु० (सं) अनुस्वार।

नुक्ता पु० (अ) १-बिन्दु। २ फबती। लगती हुई उक्ति। ३-दोष। ४-घोड़े के माथे पर बाँधने का पट्टा। तिनहारी।

नुक्ता-चीं वि० (अ) ऐब या दोष ढूँढ़ने या निकालने वाला। छिद्रान्वेषी।

नुक्ता-चीनी स्त्री० (अ) छिद्रान्वेषण।

नुकती स्त्री० (फा) बेसन की बनी छोटी छोटी मीठी बुन्दिया। एक प्रकार की मिठाई।

नुकना क्रि० (अ) लुकना। छिपना।

नुकरा पु० (अ) १-चान्दी। २-घोड़े का श्वेत रङ्ग। वि० (अ) सफेद रङ्ग का (घोड़ा)।

नुकरी स्त्री० (देश०) जलाशयों के पास रहने वाली सफेद पर वाली एक चिड़िया।

नुकसान पु० (अ) १-कमी। घाटा। २-हानि। ३ बिगाड़। दोष।

नुकाना क्रि० (अ) छिपाना।

नुकीला वि० (हि) १-नोकदार। २-बाँका। तिरछा। सजीला।

नुकीली वि० (हि) दे० 'नुकीला'।

नुक्कड़ पु० (हि) गली, मकान या मार्ग पर आगे निकला हुआ कोना। २-कोना। ३-पतला सिरा।

नुक्का पु० (हि) नोका।

नुक्स पु० (अ) १-दोष। ऐब। बुराई। २-कसर।

नुचना क्रि० (हि) नाखून आदि से छिलना। खींचा जाना।

नुचवाना क्रि० (हि) नोचने में प्रवृत्त करना। नोचने देना।

नुत वि० (सं) प्रशंसित। वंदित। स्तुत।

नुति स्त्री० (सं) वंदना। स्तुति।

नुन्न वि० (सं) १-चलाया हुआ। २-प्रेरित।

नुत्फा पु० (अ) १-वीर्य। शुक्र। २-औलाद। संतति

नुनखरा वि० (हि) नमकीन। स्वाद में नमक की तरह खारा।

नुनखारा वि० (हि) दे० 'नुनखरा'।

नुनना क्रि० (हि) खेत काटना। लुनना।

नुनाई स्त्री० (हि) लावण्य। सलोनापन। सुन्दरता।

नुनेरा पु० (हि) नोनी मट्टी आदि से नमक निकालने या इसका रोजगार करने वाला। लोनिया।

नुमा वि० (फा) दिखाने वाला। प्रगट करने वाला। सदृश।

नुमाइन्दगी स्त्री० (फा) प्रतिनिधित्व।

नुमाइन्दा पु० (फा) प्रतिनिधि।

नुमाइश स्त्री० (फा) १-प्रदर्शन। दिखावा। २-सजधज। तड़कभड़क। ३-वह मेला जहाँ अनूठी वस्तुएँ प्रदर्शनार्थ अनेक स्थानों से आती हैं।

नुमाइशगाह स्त्री० (फा) प्रदर्शनी।

नुमाइशी वि० (फा) जो केवल दिखावट के लिये हो। २-जिसमें केवल ऊपरी तड़कभड़क हो और भीतरी कुछ सार न हो। ३-सुन्दर।

नुसखा पुं० (अ) वह कागज की पर्ची जिस पर रोगी के लिए औषध और उसकी सेवन विधि लिखी होती है। द्रव्य का योग। नकल। कापी।

नुहरना क्रि० (हि) दे० 'निहुरना'।

नून वि०(सं) १-नूतन। नया। २-अनूठा। अनोखा

नूतन वि० (सं) १-नवीन। नया। २-हाल का। ताजा।

नूतनता स्त्री० (सं) नवीनता। नयापन। नूतन होने का भाव।

नूतनत्व पु० (सं) दे० 'नूतनता'।

नूतनीकरण पु० (सं) नवीकरण। (रिनोवेशन)।

नूद पु० (सं) शहतूत।

नून पु० (?) १-थाल। २-एक प्रकार की लता। पु० (हि) नमक। वि० (हि) दे० 'न्यून'।

नूनताई स्त्री० (हि) दे० 'न्यूनता'।

नूनतेल पु० (हि) गृहस्थी की सामग्री।

नूपुर पुं० (सं) पैंजनी। घुँघरू। पैरों में पहनने का एक गहना।

नूर पुं० (अ) १-ज्योति। आभा। २-कान्ति। शोभा। श्री। ३-ईश्वर का एक नाम। (सूफी)।

नूरचश्म पु० (अ) प्रिय पुत्र।

नूरबाफ पु० (फा) जुलाहा।

नूरा पुं० (?) एक ही अखाड़े के पहलवानों में लड़ी जाने वाली कुश्ती। (पहलवानों की बोली)। वि० (?) नूरवाला। तेजस्वी।

नूह पु० (अ) शामी या इबरानी (यहूदी, ईसाई, मुसलमान आदि) मतानुसार एक पैगम्बर।

नृ पु० (सं) १-मनुष्य। आदमी। २-शतरंज की गोट ३-मनुष्य जाति।

नृ-कपाल पुं० (सं) मनुष्य की खोपड़ी।

नृ-कुक्कुर पुं० (सं) कुत्ते के समान व्यवहार करने वाला मनुष्य।

नृ-केशरी पु० (सं) १-नृसिंह अवतार। २-सिंह के समान पराक्रमी पुरुष।

नृग पुं० (सं) महाभारत के अनुसार एक राजा जो एक ब्राह्मण के शाप से गिरगिट की योनि को प्राप्त हुए थे।

नृघ्न वि० (सं) नर-घातक।

नृजग्ध वि० (सं) नर-भक्षक।

नृ-जल पुं० (सं) मनुष्य का मूत्र।

२-निश्चय। संकल्प। ३-व्यवस्था। स्त्री० (हि) दे० 'नेती'। स्त्री० (देश०) एक प्रकार का आभूषण।

नेतक स्त्री० (देश०) सुन्दर। सुन्दरी।

नेतनी स्त्री० (हि) एक प्रकार की पतली डोरी।

नेता पु० (हि) १-किसी क्षेत्र में लोगों को आगे चलाने का रास्ता दिखाने वाला। अगुआ। नायक (लीडर)। २-प्रभु। स्वामी। प्रधान। मुखिया।

नेतागीरी स्त्री० (हि) नेता का काम या पद। (लीडरशिप)।

नेति पु० (सं) १-एक संस्कृत पद जिसका अर्थ 'इति या अन्त नहीं है' होता है। और जिसका उपयोग ईश्वर की महिमा के वर्णन के सम्बन्ध में होता है। २-हठयोग का एक भेद।

नेती स्त्री० (हि) मथानी की रस्सी जिससे दूध [illegible] जाता है।

नेती-धोती स्त्री० (हि) हठयोग की एक क्रिया [illegible] मुंह के रास्ते कपड़ा डालकर आंतें साफ की [illegible] हैं।

नेतृ पु० (सं) दे० 'नेता'।

नेतृत्व पु० (सं) दे० 'नेतागीरी'।

नेत्र पु० (सं) १-आंख। २-(ज्यो०) दो की संख्या का सूचक शब्द। ३-मथानी की रस्सी।

नेत्र-कनीनिका स्त्री० (सं) आंख की पुतली।

नेत्रकोष पुं० (सं) १-आंख का गोलक। २-फूल की कली।

नेत्रच्छद पु० (सं) पलक [illegible]

नेत्रजल पुं० (सं) आंसू।

नेत्रपर्यन्त पुं० (सं) आंख का कोना।

नेत्रपाक पुं० (सं) आँख का रोग।

नेत्रपिंड पु० (सं) १-नेत्र-गोलक। २-बिल्ली।

नेत्रबंध पुं० (सं) आँखमिचौनी। का खेल।

नेत्रभाव पुं० (सं) केवल नेत्रों की चेष्टा से नृत्य आदि में सुख दुःख आदि का भाव प्रदर्शित करने की कला।

नेत्रमल पुं० (सं) आंख की कीचड़।

नेत्रमार्ग पुं० (सं) नेत्र-गोलक से मस्तिष्क तक गया सूत्र जिससे अन्तःकरण में दृष्टि ज्ञान होता है।

नेत्ररंजन पुं० (सं) काजल। सुर्मा।

नेत्ररोग पुं० (सं) आंखों में होने वाले ७६ प्रकार के रोग।

नेत्रवस्त्र पु० (सं) घूंघट विशेष।

नेत्रवारि पुं० (सं) आंसू।

नेत्रबिंदु पु० (सं) आंखों में डालने वाली दवा की बूंद।

नेत्र विज्ञान पु० (सं) दृष्टि और प्रकाश के नियमों तथा सिद्धान्तों आदि का विवेचन करने वाला विज्ञान। (ऑप्टिक्स)।

नेत्रस्तंभ पुं० (सं) आँख का पथरा जाना।

नेत्रांजन पु० (सं) आँखों का सुरमा।

नेत्रांत पुं० (सं) आंख के कोने और कान के नीचे का भाग। कनपटी।

नेत्रांबु पुं० (सं) आँसू।

नेत्राम्भस् पुं० (सं) आँसू।

नेत्रामय पुं० (सं) आँख का एक रोग।

नेत्री स्त्री० (सं) १-लोगों का पथ प्रदर्शन करने वाली अग्रगामिनी। २-नदी। ३-नाड़ी। ४-लक्ष्मीदेवी

नेत्रोपम पुं० (सं) बादाम।

नेत्र्य वि० (सं) १-आँखों के लिये लाभकारी। २- [illegible]

नेपथ्य पु० (सं) अभिनय आदि में रङ्ग मंच के पर्दे के पीछे का वह स्थान जहाँ नाटक के पात्र अपना वेष बनाते हैं। २-शृङ्गार। ३-पर्दे के पीछे का स्थान।

नेपुर पुं० (हि) दे० 'नूपुर'।

नेफा पुं० (फा) पायजामे लंहगे आदि का वह स्थान जिसमें नाड़ा या डोरा डाला जाता है।

नेब पुं० (हि) सहायक। मन्त्री। दीवान। सहायता देने वाला।

नेबुआ पु० (हि) दे० 'नीबू'।

नेबू पु० (हि) दे० 'नीबू'।

नेम पु० (सं) १-काल। समय। २-अवधि। ३-टुकड़ा। ४-दीवार। ५-छल। ६-आधा। ७-अन्य। ८-सायंकाल। ९-मूल। जड़। १०-नृत्य। पुं० (हि) १-नियम। बंधी हुई क्रम से होने वाली बात। २-रीति। रिवाज। ३-धार्मिक क्रियाओं का पालन।

नेमत स्त्री० (अ) दे० 'न्यामत'।

नेमधरम पुं० (हि) पूजा पाठ आदि धार्मिक कृत्य।

नेमि स्त्री० (सं) १-पहिये का चक्र या घेरा। चक्र-परिधि। २-कुएं की जगत। कूएं के चारों ओर का ऊंचा स्थान। जमघट। ३-किनारे का हिस्सा। ४-चरखी। पु० (सं) १-नेमिनाथ तीर्थङ्कर। २-भागवत के अनुसार एक दैत्य का नाम।

नेमि घोष पु० (सं) पहिये की 'घरघर' की आवाज।

नेमि-ध्वनि स्त्री० (सं) दे० 'नेमि-घोष'।

नेमी वि० (हि) १-नियम का पालन करने वाला। २-नियमितरूप से पूजा पाठ करने वाले, व्रत आदि धार्मिक कृत्य करने वाला। स्त्री० (हि) दे०

'नेमि'।
नेमी-धरमी वि० (हि) नेम-धर्म से रहने वाला।
नेयार्थता स्त्री० (सं) काव्यदोष का एक भेद।
नेरा अव्यय (हि) पास। निकट।
नेरे अव्यय (हि) समीप। निकट।
नेरें अव्यय (हि) दे० 'नेरे'।
नेव पुं० (हि) दे० 'नेव'। स्त्री० (हि) दे० 'नीवँ'।
नेवग पुं० (हि) नेग।
नेवगी पुं० (हि) नेगी।
नेवछावर स्त्री० (हि) दे० 'निछावर'।
नेवज पुं० (हि) देवता को अर्पित करने की कोई वस्तु। भोग। नैवेद्य।
नेवजा पुं० (फा) चिलगोजा।
नेवत पुं० (हि) दे० 'न्योता'।
नेवतना क्रि० (हि) न्योता। भोजन। निमन्त्रण देना।
नेवतहरी पुं० (हि) दे० 'न्योतहरी'।
नेवता पुं० (हि) दे० 'न्योता'।
नेवतारी पुं० (हि) दे० 'न्योतहरी'।
नेवना क्रि० (हि) झुकना। नवना।
नेवर पुं० (हि) पैर में पहनने की पाजेब जिसमें बजने वाले घुंघरू लगे होते हैं। नूपुर। स्त्री० (हि) पैर की रगड़ या टाप की रगड़ से घोड़े के पैर में होने वाला घाव। वि० (हि) बुरा। खराब। थोड़ा।
नेवरना क्रि० (हि) १-दूर होना। समाप्त होना। २ निवारण होना।
नेवला पुं० (हि) एक पिंडज जन्तु जो भूरे रङ्ग का होता है और सांप को मार डालता है।
नेवाज वि० (हि) दे० 'निवाज'।
नेवाजना क्रि० (हि) दे० 'निवाजना'।
नेवाड़ा पुं० (हि) दे० 'निवाड़'।
नेवाड़ी स्त्री० (हि) दे० 'नेवारी'।
नेवाना क्रि० (हि) झुकाना।
नेवार पुं० (देश०) नैपाल की एक आदि वासी जाति का नाम। स्त्री०, पुं० (हि) दे० 'निवार'।
नेवारना क्रि० (हि) दे० 'निवारना'।
नेवारी स्त्री० (हि) चमेली या जूही की जाति का एक श्वेत फूल वाला पौधा जो बरसात में अधिक फूलता है।
नेष्टु पुं० (सं) मिट्टी का ढेला।
नेसुक वि० (हि) तनक। थोड़ा सा। क्रि० वि० (हि) थोड़ा। जरा।
नेस्त वि० (फा) जो न हो। जिसका कोई अन्त न हो
नेस्त-नाबूद वि० (फा) जड़ मूल से नष्ट।
नेह पुं० (हि) १-स्नेह। प्रीति। प्रेम। २ चिकना घी या तेल।
नेही वि० (हि) १-स्नेही। प्रेम करने वाला। प्रेमी।
नैःश्रेयस वि० (सं) कल्याणकारक। मोक्ष देने वाला।
नैःस्व वि० (सं) निर्धनता। गरीबी।
नै स्त्री० (हि) १-देखो 'नय'। २-नदी। स्त्री० (फा) १-हुक्के की बांस की नली। २-बांसुरी।
नैऋत वि०(हि) निऋति सम्बन्धी। पुं० (हि)पश्चिम दक्षिण का कोण। २-निशाचर। ३-मूल नक्षत्र।
नैक वि० (हि) दे० 'नेक'।
नैकचर वि० (स) जो अकेले न चल कर झुण्ड बना कर चलते हों जैसे सूअर, हिरन आदि।
नैकट्य पुं० (सं) निकट होने का भाव। निकटता।
नैकध अव्य० (स) अनेक बार।
नैगम वि० (सं) १-निगम सम्बन्धी। २-जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो। पुं० (स) १-वेद का टीकाकार। २-उपनिषद। ३-उपाय। ४-विवेकपूर्ण आचरण। ५-नागरिक। सौदागार।
नैगमिक वि०(सं) वेदों से सम्बन्धित। वेदों से निकला हुआ।
नैचा पुं० (फा) हुक्के की दोहरी नली जिसके एक किनारे पर चिलम रखी जाती है और दूसरी ओर से मुंह में लेकर धुंआ खींचा जाता है।
नैचाबंद पुं०(फा) नैचा बनाने वाला।
नैचिक पुं० (सं) गाय बैल आदि का सिर या माथा।
नैचिकी स्त्री० (सं) एक प्रकार की अच्छी गाय।
नैची स्त्री० (हि) कूंए के पास की वह ढालू राह या भूमि जिस पर बैल चरसा खींचते समय चलते हैं। रपट। पैढ़ी।
नैतिक वि०(सं) नीति सम्बन्धी। नीतियुक्त। (मॉरल)
नैतिक-परित्याग पुं० (सं) नीतियुक्त परित्याग। (मॉरल अबन्डेनमेन्ट)।
नैत्यक वि० (सं) १-प्रतिदिन करने का। सदैव अनुष्ठेय। २-अनिवार्य।
नैत्यिक वि० (सं) दे० 'नैत्यक'।
नैत्रिक वि० (सं) नेत्र सम्बन्धी।
नैदाघ वि० (सं) गरमी का। ग्रीष्मऋतु सम्बन्धी।
नैदाघिक वि० (सं) दे० 'नैदाघ'।
नैदानिक पुं० (सं) निदान-शास्त्र विशारद। वि०(सं) रोगों का निदान जानने वाला।
नैन पुं० (हि) १-नयन। नेत्र। २-मक्खन। नय नीति।
नैनसुख पुं० (हि) एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा
नैना पुं० (हि) नयन। क्रि० (हि) झुकना। नवना।
नैनू पुं० (हि) १-एक प्रकार का बेलबूटेदार सूती कपड़ा। २-मक्खन।
नैपुण पुं० (सं) निपुणता।
नैपुण्य पुं० (सं) निपुणता। चातुर्य। पटुता। दक्षता
नैभृत्य पुं० (सं) १-लाज। संकोच। २-रहस्य।
नैमंत्रण पुं० (स) भोज। दावत।
नैमय पुं० (सं) व्यवसायी। व्यापारी।

नैमित्तिक वि० (सं) १-जो किसी कारण विशेष वश से किया जाय। जो किसी कारण या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो। २-कभी-कभी होने वाला। असाधारण। पुं० (सं) १-कारण। २-कभी-कभी होने वाला शास्त्रोक्त कर्म। ३-ज्योतिष।
नैमिषी वि०(सं) एक क्षण या निमिष में होने वाला
नैयमिक वि० (सं) नियमानुसार। नियमित।
नैया स्त्री० (हि) नाव। नौका। किश्ती।
नैयायिक पु० (सं) न्यायवेत्ता। न्यायशास्त्र का जानने (लॉजीशियन)।
नैरन्तर्य पुं० (सं) निरन्तर का भाव। अविच्छेद।
नैर पु० (हि) देश। शहर। जनपद।
नैरपेक्ष्य पुं० (सं) निरपेक्षता। तटस्थता। उदासीनता।
नैरर्थ्य पु० (सं) निरर्थकता।
नैराश्य पुं० (सं) आशा का भाव। ना उम्मीद। निराश होने का भाव।
नैरात्म्यवाद पुं० (सं) प्रत्येक वस्तु को नैरात्म्यपूर्ण दृष्टि से देखने का सिद्धान्त। (पैसिमिज्म)।
नैरुक्त वि० (सं) निरुक्त सम्बन्धी। पु० (सं) निरुक्त सम्बन्धी ग्रन्थ। निरुक्त जानने या अध्ययन करने वाला।
नैर्दशिक पुं० (सं) दे० 'नैरुक्त'।
नैरुज्य पुं० (सं) स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती।
नैर्ऋत वि० (सं) नैऋति-सम्बन्धी। पुं० (सं) पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी। २-राक्षस।
नैर्गन्ध्य पुं० (सं) गंधहीनता।
नैर्गुण्य पुं० (सं) १-गुणों का अभाव। कलाकौशल आदि का अभाव। २-निर्गुणात्मकता।
नैष्ठुर्य पुं० (सं) निष्ठुरता। क्रूरता।
नैर्मल्य पु० (सं) निर्मलता।
नैर्लज्ज्य पु० (सं) निर्लज्जता।
नैर्विद्य पुं० (सं) निर्विद्यता।
नैवेद्य पुं० (सं) भोग। देवता पर चढ़ाने का भोज्य-पदार्थ।
नैश वि० (सं) १-रात-सम्बन्धी। २-रात में दिखाई देनेवाला। निशा का।
नैशिक वि० (सं) दे० 'नैश'।
नैश्चल्य पु० (सं) अचलता। अटलता।
नैश्चित्य पुं० (सं) १-निश्चय। दृढ़ विचार। २ निश्चित कृत्य या राय।
नैःश्रेयस वि० (सं) दे० 'निःश्रेयस'।
नैष्ठिक वि० (सं) १-निष्ठापूर्वक। निष्ठावान्। २-ब्रह्मचारी। ३-अन्तिम। ४-निर्लीन। पक्का। ५-दृढ़। निर्दिष्ट। पु० (सं) वह ब्रह्मचारी जिसने आजन्म के लिये ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो।
नैष्ठुर्य पुं० (सं) निठुराई। क्रूरता।
नैष्ठ्य पु० (सं) दृढ़ता। स्थिरता।
नैष्फल्य पु० (सं) निष्फलता।
नैसर्गिक वि० (सं) स्वाभाविक। परम्परागत। (नेचुरल)
नैसा वि० (हि) खराब। बुरा।
नैसिक वि० (हि) थोड़ा। तनिक।
नैसुक वि० (हि) थोड़ा। नैसिक।
नैहर पु० (हि) स्त्री के पिता का घर। पीहर। मायका
नो अव्यय (सं) न। नहीं।
नोइनी स्त्री० (हि) दूध दोहते समय गाय के पैर में बांधने वाली रस्सी। नोंधी।
नोई स्त्री० (हि) दे० 'नोइनी'।
नोक स्त्री० (फा) १-बहुत पतला सिरा। सूक्ष्म अग्र-भाग। २-आगे की ओर निकला हुआ कोना या सिरा।
नोकझोंक स्त्री० (हि) १-बनाव। शृंगार। २-तेज। आतंक। ३-व्यंग। ताना। ४-हुवी हुई प्रतिद्वन्द्विता
नोकदार वि० (फा) १-नुकीला। पैना। २-दिल में असर करने वाला। ३-तड़कभड़क वाला।
नोकना क्रि० (?) ललचाना।
नोकाझोंकी स्त्री० (हि) १-छेड़छाड़। २-ताना। ३-विवाद।
नोकीला वि० (हि) दे० 'नुकीला'।
नोखा वि० (हि) विचित्र। अद्भुत। विलक्षण।
नोच स्त्री० (हि) १-नोचने की क्रिया या भाव। २-कई ओर से बहुत से आदमियों का झपटना। लूट। ३-चारों ओर की माग।
नोचखसोट स्त्री० (हि) छीनाझपटी। बलपूर्वक छीन लेना। लूट।
नोचना क्रि० (हि) लगी हुई वस्तु को खींच या झटक कर अलग करदेना। उखाड़ना। २-किसी वस्तु में दांत नख या पंजा धंसाकर उसका अंश छीन लेना। खरोंचना। ३-बार-बार तंग करके लेना।
नोचानाची स्त्री० (हि) दे० 'नोचखसोट'।
नोचू पुं० (हि) १-छीनाझपटी करने वाला। नोचने वाला। २-तंग करके लेने वाला। ३-तकाजों के मारे नाक में दम करने वाला।
नोट पुं० (अं) १-ध्यान रखने के लिये लिखने या टांकने का काम। २-पत्र। चिट्ठी। टिप्पणी। ३-राज्य की ओर से चलाया हुआ वह कागज जिस पर राज्य चिह्न और रुपयों की संख्या छपा रहता है और जो उसने सिक्के के रूप में चलता है।
नोटपेपर पु० (अं) पत्र लिखने का कागज।
नोटबुक स्त्री० (अं) स्मरणार्थ लिखने की पुस्तिका। छोटी किताब।
नोटिस स्त्री० (अं) १-विज्ञप्ति। २-सूचना। [illegible] हार। विज्ञापन।
नोन पु० (हि) नमक।
नोनचा पु० (हि) १-नमकीन अचार। - नमक में

हुई आम की फाकों की खटाई। ३-लोनी जमीन।
नोनछी स्त्री० (हि) लोनी मिट्टी।
नोनहरा पुं० (?) पैसा।
नोनहरामी वि० (हि) नमकहराम।
नोना पुं० (हि) १-नमक का वह अंश जो पुरानी दीवारों या नमी वाली जमीन पर मिलता है। २-लोनी मिट्टी। ३-शरीफा। सीताफल। वि० (हि) १-खारा। २-सलोना। लावण्यमय। सुन्दर।
नोना-चमारी स्त्री०(हि) कामरूप की एक प्रसिद्ध जादूगरनी।
नोनिया पु० (हि) एक जाति विशेष जो लोनी मिट्टी से नमक निकालने का कार्य करती है। स्त्री० (हि) लोनिया। एक भाजी।
नोनी स्त्री० (हि) लोनी मिट्टी। लोनिया। वि० (हि) सुन्दर। अच्छी।
नोर वि० (हि) नया। नवीन।
नोल वि० (हि) दे० 'नवल'। पु० (हि) दे० 'नेवला' स्त्री० (देश०) चिड़िया की चोंच।
नोवना क्रि० (हि) दुहते समय गाय के रस्सी से पैर बांधना।
नोहर वि० (हि) १-आलस्य। जल्दी न मिलने वाला। २-अनोखा।
नौ स्त्री० (हि) १-पोत। जहाज। नौका। २-एक नक्षत्र का नाम। वि०(हि) १-आठ और एक। ९। २-नया। नव।
नौआबाद वि० (फा) हाल का बसा हुआ।
नौआबादी स्त्री० (फा) उपनिवेश। (कोलोनी)।
नौकड़ा पुं० (हि) तीन कौड़ियाँ लेकर तीन व्यक्तियों द्वारा खेले जाने वाला एक प्रकार का जूआ।
नौकर पु० (फा) १-काम धन्धे या टहल के लिए वेतन पर रखा हुआ आदमी। भृत्य। चाकर। २-वैतनिक कर्मचारी। (एम्प्लॉई)।
नौकरशाही स्त्री० (फा) वह शासन-पद्धति जिसमें सब अधिकारी बड़े-बड़े राज्य कर्मचारियों के हाथ में रहते हैं। (ब्यूरोक्रेसी)।
नौकराना पु० (हि) नौकरों को मिलने वाला वेतन, दस्तूरी आदि।
नौकरानी स्त्री० (फा) दासी। भृत्या। चाकरानी।
नौकरी स्त्री (फा) १-नौकर का पेशा। २-वह पद जिसके लिए कोई वेतन मिलता हो। (एम्प्लॉयमेंट)
नौकरी-पेशा पुं० (फा) नौकरी से जीविका चलाने वाला। वेतनभोगी।
नौकर्ण पुं० (स) डांड। पतवार।
नौकर्णधार पु० (स) मल्लाह। मांझी। पोत चालक
नौकर्म पु० (स) नाव चलाने का काम। मांझी का पेशा।
नौका स्त्री० (सं) नाव। पोत। जहाज।
नौकागम्य वि० (सं) पोत या नाव ले जाने योग्य। नाव्य। (नैविगेबल)।
नौकाघाट वि० (सं) नाव या पोत से उतरने का स्थान। (फैरी)।
नौकादड पुं० (सं) नाव का डाड़।
नौकाधिकरण पुं० (सं) दे० 'नावधिकरण'। (एडमिरलटी)।
नौक्रम पुं० (सं) नाव का बना हुआ पुल।
नौगमन पुं० (सं) नदी समुद्र आदि के मार्ग से यात्रा करना। जलयात्रा। 'नेविगेशन'।
नौगर स्त्री० (हि) दे० 'नौग्रही'।
नौगिरिही स्त्री० (हि) दे० 'नौग्रही'।
नौग्रही स्त्री० (हि) हाथ में पहनने का एक गहना।
नौघाट पुं० (सं) दे 'नौकाघाट'। (फैरी)।
नौचर वि० (सं) नाव पर चढ़ कर घूमने वाला।
नौ-चालक पु० (सं) नाव या जलपोत चलाने वाला (नेवीगेटर)।
नौछावर स्त्री० (हि) दे० 'निछावर'।
नौज अव्य० (हि) १-ऐसा न हो। ईश्वर न करे। (अनिच्छासूचक)। २-न हो। न सही। (बे परवाहीसूचक)।
नौजवान वि० (फा) नवयुवक।
नौजवानी स्त्री० (फा) चढ़ती युवावस्था।
नौजा पुं० (फा) १-बादाम। २-चिलगोजा।
नौजी स्त्री० लीची।
नौजीविक पुं० (सं) मांझी।
नौटंकी स्त्री० दे० बृज में होने वाला एक प्रकार का नाटक जिसमें अभिनय गाकर किया जाता है और नगाड़े का प्रयोग होता है।
नौतन वि०(हि) दे० 'नूतन'।
नौतम वि० (हि) १-एकदम नया। २-ताजा। पुं० (हि) विनय। नम्रता।
नौतरण पुं० (सं) दे 'नौपरिवहन'। (नेविगेशन)
नौतरणीय वि० (सं) दे० 'नौकागम्य'। (नेवीगेबल)
नौता पुं० (हि) दे० 'न्योता'।
नौतार्य वि० (सं) जो नाव से पार किया जाय।
नौदंड पुं० (सं) नाव चलाने का डण्डा।
नौदसी स्त्री० (हि) रुपया उधार लेने की एक रीति जिसमें उधार लेने वाले को नौ रुपये के एक साल बाद दस रुपये देने पड़ते हैं।
नौध पुं० (हि) नया पौधा।
नौधा वि० (हि) नौ प्रकार की भक्ति।
नौनगा पुं० (हि) नौ नग जड़ा हुआ बाहु पर पहने का एक आभूषण।
नौना क्रि० (हि) झुकना। नवना।
नौ-निरीक्षक पु० (सं) जल पोत की देखरेख करने वाला। (मैरीन सुपरवाइजर)।

नौ-जंगा पुं० (सं) वह जो जलपोत को पतवार पकड़े रहे। नाविक।

नौ-परिवहन पुं० (सं) समुद्री जलयान आदि चलाना (नेवीगेशन)।

नौपरिवहन विषयक वि० (सं) समुद्र यात्रा, नाविक आदि से जिसका सम्बन्ध हो। (नॉटिकल)।

नौ-प्रभार पुं० (सं) १-जहाज पर लादे जा सकने वाला भार। २-जहाज का अपना भार या उस जलराशि का भार जितना जो जल में सन्तरण किये जाने पर उसके द्वारा हटाया जाय। (टनेज)।

नौबत स्त्री० (फा) १-बारी। पारी। २-दशा। ३-संयोग। ४-मंगलसूचक शहनाई जो देवालय या विवाह आदि में बजाते हैं।

नौबतखाना पुं०(फा) फाटक के ऊपरी भाग का स्थान जहाँ बैठकर शहनाई बजाई जाती है।

नौबत-नवाज पुं० (फा) नक्कारची।

नौबती पुं०(फा) १-नक्कारची। नौबत बजाने वाला २-प्रहरी। ३-खेमा। ४-बिना सवार सजा हुआ घोड़ा।

नौबतीदार पुं० (फा) खेमे का प्रहरी।

नौबरार पुं० (फा) १ नदी के सरक जाने से निकली हुई भूमि। २-वह भूमि जिस पर पहली बार कर लगा हो।

नौ बल पुं० (सं) जहाजी बेड़ा। जल सेना। (नेवी)

नौ-बलाध्यक्ष पुं० (सं) जल सेना या नौ बल का प्रधान सेनापति या अधिकारी। (एडमिरल)।

नौबाला स्त्री०(फा) वह लड़की जो हाल ही में बालिग हुई हो।

नौ भार पुं० (सं) जहाज पर लादा हुआ माल। (कार्गो)।

नौमासा पुं० (हि) १-गर्भ का नवां महीना। २-गर्भ के नवें मास होने पर करने वाली एक रस्म।

नौमि क्रि० (सं) एक वाक्य जिसका अर्थ है—'मैं नमस्कार करता हूँ'।

नौमी स्त्री० (हि) दे० 'नवमी'।

नौ-मुस्लिम वि० (फा, अ) जो अभी हाल ही में मुसलमान हुआ हो।

नौ-यान पुं० (सं) जलयान। पोत। जहाज।

नौयान-करणिक पुं० (सं) वह लिपिक जो किसी जहाज पर जहाजी मामलों के पत्र व्यवहार का हिसाब या अन्य हिसाब रखता है। (नेविगेशन क्लर्क)।

नौरङ्ग पुं० (हि) १-एक प्रकार की चिड़िया। २-औरङ्गजेब शब्द का विकृत रूप।

नौरतन पुं० (हि) दे० 'नवरत्न'। नौलगा। स्त्री०(हि) नौ जवाहरों से तैयार की गई एक प्रकार की चटनी ३-ताजा। ४-नवयुवक।

नौरात्र पुं० (हि) दे० 'नवरात्र'।

नौरोज पुं० (फा) पारसियों के वर्ष का पहला दिन

नौल वि० (हि) दे० 'नवल'। पुं० (हि) जहाज पर माल लादने का भाड़ा।

नौलखा वि० (हि) नौ लाख का। बहुमूल्य। जड़ाऊ

नौवाहक पुं० (सं) १-नाव या पोत चलाने वाला २-जहाज का बड़ा अफसर। (कैप्टेन)।

नौवाहनिक स्त्री० (स) किसी देश या राज्य की सेना या नाविक विभाग के अधिकारियों का वर्ग (ऐडमिरेल्टी)।

नौवाहनिक-क्षेत्र पुं० (स) सामुद्रिक न्यायालय का अधिकार क्षेत्र। (ऐडमिरेल्टी ज्यूरिसडिक्शन)।

नौवाहनिक-न्यायालय पुं० (सं) सामुद्रिक नाविक विभाग के कर्मचारियों के मामलों का निपटारा करने वाला न्यायालय। (एडमिरेल्टी कोर्ट)।

नौवाहनी-अध्यक्ष पुं० (स) नौ-सेना का प्रधान अधिकारी। (एडमिरल)।

नौवाहनी-परिषद स्त्री० (स) जल सेना का संचालन करने वाली परिषद्। (बोर्ड ऑफ एडमिरेल्टी)।

नौ-विज्ञान पुं० (स) जहाजों, नाविकों तथा नौका नयन-सम्बन्धी विज्ञान। (नॉटिकल साइंस)।

नौशक्ति स्त्री० (स) राज्य की वह शक्ति जो उसकी नौ-सेना के रूप में होती है। (नैवल फोर्स)।

नौशा पुं० (फा) वर। दूल्हा।

नौशी स्त्री० (फा) नववधू। दुलहिन।

नौसत स्त्री० (हि) सोलह शृङ्गार।

नौसरा पुं० (हि) नौ लड़ी माला, हार या गजरा।

नौसरिया वि० (हि) चालबाज। धूर्त।

नौसादर पुं० (हि) एक तीक्ष्ण क्षार जो सींग, गुड़ घास आदि के भभके से अर्क खींचकर निकाला जाता है।

नौसाधन पुं० (स) जल सेना। नौसेना। जहाजी बेड़ा।

नौसिख वि० (हि) दे० 'नौसिखिया'।

नौसिखिया वि० (हि) जिसने काम अभी अभी सीखा हो। नवशिक्षित।

नौ-सेना स्त्री० (सं) जल सेना। जहाजी बेड़ा। (नेवी)

नौ-सेनाध्यक्ष पुं० (सं) नौ सेना का वह अधिकारी या अध्यक्ष जिसके आदेश से सब काम होते हैं। (नेवल कमाण्डर)।

नौ-सेना संघ पुं० (स) नाविक सैनिकों का संगठित समाज। (नेवी लीग)।

नौसैनिक वि० (स) नौ सेना सम्बन्धी। (नेवल)

नौ-सैनिक-पहरा पुं० (हि) नौ सेना की कार्रवाई आरम्भ करने का

हुई आम की फाकों की खटाई। ३-लोनी जमीन।
नोनछी स्त्री० (हि) लोनी मिट्टी।
नोनहरा पुं० (?) पैसा।
नोनहरामी वि० (हि) नमकहराम।
नोना पुं० (हि) १-नमक का वह अंश जो पुरानी दीवारों या नमी वाली जमीन पर मिलता है। २-लोनी मिट्टी। ३-शरीफा। सीताफल। वि० (हि) १-खारा। २-सलोना। लावण्यमय। सुन्दर।
नोना-चमारी स्त्री०(हि) कामरूप की एक प्रसिद्ध जादूगरनी।
नोनिया पुं० (हि) एक जाति विशेष जो लोनी मिट्टी से नमक निकालने का कार्य करती है। स्त्री० (हि) लोनिया। एक भाजी।
नोनी स्त्री० (हि) लोनी मिट्टी। लोनिया। वि० (हि) सुन्दर। अच्छी।
नोर वि० (हि) नया। नवीन।
नोल वि० (हि) दे० 'नवल'। पुं० (हि) दे० 'नेवला' स्त्री० (देश०) चिड़िया की चोंच।
नोवना क्रि० (हि) दुहते समय गाय के रस्सी से पैर बांधना।
नोहर वि० (हि) १-आलस्य। जल्दी न मिलने वाला। २-अनोखा।
नौ स्त्री० (हि) १-पोत। जहाज। नौका। २-एक नक्षत्र का नाम। वि०(हि) १-आठ और एक। ६। २-नया। नव।
नौआबाद वि० (फा) हाल का बसा हुआ।
नौआबादी स्त्री० (फा) उपनिवेश। (कोलोनी)।
नौकड़ा पुं० (हि) तीन कौड़ियाँ लेकर तीन व्यक्तियों द्वारा खेले जाने वाला एक प्रकार का जूआ।
नौकर पुं० (फा) १-काम धन्धे या टहल के लिए वेतन पर रखा हुआ आदमी। भृत्य। चाकर। २-वैतनिक कर्मचारी। (एम्प्लॉई)।
नौकरशाही स्त्री० (फा) वह शासन-पद्धति जिसमें सब अधिकारी बड़े-बड़े राज्य कर्मचारियों के हाथ में रहते हैं। (ब्यूरोक्रेसी)।
नौकराना पुं० (हि) नौकरों को मिलने वाला वेतन, दस्तूरी आदि।
नौकरानी स्त्री० (फा) दासी। भृत्या। चाकरानी।
नौकरी स्त्री० (फा) १-नौकर का पेशा। २-वह पद जिसके लिए कोई वेतन मिलता हो। (एम्प्लॉयमेंट)
नौकरी-पेशा पुं० (फा) नौकरी से जीविका चलाने वाला। वेतनभोगी।
नौकर्ण पुं० (स) डांड। पतवार।
नौकर्णधार पुं० (स) मल्लाह। मांझी। पोत चालक
नौकर्म पुं० (स) नाव चलाने का काम। मांझी का पेशा।
नौका स्त्री० (सं) नाव। पोत। जहाज।
नौकागम्य वि० (सं) पोत या नाव ले जाने योग्य। नाव्य। (नैविगेबल)।
नौकाघाट वि० (सं) नाव या पोत से उतरने का स्थान। (फैरी)।
नौकादंड पुं० (सं) नाव का डांड़।
नौकाधिकरण पुं० (सं) दे० 'नावधिकरण'। (एडमिरलटी)।
नौक्रम पुं० (सं) नाव का बना हुआ पुल।
नौगमन पुं० (सं) नदी समुद्र आदि के मार्ग से यात्रा करना। जलयात्रा। 'नेविगेशन'।
नौगर स्त्री० (हि) दे० 'नौग्रही'।
नौगिरिही स्त्री० (हि) दे० 'नौग्रही'।
नौग्रही स्त्री० (हि) हाथ में पहनने का एक गहना।
नौघाट पुं० (सं) दे 'नौकाघाट'। (फैरी)।
नौचर वि० (सं) नाव पर चढ़ कर घूमने वाला।
नौ-चालक पुं० (सं) नाव या जलपोत चलाने वाला (नेवीगेटर)।
नौछावर स्त्री० (हि) दे० 'निछावर'।
नौज अव्य० (हि) १-ऐसा न हो। ईश्वर न करे। (अनिच्छासूचक)। २-न हो। न सही। (वे परवाहीसूचक)।
नौजवान वि० (फा) नवयुवक।
नौजवानी स्त्री० (फा) चढ़ती युवावस्था।
नौजा पुं० (फा) १-बादाम। २-चिलगोजा।
नौजी स्त्री० लीची।
नौजीविक पुं० (सं) मांझी।
नौटंकी स्त्री० दे० बृज में होने वाला एक प्रकार का नाटक जिसमें अभिनय गाकर किया जाता है और नगाड़े का प्रयोग होता है।
नौतन वि०(हि) दे० 'नूतन'।
नौतम वि० (हि) १-एकदम नया। २-ताजा। पुं० (हि) विनय। नम्रता।
नौतरण पुं० (सं) दे 'नौपरिवहन'। (नेविगेशन)
नौतरणीय वि० (सं) दे० 'नौकागम्य'। (नेवीगेबल)
नौता पुं० (हि) दे० 'न्योता'।
नौतार्य वि० (सं) जो नाव से पार किया जाय।
नौदंड पुं० (सं) नाव चलाने का डण्डा।
नौदसी स्त्री० (हि) रुपया उधार लेने की एक रीति जिसमें उधार लेने वाले को नौ रुपये के एक साल बाद दस रुपये देने पड़ते हैं।
नौध पुं० (हि) नया पौधा।
नौधा वि० (हि) नौ प्रकार की भक्ति।
नौनगा पुं० (हि) नौ नग जड़ा हुआ बाहु पर पहने का एक आभूषण।
नौना क्रि० (हि) झुकना। नवना।
नौ-निरीक्षक पुं० (सं) जल पोत की देखरेख करने वाला। (मैरीन सुपरवाइजर)।

नौ-नेता पुं० (सं) वह जो जलपोत की पतवार पकड़े रहे। नाविक।
नौ-परिवहन पुं० (सं) समुद्री जलपोत आदि चलाना। (नेवीगेशन)।
नौपरिवहन-विषयक वि० (सं) समुद्र यात्रा, नाविक आदि से जिसका सम्बन्ध हो। (नॉटिकल)।
नौ-प्रभार पुं० (सं) १-जहाज पर लादे जा सकने वाला भार। २-जहाज का अपना भार या उस जलराशि का भार जितना जो जल में सन्तरण किये जाने पर उसके द्वारा हटाया जाय। (टनेज)।
नौबत स्त्री० (फा) १-बारी। पारी। २-दशा। ३-संयोग। ४-मंगलसूचक शहनाई जो देवालय या विवाह आदि में बजाते हैं।
नौबतखाना पुं०(फा) फाटक के ऊपरी भाग का स्थान जहाँ बैठकर शहनाई बजाई जाती है।
नौबत-नक्कार पुं० (फा) नक्कारची।
नौबती पुं०(फा) १-नक्कारची। नौबत बजाने वाला। २-पहरी। ३-खेमा। ४-बिना सवार सजा हुआ घोड़ा।
नौबतीदार पुं० (फा) खेमे का पहरी।
नौबरार पुं० (फा) १ नदी के सरक जाने से निकली हुई भूमि। २-वह भूमि जिस पर पहली बार कर लगा हो।
नौ बल पुं० (सं) जहाजी बेड़ा। जल सेना। (नेवी)
नौ-बलाध्यक्ष पुं० (सं) जल सेना या नौ बल का प्रधान सेनापति या अधिकारी। (एडमिरल)।
नौबाला स्त्री०(फा) वह लड़की जो हाल ही में बालिग हुई हो।
नौ भार पुं० (सं) जहाज पर लादा हुआ माल। (कार्गो)।
नौमासा पुं० (हि) १-गर्भ का नवां महीना। २-गर्भ के नवें मास होने पर करने वाली एक रस्म।
नौमि क्रि० (सं) एक वाक्य जिसका अर्थ है—"मैं नमस्कार करता हूँ"।
नौमी स्त्री० (हि) दे० 'नवमी'।
नौ-मुस्लिम वि० (फा, अ) जो अभी हाल ही में मुसलमान हुआ हो।
नौ-यान पुं० (सं) जलयान। पोत। जहाज।
नौयान-करणिक पुं० (सं) वह लिपिक जो किसी जहाज पर जहाजी मामलों के एवं व्यवहार का हिसाब या अन्य हिसाब रखता है। (नेविगेशन क्लर्क)।
नौरङ्ग पुं० (हि) १-एक प्रकार की चिड़िया। २-औरङ्गजेब शब्द का विकृत रूप।
नौरतन पुं० (हि) दे० 'नवरत्न'। नौरतन। स्त्री०(हि) नौ मसालों से तैयार की गई एक प्रकार की चटनी।
नौरस वि० (हि) १-ताजे रस वाला। २-पका हुआ। ३-ताजा। ४-नवयुवक।
नौरात्र पुं० (हि) दे० 'नवरात्र'।
नौरोज पुं० (फा) पारसियों के वर्ष का पहला दिन।
नौल वि० (हि) दे० 'नवल'। पुं० (हि) जहाज पर माल लादने का भाड़ा।
नौलखा वि० (हि) नौ लाख का। बहुमूल्य। जड़ाऊ।
नौवाहक पुं० (सं) १-नाव या पोत चलाने वाला। २-जहाज का बड़ा अफसर। (कैप्टेन)।
नौवाहनिक स्त्री० (स) किसी देश या राज्य की नौ-सेना या नाविक-विभाग के अधिकारियों का वर्ग। (ऐडमिरेल्टी)।
नौवाहनिक-क्षेत्र पुं० (स) सामुद्रिक न्यायालय का अधिकार क्षेत्र। (ऐडमिरेल्टी ज्यूरिस्डिक्शन)।
नौवाहनिक-न्यायालय पुं० (सं) सामुद्रिक नाविक-विभाग के कर्मचारियों के मामलों का निपटारा करने वाला न्यायालय। (एडमिरेल्टी कोर्ट)।
नौवाहनी-अध्यक्ष पुं० (सं) नौ-सेना का प्रधान अधिकारी। (एडमिरल)।
नौवाहनी-परिषद स्त्री० (स) जल सेना का संचालन करने वाली परिषद्। (बोर्ड ऑफ एडमिरेल्टी)।
नौ-विज्ञान पुं० (सं) जहाजों, नाविकों तथा नौका नयन-सम्बन्धी विज्ञान। (नॉटिकल साइंस)।
नौशक्ति स्त्री० (सं) राज्य की वह शक्ति जो उसकी नौ-सेना के रूप में होती है। (नैवल फोर्स)।
नौशा पुं० (फा) वर। दूल्हा।
नौशी स्त्री० (फा) नववधू। दुलहिन।
नौसत स्त्री० (हि) सोलह शृङ्गार।
नौसरा पुं० (हि) नौ लड़ी वाला, हार या गजरा।
नौसरिया वि० (हि) चालबाज। धूर्त।
नौसादर पुं० (हि) एक तीक्ष्ण क्षार जो सींग, बाल आदि के भभके से अर्क खींचकर निकाला जाता है।
नौसाधन पुं० (सं) जल सेना। नौसेना। जहाजी बेड़ा।
नौसिख वि० (हि) दे० 'नौसिखिया'।
नौसिखिया वि० (हि) जिसने [illegible] हो। नवशिक्षित।
नौ-सेना स्त्री० (सं) जल सेना। जहाजी बेड़ा। [illegible]
नौ-सेनाध्यक्ष पुं० (सं) नौ सेना का वह [illegible] या अध्यक्ष जिसके [illegible] (नेवल [illegible])।
नौ-सेना मद्य पुं० (सं) जहाजी सैनिकों का [illegible] समारोह। (नेवी [illegible])।
नौसैनिक वि० (सं) नौ सेना सम्बन्धी। (नेवल)
नौ-सैनिक-अड्डा पुं० (हि) नौ सेना के कार्यवाही आरम्भ करने का अड्डा। (नेवल बेस)।
नौसैनिक-कार्रवाई स्त्री० (हि) नौ सैनिकों द्वारा [illegible]

जाने वाली कार्यवाही। (नेवल-एक्शन)।
नौसैनिक-शक्ति स्त्री० (हि) जल सेना। (नेवल-पावर)
न्यंक पुं० (स) रंज का एक भेद।
न्यक् अव्य० (सं) एक अव्यय जो तिरस्कार, अपमान आदि का अर्थवाची है।
न्यग्रोध पुं० (सं) १-वटवृक्ष। २-बाहु। ३-महादेव। ४-शमी वृक्ष।
न्यसन पुं०(सं) १-न्यास। धरोहर। २-सौंपना। देना
न्यस्त वि० (सं) १-नीचे फेंका हुआ या धरा हुआ। २-स्थापित किया हुआ। ३-धरोहर रखा हुआ। हस्तान्तरित किया हुआ। ४-त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ।
न्यस्त-शस्त्र वि०(सं) १-जिसने अपने हथियार डाल दिये हों। २-निशस्त्र। ३-जो हानिकारक न हो।
न्याउ पुं० (हि) दे० 'न्याय'।
न्याति स्त्री० (स) जाति।
न्याद पुं० (स) भोजन। आहार।
न्यामत स्त्री० (फ) बहुमूल्य या लभ्य पदार्थ।
न्याय पुं० (सं) १-नियम के अनुकूल बात। वाजिब बात। २-किसी व्यवहार या मुकदमे में दोषी या निर्दोष आदि का विचारपूर्वक निर्धारण। फैसला। निर्णय। दो पक्षों के बीच का निर्णय (जस्टिस)। ३-छः दर्शनों में से एक जिसके प्रवर्त्तक गौतमऋषि थे। ४-वह वाक्य जिसका व्यवहार लोक में दृष्टान्त के रूप में होता है। ५-समन्वय तर्क जिसमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन यह पांच अवयव होते हैं। वि० (स) ठीक। उचित।
न्यायकर्त्ता पुं० (सं) न्याय करने वाला अधिकारी। निर्णायक।
न्याय-निर्णयन पुं० (सं) फैसला करना। (एड-ज्यूडिकेशन)।
न्यायज्ञ पुं० (सं) न्याय-शास्त्र का ज्ञाता। (ज्यूरिस्ट)
न्यायत क्रि० वि० (सं) १-न्याय के अनुसार। २-धर्म और नीति के अनुसार। ठीक-ठीक।
न्यायपत्र पुं० (सं) वह पत्र जिस पर न्याय-कर्त्ता अपना निर्णय लिखता है। (डिक्री)।
न्यायपथ पुं०(सं)१-आचरण का न्यायसम्मत मार्ग। उचित रीति। २-मीमांसा शास्त्र।
न्यायपर वि० (सं) न्याय के अनुसार आचरण करने वाला।
न्यायपरता स्त्री० (सं) न्यायी होने का भाव। न्याय-शीलता।
न्याय-परायण वि० (सं) दे० 'न्यायपरता'।
न्यायपालिका स्त्री० (स) देश का न्याय-विभाग या न्याय व्यवस्था। (ज्यूडिशियरी)।
न्यायपीठ पुं० (सं) छोटी अदालत। वह न्यायालय जिसमें साधारण अभियोगों का निर्णय किया जाता है। (बैंच)।
न्याय-प्रिय वि० (सं) न्यायशील।
न्यायमत पुं० (सं) न्यायालय का मत या विचार।
न्याय-मूर्ति पुं० (सं) किसी प्रदेश के सर्वोच्च या मुख्य न्यायालय के विचारक की उपाधि। (जस्टिस)।
न्यायलिपिक पुं० (सं) अदालती मुन्शी। (ज्यूडिशियल-क्लर्क)।
न्यायवर्ती वि०(सं) सदाचारी। न्याय पर चलने वाला
न्यायवादी वि० (स) ठीक और न्यायोचित बात कहने वाला।
न्याय-विद्या-विशारद पुं० (सं) न्याय-शास्त्र में प्रवीण व्यक्ति।
न्याय-विभाग पुं० (सं) न्याय व्यवस्था सम्बन्धी महकमा जो न्याय-मंत्री के आधीन होता है। (ज्यूडिशियल-डिपार्टमेंट)।
न्याय-विभ्रंश पुं० (सं) न्याय का ठीक मार्ग से भ्रष्ट हो जाना। (मिसकैरिज ऑफ जस्टिस)।
न्याय-शास्त्र पुं० (सं) न्याय सम्बन्धी शास्त्र। (ज्यूरिसप्रूडेंस)।
न्याय-शील वि० (सं) दे० 'न्यायपर'।
न्यायशुल्क पुं० (सं) वह शुल्क जो न्यायालय में प्रार्थना-पत्र के साथ देना पड़ता है। (कोर्ट-फी)।
न्यायसंगत वि० (सं) न्याय की दृष्टि से उचित।
न्याय-सभा स्त्री० (स) कचहरी। अदालत। (कोर्ट)।
न्यायसभ्य पुं० (सं) उस वर्ग का सदस्य जो न्यायाधीश के साथ बैठकर किसी को दोषी या निर्दोष ठहराने के लिये अपना निर्णय या मत देता है। (ज्यूरीमैन)।
न्यायसभ्यासन पुं० (सं) न्यायसभ्य के बैठने का स्थान। (ज्यूरी बॉक्स)।
न्यायसमिति स्त्री० (स) न्याय से सम्बन्ध रखने वाली समिति। (ज्यूडिशियल कमेटी)।
न्यायाधिकरण पुं० (सं) किसी विवादग्रस्त विषय पर विचार करके अपना निर्णय करने वाला अधिकारी अथवा न्यायालय। (ट्रिब्यूनल)।
न्यायाधिपति पुं० (सं) किसी प्रदेश के प्रधान या सर्वोच्च न्यायालय का विचारक। (जस्टिस)।
न्यायाधीश पुं०(सं) न्याय विभाग का वह उच्च अधिकारी जो मुकद्मों का निर्णय करता है। (जज)।
न्यायालय पुं० (सं) वह स्थान जहाँ सरकार की ओर से विवादों या मुकदमों का न्याय होता है। कचहरी अदालत। (कोर्ट)।
न्यायालय-अपमान पुं० (सं) न्यायालय की मान-हानि (कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट)।
न्यायालय उपस्थितिपत्र पुं० (सं) न्यायालय में उपस्थित होने पर दिया गया प्रमाण-पत्र। (एपीयरेन्स-स्लिप)।

प

प देवनागरी वर्णमाला का २१वां व्यञ्जन वर्ण जिसका उच्चारण ओठ से होता है।

पंक पुं० (सं) कीच। कीचड़।

पंककर्वट पुं० (सं) नदी की बाढ़ से बहकर आई हुई मिट्टी।

पंककीर पुं० (सं) टिटहरी नामक पक्षी।

पंकक्रीड़ पुं० (सं) सूअर। वि० (सं) कीचड़ में खेलने वाला।

पंकक्रीड़नक पुं० (सं) सूअर।

पंकग्राह पु० (सं) मगर। घड़ियाल।

पंकछिद पुं० (सं) रीठे का वृक्ष।

पंकज वि० (सं) कीचड़ में उत्पन्न होने वाला। पुं० (सं) कमल।

पंकजन्मा पुं० (सं) १-कमल। २-सारस पक्षी। ३-ब्रह्मा।

पंकजराग पुं० (सं) पद्मराग मणि।

पंकजात पुं० (सं) कमल।

पंकजासन पुं० (सं) ब्रह्मा।

पंकजिनी स्त्री० (सं) १-कमलाकर। २-कमल का पौधा ३-कमोदनी का दंड। ४-कमलपूर्ण जगह।

पंकदिग्ध वि० (सं) कीचड़ में सना हुआ।

पंकभाज् वि० (सं) कीचड़ में डूबा हुआ।

पंकरुह पुं० (सं) कमल। सारस।

पंकवास पुं० (सं) केकड़ा।

पंकिल वि० (सं) १-जिसमें कीचड़ हो। २-गंदला। मैला।

पंकिलता स्त्री० (सं) गन्दगी। कलुष।

पंक्ति स्त्री० (सं) १-विशेषतः सजातिय सजीव वस्तुओं या व्यक्तियों का क्रमबद्ध एक दूसरे के पीछे खड़े होने से बना हुआ समूह। श्रेणी। कतार। २-रेखा। लकीर। ३-दस की संख्या। ४-पतंग।

पंक्तिकृत वि० (सं) श्रेणीबद्ध।

पंक्तिच्युत वि० (सं) १-किसी दोष के कारण जाति-बहिष्कृत। २-जो अपनी कोटि से नीचे हटा दिया गया हो। (डिग्रेडड)।

पंक्तिपावन पुं० (सं) वह ब्राह्मण जिसे यज्ञादि में बुलाकर भोजन कराना श्रेष्ठ माना गया हो। ऐसा ब्राह्मण जो पंक्ति को पवित्र करता है। (मनुस्मृति)।

पंक्तिबद्ध वि० (सं) श्रेणीबद्ध।

पंक्तिबीज पुं० (हि) बबूल। दरगा।

पंख पुं० (हि) डैना। पर।

पंखड़ी स्त्री० (हि) पुष्पदल। फूलों का वह रंगीन पटल जिसके खिलने से फूल का रूप बनता है।

पंखा पुं० (हि) वह उपकरण जिसके हिलाने से हवा लगती है।

पंखाकुली पु० (हि) पंखा खींचने वाला कुली या नौकर।

पंखापोश पु० (हि) पंखे के ऊपर चढ़ाने का गिलाफ।

पंखिया स्त्री० (हि) १-भूसा या भूसे के महीन टुकड़े।

पंखी पुं० (हि) १-पक्षी। २-एक प्रकार का ऊनी कपड़ा। ३-पखुड़ी। स्त्री० (हि) छोटा पङ्ख।

पंखुड़ा पुं० (हि) दे० 'पखुरा'।

पंखुड़ी स्त्री० (हि) फूल का दल। पँखड़ी।

पंखुरा पुं० (हि) दे० 'पखुरा'।

पंखेरू पुं० (हि) दे० 'पखेरू'।

पंग वि० (हि) लंगड़ा। बेकाम। स्तब्ध।

पंगत स्त्री० (हि) १-पांत। कतार। २-भोज में भोजन करने वालों की पंक्ति। ३-सभा। ४-भोज।

पंगति स्त्री० (हि) दे० 'पंगत'।

पंगा वि० (हि) दे० 'पंगु'।

पंगु वि० (सं) जो पैर से चलने में असमर्थ हो। लंगड़ा। लूला। गतिहीन।

पंगुता स्त्री० (स) लंगड़ापन।

पंगुल वि० (सं) दे० 'पंगु'।

पंगो स्त्री०(हि) वह मिट्टी जो नदी बरसात बीत जाने पर डालती है।

पंच पुं० (सं) १-पांच की संख्या। २-पांच या अधिक मनुष्यों का समूह। ३-सर्वसाधारण। जनता। ४-पंचायत का सदस्य। (आर्बीट्रेटर)। ५-न्याय करने वाला समाज। ६-जूरी का सदस्य।

पंचक पुं० (सं) १-पांच का समूह। पांच सैकड़े का ब्याज। २-शकुन शास्त्र। ३-पांच नक्षत्र जो अशुभ माने जाते हैं। (फलित ज्यो०)।

पंचकन्या स्त्री०(सं) पुराणानुसार पांच स्त्रियां-अहिल्या, द्रोपदी, कुन्ती, तारा, और मन्दोदरी जो विवाहित होने पर भी कन्या रहीं।

पंचकर्म पुं०(सं) चिकित्सा की पांच क्रियाएँ—वमन, विरेचन, यस्न, निरूहवस्ति और अनुवासन।

पंचकल्याण पुं० (सं) लाल या काले रंग का घोड़ा जिसके पैर या सिर सफेद हों।

पंचकवल पुं० (सं) भोजन करने से पहले पांच ग्रास जो कुत्ते, पतित, कौए आदि के लिये निकाल देने चाहियें।

पंचकाम पुं०(सं)कामदेव के पांच नाम-काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज और मीनकेतु।

पंचकोण पुं० (सं) पांच भुजाओं वाला क्षेत्र। वि० (सं) जिसमें पांच कोने हों।

पंचकोसी स्त्री० (हि) काशी की परिक्रमा।
पंचकोशी स्त्री० (स) १-पांच कोस के घेरे में बसी काशी नगरी। २-पांच कोस का फासला।
पंचगंगा स्त्री०(सं)१-गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा, धूतपापा इन पांच नदियों का समूह। २-काशी का एक प्रसिद्ध घाट।
पंचगव्य पु० (स) गाय से उत्पन्न पांच पवित्र पदार्थ दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर।
पंचगुण वि० (स) पांच गुना। पुं० (स) पृथ्वी के पांच गुण-शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध।
पंचगुणी स्त्री० (स) जमीन। भूमि।
पंचगौड़ पुं० (सं) ब्राह्मणों के पांच प्रकार के वर्ग सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथुल तथा उत्कल।
पंचतत्त्व पुं० (सं) १-पंचभूत। पांच तत्वों का समूह— पृथ्वी, जल, वायु, तेज तथा आकाश।
पंचतपा पुं० (सं) पचाग्नि तापने वाला। तपस्वी। चारों ओर अग्नि जला कर धूप में तप करने वाला
पंचता स्त्री० (स) १-पांच का भाव। २-शरीर को घटित करने वाले पांच भूतों का अलग अलग अवस्थान। मौत। मृत्यु।
पंचतरु पुं० (सं) स्वर्ग के पांच पवित्र वृक्ष—कल्प पारिजात, मंदार, संतान और हरिचंदन।
पंचत्व पुं० (सं) १-पांच का भाव। २-मृत्यु। मौत
पंचतिक्त पुं० (सं) पांच कड़वी औषधियां—सोंठ, कुट, चिरायता, गुरुच, भटकटैया।
पंचतोलिया पुं० (हि) पांच तोले का बाट।
पंचप पुं० (सं) कोयल।
पंचदश वि० (सं) पन्द्रह।
पंचदशी स्त्री० (स) १-पूर्णिमासी। अमावस्या।
पंचदेव पुं० (सं) पांच देवता—आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश तथा देवी।
पंचद्राविड़ पुं० (सं) दक्षिण भारत के पांच प्रकार के ब्राह्मण-महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर तथा द्राविड़।
पंचधा अव्य० (स) पांच प्रकार।
पंचनख पुं० (स) वह पशु जिसके पांच नख होते हैं जैसे—बन्दर।
पंचनद पुं० (सं) पंजाब, जहाँ पांच नदियाँ बहती हैं- सतलुज (शतद्रु), व्यास (विपाशा), रावी (इरावती) चिनाब (चन्द्रभागा) तथा जेहलम (वितस्ता)।
पंचनाथ पुं० (सं) बद्रीनाथ, द्वारिकानाथ, जगन्नाथ रङ्गनाथ तथा श्रीनाथ।
पंचनामा पुं० (हि) १-वह कागज जो वादी तथा प्रतिवादी किसी विवाद को निपटाने के लिए पंच चुनते समय लिखते हैं। २-वह कागज जिसपर पंच-निर्णय या फैसला लिखा हो।
पंचनिर्णय पुं० (सं) १-पंच का किया हुआ फैसला। २-किसी विवाद के लिये नियुक्त मध्यस्थ का निर्णय (आर्बिट्रेशन)।
पंचन्यायाधिकरण पुं० (सं) वह अदालत जिसमें विवादों का निर्णय पंचों द्वारा किया जाय। (आर्बी-ट्रल-ट्रिब्यूनल)।
पंचपल्लव पुं०(सं) पांच वृक्षों के पत्ते—आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) तथा बेल जो पूजा में काम आते हैं।
पंचपात्र पुं० (सं) १-गिलास के आकार का बड़े मुंह का बरतन जो पूजा में जल रखने के काम आता है। २-वह श्राद्ध जिसमें पांच पात्रों को रख कर भोग लगाया जाता है।
पंचपाद वि० (सं) पांच पैर वाला। पुं० (स) संवत्सर
पंचपिता पुं० (हि) दे० 'पंचपितृ'।
पंचपितृ पुं० (स) पिता, आचार्य, श्वसुर, अन्नदाता तथा भय से रक्षा करने वाला।
पंचपित्त पुं० (सं) वैद्यक शास्त्रानुसार वाराह, छाग, महिष, मत्स्य तथा यह पांच प्रकार के पित्त।
पंचपुष्प पुं० (सं) पांच प्रकार के पुष्प—चम्पा, आम, शमी, कमल तथा कनेर।
पंचप्राण पुं० (सं) शरीरस्थ पांच प्राणवायु—प्राण, अपान, समान, उदान तथा व्यान।
पंचबाण पुं० (सं) कामदेव के पांच प्रकार के बाण— सम्मोहन, उन्मादन, स्तंभन, शोषण तथा तापन।
पंचबाहु पुं० (स) शिव। महादेव।
पंचभद्र पुं० (सं) १-वह घोड़ा जिसके शरीर में पांच स्थान पर फूल के चिह्न हों। पंचकल्याण घोड़ा। वि० (सं)१-पांचों गुणों वाला। २-पांच मसाले की चटनी
पंचभर्त्तारी स्त्री० (हि) द्रौपदी।
पंचभुज पुं० (स) पांच भुजा वाली आकृति। पांच कोण वाला।
पंचभूत पुं० (स) पांच प्रधान तत्व जिनसे संसार की सृष्टि हुई—आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी
पंचम वि० (स) १-पांचवां। २-सुन्दर। ३-दक्ष। पुं० (सं) १-सात स्वरों में पांचवां स्वर (सङ्गीत) जो कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। २-एक राग।
पंचमकार पुं० (सं) मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।
पंचमहापातक पुं० (सं) मनुस्मृति के अनुसार पांच महापातक—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु स्त्री-गमन तथा इन पातकों को करने वाले का [illegible]।
पंचमहायज्ञ पुं० (स) स्मृतियों के अनुसार गृहस्थ के लिए पांच आवश्यक कृत्य—अध्यापन या ब्रह्मयज्ञ, पितृतर्पण या पितृयज्ञ, हवन या देवयज्ञ, बलिवैश्व-देव या भूत-यज्ञ और अतिथिपूजन या नृयज्ञ
पंचमहाव्याधि पुं० (स) अर्श, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद यह पांच बड़े रोग।

पंचमांगी पुं० (सं) दूसरे देश से गुप्त सम्बन्ध रखकर स्वदेश की गुप्त सूचनायें देकर हानि पहुंचाने वाला। देशद्रोही। भेदिया। (फिफ्थ कालमिस्ट)।
पंचमी स्त्री० (सं) १-शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पांचवीं तिथि। २-द्रौपदी। ३-रागिनी। ४-अपादान कारक
पंचमुख पुं० (सं) १-सिंह। २-शिव। ३-पांच नोक का बाण।
पंचमेल वि० (हिं) १-जिसमें पांच प्रकार की वस्तुएँ मिली हों। २-जिसमें सब प्रकार की वस्तुएँ हों। ३-साधारण।
पंचरङ्ग वि० (हिं) १-पांच रङ्ग का। २-अनेक रङ्गों का। रङ्गबिरङ्गा।
पंचरङ्गा वि० (हिं) दे० 'पंचरङ्ग'।
पंचरत्न पुं० (सं) पांच प्रकार के रत्न—नीलम, हीरा, पद्मराग मणि, मोती तथा मूंगा।
पंचराशिक पुं० (सं) गणित की एक क्रिया जिसमें चार ज्ञात राशियों द्वारा पांचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।
पंचल पुं० (सं) शकरकन्द।
पंचलड़ा वि० (हिं) पांच लड़ों वाला (हार)।
पंचलड़ी स्त्री० (हिं) पांच लड़ों वाली माला।
पंचलरी स्त्री० (हिं) दे० 'पंचलड़ी'।
पंचलवण पुं०(सं) पांच प्रकार के नमक-कांच, सेंधा, सामुद्र, विट् और सौवर्चल।
पंचलोह पुं० (सं) १-पांच धातु—सोना, चांदी, तांबा, पीतल तथा राँगा। २-इन धातुओं से बनी धातु।
पंचवक्त्र पुं० (सं) शिव। महादेव।
पंचवक्त्रा स्त्री० (सं) दुर्गा।
पंचवट पुं० (सं) यज्ञोपवीत। जनेऊ।
पंचवांसा पुं० (हिं) एक रस्म जो गर्भ रहने से पांच महीने में की जाती है।
पंचवाण पुं० (सं) दे० 'पंचबाण'
पंचवृक्ष पुं० (सं) दे० 'पंचतरु'।
पंचविंश वि० (सं) पचीसवां।
पंचविधि वि० (सं) पांच प्रकार का। पांचगुना।
पंचशब्द पुं० (सं) १-तन्त्री, ताल, झांझ, नगारा और तुरही यह पांच मंगलसूचक बाजे। २-पांच प्रकार की ध्वनि—वेदध्वनि, वंदीध्वनि, जयध्वनि, शंखध्वनि और निशानध्वनि।
पंचशर पुं० (सं) १-कामदेव के पांच बाण। २-कामदेव।
पंचशिला स्त्री०(सं) बौद्ध धर्म के आचरण के पांच मूल सिद्धान्त— अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि। पंचशील का गलत रूप जो आजकल प्रचलित है।
पंचशील पुं० (सं) भारत सरकार की विदेश नीति के पांच मूल सिद्धान्त—१-एक दूसरे की प्रादेशिक या भौगोलिक अखण्डता एवं सार्वभौमत्व का सम्मान। २-किसी के हित पर किसी भी दृष्टि से आक्रमण न करना। ३-आर्थिक, राजनैतिक या सैद्धान्तिक किन्हीं भी कारणों से एक दूसरे के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करना। ४-सबके प्रति समानता और परस्पर लाभ की भावना। ५-शान्ति की प्रधानता तथा सह-अस्तित्व।
पंचांग पुं० (सं) १-पांच अंग या पांच अंगों वाली वस्तु। २-वृक्ष के पांच अंग—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल। ३-ज्योतिष के अनुसार वह पुस्तिका जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार लिखे होते हैं। पत्रा। ३-प्रणाम करने का वह ढंग जिसमें घुटने, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेक कर आँखें देवता की ओर करके मुँह से प्रणाम कहते हैं। ४-राजनीति में सहाय, साधन, उपाय, देश-कालभेद और विपद्-प्रतिकार। ५-पंचभद्र घोड़ा। ६-कछुआ। वि० (सं) पांच अंगों वाला।
पंचांग-शुद्धि स्त्री० (सं) वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण की शुद्धता।
पंचागी स्त्री० (सं) हाथी की कमर में बांधने का रस्सा
पंचाक्षर वि० (सं) जिसमें पांच अक्षर हों। पुं० (सं) शिव का एक मन्त्र जिसमें पांच अक्षर होते हैं— 'ॐ नमः शिवाय'।
पंचाग्नि स्त्री० (सं) १-अन्वाहार्य, पचन, गार्हपत्य, आहवनीय और आवसथ्य नाम की पांच अग्नियां २-ग्रीष्म ऋतु में धूप में बैठकर और चारों ओर अग्नि जला कर किया जाने वाला एक तप। ३-चीता, चिचड़ी, भिलावाँ, गन्धक और मदार नामक पांच औषधियां जो बहुत गरम होती हैं।
पंचाट पुं० (हिं) निर्णय करना या देना। परिनिर्णय (अवार्ड)।
पंचात्मा स्त्री० (सं) पञ्चप्राण।
पंचात्मक वि० (सं) पांच तत्वों वाला। (शरीर)।
पंचानन वि० (सं) पञ्चमुखी। जिसके पांच मुख हों। पुं० (सं) १-शिव। २-सिंह। ३-संगीत में स्वर-साधन की एक प्रणाली।
पंचानबे वि० (सं) नब्बे और पांच। सौ में पांच कम ९५।
पंचामृत पुं० (सं) १-दूध, दही, घी, चीनी और शहद मिला कर देवताओं के स्नान के लिये बनाया जाने वाला पदार्थ जिसे पवित्र मान कर श्रद्धा-सहित पान किया जाता है। २-वैद्यक में पांच गुणकारी औषधियां-गिलोय, गोखरू, मुसली, गोरखमुण्डी और शतावरी।
पंचाम्ल पुं० (सं) पांच अम्ल या खट्टे पदार्थ— बेर, अनार, बिपावलि, अमलबेद और बिजौरा नीबू।

पंचायत स्त्री० (हि) १-किसी विवाद या झगड़े का निपटारा करने के लिए चुने हुए लोगों की सभा। पंचों की सभा। २-पंचों द्वारा किसी विवाद के सम्बन्ध में किया गया विचार या निर्णय। (आर्बीट्रेशन)। ३-बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर इधर उधर की गपशप (व्यंग)। ४-पंचों का वाद-विवाद।

पंचायतन पुं० (सं) किसी देवता और उसके साथ चार देवताओं की मूर्ति का समूह।

पंचायतबोर्ड पुं० (हि) गांव के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो आपस के सब प्रकार के झगड़े निपटाती है और गांव की सफाई, पक्के मार्ग तथा अन्य विकास कार्य या योजनाओं को कार्यान्वित करती है।

पंचायती वि० (हि) १-पञ्चायत का। पञ्चायत का किया हुआ। २-पञ्चायत सम्बन्धी। ३-जनता का जनता द्वारा संचालित। सर्वसाधारण का।

पंचायती-राज्य पुं० (हि) जनता के प्रतिनिधियों द्वारा संचालित राज्य। गणतन्त्र।

पंचायुध पुं० (सं) विष्णु।

पंचाल पुं० (सं) १-एक प्राचीन देश का नाम जो हिमालय और गंगा के दोनों ओर स्थित था। २-पंचाल देश का निवासी। ३-पंचाल देश का राजा। ४-शिव। महादेव। ५-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण (ऽऽ।) होता है।

पंचालिका स्त्री० (सं) गुड़िया। पुतली।

पंचाली स्त्री० (सं) १-द्रौपदी। २-बच्चों के खेलने की गुड़िया। ३-शतरंज की बिसात। ४-एक गीत का नाम।

पंचावयव पुं० (सं) न्याय के पांच अवयव—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

पंचाशत वि० (सं) पचास।

पंचाशिका स्त्री० (सं) पचास श्लोक या कविता वाली पुस्तक।

पंचाशीत वि० (सं) पचासीवां।

पंचास्य वि० (सं) पांच मुँह वाला। पुं० (सं) १-शिव २-सिंह। (पञ्चानन)।

पंचाह पुं० (सं) १-पांच दिन में होने वाला एक यज्ञ २-पांच दिन का समूह।

पंचेन्द्रिय स्त्री० (सं) पांच ज्ञानेन्द्रियां जिनसे प्राणियों को बाह्य जगत का ज्ञान होता है।

पंचेषु पुं० (सं) कामदेव।

पंचोपचार पुं०(सं) गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य-यह पांच पूजन के साधन। इन द्रव्यों से किया गया पूजन।

पंचोषण पुं० (सं) पांच औषधि विशेष—पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, मिर्च और चित्रक।

पंछा पुं० (हि) प्राणियों के शरीर या पेड़ पौधों के अंग से चोट लगने या छिलने पर निकलने वाला स्राव २-छाले, फफोले आदि में भरा हुआ पानी।

पंछाला पुं० (हि) फफोला। फफोले का पानी।

पंछी पुं० (हि) पक्षी। चिड़िया। उड़ने वाला। पखेरू।

पंज पुं० (फा) पाँच।

पंजर पुं० (सं) १-शरीर की हड्डियों का ढांचा। कंकाल। ठटरी। २-पसली। ३-शरीर। देह। ४-पिंजड़ा।

पंजरक पुं० (सं) १-बेंत या बांस का बुना हुआ बड़ा टोकरा। झाबा। २-पिंजरा।

पंजरना क्रि० (हि) दे० 'पजरना'।

पंजरी स्त्री० (हि) अर्थी। टिकठी।

पंजरोजा वि० (फा) पांच दिनों का। अस्थाई। जो टिकाऊ न हो।

पंजहजारी पुं० (फा) पांच हजार सैनिकों का नायक

पंजा पुं० (हि) १-हाथ या पैर की पांचों उँगलियों का समूह। २-पांच का समूह। ३-उँगलियों और हथेलियों का संपुट। ४-जूते का अगला भाग जिसमें उँगलियां रहती हैं। ५-पांच उँगलियों के आकार का अथवा वह सादा दो पल्लों वाला उपकरण जिससे कागज दबा कर रखा जाता है। ६-पांच बूटियों वाला ताश का पत्ता। ७-पंजा लड़ाने की प्रतियोगिता या क्रिया।

पंजाब पुं० (फा) भारत का वह प्रदेश जहां सतलज, व्यास, रावी, चिनाब और जेहलम-यह पांच नदियां बहती हैं, भारत विभाजन के पश्चात अब इसके दो भाग हो गये हैं।

पंजाबी वि० (फा) पंजाब का। पंजाब सम्बन्धी। पुं० (फा) पंजाब का निवासी। स्त्री० (फा) पंजाब की भाषा।

पंजि स्त्री०(स) दे० 'पंजी'।

पंजिका स्त्री० (सं) १-पंचांग। २-टीका। व्याख्या। ३-हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका। ४-यमराज की वह लेखा बही जिसमें मनुष्यों के शुभ और अशुभ कार्यों का लेखा किया जाता है।

पंजी स्त्री० (सं) १-पंचांग। पत्रा। २-बही। लेखा। हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तका। ३-भूमि, गृह आदि के हस्तांतरण आदि का विवरण लिखने की पुस्तिका। (रजिस्टर)।

पंजीकार पुं०(सं) किसी कार्यालय में पंजी पर हिसाब चढ़ाने या विवरण लिखने वाला। लेखक। (रजिस्ट्रार)।

पंजीकारक पुं० (स) दे० 'पंजीकार'।

पंजीबंधन वि० (सं) लेखों आदि का प्रमाणित सिद्ध होने के लिये किसी राजकीय पंजी में लिखा या चढ़ाया जाना। (रजिस्ट्रेशन)।

पंजीवद्ध वि० (सं) जो पंजी,या रजिस्टर में चढ़ा दिया गया हो। निवद्ध। (रजिस्टर्ड)।
पंजीवद्धधारी पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसके पास सम्पत्ति आदि के कागज (दस्तावेज) पंजीवद्ध हों (रजिस्टर्ड होल्डर)।
पंजीवद्ध-प्राप्य-स्वीकृति स्त्री०(सं) पंजीयत पत्र के साथ लगा हुआ वह कागज जो भेजने वाले को प्राप्त-कर्त्ता के हस्ताक्षर होने के बाद डाकखाना वापिस भेज देता है। (रजिस्टर्ड ए० डी०)।
पंजीयक पुं० (सं) १-पंजीकार। २-किसी इच्छापत्र लेख आदि की प्रामाणिक प्रतिलिपि सरकारी पंजी में सुरक्षित रखने वाला अधिकारी। ३-किसी विश्वविद्यालय, उच्च न्यायालय, सहयोग समिति आदि का वह अधिकारी जो अपने कार्यालय के सब महत्त्वपूर्ण कागज, लेख या दस्तावेज सुरक्षित-रूप से रखने की व्यवस्था करता है। (रजिस्ट्रार)।
पंजीयन पुं० (सं) १-मकान, भूमि आदि की बिक्री का विवरण या किसी पारसल, पत्र, चिट्ठी, रुपये आदि सुरक्षित रूप में भेजे जाने के लिये प्राप्तकर्त्ता का नाम पता आदि पंजी में चढ़ाकर अभिलेख के रूप में रखा जाना। २-अभ्यर्थियों आदि का नाम पता सूची में दर्ज कर लिया जाना। (रजिस्ट्रेशन, रजिस्ट्री)।
पंजीयनवेष्टन पुं० (सं) रजिस्टरी करवाया हुआ लिफाफा। (रजिस्टर्ड एन्वेलप)।
पंजीयनशुल्क पुं० (सं) पंजीवद्ध करवाने की फीस (रजिस्ट्रेशन-फी)।
पंजीयित वि० (सं) पंजीवद्ध। पंजी में दर्ज करवाया हुआ। (रजिस्टर्ड)।
पंजीयित-अधिभोक्ता पुं (सं) वह व्यक्ति जिसका किसी जमीन या मकान पर रहने का अधिकार सरकार द्वारा मान लिया गया हो और उसे इस बात का प्रमाण पत्र दे दिया गया हो। (रजिस्टर्ड-अक्यूपेन्ट)।
पंजीयित-कार्यालय पुं० (सं) वह कार्यालय जिसका पञ्जीयन हो चुका हो। (रजिस्टर्ड ऑफिस)।
पंजीयित-क्रमांक पुं० (सं) सरकारी पञ्जी का क्रमांक जिस पर किसी मकान आदि की विक्री या अन्य दस्तावेज पञ्जी या नाम सूची में दर्ज किये गये हों। (रजिस्टर्ड नम्बर)।
पंजीयित-डाक स्त्री० (हि) दे० 'पंजीयित-पत्र'। (रजिस्टर्ड पोस्ट)। (रजिस्टर्ड मेल)।
पंजीयित-पत्र पु (सं) वह चिट्ठी जिसे डाकखाने में पंजीवद्ध करा दिया गया हो और जिसको प्राप्तकर्त्ता तक पहुँचाने में डाक विभाग जुम्मेदार हो। (रजिस्टर्ड लैटर)।
पंजीयित-पूंजी स्त्री० (सं) सरकारी कार्यालय में पंजीयित पूंजी। (रजिस्टर्ड कैपीटल)।
पंजीयित-पोटली स्त्री० (हि) वह पोटली या बण्डल जिसे डाकखाने में पञ्जीवद्ध कराकर भेजा गया हो (रजिस्टर्ड-पार्सल)।
पंजीयित-भेषज-प्रायिक पुं०(हि) वह वैद्य या डाक्टर जिसका नाम राज्य नामसूची में पञ्जीवद्ध हो। (रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टीशनर)।
पंजीयित-प्रतिभूति स्त्री० (सं) वह रकम जो जमानत के रूप में दी गई हो और पंजीवद्ध हो (रजिस्टर्ड सिक्युरिटी)।
पंजीयित-स्कन्ध पुं० (सं) वह माल या स्कन्ध जिसको पञ्जीवद्ध करवा लिया गया हो अथवा जो पञ्जी में दर्ज हो। (रजिस्टर्ड स्टॉक)।
पंजीयित-समिति स्त्री० (सं) वह समिति जिसे राज्य पञ्जीकार के कार्यालय में दर्ज करवा लिया गया हो (रजिस्टर्ड सोसाइटी)।
पंजीरी स्त्री० (हि) धनिया, चीनी, सोंठ आदि मिला कर घी में भूना हुआ एक चूर्ण।
पंजेरा पुं० (हि) वरतनों को झालने का कार्य करने वाला कारीगर।
पंड पुं० (सं) १-नपुंसक। २-हिजड़ा। ३-जिसमें फल न लगते हों।
पंडक पुं० (सं) दे० 'पंड'।
पंडग पुं० (सं) नपुंसक। खोजा।
पंडल वि० (हि) पांडुवर्ण का। पीला।
पंडवा पुं० (?) भैंस का बच्चा।
पंडा पुं० (हि) १-किसी तीर्थ या मन्दिर का पुजारी। घाटिया। पुजारी। २-रसोइया। रोटी बनाने वाला ब्राह्मण। ३-गंगा पुत्र। स्त्री० (सं) १-विवेकात्मक बुद्धि। विवेक। ज्ञान। शास्त्रज्ञान।
पंडाइन स्त्री० (हि) पांडे की स्त्री।
पंडाल पुं० (?) वह बड़ा मण्डप जो किसी सभा के अधिवेशन के लिये बनाया या लगाया जाता है।
पंडित वि० (सं) १-विद्वान। बुद्धिमान। २-निपुण। चतुर। ३-संस्कृत भाषा का विद्वान। ४-जिसे किसी विषय का पूरा ज्ञान प्राप्त हो। पुं० (सं) १-शास्त्रज्ञ। २-ब्राह्मण।
पंडितजातीय वि० (सं) कुछ-कुछ चतुर।
पंडितमंडल पुं० (सं) विद्वानों का समुदाय।
पंडितमानिक पुं० (सं) अपने को पण्डित मानने वाला व्यक्ति।
पंडितम्मन्य वि० (सं) पंडित्याभिमानी। मूर्ख।
पंडिता स्त्री० (सं) विदुषी। बुद्धिमती।
पंडिताइन स्त्री० (हि) १-पंडित की पत्नी। २-ब्राह्मणी।
पंडिताई स्त्री०(हि) १-पांडित्य। विद्वत्ता। २-पंडितों का व्यवसाय या काम।
पंडिताऊ वि० (हि) पंडितों की तरह। पंडितों का ढंग

पंडितानी स्त्री० (हि) दे० 'पंडिताइन'।
पंडु वि०(स) १-पीलापन लिये हुए। मटमैला। २-सफेद 'श्वेत'। ३-पीला।
पंडुक पुं० (हि) कबूतर की जाति का एक पक्षी जो ललाई लिये हुए भूरे रंग का होता है। पेंडकी। फाख्ता।
पंडुकी स्त्री० (हि) मादा पंडुक।
पंडोह पु० (हि) परनाला। पनाला। आबदान।
पंडूर पुं० (हि) जलसर्प।
पंतीजना क्रि० (हि) रूई ओटना।
पंतीजी स्त्री० (हि) धुनकी। रूई धुनने का साधन।
पंत्यारी स्त्री० (हि) पंक्ति। कतार।
पंथ पुं० (हि) १-मार्ग। रास्ता। २-रीति। आचार-व्यवहार का ढंग। ३-धर्ममार्ग। मत। सम्प्रदाय।
पंथकी पु० (हि) पथिक। राही। मुसाफिर।
पंथान पुं० (हि) मार्ग। रास्ता।
पंथिक पु० (हि) दे० 'पंथी'।
पंथिक-दल पु० (हि) सिख सम्प्रदाय के अनुयायियों का एक सामाजिक दल। (पन्थिक-पार्टी)।
पंथी पु० (हि) १-पथिक। राही। बटोही। २-किसी पन्थ का अनुयायी।
पंद स्त्री० (फा) शिक्षा। उपदेश।
पंद्रह वि० (हि) दस और पांच।
पंद्रहवाँ वि० (हि) चौदह के बाद आने वाला।
पंपलाना क्रि० (देश) फुसलाना। बहलाना।
पंप पुं० (प) १-वह नल जिसके द्वारा या हवा एक ओर से दूसरी ओर पहुँचाई जाती है। २-एक प्रकार का जूता।
पंपा स्त्री० (स) १-दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी २-इस नदी के किनारे बसा हुआ नगर। ३-इस नगर के पास का एक तालाब। (रामायण)।
पंपास वि० (हि) पापी।
पंवर स्त्री० (हि) सामान। ड्योढ़ी।
पँवरना क्रि० (हि) १-तैरना। पानी में तैरना। २-थाह लेना। पता लगाना।
पँवरि स्त्री० (हि) १-प्रवेश का द्वार। २-वह मकान जिसमें से होकर किसी मकान में प्रवेश करें। ड्योढ़ी।
पँवरिया पु० (हि) १-द्वारपाल। दरबान। चौकीदार। २-शुभ अवसर पर ड्योढ़ी पर बैठ कर गाने वाला याचक।
पँवरी पुं० (हि) पदत्राण। खड़ाऊँ।
पँवाड़ा पुं० (हि) १-व्यर्थ की विस्तारपूर्वक कही हुई बात। २-एक प्रकार का देहाती गीत। ३-बात का विस्तार। बढ़ा कर कही गई बात।
पँवार पुं० (हि) राजपूतों की एक जाति।

पंवारना क्रि० (हि) हटाना। दूर करना। फेंकना।
पंवारी स्त्री० (देश) लोहे में छेद करने का एक औजार
पँसरहट्टा पुं० (हि) वह बाजार जहाँ पसारियों की दुकानें हों।
पंसारी पुं० (हि) हल्दी, मिर्च आदि साधारण उपयोग में आने वाले मसाले या औषधियाँ बेचने वाला बनिया या दुकानदार।
पंसासार पुं० (हि) पासे का खेल।
पंसियाना क्रि० (हि) पासे से मारना।
पँसुरी स्त्री० (हि) दे० 'पसली'।
पँसुली स्त्री० (हि) दे० 'पसली'।
प वि० (स) १-पीने वाला जैसे—पादप। २-रक्षक। शासक। अभिभावक जैसे—नृप, क्षितिप, गोप। पुं० (सं) १-वायु। २-पत्र। पत्ता। ३-अण्डा।
पइग पुं० (हि) दे० 'पंग'।
पइठ पुं० (हि) दे० 'पैठ'।
पइठना क्रि० (हि) पैठना।
पउँरि स्त्री० (हि) ड्योढ़ी।
पउनार स्त्री० (हि) कमलदण्ड। पद्मनाल।
पउनी स्त्री० (हि) दे० 'पौनी'।
पउला पु० (हि) एक प्रकार की भद्दी खड़ाऊँ जिसमें उंगली फँसाने के स्थान रस्सी लगी रहती है।
पकड़ स्त्री० (हि) १-पकड़ने की क्रिया। ग्रहण। २-पकड़ने का ढङ्ग। ३-द्वन्द युद्ध में एक दूसरे को पकड़। ४-हाथापाई। भिड़न्त। ५-समझ। भूल आदि ढूंढ निकालने की क्रिया या भाव।
पकड़धकड़ स्त्री० (हि) दे० 'धरपकड़'।
पकड़ना क्रि० (हि) १-थामना। धरना। गहना। २-काबू में लाना। गिरफ्तार करना। ३-गति या व्यापार न करने देना। अवरुद्ध करना। स्थिर करना। ४-ढूँढ निकालना। पता लगाना। ५-टोकना। ६-किसी बात में आगे बढ़े हुए के बराबर पहुँच जाना। ७-अपने स्वभाव के अन्तर्गत करना। ८-आक्रान्त करना। घेरना। ९-समझना।
पकड़वाना क्रि० (हि) ग्रहण कराना। पकड़ने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
पकड़ाई स्त्री० (हि) १-पकड़ने की क्रिया। २-पकड़ने की मजदूरी।
पकड़ाना क्रि० (हि) किसी के हाथ में देना या रखना।
पकना क्रि० (हि) १-फल आदि का पुष्ट होकर खाने योग्य होना। कच्चा न रह जाना। २-गरमी या आँच खाकर गलना या तैयार होना। रंधना। सीझना। ३-फोड़े या घाव में मवाद पड़ना। ४-चौसर में गोटियों का सब घरों को पार करके अपने घर में आ जाना। ५-कीमत ठहराना। मामला तै करना।
पकरना क्रि० (हि) दे० 'पकड़ना'।

पकवान पुं० (हि) घी में तल कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

पकवाना क्रि० (हि) १-पकाने का काम दूसरे से कराना। २-आंच पर तैयार करना।

पकाई स्त्री० (हि) १-पकाने का भाव या क्रिया। २-पकाने की मजदूरी।

पकाना क्रि० (हि) १-फल आदि को पुष्ट और तैयार करना। २-आग पर रख कर गलाना या तैयार करना। ३-फोड़े आदि को उपचार आदि से ऐसी दशा को पहुंचाना कि उसमें मवाद पड़ जाय। ४-पक्का करना।

पकार पुं० (सं) 'प' अक्षर।

पकारान्त वि० (सं) जिसके अन्त में 'प' अक्षर हो।

पकाव पुं० (हि) १-पकने का भाव। २-पीव। मवाद

पकावन पुं० (हि) दे० 'पकवान'।

पकौड़ा पुं० (हि) घी या तेल में पकी हुई बेसन पीठी की बरी या बट्टी। बड़ी।

पकौड़ी स्त्री० (हि) छोटे आकार का पकौड़ा।

पक्करसा पुं० (सं) मदिरा। शराब।

पक्कवारि पुं० (सं) कांजी।

पक्का वि० (हि) १-जो कच्चा न हो। फल या अन्न जो पुष्ट होकर खाने योग्य हो गया हो। २-जो आग पर पकाया गया हो। जिसमें कोई कमी न हो ३-जो प्रौढ़ता को पहुँच गया हो। ४-जिसमें संस्कार या संशोधन की क्रिया पूर्ण हो गई हो। तैयार। साफ-जैसे चीनी। ५-अनुभवी। जो आंच पर दृढ़ हो गया हो। ६-दृढ़। मजबूत। ७-निश्चित ८-प्रामाणिक। ९-जो अभ्यस्त व्यक्ति के द्वारा बना हो। १०-जिसमें छीजन आदि निकल चुकी हो। ११-जिसमें अच्छी तरह जांच कर हिसाब दर्ज किया गया हो।

पक्का-गाना पुं० (हि) शास्त्रीय-सङ्गीत।

पक्का-चिट्ठा पुं० (हि) आय-व्यय का ठीक जांचा हुआ चिट्ठा। (बैलेंस शीट)।

पक्कीनिकासी स्त्री० (हि) कुल आय में से होने वाली बचत। (नेट एसेट्स)।

पक्खर स्त्री०(हि) दे० 'पाखर'। वि० (हि) दृढ़। पक्का। तीक्ष्ण। तेज।

पक्व वि० (सं) १-पका हुआ। २-पक्का। ३-परिपुष्ट

पक्वकृत पुं० (सं) १-पकाने वाले। २-फोड़े आदि को पकाने वाला। नीम।

पक्वकेश पुं० (सं) पके हुए सफेद बाल।

पक्वता स्त्री० (सं) पक्कापन। पक्व होने का भाव।

पक्वातिसार पुं० (सं) एक प्रकार का अतिसार जो आमातिसार का उलटा होता है।

पक्वाधान पुं० (सं) पेट के भीतर का वह स्थान जहां अन्न जाता है और पचता है।

पक्वान्न पुं० (सं) १-पका हुआ अन्न। २-पकवान

पक्वाशय पुं० (सं) दे० 'पक्वाधान'।

पक्ष पुं० (सं) १-किसी स्थान या वस्तु के दोनों ओर जो अगले और पिछले से भिन्न हों। २-किसी विषय के दो अधिक परस्पर विरोधी तत्वों, सिद्धान्तों या दलों में से कोई एक। ३-झगड़ा या विवाद करने वाले दलों में से एक। (पार्टी)। ४-किसी ओर से लड़ने वाली सेना का दल। सेना। बल। ५-सहायक। साथी। ६-तीर के पिछले भाग में लगा हुआ पर। शरपक्ष। ७-पंद्रह दिन का पखवारा ८-किसी दल का अनुयायी। ९-प्रत्युत्तर। १०-दीवार। मकान। घर। ११-पड़ौस। १२-शुद्धता। १३-हाथ में पहनने का कड़ा। १४-दो की संख्या-वाचक शब्द। १५-चांद मास के दो भागों में से एक। १६-(न्या०) वह वस्तु जिसकी स्थिति संदिग्ध हो। १७-शरीर का अर्धभाग। १८-पक्षी। १९-चूल्हे का मुँह। २०-पंख। २१-दरवाजे का पल्ला या किवाड़। २२-सेना का पार्श्व।

पक्षक पुं० (सं) वह पक्ष जिसमें ऐसे लोग हों जो मिलाकर किसी कार्य को करने में लगे हुए हों। दल (पार्टी)।

पक्षगम वि० (सं) उड़ने वाला। पुं० (सं) पक्षी। चिड़िया।

पक्षग्रहण पुं० (सं) किसी भी पक्ष का हो जाना।

पक्षघात पुं० (सं) वह रोग जिसमें शरीर के एक ओर के अंग सुन्न हो जाते हैं। लकवा।

पक्षघ्न वि० (सं) पक्षनाशक।

पक्षज पुं० (सं) चन्द्रमा।

पक्षता स्त्री० (सं) १-तरफदारी। २-किसी एक पक्ष में हो जाना। ३-किसी का एक अंग बन जाना।

पक्षद्वार पुं० (सं) १-अप्रधान द्वार। २-खिड़की या का दरवाजा। ३-चोर दरवाजा।

पक्षधर पुं० (सं) दे० 'पक्षपाती'।

पक्षपात पुं० (सं) १-औचित्य तथा न्यायसंगत विचार छोड़कर किसी एक पक्ष के अनुरूप होने वाली प्रवृत्ति, सहानुभूति या उस पक्ष का समर्थन। २-पर या डैनों का झड़ना।

पक्षपातिता स्त्री० (सं) १-पक्षपात। तरफदारी। २-मदद। सहायता।

पक्षपाती वि० (सं) तरफदार। जो किसी पक्ष का समर्थन करे।

पक्षपाली पुं० (सं) खिड़की।

पक्षरूप पुं० (सं) महादेव। शिव।

पक्षव्यापी वि० (सं) समूचे तर्क को ग्रहण करने वाला

पक्षहर पुं० (सं) पक्षी।

पक्षांत पुं० (सं) १-कृष्ण या शुक्लपक्ष का पन्द्रहवाँ दिन। पूर्णिमा। अमावस्या।

पक्षांतर वि० (सं) दूसरी तरफ। दूसरा पक्ष।
पक्षाघात पु० (सं) १-लकवा। फालिज। अर्द्धांग रोग। २-युक्ति का खण्डन।
पक्षिणी स्त्री० (सं) चिड़िया। मादा पक्षी। पूर्णिमा।
पक्षिराज पु० (सं) गरुड़।
पक्षी पु० (सं) १-चिड़िया। शिव। बाण। तरफदार वि० (सं) पक्ष सम्बन्धी। पक्ष का। तरफदार।
पक्षीसिंह पुं० (सं) गरुड़।
पक्षीस्वामी पुं०(सं) गरुड़।
पक्षीय वि० (सं) किसी दल या पक्ष से सम्बन्ध रखने वाली।
पक्षीशावक पुं० (सं) पक्षी का बच्चा।
पक्षीन्द्र पु० (सं) गरुड़।
पक्ष्म पुं० (सं) १-आँख की बिरौनी। २-केसर।
पक्ष्मकोप पुं० (सं) बिरौनी के आँख में चले जाने से उत्पन्न एक रोग।
पक्ष्मप्रकोप पुं० (सं) आँख की पलकी का एक रोग।
पक्ष्मल वि० (सं) सुन्दर बिरौनी वाला। बालों वाला।
पखंड पुं० (हि) दे० 'पाखण्ड'।
पखंडी वि० (हि) दे० 'पाखण्डी'।
पख स्त्री० (हि) १-ऊपर से व्यर्थ चढ़ाई हुई बात। अड़ंगा। २-झगड़ा-बखेड़ा। ३-दोष। त्रुटि।
पखड़ी स्त्री० (हि) दे० 'पंखड़ी'।
पखपान पुं० (हि) पांव का एक गहना।
पखरना क्रि० (हि) धोना। पखारना।
पखरवाना क्रि० (हि) धोने में प्रवृत्त करना।
पखराना क्रि० (हि) धुलवाना।
पखरैत पुं० (हि) वह घोड़ा, बैल या हाथी जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो।
पखवाड़ा पुं० (हि) अर्धमास। पन्द्रह दिन का समय
पखा पुं० (हि) दाढ़ी।
पखाउज पुं० (हि) दे० 'पखावज'।
पखान पुं०(हि) दे० 'पाषाण'।
पखाना पुं० (हि) १-कहावत। मसल। २-दे० 'पाखाना'।
पखारना क्रि० (हि) धोकर साफ करना। पानी से धोना।
पखाल स्त्री० (हि) १-पानी भरने की चमड़े की मशक। २-धौंकनी।
पखाली पुं० (हि) भिश्ती। मशक में पानी भरने वाला।
पखावज स्त्री० (हि) एक प्रकार का बाजा जो मृदंग से छोटा होता है।
पखावजी वि० (हि) पखावज बजाने वाला।
पखिया पुं० (हि) झगड़ालू। बखेड़ा करने वाला।
पखी पु० (हि) दे० 'पक्षी'।
पखेरी पु० (हि) दे० 'पक्षी'।

पखुड़ी, पखौरी स्त्री० (हि) दे० 'पंखड़ी'।
पखुरा पुं० (हि) दे० 'पखुवा'।
पखुवा पुं० (हि) बाहु का वह भाग जो बगल में पड़ता है। बगल। पाख्रे।
पखेरू वि० (हि) पक्षी।
पखौआ पुं० (हि) पंख। पर।
पखौटा पुं० (हि) १-पंख। पर। २-मछली का पर।
पखौरा पुं० (हि) कंधे पर की हड्डी।
पग पुं० (हि) १-पैर। पांव। २-डग। चलने के लिए पैर एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखना।
पगडंडी स्त्री० (हि) जंगल या मैदान का वह मार्ग जो लोगों के चलने से बन जाते हैं।

किराये के अतिरिक्त लेता है। नजराना।
पगतरी स्त्री० (हि) जूती।
पगदासी स्त्री० (हि) खड़ाऊं। जूता।
पगना क्रि० (हि) १-रस या शरबत में इस प्रकार पकना कि शरबत या शीरा चारों ओर लिपट जाय और अन्दर प्रवेश कर जाय। सनना। २-अत्यधिक अनुरक्त होना। किसी के प्रेम में डूबना।
पगनियाँ स्त्री० (हि) जूती।
पगरा पु० (हि) १-पग। कदम। डग। २-यात्रा करने का समय। सबेरा। तड़का।
पगरी स्त्री० (हि) दे० 'पगड़ी'।
पगला वि० (हि) मूर्ख। पागल। नासमझ।
पगहा पु० (हि) पशु बांधने की रस्सी। पघा।
पगिआना क्रि० (हि) दे० 'पगाना'।
पगिया स्त्री० (हि) दे० 'पगड़ी'।
पगियाना क्रि० (हि) दे० 'पगाना'।
पगुराना क्रि० (हि) १-पागुर या जुगाली करना। २-डकार जाना। हजम कर जाना।
पघा पु० (सं) गाय, भैंस के गले में बांधने वाली मोटी रस्सी।
पच वि० (हि) पांच का एक रूपान्तर।
पचकना क्रि० (हि) दे० 'पिचकना'।
पचकल्यान पुं० (हि) दे० 'पंचकल्याण'।
पचखना वि० (हि) पांच मंजिलों वाला। पांच खण्डों वाला। क्रि० (हि) दे० 'पचकना'।
पचखा पुं० (हि) दे० 'पचक'।
पचगुना वि० (हि) पांच बार अधिक। पांच गुना।
पचग्रह पु० (हि) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि का समूह।
पचड़ा पु० (हि) १-झंझट। बखेड़ा। प्रपंच। २-एक गीत जो ओझा लोग देवी को मनाने के लिए गाते हैं। ३-लावनी या खयाल के ढंग का एक ...

जिसमें पांच-पांच चरणों के टुकड़े होते हैं।
पचत पुं० (सं) १-सूर्य। २-अग्नि। इन्द्र।
पचतूरा पु० (हि) एक प्रकार का बाजा।
पचन पुं०(सं) १-पचाने की क्रिया या भाव। २-पकने की क्रिया या भाव। ३-अग्नि। ३-पकाने वाला।
पचना क्रि० (हि) १-खाई हुई वस्तु का हजम हो जाना। २-क्षय होना। ३-पराया माल अपना कर लेना। ४-अनुचित रूप से प्राप्त धन या पदार्थ को काम में लाना। ५-अत्यधिक परिश्रम के कारण मस्तिष्क आदि का सूखना या क्षीण होना। ५-खपना।
पचनाग्नि पुं० (सं) पेट की आग या गर्मी जिससे खाया हुआ पचता है। जठराग्नि।
पचनिका स्त्री० (सं) कड़ाही।
पचपच पु० (सं) शिवजी की उपाधि। स्त्री० (हि) १-कीचड़। २-पच-पच होने का शब्द।
पचपचा वि० (हि) अधपका भोजन जो पूर्ण रूप से पका न हो।
पचपचाना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक गीला होना। २-कीचड़ होना।
पचपन वि० (हि) पचास और पांच। ५५।
पचमान वि० (सं) पकाने वाला।
पचमेल वि० (हि) जिसमें कई प्रकार के पदार्थ हों।
पचरंग पुं० (हि) चौक पूरने की सामग्री जिसमें मेंहदी, अबीर, बुका, हल्दी और सुरवाली के बीज होते हैं। वि० (हि) दे० 'पचरंगा'।
पचरंगा वि० (हि) १-पांच रंग का। २-पांच रंग से बना या पांच रंग के सूत से बुना हुआ (कपड़े)। ३-जिसमें बहुत से रंग हों। पुं० (हि) मंगल अवसरों पर पूजा के लिये निमित्त पांच रंगों से पूजे जाने वाले खाने।
पचरा पुं० (हि) दे० 'पचड़ा'।
पचलड़ी स्त्री० (हि) पांच लड़ी वाली माला या आभूषण।
पचलोना पुं० (हि) वह जिसमें पांच प्रकार के नमक मिले हुए हों।
पचहत्तर वि० (हि) सत्तर और पांच। ७५।
पचहरा वि० (हि) १-जिसमें पांच तह हों। पांच बार लपेटा हुआ। २-पांच बार किया हुआ।
पचाना क्रि० (हि) १-हजम करना। २-क्षीण या नष्ट करना। ३-पराया माल हजम करना। ४-परिश्रम करवा कर या कष्ट देकर किसी का शरीर या मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ५-एक पदार्थ को स्वयं में लीन या आत्मसात करना।
पचारना क्रि० (हि) लड़ने के लिये ललकारना।
पचाव पुं० (हि) पचने की क्रिया या भाव।
पचास वि० (हि) चालीस और दस।
पचासा पु० (हि) एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह।
पचासी वि० (हि) अस्सी और पांच।
पचासों वि० (हि) १-कई पचास। २-पचास से अधिक। ३-बहुत सारे।
पचि पु० (सं) १-अग्नि। २-रसोई बनाने की प्रक्रिया।
पचित वि० (हि) १-पचा हुआ। २-जड़ा हुआ।
पची स्त्री० (हि) दे० 'पच्ची'।
पचीस वि० (हि) बीस और पांच।
पचीसी स्त्री०(हि) १-एक प्रकार की पच्चीस वस्तुओं का समूह। २-किसी की आयु के आरम्भ के पच्चीस वर्ष। ३-एक प्रकार का चौसर का खेल। ४-चौसर खेलने की बिसात।
पचूका पु० (हि) पिचकारी।
पचेलुक वि० (हि) रसोइया। पाचक।
पचोतर वि० (हि) पांच से अधिक या ऊपर (किसी संख्या में)।
पचोतरसौ पुं० (हि) एक सौ-पाँच।
पचौनी स्त्री० (हि) पाचन। पाचक। मेदा। अमाशय
पचौर पुं० (हि) दे० 'पचौली'।
पचौली पुं० (हि) गांव का मुखिया। पञ्च। सरदार स्त्री० (देश) एक पौधा जिसकी पत्तियों से तेल निकाला जाता है।
पचौवर वि० (हि) पचहरा। पाँच तह किया हुआ।
पच्चड़ पुं० (हि) दे० 'पच्चर'।
पच्चर पुं० (हि) लकड़ी की वह गुल्ली जो चीजों को कसने के लिये ठोंकी जाती है।
पच्ची स्त्री० (हि) १-पचने या पचाने की क्रिया या भाव। २-एक प्रकार का जड़ाव जिसमें जड़ी जाने वाली वस्तु भली प्रकार जम कर बैठ जाती है।
पच्चीकार पुं० (हि) पच्ची करने वाला।
पच्चीकारी स्त्री० (हि) १-पच्ची करने का भाव या क्रिया। २-पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।
पच्छ पुं० (हि) दे० 'पक्ष'।
पच्छपात पुं० (हि) दे० 'पक्षपात'।
पच्छनाई स्त्री० (हि) दे० 'पक्षपात'।
पच्छि पुं० (हि) दे० 'पक्षी'।
पच्छिम पु० (हि) दे० 'पश्चिम'।
पच्छी पुं० (हि) दे० 'पक्षी'।
पछरी स्त्री० (देश) तलवार।
पछड़ना क्रि० (हि) १-लड़ने में पछाड़ा जाना। २-दे० 'पिछड़ना'।
पछताना क्रि० (हि) पश्चाताप करना। अपने द्वारा किये किसी अनुचित कार्य से पीछे दुःखी होना।
पछतानि स्त्री० (हि) पछताने का भाव। पछतावा। पश्चाताप।

पछताव पुं० (हि) दे० 'पछतावा'।
पछतावना क्रि० (हि) दे० 'पछताना'।
पछतावा पुं० (हि) पश्चाताप। अनुताप।
पछना क्रि० (हि) पाछा जाना। पुं० (हि) पाछने का औजार।
पछमन क्रि० (हि) पीछे।
पछरना क्रि० (हि) लौटना। पछाड़ना।
पछरा पुं० (हि) दे० 'पछाड़'।
पछलगा पुं० (हि) दे० 'पिछलगा'।
पछलत्त पुं० (हि) पिछली टांगों द्वारा प्रहार।
पछलागा पुं० (हि) दे० 'पिछलगा'।
पछवाँ वि० (हि) पश्चिम का। स्त्री० (हि) पश्चिम की ओर से बहने वाली हवा।
पछाँह पुं० (हि) पश्चिम में पड़ने वाला देश। पश्चिम की ओर का देश।
पछाँहिया वि० (हि) पश्चिम का। पश्चिम का प्रदेश
पछाँही वि० (हि) पश्चिम का।
पछाड़ स्त्री० (हि) बहुत शोक आदि के कारण खड़े-खड़े गिर कर बेहोश होजाना। मूर्छित होकर गिरना। पुं० (प) कुश्ती का एक दांव।
पछाड़ना क्रि० (हि) १-कुश्ती में विपक्षी को गिराना या चित करना। २-प्रतियोगियों को हटाना। ३-धोते समय कपड़े बारम्बार पटकना।
पछाड़ी स्त्री० (हि) दे० 'पिछाड़ी'।
पछानना क्रि० (हि) दे० 'पहचानना'।
पछायाँ पुं० (हि) किसी वस्तु का पिछला भाग। पिछाड़ी
पछारना क्रि० (हि) १-कपड़े को पानी से धोकर साफ करना। धोना। २-पछाड़ना।
पछावर स्त्री० (देश) १-एक प्रकार का शर्बत। २-छाछ का बना हुआ एक पेय पदार्थ।
पछावरि स्त्री० (देश) दे० 'पछावर'।
पछाहें पुं० (हि) दे० 'पछाँह'।
पछाहीं स्त्री० (हि) दे० 'पछाँही'।
पछियाना क्रि० (ि १-पीछे हो लेना। पीछे-पीछे चलना। पी... करना।
पछियाव... ...० दे० 'पछावर'।
पछिऊँ पुं० (देश) दे० 'पश्चिम'।
पछितना क्रि० (हि) दे० 'पछताना'।
पछितानि स्त्री० (हि) दे० 'पछतावा'।
पछियाउर स्त्री० (देश) दे० 'पछावर'।
पछिलगा पुं० (हि) दे० 'पिछलगा'।
पछिलना क्रि० (हि) दे० 'पिछड़ना'।
पछिला वि० (हि) दे० 'पिछला'।
पछियाँ वि० (हि) पश्चिम की ओर से आने वाली (वायु)। स्त्री० (हि) पश्चिम की हवा।
पछीत स्त्री० (हि) १-मकान के पीछे की ओर का भाग २-घर के पीछे की ओर की दीवार।
पछुवाँ वि० (हि) दे० 'पछियाँ'।
पछेड़ा पुं० (हि) पीछा।
पछेलना क्रि० (हि) पीछे डालना। पीछे हटाना। आगे बढ़ जाना।
पछेला पुं० (हि) हाथ में पीछे की ओर पहनने का कड़ा।
पछेली स्त्री० (हि) एक प्रकार का स्त्रियों के पहनने का कड़ा।
पछोड़न स्त्री० (हि) अनाज आदि का बचा कूड़ा जिसे सूप में रख कर झटका देने पर निकलता है।
पछोड़ना क्रि० (हि) फटकना। अनाज को सूप में रख कर फटकना।
पछोरन स्त्री० (हि) दे० 'पछोड़न'।
पछोरना क्रि० (हि) दे० 'पछोड़ना'।
पछ्यावर स्त्री० (देश) दे० 'पछावर'।
पजर पुं० (हि) टपकने या चूने की क्रिया।
पजरना क्रि० (हि) जलना। सुलगना। दहकना।
पजामा पुं० (हि) दे० 'पायजामा'।
पजारना क्रि० (हि) जलाना। दहकाना।
पजावा पुं० (हि) ईंट या पत्थर के बरतनों का भट्ठा। आवाँ।
पजोख पुं० (देश०) परख। जाँच। आजमाइश।
पजोखा पुं० (देश०) किसी की मृत्यु पर उसके सम्बन्धियों का शोक प्रकट करना। मातम-पुरसी।
पजोड़ा पुं० (हि) दुष्ट। पाजी।
पज्ज पुं० (हि) शूद्र।
पज्झटिका पुं० (हि) १-एक मात्रिक छन्द जिसमें जगण का निषेध होता है। २-छोटी घण्टी।
पटवर पुं० (हि) रेशमी कपड़ा।
पट पुं० (स) १-कपड़ा। वस्त्र। २-कपड़े का टुकड़ा। ३-पर्दा। महीन कपड़ा। ४-धातु या लकड़ी का वह टुकड़ा जिस पर चित्र बनाये जाते हैं। ५-वह चित्र जो बद्रीनाथ, जगन्नाथ आदि मन्दिरों से यात्रियों को मिलता है। ६-कोई अच्छी प्रकार बनी वस्तु। ७-छप्पन। छप्पर। ८-नाव या बहेली पर सरकण्डे का बना हुआ छप्पर। ९-कनात। १०-रङ्गशाला का पर्दा। पुं० (हि) १-दरवाजे के किवाड़। २-पालकी के सरकाने से खुलने वाले किवाड़। ३-सिंहासन। ४-चौरस और चिपटी भूमि। वि० (हि) चित उलटा औंधा।
पटइन स्त्री० (हि) १-पटवा जाति की स्त्री। २-गहना गूँथने वाली स्त्री।
पटक पुं० (स) १-तंबू। खेमा। शिविर। २-आधा गाँव।
पटकन स्त्री० (हि) १-पटकने की क्रिया ... २-तमाचा। ३-छड़ी। छोटा डंडा।
पटकना क्रि० (हि) १-किसी ...

से नीचे जोर से गिराना। २-किसी खड़े या बैठे हुए व्यक्ति को नीचे गिराना। दे॰ मारना। ३-कुश्ती में प्रतिद्वन्द्वी को जमीन पर गिराना।
पटकनिया स्त्री॰ (हि) पटकने की क्रिया या भाव। पछाड़।
पटकनी स्त्री॰ (हि) दे॰ 'पटकनिया'।
पटका पु॰ (हि) कमर में बांधने का रूमाल या दुपट्टा। कमरबंद।
पटकान स्त्री॰ (हि) दे॰ 'पटकनिया'।
पटकर्म पु॰ (सं) बुनाई का काम। बुनाई।
पटकार पु॰ (सं) १-जुलाहा। चित्रकार।
पटकुटी स्त्री॰ (हि) छोलदारी। खेमा।
पट-चित्र पु॰ (सं) वह कपड़े पर बना चित्र जिसे लपेटा जा सके।
पटझोल पु॰ (हि) आंचल।
पटतर पु॰ (हि) १-समता। बराबरी। २-उपमा। वि॰ (हि) समतल। चौरस। बराबर।
पटतरना क्रि॰(हि) १-असमतल भूमि को समतल करना। २-भाला आदि शस्त्रों को चलने के लिये हाथ में लेना।
पटत्क पु॰ (सं) चोर।
पटधारी वि॰ (सं) जो कपड़ा पहने हुए हो। पु॰ (सं) तोशे खाने का अधिकारी।
पटन पु॰ (हि) दे॰ 'पट्टन'।
पटना क्रि॰ (हि) १-गड्ढे आदि का भरकर बराबर सतह हो जाना। २-किसी वस्तु का अत्यधिक मात्रा में एक स्थान पर एकत्रित होना। ३-मकान या छत पर कच्ची छत बनवाना। ४-घर की दूसरी मञ्जिल बनना या बनवाना। ५-एक ही स्वभाव का होना जिससे मित्रता निभ सके। मन मिलना। ६-बिक्री आदि में मोल का तै हो जाना। ७-ऋण का भुगतान हो जाना। पु॰ (हि) वर्तमान बिहार प्रदेश की राजधानी जो बौद्धकाल में पाटलिपुत्र के नाम से प्रसिद्ध थी।
पटनिया वि॰ (हि) पटना नगर की बनी हुई (वस्तु)। पटना नगर से सम्बन्धित।
पटनी स्त्री॰ (हि) १-वह कमरा जिसके ऊपर कोई और कमरा हो। २-वह भूमि जो किसी को इस्तमरारी पट्टे द्वारा मिली हो। ३-भूमि (खेत) आदि देने की वह प्रणाली जिसमें लगान देने तथा किसान के अधिकार सदा के लिये निश्चित कर दिये गये हों। ४-किसी वस्तु को टांगने के लिये दो खूटियों पर रखी हुई पटरी।
पटपट स्त्री॰ (हि) हल्की वस्तु के गिरने का शब्द।
पटपटाना क्रि॰ (हि) १-भूख, प्यास या गरमी के कारण अत्यधिक कष्ट उठाना। २-किसी वस्तु के गिरने से पट-पट शब्द होना।
पटपर वि॰ (हि) चौरस। समतल। हमवार। पु॰ (हि) १-नदी के आसपास की वह भूमि जो वर्षा-ऋतु में पानी में डूब जाती है। २-ऐसा जंगल जहां पेड़, घास आदि न हों। उजाड़ स्थान।
पट-परिवर्तन पु॰ (सं) रंगमंच का पर्दा बदलना।
पटबंधक पु॰ (हि) रेहन का वह तरीका जिसमें रेहन रखी हुई वस्तु के लाभ से सूद सहित मूलधन अदा हो जाने पर रेहनदार उस वस्तु को वापिस दे देता है।
पटबीजना पु॰ (हि) जुगनू। खद्योत।
पटमण्डप पु॰ (सं) तम्बू। खेमा।
पटरा पु॰ (हि) १-काठ का लम्बा और चौरस पतला चीरा हुआ तख्ता या टुकड़ा। २-धोबी का पाट। ३-हेंगा। पाटा।
पटरानी स्त्री॰ (हि) राजा की सबसे बड़ी या मुख्य रानी जो उसके साथ सिंहासन पर बैठती हो।
पटरी स्त्री॰ (हि) १-काठ का लम्बा और पतला तख्ता। २-लिखने की तख्ती। ३-सड़क के दोनों ओर पैदल चलने वालों के लिये बनाया गया ऊँचा भाग। ४-नहर के दोनों किनारों पर के रास्ते। ५-बाग में क्यारियों के आसपास छोड़ी जगह जिस पर घास लगी होती है। रविश। ६-सुनहरे या रुपहले तारों का फीता जो धोती या लंहगे में टांका जाता है। ७-नक्काशी की हुई एक प्रकार की हाथ में पहनने की चूड़ी। ८-लोहे के समानान्तर छड़ जिन पर रेलगाड़ी के पहिये दौड़ते हैं। ९-जंतर। तावीज।
पटल पु॰ (सं) १-छत। छप्पर। २-पर्दा। घूंघट। आवरण। ३-मोतियाबिंद नामक एक आंख का रोग। ४-लकड़ी आदि का पटरा। ५-पुस्तक का अंश विशेष। परिच्छेद। ६-माथे का टीका। ७-ढेर। समूह। ८-टोकरी। ९-मेज, टेबुल। (टेबल)।
पटलक पु॰ (सं) १-आवरण। घूंघट। पर्दा। २-टोकरा। समूह। राशि। ढेर।
पटलता स्त्री॰ (हि) अधिकता।
पटली स्त्री॰ (हि) छप्पर। छत। छान।
पटवा पु॰ (हि) १-रेशम या सूत में गहने गूंथने वाला। पटहरा। २-पटसन।
पटवाना क्रि॰ (हि) १-पाटने का काम किसी दूसरे से कराना। २-आच्छादित करना। छत डलवाना। ३-गड्ढों में मट्टी आदि डलवाना। पूरा करा देना। ४-सिंचवाना। ५-ऋण आदि चुकवा देना। ६-(पीड़ा या दर्द) दूर करना। मिटाना।
पटवाप पु॰ (सं) खेमा। तम्बू।
पटवारगिरी स्त्री॰ (हि) पटवारी का काम या पद।
पटवारी पु॰ (हि) वह सरकारी कर्मचारी जो गांव की जमीन तथा मालगुजारी आदि का लेखा रखता

है। लेनदार। स्त्री० (हि) रानियों को वस्त्राभूषण पहनाने वाली दासी।

पटवास पुं० (हि) १-तम्बू। खेमा। २-स्त्रियों का लहंगा।

पटसन पुं० (हि) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशों से रस्सी, बोरे, टाट इत्यादि बनाये जाते हैं। पटसन के रेशे। (जूट)।

पटह पुं० (सं) १-नगाड़ा। डंका। २-मृदंग। तबला।

पटह-घोषक पुं० (सं) डुग्गी पीटने वाला।

पटहार पुं० (हि) पटवा। एक जाति जो सूत या रेशम में गहने गूँथते हैं।

पटहारिन स्त्री० (हि) पटहार पत्नी। पटहार जाति की स्त्री।

पटा पुं० (हि) लोहे की वह छड़ी या पट्टी जिससे लोग तलवार का वार या उससे बचाव करना सीखते हैं। पुं० (देश०) १-अधिकार पत्र। सनद। २-लेनदेन। सौदा। ३-धारी। चौड़ी लकीर। ४-लगाम की मुहरी। ५-पीढ़ा। पटरा। पटाई।

पटाई स्त्री० (हि) १-पटाने की क्रिया या भाव। २-सिंचाई। आबपाशी। ३-सिंचाई की मजदूरी। ४-पटाने की मजदूरी।

पटाक पुं० (हि) किसी छोटी वस्तु के गिरने का शब्द पुं० (सं) चिड़िया। पक्षी।

पटाखा पुं० (हि) १-पटाक या पट शब्द। २-एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमें पटाक का शब्द निकलता है। ३-थप्पड़। तमाचा। ४-पटाके की ध्वनि। स्त्री० (हि) उमरनी अवस्था की अपेक्षाकृत अधिक सजी-धजी युवती या स्त्री (बाजारू)।

पटाक्षेप पुं० (सं) नाटक का अंक समाप्त होने पर मुख्य परदा गिरना।

[illegible]

[illegible]

...चुका देना। ५-मूल्य ले कर लेना। ६-घाव हो कर बैठना।

पटापट क्रि० [illegible]

हुए। स्त्री० [illegible]

पटापटी स्त्री० [illegible]

के बेलबूटे [illegible]

रंगा हुए हों।

पटार स्त्री० (हि) १-पिटारा। मंजूषा। पेटी। २-पिंजड़ा। ३-रेशम की लच्छी। ४-कनखजूरा।

पटालुका स्त्री० (सं) जोंक। जलौका।

पटाव पुं० (हि) १-पाटने का भाव या क्रिया। २-पटा हुआ चौरस स्थान। ३-दीवार के आधार पर बनाया हुआ स्थान। ४-मरंदा। लकड़ी का बंधी

मिट्टी जिसे दरवाजे की चौखट के ऊपर रख कर दीवार उठाते हैं।

पटिया स्त्री० (हि) १-पत्थर का लम्बोतरा या चौकोर चौरस टुकड़ा। चौरस शिलाखण्ड। २-खाट या पलंग की पट्टी। पाटी। ३-हेंगा। पाटा। ४-टाट की एक पट्टी। ५-लिखने की तख्ती। ६-सकरा तथा लम्बा खेत।

पटी स्त्री० (स) १-रङ्गशाला का पर्दा। २-वस्त्र। ३-कनात। मोटा कपड़ा। ४-रङ्गीन वस्त्र।

पटीर पुं० (सं) १-एक प्रकार का चन्दन। २-कत्था। ३-मूली। ४-वटवृक्ष। वि० (स) १-सुन्दर। रूपवान ३-ऊँचा। लम्बा।

पटीलना क्रि० (हि) किसी को उल्टी बातें करके अपने अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २-अर्जित करना ३-छलना। ठगना। ४-मारना-पीटना। ५-परास्त करना।

पटु वि० (स) १-चतुर। निपुण। दक्ष। २-चालाक। ३-चरपरा। प्रचंड। उग्र। ५-निष्ठुर। धूर्त। ६-स्वस्थ। ७-क्रियाशील। ८-सुन्दर। मनोहर।

पटुता स्त्री० (स) कुशलता। दक्षता। चतुराई।

पटुत्व पुं० (हि) पटुता।

पटुली स्त्री० (हि) १-झूले पर रखने की काठ की पटरी २-चौकी।

पटुवा पुं० (हि) १-पटसन। (जूट)। २-करमू। पुं० (देश०) तोता। शुक।

पटूका पुं० (हि) दे० 'पटका'।

पटेरा पुं० (हि) दे० 'पटेला'। दे० 'पटैला'।

पटेल पुं० (हि) गांव का मुखिया या नम्बरदार (विशेषतः राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र में)। (हेड-मैन)।

पटेलना क्रि० (हि) दे० 'पटीलना'।

पटेला पुं० (हि) १-ऐसी नाव जिसका बीच का भाग पटा हुआ हो। २-एक प्रकार की घास जिसकी चटाइयां बनाते हैं। पटेरा। ३-सिल। पटिया। ४-कुश्ती का एक पेंच।

[illegible]

की धोती।

पटोल पुं० (सं) १-प्राचीन काल में गुजरात में बनने वाला एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २-परवल की लता।

पटोलक पुं० (सं) घोंघा। सीप।

पट्ट पुं० (स) १-तख्ती। पटरी। २-धातु की पट्टी जिस पर राजाज्ञा या दान आदि

खोदी जाती थी। ३-कलगी। मुकुट। ४-धज्जी। ५-रेशमी। महीन या रंगीन वस्त्र। ६-पगड़ी। साफा। ७-चक्की का पाट। ८-नगर। कस्बा। ९-घाव आदि पर बांधने की पट्टी। १०-भूमि के स्वामी की ओर से आसामी को दिया गया भूमि जोतने आदि का अधिकार-पत्र। पट्टा। (लीज)। ११-चौराहा। १२-राजसिंहासन। १३-पटसन। १४-ढाल। १५-लकड़ी या धातु का टुकड़ा जिस पर नाम आदि लिखे जाते हैं। (बोर्ड)। वि० (हि) मुख्य। प्रधान।

पट्टक १-धातु की चपटी पट्टी जिस पर राजाज्ञा आदि की सनद खोदी जाय। २-घाव आदि पर बांधने की पट्टी। कमरबन्द। ४- तख्ती। ५-चित्रपट।

पट्टकीट पुं० (सं) रेशम का कीड़ा।

पट्ट-कीट-पालन पुं० (सं) रेशम के कीड़ों को पालना। (सेरिकल्चर)।

पट्टदेवी स्त्री० (सं) पटरानी।

पट्टन पु० (सं) नगर। शहर।

पट्टमहिषी स्त्री० (सं) पटरानी।

पट्टराज्ञी स्त्री० (स) पटरानी।

पट्टला स्त्री० (सं) जिला। मण्डल। (डिस्ट्रिक्ट)।

पट्ट-विलेख पु० (सं) वह दस्तावेज या विलेख जिसमें किसी को भूमि-सम्बन्धी दिये अधिकारों की शर्तें आदि दर्ज होती है। (लीज डीड)।

पट्टशाक पु० (सं) पटुवा।

पट्टांशुक पु० (सं) रेशमी कपड़ा।

पट्टा पुं० (सं) किसी अचल सम्पत्ति या भूमि के उपयोग का वह अधिकार-पत्र जो स्वामी (जमींदार) की ओर से आसामी को दिया जाता है। (लीज)। २-चमड़े या कपड़े की पट्टी जो कुत्ते या बिल्ली के गले में बांधी जाती है। ३-पीढ़ी। ४-चपरास। ५-पेटी। कमरबन्द। ६-पीछे या दाहिने बाएँ गिरे और बराबर कटे हुए लम्बे बाल।

पट्टा-इस्तमरारी पुं० (हि) हमेशा के लिये किया गया पट्टा। (टेन्योर इन परपेच्युलिटी)।

पट्टाधारी पु० (सं) वह व्यक्ति जिसके पास किसी अचल संपत्ति या भूमि का अधिकार-पत्र हो। पट्टेदार। (लीज-होल्डर)।

पट्टा-समर्पण-पत्र पुं० (सं) वह दस्तावेज जिसमें पट्टे में लिखित भूमि या संपत्ति को वापस देने की रसीद होती है। (सरेन्डर ऑफ लीज)।

पट्टार्हा स्त्री० (सं) पटरानी।

पट्टिका स्त्री० (सं) १-पटिया। छोटी तख्ती। (प्लेट) २-कपड़े की छोटी पट्टी। ३-रेशम का फीता।

पट्टिका-लोध्र पु० (स) पठानी लोध।

पट्टिकार वि० (सं) जुलाहा। रेशमी वस्त्र बनाने वाला।

पट्टिश पुं० (सं) एक प्रकार का दुधारा शस्त्र जो अत्यन्त पैनी नोक वाला होता है।

पट्टी स्त्री०(हि) १-लिखने की तख्ती। पाटा। पटिया २-सबक। पाठ। ३-उपदेश। शिक्षा। ४-बुरी नीयत से दी जाने वाली सलाह या शिक्षा (न्या०) ५-घाव पर बांधने की कपड़े की धज्जी। ६-धातु कागज या लकड़ी आदि का लम्बा और पतला टुकड़ा। ७-पत्थर का पतला, चिपटा तथा लम्बा टुकड़ा। ८-लम्बी बल्ली जो छत आदि के ठाठ में लगाई जाती है। ९-कपड़े की किनारी या कोर। १०-तिल, दाल आदि को चाशनी में पगाकर बनाई जाने वाली एक मिठाई। ११-वह तख्ता जो नाव के बीचोंबीच होता है। १२-किसी की संपत्ति या उससे होने वाली आय का अंश। १३-पंक्ति। पांत। १४-किसी जमींदारी का वह भाग जो एक पट्टीदार के अधिकार में हो। १५-जमींदार द्वारा अपनी आसामियों पर अतिरिक्त कर जो किसी कार्यविशेष के निमित्त लगाया गया हो।

पट्टीदार पु० (हि) १-वह व्यक्ति जिसका किसी संपत्ति में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २-वह व्यक्ति जिसकी राय की उपेक्षा न की जा सकती हो। बराबर का अधिकारी।

पट्टीदारी स्त्री० (हि) १-किसी वस्तु का अनेक की संपत्ति होना। २-पट्टीदार होने का भाव। ३-कई पट्टेदारों की मिलीजुली संपत्ति। (टेन्योर इन सैवरेली)।

पट्टू पुं० (हि) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

पट्टेदार पुं० (हि) जिसके पास किसी अचल भूमि या संपत्ति का पट्टा या अधिकार-पत्र हो। (लीसी)

पट्टेपछाड़ पुं० (हि) कुश्ती का एक पेंच।

पटैत पुं० (हि) १-मूर्ख। बेवकूफ। २-सफेद कंठे वाला लाल, काला या नीला कबूतर।

पढ्ढमान वि० (हि) पढ़ने योग्य।

पट्ठा पुं० (हि) १-जवान। तरुण। २-वह मनुष्य या पशु आदि का बच्चा जिस पर पूर्ण यौवन आ चुका हो। नवयुवक। ३-कुश्तीबाज। ४-मांस पेशियों को आपस में जोड़ने वाले तन्तु। स्नायु। ५-एक प्रकार का मोटा गोटा।

पट्ठापछाड़ वि० (हि) इतनी बलवती (स्त्री) जो पुरुष को पटक लगा दे। हृष्ट-पुष्ट और बलवती (स्त्री)।

पट्ठी स्त्री० (हि) दे० 'पठिया'।

पठन पुं० (सं) पढ़ने की क्रिया। पढ़ना। (रीडिंग)

पठनशील वि० (सं) जो बहुत पढ़ता हो।

पठनीय वि० (सं) पढ़ने योग्य।

पठनेटा पुं० (हि) पठान का लड़का।

पठवाना क्रि० (हि) दूसरे को भेजने में प्रवृत्त करना

खोदी जाती थी। ३-कलगी। मुकुट। ४-धज्जी। ५-रेशमी। महीन या रंगीन वस्त्र। ६-पगड़ी। साफा। ७-चक्की का पाट। ८-नगर। कस्बा। ९-घाव आदि पर बांधने की पट्टी। १०-भूमि के स्वामी की ओर से आसामी को दिया गया भूमि जोतने आदि का अधिकार-पत्र। पट्टा। (लीज)। ११-चौराहा। १२-राजसिंहासन। १३-पटसन। १४-ढाल। १५-लकड़ी या धातु का टुकड़ा जिस पर नाम आदि लिखे जाते है। (बोर्ड)। वि० (हि) मुख्य। प्रधान।

पट्टक १-धातु की चपटी पट्टी जिस पर राजाज्ञा आदि की सनद खोदी जाय। २-घाव आदि पर बांधने की पट्टी। कमरबन्द। ४-तख्ती। ५-चित्रपट।

पट्टकीट पुं० (सं) रेशम का कीड़ा।

पट्ट-कीट-पालन पुं० (सं) रेशम के कीड़ों को पालना (सेरिकल्चर)।

पट्टदेवी स्त्री० (सं) पटरानी।

पट्टन पु० (सं) नगर। शहर।

पट्टमहिषी स्त्री० (सं) पटरानी।

पट्टराज्ञी स्त्री० (सं) पटरानी।

पट्टला स्त्री० (सं) जिला। मण्डल। (डिस्ट्रिक्ट)।

पट्ट-विलेख पु० (सं) वह दस्तावेज या विलेख जिसमें किसी को भूमि-सम्बन्धी दिये अधिकारों की शर्तें आदि दर्ज होती हैं। (लीज़ डीड)।

पट्टशाक पु० (सं) पटुवा।

पट्टांशुक पु० (सं) रेशमी कपड़ा।

पट्टा पुं० (सं) किसी अचल सम्पत्ति या भूमि के उपयोग का वह अधिकार-पत्र जो स्वामी (जमींदार) की ओर से आसामी को दिया जाता है। (लीज़)। २-चमड़े या कपड़े की पट्टी जो कुत्ते या बिल्ली के गले में बांधी जाती है। ३-पीढ़ी। ४-चपरास। ५-पेटी। कमरबन्द। ६-पीछे या दाहिने बाएँ गिरे और बराबर कटे हुए लम्बे बाल।

पट्टा-इस्तमरारी पुं० (हि) हमेशा के लिये किया गया पट्टा। (टेन्योर इन परपेच्युलिटी)।

पट्टाधारी पु० (सं) वह व्यक्ति जिसके पास किसी अचल संपत्ति या भूमि का अधिकार-पत्र हो। पट्टेदार। (लीज-होल्डर)।

पट्टा-समर्पण-पत्र पुं० (सं) वह दस्तावेज जिसमें पट्टे में लिखित भूमि या संपत्ति को वापस देने की रसीद होती है। (सरेन्डर ऑफ लीज)।

पट्टार्हा स्त्री० (सं) पटरानी।

पट्टिका स्त्री० (सं) १-पटिया। छोटी तख्ती। (प्लेट) २-कपड़े की छोटी पट्टी। ३-रेशम का फीता।

पट्टिका-लोध्र पु० (सं) पठानी लोध्र।

पट्टिकार वि० (सं) जुलाहा। रेशमी वस्त्र बनाने वाला।

पट्टिश पुं० (सं) एक प्रकार का दुधारा शस्त्र जो अत्यन्त पैनी नोक वाला होता है।

पट्टी स्त्री० (हि) १-लिखने की तख्ती। पाटी। पटिया २-सबक। पाठ। ३-उपदेश। शिक्षा। ४-बुरी नीयत से दी जाने वाली सलाह या शिक्षा (व्यं०)। ५-घाव पर बांधने की कपड़े की धज्जी। ६-धातु कागज या लकड़ी आदि का लम्बा और पतला टुकड़ा। ७-पत्थर का पतला, चिपटा तथा लम्बा टुकड़ा। ८-लम्बी बल्ली जो छत आदि के ठाठ में लगाई जाती है। ९-कपड़े की किनारी या कोर। १०-तिल, दाल आदि को चाशनी में पगाकर बनाई जाने वाली एक मिठाई। ११-वह तख्ता जो नाव के बीचोंबीच होता है। १२-किसी की संपत्ति या उससे होने वाली आय का अंश। १३-पंक्ति। पांत। १४-किसी जमींदारी का वह भाग जो एक पट्टीदार के अधिकार में हो। १५-जमींदार द्वारा अपनी आसामियों पर अतिरिक्त कर जो किसी कार्यविशेष के निमित्त लगाया गया हो।

पट्टीदार पु० (हि) १-वह व्यक्ति जिसका किसी संपत्ति में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २-वह व्यक्ति जिसकी राय की उपेक्षा न की जा सकती हो। बराबर का अधिकारी।

पट्टीदारी स्त्री० (हि) १-किसी वस्तु का अनेक की संपत्ति होना। २-पट्टीदार होने का भाव। ३-कई पट्टेदारों की मिलीजुली संपत्ति। (टेन्योर इन सेवरेली)।

पट्टू पुं० (हि) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

पट्टेदार पुं० (हि) जिसके पास किसी अचल भूमि या संपत्ति का पट्टा या अधिकार-पत्र हो। (लीसी)

पट्टेपछाड़ पुं० (हि) कुश्ती का एक पेंच।

पट्टैत पुं० (हि) १-मूर्ख। बेवकूफ। २-सफेद कण्ठे वाला लाल, काला या नीला कबूतर।

पठ्ठमान वि० (हि) पढ़ने योग्य।

पट्ठा पुं० (हि) १-जवान। तरुण। २-वह मनुष्य या पशु आदि का बच्चा जिस पर पूर्ण यौवन आ चुका हो। नवयुवक। ३-कुश्तीबाज। ४-मांस पेशियों को आपस में जोड़ने वाले तन्तु। स्नायु। ५-एक प्रकार का मोटा गोटा।

पट्ठापछाड़ वि० (हि) इतनी बलवती (स्त्री) जो पुरुष को पटक लगा दे। हृष्ट-पुष्ट और बलवती (स्त्री)।

पट्ठी स्त्री० (हि) दे० 'पठिया'।

पठन पुं० (सं) पढ़ने की क्रिया। पढ़ना। (रीडिंग)

पठनशील वि० (सं) जो बहुत पढ़ता हो।

पठनीय वि० (सं) पढ़ने योग्य।

पठनेटा पुं० (हि) पठान का लड़का।

पठवाना क्रि० (हि) दूसरे को भेजने में प्रवृत्त करना

पणि पुं० (स) बाजार। मंडी। हाट।
पणित वि०(हि)१-प्रशंसित। २-खरीदा या बेचाहुआ ३-दांव पर लगा हुआ। पुं० (सं) १-दांव। होड़। जूआ। बाजी।
पणितृ पुं० (सं) सौदागर। व्यवसायी।
पण्य वि० (सं) १-खरीदने या बेचने योग्य। २-प्रशंसा के योग्य। पु० (स) १-सौदा। माल। व्यापार। (कॉमोडिटी)। २-बाजार। हाट। ३-दुकान।
पण्य-चिह्न पु० (स) वह चिह्न जो व्यापारी अपने यहां बनी वस्तु के प्रचार तथा उसके पार्थक्य या विशिष्टता सूचित करने के लिये लगाता है। (मर्केन्डाइज-मार्क्स)।
पण्य-भूमि स्त्री० (सं) माल जमा करने का स्थान। गोदाम।
पण्य-द्रव्य पुं० (सं) बेचने के लिये बनाये गये पदार्थ (मर्केन्डाइज)।
पण्य-पति पुं० (सं) बहुत बड़ा व्यापारी। पूंजीपति
पण्य-पत्तन पुं० (सं) मंडी। बाजार। (मार्केट)।
पण्यवाहन-नौका स्त्री० (सं) माल ले जाने या ढोने वाली नाव। (कार्गो-बोट)।
पण्यविलासिनी स्त्री० (सं) वेश्या।
पण्यवीथी, पण्यवीथिका स्त्री० (सं) बाजार। हाट।
पण्यशाला स्त्री० (सं) बाजार। हाट। दुकान।
पण्यांगना स्त्री० (सं) वेश्या।
पण्याजीवक पुं० (सं) व्यापारी। व्यवसायी।
पतंग पुं०(सं) १-पक्षी। २-सूर्य। ३-शलभ। परवाना। भुनगा। ४-गेंद। कंदुक। ५-नौका। ६-शोला। चिंगारी। ७-शरीर। पुं० (हि) हवा में उड़ने वाला कागज का बना खिलौना जो धागे के सहारे आकाश में उड़ाया जाता है। गुड्डी। कनकौवा।
पतंगछुरी स्त्री० (हि) १-पीठ पीछे बुराई करने वाला। चुगलखोर। पिशुन।
पतंगबाज पुं० (हि) वह जिसे पतंग उड़ाने का शौक या व्यसन हो।
पतंगबाजी स्त्री० (हि) पतंग उड़ाने का हुनर।
पतंगम पुं० (सं) पक्षी। पतंगा। शलभ।
पतंगा पुं० (हि) १-उड़ने वाला कोई कीड़ा-मकोड़ा २-फतिंगा। ३-चिंगारी। अग्निकण। ४-दीये का गुल या फूल।
पतगेन्द्र पुं० (सं) गरुड़।
पतंचिका स्त्री०(स) धनुष की डोरी। कमान की तांत। चिल्ला।
पतु पु० (हि) १-पति। खाविंद। २-स्वामी। मालिक प्रभु। स्त्री० (हि) १-लज्जा। आबरू। २-प्रतिष्ठा। इज्जत। ३-साख। ऐतबार। (क्रेडिट)।
पतई स्त्री० (हि) पत्र। पत्ती।
पतझड़ स्त्री० (हि) १-वह ऋतु जिसमें पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं। शिशिर ऋतु। २-अवनति काल। कंगाली का समय।
पतत् वि० (सं) उड़ने वाला। उतारने वाला। गिरने वाला। पु० (सं) पक्षी।
पततप्रकर्ष पुं० (सं) एक प्रकार का काव्य दोष जिसमें अलंकार का निर्वाह न हो सके।
पतन पुं० (सं) १-गिरना। २-नीचे जाने का भाव या क्रिया। ३-अधोगति। अवनति। ४-मृत्यु। नाश ५-पाप। ६-जातिच्युत। ७-उड़ान। ८-किले आदि शत्रु के सैनिकों के आधीन हो जाना। वि० (सं) गिरने वाला। उड़ने वाला।
पतनशील वि० (सं) जिसका पतन निश्चित हो। गिरने वाला।
पतनारा पुं० (हि) परनाला। मोरी।
पतनीय वि० (सं) जिसका पतन संभव हो। जाति-भ्रष्ट होने वाला। गिरने वाला। पुं० (सं) वह पाप जिसके कारण जातिच्युत होना पड़े।
पतनोन्मुख वि० (सं) १-जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो २-जिसका पतन समीप हो।
पतर वि० (हि) १-पतला। कृश। २-पर्ण। पत्ता। ३-पत्तल।
पतरा पुं० (हि) पतला। झीना। दुर्बल।
पतराई स्त्री० (हि) पतलापन। सूक्ष्मता।
पतरी स्त्री० (हि) पत्तल।
पतरौल पुं० (हि) गश्त लगाने वाला व्यक्ति या सिपाही। (पैट्रोल)।
पतला वि० (हि) १-जो मोटा न हो। २-झीना। हलका। अधिक तरल। अशक्त। हीन। निर्बल।
पतलापन पुं० (हि) पतला होने का भाव।
पतलून पुं० (हि) एक अंग्रेजी ढंग का पहनावा। (पैंटेलून)।
पतवर क्रि० वि० (हि) पंक्तिवार। क्रम से।
पतवार स्त्री० (हि) नाव या पोत के पिछले भाग में लगी हुई एक तिकोनी लकड़ी जिससे नौका इधर-उधर घुमाई जाती है। कर्ण। रूड़र।
पतवारी स्त्री० (हि) १-ईख का खेत। २-पतवार।
पतस्वाहा पुं० (स) अग्नि।
पता पुं० (हि) १-पत्र आदि पर लिखा किसी का नाम और रहने की जगह। (एड्रेस)। २-खोज। अनुसन्धान। ३-जानकारी। ४-गूढ़त्व। रहस्य।
पताई स्त्री० (हि) झड़ी हुई पत्तियों का ढेर।
पताका स्त्री० (सं) १-झंडा। ध्वजा। २-वह डंडा जिसमें झंडे का कपड़ा पहनाया जाता है। ३-कागज या कपड़े का वह छोटा टुकड़ा जो ध्यान आकृष्ट करने के लिये लगाया जाता है। प्रतीक। (फ्लैग)। ४-नाटक का एक विशिष्ट स्थल। ५-

के आस-पास का क्षेत्र जो सेना की देख रेख में रहता है। (पोर्ट एरिया)।
पत्तन-न्यास पुं० (सं) बन्दरगाह की व्यवस्था के लिए बनाया गया कुछ निर्वाचित सदस्यों का निगम (पोर्ट ट्रस्ट)।
पत्तन-न्यासआयुक्त पुं० (सं) पत्तन न्यास का सबसे बड़ा अधिकारी। (पोर्ट ट्रस्ट कमीश्नर)।
पत्तन-न्यासप्रभार पुं० (सं) बन्दरगाह पर माल उतारने या रखने का कर। (पोर्ट ट्रस्ट चार्जेज)।
पत्तन-न्याससंयान पुं० (सं) पत्तन न्यास क्षेत्र में चलने वाली रेलें। (पोर्ट ट्रस्ट रेलवे)।
पत्तन-निरोधा पुं० (सं) बन्दरगाह में संक्रामक रोग ग्रस्त होने पर यात्रा की रुकावट। (पोर्ट क्वारेंटाइन)
पत्तन-प्रशासनाधिकारी पुं० (सं) बन्दरगाह पर प्रशासन करने वाला उच्च पदाधिकारी।(पोर्ट एड-मिनिस्ट्रेटिव ऑफीसर)।
पत्तन मन्त्रणा समिति स्त्री० (सं) पत्तन की व्यवस्था में सलाह देने वाली समिति। (पोर्ट एडवाइजरी कमेटी)।
पत्तर पुं० (हि) १-धातु को पीट कर पतला किया हुआ चिपटा और लम्बोतरा टुकड़ा। २-दे० 'पत्तल'
पत्तल स्त्री० (हि) १-पत्तों को सींक से जोड़ कर बनाया हुआ पात्र जिसमें खाने के लिये वस्तु रखी जाती है। पत्तल पर परोसी हुई खाद्य सामग्री या भोजन।
पत्ता पुं० (हि) १-पर्ण। वृक्षों या पौधों में होने वाले हरे रङ्ग के अवयव। २-कान में पहनने का आभूषण ३-मोटे कागज का खंड। ताश का पत्ता।
पत्ति पुं० (सं) १-पैदल सिपाही। २-पैदल चलने वाला। ३-शूरवीर। स्त्री० (सं) १-सेना का सबसे छोटा दस्ता। २-पाद। चरण।
पत्तिक वि० (सं) पैदल चलने वाला। पुं० (सं) १-सेना का एक बड़ा दस्ता। २-उक्त दस्ते का अधि-कारी।
पत्तिकाय पुं० (सं) पैदल सैनिकों की सेना।
पत्तिपाल पुं० (सं) पांच छः सिपाहियों का नायक।
पत्तिव्यूह पुं० (सं) वह व्यूह जिसमें आगे कवचधारी सिपाही हों और पीछे धनुर्धर।
पत्तिसंहति स्त्री० (सं) पैदल सेना।
पत्ती स्त्री० (हि) १-छोटा पत्ता। २-साझा। हिस्सा। ३-फूल की पंखड़ी। ४-दल। ५-पत्ती के आकार की कोई वस्तु।
पत्तीदार पुं० (हि) भागीदार। साझीदार। हिस्सेदार वि० (हि) जिसमें पत्ती के आकार का टुकड़ा जुड़ा हो।
पत्तूर पुं० (सं) जल-पीपल। पतंग की लकड़ी।
पत्थ पुं० (हि) दे० 'पथ्य'।

पत्थर पुं० (हि) १-पृथ्वी के स्तर में का कठोर खंड शिला खंड। प्रस्तर। २-सड़क के किनारे लगा हुआ वह शिलाखंड जिस पर मील के संख्यासूचक शब्द अंकित होते हैं। (माइल स्टोन)। ३-ओला। ४-पत्थर के समान कठोर। ५-रत्न। पन्ना। हीरा। ६-बिल्कुल नहीं। (तुच्छता सूचित करने वाला शब्द)
पत्थरकला स्त्री०(हि) एक प्रकार की प्राचीन घोड़ेदार बन्दूक।
पत्थरचटा पुं० (हि) १-एक प्रकार की घास। २-पत्थर चाटने वाला सर्प।
पत्थरपानी पुं० (हि) आंधी-पानी।
पत्थरफूल पुं० (हि) छरीला। शैलाख्य।
पत्थरफोड़ पुं० (हि) १-हुदहुद पक्षी। २-एक प्रकार का पौधा जो दीवार फोड़कर निकल आता है।
पत्थरफोड़ा पुं० (हि) संगतराश।
पत्थरबाज पुं० (हि) जो पत्थर फेंक कर किसी को मारता हो। जिसे पत्थर फेंकने का अभ्यास हो।
पत्थरबाजी स्त्री० (हि) पत्थर फेंकने की क्रिया। पत्थर-फिकाई।
पत्थल पुं० (हि) दे० 'पत्थर'।
पत्नी स्त्री० (सं) विधिपूर्वक विवाहित स्त्री। भार्या। वधू। सहधर्मिणी। दारा। पाणिगृहीता।
पत्नीत्व पुं० (सं) पत्नी का भाव या धर्म।
पत्नीव्रत पुं० (सं) अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प।
पत्य पुं० (सं) पति होने का भाव।
पत्याना क्रि० (हि) दे० 'पतियाना'।
पत्यारा पुं० (हि) दे० 'पतियारा'।
पत्यारी स्त्री० (हि) पंक्ति। पांत। कतार।
पत्र पुं० (सं) १-किसी वृक्ष का पत्ता। पर्ण। पल। २-लिखा हुआ कागज। ३-वह ताम्रपट या कागज जिस पर किसी विशेष व्यवहार के प्रमाणस्वरूप कुछ लिखा गया हो। ४-कोई पट्टा या दस्तावेज। ५-चिट्ठी। खत। पुस्तक या लेख का पन्ना। ६-समाचार-पत्र। ७-पर। पक्ष। ८-तेज पत्ता।
पत्रक पुं० (सं) १-पत्ता। २-तेजपात। ३-पत्रावली। ४-वह पत्र जिस पर स्मृति के लिये सूचना आदि कोई बात लिखी हो। (मेमो नोट)।
पत्रकर्तक पुं० (सं) वह यंत्र जिससे कागज काटे जाते हैं। (कटिंग-प्रेस)।
पत्रकार पुं० (सं) १-समाचार-पत्र का संपादक या लेखक। (जर्नेलिस्ट, ऐडीटर)।
पत्रकारिता स्त्री० (सं) पत्रकार का पेशा या व्यवसाय। (जर्नेलिज्म)।
पत्रचलार्य पुं० (सं) छपे हुए कागज या नोटों के रूप में चलने वाली मुद्रा। कागजी मुद्रा। (पेपर करेन्सी)।

के छोटे-छोटे टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं। ३-चकमक पत्थर। ४-उस्तरा आदि तेज करने की सिल्ली। ५-पक्षियों के पेट का वह भाग जहाँ अनाज आदि के कड़े दाने पचते हैं।

पथरीला वि० (हि) पत्थर से युक्त।

पथरौटा पुं० (हि) पत्थर का बना कटोरे जैसा पात्र

पथरौटी स्त्री० (हि) पत्थर की कूंडी।

पथ-शुल्क पुं० (सं) पथकर। (टोल)।

पथ-शुल्क-गृह पुं० (सं) वह स्थान जहां पर पथ-कर दिया जाता है। (टोल-हाउस)।

पथ-शुल्क-द्वार पुं० (सं) वह द्वार जहां पथ-कर देना अनिवार्य होता है। (टोल-गेट)।

पथिक पुं० (सं) राह चलने वाला। मुसाफिर। राहगीर। यात्री।

पथिका स्त्री० (सं) मुनक्का।

पथिकार पुं० (सं) रास्ता बनाने वाला।

पथिकाश्रय पुं० (सं) पथिकों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। सराय।

पथी पुं० (सं) पथिक। यात्री।

पथीय वि० (सं) पथ सम्बन्धी।

पथेरा पुं० (हि) ईंट पाथने वाला कुम्हार।

पथौरा पुं० (हि) वह स्थान जहां उपले पाथे जाते हैं

पथ्य पुं० (सं) १-जल्दी पचने वाला हल्का भोजन जो रोगी को दिया जाता है। २-उपयुक्त आहार। ३-नमक। ४-कल्याण।

पथ्यापथ्य पुं० (सं) रोगी के लिये हितकारी और अहितकारी द्रव्य।

पद पुं० (सं) १-काम। व्यवसाय। २-त्राण। रक्षा। ३-योग्यता के अनुसार किसी कर्मचारी का नियत स्थान। ओहदा। (पोस्ट, रेंक)। ४-पैर। पांव। ५-निशान। ६-वस्तु। ७-शब्द। ८-श्लोकपाद। ९-उपाधि। १०-निर्वाण। मोक्ष। ११-ईश्वर भक्ति सम्बन्धी गीत। १२-विभक्ति। १३-प्रत्यय-युक्त शब्द।

पदकंज पुं० (सं) कमल के समान चरण।

पदक पुं० (सं) १-बालकों को रक्षार्थ पहनाने का एक गहना जिस पर किसी देवता के पद चिह्न अंकित होते हैं। २-पूजन आदि के लिये बनाये गये किसी देवता के पदचिह्न। ३-वेदों का पाठ करने में प्रवीण व्यक्ति। ४-सोने या चांदी का बना गोल टुकड़ा जो उपहार के रूप में किसी विशेष कार्य करने पर प्रमाण रूप में प्रदान किया जाता है। तमगा। (मैडल)।

पदकमल पुं० (सं) चरणकमल।

पदकारणात् (सं) दे० 'पदेन'। (एक्स ऑफिशियो)

पदकारणात् उपपंजीयक पुं० (सं) पदेन उपपंजीयक (एक्स ऑफिशियो सब-रजिस्ट्रार)।

पदक्रम पुं० (सं) चलना। गमन।

पदग पुं० (सं) पैदल सिपाही। प्यादा।

पदचर पुं० (सं) पदग।

पदचारी वि० (सं) पैदल चलने वाला।

पदचिह्न पुं० (सं) पैरों का निशान।

पदच्छेद पुं० (सं) संधि तथा समासयुक्त किसी वाक्य के पदों को व्याकरण के नियमानुसार अलग-अलग करने की क्रिया।

पदच्युत वि० (सं) जिसको अपने पद या दर्जे से हटा दिया गया हो। (डिसमिस्ड)।

पदच्युति स्त्री० (सं) पद या स्थान से हटाने की क्रिया (डिसमिसल)।

पदज पुं० (सं) पैर की उंगलियां। शूद्र। वि० (सं) जो पैरों से उत्पन्न हो।

पदतल पुं० (सं) पैर का तलवा।

पदत्याग पुं० (सं) अपना पद या अधिकार छोड़ना। ओहदे से पृथक होजाना। (एब्डिकेशन)।

पदत्राण पुं० (सं) जूता। खड़ाऊं।

पददलित वि० (सं) पैरों से रौंदा हुआ।

पददारिका स्त्री० (सं) पैर की बिवाई।

पद-धारण-सुरक्षा स्त्री० (सं) किसी पद पर काम करते रहने की सुरक्षा। (सिक्यूरिटी ऑफ टेन्योर)

पदन्यास पुं० (सं) १-पैर रखना। चलना। २-पद रखने का ढंग। ३-गोखरू।

पदपंकज पुं० (सं) पद कमल।

पदपद्म पुं० (सं) चरण कमल।

पदपद्धति स्त्री० (सं) पैर का चिह्न।

पदपाठ पुं० (सं) वेद मंत्रों का वह क्रम जिसमें वह मूल रूप में अलग-अलग रखे गये हैं।

पदपूरण पुं० (सं) किसी पद को पूरा करना।

पदबाधा स्त्री० (सं) गेंद को चट्टियों की ओर टांग लगा कर बढ़ने से रोक देना (क्रिकेट में किसी बल्लेबाज द्वारा)। (लेग बिफोर विकेट)।

पदभ्रंश पुं० (सं) पदच्युति।

पदम पुं० (सं) एक पेड़। दे० 'पद्म'।

पदमकाठ पुं० (सं) पद्मकाष्ठ।

पदमाकर पुं० (सं) 'पद्माकर'।

पदमुक्त वि० (सं) अपना पद छोड़ कर दूसरी जगह जाने वाला। (आउट गोइंग)।

पदमूल पुं० (सं) १-तलवा। २-शरण। ३-आश्रय।

पदमैत्री स्त्री० (हि) किसी पद में एक ही अक्षर सुन्दरता के लिये बारंबार आना। अनुप्रास। वर्णमैत्री।

पदमोचन पुं० (सं) किसी पद या कर्तव्य से छुटकारा पा जाना। (रिलीफ)।

पदयोजना पुं० (सं) पदों के लिये पदों को जोड़ना।

पदरिपु पुं० (सं) कंटक। कांटा।

समान पतला पत्तर। २-चमड़ा या कागज जिस पर सुनहला लेप किया गया हो। ३-एक प्रकार का भोज्य पदार्थ। स्त्री० (देश) १-बारूद की आध सेर की तौल। २-छप्पर बनाने के काम आने वाली एक लम्बी घास।

पन्नीसाज पुं० (हि) पन्नी बनाने का काम करने वाला।

पन्नीसाजी स्त्री० (हि) पन्नी बनाने का काम।

पन्य वि० (सं) प्रशंसा करने योग्य।

पपड़ा पुं० (हि) १-लकड़ी का करकर या सूखा हुआ छिलका। चिप्पड़। २-रोटी का छिलका।

पपड़िया वि० (हि) पपड़ीदार। पपड़ी वाला।

पपड़िया कत्था पुं० (हि) सफेद कत्था जो खाने में स्वाद का होता है।

पपड़ियाना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु को ऊपरी परत का सूख कर सिकुड़ जाना। २-बिलकुल सूख जाना

पपड़ी स्त्री०(हि) १-सूखकर जगह-जगह चिटकी हुई किसी वस्तु की पतली परत। २-मवाद सूख जाने पर घाव के ऊपर जमी हुई परत। खुरंड। ३-छोटा पापड़। ४-सोहन पपड़ी नामक मिठाई।

पपड़ीला वि० (हि) जिसमें पपड़ी हो। पपड़ीदार।

पपनी स्त्री० (देश०) पलक के ऊपर के बाल। बिरौनी

पपहा पुं० (देश०) १-धान की फसल को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा। २-जौ, गेहूँ आदि का घुन।

पपि पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।

पपिहा पुं० (हि) दे० 'पपीहा'।

पपीता पुं० (हि) एक प्रकार का पौधा जिसके पत्ते एरंड के समान होते हैं और इसके फल खाने में स्वादिष्ट होते हैं।

पपीलि स्त्री० (हि). च्यूंटी। पिपीलिका।

पपीहरा पुं० (हि) दे० 'पपीहा'।

पपीहा पुं० (देश) १-एक प्रकार का पक्षी जो वर्षा और बसंत ऋतु में आम के पेड़ पर बैठ कर सुरीली आवाज में बोलता है। चातक। मेघ जीवन। सारंग। तोकक। २-सितार के छः तारों में से एक जो लोहे का होता है। ३-दे० 'पपैया'।

पपैया पुं० (हि) १-आम के नये पौधे गुठली को घिस कर बनाई हुई सीटी। २-सीटी। ३-आम का नया पौधा।

पपोटा पुं० (हि) १-आँख के ऊपर का चमड़े का पर्दा २-आँख के ऊपर की पलक। दृगंचल।

पपोरना क्रि० (हि) १-बिना दांत का मुंह चलाना। २-बाहों को ऐंठ कर उनकी पुष्टता को देखना।

पब्रन क्रि० (हि) पाना।

पब्लिक स्त्री० (अ) सर्वसाधारण। आम जनता। वि० सार्वजनिक।

पबारना क्रि० (देश०) फेंकना।

पवि पुं० (सं) दे० 'पवि'।

पब्बय पुं० (हि) १-पहाड़। पत्थर। पुं० (देश०) एक चिड़िया का नाम।

पब्बि पुं० (हि) दे० 'पवि'।

पमाना क्रि० (?) डींग हांकना।

पमार पुं० (हि) १-अग्नि कुलोत्पन्न क्षत्रियों की एक शाखा। प्रमार। पवार। २-चकवंड। चकौंड़ा।

पयःपान पुं० (सं) दुग्धपान। दूध पानी।

पयःपालिनी स्त्री० (सं) रस। शरीर।

पय पुं० (सं) १-दूध। २-जल। पानी। ३-अन्न।

पयद पुं० (हि) दे० 'पयोद'।

पयधि पुं० (हि) दे० 'पयोधि'।

पयोनिधि पुं० (हि) दे० 'पयोनिधि'।

पयस्य वि० (सं) १-दूध वाला या दूध का बना हुआ २-पनीला। पुं० (सं) १-दूध से बनने वाली वस्तु २-बिल्ला।

पयस्विनी स्त्री० (सं) १-दूध देने वाली गाय। २-बकरी। ३-नदी।

पयहारी पुं० (हि) वह साधु या तपस्वी जो केवल दूध के सहारे रहता हो।

पयादा वि० (हि) पैदल। प्यादा। पुं० दे० 'प्यादा'।

पयान पुं०(हि) गमन। यात्रा। रवानगी।

पयाम पुं० (फा) संदेश। पैगाम।

पयार पुं० (हि) दे० 'पयाल'।

पयाल पुं० (हि) धान आदि के दाने झड़े हुए सूखे डंठल। पुराल।

पयोघन पुं० (सं) ओला।

पयोज पुं० (सं) कमल।

पयोजन्मा पुं० (सं) १-बादल। मेघ। २-मोथा।

पयोद पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-मोथी। मस्तक

पयोदन पुं० (हि) दूधभात।

पयोधर पुं० (सं) १-स्तन। २-बादल। ३-पर्वत। पहाड़। ४-नारियल। ५-कसेरू। ६-तालाब। ७-कोई दुग्ध वृक्ष। ८-दोहा छन्द का ग्यारहवां भेद। ९-समुद्र। १०-गाय का अयन। ११-मोथा।

पयोधारा स्त्री० (सं) जल की धारा।

पयोधि पुं० (सं) समुद्र।

पयोधिक पुं० (सं) समुद्रफेन।

पयोनिधि स्त्री० (सं) समुद्र।

पयोमुक पुं० (सं) बादल। मेघ। मोथा।

पयोमुख वि (सं) दुधमुहां बच्चा। दूधपीता।

पयोमुच पुं० (सं) बादल। मोथा।

परंच अव्य० (सं) १-और भी। २-तो भी। परन्तु। लेकिन।

परंजन पुं० (सं) १-तेल पेरने का कोल्हू। २-फेन। ३-इन्द्र की तलवार।

परंतप पुं० (सं) १-शत्रु को जीतने वाला। २-अर्जुन।
परंतप वि० (सं) १-शत्रु या वैरियों को दुःख देने वाला। २-जितेन्द्रिय।
परंतु अव्य० (सं) किसी वाक्य के साथ उससे कुछ अन्यथा स्थिति सूचित करने वाला एक शब्द। पर तो भी। किन्तु। लेकिन।
परंतुक पुं० (हि) किसी अधिनियम, धारा आदि के साथ लगी कोई शर्त या उसमें कोई पर्रा कठिनाई से निकलने का रास्ता। (प्रॉविज़ो)।
परंद पुं० (फा) दे० 'परिंदा'।
परंदा पुं० (फा) दे० 'परिंदा'।
परंपद पुं० (सं) मोक्ष। वैकुण्ठ।
परंपरया अव्य० (सं) परंपरा के अनुसार।
परंपरा स्त्री० (सं) १-अविच्छिन्न क्रम। अनुक्रम। न टूटने वाला सिलसिला। २-संतति। औलाद। ३-वह विचार, विश्वास या रीति जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप में चली आ रही हो। (ट्रेडीशन) ४-किसी कार्य या पद आदि का बहुत दिनों से चला आया हुआ क्रम।
परंपराक पुं० (सं) यज्ञ के लिये पशुओं का वध।
परंपरागत वि० (सं) जो सदा से होता आया हो। क्रमागत।
परंपरित वि० (सं) परंपरा पर अवलंबित।
परंपरितरूपक पुं० (सं) एक प्रकार का रूपक जिसमें एक का आरोप किसी दूसरे के आरोप का कारण होता है।
परंपरीण वि० (सं) १-पैतृक। २-खानदानी।
पर वि०(सं) १-[illegible]

[illegible]

[illegible] ...थ।
[प]रई स्त्री० (हि) दीये के आकार का मिट्टी का बर्तन।
[प]रक प्रत्य० (सं) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर 'पीछे या बाद में लगा हुआ' का अर्थ सूचित करता है।
[प]रकटा वि० (हि) जिसके पर कटे हुए हों।
[प]रकना क्रि०(हि) १-हिलना। मिलना। २-अभ्यास पड़ना। चसका लगना।

परकसना क्रि० (हि) १-प्रकाशित होना। २-प्रकट होना।
परकाज पुं० (हि) दूसरे का कार्य।
परकाजी वि०(हि) परोपकारी। दूसरे का कार्य साधने वाला।
परकार पुं० (फा) वृत्त या गोलाई बनाने नापने आदि का दो भुजाओं का एक औज़ार। (डिवाइडर्स)
परकाल पुं० (हि) दे० 'परकार'।
परकाला पुं० (हि) १-सीढ़ी। जीना। २-देहली। चौखट। ३-खण्ड। टुकड़ा। ४-अग्निकण। चिनगारी।
परकास पुं० (हि) दे० 'प्रकाश'।
परकासना क्रि० (हि) १-प्रकाशित करना। २-प्रकट करना।
परकिति स्त्री० (हि) दे० 'प्रकृति'।
परकीय वि० (सं) १-पराया। दूसरे का। २-अपरिचित।
परकीया स्त्री० (सं) १-अपने पति को छोड़ कर पर-पुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री। २-नायिका के दो भेदों में से एक।
परकीरति स्त्री० (हि) दे० 'प्रकृति'।
परकृति स्त्री० (सं) १-दूसरे का किया हुआ काम या कृति। २-दूसरे की कृति का वर्णन।
परक्रामण पुं० (सं) पूरे अधिकार से मुक्त होकर दूसरे को हस्तांतरित करने की क्रिया। (नेगोशियेशन)।
परक्राम्य वि० (सं) जिसे अधिकारी समेत हस्तांतरित [illegible]

[illegible] ...माशिका'। (टिप-

[illegible] ...ीक्षा करना। २-प्रतीक्षा करना।
परखवाना क्रि० (हि) दे० 'परखाना'।
परखैया पुं० (हि) परखने वाला। जांचने वाला।
परखाई स्त्री० (हि) परखने का काम या मजदूरी।
परखाना क्रि० (हि) परखने का काम दूसरे से कराना। जंचवाना।
परगी स्त्री० (हि) लोहे का पतला छोटा तथा सन्दूकनुमा उपकरण जो बन्द घेरे में से गेहूं चावल आदि

परनकुटी स्त्री० (हि) झोंपड़ी।
परनगृह पुं०(हि) परनकुटी।
परनना क्रि० (हि) विवाह करना।
परनपुरी स्त्री० (हि) पत्तों का बना हुआ दोना।
परना क्रि० (हि) दे० 'पड़ना'। पुं० (देश०) तौलिया गमछा। (पंजाबी)।
परनाना पुं० (हि) नाना का पिता।
परनानी पुं० (हि) नाना की माता।
परनाम पुं० (हि) दे० 'प्रणाम'।
परनाला पुं० (हि) पनाला। नाबदानी। मोरी।
परनाली स्त्री० (हि) १-छोटा पनाला। २-अच्छे घोड़ों की पीठ का पुट्ठों और कंधों की अपेक्षा नीचापन जो उसकी तेजी प्रकट करता है।
परनि स्त्री० (हि) पड़ी हुई बान। टेव। आदत।
परनी स्त्री० (हि) दे० 'पत्नी'।
परनौत स्त्री० (हि) प्रणाम। नमस्कार।
परपंच पुं० (हि) दे० 'प्रपंच'।
परपंचक वि० (हि) १-बखेड़िया। फसादी। २-धूर्त
परपंची वि० (हि) दे० 'परपंचक'।
परपक्ष पुं० (सं) शत्रु का पक्ष या दल।
परपक्षग्राही वि० (हि) अपने दल या उसके सिद्धान्तों को छोड़ कर दूसरे दल या सिद्धान्त ग्रहण कर लेने वाला। (टर्नकोट)।
परपट पुं० (हि) समतल भूमि। चौरस मैदान।
परपटी स्त्री० (हि) दे० 'पर्पटी'।
परपद पुं० (सं) दे० 'परमपद'।
परपरा वि० (हि) पर-पर शब्द करके टूटने वाला।
परपराना क्रि० (देश०) मिर्च आदि का शरीर या जीभ को तीखा मालूम पड़ना। तीक्ष्ण लगना।
परपराहट पुं० (हि) परपराने का भाव।
परपाजा पुं० (हि) दादा का पिता। प्रपितामह।
परपार पुं० (सं) दूसरी ओर का तट।
परपिंड पुं० (सं) दूसरे का दिया हुआ भोजन।
परपीड़क पुं० (सं) १-पीड़ा या दुःख समझने वाला २-दूसरे को कष्ट या दुःख देने वाला।
परपुरंजय पुं० (सं) शूर। विजयी।
परपुरुष पुं० (सं) १-अपरिचित। अजनबी। गैर। २-परब्रह्म। विष्णु। ३-पति के अतिरिक्त दूसरा पुरुष।
परपुष्ट पुं० (सं) कोयल। कोकिल। वि० (सं) किसी दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ।
परपुष्टा स्त्री० (सं) १-कोयल। २-वेश्या। रण्डी।
परपूठा वि० (हि) पक्का।
परपूर्वा स्त्री० (सं) वह स्त्री जो अपने पहले पति को छोड़ कर दूसरा पति करे।
परपैठ स्त्री० (हि) हुण्डी की तीसरी नकल या प्रतिलिपि।
परपोत पुं० (हि) पोते का लड़का। पुत्र के पुत्र का पुत्र
परपौत्र पुं० (सं) पोते के बेटे का बेटा। प्रपौत्र का पुत्र।
परप्रेष्य पुं० (सं) नौकर। चाकर।
परफुल्ल वि० (हि) दे० 'प्रफुल्ल'।
परबंध पुं० (हि) दे० 'प्रबन्ध'।
परब पुं० (हि) दे० 'पर्व'। स्त्री० (हि) किसी रत्न आदि का छोटा टुकड़ा।
परबत पुं० (हि) दे० 'पर्वत'।
परबत्ता पुं० (हि) पहाड़ी सुग्गा या तोता।
परबल वि० (हि) दे० 'प्रबल'।
परबस वि० (हि) परतन्त्र। पराधीन।
परबसताई स्त्री० (हि) पराधीनता। परतन्त्रता।
परबाल पुं० (हि) १-आँख की बिरौनी। कष्ट देने वाला बाल। २-दे० 'प्रवाल'।
परबी स्त्री० (हि) पर्व का दिन। पुण्य का दिन।
परबीन वि० (हि) दे० 'प्रवीण'।
परबेस पुं० (हि) दे० 'प्रवेश'।
परबोध पुं० (हि) दे० 'प्रबोध'।
परबोधना क्रि० (हि) १-जगाना। २-ज्ञानोपदेश करना। ३-दिलासा देना।
परब्रह्म पुं० (सं) निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म जो जगत से परे है।
परभव पुं० (सं) जन्मान्तर। दूसरा जन्म।
परभा स्त्री० (हि) दे० 'प्रभा'।
परभाई पुं० (हि) दे० 'प्रभाव'।
परभाग पुं० (सं) १-दूसरे का भाग। २-पश्चिम भाग। ३-दूसरे का भाग या हिस्सा। ४-सर्वोत्तमता। ५-सौभाग्य।
परभाग्योपजीवी वि० (सं) दूसरे की कमाई पर जीने वाला।
परभात पुं० (हि) दे० 'प्रभात'।
परभाती स्त्री० (हि) दे० 'प्रभाती'।
परभाव पुं० (हि) दे० 'प्रभाव'।
परभुक्त वि० (सं) अन्य द्वारा उपयुक्त या व्यवहृत किया हुआ।
परभुक्ता स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके साथ पहले कोई दूसरा समागम कर चुका हो।
परभृत् पुं० (सं) काक। कौवा।
परभृता स्त्री० (सं) कोयल। कोकिल। वि० (सं) दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ।
परम वि० (सं) १-जिससे आगे या अधिक और कुछ न हो। (एब्सोल्यूट)। २-उत्कृष्ट। सर्वश्रेष्ठ। ३-मुख्य। प्रधान। ४-आद्य। आदिम।
परम-अधिकार स्त्री० (सं) विशिष्ट अधिकार। (एब्सोल्यूट राइट)।
परम-अधिपुरुष पुं० (सं) १-किसी विश्वविद्यालय

के सम्बन्ध के लिये बोली जाने वाली उपाधि। २-किसी मन्दिर आदि के प्रधान को सम्मानित करने की उपाधि। (लार्ड-रेक्टर)।

परम-आज्ञा स्त्री० (सं) वह आज्ञा जो अंतिम हो और उसमें कोई परिवर्तन न हो सकता हो। (एब्सोल्यूट ऑर्डर)।

परम-एकाधिकार पुं० (सं) किसी व्यवसाय, कार्य या क्रय विक्रय का अकेला या स्वतंत्र अधिकार। (एब्सोल्यूट मोनोपोली)।

परमक वि० (सं) सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

परमगति स्त्री० (सं) उत्तम गति। मोक्ष। मुक्ति।

परमजा स्त्री० (सं) प्रकृति।

परमज्या पुं० (सं) इन्द्र।

परमट पुं० (देश०) संगीत में एक ताल। पुं० (हि) किसी विशेष वस्तु या कार्य प्राप्त करने के लिये वाला आज्ञापत्र। (परमिट)।

परमटा पुं० (हि) दे० 'परमैला'।

परमता स्त्री० (सं) १-सर्वोच्चता। २-सर्वोच्च लक्ष्य।

परमतत्व पुं० (हि) १-मूल तत्व जिससे सारे विश्व की सृष्टि का विकास हुआ। २-ब्रह्म। ३-ईश्वर।

परमधाम पुं० (हि) बैकुण्ठ। स्वर्ग।

परमपद पुं० (सं) सर्वोत्तम पद। मुक्ति। मोक्ष।

परमपिता पुं० (सं) परमात्मा।

परमपुरुष पुं० (सं) परमात्मा। विष्णु।

परमपूतिक पुं० (हि) अफीम।

परमप्रख्य वि० (सं) प्रसिद्ध। प्रख्यात।

परम-प्रधान न्यायाधीश पुं० (सं) संघ न्यायालय के प्रधान विचारपति की उपाधि। (चाइं चीफ-जिस्टस)

परमब्रह्म पुं०(सं) ईश्वर। परब्रह्म।

परममहत्तक पुं० (सं) १-महामहाधिराज। एक कुछ राजाओं की उपाधि। २-किसी महोच्च व्यक्ति या रक्षक के सम्मान में बोली जाने वाली एक उपाधि (लार्ड-प्रोटेक्टर)।

परममहारिका स्त्री० (हि) पटरानियों की एक सम्मान-सूचक प्राचीन उपाधि।

परममहत् वि० (सं) सबसे बड़ा और व्यापक।

परम-माननीय वि० (सं) परम सम्माननीय। अत्यधिक आदर और सम्मान के योग्य। (ऑनरेबल मोस्ट)।

परमरस पुं० (सं) पानी मिला हुआ मट्ठा।

परमल पुं० (हि) ज्वार या गेहूँ का भुना हुआ दाना।

परम-स्वत्व-अधिकार पुं० (सं) किसी भूमि या मकान में कब्जा रहने का कानूनी अधिकार। (एब्सोल्यूट आकुपेन्सी राइट)।

परम-स्थान भाटकी स्त्री० (सं) अर्थात आभोग भाटकी। बहुत दिनों किरायेदार रहने के कारण प्राप्त किरायेदार बने रहने का अधिकार। (एब्सोल्यूट आकुपेंसी टेनेन्सी)।

परम विवेक पुं०(सं) किसी विचाराधीन विवाद या किसी अन्य बात का फैसला करने का अधिकार। (एब्सोल्यूट डिस्क्रीशन)।

परमवीरचक्र पुं० (सं) भारतीय गणतन्त्र में युद्ध में असाधारण वीरता प्रदर्शित करने पर भारत सेना के किसी वीर को दिया जाने वाला प्रथम श्रेणी का उपहार या उपाधि।

परमश्रेष्ठ वि० (सं) राजमन्त्रियों तथा सम्मानित राजदूतों के सम्मान में बोला जाने वाला शब्द। (हिज़ एक्सीलेंसी)।

परमस्वामी पुं० (सं) वह जिसका कोई और दूसरा स्वामी न हो। (एब्सोल्यूट ओनर)।

परमस्वामित्व पुं० (सं) केवल स्वतः स्वामी होने का अधिकार। (एब्सोल्यूट ओनरशिप)।

परमसत्ता स्त्री० (सं) वह सत्ता या शक्ति जो सबसे बढ़कर हो तथा उसके ऊपर कोई अन्य सत्ता न हो (एब्सोल्यूट-पावर)।

परमसत्ताधारी पुं० (सं) वह जिसे सर्वोच्च अधिकार प्राप्त हो। (सॉवरेन)।

परमहंस पुं० (सं) वह संन्यासी जो ज्ञान की चरम अवस्था को प्राप्त कर चुका हो। [illegible]।

परमांगना स्त्री० (सं) अच्छी स्त्री।

परमा स्त्री० (सं) शोभा। छवि। सुन्दरता। पुं० (हि) प्रमेह रोग।

परमाटा पुं० (देश०) संगीत में एक ताल। पुं० (हि) दे० 'परमटा'।

परमाक्षर पुं० (सं) ओंकार।

परमाणु पुं० (सं) १-पृथ्वी, जल, वायु आदि पंच भूतों का वह छोटे से छोटा भाग जिसका और विभाग नहीं हो सकता। अत्यन्त सूक्ष्म अणु। २-किसी तत्व का वह छोटे से छोटा भाग जिसके विभाग न हो सकते हों। (एटम)।

परमाणु-बम पुं० (हि) यूरेनियम या प्लूटोनियम से बना महाविनाशकारी विस्फोटक जिसके फटने पर कई मीलों के घेरे में कुछ नहीं बचता। इसका आविष्कार श्री आइंस्टीन ने द्वितीय महायुद्ध में किया और इसका प्रयोग पहले पहल अमरीका ने जापान के हिरोशिमा नामक स्थान पर किया। (एटम-बोम्ब)।

परमाणुवाद पुं० (सं) १-वह वैज्ञानिक सिद्धान्त कि संसार के सब पदार्थ तथा तत्व परमाणुओं के संयुक्त होने से बने हैं और परमाणुओं से ही जगत की सृष्टि हुई। २-परमाणु [illegible] शक्ति उत्पन्न करने का [illegible]।

परमाणुवादी पुं० (सं) [illegible] उत्पत्ति मानने वाला। [illegible] शक्ति के [illegible]

में विश्वास करने वाला। (एटोमिस्ट)।
परमात्मा पुं०(सं) ईश्वर। परब्रह्म। परमेश्वर।
परमादेश पुं० (सं) वह आदेश या आज्ञा जो सर्वोपरि हो तथा जिसकी कोई काट या परिवर्तन न हो सकता हो। (एब्सोल्यूट ऑर्डर)।
परमाद्वैत पुं० (सं) १-परमेश्वर या परब्रह्म। २-जीव और ब्रह्म में अभेद की कल्पना करने वाला वेदान्त का एक सिद्धान्त।
परमानंद पुं० (सं) १-बहुत बड़ा सुख। २-ब्रह्म के अनुभव का सुख। ३-ब्रह्मानन्द।
परमान पुं० (हि) १-प्रमाण। सबूत। २-सत्य या यथार्थ बात। ३-सीमा। अवधि। हद।
परमानना क्रि० (हि) १-प्रमाण मानना। २-स्वीकारना। सकारना।
परमायु पुं० (सं) मनुष्य के जन्मकाल की सीमा जो सौ वर्ष तक की मानी गई है।
परमायुप पुं० (सं) विजयसाल का पेड़।
परमार पुं० (हि) राजपूतों की जाति की एक प्रधान शाखा। पँवार।
परमारथ पुं० (हि) दे० 'परमार्थ'।
परमार्थ पुं० (सं) १-सर्वोत्कृष्ट सत्य। सत्य आत्मज्ञान। २-जीव और ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान। ३-उत्तम भाव। ४-उत्तम प्रकार की संपत्ति। ५-परोपकार।
परमार्थता स्त्री० (सं) सत्यभाव। यथार्थता।
परमार्थवादी पुं० (सं) ज्ञानी। वेदांती। तत्वज्ञ।
परमार्थविद् वि (सं) परमार्थवेत्ता।
परमार्थी वि० (हि) १-तत्व जिज्ञासु। यथार्थ तत्व को खोजने वाला। २-मोक्ष चाहने वाला। ३-परोपकारी।
परमावश्यक-सेवाएँ स्त्री०(हि) सर्वसाधारण को पानी, बिजली, सफाई आदि की व्यवस्था करने का कार्य या सेवाएँ। (एसेंशियल सर्विसेज)।
परमाह पुं०(सं) शुभ दिन। अच्छा दिवस।
परमिट पुं० (अ) कोई विशेष वस्तु या कार्य प्राप्त करने के लिये मिलने वाला आज्ञापत्र।
परमिति स्त्री०(हि) चरम सीमा। अन्तिम मर्यादा या हद।
परमुख वि० (हि) १-विमुख। पीछे फिरा हुआ। २-प्रतिकूल। आचरण करने वाला।
परमृत्यु पुं० (सं) काक। कौवा।
परमेश पुं० (सं) १-संसार का परिचालक सगुण ब्रह्म २-विष्णु। शिव।
परमेश्वर पुं० (सं) दे० 'परमेश'।
परमेश्वरी स्त्री० (सं) दुर्गा या देवी का नाम।
परमेष्ट वि० (सं) जो परम इष्ट या प्रिय हो।
परमेष्ठ पुं० (सं) चतुर्मुख ब्रह्मा। प्रजापति।
परमेष्ठिनी स्त्री० (सं) १-देवी। श्री। वाग्देवी। २-ब्राह्मी जड़ी।
परमेष्ठी पुं० (सं) १-ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २-विष्णु। शिव। ३-गरुड़।
परमेसर पुं० (हि) परमेश्वर।
परमेसुर पुं० (हि) परमेश्वर।
परमोद पुं० (हि) दे० 'प्रमोद'।
परमोदना क्रि० (हि) दे० 'परबोधना'।
परयंक पुं० (हि) दे० 'पर्यंक'।
परराज्य-निष्कासन पुं० (हि) किसी विदेशी को अपने देश से निकालना या जिस देश का वह निवासी हो उसे सौंपना। (एक्सट्राडीशन)।
परराज्य-निष्कासन-अधिकारी पुं० (सं) किसी राज्य का वह अधिकारी जो परराज्य निष्कासन का प्रत्यर्पण कार्य करता हो। (एक्सट्राडीशन आफीसर)
परराष्ट्र पुं० (सं) अपने देश से भिन्न देश या राष्ट्र (फॉरेन् नेशन)।
परराष्ट्र-मंत्री पुं० (सं) राजनैतिक क्षेत्र में अन्य बाहरी राष्ट्रों या देशों से सम्बन्ध रखने वाला मन्त्री विदेश मन्त्री। (फॉरेन्-मिनिस्टर)।
परराष्ट्र-विभाग पुं० (हि) वह राजकीय विभाग जो दूसरे देशों या राष्ट्रों से राजनैतिक सम्बन्ध रखता है। विदेश-विभाग। (एक्सटर्नल अफेयर्स डिपार्टमेंट)।
परराष्ट्रिय वि०(सं)विदेशी। अपने राष्ट्र से भिन्न राष्ट्र से सम्बन्धित। (फॉरेन)।
परलउ पुं० (हि) दे० 'प्रलय'।
परलय स्त्री० (हि) दे० 'प्रलय'।
परला वि० (हि) उस ओर का। दूसरी तरफ का।
परलै स्त्री० (हि) दे० 'प्रलय'।
परलोक पुं० (सं) दूसरा लोक। वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है।
परलोकगत वि०(सं) मृत। मरा हुआ।
परलोकगमन पुं० (सं) मृत्यु।
परलोकगामी वि० (सं) मृत। मरा हुआ।
परलोकप्राप्ति पुं० (सं) मरण। मृत्यु।
परवत् वि० (सं) परवश। पराधीन।
परवर पुं० (हि) १-परवल। २-दे० 'प्रवर'। पुं०(?) आँख का एक रोग।
परवरदिगार पुं० (फा) पालन करने वाला। ईश्वर
परवरिश स्त्री० (फा) पालन-पोषण।
परवल पुं० (हि) १-एक प्रकार की बेल जिसके फलों की तरकारी बनाई जाती है। २-चिचड़ा।
परवश वि० (सं) जो दूसरे के वश में हो। पराधीन। पराश्रित।
परवश्य वि० (सं) दे० 'परवश'।
परवशता स्त्री० (सं) पराधीनता।

परवस्ती स्त्री० (हि) पालन-पोषण। परवरिश।

परवा पु० (हि) मिट्टी का बना कटोरे की आकृति का बरतन। कोसा। स्त्री० (हि) पड़वा पक्ष की पहली तिथि। स्त्री० (फा) १-चिन्ता। खटका। आशंका। २-भरोसा। आसरा। स्त्री० (देश०) एक प्रकार की घास।

परवाई स्त्री० (हि) दे० 'परवाह'।

परवाज स्त्री० (फा) उड़ान।

परवाद पुं० (सं) १-अपवाद। किंवदंती। २-आपत्ति। वाद-विवाद।

परवादी पुं० (सं) वाद विवाद करने वाला। मुद्दई।

परवान पु०(हि) १-प्रमाण। सबूत। २-सत्य या यथार्थ बात। ३-हद। सीमा।

परवानगी स्त्री० (फा) आज्ञा। अनुमति।

परवानना क्रि० (हि) दे० 'परमानना'। ठीक समझना

परवाना पुं० (फा) १-आज्ञा पत्र। २-पतंगा। ३-चूना आदि नापने का एक बड़ा माप या पात्र।

परवाना-गिरफ्तारी पु० (फा) बन्दी बनाने का सरकारी आज्ञापत्र।

परवाना-तलाशी पुं० (फा) अच्छी तरह तलाशी लेने का आज्ञापत्र।

परवाना नवीस पुं० (फा) परवाना लिखने वाला कर्मचारी। वह लिपिक जो परवाना लिखता हो।

परवाना-राहदारी पुं० (फा) दूसरे देश जाने का सरकारी स्वीकृति पत्र। (पासपोर्ट)।

परवाया पु० (हि) चारपाई के पायों के नीचे रखने वाली वस्तु।

परवाल पुं० (हि) दे० 'प्रवाल'।

परवाह पुं० (हि) दे० 'परवा'।

परवी स्त्री० (हि) दे० 'पर्वी'।

परवीन वि० (हि) दे० 'प्रवीण'।

परवेस पुं० (हि) चन्द्रमा के चारों ओर हलकी बदली के बीच दिखाई देने वाला घेरा। मंडल। चांद की अथाई का कुण्डल।

परवेश पुं० (हि) दे० 'प्रवेश'।

परश पुं० (सं) स्पर्शमणि। पारस पत्थर। पुं० (हि) छूना। स्पर्श।

परशु पुं० (सं) एक प्रकार का अस्त्र जिसके एक डंडे के सिरे पर अर्धचन्द्राकार फल लगा होता है। फरसा।

परशुधर पुं० (सं) परशु धारण करने वाला। परशुराम।

परशु-पलाश पुं० (सं) फरसे का फल।

परशु-मुद्रा स्त्री० (हि) उंगलियों की नृत्य में प्रयोग की जाने वाली एक मुद्रा।

परशुराम पुं० (सं) जमदग्नि ऋषि के एक पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया। यह ईश्वर के छठे अवतार माने जाते हैं।

परशुवन पुं० (सं) एक नरक जिसमें फरसे के फल जैसे पत्ते वाले पेड़ होते हैं।

परसग पुं० (सं) दे० 'प्रसंग'।

परसगत वि० (सं) १-दूसरे के साथ रहने वाला। २-दूसरे में लड़ने वाला।

परसत्तक पुं० (सं) जीव। आत्मा। रूह।

परसमा स्त्री० (हि) दे० 'प्रशंसा'।

परस पु० (हि) १-छूना। स्पर्श। २-पारस पत्थर। स्पर्शमणि।

परसन पु० (हि) छूना। छूने का भाव। वि० (हि) प्रसन्न। खुश। आनन्दित।

परसना क्रि० (हि) १-छूना। स्पर्श करना। २-छुवाना। ३-किसी के सामने भोज्य पदार्थ रखना। परोसना।

परसन्न वि० (हि) दे० 'प्रसन्न'।

परस-पखान पुं० (हि) पारस पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है।

परसा पु० (हि) १-फरसा। परशु। कुठार। २-उतना पात्र में रखा हुआ भोजन जितना एक मनुष्य के खाने पर पर्याप्त हो।

परसाद पु० (हि) दे० 'प्रसाद'।

परसादी क्रि० (हि) दे० 'प्रसाद'।

परसाना क्रि० (हि) १-स्पर्श करना। २-भोजन सामने रखना।

परसाल अव्य० (हि) १-गत वर्ष। पिछले साल। २-आगामी वर्ष। अगले साल।

परसिद्ध वि० (हि) दे० 'प्रसिद्ध'।

परसु पु० (हि) दे० 'परशु'।

परसून वि० (हि) दे० 'प्रसून'।

परसेद पु० (हि) दे० 'प्रस्वेद'।

परसेवा स्त्री० (सं) दूसरे की नौकरी करना। दूसरे की सेवा।

परसो अव्य० (हि) १-बीती हुई कल से पहला दिन २-आने वाले कल के बाद वाला दिन।

परसोतम पुं० (हि) दे० 'पुरुषोत्तम'।

परसौहा वि० (हि) छूने वाला। स्पर्श करने वाला।

परस्त्री स्त्री० (सं) दूसरे की पत्नी या भार्या।

परस्त्रीगमन पु० (सं) पराई स्त्री के साथ संभोग।

परस्पर क्रि० वि० (सं) आपस में। एक दूसरे के साथ।

परस्परानुमति स्त्री० (सं) एक दूसरे की सलाह।

परस्परोपमा स्त्री० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है। उपमेयोपमा।

परस्व पु० (सं) पराया धन। दूसरे की सं०

परस्वध पुं० (सं) कुठार। कुल्हाड़ा।

परस्व-हरण पुं० (सं) दूसरे का धन हर लेने का कार्य।
परहरना क्रि०(हि) छोड़ना। त्यागना।
परहार पुं०(हि) दे० 'प्रहार'।
परहित वि० (सं) १-शुभचिन्तक। परोपकारी। २-दूसरे के लिये लाभकारी।
परहेज पुं० (फा) १-खाने पीने आदि का संयम। २-दोष, पापों या बुराइयों से अलग रहना।
परहेजगार पुं० (फा) १-परहेज करने वाला। संयमी। २-दोषों से दूर रहने वाला।
परहेलना क्रि० (हि) अनादर या तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।
परांग पुं० (सं) श्रेष्ठ अंग। दूसरे का अंग।
परांगद पुं० (सं) शिव। महादेव।
परांगभक्षी वि० (सं) दे० 'परोपजीवी'।
परांगव पुं० (सं) समुद्र।
परांचा पुं० (हि) तख्त। पटरी। बेंडा।
परांज पुं० (सं) १-कोल्हू। तेल निकालने का यन्त्र। २-फेन। ३-छुरी का फल।
परांठा पुं० (हि) वह रोटी या चपाती जो घी लगा कर तवे पर सेंकी जाती है। परौंठा।
परांत पुं० (सं) मृत्यु।
परांतक पुं० (सं) सर्वनाशक। महादेव।
परांतकाल पुं० (सं) मृत्यु का समय।
परा स्त्री० (सं) १-चार प्रकार की वाणियों में से पहली जो नाद स्वरूप मानी जाती है। २-परमार्थ का ज्ञान कराने वाली विद्या। ब्रह्म विद्या। ३-गंगा। ४-एक प्रकार का सामगान। वि० (सं) श्रेष्ठ जो सबसे परे हो। अव्य० (सं) एक अव्यय जो दूर, पीछे, एक ओर, अर्थ में प्रयुक्त होता है जैसे परा-धीन। पुं० (हि) रेशम खोलने वालों का एक औजार। पंक्ति। कतार।
पराई वि० (हि) दूसरे की।
पराक पुं० (सं) १-मनुस्मृति के अनुसार प्रायश्चित-स्वरूप किया जाने वाला व्रत। २-बलिदान देने की तलवार। ३-एक क्षुद्र जन्तु। वि० (सं) छोटा।
पराकाष्ठा स्त्री० (सं) १-चरम सीमा। हद। अन्त। २-गायत्री का एक भेद। ब्रह्मा की आधी आयु।
पराकोटि स्त्री० (सं) दे० 'पराकाष्ठा'।
पराक्रम पुं० (सं) १-बल। शक्ति। २-पुरुषार्थ। उद्योग। पौरुष।
पराक्रमी वि० (हि) १-बलवान। बलिष्ठ। २-वीर बहादुर। उद्योगी। उद्यमी।
पराक्रमज्ञ पुं० (सं) शत्रु के बल को जानने वाला।
पराग पुं० (सं) १-वह रज जो फूलों के बीच लम्बे केसरों पर जमी रहती है। पुष्प रज। २-धूल। रज ३-नहाने के बाद शरीर पर लगाने का सुगन्धित चूर्ण। ४-चन्दन। ५-चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण। ६-उपराग। ७-कपूर की धूल या चूर्ण। ८-विख्यात ९-स्वच्छन्द गति। मनमौजीपन।
परागकेसर पुं०(सं) फूलों के मध्य के पतले और लम्बे सूत जिन पर पराग लगा रहता है।
परागति स्त्री० (सं) गायत्री।
परागना क्रि० (हि) अनुरक्त होना।
परागम पुं० (सं) शत्रु का आगमन।
पराङ्मुख वि० (सं) १-विमुख। २-उदासीन। ३-विरुद्ध।
पराङ्-मुखता स्त्री० (सं) प्रतिकूलता। विमुखता।
पराच् वि०(सं)१-उलटा चलने वाला। २-अधोगामी
पराचित वि० (सं) दूसरे से पाला पोसा हुआ।
पराजय स्त्री० (सं) हार। हारजाने की क्रिया या भाव
पराजित वि० (सं) परास्त। पराभूत। हारा हुआ।
पराण पुं० (सं) दे० 'प्राण'।
पराणीत्ति स्त्री० (सं) भगा देने की क्रिया।
परातंस वि० (सं) धक्का देकर हटाया हुआ।
परात स्त्री० (हि) बड़ा थाल। थाली के आकार का बड़ा बरतन।
परातर वि० (सं) बहुत दूर।
परातमा पुं० (हि) १-परमात्मा। २-दूसरे की आत्मा
परादन पुं० (सं) फारस देश का घोड़ा।
पराधीन वि०(सं) परवश। जो दूसरे के आधीन हो।
पराधीनता स्त्री० (सं) परतंत्रता। दूसरे की अधीनता
परान पुं० (हि) दे० 'प्राण'।
पराना क्रि० (हि) भागना।
परान्न पुं० (सं) पराया अन्न। दूसरे का दिया भोजन।
परान्नभोजी वि० (सं) दूसरे का या पराया अन्न खाने वाला।
परापर पुं० (सं) १-फासला। २-पर और अपर।
पराभव पुं० (सं) १-पराजय। २-तिरस्कार। ३-विनाश। ४-दूसरे को दबा कर आधीन रखना। (सबजुगेशन)।
पराभिष पुं० (सं) केशर। कुंकुम।
पराभूत वि० (सं) १-पराजित। हारा हुआ। २-नष्ट तिरस्कृत।
पराभूति स्त्री० (दे०) 'पराभव'।
परामर्श पुं० (सं) १-पकड़ना। खींचना। विवेचना। ३-निर्णय। ४-अनुमान। ५-स्मृति। याद। ६-युक्ति। सलाह। मंत्रणा। (कन्सलटेशन)।
परामर्श-कक्ष पुं०(सं) दे० 'परामर्शालय। (कन्सल्टिंग रूम)।
परामर्शदाता पुं० (सं) परामर्श या सलाह देने वाला सलाहकार। (एडवाइजर)।
परामर्शदात्री वि० (सं) सलाह देने वाली। (एडवाइ

शब्द का प्रयोग विशिष्ट उद्देश्य से किया जाता है।
परिकर्तन पुं० (सं) १-गोलाकार काटना। शूल।
परिकर्तिका स्त्री० (स) काटने की सी पीड़ा।
परिकर्म पुं० (सं) देह में केसर आदि का उबटना लगाना। शरीर-संस्कार।
परिकर्मा पुं० (सं) परिचारक। सेवक। नौकर।
परिकर्मी पुं० (सं) दे० 'परिकर्मा'।
परिकर्ष पुं० (सं) खींचने की क्रिया।
परिकर्षण पुं० (स) १-खींचकर निकालने की क्रिया २-खींच कर दूसरे स्थान ले जाने की क्रिया।
परिकलक पुं० (सं) १-हिसाब लगाने अथवा लेखा ठीक करने वाला व्यक्ति। २-एक यन्त्र जिसके द्वारा बड़े-बड़े हिसाब थोड़े समय में सरलतापूर्वक लग जाते हैं। (कैलक्यूलेटर)।
परिकलन पुं० (सं) हिसाब लगाने या गिनने का कार्य। गणना करना। (कैलक्यूलेशन)।
परिकलित वि० (सं) जिसका हिसाब किताब ठीक लग चुका हो (कैल्क्यूलेटेड)।
परिकल्कन पुं० (सं) धोखेबाजी। प्रवंचना।
परिकल्प पुं० (स) १-स्थिर। निश्चय। २-निर्देश। ३-रचना। बनावट।
परिकल्पक पुं० (सं) किसी वस्तु का कलापूर्ण रेखा-चित्र बनाने वाला (डिज़ाइनर)।
परिकल्पन पुं०(सं)१-मनन। चिंतन। रचना। आवि-ष्कार। २-सम्पन्न कारण। बटवारा। विभक्तकरण।
परिकल्पना स्त्री० (सं) १-जिस बात की अत्यधिक संभावना हो प्रथम ही मान लेना या उसकी कल्पना करना। २-केवल तर्क हेतु कोई बात मान लेना। ३-कोई ऐसी बात मान लेना जो प्रमाणित न हुई हो। (हाइपो-थेसिस)। ४-कुछ विशिष्ट आधारों पर किसी बात को ठीक मान लेना। (प्रिजम्पशन)
परिकल्पित वि०(सं) १-कल्पना किया हुआ। विचारा हुआ। २-मनगढ़न्त। ३-निश्चित ठहराया हुआ। ४-मन में सोच कर बनाया हुआ। रचित। (डिजा-इन्ड)।
परिकांक्षित पुं० (सं) भक्त। साधु। सन्यासी।
परिकीर्ण वि० (सं) १-फैला हुआ। २-घिरा हुआ। परिपूर्ण।
परिकृश वि० (सं) अति दुर्बल। बड़ा कमजोर।
परिकेश पुं० (सं) बाल का अगला भाग।
परिक्रम पुं० (स) १-टहलना। २-क्रम। सिलसिला ३-प्रविष्ट होने वाला। ४-चारों ओर घूमना। ५-किसी कार्य या निरीक्षण के लिये जगह-जगह जाना। घूमना। दौरा। (टूर)।
परिक्रमण पुं० (सं) दे० 'परिक्रम'।
परिक्रमसह पुं० (सं) बकरा।
परिक्रमा स्त्री० (सं) १-चारों ओर घूमना। फेरी। चक्कर। २-किसी मन्दिर आदि के चारों ओर घूमने का मार्ग।
परिक्रय पुं० (सं) १-मजदूरी। भाड़ा। २-क्रय खरीद। मोल।
परिक्रियण पुं० (सं) १-मजदूरी। २-मजदूरी काम में लगना। ३-विनिमय। अदला बदल ४-रुपये देकर की गई संधि।
परिक्रिया स्त्री० (सं) १-खाई से घेरने की क्रिया २-एक प्रकार का यज्ञ।
परिक्लांत वि० (सं) थका हुआ। परिश्रांत।
परिक्लिष्ट वि० (सं) १-अति क्लिष्ट। २-परिक्षत
परिक्लेद पुं० (सं) तरी। नमी। सील।
परिक्लेश पुं० (सं) अत्यन्त कष्ट या दुख। लड़ाई।
परिक्वणन पुं० (सं) मेघ। बादल।
परिक्षत वि० (सं) नष्टभ्रष्ट।
परिक्षय पुं० (सं) १-नाश। बरबादी। हानि। २ समाप्त होने की क्रिया।
परिक्षव पुं० (सं) छींक।
परिक्षा स्त्री० (सं) कीचड़। स्त्री० (हि) दे० 'परीक्षा'
परिक्षालन पुं० (सं) धोने या साफ करने की क्रिया
परिक्षीव वि० (सं) नशे में बिलकुल चूर।
परिक्षेप पुं० (सं) १-इधर उधर भ्रमण करना टहलना। २-घेरने की सीमा। ३-फैलाना।
परिक्षेपक वि० (सं) घूमने वाला। फेरा लगाने वाल
परिक्षेत्र पुं० (सं) दे० 'परिनगर'।
परिक्षेत्रिक वि० (सं) दे० 'परिनागर'।
परिखन वि० (हि) रक्षक। रखवाली करने वाला।
परिखना क्रि० (हि) १-बाट जोहना। २-परीक्षा करना। जांचना।
परिखा स्त्री० (हि) किसी नगर या गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिये खोदी गई खाई या नहर।
परिखात पुं० (सं) १-खाई। खंदक। २-खुदाई। ३ पहिये से बनी हुई लकीर।
परिखान स्त्री० (हि) गाड़ी के पहिये से बनी लीक या लकीर।
परिखिन्न वि० (सं) पीड़ित। सताया हुआ। परेशान
परिख्यात वि० (सं) विख्यात। प्रसिद्ध।
परिख्याति स्त्री० (सं) कीर्ति। प्रसिद्धि। नामवरी।
परिगण पुं० (सं) घर। गृह।
परिगणन पुं० (सं) भली- भांति गिनना। गणना करना। शुमार करना।
परिगणना स्त्री० (सं) परिगणन। (शेड्यूल)।
परिगणित वि० (सं) १-गिना हुआ। २-जिसका उल्लेखन किसी अनुसूची आदि में हो चुका हो। (शेड्यूल्ड)।
परिगणित जाति स्त्री० (सं) दे० 'अनुसूचित जाति' (शेड्यूल्ड-कास्ट)।

दूसरे स्थान तक पहुंचाने वाला। (उपकरण)।
परिचालकता स्त्री० (सं) १-परिचालन करने की क्रिया २-ताप या विद्युत कणों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की क्षमता। (कन्डक्टिविटी)।
परिचालन पुं० (सं) १-चलाना। चलाने के लिये प्रेरित करना। २-कार्यक्रम के चलते रहने की व्यवस्था करना। ३-गति देना। हिलाना। ४-विद्युत कणों या गर्मी के फैलने की वह रीति जिसमें विद्युत या गर्मी एक कण से दूसरे कण को मिलाती है पर स्वयं कण नहीं चलते। (कंडक्शन)।
परिचालित वि० (सं) १-चलाया हुआ। २-निर्वाह किया हुआ। व्यवस्थित। ३-हिलाया हुआ। ४-जिसका परिचालन किया गया हो।
परिचित वि० (सं) १-जिसका परिचय हो चुका हो। २-अभिज्ञ। ३-संचित।
परिचिति स्त्री० (सं) १-परिचय। २-ज्ञान। अभिज्ञता
परिचुंबन पुं० (सं) भरपूर प्रेम सहित चुंबन करना।
परिचेय वि० (सं) १-परिचय करने योग्य। २-संचय करने योग्य।
परिचो पुं० (हि) परिचय। ज्ञान।
परिच्छद पुं० (सं) वस्त्र। पोशाक। पहनाव।
परिच्छद स्त्री० (हि) १-राजा आदि के साथ रहने वाला अनुचर। २-अनुयायी। ३-असबाब। सामान
परिच्छद पुं० (सं) १-ऊपर से ढकने का कपड़ा। आच्छादन। २-पहनने के पूरे कपड़े जो किसी विशेष दल या वर्ग के लिये निर्धारित होते हैं। (यूनीफॉर्म)। ३-माल-असबाब (बरतन आदि) ४-यात्रोपयोगी सामान।
परिच्छन्न वि० (सं) १-ढका हुआ। २-कपड़ा पहने हुए। छाया हुआ। ४-घिरा हुआ। ५-छिपा हुआ।
परिच्छा स्त्री० (देश०) दे० 'परीक्षा'।
परिच्छित्ति पुं० (सं) १-अलगाव। बँटवारा। २-लक्षण। ३-पहचान। फैसला। ४-सीमा। अवधि ५-अध्याय। प्रकरण।
परिच्छिन्न वि० (सं) १-परिमित। सीमित। २-विभक्त। ३-भली भांति परिभाषा दिया हुआ। निश्चित किया हुआ।
परिच्छेद पुं० (सं) १-काटकर विभक्त करना। विभाजन (डिमारकेशन)। २-ग्रन्थ या पुस्तक का वह विभाग जिसमें प्रधान विषय पर स्वतंत्र विवेचन होता है। ग्रन्थ का कोई स्वतन्त्र विभाग। प्रकरण। अध्याय। ३-सीमा। हद। अवधि। ३-निर्णय। ५-विभाग। बँटवारा।
परिच्युति स्त्री० (सं) गिरना। स्खलन। पतन। भ्रंश
परिछद पुं० (सं) वह छतरी जिसकी सहायता से विमान से कूदते हैं। हवाई छतरी। (पैराशूट)।
परिजंक पुं० (हि) दे० 'पर्यंक'।
परिजटन पुं० (हि) दे० 'पर्यटन'।
परिजन पुं० (सं) १-आश्रित लोग। २-परिवार। ३-साथ रहने वाले लोग। ४-सेवक।
परिजन-नाशक बम स्त्री० (हि) अनजान में फटने वाला गोला या बम। जन-नाशक-बम। (एन्टी-पर्सनल-बॉम्ब)।
परिजन्मा पुं० (हि) १-चन्द्रमा। २-अग्नि।
परिजल्पित पुं० (सं) ऐसा व्यंगपूर्ण गूढ़ कथन जिससे अपनी श्रेष्ठता तथा निपुणता प्रकट हो और स्वामी की निष्ठुरता, परिवंचना आदि दुर्गुण प्रकट हो।
परिजा स्त्री० (सं) १-आदि भूमि। २-उद्गम। ३-निकास।
परिजात वि० (सं) उत्पन्न। जन्मा हुआ।
परिजीवन पुं० (सं) १-साधारणतः नियत काल से अधिक चलने वाला जीवन। २-उत्तर जीवन। (सर्वाइवल)।
परिजीवित वि० (सं) उत्तर जीवित। (सर्वाइव्ड)।
परिजीवी वि० (सं) दे० 'परिजीवित'।
परिज्ञप्ति स्त्री० (सं) १-जान पहचान। २-बात-चीत कथोपकथन।
परिज्ञात वि० (सं) १-विशेष रूप से जाना हुआ। २-निश्चित रूप से जाना हुआ।
परिज्ञाता पुं०(हि) ज्ञानी। बुद्धिमान।
परिज्ञान पुं० (सं) १-पूर्णज्ञान। २-वह ज्ञान जिस पर पूरा भरोसा हो। ३-सूक्ष्म ज्ञान। भेद या अन्तर का ज्ञान। पहचान।
परिणत वि० (सं) १-एक रूप से दूसरे रूप में आया हुआ। रूपांतरित। २-पकाया हुआ। ३-प्रौढ़। पक्का। पुष्ट। ४-ढलता हुआ। समाप्त।
परिणति स्त्री० (सं) १-नमन। झुकाव। अवनति। २-पक्वता। पुष्टि। ३-रूपांतरित्व। बदलना। परिणयन। ४-पकना। ५-पूर्णता। ६-परिणाम। ७-अन्त। ८-वृद्धावस्था।
परिणद्ध वि० (सं) १-चारों ओर से ढका हुआ। २-विस्तीर्ण। लम्बा-चौड़ा। ३-बांधा या जकड़ा हुआ।
परिणय पुं० (सं) विवाह। शादी।
परिणयन पुं० (सं) विवाह करने की क्रिया। ब्याहना।
परिणाम पुं० (सं) १-बदलने का भाव या क्रिया। रूपांतर-प्राप्ति। २-स्वभाविक रीति से रूप परिवर्तन विकृति। ३-किसी कार्य के अन्त में उसके फल-स्वरूप होने वाली बात। नतीजा। फल। (रिजल्ट) ४-किसी कार्य का क्रियात्मक रूप से पड़ने वाला असर। (एफेक्ट)। ५-किसी बात के फलस्वरूप होने वाला प्रभाव। (कंसिक्वेंस)। ६-बहुत सी बातें सुनकर उनका निकाला हुआ निष्कर्ष। (कन-क्लूजन)। ७-पकने या पचने का भाव। ८-ए[illegible]

परिप्रश्न पुं० (सं) १-प्रश्न। सवाल। २-परिपृच्छा (इन्क्वाइरी)।

परिप्रश्नक पुं० (सं) दे० 'परिपृच्छा-गृह'।

परिप्लव वि० (सं) १-हिलता हुआ। काँपता हुआ। २-उतराता हुआ। ३-अस्थिर। चंचल। पुं० (सं) १-पूर। बाढ़। २-नौका। नाव। जहाज। ३-गीला। भीगा।

परिप्लावित वि० (सं) दे० 'परिप्लुत'।

परिप्लुत वि० (सं) १-डूबा हुआ। २-भीगा हुआ। तर। अभिभूत।

परिप्लुता स्त्री० (सं) १-मदिरा। शराब। २-वह योनि जिसमें रजःस्राव के समय पीड़ा हो।

परिप्लुष्ट वि० (सं) जला हुआ। झुलसा हुआ।

परिबृंहण पुं० (सं) १-समृद्धि। सम्पन्नता। २-किसी ग्रन्थ के अंगस्वरूप अन्य ग्रन्थ। पूरक ग्रंथ।

परिबोध पुं० (सं) ज्ञान।

परिबोधन पुं० (सं) १-दण्ड की धमकी देकर कोई विशेष कार्य करने से रोकना। २-चेतावनी।

परिभग्न पुं० (सं) टुकड़े-टुकड़े होकर [illegible]

परिभग्न वि० (सं) [illegible]

[illegible] आदि के रूप में [illegible] धन। (कॉशन मनी)।

परिभाषा स्त्री० (सं) १-किसी शब्द या पद का अर्थ या भाव प्रकट करने वाला स्पष्ट कथन। व्याख्या। (डेफिनेशन)। २-वह शब्द जो शास्त्र तथा विज्ञान में किसी एक कार्य या भाव का सूचक मान लिया गया हो। (टेक्निकल टर्म)। ३-किसी वाक्य या शब्द की व्याख्या या स्पष्टीकरण। ४-निंदा। परिवाद। बदनामी। ५-स्पष्ट कथन।

परिभाषित वि० (सं) जिसकी परिभाषा या व्याख्या की गई हो। (डिफाइन्ड)।

परिभूत वि० (सं) १-पराजित। हराया हुआ। २-अपमानित।

परिभूति स्त्री० (सं) १-निरादर। अपमान। २-[illegible]

परिभेद पुं० (सं) तलवार, तीर आदि का घाव।

परिभोग पुं० (सं) १-भोग। उपभोग। २-मैथुन। [illegible] प्रसंग। ३-अनधिकार किसी वस्तु को काम में लाना।

परिभ्रंश पुं० (सं) १-छुटकारा। २-विनाश। पतन। [illegible]। च्युति।

परिभ्रमण पुं० (सं) १-पर्यटन। भ्रमण। २-घूमना। (पहिये आदि का) चक्कर खाना। (रोटेशन)। ३-घेरा। व्यास। परिधि।

परिभ्रष्ट वि०(सं) १-गिरा हुआ। २-पतित। निकाला हुआ। ३-अधःपतित।

परिभ्रामण पुं०(सं) चक्कर देना। इधर उधर घुमाना।

परिमन्यु वि० (सं) क्रोध से भरा हुआ।

परिमर्द पुं० (सं) १-रगड़ना। पीसना। २-कुचलना। ३-नाश। ४-दबाना।

परिमर्ष पुं० (सं) १-डाह। ईर्ष्या। २-रोष। क्रोध।

परिमल पुं० (सं) १-सुवास। उत्तम गन्ध। २-सुगन्धित वस्तु। ३-सहवास। मैथुन। ४-पंडितों का समुदाय।

परिमाण पुं० (सं) १-वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। २-नाप या तौल। मात्रा। (क्वान्टिटी)।

परिमान पुं० (हि) दे० 'परिमाण'।

परिमाप पुं० (सं) १-नापने की क्रिया या भाव। २-वह पदार्थ जिससे दूसरे पदार्थों का मान किया जाय। [illegible]

[illegible] खोज। अनुसंधान।

[illegible] मांजने वाला।

[illegible] मांजने का काम।

[illegible] ठीक करना।

[illegible] वि०(सं) धोया हुआ। साफ किया हुआ। परिष्कृत।

परिमित वि० (सं) १-न अधिक न कम। २-जिसकी सीमा, संख्या या विस्तार नियत हो। सीमित। (लिमिटेड)। ३-नपा तुला हुआ। ४-उचित मात्रा या परिमाण में। ५-थोड़ा। कम। अव्य० (सं) पर्यंत।

परिमिताहार वि० (सं) कम भोजन करने वाला। अल्पाहारी।

परिमिति स्त्री० (सं) १-नाप तौल। सीमा। २-ऋजुभुज (पेरिमीटर)। ३-क्षेत्र की भुजाओं की लम्बाई का योग या जोड़। (पेरिफेरीलोनियल)। ४-मान। मर्यादा। ५-सीमित होने का भाव। (लिमिटेशन)

परिमेय वि० (सं) १-नापने तौलने योग्य। २-जिसे नापना या तौलना हो।

परिमोष पुं० (सं) चोर। डाकाजनी। लूट।

परिमोषक पुं० (सं) चोर।

परिमोहन पुं० (सं) १-किसी को पूर्ण रूप से अपने वश में कर लेना। २-परिलोभन। (एन्ट्राइसमेन्ट)

परियंक पुं० (हि) दे० 'पर्यंक'।

परियंत अव्य० (हि) दे० 'पर्यंत'।

परियत्त वि० (सं) चारों ओर से घिरा हुआ।

परिया पुं० (हि) दक्षिण भारत की एक [illegible]

जाति जो अछूत समझी जाती है।
परियाण पुं० (सं) घुमाई-फिराई। पर्यटन।
परियान पुं० (सं) अपने देश को छोड़कर किसी दूसरे देश में बस जाना। (एमीग्रेशन)।
परियुद्धक पुं० (सं) वह राष्ट्र जो युद्ध में किसी एक पक्ष की ओर से लड़ रहा हो। (बेलीमेंन्ट)।
परियोजना स्त्री० (सं) सोच विचार कर आगे की स्थिति का अनुमान लगाकर बनाई गई योजना या परिकल्पना। (प्रोजेक्ट)।
परिरंभ पुं० (सं) आलिंगन करना। गले मिलना।
परिरंभना क्रि० (हि) आलिंगन करना।
परिरक्षक पुं० (सं) १-अभिभावक। रक्षा करने वाला। २-किसी संग्रहालय की देख-रेख करने वाला अधिकारी। (क्यूरेटर)। ३-सेना का अग्रदल जो चारों ओर आगे बढ़ कर रक्षा करने का काम करता है। (पेट्रोल)।
परिरक्षण पुं० (सं) १-सब तरह से रक्षा करना। २-अच्छी तरह संभाल कर रखना। (प्रिज़र्वेशन)।
परिरक्षा स्त्री० (सं) परिरक्षण। छुटकारा। निस्तार।
परिरक्षित वि० (सं) पूर्ण रूप से रक्षित।
परिरक्षी पुं० (सं) १-रक्षा या बचाव करने वाला। २-चारों ओर घूम-घूमकर रक्षा करने वाला। (पेट्रोल)।
परिरूप पुं० (सं) १-किसी होने वाले कार्य के संबन्ध में पहले से की जाने वाली कल्पना या रूपरेखा। २-कपड़े पर वेलबूटे आदि काढ़ने का नया ढंग। ३-किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक सुन्दर ढंग। (डिज़ाइन)।
परिरूपक पुं० (सं) वह जो किसी वस्तु का परिरूप बनाता हो। (डिज़ाइनर)।
परिरोध पुं० (सं) १-रुकावट। अवरोध। २-कैद।
परिलंबन पुं० (सं) कंप। कंपकंपाना। (लाइब्रेशन)
परिलघु वि० (सं) १-अत्यन्त छोटा। बहुत हल्का। २-पचने में सुलभ।
परिलब्धि पुं० (सं) १-अधिक लाभ। २-वेतन के अतिरिक्त दिया गया भत्ता। (परक्विज़िट)।
परिलाभ पुं० (सं) किसी पद पर काम करने के कारण वेतन या पुरस्कार आदि के रूप में मिलने वाला लाभ। (इमॉल्यूमेंट)।
परिलेख पुं० (सं) १-चित्र का खाका या ढांचा। रेखा चित्र। २-चित्र। तसवीर। ३-चित्र बनाने की कूँची। ४-उल्लेख। वर्णन। ५-बड़े अधिकारियों के पास भेजा जाने वाला विवरण। (रिटर्न)।
परिलेखना क्रि० (हि) समझना। मानना। खयाल करना।
परिलोभन पुं० (सं) १-ललचाना। बहकाना। २-झूठी आशा उत्पन्न करके बहकाना। (इंडयूसमेंट)
परिवर्जन पुं० (सं) १-छोड़ना। त्याग करना। २-रोकना। ३-हत्या करना।
परिवर्जित वि० (सं) त्यागा हुआ। परित्यक्त।
परिवर्तक पुं० (सं) १-घूमने वाला। फिरने वाला। २-बदलने वाला। ३-परिवर्तन योग्य। युग का अन्त करने वाला।
परिवर्तन पुं० (सं) १-घुमाव। फेर। २-अदला-बदली। विनिमय। ३-रूपांतर। तब्दीली।
परिवर्तनीय वि०(सं) बदले जाने योग्य।
परिवर्तित वि० (सं) १-बदला हुआ। रूपांतरित। २-जो बदले में मिला हुआ हो।
परिवर्ती वि० (सं) १-परिवर्तनशील। २-घूमने वाला। ३-किसी वस्तु को बदलने वाला।
परिवर्त्य वि० (सं) जिसे अन्य रूप में परिवर्तित किया जा सके। (कॉनवर्टीबल)।
परिवर्धन पुं० (सं) संख्या, गुण, तथ्य आदि में विशेष वृद्धि। परिवृद्धि। (एडीशन)। २-आकार आदि में वृद्धि। (एन्लॉर्जमेंट)।
परिवर्धित वि० (सं) १-जिसमें वृद्धि हुई हो। २-जिसमें कुछ और जोड़ दिया गया हो।
परिवहन पुं० (सं) १-किसी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर उठाकर ले जाना। (कैरिज)। २-कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे पर ले जाना। (ट्रांसपोर्ट) ३-समुद्री या हवाई जहाज चलाना। (नेवीगेशन)
परिवहन-बाधा स्त्री० (सं) रेल के डिब्बों इत्यादि की कमी के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान माल ले जाने में पड़ने वाली बाधा। (बॉटलनेक)।
परिवहन-व्यवस्थापक पुं० (सं) रेल यातायात की व्यवस्था करने वाला अधिकारी। (ट्रैफिक-मैनेजर)
परिवा स्त्री० (हि) पक्ष की पहली तिथि।
परिवाद पुं० (सं) १-निंदा। अपवाद। शिकायत। (कम्पलेंट)। २-लोहे के तारों का छल्ला जिससे वीणा बजाई जाती है।
परिवादक पुं० (सं) १-परिवाद करने वाला। मुद्दई। २-वीणा बजाने वाला। वि० (सं) १-निंदक। २-शिकायत करने वाला।
परिवादिनी स्त्री० (सं) १-सात तार वाली वीणा। २-निंदा करने वाली।
परिवादी वि० (सं) निंदा करने वाला।
परिवाप पुं० (सं) १-मंडल। २-बुआई। ३-जलाशय ४-सामान। ५-अनुचर वर्ग।
परिवार पुं० (सं) १-आवरण। २-म्यान। ३-किसी राजा या रईस को साथ लेकर चलने वाले लोग। परिषद्। ४-घर के लोग। कुटुम्ब। ५-वंश। कुल। जाति। बालबच्चे।
परिवारी पुं० (सं) परिवार में रहने वाला। कुटुम्बी
परिवास पुं० (सं) १-[illegible]

गृह। ३-सुगन्ध।

परिवासन पु० (सं) खंड। टुकड़ा।

परिवाह पु० (सं) १-ऐसा जल प्रवाह जिसके कारण नदी-नदी, तालाब आदि में बाढ़ के ऊपर बहने लगे। २-नहर। जलमार्ग। (पेसेज-वॉटर-सरप्लस-वाटर)।

परिवृत वि० (सं) ढका या छिपाया हुआ। आवृत। पु०(सं) दे० 'परिगतवृत्त'। (सरकम्स्क्राइब्ड सर्कल)

परिवृत्ति स्त्री० (सं) १-घुमाव। चक्कर। घेरा। विनिमय। ३-किसी के किए काम को देख कर उसे दोहराना। ४-बदलना। (कनवर्शन)। पु० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु देकर दूसरी के लेने का कथन होता है।

परिवृद्धि स्त्री० (सं) सब प्रकार से वृद्धि। उन्नति। बढ़ती।

परिवेदन पु० (सं) १-बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह होना। २-पूर्ण ज्ञान। ३-लाभ। ४-विद्यमानता। ५-वादविवाद। बहस। ६-विचरण।

परिवेश पु० (सं) १-घेरा। परिधि। २-परोसना या परसना। ३-सूर्य या चांद का घेरा। ४-परकोटा। कोट। किले की दीवार।

परिवेष पु०(सं) दे० 'परिवेश'।

परिवेष्टन पु० (सं) १-चारों ओर से घेरना। २-छिपाने या लपेटने की वस्तु। ३-परिधि। घेरा।

परिवेष्टा पु० (सं) परसने वाला।

परिव्यक्त वि० (सं) अत्यधिक स्पष्ट।

परिव्यय पु० (सं) १-किसी वस्तु को तैयार करने या बनाने में लगने वाला व्यय। (कॉस्ट)। २-शुल्क। पारिश्रमिक। ३-भाड़े आदि के रूप में लिया जाने वाला व्यय। (चार्ज)।

परिव्ययनीय वि० (सं) जो परिव्यय के रूप में किसी से लिया जा सके। (चार्जेबल)।

परिव्रज्या स्त्री० (सं) १-जगह-जगह घूमना। भ्रमण। २-तपस्या। ३-भिक्षुक की तरह जीवन बिताना।

परिव्राज पु० (सं) १-भ्रमण करने वाला संन्यासी। २-यती। परमहंस।

परिव्राजक पु० (सं) दे० 'परिव्राज'।

परिशयन पु० (सं) कुछ जीव जन्तुओं या पशुओं की वह निष्क्रिय अवस्था जिसमें जाड़े के दिनों में वे बिना कुछ खाए पीये एक स्थान पर चुपचाप पड़े रहते हैं। (हाइबरनेशन)।

परिशिष्ट वि० (सं) छूटा हुआ। बचा हुआ। पु० (सं) १-किसी पुस्तक या लेख का वह अन्तिम भाग जिसमें उपयोगी बातें रहती हैं जो पहले अपने स्थान पर न आ सकी हों (एपेंडिक्स)। अनुपूर्ती (टेलपीस)।

परिशीलन पु०(सं) १-मननपूर्वक किया जाने वाला अध्ययन। २-स्पर्श करना या छू जाना।

परिशुद्ध वि० (सं) १-अच्छी तरह से साफ किया हुआ। २-बिलकुल ठीक। (एक्यूरेट)।

परिशुद्धता स्त्री० (सं) यथार्थ। बिलकुल ठीक। (एक्यूरेसी)।

परिशुद्धि स्त्री० (सं) १-पूर्ण रूप से शुद्ध। २-छुटकारा। रिहाई।

परिशुष्क वि० (सं) १-अच्छी प्रकार से सूखा हुआ। २-कुम्हलाया हुआ। रसहीन। पु० (सं) एक प्रकार का तला हुआ मांस।

परिशोध पु० (सं) १-पूर्ण शुद्धि। पूरी सफाई। २-ऋण की बेबाकी। चुकता।

परिशोधन पु० (सं) १-पूर्णतया साफ या शुद्ध करना। २-ऋण चुकाना। (रिपेमेन्ट)। ३-भुगतान करना (डिसचार्ज)। ३-संशोधन।

परिशोष पु० (सं) पूर्णतया सुखाने या सूखने की क्रिया।

परिश्रम पु० (सं) ऐसा काम जिसके करने से थकावट आ जाय। श्रम। मेहनत। आयास (लेबर)। २-थकावट।

परिश्रमी वि० (सं) मेहनती। उद्यमी। बहुत परिश्रम करने वाला।

परिश्रय पु० (सं) १-सभा। परिषद्। २-रक्षा स्थान।

परिश्रान्त वि० (सं) बहुत थका हुआ।

परिश्रान्ति पु० (सं) थकावट। क्लान्ति।

परिश्रुत वि० (सं) जिसके विषय में काफी सुना जा चुका हो। प्रख्यात। प्रसिद्ध।

परिश्लेष पु० (सं) गले मिलना। आलिंगन।

परिषद् स्त्री० (सं) १-प्राचीन काल के ब्राह्मणों की सभा जिसे राजा समय-समय पर किसी विशेष विषय पर सलाह के लिये बुलाता था। २-सभा। ३-निर्वाचित या नियुक्त सदस्यों की सभा। (काउंसिल)।

परिषद पु० (सं) १-दे० 'परिषद्'। २-सदस्य। सभासद।

परिषेक पु० (सं) १-सिंचाई। छिड़काव। २-नम या तर करना। ३-स्नान।

परिष्करण पु० (सं) १-स्वच्छ या शुद्ध करना। २-त्रुटियां या दोष निकाल कर ठीक करना। संशोधन (प्यूरिफिकेशन)।

परिष्कार पु० (सं) १-संस्कार। शुद्धि। स्वच्छता। २-आभूषण। गहना। ३-शृंगार। ४-शोभा। ५-दीक्षा (बौद्ध दर्शन)। ६-घर का उपयोगी सामान

परिष्कारक पु० (सं) पालिश करने वाला। (पॉलिशर)।

परिष्कृत वि० (सं) १-साफ किया हुआ। २-धोया

या मांजा हुआ। ३-संस्कारों से शुद्ध किया हुआ। ४-सजाया हुआ। शृङ्गारित।
परिष्क्रिया स्त्री० (सं) १-शोधन। शुद्ध करना। २-सजावट। शृङ्गार।
परिस्यंद पुं० (सं) १-जल की धारा। प्रवाह। २-नदी। ३-द्वीप। टापू।
परिसंख्या स्त्री० (सं) १-गणना। गिनती। २-एक अर्थालंकार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के समान दूसरी बात के वर्जन को हटाने के लिये कही जाती है और वह बात प्रमाणों से सिद्ध जान पड़ती है।
परिसंख्यात वि० (सं) १-गिना हुआ। गणना किया हुआ। २-विशेष रूप से बताया हुआ।
परिसंख्यान पुं० (सं) गणना। २-ठीक अनुमान। ३-अनुसूची। (शेड्यूल)।
परिसंघ वि० (सं) राष्ट्रों, राज्यों आदि का ऐसा संघटन जो एक दूसरे की सहायता के लिये कुछ विशिष्ट कार्यों के लिये होता है। (कॉनफिडरेशन)।
परिसंपद् स्त्री० (सं) १-भू-संपत्ति और धन-दौलत। (एस्टेट)। २-वह संपत्ति या धन जिससे कोई ऋण चुकाया जा सके। (असेट्स)।
परिसभ्य पुं० (हि) सभासद। सदस्य।
परिसमंत पुं० (सं) किसी वृत्त की चारों ओर की सीमा।
परिसमापक पुं० (सं) किसी व्यापारी या व्यापारिक-संस्था का लेनदेन संभालकर उसका कारबार समाप्त करने वाला अधिकारी। (लिक्विडेटर)।
[illegible]पन पुं०(सं) किसी व्यापारिक संस्था या व्या-[illegible] का लेन-देन समाप्त कर कर्जा अदा कर देने [illegible]र्य। (लिक्विडेशन)।
[illegible]प्ति स्त्री० (सं) १-खातमा। समाप्ति। २-चलते हुए काम की समाप्ति। (टर्मिनेशन)।
[illegible] पुं० (सं) १-नदी या पर्वत के आसपास की [illegible]। किसी घर के आसपास का खुला मैदान। [illegible]ड़ी या शिरा। ३-मृत्यु। ४-विधि। वि० (सं) [illegible] लगा या जुड़ा हुआ।
[illegible]ण पुं० (सं) १-पर्यटन। इधर-उधर घूमना [illegible]लना। २-हार। पराभव। ३-मृत्यु।
[illegible]दर्श पुं० (सं) कुछ अपराधियों में से वह [illegible]धी जो सरकारी गवाह बन गया हो। (एप्रूवर)
[illegible]न पुं० (सं) किसी प्रदेश, स्थान आदि की [illegible] निर्धारित करना। हद बांधना। (डिलिमि-[illegible])।
[illegible] स्त्री० (सं) १-चारों ओर की सीमा या [illegible] २-सीमा ठहराना या निश्चित करना। ३-[illegible]किसी मामले की चरम सीमा या हद। (एक्सट्रीम)।
परिस्तरण पुं० (सं) १-चारों ओर फैलना। २-आवरण। आच्छादन।
परिस्तान पुं० (फा) १-परियों का देश या स्थान। २-सुसज्जित सुन्दर नवयुवतियों का समूह।
परिस्थिति स्त्री० (सं) किसी घटना आदि की आस-पास की वास्तविक अवस्था। (सरकमस्टेंसेस)।
परिस्पर्द्धा स्त्री० (सं) दे० 'प्रतिस्पर्द्धा'।
परिस्फुट वि० (सं) १-बिलकुल साफ। स्पष्ट। २-सुविकसित। खिला हुआ।
परिस्फुरण पुं० (सं) १-कंप। थरथराहट। २-खिलना
परिस्यंद पुं० (सं) १-टपकना। चूना। रिसना। २-बहाव। धारा।
परिस्राव पुं० (सं) १-प्रवाह। बहाव। २-एक प्रकार का रोग जिसमें मल के साथ पित्त और कफ निकलता है।
परिस्रावण पुं० (सं) वह पात्र जिसमें से पानी टपकाकर साफ करते हैं।
परिस्रावी वि० (सं) चूने वाला। टपकने या रिसने वाला। पुं० (सं) एक प्रकार का भगंदर रोग।
परिस्रुत वि० (सं) जिससे कुछ टपक रहा हो। स्त्री० (सं) मदिरा।
परिहँस पुं० (हि) डाह। ईर्ष्या। तुच्छ समझकर हँसी उड़ाना।
परिहरण पुं० (सं) १-बलपूर्वक लेना। २-छोड़ना या तजना। ३-निवारण।
परिहरणीय वि० (सं) १-बलपूर्वक छीन लेने योग्य। २-त्यागने योग्य। ३-उपचार करने योग्य।
परिहरना क्रि० (हि) त्यागना। छोड़ना।
परिहस पुं० (हि) १-दे० 'परिहास'। २-दुःख।
परिहस्त पुं० (सं) हाथ का छल्ला।
परिहाना क्रि० (हि) प्रहार करना।
परिहार पुं० (सं) १-परित्याग। छोड़ना। (एवॉइडेंस)। २-दोष आदि का निवारण। ३-अकाल या वर्षा न होने के कारण लगान में दी जाने वाली छूट। ५-दंड में दी गई छूट। (रेमीशन)। ६-लड़ाई में जीता हुआ धन (लूटी)। ७-खंडन। ८-तिरस्कार। अपमान। ९-अग्निकुल के अन्तर्गत माना जाने वाला एक राजवंश का नाम।
परिहारना क्रि० (हि) १-त्यागना। छोड़ना। २-दूर करना। हटाना।
परिहार्य वि० (सं) जिसका परिहार किया जा सके। त्याज्य। जिससे बचा जा सके।
परिहास पुं० (सं) १-हँसी। मजाक। दिल्लगी। २-खेल। क्रीड़ा।
परी स्त्री० (फा) १-प्राचीन फारसी कथाओं की वह कल्पित सुन्दर स्त्रियाँ जिनके कंधे पर पंख लगे होते थे। २-परम सुन्दरी स्त्री।
परीक्षक पुं० (सं) इम्तिहान लेने या करने वाला

(एक्जामिनर)।

परीक्षण पुं० (स) १-जांच या परखने की क्रिया। २-राजा के मन्त्री, चर आदि के दोषों की जांच करना। (ट्रायल)।

परीक्षण-काल पु० (सं) किसी कर्मचारी को अस्थाई रूप में यह देखने के लिये रखने का समय कि वह काम के योग्य है या नहीं। (प्रोबेशन)।

परीक्षण-नलिका स्त्री० (हि) परीक्षण के काम आने वाली कांच की नलिका। (टेस्ट ट्यूब)।

परीक्षणिक वि० (सं) १-परीक्षण-विषयक। २-परीक्षा का। ३-अस्थाई रूप से परीक्षण के लिये रखा गया (कर्मचारी)। (प्रोबेशनरी)।

परीक्षना क्रि० (हि) परीक्षा लेना।

परीक्षा स्त्री०(सं)१-किसी की योग्यता, गुण, सामर्थ्य आदि जानने के लिये भलीभांति जांचने या परखने की क्रिया। इम्तिहान। (एक्जामिनेशन)। २-किसी वस्तु के दोष या गुणों की जानकारी के लिये किया गया प्रयोग। (एक्सपेरीमेंट)। ३-वह प्रयोग जिसमें प्राचीन न्यायालयों में अभियुक्त या साक्षी के झूठे या सच्चे होने का पता लगाया जाता था। निरीक्षण मुआयना। जांच-पड़ताल।

परीक्षा-काल पु० (सं) परीक्षा का समय।

परीक्षा-भवन पुं० (स) वह कमरा या भवन जिसमें परीक्षार्थी परीक्षा देते समय बैठते हैं। (एक्जामिनेशन हॉल)।

परीक्षार्थी पुं०(सं) परीक्षा देने वाला। (एक्जामिनी)

परीक्षालय पुं० (स) दे० 'परीक्षा-भवन'।

परीक्षा-शुल्क पु० (स) परीक्षा के लिये लिया जाने वाला द्रव्य या फीस। (एक्जामिनेशन-फी)।

परीक्षित वि० (स) जिसकी जांच या परीक्षा हो चुकी हो। पुं० (स) १-अर्जुन के पौत्र तथा अभिमन्यु के पुत्र का नाम। २-वह आदमी जो परीक्षा में बैठा हो। (एक्जामिनी)।

परीक्ष्यमाण वि० (स) (कर्मचारी) जिसकी नियुक्ति अभी पक्की न हो और वह परीक्षण काल में हो। (प्रोबेशनर)।

परीखना क्रि० (हि) परखना। जांचना। परीक्षा लेना।

परीखाना पु० (फा) परियों या हसीनों के रहने का स्थान।

परीच्छा वि० (हि) दे० 'परीक्षित'। अव्य० (हि) अवश्य ही।

परीछत पु० (हि) दे० 'परीक्षित'।

परीछना क्रि० (हि) परीक्षा लेना।

परीछा स्त्री० (हि) दे० 'परीक्षा'।

परीछित वि० (हि) दे० 'परीक्षित'।

परीज़ाद वि० (फा) बहुत सुन्दर। अत्यन्त रूपवान।

परीत पु० (सं) दे० 'प्रेत'।

परीरंभ पुं० (स) दे० 'परिरंभ'।

परीर पुं० (सं) फल।

परीशान वि० (फा) हैरान। परेशान।

परीसना क्रि० (हि) स्पर्श करना। छूना।

परीसार पुं० (हि) इधर उधर घूमना।

परीहार पुं० (सं) अनादर। अवज्ञा।

परीहास पुं० (सं) दे० 'परिहास'।

परु पु० (सं) १-गांठ। जोड़। २-अंग। ३-समुद्र। ४-स्वर्ग। ५-पर्वत। अव्य०(हि) अगला या पिछला साल।

परुई स्त्री० (देश०) भड़भूजे का अन्न भूनने का पात्र

परुख वि० (हि) दे० 'परुष'।

परुखाई स्त्री० (हि) कठोरता। कड़ाई।

पुरुहार पुं० (सं) घोड़ा।

परुष वि० (स) १-कठोर। कर्कश। २-अप्रिय। ३-निष्ठुर। ४-उग्र। ५-आलसी। ६-मैला-कुचैला। पु० (सं) १-फालसा। २-तीर। ३-सरकंडा।

परुषता स्त्री० (स) १-कर्कशता। कठोरता। २-निर्दयता।

परुषत्व पु० (सं) परुषता।

परुषवचन पु० (स) कुवाच्य या सख्त कलामी।

परुषाक्षर पु० (स) कर्कश वचन। बुरी लगने वाली बात।

परुषावृत्ति स्त्री० (सं) काव्य की तीन वृत्तियों में से एक जिसमें ट, ठ, ड आदि कठोर वर्णों की योजना होती है।

परुषोक्ति स्त्री० (स) निष्ठुर वचन। कुवाक्य। कठोर वचन।

परुसना क्रि० (हि) दे० 'परसना'।

[illegible]

करना।

परेखा पुं० (हि) १-जांच। परीक्षा। २-विश्वास। ३-पछतावा। खेद।

परेग स्त्री० (हि) छोटी कील।

परेत वि० (हि) मृत। मरा हुआ। पुं० (हि) दे० 'प्रेत'।

परेतभर्ता पु० (हि) यमराज।

परेतभूमि स्त्री० (हि) श्मशान।

परेता पु० (हि) १-सूत लपेटने का जुलाहों का एक औजार। २-वह बेलन या चर्खी जिस पर पतंग की डोर लपेटी जाती है।

परेर पु०(हि) आकाश। आसमान।

परेवा पु० (हि) १-पंडुकी। २-कबूतर। ३-पत्रवाहक। (तेज चलने वाला)।

या माँजा हुआ। ३-संस्कारों से शुद्ध किया हुआ। ४-सजाया हुआ। शृङ्गारित।

परिष्क्रिया स्त्री० (सं) १-शोधन। शुद्ध करना। २-सजावट। शृङ्गार।

परिष्यंद पुं० (सं) १-जल की धारा। प्रवाह। २-नदी। ३-द्वीप। टापू।

परिसंख्या स्त्री० (सं) १-गणना। गिनती। २-एक अर्थालंकार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के समान दूसरी बात के व्यंग को हटाने के लिये कही जाती है और वह बात प्रमाणों से सिद्ध जान पड़ती है।

परिसंख्यात वि० (सं) १-गिना हुआ। गणना किया हुआ। २-विशेष रूप से बताया हुआ।

परिसंख्यान पुं० (सं) गणना। २-ठीक अनुमान। ३-अनुसूची। (शेड्यूल)।

परिसंघ वि० (सं) राष्ट्रों, राज्यों आदि का ऐसा संघठन जो एक दूसरे की सहायता के लिये कुछ विशिष्ट कार्यों के लिये होता है। (कॉनफिडरेशन)।

परिसंपद् स्त्री० (सं) १-भू-संपत्ति और धन-दौलत। (एस्टेट)। २-वह संपत्ति या धन जिससे कोई ऋण चुकाया जा सके। (असेट्स)।

परिसभ्य पुं० (हि) सभासद। सदस्य।

परिसमंत पुं० (सं) किसी वृत्त की चारों ओर की सीमा।

परिसमापक पुं० (सं) किसी व्यापारी या व्यापारिक-संस्था का लेनदेन संभालकर उसका कारबार समाप्त करने वाला अधिकारी। (लिक्विडेटर)।

परिसमापन पुं०(सं) किसी व्यापारिक संस्था या व्यापारी का लेन-देन समाप्त कर कर्जा अदा कर देने का कार्य। (लिक्विडेशन)।

परिसमाप्ति स्त्री० (सं) १-खातमा। समाप्ति। २-किसी चलते हुए काम की समाप्ति। (टर्मिनेशन)।

परिसर पुं० (सं) १-नदी या पर्वत के आसपास की भूमि। किसी घर के आसपास का खुला मैदान। २-नाड़ी या शिरा। ३-मृत्यु। ४-विधि। वि० (सं) मिला, लगा या जुड़ा हुआ।

परिसरण पुं० (सं) १-पर्यटन। इधर-उधर घूमना या टहलना। २-हार। पराभव। ३-मृत्यु।

परिसिद्धक पुं० (सं) कुछ अपराधियों में से वह अपराधी जो सरकारी गवाह बन गया हो। (एप्रूवर)

परिसीमन पुं० (सं) किसी प्रदेश, स्थान आदि की सीमा निर्धारित करना। हद बांधना। (डिलिमिटेशन)।

परिसीमा स्त्री० (सं) १-चारों ओर की सीमा या हद। २-सीमा ठहराना या निश्चित करना। ३-किसी मामले की चरम सीमा या हद। (एक्स्ट्रीम)।

परिस्तरण पुं० (सं) १-चारों ओर फैलना। २-आवरण। आच्छादन।

परिस्तान पुं० (फा) १-परियों का देश या स्थान। २-सुसज्जित सुन्दर नवयुवतियों का समूह।

परिस्थिति स्त्री० (सं) किसी घटना आदि की आस-पास की वास्तविक अवस्था। (सरकमस्टेंसेस)।

परिस्पर्द्धा स्त्री० (सं) दे० 'प्रतिस्पर्द्धा'।

परिस्फुट वि० (सं) १-बिलकुल साफ। स्पष्ट...। २-सुविकसित। खिला हुआ।

परिस्फुरण पुं० (सं) १-कंप। थरथराहट। २-खिलना।

परिस्यंद पुं० (सं) १-टपकना। चूना। रिसना। २-बहाव। धारा।

परिस्राव पुं० (सं) १-प्रवाह। बहाव। २-एक प्रकार का रोग जिसमें मल के साथ पित्त और कफ निकलता है।

परिस्रावण पुं० (सं) वह पात्र जिसमें से पानी टपकाकर साफ करते हैं।

परिस्रावी वि० (सं) चूने वाला। टपकने या रिसने वाला। पुं० (सं) एक प्रकार का भगंदर रोग।

परिस्रुत वि० (सं) जिससे कुछ टपक रहा हो। स्त्री० (सं) मदिरा।

परिहँस पुं० (हि) डाह। ईर्ष्या। तुच्छ समझकर हँसी उड़ाना।

परिहरण पुं० (सं) १-बलपूर्वक लेना। २-छोड़ना या तजना। ३-निवारण।

परिहरणीय वि० (सं) १-बलपूर्वक छीन लेने योग्य। २-त्यागने योग्य। ३-उपचार करने योग्य।

परिहरना क्रि० (हि) त्यागना। छोड़ना।

परिहस पुं० (हि) १-दे० 'परिहास'। २-दुःख।

परिहस्त पुं० (सं) हाथ का छल्ला।

परिहाना क्रि० (हि) प्रहार करना।

परिहार पुं० (सं) १-परित्याग। छोड़ना। (एबेंडनेस)। २-दोष आदि का निवारण। ३-अकाल या वर्षा न होने के कारण लगान में दी जाने वाली छूट। ५-दंड में दी गई छूट। (रेमीशन)। ६-लड़ाई में जीता हुआ धन (लूट)। ७-खंडन। ८-तिरस्कार। अपमान। ९-अग्निकुल के अन्तर्गत माने जाने वाला एक राजवंश का नाम।

परिहारना क्रि० (हि) १-त्यागना। छोड़ना। २-... करना। हटाना।

परिहार्य वि० (सं) जिसका परिहार किया जा सके। त्याज्य। जिससे बचा जा सके।

परिहास पुं० (सं) १-हँसी। मजाक। दिल्लगी। खेल। क्रीड़ा।

परी स्त्री० (फा) १-प्राचीन फारसी कथाओं की कल्पित सुन्दर स्त्रियाँ जिनके कंधे पर पर थे। २-परम सुन्दरी स्त्री।

परीक्षक पुं० (सं) इम्तिहान लेने या

जाता।

पर्यन्तभूमि स्त्री० (सं) पड़ोस का नगर, कस्बा या स्थान।

पर्यटक पु० (सं) भ्रमण करने वाला। (टूरिस्ट)।

पर्यटन पु० (सं) भ्रमण। इधर उधर घूमना।

पर्यवलोकन पु० (स) सम्पूर्ण कार्य को सरसरी तौर से आदि से अन्त तक समझने या जांचने का कार्य (सर्वे)।

पर्यवसान पु० (सं) १-समाप्ति। अन्त। निश्चय। ३-समावेश।

पर्यवेक्षक पु० (सं) १-देखभाल या निगरानी करने वाला (सुपरवाइज़र)। २-किसी बात, काम या व्यवहार आदि को ध्यान से देखने वाला। (ओब्ज़र्वर)।

पर्यवेक्षण पु० (सं) १-भलीभांति देखना। निरीक्षण (इन्सपेक्शन)। २-किसी कार्य की निगरानी। (सुपरविज़न)। ३-किसी विशेष कार्य को ध्यान से देखते रहना। (ओब्ज़र्वेशन)।

पर्यसन पु० (सं) १-फेंकना। निक्षेप। २-हटाना। दूर करना। स्थगित करना।

पर्यस्तापह्नुति स्त्री० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु के गुण छिपा करके उस गुण को किसी दूसरे में आरोपित किया जाता है।

पर्याप्त वि० (सं) १-आवश्यकतानुसार। यथेष्ट। काफी २-प्राप्त। ३-समर्थ। ४-परिमित। ५-सम्पूर्ण। पु० (सं) १-तृप्ति। संतुष्ट। २-प्रचुरता। ३-शक्ति। ४-सामर्थ्य। ५-योग्यता।

पर्याय पु० (सं) १-समानार्थक शब्द। २-क्रम। सिलसिला। ३-प्रकार। ढंग। ४-अवसर। ५-निर्माण। ६-एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रित करने का वर्णन हो।

पर्यायवाची वि० (सं) समानार्थक।

पर्यायसेवा स्त्री० (हि) क्रम से या ... करना।

पर्यायोक्ति स्त्री० (स) एक शब्दालं... ... बात सीधे रूप से न कह कर घुमाव फिराव से कही गई हो।

पर्यालोचन पु० (स) छानबीन या समीक्षण के लिये किसी बात को रखना। वि० (स) विचार-पूर्वक सावधानी से किया हुआ। (डेलीब्रेट)।

पर्यालोचना पु० (सं) किसी बात या वस्तु की पूरी-पूरी जांच।

पर्यावर्तन पु० (सं) १-लौटकर आना। २-वापिस आना।

पर्युत्थान पु० (सं) अच्छी तरह से उठना। खड़ा होना।

पर्युपासक पु० (सं) सेवक। दास। सेवा करने वाला

पर्युपासन पु० (स) १-सेवा। २-पूजा। अर्चन।

पर्युप्ति स्त्री० (सं) बीज बोने का कार्य।

पर्येषण पु० (स) १-तर्क द्वारा अनुसन्धान। खोज। २-सम्मान प्रदर्शन। पूजा।

पर्येष्टि स्त्री० (सं) खोज। तलाश।

पर्व पु० (स) १-गांठ। ग्रन्थि। जोड़। अंग। २-भाग। विभाग। ३-पुस्तक का भाग। ४-सीढ़ी। सीढ़ी। ५-अवधि। ६-पूर्णिमा। अमावस्या। संक्रान्ति। ७-चन्द्र या सूर्य ग्रहण। ८-पुण्यकाल। उत्सव। ९-अवसर।

पर्वक पु० (स) घुटना।

पर्वण पु० (स) पूरा करने का भाव या क्रिया।

पर्वणी स्त्री० (स) १-पूर्णिमा। २-उत्सव।

पर्वत पु० (सं) १-पहाड़। २-पहाड़ के सदृश किसी वस्तु का लगा ढेर। ३-सात की संख्या। ४-वृक्ष। ५-एक प्रकार का सन्यासी सम्प्रदाय।

पर्वतजा स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-नदी।

पर्वतनन्दिनी स्त्री० (सं) पार्वती।

पर्वतपति पु० (स) हिमालय।

पर्वतमाला स्त्री०(सं) पर्वतों की शृंखला। (रेंज)।

पर्वतराज पु० (स) हिमालय।

पर्वतस्थ वि० (स) १-पर्वत पर स्थित। २-पहाड़ी।

पर्वतात्मज पु० (स) मैनाक पर्वत का एक नाम।

पर्वतात्मजा स्त्री० (स) दुर्गा। पार्वती।

पर्वताधारा स्त्री० (स) पृथ्वी।

पर्वतारि पु० (स) इन्द्र।

पर्वताशय पु० (स) मेघ। बादल।

पर्वतीय वि० (स) १-पर्वत सम्बन्धी। पहाड़ी। २-पहाड़ पर रहने या उत्पन्न होने वाला।

पर्वतेश्वर पु० (स) हिमालय। पर्वतराज।

पर्वतोद्भव पु० (स) १-पारा। पारद। २-शिंगरफ। हिंगुल। वि० (सं) पर्वत पर उत्पन्न।

पर्वरुह पु० (स) अनार का पेड़।

पर्शनीय वि० (हि) छूने या स्पर्श करने योग्य।

पर्शु पु० (स) १-कुल्हाड़ी। २-हथियार। फरसा।

पर्शुका स्त्री० (स) पसली।

पर्शुपाणि पु० (स) गणेश। परशुराम।

पर्ष वि० (स) कठोर। निष्ठुर।

पर्षद् स्त्री० (स) दे० 'परिषद्'।

पर्षद्वल पु० (स) परिषद् का सदस्य।

पलका स्त्री० (हि) बहुत दूर का स्थान। पु० (हि) पलंग।

पलंग पु० (हि) बड़ी, मजबूत और बुनावट आदि में अच्छी चारपाई। पर्यंक।

पलंगड़ी स्त्री० (हि) छोटा पलंग।

परेश पुं० (सं) ईश्वर। ब्रह्मा। विष्णु।
परेशान वि० (फा) १-उद्विग्न। २-हैरान। व्याकुल।
परेशानी स्त्री० (फा) १-उद्विग्नता। २-हैरानी। व्याकुलता।
परेषक पुं० (सं) वह व्यक्ति जो कोई सामान रेल आदि से किसी दूसरे स्थान पर रहने वाले व्यक्ति के पास भेजे। (कॉनसाइनर)।
परेषणी पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसके पास रेल द्वारा कोई माल या सामान भेजा गया हो। (कॉनसाइनी)
परेषित वि० (सं) (वह सामान) जो रेल द्वारा किसी व्यक्ति के पास दूसरे स्थान पर भेजा गया हो। (कॉनसाइन्ड)।
परेस पुं० (हि) दे० 'परेश'।
परों अव्य० (हि) परसों।
परोक्तदोष पुं० (सं) न्यायालय में ऊटपटांग बक देने का अपराध।
परोक्ष वि० (सं) १-दृष्टि से बाहर। अनुपस्थित। २-गुप्त। अनजान। ३-अप्रत्यक्ष। (इनडायरेक्ट)। पुं० (सं) १-परम ज्ञानी। २-अभाव। अनुपस्थिति
परोक्ष-कर पुं० (सं) स्वयं प्रत्यक्ष रूप में न देकर उपभोक्ता द्वारा दिया जाने वाला कर। (इनडाइरेक्ट टैक्स)।
परोक्ष-निर्वाचन पुं० (सं) निर्वाचन-मंडलों या नगरपालिकाओं आदि द्वारा किया जाने वाला निर्वाचन जिसमें जनता का सीधा मतदान नहीं होता। (इनडाइरेक्ट-इलेक्शन)।
परोक्ष-भोग पुं० (सं) वस्तु के स्वामी की अनुपस्थिति में उसकी वस्तु का उपभोग।
परोक्ष-मतदान पुं० (सं) मतदाता की अनुपस्थिति में किसी और के द्वारा उसके मत का डाला जाना। (एब्सेंटी-वोटिंग)।
परोक्ष-लाभवृत्ति स्त्री० (सं) क्रियाक्षेत्र से दूर रह कर आय प्राप्त करने की पद्धति।
परोक्ष-वृत्ति वि०(सं) अज्ञातवास करने वाला। स्त्री० (सं) अज्ञात जीवन।
परोजन पुं० (हि) गृहस्थी से संबन्धित कोई ऐसा कार्य्य जिसमें परिजनों की उपस्थिति आवश्यक हो
परोना क्रि० (हि) दे० 'पिरोना'।
परोपकारक पुं० (सं) वह कार्य जिससे दूसरे की भलाई हो।
परोपकार पुं० (सं) दूसरों की भलाई करने वाला।
परोपकारी पुं०(सं) दे० 'परोपकारक'।
परोपजीवी वि० (सं) दूसरों पर आश्रित रह कर जीवित रहने वाला। पुं० (सं) वह छोटे कीड़े या तन्तु जो किसी अन्य पेड़ या शरीर के रक्त या रस को चूसकर जीवित रहते हैं। (पैरेसाइट)।
परोपदेश पुं० (सं) दूसरों को उपदेश देना।
परोरा पुं० (हि) परवल।
परोस पुं० (हि) पड़ोस।
परोसना क्रि० (हि) थाली या पत्तल में खाने के लिए भोजन रखना।
परोसा पुं० (हि) थाली या पत्तल में लगा हुआ एक आदमी के खाने भर भोजन।
परोसी पुं० (हि) दे० 'पड़ोसी'।
परोहन पुं०(हि) जिस पर चढ़ कर यात्रा की जाय या उस पर कोई चीज लादी जाय। पशु।
परौं अव्य० (हि) दे० 'परसों'।
परौठा पुं० (हि) दे० 'परांठा'।
पर्कटी स्त्री० (दे०) एक प्रकार का बगला।
पर्चा पुं० (हि) दे० 'परचा'।
पर्चाना क्रि० (हि) दे० 'परचाना'।
पर्जक पुं० (हि) दे० 'पर्यंक'।
पर्जन्य पुं० (सं) १-मेघ। बादल। जो गर्जन करे २-इन्द्र। विष्णु।
पर्ण पुं० (सं) १-पत्ता। पान। बाण में लगे पंख। २-डैना। बाजू। ३-पलाश का पेड़। ४-पुस्तक का पन्ना। ५-किसी विशेष विषय का पत्रव्यवहार रखने के लिये बनाई गई परत। (फाइल)।
पर्णक पुं० (सं) कागज का छपा हुआ टुकड़ा जो प्रायः मुफ्त बांटा जाता है। (लीफ्लेट)।
पर्णकार पुं० (सं) तंबोली। पनवाड़ी। पान बेचने वाला।
पर्णकुटिका, पर्णकुटी स्त्री० (सं) वह झोंपड़ी जो पत्तों से बनाई गई हो।
पर्णभोजनी स्त्री० (सं) बकरी।
पर्णशय्या स्त्री० (सं) पत्तों का बिछौना।
पर्णशाला स्त्री० (सं) पर्णकुटी।
पर्णिका स्त्री० (सं) १-खाद्य पदार्थों या अन्य वस्तुओं के सीमित वितरण की व्यवस्था में वह पुर्जी जिस पर जितनी मात्रा में पदार्थ लिखा उतना ही मिलता है। (कूपन)। २-(धनप्रेषादेशपत्र) मनीआर्डर फार्म का निचला भाग जिस पर संदेश लिखा जाता है।
पर्द पुं० (सं) १-केश समूह। घने बाल। २-पाद। अपानवायु।
पर्दनी स्त्री० (हि) धोती।
पर्दा पुं० (सं) दे० 'परदा'।
पर्पटी स्त्री० (सं) १-पपड़ी। गोपीचन्दन। ३-पानड़ी
पर्परीक पुं० (सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-तालाब।
पर्ब पुं० (हि) दे० 'पर्व'।
पर्बत पुं० (हि) दे० 'पर्वत'।
पर्यंक पुं० (सं) १-पलंग। खाट। २-योगासन विशेष वीरासन। ३-पालकी।
पर्यंत अव्य० (सं) तक। लौं। पुं० (सं) १-परिधि व्यास। २-सीमा। ३-पार्श्व। बगल। ४-अवसान।

स्थान।
पर्यंतभूमि स्त्री० (सं) पड़ोस का नगर, कस्बा या स्थान।
पर्यटक पु० (स) भ्रमण करने वाला। (टूरिस्ट)।
पर्यटन पु० (स) भ्रमण। इधर उधर घूमना।
पर्यवलोकन पु० (स) सम्पूर्ण कार्य को सरसरी तौर से आदि से अन्त तक समझने या जांचने का कार्य (सर्वे)।
पर्यवसान पु० (सं) १-समाप्ति। अन्त। निश्चय। ३-समावेश।
पर्यवेक्षक पु० (सं) १-देखभाल या निगरानी करने वाला (सुपरवाइजर)। २-किसी बात, काम या व्यवहार आदि को ध्यान से देखने वाला। (ओब्जर्वर)।
पर्यवेक्षण पु० (स) १-भलीभांति देखना। निरीक्षण (इन्सपेक्शन)। २-किसी कार्य की निगरानी। (सुपरविजन)। ३-किसी विशेष कार्य को ध्यान से देखते रहना। (ओब्जर्वेशन)।
पर्यसन पु० (स) १-फेंकना। निक्षेप। २-हटाना। दूर करना। स्थगित करना।
पर्यस्तापह्नुति स्त्री० (स) एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु के गुण छिपा करके उस गुण को किसी दूसरे में आरोपित किया जाता है।
पर्याप्त वि० (सं) १-अवश्यकतानुसार। यथेष्ट। काफी २-प्राप्त। ३-समर्थ। ४-परिमित। ५-सशक्त। पु० (सं) १-तृप्ति। संतुष्ट। २-प्रचुरता। ३-शक्ति। ४-सामर्थ्य। ५-योग्यता।
पर्याय पु० (सं) १-समानार्थक शब्द। २-क्रम। सिलसिला। ३-प्रकार। ढंग। ४-अवसर। ५-निर्माण। ६-एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रित करने का वर्णन हो।
पर्यायवाची वि० (सं) समानार्थक।
पर्यायसेवा स्त्री० (हि) क्रम से या बारी बारी से सेवा करना।
पर्यायोक्ति स्त्री० (सं) एक शब्दालंकार जिसमें कोई बात स्पष्ट रूप से न कह कर घुमाव फिराव से कही गई हो।
पर्यालोचन पु० (स) छानबीन या समीक्षण के लिये किसी बात को रखना। वि० (सं) विचार-पूर्वक सावधानी से किया हुआ। (डेलीबरेट)।
पर्यालोचना पु० (सं) किस बात या वस्तु की पूरी-पूरी जांच।
पर्यावर्तन पु० (सं) १-लौटकर आना। २-वापिस आना।
पर्युत्थान पु० (सं) अच्छी तरह से उठना। खड़ा होना।
पर्युपासक पु० (सं) सेवक। दास। सेवा करने वाला
पर्युपासन पु० (स) १-सेवा। २-पूजा। अर्चन।
पर्युप्ति स्त्री० (सं) बीज बोने का कार्य।
पर्येषण पु० (स) १-तर्क द्वारा अनुसन्धान। खोज। २-सम्मान प्रदर्शन। पूजा।
पर्येष्टि स्त्री० (सं) खोज। तलाश।
पर्व पु० (स) १-गांठ। ग्रन्थि। जोड़। अंग। २-भाग। विभाग। ३-पुस्तक का भाग। ४-जीना। सीढ़ी। ५-अवधि। ६-पूर्णिमा। अमावस्या। संक्रान्ति। ७-चन्द्र या सूर्य ग्रहण। ८-पुण्यकाल। उत्सव। ९-अवसर।
पर्वक पु० (स) घुटना।
पर्वण पु० (स) पूरा करने का भाव या क्रिया।
पर्वणी स्त्री० (स) १-पूर्णिमा। २-उत्सव।
पर्वत पु० (स) १-पहाड़। २-पहाड़ के सदृश्य किसी वस्तु का लगा ढेर। ३-सात की संख्या। ४-वृक्ष। ५-एक प्रकार का सन्यासी सम्प्रदाय।
पर्वतजा स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-नदी।
पर्वतनन्दिनी स्त्री० (सं) पार्वती।
पर्वतपति पु० (स) हिमालय।
पर्वतमाला स्त्री०(सं) पर्वतों की शृङ्खला। (रेंज)।
पर्वतराज पु० (स) हिमालय।
पर्वतस्थ वि० (स) १-पर्वत पर स्थित। २-पहाड़ी।
पर्वतात्मज पु० (स) मैनाक पर्वत का एक नाम।
पर्वतात्मजा स्त्री० (सं) दुर्गा। पार्वती।
पर्वताधारा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
पर्वतारि पु० (स) इन्द्र।
पर्वताशय पु० (स) मेघ। बादल।
पर्वतीय वि० (स) १-पर्वत सम्बन्धी। पहाड़ी। २-पहाड़ पर रहने या उत्पन्न होने वाला।
पर्वतेश्वर पु० (स) हिमालय। पर्वतराज।
पर्वतोद्भव पु० (स) १-पारा। पारद। २-शिंगरफ। हिंगुल। वि० (सं) पर्वत पर उत्पन्न।
पर्वतोद्भूत पु० (सं) अबरक।
पर्वधि पु० (सं) चन्द्रमा।
पर्वरिश स्त्री० (फा) पालन-पोषण।
पर्वरुह पु० (स) अनार का पेड़।
पर्शनीय वि० (हि) छूने या स्पर्श करने योग्य।
पर्शु पु० (स) १-कुल्हाड़ी। २-हथियार। फरसा।
पर्शुका स्त्री० (स) पसली।
पर्शुपाणी पु० (सं) गणेश। परशुराम।
पर्ष वि० (स) कठोर। निष्ठुर।
पर्षद् स्त्री० (स) दे० 'परिषद्'।
पर्षद्दल पु० (स) परिषद् का सदस्य।
पलका स्त्री० (हि) बहुत दूर का स्थान। पु० (हि) पलंग।
पलंग पु० (हि) बड़ी, मजबूत और बुनावट आदि में अच्छी चारपाई। पर्यङ्क।
पलंगड़ी स्त्री० (हि) छोटा पलंग।

पलंगतोड़ वि० (हि) निठल्ला। सुस्त। आलसी।
पलंगपोश पुं० (हि) पलंग पर बिछाने की चादर।
पल पुं०(स) १-समय का वह विभाग जो २४ सैकिंड के बराबर होता है। २-चार कर्ष की एक प्राचीन तौल। ३-तराजू। तुला। ४-पयाले। ५-पलक। दृगंचल।
पलक स्त्री० (हि) १-आँख के ऊपर का पर्दा। २-पल। क्षण। लहमा।
पलका पु० (हि) पलंग। खाट।
पलकी स्त्री० (हि) छोटी खाट।
पलगंड पुं० (सं) मिट्टी का पलास्तर करने वाला। राज। लेपक।
पलटन स्त्री० (अ) १-सेना। फौज। २-सैनिकों का दल। (प्लेटून)।
पलटना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु के ऊपरी भाग का नीचे या नीचे के भाग का ऊपर हो जाना। उलट-जाना। २-अवस्था या दशा बदलना। ३-इच्छित दशा को प्राप्त होना। ४-मुड़ना। ५-लौटना। फेरना। वापिस होना।
पलटनिया पुं० (हि) सेना में काम करने वाला सिपाही।
पलटा पुं० (हि) १-परिवर्तन। २-बदला। प्रतिफल। ३-मांझी के बैठने की नाव में पटड़ी। ४-सङ्गीत में गाते समय ऊंचे स्वर से खूबसूरती से नीचे स्वर में आना। ५-कुश्ती का एक पेंच। ६-लोहे या पीतल की बड़ी खुरचनी।
पलटाना क्रि० (हि) १-लौटाना। वापिस करना। २-बदलना।
पलटाव पुं० (हि) पलटे या उलटे जाने की क्रिया या भाव।
पलटे क्रि० वि० (हि) बदले में। प्रतिफल-स्वरूप।
पलड़ा, पलरा पुं० (हि) १-तराजू का पल्ला। २-विरोधियों में से कोई पक्ष।
पलथी स्त्री० (हि) बैठने का एक ढंग जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ तथा बाएँ पैर का दाहिने पट्टे के नीचे दबाकर बैठा जाता है।
पलना क्रि०(हि) १-पाला पोसा जाना। २-खा-पीकर हृष्टपुष्ट होना। पुं० (हि) दे० 'पालना'।
पलनाना क्रि० (हि) घोड़े पर जीन आदि कसकर चलने के लिये तैयार करना।
पलप्रिय वि० (सं) मांस खाने वाला। पुं० (सं) १-वन-काक। कौआ। २-राक्षस।
पलल वि० (सं) पिलपिला। पुं० (सं) १-तिल और गुड़ के मेल से बनाया हुआ तिलकुट। २-तिल का चूरा। ३-कीचड़। ४-मांस। ५-राक्षस।
पललज्वर पुं० (सं) पित्तज्वर।
पललप्रिय पुं० (स) १-राक्षस। २-कौआ। वि० (सं) मांसाहारी।
पलवा पुं० (हि) १-अंजली। चुल्लू। २-ऊख का नीरस भाग। अगौरा। ३-एक प्रकार की घास।
पलवाना क्रि० (हि) किसी के द्वारा पालन पोषण कराना।
पलस्तर पुं० (हि) १-मिट्टी, चूने, कंकर आदि का दीवार पर लेप। २-रोगी के शरीर पर औषध का लेप। (प्लास्टर)।
पलहना क्रि० (हि) पल्लवित होना। लहलहाना।
पलहा पुं० (हि) कोंपल। कोमल नया पत्ता।
पलांडु पु० (सं) प्याज।
पला पु० (हि) १-तेल की बड़ी पली। २-तराजू का पलड़ा। ३-आँचल। पल्ला। ४-पल। निमिष।
पलाद पुं० (सं) राक्षस।
पलादन पुं० (सं) दे० 'पलाद'।
पलान पुं० (हि) पशुओं की पीठ पर चढ़ने या बोझ लादने के लिये कसी जाने वाली गद्दी। जीन।
पलानना क्रि० (हि) १-घोड़े आदि पर पलान बांधना या कसना। २-चलने या चढ़ाई करने की तैयारी करना।
पलाना क्रि० (हि) पलायन करना। भागना। भगाना।
पलानि स्त्री० (हि) जीन।
पलानी स्त्री० (हि) १-स्त्रियों के पंजे के ऊपर पहनने का एक आभूषण। २-छप्पर। ३-जीन।
पलायक पुं० (सं) अपने सब उत्तरदायित्व त्याग कर या दण्ड के भय से भागने वाला। भगोड़ा। पलायी (एब्सकोंडर)।
पलायन पु० (सं) १-भागने की क्रिया या भाव। २-फरार। (एब्सकोंड)।
पलायमान वि० (सं) पलायन करता हुआ।
पलायित वि० (सं) भागा हुआ।
पलायी स्त्री० (सं) दे० 'पलायक'।
पलाल पुं० (सं) भूसी। चोकर।
पलालदोहद पुं० (सं) आम्रवृक्ष।
पलाश पुं० (सं) १-पलास। ढाक। टेसू। २-राक्षस ३-पत्ता। ४-शासन। ५-परिभाषण। ६-एक पक्षी ७-मगध देश। वि०(सं) १-हरा। २-मांसाहारी। ३-निर्दय।
पलाशक पुं० (सं) १-ढाक। पलास। २-क्रूर। ३-लाख।
पलाशाख्य पुं० (सं) नाड़ी। हींग।
पलास पुं० (हि) १-एक प्रकार का वृक्ष जिसमें लाल फूल लगते हैं। ढाक। टेसू। २-गिद्ध की जाति का एक मांसाहारी पक्षी। ३-जम्बूर जैसा एक औजार।
पलिका पुं० (हि) देश 'पलका'।
पलित वि० (सं) १-वृद्ध। बुड्ढा। २-पका हुआ या सफेद (बाल)। पुं० (सं) १-सफेद बाल। २-बुढ़ापे

मार्ग। राह।
पविधर पुं० (सं) इन्द्र।
पविताई स्त्री० (हि) पवित्रता। सफाई।
पवित्तर वि० (हि) दे० 'पवित्र'।
पवित्र वि० (सं) १-शुद्ध। निर्मल। २-पापरहित। पुं०(स) १-चलनी आदि साफ करने के साधन। २-कुश। ३-यज्ञोपवीत। जनेऊ। ४-तांबा। ५-कुश की बनी पवित्री जिसे यज्ञ आदि करते समय अनामिका में पहनते हैं।
पवित्रक पुं० (स) १-सूत का बना हुआ जाल। २-कुशा। ३-पीपल। ४-जनेऊ।
पवित्रता स्त्री० (सं) स्वच्छता। पावनता।
पवित्रधान्य पुं० (सं) जौ। जव। यव।
पवित्र-पाणि वि० (सं) जिसके हाथ में कुश हो।
पवित्रा स्त्री० (सं) १-तुलसी। २-हलदी। ३-पीपल। ४-रेशम की बनी माला।
पवित्रात्मा वि० (सं) शुद्ध अन्तःकरण वाला।
पवित्रारोपण, पवित्रारोहण पुं० (स) सावन सुदी बारस को होने वाला एक उत्सव जिसमें भगवान कृष्ण की मूर्ति को जनेऊ पहनाया जाता है।
पवित्रित वि० (सं) निर्मल या शुद्ध किया हुआ।
पवित्री स्त्री० (सं) कर्मकांड के समय अनामिका में पहनने का कुश का बना छल्ला।
पवित्रीकरण पुं० (सं) किसी अशुद्ध वस्तु को पवित्र करना। शुद्धि।
पविधर पुं० (सं) इन्द्र (जो वज्र धारण करते हैं)।
पवीर पुं० (सं) १-हल का फाल। २-शस्त्र। हथियार। ३-वज्र।
पव्य पुं० (सं) यज्ञपात्र।
पशम पुं० (हि) १-बढ़िया और मुलायम जिसके दुशाले आदि बनते हैं। २-उपस्थ पर के बाल। ३-अत्यन्त तुच्छ वस्तु।
पशमीना पुं० (फा) पशम या पशम का बना कपड़ा।
पशव्य वि० (सं) १-पशु के योग्य। २-पशु जैसा।
पशु पुं० (स) १-चार पैरों से चलने वाला जानवर। मवेशी। चौपाया। (एनीमल)। २-जीवमात्र। ३-बलिपशु। ४-यज्ञकुण्ड। ५-मूर्ख। विवेकहीन व्यक्ति।
पशु-अवरोध पुं० (स) कांजी-हाउस। वह स्थान जहां कृषि को हानि पहुंचाने वाले आवारा पशु बन्द किये जाते है। (कैटल पाउण्ड)।
पशुकर्म पुं० (सं) यज्ञादि में पशुओं का बलिदान।
पशुकाम वि० (सं) गाय भैंस आदि का अभिलाषी।
पशुक्रिया स्त्री० (सं) १-पशु बलिदान की क्रिया। २-संभोग। मैथुन।
पशु-चर पुं० (सं) १-पशुओं का चारा, घास आदि २-पशुओं के चरने की भूमि। (पासच्योर)।
पशुचर-भूमि स्त्री० (सं) गोचर भूमि।
पशुचर्या स्त्री० (सं) १-पशु की तरह विवेकहीन आचरण। २-स्वेच्छाचार। ३-मैथुन।
पशुचिकित्सक पुं० (सं) पशुओं की चिकित्सा करने वाला वैद्य। (वेटेरिनरी डॉक्टर)।
पशुचिकित्सालय पुं० (सं) वह स्थान जहां पशुओं का इलाज होता है। (वेटेरिनरी-हॉस्पिटल)।
पशुजीवी वि० (सं) पशु का मांस खाकर जीने वाला
पशुता स्त्री० (सं) पशु का भाव। मूर्खता।
पशुधन पुं० (सं) मनुष्य-परिवार के साथ रहने वाले पशु गाय भैंस आदि। (लाइवस्टॉक)।
पशुनाथ पुं० (सं) शिव।
पशुनिरोधगृह पुं० (सं) दे० 'पशु-अवरोध'। (कैटल पाउण्ड)।
पशुनिरोधिका स्त्री० (सं) दे० 'पशु-अवरोध'।
पशुपति पुं० (सं) १-शिव। २-पशु पालने का व्यवसाय करने वाला।
पशुपल्लव पुं० (सं) केवटीमोथा।
पशुपालक पुं० (सं) १-पशु पालने वाला। २-वह जो जीविका के लिये पशु पालता हो।
पशुपाश पुं० (सं) पशुरूपी जीव का बन्धन।
पशुपक्षिकानन पुं० (सं) वह कानन या बाग जहां विभिन्न प्रकार के पशु या पक्षी प्रदर्शन आदि के लिये रखे जाते हों। (चिड़िया घर)। (जू)।
पशुप्रक्षेत्र पुं० (सं) गाय भैंस आदि पशुओं को पालने के लिए रखने का स्थान। (लाइवस्टॉक फार्म)।
पशुमैथुन पुं० (सं) १-नर या मादा पशुओं का परस्पर संभोग। २-मनुष्य का मादा पशुओं के साथ संभोग (बेस्टियेलिटी)।
पशुयाग पुं० (सं) पशुबलि यज्ञ।
पशुराज पुं० (सं) सिंह।
पशुवत् वि० (स) पशु के समान।
पश्चात अव्य० (सं) पीछे-पीछे से। तदुपरांत। बाद। फिर। अनन्तर।
पश्चातकर्म पुं० (सं) वैद्यक के अनुसार वह कर्म जो रोग समाप्ति पर शरीर को पूर्व प्रकृत अवस्था में लाने के लिये किया जाता है।
पश्चातकृत वि०(सं) जिसे पीछे छोड़ दिया गया हो।
पश्चात्ताप पुं० (स) किसी अनुचित काम से मन में उत्पन्न होने वाली ग्लानि। अनुताप। पछतावा।
पश्चात्तापी वि० (सं) पछताने वाला।
पश्चादुक्त वि० (सं) १-जो बाद में कहा गया हो। २-जिसका प्रयोग किसी अन्य शब्द के बाद में किया गया हो। (लेटर)।
पश्चाद्बाहुबद्ध वि० (सं) जिसकी मुश्कें पीछे की तरफ को बांध दी गई हों।

ाद्भाग पुं० (स) पिछवाड़ा। पीछे का हिस्सा।
ाद्वर्ती वि० (सं) १-पीछा या अनुसरण करने
का। २-पीछे रहने वाला।
ार्द्ध पुं० (स) १-(शरीर का) पिछला भाग।
-(समय या स्थान संबन्धी) अन्तिम। ३-रात्रि
अन्तिम आधा भाग। वि० (सं) शेषार्ध।
ाम पुं० (सं) पूर्व दिशा के सामने वाली दिशा
म ओर सूर्य अस्त होता है। प्रतीची। पच्छिम।
स्ट)।
वर्मक्रिया स्त्री० (स) अंत्येष्टि क्रिया।
म-घाट पुं० (हि) दे० 'पश्चिमी घाट'।
मरात्र पुं० (सं) रात्रि का अन्तिम या शेष भाग
मवाहिनी वि० (स) पश्चिम दिशा की ओर
ने वाली नदी।
मा स्त्री० (स) दे० 'पश्चिम'।
माचल पुं० (सं) वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे
ं छिपता है। अस्ताचल।
मार्द्ध पुं० (सं) पीछे वाला आधा भाग।
मी क्रि० (हि) १-पश्चिम की ओर का। २-
चम की ओर के देश का रहने वाला। ३-
चम संबन्धी।
मीकरण पुं० (स) आचार-व्यवहार तथा वेश-
ा में पाश्चात्य देशों का अनुकरण करना। (वैस्ट-
इज़ेशन)।
मीघाट पुं० (सं) बंबई राज्य के पश्चिम की
र की एक पर्वतमाला।
मोत्तर पुं० (स) उत्तर और पश्चिम के मध्य का
ना। वायुकोण।
पुं० (फा) सभा।
पुं० (फा) तट। किनारा।
पुं० (हि) पाकिस्तान की पश्चिमोत्तर सीमा से
गानिस्तान तक बोली जाने वाली भाषा।
पुं० (फा) दे० 'पराम'।
ना पुं० (फा) दे० 'पश्मीना'।
ी स्त्री० (स) १-नाद की वह अवस्था जब कि
मूलाधार से उठ कर हृदय में जाता है। २-
ी।
हेर पुं० (सं) आँखों के सामने देखते-देखते
। चुराने वाला—जैसे सुनार।
० (हि) १-बंध। डैना। २-ओर। तरफ।
पुं० (हि) दे० 'पशु'।
ना क्रि० (हि) धोना।
पुं० (हि) दे० 'प्रसन्न'।
पुं० (हि) दे० 'प्रसंग'। वि० (हि) बहुत कम
पूर्ण परिमाण का।
पुं० (हि) दे० 'पश्चात्'।
स्त्री० (हि) दे० 'पसंदगी'।

पसंद वि० (फा) रुचि के अनुकूल। मन को भला
लगने वाला। स्त्री० (फा) अभिरुचि।
पसंदीदा वि० (फा) जो पसंद हो।
पस अव्य० (फा) अतः। इस कारण।
पसई स्त्री० (देश०) पहाड़ी राई।
पसोपेश पुं० (फा) टालमटोल। बहाना। आगा-पीछा
पसनी स्त्री० (हि) अन्नप्राशन संस्कार जिसमें बालक
को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है।
पसर पुं० (हि) १-गहरी की हुई हथेली। आधी
अंजली। २-विस्तार। पुं० (देश०) १-आक्रमण।
धावा। २-पशुओं का रात के समय चराने का काम
पसरना क्रि०(हि) १-फैलना। २-इस प्रकार पैर फैला
कर सोना कि दूसरा कोई और सो या बैठ न सके
पसरहट्टा पुं० (हि) वह बाजार जहाँ पंसारियों की
दूकानें हों।
पसराना क्रि० (हि) पसारने का काम दूसरे से कर-
वाना।
पसरौंहा वि० (हि) पसरने या फैलने वाला।
पसली स्त्री० (हि) मनुष्यों या पशुओं के छाती में की
आड़ी और कुछ गोलाकार हड्डी।
पसवा पुं० (देश०) हलका गुलाबी रंग।
पसा पुं० (हि) अंजली।
पसाउ पुं० (हि) कृपा। अनुग्रह।
पसाना क्रि० (हि) १-चावल पक जाने के बाद उसमें
का माड़ या बचा हुआ पानी निकालना। २-प्रसन्न
होना।
पसार पुं० (हि) १-पसरने की क्रिया या भाव। २-
लम्बाई-चौड़ाई। ३-दालान।
पसारना क्रि० (हि) फैलाना।
पसारा पुं० (हि) १-प्रसार। फैलाव। २-विस्तार।
पसाव पुं० (हि) पसाने के बाद निकला हुआ पदार्थ।
माड़।
पसावन पुं० (हि) १-पकाई या उबाली हुई वस्तु से
का निकाला हुआ पानी। मांड़।
पसाहनि पुं० (हि) अंगराग।
पसित वि० (हि) बँधा हुआ।
पसीजना क्रि० (हि) १-किसी घन पदार्थ में मिले
हुए द्रव अंशों का गरमी पाकर रस-रसकर बहना।
२-पसीने से तर होना। चित्त में दया उत्पन्न होना
पसीना पुं० (हि) शरीर या त्वचा के ऊपर
से निकलने वाला पानी।
स्वेद)।
पसु पुं० (हि) दे० 'पशु'
पसुरी स्त्री० (हि) दे० 'पसली'
पसेउ पुं० (हि) पसीना
पसेरी स्त्री० (हि) पंसेरी।
पसेव पुं० (हि) १-पसाव

२-पसीना। प्रस्वेद। ३-सुखाने पर अफीम से निकलने वाला तरल पदार्थ।
पस्त वि० (फा) १-हिम्मत हारा हुआ। थका हुआ। शिथिल।
पस्तकद वि० (फा) नाटा। छोटे कद वाला।
पस्तकिस्मत वि० (फा) भाग्यहीन।
पस्तहिम्मत वि० (फा) कायर। डरपोक। हारा हुआ।
पहँ अव्य० (हि) १-निकट। पास। समीप। २-से।
पह स्त्री० (हि) दे० 'पौ'।
पहचनवाना क्रि० (हि) पहचानने का काम कराना।
पहचान स्त्री०(हि) १-किसी गुण, मूल्य, योग्यता आदि जानने की क्रिया। परख। २-चिह्न। ३-किसी को देख कर यह बतलाना कि यह वही है। (आइडेन्टिफिकेशन)। ४-परिचय।
पहचानना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु की आकृति, रङ्ग-रूप आदि से परिचित होना। २-अन्तर समझना या करना। (डिस्टिंग्विश)। ३-किसी वस्तु का गुण या दोष जानना।
पहटना क्रि० (हि) खदेड़ना। भगाने या पकड़ने के लिये किसी के पीछे दौड़ना। क्रि० (देश०) हथियार की धार तेज करना।
पहन पुं० (हि) पाषाण। पाहन। पुं० (फा) वात्सल्यता के कारण बच्चे के लिए माँ की छाती में भर आने वाला दूध।
पहनना क्रि० (हि) शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण करना।
पहनवाना क्रि० (हि) पहनने का काम किसी दूसरे से करवाना।
पहनाई स्त्री० (हि) १-पहनने की क्रिया या भाव। २-पहनाने की मजदूरी।
पहनाना क्रि (हि) दूसरे को वस्त्राभूषण आदि धारण कराना।
पहनावा पुं० (हि) १-पहनने के मुख्य कपड़े। पोशाक परिधेय। २-सिर से पैर तक पहनने के सब वस्त्र। ३-विशेष स्थान या समाज में पहने जाने वाले वस्त्र। ४-पहनने का ढंग या रीति।
पहपट पुं० (देश०) १-स्त्रियों का एक गीत विशेष। २-हल्ला। कोलाहल। ३-कानाफूसी या शोर मचाकर की जाने वाली बदनामी। ४-धोखा। छल।
पहपटबाज वि० (देश०) १-हल्ला या शोरगुल करने वाला। फसादी। झगड़ालू। २-ठग। धोखेबाज।
पहर पुं० (हि) रात और दिन का आठवां भाग। तीन घन्टे का समय।
पहरना क्रि० (हि) पहनना।
पहरा पुं० (हि) १-रक्षा या निगाहबानी करने का प्रबन्ध। चौकी। २-रखवाली। ३-पहरेदारों के दल के बदलने का समय। ४-एक बार में नियुक्त पहरेदार। गारद। रक्षकदल। ५-चौकीदार आदि का फेरा। ६-किसी वस्तु या व्यक्ति को किसी स्थान से न हटने देने के लिये किसी आदमी को निगरानी के लिये बैठाना। ७-हिरासत। हवालात। ८-युग। समय। ९-किसी के आने का शुभ या अशुभ प्रभाव।
पहराइत पुं० (हि) पहरा देने वाला।
पहरायत पुं० (हि) दे० 'पहरेदार'।
पहराना क्रि० (हि) दे० 'पहनाना'।
पहरावनी स्त्री० (हि) सिर से पैर तक के पहनने के कपड़े या पोशाक जो किसी को खुश होने पर दान में दी जाती है। खिलअत।
पहरावा पुं० (हि) दे० 'पहनावा'।
पहरी पुं० (हि) पहरे पर नियुक्त व्यक्ति। पहरेदार। चौकीदार।
पहरुआ पुं० (हि) पहरेदार।
पहरू पुं० (हि) पहरा देने वाला। सन्तरी।
पहरेदार पुं० (हि) दे० 'पहरी'।
पहल पुं०(हि) १-किसी घन पदार्थ के सिरों या कोनों के बीच का समभूमि। २-पहलू। बगल। ३-जमी हुई रुई या ऊन की तह। ४-परत। तह। ५-किसी ऐसे कार्य का आरम्भ जिसके प्रतिकार में कुछ किए जाने की संभावना हो किसी कार्य का अपनी ओर से आरम्भ। (इनीशियेटिव)।
पहलदार वि० (हि) जिसमें चारों ओर बैठी हुई सतह हों।
पहलवान पुं० (फा) १-दांव पेंच सहित कुश्ती लड़ने वाला बली पुरुष। मल्ल। २-हृष्टपुष्ट व्यक्ति।
पहलवानी स्त्री० (फा) १-कुश्ती लड़ने का कार्य। २-कुश्ती लड़ने का पेशा। मल्लवृत्ति।
पहलवी स्त्री० (फा) ईरान की एक प्राचीन भाषा।
पहला वि० (हि) १-क्रमानुसार आरम्भ का। प्रथम। २-रुई की जमी हुई परत। पहल। पक्ष। (एस्पेक्ट)
पहलू पुं० (फा) १-बगल और कमर के बीच का भाग जहां पसलियां होती हैं। पार्श्व। २-किसी वस्तु का बायाँ भाग। पार्श्व भाग। ३-गुण-अवगुणादि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न अंग। पक्ष। (एस्पेक्ट)। ४-पड़ौस। ५-संकेत। ६-करवट बल। दिशा। ७-पहल। ८-गूढ़ आशय। व्यंग्यार्थ।
पहले अव्य० (हि) १-सर्व प्रथम। आदि या आरम्भ में। २-क्रम से प्रथम। ३-स्थिति में सबसे आगे। ४-बीते समय में।
पहलेपहल अव्य० (हि) सबसे पहले। सर्व प्रथम।
पहलौठा वि० (हि) किसी स्त्री का पहला (लड़का)।
पहलौठी स्त्री० (हि) सबसे पहले जनने की क्रिया। पहले-पहल का बच्चा जनना।
पहलोठा वि० (हि) दे० 'पहलौठा'।

पांच वि० (हि) चार और एक। पुं० (हि) १-पाँच की संख्या। ५। २-बहुत से लोग। ३-जात बिरादरी के मुखिया लोग।
पांचजन्य पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण के शंख का नाम। २-विष्णु के शंख का नाम। ३- अग्नि।
पांचनद वि० (सं) पंजाब का। पंजाबी। पुं० (सं) पंजाब का निवासी। पञ्चनद।
पांचभौतिक पुं० (सं) पांच भूतों या तत्वों से बना-हुआ शरीर।
पांचयाज्ञिक वि० (सं) पंचयज्ञ सम्बन्धी। पुं० (सं) पांच महायज्ञों में से एक।
पांचर पुं० (हि) कोल्हू के बीच में जड़े हुए लकड़ी के टुकड़े।
पांचवर्षिक वि० (सं) पांच वर्ष का।
पांचालिका स्त्री० (सं) कपड़े की बनी गुड़िया।
पांचवां वि० (हि) चार के बाद वाला।
पांचा पुं० (हि) घास, भूसा आदि हटाने या समेटने का किसानों का एक औजार।
पांचाल पुं० (सं) १-भारत के पश्चिमोत्तर का एक देश। २-नाई, धोबी, चमार, जुलाहे और बढ़ई इन पांचों का समुदाय। वि० (सं) पंचाल देश का रहने वाला।
पांचालिका स्त्री० (सं) दे० 'पंचालिका'।
पांचाली स्त्री० (सं) १-कपड़े की बनी गुड़िया या पुतली। २-साहित्य में वाक्य रचना की वह शैली जिसमें विकट पदावलियाँ होती हैं। ३-द्रौपदी।
पांचै स्त्री० (हि) पंचमी। किसी पक्ष की पांचवीं तिथि।
पांजना क्रि० (हि) धातु के टुकड़ों को टांका लगाकर जोड़ना। झालना। टांका लगाना।
पांजर पुं० (हि) शरीर में बगल तथा कमर के मध्य का भाग। २-पसली। ३-पार्श्व। बगल।
पांजी स्त्री० (हि) नदी का इतना कम पानी हो जाना कि उसे पैदल पार किया जा सके।
पांझ वि० (हि) दे० 'पाँजी'।
पांडर पुं० (सं) १-सफेद रङ्ग का कोई पदार्थ। २-कुन्द का फूल या वृक्ष। ३-गेरु।
पांडरा पुं० (देश०) एक प्रकार की ईख।
पांडव पुं० (सं) १-युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव — पांडु के पुत्र। २-पंजाब के एक प्राचीन प्रदेश का नाम।
पांडवश्रेष्ठ पुं० (सं) युधिष्ठिर।
पांडित्य पुं० (सं) १-पण्डित होने का भाव। २-विद्वता। पंडिताई।
पांडु पुं० (सं) १-कुछ लाली लिए पीला रङ्ग। २-सफेद हाथी। ३-श्वेत रङ्ग। ४-एक प्रकार का रोग जिससे शरीर पीला पड़ जाता है। पीलिया। ५-परवल। ६-प्राचीन काल के एक राजा का नाम जिनके युधिष्ठिर आदि पांच पुत्र थे।
पांडु-फल पुं० (सं) परवल।
पांडु-मृत्तिका स्त्री० (सं) खड़िया। श्वेत या पीले रङ्ग की मिट्टी। रामरज।
पांडुर वि० (सं) १-पीला। जर्द। २-सफेद। पुं० (सं) १-पीला रङ्ग। २-श्वेत रङ्ग। ३-सफेद ज्वार। ४-कबूतर। ५-सफेद खड़िया। ६-सफेद कोढ़।
पांडुरोग पुं० (सं) पीलिया।
पांडुलिपि स्त्री० (सं) १-हाथ से लिखी गई पुस्तक या ग्रन्थ। (मैन्युस्क्रिप्ट)। २-लेखादि का वह प्रारंभिक रूप जिसे घटाया या बढ़ाया जा सके। (ड्राफ्ट)।
पांडुलेख पुं० (सं) दे० 'पांडुलिपि'।
पांडुलेखक पुं० (सं) लेख्य आदि की पांडुलिपि तैयार करने वाला। (ड्राफ्ट्समैन)।
पांडुलेख्य पुं० (सं) मसविदा। पांडुलिपि लिखने का काम। (ड्राफ्टिंग)।
पांड़े पुं० (हि) १-ब्राह्मणों की एक शाखा का नाम। २-पंडित। विद्वान। ३-शिक्षक। ४-रसोई आदि बनाने वाला।
पांड्य पुं० (सं) १-पांडु देश का निवासी। २-एक प्राचीन देश।
पांत स्त्री० (हि) पंगत। कतार। पंक्ति।
पांति स्त्री० (हि) १-कतार। पंक्ति। २-पंगत। एक साथ बैठकर भोजन करने वाले।
पांथ वि० (सं) १-पथिक। २-वियोगी।
पांथ-निवास पुं० (सं) सराय। चट्टी।
पांथशाला पुं० (सं) सराय। चट्टी।
पांयँ पुं० (हि) पैर। कदम। चरण।
पांयँचा पुं० (हि) दे० 'पायँचा'।
पांयँता पुं० (हि) दे० 'पायँता'।
पांव पुं० (हि) पाद। पैर।
पांवचप्पी स्त्री० (हि) पैर दबाना।
पांव-पांव अव्य० (हि) पैदल।
पांवड़ा पुं० (हि) वह कपड़ा जो किसी आदरणीय अतिथि के पाँव रख कर चलने के लिये बिछाया गया हो।
पांवड़ी स्त्री० (हि) १-जूता। खड़ाऊँ। २-गोटा आदि बनाने का एक आला।
पांवर वि० (हि) पामर। अधम। नीच।
पांवरी स्त्री० (हि) १-दे० 'पाँवड़ी'। २-सोपान। ३-पैर रखने का स्थान। ४-जूता। ५-पौरी। ड्योढ़ी ६-बैठक। दालान।
पांशु स्त्री० (सं) १-रज। धूलि। २-बालु। ३-गोबर की खाद। ४-भू-सम्पत्ति।
पांशुका स्त्री० (सं) केवड़े का पौधा।
पांशुल वि० (सं) लम्पट। पर-स्त्रीगामी। व्यभिचारी।
पांशुला स्त्री० (सं) १-कुलटा। छिनाल। २-रजस्वला।

स्त्री। ३-भूमि। ४-केतकी।
पांस स्त्री० (हि) १-घास, गोबर और गली सड़ी वस्तुएं जो खेत को उपजाऊ बनाने के लिए डाली जाती है। २-शराब निकला हुआ महुआ। ३-खमीर।
पांसना क्रि० (हि) खेत में खाद डालना।
पांसा पु० (हि) दे० 'पासा'।
पांसी स्त्री० (हि) सूत आदि से बना हुआ जाल जो घास भूसा आदि बांधने के काम आता है।
पांसु स्त्री० (हि) पसली।
पांहीं अव्य० (हि) निकट। पास। नजदीक।
पा पुं० (फा) पैर। पांव। कदम। जड़।
पाअंदाज पुं० (फा) नारियल या मूंज आदि की बनी चटाई जो पैर पोंछने के काम आती है।
पाइ पुं० (हि) पाद। पैर। पांव।
पाइक पुं० (हि) दे० 'पायक'।
पाइका पुं० (पु) नाप के अनुसार मुद्रण का टाइप जो चौड़ाई में एक इंच का छठे भाग के बराबर होता है।
पाइट पुं० (हि) दीवार आदि चुनने के लिये खड़ी की जाने वाली मचान।
पाइतरी स्त्री० (हि) पलंग या चारपाई का पैताना।
पाइप पुं० (अं) १-नल। नली। २-पानी का नल। ३-बांसुरी की तरह का एक वाद्ययन्त्र। ४-हुक्के की नली।
पाइमाल वि० (हि) दे० 'पामाल'।
पाइरा पु० (हि) घोड़े की जीन में लगी हुई रकाब।
पाइल स्त्री० (हि) दे० 'पायल'।
पाई स्त्री० (हि) १-एक छोटा सिक्का जो एक पैसे में तीन होते हैं। २-किसी अंक की इकाई का चौथा भाग प्रकट करने वाली खड़ी रेखा जैसे—३-सवा-चार (४।)। ४-लेख में पूर्ण विराम की रेखा। ५-चक्कर घूमना। ६-धान का घुन। ७-दीर्घ आकार सूचक मात्रा। ८-सूत माँजने का बड़ा। ९-छापे में घिसे हुए बेकार टाइप।
पाउँ पुं० (हि) पैर। पांव।
पाउंड पुं० (अं) १-सोने का एक अंग्रेजी सिक्का जो बीस शिलिंग का होता है। २-एक अंग्रेजी तौल जो लगभग आधा सेर के बराबर होता है।
पाउ पुं० (हि) चतुर्थांश। पाव।
पाउडर पुं०(अं) १-चूर्ण। बुकनी। २-सुन्दरता बढ़ाने के लिये तथा चमड़ा पर निखारने के लिए मुख आदि पर लगाया जाने वाला खिलखड़ी का सुगन्ध मिश्रित चूरा।
पाक पु० (सं) भोजन पकाने की क्रिया। २-पकाने की क्रिया। ३-पकवान। ४-श्राद्ध में पिंड दान के निमित्त [illegible]
पकना। ६-फोड़े आदि का पकना। ७-वृद्धावस्था के कारण बालों का सफेद होना। वि० (फा) - १-पवित्र। साफ सुथरा। २-खालिस। ३-पारहेजगार
पाकक्रिया स्त्री० (सं) पकाने का काम।
पाकज पुं० (सं) काला नमक।
पाकट स्त्री० (अं) जेब। थैली। खीसा।
पाकद्विष् पु० (सं) इन्द्र का एक नाम।
पाकदामन वि० (फा) विशुद्ध चरित्र वाली स्त्री।
पाकना क्रि०(हि) पकाना।
पाकप हित पु० (सं) वह जो खाना या रसोई बनाने में सिद्धहस्त हो।
पाकपात्र पु० (सं) रसोई के बरतन।
पाकपुटी स्त्री० (हि) कुम्हार का आवा।
पाकफल पु० (सं) करौंदा।
पाकबाज वि० (फा) नेकनियत। सच्चा। निष्पाप।
पाकयज्ञ पु० (सं) पंचमहायज्ञ में ब्रह्मयज्ञ को छोड़ अन्य चार यज्ञ।
पाकर पु० (हि) एक प्रकार का बड़ का पेड़।
पाकरिपु पु० (सं) इन्द्र।
पाकरी स्त्री० (हि) दे० 'पाकर'।
पाकल वि० (हि) पका हुआ।
पाकशाला स्त्री० (सं) रसोई घर।
पाकशासन पु० (सं) इन्द्र का नाम।
पाकशासनि पु० (सं) १-इन्द्र का पुत्र जयन्त। २-अर्जुन। ३-बालि।
पाकशुक्ला स्त्री० (सं) खड़िया मिट्टी।
पाकस्थली स्त्री० (सं) उदर में पक्वाशय जहां आहार पचता है।
पाकस्थान पु० (सं) रसोई-घर।
पाकसाफ वि० (फा) निर्मल। साफ-सुथरा। निष्पाप।
पाकहंता पु० (हि) इन्द्र का एक नाम।
पाका पु० (हि) फोड़ा। वि० (हि) दे० 'पक्का'।
पाकागार पु० (सं) रसोई-घर।
पाकातिसार पु० (सं) अतिसार रोग का एक भेद।
पाकाभिमुख वि० (सं) जो पकने वाला हो। विकासोन्मुख।
पाकारि पु०(सं) १-इन्द्र। २-सफेद कचनार।
पाकिस्तान पुं० (फा) भारत के कुछ प्रदेशों को अलग करके बनाया हुआ एक मुसलमानी राज्य।
पाकिस्तानी १-पाकिस्तान सम्बन्धी। २-पाकिस्तान का पु० (फा)पाकिस्तान का निवासी।
पाकी स्त्री० (फा) पवित्रता। शुद्धता।
पाकीजा वि० (फा) १-पाक। पवित्र। शुद्ध। २-सुन्दर। निर्दोष।
पाकेट पु०(अं) जेब। खीसा।
पाकेटमार पुं० (हि) गिरहकट। (पिक पॉकेट)।

पाक्षपातिक वि० (सं) १-फूट डालने वाला । २-पक्ष-पात करने वाला ।
पाक्षायण वि० (सं) पक्ष संबन्धी । जो पक्ष में एक बार किया जाय ।
पाक्षिक वि० (सं) १-तरफदार । पक्षपाती । २-पक्ष या पखवाड़े से संबन्धित । (फोर्ट नाइटली) । पुं० (सं) पक्षियों को मारने वाला । व्याध । बहेलिया ।
पाखंड पुं० (सं) १-ढोंग । आडम्बर । २-वेद विरुद्ध आचरण । ३-छल । धोका । ४-धूर्तता । चालाकी ।
पाखंडफंडी वि० (सं) १-वेद विरुद्ध आचरण करने वाला । २-ठग । धूर्त ।
पाखंडी वि० (सं) दे० 'पाखंड' ।
पाख पुं० (हि) १-महीने का आधा । पखवाड़ा । २-कच्चे मकानों की दीवारों का वह तिकोना चौड़ा भाग जिस पर लट्ठे रखे रहते हैं । ३-पंख । पर ।
पाखर स्त्री० (हि) १-लड़ाई के समय हाथी या घोड़े पर डाली जाने वाली लोहे की भूल । २-राल चढ़ाया हुआ टाट या उसकी पोशाक ।
पाखा पुं० (हि) १-कोना । छोर । २-कच्चे घर का पाख ।
पाखान पुं० (हि) पाषाण । पत्थर ।
पाखाना पु० (फा) १-मल त्याग के निमित्त बनाया हुआ विशेष प्रकार का कमरा या संडास । २-मल ।
पाग स्त्री० (हि) पगड़ी । पुं० (हि) १-शीरा जिसमें डुबोकर मिठाइयां रखी जाती हैं । २-चाशनी या शीरे में बनाई हुई मिठाई ।
पागना क्रि० (हि) १-शीरे या चाशनी में डुबोना । २-तन्मय होना ।
पागल वि० (सं) १-जिसका विवेक नष्ट होगया हो । विक्षिप्त । सिड़ी । २-आपे से बाहर । नासमझ । (ल्यूनेटिक) ।
पागलखाना पुं० (हि) वह स्थान जहां चिकित्सा के लिये पागल रखे जाते है । (ल्यूनेटिक एसाइलम) ।
पागलपन पुं० (हि) १-उन्माद । विक्षिप्तता । २-मूर्खता । बेवकूफी ।
पागलिनी स्त्री० (हि) पगली ।
पागुर पुं० (हि) दे० 'जुगाली' ।
पाचक वि० (स) पचाने अथवा पकाने वाला । (स्टिमुलेंट) । पुं० (स) १-वह चारयुक्त औषधि जो पाचनशक्ति बढ़ाने के लिये खाई जाती है । २-रसोइया । ३-पाचक पित्त में की अग्नि ।
पाचन पुं० (सं) १-पचाने अथवा पकाने की क्रिया । २-अजीर्ण को नाश करने वाली औषधि । ३-खाये हुए पदार्थ का उदर में शरीर की धातुओं के रूप में परिवर्तन । ४-अग्नि । ५-खट्टा रस । वि० (सं) पचाने वाला ।
पाचनशक्ति स्त्री० (सं) १-भोजन पचाने की शक्ति । हाजमा । २-आमाशय में रहने वाले पित्त या अग्नि की शक्ति ।
पाचना क्रि० (हि) भलीभांति पकाना । पकाना ।
पाचनी स्त्री० (सं) हड़ ।
पाच्य वि० (सं) जो पचाया या पकाया जा सके ।
पाछ स्त्री० (हि) १-पोस्त के डोडे पर लगा हुआ चीर २-किसी वृक्ष पर लगाया हुआ हल्का आघात । ३-रक्त या रस निकालने के लिये जंतु अथवा पौधे के शरीर पर मारा हुआ हल्का आघात । पुं० (हि) पिछला भाग या अंश । अव्य० (हि) पीछे ।
पाछना क्रि० (हि) रक्त या रस निकालने के लिये शरीर या पौधे पर छुरी आदि से हल्का आघात करना ।
पाछल वि० (हि) दे० 'पिछला' ।
पाछा पुं० (हि) पीछा ।
पाछिल वि० (हि) दे० 'पिछला' ।
पाछी अव्य० (हि) पीछे की ओर । पीछे ।
पाछू अव्य० (हि) दे० 'पाछी' ।
पाछे अव्य० (हि) दे० 'पीछे' ।
पाज पुं० (हि) पांजर । पार्श्व ।
पाजामा पुं० (फा) एक पहनावा जिसमें कमर से एड़ी तक का भाग ढका रहता है ।
पाजी पुं० (हि) १-पैदल सैनिक । प्यादा । २-रक्षक । चौकीदार । वि० (हि) दुष्ट । लुच्चा । शरारती ।
पाजीपन पुं० (हि) दुष्टता । नीचता । कमीनापन ।
पाजेब स्त्री० (फा) नूपुर । पैर में पहनने का घुंघरूदार चांदी का गहना ।
पाटंबर पुं० (सं) रेशमी वस्त्र ।
पाट पुं० (हि) १-रेशम । २-रेशम का कीड़ा । ३-बटा हुआ रेशम । ४-पटसन का रेशम । ५-राजगद्दी । ६-चौड़ाव । फैलाव । ७-चिपटा शहतीर जिस पर कोल्हू के बैल चलाने वाला बैठता है । ८-तख्ता । पीढ़ा । ९-पटिया या शिला । १०-चक्की के दो भागों में से एक । ११-बैलों की आंखों का एक रोग । १२-लकड़ी का वह शहतीर जिस पर खड़े होकर कुएँ से पानी निकालते हैं ।
पाटक पुं० (सं) १-विभाजित करने वाला । २-नदी तट । किनारा । ३-घाट की सीढ़ियां । ४-मूलधन या पूंजी का घाटा ।
पाटद पुं० (सं) कपास ।
पाटन स्त्री० (हि) १-पटाव । पाटने की क्रिया या भाव २-पाट कर बनी हुई (छत) । ३-मकान के पहले खंड के ऊपर के खंड । ४-सर्पविष उतारने का एक मंत्र । पुं० (म) चीरने, फाड़ने, तोड़ने तथा नष्ट करने की क्रिया ।
पाटना क्रि० (हि) १-किसी नीचे धरातल को पाट कर बराबर करना । २-ढेर लगाना । ३-छत बनाना

४–नृत्य करना। मौचना।

पाटमहिषी स्त्री० (हि) पटरानी।

पाटरानी स्त्री० (हि) पटरानी।

पाटल पु० (स) पाडर का पेड़ जिसके पत्ते बेल के समान होते हैं। वि० (सं) गुलाबी रंग का।

पाटलक वि० (सं) लाल-पीले रंग का।

पाटला स्त्री० (स) १–पाटल-वृक्ष। २–जलकुम्भी। ३–दुर्गा। पुं० (देश०) एक उत्तम कोटि का सोना। (धातु)।

पाटलिक पुं० (सं) शिष्य। चेला।

पाटलिपुत्र पु० (सं) आधुनिक पटना का प्राचीन नाम जो बिहार की राजधानी है।

पाटव पु० (स) १–पटुता। कुशलता। २–दृढ़ता। मजबूती। ३–आरोग्य।

पाटविक वि० (सं) १–चतुर। २–धूर्त। चालाक। धोखेबाज।

पाटवी वि० (हि) १–पटरानी से उत्पन्न राजकुमार। २–रेशमी। रेशम का बना हुआ।

पाटहिक पुं० (सं) नगाड़ा बजाने वाला।

पाटा पु० (हि) १–दो खड़े आधारों पर बनाया हुआ स्नान आदि करने का आसन। २–पीढ़ा। ३–दो दीवारों के बीच बांस की बल्ली से बनाया हुआ स्थान

पाटी स्त्री० (सं) १–रीति। शैली। परिपाटी। २–जोड़, बाकी गुणा आदि गणित के क्रम। ३–पंक्ति में दी। ४–अंकगणित। स्त्री० (हि) तख्ती। २–शिला पट्टान। ३–चटाई। ४–पाठ।

पाटी-गणित पु० (सं) गणित शास्त्र। गणित। (एरिथमेटिक)।

पाटीर पुं० (स) एक प्रकार का चन्दन।

पाटूनी पु० (हि) पटवार। घाट का ठेकेदार।

पाठ पुं० (सं) १–पढ़ाई। पढ़ने की क्रिया या भाव। २–किसी धार्मिक ग्रन्थ को नियमपूर्वक पढ़ना। ३–जो कुछ पढ़ा या पढ़ाया जाय। सबक। ४–पुस्तक का एक अंश। परिच्छेद। अध्याय। ५–शब्दों अथवा वाक्यों का क्रम। (रीडिंग)।

पाठक पुं० (स) जो पढ़े। पढ़ने वाला। छात्र। शिष्य। २–शिक्षक। गुरु। ३–कथावाचक। ४–ब्राह्मणों के एक वर्ग का नाम।

पाठच्छेद पुं० (सं) पाठ्य पुस्तक के बीच में होने वाला विराम। यति।

पाठदोष पुं० (सं) पढ़ने की वह शैली जो निंदित या वर्जित समझी जाती है।

पाठन पुं० (सं) पढ़ाने की क्रिया या भाव। अध्यापन का कार्य।

पाठनवृत्ति स्त्री० (सं) पढ़ाने का कार्य।

पाठनिश्चय पु० (सं) किसी पुस्तक के किसी अंश पर मनन करके उसके अर्थादि का निश्चय करना।

पाठपद्धति स्त्री० (सं) पढ़ने की रीति या ढंग।

पाठभू स्त्री० (सं) वह स्थान जहां वेदादि का पाठ किया जाता है।

पाठभेद पुं० (सं) दे० 'पाठांतर'।

पाठमंजरी स्त्री० (सं) मैना या सारिका पक्षी।

पाठशाला स्त्री० (सं) विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान। विद्यालय। मदरसा। (स्कूल)।

पाठशालिनी स्त्री० (सं) मैना। सारिका।

पाठांतर पुं० (सं) पाठ भेद। एक ही पाठ में किसी विशेष स्थल पर पुस्तकों की विभिन्न प्रतियों में भिन्न क्रम या वाक्य होना।

पाठा पु० (हि) १–हृष्ट-पुष्ट। मोटा। तगड़ा। २–जवान बकरा या भैंसा।

पाठार्थी वि०(सं) पढ़ने वाला।

पाठावली स्त्री० (स) पाठों का समूह। पाठों की पुस्तक (रीडर)।

पाठिका स्त्री० (सं) १–पढ़नेवाली। २–पढ़ाने वाली।

पाठित वि० (सं) पढ़ाया या सिखाया हुआ।

पाठी पु० (हि) १–पाठक। पाठ करने वाला। २–चीता चित्रक वृक्ष।

पाठीन पु० (स) १–गूगल का पेड़। २–एक प्रकार की मछली। ३–पुराणों की कथा सुनानेवाला।

पाठ्य वि० (स) पठनीय। जो पढ़ाया जा सके।

पाठ्यक्रम पुं०(स) पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने वाली पुस्तिका। (कोर्स, सिलेबस, केरिक्यूलम)।

पाठ्यपुस्तक स्त्री० (स) पाठशालाओं में विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़ाई जाने वाली पुस्तक। (टेस्ट बुक)।

पाड़ पु० (हि) १–साड़ी धोती आदि का किनारा। २–मचान। पाइट। ३–कूएँ के मुख पर रखने की जाली। ४–फांसी का तख्ता। ५–पुश्ता। बांध।

पाड़ई स्त्री० (हि) पाटल नामक वृक्ष।

पाड़ा पुं० (हि) १–मोहल्ला। टोला। पुरवा। २–भैंस का नर बच्चा।

पाढ़िनी स्त्री० (हि) हांडी। मिट्टी का बर्तन।

पाढ़ पु० (हि) १–पाटा। २–वह मचान जिस पर बैठ कर किसान रखवाली करता है। ३–कूएँ के मुंह पर रखी हुई लकड़ी। ४–वह ढांचा जिस पर कारीगर बैठ कर काम करते हैं।

पाढ़त स्त्री० (हि) जो कुछ पढ़ा जाय या जिसका पाठ किया जाय। जादू मंत्र।

पाढ़र पुं० (हि) पाटल या पडार का वृक्ष।

पाढ़ा पु० (देश०) एक मृग विशेष जिसके शरीर पर सफेद चित्तियां होती हैं।

पाणि पु० (स) हाथ।

पाणिक पु० (स) १–जो रखीरा जा सके।

२-हाथ।
पाणिकर्ण पुं० (सं) शिव। महादेव।
पाणिगृहीती वि० (सं) धर्मानुसार विवाहिता।
पाणिग्रह पुं० (सं) विवाह। शादी।
पाणिग्रहण पुं० (सं) शादी। विवाह।
पाणिग्राहक पुं० (सं) पति।
पाणिघ पुं० (सं) १-ढोल बजाने वाला। २-कारीगर शिल्पी। ३-हाथ से बजाये जाने वाले ढोल, मृदंग आदि वाद्ययन्त्र।
पाणिघात पुं० (सं) हाथ का प्रहार। घूँसा। चपत। थप्पड़।
पाणिघ्न पुं० (सं) १-शिल्पी। २-ताली बजाने वाला ३-उंगलियां चटकाना।
पाणिज पुं० (सं) १-उंगली। २-हाथ की उंगलियों के नाखून। ३-नख।
पाणितल पुं० (सं) १-हथेली। २-वैद्यक में दो तोले का एक परिमाण।
पाणिनि पुं० (सं) संस्कृत भाषा के प्रख्यात तथा प्राचीन व्याकरण-रचियता एक प्रसिद्ध ऋषि।
पाणिपल्लव पुं० (सं) उंगलियाँ।
पाणिपात्र पुं० (सं) हाथ में लेकर या चुल्लू से पानी पीने वाला। अंजली से पात्र का काम लेने वाला।
पाणिपीड़न पुं०(सं) १-पाणिग्रहण। २-क्रोध अथवा पश्चाताप के कारण हाथों को परस्पर मलना।
पाणिपुट पुं० (सं) चुल्लू।
पाणिबंध पुं० (सं) विवाह। शादी।
पाणिभुक् पुं० (सं) गूलर का पेड़।
पाणिभुज पुं० (सं) दे० 'पाणिभुक्'।
पाणिमुक्त पुं० (सं) हाथ से फेंका हुआ ढेला या कोई अस्त्र।
पाणिमुख वि० (सं) पितर। वि० (सं) हाथ से खाने वाला।
पाणिमूल पुं० (सं) कलाई।
पाणिरुह पुं० (सं) उंगली। नख। नाखून।
पात पुं० (सं) १-गिरने या गिराने का भाव या क्रिया। २-नाश। ध्वंस। ३-पतन। ४-टूट कर गिरने की क्रिया या भाव। ५-राहु का नाम। ६-अशुभ स्थिति। ७-अभिभावक। पुं० (हि) १-पत्र। पत्ता। २-कान का गहना।
पातक पुं० (सं) पाप। गुनाह।
पातकी वि० (सं) पापी। अधर्मी। कुकर्मी।
पातन पुं० (सं) १-झुकना। २-गिराने की क्रिया।
पातनीय पुं० (सं) गिराने या तिरस्कार करने योग्य
पातर स्त्री० (सं) १-पत्तल। २-वेश्या। ३-तितली। वि० (सं) पतला। सूक्ष्म।
पातरि स्त्री० (हि) पत्तल।
पातल स्त्री० (हि) दे० 'पातर'।
पातव्य वि० (सं) १-पीने योग्य। २-रक्षा करने योग्य
पातशाह पुं० (हि) बादशाह।
पाता वि० (हि) १-रक्षक। २-पीने वाला। पुं० (हि) पत्र। पत्ता।
पातालत पुं० (हि) पत्र और अक्षत। पूजा की साधारण सामग्री। तुच्छ भेंट।
पातावा पुं० (फा) १-मोजा। २-पद के आकार का चमड़े का टुकड़ा जो जूते में डाला जाता है।
पातार पुं० (हि) दे० 'पाताल'।
पाताल पुं० (सं) १-नीचे के सप्त लोकों में से सबसे नीचे का लोक। २-अधोलोक। नागलोक। ३-सुराख। विवर। बिल। ४-बालक के लग्न से चौथा स्थान। ५-पारा आदि शोधने का यन्त्र। ६-छंदशास्त्र में वह चक्र जिससे मात्रिक छंद की संख्या गुरु, लघु, कला आदि का ज्ञान होता है।
पातालगंगा स्त्री० (सं) पाताल लोक में बहने वाली गंगा।
पातालयंत्र पुं० (सं) एक प्रकार का यन्त्र जिससे औषधियाँ, पारा आदि पिघलाये जाते हैं।
पातालवासी पुं० (सं) १-नाग। २-दैत्य। राक्षस।
पाति स्त्री० (हि) १-पत्ती। पर्ण। २-पत्र। चिट्ठी।
पातिग पुं० (सं) पातक।
पातित वि०(सं) १-फैंका या गिराया हुआ। २-नीचा दिखाया हुआ। ३-नीचा किया हुआ (पदादि में)।
पातिव्रत पुं० (सं) पतिव्रता होने का भाव।
पातिव्रत्य पुं० (सं) दे० 'पातिव्रत'।
पाती स्त्री० (हि) १-पत्री। चिट्ठी। २-पत्ती। वृक्ष के पत्ते। ३-लज्जा। प्रतिष्ठा।
पातुर स्त्री० (हि) वेश्या। रंडी।
पातुरनी स्त्री०(हि) वेश्या।
पात्त पुं० (सं) पापियों का उद्धार करने वाला।
पात्र पुं० (सं) १-वह वस्तु जिसमें कुछ रखा जाय। बरतन। आधार। २-वह व्यक्ति जो किसी वस्तु को प्राप्त करने का अधिकारी हो। ३-नदी के तटों के बीच का स्थान पाट। ४-अभिनेता। (एक्टर)। ५-आमात्य। राज्यसचिव। ६-पत्र। पत्ता। ७-स्रुवा आदि यज्ञ के उपकरण। वि० (सं) जो किसी कार्य या पद के उपयुक्त होने के कारण नियुक्त किया जा सकता हो। (एलिजिबल)।
पात्रक पुं० (सं) १-भिक्षापात्र। २-थाली। हाँडी आदि बरतन।
पात्रता स्त्री० (सं) पात्र होने का भाव। योग्यता। अधिकार।
पात्रत्व पुं० (सं) दे० 'पात्रता'।
पात्रिक पुं०(सं) प्याला। तश्तरी आदि पात्र। वि० योग्य। उचित।
पात्री स्त्री० (सं) १-छोटा बरतन। २-अभिनेत्री।

नदी। (ब्रह्मपुत्र)।
पाथ्य वि० (सं) जिसके साथ एक ही थाली में भोजन किया जा सके। सहभोजी।
पाथ पुं० (सं) १-जल। २-पवन। ३-भोजन। ४-सूर्य। ५-आकाश। पुं० (हि) मार्ग। रास्ता।
पाथना क्रि० (हि) १-गढ़ना। ठोक पीट कर सुडौल बनाना। २-साँचे में दबा कर टिकिया आदि बनाना। ३-किसी को पीटना या मारना।
पाथनाथ पुं० (सं) समुद्र।
पाथनिधि पुं० (सं) समुद्र।
पाथर पुं० (हि) दे० 'पत्थर'।
पाथस्पति पुं० (सं) वरुण।
पाथा पुं० (हि) १-जल। २-अन्न। ३-आकाश।
पाथि पुं० (हि) १-आँख। २-समुद्र। ३-सुरंड। घाव पर की पपड़ी। ४-एक प्रकार का शरबत।
पाथेय पुं० (सं) १-रास्ते में काम आने वाला खाद्य पदार्थ या कलेवा। २-सफर या राह खर्च। ३-कन्या राशि।
पाथोज पुं० (सं) कमल।
पाथोद पुं० (सं) मेघ। बादल।
पाथोधर पुं० (सं) मेघ। बादल।
पाथोधि पुं० (सं) समुद्र। सागर।
पाथोन पुं० (हि) कन्याराशि।
पाथोनिधि पुं० (सं) सागर। समुद्र।
पाथ्य वि० (सं) १-आकाश में रहने वाला। २-हृदय में रहने वाला। ३-हृदय में बसने वाला।
पाद पुं० (सं) १-पैर। चरण। पाँव। २-चौथाई। ३-पुस्तक का प्रकरण। ४-तल। ५-बड़े पर्वत के पास का छोटा पर्वत। ६-रश्मि। किरण। ७-गमन। ८-शिव। ९-वृक्ष की जड़। १०-मन्त्र या पद का चौथा भाग। पुं० (हि) अपान वायु।
पादक वि० (सं) १-चलने वाला। २-चौथाई। ३-छोटा पैर।
पादक्षेप पुं० (सं) १-चरणन्यास। पैर रखना।
पादग्रंथि स्त्री० (सं) घुटना। गुल्फ।
पादग्रहण पुं० (सं) पैर छूकर प्रणाम करना।
पादचत्वर पुं० (सं) १-बकरा। २-बालू। ३-ओला। ४-पीपल का वृक्ष।
पादचारी पुं० (सं) पैदल चलने वाला। पैदल। प्यादा।
पादज पुं० (सं) शूद्र। वि० (सं) जो पैरों से उत्पन्न हो।
पादजल पुं० (सं) १-चरणोदक। पैरों की धोवन। २-मट्ठा।
पाद-टिप्पणी स्त्री० (सं) वह टिप्पणी जो किसी पुस्तक के पृष्ठ या लेख के नीचे लिखी जाती है। (फुटनोट)।
पाद-टीका स्त्री० (सं) दे० 'पाद टिप्पणी'।
पाद-तल पुं० (सं) पैर का तलवा।
पादत्र पुं० (सं) दे० 'पादत्राण'।
पादत्राण पुं० (सं) जूता। खड़ाऊँ। वि० (सं) पद-रक्षक। जो पैर की रक्षा करे।
पाददलित वि० (सं) पददलित। पैर से कुचला हुआ।
पाददारिका स्त्री० (सं) बिवाई। पैर की एड़ी के आस-पास फट जाने का रोग।
पाददाह पुं० (सं) १-तलवों का जलना। २-एक पित्त से उत्पन्न होने वाला रोग जिससे तलवों में जलन होती है।
पादधावन पुं० (सं) पैर धोने की क्रिया। वह बालू या रेत आदि जिससे पैर धोकर [illegible]
[illegible]
पादनिष्क पुं० (सं) पैर रखने की छोटी चौकी।
पादपङ्कज पुं० (सं) कमल के समान चरण।
पादप पुं० (सं) १-वृक्ष। पेड़। २-पीढ़ा।
पादप-शास्त्र पुं० (सं) उन लाखों वर्ष प्राचीन पेड़ों आदि का अध्ययन जो अब पत्थर आदि के रूप में बदल गये हैं। (पेलियो-बोटैनी)।
पाद-पथ पुं० (सं) पगडंडी।
पादपद्धति स्त्री० (सं) पगडंडी।
पादपीठ पुं० (सं) पैर रखने का पीढ़ा। पैर का आसन। पादपीठिका।
पादपूरण पुं०(सं) १-किसी श्लोक के किसी चरण को लेकर पूरा श्लोक या छन्द बना देना। २-वह शब्द या अक्षर जो किसी पद की पूर्ति के निमित्त रखा जाय।
पादप्रक्षालन पुं० (सं) पैर धोना।
पादप्रहार पुं० (सं) पैर की ठोकर या लात।
पादबंधन पुं० (सं) १-पशुओं के पैर बाँधना। २-कोई वस्तु जिसमें पैर बाँधे जायें।
पादभुज पुं० (सं) शिव। महादेव।
पादमुद्रा स्त्री० (सं) पैर के चिह्न या निशान।
पादमूल स्त्री० (सं) १-एड़ी या टखना। २-पैर का तलवा। ३-पर्वत की तलहटी। ४-किसी व्यक्ति के विषय में नम्रतासूचक कथन।
पादरक्षक पुं० (सं) जूता। खड़ाऊँ।
पादरज स्त्री० (सं) पैर की धूल।
पादरज्जु स्त्री० (सं) वह सांकल या रस्सा जिससे हाथी के पैर बाँधे जाते हैं।
पादरी पुं० (हि) ईसाइयों का पु[illegible] उपासना आदि कराता है।
पादरोह पुं० (सं) बरगद।

पादरोहण पुं० (सं) वटवृक्ष ।
पादवंदन पुं० (सं) पैर छूकर प्रणाम करना ।
पादविक पुं० (सं) पथिक ।
पादविन्यास पुं० (सं) पैर रखने का ढंग ।
पादशाखा स्त्री० (सं) पैर की उँगलियां ।
पादशाह पुं० (फा) बादशाह ।
पादशाही स्त्री० (फा) बादशाही ।
पादशाहजादा पुं० (फा) राजकुमार ।
पादशोथ पुं० (सं) पैर की सूजन ।
पादशौच पुं० (सं) पैर धोना ।
पादसेवन १-पैर छूकर प्रतिष्ठा करना । २-सेवा ।
पादसेवा स्त्री० (सं) १-चरणसेवा । २-सेवा ।
पादस्वेदन पुं० (सं) पैर में पसीना आना ।
पादहत वि० (सं) लतियाया हुआ ।
पादहीन वि० (सं) १-जिसके चरण न हों । २-हीन चरण वाली (कविता) ।
पादांक पुं० (सं) पैर का चिह्न या निशान ।
पादांगद पुं० (सं) नूपुर ।
पादांगुलि स्त्री० (सं) पैर की उंगली ।
पादांगुष्ठ पुं० (सं) पैर का अंगूठा ।
पादांत पुं० (सं) १-पैर का अगला भाग । २-पद या श्लोक का अन्तिम भाग ।
पादांबु पुं० (सं) मठा जिसमें एक चौथाई जल मिला हो ।
पादाक्रांत वि० (हि) १-पददलित । २-पराजित ।
पादाघात पुं० (सं) १-ठोकर । लात ।
पादात पुं० (सं) पैदल सिपाही ।
पादाति पुं० (सं) पैदल सिपाही ।
पादातिक पुं० (सं) दे० 'पादाति' ।
पादारक पुं०(सं) नाव के यात्रियों के बैठने की पटरी
पादारघ पुं० (हि) दे० 'पाद्यार्घ' ।
पादारविंद पुं० (सं) चरणकमल ।
पादावर्त्त पुं० (सं) कुएं से जल निकालने का रहट ।
पादाहत वि० (सं) जिस पैर से आघात किया गया हो
पादी पुं० (हि) पैर से चलने वाले जन्तु । वि० (हि) जो एक चौथाई का भागीदार हो ।
पादुका स्त्री० (सं) १-खड़ाऊं । २-जूता ।
पादुकाकार पुं० (सं) बढ़ई । मोची । खड़ाऊं या जूता बनाने वाला ।
पादू स्त्री० (सं) खड़ाऊँ । जूता ।
पादोदक पुं० (सं) चरणामृत । वह जल जिससे किसी पूज्य व्यक्ति के पैर धोये गये हों ।
पादोदर पुं० (सं) सांप ।
पाद्य पुं० (सं) पैर धोने का जल या वह जल जिससे पैर धोये हों । वि० (सं) पैर संबन्धी । पैर का ।
पाद्यार्घ पुं० (सं) १-हाथ पैर धुलाने का जल । २-पूजा सामिग्री । ३-भेंट या पूजा में दिया जाने वाला धन ।
पाधा पुं० (हि) १-आचार्य । उपाध्याय । २-पंडित ।
पान पुं० (सं) १-घूंट-घूंट करके किसी द्रव-पदार्थ को गले के नीचे उतारना । पीना । २-पेय द्रव्य । ३-मद्यपान । ४-मद्य । मदिरा । ५-पीने का पात्र । ६-पानी । ७-शस्त्रों को गरम करके द्रव पदार्थ में डुबोने से आई हुई सान या चमक । ८-नहर । ९-चुम्बन । १०-निःश्वास । पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्ते पर कत्था चूना लगाकर खाया जाता है । ताम्बूल । २-लड़ी । ३-पान के आकार की चौकी जो हार में लटकी रहती है । ४-ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक जिस पर लाल रङ्ग की बूटियां बनी रहती हैं । ५-हाथ । पाणि ।
पानक पुं० (सं) १-पेय पदार्थ । शर्बत । २-पना । पकाये हुए आम के रस में नमक, मिर्च आदि मिला कर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ ।
पानगोष्ठिका स्त्री० (सं) १-शराबियों की मंडली । २-मदिरालय । ३-मद्यपान करने के लिए एकत्रित शराबियों की मंडली ।
पानगोष्ठी स्त्री० (सं) दे० 'पानगोष्ठिका' ।
पानदान पुं० (हि) वह डिब्बा जिसमें पान, कत्था, चूना, सुपारी आदि सामग्री रखी जाती है । पनडब्बा ।
पानदोष पुं० (सं) मद्यपान का व्यसन या लत ।
पानप पुं० (सं) शराबी । पियक्कड़ ।
पानपत्ता पुं० (हि) १-लगा हुआ पान । तुच्छ भेंट ।
पानपात्र पुं० (सं) मद्यपान का पात्र ।
पानफूल पुं० (हि) १-कोमल वस्तु । २-तुच्छ भेंट ।
पानबीड़ा पुं० (हि) सगाई पक्की करते समय पान के बीड़ा देने की रस्म ।
पानभूमि स्त्री० (सं) वह स्थान जहाँ शराबी मदिरा पान करते हैं । मदिरालय ।
पानमंडली पुं० (सं) मदिरा पान करने वालों की गोष्ठी ।
पानमत्त वि० (सं) नशे में चूर ।
पानमद पुं० (सं) मदिरा का नशा ।
पानरा पुं० (हि) दे० 'पनारा' ।
पानवणिज पुं० (सं) कलवार । शराब बेचने वाला ।
पानविभ्रम पुं० (सं) १-नशा । २-अधिक मदिरा पीने से उत्पन्न एक रोग ।
पानस पुं० (सं) कटहल से बनाई जाने वाली एक प्रकार की प्राचीन शराब । वि० (सं) कटहल से सम्बन्धित ।
पानसुपारी स्त्री० (हि) वह समारोह जिसमें आगत व्यक्तियों का पान सुपारी से सम्मान किया जाता है
पानही स्त्री० (हि) जूता ।
पाना क्रि० (हि) १-प्राप्त करना । हासिल करना ।

२-अच्छा या बुरा फल भोगना। ३-खोई हुई या दी हुई वस्तु फिर से हाथ में आना। ४-देख लेना। जान लेना। ५-अनुभव करना। भोगना। ६-भोजन करना। ७-समर्थ होना। ८-ज्ञान प्राप्त करना।

पानागार पुं० (सं) मदिरालय। जहाँ बहुत से लोग बैठकर मद्यपान करते हों।

पानि पु० (हि) १-हाथ। पाणि। २-जल। पानी।

पानिक पुं० (सं) कलवार। मदिरा बेचने वाला।

पानिग्रहण पुं० (हि) दे० 'पाणिग्रहण'।

पानिप पुं० (हि) १-चमक। कांति। २-पानी। जल

पानिल पुं० (सं) शराब पीने का बरतन।

पानी पुं० (हि) १-नदी, कुप, वर्षा आदि से प्राप्त होने वाला वह प्रसिद्ध यौगिक द्रवपदार्थ जो नहाने, खाने, खेत आदि सींचने के काम आता है और सृष्टि के लिये अनिवार्य होता है (यह दो भाग उद्जन और एक भाग अम्लजन गैसों से बनता है)। जल। नीर। २-ओस, आँख, घाव आदि से रसने वाला तरल पदार्थ। ३-वर्षा। वृष्टि। ३-कोई वस्तु जो जल के समान पतली हो। ४-वह द्रव पदार्थ जो किसी वस्तु को निचोड़ने से प्राप्त हो। ५-तलवार आदि शस्त्रों के फल की वह रङ्गत जिससे उनकी उत्कृष्टता प्रकट हो। आब। ६-चमक। कांति ७-वर्ष। साल। ८-मुलम्मा। ६-मान। प्रतिष्ठा। १० वीर्य। ११-पुंसत्व। स्वाभिमान। १२-पानी के समान ठंढा पदार्थ। १३-पानी के समान स्वादहीन पदार्थ। १४-बार। दफा। १५-अवसर। १६-जलवायु। १७-परिस्थिति। सामाजिक दशा।

पानीतराश पुं० (फा) नाव या जहाज की पेंदी की वह लकड़ी जो पानी को चीरती है।

पानीदार वि० (हि) १-आबदार। चमकदार। २-प्रतिष्ठित। इज्जत वाला। ३-साहसी।

पानीदेवा वि० (हि) १-पिंडदान करने वाला। २-पुत्र।

पानीफल पुं० (हि) सिंघाड़ा।

पानीय पुं० (सं) १-जल। २-पेय पदार्थ। वि० (सं) १-पीने योग्य। २-रक्षा करने योग्य।

पानीयशाला स्त्री० (सं) प्याऊ। पौसरा।

पानूस पुं० (हि) फानूस।

पानौरा पुं० (हि) पान के पत्ते की बनी पकौड़ी।

पान्यो पु० (हि) पानी।

पाप पुं० (सं) १-इस लोक में बुरा समझा जाने वाला तथा परलोक में अशुभ फलदायक कर्म। पातक। गुनाह। २-अपराध। जुर्म। ३-वध। हत्या। ४-अमंगल। ५-बुराई। अहित। ६-अनिष्ट। वि० (हि) बुरा। नीच। अशुभ।

पापक पुं० (सं) पाप। वि० (सं) पापयुक्त।

पापकर वि० (सं) दे० 'पापकारक'।

पापकर्म पुं० (सं) अनुचित काम। बुरा काम।

पापकारक वि० (सं) पापी। पाप करने वाला।

पापकर्मी वि० (हि) पापी। पाप करने वाला।

पापक्षय पुं० (सं) १-पापों का नाश। २-तीर्थ। वह स्थान जहाँ पापों का नाश हो।

पापघ्न पुं० (सं) तिल। वि० (सं) पाप नाश करने वाला। जिसके पाप नष्ट हों।

पापघ्नी स्त्री० (सं) तुलसी।

पापचर वि० (सं) पापी। पाप कमाने वाला।

पापचारी वि० (सं) पापी।

पापचेता वि० (हि) जिसके मन में सदा पाप बसता है। दुष्ट-चित्त।

पापड़ पुं० (हि) वह मसालेदार चपाती जो उड़द या मूंग की पिट्ठी से बनती है। वि० (हि) १-कागज का सा पतला। २-सूखा। शुष्क।

पापड़ाखार पुं० (हि) केले के पेड़ का खार।

पापत्व पुं० (सं) पाप का भाव।

पापदृष्टि वि० (सं) बुरी निगाह वाला।

पापधी वि० (सं) पापमति। निर्दय अथवा दुष्ट बुद्धि वाला।

पापनाम वि० (सं) बदनाम।

पापनाशक वि० (सं) पापों का नाश करने वाला।

पापनाशन पुं० (सं) १-वह कर्म जिससे पाप का नाश हो। २-विष्णु। ३-पाप नाश का भाव या क्रिया।

पापफल वि० (सं) पाप का फल। अशुभ फल देने वाला।

पापबुद्धि वि० (सं) पापमति। दुष्टमति।

पापमोचन पुं० (सं) पाप को दूर करने की क्रिया या भाव।

पापमोचनी स्त्री० (सं) चैत्र कृष्णपक्ष की एकादशी।

पापशील वि० (सं) पाप कर्मों के करने की प्रवृत्ति रखने वाला।

पापहर वि० (सं) पाप का नाशक। पापहारक। पुं० (सं) एक नदी का नाम।

पापा पुं० (हि) बच्चों का पिता को सम्बोधन करने का एक शब्द।

पापाचार पुं० (सं) दुराचार। पाप का आचरण।

पापात्मा वि० (सं) जिसकी आत्मा सदा पाप में लिप्त रहे। पापी। दुरात्मा।

पापिष्ठ वि० (सं) बहुत बड़ा पापी।

पापी वि० (हि) १-पातकी। पाप करने वाला। २-क्रूर। निर्दय। पापीड़क।

पापोश पुं० (फा) जूता।

पाबंद वि० (फा) १-बद्ध।

पाबंदी

आदि का पालन करने वाला या उससे आबद्ध। पुं० (फा) १-घोड़े की पिछाड़ी। २-नौकर। दास।
पाबंदी स्त्री० (फा) १-पाबन्द होने का भाव। २-नियमित रूप से किसी बात का अनुसरण। ३-लाचारी। मजबूरी।
पाम स्त्री० (दे०) १-गोटे किनारी के छोर की डोरी। २-रस्सी। डोरी। ३-एक चर्मरोग।
पामघ्न पुं० (सं) गंधक।
पामघ्नी स्त्री० (सं) कुटकी।
पामड़ा वि० (सं) दे० 'पावँड़ा'।
पामर वि० (सं) १-दुष्ट। कमीना। २-पापी। अधम। नीचकुलोत्पन्न। ३-मूर्ख।
पामरि पुं० (सं) गंधक।
पामरी स्त्री० (हि) दुपट्टा।
पामाल वि० (फा) १-पददलित। २-तबाह। बरबाद।
पामाली स्त्री० (फा) तबाही। बरबादी। नाश।
पामोज़ पुं० (हि) एक प्रकार का कबूतर जिसके पंजे तक परों से ढके रहते हैं।
पायँ पुं० (हि) पांव। पैर।
पायँजेहरि स्त्री० (हि) पाजेब।
पायँत स्त्री० (हि) पायँता।
पायँता पुं० (हि) चारपाई या बिछौने का वह सिरा जिस ओर पांव रहते हैं।
पायँदाज पुं० (फा) दे० 'पाअंदाज'।
पाय पुं० (हि) पांव। पैर।
पायक वि० (सं) १-पीने वाला। पुं० (हि) १-पैदल सिपाही। २-दूत। अनुचर। सेवक।
पायकार पुं० (फा) बनाने वालों से माल खरीद कर दुकानदारों को बेचने वाला।
पायखाना पुं० (फा) दे० 'पाखाना'।
पायजामा पुं० (फा) दे० 'पाजामा'।
पायजेब स्त्री० (फा) दे० 'पाजेब'।
पायजेहरि स्त्री० (हि) दे० 'पाजेब'।
पायड़ा पुं० (हि) दे० 'पायरा'।
पायतख्त पुं० (फा) राजधानी।
पायतन पुं० (फा) पैताना। पायँता।
पायताबा पुं० (फा) मोजा। जुर्राब।
पायदान पुं० (फा) सवारी गाड़ी में बाहर की ओर लगाया हुआ तख्ता जिस पर पैर रख कर उसमें चढ़ते हैं।
पायदार वि० (फा) मजबूत। दृढ़। टिकाऊ।
पायदारी स्त्री० (फा) दृढ़ता। मजबूती। टिकाऊपन।
पायपोश पुं० (फा) पापोश। जूता।
पायबंद वि० (फा) दे० 'पाबंद'।
पायबंदी स्त्री०(फा) दे० 'पाबंदी'।
पायमाल वि० (फा) दे० 'पामाल'।
पायरा पुं० (हि) घोड़े की रकाब। पुं० (देश०) एक प्रकार का कबूतर।
पायल स्त्री०(हि) १-पाजेब। नूपुर। २-बांस की सी[illegible] ३-तेज चलने वाली हथिनी। ४-जन्म के सम[illegible] पहले पैर बाहर निकालने वाला बच्चा।
पायस स्त्री० (सं) १-दूध में चावल डाल कर रंधा हुआ पदार्थ। खीर। २-देवदार वृक्ष से निक[illegible] हुआ गोंद। वि० (सं) दूध या जल का बना हुआ[illegible]
पायसा पुं० (हि) पड़ौस।
पाया पुं० (फा) १-कुर्सी, चौकी, मेज, पलंग आ[illegible] में नीचे लगे हुए छोटे खम्बे जिनके सहारे इ[illegible] ढांचा खड़ा रहता है। २-खम्बा। स्तम्भ। [illegible] ओहदा। ४-जीना। सीढ़ी। ५-घोड़े के पैर [illegible] एक रोग।
पायिक पुं० (सं) १-पैदल सिपाही। २-दूत। चर
पायी वि० (सं) पानकारी। पीने वाला।
पायु पुं० (सं) मलद्वार।
पारंगत वि० (सं) दे० 'पारगत'।
पारंपरीण वि० (सं) परम्परा से चला आया हुआ[illegible]
पारंपरीय वि० (सं) परंपरागत।
पार पुं० (सं) १-नदी या समुद्र का सामने [illegible] दूसरा तट। सीमा। २-किसी वस्तु के आगे सामने की ओर। ३-अन्त। सिरा। छोर। ४-[illegible] वस्तु का अधिक से अधिक परिमाण। अव्य० दूर। परे।
पारई स्त्री० (हि) बड़ा कसोरा या कटोरा।
पारक वि० (सं) १-पालन करने वाला। २[illegible] करने वाला। ३-उद्धार करने वाला।
पारख स्त्री० (हि) दे० 'परख'। पुं० (हि) दे० 'प[illegible]
पारखद पुं० (हि) दे० 'पार्षद'।
पारखी पुं० (हि) परख या पहचान करने [illegible] परीक्षक। परखने वाला।
पारग वि० (सं) १-पार जाने वाला। २-अन्त[illegible] पहुंचने वाला। ३-प्रकांड विद्वान।
पारगत वि० (सं) १-जिसने पार किया हो। [illegible] जानकार। समर्थ। जिसने किसी विषय को [illegible] से अन्त तक पूरा किया हो।
पारगामी वि० (सं) दूसरे या परले पार गया [illegible]
पारचा पुं० (फा) १-टुकड़ा। धज्जी। २-[illegible] वस्त्र। ३-पोशाक।
पारज पुं० (सं) सोना। स्वर्ण।
पारजात पुं० (हि) दे० 'पारिजात'।
पारजायिक पुं० (सं) लम्पट पुरुष। व्यभिचार[illegible]
पारण पुं० (सं) १-पार करने या उतारने की [illegible] या भाव। २-उत्तीर्ण होना। (पासिंग)। [illegible] घट के स्थान को पार करके आगे बढ़ना। [illegible] समाप्ति। ५-धार्मिक ग्रन्थ का नियमित पाठ। ६-व्रत के बाद का पहला भोजन।

पारलक वि० (सं) पारण करने वाला। पुं० (सं) १-वह पत्र जो किसी परीक्षा आदि में उत्तीर्ण होने का सूचक हो। २-वह अनुमति पत्र जिसको दिखा कर इधर उधर कोई आ-जासके जैसे सिनेमा में पारण-पत्र। (पास)।
पारणपत्र पुं० (सं) दे० 'पारणक'।
पारणा स्त्री० (सं) व्रत के बाद का पहला भोजन।
पारणीय वि० (सं) पूरा करने योग्य।
पारतंत्र्य वि० (सं) पराधीनता।
पारत्रिक वि० (सं) १-परलोक का। पारलौकिक। २-मृत्यु के पश्चात उत्तम गति प्रदाता।
पारथ पुं० (हि) दे० 'पार्थ'।
पारथिव पुं० (हि) दे० 'पार्थिव'।
पारद पुं० (सं) १-पारा। २-एक प्राचीन म्लेच्छ जाति का नाम।
पारदर्शक वि० (सं) जिसके सामने और बीच में रहने पर भी उस ओर की वस्तु दिखाई दे सके। (ट्रांसपेरेंट)।
पारदर्शिकरण स्त्री० (सं) दे० 'पर-किरण'। [illegible]
पारदर्शिता [illegible]

पारदेशिक वि० (सं) दूसरे देश का। पर देश का। पुं० (सं) परदेशी। यात्री।
पारधि पुं० (हि) दे० 'पारधी'।
पारधिपति पुं० (हि) कामदेव। धनुर्धरों में श्रेष्ठ।
पारधी पुं० (हि) १-व्याध। बहेलिया। शिकारी। २-हत्यारा। बधिक। स्त्री० (हि) ओट। आड़।
पारन पुं० (हि) दे० 'पारण'।
पारना क्रि० (हि) १ [illegible] ५-[illegible] ६-[illegible]। ७-साँचे आदि में डालना। ८-करने में समर्थ होना।
पारनेता पुं० (सं) पार ले जाने [illegible] पर पूरा ज्ञान रखने [illegible]
पारपत्र पुं० (सं) यात्रि[illegible] द्वारा विदेश जाने के [illegible] (पासपोर्ट)।
पारबती स्त्री० (हि) दे० 'पार्वती'।
पारमार्थिक वि० (सं) १-धर्मार्थ। २-जिससे परमार्थ सिद्ध हो। ३-वास्तविक। यथार्थ में विद्यमान
पारमार्थ्य पुं० (सं) परम सत्य।
पारप्रेषक पुं० (सं) बिना तार द्वारा समाचार आदि भेजना। (ट्रांसमिट)।
पारमिक वि० (सं) श्रेष्ठ। सर्वोत्कृष्ट।
पारमित वि० (सं) १-आरपार गया हुआ। पल्ले-पार गया हुआ।
पारमिता स्त्री० (सं) पूर्णता, उत्कृष्टता—दान, शील, शांति आदि।
पारलौकिक वि० (सं) १-परलोक संबन्धी। २-परलोक में शुभ फल देने वाला।
पारवत पुं० (सं) कपोत। कबूतर।
पारवश्य पुं० (सं) पराधीनता। परवशता। परतन्त्रता।
पारशव पुं० (सं) १-पर स्त्री से उत्पन्न पुत्र। २-एक वर्णसंकर जाति। ३-लोहा। ४-दोगला। हरामी। वि० (सं) लोहे का बना हुआ।
पारषद पुं० (हि) दे० 'पार्षद'।
पारस पुं० (हि) १-एक कल्पित पत्थर जिसके लोहा छुआने से सोना बन जाता है। स्पर्शमणि। २-अधिक लाभदायक वस्तु। ३-परसा हुआ भोजन ४-पत्तल जिसमें भोजन परोसा हुआ हो। ५-ईरान देश।
पारसव वि० (हि) दे० 'पारशव'।
पारसी वि० (सं) पारस देश सम्बन्धी। पुं० (हि) १-एक अग्निपूजक जाति। २-फारस देश की भाषा।
पारसीक पुं० (सं) १-फारस देश। २-फारस देश का घोड़ा। फारस देश का निवासी।
पारस्परिक वि० (सं) आपस का। एक दूसरे का। परस्पर होने वाला। (म्युचुअल, रेसीप्रोकल)।
पारस्परिक संविदा स्त्री० (सं) आपसी व्यवहार के लिये बनाई हुई परंपरा। (कॉन्वेन्शन्स)।
पारस्पर्य पुं० (सं) एक दूसरे का व्यवहार में ख्याल रखना तथा अनेक सुविधा देने का सिद्धांत। (रेसीप्रोसिटी)।
[illegible] ईरान देश। [illegible] श्वेत रंग की चमकदार [illegible] २-टुकड़ा। ३-मिट्टी का बड़ा कसोरा। ४-छोटी दीवार।
पारापत पुं० (सं) कपोत। कबूतर।
पारावार [illegible]
पारायणिक पुं० (सं) १-नित्य नियमित रूप से धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला। छात्र।
पारायणी स्त्री० (सं) १-मनन। चिंतन। २-सरस्वती
पारावत पुं० (सं) चट्टान। शिला।
पारावत पुं० (सं) १-कपोत। कबूतर। २-बन्दर ३-पर्वत। ४-पण्डुक।
पारावार पुं० (सं) दे० 'पारापार'।

पारावार पुं०(सं) १–आरपार। दुःख आदि का अंत। २–समुद्र का किनारा।

पारावारीण पुं० (सं) केवट।

पारि स्त्री० (सं) १–हद। सीमा। २–तरफ। ओर। ३–जलाशय का तट। पुं० (सं) जलपात्र पात्र। प्याला।

पारिकूट पुं० (सं) ड्योढ़ी। द्वार।

पारिख वि० (सं) पारखी संबन्धी। पारखी का। स्त्री० (हिं) दे० 'परख'।

पारिगर्भिक पुं० (सं) कबूतर।

पारिग्रामिक वि० (सं) गाँव के चारों ओर का।

पारिजात पुं० (सं) १–समुद्रमंथन के समय निकले पाँच देव वृक्षों में से एक। हरसिंगार। २–कचनार। ३–एक मुनि का नाम।

पारिजातक पुं० (सं) १–हरसिंगार। २–इन्द्र के उपवन का एक देववृक्ष।

पारिणामिक वि० (सं) किसी के उपरांत तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाला। (कॉन्सीक्वेंशल)।

पारिणाय्य वि० (सं) विवाह में प्राप्त (धन)।

पारित वि० (सं) १–सभा, विधान सभा आदि में विधिपूर्वक स्वीकृत (कोई प्रस्ताव या विधेयक)। (पास्ड)। २–जो पास हो गया हो।

पारितोषिक पुं० (सं) किसी के कार्य से प्रसन्न होने पर उसे दिया जाने वाला धन। इनाम। (प्राइज, रिवार्ड)। वि० (सं) आनन्दप्रद। तोषकर।

पारितोषिक प्रतिज्ञापत्र पुं० (सं) इनाम में दिया हुआ प्रतिज्ञा पत्र। (प्राइज बोण्ड)।

पारिपंथिक पुं० (सं) डाकू। लुटेरा।

[illegible] पुं० (सं) १–सदा साथ रहने वाला अनुचर। सेवक। २–परिचर। ३–नाटक में स्थापक का अनुचर।

पारिप्लव पुं० (सं) १–नौका। नाव। २–एक प्रकार का जल पक्षी। वि० (सं) १–चंचल। चपल। २–तैरने वाला। ३–उद्विग्न।

पारिप्लाव्य पुं० (सं) चंचल या व्यथित होने का भाव।

पारिश्रमिक-धन पुं० (सं) आवेदन या प्रतिभूति के रूप में कोई कार्य आदि पूरा कराने के लिये लिया हुआ धन या राशि। (कॉशन मनी)।

पारिभाषिक वि० (सं) १–जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जाय। २–(शब्द) जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय। (टैक्निकल)।

पारिभाषिक शब्दावली स्त्री० (सं) विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली या शब्दों की सूची। (ग्लॉसरी ऑफ टैक्निकल टर्म्स)।

पारियानिक पुं० (सं) यात्री। पंथी।

पारिवारिक व्यवस्थापन पुं० (सं) परिवार की व्यवस्था। (फ़ैमिली अरैंजमेंट)।

पारिश्रमिक पुं०(सं) किसी को परिश्रम करने के फल-स्वरूप दिया जाने वाला धन। (रिम्यूनरेशन)।

पारिषद वि०(सं) परिषद्-संबन्धी। पुं० (सं) १–परिषद् में बैठने वाला। सभासद्। पंच। २–अनुयायी। पार्श्व। गण। (काउंसिलर)।

पारी स्त्री० (सं) १–हाथी के पैर का रस्सा। २–पानी का घड़ा। ३–पीने का पात्र। प्याला। स्त्री० (हिं) १–बारी। २–गुड़ आदि का जमाया हुआ टोंका।

पारीक्षित पुं० (सं) १–राजा परीक्षित का पुत्र या वंशज। २–जनमेजय।

पारीरण पुं० (सं) कछुआ।

पारु पुं० (सं) १–सूर्य। २–अग्नि।

पारुष्य पुं० (सं) १–कठोरता। रूखापन। २–वचन की कठोरता। गाली। दुर्वचन।

पारेषण पुं० (सं) बिना तार के सूचना आदि भेजने का कार्य। (ट्रांसमिशन)।

पारोक्ष वि०(सं) परोक्ष सम्बन्धी।

पार्क पुं० (अं) उद्यान। बगीचा।

पार्टेट पुं० (सं) धूल या राख।

पार्टी स्त्री० (अं) १–दल। मंडली। २–वह समारोह जिसमें निमंत्रित लोगों को जलपान या भोजन कराया जाता है।

पार्थ वि० (सं) पृथा-संबन्धी।

पार्थ पुं० (सं) १–राजा। पृथ्वीपति। २–युधिष्ठिर, भीम, और अर्जुन का नाम जो विशेषतया अर्जुन के लिये ही प्रयुक्त होता था।

पार्थ सारथि पुं० (सं) कृष्ण।

पार्थक्य पुं० (सं) १–पृथक होने की क्रिया या भाव। २–वियोग।

पार्थव पुं० (सं) १–बड़प्पन। बड़ाई। २–स्थूलता। ३–चौड़ाई।

पार्थिव वि० (सं) १–पृथ्वी या मिट्टी का। २–पृथ्वी-सम्बन्धी। ३–पृथ्वी पर शासन करने वाला। ४–राजसी। शाही। पुं० (सं) १–मिट्टी का शिवलिंग। २–मिट्टी का बरतन। ३–पृथ्वी पर रहने वाला। ४–राजा।

पार्थिव-कन्या स्त्री० (सं) राजकुमारी।

पार्थिव-दूरबीन स्त्री० (हिं) पृथ्वी पर रखी हुई दूर की वस्तुएं तारे आदि को देखने की दूरबीन। (टेरेस्ट्रियल टेलिस्कोप)।

पार्थिवी स्त्री० (सं) लक्ष्मी। सीता। पार्वती।

पार्पर पुं० (सं) यम।

पार्लमेंट स्त्री० (अं) राज्य की शासन व्यवस्था करने वाली निर्वाचित विधान सभा। संसद (विशेषतः इंगलैंड की विधान सभा)। (हाउस ऑफ कॉमन्स)

पार्वण वि० (सं) जो किसी पर्व के समय किया जाय।

पारागार पुं०(सं) १-पाराशर पुत्र व्यास जी का नाम २-पाराशर का वंशज ।
पारायारी पुं० (सं) संन्यासी ।
पारि स्त्री० (हि) १-हद । सीमा । २-तरफ। ओर। ३-जलाशय का तट । पुं० (सं) मद्यपान पात्र। प्याला ।
पारिकुट पु० (सं) नौकर । भृत्य ।
पारिख वि० (सं) पारखी संबन्धी । पारखी का । स्त्री० (हि) दे० 'परख' ।
पारिगर्भिक पुं० (सं) कबूतर ।
पारिग्रामिक वि० (सं) गांव के चारों ओर का ।
पारिजात पु० (सं) १-समुद्रमंथन के समय निकाले गये पांच देव वृक्षों में से एक । हारसिंगार। २-कचनार । ३-एक मुनि का नाम ।
पारिजातक पुं० (स) १-हारसिंगार । २-इन्द्र के उपवन का एक देववृक्ष ।
पारिणामिक वि० (सं) किसी के उपरांत तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाला । (कौंसीक्वेंशल) ।
पारिणाय्य वि० (सं) विवाह में प्राप्त (धन) ।
पारित वि० (सं) १-सभा, विधान सभा आदि में विधिपूर्वक स्वीकृत (कोई प्रस्ताव या विधेयक)। (पास्ड) । २-जो पास होगया हो ।
पारितोषिक पुं० (सं) किसी के कार्य से प्रसन्न होने पर उसे दिया जाने वाला धन । इनाम । (प्राइज, रिवार्ड) । वि० (सं) आनन्दकर । प्रीतिकर ।
पारितोषिक प्रतिज्ञापत्र पु० (सं) इनाम में दिया हुआ प्रतिज्ञा पत्र । (प्राइज बॉंड) ।
पारिपंथिक पुं० (सं) डाकू । लुटेरा ।
पारिपार्श्वक पुं० (सं) १-सदा साथ रहने वाला अनुचर । सेवक । २-परिषद् । ३-नाटक में स्थापक का अनुचर ।
पारिप्लव पुं० (सं) १-नौका । नाव । २-एक प्रकार का जल पक्षी । वि० (सं) १-चंचल। चपल। २-तैरने वाला । ३-उद्विग्न ।
पारिभाव्य पुं० (सं) परिभू या जामिन होने का भाव
पारिभाव्य-धन पुं० (सं) जमानत या प्रतिभूति के रूप में कोई शर्त आदि पूरी कराने के लिये लिया हुआ धन या राशि । (कॉशन मनी) ।
पारिभाषिक वि० (सं) १-जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जाय । २-(शब्द) जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय । (टैक्निकल) ।
पारिभाषिक शब्दावली स्त्री० (सं) विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली या शब्दों की सूची । (ग्लॉसरी ऑफ टैक्निकल वर्ड्ज) ।
पारियानिक पुं० (सं) गाड़ी । बग्घी ।
पारिवारिक व्यवस्थापन पुं० (सं) परिवार की व्यवस्था । (फेमिली अरेंजमेंट) ।
पारिश्रमिक पु०(सं) किसी को परिश्रम करने के फलस्वरूप दिया जाने वाला धन । (रिम्यूनरेशन) ।
पारिषद वि०(सं) परिषद्-संबन्धी । पुं० (सं) १-परिषद् में बैठने वाला । सभासद । पंच। २-अनुयायी । वर्ग । गण । (काउंसिलर) ।
पारी स्त्री० (सं) १-हाथी के पैर का रस्सा । २-पानी का घड़ा । ३-पीने का पात्र । प्याला । स्त्री० (हि) १-बारी । २-गुड़ आदि का जमाया हुआ ढोंका ।
पारीक्षित पुं० (सं) १-राजा परीक्षित का पुत्र या वंशज । २-जन्मेजय ।
पारीरण पु० (सं) कछुवा ।
पारु पुं० (सं) १-सूर्य । २-अग्नि ।
पारुष्य पुं० (सं) १-कठोरता । रूखापन । २-वचन की कठोरता । गाली । दुर्वचन ।
पारेषण पुं० (सं) बिना तार के सूचना आदि भेजने का कार्य । (ट्रांसमिशन) ।
पारोक्ष वि०(सं) परोक्ष सम्बन्धी ।
पार्क पु० (अं) उद्यान । बगीचा ।
पार्घट पुं० (सं) धूल या राख ।
पार्टी स्त्री० (अं) १-दल । मंडली । २-वह समारोह जिसमें निमंत्रित लोगों को जलपान या भोजन कराया जाता है ।
पार्ण वि० (सं) पत्ता-संबन्धी ।
पार्थ पु० (सं) १-राजा । पृथ्वीपति । २-युधिष्ठिर, भीम, और अर्जुन का नाम जो विशेषतया अर्जुन के लिये ही प्रयुक्त होता था ।
पार्थ सारथि पुं० (स) कृष्ण ।
पार्थक्य पुं० (सं) १-पृथक होने की क्रिया या भाव । २-वियोग ।
पार्थव पुं० (सं) १-बड़प्पन । बड़ाई । २-स्थूलता । ३-चौड़ाई ।
पार्थिव वि० (सं) १-पृथ्वी या मिट्टी का । २-पृथ्वी-सम्बन्धी । ३-पृथ्वी पर शासन करने वाली । ४-राजसी । शाही । पुं० (सं) १-मिट्टी का शिवलिंग । २-मिट्टी का बरतन । ३-पृथ्वी पर रहने वाला । ४-राजा ।
पार्थिव-कन्या स्त्री० (सं) राजकुमारी ।
पार्थिव-दूरबीन स्त्री० (हि) पृथ्वी पर रखी हुई दूर की वस्तुएं तारे आदि को देखने की दूरबीन । (टेरेस्ट्रियल टेलिस्कोप) ।
पार्थिवी स्त्री० (सं) लक्ष्मी । सीता । पार्वती ।
पार्पर पुं० (सं) यम ।
पार्लमेंट स्त्री० (अं) राज्य की शासन व्यवस्था करने वाली निर्वाचित विधान सभा । संसद (विशेषतः इंगलैंड की विधान सभा) । (हाउस ऑफ कॉमन्स)
पार्वण वि० (सं) जो किसी पर्व के समय किया जाय

पाषाणी स्त्री० (सं) पत्थर का बटखरा। बाट। वि० (सं) पत्थर के समान कठोर हृदय वाली।

पाषान पुं० (हि) दे० 'पाषाण'।

पासंग पुं० (फा) तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर करने के लिये चढ़े हुए पलड़े पर रखा हुआ बोझ। पसंघा। पलड़ों का अन्तर।

पास स्त्री०(हि) १-बगल। ओर। तरफ। २-निकटता। सामीप्य। ३-अधिकार। कब्जा। अव्य० (हि) १-निकट। समीप। २-अधिकार में। ३-किसी से। किसी के प्रति। वि० (अं) १-पार किया हुआ। २-उत्तीर्ण। ३-स्वीकृत। ४-प्रचलित। पुं० (अं) १-कहीं से रोकटोक आने जाने के लिए दिया हुआ अधिकार पत्र। पारण-पत्र। २-रेल द्वारा बे-रोक-टोक यात्रा करने के लिए दिया गया अधिकार पत्र पुं० (देश०) १-भेड़ों आदि के बाल उतारने की कैंची का दस्ता। २-आँवे के ऊपर उपले जमाने का कार्य।

पासना क्रि० (हि) थनों में दूध आना।

पासनी स्त्री० (हि) बच्चों को पहले पहल अन्न देने की रस्म।

पासपोर्ट पुं० (अं) विदेश यात्रा के लिए सरकार द्वारा दिया गया अधिकार-पत्र। पार-पत्र।

पासबुक स्त्री० (अं) १-बैंक से मिलने वाली वह पुस्तक जिसमें हिसाब लिखा होता है निक्षेपक पुस्तिका। २-ग्राहक की वह पुस्तिका जिसमें दुकानदार द्वारा दिये हुए माल का हिसाब लिखा होता है। ग्राहक-पुस्तिका।

पासा पुं० (हि) १-काठ या हाथी दांत का बना हुआ चौपहला टुकड़ा जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिससे चौसर खेली जाती है। २-चौसर का खेल। ३-पीतल या कांसे के चौखूँटे लम्बे टुकड़े की गुल्ली जैसे सोने के पासे।

पासासार पुं० (हि) १-पासे की गोटी। २-पासे का खेल।

पासि पुं० (हि) बन्धन। फन्दा।

पासिक पुं० (हि) फन्दा। जाल। बन्धन।

पासिका स्त्री० (हि) फन्दा। जाल। बन्धन।

पासी पुं० (हि) १-चिड़ीमार। बहेलिया। २-एक जाति विशेष जिसके लोग सूअर पालने तथा ताड़ी निकालने का काम करते हैं।

पासुरी स्त्री० (हि) पसली।

पासुली स्त्री० (हि) पसली।

पाहँ अव्य० (हि) १-पास। निकट। २-किसी से। पास जाकर सम्बोधन करके।

पाहन पुं० (स) शहतूत का वृक्ष।

पाहन पुं० (हि) पत्थर। प्रस्तर।

पाहरू पुं० (हि) पहरेदार। पहरा देने वाला।

पाहि अव्य० (हि) १-पास। निकट। २-किसी से।

पाहि क्रियापद (सं) बचाओ। रक्षा करो।

पाहीं अव्य० (हि) दे० 'पाहि'।

पाही स्त्री० (हि) जिस खेत का किसान दूसरे गांव में रहता हो।

पाहीकाश्त पुं० (हि) दूसरे गांव में खेती करने वाला किसान या आसामी।

पाहीखेती स्त्री० (हि) वह खेती जो किसी दूसरे गांव में हो।

पाहुँच स्त्री० (हि) दे० 'पहुँच'।

पाहुना पुं० (हि) १-अतिथि। अभ्यागत। २-दामाद। जामाता।

पाहुनी स्त्री० (हि) १-अभ्यागत स्त्री। २-रखेल स्त्री। उपपत्नी। ३-अतिथि-सत्कार।

पाहू पुं० (हि) व्यक्ति। शख्स।

पिंग पुं० (स) १-भैंसा। २-चूहा। ३-हरताल। वि० (सं) १-पीला या पीलापन लिये हुए। भूरा रंग। २-तामड़ा। दीपशिखा के रंग का। ३-भूरापन लिये हुए लाल रंग का।

पिंगल वि० (सं) १-भूरापन लिये लाल। २-पीला। ३-सुवर्ण के रंग का। पुं०(सं) १-पीतल। २-हरताल ३-बन्दर। ४-उल्लू पक्षी। ५-पपीहा।

पिंगलस्फटिक पुं० (स) गोमेद।

पिंगला स्त्री० (स) १-लक्ष्मी। २-शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक। ३-शीशम का पेड़। ४-राजनीति। ५-एक वेश्या का नाम जो अपनी धर्मनिष्ठा के लिये प्रसिद्ध थी।

पिंगलाक्ष पुं०(सं) शिव।

पिंगेश पुं० (सं) अग्निदेव।

पिंजट पुं० (स) आंख की कीचड़।

पिंजड़ा पुं० (हि) दे० 'पिंजरा'।

पिंजन पुं० (स) धुनकी। रुई धुनने की क्रिया।

पिंजर वि० (सं) १-पीला। २-भूरापन लिये लाल रंग का। पुं० (सं) १-शरीर के अन्दर की हड्डियों का ढांचा या ठठरी। २-पिंजरा। ३-स्वर्ण। ४-हरताल

पिंजरा पुं० (हि) १-लोहे, बांस आदि की तीलियों का बना झाबा जिसमें बन्द करके पक्षी पाले जाते हैं। २-संकरा कमरा या स्थान।

पिंजरापोल पुं० (हि) गोशाला। पशुशाला।

पिंजरिया स्त्री० (सं) ललाई लिये हुए भूरा रंग।

पिंजल वि० (स) १-भयभीत। बहुत घबराया हुआ। २-जिसका चेहरा पीला पड़ गया हो। पुं० (स) १-हरताल। २-कुश की पत्ती। ३-अजवाँन।

पिंजिका पुं० (सं) रुई की पत्नी।

पिंजूष पुं० (स) कान का मैल।

पिंड पुं० (सं) १-ठोस गोला। गोल पदार्थ। २-ढेला। मुगदर। ३-पके हुए चावल या खीर। ४-

खेल में दो दलों के बीच की रेखा। ६-अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन। ७-अखाड़ा।
पालागन स्त्री० (हि) नमस्कार। प्रणाम। दंडवत्।
पालि स्त्री० (सं) १-कान का अग्रभाग। २-नोक। किनारा। ३-सीमा। ४-पंक्ति।
पालिका स्त्री० (सं) पालन करने वाली।
पालित वि० (सं) रक्षित। पाला पोसा हुआ। २-जो कहा सो किया।
पालिनी वि० (सं) पालन करने वाली।
पालिश स्त्री० (अं) चिकनाई और चमक लाने वाला मसाला या रोगन।
पाली वि० (हि) पालने या रक्षा करने वाला। स्त्री० (हि) १-तीतर बटेर लड़ाने का स्थान। २-बरतन का ढक्कन। ३-बारी। पारी। क्रिकेट के खेल में एक पक्ष के खेलने के बाद दुबारा उसी पक्ष का खेलना (इनींग्स)। ४-कारखाने आदि का वह निर्धारित समय जिसमें एक मजदूर-दल काम करता है। (शिफ्ट)। ५-एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्म ग्रन्थ लिखे हुए हैं।
पालू वि० (हि) पालतू। पाला हुआ।
पाले अव्य० (हि) चंगुल में। वश में।
पावँ पु० (हि) दे० 'पाँव'।
पावँड़ा पुं० (हि) दे० 'पाँवड़ा'।
पावँड़ी स्त्री० (हि) दे० 'पाँवड़ी'।
पावँर वि० (हि) दे० 'पाँवर'।
पावँरी स्त्री० (हि) दे० 'पाँवरी'।
[illegible] पुं० (हि) १-चौथाई भाग या अंश। २-चार [illegible] का एक तौल।
[illegible]क पुं० (सं) १-अग्नि। आग। २-सदाचार। ३-तेज। कांति। ४-सूर्य। वि० (सं) शुद्ध या पवित्र करने वाला।
पावदान पुं० (हि) दे० 'पायदान'।
पावती स्त्री० (हि) किसी वस्तु या रुपये का प्राप्ति-सूचक पत्र। रसीद। (रिसीप्ट)।
पावती-पत्र पुं० (हि) रसीद। (एक्नॉलिजमेंट)।
पावन वि० (सं) १-पवित्र या शुद्ध करने वाला। २-पवित्र। ३-शुद्ध। ४-हवा पीकर रहने वाला। पुं० (सं) १-तप। जल। ३-गोबर। ४-रुद्राक्ष। ५-माथे का तिलक। ६-चन्दन। ७-विष्णु।
पावना पुं० (हि) वह रुपया जो दूसरे से प्राप्त करना हो। प्राप्यधन। क्रि० (हि) १-प्राप्त करना। पाना। २-ज्ञान प्राप्त करना। जानना। ३-भोजन प्राप्त करना।
पावनि पुं० (सं) पवनसुत हनुमान।
पावनी स्त्री० (सं) १-तुलसी। २-गङ्गा। ३-हड़।
पावर पुं० (अं) १-शक्ति। अधिकार। २-वह शक्ति जिससे यन्त्र आदि चलाये जाते हैं। विद्युत-शक्ति
पावर-लूम पु० (अं) विद्युत या यन्त्र शक्ति से चलने वाला करघा।
पावर-स्टेशन पुं० (अं) बिजली घर। वह स्थान जहां वितरण के लिये बिजली बनाई जाती है।
पावर-हाउस पुं० (अं) दे० 'पावर-स्टेशन'।
पावरोटी स्त्री० (हि) एक प्रकार की मोटी और फूली हुई खमीरी रोटी। डबल रोटी।
पावस स्त्री० (हि) बरसात। वर्षाऋतु।
पावा पुं० (हि) १-दे० 'पाया'। २-वैशाली के पास का एक प्राचीन ग्राम जहां महात्मा बुद्ध कुछ दिन ठहरे थे।
पाश पुं० (सं) १-रस्सी तार आदि का बना फन्दा जिससे जीव या प्राणी बँध जाता है। बन्धनजाल २-पशु, पक्षियों को पकड़ने का जाल। ३-बन्धन।
पाशजाल पुं० (सं) संसार रूपी जाल।
पाशव वि० (सं) पशु से सम्बन्धित। पशु से उत्पन्न। पशुओं का सा।
पाशवता स्त्री० (सं) पशु होने का भाव।
पाशविक वि० (सं) दे० 'पाशव'।
पाशा पुं० (तु०) तुर्क देश के सरदारों की एक उपाधि।
पाशिक पुं० (सं) चिड़ीमार। व्याध।
पाशुपत पुं० (सं) १-पशुपति या शिव का उपासक। शैव। २-शिवोक्त तंत्रशास्त्र। वि० (सं) शिव या पशुपति सम्बन्धी। पशुपति का।
पाशुपतास्त्र पुं० (सं) शिव का एक प्रचंड अस्त्र जिसे अर्जुन ने कठोर तपस्या करके प्राप्त किया था।
पाश्चात्य वि० (सं) १-पीछे का। पिछला। २-पश्चिम दिशा का। पश्चिमी। (वेस्टर्न)। ३-पश्चिम का रहने वाला पश्चिमी योरप के महादेश। (योरप) से सम्बन्ध रखने वाला। (ऑक्सिडेन्टल)।
पाषंड वि० पुं० (सं) दे० 'पाखंड'।
पाषंडक पुं० (सं) वेदों के विरुद्ध आचरण करने वाला।
पाषंडकी पुं० (सं) धार्मिकता का आडम्बर फैलाने वाला।
पाषंडी वि० (सं) धूर्त। पाखंडी।
पाषर स्त्री० (हि) दे० 'पाखर'।
पाषाण पुं० (सं) १-पत्थर। प्रस्तर। २-शिला। ३-गंधक।
पाषाणगर्दभ पुं० (सं) दाढ़ सूजने का रोग।
पाषाणदारक पुं० (सं) संगतराश की छेनी या टांकी
पाषाणभेद पुं० (सं) एक पौधा जिसकी पत्तियां बहुत सुन्दर होती हैं। पथरचट।
पाषाणयुग पुं० (सं) दे० 'प्रस्तरयुग'। (स्टोनएज)।
पाषाणहृदय वि० (सं) पत्थर के समान कठोर हृदय वाला। नृशंस। क्रूर। निष्ठुर।

अनुगामी। अनुयायी। ३-सेवक। नौकर।
पिछगामी स्त्री० (हि) अनुयायी। अनुगमन करना।
पिछलगू पु० (हि) दे० 'पिछलगा'।
पिछपगू पु० (हि) दे० 'पिछलगा'।
पिछलत्ती स्त्री० (हि) घोड़ों आदि का पीछे की ओर लात मारना।
पिछलना क्रि० (हि) पीछे की ओर मुड़ना या हटना
पिछला वि० (हि) १-पीछे की ओर का। २-जो क्रम में सबसे पीछे पड़ता हो। ३-अन्त की ओर का। ४-बीता हुआ। गत। ५-अन्त की ओर का।
पिछवाई स्त्री० (हि) पीछे की ओर लटकाया जाने वाला परदा।
पिछवाड़ा पु० (हि) १-घर या मकान का पिछला भाग। घर के पीछे की जमीन।
पिछवारा पु० (हि) दे० 'पिछवाड़ा'।
पिछाड़ी स्त्री० (हि) १-पिछला भाग। २-वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पैर बाँधे जाते हैं। ३-क्रम में सबसे अन्त वाला व्यक्ति।
पिछान स्त्री० (हि) दे० 'पहचान'।
पिछानना क्रि० (हि) दे० 'पहचानना'।
पिछारी स्त्री० (हि) दे० 'पिछाड़ी'।
पिछेलना क्रि० (हि) पीछे धकेलना। पीछे कर देना।
पिछौंहें अव्य० (हि) पीछे की ओर।
पिछौरा पु० (हि) पुरुषों के ओढ़ने की चादर।
पिछौरी स्त्री० (हि) १-स्त्रियों की ओढ़नी। २-ओढ़ने का ...

में किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसके बदले में वह अपनी बारी समाप्त करके फिर खेलता है।
पिठर पु० (हि) भाप बनाने की भट्टी। (बायलर)।
पिठी स्त्री० (हि) उड़द या मूंग को भिगोकर पीसी हुई दाल।
पिठौरी पु० स्त्री० पिट्ठी की बनी बरी या पकौड़ी।
पिड़क पु० (सं) फुंसी। छोटा फोड़ा।
पिड़का स्त्री० (सं) फुड़िया। फुंसी।
पिड़किया स्त्री० (हि) गुंझिया।
पितंबर पु० (हि) दे० 'पीताम्बर'।
पितपापड़ा पु० (हि) एक क्षुप विशेष जो औषधि बनाने के काम आता है।
पितर पु० (हि) मृत पूर्वज।
पितरपति पु० (हि) यमराज।
पितराइध स्त्री० (हि) पीतल के बरतन में खटाई या अन्य पदार्थ बहुत देर रखने पर उत्पन्न कसाव।
पितराइ स्त्री० (हि) दे० 'पितराइध'।
पिता पु० (हि) वह सम्बन्धी जिसके वीर्य से उसकी उत्पत्ति हुई हो। जनक। बाप।
पितापुत्र पु० (हि) बाप और बेटा।
पितामह पु० (स) १-दादा। पिता का पिता। २-शिव। ब्रह्मा। ३-भीष्म।
पितामही स्त्री० (स) दादी। पिता की माता।
पितिया पु० (हि) चाचा। पिता का भाई।

भाई। चचिया-

३ ... का एक भाग।
पिटका स्त्री० (सं) १-पिटारी। २-फुन्सी।
पिटना क्रि० (हि) १-मार खाना। पीटा जाना। २-बजना। पु० (हि) छत आदि को पीटने का औजार थापी।
पिटवाना क्रि० (हि) १-पीटने का काम दूसरे से करवाना। २-बजवाना। ३-कुटवाना।
पिटाई स्त्री० (हि) १-पीटने का काम। २-पीटने की मजदूरी। ३-मारने या पीटने का पुरस्कार।
पिटारा पु० (हि) बांस, बेंत आदि का बना डिब्बे के आकार का बना हुआ पात्र।
पिटारी स्त्री० (हि) १-छोटा पिटारा। २-पानदान।
पिट्टस स्त्री० (हि) दुःख या शोक से छाती पीटना।
पिट्टू वि० (हि) मार खाने का अभ्यस्त। जिस पर अक्सर बोझ पड़े।
पिट्ठी स्त्री० (हि) दे० 'पीठी'।
पिट्ठू पु० (हि) १-गुप्त रूप से सहायता करने वाला। २-सहायक। हिमायती। खुशामदी। ३-एक साथ मिलकर खेल खेलने वाला। ४-कुछ विशिष्ट खेलों

पितिया सास स्त्री० (हि) चचिया सास। ससुर के भाई की पत्नी।
पितु पु० (हि) पिता। बाप। पु० (सं) अन्न। अनाज
पितुमातु पु० (हि) माता और पिता।
पितृ पु० (सं) १-दे० 'पिता'। २-मरे हुए पूर्वज। पितर। (एनसेस्टर)।
पितृऋण पु० (स) शास्त्रानुसार पुत्र उत्पन्न होने पर तीन ऋणों में से एक की मुक्ति।
पितृक वि० (सं) १-पैतृक। पिता का दिया हुआ।
पितृकर्म पु० (सं) श्राद्धकर्म।
पितृकृत्य पु० (सं) दे० 'पितृकर्म'।
पितृकार्य पु० (सं) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला कार्य।
पितृकुल पु० (स) पिता के वंश या कुल के लोग।
पितृकृत वि० (सं) पूर्वजों द्वारा किया हुआ।
पितृक्रिया स्त्री० (स) श्राद्धकर्म।
पितृगृह पु० (सं) मायका। पीहर। स्त्रियों के पिता का घर।
पितृघात पु० (स) पिता की हत्या। (पेट्रीसाइड)।

श्राद्ध आदि में अर्पित किया जाने वाला पायस। ५-भोजन। ६-जीविका। ७-काया। शरीर। (लम्प)

पिंडखर्जूर स्त्री० (सं) १-पिंडखजूर। २-एक विशेष प्रकार की खजूर जिसका फल मीठा होता है।

पिंडज पुं० (सं) गर्भ से शरीर अथवा पिंड के रूप में निकलने वाला जीव। जरायुज।

पिंडदान पुं० (सं) पितरों को पिंड देने का कार्य।

पिंडभृति स्त्री० (सं) आजीविका का उपाय। निर्वाह।

पिंडमूल पु० (स) १-शलजम। गाजर।

पिंडराशि स्त्री० (सं) एक ही बार अदा कर दी जाने वाली राशि। (लम्पसम)।

पिंडरी स्त्री० (सं) दे० 'पिंडली'।

पिंडली स्त्री० (हि) घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग।

पिंडवाही स्त्री०(हि) एक प्रकार का कपड़ा।

पिंडस पुं० (सं) भिक्षादान पर निर्वाह करने वाला।

पिंडा पुं०(हि) १-ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। २-श्राद्ध में पितरों को मधु, तिल आदि मिलाकर खीर का लोंदा। ३-शरीर। देह।

पिंडाकार वि० (सं) गोल।

पिंडारी पुं० (देश०) दक्षिण भारत की एक मुसलमान जाति जो लूटमार का पेशा करती थी।

पिंडाश पु० (सं) भिक्षुक। भिक्षा मांगने वाला। भिखारी।

पिंडाशी स्त्री० (सं) दे० 'पिंडाश'।

पिंडि स्त्री० (सं) दे० 'पिंडी'।

[illegible] स्त्री० (सं) १-मांस की गोलाकार सूजन। [illegible]। २-पिंडली। ३-छोटा पिंड। छोटा गोल-मटोल टुकड़ा। ४-पहिये के मध्य का वह गोल भाग जिसमें धुरी पहनाई जाती है। ५-शिवलिंग। ६-इमली।

पिंडित वि० (सं) १-पिंड के रूप में बनाया हुआ। २-गुणा किया हुआ। ३-गणित। ४-ठोस। ५-मिश्रित।

पिंडितार्थ पुं० (सं) सारांश। भावार्थ।

पिंडी स्त्री० (सं) १-छोटा गोल पिंडा या गोला। २-घरनाभि। ३-टांग की पिंडली। ४-घीया। लौकी। ५-घर। मकान। ६-वेदी। ७-सूत, रस्सी आदि से कस कर लपेटा हुआ गोला। ८-भिक्षुक। ९-पिंडदान करने वाला। वि० (सं) १-पिंडा प्राप्त करने वाला। २-शरीरधारी।

पिंडीकरण पु० (सं) पिंडाकार बनाना।

पिंडुरी पुं० (हि) दे० 'पिंडली'।

पिंडूक पुं० (हि) उल्लू। पंडुक।

पिअ वि० (हि) दे० 'प्रिय'। पुं० (हि) दे० 'पिय'।

पिअर वि० (हि) पीला।

पिअरा वि० (हि) दे० 'प्यारा'। पुं० (हि) स्वामी। पति।

पिअराई स्त्री० (हि) पीलापन।

पिअरी स्त्री० (हि) १-पीले रंग में रंगी हुई पीली धोती। २-पीलिया रोग। वि० (हि) पीली।

पिउ पु० (हि) पति।

पिउनी स्त्री० (हि) पूनी।

पिक पु० (सं) कोयल। कोकिल।

पिकदेव पुं० (सं) आम का पेड़।

पिकबंधु पुं० (सं) आम का पेड़।

पिकबांधव पुं० (सं) वसन्त ऋतु।

पिकांग पुं० (सं) चातक पक्षी।

पिचक पुं० (सं) हाथी का बच्चा

पिघरना क्रि० (हि) दे० 'पिघलना'।

पिघलना क्रि० (हि) १-गरमी से किसी ठोस वस्तु का गल कर पानी हो जाना। द्रवीभूत होना। २-चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।

पिघलाना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु को गरम करके द्रवीभूत करना। २-किसी के मन में दया उत्पन्न करना।

पिचकना क्रि० (हि) किसी उभरे या उठे तल का दब जाना।

पिचकाना क्रि० (हि) उभरे या फूले हुए तल को भीतर की ओर दबाना।

पिचकारी स्त्री० (हि) एक उपकरण जिससे कोई द्रव पदार्थ धार या फुहारे के रूप में छोड़ा जाता है।

पिचकी स्त्री० (हि) दे० 'पिचकारी'।

पिचपिचा वि० (हि) चिपचिपा।

पिचपिचाना क्रि० (हि) घाव आदि में से थोड़ा-थोड़ा मवाद या पानी रसना या निकलना।

पिचपिचाहट स्त्री० (हि) पिचपिचा या गीला होने का भाव।

पिचलना क्रि० (हि) दे० 'कुचलना'।

पिचास पुं० (हि) दे० 'पिशाच'।

पिचुका पुं० (हि) १-पिचकारी। २-गोल गप्पा।

पिचूका पुं० (हि) दे० 'पिचुका'।

पिचोतरसौ पुं० (हि) पहाड़े में एक सौ पांच की संख्या के लिए कहा जाने वाला शब्द।

पिच्छ पुं० (सं) १-बालदार पूंछ। २-मोर की पूंछ। ३-मोचरस।

पिच्छल पुं० (सं) १-आकाश बेल। शीशम। वि०(सं) १-चिकना। रपटन वाला। २-पिछला।

पिच्छिल वि० (सं) १-चिकना। २-रिपटने वाला। ३-पूंछ वाला।

पिछ पुं० (हि) समास में पीछा का लघुरूप।

पिछड़ना क्रि०(हि) १-साथ से छूटकर पीछे रह जाना। २-प्रतियोगिता में पीछे रह जाना।

पिछलगा पुं० (हि) १-पीछे-पीछे फिरने वाला। २-

अनुगामी। अनुयायी। ३-सेवक। नौकर।
पिछलगी स्त्री० (हि) अनुयायी। अनुगमन करना।
पिछलगू पु० (हि) दे० 'पिछलगा'।
पिछलागू पु० (हि) दे० 'पिछलगा'।
पिछलत्ती स्त्री० (हि) घोड़ों आदि का पीछे की ओर लात मारना।
पिछलना क्रि० (हि) पीछे की ओर मुड़ना या हटना
पिछला वि० (हि) १-पीछे की ओर का। २-जो क्रम में सबसे पीछे पड़ता हो। ३-अन्त की ओर का। ४-बीता हुआ। गत। ५-अन्त की ओर का।
पिछवाई स्त्री० (हि) पीछे की ओर लटकाया जाने वाला परदा।
पिछवाड़ा पु० (हि) १-घर या मकान का पिछला भाग। घर के पीछे की जमीन।
पिछवारा पु० (हि) दे० 'पिछवाड़ा'।
पिछाड़ी स्त्री० (हि) १-पिछला भाग। २-वह रस्सी जिसमें घोड़े के पिछले पैर बाँधे रहते हैं। ३-क्रम में सबसे अन्त वाला व्यक्ति।
पिछान स्त्री० (हि) दे० 'पहचान'।
पिछानना क्रि० (हि) दे० 'पहचानना'।

में किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसके बदले में वह अपनी बारी समाप्त करके फिर खेलता है।
पिठर पु० (हि) भाप बनाने की भट्टी। (बायलर)।
पिठी स्त्री० (हि) उड़द या मूंग को भिगोकर पीसी हुई दाल।
पिठौरी पु० स्त्री० पिट्ठी की बनी बरी या पकौड़ी।
पिडक पु० (सं) फुंसी। छोटा फोड़ा।
पिड़का स्त्री० (सं) फुड़िया। फुंसी।
पिड़िया स्त्री० (हि) गुझिया।
पितम्बर पु० (हि) दे० 'पीताम्बर'।
पितपापड़ा पु० (हि) एक क्षुप विशेष जो औषधि बनाने के काम आता है।
पितर पु० (हि) मृत पूर्वज।
पितरपति पु० (हि) यमराज।
पितराइध स्त्री० (हि) पीतल के बरतन में खटाई या अन्य पदार्थ बहुत देर रखने पर उत्पन्न कसाव।
पितराई स्त्री० (हि) दे० 'पितराइध'।
पिता पु० (हि) वह सम्बन्धी जिसके वीर्य से उसकी उत्पत्ति हुई हो। जनक। बाप।

पेता। २-

पिटक पु०(सं) १-पेटी। टोकरी। २-फुंसी। फुड़िया ३-किसी ग्रंथ का एक भाग।
पिटका स्त्री० (सं) १-पिटारी। २-फुन्सी।
पिटना क्रि० (हि) १-मार खाना। पीटा जाना। २-बजना। पु० (हि) छत आदि को पीटने का औजार थापी।
पिटवाना क्रि० (हि) १-पीटने का काम दूसरे से करवाना। २-बजवाना। ३-कुटवाना।
पिटाई स्त्री० (हि) १-पीटने का काम। २-पीटने की मजदूरी। ३-मारने या पीटने का पुरस्कार।
पिटारा पु० (हि) बांस, बेंत आदि का बना डिब्बे के आकार का बना हुआ पात्र।
पिटारी स्त्री० (हि) १-छोटा पिटारा। २-पानदान।
पिटूस स्त्री० (हि) दुःख या शोक से छाती पीटना।
पिट्ठ वि० (हि) मार खाने का अभ्यस्त। जिस पर अक्सर बोझ पड़े।
पिट्ठी स्त्री० (हि) दे० 'पीठी'।
पिट्ठू पु० (हि) १-गुप्त रूप से सहायता करने वाला २-सहायक। हिमायती। खुशामदी। ३-एक साथ मिलकर खेल खेलने वाला। ४-कुछ विशिष्ट खेलों

। चचिया-
ससुर।
पितिया सास स्त्री० (हि) चचिया सास। ससुर के भाई की पत्नी।
पितु पु० (हि) पिता। बाप। पु० (सं) अन्न। अनाज
पितुमातु पु० (हि) माता और पिता।
पितृ पु० (सं) १-दे० 'पिता'। २-मरे हुए पूर्वज। पितर। (एनसेस्टर)।
पितृऋण पु० (सं) शास्त्रानुसार पुत्र उत्पन्न होने पर तीन ऋणों में से एक की मुक्ति।
पितृक वि० (सं) १-पैतृक। पिता का दिया हुआ।
पितृकर्म पु० (सं) श्राद्धकर्म।
पितृकल्प पु०(सं) दे० 'पितृकर्म'।
पितृकार्य पु० (सं) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला कार्य।
पितृकुल पु०(सं) पिता के वंश या कुल के लोग।
पितृकृत वि० (सं) पूर्वजों द्वारा किया हुआ।
पितृक्रिया स्त्री० (सं) श्राद्धकर्म।
पितृगृह पु० (सं) मायका। पीहर। स्त्रियों के पिता का घर।
पितृघात पु० (सं) पिता की हत्या। (पेट्रीसाइड)।

पितृघातिक पुं० (सं) पिता का हत्यारा।
पितृघाती पुं० (सं) दे० 'पितृघातिक'।
पितृतंत्र पुं० (सं) समाज की वह प्राचीन व्यवस्था जिसमें घर का बड़ाबूढ़ा ही गृहस्थ का प्रबन्धक होता था और सब को उसके अनुशासन में रहना पड़ता था। (पेट्रिआर्की)।
पितृतर्पण पुं० (सं) १-पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला तर्पण। २-तिल।
पितृतिथि स्त्री० (सं) अमावस्या।
पितृदाय पुं० (सं) पिता से प्राप्त संपत्ति। मपौती।
पितृद्रव्य पुं० (सं) दे० 'पितृदाय'।
पितृनाथ पुं० (सं) १-यमराज। २-सब पितरों में श्रेष्ठ।
पितृपक्ष पुं० (सं) १-पिता की ओर के लोग। पितृकुल। २-आश्विन का कृष्णपक्ष जिसमें श्राद्धकर्म करना श्रेष्ठ माना गया है।
पितृपति पुं० (सं) यमराज का एक नाम।
पितृप्राप्त वि० (सं) पिता या पुरखों से प्राप्त।
पितृबंधु पुं० (सं) पितृकुल के लोग। पिता के नातेदार
पितृभक्त वि० (सं) पिता का आज्ञाकारी।
पितृभक्ति स्त्री० (सं) १-पुत्र का पिता के प्रति कर्तव्य। २-पिता की भक्ति।
पितृभोजन पुं० (सं) १-पितरों को अर्पित किया हुआ भोजन। २-उरद। माष।
पितृव्य पुं० (सं) चाचा।
पितृवंश पुं० (सं) पिता का कुल।
पितृवन पुं० (सं) श्मशान।
पितृविसर्जन पुं० (सं) पितृपक्ष के अन्तिम दिन या आश्विन कृष्णा अमावस्या के दिन होने वाला धार्मिक कृत्य।
पितृवेश्म पुं० (सं) मायका। पिता का घर।
पितृश्राद्ध पुं० (सं) पितरों के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध।
पितृसत्तात्मक वि० (सं) (वह परम्परा) जिसमें पिता की सत्ता को सर्वोच्च माना गया हो। (पैट्रिआर्कल)
पितृस्थान पुं० (सं) अभिभावक। वह जो पिता के स्थान पर हो।
पितृस्थानीय पुं० (सं) सरक्षक। अभिभावक।
पितृसू स्त्री० (सं) १-दादी। २-संध्या।
पितृहा पुं० (सं) पिता की हत्या करने वाला।
पित्त पुं० (सं) १-यकृत या जिगर में बनने वाला एक नीलापन लिये पीला तरल पदार्थ जो स्वाद में कड़ुवा तथा पाचन में सहायक होता है।
पित्तकर वि० (सं) पित्त को उत्पन्न करने वाला।
पित्तकास पुं० (सं) पित्तदोष से उत्पन्न खांसी।
पित्तकोष पुं० (सं) पित्ताशय।
पित्तक्षोभ पुं० (सं) पित्त का प्रकोप।
पित्तज वि० (सं) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न।
पित्तज्वर पुं० (सं) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।
पित्तद्रावी वि० (सं) पित्त को पिघलाने वाला। पुं० (सं) मीठा नीबू।
पित्तनाड़ी स्त्री० (सं) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न एक प्रकार की नाड़ी व्रण।
पित्तनाशक वि० (सं) पित्त का नाश करने वाला।
पित्तपथरी स्त्री० (हि) पित्तवाहक नाड़ियों में कंकड़ियां सी पड़ जाने का रोग।
पित्तपांडु पुं० (सं) पित्त के विकार से उत्पन्न एक रोग जिसमें नेत्र आदि सब पीले पड़ जाते हैं।
पित्तपापड़ा पुं० (हि) एक झाड़ या क्षुप जिसका उपयोग दवा के रूप में किया जाता है।
पित्तप्रकोप पुं० (सं) पित्त का विकार।
पित्तभेषज पुं० (सं) मसूर। मसूर की दाल।
पित्तरक्त पुं० (सं) रक्त-पित्त नामक एक रोग।
पित्तल वि० (सं) पित्त को बढ़ाने वाला। पित्तकारी। पुं० (सं) १-भोजपत्र। २-पीतल। ३-हरताल। स्त्री० (हि) जलपीपल।
पित्तला स्त्री० (सं) पित्त के दूषित होने के कारण होने वाला योनि का एक रोग।
पित्तविसर्प पुं० (सं) एक प्रकार का विसर्प रोग।
पित्तव्याधि स्त्री० (सं) पित्त दोष से उत्पन्न रोग।
पित्तशमन वि० (सं) पित्त के प्रकोप को दूर करने वाला
पित्तशूल पुं० (सं) पित्त विकार से होने वाला एक प्रकार का शूल रोग।
पित्तशोथ पुं० (सं) पित्त से उत्पन्न शोथ।
पित्तसंशमन पुं० (सं) वे औषधियां जिनसे कुपित पित्त शान्त होता है।
पित्तस्थान पुं० (सं) दे० 'पित्तकोष'।
पित्तहा पुं० (हि) पित्तपापड़ा। वि० (हि) पित्त को नाश करने वाला।
पित्ता पुं० (हि) १-पित्ताशय। २-साहस। ३-पित्त। ४-स्तब्रा।
पित्तातिसार पुं० (सं) पित्त प्रकोप से होने वाला अतिसार रोग।
पित्तारि पुं० (सं) १-पित्तपापड़ा। २-चन्दन। ३-लाख।
पित्ताशय पुं० (सं) पित्त की वह थैली जो यकृत के पीछे की ओर होती है।
पित्ती स्त्री० (हि) पित्त विकार से होने वाला एक रोग। जिसमें शरीर पर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं। पुं० (हि) चाचा।
पिथौरा पुं० (हि) दिल्ली के अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज।
पिदारा पुं० (हि) दे० 'पिद्दा'।
पिद्दा पुं० (हि) १-पिद्दी का नर। २-अत्यन्त तुच्छ

पिल्लू पुं० (हि) एक प्रकार का सफेद लम्बा बिना पैर का कीड़ा। ढोला।
पिव पुं० (हि) प्रियतम।
पिवाना क्रि० (हि) दे० 'पिलाना'।
पिशाच पुं० (सं) एक हीन देवयोनि। भूत। प्रेत। दुष्ट मनुष्य।
पिशाचक पुं० (सं) भूत। प्रेत। पिशाच।
पिशाचघ्न वि० (सं) पिशाचों को नष्ट करने वाला। पुं० (हि) पीली सरसों।
पिशाचचर्या स्त्री० (सं) श्मशान सेवन।
पिशाचपति पुं० (सं) शिव।
पिशाचबाधा स्त्री० (सं) पिशाच द्वारा अनिष्ट होना।
पिशाचभाषा स्त्री०(सं) पैशाची प्राकृत जिसका प्रयोग संस्कृत के नाटकों में कहीं कहीं मिलता है।
पिशित पुं० (सं) मांस। गोश्त।
पिशिता पुं० (सं) जटामांसी।
पिशिताशन पुं० (सं) १-मांसभक्षी। २-मनुष्य भक्षी राक्षस। ३-भेड़िया।
पिशुन पुं० (सं) १-चुगलखोर। २-दुर्जन। ३-केसर। ४-काक। ५-कपास। वि० (सं) चुगली खाने वाला।
पिष्ट वि० (सं) १-पिसा हुआ। २-दोनों हाथों से पकड़ कर दबाया हुआ। पुं० (सं) १-पिसी हुई कोई वस्तु। २-पीठी। पिट्ठी।
पिष्टपेषण पुं० (सं) १-पिसे हुए को दुबारा पीसना। २-व्यर्थ काम करना। ३-निरर्थक परिश्रम।
पिष्टिका स्त्री० (सं) पिट्ठी। पीठी।
पिष्टोदक पुं० (सं) पिसे हुए चावल का पानी।
पिसनहारी स्त्री० (हि) आटा पीसने वाली स्त्री।
पिसना क्रि० (हि) १-रगड़ या दाब खाकर चूर्ण होना। २-दब या कुचल जाना। ३-पीड़ित होना। घोर कष्ट या हानि सहना। ४-अत्यधिक परिश्रम से क्लांत होना।
पिसवाज पुं० (हि) नाचते समय नर्तकियों के पहनने का घाघरा।
पिसवाना क्रि० (हि) पीसने का काम दूसरे से कराना।
पिसाई स्त्री० (हि) १-पीसने की क्रिया या भाव। २-पीसने की मजदूरी। ३-अत्यधिक परिश्रम। ४-चक्की पीसने का काम।
पिसाच पुं० (हि) दे० 'पिशाच'।
पिसान पुं० (हि) अन्न का पिसा बारीक चूर्ण। आटा।
पिसाना क्रि० (हि) पीसने का काम किसी दूसरे से करवाना।
पिसी स्त्री० (हि) गेहूं।
पिसुन पुं० (हि) चुगलखोर। पिशुन।
पिसौनी स्त्री० (हि) १-चक्की पीसने का धंधा। २-अधिक परिश्रम का धंधा।
पिस्त पुं० (फा) पिस्ता।
पिस्तई वि० (फा) पिस्ते के रंग का। पीलापन लि...
पिस्ता पुं० (फा) १-एक प्रसिद्ध और स्वादिष्ट मे... २-इसका पेड़।
पिस्तौल स्त्री० (हि) तमंचा। बंदूक की तरह ... चलाने का एक छोटा हथियार। (पिस्टल)।
पिस्सू पुं० (हि) एक प्रकार का उड़ने वाला ... जो शरीर का रक्त चूसता है। (फ्ली)।
पिहकना क्रि० (हि) कोयल, मोर आदि मधुर ... वाले पक्षियों का बोलना।
पिहान पुं० (हि) ढकने की कोई वस्तु। ढक्कन। ढकन।
पिहित वि० (सं) छिपा हुआ। पुं० (सं) एक ... अलंकार जिसमें किसी के मन का भाव जानकर ... द्वारा अपना भाव प्रकट करने का उल्लेख होता...
पींजना क्रि० (हि) रूई धुनना।
पींजर पुं० (हि) पंजर। पिंजड़ा।
पींजरा पुं० (हि) पिंजड़ा।
पींड पुं० (हि) १-वृक्ष का धड़ या तना। २-... देह। पिंड। ३-चरखे के बीच का हिस्सा। ४-... खजूर।
पींडी स्त्री० (हि) दे० 'पिंडी'।
पींडुरी स्त्री० (हि) दे० 'पिंडुली'।
पी पुं० (हि) दे० 'प्रिय'। स्त्री०(हि) पपीहे की बोल...
पीक स्त्री०(हि) थूक में मिला पान का रस।
पीकदान पुं० (हि) उगालदान। पीक थूकने का ...
पीकना क्रि० (हि) कोयल तथा पपीहे का बोलना...
पीका पुं० (देश०) नया कोमल पत्ता। कोंपल। पल्लव।
पीच स्त्री० (हि) चावल का मांड। पुं० (हि) ठो...
पीछ स्त्री० (हि) १-मांड। पीच। २-पक्षियों की पू...
पीछा पुं० (हि) १-पीछे की ओर का भाग। २-... का पीठ वाला भाग। ३-किसी घटना के बाद ... समय। ४-किसी के पीछे रहने का भाव।
पीछू अव्य० (हि) दे० 'पीछे'।
पीछे अव्य० (हि) १-पीठ की ओर। आगे से उल... २-अनन्तर। ३-अन्त में। ४-किसी की अनुपस्थि... में। ५-मर जाने पर। ६-वास्ते। ७-कारण। लि...
पीजन पुं० (हि) वह धुनकी जिससे रेशों के ... धुने जाते हैं।
पीजर पुं० (हि) दे० 'पिंजड़ा'।
पीटन पुं० (हि) दे० 'पिटना'।
पीटना क्रि० (हि) १-मारना या प्रहार करना। ... चोट लगा कर किसी वस्तु को चिपटी करना। ... किसी प्रकार से कोई काम निबटा लेना। ४-कि... वस्तु पर चोट पहुँचाना। ५-किसी प्रकार कोई

स्थ कर लेना।

पुं० (सं) १-पीढ़ा। किसी वस्तु का बना बैठने का आसन। २-वेदी। ३-अधिष्ठान। ४-कुशासन। ५-विद्यार्थियों के बैठने का स्थान। ६-बैठने का एक विशेष ढंग। ७-तख्ता। राजसिंहासन। ८-...स के किसी अंक का पूरक। ९-विधान सभा आदि में किसी विशिष्ट दल के बैठने का सुरक्षित स्थान। (बेंच)। १०-न्यायाधीश अथवा न्यायाधीशों का वर्ग (बेंच) स्त्री० (सं) १-पृष्ठभाग। २-शरीर में पेट के पीछे का भाग जिसमें रीढ़ की हड्डी होती है।

...टक पुं० (सं) पीढ़ा।

...ठग वि० (सं) लंगड़ा। पंगु।

...ठगर्भ पुं० (सं) वेदी पर मूर्ति को जमाने के लिए बनाया गया गड्ढा।

...ठभू पुं० (सं) प्राचीर के आसपास का भू-भाग। (प्लिन्थ)।

...ठमर्द पुं० (सं) नायक के चार सखाओं में से एक जो मीठी बातों से नायिका को मना सके। २-नर्तकी या वेश्या को नाच सिखाने वाला उस्ताद।

...ठमर्दिका स्त्री० (सं) नायक को रिझाने या मनाने में नायिका की सहायता करने वाली।

पीठविवर पुं० (सं) दे० 'पीठगर्भ'।

पीठसर्प वि० (सं) लंगड़ा।

पीठस्थविर पुं० (सं) कुल सचिव। विश्वविद्यालय के कागज-पत्र या छात्र-सम्बन्धी विवरण रखने वाला अधिकारी। (रजिस्ट्रार)।

पीठस्थान पुं० (सं) कोई विशिष्ट पवित्र स्थान।

पीठा पुं० (हि) १-पीढ़ा। २-एक पकवान जो आटे की लोई में पिट्ठी आदि भर कर बनाया जाता है।

पीठासीन वि० (सं) जो अध्यक्ष के स्थान पर आसीन हो। (प्रज़ाइडिंग)।

पीठि स्त्री० (हि) दे० 'पीठ'।

पीठिका स्त्री० (सं) १-पीढ़ा। २-खंभे या मूर्ति का मूल या आधार। ३-पुस्तक का अध्याय। परिच्छेद ४-आसन। ५-किसी अध्यापक का पद या कार्य। (चेयर)।

पीठी स्त्री०(हि) उड़द, मूंग आदि को पानी में भिगो-कर पीसी हुई दाल।

पीढ़ स्त्री० (हि) १-पीढ़ा। २-एक प्रकार का सिर पर बाँधने का आभूषण।

पीड़क पुं०(सं) १-कष्ट या पीड़ा देने वाला। उत्पीड़क २-अत्याचारी।

पीड़न पुं० (सं) १-दबाने या चाँपने की क्रिया। २-पेरना। पेरना। ३-यन्त्रणा पहुँचाना। ४-उत्पीड़न ५-पीट-पीट कर अनाज बालों से निकालना। ६-पकड़ना। हाथ में लेना। ७-मसलना। ८-उच्छेद।

नाश।

पीड़नीय वि० (सं) दुःख या कष्ट पहुँचाने योग्य। पुं० (सं) १-बिना मन्त्री का राजा। २-चार प्रकार के शत्रुओं में से एक।

पीड़ा स्त्री० (सं) १-वेदना। दर्द। व्यथा। २-रोग। व्याधि। ३-शिरोमाला। ४-कष्ट। तकलीफ।

पीड़ाकर वि०(सं) कष्टदायक। दुःख देने वाला।

पीड़िका स्त्री० (सं) फुंसी। फुड़िया।

पीड़ित वि० (सं) १-दुखित। क्लेशयुक्त। पीड़ायुक्त २-रोगी। ३-दबाया हुआ। ४-नष्ट किया हुआ। ५-दबा कर पतला किया गया। [टिंग्ड (डेंच)]।

पीडुरी स्त्री० (हि) पिंडली।

पीढ़ा पुं० (हि) काठ, बाँस या बेंत का बना ऊंचा और छोटा आसन। पाटा।

... [illegible]

(डेनरेशन) स्त्री० (हि) छोटा पीढ़ा।

पीत वि०(सं)१-पीला। २-भूरा। ३-पीया हुआ। पुं० (सं) १-पीला रङ्ग। २-भूरा रंग। ३-कुसुम। ४-पुखराज। ५-हरताल। ६-गन्धक।

पीतकंद पुं० (सं) १-गाजर। २-शलजम।

पीतका स्त्री० (सं) हल्दी।

पीतकाष्ठ पुं० (सं) १-पीला चन्दन। २-पद्माख।

पीतता स्त्री० (सं) पीलापन।

पीतधातु पुं० (हि) रामरज। गोपीचन्दन।

पीतम वि० (हि) प्रियतम। कंत।

पीतल पुं० (हि) एक प्रसिद्ध उपधातु जो तांबे और जस्ते के संयोग से बनती है।

पीतवासा वि० (सं) पीले वस्त्र पहनने वाला। पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

पीतांबर पुं० (सं) पीले रङ्ग का वस्त्र। २-श्रीकृष्ण। ३-रेशमी धोती जो पूजा पाठ करते समय पहनी जाती है। वि० (सं) पीले वस्त्र पहनने वाला।

पीतातंक पुं०(सं) पश्चिमी देशों का यह भय कि चीन, जापान आदि पीली जातियां सारे संसार पर न छा जायें। (येलो पेरिल)।

पीता स्त्री० (सं) १-हल्दी। २-देवदार। ३-पीला केला। ४-भूरे रङ्ग का गोरस।

पीताब्धि पुं० (सं) अगस्त्य ऋषि का नाम।

पीताभ वि० (सं) १-पीत वर्ण का। २-पीली आभा देने वाला।

पीतिमा स्त्री० (सं) पीलापन।

पीती पुं० (सं) घोड़ा। स्त्री० (सं) दे० 'प्रीति'।

पीथ पुं० (सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-काल। ४-जल।

पीथि पुं० (सं) घोड़ा।

पीन वि० (सं) १-मोटा। स्थूल। २-पुष्ट। ३-संपन्न। पुं० (सं) मोटाई। स्थूलता।
पीनक स्त्री० (हि) अफीम के नशे में ऊंघना। २-नींद के कारण झुक-झुक पड़ना।
पीनता स्त्री० (सं) स्थूलता। मोटाई।
पीनस पुं० (सं) १-जुकाम। २-नाक का एक रोग जिससे घ्राणशक्ति नष्ट हो जाती है। स्त्री० (हि) पालकी।
पीना क्रि० (हि) १-द्रव पदार्थ को मुख द्वारा ग्रहण करना। २-किसी बात को दबा देना। ३-बरदाश्त करना। सहना। ४-मद्यपान करना। ५-धूम्रपान करना। पुं० (हि) तिल आदि की खली।
पीप स्त्री० (हि) पीब। मवाद। फोड़े या घाव में से निकलने वाला पानी।
पीपर पुं० (हि) दे० 'पीपल'।
पीपरपर्न पुं० (हि) १-पीपल का पत्ता। २-एक आभूषण।
पीपरामूल पुं० (हि) एक प्रसिद्ध औषधि पीपलामूल।
पीपल पुं० (हि) बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी हिन्दू लोग पूजा करते है। स्त्री० (हि) एक लता जो औषधि के काम आती है।
पीपा पुं० (हि) काठ या लोहे का बना एक बड़ा पात्र जिसमें घी, शराब, तेल आदि रखते हैं।
पीब स्त्री० (हि) दे० 'पीप'।
पीय पुं० (हि) पति। स्वामी।
पीयर वि० (हि) पीला।
पीया पुं० (हि) पति। स्वामी।
पीयूख पुं० (हि) दे० 'पीयूष'।
पीयूष पुं० (सं) १-सुधा। अमृत। २-ब्याने के सात दिन के भीतर का गाय का दूध।
पीयूषभानु पुं० (सं) चन्द्रमा।
पीयूषवर्ष पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
पीर स्त्री०(हि) १-पीड़ा। दुःख। दर्द। २-सहानुभूति करुणा। ३-प्रसवकाल की पीड़ा। वि० (फा) १-बुजुर्ग। वृद्ध। २-महात्मा। ३-धूर्त। चालाक। पुं० (हि) १-परलोक का मार्ग दिखाने वाला। २-मुसलमानों का धर्म गुरु। ३-सोमवार का दिन।
पीरजादा पुं० (फा) किसी पीर या धर्मगुरु की संतान
पीरना क्रि० (हि) पेरना।
पीरा स्त्री० (हि) दे० 'पीड़ा'। वि० (हि) दे० 'पीला'।
पीरानी स्त्री० (फा) पीर की पत्नी।
पीरी स्त्री० (फा) १-वृद्धावस्था। बुढ़ापा। २-चेला मूंडने का धंधा। ३-धूर्तता। ४-चमत्कार।
पीरोजा पुं० (हि) दे० 'फिरोजा'।
पील पुं०(फा) १-हाथी। २-शतरंज का मोहरा। पुं० (हि) एक प्रकार का कीड़ा। २-एक प्रकार का वृक्ष।
पीलखाना पुं० (हि) हाथीखाना।
पीलपांव पुं० (हि) श्लीपद नामक एक रोग जिससे हाथ पाँव सूज जाते हैं।
पीलपा पुं० (हि) दे० 'पीलपाँव'।
पीलपाया पुं० (हि) टेक। थूनी।
पीलपाल पुं० (हि) महावत। हाथीवान।
पीलबान पुं० (हि) पीलपाल।
पीलवान पुं० (हि) महावत। हाथीवान।
पीलसोज पुं० (फा) दीप जलाने की दीवट। चिराग-दान।
पीला वि० (हि) १-हल्दी या केसर के रंग का। पीत २-निस्तेज। ३-कांतिहीन।
पीलिमा स्त्री० (हि) पीलापन।
पीलिया पुं० (हि) पांडु रोग।
पीलु पुं० (सं) १-एक प्रकार का फलदार वृक्ष। २-तीर। बाण। ३-अणु। ४-कीट। ५-हाथी। ६-फूल। ७-हथेली।
पीलू पुं० (हि) १-एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जिसमें छोटे-छोटे फल लगते है। २-सड़े फलों में पड़ने वाले कीड़े। ३-एक राग।
पीव वि० (हि) स्थूल। मोटा। स्त्री०(हि) पीप। मवाद
पीवना क्रि० (हि) दे० 'पीना'।
पीवर वि० (सं) मोटा। स्थूल। भारी। पुं० (सं) १-जटा। २-कछुवा।
पीविष्ठ वि० (सं) अत्यधिक मोटा।
पीसना क्रि० (हि) १-रगड़कर आटे या चूर्ण के रूप में करना। २-किसी वस्तु को जल की सहायता से महीन करना। ३-कुचल देना। ४-कठोर परिश्रम करना। पुं० (हि) १-पीसी जाने वाली वस्तु। २-एक व्यक्ति के हिस्से का कार्य (व्यंग में)।
पीहर पुं० (हि) स्त्री के माता-पिता का घर। पीहर मायका।
पुंख पुं०(सं)१-तीर का वह स्थान जहाँ पर पर लगा होता है। २-मंगलाचार। ३-बाज पक्षी।
पुंखित वि० (सं) पंखों से युक्त (बाण)।
पुंग पुं० (सं) संग्रह। समूह।
पुंगफल पुं० (हि) सुपारी।
पुंगव पुं० (सं) १-बैल। २-सांड। वि० (सं) श्रेष्ठ उत्तम।
पुंगवकेतु पुं० (सं) शिव।
पुंगीफल पुं० (हि) सुपारी।
पुंछल्ला पुं० (हि) दे० 'पुंछाल'।
पुंछार पुं० (हि) मोर। मयूर।
पुंछाल पुं० (हि) १-दुमवाला। २-साथ न छोड़ने वाला। ३-पिछलग्गू।
पुंज पुं० (सं) ढेर। समूह।
पुंजि स्त्री० (सं) ढेर। समूह।
पुंजिक पुं०(सं) १-ओला। २-जमी हुई बरफ।

पुंजित वि० (सं) १-जमा हुआ। ढेर लगाया हुआ। २-मिलकर दबाया हुआ। ३-थोड़ा-थोड़ा करके जमा होकर बढ़ा हुआ। (एक्यूम्यूलेटेड)।
पुंजी स्त्री० (हि) दे० 'पूंजी'।
पुंजोत्पादन पुं० (सं) कारखाने आदि में किसी वस्तु का बड़े पैमाने पर उत्पादन। (मास प्रोडक्शन)।
पुंडरीक [illegible]

अग्नि। व्याघ्र। ११-आकाश।
पुंडरीकनयन वि० (सं) कमलनयन।
पुंडरीकलोचन वि० (सं) कमलनयन।
पुंडरीकाक्ष पुं० (सं) १-विष्णु। २-रेशम के कीड़े पालने वालों की एक जाति। वि० (सं) जिसके कमल के समान नयन हों।
पुंड्र पुं० (सं) १-लाल जाति की ऊख। २-कमल। ३-माथे का तिलक। ४-एक प्राचीन देश।
पुंलक्षण स्त्री० (सं) पुरुष के लक्षण वाली नपुंसक स्त्री।
पुंलिंग वि० (सं) व्याकरण के अनुसार पुरुषवाचक (शब्द)। (मैस्कुलिन)।
पुंवत् अव्य० वि० (सं) १-पुरुष की तरह। [illegible] वाची शब्द की तरह।
पुंश्चल पुं० (सं) व्यभिचारी पुरुष।
पुंश्चली स्त्री० (सं) व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा
पुंश्चलीय पुं० (सं) वेश्या का पुत्र।
पुंस पुं० (सं) पुरुष। नर।
पुंसत्व स्त्री० (सं) मर्दानगी।
पुंसवन स्त्री० (सं) १-गर्भाधान के तीन मास बाद का संस्कार। २-दूध। ३-गर्भपिंड।
पुंसत्व पुं० (सं) १-पुरुष। मर्दानगी। २-वीर्य। ३-पुरुष की स्त्री समागम की शक्ति। (पोटेंसी)।
पुंसत्वदोष पुं० (सं) नामर्दी। (इम्पोटेंसी)।
पुआ पुं० (हि) आटे या मैदे को मीठे रस में सानकर बनाई हुई पूरी या पकौड़ी।
पुआल पुं० (हि) दे० 'पयाल'।
पुकार पुं० (हि) १-किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव। २-किसी अधिकारी आदि से की गई प्रार्थना या फरयाद। दुहाई। ३-किसी वस्तु की अधिक मांग। ४-रक्षा या बचाव के लिए किसी को चिल्लाकर बुलाना।
पुकारना क्रि० (हि) १-ऊँचे स्वर में संबोधन करना। २-नामोच्चारण करना। ३-चिल्लाकर मांगना, कहना, बुलाना तथा सुनाना। ४-अभियोग लगाना।

पुग पुं० (हि) दे० 'पुण्य'।
पुगर पुं० (हि) पोखर। तालाब।
पुखराज पुं० (हि) एक प्रकार का पीले रङ्ग का रत्न। पीतमणि।
पुख्तगी स्त्री० (फा) पुख्ता होने का भाव। दृढ़ता। मजबूती।
पुख्ता वि० (फा) पक्का। दृढ़। मजबूत।
[illegible] लिए
[illegible] हुए
प्यार जताना।
पुचकारी स्त्री० (हि) दे० 'पुचकार'।
पुचारना क्रि० (हि) पोतना। पुचारा देना।
पुचारा पुं० (हि) १-तर कपड़े से पोंछने या पोतने की क्रिया। २-लेप चढ़ाई हुई पतली तह। ३-पोतने का तर कपड़ा। ४-वह तरल पदार्थ जो पोतने के काम आता है। ५-चापलूसी। झूठी प्रशंसा।
पुच्छ स्त्री० (सं) १-पिछला या अन्तिम भाग। २-पूंछ। दुम।
पुच्छल वि० (हि) दुमदार। पूंछवाला।
पुच्छलतारा पुं० (हि) वह तारा जिसके भाप या कोहरे जैसी पूँछ दूर तक दिखाई दे। केतु।
[illegible] थोड़ी हुई
३-बड़ी
[illegible] समझ-
कर आदर करने वाला। ३-मोर।
पुछिया पुं० (हि) भेड़ा। भेड़।
पुजना क्रि०(हि) १-सम्मानित होना। २-पूजा जाना ३-पूरा होना।
पुजवना क्रि० (हि) १-पुजाना। २-पूरा करना। ३-सफल करना।
पुजवाना क्रि० (हि) १-पूजने का कार्य दूसरे से कराना। २-अपना सम्मान कराना।
पुजाई स्त्री० (हि) १-पूजने का कार्य या भाव। २-पूजने की उजरत या मजदूरी।
पुजाना क्रि० (हि) १-दे० 'पुजवाना'। २-त्रुटि दूर करना। पूरा करना।
पुजापा पुं० (हि) १-देव पूजन करने की सामग्री। २-पूजा की सामग्री रखने का पात्र या झोली।
पुजारी पुं० (हि) १-पूजा करने वाला। पूजक। २-मन्दिर आदि में पूजा करने के लिए नियुक्त व्यक्ति ३-उपासक।
पुजाही स्त्री० (हि) पूजा की सामग्री रखने का पात्र या झोली।

पुजेरी पुं० (हि) पुजारी।
पुजैया पुं० (हि) १-पूजा करने वाला। २-भरने या पूरा करने वाला। स्त्री० (हि) दे० 'पुजाई'।
पुजौरा पुं० (हि) १-पूजन के समय देवता को अर्पित करने की सामग्री। २-पूजनअर्चा।
पुट पुं० (हि) १-किसी वस्तु को मुलायम, तर या हलका करने के लिए दिया जाने वाला छींटा। २-बहुत हलका मिश्रण। ३-भावना। पुं० (सं) १-आच्छादन। ढकने वाली वस्तु। २-दोना। कटोरा। गोल गहरा बरतन। ३-औषध पकाने का मुँह बन्द बरतन। संपुट। ४-रिक्त स्थान। विविर।
पुटकी स्त्री० (हि) १-पोटली। गठड़ी। २-आकस्मिक मृत्यु। दैवी विपत्ति। ३-तरकारी के रस को गाढ़ा करने के लिये मिलाया गया आटा या बेसन।
पुटग्रीव पुं० (सं) १-घड़ा। कलसा। २-ताँबे का बरतन।
पुटपाक पुं० (सं) १-वैद्यक में वह क्रिया जो औषध को पत्तों के दोने में पकाने के लिए रख कर की जाती है। २-किसी औषध विशेष को भस्मादि बनाने के लिए मुँह बन्द बरतन में रख कर उसे गड्ढे के अन्दर पकाने का विधान। ३-इस प्रकार तैयार की गई औषध या रस।
पुटरिया स्त्री० (हि) पोटली।
पुटरी स्त्री० (हि) पोटली।
पुटिका स्त्री० (सं) १-इलायची। २-संपुट। ३-पुड़िया
पुटित वि० (सं) १-सुकड़ा हुआ। २-सिला हुआ। ३-बन्द किया हुआ। ४-जो पुट के रूप में किसी आवरण विशेष के अन्दर हो। बन्द। (कैपस्यूल्ड)
पुटियाना क्रि० (हि) फुसलाना।
पुटी स्त्री० (सं) १-कटोरा या छोटा दोना। २-रिक्त स्थान जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। ३-लंगोटी ४-पुड़िया। ५-कौपीन।
पुटीन पुं० (अ) एक प्रकार का सफेदे में वार्निश मिला कर बनाया हुआ मसाला जो किवाड़ में शीशे बैठा कर लगाया जाता है। और लकड़ी में छेद भरने के काम आता है। (पुटी)।
पुट्ठा पुं० (हि) १-चूतड़ के ऊपर का कड़ा भाग। २-चौपायों (विशेषतः घोड़ों) का चूतड़ वाला भाग। ३-घोड़ों की संख्या के लिए शब्द। ४-किसी पुस्तक की जिल्द का पृष्ठ भाग। ५-पुट्ठे पर का चमड़े का भाग।
पुट्ठी स्त्री० (हि) गाड़ी के पहिये का वह भाग जिसमें आरे जुड़े होते हैं।
पुठवार अव्य० (हि) १-पीछे। २-बगल में।
पुठवाल पुं० (हि) १-चोरों के दल का वह बलिष्ठ चोर जो सेंध के मुँह पर पहरे के लिए नियुक्त किया जाता है। २-बुरे काम का सहायक। पृष्ठ-रक्षक। मददगार।
पुड़ा पुं० (हि) १-पुड़िया। बंडल। २-ढोल मढ़ने का चमड़ा।
पुड़िया स्त्री० (हि) १-कागज या पत्ता मोड़ कर बनाया गया वह संपुट जिसमें कोई वस्तु रखी हो। २-इस प्रकार लपेटी दवा या धातु की मात्रा। ३-खान। भंडार। ४-धन-संपत्ति।
पुड़ी स्त्री० (हि) १-ढोल मढ़ने का चमड़ा। २-पूरी।
पुण्य वि० (सं) १-पवित्र। शुद्ध। मंगलात्मक। पुं० (सं) १-धर्म कार्य। २-शुभ कार्य का फल। ३-परोपकार आदि का काम।
पुण्यक पुं० (सं) १-वह व्रत जिससे पुण्य फल की प्राप्ति होती है। २-विष्णु।
पुण्यकर्ता पुं० (सं) पुण्य या शुभ कार्य करने वाला।
पुण्यकर्म पुं० (सं) १-मंगलात्मक कार्य। २-वह कर्म जिसे करने से पुण्य फल की प्राप्ति होती है।
पुण्यकाल पुं० (सं) १-दान-पुण्य का समय। २-शुभ कार्य करने का समय।
पुण्यकृत् वि०(सं) नेक। पुण्यात्मा। धर्मात्मा।
पुण्यकृत्य पुं० (सं) शुभ कार्य। धर्म कार्य।
पुण्यक्षेत्र पुं० (सं) १-तीर्थ स्थान। २-(पुण्य भूमि) आर्यावर्त का नाम।
पुण्यगर्भा स्त्री० (सं) गंगा।
पुण्यत्व पुं० (सं) पुण्यता। पवित्रता।
पुण्यतिथि स्त्री० (सं) १-पुण्य करने का शुभ दिन या तिथि। २-किसी महापुरुष के निधन की तिथि।
पुण्यदर्शन वि० (सं) जिसके दर्शन का फल शुभ हो पुं० (सं) १-देवालय में ठाकुर जी के दर्शन। २-नीलकंठ पक्षी (इसका दर्शन विजयादशमी को करने से पुण्य होता है)।
पुण्यपुरुष पुं० (सं) धर्मात्मा व्यक्ति।
पुण्यभूमि स्त्री० (सं) १-तीर्थ स्थान। २-आर्यवर्त।
पुण्यशील वि० (सं) अच्छे चरित्र या यश वाला। धर्मपरायण।
पुण्यश्लोक वि० (सं) पवित्र चरित्र या आचरण वाला पुं० (सं) १-नल। २-युधिष्ठिर। ३-विष्णु।
पुण्यस्थान पुं० (सं) १-तीर्थ स्थान। पवित्र स्थान। २-देवालय।
पुण्या स्त्री० (सं) तुलसी।
पुण्याई स्त्री० (हि) पुण्य का फल या प्रताप।
पुण्यात्मा वि० (सं) धर्मात्मा। नेक। जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो।
पुण्योदय पुं० (सं) शुभ या पुण्य कर्मों का उदय।
पुतना क्रि० (हि) पोता जाना। पुताई होना।
पुतरा पुं० (हि) दे० 'पुतला'।
पुतरि स्त्री० (हि) दे० 'पुत्तलिका'।
पुतरिका स्त्री० (हि) दे० 'पुत्तलिका'।

पुतरिया स्त्री० (हि) दे० 'पुतली'।
पुतरी स्त्री० (हि) दे० 'पुतली'।
पुतला पुं० (हि) घास, कपड़े, मट्टी या धातु आदि का बना हुआ मनुष्य का आकार।
पुतली स्त्री० (हि) १-स्त्री की आकृति का बना हुआ

विचार करना। (रिट्राई)।

पुनारा पुं० (हि) दे० 'पुचारा'।
पुत्त पुं० (हि) दे० 'पुत्र'।
पुत्तरी स्त्री० (हि) १-पुत्री। २-पुतली।
पुत्तलिका स्त्री० (सं) दे० 'पुतली'।
पुत्तली स्त्री० (सं) पुतली।
पुत्रिका स्त्री० (सं) १-पुत्री...। २-दीमक।
पुत्र पुं० (सं) बेटा। पूत। लड़का।
पुत्रलाभ पुं० (सं) पुत्र की प्राप्ति।
पुत्रवत् वि० (सं) पुत्र के समान। पुत्र तुल्य।
पुत्रवती वि० (सं) जिसके पुत्र हो। पुत्रवाली।
पुत्रवधू स्त्री० (सं) पुत्र की स्त्री। पतोहू।
पुत्रार्थी वि० (सं) पुत्र की कामना करने वाला।

यज्ञ।
पुत्रेष्टिका स्त्री० (सं) दे० 'पुत्रेष्टि'।
पुत्रैषणा स्त्री० (सं) पुत्र प्राप्ति की कामना।
पुदीना पुं० (हि) सुगन्धित पत्तियों वाला एक छोटा पौधा जो चटनी आदि में डाला जाता है।
पुन अव्य० (हि) १-फिर। २-पीछे। उपरान्त। ३-दूसरी बार। बार-बार।

(रिकवरी)।
पुन संस्कार पुं० (सं) उपनयन आदि संस्कार जो दुबारा किये जायें।
पुन स्थापन पुं० (सं) फिर से स्थापित करना। (रेस्टोरेशन)।
पुनर् अव्य० (सं) फिर। दुबारा।
पुनरधिनियम पुं० (सं) दे० 'पुनर्विधायन'। (री-

इनेक्टमेंट)।
पुनरधिनियमित वि० (सं) जो दुबारा लागू हुआ हो। (अधिनियम)। (रीइनेक्टेड)।
पुनरधिष्ठापन पुं० (सं) उसी पद फिर से नियुक्त कर देना। (रीइन्स्टेटमेंट)।

पुनरस्त्रीकरण पुं० (सं) १-जिस देश या राष्ट्र के शस्त्र पहले छीन लिये गये हों उसका फिर से शस्त्रीकरण करना। २-सेना को आधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित करना। ३-फिर से अस्त्र-सम्भार बढ़ाना। (रीआर्मामेंट)।
पुनरागत वि० (सं) लौटा हुआ। फिरा हुआ।
पुनरागमन पुं० (हि) १-दुबारा आना। २-फिर से जन्म ग्रहण करना।
पुनरारोपण पुं० (हि) फिर से आरोप या बीमा कराना। (रीएस्योरेंस, री-इन्श्योरेंस)।
पुनरादान पुं० (सं) किसी, कोई या भेजी हुई वस्तु

पुनः

पुनरारंभण पुं० (सं) किसी कार्य को दुबारा आरम्भ करना। (रिज़्यूम)।
पुनरावर्त पुं०(सं) १-चक्कर। घेरा। २-पुनरागमन।
पुनरावर्तक वि० (सं) फिर से बार-बार आने वाला (ज्वर)।
पुनरावृत्त वि० (सं) १-दोहराया हुआ। जिसने दुबारा जन्म लिया हो। २-लौटा हुआ।
पुनरावृत्ति स्त्री० (सं) १-फिर से लौट कर आना। २-दोहराना। ३-पाठ दोहराना।
पुनरावेदक पुं० (सं) १-किसी न्यायालय में किसी के विरुद्ध मुकदमा दायर करने वाला। २-किसी उप-न्यायालय के निर्णय से सन्तुष्ट न होने पर किसी उच्च-न्यायालय में पुनरावेदन करने वाला व्यक्ति। (अपेलेंट)।
पुनरावेदन पुं०(सं) दे० 'पुनर्न्याय-प्रार्थना'। (अपील)
पुनरावेदन क्षेत्र पुं० (सं) पुनरावेदन न्यायालय का अधिकार क्षेत्र। (ज्यूरिडिक्शन ऑफ अपील-कोर्ट)।
पुनरावेद्य वि० (सं) पुनरावेदन करने योग्य। (अपीलेबल)।

पुनरासीन वि० (सं) जो एक बार अपने पद पर हटाये जाने पर दुबारा उसी पद पर बैठाया जाय। (रीइन्स्टेटेड)।

पुनराहार पुं० (सं) १-दूसरी बार भोजन करना। दुबारा किया गया भोजन।

पुनरीक्षण पुं० (सं) १-फिर से देखना। २-न्यायालय का एक बार देखे हुए मुकदमे को फिर सुनना। (रिवीजन)।

पुनरीक्षण क्षेत्राधिकार वि० (सं) पुनरीक्षण न्यायालय का क्षेत्राधिकार। (रिवीजनल ज्यूरिसडिक्शन)

पुनरीक्षित वि० (सं) जो सुधार करने की दृष्टि से पुनः देखा गया हो (रिवाइज्ड)।

पुनरीक्षित-पाठ पुं० (सं) वह विवरण, वक्तव्य आदि जिसकी फिर से जाँच कर ली गई हो। (रिवाइज्ड-वर्शन)।

पुनरुक्त वि० (सं) १-फिर से कहा हुआ। २-दोहराया हुआ। (रिपीटेड)।

पुनरुक्तवदाभास पुं० (सं) एक शब्दालंकार जिसमें शब्द सुनते से पुनरुक्ति का भास हो पर वस्तुतः ऐसा न हो।

पुनरुक्ति स्त्री० (सं) एक बार कही गई बात को दुबारा दुहराना। (रेपीटेशन)।

पुनरुच्छ्रित वि (सं) फिर से बनाया या खड़ा किया हुआ। (री-इरेक्टेड)।

पुनरुज्जीवन पुं० (सं) १-फिर से जीवित होना। २-फिर से उन्नति की ओर जाना। (रिवाइवल)।

पुनरुज्जीवित वि० (सं) फिर से जीवन प्राप्त किया हुआ। (री-इरेक्टेड)।

पुनरुत्थान पुं० (सं) १-फिर से उठना। २-उन्नति करना। ३-कला या साहित्य का पुनर्जन्म या उत्थान। (रिनेसंन्स)।

पुनरुत्पत्ति स्त्री० (सं) फिर से जन्म लेना।

पुनरुत्पादन पुं० (सं) फिर से उत्पादन या निर्माण करना। (रिप्रोडक्शन)।

पुनरुत्पादी ऋण पुं० (सं) वह ऋण जो फिर से उत्पादन करने के लिये लिया गया हो।

पुनरुद्धार पुं० (सं) टूटी फूटी या नष्ट हुई वस्तुओं को पुनः यथावत ठीक करना। (रेस्टोर)।

पुनरुन्नयन पुं० (सं) किसी स्थगित कार्य को फिर से आरम्भ करना। (रिवाइवल)।

पुनरेकन पुं० (सं) पुनः मिल जाना। (रियूनीयन)।

पुनर्गमन पुं० (सं) फिर से जाना। दुबारा जाना।

पुनर्गठन पुं० (सं) फिर से निर्माण करना।

पुनर्ग्राह्य भू-वृत्ति स्त्री० (सं) वह भूमि जो दुबारा पट्टे पर ली जा सके। (रिन्यूमेबल टेन्योर)।

पुनर्जन्म पुं० (सं) मरने के बाद फिर से दूसरे शरीर में जन्म ग्रहण करना।

पुनर्जन्मा पुं० (सं) ब्राह्मण।

पुनर्जात वि० (सं) फिर से उत्पन्न।

पुनर्देशावर्तन पुं० किसी को देश से लौटा भेजना। (रिपेट्रियेशन)।

पुनर्नवन पुं० (सं) नवीकरण। (रिन्युवल्स)।

पुनर्नवा स्त्री० (सं) एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ चौलाई के समान गोल होती हैं। गदह-पूरना।

पुनर्निगमन पुं० (सं) दुबारा जारी करना। (री-ईश्यु)

पुनर्निर्माण पुं० (सं) फिर से निर्माण करना। (रिबिल्ड)।

पुनर्नियन्त्रण पुं० (सं) फिर से नियन्त्रण में लेना। (रिकन्ट्रोल)।

पुनर्निर्यात पुं० (सं) १-फिर से देश के बाहर माल भेजना। २-फिर से देश के बाहर भेजने वाला माल। (री-एक्सपोर्ट)।

पुनर्नियुक्ति स्त्री० (सं) किसी पद या काम पर फिर से नियुक्त कर दिया जाना। (रीइंस्टेटमेंट)।

पुनर्न्याय प्रार्थना स्त्री० (सं) फिर से विचार के लिए मुकदमा उच्चतर न्यायालय में रखना। (अपील)।

पुनर्न्यायप्रार्थी पुं० (सं) वह जो फिर से विचार करने के लिए अपना मामला उच्चतर न्यायालय में रखे। (अपेलेंट)।

पुनर्पूर पुं० (सं) फिर से भरने या बैठाने की वस्तु। (रिफिल)।

पुनर्प्रवेश पुं० (सं) दुबारा प्रवेश कराने का काम। (रिएन्ट्री)।

पुनर्भव पुं० (सं) १-फिर होना। २-नाखून। वि०(सं) जो फिर हुआ हो।

पुनर्भाव पुं० (सं) मरणोपरांत पुनः जन्म।

पुनर्भू स्त्री० (सं) वह विधवा स्त्री जिसका विवाह पति के मरने के बाद हुआ हो।

पुनर्भोग पुं० (सं) पूर्वजन्म में किए गये कर्मों का पुनः भोग।

पुनर्मिलन पुं० (सं) बिछड़ने के बाद फिर से मिलना (री-यूनियन)।

पुनर्मुद्रित वि० (सं) जिसको फिर से छापा गया हो। (री-प्रिंटेड)।

पुनर्मुद्रीकरण पुं०(सं) फिर से मुद्रा या सिक्के बनाना (रीमोनेटाइजेशन)।

पुनर्मूल्यन पुं० (सं) १-फिर से मूल्य लगाना। २-फिर से मुद्रा आदि का भाव निश्चित करना। (री-वैल्यूएशन)।

पुनर्पूर्वप्रापण पुं०(सं) फिर से दुबारा कटौती काटना (रीडिस्काउंट)।

पुनर्प्रकाशन पुं० (सं) फिर से प्रकाशित करना।

[illegible]गठित)।

पुनर्वटन पु० (स) १-फिर से संपत्ति, धन आदि बांटना। २-सरकार द्वारा फिर से बांटी जाने वाली वस्तु की मात्रा निर्धारित करना। (रीअलॉटमेंट)।

पुनर्वंटित वि० (सं) जिसकी मात्रा फिर से निर्धारित कर दी गई हो। (रिअलॉटिड)।

पुनर्वसु पु० (सं) १-सत्ताइस नक्षत्रों में से सातवां। २-शिव। ३-विष्णु।

पुनर्वार अव्य० (सं) फिर से। दुबारा।

पुनर्वास पु० (सं) जिनका घरबार नष्ट हो गया हो उनको फिर से बसाना। (रिहेबिलिटेशन)।

पुनर्विक्रय पुं० (हि) दुबारा की बिक्री। (रीसेल)।

[illegible]

नल)।

पुनर्विचार न्यायालय पुं० (स) छोटी अदालत में निर्णीत मुकद्दमों पर फिर से विचार करने वाला उच्चतर न्यायालय। (कोर्ट ऑफ अपील)।

पुनर्विचार-प्रार्थी पुं० (स) दे० 'पुनरभ्यर्थी'। (अपेलेंट)।

पुनर्वितरण पुं० (सं) दुबारा वितरण करना। (री-डिस्ट्रीब्यूशन)।

पुनर्विधायन पु० (सं) फिर से कोई अधिनियम आदि बनाना। (री-इनेक्टमेंट)।

पुनर्विधायित वि०(स) जिसका फिर से विधान किया गया हो। (री-इनेक्टेड)।

पुनर्विनियोजन पुं० (सं) फिर से विशिष्ट कार्य पर लगाना। (रीएप्रोप्रियेशन)।

पुनर्विन्यस्त वि० (सं) फिर से व्यवस्थित या क्रमबद्ध किया हुआ। (रीअरेंज्ड)।

पुनर्विन्यास पुं० (सं) फिर से क्रमबद्ध या सुव्यवस्थित करना। (री-अरेन्जमेंट)।

पुनर्विमलीकृत वि० (सं) जिसका फिर से स्पष्टीकरण किया गया हो। (री-क्लेरीफाइड)।

पुनर्विभाजन पुं० (सं) [illegible]

[illegible]

पुनर्विलोकन पुं० (सं) १-फिर से देखना। २-न्यायालय में सुने हुए अभियोग को फिर से सुनना। ३-

इंग्लैण्ड आदि का फिर से विचार करना। [illegible]

[illegible]

पु[illegible] (हि) पुण्य करने वाला। धर्मात्मा। स्त्री० (हि) पूर्णिमा। अव्य० (हि) पुनः। फिर से।

पुनीत वि० (स) पवित्र। पाक। शुद्ध।

पुन्न पुं० (हि) पुण्य।

पुन्नाग पुं० (स) १-एक सदाबहार वृक्ष जिसके लाल रङ्ग के पुष्प गुच्छों में लगते हैं। २-पुरुष श्रेष्ठ। ३-जायफल। ४-श्वेत कमल।

पुन्य पुं० (हि) दे० 'पुण्य'।

पुन्यताई स्त्री० (हि) १-पवित्रता। २-धर्मशीलता। ३-पुण्य का फल।

पुमान् पुं० (स) पुरुष। नर।

[illegible]

पुरः अव्य० (हि) आगे। पहले।

पुरःदान पुं० (सं) पहले से अदा करना या चुकाना। (प्रीपेमेन्ट)।

पुरःसंगी वि० (सं) किसी तथ्य में उससे पूर्व उसके सम्बन्ध रूप में होने वाला। (एनेसरी बिफोर दि फैक्ट)।

पुरःस्थापन पु० (सं) १-प्रस्तुत करना। २-सामने रखना। (इन्ट्रोडक्शन)।

पुरःस्थापित करना क्रि० (हि) औपचारिक रूप से सामने रखना। (टु इन्ट्रोड्यूस)।

पुर पु० (सं) १-नगर। शहर। कस्बा। २-घर। ३-कोठा। अटारी। ४-लोक। ५-शरीर। ६-पृथ्वी। राशि ७-मोट। चरसा। ८-दुर्ग। ९-बाजार। वि० (फा) पूर्ण। पूरा।

पुरअमन वि० (फा) शांतिमय।

पुरइन स्त्री० (हि) कमल का पत्ता। कमल।

पुरइया पु० (हि) तानी। तंतुआ।

पुरखा पु० (हि) १-पूर्वज। २-घर का बड़ा-बूढ़ा आदमी।

पुरखुमार वि० (फा) नशा किये हुए।

[illegible] कटा हुआ कागज का टुकड़ा। धज्जी। ३-अवयव। अंश। ४-चिड़ियों के महीन पर।

पुरजोर वि० (फा) ओजपूर्ण। जोरदार।
पुरजोश वि० (फा) जोश से भरा हुआ।
पुरट पुं० (सं) सोना। स्वर्ण।
पुरण पुं० (सं) समुद्र। सागर।
पुरतः अव्य०(सं) १-पूर्व। सामने। पहले। २-पीछे से
पुरत्राण पुं० (सं) शहर या नगर के चारों ओर रक्षा के लिए बनाई गई दीवार। कोट।
पुरद्वार पुं०(सं) नगर या शहर का फाटक या प्रवेश द्वार।
पुरनारी स्त्री० (सं) वेश्या।
पुरपाल पुं० (सं) १-नगर का रक्षक। कोतवाल। २-जीव।
पुरबला वि०(हि) १-पहले का। पूर्व का। पूर्वजन्म का
पुरबिया वि० (हि) पूरब का।
पुरबी वि० (हि) पूरब का।
पुरभिद् पुं० (सं) शिव।
पुरमथन पुं० (सं) शिव का नाम।
पुरमार्ग पुं० (सं) नगर की सड़क।
पुररक्षक पुं० (सं) नगर रक्षक दल का सिपाही या अधिकारी।
पुररोध पुं० (सं) नगर का घेरा डालना।
पुरला स्त्री० (सं) दुर्गा।
पुरलोक पुं० (सं) पुरजन।
पुरवइया स्त्री० (हि) पूरब की ओर से बहने वाली वायु। पुरवाई।
पुरवट पुं० (हि) खेत सींचने का पानी का बड़ा डोल जो बैलों द्वारा खींचा जाता है। मोट। चरसा।
पुरवधू स्त्री० (सं) वेश्या।
पुरवना क्रि० (हि) १-पूरा करना। २-भरना। ३-पूरा होना। पर्याप्त होना।
पुरवा पुं० (हि) १-छोटा गांव। २-मिट्टी का कुल्हड़ स्त्री० (हि) १-पूरब से आने वाली हवा। २-पशुओं के गले का एक रोग।
पुरवाई स्त्री० (हि) पूर्व दिशा से आने वाली हवा।
पुरवाना क्रि० (हि) पूरा करना।
पुरवासी पुं० (सं) नागरिक। नगर निवासी।
पुरवैया स्त्री० (हि) दे० 'पुरवाई'।
पुरशासन पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु।
पुरश्चरण पुं० (सं) १-किसी कार्य को आरम्भ करने से पहले उसे सिद्ध करने का उपाय सोचना और प्रबन्ध करना। २-कार्य सिद्धि के लिए नियमपूर्वक मन्त्र का जाप करना।
पुरश्चर्या स्त्री० (सं) दे० 'पुरश्चरण'।
पुरषा पुं० (हि) दे० 'पुरखा'।
पुरसां वि० (फा) खैर-खबर लेने वाला या पूछने वाला।
पुरसा पुं० (हि) एक नाप जो साढ़े चार हाथ की होती है।
पुरस् अव्य० (सं) १-आगे। २-सामने। समक्ष। ३-पहले।
पुरस्करण पुं० (सं) १-आगे रखना या देना। २-पुरस्कृत करना। ३-पूरा करना।
पुरस्कार पुं० (सं) १-वह धन या द्रव्य जो किसी अच्छे काम के लिए दिया जाय। इनाम। २-आदर सम्मान। ३-आगे करने या लाने की क्रिया। वि० (हि) पारिश्रमिक।
पुरस्कृत वि० (सं) १-इनाम में पाया हुआ। २-आगे या सामने रखा हुआ। ३-आदृत। ४-स्वीकृत। ५-जिसे पुरस्कार मिला हो।
पुरस्क्रिया स्त्री० (सं) १-आदर या सम्मान करना। २-आरंभिक कृत्य।
पुरस्तात् अव्य० (सं) १-पूर्व। सामने। २-सबसे आगे। ३-पूर्व दिशा की ओर। ४-पीछे से। ५-अन्त में।
पुरस्तर वि० (सं) आगे चलने वाला। पुं० (सं) १-नेता। अगुआ। २-अनुचर।
पुरहा पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु। पुं० (हि) चरस से पानी निकालने के लिए नियुक्त व्यक्ति।
पुरहूत पुं० (हि) इन्द्र।
पुरा पुं० (हि) १-गांव। २-बस्ती। स्त्री० (हि) १-पूर्व दिशा। २-गंगा। ३-महल। वि० (हि) प्राचीन। पुराना। जैसे—पुरातत्व। अव्य० (सं) १-पूर्वकाल में। २-पुराने समय में।
पुराकथा स्त्री० (सं) १-प्राचीन कहानी या कहावत। २-इतिहास।
पुराकृत वि० (सं) १-पहले किया हुआ। २-पूर्व जन्म में किया हुआ। पुं० (सं) पूर्व जन्म में किया हुआ पाप या पुण्य।
पुराण वि० (सं) पुरातन। प्राचीन। पुं० (सं) १-प्राचीन काल की कोई घटना। २-अतीत काल की कथा। ३-हिन्दुओं के अट्ठारह धार्मिक आख्यान जिनकी रचना वेदव्यास ने की थी। ४-अट्ठारह की संख्या। ५-शिव।
पुराणग पुं०(सं) १-ब्रह्मा। २-पुराण कहने या सुनने वाला।
पुराणपंथी वि० (सं) पुरानी रूढ़ियों पर न चलने वालों के प्रति कोई भी उदारता न प्रकट करने वाला (कन्जर्वेटिव)।
पुराणपुरुष पुं० (सं) विष्णु।
पुरातत्व पुं० (सं) वह विद्या जिससे प्राचीन काल, विशेषतः पूर्व इतिहास काल, की वस्तुओं के आधार पर अज्ञात इतिहास की खोज की जाती है। (आर्कियॉलोजी)।
पुरातत्वज्ञ पुं०(सं) पुरातत्व का वेत्ता। (आर्कियॉलो-

जिस्ट)।
पुरातन वि० (सं) १-प्राचीन। पुराना। २-जीर्ण। घिसा हुआ। पुं० (सं) विष्णु।
पुरातनपुरुष पुं० (सं) विष्णु।
पुरातत्त्व पुं० (सं) [illegible] का अधिकारी [illegible]
पुरान वि० ([illegible]
पुराना वि० ([illegible] दिन का होने [illegible] पाया हो। पो [illegible] ४-जिसका चलन अब न रहा हो। क्रि० (हि) १-पूरा कराना। २-पालन कराना। ३-पूरा डालना।
पुरारि पुं० (सं) शिव। महादेव।
पुराल पुं० (हि) दे० 'पयाल'।
पुरा-लिपि स्त्री० (सं) हजारों वर्ष पहले प्रचलित लिपि
पुरा-लिपि-शास्त्र पुं०(सं)प्राचीन काल की जानकारी कराने और विवेचन करने [illegible]
पुरालेख पुं० (सं) पुराने [illegible] कागजात। (आर्काइव्स)।
पुरालेखपाल पुं० (सं) राज्य के [illegible] रखने वाला अधिकारी। (आर्काइविस्ट)।
पुरावसु पुं० (सं) भीष्म।
पुरावृत्त पुं० (सं) अतीतकाल का इतिहास। पुराना हाल।
पुराविद वि० (सं) प्राचीन इतिहास या पुरानी बातों को जानने वाला।
पुरि स्त्री० (सं) १-कस्बा। शहर। २-नदी। ३-शरीर
पुरिया स्त्री० (हि) दे० 'पुड़िया'।
पुरिया पुं०(हि) १-वह नरी जिस पर बाने को बुनने से पहले फैलाया जाता है। २-दे 'पुड़िया'।
पुरी स्त्री० (सं) १-नगरी। शहर। २-जगन्नाथपुरी।
पुरीष पुं० (सं) १-विष्ठा। मल। २-कूड़ा-करकट।
पुरीषण पुं० (सं) मलत्याग।
पुरीषोत्सर्ग पुं० (सं) मलत्याग करना।
पुरु पुं० (सं) १-देवलोक। २-दैत्य। ३-शरीर। ४-एक चन्द्रवंशी राजा का नाम जो राजा ययाति के पुत्र थे। ५-सिकन्दर से लड़ने वाले एक राजा का नाम। वि० (सं) प्रचुर।
पुरुख पुं० पुरुष।
पुरुखा पुं० (हि) दे० 'पुरखा'।
पुरुष पुं० (सं) १-मनुष्य। आदमी। २-मानव जाति ३-आत्मा। ४-विष्णु। ५-सूर्य। ६-जीव। ७-पति स्वामी। ८-पूर्वज।
पुरुषक पुं० (सं) घोड़े का पुरुष के समान दो पैरों पर खड़ा होना।
पुरुषकार पुं० (सं) पुरुष का उद्योग या प्रयत्न। पुरुषार्थ।
पुरुषकुणप पुं० (सं) मनुष्य की लाश या मृतक शरीर।
पुरुषकेसरी पुं० (सं) १-[illegible]
[illegible] वि० (सं) मनुष्य मात्र से द्वेष करने वाला।
पुरुषपुर पुं० (सं) आधुनिक पेशावर का प्राचीन नाम।
पुरुषशार्दूल पुं० (सं) पुरुषों में श्रेष्ठ।
पुरुषांग पुं० (सं) पुरुष की जिनेन्द्रिय।
पुरुषाद पुं० (सं) १-राक्षस। २-नरभक्षक।
पुरुषादक पुं० (सं) दे० 'पुरुषाद'।
पुरुषायत [illegible]
[illegible] या पौधों पलने की सम्भावना हो। (हेरिडिटरी)।
पुरुषायुष पुं० (सं) मनुष्य की आयु।
पुरुषायुषजीवी वि० (सं) जो मनुष्य की पूरी आयु (लगभग सौ साल) तक जीये।
पुरुषारथ पुं० (हि) दे० 'पुरुषार्थ'।
पुरुषार्थ पुं० (सं) १-पुरुष के प्रयत्न का कार्य। २-पौरुष। पराक्रम। सामर्थ्य। शक्ति। पुंसत्व।
पुरुषेन्द्र पुं० (सं) श्रेष्ठ पुरुष। नृप।
पुरुषोत्तम पुं० (सं) १-पुरुषों में उत्तम। २-विष्णु। ३-नारायण। ४-जगन्नाथ।
पुरुषोत्तम-क्षेत्र पुं० (सं) जगन्नाथपुरी।
पुरुषोत्तम-मास पुं० (सं) मलमास। अधिक मास।
पुरुह वि०(हि) प्रचुर। काफी।
पुरुहूत पुं० (सं) इन्द्र।
पुरूरवा पुं० (सं) एक प्रसिद्ध सोमवंशी राजा जिसका विवाह उर्वशी से हुआ था।
पुरेथा पुं० (हि) हल की मूठ।
पुरैन स्त्री० (हि) दे० 'पुरइन'।
पुरोगमा वि० (सं) दे० 'पुरोग'।
पुरोग वि० (सं) अग्रगामी। जो सामने हो।
पुरोगत वि० (सं) जो पहले गया हो।
पुरोजन्मा वि० (सं) बड़ा भाई।
पुरोटि पुं० (सं) १-नदी का प्रवाह। २-पत्तों का शब्द।
पुरोडाश पुं० (सं) १-जौ के आटे की टिकिया जो कपाल में पका कर होम में टुकड़े करके डाली जाती है। २-हवि। ३-यज्ञ से बची सामग्री। ४-सोमरस।

पुरोद्यान पुं० (सं) नगर या शहर का बगीचा। (पार्क)
पुरोध पुं० (सं) पुरोहित।
पुरोधा स्त्री० (हिं) पुरोहिताई।
पुरोभाग पुं० (सं) अग्रभाग। अगला भाग।
पुरोहित पुं० (सं) वह ब्राह्मण जो यजमान के सब कृत्य या संस्कार कराता है।
पुरोहित-तंत्र पुं० (सं) १-पुरोहितों की शासन व्यवस्था। २-कैथोलिक पदारियों के क्रमानुगत अधिकारियों का वर्ग। (हायरारकी)।
पुरोहिताई स्त्री० (हिं) पुरोहित का काम।
पुरोहितानी स्त्री० (हिं) पुरोहित की स्त्री।
पुरोहिती स्त्री० (हिं) पुरोहिताई।
पुरौ पुं० (हिं) पुरवट। चरसा।
पुर्तगाल पुं० (अं) योरूप के दक्षिण-पश्चिम में स्पेन देश से लगा एक प्रदेश।
पुर्तगाली वि० (हिं) १-पुर्तगाल का रहने वाला। २-पुर्तगाल सम्बन्धी।
पुर्तगीज पुं० (अं) १-पुर्तगाल की भाषा। २-पुर्तगाल का निवासी।
पुर्वला वि० (हिं) दे० 'पुरबला'।
पुल वि० (सं) बहुत सा। पुं० (फा) किसी नदी, नाले आदि के आरपार जाने के लिए बनाया हुआ रास्ता। सेतु। पुं० (सं) १-रोमांच। २-शिव के एक अनुचर का नाम।
पुलक पुं० (सं) १-हर्ष, प्रेम आदि के कारण शरीर के रोंगटे खड़े होना। रोमांच। २-खनिज पदार्थ ३-मदिरा पीने का कांच का गिलास। ४-शरीर में पड़ने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
पुलकना क्रि० (हिं) पुलकित होना।
पुलकाई स्त्री० (हिं) पुलकित होने का भाव।
पुलकालि स्त्री० (हिं) हर्ष से प्रफुल्लित रोम। पुलकावलि।
पुलकावलि स्त्री० (सं) हर्षातिरेक के कारण खड़ी होने वाली रोमावली।
पुलकित वि० (सं) रोमांचित। आनन्दित।
पुलटिस स्त्री० (हिं) फोड़े आदि को पकाने के लिए अलसी आदि का गोटा लेप। (पुल्टिस)।
पुलपुला वि० (हिं) १-तनिक दबाने पर दब जाने वाला। (ढीला तथा मुलायम पदार्थ)। २-बार-बार दबने, उभड़ने और बन्द होने वाला।
पुलपुलाना क्रि० (हिं) किसी वस्तु को दबा कर चूसना।
पुलस्त पुं० (हिं) दे० 'पुलस्ति'।
पुलस्ति पुं० (सं) ब्रह्मा के मानस पुत्र ऋषियों में से एक ऋषि का नाम।
पुलस्त्य पुं० (सं) दे० 'पुलस्ति'।
पुलहना क्रि० (हिं) दे० 'पलुहना'।
पुलाक पुं० (सं) १-कदन्न विशेष। २-उबला हुआ चावल। भात। ३-मांड। ४-पुलाव। ५-संक्षेप।
पुलाव पुं० (हिं) पकाये हुए मांस में पुनः चावल डाल कर बनाया हुआ एक व्यंजन।
पुलिंदा पुं० (हिं) लपेटे हुए कागज, कपड़े आदि का मुट्ठा। (बंडल)।
पुलिन पुं० (सं) १-नदी का रेतीला तट। २-नदीतट ३-पानी के हट जाने से निकली हुई हाल की भूमि।
पुलिनवती स्त्री० (सं) नदी।
पुलिया स्त्री० (हिं) छोटे नालों आदि को पार करने का पुल।
पुलिस स्त्री० (अं) १-जनता के जानमाल के रक्षार्थ तथा शांति स्थापन के लिए नियुक्त सरकारी कर्मचारियों का वर्ग। २-इस प्रकार के कर्मचारियों का विभाग।
पुलिसमैन पुं० (अं) पुलिस का सिपाही।
पुलिहोरा पुं० (देश०) एक पकवान।
पुलोमजा स्त्री० (सं) शची। इन्द्र की पत्नी।
पुलोमा पुं० (सं) १-एक असुर जो इन्द्र का सुसर था २-राक्षस।
पुलोमाजित् पुं० (सं) इन्द्र।
पुलोमापुत्री स्त्री० (सं) शची
पुश्त स्त्री० (फा) १-पीठ। पृष्ठ। २-वंश परम्परा में कोई एक स्थान।
पुश्तक स्त्री० (फा) घोड़े, गधे आदि का पिछले पैरों से लात मारना।
पुश्तनामा पुं० (फा) वह कागज जिस पर वंश में उत्पन्न होने वाले पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों के नाम लिखे हों।
पुश्तवानी स्त्री० (फा) वह आड़ी लकड़ी जो किवाड़ के पीछे पल्ले को पुष्ट करने के लिए गड़ी होती है।
पुश्ता पुं० (फा) मजबूती या पानी की रोक के लिए दीवार के सहारे लगाया हुआ ईंट पत्थरों का ढेर २-बांध। (बैरेज)। ३-किताब की जिल्द का चमड़ा।
पुश्ताबंदी स्त्री० (फा) पुश्ता बांधने का कार्य।
पुश्तापुश्त अव्य० (फा) कई पीढ़ियों से।
पुश्तैनी वि० (हिं) १-कई पीढ़ियों से चला आया हुआ। २-आगे की पीढ़ियों तक चलने वाला।
पुष्कर पुं० (सं) १-जल। २-तालाब। सरोवर। ३-नील कमल। ४-हाथी की सूंड की नोक। ५-तलवार की धार। ६-तीर। ७-आकाश। ८-वायुमंडल। ९-अजमेर नगर के निकट एक तीर्थ स्थान १०-राजा नल का छोटा भाई। ११-जंबू आदि द्वीपों में से एक। १२-एक सूर्य। १३-पिंजड़ा।
पुष्कर-तीर्थ पुं० (सं) पुष्कर नाम का एक तीर्थ।
पुष्करबीज पुं० (सं) कमल का बीज।

खिला हुआ।
पुष्पोद्यान पुं० (सं) फुलवारी। पुष्प वाटिका।
पुष्पोपजीवी पुं० (स) माली।
पुष्य पुं० (सं) १-पोषण। २-पुष्टि। ३-सार वस्तु। ४-सत्ताइस नक्षत्रों में से आठवां। ५-पूस का महीना।
पुष्यमित्र पुं०(सं) एक प्रतापी राजा का नाम जिसने मौर्यों के पीछे मगध देश में शुंगवंश का राज्य ई० पू० १८५ में स्थापित किया था।
पुष्यार्क पुं० (स) रविवार के दिन पड़ा हुआ पुष्य-नक्षत्र। (ज्यो०)।
पुस पुं० (देश०) बिल्ली को प्यार से बुलाने का एक शब्द।
पुसाना क्रि० (हि) १-हो सकना या बन पड़ना। २-अच्छा लगना।
पुस्त पुं० (सं) १-गीली मट्टी का पलस्तर। २-चित्र-कारी। लीपना-पोतना। ३-लकड़ी की बनी हुई वस्तु। ४-मिट्टी खोदने का काम। ५-पुस्तक।
पुस्तक स्त्री० (सं) हस्त लिखित या छपी पोथी या किताब। ग्रन्थ। (बुक)।
पुस्तकमुद्रा स्त्री० (सं) (तंत्र) हाथ की एक मुद्रा।
पुस्तकाकार वि० (सं) पुस्तक के आकार का।
पुस्तकागार पुं० (सं) दे० 'पुस्तकालय'।
पुस्तकाध्यक्ष पुं० (सं) पुस्तकालय की व्यवस्था करने वाला अधिकारी। (लाइब्रेरियन)।
पुस्तकालय पुं० (सं) १-वह स्थान जहां पढ़ने की बहुत सी पुस्तकें हों। (लाइब्रेरी)। २-वह दुकान जहां पुस्तकें बिकती हों। (बुकडिपो)।
पुस्तकास्तरण पु० (सं) पुस्तक का बेठन।
पुस्तकी स्त्री० (सं) पुस्तक। पोथी।
पुस्त-डाक पुं० (हि) छपी हुई पुस्तक, लेख, समाचार पत्र आदि रियायती दरों पर भेजने का डाकखाने का नियम। (बुकपोस्ट)।
पुस्तिका स्त्री० (हि) छोटी या कम पृष्ठ वाली पुस्तक (बुकलेट)।
पुहकर पु० (हि) दे० 'पुष्कर'।
पुहना क्रि० (हि) गुथना। पिरोया जाना।
पुहाना क्रि० (हि) गुथवाना। पिरोने का काम करना
पुहुप पुं० (हि) पुष्प। फूल।
पुहुमी स्त्री० (हि) पृथ्वी।
पुहुमीपति पु० (हि) राजा।
पुहुवी स्त्री० (हि) भूमि। पृथ्वी।
पूंगी स्त्री० (हि) वह बाजा जिसे सपेरे बजाते हैं। बीन।
पूंछ स्त्री० (हि) १-दुम। पुच्छ। २-पुछल्ला। किसी का पिछला भाग। ३-पिछलग्गू।
पूंछना क्रि० (हि) दे० 'पूछना'।
पूंछलतारा पुं० (हि) दे० 'पुच्छलतारा'।
पूंजी स्त्री० (हि) १-किसी व्यवसाय में लगाया हुआ धन। मूलधन। (प्रिंसिपल)। २-एकत्रित किया हुआ धन या राशि। ३-वह धन जिससे कोई व्यापार या कारखाना खोला गया हो। (केपिटल)। ४-कारखाने आदि की अचल संपत्ति। ५-किसी में जानकारी। सामर्थ्य। ६-पुञ्ज। समूह।
पूंजी-अर्हा पुं०(हि) किसी पूंजी की निर्धारित राशि (केपिटल वेल्यू)।
पूंजीकर पुं० (हि) किसी सीमित समवाय (लिमिटेड कम्पनी) के लिए एकत्रित पूँजी पर लगने वाला कर। (केपिटल ड्यूटी)।
पूंजीकरण पुं० (हि) मूलधन या पूँजी में परिवर्तन करना। (केपिटेलाइजेशन)।
पूंजीकृत वि०(हि) मूलधन या पूंजी में परिणित किया हुआ (केपिटेलाइज्ड)।
पूंजीकृत-अर्हा पुं० (हि) उतनी राशि जिसे मूलधन में परिणित राशि कर दिया गया हो। (केपिटे-लाइज्ड वेल्यू)।
पूंजीकृत-लाभ पुं० (हि) लाभ की वह राशि जिसे पूंजी में परिणित कर दियागया हो। (केपिटेलाइज्ड प्रोफिट)।
पूंजीकृत-व्यय स्त्री० (हि) वह व्यय जिसे पूँजी में से पूरा किया गया हो। (केपिटेलाइज्ड एक्सपेंडी-चर)।
पूंजीखाता पुं० (हि) पूंजी के जमा खर्च का खाता (केपिटल एकाउंट)।
पूंजीगत मूल्य पुं०(हि) दे० 'पूंजी-अर्हा'। (केपिटल वेल्यू)।
पूंजीगत लागत स्त्री० (हि) निर्माण कार्यों में लगाये जाने वाली पूंजी। (केपिटल आउटले)।
पूंजीगत व्यय पुं० (हि) उत्पादक कार्यों में जैसे रेल आदि में खर्च करने वाली राशि। (केपिटल एक्स-पेंडीचर)।
पूंजी तथा आगम लेख पुं० (हि) वह लेखा या खाता जिसमें पूंजी तथा आयकर आदि का हिसाब लिखा होता है। (केपिटल एण्ड रेवन्यु एकाउन्ट)।
पूंजी तथा लाभ पुं० (हि) नफा और निर्धारित पूंजी। (केपिटल एण्ड प्रोफिट)।
पूंजीतंत्र पुं० (हि) वह आर्थिक व्यवस्था जिसमें पूंजीपतियों का स्थान प्रधान और सर्वोपरि हो। (केपिटेलिस्टिक सिस्टम)।
पूंजीतन्त्रीय वि० (हि) पूञ्जी तन्त्र से सम्बन्धित। (केपिटेलिस्टिक)।
पूंजीदार पुं० (हि) दे० 'पूंजीपति'।
पूंजीपति पुं० (हि) जिसके पास पूंजी हो या जो किसी उद्योग या व्यापार में लगाये। (केपिटेलिस्ट)

में से एक। २-पुरखा। ३-प्रज्ञा।

पूर्वप्रज्ञा स्त्री० (सं) पूर्वकाल या अतीत का ज्ञान या स्मृति।

पूर्वप्लावनिक वि० (सं) प्रलय के समय प्लावन या बाढ़ से पहले का। (ऐंटीडाइलूवियल)।

पूर्वफाल्गुनी स्त्री० (सं) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ।

पूर्वभाद्रपद पुं०(सं) सत्ताईस नक्षत्रों में से पच्चीसवां नक्षत्र।

पूर्वमीमांसा स्त्री० (सं) एक हिन्दू दर्शनशास्त्र जिसमें कर्मकांड सम्बन्धी विषयों का निर्णय किया गया है।

पूर्वरंग पुं० (सं) नाटक के आरम्भ में विघ्नों को शान्त या दर्शकों को सावधान करने लिए गाया जाने वाला गाना या स्तुति।

पूर्वराग पुं०(सं) साहित्य में नायक और नायिका का मिलने से पहले चित्रादि देखने से उत्पन्न अनुराग।

पूर्वरूप पुं० (सं) १-किसी वस्तु का वह रूप जो उस वस्तु के पूर्णरूप से प्रस्तुत होने के पहले बना हो। २-आसार। ३-वह रूप जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। ४-एक अर्थालंकार जिसमें किसी के विशिष्ट गुण, रूप आदि के दुबारा आ जाने अथवा उस वस्तु के फिर से अपने पूर्वरूप में आ जाने का वर्णन होता है।

पूर्ववत् अ० (सं) पहले के समान। जैसा पहले था वैसा ही।

पूर्ववत्-करण पुं० (सं) १-जैसा पहला था वैसा ही बना देना। २-चालू कर देना। ३-प्रभावशाली बना देना। (रेस्टोरेशन)।

पूर्ववर्तिता स्त्री० (सं) समय आदि की दृष्टि से पहले का भाव या क्रिया। (प्रिसीडेंस)।

पूर्ववर्ती वि० (सं) १-पहले का। २-जो पहले रह चुका हो। (प्रिसीडिंग)।

पूर्ववाद पुं० (सं) वह अभियोग जो न्यायालय में उपस्थित किया जाय। (प्लेंट)।

पूर्ववादी पुं० (सं) न्यायालय में पहला अभियोग उपस्थित करने वाला। वादी (प्लेंटिफ)।

पूर्वविद् वि० (सं) पुरानी बातों को जानने वाला।

पूर्ववृत्त पुं० (सं) १-इतिहास। २-पहले का आचरण

पूर्वसंचित वि० (सं) पहले से इकट्ठा किया हुआ।

पूर्वस्थानियता स्त्री० (सं) दे० 'पूर्ववर्तिता'। (प्रेसीडेंस)।

पूर्वसम्मोदन पुं०(सं) किसी नियम, आदेश आदि के बारे में पहले से ही उच्चाधिकारियों से प्राप्त स्वीकृति। (प्रीवियस सेंक्शन)।

पूर्वस्थिति स्त्री०(सं) पूर्वावस्था। पहले की दशा।

पूर्वस्थिति-स्थापन पुं० (सं) फिर पूर्व स्थिति को (लचीलेपन आदि के कारण) प्राप्त हो जाना। प्रत्यास्थापन। (रेस्टिट्यूशन)।

पूर्वा स्त्री० (सं) १-पूरब। पूर्व दिशा। प्राची।

पूर्वाचल पुं० (सं) उदयाचल।

पूर्वाधिकारी पुं० (सं) १-वह अधिकारी जो किसी पद पर उसके वर्तमान अधिकारी से पहले रहा हो २-संपत्ति का वह स्वामी जो वर्तमान स्वामी से पहले रहा हो। (प्रेडिसेसर)।

पूर्वानिल पुं० (सं) पूरब दिशा से आने वाली हवा।

पूर्वानुमान पुं० (सं) निकट भविष्य में होने वाली वर्षा, आंधी, ठंड, उपज या किसी संभावित घटना के बारे में पहले से किया गया अनुमान। (फोर-कास्ट)।

पूर्वानुमति निष्कर्ष पुं० (सं) वह नतीजा जिसका अनुमान पहले से ही कर लिया गया हो। (फोर-गॉन कनक्लूजन)।

पूर्वानुराग पुं० (सं) दे० 'पूर्वराग'।

पूर्वापर वि० (सं) १-जो आगे और पीछे हो। २-अगला और पिछला। पुं० (सं) पूर्व और पश्चिम अव्य० (सं) आगे-पीछे।

पूर्वापराधी पुं०(सं) वह अपराधी या बन्दी जो पहले कई दफा अपराध कर चुका हो। (हिस्ट्री शीटर)।

पूर्वापर्य पुं० (सं) पूर्वापर का भाव।

पूर्वाफाल्गुनी स्त्री० (सं) अश्विन आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से ग्यारहवां नक्षत्र।

पूर्वाभाद्रपदा स्त्री०(सं) दे० 'पूर्वभाद्रपद'।

पूर्वाभिनय पुं०(सं) शीघ्र ही खेले जाने वाले नाटक का या हमला करने से पहले हमले का अभिनय या अभ्यास। (रिहर्सल)।

पूर्वाभिषेक पुं० (सं) १-एक प्रकार का मन्त्र। २-पहले का स्नान।

पूर्वाभ्यास पुं० (सं) पहले से किया हुआ अभ्यास।

पूर्वार्जित वि०(सं) १-पूर्व कर्मों से उपार्जित। २-पहले से कमाया हुआ। पुं० (सं) पुश्तैनी जायदाद या संपत्ति।

पूर्वार्द्ध, पूर्वार्ध पुं० (सं) शुरू या आरम्भ का पहला भाग।

पूर्वावधानता स्त्री० (सं) अनिष्ट होने की संभावना होने पर पहले से ही सावधान होने की क्रिया। (प्रिकॉशन)।

पूर्वाषाढ़ा स्त्री० (सं) सत्ताईस नक्षत्रों में से बीसवां नक्षत्र।

पूर्वाह्न पुं० (सं) दिन के पहले दो प्रहर।

पूर्वाह्निक वि० (सं) दिन के पहले दो प्रहर में किया हुआ। काम।

पूर्वी वि० (सं) पूरब का। पूर्व दिशा से सम्बन्धित।

पूर्वेतर वि० (सं) पूर्व से भिन्न। पश्चिम।

पूर्वोक्त वि० (सं) १-जो पहले कहा गया हो। २-

पेशबंदी स्त्री० (फा) १-पहले से किया गया प्रबन्ध या बचाव की युक्ति । २-धोखा । छल ।
पेशराज पु०(हि) १-पत्थर ढोने वाला मजदूर । २-राज या मेमार के आगे पत्थर या ईंट ढोकर लाने वाला मजदूर ।
पेशल वि० (सं) १-कोमल । सुकुमार । २-मनोहर । ३-चतुर । ४-धूर्त । पु० (सं) विष्णु ।
पेशवा पु० (फा) १-नेता । सरदार । २-महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की एक उपाधि ।
पेशवाई स्त्री० (फा) १-पेशवाओं का शासन-काल । २-पेशवा का पद या कार्य । ३-अगवानी ।
पेशवाज स्त्री० (फा) नाच के समय पहनने का नर्तकियों का घाघरा ।
पेशा पु० (फा) वह काम जो मनुष्य जीविका उपार्जित करने के लिए नियमित रूप से करता है । धन्धा । व्यवसाय । उद्यम ।
पेशानी स्त्री० (फा) १-ललाट । भाल । माथा । २-भाग्य । ३-किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग
पेशाब पु० (फा) मूत्र । मूत । (यूरीन) ।
पेशाबखाना पु०(फा) पेशाब करने का स्थान (यूरीनल) ।
पेशावर पु० (फा) व्यवसायी । किसी प्रकार का पेशा करने वाला ।
पेशि स्त्री० (सं) १-अंडा । २-अरहर की दाल ।
पेशी स्त्री० (फा) १-किसी अधिकारी के सम्मुख या न्यायालय में अभियोग या मुकदमे के पेश होने तथा सुनने तक की कार्रवाई । २-किसी के आगे पेश होने का भाव । स्त्री० (सं) दे० 'पेशि' ।
पेशी का मुहर्रिर पु०(फा) अभियोग सम्बन्धी कागज पत्र हाकिम को पढ़कर सुनाने वाला लिपिक (रीडर)
पेशीनगोई स्त्री० (फा) भविष्य कथन ।
पेश्तर अव्य० (फा) दे० 'पेशतर' ।
पेषक वि० (सं) पीसने वाला ।
पेषण पु० (सं) १-पीसना । २-कोई भी कूटने पीसने का यन्त्र ।
पेषणि स्त्री० (सं) १-पीसने की सिल । २-चक्की । ३-खरल ।
पेषणी स्त्री० (सं) दे० 'पेषणि' ।
पेषना क्रि० (हि) १-पीसना । २-देखना ।
पेष्टा पु० (सं) पीसने वाला ।
पेस अव्य० (हि) दे० 'पेश' ।
पेसकस स्त्री० (हि) दे० 'पेशकश' ।
पैंजना पु० (हि) पैर का कड़ा ।
पैंजनिया स्त्री० (हि) दे० 'पैजनिया' ।
पैंजनी स्त्री० (हि) दे० 'पैजनी' ।
पैंट पु० (अं) पतलून । पजामे जैसा एक अंग्रेजी पहनावा ।
पैंठ पु० (हि) १-हाट । बाजार । २-वह दिन जिस दिन हाट लगती हो । ३-पहली हुंडी खो जाने पर दुबारा लिखी हुई हुंडी ।
पैंठौर पु० (हि) हाट । दुकान ।
पैंड़ पु० (हि) १-डग । कदम । २-मार्ग । ३-ढंग या विधि ।
पैंड़ा पु० (हि) १-पथ । रास्ता । २-अस्तबल । ३-प्रणाली ।
पैंत स्त्री० (हि) दांव । बाजी ।
पैंतरा पु० (हि) १-वार करने के लिये खड़े होने की मुद्रा । २-चाल । युक्ति ।
पैंतरी स्त्री० (हि) जूती ।
पैंतालिस वि० (हि) चालीस और पांच ।
पैंती स्त्री० (हि) १-दे० 'पवित्र' । २-पवित्रता के लिए अनामियों में पहनने की तांबे या त्रिलोह की अंगूठी
पैंतीस वि० (हि) तीस और पांच ।
पैंयां स्त्री० (हि) पांव । पैर । चरण ।
पैंसठ वि० (हि) साठ और पांच ।
पै अव्य०(हि) १-परन्तु । पर । २-अनन्तर । ३-पीछे । अनन्तर । ४-पास । समीप । ओर । तरफ । प्रत्य० (हि) १-पर । ऊपर । २-से । द्वारा । स्त्री० (हि) १-दोष । त्रुटि । पु० (हि) १-केवल दूध पर रहने वाला साधु । २-मांडी या कलफ देने की क्रिया ।
पैकर पु० (हि) कपास से रूई इकट्ठा करने वाला ।
पैकरमा स्त्री० (हि) दे० 'परिक्रमा' ।
पैकरी स्त्री० (हि) पांव में पहनने का एक गहना ।
पैका पु० (अं) १-एक विशेष प्रकार का छापे का टाइप । २-पैसा ।
पैकार पु० (फा) फेरीवाला । छोटा व्यापारी ।
पैकारी पु० (फा) दे० 'पैकार' ।
पैखाना पु० (हि) दे० 'पायखाना' ।
पैगंबर पु० (फा) वह धर्माचार्य जो ईश्वर का सन्देश मानव मात्र को सुनाने आता है । नबी ।
पैगंबरी स्त्री० (फा) १-पैगंबर होने का भाव । २-पैगम्बर का पद । वि० (फा) पैगम्बर-सम्बन्धी ।
पैग पु० (हि) डग । कदम ।
पैगाम पु० (फा) १-सन्देसा । सन्देश । २-विवाह के सम्बन्ध की बात ।
पैगामबर पु० (फा) सन्देश पहुँचाने वाला । दूत । एलची ।
पैगामी पु० (फा) सन्देशवाहक । दूत ।
पैज स्त्री०(हि) १-प्रतिज्ञा । प्रण । टेक । २-होड़ । प्रतिद्वन्द्विता ।
पैजनिया स्त्री० (हि) दे० 'पैजनी' ।
पैजनी स्त्री० (हि) पैर में पहनने का एक गहना जो चलने पर झनझनाता है ।
पैजामा पु० (हि) दे० 'पाजामा' ।

पूड़ी आदि छानने का नांद के आकार का बरतन वि० (हि) १-पहला। २-दूसरा।

पैवंद पुं०(फा) १-छेद बन्द करने के लिए कपड़े आदि का छोटा टुकड़ा जो जोड़ कर सी दिया जाता है। थिगली। २-एक पेड़ की टहनी काट कर उसी जाति के दूसरे पेड़ में बांधना जिससे फल स्वादिष्ट हों। ३-इष्ट-मित्र।

पैवंदकार पुं० (फा) पैवंद लगाने वाला।

पैवंदकारी स्त्री० (फा) पैवंद लगाने की क्रिया।

पैवंदी वि०(फा) १-पैवंद लगा कर उत्पन्न किया हुआ २-दोगला। वर्णसंकर। पुं०(फा) बड़ा आलू। शफ़तालू।

पैवस्त वि० (फा) समाया हुआ। जो भीतर घुसकर सब भागों में फैल गया हो। (तरल पदार्थ)।

पैशाच वि०(सं) पिशाच का। पिशाच सम्बन्धी। पुं० (सं) एक प्रकार का विवाह जिसमें किसी सोयी हुई या प्रमत्त कन्या का कौमार्य हरण करने वाला उसका पति बन जाता है (स्मृति)।

पैशाचिक वि० (सं) १-पिशाच-सम्बन्धी। २-राक्षसी ३-क्रूरतापूर्ण।

पैशाची स्त्री० (सं) एक प्रकार की निकृष्ट प्राकृत भाषा

पैशुन पुं० (सं) चुगली। पीठ पीछे निंदा।

पैशुन्य पुं० (सं) दे० 'पैशुन'।

पैष्ट वि० (सं) आटे से बनाया या तैयार किया हुआ

पैष्टिक पुं० (सं) अनाज से खींची हुई मदिरा। वि० (सं) आटा या पिट्ठी का बना हुआ।

पैसना क्रि० (हि) पैठना। प्रवेश करना। घुसना।

पैसरा पुं० (हि) झंझट। बखेड़ा। झगड़ा।

पैसा पुं० (हि) १-तांबे का भारतीय सिक्का जो तीन पाई या पाव आने के बराबर होता है। २-धन। दौलत।

पैसार पुं० (हि) १-प्रवेश द्वार। २-अन्दर जाने का मार्ग।

पैसेंजर पुं० (अं) मुसाफिर। यात्री।

पैसेंजर-गाड़ी स्त्री० (हि) मुसाफिरों को ले जाने वाली रेलगाड़ी।

पैहम स्त्री० (फा) लगातार। निरंतर।

पों स्त्री० (हि) १-अधोवायु निकलने का शब्द। २-भोंपू का शब्द।

पोंकना क्रि० (हि) १-दस्त या पतला पाखाना आना २-भयभीत होना। पुं० (हि) चौपायों का पतले दस्त आने का रोग।

पोंगरा पुं० (हि) बच्चा। बालक।

पोंगली स्त्री० (हि) १-दे० 'पोंगी'। २-वह गगरिया जो दुबारा चाक पर से बना कर उतारी गई हो। (कुम्हार)।

पोंगा पुं०(हि) १-टीन आदि की पोली नली जिसमें कागज आदि रखे जाते हैं। २-बांस की नली। वि० (हि) १-भोंदू। मूर्ख। २-पोला।

पोंगापंथी स्त्री० (हि) १-ढोंग। २-मूर्खतापूर्ण कार्य। वि० (हि) ढोंगी। मूर्ख।

पोंगी स्त्री० (हि) १-छोटी पोली नली। २-बांस या नरकट का दो गांठों के बीच का भाग। ३-वह नली जिस पर जुलाहे तागा लपेट कर बाना करते हैं।

पोंछ स्त्री० (हि) दे० 'पूँछ'।

पोंछन स्त्री० (हि) किसी वस्तु का पोंछ कर निकला हुआ अंश।

पोंछना क्रि० (हि) किसी लगी या गिरी हुई वस्तु को कपड़े से साफ करना। पुं० (हि) पोंछने का कपड़ा।

पोआ पुं० (हि) सँपोला। सांप का बच्चा।

पोआना क्रि० (हि) १-पोने का काम दूसरे से कराना २-आटे को लोई बनाकर बेलने के लिए देना।

पोइया स्त्री० (हि) घोड़े की सरपट चाल।

पोइस स्त्री० (हि) सरपट चाल।

पोई स्त्री० (हि) एक लता जिसकी पत्तियों का साग बनाया जाता है। २-कोंपल। अंकुर। ३-गन्ने की पोर। ४-गेहूं, ज्वार आदि का छोटा पौधा।

पोख पुं०(हि) पालन पोषने का सम्बन्ध।

पोखना क्रि० (हि) पालना। पोसना।

पोखरा स्त्री० (हि) खोदकर बनाया हुआ जलाशय। तालाब।

पोखरी स्त्री० (हि) छोटा तालाब।

पोगंड पुं०(हि) १-पांच से सोलह वर्ष तक का बालक २-छोटे अंगवाला।

पोच वि०(हि) १-तुच्छ। क्षुद्र। २-हीन। ३-निर्बल

पोची स्त्री० (हि) ओछापन। नीचता। बुराई।

पोट स्त्री० (हि) १-गठरी। पोटली। २-ढेर। ३-पुस्तक के पन्नों की वह जगह जहां सिलाई होती है।

पोटना क्रि० (हि) १-समेटना। बटोरना। २-हथियाना। फुसलाना।

पोटरी स्त्री० (हि) दे० 'पोटली'।

पोटल पुं० (हि) पोटली।

पोटलक पुं० (हि) पोटली।

पोटलिका स्त्री० (हि) पोटली।

पोटला पुं० (हि) बड़ी गठरी।

पोटली स्त्री० (हि) १-छोटी गठरी। २-छोटे वस्त्र में कसकर अल्प मात्रा में बांधी हुई वस्तु।

पोटा पुं० (हि) १-उदराशय की पेट की थैली। २-साहस। सामर्थ्य। ३-बिसात। समाई। ४-आंख की पलक। ५-उँगली का छोर। चिड़िया का छोटा बच्चा जिसके अभी पर न निकले हों। स्त्री० (सं) १-मरदाने लक्षणों वाली स्त्री। २-नौकरानी। ३-घड़ियाल।

पोटाश पुं० (अं) पौधों की राख से या खानों से निकला हुआ एक प्रकार का क्षार ।

पोटी स्त्री० (हि) कलेजा ।

पोटुलिका स्त्री० (हि) पोटली ।

पोढ़ वि० (हि) दे० 'पोढ़ा' ।

पोढ़ा वि० (हि) १-पुष्ट । दृढ़ । मजबूत । २-कठोर ।

पोढ़ाना क्रि० (हि) दृढ़ होना । मजबूत होना । पुष्ट बनाना ।

पोत पुं० (सं) १-किसी जानवर का बच्चा । २-दो वर्ष की आयु का हाथी । ३-कपड़ा । ४-गर्भस्थ पिंड जिस पर झिल्ली न चढ़ी हो । ५-जहाज । नौका । ६-कपड़े की बुनावट । स्त्री० (हि) १-भूमिकर । २-ढंग । प्रवृत्ति । ४-दाँव । ५-कांच का छोटा दाना ।

पोतघाट पुं० (हि) लोहे, पत्थर या लकड़ी का बना ढांचा जो समुद्र में आगे की ओर फैला हुआ हो और जहां जहाज से आसानी से उतरा जा सके । (पीयर)

पोतड़ा पुं० (हि) बच्चों के नीचे बिछाने का छोटा कपड़ा ।

पोतदार पुं०(हि) १-खजानची । २-खजाने में रुपये परखने वाला । पारखी ।

पोतधारी पुं० (सं) जहाज का मालिक या अध्यक्ष ।

पोतध्वज पुं० (सं) जहाज पर किसी राष्ट्र विशेष या नौसेना विशेष का फहराने वाला परिचायक झण्डा (एनसाइन) ।

पोतन पुं० (सं) पवित्र । शुद्ध । वि० (सं) पवित्र करने वाला ।

पोतनहर पुं०(हि) १-वह पात्र जिसमें पोतने के लिए मिट्टी घोल रखी हो । २-घर या चौका पोतने वाली स्त्री । ३-आंत ।

पोतना क्रि० (हि) १-किसी तरल पदार्थ की पतली तह चढ़ाना । २-गोबर, मिट्टी, चूने आदि से किसी स्थान को लेपना । पुं० (हि) पोतने का कपड़ा ।

पोतनिर्माण उद्योग पुं० (सं) जहाज या पोत बनाने का निर्माण करने का व्यवसाय । (शिप बिल्डिंग इण्डस्ट्री) ।

पोतभंग पुं० (सं) पोत या जहाज का चट्टान आदि से टकरा कर नष्ट हो जाना । (शिप-रेक) ।

पोतला पुं० (हि) पराँठा ।

पोतवाह पुं० (सं) मल्लाह । मांझी ।

पोतसंतरण पुं० (सं) किसी नये बने हुए जहाज को समुद्र या पानी में उतारना । (लांचिंग ए शिप) ।

पोता पुं० (हि) १-बेटे का बेटा । पौत्र । २-घुली हुई मिट्टी जिससे दीवार पोती जाती है । ३-पोतने का कपड़ा । ४-लगान । ५-अण्डकोष । ६-सामर्थ्य । ७-सोलह प्रधान व्यक्तियों में से एक ।

पोताई स्त्री० (हि) १-पोतने का काम । २-पोतने की मजदूरी ।

पोताच्छादन पुं० (सं) तम्बू । छोलदारी । डेरी ।

पोतावरोध पुं०(सं) किसी देश के नौ सेना विभाग द्वारा अपनी बन्दरगाहों पर अन्य देशों के जहाज आने या जाने पर लगाया गया प्रतिबन्ध । (एम्बार्गो) ।

पोतारा पुं० (हि) दे० 'पुतारा' ।

पोतारी स्त्री० (हि) पोतने का कपड़ा ।

पोतिका स्त्री० (सं) १-पोई की बेल । २-वस्त्र । कपड़ा

पोतिया पुं०(हि) १-वह छोटी थैली जिसमें तम्बाकू, सुपारी आदि होती है । २-पहन कर नहाने का कपड़ा । ३-एक छोटा खिलौना ।

पोती स्त्री०(हि) १-बेटे की पुत्री । २-मिट्टी की हंडिया पर चढ़ाने का लेप । ३-पोतने की क्रिया या भाव । ४-पानी से तर किया हुआ वह कपड़ा जो मद्य चुआते समय उसके बरतन पर फेरा जाता है ।

पोथा पुं० (हि) १-बड़ी पुस्तक । २-कागजों की गड्डी

पोथी स्त्री० (हि) १-पुस्तक । २-लहसुन की गाँठ ।

पोदना पुं० (हि) १-एक छोटी चिड़िया । २-ठिगना या नाटा आदमी ।

पोदीना पुं० (हि) दे० 'पुदीना' ।

पोद्दार पुं० (हि) १-पोतदार । २-मारवाड़ी बनियों की एक उपाधि ।

पोना क्रि० (हि) १-गुंधे हुए आटे की लोई को हाथों से घुमा-घुमा कर रोटी का रूप देना । २-पकाना (रोटी) । ३-पिरोना । गूंथना ।

पोप पुं० (अ) ईसाई धर्म (रोमन कैथोलिक) का प्रधान आचार्य ।

पोपला वि० (हि) १-जिसके मुँह में दांत न हों । २-सिकुड़ा या पिचका हुआ । ३-जो अन्दर से खाली हो ।

पोपलाना क्रि० (हि) पोपला होना ।

पोपली स्त्री० (हि) उगी हुई आम की गुठली जिसे घिस कर बच्चे बजाते हैं ।

पोपलीला स्त्री० (हि) धर्म का आडम्बर या साधारण लोगों को जाल में फसाने का कार्य ।

पोया पुं०(हि) १-ताजा उगा हुआ पौधा । २-सपोला साँप का बच्चा । ३-बच्चा ।

पोयाखोई स्त्री० (हि) छलकपट की बातें ।

पोर स्त्री० (हि) १-उंगली की गांठ या जोड़ जहां से वह मुड़ती है । २-उंगली की दो गांठों के बीच का भाग । ३-रीढ़ । पीठ । ४-गन्ने की दो गांठों के बीच का भाग ।

पोल स्त्री० (हि) १-खोखला या खाली जगह । शून्य स्थान । खोखलापन । २-सारहीनता । ३-आंगन सहन । ४-प्रवेश द्वार ।

पोला वि० (हि) १-जिसका भीतरी भाग खाली हो । २-खोखला । ३-तत्वहीन । सारहीन ―

न हो। पुलपुला। पुं० (हि) सूत का लच्छा। पुं० (देश०) एक वृक्ष।
पोलिका स्त्री० (सं) १-पूआ। २-गेहूँ के आटे की पूरी।
पोलिया स्त्री०(हि) पैर में पहनने का एक पोला गहना। पुं० (हि) दे० 'पौरिया'।
पोली स्त्री० (सं) दे० 'पोलिका'।
पोलो पुं० (अं) घोड़े पर चढ़ कर खेला जाने वाला एक गेंद का खेल।
पोवना क्रि० (हि) दे० 'पोना'।
पोश पुं० (फा) १-वह जिससे कोई वस्तु ढकी जाय, जैसे—पलंगपोश। २-सामने से हटाने का संकेत वि० (फा) पहनने वाला।
पोशाक स्त्री० (फा) १-पहरावा। परिधान। २-पहनने के सब कपड़े। (ड्रेस)।
पोशीदगी स्त्री० (फा) छिपाव।
पोशीदा वि० (फा) छिपा हुआ। गुप्त।
पोष पुं० (सं) १-पालन-पोषण। २-धन। ३-सन्तोष तुष्टि। ४-वृद्धि। बढ़ती। ५-उन्नति।
पोषक पुं० (सं) १-पालक। पालने वाला। २-बढ़ाने वाला। ३-सहायक।
पोषकतत्व पुं० (सं) दे० 'खाद्योज'। (विटामिन)।
पोषण पुं० (सं) १-पुष्ट करना। बढ़ाना। २-पालन करना। (मैन्टेनेन्स)।
पोषना क्रि० (हि) पालना।
पोषयिता वि० पुं० (सं) पालन करने वाला।
पोषाध्यक्ष पुं० (सं) किसी पशुशाला या पौधों को ठीक प्रकार उगाने तथा उनकी उपज बढ़ाने की प्रयोगशाला की देखभाल करने वाला अधिकारी (नर्सरी-सुपरइन्टेन्डेन्ट)।
पोषिका स्त्री० (सं) गले के भीतर की वह नली जिससे भोजन पेट तक पहुँचता है। (एलिमेंटरी कैनाल)।
पोषित वि० (सं) पाला हुआ।
पोषिता वि० पुं० (सं) पालन करने वाला।
पोषी वि० पुं० (सं) पालन-पोषण करने वाला।
पोष्टा वि० (सं) पालने पोसने वाला।
पोष्य वि० (सं) १-पाले जाने योग्य। २-प्रभूत।
पोष्य-पुत्र पुं० (सं) दत्तक। जो पुत्र की तरह पाला गया हो।
पोष्यसुत पुं० (सं) दे० 'पोष्य-पुत्र'।
पोस पुं० (हि) १-पालने का नाता। २-पालने वाले के प्रति होने वाला प्रेम।
पोस्ती पुं० (हि) अफीमची।
पोसन पुं० (हि) दे० 'पोषण'।
पोसना क्रि० (हि) १-पालन या रक्षा करना। २-अपने पास अपनी रक्षा में रखना। ३-दे० 'पोहना'
पोस्ट स्त्री० (अं) १-स्थान। जगह। २-पद। ३-पत्र-वाहक। ४-नौकरी। ५-डाकखाना।
पोस्टआफिस पुं० (अं) डाकखाना। पत्रालय।
पोस्टकार्ड पुं०(अं) पत्र व्यवहार के काम आने वाला और डाक द्वारा भेजे जाने वाला मोटे कागज का टुकड़ा। प्रेष-पत्रक।
पोस्टबाक्स पुं० (अं) डाकखाने में किसी विशेष व्यापारी या व्यक्ति की डाक या चिट्ठियां विशेष रूप से रखने की पेटी। पत्र-पेटिका।
पोस्टमार्टम पुं० (अं) १-मृत्यु का कारण ज्ञात करने के लिए शव की चीरफाड़। २-किसी शव को चीर-फाड़ कर परीक्षा करने की क्रिया। मरणोत्तर। शव-परीक्षा।
पोस्टमास्टर पुं०(अं) डाकघर का सबसे बड़ा अधिकारी पत्रपाल।
पोस्टमास्टर जेनरल पुं० (अं) किसी प्रदेश के डाक-विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी। महाप्रेषपति।
पोस्टमैन पुं०(अं) पत्र-वाहक। डाकिया। पत्र-वितरक
पोस्टर पुं०(अं) विज्ञापन-पत्र। बड़े अक्षरों में छपा हुआ या लिखा विज्ञापन।
पोस्टल-गाइड स्त्री० (अं) वह पुस्तिका जिसमें डाक-विभाग द्वारा चिट्ठी पारसल आदि भेजने के नियम आदि छपे होते हैं।
पोस्त पुं०(फा) १-छिलका। २-खाल। चमड़ा। ३-अफीम के पौधे का डोडा। ४-अफीम का पौधा।
पोस्ता पुं० (फा) वह पौधा जिसके डोडे में से अफीम निकलती है।
पोस्ती पुं० (फा) १-नशे के लिए पोस्ट का डोडा पीस कर पीने वाला। २-आलसी आदमी।
पोस्तीन पुं० (फा) १-जानवरों की मुलायम खाल का बना हुआ मध्य एशिया के लोगों का एक पहरावा। २-मुलायम खाल का बना हुआ कोट जिसके अन्दर की ओर रोयें होते हैं।
पोहना क्रि० (हि) १-पिरोना। गूंथना। २-छेदना। ३-पोतना। ४-घिसाना। ५-पीसना।
पोहमी स्त्री० (हि) पृथ्वी।
पौंड पुं० (हि) दे० 'पाउण्ड'। (स्टर्लिङ्ग)।
पौंडपावना पुं० (हि) ब्रिटेन के बैंक में किसी देश को पावने की वह राशि जो अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य आदि के लिए उसके पास जमा रहती है और समझौते की शर्तों के अनुसार चुकाई जाती है।
पौंडरीक वि० (सं) कमल सम्बन्धी। कमल का। पुं० (सं) १-एक प्रकार का कुष्ट। २-स्थल पद्म।
पौंडा पुं० (हि) एक प्रकार का गन्ना या ईख।
पौंड्र पुं० (सं) १-एक देश का नाम। २-उस देश का राजा या निवासी। ३-एक प्रकार का गन्ना। ४-माथे पर का तिलक। ५-मनु के अनुसार एक जाति
पौंड्रक पुं० (सं) १-मोटा गन्ना। पौंडा। २-पुण्ड्र

होना।
प्रकथन पुं० (सं) किये हुए कार्य या कही हुई बात की पुष्टि। (एफर्मेशन)।
प्रकरण पुं० (सं) १-अध्याय। २-आरम्भिक वक्तव्य ३-प्रसंग। ४-रचना। वर्णन। ५-एक शृंगार प्रधान नाटक। ६-वह वचन जिसमें किसी काम को अवश्य करने का विधान हो।
प्रकरिका स्त्री० (सं) नाटक के किसी दो अंशों के बीच का वह अंग जिसमें आगे होने वाली घटना की सूचना दी जाती है। प्रासंगिक कथावस्तु।
प्रकरी स्त्री० (सं) १-नाटक के प्रयोजन की सिद्धि के पांच साधनों में से एक जिसमें देशव्यापी चरित्र का वर्णन होता है। २-एक प्रकार का गाना। ३-एक प्रासंगिक कथावस्तु।
प्रकर्तव्य वि० (सं) अवश्य करने योग्य।
प्रकर्ता वि० (सं) अच्छी प्रकार से करने वाला।
प्रकर्ष पुं० (सं) १-उत्तमता। उत्कर्ष। २-अधिकता। बहुतायत। ३-विस्तार। ४-विशेषता।
प्रकर्षण पुं० (सं) १-खींच लेने की क्रिया। २-हल जोतने की क्रिया। ३-अधिकता। ४-उत्कर्ष।
प्रकला स्त्री० (सं) एक कला (समय) का साठवां भाग
प्रकल्पना स्त्री० (सं) स्थिर करना। निश्चित करना।
प्रकांड पुं० (सं) १-वृक्ष का तना। स्कंध। २-शाखा डाली। ३-वृक्ष। पेड़। वि० (सं) १-बहुत बड़ा। विस्तृत। २-सर्वश्रेष्ठ।
प्रकाम वि० (सं) यथेष्ट। पर्याप्त। काफी। पुं० (सं) अभिलाषा। कामना। इच्छा।
प्रकार पुं०(सं) १-भेद। किस्म। (काइन्ड)। २-तरह भांति। ३-समानता। ४-ढंग। (मैनर)। स्त्री०(सं) चहारदीवारी। परकोटा।
प्रकाश पुं० (सं) वह तत्व या शक्ति जिसके योग से वस्तुओं का रूप आंखों को दिखाई देता है। आलोक ज्योति (लाइट)। २-प्रकट होना। ३-विकास। अभिव्यक्ति। ४-प्रसिद्धि। ख्याति। ५-स्पष्ट होना ६-धूप। घाम। ७-परिच्छेद। वि० (सं) १-चमकीला। २-प्रख्यात। ३-फूला हुआ। ४-विकसित।
प्रकाशक पुं० (सं) १-प्रकाश देने वाला। सूर्य। २-आविष्कारकर्त्ता। ३-पुस्तक, समाचार आदि छाप कर बांटने या बेचने वाला व्यक्ति। (पब्लिशर)। वि० (सं) १-चमकीला। २-प्रकट करने वाला। ३-प्रसिद्ध।
प्रकाशकर्ता पुं० (सं) सूर्य।
प्रकाशकाम वि० (सं) प्रसिद्धि या ख्याति का इच्छुक
प्रकाशकीय वि०(सं) प्रकाशक सम्बन्धी। प्रकाशक का
प्रकाशकार्य पुं० (सं) सुने काम होने वाली सतीर।
प्रकाशगृह पुं० (सं) वह ऊंची इमारत या मीनार जो विशेषतः समुद्र में बनी हो और जहां से जहाजों आदि को रास्ता दिखाने के लिए चारों ओर प्रकाश फैलता हो। (लाइट हाउस)।
प्रकाशन पुं० (सं) १-प्रकाशित करने का काम। २-प्रकाश में लाने का काम। ३-वे पुस्तक, ग्रन्थ, समाचार-पत्र आदि जो प्रकाशित किये जायें। (पब्लिकेशन)। वि० (सं) १-प्रकाश करने वाला। चमकीला।
प्रकाशनारी स्त्री० (सं) वेश्या।
प्रकाश परावर्तक पुं० (सं) १-शीशे आदि का वह टुकड़ा जो प्रकाश ग्रहण करके उसे अन्य दिशा में प्रक्षेपित करे। २-वह यन्त्र जो किसी प्रतिबिंब को ग्रहण करके दूसरी तरफ प्रतिफलित करने की क्षमता रखता हो। (रिफ्लेक्टर)।
प्रकाश प्रक्षेपक पुं० (सं) बिजली की बड़ी तेज रोशनी का लैम्प जिसका प्रयोग कर दूर की वस्तु स्पष्ट देखी जा सकती है। (सर्चलाइट)।
प्रकाशमान वि० (सं) १-चमकता हुआ। चमकीला २-प्रसिद्ध।
प्रकाशवान वि०(सं) १-चमकता हुआ। प्रकाशयुक्त २-प्रसिद्ध।
प्रकाशवियोग पुं० (सं) वह वियोग जो गुप्त न रह सके सबको विदित हो जाय।
प्रकाशस्तंभ पुं० (सं) प्रकाश-गृह। वह ऊँचा स्तंभ जो समुद्र में जहाजों को चट्टानों से बचाने के लिए और पथ प्रदर्शन के लिए बनाया गया हो। (लाइट-हाउस)। मार्गदर्शक।
प्रकाशित वि० (सं) १-चमकता हुआ। २-जिस पर प्रकाश पड़ या निकल रहा हो। ३-जो छप कर लोगों के सामने आ गया हो। (पब्लिश्ड)।
प्रकाश्य वि० (सं) १-प्रकट करने योग्य। २-प्रकाशन के योग्य। पुं० (सं) प्रकाश।
प्रकास पुं० (हि) दे० 'प्रकाश'।
प्रकासना क्रि० (हि) प्रकट करना। प्रकाशित होना।
प्रकीर्ण वि०(सं) १-बिखरा हुआ। छितराया हुआ। २-अनेक प्रकार का। ३-जिसमें अनेक वस्तुएँ मिली हों। पुं० (सं) १-प्रकरण। अध्याय। २-पागल। ३-चंवर। ४-फुटकर कविता।
प्रकीर्णक वि० (सं) जिसमें कई वस्तुएं एक साथ मिली हों। फुटकर। (मिसलेनियस)। पुं० (सं) १-अध्याय। प्रकरण। २-कई वस्तुओं का मिश्रण। ३-विस्तार। ४-वह पाप जिसका उल्लेख धर्म ग्रन्थ में न हो। ५-फुटकर वस्तुओं का संग्रह।
प्रकीर्णक लेखा पुं० (सं) फुटकर आय या व्यय का खाता या लेखा। (मिसलेनियस एकाउन्ट)।
प्रकीर्तन पुं० (सं) १-जोर-जोर से कीर्तन करना। २-घोषणा करना। ३-प्रशंसा।
प्रकीर्ति स्त्री० (सं) १-प्रसिद्धि। ख्याति। २-घोषणा।

प्रकुपित वि० (सं) १-जिसका क्रोध बहुत बढ़ गया हो। २-अति कुपित।

प्रकुल पुं० (सं) सुन्दर शरीर। सुडौल बदन।

प्रकृत वि० (सं) १-असली। वास्तविक। २-जिसमें कोई त्रुटि या विकार न हो। ३-रचा हुआ। ४-जो अपने यथार्थ रूप में हो। (नॉर्मल)।

प्रकृतार्थ पुं० (सं) असली या यथार्थ अभिप्राय। वि० (सं) यथार्थ। असल।

प्रकृति स्त्री० (सं) १-किसी व्यक्ति या वस्तु का मूल गुण। स्वभाव। २-वह मूल शक्ति जिसने अनेक रूपात्मक जगत का विकास किया है और जिसका रूप दृश्यों में दृष्टिगोचर होता है। कुदरत (नेचर) ३-गुणक। ४-स्त्री। ५-माता। ६-वह मूल शब्द जिसमें प्रत्यय लगाये जाते हैं।

प्रकृतिज वि० (सं) जो स्वभाव या प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। स्वाभाविक।

प्रकृतिमंडल पुं० (सं) १-राज्य के स्वामी, अमात्य, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सुहृद तथा बल इन सात अंगों का समूह। प्रजा का समूह।

प्रकृतिशास्त्र पुं०(सं)वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे—जीव, पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विवेचन होता है।

प्रकृतिसिद्ध वि० (सं) नैसर्गिक। स्वाभाविक।

प्रकृतिसुभग वि० (सं) जो स्वभाव से ही सुन्दर हो। जिसमें सहज सौंदर्य हो।

प्रकृतिस्थ वि०(सं) १-जो अपनी स्वाभाविक अवस्था में हो। स्वाभाविक। २-जिसके होश हवाश ठिकाने न हों।

प्रकृत्या अव्य० (सं) स्वभावतः। स्वभाव से।

प्रकृष्ट वि० (सं) १-मुख्य। प्रधान। खास। २-आकृष्ट। खींचा हुआ। ३-सींचा हुआ। (खेत)।

प्रकोप पुं० (सं) १-अत्यधिक कोप। २-क्षोभ। ३-रोग का बढ़ने वाला जोर। वात, पित्त और कफ के विकार से उत्पन्न रोग।

प्रकोपन पुं० (सं) किसी के प्रकोप को उत्तेजित करना। २-गुस्सा करना। ३-क्षोभ। ४-चंचलता ५-वात, पित्त आदि का कोप।

प्रकोष्ठ पुं० (सं) १-कोहनी के नीचे का भाग। २-दरवाजे के पास का कोठा। ३-घर के बीच का आंगन। ३-विधान सभा आदि का वह बाहर वाला कमरा जहां सदस्य गण आपस में या दूसरे लोगों से बातें करते हैं। (लॉबी)।

प्रकोष्ठक पुं० (सं) बड़े दरवाज़े के पास का कमरा।

प्रकोष्ठवार्ता स्त्री० (सं) संसद् या विधान सभा से बाहर की गई बातचीत। (लॉबी टॉक)।

प्रखर पुं० (सं) १-घोड़े या हाथी का कवच। २-खच्चर। ३-कुत्ता। वि० (सं) अति तीक्ष्ण।

प्रक्रम पुं० (सं) १-क्रम। सिलसिला। २-प्रगति आदि के लिए बीच में पड़ने वाला काल भाग। (स्टेज)। ३-मौका। अवसर। ४-किसी कार्य के आरम्भ में किया गया उपाय। उपक्रम। ५-अतिक्रम। उल्लंघन।

प्रक्रमण पुं० (सं) १-भली प्रकार घूमना। २-आरम्भ करना। ३-पार करना। ४-आगे बढ़ना।

प्रक्रमभंग पुं० (सं) १-किसी काम में आरम्भ किये हुए क्रम का उल्लङ्घन। २-साहित्य में वर्णन करते समय आरम्भ किये क्रम आदि का यथावत पालन न किया जाने का दोष।

प्रक्रमविरुद्ध वि० (सं) जिसे आरम्भ करते ही रोक दिया गया हो।

प्रक्रांत वि० (सं) १-आरम्भ किया हुआ। २-गत। ३-विवादग्रस्त।

प्रक्रिया स्त्री० (सं) वह क्रिया अथवा प्रणाली जिससे कोई वस्तु बनती या होती हो। (प्रोसेस)। २-किसी अभियोग आदि की सुनवाई में होने वाले, आदि से अन्त तक के, समस्त कार्य या ढंग। (प्रोसीजर)। ३-राजचिह्न (चँवर) आदि का धारण करना। ४-किसी काम के पूरे होने के सम्बन्ध में आदि से अन्त तक की सारी कार्रवाई (प्रोसीडिंग)।

प्रक्षालय पुं० (सं) जल से साफ करना। धोना।

प्रक्षालनगृह पुं० (सं) १-हाथ मुँह धोने आदि का प्रकोष्ठ। २-शौचालय। (लिवेटरी)।

प्रक्षालित वि० (सं) धोया या साफ किया हुआ।

प्रक्षिप्त वि० (सं) १-फेंका या छितराया हुआ। २-पीछे या आगे की ओर से किसी में मिलाया हुआ ३-आगे की ओर बाढ़ या निकला हुआ। (प्रोजेक्टेड)।

प्रक्षेप पुं० (सं) १-फेंकना। डालना। २-वह जो बाद में बढ़ाया गया हो। ३-किसी बहुत बड़े काम की योजना। (प्रोजेक्ट)।

प्रक्षेपण पुं०(सं) १-डालना। फेंकना। २-निश्चित करना। जहाज आदि का चलाना। ३-ऊपर से मिलाना।

प्रखर वि० (सं) १-अति तीव्र। तीक्ष्ण। २-पैना। धारदार। पुं० (सं) १-खच्चर। २-कुत्ता।

प्रखरता स्त्री० (सं) १-तीव्रता। तीक्ष्णता। २-प्रखर होने का भाव। ३-तेजी।

प्रख्यात वि० (सं) प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात।

प्रख्याति स्त्री० (सं) प्रसिद्धि। विख्याति। प्रशंसा।

प्रख्यापन पुं० (सं) १-जतलाने के लिए स्पष्ट रूप से कही गई बात। २-सूचित करना। (डिक्लेरेशन, प्रोमलगेशन)।

प्रख्यापित वि० (सं) (वह अध्यादेश आदि) जो

र्व साधारण को स्पष्ट रूप से बता दी गई हो या जिसकी विज्ञप्ति कर दी गई हो। (प्रोमलगेटेड)।

ट पुं० (स) कंधे से लेकर कोहनी तक का भाग

ट पुं० (हि) दे० 'प्रकट'। अव्य० (हि) प्रकट रूप से।

टन पुं० (हि) प्रकट होने का भाव या क्रिया।

टना क्रि० (हि) १-प्रकट करना या होना। २-जन्म लेना।

टाना क्रि० (हि) प्रकट करना।

ति स्त्री० (सं) १-आगे की ओर बढ़ना। अग्रसर होना। २-उन्नति करना।

तिरोध पुं० (सं) १-प्रगति में बाधा या अड़चन पड़ना। (सैट बैक)।

तिवाद पुं० (सं) १-वह सिद्धान्त जिसके अनुसार समाज, साहित्य आदि का [illegible] हितकर माना [illegible] बातों को त्रुटिपूर्ण [illegible] ग्रहण करने में वि [illegible]

तिशील वि० (सं) आगे बढ़ने या उन्नति करने वाला।

र्भ वि० (स) दे० 'प्रगल्भ'।

ल्भ वि० (सं) १-चतुर। २-साहसी। उत्साही। ३-निर्भय। ४-हाजिरजवाब। प्रत्युत्पन्नमति। ५-प्रतिभाशाली। ६-निःसंकोच बोलने वाला। ७-गम्भीर। ८-प्रधान। ९-उद्धत। उद्दंड। पुष्ट।

ल्भता स्त्री० (स) प्रौढ़ा। नायिका।

ासना क्रि०(हि) प्रकाशित होना। प्रकट होना।

ाढ़ वि० (सं) १-बहुत गाढ़ा। गहरा। २-अत्यधिक। ३-कड़ा। कठोर। पुं० (स) कष्ट। तपस्या।

ासना क्रि० (हि) प्रकाशित करना। २-प्रज्वलित करना।

ुणता अर्गल पुं० (स) दक्षता-अर्गल। सरकारी नौकरी आदि में वेतन वृद्धि के समय एक बाधा जो योग्यता या दक्षता के कारण ही पार की जा सकती है। (एफीशेंसी-बार)।

ृहीत वि० (सं) १-जो भली भांति ग्रहण किया गया हो। २-[illegible]

[illegible] १०-किरण। ११-नेता। १२-विष्णु।

घट वि० (हि) दे० 'प्रकट'।

घटक पुं० (स) सिद्धान्त।

घटना क्रि० (हि) प्रकट होना।

प्रघट्टक वि० (हि) प्रकट करने वाला।

प्रघण पुं० (स) बंगले या मकान के दरवाजे के सामने छाया हुआ स्थान। छज्जा। २-ताँबे का बरतन। मुगदर (लोहे का)।

प्रघन पुं० (सं) दे० 'प्रघण'।

प्रघाण पुं० (स) दे० 'प्रघण'।

प्रघान पुं० (हि) दे० 'प्रघण'।

प्रघोर वि० (स) अति घोर।

प्रघोष पुं० (सं) १-प्रचंड शब्द। २-ऊँची ध्वनि।

प्रचंड वि० (सं) १-अत्यन्त तीव्र। तेज। २-कठिन। कठोर। ३-भयानक। ४-असह्य। ५-बलवान। ६-बड़ा। भारी। ७-प्रतापी। ८-बहुत गरम।

प्रचय पुं० (स) १-समूह। २-राशि। ढेर। ३-वृद्धि। ४-फल आदि लकड़ी आदि की सहायता से एकत्रित करना।

[illegible] होना या होना। २-चलन। प्रथा। रिवाज

प्रचलित वि० (स) १-जिसका चलन हो। २-जो इस समय चल रहा हो। (करेंट)।

प्रचार पुं० (स) १-चलन। रिवाज। २-घोड़े की आँखों का रोग। ३-कोई नियम, मत या बात फैलाने के लिए बहुत से लोगों के सामने रखना। (प्रोपेगैंडा)।

प्रचारक पुं०(स) प्रचार करने वाला। फैलाने वाला (प्रोपेगैंडिस्ट)।

प्रचारकार्य पुं० (सं) प्रचार करने का काम। (प्रोपेगैंडा)।

प्रचारना क्रि० (हि) १-प्रचार करना। २-सामने खड़े होकर ललकारना।

प्रचारित वि० (स) जिसका प्रचार किया गया हो। प्रचलित। चलता हुआ।

प्रचारी वि० (सं) प्रचार करने वाला।

प्रचालन पुं० (सं) चलाने की क्रिया।

प्रचालित वि० (स) जो चलाया गया हो। जिसका प्रचलन किया गया हो।

[illegible]

प्रचुरत्व पुं० (सं) दे० 'प्रचुरता'।

प्रच्छन्न वि० (सं) १-ढका हुआ। लपेटा हुआ। परिवेष्टित। २-छिपा हुआ।

प्रच्छन्नचारी वि० (सं) गुप्त रूप से कार्य करने [illegible]

प्रच्छादन पुं० (सं) १-ढकने या छिपाने [illegible]

२-चादर। ओढ़ने का वस्त्र। ३-आंख की पलक।
प्रच्छादित वि० (सं) १-ढका हुआ। २-छिपा हुआ।
प्रच्छाय पुं० (सं) १-सघन या घनी छाया। २-छायादार स्थान।
प्रच्छालना क्रि० (हि) धोना।
प्रछालना क्रि० (हि) धोना।
प्रजंक पुं० (हि) पलंग।
प्रजंत अव्य० (हि) दे० 'पर्यंत'।
प्रजनन पुं० (सं) १-सन्तान उत्पन्न करने का कार्य २-बच्चा जनाने का काम। ३-जन्म। ४-योनि। जन्म देने वाला पिता।
प्रजनयिता पुं० (सं) उत्पन्न करने वाला।
प्रजरना क्रि० (हि) अच्छी प्रकार जलना।
प्रजल्प पुं० (सं) व्यर्थ की इधर-उधर की बात। गप-शप।
प्रजल्पन पुं० (सं) बातचीत।
प्रजल्पित वि० (सं) व्यक्त। कहा हुआ। प्रकट।
प्रजवन वि० (सं) तेज चाल वाला। वेगवान। तेज
प्रजवी वि० (सं) तेज। फुर्तीला। पुं० (सं) दूत। हरकारा।
प्रजांतक पुं० (सं) यम।
प्रजा स्त्री०(सं) १-सन्तान। औलाद। २-किसी देश, राज्य या राष्ट्र में रहने वाला जन समूह। रिआया रैयत। (पब्लिक)।
प्रजाकाम वि० (सं) सन्तान की इच्छा रखने वाला पुं० (सं) सन्तान की कामना।
प्रजाकार पुं० (सं) प्रजापति। ब्रह्मा।
प्रजाक्षोभ पुं० (सं) राजसत्ता या शासन के विरुद्ध व्याप्त क्षोभ या विद्रोह की भावना। (इनसर्जेन्सी)
प्रजागुप्ति स्त्री० (सं) प्रजा की रक्षा।
प्रजातंतु पुं०(सं) १-वंश। सन्तान। २-वंशपरंपरा।
प्रजातंत्र पुं० (सं) वह शासन व्यवस्था जिसमें प्रजा ही समय-समय पर अपने प्रतिनिधि तथा प्रधान शासन चुनती है। (रिपब्लिक)।
प्रजातंत्रिक दल पुं०(सं) संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राजनैतिक दल। (रिपब्लिकन पार्टी)।
प्रजाता स्त्री० (सं) प्रसूता स्त्री।
प्रजाति स्त्री० (सं) १-प्रजा। २-सन्तान। ३-प्रजनन शक्ति।
प्रजातिगत भेदभाव पुं० (सं) एक प्रजाति का दूसरी प्रजातियों से श्रेष्ठ मान कर उनसे भेद भाव करना (रेशियल डिसक्रिमिनेशन)।
प्रजातिसंहार पुं० (सं) किसी देश या राज्य द्वारा वहां की अल्पसंख्यक जाति या वर्ग को सुनियोजित नीति के अनुसार विनाश का कार्य। (जेनोसाइड)।
प्रजातीर्थ पुं० (सं) जन्म का शुभ काल।
प्रजादान पुं० (सं) चांदी। सन्तानोत्पत्ति।
प्रजानाथ पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-मुनि। ३-दक्ष। ४-राजा।
प्रजापति पुं० (सं) १-सृष्टिकर्त्ता। २-ब्रह्मा। ३-मनु ४-राजा। ५-सूर्य। ६-पिता। ७-अग्नि। ८-दामाद। ९-लिंगेंद्रिय।
प्रजापाल पुं० (सं) राजा।
प्रजापालक पुं० (सं) राजा।
प्रजापालन पुं० (सं) प्रजा का पालन।
प्रजारना क्रि० (हि) अच्छी प्रकार जलाना।
प्रजावती स्त्री० (हि) १-भावज। भातृजाया। २-वह स्त्री जिसके कई सन्तान हों। ३-गर्भवती स्त्री।
प्रजावृद्धि स्त्री० (सं) सन्तान की बहुलता।
प्रजाव्यापार पुं०(सं) प्रजा की देखभाल या व्यवस्था
प्रजासत्ता स्त्री० (सं) दे० 'प्रजातंत्र'।
प्रजासत्ताक वि० (सं) (वह शासन पद्धति) जिसमें प्रजा अथवा उसके प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो।
प्रजासत्तात्मक वि० (सं) दे० 'प्रजासत्ताक'।
प्रजुरना क्रि० (हि) १-जलना। प्रज्वलित होना। २-चमकना। प्रकाशित होना।
प्रजुरित वि० (हि) दे० 'प्रज्वलित'।
प्रजुलित वि० (हि) दे० 'प्रज्वलित'।
प्रजेश पुं० (सं) दे० 'प्रजापति'।
प्रजेश्वर पुं० (सं) राजा।
प्रजोग पुं० (हि) दे० 'प्रयोग'।
प्रज्ञ वि० (सं) विद्वान। बुद्धिमान। पुं० (सं) जानकार। विद्वान।
प्रज्ञता स्त्री०(सं) पांडित्य। विद्वत्ता।
प्रज्ञप्ति स्त्री० (सं) १-जनाने या सूचित करने का भाव। २-सूचना पत्र। ३-संकेत। ४-ज्ञान। ५-सूचना। (इन्फर्मेशन) ६-वह पत्र जो माल के साथ भेजा जाता है और जिसमें माल का मूल्य तथा विवरण लिखा होता है। (एडवाइस)।
प्रज्ञा स्त्री० (सं) १-बुद्धि। ज्ञान। २-एकाग्रता। ३-सरस्वती।
प्रज्ञाचक्षु पुं० (सं) १-धृतराष्ट्र। २-अंधा। ३-ज्ञानी
प्रज्ञात वि० (सं) प्रसिद्ध। विख्यात। अच्छी तरह जाना हुआ।
प्रज्ञापन पुं० (सं) १-विशेष रूप से ज्ञात करने की क्रिया या भाव। २-इस प्रकार की सूचना, लेख आदि। (इन्फर्मेशन)।
प्रज्ञावृद्ध वि० (सं) जो ज्ञान में बड़ा हो। ज्ञानवृद्ध।
प्रज्ञावान वि० (सं) समझदार। बुद्धिमान।
प्रज्ञाहीन वि० (सं) मूर्ख। बुद्धिहीन। मूढ़।
प्रज्वलन पुं० (सं) जलने की क्रिया। जलना।
प्रज्वलित वि० (सं) १-जलता या धधकता हुआ।

२-चमकीला। चमकता हुआ।

प्रण वि०(सं) प्राचीन। पुराना। पु० (हि) प्रतिज्ञा। किसी कार्य को करने के लिए किया गया दृढ़ निश्चय।

प्रणत वि० (सं) १-बहुत झुका हुआ। २-प्रणाम करता हुआ। ३-नम्र। दीन। पु० (सं) १-प्रणाम करने वाला। २-भक्त। उपासक। ३-सेवक। दास

प्रणतकाय वि० (सं) जिसका शरीर झुका हुआ हो

प्रणतपाल पु० (सं) वह जो शरणागत की रक्षा करे।

प्रणतपालक पु० (सं) दे० 'प्रणतपाल'।

प्रणति स्त्री० (सं) १-प्रणाम। दंडवत्। २-नम्रता। ३-विनती।

प्रणदन पु० (सं) गर्जन। जोर से शब्द करना।

प्रणमन पु० (सं) १-प्रणाम करना। २-झुकना।

प्रणमना क्रि० (हि) प्रणाम करना। २-झुकना।

प्रणम्य वि० (सं) वंदनीय। जिसके आगे झुककर प्रणाम करना उचित हो।

प्रणय पु० (सं) १-प्रेमपूर्वक की हुई प्रार्थना। २-विश्वास। ३-प्रेम। ४-मोक्ष। ५-श्रद्धा। ६-प्रसव

प्रणयकलह पु० (सं) नायक और नायिका का आपसी झगड़ा या कलह।

प्रणयकुपित वि० (सं) जो प्रणय कलह के कारण रूठ गया हो।

प्रणयकोप पु० (सं) नायिका का अपने नायक के प्रति झूठमूठ का कोप।

प्रणयन पु० (सं) १-रचना। बनाना। २-होम के समय अग्नि-संस्कार।

प्रणयभंग पु० (सं) १-विश्वासघात। २-मित्रता भंग हो जाना।

प्रणयवचन पु० (सं) प्यार भरे या प्रेम पूर्ण वचन।

प्रणयविमुख वि० (सं) जिसकी प्रेम और मित्रता की ओर प्रवृत्ति न हो।

प्रणयिनी स्त्री० (सं) १-वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रेमिका। २-भार्या। पत्नी।

प्रणयी पु०(सं) १-प्रेम करने वाला। प्रेमी। २-पति स्वामी।

प्रणव पु०(सं) १-ओंकार। ओंकार मंत्र। २-परमेश्वर। ३-त्रिदेव।

प्रणवना क्रि० (हि) प्रणाम या नमस्कार करना।

प्रणष्ट वि० (सं) मृत। जो नष्ट हो गया हो।

प्रणाम पु० (सं) हाथ जोड़ कर किया जाने वाला अभिवादन या प्रणाम।

प्रणालिका स्त्री० (सं) १-पानी। परनाली। २-बन्दूक की नली।

प्रणाली स्त्री० (सं) १-पानी बहने या निकलने की नाली। २-रीति। परिपाटी। ३-प्रथा। चाल। ४-ढंग। पद्धति। परंपरा। ५-वह छोटा जलमार्ग जो दो समुद्रों या जल के बड़े भागों को मिलाता हो। (चैनल)। ६-कोई कार्य करने अथवा कोई वस्तु कहीं भेजने का उपयुक्त तथा नियत मार्ग या तरीका। (चैनल)।

प्रणाशी वि० (सं) नाश करने वाला।

प्रणिधान पु० (सं) १-रखा जाना। २-समाधि (योग)। ३-उपासना। ४-चित्त की एकाग्रता। ५-अर्पण। ६-कर्म के फल का त्याग। ७-भक्ति। ८-प्रवेश। गति।

प्रणिधि पु० (सं) १-राज्य के किसी विशेष कार्य के लिए भेजे जाने वाला दूत। (एमीसरी)। २-वह दूत या अभिकर्ता जो गुप्त रूप से कार्य करे। (सीक्रेट एजेंट)। स्त्री०(हि)१-मन की एकाग्रता। २-प्रार्थना। ३-तत्परता।

प्रणिपतन पु० (सं) चरणों में सिर नवाना। प्रणाम। दंडवत।

प्रणिपात पु० (सं) दे० 'प्रणिपतन'।

प्रणीत वि० (सं) १-रचित। बनाया हुआ। २-भेजा हुआ। ३-पास पहुँचाया हुआ। लाया हुआ। ४-जिसका मंत्रों से संस्कार किया गया हो। ५-अच्छी तरह से बनाया या पकाया हुआ। ६- प्रिय।

प्रणेता स्त्री० (सं) १-रचयिता। बनाने वाला। २-नेता। ३-कर्त्ता।

प्रणोदित वि० (सं) प्रेरित। नियोजित।

प्रतच्छ वि० (हि) दे० 'प्रत्यक्ष'।

प्रतक्ष वि० (हि) दे० 'प्रत्यक्ष'।

प्रतच्छ वि० (हि) दे० 'प्रत्यक्ष'।

प्रतत वि० (सं) लम्बा-चौड़ा। विस्तृत।

प्रतति स्त्री० (सं) विस्तार। फैलाना।

प्रतन वि० (सं) प्राचीन। पुरानी।

प्रतनु वि० (सं) १-क्षीण। दुबला। २-सूक्ष्म। ३-तुच्छ। ४-बहुत छोटा।

प्रतप्त वि० (सं) १-गरमाया हुआ। तपाया हुआ। पीड़ित। सताया हुआ।

प्रताप पु० (सं) १-पौरुष। वीरता। २-दंडजनित तेज। ३-वीरता, शक्ति आदि का वह प्रभाव जिससे विरोधी दबे रहें।

प्रतापवान वि० (सं) जो प्रताप वाला हो।

प्रतापी वि० (हि) जिसका बहुत अधिक प्रताप हो।

प्रतारक पु० (सं) १-धोखा देने वाला। २-धूर्त। चालाक। ३-ठग।

प्रतारण पु० (सं) १-वंचना। ठगी। २ धूर्तता।

प्रतारणा स्त्री० (सं) १-धोखा देना। ठगी। [illegible]।

प्रतारित वि० (सं) १-जो ठगा गया हो। २-[illegible] धोखा दिया हो।

प्रतिचा स्त्री० (हि) धनुष की डोरी। चिल्ला।

१२-चादर। ओढ़ने का वस्त्र। ३-आंख की पलक।
प्रच्छादित वि० (सं) १-ढका हुआ। २-छिपा हुआ।
प्रच्छाय पुं० (सं) १-सघन या घनी छाया। २-छायादार स्थान।
प्रच्छालना क्रि० (हि) धोना।
प्रछालना क्रि० (हि) धोना।
प्रजंक पुं० (हि) पलंग।
प्रजंत अव्य० (हि) दे० 'पर्यंत'।
प्रजनन पुं० (सं) १-सन्तान उत्पन्न करने का कार्य २-बच्चा जनाने का काम। ३-जन्म। ४-योनि। जन्म देने वाला पिता।
प्रजनयिता पुं० (सं) उत्पन्न करने वाला।
प्रजरना क्रि० (हि) अच्छी प्रकार जलना।
प्रजल्प पुं० (सं) व्यर्थ की इधर-उधर की बात। गप-शप।
प्रजल्पन पुं० (सं) बातचीत।
प्रजल्पित वि० (सं) व्यक्त। कहा हुआ। प्रकट।
प्रजवन वि० (सं) तेज चाल वाला। वेगवान। तेज
प्रजवी वि० (सं) तेज। फुर्तीला। पुं० (सं) दूत। हरकारा।
प्रजांतक पुं० (सं) यम।
प्रजा स्त्री०(सं) १-सन्तान। औलाद। २-किसी देश, राज्य या राष्ट्र में रहने वाला जन समूह। रिआया रैयत। (पब्लिक)।
प्रजाकाम वि० (सं) सन्तान की इच्छा रखने वाला पुं० (सं) सन्तान की कामना।
प्रजाकार पुं० (सं) प्रजापति। ब्रह्मा।
प्रजाक्षोभ पुं० (सं) राजसत्ता या शासन के विरुद्ध व्याप्त क्षोभ या विद्रोह की भावना। (इनसर्जेन्सी)
प्रजागुप्ति स्त्री० (सं) प्रजा की रक्षा।
प्रजातंतु पुं०(सं) १-वंश। सन्तान। २-वंशपरंपरा।
प्रजातंत्र पुं० (सं) वह शासन व्यवस्था जिसमें प्रजा ही समय-समय पर अपने प्रतिनिधि तथा प्रधान शासन चुनती है। (रिपब्लिक)।
प्रजातंत्रिक दल पुं०(सं) संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राजनैतिक दल। (रिपब्लिकन पार्टी)।
प्रजाता स्त्री० (सं) प्रसूता स्त्री।
प्रजाति स्त्री० (सं) १-प्रजा। २-सन्तान। ३-प्रजनन शक्ति।
प्रजातिगत भेदभाव पुं० (सं) एक प्रजाति का दूसरी प्रजातियों से श्रेष्ठ मान कर उनसे भेद भाव करना। (रेशियल डिसक्रिमिनेशन)।
प्रजातिसंहार पुं० (सं) किसी देश या राज्य द्वारा वहां की अल्पसंख्यक जाति या वर्ग को सुनियोजित नीति के अनुसार विनाश का कार्य। (जेनोसाइड)।
प्रजातीर्थ पुं० (सं) जन्म का शुभ काल।
प्रजादान पुं० (सं) चांदी। सन्तानोत्पत्ति।
प्रजानाथ पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-मुनि। ३-दक्ष। ४-राजा।
प्रजापति पुं० (सं) १-सृष्टिकर्ता। २-ब्रह्मा। ३-मनु ४-राजा। ५-सूर्य। ६-पिता। ७-अग्नि। ८-दामाद। ६-लिंगेंद्रिय।
प्रजापाल पुं० (सं) राजा।
प्रजापालक पुं० (सं) राजा।
प्रजापालन पुं० (सं) प्रजा का पालन।
प्रजारना क्रि० (हि) अच्छी प्रकार जलाना।
प्रजावती स्त्री० (हि) १-भावज। भातृजाया। २-वह स्त्री जिसके कई सन्तान हों। ३-गर्भवती स्त्री।
प्रजावृद्धि स्त्री० (सं) सन्तान की बहुलता।
प्रजाव्यापार पुं०(सं) प्रजा की देखभाल या व्यवस्था
प्रजासत्ता स्त्री० (सं) दे० 'प्रजातंत्र'।
प्रजासत्ताक वि० (सं) (वह शासन पद्धति) जिसमें प्रजा अथवा उसके प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो।
प्रजासत्तात्मक वि० (सं) दे० 'प्रजासत्ताक'।
प्रजुरना क्रि० (हि) १-जलना। प्रज्वलित होना। २-चमकना। प्रकाशित होना।
प्रजुरित वि० (हि) दे० 'प्रज्वलित'।
प्रजुलित वि० (हि) दे० 'प्रज्वलित'।
प्रजेश पुं० (सं) दे० 'प्रजापति'।
प्रजेश्वर पुं० (सं) राजा।
प्रजोग पुं० (हि) दे० 'प्रयोग'।
प्रज्ञ वि० (सं) विद्वान। बुद्धिमान। पुं० (सं) जानकार। विद्वान।
प्रज्ञता स्त्री० (सं) पांडित्व। विद्वत्ता।
प्रज्ञप्ति स्त्री० (सं) १-जनाने या सूचित करने का भाव। २-सूचना पत्र। ३-संकेत। ४-ज्ञान। ५-सूचना। (इन्फर्मेशन) ६-वह पत्र जो माल के साथ भेजा जाता है और जिसमें माल का मूल्य तथा विवरण लिखा होता है। (एडवाइस)।
प्रज्ञा स्त्री० (सं) १-बुद्धि। ज्ञान। २-एकाग्रता। ३-सरस्वती।
प्रज्ञाचक्षु पुं० (सं) १-धृतराष्ट्र। २-अंधा। ३-ज्ञानी
प्रज्ञात वि० (सं) प्रसिद्ध। विख्यात। अच्छी तरह जाना हुआ।
प्रज्ञापन पुं० (सं) १-विशेष रूप से ज्ञात करने की क्रिया या भाव। २-इस प्रकार की सूचना, लेख आदि। (इन्फर्मेशन)।
प्रज्ञावृद्ध वि० (सं) जो ज्ञान में बड़ा हो। ज्ञानवृद्ध।
प्रज्ञावान वि० (सं) समझदार। बुद्धिमान।
प्रज्ञाहीन वि० (सं) मूर्ख। बुद्धिहीन। मूढ़।
प्रज्वलन पुं० (सं) जलने की क्रिया। जलना।
प्रज्वलित वि० (सं) १-जलता या धधकता हुआ।

२-चमकीला। चमकता हुआ।
प्रण वि०(सं) प्राचीन। पुराना। पुं० (हि) प्रतिज्ञा। किसी कार्य को करने के लिए किया गया दृढ़ निश्चय।
प्रणत वि० (सं) १-बहुत झुका हुआ। २-प्रणाम करता हुआ। ३-नम्र। दीन। पुं० (स) १-प्रणाम करने वाला। २-भक्त। उपासक। ३-सेवक। दास
प्रणतकाय वि० (सं) जिसका शरीर झुका हुआ हो
प्रणतपाल पुं० (सं) वह जो शरणागत की रक्षा करे।
प्रणतपालक पुं० (सं) दे० 'प्रणतपाल'।
प्रणति स्त्री० (सं) १-प्रणाम। दंडवत्। २-नम्रता। ३-विनती।
प्रणदन पुं० (सं) गर्जन। जोर से शब्द करना।
प्रणमन पु० (सं) १-प्रणाम करना। २-झुकना।
प्रणमना क्रि० (हि) प्रणाम करना। २-झुकना।
प्रणम्य वि० (सं) वंदनीय। जिसके आगे झुककर प्रणाम करना उचित हो।
प्रणय पुं० (सं) १-प्रेमपूर्वक की हुई प्रार्थना। २-विश्वास। ३-प्रेम। ४-मोक्ष। ५-श्रद्धा। ६-प्रसव
प्रणयकलह पुं० (सं) नायक और नायिका का आपसी झगड़ा या कलह।
प्रणयकुपित वि० (स) जो प्रणय कलह के कारण रूठ गया हो।
प्रणयकोप पुं० (सं) नायिका का अपने नायक के प्रति भूठमूठ का कोप।
प्रणयन पुं० (स) १-रचना। बनाना। : ॰ ॰ समय अग्नि-संस्कार।
प्रणयभंग पुं० (सं) १-विश्वासघात। ॰ भंग हो जाना।
प्रणयवचन पुं० (सं) प्यार भरे या प्रेम पूर्ण वचन।
प्रणयविमुख वि० (सं) जिसकी प्रेम और मित्रता की ओर प्रवृत्ति न हो।
प्रणयिनी स्त्री० (स) १-वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रेमिका। २-भार्या। पत्नी।
प्रणयी पु०(सं) १-प्रेम करने वाला। प्रेमी। २-पति स्वामी।
प्रणव पुं०(सं) १-ओंकार। ओंकार मंत्र। २-परमेश्वर। ३-त्रिदेव।
प्रणवना क्रि० (हि) प्रणाम या नमस्कार करना।
प्रणष्ट वि० (स) मृत। जो नष्ट हो गया हो।
प्रणाम पुं० (सं) हाथ जोड़ कर किया जाने वाला अभिवादन या प्रणाम।
प्रणालिका स्त्री० (स) १-पानी। पतनाली। २-बन्दूक की नली।
प्रणाली स्त्री० (स) १-पानी बहने या निकलने की नाली। २-रीति। परिपाटी। ३-प्रथा। चाल। ४-ढंग। पद्धति। परंपरा। ५-वह छोटा जलमार्ग जो दो समुद्रों या जल के बड़े मार्गों को मिलाता हो। (चैनल)। ६-कोई कार्य करने अथवा कोई वस्तु कहीं भेजने का उपयुक्त तथा नियत मार्ग या तरीका। (चैनल)।
प्रणाशी वि० (सं) नाश करने वाला।
प्रणिधान पु० (स) १-रखा जाना। २-समाधि (योग)। ३-उपासना। ४-चित्त की एकाग्रता। ५-अर्पण। ६-कर्म के फल का त्याग। ७-भक्ति। ८-प्रवेश। गति।
प्रणिधि पु० (सं) १-राज्य के किसी विशेष कार्य के लिए भेजे जाने वाला दूत। (एमीसरी)। २-वह दूत या अभिकर्ता जो गुप्त रूप से कार्य करे। (सीक्रेट एजेंट)। स्त्री०(हि)१-मन की एकाग्रता। २-प्रार्थना। ३-तत्परता।
प्रणिपतन पुं० (सं) चरणों में सिर नवाना। प्रणाम। दंडवत्।
प्रणिपात पुं० (स) दे० 'प्रणिपतन'।
प्रणीत वि० (स) १-रचित। बनाया हुआ। २-भेजा हुआ। ३-पास पहुंचाया हुआ। लाया हुआ। ४-जिसका मंत्रों से संस्कार किया गया हो। ५-अच्छी तरह से बनाया या पकाया हुआ। ६-प्रिय।
प्रणेता स्त्री० (स) १-रचयिता। बनाने वाला। २-नेता। ३-कर्त्ता।
प्रणोदित वि० (सं) प्रेरित। नियोजित।
प्रतंचा वि० (हि) दे० 'प्रत्यंचा'।

प्रतन वि० (सं) प्राचीन। पुरानी।
प्रतनु वि० (सं) १-क्षीण। दुबला। २-सूक्ष्म। ३-तुच्छ। ४-बहुत छोटा।
प्रतप्त वि० (सं) १-गरमाया हुआ। तपाया हुआ। पीड़ित। सताया हुआ।
प्रताप पुं० (सं) १-पौरुष। वीरता। २-दृढ़जनित तेज। ३-वीरता, शक्ति आदि का वह प्रभाव जिससे विरोधी दबे रहें।
प्रतापवान वि० (सं) जो प्रताप वाला हो।
प्रतापी वि० (हि) जिसका बहुत अधिक प्रताप हो।
प्रतारक पुं० (सं) १-धोखा देने वाला। २-धूर्त। चालाक। ३-ठग।
प्रतारण पु० (स) १-वंचना। ठगी। २ धूर्तता।
प्रतारणा स्त्री० (सं) १-धोखा देना। ठगी। ...
प्रतारित वि० (सं) १-जो ठगा ... से धोखा दिया हो।
प्रतिचा स्त्री० (हि) धनुष की

प्रति अव्य० (सं) एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में लगता है और निम्न अर्थ देता है--१-विरुद्ध। २-सामने। ३-बदले में। ४-हर एक। ५-समान। ६-जोड़ का। ७-मुकाबले में। ८-ओर। तरफ। स्त्री०(सं)एक प्रकार की कई वस्तुओं में अलग-अलग एक-एक वस्तु। अदद। नकल (कॉपी)।

प्रतिकर पुं० (सं) किसी की हानि हो जाने पर बदले में दिया जाने वाला धन। क्षतिपूर्ति। हरजाना। (कंपन्सेशन)।

प्रतिकरक वि० (सं) १-प्रतिकर या क्षतिपूर्ति सम्बन्धी २-प्रतिकर के रूप में दिया जाने वाला। (कम्पन्सेटरी)।

प्रतिकरण पुं० (सं) वह काम जो किसी काम के विरोध, प्रतिकार या उत्तर में किया जाय। (काउन्ट-एक्शन)।

प्रतिकर्ता वि० पुं० (सं) १-प्रतिकार करने वाला। अपकार का बदला लेने वाला।

प्रतिकार पुं० (सं) १-प्रतिशोध। बदला। २-वह काम जो प्रतिकार के रूप में किया गया हो। ३-चिकित्सा। इलाज।

प्रतिकारक पुं० (सं) बदला चुकाने वाला। वह जो किसी का प्रतिकार करता हो।

प्रतिकारी पुं० वि० (सं) प्रतिकार करने वाला।

प्रतिकाश पुं०(सं) १-प्रतिबिम्ब। २-चितवन। दृष्टि

प्रतिकूप पुं० (सं) खाई। परिखा।

प्रतिकूल वि० (सं) विपरीत। विरुद्ध। पुं०(सं) विरोध करने वाला।

प्रतिकूलकारी वि०(सं) १-विरोधी। २-विरुद्ध आचरण करने वाला।

प्रतिकूलकृत वि० (सं) दे० 'प्रतिकूलकारी'।

प्रतिकूलचारी वि० (सं) दे० 'प्रतिकूलकारी'।

प्रतिकूलिक वि० (सं) शत्रुता रखने वाला। विरोधी

प्रतीकृत वि० (सं) १-जिसके विरुद्ध प्रयत्न किया जा चुका है। २-जिसका बदला चुका दिया गया हो। पुं० (सं) १-विरोध। २-प्रतिकार।

प्रतिक्रम पुं० (सं) उलटा-पुलटा क्रम या सिलसिला।

प्रतिक्रमात वि० (सं) बतलाये हुए क्रम से उलटे क्रम से। (वाइस वर्सा)।

प्रतिक्रिया स्त्री० (सं) १-प्रतिकार। २-एक तरफ से कोई क्रिया होने पर उसके परिणाम स्वरूप दूसरी ओर से होने वाली क्रिया। ३-विपरीति दिशा में होने वाली गति। (रिएक्शन)।

प्रतिक्रियात्मक-सहयोग पुं० (सं) सहयोग के बदले में किया जाने वाला सहयोग। (रिस्पोंसिव कोऑपरेशन)।

प्रतिक्रियावादी पुं० (सं) वह जो उन्नति या सुधार आदि कार्यों या विचारों का विरोध करता हो। (रिएक्शनरी)।

प्रतिक्षण अव्य० (सं) निरंतर। हर लहमे में।

प्रतिक्षेप पुं० (सं) फेंकना। २-रोकना। ३-तिरस्कार

प्रतिक्षेपक पुं०(सं) दे० 'प्रकाश परावर्तक'। (रिफ्लेक्टर)।

प्रतिगमन पुं० (सं) वापिस आना। लौटना।

प्रतिगृहीत वि०(सं) १-ग्रहण किया हुआ। २-अंगीकार किया हुआ।

प्रतिगृहीता स्त्री० (सं) धर्मपत्नी। वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो।

प्रतिग्या स्त्री० (हि) दे० 'प्रतिज्ञा'।

प्रतिग्रह पुं० (सं) १-स्वीकार। ग्रहण। २-विधिपूर्वक दिये गये दान को लेना। ३-विवाह। ४-पकड़ना। ५-स्वागत। अभ्यर्थना। ६-कृपा। ७-सेना का पिछला भाग। ८-अभियुक्त या संदिग्ध व्यक्ति का अधिकारी गण को जांच या विचारार्थ सौंपा जाना (कस्टडी)।

प्रतिग्रहण पुं० (सं) १-विधिपूर्वक दिया हुआ दान लेना। २-स्वागत। ३-विवाह। ४-ऋण की रकम या जुरमाने के बदले न्यायालय के आदेश से संपत्ति आदि पर अधिकार कर लेना। (अटैचमेंट)।

प्रतिग्रही वि० पुं० (सं) दान लेने वाला।

प्रतीग्रहीता पुं० (सं) १-दान लेने वाला। २-पति। स्वामी।

प्रतिग्राहक वि० पुं० (सं) १-लेने या ग्रहण करने वाला। २-वह जो किसी की दी हुई वस्तु या संपत्ति आदि को ग्रहण करता हो। (रिसीवर)। ३-वह व्यक्ति जो किसी की संपत्ति, आदि को देखभाल या रक्षा के लिए ले ले। (रिसीवर, कस्टोडियन)।

प्रतिग्राह्य वि० (सं) १-ग्रहण करने योग्य। २-स्वीकार करने योग्य।

प्रतिघात पुं०(सं) १-आघात के बदले में किया जाने वाला आघात। २-बाधा। ३-वध।

प्रतिघातक पुं० (सं) प्रतिघात करने वाला।

प्रतिच्छा स्त्री० (हि) दे० 'प्रतीक्षा'।

प्रतिच्छाया स्त्री०(सं) १-चित्र। २-परछांई। प्रतिबिंब ३-मिट्टी या पत्थर की बनाई हुई मूर्ति। प्रतिमा।

प्रतिच्छेद पुं० (सं) बाधा। रुकावट।

प्रतिछांई स्त्री० (हि) प्रतिबिंब। परछाहीं।

प्रतिछांह स्त्री० (हि) दे० 'प्रतिछाँह'।

प्रतिछांही स्त्री० (हि) प्रतिबिंब। प्रतिछाया।

प्रतिजिह्वा स्त्री० (सं) गले के भीतर की घन्टी। कव्वा

प्रतिजिह्विका स्त्री० (सं) दे० 'प्रतिजिह्वा'।

प्रतिज्ञा स्त्री० (सं) १-किसी काम को करने या न करने के विषय में वचनदान। २-शपथ। सौगंध।

हुआ। ३-प्रमाणित। ४-शरणागत। ५-सम्मानित। ६-अंगीकृत। (एक्सेप्टेड)।

प्रतिपरिपद् विपत्र पुं० (सं) वह हुंडियाँ जो (ब्रिटिश शासन काल में) लन्दन स्थित भारत मंत्री के नाम जारी की जाती थीं और उनका भुगतान विदेशों (इंगलैंड) में होता था। (रिवर्स काउंसिल बिल)।

प्रतिपरीक्षण पुं० (सं) न्यायालय में साक्षी का बयान हो चुकने के बाद उसकी सत्यता जानने के लिए या छिपाई हुई बात का पता लगाने के लिए एकटे-रीसे प्रश्न करना। (क्रास-एग्जामिनेशन)।

प्रतिपर्ण पुं० (सं) दे० 'प्रतिपत्रक'। (काउंटर फाइल)।

प्रतिपादक पुं० (सं) १-प्रतिपत्र करने वाला। २-निष्पादन या निरूपण करने वाला। ३-निर्वाह करने वाला। ४-उत्पादक। ५-पूरा करने वाला। ६-देने वाला।

प्रतिपादन पु० (सं) १-भली भाँति समझना। प्रतिपत्ति। २-किसी बात का प्रमाण युक्त कथन। ३-प्रमाण। ४-पुरस्कार। ५-दान। ६-उत्पत्ति।

प्रतिपादित वि० (सं) १-जो भली भाँति समझा दिया गया हो। २-निर्धारित। ३-प्रदत्त। ३-प्रमाणित।

प्रतिपाद्य वि० (सं) १-निरूपण करने योग्य। समझने योग्य। २-देने योग्य।

प्रतिपान पुं० (सं) १-जल। २-पीने का पानी। ३-पीना।

प्रतिपाप वि० (सं) बुराई का बदला बुराई से देने वाला। पुं० (सं) बुराई के बदले बुराई करना।

प्रतिपापी वि० (सं) दे० 'प्रतिपाप'।

प्रतिपार पुं० (हि) दे० 'प्रतिपाल'।

प्रतिपारना क्रि० (हि) १-रक्षा करना। २-पालन करना।

प्रतिपाल पुं० (सं) पालन या रक्षण करने वाला।

प्रतिपालक पुं० (सं) दे० 'प्रतिपाल'।

प्रतिपालक-अधिकरण पुं० (सं) वह सरकारी विभाग जो अयोग्य तथा अल्पवयस्कों की संपत्ति आदि का निरीक्षण करता है। (कोर्ट ऑफ वार्ड्स)।

प्रतिपालन पुं० (सं) रक्षण करना। पालन करना।

[प्र]तिपालना क्रि० (हि) १-पालन करना। २-रक्षा करना।

[प्रति]पालनीय वि० (सं) दे० 'प्रतिपाल्य'।

[प्रति]पालित वि० (सं) १-पालन किया हुआ। २-रक्षित।

प्रतिपाल्य वि० (सं) १-पालन करने योग्य। रक्षा करने योग्य।

प्रतिपीडन पुं० (सं) १-पीड़ा पहुंचाना। कष्ट देना। २-संपत्ति आदि का अधिकार देकर वापिस ले लेना। ३-शत्रु द्वारा की गई हानि के बदले में उसे हानि पहुंचाना। (रिप्राइजल)।

प्रतिपुरुष पुं० (सं) १-आदमी का पुतला जिसे पहले चोर सेंध आदि पर यह जानने के लिए खड़ा करते थे कि घर में कोई जाग तो नहीं रहा है। २-किसी का स्थानापन्न होकर काम करनेवाला पुरुष (डेपुटी) ३-वह व्यक्ति जिसे किसी सभा में किसी के प्रतिनिधि रूप में कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो निधि। साथी। (प्रॉक्सी)।

प्रतिपुरुषपत्र पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति के बदले म[त] करने तथा कोई दूसरे कार्य करने का अ[धिकार] दिया जाय। (प्रॉक्सी)।

प्रतिपुरुष पुं० (सं) दे० 'प्रतिपुरुष'।

प्रतिपूर्ति स्त्री० (सं) किसी व्यक्ति या खाते से [...] या निकला हुआ धन दुबारा देकर उसकी [पूर्ति] करना। (रिइम्बर्समेंट)।

प्रतिपोषक पुं० (सं) सहायता या मदद करने [वाला] सहकारी।

प्रतिप्रत्त वि० (सं) किसी के बदले में दिया हुआ।

प्रतिप्रभा स्त्री० (सं) प्रतिबिंब। परछाईं।

प्रतिप्रहार पुं० (सं) मार पर मार। अनुरूप प्र[...]

प्रतिप्राप्ति स्त्री० (सं) खोई हुई या गई हुई वस्तु [फिर] से प्राप्त करना। (रिकवरी)।

प्रतिप्रेषण करना क्रि० (हि) १-कोई प्रार्थना प[त्र या] आवेदन पत्र आवश्यक कार्रवाई के लिए या स्वी[कृति] के लिए किसी उच्चाधिकारी के पास भेजना। २-संशयात्मक या विवादास्पद विषय का संशय मि[टाने] के लिए किसी विशेषज्ञ को भेजना। (रेफर)।

प्रतिफल पुं० (सं) १-छाया। प्रतिबिंब। २-परिण[ाम] ३-बदली में मिली हुई वस्तु। (रिटर्न, कंसीडरे[शन])

प्रतिफलक पुं० (सं) किसी वस्तु को प्रतिफलित क[रने] का यन्त्र। (रिफ्लेक्टर)।

प्रतिफलन पुं० (सं) दे० 'प्रतिफल'।

प्रतिफलित वि० (सं) प्रतिबिंबित।

प्रतिबंध पुं० (सं) १-रुकावट। रोक। २-विघ्न। [३-] बाधा। ४-किसी बात या कार्य के लिए लगाई [गई] शर्त। (कंडीशन)। ५-विदेशों को कोई माल नि[र्यात] करने पर लगाई गई रोक। (एम्बार्गो)। ६-कि[सी] अधिनियम आदि की धारा में या किसी प्र[...] आदि में पड़ने वाली कठिनाई से बचने के [लिए] बताया गया उपाय। परंतुक। (प्रोविज़ो)। ७-प्र[ति]रोध।

प्रतिबंधक पुं० (सं) १-रोकने वाला। बाधा डाल[ने] वाला। वृक्ष। पेड़।

प्रतिबंधु पुं० (सं) वह जो बंधु के समान हो।

प्रतिबद्ध वि० (सं) १-बंधा हुआ। जिसमें कोई प्र[ति]बन्ध हो। २-नियन्त्रित। ३-जिसमें कोई बा[धा] डाली गई हो।

प्रतिबाधित *वि०* (सं) जिसे पहले से ही रोक दिया गया हो। (प्रीक्लूडेड)।

प्रतिबाहु पुं०(सं) १-बांह का अगला भाग। २-अक्रूर का एक भाई।

प्रतिबिंब पुं० (सं) १-परिच्छाया। परछाईं। छाया (रिफ्लेक्शन)। २-मूर्ति। प्रतिमा। ३-चित्र। ४-दर्पण। शीशा।

प्रतिबिंबक पुं० (सं) १-प्रतिबिंबित होना। २-तुलना ३-अनुगमन।

प्रतिबिंबना *क्रि०* (हि) प्रतिबिंबित होना।

प्रतिबिंबवाद पुं० (सं) वेदांत के अनुसार जीव को ईश्वर का प्रतिबिंब मानने का सिद्धान्त।

प्रतिबिंबित *वि०* (सं) १-जिसका प्रतिबिंब पड़ा हो। २-दर्पण में प्रतिफलित।

प्रतिबुद्ध *वि०* (सं) १-जागा हुआ। २-प्रसिद्ध। ३-उन्नत।

प्रतिबुद्धि *स्त्री०* (सं) उलटी समझ या बुद्धि।

प्रतिबोध पुं० (सं) १-जागरण। जगाना। २-ज्ञान।

प्रतिबोधक *वि०* (सं) १-ज्ञान उत्पन्न कराने वाला। २-जगाने वाला। ३-शिक्षा देने वाला। ४-तिरस्कार करने वाला।

प्रतिबोधन पुं० (सं) १-जागरण। २-जागृति। ३-ज्ञानोत्पादन।

प्रतिभट पुं० (सं) १-बराबर का समान बलवान योद्धा। २-शत्रु। ३-प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिभा स्त्री० (सं) १-बुद्धि। समझ। २-असाधारण मानसिक शक्ति। ३-बौद्धिक बल। ४-चमक। उज्ज्वलता।

प्रतिभाग पुं० (सं) १-प्राचीन काल में लगने वाला एक प्रकार का कर। २-वह शुल्क जो ... मादक द्रव्य, दियासलाई, नमक ... लगाया गया विशेष कर। (एक्सा...

प्रतिभाक्षय पुं० (सं) दे० 'प्रतिभा हा...'।

प्रतिभात *वि०* (सं) १-चमकीला। २-ज्ञात। ३-प्रदीप्त ४-जिसका प्रादुर्भाव हुआ।

प्रतिभामुख *वि०* (सं) १-कुशाग्र बुद्धि। २-प्रगल्भ।

प्रतिभावन पुं० (सं) एक ओर से दिखाई देने वाली किसी भावना, व्यवहार आदि के परिणामस्वरूप दूसरी ओर से दिखाई पड़ने वाली भावना, वृत्ति आदि। (रिस्पॉंस)।

प्रतिभावान *वि०* (सं) जिसकी प्रतिभा हो। प्रतिभा-वाला।

प्रतिभाम्य *वि०* (सं) दे० 'प्रतिभूमोच्य'। (बेलेबल)।

प्रतिभाशाली *वि०*(सं) प्रतिभा वाला। जिसमें प्रतिभा हो।

प्रतिभासंपन्न *वि०* (सं) दे० 'प्रतिभाशाली'।

प्रतिभास पुं० (सं) १-प्रकाश। चमक। २-आकृति। धोखा। भ्रम।

प्रतिभासन पुं० (सं) १-चमकना। २-दिखाई देना।

प्रतिभाहानि स्त्री० (सं) १-प्रकाश या चमक का नाश। २-शक्ति का ह्रास।

प्रतिभाहीन स्त्री० (सं) प्रतिभा रहित। बुद्धि का अभाव

प्रतिभू पुं० (सं) किसी की जमानत करने वाला। जामिन। (सिक्योरिटी)।

प्रतिभूति स्त्री० (सं) वह धन जो प्रतिभू या जामिन ने जमानत के रूप में जमा किया हो। (सिक्यूरिटी डिपॉजिट)।

प्रतिभूपत्र पुं० (सं) जमानतनामा। वह पत्र जिसमें प्रतिभू अपने उत्तरदायित्व की लिखित स्वीकृति देता है। (...)।

... जाता है। (बेलबल)।

प्रतिभेद पुं० (सं) १-अन्तर। फर्क। २-आविष्कार। भेद खोलना।

प्रतिभेदन पुं० (सं) १-विभाग करना। २-खोलना। ३-चीरना। फाड़ना।

प्रतिभोग पुं० (सं) उपभोग।

प्रतिभौ पुं० (हि) शरीर का बल और तेज।

प्रतिमंडल पुं० (सं) १-सूर्य आदि चमकते हुए ग्रहों का चारों ओर का मंडल या घेरा। परिवेश। २-प्रतिनिधियों का मंडल या दल।

प्रतिमंत्रण पुं० (सं) उत्तर देना। जवाब देना।

प्रतिमंत्रित *वि०* (सं) मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ।

प्रतिम *वि०* (सं) समान। सदृश।

प्रतिमल्ल पुं० (सं) १-बराबर का पहलवान। २-...

... वाट)।

प्रतिमा स्त्री० (सं) १-किसी वास्तविक या कल्पित आधार पर बनाई हुई मूर्ति, चित्र आदि। २-मिट्टी या पत्थर की बनी देवमूर्ति। ३-प्रतिबिंब। छाया। ४-तौलने का बाट। ५-सादृश्य।

प्रतिमागत *वि०* (सं) जो चित्र या प्रतिमा में स्थित हो।

प्रतिमान पुं० (सं) १-प्रतिबिंब। परछाईं। २-समानता। ३-उदाहरण। ४-हाथी का मस्तक। ५-मानदंड। मानक। (स्टैंडर्ड)। ६-वह वस्तु जो आदर्श के रूप में सामने रखी जाय। (मॉडल)। ७-किसी आदर्श को देख कर उसके अनुरूप बनाई हुई वस्तु। (मॉडल)। ८-(छपाई आदि में) छापे जाने लेखों आदि का वह नमूना जो छापने से पहले संशोधन आदि के लिए तैयार किया जाता है। (प्रूफ, प्रूफशीट)।

प्रतिमापूजा स्त्री० (सं) मूर्तिपूजा।
प्रतिमुख पुं० (सं) १-किसी वस्तु का पिछला भाग। २-नाटक की पंच-संधियों में से एक।
प्रतिमुद्रण पुं० (सं) १-खुदे हुए लेख या आकृति आदि पर से उसकी उठी हुई छाप उठाने की किया २-इस प्रकार से छापी हुई प्रति। (बैक-सिमिली)।
प्रतिमुद्रांकन पुं० (सं) जिस पर पहले मुद्रांकन हो चुका हो उस पर बड़े अधिकारी की स्वीकृति सूचित करने के लिए उसकी लगाई हुई मोहर। (काउंटर-सील)।
प्रतिमुद्रा स्त्री० (सं) नामांकित मोहर की छाप।
प्रतिमूर्ति स्त्री०(सं) किसी के अनुरूप ज्यों की त्यों बनी हुई मूर्ति या चित्र। प्रतिमा।
प्रतियोग पुं०(सं) १-विरोधी पदार्थों का संयोग। २-शत्रुता। विरोध। ३-किसी पदार्थ के परिणाम को नष्ट करने वाली वस्तु।
प्रतियोगिता स्त्री० (सं) १-किसी कार्य में औरों से बढ़ने का प्रयत्न। २-ऐसा कार्य जिसमें अलग-अलग सफल होने का प्रयत्न करें। (कम्पिटीशन)।
प्रतियोगिता परीक्षा स्त्री० (सं) किसी काम या पद के लिए उम्मीदवारों की ली गई परीक्षा जो उनकी योग्यता जांचने के ली जाती है और इसमें उत्तीर्ण होने वाले चुन लिए जाते हैं।
प्रतियोगी पुं० (सं) १-शत्रु। विरोधी। २-बाधा डालने वाला। ३-सहायक। ४-बराबर वाला। वि० (सं) प्रतियोगिता करने वाला। मुकाबले का।
प्रतियोध पुं० (सं) प्रतिद्वंद्वी। मुकाबले में लड़ने वाला।
प्रतियोधी पुं० (सं) दे० 'प्रतियोध'।
प्रतिरक्षण पुं० (सं) रक्षा। हिफाजत।
प्रतिरक्षा स्त्री० (सं) किसी के आक्रमण से अपनी रक्षा के निमित्त या अभियोग आदि का उत्तर देने के लिए किया जाने वाला कार्य या व्यवस्था। (डिफेंस)।
प्रतिरक्षाव्यय पुं० (सं) देश की प्रतिरक्षा के निमित्त किया जाने वाला व्यय। (डिफेंस एक्सपेंडीचर)।
प्रतिरथ पुं० (सं) बराबरी का लड़ने वाला। प्रति-योद्धा।
प्रतिरव पुं०(सं) १-प्रतिध्वनि। २-झगड़ा। विवाद
प्रतिरुद्ध वि०(सं)१-अवरुद्ध। रुकाहुआ। २-अटका-हुआ। फंसा हुआ।
प्रतिरूप पुं० (सं) १-प्रतिमा। मूर्ति। २-चित्र। ३-प्रतिनिधि। ४-नमूना। (स्पेसीमन)। वि० (सं) कृत्रिम या बनावटी। नकली। (काउंटरफीट)।
प्रतिरूपक पुं०(सं) वह जो नकली या बनावटी वस्तुएं विशेषतः सिक्के नोट आदि बनाता हो। (काउंटर-फीटर)।
प्रतिरोध पुं०(सं) १-विरोध। २-बाधा। ३-तिरस्कार ३-प्रतिबिंब। ४-घेरा डालना।
प्रतिरोधक पुं०, वि० (सं) १-प्रतिरोध करने वाला बाधा डालने वाला। २-चोर। डाकू।
प्रतिरोधन पुं०(सं) प्रतिरोध करने का भाव अथवा क्रिया।
प्रतिरोधित वि०(सं)१-जो रोका गया हो। २-जिसमें बाधा डाली गई हो।
प्रतिरोपित वि०(सं) जो (पौधा) दुबारा रोपा गया हो
प्रतिलब्धि स्त्री० (सं) किसी पहले खोई हुई या दी गई वस्तु का दुबारा प्राप्त होना। (रिकवरी)।
प्रतिलिपि स्त्री० (सं) किसी लेख आदि की ज्यों की त्यों की गई नकल। (कॉपी)।
प्रतिलिपिक पुं० (सं) किसी लेख आदि की प्रतिलिपि या नकल करने वाला। (कॉपीइस्ट)।
प्रतिलिपित वि० (सं) जिसकी प्रतिलिपि या नकल की गई हो। (कॉपीड)।
प्रतिलिप्याधिकार पुं० (सं) बिना ग्रन्थ या पुस्तक लेखक की अनुमति के पुस्तक न छापने का स्वत्व या अधिकार। मुद्रण अधिकार। प्रतिकस्वत्व। कॉपी राइट)।
प्रतिलेखक पुं० (सं) दे० 'प्रतिलिपिक,। (कॉपीइस्ट)।
प्रतिलेखन पुं० (सं) किसी लिखी हुई पुस्तक, पत्र आदि से कोई अंश ज्यों का त्यों उतार लेना या पुनः उसी तरह लिखना। (ट्रांसक्रिप्शन)।
प्रतिलोम वि० (सं) १-प्रतिकूल। विपरीत। २-उलटे क्रम वाला। विपरीत दिशा में जाने वाला। (कॉन-वर्स)। पुं० (सं) नीच या कमीना व्यक्ति।
प्रतिलोम-विवाह पुं० (सं) वह विवाह जिसमें वर नीच वर्ण का पर कन्या उच्च वर्ण की हो।
प्रतिवक्ता पुं० (सं) १-उत्तर देने वाला। २-(कानून आदि की) व्याख्या करने वाला।
प्रतिवचन पुं० (सं) १-उत्तर। जवाब। २-प्रतिध्वनि
प्रतिवनिता स्त्री० (सं) सौत।
प्रतिवर्तन पुं० (सं) लौट आना। वापिस आना।
प्रतिवर्ती वि० (सं) जो मृत्यु के बाद प्राप्त हो। (लाभादि की रकम)। (रिवर्शनरी)।
प्रतिवर्ती-अधिलाभांश पुं० (सं) बीमा आदि से मिलने वाला वह अभिलाभांश (बोनस) जो मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी को मिल सके। (रिवर्शनरी बोनस)।
प्रतिवस्तु स्त्री० (सं) १-वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के बदले में दी जाय। २-समानान्तर। ३-उपमान।
प्रतिवस्तूपमा स्त्री० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग-अलग वाक्यों में किया जाय।

प्रतिवहन पुं० (सं) विरुद्ध दिशा में ले जाना। उलटी ओर ले जाना।

प्रतिवाक्य पुं० (सं) १-प्रतिध्वनि। २-प्रत्युत्तर।

प्रतिवाणी स्त्री० (सं) प्रत्युत्तर।

प्रतिवाद पुं० (सं) १-किसी वाक्य या बात के खंडन करने के निमित्त या उसका विरोध करने के लिए कही हुई बात। २-विरोध। ३-जवाब। (कन्ट्राडिक्शन)।

प्रतिवादिक वि० (सं) १-जिसमें प्रतिवाद या खंडन हो। २-विरोधी। (कन्ट्राडिक्टरी)।

प्रतिवादिता स्त्री० (सं) प्रतिवाद का भाव।

प्रतिवादी पुं०(सं) १-प्रतिवाद या खंडन करने वाला। २-वह जो किसी की बात में तर्क करे। ३-वादी की बात का उत्तर देने वाला व्यक्ति। प्रतिवादी। (डिफेंडेंट)।

प्रतिवास पुं० (सं) पड़ोस।

प्रतिवासी पुं० (सं) पड़ोसी। पड़ोस में रहने वाला।

प्रतिविधि स्त्री० (सं) प्रतिकार। (रेमेडी)।

प्रतिवेदक पुं० (सं) संवाददाता। (रिपोर्टर)।

प्रतिवेदन पुं० (सं) १-किसी घटना अथवा कार्य का विवरण जो किसी को सूचित करने के लिए हो। किसी को दी जाने वाली सूचना। (रिपोर्ट)।

[illegible]

प्रतिवेशी पुं० (सं) पड़ोसी।

प्रतिवेश्म पुं० (सं) पड़ोस का मकान।

प्रतिव्यक्ति-कर पुं० (सं) प्रति व्यक्ति पर लगने वाला कर। (कैपिटेशन टैक्स)।

प्रतिशत अव्य० (सं) फीसदी। हर सौ पर। (परसेन्ट)।

प्रतिशतक पुं० (सं) प्रतिशत के हिसाब से लगाया जाने वाला लेखा। (परसेन्टेज)।

प्रतिशयन पुं० (सं) धरना देना।

प्रतिशयित वि० (सं) धरना देने वाला। (व्यक्ति)।

प्रतिशाप पुं० (सं) फिर से शाप देना।

प्रतिशासन पुं० (सं) विरोधी या किसी दूसरे का शासन।

प्रतिशिष्ट वि० (सं) १-जिसका निराकरण किया गया हो। २-अस्वीकृत। ३-प्रसिद्ध।

प्रतिशुल्क पुं० (सं) विदेशों से आने वाले माल पर इस उद्देश्य से लगाया गया कर कि स्वदेश माल या वस्तु स्वदेश में प्रस्तुत या निर्माण की गई वस्तु से सस्ता न बिके। (काउंटर वेलिंग ड्यूटी)।

प्रतिशोध पुं० (सं) बदला लेने की भावना से किया जाने वाला काम। बदला। प्रतिकार। (रिवेंज)।

प्रतिश्यान पुं० (सं) सरदी। जुकाम।

प्रतिश्याय पुं० (सं) जुकाम। सरदी।

प्रतिश्रयण पुं० (सं) स्वीकृत। मंजूरी।

प्रतिश्रवण पुं०(सं) १-प्रतिज्ञाबद्ध होना। २-प्रतिज्ञा ३-सुनना।

प्रतिश्रुत वि०(सं) १-जिसे सुना गया हो। २-जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो।

प्रतिश्रुति स्त्री० (सं) १-प्रतिध्वनि। २-स्वीकृति। ३-प्रतिज्ञा। किसी बात के लिए दिया जाने वाला वचन। (प्रॉमिस)। ४-इस बात की जुम्मेदारी कि कोई वस्तु या बात वैसी ही है जैसी कि बताई गई हो और इसी प्रकार रहेगी। (गारंटी)।

प्रतिश्रुतिपत्र पुं० (सं) १-वह पत्र या प्रलेख जिसमें किसी बात की प्रतिज्ञा की गई हो। (कॉवनेंट)।

[illegible]

बाहर भेजने या आयात करने का निषेध। (कॉन्ट्राबैंड)। ३-जिसका प्रतिरोध किया गया हो। (प्रोहिबिटेड)।

प्रतिषेध पुं० (सं) १-निषेध। २-खंडन। ३-एक [illegible] निषेध या अन्तर का

[illegible]

प्रतिषेधाधिकार पुं० (सं) १-किसी राष्ट्र के प्रधान या राष्ट्रपति का विधान सभा द्वारा पारित प्रस्ताव को कार्यान्वित होने से रोकने का अधिकार। २-[illegible] किसी प्रस्ताव

[illegible]

जगह। ३-मान-मर्यादा। ४-देव प्रतिमा का स्थापन। ५-आदर। सत्कार। ६-स्थिति। ठहराव। ७-पृथ्वी। ८-शरीर। ९-आश्रय।

प्रतिष्ठान पुं० (सं) १-स्थापित या प्रतिष्ठित करना। २-पदवी। ३-स्थान। ४-जड़। मूल। ५-देवमूर्ति की स्थापना।

प्रतिष्ठानपत्र पुं० (सं) किसी [illegible]

सीमित समवाय का नाम, उद्देश्य आदि का ब्योरा देने वाला वह प्रलेख जो उसके संस्थापन के पहले सार्वजनिक रूप में प्रकाशित किया जाय तथा उसका विधिवत पंजीयन किया जाय। (मेमोरेण्डम ऑफ एसोसियेशन)।

प्रतिष्ठापत्र पुं॰ (सं) दे॰'मानपत्र'।

प्रतिष्ठापन पुं॰(सं) १-स्थापित करने का कार्य। २-किसी देवमूर्ति की स्थापना का काम।

प्रतिष्ठापयिता पुं॰ (सं) प्रतिष्ठापन करने वाला।

प्रतिष्ठापित वि॰ (सं) जिसका स्थापन किया गया हो। जिसका प्रतिष्ठापन किया गया हो।

प्रतिष्ठित वि॰ (सं) १-जिसकी प्रतिष्ठा हो। २-जिसकी स्थापना की गई हो। ३-इज्जतदार। ४-प्रसिद्ध। ५-प्रयुक्त।

प्रतिष्ठिति स्त्री॰ (सं) प्रतिष्ठान। स्थापित करने का भाव या क्रिया।

प्रतिसंधि स्त्री॰ (सं) १-ढूंढना। खोजना। २-वियोग

प्रतिसंस्कार पुं॰ (सं) टूटी फूटी वस्तुओं को फिर से ठीक करना। मरम्मत करना।

प्रतिसंहरण पुं॰ (सं) १-किसी विज्ञप्ति, आदेश आदि को रद्द करना। रद्द करना। (रिवोकेशन)।

प्रतिसंहार पुं॰ (सं) १-त्यागना। २-समेट लेना।

प्रतिसचिव पुं॰ (सं) सचिव के स्थान पर उसकी उपस्थिति में काम करने वाला। (डिप्टी सेक्रेटरी)।

प्रतिसम वि॰ (सं) जो देखने में समान तथा सुन्दरता के विचार से जिसके अंगों में एकरूपता हो। (सिमिट्रिकल)। जो प्रतिसाम्य हो।

प्रतिसर पुं॰ (सं) १-नौकर। सेवक। २-सेना का पिछला भाग। ३-पुष्पहार। ४-प्रभात। ५-घाव का भरना या अच्छा होना। वि॰ (सं) परतंत्र। अधीन

प्रतिसरकार स्त्री॰ (हि) किसी देश की प्रतिष्ठित सरकार के विरोध में स्थापित सरकार जो उस सरकार के साथ-साथ कुछ भागों पर शासन करने का प्रयत्न करें। (पैरेलेल गवर्नमेंट)।

प्रतिसरण पुं॰ (सं) किसी के सहारे बैठने या विश्राम करने की क्रिया।

प्रतिसव्य वि॰ (सं) १-विरुद्ध आचरण करने वाला। २-प्रतिकूल।

प्रतिसाम्य पुं॰ (सं) किसी वस्तु, शरीर, या किसी रचना के आकार, बनावट, मान आदि के विभिन्न अंगों में अनुपात और सुन्दरता के विचार से होने वाली पारस्परिक समानता तथा एकरूपता। (सिमेट्री)

प्रतिसारण पुं॰ (सं) १-घाव के किनारों की सफाई तथा मलहम पट्टी करना। (ड्रेसिंग)। २-घाव में मलहम लगाने का एक उपकरण।

प्रतिसारित वि॰ (सं) जिसकी मरहम पट्टी हो गई हो। (ड्रेस्ड)।

प्रतिसेना पुं॰ (सं) शत्रुपक्ष की सेना।

प्रतिस्त्री स्त्री॰ (सं) दूसरे की स्त्री।

प्रतिस्थान अव्य॰ (सं) हर जगह।

प्रतिस्थापन पुं॰ (सं) अपने स्थान से हटी हुई वस्तु को पुनः उसी स्थान पर रखना। (रिप्लेसमेंट)।

प्रतिस्नेह पुं॰ (सं) स्नेह या प्यार के बदले प्यार।

प्रतिस्पंदन पुं॰ (सं) हृदय की धकधक।

प्रतिस्पर्द्धा स्त्री॰ (सं) १-प्रतियोगिता। होड़। २-झगड़ा। (राइवेल्री)।

प्रतिस्पर्द्धी (पुं॰ (सं) १-होड़ करने वाला। प्रतिद्वन्द्वी। (राइवल)।

प्रतिस्पर्धा स्त्री॰ (सं) दे॰ 'प्रतिस्पर्द्धा'।

प्रतिस्पर्धी पुं॰ (सं) दे॰ 'प्रतिस्पर्द्धी'।

प्रतिस्राव पुं॰ (सं) एक नाक का रोग।

प्रतिहंता पुं॰ (सं) १-बाधक। रोकने वाला। २-मुकाबले में आकर मारने वाला।

प्रतिहत वि॰ (सं) १-भगाया हुआ। हटाया हुआ। २-अवरुद्ध। ३-निराश। ४-चोट खाया हुआ।

प्रतिहनन पुं॰ (सं) आघात के बदले में आघात करना।

प्रतिहरण पुं॰ (सं) विनाश। बरबादी।

प्रतिहर्ता पुं॰ (सं) १-सोलह ऋत्विजों में से बारहवाँ। २-नाश करने वाला।

प्रतिहस्त पुं॰ (सं) १-प्रतिनिधि। २-काम चलाने के लिए किसी के बदले में कोई दूसरी वस्तु काम में लाने का कार्य। (सब्स्टीट्यूशन)।

प्रतिहस्तक पुं॰ (सं) दे॰ 'प्रतिहस्त'।

प्रतिहस्ताक्षरित वि॰ (सं) (वह प्रलेख आदि) जिस पर पहले किये गये हस्ताक्षरों के सामने किसी दूसरे ने साक्षीकरण के लिए हस्ताक्षर किये हों। (काउंटर-साइन्ड)।

प्रतिहस्तापन पुं॰ (सं) किसी कार्य चलाने के निमित्त एक वस्तु या आदमी के स्थान पर कोई दूसरा आदमी या वस्तु रखना। (सब्सटीट्यूशन)।

प्रतिहार पुं॰ (सं) १-दरबार। द्वारपाल। २-मायावी ऐन्द्रजालिक। ३-निवारण। ४-चोबदार। ५-सामवेद गान का एक अंग।

प्रतिहारक पुं॰ (सं) १-बाजीगर। २-वह जो प्रतिहार सामगान करता हो।

प्रतिहार-भूमि स्त्री॰ (सं) ड्योढ़ी।

प्रतिहार-रक्षी स्त्री॰(सं) द्वारपालिका।

प्रतिहास पुं॰ (सं) १-हँसी के बदले हँसी। २-कनेर

प्रतिहिंसा स्त्री॰ (सं) १-हिंसा जो किसी वैर चुकाने के लिए की जाय। २-बदला लेना।

प्रतिहित वि॰ (सं) १-स्थित। रखा हुआ। २-जमाया हुआ।

प्रतीक वि॰ (सं) १-विरुद्ध। प्रतिकूल। २-उल्टा। जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो। ३-विलोम।

४-माया। पुं० (सं) १-चिह्न। निशान। पता। २-अंग। ३-मुख। ४-रूप। आकृति। ५-किसी गद्य या पद्य के आदि से अन्त तक के कुछ शब्दों को लिख कर पूरे वाक्य या पद्य का पता लगाना। ६-प्रतिरूप। मूर्ति। ७-वह जो किसी समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में और उसकी सब बातों का सूचक या प्रतिनिधि हो। (सिम्बल)।

प्रतीकार पुं० (सं) दे० 'प्रतिकार'।

प्रतीकन्यूनन पुं० (सं) वह प्रस्ताव जो असन्तोष या विरोध प्रकट करने के लिए आय-व्यय की किसी मद में नाम मात्र की कमी करने के लिए रखा जाता है। (टोकन कट)।

प्रतीकवाद पुं० (सं) किसी वस्तु या विषय को केवल उसके प्रतीक रूप में देखने या वर्णन करने का सिद्धांत। (सिम्बोलिज्म)।

प्रतीक्ष्य वि० (सं) दे० 'प्रतीक्ष्य'।

प्रतीक्षक वि० (सं) १-आसरा देखने वाला। २-पूजने वाला।

प्रतीक्षण पुं० (सं) १-प्रतीक्षा करना। आसरा करना। २-कृपादृष्टि।

प्रतीक्षा स्त्री० (सं) आसरा। इन्तजार। प्रत्याशा।

प्रतीक्षागृह पुं० (सं) १-किसी उच्च-अधिकारी या बड़े आदमी का वह कमरा जहां बैठकर मिलने वाले उसकी प्रतीक्षा करते है। २-रेलगाड़ी, बस, वायुयान आदि के आने तक प्रतीक्षा करने वाले यात्रियों के बैठने का स्थान। (वेटिंग रूम)।

प्रतीक्षालय पुं० (सं) दे० 'प्रतीक्षागृह'।

प्रतीघात पुं० (सं) दे० 'प्रतिघात'।

प्रतीची स्त्री० (सं) पश्चिम दिशा।

प्रतीचीन वि० (सं) १-पश्चिमी। पाश्चात्य। २-जिसने मुँह फेर लिया हो। पराङ्मुख।

प्रतीचीश पुं० (सं) वरुण।

प्रतीच्य वि० (सं) पश्चिम दिशा का।

प्रतीत वि० (सं) १-विदित। जाना हुआ। २-विख्यात ३-प्रसन्न।

प्रतीति स्त्री (सं) १-निश्चित विश्वास या धारणा। २-ख्याति। ३-आनन्द। ४-आदर। ५-लेन देन में माने जाने वाली वचन की प्रामाणिकता। (क्रे

प्रतीप पुं० (सं) १-आशा के प्रतिकूल-घटना। या २-एक अर्थालंकार उपमेय को उपमान बना। ... जाय या उपमेय द्वारा उपमान के तिरस्कार का ... किया जाय। वि० (सं) १-विरुद्ध। प्रतिकूल। विलोम। उलटा।

प्रतीपग वि० (सं) उलटा आचरण करने वाला।

प्रतीपगति स्त्री० (सं) प्रतिकूल या विरुद्ध गमन।

प्रतीपगमन पुं० (सं) दे० 'प्रतीपगति'।

प्रतीपगामी वि० (सं) विरुद्ध आचरण करने वाला।

प्रतीपोक्ति स्त्री० (सं) किसी के वचन के विरुद्ध कथन खण्डन।

प्रतीयमान वि० (सं) ऊपर से दिखाई पड़ने या प्रतीत होने वाला। (एपेरेंट)। २-अर्थ या उद्देश्य के रूप में भासित होने वाला। (पर्टेंड)।

प्रतीवेश पुं० (सं) पड़ोस। प्रतिवेश।

प्रतीवेशी पुं० (सं) दे० 'प्रतिवेशी'।

प्रतीहार पुं० (सं) दे० 'प्रतिहार'।

प्रतीहारी स्त्री० (सं) दे० 'प्रतिहारी'।

प्रतोद पुं० (सं) १-किसी को किसी काम के लिए उत्तेजित या विवश करना। २-कोड़ा। चाबुक। ३-अंकुश।

प्रतोष पुं० (सं) सन्तोष। तुष्टि।

प्रतोषना क्रि० (हि) समझाना। संतुष्ट करना।

प्रत्न वि० (सं) प्राचीन। पुरातन।

प्रत्यंकन पुं० (सं) किसी अंकित की हुई आकृति को ज्यों का त्यों पतला कागज आदि रख कर उतारना। (ट्रेसिंग)।

प्रत्यंग पुं० (सं) शरीर का कोई गौण अंग जैसे—नाक।

प्रत्यंचा स्त्री० (सं) धनुष की डोरी। चिल्ला।

प्रत्यक्त वि० (सं) जो सन्निकृष्ट हो।

प्रत्यक्ष वि० (सं) १-आँखों के सामने वाला। २-जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो। पुं०(सं) चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जिसका आधार देखी या जानी हुई बातों पर होता है। (डायरेक्ट)। अव्य० (सं) सामने। आँखों के सामने।

प्रत्यक्षता स्त्री० (सं) प्रत्यक्ष होने का भाव।

प्रत्यक्षज्ञान पुं० (सं) इन्द्रियों के और विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान।

प्रत्यक्षदर्शन पुं० (सं) वह जिसने किसी घटना या कार्य को संघटित होते हुए अपनी आँखों से देखा हो। (आई-विटनस)।

प्रत्यक्षदर्शी पुं० (सं) दे० 'प्रत्यक्षदर्शन'।

प्रत्यक्षवाद पुं० (सं) एक प्रकार की दार्शनिक प्रणाली जिसमें केवल प्रत्यक्ष या दृश्य बातों या तत्वों को प्रामाणिक माना जाता है ...

... प्रत्यक्ष ज्ञान या साक्षात्कार करा देना।

प्रत्यक्षीभूत वि० (सं) जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हुआ हो।

प्रत्यनन्तर पुं० (सं) १-किसी के पश्चात उसके स्थान

पर बैठने वाला । उत्तराधिकारी ।

प्रत्यनीक पुं० (सं) १-शत्रु । २-विरोधी । ३-प्रतिवादी । ४-विघ्न । बाधा । ५-एक अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहने वाले या सम्बन्धी के प्रति अहित का वर्णन किया जाय । वि० (सं) विरोधी विपक्षी ।

प्रत्यपकार पुं० (सं) किसी के अपकार के बदले में किया जाने वाला अपकार ।

प्रत्यभिज्ञा स्त्री० (सं) १-किसी की सहायता से उत्पन्न होने वाला ज्ञान । २-वह अभेद ज्ञान जिसमें ईश्वर और जीवात्मा दोनों एक ही समझे जाते हैं । ३-पहचान । (आइडेन्टिफिकेशन) ।

प्रत्यभिज्ञात वि० (सं) पहचाना हुआ ।

प्रत्यभिज्ञान पुं० (सं) १-पहचान । २-समान देखी गई वस्तु को देखकर किसी वस्तु को पहचानना ।

प्रत्यभिदेश पुं०(सं) जिससे कुछ जानना चाहें उसका किसी और की ओर संकेत करना । (क्रॉस रेफरेन्स) ।

प्रत्यभियोग पुं० (सं) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगाने वाले पर लगाये । (काउंटर एलीगेशन) ।

प्रत्यभिवाद पुं० (सं) नमस्कार के बदले नमस्कार ।

प्रत्यभिवादन पुं० (सं) दे० 'प्रत्यभिवाद' ।

प्रत्यमित्र पुं० (सं) शत्रु । दुश्मन ।

प्रत्यय पुं० (सं) १-विश्वास । प्रतीति । २-साख । एतबार । (क्रेडिट) । ३-विचार । ४-ज्ञान । ५-व्याख्या । ६-कारण । ७-आवश्यकता । ८-चिह्न । लक्षण । ९-प्रसिद्धि । १०-सम्मति । ११-सहायक । १२-विष्णु । १३-व्याकरण में वे अक्षर जो किसी मूल धातु या शब्द के अन्त में लगकर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करने के लिए लगाया जाय । (सफिक्स) । १४-वह रीति जिसमे छन्दों के भेद तथा उनकी संख्या जानी जाती है ।

प्रत्ययपत्र पुं० (सं) वह पत्र जिसमें यह लिखा होता है कि इसे ले जाने वाले को अपने खाते में से इतनी रकम या ऋण दे दिया जाय । (लेटर ऑफ क्रेडिट) ।

प्रत्ययप्रतिभू पुं० (सं) वह प्रतिभू या जमानती जो ऋण देनेवाले को ऋण लेनेवाले के बारे में विश्वास दिलाता है कि वह अच्छा आदमी है ।

प्रत्यर्पण पुं०(सं) १-ली हुई वस्तु वापिस देना । २-किसी दूसरे देश से आये हुए अपराधी को उसी के देश को सौंप देना । (एक्स्ट्राडीशन) । ३-जमानत के रूप में ली गई रकम या गलती से ली हुई रकम लौटाना । (रिफंड, रेस्टोरेशन) ।

प्रत्यर्पित वि० (सं) फेरा हुआ । लौटाया हुआ ।

प्रत्यवाय पुं० (सं) १-नित्यकर्म न करने से लगने वाला पाप । २-उलटफेर । ३-बाधा । ४-विरोध । ५-हानि । ६-निराशा ।

प्रत्यवेक्षण पुं० (सं) १-किसी काम को भलीभांति देखना । २-किसी काम या वस्तु को किसी की देख भाल में रखना । (चार्ज) ।

प्रत्यवेक्षा स्त्री०(सं) देखना भालना । निरीक्षण करना ।

प्रत्यवेक्षाय स्त्री० (सं) दे० 'प्रत्यवेक्षण' ।

प्रत्याक्रमण पुं० (सं) किसी होने वाले आक्रमण को रोकने के लिए किया गया आक्रमण । जवाबी हमला (काउंटर अटैक) ।

प्रत्याख्यात वि० (सं) १-जो अंगीकार न किया गया हो । अस्वीकृत । २-प्रसिद्ध ।

प्रत्याख्यान पुं०(सं) १-खंडन । निराकरण । २-आदर पूर्वक लौटाना । ३-अमान्य करना । (प्रोटेस्ट) ।

प्रत्यागत वि० (सं) लौट कर आया हुआ ।

प्रत्यागतासु वि० (सं) जो फिर से जीवित हो गया हो

प्रत्यागति स्त्री० (सं) वापिस लौट आना ।

प्रत्यागम पुं० (सं) लौट आना । दुबारा आना ।

प्रत्यागमन पुं० (सं) दे० 'प्रत्यागम' ।

प्रत्याघात पुं०(सं) आघात या चोट के बदले में चोट

प्रत्यादान पुं० (सं) देकर वापिस ले लेना ।

प्रत्यादिष्ट वि० (सं) सावधान किया हुआ ।

प्रत्यादेश पुं० (सं) १-खंडन । २-निराकरण । ३-चेतावनी ।

प्रत्यानयन पुं० (सं) १-दूसरे के हाथ में गई वस्तु फिर से पाना । (रेस्टोरेशन) । २-फिर से लौटा दिया जाना । (रेस्टिट्यूशन) ।

प्रत्यापतन पुं० (सं) किसी संपत्ति के उत्तराधिकारी के न होने पर उसका राज्य के अधिकार में आना (एस्चीट) ।

प्रत्याभूति स्त्री० (सं) इस बात की जिम्मेदारी कि कोई बात सच्ची है और विश्वासनीय है । (गारंटी)

प्रत्याय पुं० (सं) कर । राजस्व । (टैक्स) । स्त्री० (सं) प्रतिफल । बदले में होने वाला लाभ । (रिटर्न) ।

प्रत्यायक वि० (सं) १-सिद्ध करने वाला । समझाने वाला । २-विश्वास करने वाला । पुं० (सं) राज्य-दूतों आदि को दिया गया वह प्रमाणपत्र जिसे दिखाकर वे दूसरे देशों में अपना पद और अधिकार प्राप्त करते हैं । (क्रिडेन्शल) ।

प्रत्यायुक्त वि० (सं) जिसे किसी विशेष कार्य के लिए कुछ अधिकार दिया गया हो या उसे प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया हो । (डेलीगेटेड) ।

प्रत्यायोजन पुं० (सं) अपने कर्त्तव्य, कार्य या शक्ति आदि किसी को सौंपना । (एक्ट ऑफ डेलीगेटिंग) ।

प्रत्यारंभ पुं० (सं) १-फिर से आरम्भ करना । २-निषेध ।

प्रत्यारोप पुं० (सं) किसी के आरोप के उत्तर में

प्रदर्शन पुं० (सं) १-दिखाने का कार्य । २-दे० 'प्रदर्शनी' । ३-असन्तोष प्रकट करने के लिए जलूस बनाकर जनता से सहानुभूति प्राप्त करने के लिए नारे लगाना । (डिमॉन्स्ट्रेशन) ।
प्रदर्शनी स्त्री० (सं) अनेक प्रकार की वस्तुओं को दिखाने या बेचने के लिए एक स्थान पर रखना । २-वह स्थान जहाँ पर इस प्रकार की वस्तुएं रखी जायँ । नुमाइश । (एक्ज़ीबिशन) ।
प्रदर्शिका स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें किसी स्थान-विषयक सब बातों का वर्णन हो । (गाइड) ।
प्रदर्शित वि० (सं) १-दिखलाया हुआ । २-प्रदर्शनी में रखा हुआ । (एक्ज़ीबिटेड) ।
प्रदाता वि०(सं) देने वाला । दाता । पुं० (सं) १-बहुत बड़ा दानी । २-इन्द्र । ३-दान में दिया जाने वाला धन ।
प्रदान पुं० (सं) १-देने की क्रिया । २-दान । ३-विवाह । ४-अंकुश । ५-दिया जाने वाला धन (पेमेंट) । ६-सहायता आदि के लिये दिया जाने वाला या स्वीकृत धन । अनुदान । (ग्रांट) ।
प्रदायक पुं० (सं) देने वाला ।
प्रदायी पुं० (सं) दे० 'प्रदायक' ।
प्रदाह पुं० (सं) १-ज्वर, फोड़े, सूजन आदि के कारण शरीर में होने वाली जलन । दाह । २-ध्वंस
प्रदिशा स्त्री० (सं) दो दिशाओं के बीच की दिशा । कोण ।
प्रदिष्ट वि० (सं) १-आज्ञा दिया हुआ । दिखाया हुआ । २-जिसके सम्बन्ध में नियमादि के रूप में यह बताया गया हो कि वह किस प्रकार होना चाहिए । (प्रेस्क्राइब्ड) ।
प्रदीप पुं० (सं) १-दीपक । प्रकाश । २-तीसरे पहर गाये जाने वाला एक राग । ३-वह जिससे प्रकाश हो ।
प्रदीपक पुं० (सं) १-प्रकाश करने वाला । २-छोटा दीया । ३-स्पष्ट करने वाला ।
प्रदीपति स्त्री० (हि) दे० 'प्रदीप्ति' ।
प्रदीपन पुं० (सं) १-उजाला या प्रकाश करना । २-उज्ज्वल करना । ३-उत्तेजित करना ।
प्रदीपिका स्त्री० (सं) १-छोटी लालटेन । २-एक रागिनी । ३-बिजली की बत्ती । (इलेक्ट्रिक बल्ब) ४-अर्थ स्पष्ट करने वाली पुस्तिका ।
प्रदीप्त वि० (सं) १-जलता हुआ । जगमगाता हुआ । २-प्रकाशित । ३-उज्ज्वल । चमकदार ।
प्रदीप्ति स्त्री० (सं) १-रोशनी । प्रकाश । २-आभा । चमक ।
प्रदुमन पुं० (हि) दे० 'प्रद्युम्न' ।
प्रदेय वि० (सं) देने योग्य । दान करने योग्य ।
प्रदेश पुं० (सं) १-किसी को वह बड़ा भाग जिसके निवासियों की भाषा, रहन-सहन, शासन-पद्धति आदि एक हों । सूबा । प्रांत । (प्रोविंस, स्टेट) । २-स्थान । ३-अंग । ४-छोटी बालिश्त । ५-नाम ।
प्रदेशनी स्त्री०(सं) तर्जनी । अंगूठे के पास की उंगली
प्रदेशिनी स्त्री० (सं) दे० 'प्रदेशनी' ।
प्रदेशीय वि०(सं) प्रदेश सम्बन्धी । प्रदेश का ।
प्रदोष पुं० (सं) १-संध्या के समय होने वाला अंधेरा २-भारी दोष । ३-आर्थिक लाभ, स्वार्थ, पद आदि के कारण लोगों का पतन । (करप्शन) ।
प्रद्युम्न पुं० (सं) १-कामदेव । २-श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम ।
प्रद्योत पुं० (सं) १-किरण । रश्मि । आभा । दीप्ति
प्रद्योतन पुं० (सं) १-सूर्य । २-चमक । दीप्ति ।
प्रधन पुं० (सं) युद्ध में लूट का माल ।
प्रधान वि० (सं) १-मुख्य । सर्वोच्च । २-श्रेष्ठ । पुं० (सं) १-मुखिया । नेता । २-संसार का उपादान कारण । ३-बुद्धि । ४-ईश्वर । ५-सेनापति । ६-किसी संस्था का मुख्य अधिकारी । (चेयरमैन) ।
प्रधान-कार्यालय पुं० (सं) किसी व्यापारी संस्था या सरकारी विभाग का मुख्य या केन्द्रीय कार्यालय । (हैड ऑफिस) ।
प्रधानतः अव्य० (सं) मुख्य रूप से ।
प्रधानमंत्री पुं० (सं) किसी देश का सबसे बड़ा मंत्री केन्द्रिय मंत्रिमंडल के मंत्रियों में मुख्य मंत्री (प्राइम-मिनिस्टर) ।
प्रधानता स्त्री० (सं) प्रधान होने का भाव ।
प्रधान-सचिव पुं० (सं) किसी सरकारी विभाग को संभालने वाला मुख्य सचिव । (सेक्रेटरी जनरल, चीफ सेक्रेटरी) ।
प्रधान सैन्यावास व्यवस्थापक पुं० (सं) सैनिकों के आवास, साजसज्जा, रसद आदि का प्रबन्ध करने वाले सेना के विभाग का प्रधान अधिकारी । प्रधान रसद व्यवस्थापक । (क्वार्टर मास्टर जनरल) ।
प्रधानाध्यापक पुं०(सं) किसी विद्यालय या पाठशाला का मुख्य अध्यापक । (हैड मास्टर) ।
प्रधानामात्य पुं० (सं) महामात्य । प्रधान मंत्री ।
प्रधानी स्त्री० (हि) प्रधान का पद ।
प्रध्वंस पुं० (सं) १-नाश । विनाश । २-किसी पदार्थ की अतीत अवस्था । (सांख्यमत) ।
प्रन पुं० (हि) दे० 'प्रण' ।
प्रनत वि० (हि) दे० 'प्रणत' ।
प्रनति स्त्री० (हि) दे० 'प्रणति' ।
प्रनप्ता पुं० (सं) लड़की का लड़का ।
प्रनमन पुं०(हि) दे० 'प्रणमन' ।
प्रनमना क्रि० (हि) प्रणाम करना ।
प्रनय पुं० (हि) दे० 'प्रणय' ।
प्रनव पुं० (हि) दे० 'प्रणव' ।

प्रबोधक वि० (सं) १-जगाने वाला। समझाने वाला। २-सांत्वना देने वाला। चेताने वाला।

प्रबोधन पुं० (सं) १-जागरण। जगाना। २-ज्ञान देना। ३-विकसित करने का कार्य। ४-सांत्वना।

प्रबोधना क्रि० (हि) १-नींद से जगाना। २-सिखाना पाठ पढ़ाना। ३-सांत्वना देना। ४-ढारस देना।

प्रबोधनी स्त्री० (सं) दे० 'प्रबोधिनी'।

प्रबोधिनी। स्त्री० (सं) १-कार्तिक शुक्ल एकादशी जिस दिन देव चार मास शयन कर जागते हैं। २-जवासा।

प्रभंजन पुं० (सं) १-अत्यधिक तोड़ फोड़। टुकड़े टुकड़े कर डालना। २-पवन। वायु। आंधी।

प्रभंजनसुत पुं० (सं) हनुमान।

प्रभव पुं० (सं) १-निकास। उद्‌गमस्थल। २-जन्म। उत्पत्ति। ३-नदी का उद्‌गम स्थान। ४-उपादान-कारण। ५-शक्ति। पराक्रम। साठ संवत्सरों में से एक।

प्रभविष्णु वि० (सं) प्रभावशाली।

प्रभा स्त्री० (सं) १-आभा। दीप्ति। २-सूर्यबिंब। ३-सूर्य की एक पत्नी। ४-एक अप्सरा।

प्रभाउ पुं० (हि) दे० 'प्रभाव'।

प्रभाग पुं० (सं) भाग का भाग। भिन्न का भिन्न।

प्रभाकर पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-समुद्र। ४-अग्नि। ५-एक मीमांसादर्शनकार का नाम।

प्रभाकीट पुं० (सं) जुगनू। खद्योत।

प्रभात पुं० (सं) प्रातःकाल। सवेरा।

प्रभातफेरी स्त्री (सं) किसी उत्सव वाले दिन प्रातः गली मोहल्ले में उत्सव का प्रचार करते हुए जलूस बनाकर चक्कर लगाना।

प्रभाती स्त्री० (सं) प्रातःकाल गाया जाने वाला एक राग।

प्रभामंडल पुं० (सं) महात्माओं, देवताओं आदि के मुख के चारों ओर का दीप्ति मंडल जो चित्रों या मूर्तियों में देख पड़ता है।

प्रभार पुं० (सं) किसी कार्य या विभाग आदि की जुम्मेदारी। (चार्ज)।

प्रभारी वि० (सं) जिसके ऊपर किसी कार्य या विभाग आदि का उत्तरदायित्व हो। (इनचार्ज)।

प्रभारी राजदूत पुं० (सं) अस्थायी रूप से राजदूत के कार्य का भार संभालने वाला उप राजदूत। (चार्जेड फेयर)।

प्रभारी सदस्य पुं० (सं) वह सदस्य जिस पर किसी कार्य का भार सौंपा गया हो। (मेम्बर इनचार्ज)।

प्रभाव पुं० (सं) १-किसी वस्तु या बात पर किसी क्रिया से होने वाला परिणाम। (एफेक्ट)। २-प्रादुर्भाव। ३-महात्म्य। ४-किसी व्यक्ति की शक्ति, आतंक, सम्मान आदि पर होने वाला परिणाम। (इन्फ्लुएन्स)। ५-अन्तःकरण को किसी एक ओर करने का गुण। ६-सूर्य के एक पुत्र का नाम।

प्रभावकर वि० (सं) प्रभाव डालने वाला। असर डालने वाला।

प्रभाववान वि० (सं) प्रतापी। शक्तिशाली।

प्रभावशाली वि० (सं) जिसका अधिक प्रभाव हो।

प्रभावान् वि० (सं) दीप्तियुक्त।

प्रभावान्वित वि० (सं) जिस पर प्रभाव पड़ा हो।

प्रभावित वि० (सं) प्रभावान्वित।

प्रभास पुं० (सं) १-आभा। चमक। २-एक वसु का नाम। ३-एक तीर्थ।

प्रभासना क्रि० (हि) प्रकाशित होना। दिखाई पड़ना

प्रभास्वर वि० (सं) चमकीला। दीप्तियुक्त।

प्रभिन्न वि० (सं) १-अलग किया हुआ। विभक्त। २-अंगभंग किया हुआ। पुं० (सं) मतवाला हाथी

प्रभिन्नकरट वि० (सं) (वह हाथी) जिसके फटे हुए कुंभस्थल से तरल पदार्थ बह रहा है।

प्रभीत वि० (सं) अत्यधिक डरा हुआ। भयभीत।

प्रभु पुं० (सं) १-वह जो अनुग्रह या निग्रह करने में समर्थ हो। अधिपति। २-स्वामी। मालिक। ३-ईश्वर। ४-श्रेष्ठ पुरुष के लिए संबोधन। ५-शब्द। ६-पारा।

प्रभुता स्त्री० (सं) १-महत्व। बड़ाई। २-हुकूमत। शासनाधिकार। ३-वैभव।

प्रभुताई पुं० (हि) दे० 'प्रभुता'।

प्रभुभक्त वि० (सं) स्वामी भक्त। वफादार।

प्रभुशक्ति स्त्री० (सं) परम सत्ता। कोष और सेना का शक्ति।

प्रभुसत्ता स्त्री० (सं) पूर्ण सत्ता राज्य की वह सत्ता जिसके ऊपर और कोई सत्ता न हो। (सोवरेनटी)

प्रभू पुं० (हि) दे० 'प्रभु'।

प्रभूत वि० (सं) १-निकला हुआ। उत्पन्न। उद्‌गत। २-विपुल। अधिक। ३-उन्नत। ४-जो अच्छी प्रकार से हुआ हो। पुं० (सं) पंचभूत। तत्व।

प्रभूति स्त्री० (सं) १-निकास। उत्पत्ति। २-शक्ति। बल। ३-पर्याप्तता।

प्रभृति अव्य० (सं) इत्यादि। वगैरह।

प्रभेद पुं० (सं) १-भेद। भिन्नता। २-स्फोटन। फोड़कर निकालने की क्रिया।

प्रभेदक वि० (सं) विभाग करने वाला।

प्रभेव पुं० (हि) दे० 'प्रभेद'।

प्रमंडल पुं० (सं) १-पहिये का घुरा। २-प्रदेश का वह भाग जिसमें कई मंडल या जिले हों। (कमिश्नरी, डिवीजन)। ३-मिलकर व्यापार आदि करने के लिए बनाया गया समवाय। (कम्पनी)।

प्रमग्न वि० (सं) डूबा हुआ।

प्रमत्त वि० (सं) १-नशे में चूर। मस्त। २-पागल।

स्थिर करना।
प्रमानी वि० (हि) प्रमाण योग्य। मानने योग्य।
प्रमाप स्त्री० (सं) १-नापने या मापने की सुनिर्धारित या स्थिर की हुई तथा बहुमान्य नाप जिसके आधार पर अन्य मापों का निश्चय किया जाय। (स्टैंडर्ड)। २-योग्यता।
प्रमापक पुं० (सं) सिद्ध या प्रमाणित करने वाला। पुं० (सं) प्रमाण।
प्रमार्जक वि०(सं) १-साफ करने वाला। २-दूर करने या हटाने वाला।
प्रमार्जन पुं०(सं) १-धोना। साफ करना। २-झगड़ा मिटना। ३-हटाना।
प्रमित वि० (सं) १-परिमित। २-निश्चित। ३-अल्प ४-विदित। ५-प्रमाणित।
प्रमिताक्षरा स्त्री० (सं) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं जो क्रमशः इस प्रकार आते हैं, सगण, जगण और अन्त में दो जगण।
प्रमीत वि० (सं) १-मृत। मरा हुआ। २-यज्ञ के निमित्त मरा हुआ पशु। (डिकीज्ड)।
प्रमीलन पुं० (सं) निमीलन। आंखें मूंदना।
प्रमीला स्त्री० (सं) १-नींद। तंद्रा। २-थकावट। ३-शैथिल्य। ४-अर्जुन की एक स्त्री का नाम।
प्रमीलित वि० (सं) आंखें मूंदे हुए।
प्रमुक्त वि० (सं) १-छोड़ा या मुक्त किया हुआ। २-त्यागा हुआ।
प्रमुक्ति स्त्री० (सं) मोक्ष। निर्वाण।
प्रमुख वि० (सं) १-पहला। प्रथम। २-प्रधान। मुख्य ३-श्रेष्ठ। प्रतिष्ठित। पुं० (सं) दे० 'अध्यक्ष'। (स्पीकर)।
प्रमुख-सभा स्त्री० (सं) प्रख्यात या प्रमुख व्यक्तियों की सभा। (सीनेट)।
प्रमुग्ध वि० (सं) १-अचेत। बेहोश। २-अत्यन्त मनोहर। ३-हतबुद्धि।
प्रमुदित वि० (सं) हर्षित। आनन्दित। प्रसन्न।
प्रमूढ़ १-मूर्ख। मूढ़। २-घबड़ाया हुआ। व्याकुल।
प्रमृत वि० (सं) मृत। मरा हुआ। पुं० (सं) सूखी या पाला मारी हुई खेती।
प्रमेय वि०(सं)१-जो सिद्ध करके हो। २-जो नापा जा सके। पुं० (सं) जिसका ज्ञान प्रमाण द्वारा कराया जा सके।
प्रमेह पुं० (सं) एक रोग जिसमें वीर्य तथा शरीर की अन्य धातुएं मूत्र मार्ग से निकलती हैं।
प्रमेही वि० (सं) प्रमेह का रोगी।
प्रमोद पुं० (सं) १- हर्ष। २-सुख। ३-बृहस्पति के पहले युग के चौथे वर्ष का नाम।
प्रमोद-कर पुं० (सं) वह कर जो नाटक चलचित्र आदि मनोरंजन के लिए देखे जाने वाले तमाशों के टिकट के साथ लिया जाता है। (एन्टरटेनमेंट टैक्स)।
प्रमोद-गोष्ठी स्त्री० (सं०) मित्र मंडली के साथ किसी खुले स्थान पर मनोरंजन या खाने पीने का आयोजन करना। (पिकनिक पार्टी)।
प्रमोदित वि० (सं) प्रसन्न। हर्षित। पुं० (सं) कुबेर।
प्रमोदी वि० (सं) हर्षयुक्त। प्रसन्न।
प्रमोह पुं० (सं) १-मोह। मूर्छा।
प्रमोहन पुं० (सं) १-मोहित करना। २-एक प्रकार का अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रु के लोगों को प्रमोह उत्पन्न हो जाता है।
प्रमोहित वि० (सं) रतच्य। घबराया हुआ।
प्रयंक पुं० (सं) दे० 'पर्यंक'।
प्रयंत अव्य० (सं) दे० 'पर्यंत'।
प्रयत्न पुं० (सं) १-अध्यवसाय। प्रयास। कोशिश। २-वर्णों के उच्चारण में होने वाली क्रिया। (व्या०)
प्रयत्नवान वि० (सं) प्रयत्न या चेष्टा में लगा हुआ।
प्रयत्नशील वि० (सं) प्रयत्न में लगा हुआ।
प्रयाग पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो इलाहाबाद में गंगा और यमुना के संगम पर है।
प्रयागवाल पुं० (हि) प्रयाग का पंडा।
प्रयाण पुं० (सं) १-प्रस्थान। जाना। २-चढ़ाई। युद्ध यात्रा। ३-आरम्भ। ४-इस लोक को छोड़कर परलोक जाना। (डिपार्चर)।
प्रयाणकाल पुं० (सं) १-यात्रा करने का समय। २-मृत्यु का समय।
प्रयाणपटह पुं० (सं) युद्ध के समय सेना इकट्ठा करने के लिये बजाया हुआ डंका।
प्रयान पुं० (हि) दे० 'प्रयाण'।
प्रयास पुं० (सं) १-प्रयत्न। चेष्टा। उद्योग। २-परिश्रम। ३-इच्छा।
प्रयुक्त वि० (सं) १-भली भाँति जोड़ा हुआ। २-सम्मिलित। ३-जिसका प्रयोग हो चुका हो। (यूज्ड) ४-प्रेरित किया हुआ।
प्रयुक्त-संस्कार पुं० (सं) साफ करके चमकाया हुआ। (रत्नादि)।
प्रयुत वि० (सं) १-खूब मिला हुआ। २-मिलाजुला अस्पष्ट। ३-सहित। ४-दस लाख।
प्रयोक्ता पुं० (सं) १-प्रयोग करने वाला। २-नियोजित करने वाला। ३-ब्याज पर रुपया उधार देने वाला। महाजन। ४-अभिनयकर्त्ता। (नाटक)।
प्रयोग पुं०(सं) १-किसी कार्य में लगना। २-किसी वस्तु का काम में लाया जाना। व्यवहार। ३-किसी बात को समझने या जानने के निमित्त अथवा परीक्षा आदि के रूप में होने वाला कार्य। (एक्सपेरिमेंट)। ४-अभिनय करना। ५-रोग का उपचार। ६-अनुमान के पांच अंगों का उच्चारण। ७-धनवृद्धि

के लिए धन लगाना।

प्रयोगज्ञ वि० (सं) जिसे अभ्यास तथा अनुभव प्राप्त हो।

प्रयोगतः (सं) (अ) प्रयोग द्वारा। अनुसार। रूप में

प्रयोगनिपुण वि० (सं) 'प्रयोगज्ञ'।

प्रयोगपत्र पुं० (सं) बस या रेलगाड़ी में कुछ नियत समय तक यात्रा करने का अधिकार प्रदान करने वाला पत्र। (टिकट)।

प्रयोगपत्र कार्यालय पुं० (सं) बस, रेलगाड़ी आदि [illegible] करने के लिए अधिकार पत्र जारी या [illegible]

[illegible]

जहां पर किसी विषय का विशेषतः रसायनिक प्रयोग या जांच होती हो (लेबोरेटरी)।

प्रयोगातिशय पुं० (सं) नाटक में प्रस्तावना का भेद

प्रतियोगार्थ पुं० (सं) मुख्य कार्य को फलीभूत करने के लिए किया गया गौण कार्य।

प्रयोगार्ह वि० (सं) जिसका प्रयोग किया जा सके।

प्रयोगी पुं० (हि) प्रयोग करने वाला।

प्रयोजक पुं० (सं) १-प्रयोग करने वाला। [illegible] दान करने वाला। ३-प्रेरक। ४-व्यवस्था- वाला। ५-ग्रन्थ लेखक।

प्रयोजन पुं० (सं) १-काम। कार्य। अर्थ। २-अभिप्राय। ३-उद्देश्य। ४-उपयोग।

प्रयोजनवती लक्षणा स्त्री० (सं) वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करे।

प्ररोचना स्त्री० (सं) १-उत्तेजना। बढ़ावा। २-रुचि उत्पन्न करने की क्रिया। ३-नाटक की प्रस्तावना का एक अंग जिसमें आगे होने वाले दृश्य का रोचक वर्णन होता है।

प्ररोचन पुं० (सं) बहलाना। ऊपर उठाना।

प्ररोह पुं० (सं) १-आरोह। चढ़ाव। २-उगना। जमना। ३-उत्पत्ति। ४-अंकुर। कोंपल।

प्ररोहण पुं० (सं) १-आरोह। चढ़ाव। २-उगना। जमना। ३-उत्पत्ति। ४-अंकुर।

प्रलंब वि० (सं) १-लम्बा। २-नीचे की ओर दूर तक लटकता हुआ। ३-शिथिल। सुस्त। ४-टंगा हुआ। ५-निकला हुआ। पुं०(सं) १-लटकाव। २-झुकाव। ३-टहनी। शाखा। ४-गले में पड़ी हुई फूल माला। ५-स्त्री के कुच। स्तन।

प्रलंबन पुं० (सं) लटकाव। झुकाव। (सस्पेंशन)

प्रलंब बाहु वि० (सं) जिसकी बाहें बहुत लम्बी हों।

प्रलंबित वि० (सं) खूब नीचे तक लटकाया हुआ। (सस्पेंडेड)

प्रलंबी वि० (सं) १-दूर तक लटकने वाला, लम्बा। २-सहारा लेने वाला।

प्रलपन पुं० (सं) १—कहना। कथन। २—ऊटपटांग बकना।

प्रलयकर वि० (सं) प्रलय के समान नाशकारी।

प्रलय पुं० (सं) १-लय को प्राप्त होना। नाश। २—मृत्यु। विनाश। ३-साहित्य में एक सात्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने पर स्मृति नष्ट हो जाती है। ४-अचेतनता। मूर्च्छा। ५-सृष्टि का सर्वनाश।

प्रलयकर वि० (सं) दे० 'प्रलयंकर'।

[illegible]

प्रलाप पुं० (सं) अनाप-शनाप बातचीत। व्यर्थ की बकवाद।

प्रलापक पुं० (सं) सन्निपात रोग जिसमें रोगी अंड-बंड बोलता है।

प्रलापी वि० (सं) प्रलाप करने वाला।

प्रलाभी वि० (सं) १-जिसे करने से अत्यधिक लाभ हो। पद या कार्य। २-लाभदायक। (ल्यूक्रेटिव)

[illegible]

प्रलीनता स्त्री० (सं) १-विलीनता। नाश। २-[illegible] ३-जड़त्व।

प्रलुब्ध वि० (सं) लालची। जो लालच करता हो। लोभी।

प्रलुब्धा वि० (सं) (वह स्त्री) जिसे किसी पर-पुरुष से प्रेम हो गया हो।

प्रलून वि० (सं) टुकड़े किया हुआ। पुं० (सं) एक प्रकार का कीड़ा।

प्रलेख पुं० (सं) किसी प्रामाणिक बात या कानूनी दृष्टि से किसी पक्ष या मामले के समर्थन में उपस्थित किए जाने वाला लेख या लिखित पत्र। (डोक्यूमेंट, डीड)

प्रलेखीय चलचित्र पुं० (सं) वह चलचित्र जिसमें किसी देश के पुरातत्व, औद्योगिक प्रगति, महत्वपूर्ण घटना आदि का चित्रण किया गया हो। (डोक्युमेंटरी फ़िल्म)

प्रलेप पुं० (सं) लेप। उबटन। मलहम।

प्रलेपक पुं० (सं) १-लेप करने वाला। २-एक प्रकार का मन्द ज्वर।

प्रलेपन पुं० (सं) लेप लगाने या करने काम।

प्रलोटन पुं० (सं) जमीन पर लोटना पोटना।

प्रलोप पुं० (सं) विलय। नाश।

प्रलोभ पुं० (सं) लालच। अत्यधिक लोभ।

प्रलोभक वि० (सं) प्रलोभन या लालच देने वाला।

स्थिर करना।
प्रमानी वि० (हि) प्रमाण योग्य। मानने योग्य।
प्रमाप स्त्री० (सं) १-नापने या मापने की सुनिर्धारित या स्थिर की हुई तथा बहुमान्य नाप जिसके आधार पर अन्य मापों का निश्चय किया जाय। (स्टैंडर्ड)। २-योग्यता।
प्रमापक पुं० (सं) सिद्ध या प्रमाणित करने वाला। पुं० (सं) प्रमाण।
प्रमार्जक वि०(सं) १-साफ करने वाला। २-दूर करने या हटाने वाला।
प्रमार्जन पुं०(सं) १-धोना। साफ करना। २-झगड़ा ःदना। ३-हटाना।
प्रमित वि० (सं) १-परिमित। २-निश्चित। ३-अल्प ४-विदित। ५-प्रमाणित।
प्रमिताक्षरा स्त्री० (सं) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं जो क्रमशः इस प्रकार आते है, सगण, जगण और अन्त में दो जगण।
प्रमीत वि० (सं) १-मृत। मरा हुआ। २-यज्ञ के निमित्त मरा हुआ पशु। (डिकीज्ड)।
प्रमीलन पुं० (सं) निमीलन। आंखें मूंदना।
प्रमीला स्त्री० (सं) १-नींद। तंद्रा। २-थकावट। ३-शैथिल्य। ४-अर्जुन की एक स्त्री का नाम।
प्रमीलित वि० (सं) आंखें मूंदे हुए।
प्रमुक्त वि० (सं) १-छोड़ा या मुक्त किया हुआ। २-त्यागा हुआ।
प्रमुक्ति स्त्री० (सं) मोक्ष। निर्वाण।
प्रमुख वि० (सं) १-पहला। प्रथम। २-प्रधान। मुख्य ३-श्रेष्ठ। प्रतिष्ठित। पुं० (सं) दे० 'अध्यक्ष'। (स्पीकर)।
प्रमुख-सभा स्त्री० (सं) प्रख्यात या प्रमुख व्यक्तियों की सभा। (सीनेट)।
प्रमुग्ध वि० (सं) १-अचेत। बे होश। २-अत्यन्त मनोहर। ३-हतबुद्धि।
प्रमुदित वि० (सं) हर्षित। आनन्दित। प्रसन्न।
प्रमूढ़ १-मूर्ख। मूढ़। २-घबड़ाया हुआ। व्याकुल।
प्रमृत वि० (सं) मृत। मरा हुआ। पुं० (सं) सूखी या पाला मारी हुई खेती।
प्रमेय वि०(सं)१-जो सिद्ध करके हो। २-जो नापा जा सके। पुं० (सं) जिसका ज्ञान प्रमाण द्वारा कराया जा सके।
प्रमेह पुं० (सं) एक रोग जिसमें वीर्य तथा शरीर की अन्य धातुएं मूत्र मार्ग से निकलती हैं।
प्रमेही वि० (सं) प्रमेह का रोगी।
प्रमोद पुं० (सं) १- हर्ष। २-सुख। ३-बृहस्पति के पहले युग के चौथे वर्ष का नाम।
प्रमोद-कर पुं० (सं) वह कर जो नाटक चलचित्र आदि मनोरंजन के लिए देखे जाने वाले तमाशों के टिकट के साथ लिया जाता है। (एन्टरटेनमैंट टैक्स)।
प्रमोद-गोष्ठी स्त्री० (सं०) मित्र मंडली के साथ किस खुले स्थान पर मनोरंजन या खाने पीने क आयोजन करना। (पिकनिक पार्टी)।
प्रमोदित वि० (सं) प्रसन्न। हर्षित। पुं० (सं) कुबेर
प्रमोदी वि० (सं) हर्षयुक्त। प्रसन्न।
प्रमोह पुं० (सं) १-मोह। मूर्छा।
प्रमोहन पुं० (सं) १-मोहित करना। २-एक प्रका का अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रु के लोगों को प्रमो उत्पन्न हो जाता है।
प्रमोहित वि० (सं) स्तब्ध। घबराया हुआ।
प्रयंक पुं० (सं) दे० 'पर्यंक'।
प्रयंत अव्य० (सं) दे० 'पर्यंत'।
प्रयत्न पुं० (सं) १-अध्यवसाय। प्रयास। कोशिश। २-वर्णों के उच्चारण में होने वाली क्रिया। (व्या०)
प्रयत्नवान वि० (सं) प्रयत्न या चेष्टा में लगा हुआ।
प्रयत्नशील वि० (सं) प्रयत्न में लगा हुआ।
प्रयाग पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो इलाहाबाद में गंगा और यमुना के संगम पर है।
प्रयागवाल पुं० (हि) प्रयाग का पंडा।
प्रयाण पुं० (सं) १-प्रस्थान। जाना। २-चढ़ाई। युद्ध यात्रा। ३-आरम्भ। ४-इस लोक को छोड़कर परलोक जाना। (डिपार्चर)।
प्रयाणकाल पुं० (सं) १-यात्रा करने का समय। २-मृत्यु का समय।
प्रयाणपटह पुं० (सं) युद्ध के समय सेना इकट्ठा करने के लिये बजाया हुआ डंका।
प्रयान पुं० (हि) दे० 'प्रयाण'।
प्रयास पुं० (सं) १-प्रयत्न। चेष्टा। उद्योग। २-परिश्रम। ३-इच्छा।
प्रयुक्त वि० (सं) १-भली भाँति जोड़ा हुआ। २-सम्मिलित। ३-जिसका प्रयोग हो चुका हो। (यूज्ड) ४-प्रेरित किया हुआ।
प्रयुक्त-संस्कार पुं० (सं) साफ करके चमकाया हुआ। (रत्नादि)।
प्रयुत वि० (सं) १-खूब मिला हुआ। २-मिलाजुला अस्पष्ट। ३-सहित। ४-दस लाख।
प्रयोक्ता पुं० (सं) १-प्रयोग करने वाला। २-नियो-जित करने वाला। ३-व्याज पर रुपया उधार दे वाला। महाजन। ४-अभिनयकर्त्ता। (नाटक)
प्रयोग पुं०(सं) १-किसी कार्य में लगना। २-कि वस्तु का काम में लाया जाना। व्यवहार। ३-कि बात को समझने या जानने के निमित्त अथ परीक्षा आदि के रूप में होने वाला कार्य। (एक्स मेंट)। ४-अभिनय करना। ५-रोग का उपच ६-अनुमान के पांच अंगों का उच्चारण। ७-धन

धन लगाना।
वि० (सं) जिसे अभ्यास तथा अनुभव प्राप्त

(सं) (सं) प्रयोग द्वारा। अनुसार। रूप में
युक्त वि० (सं) 'प्रयोगज्ञ'।
त्र पुं० (सं) बस या रेलगाड़ी में कुछ नियत
तक यात्रा करने का अधिकार प्रदान करने
पत्र। (टिकट)।
य कार्यालय पुं० (सं) बस, रेलगाड़ी आदि
यात्रा करने के लिए अधिकार पत्र जारी या
का कार्यालय। टिकट घर। (बुकिंग ऑफिस)
विधि स्त्री० (सं) प्रयोगात्मक विधि। (मीमांसा)
शाला स्त्री० (सं) रसायन शाला। वह स्थान
पर किसी विषय का विशेषतः रसायनिक प्रयोग
जाँच होती हो (लेबोरेटरी)।
तिशय पु० (सं) नाटक में प्रस्तावना का भेद
गार्थ पु० (सं) मुख्य कार्य को फलीभूत करने
लिए किया गया गौण कार्य।
र्ह वि० (सं) जिसका प्रयोग किया जा सके।
पुं० (हि) प्रयोग करने वाला।
क पुं० (सं) १-प्रयोग करने वाला। २-अनु-
न करने वाला। ३-प्रेरक। ४-व्यवस्था करने
ला। ५-ग्रन्थ लेखक।
जन पु० (सं) १-काम। कार्य। अर्थ। २-अभि-
य। ३-उद्देश्य। ४-उपयोग।

न-न कान का क्रिया। ३-नाटक की प्रस्तावना
एक अंग जिसमें आगे होने वाले दृश्य का
चक वर्णन होता है।
धन पुं० (सं) चढ़ाना। ऊपर उठाना।
ह पुं० (सं) १-आरोह। चढ़ाव। २-उगना।
मना। ३-उत्पत्ति। ४-अंकुर। कोंपल।
हण पुं० (सं) १-आरोह। चढ़ाव। २-उगना।
मना। ३-उत्पत्ति। ४-अंकुर।
ब वि० (सं) १-लम्बा। २-नीचे की ओर दूर तक
टकता हुआ। ३-शिथिल। सुस्त। ४-टंगा हुआ।
-निकला हुआ। पुं०(सं) १-लटकाव। २-झुकाव।
-टहनी। शाखा। ४-गले में पड़ी हुई फूल माला।
-स्त्री के कुच। स्तन।
म्बन पुं० (सं) लटकाव। झुकाव। (सस्पैंशन)
म्ब बाहु वि० (सं) जिसकी बाहें बहुत लम्बी हों।
म्बित वि० (सं) खूब नीचे तक लटकाया हुआ।
(सस्पेंडेड)
म्बी वि० (सं) १-दूर तक लटकाने वाला, लम्बा।
२-सहारा देने वाला।

प्रलपन पु० (सं) १—कहना। कथन। २—ऊटपटांग
बकना।
प्रलयंकर वि० (सं) प्रलय के समान नाशकारी।
प्रलय पु० (सं) १-लय को प्राप्त होना। नाश। २—
मृत्यु। विनाश। ३-साहित्य में एक सात्विक भाव
जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने पर स्मृति नष्ट हो
जाती है। ४-अचेतनता। मूर्च्छा। ५-सृष्टि का
सर्वनाश।
प्रलयकर वि० (सं) दे० 'प्रलयंकर'।
प्रलयकारी वि० (सं) दे० 'प्रलयंकर'।
प्रलयकाल पु० (सं) संसार के विनाश का समय।
प्रलय जलधर पु० (सं) प्रलय के समय के बादल।
प्रलाप पुं० (सं) अनाप-शनाप बातचीत। व्यर्थ की
बकवाद।
प्रलापक पुं० (सं) सन्निपात रोग जिसमें रोगी अंड-
बंड बोलता है।
प्रलापी वि० (सं) प्रलाप करने वाला।
प्रलाभी वि० (सं) १-जिसे करने से अत्यधिक लाभ
हो। पद या कार्य। २-लाभदायक। (ल्यूक्रिएटिव)
प्रलिप्त वि० (सं) चिपटा हुआ, लिपटा हुआ। लिप्त।
प्रलीन वि० (सं) १-तिरोहित। समाया हुआ। २—
चेष्टा रहित। जड़वत।
प्रलीनता स्त्री० (सं) १-विलीनता। नाश। २-अचेत
३-जड़त्व।
प्रलुब्ध वि० (सं) लालची। जो लालच करता हो।
लोभी।
प्रलुब्धा वि० (सं) (वह स्त्री) जिसे किसी पर-पुरुष
से प्रेम हो गया हो।
प्रलून वि० (सं) टुकड़े किया हुआ। पुं० (सं) एक
प्रकार का कीड़ा।
प्रलेख पुं० (सं) किसी प्रामाणिक बात या कानूनी
दृष्टि से किसी पक्ष या मामले के समर्थन में उप-
स्थित किए जाने वाला लेख या लिखित पत्र। (डोक्यू-
मेंट, डीड)
प्रलेखीय चलचित्र पु० (सं) वह चलचित्र जिसमें
किसी देश के पुरातत्व, औद्योगिक प्रगति, महत्वपूर्ण
घटना आदि का चित्रण किया गया हो। (डोक्यु-
मेंटरी फिल्म)
प्रलेप पु० (सं) लेप। उबटन। मलहम।
प्रलेपक पुं० (सं) १-लेप करने वाला। २-एक प्रकार
का मन्द ज्वर।
प्रलेपन पुं० (सं) लेप लगाने या करने काम।
प्रलोटन पुं० (सं) जमीन पर लोटना पोटना।
प्रलोप पुं० (सं) विलय। नाश।
प्रलोभ पुं० (सं) लालच। अत्यधिक लोभ।
प्रलोभक वि० (सं) प्रलोभन या लालच देने वाला।

प्रलोभन पुं० (सं) १-लोभ या लालच देना। २-वह काम या बात जो किसी को लुभा कर अपनी ओर आकर्षित करने के लिये की गई हो। (एल्योरमेंट टेम्प्टेशन)
प्रलोभित वि० (सं) मुग्ध। ललचाया हुआ। मोहित।
प्रलोभी वि० (हि) लोभ में फँसने वाला। लुब्ध।
प्रवंचक पुं० (सं) धोखेबाज। धूर्त। बहुत बड़ा ठग।
प्रवंचन पुं० (सं) धोखा देना। ठगना।
प्रवंचना पुं० (सं) धूर्तता। ठगी। धोखेबाजी।
प्रवंचित वि० (सं) जो ठगा गया हो।
प्रवक्ता पुं० (सं) १-अच्छी प्रकार बोलने या कहने वाला। २-वेदादि का उपदेश करने वाला। ३-किसी संस्था या विभाग की ओर से उसकी नीति या बात अधिकृत रूप से कहने वाला (स्पोक्समैन)
प्रवचन पुं० (सं) १-भली भाँति खोलकर समझा कर कहना। अर्थ खोलकर समझाना। २-धार्मिक या नैतिक बातों की कीजाने वाली व्याख्या।
प्रवण पुं० (सं) १-भूमि का ढाल या उतार। २-पहाड़ का किनारा। ३-चौराहा। वि० (सं) १-ढलवाँ। २-झुका हुआ। ३-रत। प्रवृत्त। ४-नम्र। ५-तत्पर। उत्सुक। ६-अनुकूल। ७-उदार। ८-निपुण। ९-लम्बा।
प्रवणता स्त्री० (सं) प्रवण होने का भाव।
प्रवत्स्यत्पतिका स्त्री० (सं) वह नायिका जिसका पति विदेश जाने वाला हो।
प्रवत्स्यत्प्रेयसी स्त्री० (सं) प्रवत्स्यत्पतिका।
प्रवत्स्यद्भर्तृका स्त्री० (सं) प्रवत्स्यत्पतिका।
प्रवर वि० (सं) १-प्रधान। मुख्य। २-श्रेष्ठ। ३-योग्यता में अधिक। (सुपीरियर)। पुं० (सं) १-गोत्र प्रवर्तक ऋषि। २-सेनापति। ३-किसी विषय का विशेषज्ञ। (एक्सपर्ट)।
प्रवरसमिति स्त्री० (सं) चुने हुए विशेषज्ञों की एक विशेष समिति जो किसी विषय की छानबीन करने के लिये बनाई गई हो। (सेलेक्ट कमिटी)।
प्रवर-स्थापना पुं०(सं) किसी कार्यालय या विभाग में काम करने वाले प्रवर कर्मचारी। (सुपीरियर स्टाफ)।
प्रवर्ग पुं० (सं) कई वर्गों, श्रेणियों या भागों में से एक। (केटेगरी)।
प्रवर्तक पुं०(सं) १-सञ्चालक। आरम्भ करने वाला। प्रचलित करने वाला। २-किसी को किसी कार्य (विशेषतः अनुचित) में लगाने या उसकी सहायता करने वाला। (एबेटर) ३-किसी नवीन बात को निकालने या चलाने वाला। (ओरिजीनेटर)। ४-पंच। ५-रंग-मंच में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें सूत्रधार वर्तमान समय के वर्णन की चर्चा करता हुआ रंग-मंच पर आता है।
प्रवर्तन पुं० (सं) १-कार्य का आरम्भ करना। २-प्रचलित करना। ३-प्रवृत्ति। ४-कार्य संचालन। ५-किसी अनुचित बात के लिए उकसाना। (एबेटमेण्ट)।
प्रवर्तित वि० (सं) १-आरम्भ किया हुआ। २-निकाला हुआ। ३-उत्तेजित। ४-प्रेरित।
प्रवर्द्धन पुं० (सं) वृद्धि। बढ़ती।
प्रवर्धन पुं० (सं) दे० 'प्रवर्द्धन'।
प्रवर्षण पुं० (सं) १-प्रथम वृष्टि। वृष्टि। २-किष्किन्धा के पास के एक पर्वत का नाम।
प्रवह पुं० (सं) १-तेज बहाव। २-सात वायुओं में एक। ३-घर नगर आदि से बाहर निकलना।
प्रवहमान वि० (सं) तेज बहने वाला। प्रवाहशील
प्रवात पुं०(सं)१-हवा का झोंका। २-अंधड़। आंधी ३-हवादार स्थान। ४-ढाल। उतार। वि० (सं) हवा में हिलता हुआ।
प्रवाद पुं० (सं) १-बातचीत। २-जनश्रुति। अफवाह (रयूमर)। ३-अपवाद। ४-किसी को दी जाने वाली सूचना। (रिपोर्ट)।
प्रवादक पुं० (सं) वाद्य-यन्त्र बजाने वाला (सङ्गीत
प्रवादी पुं० (सं) प्रवाद करने वाला।
प्रवान पुं० (हि) दे० 'प्रमाण'।
प्रवारण पुं० (सं) १-निषेध। विरोध। २-इच्छापूर्ति करना। महादान।
प्रवाल पुं० (सं) दे० 'प्रवाल'।
प्रवास पुं० (सं) १-स्वदेश छोड़कर दूसरे देश में बसना। २-विदेश। ३-यात्रा।
प्रवासगत वि० (सं) विदेश गया हुआ।
प्रवासन पुं० (सं) १-विदेश वास। २-घर से बाहर निकलना। देशनिकाला। ३-वध। हत्या।
प्रवासस्थ वि० (सं) दे० 'प्रवासगत'।
प्रवासस्थित वि० (सं) दे० 'प्रवासगत'।
प्रवासी वि० (सं) विदेश में रहने वाला।
प्रवाह पुं० (सं) १-जल का बहाव। २-बहता हुआ जल। धारा। ३-काम का चलना या जारी रहना ४-चलता हुआ क्रम। प्रवृत्ति। ५-झुकाव। व्यवहार।
प्रवाहक पुं०(सं) १-अच्छी तरह ले जाने वाला। प्रेत। पिशाच।
प्रवाहमान वि० (सं) अधिक प्रवाह वाला।
प्रवाहमान ईक्षण पुं० (सं) नदी के प्रवाह की नाप (स्ट्रीम गेजिंग ऑबजर्वेशन)।
प्रवाहिका स्त्री० (सं) १-बहने वाली। २-दस्तों का रोग।
प्रवाहित वि० (सं) १-बहता हुआ। २-ढोया हुआ
प्रवाहिनी स्त्री० (सं) नदी।
प्रवाही वि० (सं) १-बहाने वाला। २-बहने वाला ३-तरल। द्रव्य।

प्रविष्ट पुं० (सं) सन्निवेश का भाव।
प्रविष्ट रोगी पुं० (सं) वह रोगी जिसका चिकित्सालय में ही भरती करके इलाज किया जाय। (इनडोर-पेशेंट)।
प्रविष्टि स्त्री० (सं) १-पुस्तक या खाते में लिखने या चढ़ाने की क्रिया। २-वह चीज जो खाते या बही ... ।

प्रवीणता स्त्री० (सं) निपुणता। चतुराई। दक्षता।
प्रवीण श्रम पुं० (सं) वह श्रमिक जो अपने कार्य में निपुण हो। (स्किल्ड लेबर)।
प्रवीन वि० (हि) दे० 'प्रवीण'। स्त्री० (हि) अच्छी बीन।
प्रवीर वि० (सं) सुभट। महान योद्धा।
प्रवृत्त वि० (सं) १-किसी बात की ओर झुका हुआ। रत। तत्पर। २-प्रस्तुत। उद्यत। ३-उत्पन्न।
प्रवृत्ति स्त्री० (सं) १-बहाव। प्रवाह। २-मन का किसी ओर होने वाला झुकाव। लगन। (टैन्डेन्सी) ३-संसार के धन्धों में लीन होना। ४-न्याय में एक प्रकार का यत्न। ५-उत्पत्ति का आरम्भ।
प्रवृत्तिमार्ग पुं० (सं) दुनिया के झंझटों में फंसे रहना।
प्रवृद्ध वि० (सं) १-पूरा बढ़ा हुआ। वृद्धियुक्त। २-फैला हुआ। विस्तारित। ३-प्रौढ़। ४-उग्र।
प्रवेग पुं० (सं) १-अत्यधिक वेग। (टेम्पो)। २-काम करने की तीव्र गति। ३-किसी वस्तु आदि की तीव्र गति से आगे बढ़ने की रफ्तार। (वेलोसिटी)।
प्रवेणि स्त्री० (सं) १-बालों का जूड़ा या वेणी। केश-विन्यास। २-हाथी की झूल। ३-जल प्रवाह। ४-रङ्गीन ऊनी कपड़े का थान।
प्रवेणी स्त्री० (सं) दे० 'प्रवेणि'।
प्रवेश पुं० (सं) १-भीतर जाना। घुसना। २-किसी विषय की जानकारी। ३-गति। रसाई। पहुँच। ४-किसी वर्ग, दल, कक्षा आदि में विशिष्ट नियम पालन करके पहुँचना या लिया जाना। (एड्मीशन) ५-द्वार।
प्रवेशक पुं० (सं) १-प्रवेश करने वाला। २-नाटक का वह स्थल जहाँ अभिनेता दो अंकों के बीच की घटना संवाद द्वारा देता है।
विशेष स्थान पर जाने का अधिकार प्राप्त हो। (टिकट, पास)।
प्रवेश-परिषद् पुं० (सं) वह परिषद् जो किसी संस्था, या शिक्षालय कार्यालय आदि में काम सीखने वालों को छांटती है। (एडमीशन बोर्ड)।
प्रवेशरोधन पुं०(सं) सत्ता। अपनी मांगे पूरी कराने ... सामने धरना ... ।रेटिंग)। ... में सम्मिलित ... दिये जाने वाला शुल्क। (एडमीशन फी)। २-किसी स्थान में प्रवेश करने समय दिया जाने वाला शुल्क। (एन्ट्रेन्स-फी)।
प्रवेशिका स्त्री० (सं) १-प्रवेश-पत्र। २-प्रवेश-शुल्क। ३-किसी विषय की पहली पुस्तक। (प्राइमर)।
प्रवेशिका-परीक्षा स्त्री० (सं) उच्च शिक्षालय में प्रवेश करने से पहले दी जाने वाली परीक्षा। (एन्ट्रेन्स-एक्जामिनेशन)।
प्रवेशित वि० (सं) प्रवेश कराया हुआ।
प्रवेष्टा पुं० (सं) प्रवेश करने वाला। घुसने वाला।
प्रव्रजन पुं० (सं) १-घरबार छोड़ कर संन्यास लेना २-अपना देश छोड़ कर दूसरे देश बसने के लिए चले जाना। (माइग्रेशन)।
प्रव्रज्या स्त्री० (सं) १-विदेश गमन। २-संन्यास।
प्रव्रज्याग्रहण पुं० (सं) संन्यास लेना।
प्रशंस स्त्री० (सं) दे० 'प्रशंसा'। वि० (सं) प्रशंसा के योग्य।
प्रशंसक वि० (सं) प्रशंसा करने वाला। खुशामदी।
प्रशंसन पुं० (सं) १-सराहना। २-प्रशंसा करना। ३-धन्यवाद।
प्रशंसना क्रि० (हि) सराहना। प्रशंसा करना।
प्रशंसनीय वि० (सं) प्रशंसा के योग्य।
प्रशंसा स्त्री०(सं) गुण-वर्णन। श्लाघा। स्तुति। तारीफ
प्रशंसा घोष पुं० (सं) किसी वक्ता के भाषण करते समय उसके कथन के अनुमोदन करने के लिए श्रोताओं द्वारा की गई ध्वनि। (एप्लॉज)।
प्रशंसित वि० (सं) जिसकी प्रशंसा की गई हो।
प्रशंसोपमा स्त्री० (सं) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय की विशेष प्रशंसा करके उपमान की प्रशंसा व्यक्त की जाती है।

प्रशंस्य वि० (सं) प्रशंसा के योग्य
प्रशम पुं० (सं) १-शमन। शांति। २-निवृत्ति। नाश। ३-रंतिदेव के पुत्र का नाम। (भागवत)।
प्रशमन पुं० (सं) १-शांति। २-नाश। ३-वध। ४-प्रतिपादन। ५-अस्त्र प्रहार। ६-आपसी झगड़ों को समझौते से निबटाना। (कम्पाउंडिंग)।
प्रशस्त वि० (सं) १-अच्छा। प्रशंसनीय। २-श्रेष्ठ। उत्तम। ३-उचित। उपयुक्त। ४-चौड़ा या लम्बा चौड़ा। ५-साफ। सुथरा।
प्रशस्ति स्त्री० (सं) १-स्तुति। प्रशंसा। २-प्रशंसा-सूचक वाक्य जो किसी को पत्र लिखते समय पत्र के आदि में लिखा जाता है। ३-प्राचीनकाल के वह आज्ञापत्र जो चट्टानों या ताम्रपत्रों पर खोदे जाते थे। ४-प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों पर आदि या अन्त में लिखी कुछ पंक्तियां जिनसे उसके कर्ता, विषय, काल आदि का कुछ पता चलता है।
प्रशस्तिगाथा स्त्री० (सं) किसी की प्रशंसा में लिखा हुआ गीत।
प्रशस्तिपट्ट पुं० (सं) लेख-पत्र।
प्रशस्य वि०(सं) १-प्रशंसा के योग्य। २-उत्तम। श्रेष्ठ।
प्रशांत वि० (सं) १-स्थिर। अचंचल। २-निश्चल प्रवृत्तिवाला। शांत। पुं० (सं) अमेरिका और एशिया के बीच का महासागर। (पेसिफिक)।
प्रशांतकाय वि० (सं) सन्तुष्ट।
प्रशांतचित्त वि० (सं) जिसका मन शांत हो।
प्रशांतात्मा पुं० (सं) १-शिव। महादेव। २-शांतचित्त
प्रशांति स्त्री० (सं) १-पूर्णशांति। २-वह पूर्णशांति जो किसी देश में हो और उपद्रव आदि का अभाव हो। (ट्रॅंक्विलिटी)।
प्रशाखा स्त्री० (सं) शाखा में से निकली हुई छोटी शाखा।
प्रशासक पुं० (सं) १-शासन करने वाला। २-राज्य का प्रशासन या प्रबन्ध करने वाला व्यक्ति। (एडमिनिस्ट्रेटर)।
प्रशासकता स्त्री०(सं) प्रशासन चलाने की कला। प्रशासक का पद। (एडमिनिस्ट्रेटरशिप)।
प्रशासन पुं० (सं) १-शिष्य आदि को दी जाने वाली कर्तव्य की शिक्षा। २-राज्य के परिचालन का प्रबंध या व्यवस्था। (एडमिनिस्ट्रेशन)।
प्रशासन अधिकार पुं० (सं) प्रशासन पर डाला गया अतिरिक्त भार या जुम्मेदारी। (एडमिनिस्ट्रेटिव सरचार्ज)।
प्रशासनपत्र पुं० (सं) न्यायालय द्वारा जारी किया गया वह आदेश पत्र जिसमें इच्छापत्रहीन संपत्ति की देखभाल करने के लिए प्रशासक की नियुक्ति की गई हो। (लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन)।
प्रशासन प्रभार पुं०(सं) ठीक प्रकार से प्रशासन करने का उत्तरदायित्व। (एडमिनिस्ट्रेटिव चार्ज)।
प्रशासन भंग पुं० (सं) आर्थिक संकट या आन्तरिक उपद्रवों के कारण शासन व्यवस्था का भंग हो जाना। (ब्रेक डाउन ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन)।
प्रशासनीय कृत्य पुं० (सं) राज्य-प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य। (एडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शन)।
प्रशिक्षण पुं० (सं) किसी पेशे या कला कौशल के सम्बन्ध में दी जाने वाली क्रियात्मक शिक्षा। (ट्रेनिंग)।
प्रशिक्षण केन्द्र पुं० (सं) आसपास के गांवों और नगरों के बीच में पड़ने वाला वह स्थान जहां किसी कला कौशल या धनोद्योग विषयक शिक्षा दी जाती है। (ट्रेनिंग सेन्टर)।
प्रशिक्षण महाविद्यालय पुं० (सं) वह महाविद्यालय जहां ऊंची कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षण विज्ञान विषयक सिद्धान्त तथा शिक्षा प्रणाली सिखलाई जाती है। (ट्रेनिंग कॉलिज)।
प्रशिक्षण विद्यालय पुं० (सं) वह विद्यालय जिसमें देशी भाषाओं के शिक्षकों को शिक्षण विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। (नार्मल स्कूल)।
प्रशिक्षार्थी पुं० (सं) वह शिक्षार्थी जो प्रशिक्षण पा रहा हो। (ट्रेनी)।
प्रशिक्षित वि० (सं) किसी प्रकार का प्रशिक्षण मिला हो। (ट्रेन्ड)।
प्रशुल्क पुं० (सं) आयात-निर्यात पर जाने वाला शुल्क या कर। (टैरिफ)।
प्रशुल्क मंडल पुं० (सं) विशेषज्ञों का वह समिति जो सरकार को यह सलाह दे कि आयात या निर्यात की किन-किन वस्तुओं पर कर लगाना चाहिए। (टैरिफ बोर्ड)।
प्रशोष पुं० (सं) सोखना। सुखाना।
प्रश्न पुं० (सं) १-वह बात जो कुछ जानने या जांचने के लिए पूछी जाय और जिसका कोई उत्तर हो। सवाल। २-पूछने की बात। (क्वेश्चन)। ३-विचारणीय विषय। (इश्यू)।
प्रश्नपत्र पुं० (सं) वह पत्र जिस पर परीक्षा के लिए विद्यार्थियों से किये जाने वाले प्रश्न लिखे रहते हैं। (क्वेश्चन पेपर)।
प्रश्नभावी पुं० (सं) ज्योतिषी।
प्रश्नावली स्त्री० (सं) किसी विषय पर लोगों को अधिकार रूप से किसी बात की जांच करने या अभिमत प्राप्त करने के लिए भेजे गये उस विषय से सम्बन्ध रखने वाले प्रश्नों की सूची।
प्रश्नावली पत्रक पुं० (सं) किसी विषय की विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उस विषय से संबंधित व्यक्तियों के पास भेजी गई प्रश्नों की सूची या पत्रक जिसके उत्तर आने तक उस विषय पर कोई

निर्णय नहीं किया जाता (क्वेश्चनेयर)।
प्रश्नोत्तर पु० (सं) प्रश्न और उत्तर। सवाल-जवाब। २-वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।
प्रश्नोत्तरी स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें किसी विषय के प्रश्नों के उत्तरों को समझाया गया हो। (कैटेकिज़्म)।
प्रश्रय पुं० (सं) १-आश्रय स्थान। २-[illegible] सहारा। ३-विनय। नम्रता।
प्रश्रयण पुं० (सं) दे० 'प्रश्रय'।
प्रश्लिष्ट वि० (सं) मिलाजुला। संधि प्राप्त।
प्रश्वास पु० (सं) १-वायु के नथने से बाहर [illegible] लने की क्रिया। २-ऐसी वायु।
प्रष्टव्य वि० (सं) १-पूछने योग्य। २-पूछने का।
प्रष्टा वि० (सं) प्रश्न करने वाला। पूछने वाला।
प्रसंग पु० (सं) १-मेल। सम्बन्ध। २-बातों का पर- [illegible]

प्रसंसना क्रि० (हि) प्रशंसा करना।
प्रसक्त वि० (सं) १-सम्बन्धयुक्त। लगाया हुआ। २-जो बराबर लगा रहे। ३-अत्यन्त आसक्त। ४-प्रसाधित। ५-निर्दिष्ट।
प्रसज्य वि० (सं) १-जो प्रयोग में लाया जाय। २-संभव।
प्रसज्यप्रतिषेध पुं० (सं) एक निषेध विशेष जिसमें विधि की अप्रधानता तथा निषेध की प्रधानता होती है।
प्रसन्न वि० (सं) १-खुश। आह्लादित। २-सन्तुष्ट। ३-अनुकूल। पसंद। ४-स्वच्छ। निर्मल। पु० (सं) महादेव।
प्रसन्नजल वि० (सं) जिसका जल निर्मल हो।
प्रसन्नता स्त्री० (सं) १-सन्तोष। तुष्टि। २-हर्ष। ३-अनुग्रह। ४-स्वच्छता। निर्मलता।
प्रसन्नमुख वि० (सं) जिसका मुख प्रसन्न हो।
प्रसन्नवदन वि० (सं) दे० 'प्रसन्नमुख'।
[illegible]
६-साहस। ७-धाड़।
प्रसरण पु० (सं) १-आगे बढ़ना। २-फैलाव होना। ६-लूट मार करने के लिए सेना का इधर-उधर फैलना।
प्रसरित वि० (सं) १-फैला हुआ। २-विस्तृत। ३-आगे को बढ़ा हुआ।
प्रसरी वि० (सं) १-रेंगने वाला २-गतिशील।

प्रसव पुं० (सं) १-बच्चा जनने की क्रिया। प्रसूति। २-जन्म। उत्पत्ति। ३-बच्चा। सन्तान। (मेटरनिटी)
प्रसवगृह पुं० (सं) बच्चा जनाने का घर (मेटरनिटी होम)।
प्रसवना क्रि० (हि) (बच्चा) जनना या उत्पन्न करना।
प्रसव-वेदना स्त्री० (सं) वह पीड़ा जो बच्चा जनने के समय होती है।

[illegible] जो को

प्रसविता स्त्री० (सं) माता।
प्रसविनी वि० (सं) जन्म देने वाली।
प्रसवी वि० (सं) जन्म देने वाला।
प्रसवोत्तरकाल पु० (सं) बच्चा जनने के बाद की स्त्री की स्थिति या समय। (पोस्टनेटल पीरियड)।
प्रसाद पु० (सं) १-अनुग्रह। कृपा। २-स्वास्थ्य। ३-सफाई। निर्मलता। ४-प्रसन्नता। ५-देवता, गुरु जन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। ६-दे० 'प्रासाद'। ७-कोई भी पदार्थ जो तुष्टि साधन के लिए भेंट किया जाय। ८-शास्त्र० लकार के अन्तर्गत कोमलावृत्ति। ९-भोजन। १०-काव्य के तीन गुणों में से एक।
प्रसादक वि० (सं) १-अनुग्रह कारक। २-निर्मल। ३-दीनिदार। पु० (सं) प्रसाद। देवयन।
प्रसादन पु० (सं) १-अन्न। २-किसी को संतुष्ट करके अपने अनुकूल करना। (प्रोपिशिएशन)।
प्रसादना स्त्री० (सं) १-चाकरी। सेवा। २-तपिडना। क्रि० (हि) प्रसन्न करना।
प्रसादनीय वि० (सं) प्रसन्न करने योग्य।
प्रसाद-पट्ट पु० (सं) राजा की ओर दिया जाने वाला सम्मानार्थ शिरोवस्त्र।
प्रसाद-पराङ्मुख वि० (सं) १-अप्रसन्न। प्रतिकूल। २-किसी की परवाह न करने वाला।
प्रसादपर्यन्त अव्य०(सं) (राष्ट्रपति राजा आदि) जब तक चाहें तब तक। (ड्यूरिंग दि प्लेज़र ऑफ)।
प्रसादित वि० (सं) सन्तुष्ट किया हुआ।
प्रसादी स्त्री० (हि) १-वह पदार्थ जो देवताओं को चढ़ाया जाय। २-नैवेद्य। ३-बलि चढ़ाए हुए पशु का मांस। वि० (सं) १-प्रसन्न करने वाला। २-शान्त। ३-अनुग्रह करने वाला। ४-निर्मल। स्वच्छ।
प्रसाधक पुं० (सं) १-सम्पादन करने वाला। सम्पादक। २-सजावट का काम करने वाला। ३-राजाओं आदि को वस्त्राभूषण पहनाने वाला अनुचर।
प्रसाधन पु० (सं) शृङ्गार करना। कार्य को पूरा करना। सम्पादन।

सजावट का सामान। (साबुन आदि)। (टायलेट)
प्रसाधनद्रव्य पुं० (सं) शृङ्गार आदि में काम आने वाली वस्तुएँ। (टायलेट)।
प्रसाधन-सामग्री स्त्री० (सं) दे० 'प्रसाधन'।
प्रसाधनी स्त्री० (सं) कंघी।
प्रसाधिका स्त्री० (सं) वह दासी जो अपनी स्वामिनी का शृङ्गार करती है।
प्रसाधित वि० (सं) १-संवारा हुआ। २-जिसका शृङ्गार किया गया हो। ३-सुसंपादित।
प्रसार पुं० (सं) १-फैलाव। विस्तार। २-संचार। ३-गमन। ४-किसी बात को चारों ओर फैलाना।
प्रसारक वि० (सं) फैलाने वाला।
प्रसारण पुं०(सं) १-फैलाना। २-बढ़ाना। ३-किसी विषय या चर्चा का प्रचार करना। ४-रेडियो (आकाशवाणी) के द्वारा सङ्गीत, भाषण आदि सुनने के निमित्त चारों ओर फैलाना। (ब्रॉड-कास्टिंग)।
प्रसारना क्रि० (हि) फैलाना। बढ़ाना।
प्रसारिणी स्त्री० (सं) १-गंधप्रसारिणी लता। २-देव धान्य। ३-सेना को आक्रमण करने के लिए इधर-उधर फैलाना। ४-लजालु।
प्रसारित वि० (सं) १-फैलाया हुआ। २-संगीत, भाषण आदि आकाशवाणी द्वारा प्रसारण किया हुआ। (ब्रॉडकास्ट)।
प्रसाविका स्त्री०(सं) बच्चे जनने वाली दाई। (मिड-वाइफ)।
प्रसिद्ध वि० (सं) १-विख्यात। मशहूर। २-भूषित। अलंकृत।
प्रसिद्धि स्त्री० (सं) १-प्रसिद्ध होने का भाव या क्रिया ख्याति। २-बनाव-शृङ्गार।
प्रसुप्ति स्त्री० (सं) प्रगाढ़ निद्रा। नींद।
प्रसू वि० (सं) उत्पन्न करने वाली। जनने वाली। स्त्री० (सं) १-माता। जननी। २-घोड़ी। ३-केला। ४-फैलने वाली लता। ५-कोमल घास।
प्रसूत वि० (सं) १-उत्पन्न। पैदा। २-जन्म दिया हुआ। ३-उत्पादक। स्त्री० (सं) १-कुसुम। फूल। २-प्रसव के पीछे होने वाला एक रोग।
प्रसूता स्त्री० (सं) १-जच्चा। बच्चा जनने वाली। २-घोड़ी।
प्रसूति स्त्री० (सं) १-प्रसव। २-उत्पत्ति। उद्भव। ३-कारण। प्रकृति। ४-सन्तति। ५-उत्पत्ति स्थान। ६-प्रसूत।
प्रसूतिकल्याण पुं०(सं) बच्चे जनने तथा जच्चा और बच्चे को सुविधा पहुंचाने से सम्बन्धित कार्य। (मैटरनिटी वेलफेयर वर्क)।
प्रसूतिका स्त्री० (सं) जिस स्त्री के बच्चा हुआ हो। प्रसूता। जच्चा।
प्रसूतिगृह पुं० (सं) बच्चा जनने का स्थान। सौरी।
प्रसूतिभवन पुं० (सं) प्रसूतिगृह।
प्रसूतिज्वर पुं० (सं) प्रसव के कुछ समय बाद होने वाला ज्वर।
प्रसूत्यवकाश पुं० (सं) प्रसवावकाश। (मैटरनिटी-लीव)।
प्रसून पुं० (सं) १-फूल। पुष्प। २-कली। ३-फल। वि० (सं) उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ।
प्रसूनबाण पुं० (सं) कामदेव।
प्रसूनशर पुं० (सं) कामदेव।
प्रसृतज पुं० (सं) व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र।
प्रसृति स्त्री० (सं) १-विस्तार। फैलाव। २-सन्तान। संतति। ३-सोलह तोले का एक मान। ४-गहरी की गई हथेली।
प्रसृष्ट वि० (सं) उत्पन्न। व्यक्त।
प्रसृष्टा स्त्री० (सं) १-युद्ध का एक दांव। २-फैलाई हुई अंगलियां।
प्रसेक पुं० (सं) १-सींचना। सेचन। २-निचोड़। छिड़काव। ३-प्रसेव। ४-मुँह या नाक से पानी छूटना।
प्रसेद पुं० (सं) पसीना। प्रस्वेद।
प्रस्तर पुं०(सं) १-पत्थर। २-फूल और पत्तों की सेज शय्या। ४-समतल। ५-चमड़े की थैली। ६-प्रस्तार ७-अध्याय।
प्रस्तरभेद पुं० (सं) पाषाणभेद।
प्रस्तर-मुद्रण पुं० (सं) छपाई अथवा मुद्रण की वह प्रक्रिया जिसमें एक विशेष स्याही द्वारा लेखादि लिखकर पत्थर पर उतारते हैं और फिर छापते हैं। (लीथोग्राफी)।
प्रस्तर-युग पुं० (सं) वह प्राचीन युग जब लोग पत्थर के हथियारों या औजारों से काम लेते थे। (स्टोन-एज)।
प्रस्तार पुं० (सं) १-फैलाव। विस्तार। २-शय्या। सेज। ३-पर्णशय्या। ४-चौरस। समतल। पत्ता। ५-घास का जंगल। ६-छन्दशास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से एक। ७-वस्तुओं, अंकों आदि के परिमित वर्गों के क्रम में संगत तथा संभव परिवर्तन या हेर फेर करना। (परम्यूटेशन)।
प्रस्ताव पुं० (सं) १-प्रस्तुत प्रसंग। २-प्रस्तावना। ३-किसी सभा या समाज में विचारार्थ या स्वीकृति के लिए उपस्थित की जाने वाली बात। (रिजोल्यूशन)। ४-मामला निपटाने के लिए कोई बात रखना (ऑफर)।
प्रस्तावक पुं० (सं) किसी सभा आदि में प्रस्ताव रखने वाला। (प्रपोजर)।
प्रस्तावना स्त्री० (सं) १-किसी विषय का वर्णन आरम्भ करने से पूर्व का वक्तव्य। भूमिका। आ-

-पन । ३-प्रारम्भ । (इन्ट्रोडक्शन, प्रीएम्बल) ।

प्रस्ताव-विवादनिर्णयन पुं० (सं) किसी विधेयक आदि पर विरोधी दल के अनावश्यक बाधा डालने पर अध्यक्षों द्वारा समय निर्धारित करना कि वे उस समय में ही उसे स्वीकृत या अस्वीकृत करने का निश्चय करें । (गिलोटिन ए मोशन) ।

प्रस्तावित वि० (सं) जिसके लिए या जिसके विषय में प्रस्ताव किया गया हो ।

प्रस्तुत पुं० (सं) १-जिसकी प्रशंसा या स्तुति की गई हो । २-जो कहा गया हो । कथित । ३-प्रासंगिक । ४-उद्यत । ५-सम्पादित । ६-उपयुक्त । (प्रेजेंटेड, सबमिटेड) ।

प्रस्तुतांकुर पुं० (सं) एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत पदार्थ के सम्बन्ध में कुछ कहकर उसका अभिप्राय अन्य प्रस्तुत पदार्थ पर घटाया जाता है ।

प्रस्तुतोत्पाद्य निर्माणशाला स्त्री० (सं) मकान आदि के पहले से अलग-अलग भाग तैयार करने वाला कारखाना जिससे बाद में इन भागों को जोड़कर मकान आसानी से खड़ा किया जा सके । (प्रीफेब्रिकेटेड हाउस फैक्टरी) ।

प्रस्तुति स्त्री० (सं) १-प्रशंसा । स्तुति । २-प्रस्तावना । ३-तैयारी । उपस्थिति । (प्रेजेन्टेशन) ।

प्रस्थान पुं० (सं) १-गमन । एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना । (डिपार्चर) । २-सेना का कूँच । ३-मार्ग । ४-उपदेश का साधन ।

प्रस्थानत्रयी स्त्री० (सं) गीता, ब्रह्मसूत्र तथा उपनिषद् ।

प्रस्थानी वि० (हि) जाने वाला । प्रस्थान करने वाला ।

प्रस्थापक पुं० (सं) प्रस्ताव आदि सामने लाने या रखने वाला (विधान सभा आदि में) (प्रोपोजर) ।

प्रस्थापन पुं० (सं) १-प्रस्थान करना । भेजना । २-स्थापन । ३-प्रेरण ।

प्रस्थापना स्त्री० (सं) १-विधान सभा आदि में रखा गया प्रस्ताव । (प्रोपोज़ल) । २-विवाह प्रस्ताव ।

प्रस्थापित वि० (सं) १-भली भाँति स्थापित । २-प्रेरित । ३-आगे बढ़ाया हुआ ।

प्रस्थापित करना क्रि० (सं) कोई प्रस्ताव (विधान सभा आदि में) प्रस्तुत करना । (टु प्रोपोज) ।

प्रस्थित वि० (सं) १-जो जाने को तैयार हो । २-स्थिर । ३-दृढ़ । ४-जो गया हो ।

प्रस्नुत वि०(सं) १-टपकाने वाला । २-बहाने वाला ।

प्रस्नुतस्तनी स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके स्तनों से वात्सल्य प्रेम के कारण दूध टपक रहा हो ।

प्रस्फुटित वि० (सं) विकसित । खिला हुआ ।

प्रस्फुरण पुं० (सं) १-निकलना । २-प्रकाशित होना ।

प्रस्फुरित वि० (सं) हिलता हुआ । कम्पनयुक्त ।

प्रस्फोट पुं० (सं) विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे आदि का गोला जो तोप, वायुयान आदि द्वारा शत्रु पर फैंका जाता है । (बॉम्ब) ।

प्रस्फोटन पुं० (सं) १-किसी वस्तु का वेग से फटना ।

[illegible]

प्रस्रवण पुं० (सं) १-जलादि द्रव पदार्थ का टपक-टपक कर बहना । २-दूध । ३-पसीना । ४-सोता । झरना । ५-मूत्र करना ।

प्रस्राव पुं० (सं) १-जलादि का टपकना या रिसना । २-मूत्र । ३-प्रस्रवण ।

प्रस्रुत वि० (सं) उमड़ा हुआ । टपका हुआ ।

प्रस्वापन पुं० (सं) १-वह वस्तु जिसके व्यवहार से निद्रा आवे । २-एक प्राचीन अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रुदल को निद्रा आ जाती थी ।

प्रस्वीकृत वि० (सं) जिसे अधिकृत रूप में मान्यता दे दी गई हो । (रिकॉगनाइज्ड) ।

प्रस्वीकृति स्त्री० (सं) १-छोटी संस्थाओं का केन्द्रिय संस्था द्वारा अस्तित्व, प्रामाणिकता आदि मान लेना । २-मान्यता । (रिकॉगनीशन) ।

प्रस्वेद पुं० (सं) पसीना ।

प्रस्वेदन पुं० (सं) पसीना लाने के लिए गर्म पानी से सेंकने की क्रिया (फोमेंटेशन) ।

प्रस्वेदित वि० (सं) जो पसीने से तर हो ।

प्रह पुं० (हि) प्रातःकाल ।

प्रहर पुं० (सं) दिन-रात का आठवाँ भाग । तीन घंटे ।

प्रहरखना क्रि० (हि) प्रसन्न होना ।

प्रहरण पुं० (सं) १-छीनना । हरण करना । २-युद्ध । ३-अस्त्र । ४-प्रहार । ५-फेंकना । हटाना । ६-पर्दे वाली डोली या गाड़ी ।

प्रहरी पुं० (सं) द्वारपाल । पहरेदार ।

प्रहर्ष पुं० (सं) अत्यधिक हर्ष । आनन्द ।

प्रहर्षण पुं० (सं) १-आनन्द । २-बुध ग्रह । ३-एक अलंकार जिसमें बिना प्रयत्न किये किसी अभीष्ट फल की सिद्धि का उल्लेख होता है । वि० (सं) हर्ष देने वाला ।

प्रहसन पुं० (सं) १-हंसी । दिल्लगी । २-एक प्रकार का हास्य रस प्रधान रूपक ।

प्रहसित पुं० (सं) एक बुद्ध का नाम । वि० (सं) जिसकी हँसी उड़ाई जाय ।

प्रहाण पुं० (सं) १-छोड़ना । त्यागना । २-चित्त की एकाग्रता ।

प्रहाणि स्त्री० (सं) १-परित्याग । २-हानि । ३-नाश ।

प्रहान पुं० (हि) दे० 'प्रहाण' ।

प्रहानि स्त्री० (हि) दे० 'प्रहाणि' ।

प्रहार पुं० (सं) वार । चोट । आघात ।

प्रहारक वि० (सं) प्रहार करने वाला ।

सजावट का सामान। (लहसुन आदि)। (टायलेट)
प्रसाधनद्रव्य पुं० (सं) श्रृंगार आदि में काम आने वाली वस्तुएँ। (टाइलेट)।
प्रसाधन-सामग्री स्त्री० (सं) दे० 'प्रसाधन'।
प्रसाधनी स्त्री० (सं) कंघी।
प्रसाधिका स्त्री० (सं) वह दासी जो अपनी स्वामिनी का श्रृङ्गार करती है।
प्रसाधित वि० (सं) १-संवारा हुआ। २-अलंकृत श्रृङ्गार किया गया हो। ३-सुशोभित।
प्रसार पुं० (सं) १-फैलाव। विस्तार। २-संचार। ३-गमन। ४-किसी बात को चारों ओर फैलाना।
प्रसारक वि० (सं) फैलाने वाला।
प्रसारण पुं०(सं) १-फैलाना। २-बढ़ाना। ३-किसी विषय या चर्चा का प्रचार करना। ४-रेडियो (आकाशवाणी) के द्वारा सङ्गीत, भाषण आदि सुनने के निमित्त चारों ओर फैलाना। (ब्रोडकास्टिंग)।
प्रसारना क्रि० (हि) फैलाना। बढ़ाना।
प्रसारिणी स्त्री० (सं) १-गंधप्रसारिणी लता। २-देव धान्य। ३-सेना को आक्रमण करने के लिए इधर-उधर फैलाना। ४-लजालु।
प्रसारित वि० (सं) १-फैलाया हुआ। २-(सङ्गीत, भाषण आदि आकाशवाणी द्वारा) प्रसारण किया हुआ। (ब्रॉडकास्ट)।
प्रसाविका स्त्री०(सं) बच्चे जनने वाली दाई। (मिडवाइफ)।
प्रसिद्ध वि० (सं) १-विख्यात। मशहूर। २-भूषित। अलंकृत।
प्रसिद्धि स्त्री० (सं) १-प्रसिद्ध होने का भाव या क्रिया ख्याति। २-बनाव-श्रृङ्गार।
प्रसुप्ति स्त्री० (सं) प्रगाढ़ निद्रा। नींद।
प्रसू वि० (सं) उत्पन्न करने वाली। जनने वाली। स्त्री० (सं) १-माता। जननी। २-घोड़ी। ३-केला। ४-फैलने वाली लता। ५-कोमल घास।
प्रसूत वि० (सं) १-उत्पन्न। पैदा। २-उत्पन्न किया हुआ। ३-उत्पादक। स्त्री० (सं) १-कुसुम। फूल। २-प्रसव के पीछे होने वाला एक रोग।
प्रसूता स्त्री० (सं) १-जच्चा। बच्चा जनने वाली। २-घोड़ी।
प्रसूति स्त्री० (सं) १-प्रसव। २-उत्पत्ति। उद्भव। ३-कारण। प्रकृति। ४-सन्तति। ५-उत्पत्ति स्थान। ६-प्रसूत।
प्रसूतकल्याण पुं०(सं) बच्चे जनने तथा जच्चा और बच्चे को सुविधा पहुंचाने से सम्बन्धित कार्य। (मैटरनिटी वेलफेयर वर्क)।
प्रसूतिका स्त्री० (सं) जिस स्त्री के बच्चा हुआ हो। प्रसूता। जच्चा।

प्रसूतिगृह पुं० (सं) बच्चा जनने का स्थान। सौरी।
प्रसूतिभवन पुं० (सं) प्रसूतिगृह।
प्रसूतिज्वर पुं० (सं) प्रसव के कुछ समय बाद होने वाला ज्वर।
प्रसूत्यवकाश पुं० (सं) प्रसवावकाश। (मैटरनिटी-लीव)।
प्रसून पुं० (सं) १-फूल। पुष्प। २-कली। ३-फल। वि० (सं) उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ।
प्रसूनबाण पुं० (सं) कामदेव।
प्रसूनशर पुं० (सं) कामदेव।
प्रसृतज पुं० (सं) व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र।
प्रसृति स्त्री० (सं) १-विस्तार। फैलाव। २-सन्तान संतति। ३-सोलह तोले का एक मान। ४-गहरी की गई हथेली।
प्रसृष्ट वि० (सं) आसन्न। व्यक्त।
प्रसृष्टा स्त्री० (सं) १-युद्ध का एक दांव। २-फैली हुई उंगलियां।
प्रसेक पुं० (सं) १-सींचना। सेचन। २-निचोड़ छिड़काव। ३-प्रक्षेप। ४-मुँह या नाक से पानी छूटना।
प्रस्वेद पुं० (सं) पसीना। प्रस्वेद।
प्रस्तर पुं०(सं) १-पत्थर। २-फूल और पत्तों की सेज शय्या। ४-समतल। ५-चमड़े की थैली। ६-प्रस्त ७-अध्याय।
प्रस्तरभेद पुं० (सं) पाखानभेद।
प्रस्तर-मुद्रण पुं० (सं) छपाई अथवा मुद्रण की प्रक्रिया जिसमें एक विशेष स्याही द्वारा लेख लिखकर पत्थर पर उतारते हैं और फिर छापते हैं (लीथोग्राफी)।
प्रस्तर-युग पुं० (सं) वह प्राचीन युग जब लोग पत्थर के हथियारों या औजारों से काम लेते थे। (स्टोन एज)।
प्रस्तार पुं० (सं) १-फैलाव। विस्तार। २-सेज। ३-आधिक्य। ४-चौरस। समतल। ५-घास या जंगल। ६-छन्दशास्त्र के अनुसार प्रत्ययों में से एक। ७-वस्तुओं, अंकों आदि पंक्तिबद्ध वर्गों के क्रम में संगत तथा संभव परिवर्तन या हेर फेर करना। (परम्यूटेशन)।
प्रस्ताव पुं० (सं) १-प्रस्तुत प्रसंग। २-प्रस्ताव ३-किसी सभा या समाज में विचारार्थ या स्वी के लिए उपस्थित की जाने वाली बात। (रेजोल्यूशन)। ४-झगड़ा निपटाने के लिए कोई बात (ऑफर)।
प्रस्तावक पुं० (सं) किसी सभा आदि में रखने वाला। (प्रोपोजर)।
प्रस्तावना स्त्री० (सं) १-किसी विषय का आरम्भ करने से पूर्व का वक्तव्य। भूमिका

-पत्र । २-प्रारम्भ । (इन्ट्रोडक्शन, प्रीएम्बल) ।
प्रस्ताव-विवादनियंत्रण पुं० (सं) किसी विधेयक आदि पर विरोधी दल के अनावश्यक बाधा डालने पर अध्यक्षों द्वारा समय निर्धारित करना कि वे उस समय में ही उसे स्वीकृत या अस्वीकृत करने का निश्चय करें । (गिलोटिन ए मोशन) ।
प्रस्तावित वि० (सं) जिसके लिए या जिसके विषय में प्रस्ताव किया गया हो ।
प्रस्तुत पुं० (सं) १-जिसकी प्रशंसा या स्तुति की गई हो । २-जो कहा गया हो । कथित । ३-प्रासंगिक । ४-उद्यत । ५-सम्पादित । ६-उपयुक्त । (प्रेजेंटेड, सब्मिटेड) ।
प्रस्तुतांकुर पुं० (सं) एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत पदार्थ के सम्बन्ध में कुछ कहकर उसका अभिप्राय अन्य प्रस्तुत पदार्थ पर घटाया जाता है ।
प्रस्तुतगृह निर्माणशाला स्त्री० (सं) मकान आदि के पहले से अलग-अलग भाग तैयार करने वाला कारखाना जिससे बाद में इन भागों का जोड़कर मकान आसानी खड़ा किया जा सके । (प्रीफेब्रिकेटेड हाउस फैक्टरी) ।
प्रस्तुति स्त्री० (सं) १-प्रशंसा । स्तुति । २-प्रस्तावना । ३-तैयारी । उपस्थित । (प्रेजेन्टेशन) ।
प्रस्थान पुं० (सं) १-गमन । एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना । (डिपार्चर) । २-सेना का कूँच । ३-मार्ग । ४-उपदेश का साधन ।
प्रस्थानत्रयी स्त्री० (सं) गीता, ब्रह्मसूत्र तथा उपनिषद्
प्रस्थानी वि० (हि) जाने वाला । प्रस्थान करने वाला ।
प्रस्थापक पुं० (सं) प्रस्ताव आदि सामने लाने या रखने वाला (विधान सभा आदि में) (प्रोपोजर) ।
प्रस्थापन पुं० (सं) १-प्रस्थान करना । भेजना । २-स्थान । ३-प्रेरणा ।
प्रस्थापना स्त्री० (सं) १-विधान सभा आदि में रखा गया प्रस्ताव । (प्रोपोजल) । २-विवाह प्रस्ताव ।
प्रस्थापित वि० (सं) १-भली भांति स्थापित । २-प्रेरित । ३-आगे बढ़ाया हुआ ।
प्रस्थापित करना क्रि० (स) कोई प्रस्ताव (विधान सभा आदि में) प्रस्तुत करना । (टु प्रोपोज) ।
प्रस्थित वि० (सं) १-जो जाने को तैयार हो । २-स्थिर । ३-दृढ़ । ४-जो गया हो ।
प्रस्नुत वि०(स) १-टपकाने वाला । २-बहाने वाला ।
प्रस्नुतस्तनी स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके स्तनों से वात्सल्य प्रेम के कारण दूध टपक रहा हो ।
प्रस्फुटित वि० (स) विकसित । खिला हुआ ।
प्रस्फुरण पु० (स) १-निकलना । २-प्रकाशित होना ।
प्रस्फुरित वि० (सं) हिलता हुआ । कम्पयुक्त ।
प्रस्फोट पुं० (सं) विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे आदि का गोला जो तोप, वायुयान आदि द्वारा शत्रु पर फेंका जाता है । (बॉम्ब) ।
प्रस्फोटन पुं० (स) १-किसी वस्तु का वेग से फटना या फूटना जिससे कि उसके भीतर के पदार्थ बाहर निकल पड़े । २-विकसित होना । खिलना । ३-पीटना । ४-(अन्नादि) फटकना । ५-सूप ।
प्रस्रवण पुं० (सं) १-जलादि द्रव पदार्थ का टपक-टपक कर बहना । २-दूध । ३-पसीना । ४-सोता । झरना । ५-मूत्र करना ।
प्रस्राव पु० (स) १-जलादि का टपकना या रिसना । २-मूत्र । ३-प्रस्रवण ।
प्रस्रुत वि० (सं) उमड़ा हुआ । टपका हुआ ।
प्रस्वापन पुं० (स) १-वह वस्तु जिसके व्यवहार से निद्रा आये । २-एक प्राचीन अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रुदल को निद्रा आ जाती थी ।
प्रस्वीकृत वि० (स) जिसे अधिकृत रूप में मान्यता दे दी गई हो । (रिकॉगनाइज्ड) ।
प्रस्वीकृति स्त्री० (सं) १-छोटी संस्थाओं का केन्द्रिय संस्था द्वारा अस्तित्व, प्रामाणिकता आदि मान लेना । २-मान्यता । (रिकॉगनीशन) ।
प्रस्वेद पुं० (स) पसीना ।
प्रस्वेदन पु० (सं) पसीना लाने के लिए गर्म पानी से सेंकने की क्रिया (फोमेंटेशन) ।
प्रस्वेदित वि० (सं) जो पसीने से तर हो ।
प्रह पुं० (हि) प्रातःकाल ।
प्रहर पुं० (स) दिन-रात का आठवाँ भाग । तीन घंटे ।
प्रहरखना क्रि० (हि) प्रसन्न होना ।
प्रहरण पुं० (स) १-छीनना । हरण करना । २-युद्ध । ३-अस्त्र । ४-प्रहार । ५-फेंकना । हटाना । ६-पर्दे वाली डोली या गाड़ी ।
प्रहरी पु० (स) द्वारपाल । पहरेदार ।
प्रहर्ष पुं० (स) अत्यधिक हर्ष । आनन्द ।
प्रहर्षण पु० (स) १-आनन्द । २-बुद्ध ग्रह । ३-एक अलंकार जिसमें बिना प्रयत्न किये किसी अभीष्ट फल की सिद्धि का उल्लेख होता है । वि० (सं) हर्ष देने वाला ।
प्रहसन पुं० (स) १-हँसी । दिल्लगी । २-एक प्रकार का हास्य रूप प्रधान रूपक ।
प्रहसित पुं० (स) एक बुद्ध का नाम । वि० (सं) जिसकी हँसी उड़ाई जाय ।
प्रहाण पु० (स) १-छोड़ना । त्यागना । २-चित्त की एकाग्रता ।
प्रहाणि स्त्री० (सं) १-परित्याग । २-हानि । ३-नाश ।
प्रहान पुं० (हि) दे० 'प्रहाण' ।
प्रहानि स्त्री० (हि) दे० 'प्रहाणि' ।
प्रहार पु० (सं) वार । चोट । आघात ।
प्रहारक वि० (स) प्रहार करने वाला ।

प्रहारना क्रि० (हि) १-मारना। आघात करना। २-मारने के लिए हथियार चलाना।
प्रहारित वि० (हि) जिस पर प्रहार हुआ हो।
प्रहारी वि० (सं) १-प्रहार करने वाला। २-मारने वाला। ३-नष्ट करने वाला।
प्रहास पुं० (सं) १-अट्टहास। २-नट। ३-शिव।
प्रहासक पुं० (सं) अट्टहास करने वाला। मसखरा।
प्रहासी पुं० (सं) १-खूब हंसने वाला। २-विदूषक।
प्रहृष्ट वि० (सं) अत्यन्त प्रसन्न।
प्रहृष्टचित्त वि० (सं) बहुत प्रसन्न।
प्रहृष्टमना वि० (सं) अत्यन्त प्रसन्न।
प्रहृष्टमुख वि० (सं) जिसका मुख प्रसन्न हो।
प्रहृष्टवदन वि० (सं) दे० 'प्रहृष्टमुख'।
प्रहेलि स्त्री० (सं) पहेली।
प्रहेलिका स्त्री० (सं) पहेली।
प्रह्लाद पुं० (सं) १-आमोद। आनन्द। २-हिरण्यकश्यप के पुत्र जो विष्णु के परम भक्त थे।
प्रांगण पु०(सं) १-आंगन। सहन। २-एक प्रकार का ढोल।
प्रांजल वि० (सं) १-सीधा। सरल। २-सच्चा। ३-समान। ४-शुद्ध (भाषा)।
प्रांजलता स्त्री० (सं) शब्द के अर्थ की सफलता।
प्रांजलि वि० (सं) जो हाथ जोड़े हुए हो।
प्रांत पुं० (सं) १-अन्त। सीमा। २-सिर। छोर। ३-दिशा। ४-खंड। प्रदेश। ५-किसी बड़े देश का शासनिक विभाग। (प्रोविंस)।
[illegible] पुं० (सं) प्रांत का सबसे बड़ा अधिकारी। [illegible]पाल। (गवर्नर)।
[illegible] पुं० (सं) लंबा और सुनसान रास्ता जिसमें जल और वृक्ष न हों। उजाड़। २-जंगल। वन। ३-वृक्ष का कोटर।
प्रांतिक वि० (सं) प्रांत से संबन्ध रखने वाला।
प्रांतीय वि० (सं) प्रांत संबन्धी
प्रांतीयता स्त्री० (सं) १-प्रांतीय होने का भाव। २-अपने प्रांत के प्रति अतिरिक्त मोह या पक्षपात। (प्रोविंशियलिज्म)।
प्रांतीय सरकार स्त्री० (हि) प्रांत की शासन व्यवस्था करने वाली सरकार। (प्राविंशियल गवर्नमेंट)।
प्रांतीय स्वराज्य पुं० (सं) किसी संघ राज्य द्वारा प्रांतीय सरकार को आन्तरिक मामलों में स्वतंत्रता पूर्वक आचरण करने का दिया गया अधिकार। (प्रोविंशियल ऑटोनॉमी)।
प्रांशु वि० (सं०) १-उच्च। ऊँचा। २- पुं० (सं) १-विष्णु। २-लम्बा आदमी।
प्रांशुप्राकार वि० (सं) जिसका परकोटा बहुत ऊँचा या लम्बा हो।
प्रांशुलभ्य वि० (सं) जो केवल लम्बे आदमी को मिले।
प्राइवेट वि० (अं०) व्यक्तिगत। निजी।
प्राइवेट सेक्रेटरी पुं० (सं) किसी बड़े आदमी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार आदि करने वाला निजी सहायक।
प्राकट्य पुं० (सं) प्रकट होने का भाव।
प्राकाम्य पुं० (सं) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।
प्राकार पुं० (सं) चहारदीवारी। परकोटा।
प्राकारीय वि० (सं) चहारदीवारी से घिरा हुआ।
प्राकाश्य पुं० (सं) १-प्रकीर्ति। यश। ३-प्रकाश का भाव।
प्राकृत वि० (सं) १-प्रकृति से उत्पन्न। २-स्वाभाविक ३-भौतिक। ४-साधारण। ५-लौकिक। ६-नीच। स्त्री० (सं०) १-किसी स्थान की बोलचाल की भाषा। २-एक प्राचीन भारतीय भाषा जिसका संस्कार करके संस्कृत बनाई गई थी।
प्राकृतमित्र पुं० (स) जिसके साथ स्वाभाविक मित्रता हो।
प्राकृतशत्रु पुं० (सं) स्वाभाविक शत्रु।
प्राकृतिक वि० (सं) १-जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ। हो। २-प्रकृति-सम्बन्धी। ३-साधारण। लौकिक। ४-नीच। ५-स्वाभाविक। (नेचुरल)।
प्राकृतिक चिकित्सा स्त्री० (सं) वह चिकित्सा पद्धति जो मुख्य रूप से प्राकृतिक साधनों पर आधारित हो। (नेचरोपैथी)।
प्राकृतिक भूगोल पुं० (सं) भूगोल विद्या का वह भाग जिसमें भौगोलिक तत्वों का तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया गया हो।
प्राच् वि०(सं) पुराना। पहले का। अव्य० (सं) आगे। पहले।
प्राक् वि० (सं) दे० 'प्राक्'।
प्राक्कथन पुं० (सं) प्रारम्भ में कही गई बात। भूमिका (फोरवर्ड)।
प्राक्कलन पुं० (सं) पहले से व्यय या लागत का अनुमान लगाना। (एस्टिमेट)।
प्राक्काल पु० (सं) प्राचीन काल।
प्राक्कालिक वि० (सं) प्राचीन।
प्राक्कालीन वि० (सं) प्राचीन।
प्राक्तन वि० (सं) १-प्राचीन। २-पूर्व-जन्म सम्बन्धी।
प्राखर्य पुं० (सं) प्रखरता। तेजी।
प्रागनुराग पुं० (सं) पहले से अनुराग।
प्रागल्भ्य पुं० (सं) १-प्रागल्भता। धीरता। २-अभिमान। ३-योग्यता। ४-प्रधानता। ५-प्रादुर्भाव। ६-साहस। ७-धीरता।
प्रागुक्ति स्त्री० (सं) पूर्वकथन।

प्रागैतिहासिक वि० (सं) जिस काल का इतिहास मिलता हो उससे पूर्वकाल का (प्रीहिस्टोरिक)।
प्राग्ज्योतिष पु० (सं) महाभारत के अनुसार कामरूप-देश।
प्राग्ज्योतिषपुर पु० (सं) कामरूप देश (आसाम) की ...

प्राची स्त्री० (सं) पूर्व दिशा। पूरब।
प्राचीन वि० (सं) १-पूर्व का। २-पहले का। पुराना।
प्राचीनता स्त्री० (सं) पुरानापन। प्राचीन होने का भाव।
प्राचीपति पु० (सं) इन्द्र।
प्राचीर पु० (सं) चारों ओर से घेरने वाली दीवार। चहारदीवारी। परकोटा।
प्राचुर्य पु० (सं) प्रचुर होने का भाव। अधिकता। विपुलता।
प्राचेतस पु० (सं) १-मनु। २-दक्ष। ३-वाल्मीकि। ४-विष्णु।
प्राच्छित्त पु० (हि) दे० 'प्रायश्चित'।
प्राच्य वि० (सं) १-पूर्व का। २-पूर्वीय। ३-पुराना।
प्राच्यभाषा स्त्री० (सं) पूरबी भाषा।
प्राजापत्य वि० (सं) १-प्रजापति सम्बन्धी। २-प्रजापति से उत्पन्न। पु० (सं) १-बारह दिन के एक व्रत का नाम। २-यज्ञ। ३-प्रयाग का एक नाम। ४-रोहिणी नक्षत्र।
प्राजापत्य विवाह पु० (सं) वह विवाह जिसमें कन्या का पिता वर और कन्या से यह प्रण करवाता है कि हम दोनों मिलकर गृहस्थ आश्रम का पालन करेंगे।
प्राज्ञ वि० (सं) १-बुद्धि सम्बन्धी। मानसिक। २-बुद्धिमान। चतुर। पु०(सं) जीवात्मा। (वेदान्त)।
प्राज्ञमान्य वि० (सं) अपने को बुद्धिमान समझने वाला।
प्राज्ञमानी वि० (सं) दे० 'प्राज्ञमान्य'।
प्राज्ञा स्त्री०(सं) १-बुद्धि। समझ। २-चतुर या बुद्धिमती स्त्री। ३-सूर्य की पत्नी का नाम।
प्राज्ञी स्त्री० (सं) १-बुद्धिमती स्त्री। २-विद्वान पत्नी।
प्राज्य वि० (सं) १-अधिक। विपुल। २-जिसमें बहुत सा घी पड़ा हो।
प्राड्विवाक पु०(सं) १-न्यायकर्त्ता। न्यायाधीश। २-वकील।
प्राड्विवेक पु० (सं) दे० 'प्राड्विवाक'।
प्राण पु० (सं) १-वायु। हवा। २-शरीर की वह हवा जिससे वह जीवित रहता हो। ३-सांस। श्वास ४-दम। शक्ति। ५-जीव। आत्मा। ६-इन्द्रिय। ७-ब्रह्म। ८-काल का वह विभाग जिसमें दस मात्राओं का उच्चारण हो सके। ९-मूलाधार में रहने वाली वायु। १०-अग्नि। आग।

प्राणघात पु० (सं) वध। हत्या।
प्राणघातक पु० (सं) हत्यारा। प्राण लेने वाला।
प्राणघ्न वि० (सं) प्राण लेने वाला।
प्राणच्छेद पु० (सं) वध। हत्या।
प्राणजीवन पु०(सं) १-प्राणाधार। परम प्रिय व्यक्ति २-विष्णु।
प्राणत्याग पु० (सं) प्राण त्याग देना। आत्महत्या।
प्राणदंड पु० (सं) मौत की सजा।
प्राणद वि० (सं) प्राणदाता। प्राणों की रक्षा करने वाला।
प्राणदयित पु० (सं) पति। स्वामी। वि० (सं) प्राण-प्यारा।
प्राणदा स्त्री० (सं) हड़। हरीतकी।
प्राणदाता पु० (सं) किसी के प्राण बचाने वाला।
प्राणदान पु० (सं) किसी के मरने से बचाना।
प्राणधन पु० (सं) अत्यधिक प्रिय। प्यारा।
प्राणधार वि० (सं) जीवित। जिसमें प्राण हो।
प्राणधारण पु० (सं) १-जीवन धारण करने का भाव। २-शिव।
प्राणधारी वि० (सं) १-जीवित। २-चेतन।
प्राणन पु० (सं) १-जीवन। २-हिलना डुलना। ३-जल।
प्राणनाथ पु० (सं) प्रियतम। प्यारा। २-स्वामी। पति। ३-एक सम्प्रदाय के आचार्य का नाम।
प्राणनाथी पु० (सं) १-प्राणनाथ संप्रदाय का अनुयायी। २-स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ सम्प्रदाय।
प्राणनाश पु० (सं) प्राणत्याग। हत्या या मृत्यु।
प्राणनाशक वि० (सं) मार डालने वाला।
प्राणनिग्रह पु० (सं) प्राणायाम की क्रिया।
प्राणपण पु०(सं) जान की बाजी।
प्राणपति पु० (सं) १-आत्मा। २-हृदय। ३-पति। स्वामी। ४-प्रिय व्यक्ति।
प्राणप्यारा पु० (हि) परमप्रिय व्यक्ति। स्वामी। पति।

प्राणप्रतिष्ठा स्त्री० (सं) १-प्राण धारण करना। २-कोई नई मूर्ति की स्थापना करते समय उसमें मंत्रों द्वारा प्राणों की प्रतिष्ठा करना। (हिन्दू धर्मशास्त्र)।
प्राणप्रद वि० (सं) जो प्राण दे। स्वास्थ्यवर्धक।
प्राणप्रिय वि० (सं) प्राणों के समान प्रिय।
प्राणबाधा स्त्री० (हि) दे० 'प्राणकृच्छ्र'।
प्राणभक्ष वि० (सं) जो केवल हवा पी कर ही रहता हो।
प्राणभय पुं० (सं) प्राण जाने का खतरा।
प्राणभृत वि० (सं) जीवित।
प्राणमय वि० (सं) जिसमें प्राण हों।
प्राणमयकोश पु० (सं) वेदांत के अनुसार पांच कोशों में से दूसरा कोश जो, प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान इन पांचों प्राणों से बना हुआ माना जाता है।
प्राणयम पु० (सं) प्राणायाम।
प्राणयात्रा स्त्री०(सं) १-सांस का खींचना या छोड़ना। २-वह व्यवहार जिसके द्वारा मनुष्य जीवित रहता है।
प्राणरंध्र पुं० (सं) १-नाक। २-मुँह।
प्राणरोध पुं० (सं) प्राणायाम।
प्राणवत्ता स्त्री० (सं) जीवित होने का भाव।
प्राणवल्लभ पुं० (सं) परम प्रिय। पति। स्वामी।
प्राणवायु स्त्री० (सं) १-प्राण। २-जीव।
प्राणविनाश पुं० (सं) मृत्यु। मौत।
प्राणविप्लव पुं० (सं) प्राण विनाश।
प्राणवियोग पुं० (सं) मृत्यु।
प्राणवृत्ति स्त्री० (सं) प्राण, अपान, उदान आदि पंच प्राणों का कार्य।
प्राणशरीर पुं० (सं) परमात्मा।
प्राणशोषण पुं० (सं) बाण।
प्राणसंकट पुं० (सं) वह अवस्था जिसमें प्राण जाने का भय हो।
प्राणसंदेह पुं० (सं) प्राण संकट।
प्राणसंशय पुं० (सं) प्राण संकट।
प्राणसद्म पुं० (सं) शरीर।
प्राणसम पुं० (सं) प्रियतम। पति। स्वामी। वि० (सं) प्राणप्रिय।
प्राणसमा स्त्री० (सं) पत्नी। प्रियतमा।
प्राणहर वि० (सं) १-प्राण लेने वाला। घातक। २-बल या शक्ति नाशक।
प्राणहारक वि० (सं) प्राण लेने वाला।
प्राणहानि स्त्री० (सं) जान-जोखिम। प्राण जाने की अवस्था।
प्राणहारी वि० (सं) प्राणहर।
प्राणहीन वि० (सं) निर्जीव।
प्राणांत पुं० (सं) मृत्यु। मरण।
प्राणांतक वि० (सं) प्राण लेने वाला।
प्राणाचार्य पुं० (सं) राजवैद्य।
प्राणाधार पुं० (सं) जीवन का सहारा। पति। स्वामी।
प्राणाधिनाथ पुं० (सं) पति।
प्राणायाम पु० (सं) श्वास और प्रश्वास की वायुओं को नियंत्रित और नियन्त्रित रूप से खींचने या बाहर निकालने की क्रिया (योग)।
प्राणायामी वि० (सं) प्राणायाम करने वाला।
प्राणावरोध वि० (सं) सांस का अवरोध।
प्राणाहुति स्त्री० (सं) भोजन के समय पांच मंत्र विशेष पढ़ कर खाने की क्रिया।
प्राणित वि० (सं) जिसमें जीवन का संचार किया गया हो।
प्राणी वि० (सं) जिसमें प्राण हो। जीवधारी। पुं० (हि) १-जीव। जन्तु। २-मनुष्य।
प्राणीघाती वि० (सं) प्राणियों की हत्या करने वाला।
प्राणीवध पुं० (सं) जीवहत्या।
प्राणीहिंसा स्त्री० (सं) जीवों को कष्ट देना या मारना।
प्राणेश पुं० (सं) प्रियतम। पति। स्वामी।
प्राणेश्वर पुं० (सं) दे० 'प्राणेश'।
प्राणेश्वरी स्त्री० (सं) प्रियतमा। पत्नी।
प्राणेशा स्त्री० (सं) प्राणेश्वरी।
प्राणोत्क्रमण पुं० (सं) मृत्यु।
प्राणोत्सर्ग पुं० (सं) मृत्यु।
प्रातः पु० (सं) प्रभात। तड़का। सवेरा। अव्य० (सं) तड़के। सवेरे।
प्रातःकर्म पुं० (सं) वह कर्म जो प्रातःकाल किया जाता है। शौच, स्नान आदि।
प्रातःकाल पुं० (सं) दिन चढ़ने का समय। सवेरा।
प्रातःकालीन वि० (सं) प्रातःकाल-सम्बन्धी। प्रातःकाल का।
प्रातःकाल संध्या स्त्री० (सं) प्रातःकाल की जाने वाली संध्या।
प्रातःस्नान पुं० (सं) सवेरे का स्नान।
प्रातःस्नायी वि० (सं) प्रातःकाल स्नान करने वाला।
प्रातःस्मरण पुं० (सं) सवेरे देवता का स्मरण।
प्रातःस्मरणीय वि०(सं) प्रातःकाल स्मरण करने योग्य
प्रात पुं० (सं) प्रभात। तड़का। सवेरा। अव्य० (सं) तड़के। सवेरे।
प्रातनाथ पुं० (सं) सूर्य।
प्रातर अव्य० (सं) तड़के। सवेरे।
प्रातरशन पुं०(सं) कलेवा।
प्रातरह्न पुं० (सं) दोपहर के पहले का समय।
प्रातराशी वि० (सं) प्रातःकाल कलेवा या जलपान करने वाला।
प्रातरप्राहुति स्त्री० (सं) प्रातःकाल दी जाने वाली

आहुति।
प्रातरगेय पुं० (सं) प्रातःकाल स्तुति पाठ या वन्दना करने वाला। वि० (सं) जो सवेरे गाया जाय।
प्रातरभोजन पु० (सं) सवेरे किया गया भोजन या कलेवा।
प्रातिकूल्य पुं० (सं) प्रतिकूल होने का भाव।
प्रातिनिधिक पुं० (सं) प्रतिनिधि।
प्रातिपक्ष्य पुं० (सं) प्रतिकूल। विरुद्ध।
प्रातिपथिक वि० (सं) यात्रा करने वाला। पु० (सं) यात्री।
प्रातिपद वि० (सं) प्रतिपद सम्बन्धी। आरम्भ का।
प्रातिपदिक पुं० (सं) १-अग्नि। २-वह अर्थवान शब्द जो धातु न हो और जिसकी सिद्धि विभक्ति लगाने से न हुई हो।
प्रातिभ वि० (सं) प्रतिभा सम्बन्धी।
प्रातिभाव्य पुं० (सं) १-जमानत। २-प्रतिभू का भाव

प्रातिरूपक वि० (सं) उसी रूप का। नकली।
प्रातिलोमिक वि० (सं) १-विपक्ष। विरुद्ध। २-प्रतिलोम से उत्पन्न।
प्रातिलोम्य पु० (सं) १-प्रतिलोम का भाव। २-विरुद्धता। ३-प्रतिकूलता।
प्रातिवेशिक पुं० (सं) पड़ोसी।
प्रातिवेश्मक पुं० (सं) पड़ोसी।
प्रातिवेश्य पुं० (सं) १-पड़ोस। २-पड़ोसी।
प्रातिवश्यक पुं० (सं) पड़ोसी।
प्रातिहारिक वि० (सं) प्रतिहार सम्बन्धी।
१-द्वारपाल। २-जादूगर।
प्रात्यहिक वि० (सं) दैनिक। प्रतिदिन का।
प्राथमिक वि०(सं) १-पहले का। २-आरम्भ का। ३-सबसे अधिक महत्व का।
प्राथमिकता स्त्री० (सं) १-प्राथमिक होने का भाव। २-किसी विषय में किसी वस्तु या व्यक्ति को किसी कार्य के लिए औरों से पहले मिलने वाला स्थान, अवसर आदि। (प्रायरिटी)।
प्राथमिकता सूची स्त्री० (सं) विषयों आदि की सूची जिसमें उन महत्वपूर्ण विषयों को लिखा गया हो जिनको और विषयों से पहले कार्यान्वित करना हो (प्रायरिटी लिस्ट)।
प्रादुर्भाव पु०(सं) १-अस्तित्व में आना। प्रकट होना २-उत्पत्ति। ३-आविर्भाव।
प्रादुर्भूत वि०(सं) १-प्रकटित। २-विकसित। निकला हुआ। ३-उत्पन्न।
प्रादुर्भूतमनोभवा स्त्री० (सं) एक प्रकार की नायिका जिसके मन में काम का पूर्ण प्रादुर्भाव होता है और उसमें काम के सब चिह्न प्रकट होते हैं
प्रादेश पुं०(सं) १-अंगूठे की नोक से तर्जनी तक का एक माप। २-प्रदेश। ३-स्थान। प्रांत।
प्रादेशन पुं० (सं) दान।
प्रादेशिक वि० (सं) प्रदेश सम्बन्धी। किसी प्रदेश का (टैरिटोरियल)। पु० (सं) किसी प्रदेश का शासक। सूबेदार।
प्रादेशिक आयुक्त पुं० (सं) किसी प्रदेश के जटिल कानूनी प्रश्नों को हल करने के लिए नियुक्त उच्च अधिकारी। (रीजनल कमिश्नर)।
प्रादेशिक क्षेत्राधिकार पुं० (सं) प्रादेशिक अधिकार या कार्य क्षेत्र। (टैरिटोरियल ज्यूरिसडिक्शन)।
प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र पुं० (सं) वह प्रादेशिक स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो। (टैरिटोरियल कॉन्स्टीट्यूएंसी।

जन ऑफ लेबर)।
प्रादेशिक-सेना स्त्री० (सं) किसी प्रदेश में स्थानीय सुरक्षा के उद्देश्य से विशेषतः नागरिकों की तैयार की हुई सेना। (टैरिटोरियल आर्मी)।
प्रादेशिनी स्त्री० (सं) तर्जनी।
प्राधान्य पु० (सं) १-प्रधानता। श्रेष्ठता। २-मुख्यता।
प्राधिकरण पु० (सं) किसी व्यक्ति को आदेश आदि देने का अधिकार देना।

प्राधिकारी पु० (सं) १-वह जिसे अधिकार प्राप्त हो, (अथोरिटी)। २—अधिकारियों का वर्ग। (अथोरिटीज)।
प्राधिकृत वि० (सं) १-जिसको कोई काम करने का अधिकार हो। (अथोराइज्ड)। २-जिसे अधिकार या सुभीता मिला हो। (प्रिविलेज्ड)।
प्राधिकृत अभिकर्ता पु० (सं) वह अभिकर्ता जिसे विधिपूर्वक किसी के लिये काम करने का अधिकार प्राप्त हो। (अथोराइज्ड-एजेंट)।
प्राधिकृत-पूंजी स्त्री० (सं) किसी कारखाने आदि में लगाई जाने वाली वह पूँजी जिसको किसी संमिलित समवाय ने हिस्सेदारों से लेने की अनुमति सरकार से ले ली हो। (अथोराइज्ड कैपिटल)।
प्राध्यापक पु० (सं) किसी महाविद्या-

कोई विषय पढ़ाने वाला उच्च शिक्षा प्राप्त अध्यापक जो उस विषय का विशेषज्ञ या विद्वान हो। (प्रोफेसर, लैक्चरर)।

प्रान पु० (हि) दे० 'प्राण'।

प्रानी पु० (हि) दे० 'प्राणी'।

प्रानुमतिपत्र पु० (सं) वह पत्र जिससे किसी नियन्त्रित माल को नियत मात्रा में खरीदने का अधिकार दिया गया हो। (परमिट)।

प्रानेस पु० (हि) दे० 'प्राणेश'।

प्रापक वि० (सं) १-पाने वाला। २-प्राप्त होने वाला

प्रापण पु० (सं) १-प्राप्ति। मिलना। २-प्रेरणा। ले आना।

प्रापणिक पु० (सं) सौदागर। व्यापारी।

प्रापति स्त्री० (हि) सिद्धि। प्राप्ति।

प्रापना क्रि० (हि) पाना। प्राप्त करना।

प्रापयिता पुं० (सं) प्राप्त करने वाला।

प्रापित वि० (सं) पहुंचाया हुआ। प्राप्त किया हुआ

प्रापी वि० (सं) प्राप्त करने वाला।

प्राप्त वि० (सं) १-लब्ध। पाया हुआ। मिला हुआ २-उत्पन्न। ३-सामने आया हुआ।

प्राप्तकाल पुं० (सं) १-कोई कार्य करने योग्य समय उचित समय। २-मरने योग्य काल। ३-विवाह करने योग्य समय। वि० (सं) जिसका समय आ गया हो।

प्राप्तजीवन वि० (सं) जिसकी नई जिंदगी हुई हो। पुनर्जीवन।

प्राप्तमनोरथ वि० (सं) जिसकी मनोकामना पूरी हुई हो।

प्राप्तयौवन वि० (सं) जो जवान हो गया हो।

प्राप्ततुं स्त्री०(सं) वह लड़की जो रजस्वला हो गई हो

प्राप्तव्य वि०(सं) प्राप्त। मिलने वाला।

प्राप्तव्यवहार वि० (सं) बालिग।

प्राप्ताधिकार पुं० (सं) किसी व्यक्ति, वर्ग आदि को काम करने के सुभीते के लिए दिया गया विशेषाधिकार। (प्रीविलेज)।

प्राप्तानुज्ञ वि० (सं) जिसे कोई माल खरीदने पर बेचने के लिए अधिकार पत्र या अनुज्ञा पत्र दिया गया हो। (लाइसेंस्ड)। पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसे उपरोक्त अनुज्ञा पत्र दिया गया हो। (लाइसेंसी)।

प्राप्तावसर वि० (सं) दे० 'प्राप्तकाल'।

प्राप्ति स्त्री० (सं) १-उपलब्धि। प्रमाण। २-रसीद। पहुंच। ३-अर्जन। ४-उदय। ५-भाग्य। ६-व्याप्ति प्रवेश। ७-मेल। ८-नाटक का सुखद उपसंहार। ९-अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिससे वांछित पदार्थ मिलता है।

प्राप्तिकर्ता पुं० (सं) वह जिसे कोई वस्तु मिले या प्राप्त हो। (रिसीपिएंट)।

प्राप्तिका स्त्री० (सं) वह पत्र जिस पर किसी वस्तु की पहुंच का उल्लेख हो। (रिसीप्ट)।

प्राप्त्याशा स्त्री० (सं) मिलने की आशा।

प्राप्य वि० (सं) १-पाने या प्राप्त करने योग्य। २-जो किसी को आवश्यक रूप में प्राप्त करना हो। ३-बाकी धन अथवा वस्तु जो लेनी हो। (ड्यू)।

प्राप्यक पुं० (सं) वह पत्र जिसमें किसी के नाम पड़ी रकम या माल का ब्योरा और मूल्य लिखा रहता है प्राप्यधन या बाकी का सूचक पत्र। (बिल)।

प्राबल्य पुं० (सं) १-प्रबलता। २-प्रधानता।

प्राभिकर्ता पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसे किसी अन्य व्यक्ति के प्रतिनिधि रूप में कार्य करने का अधिकार-पत्र प्राप्त हो। (एटॉर्नी)।

प्राभियोक्ता पुं० (सं) किसी के विरुद्ध कोई आरोप लगाकर मामला चलाने वाला। (प्रॉसीक्यूटर)।

प्राभियोक्ता-पक्ष पुं० (सं) जिसकी ओर से कोई मामला चलाया गया हो वह पक्ष। (प्रॉसीक्यूशन)।

प्राभियोजन पुं० (सं) किसी के विरुद्ध कोई आरोप लगा कर मामला चलाना। (प्रॉसीक्यूशन)।

प्रामंडलिक वि० (सं) प्रमण्डल-सम्बन्धी। (डिवीजनल)

प्रामाणिक वि० (सं) १-प्रमाण के रूप में मान्य। २-जो प्रत्यक्ष प्रमाणों से सिद्ध हो। (अथॉरिटेटिव)। ३-ठीक मानने योग्य। ४-सत्य।

प्रामाण्य पुं० (सं) १-प्रामाणिकता। २-मान-मर्यादा।

प्रामिसरी वि० (सं) जिसमें किसी बात की प्रतिज्ञा हो

प्रामिसरीनोट पुं० (सं) १-वह राजकीय पत्र जिसमें सरकार जनता से कुछ ऋण लेकर ब्याज समेत एक निश्चित समय के बाद लौटाने का करार करती है। २-वह लेख या पत्र जिस पर लेने वाला यह लिख कर हस्ताक्षर करे कि उधार लिया हुआ रुपया वह निश्चित काल पर पत्र दिखाने पर वापिस कर देगा। हुंडी।

प्रायः अव्य० (सं) अकसर। अधिक अवसरों पर। २-लगभग। वि० (सं) अधिकतर। करीब-करीब।

प्राय पुं० (सं) १-समान। बराबर। २-लगभग। ३-आयु। ४-मृत्यु। ५-इष्टसिद्धि के लिए मरण पर्यन्त उपवास करने के लिए उद्यत होना। वि०(सं) समान पूर्ण।

प्रायद्वीप पुं० (हि) दे० 'प्रायोद्वीप'।

प्रायशः अव्य० (सं) बहुधा। अकसर। अधिकतर। प्रायः।

प्रायश्चित्त पुं० (सं) वह शास्त्रीय कृत्य जिसके करने से पापों का निवारण होता है।

प्रायिक वि० (सं) १-प्रायः या अकसर होने वाला। २-सामान्यतः सभी अवसरों पर अपने नियमों के अनुसार होने वाला। (यूजुअल)। ३-गिनती अनुमान से कुछ ठीक। (एप्रोक्सीमेट)।

प्रायोगिक वि०(सं) १-प्रयोग सम्बन्धी। २-प्रयोग के रूप में किया जाने वाला। (अप्लाइड, एक्सपेरी-मेंटल)।

प्रायोज्य वि० (सं) प्रयोग में आने वाला।

प्रायोद्वीप पुं० (सं) स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।

प्रायोपवेश पुं०(सं) प्राण त्यागने के लिए किया जाने वाला अनशन-व्रत।

प्रायोपवेशन पुं० (सं) दे० 'प्रायोपवेश'।

प्रायोवाद पुं० (सं) कहावत। लोकोक्ति।

प्रारंभ पुं० (सं) आरम्भ। आदि। (कमेंसमेंट)।

प्रारंभण पुं० (सं) प्रारंभ या शुरू करना।

प्रारंभिक वि०(सं) १-आरम्भ या शुरू का। २-सबसे पहले होने वाला। (प्रिलिमिनरी)।

प्रारब्ध वि०(सं) आरम्भ किया हुआ। पुं०(सं) १-वह कर्म जिसका फल भोग आरम्भ हो चुका है। २-भाग्य।

प्रारूप पुं० (सं) किसी लेख, प्रस्ताव, योजना, विधेयक आदि का लोकता से प्रारंभिक रूप से तैय्यार किया गया रूप जिसमें संशोधन की आवश्यकता पड़ती है। प्रालेख। (ड्राफ्ट)।

प्रारूपकार पुं० (सं) प्रारूप या कच्चा मसौदा तैयार करने वाला। (ड्राफ्ट्समैन)।

प्रार्थन पुं०(सं) १-प्रार्थना करना। मांगना। याचना।

प्रार्थना स्त्री०(सं) १-किसी से कुछ मांगना या चाहना। २-विनय। ३-निवेदन ४-संगीतानुसार एक प्रकार की मुद्रा। क्रि० (सं) विनती करना।

प्रार्थनापत्र पुं० (सं) वह लेख जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। आवेदन पत्र। (एप्लिकेशन)

प्रार्थनाभंग पुं० (सं) प्रार्थना की स्वीकृति न मिलना।

प्रार्थनासमाज पुं० (सं) ब्रह्मसमाज के समान एक पंथ जिसके अनुयायी मूर्ति पूजा और जातिगत का भेद नहीं मानते।

प्रार्थनासिद्धि स्त्री०(सं) इच्छा का पूरा होना।

प्रार्थनीय वि० (सं) प्रार्थना या निवेदन करने योग्य

प्रार्थयिता पुं० (सं) प्रार्थना करने वाला।

प्रार्थित वि० (सं) जो मांगा गया हो। याचित। पुं० (सं) इच्छा।

प्रार्थित पूंजी स्त्री० (सं) किसी सीमित सम्वाय की अधिकृत पूञ्जी का वह अंश जिसके लिए प्रार्थना पत्र स्वीकृत कर लिये गये। (सब्सक्राइब्ड कैपिटल)।

प्रार्थी वि० (सं) प्रार्थना या निवेदन करने वाला।

प्रार्थ्य वि० (सं) प्रार्थना के योग्य।

प्रालंब पुं० (सं) १-वह माला जो गरदन से ... तक लटकती है। २-रस्सी के समान कोई ... ई वस्तु।

प्रालंबक पुं० (सं) नीचे तक लटकने वाली माला।

प्रालंबिका स्त्री० (सं) गले में पहनने की माला। ... हार।

प्रालेय पुं० (सं) दे० 'प्रारूप'। (ड्राफ्ट)।

प्रालेय पुं० (सं) १-हिम। पाला। २-बरफ।

प्रालेयकर पुं० (सं) हिमालय।

प्रालेयपर्वत पुं० (सं) हिमालय।

प्रालेयरश्मि पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

प्रालेयांशु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

प्रालेयाद्रि पुं० (सं) हिमालय।

प्रावरण पुं० (सं) १-ओढ़ने का वस्त्र। चादर। २-ढकन। प्रच्छादन।

प्राविधानिक वि० (सं) १-प्रविधान-विषयक। २-जिसे प्रविधान में स्थान मिला हो। (स्टैट्यूटरी)

प्राविधिक वि० (सं) किसी कला, शिल्प आदि की विशेष कार्य रीति। (टेक्निकल)।

प्राविधिक-आपत्ति स्त्री० (सं) वह आपत्ति जो नियम, प्रविधि आदि के अननुपालन के आधार पर की गई हो। (टेक्निकल ऑब्जेक्शन)।

प्राविधिज्ञ पुं० (सं) किसी कला कला आदि की विशेष कार्य रीति का वेत्ता। (टेक्नीशियन)।

प्रावीण्य पुं० (सं) निपुणता। कुशलता।

प्रावृट पुं० (सं) वर्षाऋतु। पावस।

प्रावृतकाल पुं० (सं) वर्षा का मौसम।

प्रावृत पुं० (सं) १-घूंघट। बुरका। २-ओढ़ने का वस्त्र। उत्तरीय। (रैपर)। वि० (सं) ढका हुआ। घिरा हुआ।

प्रावृष पुं० (सं) वर्षाऋतु।

प्रावृषा स्त्री० (सं) वर्षाऋतु।

प्रावृषेण्य वि० (सं) वर्षाकाल में होने वाला।

प्रावृष्य पुं० (सं) दे० 'प्रावृषेण्य'।

प्राशन पुं० (सं) १-खाना। भोजन करना। २-चखना।

प्राश्निक पुं० (सं) १-सभा में कार्रवाई चलाने वाला। २-प्रश्न पूछने वाला। ३-छात्रों की परीक्षा के लिए प्रश्नपत्र तैयार करने वाला। (पेपर सेटर)।

प्रासंगिक वि० (सं) १-प्रसंग सम्बन्धी। २-प्रसंग द्वारा प्राप्त। ३-किसी प्रसंग में आकस्मिक रूप से सम्मुख आने वाला (व्यय आदि)। (कंटिन्जेंट)। ४-प्रकाशिक।

प्रासविक विज्ञान पुं० (सं) गर्भवती स्त्रियों को प्रसव कराने की कला का ज्ञान। (मैटर्निटी साइन्स)।

प्रासाद पुं०(सं) १-बहुत बड़ा मकान। महल। राज-भवन। २-देवालय। ३-राजमहल की चोटी।

... -सुन्दर। ... जाय।

प्रासादीय वि० (सं) प्रासाद सम्बन्धी। प्रासाद का।

प्रासूतिक वि० (सं) प्रसूति-सम्बन्धी।
प्रास्ताविक वि० (सं) १-प्रस्ताव के रूप में काम आने वाला। २-समयोचित।
प्रास्थानिक वि०(सं) (वह वस्तु) जो प्रस्थान के समय शुभ समझी जाती हो।
प्रिंसिपल पुं०(अं) १-किसी महाविद्यालय या विद्यालय का सर्वोच्च अध्यापक या अधिकारी। २-मूलधन।
प्रिथिमी स्त्री० (हि) पृथ्वी।
प्रियंकर वि० (सं) प्रसन्नकारक।
प्रियंवद वि० (सं) मीठा बोलने वाला। प्रियवादी।
प्रिय वि० (सं) १-जिससे प्रेम हो। प्यारा। २-सुन्दर मनोहर। पुं० (सं) १-पति। स्वामी। २-जमाता। ३-ऋद्धि। ४-कंगनी। ५-हित। बेंत। ६-हरताल ७-ईश्वर।
प्रियकांक्षी वि० (सं) जो भला चाहे।
प्रियकारक वि० (सं) भला करने वाला। पुं० (सं) मित्र।
प्रियकारी वि० (सं) प्रियकारक।
प्रियजन पुं० (सं) प्रेमपात्र। सगे-सम्बन्धी।
प्रियतम वि० (सं) सबसे अधिक प्रिय। पुं० (सं) पति स्वामी।
प्रियतमा वि० (सं) अत्यधिक प्यारी। स्त्री० (सं) पत्नी प्रेमिका।
प्रियता स्त्री० (सं) प्रेम। प्रिय होने का भाव।
प्रियत्व पुं० (सं) प्रियता।
प्रियदर्शन वि० (सं) मनोहर। सुन्दर। पुं० (सं) १-तोता। २-खिरनी का पेड़।
प्रियदर्शी वि० (सं) सबको प्रिय समझने वाला। पुं० (सं) अशोक राजा की उपाधि।
प्रियपात्र पुं० (सं) जिसके साथ प्रेम किया जाय।
प्रियभाव पुं० (सं) प्रेम।
प्रियभाषी वि० (सं) मधुर वचन बोलने वाला।
प्रियवचन पुं० (सं) मधुर वचन। प्रिय वाक्य।
प्रियवादी पुं० (सं) १-प्रियभाषी। २-चापलूस।
प्रिया स्त्री० (सं) १-नारी। स्त्री। २-पत्नी। ३-इलायची। ४-चमेली। मल्लिका। ५-मदिरा। ६-प्रेमिका। माशूका। ७-कंगनी।
प्रियाल पुं० (सं) चिरौंजी का पेड़।
प्रियाला स्त्री० (सं) दाख।
प्रियोक्ति स्त्री० (सं) चापलूसी की बात। चिकनी चुपड़ी बात।
प्रीणन पुं० (सं) प्रसन्न करना। जो प्रसन्न करे।
प्रीणित वि० (सं) सतुष्ट। प्रसन्न।
प्रीत वि०(सं) १-प्रसन्न। आह्लादमय। २-संतुष्ट। ३-प्यारा। स्त्री० (हि) दे० 'प्रीति'।
प्रीतम पुं० (हि) दे० 'प्रियतम'।
प्रीति स्त्री० (सं) १-संतोष। २-हर्ष। आनन्द। ३-प्रेम। ४-कामदेव की स्त्री का नाम जो रति की सौत थी। ५- फलित ज्योतिष के सत्ताइस योगों में से एक।
प्रीतिकर वि० (सं) प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला।
प्रीतिकर्म पुं० (सं) प्रेमपूर्ण कार्य।
प्रीतिकारक वि० (सं) दे० 'प्रीतिकर'।
प्रीतिकारी वि० (सं) दे० 'प्रीतिकर'।
प्रीतिदत्त पुं० (सं) १-प्रेम पूर्वक दिया हुआ दान। २-वह सम्पत्ति जो किसी स्त्री को सगे संबन्धियों से मिली हो।
प्रीतिदान पुं० (सं) दे० 'प्रीतिदत्त'।
प्रीतिधन पुं० (सं) प्रेम या मित्रता के नाते दिया हुआ धन या रुपया।
प्रीतिपात्र पुं० (सं) प्रेमपात्र। कोई भी पुरुष या पदार्थ जिसके प्रति प्रेम हो।
प्रीतिभोज पुं० (सं) मित्रों और बन्धुबान्धवों के साथ बैठ कर खाना पीना। दावत। (डिनर)।
प्रीतिवर्द्धन पुं० (सं) विष्णु। वि० (सं) प्रीति बढ़ाने वाला।
प्रीतिवर्धन पुं० (सं) दे० 'प्रतिवर्द्धन'।
प्रीतिवाद पुं० (सं) मैत्रीपूर्ण बातचीत।
प्रीति विवाह पुं० (सं) पहले से प्रेम सम्बन्ध के कारण होने वाला विवाह।
प्रीति सम्मेलन पुं० (सं) विद्यालय आदि के नये या पुराने छात्रों का वार्षिकोत्सव आदि पर इकट्ठे होकर एक दूसरे से मिलना तथा नाटक आदि खेलना। (सोश्यल गैदरिंग)।
प्रीतिस्निग्ध वि० (सं) प्रेम या स्नेह के कारण आर्द्र। (नेत्र)।
प्रीत्यर्थ अव्य० (सं) १-प्रीति के कारण। प्रसन्न करने के लिए। २-लिए। वास्ते।
प्रूफ पुं० (सं) १-प्रमाण। सबूत। २-किसी छापे जाने वाले लेख पुस्तकादि का वह नमूना जिसमें गलतियां ठीक की जाती हैं। ३—वस्तु विशेष को रोकने वाला-जैसे वाटर-प्रूफ।
प्रूफरीडर पुं० (सं) प्रूफ की अशुद्धियां आदि ठीक करने वाला।
प्रेंखण पुं० (सं) १—झूलने की क्रिया या भाव। २-झूला।
प्रेंखित वि० (सं) झूला हुआ। कंपित।
प्रेक्षक पुं० (सं) देखने वाला। दर्शक।
प्रेक्षण पुं० (सं) १-देखने की क्रिया। २-नेत्र, आंख। ३-कोई सार्वजनिक तमाशा।
प्रेक्षणक पुं० (सं) १-खेल। तमाशा। २-खेल या तमाशा देखने वाला।

प्रेक्षणीय वि० (सं) १-देखने योग्य। २-दर्शनीय। ध्यान देने योग्य।

प्रेक्षा स्त्री० (सं) १-देखना। २-नृत्य, नाटक आदि देखना। ३-बुद्धि। प्रज्ञा। ४-दृष्टि। निगाह। ५-शोभा। ६-मनन। विलोचन। विचार।

प्रेक्षाकारी वि० (सं) विवेक से काम लेने वाला।

प्रेक्षागृह पुं० (सं) १-रंगशाला। नाट्यशाला। २-मंत्रणागृह।

प्रेक्षागार पुं० (सं) दे० 'प्रेक्षागृह'।

प्रेक्षावान वि० (सं) सोच समझ कर काम करने वाला चतुर।

प्रेक्षित वि० (सं) देखा हुआ।

प्रेक्षिता पु० (सं) दर्शक। देखने वाला।

प्रेक्षी वि० (सं) बुद्धिमान। समझदार।

प्रेक्ष्य वि० (सं) दे० 'प्रेक्षणीय'।

प्रेत वि० (सं) मृत। मरा हुआ। पुं० (सं) १-वह मृतात्मा जो और्ध्वदेहिक कृत्य किए जाने के बाद रह जाती है। २-मृत मनुष्य। ३-पिशाचों के समान एक कल्पित देवयोनि। ४-बहुत ही दुष्ट व्यक्ति।

प्रेतकर्म पुं० (सं) दाह से लेकर सपिंडी तक का वह कर्म जो मृतक प्राणी के निमित्त किया जाता है।

प्रेतकृत्य पुं० (सं) प्रेतकर्म।

प्रेत कार्य पुं० (सं) प्रेतकर्म।

प्रेतगृह पुं० (सं) श्मशान।

प्रेतगेह पुं० (सं) श्मशान।

प्रेतता स्त्री० (सं) दे० 'प्रेतत्व'।

प्रेततर्पण पु० (सं) वह तर्पण जो किसी के मरने के दिन से सपिंडी के दिन तक किया जाता है।

प्रेतत्व पु० (सं) प्रेत का भाव या धर्म।

प्रेतदाह पुं० (सं) मृतक को जलाने आदि का कर्म।

प्रेतदेह स्त्री० (सं) मृतक का वह कल्पित शरीर जो मृत्यु के समय से सपिंडीकरण तक उसकी आत्मा को प्राप्त होता है।

प्रेतनदी स्त्री० (सं) वैतरणी नदी।

प्रेतनाह पुं० (सं) यमराज।

प्रेतनी स्त्री० (हि) भूतनी। चुड़ैल।

प्रेतपटह पुं० (सं) (प्राचीन काल में) जलाने को ले-जाते समय बजाये जाने वाला ढोल।

प्रेतपति पुं० (सं) यमराज।

प्रेतपावक पुं० (सं) रात के समय रेगिस्तान जंगलों आदि में चलता हुआ दिखाई देने वाला प्रकाश। लुक। लहाब।

प्रेतपिंड पुं० (सं) मरने के दिन से लेकर सपिंडी के दिन तक दिया जाने वाला अन्न का वह पिंड जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि पिंड देह बनती है।

प्रेतपुर पु० (सं) यमपुरी।

प्रेतपुरी स्त्री० (सं) यमपुरी।

प्रेतबाधा स्त्री० (सं) प्रेत द्वारा पहुँचाया गया कष्ट।

प्रेतभाव पु० (सं) मृत्यु।

प्रेतभूमि पुं० (सं) श्मशान।

प्रेतमेध पु० (सं) मृतक के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध।

प्रेतराज पुं० (सं) यमराज।

प्रेतलोक पुं० (सं) यमलोक।

प्रेतवाहित वि० (सं) जिस पर भूत सवार हो।

प्रेतशिला स्त्री० (सं) गया तीर्थ की वह शिला जिस पर प्रेतों के निमित्त पिंडदान दिया जाता है।

प्रेतशुद्धि स्त्री० (सं) प्रेतशौच।

प्रेतशौच पुं० (सं) किसी मृत नातेदार के सूतक की शुद्धि।

प्रेतश्राद्ध पु० (सं) मरने की तिथि से एक वर्ष के अन्दर में होने वाला सोलह श्राद्ध।

प्रेताधिप पुं० (सं) यमराज।

प्रेतान्न पु० (सं) प्रेत के उद्देश्य से दिया जाने वाला अन्न।

प्रेतावास पु० (सं) श्मशान।

प्रेताशौच पु० (सं) मरने का अशौच। सूतक।

प्रेतास्थि पु० (सं) मुर्दे की हड्डी।

प्रेतेश पु० (सं) यमराज।

प्रेतेश्वर पु० (सं) यमराज।

प्रेतोन्माद पु० (सं) प्रेत के कारण होने वाला पागल-पन।

प्रेप्सा स्त्री० (सं) पाने या प्राप्त करने की इच्छा।

प्रेम पु० (सं) १-किसी के बहुत अच्छा लगने पर सदा उसे पास रहने के लिए प्रेरित करने वाली मनोवृत्ति। प्रीति। प्यार। २-स्त्री और पुरुष का पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप तथा कामवासना के कारण होता है। ३-माया और लोभ। ४-केशव के मतानुसार एक अलंकार।

प्रेमकर्त्ता पु० (सं) प्रीति करने वाला प्रेमी।

प्रेमकलह पु० (सं) प्रेम के कारण हास-परिहास या झगड़ा करना।

प्रेमगर्विता स्त्री० (सं) साहित्य में वह नायिका जिसे यह अभिमान हो कि मेरा पति मुझे बहुत चाहता है

प्रेमजल पुं० (सं) १-पसीना। २-प्रेमाश्रु।

प्रेमनीर पु० (सं) प्रेम के कारण आंखों से निकलने वाला आंसू।

प्रेमपात्र पु० (सं) वह जिससे प्रेम किया जाय।

प्रेमपाश पु० (सं) प्रेम का जाल या फंदा।

प्रेम-पुलक स्त्री० (सं) प्रेम के कारण होने वाला रोमांच।

प्रेमबंध पु० (सं) गहरा प्रेम।

प्रेमबंधन पुं० (सं) प्रेम का बन्धन।

प्रेमभक्ति पु० (सं) [illegible] भक्ति

चुकनी की इतनी मात्रा जो एक बार मुँह में फांकी जा सके।
फंकी स्त्री० (हि) १-चूर्ण रूप में फांकने की दवा। २-छोटी फांक या टुकड़ा। ३-उतनी दवा जो एक बार में फांकी जा सके।
फंग पुं० (हि) १-फंदा। २-प्रेम। अनुराग।
फंड पु० (श्रं) किसी कार्य विशेष के लिए एकत्र धन।
फंद पु० (हि) १-बंधन। २-जाल। फंदा। ३-छल। ४-मर्म। ५-कष्ट।
फंदवार वि० (हि) फन्दा लगाने वाला।
फंदना क्रि० (हि) फंसना। फंदे में आना। चक्कर में आना। क्रि० फांदना। पार करना।
फंदा पुं० (हि) जाल। फसाने की वस्तु। बन्धन। धोखा। जाल। दुःख। कष्ट। छल। फांसी की रस्सी।
फँदाना क्रि० (हि) फांदने का काम करवाना।
फँफाना क्रि० (हि) उफनना।
फँसना क्रि० (हि) फंदे में जाना। चक्कर में फँस-जाना।
फँसाना क्रि० (हि) फंदे में पकड़ना। चक्कर में डालना। चंगुल में ले लेना।
फ पुं० (सं) कड़वे वचन। व्यर्थ बात। झंझावात।
फक वि० स्वच्छ। बिना रंग का। फीका।
फक़त वि० (अ) केवल। मात्र।
फ़कीर पुं० (अ) साधु। भिखारी। निर्धन।
फ़क़ीरनी स्त्री० (अ) फकीर का स्त्रीलिंग शब्द।
फ़क़ीराना वि० (अ) फकीरों के समान।
फक्कड़ पुं० (हि) १-गाली गलौच। २-बिना धन के मस्त रहनेवाला व्यक्ति। ३-गैर जिम्मेदार व्यक्ति।
फख़ पुं० (फा) गर्व। घमंड।
फगुआ पुं० (हि) फाग या होली की भेंट।
फगुनहट स्त्री० (हि) फागुन की तेज हवा जिसमें धूल उड़ती है।
फजर स्त्री० (अ) प्रातःकाल।
फ़जल पुं० (अ) अरबी के फज्ल शब्द का अपभ्रंश। कृपा। दया। विद्या। महानता।
फजीता पुं० (अ) झगड़ा। झंझट।
फजीहत स्त्री० (अ) अपमान। बदनामी।
फजूल वि० बेकार। व्यर्थ।
फजूल खर्च अपव्यय। व्यर्थ का खर्च। बेकार धन बरबाद करने वाला।
फजूलखर्ची स्त्री० व्यर्थ धन बरबाद करने की आदत।
फज्ल पुं० (अ) कृपा। दया। विद्या। महानता।
फट स्त्री० (हि) टकरा से उत्पन्न होने वाला शब्द।
फटफट स्त्री० (हि) मोटर साइकिल। अव्य० तुरन्त।
फटक स्त्री० (हि) स्फटिक। बिल्लौर। अव्य० तुरन्त।
फटकन स्त्री० (हि) अनाज को फटकने से निकालने वाले भूसे आदि।
फटकना क्रि० (हि) छाज या सूप से अनाज साफ करना। पुं० (हि) गुलेल का फीता। क्रि० (हि) आना। श्रम करना। चला जाना।
फटकवाना क्रि० (हि) फटक कर साफ करवाना।
फटका पु० (हि) १-धुनियों की धुनकी। २-कोरी तुकबन्दी वाली कविता।
फटकार स्त्री० (हि) डाट-डपट। झिड़की। धिक्कार। लानत।
फटकारना क्रि० १-झाड़ से फटक कर साफ करना। छल से रुपया ठग लेना। ३-डांटना। ४-शस्त्र चलाना।
फटन स्त्री० (हि) फटने की क्रिया। फटने से उत्पन्न दरार। फटने से उत्पन्न पीड़ा।
फटना क्रि० (हि) दो फांक होना। दरार पड़ना। दूध में खटाई पड़ने से उसका सार अलग हो जाना। बादलों का छिन्न भिन्न होना। विदीर्ण होना। छाती फटना। बहुत दुःख होना।
फटफटाना क्रि० (हि) फटफट शब्द करना। फड़फड़ाना। मुसीबत में हाथ पैर डालना।
फटा वि० (हि) फटा हुआ। दरार वाला।
फटिक पुं० (हि) स्फटिक का अपभ्रंश। संगमरमर।
फटिका स्त्री० (हि) कच्ची घटिया शराब। बीयर।
फट्टा पुं० (हि) फाड़ कर बनाई हुई बाँस की छड़। फट्टा।
फट्टी स्त्री० (हि) बाँस की चिरी हुई छड़।
फड़ पुं० (हि) जुए का दाव या अड्डा। माल बेचने का स्थान। (सेल्स काउन्टर)। दल। पक्ष। तोप चढ़ाने की गाड़ी का हरसा।
फड़क स्त्री० (हि) फड़कने की क्रिया।
फड़कन स्त्री० (हि) फड़क। धड़कन। आतुरता।
फड़कना क्रि० (हि) स्फुरण। हिलना। फड़फड़ाना। आतुर होना।
फड़काना क्रि० (हि) फड़कने के लिए प्रेरित करना। आतुरता उत्पन्न करना। प्रसन्न करना।
फड़नवीस पुं० (सं) मराठा काल में एक उच्च पद।
फड़फड़ाना क्रि० (हि) घबराना। तड़फड़ाना।
फड़िंगा पु० (हि) फनगा। झींगुर।
फड़िया पुं० (हि) दे० 'फड़बाज़'।
फड़ी स्त्री० (हि) ईंटों या पत्थरों का ३० गज × १ गज × १ गज का ढेर।
फड़ुई स्त्री० (हि) छोटा फावड़ा।
फण पुं० (सं) सांप का फन। रस्सी का फन्दा। नाव का ऊपर का भाग।
फणधर पुं० (सं) सांप। शिवजी।
फणी पुं० (सं) सांप। केतु। सीसा।
फणीन्द्र पुं० (सं) शेषनाग, बड़ा सांप।

फणीरा पुं० (स) फणीन्द्र।
फतवा पुं० (अ) इस्लाम के धर्म गुरु का आदेश।
फतह स्त्री० (अ) विजय।
फतिंगा पुं० (हि) पतंगा।
फतीला पुं० (अ) बेल-बूटे बनाने में [illegible] की तीली।
फतूर पुं० (अ) विकार। खलल। उपद्रव।
फतूरिया पु० (अ) फतूर करने वाला।
फतूह स्त्री० (अ) जीत। जीता हुआ माल।
फतूही स्त्री० (अ) बिना बांह की कुर्ती। फतूह।
फते स्त्री० फतह का अपभ्रंश।
फतेह स्त्री० फतह का अपभ्रंश।
फदकना क्रि० (हि) फुदकना का अपभ्रंश।
फन पुं० (हि) सांप का फण। बाल।
फन पु० (फा) मक्कारी। विद्या। गुण।
फनगना क्रि० (हि) अंकुर फूटना।
फनगा पु० (हि) पतंगा।
फनना क्रि० (हि) कार्यारंभ होना।
फनफनाना क्रि० (हि) फनफन शब्द करना।
फनस पुं० (हि) कटहल।
फना स्त्री० (अ) बरबादी। नाश।
फनाना क्रि० (हि) तैयार होना। तैयार करना।
फनिंद पुं० (हि) फणीन्द्र का अशुद्ध रूप।
फन्नी स्त्री० (हि) लकड़ी का टुकड़ा जो दरार में ठोका जाता है। कंघी के समान बुनने का औजार।
फफूंदी स्त्री० (हि) फलों आदि पर उत्पन्न होने वाली सफेद काई। साड़ी का बंधन।
फफोला पुं० (हि) छाला। चमड़ी जल जाने पर उस में पानी भर जाने से फूला हुआ भाग।
फबती स्त्री० (हि) व्यंग्य। चुटकी। ताना।
फबन स्त्री० (हि) शोभा। फबने का भाव।
फबना क्रि० (हि) ठीक लगना। शोभा देना।
फबाना क्रि० (हि) ठीक बैठाना। शोभा के साथ जमना। उचित स्थान पर रखना।
फबि स्त्री० (हि) शोभा। सुन्दरता।
फबीला वि० (हि) फबने वाला। सजने वाला।
फरक दे० फड़क।
फरक दे० फर्क।
फरकन स्त्री० (हि) दे० 'फड़कन'।
फरकना क्रि० (हि) दे० 'फड़कना'।
फरका पुं० (हि) १-छप्पर। २-पल्ला। ढलान। ३-द्वार का टट्टर।
फरकाना क्रि० (हि) दे० 'फड़काना'।
फरचा वि० (हि) शुद्ध। पवित्र। साफ। सुथरा।
फरजद पुं० (फा) पुत्र।
फरजिंद पुं० (फा) दे० 'फरजंद'।
फरजी पुं० (फा) शतरंज में 'वजीर' नामक मोहरा।

[illegible] वि० (फा) नकली। बनावटी।
फरद स्त्री० (फा) दे० 'फर्द'।
[illegible]

शब्द।
फरफराना क्रि० (हि) दे० 'फड़फड़ाना'।
फरफुंदा पु० (हि) पतंगा।
फरमा पु० (अं) 'फार्म' का विकृत रूप। ढांचने का सांचा। डौल। ढांचा। कागज का वह पूरा ताव जो एक बार मशीन पर छपता है।
फरमाइश स्त्री० (फा) आदेश। प्रकट की हुई इच्छा।
फरमाइशी वि० (फा) आदेश पर की हुई बात। अच्छा या बढ़िया।
फरमान पुं० (फा) राजा की आज्ञा। आज्ञापत्र।
फरमाना क्रि० (फा) कहना। आज्ञा देना।
फरयाद स्त्री० (हि) दे० 'फरियाद'।
फरलांग पुं० (अं) मील का आठवां भाग। २२० गज
फरवरी पु० (अं) ईसा सवत् के वर्ष का दूसरा मास
फरवी स्त्री० (हि) मुरमुरा। भुना हुआ चावल।
फरश पु० (अ) दे० 'फर्श'।
फरशी स्त्री० (फा) हुक्का।
फरस पु० (हि) दे० 'फर्श'। दे० 'फरसा'।
फरसा पु० (हि) चौड़ी कुल्हाड़ी। परशु। कुठार। फावड़ा।
फरसी स्त्री० (हि) दे० फरशी।
फरहत पु० (अ) १-प्रसन्नता। आनन्द। मनःशुद्धि
फरहद पु० (हि) बगाल का समुद्र तटीय वृक्ष विशेष, पिचका।
फरहरा पुं० (हि) झंडा। कपड़े का कपड़ा। वि० (हि) शुद्ध। निर्मल। पृथक। स्पष्ट। खिला हुआ। प्रसन्न
फरहरी स्त्री० (हि) फल।
फरा पुं० (हि) एक प्रकार का व्यंजन।
फराक पुं० (हि) मैदान। वि० लम्बा चौड़ा। (दे० फराख)।
फराख वि० (हि) लम्बा-चौड़ा। आयत। पुं० (अ, देखो 'फराखन'।
फराज वि० (हि) विस्तृत। लम्बा-चौड़ा।
फराग़त स्त्री० (अ) छुट्टी। मुक्ति। पाखाने जाना।
[illegible]

[illegible] (हि) एक प्रकार का लट्ठा। मिट्टी की नांद। लट्ठे की लकड़ियां जिन पर हांड़ियां रखते हैं।
फरियाद स्त्री० (फा) शिकायत। पीड़ित होने [illegible]

लय या राजदरबार में की गई प्रार्थना। (कम्प्लेन्ट) (संविधान)।

फरियादी पुं० (फा) फरियाद करने वाला। (कम्प्लेनेंट)।

फरियाना क्रि० (हि) दे० 'फटकना'।

फरिश्ता पुं० (फा) इस्लाम के ग्रन्थों में वर्णित एक प्रकार का देवदूत। देवता के समान सज्जन व्यक्ति

फरी स्त्री० (हि) गाड़ी का हरसा। फाल। छुरी। एक छोटी सी चमड़े की ढाल।

फरीक पुं० (अ) विपक्षी। प्रतिद्वन्द्वी।

फरुई स्त्री० (हि) दे० 'फरुही'।

फरुही स्त्री० (हि) छोटा फावड़ा। मथानी। मुरमुरा।

फरेन्द्र पुं० (सं) जामुन का वृक्ष।

फरेब पुं० (फा) छलकपट। धोखा।

फरेबी वि० (फा) धोखेबाज।

फरेरा पुं० दे० 'फरहरा'।

फरेरी स्त्री० (हि) जंगल का एक फल या मेवा।

फरो वि० (फा) दबा हुआ।

फरोख्त स्त्री० (फा) विक्रय। बिक्री।

फर्क पुं० (अ) अन्तर। भेद। परायापन। दुराव। कमी।

फर्ज पुं० (अ) कर्तव्य। उत्तरदायित्व।

फर्ज करना क्रि०(फा) मान लेना। कल्पना करना।

फर्जी वि० (फा) कल्पित। नकली। दे० 'फरजी'।

फर्द स्त्री०(फा) १-वह कागज जिसपर ब्यौरा, लेखा, विवरण आदि लिखा हो। २-शाल। चद्दर। ३-बिना जोड़े का अकेला पशु या पक्षी।

फर्दजुर्म (फा) वह कागज जिसपर अभियुक्त के विरुद्ध अभियोग लिखा होता है। (चार्ज शीट)।

फर्रा पुं० (हि) फसल का एक रोग। लम्बा चौड़ा कागज जिसपर बहुत कुछ लिखा हो। चेतावनी देने वाला दफ्तरी पत्र। मोटी ईंट।

फर्राटा पुं० (हि) तेजी। वेग। सर्राटा।

फर्राश पुं० (अ) वह नौकर जो सफाई आदि करता है

फर्राशी वि० (फा) फर्राश-सम्बन्धी। स्त्री० फर्राश का पद।

फर्श पुं० (फा) आंगन। चौक। पक्का बैठने का स्थान

फर्शी स्त्री० (अ) हुक्का। वि० फर्श सम्बन्धी।

फर्शी सलाम पुं० (अ) फर्श तक झुककर किया हुआ सलाम। खुशामद।

फलंक पुं० (हि) १-देखो 'फलांग'। २-आकाश।

फल पुं० (सं) वनस्पति का गूदेदार खानेयोग्य भाग २-परिणाम। नतीजा। ३-चार फल—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। ४-लाभ। ५-गुण। प्रभाव। ६-बदला ७-शस्त्र का धार वाला भाग। ८-हल के आगे का लोहे वाला भाग। ९-ढाल। १०-त्रिराशि की तीसरी राशि। ११-जायफल। १२-गिरी। १३-प्रयोजन। १४-उद्देश्य। १५-ब्याज।

फलकंटक पुं० (सं) कटहल।

फलक पुं० (सं) १-तख्ता। पट्टा। २-चादर। ३-पत्र। पृष्ठ। ४-चौकी। ५-नितंब। कूल्हा। ६-हथेली। ७-फल। ८-कमल का बीज कोष। ९-माथे की हड्डी। १०-धोबी का पट्टा। ११-ढाल। १२-लाभ। १३-खाट का बुनावट वाला भाग।

फलक पुं० (अ) आकाश। स्वर्ग।

फलकना क्रि० (हि) छलकना। फड़कना।

फलका पुं० (हि) फफोला। झलना। जहाज की छत में छोटा सा दरवाजा।

फलकाम वि० फल की कामना करने वाला।

फलतः अव्य० (सं) फलस्वरूप। इसलिए। (कौन्सीक्वेन्टली)।

फलत्रय पुं० (सं) पेट साफ करने का चूर्ण। हरड़, बहेड़ा और आमला। द्राक्षा, परुष और काश्मीरी ये तीन फल।

फलद वि० (सं) फल देने वाला। लाभदायक। वृक्ष।

फलदान पुं० (हि) विवाह पक्का करने के लिए फल आदि देने की रस्म। टीके की रस्म।

फलदार वि० (हि) फल वाला। फलने वाला।

फलना क्रि० (हि) फल देना। फल आना। लाभ प्राप्त होना। शरीर में फुंसियां निकलना। सन्तानवती बनना।

फलना-फूलना क्रि० (हि) फल और फूल वाला होना। सुखी सम्पन्न होना। बाल बच्चों वाला होना।

फल-परिरक्षण पुं० (हि) फलों की सड़ने से रक्षा। फलों का मुरब्बा आदि बनाना। (फ्रूटप्रिजरवेशन)

फल-पाक पुं० (सं) करौंदा।

फलपादक पुं० (सं) फल का वृक्ष।

फल-पुच्छ पुं० (सं) गांठ वाली सब्जी जैसे प्याज। शलगम।

फल-पुष्प पुं० (सं) फल और फूल। फल और फूल दोनों उत्पन्न करने वाली वनस्पति।

फलपुष्पा स्त्री० (सं) पिण्डखजूर।

फलपूर स्त्री० (सं) अनार। दाड़िम।

फलप्रद वि० (सं) फलदायक। लाभदायक।

फलभागी वि० (सं) फल भोगने वाला।

फल-भूमि स्त्री० (सं) फलों का भोग करने का स्थान-स्वर्ग या नर्क।

फलभोग पुं०(सं) फलों का भोग। लाभ-हानि। सुख-दुःख का भोग।

फलयोग पुं० (सं) फल-प्राप्ति। वेतन। पुरस्कार। नाटक में नायक के उद्देश्य की सिद्धि का स्थान।

फलराज पुं० (सं) तरबूज।

फलवन्ध्य वि०(सं) ऐसा वृक्ष जिसमें फल न लगते हों

फलवर्ति स्त्री० (सं) घाव में भरने की मोटी बत्ती।

फलवर्तुल पुं० (सं) कुम्हड़ा ।
फलवान वि० (सं) फलवाला ।
फलवृक्षक पुं० (सं) कटहल ।
फलशाड़ पु० (सं) कटहल ।
फलशाक पुं० (सं) वह फल जिसका साग बनता हो
फलश्रेष्ठ पुं० (सं) आम ।
फलसत्ता पुं० (सं) जिज्ञासकी । दर्शनसाध्य । तर्क ।
फलस्नेह पुं० (सं) अखरोट ।
फला वि० (फा) अमुक ।
फलांग स्त्री० (हि) छलांग । एक कदम में पार किया जाने वाला अन्तर ।
फलांगना क्रि० (हि) कूदना । छलांग मारना । कूद कर पार करना ।
फलाकांक्षा स्त्री० (सं) फल की आकांक्षा । फल की इच्छा ।
फलागम पुं० (सं) फल का आना । फल की ऋतु । शरदृतु ।
फलाढ्या स्त्री० (सं) जंगली केला ।
फलाम्लिक पुं० (सं) करेला ।
फलादन पुं० (सं) फल खाने वाला । तोता ।
फलादेश पुं० (सं) फल बताना । कुंडली जन्मपत्री आदि देखना ।
फलाना क्रि० दे० 'फलाँ' । क्रि० फलने के लिए प्रेरित करना ।
फलाफल पुं० (सं) फल और अफल । अच्छा और बुरा । परिणाम ।
फलाम्ल पुं० (सं) अम्ल (खट्टा) फल । इमली आदि
फलाम्ल-पंचक पुं० (सं) पाँच खट्टे फल-बेर, अनार, इमली, अम्लबेत, बिजौरा ।
फलाराम पुं० (सं) फलों का बाग ।
फलार्थी वि० (सं) फल की कामना करने वाला ।
फलालैन पुं० (अं) एक प्रकार का कोमल ऊनी कपड़ा
फलाशी वि० (सं) फल ही खाने वाला । फलाहारी । तोता ।
फलासव पुं० (सं) फलों का आसव (फ्रूट ज्यूस) ।
फलाहार पुं०(सं) फलों का आहार । ऐसा व्रत जिसमें अन्न न खाया जाता हो अन्न के बिना बना हुआ भोजन ।
फलाहारी पुं० (हि) जो फलों का ही भोजन करे ।
फलित वि० (सं) फला हुआ । सफल । पूर्ण । सम्पन्न
फलित-ज्योतिष पुं० (सं) वह नक्षत्रों से मनुष्य के भाग्य का सम्बन्ध जोड़ने वाली विद्या ।
फलितव्य वि० (सं) फल देने योग्य ।
फली स्त्री० (हि) छोटे बीजों वाला लम्बा और चिपटा फल जिसमें से दानों के दाने निकलते हैं—मटर, सेम, गवार आदि।
फलौंदा पुं० (स फलौदा) फली । पलौदा ।
फलीभूत वि० (सं) सफल । फलदायक । फलित ।
फलेंदा पु० (हि) दे० 'फलेंद्र' ।
फलेंद्र पुं०(सं) बड़ा जामुन जिसमें गूदा और मिठास अधिक हो ।
फलोत्पत्ति स्त्री० (सं) फल की उत्पत्ति । आम ।
फलोदय पुं० (सं) फलोत्पत्ति । लाभ । स्वर्ग । हर्ष । दंड
फलोद्भव वि० (सं) फल से उत्पन्न होने वाला ।
फलोपजीवी वि० (सं) फल खाकर निर्वाह करनेवाला फल का व्यवसाय करने वाला ।
फल्गु स्त्री० (सं) १—सारहीन । तुच्छ । शक्तिहीन । २—गया नगर के पास बहने वाली नदी ।
फवारा पु० (हि) फुहारा ।
फसकड़ा पुं० (हि) चूतड़ टेककर बैठने का ढंग ।
फसल स्त्री०(सं) बाग या खेती की पैदावार । अन्न या फल पकने का समय । काल ।
फसली वि० (प) फसल सम्बन्धी ।
फसली कौवा पुं० एक प्रकार का पहाड़ी कौवा । स्वार्थी मित्र ।
फसली बुखार पु० (प) मौसमी बुखार मलेरिया (जूड़ी-ज्वर) ।
फसली साल पु०(प) अकबर द्वारा चलाया गया एक संवत्सर जो फसलों के अनुसार होता है ।
फसाद पुं० (प) उत्पात । लड़ाई । झगड़ा । बिगाड़ । उपद्रव ।
फसादी वि० (प) फसाद करने वाला ।
फसाना पुं० (फा) कहानी ।
फस्द स्त्री० (प) रग को काट कर रक्त निकलने की क्रिया ।
फहराना क्रि० (हि०) हवा में लहराना ।
फाँक स्त्री० (हि) फल आदि का लम्बा टुकड़ा । खंड ।
फाँकना क्रि० (हि) चूर्ण आदि को मुँह में डालना । फंक लेना ।
फांका पु० (हि) फाँकने की क्रिया । दे० 'फंकी' ।
फाकी स्त्री० (हि) दे० 'फंकी' । दे० 'फांक' ।
फांग स्त्री० (हि) एक प्रकार का साग ।
फांड़ स्त्री० दे० 'फांदा' ।
फाड़ा स्त्री० (हि) धोती का कमर में लपेट कर बांधा हुआ भाग फेंटा ।
फांद स्त्री० (हि) फंदा । जाल । छलांग । उछाल । फन्दा ।
फांदना क्रि० (हि) उछलना । छलांग मार कर पार करना ।
फांस स्त्री० (हि) फन्दा या बांस या लकड़ी का रेशा जो चमड़ी में धंस जाये, चुभने वाली चीज । खटकने वाली बात । फंदा ।
फांसना क्रि० (हि) १—जाल में फंसाना । २—वश में करना ।

फांसी स्त्री० (हि) १-गले में फंदा डालकर प्राण दण्ड देने की प्रथा। फंदे की रस्सी। २-अच्छा दुःख।
फाइन पुं० (अं) अर्थदण्ड। जुर्माना।
फाइनल वि० (अं) अन्तिम। निर्णायक।
फाइल स्त्री० (अं) मिसिल। सिलसिले से नत्थी करके रखे गये कागज। पत्र-व्यवहार, पत्रकाएं आदि।
फाउंड्री स्त्री० (अं) धातु ढालने का कारखाना।
फाका पुं० (अ) भूखापन। अनशन।
फाकामस्त वि० (फ) भोजन की कमी होने पर भी मस्त रहने वाला।
फाकेमस्ती स्त्री० (फ) फाकामस्त होने की स्थिति या भाव।
फाखतई वि० (हि) फाखता के रङ्ग का। भूरापन लिए हुए लाल रङ्ग का।
फाखता स्त्री० पंडुक पक्षी।
फाग पुं० (सं) होली। फाल्गुन मास का आनन्दोत्सव। उस उत्सव में गाया जाने वाला गीत।
फागुन पुं० (सं) फाल्गुन मास।
फागुनी वि० (सं) फागुन सम्बन्धी।
फाजिल वि०(अ) फालतू बचा हुआ। गुणी। विद्वान
फाटक पुं० (हि) बड़ा द्वार। मुख्य द्वार। कांजी हौस जहाँ आवारा पशुओं को बंद कर दिया जाता है। फटकन।
फाटका पुं० (हि) आगे का सौदा। सट्टा। जुआ। 'फारवर्ड' और 'वायदा'।
फाटना क्रि० (हि) देखो 'फटना'।
फाड़न स्त्री०(हि) फाड़ा हुआ भाग। धज्जी। घी तपाने पर निकली हुई छाछ।
फाड़ना क्रि०(हि) चीरना। कपड़े या कागज के टुकड़े करना। दूध में खटाई डाल कर पानी अलग करना। भेद उत्पन्न करना।
फातिहा पुं० (अ) मुसलमानों द्वारा मृतक व्यक्ति के लिए की गई प्रार्थना। आरम्भ।
फानी वि० (अ) नाशवान।
फानूस पुं० (फा) कंदील। छत में लटकाने के झाड़। मोमबत्ती जलाने का गिलास। ईंटों की भट्टी।
फाब स्त्री० (हि) फबन। शोभा।
फायदा पुं० (अ) लाभ। नफा। हित। प्रयोजन। अच्छा फल।
फायदेमंद वि० (अ) फायदे देने वाला। लाभदायक।
फाया पुं० (हि) मरहम लगा हुआ कपड़े या रूई का टुकड़ा। फाहा।
फारखती स्त्री० (अ) अधिकार छोड़ने की घोषणा। कुछ जातियों में पत्नी को विवाह-सम्बन्ध से मुक्त करने की प्रथा।
फारम पुं०(अं) फार्म। प्रपत्र। फरमा। मसौदे का ... या नमूना। कागज का ताव जो एक बार ... एक बार छापने के लिए जमाये हुए अक्षर। जिसमें वैज्ञानिक ढंग से खेती हो। नकशा। मा... सांचा।
फारस पुं० ईरान। पारस।
फारसी स्त्री० ईरान की भाषा या वहाँ का निवा...
फारिग वि० (अ) निवृत्त। मुक्त। शौच जा... निश्चिन्त।
फार्म दे० फारम।
फाल स्त्री० (सं) हल के नीचे लगा हुआ लोहे... फल। छाबिया। पतले दल का कटा हुआ टुक... डग। फलांग। कदम। पैंड।
फालकृष्ट वि० (सं) हल से जोता हुआ।
फालतू वि० (हि) आवश्यकता से अधिक। निर...
फालसई वि० (अ) फालसे के रङ्ग का। ऊदा।
फालसा पुं० (फा) खट मिट्ठे बेर के बराबर के जो ऊदे रङ्ग के होते हैं।
फालिज पुं० (अ) लकवा। अधरंग। पक्षाघात।
फालूदा पुं० (फा) एक प्रकार की सेवई जो आ... क्रीम के साथ खाई जाती है।
फाल्गुन पुं० (सं) भारतीय पत्रे का अंतिम मास मार्च के लगभग आता है। अर्जुन। फागुन।
फाल्गुनी स्त्री० (सं) फाल्गुन मास की पूर्णिमा।
फावड़ा पुं० (हि) मिट्टी खोदने का या इकट्ठी ... का एक औजार।
फावड़ी स्त्री० (हि) छोटा फावड़ा। लीद हटाने ... काठ का फावड़ा।
फासफरस पुं० (अ) एक तत्व जो हवा लगने ... जलने लगता है।
फासला पुं० (अ) दूरी। अन्तर।
फाहा पुं० (हि) देह। काया।
फाहिशा स्त्री० (अ) कुलटा। छिनाल।
फिकवाना क्रि० (हि) किसी से फेंकने का काम ... वाना।
फिकर स्त्री० (हि) 'फिक्र' का अशुद्ध रूप।
फिकरा पुं० (अ) वाक्य। धोखे की बात। भ... रीढ़ की हड्डी।
फिकरेबाज वि० (अ) धोखेबाज।
फिकरेबाजी स्त्री० (अ) धोखेबाजी।
फिकैत पुं० (हि) पटा-बनेठी का खेल खेलने वा... पटेबाज।
फिकैति स्त्री० (हि) पटा-बनेठी का खेल। उसमें ... लता।
फिक्र स्त्री० (अ) चिन्ता। सोच। परवाह।
फिक्रमंद वि० (अ) जिसे कोई चिन्ता लगी हो।
फिटकरी स्त्री० (हि) एक स्फटिक पदार्थ।
...र स्त्री० (हि) दे० 'फटकार'।
... स्त्री० (हि) छींटा। कपड़े की बनाव...

निकले हुए सूत के फुचरे। दे० 'फिटकरी'।

फ़िटन स्त्री० (प) बड़ी और खुली हुई घोड़ा गाड़ी। कोच।

फ़िट्टा वि०(हि) फटकार खाया हुआ। उदास। अप-मानित। श्रीहत।

फ़ितरत स्त्री०(प) स्वभाव। रचना। चालाकी। पैदा-इश।

फ़ितरतन (प) स्वभाव से ही। प्रकृति से ही।

फ़ितरती वि० (प) चतुर। चालाक। धोखेबाज। फितूरी।

फ़ितूर वि० (प) कमी। घाटा। खराबी। झगड़ा।

फ़ितूरी वि० (हि) लड़ाका। झगड़ालू। उपद्रवी। फित-रती।

फ़िदवी वि० (अ) आज्ञाकारी। पुं० दास। सेवक।

फ़िदा वि० (प) आसक्त। मुग्ध। किसी के प्रेम में लिप्त होकर उस पर जान देने वाला।

फ़िदा होना क्रि० (प) आसक्त होना। किसी पर जान देना।

फ़िनिया स्त्री० (हि) कान में पहनने का एक आभूषण

फ़िरंग पुं० (हि) १-यूरोप। विलायत। विदेश। २-गरमी या आतशक की बीमारी।

फ़िरंगिस्तान पुं० (हि) फिरंगियों का देश। यूरोप।

फ़िरंगी पु० (हि) विदेशी। यूरोपीय। गोरा। विला-यती।

फिरंट वि० (हि) फिरा हुआ। विरुद्ध। विपरीत। झगड़े पर आमादा। सामना करने वाला। नाराज़

फिर क्रि० वि० (हि) १-पुन। एक बार और। २-भविष्य में किसी समय। ३-पीछे। उपरान्त। अलावा।

फिरकना क्रि० (हि) नाचना। अपने केन्द्र पर लट्टू के समान घूमना।

फ़िरक़ा पुं० (प) सम्प्रदाय। जाति। पंथ। संकीर्ण समुदाय।

फ़िरक़ापरस्ती स्त्री० (प) संकीर्ण साम्प्रदायिक भावना

फिरकी स्त्री० (हि) १-छोटा लट्टू के आकार का खिलौना। २-चरखे में चमड़े का गोल टुकड़ा। ३-कुश्ती का एक पेच। ४-एक प्रकार का व्यायाम। ५-धागा लपेटने की रील।

फिरता वि० (हि) वापस। लौटाया हुआ। पुं० (हि) अस्वीकार।

फिरना क्रि० (हि) १-सैर करना। चक्कर लगाना। भ्रमण करना। टहलना। घूमना। चक्कर काटना। २-लौट जाना। वापस होना। ३-मुड़ना। ४-बिगड़ जाना। ५-विपरीत होना। ६-किसी वस्तु पर पोता जाना। ७-अपनी बात पर दृढ़ न रहना। ८-मुकरना। ९-टेढ़ा होना। १०-प्रसिद्ध या प्रचारित होना। ११-पलटाया जाना। १२-पलटा खाना।

फिरनी स्त्री० (हि) पिसे हुए चावलों को दूध में पका कर बनाया जाने वाला एक पकवान।

फिरवाना क्रि० (हि) फेरना या फिराने का काम करना।

फिराक़ वि० (हि) १-फिरता हुआ। २-वह माल जो फेरा जा सके।

फ़िराक़ पुं० (प) १-वियोग। २-चिन्ता। ३-खोज। ४-खटका।

फ़िरार दे० 'फरार'।

फ़िरारी १-दे० 'फरार'। २-ताश के पत्ते में एक चाल में होने वाली जीत।

फ़िरियाद दे० 'फ़रियाद'।

फ़िरियादी दे० 'फ़रियादी'।

फ़िरिश्ता दे० 'फ़रिश्ता'।

फ़िर्क़ा दे० 'फिरक़ा'।

फ़िलहाल क्रि० वि० (प) वर्तमान समय में। इस समय के लिए।

फ़िलासफ़ी स्त्री० (प) दर्शनशास्त्र। दे० 'फलसफा'।

फिस वि० (हि) कुछ नहीं।

फिसड्डी वि० (हि) प्रतियोगिता में सबसे पिछड़ा हुआ

फिसफिसाना क्रि० (हि) शिथिल होना। ढीला पड़ जाना।

फिसलन स्त्री० (हि) रपटन। फिसलने की क्रिया। ऐसा स्थान जहां फिसलना संभव हो।

फिसलना क्रि० (हि) चिकनाहट के कारण सरक जाना। लोभ में फस जाना। ऊँचे स्वर से गिर जाना।

फ़िहरिस्त स्त्री० (फा) फेहरिस्त। सूची।

फ़ी (प) प्रत्येक। दोष। त्रुटि।

फीका वि०(हि) स्वादहीन। नमकरहित। कांतिहीन। प्रभावहीन। कम चमक वाला।

फीता पुं० (हि) पतली धज्जी। जूते का लेस। बालों में बांधने की पतली पट्टी।

फीरनी दे० 'फिरनी'।

फ़ीरोज़ वि० (फा) सफल। विजयी। सौभाग्यशाली।

फ़ीरोज़ा पुं० हरितमणि। वैदूर्य।

फ़ीरोज़ी वि०(प) हरितमणि के रंग का। भाग्योदय। सफलता।

फ़ील पु० (प) हाथी।

फ़ीलख़ाना पु० (फा) हाथियों के बांधने का स्थान।

फ़ीलपा पुं० (फा) पैरों के सूजने का रोग।

फ़ीलपाया पुं० (फा) ईंटों का मोटा खंभा। फीलपा।

फ़ीलपांव दे० 'फ़ीलपा'।

फ़ीलवान पुं० (फा) हाथी को चलाने वाला महावत।

फीली स्त्री० (हि) घुटने से लेकर [illegible] भाग।

फ़ील्ड पु०(प) मैदान। गेंद का

फीस स्त्री० (अं) शुल्क। पारिश्रमिक।
फुंकना क्रि० (हि) जलाना। जलाया जाना। व्यर्थ नष्ट होना। चिंतित रहना। २-पुं० (हि) मुंह से आग में हवा छोड़ने की नाली। शरीर में मूत्र की थैली।
फुंकनी स्त्री० (हि) मुंह से आग में हवा छोड़ने की नाली।
फुंकरना क्रि० (हि) फुंकार मारना। फूंक मारना।
फुंकवाना क्रि० (हि) फूंक लगवाना। भस्म करवाना।
फुंकार स्त्री० (हि) फुत्कार। सर्प के मुख से वायु का निकलना।
फुंकारना क्रि० (हि) जोर जोर से फुंकार मारना। क्रोध में गहरे सांस लेना।
फुंदना पुं० (हि) डोली या झालर के सिरे पर सुन्दरता के लिए बना हुआ फूल जैसा गुच्छा। तराजू की डंडी के बीच की रस्सी। गाँठ। झब्बा।
फुंदिया स्त्री० (हि) दे० 'फुंदना'।
फुंदी स्त्री० (हि) गांठ। फन्दा। विन्दी। टीका।
फुंसी स्त्री० (हि) छोटा फोड़ा। फुड़िया। गूमड़ी।
फुआ स्त्री० (हि) पिता की बहन। बुआ।
फुआरा दे० 'फुहारा'।
फुकना दे० 'फुंकना'।
फुकनी दे० 'फुंकनी'।
फुचड़ा पुं० (हि) वह सूत आदि का रेशा जो कपड़े, कालीन, चटाई आदि की बुनाई से बाहर निकला रहता है।
फुट वि० (हि) अकेला। पृथक। क्रम से बाहर। पुं० (अं) बारह इन्च का माप।
फुटकर वि० (हि) अकेला। पृथक। कई प्रकार का मिलाजुला। थोड़ा-थोड़ा। थोक में नहीं। खरीज।
फुटकल दे० 'फुटकर'।
फुटका पुं० (हि) छाला। फफोला। धान आदि का लावा। गन्ने का रस पकाने का कड़ाह।
फुटकी स्त्री० (हि) छोटी सी दाल। दाना। एक प्रकार की चिड़िया। फुदकी।
फुटबाल पुं० (अं) बड़ी गेंद जिसमें हवा भरी होती है
फुटमत पु० (हि) मतभेद। फूट।
फुटहरा पुं०(हि) भुना हुआ चने या मटर का चबेना
फुटैल वि० (हि)अकेला। जोड़ेहीन। फूटे भाग्यवाला।
फुट्टैल दे० 'फुटैल'।
फुत्कार पुं० (सं) फुंकार।
फुत्कृति दे० 'फुत्कार'।
फुदकना क्रि० (हि) उछलना-कूदना। प्रसन्न होना।
फुदकी स्त्री० (हि) फुदकने वाली एक छोटी चिड़िया।
फुद्दी स्त्री (पं०) भग। स्त्री की योनि।
फुनंग स्त्री (हि) वृक्ष या शाखा का अग्रिम भाग।
फुनगी स्त्री (हि) अंकुर। फुनंग।
फुपफुस पुं० (सं) फेफड़ा।
फुफंदी स्त्री० (हि) लहंगे या साड़ी में कसी जाने वाली डोर।
फुफकाना क्रि० (हि) फुफकारना।
फुफकार पुं० (हि) फुंकार।
फुफकारना क्रि० (हि) फुंकारना।
फुफी स्त्री० (हि) दे० 'फूफी'।
फुफुनी दे० 'फुफुंदी'
फुफू दे० 'फूफी'।
फुफेरा पुं० (हि) फूफा के सम्बन्ध से।
फुर स्त्री (हि) उड़ते समय होने वाला परों का शब्द। वि० (हि) सच्चा। सत्य।
फुरकत स्त्री० (अ) वियोग।
फुरकना क्रि० सं (हि) जोर से थूकना।
फुरती दे० 'फुर्ती'।
फुरतीला दे० 'फुर्तीला'।
फुरना क्रि० (हि) निकलना। प्रकाशित होना। मुंह से शब्द निकलना। सत्य ठहराना। असर करना। सफल होना।
फुरफुराना क्रि० (हि) फुरफुर शब्द होना। लहराना। क्रि० (हि) कान में फुरेरी फिराना। फुरफुर करना।
फुरफुरी स्त्री० (हि) फुरफुर शब्द।
फुरमान दे० 'फरमान'।
फुरमाना दे० 'फरमाना'।
फुरसत पुं० (अ) बेकारी। खाली वक्त। छुट्टी। मुक्त
फुरहरना क्रि० (हि) स्फुरित होना। निकलना।
फुरहरी स्त्री० (हि) परों को फड़फड़ाना। कंपकंपी।
फुराना क्रि० (हि) प्रमाणित करना।
फुरेरी स्त्री० (हि) सींक के सिरे पर दवा आदि लगाई हुई रुई। शीत के कारण रोमांच भय से कंपन।
फुर्ती स्त्री० (हि) शीघ्रता। जल्दी।
फुर्तीला पुं० (हि) फुर्ती से काम करने वाला।
फुर्सत दे० 'फुरसत'।
फुलका पुं० (हि) हलकी। पतली और फूली हुई रोटी छाला। फफोला। चीनी बनाने का कड़ाह।
फुलकारी स्त्री० (हि) मलमल पर रेशम की कढ़ाई।
फुलचुही स्त्री० (हि) एक प्रकार की चिड़िया।
फुलझड़ी स्त्री० (हि) एक पटाखा जिससे फूल जैसी चिंगारियां झड़ती हैं। सुन्दरी। मजाक की बात : झगड़ा कराने वाली बात।
फुलवर पुं० (हि) फूल कढ़ा हुआ वस्त्र।
फुलवाई दे० 'फुलवारी'।
फुलवाड़ी दे० 'फुलवारी'।
फुलवार वि० (हि) प्रसन्न। प्रफुल्लित।
फुलवारी स्त्री० (हि) फूलों का बाग। पुष्पवाटिका।
फुलसुंघी स्त्री० (हि) फुलचुही।
फुलहारा पुं० (हि) माली।

फुलाई स्त्री० (हि) फूलने की क्रिया। एक प्रकार का पकवान।
फुलाना क्रि० (हि) अन्दर हवा भरना। प्रसन्न करना।
फुनायल दे० 'फुनेल'।
फुलाव पुं० (हि) फूलने की क्रिया। सूजन।
फुलावट दे० 'फुलाव'।
फुलावा पुं० (हि) फूल-फुंदने की डोरी जो बालों में गूंथी जाती है।
फुलिंग पुं० (हि) चिङ्गारी।
फुलिया स्त्री० (हि) लौंग के आकार का कानों का गहना। कील का फैला हुआ भाग।
फुलेरा पुं० (हि) फूलों की छतरी।

फु... स्त्री० (हि) पकौड़ी। फुलकड़ी।
फुल्ल वि० (सं) फूला हुआ। विकसित। प्रसन्न।
फुस स्त्री०(हि) धीमा स्वर।
फुसकारना क्रि० (हि) फुंकारना। फूंक मारना।
फुसरी स्त्री० (हि) पाद।
फुसफुसा वि० (हि) शीघ्र टूटने वाला। ... हुआ।

फूंक स्त्री० (हि) मुँह से छोड़ी गई हवा। सांस। प्राण।
फूंकना क्रि० (हि) फूंक मारना। जलाना। भस्म करना। नष्ट करना। सताना। प्रचारित करना।
फूका पुं०(हि) गाय भैंस से बलात् दूध लेने के लिए की गई क्रिया। फूंक मारने की क्रिया। ... फफोला। फोड़ा।
फूद स्त्री० (हि) दे० 'फुंदना'।
फूदा पुं० (हि) दे० 'फुंदना'। फफूंदी।
फूई स्त्री० (हि) फफूंदी। घी का फूल।
फूट स्त्री० (हि) मतभेद। वैमनस्य। एक प्रकार की ककड़ी।
फूटन स्त्री० (हि) शरीर के जोड़ों में पीड़ा। टूटा हुआ अंश।
फूटना क्रि० (हि) भग्न होना। दरार पड़ना। निकलना। देह में दाने निकलना। खिलना। फूट फैलना। नष्ट होना।
फूटा वि० (हि) टूटा हुआ। पुं० (हि) जोड़ों का दर्द।

टूटी हुई अन्न की बालें।
फूत्कार पुं० (सं) फुंकार।
फूफा पुं० (हि) पिता की बहिन का पति। पिता का बहनोई। फूआ का पति।
फूफी स्त्री० (हि) पिता की बहन। फूआ।
फूफू दे० 'फूफी'।
फूल पुं०(हि) सुमन। कुसुम। पुष्प। फूल जैसे बेल-बूटे या आभूषण। दीपक का गुल। शव दाह के पश्चात बची हड्डियां। एक मिश्रित धातु। कोढ़ का दाग। स्त्रियों का मासिक रज। पहली बार खींची हुई मदिरा। घुटने की गोल हड्डी।
फूलकारी स्त्री० (हि) बेलबूटे बनाने का कार्य।

गर्व करना।
फूला पुं० (हि) खील। आंख की पुतली पर सफेद दाग।
फूली स्त्री० (हि) दे० 'फूला'।

फंकरना दे० 'फेंकरना'।
फेंकाना क्रि० (हि) फेंकने का कार्य करवाना।
फेंट स्त्री० (हि) कमर का घेरा। धोती का कमर पर लपेटा हुआ भाग। ...

फेंटा पुं० (हि) दे० फेंट। साफा। सूत की अंटी।
फेंटी स्त्री० (हि) अटेरन पर लपेटा हुआ सूत। फेंटा।
फेंकरना क्रि० (हि) नंगा होना। दे० 'फेंकरना'।
फेकारना क्रि० (हि) नंगा सिर करना। जोर से रोना।
फेकैत पुं० (हि) पटा-बनेटी खेलने वाला। फेंकने वाला। पटेबाज।
फेण दे० 'फेन'।
फेन पुं० (स) झाग। बुदबुद। नाक का मल। रेंट।
फेनिल वि० (स) फेन वाला। झागदार।
फेनी स्त्री० (हि) सूत के लच्छे के समान एक मिठाई।
फेफड़ा पुं० (स) फुप्फुस। सांस लेने

फेफड़ी स्त्री० (हि) होठों पर जमने वाली पपड़ी। फेफड़े का एक रोग।
फेफरी दे० 'फेफड़ी'।
फेरंड पुं० (सं) 'गीदड़'।
फेर पुं० (हि) फिरने का भाव। चक्कर। घुमाव। परिवर्तन। झंझट। धोखा। चालबाजी। विनिमय। घाटा। दुविधा।
फेरना क्रि० (हि) चक्कर देना। घुमाना। वापस करना। पोतना। उलटना। प्रचारित करना।
फेरवट पुं० (हि) फेरने का भाव। चक्कर।
फेरा पुं० (हि) परिक्रमा। चक्कर। घेरा।
फेरि अव्य० (हि) पुनः। फिर।
फेरी स्त्री० (हि) 'दे०' फेरा। भिक्षा के लिए घूमना। माल बेचने के लिए चक्कर लगाना।
फेरीवाला पुं० (हि) घूम-घूमकर माल बेचने वाला।
फेरु पुं० (सं) गीदड़।
फेरौरी स्त्री० (हि) खपरैल बदलने की क्रिया।
फेल पुं० (अ) काम। वि० (अं) असफलता।
फेहरिस्त स्त्री० (अ) सूची।
फैंसी वि० (अं) तड़क-भड़क वाला। सुन्दर।
फैज पुं० (फा) लाभ। परिणाम। लाल मुसलमानी टोपी।
फैर स्त्री० (अं) बन्दूक का दगना। (सं) पहर।
फैल पुं० (हि) दे० 'फेल'। नखरा। मक्कारी। हठ। विस्तार।
फैलना क्रि० (हि) विस्तृत होना। मोटा होना। पसरना। बिखरना। प्रचारित होना। मचलना।
फैलाना क्रि० (हि) विस्तृत करना। पसारना। बखेरना। हिसाब लगाना। प्रचारित करना।
फैलाव पुं० (हि) विस्तार। प्रचार।
फैशन पुं०(अं) ढंग। रीति। प्रथा। बनाव-शृङ्गार का ढंग।
फैसला पुं० (अ) निर्णय। निपटारा।
फोंक पुं० (हि) तीर का पिछला छोर। वस्त्र की फटन
फोंदा पुं० (हि) दे० 'फुंदना'।
फोंफर वि० (हि) पोला। निस्सार।
फोंफी स्त्री० (हि) लम्बी नली। फुंकनी। नाक की कील।
फोक पुं० (हि) साररहीन अंश। भूसा।
फोकट वि० (हि) निस्सार। मुफ्त।
फोकला पुं० (हि) छिलका।
फोकस पुं० (अ) केन्द्र बिन्दु।
फोट पुं० (हि) विस्फोट। धड़का।
फोटा पुं० (हि) टीका। बिन्दी।
फोटो पुं० (अं) यन्त्र से उतारा हुआ चित्र।
फोड़ना क्रि० (हि) तोड़ना। भग्न करना। भेदभाव उत्पन्न करना। प्रकट करना।
फोड़ा पुं० (हि) मवाद भरा हुआ शोथ।
फोड़िया स्त्री० (हि) फुड़िया। छोटा फोड़ा।
फोता पुं० (फा) भूमिकर। रुपये रखने की थैली। अंडकोष।
फोनोग्राम पुं०(अं) ग्रामोफोन।
फोया पुं० (हि) रुई का लच्छा। फाया।
फोरना दे० 'फोड़ना'।
फोरमैन पुं० (अं) मिस्त्री से बड़ा पद।
फोहा पुं० (हि) दे० 'फाहा'। फोया। फाया।
फोहारा दे० 'फुहारा'। फव्वारा।
फौज पुं० (फा) सेना। झुंड।
फौजदार पुं० (फा) सेनापति।
फौजदारी स्त्री० (फा) मारपीट। दंड। न्यायालय।
फौजी वि० (फा) फौज सम्बन्धी। पुं० सैनिक।
फौजी कानून पुं० (फा) सैनिक कानून।
फौत वि० (अ) मृत। नष्ट।
फौती वि० (अ) मृत्यु सम्बन्धी।
फौतीनामा पुं०(फा) मृत्यु की सूचना। मृतकों की सूची
फौरन क्रि० (फा) तत्काल। तुरन्त। तत्क्षण।
फौलाद पुं० (फा) कड़ा लोहा। इस्पात।
फौलादी वि० (फा) मजबूत। दृढ़। फौलाद का बना हुआ।
फौवारा दे० 'फुहारा'। फव्वारा।
फ्राक पुं० (अं)घुटने तक का वस्त्र जो महिलाएँ तथा कन्याएँ पहनती हैं।

[शब्दसंख्या—२४६०८]

ब

ब देवनागरी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
बंक पुं०(अं) बैंक। साहूकारी संस्था। वि०(हि) तिरछा टेढ़ा। दुर्गम। पुरुषार्थी।
बंकट वि० (हि०) वक्र। टेढ़ा।
बंका वि० (हि०) टेढ़ा। बाँका। बलशाली। एक प्रकार का हरा कीड़ा।
बंकाई स्त्री० (हि) टेढ़ापन।
बंकुर दे० 'वंक'।
बंकुरता दे० 'बंकाई'।
बंग पुं० (हि) बंगाल। दे० 'बंग'। वि० (हि) टेढ़ा। उद्दण्ड। अज्ञानी।
बंगड़ी स्त्री० (हि) चूड़ियों के साथ पहनने का एक

बंधनकारी वि० (सं) बांधने वाला।
बंधन-स्तंभ पुं० (सं) पशु बांधने का खूंटा।
बंधन-स्थान पुं० (सं) अस्तबल। गोशाला।
बंधना क्रि० (हि) बंधन में पड़ना। बन्दी होना। पाबन्द होना। पुं० बांधने की वस्तु, रस्सी आदि।
बंधनागार पुं० (हि) कैदखाना।
बंधनालय पु० (हि) कारागार।
बंधनि स्त्री० (हि) उलझाने या फंसाने की वस्तु।
बंधनीय वि० (सं) बांधने योग्य। पुं० पुल।
बंध-मोच स्त्री० (सं) एक योगिनी।
बंधमोचनी स्त्री० (सं) एक योगिनी।
बंधवाना क्रि० (हि) बांधने का काम करवाना। कैद करवाना।
बंध-स्तंभ दे० 'बंधन-स्तंभ'।
बंध-स्थान दे० 'बंधन-स्थान'।
बंधान पुं० (हि) बंधा हुआ क्रम। प्रथा। बांध।
बंधाना दे० 'बंधवाना'।
बंधित वि० (हि) बंधा हुआ। बांझ।
बंधी स्त्री० (सं) कैद। नियम से वस्तु देना।
बंधु पु० (सं) भाई। मित्र। पति। पिता। एक फूल।
बंधुआ पुं० (हि) कैदी।
बंधुक पुं० (हि) जारज सन्तान।
बंधुकाम वि० (हि) स्वजनों से स्नेह रखने वाला।
बंधुजन पुं० (हि) स्वजन। भाईबन्द।
बंधुजीव पु० (हि) गुलदुपहरिया।
बंधुजीवक दे० 'बंधुजीव'।
बंधुता दे० 'बंधुत्व'।
बंधुत्व पुं०(हि) बंधु होने का भाव। मैत्री। भाईचारा
बंधुदत्त पुं० (सं) दहेज।
बंधुदा स्त्री० (सं) कुलटा स्त्री। वेश्या।
बंधुभाव पुं० (सं) भाईचारा। मैत्री।
बंधुर पुं० (सं) मुकुट। हंस। भग। बगुला।
बंधुरा स्त्री० (हि) कुलटा स्त्री।
बंधुल पुं० (सं) कुलटा का पुत्र। वि० आकर्षक। नम्र
बंधुवा पु० (हि) कैदी।
बंधूक पुं० (हि) गुलदुपहरिया।
बंधेज पुं० (हि) रुकावट। स्तंभन।
बंध्य वि० (सं) बांधने योग्य। बांझ।
बंध्या स्त्री० (सं) बांझ।
बंध्यापन पुं० (हि) बांझपन।
बंध्यापुत्र पुं० (हि) असम्भव बात।
बंपुलिस पुं० (हि) सार्वजनिक शौचालय। कमेटी की टट्टियां।
बंब पुं० (हि) डंका। रणनाद। बम-बम का शब्द।
बंबा पुं० (हि) पानी का नल। स्रोत।
बंबाना क्रि० (हि) गौ आदि का रंभाना।
बंबू पुं० (हि) बांस आदि की मोटी नाली।
बंस पुं० (हि) वंश या बांस।
बंसरी स्त्री० (हि) मुरली। बांसुरी।
बंसवाड़ी स्त्री० (हि) बांसों का स्थान।
बंसी स्त्री० (हि) मुरली। मछली। फंसाने का कांटा।
बंसीधर पुं० (हि) श्रीकृष्ण।
बंहगी स्त्री० (हि) कांवर।
ब पुं० (सं) भग। जल। वरुण। सिन्धु। सुगन्ध। कुम्भ।
बक पु० (सं) बगुला। कुबेर। एक असुर। एक ऋषि वि० (सं) सफेद।
बकजित पुं० (सं) श्रीकृष्ण। भीम।
बकध्यान पुं० (हि) बनावटी साधुभाव।
बकना क्रि० (हि) व्यर्थ बोलना। बकवास करना।
बकर पुं० (अ) १-गाय। २-बैल। ३-कुरानशरीफ की एक सूरत।
बकरईद स्त्री० (अ) मुसलमानों का एक त्योहार जिस में बकरे की बलि दी जाती है।
बकरकसाव पुं० (अ) कसाई। चिक।
बकरना क्रि० (हि) १-बड़बड़ाना। २-अपना दोष कबूल करना।
बकरा पुं० (हि) १-प्रसिद्ध चौपाया जिसका मांस मांसाहारी लोग खाते हैं। २-छाग।
बकरीद स्त्री० (अ) दे० 'बकरईद'।
बकलस पुं० (अ) धातु का छल्ला जो फीता आदि बांधने के काम आता है।
बकला पुं० (हि) १-पेड़ की छाल। २-फल का छिलका।
बकवाद स्त्री० (हि) व्यर्थ की बातें।
बकवाना क्रि० (हि) किसी से बकवाद करना।
बकस पुं० (हि) १-सन्दूक। २-कीमती जेवर आदि रखने का डिब्बा।
बकसना क्रि० (हि) छोड़ देना। क्षमा करना।
बकसाना क्रि० (हि) १-दिलाना। क्षमा करना।
बकसीस स्त्री० (हि) दान। इनाम। पारितोषिक।
बकसुआ पुं० (हि) दे० 'बकलस'।
बकाइन पुं० (हि) दे० 'बकायन'।
बकाउर स्त्री० (हि) दे० 'बकावली'।
बकाना क्रि० (हि) १-बकबक कराना। २-रटाना। ३-कहलाना।
बकायन पुं० (हि) नीम की जाति का एक वृक्ष जिस के पत्ते आदि औषध के रूप में प्रयुक्त होते हैं। महानिंब।
बकाया पुं० (अ) १-बाकी। शेष। २-बचत।
बकारि पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-भीमसेन।
बकारी स्त्री० (हि) मुख से निकलने वाला शब्द।
बकावर स्त्री० (हि) दे० 'गुलबकावली'।

बकावली स्त्री० (हि) दे० 'गुलबकावली'।
बकासुर पुं० (सं) एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
बकिनव पुं० (हि) दे० 'बकायन'।
बकी स्त्री० (सं) १-बकासुर की बहन। २-पूतना। ३-मादा बगला।
बकीया वि० (प) बाकी। अवशिष्ट।
बकुचन स्त्री० (हि) १-हाथ या मुट्ठी से पकड़ना। २-हाथ जोड़ने की मुद्रा।
बकुचना क्रि० (हि) संकुचित होना। सुकड़ना।
बकुचा पुं० (हि) छोटी गठरी।
बकुची स्त्री० (हि) १-छोटी गठरी। २-एक गुलाबी रंग के फूल वाला पौधा।
बकुचौंहाँ वि० (हि) बकुचे के समान।
बकुर वि० (सं) भयंकर। पुं०(सं) १-सूर्य। २-तुरही ३-बिजली।
बकुरना क्रि० (हि) दे० 'बकरना'।
बकुराना क्रि० (हि) १-मंजूर या कबूल करना। २-बहलाना।
बकुल पुं० (सं) १-मौलसिरी का पेड़ या फूल। २-शिव।
बकुला पुं० (हि) दे० 'बगुला'।
बकेन स्त्री० (हि) बच्चा देने के साल भर बाद भी दूध देने वाली गाय या भैंस।
बकैयाँ पुं० (हि) बच्चों का घुटने के बल चलना।
बकोट स्त्री०(हि) १-बकोटने की क्रिया या भाव। २-हाथ की संपुटाकार मुद्रा। ३-उतनी मात्रा जितनी एक बार चंगुल में पकड़ी जा सके।
बकोटना क्रि० (हि) नाखूनों से नोचना।
बकौरी स्त्री० (हि) गुलबकावली।
बकौली स्त्री० (हि) गुलबकावली।
बक्कम पुं० (हि) एक पेड़ जिसकी छाल और फलों से लाल रंग निकलता है।
बक्कल पुं० (हि) १-छिलका। २-छाल।
बक्काल पुं०(प) वणिक। बनिया। आटा दाल आदि बेचने वाला।
बक्की वि० (हि) बकवादी।
बक्खुर पुं० (हि) मुख से निकला हुआ शब्द। वचन
बखर पुं० (हि) १-दे० 'बाखर'। २-गाय बैल आदि बाँधने का स्थान।
बखोर पुं० (हि) डरोम।
बक्स पुं० (हि) बकस। सन्दूक।
बखत पुं०(हि) दे० 'वक्त' 'वख्त'।
बखतर पुं० (हि) दे० 'बख्तर'।
बखरा पुं० (हि) १-भाग। हिस्सा। २-दे० 'बाखर'।
बखरी स्त्री० (हि) एक परिवार के रहने योग्य गाँव का अच्छा मकान।
बखरैत वि० (हि) साझीदार। हिस्सेदार।
बखसीस स्त्री० (हि) दे० 'बख्शीश'।
बखसीसना क्रि० (हि) देना। प्रदान करना।
बखान पुं० (हि) १-वर्णन। २-बड़ाई। प्रशंसा।
बखानना क्रि० (हि) १-वर्णन करना। २-प्रशंसा करना। ३-गालियाँ देना।
बखार पुं० (हि) किसान लोगों के अन्न रखने का घेरा या बड़ा पात्र।
बखिया पुं० (फा) एक प्रकार की मजबूत और महीन सिलाई।
बखियागर पुं० (फा) बखिया करने वाला।
बखियाना क्रि० (हि) बखिया की सिलाई करना।
बखीर स्त्री० (हि) गुड़ में बनाए हुए मीठे चावल।
बखील वि० (प) कंजूस। कृपण।
बखीली स्त्री० (प) कंजूसी। कृपणता।
बखेड़ा पुं० (हि) १-झंझट। झगड़ा। २-आडम्बर। ३-कठिनता।
बखेड़िया वि० (हि) बखेड़ा करने वाला। झगड़ालू
बखेरना क्रि० (हि) फैलाना। बिखेरना।
बख्त पुं० (फा) भाग्य। किस्मत।
बख्तर पुं० (फा) दे० 'बकतर'।
बख्तावर वि० (फा) भाग्यशाली।
बख्श वि० (फा) देने वाला। बख्शिश देने वाला।
बख्शना क्रि० (फा) १-देना। २-छोड़ना। त्यागना। ३-क्षमा करना।
बख्शनामा पुं० (फा) दे० 'बख्शिशनामा'।
बख्शवाना क्रि० (फा) १-देने में प्रवृत्त करना। २-क्षमा करना।
बख्शाना क्रि० (फा) दे० 'बख्शवाना'।
बख्शिश स्त्री० (फा) दे० 'बखसीस'।
बख्शिशनामा स्त्री० (फा) दानपत्र। हिब्बानामा।
बख्शी पुं० (फा) वेतन बांटने वाला। खजांची।
बख्शीश स्त्री० (फा) दे० 'बखसीस'।
बग पुं० (हि) बगुला।
बगई स्त्री० (हि) १-कुत्तों आदि पर बैठने वाली एक प्रकार की मक्खी। २-भंग के साथ घोट कर पी जाने वाली एक घास।
बगटुट अव्य० (हि) सरपट। बहुत वेग से। बेतहाशा
बगदना क्रि० (हि) १-बिगड़ना। २-सीधे रास्ते से हट जाना। भूलना।
बगदहा वि० (हि) बिगड़ने वाला।
बगटूट अव्य० (हि) दे० 'बगटुट'।
बगना क्रि० (हि) घूमना-फिरना।
बगर पुं० (हि) १-बड़ा मकान। प्रासाद। २-घर। कोठरी। ३-आँगन। ४-गाय बैल बाँधने का स्थान स्त्री० (हि) दे० 'बगार'।

बगरना क्रि० (हि) फैलना। बिखरना।
बगराना क्रि० (हि) फैलाना। छितराना।
बगरी स्त्री० (हि) मकान। खरीब।
बगदरा पुं० (हि) बवण्डर। बगूला।
बगल स्त्री० (फा) १-कंधे के नीचे का गड्ढा। काँख २-पार्श्व। ३-पास की जगह। ४-आस्तीन के कंधे के जोड़ के नीचे लगाया जानेवाला कपड़े का टुकड़ा
बगलबंदी स्त्री० (फा) एक प्रकार की कुरती।
बगला पुं० (हि) एक प्रसिद्ध श्वेत रङ्ग का पक्षी जो मछलियां पकड़ता है और कपट-वृत्ति के कारण प्रसिद्ध है।
बगलाभगत वि० (हि) साधु दीख पड़ने वाला परन्तु कपटी।
बगली वि० (फा) बगल का। बगल-सम्बन्धी। स्त्री० (फा) १-एक थैली जिसमें दर्जी सुई तागा रखता है २-बगला पक्षी का मादा। ३-किवाड़ की बगल में खोदी हुई सेंध। ४-मुगदर हिलाने का एक ढंग।
बगली-घूंसा पुं० (हि) १-वह घूंसा जो बगल से मारा जाय। २-छिप कर किया गया वार।
बगलौंहा वि० (हि) तिरछा।
बगलना क्रि० (हि) दे० 'बखानना'।
बगा पुं० (हि) बगला। बागा।
बगाना क्रि० (हि) १-घुमाना। टहलना। २-भगाना
बगार पुं० (देश०) गाय भैंस बाँधने का स्थान।
बगारना क्रि० (हि) फैलाना। पसारना।
बगावत स्त्री०(अ) १-विद्रोह। २-बागी होने का भाव
बगिया स्त्री० (हि) छोटा बाग। बगीचा।
बगीचा पुं० (फा) वाटिका। छोटा बाग।
बगीची स्त्री० (हि) बहुत छोटा बाग।
बगुला पुं० (हि) दे० 'बगला'।
बगुलाभगत वि० (हि) दे० 'बगलाभगत'।
बगूरा पुं० (हि) 'बगूला'।
बगूला पुं० (फा) ग्रीष्म ऋतु में भँवर की तरह कभी-कभी घूमने वाली वस्तु। बवंडर।
बगेदना क्रि० (हि) हटा देना। धकेल देना।
बगेरी स्त्री० (देश०) गौरैया के समान एक खाकी रङ्ग की चिड़िया।
बग्गी स्त्री० (हि) चार पहियों की बन्द या खुली घोड़ा गाड़ी।
बग्घी स्त्री० (हि) दे० 'बग्गी'।
बघंदर पुं० (हि) दे० 'बाघम्बर'।
बघ पुं० (हि) बाघ का लघु रूपान्तर।
बघछाला पुं०(हि) दे० 'बाघंबर'।
बघनखा पुं० (हि) १-बाघ के नख के समान एक हथियार। २-एक गहना।
बघनहां पुं० (हि) दे० 'बघनखा'।
बघनहियां स्त्री० (हि) दे० 'बघनखा'।
बघना पुं० (हि) बाघ के नख जैसा एक गहना।
बघरूरा पुं० (हि) बगूला।
बघवार पुं० (हि) बाघ की मूँछों के बाल।
बघार पुं० (हि) १-छौंक। तड़का। २-छौंक की महक। ३-बघारने की क्रिया या भाव।
बघारना क्रि० (हि) १-छौंक लगाना। २-योग्यता दिखाने के लिए अधिक बोलना।
बघूरा पुं० (हि) दे० 'बगूला'।
बघेलखंड पुं० (हि) मध्यभारत का एक प्रदेश जहां बघेले राजपूतों का राज्य था।
बच पुं० (हि) वचन। वाक्य। स्त्री० (हि) औषध में काम आने वाला एक पौधा।
बचका पुं० (हि) पकवान।
बचकाना वि० (हि) बच्चों के योग्य। बच्चों का।
बचत स्त्री० (हि) १-बचा हुआ अंश। शेष। २-लाभ ३-बचने का भाव। (इकोनोमी)।
बचती वि० (हि) १-बचत सम्बन्धी। २-अपना खर्चा पूरा करने के बाद बचा हुआ। (सरप्लस)।
बचन पुं० (हि) दे० 'वचन'।
बचना क्रि० (हि) १-कष्ट आदि से अलग रहना। २-छूट जाना। ३-शेष रहना। ४-अलग रहना। ५-कहना। बोलना।
बचपन पुं० (हि) बाल्यावस्था। लड़कपन।
बचवैया पुं० (हि) रक्षक। बचाने वाला।
बचा पुं० (हि) दे० 'बच्चा'।
बचाना क्रि० (हि) १-कष्ट आदि में पड़ने देना। २-अलग रखना। ३-छिपाना। ४-खर्च न होने देना
बचाव पुं० (हि) रक्षा। त्राण। बचाने वाला।
बच्चा पुं० (हि) १-नवजात शिशु। २-लड़का। बालक।
बच्चाकश वि० (फा) बहुत-से बच्चे जनने वाली। (विनोद)।
बच्चाकशी स्त्री० (फा) बार-बार बच्चे जनना।
बच्चादानी स्त्री० (हि) गर्भाशय।
बच्ची स्त्री० (हि) १-नवजात कन्या। २-होंठ के नीचे बीच में उगे हुए बाल।
बच्छ पुं० (हि) १-बच्चा। बेटा। २-बछड़ा।
बच्छल वि० (हि) दे० 'वत्सल'।
बच्छस पुं० (हि) दे० 'वक्ष'।
बच्छा पुं० (हि) दे० 'बछड़ा'।
बछ पुं० (हि) बछड़ा। स्त्री० (हि) दे० 'बच'।
बछड़ा पुं० (हि) गाय का बच्चा।
बछरा पुं० (हि) बछड़ा।
बछरू पुं० (हि) दे० 'बछड़ा'।
बछल वि० (हि) दे० 'वत्सल'।
बछवा पुं० (हि) दे० 'बछड़ा'।
बछा पुं० (हि) दे० 'बछड़ा'।

बछिया स्त्री० (हि) गाय का मादा बच्चा। बछड़ी।
बछेड़ पुं० (हि) बछड़ा। बच्चा।
बजनी पुं० (हि) १-बाजा बजाने वाला। २-मुसलमानी राज्यकाल में गाने बजाने वालों पर लगने वाला एक कर।
बजट पुं० (अं) आगामी वर्ष या मास के लिये आय-व्यय का लेखा जो पहले से तैयार कर के मंजूर कराया जाता है। आयव्ययक।
बजड़ा पुं०(हि) दे० 'बजरा'।
बजना क्रि० (हि) १-आघात लगने से शब्द होना। २-शस्त्रों का चलाना। ३-अड़ना। ४-प्रख्याति पाना। ५-लड़ाई या मारपीट करना।
बजनियाँ पुं० (हि) बाजा बजाने वाला।
बजनिहा पुं० (हि) दे० 'बजनियाँ'।
बजबजाना क्रि० (हि) किसी तरल पदार्थ सड़ने के कारण बुलबुले छोड़ना।
बजमारा वि० (हि) वज्र से मारा हुआ (गाली)।
बजरंग वि० (हि) वज्र के समान सुदृढ़ शरीर वाला। पुं० (हि) हनुमान।
बजर पुं० (हि) दे० 'वज्र'।
बजरबट्टू पुं०(हि) एक पेड़ जिसके बीज नजर उतारने के लिये पहनाये जाते हैं।
बजरा पुं० (हि) १-एक प्रकार की बड़ी पटी हुई नाव २-दे० बाजरा।
बजराग्नि स्त्री० (हि) बिजली। वज्र की अग्नि।
बजरी स्त्री० (हि) कंकर के छोटे छोटे टुकड़े। २-ओला। ३-किले की दीवार पर बना कंगूरा। ४-दे० 'बाजरा'।
बजवाई स्त्री० (हि) बाजा बजाने की मजदूरी।
बजवाना क्रि० (हि) किसी को बजाने में प्रवृत्त करना।
बजवैया पुं०(हि) बाजा बजाने वाला।
बजागि स्त्री० (हि) बिजली।
बजागिन स्त्री० (हि) बिजली।
बजाज पुं० (फ) कपड़े का व्यापारी।
बजाजा पुं० (फ) वह बाजार जिसमें कपड़े वालों की दुकानें हों।
बजाजी स्त्री० (फ०) कपड़ा बेचने का व्यवसाय।
बजाना क्रि० (हि) १-आघात करके शब्द उत्पन्न करना। २-किसी बाजे से शब्द उत्पन्न करना। ३-आघात करना। ४-पालन करना।
बजार पुं० (हि) दे० 'बाजार'।
बजारी वि० (हि) दे० 'बाजारी'।
बजारू वि० (हि) दे० 'बाजारू'।
बजूखा पुं० (हि) दे० 'बिजूखा'।
बज्जना क्रि० (हि) दे० 'बजना'।
बज्जात वि० (हि) दे० 'बदजात'।
बज्र पुं० (हि) दे० 'वज्र'।
बज्री पुं० (हि) दे० 'वज्री'।
बझना क्रि०(हि) १-बंधना। अटकना। २-हठ करना। दुराग्रह करना।
बझाउ पुं० (हि) दे० 'बझाव'।
बझान स्त्री० (हि) बझने की क्रिया या भाव।
बझाना क्रि० (हि) छलझाना। फंसाना।
बझाव पुं० (हि) १-उलझाव। अटकाव। २-फंसने की क्रिया या भाव।
बझावना क्रि० (हि) दे० 'बझाना'।
बट पुं० (हि) १-दे० 'वट'। २-गोल वस्तु। ३-'बड़ा' नामक पकवान। ४-बट्टा। ५-मार्ग। ६-रस्सी का बल। ७-बाट।
बटखरा पुं० (हि) तोलने का बाट।
बटन स्त्री० (हि) बटने की क्रिया या भाव। ऐंठन। बल। पुं० (अं) चिपटे आधार की गोल घुंडी जो कमीज आदि में लगी रहती है।
बटना क्रि० (हि) १-तागों, तन्तुओं आदि को बटकर रस्सी का रूप देना। २-पिसना। पुं० (हि) १-उबटन। २-रस्सी बुनने का एक औजार।
बटपरा पुं० (हि) दे० 'बटमार'।
बटपार पुं० (हि०) दे० 'बटमार'।
बटमार पुं० (हि) राह में आकर माल छीन लेने वाला। ठग। डाकू।
बटमारी स्त्री० (हि) ठगी। डकैती।
बटला पुं० (हि) देगचा। बड़ी बटलोई।
बटली स्त्री० (हि) बटलोई। देगची।
बटलोई स्त्री० (हि) देगची। पतीली।
बटवाना क्रि० (हि) बांटने का काम किसी दूसरे से कराना।
बटवार पुं० (हि) १-पहरेदार। २-मार्ग का कर उगाहने वाला।
बटवारा पुं० (हि) बांटने का भाव या क्रिया। विभाजन। तकसीम।
बटा पुं० (हि) १-गोल वस्तु। २-गेंद। ढेला। ३-पथिक। यात्री। ४-बांटने वाला। ५-भाग लेने वाला। ६-जमींदार को लगान के रूप में पैदावार देने की व्यवस्था।
बटाई स्त्री० (हि) १-बटने की क्रिया या भाव। २-बाँटने की मजदूरी।
बटाउ पुं० (हि) राही। पथिक। बटोही।
बटालियन स्त्री०(अं) पैदल सेना का वह अंश जिसमें एक हजार सैनिक होते हैं।
बटिका स्त्री० (हि) दे० 'वाटिका'।
बटिया स्त्री० (हि) १-छोटा गोला। २-सिल पर पीसने का लोढ़ा। ३-छोटा मार्ग।
बटी स्त्री० (हि) १-गोली। 'बड़ी' नामक पकवान। २-वाटिका। बगीचा।

बटु पुं० (हि) दे० 'बटु'।
बटुआ पुं० (हि) 'बटुवा'।
बटुई स्त्री० (हि) छोटी पतीली।
बटुरना क्रि० (हि) सिमटना। इकट्ठा होना।
बटुला पुं० (हि) बड़ी पतीली।
बटुवा १- कई खानों वाली छोटी थैली। २-बड़ी पतीली। देगची।
बटेर स्त्री० (हि) तीतर के समान एक छोटी चिड़िया।
बटेरबाज पुं० (हि) बटेर पालने या लड़ाने वाला।
बटेरबाजी स्त्री० (हि) बटेर पालने या लड़ाने की लत
बटोरन स्त्री० (हि) १-बटोर कर इकट्ठा किया हुआ ढेर। २-कूड़े का ढेर। ३-खेत में इकट्ठा किया हुआ अन्न का दाना।
बटोरना क्रि० (हि) समेटना। इकट्ठा करना।
बटोही पुं० (हि) पथिक। मुसाफिर। यात्री।
बट्ट पुं० (हि) १-गोला। बटा। २-गेंद। ३-शिकन बल। ४-बटखना।
बट्टा पुं० (हि) १-वह कमी जो किसी वस्तु के क्रय-विक्रय या लेन देन में किसी वस्तु के मूल्य में हो जाती है। (डिस्काउन्टर)। २-दलाली। ३-हानि। टोटा। ४-कलंक। दाग। स्त्री० (हि) १-कूटने या पीसने का पत्थर। २-गोल डिब्बा। ३-बाजीगर का करतल दिखाने का प्याला।
बट्टाखाता पुं० (हि) न वसूल होने वाली रकमों का लेखा या मद। (डेड एकाउन्ट)।
बट्टाढाल वि० (हि) चिकना और बिलकुल समतल।
बट्टी स्त्री० (हि) १-किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा। २-टिकिया। ३-लोढ़िया।
बट्टू पुं० (हि) १-धारीदार। चारखाना। २-बजर-बट्टू का पेड़।
बड़ंगा पुं० (हि) बँडेर।
बड़ स्त्री० (हि) बकवाद। प्रलाप। पुं० (हि) बरगद का वृक्ष। वि० (हि) 'बड़ा' का लघु रूपान्तर।
बड़क स्त्री० (हि) डींग। शेखी। बकवाद।
बड़दंता वि० (हि) बड़े-बड़े दांतों वाला।
बड़दुमा पुं० (हि) लम्बी दुम वाला हाथी।
बड़प्पन पुं० (हि) बड़ा या श्रेष्ठ होने का भाव। महत्व।
बड़पेटा वि० (हि) बड़े उदर या पेट वाला।
बड़बड़ स्त्री० (हि) बकवाद। व्यर्थ का बोलना।
बड़बड़ाना क्रि०(हि)१-बक-बक करना। प्रलाप करना २-धीरे-धीरे अस्पष्ट शब्दों में कुछ कहना।
बड़बड़िया वि० (हि) बड़बड़ाने वाला।
बड़बेरी स्त्री० (हि) जंगली बेर। झड़बेरी।
बड़बोल वि० (हि) शेखी मारने वाला। बहुत बोलने वाला।
बड़भाग वि० (हि) भाग्यवान। भाग्यशाली।
बड़भागी वि० (हि) दे० 'बड़भाग'।
बड़मुहाँ वि० (हि) लम्बे मुख वाला।
बड़रा वि० (हि) दे० 'बड़ा'।
बड़राना क्रि० (हि) दे० 'बर्राना'।
बड़वा स्त्री० (हि) १-घोड़ी। २-अश्विनी नक्षत्र। ३-बड़वाग्नि।
बड़वागि स्त्री० (हि) दे० 'बड़वाग्नि'।
बड़वाग्नि स्त्री० (सं) समुद्राग्नि।
बड़वानल पुं० (सं) दे० 'बड़वाग्नि'।
बड़वार वि० (हि) दे० 'बड़ा'।
बड़वारी स्त्री० (हि) १-बड़प्पन। बड़ाई। २-प्रशंसा
बड़हन पुं० (हि) एक प्रकार का धान। वि० (हि) बड़ा।
बड़हर पुं० (हि) दे० 'बड़हर'।
बड़हल पुं० (हि) एक प्रकार का वृक्ष या उसके फल जो शरीफे के आकार के होते हैं।
बड़हार पुं० (हि) विवाह के बाद होने वाली बरातियों की ज्योनार।
बड़ा वि० (हि) १-अधिक। २-विस्तार वाला। ३-लम्बाचौड़ा। ४-अधिक अवस्था वाला। ५-श्रेष्ठ। ६-महत्व का। अधिक। पुं० (हि) १-तली हुई उरद की गोल टिकिया। २-एक बरसाती घास।
बड़ा आदमी पुं० (हि) धनवान् तथा प्रभावशाली पुरुष।
बड़ाई स्त्री० (हि) १-बड़प्पन। २-बड़े होने का भाव ३-महत्व। ४-प्रशंसा।
बड़ा काम पुं० (हि) कठिन काम।
बड़ा कुलंजन पुं० (हि) मोथा।
बड़ा घर पुं० (हि) १-जेलखाना। २-अमीर आदमी का घर।
बड़ा घराना पुं० (हि) ऊँचा घराना।
बड़ा दिन पुं० (हि) पच्चीस दिसम्बर का दिन जो ईसामसीह का जन्म दिन मानते है। (क्रिसमस डे)
बड़ाबाबू पुं० (हि) मुख्य लिपिक। (हैडक्लर्क)।
बड़ाबूढ़ा पुं० (हि) गुरुजन। बुजुर्ग।
बड़ाबोल पुं० (हि) घमंड या अहंकारपूर्ण बात।
बड़ासाहब पुं० (हि) प्रधान अधिकारी।
बड़ी वि० (हि) दे० 'बड़ा'। स्त्री० (हि) १-दाल आलू आदि की सुखाई हुई टिकिया। २-मांस की रस्सी की तरह चीर कर सुखाई गई बोटी।
बड़ी इलायची स्त्री० (हि) बड़े दाने वाली इलायची जो गर्म मसाले में डाली जाती है।
बड़ीमाता स्त्री० (हि) शीतला। चेचक। (स्मॉल पॉक्स)
बड़ूजा पुं० (हि) दे० 'बिड़ौजा'।
बड़ेरर पुं० (देश) बवंडर। बगूला।
बड़ेरा वि० (हि) बड़ा। प्रधान। मुख्य। पुं० (हि)

१-लम्बाई के बल लगी हुई छप्पर के बीच लकड़ी। २-कूप पर दो खम्भों के बीच की लकड़ी जिस पर घिरनी लगी होती है।

बड़े लाट पुं०(हि) प्रधान शासक।

बड़ौना पुं० (हि) प्रशंसा। बड़ाई।

बढ़ती स्त्री० (हि) दे० 'बढ़ती'।

बढ़ई पुं० (हि) वह कारीगर जो लकड़ी को गढ़कर मेज कुर्सी आदि बनाता है।

बढ़ईगीरी स्त्री० (हि) बढ़ई का काम।

बढ़ती स्त्री० (हि) १-तौल गिनती आदि में होने वाली अधिकता। २-धन आदि की वृद्धि। ३-मूल्य में वृद्धि।

बढ़दम पुं० (देश) पत्थर काटने की टांकी।

बढ़ना क्रि० (हि) १-वृद्धि को प्राप्त होना। २-नाप, तोल आदि में अधिक होना। ३-मूल्य। योग्यता। अधिकार में वृद्धि होना। ४-किसी स्थान से आगे चलना। ५-दुकान आदि बन्द होना। ६-लाभ होना। ७-दीपक का बुझना।

बढ़नी स्त्री० (हि) १-झाड़ू। २-पेशगी। अगमी।

बढ़वारि स्त्री० (हि) बढ़ती।

बढ़ाना क्रि० (हि) १-परिमाण या विस्तार अधिक करना। २-गिनती नाप तौल आदि में अधिक करना। ३-फैलाना। ४-सफल या तीव्र करना। ५-उन्नत करना। ६-दुकान आदि बन्द करना। ७-दीपक बुझाना।

बढ़ाव पुं० (हि) १-बढ़ने की क्रिया या भाव। २-अधिकता। विस्तार। ३-उन्नति।

बढ़ावा पुं० (हि) १-साहस या हिम्मत बढ़ाने वाली बात। प्रोत्साहन। २-उत्तेजना।

बढ़िया वि० (हि) उत्तम। अच्छा। स्त्री० (हि) एक प्रकार की दाल।

बढ़ैया पुं० (हि) बढ़ाने वाला। पुं० (देश) बढ़ई।

बढ़ोतरी स्त्री० (हि) १-उत्तरोत्तर वृद्धि। बढ़ती। २-उन्नति।

बणिक पुं० (सं) वाणिज्य या व्यापार करने वाला। व्यवसायी। बनिया।

बणिग्वृत्ति स्त्री० (हि) व्यापार। व्यवसाय।

बत स्त्री० (हि) बात। स्त्री० (हि) बतस।

बतकट पुं० (हि) जो बड़ी बात का खण्डन करे।

बतकहाव पुं० (हि) बातचीत।

बतकही स्त्री० (हि) बातचीत।

बतख स्त्री० (हि) हंस जाति का एक पक्षी जो पानी पर तैरता है।

बतबल वि० (हि) बकवादी।

बतबढ़ाव पुं० (हि) विवाद। व्यर्थ बात बढ़ाना।

बतर वि० (हि) दे० 'बदतर'।

बतरस पुं० (हि) बातचीत का आनन्द।

बतरान स्त्री० (हि) वार्तालाप। बातचीत।

बतराना क्रि० (हि) बातचीत करना।

बतरौहा वि० (हि) बातचीत करने का इच्छुक।

बतलाना क्रि० (हि) दे० 'बताना'।

बताना क्रि०(हि) १-कहना। जताना। २-समझाना। ३-निर्देश करना। ४-मारपीट कर ठीक राह पर लाना। ५-नृत्य में अंगों की चेष्टा से भाव प्रकट करना।

बतारा पुं० (हि) दे० 'बताशा'।

बतास स्त्री० (हि) १-वायु। हवा। २-गठिया। वात-रोग।

बताशा पुं० (हि) १-चीनी की चाशनी टपका कर बनाई हुई एक मिठाई। २-एक प्रकार की आतिश-बाजी।

बतिया पुं० (हि) थोड़े दिनों का लगा हुआ कच्चा फल। स्त्री० (हि) दे० 'बात'।

बतियाना क्रि० (हि) बातें करना।

बतियार स्त्री० (हि) बातचीत।

बतीसी स्त्री० (हि) १-नीचे और ऊपर के सब दांत। २-बत्तीस वस्तुओं का समूह।

बतू पुं० (हि) कलाबत्तू।

बतोला पुं० (हि) झांसा। फुसलाना।

बतौर अव्य० (अ) १-रीति से। तरह पर। २-सदृश। समान।

बतौरी स्त्री० (हि) शरीर में मांस का उभरा हुआ अंश। गुमड़ी।

बत्तख स्त्री० (हि) दे० 'बतख'।

बत्तिस पुं०, वि० (हि) दे० 'बत्तीस'।

बत्ती स्त्री० (हि) १-सूत या रुई का बटा हुआ लच्छा जिससे दीप जलाया जाता है। २-दीपक। ३-मोम-बत्ती। ४-पलीता। ५-कपड़े की बत्ती जो घाव में लगाई जाती है। ६-ऐंठा हुआ कपड़ा। ७-बत्ती के आकार की कोई वस्तु।

बत्तीस वि० (हि) तीस और दो। पुं० (हि) बत्तीस की संख्या। ३२।

बत्तीसा पुं०(हि) १-बत्तीस मसाले डाल कर बनाया गया लड्डू। २-एक प्रकार की आतिशबाजी।

बत्तीसी स्त्री० (हि) १-बत्तीस का समूह। २-मनुष्य के मुँह में बत्तीस दांतों का समूह।

बथुआ पुं०(हि) एक छोटा पौधा जिसका साग बनाया जाता है।

बद स्त्री० (हि) १-जांघ पर की गिल्टी। गिल्टिया। २-पलटा। बदला। ३-एवज। ४-जोखिम। ५-चौपायों का एक छूत का रोग। वि० (फा) १-दुष्ट खराब। निकृष्ट। २-दुष्ट। नीच।

बदअंदेश वि० (फा) बुरा चाहने वाला।

बदअंदेशी स्त्री० (फा) बदख्वाही।

बदअमनी स्त्री० (फा) विद्रोह। अशांति। उपद्रव।
बदअमली स्त्री० (फा) राज्य का कुप्रबन्ध। अशांति। हलचल।
बदइन्तजामी स्त्री० (फा) कुप्रबन्ध। अव्यवस्था।
बदकार वि० (फा) व्यभिचारी। कुकर्मी।
बदकारी स्त्री० (फा) व्यभिचार। कुकर्म।
बदकिस्मत वि० (फा) अभागा।
बदखत पुं०(फा)१-बुरा लेख। वि० बुरा लिखने वाला।
बदखती स्त्री० (फा) बुरी लिखावट।
बदख्वाह वि० (फा) अनिष्ट चाहने वाला।
बदगुमान वि० (फा) संदेह की दृष्टि से देखने वाला।
बदगुमानी स्त्री० (फा) मिथ्या संदेह।
बदगोई स्त्री० (फा) १-निंदा। २-चुगली।
बदचलन वि० (फा) कुमार्गी। दुश्चरित्र।
बदजबान वि० (फा) कटुभाषी। गाली-गलौज बकने वाला।
बदजबानी स्त्री० (फा) गाली। कटुवाक्य।
बदजात वि० (फा) नीच। छोटा। लुच्चा।
बदजायका वि० (फा) जिसका खराब स्वाद हो।
बदतमीज वि० (फा) अशिष्ट। गँवार। बेहूदा।
बदतमीजी स्त्री० (फा) अशिष्टता। बेहूदगी। गँवारपन।
बदतर वि० (फा) किसी की अपेक्षा और भी बुरा।
बदतरीन वि० (फा) बुरे से बुरा।
बदतहजीब वि० (फा) असभ्य। अशिष्ट। उजड्ड।
बदतहजीबी स्त्री० (फा) असभ्यता। अशिष्टता। उजड्डपन।
बददयानती स्त्री०(फा) विश्वासघात। बेईमानी। दगाबाजी।
बददुआ स्त्री० (फा) शाप।
बदन पुं० (फा) देह। शरीर।
बद-नजर वि०(फा) बुरी नजर वाला।
बदनसीब वि० (फा) अभागा।
बदनसीबी स्त्री० (फा) दुर्भाग्य।
बदनस्ल वि० (फा) नीच। बुरी नस्ल का।
बदना क्रि० (हि) १-कहना। वर्णन करना। २-नियत करना। ३-बाजी लगाना। ४-कुछ महत्व का समझना। ५-स्वीकार करना।
बदनाम वि० (फा) जिसकी लोग निंदा करते हों।
बदनामी स्त्री० (फा) अपकीर्ति। लोकनिन्दा।
बदनीयत वि० (फा) १-नीचाशय। २-बेईमान।
बदनीयती स्त्री० (फा) बेईमानी। दगाबाजी।
बदनुमा वि० (फा) कुरूप। भद्दा। भोंडा।
बदपरहेज वि० (फा) कुपथ्य करने वाला।
बदपरहेजी स्त्री० (फा) कुपथ्य। असंयम।
बदफेल वि० (फा) दुराचारी। कुकर्मी।
बदबख्त वि० (फा) अभागा।
बदबू स्त्री० (फा) दुर्गन्ध। बुरी गंध।
बदमजगी स्त्री० (फा) बदमजा होना। कटुता।
बदमजा वि०(फा) १-बुरे स्वाद वाला। २-आनन्दरहित।
बदमस्त वि० (फा) १-नशे में चूर। मस्त। २-कामोन्मत्त।
बदमस्ती स्त्री० (फा) १-मतवालापन। २-कामुकता
बदमाश वि० (फा) १-बुरे कामों से जीविका चलाने वाला। दुर्वृत्त। २-दुष्ट। ३-दुराचारी।
बदमाशी स्त्री० (फा) १-बुरी वृत्ति। २-दुष्टता। ३-व्यभिचार।
बदमिजाज वि० (फा) बुरे स्वभाव का। चिड़-चिड़ा
बदमिजाजी स्त्री० (फा) बुरा स्वभाव। चिड़चिड़ापन
बदरंग वि०(फा) १-बुरे या भद्दे रङ्ग का। २-जिसका रङ्ग बिगड़ चुका हो।
बदर पुं० (सं) १-बेर का पेड़ या फल। २-कपास। ३-बिनौला। पुं० (हि) मेघ। बादल। वि० (फा) बाहर।
बदरा पुं० (हि) बादल। मेघ। स्त्री० (सं) कपास का पौधा।
बदराई स्त्री० (हि) बदली।
बदराह वि० (फा) १-दुश्चरित्र। दुष्ट। २-बुरे मार्ग पर चलने वाला।
बदरिका स्त्री० (सं) १-बेर का पेड़ या फल। २-गंगा का एक उद्गम स्थान। ३-उसके पास का आश्रम। बदरिकाश्रम।
बद-रिकाब वि० (फा) जो सवार होते समय अड़े। (घोड़ा)।
बदरिया स्त्री० (हि) बदली। मेघ।
बदरी स्त्री० (सं) १-बेर का पेड़ या पौधा। २-कपास का पौधा। स्त्री० (हि) बादल। मेघ।
बदरीनाथ पुं० (सं) बदरिकाश्रम नामक तीर्थ।
बदरीनारायण पुं० (सं) बदरिकाश्रम के मन्दिर की नारायण की मूर्ति।
बदरीफल पुं० (सं) बेर का फल।
बदरीवन पुं०(सं) १-बेर का जंगल। २-बदरिकाश्रम
बदरोब वि० (फा) १-जिसका तनिक भी रोब न हो। २-तुच्छ। भद्दा।
बदरोबी स्त्री० (फा) अप्रतिष्ठा।
बदरौह वि० (फा) दे० 'बदराह'।
बदल पुं० (अ) १-हेरफेर। परिवर्तन। २-पलटा। प्रतिकार।
बदलगाम वि० (फा) १-मुँहजोर। मुँहफट। २-सरकश। (घोड़ा)।
बदलना क्रि० (हि) १-परिवर्तित होना। २-एक वस्तु हटाकर उसके स्थान पर दूसरी वस्तु रखना या हो जाना। ३-एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्त

हो जाना।

बदलवाना क्रि०(हि) बदले का काम दूसरे से कराना।

बदला पुं० (हि) १-विनिमय। २-पलटा। ३-प्रतिकार। ४-नतीजा। परिणाम।

बदलाई स्त्री० (हि) १-बदलने की क्रिया या भाव। २-बदले में लगने वाली रकम।

बदलाना क्रि० (हि) दे० 'बदलवाना'।

बदली स्त्री० (हि) १-फैल कर छाया हुआ बादल। २-बदले जाने की क्रिया या भाव। ३-एक स्थान से हटाकर दूसरी जगह करने वाली नियुक्ति। (ट्रान्सफर)।

बदलौवल स्त्री० (हि) हेर-फेर। अदल-बदल।

बदशक्ल वि० (फा) भद्दा। कुरूप।

बदशगून वि० (फा) मनहूस। अशुभ।

बदसलीकगी स्त्री० (फा) फूहड़पन। बेशऊरी।

बदसलीका वि० (फा) असभ्य। बेशऊर। फूहड़।

बदसलूकी स्त्री० (फा) १-अशिष्ट व्यवहार। २-बुराई व्यवहार।

बदसूरत वि० (फा) कुरूप। बेडौल।

बदहज़मी स्त्री० (फा) अजीर्ण। अपच।

बदहवास वि० (फा) १-बेहोश। अचेत। २-व्याकुल। ३-श्रांत। शिथिल।

बदहवासी स्त्री० (फा) १-अचेतनता। २-व्याकुलता। ३-शिथिलता।

बदा वि० (हि) भाग्य में लिखा हुआ।

बदावदी स्त्री० (हि) प्रतियोगिता। होड़। अव्य० (हि) बढ़कर।

बदाम पुं० (हि) दे० 'बादाम'।

बदामी वि० (हि) दे० 'बादामी'।

बदि स्त्री० (हि) बदल। पलटा। अव्य० (हि) बदले में पलटे में।

बदी स्त्री० (हि) कृष्णपक्ष। स्त्री० (फा) अपकार। बुराई।

बदूख स्त्री० (हि) दे० 'बन्दूक'।

बद्दर पुं० (हि) दे० 'बादल'।

बद्दल पुं० (हि) दे० 'बादल'।

बदौलत अव्य० (फा) १-आसरे से। द्वारा। २-कारण से। ३-वजह से।

बद्ध वि० (सं) १-बँधा हुआ। २-बन्धन में फँसा हुआ। ३-संसार के बन्धन में फँसा हुआ। ४-जिसके लिए कोई बन्धन न हो। ५-निर्धारित। ६-बैठा हुआ। ७-किसी प्रतिज्ञापत्र से बंधा हुआ। (बाउन्ड)।

बद्धकोष्ठ पुं० (सं) अजीर्ण। बदहज्मी।

बद्धदृष्टि वि० (सं) जो किसी वस्तु पर आँखें जमाये हुए हो।

बद्धनेत्र वि० (सं) दे० 'बद्धदृष्टि'।

बद्धपरिकर वि० (सं) कमर बांधे हुए। तैयार।

बद्धप्रतिज्ञ वि० (सं) वचनबद्ध।

[illegible]

[illegible] मामले में

दिलचस्पी रखता हो। (इन्टरेस्टेड पार्टी)।

बद्धांजलि वि० (सं) करबद्ध। हाथ जोड़े हुए।

बद्धी स्त्री० (हि) १-बांधने की कोई वस्तु। डोरी। रस्सी। २-चार लड़ी वाला एक हार।

बध पुं० (सं) दे० 'वध'।

बधना क्रि० (हि) मार डालना। वध करना। पुं०(हि) मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

बधाई स्त्री० (हि) १-वृद्धि। २-मंगल। उत्सव। ३-मंगलाचार। ४-किसी के यहाँ शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार या आनन्द प्रकट करने वाला वचन। मुबारकबाद।

बधाना क्रि० (हि) वध करना।

बधाया पुं० (हि) दे० 'बधाई'।

बधावना पुं० (हि) दे० 'बधावा'।

बधावरा पुं० (हि) दे० 'बधावा'।

बधावा पुं० (हि) १-बधाई। २-मंगलाचार। ३-उपहार।

बधिक पुं० (हि) १-वध करने वाला। २-जल्लाद। व्याध।

बधिया पुं० (हि) १-अण्डकोश निकाला हुआ पशु। २-एक प्रकार का मोटा गन्ना।

बधियाना क्रि० (हि) बधिया बनाना।

बधिर वि० (सं) जिसमें सुनने की शक्ति न हो। बहरा।

बधिरता स्त्री० (सं) बहरापन।

बधू स्त्री० (हि) दे० 'वधू'।

बधूक पुं० (हि) दे० 'बन्धूक'।

बधूटी स्त्री० (हि) दे० 'वधूटी'।

बधूरा पुं० (हि) बवंडर। बगूला। चक्रवात।

बधैया स्त्री०(हि) दे० 'बधाई'। पुं०(हि) दे० 'बधिक' २-दे० 'बधावा'।

बध्य वि० (सं) मार डालने के योग्य।

बन पुं० (सं) १-जंगल। कानन। २-जल। पानी। ३-समूह। ४-बगीचा। ५-कपास का पौधा। स्त्री० (हि) सजावट। सजधज। बाना।

बनआलू पुं० (हि) पिंडालू और जिमीकंद के समान एक पौधा।

बनकर पुं०(हि) १-दे० 'बिनौला'। २-दे० 'खोजा'

बनकंडा पुं० (हि) वन में सूखा हुआ गोबर। कंडा। छरना।

बनक स्त्री०(हि) १-बनावट। सजावट। २-वेश। बाना। ३-वन की उपज। जैसे लकड़ी, गोंद।

बनकटा वि० (हि) जंगली।

वन-कपासी स्त्री०(हि) एक पौधा जिसके रेशे से रस्सा बटते है।
वनकर पुं० (हि) १-जंगल में होने वाली घास, लकड़ी आदि का कर। २-सूर्य।
वनखंड पुं० (हि) जंगली प्रदेश। जंगल का कोई भाग
वनखंडी स्त्री० (हि) वनस्थली। पु०(हि) वन में रहने वाला।
वनखरा पुं० (हि) ऐसी भूमि जिसमें पिछली फसल कपास की बोई गई हो।
वनगरी स्त्री० (हि) एक प्रकार की मछली।
वनचर पुं० (हि) १-जंगली पशु। २-जंगली आदमी ३-जलजीव।
वनचरी स्त्री० (हि) एक प्रकार की जंगली घास।
वनचारी पुं०(हि)१-वन में घूमने वाला। २-जंगली जन्तु। ३-जलजीव। ४-वनवासी।
वनचौंर स्त्री० (हि) सुरागाय। सुरभी।
वनचौंरी स्त्री० (हि) दे० 'वनचौंर'।
वनज पु० (हि) १-वाणिज्य। २-कमल। ३-जल में होने वाले पदार्थ।
वनजना क्रि० (हि) व्यापार या रोजगार करना।
वनजात पुं० (हि) कमल।
वनजारा पुं०(हि) १-बैलों पर सामान (अन्न) लाद-कर जगह-जगह वेचने वाला व्यक्ति। २-व्यापारी। सौदागर।
वनजी पुं० (हि) १-व्यापार। २-व्यापारी।
वनड़ा पुं० (दे०) १-दुल्हा। घर।
वनत स्त्री० (हि) १-वनावट। रचना। २-अनुकूलता। ३-एक प्रकार की रेशम पर काढ़ने की वेल।
वनताई स्त्री० (हि) वन की सघनता या भयंकरता।
वनतुलसी स्त्री० (हि) एक पौधा जिसकी पत्तियां तुलसी के समान होती हैं। बबरी।
वनद पुं० (हि) बादल। मेघ।
वनदाम स्त्री० (हि) वनमाला।
वनदेवता पुं० (हि) दे० 'वनदेवता'।
वनदेवी स्त्री० (हि) दे० 'वनदेवी'।
वनधातु स्त्री० (हि) गेरू या कोई रंगीन मिट्टी।
वनना (हि) १-तैयार होना। रचा जाना। २-काम आने के योग्य होना। ३-एक रूप से बदलकर अन्य रूप में हो जाना। ४-उन्नत दशा को प्राप्त होना। ५-प्राप्त होना। ६-मरम्मत होना। ७-निभना। पटना। ८-मूर्ख या उपहासास्पद सिद्ध होना। ९-सजना। १०-सुअवसर मिलना।
वननि स्त्री० (हि) १-वनावट। २-वनावसिंगार।
वननिधि पुं० (हि) समुद्र।
वननीवू पुं० (हि) एक सदाबहार वृक्ष।
वनपट पुं०(हि) वृक्ष की छाल से बनाया हुआ कपड़ा
वनपति पुं० (हि) सिंह। शेर।
वनपथ पुं० (हि) वह मार्ग जिसमें जंगल बहुत पड़ता हो।
वनपाट पुं० (हि) जंगली पटसन।
वनपाती स्त्री० (हि) वनस्पति।
वनपाल पुं० (हि) वन या बगीचे का रक्षक। माली।
वनप्रिय पुं० (सं) कोयल। कोकिल।
वनफशई वि० (फा) वनफशे के रंग का।
वनफशा पुं० (फा) एक पर्वतों पर उगने वाला पौधा जिसके पत्ते आदि दवा के काम आते हैं।
वनबसन पु० (हि) छाल का बना कपड़ा।
वनवारी स्त्री० (हि) वनकन्या।
वनवाहन पुं० (हि) नाव। नौका।
वनबिलाव पुं० (हि) बिल्ली जैसा पर उस से बड़ा जंगली जन्तु।
वनमानुस पुं०(हि) १-बन्दरों से उन्नत मनुष्य आकृति वाला जंगली जन्तु। २-जंगली आदमी (विनोद)
वनमाला स्त्री (हि) दे०'वनमाला'।
वनमाली पुं० (हि) दे०'वनमाली'।
वनमुरगा पुं०(हि) जंगली मुर्गा।
वनमूंग पुं० (हि) मोठ।
वनरखा पुं०(हि)१-वन का रक्षक। २-एक जंगली जात
वनरा पुं०(हि) १-दुल्हा। २-लड़के के विवाह उत्सव में गाया जाने वाला एक गीत। पुं० (देश) बन्दर।
वनराज पुं० (हि) वन का राजा। सिंह। शेर। २-बहुत बड़ा पेड़।
वनराय पुं०(हि) दे० 'वनराज'।
वनरी स्त्री०(हि) नववधु।
वनवना क्रि० (हि) वनाना।
वनवारी पुं०(हि) श्रीकृष्ण।
वनवैया पु०(हि) बनाने वाला।
वनसंपति स्त्री०(हि) दे० 'वनस्पति'।
वनाइ अव्य० (हि) दे 'वनाय'।
वनाउ पु०(हि) दे०'वनाव'।
वनाउरि स्त्री०(हि) दे० 'वाणावली'।
वनागि स्त्री० (हि) दावानल।
वनाग्नि स्त्री० (हि) दावानल।
वनात स्त्री (हि) एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।
वनाना क्रि०(हि) १-रूप या अस्तित्व देना। रचना। २-ठीक अवस्था में लाना। ३-किसी को पद, मान, अधिकार आदि देना। ४-उन्नत अवस्था को प्राप्त करना। ५-उपार्जित करना। ६-किसी को व्यंगपूर्वक मूर्ख ठहराना। ७-दोष दूर करके ठीक करना।
वनावत पु०(हि) विवाह करने के पहले लड़के और कन्या की जन्मकुण्डली मिलाना।
वनाम अव्य० (फा) नाम पर का नाम।
वनाय अव्य० (हि) १-बिलकुल। पूर्णतया। २-अच्छी तरह से।

बनाव पु० (हि) १–बनावट। रचना। २–सजावट। ३–युक्ति।

बनावट स्त्री० (हि) १–बनने या बनाने का भाव या ढंग। २–आडम्बर। ३–कृत्रिमता।

बनावटी वि० (हि) नकली। कृत्रिम। बनाया हुआ।

बनावन पु० (हि) अन्न साफ करते समय निकलने वाली लकड़ी, कंकड़ आदि।

बनावनहारा पु० (हि) रचयिता। बनाने वाला। बिगड़े को बनाने वाला।

बनावना क्रि० (हि) दे० 'बनाना'।

बनावरि स्त्री० (हि) बाणों की पंक्ति।

बनासपाती स्त्री० (हि) दे० 'वनस्पति'।

बनि वि० (हि) पूर्ण। समस्त। स्त्री० (हि) मजदूरी के बदले में दिया जाने वाला अन्न। पु० (हि) खेती पर काम करने वाला मजदूर।

ब[illegible]

बश में करना।

बनिजारा पु० (हि) दे० 'बनजारा'।

बनिजारिन स्त्री० (हि) बनजारा जाति की स्त्री।

बनिजारी स्त्री० (हि) बनिजारिन।

बनित स्त्री० (हि) वेष। बानक।

बनिता स्त्री० (हि) १–औरत। स्त्री। पत्नी।

बनिया पु० (हि) १–व्यापार करने वाला। व्यापारी। २–आटा दाल बेचने वाला। ३–वैश्य।

बनियाइन स्त्री० (हि) १–बिना बांह की कुर्ती। २–बनिये की स्त्री। ३–वैश्या स्त्री।

ब-निस्बत अव्य० (फा) तुलना में। अपेक्षाकृत।

बनिहार पु०(हि) खेत सम्बन्धी सब काम करने वाला नौकर।

बनी स्त्री०(हि) १–वनस्थली। बन का कोई भाग। २–बाग। ३–नववधू। ४–नायिका। स्त्री। ५–कपास। पु० (हि) बनिया।

बनौनी स्त्री० (हि) दे० 'बनैनी'।

बनौर पु० (हि) बेंत।

बनेठी स्त्री० (हि) पटेबाजी का वह डंडा जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे होते हैं।

बनैनी स्त्री० (हि) बनिये की स्त्री। वैश्य जाति की स्त्री।

बनैला वि० (हि) जंगली। वन्य (पशु)।

बनोवास पु० (हि) दे० 'बनवास'।

बनोवा (वि) (हि) बनावटी।

बनौटी वि० (हि) कपास के फूल के समान। कपासी।

बनौरी पु०(हि) १–वर्षा के साथ गिरने वाला ओला। २–एक रोग जिसमें शरीर पर गांठें पड़ जाती हैं।

बनौवा वि० (हि) बनावटी।

बन्नी स्त्री० (हि) उपज का वह अंश जो खेत पर काम करने वाले मजदूर को दिया जाता है।

बन्हि पु० (हि) दे० 'वह्नि'।

बप पु० (हि) पिता। बाप।

बपतिस्मा पु० (अ) नवजात शिशु या किसी को ईसाई बनाने के समय का एक संस्कार।

बपना क्रि० (हि) बीज बोना।

बपमार वि० (हि) पितृघातक।

बपु पु० (हि) १–शरीर। देह। २–अवतार। ३–रूप।

बपुरव पु० (हि) दे० 'बपु'।

बपुरा वि० (हि) १–बेचारा। गरीब। २–असहाय। ३–गरीब।

बपौती स्त्री० (हि) पैतृक सम्पत्ति।

बप्पा पु० (हि) पिता। बाप।

[illegible] भाप से

बफरना क्रि० (हि) उत्तेजना में बोलना।

बबर पु० (फा) १–बड़ा शेर। २–एक प्रकार का मोटा कम्बल।

बबा पु० (हि) दे० 'बाबा'।

बबुआ पु० (हि) १–छोटे बच्चे के लिए प्यार का शब्द २–जमींदार। रईस। ३–बालक के आकार की गुड़िया।

बबुई पु० (हि) १–कन्या। बेटी। २–छोटी ननद। ३–किसी ठाकुर, सरदार की बेटी।

बबूर पु० (हि) कीकर नामक वृक्ष।

बबूल पु० (हि) दे० 'बबूर'।

बबूला पु० (हि) १–बगूला। २–बुलबुला।

बम्नी स्त्री० (हि) छिपकली के आकार का एक छोटा जन्तु जिसके शरीर पर धारियां होती हैं।

बम पु० (अ) विस्फोटक पदार्थ का बना हुआ गोला जो शत्रु की सेना पर फेंका जाता है। पु० (हि) १–शिव को प्रसन्न करने का 'बम-बम' शब्द। २–शहनाई वालों का छोटा नगाड़ा। ३–तांगे या इक्के का वह बांस जिसमें घोड़े जोते जाते हैं।

बमकना क्रि० (हि) शेखी बघारना। डींग हांकना।

बमकांड पु०(हि) बम गिरने की दुर्घटना। (बॉम्ब केस)

बमगोला पु० (हि) दे० 'बम'।

बमचख स्त्री०(हि) १–शोर। गुल। २–लड़ाई-झगड़ा। विवाद।

बमना क्रि० (हि) कै। करना।

बमबाज पु० (हि) शत्रु पर बम फेंकने वाला।

बमबाजी स्त्री० (हि) शत्रु पर बम फेंकने की क्रिया या भाव। बमवर्षा। (बॉम्बिंग)।

बमबारी स्त्री० (हि) दे० 'बमबाजी'।

बमवर्षक पु० (हि) एक प्रकार का लड़ाकू वायुयान जिससे शत्रु पर बम वर्षा की जाती है। (बॉम्बर)।
बमवर्षा स्त्री० (हि) शत्रु पर वायुयान से बम बरसाने की क्रिया या भाव।
बमवर्षी स्त्री० (हि) दे० 'बमवर्षक'।
बमीठा पु० (हि) बाँबी। वाल्मीक।
बमुकाबला अव्य० (फा) १-मुकाबले में। २-विरोध में
बमूजिब अव्य० (फा) अनुसार। मुताबिक।
बम्हनी स्त्री० (हि) १-दे० 'बभनी'। २-आँख का एक रोग। गुहांजनी। ३-लाल रंग की भूमि। ४-ईख में लगने वाला एक रोग। ५-हाथी का एक रोग।
बयँहत्था वि० (हि) १-बाएँ हाथ से काम करने वाला २-बाँये हाथ से गेंद फेंकने वाला। (लेफ्ट हैंडर)
बय स्त्री० (हि) दे० 'वय'।
बयन पु० (हि) वाणी। बात। बोली।
बयना क्रि० (हि) १-बोना। बीज जमना। २-वर्णन कहना। कहना। पु० (हि) दे० 'बैना'।
बयर पु० (हि) दे० 'बैर'।
बयस स्त्री० (हि) दे० 'वय'।
बयसवाला वि० (हि) 'वयस्क'।
बयससिरोमनि स्त्री० (हि) 'यौवन'।
बया पु०(हि) गौरैया के आकार का एक पक्षी जिसका माथा पीला होता है। २-अनाज तौलने वाला।
बयाई स्त्री० (हि) अन्नादि तौलने की मजदूरी।
बयान पु०(फा)१-वर्णन। चर्चा। वक्तव्य। २-हाल। विवरण। वृत्तांत।
बयान तहरीरी पु०(फा) प्रतिवादी का मुकद्दमे के प्रार्थना पत्र के उत्तर में लिखित बयान जो वह न्यायालय में दाखिल करता है। जवाबदावा। (रिटन स्टेटमेंट)।
बयाना पु०(हि) मूल्य, पारिश्रमिक का वह अंश जो कोई वस्तु खरीदने से पहले बात पक्की करते समय लिया जाता है पेशगी। (एडवान्स)। क्रि०(हि) बड़ बड़ करना।
बयाबान पु० (हि) जंगल। उजाड़।
बयार स्त्री०(हि) हवा। पवन।
बयारि स्त्री० (हि) बयार।
बयारी स्त्री० (हि) दे० 'ब्यालू'।
बयाला पु० (हि) १-दीवार का झरोखा या ताक। २-ताख। आला। ३-गढ़ों में वह स्थान जहां तोपें लगी रहती हैं। ४-पटाव के नीचे खाली जगह।
बयालिस वि० (हि) चालीस और दो। पु० (हि) बयालिस की संख्या। ४२।
बयासी वि० (हि) अस्सी और दो। पु० (हि) बयासी की संख्या। ८२।
बर पु० (हि) १-बरगद। २-रेखा। लकीर। ३-जिद करना। ४-किसी व्यापार में वह कोई विशेष पदार्थ जो उसी मेल के अन्य पदार्थों से अलग हो। ५-दे० 'वर'। अव्य० (फा) ऊपर। अव्य० (हि) बरन्। बल्कि। वि०(फा) १-बढ़ाचढ़ा। श्रेष्ठ। २-पूर्ण। पु०(फा) फल। वि०(हि) अच्छा। उत्तम।
बरअंग स्त्री० (हि) योनि।
बरई पु० (हि) पनवाड़ी। तमोली।
बरकंदाज पु० (हि) वह सिपाही जिसके पास लाठी या बन्दूक होती है। पहरेदार।
बरकत स्त्री० (प) १-लाभ। २-प्रसाद। ३-किसी वस्तु में वृद्धि। ४-समाप्ति। ५-बढ़ोतरी के लिए छोड़ा गया पदार्थ।
बरकना क्रि० (हि) निवारण होना। अलग रहना।
बरकरार वि० (फा) १-स्थिर। कायम। २-उपस्थित
बरकाज पु० (हि) विवाह।
बरकाना क्रि० (हि) १-निवारण करना। २-पीछा छुटाना।
बरख पु० (हि) साल। बरस।
बरखना क्रि० (हि) पानी बरसना। वर्षा होना।
बरखा स्त्री० (हि) १-मेंह बरसना। वृष्टि। २-वर्षा-ऋतु।
बरखाना क्रि० (हि) १-बरसाना। २-अधिक देना। ३-ऊपर से छितराकर वर्षा के समान गिराना।
बरखास वि० (हि) बरखास्त।
बरखास्त वि० (फा) १-नौकरी से हटाया हुआ। २-जिसकी बैठक विसर्जित हो गई हो।
बरखास्तगी स्त्री० (फा) १-विसर्जन। २-समाप्ति।
बरखिलाफ वि० (फा) प्रतिकूल। विरुद्ध। उलटा।
बरग पु० (हि) दे० 'वर्ग'।
बरगद स्त्री० (हि) पीपल, गूलर आदि जाति का एक पेड़ जिसे 'बड़' भी कहते हैं।
बरच्छा स्त्री० (हि) दे० 'बरेच्छा'।
बरछा पु० (हि) फेंक कर मारने का शस्त्र। भाला।
बरछैत पु० (हि) बरछा चलाने या रखने वाला।
बरजना क्रि० (हि) रोकना। मना करना।
बरजनि स्त्री० (हि) मनाही। रुकावट। रोक।
बरजोर वि० (फा) १-अत्याचारी। बलवान। अव्य० (फा) बलपूर्वक। जबरदस्ती।
बरजोरी स्त्री० (फा) १-अत्याचार। २-बल।
बरत पु० (हि) दे० 'व्रत'। स्त्री० (हि) १-रस्सी। २-नट की रस्सी जिस पर चढ़कर वह खेल दिखाता है
बरतन पु० (हि) १-धातु, मिट्टी आदि के वह उपकरण जिसमें खाने पीने की वस्तु रखी जाती है। पात्र। भांडा। २-व्यवहार। बरताव।
बरतना क्रि० (हि) १-व्यवहार या बरताव करना। २-काम में लाना।
बरतनी स्त्री० (हि) १-लिखने का ढंग। २-एक प्रकार की लम्बी कलम।

बरहीमुख

बरहीमुख पुं० (हि) देवता।
बरहो पुं० (हि) दे० 'बरही'।
बरांडा पुं० (हि) दे० 'बरामदा'।
बरांडी स्त्री० (हि) एक प्रकार की विलायती शराब।
बरा पुं० (हि) १-पिट्ठी का पकवान। बड़ा। २-बर-गद का पेड़। ३-भुजदंड पर बांधने का एक गहना
बराई स्त्री० (हि) दे० 'बड़ाई'।
बराक पुं० (हि) दे० 'बराक'। वि० (हि) १-नीच। २-शोचनीय। ३-बेचारा।
बराटिका स्त्री० (हि) दे० 'वराटिका'।
बरात स्त्री० (हि) विवाह के समय वर सहित पुरुष लोगों का कन्यापक्ष के यहां जाना। जनेत।
बराती पुं० (हि) बरात में वरपक्ष वालों के साथ लड़की वालों के घर तक जाने वाला। वि० (हि) बरात सम्बन्धी।
बराना क्रि० (हि) १-जान बूझ कर अलग करना। २-बचना। ३-रक्षा करना। ४-चुनना। छांटना। ५-जलाना। ६-खेतों में पानी देना।
बराबर वि० (फा) १-एकसा। तुल्य। २-समान पद वाला। ३-ठीक। अव्य० (हि) १-एक साथ। एक पंक्ति में। २-सर्वदा। ३-साथ। ४-लगातार।
बराबरी स्त्री०(हि) १-समता। समानता। २-सा-दृश्यता। ३-तुलना।
बरामद पुं० (फा) १-निकलना। २-प्राप्त होना। ३-गंगबरार। ४-आमदनी। ५-खोई हुई वस्तु का कहीं से निकलना।
बरामदगी स्त्री० (फा) बरामद होने का भाव या क्रिया
बरामदा पुं०(फा)१-मकान के आगे का छाया हुआ भाग। दालान। २-बारजा।
बराय अव्य० (फा) वास्ते। लिए। निमित्त।
बरायखुदा अव्य०(फा) भगवान के नाम पर।
बरायनाम अव्य० (फा) नाम मात्र के लिए।
बरायन पुं०(हि) विवाह के समय वर के हाथ में पह-नाने का लोहे का छल्ला।
बरार पुं० (हि) १-एक जंगली पशु। २-मध्य भारत का एक भाग।
बराव पुं० (हि) निवारण। परहेज। बचाव।
बराह पुं० (हि) दे० 'वराह'। अव्य० (फा) १-के तौर पर। जरिये से। २-द्वारा।
बरिआई स्त्री० (हि) १-बलवान होने का भाव। २-बल प्रयोग।
बरिआत स्त्री० (हि) दे० 'बरात'।
बरिआर वि० (हि) बलवान। बली। मजबूत।
बरिच्छा स्त्री (हि) फलदान।
बरियंड वि० (हि) बलवान। प्रचंड।
बरिया वि० (हि) बलवान। शक्तिशाली।
बरियाई स्त्री० (हि) दे० 'बरिआई'।
बरियात स्त्री० (देश०) दे० 'बरात'।
बरियार पुं० (हि) बली। बलवान। मजबूत।
बरियारा पुं० (हि) एक छोटा पौधा।
बरिसना क्रि० (हि) दे० 'बरसना'।
बरिखा स्त्री० (हि) दे० 'वर्षा'।
बरिस पुं० (हि) वर्ष। साल।
बरी स्त्री० (हि) १-गोल टिकिया। बटी। २-बरं पिट्ठी के सुखाए हुए टुकड़े। वि० (फा) छूटा हुआ मुक्त।
बरीस पुं० (हि) दे० 'बरस'।
बरीसना क्रि० (हि) दे० 'बरसना'।
बरु अव्य (हि) भले ही परवाह नहीं। वरन्। ब
बरुआ पुं० (हि) १-ब्रह्मचारी। २-उपनयन। ब्राह्मणकुमार। ४-मूंज की बद्धी जिससे ट बनती है।
बरुक अव्य० (हि) दे० 'बरु'।
बरुणालय पुं० (हि) समुद्र।
बरुन पुं० (हि) दे० 'बरुण'।
बरुनी स्त्री० (हि) आँख की पलक के किनारे
बरुवा पुं० (हि) दे० 'बरुआ'।
बरूथ पुं० (हि) दे० 'वरूथ'।
बरेंडा पुं०(हि) लकड़ी या मोटा लट्ठा जो खप छाजन में लम्बाई के बल लगी रहती है।
बरेंडी स्त्री० (हि) छोटा बरेंडा।
बरे अव्य० (हि) १-ओर से। २-बलपूर्वक। में।
बरेखी स्त्री० (हि) विवाह सम्बन्ध स्थिर करने वर या कन्या को देखना।
बरेच्छा स्त्री० (हि) मंगनी। विवाह ठहराना
बरेज पुं० (हि) पान का बगीचा।
बरेजा पुं० (हि) बरेज।
बरेठ पुं० (हि) धोबी।
बरेठा पुं० (हि) धोबी।
बरेत स्त्री० (हि) दे० 'बरेता'।
बरेता पुं० (हि) सन का मोटा रस्सा।
बरेदी पुं० (देश) चरवाहा।
बरेषी स्त्री० (हि) दे० 'बरेखी'।
बरैंडा पु० (हि) दे० 'बरेंडा'।
बरोक पुं० (हि) फलदान। विवाह की करने के लिए वरपक्ष वालों को दिया धन। अव्य० (हि) बलपूर्वक। जबरद
बरोठा पुं० (हि) १-ड्योढ़ी। पौरी। दीवानखाना।
बरोरु वि० (हि) दे० 'बरोरु'।
बरोह स्त्री० (हि) बरगद की जटा।
बरौंखी स्त्री० (हि) सुनार की गहने सुअर के बालों की बनी कूंची।

विद्रोह, बगावत।
बलवाई पुं० (फा) बलवा करने वाले। विद्रोही। उपद्रवी।
बलवान् वि० (सं) १-बलिष्ठ। ताकतवर। २-शक्तिशाली। ३-दृढ़। मजबूत।
बलवार वि० (हि) बलवान।
बलशाली वि०(सं) बली। बलवान।
बलशील वि० (सं) बलवान। बलशाली।
बलसूदन पुं० (सं) इन्द्र।
बलसैन्य पुं० (सं) सेना में बलात् भर्ती किया हुआ व्यक्ति। नई भर्ती। (कन्सक्रिप्ट)।
बला स्त्री० (सं) १-बरियारा नामक क्षुप। २-पृथ्वी। ३-लक्ष्मी। ४-दक्षप्रजापति की कन्या। ५-एक मंत्र जिसके प्रयोग से युद्ध के समय योद्धा को भूख नहीं लगती। ६-दे० 'बला'। स्त्री० (अ) १-आपत्ति। विपत्ति। २-दुःख। कष्ट। ३-भूत। प्रेत। ४-रोग।
बलाइ स्त्री० (हि) दे० 'बला' (अ)।
बलाक पुं० (सं) १-बगला। बक। २-राजा पुरु का एक पुत्र।
बलाकश वि० (फा) मुसीबत उठाने वाला।
बलाका स्त्री० (सं) १-बगली। २-बगलों की पंक्ति। ३-कामुकी स्त्री।
बलाठ पुं० (हि) मूंग।
बलाढ्य पुं० (सं) माष। उड़द। उरद। वि० (सं) बली। बलशाली।
बलात् अव्य० (सं) बल पूर्वक। जबरदस्ती। (फोर्सियली)।
बलात् अंशदान लेना (हि) बलपूर्वक चन्दा उगाना। (टु एक्सटॉर्ट कन्ट्रीब्यूशन)।
बलात् अपराधांगीकार करवाना (हि) बलपूर्वक अपराध को स्वीकार करवाना। (टु एक्सटॉर्ट कन्फैशन ऑफ ए गिल्ट)।
बलात्-आदान पुं० (सं) १-बलपूर्वक ले लेना। २-छीनना। (एक्सटॉर्ट)।
बलात्कार पुं० (सं) १-किसी की इच्छा के विपरीत बलपूर्वक कोई कार्य करना। २-किसी स्त्री का उसकी इच्छा के विरुद्ध सतीत्व नष्ट करना। (रेप)। ३-अन्याय। अत्याचार। ४-ऋणी को पकड़ कर बैठाना।
बलात्कार-दापन पुं० (सं) ऋणी को मार पीट कर रुपया वसूल करना। (स्मृति)।
बलात्कारित वि० (सं) जिस पर बलात्कार करके कोई कार्य कराया जाय।
बलात्कृत वि०(सं) जिसके साथ बलात्कार किया गया हो। (फोर्स्ड)।
बलात्कृतविक्रय पुं० (सं) वह वस्तु जिसे बेचने पर मजबूर कर दिया गया हो। (फोर्स्ड सेल)।
बलात्-निरोध पुं० (सं) बलपूर्वक जाने से रोकने वाला। (फोर्सिबिल डिटेनर)।
बलात्-प्रवेश पुं० (सं) बलपूर्वक कहीं घुस जाना। (फोर्सिबिल एन्ट्री)।
बलात्-श्रम पुं० (सं) बेगार। (फोर्स्ड लेबर)।
बलात्-सत्तापहरण पुं० (सं) दे० 'शासन विपर्यय'। (कूडेटा)।
बलादुद्घाटन पुं० (सं) किसी स्थान में बलपूर्वक प्रवेश करना। (ब्रेक ओपन)।
बलादवतरण पुं०(सं) वायुयान का इंजन में खराबी होने के कारण भूमि पर उतरने के लिए बाध्य होना (फोर्स्ड लैंडिंग)।
बलादवतरित वि० (सं) जिसे भूमि पर उतरने के लिए बाध्य होना पड़ा हो। (फोर्स्ड लैंडेड)।
बलाद्ग्रहण पुं०(सं)१-किसी से बलपूर्वक छीन लेना। २-धन आदि की कोई अनुचित मांग। ३-बलपूर्वक आधीन कर लेना। (केपचर, एक्जेक्शन)।
बलादादाता पुं० (सं) बलपूर्वक रुपये पैसे छीन लेने वाला। (एक्सटोर्शनर)।
बलाधिकृत पुं० (सं) किसी राज्य की सेना-विभाग का प्रधान अधिकारी। (मार्शल)।
बलाधिक्य पुं० (सं) बल की अधिकता।
बलाध्यक्ष पुं० (सं) सेनापति।
बलाबल पुं० (सं) दो पक्षों का तुलनात्मक बल और निर्बलता।
बलाय पुं० (हि) दे० 'बला'।
बलाराति पुं० (सं) १-विष्णु। २-इन्द्र।
बलाहक पुं०(सं) १-मेघ। बादल। २-श्रीकृष्ण। ३-बगला या सारस।
बलिदम पुं० (सं) विष्णु।
बलि पुं० (सं) किसी देवता पर चढ़ाया गया खाद्य पदार्थ। २-उपहार। भेंट। ३-पूजा की सामग्री। ४-चढ़ावा। ५-वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा गया हो। ६-खाने की वस्तु। ७-राजकर। स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का फोड़ा। २-मस्सा या अर्श। ३-चमड़े की झुर्री। ४-सखी। ५-चँवर का दंड।
बलिकानीति स्त्री० (सं) दो विरोधी दलों की मुकाबले में अपनी शक्ति, प्रभुत्व, अधिकार आदि बढ़ाने की नीति। (पावर-पालिटिक्स)।
बलिकर्म पुं० (सं) बलिदान।
बलित वि० (हि) बलिदान पर चढ़ाया हुआ।
बलिदान पुं० (सं) १-किसी देवता के नाम पर बकरे आदि पशु काट कर चढ़ाना। कुरबानी। २-देवता के उद्देश्य से पूजा की सामग्री चढ़ाना।
बलिद्विट् पुं० (सं) विष्णु।
बलिप्रध्वंसी पुं० (सं) विष्णु।

बलिनंदन पु० (सं) बलिराज के पुत्र बाणासुर का नाम।
बलिपशु पु०(सं) वह पशु जो देवता के निमित्त बलि चढ़ाया जाय।
बलिपुष्ट पु० (सं) कौवा।
बलिभोज पु० (सं) कौवा।
बलिवर्द पु० (सं) सांड। बैल।
बलिष्ठ वि० (सं) अतिशय बलवान। अधिक बलवान पु० (सं) ऊंट। बट्टू।
बलिष्ठातिजीवन पु० (सं) प्राकृतिक या सामाजिक जीवन-संघर्ष में केवल बलिष्ठों का जीवित रहना। (सर्वाइवल आफ दि फिटेस्ट)।
बलिहारना क्रि० (हि) निछावर करना। चढ़ा देना।
बलिहारी स्त्री० (हि) प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को निछावर कर देना। कुर्बान। निछावर।
बली स्त्री० (हि) १-चमड़े पर की झुर्री। २-वह रेखा जो त्वचा के सिकुड़ने से पड़ती है। वि० (सं) बलवान। ताकतवर।
बलीमुख पु० (हि) बन्दर।
बलीवर्द पु० (सं) सांड। बैल।
बलुआ वि०(हि) रेतीला जिसमें बालू मिली हो। पु० (हि) वह भूमि जिसमें बालू का अंश अधिक हो।
बलूची पु० (देश) बलूचिस्तान का निवासी। स्त्री० वहाँ की भाषा।
बल्ला पु० (हि) पानी का बुलबुला।
बलैया स्त्री० (हि) बला। बलाय। आपत्ति।
बल्कल पु० (सं) दे० 'वल्कल'।
बल्कि अव्य० (फा) १-अन्यथा। प्रत्युत। इसके विरुद्ध २-अच्छा यह है।
बल्ब पु० (अं) १-बिजली का लट्टू जो प्रकाश देता है। २-एक प्रकार की वनस्पति।
बल्लभ वि०, पु० (हि) दे० 'वल्लभ'।
बल्लभी स्त्री० (हि) १-प्रिया। दे० 'वल्लभी'।
बल्लम पु०(हि) १-सोंटा। डंडा। २-छड़। ३-बरछा ४-वह सुनहला डंडा जो चोबदार राजाओं के आगे लेकर चलते हैं।
बल्लमटेर पु० (हि) स्वयंसेवक। (वालंटियर)।
बल्लमबरदार पु० (हि) बरात, सवारी आदि के आगे बल्लम लेकर चलने वाला।
बल्लरी स्त्री० (हि) दे० 'वल्लरी'।
बल्लव पु० (सं) १-ग्वाल। अहीर। गोपाल। २-रसोइया। ३-भीम का नाम जो इन्होंने अज्ञातवास के समय रखा था।
बल्लवी स्त्री० (सं) गोपी। ग्वालिन।
बल्ला पु० (हि) बड़ा, लम्बा और मोटा शहतीर या डं। २-डांड़। पतवार। ३-गेंद खेलने का चपटा और चौड़ा डंडा। (बैट)।
बल्लेबाज पु० (हि) क्रिकेट के खेल में वह खिलाड़ी जो गेंद को बल्ले से मार कर रन बनाता है। (बैट्समैन)।
बल्लेबाजी स्त्री० (हि) क्रिकेट के खेल में गेंद पर प्रहार करने की कला या क्रिया। (बैट्समैनशिप)।
बवंडर पु० (हि) चक्रवात। बगूला। आंधी। तूफान
बवडा पु० (हि) दे० 'बवंडर'।
बव पु० (सं) ज्योतिष के अनुसार एक करण का नाम
बवधूरा पु० (हि) बगूला। बवंडर।
बवन पु० (हि) दे० 'बावन'।
बवना क्रि० (हि) १-छितराना। बिखरना। २-विखरना। छितरना। पु० (हि) बौना।
बवरना क्रि० (हि) दे० 'बौरना'।
बवासीर स्त्री (अ) एक रोग जिसमें गुदा में मस्से हो जाते हैं। अर्श।
बशिष्ठ पु० (सं) दे 'वसिष्ठ'।
बशीरी पु० (हि) एक प्रकार का पतला रेशमी वस्त्र।
बसंत पु० (हि) १-एक पौधा। २-दे० 'वसंत'।
बसंती वि० (हि) १-वसंत ऋतु संबंधी। २-खुलते हुए पीले रंग का। पु० (हि) हलके पीले रंग का कपड़ा या ऐसा रंग।
बसंदर पु० (हि) दे० 'वैश्वानर'।
बस वि० (फा) पर्याप्त। भरपूर। अव्य० ठहरो। रुको। बस करो। पु० (हि) शक्ति। काबू। वश। स्त्री० (अं) सवारियों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने वाली मोटरगाड़ी। लारी।
बसति स्त्री० (हि) दे० 'बस्ती'।
बसन पु० (हि) दे० 'वसन'।
बसना क्रि०(हि) १-जीवनयापन के लिए कहीं निवास करना। रहना। २-आबाद होना। ३-आकर रहना टिकना। डेरा डालना। ४-बसाया जाना। ५-सुगंध से भर जाना। पु० (हि) १-किसी वस्तु को लपेट कर रखने का कपड़ा। २-थैली। ३-बरतन। ४-लेनदेन करने की कोठी।
बसनि स्त्री० (हि) निवास। वास।
बसनी स्त्री० (हि) रुपये रखने की कमर में बांधने की लम्बी थैली।
बसर पु० (फा) गुजर। निर्वाह।
बसरऔकात पु० (फा) जीवनयापन। निर्वाह।
बसवार पु० (हि) छौंक। तड़का। वि० (हि) सुगंधित सोंधा।
बसवास पु० (हि) १-निवास। रहना। २-स्थिति। ३-ठिकाना।
बसह पु० (हि) बैल।
बसौंधा वि० (हि) सुवासित। गंधयुक्त।
बसा स्त्री० (हि) १-दे० 'वसा'। २-भिड़। बरैया।

विद्रोह। बगावत।
बलवाई पुं० (फा) बलवा करने वाले। विद्रोही। उपद्रवी।
बलवान् वि० (सं) १-बलिष्ठ। ताकतवर। २-शक्तिशाली। ३-दृढ़। मजबूत।
बलवार वि० (हि) बलवान।
बलशाली वि०(सं) बली। बलवान।
बलशील वि० (सं) बलवान। बलशाली।
बलसूदन पुं० (सं) इन्द्र।
बलसैन्य पुं० (सं) सेना में बलात् भर्ती किया हुआ व्यक्ति। नई भर्ती। (कन्सक्रिप्ट)।
बला स्त्री० (सं) १-बरियारा नामक क्षुप। २-पृथ्वी। ३-लक्ष्मी। ४-दक्षप्रजापति की कन्या। ५-एक मंत्र जिसके प्रयोग से युद्ध के समय योद्धा को भूख नहीं लगती। ६-दे० 'बला'। स्त्री० (अ) १-आपत्ति। विपत्ति। २-दुःख। कष्ट। ३-भूत। प्रेत। ४-रोग।
बलाइ स्त्री० (हि) दे० 'बला' (अ)।
बलाक पुं० (सं) १-बगला। बक। २-राजा पुरु का एक पुत्र।
बलाकश वि० (अ) मुसीबत उठाने वाला।
बलाका स्त्री० (सं) १-बगली। २-बगलों की पंक्ति। ३-कामुकी स्त्री।
बलाट पुं० (हि) मूंग।
बलाढ्य पुं० (सं) माष। उड़द। उरद। वि० (सं) बली। बलशाली।
बलात् अव्य० (सं) बल पूर्वक। जबरदस्ती। (फोर्सिबली)।
बलात् अंशदान लेना (हि) बलपूर्वक चन्दा उघाना। (टु एक्सटॉर्ट कन्ट्रीब्यूशन्स)।
बलात् अपराधांगीकार करवाना (हि) बलपूर्वक अपराध को स्वीकार करवाना। (टु एक्सटॉर्ट कन्फैशन ऑफ ए गिल्ट)।
बलात्-आदान पुं० (सं) १-बलपूर्वक ले लेना। २-छीनना। (एक्सटॉर्ट)।
बलात्कार पुं० (सं) १-किसी की इच्छा के विपरीत बलपूर्वक कोई कार्य करना। २-किसी स्त्री का उसकी इच्छा के विरुद्ध सतीत्व नष्ट करना। (रेप)। ३-अन्याय। अत्याचार। ४-ऋणी को पकड़ कर बैठाना।
बलात्कार-दापन पुं० (सं) ऋणी को मार पीट कर रुपया वसूल करना। (स्मृति)।
बलात्कारित वि० (सं) जिस पर बलात्कार करके कोई कार्य कराया जाय।
बलात्कृत वि०(सं) जिसके साथ बलात्कार किया गया हो। (फोर्स्ड)।
बलात्कृतविक्रय पुं० (सं) वह वस्तु जिसे बेचने पर मजबूर कर दिया गया हो। (फोर्स्ड सेल)।
बलात्-निरोध पुं० (सं) बलपूर्वक जाने से रोकने वाला। (फोर्सिबिल डिटेनर)।
बलात्-प्रवेश पुं० (सं) बलपूर्वक कहीं घुस जाना। (फोर्सिबिल एन्ट्री)।
बलात्-श्रम पुं० (सं) बेगार। (फोर्स्ड लेबर)।
बलात्-सत्तापहरण पुं० (सं) दे० 'शासन विपर्यय'। (कूडेटा)।
बलाद्उद्घाटन पुं० (सं) किसी स्थान में बलपूर्वक प्रवेश करना। (ब्रेक ओपन)।
बलादवतरण पुं०(सं) वायुयान का इंजन में खराबी होने के कारण भूमि पर उतरने के लिए बाध्य होना (फोर्स्ड लैंडिंग)।
बलादवतरित वि० (सं) जिसे भूमि पर उतरने के लिए बाध्य होना पड़ा हो। (फोर्स्ड लैंडेड)।
बलाद्ग्रहण पुं०(सं)१-किसी से बलपूर्वक छीन लेना। २-धन आदि की कोई अनुचित मांग। ३-बलपूर्वक आधीन कर लेना। (केपचर, एक्जेक्शन)।
बलादादाता पुं० (सं) बलपूर्वक रुपये पैसे छीन लेने वाला। (एक्सटोर्शनर)।
बलाधिकृत पुं० (सं) किसी राज्य की सेना-विभाग का प्रधान अधिकारी। (मार्शल)।
बलाधिक्य पुं० (सं) बल की अधिकता।
बलाध्यक्ष पुं० (सं) सेनापति।
बलाबल पुं० (सं) दो पक्षों का तुलनात्मक बल और नियंतता।
बलाय पुं० (हि) दे० 'बला'।
बलाराति पुं० (सं) १-विष्णु। २-इन्द्र।
बलाहक पुं०(सं) १-मेघ। बादल। २-श्रीकृष्ण। ३-बगला या सारस।
बलिदम पुं० (सं) विष्णु।
बलि पुं० (सं) किसी देवता पर चढ़ाया गया खाद्य पदार्थ। २-उपहार। भेंट। ३-पूजा की सामग्री। ४-चढ़ावा। ५-वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा गया हो। ६-खाने की वस्तु। ७-राजकर। स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का फोड़ा। २-मस्सा या अर्श। ३-चमड़े की झुर्री। ४-सखी। ५-चँवर का दंड।
बलिकनीति स्त्री० (सं) दो विरोधी दलों की मुकाबले में अपनी शक्ति, प्रभुत्व, अधिकार आदि बढ़ाने की नीति। (पावर-पालिटिक्स)।
बलिकर्म पुं० (सं) बलिदान।
बलित वि० (हि) बलिदान पर चढ़ाया हुआ।
बलिदान पुं० (सं) १-किसी देवता के नाम पर बकरे आदि पशु काट कर चढ़ाना। कुरबानी। २-देवता के उद्देश्य से पूजा की सामग्री चढ़ाना।
बलिद्विट् पुं० (सं) विष्णु।
बलिप्रध्वंसी पुं० (सं) विष्णु।

बलिनंदन पु० (सं) बलिराज के पुत्र बाणासुर का नाम।
बलिपशु पु०(सं) वह पशु जो देवता के निमित्त बलि चढ़ाया जाय।
बलिपुष्ट पु० (सं) कौवा।
बलिभोज पु० (सं) कौवा।
बलिवर्द पु० (सं) सांड। बैल।
बलिष्ठ वि० (सं) अतिशय बलवान। अधिक बलवान पु० (सं) ऊँट। शूद्र।
बलिष्ठातिजीवन पु० (सं) प्राकृतिक या सामाजिक जीवन-संघर्ष में केवल बलिष्ठों का जीवित रहना। (सर्वाइवल आफ दि फिटेस्ट)।
बलिहारना क्रि० (हि) निछावर करना। चढ़ा देना
बलिहारी स्त्री० (हि) प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को निछावर कर देना। कुर्बान। निछावर।
बली स्त्री० (हि) १-चमड़े पर की झुर्री। २-वह रेखा जो त्वचा के सिकुड़ने से पड़ती है। वि० (सं) बल-वान। ताकतवर।
बलीमुख पु० (हि) बन्दर।
बलीवर्द पु० (सं) सांड। बैल।
बलुआ वि०(हि) रेतीला जिसमें बालू मिली हो। पु० (हि) वह भूमि जिसमें बालू का अंश अधिक हो।
बलूची पु० (देश) बलूचिस्तान का निवासी। स्त्री० वहां की भाषा।
बलूला पु० (हि) पानी का बुलबुला।
बलैया स्त्री० (हि) बला। बलाय। आपत्ति।
बल्कल पु० (स) दे० 'वल्कल'।
बल्कि अव्य० (फा) १-अन्यथा। प्रत्युत। इसके विरुद्ध २-अच्छा यह है।
बल्ब पु० (अ) १-बिजली का लट्टू जो प्रकाश देता है। २-एक प्रकार की वनस्पति।
बल्लभ वि०, पु० (हि) दे० 'वल्लभ'।
बल्लभी स्त्री० (हि) १-प्रिया। दे० 'वल्लभी'।
बल्लम पु०(हि) १-सोंटा। डंडा। २-छड़। ३-बरछा ४-वह सुनहला डंडा जो चोबदार राजाओं के आगे लेकर चलते हैं।
बल्लमटेर पु० (हि) स्वयंसेवक। (वालंटियर)।
बल्लमबरदार पु० (हि) बरात, सवारी आदि के आगे बल्लम लेकर चलने वाला।
बल्लरी स्त्री० (हि) दे० 'वल्लरी'।
बल्लव पुं० (स) १-ग्वाला। अहीर। गोपाल। २-रसोइया। ३-भीम का नाम जो उन्होंने अज्ञात वास के समय रखा था।
बल्लवी स्त्री० (सं) गोपी। ग्वालिन।
बल्ला पु० (हि) बड़ा, लम्बा और मोटा शहतीर या बाँस। २-डांड। पतवार। ३-गेंद खेलने का बल्ला और थोड़ा डंडा। (बैट)।
बल्लेबाज पु० (हि) क्रिकेट के खेल में वह खिलाड़ी जो गेंद को बल्ले से मार कर रन बनाता है। (बैटसमैन)।
बल्लेबाजी स्त्री० (हि) क्रिकेट के खेल में गेंद पर प्रहार करने की कला या क्रिया। (बैटसमैनशिप)।
बवंडर पु० (हि) चक्रवात। बगूला। आंधी। तूफान
बवंडा पु० (हि) दे० 'बवंडर'।
बव पु० (सं) ज्योतिष के अनुसार एक करण का नाम
बवपुरा पु० (हि) बगूला। बवंडर।
बवन पु० (हि) दे० 'वमन'।
बवना क्रि० (हि) १-छितराना। बिखराना। २-बिखरना। छितरना। पु० (हि) बौना।
बवरना क्रि० (हि) दे० 'बौरना'।
बवासीर स्त्री (अ) एक रोग जिसमें गुदा में मस्से हो जाते हैं। अर्श।
बशिष्ठ पु० (सं) दे० 'वशिष्ठ'।
बशीरी पु० (हि) एक प्रकार का पतला रेशमी वस्त्र।
बसंत पु० (हि) १-एक पौधा। २-दे० 'वसंत'।
बसंती वि० (हि) १-वसंत ऋतु संबंधी। २-खुलते हुए पीले रंग का। पु० (हि) हलके पीले रंग का कपड़ा या ऐसा रंग।
बसंदर पु० (हि) दे० 'वैश्वानर'।
बस वि० (फा) पर्याप्त। भरपूर। अव्य० ठहरो। रुको। बस करो। पु० (हि) शक्ति। काबू। वश। स्त्री० (अं) सवारियों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने वाली मोटरगाड़ी। लारी।
बसति स्त्री० (हि) दे० 'बस्ती'।
बसन पु० (हि) दे० 'वसन'।
बसना क्रि०(हि) १-जीवनयापन के लिए कहीं निवास करना। रहना। २-आबाद होना। ३-आकर रहना टिकना। डेरा डालना। ४-बसाया जाना। ५-सुगंध से भर जाना। पु० (हि) १-किसी वस्तु को लपेट कर रखने का कपड़ा। २-थैली। ३-बरतन। ४-लेनदेन करने की कोठी।
बसनि स्त्री० (हि) निवास। वास।
बसनी स्त्री० (हि) रुपये रखने की कमर में बांधने की लम्बी थैली।
बसर पु० (फा) गुजर। निर्वाह।
बसरऔकात पु० (फा) जीवनयापन। निर्वाह।
बसवार पु० (हि) छौंक। तड़का। वि० (हि) सुगन्धित सोंधा।
बसवास पु० (हि) १-निवास। रहना। २-स्थिति। ३-ठिकाना।
बसह पु० (हि) बैल।
बसांधा वि० (हि) सुवासित। गंधयुक्त।
बसा स्त्री० (हि) १-दे० 'वसा'। २-भिड़। बरैया।

बसात स्त्री० (हि) दे० 'विसात'।

बसाना क्रि०(हि) १-बसने के लिए स्थान देना। २-आबाद करना। टिकाना। ठहराना। ३-बैठाना। रखना। ४-बश या जोर चलाना। ५-रहना। ६-गंधयुक्त होना। ७-दुर्गन्ध देना।

बसिआना क्रि० (हि) बासी हो जाना।

बसिऔरा पुं० (हि) १-बासी भोजन। २-वह दिन जिसमें बासी भोजन खाया जाता है।

बसिया वि० (हि) दे० 'बासी'। २-बासी भोजन।

बसियाना क्रि० (हि) दे० 'बसिआना'।

बसियौरा पुं० (हि) दे० 'बसिऔरा'।

बसिष्ठ पुं० (हि) दे० 'वसिष्ठ'।

बसीकत स्त्री० (हि) १-बस्ती। आबादी। २-बसने का भाव या क्रिया।

बसीकर वि० (हि) दे० 'वशीकर'।

बसीकरन पुं० (हि) दे० 'वशीकरण'।

बसीठ पुं० (हि) दूत। समाचार या संदेश ले जाने वाला।

बसीठी स्त्री० (हि) दूत का काम। दौत्य।

बसीत्यो पुं० (हि) निवास स्थान। बस्ती।

बसीना पुं० (हि) रिहाइश। निवास।

बसीला वि० (हि) गंधयुक्त। दुर्गंध वाला।

बसु पुं० (हि) दे० 'वसु'।

बसुदेव पुं० (हि) दे० 'वसुदेव'।

बसुधा स्त्री० (हि) दे० 'वसुधा'।

बसुमति स्त्री० (हि) दे० 'वसुमति'।

बसुरी स्त्री० (हि) बांसुरी।

बसुला पुं० (हि) बढ़इयों का लकड़ी गढ़ने का एक औजार।

बसूली स्त्री० (हि) छोटा बसुला।

बसेरा पुं० (हि) १-ठहरने या टिकने का स्थान। २-वह स्थान जहां पक्षी ठहर कर रात बिताते हैं। ३-टिकने या बसाने का भाव।

बसेरी वि० (हि) निवासी। रहने वाला।

बसैया वि० (हि) बसने वाला। रहने वाला।

बसोबास पुं० (हि) रहने की जगह। निवास स्थान

बसौंधी स्त्री० (हि) सुगंधयुक्त रबड़ी।

बस्तर पुं० (हि) दे० 'वस्त्र'।

बस्तमोचन पुं० (फा) किसी के सारे वस्त्र छीन लेना।

बस्ता पुं० (फा) १-पुस्तक आदि रखने का कपड़े का टुकड़ा। थैला। बसना। २-इस प्रकार बंधी हुई पुस्तक आदि।

बस्तार पुं० (फा) बंधी हुई वस्तुओं का पुलिंदा।

बस्ती स्त्री० (हि) १-वह स्थान जहां लोग घर बना कर रहते हों। २-बहुत से घरों का समूह। जनपद।

बस्त्र पुं०(हि) दे० 'वस्त्र'।

बस्य वि० (हि) दे० 'वश्य'।

बहंगा पुं० (हि) बड़ी बहंगी।

बहंगी स्त्री० (हि) बोझ ढोने का वह बांस जिसके दोनों ओर छींके लटके रहते हैं।

बहक स्त्री० (हि) १-पथ भटकना। २-व्यर्थ की बकवास ३-बहकने का भाव।

बहकना क्रि० (हि) १-भटकना। मार्गभ्रष्ट होना। २-चूकना। ३-किसी के धोखे में आ जाना। ४-आपे में न रहना। ५-किसी बात में लग जाने के कारण शांत होना (बच्चों का)।

बहकाना क्रि० (हि) १-ठीक राह से हटाकर धोखे से अन्यत्र ले जाना। २-भुलावा देना। ३-बहलाना (बच्चों का)।

बहकावट स्त्री० (हि) बहकाने की क्रिया या भाव।

बहकावा पुं० (हि) भुलावा। वह बात जिससे कोई बहक जाय।

बहतोल स्त्री०(हि) वह नाली जिसमें पानी बहता हो।

बहत्तर वि० (हि) सत्तर और दो। ७२।

बहन स्त्री०(हि) १-अपनी मां से उत्पन्न कन्या। २-चाचा, मामा, आदि की लड़की।

बहना क्रि (हि) १-प्रवाहित होना २-वायु का संचारित होना। ३-अपने या ठीक स्थान से डिगना। ४-फिसल जाना। ५-कुमार्गी होना। ६-(रुपया आदि) नष्ट होना। ७-लादकर ले चलना। वहन करना। ८-धारण करना। ९-निर्वाह करना। १०-उठना। चलना। ११-कहीं चला जाना।

बहनापा पुं० (हि) बहिन का माना हुआ सम्बन्ध।

बहनी स्त्री० (हि) दे० 'वह्नि'।

बहनु पुं० (हि) सवारी।

बहनेली पुं० (हि) जिसके साथ बहनापा हो।

बहनोई पुं० (हि) बहिन का पति।

बहनोता पुं० (हि) बहिन का पुत्र।

बहनौरा पुं० (हि) बहिन की ससुराल।

बहम पुं० (हि) दे० 'वहम'।

बहर अव्य० (हि) बाहर।

बहरा वि०(हि) कान से न सुनने या कम सुनने वाला

बहरा पत्थर वि० (हि) अतिशय बहरा।

बहराना क्रि० (हि) १-बहलाना। बहकाना। २-फुसलाना। ३-बह जाना। उड़ जाना।

बहरिया वि० (हि) बाहर का। बाहरी। पुं० (हि) वह मन्दिर का कर्मचारी जो प्रायः मन्दिरों के बाहर ही रहते हैं। (वल्लभ सम्प्रदाय)।

बहरियाना क्रि० (हि) १-बाहर करना। अलग करना २-किनारे से हटकर नाव को मंझधार की ओर लेजाना। ३-बाहर की ओर होना। ४-अलग होना

बहरी स्त्री० (हि) एक शिकारी बाज जैसा पक्षी। वि० (हि) १-समुद्र का। २-बाहर का।

बहल स्त्री० (हि) देख 'बहली'।

बहलना क्रि० (हि) १-दुःख या चिन्ता की बात भूल-कर चित्त दूसरी ओर लगाना। २-भुलावे में आना। ३-मनोरंजन होना।

बहलाना क्रि० (हि) १-व्यथित मन को दूसरी ओर लगाना। २-बहकाना। भुलावा देना। ३-चित्त प्रसन्न करना।

बहलाव पुं० (हि) १-मनोरंजन। प्रसन्नता। २-बहलने की क्रिया या भाव।

बहली स्त्री० (हि) रथ के आकार की बैलगाड़ी।

बहल्ला पुं० (हि) आनन्द। प्रमोद।

बहल्लो पुं० (?) कुश्ती का एक पेंच।

बहस स्त्री० (अ) १-वाद। दलील। तर्क। २-झगड़ा। विवाद। ३-होड़। बाजी।

बहसमुबाहिसा पुं० (अ) वादविवाद। शास्त्रार्थ।

बहसना क्रि० (हि) १-बहस करना। २-होड़ लगाना शर्त लगाना।

बहादर वि० (हि) दे० 'बहादुर'।

बहादुर वि० (फा) १-उत्साही। साहसी। २-शूरवीर पराक्रमी।

बहादुराना अव्य० (फा) वीरतापूर्वक। वि० बहादुरों का सा।

बहादुरी स्त्री० (फा) वीरता। शूरता।

बहाना क्रि० (हि) १-प्रवाहित करना। २-पानी की धारा में डालना। ३-व्यर्थ व्यय करना। ४-सस्ता बेचना। ५-डालना। ६-फेंकना। त्यागना। पुं० (फा) १-अपना बचाव करने के लिए कही गई झूठी बात। मिस। हीला। २-तुच्छ। निमित्त। नाममात्र का कारण।

बहाने अव्य (हि) ···के हेतु। ···के बहाने से।

बहानेबाजी स्त्री० (फा) बहाने बनाना।

बहार स्त्री० (फा) १-वसन्त ऋतु। २-यौवन का विकास। ३-सौंदर्य। ४-विकास। ५-कौतुक। तमाशा। ६-नारंगी का फूल।

बहारगुर्जरी स्त्री० (फा) सम्पूर्ण जाति की एक रागनी।

बहारनाथ पुं० (फा) एक प्रकार का राग।

बहारना क्रि० (हि) दे० 'बुहारना'।

बहारी स्त्री० (हि) दे० 'बुहारी'।

बहारेदानिश स्त्री० (फा) फारसी का एक संग्रह।

बहारे हुस्न स्त्री० (फा) यौवनश्री। छटा।

बहाल अव्य(फा) पूर्ववत्। अगली अवस्था। वि०(फा) १-ज्यों का त्यों। यथावत्। स्वस्थ। ३-प्रसन्न। खुश।

बहाली स्त्री० (फा) फिर अपनी स्थान पर नियुक्त होना। पुं० (हि) भागाभागी का धोखा देने वाली बात।

बहाव पुं० (हि) १-बहने की क्रिया या भाव। २-बहती हुई धारा।

बहि अव्य० (सं) बाहर। अलग। बाहर से।

बहिःशाला स्त्री० (सं) बाहर की ओर का कमरा।

बहिःशीत (सं) जो बाहर से ठंडा हो।

बहिःशुल्क पुं०(सं) विदेश से आने वाली या विदेश को जाने पर लगने वाली चुंगी। (कस्टम ड्यूटी)

बहिःसद वि०(सं) जो बाहर बैठता हो। बाहर बैठने वाला।

बहिःस्थ वि० (सं) बाहर का। जो बाहर स्थित हो।

बहिःस्पर्शी वि०(सं) ऊपरी। दिखाऊ। जो केवल ऊपर ही हो। (सुपरफीशियल)।

बहिअर स्त्री० (हि) स्त्री।

बहिक्रम पुं० (हि) अवस्था। उम्र।

बहित्र पुं० (हि) दे० 'वहित्र'।

बहिन स्त्री० (हि) बहन। भगिनी।

बहिनापा पुं० (हि) दे० 'बहनापा'।

बहियाँ स्त्री० (हि) बाँह।

बहिया स्त्री० (हि) बाढ़। प्लावन।

बहिरंग वि० (सं) १-बाहर आया हुआ। २-अप्रधान। ३-जो बाहर हो।

बहिर वि० (हि) बहरा।

बहिरत वि० (हि) बाहर।

बहिरर्थ पुं० (सं) बाह्य उद्देश्य।

बहिराना क्रि०(हि) १-निकाल देना। बाहर कर देना २-बाहर होना।

बहिर्गत वि०(सं) १-बाहर आया या निकाला हुआ। २-अलग। जुदा। ३-(क्रिकेट या गेंद बल्ले के खेल में) जो गेंद के (विकेटों) यष्टियों के ऊपर की गुल्ली गिरने, पदबाधा होने के कारण या मारी हुई गेंद लपक लेने के कारण खेलने के अधिकार से वंचित हो जाता है। (आउट)। ४-जो पद पर से हटा दिया गया।

बहिर्गमन पुं० (सं) बाहर को जाना।

बहिर्गमन द्वार पुं० (सं) नाटकशाला, सिनेमा आदि के भवन में बाहर जाने का रास्ता या द्वार। प्रकोष्ठ (एक्जिट)।

बहिर्गामी वि० (सं) बाहर जाने वाला।

बहिर्जगत पुं० (सं) दृश्य जगत।

बहिर्द्वार पुं० (सं) प्रकोष्ठ। बाहर जाने का रास्ता या द्वार।

बहिर्निःसारण पुं० (सं) बाहर निकाल देना।

बहिर्परिजीवी वि० (सं) दूसरे जन्तुओं आदि से भोजन पाने वाला (कीड़ा)। (एक्टोजोआ)।

बहिर्भाटक पुं०(हि) रेल या बस का किसी वस्तु को बाहर भेजने का भाड़ा या किराया। (आउटवर्ड फ्रेट)।

बहिर्भूत वि० (सं) बहिर्गत। जो बाहर आ गया हो

बहिर्मनस्क वि० (सं) जिसका चित्त किसी दूसरी ओर लगा हो।

बहिर्मुख वि० (स) विपरीत। विमुख। पुं० देवता।
बहिर्यात्रा स्त्री० (सं) विदेश यात्रा। कहीं बाहर जाना
बहिर्यान पुं०(स) दे० 'बहिर्यात्रा'।
बहिर्रति स्त्री० (सं) रति के दो भेदों में से एक (चुम्बन आदि)।
बहिर्लिपिका स्त्री० (स) वह पहेली जिसके उत्तर का शब्द उसकी पद योजना में नहीं रहता।
बहिर्लोम वि० (सं) जिसके बाल बाहर की तरफ झुके हुए हों।
बहिर्लोमा वि० (सं) बहिर्लोम।
बहिर्वाणिज्य पु० (सं) अन्य देशों के साथ किसी देश का होने वाला व्यापार। (एक्सटरनल ट्रेड)।
बहिर्वास पुं० (सं) बाहरी वस्त्र। ऊपर से पहनने का कपड़ा।
बहिर्वासी रोगी पु० (सं) वह रोगी जो चिकित्सालय में केवल औषधि लेने जाता है पर वहां रह कर अपनी चिकित्सा नहीं करवाता। (आउटडोर पेशेन्ट)
बहिर्विकार पु० (सं) आतशक। सुजाक। गर्मी का रोग।
बहिर्व्यसनी वि० (सं) लम्पट। दुराचारी। व्यभिचारी
बहिला वि० (हि) बांझ। वन्ध्या।
बहिश्त पुं० (फा) मुसल्मानों के मतानुसार स्वर्ग।
बहिष्क वि०(सं) जो बाहर हो।
बहिष्करण पु०(सं) १-बाहर निकालना। २-हटाना दूर करना। ३-सब प्रकार के सम्बन्ध तोड़ना।
बहिष्कार पुं० (सं) बाहर निकालने का भाव या क्रिया। २-नाविच्युत करना। ३-सामूहिक व्यवहार त्याग। (बॉयकॉट)।
बहिष्कृत वि०(सं) १-बाहर निकाला हुआ। २-त्यागा हुआ। परित्यक्त।
बहिष्क्रिया स्त्री० (स) बाह्य संस्कार।
बही स्त्री० (हि) हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक।
बहीखाता पुं० (हि) हिसाब की किताबें। एकाउंट-बुक्स, लैजर।
बहीर स्त्री० (हि) १-भीड़। जनसमूह। २-सेना की सामग्री या दूसरे साथ-साथ चलने वाले नौकर।
बहुंटा पु० (हि) बांह पर पहनने का एक गहना।
बहु वि० (सं) १-विपुल। प्रचुर। २-अनेक। ३-बहुतायत। (मल्टीप्लेरियस मल्टीपल)।
बहुकंटक वि० (सं) बहुत कांटों वाला। पु० (सं) १-जवासा। २-हिंताल वृक्ष।
बहुक-निगम पु० (सं) वह निकाय जिसमें बहुत से लोग हों। (कोरपोरेशन एग्रीमेंट)।
बहुकर पुं० (हि) झाड़ू देने वाला। २-ऊँट। कई प्रकार के लगाये गये कर। (मल्टीपल टेक्सेस)।
बहुकर-पद्धति स्त्री० (हि) कई प्रकार के कर लगाने की व्यवस्था। (मल्टीपल टैक्स सिस्टम)।
बहुकालीन वि० (सं) प्राचीन। पुरातन।
बहुक्षम वि० (सं) बहुत सहने वाला।
बहुगंध वि० (स) तेज गंध वाला।
बहुगंध-दा स्त्री०(सं) कस्तूरी।
बहुगर्भित वि० (सं) अनेक वस्तुओं वाली। (ओमनीबस)।
बहुगर्भित विधेयक पुं० (सं) वह विधेयक जिसके अन्तर्गत कई प्रकार के मामले हों। (ओमनीबस बिल)।
बहुगुण वि० (सं) १-अनेक गुणों से युक्त। २-कई तारों वाला।
बहुगुना पुं० (हि) चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन जिसके पेंदे और मुँह का घेर बराबर है।
बहुजन-तंत्र,पुं० (स) अनेक मनुष्यों से शासित राज्य (पॉलीक्रेसी)।
बहुजल्प वि०(सं) बहुत बोलने वाला आदमी। बातूनी
बहुज्ञ वि० (सं) बहुत सी बातें जानने वाला। जानकार।
बहुतंत्रीक वि०(सं) जिसमें बहुत से तार हों। (वाद्य)
बहुत वि० (हि) १-गिनती में अधिक। अनेक। २-मात्रा में अधिक। ३-यथेष्ट।
बहुतक वि० (हि) बहुत से। बहुतेरे।
बहुतर वि० (सं) अनेक। प्रभूत।
बहुता स्त्री० (सं) बहुत्व। अधिकता।
बहुताइत स्त्री०(हि) बहुतायत।
बहुतात स्त्री० (हि) अधिकता। ज्यादती।
बहुतायत स्त्री० (हि) दे० 'बहुतात'।
बहुतेरा वि० (हि) बहुत सा। अधिक। अव्य० अनेक प्रकार से।
बहुतेरे वि० (हि) संख्या में अधिक। अनेक।
बहुत्व पुं० (सं) आधिक्य। अधिकता।
बहुदर्शी पुं० (हि) जिसने संसार या व्यवहार बहुत सी बातें देखी हो। बहुज्ञ।
बहुधंधी वि० (हि) जो बहुत से काम एक साथ साथ लेता हो।
बहुधन वि० (सं) धनी। अमीर।
बहुधर पुं० (सं) शिव। महादेव।
बहुधा अव्य०(सं) प्रायः। अक्सर। अनेक प्रकार
बहुनाद पुं० (सं) शंख।
बहुनामा वि० (सं) जिसके बहुत से नाम हों।
बहुपत्नीक पुं०(सं) बहुपत्नीकवादी। एक से अधिक विवाह करने के सिद्धांत में विश्वास करने वाला (पोलीगेमिस्ट)।
बहुपद पुं०(सं) १-वट वृक्ष। बड़ का पेड़। २-पदों वाला।
बहुपदीय वि० (सं) अनेक वस्तुओं या पद वाला।
बहुप्रज वि०(सं) जिसके अधिक सन्तानें हों। पुं०(सं)

मिला कर व्यय किये हुए धन का लेखा। (मल्टीपल-कोस्ट एकाउंट)।
बहु-विवाह पुं० (सं) एक पत्नी के जीवित होते हुए दूसरा विवाह करना। (पॉलीगेमी)।
बहुविस्तीर्ण वि० (सं) बहुत लम्बा चौड़ा।
बहुव्ययी वि० (सं) अत्यधिक खर्च करने वाला। खर्चीला।
बहुव्रीहि वि० (सं) जिसके पास बहुत धन हो। पुं० (सं) चार प्रकार के समासों में से एक। (व्या०)।
बहुशः वि० (सं) बहुत अधिक। अव्य० (सं) १-प्रायः २-बहुत प्रकार से।
बहुश्रुत वि० (सं) जिसने बहुत सी बातें सुनी हों। चतुर।
बहुसंख्यक पुं० (सं) गिनती में अधिक।
बहूंटा पुं० (हि) बांह पर पहनने का एक आभूषण।
बहू स्त्री० (हि) १-लड़के की स्त्री। पुत्रवधू। २-पत्नी स्त्री। ३-दुलहिन।
बहूपमा स्त्री० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जायें।
बहेड़ा पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसके फल दवा के काम आते हैं।
बहेतू वि०(हि) १-इधर-उधर मारा-मारा फिरने वाला २-आवारा।
बहेरा पुं० (हि) दे० 'बहेड़ा'।
बहेलिया पुं०(हि) पशु-पक्षी पकड़ने या मारने वाला व्याध। चिड़ीमार।
बहोर पुं० (हि) फेरा। वापिसी। पलटा।
बहोरना क्रि० (हि) १-लौटाना। वापिस करना। २-घर की ओर हांकना। (पशु आदि)।
बहोरि अव्य० (हि) दे० 'बहुरि'।
बह्र स्त्री०(फ) छंद या शेर का चरण। पुं० (फ) १-महासागर। २-नदी। ३-अप्सरा का बेड़ा। ४-अच्छा घोड़ा।
बा पुं० (हि) १-बार के बोलने का शब्द। २-बार। दफा।
बांक पुं० (हि) १-बांह पर पहनने का गहना। २-कमान। धनुष। ३-नदी का मोड़। ४-टेढ़ापन। ५-नख छीलने का सरोते जैसा औजार। ६-लोहे की चीजें पकड़ने का लुहार का शिकंजा। ७-हाथ में पहनने की चौड़ी चूड़ियां। वि० (हि) दे० 'बाँका'।
बांकड़ा वि० (हि) वीर। साहसी। पुं० (सं) छकड़े आदि में धुरे के नीचे आड़े बल लगी हुई लकड़ी।
बांकड़ी स्त्री० (हि) कलाबत्तू का एक प्रकार का फीता
बांकना क्रि० (हि) १-टेढ़ा करना। टेढ़ा होना।
बांका वि० (हि) १-टेढ़ा। तिरछा। २-अत्यन्त साहसी वीर। ३-सुन्दर और बना ठना। छैला। पुं० (हि) बांस छीलने का लोहे का औजार।
बांकिया पुं० (हि) नरसिंह नामक एक वाद्ययन्त्र।
बांकुरा वि० (हि) १-बांका। टेढ़ा। २-पैना। पतली धार का। ३-चतुर।
बांग स्त्री० (फा) १-शब्द। आवाज। २-अज़ान। ३-मुर्गे का सुबह का बोलना।
बांगड़ पुं० (देश०) हिसार, रोहतक, तथा करनाल के आसपास का प्रदेश।
बांगड़ू स्त्री० (हि) बागड़ प्रदेश की बोली या भाषा। वि० (हि) १-मूर्ख। २-उजड्ड।
बांगर पुं० (देश०) वह भूमि जो ऊँचाई पर हो और नदी आदि में बाढ़ आने पर भी पानी में न डूबे।
बांगुर पुं० (देश) पशु, पक्षियों आदि को फँसाने का फंदा। जाल।
बांचना क्रि० (हि) १-पढ़ना। २-बाकी रहना। ३-बचाना। छोड़ देना।
बांछना स्त्री० (हि) इच्छा। कामना। अभिलाषा। क्रि० (हि) १-इच्छा करना। २-चुनना। छांटना।
बांछा स्त्री०(हि) इच्छा। अभिलाषा।
बांछित वि० (हि) जिसकी इच्छा या अभिलाषा की जाय।
बांछी पुं०(हि) चाहने वाला। अभिलाषा करने वाला
बांझ वि० (हि) जिसके सन्तान न होती हो। वन्ध्या।
बांझपन पुं० (हि) बांझ होने का भाव। वंध्यत्व।
बांझपना पुं० (हि) दे० 'बांझपन'।
बांट स्त्री० (हि) १-बाँटने की क्रिया या भाव। २-भाग। हिस्सा। ३-पयाल का बना रस्सा ४-दे० 'बाट'।
बांटना क्रि० (हि) १-हिस्सा लगाना। विभाग करना। २-वितरण करना। ३-थोड़ा-थोड़ा करके सबको देना।
बांटा पुं० (हि) भाग। हिस्सा।
बांड पुं० (देश) दो नदियों के बीच की भूमि।
बांडा पुं० (देश) १-वह पशु जिसके पूँछ न हो। २-परिवारहीन पुरुष। ३-बौना।
बांद पुं० (हि) सेवक। दास।
बांदर पुं० (हि) बन्दर।
बांदा पुं०(हि) एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर आकर पुष्ट होती है।
बांदी स्त्री० (हि) दासी। लौंडी। नौकरानी।
बांदू पुं० (हि) कैदी। बन्दी।
बांध पुं० (हि) १-नदी या जलाशय का पानी रोकने के लिए किनारे पर मट्टी चूने आदि का बना पुश्ता। (डैम)। २-बंधन जो किसी बात पर नियंत्रण रखने के लिए लगाया जाता हो। (बार)।
बांधना क्रि० (हि) १- कसने के लिए घेर कर रोकना २-पाबन्द करना। ३-प्रेमपाश में बद्ध करना। ४-

पानी को रोकने के लिए बाँध बाँधना। ५-उपक्रम या योजना करना। ६-स्थिर करना। ७-चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में लाना। ८-कैद करना। ९-रस्सी कपड़े आदि में लपेटकर गाँठ लगाना।

बाँधनीपौरि स्त्री० (हि) पशुशाला।

बाँधनू पुं० (हि) १-पहले से ठीक की हुई तरकीब या विचार। उपक्रम। २-मनगढ़न्त बात। ३-तोहमत। कलंक। ४-लहरियेदार रंगाई के लिए रंगरेज का चुनरी आदि को बाँध कर रंगना।

बाँधव पुं० (सं) १-भाई। बन्धु। २-मित्र। ३-रिश्तेदार।

बाँबी स्त्री० (हि) १-साँप का बिल। २-दीमकों के रहने का मिट्टी का भीटा।

बाँभी स्त्री० (हि) दे० 'बाँबी'।

बाँभन पुं० (हि) ब्राह्मण।

बाँस पुं० (हि) एक लम्बा गन्ने के आकार का पौधा जो टोकरी आदि बनाने के काम आता है। २-नाव खेने की लग्गी। ३-रीढ़।

बाँसली स्त्री० (हि) दे० 'बाँसुरी'।

बाँसा पुं० (हि) १-बाँस की छोटी नली जो हल के साथ लगी रहती है और जिसमें से बीज गिरते रहते हैं। २-रीढ़ की हड्डी। ३-नथनों के बीच की नाक की हड्डी।

बाँसाफाड़ पुं० (हि) कुश्ती का एक पेंच।

बाँसी स्त्री० (हि) बाँसुरी।

बाँसुरी स्त्री० (हि) बाँस की नली का फूँककर बजाया जाने वाला बाजा।

बाँह स्त्री० (हि) १-भुजा। हाथ। २-बल। ३-सहायक ४-सहारा। ५-भरोसा। ६-आस्तीन।

बाँहतोड़ पुं० (हि) कुश्ती का एक पेंच।

बाँहबोल पुं० (हि) सहायता देने का वचन।

बाँह मरोड़ पुं० (हि) कुश्ती का एक पेंच।

बा पुं० (हि) जल। पानी। अव्य० (फा) बार। दफा। स्त्री० (हि) दे० 'बाई'।

बाअदब वि० (फा) विनीत।

बाअसर वि० (फा) प्रभावशाली।

बाइ स्त्री० (हि) दे० 'बाई'।

बाइख्तियार वि० (फा) अधिकार के साथ।

बाइनि स्त्री० (हि) १-बयना। कहना। २-बीज बोना

बाइबिल स्त्री०(अं) इञ्जील। ईसाइयों की धर्म-पुस्तक

बाइस पुं० (फा) कारण। सबब। वि० (हि) बीस और दो।

बाइसिकिल स्त्री० (अं) दो पहियों वाली गाड़ी जो पैरों से चलाई जाती है।

बाई स्त्री० (हि) १-त्रिदोषों में से वात नामक दोष। २-स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। इस्त्रियों के साथ लगने वाला एक शब्द।

बाईजी स्त्री० (हि) वेश्या। नायिका।

बाईमान वि० (फा) ईमानदार।

बाईस वि० (हि) बीस और दो।

बाउ पुं० (हि) वायु। हवा।

बाउर वि०(हि) १-पागल। २-भोलाभाला। ३-मूर्ख। ४-मूक। गूँगा।

बाउरी स्त्री० (हि) दे० 'बावली'।

बाऊ पुं० (हि) वायु। हवा।

बाक पुं० (हि) बात। वचन।

बाकचाल वि० (हि) वाचाल। बातूनी।

बाकना क्रि० (हि) बकना। प्रलाप करना।

बाकल पुं० (हि) छाल। वल्कल।

बाकला पुं० (हि) एक प्रकार की बड़ी मटर।

बाका स्त्री० (हि) वाणी। वाचा। बोलने की शक्ति।

बाकार वि० (फा) जो कोई काम करता हो।

बाकायदा वि० (फा) नियमित।

बाकी वि० (अ) जो बच रहा हो। शेष। अवशिष्ट। स्त्री० (अ) घटाने के बाद बची हुई संख्या। अव्य० (फा) लेकिन। अगर। परन्तु।

बाकीदार पुं०(हि) जिस पर लगान या कर बाकी हो

बाकुल पुं० (हि) दे० 'बाकल'।

बाखर पुं० (देश) एक प्रकार की घास।

बाखरि स्त्री० (हि) दे० 'बखरी'।

बाग पुं० (हि) उद्यान। वाटिका। स्त्री० (हि) लगाम।

बागडोर स्त्री० (हि) लगाम।

बागना क्रि० (हि) १-यों ही टहलना। २-बोलना।

बागबाग वि० (फा) अति प्रसन्न। प्रफुल्लित।

बागबान पुं० (फा) माली।

बागबानी स्त्री० (फा) माली का पद या काम।

बागर पुं० (हि) दे० 'बांगर'।

बागरज वि० (फा) जिसको कोई गरज हो।

बागल पुं० (हि) बक। बगला।

बागा पुं० (हि) एक पुराना पहनावा। जामा।

बागी पुं० (अ) विद्रोह करने वाला। विद्रोही।

बगीचा पुं० (फा) उपवन। उद्यान।

बागुर पुं० (देश) पक्षी आदि पकड़ने का फंदा। जाल

बाघंबर पुं० (हि) बाघ की खाल। जो बिछाने के काम आती है।

बाघ पुं० (हि) सिंह से छोटा शेर।

बाघनख पुं० (हि) दे० 'बघनखा'।

बाघी स्त्री० (हि) जांघ की संधि में पड़ने वाली एक प्रकार की गिल्टी।

बाच वि० (हि) १-वर्णनीय। अच्छा। २-सुन्दर

बाचना क्रि० (हि) दे० 'बाँचना'।

बाचा स्त्री० (हि) १-वाक्य। वचन। २-प्रण।

बाचाबंध वि० (हि) प्रतिज्ञाबद्ध।
बाछ पुं० (हि) १-दे० 'बाछा'। स्त्री० (हि) वह भाग जहाँ ओठ मिलते हैं।
बाछा पुं०(हि) १-गाय का बछड़ा। २-लड़का। बच्चा
बाज पुं० (फा) एक शिकारी पक्षी। अव्य० शब्दों के अन्त में लगने से व्यसनी, शौकीन आदि का अर्थ देने वाला एक प्रत्यय जैसे-नशेबाज। वि० वंचित। रहित। वि० (अ) कोई कोई। कुछ। विशिष्ट। (फा) फिर। दोबारा। पुं० (हि) १- घोड़ा २-बाजा।
बाजड़ा पुं० (हि) दे० 'बाजरा'।
बाजदावा पुं० (फा) स्वत्व का त्याग।
बाजन पुं० (हि) बाजा।
बाजना क्रि० (हि) १-बाजे आदि का बजाना। २-लड़ना। ३-कहलाना। ४-आघात पहुँचाना। ५-जा पहुँचना। वि० (हि) जो बजता है।
बाजरा पुं० (हि) एक प्रकार का मोटा अन्न। जोंधरी
बाजा पुं० (हि) वाद्ययन्त्र।
बाजागाजा पुं० (हि) १-कई प्रकार के वाद्ययन्त्रों का एक साथ बजना। २-धूमधाम।
बाजाब्ता अव्य० (फा) नियम के अनुसार। वि० (फा) जो नियमानुसार हो।
बाजार पुं० (फा) १-वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार की दुकानें हों। २-पैंठ। ३-भाव। ४-हाट लगने का दिन।
बाजारभाव पुं० (फा) प्रचलित दर।
बाजारी वि० (फा) १-बाजार सम्बन्धी। २-साधारण ३-मर्यादा रहित। ४-अशिष्ट।
बाजारी औरत स्त्री०(फा) वेश्या।
बाजारी गप स्त्री०(फा) वह बात जो अविश्वसनीय हो
बाजारू वि० (हि) दे० 'बाजारी'।
बाजि पुं० (हि) १-घोड़ा। २-बाण। ३-पक्षी। वि० (हि) चलने वाला।
बाजी स्त्री० (फा) १-शर्त। बदान। २-आदि से अन्त तक का कोई खेल जिसमें शर्त लगी हो या हार-जीत लगी हो। ३-दाँव। (खेल में)। पुं० (हि) १-घोड़ा। २-बाजा बजाने वाला।
बाजीगर पुं०(फा) जादू के खेल करने वाला। जादूगर।
बाजीगरी स्त्री० (फा) १-बाजीगर का काम। २-कपट धोखा।
बाजु अव्य०(हि) १-बिना। बगैर। २-सिवा। अतिरिक्त।
बाजू पुं० (फा) १-भुजा। बाहु। २-सेना का किसी ओर का पक्ष। ३-पक्षी का डैना। ४-बाजूबन्द।
बाजूबंद पुं०(फा) बांह पर पहनने का एक आभूषण
बाझ अव्य० (फा) बिना। बगैर।
बाझन स्त्री० (हि) १-उलझन। पेंच। २-बखेड़ा। झंझट।
बाझना क्रि०(हि) दे० 'बझना'।
बाट पुं० (हि) १-राह। मार्ग। रास्ता। २-बट्टा। ३-बटखरा। स्त्री० (हि) १-बल। ऐंठन। २-मार्ग।
बाटकी स्त्री०(हि) बटलोई।
बाटना क्रि० (हि) १-पीसना। चूर्ण करना। २-'बटना'।
बाटिका स्त्री० (सं) छोटा बाग। बगीचा।
बाटी स्त्री० (हि) १-उपलों पर सेंक कर पकाई जाने वाली गोल रोटी। २-गोली। पिंड। ३-तसला।
बाड़ स्त्री० (हि) 'बाढ़'।
बाड़व पुं०(सं) १-ब्राह्मण। २-वड़वाग्नि। ३-घोड़ि का झुण्ड। वि० (सं) वड़वा सम्बन्धी।
बाड़ा पुं० (हि) १-चारों ओर से घिरा हुआ खाली मैदान। २-पशुशाला।
बाड़ि स्त्री० (हि) १-मेंड़। २-टट्टर। बाड़ी।
बाड़ी स्त्री० (हि) १-वाटिका। फुलवारी। २-घर।
बाढ़ स्त्री० (हि) १-वृद्धि। अधिकता। २-अधिक वर्षा के कारण नदी, तालाब आदि में जल का अत्यधिक बढ़ जाना। जलप्लाव। सैलाब। ३-बन्दूकों या तोपों का लगातार छूटना। ४-तलवार आदि हथियारों की धार। सान।
बाढ़ना क्रि० (हि) दे० 'बढ़ना'।
बाढ़ि स्त्री० (हि) दे० 'बाढ़'।
बाढ़ी स्त्री० (हि) १-बाढ़। बढ़ाव। २-अधिकता। किसी को ऋण देने पर मिलने वाला ब्याज। लाभ।
बाढ़ीवान पुं० (हि) शस्त्रों आदि पर सान रखने वाला कारीगर।
बाण पुं० (सं) एक लम्बा और नुकीला शस्त्र धनुष पर चढ़ा कर फेंका जाता है। शर। तीर। गाय का थन। ३-निशाना। लक्ष्य। ४-तीर की नोक जिसपर पर लगे हों। ५-भाग। ६-स्व मोक्ष। ७-पांच की संख्या। ८-नरकुल।
बाणक पुं० (हि) महाजन। बनिया।
बाणगंगा स्त्री० (सं) हिमालय की सोमेश्वर गिरि से निकली हुई एक प्रसिद्ध नदी।
बाणधि पुं० (सं) तूण। तरकस।
बाणमुक्ति स्त्री० (सं) बाण छोड़ना।
बाणमोक्षण पुं० (सं) बाण छोड़ना।
बाणवर्षण पुं० (सं) बाणों की वर्षा।
बाणवर्षी वि० (सं) बाणों की वर्षा करने वाला।
बाणविद्या स्त्री०(सं) बाण चलाने की विद्या। तीरं
बाणवृष्टि स्त्री० (सं) बाणों की वर्षा।
बाणसंधान पुं० (सं) तीर को धनुष पर चढ़ाना

बाणसुता स्त्री० (सं) बाणासुर की पुत्री उषा।
बाणाग्र पु० (सं) विन्दु।
बाणाभ्यास पुं० (सं) तीर चलाने का अभ्यास।
बाणावलि स्त्री० (सं) तीरों की पंक्ति।
बाणासन पु० (सं) धनुष।
बाणासुर पुं० (सं) राजा बलि के सौ पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र का नाम।
बाणि स्त्री० (सं) दे० 'वाणि', 'वाणी'।
बाणिज्य पुं० (सं) दे० 'वाणिज्य'।
बात पु० (हि) दे० 'वात'। स्त्री० (हि) १-कहा हुआ

मिथ्या कथन। बहाना। ७-प्रतिज्ञा। कौल। ८-मान। विश्वास। ९-आशय। तात्पर्य। १०-रहस्य भेद। ११-उपदेश। १२-विशेष गुण। खूबी। १३-इच्छा। कामना। १४-समस्या। १५-आचरण। व्यवहार। १६-लगाव। सम्बन्ध। १७-स्वभाव। प्रकृति। १८-वस्तु। पदार्थ। १९-कर्तव्य।
बातचीत स्त्री० (हि) दो या दो से अधिक व्यक्तियों में होने वाला वार्तालाप।
बाती स्त्री० (हि) दे० 'बत्ती'।
बातुल वि० (हि) पागल। सनकी।
बातूनिया वि० (हि) बहुत या व्यर्थ की बातें करने वाला।
बातूनी वि० (हि) दे० 'बातूनिया'।
बाथ पुं० (हि) गोद। अंकवार।
बाद अव्य० (सं) उपरांत। पीछे। पुं० (फा) १-वात। हवा। २-घोड़ा। पु० (हि) १-तर्क। बहस। विवाद ३-हुज्जत। ४-बाजी। शर्त। ५-दे० 'बाद'। अव्य० (हि) व्यर्थ। निष्प्रयोजन।
बादकश पुं० (फा) १-धौंकनी। २-हवा का पंखा।
बादगीर पुं० (फा) भरोखा।
बादना क्रि० (हि) १-तर्क वितर्क करना। २-झगड़ा करना। ३-ललकारना।
बादनुमा पुं०(फा) वायु की दिशा सूचित करने वाला यन्त्र।
बादबान पुं० (फा) पाल।
बादर पुं० (हि) मेघ। बादल।
बादरायण पु० (सं) वेदव्यास का एक नाम।
बादरायण-संबंध पुं० (सं) बहुत ही दूर का रिश्ता या सम्बन्ध।
बादल पुं० (हि) १-सूर्य की गरमी के कारण समुद्र आदि से बनी वाष्प जो आकाश पर छा जाती है और बूंदों के रूप में बरसाती है। मेघ। घन। २-एक प्रकार का दूधिया रंग का पत्थर।
बादला पु० (देश) सोने या चांदी का चिपटा और चमकीला तार।
बादशाह पु० (फा) १-बड़ा राजा। शासक। २-सर्वश्रेष्ठ पुरुष। ३-ईश्वर। ४-मनमानी करने वाला। ५-ताश का एक पत्ता। ६-शतरंज का एक मोहरा।
बादशाहजादा पुं० (फा) राजकुमार।
बादशाहत स्त्री० (फा) शासन। राज्य। हुकूमत।
बादशाही स्त्री० (फा) १-राज्याधिकार। २-शासन। ३-मनमाना व्यवहार। वि०(फा) राजाओं के योग्य बादशाह का।

बादामी वि० (फा) १-बादाम के छिलके के रंग का। २-बादाम के आकार का। ३-अंडाकार। पु० (हि) १-एक छोटी चिड़िया। २-एक प्रकार की छोटी डिबिया। ३-बादाम के रंग का घोड़ा।
बादामी आंख स्त्री० (फा) बादाम के आकार के छोटे नेत्र।
बादि अव्य० (हि) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।
बाधित वि० (हि) दबाया हुआ।
बादी वि० (फा) १-वायु-विकार सम्बन्धी। २-शरीर में वायु का विकार उत्पन्न करने वाला। स्त्री० (फा) वात विकार। पु० (हि) १-किसी के विरुद्ध अभियोग लगाने वाला। मुद्दई। (प्लेंटिफ)। २-शत्रु। प्रतिद्वन्द्वी।
बादीगर पु० (हि) बाजीगर।
बादीपन पुं० (हि) वायु विकार।
बादी-बवासीर स्त्री० (हि) एक प्रकार का बवासीर का रोग जिसमें रक्त नहीं बहता।
बादुर पुं० (देश) चमगादड़।
बाध पु० (सं) १-बाधा। अड़चन। पीड़ा। कष्ट। ३-कठिनता। पु० (हि) मूंज की रस्सी।
बाधक पु० (सं) १-रुकावट डालने वाला। २-कष्टदायक। ३-स्त्रियों का एक रोग।
बाधन पु० (सं) १-रुकावट या विघ्न डालना। २-पीड़ा पहुँचाना।
बाधना क्रि० (हि) बाधा डालना।
बाधा स्त्री०(सं)१-अड़चन। विघ्न। २-संकट। कष्ट। ३-भय। ४-भूतप्रेत आदि के कारण होने वाला कष्ट
बाधाहर वि०(सं) बाधा या कष्ट दूर करने वाला।
बाधित वि० (सं) १-जो रोका गया हो। २-असंगत। ३-प्रभावहीन। ग्रस्त।
बाध्य वि० (सं) १-जो रोका जाने वाला हो। २-विवश।
बान पुं०(हि)१-बाण। तीर। २-धुनकी की तांत पर मारने का डंडा। ३-बाना नामक एक अस्त्र जो

फेंक कर मारा जाता है। ४-आब। कांति। स्त्री० (हि) १-आदत। अभ्यास। २-सजधज। बनाव-सिंगार।

बानइत पुं० (हि) दे० 'बानैत'।

बानक स्त्री०(हि) १-भेष। वेश। २-एक प्रकार का रेशम। ३-संयोग। परिस्थिति।

बानगी स्त्री०(हि) किसी माल का वह अंश जो ग्राहक को दिखाया जाता है। नमूना।

बानना क्रि० (हि) दे० 'बनाना'।

बानवे वि० (हि) नब्बे और दो। पुं० (हि) बानवे की संख्या। ९२।

बानर पुं० (हि) बन्दर।

बाना पुं०(हि) १-पहनावा। वस्त्र। २-वेश विन्यास ३-रीति। ४-बुनावट। ५-कपड़े की बुनावट का वह तागा जो आड़े बल ताने में भरा जाता है। ६-तलवार के समान एक दुधारा हथियार। ७-पतंग उड़ाने का तागा। क्रि० (हि) फैलाना। सिकोड़ना- जैसे मुँह बनाना।

बानावरी स्त्री० (हि) तीर या बाण चलाने की विद्या।

बानि स्त्री० (हि) १-बनावट। सजधज। २-आदत ३-चमक। आभा। ४-वचन। वाणी।

बानिक स्त्री० (हि) १-बनावसिंगार। २-वेश।

बानिन स्त्री० (हि) बनिये की स्त्री।

बानिनि स्त्री० (हि) बनिन।

बानिया पुं० (हि) दे० 'बनिया'।

बानी स्त्री० (हि) दे० 'वाणी'। पुं० (अ) बुनियाद डालने वाला। प्रवर्तक। पुं० (हि) बनिया।

बानैत पुं० (हि) १-तीर चलाने वाला। २-योद्धा। सैनिक। ३-बाना फेरने वाला।

बाप पुं० (हि) पिता। जनक।

बापा पुं० (हि) दे० 'बाप्पा'।

बापी स्त्री० (हि) दे० 'वापी'।

बापू पुं०(हि) १-पिता। बाप। २-राष्ट्रपिता महात्मा-गांधी के लिए उनके अनुयायियों द्वारा लिया जाने वाला आदरसूचक नाम।

बाप्पा पुं० (देश) मेवाड़ के राजवंश के आदिपुरुष का नाम।

बाफ्ता पुं० एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जिस पर कलाबत्तू या रेशम की बूटियाँ कढ़ी होती हैं।

बाब पुं० (अ) १-परिच्छेद। अध्याय। २-मुकदमा। ३-प्रकार। तरह। ४-विषय। ५-अभिप्राय।

बाबत स्त्री० (फा) [illegible]। जरिया।

बाबरची पुं० (हि) दे० 'बावरची'।

बाबा पुं० (फा) १-पिता। २-दादा। ३-लड़कों के लिए प्यार का शब्द। ४-साधु संतों आदि के लिए आदरसूचक शब्द।

बाबी स्त्री० ([illegible]) १-संन्यासिन। २-लड़कियों के लिए प्यार का शब्द।

बाबुल पुं० (हि) १-बाबू। २-पिता।

बाबू पुं० (हि) १-पिता के लिये सम्बोधन। २-बड़े आदमियों के लिए आदरसूचक शब्द। ३-क्लर्क।

बाबूना पुं० (फा) एक छोटा पौधा जो दवा में काम आता है। और फारस में होता है।

बाम वि०(हि) दे० 'वाम'।

बामा स्त्री० (हि) बाँबी। वि० (हि) वाम-मार्गी।

बाम्हन पुं० (हि) दे० 'ब्राह्मण'।

बायँ वि०(हि) १-दे० 'बायाँ'। २-खाली।

बाय स्त्री० (हि) १-वात का प्रकोप। २-हवा। वायु।

बायक पुं० (हि) १-कहने वाला। २-पढ़ने वाला। ३-दूत।

बायन पुं० (हि) मित्रों या सम्बन्धियों के यहां भेजी जाने वाली मिठाई।

बायबी वि० (हि) बाहर का। अपरिचित। अजनबी।

बायव्य वि० (हि) दे० 'वायव्य'।

बायलर पुं० (हि) १-वह बड़ा पात्र जिसमें कोई वस्तु उबाली जाती है। २-इञ्जन का वह भाग जहाँ पानी से भाप बनती है।

बायला वि० (देश) वायु विकार उत्पन्न करने वाला।

बायवी वि० (हि) दे० 'बायबी'।

बायस पुं० (हि) दे० 'वायस'।

बायस्कोप पुं० (अं) एक यंत्र जिससे चल चित्र दिखाये जाते हैं।

बायाँ वि० (हि) १-दाहिने का उलटा। २-विपरीत। ३-अहित, अपकार या हानि करने वाला। ४-विरोधी या शत्रु। ५-पूर्व की ओर पढ़ने वाला वाम।

बायु स्त्री० (हि) दे० 'वायु'।

बायें अव्य० (हि) १-बाईं ओर। २-विरोध। विरुद्ध।

बारंबार अव्य० (हि) लगातार। बार-बार।

बार पुं० (हि) १-द्वार। २-आश्रय। घर। ३-बाढ़। रोक। ४-किनारा। ५-पार। पुं० (फा) १-बोझ। २-पहुँच। ३-दरबार। ४-फल। स्त्री० मरतबा। दफा। स्त्री० (हि) १-काल। समय। २-विलंब। देर। ३-दफा।

बारक अव्य० (हि) एक बार। स्त्री० छावनी आदि में सैनिकों के रहने का स्थान।

बारगह स्त्री० (फा) १-थैला। बोरा। २-खाट। ३-काम में न आने योग्य टूटा फूटा सामान। ४-ड्योढ़ी। ५-[illegible]।

बारगाह स्त्री० (फा) दे० 'बारगह'।

बारजा पुं० (हि) १-मकान के सामने का बरामदा। २-कोठा। अटारी। ३-बरामदा। ४-कमरे के आगे का छोटा दालान।

बारण पुं० (हि) दे० 'वारण'।

बारता स्त्री०(हि) दे० 'वार्ता'।

बारदाना पुं० (फा) १-वह सन्दूक, थैला या बोरी जिसमें बाध का माल बाहर भेजा जाता है। २-रसद। ३-टूटा फूटा सामान।
बारना क्रि० (हि) १-मना करना। २-जलाना।
बारनिश स्त्री० (हि) लोहे, लकड़ी आदि पर करने का चमकीला रोगन। (वार्निश)।
बारवधू स्त्री० (हि) वेश्या।
बारबरदार पुं० (फा) १-सामान या बोझ ढोने वाला।
बारबरदारी स्त्री० (फा) १-सामान ढोने का काम। २-सामान ढोने की मजदूरी।
बारमुखी स्त्री० (हि) वेश्या।
बारह वि० (हि) दस और दो।
बारहखड़ी स्त्री०(हि) देवनागरी वर्णमाला के व्यंजनों के बारह स्वरों से युक्त रूप।
बारहदरी स्त्री० (हि) वह बैठक जिसमें चारों ओर बारह दरवाजे हों।
बारहबान पुं० (हि) एक प्रकार का उत्तम सोना।
बारहवानी वि० (हि) १-सूर्य के समान चमकदार। २-खरा। ३-निर्दोष। ४-पूर्ण। पक्का।
बारहमासा पुं० (हि) वह गीत जिसमें बारह मासों के विरह का वर्णन होता है।
बारहमासी वि० (हि) सदाबहार। सब ऋतुओं में फलने फूलने वाला।
बारहमुकाम पुं० (हि) ईरानी संगीत के बारह स्वर या पर्दे।
बारहवफात स्त्री० (हि, अ) मुसलमानों के अनुसार अरबी महीने की वह बारह तिथियां जिसमें मोहम्मद साहब बारह दिन बीमार पड़कर मरे थे।
बारहसिंगा पुं० (हि) हिरन जाति का एक पशु।
बारहीं वि० (हि) बारहवाँ।
बारा वि०(हि) बालक। जो सयाना न हो। पुं०(हि) १-बालक। लड़का। २-महीन तार खींचने का यन्त्र पुं० (फा) बार। समय। विषय।
[illegible]

[illegible] (फा) बरसात। स्त्री० वह भूमि जिसमें केवल वर्षा के पानी से उपज होती है। २-वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिए बरसात में ओढ़ा या पहना जाता है।
[illegible]राह पुं० (हि) दे० 'बारह'।
[illegible]रि पुं० (हि) दे० 'बारि'।
[illegible]रिगर पुं० (हि) शस्त्रों पर सान रखने वाला। सिकलीगर।
[illegible]रिगह स्त्री० (हि) दे० 'बारगह'।
[illegible]रिवाह पुं० (हि) बादल। मेघ।

बारिश स्त्री० (फा) १-वर्षा। वृष्टि। २-बरसात। वर्षाऋतु।
बारी स्त्री० (हि) १-किनारा। तट। २-हाशिया। ३-बाड़। ४-बरतन का मुंह। ५-धार। ६-घर। मकान ७-झरोखा। खिड़की। ८-बन्दरगाह। ९-आगे या पीछे क्रमानुसार आने वाला अवसर। पारी। पुं० (हि) पत्तल आदि बनाने वाली एक जाति। वि० (हि) कम अवस्था की। जो सयानी न हो।
बारीक वि० (फा) १-महीन। पतला। २-सूक्ष्म। ३-गूढ़। ४-जिस का अणु अतिसूक्ष्म हो। ५-जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और निपुणता प्रकट हो
बारीका पुं० (फा) चित्रकार की महीन कलम।
बारीकी स्त्री० (फा) १-पतलापन। महीनपन। २-गुण। विशेषता।
बारीस पुं० (हि) दे० 'बारीश'।
बारुणी स्त्री० (हि) दे० 'बारुनी'।
बारुनी स्त्री० (हि) दे० 'बारुणी'।
बारू पुं० (हि) दे० 'बालू'।
बारूद स्त्री० (हि) गंधक, शोरे और पिसे हुए कोयले का विस्फोटक चूर्ण जो आग लगाने पर भड़क उठता है और जिससे आतिशबाजी बनती है तथा बन्दूक आदि चलती है। दारू।
बारूदखाना पुं०(हि) गोला बारूद रखने की जगह।
बारे अव्य० (फा) अन्त को। किन्तु। लेकिन।
बारोठा पुं० (हि) विवाह की एक रस्म जो घर के द्वार पर आने पर की जाती है। दरोठी।
बाल पुं० (म) १-बालक। लड़का। २-अनजान। नासमझ। ३-किसी पशु का बच्चा। ४-केश। सूत के समान बारीक तन्तु जो जन्तुओं की त्वचा के ऊपर निकला रहता है। ५-बालक। बच्चा। स्त्री०(हि) जौ, गेहूँ आदि के ऊपरी भाग जिन पर दाने उगते हैं। वि० (हि) १-जो सयाना न हुआ हो। २-ताज़ा का उगा हुआ। ३-जो युवा न हुआ हो। पुं०(द) एक प्रकार का नृत्य।
बालक पुं० (सं) १-लड़का। पुत्र। २-शिशु। ३-अबोध व्यक्ति। ४-बछेड़ा। घोड़े या हाथी का बच्चा। ५-कंगन। ६-अंगूठा। ७-हाथी की पूँछ
बालकताई स्त्री० (हि) १-बाल्यावस्था। २-लड़कपन। ३-बालकों की सी मूर्खता।
बालकपन पुं० (हि) १-लड़कपन। नासमझी। २-बालक होने का भाव।
बालकमानी स्त्री० (हि) घड़ी में लगाई जाने वाली पतली कमानी।
बालकांड पुं०(हि) रामायण का पहला अध्याय जिसमें श्रीरामचन्द्र जी की बाल्यावस्था का वर्णन है।
बालकाल पुं०(सं) बाल्यावस्था। बचपन।
बालकीय वि० (सं) बालक संबन्धी।

वालकेलि स्त्री० (सं) १-वालकों का खेल या खिलवार। वह कार्य जिसे करने में परिश्रम पड़े।
वालक्रीड़न पुं० (सं) लड़कों का खेल।
वालक्रीड़नक पुं० (सं) खिलौना।
वालक्रीड़ा स्त्री० (सं) वालकों के खेल और काम।
वालखंडी पुं० (सं) वह हाथी जिसमें कोई दोष हो।
वालखोरा पुं० (फा) सिर के वाल उड़ने का रोग। गंज।
वालगोपाल पुं० (सं) १-वाल वच्चे। २-वाल्यावस्था के कृष्ण।
वालग्रह पुं०(सं) वालकों के प्राणघातक चार ग्रह या पिशाच।
वालचन्द्र पुं० (सं) दूज का चांद।
वालचर स्त्री० (हि) वह वालक जिसे अनेक प्रकार के सामाजिक सेवा-कार्य करने की शिक्षा मिली हो। (बॉय स्काउट)।
वालचरित पुं० (सं) वालकों का खिलवाड़।
वालचर्या स्त्री० (सं) शिशुपालन।
वालटी स्त्री० (हि) पानी भरने के काम आने वाली धातु की डोलची। (बकेट)।
वालटू पुं० (हि) पेच के दूसरे सिरे पर कसने वाला पेचदार दल्ला। (बोल्ट)।
वालतोड़ पुं० (हि) झटके आदि से वाल टूटने से होने वाला फोड़ा।
वालधि पुं० (सं) दुम। पूँछ।
वालधी स्त्री० (हि) दुम। पूँछ।
वालना क्रि० (हि) जलाना। प्रज्वलित करना।
वालपन पुं० (सं) लड़कपन। वचपन।
वालवच्चे पुं० (हि) संतान। लड़के वाले। औलाद।
वालवरावर अव्य० (हि) रत्तीभर। अतिसूक्ष्म। वहुत वारीक।
वाल-वाल अव्य० (हि) प्रत्येक। जरा सा। तनिक सा
वालवुद्धि स्त्री० (सं) वालकों के समान वुद्धि।
वालवोध स्त्री० (सं) देवनागरी लिपि।
वालब्रह्मचारी पुं० (सं) वह जिसने वाल्यावस्था से ही ब्रह्मचारी रहने का व्रत लिया हो।
वालभाव पुं० (सं) लड़कपन। वालपन।
वालभोग पुं० (सं) वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे प्रातःकाल रखा जाता है।
वालभोज्य पुं० (सं) चना।
वालम पुं० (हि) १-पति। स्वामी। २-प्रेमी। प्रणयी
वालमखीरा पुं० (हि) एक प्रकार का खीरा जिसकी तरकारी बनाई जाती है।
वालमुकुन्द पुं० (सं) वाल्यावस्था के श्रीकृष्ण।
वालरोग पुं० (सं) वालक की व्याधि।
वाललीला स्त्री० (सं) वालकों का खेल या क्रीड़ा।
वालविधवा स्त्री० (सं) वह स्त्री जो वाल्यावस्था में विधवा हो गई हो।
वालविधु पुं० (सं) अमावस्या के वाद दिखाई देने वाला नवीन चन्द्रमा।
वालविवाह पुं०(हि) छोटी आयु में होने वाला विवाह
वालसखा पुं० (सं) वचपन का साथी या मित्र।
वालसफा वि० (हि) वाल उड़ाने वाला। (सावुन या औषधि)।
वालसूर्य पुं०(सं) १-उदयकाल का सूर्य। २-वैदूर्यमणि
वालस्थान पुं० (हि) लड़कपन। वचपन।
वालहठ पुं० (सं) वच्चों का हठ।
वालहस्त पुं० (सं) केशों का समूह।
वाला स्त्री० (सं) १-वारह वर्ष से सोलह सत्रह वर्ष की जवान लड़की। पत्नी। भार्या। ३-पुत्री। कन्या ४-दो वर्ष की अवस्था की लड़की। ५-छोटी इलायची। ६-नारियल। ७-हल्दी। पुं० (हि) १- हाथ पहनने का कड़ा। २-कान की वाली। ३-सरल। निश्छल। ४-वालकों के समान अनजान। वि०(फा) ऊँचा। जो ऊपर हो। पुं० १-ऊँचाई। लम्बाई। २-डील।
वालाई स्त्री० (फा) मलाई। वि० ऊपर का (भाग)।
वालाई-आमदनी स्त्री० (फा) १-अतिरिक्त आय। २-वेतन के अतिरिक्त मिलने वाला भत्ता।
वालाखाना पुं०(फा) मकान के ऊपर वैठक या कमरा
वालाजोवन पुं० (हि) उठती जवानी।
वालातप पुं० (सं) प्रातःकाल की धूप।
वालादित्य पुं० (सं) हाल का उगा सूर्य।
वालाध्यापक पुं० (सं) वच्चों को पढ़ाने वाला।
वालानशीन पुं० (फा) (वैठने का) १-सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ स्थान। २-वह जो सवसे ऊँचे स्थान पर वैठा हो।
वालापन पुं० (हि) वचपन। लड़कपन।
वालावाला अव्य० (फा) १-वाहर-वाहर। २-ऊपर-ऊपर।
वालाभोला वि० (हि) सरल। सीधासाधा।
वालामय पुं० (सं) वच्चों का एक रोग।
वालायताक वि० (फा) दूर। अलग।
वालार्क पुं० (सं) १-प्रातःकाल का सूर्य। २-कन्याराशि में स्थित सूर्य।
वालावस्था स्त्री० (सं) वचपन।
वालि पुं० (सं) दे० 'वाली'। स्त्री० (हि) मंजरी।
वालिका स्त्री० (सं) १-कन्या। छोटी लड़की। २-पुत्री बेटी। ३-कान की वाली। ४-वालू।
वालिका दुर्व्यवहार पुं० (सं) वालिका के साथ अनुचित व्यवहार करना। (एब्यूज ऑफ फीमेल चाइल्ड)
वालिका विद्यालय पुं० (सं) लड़कियों की पाठशाला
वालिकुमार पुं० (सं) वालि नामक वानरराज का पुत्र अंगद।

बाहक पुं० (हिं) दे० 'बाहक'।
बाहकी स्त्री० (हिं) पालकी ढोने का काम करने वाली कहारिन।
बाहन पुं० (हिं) दे० 'वाहन'।
बाहना क्रि० (हिं) १-ढोना। लादना। २-चलाना। ३-गाड़ी आदि हांकना। ४-बहाना। ५-खेत जोतना। ६-बाल बहाना। ७-धारण करना।
बाहनी स्त्री० (हिं) १-सेना। फौज। २-नदी।
बाहर अव्य० (हिं) १-किसी निश्चित या कल्पित सीमा से अलग अथवा निकला हुआ। २-दूर। प्रथक्। ३-वगैरा। सिवा। ४-परे।
बाहरजामी पुं० (हिं) ईश्वर का सगुण रूप।
बाहर-बाहर अव्य० (हिं) १-दूर-दूर। २-ऊपर-ऊपर
बाहर-भीतर अव्य० (हिं) अन्दर और बाहर।
बाहरवाली स्त्री० (हिं) भगिन।
बाहरी वि०(हिं) १-बाहर का। २-बाहर वाला। ३-पराया। ४-ऊपरी।
बाहाँजोरी अव्य० (हिं) भुजा से भुजा या हाथ से हाथ मिलाकर।
बाहिज अव्य० (हिं) ऊपर से। बाहर से।
बाहिनी स्त्री० (हिं) १-सेना। फौज। २-नदी। ३-सवारी।
बाहिर अव्य० (हिं) बाहर।
बाहु स्त्री० (सं) भुजा। हाथ। बांह।
बाहुज पुं० (सं) १-क्षत्रिय। २-तोता।
बाहुत्राण पुं० (सं) एक प्रकार का दस्ताना जो युद्ध के समय पहना जाता है।
बाहुदंड पुं० (सं) भुजदंड।
बाहुदंती पुं० (सं) इन्द्र।
बाहुदा स्त्री० (सं) १-महाभारत में वर्णित एक नदी का नाम। २-परीक्षित की पत्नी का नाम।
बाहुपाश पुं० (सं) १-बाहु के फंदे में। २-आलिंगन करते समय बाहुओं की मुद्रा।
बाहुपार्श्वता स्त्री० (सं) बहुमुखी होने का भाव। (मल्टीलेटरिज्म)।
बाहुपार्श्व व्यापार संविदा स्त्री० (सं) दूसरे राष्ट्रों के साथ व्यापार सम्बन्धी किए गये बहुमुखी समझौते (मल्टीलेटरल ट्रेड एग्रीमेन्ट)।
बाहुप्रलम्ब वि० (सं) लम्बी भुजाओं वाला।
बाहुबल पुं० (सं) १-शारीरिक शक्ति। २-पराक्रम। बहादुरी।
बाहुभूषण पुं० (सं) बांह पर पहनने का आभूषण।
बाहुभूषा स्त्री० (सं) दे० 'बाहुभूषण'।
बाहुभूषा स्त्री० (सं) दे० 'बाहुभूषण'।
बाहुमूल पुं० (सं) कंधे और बांह के बीच का जोड़।
बाहुयुद्ध पुं० (सं) कुश्ती। मल्लयुद्ध।
बाहुरना क्रि० (हिं) दे० 'बहुरना'। लौटाना।
बाहुलता स्त्री० (सं) लता के समान कोमल बाहु।
बाहुल्य पुं० (सं) १-बहुतायत। अधिकता। (मल्टीफेरियनस)। २-व्यर्थता।
बाहुहजार पुं० (सं) दे० 'सहस्रबाहु'।
बाह्य अव्य०(हिं) बाहर। परे। वि० बाहर का। बाहरी (आउटडोर, एक्सटरल)।
बाह्याचरण पुं० (सं) दिखावा। आडंबर। ढकोसला
बाह्यभित्ति स्त्री०(सं) बाहर की दीवार। (एक्सटर्नल वॉल)।
बाह्यमितव्ययिता स्त्री० (सं) बाहरी मितव्ययिता। (एक्सटर्नल इकोनोमी)।
बाह्यरति स्त्री० (सं) आलिंगन आदि।
बाह्यरोगी पुं० (सं) दे० 'बहिर्वासी रोगी'।
बाह्यस्वरूप पुं०(सं) बाहरी रूप। (एक्सटर्नल फीचर्स)
बिंजन पुं० (हिं) दे० 'व्यंजन'।
बिंद पुं० (हिं) १-पानी की बूँद। २-दोनों भौंहों के बीच का स्थान। ३-बिन्दी। माथे का तिलक।
बिंदा पुं० (हिं) १-माथे पर का बड़ा और गोल टीका २-इस तरह का कोई चिह्न। स्त्री० १-शून्य। बिंदु। सिफर। २-माथे पर की छोटी गोल टीकी। ३-इस प्रकार का कोई चिह्न।
बिंदु पुं० (सं) १-बूँद। शून्य। सिफर। २-दे०'बिंदु'
बिंदुरी स्त्री० (हिं) बिंदी।
बिंदुली स्त्री० (हिं) बिंदी।
बिंध पुं०(हिं) दे० 'विंध्याचल'।
बिंधना क्रि० (हिं) १-बींधा या छेदा जाना। २-उलझना। फंसना।
बिंब पुं० (सं) १-प्रतिबिंब। अक्स। छाया। २-प्रतिमूर्ति। ३-सूर्य या चन्द्रमा का मंडल। ४-गिरगिट। ५-सूर्य। ६-आभास। झलक। ७-चाँबी।
बिंबक पुं० (सं) १-सूर्य या चन्द्रमा का मंडल। २-सांचा। ३-कुँदरू।
बिंबफल पुं० (सं) कुँदरू।
बिंबा पुं० (सं) १-कुँदरू फल। २-प्रतिछाया। ३-सूर्य या चन्द्रमा का मंडल।
बिंबी स्त्री० (सं) कुँदरू की लता।
बिंबित वि० (सं) प्रतिबिंबित।
बिंबोष्ठ वि० (सं) कुँदरू की तरह लाल होंठ वाला।
बिंबौष्ठ वि० (सं) दे० 'बिंबोष्ठ'।
बि वि०(हिं) दो (संख्या)।
बिअ वि० (हिं) दो।
बिआज पुं० (हिं) सूद। ब्याज।
बिआध पुं० (हिं) व्याध।
बिआधि स्त्री० (हिं) दे० 'व्याधि'।
बिआना क्रि० (हिं) बच्चा देना। ब्याना। (पशु)।
बिआहना क्रि० (हिं) विवाह करना।
बिकट वि० (हिं) दे० 'विकट'।

बिघन पुं० (हिं) १-बाधा। विघ्न। २-हथौड़ा।
बिघनहरन वि० (हिं) विघ्न या बाधा को दूर करने वाला। पुं० (हिं) गणेशजी।
बिच अव्य० (हिं) दे० 'बीच'।
बिचकना क्रि० (हिं) १-(मुख का) टेढ़ा होना। २-भड़कना। चौंकना।
बिचकाना क्रि० (हिं) १-(मुँह) चिढ़ाना। २-मुँह बनाना। भड़काना। चौंकाना।
बिचच्छन वि० (हिं) दे० 'विचक्षण'।
बिचरना क्रि० (हिं) १-घूमना-फिरना। २-पर्यटन करना। यात्रा करना।
बिचलना क्रि० (हिं) १-विचलित होना। २-मुकरना। ३-साहस छोड़ना।
बिचला वि० (हिं) जो बीच में हो। बीच वाला।
बिचलाना क्रि० (हिं) १-विचलित करना। डगमगाना। २-तितरबितर करना।
बिचवई पुं० (हिं) बीच में झगड़ा निपटाने वाला। मध्यस्थ। स्त्री० (हिं) मध्यस्थता।
बिचवान पुं० (हिं) मध्यस्थ।
बिचवानी पुं० (हिं) मध्यस्थ।
बिचहुत पुं० (हिं) १-अन्तर। फर्क। २-दुविधा। सन्देह।
बिचार पुं० (हिं) विचार। इरादा।
बिचारना क्रि० (हिं) १-विचार करना। सोचना। २-पूछना।
बिचारमान वि०(हिं)१-विचारने योग्य। २-बुद्धिमान
बिचारा वि० (हिं) दे० 'बेचारा'।
बिचारी पुं० (हिं) विचार करने वाला।
बिचाल पुं० (हिं) १-अलग करना। २-अन्तर। फर्क
बिचेत वि० (हिं) १-बेहोश। मूर्छित। २-बदहवास।
बिचौंहाँ वि० (हिं) बीच का।
बिच्छित्ति स्त्री० (हिं) दे० 'विच्छित्ति'।
बिच्छी स्त्री० (हिं) दे० बिच्छू।
बिच्छू पुं० (हिं) १-एक छोटा जहरीला जानवर जिसके डंक में विष होता है। २-एक प्रकार की घास जिसके स्पर्श से जलन होती है।
बिच्छेप पुं० (हिं) दे० 'विक्षेप'।
बिछना क्रि० (हिं) १-बिछाया या फैलाया जाना। २-छितराया जाना। ३-भूमि पर गिराना।
बिछलन स्त्री० (हिं) फिसलन।
बिछलना क्रि० (हिं) फिसलना।
बिछलाना क्रि० (हिं) १-फिसलना। २-डगमगाना।
बिछवाना क्रि० (हिं) दूसरे को बिछाने में प्रवृत्त करना।
बिछाना क्रि० (हिं) १-विस्तर, कपड़ा आदि जमीन आदि पर दूर तक फैलाना। २-बिखेरना। ३-मारकर लिटा देना।
बिछायत स्त्री० (हिं) बिछौना।
बिछावन पुं० (हिं) दे० 'बिछौना'।
बिछिप्त वि० (हिं) दे० 'विक्षिप्त'।
बिछिया स्त्री० (हिं) १-पैर की उँगलियों में पहनने का गहना।
बिछुआ पुं० (हिं) १-बिछिया। २-एक प्रकार की करधनी।
बिछुड़न स्त्री०(हिं)१-बिछुड़ने का भाव। २-वियोग। विरह।
बिछुड़ना क्रि० (हिं) १-अलग या जुदा होना। २-वियोग होना।
बिछुरंता पुं० (हिं) बिछुड़ने वाला।
बिछुरना क्रि० (हिं) दे० 'बिछुड़ना'।
बिछुरति स्त्री० (हिं) दे० 'बिछुड़न'।
बिछुवा पुं० (हिं) दे० 'बिछुआ'।
बिछूना वि० (हिं) जो बिछुड़ गया हो।
बिछोई वि० (हिं) दे० 'बिछोही'।
बिछोड़ा पुं० (हिं) वियोग। विरह। जुदाई।
बिछोही वि० (हिं) बिछुड़ा हुआ।
बिछौना पुं० (हिं) बिस्तर। वह कपड़े जो सोने या बैठने के लिए बिछाये जाते हैं। बिछावन।
बिजन पुं० (हिं) छोटा पंखा। वि० दे० 'विजन'
बिजना पुं० (हिं) पंखा।
बिजय स्त्री० (हिं) दे० 'विजय'।
बिजयघंट पुं० (हिं) मंदिरों में लटकाने का घण्टा।
बिजयी वि० (हिं) दे० 'विजयी'
बिजली स्त्री० (हिं) १-पदार्थ के अणुओं के अलग होने से उत्पन्न शक्ति जो रासायनिक क्रिया या आकर्षण शक्ति विशेष से उत्पन्न होती है। विद्युत। २-आकाश में बादलों की रगड़ से उत्पन्न सहसा दिखाई देने वाला प्रकाश। चपला। (इलेक्ट्रिसिटी) ३-आम के भीतर की गुठली। ४-एक आभूषण। वि० १-अतिशय चंचल। २-चमकीला।
बिजलीघर पुं० (हिं) वह स्थान जहां से आसपास स्थानों में बिजली पहुँचाई जाती है। (पावर-हाउस)
बिजहन वि० (हिं) जिसका बीज नष्ट हो गया हो।
बिजाती स्त्री०(हिं) १-दूसरी जाति का। २-जातिच्युत ३-दूसरी तरह का।
बिजान वि० (हिं) अनजाना।
बिजायठ पुं० (हिं) भुजा पर पहनने का एक आभूषण।
बिजुरी स्त्री० (हिं) दे० 'बिजली'।
बिजूका पुं० (देश) १-पक्षियों को डराने के लिये खेत में टँगी उलटी हांडी या इस प्रकार की कोई वस्तु। २-छली। धोखा।
बिजूखा पुं० (देश) 'बिजूका'।
बिजै स्त्री० (हिं) जीत। विजय।

विजोग पु० (हि) दे० 'वियोग'।
विजोना क्रि० (हि) देख रेख करना। अच्छी तरह देखना।
विजोरा पु० (हि) दे० 'विजौरा'।

विज्जू पु० (देश) बिल्ली के आकार-प्रकार का एक जानवर जो कब्रों में से मृत शरीर निकाल कर खाता है।
विझकना क्रि०(हि) दे० 'बिचकना'।
विझुकना क्रि० (हि) १-भड़कना। २-डरना। भयभीत होना। ३-तनने के कारण कुछ टेढ़ा होना।
विभुका पु०(देश) घोखा। कपट।
विभुकाना क्रि० (हि) १-भड़काना। २-डराना।
विट पुं० (हि) १-साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में पूर्ण हो। २-वीट। पक्षियों की विष्ठा। ३-नीच। वेश्यागामी।
विटप पु० (हि) १-पेड़। २-वृक्ष की नई डाल। ३-झाड़ी।
विटपी पु० (हि) दे० 'विटपी'।
विटरना क्रि० (हि) १-घंघोला जाना। २-गंदा होना।
विटारना क्रि० (हि) घंघोल कर गन्दा करना।
विटिनिया स्त्री० (हि) दे० 'बेटी'।
विटिया स्त्री० (हि) छोटी लड़की। बच्ची।
विटौरा पुं० (हि) उपलों का ढेर।
विठ्ठल पुं० (हि) १-विष्णु का एक नाम। २-शोलापुर में पंढरपुर में स्थित एक देवमूर्ति।
विठलाना क्रि० (हि) दे० 'बिठाना'।
बिठाना क्रि० (हि) बैठाना।
विडंब पुं० (हि) दिखावा। आडम्बर।
विडंबना स्त्री० (हि) दे० 'विडंबना'।
विड पुं० (हि) १-विष्ठा। बीट। २-एक प्रकार का नमक।
विड़ई स्त्री० (हि) गेंडुरी।

बिड़ा पुं० (हि) पेड़। वृक्ष।
बिडारना क्रि० (हि) १-डरा कर भगा देना। २-इधर उधर करना।

विड़ाल पु० (स) १-बिलाव। बिल्ली। २-एक दैत्य जिसका नाम विड़ालाक्ष था। ३-आंख का ढेला।
विड़ालाक्ष वि० (स) जिसके नेत्र बिल्ली के से हों।
विड़ालिका स्त्री० (स) १-बिल्ली। २-हरताल।

विढ़ाना क्रि०(हि) दे० 'बिढ़वना'।
वित पु० (हि) दे० 'वित्त'।
वितताना क्रि० (हि) १-बिलखाना। व्याकुल होना। सताना।
वितना पुं० (हि) दे० 'बित्ता'।
वितरना क्रि० (हि) बाँटना। वितरण करना।
वितवना क्रि० (हि) बिताना।
विताना क्रि० (हि) (समय) व्यतीत करना। गुजारना।
वितावना क्रि० (हि) दे० 'बिताना'।
वितीतना क्रि०(हि)१-बीतना। गुजरना। २-बिताना। व्यतीत करना।
वितुंड पु० (हि) दे० 'वितुंड'।
वित्त स्त्री० (हि) १-धन। २-शक्ति। सामर्थ्य। ३-ऊँचाई। ४-हैसियत। औकात।
वित्ता पुं० (हि) बालिश्त। अंगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की लम्बाई।
वियकना क्रि० (हि) १-थकना। २-चकित होना। ३-मोहित होना।
वियरना क्रि० (हि) १-बिखराना। २-अलग-अलग होना।
वियराना क्रि० (हि) १-बिखराना। २-बिलेरना।
विथित वि० (हि) दे० 'व्यथित'।
विथुरित वि० (हि) बिखरा हुआ।
वियोरना क्रि० (हि) दे० 'बिथराना'।
विदकना क्रि० (हि) १-फटना। चिरना। २-घायल होना। ३-बिचकना।
विदकाना क्रि० (हि) १-विदीर्ण करना। २-घायल करना। ३-भड़काना।

विदोरना क्रि० (हि) चीरना। फाड़ना।
विदुराना क्रि० (हि) धीरे धीरे हँसना। मुस्कराना।
विदुरानि स्त्री० (हि) मुस्कराहट।

बिदूपना क्रि० (हि) १-दोष या कलंक लगाना। २-बिगाड़ना।
बिदेस पुं० (हि) विदेश। परदेश।
बिदेसी वि० (हि) विदेशी।
बिदोख पुं०(हि) बैर। वैमनस्य। विद्वेष।
बिदोरना क्रि०(हि) (मुँह या दांत) खोल कर दिखाना। २-फैलाना।
बिद्दत स्री० (प) १-खराबी। बुराई। २-कष्ट। ३-विपत्ति। ४-जुल्म। ५-दुर्दशा।
बिद्ध वि० (हि) बिधा हुआ।
बिधंसना क्रि० (हि) नष्ट करना।
बिध स्री०(हि) दे० 'विधि'। पुं० (हि) हाथी के खाने का चारा। २-जमाखर्च का लेखा।
बिधना पुं० (हि) ब्रह्मा। विधाता। क्रि० (हि) १-बिंधना। २-फंसाना।
बिधवपन पुं० (हि) वैधव्य।
बिधवा वि० (हि) जिसका पति मर गया हो।
बिधवाना क्रि० (हि) छेद कराना।
बिधांसना क्रि० (हि) नष्ट करना। विध्वंस करना।
बिधाई पुं० (हि) 'विधायक'।
बिधाना क्रि० (हि) बेधा जाना।
बिधानी पुं०(हि) बनाने वाला। विधान करने वाला
बिधि स्री० (हि) दे० 'विधि'।
बिधिना पुं० (हि) ब्रह्मा।
बिधुंतुद पुं० (हि) दे० 'विधुंतुद'।
बिधुंसना क्रि० (हि) नष्ट करना। विध्वंस करना।
बिधुर वि० (हि) दे० 'विधुर'।
बिन अव्य० (हि) दे० 'बिना'।
बिनई पुं० (हि) १-विनती करने वाला। २-नम्र।
बिनउ स्री० (हि) दे० 'विनय'।
बिनठना क्रि० (हि) नाश होना। बिगड़ना।
बिनता स्री० (हि) दे० 'विनता'।
बिनति स्री० (हि) दे० 'विनती'।
बिनती स्री० (हि) प्रार्थना। निवेदन।
बिनन स्री०(हि) १-चुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २-कूड़ाकरकट जो किसी चीज के चुनने पर निकले।
बिनना क्रि० (हि) १-चुनना। २-छांट कर अलग करना। ३-दे० 'बुनना'।
बिनय स्री० (हि) दे० 'विनय'।
बिनयना क्रि० (हि) विनय करना। प्रार्थना करना।
बिनवट स्री० (हि) पटायनेठी का खेल।
बिनवना क्रि० (हि) विनय करना। प्रार्थना करना।
बिनसना क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-नष्ट करना।
बिनसना क्रि०(हि) १-नष्ट होना। २-बरबाद करना।
बिनसाना क्रि० (हि) नष्ट या चौपट करना।
बिना अव्य० (हि) छोड़ कर। बगैर। स्री०(प) नींव। बुनियाद।
बिनाई स्री० (हि) १-चीनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २-बुनने का भाव अथवा मजदूरी। ३-आधार।
बिनाती स्री० (हि) दे० 'विनती'।
बिनाना क्रि० (हि) दे० 'बुनवाना'।
बिनानी वि० (हि) १-ज्ञानवान। २-अनजान। स्री० विवेचन। गौर।
बिनावट स्री० (हि) दे० 'बुनावट'।
बिनास पुं० (हि) दे० 'विनाश'।
बिनासना क्रि० (हि) विनिष्ट या बरबाद करना।
बिनासी वि० (हि) विनाशी। नष्ट होने वाला।
बिनाह पुं० (हि) दे० 'विनाश'।
बिनि अव्य० (हि) दे० 'बिना'।
बिनु अव्य० (हि) दे० 'बिना'।
बिनूठा वि० (हि) अनूठा।
बिनौला पुं० (हि) कपास के बीज।
बिपक्ष पुं० (हि) दे० 'विपक्ष'।
बिपक्षी वि० (हि) दे० 'विपक्षी'।
बिपच्छ पुं० (हि) शत्रु। बैरी। वि० प्रतिकूल। विमुख
बिपच्छी पुं० (हि) दे० 'विपक्षी'।
बिपत स्री० (हि) दे० 'विपत्ति'।
बिपता स्री० (हि) दे० 'विपत्ति'।
बिपति स्री० (हि) दे० 'विपत्ति'।
बिपत्ति स्री० (हि) दे० 'विपत्ति'।
बिपथ पुं० (हि) कुमार्ग। गलत राह।
बिपद स्री० (हि) विपत्ति। आफत। मुसीबत।
बिपर पुं० (हि) विप्र। ब्राह्मण।
बिपाक पुं० (हि) दे० 'विपाक'।
बिपाशा स्री० (हि) व्यास नदी।
बिपासा स्री० (हि) दे० 'विपाशा'।
बिपोहना क्रि० दे० 'विपोहना'।
बिफर वि०(हि) दे० 'विफल'।
बिफरना क्रि० (हि) २-विद्रोही होना। बागी होना। २-नाराज होना। बिगड़ना।
बिबछना क्रि० (हि) १-विरोध करना। २-उलझन फंसना।
बिवर वि० (हि) दे० 'विविर'।
बिबरन वि०(हि) दे० 'विवर्ण'। पुं० दे० 'विवर
बिबस वि० (हि) दे० 'विवश'। अव्य० लाचार हो
बिबसाना क्रि० (हि) विवश या लाचार होना।
बिबहार पुं० (हि) दे० 'व्यवहार'।
बिबाई स्री० (हि) दे० 'बिवाई'।
बिबाक स्री० (हि) दे० 'बेबाक'।
बिबाकी स्री० (हि) दे० 'बेबाकी'।
बिबादना क्रि० (हि) विवाद करना। झगड़ा करना
बिबाहना क्रि० (हि) विवाह करना।

विवि क्रि० (हि) दो।
विब्बोक पुं०(हि) रूप या सुन्दरता के घमंड के कारण उपेक्षा।
विभचारी वि० (हि) दे० 'व्यभिचारी'।
विभाना क्रि० (हि) चमकना। चमकदार होना।
विभावरी स्त्री० (हि) दे० 'विभावरी'।
विभिनाना क्रि० (हि) पृथक या अलग करना। अलगाना।
विभीषक वि०(सं) डराने वाला। भयभीत करने वाला। डरावना।
विभीषिका स्त्री० (सं) दे० 'विभीषिका'।
विभु पुं० (हि) दे० 'विभु'।
विभौ पु० (हि) अधिकता। ऐश्वर्य।
विमन वि० (हि) १-जिसे बहुत दुःख हो। २-उदास चिंतित। अव्य० अनमना होकर।
विमर्दना क्रि० (हि) मसलना। नाश करना।
विमान पुं० (हि) १-वायुयान। हवाई जहाज। २-अनादर।
विमानी वि० (हि) जिसे किसी प्रकार का अभिमान न हो। निरभिमान।
विमानीकृत वि० (हि) १-जिसका अनादर किया गया हो। २-जिसने वायुयान बनाया हो।
विमूढ़ वि० (हि) दे० 'विमूढ़'।
विमोचना क्रि० (हि) १-मुक्त करना। २-छोड़ना। ३-टपकाना।
विमोहना क्रि० (हि) मोहित करना। लुभाना।
विमौट पु० (हि) बाँबी। वल्मीक।
विमौरा पुं० (हि) बाँबी।
[illegible]

[illegible]
वियाघ पुं० (हि) दे० 'व्याध'।
वियाधा पुं० (हि) दे० 'व्याध'।
वियाधि स्त्री० (हि) दे० 'व्याधि'।
वियाना क्रि० (हि) बच्चा देना (पशुओं के लिए)।
[illegible]

वियाह स्त्री० (हि) दे० 'ब्याह'।
वियार पुं० (हि) १-सर्प। २-शेर।
वियारू स्त्री० (हि) दे० 'ब्यालू'।
वियाहना क्रि० (हि) विवाह करना।
वियोग पुं० (हि) दे० 'वियोग'।

विरंग वि० (हि) १-कई रंग वाला। २-बिना रंग का
विरंचि पुं० (हि) ब्रह्मा।
विरंजी स्त्री० (हि) छोटी कील। छोटा काँटा।
विरई स्त्री० (हि) १-छोटा बिरवा। २-जड़ी-बूटी।
विरक्त वि० (हि) दे० 'विरक्त'।
विरखभ पुं० (हि) दे० 'वृषभ'।
विरचना क्रि० (हि) बनाना। रचना।
विरछ पुं० (हि) वृक्ष। पेड़।
विरछिक स्त्री० (हि) दे० 'वृश्चिक'।
विरछीक स्त्री० (हि) दे० 'वृश्चिक'।
विरज वि० (हि) निर्दोष। निर्मल।
विरझना क्रि० (हि) उलझना। झगड़ना।
विरझाना क्रि० (हि) क्रोधित होना।
विरतंत पु० (हि) दे० 'वृत्तांत'।
विरतांत पु० (हि) दे० 'वृत्तांत'।
विरता पुं० (हि) सामर्थ्य। शक्ति।
विरताना क्रि० (हि) बरताना। बाँटना।
विरति स्त्री० (हि) दे० 'विरति'।
विरथा वि० (हि) व्यर्थ। फजूल। निरर्थक। अव्य० बिना किसी कारण के।
विरदंग पु० (हि) दे० 'मृदंग'।
विरद पु० (हि) १-बड़ाई। यश। २-दे० 'विरद'।
विरदैत वि० (हि) प्रसिद्ध। नामी। पु० प्रसिद्ध वीर या योद्धा।
विरध वि० (हि) दे० 'वृद्ध'।
विरधाई स्त्री० (हि) बुढ़ापा। वृद्धावस्था।
विरधापन पु० (हि) बुढ़ापा।
विरमना क्रि० (हि) १-ठहरना। २-आरम्भ करना। ३-मोहित होकर कहीं रुक या फँस जाना।
[illegible] ना। २-

[illegible] (हि) बहुत बाड़। [illegible]
विरवा पु० (हि) १-वृक्ष। पौधा।
विरवाई स्त्री० (हि) १-छोटे पौधों का समूह। २-वह स्थान जहाँ बहुत से छोटे पौधे हों।
विरवाही स्त्री० (हि) दे० 'बिरवाई'।
[illegible]

विरह।
विरहना क्रि० (हि) विरह से पीड़ि
विरही पुं० (हि) दे० 'विरही'।
विराग पुं० (हि) दे० 'विराग'।
विरागना क्रि० (हि) विरक्त होना।

विराजना क्रि० (हि) १-शोभित होना। २-बैठना। (आदरसूचक)।
विरादर पुं० (फा) भाई। भ्राता।
विरादरकुशी स्त्री० (फा) बन्धुवध।
विरादरजादा पुं० (फा) भतीजा।
विरादराना वि० (फा) भाई जैसा। भाई के अनुरूप।
विरादरी स्त्री० (फा) १-भाईचारा। बन्धुत्व। २-एक ही जाति के लोगों का समूह।
विरान वि० (हि) १-पराया। बेगाना। २-दूसरे का।
विराना वि०(हि) दे० 'विराना'। क्रि० मुँह चिढ़ाना।
विराल पुं० (हि) दे० 'बिडाल'।
विरावना क्रि० (हि) दे० 'विरान'।
विरास पुं० (हि) दे० 'विलास'।
विरासी वि० (हि) दे० 'विलासी'।
विरिख पुं० (हि) दे० 'वृक्ष'।
विरिछ पुं० (हि) वृक्ष।
विरिध वि० (हि) दे० 'वृद्ध'।
विरियां स्त्री० (हि) १-समय। वेला। २-बार। दफा
विरी स्त्री० (हि) १-गठरी। २-पान का बीड़ा। ३-बीड़ी।
विरुझना क्रि० (हि) उलझना। झगड़ना।
विरुझाना क्रि० (हि) उलझना।
विरुद पुं० (हि) दे० 'विरद'।
विरुदैत वि० (हि) दे० 'विरदैत'।
विरुधाई स्त्री० (हि) वृद्धावस्था।
विरूप वि० (हि) दे० 'विरूप'।
विरोधना क्रि० (हि) वैर या विरोध करना। द्वेष करना।
विरोलना क्रि० (हि) दे० 'विलोड़ना'।
विलंद वि० (हि) दे० 'बुलंद'।
विलंब पुं० (हि) दे० 'विलंब'।
विलंबना क्रि० (हि) १-विलंब या देर करना। २-रुकना। ठहरना।
विलंबित वि० (हि) दे० 'विलंबित'।
विल पुं०(सं) जमीन खोद कर बनाई हुई पतली, तंग जगह जिसमें जीव जन्तु रहते है। (अं) १-पावने का वह हिसाब जिसमें प्राप्त मूल्य अथवा पारिश्रमिक का ब्योरा होता है। २-किसी कानून का वह मसौदा जो विधान सभा में उपस्थित किया जाय। विधेयक।
विलकारी पुं० (सं) चूहा।
विलकुल अव्य० (अ) १-पूरा-पूरा। सब। २-सिर से पैर तक। ३-आदि से अन्त तक।
विलखना क्रि० (हि) १-विलाप करना। रोना। २-दुःखी होना। ३-सिकुड़ना।
विलखाना क्रि० (हि) १-रुलाना। २-दुखी करना। ३दे-विलखाना।
विलग वि० (हि) अलग। पृथक। पुं० अलगाव। पार्थक्य।
विलगाना क्रि० (हि) १-अलग करना। २-अलग होना। ३-चुनना।
विलच्छन वि० (हि) दे० 'विलक्षण'।
विलछना क्रि० (हि) देख कर समझ लेना। ताड़ना
विलटी स्त्री० (हि) रेल या मोटर द्वारा भेजे जाने वाले माल की रसीद जिसे दिखाने पर पाने वाले को वह माल मिलता है।
विलनी स्त्री० (हि) १-आंख की पलक पर होने वाली एक छोटी फुंसी। गुहांजनी। २-काला भौंरा।
विलपना क्रि० (हि) विलाप करना। रोना।
विलफेल अव्य० (अ) इसी समय। अभी।
विलबिलाना क्रि०(हि) १-छोटे-छोटे कीड़ों का रेंगना २-व्याकुल होकर प्रलाप करना। ३-कष्ट या पीड़ा के कारण रोना या चिल्लाना। ४-भूख से बेचैन हो जाना।
विलम पुं० (हि) दे० 'विलंब'।
विलमना क्रि० (हि) १-विलंब या देर करना। २-ठहराना। ३-प्रेम हो जाने के कारण पास रह जाना
विलमाना क्रि० (हि) रोक रखना। अटका रखना।
विलल्ला वि० (हि) १-जिसे कोई शऊर या ढंग न हो। २-मूर्ख। गावदी।
विलसना क्रि० (हि) १-शोभा देना। भला या अच्छा जंचना। २-भोगना।
विलसाना क्रि० (हि) १-काम में लाना। २-दूसरे से भोगवाना।
विलस्त पुं० (हि) बालिश्त। बित्ता।
विलहरा पुं० (हि) पान के बीड़े रखने के बांस की तीलियों का एक छोटा डिब्बा।
विला अव्य० (अ) बिना। बगैर।
विलाई स्त्री० (हि) १-बिल्ली। २-किवाड़ों को बन्द करने के लिए लगाई जाने वाली सिटकनी। ३-कांटों या अंकुसी का गुच्छा जिससे कूएं में बरतन निकाले जाते हैं।
विलातकल्लुफ अव्य० (अ) बिना किसी संकोच बिना किसी रोक टोक के।
विलाना क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-अदृश्य।
विलानागा अव्य० (अ) प्रतिदिन। हररोज।
विलाप पुं० (हि) दे० 'विलाप'।
विलापना क्रि० (हि) विलाप करना। रोना।
विलायत पुं० (हि) दे० 'विलायत'।
विलार पुं० (हि) बिल्ला। बड़ी बिल्ली।
विलारी स्त्री० (हि) बिल्ली।
विलाव पुं० (हि) बिल्ली। मार्जार।
विलावल पुं० (हि) एक सवेरे के समय गाने वाला राग। स्त्री० प्रेमिका। पत्नी।

बिलास पु० (हि) दे० 'विलास'।
बिलासना क्रि० (हि) भोग करना। बरतना।
बिलासिनी स्त्री० (हि) वेश्या।
बिलासी वि० (हि) दे० 'विलासी'।
बिलिया स्त्री० (हि) कटोरी।
बिलुठना क्रि० (हि) कष्ट या पीड़ा के कारण जमीन पर लोटना।
बिलूर पुं० (हि) दे० 'बिल्लौर'।
बिलेशय पुं०(स) बिल में रहने वाला सांप आदि।
बिलैया स्त्री० (हि) १-बिल्ली। २-सटकनी।
बिलोकना क्रि०(हि) १-देखना। २-परीक्षा करना। जांचना।
बिलोकनि स्त्री० (हि) १-देखना। २-दृष्टि। निगाह। चितवन।
बिलोचन पुं०(हि) आंख। नेत्र।
बिलोड़ना क्रि०(हि) १-दूध आदि मथना। २-ढालना। उड़ेलना।
बिलोन वि० (हि) १-बिना नमक वाला। २-भद्दा। कुरूप।
बिलोना क्रि० (हि) १-दूध आदि मथना। २-ढालना। उड़ेलना। पुं० १-बिलो कर निकाली जाने वाली वस्तु। नवनीत। मक्खन। २-वह पात्र जिसमें दूध आदि बिलोया जाता है।
बिलोरना क्रि० (हि) दे० 'बिलोड़ना'।
बिलोल वि० (हि) सुन्दर। चंचल।
बिलोलना क्रि० (हि) हिलना। डोलना।
बिलोवना क्रि० (हि) दे० 'बिलोना'। पु० वह पात्र जिसमें दूध दही बिलोया जाता है।
बिलौटा पुं० (हि) बिल्ली का बच्चा।
बिलौर पुं० (हि) दे० 'बिल्लौर'।
बिल् अव्य० (हि) द्वारा। लिए। साथ। से।
बिल्कुल अव्य० (हि) दे० 'बिल्कुल'।
बिल्कुल अव्य०(हि) दे० 'बिलकुल'।
बिल्ला पुं० (हि) १-बिलाव। मार्जार। २-कपड़े की पतली पट्टी जिसे चपरासी, सेवक आदि अपनी पहचान के लिए लगाते हैं।
बिल्लाना क्रि० (हि) विलाप करना।
बिल्ली स्त्री० (हि) १-शेर, चीते, व्याघ्र आदि की जाति का एक छोटा पशु जो मांसाहारी होता है और प्रायः घरों में रहता है। २-दरवाजे पर लगाने वाली सटकनी।
बिल्लौर पु० (हि) १-एक प्रकार का पारदर्शक सफेद पत्थर। स्फटिक। २-स्वच्छ शीशा जिसकी चूड़ियाँ आदि बनती हैं।
बिल्लौरी वि० (हि) १-बिल्लौर का बना हुआ। २-बिल्लौर के समान स्वच्छ।
बिल्व पु० (सं) बेल का पेड़।
बिवछना क्रि० (हि) दे० 'बिवछना'।
बिवरना क्रि०(हि) १-सुलझना। २-केश सुलझाना।
बिवराना क्रि० (हि) १-बाल सुलझाना। २-बाल सुलझवाना।
बिवसाइ पु० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
बिवाई स्त्री०(हि) पैर के तलवे में चमड़े फटने का रोग
बिवान पु० (हि) रथ। विमान।
बिवेचना क्रि० (हि) विवेचन करना। विचार करना।
बिशाखा स्त्री० (हि) राधा की एक सखी का नाम।
बिष पु० (हि) दे० 'विष'।
बिषय स्त्री० (हि) विषय। वासना।
बिषान पु० (हि) विषाण। सींग।
बिषारा वि० (हि) विषाक्त।
बिषिया स्त्री० (हि) दे० 'विषय'।
बिसच पु० (हि) १-संभाल कर न रखना। २-कार्य की हानि। बाधा। ३-भय। डर।
बिसभर पु० (हि) दे० 'विश्वंभर'। वि० जो सम्भाला न जा सके।
बिसभार वि० (हि) जिसकी सुधबुध खो गई हो। असावधान।
बिस पु० (हि) दे० 'विष'।
बिसकरमा पु० (हि) दे० 'विश्वकर्मा'।
बिसखपरा पु० (हि) गोह जाति का एक विषैला जन्तु।
बिसखापर पु० (हि) दे० 'बिसखपरा'।
बिसखोपरा पु० (हि) दे० 'बिसखपरा'
बिसतरना क्रि० (हि) फैलाना। विस्तार करना।
बिसतार वि० (हि) दे० 'विस्तार'।
बिसद वि० (हि) दे० 'विशद'।
बिसन पु० (हि) दे० 'व्यसन'।
बिसनी वि०(हि)१-दे० 'व्यसनी'। २-छैला। शौकीन ३-वेश्यागामी।
बिसमउ पु० (हि) दे० 'बिसमय'।
बिसमय पुं० (हि) १-आश्चर्य। विस्मय। २-गर्व। ३-सन्देह।
बिसमरना क्रि० (हि) भूलना।
बिसमय पु० (हि) दे० 'विस्मय'।
बिसमिल्ला पु० (हि) श्रीगणेश। आरम्भ।
बिसयक पु० (हि) १-देश। प्रदेश। २-राज्य। रियासत।
बिसरना क्रि० (हि) भूलना। याद न रहना।
बिसरात पु० (हि) खच्चर। अश्वतर।
बिसराना क्रि० (हि) विस्मृत करना। भुलाना।
बिसराम पुं० (हि) दे० 'विश्राम'।
बिसरामी वि० (हि) विश्राम देने वाला।
बिसरावना क्रि० (हि) दे० 'बिसराना'।
बिसवास पुं० (हि) दे० 'विश्वास'।

बिसवासिनि वि० (हि) १-जिस पर विश्वास न हो २-विश्वासघातिनी।
बिसवासी वि० (हि) १-विश्वास करने वाला। जिस पर विश्वास हो।
बिससना क्रि०(हि) १-विश्वास करना। २-वध करना ३-शरीर काटना। चीरना। फाड़ना।
बिसहना क्रि० (हि) १-मोल लेना। २-जानबूझकर अपने साथ लगाना।
बिसहर पुं० (हि) विसधर। साँप। सर्प।
बिसा पुं० (हि) दे० 'बिस्वा'।
बिसाइंध स्त्री० (हि) दे० 'बिसायँध'।
बिसाख स्त्री० (हि) दे० 'विशाखा'।
बिसात स्त्री० (प) १-हैसियत। औक़ात। २-वित्त। ३-सामर्थ्य। शक्ति। ४-चौपड़ या शतरंज आदि खेलने का कपड़ा।
बिसातखाना पुं०(प) बिसाती की दुकान।
बिसातखाना पुं० (प) वह वस्तुएँ जो बिसाती की दूकान पर मिलती हैं। (स्टेशनरी)।
बिसाती पुं० (प) १-कपड़ा बिछा कर उस पर सौदा लगा कर बेचने वाला। २-सुई, तागा, दवाव तथा शृङ्गार आदि की साधारण वस्तुएँ बेचने वाला।
बिसाना क्रि०(हि) १-दे० 'बसाना'। जहरबाद होना।
बिसायँध स्त्री० (हि) सड़ी मछली जैसी दुर्गन्ध। वि० जिसमें बदबू आती हो।
बिसारद पुं०(हि) दे० 'विशारद'।
बिसारना क्रि० (हि) विस्मृत करना। भुलाना।
बिसारो वि०(हि) विषैला। विषाक्त। विषभरा।
बिसास पुं०(हि) दे० 'विश्वास'।
बिसासिन स्त्री० (हि) जिस पर विश्वास न किया जा सके। विश्वासघातिनी।
बिसासिनी (स्त्री)हि० विश्वासघातिनी।
बिसासी वि० (हि) विश्वासघाती। धोखेबाज।
बिसाहना क्रि० (हि) १-खरीदना। मोल लेना। २-जानबूझकर पीछे लगाना। पुं० (हि) १-खरीदी हुई वस्तु। सौदा। २-मोल लेने की क्रिया।
बिसाहनी स्त्री०(हि) मोल ली जानेवाली वस्तु। सौदा
बिसाहा पुं० (हि) सौदा।
बिसियर वि०(हि) विषैला। ज़हरीला।
बिसुरना क्रि०(हि) दे० 'बिसूरना'
बिसूरना क्रि० (हि) १-मन दुखी करना। सिसक कर रोना। स्त्री०(हि) चिन्ता। सोच। फ़िक्र।
बिसेख वि० (हि) दे०'विशेष'।
बिसेखता स्त्री०(हि) दे०'विशेषता'।
बिसेखना क्रि० (हि) विशेष प्रकार से वर्णन करना।
बिसेसर पुं० (हि) दे०'विश्वेश्वर'।
बिसैंधा वि०(हि) जिसमें बिसायँध या बदबू आती हो
बिसोक वि० (हि) शोकरहित।
बिस्कुट पुं० (हि) खमीरी आटे की तंदूर पर पकी हुई एक प्रकार की टिकिया।
बिस्तर पुं० (फा) बिछाने के कपड़े। बिछौना।
बिस्तरना क्रि० (हि) १-फैलाना। २-फैलना।
बिस्तरा पुं० (हि) दे० 'बिस्तर'।
बिस्तार पुं०(हि) दे० 'विस्तार'।
बिस्तारना क्रि० (हि) फैलाना। विस्तृत करना।
बिस्तुइया स्त्री० (हि) छिपकली।
बिस्मिल्लाह स्त्री० (प) श्रीगणेश। आरम्भ।
बिस्राम पुं० (हि) दे० 'विश्राम'।
बिस्वा पुं० (हि) एक बीघे का बीसवाँ भाग।
बिस्वास पुं० (हि) दे० 'विश्वास'।
बिहंग पुं० (हि) दे० 'विहंग'।
बिहंडना क्रि०.(हि) १-तोड़ना। नष्ट करना। २-मार डालना।
बिहँसना क्रि० (हि) मुस्कराना।
बिहँसाना क्रि० (हि) १-हँसाना। हर्षित करना। २-बिहँसना। खिलना।
बिहँसौंहा वि० (हि) हँसता हुआ।
बिह वि० (फा) दे० 'बेह'।
बिहग पुं० (हि) दे० 'विहंग'।
बिहद वि० (हि) दे० 'बेहद'।
बिहबल वि० (हि) दे० 'विह्वल'।
बिहरना क्रि० (हि) १-घूमना-फिरना। सैर करना। २-फटना। विदीर्ण होना।
बिहराना क्रि० (हि) फटना।
बिहान पुं० (हि) १-सवेरा। प्रातःकाल। २-आने वाला दिन। कल।
बिहाना क्रि०(हि) १-छोड़ना। त्यागना। २-गुजरना बीतना।
बिहार पुं० (हि) दे० 'विहार'।
बिहारना क्रि० (हि) विहार करना। क्रीड़ा करना।
बिहारी वि० (हि) दे० 'विहारी'। पुं० बिहार का निवासी।
बिहाल वि० (हि) दे० 'बेहाल'।
बिहि पुं० (हि) ब्रह्मा। विधि।
बिहिश्त पुं० (फा) स्वर्ग। बैकुंठ। (मुसल०)।
बिहिश्ती पुं० (फा) १-भिश्ती। २-बिहिश्त का रहने वाला।
बिही पुं० (फा) १-एक वृक्ष विशेष जिसके फल अमरूद की तरह होते हैं। २-इस पेड़ के फल (मेवा)। ३-अमरूद।
बिहीदाना पुं० (फा) बिही का बीज।
बिहीन वि० (हि) दे० 'विहीन'।
बिहुरना क्रि० (हि) १-दे० 'बिछुरना'। २-छोड़ना।
बिहून वि० (हि) दे० 'विहीन'।
बिहोरना क्रि० (हि) बिछुड़ना।

बींदना क्रि० (हि) १-अनुमान करना। आंकना। २-अनुमान। बींधना।
बींधना क्रि० (हि) १-फँसना। उलझना। २-छेदना। बेधना।
बी स्त्री० (हि) १-बीबी। २-प्रतिष्ठित महिला।
बीका वि० (हि) टेढ़ा।
बीख पुं० (हि) १-पग। कदम। २-दे० 'विष'।
बीग पुं० (हि) भेड़िया।
बीघा पुं० (हि) भूमि, खेत का नाप जो बीस बिस्वे का होता है।
बीच पुं० (हि) १-किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य २-बीच का अन्तर। फासला। ३-अवसर। ४-अन्तर। भेद।
बीचि स्त्री० (हि) दे० 'वीचि'।
बीछना क्रि० (हि) चुनना। छांटना।
बीछी स्त्री० (हि) बिच्छू।
बीछू स्त्री० (हि) बिच्छू।
बीज पुं० (स) १-फूल या अनाज के वह दाने या फल की वह गुठली जिनसे वैसे ही नये पौधे उत्पन्न होते हैं। २-प्रधान कारण। ३-वीर्य। ४-हेतु। ५-मंत्र का प्रधान अंग। ६-बीजगणित। ७-अक्षर या ध्वनि।
बीजक पुं० (स) १-सूची। तालिका। २-वह सूची जिसमें माल का ब्योरा लिखा होता है। (इन-वोइस)। ३-बिजौरा नीबू।
बीजकोष पुं० (सं) फूलों का वह भाग जिसमें बीज भरा रहता है।
बीजगणित पुं०(सं) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मान कर अज्ञात संख्याएं मालूम की जाती हैं। (एल्जबरा)।
बीजगर्भ पुं० (स) परवल।
बीजन पुं० (हि) पंखा। बेना।
बीजना क्रि० (हि) दे० 'बोना'।
बीजरी स्त्री० (हि) दे० 'बिजली'।
बीजल वि० (सं) वह जिसमें बीज हो।
बीजांकुर पुं० (सं) अंकुर।
बीजांकुरन्याय पुं०(सं) वह यथार्थ कि बीज से अंकुर और अंकुर से बीज होता है और यही पदार्थों का नित्य प्रवाह है।
बीजा पुं० (हि) बीज। वि० (हि) अन्य। दूसरा।
बीजाक्षर पुं० (स) तंत्र में किसी बीज मंत्र का पहला अक्षर।
बीजी वि० (हि) १-बीज विषयक। २-बीज वाला। स्त्री० १-गिरी। २-गुठली। ३-बीजी। पुं० १-पिता २-सूर्य।
बीजु स्त्री० (हि) बिजली।
बीजुपात पुं० (हि) बिजली का गिरना।
बीजुरी स्त्री० (हि) बिजली।
बीजू वि० (हि) बीज से उत्पन्न। 'कलमी' का उलटा पुं० दे० 'विज्जू'।
बीझ वि० (हि) दे० 'बीभा'।
बीझना क्रि० (हि) लिप्त होना। फंसना।
बीझा वि० (हि) १-निर्जन। एकान्त (स्थान)। २-घना।
बीट स्त्री० (हि) चिड़ियों या पक्षियों की विष्ठा।
बीड़ स्त्री० (हि) एक के ऊपर एक रखे हुए सिक्कों की गड्डी।
बीड़ा पुं० (हि) १-तलवार को म्यान के पास बँधी रहने वाली डोरी। २-पान की गिलौरी।
बीड़ी स्त्री० (हि) १-पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूरा जिससे चुरुट आदि के समान धुआं कर पिया जाता है। २-छोटा बीड़ा। ३-गठरी। ४-एक प्रकार की नाव।
बीतना क्रि० (हि) १-समय गुजरना। २-दूर होना। ३-घटित होना। घटना। पड़ना।
बीता पुं० (हि) दे० 'बित्ता'।
बीती स्त्री० (हि) किसी पर बीती हुई बात। घटना। वृत्तांत।
बीथि स्त्री० (हि) दे० 'वीथी'।
बीथित वि० (हि) दे० 'व्यथित'।
बीथी स्त्री० (हि) दे० 'वीथी'।
बीधना क्रि० (हि) दे० 'बींधना'।
बीन स्त्री० (हि) १-वीणा। २-सपेरों के बजाने का तूमड़ा।
बीनकार पुं०(हि) १-वीणावादक। २-बीन बजाने-वाला।
बीनना क्रि० (हि) १-चुनना। २-छांटना। अलग करना। ३-बींधना। ४-बुनना।
बीफै पुं० (हि) बृहस्पतिवार।
बीबी स्त्री० (फा) १-कुलीन स्त्री। कुलवधू। २-पत्नी ३-स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। ४-अवि-वाहित लड़की। कन्या (आगरा)।
बीभत्स वि० (सं) १-घृणित। २-क्रूर। ३-पापी। पुं० काव्य के नवरसों में से सातवां जिसमें रक्त, मांस आदि का वर्णन होता है।
बीमा पुं० (फा) किसी प्रकार की हानि (विशेषतः आर्थिक) होने को अवस्था में कुछ रकम देने का उत्तरदायित्व जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में लिया जाता है। आगोप। (इन्श्योरेंस)।
बीमादार पुं०(फा) वह व्यक्ति जिसने बीमा कराया हो। (पॉलिसी होल्डर)।
बीमापत्रक पुं० (हि) बीमा करने वाली संस्था या बीमा कराने वाले व्यक्ति के बीच हुए समझौता का लिखित पत्रक। (इन्श्योरेंस पॉलिसी)।

बीमार पुं० (फा) रोगग्रस्त व्यक्ति । मरीज़ । वि० रोगी । आशिक ।
बीमारदारी स्त्री० (फा) रोगियों की सुश्रूषा ।
बीमारी स्त्री० (फा) १-रोग । व्याधि । २-झंझट । ३-बुरी आदत । लत ।
बीय वि० (हि) दे० 'बीज' ।
बीया वि० (हि) दे० 'दूसरा' । पुं० बीज । दाना ।
बीर वि० (हि) दे० 'वीर' । पुं० भ्रात । भाई । स्त्री० १-सखी । सहेली । २-कान का आभूषण । ३-कलाई में पहनने का गहना । ४-चरागाह । ५-स्त्री
बीरउ पुं० (हि) दे० 'बिरवा' ।
बीरज पुं० (हि) दे० 'वीर्य' ।
बीरन पुं० (हि) १-भाई । भ्राता । २-खस ।
बीरबहूटी स्त्री० (हि) एक छोटा रेंगने वाला कीड़ा जो लाल रंग का होता है । इन्द्रवधू ।
बीरा पुं० (हि) १-पान का बीड़ा । २-देवता के प्रसाद के रूप में भक्तों को मिलने वाला फल फूल
बीरी स्त्री० (हि) दे० 'बीड़ी' ।
बीरौ पुं०(हि) दे० 'बिरवा' ।
बील वि० (हि) पोला । अन्दर से खाली । पुं० १-बेल । २-नीची जमीन जहां पानी भरा रहता है ।
बीवी स्त्री० (फा) स्त्री । पत्नी । गृहिणी ।
बीस वि० (हि) उन्नीस और एक । २० ।
बीसबिस्वे अव्य० (हि) निश्चयपूर्वक । बहुत करके ।
बीसरना क्रि० (हि) भूलना । भूल जाना ।
बीसी स्त्री० (हि) १-बीस वस्तुओं का समूह । कोड़ी २-भूमि का एक नाप । ३-प्रति बीघे दो बिस्वे की उपज । ४-साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से एक
बीह वि० (हि) बीस ।
बीहड़ वि० (हि) १-जो सरल हो । २-ऊबड़-खाबड़ या ऊँचा-नीचा ।
बुंद स्त्री० (हि) १-बूँद । बिन्दु । कतरा । २-वीर्य । वि० (हि) थोड़ा सा । पुं० (हि) तीर ।
बुंदकी स्त्री० (हि) १-छोटी गोल बिन्दी । २-किसी वस्तु पर बना या पड़ा हुआ गोल धब्बा ।
बुंदकीदार वि०(हि) जिस पर बुंदकी बनी या लगी हों
बुंदेलखंड पुं०(हि) उत्तर प्रदेश का वह भाग जिसमें जालौन, झांसी, हमीरपुर, बांदे के जिले पड़ते हैं ।
बुंदेलखंडी वि० (हि) बुन्देलखंड का निवासी । स्त्री०(हि) बुन्देलखंड की भाषा ।
बुंदेला पुं० (हि) १-क्षत्रियों का एक वंश । २-बुन्देल वंश का कोई आदमी । ३-बुन्देलखंड का निवासी ।
बुंदौरी स्त्री० (हि) बुंदिया या बूंदी नामक मिठाई ।
बुआ स्त्री०(हि) दे० 'बूआ' ।
बुक स्त्री०(हि) एक प्रकार का कलफ दिया हुआ महीन कपड़ा । स्त्री० (अं) पुस्तक । पुं० (घ) हास्य ।
बुकचा पुं० (हि) १-गठरी जिसमें कपड़े बँधे हों ।
बुकची स्त्री० (हि) १-कपड़ों की छोटी गठरी । २-सूई डोरा रखने की दर्जी की थैली ।
बुकटा पुं० (हि) दे० 'बकोटा' ।
बुकनी स्त्री०(हि) १-किसी वस्तु का पिसा हुआ महीन चूर्ण । २-वह चूर्ण जिसे पानी में मिलाने पर रंग बनता है ।
बुकवा पुं० (देश) उबटना ।
बुकुना पुं० (हि) १-बुकनी । २-पाचक । चूर्ण ।
बुक्क पुं० (सं) १-हृदय । २-बकरा ।
बुक्कन पुं०(स) कुत्ते आदि जानवरों की बोली ।
बुक्का स्त्री०(सं) १-हृदय । कलेजा । २-गुरदे का मांस ३-बकरी । ४-रक्त । ५-अभ्रक का चूर्ण ।
बुखार पुं० (अ) १-भाप । वाष्प । २-ज्वर । ताप । ३-दुःख, क्रोध आदि का आवेग ।
बुगचा पुं० (तु) कपड़ों की गठरी ।
बुज़ पुं० (फा) बकरा । स्त्री०(फा) बकरी ।
बुज़कसाब पुं०(फा) क़साई । बूचड़ ।
बुज़दिल वि० (फा) कायर । डरपोक ।
बुज़दिली स्त्री०(फा) कायरता ।
बुज़ुर्ग वि० (फा) १-वृद्ध । बड़ा । २-पाजी । दुष्ट । पुं० (फा) बापदादा । पूर्वज ।
बुज़ुर्गाना वि० (फा) बुज़ुर्गों के अनुरूप ।
बुज़ुर्गी स्त्री० (फा) बड़प्पन । बुज़ुर्ग होने का भाव ।
बुझना क्रि० (हि) १-आग का आप से आप शांत हो जाना । २-ठंडा होना । ३-छौंका जाना । ४-पानी पड़ने या मिलने के कारण ठंडा होना । ५-मन का आवेग शांत होना । ६-मिटना । (प्यास) ।
बुझाई स्त्री० (हि) बुझाने की क्रिया या मजदूरी ।
बुझाना क्रि० (हि) १-अग्नि को शांत करना । २-तपी हुई वस्तु को जल डाल कर ठंडा करना । ३-पानी को छौंकना । ४- मन के आवेग को शांत करना । ५-किसी को बुझाने में प्रवृत्त करना । ६-बोध कराना । ज्ञात कराना । ७-सांत्वना देना ।
बुझौवल स्त्री० (हि) दे० 'पहेली' ।
बुट स्त्री० (हि) दे० 'बूटी' ।
बुटना क्रि० (हि) भागना । दौड़कर चला जाना ।
बुड़की स्त्री० (हि) डुबकी । गोता ।
बुड़ना क्रि० (हि) डूबना ।
बुड़भस स्त्री० (हि) बुढ़ापे में जवानी की उमंग ।
बुड़ाना क्रि० (हि) डुबाना ।
बुड़बुड़ाना क्रि० (हि) बड़-बड़ करना ।
बुड्ढा वि० (हि) बूढ़ा ।
बुढ़ाई स्त्री० (हि) बुढ़ापा ।
बुढ़ाना क्रि० (हि) बूढ़ा होना ।
बुढ़ापा पुं० (हि) वृद्धावस्था ।
बुढ़िया स्त्री० (हि) वृद्धा स्त्री ।
बुत पुं० (फा) १-मूर्ति । प्रतिमा । २-प्रियतम ।

बुतख़ाना पुं० (फ़ा) मंदिर।

बुत्ता पुं० (हि) १-धोखा। झाँसापट्टी। २-हीला। बहाना।
बुदबुद पुं० (सं) बुलबुला।
बुदबुदा पुं० (हि) पानी का बुलबुला।
बुद्ध वि० (सं) १-जो जागा हुआ हो। २-ज्ञानवान ३-विद्वान। पंडित। पुं० एक प्रसिद्ध महात्मा का नाम जो बौद्धधर्म के प्रवर्तक थे, ई० पू० ५५० में नेपाल की तराई में ... इनके पिता का नाम शुद्धोधन और मा... महामाया था।
बुद्धगया स्त्री० (सं) गया के पास का एक स्थान जहाँ बुद्ध को बोध प्राप्त हुआ था।
बुद्धत्व पुं० (सं) बुद्ध पद।
बुद्धधर्म पुं० (सं) बौद्ध-धर्म।
बुद्धपुराण पुं०(सं) शरारारचित 'ललितविस्तर'
बुद्धागम पुं० (सं) बौद्ध धर्म के सिद्धांत।
बुद्धि स्त्री० (सं) १-सोचने समझने की शक्ति। समझ (इन्टेलैक्ट)।
बुद्धिकौशल पुं०(सं) चतुराई।
बुद्धिगम्य वि० (सं) जो बुद्धि से समझा जा सके। समझ के भीतर।
बुद्धिग्राह्य वि० (सं) बुद्धिगम्य।
बुद्धिचक्षु पुं० (सं) धृतराष्ट्र।
बुद्धिजीवि-वर्ग पुं०(सं) बुद्धि बल से जीविका उपार्जन करने वाले लोगों का वर्ग। (इन्टेलिजेंशिया)।
बुद्धि-जीवी वि० (सं) जो केवल बुद्धि बल से ही जीविका चलाता हो।
बुद्धि-तत्त्व पुं० (सं) वह मानसिक तत्त्व या शक्ति जिससे समझने बूझने की क्षमता आती है। (इन्टेलैक्चुएलिटी)।
बुद्धि-दोष पुं० (सं) समझ की कमी।
बुद्धिपर वि० (सं) जो समझ से परे हो।
बुद्धि-पुरस्सर अव्य० (सं) इच्छापूर्वक। सोच समझ कर।
बुद्धिपूर्वक अव्य० (सं) दे० 'बुद्धि-पुरस्सर'।
बुद्धिबल पुं० (सं) बुद्धि का बल।
बुद्धिभ्रंश पुं० (सं) एक प्रकार का पागलपन जिसमें बुद्धि ठीक प्रकार से काम नहीं करती। (डिमे-... (रेशनेलिस्ट)।
बुद्धिविलास पुं०(सं) कल्पना।
बुद्धिवैभव पुं० (सं) बुद्धिबल।
बुद्धि-शक्ति स्त्री० (सं) मेधाशक्ति।
बुद्धिशाली वि० (सं) समझदार। बुद्धिमान।
बुद्धिहीन वि० (सं) जिसमें बुद्धि न हो। मूर्ख।

बुधजन पुं० (सं) विद्वान। पंडित।
बुधजामी पुं० (हि) बुध के पिता चांद।
बुधरत्न पुं० (हि) मरकतमणि। पन्ना।
बुधवान पुं० (हि) दे० 'बुद्धिमान'।
बुधवार पुं० (हि) मंगल और बृहस्पतिवार के बीच का दिन।
बुधि स्त्री० (हि) दे० 'बुद्धि'।
बुध्य वि० (सं) जानने योग्य।
बुनकर पुं० (हि) कपड़ा बुनने वाला। जुलाहा।
बुनना क्रि० (हि) १-करघे पर तागों से कपड़ा तैयार करना। २-यंत्र या सलाई से मोजे, बनियान आदि ऊनी या सूती तागों से तैयार करना। ३-कुर्सी, चारपाई आदि के बीच का खाली स्थान बेंत के छिलके या बान से भरना। ४-तागों से कोई वस्तु तैयार करना जैसे—जाल बुनना।
बुनवाना क्रि० (हि) बुनने के कार्य में दूसरे को प्रवृत्त करना।
बुनाई स्त्री० (हि) बुनने का कार्य या मजदूरी।
बुनावट स्त्री० (हि) बुनने का कार्य या ढंग।
बुनियाद स्त्री० (फ़ा) १-नींव। जड़। मूल। २-वास्तविकता।
बुनियादी वि० (फ़ा) १-मूल से सम्बन्धित। आधारित। २-प्रारंभिक।
बुबुकना क्रि० (हि) जोर-जोर से रोना।
बुबुकारी स्त्री० (हि) जोर-जोर से रोना।
बुभुक्षा स्त्री० (सं) क्षुधा। भूख।
बुभुक्षित वि० (सं) जिसे भूख लगी हो। भूखा।
बुभुक्षु वि० (सं) १-भूखा। २-सांसारिक सुख भोग

का बच्चुक।
बुर स्त्री० (हि) योनि। भग। (गाली में प्रयुक्त)।
बुरकना क्रि० (हि) किसी वस्तु पर चूर्ण आदि छिड़कना। भुरभुराना।
बुरका पुं० (अ) मुसलमान स्त्रियों का एक पहनावा जिसमें सिर से पैर तक सब अंग ढके जाते हैं। नकाब।
बुरकापोश वि० (अ) जो बुरका पहने हुए हो।
बुरा वि० (हि) १-जो अच्छा न हो। २-निकृष्ट। गंदा। खराब।
बुराई स्त्री० (हि) १-बुरा होने का भाव। बुरापन। २-नीचता। ३-निंदा। शिकायत।
बुरादा पुं० (फा) १-लकड़ी चीरने पर निकलने वाला चूरा। २-चूरा। ३-चूर्ण।
बुरापन पुं० (हि) दे० 'बुराई'।
बुराभला पुं० (हि) १-अच्छाई-बुराई। २-अपशब्द
बुरा वक्त पुं० (हि) कष्ट का समय।
बुरा हाल पुं० (हि) दुर्दशा।
बुरुश पुं० (अ) कूची की तरह की एक वस्तु जो दांत मांजने, रोगन करने, तसवीर बनाने तथा बाल सँवारने आदि के काम आती है और इसमें तार या बाल लगे होते हैं। (ब्रश)।
बुर्ज पुं० (हि) १-गरगज। २-मीनार का ऊपरी भाग ३-गुम्बारा। ४-राशिचक्र।
बुर्जतोप स्त्री० (हि) वह तोप जो चारों तरफ घूमने वाली बुर्ज पर लगी होती है। (टरैटगन)।
बुर्जी स्त्री० (हि) छोटा बुर्ज।
बुर्द स्त्री० (फा) १-ऊपरी लाभ। नफा। २-शर्त। होड़ ३-शतरंज के खेल में केवल बादशाह का रह जाना।
बुर्दाफरोश पुं० (फा) स्त्रियों को बहका कर बेचने वाला
बुलंद वि० (फा) ऊँचा।
बुलंद-इकबाल वि० (फा) सौभाग्यशाली।
बुलंद-हिम्मत वि० (फा) बहुत हिम्मत वाला।
बुलंदी स्त्री० (फा) ऊँचाई।
बुलबुल स्त्री० (अ) काले रङ्ग की एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुरीला बोलती है।
बुलबुलबाज पुं० (अ) बुलबुल पालने का शौकीन।
बुलबुला पुं० (हि) पानी का बुल्ला। बुदबुदा।
बुलवाना क्रि० (हि) बुलाने का काम दूसरों से कराना।
बुलाक पुं० (तु०) नथ में का लंबोतरा या सुराहीदार मोती।
बुलाकी पुं० (हि) घोड़े की एक जाति।
बुलाना क्रि० (हि) १-पुकारना। २-किसी को पास आने को कहना। ३-किसी को बोलने में प्रवृत्त करना
बुलावा पुं० (हि) निमंत्रण। बुलाने की क्रिया या भाव।
बुलौआ पुं० (हि) दे० 'बुलावा'।

बुल्ला पुं० (हि) दे० 'बुलबुला'।
बुहारना क्रि० (हि) झाड़ू लगाना। झाड़ना। स[...] करना।
बुहारी स्त्री० (हि) झाड़ू। सोहनी। बढ़नी।
बूँद स्त्री० (हि) १-किसी तरल पदार्थ या जल का कतरा। टोप। २-वीर्य। ३-बुँदकीदार कपड़ा
बूँदा पुं० (हि) १-बड़ी टिकली। २-कान का बुन्[...]
बूँदाबाँदी स्त्री० (हि) हलकी वर्षा।
बूँदी स्त्री० (हि) १-वर्षा के जल की बूँद। २-[...] प्रकार की बेसन की मिठाई।
बू स्त्री० (फा) १-गंध। बास। महक। २-दुर्गं[...] बदबू। ३-ढङ्ग। खानदान।
बूआ स्त्री० (हि) पिता की बहन। फूफी।
बूकना क्रि० (हि) १-महीन या बारीक पीसना। गढ़-गढ़ कर बातें करना।
बूचड़ पुं० (हि) कसाई। मांस बेचने वाला।
बूचड़खाना पुं० (हि) कसाईखाना।
बूचा वि० (हि) १-कटे हुए कान का। कनकटा। नंगा।
बूजना क्रि० (हि) १-धोखा देना। छिपाना। २-(छि[...] छेद आदि का) बन्द करना या मूँदना।
बूझ स्त्री० (हि) १-समझ। बुद्धि। २-पहेली। बु[...] पल।
बूझना क्रि० (हि) १-समझना। जानना। २-पं[...] का उत्तर निकालना।
बूट पुं० (हि) १-चने का हरा पौधा। २-चने का दाना। ३-बूटा। (अं) एक प्रकार का जूता।
बूटना क्रि० (हि) भागना।
बूटनि स्त्री० (हि) बीरबहूटी।
बूटा पुं० (हि) १-छोटा वृक्ष। पौधा। २-क[...] दीवार आदि पर बनाए हुए फूल पत्तियाँ।
बूटी स्त्री० (हि) वनस्पति। जड़ी। २-भांग। ३-[...] वस्तु पर बने फूल पत्तों के चिह्न।
बूड़ना क्रि० (हि) १-डूबना। गर्क होना। २-[...] होना।
बूड़ा पुं० (हि) जल आदि में डूब मरने वाला [...] जो प्रेत बन गया हो।
बूढ़ पुं० (हि) लालरङ्ग। बीरबहूटी। वि० (दे[...] बूढ़ा।
बूढ़ा पुं० (हि) दे० 'बुड्ढा'। स्त्री० बुढ़िया।
बूढ़ाखर्राट पुं० (हि) अनुभवी और चालाक व्यक्ति
बूढ़ाबोंग पुं० (हि) मूर्ख व्यक्ति।
बूढ़ाफूँस पुं० (हि) बहुत बूढ़ा।
बूता पुं० (हि) शक्ति। बल। सामर्थ्य।
बूदना क्रि० (हि) दे० 'बूड़ना'।
बूरा पुं० (हि) १-कच्ची चीनी। शक्कर। २-साफ[...] हुई चीनी। ३-चूर्ण।

बूंद पुं० (हि) दे० 'वृन्द'।
बृक पुं० (हि) १-भेड़िया। २-गीदड़।
बृक्ष पुं० (हि) वृक्ष। पेड़।
बृष पुं० (हि) दे० 'वृष'।
बृषकेतु पुं० (हि) शिव।
बृषध्वज पुं० (हि) शिव। महादेव।
बृषभ पुं० (हि) दे० 'वृषभ'।
बृहत् वि० (सं) १-बड़ा। विशाल। २-लम्बा-चौड़ा। (लार्ज)। ३-दृढ़। बलिष्ठ। ४-ऊँचा (स्वर)।
बृहत्कथा स्त्री० (सं) गुणाढ्य रचित कहानियों की पुस्तक।
बृहत्काय वि० (सं) बड़े डीलडौल वाला।
बृहत्तर वि० (सं) १-और अधिक बड़ा या विशाल। २-देश आदि से अधिक विस्तार का।
बृहन्नला स्त्री० (सं) अर्जुन का अज्ञातवास के समय का नाम।
बृहस्पति पुं० (सं) १-एक देवता का नाम जो देवताओं के गुरु माने जाते हैं। २-सौरमंडल के पांचवें ग्रह का नाम।
बृहस्पतिवार पुं० (सं) गुरुवार। बुधवार और शुक्रवार के बीच का दिन।
बेंग पु० (हि) मेंढक।
बेंच स्त्री० (अं) १-लोहे, लकड़ी आदि की बनी लम्बी चौकी। २-न्यायालय। ३-न्यायाधीश का आसन ४-मानसेवी। दंडाधिकारियों (ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट्स) का इजलास।
बेंट स्त्री०(हि) औजार आदि में काठ की लगी मूँठ।
बेंड़ स्त्री० (हि) भार को रोकने की टेक। चाँड़।
बेंड़ना क्रि० (हि) बन्द करना।
बेंड़ा वि० (हि) १-आड़ा। तिरछा। २-कठिन।
बेंड़ी स्त्री० (हि) खेत की सिंचाई करने के काम आने वाली बड़ी घास की टोकरी।
बेंत पुं० (हि) एक लता जिसके डंठलों से छड़ियाँ, टोकरियां बनती हैं। और छिलके आदि से कुर्सी आदि बनी जाती है।
बेंदा पुं० (हि) १-माथे पर का गोल तिलक। टीका। २-माथे की गोल टिकली। ३-एक माथे पर लगाने का आभूषण।
बेंदी स्त्री०(हि) १-टिकली। बिंदी। २-माथे पर लगाने का छोटा आभूषण।
बेंवड़ा पुं०(हि) १-किवाड़ के पीछे लगाई जाने वाली लकड़ी। २-अरगल।
बेंवर स्त्री० (हि) दे० 'ब्योंत'।
बे अव्य० (फा) बिना। बगैर।
बेअन्त वि० (फा) जिसका अंत न हो। अथाह।
बेअक्ल वि० (फा) नासमझ। मूर्ख।
बे-अक्ली स्त्री० (फा) नासमझी। मूर्खता।
बे-अदब वि०(फा) उद्दंड। जो बड़ों का अदब न करे
बे-अदबी स्त्री० (फा) उद्दंडता। बड़ों का सम्मान न करना।
बे-आब वि० (फा) जिस में चमक न हो। २-जिसकी प्रतिष्ठा न हो।
बे-आबरू वि० (फा) बेइज्जत।
बे-आबरूई स्त्री० (फा) बेइज्जती।
बे-इंसाफी स्त्री० (फा) अन्याय।
बे इज्जत वि० (फा) अपमानित। अप्रतिष्ठित।
बे इज्जती स्त्री०(फा) १-अप्रतिष्ठितता। २-अपमान।
बे-इल्म वि० (फा) जो पढ़ा लिखा न हो। जो कोई विद्या न जानता हो।
बे ईमान वि० (फा) १-अधर्मी। २-अविश्वासनीय। ३-छलकपट या अनाचार करने वाला।
बे-ईमानी स्त्री (फा) बेईमान होने का भाव।
बे-उज्र वि०(फा) जिसे कोई बात मानने या कोई कार्य करने में आपत्ति न हो।
बे-कद्री स्त्री० (फा) बेकद्र होने का भाव।
बे-करार वि० (फा) व्याकुल। विकल।
बे-करारी स्त्री०(फा) व्याकुलता। बेचैनी। घबराहट।
बे-कल वि०(फा) व्याकुल। बेचैन।
बे-कली स्त्री (फा) व्याकुलता। विकलता।
बे-कस वि० (फा) १-निआश्रय। निराश्रय। २-दीन अनाथ।
बे-कसी वि०(फा) दीनता। विवशता।
बे-कहा वि० (फा) किसी का कहा न मानने वाला। उद्दंड।
बे-कानूनी वि० (फा) नियमविरुद्ध।
बे काबू वि०(फा) १-लाचार। विवश। २-जो किसी के काबू में न हो।
बे-काम वि०(फा) दे० 'बेकार'।
बे-कायदगी स्त्री०(फा) अनियमितता।
बे कायदा वि०(फा) कायदे के खिलाफ। नियमविरुद्ध
बे-कार वि०(फा) १-निठल्ला। निकम्मा। २-निरर्थक व्यर्थ।
बे-कारी स्त्री०(फा) १-खाली या निकम्मा का भाव २-वह अवस्था जिसमें निर्वाह के लिये किसी के हाथ में कोई काम धंधा न हो। (अनएम्प्लायमेंट)
बे-कारूपो पुं० (हि) बुलाने का शब्द जैसे-अरे, ओ। आदि।
बे-कुसूर वि० (फा) निर्दोष।
बेख पु० (हि) १-भेस। स्वरूप। २-नकल। स्वांग।
बेखटके अव्य० (फा) बेधड़क। बिना संकोच या भय के।
बेखबर वि०(फा) १-अनजान। नावाकिफ। २-बेसुध बेहोश।
बेखबरी स्त्री० (फा) बेखबर होने का भाव। अज्ञानता

बेहोशी।
बेख़ुदी स्त्री० (फा) आत्मविस्मृति।
बेख़ौफ वि० (फा) निर्भय। निडर।
बेख़्वाबी स्त्री० (फा) निद्रा न आना।
बेग पुं० (हिं) दे० 'वेग'। पुं० (तु०) सरदार। पुं० (अ) चमड़े आदि का थैला।
बेगड़ी पुं० (देश) १-नगीना बनाने वाला। हीरा तराशने वाला।
बेगना क्रि० (हिं) जल्दी करना।
बेगपाइप पुं० (अं) बैंड बाजे के साथ बजने वाली बीन। मशकबीन।
बेगम स्त्री० (तु) १-स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। २-बड़े आदमी की पत्नी। रानी। ३-पत्नी। ४-एक तारा का पत्ता। वि० (फा) जिसे कोई चिंता न हो।
बेगर वि० (हिं) भिन्न। पृथक।
बेगाना वि० (फा) १-दूसरा। गैर। पराया। २-अनजान।
बेगार स्त्री० (फा) १-बिना मजदूरी दिये जबरदस्ती लिया जाने वाला काम। २-वह काम जो मन लगाकर न किया जाये।
बेगारी स्त्री० (फा) दे० 'बेगार'।
बेगि अव्य० (हिं) वेगपूर्वक। झटपट। तुरन्त।
बेगुनाह वि० (फा) निर्दोष। जिसने कोई पाप न किया हो।
बेघर वि० (फा) गृहहीन।
बेचक पुं० (हिं) बेचने वाला।
बेचना क्रि० (हिं) मूल्य लेकर बदले में कोई वस्तु देना विक्रय करना।
बेचवाना क्रि० (हिं) दे० 'बिकवाना'।
बेचवाल पुं० (हिं) दे० 'बेचू'।
बेचाना क्रि० (हिं) दे० 'बिकवाना'।
बेचारगी स्त्री० (फा) दीनता। विवशता।
बेचारा वि० (फा) जिसका कोई साथी या सहारा न हो। गरीब। दीन।
बेचिराग वि० (फा) उजड़ा हुआ। जहाँ दीया तक न जलता हो।
बेची स्त्री०(हिं) १-बेचने की क्रिया या भाव। २-बिक्री
बेचू पुं० (हिं) बेचने वाला।
बेचैन वि०(फा) व्याकुल। विकल। जिसे चैन न पड़ता हो।
बेचैनी स्त्री० (फा) व्याकुलता। विकलता।
बेचोबा पुं० (फा) बिना लंबे का तम्बू या खेमा।
बेजड़ वि०(फा) निर्मूल। जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो।
बेजबान वि० (फा) १-जिसमें बोलने की शक्ति न हो गूंगा। २-मूक। (जानवर)। ३-जो विरोध करना न जानता हो। दीन।
बेजा वि० (फा) अनुचित। ना-मुनासिब।
बेजान वि० (फा) १-निष्प्राण। मुरदा। मृतक। २-मुरझाया हुआ। ३-निर्बल।
बेजाब्ता वि० (फा) कानून या नियम के विरुद्ध।
बेजार वि० (फा) जो किसी बात से बहुत तंग आ गया हो।
बेजारी स्त्री० (फा) परेशानी।
बेजोड़ वि० (फा) १-अखंड। २-अद्वितीय। निराला। ३-जिसमें कोई जोड़ न हो।
बेझड़ पुं० (हिं) मटर, चना, गेहूँ, आदि मिला हुआ अन्न या ऐसी फसल।
बेझना क्रि० (हिं) बेधना। निशाना लगाना।
बेझा स्त्री० (हिं) निशाना। लक्ष्य।
बेटकी स्त्री० (हिं) दे० 'बेटी'।
बेटला पुं० (हिं) दे० 'बेटा'।
बेटवा पुं० (हिं) बेटा।
बेटा पुं० (हिं) पुत्र। सुत। लड़का।
बेटी स्त्री० (हिं) पुत्री। लड़की। कन्या।
बेटीवाला पुं० (हिं) कन्या का पिता।
बेटीव्यवहार पुं० (हिं) विवाह-सम्बन्ध।
बेठन पुं० (हिं) वह कपड़ा जो किसी वस्तु को धूल से बचाने के लिए उस पर चढ़ाया गया हो।
बेठिकाना वि० (फा) अविश्वासनीय। जिसका कोई ठौर न हो।
बेठिकाने वि० (फा) १-जो अपनी ठीक जगह पर न हो। २-व्यर्थ। निरर्थक।
बेड़ स्त्री० (हिं) दे० 'बाड़'।
बेड़ना क्रि० (हिं) बाड़ लगाना।
बेड़ा पुं० (हिं) १-नदी पार करने के लिए बड़े लट्ठों आदि का बनाया हुआ ढांचा। २-नाव। ३-जहाजों का समूह। वि० १-आड़ा। तिरछा। २-कठिन। विकट।
बेड़ी स्त्री० (हिं) १-लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों आदि के हाथ पैर बांधे रखने के लिए पहनाई जाती है। २-खेत में पानी डालने की टोकरी। ३-छोटी नाव।
बेडौल वि० (फा) १-कुरूप। भद्दा। २-बेढंगा। जो अपनी जगह न जंचे।
बेढंगा वि० (फा) जो ठीक प्रकार से सजाया या रखा न गया हो। बेतरतीब। २-कुरूप। भद्दा।
बेढ़ पुं० (हिं) १-नाश। बरबादी। २-वह कोई वस्तु जिसका अंकुर निकल आया हो।
बेढ़ई स्त्री० (हिं) पिट्ठी भर कर बनाई हुई कचौरी।
बेढ़ना क्रि० (हिं) १-रक्षा के लिए बाड़ बनाना। २-चौपायों को घेर कर हांक ले जाना।
बेढब वि० (फा) बेढंगा। भद्दा। कुरूप।

बेफायदा वि० (फा) जिससे कोई लाभ न हो। व्यर्थ का।
बेफिक्र वि० (फा) जिसे कोई चिन्ता न हो। निश्चिन्त
बेफिक्री स्त्री० (फा) निश्चिन्तता।
बेबस वि० (फा) पराधीन। परवश। लाचार।
बेबसी स्त्री० (फा) १-विवशता। लाचारी। परवशता
बेबाक वि० (फा) चुकता किया हुआ। (ऋण अथवा हिसाब)।
बेबाकी स्त्री० (हि) निर्भयता। धृष्टता। स्त्री० (फा) चुकता। बेबाक होना।
बेबुनियाद वि० (फा) निर्मूल।
बेब्याहा वि० (हि) कुँआरा। अविवाहित।
बेभाव अव्य० (हि) बेहद। बे हिसाब से।
बेमजा वि० (फा) जिसमें कोई स्वाद न हो। बद-जायका।
बेमतलब अव्य० (फा) बेकार। बिना किसी प्रयोजन के। वि० (फा) निरर्थक।
बेमन वि० (हि) जिसका मन न लगता हो।
बेमरम्मत वि० (फा) बिना सुधारा। टूटाफूटा।
बेमसरफ वि० (फा) जिसका कोई उपयोग न हो। निकम्मा।
बेमानी वि० (फा) निरर्थक।
बेमालूम वि० (फा) जो मालूम न पड़ता हो। अज्ञात
बेमिलावट वि० (फा) जिसमें मिलावट न हो। शुद्ध खालिस।
बेमुनासिब वि० (फा) अनुचित।
बेमुरोवत वि० (फा) जिसमें शील संकोच का अभाव हो। तोताचश्म।
बेमुरोवती स्त्री० (फा) बे मुरव्वत होने का भाव।
बेमेल वि० (फा) बेजोड़। जो मेल न खाता हो।
बेमौका वि०(फा) जो ठीक अवसर पर न हो। अयुक्त
बेमौत अव्य० (फा) बिना मौत आये (मरना)।
बेमौसिम वि० (फा) मौसम न होने पर भी होने वाला
बेयरा पुं० (हि) दे० 'बेरा'।
बेरंग वि० (फा) जिसमें कोई आनन्द न हो।
बेर पुं० (हि) १-एक मंझोले आकार का कंटीला वृक्ष जिसके फल की गुठली कड़ी होती है। २-इस वृक्ष का फल। स्त्री० (हि) १-दफा। बार। २-विलम्ब।
बेरहम वि० (फा) निर्दय। निष्ठुर।
बेरहमी स्त्री० (फा) निर्दयता। निष्ठुरता।
बेरा पुं० (हि) १-समय। बेला। २-तड़का। भोर। ३-कच्चा कूआँ। ४-दे० 'बेड़ा'। पुं० (देश) एक में मिला जौ और चना। पुं०(अं) साहब लोगों का चपरासी।
बेराम वि० (देश) दे० 'बीमार'।
बेराह वि० (फा) पथभ्रष्ट।
बेरी स्त्री० (हि) १-दे० 'बेड़ी'। २-नाव।

बेरुख वि० (फा) १-बे मुरव्वत। २-नाराज। क्रुद्ध।
बेरुखी स्त्री० (फा) अवसर पड़ने पर मुंह फेर लेना। उपेक्षा।
बेरोकटोक अव्य० (फा) बिना किसी खटके के।
बेरोजगार वि० (फा) जिसके पास कोई काम-धंधा न हो।
बेरोजगारी स्त्री० (फा) बेकारी।
बेरौनक वि० (फा) उदास। जिस पर रौनक न हो।
बेलंद वि० (हि) ऊँचा।
बेलंब पुं० (हि) दे० 'विलंब'।
बेल पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके फल का छिलका कड़ा होता है। २-इस वृक्ष का फल। बिल्व श्रीफल। स्त्री० १-लता। वल्ली। २-सन्तान। वंश। ३-नाव खेने का डांड। ४-फीते पर बना रेशमी या जरदोजी का काम। ५-विवाह आदि पर नेगियों को दिया जाने वाला धन। ६-लम्बाई के बल में कपड़े पर बनी फूल पत्तियां। ७-एक प्रकार की कुदाली।
बेलगाम वि० (फा) सरकश। मुंहजोर।
बेलगिरी स्त्री० (हि) बेल के फल का गूदा।
बेलचा पुं० (फा) एक प्रकार की छोटी कुदाली।
बेलज्जत वि० (फा) स्वादरहित।
बेलड़ी स्त्री०(हि) छोटी बेल या लता।
बेलदार पुं० (फा) फावड़ा चलाने या जमीन खोदने वाला मजदूर।
बेलदारी स्त्री० (फा) फावड़े से भूमि खोदने का काम
बेलन पुं० (हि) १-लम्बोतरे आकार का पत्थर या लोहे का भारी गोल खंड जिससे कोई स्थान समतल करते या कंकर आदि कूटकर सड़क बनाते हैं (रोलर)। २-काठ का गोल दस्ता जिससे रोटी आदि बेली जाती है। ३-इस प्रकार का कोई बड़ा पुर्जा जो यन्त्रों में लगता है।
बेलनदार वि० (हि) जिसमें बेलन लगा हो।
बेलना पुं०(हि) दे० 'बेलन'। क्रि० रोटी बनाने के लिए चकले पर लोई रखकर पतला करना।
बेलपत्ती स्त्री० (हि) दे० 'बेलपत्र'।
बेलपत्र पुं० (हि) बेल के वृक्ष की पत्तियां।
बेलपात पुं० (हि) दे० 'बेलपत्र'।
बेलबूटा पुं० (हि) कागज, दीवार, कपड़े आदि पर बनाई गई फूल पत्तियां।
बेलरी स्त्री० (हि) दे० 'बेल'।
बेलवाना क्रि० (हि) दूसरे को बेलने के लिए प्रवृत्त करना।
बेलसना क्रि० (हि) सुख या आनन्द लूटना। भोग-करना।
बेला पुं० (हि) १-चमेली के समान सुगंध वाला एक पौधा। २-लहर। ३-समय। ४-कटोरा। ५-समुद्र

का किनारा। ६-एक वाद्ययन्त्र।
बेलाग वि० (फा) १-बिना आधार का। २-बिलकुल अलग। ३-व्यवहार में खरा।
बेलि स्त्री० (हि) दे० 'बेल'।
बेलिहाज वि० (फा) निर्लज्ज।
बेली पुं० (हि) सङ्गी। साथी।
बेनुत्फ वि० (फा) बेमजा। रसरहित।
बेलुत्फी स्त्री० (फा) आनन्द या मजा न आना।
बेलौस वि० (फा) १-सच्चा। खरा। २-बेमुरव्वत।
बेलौसी स्त्री० (फा) सच्चापन। सचाई। निष्पक्षता।
बेवक्त वि० (फा) तुच्छ। प्रतिष्ठा रहित।
बेवकूफ वि० (फा) मूर्ख। नासमझ। निर्बुद्धि।
बेवक्त अव्य० (फा) कुसमय में।
बेवट स्त्री० (हि) १-संकट। २-विषमता।
बेवपारी पुं० (देश) 'व्यापारी'।
बेवफा वि० (फा) १-कृतघ्न। २-दुःशील। ३-उप-कार न मानने वाला।
बेवफाई स्त्री० (फा) कृतघ्नता। बेवफा होने का भाव
बेवरा पुं० (हि) विवरण। ब्योरा।
बेवरेवार वि० (हि) विवरणसहित। ब्योरेवार।
बेवसाउ पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
बेवस्था स्त्री० (हि) दे० 'व्यवस्था'।
बेवहरना क्रि० (हि) बरताव करना। बरतना।
बेवहरिया पुं० (हि) १-लेन देन करने वाला। महा-जन। २-मुनीम।
बेवहार पुं० (हि) दे० 'व्यवहार'।
बेवा स्त्री० (फा) विधवा'।
बेवाई स्त्री० (हि) दे० 'बिवाई'।
बेवान पुं० (हि) दे० 'विमान'।
बेश वि० (फा) अधिक। ज्यादा।
बेशऊर वि० (फा) फूहड़। मूर्ख।
बेशक अव्य० (फा) बिना किसी संदेह के। अवश्य। निःसन्देह।
बेशकीमत वि० (फा) मूल्यवान। बहुमूल्य।
बेशकीमती वि० (फा) दे० 'बेशकीमत'।
बेशर्म वि० (फा) निर्लज्ज। बेहया।
बेशर्मी स्त्री० (फा) निर्लज्जता। बेहयापन।
बेशी स्त्री० (फा) १-अधिकता। लाभ।
बेशुमार वि० (फा) अगणित। असंख्य।
बेसम पुं० (हि) घर। निवास स्थान।
बेसंदर पुं० (हि) अग्नि।
बेसंभर वि० (हि) बेसुध। बेहोश।
बेस पुं० (हि) दे० 'बेश'।
बेसन पुं० (हि) चने की दाल का पिसा हुआ आटा।
बेसनी वि०(हि) बेसन का बना हुआ। स्त्री० १-बेसन की पूरी। २-वह कचौरी जिसमें बेसन भरा हो।
बेसबब अव्य० (फा) अकारण।
बेसबरा वि० (फा) दे० 'बेसब्र'।
बेसबरी स्त्री० (फा) असंतोष। अधैर्य।
बेसब्र वि० (फा) जिसमें धीरज न हो।
बेसब्री स्त्री० (फा) अधैर्य। अधीरता।
बेसमझ वि० (फा) मूर्ख। नासमझ।
बेसर पुं०(हि) खच्चर। स्त्री० नाक में पहनने की नथ वि० आश्रयरहित।
बेसरा वि० (फा) आश्रयहीन। पुं० (देश) एक प्रकार का शिकारी पक्षी।
बेसरोसामान वि० (फा) जिसके पास कुछ भी सामग्री न हो। निर्धन। कंगाल।
बेसलीका वि० (फा) फूहड़।
बेसवा स्त्री० (हि) वेश्या। रंडी।
बेसवारन पुं० (हि) वेश्यावृत्ति।
बेसहना क्रि० (हि) मोल लेना।
बेसा स्त्री० (हि) वेश्या।
बेसामान वि० (फा) जिसके पास माल असबाब या उपकरण न हों।
बेसारा वि० (हि) बैठाने, रखने या जमाने वाला।
बेसाहना क्रि० (हि) १-खरीदना। २-जानबूझकर अपने सिर लेना। (बैर संकट आदि)।
बेसाहिनी स्त्री० (हि) मोल लेने की क्रिया।
बेसाहा पुं० (हि) खरीदा हुआ माल। सौदा।
बेसिलसिला वि० (फा) अव्यवस्थित। किसी क्रम के बिना।
बेसिलसिले अव्य० (फा) बिना क्रम के।
बेसी वि० (फा) अधिक। ज्यादा।
बेसुध वि०(हि) अचेत। बदहवास।
बेसुधी स्त्री० (हि) अचेतनता। बेखबरी।
बेसुर वि० (हि) जिसका स्वर ठीक न हो (सङ्गीत)।
बेसुरा वि०(हि)१-जो नियमित स्वर में न हो (संगीत) २-बेमौका।
बेसूद वि० (फा) व्यर्थ। जिसमें कोई लाभ न हो।
बेस्या स्त्री० (देश०) वेश्या।
बेस्वाद वि० (हि) १-स्वाद रहित। २-जिसका स्वाद खराब हो।
बेहँसना क्रि० (हि) जोर से हँसना।
बेह पुं० (हि) छेद। सूराख। वि०(फा) भला। अच्छा
बेहड़ वि० (हि) दे० 'बीहड़'। पुं० जंगल आदि का विकट स्थान।
बेहकीकत वि० (फा) उपेक्षा के योग्य। तुच्छ।
बेहतर वि० (फा) अपेक्षाकृत ठीक या अच्छा। अव्य०। स्वीकृतिसूचक शब्द। अच्छा।
बेहतरी स्त्री० (फा) अच्छापन। भलाई।
बेहद वि० (फा) असीम। अपार। बहुत अधिक।
बेहना पुं० (हि) १-धुनिया। रुई धुनने वाले जुलाहों की एक छोटी जाति।

बेफायदा वि० (फा) जिससे कोई लाभ न हो। व्यर्थ का।
बेफिक्र वि० (फा) जिसे कोई चिन्ता न हो। निश्चिन्त
बेफिक्री स्त्री० (फा) निश्चिन्तता।
बेबस वि० (फा) पराधीन। परवश। लाचार।
बेबसी स्त्री० (फा) १-विवशता। लाचारी। परवशता
बेबाक वि० (फा) चुकता किया हुआ। (ऋण अथवा हिसाब)।
बेबाकी स्त्री० (हि) निर्भयता। धृष्टता। स्त्री० (फा) चुकता। बेबाक होना।
बेबुनियाद वि० (फा) निर्मूल।
बेब्याहा वि० (हि) कुँआरा। अविवाहित।
बेभाव अव्य० (हि) बेहद। बे हिसाब से।
बेमजा वि० (फा) जिसमें कोई स्वाद न हो। बद-जायका।
बेमतलब अव्य० (फा) बेकार। बिना किसी प्रयोजन के। वि० (फा) निरर्थक।
बेमन वि० (हि) जिसका मन न लगता हो।
बेमरम्मत वि० (फा) बिना सुधारा। टूटाफूटा।
बेमसरफ वि० (फा) जिसका कोई उपयोग न हो। निकम्मा।
बेमानी वि० (फा) निरर्थक।
बेमालूम वि० (फा) जो मालूम न पड़ता हो। अज्ञात
बेमिलावट वि० (फा) जिसमें मिलावट न हो। शुद्ध खालिस।
बेमुनासिब वि० (फा) अनुचित।
बेमुरौवत वि० (फा) जिसमें शील संकोच का अभाव हो। तोताचश्म।
बेमुरौवती स्त्री० (फा) बे मुरव्वत होने का भाव।
बेमेल वि० (फा) बेजोड़। जो मेल न खाता हो।
बेमौका वि०(फा) जो ठीक अवसर पर न हो। अयुक्त
बेमौत अव्य० (फा) बिना मौत आये (मरना)।
बेमौसिम वि० (फा) मौसम न होने पर भी होने वाला
बेयरा पुं० (हि) दे० 'बेरा'।
बेरंग वि० (फा) जिसमें कोई आनन्द न हो।
बेर पुं० (हि) १-एक मंझोले आकार का कंटीला वृक्ष जिसके फल की गुठली कड़ी होती है। २-इस वृक्ष का फल। स्त्री० (हि) १-दफा। बार। २-विलम्ब।
बेरहम वि० (फा) निर्दय। निष्ठुर।
बेरहमी स्त्री० (फा) निर्दयता। निष्ठुरता।
बेरा पुं० (हि) १-समय। वेला। २-तड़का। भोर। ३-कच्चा कूआँ। ४-दे० 'बेड़ा'। पुं० (देश) एक में मिला जो और चना। पुं०(अं) साहब लोगों का चपरासी।
बेराम वि० (देश) दे० 'बीमार'।
बेराह वि० (फा) पथभ्रष्ट।
बेरी स्त्री० (हि) १-दे० 'बेड़ी'। २-नाव।
बेरुख वि० (फा) १-बे मुरव्वत। २-नाराज। क्रुद्ध।
बेरुखी स्त्री० (फा) अवसर पड़ने पर मुंह फेर लेना। उपेक्षा।
बेरोकटोक अव्य० (फा) बिना किसी खटके के।
बेरोजगार वि० (फा) जिसके पास कोई काम-धंधा न हो।
बेरोजगारी स्त्री० (फा) बेकारी।
बेरौनक वि० (फा) उदास। जिस पर रौनक न हो।
बेलंद वि० (हि) ऊँचा।
बेलंब पुं० (हि) दे० 'विलंब'।
बेल पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके फल का छिलका कड़ा होता है। २-इस वृक्ष का फल। बिल्व श्रीफल। स्त्री० १-लता। वल्ली। २-सन्तान। वंश। ३-नाव खेने का डांड। ४-फीते पर बना रेशमी या जरदोजी का काम। ५-विवाह आदि पर नेगियों को दिया जाने वाला धन। ६-लम्बाई के बल में कपड़े पर बनी फूल पत्तियां। ७-एक प्रकार की कुदाली।
बेलगाम वि० (फा) सरकश। मुंहजोर।
बेलगिरी स्त्री० (हि) बेल के फल का गूदा।
बेलचा पुं० (फा) एक प्रकार की छोटी कुदाली।
बेलज्जत वि० (फा) स्वादरहित।
बेलड़ी स्त्री०(हि) छोटी बेल या लता।
बेलदार पुं० (फा) फावड़ा चलाने या जमीन खोदने वाला मजदूर।
बेलदारी स्त्री० (फा) फावड़े से भूमि खोदने का काम
बेलन पुं० (हि) १-लम्बोतरे आकार का पत्थर या लोहे का भारी गोल खंड जिससे कोई स्थान समतल करते या कंकर आदि कूटकर सड़क बनाते हैं (रोलर)। २-काठ का गोल दस्ता जिससे रोटी आदि बेली जाती है। ३-इस प्रकार का कोई बड़ा पुर्जा जो यन्त्रों में लगता है।
बेलनदार वि० (हि) जिसमें बेलन लगा हो।
बेलना पुं०(हि) दे० 'बेलन'। क्रि० रोटी बनाने के लिए चकले पर लोई रखकर पतला करना।
बेलपत्ती स्त्री० (हि) दे० 'बेलपत्र'।
बेलपत्र पुं० (हि) बेल के वृक्ष की पत्तियां।
बेलपात पुं० (हि) दे० 'बेलपत्र'।
बेलबूटा पुं० (हि) कागज, दीवार, कपड़े आदि पर बनाई गई फूल पत्तियां।
बेलरी स्त्री० (हि) दे० 'बेल'।
बेलवाना क्रि० (हि) दूसरे को बेलने के लिए प्रवृत्त करना।
बेलसना क्रि० (हि) सुख या आनन्द लूटना। भोग-करना।
बेला पुं० (हि) १-चमेली के समान सुगंध वाला एक पौधा। २-लहर। ३-समय। ४-कटोरा। ५-समुद्र

का किनारा। ६-एक बाद्ययन्त्र।
बेनाग वि० (फा) १-बिना आधार का। २-बिल्कुल अलग। ३-व्यवहार में खरा।
बेनि स्त्री० (हि) दे० 'वेत'।
बेनिहाज वि० (फा) निर्लज्ज।
बेनी पुं० (हि) सङ्गी। साथी।
बेनुत्फ वि० (फा) बेमजा। रसरहित।
बेनुत्फी स्त्री० (फा) आनन्द या मजा न आना।
बेनोस वि० (फा) १-सच्चा। खरा। २-बेमुरव्वत।
बेनोमी स्त्री० (फा) खरापन। सचाई। निष्पक्षता।
बेवकत वि० (फा) तुच्छ। प्रतिष्ठा रहित।
बेवकूफ वि० (फा) मूर्ख। नासमझ। निर्बुद्धि।
बेवक्त अव्य० (फा) कुसमय में।
बेवट स्त्री० (हि) १-संकट। २-विवशता।
बेवपारी पुं० (देश) 'व्यापारी'।
बेवफा वि० (फा) १-कृतघ्न। २-दुःशील। ३-उप-कार न मानने वाला।
बेवफाई स्त्री० (फा) कृतघ्नता। बेवफा होने का भाव
बेवरा पुं० (हि) विवरण। ब्योरा।
बेवरेवार वि० (हि) विवरणसहित। ब्योरेवार।
बेवसाउ पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
बेवस्था स्त्री० (हि) दे० 'व्यवस्था'।
बेवहरना क्रि० (हि) बरताव करना। बरतना।
बेवहरिया पुं० (हि) १-लेन देन करने वाला। महाजन। २-मुनीम।
बेवहार पुं० (हि) दे० 'व्यवहार'।
बेवा स्त्री० (फा) विधवा।
बेवाई स्त्री० (हि) दे० 'बिवाई'।
बेवान पुं० (हि) दे० 'विमान'।
बेश वि० (फा) अधिक। ज्यादा।
बेशऊर वि० (फा) फूहड़। मूर्ख।
बेशक अव्य० (फा) बिना किसी संदेह के। निःसंदेह।
बेशकीमत वि० (फा) मूल्यवान। बहुमूल्य।
बेशकीमती वि० (फा) दे० 'बेशकीमत'।
बेशर्म वि० (फा) निर्लज्ज। बेहया।
बेशर्मी स्त्री० (फा) निर्लज्जता। बेहयापन।
बेशी स्त्री० (फा) १-अधिकता। लाभ।
बेशुमार वि० (फा) अपरिमित। असंख्य।
बेश्म पुं० (हि) घर। निवास। स्थान।
बेसंदर पुं० (हि) अग्नि।
बेसँभर वि० (हि) बेसुध। बेहोश।
बेस पुं० (हि) दे० 'वेश'।
बेसन पुं० (हि) चने की दाल का पिसा हुआ आटा।
बेसनी वि०(हि) बेसन का बना हुआ। स्त्री० १-बेसन की पूरी। २-वह कचौरी जिसमें बेसन भरा हो।
बेसबब अव्य० (फा) अकारण।

बेसबरा वि० (फा) दे० 'बेसब्र'।
बेसबरी स्त्री० (फा) असंतोष। अधैर्य।
बेसब्र वि० (फा) जिसमें धीरज न हो।
बेसब्री स्त्री० (फा) अधैर्य। अधीरता।
बेसमझ वि० (फा) मूर्ख। नासमझ।
बेसर पुं०(हि) खच्चर। स्त्री० नाक में पहनने की नथ वि० आश्रयरहित।
बेसरा वि० (फा) आश्रयहीन। पुं० (देश) एक प्रकार का शिकारी पक्षी।
बेसरोसामान वि० (फा) जिसके पास कुछ भी सामग्री न हो। निर्धन। कंगाल।
बेसलीका वि० (फा) फूहड़।
बेसवा स्त्री० (हि) वेश्या। रंडी।
बेसवापन पुं० (हि) वेश्यावृत्ति।
बेसहना क्रि० (हि) मोल लेना।
बेसा स्त्री० (हि) वेश्या।
बेसामान वि० (फा) जिसके पास माल असबाब या उपकरण न हों।
बेसारा वि० (हि) बैठाने, रखने या जमाने वाला।
बेसाहना क्रि० (हि) १-खरीदना। २-जानबूझकर अपने सिर लेना। (बैर संकट आदि)।
बेसाहिनी स्त्री० (हि) मोल लेने की क्रिया।
बेसाहा पुं० (हि) खरीदा हुआ माल। सौदा।
बेसिलसिला वि० (फा) अव्यवस्थित। किसी क्रम के बिना।
बेसिलसिले अव्य० (फा) बिना क्रम के।
बेसी वि० (फा) अधिक। ज्यादा।
बेसुध वि०(हि) अचेत। बदहवास।
बेसुधी स्त्री० (हि) अचेतनता। बेखबरी।

बेसूद वि० (फा) व्यर्थ। जिससे कोई लाभ न हो।
बेस्या स्त्री० (देश०) वेश्या।
बेस्वाद वि० (हि) १-स्वाद रहित। २-जिसका स्वाद खराब हो।
बेहँसना क्रि० (हि) जोर से हँसना।
बेह पुं० (हि) छेद। सुराख। वि०(फा) भला। अच्छा।
बेहड़ वि० (हि) दे० 'बीहड़'। पुं० जंगल आदि का विकट स्थान।
बेहकीकत वि० (फा) जिसकी कोई कीमत न हो। तुच्छ।
बेहतर वि० (फा) अपेक्षाकृत ठीक या अच्छा। अव्य० स्वीकृतिसूचक शब्द। अच्छा।
बेहतरी स्त्री० (फा) अच्छापन। भलाई।
बेहद वि० (फा) असीम। अपार। बहुत अधिक।
बेहना पुं० (हि) १-धुनिया। रुई धुनने वाला। २-जुलाहों की एक छोटी जाति।

बोधना क्रि० (हि) १–समझाना। ज्ञान देना। २–जताना।
बोधनीय वि० (सं) समझाने योग्य।
बोधि पुं० (सं) १–पूर्ण ज्ञान। २–पीपल का पेड़। ३–समाधि भेद।
बोधित वि० (सं) ज्ञापित। जनाया हुआ।
बोधितरु पुं० (सं) गया में स्थित वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे भगवान बुद्ध को बोध या ज्ञान प्राप्त हुआ था।
बोधितव्य वि० (सं) जताने या समझाने योग्य।
बोधिद्रुम पुं० (सं) दे० 'बोधितरु'।
बोधिवृक्ष पुं० (सं) दे० 'बोधितरु'।
बोधिसत्व पुं० (सं) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो परन्तु बुद्ध न हो सका हो। (महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम)।
बोध्य वि० (सं) समझाने योग्य।
बोनस पुं० (अं) १–वह धन जो किसी कर्मचारी को उसके पारिश्रमिक या वेतन के अतिरिक्त दिया जाय २–सीमित समवाय द्वारा हिस्सेदारों को दिया जाने वाला अतिरिक्त लाभ।
बोना क्रि० (हि) १–खेत में उपजने के लिए बीज बखेरना। २–किसी बात का सूत्रपात करना।
बोनी स्त्री० (हि) बोने की क्रिया या बोने का मौसम।
[illegible] पुं० (हि) १–स्तन। थन। २–घर का समान। [illegible]
[illegible] ० (देश) दे० 'बू'।
[illegible] स्त्री० (हि) डुबोने की क्रिया। डुबाव।
बोरका पुं० (हि) दवात।
बोरना क्रि० (हि) १–डुबाना। २–डुबा कर भिगोना। ३–घुले रङ्ग में डुबा कर रंगना। ४–नष्ट करना। (मर्यादा)।
बोरसी स्त्री० (देश) अँगीठी।
बोरा पुं० (हि) १–अनाज आदि भर कर रखने का टाट का बड़ा थैला। २–घुंघरू।
बोरिया स्त्री० (हि) छोटा थैला। पुं० (फा) १–बिस्तर २–चटाई।
बोरी स्त्री० (हि) टाट का छोटा थैला या बोरा।
बोर्ड पुं० (अं) १–किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति। मंडल। २–कागज की मोटी दफ्ती। ३–कमेटी।
बोल पुं० (हि) १–मुख से उच्चारण किया हुआ शब्द वचन। वाणी। २–व्यंग। ताना। ३–गीत या बाजे के बंधे हुए शब्द। ३–प्रतिज्ञा। ४–संख्या।
बोलचाल स्त्री० (हि) १–बातचीत। साधारण भाषा। २–बोलने का विशेष ढंग।
बोलता पुं० (हि) १–आत्मा। २–जीवनतत्व। प्राण ३–मनुष्य। वि० खूब बोलने वाला। वाचाल।
बोलती स्त्री० (हि) बोलने की शक्ति। वाणी।
बोलनहारा वि०(हि) बोलने वाला। पुं०दे० 'बोलता'
बोलना क्रि० (हि) १–मुंह से शब्द निकालना। उच्चारण। २–किसी वस्तु से शब्द उत्पन्न करना या निकलना। ३–कुछ कहना। ४–बाकी न रहना। ५–जीर्ण होना। ६–हार मान लेना। ७–उत्तर में कुछ कहना। ८–पुकारना। ९–छेड़छाड़ करना।
बोलपट पुं० (हि) वह चल-चित्र जिसमें पात्रों के संवाद आदि भी सुनाई देते हों। (टॉकी)।
बोलवाना क्रि० (हि) उच्चारण कराना।
बोलसर पुं० (हि) १–मौलसरी। २–एक प्रकार का घोड़ा।
बोलाचाली पुं०(हि) बोलचाल।
बोलावा पुं० (हि) निमंत्रण। बुलावा।
बोली स्त्री० (हि) १–किसी प्राणी से निकला हुआ शब्द। वाणी। २–सार्थक बात। ३–नीलाम में जोर से चिल्ला कर दाम लगाना। ४–किसी विशेष स्थान पर बना शब्दों का उच्चारण करने का ढंग जिसका व्यवहार केवल बातचीत में होता है पर साहित्य में नहीं। (डाइलेक्ट)।
बोलीठोली स्त्री० (हि) व्यंग। कटाक्ष।
बोलीदार पुं० (हि) वह आसामी जिसे खेत बिना किसी लिखत-पढ़त के दिया गया हो।
बोल्शेविक (रूसी) रूस के साम्यवादी दल का अग्रगामी या चरमपंथी सदस्य।
बोल्शेविज्म पुं० (अं) रूस के साम्यवादी दल के चरमपंथी दल का एक सिद्धांत।
बोवाई स्त्री० (हि) दे० 'बोआई'।
बोवाना क्रि० (हि) बोने के काम में दूसरे को प्रवृत्त करना।
बोह स्त्री० (देश) डुबकी।
बोहनी स्त्री० (हि) किसी दिन की पहली बिक्री।
बोहित पुं० (हि) बड़ी नाव। जहाज।
बोहित्य पुं० (हि) दे० 'बोहित्थ'।
बौंड़ स्त्री०(हि) १–लता। बेल। २–दूर तक फैली लम्बी टहनी।
बौंड़ना क्रि०(हि) १–बेल की तरह फैलाना। २–टहनी फेंकना।
बौंड़र पुं० (हि) दे० 'बवंडर'।
बौंड़ी स्त्री० (हि) १–पौधों या लताओं का कच्चा फल या कलियां। २–फली। ३–दमड़ी।
बौआना क्रि० (हि) स्वप्न अवस्था में कुछ कहना।
बौखल वि० (हि) सनकी। पागल।
बौखलाना क्रि० (हि) क्रोध में आकर अण्डबण्ड बातें करना।
बौखलाहट स्त्री० (हि) क्रोधावेश। बदहवासी।
बौछाड़ स्त्री० (हि) दे० 'बौछार'।

बौछार स्त्री० (हि) १-हवा के झोंके से आने वाली झड़ी। २-किसी वस्तु का अधिक मात्रा या संख्या में आकर गिरना। ३-लगातार कटु आलोचना की बातें।
बौड़ना क्रि० (हि) दे० 'बौराना'।
बौड़म वि०(हि) नासमझ। मूर्ख। पागल। पुं० पागल व्यक्ति।
बौड़हा वि० (हि) दे० 'बौड़म'।
बौद्ध वि० (सं) महात्मा बुद्ध द्वारा प्रचलित। पुं० गौतम बुद्ध के चलाये हुए धर्म का अनुयायी।
बौद्धधर्म पुं० (सं) महात्मा बुद्ध द्वारा चलाया गया धर्म।
बौद्धमत पुं० (सं) दे० 'बौद्धधर्म'।
बौना पुं० (हि) बहुत ठिगना आदमी। नाटा मनुष्य।
बौर पुं० (हि) १-आम की मंजरी। २-मौर।
बौरई स्त्री० (हि) पागलपन।
बौरना क्रि० (हि) आम की मंजरी निकलना।
बौरहा वि० (हि) पागल। विक्षिप्त। बावला।
बौरा वि० (हि) १-बावला। पागल। २-भोला। ३-मूर्ख। ४-गूँगा।
बौराई स्त्री० (हि) पागलपन।
बौराना क्रि० (हि) १-विक्षिप्त या पागल हो जाना। २-किसी को पागल बनाना। बेवकूफ बनाना।
बौराह वि० (हि) बावला। पागल।
बौरी स्त्री० (हि) बावली स्त्री।
बौहर स्त्री० (हि) बधू। दुलहिन।
ब्यंग पुं० (हि) दे० 'व्यंग'।
ब्यंजन पुं० (हि) दे० 'व्यंजन'।
ब्यक्ति स्त्री० (हि) दे० 'व्यक्ति'।
ब्यवसाय पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
ब्यवहरिया पुं०(हि) लेनदेन करने वाला। महाजन।
ब्यवहार पुं० (हि) १-दे० 'व्यवहार'। २-रुपये का लेनदेन।
ब्यवहारी वि० (हि) लेनदेन करने वाला। व्यापारी। व्यवहार करने वाला।
ब्यसन पुं० (हि) दे० 'व्यसन'।
ब्याज पुं० (हि) १-वह धन जो मूलधन पर मिलता है सूद। २-दे० 'व्याज'।
ब्याजबट्टा पुं० (हि) लाभ-हानि।
ब्याजू वि० (हि) ब्याज पर लगाया हुआ (धन)।
ब्याध पुं० (हि) दे० 'व्याध'।
ब्याधा स्त्री० (हि) दे० 'व्याधि'।
ब्याधि स्त्री० (हि) दे० 'व्याधि'।
ब्याना क्रि०(हि) गर्भ से निकलना या जनना। (पशु)
[illegible]

ब्यापार पुं० (हि) दे० 'व्यापार'।
ब्यापारी पुं० (हि) दे० 'व्यापारी'।
ब्यार स्त्री० (हि) हवा। वायु।
ब्यारि स्त्री० (हि) दे० 'बयारी'।
ब्यारी स्त्री० (हि) दे० 'ब्यालू'।
ब्याल पुं० (हि) दे० 'व्याल'।
ब्याली स्त्री० (हि) सापिन। नागिन। वि० सर्पों को धारण करने वाला।
ब्यालू पुं० (हि) रात का भोजन। वियारी।
ब्याह पुं० (हि) विवाह। शादी। पाणिग्रहण।
ब्याहता वि० (हि) जिसके साथ विवाह हुआ हो। पुं० पति।
ब्याहना क्रि० (हि) किसी पुरुष का किसी स्त्री के साथ विधिवत् विवाह करना।
ब्योंच स्त्री० (देश) मोच।
ब्योंचना क्रि०(हि) १-सहसा मुड़ जाने से नस आदि का अपने स्थान से हट जाना। मोच आजाना। २-किसी अंग का इधर-उधर मुड़ जाना।
ब्योंत स्त्री० (हि) १-कार्य पूर्ण करने की युक्ति। २-ढंग। युक्ति। उपाय। संयोग। अवसर। ४-पहनने के कपड़े बनाने के लिए कपड़े की काट-छांट। ५-आयोजन।
ब्योंतना क्रि०(हि) १-शरीर के नाप के अनुसार कपड़ा काटना-छांटना। २-मारना। काटना। मार डालना।
ब्योंताना क्रि० (हि) नाप के अनुसार दर्जी से कपड़ा कटवाना।
ब्योपार पुं० (हि) दे० 'व्यापार'।
ब्योपारी पुं० (हि) दे० 'व्यापारी'।
ब्योरन स्त्री० (हि) बालों को संवारने का ढंग।
ब्योरना क्रि० (हि) १-उलझे हुए बालों को सुलझाना। २-उलझे हुए तागों को सुलझाना।
ब्योरा पुं० (हि) किसी घटना के अन्तर्गत एक एक बात का उल्लेख। वृतांत। समाचार।
ब्योरेवार अव्य० (हि) विस्तारपूर्वक।
ब्योसाय पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
ब्योहर पुं० (हि) रुपये उधार देने का काम।
ब्योहरा पुं० (हि) सूद पर रुपये के लेन-देन का व्यापार।
ब्योहरिया पुं० (हि) सूद पर रुपये का लेन-देन करने वाला।
ब्योहार पुं० (हि) दे० 'व्यवहार'।
ब्यौहरिया पुं० (हि) दे० 'ब्योहरिया'।
ब्यौहार पुं० (हि) दे० 'व्यवहार'।
[illegible]

बोधना क्रि० (हि) १–समझाना। ज्ञान देना। २–जताना।
बोधनीय वि० (सं) समझाने योग्य।
बोधि पु० (सं) १–पूर्ण ज्ञान। २–पीपल का पेड़। ३–समाधि भेद।
बोधित वि० (सं) ज्ञापित। जताया हुआ।
बोधितरु पुं० (सं) गया में स्थित वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे भगवान बुद्ध को बोध या ज्ञान प्राप्त हुआ था।
बोधितव्य वि० (सं) जताने या समझाने योग्य।
बोधिद्रुम पुं० (सं) दे० 'बोधितरु'।
बोधिवृक्ष पुं० (सं) दे० 'बोधितरु'।
बोधिसत्व पुं० (सं) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो परन्तु बुद्ध न हो सका हो। (महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम)।
बोध्य वि० (सं) समझाने योग्य।
बोनस पुं० (अं) १–वह धन जो किसी कर्मचारी को उसके पारिश्रमिक या वेतन के अतिरिक्त दिया जाय २–सीमित समवाय द्वारा हिस्सेदारों को दिया जाने वाला अतिरिक्त लाभ।
बोना क्रि० (हि) १–खेत में उपजने के लिए बीज बखेरना। २–किसी बात का सूत्रपात करना।
बोनी स्त्री० (हि) बोने की क्रिया या बोने का मौसम।
बोबा पुं० (हि) १–स्तन। थन। २–घर का समान। ३–गठरी।
स्त्री० (देश) दे० 'बू'।
बोर स्त्री० (हि) डुबोने की क्रिया। डुबाव।
बोरका पुं० (हि) दवात।
बोरना क्रि० (हि) १–डुबाना। २–डुबा कर भिगोना। ३–घुले रङ्ग में डुबा कर रंगना। ४–नष्ट करना। (मर्यादा)।
बोरसी स्त्री० (देश) अँगीठी।
बोरा पुं० (हि) १–अनाज आदि भर कर रखने का टाट का बड़ा थैला। २–घुंघरू।
बोरिया स्त्री० (हि) छोटा थैला। पुं० (फा) १–बिस्तर २–चटाई।
बोरी स्त्री० (हि) टाट का छोटा थैला या बोरा।
बोर्ड पुं० (अं) १–किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति। मंडल। २–कागज की मोटी दफ्ती। ३–कमेटी।
बोल पुं० (हि) १–मुख से उच्चारण किया हुआ शब्द वचन। वाणी। २–व्यंग। ताना। ३–गीत या बाजे के बंधे हुए शब्द। ३–प्रतिज्ञा। ४–संख्या।
बोलचाल स्त्री० (हि) १–बातचीत। साधारण भाषा। २–बोलने का विशेष ढंग।
बोलता पुं० (हि) १–आत्मा। २–जीवनतत्व। प्राण ३–मनुष्य। वि० खूब बोलने वाला। वाचाल।
बोलती स्त्री० (हि) बोलने की शक्ति। वाणी।
बोलनहारा वि०(हि) बोलने वाला। पुं०दे० 'बोलता'
बोलना क्रि० (हि) १–मुंह से शब्द निकालना। उच्चारण। २–किसी वस्तु से शब्द उत्पन्न करना या निकलना। ३–कुछ कहना। ४–बाकी न रहना। ५–जीर्ण होना। ६–हार मान लेना। ७–उत्तर में कुछ कहना। ८–पुकारना। ९–छेड़छाड़ करना।
बोलपट पुं० (हि) वह चल-चित्र जिसमें पात्रों के संवाद आदि भी सुनाई देते हों। (टॉकी)।
बोलवाना क्रि० (हि) उच्चारण कराना।
बोलसर पु० (हि) १–मौलसरी। २–एक प्रकार का घोड़ा।
बोलाचाली पुं०(हि) बोलचाल।
बोलावा पु० (हि) निमंत्रण। बुलावा।
बोली स्त्री० (हि) १–किसी प्राणी से निकला हुआ शब्द। वाणी। २–सार्थक बात। ३–नीलाम में जोर से चिल्ला कर दाम लगाना। ४–किसी विशेष स्थान पर बना शब्दों को उच्चारण करने का ढंग जिसका व्यवहार केवल बात चीत में होता है पर साहित्य में नहीं। (डाइलैक्ट)।
बोलीठोली स्त्री० (हि) व्यंग। कटाक्ष।
बोलीदार पुं० (हि) वह आसामी जिसे खेत बिना किसी लिखत-पढ़त के दिया गया हो।
बोल्शेविक (रूसी) रूस के साम्यवादी दल का अग्रगामी या चरमपंथी सदस्य।
बोल्शेविज्म पुं० (अं) रूस के साम्यवादी दल के चरमपंथी दल का एक सिद्धांत।
बोवाई स्त्री० (हि) दे० 'बोआई'।
बोवाना क्रि० (हि) बोने के काम में दूसरे को प्रवृत्त करना।
बोह स्त्री० (देश) डुबकी।
बोहनी स्त्री० (हि) किसी दिन की पहली बिक्री।
बोहित पुं० (हि) बड़ी नाव। जहाज।
बोहित्य पुं० (हि) दे० 'बोहित्थ'।
बौंड़ स्त्री०(हि) १–लता। बेल। २–दूर तक फैली लम्बी टहनी।
बौंड़ना क्रि०(हि) १–बेल की तरह फैलाना। २–टहनी फेंकना।
बौंड़र पुं० (हि) दे० 'बवंडर'।
बौंड़ी स्त्री० (हि) १–पौधों या लताओं का कच्चा फल या कलियां। २–फली। ३–दमड़ी।
बौआना क्रि० (हि) स्वप्न अवस्था में कुछ कहना।
बौखल वि० (हि) सनकी। पागल।
बौखलाना क्रि० (हि) क्रोध में आकर अण्डबण्ड बातें करना।
बौखलाहट स्त्री० (हि) क्रोधावेश। बदहवासी।
बौछाड़ स्त्री० (हि) दे० 'बौछार'।

बौछार स्त्री० (हि) १-हवा के झोंके से आने वाली झड़ी। २-किसी वस्तु का अधिक मात्रा या संख्या में आकर गिरना। ३-लगातार कटु आलोचना की बातें।
बौड़ना क्रि० (हि) दे० 'बौराना'।
बौड़म वि०(हि) नासमझ। मूर्ख। पागल। पुं० पागल व्यक्ति।
बौड़हा वि० (हि) दे० 'बौड़म'।
बौद्ध वि० (सं) महात्मा बुद्ध द्वारा प्रचलित। पुं० गौतम बुद्ध के चलाये हुए धर्म का अनुयायी।
बौद्धधर्म पुं० (सं) महात्मा बुद्ध द्वारा चलाया गया धर्म।
बौद्धमत पुं० (सं) दे० 'बौद्धधर्म'।
बौना पुं० (हि) बहुत ठिगना आदमी। नाटा मनुष्य
बौर पुं० (हि) १-आम की मंजरी। २-मौर।
बौरई स्त्री० (हि) पागलपन।
बौरना क्रि० (हि) आम की मंजरी निकलना।
बौरहा वि० (हि) पागल। विक्षिप्त। बावला।
बौरा वि० (हि) १-बावला। पागल। २-भोला। ३-मूर्ख। ४-गूँगा।
बौराई स्त्री० (हि) पागलपन।
बौराना क्रि० (हि) १-विक्षिप्त या पागल हो जाना। २-किसी को पागल बनाना। बेवकूफ बनाना।
बौराह वि० (हि) बावला। पागल।
बौरी स्त्री० (हि) बावली स्त्री।
बौहर स्त्री० (हि) बहू। दुलहिन।
ब्यंग पुं० (हि) दे० 'व्यंग'।
ब्यंजन पुं० (हि) दे० 'व्यंजन'।
ब्यक्ति स्त्री० (हि) दे० 'व्यक्ति'।
ब्यवसाय पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
ब्यवहरिया पुं०(हि) लेनदेन करने वाला। महाजन।
ब्यवहार पुं० (हि) १-दे० 'व्यवहार'। २-रुपये का [illegible]
[illegible]
व्यवहार करने वाला।
ब्यसन पुं० (हि) दे० 'व्यसन'।
ब्याज पुं० (हि) १-वह धन जो मूलधन पर मिलता है सूद। २-दे० 'व्याज'।
ब्याजबट्टा पुं० (हि) लाभ-हानि।
ब्याजू वि० (हि) ब्याज पर लगाया हुआ (धन)।
ब्याध पुं० (हि) दे० 'व्याध'।
ब्याधा स्त्री० (हि) दे० 'व्याधि'।
ब्याधि स्त्री० (हि) दे० 'व्याधि'।
ब्याना क्रि०(हि) गर्भ से निकलना या जनना। (पशु)
ब्यापक वि० (हि) दे० 'व्यापक'।
ब्यापना क्रि० (हि) १-व्याप्त होना। २-चारों ओर छाना या फैलना। ३-घेरना। ४-प्रभाव दिखाना।

ब्यापार पुं० (हि) दे० 'व्यापार'।
ब्यापारी पुं० (हि) दे० 'व्यापारी'।
ब्यार स्त्री० (हि) हवा। वायु।
ब्यारि स्त्री० (हि) दे० 'बयारी'।
ब्यारी स्त्री० (हि) दे० 'व्यालू'।
ब्याल पुं० (हि) दे० 'व्याल'।
ब्याली स्त्री० (हि) सांपिन। नागिन। वि० सर्पों को धारण करने वाला।
ब्यालू पुं० (हि) रात का भोजन। बियारी।
ब्याह पुं० (हि) विवाह। शादी। पाणिग्रहण।
ब्याहता वि० (हि) जिसके साथ विवाह हुआ हो। पुं० पति।
ब्याहना क्रि० (हि) किसी पुरुष का किसी स्त्री के साथ विधिवत् विवाह करना।
ब्योंच स्त्री० (देश) मोच।
ब्योंचना क्रि०(हि) १-सहसा मुड़ जाने से नस आदि का अपने स्थान से हट जाना। मोच आजाना। २-किसी अंग का इधर-उधर मुड़ जाना।
ब्योंत स्त्री० (हि) १-कार्य पूरा करने की युक्ति। २-ढंग। युक्ति। उपाय। संयोग। अवसर। ४-पहनने के कपड़े बनाने के लिए कपड़े की काट-छांट। ५-आयोजन।
ब्योंतना क्रि०(हि) १-शरीर के नाप के अनुसार कपड़ा काटना-छांटना। २-मारना। काटना। मार डालना।
ब्योंताना क्रि० (हि) नाप के अनुसार दर्जी से कपड़ा कटवाना।
ब्योपार पुं० (हि) दे० 'व्यापार'।
ब्योपारी पु० (हि) दे० 'व्यापारी'।
ब्योरन स्त्री० (हि) बालों को संवारने का ढंग।
ब्योरना क्रि० (हि) १-उलझे हुए बालों को सुलझाना। २-उलझे हुए तागों को सुलझाना।
ब्योरा पुं० (हि) किसी घटना के अन्तर्गत एक एक [illegible]
[illegible]
ब्योहर पुं० (हि) रुपये उधार देने का काम।
ब्योहरा पुं० (हि) सूद पर रुपये के लेन-देन का व्यापार।
ब्योहरिया पुं० (हि) सूद पर रुपये का लेन-देन करने-वाला।
ब्योहार पुं० (हि) दे० 'व्यवहार'।
ब्यौहरिया पु० (हि) दे० 'ब्योहरिया'।
ब्यौहार पु० (हि) दे० 'व्यवहार'।
ब्रंद पु० (हि) दे० 'वृंद'।
ब्रज पुं० (हि) दे० 'व्रज'।
ब्रजना क्रि० (हि) चलना। गमन करना।
ब्रह्मांड पु० (हि) दे० 'ब्रह्माण्ड'।

ब्रह्म पुं० (सं) १-वह सब से बड़ी नित्य चेतनसत्ता जो जगत का मूल कारण और सच्चिदानंदस्वरूप मानी गई है। २-ईश्वर। परमात्मा। ३-ब्राह्मण। ४-ब्रह्मा (समास में)। ५-वेद। ६-एक की संख्या ७-तपस्या।
ब्रह्मकन्यका स्त्री० (सं) १-सरस्वती। ब्राह्मीबूटी।
ब्रह्मकन्या स्त्री० (सं) दे० 'ब्रह्मकन्यका'।
ब्रह्मकर्म पुं० (सं) १-वेदविहित कर्म। २-ब्राह्मण का कर्म।
ब्रह्मकल्प पुं० (सं) ब्रह्मा की आयु। वि० (सं) ब्रह्मा के समान।
ब्रह्मगांठ स्त्री० (हि) यज्ञोपवीत की मुख्य गांठ।
ब्रह्मग्रह पुं० (सं) ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मघातक पुं० (सं) ब्राह्मण का वध करने वाला।
ब्रह्मघातिनी स्त्री० (सं) १-ब्राह्मण की हत्या करने वाली स्त्री। २-रजस्वला होने की संज्ञा।
ब्रह्मघाती पुं० (सं) दे० 'ब्रह्मघातक'।
ब्रह्मघोष पुं० (सं) १-वेदध्वनि। २-वेदपाठ।
ब्रह्मघ्न वि० (सं) ब्राह्मण को मारने वाला।
ब्रह्मचारिणी स्त्री० (सं) १-ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाली स्त्री। २-दुर्गा। पार्वती। २-सरस्वती। ३-भारंगी बूटी।
ब्रह्मचारी पुं० (सं) जो ब्रह्मचर्य-व्रत का संकल्प किये हो। २-स्त्री-संसर्ग आदि से अलग विद्याध्ययन करने वाला पुरुष।
ब्रह्मज्ञ पुं०(सं) वेदांत का तत्व समझने वाला। ज्ञानी
ब्रह्मज्ञान पुं० (सं) ब्रह्म का या पारमार्थिक सत्ता का ज्ञान।
ब्रह्मज्ञानी वि०(सं) परमार्थ तत्व का ज्ञान रखनेवाला।
ब्रह्मण्य वि० (सं) १-ब्रह्म या ब्रह्मा सम्बन्धी। २-ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखने वाला।
ब्रह्मतत्व पुं० (सं) ब्रह्म का यथार्थ ज्ञान।
ब्रह्मतेज पुं० (सं) १-ब्रह्म का तेज। २-ब्रह्मचर्य का तेज।
ब्रह्मत्व पुं०(सं) १-ब्राह्मणत्व। २-ब्रह्मा होने का भाव या धर्म।
ब्रह्मदंड पुं० (सं) १-ब्राह्मण का शाप। २-ब्रह्मचारी का डंडा।
ब्रह्मदूषक वि० (सं) जो वेद की निंदा करता हो।
ब्रह्मदेय पुं० (सं) ब्राह्मण को दान में दी हुई वस्तु।
ब्रह्मदोष पुं० (सं) ब्राह्मण की हत्या करने का पाप।
ब्रह्मद्रोही वि० (सं) ब्राह्मणों से बैर रखने वाला।
ब्रह्मद्वार पुं० (सं) खोपड़ी के बीच माना हुआ वह छिद्र जिससे योगियों के प्राण निकलते हैं। ब्रह्मछिद्र
ब्रह्मद्विट् वि० (सं) ब्राह्मण या वेद के प्रति द्वेष।
ब्रह्मनाभ पुं० (सं) विष्णु।
ब्रह्मनिष्ठ वि० (सं) ब्रह्म के ध्यान में मग्न रहने वाला

ब्रह्मपद पुं० (सं) १-ब्रह्मत्व। २-मोक्ष। मुक्ति।
ब्रह्मपारायण पुं० (सं) सारे वेदों का अध्ययन।
ब्रह्मपाश पुं० (सं) ब्रह्मा का पाश नामक एक अस्त्र।
ब्रह्मपुत्र पुं० (सं) १-ब्राह्मण का बेटा। २-एक नदी का नाम जो मानसरोवर से निकल कर आसाम में होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। ३-मनु। ४-नारद। ५-वशिष्ठ।
ब्रह्मपुत्री स्त्री० (सं) १-सरस्वती। २-सरस्वती नदी।
ब्रह्मपुर पुं० (सं) १-ब्रह्मलोक। २-ब्रह्म के अनुभव का स्थान हृदय।
ब्रह्मपुरी स्त्री० (सं) १-वाराणसी। २-ब्रह्मलोक।
ब्रह्मफांस स्त्री० (हि) दे० 'ब्रह्मपाश'।
ब्रह्मबल पुं० (सं) वह तेज या शक्ति जो तप से प्राप्त हो।
ब्रह्मभाव पुं० (सं) ब्रह्म में लीन होना।
ब्रह्मभूत पुं०(सं) जो ब्रह्म में लीन हो गया हो।
ब्रह्मभोज पुं० (सं) ब्राह्मणों को भोजन कराने का कर्म
ब्रह्ममुहूर्त पुं० (सं) सूर्योदय के तीन या चार घड़ी पहले का समय।
ब्रह्मयज्ञ पुं० (सं) १-पंच महायज्ञों में से एक। २-वेद पढ़ना।
ब्रह्मरंध्र पुं० (सं) दे० 'ब्रह्मद्वार'।
ब्रह्मराक्षस पुं० (सं) वह ब्राह्मण जो अकाल मृत्यु से मर कर राक्षस होगया हो।
ब्रह्मरेखा पुं० (सं) दे० 'ब्रह्मलेख'।
ब्रह्मर्षि पुं० (सं) ब्राह्मण ऋषि।
ब्रह्मलेख पुं० (सं) ब्रह्मा का लिखा हुआ भाग्य का लेख।
ब्रह्मलोक पुं० (सं) मोक्ष का एक भेद। ब्रह्मा का लोक।
ब्रह्मवादी वि० (सं) वेदों को पढ़ने या सिखाने वाला
ब्रह्मविद् वि०(सं) ब्रह्म को जानने या समझने वाला।
ब्रह्मविद्या स्त्री० (सं) १-वह विद्या जिसके द्वारा ब्रह्म को जान सकें। २-दुर्गा।
ब्रह्मवेत्ता वि० (सं) दे० 'ब्रह्मविद्'।
ब्रह्मवेदी वि० (सं) दे० 'ब्रह्मविद्'।
ब्रह्मशासन पुं० (सं) वेद या स्मृति की आज्ञा।
ब्रह्मसमाज पुं० (सं) एक मात्र ब्रह्म की उपासना करने वाला एक संप्रदाय।
ब्रह्मसुता स्त्री० (सं) सरस्वती।
ब्रह्मस्व पुं० (सं) ब्राह्मण का धन।
ब्रह्मस्वहारी वि० (सं) ब्राह्मण का धन चोरी करने वाला।
ब्रह्महत्या स्त्री० (सं) ब्राह्मण को मार डालना।
ब्रह्मांड पुं० (सं) १-संपूर्ण विश्व जिसके भीतर अनंत लोक हैं। २-विश्वगोलक। ३-खोपड़ी। कपाल।
ब्रह्मा पुं० (सं) ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से वह जो सृष्टि की रचना करने वाला है। विधाता।

डिकरी।
णी स्त्री० (सं) १-ब्रह्मा की स्त्री। २-सरस्वती।
नदी का नाम।
नंद पुं० (सं) ब्रह्म के ज्ञान से मिलने वाला
आनंद।
भ्यास पुं० (सं) वेदाभ्यास।
पंरा पुं० (सं) ब्रह्म को सब कर्मफल का समर्पण।
आसन पुं० (सं) वह आसन जिसमें बैठकर ब्रह्म
ध्यान किया जाता है।
अस्त्र पु०(सं) एक प्रकार का प्राचीन कल्पित अस्त्र
मंत्र द्वारा चलता था।
उपदेश पु० (सं) वेद स्मृति या ब्रह्मज्ञान की शिक्षा
पुं० (हि) दे० 'ब्रात्य'।
वि० (सं) ब्रह्म सम्बन्धी। पु० १-विवाद का
भेद। २-एक पुराण। ३-नारद। ४-नक्षत्र।
ण पु०(सं) १-हिन्दुओं के चार वर्णों में से पहला
। २-वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता
-शिव। ४-विष्णु। ५-अग्नि।
णक पु० (सं) नाम मात्र का ब्राह्मण। अयोग्य
ब्राह्मण।
णत्व पुं० (सं) ब्राह्मण का धर्म, भाव या अधि-
र।
णद्वेषी वि० (सं) ब्राह्मण से द्वेष करने वाला।
णप्रिय पुं० (सं) विष्णु।
णभोजन पुं० (सं) धार्मिक विचार से अथवा
या ब्राह्मणों का भोजन।
णवध पु० (सं) ब्राह्मण की हत्या।
णी स्त्री० (सं) १-ब्राह्मण जाति की स्त्री। २-
द्धि।
ण्य पुं० (सं) १-ब्राह्मणत्व। २-ब्राह्मणों का
समुदाय।
मुहूर्त पुं० (सं) दे० 'ब्रह्ममुहूर्त'।
विवाह पुं० (सं) वह विवाह जिसमें कन्यादान
या जाता है।
समाज पुं० (हि) दे० 'ब्रह्मसमाज'।
ी स्त्री० (सं) ब्रह्म की मूर्तिमती शक्ति। २-सर-
ती। ३-वाणी। ४-भारत की एक प्राचीन लिपि
जिससे देवनागरी, बंगला आदि लिपियां निकलीं
। ५-एक बूटी जो औषध के काम आती है।
टश वि० (अं) अंग्रेजी। ब्रिटेन सम्बन्धी।
शराज पु० (हि) अंग्रेजों का राज्य।
न पु० (अं) इंगलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स।
ड पुं० (अं) सेना का एक समूह। वाहिनी।
डियर पुं० (अं) वाहिनीपति।
पुं० (हि) दे० 'व्रीड'।
ना क्रि० (हि) लजाना। लज्जित होना।
पुं० (हि) दे० 'व्रीड'।

ब्रीवियर पुं० (अ) एक प्रकार का छोटा टाइप (मुद्रण)
ब्रेक पुं० (अ) १-पहिये की गति को रोकने का एक
यन्त्र। २-रेलगाड़ी में गार्ड का डिब्बा।
ब्लाउज पुं० (अ) स्त्रियों के पहनने की एक विलायती
ढंग की कुरती।
ब्लॉक पुं० (अं) १-तांबे, जस्ते, काठ आदि का वह
ठप्पा जिससे चित्र आदि छापे जाते हैं। २-भूमि
का चौकोर टुकड़ा या वर्ग।

[शब्दसंख्या—३६७१२]

भ

भ हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ व्यञ्जन जिसका
उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
भंकार पु० (हि) भयंकर ध्वनि का शब्द।
भंग पु० (सं) १-तरंग। लहर। २-पराजय। ३-खंड
४-टेढ़ापन। कुटिलता। ५-गमन। ६-टूटने का
भाव। विध्वंस। (नीच)। ८-बाधा। ९-भय।
१०-लकवा नामक रोग। ११-सभा आदि समाप्त
करना (डिसर्स)। स्त्री० (हि) दे० भाग।
भंगघुटना पु० (हि) भांग घोटने का मोटा डंडा।
भंगड़ वि० (हि) बहुत भांग पीने वाला। भंगेड़ी।
भंगना क्रि० (हि) १-टूटना। २-दबना। ३-हार
मानना। ४-तोड़ना। ५-दबाना।
भंगरा पुं० (हि) १-एक प्रकार का भाग के रेशों का
बना मोटा कपड़ा। २-एक बूटी।
भंगराज पुं०(हि) १-कोयल के आकार की एक चिड़िया
२-एक बूटी।
भंगरैया स्त्री० (हि) दे० 'भँगरा'।
भंगवासा स्त्री० (सं) हल्दी।
भंगार पु० (हि) १-बरसात के दिनों में जमीन धस-
जाने से बना गड्ढा। २-घासफूस। कूड़ा-करकट
३-गड्ढा।
भंगि स्त्री० (सं) १-विच्छेद। २-टेढ़ाई। ३-विन्यास
अन्दाजा। ४-लहर। ५-भंग। ६-व्याज। ७-प्रति-
कृति। ८-कुटिलता।
भंगिमा स्त्री० (सं) १-कुटिलता। २-स्त्रियों के हाव-
भाव या कोमल चेष्टाएँ। अंगनिवेश। अन्दाज।
३-लहर। प्रतिकृति।
भंगी पुं० (हि) १-एक जाति जिसके अधिकांश लोग
मैला या विष्ठा उठाते हैं। २-भंगेड़ी। वि० भंग या
नाश होने वाला।
भंगुर वि० (सं) १-नाशवान। २-टेढ़ा। कुटिल।

भंगुए पुं०(स) एक प्रकार का पूर्वी भारत में होनेवाला बलप्रवर्द्धक फल। मंगोस्ताँ। (मैंगोस्टीन)।

भंगेड़ी वि० (सं) जिसे भांग पीने की लत हो। भंगड़ी

भँगेरा पुं० (हि) दे० 'भँगरा'।

भँगेला पुं० (हि) दे० 'भँगरा'।

भंजक वि० (सं) तोड़ने या भंग करने वाला।

भंजन पुं० (सं) १-तोड़ना। भंग करना। २-ध्वंस। ३-नाश। ४-भांग। ५-वायु के कारण होने वाली पीड़ा। वि० भंग करने या तोड़ने वाला।

भंजनशील वि० (सं) जो गिरने या पीटा जाने पर चूर-चूर हो जाय। (ब्रिटल)।

भंजनशीलता स्त्री (सं) गिरने या पीटा जाने पर चूर-चूर हो जाने का गुण। (ब्रिटलनेस)।

भंजना क्रि०(हि) १-टुकड़े होना। २-किसी बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलवाना। ३-(नागे आदि) बटा जाना। ४-कागज के तावों को कई परतों में मोड़ना। ५-टुकड़े करना। स्त्री० १-टूटना। २-बिखरना। ३-नाश होना। ४-पीड़ा।

भँजाई स्त्री० (हि) १-भँजाने की क्रिया या भाव। २-भँजाने की मजदूरी। ३-दे० 'भुनाई'।

भंजाना क्रि० (हि) १-भँजाने, तोड़ने आदि का काम दूसरे से कराना। २-दे० 'भुनाना'।

भंटा पुं० (हि) बैंगन।

भंड पुं० (सं) दे० 'भांड'। (क्लाउन)। वि० १-अश्लील गन्दी बातें बकने वाला। २-धूर्त। पाखण्डी।

भंडता स्त्री० (सं) १-भांडों का ओछा परिहास। २-मन के बुरे भाव। ३-भांडों का काम।

भँडताल पुं० (हि) एक प्रकार का निम्न कोटि का गाना और नाच जिसमें और लोग तालियां पीटते हैं।

भँडतिल्ला पुं० (हि) दे० 'भँडताल'।

भँडना क्रि० (हि) १-बिगड़ना। हानि पहुँचाना। २-तोड़ना। भंग करना। ३-बदनाम करना।

भँडर पुं० (हि) दे० 'भड्डर'।

भँडरिया स्त्री० (हि) १-एक जाति विशेष जिसके लोग फलित ज्योतिष आदि से लोगों का भविष्य बता कर अपनी जीविका चलाते हैं। २-दीवार में बना हुआ ताख जिसमें पल्ले लगे हों। वि० पाखंडी। ढोंगी।

भंडा पुं०(हि) १-बर्तन। पात्र। भांडा। २-भंडार। ३-भेद। रहस्य।

भंडाना क्रि०(हि) १-उछलकूद मचाना। २-वस्तुओं को तोड़ना-फोड़ना।

भंडाफोड़ पुं० (हि) रहस्य का भेद प्रकट होना।

भंडार पुं० (हि) १-कोष। खजाना। २-खाने पीने आदि की वस्तुएं रखने का स्थान। ३-उदर। पेट ४-पाकशाला। ५-दे० 'भंडारा'। ६-सामान रखने का भंडारा। (वेअर हाउस)।

भंडारा पुं० (हि) १-दे० 'भंडार'। २-समूह। झुण्ड ३-वह भोज जिसमें साधु संतों को खिलाया जाता है।

भंडारी पुं० (हि) १-कोषाध्यक्ष। खजांची। २-भंडार का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी। ३-रसोइया। स्त्री० १-छोटी कोठरी। २-कोश। खजाना।

भँडेरिया पुं० (हि) दे० 'भड्डर'।

भँडेहर पुं० (हि) १-छोटे मिट्टी के बरतन। २-व्यर्थ की वस्तुओं का किसी छोटे स्थान पर लगा हुआ ढेर।

भँडौआ पुं० (हि) १-भांडों के गाने की गति। २-निम्न कोटि की साधारण कविता।

भँभाना क्रि० (हि) गाय आदि पशुओं का चिल्लाना या बोलना। रँभाना।

भँभीरी स्त्री० (हि) १-एक बरसाती पतिंगा। २-एक छोटा खिलौना। फिरकी।

भँभेरी स्त्री० (हि) भय। डर।

भँवना क्रि० (हि) १-घूमना। फिरना। २-चक्कर लगाना।

भँवर पुं० (हि) १-भौंरा। २-जल के बीच में वह स्थान जहाँ लहर एक केन्द्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है। आवर्त। ३-गड्ढा। ४-प्रेमी। ५-पति।

भँवरकली स्त्री० (हि) लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार लगी रहती है कि घूम सके।

भँवरजाल पुं० (हि) भ्रमजाल। सांसारिक झगड़े।

भँवरभीख स्त्री० (हि) वह भीख जो घूम-घूम कर माँगी जाय।

भँवरा पुं० (हि) भौंरा। भ्रमर।

भँवरी स्त्री० (हि) १-भँवर। पानी का चक्कर। २-गश्त। फेरी। ३-परिक्रमा। ४-बालों का एक केन्द्र पर घूमे हुए होना।

भँवाना क्रि० (हि) १-घुमाना। २-चक्कर देना। ३-उलझन में डालना।

भँवारा वि० (हि) भ्रमणशील। घूमने वाला।

भ पुं० (सं) १-नक्षत्र। २-ग्रह। ३-राशि। ४-भ्रमर। ५-पहाड़। ६-भ्रांति। ७-छंदशास्त्र में भगण का सूक्ष्म रूप।

भइया पुं०(हि) १-भाई। २-भ्राता। ३-बराबर वालों के लिये व्यवहार में लाने का आदरसूचक शब्द।

भउजाई पुं० (हि) दे० 'भौजाई'।

भकक्षा स्त्री० (हि) नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

भकभकाना क्रि० (हि) भक-भक शब्द करके जलना। चमकना।

भकाऊ पुं० (हि) एक कल्पित व्यक्ति जिससे बच्चे डराये जाते हैं। हव्वा।

भकुआ वि० (हि) मूर्ख। मूढ़।
भकुआना क्रि०(हि) १-भौंचक्का होना। २-चकपकाना ३-चकपका देना। ४-मूर्ख बनाना।
भकूट पु० (सं) राशियों का एक समूह जो विवाह की गणना में शुभ माना जाता है। (फ० ज्यो०)।
भकोसना क्रि० (हि) १-बिना चबाये हुए ही जल्दी-जल्दी खाना। निगलना।
भक्त वि० (सं)१-बांटा हुआ। २-बांट कर दिया हुआ ३-सेवा या भक्ति करने वाला। ४-अनुयायी। पुं० (हि) १-उपासक। २-धन। ३-पका हुआ चावल
भक्तकार पुं० (सं) रसोइया। पाचक।
भक्तदास पुं० (सं) भोजन मात्र पर सेवा करने वाला दास।
भक्तबच्छल वि० (सं) दे० 'भक्तवत्सल'।
भक्तमंड पुं० (सं) चावल का मांड।
भक्तवत्सल वि० (सं) भक्तों पर कृपा रखने वाला। (विष्णु)।
भक्तशाला स्त्री० (सं) १-पाकशाला। २-धर्मोपदेश सुनने का स्थान।
भक्ताई स्त्री० (हि) दे० 'भक्ति'।
भक्ति स्त्री०(सं) १-बांटना। अनेक भागों में विभक्त करना। २-भाग। ३-बांटने या विभाग करने वाली रेखा। ४-अंग। अवयव। ५-पूजा। ६-सेवा-शुश्रूषा। ७-श्रद्धा। ८-रचना। ९-ईश्वर या पूज्य देवता के प्रति असीम श्रद्धा और अनुराग। १०-उपचार। ११-विश्वास। १२-किसी के प्रति होने वाला श्रद्धाभाव।
भक्तिगम्य वि० (सं) जो सेवा से प्राप्त होता हो। (शिव)।
भक्तिपूर्वक अव्य० (सं) भक्तिसहित।
भक्तिप्रवण वि० (सं) जो भक्ति में लीन हो।
भक्तिभाजन वि० (सं) जो भक्ति करने के योग्य हो।
भक्तिमान् वि० (सं) जिसमें भक्ति हो।
भक्तिमार्ग पुं० (सं) मोक्ष प्राप्त करने का एक तरीका
भक्तियोग पुं० (सं) भक्ति के द्वारा भगवान को प्राप्त करने की साधना।
भक्ष पुं०(सं) १-खाने का पदार्थ। भोजन। २-भक्षण खाने का काम।
भक्षक वि०, पुं० (सं) १-भोजन करने वाला। २-स्वार्थ के लिए किसी का सर्वनाश करने वाला।
भक्षण पु० (सं) १-भोजन करना। २-आहार। भोजन।
भक्षणीय वि० (सं) खाने योग्य।
भक्षना क्रि० (हि) भोजन करना।
भक्षित वि० (सं) खाया हुआ।
भक्षी वि० (सं) दे० 'भक्षक'।
भक्ष्य वि० (सं) जो खाया जा सके। (एडीबल)। पु० आहार। भोजन।
भक्ष्याभक्ष्य पुं०(सं) खाने और न खाने योग्य पदार्थ
भख पुं० (हि) भोजन। आहार।
भखाना क्रि० (हि) १-खाना। भोजन करना। २-निगलना।
भगंदर पुं० (हि) एक रोग जिसमें गुदा के भीतर किनारे में फोड़ा हो जाता है।
भग पु० (सं) १-सूर्य। २-ऐश्वर्य। ३-इच्छा। ४-महात्म्य। ५-धर्म। ६-मोक्ष। ७-सौभाग्य। ८-धन ९-चन्द्रमा। स्त्री० स्त्री की योनि या जननेन्द्रिय।
भगण पु० (सं) १-खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर। २-छन्दशास्त्रानुसार एक गण जिसमें पहले एक वर्ण गुरु और दो लघु वर्ण होते हैं। (ऽ।।)।
भगत वि० (हि) १-भक्त। सेवक। २-विचारवान। ३-साधु। ४-जो मांसहारी न हो। पुं० १-वैष्णव मत को मानने वाला साधु। २-राजस्थान की एक जाति। ३-होली में रचा जाने वाला स्वांग।
भगतबछल वि० (हि) दे० 'भक्तवत्सल'।
भगति स्त्री० (हि) दे० 'भक्ति'।
भगतिया पु० (हि) राजस्थान की गाना बजाने का कार्य करने वाली एक जाति।
भगती स्त्री० (हि) दे० 'भक्ति'।
भगदड़ स्त्री०(हि) बहुत से लोगों का सहसा इधर-उधर दौड़ना।
भगन वि० (हि) दे० 'भग्न'।
भगना क्रि० (हि) दे० 'भागना'। पुं० भानजा।
भगनी स्त्री० (हि) दे० 'भगिनी'।
भगर पुं० (हि) सड़ा हुआ अनाज या अन्न। पुं० (देश) छल। फरेब।
भगरना क्रि० (हि) अनाज की गरमी पाकर सड़ने लगना।
भगल पुं० (देश) दे० 'भगर'।
भगवत वि० (हि) दे० 'भगवान'।
भगवत् पुं० (सं) ईश्वर। परमात्मा।
भगवती स्त्री० (सं) १-देवी। २-सरस्वती। ३-दुर्गा। ४-गंगा।
भगवद्भक्ति स्त्री० (सं) भगवान की भक्ति।
भगवदीय वि०(सं)१-भगवन्-सम्बन्धी। पुं० भगवान का भक्त।
भगवान वि० (हि) १-धन, सम्पत्ति या ऐश्वर्य वाला २-पूज्य। पुं० १-ईश्वर। २-पूज्य। और आदर-णीय व्यक्ति। ३-विष्णु। ४-बुद्ध। ५-शिव।
भगाना क्रि० (हि) १-किसी को दौड़ने या भागने में प्रवृत्त करना। २-ऐसा कार्य करना जिससे दूसरा व्यक्ति वहीं से हट जाय। ३-किसी स्त्री आदि को उड़ा ले जाना
भगिनिका स्त्री० (सं)

भगिनी स्त्री० (सं) बहन। सहोदरा।
भगिनीपति पुं० (सं) बहनोई।
भगिनीसुत पुं० (सं) भांजा।
भगीरथ पुं०(स) अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा जो गंगा को तपस्या करके पृथ्वी पर लाये थे। वि० बड़ा। भारी।
भगीरथ कन्या स्त्री० (सं) गंगा।
भगीरथ प्रयत्न पुं० (सं) असाधारण कोशिश या प्रयत्न।
भगीरथ सुता स्त्री० (सं) गंगा।
भगोड़ा पुं०(हि) १-वह जो अपना कार्य, पद अथवा कर्तव्य छोड़ कर कहीं भाग गया हो। (फ्यूजिटिव) २-काम या दंड के डर से भागा हुआ। (एब्सकोंडर)
भगोल पुं० (सं) नक्षत्र। चक्र। खगोल।
भगोष्ठ पु.० (सं) भग के बाहर के सिरे का भाग।
भगोती स्त्री० (हि) दे० 'भगवती'।
भगौहाँ वि० (हि) १-भागने के लिए सदा तैयार रहने वाला। २-कायर। ३-गेरुआ।
भग्गुल वि० (हि) दे० 'भगोड़ा'।
भग्गू वि० (हि) १-कायर। २-डर कर भागने वाला।
भग्न वि० (सं) १-टूटा हुआ। २-पराजित।
भग्नक्रम वि० (सं) जिसका सिलसिला या क्रम टूट गया हो।
भग्नचित्त वि० (सं) जिसका दिल टूट गया हो। हताश
भग्नचेष्ट वि० (सं) विफल होने के कारण चेष्टा रहित होने वाला।
भग्नदर्प वि० (सं) जिसका घमण्ड टूट गया हो।
भग्नप्रक्रम पुं० (सं) एक काव्य दोष।
भग्नप्रतिज्ञ वि० (सं) जिसकी प्रतिज्ञा टूट गई हो।
भग्नमना वि० (सं) हतोत्साह।
भग्नमनोरथ वि० (सं) नाकाम। जिसकी कामना पूरी न हुई हो।
भग्नव्रत वि० (सं) जिसका व्रत टूट गया हो।
भग्नश्री वि० (सं) जो पहले कभी सुन्दर रही हो।
भग्नांश पुं० (सं) १-मूल द्रव्य का कोई अलग किया हुआ भाग। २-गणितशास्त्र के अनुसार किसी पूरी संख्या का कोई भाग-जैसे १/२। (फ्रेक्शन)।
भग्नावशेष पुं० (सं) १-टूटे-फूटे मकानों का बचा-हुआ अंश। खंडहर। (रिमेन्स)। २-किसी वस्तु के टूटे-फूटे अशेष।
भग्नाश वि० (सं) हताश।
भग्नोत्साह वि० (सं) जिसमें उत्साह न रहा हो।
भग्नोद्यम वि० (सं) जिसका उद्यम व्यर्थ गया हो।
भचक स्त्री० (हि) भचकने की क्रिया या भाव।
भचकना क्रि० (हि) १-आश्चर्य से स्तब्ध रह जाना। २-चलने में लंगड़ा मालूम पड़ना।
भचक्र पुं०(सं) १-ग्रहों या राशियों के चलने का मार्ग २-नक्षत्रों का समूह।
भच्छ पुं० (हि) दे० 'भक्ष'।
भच्छक वि० दे० 'भक्षक'।
भच्छन पुं० (हि) दे० 'भक्षण'।
भच्छना क्रि० (हि) खाना।
भजन पुं०(सं) १-भाग। खंड। २-सेवा। पूजा। ३-जप। ४-वह गीत जिसमें किसी देवता या ईश्वर के गुणों का कीर्तन हो।
भजना क्रि० (हि) १-देवता आदि का नाम। जपना भजन करना। २-आश्रय लेना। ३-सेवा करना। ४-भागना। ५-भाग जाना। ६-प्राप्त होना।
भजनानंद पुं० (सं) ईश्वर भजन से मिलने वाला आनन्द।
भजनानंदी वि० (सं) ईश्वर भजन में मग्न रहने वाला।
भजनी वि० (हि) भजन गाने वाला। गायक।
भजनीक पुं० (हि) भजन गाने वाला। भजनी।
भजनोपदेशक पुं० (हि) भजन गाकर उपदेश देने वाला भजनी।
भजाना क्रि० (हि) १-भागना। २-भगाना।
भट पुं० (सं) १-योद्धा। २-सैनिक। सिपाही। ३-पहलवान।
भटई स्त्री०(हि) १-भाट का काम। २-दूसरों की झूठी प्रशंसा और खुशामद।
भटकना क्रि० (हि) १-इधर-उधर व्यर्थ घूमना। २-रास्ता भूल जाने के कारण घूमना। भ्रम में पड़ना
भटका पुं० (हि) इधर-उधर व्यर्थ घूमने की क्रिया या भाव।
भटकाना क्रि०(हि) १-गलत रास्ता बताना। २-धोखा देना।
भटकैंया पुं० (हि) १-भटकने वाला। २-भटकाने वाला।
भटकौहाँ वि० (हि) भटकने वाला।
भटभटी स्त्री० (हि) वह अवस्था जिसमें चकाचौंध होने के कारण कुछ दिखाई न पड़े।
भटभरा पुं० (हि) दो वीरों का आपस में भिड़ना। भिड़न्त। २-टक्कर। ३-मार्ग में अचानक हो जाने वाली भेंट।
भटू स्त्री० (हि) १-सखी। २-स्त्रियों का एक आदर-सूचक सम्बोधन।
भट्ट पुं० (सं) १-ब्राह्मणों की एक उपाधि। २-योद्धा। ३-भाट।
भट्टाचार्य पुं० (सं) १-दर्शन शास्त्र का पंडित। माननीय अध्यापक।
भट्टारक पुं० (सं) १-ऋषि। २-सूर्य। ३-पंडित। ४-राजा। वि० पूज्य। मान्य।
भट्ठा पुं० (हि) १-बड़ी भट्टी। २-ईंटें खपड़े या चूना

आदि पकाने का पजावा। (किलन)।
भट्ठी स्त्री० (हि) १-एक विशेष प्रकार का बना बड़ा चूल्हा। २-देशी शराब बनाने का कारखाना।
भठियारखाना पुं० (हि) १-भठियारों का मकान। २-वह स्थान जहां शोरगुल होता हो तथा जो असभ्य लोगों की बैठक हो।
भठियारन स्त्री० (हि) १-भठियारे की लड़की या स्त्री भठियारिन। भठियारी।
भठियारपन पुं० (हि) १-भठियारे का काम। २-भठियारों के समान अश्लील गालियां बकना।
भठियारा पुं० (हि) सराय में ठहरने वालों के लिये भोजनादि का प्रबन्ध करने वाला।
भठिहारिन स्त्री० (हि) भठियारन।
भड़क स्त्री० (हि) १-भड़कने की क्रिया या भाव। ऊपरी चमकदमक।
भड़कदार वि० (हि) १-जिस में खूब चमकदमक हो। चमकीला। २-रोबदार।
भड़कना क्रि० (हि) १-तेजी से जल उठना। २-सहसा चौंक पड़ना। ३-क्रुद्ध होना। ४-भयानक रूप धारण कर लेना।
भड़काना क्रि० (हि) १-प्रज्वलित करना। जलाना। २-उत्तेजित करना। ३-भयभीत कर देना (पशु आदि को)। ४-बहकाना। ५-बढ़ावा देना।
भड़कीला वि०(हि)१-भड़कदार। चमकीला। २-उत्तेजित होने वाला।
भड़कीलापन पुं० (हि) चमकदमक। भड़कीले होने का भाव।
भड़भड़ स्त्री० (हि) १-आघात आदि से होने वाला शब्द। २-भीड़। ३-व्यर्थ बकवाद।
भड़भड़ाना क्रि० (हि) भड़भड़ शब्द करना।
भड़भड़िया वि० (हि) अत्यधिक व्यर्थ की बातें करने वाला।
भड़भांड़ पुं० (हि) एक प्रकार का कंटीला और विषैला पौधा। घमोय।
भड़भूंजा पुं० (हि) भाड़ में अन्न आदि भूनने का काम करने वाली एक जाति।
भड़वा पुं० (हि) दे० 'भड़ुआ'।
भड़ाई स्त्री० (हि) दे० 'भड़'।
भड़हर पुं० (हि) बरतन। भांडा।
भड़ार पुं० (हि) दे० 'भंडार'।
भड़ास स्त्री० (हि) १-मन में छिपा हुआ दुःख या गुब्बार। २-मूर्ति के अन्दर से पानी छिड़कने पर निकलने वाली गरमी।
भड़िहा पुं० (देश) चोर।
भड़िहाई [illegible] स्त्री० (हि) चोरी।
भड़ुआ स्त्री० (हि) वेश्याओं या छिनाल स्त्रियों की दलाली करने वाला व्यक्ति।
भड़रिया पुं० (हि) दे० 'भड्डर'।
भड्डर पुं० (हि) ब्राह्मणों का एक वर्ग जो सामुद्रिक आदि के द्वारा या तीर्थों में लोगों को दर्शन कराकर अपनी जीविका चलाता है।
भणन पुं० (सं) वर्णन। कहना। कथन।
भणना क्रि० (हि) कहना। बोलना।
भणित स्त्री० (स) कही हुई बात। कथा। वि० कहा हुआ।
भतवान पुं० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें लड़के वालों को कच्ची रसोई खिलाते हैं।
भतार पुं० (हि) दे० 'भर्तार'।
भतीजा पुं० (हि) भाई का लड़का।
भत्ता पुं० (हि) वह दैनिक या मासिक व्यय जो कर्मचारी को यात्रा, अतिरिक्त कार्य या महँगाई के रूप में दिया जाता है। (एलाउन्स)।
भदन्त वि० (सं) पूज्य। मान्य। पुं०(हि) बौद्धभिक्षु।
भदई स्त्री० (हि) भादों में पक कर तैयार होने वाली फसल। वि० भादों का। भादों सम्बन्धी।
भदेस वि० (हि) भद्दा। भौंडा।
भदौंह क्रि० (हि) दे० 'भदौहाँ'।
भदौहाँ वि० (हि) भादों में होने वाला जैसे-आम।
भद्दा पुं० (हि) १-जो देखने में अच्छा न लगे। २-कुरूप। [illegible]।
भद्दापन पुं० (हि) भद्दे होने का भाव।
भद्र वि० (सं) १-सभ्य। सुशिक्षित। २-श्रेष्ठ। ३-साधु। पुं० १-कल्याण। २-चन्दन। ३-महादेव। ४-स्वर्ण। सोना। ५-राम की सभा का एक सभासद जिसके कहने पर सीता जी को वनवास दिया गया था। ६-पर्वत। ७-बैल। पुं० (हि) सिर। दाढ़ी। मूंछों आदि का मुंडन।
भद्रजन पुं० (सं) शिष्ट या भला आदमी।
भद्रपुरुष पुं० (स) दे० 'भद्रजन'। (जेन्टलमैन)।
भद्रा स्त्री० (स) शिष्ट स्त्री। स्त्री० (हि) १-आकाशगङ्गा। २-गाय। ३-दुर्गा। ४-बाधा। विघ्न। ५-हल्दी। ६-रास्ना।
भनक स्त्री० (हि) १-धीमा शब्द। ध्वनि। २-उड़ती खबर।
भनकना क्रि० (हि) कहना।
भनना क्रि० (हि) कहना।
भनभनाना क्रि०(हि) भनभन शब्द करना। गुंजारना।
भनभनाहट स्त्री० (हि) भनभनाने का शब्द। गुंजार।
भनित वि० (हि) दे० 'भणित'।
भभका पुं० (हि) अर्क निकालने या मद्य चुआने का [illegible]
भभकी स्त्री० (हि) १-बन्दर की घुड़की। [illegible] घुड़की।

भभ्मड़ (हि) स्त्री० भीड़भाड़।
भभक स्त्री० (हि) १-भभकने की क्रिया। २-किसी वस्तु का सहसा गरम होकर ऊपर उबलना। ३-रह-रहकर आने वाली दुर्गन्ध।
भभकना क्रि०(हि) १-उबलना। २-गरमी पाकर किसी वस्तु का फूटना। ३-भड़कना।
भभका पुं० (हि) दे० 'भबका'।
भभकी स्त्री० (हि) दे० 'भबकी'।
भम्भड़ स्त्री० (हि) दे० 'भब्भड़'।
भभरना क्रि० (हि) १-डरना। २-घबरा जाना। ३-भ्रम में पड़ना।
भभूका पुं० (हि) ज्वाला। लपट।
भभूत स्त्री० (हि) वह भस्म जो शैव लोग मस्तक पर लगाते हैं।
भभूदर स्त्री० (हि) गरम राख।
भयंकर वि० (स) डरावना। भयानक। भीषण। (डेन्जरस)।
भयंकर उज्जवाल्य वि० (सं) जो जरा सी गरमी पाने पर या चिंगारी लगने पर शीघ्रता से जल उठता हो। (डेन्जरसली इनफ्लेमेबल)।
भयंकर उपकरण पुं० (सं) वह औजार या उपकरण जिनसे जरा-सी असावधानी बरतने पर जान जोखिम में पड़ जाती है। (डेन्जरस इन्स्ट्रूमेंट)।
भयंकर नौभांड विनियम पुं० (हि) विस्फोटक आदि भयंकर वस्तु एक जहाज द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने का विनियम। (डेन्जरस कार्गो रेग्यूलेशन्स)।
- रोग पुं० (हि) वह रोग जिसमें जीवन खतरे में हो। (डेन्जरस डिजीज)।
भय पुं० (सं) १-एक मनोविकार जो आपत्ति या अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होता है। डर। खौफ (डेंजर)। २-बालकों का एक रोग जो डर जाने से होता है। क्रि० (देश) हुआ।
भयकर वि० (सं) भयानक। भयकर।
भयजनक वि० (सं) दे० 'भयकर'।
भयत्रस्त वि० (सं) अत्यधिक डरा हुआ।
भयत्राता पुं० (सं) भय दूर करने वाला।
भयनाशन वि०(सं) भय नष्ट करने वाला। पुं० विष्णु
भयप्रद वि० (सं) भयानक। भय उत्पन्न करने वाला। (डेंजरस)।
भयप्रद-भवन पुं० (सं) वह मकान जिसके गिरने का डर हो। (डेंजरस बिल्डिंग)।
भयप्रद-व्यापार पुं० (सं) वह व्यापार जिसमें किसी प्रकार का खतरा हो। जैसे तस्कर व्यापार। (डेंजरस ट्रेड)।
भयप्रद-शस्त्र पुं० (सं) वह शस्त्र जिसके नाम सुनने पर ही डर लगे। (डेंजरस वेपन)।
भयभीत वि० (सं) डरा हुआ।
भयमोचन वि० (सं) भय दूर करने वाला।
भयविह्वल वि० (सं) भय से व्याकुल।
भयशील वि० (सं) डरपोक।
भयशून्य वि० (सं) निर्भय।
भयसूचना स्त्री० (सं) भय से सचेत करने के लिए दी गई सूचना। (अलार्म)।
भयसूचना-घंटी स्त्री० (हि) खतरे की घण्टी। (अलार्म बेल)।
भयहरण वि० (सं) भय या डर दूर करने वाला।
भयहारी वि० (सं) भयहरण।
भया क्रि० (देश) हुआ। पुं० (हि) दे० 'भाई'।
भयाकुल वि० (सं) भयभीत। भय से व्याकुल।
भयाक्रांत वि०(सं) भय से अभिभूत।
भयातुर वि० (सं) भय से घबराया हुआ।
भयान वि० (हि) भयानक। डरावना।
भयानक वि० (सं) जिसे देखने से डर लगे। भयंकर (डेंजरस,ड्रेडफुल) पुं०(सं) साहित्य के नौ रसों में से एक जिसमें भीषण दृश्यों का वर्णन होता है।
भयानक पशु पुं० (हि) हिंसक पशु जैसे सिंह आदि (डेंजरस एनीमल्स)।
भयानक वस्तुएं स्त्री०(हि) वह वस्तुएँ जिनके रखने में जोखिम हो। (डेंजरस गुड्स)।
भयाना क्रि० (देश) १-डराना। २-डरना। भयभीत होना।
भयावन वि०(हि) दे० 'भयावना'।
भयावना वि० (हि) डरावना।
भयावह वि० (सं) भयंकर। डरावना। खौफनाक।
भरंत स्त्री० (हि) १-भ्रम। संदेह। २-भरने की क्रिया या भाव।
भर वि०(हि) कुल। पूरा। सब। तमाम। अव्य० बल के द्वारा। पुं० १-बोझ। भार। २-एक जाति का नाम (सं) १-वह जो पालन पोषण करता हो। २-युद्ध। लड़ाई।
भरकना क्रि० (हि) दे० 'भड़कना'।
भरका पुं० (देश) वह निर्जन तथा पहाड़ी स्थान का गड्ढा जिस में चोर डाकू छिपे रहते हैं।
भरकाना क्रि० (हि) दे० 'भड़काना'।
भरण पुं० (सं) १-पालन-पोषण। २-वेतन। ३-किसी के पास उसकी आवश्यकता की वस्तु पहुँचाना। (सप्लाई)। ४-उत्पादन।
भरणतट पुं०(सं) १-नदी का घाट। जहाजी गोदाम घाट। (व्हार्फ)।
भरणतट-प्रभार पुं० (सं) घाट पर माल चढ़ाने या उतारने का कर। (व्हारफेज)।
भरणतटाध्यक्ष पुं०(सं) घाट का अधिकारी। (व्हारफिंजर)।

भरणपोषण पुं० (सं) किसी को पालने पोसने की क्रिया या भाव। (मेन्टेनैन्स, सपोर्ट)।

भरण-रेचन-दिवस पुं० (सं) माल जहाज आदि में उतारने या चढ़ाने का निश्चित दिन। (ले-डे)।

भरण-रेचन-काल पुं० (सं) वह निश्चित समय जिसमें माल लादने या उतारने का काम समाप्त होना चाहिए। (ले-टाइम)।

भरत पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र जी के छोटे भाई जो कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। २-शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यन्त के पुत्र का नाम। ३-अभिनेता। नट। ४-खेत। क्षेत्र। ५-प्राचीन भारत के एक प्रदेश का नाम। ६-जुलाहा। पुं० एक प्रकार का लावा पक्षी। (देश) १-काँसा नामक धातु। २-ठठेरा। स्त्री० मालगुजारी। प्रथम चक्रवर्ती।

भरणी स्त्री० (सं) १-पिया। तोरई। २-एक लग्न जो भूमि जोतने के लिए शुभ मानी जाती है। ३-एक नक्षत्र। वि० भरण-पोषण करने वाली।

भरतखंड पुं० (सं) भारत का प्राचीन नाम।

भरता पुं० (देश०) एक प्रकार का सालन जो आलू और बैंगन आदि को भून कर बनाया जाता है। २-वह जो दबाने के कारण विकृत हो गया हो। पुं० दे० 'भर्त्ता'।

भरताग्रज पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।

भरतार पुं० (देश) स्वामी। पति। मालिक।

भरती स्त्री० (हि) १-किसी वस्तु में भरे जाने का भाव। २-सेना आदि में प्रविष्ट होने के लिए जाने का भाव। (रिक्रूटमेंट)। ३-केवल स्थान पूर्ति के लिए रखी गई व्यर्थ की वस्तुएँ या बातें। ४-वह नाव जिसमें माल लादा जाता है। ५-नदी की बाढ़। ६-समुद्र का ज्वार-भाटा।

भरथ पुं० (देश०) भरत (राम के छोटे भाई)।

भरथ पुं० (सं) दे० 'भरत'।

भरथरी पुं० (हि) दे० 'भर्तृहरि'।

भरदुल पुं० (हि) [illegible]

[illegible]

[illegible] का नाम।

भरना क्रि०(हि) १-खाली स्थान को पूरा करने के लिये कोई वस्तु डालना। २-भरना। उड़ेलना। ३-तोप बन्दूक आदि में गोला आदि डालना। ४-पद पर नियुक्त करना। ५-छेद को बन्द करना। ६-ऋण चुकाना। ७-किसी के बारे में गुप्त रूप से निंदात्मक बातें कहना। ८-निबाहना। ९-खेत में पानी देना। १०-कसना। काटना। ११-पशुओं पर बोझ लादना। १२-शरीर पर पोतना। १३-शरीर का पुष्ट होना। १४-गर्भ धारण करना (पशु)। १५-चेचक के दानों का सारे शरीर में निकल आना। १६-पाव का पूरा हो जाना। पुं० (हि) १-भरने की क्रिया या भाव। २-घूस उत्कोच।

भरनि स्त्री० (हि) पोशाक। पहनावा।

भरनी स्त्री० (हि) १-करघे की ढरकी। २-मोरनी। एक जंगली बूटी।

भरपाई स्त्री० (हि) १-पूरा पावना मिल जाना। २-पूरे पावने की दी जाने वाली रसीद।

भरपूर वि० (हि) पूरी तरह से भरा हुआ। अव्य० (हि) पूर्णरूप से।

भरपेट अव्य० (हि) पेट भरकर।

भरभराना क्रि० (हि) १-घबराना। २-रोमांच होजाना। ३-सहसा नीचे आ गिरना।

भरभराहट स्त्री० (हि) सूजन। वरम।

भरभेंटा पुं० (हि) सामना। मुठभेड़। मुकाबिला।

भरम पुं० (हि) १-भ्रांति। भ्रम। सन्देह। धोखा। २-भेद। रहस्य। ६-साख।

भरमा [illegible]

[illegible]

भ[illegible]

२-भटकना।

भरमार स्त्री० (हि) अधिकता। बहुतायत।

[illegible]

[illegible] क्रि० (हि) किसी को भरने में प्रवृत्त करना।

भरसक अव्य० (हि) यथाशक्ति। जहां तक हो सके।

भरसाना स्त्री० (हि) डाँट। फटकार।

भरसाईं स्त्री० (देश) भाड़।

भरहराना क्रि० (हि) दे० 'भहराना'।

भराई स्त्री० (हि) भरने का काम या मजदूरी।

भराव पुं०(हि) भरने का भाव या काम। भरना। २-कसीदा काढ़ने में पत्तियों के बीच का स्थान। धागे [illegible]

[illegible] हुआ। २-खूब पोसा हुआ जो एक रुपये के बराबर [illegible]

भरु पुं० (हि) बोझ। वजन।

भरुआना क्रि० (हि) भारी होना।

भरुहाना क्रि० (हि) १-घमंड करना। २-बहकाना। उत्तेजित करना।

भरुही स्त्री० (देश) कलम बनाने की एक प्रकार की कलक। (हि) लवा।

भरेठ पुं० (हि) दरवाजे के ऊपर के पटाव की लकड़ी।

भरैया वि० (हि) १-भरने वाला। २ [illegible] वाला।

भरोसा पुं० (हि) १-आश्रय। सहारा

३-दृढ़ विश्वास।
भर्ग पुं० (हि) शिव। महादेव।
भर्ता पुं०(सं) १-अधिपति। स्वामी। २-पति। विष्णु
भर्तृघ्नी स्त्री० (सं) पति की हत्या करने वाली स्त्री।
भर्तृदारक पुं० (सं) राजकुमार।
भर्तृदारिका स्त्री० (सं) राजकन्या। राजकुमारी।
भर्तृदेवता स्त्री०(सं) पति को देवता मानने वाली स्त्री
भर्तार पुं० (हि) पति। स्वामी।
भर्तृमती स्त्री० (सं) सधवा स्त्री।
भर्तृव्रत पुं० (सं) पतिव्रत।
भर्तृहरि पुं० (सं) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जो राजा विक्रमादित्य के भाई थे।
भर्त्सना स्त्री० (सं) १-निंदा। शिकायत। २-डांटडपट फटकार।
भर्म पुं० (हि) दे० 'भ्रम'।
भर्मन पुं० (हि) दे० 'भ्रमण'।
भर्म पुं०(सं) गुजारे का खर्च।
भर्रा पु० (हि) १-पक्षी की उड़ान। २-एक चिड़िया।
भर्राना पुं० (हि) भर्र-भर्र शब्द होना।
भर्सन स्त्री० (हि) दे० 'भर्त्सना'।
भल वि० (हि) दे० 'भला'।
भलमनसात स्त्री० (हि) सज्जनता। भले आदमी होने का भाव।
भलमनसी स्त्री० (हि) दे० 'भलमनसाहत'।
भरी शतघ्नी स्त्री० (हि) भरी हुई बन्दूक। (लोडेड-गन)।
भला वि० (हि) १-जो स्वभाव से अच्छा हो। उत्तम प्रकृति का। २-श्रेष्ठ। अच्छा। ३-भला आदमी। सज्जन।
भलाई स्त्री० (हि) १-भला होने का भाव। भलापन। २-नेकी। उपकार। ३-हित। लाभ।
भलाचंगा वि० (हि) हृष्टपुष्ट।
भलाबुरा वि० (हि) १-हानि और लाभ। २-डांट। फटकार।
भलामानस पु० (हि) १-सज्जन। शिष्ट पुरुष। (जेंटलमेन)
भले क्रि०वि० (हि) खूब। पास।
भलेरा पुं० (हि) दे० 'भला'।
भले-ही अव्य० (हि) ऐसा हुआ हो हुआ करे।
भल्ल पुं० (सं) १-वध। हत्या। २-दान। ३-भालू। ४-भाला। ५-शिव।
भल्लक पुं० (सं) १-भालू। एक प्राचीन जनपद।
भल्लुक पुं० (सं) भालू।
भल्लूक पुं० (सं) १-भालू। २-कुत्ता।
भवंग पुं० (हि) सांप। सर्प।
भवंगा पुं० (हि) सर्प।
भवंगम पुं० (हि) सर्प।
भवंत वि० (हि) आप लोगों का। आपका।
भवंना क्रि० (हि) १-घूमना। २-चक्कर लगाना।
भव पुं० (सं) १-जन्म। उत्पत्ति। २-मेघ। ३-शिव ४-संसार। ५-सत्ता। ६-कारण। ७-जन्म मरण का दुःख। कामदेव। पुं० (हि) डर। भय। वि० (हि) १-शुभ। २-उत्पन्न।
भवचक्र पुं० (सं) मायाजाल।
भवचाप पुं० (सं) शिव का धनुष।
भवत्संमानकारी वि० (सं) आपका आदर करने वाला (पत्रों को पत्र लिखने में अन्त में नाम लिखने का विशेषण)। (योर्स रैस्पेक्टिवली)।
भवदनुगत वि० (सं) दे० 'भवदाज्ञाकारी'।
भवदनुरत वि० (सं) दे० 'भवदीय सद्भावी'।
भवदाज्ञाकारी वि० (सं) आपका आज्ञाकारी (प्रार्थना पत्र आदि में अन्त में नाम लिखने का विशेषण)। (योर्स ओबीडियेन्टली)।
भवदीय वि०(सं) आपका (पत्रों के अन्त में)। (योर्स)
भवदीयसत्यवी वि० (सं) आपका सदा सच्चाई पर रहने वाला। (योर्स ट्रूली)।
भवदीय सद्भावी वि० (सं) आपसे मित्रता और प्रेम का भाव रखने वाला (योर्स सिन्सीयरली)।
भवन पुं० (सं) १-घर। मकान। २-प्रसाद। महल। ३-जन्म। उत्पत्ति। ४-सत्ता।
भवन निर्माण विज्ञान पुं० (सं) भवन। मकान आदि बनाने की कला का शास्त्र। (आर्किटेक्चर)
भवना क्रि० (हि) दे० 'भँवना'।
भवनापकरण पुं०(सं) किसी के मकान अहाते आदि में अनधिकार रूप से प्रवेश करना। (हाउस ट्रे स-पास)।
भवनी स्त्री० (देश) स्त्री। पत्नी। गृहणी।
भवन्निष्ठ वि० (सं) आपमें विश्वास करने वाला। (व्यापारिक पत्रों आदि में पत्र के अन्त में नाम से पहले लिखने का विशेषण)। (योर्स फेथफुली)।
भवभय पुं० (सं) संसार में बारम्बार जन्म लेने का भय।
भवभामिनी स्त्री० (सं) पार्वती। भवानी।
भवभीति स्त्री० (सं) जन्म मरण का भय।
भवभूप वि० (हि) दे० 'भवभूषण'।
भवभूषण वि० (हि) संसार के भूषण।
भवभोग पुं० (सं) लौकिक सुख का उपभोग।
भवमोचन पु० (सं) संसार के बन्धनों से मुक्ति दिलाने वाला। (ईश्वर)।
भवशूल पुं० (सं) सांसारिक दुःख और कष्ट।
भवशेखर पुं० (सं) चन्द्रमा।
भवसागर पुं० (सं) संसाररूपी सागर।
भवसिंधु पुं० (सं) दे० 'भवसागर'।
भवाँ स्त्री० (हि) भौंरी। चक्कर। फेरी।
भवाँना क्रि० (हि) घुमाना। चक्कर देना।

भवांबुधि पुं० (सं) दे० 'भवसागर'।
भवा स्त्री० (हि) पार्वती।
भवात्मज पुं०(सं) गणेश।
भवानी पुं० (सं) १-पार्वती। दुर्गा।
भवानीकांत पुं० (सं) शिव।
भवानीनन्दन पुं० (सं) गणेश। कार्त्तिकेय।
भवानीपति पुं० (सं) शिव।
भवानीवल्लभ पुं० (सं) शिव।
भवाब्धि पुं० (सं) दे० 'भवसागर'।
भवि वि० (हि) दे० 'भव्य'।
भवितव्य वि० (सं) होनहार। भवनीय।
भवितव्यता स्त्री० (सं) १-होनी। २-भाग्य।
भविष्य पुं० (सं) आने वाला समय या काल।
भविष्यकाल पुं० (सं) क्रिया के तीन कालों में से एक (व्या०)।
भविष्यगुप्ता स्त्री (सं) वह नायिका जिसे रति में प्रवृत्त होने की इच्छा हो पर इसे चतुरता से छिपाने का प्रयत्न करे।
भविष्यज्ञान पुं० (सं) होने वाली बातों की जानकारी।
भविष्यत् पुं०(सं) आगामी काल। आने वाला समय।
भविष्यत्काल पुं० (सं) आने वाला समय। भविष्य।
भविष्यद्वक्ता पुं० (सं) ज्योतिषी। भविष्य की बातें पहले से बताने वाला।
भविष्यद्वाणी स्त्री० (सं) आगे होने वाली बात जो किसी ने पहले से बता दी हो। पेशीनगोई।
भविष्यनिधि स्त्री० (सं) वह निधि जो किसी संस्था या सरकारी कर्मचारी के माहवारी वेतन से काट कर उसमें उतना ही रुपया जमा करके इकट्ठी होती रहती है और अवसर ग्रहण करने के समय कर्मचारी को दे दी जाती है। संभरण निधि। (प्रोविडेंट फण्ड)
भवेला वि० (हि) १-भाव पूर्ण। २-बांका। तिरछा।
भवेश पुं०(सं) संसार का स्वामी। शिव।
भव्य वि० (सं) १-देखने में विशाल और सुन्दर। २-शुभ। ३-योग्य। ४-श्रेष्ठ। ५-प्रसन्न।
भष पुं० (हि) भोजन। आहार।
भषना क्रि० (हि) खाना। भोजन करना।
भसना क्रि० (हि) १-पानी के ऊपर तैरना। २-पानी में डूबना।
भसम पुं० (हि) दे० 'भस्म'।
भसान पुं० (हि) पूजा उपरांत मूर्ति को नदी में बहाने की क्रिया (इमर्शन)
भसाना क्रि० (हि) १-पानी पर तैरना। २-पानी में डुबोना।
भसिंड पुं० (हि) कमलनाल।
भसींड पुं० (हि) कमलनाल।
भसुंड पुं० (हि) हाथी।
भसुर पुं० (हि) जेठ। पति का भाई।
भसूँड पुं० (हि) हाथी की सूँड।
भस्म पुं० (सं) १-राख। २-अग्निहोत्र की राख जो माथे पर लगाई जाती है। ३-एक प्रकार की धातु जो वि० जो जल कर राख हो गया हो।
भस्मचय पुं० (सं) राख का ढेर।
भस्मदानी स्त्री० (हि) सिगरेट आदि की राख झाड़ने की रकाबी। (ऐशट्रे)।
भस्मपुंज पुं० (सं) भस्मराशि।
भस्मप्रिय पुं० (सं) शिव।
भस्मराशि स्त्री० (सं) दे० 'भस्मचय'।
भस्मसात् वि० (सं) जो भस्म रूप हो गया हो।
भस्मस्नान पुं० (सं) सारे शरीर पर राख मलना।
भस्मावशेष वि०(सं) राख के रूप में बचा हुआ अंश।
भस्मासुर पुं० (सं) एक दैत्य का नाम जिसे शिव जी का यह वरदान था कि वह जिस पर हाथ रख दे वह भस्म हो जायगा।
भस्मित वि० (सं) १-जला कर भस्म किया हुआ। २-जला हुआ।
भस्मीभूत वि० (सं) पूर्णतया जला हुआ। जला कर राख बना हुआ।
भस्सड़ वि० (हि) बहुत मोटा या भद्दा (आदमी)।
भहराना क्रि० (हि) १-सहसा नीचे आ गिरना। २-टूट पड़ना। ३-फिसल पड़ना।
भांउ पुं० (हि) दे० 'भाव'।
भांग स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियां लोग नशा करने के लिए पीस कर पीते हैं। भंग। विजया। (इण्डियन हेम्प)।
भांज स्त्री०(हि) १-किसी वस्तु को तह करने या मोड़ने का भाव। २-घुमाने की क्रिया। ३-रुपये नोट आदि भुनाने के बदले दिया जाने वाला बट्टा।
भांजना क्रि० (हि) १-तह करना। मोड़ना। २-लड़ी को बटना। ३-मुगदर घुमाना।
भांजा पुं० (हि) दे० 'भानजा'।
भांजी स्त्री०(हि) किसी होते हुए काम में बाधा डालने के लिए कही गई बात। चुगली।
भांट पुं० (हि) दे० 'भाट'।
भांड़ पुं० (हि) १-विदूषक। मसखरा। (बफून)। २-महफिलों में नाच-गाकर जीविका उपार्जन करने वाला। ३-हंसी। दिल्लगी। ४-विनाश। ५-रहस्योद्घाटन। ६-बरतन। भांड़ा। ७-उपद्रव।
भांड पुं० (हि) १-भांड़ा। बरतन। (वेसल)। २-माल। पण्य। व्यापार की वस्तुएं।
भांड वाष्पयान पुं० (सं) माल ले जाने वाला जल पोत। (कार्गो स्टीमर)।
भांडवाहन पुं० (सं) मालगाड़ी का डिब्बा। (वैगन)
भांडागार पुं० (सं) १-भंडार। वह स्थान जहाँ बहुत सी वस्तुएँ रखी हों। गोदाम। सरकारी गोदाम।

(वेअर हाउस)। २–कोश। खजाना।
भांडागार-अधिपत्र पुं०(सं) वह अधिपत्र जिसे दिखाकर गोदाम से माल निकाला जाता है। (वेयरहाउस वारेंट)।
भांडागार पंजी स्त्री० (सं) वह पंजी जिसमें सरकारी मालगोदाम के माल का हिसाब-किताब लिखा जाता है। (वेयरहाउस रजिस्टर)।
भांडागार-पत्तन स्त्री० (सं) वह सरकारी मालगोदाम जो माल रखने के लिए बन्दरगाहों पर बनाया जाता है। (वेयरहाउस पोर्ट)।
भांडागार-पुस्त स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें सरकारी मालगोदाम का विवरण लिखा होता है। (वेयरहाउस बुक)।
भांडागार-भाटक पुं० (सं) सरकारी गोदाम में माल रखने का भाटक या किराया। (वेयरहाउस रेंट)।
भांडागार-सुविधाएं स्त्री० (सं) बाहर से माल मंगाने या भेजने के लिए जहाज या रेलगाड़ी पर लादने या उतारने से पहले माल रखने की सुविधाएँ। (वेयरहाउस फेसीलिटीज)।
भांडागारिक पुं०(सं) १–भांडागार की देख रेख तथा व्यवस्था करने वाला कर्मचारी। (वेयरहाउस मैन) २–भंडारी। खजांची।
भांडागारिक सेवक पुं० (सं) भांडागार में काम करने वाला कर्मचारी।
भांडागारी पुं० (सं) भांडागार की व्यवस्था करने वाला अधिकारी। (वेयरहाउस कीपर)।
भांडार पुं०(सं) १–भंडार। २–वह स्थान जहां बेचने वाले का माल रखा रहता हो (स्टॉक)। ३–खजाना कोश। ४–अत्यधिक मात्रा में गुण आदि का आधार स्थान।
भांडारगृह पुं० (सं) वह स्थान जहां अनेक प्रकार की बहुत सी वस्तुएँ रखी होती हैं। (स्टोर हाउस)।
भांडारपंजी स्त्री० (सं) वह पंजी जिसमें भांडार में रहने वाली वस्तुओं का लेखा होता है। (स्टॉक-रजिस्टर)।
भांडारपाल पुं० (सं) भांडार का मुख्य अधिकारी। (स्टोर कीपर)।
भांडारिक पुं० (सं) १–दे० 'भंडारी'। २–वह जो बेचने के लिए अपने पास वस्तुओं का भंडार रखता हो। (स्टाकिस्ट)।
भांडारी पुं० (सं) दे० 'भांडारिक'।
भाँति स्त्री०(हि) १–तरह। किस्म। प्रकार। २–मर्यादा
भाँपना क्रि० (हि) १–दूर से देख कर समझ लेना। भांपना। ताड़ना। २–देखना।
भाँपू पुं० (हि) भाँपने या ताड़ने वाला।
भाँय-भाँय पुं० (हि) निर्जन स्थान या सन्नाटे में आप से आप होने वाला शब्द।
भाँवना क्रि० (हि) १–चक्कर देना। खरादना। २–सुन्दर बनाने के लिए अच्छी तरह गढ़ना।
भाँवर स्त्री० (हि) १–चक्कर लगाना। २–हल जोतते समय खेत के चारों ओर घूम आना। ३–विवाह के समय वधु और वर की अग्नि के चारों ओर की परिक्रमा।
भाँवरा पुं० (हि) फेरा। चक्कर। परिक्रमा।
भांस स्त्री० (हि) शब्द। आवाज़।
भा अव्य० (हि) यदि इच्छा हो। या। चाहे। स्त्री० (सं) १–चमक। प्रकाश। २–शोभा। छवि। ३–रश्मि ४–बिजली। विद्युत। ५–चित्र। (फोटो)।
भाइ पुं० (हि) १–प्रेम। प्रीति। स्वभाव। ३–विचार। स्त्री० (हि) १–तरह। भांति। २–रंगढंग। ३–चमक। दीप्ति।
भाइप पुं० (हि) भाईचारा।
भाई पुं० (हि) १–अपने माता पिता से उत्पन्न दूसरा लड़का या व्यक्ति। भ्राता। २–बराबर वालों के लिये आदरसूचक शब्द।
भाईचारा पुं० (हि) परम मित्र या बन्धु होने का भाव
भाईदूज पुं० (हि) भैयादूज।
भाईबंद पुं० (हि) १–एक ही वंश या गोत्र के लोग। २–मित्रवर्ग।
भाईबिरादर पुं० (हि) दे० 'भाईबंद'।
भाई-बिरादरी स्त्री० (हि) जाति या समाज के लोग।
भाउ पुं० (हि) दे० 'भाव'।
भाऊ पुं० (हि) १–प्रेम। स्नेह। २–भावना। ३–स्वभाव। ४–महत्त्व। ५–स्वरूप। ६–महत्व। ७–प्रभाव। ८–विचार।
भाएँ अव्य० (हि) समझ में। बुद्धि के अनुसार।
भाकसी स्त्री० (हि) भट्टी।
भाखना क्रि० (हि) कहना। बोलना।
भाखा स्त्री० (हि) दे० 'भाषा'।
भाग पुं० (हि) १–हिस्सा। अंश। २–पार्श्व। ओर। भाग्य। ४–सौभाग्य। ५–ललाट। ६–प्रातःकाल। ७–गणित में किसी राशि की संख्या को कई अंशों में बांटने की क्रिया।
भागड़ स्त्री० (हि) दे० 'भगदड़'।
भागण पुं० (हि) १–भाग्यवान। सूर्य आदि की प्रभा
भागदौड़ स्त्री० (हि) १–दौड़धूप। २–भगदड़।
भागधेय पुं० (सं) १–भाग्य। किस्मत। २–राजा को दिया जाने वाला कर। ३–दायाद। सपिंड।
भागना क्रि० (हि) १–पालायन करना। २–कोई काम करने से बचना या डरना। ३–टल जाना। ४–हट जाना।
भागफल पुं० (सं) भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त संख्या।
भागभरा वि० (हि) भाग्यवान।

भागवत वि० (हि) भाग्यवान।

भागवत पु० (सं) १-अट्ठारह पुराणों में से एक। २-ईश्वर का भक्त। ३-तेरह मात्रा का एक छन्द। वि० भगवान्-सम्बन्धी।

भागाभाग स्त्री० (हि) दे० 'भागड़'।

भागार्ह वि० (सं) जो भाग देने योग्य हो।

भा-ग्राही वि० (सं) वह (पदार्थ) जिस पर फोटो (भा) का अक्स लेने की क्षमता होती है। (फोटो-रिसेप्टिव)।

भागिता स्त्री०(सं) किसी व्यापार में किसी का हिस्सा होना। साझेदारी। (पार्टनरशिप)।

भागिता-अधिनियम पु० (सं) साझेदारी में व्यापार आदि करने के लिए बनाया गया अधिनियम। (पार्टनरशिप एक्ट)।

भागिता-अवसान पु० (सं) साझेदारी को समाप्त करने का कार्य। (डिसॉल्यूशन ऑफ पार्टनरशिप)

भागितानिधि स्त्री० (सं) वह निधि जो साझे की हो। (पार्टनरशिप फण्ड)।

भागिता-लेखा पु० (सं) साझेदारी के व्यापार का लेखा। (पार्टनरशिप एकाउंट)।

भागिता-विलेख पु०(सं) साझे में व्यापार आदि चलाने के लिए आपस में किया गया लिखित समझौता। (पार्टनरशिप डीड)।

भागिता-सार्थ पु०(सं) वह व्यापारिक संस्था, दुकान या कारोबार जिसमें एक से अधिक साझेदार हों। (पार्टनरशिप फर्म)।

भागिता-हित पु० (सं) किसी दुकान या व्यापार में किसी साझेदार का हित। (पार्टनरशिप इन्टेरेस्ट)

भागिनेय पु० (सं) भानजा।

भागी स्त्री० (सं) १-हिस्सेदार। साझी। (पार्टनर)। २-अधिकारी। ३-शिव। वि० १-हिस्सेदार। शामिल। २-भाग्यवान्।

भागीदार पु० (हि) हिस्सेदार। सहभागी।

भागी प्रवेश पु० (सं) किसी को साझेदार बनाना। (एडमीशन ऑफ पार्टनर)।

भागीमृत्यु पु०(सं) किसी साझेदार की मृत्यु हो जाना (डेथ ऑफ पार्टनर)।

भागीरथ पु० (हि) दे० 'भगीरथ'।

भागीरथी स्त्री०(सं) १-गंगा नदी। २-गंगा की एक शाखा का नाम।

भाग्य पु० (सं) नसीब। तकदीर। दैव। नियति। विधि। प्रारब्ध।

भाग्यक्रम पु० (सं) भाग्य का फेर।

भाग्यदा स्त्री० (सं) घुड़-दौड़ में टिकट बेच कर या टिकटों को पकसे में डाल कर मशीन द्वारा निकलने वाले टिकट वालों को इनाम देने की पद्धति। (लॉटरी)।

भाग्यदा कार्यालय पु० (सं) भाग्यदा निकालने का कार्यालय। (लॉटरी ऑफिस)।

भाग्यदोष पु० (सं) किस्मत की खराबी।

भाग्यपत्रक पु० (सं) वह कागज का टुकड़ा या गोली जिसे फेंक कर या उठा कर माल का बटवारा किया जाता है। (लॉट)।

भाग्यबल पु०(सं) तकदीर का बल।

भाग्यलिपि स्त्री० (सं) वह जो भाग्य में लिखा हो।

भाग्यवश अव्य० (सं) तकदीर से।

भाग्यवाद पु० (सं) भाग्य के अनुसार अच्छा बुरा मानने का सिद्धांत।

भाग्यवान वि०, पु० (सं) अच्छे भाग्य वाला। खुश-भाग्यशाली।

भाग्यविधाता पु० (सं) भाग्य बनाने वाला।

भाग्यविपर्यय पु० (सं) दिनों का फेर।

भाग्यविप्लव पु० (सं) दुर्भाग्य।

भाग्यशाली वि० (सं) भाग्यवान।

भाग्यसंपद स्त्री० (सं) सौभाग्य।

भाग्यहीन वि० (सं) बदनसीब। अभागा।

भाग्योदय पु०(सं) तकदीर का खुलना।

भा-चित्र पु० (सं) प्रकाश की सहायता से यंत्र द्वारा लिए जाने वाला छाया चित्र। आलोक चित्र। (फोटोग्राफ)।

भा-चित्र अनुभाग पु० (सं) किसी कार्यालय का वह अनुभाग जहां भा-चित्र लेने का कार्य होता है। (फोटो सेक्शन)।

भा-चित्र-निर्वचन समूह पु०(सं) (सेना में) वायुयान द्वारा लिए गये चित्रों का निर्वचन करने वाले सैनिकों का एक विशेष दल जो इसी कार्य पर लगाया जाता है (फोटो इन्टरप्रेटेशन टीम)।

भा-चित्रिक पु०(सं) फोटो या भा-चित्र उतारने वाला (फोटोग्राफर)।

भा-चित्रिकी स्त्री०(सं) १-वह शास्त्र जिसमें भा-चित्र उतारने की विधि के बारे में दिया हुआ होता है। २-भाचित्र उतारने की क्रिया या भाव (फोटोग्रैफी)

भाजक वि० (सं) विभाग करने वाला। बांटने वाला पु० वह अंक जिससे किसी संख्या का भाग किया जाय। (गणित)।

भाजन पु० (सं) १-बरतन। लोटा। २- आधार। पात्र। योग्य।

भाजना क्रि० (हि) भागना।

भाजित वि० (सं) १-विभक्त। अलग किया हुआ। २-जिसे अन्य संख्या से भाग दिया गया हो(गणित)

भाजी स्त्री०(सं) तरकारी, साग आदि खाने की वन-स्पतियां का पत्ता।

भाज्य पु० (सं) वह अंक जिसमें भाजकअंक से भाग किया जाता है। वि० विभाग करने योग्य।

३-ध्यान। ४-अभ्यास। ५-कल्पित विचार।
भानजा पुं० (हि) बहन का लड़का।
भानना क्रि० (हि) १-तोड़ना। भंग करना। २-नष्ट करना। ३-समझना।
भानमती स्त्री० (हि) जादूगरनी।
भानवी स्त्री० (हि) यमुना।
भानवीय वि० (सं) भानु संबंधी। पुं०(सं) दाहिनी ओर की आँख।
भाना क्रि०(हि) १-अच्छा लगना। पसंद आना। २-जान पड़ना। ३-चमकना।
भानु पुं० (सं) १-सूर्य। किरण। ३-राजा। ४-मंदार आक। स्त्री० (सं) दक्ष की कन्या का नाम।
भानुज पुं०(सं) १-यम। २-शनिश्चर।
भानुजा स्त्री० (सं) यमुना।
भानुपाक पुं० (सं) धूप में रख कर औषध तैयार करने की क्रिया।
भानुप्रताप पुं० (सं) एक राजा का नाम जो मरने पर रावण हुआ (रामा०)।
भानुमती स्त्री० (सं) एक प्रसिद्ध जादूगरनी (कदाचित कल्पित)।
भानुमान वि० (सं) दीप्तिमान। चमकदार। तेजयुक्त
भानुमुखी स्त्री० (सं) सूर्यमुखी।
भानुवार पुं० (सं) रविवार।
भानुसुत पुं० (सं) १-यम। २-शनिश्चर।
भानुसुता स्त्री० (सं) यमुना।
भाप पुं० (हि) १-वाष्प। उबालते हुए पानी में निकलने वाले सूक्ष्म जल कण जो धूएँ के रूप में उड़ते हुए दिखाई देते हैं (स्टीम)। २-द्रव्य पदार्थों की वह अवस्था जो ताप पाकर विलीन होने पर होती है (वेपर)।
भापना क्रि० (हि) दे० 'भांपना'।
भाफ पुं० (हि) दे० 'भाप'।
भाभर पुं०(हि) १-पहाड़ों की तराई का जंगल। २-एक घास जिसकी रस्सी बटी जाती है।
भाभरा वि० (हि) लाल।
भाभी स्त्री० (हि) बड़े भाई की स्त्री भौजाई।
भामंडल पुं० (सं)१-सूर्य, चंद्रमा आदि के चारों ओर दिखाई देने वाला प्रकाश का घेरा। २-तेजस्वी पुरुषों के मुख के चारों ओर दिखाई देने वाला वलय प्रभामंडल। (हालो)।
भाम स्त्री (हि) स्त्री। औरत।
भामा स्त्री० (हि) १-स्त्री। औरत। २-क्रुद्ध स्त्री।
भामिनी स्त्री० (सं)१-क्रोध करनेवाली स्त्री। २-सुन्दर स्त्री।
भामी स्त्री० (सं) तेज स्त्री। वि०(हि) क्रुद्ध। नाराज।
भामुद्रण पुं० (सं) एक प्रकार की छपाई। जिसमें फोटो लेकर छपाई की जाती है। (फोटो प्रिंटिंग)।
भाय पुं० (हि) भाई।
भायप पुं० (हि) भाईचारा।
भाया वि० (हि) प्रिय। प्यारा। पुं० (हि) भाई।
भार पुं० (सं) १-किसी वस्तु का गुरुत्व जो तौल के द्वारा जाना जाता है। वजन। बोझ। (वेट)। २-उत्तरदायित्व। (चार्ज)। ३-वह बोझा जो किसी वाहन या किसी अंग पर रख कर कहीं ले जाया जाता है। (लोड, बर्डन)। ४-किसी वस्तु की रेहन पड़े रहने, बन्धक होने या ऋणग्रस्त होने की अवस्था (सवि०)। (एनकम्बरेंस)। ५-देखभाल। संभाल। ६-एक तौल।
भाराक्रान्त वि०(सं)जो बन्धक रखी हुई हो या जिस पर ऋण ले रखा हो (एन्कम्बर्ड)।
भारकेंद्र पुं० (सं) गुरुत्व केंद्र। भार का मध्य केंद्र। सेंटर ऑफ ग्रैविटी)।
भारक्षम वि० (सं) भार ले जाने की क्षमता। (जहाज आदि)।
भारग्रस्त वि० (सं) दे० 'भाराक्रान्त'। (एन्कम्बर्ड)
भारग्रस्तता स्त्री० (सं) वह संपत्ति जिस पर ऋण का भार हो या जो रेहन रखदी गई हो (एन्कम्बर्ड-एस्टेट)।
भारजीवी पुं० (सं) बोझा ढो कर जीविका चलाने वाला। पल्लेदार।
भार तथा माप पुं० (सं) सामूहिक रूप से भारों के बट्टे तथा कई प्रकार के माप। (वेट्स एण्ड मेजरस)
भारत पुं० (सं) १-भारतवर्ष। हिन्दुस्तान। २-भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। ३-महाभारत का मूलरूप ४-अग्नि। दे० 'भारतवर्ष'। ५-लम्बा-चौड़ा विवरण। ६-घोर युद्ध।
भारत आरक्षी सेवा स्त्री०(सं) भारत की पुलिस सेवी में अधिकारी नियुक्त करने का आयोग (इंडियन पुलिस सर्विस)।
भारतखंड पुं० (सं) दे० 'भरतखंड'।
भारतदंड-संहिता स्त्री० (सं) जाब्ता। फौजदारी (इन्डियन पीनल कोड)।
भारतमहासागर पुं० (सं) भारतवर्ष के दक्षिण के महासागर का नाम।
भारतमाता स्त्री० (सं) भारतभूमि।
भारतवर्ष पुं० (सं) वह देश जो एशिया में हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। हिन्दुस्तान। आर्यावर्त'। (इन्डिया)।
भारतवर्षीय वि० (सं) भारतवर्ष संबन्धी।
भारतवासी पुं० (सं) भारत देश में रहने वाला। भारतीय।
भारत संतान पुं०(सं) भारतवासी।
भारतीय-आयकर पुं० (सं) भारत में आय पर लगने वाला कर। (इन्डियन इन्कमटैक्स)।

भारत-शासन पुं० (सं) भारत की सरकार। गवर्नमेंट-ऑफ इण्डिया)।
भारत-शासन प्रयोग मुद्रांक पुं०(सं) भारत के बीमा-पत्रक पर लगाए जाने वाले टिकट। (गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया इन्श्योरेंस स्टेम्प)।
भारत-शासन टंकशाला स्त्री० (सं) भारत सरकार की टकसाल। (इण्डिया गवर्नमेंट मिंट)।
भारति स्त्री० (हि) भारती।
भारती स्त्री० (सं) १-वचन। वाणी। २-सरस्वती। ३-ब्राह्मी। ४-एक वर्णन शैली। ५-मंगलग्रह।
भारतीय वि० (सं) भारत-सम्बन्धी। भारत का। पुं० भारतवर्ष का निवासी।
भारतीय अधिनियम पुं० (सं) भारतवर्ष में लागू होने वाला अधिनियम। (इण्डिया एक्ट)। (इंडियन लिमिटेशन एक्ट)।
भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम पुं० (सं) भारत के उत्तराधिकार के अधिनियम। (इण्डियन सक्सेशन एक्ट)।
भारतीय अवधि अधिनियम पुं० (सं) किसी सम्पत्ति आदि के बारे में मुकदमा दायर करने की अवधि के बारे में अधिनियम।
भारतीय उत्प्रवास अधिनियम पुं० (सं) भारत से दूसरे देश में जाकर बसने वालों से सम्बन्धित अधिनियम। (इंडियन एमिग्रेशन एक्ट)।
भारतीय खनि तथा व्यावहारिक भौमिकी विद्यालय पुं० (सं) भारत सरकार का वह विद्यालय जिसमें खानों तथा भू-शास्त्र के सम्बन्ध में शिक्षा दी जाती है। (इंडियन स्कूल आफ माइन्स एन्ड एप्लाइड साइंस)।
भारतीय नागरिक पुं० (सं) भारत का नागरिक। (इंडियन नेशनल)।
भारतीय प्रत्याभूति मुद्रणालय पुं० (सं) वह मुद्रणालय जिसमें भारत के राजकीय मुद्रांक तथा नोट आदि छपते हैं। (इंडियन सिक्यूरिटी प्रेस)।
भारतीय प्रमाप संस्था स्त्री० (हि) वह संस्था जो भारत में निर्माण की गई वस्तुओं के प्रमाप निर्धारित करती है। (इंडियन स्टैंडर्ड इंस्टीट्यूशन)।
भारतीय पारपत्र अधिनियम पुं०(सं) भारत से बाहर यात्रा करने के लिये दिये जाने वाले पार-पत्र सम्बन्धी नियम। (इंडियन पासपोर्ट एक्ट)।
भारतीय प्रशासन सेवा स्त्री० (सं) वह सेवा जिसमें भारत की शासन व्यवस्था चलाने वाले अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है। (इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस)।
भारतीय फल प्रायोगिकी विद्यालय पुं० (सं) वह भारतीय विद्यालय जिसमें फलों के उद्योग के सम्बन्ध में शिक्षा दी जाती है। (इण्डियन इनस्टीट्यूट आफ फ्रूट टेकनोलॉजी)।
भारतीय भाषा माध्यमिक पाठशाला स्त्री० (सं) वह माध्यमिक पाठशाला जिसमें भारतीय भाषा की शिक्षा दी जाती है। (इण्डियन वर्नेकुलर मिडिल-स्कूल)।
भारतीय वायु सेना स्त्री (सं) भारत की वायु सेना। (इंडियन एयरफोर्स)।
भारतीय युद्ध स्मारक पुं०(सं) भारत में बना युद्ध-स्मारक। (इंडियन वार मेमोरियल)।
भारतीय विज्ञान विहार पुं० (सं) भारत का वह उच्च शिक्षालय जहाँ विज्ञान की उच्च शिक्षा दी जाती है और अनुसंधान किया जाता है। (इण्डियन ऐकडेमी आफ साइंसेज)।
भारतीय संग्रहालय पुं० (हि) पुरातत्व सम्बन्धी तथा अन्य ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रहालय। (इंडियन म्युजियम)।
भारतीय संचित बल (सेना) पुं० (सं) भारत की वह सेना जो विपत्ति काल में साधारण सेना के अतिरिक्त सेवा के लिए तैयार रहती है। (इंडियन रिजर्व फोर्सेज)।
भारतीय संयान समवाय पुं० (सं) भारतीय रेल समवाय। (इंडियन रेलवे कम्पनी)।
भारतीय समुद्र पुं० (सं) भारत के तट से लाने वाले समुद्र की वह सीमा जहाँ तक भारत शासन का अधिकार माना जाता है। (इंडियन वाटर्स)।
भारतीय सामुद्र न्यायालय पुं० (सं) वह न्यायालय जहाँ भारत के सामुद्रिक जहाजों आदि के झगड़े निपटाये जाते है। (इण्डियन मेराइन कोर्ट)।
भारतीयीकरण पुं० (सं) विभागों तथा संस्थाओं में विदेशी कर्मचारियों को हटाकर उन के स्थान पर भारतीयों को नियुक्त करना जिससे केवल भारतीयों की प्रधानता रहे।
भारथ पुं० (हि) १-दे० 'भारत'। २-युद्ध।
भारथी पुं० (हि) सिपाही। योद्धा।
भारदंड पुं० (सं) बहँगी।
भारद्वाज पुं० (सं) १-भरद्वाज के वंशज। २-द्रोणाचार्य। ३-भरदूल नामक पक्षी। ४-हड्डी। ५-मंगल ग्रह।
भारधारक पुं०(सं) वह जिस पर किसी के काम करने का या किसी वस्तु की रक्षा करने का उत्तरदायित्व हो। (चार्ज होल्डर)।
भारना क्रि० (हि) १-बोझ लादना। दबाना। २-भार डालना।
भारप्रमाणक पुं० (सं) वह प्रमाण पत्र जो इस बात का सूचक हो कि किसी व्यक्ति को किसी कार्य का भार सौंप दिया गया हो। (चार्ज-सार्टीफिकेट)।
भारभूत पुं० (सं)। बहुत भारी बोझ (डेड व्हेट)।

भारभृत् वि० (सं) बोझ उठाने वाला।
भारयष्टि स्त्री० (सं) भारदंड। बहँगी।
भारवाह पुं० (सं) बोझ ढोने वाला।
भारवाह अधिकारी पुं०(सं) वह अधिकारी जिस पर किसी पद या कार्य का सम्पूर्ण भार हो।
भारवाहक पुं० (सं) दे० 'भारवाह'।
भारवाहन पुं०(सं) १-बोझ ढोने की क्रिया या भाव २-पशु। ३-गाड़ी।
भारवाहिक पुं० (सं) दे० 'भारवाह'।
भारवाही वि० (सं) दे० 'भारवाह'।
भारशृङ्ग पुं० (सं) भार उठाने का डंडा। झटका। (लिवर)।
भारसह पुं० (सं) गधा। वि० जिसमें भार उठाने का सामर्थ्य हो।
भारहर पुं० (सं) बोझा उठाने वाला।
भारहारी पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-विष्णु।
भारहीन वि० (सं) जिसमें भार न हो। (व्हेटलेस)।
भारा वि० (हि) दे० 'भारी'।
भाराक्रांत वि० (सं) १-जो बोझ से दबा हुआ हो। २-जिस पर सम्पत्ति आदि रहन रखकर ऋण चुकाने का भार डाला गया हो।
भारिक वि० (सं) १-बोझ ढोने वाला। २-जिसके कारण भार पड़े।
भारिकमत पुं० (सं) १-सभापति का वह मत जो वह किसी विवाद ग्रस्त विषय का निर्णय करने के लिए देता है। (कास्टिंग वोट)।
भारित वि० (सं) १-जिस पर कोई भार हो। २-जिस पर कोई ऋण हो। (एनकम्बर्ड)।
भारित देशनांक पुं० (सं) किसी वस्तु का सापेक्ष मूल्यांकन करने वाले देशनांक। (व्हेटेड इनडेक्स नम्बर्स)।
भारितमाध्य पुं०(सं) किसी वस्तु का सापेक्ष मूल्यांकन करने वाले माध्य। (व्हेटेड एवरेज)।
भारी वि० (हि) १-जिसमें अधिक बोझ हो। २-असह्य। ३-कठिन। ४-प्रबल। ५-गंभीर। ६-शांत ७-सूजा हुआ।
भारीपन पुं० (हि) १-गुरुत्व। २-भारी होने का भाव
भारी वस्तु स्त्री० (सं) वह वस्तु जिसमें बहुत बोझ या भार हो। (हेवी स्टेट)।
भारोद्वह पुं० (सं) भार ढोने वाला।
भारोपीय वि० (सं) भारत तथा योरप में समानरूप से पाये जाने वाले या उत्पन्न। (इन्डो यूरोपियन)
भार्गव पुं० (सं) १-भृगु के वंश से उत्पन्न पुरुष। २-परशुराम। ३-हाथी। ४-कुम्हार। ५-एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहती है। ६-हीरा। ७-जमदग्नि।
भार्गवी स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-पार्वती। ३-दूब।
भार्गवीय वि० (सं) भृगु सम्बन्धी।
भार्गवेश पुं० (सं) परशुराम।
भार्या स्त्री० (सं) पत्नी। स्त्री। (यूक्सर, वाइफ)।
भार्याटिक वि० (सं) जो पत्नी के शासन में रहता हो।
भार्याद्रोही वि० (सं) पत्नी से झगड़ा करने वाला।
भार्यात्व पुं० (सं) भार्या या पत्नी होने का भाव।
भाल पुं० (सं) १-कपाल। माथा। ललाट। २-तेज। (हि) १-भाला। २-तीर का फल। ३-भालू। रीछ।
भालचन्द्र पुं० (सं) महादेव।
भालनयन पुं० (सं) शिव।
भालना क्रि०(हि)१-ध्यानपूर्वक देखना। २-ढूँढना। खोजना।
भाललोचन पुं० (सं) शिव।
भाला पुं० (हि) नेजा। बरछा।
भालाबरदार पुं०(हि)भाला लेकर चलने वाला व्यक्ति।
भालि स्त्री० (हि) १-बरछी। २-शूल। काँटा।
भाली स्त्री० (हि) भाले या बरछे की नोक।
भालु पुं० (हि) दे० 'भालू'।
भालुक पुं० (सं) रीछ।
भालू पुं० (हि) एक प्रसिद्ध हिंसक पशु जिसके सारे शरीर पर काले,भूरे या सफेद बाल होते हैं। रीछ।
भावता पुं० (हि) १-प्रिय। २-होनहार। भावी।
भाव पुं०(सं) १-होने की क्रिया या तत्व। २-विचार ख्याल। (नोशन)। ३-अभिप्राय। ४-आत्मा। ५-जन्म। ६-वस्तु। पदार्थ। ७-विभूति। ८-मुख की चेष्टा या आकृति। ९-पर्यालोचन। १०-स्वभाव। ११-मन की छिपी हुई गूढ़ इच्छा। १२-ढंग। १३-दशा। १४-प्रतिष्ठा। १५-किसी बिक्री की वस्तु का [illegible]

[illegible]

भावपूर्ण। पुं० १-भावना करने वाला। २-भक्त। प्रेमी। ३-भाव। उत्पादक। उत्पन्न करने वाला।
भावगति स्त्री० (हि) इच्छा। इरादा। विचार।
भावगम्य वि० (सं) भक्तिपूर्वक ग्रहण करने योग्य।
भावग्राह्य वि० (सं) भक्तिपूर्वक ग्रहण करने योग्य।
भावग्राही वि० (सं) भाव या अभिप्राय को समझने वाला।
भावज पुं० (सं) कामदेव। स्त्री० (हि) भाभी। भाई की पत्नी।
भावज्ञ वि० (सं) मानसिक भाव जानने वाला।
भावता वि० (हि) १-जो भला लगे। २-प्रिय।
भाव-ताव पुं० (हि) १-किसी वस्तु का मूल्य या दर २-रङ्ग-ढंग।
भावन वि० (हि) अच्छा या भला लगने वाला। पुं०

(सं) १-भावना। २-विष्णु।
भावना स्त्री० (सं) १-विचार। खयाल। २-साधारण विचार या कल्पना। ३-चाह। इच्छा। ४-पुट। ५-चूर्ण, जल आदि को रस में घोटने की क्रिया। ६-कौआ। ७-स्मरण। ८-धारण। (कॉम्पलेक्स)।
भावनामय वि० (सं) काल्पनिक।
भावनि स्त्री० (हि) इच्छानुसार काम या बात।
भावनीय वि० (सं) सोचने विचारने के योग्य।
भावप्रधान वि० (सं) दे० 'भाववाच्य'।
भावप्रवण वि० (सं) भावुक।
भावप्रवणता स्त्री० (सं) भावुकता।
भावबोधक वि० (सं) भाव प्रकट करने वाला।
भावभक्ति स्त्री० (सं) १-ईश्वर की भक्ति का भाव। २-आदर-सत्कार।
भावमैथुन पुं० (सं) जैनमतानुसार मन में मैथुन का विचार रखना।
भाववाचक वि० (सं) किसी वस्तु का भाव या गुण सूचित करने वाली (व्या०)।
भाववाच्य पुं० (सं) क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया का कर्ता और कर्म के स्थान पर केवल कोई भाव हो (व्या०)।
भावव्यंजक वि० (सं) भावबोधक।
भावशबलता स्त्री० (सं) एक अलंकार जिसमें अनेक भावों की सन्धि होती है।
भावशांति स्त्री० (सं) साहित्य में एक अवस्था जिसमें किसी नये विरोधी भाव के आने पर पहले का कोई भाव समाप्त हो जाता है।
भावशुद्धि स्त्री० (सं) नेकनीयत।
भावसंधि स्त्री० (सं) वह अलंकार जिसमें दो विरुद्ध भावों की संधि का वर्णन होता है।
भावांतर पुं० (सं) १-अर्थांतर। २-मन दूसरी ओर हो जाना।
भावानुग वि० (सं) जो भावों का अनुसरण करता हो।
भावाभास पुं० (सं) साहित्य में भाव का अनुपयुक्त स्थान पर दिखाया जाना।
भावार्थ पुं० (सं) १-वह अर्थ जो मूल का भाव मात्र हो। २-अभिप्राय। आशय।
भाविक पुं० (सं) वह अनुमान जो होने वाला हो। वि० मर्मज्ञ।
भावित वि० (सं) १-सोचा हुआ। विचारा हुआ। २-शुद्ध किया हुआ। ३-मिलाया हुआ। ४-जिसमें पुट दिया गया हो। ५-भेंट किया हुआ। ६-सुगंधित
भाविप्रदान पुं० (सं) भविष्य में भेजा जाने वाला माल। (फ्यूचर डिलीवरी)।
भावी स्त्री० (हि) १-आने वाला समय। २-होनी। भाग्य। वि० (सं) भविष्य में आने वाला।
भावीदायाद पुं०(सं) भविष्य में बनने वाला दायाद (फ्यूचर एअर)।
भावीपण्य पुं० (हि) सट्टा। (फ्यूचर्स)।
भावीभाटक पुं० (सं) भविष्य में लिया जाने वाला किराया। (फ्यूचर रेंट)।
भावीसंपदा स्त्री० (सं) भविष्य में मिलने वाली संपत्ति (फ्यूचर एस्टेट)।
भावी हस्तांतरण पत्र पुं० (सं) भविष्य में संपत्ति आदि का हस्तांतरण करने का पत्रक। (फ्यूचर एश्योरेंस)।
भावुक वि० (सं) १-भावना करने वाला। सोचने वाला। २-उत्तम भावना करने वाला। ३-जिसके मन पर कोमल भावों का सहज में प्रभाव पड़ता हो (सेन्टिमेंटल)।
भावुकता स्त्री० (सं) भावुक होने का भाव या गुण। (सेन्टिमेन्टेलिज्म)।
भावें अव्य (हि) चाहे।
भावोदय पुं० (सं) एक अलंकार जिसमें किसी भाव के उदय होने की अवस्था का वर्णन होता।
भावोद्दीपक वि० (सं) जो भावों को उत्तेजित करे।
भावोन्मत्त वि० (सं) भावविह्वल।
भावोन्मेष पुं० (सं) भाव का उत्पन्न होना।
भाव्य वि० (सं) १-विचारणीय। २-सिद्ध करने योग्य ३-भावी।
भाषक पुं० (सं) बोलने वाला। कहने वाला।
भाषज्ञ पुं० (सं) भाषा का ज्ञाता।
भाषण पुं० (सं)१-बातचीत। कथन। २-व्याख्यान वक्तृता (स्पीच)।
भाषण-प्रतियोगिता स्त्री० (सं) किसी विषय पर बोलने की प्रतियोगिता।
भाषना क्रि० (हि) १-बोलना। कहना। २-भोजन करना।
भाषांतर पुं०(सं) एक भाषा का दूसरी भाषा में किया हुआ अनुवाद उल्था। (ट्रांसलेशन)।
भाषा पुं० (सं) १-बोली। जबान। मुख से निकले हुए सार्थक शब्दों या वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा मन के विचार दूसरे पर प्रकट किये जाते हैं। २-किसी देश के निवासियों की प्रचलित बात करने का ढंग। ३-आधुनिक हिन्दी। ४-वाक्य। वाणी। ५-सरस्वती। (लैंग्वेज)
भाषाज्ञान पुं०(सं) किसी भाषा के व्याकरण का ज्ञान
भाषाबद्ध वि०(सं) साधारण भाषा में लिखा या बना हुआ।
भाषाविज्ञान पुं०(सं) वह विज्ञान जिसमें भाषा की उत्पत्ति, विकास, और रूपपरिवर्तन आदि का विवेचन होता है। (फिलोलोजी)
भाषाविद पुं० (सं०) १-किसी भाषा का पूर्ण पंडित। २-अनेक भाषाओं का ज्ञाता। (लिंग्विस्ट)।

छेदा जाना।
भिदुर पुं० (हि) वज्र।
भिनकना क्रि० (हि) १-भिन-भिन शब्द करना। २-घृणा उत्पन्न करना। ३-कोई काम अधूरा रहजाना
भिनभिनाना क्रि० (हि) भिन-भिन शब्द करना।
भिनसार पुं० (हि) सवेरा। प्रभात।
भिनहीं अव्य० (हि) सवेरे। तड़के।
भिन्न वि० (सं) १-अलग। पृथक। २-दूसरा। अन्य। (डिफरेन्ट)। पुं० १-इकाई से कम भाग की संख्या सूचित करने वाली कोई संख्या (गणित)। (फ्रेक्शन) किसी तेज धार के अस्त्र से शरीर का कोई भाग कट जाना। (वैद्यक)।
भिन्न-आदेश पुं० (सं) कोई दूसरा आदेश। (डिफरेन्ट आर्डर)।
भिन्नक्रम वि० (सं) जिसका क्रम या सिलसिला टूट गया हो।
भिन्नता स्त्री० (सं) भिन्न होने का भाव। अलगाव।
भिन्नदेशीय वि० (सं) किसी दूसरे देश का।
भिन्नभिन्नात्मा पुं० (सं) चना।
भिन्नमतावलंबी पुं० (सं) दूसरे मत या मजहब का अनुयायी।
भिन्नरुचि वि० (सं) जिसकी रुचि अलग हो।
भिन्नहृदय वि० (सं) जिसका दिल छिद गया हो।
भिन्नात्मक वि० (सं) (गणित) वह संख्या जिसमें इकाई को कोई भाग भी लगा हो। (फ्रेक्शनल)।
भिन्नाना क्रि०(हि) (बदबू आदि) से सिर चकराना।
भिन्नार्थ वि० (सं) जिसका उद्देश्य भिन्न हो।
भिन्नोदर पुं० (सं) सौतेला भाई।
भियना क्रि० (हि) डरना।
भिरना क्रि० (हि) दे० 'भिड़ना'।
भिलनी स्त्री० (हि) १-भील जाति की एक स्त्री। २-भील की स्त्री।
भिलावां पुं० (हि) एक जंगली वृक्ष जिसका विषैला फल औषधि के काम आता है।
भिल्ल पुं० (हि) दे० 'भील'।
भिश्त स्त्री० (फा) स्वर्ग। वैकुण्ठ।
भिश्ती पुं० (फा) मशक से पानी भर कर ढोने वाला सक्का। मशकी।
भिषक पुं० (सं) वैद्य।
भिषग्वर पुं० (हि) वैद्य।
भिष्टा स्त्री० (हि) विष्ठा। मल।
भिसत स्त्री० (हि) स्वर्ग।
भिस्ती पुं० (हि) दे० 'भिश्ती'।
भिस्स स्त्री० (हि) भँसीड़। कमल की जड़।
भींचना क्रि० (हि) १-खींचना। कसना। २-मूँदना बंद करना। (आंख)।
भींजना क्रि० (हि) १-गीला होना। २-पुलकित हो जाना। ३-नहाना। समाजाना।
भींट पुं० (हि) दे० 'भीत'। स्त्री० दीवार।
भी अव्य०(हि) १-अवश्य। जरूर। २-अधिक। विशेष ३-तक। स्त्री० भय। डर।
भीउँ पुं० (हि) दे० 'भीम'।
भीक स्त्री० (हि) दे० 'भीख'।
भीकर वि० (सं) भयोत्पादक।
भीख स्त्री० (हि) १-भिक्षा। २-भिक्षा में मिला हुआ धन या पदार्थ। खैरात।
भीखन वि० (हि) भयानक। डरावना।
भीखम पुं० (हि) भीष्मपितामह। वि० भयानक। डरावना।
भीगना क्रि० (हि) किसी तरल पदार्थ या पानी से तर या आर्द्र होना।
भीजना क्रि० (हि) दे० 'भीगना'।
भीट पुं० (हि) दे० 'भीटा'।
भीटा पुं०(देश) १-टीले के समान कुछ ऊँची जमीन २-वह बनाई गई ऊँची और ढलवाँ जमीन जिस पर पान के पौधे लगाये जाते हैं।
भीड़ स्त्री० (हि) १-जनसमूह। एक ही स्थान पर एक ही समय में आदमियों का जमाव। २-संकट। ३-किसी बात की अधिकता।
भीड़ना वि० (हि) १-मिलाना। २-लगाना।
भीड़भड़क्का पुं० (हि) दे० 'भीड़भाड़'।
भीड़भाड़ स्त्री० (हि) जनसमूह।
भीड़ा वि० (हि) तंग। संकुचित। स्त्री० भिड़ी।
भीत स्त्री०(सं) १-दीवार। भित्तिका। २-विभाग करने वाला परदा। ३-छत। ४-स्थान। ५-कसर। त्रुटि ६-टुकड़ा। खंड। ७-अवसर। ८-दरार।
भीतर अव्य० (हि) अन्दर। में। पुं० १-अन्तःकरण हृदय। २-जनानखाना।
भीतरी वि०(हि) १-अन्दर का। २-गुप्त। छिपा हुआ
भीति स्त्री० (स) १-डर। भय। २-कंप। ३-दीवार।
भीतिकर वि० (सं) भयकर। डरावना।
भीतिकृत वि० (सं) भय उत्पन्न करने वाला।
भीती स्त्री० (हि) १-दीवार। २-डर।
भीन पुं० (हि) प्रातःकाल। सवेरा।
भीनना क्रि० (हि) भर जाना। समाजाना।
भीनी वि० (हि) मीठी। हलकी (सुगंध)।
भीम पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु। ३-भयानक रस ४-अर्जुन के छोटे भाई भीमसेन। वि० भीषण। भयानक। २-बहुत बड़ा।
भीमकर्मा वि० (सं) महापराक्रमी।
भीमता स्त्री० (सं) भयानकता। भयंकरता।
भीमतिथि स्त्री० (सं) माघसुदी एकादशी।
भीमनाद पुं० (सं) शेर। सिंह।
भीमपराक्रम वि० (सं) महाबली।

भीमपूर्वज पुं० (सं) युधिष्ठिर ।
भीमरथी पु० (सं) वह आयु जो ७७ वर्ष ७ माह ७ दिन समाप्त होने पर होती है ।
भीमरूप वि० (सं) भयंकर आकृति वाला ।
भीमसेन पु० (स) पाडव पुत्र भीम ।
भीमसेनी कपूर पु० (स) एक प्रकार का उत्तम कपूर ।
भीमा स्त्री०(सं) १-कोड़ा । चाबुक । २-दक्षिण भारत की एक नदी । ३-दुर्गा । एक प्रकार की नाव । वि० भयंकर । भीषण ।
भीर स्त्री० (हि) १-दे० 'भीड़' । २-कष्ट । दुःख । ३-विपत्ति । वि० १-डरा हुआ । कायर ।
भीरना क्रि० (हि) डरना । भयभीत होना ।
भीरु वि० (सं) डरपोक । कायर । स्त्री० १-शतावरी । २-बकरी । ३-छाया । पु० १-गीदड़ । २-बाघ ।
भीरुता स्त्री० (हि) १-कायरता । २-डर । भय ।
भीरुताई स्त्री० (हि) दे० 'भीरुता' ।
भीरु वि० (हि) दे० 'भीरु' । स्त्री० स्त्री । औरत ।
भीरे अव्य० (हि) पास । निकट । समीप ।
भील पुं०(हि) एक प्रसिद्ध जंगली जाति जो राजपूताने में पायी जाती है ।
भीलनी स्त्री० (हि) भील की स्त्री ।
भीलु वि० (स) भीरु । डरपोक ।
भीलुक पुं० (स) भालू । वि० डरपोक ।
भीव पु० (हि) भीमसेन ।
भीख स्त्री० (हि) दे० 'भीख' ।
भीषण वि०(स) १-भयानक । २-विकट । घोर । पु० १-भयानक रस । २-कबूतर । ३-शिव । ४-सलाई ५-ब्रह्म । ६-कुँदरू ।
भीषणता स्त्री० (सं) भयंकरता । डरावनापन ।
भीष्म पुं०(स) राजा शांतनु के पुत्र । देवव्रत । गांगेय २-भयानक रस (साहि०) । ३-शिव । ४-राक्षस । वि० भीषण । भयकर ।
भीष्मक पु० (स) विदर्भ देश के राजा का नाम ।
भीष्मपितामह पुं० (सं) दे० 'भीष्म' ।
भीष्माष्टमी स्त्री० (सं) माघशुक्ला अष्टमी जिसे भीष्म ने प्राण त्यागे थे ।
भुँइ स्त्री० (हि) पृथ्वी । भूमि ।
भुँजना क्रि० (हि) १-भुनना । २-झुलसना ।
भुँजवा पुं० (हि) भड़भूजा ।
भुँडा वि० (हि) १-बिना सींग का । २-बदमाश । दुष्ट
भुअंग पुं० (सं) सर्प । साप ।
भुअंगम पु० (हि) सर्प ।
भुआ पु० (हि) दे० 'भूआ' ।
भुइँ स्त्री० (हि) भूमि ।
भुइँकप पुं० (हि) भूकंप ।
भुइँचाल पु० (हि) भूकप ।
भुइँधारा पुं० (हि) तहखाना ।
भुइँहरा पु० (हि) तहखाना ।
भुक पुं० (हि) १-भोजन । आहार । २-अग्नि ।
भुकड़ी स्त्री० (हि) सड़े हुए खाद्य पदार्थों पर निकलने वाली फूई ।
भुकराँद स्त्री० (हि) सड़े हुए खाद्य पदार्थों से आने वाली बदबू ।
भुकाना क्रि० (हि) व्यर्थ की बकवाद करने में प्रवृत्त करना ।
भुक्कड़ वि० (हि) दे० 'भुक्खड़' ।
भुक्खड़ वि० (हि) १-भूखा । २-पेटू । ३-दरिद्र । कंगाल ।
भुक्त वि० (स) १-खाया हुआ । २-भोगा हुआ । ३-जिसका नगद रुपया देकर वस्तु ले ली गई हो । ४-जो भुना लिया गया हो । (वेरड) ।
भुक्तपूर्व वि० (स) जो पहले भोगा जा चुका हो ।
भुक्तभोग वि० (सं) जो किसी कर्म आदि का फल भोग चुका हो ।
भुक्तभोगी पु० (स) वह जिसने भोगा हो ।
भुक्तशेष स्त्री० (स) खाने से बचा हुआ । उच्छिष्ट ।
भुक्ति स्त्री० (सं) १-भोजन । आहार । २-लौकिक सुख । ३-दखल । कब्जा । ४ अधिकार पत्र के अनुसार नकद धन या कोई वस्तु लेना । (कैश) ।
भुक्ति-पात्र पु०(स) भोजन का पात्र ।
भुक्तोच्छिष्ट पु० (स) भूठन ।
भुखमरा वि० (हि) १-भुक्खड़ । २-पेटू ।
भुखमरी स्त्री० (हि) घोर अकाल । अन्न के अभाव में भूखों मरने की अवस्था ।
भुखाना क्रि० (हि) भूखा होना ।
भुगत स्त्री० (हि) दे० 'भुक्ति' ।
भुगतना क्रि० (हि) १-भोगना । सहना । २-पूरा होना । निबटना ।
भुगतान पु० (हि) १-भुगतने की क्रिया या भाव । २-मूल्य चुकाना । (पेमेंट) । ३-खरीदा हुआ माल देना । (डिलीवरी) ।
भुगतानतुला स्त्री० (हि) हिसाब की वह मद जो एक देश को दूसरे को चुकता देनी शेष हो । (बेलेंस आफ पेमेंट) ।
भुगताना क्रि० (हि) १-भोगना । सम्पन्न करना । पूरा करना । बिताना । ४- चुकाना ।
भुगाना क्रि० (हि) दे० 'भोगवाना' ।
भुगुन स्त्री० (हि) १-त्रिसाठ । २-मुक्ति ।
भुगुति स्त्री० (हि) दे० 'भुक्ति' ।
भुग्गा वि० (देश) मूर्ख ।
भुच्चड़ वि० (हि) मूर्ख ।
भुजंग पुं० (स) १-साप । सर्प । २-स्त्री का उपपति । जार । ३-सीसा नामक धातु ।
भुजंगम पु० (स) १-सर्प । २-सीसा ।

ऊपरी तथा भीतरी भाग के तत्वों तथा उनके वर्तमान रूप कैसे बने, इन बातों का विवेचन होता है। (जियोलॉजी)।

भूगर्भित वि० (सं) १–भूगर्भ के अन्दर या भीतरी भाग में होने वाला। (सबटरेनियन)। २–भूमि में दफनाया हुआ। (इन्टर्ड)।

भूगोल पुं० (सं) १–पृथ्वी। २–वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी के ऊपरी तथा उसके प्राकृतिक विभागों आदि के स्वरूप का वर्णन होता है। (ज्योग्रेफी)।

भूगोलशास्त्र पुं० (सं) दे० 'भूगोल'।

भूगोलक पुं० (सं) भूमंडल।

भूचर पुं० (सं) १–भूमि पर रहने वाले प्राणी। २–शिव। ३–दीमक।

भूचरी स्त्री० (सं) योग की एक समाधि।

भूचर्या स्त्री० (सं) अंधकार। धरती की छाया।

भूचाल पुं० (हि) भूकंप।

भूच्छाया स्त्री० (सं) दे० 'भूचर्या'।

भूछाया स्त्री० (सं) ग्रहण के समय सूर्य या चन्द्रमा पर पड़ने वाली पृथ्वी की छाया। (अम्ब्रा)।

भूजंतु पुं० (सं) सीसा (धातु)।

भूजंबु पुं० (सं) १– गेहूँ। २–वन-जामुन।

भूजात पुं० (सं) वृक्ष।

भूटानी वि० (हि) भूटान देश का। भूटान संबन्धी। पुं० (हि) भूटान का निवासी। २–भूटान का घोड़ा। स्त्री० (हि) भूटान की भाषा।

भूटिया वि० (हि) भूटान का। पुं० (हि) भूटान का निवासी।

भूडोल पुं० (हि) भूकंप।

भूत पुं० (हि) १–वे मूलद्रव्य जिनकी सहायता से सृष्टि की रचना हुई है। २–प्राणी। ३–जीव। ४–सत्य। ५–वृक्ष। ६–कृष्ण पक्ष। ७–बीता हुआ समय। ८–मृत शरीर। शव। ९–मृत प्राणी की आत्मा। १०–वे कल्पित आत्माएं जिनके विषय में यह माना जाता है कि यह नाना प्रकार के उपद्रव करके लोगों को कष्ट पहुँचाते हैं। प्रेत। शैतान। वि० (हि) १–बीता हुआ। गत। २–मिला हुआ। ३–समान।

भूतकाल पुं० (हि) बीता हुआ समय।

भूतखाना पुं० (हि) बहुत ही मैला-कुचैला या गन्दा घर।

भूतग्रस्त वि० (हि) जिस पर भूत सवार हो।

भूतत्व पुं० (सं) पृथ्वी के भीतर के पदार्थों का विज्ञान।

भूतत्वविज्ञान पुं० (सं) भूगर्भ-शास्त्र।

भूतत्त्व-विद्या स्त्री० (सं) भूगर्भ शास्त्र।

भूतत्त्व-विद् पुं० (सं) भूगर्भ शास्त्र का पंडित।

भूतत्वी वि० (सं) भूगर्भ सम्बन्धी। (जियोलोजिकल)।

भूतत्वी परिमाप पुं० (सं) भूगर्भ सम्बन्धी परिमाप (जियोलोजिकल सर्वे)।

भूतनाथ पुं० (सं) शिव।

भूतनायिका स्त्री० (सं) दुर्गा।

भूतनाशन पुं० (सं) १–रुद्राक्ष। २–सरसों। ३–हींग। ४–भिलावाँ।

भूतनी स्त्री० (हि) प्रेत स्त्री। भुतनी।

भूतपूर्व वि० (सं) वर्तमान समय से पहले का।

भूतप्रेत पुं० (सं) भूत-पिशाच आदि।

भूतभावन पुं० (सं) १–महादेव। विष्णु।

भूतभाषा स्त्री० (सं) पैशाची भाषा।

भूतभाषिका पुं० (सं) पैशाची।

भूतल पुं० (सं) १–पृथ्वी का ऊपरी तल या भाग। धरातल। (लैंड सर्फेस)। २–संसार। ३–पाताल।

भूतल-अधिकार पुं० (सं) १–भूमि पर मकान आदि बनाने का अधिकार। २–भूमि जोतने का अधिकार। (सर्फेस राइट्स)।

भूतलक्षी वि० (सं) भूतगत विषय पर विचार करने वाला। (रिट्रोस्पेक्टिव)।

भूतल-जलराशि स्त्री० (सं) भूतल पर स्थित होने वाली नदी। तालाब आदि। (सर्फेस वाटर्स)।

भूतल-भाटक पुं० (सं) भूतल पर मकान आदि बनाने या जोतने के अधिकार के बदले में किया जाने वाला भाटक। (सर्फेस रेंट)।

भूतल-स्रोत पुं० (सं) भूतल पर की नदी या झरना आदि। (सर्फेस स्ट्रीम)।

भूतल-हानि स्त्री० (सं) भूतल को पहुँचाई गई हानि। (सर्फेस डेमेज)।

भूतवाद पुं० (सं) दे० 'भौतिकवाद'।

भूतवाहन पुं० (सं) शिव।

भूतविद्या स्त्री० (सं) आयुर्वेद का वह विभाग जिसमें मानसिक रोगों का उपचार दिया गया है।

भूतसिद्ध वि० (सं) जिसने भूत प्रेतों को अपने वश में करने की सिद्धि करली हो।

भूतसिद्धि स्त्री० (सं) भूतों को वश में करने की विद्या। (सोरसेरी)।

भूतसृष्टि स्त्री० (सं) भूत पद जाने पर होने वाली भ्रांति

भूतसाधक पुं० (सं) भूतों को वश में करने वाला। (सोरसरर)।

भूतहत्या स्त्री० (सं) जीवहत्या।

भूतांतक पुं० (सं) १–यम। १–रुद्र।

भूतात्मा पुं० (सं) १–शरीर। २–ईश्वर। ३–शिव। ४–जीवात्मा।

भूताधिपति पुं० (सं) शिव।

भूतानुकंपा स्त्री० (सं) जीवों पर दया करना।

भूताली स्त्री० (सं) पृथ्वी के ऊपर का भाग।

भूताविष्ट वि० (सं) जिस पर भूत सवार हो गया हो।

भूतावेश पुं० (सं) प्रेतबाधा।

भूति स्त्री० (सं) १-वैभव। २-भस्म। राख। ३-उत्पत्ति ४-वृद्धि। ५-आठ प्रकार की सिद्धियाँ। ६-लक्ष्मी। ७-हाथी के मस्तक को रंग कर शृङ्गार करना। ८-पकाया हुआ मांस।
भूतिनी स्त्री० (सं) १-भूत योनि की स्त्री। २-डाकिनी
भूतेंवी स्त्री० (सं) एक प्रकार की ककड़ी।
भूतेश पुं० (सं) शिव।
भूतेश्वर पुं० (सं) शिव।
भूतोन्माद पुं० (स) भूत या पिशाच के आक्रमण या प्रभाव से होने वाला ...
भूदान पुं० (सं) १- ... २-भूमिहीन किसा... चलाये गये आन्दो... ... के मध्य किया गया दान।
भूदार पुं० (सं) सूअर।
भूदृश्य पुं०(सं) १-भूमि का वह भाग जो एक दृश्य में दिखाई दे। २-प्राकृतिक या ग्राम्यदृश्य। ३-ग्राम्य-दृश्य का चित्र। (लैंडस्केप)।
भूदेव पुं० (सं) राजा।
भूधर पुं०(सं) १-पहाड़। २-शेषनाग। ३-राजा। ४-विष्णु। ५-सात की संख्या। ६-शिव।
भूधरराज पुं० (सं) हिमालय।
भूधारक पुं० (सं) (वि०) वह किसान जिसने भूमि जोतने के लिए किराये पर ले रखी हो। (टेनाटेनेंट)
भूधारिणी स्त्री० (सं) वह स्त्री जो संपत्ति या भूमि की मालिक हो। (लैंड लेडी)।
भूधारी स्त्री० (स) वह किसान जिसे भूधृति का अधिकार हो। (टेन्यार होल्डर)।
भूधृति स्त्री० (स) जोतने बोने का भूमि पर होने वाला किसान का अधिकार। (लैंड टेन्योर)।
भून पुं० (सं) दे० 'भ्रूण'।
भूनना क्रि० (हि) १-आग पर रखकर पकाना। २-गरम बालू में डाल कर पकाना। ३-तलना। ४-अत्यधिक कष्ट देना।
भूनाग पुं० (सं) १-केंचुआ। २-भूमिनाग।
भूनिंब पुं० (स) चिरायता।
भूनेता पुं० (सं) राजा।
भूप पुं० (सं) राजा।
भूपटल पुं० (सं) भूतल।
भूपतित वि० (सं) जो (घायल होकर) पृथ्वी पर गिर पड़ा हो।
भूपरिधि स्त्री० (स) पृथ्वी की परिधि।
भू-परिमाप स्त्री० (स) भूमि के किसी खंड आदि की नाप जोख। (लैंड सर्वे)।
भूपवित्र पुं० (स) गोबर।
भूपाल पुं० (सं) १-राजा। नृप। २ मध्य भारत में भोपाल राज्य।

भूपुत्र पुं० (सं) मंगलग्रह।
भूपुत्री स्त्री० (सं) सीता।
भूपेन्द्र पुं० (सं) सम्राट।
भूप्रतिभूति स्त्री०(स) वह जमानत जो पृथ्वी या संपत्ति के रूप में हो। (लैंडेड सिक्यूरिटी)।
भूभर्ता पुं० (सं) राजा।
भूभल स्त्री० (हि) गरम राख या धूल।
भूभाग पुं० (सं) प्रदेश। खण्ड।
भूभागहारी पुं० (सं) ईश्वर।
...
भूमय स्त्री० (स) १-सूर्य की माया छाया। वि० मिट्टी का बना हुआ।
भूमयी स्त्री० (सं) दे० 'भूमय' (स्त्री०)।
भूमहेन्द्र पुं० (सं) राजा।
भूमापक पुं० (स) भूमि की नाप जोख करने वाला। (सर्वेयर)।
भूमापन पुं० (स) किसी खेत आदि की सीमा आदि निर्धारित करने के उद्देश्य से भूमि की नाप जोख करना। (सर्वे)।
भूमापन अधिकारी पुं० (स) भूमापन करने वाला अधिकारी। (सर्वे आफीसर)।
भूमापन एकक पुं०(सं) भूमापकों का वह दल जो एक स्थान पर एक साथ भूमि की नाप जोख करता है (सर्वे यूनिट)।
भूमापन कर्कट पुं० (सं) वह (कम्पास) कर्कट जिसके द्वारा भूमि नापने के लिए दिशा मालूम की जाती है। (सर्वे कम्पास)।
भूमापन चिह्न पुं० (सं) भूमि की नाप जोख करने के लिए लगाया गया चिह्न। (सर्वे मार्क)।
भूमापन-शृङ्खला पुं० (सं) भूमि की नाप जोख करने की लोहे की जंजीर। (सर्वे चेन्स)।
भूमापन सीमाचिह्न पुं० (सं) खेत आदि पर नाप जोख कर बाड़ लगाया हुआ सीमा का चिह्न। (लैंडमार्क्स मार्क्स)।
भूमापनांक पुं०(सं) वह अंक जो किसी विशेष स्थान के भूमापन के कागजों पर स्मरण के लिए दिया जाता है। (सर्वे नम्बर)।
भूमि स्त्री० (सं) १-पृथ्वी के ऊपर का वह ठोस भाग जिसमें नदी, पर्वत आदि हैं और हम लोग रहते हैं २-भूखंड का छोटा भाग जिस पर किसी का अधिकार हो। (एस्टेट)। ३-स्थान। जगह। ४-नींव। ५-प्रदेश। ६-जीभ। ७-उत्पत्ति स्थान।
भूमि-अधिकोश पुं० (सं) भूमि आदि रेहन रख कर

ब्याज पर रुपया देने वाला बैंक। (लैंड बैंक)।
भूमि-अन्य संक्रामण-अधिनियम पुं० (सं) भूमि के अधिकार को दूसरे को दे देने के सम्बन्ध में लागू होने वाला अधिनियम। (लैंड एलीयेनेशन एक्ट)
भूमि-अर्जन पुं० (सं) किसी विशेष राजकीय कार्य के लिए किसी भूमि का खरीदना। (लैंड एक्वीजीशन)
भूमि-अवाप्ति-अधिकारी पुं० (सं) वह अधिकारी जिसे किसी राजकीय काम के लिए किसी भूमि को खरीद लेने की व्यवस्था करता है। (लैंड एक्वीजीशन आफीसर)।
भूमि-अवाप्ति-अधिनियम पुं० (सं) वह अधिनियम जिसके द्वारा किसी सार्वजनिक या राज्यादि की विशेष आवश्यकता पूरी करने के लिए भूमि खरीद लेने का सरकार को अधिकार है। (लैंड एक्वीजीशन एक्ट)।
भूमि-उपयोग-समंक पुं० (सं) भूमि सम्बन्धी उपयोगी भूमि के आंकड़े। (लैंड युटिलाइजेशन स्टेटिस्टिक्स)
भूमिकंप पुं० (सं) भूचाल। भूकंप।
भूमिकंपन पुं० (सं) भूकंप।
भूमिकर पुं० (सं) भूमि पर लगने वाला सरकारी लगान। (लैंड टैक्स)।
भूमिका स्त्री० (सं) १-रचना। २-किसी लेख या ग्रन्थ के आरम्भ का वह वक्तव्य उसकी ज्ञातव्य बातों का पता चलता है। (इन्ट्रोडक्शन)। ३-पृष्ठभूमि। (बैक ग्राउन्ड)। ४-नाटक आदि में किसी पात्र का अभिनय।
भूमिकागत पुं० (सं) नाटकीय पोशाक पहनने वाला
भूमिकुष्मांड पुं० (सं) भूमि पर होने वाला कुम्हड़ा।
भूमिगृह पुं० (सं) तहखाना।
भूमिजा स्त्री० (सं) सीता।
भूमिजीवी पुं० (सं) किसान। कृषक। खेतिहर।
भूमितल पुं० (सं) भूतल।
भूमिदान पुं० (सं) भूमि या जमीन का दान।
भूमिदेव पुं० (सं) १-ब्राह्मण। २-राजा।
भूमिधर पुं० (सं) १-पर्वत। २-शेषनाग। ३-वह किसान जिसने खेत पर स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिया हो।
भूमिधारण पुं० (सं) भूमि अधिकार प्राप्त होना। (लैंड होल्डिंग)।
भूमिनाग पुं० (सं) केंचुआ।
भूमिप पुं० (सं) राजा।
भूमिपक्ष पुं० (सं) अत्यधिक तेज घोड़ा।
भूमिपट्टा पुं० (सं) पट्टे पर ली हुई भूमि का पत्रक। (ग्राउंड लीज)।
भूमिपति पुं० (सं) राजा।
भूमिपरिकल्पक पुं० (सं) वह मजदूर जो खेत पर काम करता हो। (लैंड जॉवर)।
भूमिपरिव्यय पुं० (सं) भूमि की कीमत। (कॉस्ट आफ लैंड)।
भूमिप्रभार पुं० (सं) भूमि पर लगने वाला अतिरिक्त कर। (लैंड चार्जेस)।
भूमिया पुं० (सं) १-जमींदार। २-ग्राम देवता। ३-किसी देश का आदिवासी।
भूमिरह पुं० (सं) वृक्ष।
भूमिलवण पुं० (सं) शोरा।
भूमिलाभ पुं० (सं) मृत्यु।
भूमिलेपन पुं० (सं) गोबर।
भूमिव्यवस्था पुं० (सं) भूमि के सम्बन्ध में शासन व्यवस्था। (लैंड-सैटलमेंट)।
भूमिवर्गीकरण पुं० (सं) कृषि योग्य भूमि का अलग हिस्सा लगाना। (लैंड क्लासिफिकेशन)।
भूमिशयन पुं० (सं) भूमि पर सोना।
भूमिसंरक्षण पुं० (सं) भूमि का कटाव आदि से बचाव करना। (लैंड कन्जर्वेशन)।
भूमिसत्र पुं० (सं) भूदान यज्ञ।
भूमिसात् पुं० (सं) जो गिर कर भूमि के साथ मिल गया हो।
भूमिसुर पुं० (सं) ब्राह्मण।
भूमिस्वामी पुं० (सं) १-भूमि का मालिक। (लैंड-लॉर्ड)।
भूमिहस्तांतर-अधिनियम पुं० (सं) भूमि के स्वामित्व हस्तांतरित करने से सम्बन्धित अधिनियम। (लैंड-एलीनियेशन एक्ट)।
भूमिहार पुं० (सं) उत्तर प्रदेश और बिहार में रहने वाली एक जाति विशेष।
भूमीश्वर पुं० (सं) राजा।
भूयः अव्य० (सं) १-पुनः। फिर। २-बहुत। अधिक
भूयशः अव्य० (सं) १-बहुधा। २-अधिक करके। अधिकतर।
भूयसी वि० (सं) बहुत अधिक। अव्य० (सं) बार-बार।
भूयसीदक्षिणा स्त्री० (सं) मंगल कार्य के अन्त में ब्राह्मणों को दी जाने वाली दक्षिणा।
भूयोभूयः अव्य०(सं) बार-बार।
भूर वि० (हि) बहुत अधिक। पुं० बालू।
भूरज पुं० (हि) भोजपत्र वृक्ष। (सं) पृथ्वी की धूल-मिट्टी।
भूरजपत्र पुं० (हि) भोजपत्र।
भूरसीदक्षिणा स्त्री० (हि) दे० 'भूयसी दक्षिणा'।
भूरा पुं० (हि) १-मिट्टी की तरह मटमैला रङ्ग। २-गोरा। ३-चीनी। वि० मिट्टी के रङ्ग का खाकी।
भूराजस्व पुं० (सं) जोती-बोई जाने वाली जमीन पर लगने वाला सरकारी कर। (लैंड रैवेन्यू)।
भूरि पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-स्वर्ण। इन्द्र

वि० १-अधिक। प्रचुर। २-बड़ा भारी।
भूरिता स्त्री० (स) १-अधिकता। २-प्रचुरता।
भूरिद वि० (सं) बहुत दान देने वाला।
भूरिदा वि० (स) महादानी।
भूरिभाग वि० (सं) बड़ा भाग्यशाली।
भूरुह पुं० (सं) वृक्ष।
भूरोह पुं० (सं) केंचुआ।
भूर्ज पुं० (सं) भोजपत्र नामक वृक्ष।
भूर्जपत्र पुं० (सं) भोजपत्र।
भूर्लोक पुं०(स) संसार। मृत्युलोक।
भूल स्त्री० (हि) १-भूलने का भाव। २-गलती। चूक
३-अशुद्धि। (ऐरर, मिस्टेक)।
भूलक वि० (हि) भूल करने वाला।
भूलचूक स्त्री० (हि) भूल। गलती।
भूलना क्रि० (हि) १-याद न रखना। २-याद न रहना। ३-गलती करना या होना। ४-धोखे में आना। ५-इतराना। ६-खो देना। वि० (हि)भूलने वाला।
भूलभुलैया स्त्री०(हि) कोई घुमावदार वस्तु की रचना जिसमें आदमी जल्दी ही मार्ग भूल जाता है और ठिकाने पर नहीं पहुँचता।
भूवा पुं० (हि) दे० 'भूआ'।
भूषण पुं० (स) १-अलंकार। गहना। २-विष्णु। ३-वह जिससे किसी वस्तु की शोभा बढ़ती हो।
भूषण-पेटिका स्त्री० (स) रत्नमंजूषा।
भूषणीय वि० (स) सजाने योग्य।
भूषन पुं० (हि) दे० 'भूषण'।
भूषना क्रि० (हि) १-सजाना। अलंकृत करना। २-गहने पहनना।
भूष्य वि० (सं) दे० 'भूषणीय'।
भूषा स्त्री० (सं) १-आभूषण। गहने। जेवर। २-सजाने की क्रिया या सामग्री।
भूषाचार पुं०(सं) १-कपड़े आदि पहनने का विशेष ढंग। २-रीति। तौर। तरीका। ३-उच्च वर्गों में प्रचलित ढंग। (फैशन)।
भूषित वि० (सं) १-सजाया हुआ। २-गहने पहने हुए। अलंकृत।
भूसन पुं० (हि) दे० 'भूषण'।
भूसना क्रि० (हि) दे० 'भूँकना'।
भूसा पुं० (हि) अनाज का डंठल जो टुकड़े करके पशुओं को खिलाया जाता है।
भूसी स्त्री० (हि) १-भूसा। २- अनाज आदि के ऊपर का छिलका।
भूसेचन पुं० (सं) भूमि की सिंचाई। (इरीगेशन)।
भू-सेचन अभियन्ता पुं० (स) भूमि की सिंचाई का प्रबन्ध करने वाला इन्जीनियर। (इरीगेशन इन्जीनियर)।
भूसेचन अभियंत्रण स्त्री० (सं) भूमि की सिंचाई के लिये नहर आदि खोदकर प्रबन्ध करना। (इरीगेशन इन्जीनियरिंग)।
भूसेचन कर्मान्त पुं० (स) भूमि की सिंचाई के लिए नहर आदि बनाने का काम। (इरीगेशन वर्क्स)
भूसेचन परियोजना स्त्री० (स) भूमि की सिंचाई के लिए नहर, कूएँ आदि बनाने की परियोजना। (इरीगेशन प्रोजेक्ट)।
भूसेचक पुं० (सं) भूमि की सिंचाई करने वाला। (इरीगेटर)।
भृंग पुं० (स) १-भौंरा। २-बिल्ली नामक कीड़ा।
भृंगज पुं० (सं) अभ्रक। अगरु।
भृंगजा स्त्री० (सं) भारंगी।
भृंगपर्णिका स्त्री० (सं) छोटी इलायची।
भृंगराज पुं० (सं)१-भौंरा। २-काले रंग का एक पक्षी
भृंगावली स्त्री० (सं) भौंरों की पंक्ति।
भृंगि पुं० (सं) शिव के एक अनुचर का नाम।
भृंगी स्त्री० (स) १-भौंरी। २-बिलनी नामक कीड़ा। ३-भांग। पुं० शिव का एक गण।
भृगीश पुं० (सं) शिव।
भृकुटि स्त्री० (सं) भौं चढ़ाना। भ्रूभंग। तेवरी।
भृगु पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध गोत्र प्रवर्तक मुनि का नाम। २-जमदग्नि। ३-परशुराम। ४-समुद्र तट पर ढालुआँ चट्टान। (क्लिफ)। ५-शुक्राचार्य।
भृगुज पुं० (सं) १-भार्गव। २-शुक्राचार्य।
भृगुतुंग पुं० (सं) १-हिमालय की एक चोटी। २-शिव।
भृगुनंदन पुं०(सं) परशुराम।
भृगुपति पुं० (सं) परशुराम।
भृगुपुत्र पुं० (सं) शुक्र।
भृगुरेखा स्त्री० (सं) विष्णु की छाती पर का चिह्न जो भृगु के लात मारने पर बना था।
भृगुवार पुं० (सं) शुक्रवार।
भृगुश्रेष्ठ पुं० (सं) परशुराम।
भृत वि० (सं) १-भरा हुआ। पूरित। २-पाला पोसा हुआ। पुं० दास। नौकर।
भृतक पुं० (सं) नौकर।
भृतकाध्यापक पुं० (सं) वेतन लेकर पढ़ाने का काम करने वाला अध्यापक।
भृति स्त्री०(सं) १-भरने की क्रिया या भाव। २-सेवा नौकरी। ३-मजदूरी। ४-वेतन (वेजेज)। ५-मूल्य ६-वह धन जो पत्नी को निर्वाह के निमित्त मिलता है। (एलीमनी, मेन्टेनेन्स)।
भृतिकर्मकर पुं० (सं) नौकर। मजदूर।
भृतिनिधि स्त्री० (सं) वह निधि जो वेतन आदि देने के लिए अलग रखी जाती है।
भृतिभोगी वि० (सं) १-वेतन के

कोई विशेष काम करने या लड़ने वाला। (मर्सीनरी) २-किराये का सैनिक।
भृतिविश्लेषण-पुस्त स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें विभिन्न वर्गों के कर्मचारियों के वेतन का विश्लेषण होता है। (वेजेज ऐनेलिसिस बुक)।
भृत्य पुं०(सं) नौकर। चाकर। सेवक।
भृत्यभर्ता पुं० (सं) गृहस्वामी। नौकर रखने वाला।
भृत्यभाव पुं० (सं) सेवाभाव।
भृत्यवर्ग पुं० (सं) दास-समूह।
भृत्यवृत्ति स्त्री० (सं) सेवकों को पालना।
भृत्यशाली वि० (सं) जिसके पास बहुत से सेवक या दास हों।
भृत्या स्त्री०(सं) दासी। नौकरानी। सेविका।
भृश वि० (सं) अत्यधिक। बहुत शक्तिशाली।
भृशकोपन वि०(सं) अत्यधिक क्रोध करने वाला।
भृशदुःखित वि० (सं) अत्यधिक दुःखित।
भेंट स्त्री० (हि) १-मिलना। मुलाकात। २-उपहार। नजराना। (ऑफरिङ्ग)।
भेंटना क्रि० (हि) १-मुलाकात करना। २-गले या छाती से लगाना। आलिङ्गन करना।
भेंटाना क्रि० (हि) १-मिलना। २-किसी वस्तु तक हाथ पहुँचाना। ६-मुलाकात करना।
भेंना क्रि० (हि) भिगोना। तर करना।
भेंवना क्रि० (हि) दे० 'भेंना'।
भेइ पुं० (देश) दे० 'भेद'।
भेउ पुं० (देश) दे० 'भेद'
भेक पुं० (सं) 'मेंढ़क'।
भेकभुक पुं० (सं) सांप। सर्प।
भेकरव पुं० (सं) मेंढकों का टर्राना।
भेकी स्त्री० (सं) मेंढकी।
भेख पुं०(हि) दे 'वेप'।
भेखज पुं० (हि) दे० 'भेपज'।
भेजना क्रि० (हि) किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना। प्रेषण।
भेजवाना क्रि० (हि) भेजने का काम किसी और से कराना।
भेजा पुं० (हि) १-सिर या खोपड़ी के अन्दर का गूदा २-मस्तिष्क। दिमाग। ३-चंदा। मेंढक।
भेटना क्रि० (हि) दे० 'भेंटना'।
भेड़ स्त्री० (हि) १-बकरी के आकार का एक चौपाया जिसकी ऊन के कंबल और वस्त्र बनाए जाते हैं। २-मूर्ख आदमी।
भेड़ा पुं० (हि) भेड़ जाति का नर। मेप।
भेड़िया पुं० (हि)कुत्ते से मिलता जुलता एक जंगली हिंसक जन्तु जो छोटे जानवरों को उठा ले जाता है
भेड़ियाधसान पुं० (हि) १-भेड़चाल। २-बिना सोचे समझे दूसरे का अनुसरण करना।
भेड़ी स्त्री० (हि) १-दे० 'भेड़'। २-भेड़ का कमाया हुआ चमड़ा।
भेतव्य क्रि० (सं) जिस से डरा जाय।
भेत्ता वि० (सं) विघ्न या बाधा डालने वाला। भेदन करने वाला।
भेद पुं०(सं) भेदन, छेदन या अलग करने की किया या भाव। २-रहस्य। ३-मर्म। तात्पर्य। ४-अन्तर। फर्क। (डिफरेंस)। ५-शत्रु पक्ष के लोगों को एक दूसरे का विरोधी बना कर अपने पक्ष में मिलाना. ६-जाति।
भेदक वि० (सं) १-भेदने या छेदने वाला। २-रेचक दस्तावर।
भेदकातिशयोक्ति स्त्री० (सं) एक अतिशयोक्ति अलंकार जिसमें किसी की क्षति या अधिकता का वर्णन 'या', 'ही', 'न्यारा' आदि शब्द लगा कर किया जाता है।
भेदकर वि० (सं) भेद करने वाला।
भेदकारी वि० (सं) दे० 'भेदकर'।
भेददर्शी वि० (सं) द्वैतवादी।
भेदन पुं०(सं)१-भेदने की किया या भाव। २-वेधना छेदना। ३-भेद लेने की क्रिया या भाव। (एसि• नेज)।
भेदनीति स्त्री० (सं) फूट डालने की नीति।
भेदबुद्धि स्त्री० (सं) एकता का अभाव। फूट। अल-गाव।
भेदभाव पुं० (सं) कुछ विशिष्ट लोगों के साथ अन्तर या फर्क का भाव रखना। (डिस्क्रिमिनेशन)।
भेदवादी वि० (सं) भिन्न मत अवलंबी।
भेदित वि०(सं) अलग किया हुआ। भेद किया हुआ।
भेदिया पुं० (सं) १-गुप्तचर। २-जासूस। ३-गुप्त रहस्य जानने वाला।
भेदी पुं०, वि० (सं) १-गुप्त रहस्य बताने वाला। २-छेदने वाला।
भेदीसार पुं० (सं) बढ़ई की लकड़ी में छेद करने का औजार। बरमा।
भेदू पुं० (देश) मर्म या रहस्य जानने वाला।
भेद्य वि० (सं) भेदन करने के योग्य।
भेद्यरोग पुं० (सं) वह रोग जिसमें शरीर के किसी अंग की चीरफाड़ की जाय।
भेना क्रि० (हि) 'भिगोना'।
भेय वि० (सं) दे० 'भेतव्य'।
भेर पुं० (सं) डंका। नगाड़ा।
भेरा पुं० (देश) एक प्रकार की नाव।
भेरी स्त्री० (सं) बड़ा ढोल या नगाड़ा। दुंदुभी।
भेरीकार पुं० (सं) नगाड़ा बजाने वाला।
भेला पुं० (हि) १-भेंट। २-भिड़ंत। ३-लकड़ी की बनी नाव। ४-(गुड़ आदि का) बड़ा पिंड या ढेला

भेली स्त्री० (हि) गुड़ आदि की गोल पिंडी।
भेव पु० (हि) १-रहस्य। भेद। २-बारी। पारी।
भेवना क्रि०(हि) तर करना। भिगोना।
भेष पुं० (हि) दे० 'वेद'।
भेषज पु० (स) १-औषध। दवा। (मेडिसिन)। २-जल। ३-सुख। ४-विष्णु। ५-उपचार।
भेषज रसायन पुं० (स) १-दवा में काम ... रसायन। (फार्मस्युटिक केमेस्ट्री)।
भेषजांग पुं० (सं) औषधि खाने के बाद या साथ खाने वाला पदार्थ। अनुपान।
भेषजागार पुं० (स) दवा की दुकान। (फार्मेसी)।
भेषना क्रि० (हि) १-भेष बनाना। २-पहनना।
भेस पु० (हि) १-वेष। पहनावा। २-किसी के अनुकरण पर बनाया हुआ। बनावटी रूप तथा पहने हुए वस्त्र।
भेसज पुं० (हि) दे० 'भेषज'।
भेसना क्रि० (हि) १-कपड़े पहनना। २-भेस बनाना।
भैंस स्त्री० (हि) १-गाय जैसा काले या भूरे रंग का पशु की मादा जो दूध के निमित्त पाली जाती है।
भैंसा पुं० (हि) भैंस का नर।
भै पुं० (हि) दे० 'भय'।
भैक्ष पु० (सं) १-भिक्षा मांगने की क्रिया या ... २-भीख।
भैक्षकाल पुं० (सं) भिक्षा मांगने का समय।
भैक्षचर्या स्त्री० (सं) भिक्षा मांगने का काम।
भैक्षजीविका स्त्री० (स) भिक्षा मांग कर जीविका चलाना।
भैक्षभुज वि०(सं) भिक्षा मांग कर निर्वाह करने वाला।
भैक्षवृत्ति स्त्री० (सं) दे० 'भैक्षचर्या'।
भैक्षान्न पुं० (स) भिक्षा में मिला हुआ अन्न।
भैक्ष्य पुं० (स) भिक्षा। भीख।
भैचक वि० (हि) चकित। विस्मित।
भैच्चक वि० (हि) दे० 'भैचक'।
भैन स्त्री० (हि) बहन।
भैना स्त्री० (हि) बहन।
भैनी स्त्री० (हि) बहन।
भैने पुं० (हि) भानजा।
भैया पुं० (हि) १-भाई। भ्राता। २-बराबर वालों के लिए आदरसूचक शब्द।
भैयाचारा पुं० (हि) भाईचारा।
भैयादूज स्त्री० (हि) भाई दूज कार्तिक-शुक्ला द्वितीया ...
भैरव वि० (सं) १-भीषण शब्द वाला। २-विकट। भयानक। पुं० १-शंकर। महादेव। २-साहित्य के भयानक रस। ३-संगीत का एक राग। ४-ताल का एक भेद। ५-कगालो। ६-गीदड़।
भैरवकारक वि० (सं) भयानक। डरावना।
भैरवी स्त्री० (स)१-एक देवी का नाम। चामुण्डा। २-एक रागनी। (संगीत)। ३-पार्वती। ४-एक नदी।
भैरवीचक्र पुं०(सं) देवी पूजन के निमित्त एकत्रित एक तांत्रिकों का मंडल।
भैरवी यातना स्त्री०(सं) मरने समय की भीषण यातना जो ...
भैषजिक वि० (स) १-औषध या दवा सम्बन्धी। २-चिकित्सा सम्बन्धी। (मेडीकल)।
भैषजिक उपाधि स्त्री० (सं) वैद्यक या डाक्टरी की परीक्षा पास करने के पश्चात् चिकित्सा करने के लिए दी गई उपाधि। (मेडीकल डिप्लोमा)।
भैषजिक परीक्षा स्त्री० (स) रोग मालूम करने के लिए डाक्टर या वैद्य द्वारा की गई परीक्षा। (मेडिकल एक्जामिनेशन)।
भैषजिक प्रमाण पत्र पुं० (सं) वह प्रमाण पत्र जो किसी व्यक्ति को रोगी प्रमाणित करने के लिए दिया जाता है। (मेडिकल सार्टिफिकेट)।
भैषजिक मण्डली स्त्री० (स) वैद्य या डाक्टरों की बनाई गई मण्डली। ...
... के लिए
... जहां रोग ... मेडिकल कॉलेज)।
... प्रक्टिस)।
भैषजिक वृत्तिक पु० (सं) चिकित्सा करने वाला डाक्टर या वैद्य। (मेडिकल प्रेक्टीशनर)।
भैषजिक संस्था स्त्री० (स) वह संस्था जो वैद्यक या डाक्टरी आदि की शिक्षा या चिकित्सा विधि की उन्नति के लिए बनाई गई हो। (मेडिकल इंस्टीट्यूशन)।
... के लिये बनाई गई समिति। (मेडिकल सर्विसेज कमिटी)।
भैषज्य पुं० (सं) औषध। दवा।
भैष्मकी स्त्री० (स) भीष्मक की कन्या। रुक्मिणी।
भैहा पुं० (हि) डरा हुआ। भयभीत।
भोंकना क्रि० (हि) नुकीली वस्तु जोर से धसाना।

घुसेड़न।(स्टेव)।
भोंगाल पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा भोंपा।
भोंचाल पुं० (हि) दे० 'भूकंप'।
भोंडा वि०(हि) कुरूप। भद्दा। (वॉच)।
भोंडापन पुं० (हि) १-भद्दापन। २-बेहूदापन।
भोंतरा वि० (हि) (वह शस्त्र) जिसकी नोक या धार तेज न हो। कुन्द धार वाली।
भोंतला वि० (हि) दे० 'भोंतरा'।
भोंदू वि० (हि) १-मूर्ख। २-भोला। सीधा।
भोंपा पुं० (हि) दे० 'भोंपू'।
भोंपू पुं० (हि) १-एक प्रकार का तुरही जैसा बाजा। २-कारखाने आदि में समय की सूचना देने वाली सीटी।
भों-भों पुं० (हि) कुत्ते आदि के भोंकने का शब्द।
भो अव्य०(हि) हुआ। अव्य०(सं) हे! हो! संबोधन-सूचक शब्द।
भोकस वि० (हि) भूखा। भुक्खड़। पुं० राक्षस।
भोक्तव्य वि० (सं) भोगने के योग्य।
भोक्ता वि० (सं) १-भोग करने वाला। भोजन करने वाला। ३-ऐयाश। पुं० १-विष्णु। २-राजा। ३-पति। ४-प्रेत।
भोग पुं०(सं) १-सुख-दुःख आदि का अनुभव करना २-कष्ट। दुःख। ३-विलास। सुख। ४-स्त्री संभोग ५-प्रारब्ध। ६-भक्षण। आहार। ७-परिमाण। ८-घर। ६-धन। १०-अर्थ। ११-वह स्थिति जिसमें किसी पदार्थ को पास रख कर उसका उपयोग किया जाता है। अधिकार। (पजेशन)। १२-पंक्तिबद्ध सेना। १३-सर्प।
भोगजात वि० (सं) भोग से उत्पन्न। (कष्ट)।
भोगतृष्णा स्त्री० (सं) भोग करने की इच्छा।
भोगदेह स्त्री० (सं) स्वर्ग या नरक का भोग करने के लिए सूक्ष्म देह (पुराण)।
भोगधर पुं० (सं) सांप। सर्प।
भोगना क्रि० (हि) १-सुख, दुःख आदि कर्मफल का अनुभव करना। २-सहना। ३-स्त्री प्रसंग करना।
भोगनाथ पुं० (सं) पालन करने वाला।
भोगपति पुं० (सं) किसी नगर या प्रांत आदि का प्रधान शासक या अधिकारी।
भोगपत्र पुं० (सं) राजा को उपहार भेजने के संबंध में लिखा जाने वाला पत्र।
भोगपाल पुं० (सं) साईस।
भोगपिशाचिका स्त्री० (सं) भूख।
भोगबंधक पुं० (सं) रेहन रखने की वह प्रणाली जिसमें ऋण के सूद के स्थान पर महाजन को उस वस्तु के भोग करने का अधिकार होता है। (मोर्टगेज़ विद् पजेशन)।
भोगभुक् वि० (सं) भोग करने वाला।
भोगभूमि स्त्री० (सं) १-भारतवर्ष से अन्य देश। २-जैनमतानुसार स्वर्ग लोक जहां कल्पवृक्ष से सारी इच्छाएँ पूरी होती हैं।
भोगभृतक पुं० (सं) बिना वेतन केवल कपड़े रोटी पर रहने वाला नौकर।
भोगलाभ पुं०(सं) सुख-भोग आदि की प्राप्ति।
भोगलिप्सा स्त्री० (सं) लत। व्यसन।
भोगली स्त्री० (देश) १-छोटी नली। नाक की लौंग ३-कँगनी। ४-चपटे तार का सलमा। ५-कान में पहनने के फूल की कील।
भोगवती स्त्री०(सं) १-गंगा। २-पाताल गंगा। ३-एक तीर्थ।
भोगवना क्रि० (हि) भोगना।
भोगवान् पुं० (सं) १-सांप। २-गाति। ३-नाट्य।
भोगवाना क्रि०(हि) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
भोग-विलास पुं० (सं) आमोदप्रमोद। ऐश।
भोगशील वि० (सं) भोगी।
भोगसद्म पुं० (सं) अन्तःपुर। जनानखाना।
भोगस्थान पुं०(सं) १-शरीर। २-अन्तःपुर। रमणगृह
भोगाधिकार पुं०(सं) भूमि, संपत्ति आदि पर वह अधिकार जो उस पर निर्धारित समय से पहले से काबिज होने के कारण प्राप्त होता है। (अकुपेन्सी राइट)।
भोगाना क्रि० (हि) दे० 'भोगवाना'।
भोगार्ह वि० (सं) जिसका भोग किया जा सके। पुं० धन। दौलत।
भोगावास पुं०(सं) अन्तःपुर।
भोगींद्र पुं०(सं)पतंजली का एक नाम।
भोगी पुं०(सं) १-भोगने वाला। २-सांप। ३-राजा ४-जमींदार। ५-शेषनाग।
भोग्य वि० (सं) १-भोगने में काम लाने योग्य। २-खाद्य (पदार्थ)। पुं० १-धन। २-धान्य। ३-भोग-बंधक।
भोग्या स्त्री० (सं) वेश्या।
भोज पुं० (हि) १-बहुत से लोगों का एक साथ बैठ कर भोजन करना। दावत। ज्योनार। २-भोज्य पदार्थ। पुं० १-चन्द्रवंशियों का एक वंश। २-भोज पुर। ३-कान्यकुब्ज का एक राजा। ४-कृष्ण के एक सखा का नाम।
भोजक पुं० (सं) भोजन करने वाला। वि० १-भोगी विलासी। २-भोजन करने वाला।
भोजन पुं० (सं) १-खाने की वस्तु खाना। २-भोज्य पदार्थ।
भोज-काल पुं०(सं) भोजन करने का समय।
भोजनखानी स्त्री० (हि) पाकशाला। रसोईघर।
भोजनग्रह पुं० (हि) रसोईघर।
भोजनत्याग पुं० (सं) भोजन छोड़कर उठ जाना।

भोजनभट्ट पुं० (हि) पेटू।
भोजनभूमि स्त्री० (सं) भोजन करने का स्थान।
भोजनवस्त्र पुं० (सं) खाना। कपड़ा।
भोजनवेला स्त्री० (सं) खाने का समय।
भोजनव्यय पुं० (सं) खाने पीने का व्यय।
भोजनशाला स्त्री० (सं) रसोईघर।
भोजनार्थी वि० (सं) भूखा।
भोजनालय पुं० (सं) १-रसोईघर। २-होटल। ३-भोजनशाला। (रेस्टोरां, होटल)।
भोजनीय वि० (सं) खाने के योग्य।
भोजपति पुं० (सं) १-भोज राजा। २-कंस।
भोजपत्र पुं० (सं) एक वृक्ष जिसकी छाल पर प्राचीन काल में ग्रंथ लिखे जाते थे।
भोजपिता वि० (हि) भोजन करने वाला।
भोजपुर पुं०(सं) भोजपुर नामक एक जनपद।
भोजपुरिया पुं० (सं) भोजपुर का निवासी।
भोजपुरी वि० (सं) भोजपुर का। पुं० भोजपुर का निवासी।
भोजराज पुं० (सं) राजा भोज।
भोजविद्या स्त्री० (सं) बाजीगरी। इन्द्रजाल।
भोजी वि० (सं) भोजन करने वाला।
भोज्य पुं० (सं) खाद्य पदार्थ। वि० खाने योग्य।
भोटिया पुं० (हि) भूटान का निवासी। स्त्री० भूटान की भाषा।
भोडर पुं० (हि) अभ्रक। अबरक।
भोडल पुं० (हि) अबरक।
भोथरा वि० (हि) कुंठित। जिसकी धार कुन्द हो।
भोना क्रि० (हि) १-घूमना। २-लीन होना। ३-आसक्त होना।
भोपा पुं० (हि) १-मूर्ख। २-भोंदू।
भोमि स्त्री० (हि) दे० 'भूमि'।
भोर पुं० (हि) १-प्रातःकाल। तड़का। २-धोखा। वि० (देश) भोला। सीधा।
भोराई स्त्री० (हि) भोलापन। सरलता।
भोराना क्रि० (हि) १-भ्रम या धोखे में डालना। २-धोखे में आना।
भोलना क्रि० (हि) भुलावा देना। बहकाना।
भोला वि०(हि) १-सीधा-सादा। २-सरल। ३-मूर्ख।
भोलानाथ पुं० (हि) शिव।
भोलापन पुं०(हि) १-सादगी। सरलता। २-मूर्खता।
भोलाभाला वि० (हि) निश्छल। सरल। सीधासादा।
भोहरा पुं० (हि) खोह।
भौं स्त्री० (हि) भौंह। भृकुटी।
भौंकना क्रि० (हि) दे० 'भूंकना'।
भौंजाल पुं० (हि) दे० 'भूजाल'।
भौंड़ा वि० (हि) दे० 'भोंडा'।
भौंतुवा पुं०(हि) १-खटमल के आकार का एक काला कीड़ा। २-चपल की गिल्टी। ३-तेली का बैल।
भौंर पुं० (हि) १-भौंरा। भ्रमर। मुश्की घोड़ा। ५-
भौंरा पुं०(हि) एक काले रंग का ततैया से बड़ा पतंगा। २-बड़ी मधुमक्खी। ३-काला या लाल ततैया। ४-गाड़ी के पहिये का मध्य भाग। लट्ठा। ५-रहट को खड़े बल की चरखी। ६-तहखाना। ७-खात। ८-लट्टू।
भौंराना क्रि० (हि) १-घुमाना। चक्कर देना। २-विवाह के समय फेरे दिलाना। ३-घूमना। चक्कर काटना।
भौंराला वि० (हि) घुँघराला।
भौंरी स्त्री० (हि) १-पशुओं के शरीर पर चक्करदार बाल जो कि शुभ माने जाते हैं। २-विवाह के समय फेरे पड़ना। ३-आवर्त्त। ४-बाटी।
भौंह स्त्री० (हि) आँख पर की हड्डी के बाल। भौं। भृकुटी।
भौ पुं० (हि) १-संसार। जगत। २-डर। भय।
भौगोलिक वि० (सं) भूगोल का। भूगोल सम्बन्धी। (ज्योग्राफिकल)।
भौगोलिक सर्वेक्षण पुं०(सं) भूगोल संबन्धी सर्वेक्षण। (ज्योग्राफिकल सर्वे)।
भौगोलिक कारक पुं० (सं) भूगोल संबन्धी कारण। (ज्योग्राफिकल फेक्टर)।
भौगोलिक स्थिति स्त्री० (सं) भूगोल संबन्धी स्थिति। (ज्योग्राफिकल सिचुएशन)
भौचक्का वि० (हि) हक्काबक्का। चकित।
भौजग वि० (सं) सर्प या साँप सम्बन्धी।
भौज स्त्री० (हि) भाभी। भावज।
भौजाई स्त्री० (हि) भाई की पत्नी। भाभी।
भौजी स्त्री० (हि) भाभी।
भौतिक वि०(सं) १-पंचभूत से सम्बन्ध रखने वाला। २-पार्थिव। (मेटीरियल)। ३-शरीर सम्बन्धी। (फिजीकल)।
भौतिक प्रतिवेदन पुं० (सं) किसी वस्तु या बात का विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन। (फिजिकल रिपोर्ट)।
भौतिक पृथक्करण पुं०(सं) किसी को किसी से जुदा कर देना। (फिजिकल सेपेरेशन)।
भौतिक भार पुं० (सं) किसी वस्तु का भार। (फिजिकल वेट)।
भौतिक भूगोल पुं०(सं) भूगोल की वह शाखा जिसमें पृथ्वी के किसी अंश की बनावट आदि के सम्बन्ध में विवेचन होता है। (फिजिकल ज्योग्राफी)।(फिजियोग्राफी)।
भौतिकवाद पुं० (सं) पदार्थवाद। (मेटीरियलिज्म)।
भौतिकविज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें पृथ्वी तत्वों जल, वायु आदि का विवेचन होता है। (फिजिकल साइंस)।

भौतिकविद्या स्त्री० (सं) १-भूत प्रेतों को जगाने की विद्या। जादूगरी। २-भौतिक विज्ञान।
भौतिकी स्त्री० (सं) वह विज्ञान की शाखा जिसमें पृथ्वी के पदार्थों के भौतिक रूप गुणों आदि का विवेचन होता है। (फिजिक्स)।
भौतिकीयता स्त्री० (सं) किसी पदार्थ आदि में शरीर आदि होने के गुण। (फिजिकेलिटी)।
भौतिकीविद पुं० (सं) भौतिकी सम्बन्धी ज्ञान रखने वाला। (फिजिसिस्ट)।
भौन पुं० (हि) दे० 'भवन'।
भौना क्रि० (हि) घूमना। चक्कर लगाना।
भौम वि०(सं) १-भूमि सम्बन्धी। भूमि का। २-भूमि से उत्पन्न। पुं० १-मंगलग्रह। पुच्छलतारा।
भौमप्रदोष पुं० (सं) मंगलवार को पड़ने वाला दोष।
भौमरत्न पुं० (सं) मूंगा।
भौमवार पुं० (सं) मंगलवार।
भौमासुर पुं० (सं) नरकासुर नामक राक्षस।
भौमिक वि० (सं) भूमि सम्बन्धी। पुं० जमींदार। (लैंड लार्ड)।
भौमिक अधिकार पुं० (सं) भूमि को जोतने बोने का अधिकार जो भूमि के मालिक को होता है। (लैंड टेन्योर)।
भौमिकी स्त्री० (सं) १-भूतत्व विद्या। (ज्योलाजी)
भौमी स्त्री० (सं) सीता।
भौम्य वि०(सं) भूमि-सम्बन्धी।
भौर पुं० (हि) १-दे० 'भौंरा'। २-घोड़ों का एक भेद
भ्रंगी पुं०(सं) पतंगा।
भ्रंश पुं०(सं) १-अधःपतन। २-नीचे गिरना ३-नाश
भ्रंशन पुं० (सं) १-पतन। २-नाश। ३-कष्ट होना वि० अधःपतन करने वाला।
भ्रंशित वि० (सं) नीचे गिरा हुआ।
भ्रंशी वि० (सं) १-नीचे गिरने वाला। २-नाश होने वाला। ३-छीजने वाला।
भ्रंशोद्धार पुं० (सं) डूबे हुए जहाज या अन्य वस्तु को पानी या समुद्र में से निकालना। (साल्वेज)
भ्रकुटि स्त्री० (सं) भौंह। भृकुटि।
भ्रमंत पुं० (सं) छोटा घर या मकान।
भ्रम पुं० (सं) १-किसी वस्तु को कुछ और समझना मिथ्या कथन। २-संशय। संदेह। ३-मूर्च्छा। ४-नल। पनाला। ५-कुम्हार का चाक। ६-भ्रमण। वि० १-घूमने वाला। चक्कर काटने वाला। २-भ्रमण करने वाला। (हि) मान। प्रतिष्ठा।
भ्रमकारी वि० (सं) भ्रम या संशय उत्पन्न करने वाला
भ्रमण पुं०(सं) १-घूमना। फिरना। २-आना जाना। ३-यात्रा। सफर। ४-चक्कर। फेरी।
भ्रमणकारी वि० (सं) घूमने वाला। घुमक्कड़।
भ्रमणवृतांत पुं० (सं) यात्रा का वर्णन।
भ्रमन पुं० (हि) दे० 'भ्रमण'।
भ्रमना क्रि०(हि) १-घूमना। फिरना। २-धोखा खाना ३-भूल करना।
भ्रमनि स्त्री० (हि) दे० 'भ्रमण'।
भ्रमर पुं० (सं) १-भौंरा। २- दोहे का एक भेद। ३-एक छन्द का भेद।
भ्रमरकीट पुं० (सं) एक तरह का ततैया।
भ्रमरगीत पुं० (सं) एक गीत संग्रह जिसमें उद्धव को गोपियों ने भ्रमर को संबोधित करके उलाहना दिया था।
भ्रमरनिकर पुं० (सं) मधुमक्खियों क झुंड।
भ्रमरावली स्त्री० (सं) भौंरों की पंक्ति।
भ्रमरी स्त्री० (सं) १-मिरगी का रोग। २-भ्रमर की मादा। ३-पार्वती।
भ्रमात्मक वि० (सं) १-सन्दिग्ध। जिसके सम्बन्ध में भ्रम उत्पन्न हो। २-भ्रममूलक।
भ्रमाना क्रि०(हि) १-घुमाना। २-बहकाना। ३-भ्रम में डालना।
भ्रमासक्त पुं०(सं) अस्त्र-शस्त्र आदि साफ करने वाला
भ्रमि स्त्री० (सं) १-चक्कर। २-सेना का चक्रव्यूह। ३-कुम्हार का चाक। ४-खराद। ५-भँवर।
भ्रमित वि० (सं) १-जिसे भ्रम हुआ हो। शंकित। २-घूमता या चक्कर खाता हुआ।
भ्रमितनेत्र वि० (सं) भेंडी आंख वाला। ऐंचाताना।
भ्रमी वि० (सं) १-जिसको भ्रम हो। शंकित। २-चकित।
भ्रमीन वि० (हि) भ्रमण करने वाला।
भ्रष्ट वि० (सं) १-अपने स्थान से गिरा हुआ। पतित २-दूषित। ३-बदचलन। दुराचारी।
भ्रष्टनिद्र वि० (सं) जिसको नींद न आती हो।
भ्रष्टमार्ग वि० (सं) कुमार्ग पर चलने वाला।
भ्रष्टश्री वि० (सं) भाग्यहीन।
भ्रष्टाचार वि० (सं) जिसका आचार बिगड़ गया हो पुं० १-बेईमानी। दुराचार। २-घूसखोरी। (ब्राइबरी)।
भ्रष्टाचरण वि० (सं) १-बदचलन। २-दुराचारी।
भ्रांत पुं० (सं) १-धोखे में आया हुआ। २-जिसे भ्रम हुआ हो। ३-घबराया हुआ। ४-उन्मत्त। ५-घुमाया हुआ।
भ्रांतकथन पुं० (सं) १-असत्य कथन। २-भ्रम में डालने वाला कथन। (मिसरिप्रिजेन्टेशन)।
भ्रांतापह्नुति स्त्री० (सं) एक अलंकार जिसमें भ्रम दूर करने के लिए सची बात का वर्णन होता है।
भ्रांति स्त्री० (सं) १-धोखा। भ्रम। २-संदेह। शक। ३-भ्रमण। ४-भूल। ५-पागलपन। ६-एक काव्यालंकार। ७-अयथार्थ ज्ञान। (फेलेसी)।
भ्रांतिकर वि० (सं) भ्रम में डालने वाला।

भ्रांतिकारी वि० (सं) जो धोखे में डालने वाला हो। जो सच न हो। (फेलेशियस)।
भ्रांतिकार्योपरिणाम पुं०(सं) वह परिणाम जो अयथार्थ ज्ञान पर आधारित हो। (फेलेशियस कन्क्लूजन)।
भ्रांतिमान् वि०(सं) १-भ्रान्ति युक्त। २-चक्कर खाता हुआ।
भ्राजक वि० (सं) चमकाने वाला।
भ्राजन पुं० (सं) चमकदमक।
भ्राजना कि० (हि) शोभा पाना। शोभित होना।
भ्राजमान वि० (हि) शोभायमान।
भ्राजि स्त्री० (सं) चमकदमक।
भ्रात पुं० (हि) दे० 'भ्राता'।
भ्राता पुं० (स) सहोदर। सगा भाई।
भ्रातृक पु० (सं) वह धन जो भाई से मिला हो।
भ्रातृज पुं० (सं) भतीजा। भाई का लड़का।
भ्रातृजा स्त्री० (सं) भतीजी।
भ्रातृजाया स्त्री० (सं) भाभी। भाई की स्त्री।
भ्रातृद्वितिया स्त्री० (स) भैयादूज। कार्तिक सुदी दूज
भ्रातृपुत्र पुं० (सं) भतीजा। भाई का लड़का।
भ्रातृभाव पुं० (स) १-भाई जैसा प्रेम तथा सम्बन्ध। २-भाई चारा (फ्रटरनिटी)
भ्रातृवधू स्त्री० (सं) भाई की स्त्री। भाभी।
[illegible]
का काम पहुँचाने के निमित्त बनाया गया एक समाज। (फ्रेटरनल सोसाइटी)।
भ्रातृसुत पुं० (सं) भतीजा।
भ्रातृसुत्री स्त्री० (सं) भतीजी।
भ्रात्रीय वि० (सं) भ्राता सम्बन्धी। (फ्रेटरनल)। पुं० (सं) भतीजा।
भ्रात्रीय आगोप पुं०(सं) भ्रात्रीय बीमा। (फ्रेटरनल-इन्श्योरेंस)
भ्रात्रेय वि० (सं) भाई सम्बन्धी। पु० (सं) भतीजा।
भ्राम वि० (सं) १-भ्रमयुक्त। २-घूमने वाला। पु० (सं) दे० 'भ्रम'।
भ्रामक वि०(सं) १-भ्रम उत्पन्न करने वाला। २-सन्देह उत्पन्न करने वाला। ३-घुमाने वाला। ४-धूर्त।
भ्रामर पुं० (सं) १-शहद। मधु। २-नाच। ३-दोहे का एक भेद। ४-चुम्बक पत्थर। वि० (सं) भ्रमर-संबंधी।
भ्राष्ट्र पुं० (सं) १-वह पात्र जिस में भड़भूजा अन्न डालकर भूनता है। २-भाड़।
भ्रांशिरक पुं० (सं) शरीर की एक नाड़ी।
भ्रुकुंस पुं० (सं) स्त्री का वेश बना कर नाचने वाला मनुष्य।
भ्रुकुटि स्त्री० (सं) भौं। आँख की हड्डी के ऊपर के बाल।
भ्रुकुटी स्त्री० (सं) दे० 'भ्रुकुटि'।
भ्रू स्त्री० (सं) भौंह।
भ्रूकुटी स्त्री० (सं) दे० 'भ्रुकुटि'।
भ्रुकुटीमुख पु०(हि) एक प्रकार का सर्प।
भ्रूक्षेप पु० (सं) भौं टेढ़ी करना। संकेत बताने के लिए भौं को तिरछा करना।
भ्रूण पुं० (सं) स्त्री का गर्भ। २-बालक की वह अवस्था जो गर्भ में होती है। (एम्ब्रायो)।
भ्रूणघ्न पु० (सं) भ्रूण हत्या करने वाला।
भ्रूणहत्या स्त्री०(सं) १-गर्भ गिरा कर बच्चे को मार देना। २-गर्भ के बालक की हत्या।
भ्रूणहा पुं० (सं) भ्रूण हत्या करने वाला।
भ्रूभंग पुं० (सं) त्योरी चढ़ाना (क्रोध में)।
भ्रूभेद पुं० (सं) दे० 'भ्रूभंग'।
भ्रूमध्य पुं० (सं) दोनों भवों के मध्य का स्थान।
भ्रूलता पु० (सं) वह भौं जो मेहराबदार हों।
भ्रूविकार स्त्री० (सं) त्योरी बदलना।
भ्रूविक्रिया स्त्री० (सं) दे० 'भ्रूभंग'।
भ्रूविक्षेप पुं० (सं) त्योरी बदलना। अप्रसन्नता प्रकट करना।
भ्रूविचेष्टित पुं० (सं) त्योरी चढ़ाना।
भ्रूविलास पु० (सं) त्योरी चढ़ाना।
[illegible] २-भय। ३-नाश।
[illegible] ३ होना।

[शब्दसंख्या—३१३७१]

म

म देवनागरी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण ओष्ठ-नासिका द्वारा होता है
मंकुर पुं० (सं) दर्पण। आइना।
मंख पुं० (सं) १-राजा का चंदीजन। २-मद्दाह।
मंगली स्त्री० (देश) एक गहना जो बच्चों के गले में पहनाया जाता है।
मंग पुं० (सं) १-नाव का अग्रभाग। २-जहाज का एक भाग।
मंगता पुं० (हि) १-भिखमंगा। २-भिक्षुक।
मंगन पुं० (हि) भिखमंगा।
मंगनी स्त्री० (हि) १-माँगने की क्रिया या भाव। २-माँगने पर कोई वस्तु कुछ समय के लिए देना। ३-वह रस्म जिसमें लड़के और कन्या का सम्बन्ध पक्का

होता है।
मंगल पुं० (सं) १-कल्याण। २-मनोकामना पूर्ण होना। ३-सौरजगत का एक ग्रह। ४-मंगलवार। ५-विष्णु।
मंगलकलश पुं० (सं) मंगल अवसरों पर पानी भर कर पूजा के लिए रखा जाने वाला घड़ा या पात्र।
मंगलकाम वि० (सं) शुभचिंतक।
मंगलकामना स्त्री० (सं) शुभ या कल्याण की कामना
मंगलकारक वि० (सं) शुभ।
मंगलकारी वि० (सं) कल्याणकारी।
मंगलकार्य पुं०(सं) शुभ काम। विवाह, जन्म आदि का शुभ उत्सव।
मंगलकाल पुं० (सं) शुभ समय।
मंगलगान पुं० (सं) मंगलकार्य के अवसर पर गाया जाने वाला गाना-बजाना।
मंगलगीत पुं०(सं) शुभ उत्सवों पर गाया जाने वाला गीत।
मंगलग्रह पुं० (सं) १-सौर जगत का पृथ्वी से छोटा और चन्द्रमा से बड़ा एक ग्रह। २-शुभग्रह।
मंगलघट पुं० (सं) दे० 'मंगलकलश'।
मंगलदायक वि० (सं) कल्याणकारी।
मंगलपाठक पुं०(सं) भाट। बन्दीजन।
मंगलप्रद वि० (सं) शुभ। जिसमें मंगल होता है।
मंगलमय वि० (सं) कल्याणकारी।
मंगलवाद्य पुं० (सं) शुभ अवसरों पर बजाने वाला बाजा।
मंगलवार पुं०(सं) सोमवार के बाद पड़ने वाला दिन
मंगलसूत्र पुं०(सं) वह डोरा जो देवता के प्रसाद रूप में कलाई पर बाँधा जाता है।
मंगलस्नान पुं० (सं) किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान।
मंगला स्त्री० (सं) १-पतिव्रता स्त्री। २-पार्वती। ३-सफेद दूब। ४-हल्दी।
मंगलाचरण पुं० (सं) किसी शुभ कार्य के आरम्भ में पढ़े जाने वाले श्लोक या पद। (प्रिल्यूड)।
मंगलाचार पुं० (सं) आशीर्वादोच्चारण।
मंगलाष्टक पुं० (सं) विवाह अवसर पर वर-वधू के कल्याण के लिए पढ़े जाने वाले श्लोक।
मंगलामुखी स्त्री० (सं) वेश्या।
मंगली वि०(सं) जिसकी जन्मकुण्डली के चौथे, आठवें और बारहवें स्थान पर मंगल हो (अशुभ)।
मंगलेच्छु वि० (सं) शुभ या भला चाहने वाला।
मंगलोत्सव पुं० (सं) १-मंगलवार को होने वाला उत्सव। २-शुभ उत्सव।
मंगल्य स्त्री० (सं) १-चंदन। २-सोना। सुवर्ण। ३-अनेक तीर्थों से लाया हुआ जल। वि० १-शुभ। २-साधु।
मंगवाना क्रि० (हि) दूसरे को कोई वस्तु आदि मांगने में प्रवृत्त करना।
मंगाना क्रि० (हि) १-मंगवाना। २-मंगनी कराना ३-विवाह की बातचीत पक्की कराना।
मंगेतर वि० (सं) जिसके साथ किसी की मंगनी हुई हो।
मंगोल पुं० (सं) मध्य एशिया में बसने वाली एक जाति।
मंच पुं० (सं) १-खाट। २-खाट के समान बनी हुई बैठने की पटड़ी। ३-ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने कोई कार्य किया जाय।
मंचमंडप पुं० (सं) १-फसल की रखवाली के लिये ऊँचा बना हुआ मचान। २-विवाह आदि के अवसर पर बनाया गया कोई मचान।
मंचिका स्त्री० (सं) १-कुर्सी। २-कठौता।
मंछर पुं० (सं) मच्छर।
मंजन पुं०(हि) १-दांत साफ करने का चूर्ण या बुकनी २-स्नान।
मंजना क्रि० (हि) १-मांजा जाना। २-अभ्यास होना
मंजर पुं० (अ) १-दृश्य। नजारा। २-झरोखा। ३-देखने योग्य वस्तु।
मंजरित वि० (सं) १-फूलों से सम्पन्न। २-कलियों से युक्त।
मंजरी स्त्री० (सं) १-छोटे पौधे, लता आदि का नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २-मोती। ३-तुलसी ४-गुच्छा। ५-लता। बेल।
मंजरीक पुं० (सं) १-तुलसी। २-मोती। ३-बेंत (लता)। ४-अशोक वृक्ष।
मंजरीचामर पुं० (सं) मंजरी के आकार का चँवर।
मँजाई स्त्री० (हि) मांजने की क्रिया या मजदूरी।
मंजारी स्त्री० (हि) बिल्ली।
मंजिका स्त्री० (सं) वेश्या।
मंजिमा स्त्री० (सं) सुन्दर।
मंजिल स्त्री० (अ) १-यात्रा के समय ठहरने का स्थान २-मकान का खण्ड।
मंजिलगाह स्त्री० (अ) ठहरने का स्थान।
मंजिलहस्ती स्त्री० (अ) जिन्दगी।
मंजिले मकसूद स्त्री० (अ) असली कामना। अभीष्ट
मंजिष्ठा स्त्री० (सं) मजीठ।
मंजिष्ठामेह पुं० (सं) एक प्रकार का प्रमेह।
मंजिष्ठाराग पुं० (सं) १-मजीठ के रंग जैसा पक्का २-स्थायी मनुष्य।
मंजीर पुं० (सं) १-नूपुर। घुँघरू। २-ताल।
मंजीरा पुं० (सं) दे० 'मजीरा'।
मंजु वि० (सं) सुन्दर। मनोहर। मनमोहन।
मंजुकेशी पुं०(सं) श्रीकृष्ण। वि० सुन्दर बाल वाला

मंजुगति वि० (सं) मनोहर चाल वाली।
मंजुगमना वि०(सं) मनोहर चाल वाली। स्त्री० हंसिनी
मंजुघोषा स्त्री० (सं) एक अप्सरा का नाम। वि० मधुर स्वर वाला।
मंजुभाषिणी स्त्री० (सं) मधुर स्वर वाली स्त्री।
मंजुभाषी वि० (सं) मधुरभाषी।
मंजुल वि०(सं) मनोहर। सुन्दर। खूबसूरत। पुं० १-कुंज। जलाशय या नदी का किनारा।
मंजूर वि० (अ) स्वीकृत।
मंजूरी स्त्री० (अ) स्वीकृति।
मंजूषा पुं० (सं) १-छोटा डिब्बा या पिटारी। २-पिंजरा। ३-अभिनन्दन पत्र, पान आदि भेंट करने की तश्तरी। (कास्केट) या डिब्बा।
मँझला वि० (हि) दे० 'मझला'।
मंझा पुं० (हि) १-खाट। पलंग। २-मांझा। ३-चरखे का चक्र। वि०(देश) बीच का।
मँझियाना क्रि०(हि) १-नाव खेना। २-बीच कर पार करना।
मँझोला वि० (हि) दे० 'मझोला'।
मंठ पुं० (सं) बालूशाही जैसा एक मैदे का प्राचीन पक्वान।
मंड पुं० (सं) १-मांड। २-भूषा। सजावट। ३-मेंढक
मंडन पुं० (सं) १-सजाना। २-प्रमाण द्वारा सिद्ध करना। ३-भरना।
मडनप्रेमी वि० (सं) अलङ्कार प्रिय।
मंडना क्रि० (हि) १-सजाना। २-युक्ति द्वारा सिद्ध करना। ३-दलित करना।
मंडप पुं० १-किसी उत्सवादि के लिए फूल पत्तों और कपड़ों से छाकर सजाया हुआ मंच। २-शामियाना ३-देव मंदिर के ऊपर का गोलाकार हिस्सा।
मंडपिका स्त्री० (सं) छोटा मंडप।
मंडरी स्त्री० (हि) छोटा मंडप।
मंडर पुं० (हि) दे० 'मंडप'।
मंडरना क्रि० (हि) चारों ओर से छा जाना।
मंडराना क्रि० (हि) १-चक्कर देते हुए उड़ना। २-किसी के चारों ओर घूमना।
मंडल पुं०(सं) १-परिधि। घेरा। २-गोलाई। [illegible]

[illegible]

अधिकरण। (बोर्ड)। ६-क्षितिज। ७-प्रदेश।
मंडलनृत्य पुं० (सं) गोलाई में घूमते हुए नाचना।
मडलाकार वि० (सं) गोल। मंडल के आकार का।
मंडलाढ़ पुं० (सं) रामर।
मंडलाधिप पुं० (सं) दे० 'मंडलेश्वर'।
मडलाधीश पुं० (सं) दे० 'मंडलेश्वर'।
मंडलायुक्त पुं०(सं) किसी प्रदेश का आयुक्त। (डिवीज़नल कमिश्नर)।
मडली स्त्री० (हि) १-समूह। २-छोटा मण्डल। दूब।
मडलीक पुं० (हि) मण्डल अथवा बारह राजाओं का अधिपति।
मंडलेश्वर पुं० (सं) एक मण्डल का अधिपति।
मंड़वा पुं०(हि) शामियाना। मण्डप।
मेंड़ार पुं० (हि) १-गड्ढा। २-झाबा। डलिया।
मंडित वि० (सं) १-सजाया हुआ। २-छाया हुआ। पूरित।
मंडी स्त्री०(हि) १-थोक बिक्री का स्थान। बड़ा बाजार
मंडुआ पुं० (देश) एक प्रकार का मोटा अनाज कदन्न।
मंडूक पुं०(सं) १-मेंढक। २-एक नाग। ३-घोड़े की एक जाति।
मंडूर पुं० (सं) लोहे का मैल। सिंघान।
मंड़ा पुं० (हि) कमखाब का काम करने का लकड़ी का एक औजार।
मंत पुं० (हि) १-सलाह। २-मन्त्र। ३-उद्योग।
मंतव्य वि० (सं) मानने योग्य। पुं० मत। विचार।
मंत्र पुं०(सं) १-वेद वाक्य। २-गुप्त सलाह। ३-इष्ट-सिद्धि के लिए किया जाने वाला जप। ४-वेदों का ब्राह्मण-भाग से भिन्न भाग।
मंत्रकार पुं० (सं) मन्त्र रचने वाला। ऋषि।
मंत्रकुशल वि० (सं) परामर्श देने में कुशल।
मंत्रगृह पुं०(सं) सलाह या मन्त्रणा देने का कमरा।
मंत्रजल पुं० (सं) मंत्र से प्रवाहित किया गया जल।
मंत्रज्ञ पुं० (सं) मन्त्रणा देने में कुशल व्यक्ति।
मंत्रणा पुं० (सं) परामर्श। सलाह। (एडवाइस)।
मंत्रणाकार पुं० (सं) परामर्श देने वाला। (एडवाइ-ज़र)।
मंत्रणा-परिषद् स्त्री०(सं) वह परिषद् जो किसी विशेष विषय पर मंत्रणा देने के लिए बनाई गई हो। (एड-वाइज़री काउंसिल)।
मंत्रद पुं० (सं) मन्त्रों की शिक्षा देने वाला गुरु।
मंत्रदर्शी वि० (सं) वेदज्ञ।
मंत्रदेवता पुं० (सं) मंत्रों द्वारा बुलाया जाने वाला देवता।

[illegible]

मंत्रप्रयोग पुं० (सं) मंत्रों का प्रयोग करना।
मंत्रयुक्ति पुं० (सं) दे० 'मंत्रप्रयोग'।
मंत्रबल पुं० (सं) मन्त्रों की शक्ति।
मंत्रबीज पुं० (सं) मूलमंत्र।
मंत्रभेद पुं०(सं) गुप्त मंत्रणा या सलाह को प्रकट कर देना।
मंत्रपूत वि० (सं) वश किया हुआ। जड़ित।

मंत्रवादी पुं० (सं) १-मंत्रज्ञ। २-जादूगर।
मंत्रविद् वि० (सं) मंत्रज्ञ।
मंत्रविद्या स्त्री० (सं) तंत्रविद्या। मंत्रशास्त्र।
मंत्रशक्ति स्त्री० (सं) १-युद्ध में चतुराई या चालाकी। २-मंत्र का प्रभाव।
मंत्रसंहिता स्त्री० (सं) वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।
मंत्रसाधन पुं० (सं) अभिलषित विषय की सिद्धि।
मंत्रसिद्धि स्त्री० (सं) १-मंत्र का सिद्ध होना। २-मंत्रों की सफलता।
मंत्रहीन वि० (सं) अदीक्षित।
मंत्रालय पुं० (हि) किसी राज्य के मन्त्री तथा उसके विभाग का कार्यालय। २-मन्त्री, अधिकारी वर्ग, सचिव और अन्य कर्मचारी। (मिनिस्ट्री)।
मंत्रालयिक-सेवक पुं० (सं) किसी मन्त्रालय का सेवक (मिनिस्टीरियल सर्वेन्ट)।
मंत्रालयिक सेवा स्त्री०(सं) किसी मन्त्रालय की सेवा (मिनिस्टीरियल सर्विस)।
मंत्रिणी स्त्री० (सं) सलाह देने वाली।
मंत्रित वि० (सं) १-अभिमन्त्रित। २-परामर्श किया हुआ।
मंत्रित्व पुं०(सं) मन्त्री का काम या पद। (मिनिस्टर-शिप)।
मंत्रिपक्ष पुं०(सं) मन्त्रियों का दल। (मिनिस्टीरियल पार्टी, मिनिस्टीरियल बेंचस)।
मंत्रिपरिषद् पुं० (सं) मन्त्रियों की सभा या परिषद्। (केबिनेट, कौंसिल आफ मिनिस्टर्स)।
मंत्रिपोषक पुं० (सं) मन्त्रिपक्ष का पक्ष लेने वाला। (मिनिस्टीरियलिस्ट)।
मंत्रिमंडल पुं० (सं) मन्त्रियों की सभा। (केबिनेट,-मिनिस्ट्री)।
मंत्रिमंडलीय संकट स्त्री०(सं) किसी देश अथवा राज्य के मन्त्रियों में विचारों के मत भेद होने के कारण उत्पन्न संकट। (केबिनेट क्राइसिस)।
मंत्री पुं० (सं) १-परामर्श देने वाला। २-वह व्यक्ति विशेष जिसके परामर्श से किसी विभाग के सब कार्य होते हैं (मिनिस्टर)। ३-किसी मन्त्रालय या राज-कीय विभाग का वह अधिकारी जो नियमित रूप से अपने सब कार्य चलाता हो। सचिव (सेक्रेटरी)
मंत्रेला पुं० (हि) तन्त्र मन्त्र या झाड़ फूँक जानने वाला।
मंथ पुं० (सं) १-मथना। २-हिलाना। ३-कम्पन। ४-मथानी। ५-सूर्य किरण।
मंथन पुं० (सं) १-मथना। बिलोना। २-मथानी। ३-गहरी छानबीन। अवगाहन।
मंथनघट पुं० (सं) दही बिलोने का बड़ा मटका।
मंथर वि० (सं) १-धीमा गति वाला। मन्द। २-गंभीर।
मंथरगति वि० (सं) धीमी चाल वाला। स्त्री० (सं) मन्द गति।
मंथरा स्त्री० (सं) कैकेई की दासी जो कुबड़ी थी। (रामा०)।
मंद वि० (सं) १-धीमा। सुस्त। आलसी। २-मूर्ख। ३-शिथिल। ४-दुष्ट।
मंदकर्म वि० (सं) कार्यहीन।
मंदकांति पुं (सं) चन्द्रमा।
मंदग वि० (सं) धीरे चलने वाला। पुं० शनि।
मंदगति वि० (सं) धीमी चाल चलने वाला।
मंदचेता वि० (सं) कम बुद्धि वाला। मन्दबुद्धि।
मंदता स्त्री० (सं) १-आलस्य। २-धीमापन। ३-क्षीणता।
मंदबुद्धि वि० (सं) कम अक्ल। मूर्ख।
मंदभागी वि० (सं) अभागा। हतभाग्य।
मंदभाग्य वि० (सं) दुर्भाग्य। अभाग्य।
मंदमति वि० (सं) मन्द बुद्धि।
मंदर पुं० (सं) १-वह पर्वत जो समुद्र मथते समय देवताओं ने मथानी बनाया था। २-स्वर्ग। ३-दर्पण।
मंदला पुं० (सं) एक प्रकार का बाजा।
मंदसमीर पुं० (सं) हलका वायु का झोंका।
मंदस्मित पुं० (सं) हलकी हँसी।
मंदा वि०(हि) १-धीमा। मन्द। २-ढीला। ३-सस्ता कम मूल्य का। ४-जिसका भाव घट गया हो। ५-घटिया।
मंदाकिनी स्त्री० (सं) १-आकाश गंगा। २-गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है। ३-एक नदी का नाम। ४-एक वर्णवृत्त।
मंदाक्रांता स्त्री० (सं) सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मंदाग्नि पुं०(सं) अन्न न पचने का रोग। बदहजमी अपच।
मंदात्मा वि० (सं) १-नीच। अधम। २-मूर्ख।
मंदानिल पुं० (सं) सुखद हलकी वायु।
मंदार पुं० (सं) १-स्वर्ग का एक वृक्ष। २-आक का पेड़। ३-हाथी। ४-मन्दर नाम का पर्वत। ५-स्वर्ग
मंदारमाला स्त्री० (सं) मन्दार के फूलों का हार।
मंदिर पुं० (सं) १-वास स्थान। घर। २-देवालय। ३-शिविर।
मंदिल पुं० (हि) मन्दिर। घर।
मंदी स्त्री० (हि) १-भाव कम होना। २-सस्ती। ३-तेजी का उलटा।
मंदोदरी वि० (सं) सूक्ष्म पेट वाली। स्त्री० रावण की स्त्री का नाम।
मंदोष्ण वि० (सं) गुनगुना। कम गरम।
मंद्र पुं० (सं) १-गंभीर। ध्वनि। २-मृदंग। ३-

ाधियों की एक जाति।

ाज पुं० (हि) मद्रास।

ा स्त्री० (फ) कामना। इच्छा। इरादा।

ूस वि० (हि) दे० 'मनहूस'।

ा क्रि० (हि) दे० 'मढ़ना'।

पु० (सं) १-शिव। २-चन्द्रमा। ३-यम। ४-विष्णु। ५-ब्रह्मा।

हका पुं० (हि) दे० 'मायका'।

इमंत वि० (हि) दे० 'मैमंत'।

ई स्त्री० (हि) १-एक जाति। २-ऊँटनी। पु० (सं-से) सके की वर्ष का पांचवाँ महीना

उर पु० (हि) दे० 'मौर'।

उरछोराई स्त्री०(हि) १-विवाह के बाद मौर खोलने की रस्म। २-इस रस्म पर मिलने वाला धन।

उलसिरी स्त्री० (हि) दे० 'मौलसिरी'।

ासी स्त्री० (हि) माता की बहन।

ाई स्त्री० (हि) एक अन्न का नाम। ज्वार।

कड़ा पु० (हि) बड़ी मकड़ी।

कड़ाना क्रि० (हि) १-इतराना। २-अकड़ना।

कड़ी स्त्री०(हि) एक कीड़ा जो अपने तन्तुओं से जाला बुनकर उसमें मक्खियाँ आदि फँसाता है।

कतब पु० (अ) पाठशाला। मदरसा।

कदूर पुं० (अ) सामर्थ्य। शक्ति।

कना क्रि० (हि) दे० 'मुकना'।

कनातीस पुं० (अ) चुम्बक पत्थर।

रकफूल वि० (अ) रेहन रखा हुआ।

मकबरा पु० (अ) वह इमारत जिसमें किसी राजा की कब्र हो।

मकबूजा वि० (अ) अधिकृत।

मकबूलियत स्त्री० (अ) लोकप्रियता।

मकबूलेन्तुका पुं० (अ) तुला का भार।

मकरंद पु०(सं) १-फूलों का रस। २-फूलों का केसर ३-एक ताल। ४-मधु। ५-एक वर्णवृत्त।

मकर पु० (सं) १-मगर या घड़ियाल। २-मछली। ३-बारह राशियों में से एक। ४-कुबेर के नौ निधियों में से एक। ५-एक पर्वत का नाम।

मकरकुंडल पु० (सं) मकर या मछली के आकार का कुंडल।

मकरकेतु पुं० (सं) कामदेव।

मकरक्रांति स्त्री० (सं) मकररेखा।

मकरगार पुं० (हि) बादले का तार।

मकरध्वज पुं० (सं) १-कामदेव। २-एक प्रसिद्ध आयुर्वेद का रस। ३-लौंग। ४-अहिरावण का एक द्वारपाल।

मकरवासन पुं० (सं) कामदेव।

मकरवाहन पुं० (सं) वरुण।

मकरव्यूह पुं० (सं) मकर के आकार का एक सैनिक व्यूह।

मकरसंक्रांति स्त्री०(सं) १-वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। २-माघ मास की संक्रांति

मकराकृत वि० (सं) मकर या मछली के आकार का।

मकरालय पु० (सं) समुद्र।

मकराश्व पु० (सं) वरुण।

मकरी स्त्री० (सं) १-मकर की मादा। २-चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जो जूए से बंधी रहती है।

मकसद पुं० (अ) १-मनोरथ। २-मनोकामना। ३-अभिप्राय।

मकसूद वि०(अ) अभिप्रेत। उद्दिष्ट। पुं०१-अभिप्राय २-मनोरथ।

मकान पु० (अ) १-घर। गृह। २-निवास स्थान।

मकानदार वि० (अ) मकान वाला।

मकाम पु० (अ) दे० 'मुकाम'।

मकु अव्य० (हि) १-चाहे। २-बल्कि। वरन्। ३-कदाचित। शायद।

मकुट पु० (हि) दे० 'मुकुट'।

मकुना पु० (हि) १-बिना दांत वाला या छोटे-छोटे दांत वाला। २-बिना मूछों वाला आदमी।

मकुनी स्त्री० (देश) १-बेसनी रोटी। २-एक प्रकार की बाटी जिसमें मेथी और मसाला भरा होता है।

मकूनी स्त्री० (हि) दे० 'मकुनी'।

मकूला पु०(अ) १-कहावत। २-वचन। कथन।

मकोई स्त्री० (देश) दे० 'मकोय'।

मकोड़ा पु० (हि) छोटा कीड़ा।

मकोय स्त्री० (हि) १-एक छोटा पौधा जिसके पत्ते और फल दवा के काम आते है। २-रसभरी।

मकोरना क्रि० (हि) दे० 'मकोड़ना'।

मक्का पुं०(हि) मकई ज्वार (अ) मुसलमानों का तीर्थ स्थान जो अरब में है।

मक्कार वि० (अ) छली। कपटी। धूर्त।

मक्कारी स्त्री० (अ) छल। कपट। धूर्तता।

मक्खन पु० (हि) दही को मथ कर निकला हुआ सार-भाग। नवनीत।

मक्खी स्त्री० (हि) १-एक प्रसिद्ध उडने वाला कीड़ा जो प्रायः सर्वत्र पाया जाता है। २-बन्दूक आदि का वह उभरा हुआ अंश जिससे निशाना साधा जाता है।

मक्खीचूस पुं० (हि) भारी कंजूस। परम कृपण।

मक्खीमार वि० (हि) १-मक्खी मारने वाला। २-निकम्मा। घृणित।

मक्र पु०(अ) १-छल। कपट। २-बनावट। ३-धोखा

मक्रचांदनी स्त्री० (अ) १-धोखा देने वाली वस्तु। २-पिछली रात की चांदनी जिससे सवेरे का भ्रम होता है।

मक्षिका स्त्री० (सं) मक्खी।

मक्षिकामल पुं० (सं) मोम ।
मक्षिकासन पुं० (सं) मधुमक्खियों का छत्ता ।
मख पुं० (सं) यज्ञ ।
मखजन पुं० (अ) खजाना । कोष । भंडार ।
मखतूल पुं० (हिं) काला रेशम ।
मखतूली वि० (हि) काले रेशम का बना हुआ ।
मखत्राता पुं०(सं) १-यज्ञ की रक्षा करने वाला । २-रामचन्द्र ।
मखदूम पुं०(अ) १-स्वामी । मालिक । २-जिसकी सेवा की जाय ।
मखद्वेषी पुं० (हि) राक्षस ।
मखन पुं० (हिं) मक्खन ।
मखनिया पुं० (हिं) मक्खन बनाने वाला । वि०) जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो ।
मखमल स्त्री०(अ) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसके एक ओर रोएं उभरे होते है ।
मखमली वि० (अ) १-मखमल का बना हुआ । २-मखमल का सा ।
मखशाला स्त्री० (सं) यज्ञशाला ।
मखहा पुं० (सं) १-शिव । इन्द्र ।
मखाग्नि स्त्री० (सं) यज्ञ में पवित्र की गई अग्नि ।
मखाना पुं० (हि) तालमखाना ।
मखान्न पुं० (सं) तालमखाना । मखाना ।
मखी स्त्री० (हि) मक्खी ।
मखौल पुं० (हि) हँसीठट्ठा । उपहास । दिल्लगी ।
मखौलिया वि० (हि) हँसोड़ । दिल्लगीबाज ।
मग पुं० (हि) मार्ग । रास्ता । (सं) मगध देश ।
मगज पुं० (हि) १-मस्तिष्क । दिमाग । २-गिरी ।
मगजचट पुं० (हि) मगज चाट जाने वाला बकवादी
मगजचट्टी स्त्री० (हि) बकवास ।
मगजपच्ची स्त्री०(हि) कुछ करने के लिए बहुत दिमाग खपाना । सिर खपाना ।
मगजी स्त्री० (फा) गोट जो रजाई आदि पर लगाई जाती है ।
मगण पुं० (सं) छन्दशास्त्र के आठ गणों में से एक
मगद पुं० (हि) मूंग या उड़द के बेसन के बने लड्डू
मगदूर पुं० (हि) 'मकदूर' ।
मगध पुं० (सं) १-दक्षिण विहार का प्राचीन नाम । २-राजाओं का गुणगान करने वाला ।
मगन पुं० (सं) १-डूबा या समाया हुआ । २-प्रसन्न सुरा । ३-बेहोश । लीन ।
मगना क्रि० (हि) १-लीन या तन्मय होना । २-डूबना
मगर पुं० (हि) मकर या घड़ियाल नामक जलजन्तु २-मछली । ३-मछली के आकार का कान का गहना । अव्य० (फा) लेकिन । परन्तु । पर ।
मगरमच्छ पुं० (हि) १-घड़ियाल नामक जल जन्तु । २-बड़ी मछली ।
मगरा वि० (हि) १-सुस्त । २-जिद्दी । उद्दंड ।
मगरिब पुं० (अ) पश्चिम दिशा । पच्छिम ।
मगरिबी वि० (अ) पश्चिमी । पच्छिम का ।
मगरूर वि० (अ) घमंडी । अभिमानी ।
मगरूरी स्त्री० (अ) घमंड । अभिमान ।
मगह पुं० (हि) मगध देश ।
मगहपति पुं० (हि) जरासंध जो मगध का राजा था ।
मगहय पुं० (हि) मगध देश ।
मगही वि० (हि) १-मगध देश सम्बन्धी । मगध में उत्पन्न ।
मगु पुं० (हि) मार्ग । पथ । रास्ता ।
मग्ग पुं० (हि) रास्ता । मार्ग ।
मग्ज पुं० (अ) १-मस्तिष्क । दिमाग । २-गूदा ।
मग्जरोशन स्त्री० (फा) सुंघनी । नास ।
मग्न वि० (सं) १-डूबा हुआ । २-तन्मय । लीन । ३-मदमस्त ।
मघवा पुं०(सं) इन्द्र ।
मघवाजित पुं० (सं) मेघनाद ।
मघा स्त्री०(सं) १-सत्ताइस नक्षत्रों में से दसवां नक्षत्र २-एक प्रकार की औषध ।
मघोनी स्त्री० (हि) इन्द्राणी । शची ।
मघौना पुं० (हि) नीले रंग का कपड़ा ।
मचक स्त्री० (हि) बोझ । दबाव ।
मचकना क्रि० (हि) किसी वस्तु के दबने या दबाने से होने वाला मचमच शब्द ।
मचका पुं० (हि) १-झोंक । झटका । २-झूले की पेंग
मचकाना क्रि० (हि) झचकने में प्रवृत्त करना ।
मचना क्रि० (हि) १-आरम्भ होना । (शोर आदि) । २-छाजाना । फैलाना (कीर्ति आदि) ।
मचमचाना क्रि० (हि) १-दबने से मचमच शब्द होना २-कामातुर होना ।
मचलना क्रि० (हि) किसी वस्तु के प्राप्त करने के लिए हठ करना । अड़ना ।
मचला वि० (हि) १-अनजान बनने वाला । २-जिद करने वाला । पुं० (हि) बांस की टोकरी ।
मचलाना क्रि० (हि) ओकाई आना । मतली मालूम होना ।
मचली स्त्री० (हि) कै आने की प्रवृत्ति । मतली ।
मचवा पुं० (हि) १-खाट । पलंग । २-खाट या चौकी का पाया । ३-नाव ।
मचान पुं०(हि) खेत की रखवाली या शिकार खेलने के लिए चार लट्ठों पर बाँध कर बनाया गया ऊँचा स्थान । २-मंच । टीकट ।
मचाना क्रि० (हि) १-मचना का सकर्मक रूप । २-मैला या गंदा करना ।
मचामच स्त्री० (हि) किसी वस्तु को दबाने से होने वाला मचमच शब्द ।

मचिया स्त्री० (हि) १-छोटी चारपाई। २-पीढ़ी।
मचिलाई स्त्री० (हि) १-मचलने का भाव। २-हठ।
मच्छ पु० (हि) १-बड़ी मछली। २-दे० 'मत्स्य'।
मच्छपालिनी स्त्री० (हि) मछली पकड़ने की बंसी।
मच्छड़ पु० (हि) दे० 'मच्छर'।
मच्छर पु० (हि) एक प्रकार का उड़ने वाला पतङ्गा जिसके काटने से कई रोग हो जाते हैं।
मच्छरदानी स्त्री० (हि) मसहरी। मच्छरों से बचने के लिए चारों ओर लगाने का जाली का पर्दा।
मच्छी स्त्री० (हि) दे० 'मछली'।
मच्छीकांटा पु० (हि) १-एक प्रकार की सिलाई। २-कालीन की जालीदार बेल।
मच्छीभवन पु०(हि) मछली आदि पालने का तालाब
मच्छीमार पु० (हि) धीवर। मल्लाह।
मच्छोदरी स्त्री० (हि) वेदव्यास की माता सत्यवती
मछली स्त्री०(हि) सदा जल में रहने वाला एक प्रसिद्ध जलजन्तु जिसकी कई जातियां होती हैं। मत्स्य। २-मछली के आकार का कोई पदार्थ।
मछलीदार पु० (हि) दरी की एक बुनावट।
मछलीमार पु० (हि) धीवर। मछुआ।
मछवा पु० (हि) १-वह नाव जिस पर से मछली पकड़ी जाती है। २-मल्लाह।
मछुआ पु० (हि) मछली पकड़ने वाला। धीवर। मल्लाह।
मछुवा जहाज पु० (हि) मछली पकड़ने या शिकार खेलने की बड़ी नाव या जहाज। (ट्रॉलर)।
मजकूर वि० (फा) जिसका उल्लेख पहले हो चुका हो उक्त।
मजकूरी पु०(फा) १-ताल्लुकेदार। २-सम्मन तामील कराने वाला चपरासी। ३-बिना वेतन का चपरासी ४-वह भूमि जिसका बटवारा न हो सके और सर्वसाधारण के लिए छोड़ दी गई हो।
मजदूर पु० (फा) १-शारीरिक परिश्रम से जीविका चलाने वाला। श्रमिक। २-बोझ ढोने वाला। (लेबरर)।
मजदूर-दल पु० (हि) संघटित श्रमिक वर्ग। (लेबर-कन्फिडेरान)।
मजदूरसंघ पु० (हि) मजदूरों का संघ। (लेबर यूनियन)।
मजदूरी स्त्री० (फा) १-मजदूर का काम। २-पारिश्रमिक। मजूरी। (वेजेज)।
मजना क्रि० (हि) १-डूबना। २-अनुरक्त होना।
मजनू पु० (फा) १-पागल। दीवाना। २-प्रेमी। आशिक।
मजबूत वि० (फा) १-दृढ़। पुष्ट। पक्का। २-अटल। स्थिर।
मजबूती स्त्री०(फा)१-दृढ़ता। पुष्टता। २-बल। साहस
मजबूर वि० (फा) विवश। लाचार।
मजबूरन अव्य० (फा) लाचारी से। विवश होकर।
मजबूरी स्त्री०(फा) असमर्थता। विवशता। लाचारी।
मजमा पु० (फा) बहुत से लोगों का एक जगह पर जमाव। जमघट।
मजमूआ वि० (फा) जमा या एकत्र किया हुआ। संगृहीत।
मजमून पु०(फा)१-किसी लेख आदि का विषय। लेख
मजमून नवीस पु० (फा) निबंधकार।
मजलिस पु० (फा) १-सभा। जलसा। समाज। २-महफिल। नाच-रंग।
मजलूम वि० (फा) अत्याचार से पीड़ित।
मजहब पु० (फा) धार्मिक सम्प्रदाय। मत। पंथ। धर्म
मजहबी वि० (फा) किसी धार्मिक मत से संबन्ध रखने वाला।
मजा पु०(फा)१-आनन्द। सुख। २-स्वाद। ३-हँसी-दिल्लगी।
मजाक पु० (फा) १-हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी। ठठोली। २-रुचि। प्रवृत्ति।
मजाकपसंद वि० (फा) हँसोड़।
मजाकन अव्य० (फा) मजाक के तौर पर।
मजाकिया वि० (फा) मजाक या हँसी दिल्लगी करने वाला।
मजाज पु० (हि) १-गर्व। अभिमान। २-दे० 'मिजाज'। ३-अधिकार। हक।
मजार पु० (अ) १-समाधि। मकबरा। २-कब्र।
मजारी स्त्री० (हि) बिल्ली।
मजाल स्त्री० (फा) सामर्थ्य। शक्ति।
मजीठ स्त्री० (हि) एक लता जिसकी जड़ से लाल रंग तैयार किया जाता है।
मजीठी वि० (हि) मजीठे के रंग का लाल।
मजीर स्त्री० (हि) फूलों का गुच्छा। मंजीर।
मजीरा पु० (हि) ताल देने की कांसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी (संगीत)।
मजूर पु० (हि) १-मजदूर। २-मोर। मयूर।
मजूरी स्त्री०(हि) दे० 'मजदूरी'। (वेजेज), (संवि०)।
मजेज वि० (हि) घमंड। दर्प। अहंकार।
मज्ज स्त्री० (हि) हड्डी के भीतर का गूदा।
मज्जन पु० (सं) स्नान। नहाना।
मज्जा स्त्री०(सं) हड्डी के भीतर भरा हुआ चिकना गूदा।
मज्जारस पु० (सं) वीर्य। शुक्र।
मज्जासार स्त्री० (सं) जायफल।
मझ वि० (हि) बीच। मध्य।
मझधार स्त्री० (हि) १-नदी के मध्य ... २-किसी कार्य का मध्य।
मझला वि० (हि) मध्य का,

मझाना क्रि० (हि) १-प्रविष्ट करना। २-बीच में धंसाना। ३-थाह लेना।
मझार अव्य० (हि) बीच में। भीतर।
मझावना क्रि० (हि) दे० 'मझाना'।
मझियाना क्रि० (हि) १-नाव खेना। २-बीच में से ले जाना। ३-बीच में होकर जाना।
मझियारा वि० (हि) बीच का।
मझोला वि०(हि)१-बीच का। २-मध्यम आकार का
मझोली स्त्री० (हि) १-एक तरह की बैलगाड़ी। २-मोचियों का एक औजार।
मट पुं० (हि) मटका। मटकी।
मटक स्त्री० (हि) १-मटकने की क्रिया या भाव। २-गति। चाल।
मटकना क्रि० (हि) १-लचक कर नखरे से चलना। २-नखरे से हाथ या आंख नचाना। ३-विचलित होना। ४-लौटना। पुं० मिट्टी का कुल्हड़।
मटकनि स्त्री० (हि) दे० 'मटक'।
मटका पुं० (हि) मिट्टी का बड़ा घड़ा। मट।
मटकाना क्रि०(हि) नखरों के साथ अंगों का संचालन करना
मटकी स्त्री० (हि) छोटा घड़ा।
मटकीला वि० (हि) मटकने वाला।
मटकौअल स्त्री० (हि) मटकने की क्रिया या भाव।
मटमैला वि० (हि) मट्टी के रङ्ग का धूलिया।
मटर पुं० (हि) एक प्रसिद्ध द्विदल अन्न।
मटरगश्त पुं० (हि) १-धीरे-धीरे चलना। टहलना। २-सैर सपाटा। ३-आवारा फिरना।
मटरगश्ती स्त्री० (हि) १-सैर-सपाटा। २-आवारा घूमना।
मटरचूड़ा पुं० (हि) मटर के साथ चूड़ा मिला कर बनाई हुई घुघरी।
मटिया वि० (हि) मटमैला। खाकी। स्त्री० मिट्टी। मृत शरीर। शव।
मटियाफूस वि० (हि) बहुत दुर्बल और बूढ़ा। जर्जर
मटियामसान वि० (हि) गया-बीता। नष्टप्राय।
मटियामेट वि०(हि) नष्ट। मिट्टी में मिला हुआ।
मटियाला वि० (हि) दे० 'मटमैला'।
मटुक पुं० (हि) दे० 'मुकुट'।
मटुका पुं० (हि) दे० 'मटका'।
मटुकिया स्त्री० (हि) मटकी।
मटुकी स्त्री० (हि) मटकी।
मट्टी स्त्री० (हि) दे० 'मिट्टी'।
मट्ठर पुं० (हि) आलसी। सुस्त।
मट्ठा पुं० (हि) छाछ। मक्खन निकाल लेने के बाद बना हुआ दही का पानी।
मठ पुं०(सं) १-वह मकान जिसमें किसी महन्त के आधीन अन्य साधु रह सकें। २-निवास। स्थान। ३-विद्यामंदिर। ४-देवालय। मंदिर।
मठधारी पुं०(सं) वह साधु या महन्त जिसके आधीन कोई मठ हो।
मठरी स्त्री० (हि) मैदे की बनी नमकीन टिकिया।
मठा पुं० (हि) दे० 'मट्ठा'।
मठाधीश पुं० (सं) महन्त।
मठिया स्त्री० (हि) १-छोटा मठ। २-छोटी कुटी। ३-फूल। (धातु) की बनी गरीब ग्रामीण स्त्रियों के पहनने की चूड़ियां।
मठी पुं० (सं) छोटा मठ।
मठोर स्त्री०(हि) दही मथने और छाछ रखने की मटकी
मड़ई स्त्री०(हि) १-छोटा मंडप। २-पर्णशाला। कुटिया
मड़राना क्रि० (हि) दे० 'मंडराना'।
मड़वा पुं० (हि) दे० 'मंडप'।
मड़हट पुं० (हि) दे० 'मरघट'।
मड़ा पुं० (हि) कमरा। बड़ी कोठी।
मडुआ पुं० (हि) एक प्रकार का अन्न।
मड़ैया स्त्री० (हि) १-झोपड़ी। कुटी। २-छोटा मंडप ३-मिट्टी या घासफूस का बना छोटा घर।
मड़ वि० (हि) अड़कर बैठने वाला।
मढ़ना क्रि० (हि) १-चारों ओर से लपेट या घेर देना २-पुस्तक पर जिल्द चढ़ाना। ३-थोपना। ४-चित्र आदि को चौखटे में जड़ना।
मढ़वाना क्रि० (हि) मढ़ने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ाई स्त्री० (हि) १-मढ़ने का काम या भाव। २-मढ़ने की मजदूरी।
मढ़ी स्त्री० (हि) १-छोटा मठ। २-कुटिया। ३-मंदिर
मढ़ैया पुं० (हि) मढ़ने वाला।
मणि स्त्री० (सं) १-बहुमूल्य रत्न। जवाहरात। २-मणांकुर। ३-लिंग का अग्रभाग। ४-बकरी के गले की थैली। ५-श्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति।
मणिकंकण पुं० (सं) वह कंकण जिसमें रत्न जड़े हुए हों।
मणिकंचन योग पुं०(सं) सोने पर सुहागे वाला श्रेष्ठ संयोग।
मणिकुंडल पुं० (सं) रत्नजड़ित कुण्डल।
मणिदीप पुं०(सं) १-रत्न जड़ित दीवा। २-दीवे का काम देने वाला मणि।
मणिदोष पुं० (सं) रत्नादि का दोष।
मणिधर पुं० (सं) सर्प। सांप।
मणिबंध पुं० (सं) कलाई। पहुँचा।
मणिमाला स्त्री०(सं) १-लक्ष्मी। २-मणियों की माला
मत अव्य० (हि) न। नहीं। (निषेधवाचक शब्द)। पुं०(सं) १-सम्मति। राय। २-आशय। भाव। ३-धर्म। पंथ। ४-ज्ञान। पूजा। ५-जिस विषय में कोई व्यक्ति रुचि रखता हो उस विषय के सम्बन्ध में उसका प्रकट किया हुआ विचार। ६-निर्वाचन

आदि के सम्बन्ध दी जाने वाली सम्मति। (वोट)।
मतगणना पुं० (सं) किसी निर्वाचन में दिये हुए मतों या वोटों की गिनती। (काउंटिंग आफ वोट्स)।
मतदाता पु०(सं) किसी निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने के लिए मत देने का अधिकारी। (वोटर)।
मतदातृ-सूची स्त्री० (सं) किसी निर्वाचन क्षेत्र में मत देने के अधिकारी, वयस्क लोगों की सूची। (वोटिंग लिस्ट)।
मतदान पुं० (सं) निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने के लिए मत देने की क्रिया या भाव। (वोटिंग)।
मतदानकक्ष पुं० (सं) किसी मतदान केन्द्र का वह कमरा जहाँ किसी मोहल्ले को मतदान की सुविधा प्राप्त हो। (पोलिंग बूथ)।
मतदानकोष्ठ पुं० (सं) दे० 'मतदानकक्ष'।
मतदानकेन्द्र पु०(सं) वह स्थान जहाँ मतदाताओं को किसी निर्वाचन क्षेत्र में मतदान करने के लिए खड़े होने तथा मतदान करने की व्यवस्था हो। (पोलिंग स्टेशन)।
मतदानपत्र पुं० (सं) शलाका-पत्र। वह पत्र जिस पर चुनाव में खड़े होने वाले व्यक्ति का नाम और चिह्न अंकित हो और जिस पर मतदाता को अपना चिह्न बनाकर शलाका पेटिका (बैलट बाक्स) में डालना है। (बैलट पेपर)।
मतदान पेटिका स्त्री० (सं) वह पेटी जिसमें मतदान पत्र छोड़े जाते हैं। शलाका-पेटिका। (बैलट बॉक्स)
मतपेटिका स्त्री० (सं) दे० 'मतदान पेटिका'।
मतदेय वि० (सं) वह विषय या मद जिस पर सदस्यों का मत व्यय करने के लिए लिया जा सके। (वोटेबल)।
मतदेय-पद पुं०(सं) वह पद जिस पर सदस्यों का मत लेना आवश्यक हो। (वोटेबल आइटम)।
मतदेयव्यय पु०(सं) वह व्यय जिसपर सदस्यों का मत लेना आवश्यक हो। (वोटेबल एक्सपेंडीचर)।
मतना क्रि० (हि) १-मत या राय निश्चित करना। २-नशे में चूर होना।
मतपत्र पु० (सं) दे० 'मतदानपत्र'।
मतभेद पुं० (सं) आपस में एक दूसरे की राय या सम्मति न मिलना।
मतलब पुं० (अ) १-अभिप्राय। आशय। तात्पर्य। २-अर्थ। ३-स्वार्थ। ४-उद्देश्य। ५-सम्बन्ध। वास्ता।
मतलबी वि० (अ) स्वार्थी। खुदगरज।
मतवार वि० (हि) मतवाला।
मतवारा वि० (हि) मतवाला।
मतवाला वि० (हि) १-नशे में चूर। २-उन्मत्त। ३-मत्त। ३-जिसे अभिमान हो।
मतसंग्रह पुं० (सं) किसी विशेष प्रश्न पर सब अधिकारियों के मतों को एकत्रित करना।

मतस्वातंत्र्य पुं०(सं) विचार, राय, या मत की स्वतंत्रता।
मतसाम्य पुं०(सं) सबको मत देने का समान अधिकार। (इक्वेलिटी आफ वोट्स)।
मतांतर पुं० (सं) १-भिन्न मत। २-विचारों की भिन्नता।
मता पुं० (हि) मत। सम्मति। सलाह।
मताधिकार पुं० (सं) संसद आदि के सदस्य निर्वाचित करने के लिए मत देने का अधिकार। (फ्रेंचाइज सफरेज)।
मताधिकारी पु०(सं) जिसे मतदान करने का अधिकार हो। (वोटर)।
मतानुयाचक पु० (सं) वह जो किसी निर्वाचन क्षेत्र में अपने पक्ष में मत देने के लिए मतदाताओं से प्रार्थना करे। (कन्वेसर)।
मतानुयायी वि०(सं) किसी धार्मिक सम्प्रदाय या किसी व्यक्ति विशेष के मत को मानने वाला।
मतारी स्त्री० (हि) माता।
मतार्थी पुं० (सं) मत देने के लिए जो प्रार्थना करे। उम्मीदवार। (कैंडीडेट)।
मतार्थीघटक पुं०(सं) किसी मतार्थी की ओर से मतदान केन्द्र पर काम करने वाला। (पोलिंग एजेंट)
मतावलम्बी वि० (सं) किसी एक मत, सिद्धांत या सम्प्रदाय का अवलम्बन करने वाला।
मति स्त्री० (सं) १-समझ। बुद्धि। २-इच्छा। ३-स्मृति। अव्य० (हि) मत। वि० सदृश्य। समान।
मतिद्वैध पु० (सं) मतभेद।
मतिभ्रंश पुं० (सं) पागलपन।
मतिभ्रम पुं० (सं) बुद्धिनाश। पागलपन।
मतिमंद वि० (सं) चतुर। बुद्धिमान।
मतिमान् वि० (सं) विचारवान। बुद्धिमान।
मतिहीन वि० (सं) मूर्ख। बुद्धिहीन।
मती स्त्री० (हि) दे० 'मति'। अव्य० (हि) दे० 'मत'।
मतीर पुं० (हि) तरबूज।
मतीरा पुं० (हि) तरबूज।
मतैई पुं० (दे) विमाता।
मतैक्य पु० (सं) किसी विषय में सब लोगों का मत या विचार एक होना। (यूनैनिमिटी)।
मत्कुण पु० (सं) खटमल।
मत्त वि० (सं) १-मस्त। मतवाला। २-पागल। ३-मस्त। खुश।
मत्तता स्त्री० (सं) मत्त होने का भाव। [illegible]
मत्ताई स्त्री० (हि) दे० 'मत्तता'।
मत्ता स्त्री०(सं)१-एक वर्णवृत्त। २-[illegible] मात्रा में मनने वाला भाव [illegible]
मत्था पुं०(हि) १-भाल। [illegible] पदार्थ का ऊपरी भाग।

मत्थे अव्य० (हि) १-मस्तक या सिर पर। २-आसरे या भरोसे पर।
मत्सर पुं० (सं) १-डाह। हसद। जलन। २-क्रोध
मत्सरी वि० (सं) दूसरों से डाह करने वाला।
मत्स्य पुं० (सं) १-मछली। २-मीनराशि। ३-एक पुराण। ४-छप्पयछन्द का एक भेद। ५-विराट् देश का एक नाम।
मत्स्यगंधा स्त्री० (सं) व्यास की माता सत्यवती का एक नाम।
मत्स्यघाती पुं० (सं) मछुआ।
मत्स्यजीवी पुं० (सं) मछुआ। मछली पकड़ने वाला
मत्स्यदेश पुं० (सं) विराट् देश।
मत्स्यवेधनी स्त्री० (सं) मछली पकड़ने की बंसी।
मत्स्यावतार पुं० (सं) विष्णु के दस अवतारों में से प्रथम।
मत्स्येन्द्रनाथ पुं० (सं) एक प्रसिद्ध हठयोगी साधु जो गोरखनाथ के गुरु थे।
मत्स्योपजीवी पुं० (सं) मछुआ।
मथन पुं०(सं) १-मथने की भाव या क्रिया। बिलोना २-वध।
मथना क्रि०(हि) १-किसी तरल पदार्थ को लकड़ी, रई आदि से बिलोना। २-नष्ट करना। ३-घूम-घूम कर पता लगाना।
मथनिया स्त्री० (हि) वह मटका जिसमें दही मथा जाता है।
मथनी स्त्री० (हि) १-मथनिया। २-रई। मथानी। ३-मथने की क्रिया।
मथवाह पुं० (हि) महावत।
मथानी स्त्री० (हि) एक प्रकार का डंडा जिससे दही मथ कर नवनीत निकाला जाता है।
मथित वि० (सं) १-मथा हुआ। २-घोल कर अच्छी तरह मिलाया हुआ।
मथो पुं० (हि) मथनी।
मथुरिया वि० (हि) मथुरा से सम्बन्ध रखने वाला। मथुरा का।
मथूल पुं० (देश) मस्तूल।
मथ्थ पुं० (हि) माथा।
मद पुं०(सं) १-हर्ष। आनन्द। २-वीर्य। ३-मतवाले हाथियों की कनपटी से निकलने वाला द्रव्य। ४-शराब। मद्य। ५-नशा। ६-घमंड। ७-शहद। ८-उन्माद।
मदक पुं० (हि) अफीम के सत से बनने वाला एक विशेष पदार्थ जो तम्बाकू के समान पीया जाता है।
मदकची वि० (हि) मदक पीने वाला।
मदकर वि०(सं) जिससे मद या नशा हो। पु० धतूरा
मदकल वि० (सं) १-मस्त। मतवाला। २-पागल।
मदन पुं० (हि) १-मद्य। २-चितवन।
मदगज वि० (सं) दे० 'मदकल'।
मदग्नी स्त्री० (सं) पूतिका। पोय।
मदजल पुं० (सं) हाथी का मद। दान।
मदज्वर पुं० (सं) बैल आदि का नशा या घमंड।
मदद स्त्री० (अ) १-सहायता। सहारा। २-साथ काम करने वालों का समूह।
मददगार वि० (अ) सहायक।
मदन पुं० (सं) १-कामदेव। २-अनुराग। ३-काम क्रीड़ा। ४-खंजनपक्षी। ५-भ्रमर। ६-वसंत काल।
मदनकंटक पुं० (सं) सात्विक। रोमांच।
मदनकदन पुं० (सं) शिव।
मदनकलह पुं० (सं) प्रेम का झगड़ा।
मदनगोपाल पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
मदनदमन पुं० (सं) शिव का एक नाम।
मदनदिवस पुं० (सं) मदनोत्सव का दिन।
मदनपक्षी पुं० (सं) खंजन पक्षी।
मदनफल पुं० (सं) मैनफल।
मदनमस्त पुं० (सं) चम्पा की जाति का एक तीव्र सुगंध वाला पौधा।
मदनमहोत्सव पुं० (सं) एक प्राचीन समय का होली जैसा उत्सव। होली।
मदनमोहन पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
मदनरिपु पुं० (सं) शिव।
मदनांतक पुं० (सं) शिव।
मदनातुर वि० (सं) कामातुर।
मदनारि पुं० (सं) शिव।
मदनोत्सव पुं० (सं) दे० 'मदन महोत्सव'।
मदनोद्यान पुं० (सं) सुन्दर बगीचा। प्रमोद-वन।
मदमत्त वि० (सं) मतवाला।
मदमाता वि० (हि) १-कामुक। मस्त।
मदमुकुलिताक्षी स्त्री०(सं) वह स्त्री जिसकी आँखें मस्ती में बन्द सी हो रही हों।
मदर पुं० (हि) मंडराना। घेरना।
मदरसा पुं० (अ) पाठशाला। विद्यालय।
मदहोश वि०(फ़ा) १-नशे में चूर। २-कायर। ३-बेहोश।
मदांध वि०(सं) जो नशे के कारण अंधा हो। मदोन्मत
मदानि वि० (देश) कल्याण करने वाला।
मदार पुं० (सं) १-हाथी। २-धूर्त। ३-सूअर। पुं० (हि) आक का पौधा।
मदारिया पुं०(हि) बंदर, भालू आदि का तमाशा दिखाने वाला बाजीगर।
मदारी पुं० (हि) दे० 'मदारिया'।
मदालु वि० (सं) मस्त। जिसके मद गिरता हो।
मदिर वि० (सं) नशीला। मस्त करने वाला।
मदिरा स्त्री० (सं) शराब। मद्य। दारू।
मदिराक्षी स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसकी आँखें सुन्दर हैं

मदिरालय पुं० (सं) शराबखाना।
मदीय वि० (सं) मेरा।
मदीला वि० (हि) नशे से भरा हुआ। नशीला।
मदोन्मत्त वि० (सं) मदांध। नशे में चूर।
मदोवै पुं० (हि) मन्दोदरी।
मद्द स्त्री० (अ) १-वह खड़ी लकीर जिसे खींच कर लेख लिखना आरंभ किया जाता है। २-शीर्षक। ३-खाता। खाता। ४-विभाग।
मद्दत स्त्री० (हि) सहायता।
मद्दा वि० (हि) मंदा। सस्ता।
मद्धिम वि० (हि) १-मध्यम। २-मन्दा।
मद्धे अव्य० (हि) १-बीच में। २-लेखे या हिसाब में बावत। (आन-एकाउण्ट ऑफ)।
मद्य पुं० (सं) मदिरा। शराब।
मद्यप वि० (सं) शराबी। मद्य पीने वाला।
मद्यपान पुं० (सं) शराब पीना।
मद्यपायी वि० (सं) शराबी।
मद्यपाशन पुं० (सं) मद्य के साथ खाने की चटपटी चीज। चाट।
मद्यभांड पुं० (सं) शराब रखने का पात्र।
मद्यसार पुं० (सं) १-सुरा। अंगूर की शराब। (अल्कोहल)।
मद्यसारिक वि० (सं) जिसमें मद्यसार मिला हुआ हो (अल्कोहलिक)।
मद्यसारिक पान पुं०(सं) वह पेय पदार्थ जिसमें मद्य-सार मिला हुआ हो। (अल्कोहलिक लिकर)।
मद्र पुं०(स) १-एक प्राचीन जनपद का नाम। २-हर्ष।
मद्रसुता स्त्री० (सं) माद्री।
मध वि० (हि) दे० 'मध्य'।
मधु पुं०(स) १-शहद। फूलों का रस। २-पानी। ३-अमृत। ४-मकरंद। ५-शराब। ६-दूध। मक्खन। ७-मिसरी। ८-वसन्तऋतु। १०-चैत्र मास।
मधुकंठ पुं० (सं) कोयल।
मधुकर पुं० (सं) १-भौंरा। २-कामी पुरुष। ३-एक प्रकार का चावल।
मधुकरी स्त्री० (स) १-बाटी। २-भौंरी। भ्रमरी। ३-सन्यासियों की वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता है।
मधुकोष पुं० (स) शहद का छत्ता।
मधुकोश पुं० (सं) दे० 'मधुकोष'।
मधुघोष पुं० (सं) कोयल।
मधुचक्र पुं० (सं) मधुमक्खियों का छत्ता।
मधुज पुं० (सं) मोम।
मधुजा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
मधुत्रय पुं० (सं) शहद, घी और मिश्री इन तीनों का समुदाय।
मधुद्रुम पुं०(सं) १-आम का पेड़। २-महुए का पेड़

मधुप पुं०(स) १-भौंरा। भ्रमर। २-शहद की मक्खी ३-उद्धव।
मधुपटल पुं० (स) शहद की मक्खियों का छत्ता।
मधुपति पुं० (स) श्रीकृष्ण।
मधुपर्क पुं० (स) देवता को अर्पण करने के लिए मिलाया हुआ दही, घी, जल, चीनी और शहद।
मधुपुर पुं०(स) आधुनिक मथुरानगर का एक प्राचीन नाम।
मधुपुरी पुं० (सं) मथुरा।
मधुबन पुं०(स) ब्रजभूमि,पार्श्वनाथ के एक वन का नाम
मधुबाला स्त्री० (सं) १-भ्रमरी। २-साकी।
मधुमक्खी स्त्री० (हि) शहद की मक्खी।
मधुमक्षिका स्त्री० (स) मधुमक्खी।
मधुमक्षी स्त्री० (सं) शहद की मक्खी।
मधुमेह पुं० (सं) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें पेशाब के साथ शक्कर आती है।
मधुमेही वि० (सं) जो मधुमेह के रोग से पीड़ित हो।
मधुयष्टिका स्त्री० (स) मुलेठी।
मधुर वि० (स) १-मीठा। जो सुनने में अच्छा लगे। २-मनोरंजक। ३-मंदगामी। ४-सौम्य। ५-जो क्लेशप्रद न हो।
मधुरई स्त्री० (हि) मधुरता। कोमलता।
मधुरता स्त्री० (हि) मिठास। माधुर्य।
मधुरत्व पुं० (हि) दे० 'मधुरता'।
मधुरस वि०(स) मीठे रस वाला। पुं० १-ईख। गन्ना २-दाख।
मधुराज पुं० (सं) भौंरा।
मधुराना क्रि० (हि) १-मीठा होना। २-सुन्दर हो जाना।
मधुरान्न पुं० (स) मिठाई। मिष्टान्न।
मधुरिका स्त्री० (सं) सौंफ।
मधुरिन स्त्री० (हि) एक पानी के रङ्ग का द्रव्य जो स्वाद में मीठा और विस्फोटक पदार्थ तथा ... बनाने के का आता है। (ग्लिसरीन)।
मधुरिपु पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
मधुरिमा स्त्री० (सं) मधुरता। मिठास।
मधुरी स्त्री० (हि) दे० 'माधुरी'।
मधुलिट् पुं० (स) भौंरा।
मधुलेह पुं० (सं) भौंरा।
मधुलोलुप पुं० (स) भौंरा।
मधुवन पुं० (स) १-ब्रज का एक वन। २-कोयल।
मधुवल्ली स्त्री० (सं) मुलेठी।
मधुशर्करा स्त्री० (सं) वह शक्कर जो शहद से बनी हो
मधुशेष पुं० (सं) मोम।
मधुसहाय पुं० (सं) कामदेव।
मधुसारथि पुं० (सं) कामदेव।
मधुसुहृदय पुं० (सं) कामदेव।

मनार पुं० (हि) दे० 'मीनार' ।
मनावन पुं० (हि) १-मनाने की क्रिया या भाव । २-रूठे हुए को प्रसन्न करना ।
मनाही स्त्री० (हि) १-मना करने की क्रिया या भाव । २-निषेध । अवरोध ।
मनि स्त्री० (हि) दे० 'मणि' ।
मनिका पुं० (हि) दे० 'मनका' ।
मनिया स्त्री० (हि) मनका ।
मनियार वि०(हि) १-उज्ज्वल । चमकीला । २-स्वच्छ
मनिहार पुं० (हि) १-चूड़ियाँ पहनाने वाला । २-फेरीवाला जो बिंदी, टिकली, चूड़ी आदि बेचता है
मनिहारन स्त्री० (हि) चूड़ी बेचने या पहनाने वाली ।
मनिहारिन स्त्री० (हि) दे० 'मनिहारन' ।
मनिहारिन-लीला स्त्री० (हि) श्रीकृष्ण की राधा को मनिहारिन का वेष बनाकर चूड़ियाँ पहनाने की लीला
मनीआर्डर पुं० (अं) एक स्थान से दूसरे स्थान डाक द्वारा रुपया भेजने का धनादेश ।
मनीषा स्त्री०(स)१-बुद्धि । अक्ल । २-स्तुति । प्रशंसा ।
मनीषिका स्त्री० (स) बुद्धि । अक्ल । २-इच्छा ।
मनीषी वि० (स)० १-पंडित । ज्ञानी । २-बुद्धिमान् ।
मनु पुं०(सं)१-ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं । २-मत । ३-चौदह की संख्या । अव्य० (हि)० मानो । जैसे ।
मनुज पुं० (सं) मनुष्य । आदमी ।
मनुजात पुं०(स) मनुष्य । आदमी । वि० (सं) मनुष्य से उत्पन्न ।
मनुजाद पुं० (सं) मनुष्यों को खाने वाला । राक्षस ।
मनुजाधिप पुं० (सं) राजा ।
मनुजेन्द्र पुं० (सं) राजा ।
मनुजेश्वर पुं० (सं) राजा ।
मनुजोत्तम पुं० (स) जो मनुष्यों में श्रेष्ठ हो ।
मनुष पुं० (सं) दे० 'मनुष्य' ।
मनुषी स्त्री० (स) स्त्री । औरत ।
मनुष्य पुं० (स) आदमी । नर । मानव ।
मनुष्यकृत वि० (सं) मनुष्य का बनाया हुआ ।
मनुष्यगणना स्त्री० (सं) किसी स्थान या देश के निवासियों की होने वाली गणना । (सेंसस) ।
मनुष्यलोक पुं० (सं) मृत्यु लोक । पृथ्वी ।
मनुष्यता स्त्री० (सं) १-मनुष्यता का भाव । २-दया-भाव । ३-सभ्यता । शिष्टता ।
मनुसंहिता स्त्री० (सं) मनुस्मृति ।
मनुस पुं० (हि) मनुष्य । मर्द । युवा ।
मनुसाई स्त्री०(हि)१-पुरुषार्थ । बहादुरी । २-मनुष्यता
मनुसाना क्रि० (हि) पुरुषत्व का भाव जागृत होना
मनुस्मृति स्त्री० (सं) आदि मनु द्वारा बनाया गया धर्म-शास्त्र ।
मनुहार स्त्री० (हि) १-खुशामद । २-विनय । ३-आदरसत्कार । ४-शान्ति ।
मनुहारना क्रि० (हि) १-मनाना । २-विनय करना ३-आदरसत्कार करना ।
मनुहारनीति स्त्री० (हि) मानने की नीति ।
मनूरी स्त्री० (हि) मुरादाबादी कलई करने की बुकनी
मने वि० (हि) दे० 'मना' ।
मनों अव्य० (हि) मानो । जैसे ।
मनो पुं० (सं) मनस् का समास का रूप ।
मनोकामना स्त्री० (हि) इच्छा । अभिलाषा ।
मनोगत वि० (सं) मन में आया हुआ । पुं० कामदे
मनोगति स्त्री० (सं) मन की गति । इच्छा । चित्त वृत्ति ।
मनोज पुं० (सं) कामदेव ।
मनोज्ञ वि० (स) मनोहर । सुन्दर ।
मनोदंड पुं० (सं) मन का निग्रह ।
मनोदाही वि० (हि) मन को जलाने वाला । हृद दाही ।
मनोदौर्बल्य पुं०(सं) मन की दुर्बलता । (इनफर्मिट आफ माइन्ड) ।
मनोनयन पुं० (सं) किसी को मनोनीत करना (नॉमीनेट) ।
मनोनिग्रह पुं०(सं) मन को रोकना या वश में रखन
मनोनियोग पुं० (सं) किसी कार्य में खूब मन लगान
मनोनिवेश पुं० (स) दे० 'मनोनियोग' ।
मनोनीत वि० (सं) १-जो मन के अनुकूल हो । २-जो चुना गया हो । (डेजिगनेटेड) ।
मनोभंग पुं० (सं) उदासी । नैराश्य ।
मनोभव पुं० (सं) कामदेव ।
मनोभाव पुं० (सं) मन में उत्पन्न होने वाला भाव विचार ।
मनोमय वि० (सं) १-मानसिक । २-मन से युक्त ३-मानस ।
मनोमयकोष पुं० (सं) आत्मा के पंचकोषों में तीसरा ।
मनोरंजक वि० (सं) मन को बहलाने या प्रसन्न क वाला ।
मनोरंजन पुं० (सं) १-मनोविनोद । दिल-बहला २-मन को प्रसन्न करने वाला कोई खेल-तमाश (संवि०) । (एन्टरटेनमेंट) ।
मनोरंजन-कर पुं० (सं) प्रमोद-कर खेल-तमाशों टिकटों पर लगने वाला राजकीय कर । (संवि (एन्टरटेनमेंट-टैक्स) ।
मनोरथ पुं० (सं) इच्छा । अभिलाषा ।
मनोरमा स्त्री० (सं) १-सुन्दर स्त्री । २-सात स्वतियों में से चौथी का नाम । ३-एक गंधर्व पत्नी का नाम ।
मनोरा पुं० (हि) दीवार आदि पर पूजन आदि

मनोरा पुं० (हि) दीवार आदि पर पूजन आदि के लिए बने गोबर के चित्र।
मनोराज्य पुं० (स) मानसिक कल्पना।
मनोरानूपक पुं० (हि) एक प्रकार का गीत।
मनोरोग-चिकित्सक पुं० (सं) मानसिक रोगों की चिकित्सा करने वाला। (साइकियेट्रिस्ट)।
मनोलीला स्त्री० (स) कोई कल्पित बात या विचार जिसका कोई अस्तित्व न हो। (फैन्टम)।
मनोवाञ्छा स्त्री० (स) इच्छा। अभिलाषा।
मनोवाञ्छित वि० (स) इच्छित। मनचाहा।
मनोविकल वि० (स) १-जिसका चित्त ठिकाने न हो २-जिसका मानसिक विकास ठीक तरह से न हो पाया हो (संवि०)। (मेन्टल डेफिशेन्ट)।
मनोविकार पु० (सं) मन में उठने वाले भाव-क्रोध, दया, प्रेम आदि।
मनोविज्ञान पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें चित्त की प्रवृत्तियों का तथा मन में उठने वाली भावनाओं आदि की मीमांसा हो। मानसशास्त्र। (साइकॉलोजी)।
मनोविश्लेषण पुं०(सं) मनुष्य के चित्त की प्रवृत्तियों तथा विचारों की विश्लेषण। (साइको-एनेलिसिस)।
मनोवृत्ति स्त्री० (सं) मन की स्थिति। मन का विकार।
मनोवेग पुं०(सं) मन के विकार। मनोविकार। (मूड, डिस्पोजीशन)।
मनोवैकल्य पु० (स) वह अवस्था जिसमें ठीक प्रकार से मानसिक विकास न होने के कारण बुद्धि पूरी तौर से परिपक्व नहीं होती (मेन्टल डेफीशेन्सी)।
मनोवैज्ञानिक वि० (स) मनोविज्ञान सम्बन्धी। पु० मनोविज्ञान का ज्ञाता। (साइकिस्ट)।
मनोव्याधि स्त्री० (स) मानस रोग।
मनोसर पुं० (हि) मनोविकार। मन की वृत्ति।
मनोहर वि० (सं) १-सुन्दर। मनोज्ञ। २-मन को हरने वाला। पुं० १-छप्पय छन्द का एक भेद। २-एक संकर राग का नाम। ३-स्वर्ण। सोना।
मनोहरता स्त्री० (स) सुन्दरता।
मनोहरताई स्त्री० (हि) सुन्दरता
मनोहारी वि० (स) सुन्दर। मनोहर।
मनौनी स्त्री०(हि) १-असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करना। मन्नत।
मन्नत स्त्री० (हि) किसी काम की सिद्धि के लिए कोई पूजा आदि करना। मनौती।
मन्मथ पुं० (स) १-कामदेव। २-कैथ।
मन्मथप्रिया स्त्री० (स) रति।
मन्मथालय पु०(स) आम का पेड़। २ प्रेमी-प्रेमिकाओं के मिलने का स्थान।
मन्य वि० (सं) अपने आपको समझने वाला। (समास में)।
मन्यु पुं० (सं) १-स्तोत्र। २-कर्म। ३-योग। ४-क्रोध ५-अहङ्कार। ६-अग्नि।
मन्युमान् वि० (स) क्रोधी। अहंकारी।
मन्वंतर पुं० (स) ब्रह्मा के एक दिन के चौदहवें भाग के बराबर इकहत्तर चतुर्युगियों का काल। २-दुर्भिक्ष, अकाल।
मफरूर वि० (अ) भागा हुआ। (अपराधी)।
मम सर्व० (स) मेरा (मेरी)।
ममता स्त्री० (हि) १-अपना समझने का भाव। २-स्नेह। मोह। ३-लोभ।
ममत्व पु०(स) १-अपनापन। ममता। २-स्नेह। गर्व
ममरखी स्त्री० (हि) बधाई।
ममाखी स्त्री० (हि) शहद की मक्खी।
ममिया वि० (हि) जो सम्बन्ध में मामा के स्थान पर हो।
ममिया ससुर पु०(हि) पत्नी या पति का मामा।
ममिया सास स्त्री०(हि) पति या पत्नी की मामी।
ममियौरा पुं० (हि) मामा का घर।
ममीरा पु०(स) एक हल्दी की जाति के पौधे की जड़ जो नेत्र रोगों की दवा है।
ममोला पु० (हि) १-एक छोटा पक्षी जिसे धोबिन कहते हैं। २-बहुत छोटा बच्चा।
मयंक पु० (हि) चन्द्रमा।
मयंद पुं० (हि) १-सिंह। २-राम की सेना के एक वानर का नाम।
मय प्रत्य० (सं) एक प्रत्यय जो प्रचुरता तथा तद्रूप विकार का सूचक होता है जैसे-मंगलमय। अव्य० (स) में। स्त्री० (फा) शराब। मदिरा। पु० (सं) १-एक महान शिल्पी दैत्य जिसने इन्द्रप्रस्थ में पाण्डवों का महल बनाया था (पुराण)। २-ऊँट। ३-खच्चर ४-घोड़ा। ५-सुख।
मयकदा पुं० (फा) मधुशाला। शराबखाना।
मयकश वि० (फा) शराब पीने वाला।
मयकशी स्त्री० (फा) शराब पीना।
मयखाना पुं०(फा) शराबखाना।
मयगज पु० (हि) मतवाला हाथी।
मयन पुं० (हि) कामदेव।
मयना स्त्री० (हि) मैना।
मयपरस्त वि० (फा) शराबी।
मयफरोश पु० (फा) शराब बेचने वाला। (कलाल)।
मयमत वि० (हि) मदमस्त।
मयमस्त वि० (हि) नशे में चूर।
मयस्सर वि० (अ) मिला हुआ। प्राप्त। सुलभ।
मया स्त्री० (हि) माया।
मयार वि० (हि) दयालु। कृपालु।
मयारी स्त्री० (देश) वह डंडा या धरन जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकाई जाती है।
मयूख पु०(स) १-किरण। रश्मि। २-दीप्ति। प्रकाश।

३-ज्वाला । ४-शोभा । ५-कील । ६-पार्वती ।
मयूर पुं० (सं) १-मोर । २-एक पर्वत (पुराण) ।
मयूरनृत्य पुं० (सं) एक प्रकार का मोर जैसा नृत्य ।
मयूरपुच्छ पुं० (सं) मोर की पूँछ ।
मयूरी स्त्री० (सं) मोरनी ।
मरंद पुं० (सं) मकरंद ।
मरक पुं०(म) १-मृत्यु । मरण । महामारी । स्त्री०(हि) १-संकेत । बढ़ावा ।
मरकज पुं० (म) १-वृत्त का मध्य बिंदु । २-प्रधान । या मुख्य स्थान ।
मरकजी वि० (म) प्रधान । केन्द्रीय ।
मरकत पुं० (सं) पन्ना ।
मरकना क्रि० (हि) किसी वस्तु का दब कर टूटना ।
मरकहा वि० (हि) (सींग से) मारने वाला । (पशु) ।
मरकाना क्रि० (हि) किसी वस्तु को दबा कर तोड़ना ।
मरखन्ना वि० (हि) सींग से मारने वाला (पशु) ।
मरगजा वि० (हि) मलादला । मसला हुआ ।
मरघट पुं० (हि) वह स्थान जहाँ मुरदे जलाये जाते है । श्मशान ।
मरचा पुं० (हि) मिरचा ।
मरज पुं० (हि) मर्ज़ । रोग ।
मरजाद स्त्री० (हि) दे० 'मर्यादा' ।
मरजादा स्त्री० (हि) दे० 'मर्यादा' ।
मरजिया वि० (हि) १-मरकर जीने वाला । २-मृतप्राय । ३- जो प्राण देने पर उतारू हो ।
मरजी स्त्री० (म) १-स्वीकृति । २-इच्छा । ३-खुशी । प्रसन्नता ।
मरजीवा वि० (हि) दे० 'मरजिया' ।
मरण पुं० (सं) १-मृत्यु । २-मरने का भाव । ३-बछनाग ।
मरणगति स्त्री० (सं) आबादी के प्रति हजार लोगों के पीछे होने वाली मृत्युओं की सख्या । (डैथरेट) ।
मरणधर्मा वि० (सं) मरणशील ।
मरणशील वि० (सं) मरने वाला ।
मरणशुल्क पुं० (सं) किसी व्यक्ति के मरने के बाद उसकी सारी सम्पत्ति पर लगने वाला राजकीय कर (डैथ ड्यूटी) ।
मरणांतक वि० (सं) जिसका अन्त केवल मृत्यु ही हो ।
मरणाशौच पुं० (सं) मृत्यु के कारण घर वालों को लगने वाला अशौच ।
मरणीय वि० (सं) मरने वाला ।
मरणोन्मुख वि० (सं) जो मृत्युशैय्या पर पड़ा हो ।
मरतबा पुं० (हि) १-पद । ओहदा । २-बार । दफा ।
मरतबान पुं० (हि) अमृतबान । अचार आदि डालने का बड़ा पात्र ।
मरता वि० (हि) मरता हुआ । मृतप्राय ।
मरद पुं० (हि) दे० 'मर्द' ।
मरदई स्त्री० (हि) १-पुरुषत्व । २-साहस । ३-वीरता ।
मरदना क्रि० (हि) १-मलना । मसलना । २-चूर्ण करना । ध्वंस करना । ३-गूँधना ।
मरदनिया पुं० (हि) बड़े लोगों के तेल मालिश करने वाला ।
मरदानगी स्त्री० (हि) दे० 'मर्दानगी' ।
मरदाना पुं० (हि) दे० 'मर्दाना' ।
मरदूद वि० (म) १-तिरस्कृत । २-लुच्चा । नीच ।
मरन पुं० (हि) दे० 'मरण' ।
मरना क्रि०(हि) १-प्राणियों की सब शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिए अन्त होना । २-अत्यंत दुःख या कष्ट सहना । ३-सूखना । ४-मुर्झाना । ५-मृतक के समान होना । ६-पराजित होना । ७-पछताना । ८-रोना । ९-प्राप्त न होना । १०-आसक्त होना ।
मरनि स्त्री० (हि) दे० 'मरनी' ।
मरनी स्त्री० (हि) १-मृत्यु । मौत । २-कष्ट । ३-मृतक सम्बन्धी क्रिया कर्म ।
मरभुखा वि० (हि) १-भुक्खड़ । २-दरिद्र । कंगाल ।
मरम पुं० (हि) दे० 'मर्म' ।
मरमर पुं० (यू०) एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर-जैसे संगमरमर ।
मरमराना क्रि० (हि) १-मरमर शब्द करना । २-इस प्रकार दबना या दबाना कि मरमर का शब्द हो ।
मरम्मत स्त्री० (म) १-किसी वस्तु के टूटे फूटे भाग को फिर से ठीक करना । सुधार । जीर्णोद्धार ।
मरम्मती वि० (म) मरम्मत करने योग्य ।
मरवाना क्रि०(हि)१-वध कराना । २-दूसरे को मारने की प्रेरणा देना ।
मरसा पुं० (हि) एक प्रकार का साग ।
मरसिया पुं० (म) १-किसी की मृत्यु पर बनाई गई शोक सूचक कविता । २-मरण-शोक । सियापा ।
मरहट पुं० (हि) दे० 'मरघट' ।
मरहटा पुं० (हि) दे० 'मराठा' ।
मरहठा पुं० (हि) दे० 'मराठा' ।
मरहठी स्त्री० (हि) मराठी भाषा । वि० महाराष्ट्र संबंधी ।
मरहम पुं० (म) औषध का गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव पर लगाया जाता है । लेप ।
मरहमपट्टी स्त्री० (म) १-घाव का इलाज करना । २-मरहम पट्टी बांधना ।
मरहला पुं०(म) १-पड़ाव । ठिकाना । २-कठिन काम या प्रसंग । ३-झोंपड़ी । ४-दर्जा ।
मरहून वि० (म) बंधक रक्खा हुआ ।
मरहूना वि० (म) जो रहेन किया गया हो । (संपत्ति आदि) ।
मरहूम वि० (म) मृत । स्वर्गवासी ।
मराठा पुं०(हि) महाराष्ट्र प्रदेश का रहने वाला ।
मराठी स्त्री० (हि) महाराष्ट्र की भाषा । वि० महा

संबंधी।
मरातिब पुं० (अ) १-पद। ओहदा। २-मकान का खंड। ३-पृष्ठ। तह।
मराना क्रि० (हि) दे० 'मरवाना'।
मरायल वि० (हि) १-जिसने कई बार मार खाई हो दुर्बल। २-सत्वहीन। ३-घाटा। टोटा।
मरार पुं० (अ) खलिहान।
मराल पुं०(सं)१-हंस। २-एक प्रकार की बत्तख। ३-बादल। ४-हाथी। ५-काजल। ६-घोड़ा।
मरिंद पुं० (हि) दे०१-'मरंद'। २-दे० मलिंद।
मरियम स्त्री० (अ) १-ईसा मसीह की माता का नाम २-कुमारी।
मरियल वि० (हि) बहुत दुर्बल। दुबला और कमजोर
मरी स्त्री० (हि) १-महामारी। २-एक प्रकार का मृग ३-सागूदाने का पेड़।
मरीचि स्त्री० (सं) १-किरण। २-कांति। ज्योति। ३-मृगतृष्णा। पुं० कश्यप के पिता का नाम।
मरीचिका स्त्री० (सं) १-मृगतृष्णा। २-किरण।

मरीज पुं० (अ) रोगी। बीमार।
मरु पुं० (सं) १-रेगिस्तान। मरुस्थल। २-वह पर्वत जिसमें जल का अभाव हो। ३-एक पौधा।
मरुआ पुं० (हि) १-वनतुलसी जाति के एक पौधे का नाम। २-हिंडोले के ऊपर की लकड़ी जिसमें हिंडोला लटकाया जाता है।
मरुत् पुं० (सं) १-पवन। २-पवन देवता। ३-सोना ४-प्राण। ५-सौंदर्य। ६-मरुआ।
मरुतनय पुं० (सं) १-हनुमान्। २-इन्द्र।
मरुत्पट पुं० (सं) बादबान।
मरुत्पति पुं० (सं) इन्द्र।
मरुत्वान पुं० (सं) १-इन्द्र। २-हनुमान।
मरुदेश पुं० (सं) रेगिस्तान।
मरुद्दाह पुं० (सं) १-ऊँट। २-आग। ३-धूँआ।
मरुद्वीप पुं० (सं) मरुदेश में स्थित छोटा उपजाऊ स्थान। (ओएसिस)।
मरुभूमि स्त्री०(सं) रेगिस्तान। बालू का निर्जन स्थान जहां कोई वनस्पति आदि न होती हो।
मरुराना क्रि० (हि) ऐंठना। बल खाना।
मरुसख पुं० (सं) १-व्याघ्र। बाघ। २-वायु। ३-मरुआ।
मरुस्थल पुं० (सं) रेगिस्तान। मरुभूमि।
मरू वि० (हि) कठिन। दुरूह।
मरोर पुं० (हि) मरोड़। ऐंठन। बल।
मरोड़ पुं० (हि) १-ऐंठन। बल। २-व्यथा। क्षोभ। ३-घमंड। ४-क्रोध।
मरोड़ना क्रि० (हि) १-ऐंठन। बल डालना। २-मार डालना। ३-पीड़ा देना। ४-मसलना।
मरोर स्त्री० (हि) १-ऐंठन। २-बेचैनी। ३-क्रोध। ४-अफसोस।
मर्कट पुं० (सं) १-वानर। बन्दर। २-मकड़ा। ३-एक प्रकार का विष।
मर्कटी स्त्री०(सं) १-वानरी। २-मकड़ी। ३-अजमोदा
मर्ज पुं० (अ) १-रोग। बीमारी। व्याधि। २-आदत। लत।
मर्जी स्त्री० (अ) दे० 'मरजी'।
मर्तबा पुं० (अ) १-पदवी। पद। २-दफा। बार।
मर्तबान पुं० (हि) दे० 'मरतबान'।
मर्त्य पुं० (सं) १-शरीर। २-भूलोक। ३-मनुष्य। वि० नश्वर।
मर्त्यधर्मा वि० (सं) मरणशील।
मर्त्यलोक पुं० (सं) मनुष्य लोक। भूलोक।
मर्द पुं० (सं) मर्दन। (फा) १-मनुष्य। २-पुरुष। ३-मारा करना। ४-शरीर में मालिश करना।
मर्दना क्रि० (हि) १-मर्दन करना। २-मसलना। ३-मार डालना। ४-नष्ट करना।
मर्दल पुं० (स) एक प्रकार का मृदंग।
मर्दानगी स्त्री० (फा) १-पुरुषत्व। २-वीरता।
मर्दाना वि० (फा) १-पुरुष-सम्बन्धी। २-पौरुषोचित ३-वीर। साहसी। ४-पुरुषों का-सा।
मर्दित वि० (स) १-मला या मसला हुआ। २-नष्ट किया हुआ। ३-टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।
मर्दी स्त्री० (फा) मरदानगी। वीरता।
मर्दुआ पुं० (हि) १-तुच्छ पुरुष। २-पति। ३-कोई दूसरा आदमी।
मर्दुम पुं० (फा) १-मनुष्य। २-आंख की पुतली। ३-जनसाधारण।
मर्दुमखोर पुं० (फा) नरभक्षी।
मर्दुमशनासी वि० (फा) आदमी को पहचानने वाला
मर्दुमशुमारी स्त्री० (फा) देश के रहने वाले मनुष्यों की गणना। जनसंख्या।
मर्दुमी स्त्री० (फा) १-वीरत्व। मर्दानगी। २-पुंसत्व।
मर्दूद वि० (हि) दे० 'मरदूद'।
मर्म पुं० (स) १-स्वरूप। २-रहस्य। भेद। ३-संधि स्थान। ४-प्राणियों का वह स्थान जहां चोट लगने से अधिक वेदना होती है।
मर्मकील पुं० (स) पति।
मर्मग वि० (स) मर्मज्ञ।

मर्मघाती वि० (सं) बहुत पीड़ा पहुंचाने वाला।
मर्मघ्न वि० (सं) मर्मघातक।
मर्मच्छिद वि० (सं) मर्म भेदने वाला।
मर्मच्छेदक वि० (सं) मर्मभेदक।
मर्मज्ञ वि० (सं) १-किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला। तत्वज्ञ। २-भेद जानने वाला।
मर्मपारग वि० (सं) भली भांति अभिज्ञ।
मर्मपीड़ा स्त्री० (सं) मन को पहुँचने वाला क्लेश या दुःख।
मर्मप्रहार पु'० (सं) वह आघात जो मर्म स्थान पर हो
मर्मभेद पु'० (सं) १-किसी भेद या रहस्य का खुलना। २-हृदय का भेदन।
मर्मभेदन पु'० (सं) मर्मभेदक अस्त्र। तीर। बाण।
मर्मभेदी वि०(हि) हृदय में चुभने वाला। हार्दिक कष्ट पहुँचाने वाला। पु० (सं) बाण।
मर्मर पु'० (सं) १-पत्तों की खड़कन। २-कलफदार कपड़े की खरभर।
मर्मरध्वनि स्त्री० (सं) खड़खड़ाहट।
मर्मरित वि० (सं) जिसमें मर्मर शब्द हो।
मर्मवचन पु'० (सं) दिल में चुभने वाली बात या वचन।
मर्मवाक्य पु'० (सं) रहस्य की बात। गूढ़बात।
मर्मविद् वि० (सं) मर्मज्ञ।
मर्मवेधी वि० (सं) मर्मज्ञ।
मर्मस्थल पु'० (सं) १-शरीर के वह कोमल अंग जहां चोट लगने से मृत्यु की संभावना होती है। २-वह स्थल जिस पर आक्षेप या आघात करने पर मानसिक क्लेश हो।
मर्मस्थान पु'० (सं) मर्मस्थल।
मर्मस्पर्शी वि० (सं) मर्म को स्पर्श करने या प्रभाव डालने वाला।
मर्मस्पृक् वि० (सं) मर्मस्पर्शी।
मर्मांतक वि० (सं) मन में चुभने वाला। मर्मभेदी।
मर्माघात पु'० (सं) हृदय पर गहरी चोट लगाना।
मर्माहत वि० (सं) जिसके दिल पर गहरी चोट पहुँची हो।
मर्मी वि० (सं) रहस्य जानने वाला। तत्वज्ञ।
मर्मोद्घाटन पु'० (सं) भेद का खुल जाना।
मर्याद स्त्री० (हि) दे० 'मर्यादा'।
मर्यादा स्त्री० (सं) १-सीमा। हद। २-तट। किनारा ३-प्रतिज्ञा। करार। ४-सदाचार। ५-नियम। ६-मान। ७-गौरव। धर्म। प्रतिष्ठा।
मर्षण पु'० (सं) १-क्षमा। माफी। २-रगड़। घर्षण
मर्षणीय वि० (सं) क्षम्य। क्षमा करने योग्य।
मर्षित वि० (सं) क्षमा किया हुआ।
मलंग पु'० (फा) १-एक प्रकार के मुसलमान साधु। २-सफेद बगला।
मल पु'० (सं) १-मैल। गंदगी। २-विष्ठा। ३-दोष। विकार। पाप। ४-शरीर से निकलने वाला विकार या मैल।
मलखंभ पु'० (हि) १-कसरत करने का खंभा। २-खंभे पर की जाने वाली कसरत।
मलखम पु'०(हि) दे० 'मलखंभ'।
मलखान पु'० (हि) आल्हा ऊदल का चचेरा भाई।
मलगजा वि०(हि) मला दला हुआ। पु'० बेसन लपेट-कर घी या तेल में तले बैंगन के टुकड़े।
मलता वि० (हि) मला या घिसा हुआ (सिक्का)।
मलद्वार पु'० (सं) गुदा।
मलधात्री स्त्री० (सं) बच्चे के गन्दे कपड़े तथा मल-मूत्र आदि साफ करने वाली धाय।
मलना क्रि० (हि) १-मसलना। घिसना। २-मालिश करना। ३-मरोड़ना। हाथ से बार-बार रगड़ना या दबाना।
मलपृष्ठ पु'० (सं) पुस्तक का बाहरी पहला पृष्ठ।
मलबा पु'० (हि) १-कूड़ा करकट। २-टूटे या गिरे हुए मकान की ईंटें पत्थर आदि या उनका ढेर।
मलभुक पु'० (सं) कौआ।
मलमल पु'० (हि) बारीक सूत का बना बारीक कपड़ा
मलमलाना क्रि० (हि) १-बार-बार स्पर्श करना। २-बार-बार आलिंगन करना। ३-पछताना।
मलय पु'० (सं) १-त्रावंकोर के पूर्व और मैसूर के दक्षिण का प्रदेश। २-दक्षिणी भारत का एक पर्वत जहां चंदन के पेड़ बहुत होते हैं। ३-सफेद चंदन
मलयगिरि पु'० (सं) १-मलय पर्वत। २-सफेद चंदन
मलयज पु'० (सं) १-राहु। २-चंदन।
मलयद्रुम पु'० (सं) १-मदन (वृक्ष)। २-चंदन।
मलयसमीर स्त्री० (सं) दक्षिणी वायु। मलय पर्वत की ओर से आने वाली वायु।
मलयाचल पु'० (सं) मलय पर्वत।
मलयानिल पु० (सं) १-दक्षिणी वायु। २-सुगन्धित वायु। ३-वसंत काल की वायु।
मलयालम पु'० (सं) १-दक्षिण के एक पहाड़ी प्रदेश का नाम जो पश्चिमी घाट के किनारे है। २-वहां की भाषा।
मलयुग पु'० (सं) कलियुग।
मलयोद्भव पु'० (सं) चन्दन।
मलरोधक वि० (सं) जो मल को रोके। कब्जियत करने वाला।
मलवाना क्रि० (सं) मलने का काम दूसरे से कराना
मलवाहनपद्धति स्त्री० (सं) नगर का कूड़ा करकट इकट्ठा करके नगर के बाहर हटवा देने की पद्धति। (कन्सर्वैन्सी सिस्टम)।
मलविसर्जन पु'०(सं) पाखाना करना। मल त्यागना
मलशुद्धि स्त्री० (सं) पेट साफ करना।

मलसा पु० (हि) घी रखने का चमड़े का कुप्पा।
मलहम पु० (हि) दे० 'मरहम'।
मलाई स्त्री० (हि) १-दूध गर्म करने पर उस पर जमने वाली तह। २-सार। तत्व। ३-मलने की क्रिया या मजदूरी।
मलाट पु० (हि) एक प्रकार का मोटा घटिया कागज
मलान वि० (हि) दे० 'म्लान'।
मलानि स्त्री० (हि) दे० 'म्लानि'।
मलाबार पु० (हि) भारत देश के दक्षिण प्रांत का एक प्रदेश।
मलाबार-हिल पु० (हि, प) बंबई की एक पहाड़ी जहां धनिकों के निवास स्थान हैं।
मलामत स्त्री० (प) १-लानत। फटकार। २-मैल। गंदगी।
मलाया पुं० (हि) बर्मा के दक्षिण में स्थित एक प्राय-द्वीप।
मलार पुं० (हि) वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग (सङ्गीत)।
मलाल पु० (प) १-दुख। रंज। २-उदासीनता। उदासी। ३-विषाद।
मलावरोध पुं० (स) कब्ज। (कोष्ठीबद्धता)।
मलाशय पुं० (सं) पेट की बड़ी आंतों का निचला भाग जहां मल रहता है।
मलाह पुं० (हि) दे० 'मल्लाह'।
मलिंद पु० (हि) भौंरा।
मलिक पुं० (प) १-राजा। २-अधीश्वर। सरदार। ३-एक उपाधि।
मलिका स्त्री० (प) महारानी।
मलिछ पुं० (हि) दे० 'म्लेच्छ'।
मलिन पु० (देश) सुनारों की नक्काशी के काम के गहने साफ करने की कूची।
मलिन वि० (सं) १-मैला। गंदला। २-दूषित। ३-धुंधला। ४-फीका। ५-म्लान।
मलिनमुख वि० (सं) उदास।
मलिनाई स्त्री० (हि) मैलापन। मलिनता।
मलिनाना क्रि० (हि) मैला होना।
मलिनावास पुं० (सं) दरिद्रों या मजदूरों की गन्दी बस्तियां। (स्लम्ज)।
मलियामेट वि० (हि) तहसनहस। सर्वनाश। बरबादी
मलीदा पुं०(हि)१-चूरमा। २-एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।
मलीन वि० (हि) १-मैला। मलिन। २-उदास।
मलीनता स्त्री० (हि) मलिनता।
मलूक पुं०(हि) १-एक प्रकार का पक्षी। २-एक कीड़ा। वि० सुन्दर।
मलेच्छ पुं० (हि) दे० 'म्लेच्छ'।
मलेरिया पुं० (अं) मच्छरों के काटने से आने वाला ज्वर। बुखार।
मलैया पु० (देश) ओस में रखे दूध को मथ कर बनाया हुआ फेन।
मलोत्सर्ग पु० (सं) मलत्याग।
मलोला पुं० (हि) मलाल।
मलोलना क्रि० (हि) १-पछताना। २-दुखी होना।
मलोल पु० (हि) १-मानसिक व्यथा। २-दुख। रंज। ३-अरमान। इच्छा।
मल्ल पु० (सं) १-एक प्राचीन जाति। पहलवान। पट्ठा। ३-दीप। ४-कपोल। ५-पात्र।
मल्लक्रीड़ा पु० (स) पहलवानों का दंगल।
मल्लभूमि स्त्री० (सं) अखाड़ा।
मल्लयुद्ध पु० (स) कुश्ती।
मल्लविद्या पुं० (सं) कुश्ती।
मल्लशाला स्त्री० (स) अखाड़ा।
मल्लार पुं० (स) मलार नाम का एक राग।
मल्लाह पु० (प) मांझी। केवट।
मल्लाही वि० (प) मल्लाह सम्बन्धी। स्त्री० मल्लाह का काम।
मल्लिका स्त्री० (सं) १-एक प्रकार का बेला जिसे मोतिया कहते हैं। २-एक वर्णवृत्त।
मल्हराना क्रि०(हि) १-स्नेह से शरीर पर हाथ फेरना २-पुचकारना।
मल्हाना क्रि० (हि) दे० 'मल्हराना'।
मवक्किल पु० (हि) दे० 'मुवक्किल'।
मवाद पुं०(प)१-सामग्री। मसाला। २-पीब। गंदगी
मवास पु० (हि) १-दुर्ग। गढ़। २-शरण या रक्षा का स्थान।
मवासी स्त्री० (हि) छोटा गढ़। गढ़ी। पु० १-गढ़-पति। २-प्रधान। मुखिया।
मवेशी पुं०(अ) चौपाया। ढोर। पशु।
मवेशीखाना पु० (फा) वह बाड़ा जिसमें पशु रखे जाते हैं। पशुशाला।
मशक स्त्री० (फा) चमड़े का वह थैला जिसमें भिश्ती एक स्थान से दूसरे स्थान पानी ले जाता है। पु० (सं) १-मच्छर। डांस। २-एक चर्म रोग।
मशहरी स्त्री० (सं) मसहरी।
मशक्कत स्त्री० (प) १-श्रम। परिश्रम। २-वह मेहनत जो कैदियों से जेल में कराई जाती है।
मशक्कती वि० (प) मेहनती। मशक्कत करने वाला
मशगूल वि० (प) कार्य में लगा हुआ। लीन। प्रवृत्त
मशरिक पुं० (प) पश्चिमी।
मशरू पु० (प) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
मशवरा पुं०(प) १-सलाह। परामर्श। २-साजिश।
मशविरा पुं० (प) दे० 'मशवरा'।
मशहूर वि० (प) प्रख्यात। प्रसिद्ध।
मशाल स्त्री०(प) डंडे में चीथड़ा लपेट कर

मोटी बत्ती जिसे हाथ में लेकर चलते हैं।
मशालची पुं० (अ) मशाल लेकर चलने वाला।
मशीन स्त्री० (अ) यन्त्र। कल।
मशीनगन स्त्री० (अ) वह स्वचालित बन्दूक जिसमें से लगातार सैकड़ों गोलियां छूटती हैं।
मशीनमैन पुं० (अ) १-वह कर्मचारी जो मशीन चलाता है। २-छापेखाने की मशीन चलाने वाला कर्मचारी।
मश्क पुं० (अ) अभ्यास।
मष पुं० (हि) मख। यज्ञ।
मषि स्त्री० (सं) १-काजल। २-सुरमा। ३-स्याही।
मष्ट वि० (हि) १-जो भूल गया हो। २-मौन। चुप।
मस स्त्री० (हि) १-स्याही। रोशनाई। २-मूँछ निकलने से पहले की रोमावली। पुं०(हि) दे० 'मशक'।
मसकत स्त्री० (हि) दे० 'मशक्कत'। पुं० (अ) अरबदेश का अनार।
मसकीन वि० (हि) दे० 'मिस्कीन'।
मसखरा वि० (अ) १-हँसोड़। परिहास करने वाला। २-विदूषक।
मसखरापन पुं० (अ) हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी।
मसखरी स्त्री० (अ) हँसी। मजाक।
मसखवा पुं० (हि) मांसाहारी। मांस खाने वाला।
मसजिद स्त्री० (अ) वह स्थान या भवन जहां पर मुसलमान लोग सामूहिक रूप में नमाज पढ़ते हैं।
मसनद स्त्री० (अ) १-गाव-तकिया। बड़ा तकिया। २-वह स्थान जहां तकिया लगाया जाय। धनियों के बैठने की गद्दी।
मसनदनशीं वि० (अ) मसनद पर बैठने वाला।
मसनवी स्त्री० (अ) उर्दू-फारसी एक प्रबन्ध काव्य जिसके हर शेर का काफिया जुदा होता है शेर के दोनों मिसरों का काफिया एक।
मसमुंद पुं० (हि) धक्कम धक्का। कशमकश।
मसयारा पुं० (हि) १-मशाल। २-मशालची।
मसरफ़ पुं० (अ) १-उपयोग। काम में आना।
मसल स्त्री० (अ) कहावत। लोकोक्ति।
मसलति स्त्री० (हि) दे० 'मसलहत'।
मसलना क्रि० (हि) १-उंगलियों में दबाकर रगड़ना। २-जोर से दबाना। ३-गूँथना।
मसलहत स्त्री० (अ) १-रहस्य। २-गुप्त तथा गूढ़ हितकर सलाह।
मसलहत-अंदेश वि० (अ) हित या भलाई का विचार करने वाला।
मसलहतन् अव्य० (अ) हित या लाभ की दृष्टि से।
मसला पुं० (अ) १-कहावत। २-समस्या। विचारणीय विषय।
मसवरा पुं० (हि) प्रसव के उपरान्त एक मास बाद होने वाला स्नान।
मसवासी पुं० (हि) १-वह साधु या पुरुष जो एक माह से अधिक किसी स्थान पर न रहे। २-वह स्त्री जो एक पुरुष के पास एक माह से अधिक न रहे। वेश्या।
मसविदा पुं० (अ) दे० 'मसौदा'।
मसहरी स्त्री० (हि) १-मच्छर आदि से बचने के लिये पलंग के चारों ओर लगाया गया जालीदार कपड़ा। २-वह पलंग जिसमें ऐसा कपड़ा लगा हो।
मसहार पुं०(हि) मांसाहारी।
मसा पुं० (हि) १-मच्छर। २-मासा।
मसान पुं० (हि) १-मुर्दे फूंकने का स्थान। मरघट। २-बच्चों का एक रोग। ३-रणभूमि।
मसानिया पुं० (हि) १-श्मशान पर रहने वाला। डोम। २-ओझा।
मसानी स्त्री० (हि) १-मसान में रहने वाली डंकिनी, पिशाचिनी आदि।
मसालहत स्त्री० (अ) १-समझौता। २-मेलमिलाप।
मसाला पुं० (हि) १-साधारण सामग्री। २-वे पदार्थ जिनकी सहायता से कोई वस्तु तैयार होती है। ३-ओषधियों आदि का कोई अंश। ४-धनिया, मिर्च आदि जो साग में पड़ते हैं। ५-साधन।
मसालेदार वि० (हि) जिसमें मसाला मिला हुआ हो। चटपटा।
मसाहत स्त्री० (अ) मापना। पैमाइश।
मसि स्त्री० (सं) १-लिखने की स्याही। २-काजल। कालिख।
मसिजीवी पुं० (सं) लेखक।
मसिधान पुं० (सं) दवात।
मसिधानी स्त्री० (सं) दवात।
मसिपत्र पुं० (सं) वह कागज जिस पर स्याही चढ़ी होती है जिसे दो कागजों के बीच में रखकर लिखने से नीचे वाले कागज पर वही लिखावट उतर आती है। (कार्बनपेपर)।
मसिपात्र पुं० (सं) दवात।
मसियार पुं० (हि) मशाल।
मसियारा पुं० (हि) मशालची।
मसिबिंदु पुं० (सं) नजर से बचाने के लिये बालकों के लगाने वाली काली बिंदी। डिठौना।
मसी स्त्री० (सं) मसि। स्याही।
मसीत पुं० (हि) मसजिद।
मसीद पुं० (हि) मसजिद।
मसीह पुं० (अ) ईसाइयों का धर्म गुरु महात्मा ईसा।
मसीहा पुं० (अ) मुर्दों को जिला देने वाला।
मसीही वि० (हि) ईसामसीह सम्बन्धी। पुं० (हि) ईसाई।
मसू स्त्री० (हि) कठिनता। कठिनाई।
मसूड़ा पुं० (हि) मुँह के अन्दर का वह अंग जिसमें

दांत उगे होते हैं।
मसूर पु० (हि) एक प्रकार का द्विदल अन्न जिससे दाल बनाई जाती है।
मसूरिका स्त्री० (सं) १-शीतला। माता। चेचक। २-छोटी माता।
मसूरी स्त्री० (स) दे० 'मसूरिका'।
मसूसना क्रि० (हि) दे० 'मसोसना'।
मसृण वि० (स) चिकना और 'मुलायम'।
मसेवरा पु० (हि) मांस की बनी हुई भोजन-सामग्री
मसोसना क्रि० (हि) १-मनोवेग को रोकना। २-मन ही मन में कुढ़ना। मरोड़ना। ४-निचोड़ना।
मसोसा पु० (हि) १-कुढ़ने का भाव। २-मन की पीड़ा। ३-पश्चाताप।
मसौदा पु०(अ) १-लेख का वह पूर्वरूप जिसमें काट-छांट न की गई हो। प्रालेख। २-युक्ति। मनसूबा।
मसौदानवीस पु० (अ) मसौदा बनाने वाला।
मसौदेबाज़ वि० (अ) १-युक्ति या उपाय सोचने वाला। २-धूर्त। चालाक।

मस्त वि० (फा) १-मतवाला। मदोन्मत्त। २-यौवन-मद से भरा हुआ। ३-परम आनन्दित। ४-मदपूर्ण ५-अभिमानी।
मस्तक पु० (स) सिर।
मस्तकशूल पु० (स) सिर का दर्द।
मस्ताना वि० (हि) १-मस्तों का सा। २-मस्त। मस्त। क्रि० (हि) मस्त होना।
मस्तिष्क पु० (सं) १-मस्तक के भीतर का भेजा। मगज। २-दिमाग।
मस्ती स्त्री० (स) १-मस्त होने की क्रिया या भाव। २-भोग या प्रसंग की प्रबल कामना। ३-मद। ४-कुछ वृक्षों आदि में होने वाला स्राव।
मस्तूल पु० (पुर्त) नाव या जहाज के बीच का वह मोटा लट्ठा जिस पर पाल बांधा जाता है। (मास्ट)
मस्सा पु० (हि) १-शरीर पर उभरा हुआ छोटा दाना। २-बवासीर रोग में गुदा के भीतर उभरे हुए मांस के दाने।
महँ अव्य० (हि) में।
महँगा वि० (हि) १-जिसका मूल्य सामान्य से अधिक हो। २-बहुमूल्य।
महँगाई स्त्री० (हि) महँगी के कारण मिलने वाला भत्ता।
महँगी स्त्री०(हि) १-महँगे होने का भाव। महँगाई। २-दुर्भिक्ष। अकाल।
महंत पु० (हि) १-किसी मठ या साधु मंडली का अधिष्ठाता। २-साधु-समाज का प्रधान।
महंती स्त्री० (हि) १-महंत का भाव। २-महंत का पद।
मह वि०(हि) १-महा। अति। बहुत। २-श्रेष्ठ। बड़ा। अव्य० (हि) में।

महकमा पु० (अ) किसी विशिष्ट कार्य के लिए बनाया हुआ विभाग। कचहरी।
महकान पु० (हि) दे० 'महक'।
महकीला वि० (हि) दे० 'महकदार'।
महज़ वि० (अ) १-शुद्ध। खालिस। २-केवल। सिर्फ़।
महज़र पु० (अ) उपस्थित या हाजिर होने का स्थान।
महज़रनामा पु० (अ) हिंसा विषयक साक्षीपत्र।
महजिद स्त्री० (हि) मसजिद।
महज्जन पु० (स) दे० 'महाजन'।
महत पु० (हि) दे० 'महत्व'। स्त्री० (हि) प्रतिष्ठा।

पु० (फा) चन्द्रमा।
महताबी स्त्री० (फा) १-एक आतिशबाजी जिसके जलने पर केवल रोशनी होती है। २-बाग के बीच का गोल चबूतरा। ३-चकोतरा।
महतारी स्त्री० (हि) माता।
महती स्त्री० (स) नारद की वीणा का नाम। वि० (स) बहुत बड़ी महान्।
महतु पु० (हि) महिमा। बड़ाई। महत्व।
महतो पु० (हि) पटवों की एक उपाधि। २-कहार। ३-सरदार। मुखिया।
महत् वि० (सं) १-बहुत बड़ा। विशाल। २-प्रधान। ३-श्रेष्ठ। ४-ऊँचा।
महत्तम वि० (सं) सब से बड़ा। श्रेष्ठ।
महत्तमसमापवर्तक पु० (स) वह संख्या जिसका भाग दो या दो से अधिक अन्य संख्याओं में पूरा हो सके।
महत्तर वि० (सं) दो में से बड़ा या श्रेष्ठ।
महत्ता स्त्री० (स) १-महिमा। २-गुरुता। ३-उच्च पद। ४-बड़प्पन। ऊँचाई। (मैग्नीट्यूड)। (संधि)
महत्त्व पु० (स) १-बड़प्पन। बड़ाई। गुरुता। २-श्रेष्ठता। उत्तमता। (इम्पोर्टेन्स)।
महत्त्वपूर्ण वि० (स) महत्त्व वाला।
महत्त्वयुक्त वि० (स) महत्त्वपूर्ण।
महत्त्वशाली वि० (सं) महत्त्ववाला।
महत्त्वाकांक्षा स्त्री० (सं) महत्त्व या बड़प्पन पर

अभिलाषा।
महदाशय वि० (सं) उच्च विचार वाला।
महदी पुं० (अ) १-मुसलमानों के बारहवें इमाम। २-पथप्रदर्शक।
महदूद वि० (अ) परिमित।
महन पुं० (हि) दे० 'मथन'।
महना क्रि० (हि) दे० 'मथना'।
महनिया पुं० (हि) मथने वाला।
महनीय वि० (सं) १-माननीय। प्रतिष्ठापात्र। पूज्य २-महान्।
महनु पुं० (हि) मथन करने वाला। विनाशक।
महफिल स्त्री० (अ) १-सभा। जलसा। २-नाच गाने का जलसा।
महफूज वि० (अ) सुरक्षित।
महबूब पुं० (अ) १-प्रेमपात्र। २-मित्र।
महबूबा स्त्री०(अ) प्रेमिका।
महमंत वि० (हि) मदमत्त। मतवाला।
महमद पुं० (हि) मुहम्मद।
महमदी वि० (हि) मुसलमान।
महमह अव्य० (हि) सुगन्धित रूप में।
महमहाना क्रि० (हि) गंध या महक देना। गमकना।
महमा स्त्री० (हि) दे० 'महिमा'।
महमेज स्त्री० (फा) जूते के पीछे बांधने की लोहे की नाल जिससे घोड़े के ऐंड़ लगाते हैं।
महर पुं० (हि) १-बड़े आदमियों के लिए ब्रज में व्यवहृत एक आदरसूचक शब्द। २-एक पक्षी। (अ) वह धन या संपत्ति जो मुसलमानों में विवाह के समय वर कन्या को देने का वचन देता है। वि० सुगंधित।
महरम पुं० (अ) १-भेद या रहस्य जानने वाला। २-वह निकट सम्बन्धी जिसके साथ विवाह जायज न हो (मुसलमानों में)। स्त्री० १-अंगिया। २-अंगिया की कटोरी।
महरा पुं० (हि) १-कहार। २-सरदार। वि० श्रेष्ठ। बड़ा।
महराई स्त्री० (हि) प्रधानता। श्रेष्ठता।
महराज पुं० (हि) दे० 'महाराज'।
महराजा पुं० (हि) दे० 'महाराजा'।
महराना पुं० (हि) १-वह स्थान, महल्ला या गांव जहां महरे रहते हैं। २-दे० 'महाराणा'।
महराव पुं० (हि) दे० 'मेहराव'।
महरि स्त्री० (हि) १-ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। २-घरवाली। ३-एक पक्षी।
महरी स्त्री० (हि) दे० 'महरि'।
महरूम वि० (अ) जिसे न मिले। वंचित।
महरेटा पुं० (हि) १-महर का बेटा। २-श्रीकृष्ण।
महरेटी स्त्री०(हि)१-वृषभानु महर की लड़की, राधिका
महर्घता स्त्री० (हि) महंगी।
महर्लोक पुं०(सं) पुराणानुसार चौदह लोकों में से।
महर्षि पुं० (सं) बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि।
महल पुं० (अ) १-राजाओं या धनिकों के रहने बहुत बड़ा मकान। प्रासाद। २-अन्तःपुर। ३-अ सर। ४-बड़ा कमरा। ५-पहाड़ी मधु मक्खी।
महलदार पुं० (अ) महल का प्रबन्ध करने वाला।
महलसरा स्त्री० (अ) अन्तःपुर। रनिवास।
महल्ला पुं०(अ) शहर या नगर का वह भाग जि बहुत मकान हों।
महल्लेदार पुं० (अ) महल्ले का चौधरी।
महसिल पुं० (हि) उगाहने वाला। महसूल उगाहने वाला।
महसूल पुं० (अ) १-कर। २-भाड़ा। भाटक। जमीन का लगान। (टैक्स)।
महसूली वि० (अ) १-महसूल के योग्य। २-बैरंग।
महसूस वि०(अ)जिसका ज्ञान या अनुभव हो। अनु
महाँ अव्य० (हि) में।
महांग वि० (सं) भारी-भरकम। मोटा। स्थूल।
महांधकार पुं० (सं) १-घोर अन्धकार। २-अज्ञान
महा पुं० (हि) मट्ठा। छाछ। वि० (सं) १-अत्यधि सर्वश्रेष्ठ। २-बहुत बड़ा।
महाअन्वेषक पुं० (सं) किसी न्यायालय की ओर जांच करने वाला सबसे बड़ा अधिकारी। (इ क्वियजिटर-जनरल)।
महाअहि पुं० (सं) शेषनाग।
महाई स्त्री० (हि) मथने का काम या मजदूरी।
महाउत पुं० (हि) दे० 'महावत'।
महाउर पुं० (हि) दे० 'महावर'।
महाकवि पुं० (सं) १-बहुत बड़ा कवि। २-महाका का रचने वाला।
महाकाय वि० (सं) स्थूल शरीर वाला। मोटा। ड डीलडौल वाला। पुं० १-हाथी। २-शिव का ए अनुचर।
महाकार्त्तिकी स्त्री० (सं) कार्त्तिक की पूर्णिमा।
महाकाल पुं० (सं) १-महादेव। २-शिव के एक ग का नाम। ३-समय जो अनन्त और अखण्ड है।
महाकाली स्त्री० (सं) १-दुर्गा की एक मूर्ति। २-मह काल रूपी शिव की पत्नी।
महाकाव्य पुं० (सं) १-वह बड़ा काव्य जिसमें प्राय सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों का वर्ण हो। २-बहुत बड़ा और श्रेष्ठ काव्य। (एपिक्स)
महाकुमार पुं० (सं) युवराज।
महाकोशल पुं० (सं)आधुनिक मध्य प्रदेश का व भाग जहां हिन्दी भाषा बोली या लिखी जाती है।
महाक्रतु पुं० (सं) बहुत बड़ा यज्ञ।
महाखर्व पुं० (सं) सौ खरब की संख्या।

महाचार्य पुं० (सं) प्रधान आचार्य।
महाजन पुं० (सं) १-श्रेष्ठ पुरुष। २-धनी व्यक्ति। ३-महामानुस। ४-ऋण देने वाला। २-रुपये के लेन देन का व्यापार करने वाला। (क्रेडिटर)।
महाजनक पुं० (सं) दादा, दादी तथा नाना, नानी आदि। (ग्रान्ड पेरेन्टस)।
महाजनी स्त्री० (सं) १-महाजनों के व्यापार की भाषा मुंडी। २-रुपये के लेन देन का व्यवसाय। (बैंकिंग)
महाज्ञानी पुं० (सं) १-बहुत बड़ा ज्ञानी या पंडित। २-शिव।
महाढ्य वि० (सं) बहुत धन वाला। धनिक।
महतत्त्व पुं० (हि) दे० 'महत्तत्व'।
महातपा पुं० (सं) विष्णु। वि० कठोर तप करने वाला।
महातम पुं० (हि) दे० 'महात्म्य'।
महातल पुं० (सं) चौदह तलों में से पृथ्वी के नीचे का पांचवां तल।
महातिक्त पुं० (सं) १-नीम। २-चिरायता।
महात्मा पुं० (सं) १-श्रेष्ठ तथा उच्च विचारों वाला सदाचारी पुरुष। महापुरुष। ३-परमात्मा। ४-सन्त ५-योगी।
महात्याग पुं० (सं) दान।
महात्यागी पुं० (सं) शिव।
महादंड पुं० (सं) १-भारी दंड। २-यम के दूत। ३-मृत्युदण्ड।
महादंत पुं० (सं) १-शिव। २-हाथी दांत।
महादंष्ट्र पुं० (सं) १-शिव। २-एक असुर का नाम।
महादशा स्त्री० (सं) भोग्यकाल।
महादान पुं० (सं) १-ग्रहण आदि के समय दिया जाने वाला दान। २-तुलादान। ३-स्वर्ग की प्राप्ति के लिए दिया जाने वाला दान।
महादारु पुं० (सं) देवदार।
[illegible]

(कंटिनेंट)।
महाद्वार पुं० (सं) मकान आदि का मुख्य द्वार।
महाद्वीप पुं० (सं) दे० 'महादेश'।
महाधिकारपत्र पुं० (सं) सन् १२१५ ई० में ब्रिटेन के सम्राट जॉन द्वारा लिखित वह पत्र जिसमें वैधानिक तथा राजनैतिक स्वतन्त्रता सर्व साधारण को प्रदान की गई थी। मेगनाकार्टा।
महाधिवक्ता पुं० (सं) वह मुख्य अधिवक्ता जो सरकार की ओर से संघीय या उच्चतम न्यायालय आदि में पेश किये मामलों में सरकार के पक्ष की पैरवी करता है। (एडवोकेट जनरल)।

महानता स्त्री० (हि) बड़प्पन। महत्ता।
महानवमी स्त्री०(सं) आश्विनशुक्ला-नवमी।
महानाटक पुं०(सं) एक प्रकार का बड़ा नाटक जिसमें दस अंक होते हैं।
महानिंब पुं० (सं) बकायन।
महानिद्रा स्त्री० (सं) मृत्यु। मौत।
महानिर्वाण पुं० (सं) परिनिर्वाण।
महानिशा स्त्री० (सं) १-आधीरात। २-कल्प के अन्त में होने वाली प्रलय की रात।
महानीच पुं० (सं) धोबी।
महानील पुं० (सं) १-एक प्रकार का नीलम। २-सरमें बड़ी संख्या। वि० गहरा नीला।
महानुभाव पुं० (सं) बड़ा भारी आदरणीय व्यक्ति।
महान् वि० (सं) बहुत बड़ा। विशाल।
महानृत्य पुं० (सं) शिव।
महानेत्र पुं० (सं) शिव।
महान्यायवादी पुं० (सं) (संवि०) वह सर्वोच्चाधिकार सम्पन्न बड़ा सरकारी वकील जो सरकारी मुकदमों की पैरवी के लिए नियुक्त होता है। (एटार्नी जनरल)।
महापंचविष पुं० (सं) पांच मुख्य विषों का समूह—शृङ्गी, कालकूट, मुस्तक, वत्सनाग और शंखकर्णी।
महापगा स्त्री० (सं) एक प्राचीन नदी का नाम।
महापत्तन पुं० (सं) (संवि०) बड़ा बन्दरगाह। (मेजर पोर्ट)।
महापत्रपाल पुं० (सं) डाक-विभाग का राजधानी में रहने वाला सबसे बड़ा उच्चाधिकारी। (पोस्ट-मास्टर जनरल)।
महापथ पुं० (सं) १-राजपथ। २-परलोक का मार्ग ३-हिमालय के एक तीर्थ का नाम। ४-शिव।
महापद्म पुं० (सं) १-सौ पद्म की संख्या। २-एक नन्दवंशी राजा। ३-कुबेर की एक निधि। ४-सफेद [illegible] में एक। [illegible] का अन्तिम राजा।

[illegible] शास्त्रानुसार पांच बड़े पाप ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी से व्यभिचार तथा पाप करने वाले का साथ।
महापातकी वि० (सं) महापातक करने वाला। बड़ा पापी।
महापात्र पुं० (सं) १-मृतक कर्म का दान लेने वाला ब्राह्मण। २-महामंत्री।
महापाप पुं० (सं) महापातक।
महापुराण पुं० (सं) दे० 'पुराण'।
महापुरुष पुं०(सं) १-श्रेष्ठ पुरुष। २-नारायण। ३-दुष्ट (व्यंग्य)।
महाप्रस्थान पुं० (सं) मरणार्थ अभिलाषा लिये [illegible]

आग बहुत दूर तक फैलने की संभावना हो और बहुत ही नुकसान हो। (कोनफ्लेग्रेशन)।
महाप्रभु पुं० (सं) १-चैतन्य महाप्रभु। २-ईश्वर। ३-शिव। ४-विष्णु। ५- वल्लभाचार्य जी की एक एक आदरसूचक पदवी।
महाप्रलय पुं० (सं) वह प्रलय जिसमें सारी सृष्टि का नाश होता है।
महाप्रशासक पुं० (सं) वह प्रशासक जो और प्रशासकों से पदादि में बड़ा होता है। (एडमिनिस्ट्रेटर-जनरल)।
महाप्रसाद पुं० (सं) १-जगन्नाथ जी का चढ़ा हुआ भात। २-देवताओं का प्रसाद या बलि। ३-मांस (व्यंग्य)।
महाप्रस्थान पुं०(सं) १-प्राण त्याग करने लिए हिमालय की ओर जाना। २-मरण।
महाप्राज्ञ वि०(सं) महापंडित।
महाप्राण पुं० (सं) वह वर्ण जिसके उच्चारण करने में प्राणवायु का विशेष प्रयोग करना पड़ता है। (व्याकरण)। (एस्पीरेटेड)।
महाभिवक्ता पुं० (सं) महान्यायवादी। (एटार्नी-जनरल)।
महाबन पुं० (हि) वृन्दावन के अन्दर एक वन का नाम।
महाबल वि० (सं) अतिशय बलवान। पुं० १-वायु २-सीसा। ३-बुद्ध।
महाबलाधिकृत पुं०(सं) सबसे बड़ा सैनिक अधिकारी (फील्ड मार्शल)।
महाबाहु वि० (सं) १-लम्बी भुजा वाला। २-बली। पुं० १-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २-विष्णु।
महाब्राह्मण पुं० (सं) १-मृतक-कर्म का दान लेने वाला ब्राह्मण।
महाभाग वि० (सं) भाग्यवान्।
महाभागवत पुं० (सं) १-एक पुराण का नाम। २-परम वैष्णव। ३-मनु, नारद आदि बारह महाभाग
महाभारत पुं० (सं) एक प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जो व्यास ने रचा था और जिसमें कौरव पाण्डव के युद्ध आदि का वर्णन किया गया है।
महाभाष्य पुं०(सं) पाणिनि के व्याकरण पर पतंजली का लिखा हुआ प्रसिद्ध भाष्य।
महाभिक्षु पुं० (सं) भगवान बुद्ध।
महाभियोग पुं० (सं) वह बड़ा अभियोग जो उच्च अधिकारियों (राष्ट्रपति आदि) पर कोई हानिकारक कार्य करने पर लगाया जाता है। (इम्पीचमेंट)। (संवि०)।
महाभीरु वि० (सं) बड़ा डरपोक या लजालु।
महाभीम पुं० (सं) १-राजा शांतनु। २-शिव के एक द्वारपाल का नाम। वि० बहुत भयंकर।
महाभीरु पुं० (सं) ग्वालिन नामक बरसाती कीड़ा। वि० (सं) बहुत डरने वाला।
महाभैरव पुं० (सं) शिव।
महामंडल पुं० (सं) प्रधान, बड़ा या केन्द्रिय संघ मंडल।
महामंत्र पुं०(सं)१-उत्कृष्ट मंत्र। २-बड़ा प्रभावशाली मंत्र जिससे कार्यसिद्धि निश्चित हो।
महामंत्री पुं० (सं) प्रधान मंत्री। वह मन्त्री जो सब मंत्रियों से बड़ा होता है। (प्राइम मिनिस्टर)
महामणि पुं० (सं) मूल्यवान रत्न।
महामति वि०(सं) बड़ा बुद्धिमान। पुं० १-एक बोधिसत्व का नाम। २-गणेश।
महामना वि० (सं) ऊँचे विचार तथा उदार चित्त वाला।
महामहिम वि० (सं) जिसकी महिमा अत्यधिक (राजपालादि के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द (हिज एक्सिलेंसी)।
महामहोपाध्याय वि०(सं) १-गुरुओं का गुरु। २-एक उपाधि।
महामांस पुं० (सं) १-गाय का मांस। २-नरमांस
महामाई स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-काली।
महामात्य पुं० (सं) महामन्त्री। प्रधान सचिव।
महामान्य वि०(सं) सर्वोत्कृष्ट माननीय। स्वतंत्र राज्यों के नरेशों या सम्राट के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द (हिज मैजस्टी)।
महामाया स्त्री० (सं) १-प्रकृति। २-गंगा। ३-दुर्गा ४-गौतम बुद्ध की माता का नाम।
महामारी स्त्री० (सं) १-वह संक्रामक रोग जिसके कारण एक साथ बहुत सारे लोग मर जाते हैं। २-महाकाली।
महामृग पुं० (सं) १-हाथी। २-कोई बड़ा पशु।
महामृत्युंजय पुं० (सं) शिव का एक मंत्र जिससे अकाल मृत्यु नहीं होती।
महायवि० (हि) महान्। बहुत। अधिक।
महायज्ञ पुं० (सं) हिंदूधर्मशास्त्रानुसार प्रतिदिन किये जाने वाले धार्मिक कर्म।
महायान पुं० (सं) १-बौद्धों के तीन प्रधान सम्प्रदायों में से एक। २-एक विद्याधर का नाम।
महायुद्धपोत पुं०(सं) बड़ा लड़ाकू पोत। जंगी जहाज (कैपिटलशिप)।
महायोगी पुं०(सं) १-शिवजी। २-विष्णु। ३-मुर्गा
महारंभ वि० (सं) बड़े कार्य प्रारंभ करने वाला।
महारण्य पुं० (सं) बीहड़ जंगल। बड़ा जंगल।
महारत्न पुं० (सं) हीरा, पन्ना आदि नौ रत्नों में से एक।
महारथ पुं० (सं) बहुत बड़ा योद्धा जो हजारों से अकेला लड़ सके।

महारयी पुं० (सं) दे० 'महारथ'।
महारस पुं० (सं) १-खजूर। २-गन्ना। ३-कसेरू। ४-पारा। ५-अभ्रक। ६-जामुन का पेड़। ७-कांतिसार लोहा। ८-सोनामक्खी।
महाराज पुं०(सं) १-बहुत बड़ा राजा। २-गुरु, ब्राह्मण आदि के लिए आदरसूचक शब्द।
महाराजाधिराज पुं०(स) अनेक राजाओं का प्रधान राजा।
महाराणा पुं० (सं) नेपाल और मारवाड़ के राजाओं की उपाधि।
महारानी स्त्री०(स) किसी महाराज की रानी। पटरानी।
महारात्रि स्त्री० (सं) १-आधी रात। २-महाप्रलय की रात। ३-दुर्गा।
महारावण पुं० (स) पुराणों में वर्णित वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थी।
महारावल पुं० (स) डूंगरपुर, जैसलमेर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।
महाराष्ट्र पुं० (सं) १-बहुत बड़ा राष्ट्र। २-दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। ३-इस प्रदेश का निवासी।
महाराष्ट्री स्त्री० (सं) महाराष्ट्र में बोली जाने वाली जाने वाली भाषा। मराठी।
महाराष्ट्रिय वि० (सं) महाराष्ट्र-संबंधी।
महारुद्र पुं० (स) शिव।
महारेता पुं० (सं) शिव।
महार्घ पुं० (स) एक दानव का नाम। वि० बहुत अधिक मूल्य का। महगा।
महार्घता स्त्री० (स) महगाई। महँगी।
महार्णव पुं० (सं) १-महासागर। २-शिव।
महार्बुद पुं० (स) सौ करोड़ की संख्या।
महार्ह वि० (स) बहुमूल्य। पुं० सफेद चन्दन।
महाल पुं० (फा) १-मुहल्ला। टोली। २-बन्दोबस्त के हिसाब से कई गावों का समूह।
[illegible]
में होता है। २-तीर्थ।
महालया स्त्री० (स) पितृपक्ष की अंतिम तिथि।
महालिंग पुं० (सं) महादेव।
महालेखापाल पुं० (सं) सरकार के डाक, रेल आदि विभागों तथा सार्वजनिक विभागों के हिसाब किताब को देखने वाला प्रधान अधिकारी। (एकाउन्टेंट-जनरल)।
महालेखापरीक्षक पुं०(स) सरकारी विभागों के हिसाब किताब आदि का परीक्षण या जांच करने वाला उच्च अधिकारी। (ऑडीटर जनरल)।
महालोह पुं० (सं) चुम्बक।

महावट स्त्री० (हि) सरदी की पहली वर्षा।
महावत पुं० (हि) फीलवान।
महावर पुं० (हि) लाख का रङ्ग जिसे स्त्रियां पैरों पर लगाती है।
महावरा (सं) दूब (घास)। पुं०(हि) दे० 'मुहावरा'।
महावराह पुं० (स) विष्णु के वाराह अवतार।
महावरी स्त्री० (हि) लाल के रङ्ग की गोली।
महावाक्य पुं०(सं) १-उपनिषद के 'अहं ब्रह्मास्मि' तथा 'अयमात्माब्रह्म' आदि वाक्य। २-दान देते समय पढ़ा जाने वाला संकल्प।
महावाणिज्य दूत पुं० (स) वह वाणिज्य दूत जो किसी दूसरे देश में अपने देश के नियुक्त वाणिज्य दूतों की उस देश की राजधानी में अपना कार्यालय बना कर देखभाल करता है। (कांउसल जनरल)।
महावात पुं० (स) जोर की हवा। आंधी। तूफान।
महावादी वि० (स) जो शास्त्रार्थ करने में प्रबल हो।
महावायु स्त्री० (सं) दे० 'महावात'।
महावारुणी स्त्री० (स) गंगा स्नान का एक योग।
महाविद्या स्त्री० (सं) १-दुर्गा देवी। २-जोरह दस देवियां-काली, तारा आदि।
महाविद्यालय पुं०(स) वह विद्यालय जहां उच्च शिक्षा दी जाती है। (कॉलेज)।
[illegible]

[illegible] रानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।
महावीर चक्र पुं०(सं) भारत में स्वतन्त्रता के बाद रणभूमि में असाधारण वीरता दिखाने के लिए दिया जाने वाला पदक जो परमवीरचक्र से छोटा होता है।
महाव्रण पुं० (स) दुष्टव्रण।
महाव्रत पुं० (सं) वह व्रत जो बारह वर्ष तक चलता रहे।
[illegible] पुं०(स) १-सौ शंख की संख्या। २-एक बड़ा [illegible] ३-कुबेर की एक निधि।
[illegible] पुं० (स) १-कार्तिकेय। २-शिव। स्त्री० दुर्गा।
महाशन वि० (स) पेटू। बहुत खाने वाला।
महाशय पुं० (स) १-उच्च विचारों वाला व्यक्ति। महानुभावी। २-समुद्र।
महाश्मशान पुं० (स) काशी नगरी का एक नाम।
महाश्रमण पुं० (सं) भगवान बुद्ध का एक नाम।
महाष्टमी स्त्री० (सं) आश्विनशुक्ला-अष्टमी।
महासंस्कार पुं० (सं) अंत्येष्टि।
महासत्व पुं० (सं) १-एक बोधिसत्व का नाम। २-कुबेर।
महासभा स्त्री०(सं) १-बहुत बड़ा संघ या सभा। २-

हिन्दू महासभा।

महासभाई वि० (हि) हिन्दू महासभा का सदस्य।

महासमुद्र पुं० (सं) बहुत बड़ा समुद्र। महासागर। (हाई सी)।

महासर्ग पुं०(सं) वह नयी सृष्टि जो महाप्रलय के बाद की जाती है।

महासंधिविग्रहिक पुं० (सं) परराष्ट्र मन्त्री। (फोरेन मिनिस्टर)।

महासागर पुं० (सं) बहुत बड़ा समुद्र।

महासरधि पुं० (सं) अस्त्र।

महासाहस पुं० (सं) १-जबर्दस्ती छीन लेना। डकैती २-बलात्कार। ३-अति साहस।

महासाहसिक वि० (सं) अति साहस करने वाला। पुं० १-चोर। डाकू। २-बलात्कार करने वाला।

महासिद्धि स्त्री० (सं) एक प्रकार का जादू।

महासुख पुं० (सं) १-सजावट। शृङ्गार। २-बुद्धदेव

महिं अव्य० (हि) में।

महि स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-महिमा। ३-विज्ञान-शक्ति।

महिप पुं० (हि) दे० 'महिप'।

महिदेव पुं० (सं) ब्राह्मण।

महिमा स्त्री० (सं) १-गौरव। महत्त्व। २-प्रभाव। प्रताप। ३-आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

महिमान्वित वि० (सं) महिमायुक्त।

महिमामयी वि० (सं) महिमा वाली।

महिमावान् वि० (सं) गौरव या महिमा वाला।

महियाँ अव्य० (हि) में।

महियाउर पुं० (हि) मट्ठे में पका हुआ चावल।

महिला स्त्री० (सं) १-भले घर की स्त्री। स्त्री। मदमत्त स्त्री।

महिलादीर्घा स्त्री०(सं) महिलाओं के बैठने की लम्बी तथा कम चौड़ी जगह। (लेडीज-गैलरी)।

महिष पुं० (सं) १-भैंसा। २-महिषासुर नामक एक दैत्य।

महिषाक्ष पुं० (सं) १-भैंसा। २-गुग्गुल।

महिषासुर पुं० (सं) रंभ नामक दैत्य का पुत्र जिसे दुर्गा देवी ने मारा था।

महिषासुरघातिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।

महिषी स्त्री० (सं) १-भैंस। २-रानी। ३-सैरिंध्री।

महिषेश पुं० (सं) १-महिषासुर। २-यमराज।

महिसुता स्त्री० (सं) सीताजी।

महिसुर पुं० (हि) ब्राह्मण।

मही स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-मिट्टी। ३-नदी। ४-सेना। ५-देश। स्थान। ६-अवकाश।

महीज पुं० (सं) १-अदरक। २-मंगलग्रह।

महीजा स्त्री० (सं) सीता।

महीधर पुं० (सं) १-विष्णु। २-पर्वत।

महीन वि० (हि) १-पतला। २-बारीक। ३-धीमा।

महीना पुं०(हि) १-मास। २-तीस दिन। ३-मासिक वेतन। ४-स्त्रियों का मासिक धर्म।

महीप पुं० (सं) राजा।

महीपाल पुं० (सं) नृप। राजा।

महीपुत्र पुं० (सं) मंगलग्रह।

महीपुत्री स्त्री०(सं) सीता।

महीभुक् पुं० (सं) राजा।

महीभृत् पुं० (सं) राजा।

महीयान् वि० (सं) बहुत बड़ा। महान्।

महीर स्त्री० (हि) १-मट्ठे में पकाया हुआ चावल २-तपाये हुए मक्खन की तलछट।

महीरुह पुं० (सं) वृक्ष। पेड़।

महीश पुं० (सं) राजा।

महीसुत पुं० (सं) मंगलग्रह।

महीसुता स्त्री० (सं) सीता।

महीसुर पुं० (सं) ब्राह्मण।

महुँ अव्य० (सं) में।

महुअर पुं०(हि) १-तम्बू नामक एक प्रकार का बाजा २-दे० 'महुअरी'।

महुअरी स्त्री० (हि) आटे में महुआ मिला कर बनाई हुई रोटी।

महुआ पुं० (हि) एक प्रकार का वृक्ष जिसके फलों की शराब बनाई जाती है।

महुआरी स्त्री० (हि) महुए का जंगल या बाग।

महुकम वि० (अ) पक्का। दृढ़।

महुर्छा पुं० (हि) महोत्सव।

महुलिया पुं० (देश) महुआ। स्त्री० महुवे की शराब

महुवरि स्त्री० (हि) महुअर नामक बाजा।

महुवा पुं० (हि) दे० 'महुआ'।

महूल पुं० (हि) १-महुआ। २-मुलेठी।

महूरत पुं० (हि) दे० 'मुहूर्त'।

महूष पुं० (हि) १-शहद। २-महुआ।

महेंद्र पुं०(सं) १-विष्णु। २-इन्द्र। ३-एक पर्वत का नाम।

महेर स्त्री० (हि) दे० 'महेरा'। पुं० (देश) झगड़ा। बखेड़ा।

महेरा पुं० (हि) १-मट्ठा। २-मट्ठे में उबाल कर बनाया हुआ चावल।

महेरि स्त्री० (हि) दे० 'महेरा'।

महेरी स्त्री० (हि) उबाली हुई ज्वार। वि० अड़चन डालने वाला।

महेलिका स्त्री० (सं) १-महिला। रमणी। २-बड़ी इलायची।

महेश पुं० (सं) १-शिव। २-ईश्वर।

महेशानी स्त्री० (हि) पार्वती।

महेश्वर पुं० (सं) १-शिव। २-ईश्वर। ३-स्वर्ग।

सोना।
महेश्वरी स्त्री० (सं) दुर्गा।
महेस पु॰ (हि) दे॰ 'महेश'।
महेसी पु॰ (हि) पार्वती।
महेसुर पु॰ (हि) महेश्वर।
महोक्ष पु॰ (सं) बड़ा बैल।
महोखा पु॰ (हि) एक प्रकार का कौवे के आकार का भूरे रङ्ग का पक्षी जिसकी बोली बहुत तीव्र होती है
महोगनी पु॰ (प) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट और कीमती होती है।
महोच्छव पु॰ (हि) दे॰ 'महोत्सव'।
महोत्सव पु॰ (सं) बड़ा उत्सव।
महोदधि पु॰(सं) समुद्र।
महोदय पु॰(सं) १-महाशय (सर)। २-स्वर्ग। ३-स्वामी। ४-कान्यकुब्ज देश।
महोदया स्त्री॰(सं) १-महिलाओं के लिए प्रयोग किया जाने वाला आदरसूचक शब्द। २-नागवल्ली।
महोदर वि० (सं) जिसका पेट बड़ा हो। पु॰ १-एक नाग। २-एक दैत्य। ३-शिव।
महोदार वि० (सं) बहुत उदार चित्त वाला।
महोद्यम वि० (सं) बहुत उत्साह वाला।
महोन्नति स्त्री० (सं) भारी उन्नति।
महोपाध्याय वि० (सं) बड़ा अध्यापक या पंडित।
महोबा पु॰ (हि) उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले का एक भाग।
महोबिया वि० (हि) महोबे का।
महोरस्क वि० (सं) जिसकी छाती चौड़ी हो।
महोला पु॰(हि)१-बहाना। हौला। २-छल। धोखा
महौघ पु॰ (सं) समुद्री तूफान।
महौजा वि० (सं) अति तेजस्वी।
माँ स्त्री० (हि) माता। जननी।
माँस पु॰ (हि) दे॰ 'मांस'।
माँसना क्रि०(हि) १-नाराज होना। २-मन में दुःख या खेद करना।
माँग स्त्री० (हि) १-मांगने की क्रिया या भाव। २-आवश्यकता। ३-वह वस्तु या बात जिसके लिए प्रार्थना की जाय। (डिमांड)। ४-सिर के बालों को संवार कर बनाई गई रेखा।
माँगजली स्त्री० (हि) अनाथ-शृंगार।
माँगटीका पु॰ (हि) माथे पर पहनने का एक गहना।
माँगन पु॰ (हि) १-मांगने का भाव। २-याचक।
माँगना क्रि० (हि) १-किसी-किसी वस्तु के देने के लिए प्रार्थना करना। २-चाहना। पु॰ याचक। भिक्षुक।
[illegible]

पतः आर्थिक मांग लिखी होती है। (रिट आफ-डिमाण्ड)।
मांगफूल पु॰ (हि) दे॰ 'मांगटीका'।
मांगलिक वि० (सं) शुभ या मंगल करने वाला। पु॰ नाटक का मंगल-पाठ करने वाला पात्र।
मांगल्य वि० (सं) मंगलकारक। शुभ। पु॰ माङ्गलिकता।
मांचना क्रि० (हि) १-आरम्भ या शुरू होना। २-प्रसिद्ध होना।
मांजना क्रि० (हि) १-जोर से मल कर किसी वस्तु को साफ करना। ३-माँझा देना। ४-अभ्यास करना।
मांजा पु॰ (देश) पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिए मादक होता है।
माँ-जाई स्त्री० (हि) सगी बहन।
माँ-जाया पु॰ (हि) सगा भाई।
मांजिष्ट वि०(सं) १-मजीठे का सा। २-लाल रङ्ग का
माँझ अव्य० (हि) भीतर। मध्य। बीच।
माँझा पु॰ (हि) १-नदी के बीच का टापू या जमीन २-विवाह के अवसर पर पहनने के पीले कपड़े। ३-पतंग की डोर जिस पर मसाला चढ़ाया हुआ होता है।
माँझिल वि० (हि) बीच का। मध्य का।
माँझी पु॰(हि) १-नौका खेने वाला। केवट। मल्लाह २-मध्यस्थ।
माँट पु॰ (हि) १-मटका। अटारी।
माँठ पु॰ (हि) १-मटका। २-मिट्टी का बड़ा पात्र जिसमें नील घोला जाता है।
माँड़ पु॰ (हि) १-उबले हुए चावलों का पानी। कलफ २-पसाव।

करना।
मांडलिक पु॰ (सं) १-किसी मंडल या प्रांत का शासक २-शासन कार्य।
मांडव पु॰ (हि) मड़प।
मांडवी स्त्री० (सं) राम के भाई भरत की पत्नी।
माँड़ा पु॰(हि) १-एक नेत्र रोग। २-मंडप। ३- एक प्रकार की रोटी।
माँड़ी स्त्री०(हि) १-सूत या कपड़े पर लगाये जानेवाला कलफ। २-भात का पसावन।
माँड़यो पु॰ (हि) मंडप।
मांत वि० (हि) १-मस्त। उन्मत्त। पागल। दीवाना। ३-उदास। ४-मात।
[illegible]

मांप पुं० (हि) माथा। सर।
मांपबंधन पुं० (हि) १-सिर पर लपेटने का कपड़ा। २-स्त्रियों के वाल वांधने की ऊनी डोरी।
मांपर्य पुं० (स) सुस्ती। धीमापन।
मांद पुं० (सं) हिंसक जानवरों की रहने की जगह। खोह। गुफा। वि० (सं) १-उदास। श्रीहीन। २-हलका। ३-मात।
मांदगी स्त्री० (हि) १-रोग। २-थकावट।
मांद्य पुं० (सं) १-कमी। न्यूनता। २-मंद होने का भाव। ३-रोग।
मांपना क्रि० (हि) नशे में चूर होना।
मांस पुं० (सं) १-शरीर में हड्डियों तथा चमड़े का मुलायम तथा लचीला पदार्थ। गोश्त। २-फल का गूदा।
मांसग्रंथि स्त्री० (सं) शरीर के भिन्न अंगों में निकलने वाली मांस की गाठें।
मांसज पुं० (सं) चरबी।
मांसप १-भूत। प्रेत। २-दैत्य।
मांसपिंड पुं०(सं) मांस का बना हुआ शरीर।
मांसपेशी स्त्री० (सं) १-शरीर के अन्दर आपस में जुड़े हुए मांसपिण्ड। पट्टा। २-गर्भधारण किये सात दिन तक का भ्रूण।
मांसभक्षी पुं० (सं) मांस खाने वाला। मांसाहारी।
मांसभेत्ता पुं० (सं) मांस काटने वाला।
मांसभेदी पुं० (सं) मांसभेत्ता।
मांसभोजी वि० (सं) मांसभक्षी।
मांसरस पुं० (सं) मांस का रस। शोरबा।
मांसल वि० (सं) १-मांस से भरा हुआ। २-पुष्ट। दृढ़ मजबूत। ३-उड़द।
मांसविक्रय पुं० (हि) १-मांस वेचने वाला। कसाव। २-धन के लिए पुत्री को वेचने वाला।
मांसवृद्धि स्त्री० (सं) शरीर के किसी अंग के मांस का बढ़ जाना।
मांससार पुं० (सं) चरबी।
मांसस्नेह पुं० (सं) चरबी।
मांसाद वि० (सं) मांसभक्षी।
मांसादी वि० (सं) मांसाहारी।
मांसाशी पुं० (सं) १-मांसाहारी। २-राक्षस।
मांसाहारी पुं० (सं) १-मांस खाने वाला। २-दूसरे जीव जन्तुओं का मांस खाकर निर्वाह करने वाला
मांसोपजीवी पुं० (सं) मांस वेच कर निर्वाह चलाने वाला।
मांहीं अव्य० (हि) में। वीच में।
मा अव्य० (सं) मत। नहीं। स्त्री० (हि) १-लक्ष्मी। २-माता। जननी।
माई स्त्री०(हि) १-मामी। २-पुत्री। कन्या। ३-छोटा पूआ।
माई स्त्री० (हि) १-माता। जननी। २-बड़ी या बूढ़ी स्त्री के लिए आदरसूचक शब्द।
माकूल वि० (अ) १-उचित। ठीक। २-अच्छा। ३-कायल। ४-यथेष्ट। पूरा।
माकूलपसंद वि० (अ) समझदार। ठीक वात को मान लेने वाला।
माख पुं०(हि) १-अप्रसन्नता। नाराजगी। २-घमंड। ३-पछतावा।
माखन पुं० (हि) मक्खन। नवनीत।
माखनचोर पुं० (हि) श्रीकृष्ण।
माखना क्रि०(हि) अप्रसन्न या नाराज होना।
मागध पुं०(सं) १-एक प्राचीन जाति। २-भाट। ३-जरासंध का एक नाम। वि० मगध देश का।
मागधी स्त्री० (सं) १-मगध देश की राजकुमारी। २-मगध देश की प्राचीन भाषा।
माघ पुं०(सं) पूस के वाद आने वाला माह का महीना।
माघी स्त्री० (हि) माघमास की पूर्णिमा।
माच पुं० (हि) दे० 'मचान'।
माचना क्रि० (हि) दे० 'मचना'।
माचल वि० (हि) १-हठी। जिद्दी। २-मचलने वाला
माचा पुं० (हि) छोटी खाट या बड़ी मचिया।
माची स्त्री० (हि) १-हल जोतने का जुआ। २-बैल गाड़ी में की वह जगह जहाँ गाड़ीवान बैठता है ३-पीढ़ी।
माछ पुं० (हि) मछली।
माछर पुं० (हि) मच्छर।
माछी स्त्री० (हि) मक्खी।
माजरा पुं० (अ) १-वृतान्त। हाल। घटना।
माजू पुं० (हि) एक प्रकार की झाड़ी जिसकी डालियों में से गोंद निकलता है।
माजून स्त्री० (अ) चाशनी के साथ मिला कर बनाई गई दवा या अवलेह।
माजूफल पुं० (हि) माजू नामक झाड़ी का गोंद जो दवा में काम आता है।
माट पुं०(हि)१-मटका। घड़ा। २-रङ्गरेज का कपड़ा रङ्गने का मिट्टी का पात्र।
माटा पुं० (हि) लाल चींटी।
माटी स्त्री० (हि) दे० 'मिट्टी।
माठ पुं० (हि) १-मटका। २-एक प्रकार मिठाई।
माड़ना क्रि०(हि) १-मचाना। ठानना। करना। २-भूषित करना। ३-पहनना। ४-आदर करना।
माड़व पुं० (हि) मंडप।
माड़ा वि० (हि) १-खराव। निकम्मा। २-दुर्बल। ३-रोगी।
माड़ा पुं० (हि) १-मकान के दूसरे खंड का कमरा। २-मचिया।

माड़ी स्त्री० (हि) दे० 'मढ़ी'।
माणिक पुं० (सं) लाल। पद्मराग। (रत्न)।
माणिक्य पुं० (सं) दे० 'माणिक'।
मातंग पुं० (सं) १-हाथी। २-चांडाल। ३-एक नाग का नाम।
मात स्त्री०(हि) माता। माँ। (अ) पराजय। हार। वि० पराजित। (देश) मतवाला।
मातदिल वि०(हि) बहुत गरम न बहुत ठंडा। शीतोष्ण
मातना क्रि० (हि) मस्त होना। नशे में होना।
मातबर वि० (अ) विश्वास के योग्य।
मातबरी स्त्री० (अ) विश्वासनीयता। मातबर होने का भाव।
मातम पुं०(अ) १-मृतक का शोक। २-किसी दुर्घटना के कारण उत्पन्न शोक।
मातमपुर्सी स्त्री० (अ) मृतक के सबन्धियों के पास जाकर उन्हें सांत्वना देना।
मातमी वि० (अ) शोकसूचक। मातम संबन्धी।
मातमीलिबास पुं० (अ) शोकसूचक वस्त्र या काले रंग का कपड़ा।
मातरिपुरुष पुं० (सं) घर पर माता के सामने डींग हाँकने वाला और बाहर कुछ भी न कर सकने वाला व्यक्ति।
मातलि पुं० (सं) इन्द्र के सारथी का नाम।
मातहत वि० (अ) अधीनस्थ कर्मचारी। सहकारी।
मातहती स्त्री० (अ) मातहत या अधीन होने का काम या भाव।
माता स्त्री० (सं) १-जन्म देने वाली स्त्री। जननी। माँ। २-गौ। ३-भूमि। ४-लक्ष्मी ५-देवी। ६-शीतला। चेचक। वि० (सं) मत्त। मारने वाला।
मातामह पुं० (सं) माता के पिता। नाना।
मातामही स्त्री० (सं) नानी।
मातुल पुं० (सं) १-मामा। २-धतूरा।
मातुला स्त्री० (सं) १-मामी। २-धतूरा। ३-भंग।
मातुलानी स्त्री० (सं) मामी।
मातुली स्त्री० (सं) मामी।
मातुलेय पुं० (सं) मामा का लड़का। ममेरा भाई।
मातृ स्त्री० (सं) दे० 'माता'।
मातृक वि० (सं) माता-संबन्धी। पुं० (सं) मामा।
मातृकल्याणगृह पुं०(सं) वह स्थान जहाँ माता बनने वाली स्त्रियों की देखभाल का तथा शिशुजन्म का प्रबन्ध होता है। मैटरनिटी वेलफेयर सेंटर।
मातृका स्त्री० (सं) १-माता। २-धाय। ३-देवी। ४-इन्द्राणी।
मातृगण पुं० (सं) शिव के परिवार।
मातृगामी वि० (सं) माता के साथ विषय भोग करने वाला।
मातृगोत्र पुं० (सं) माता का गोत्र या कुल।
मातृघातक पुं० (सं) माता की हत्या करने वाला।
मातृघाती पुं० (सं) मातृ घातक।
मातृत्व पुं०(सं) मा होने का भाव। मांपन।
मातृदेव पुं० (सं) वह जो अपनी माता को ही इष्ट-देव मानता हो
मातृपक्ष पुं० (सं) माता कुल, नाना, मामा आदि
मातृपितृहीन वि०(सं) अनाथ। जिसके माँ बाप न हों
मातृपूजन पुं० (सं) माता की पूजा।
मातृभाषा स्त्री० (सं) वह भाषा जो बालक बचपन से ही अपने माँ बाप से सीखता है। मादरी ज़बान। (मदर टंग)।
मातृभूमि स्त्री० (सं) जन्मभूमि।
मातृष्वसा स्त्री० (सं) मौसी। माँ की बहन।
मातृसत्तात्मक वि० (सं) जिसमें माता की सत्ता ही सर्वोपरि मानी गई हो (समाज)। मैट्रियार्कल।
मातृसपत्नी स्त्री० (सं) विमाता। सौतेली मा।
मातृहंता पुं० (सं) माता की हत्या करने वाला।
मातृहत्या स्त्री० (सं) माता की हत्या। (मैट्रिसाइड)।
मात्र अव्य० (सं) केवल। भर। सिर्फ।
मात्रा स्त्री०(सं) १-परिमाण। मिक़दार। (क्वान्टिटी) २-एक बार खाने भर की औषध। ३-बारहखड़ी लिखते समय वह स्वर चिह्न या रेखा जो शब्दों के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाती है। ४-अंश। ५-रूप। ६-संगीत में गीत का समय निर्धारित करने के लिए उतना काल जितना एक स्वर के उच्चारण में लगता है। ७-राशि। रकम। (अमाउन्ट)।
मात्रिक वि० (सं) १-मात्रा-सम्बन्धी। २-जिसमें मात्राओं की गणना का विचार हो। एकाई। (यूनिट)।
मात्रिकछंद पुं० (सं) वह छन्द जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।
मात्सर्य पुं० (सं) डाह। जलन।
मात्स्य वि० (सं) मछली-सम्बन्धी।
मात्स्य-न्याय पुं०(सं) बलवान द्वारा निर्बल को सताना।
माथ पुं० (हि) दे० 'माथा'।
माथा पुं०(हि) १-सिर का ऊपरी और सामने वाला भाग। मस्तक। २-किसी वस्तु का ऊपरी भाग।
माथुर वि० (सं) मथुरा-सम्बन्धी। मथुरा का। पुं० १-ब्राह्मणों की एक जाति। चौबे। २-कायस्थों की एक जाति। ३-मथुरा का निवासी।
माथे अव्य० (हि) १-माथे या मस्तक पर। २-भरोसे
मादक वि० (सं) नशा उत्पन्न करने वाला। नशीला। (इन्टॉक्सीकेटिंग)।
मादकता स्त्री०(सं) नशीलापन। मादक होने का भाव
मादन वि०(सं) १-मादक। २-मस्त करने वाला। पुं०

१–कामदेव के पांच बाणों में से एक। २–लौंग। ३–धतूरा।

मादर स्त्री० (फा) माता। माँ।

मादरजाद वि०(फा) १–जन्म का पैदायशी। २–सगा सहोदर।

मादरिया स्त्री० (हि) मां। माता।

मादरी वि० (फा) १–माता-सम्बन्धी। माता का। २–जन्मसिद्ध।

मादरीजबान स्त्री० (फा) मातृभाषा।

मादा स्त्री०(फा) स्त्री जाति का प्राणी या जीव। 'नर' का उलटा।

मादिक वि० (हि) नशीला। स्त्री० मदिरा। शराब।

मादिकता स्त्री० (हि) दे० 'मादकता'।

माद्दा पु'० (घ) १–मूलतत्व। २–योग्यता। सामर्थ्य। ३–मवाद। पीव। ४–शब्द की व्युत्पत्ति। शब्द का मूल।

माद्रवती स्त्री० (सं) राजा परीक्षित की स्त्री का नाम।

माद्री स्त्री०(सं) पांडु की पत्नी तथा नकुल और सहदेव की माता का नाम।

माद्रेय पु'० (सं) माद्रीपुत्र नकुल और सहदेव।

माधव पु'० (सं) १–विष्णु। २–वैसाख मास। ३–वसंतऋतु। ४–काला उर्द। ५–एक वर्णवृत्त। ६–महुवे का वृक्ष।

माधवक पु'० (सं) महुवे की शराब।

माधवी स्त्री०(सं) १–एक चमेली-लता के समान सुगंधित फूल वाली लता। २–तुलसी। ३–दुर्गा। ४–शहद की बनी चीनी। ५–एक प्रकार की मदिरा।

माधुरई स्त्री० (हि) मधुरता। मिठास।

माधुरिया स्त्री० (हि) दे० 'माधुरी'।

माधुरी स्त्री० (सं) १–मिठास। २–माधुर्य। शोभा। ३–मदिरा। ४–मिठाई।

माधुर्य पु'०(सं) १–मधुर होने का भाव। २–लावण्य सौन्दर्य। ३–मिठास। ४–वाक्य का एक से अधिक अर्थ होना।

माधवा पु०(हि) दे० 'माधव'।

माधो पु'० (हि) दे० 'माधव'।

माधौ पु'० (हि) दे० 'माधव'।

माध्य वि० (सं) बीच का। मध्य का।

माध्यम वि० (सं) बीच का। बिचले भाग का। पु'० १–वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय। २–साधन। (मीडियम)।

माध्यमिक पु'० (सं) १–बौद्धों का एक भेद। २–मध्य देश का निवासी। वि० बीच का। मध्य का।

माध्यमिक पाठशाला स्त्री० (सं) माध्यमिक शिक्षा की पाठशाला। (सेकेन्डरी स्कूल)।

माध्यमिक-शिक्षा स्त्री० (सं) प्रारंभिक शिक्षा के बाद और उच्च शिक्षा से पहले दी जाने वाली शिक्षा। (सेकेन्डरी एज्युकेशन)।

माध्यस्थ पु'०(सं) १–मध्यस्थ। २–दलाल। ३–विवाह करने वाला ब्राह्मण।

माध्याकर्षण पु'०(सं) पृथ्वी के अन्दर की वह आकर्षण शक्ति जो सब पदार्थों को अपनी ओर खींचती रहती है और जिसके कारण सब पदार्थ पृथ्वी पर ही गिरते हैं। (ग्रेविटेशन)।

माध्याह्निक वि० (सं) ठीक मध्याह्न या दोपहर का।

माध्यिका स्त्री० (सं) त्रिभुज के किसी शीर्ष से सामने वाले भुज के अर्धक बिंदु तक खींची जाने वाली सरल रेखा। (मीडियन)।

माध्व वि० (सं) १–मधु का बना हुआ। मीठा। २–मध्व संप्रदाय का अनुयायी।

माध्वसंप्रदाय पु'०(सं) मध्वाचार्य द्वारा चलाया गया एक वैष्णव संप्रदाय।

माध्वी स्त्री०(सं)१–मदिरा। शराब। २–महुए की बनी शराब।

मान पु'० (सं) १–परिमाण। नाप, तौल आदि। २–नापने या तौलने का साधन। ३–मानदण्ड। (स्टैन्डर्ड)। ४–ताल का एक विराम। ५–प्रमाण। ६–अभिमान।

मानकंद पु'० (सं) बंगाल में रहने वाला एक मीठा कन्द। सालिब मिश्री।

मानक पु'०(सं) १–मानकन्द। २–निश्चित किया हुआ मानदण्ड। (स्टैन्डर्ड)।

मानकलह पु'० (सं) १–ईर्ष्या। डाह। २–प्रतिद्वन्द्विता

मानकीकरण पु'० (सं) एक जैसी बहुत सी वस्तुओं का मान स्थिर करना। (स्टैन्डर्डाइजेशन)।

मानगृह पु'० (सं) रूठ कर बैठने का स्थान। कोप भवन।

मानचित्र पु'० (सं) नकशा। (चार्ट, मैप)।

मानता स्त्री० (हि) मन्नत। मनौती।

मानदंड पु'० (सं) पैमाना।

मानदेय पु'०(सं) वह धन जो किसी व्यक्ति को काम करने के बदले प्रतिष्ठित रूप में दिया जाता है। (ऑनोरेरियम)।

मानधन वि०(सं) जो अपनी प्रतिष्ठा को ही धन समझता हो।

मानना क्रि०(हि) १–सहमत होना। २–ठीक मार्ग पर चलना। ३–समझना। ४–प्रसन्न होना। ५–स्वीकार करना। ६–मन्नत करना। ७–किसी का बहुत आदर करना।

माननीय वि० (सं) जो मान करने योग्य हो। आदरणीय। पु'० प्रतिष्ठित लोगों के नाम से पहले लगाने की एक उपाधि। (ऑनरेबल)।

मानपत्र पु'० (सं) अभिनन्दन-पत्र। (एड्रेस आफ वेल्कम)।

मानरेखा पुं० (हि) आशा। मरोसा।
मानभंग पुं०(स) १-मानहानि। २-नायिका के मान का टूटना।
मानमंदिर पु० (सं) १-मानगृह। २-वेधशाला।
मानमनौती स्त्री०(हि) १-रूठने और मनाने की किया २-पारस्परिक प्रेम।
मानमरोर पु० (हि) बिगाड़। झगड़ा।
मानमोचन पुं० (स) साहित्य के अनुसार रूठे हुए को मनाने के छः उपाय।
मानव पुं० (सं) मनुष्य। आदमी। मनुज। वि० १-मनु-सम्बन्धी। २-मनुष्योचित।
मानव-उपभोग पु०(सं) मनुष्य की उपयोग की वस्तुएँ (ह्यूमैन कन्जम्शन)।
मानवता स्त्री० (स) १-मनुष्यता। आदमीयत। २-संसार के समस्त मनुष्यों का समाज। (ह्यूमैनिटी)।
मानवती स्त्री० (सं) वह नायिका जो अपने पति से मान कराती है।
मानवधर्मशास्त्र पु० (सं) १-मनुस्मृति। २-मनुष्यों की उत्पत्ति, विकास आदि का विवेचन करने वाला शास्त्र। (एन्थ्रोपॉलॉजी)।
मानव-पण्न पु०(सं) मनुष्यों को खरीदने और बेचने का व्यापार। (ट्रैफिक इन ह्यूमैन बीइंग्स)।
मानव-व्यापार पु० (सं) दे० 'मानव-पण्न'।
मानवविज्ञान पु० (सं) मानवशास्त्र। (एन्थ्रोपोलॉजी)
मानवी स्त्री० (सं) नारी। स्त्री। औरत। वि० दे० 'मानवीय'।
मानवीय वि० (सं) मानव-सम्बन्धी।
मानवेंद्र वि०(सं) मनुष्योचित प्रवृत्ति वाला। (ह्यूमैन)
मानस पुं०(हि) मनु। (स) १-हृदय। मन। २-मान-सरोवर। ३-संकल्प विकल्प। ४-कामदेव। ५-रामचरितमानस। वि० (सं) मन के द्वारा होने वाला। मन का।
मानसचारी पुं० (सं) हंस। वि० जो मानसरोवर में रहता हो।
मानसजन्मा पुं० (सं) कामदेव।
मानसदेव पु० (हि) राजा।
मानसपुत्र पुं० (स) वह पुत्र या सन्तान जो केवल इच्छा मात्र से ही उत्पन्न हुआ हो। (पुराण)।
मानसपूजा स्त्री० (स) मन ही मन में की जाने वाली पूजा।
मानसरोवर पुं० (सं) हिमालय पर्वत पर एक प्रसिद्ध झील। २-शरीर के अन्दर का शून्य स्थान। अमृत कुण्ड।
मानसविज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें मन की प्रकृति, प्रवृत्ति तथा मन किस प्रकार काम करता है इन सब बातों का विवेचन होता है। (मेन्टल-साइन्स)।
मानसशास्त्र पु० (सं) दे० 'मानसविज्ञान'।
मानसशास्त्री पुं० (सं) मानस-शास्त्र का वेत्ता।
मानसिक वि० (स) १-मन की कल्पना से उत्पन्न। २-मन-सम्बन्धी। (मेन्टल)।
मानसी वि० (सं) मन का। मन से उत्पन्न।
मानस्थापन पुं० (सं) विभिन्न मान या मानक-स्थापित करने का कार्य। (एस्टेबलिशमेंट आफ-स्टैन्डर्ड)।
मानहानि स्त्री० (स) अपमान। कोई ऐसी बात या कार्य जिससे किसी का मान घटे। (डिफेमेशन)।
मानहुँ अव्य० (हि) मानो।
माना क्रि० (हि) १-नापना। तौलना। २-अचना। ३-समाना। अमाना।
मानिंद वि० (फा) समान। सदृश। तुल्य।
मानिक पुं० (हि) रत्न। लाल। (सं) आठ पल का एक मान। वि० जिसका कुछ मान हो। परिमाण-वाला। (क्वान्टिटेटिव)।
मानिक-रेत स्त्री० (हि) मानिक का चूर्ण।
मानित वि० (सं) सम्मानित। प्रतिष्ठित।
मानिता स्त्री० (सं) १-आदर। सम्मान। प्रतिष्ठा। २-गौरव। ३-अहंकार। गर्व।
मानित्व पु० (सं) दे० 'मानिता'।
मानिनी वि०(स) १-मान व गर्व करने वाली। २-रूठने वाली।
मानी पु० (म) १-तात्पर्य। २-अर्थ। मतलब। ३-अभिप्राय।
मानुख पु० (हि) मनुष्य।
मानुष वि० (सं) मानव। मनुष्य का। पुं० मनुष्य।
मानुषिक वि० (स) मनुष्य का। मनुष्य सम्बन्धी।
मानुषी वि० (हि) मनुष्य सम्बन्धी। स्त्री० (सं) १-स्त्री। औरत। २-तीन प्रकार की स्त्रियों में से एक।
मानुष्य वि० (सं) मनुष्य का।
मानुष्यक वि० (सं) मनुष्य सम्बन्धी।
मानुस पु० (हि) मनुष्य। आदमी।
माने पु० (म) मतलब। आशय। अर्थ।
मानो अव्य० (हि) मानलो कि ऐसा होगा। गोया। जैसे।
मान्य वि०(स) १-मानने योग्य। २-जिसे विधिपूर्वक-मान्यता दी गई हो। (रैकिंग्नाइज्ड)।
मान्यता स्त्री० (स) न्यायपुक्तता। प्रबलता। पुष्टता। सिद्धता। (वैलिडिटी)।
माप स्त्री० (सं) मापने की क्रिया या भाव। नाप। (मेजर)।
मापक पु० (स) १-वह जिससे कुछ मापा जाय। नाप। २-वह जो मापता हो। ३-पैमाना।
मापन पु०(सं) १-मापने की क्रिया। २-तराजू। (मिजरमैंट)।

मापना क्रि० (हि) किसी वस्तु के वर्गत्व, घनत्व का किसी नियत मान से परिमाण करना। नापना।
मापमान पुं० (सं) मापक। पैमाना। (स्केल)।
माफ वि० (हि) क्षमा किया हुआ।
माफिक वि० (हि) १-अनुकूल। अनुसार। २-योग्य
माफी स्त्री० (हि) १-वह भूमि जिसका राज्य की ओर से कर माफ हो। २-क्षमा।
माफीदार वि०(हि) जिसको माफी की भूमि मिली हो
माम पुं० (हि) ममता।
मामलत स्त्री० (हि) मामला। विवाद। झगड़ा।
मामलतदार पु० (हि) तहसीलदार। (म० प्र०)।
मामला पुं० (अ) १-काम। व्यापार। २-विवाद। झगड़ा। ३-मुकदमा। ४-प्रधान विषय।
मामा (हि) माता का भाई। स्त्री० (फा) १-माता। माँ २-नौकरानी। ३-रोटी पकाने वाली। ४-बुड्ढी स्त्री
मामिला पुं० (हि) दे० 'मामला'।
मामी स्त्री० (हि) १-मामा की पत्नी। २-अपने दोष पर ध्यान न देना।
मामूँ पुं० (हि) माँ का भाई। मामा।
मामूर वि० (अ) भरा हुआ। पूर्ण।
मामूल वि०(अ) जिस पर अमल किया गया हो। पु० रीति। परिपाटी।
मामूली वि० (अ) १-सामान्य। २-नियमित। ३-साधारण।
माँयँ अव्य० (हि) बीच में। मध्य में।
माय स्त्री० (हि) १-माँ। माता। माया।
मायक पु० (सं) मायावी। माया करने वाला।
मायका पुं० (हि) नैहर। पीहर।
मायन पुं० (हि) विवाह से पूर्व मातृ का पूजन तथा पितृ-निमंत्रण का कार्य।
मायनी स्त्री० (हि) मायाविनी।
माया स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-धन। संपत्ति। ३-अविद्या। ४-छल। सृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण प्रकृति। ६-जादू। इन्द्रजाल। ७-बुद्धि। (हि) १-माता। २-ममत्व। ३-कृपा। दया।
मायाकार पुं०(सं) जादूगर। ऐंद्रजालिक।
मायाजाल पुं० (सं) १-गृहस्थी का जंजाल। २-मोह
मायाजीवी पुं०(सं) मायाकार।
मायापटु वि० (सं) मायावी।
मायापाश पुं० (सं) माया जाल। माया का फंदा।
मायामय वि० (सं) मायायुक्त।
मायामृग पुं० (सं) सीता जी को हरने के लिए रावण का स्वर्ण मृग का रूप।
मायायुद्ध पुं०(स) वह युद्ध जो माया बल से या छल कपट से किया जाय।
मायावती स्त्री० (सं) कामदेव की पत्नी का एक नाम
मायावाद पुं० (सं) वह सिद्धांत जिसमें ईश्वर के अतिरिक्त संसार की समस्त वस्तुओं को अनित्य तथा सत्य माना जाता है। संसार को मिथ्या मानने का सिद्धांत।
मायावादी पुं० (सं) मायावाद में विश्वास करने वाला।
मायावान् वि० (सं) मायावी। पु० कंस।
मायावी पुं० (हि) १-छली। फरेबी। २-धूर्त। ३-परमात्मा। ४-बिल्ली।
मायिक वि० (सं) १-माया से बना हुआ। २-बनावटी। जाली। माया करने वाला।
मायी वि०(सं) १-माया करने वाला। २-छली। पुं० १-ईश्वर। २-छलिया।
मायूर वि०(सं) मोर या मयूर सम्बन्धी।
मायूस वि०(फा) निराश। नाउम्मेद।
मायूसी स्त्री० (फा) निराशा। नाउम्मीदी।
मार पुं० (सं) १-कामदेव। २-धतूरा। ३-विष। ४-विघ्न। स्त्री०(हि) १-आघात। २-लक्ष्य। ३-क्लेश कष्ट। ५-मारपीट। लड़ाई। अव्य० अत्यन्त। बहुत
मारक वि० (सं) १-मार डालने वाला। २-विष के प्रभाव को नष्ट करने वाला।
मारक-स्थान पुं० (सं) जन्म-कुण्डली में लग्न से सातवाँ और दूसरा स्थान।
मारका पुं० (अ) १-निशान। २-चिह्न। (मार्क)।
मारकाट स्त्री० (हि) युद्ध। लड़ाई।
मारकीन पु० (हि) एक प्रकार का कोरा मोटा कपड़ा
मारकेश पुं०(सं) जन्मकुण्डली का वह योग जिससे मृत्यु की संभावना हो।
मारग पुं० (हि) दे० 'मार्ग'।
मारगन पुं० (हि) १-बाण। तीर। २-भिखमंगा।
मारजन पुं०(हि) दे० 'मार्जन'।
मारण पुं० (सं) मार डालना। जान लेना।
मारतौल पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।
मारना क्रि० (हि) १-प्राण लेना। चोट पहुँचाना २-कुश्ती में विपक्षी को पछाड़ना। ३-फेंकना। ४-शिकार खेलना। ५-प्रभाव घटना। ६-लगाना करना। ७-सहना।
मारफत स्त्री० (अ) १-ईश्वरीय ज्ञान। २-जरिया वसीला।
मारवाड़ी वि०(हि) मारवाड़ देश सम्बन्धी। मारवाड़ का।
मारा वि० (हि) १-मारा हुआ। निहत। २-जिस पर मार पड़ी हो।
मारात्मक वि० (सं) १-हिंसक। २-दुष्ट। ३-प्राणनाशक।
मारामार अव्य०(हि) अत्यन्त शीघ्रता से। स्त्री० १-मारपीट। २-भगदड़।
मारि स्त्री० (सं) १-मार डालना। २-महामारी।

मारिष पुं० (सं) १-नाटक का सूत्रधार। २-प्रतिष्ठित।
मारी स्त्री० (सं) १-महामारी। २-वडी।
मारीच पुं०(सं) वह राक्षस जिसने स्वर्ण हिरन बनकर सीता जी को धोखा दिया था।
मारुत पुं० (स) १-पवन। हवा। २-वायु। देवता।
मारुततनय पुं० (स) हनुमान।
मारुतात्मज पुं० (स) हनुमान।
मारुति पुं० (सं) १-भीम। २-हनुमान।
मारू पुं० (हि) १-युद्ध में बजाया और गाया जाने वाला एक राग। २-बड़ा नगाड़ा। ३-मरु देश का निवासी। वि० मारने वाला। हृदयवेधक।
मारे अव्य० (हि) वजह से।
मार्ग पुं० (स) १-रास्ता। पथ। (रूट)। २-किसी कार्य को करने का साधन या तरीका।
मार्गकर पुं० (सं) किसी विशेष मार्ग पर चलने के बदले में लिया जाने वाला कर। (टोल टैक्स)।
मार्गण पुं०(स)१-ढूंढना। अन्वेषण। जांच। (इन्वेस्टिगेशन)। २-मांगना। ३-बाण।
मार्गणा पुं०(स) १-याचना। ढूंढना।
मार्गतोरण पुं० (स) स्वागत के लिए रास्ते में बनाया गया बड़ा फाटक।
मार्गदर्शक पुं० (स) पथप्रदर्शक।
मार्गन पुं० (हि) बाण। तीर।
मार्गरक्षक पुं० (सं) वह सशस्त्र व्यक्ति जो किसी व्यक्ति,समूह, या माल की रक्षा के लिए साथ-साथ चले। (एस्कॉर्ट)।
मार्गशिर पुं० (सं) दे० 'मार्गशीर्ष'।
मार्गशीर्ष पुं० (सं) अगहन का महीना।
मार्गशोधक पुं० (स) रास्ता साफ करने वाला।
मार्गित वि० (सं) १-खोजा हुआ। २-अभिलषित।
मार्गी पुं० (स) १-पथिक। २-मार्गदर्शक। ३-मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति।
मार्च पुं० (अ) १-फरवरी के बाद और अप्रैल से पहले आने वाला ईसवी सन् का तीसरा महीना। २-सैनिकों की नपी तुली चाल। ३-प्रयाण।
मार्जन पुं० (स) १-सफाई। २-भूल दोष आदि का परिहार। ३-शुद्ध या पवित्र करना। ४-पवित्र करने के लिए तीर्थादि का जल छिड़कना।
मार्जनी स्त्री० (स) झाड़ू। बुहारी।
मार्जनीय वि० (स) मार्जन करने योग्य। पुं० अग्नि
मार्जार पुं०(सं) १-बिलाव। बिलाव। २-लाल चीता नामक वृक्ष।
मार्जारकंठ पुं० (स) मोर।
मार्जारी स्त्री० (सं) १-कस्तूरी। २-मादा बिल्ली।
मार्जित वि० (स) स्वच्छ या साफ किया हुआ।
मार्तंड पुं० (सं) १-सूर्य। २-आक। ३-सूअर।
मार्तिक वि० (स) मिट्टी का बना हुआ।
मार्त्य वि० (सं) मरणशील।
मार्दव पुं० (सं) १-अहंकार का त्याग। २-सरलता। कोमलता। ३-दूसरे के कष्ट से दुःखित होना।
मार्फत अव्य० (अ) द्वारा। जरिये।
मार्मिक वि० (स) १-मर्म स्थान पर प्रभाव डालने वाला। २-मर्मज्ञ।
माल स्त्री० (हि) १-माला। हार। २-चरखे की डोरी जिससे तकुआ घूमता है। (अ) १-धन। संपत्ति। २-सामग्री। सामान। ३-क्रय-विक्रय की वस्तुएँ। (गुड्स)। ४-कर के रूप में मिलने वाला अन्न या धन। ५-उत्तम या स्वादु भोजन। ६-कोई उत्तम वस्तु। पुं० (सं) पहलवान।
मालअदालत स्त्री० (अ) लगान आदि के मुकदमे सुनने वाली कचहरी। (रेवेन्यू कोर्ट)।
मालकंगनी स्त्री० (सं) एक लता जिसके बीजों का तेल निकाला जाता है।
मालकोस पुं० (सं) एक संपूर्ण जाति का राग।
मालखाना पुं०(अ) वह राजकीय या विभागीय स्थान जहां माल जमा रहता है। भंडार।
मालगुजार पुं० (अ) १-लगान वसूल करने वाला। २-जमींदार (अ० प्र०)।
मालगुजारी स्त्री० (अ) लगान। भूमिकर।
मालगोदाम पुं०(अ)१-वह स्थान जहां व्यापारिक माल रखा जाता है। २-रेल के स्टेशनों या बन्दरगाहों पर वह स्थान जहां बाहर भेजने वाला माल या कहीं से आया हुआ माल रहता है
मालटाल पुं० (हि) धन-दौलत।
मालती स्त्री० (स) १-एक प्रकार की सुगन्धित फूलों वाली बेल। २-युवति।
मालदार वि० (अ) अमीर। धनी।
मालपुआ पुं० (हि) आटे में चीनी मिला कर बनाया गया मीठा पकवान।
मालमंत्री पुं० (सं) राजस्वमंत्री। (रेवेन्यू मिनिस्टर)
मालमताअ पुं० (अ) सामान। धन-दौलत।
मालमहकमा पुं० (अ) राजस्व विभाग। (रेवेन्यू-डिपार्टमेंट)।
मालय वि० (स) मलय प्रदेश का। मलय सम्बन्धी पुं० चन्दन।
मालव पुं० (सं) १-मालवा। २-मालवा का निवासी ३-एक राग।
मालवीय वि० (स) मालवा सम्बन्धी। पुं० १-मालवा का निवासी। २-ब्राह्मणों की एक उपजाति।
माला स्त्री० (सं) १-पंक्ति। २-फूलों का हार। गजरा ३-समूह। ४-सूत्र। ५-लड़ी।
मालाकार पुं० (सं) गजरा या माला बनाने वाला माली।
मालादीपक पुं० (सं) एक अर्थालंकार

कथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है।
मालामाल वि० (फा) बहुत सम्पन्न।
मालिक पुं० (अ) १-ईश्वर। २-स्वामी। ३-पति। (सं)१-माली। २-धोबी। ३-एक प्रकार की चिड़िया
मालिका स्त्री०(अ) १-पंक्ति। २-माला। ३-मकान का दूसरा खंड। ३-चमेली।
मालिकाना पुं० (फा) १-स्वामित्व। २-वह दस्तूरी जो आसामी जमींदार को देता है।
मालिकी स्त्री०(फा) १-मालिक का स्वत्व। २-मालिक होने का भाव।
मालिन स्त्री० (हि) १-माली की स्त्री। २-वह स्त्री जो माली का काम करे।
मालिनी स्त्री० (सं) १-मालिन। २-वह नदी जिसके तट पर मेनका के गर्भ से शकुन्तला का जन्म हुआ था। ३-चम्पानगरी। ४-द्रौपदी का एक नाम।
मालिन्य पुं० (सं) १-मलीनता। २-अंधकार।
मालियत स्त्री० (फा) १-मूल्य। कीमत। २-धन। संपत्ति।
मालिया पुं० (अ) मोटे रस्सों में दी जाने वाली एक प्रकार की गाँठ।
माली पुं० (हि) १-बाग में पौधों आदि की देखभाल करने वाला व्यक्ति। २-एक जाति विशेष। ३-एक छन्द। वि० (सं) जो माला धारण किये हुए हो। (फा) धन या अर्थ सम्बन्धी।
मालीखूलिया पुं० (यू०) १-एक रोग। २-चित्त का सदा उदास रहना।
मालूम वि० (अ) जाना हुआ। विदित।
मालोपमा स्त्री० (सं) एक उपमालंकार जिसमें एक उपमेय के भिन्न-भिन्न धर्मों वाले अनेक उपमान बनाये जाते हैं।
माल्य पुं० (सं) १-फूल। माला।
माल्यजीवक पुं० (स) माली।
माल्यवान् वि०(सं) जिसने माला पहन रखी हो। पुं० १-एक राक्षस। २-एक पर्वत का नाम। (पुराण)।
मावत पुं० (हि) महावत।
मावस स्त्री० (हि) अमावस।
मावा पुं० (हि) १-सार। सत्त। २-दूध का खोया। ३-अण्डे के भीतर का पीला रस। ४-तम्बाकू का खमीरा। ५-चन्दन का इत्र।
माश पुं० (फा) उड़द।
माशा पुं० (हि) आठ रत्ती का प्रसिद्ध मान या तौल
माशाअल्लाह अव्य०(अ) १-क्या कहना। २-भगवान भरोसे।
माशूक पुं० (अ) प्रेमपात्र। प्रिय।
माशूका स्त्री० (अ) प्रेमिका।
माशूकाना वि० (अ) प्रेमिकों जैसा।
माशूकी स्त्री० (अ) माशूक होने का भाव।
माशूकेहकीकी पुं० (अ) खुदा। ईश्वर।
माष पुं० (सं) १-उड़द। २-मासा। ३-मूर्ख। (देश) १-गर्व। २-क्रोध।
माषना क्रि० (हि) दे० 'माखन'।
माषपर्णी स्त्री० (सं) जंगली उड़द।
माषयोनि पुं० (सं) पापड़।
मास पुं० (सं) वर्ष का बारहवां भाग। महीना।
मासकालिक वि० (सं) महीने भर तक रहने वाला।
मासजात वि० (सं) महीने भर का।
मासदेय वि० (सं) जो एक महीने में चुकानी हो।
मासना क्रि० (हि) १-मिलना। २-मिलाना।
मासप्रवेश पुं० (सं) महीने का आरंभ होना।
मासमान पुं० (सं) वर्ष।
मासस्तोम पुं० (सं) एक प्रकार का यज्ञ।
मासांत पुं० (सं) १-महीने का अंत। २-अमावस्या। ३-संक्रांति।
मासावधिक वि० (सं) एक महीने भर तक रहने वाला
मासिक वि० (सं) १-मास संबंधी। २-महीने में एक बार या माहवार होने वाला। (मन्थली)। पुं० (सं) १-प्रति मास मिलने वाला वेतन। २-प्रति मास प्रकाशित होने वाला पत्र।
मासिक धर्म पुं० (सं) रजोधर्म। (मेन्सेस)।
मासी स्त्री० (हि) मौसी। मां की बहन।
मासूम वि० (अ) अपराध या दोष रहित। बेगुनाह।
मास्टर पुं० (सं) १-स्वामी। मालिक। २-शिक्षक। ३-किसी विषय में प्रवीण। ४-बालकों के लिये व्यवहृत शब्द।
मास्टर-की स्त्री० (अ) वह कुञ्जी जिससे विभिन्न कुञ्जियों से खुलने वाले ताले खुल जाते हों।
मास्टरी स्त्री० (अ) १-अध्यापन कार्य। २-मास्टर का भाव।
मास्य वि० (सं) जो महीने भर का हो।
माहँ अव्य० (हि) बीच में। मध्य में।
माह पुं० (हि) १-माघ। २-उड़द। ३-मास। महीना।
माहत स्त्री० (हि) महत्व। बड़ाई।
माहताब पुं० (फा) १-चन्द्रमा। चांदनी।
माहताबी स्त्री० (फा) १-छत या खुला चबूतरा। २-एक आतिशबाजी।
माहना पुं० (हि) उमड़ना।
माहनामा पुं० (फा) मासिक पत्र।
माह-ब-माह अव्य०(फा) प्रतिमास। माहवार।
माहली पुं० (हि) १-सेवक विशेषतः अन्तःपुर का। २-नौकर। दास।
माहवार अव्य० (फा) प्रतिमास।
माहवारा पुं० (फा) मासिक वेतन।
माहवारी अव्य० (फा) माहवार। स्त्री०(फा) स्त्रियों का

मासिक धर्म।
माही अव्य(हि) दे० 'महँ'।
माहा पुं०(हि) कपड़ा। पट।
माहात्म्य पुं० (स) १-महिमा। महत्व। २-आदर। मान।
माहिँ अ० (हि) १-भीतर। २- में। पर।
माहिर वि०(अ) ज्ञाता। जानकार। पुं०(स) इन्द्र।

मिटियामहल पुं० (हि) मिट्टी का मकान। झोंपड़ी (व्यंग)।
मिटियासाँप पुं० (हि) एक प्रकार का काली चित्तियों वाला मटमैला साँप।
मिट्टी स्त्री० (हि) १-पृथ्वी। भूमि। २-भुरभुरा पदार्थ जो धरातल पर सब जगह पाया जाता है। धूल। ३-शरीर। ४-मृत शरीर। ५-शारीरिक बनावट।
... मो लालटेन

प्राचीन नगर (आधुनिक मदुरा)।
माही स्त्री० (फा) मछली। (हि) एक नदी का नाम।
माहीमरातिब पुं० (फा) राजा की सवारी के आगे मछली आदि के चिह्न के झण्डे लेकर चलने वाले।
माहुर पुं० (हि) विष।
माहेन्द्र वि० (स) १-इन्द्र सम्बन्धी। २-जिसके देवता इन्द्र हों।
मिंजाई स्त्री० (हि) मींजने की क्रिया या मजदूरी।
मिंत पुं० (हि) मित्र।
मिआद स्त्री० (हि) दे० 'मीआद'।
मिआन पुं० (हि) दे० 'मियान'।
मिकदार स्त्री० (अ) मात्रा। मिकदार।
मिचकाना क्रि० (हि) पलकों का झपकाना या बंद करना।
मिचना क्रि० (हि) आँखों का बन्द होना।
मिचलाना क्रि० (हि) इच्छा न होते हुए भी खाना।
मिचलाना क्रि० (हि) मिचली आना।
मिचली स्त्री० (हि) वमन करने की इच्छा।
मिचौनी, मिचौली स्त्री० (हि) आँख बन्द करने की क्रिया। (आँखमिचौली)।
मिछा वि० (हि) मिथ्या। झूठ।
मिजराब स्त्री० (अ) सितार या तानपूरा बजाने का उंगलियों में पहनने का छल्ला।
मिजाज पुं० (अ) १-प्रकृति। तासीर। २-मन की दशा। ३-गर्व।
मिजाजपुरसी स्त्री० (अ) स्वास्थ्य का हाल पूछना।
मिजाजमुबारक पुं० (अ) दे० 'मिजाजशरीफ'।
मिजाजवाला वि० (अ) घमंडी। अभिमानी।
मिजाजशरीफ पुं० (अ) आप अच्छे तो हैं।
मिजाजी वि० (हि) अभिमानी घमंडी।
मिटना क्रि० (हि) १-अंकित चिह्न का नष्ट होना। २-न रह जाना।
मिटाना क्रि० १-नष्ट करना। २-चौपट करना। ३-चिह्न आदि दूर करना।
मिटिया स्त्री० (हि) मटकी। वि० मिट्टी का।
मिटियाना क्रि० (हि) मिट्टी लगाकर साफ करना।

मिठ वि० (हि) मीठा का संक्षिप्त रूप।
मिठबोला वि०(हि) मधुरभाषी। २-मन में कपट और ऊपर से मीठी बातें करने वाला।
मिठलोना वि०(हि) जिसमें लोन या नमक पड़ा हुआ हो।
मिठाई स्त्री०(हि) १-मिठास। माधुरी। २-कोई खाने का मीठा पदार्थ। ३-कोई अच्छी बात।
मिठाना क्रि० (हि) मीठा होना।
मिठौरी स्त्री० (हि) उड़द या मूँग की बड़ी।
मिडिल वि० (अ) मध्य। बीच।
मिडिलची पुं० (हि) मिडिल परीक्षा में पास या उत्तीर्ण।
मिडिलक्लास पुं० (हि) आठवीं कक्षा। मध्यम श्रेणी।
मिढ़ुलिया स्त्री० (हि) कुटी। झोंपड़ी।
मितंग पुं० (हि) हाथी।
मित वि० (स) १-परिमित। २-थोड़ा। कम।
मितद्रु पुं० (स) समुद्र।
मितभाषी पुं० (स) सोच समझ कर बोलने वाला।
मितभोजी वि० (स) थोड़ा भोजन करने वाला।
मितमति पुं० (स) थोड़ी बुद्धि वाला।
मितव्ययिता स्त्री० (स) कम खर्च करना।
मितव्ययी वि० (सं) कम खर्च करने वाला। किफा-यतसार।
मिताई स्त्री० (हि) मित्रता।
मिताक्षरा स्त्री० (स) याज्ञवल्क्यस्मृति की विज्ञानेश्वर कृत टीका।
मितार्थ वि० (सं) थोड़ी बातें कहकर अपना काम करने वाला बुद्धिमान दूत।
मिताहार पुं० (स) थोड़ा भोजन।
मिति स्त्री० (स) १-मान। परिमाण। २-हद। सीमा ३-काल की अवधि।
मिती स्त्री० (हि) १-चन्द्रमास की तिथि। २-दिन।
मितीकाटा पुं० (हि) एक एक दिन और एक एक रकम का सूद जोड़ने का सरल ढंग।
मिति-पूजना पुं० (हि) हुण्डी की मियाद पूरी होना।
मितोपभोग योजना स्त्री० (सं) उपभोग की वस्तुओं को स्वल्प मात्रा में खर्च करने की योजना। (आस्टे-

रिटी स्कीम)।
मित्त पुं० (हि) दे० 'मित्र'।
मित्र पुं०(हि) १-वह जो सब बातों में शुभचिंतक या सहायक हो। सखा। दोस्त। २-सूर्य। ३-भारत के एक प्राचीन प्रदेश का नाम। ४-युद्ध में सहायता देने वाला राष्ट्र।
मित्रकर्म पुं० (सं) मित्र के योग्य काम।
मित्रघ्न वि० (सं) १-मित्र का हत्यारा। २-विश्वासघातक।
मित्रता स्त्री० (सं) मित्र होने का भाव या धर्म।
मित्रत्व पुं० (सं) मित्रता।
मित्रद्रोह पुं० (सं) मित्र से द्रोह या शत्रुता करना।
मित्रद्रोही वि० (सं) मित्र का विरोध करने वाला।
मित्रपंचक पुं० (सं) घी, शहद, गुंजा, सुहागा, और गुग्गल इन पांचों का समूह। (वैद्यक)।
मित्रभाव पुं० (स) मित्र का धर्म। मित्रता।
मित्रभेद पुं० (सं) मित्रता का टूट जाना।
मित्रराष्ट्र पुं०(सं) मित्रतापूर्ण व्यवहार करने वाला राष्ट्र। (एलाइड पावर)।
मित्रलाभ पुं० (सं) दोस्तों का मिलना।
मित्राई स्त्री०(हि) मित्रता। दोस्ती।
मित्रावरुण पुं० (स) मित्र तथा वरुण नामक देवता।
मिथः अव्य०(सं) परस्पर। आपस में।
मिथिला स्त्री०(स) वर्तमान तिरहुत जहां राजा जनक राज करते थे।
मिथिलापति पुं० (सं) राजा जनक।
मिथुन पुं० (स) १-स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २-बारह राशियों में से एक राशि। ३-समागम। मेल (जेमिनी)।
मिथुनीकरण पुं० (सं) जोड़ा मिलाना।
मिथुनीभाव पुं०(सं) समागम। जोड़ा खाना।
मिथ्या वि० (सं) असत्य। झूठ। (फाल्स)।
मिथ्याचर्या स्त्री० (सं) झूठा या कपट व्यवहार।
मिथ्याचार पुं० (स) कपटपूर्ण आचरण।
मिथ्याजल्पित वि० (सं) झूठी चर्चा।
मिथ्याज्ञान पुं० (सं) भ्रम। भूल।
मिथ्यात्व पुं० (सं) १-मिथ्या होने का भाव। २-माया।
मिथ्याध्यवसिति स्त्री० (सं) एक काव्यालंकार जिसमें किसी एक असंभव बात को मानकर दूसरी बात कही जाती है।
मिथ्यानाम पुं० (सं) वह शब्द या नाम जो किसी वस्तु विशेष कार्य अथवा व्यक्ति के लिए उपयुक्त न हो सके। (मिसनोमर)।
मिथ्यापवाद पुं० (सं) झूठा आरोप। झूठी तोहमत।
मिथ्यापुरुष पुं० (सं) छाया पुरुष।
मिथ्याप्रतिज्ञ वि० (सं) झूठा वायदा करने वाला। विश्वासघाती।
मिथ्याभास पुं० (सं) वास्तविक स्थिति से विरुद्ध या उलटा होने वाला आभास। (पैराडॉक्स)।
मिथ्याभियोग पुं० (सं) झूठा आरोप।
मिथ्यारोपण पुं० (सं) झूठे आरोप या आधार हीन अफवाहें फैलाकर बदनाम करना। (विलिफिकेशन)
मिथ्यावचन पुं० (सं) असत्य या झूठा कथन।
मिथ्यावादी पुं० (सं) झूठ बोलने वाला।
मिथ्याहार पुं०(सं) अयुक्त आहार। ऊटपटांग खाना।
मिथ्योपचार पुं० (सं) वह चिकित्सा जो ठीक न हो
मिनकना क्रि० (हि) बहुत ही दबक कर धीरे से बोलना।
मिनट पुं० (अ) एक घण्टे का साठवां भाग।
मिनमिनाना क्रि० (हि) नाक से बोलना। नकियाना
मिनहा पुं० (अ) १-किसी में से काटा या घटाया हुआ। २-मुजरा किया हुआ।
मिनहाई स्त्री० (अ) कटौती।
मिन्नत स्त्री० (अ) १-विनय। विनती। २-दीनता।
मिन्नत-गुजार वि० (अ) आभारी। कृतज्ञ।
मिमियाना क्रि० (हि) बकरी या भेड़ का बोलना।
मियाँ पुं० (फा) १-स्वामी। मालिक। पति। ३-महाशय। ४-पहाड़ी। राजपूतों की एक उपाधि।
मियाँबीबी पुं० (फा) पति-पत्नी।
मियाँमिट्ठू पुं० (फा) १-मधुरभाषी। २-तोता। ३-महामूर्ख।
मियाद स्त्री० (हि) दे० 'मीआद'।
मियान स्त्री० (फा) १-वह खेत जो गांव के बीच में हो। २-गाड़ी का बम। ३-तलवार रखने का खोल वि० मझोले आकार का।
मियानी स्त्री(फा) पाजामें के पायंचों के बीच का कपड़ा
मिरग पुं० (हि) मृग। हिरन।
मिरगचिड़ा पुं० (हि) एक चिड़िया।
मिरगछाला स्त्री० (हि) दे० 'मृगछाला'।
मिरगी स्त्री० (हि) एक मानसिक रोग जिसमें रोगी अचानक जमीन पर गिर पड़ता है। (एपीलेप्सी)
मिरचा स्त्री० (हि) लाल मिर्च।
मिरजई स्त्री० (फा) एक प्रकार का बन्ददार कमर तक का कुरता।
मिरजा पुं० (फा) १-मीर या अमीर का लड़का। २-राजकुमार। ३-मुगलों की एक उपाधि। वि० कोमल सुकुमार।
मिरजान पुं० (फा) मूंगा।
मिरदंग पुं० (हि) दे० 'मृदंग'।
मिरवना क्रि० (हि) मिलाना।
मिरियासी स्त्री० (हि) पैतृक संपत्ति।
मिर्गी स्त्री०(हि) दे० 'मिरगी'।
मिर्च स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की फली जो बहुत

चरपरी होती है और साग आदि व्यञ्जनों में डाली जाती है। लाल मिरच। २-उक्त प्रकार का एक गोल छोटा दाना। काली मिर्च।

मिल स्त्री० (अ) १-अनाज आदि पीसने की कल जो बिजली से चलती है। २-कपड़ा आदि बनाने का बड़ा कारखाना।

मिलकना क्रि० (हि) अलगना।

मिलकी स्त्री० (अ) दे० 'मिल्की'।

मिलता-जुलता वि० (हि) समान। एक सा।

मिलन पुं०(स) १-मिलाप। भेंट। २-मिश्रण। मिलावट

मिलनसार वि० (हि) सबसे प्रेमपूर्वक मिलने-जुलने वाला।

मिलनसारी स्त्री० (हि) सबसे प्रेमपूर्वक मिलने का गुण।

मिलना क्रि०(हि) १-सम्मिलित होना। २-दो अलग अलग पदार्थों का एक होना। ३-संभोग करना। ४-मेलमिलाप होना। ५-गले लगाना। भेंट करना।

मिलनी स्त्री०(हि) कन्या पक्ष वालों का वर पक्ष वालों से मिलना तथा रुपये आदि देने की एक रस्म।

मिलवना क्रि० (हि) दे० 'मिलाना'।

मिलवाई स्त्री०(हि) दे० 'मिलाई'।

मिलवाना क्रि० (हि) १-किसी को मिलने में प्रवृत्त करना। २-परिचय कराना।

मिलाई स्त्री०(हि) १-मिलाने की मजदूरी। २-मिलनी ३-जेल के कैदियों की अपने सम्बन्धियों से भेंट।

मिलाजुला वि० (हि) [illegible]

मिलान पुं० (हि) [illegible] ३-जांचना।

मिलाना क्रि० (हि) १-सम्मिलित या मिश्रित करना। २-जोड़ना। चिपकाना। ३-तुलना करना। ४-जांच करना। ५-संधि या सुलह कराना। ६-वाद्य-यन्त्रों को सुर में करना। ७-स्त्री या पुरुष का संयोग कराना।

मिलाप पुं० (हि) १-मेल। २-भेंट। मुलाकात। ३-संयोग। ४-प्रेम। ५-मित्रता।

मिलाव पुं० (हि) १-मिलने की क्रिया या भाव। २-मिलाप।

मिलावट स्त्री० (हि) १-मिश्रण। २-बढ़िया वस्तु में घटिया या नकली वस्तु का मिश्रण। ३-खोट।

मिलिन्द पुं० (सं) भौंरा।

मिलिक स्त्री० (हि) दे० 'मिल्क'।

मिलित वि० (सं) युक्त। मिला हुआ।

मिलौनी स्त्री० (हि) १-मिलाई। २-मिलावट।

मिल्क स्त्री० (अ) १-जमींदारी। २-माल। संपत्ति। ३-अधिकार। ४-भूमि-अधिकार।

मिल्कियत स्त्री० (हि) दे० 'मिल्कीयत'।

मिल्की पुं० (अ) जमींदार। जागीरदार।

मिल्कीयत स्त्री० (अ) १-जागीर। संपत्ति। २-भूमि या सम्पत्ति पर मालिक का अधिकार।

मिल्लत स्त्री० (अ) धार्मिक सम्प्रदाय। (हि) १-मेलजोल मिलाप। २-मिलनसारी। ३-मंडली।

मिशन पुं० (अं) १-वह व्यक्ति या मंडली जो किसी विशेष कार्य के लिए कहीं भेजी जाय। २-उद्देश्य ३-वह संस्था, विशेष कर ईसाई मतावलम्बियों की, जो संघटित रूप में धर्म प्रचार का उद्योग करती है ४-दूतमंडल।

मिशनरी स्त्री० (अं) ईसाई धर्मोपदेशक। पादरी।

मिश्र वि० (सं) १-मिला हुआ। २-श्रेष्ठ। बड़ा। ३-संयुक्त। पुं० १-कुछ ब्राह्मणों के वर्ग की उपाधि। २-रक्त। ३-सन्निपात। ४-मूली।

मिश्रगुणा पुं० (हि) आने पाई या मन, सेर आदि को गुणा।

मिश्रण पुं०(सं) १-मिलावट (मिक्सचर)। २-गणित में जोड़ लगाने की क्रिया। जोड़ना।

मिश्र-धातु स्त्री० (सं) दो या दो से अधिक धातुओं को मिला कर बनाई हुई घटिया धातु। (खोंट)।

मिश्रधान्य पुं० (सं) कई प्रकार के धन जो एक में मिले हों।

मिश्रमाण पुं०(सं) मन, सेर या आने, पाई का मान (गणित)।

मिश्रशाक पुं० (सं) बैंगन।

[illegible]

मिष पुं० (सं) १-छल। कपट। २-बहाना। ३-ईर्ष्या ४-सेचन। ५-होड़।

मिष्ट वि०(सं) १-मीठा। मधुर। पुं० मिठाई। मीठा रस।

मिष्टभाषी पुं० (स) मीठा बोलने वाला। मधुरभाषी

मिष्टान्न पुं० (सं) पक्वान्न। मिठाई।

मिस पुं०(हि) १-बहाना। हीला। २-पाखंड। आडम्बर। (अं) तांबा।

मिसगार पुं० (फा) कसेरा।

मिसट्‌टा पुं० (हि) बहानेबाज। पाखंडी।

मिसकीन वि० (अ) दे० 'मिस्कीन'।

मिसकीनता स्त्री० (हि) दीनता। गरीबी। नम्रता।

मिसना क्रि० (हि) मिलना। मिश्रित होना।

मिसरा पुं० (अ) १-शेर का आधा भाग। २-पद। ३-उर्दू की कविता के लिए दी गई समस्या।

मिसरी स्त्री० (हि) १-मिस्र देश की भाषा। २-थाल आदि में जमाई हुई दानेदार चीनी।

मिसरोटी स्त्री० (हि) १-मिस्से आटे की रोटी। २-बाटी।

मिसल स्त्री० (हि) दे० 'मिसिल'।
मिसहा वि०(हि) बहानेबाज। कपटी। ढोंगी।
मिसाल स्त्री०(भ) १-उपमा। उदाहरण। २-लोकोक्ति कहावत।
मिसिल स्त्री० (भ) १-किसी एक विषय या मुकदमे से सम्बन्ध रखने वाले एक जगह किए हुए कागज-पत्र (फाइल)। २-किसी पुस्तक के अलग-अलग छापे हुए फार्म जो सिलाई के लिए रखे गए हों।
मिसिली वि० (भ) जिसकी मिसल बन चुकी हो। सजायाफ्ता।
मिस्कीन वि०(भ) १-दीन। बेचारा। २-गरीब। ३-सीधासाधा।
मिस्कीनी स्त्री०(भ) १-दीनता। २-गरीबी। ३-सुशीलता।
मिस्कोट पु० (हि) १-गुप्त परामर्श। २-भोजन। ३-एक साथ भोजन करने वाले।
मिस्टर पुं० (ध) महाशय।
मिस्तरी पुं०(हि) यंत्रों की मरम्मत करने, काठ, धातु की वस्तुएँ बनाने का कारीगर।
मिस्तरीखाना पुं० (हि) लोहार और बढ़ई दोनों का एक जगह बैठकर काम करने का स्थान।
मिस्मरेजम पुं० (हि) इच्छा शक्ति से दूसरे आदमी को मूर्छित या अपने वश में करने की विद्या।
मिस्र पुं० (भ) उत्तरी अफ्रीका में स्थित एक प्राचीन देश।
मिस्री स्त्री० (हि) १-दे० 'मिसरी'। २-मिस्र देश की भाषा।
मिस्ल वि०(भ) सामान्य। तुल्य। बराबर।
मिस्सा पुं० (हि) १-कई प्रकार की दालों को पीसकर बनाया गया आटा। २-मूंग उड़द आदि दालों का भूसा।
मिस्सी स्त्री० (हि) स्त्रियों के शृंगार की एक वस्तु। जिसके मलने पर मसूड़े काले पड़ जाते हैं।
मिस्सी-काजल पुं० (हि) बनाव-शृङ्गार।
मिहचना क्रि० (हि) दे० 'मीचना'।
मिहानी स्त्री० (हि) मथानी।
मिहिचना, मिहीचना क्रि० (हि) दे० 'मीचना'।
मिहिर पुं० (सं) १-सूर्य। २-बादल। ३-चन्द्रमा। ४-पवन।
मिहीं वि० (हि) महीन। बारीक।
मींगनी स्त्री० (हि) दे० 'मेंगनी'।
मींग स्त्री० (हि) बीज का गूदा। गिरी।
मींजना क्रि० (हि) १-हाथों को मलना। मसलना। २-आंखें बन्द करना।
मींडना क्रि० (हि) हाथों को मसलना या मलना।
मीआद स्त्री० (भ) अवधि। मियाद।
मीआदी वि० (हि) १-जिसके लिए अवधि नियत हो २-जो कारागार रह चुका हो।
मिआदी-बुखार पुं०(हि) वह बुखार जो नियत अवधि पर बिना दवाई उतर जाता है। सन्निपात। (टाइफाइड)।
मीच स्त्री० (हि) मृत्यु।
मीचना क्रि० (हि) (आंखें) मूँदना या बन्द करना।
मीचु स्त्री० (हि) मौत। मृत्यु।
मीजना क्रि० (हि) मसलना। मलना।
मीजान स्त्री० (भ) १-तुला। तराजू। २-योग। जमा (गणित)।
मीटर पुं० (भ) बिजली, पानी या किसी और वस्तु के नापने का यन्त्र।
मीठा वि० (हि) १-मधुर। २-स्वादिष्ट। ३-धीमा। सुस्त। ४-साधारण। ५-नपुंसक। ६-प्रिय। पुं० १-मिठाई। २-गुड़। ३-मीठा नीबू।
मीठाकद्दू पुं० (हि) कुम्हड़ा। सीताफल।
मीठाचावल पुं०(हि) चीनी या गुड़ डालकर उबाला हुआ चावल।
मीठाठग पुं० (हि) मीठा बोल कर ठगने वाला मित्र
मीठातंबाकू पुं० (हि) वह पीने का तम्बाकू जिसमें शीरा और गुड़ अधिक मिलाया गया हो।
मीठातेल पुं० (हि) तिल का तेल।
मीठानीम पुं० (हि) एक छोटा वृक्ष जिसमें मीठी गंध निकलती है।
मीठापानी पुं० (हि) नीबू का सत, और गैस मिला बोतल में बन्द पानी। (लेमोनेड)।
मीठा बरस पुं०(हि) स्त्रियों की अवस्था का अठारहवां वर्ष।
मीठाभात पुं० (हि) दे० 'मीठा चावल'।
मीठामीठा वि० (हि) थोड़ा-थोड़ा।
मीठी वि० (हि) मधुर। मिठास वाली।
मीठीछुरी वि०(हि) विश्वासघातक। कपटी। छली।
मीठीतूंबी स्त्री० (हि) कद्दू।
मीठीनजर स्त्री० (हि) प्रेम भरी दृष्टि।
मीठीनींद स्त्री० (हि) सुख की नींद
मीठीमार स्त्री० (हि) प्रेम की मार।
मीठीलकड़ी स्त्री० (हि) मुलेठी।
मीड़ स्त्री०(हि) स्वर बदलने का सुन्दर ढंग। (संगीत)
मीत पुं० (हि) मित्र।
मीन स्त्री० (स) १-मछली। २-एक राशि। ३-एक नक्षत्र। (पिसेस)।
मीनकेतन पुं० (स) कामदेव।
मीनक्षेत्र पुं० (सं) १-मछलियों को सुरक्षित रखने तथा उनकी नसल बढ़ाने का क्षेत्र। २-वह राजकीय-विभाग जिसके अधीन मछलियों के संवर्धन, क्रय-विक्रय आदि की व्यवस्था की जाती है। (फिशरीज)।

मीनगंधा स्त्री० (सं) सत्यवती। मत्स्यगंधा।
मीनध्वज पुं० (सं) कामदेव।
मीन मेख पुं० (हि) १-सोचविचार। २-असमंजस। ३-दोष निकालना।
मीना पुं० (फा) १-नीले रङ्ग का पत्थर। २-सुराही। ३-सोने चांदी पर किया जाने वाला एक प्रकार का रङ्गीन काम। ४-शराब। ५-रङ्गबिरंगा शीशा।
मीनाकार पुं० (फा) सोने चांदी आदि पर मीना करने वाला।
मीनाकारी स्त्री० (फा) १-सोने पर रङ्ग-बिरङ्गा किया जाने वाला काम। २-दूसरे के काम में दोष निकालना।
मीनाबाजार पुं० (फा) बहुत सुन्दर और सजा हुआ बाजार जहाँ क्रयविक्रय स्त्रियां ही करती हैं।
मीनार (फा) १-बहुत ऊँचा और गोलाकार स्तम्भ या इमारत। लाट। धरहरा।
मीनालय पुं० (सं) समुद्र।
मीमांसक पुं० (सं) मीमांसा या विवेचन करने वाला।
मीमांसा स्त्री० (सं) १-तर्कवितर्क द्वारा यह अनुमान लगाना कि कोई बात कैसी है। २-हिन्दुओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन।
मीमांसासूत्रकार पुं० (सं) मीमांसा सूत्र के रचयिता जैमिनी ऋषि।
मीयाद स्त्री० (अ) दे० 'मियाद'।
मीर पुं० (सं) १-समुद्र। २-सीमा। ३-जल। ४-पर्वत का भाग। पुं० (फा) १-सरदार। नेता। २-मुसलमानों के सैयदों की एक उपाधि। ३-ताश के बादशाह का पत्ता। ४-कोई प्रतियोगिता जीतने वाला।
मीरजा पुं० (हि) दे० 'मिर्जा'।
मीर-म शी पुं० [illegible]

[illegible]

मीरासी पुं०(अ) एक मुसलमान जाति जो गाने बजाने का काम करती है।
मील पुं० (अ) १७६० गज का एक माप। (माइल)।
मीलित वि० (सं) १-मूंदा हुआ। २-सिकोड़ा हुआ। पुं० एक अलङ्कार।
मुंगरा पुं० (हि) १-लकड़ी का हथौड़ा। २-नमकीन बुंदियां।
मुंगरी स्त्री० (हि) छोटा मुंगरा।
मुंगौड़ी स्त्री० (हि) मूंग की बनी हुई बड़ी।
मुंगौरी स्त्री० (हि) दे० 'मुंगौड़ी'।
मुंचन पुं० (हि) दे० 'मोचन'।
मुंज पुं० (हि) मूंज।
मुंजमणि पुं० (हि) पुखराज।
मुंजमेखला स्त्री० (हि) मूंज की बनी करधनी।

मुंड पुं० (सं) १-खोपड़ी। सिर। २-कटा हुआ सिर ३-नाई। वृक्ष का ठूँठ। वि० मुंडा हुआ। बिना बाल का।
मुंडक पुं० (सं) १-नाई। सिर।
मुंडकर पुं० (सं) प्रति व्यक्ति पर लगने वाला कर (पोल टैक्स)।
मुंडकरी स्त्री०(हि) दोनों घुटनों के बीच में सिर रखने की मुद्रा।
मुंडचिरा पुं० (हि) वह मुसलमान फकीर जो भिक्षा न मिलने पर सिर को घायल कर लेते हैं।
मुंडचिरायन पुं० (हि) लेनदेन के काम में झगड़ा।
मुंडन पुं० (सं) १-सिर या किसी अंग के बाल साफ करना। २-बच्चों के पहली दफा बाल बनवाने का संस्कार।
मुंडना क्रि० (हि) १-उस्तरे आदि से सिर के बाल उतरवाना। लुटना या ठगा जाना।
मुंडमाला स्त्री० (स) कटे हुए सिरों की माला।
मुंडमाली पुं० (सं) शिव। कटे हुए मुंडों की माला पहनने वाला।
मुंडला पुं० (हि) १-चरखे के बीच का भाग। २-एक जंगली जाति।
मुंडा पुं० (हि) १-वह जिसके बाल मुंडे हुए हों। २-सिर मुंडा कर जो साधु बन गया हो। ३-बिना सींग का पशु। ४-लौंडा (पंजाबी)। ५-महाजनी लिपि। ६-एक जाति। ७-बिना नोक का जूता। मुर्गाबी। ८-एक आदिवासी जाति। (स) १-संन्यासिनी। २-वह स्त्री जिसके बाल मुंडवा दिए हों। (हि) बिना बाल या सींग का गंजा।
मुंडाई स्त्री० (हि) मूंडने की क्रिया या मजदूरी।
मुंडाना क्रि० (हि) दे० 'मुड़ाना'।
[illegible] ी या साफ

[illegible] -सिर मुंडा साधु। ३-बिना मात्रा की महाजनी भाषा।
मुंडी स्त्री० (हि) १-वह स्त्री जिसका सिर मुंडा हो। २-विधवा। ३-एक प्रकार की जूती। ४-महाजनी भाषा। वि० (स) बिना बाल या सींग का। पुं० १-शिव। २-नाई।
मुंडेर स्त्री० (हि) १-मुंडेरा। २-खेत के चारों ओर मेड़ या ढोला।
मुंडेरा पुं० (हि) १-छाती की दीवार का ऊपर उठा हुआ भाग। २-किसी प्रकार का बांधा हुआ पुश्ता
मुंडेरी स्त्री० (हि) छोटा मुंडेरा।
मुंडो स्त्री० (हि) १-सिर मुंडी स्त्री। २-विधवा। (गाली)।
मुंतजिम पुं० (अ) प्रबंध करने वाला। व्यवस्थापक।
मुंतज़िर वि० (अ) प्रतीक्षा करने वाला।

मुँदना क्रि०(हि) १-बन्द होना। २-छिपना। ३-छिद्र आदि का पूर्ण होना।
मुँदरी स्त्री० (हि) १-अंगूठी। २-सादा उँगली में पहनने का छल्ला।
मुंशियाना वि० (हि) मुंशियों का सा।
मुंशी पुं० (अ) १-लिखने का काम करने वाला। लिपिक। २-उर्दू या फारसी का अध्यापक। ३-मजमून लिखने वाला।
मुंशीगिरी स्त्री० (अ) मुंशी का काम या पद।
मुंसरिम पुं० (अ) १-प्रबंधक। २-समाहर्त्रालय (कलक्टरेट) का प्रधान कर्मचारी।
मुंसिफ पुं० (अ) १-न्याय करने वाला। २-दीवानी विभाग का न्यायाधीश जो छोटे मुकदमे करता है।
मुंसिफी स्त्री० (अ) १-मुंसिफ का पद। २-मुंसिफ की अदालत। ३-न्यायशीलता।
मुँह पुं० (हि) १-प्राणियों का वह अंग जिससे वे बोलने और खाते हैं। २-चेहरा। ३-किसी वस्तु का ऊपरी कुछ खुला हुआ भाग। ४-छिद्र। ५-सामना। ६-साहस। हिम्मत। अव्य० ओर। तरफ
मुँह-अँधेरे अव्य (हि) बहुत सवेरे। तड़के।
मुँह-अखरी वि० (हि) जबानी।
मुँहचंग पुं० (हि) एक प्रकार का बाजा।
मुँहचटौवल स्त्री० (हि) १-चुम्बन। २-बकवाद।
मुँहचोर वि० (हि) झेंपू। दूसरों के सामने आने से कतराने वाला।
मुँहचोरी स्त्री० (हि) मुंहचोर होने का भाव।
मुँहछुआई स्त्री० (हि) केवल ऊपरी मन से कुछ कहना।
मुँहछुट वि० (हि) मुँहफट।
मुँहजोर वि० (हि) १-बकवादी। २-उद्दण्ड। मुँहफट
मुँहजोरी स्त्री० (हि) १-उद्दण्डता। अक्खड़पन।
मुँह-दर-मुँह अव्य० (हि) सामने।
मुँहदिखाई स्त्री०(हि) पहली बार वधु के ससुराल आने पर मुँह देखने की रस्म या उसमें दिया गया धन।
मुँह-देखा वि० (हि) १-दिखाऊ। २-केवल सामने होने वाला। ३-सदा आज्ञा की प्रतीक्षा में रहने वाला।
मुँह-पातर वि० (हि) बकवादी।
मुँह-फट वि० (हि) जो अनुचित या कटु बात कहने में संकोच न करता हो।
मुँह-बंद वि० (हि) १-जिसका मुँह खुला न हो। २-कुमारी।
मुँह-बंधा पुं० (हि) जैन साधु जो मुँह पर कपड़ा बांधते हैं।
मुँह-बोला वि० (हि) माना हुआ। मुँह से कहकर बनाया हुआ।
मुँह-भर अव्य० (हि) अच्छी तरह से। दिल से।
मुँह-माँगा वि० (हि) अपनी इच्छा के अनुकूल।
मुँह-लगा वि० (हि) हठी। जिद्दी। शोख।
मुँहाचही स्त्री० (हि) शेखी बघारना। डींग मारना।
मुँहामुँह अव्य० (हि) मुँह तक। भरपूर। लबालब।
मुँहासा पुं०(हि) युवावस्था में मुँह पर निकलने वाले दाने।
मुअज्जम वि० (अ) बुजुर्ग। पूज्य।
मुअज्जिन पुं०(अ) वह जो मस्जिद से नमाज के लिए सबको बुलाने के लिए अजाँ देता है।
मुअत्तल वि० (अ) १-जिसके पास काम न हो। २-जो अभियोग लगने के कारण जाँच के अन्तिम निर्णय तक के लिए अपने स्थान से हटा दिया गया हो।
मुअत्तली स्त्री० (अ) काम से कुछ समय तक अलग कर दिया जाना।
मुअल्लिम पुं० (अ) शिक्षक। अध्यापक।
मुआ वि० (हि) मरा हुआ। मृत।
मुआइना, मुआयना पुं० (अ) निरीक्षण।
मुआफ वि० (अ) दे० 'माफ'।
मुआफिक वि० (अ) दे० 'मुवाफिक'।
मुआफिकत स्त्री० (अ) १-अनुरूपता। २-अनुकूलता। ३-मित्रता।
मुआमला पुं० (अ) दे० 'मामला'।
मुआवजा पुं० (अ) १-बदला। पलटा। २-हानि के बदले में मिलने वाला धन।
मुकट पुं० (हि) दे० 'मुकुट'।
मुकतई स्त्री० (हि) १-मुक्ति। २-छुटकारा।
मुकता पुं० (हि) दे० 'मुक्ता'। वि० अधिक। बहुत
मुकतालि स्त्री० (हि) दे० 'मुक्तावली'।
मुकति स्त्री० (हि) दे० 'मुक्ति'।
मुकदमा पुं० (हि) १-वह विवाद जो किसी पक्ष द्वारा न्यायालय के सम्मुख निर्णय के लिए रखा गया हो दावा। नालिश।
मुकदमेबाज वि० (हि) प्रायः मुकदमे लड़ने वाला।
मुकदमेबाजी स्त्री० (हि) मुकदमा लड़ने का कार्य।
मुकद्दम वि० (अ) १-प्राचीन। पुराना। २-आवश्यक ३-सर्वश्रेष्ठ।
मुकद्दमा पुं० (अ) दे० 'मुकदमा'।
मुकद्दर पुं० (अ) भाग्य। प्रारब्ध।
मुकद्दरआजमाई स्त्री०(अ) भाग्य या मुकद्दर की परीक्षा करना।
मुकना क्रि०(हि) १-मुक्त होना। छूटना। २-समाप्त होना।
मुकम्मल वि० (अ) पूरा किया हुआ। पूर्ण।
मुकरना क्रि० (हि) १-कोई बात कहकर उससे फिर जाना। २-मुक्त होना।
मुकरी स्त्री० (हि) वह कविता जिसमें पहले कही गई बात से मुकरते हुए फिर और तरह बात बनाते हुए कहा जाय।

मुड़ना क्रि०(हि) १-घूमकर या बल खाकर किसी ओर जाना। २-किसी वस्तु का दबकर झुकना। ३-घूम जाना।
मुड़ला वि०(हि) गंजा।
मुड़वारी स्त्री०(हि) १-मुँडेरा। २-सिरहाना।
मुड़वाना क्रि० (हि) १-उस्तरे से बाल उतारना। २-मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना।
मुड़हर पुं० (हि) स्त्रियों की साड़ी का सिर पर का भाग। २-सिर का अग्रभाग।
मुड़ाना क्रि० (हि) मुंडन करना। मुंडाना।
मुड़िया पुं० (हि) १-महाजनी लिपि। २-सिर मुँडा हुआ व्यक्ति।
मुतअल्लिक वि० (अ) १-सम्बद्ध। सम्मिलित। अव्य० सम्बन्ध में। विषय में।
मुतअल्लिम पुं० (अ) शिक्षार्थी।
मुतक्का पुं० (देश) १-मुँडेरा। २-छोटा खंभा। ३-मीनार।
मुतफन्नी वि० (अ) चालाक। धोखेबाज।
मुतफर्रिकात स्त्री० (अ) १-फुटकर वस्तुएँ। २-फुटकर व्यय की मद।
मुतवन्ना पुं० (अ) दत्तक पुत्र। वि० गोद लिया हुआ
मुतलक अव्य० (अ) कुछ भी। तनिक भी। वि० निपट निरा। बिल्कुल।
मुतलाशी वि० (हि) ढूँढने या तालाश करने वाला।
मुतवज्जह वि०(अ) जिसने किसी की ओर ध्यान दिया हो। प्रवृत्त।
मुतवल्ली पुं० (अ) किसी नाबालिग और उसकी संपत्ति का रक्षक। वली।
मुतसद्दी पुं० (अ) १-लेखक। मुंशी। २-प्रबन्धकर्ता ३-मुनीम। पेशकार।
मुतसिरी स्त्री० (हि) मोतियों की माला या कण्ठी।
मुताबिक अव्य०(अ) अनुसार। वि० अनुकूल। समान
मुतालबा पुं० (अ) पावना। प्राप्तव्य धन।
मुतास स्त्री० (हि) मूतने की इच्छा।
मुताह पुं०(अ) मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह।
मुताही वि० (अ) जिसके साथ मुताह किया गया हो। रखेली (स्त्री)।
मुतिलाड़ू पुं० (हि) मोतीचूर का लड्डू।
मुतेहरा पुं० (हि) कलाई में पहनने का एक गहना।
मुत्तला वि० (अ) जिसे सूचित किया गया हो।
मुत्तहिदा वि० (अ) संयुक्त। इकट्ठा।
मुद पुं० (सं) हर्ष। आनन्द।
मुदर्रिस पुं० (अ) अध्यापक।
मुदर्रिसी स्त्री०(अ) १-अध्यापक। २-मुदर्रिस का पद।
मुदवंत वि० (सं) प्रसन्न। खुश।
मुदा अव्य० (अ) मगर। किन्तु। परन्तु। स्त्री० (सं) आनन्द।
मुदाखलत स्त्री०(अ) बाधा डालना। अड़चन डालना। रोक-टोक।
मुदाखलत बेजा स्त्री० (अ) किसी के घर जाकर बिना आज्ञा लिए लौट आना।
मुदाम अव्य० (अ) १-सदैव। हमेशा। सदा। २-निरंतर। ३-ठीक-ठीक।
मुदामी वि० (अ) सदा होता रहने वाला।
मुदित वि० (सं) प्रसन्न। खुश।
मुदिता स्त्री० (सं) १-साहित्य में वह नायिका जो पर-पुरुष प्रीति संबंधी कामना की आकस्मिक प्राप्ति से प्रसन्न होती है। २-हर्ष। आनन्द।
मुदिर पुं० (सं) १-बादल। २-मेंढक। ३-कामुक।
मुद्गर पु० (हि) दे० 'मुगदर'।
मुद्दई पुं० (अ) बादी। २-शत्रु। बैरी।
मुद्दत स्त्री (अ) १-अवधि। २-बहुत दिन।
मुद्दती वि० (अ) जिसकी कोई अवधि नियत हो।
मुद्दालेह पुं० (अ) प्रतिवादी। जिस पर दीवानी दावा हो।
मुद्ध वि० (हि) दे० 'मुग्ध'।
मुद्धा पुं० (देश) टसना।
मद्धी स्त्री० (देश) खिसकने वाली रस्सी की गांठ।
मुद्र पुं० (सं) छपाई आदि में काम आने वाले सीसे के बने अक्षर। (टाइप)
मुद्रक पुं० (सं) १-छापने वाला। समाचार पत्र आदि का वह अधिकारी जिसपर उस के छापने का उत्तर-दायित्व होता है (प्रिंटर)।
मुद्रण पुं० (सं) छपाई। २-ठप्पे आदि की सहायता से मुद्रा तैयार करना। (प्रिंटिंग)।
मुद्रणयंत्र पुं० (सं) १-छपाई यंत्र जिससे पुस्तक तथा समाचार पत्र आदि छापे जाते हैं (प्रिंटिंग मेशीन)।
मुद्रणस्वातंत्र्य पुं०(सं) किसी भी समाचार को (केवल अश्लील और राजद्रोह या हिंसा प्रवर्तक लेखों को छोड़ कर) स्वतंत्रता-पूर्वक अपनी सम्मति या खबरों को देने की स्वतंत्रता। (फ्रीडम आफ दि प्रेस)।
मुद्रणालय पुं० (सं) छापाखाना। (प्रिंटिंग-प्रेस)।
मुद्रधान पुं० (सं) छपाई के टाईप रखने का खानेदार ढांचा। (टाइप केस)।
मुद्रलिख पुं० (सं) कागज आदि पर छापे के अक्षर हाथ द्वारा छापने का यंत्र। (टाइप राइटर)।
मुद्रलिखित वि० मुद्रलिख द्वारा लिखित कागज। (टाइप्ड)।
मुद्रलिखित-प्रति स्त्री० (सं) मुद्रलिख द्वारा छापी गई प्रति। (टाइप्ड-कॉपी)।
मुद्रलेखक पुं० (सं) मुद्रलिख से कागज या पत्र छापने वाला। (टाइपिस्ट)।
मुद्रलेखन पुं० (सं) मुद्रलिख द्वारा पत्र आदि छापने

का कार्य। (टाइपिंग)।

मुद्रलेखन-अनुभाग पु० (सं) किसी कार्यालय या विभाग में मुद्रलेखन का अनुभाग। (टाइपिंग सेक्शन)।

मुद्रलेखन-पत्र पुं० (सं) मुद्रलित्र द्वारा छापने का कागज। (टाइपिंग पेपर)।

मुद्रलेखनयंत्र पुं० (सं) मुद्रलित्र। (टाइपराइटर)।

मुद्रांक पुं० (सं) धातु का बना हुआ वह उपकरण जिस पर उलटे अक्षर खुदे होते हैं और जिसे लाख लगाकर किसी कागज की प्रामाणिकता सिद्धि करने के लिए अंकित करते हैं। (सील)।

मुद्रांकन पुं० (सं) १-मुद्रा की सहायता से अंकित करने का काम। २-छपाई।

मुद्रांक-शुल्क पुं० (सं) सरकार द्वारा मुकदमे आदि के कागजों पर लगने वाला कर। (स्टैम्प ड्यूटी)।

मुद्रांकित वि० (सं) जिस पर मुद्रा लगा दी गई हो। मोहर किया हुआ। (सील्ड)।

मुद्रा स्त्री० (सं) १-किसी के नाम की छाप। मोहर। (सील)। २-रुपया-पैसा। ३-अँगूठी। ४-सीसे के छपाई के ढले हुए अक्षर। (टाइप)। ५-खड़े होने या बैठने का कोई विशेष ढंग। (पोस्चर)। ६-कहीं जाने का परवाना या आज्ञापत्र।

मुद्राकार पु० (सं) मोहर या मुद्रा बनाने वाला।

मुद्राध्यक्ष पुं० (सं) कहीं जाने का पारपत्र (पासपोर्ट) देने वाला अधिकारी।

मुद्राबाहुल्य पुं० (सं) दे० 'मुद्रास्फीति'।

मुद्रायंत्र पु० (सं) छापने की मशीन। (प्रेस)।

मुद्रारक्षक पुं० (सं) वह राजकीय अधिकारी जिसके पास सरकारी मोहर रहती है।

मुद्रालिपि स्त्री० (सं) छापी हुई लिपि। छाप।

मुद्रा-विज्ञान पुं० (सं) दे० 'मुद्राशास्त्र'।

मुद्रा-विस्तार पुं० (सं) दे० 'मुद्राशास्त्र'।

मुद्रा-शास्त्र पु० (सं) पुराने सिक्कों से प्राचीन इतिहास का विवेचन करने वाला शास्त्र। (न्यूमिसमैटिक्स)

मुद्रास्फीति स्त्री० (सं) किसी देश में जनता में आवश्यकता से अधिक नोटों (छपी हुई कागजी मुद्रा) का परिचलन होना जिससे वस्तुओं का मूल्य बढ़ जाता है। (इन्फ्लेशन)। मुद्रा का फैलाव।

मुद्रास्फीतिरोधक वि० (सं) मुद्रा के फैलाव को रोकने के लिए किये गये उपाय। (एन्टी इन्फ्लेशनरी)।

मुद्रिक स्त्री० (सं) दे० 'मुद्रिका'।

मुद्रिका स्त्री० (सं) १-वह अंगूठी जिस पर मुहर बनी होती है। २-अंगूठी। ३-सिक्का।

मुद्रित वि०(सं) १-जिसकी मुद्रण हुआ हो। [illegible] किया हुआ। (सील्ड)।

मुधा अव्य० (सं) व्यर्थ। बेफायदा। वि० १-[illegible] बोजन। २-मिथ्या। झूठ। पुं० [illegible]।

मुनक्का पुं० (अ) बड़ी किशमिश। [illegible]

अंगूर।

मुनहसर वि० (हि) दे० 'मुनहसिर'।

मुनहसिर वि० (अ) आश्रित। अवलंबित।

मुनादी स्त्री० (अ) ढोल आदि पीटकर की जाने वाली घोषणा। ढिंढोरा।

मुनाफा पु० (अ) लाभ। नफा।

मुनारा पुं० (हि) दे० 'मीनार'।

मुनासिब वि० (अ) उचित। योग्य। ठीक।

मुनि पु० (सं) १-वह जो मनन करे। २-तपस्वी। त्यागी। ३-सात की संख्या।

मुनिकुमार पुं० (सं) कम आयु का मुनि।

मुनिभक्त पुं० (सं) तिन्नी नामक चावल।

मुनिभोजन पुं० (सं) दे० 'मुनिभक्त'।

मुनियाँ स्त्री० (देश) लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनींद्र पुं० (सं) १-ऋषि श्रेष्ठ। २-बुद्धदेव।

मुनी पुं० (हि) दे० 'मुनि'।

मुनीम पुं०(हि)१-सहायक। २-आय व्यय का हिसाब लिखने वाला लिपिक।

मुनीमखाना पुं० (हि) मुनीमों के बैठने का स्थान।

मुनीमी स्त्री० (हि) मुनीम का कार्य या पद।

मुनीश, मुनीश्वर पु० (सं) १-मुनियों में श्रेष्ठ। २-भगवान बुद्ध। ३-विष्णु।

मुन्ना, मुन्नू पु० (देश) १-छोटों के लिए प्रेमसूचक शब्द। २-प्रिय।

मुन्यन्न पुं० (सं) मुनियों के खाने का अन्न।

मुफलिस वि० (अ) निर्धन। गरीब।

मुफलिसी [illegible] (अ) गरीबी। निर्धनता।

मुफस्सिल [illegible]

मुफस्सल वि० (अ) विस्तृत। [illegible]। पुं० [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२-प्रेमी।
मुषल पुं० (सं) १-मूसल। २-विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
मुषली स्त्री० (सं) १-तालमूलिका। २-छिपकली।
मुषित वि० (सं) १-चुराया हुआ। २-ठगा हुआ।
मुषीवान् पुं० (सं) चोर।
मुषुर स्त्री० (हि) गूँजने का शब्द। गुंजार।
मुष्टि स्त्री० (सं) १-मुट्ठी। मुक्का। २-मूँठ। ३-चोरी ४-अकाल। ५-मुट्ठी भर मात्रा। वि० (हि) मौन।
मुष्टिक पुं० (सं) १-कंस के दरबार के एक पहलवान का नाम। २-घूँसा। ३-सुनार।
मुष्टिकांतक पुं० (सं) बलराम।
मुष्टिका स्त्री० (सं) १-मुक्का। घूँसा। २-मुट्ठी।
मुष्टिद्यूत पुं० (सं) एक प्रकार का जुआ।
मुष्टिद्वंद्व पुं० (सं) गद्दीदार दस्ताने पहन कर घूँसे से एक दूसरे पर प्रहार करने का द्वंद्व। (बॉक्सिंग)।
मुष्टिबंध पुं० (सं) मुट्ठी बांधना।
मुष्टिभिक्षा स्त्री० (सं) एक मुट्ठी चावल की भिक्षा।
मुष्टिमेय वि०(सं) १-मुट्ठी भर। २-थोड़ा। अल्प।
मुष्टियुद्ध पुं० (सं) मूके या घूँसों की लड़ाई। (बाक्सिंग)।
मुसकनि स्त्री० (हि) मुस्कराहट।
मुसकनिया स्त्री० (हि) दे० 'मुस्कान'।
मुसकराना क्रि०(हि) बहुत मंद रूप से हँसना। होठों में हँसना।
मुसकराहट स्त्री० (हि) मुस्कराने का भाव या क्रिया। मधुर मन्दहास।
मुसकान स्त्री० (हि) दे० 'मुसकराहट'।
मुसकाना क्रि० (हि) मुसकराना।
मुसकानि क्रि० (हि) दे० 'मुसकराहट'।
मुसकिराना क्रि० (हि) दे० 'मुसकराना'।
मुसकिराहट स्त्री० (हि) दे० 'मुसकराना'।
मुसक्यान स्त्री० (हि) दे० 'मुसकाना'।
मुसक्याना क्रि० (हि) दे० 'मुसकराना'।
मुसजर स्त्री० (हि) दे० 'मुशज्जर'।
मुसटी स्त्री० (हि) चुहिया।
मुसना क्रि० (हि) अपहृत होना। चुराया जाना।
मुसन्ना पुं० (म) १-प्रतिलिपि। २-प्रतिपर्ण। रसीद का वह भाग जो देने वाले के पास रह जाती है।
मुसब्बर पुं० (अ) ग्वारपाठा का जमा कर सुखाया हुआ रस जो औषध के काम आता है।
मुसमंद वि० (हि) ध्वस्त। नष्ट।
मुसम्मात स्त्री० (अ) १-नाम्नी। नामधारिणी। स्त्री। औरत।
मुसल पुं० (सं) मूसल।
मुसलधार अव्य० (सं) दे० 'मूसलाधार'।
मुसलमान पुं० (अ) मुहम्मद साहब के चलाए हुए इस्लामी संप्रदाय का अनुयायी।
मुसलमानी वि०(अ) मुसलमान संबंधी। स्त्री० १-छोटे बालकों की इन्द्री के अग्रभाग का चमड़ा काटने की मुसलमानों की एक रीति। २-मुसलमान स्त्री।
मुसलायुध पुं० (सं) बलराम।
मुसलिम पुं० (अ) मुसलमान।
मुसलिम-लीग स्त्री० (अ) सन् १९०६ में स्थापित मुसलमानों की एक राजनैतिक संस्था।
मुसली स्त्री० (सं) एक वनस्पति की जड़ जो वीर्य पौष्टिक होती है।
मुसल्लम वि०(अ) अखण्ड। पूरा। साबुत।
मुसल्ला पुं० (अ)१-एक चटाई या दरी जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है। २-एक बड़े दीये के आकार का एक पात्र। ३-ईदगाह। पुं० (देश) मुसलमान।
मुसव्विर पुं० (अ) १-चित्रकार। २-बेल बूटे बनाने वाला।
मुसव्वरी स्त्री० (अ) १-चित्रकारी। २-बेल बूटे बनाने का काम
मुसहर पुं० (हि) एक आदिवासी जाति जो पत्तों के दोने बनाने का काम करती है।
मुसाफिर पुं० (अ) यात्री। पथिक।
मुसाफिरखाना पुं० (अ) १-यात्रियों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। २-रेल के स्टेशन पर मुसाफिरों के ठहरने के लिये बना हुआ स्थान।
मुसाफिर गाड़ी स्त्री०(अ) वह रेलगाड़ी जो मुसाफिरों को ले जाती है। (पैसेंजर ट्रेन)।
मुसाफिरत स्त्री० (अ) दे० 'मुसाफिरी'।
मुसाफिरी स्त्री० (अ) यात्रा। पर्यटन।
मुसाहत स्त्री० (अ) राजा या धनवानों के साथ उठने बैठने वाले या सहवासी होने का भाव या क्रिया।
मुसाहिब पुं० (अ) १-सहवासी। २-साथ उठने बैठने वाला (विशेषतः राजा या धनवानों का)।
मुसाहिबी स्त्री० (अ) मुसाहिब का काम या पद।
मुसीबत स्त्री० (अ) १-कष्ट। तकलीफ। २-विपत्ति। संकट।
मुसीबतजदा वि० (अ) जो किसी विपदा में फँसा हो। दुखिया।
मुसुकाना क्रि० (हि) दे० 'मुसकराना'।
मुसुकाहट स्त्री० (हि) दे० 'मुसकराहट'।
मुसौवर पुं० (हि) दे० 'मुसव्विर'।
मुस्कराना क्रि० (हि) दे० 'मुसकराना'।
मुस्कराहट स्त्री० (हि) दे० 'मुस्कराहट'।
मुस्क्यान स्त्री (हि) दे० 'मुसकान'।
मुस्टंडा वि०(हि) १-मोटा-ताजा। हृष्टपुष्ट। २-गुण्डा बदमाश।
मुस्त पुं० (सं) नागरमोथा।
मुस्तक पुं० (सं) नागरमोथा।

मूर्छित वि० (सं) १-अचेत। बेसुध। २-भस्म किया हुआ (पारा आदि)।

मूर्त वि० (सं) १-साकार। २-कठिन (कंक्रीट)। ३-मूर्छित।

मूर्ति स्त्री० (सं) १-शरीर। देह। २-ठोसपन। ३-आकृति। स्वरूप। सूरत। ४-किसी की आकृति के अनुरूप गढ़ी हुई प्रतिमा। विग्रह। ५-चित्र।

मूर्तिकला स्त्री० (सं) मूर्ति बनाने की कला।

मूर्तिकार पुं० (सं) मूर्ति या तस्वीर बनाने वाला।

मूर्तिपूजक पुं० (सं) मूर्ति पूजने वाला।

मूर्तिभंजक पुं० (सं) १-मूर्ति को व्यर्थ समझ कर तोड़ने वाला।

मूर्तिमान् वि०(सं) जो शरीर के रूप में हो। सशरीर। प्रत्यक्ष। गोचर।

मूर्द्ध, मूर्ध पुं० (सं) सिर।

मूर्धखोल पुं० (सं) छतरी। छाता।

मूर्धज वि०(सं) सिर से उत्पन्न होने वाला। पुं० बाल केश।

मूर्धन्य वि० (सं) १-मूर्धा से सम्बन्ध रखने वाला। २-मस्तक में स्थित।

मूर्धन्य-वर्ण पुं०(सं) वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्धा से होता है जैसे-ऋ, ट, ठ आदि।

मूर्धवेष्टन पुं० (सं) साफा। पगड़ी।

मूर्धा स्त्री० (सं) सिर।

मूर्धाभिषिक्त वि० (सं) जिसके माथे पर तिलक लगाया गया हो। सर्वमान्य।

मूर्धाभिषेक पुं०(सं) सिर पर अभिषेक या जल सिंचन होना। (राज्याभिषेक)।

मूल पुं० (सं) १-जड़। कन्द। २-आरम्भ। ३-उत्पत्ति हेतु। ४-असल धन। ५-पूँजी। ६-आधार। नींव। ७-स्वयं ग्रन्थकार द्वारा लिखित ग्रन्थ। (ओरिजिनल)। ८-पड़ोस। ९-निकुञ्ज। वि० मुख्य प्रधान। (बेसिक)।

मूलक (सं) १-मूली। कन्दमूल। २-एक स्थावर विष। ३-मूलनक्षत्र। वि० १-उत्पन्न करने वाला। २-जिसके मूल में कुछ हो।

मूलकर्म पुं० (सं) १-जादू। इन्द्रजाल। टोना। ३-मंत्रतंत्र आदि।

मूलकारण पुं० (सं) आद्यकारण।

मूलग्रंथ पुं०(सं) असल ग्रन्थ जिसकी टीका या भाषान्तर आदि किया गया हो।

मूलच्छेद पुं० (सं) १-जड़ से नाश। २-पूर्ण नाश।

मूलच्छेदन पुं० (सं) मूलच्छेद।

मूलतः अव्य० (सं) असल। मूल रूप में।

मूलधन पुं० (सं) वह असल धन जो किसी के पास रखा या व्यापार में लगाया गया हो। (प्रिंसिपल)।

मूलपदार्थ पुं० (सं) वे पदार्थ या तत्त्व जिनसे सब पदार्थ बने हैं। (एलिमेंट)।

मूलपाठ पुं०(सं) १-किसी भाषा की प्रारम्भिक पुस्तक २-किसी लेखक के मूल शब्द। (टेक्स्ट)।

मूलपुरुष पुं० (सं) किसी वंश का आदि पुरुष या सबसे पहला पुरखा।

मूल-प्रकृति स्त्री० (सं) संसार की वह आदिम-सत्ता जिसका यह संसार परिणाम या विकास है।

मूलभूत वि० (सं) किसी वस्तु के मूल या तत्त्व से संबंध रखने वाला। असल।

मूलमन्त्र पुं० (सं) बीजमन्त्र।

मूलवचन पुं० (सं) मूलवचन।

मूल-व्याधि स्त्री० (सं) मूल रोग। असली मर्ज

मूलाशी पुं० (सं) केवल फलों का आहार करके रहने वाला।

मूलस्थान पुं०(सं) १-वह स्थान जहाँ बाप दादा रहते आये हों। २-नींव। ३-ईश्वर। ४-राजधानी।

मूलस्रोत पुं० (सं) नदी, झरने आदि का उद्गम स्थान।

मूलिक वि० (सं) १-मूल सम्बन्धी। २-कन्द खाकर रहने वाला। (साधु)।

मूलिका स्त्री० (सं) औषधियों की जड़। जड़ी।

मूली स्त्री०(हि) १- मीठी और चरपरी जड़ वाला एक पौधा। २-एक प्रकार का घास। (सं) १-छोटी। २-छिपकली।

मूल्य पुं०(सं) १-किसी वस्तु को खरीदने के बदले दिया जाने वाला धन। कीमत। दाम। (प्राइस)। २-वह गुण या तत्त्व जिसके कारण किसी वस्तु का महत्त्व होता है। (वैल्यू)।

मूल्यकक्ष पुं० (सं) मूल्यों के बढ़ाने की सीमा या स्तर (लेवल आफ प्राइसेस)।

मूल्यन पुं० (सं) मूल्य निरूपण। (वैल्यूएशन)।

मूल्यनिरूपण पुं० (सं) किसी वस्तु संपत्ति या दौलत का मूल्य ठहराना। (वैल्यूएशन)।

मूल्यरहित वि० (सं) जिसका अधिक मूल्य न हो। सस्ता। निकम्मा।

मूल्यवृद्धि स्त्री० (सं) दाम या मूल्य का बढ़ना।

मूल्यवान् वि० (सं) कीमती। जिसका अधिक मूल्य हो। बेश। (कोस्टली)।

मूल्यह्रासरोध पुं० (सं) [illegible]
[illegible]

मेंडराना क्रि० (हि) १-दे० 'मंडराना'। २-घेरकर गोल चक्कर बनाना।
मेंढक पुं० (हि) मेढक।
मेंढकी स्त्री० (हि) मेढकी।
मेंबर पुं० (अ) सभासद। सदस्य।
मेंह पुं० (हि) आकाश से बरसने वाला पानी। वर्षा।
मेंहदी स्त्री० (हि) दे० 'मेहदी'।
मकल पुं० (सं) एक पर्वत का नाम।
...ल स्त्री० (फा) १-लकड़ी का खूँटा। २-कील। कांटा ३-पच्चर।
मेखड़ा स्त्री० (हि) बांस की पट्टी का घेरा जो गाये के मुंह पर बाँध देते हैं।
मेखल स्त्री० (हि) दे० 'मेखला'।
मेखला स्त्री० (सं) १-किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरने वाली डोरी, शृङ्खला, रेखा आदि। २-करधनी। तगड़ी। ३-मंडल। ४-गोल घेरा। ५-वह पेटी या कमरबन्द जिसमें तलवार बांधी जाती है।
मेखली स्त्री० (हि) १-एक बिना बांह का चोगा या पहनावा। करधनी।
मेगनी स्त्री० (हि) दे० 'मेंगनी'।
मेघ पुं० (सं) १-बादल। २-एक राग का नाम।
मेघकाल पुं० (सं) वर्षाऋतु।
मेघगर्जन पुं० (सं) बादल की गरज।
मेघजाल पुं० (सं) घनघोर घटा।
मेघज्योति स्त्री० (सं) बिजली।
मेघडंबर पुं० (सं) १-बादल की गरज। २-बड़ा शामियाना।
मेघदीप पुं० (सं) बिजली।
मेघदूत पुं०(सं) महाकवि कालिदास प्रणीत एक खंड-काव्य।
मेघद्वार पुं०(सं) आकाश। व्योम।
मेघधनु पुं० (सं) इन्द्रधनुष।
मेघनाद पुं० (सं) १-बादल का गर्जन। २-वरुण। ३-रावण के पुत्र इन्द्रजीत का नाम।
मेघमाला पुं० (सं) मेघ या बादलों की घटा।
मेघयोनि स्त्री० (सं) १-कुहरा। २-धूआँ।
मेघरेखा स्त्री० (सं) दे० 'मेघमाला'।
मेघलेखा स्त्री० (सं) दे० 'मेघमाला'।
मेघवाई स्त्री० (हि) घनघोर घटा।
मेघवाहन पुं० (सं) १-इन्द्र। २-एक बौद्धराज का नाम।
मेघवर्ती पुं० (सं) चातक।
मेघसार पुं० (सं) चीनिया। कपूर। घनसार।
मेघांत पुं० (सं) शरत्काल।
मेघा पुं० (हि) मेंढक। मंडूक।
मेघागम पुं० (सं) वर्षाकाल। २-धाराकदम्ब।
मेघाच्छन्न वि० (सं) बादलों से ढका हुआ।
मेघाडंबर पुं० (सं) १-बादलों की गड़गड़ाहट। २-बादल का फैलाव।
मेघानंद पुं० (सं) १-मोर। २-बगला।
मेघारि पुं० (सं) पवन। हवा।
मेघावरि स्त्री० (हि) बादलों की घटा।
मेघोदय पुं० (सं) घटा का छाना।
मेचक पुं० (सं) १-अंधकार। अँधेरा। २-धूआँ। ३-बादल। वि० श्यामल। काला।
मेचकता स्त्री० (सं) कालापन।
मेचकताई स्त्री० (हि) कालापन।
मेज स्त्री० (फा) पढ़ने लिखने या खाना खाने के लिए बनी ऊँची चौकी। (टेबल)।
मेजपोश पुं० (फा) मेज के ऊपर बिछाने का कपड़ा।
मेजबान पुं० (फा) १-वह जिसके यहाँ कोई मेहमान या अतिथि आकर ठहरे। २-आतिथ्य करने वाला।
मेजबानी स्त्री० (फा) मेहमानदारी। अतिथि-सत्कार।
मेजा पुं० (हि) मेंढक।
मेट पुं० (हि) कुलियों या मजदूरों का सरदार या जमादार।
मेटक पुं० (हि) नाशक। मिटाने वाला।
मेटनहार पुं० (हि) मिटाने वाला। हटाने वाला।
मेटना क्रि० (हि) दे० 'मिटाना'।
मेटा पुं० (हि) मटका।
मेड़िया स्त्री० (हि) मण्डप। छोटा घर।
मेढ़ी स्त्री० (हि) तीन लटों वाली सिर गूंथने की चोटी
मेथिका स्त्री (सं) मेथी।
मेथी स्त्री० (हि) एक पौधा जिसकी पत्तियों का साग बनता है।
मेथौरी स्त्री० (हि) मूँग या उड़द की बरी में मेथी का साग मिला होता है।
मेद पुं० (सं) चरबी। २-मोटाई या चर्बी का रोग। ३-कस्तूरी। वि० (सं) स्थूलकाय। जिस शरीर में अधिक चर्बी हो।
मेदा पुं० (अ) पेट का वह भीतरी भाग जिसमें अन्न पकता है। आमाशय।
मेदिनी स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। धरती। २-मेदा।
मेदुर वि० (सं) चिकना। स्निग्ध।
मेध पुं० (सं) १-यज्ञ। २-हवि। ३-यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु।
मेधा स्त्री० (सं) बात को समझने या स्मरण रखने की मानसिक शक्ति। धारणा शक्ति।
मेधावन वि० (सं) दे० 'मेधावी'।
मेधावी वि०(सं) १-जिस की धारणा शक्ति तीव्र हो। बुद्धिमान। २-पंडित। पुं० (सं) १-तोता। २-मदिरा ...। ४-बकरा।

मेध्य वि० (सं) १-यज्ञ-सम्बन्धी । २-पवित्र । पु० (सं) १-कथा । २-जौ । ३-बकरी ।
मेनका स्त्री०(सं) १-स्वर्ग की एक अप्सरा जो शकुन्तला की माता थी । २-पार्वती की माता का नाम ।
मेनकात्मजा स्त्री० (सं) १-शकुन्तला । २- पार्वती ।
मेना स्त्री० (सं) १-हिमवान की पत्नी जो पार्वती की माता थी । २-मेनका ।
मेम स्त्री० (हि) १-यूरोप अमेरिका आदि पाश्चात्य देश की स्त्री । २-एक ताश का पत्ता ।
मेम साहिबा स्त्री० (हि) मेम की तरह रहने वाली स्त्री मेम ।
मेमना पु० (हि) भेड़ का बच्चा ।
मेमार पु० (अ) भवन निर्माण करने वाला शिल्पी । राजा ।
मेर पु० (हि) दे० 'मेल' ।
मेरवना क्रि० (हि) दे० 'मिलाना' ।
मेरा पु० (हि) दे० 'मेला' । सर्व० मैं, के सम्बन्ध-कारक का एक रूप ।
मेराउ पु० (हि) मेराव ।
मेराना क्रि०(हि) दे० 'मिलना' ।
मेराव पु० (हि) मेल । मिलाप ।
मेरु पु० (सं) १-एक पर्वत जो सोने का बताया जाता है (पुराण) । २-जपमाला के बीच का बड़ा दाना । ३-पिंगल या छन्द-शास्त्र की वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने लघु, गुरु के कितने छन्द हो सकते हैं । ४-उत्तरी ध्रुव ।
मेरुदण्ड पु०(सं) १-पीठ के मध्य की हड्डी । रीढ़ । २-पृथ्वी के दोनों ध्रुव के मध्य की सीधी कल्पित रेखा
मेल पु० (सं) १-समागम । मिलाप । २-एकता । सुलह ३-मित्रता । ४-संगति । ५-जोड़ । समता । ६-ढंग ७-मिश्रण । स्त्री० (अ) १-डाक । २-डाकगाड़ी ।
मेलजोल पु० (सं) घनिष्टता ।
मेलन पु० (सं) १-मिलन । २-मिलने की क्रिया या भाव ।
मेलना क्रि०(हि) १-मिलना । २-डालना । ३-पहनना ४-एकत्र होना ।
मेला पु० (हि) १-भीड़ । २-उत्सव । त्यौहार, उत्सव आदि पर होने वाली भीड़ । स्त्री० (सं) १-समागम । २-मिलाप । ३-अंजन । स्याही ।
मेलान पु० (हि) १-ठहराव । २-पड़ाव । डेरा ।
मेलापक पु० (सं) १-एकत्र करने वाला । २-जमघट भीड़ ।
मेली वि० (हि) १-जिससे मेलमिलाप हो । २-मिलन सार । ३-संगी ।
मेली-मुलाकाती पु० (हि) १-साथी । २-मित्र ।
मेवा पु० (फा) किशमिश, बादाम आदि सुखाये हुए बढ़िया फल ।
मेवाटी स्त्री० (हि) मेवे भर कर पकाया जाने वाला एक पकवान ।
मेवाफरोश पु० (फा) मेवा या ताजे फल बिक्रेता ।
मेवासा पु० (हि) दे० 'मवास' ।
मेवासी पु० (हि) १-घर का मालिक । २-किले में रहने वाला ।
मेष पु० (सं) १-भेड़ । २-बारह राशियों में से पहली राशि । ३-एक औषध ।
मेषपालक पु० (सं) गड़ेरिया ।
मेषसंक्रांति स्त्री० (सं) सौर वर्ष के प्रारम्भ का दिन ।
मेंहदी स्त्री० (हि) एक झाड़ी जिसकी पत्तियों को पीस कर स्त्रियां तलवे या हथेली पर रङ्गने के लिए लगाती हैं ।
मेह पु० (हि) १-मेघ । बादल । २-वर्षा । पु० (सं) १-मूत्र । प्रमेह रोग । ३-मेंढ़ा ।
मेहतर पु० (फा) हलालखोर । भंगी ।
मेहतरानी स्त्री० (फा) भंगिन ।
मेहनत स्त्री० (अ) परिश्रम ।
मेहनतकश वि०(अ) १-परिश्रमी । २-कष्ट उठाने वाला
मेहनताना पु० (अ) किसी काम की मजदूरी । पारि-श्रमिक ।
मेहनती वि० (अ) परिश्रमी ।
मेहमान पु० (फा) अतिथि । पाहुना ।
मेहमानखाना पु० (फा) अतिथियों को ठहराने का स्थान । मुसाफिरखाना ।
मेहमानदार पु० (फा) अतिथि सत्कार करने वाला ।
मेहमानदारी स्त्री० (फा) अतिथि-सत्कार ।
मेहमान-नवाज वि० (फा) अतिथि का आदर-सत्कार करने वाला ।
मेहमान-नवाजी स्त्री० (फा) मेहमानदारी ।
मेहमानी स्त्री० (हि) १-अतिथि-सत्कार । २-मेहमान बन कर रहने का भाव ।
मेहर स्त्री० (फा) कृपा । अनुग्रह । दया ।
मेहरबान वि० (फा) कृपालु । दयालु ।
मेहरा पु० (हि) १-खत्रियों की एक जाति । जनखा । २-स्त्रियों में बहुत रहने वाला ।
मेहराब स्त्री०(अ) द्वार आदि के ऊपर को अर्ध गोला-कार बना हुआ (द्वार) ।
मेहराबी वि० (अ) मेहराबदार । स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
मेहरारू स्त्री० (हि) स्त्री । औरत ।
मेहरी स्त्री० (हि) स्त्री । पत्नी ।
मैं सर्व० (हि) सर्वनाम उत्तम स्वयं ।
मैंड़ स्त्री० (हि) दे० 'मेंड़'
मैं प्रत्यय० (हि) दे० 'मय' शराब । (अ) साथ । सहि

मैकदा पुं० (फा) मदिरालय।
मैकश पुं० (फा) मद्यप। शराब पीने वाला।
मैकशी स्त्री० (फा) मद्यपान।
मैका पुं० (हि) दे० 'मायका'।
मैगल वि० (हि) दे० 'मदगल'।
मैजल स्त्री० (हि) दे० 'मंजिल'।
मैड़ स्त्री० (हि) दे० 'मेंड'।
मैत्रावरुण पुं० (सं) १-अगस्त्य। २-वसिष्ठ।
मैत्री स्त्री० (सं) मित्रता। दोस्ती।
मैत्रेयी स्त्री० (सं) १-अहिल्या। २-याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम।
मैत्र्य पुं० (सं) मित्रता। दोस्ती।
मैथिल पुं० (सं) १-मिथिला देश का निवासी। २-राजा जनक। वि० मिथिला सम्बन्धी।
मैथिली स्त्री० (सं) जानकी। सीता।
मैथुन पुं०(सं) स्त्री के साथ पुरुष का समागम। संभोग। रतिक्रीड़ा।
मैथुनज्वर पुं० (सं) काम-ज्वर।
मैथुनिक वि० (सं) मैथुन से सम्बन्ध रखने वाला। (सैक्सुअल)।
मैदा पुं० (फा) बहुत बारीक पिसा हुआ और चोकर निकाला हुआ आटा।
मैदान पुं० (फा) १-लम्बा चौड़ा खाली स्थान। २-समतल भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय। ३ रण-भूमि। ४-किसी वस्तु का विस्तार।
मैदानी वि० (फा) मैदान सम्बन्धी।
मैन पुं० (हि) १-कामदेव। २-मोम।
मैनमय वि० (हि) कामासक्त।
मैनसिल पुं० (हि) एक प्रकार की पीली धातु जो दवा में काम आती है।
मैना स्त्री० (हि) १-एक काले रङ्ग की चिड़िया जो मनुष्यों की सी बोली बोलती है। सारिका। २-मेनका।
मैमंत वि० (हि) १-मतवाला। २-अभिमानी।
मैमत स्त्री० (हि) ममता।
मैया स्त्री० (हि) मां। माता।
मैर स्त्री० (हि) सांप के विष की लहर।
मैल पुं० (हि) १-किसी वस्तु पर पड़ी हुई अथवा जमी हुई धूल, गर्द आदि। २-दोष विकार।
मैलखोरा वि०(हि) (रङ्ग आदि) जिस पर जमा हुआ मैल जल्दी न दिखाई दे। पुं० १-घोड़े की काठी के नीचे रखने का नमदा। २-चनियान।
मैला वि० (हि) जिस पर मैल जमा हुआ हो। मलिन अस्वच्छ। २-विकारयुक्त। गन्दा। पुं० १-विष्ठा २-कूड़ा-करकट।
मैलाकुचैला वि० (हि) गन्दा। बहुत मैला।
मैहर पुं० (हि) मायका।
मों प्रत्य० (हि) दे० 'में'। सर्व० दे० 'मो'।
मोंगरा पुं० (हि) दे० 'मुँगरा'।
मोंछ स्त्री० (हि) दे० 'मूँछ'।
मोंड़ा पुं० (देश) बालक। लड़का।
मोंढ़ा पुं०(हि) १-कन्धा। २-सरकण्डे या बांस। तिपाई जैसा ऊँचा आसन।
मो सर्व० (हि) मेरा।
मोक पुं०(सं) केंचुल।
मोकना क्रि० (हि) १-छोड़ना। २-फेंकना। वि करना।
मोकल वि० (हि) छुटा हुआ। मुक्त।
मोकला वि० (हि) १-लम्बा-चौड़ा।
मोक्ष पुं० (सं) १-बन्धन से मुक्त। छुटकारा। २ जन्म-मरण से छुटकारा। मुक्ति। ३-मृत्यु। ४-पत ५-पाँडर का वृक्ष।
मोक्षक पुं० (सं) १-मोक्ष देने वाला। २-मोरवा वृ
मोक्षण पुं० (सं) मोक्ष देने की क्रिया।
मोक्ष्य वि० (सं) जो मोक्ष के योग्य हो। मोक्ष क अधिकारी।
मोखा पुं० (हि) दीवार में बना छोटा छेद।
मोगरा पुं० (हि) एक प्रकार का बढ़िया और ब‌ बेला (पुष्प)।
मोगल पुं० (हि) दे० 'मुगल'।
मोघ वि० (सं) जो न होने के समान हो।
मोच स्त्री०(हि) शरीर के किसी अंग के जोड़ का इधर उधर हट जाना।
मोचक पुं० (सं) १-छुड़ाने वाला। २-केला। ३ संन्यासी। ४-सेंमल का पेड़।
मोचन पुं० (सं) १-मुक्त करना। २-दूर करना। ३ छीन लेना।
मोचना क्रि०(हि) १-छोड़ना। २-गिराना। ३-बंध से मुक्त करना। ४-बहाना। पुं० (हि) १-नाई क बाल उखाड़ने की चिमटी। २-लुहार का एक औजा
मोचयिता वि० (सं) मुक्त कराने वाला।
मोचरस पुं० (सं) सेमल का गोंद।
मोची पुं० (हि) जूते आदि बनाने वाला कारीगर। (सं) छुड़ाने वाला।
मोच्छ पुं० (हि) दे० 'मोक्ष'।
मोजा पुं० (फा) १-जुर्राब। २-पिंडली का निचल भाग।
मोट स्त्री० (हि) गठरी। पुं० चरसा। वि० १-मोट २-साधारण।
मोटर स्त्री० (अं) १-एक विशेष प्रकार का यंत्र जिस अन्य यंत्रों का संचालन किया जाता है। २-आन्तरि दहन की प्रक्रिया से चलने वाली गाड़ी। मोटरगाड़ी
मोटरकार स्त्री० (अं) मोटरगाड़ी।
मोटरखाना पुं० (हि) मोटरगाड़ी रखने का स्थान

मोमदिल वि०(फा) मोम के समान कोमल हृदय वाला
मोमबत्ती स्त्री० (फा) मोम की बनी बत्ती जो प्रकाश के लिए जलाई जाती है।
मोमिन पुं०(अ) १-धर्मनिष्ठ मुसलमान। २-जुलाहों की एक जाति।
मोमिया स्त्री० (फा) १-मसाला लगा कर रखा गया शव। २-इस प्रकार शव को नष्ट होने से बचाने का मसाला।
मोमियाई स्त्री० (फा) १-नकली शिलाजीत। २-मृतकों के शव को नष्ट होने से बचाने का मसाला
मोमी वि० (फा) १-मोम का बना हुआ। २-मोम का सा।
मोमीछींट स्त्री० (फा) एक प्रकार का मुलायम छींट-दार कपड़ा।
मोमीमोती पुं० (फा) नकली मोती।
मोयन पुं० (हि) गुँधे हुए आटे में डाला जाने वाला तेल या घी जिससे बनने वाली वस्तु मुलायम होती है।
मोयनदार वि० (हि) जिसमें मोयन लगाया गया हो
मोरंग पु० (देश) नैपाल देश का पूर्वीभाग।
मोर पुं० (हि) १-एक अत्यन्त सुन्दर बड़ा पक्षी। २-नीलम की आभा। सर्व० (हि) दे० 'मेरा'।
मोरचंदा पुं० (हि) दे० 'मोरचन्द्रिका'।
मोरचन्द्रिका स्त्री० (हि) मोर के पंख पर की चन्द्राकार बूटी।
मोरचा पुं० (फा) १-जंग। लोहे पर नमी के कारण पड़ने वाला अंश। २-किले के चारों ओर रक्षा के लिए खोदा गया गड्ढा। वह स्थान जहाँ से नगर या गढ़ की रक्षा की जाती है। द्वंद्व में होने वाला सामना।
मोरचाबन्दी स्त्री०(हि) शत्रु पर आक्रमण करने अथवा अपना बचाव के लिए बनाया हुआ मोरचा।
मोरचाल पुं० (हि) एक प्रकार का व्यायाम।
मोरछल पुं० (हि) मोर की पूँछ के परों को इकट्ठा बांध कर बनाया हुआ चँवर।
मोरछली पुं० (हि) १-मोरछल हिलाने वाला। २-दे० 'मौलसिरी'।
मोरछाँह स्त्री० (देश) दे० 'मोरछल'।
मोरध्वज पुं०(हि) एक प्रसिद्ध भक्त राजा। (पुराण)
मोरन स्त्री०(हि) शिखरन। बिलोया हुआ दही जिसमें सुगन्धित वस्तुएँ डाली गई हों।
मोरना क्रि०(हि) १-दही का मक्खन निकालना। २-दे० 'मोड़ना'।
मोरनी स्त्री० (हि) १-मोर पक्षी की मादा। २-नथ में लटकाने का मोर की आकृति का टिकड़ा।
मोरपंख पुं०(हि). १-मोर का पर। २-मोर के पर की कलगी।
मोरपंखी स्त्री०(हि) १-मोर पंख के समान सिरे वाली नाव। २-एक व्यायाम। वि० मोर के पंख के रङ्ग का। गहरा चमकीला नीला। पुं० एक प्रकार का गहरा चमकीला रङ्ग।
मोरपखा पुं० (हि) १-मोर का पर। २-मोर पंख की कलगी।
मोरमुकुट पुं०(हि) मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।
मोरवा पुं०(हि) १-दे० 'मोर'। २-एक वृक्ष।
मोराना क्रि० (हि) १-चारों ओर घूमना। फिरना। ऊख की गंडारी को कोल्हू में दबाना।
मोरी स्त्री० (हि) १-नाली। मोहरी। २-मोर की मादा मोरनी।
मोर्चा पुं० (हि) दे० 'मोरचा'।
मोल पुं० (हि) कीमत। दाम। मूल्य।
मोलतोल पुं० (हि) भाव ठहराना। दाम ठहराना।
मोलना पुं० (हि) मौलाना। टूटना।
मोलभाव पुं० (हि) मोलतोल।
मोलवी पुं० दे० 'मौलवी'।
मोलाई स्त्री० (हि) दे० 'मोलतोल'।
मोवना क्रि०(हि) दे० 'मोना'।
मोष पुं० (हि) दे० 'मोक्ष'। (सं) १-चोरी। लूटना। २-वध। हत्या। ३-दण्ड देना।
मोषक पुं० (सं) चोर।
मोषण पुं० (सं) चोरी करना।
मोषयितापुं० (सं) चोरी कराने वाला।
मोह पुं० (सं) १-अज्ञान। २-भ्रम। भ्रांति। ३-सांसारिक वस्तुओं को सब कुछ समझना। ४-प्रेम। ममता। ५-मूर्छा। बेहोशी।
मोहक वि० (सं) १-मोह उत्पन्न करने वाला। २-मन को लुभाने वाला।
मोहड़ा पुं० (हि) १-किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २-मुँह। ३-दे० 'मोहरा'।
मोहताज वि० (हि) दे० 'मुहताज'।
मोहन वि० (सं) मोह उत्पन्न करने वाला। पुं० १-मोहित करने की क्रिया या भाव। २-श्रीकृष्ण। ३-बारह मात्राओं की एक ताल। ४-कामदेव के पांच बाणों में से एक। ४-प्राचीनकाल का शत्रु को मूर्छित करने का एक अस्त्र। ५-धतूरे का पौधा।
मोहनभोग पुं० (हि) एक प्रकार का हलवा।
मोहनमाला पुं० (हि) वह माला जो सोने के दानों की बनी हो।
मोहना क्रि० (हि) १-मोहित होना। रीझना। २-बेहोश होना। ३-मुग्ध करना।
मोहनास्त्र पुं० (सं) प्राचीन काल का शत्रु को मूर्छित करने का मन्त्रचालित अस्त्र।
मोहनिद्रा स्त्री० (सं) १-मोह रूपी निद्रा। २-उत्कट आत्मविश्वास।

मोहनिशा स्त्री० (सं) वह काल रात्रि जब सारा संसार नष्ट हो जायेगा।
मोहनी स्त्री०(सं) १-माया। २-एक वर्णवृत्त। ३-पोई का साग। ४-लुभाने का प्रभाव।
मोहब्बत स्त्री० (हि) दे० 'मुहब्बत'।
मोहभंग ० (सं) अज्ञान का दूर होना।
मोहमंत्र पुं० (सं) मोह में फंसने वाला मंत्र।
मोहर स्त्री० (हि) दे० 'मुहर'।
मोहरा पुं० (हि) १-किसी पात्र का मुँह या सुंवा भाग। २-सेना की अगली पंक्ति। ३-गाय बैल आदि के मुँह पर बांधने की जाली। ४-शतरंज की गोटी। ५-जहरमोहरा। ६-चैनिया के बन्द।
मोहरात्रि स्त्री० (सं) दे० 'मोहनिशा'।
मोहरी स्त्री० (हि) १-पात्र आदि का छोटा मुँह या सुंवा भाग। २-पाजामे का वह भाग जिसमें टांगें रहती हैं।
मोहर्रिर पुं० (प) दे० 'मुहर्रिर'।
मोहलत स्त्री० (प) दे० 'मुहलत'।
मोहल्ला पुं० (हि) दे० 'मुहल्ला'।
मोहार पुं० (हि) १-द्वार। २-मुंडेरा। ३-अग्र भाग ४-मधु का छत्ता।
मोहाल पुं० (हि) दे० 'महाल'।
मोहि सर्व० (हि) मुझको। मुझे।
मोहिं सर्व० (हि) दे० 'मोहि'।
मोहित वि० (सं) १-मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २-आसक्त। लुब्ध।
मोहिनी वि० (सं) मोहने वाली। स्त्री० (सं) १-बेला का फूल। २-विष्णु का एक अवतार। ३-माया। ४-वैशाख शुक्ला-एकादशी।
मोही वि० (सं) १-मोह करने वाला। २-लोभी। ३-भ्रम में पड़ा हुआ।
मौंगा वि० (सं) मौन। चुप।
मौंगी स्त्री० (स) चुप्पी। मौन।
मौंज वि० (स) मूँज का बना।
मौंजी स्त्री०(स) मूँज की तीन लड़ी की बनी हुई रस्सी
मौंजीबंध पुं० (सं) उपनयन। मूँजी की करधनी पहनना।
मौंड़ा पुं० (हि) लड़का।
मौका पुं०(अ) १-वह स्थान जहां पर कोई घटना घटी हो। २-अवसर। ३-समय। ४-स्थान।
मौका-बेमौका क्रि०वि० (अ) चाहे जब।
मौकूफ वि० (अ) १-स्थगित किया हुआ। २-बरखास्त। ३-रद्द किया हुआ। ४-आश्रित।
मौकूफी स्त्री० (अ) १-प्रतिबन्ध। रुकावट। २-बरखास्तगी।
मौक्तिक पुं० (सं) मोती।
मौक्तिकदाम पुं० (स) १-मोतियों की लड़ी। २-एक वर्णवृत्त।
मौक्तिकहार पुं० (सं) मोतियों का हार।
मौखर्य पुं० (सं) मौन। चुप्पी। मूकता।
मौख वि० (स) १-वह पाप जो मुख से हो। २-एक प्रकार का मसाला।
मौखर्य पुं० (स) मुखरता। वाचालता। मुँहजोरी।
मौखिक वि० (सं) १-मुख का। २-जबानी।
मौखिक-परीक्षा स्त्री० (सं) वह परीक्षा जिसमें जबानी प्रश्नों का उत्तर जबानी ही दिया जाता है (वाइवा-वोसी)।
मौग्ध्य पुं० (सं) मुग्धता।
मौज स्त्री० (प) १-लहर। तरङ्ग। २-मन की उमंग। ३-धुन। ४-सुख। आनन्द।
मौजा पुं० (प) गांव। ग्राम।
मौजी वि० (हि) १-जो मन में आवे वही काम करने वाला। २-सदा प्रसन्न रहने वाला।
मौजूं वि० (प) उपयुक्त।
मौजूद वि० (फा) १-उपस्थित। विद्यमान। २-प्रस्तुत। तैयार।
मौजूदगी स्त्री० (फा) उपस्थिति। विद्यमान।
मौजूदा वि० (प) १-वर्तमान काल का। २-उपस्थित। वर्तमान।
मौड़ा पुं० (देश) लड़का।
मौढ्य पुं० (स) मूढ़ता।
मौत स्त्री०(फा) १-मरण। मृत्यु। २-काल। ३-वह जो प्राणियों के प्राण निकालता है। २-वह कष्ट या वैसा कष्ट जैसा मरने के समय होता है।
मोदक वि० (स) लड्डू या मिठाई सम्बन्धी।
मौदकिक पुं० (सं) हलवाई। (कन्फेक्शनर)।
मौद्गलि पुं० (स) कौआ। काक।
मौद्गल्य पुं० (स) मुद्गल ऋषि के गोत्रज।
मौद्गल्यायन पुं० (सं) गौतम बुद्ध के एक प्रधान शिष्य का नाम।
मौन पुं० (सं) १-मुनियों का व्रत या चर्या। २-चुप रहना। ६-बरतन। ४-फागुन महीने का पहला पक्ष ५-मूंज का पिटारा।
मौनभंग पुं० (सं) चुप्पी तोड़ना और बोलना।
मौनमुद्रा स्त्री० (सं) मौन भाव।
मौनव्रत पुं० (हि) चुप रहने का व्रत।
मौनव्रती वि० (स) मौनव्रत धारण करने वाला।
मौना पुं० (हि) १-घी, तेल आदि रखने का बरतन। २-पिटारा।
मौनी वि० (हि) मौन धारण करने वाला (साधु)। स्त्री (हि) टोकरी। पिटारी।
मौनीअमावस्या स्त्री (स) माघ मास की अमावस्या।
मौर पुं० (हि) १-विवाह के अवसर पर वर द्वारा पहने जाने का एक मुकुट। २-प्रधान। मंजरी। बौर

गरदन।
मौरना क्रि० (हि) वृक्षों पर मंजरी लगना।
मौरसिरी स्त्री० (हि) दे० 'मौलसिरी'।
मौरी स्त्री० (हि) छोटा मौर।
मौरूसी वि० (अ) बाप दादे के समय का चला आया पैतृक (धन संपत्ति)।
मौरूसी काश्तकार पुं० (अ) वह किसान जिसकी संतान को भी जमीन पर वही अधिकार मिला हुआ हो।
मौर्य्य पुं०(सं) मूर्खता।
मौर्य पुं० (सं) अशोक और चंद्रगुप्त के वंश का नाम
मौर्वी स्त्री० (सं) धनुष की प्रत्यंचा।
मौलवी पुं० (अ) १-अरबी भाषा का पंडित। २-मुसलमानने धर्म का आचार्य।
मौलवी-गिरी स्त्री० (अ०) १-अध्यापन कार्य। २-मौलवी का काम।
मौलसिरी स्त्री० (हि) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसमें छोटे छोटे सुगंधित फूल आते हैं। वाकुल।
मौला पुं० (फ) १-मित्र। दोस्त। २-मददगार। सहायक। ३-स्वामी। ४-ईश्वर।
मौलादौला वि० (फ) १-लापरवाह। सीधा। दानी।
मौलाना पुं० (अ) दे० 'मौलवी'।
मौलि पुं० (सं) १-चोटी। सिर। २-मस्तक। सिर। ३-जूड़ा। ४-किरिट। ५-भूमि। ६-सरदार। ७-अशोक वृक्ष।
मौलिक वि० (सं) १-मूल से सम्बन्ध रखने वाला। तात्त्विक। (फन्डामेंटल)। २-जो किसी की नकल न हों बल्कि उद्भावना से निकले हों (विचार या ग्रन्थ)। (ओरिजिनल)।
मौलिकता स्त्री० (सं) मौलिक होने का भाव।
मौलि-मणि पुं० (सं) किरीट या मुकुट में लगा हुआ मणि।
मौली वि० (सं) १-मुकुटधारी। २-जिसके सिर पर चोटी हो।
मौष्टा स्त्री० (सं) मुक्का मुक्की। घूसमघूसा।
मौष्टिक पुं० (सं) चोर। ठग।
मौसम पुं० (हि) दे० 'मौसिल'।
मौसर वि० (हि) दे० 'मुयस्सर'।
मौसा पुं० (हि) मौसी का पति।
मौसिम पुं० (अ) १-ऋतु। २-उपयुक्त समय।
मौसिमी वि० (अ) समयोपयोगी। २-ऋतु सम्बन्धी।
मौसिमी बुखार पुं० (अ) मलेरिया बुखार।
मौसिमे-खिजां पुं० (अ) पतझड़।
मौसिमेबहार पुं० (अ) वसंत।
मौसिया पुं० (हि) मौसा। वि० दे० 'मौसेरा'।
मौसी स्त्री० (हि) मां की बहन।
मौसूफ वि० (अ) १-जिसकी प्रशंसा की गई हो। २-जिसका वर्णन किया गया हो।
मौसेरा वि० (हि) मौसी के सम्बन्ध का।
मौहूर्तिक वि० (सं) मुहूर्त बताने वाला। (ज्योतिषी) पुं० दक्ष की कन्या से उत्पन्न एक देव गण।
म्याँव स्त्री० (हि) बिल्ली की बोली।
म्यान पुं० (फा) तलवार, कटार आदि रखने का खाना। खड्कोश। शरीर।
म्याना क्रि० (हि) म्यान में रखना। पुं० (देश) दे० 'मियाना'।
म्यानी स्त्री० (हि) दे० 'मियानी'।
म्युनिसिपैलिटी स्त्री० (अ) नगर-पालिका। नगर के स्वास्थ्य स्वच्छता आदि का प्रबंध करने वाली निर्वाचितसदस्यों की सभा।
म्यौं स्त्री० (हि) दे० 'म्याँव'।
म्रक्षण पुं०(सं) १-मक्करी। अपने दोषों को छिपाना २-तेल लगाना। ३-मसलना।
म्रजाद स्त्री० (हि) मर्यादा।
म्रदिमा स्त्री० (सं) १-कोमलता। मृदुता। २-नम्रता।
म्रिदिष्ट वि० (सं) अत्यन्त कोमल।
म्रियमाण वि० (सं) मरे हुए के समान।
म्लात वि० (सं) कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। म्लान
म्लान वि० (सं) १-मलिन। मुरझाया हुआ। २-दुर्बल। ३-मैला।
म्लानमना वि० (सं) हतोत्साह। उदास।
म्लानि स्त्री० (सं) १-मलिनता। २-ग्लानि।
म्लायी वि० (सं) १-ग्लानियुक्त। २-दुखी।
म्लेच्छ पुं०(सं) हिन्दुओं के अनुसार वे जातियां जिन में वर्णाश्रम धर्म न हो। वि० १-नीच। पापी।
म्लेच्छकंद पुं० (सं) लहसुन।
म्लेच्छजाति स्त्री० (सं) अनार्य या वह जाति जिसकी भाषा संस्कृत न हो।
म्लेच्छदेश पुं० (सं) अनार्य देश।
म्लेच्छभाषा स्त्री० (सं) अनार्य या विदेशी भाषा।
म्लेच्छ-भोजन पुं० (सं) १-गेहूँ। यावक। चोरी।
म्लेच्छमंडल पुं० (सं) म्लेच्छ देश।
म्लेच्छमुख पुं० (सं) तांबा।
म्लेच्छाश पुं० (सं) गेहूँ।
म्लेच्छित पुं० (सं) म्लेच्छ भाषा। अनार्य भाषा।
म्हा सर्व० (हि) दे० 'मुझ'।
म्हारा सर्व० (हि) दे० 'हमारा'।

यक्षप पुं० (सं) कुबेर।
यक्षपति पुं० (सं) कुबेर।
यक्षपुर पुं० (सं) अलकापुरी।
यक्षरस पुं० (सं) पुष्पों के रस से बनाई हुई मदिरा
यक्षराज पुं० (सं) कुबेर।
यक्षाधिप पुं० (सं) कुबेर।
यक्षाधिपति पुं० (सं) कुबेर।
यक्षिणी स्त्री० (सं) १-यक्ष की पत्नी। २-कुबेर की पत्नी। ३-यक्ष जाति की स्त्री।
यक्षी स्त्री० (सं) दे० 'यक्षिणी'।
यक्ष्मनी स्त्री० (सं) अंगूर। किशमिश।
यक्ष्मा स्त्री० (सं) क्षय नामक रोग। तपेदिक।
यक्ष्मी पुं० (सं) तपेदिक का रोगी।
यखनी स्त्री० (फा) १-उबाले हुए मांस का रस। शोरबा। २-केवल लहसुन, प्याज, धनिया नमक तथा अदरक डालकर पकाया हुआ मांस।
यगण पुं० (सं) छंद शास्त्र के आठ गणों में से वह जिसमें एक लघु और दो गुरु मात्राएं होती है। (ISS)।
यगाना वि० (फ) १-आत्मीय। नातेदार। २-अकेला फर्द। ३-अनुपम।
यग्य पुं० (हि) दे० 'यज्ञ'।
यच्छ पुं० (हि) दे० 'यक्ष'।
यच्छिनी स्त्री० (हि) दे० 'यक्षिणी'।
यजन पुं० (सं) १-विधिवत्। २-यज्ञ करने का स्थान
यजमान पुं० (सं) ब्राह्मणों को दक्षिणा आदि देकर कोई धार्मिक कृत्य करने वाला।
यजमानी पुं० (हि) पुरोहिती।
यजुर्विद् पुं० (सं) यजुर्वेद का ज्ञाता।
यजुर्वेद पुं० (सं) भारतीय आर्यों के चार वेदों में से एक जिसमें यज्ञकर्मों का विवरण तथा विधान है।
यजुर्वेदी वि० (सं) दे० 'यजुर्वेदीय'।
यजुर्वेदीय वि० (सं) १- यजुर्वेद को समझने वाला। यजुर्वेद सम्बन्धी।
यज्ञ पुं० (सं) १-प्राचीन भारतीय आर्यों का एक धार्मिक कृत्य जिसमें हवन आदि होता है। मख। याग। २-विष्णु।
यज्ञक पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
यज्ञकाल पुं० (सं) १-यज्ञ आदि के लिये शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट समय। २-पूर्णमासी।
यज्ञकुंड पुं० (सं) हवन करने का गड्ढा या कुण्ड।
यज्ञकृत् पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
यज्ञघ्न पुं० (सं) १-राक्षस। २-यज्ञ का विध्वंस करने वाला।
यज्ञतुरंग पुं० (सं) यज्ञ में बलि दिया जाने वाला घोड़ा।
यज्ञत्राता पुं० (सं) विष्णु। यज्ञ की रक्षा करने वाला
यज्ञदुग्ध पुं० (सं) गंधतृण।
यज्ञद्वेषी पुं० (सं) यज्ञ का विरोध करने वाला।
यज्ञद्रव्य पुं० (सं) यज्ञ की सामग्री।
यज्ञधर पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञधूम पुं० (सं) हवन का धूआँ।
यज्ञपति पुं० (सं) १-विष्णु। २-यजमान।
यज्ञपत्नी स्त्री० (सं) १-यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा। २-यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों की स्त्रियां।
यज्ञपशु पुं० (सं) १-वह पशु जिसकी यज्ञ में बलि चढ़ाई जाय। २-घोड़ा। ३-बकरा।
यज्ञपात्र पुं० (सं) काठ के बरतन जो यज्ञ के काम आते हैं।
यज्ञपुरुष पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञफलद पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञभांड पुं० (सं) यज्ञपात्र।
यज्ञभाग पुं० (सं) १-यज्ञ का वह अंश जो देवताओं को दिया जाता है। २-देवता।
यज्ञभाजन पुं० (सं) यज्ञपात्र।
यज्ञभूमि स्त्री० (सं) यज्ञक्षेत्र। वह स्थान जहां पर यज्ञ होता है।
यज्ञभूषण पुं० (सं) कुश।
यज्ञभृत् पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञभोक्ता पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञमंडप पुं० (सं) यज्ञ करने के लिए बनाया गया मंडप।
यज्ञमहोत्सव पुं० (सं) वह भारी उत्सव जो यज्ञ के लिए किया गया हो।
यज्ञमुख पुं० (सं) यज्ञ का आरम्भ।
यज्ञयूप पुं० (सं) वह खंभा जिससे यज्ञ में बलि देने वाला पशु बांधा जाता है।
यज्ञरस पुं० (सं) सोम।
यज्ञवराह पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञवाह पुं० (सं) १-यजमान। २-कुमार कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
यज्ञवाहन पुं० (सं) १-यज्ञ करने वाला। २-ब्राह्मण। ३-विष्णु।
यज्ञवाही पुं० (सं) यज्ञ का सब काम करने वाला।
यज्ञवेदी स्त्री० (सं) यज्ञ की वेदिका।
यज्ञशत्रु पुं० (सं) राक्षस।
यज्ञसदन पुं० (सं) दे० 'यज्ञयूप'।
यज्ञस्थाणु पुं० (सं) दे० 'यज्ञयूप'।
यज्ञहोता पुं० (सं) १-यज्ञ में देवताओं का आवाहन करने वाला। २-उत्तम मनु के पुत्र का नाम।
यज्ञांग पुं० (सं) १-विष्णु। २-गूलर का पेड़। ३-खैर का पेड़।
यज्ञागार पुं० (सं) यज्ञशाला।
यज्ञात्मा पुं० (सं) विष्णु।

यज्ञारि पुं० (सं) १-शिव। २-राक्षस।
यज्ञिय वि० (सं) १-यज्ञ-सम्बन्धी। २-पवित्र। पुं० देवता।
यज्ञियदेश पुं० (सं) १-भारतवर्ष। २-यज्ञादि के लिए उपयुक्त देश।
यज्ञीय वि० (सं) यज्ञ का।
यज्ञेश्वर पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञेष्ट पुं० (सं) रोहिस नामक घास।
यज्ञोपवीत पुं०(सं) १-जनेऊ। २-उपनयन। संस्कार
यज्ञोपवीत संस्कार पुं० (सं) उपनयन संस्कार। जनेऊ धारण करने का संस्कार।
यज्य वि० (सं) यजन करने योग्य।
यज्वा पुं० (सं) विधिवत् यज्ञ करवाने वाला।
यतन पुं० (सं) प्रयत्न। उद्योग।
यतनीय वि० (सं) यत्न करने योग्य।
यतमान पुं० (सं) १-यत्न करता हुआ। २-बुरी प्रवृत्तियों को छोड़ कर अच्छी प्रवृत्तियाँ बनाने का यत्न करने वाला।
यतात्मा वि० (सं) संयमी।
यति पुं० (सं) १-वह जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो। त्यागी। सन्यासी। २-छप्पय छन्द का एक भेद। ३-श्वेतांबर जैन साधु। स्त्री० विश्राम विराम। विरति।
यतिधर्म पुं० (सं) सन्यास।
यतिपात्र पुं० (सं) सन्यासी का भिक्षापात्र।
यतिभंग पुं० (सं) एक छन्द दोष जिसमें यति या विराम ठीक स्थान पर नहीं पड़ता।
यतिभ्रष्ट पुं० (सं) वह छन्द जिसमें यतिभंग दोष हो
यतिसांतपन पुं० (सं) एक प्रकार का चान्द्रायणव्रत।
यती स्त्री० (सं) दे० 'यति'।
यतीम पुं० (अ) १-अनाथ। २-एक सीप में एक ही निकलने वाला मोती।
यतीमखाना पुं० (फा) अनाथालय।
यत् सर्व० (सं) जो।
यत्किंचित अव्य० (सं) थोड़ा सा। बहुत कम। कुछ
यत्न पुं० (सं) १-प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २-उपाय। ३-रक्षा का प्रबन्ध। ४-उपचार। चिकित्सा
यत्नपर वि० (सं) दे० 'यत्नवान्'।
यत्नपूर्वक अव्य० (सं) उद्योग से। उपाय द्वारा।
यत्नवती वि० (सं) कोशिश में लगी हुई।
यत्नवान् वि० (सं) यत्न करने वाला।
यत्नशील वि० (सं) यत्न में लगा हुआ। सचेष्ट।
यत्र अव्य० (सं) जहां। जिस जगह।
यत्रतत्र अव्य० (सं) इधर-उधर। जहां-तहां।
यथार्ह वि० (सं) यथा योग्य।
यथा अव्य० (सं) जिस तरह। जैसे।
यथाकथित वि० (सं) जैसे पहले कहा गया हो।
यथाकर्तव्य अव्य० (सं) कर्तव्य के अनुसार।
यथाकर्म अव्य० (सं) कर्म के अनुसार।
यथाकाम वि० (सं) इच्छानुसार।
यथाकामी वि० (सं) स्वेच्छाचारी। मनमाना काम करने वाला।
यथाकार्य वि० (सं) जैसा करना चाहिए।
यथाकाल अव्य० (सं) उपयुक्त समय में।
यथातथ्य अव्य० (सं) ज्यों का त्यों। जैसा हो उसी के अनुसार।
यथातृप्ति अव्य०(सं) जी भरकर।
यथादृष्ट वि० (सं) जैसा देखा गया हो।
यथानियम अव्य० (सं) नियमानुसार।
यथानिर्दिष्ट वि० (सं) जैसी आज्ञा दी गई हो।
यथानुपूर्वक वि० (सं) परम्परा के अनुकूल।
यथापूर्व अव्य० (सं) ज्यों का त्यों।
यथाप्रयोग अव्य०(सं) प्रयोग के अनुरूप।
यथाभाग अव्य० (सं) १-भाग के अनुसार जितना चाहिए उतना। २-यथोचित।
यथामति अव्य० (सं) बुद्धि या समझ के अनुसार।
यथामूल्य अव्य० (सं) मूल्य के अनुसार।
यथायथ अव्य० (सं) जैसा चाहिए वैसा।
यथायोग्य अव्य०(सं) जैसा उचित हो वैसा। उपयुक्त मुनासिब।
यथारीति अव्य० (सं) प्रचलित रीति के अनुसार।
यथारुचि वि० (सं) इच्छा के अनुरूप।
यथार्थ अव्य० (सं) १-ठीक। उचित। २-जैसा है वैसा। ३-सत्य।
यथार्थतः अव्य० (सं) यथार्थ में। वास्तव में। सच-मुच।
यथार्थवाद पुं० (सं) १-जो बात जिस रूप में है उसे उसी रूप में ग्रहण करने या मानने का सिद्धांत। २-आदर्शवाद के सिद्धांत का उलटा। ३-साहित्य में वह सिद्धांत कि जो वस्तुएं जिस रूप में दिखाई देती है उसी रूप में उनका वर्णन होना चाहिये। (रियलिज्म)।
यथार्थवादी पुं० (सं) यथार्थवाद के सिद्धांत को मानने वाला।
यथालब्ध वि० (सं) जितना प्राप्त हो सके उसी के अनुसार।
यथालाभ वि० (सं) जो कुछ मिले उसके अनुसार।
यथावकाश अव्य०(सं) छुट्टी के मुताबिक।
यथावत् अव्य०(सं) जैसा था वैसा ही। अच्छी तरह पूर्ण रीति से।
यथावसर अव्य०(सं) जैसा अवसर पड़े उसी के अनु-सार।
यथाविधि अव्य० (सं) जिस प्रकार से।
यथाविहित अव्य० (सं) विधि के अनुसार।

यक्षप पुं० (सं) कुबेर।
यक्षपति पुं० (सं) कुबेर।
यक्षपुर पुं० (सं) अलकापुरी।
यक्षरस पुं० (सं) पुष्पों के रस से बनाई हुई मदिरा
यक्षराज पुं० (सं) कुबेर।
यक्षाधिप पुं० (सं) कुबेर।
यक्षाधिपति पुं० (सं) कुबेर।
यक्षिणी स्त्री० (सं) १-यक्ष की पत्नी। २-कुबेर की पत्नी। ३-यक्ष जाति की स्त्री।
यक्षी स्त्री० (सं) दे० 'यक्षिणी'।
यक्ष्मनी स्त्री० (सं) अगूर। किशमिश।
यक्ष्मा स्त्री० (सं) क्षय नामक रोग। तपेदिक।
यक्ष्मी पुं० (सं) तपेदिक का रोगी।
यखनी स्त्री० (फा) १-उबाले हुए मांस का रसा। शोरवा। २-केवल लहसुन, प्याज, धनिया नमक तथा अदरक डालकर पकाया हुआ मांस।
यगण पुं० (सं) छंद शास्त्र के आठ गणों में से वह जिसमें एक लघु और दो गुरु मात्राएं होती हैं। (ISS)।
यगाना वि० (फा) १-आत्मीय। नातेदार। २-अकेला फर्द। ३-अनुपम।
यग्य पुं० (हि) दे० 'यज्ञ'।
यच्छ पुं० (हि) दे० 'यक्ष'।
यच्छिनी स्त्री० (हि) दे० 'यक्षिणी'।
यजन पुं० (सं) १-विधिवत्। २-यज्ञ करने का स्थान
यजमान पुं० (सं) ब्राह्मणों को दक्षिणा आदि देकर कोई धार्मिक कृत्य करने वाला।
यजमानी पुं० (हि) पुरोहिती।
यजुर्विद् पुं० (सं) यजुर्वेद का ज्ञाता।
यजुर्वेद पुं० (सं) भारतीय आर्यों के चार वेदों में से एक जिसमें यज्ञकर्मों का विवरण तथा विधान है।
यजुर्वेदी वि० (सं) दे० 'यजुर्वेदीय'।
यजुर्वेदीय वि० (सं) १- यजुर्वेद को समझने वाला। यजुर्वेद सम्बन्धी।
यज्ञ पुं० (सं) १-प्राचीन भारतीय आर्यों का एक धार्मिक कृत्य जिसमें हवन आदि होता है। मख। याग। २-विष्णु।
यज्ञक पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
यज्ञकाल पुं० (सं) १-यज्ञ आदि के लिये शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट समय। २-पूर्णमासी।
यज्ञकुंड पुं०(सं) हवन करने का गड्ढा या कुण्ड।
यज्ञकृत् पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
यज्ञघ्न पुं० (सं) १-राक्षस। २-यज्ञ का विध्वंस करने वाला।
यज्ञतुरंग पुं० (सं) यज्ञ में बलि दिया जाने वाला घोड़ा।
यज्ञत्राता पुं० (सं) विष्णु। यज्ञ की रक्षा करने वाला।
यज्ञदत्त पुं० (सं) यज्ञान्न।
यज्ञद्वेषी पुं० (सं) यज्ञ का विरोध करने वाला।
यज्ञद्रव्य पुं० (सं) यज्ञ की सामग्री।
यज्ञधर पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञधूम पुं० (सं) हवन का धूआँ।
यज्ञपति पुं० (सं) १-विष्णु। २-यजमान।
यज्ञपत्नी स्त्री० (सं) १-यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा। २-यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों की स्त्रियां।
यज्ञपशु पुं० (सं) १-वह पशु जिसकी यज्ञ में बलि चढ़ाई जाय। २-घोड़ा। ३-बकरा।
यज्ञपात्र पुं० (सं) काठ के बरतन जो यज्ञ के काम आते हैं।
यज्ञपुरुष पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञपल्लव पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञभांड पुं० (सं) यज्ञपात्र।
यज्ञभाग पुं० (सं) १-यज्ञ का वह अंश जो देवगणों को दिया जाता है। २-ऐसा देवता।
यज्ञभाजन पुं० (सं) यज्ञपात्र।
यज्ञभूमि स्त्री० (सं) यज्ञक्षेत्र। वह स्थान जहां पर यज्ञ होता है।
यज्ञभूषण पुं० (सं) कुश।
यज्ञभृत् पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञभोक्ता पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञमंडप पुं० (सं) यज्ञ करने के लिए बनाया गया मंडप।
यज्ञमहोत्सव पुं० (सं) वह भारी उत्सव जो यज्ञ के लिए किया गया हो।
यज्ञमुख पुं० (सं) यज्ञ का आरम्भ।
यज्ञयूप पुं० (सं) वह खंभा जिससे यज्ञ में बलि देने वाला पशु बांधा जाता है।
यज्ञरस पुं० (सं) सोम।
यज्ञवराह पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञवाह पुं० (सं) १-यजमान। २-कुमार कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
यज्ञवाहन पुं० (सं) १-यज्ञ करने वाला। २-ब्राह्मण। ३-विष्णु।
यज्ञवाही पुं० (सं) यज्ञ का सब काम करने वाला।
यज्ञवेदी स्त्री० (सं) यज्ञ की वेदिका।
यज्ञशत्रु पुं० (सं) राक्षस।
यज्ञसदन पुं० (सं) दे० 'यज्ञयूप'।
यज्ञस्थाणु पुं० (सं) दे० 'यज्ञयूप'।
यज्ञहोता पुं० (सं) १-यज्ञ में देवताओं का आवाहन करने वाला। २-उत्तम मनु के पुत्र का नाम।
यज्ञांग पुं० (सं) १-विष्णु। २-गूलर का पेड़। ३-खैर का पेड़।
यज्ञागार पुं० (सं) यज्ञशाला।
यज्ञात्मा पुं० (सं) विष्णु।

यज्ञारि पुं० (स) १-शिव। २-राक्षस।
यज्ञिय वि० (सं) १-यज्ञ-सम्बन्धी। २-पवित्र। पुं० देवता।
यज्ञियदेश पुं० (सं) १-भारतवर्ष। २-यज्ञादि के लिए उपयुक्त देश।
यज्ञीय वि० (स) यज्ञ का।
यज्ञेश्वर पुं० (स) विष्णु।
यज्ञेष्ट पुं० (सं) रोहिस नामक घास।
यज्ञोपवीत पुं०(स) १-जनेऊ। २-उपनयन। संस्कार
यज्ञोपवीत संस्कार पुं० (स) उपनयन संस्कार। जनेऊ धारण करने का संस्कार।
यज्य वि० (सं) यजन करने योग्य।
यज्वा पुं० (स) विधिवत् यज्ञ करवाने वाला।
यतन पुं० (स) प्रयत्न। उद्योग।
यतनीय वि० (सं) यत्न करने योग्य।
यतमान पुं० (सं) १-यत्न करता हुआ। २-बुरी प्रवृत्तियों को छोड़ कर अच्छी प्रवृत्तियाँ बनाने का यत्न करने वाला।
यतात्मा वि० (सं) संयमी।
यति पुं० (स) १-वह जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो। त्यागी। सन्यासी। २-छप्पय छन्द का एक भेद। ३-स्वेतांबर जैन साधु। स्त्री० विश्राम विराम। विरति।
यतिधर्म पुं० (सं) सन्यास।
यतिपात्र पुं० (स) सन्यासी का भिक्षापात्र।
यतिभंग पुं० (स) एक छन्द दोष जिसमें यति या विराम ठीक स्थान पर नहीं पड़ता।
यतिभ्रष्ट पुं० (सं) वह छन्द जिसमें यतिभंग दोष हो
यतिसांतपन पुं० (स) एक प्रकार का चांद्रायणव्रत।
यती स्त्री० (स) दे० 'यति'।
यतीम पुं० (अ) १-अनाथ। २-एक सीप में एक ही निकलने वाला मोती।
यतीमखाना पुं० (अ) अनाथालय।
यत् सर्व० (स) जो।
यत्किंचित अव्य० (सं) थोड़ा सा। बहुत कम। कुछ
यत्न पुं० (सं) १-प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २-उपाय। ३-रक्षा का प्रबन्ध। ४-उपचार। चिकित्सा
यत्नपर वि० (सं) दे० 'यत्नमान'।
यत्नपूर्वक अव्य० (स) उद्योग से। उपाय द्वारा।
यत्नवती वि० (सं) कोशिश में लगी हुई।
यत्नवान वि० (सं) यत्न करने वाला।
यत्नशील वि० (स) यत्न में लगा हुआ। सचेष्ट।
यत्र अव्य० (सं) जहां। जिस जगह।
यत्रतत्र अव्य० (स) इधर-उधर। जहां-तहां।
यथार्ह वि० (स) यथा योग्य।
यथा अव्य० (सं) जिस तरह। जैसे।
यथाकथित वि० (स) जैसे पहले कहा गया हो।
यथाकर्तव्य अव्य० (स) कर्तव्य के अनुसार।
यथाकर्म अव्य० (सं) कर्म के अनुसार।
यथाकाम वि० (स) इच्छानुसार।
यथाकामी वि० (स) स्वेच्छाचारी। मनमाना काम करने वाली।
यथाकार्य वि० (सं) जैसा करना चाहिए।
यथाकाल अव्य० (सं) उपयुक्त समय में।
यथातथ्य अव्य० (स) ज्यों का त्यों। जैसा हो उसी के अनुसार।
यथातृप्ति अव्य०(स) जी भरकर।
यथादृष्ट वि० (सं) जैसा देखा गया हो।
यथानियम अव्य० (स) नियमानुसार।
यथानिर्दिष्ट वि० (स) जैसी आज्ञा दी गई हो।
यथानुपूर्वक वि० (सं) परम्परा के अनुकूल।
यथापूर्व अव्य० (स) ज्यों का त्यों।
यथाप्रयोग अव्य०(सं) प्रयोग के अनुरूप।
यथाभाग अव्य० (सं) १-भाग के अनुसार जितना चाहिए उतना। २-यथोचित।
यथामति अव्य० (सं) बुद्धि या समझ के अनुसार।
यथामूल्य अव्य० (सं) मूल्य के अनुसार।
यथायथ अव्य० (सं) जैसा चाहिए वैसा।
यथायोग्य अव्य०(स) जैसा उचित हो वैसा। उपयुक्त मुनासिब।
यथारीति अव्य० (सं) प्रचलित रीति के अनुसार।
यथारुचि वि० (सं) इच्छा के अनुरूप।
यथार्थ अव्य० (सं) १-ठीक। उचित। २-जैसा है वैसा। ३-सत्य।
यथार्थतः अव्य० (स) यथार्थ में। वास्तव में। सच-मुच।
यथार्थवाद पुं० (सं) १-जो बात जिस रूप में है उसे उसी रूप में ग्रहण करने या मानने का सिद्धांत। २-आदर्शवाद के सिद्धान्त का उल्टा। ३-साहित्य में वह सिद्धांत कि जो वस्तुएं जिस रूप में दिखाई देती है उसी रूप में उनका वर्णन होना चाहिये। (रियलिज़्म)।
यथार्थवादी पुं० (सं) यथार्थवाद के सिद्धांत को मानने वाला।
यथालब्ध वि० (सं) जितना प्राप्त हो सके उसी के अनुसार।
यथालाभ वि० (सं) जो कुछ मिले उसके अनुसार।
यथावकाश अव्य०(सं) छुट्टी के मुताबिक।
यथावत अव्य०(सं) जैसा था वैसा ही। अच्छी तरह पूर्ण रीति से।
यथावसर अव्य०(सं) जैसा अवसर पड़े अनु-सार।
यथाविधि अव्य० (सं) विधि
यथाविहित अव्य० (सं) विधि

यक्षप पुं० (सं) कुबेर।
यक्षपति पुं० (सं) कुबेर।
यक्षपुर पुं० (सं) अलकापुरी।
यक्षरस पुं० (सं) पुष्पों के रस से बनाई हुई मदिरा
यक्षराज पुं० (सं) कुबेर।
यक्षाधिप पुं० (सं) कुबेर।
यक्षाधिपति पुं० (सं) कुबेर।
यक्षिणी स्त्री० (सं) १-यक्ष की पत्नी। २-कुबेर की पत्नी। ३-यक्ष जाति की स्त्री।
यक्षी स्त्री० (सं) दे० 'यक्षिणी'।
यक्ष्मनी स्त्री० (सं) अंगूर। किशमिश।
यक्ष्मा स्त्री० (सं) क्षय नामक रोग। तपेदिक।
यक्ष्मी पुं० (सं) तपेदिक का रोगी।
यखनी स्त्री० (फा) १-उबाले हुए मांस का रसा। शोरबा। २-केवल लहसुन, प्याज, धनिया नमक तथा अदरक डालकर पकाया हुआ मांस।
यगण पुं० (सं) छंद शास्त्र के आठ गणों में से वह जिसमें एक लघु और दो गुरु मात्राएं होती है। (ISS)।
यगाना वि० (फा) १-आत्मीय। नातेदार। २-अकेला फर्द। ३-अनुपम।
यग्य पुं० (हि) दे० 'यज्ञ'।
यच्छ पुं० (हि) दे० 'यक्ष'।
यच्छिनी स्त्री० (हि) दे० 'यक्षिणी'।
यजन पुं० (सं) १-विधिवत्। २-यज्ञ करने का स्थान
यजमान पुं० (सं) ब्राह्मणों को दक्षिणा आदि देकर कोई धार्मिक कृत्य करने वाला।
यजमानी पुं० (हि) पुरोहिती।
यजुर्विद् पुं० (सं) यजुर्वेद का ज्ञाता।
यजुर्वेद पुं० (सं) भारतीय आर्यों के चार वेदों में से एक जिसमें यज्ञकर्मों का विवरण तथा विधान है।
यजुर्वेदी वि० (सं) दे० 'यजुर्वेदीय'।
यजुर्वेदीय वि० (सं) १-यजुर्वेद को समझने वाला। यजुर्वेद सम्बन्धी।
यज्ञ पुं० (सं) १-प्राचीन भारतीय आर्यों का एक धार्मिक कृत्य जिसमें हवन आदि होता है। मख। याग। २-विष्णु।
यज्ञक पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
यज्ञकाल पुं० (सं) १-यज्ञ आदि के लिये शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट समय। २-पूर्णमासी।
यज्ञकुंड पुं०(सं) हवन करने का गड्ढा या कुण्ड।
यज्ञकृत् पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
यज्ञघ्न पुं० (सं) १-राक्षस। २-यज्ञ का विध्वंस करने वाला।
यज्ञतुरंग पुं० (सं) यज्ञ में बलि दिया जाने वाला घोड़ा।
यज्ञत्राता पुं० (सं) विष्णु। यज्ञ की रक्षा करने वाला

यज्ञकूट पुं० (सं) ब्राह्मण।
यज्ञद्वेषी पुं० (सं) यज्ञ का विरोध करने वाला।
यज्ञद्रव्य पुं० (सं) यज्ञ की सामग्री।
यज्ञधर पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञधूम पुं० (सं) हवन का धूआँ।
यज्ञपति पुं० (सं) १-विष्णु। २-यजमान।
यज्ञपत्नी स्त्री० (सं) १-यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा। २-यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों की स्त्रियां।
यज्ञपशु पुं० (सं) १-वह पशु जिसकी यज्ञ में बलि चढ़ाई जाय। २-घोड़ा। ३-बकरा।
यज्ञपात्र पुं० (सं) काठ के बरतन जो यज्ञ के काम आते हैं।
यज्ञपुरुष पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञफलद पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञभांड पुं० (सं) यज्ञपात्र।
यज्ञभाग पुं० (सं) १-यज्ञ का वह अंश जो देवताओं को दिया जाता है। २-ऐसा देवता।
यज्ञभाजन पुं० (सं) यज्ञपात्र।
यज्ञभूमि स्त्री० (सं) यज्ञक्षेत्र। वह स्थान जहां पर यज्ञ होता है।
यज्ञभूषण पुं० (सं) कुश।
यज्ञभृत् पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञभोक्ता पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञमंडप पुं० (सं) यज्ञ करने के लिए बनाया गया मंडप।
यज्ञमहोत्सव पुं० (सं) वह भारी उत्सव जो यज्ञ के लिए किया गया हो।
यज्ञमुख पुं० (सं) यज्ञ का आरम्भ।
यज्ञयूप पुं० (सं) वह खंभा जिससे यज्ञ में बलि देने वाला पशु बांधा जाता है।
यज्ञरस पुं० (सं) सोम।
यज्ञवराह पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञवाह पुं० (सं) १-यजमान। २-कुमार कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
यज्ञवाहन पुं० (सं) १-यज्ञ करने वाला। २-ब्राह्मण। ३-विष्णु।
यज्ञवाही पुं० (सं) यज्ञ का सब काम करने वाला।
यज्ञवेदी स्त्री० (सं) यज्ञ की वेदिका।
यज्ञशत्रु पुं० (सं) राक्षस।
यज्ञसदन पुं० (सं) दे० 'यज्ञयूप'।
यज्ञस्थाणु पुं० (सं) दे० 'यज्ञयूप'।
यज्ञहोता पुं० (सं) १-यज्ञ में देवताओं का आवाहन करने वाला। २-उत्तम मनु के पुत्र का नाम।
यज्ञांग पुं० (सं) १-विष्णु। २-गूलर का पेड़। ३-खैर का पेड़।
यज्ञागार पुं० (सं) यज्ञशाला।
यज्ञात्मा पुं० (सं) विष्णु।

यज्ञारि पुं० (सं) १-शिव। २-राक्षस।
यज्ञिय वि० (सं) १-यज्ञ-सम्बन्धी। २-पवित्र। पुं० देवता।
यज्ञियदेश पुं० (सं) १-भारतवर्ष। २-यज्ञादि के लिए उपयुक्त देश।
यज्ञीय वि० (सं) यज्ञ का।
यज्ञेश्वर पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञेष्ट पुं० (सं) रोहिस नामक घास।
यज्ञोपवीत पुं०(सं) १-जनेऊ। २-उपनयन संस्कार।
यज्ञोपवीत संस्कार पुं० (सं) उपनयन संस्कार। जनेऊ धारण करने का संस्कार।
यज्य वि० (सं) यजन करने योग्य।
यज्वा पुं० (सं) विधिवत् यज्ञ करवाने वाला।
यत्न पुं० (सं) प्रयत्न। उद्योग।
यत्नीय वि० (सं) यत्न करने योग्य।
यतमान पुं० (सं) १-यत्न करता हुआ। २- ... प्रवृत्तियों को छोड़ कर अच्छी प्रवृत्तियाँ बनाने का यत्न करने वाला।
यतात्मा वि० (सं) संयमी।
यति पुं० (सं) १-वह जि... कर लिया हो। त्यागी। ... का एक भेद। ३-छन्दशास्त्र ... विराम। विरति।
यतिधर्म पुं० (सं) सन्यास।
यतिपात्र पुं० (सं) सन्यासी का भिक्षापात्र।
यतिभंग पुं० (सं) एक छन्द दोष जिसमें यति या विराम ठीक स्थान पर नहीं पड़ता।
यतिभ्रष्ट पुं० (सं) वह छन्द जिसमें यतिभंग दोष हो।
यतिसांतपन पुं० (सं) एक प्रकार का चान्द्रायणव्रत।
यती स्त्री० (सं) दे० 'यति'।
यतीम पुं० (फा) १-अनाथ। २-एक सीप में एक ही निकलने वाला मोती।
यतीमखाना पुं० (फा) अनाथालय।
यत् सर्व० (सं) जो।
यत्किंचित अव्य० (सं) थोड़ा सा। बहुत कम। कुछ।
यत्न पुं० (सं) १-प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २-उपाय। ३-रक्षा का प्रबन्ध। ४-उपचार। चिकित्सा।
यत्नवान वि० (सं) दे० 'यत्नमान्'।
यत्नपूर्वक अव्य० (सं) उद्योग से। उपाय द्वारा।
यत्नवती वि० (सं) कोशिश में लगी हुई।
यत्नवान वि० (सं) यत्न करने वाला।
यत्नशील वि० (सं) यत्न में लगा हुआ। सचेष्ट।
यत्र अव्य० (सं) जहां। जिस जगह।
यत्रतत्र अव्य० (सं) इधर-उधर। जहां-तहां।
यथार्ह वि० (सं) यथा योग्य।
यथा अव्य० (सं) जिस तरह। जैसे।
यथाकथित वि० (सं) जैसे पहले कहा गया हो।
यथाकर्तव्य अव्य० (सं) कर्तव्य के अनुसार।
यथाकर्म अव्य० (सं) कर्म के अनुसार।
यथाकाम वि० (सं) इच्छानुसार।
यथाकामी वि० (सं) स्वेच्छाचारी। मनमाना काम करने वाला।
यथाकार्य वि० (सं) जैसा करना चाहिए।
यथाकाल अव्य० (सं) उपयुक्त समय में।
यथातथ्य अव्य० (सं) ज्यों का त्यों। जैसा हो उसी के अनुसार।
यथातृप्ति अव्य०(सं) जी भरकर।
यथादृष्ट वि० (सं) जैसा देखा गया हो।
यथानियम अव्य० (सं) नियमानुसार।
यथानिर्दिष्ट वि० (सं) जैसी आज्ञा दी गई हो।
...
यथाभाग अव्य० (सं) १-भाग के अनुसार जितना चाहिए उतना। २-यथोचित।
यथामति अव्य० (सं) बुद्धि या समझ के अनुसार।
... मुताबिक।
यथारीति अव्य० (सं) प्रचलित रीति के अनुसार।
यथारुचि वि० (सं) इच्छा के अनुरूप।
यथार्थ अव्य० (सं) १-ठीक। उचित। २-जैसा है वैसा। ३-सत्य।
यथार्थतः अव्य० (सं) यथार्थ में। वास्तव में। सच-मुच।
यथार्थवाद पुं० (सं) १-जो बात जिस रूप में है उसे उसी रूप में ग्रहण करने या मानने का सिद्धांत। २-आदर्शवाद के सिद्धांत का उलटा। ३-साहित्य में वह सिद्धांत कि जो वस्तुएं जिस रूप में दिखाई देती है उसी रूप में उनका वर्णन होना चाहिये। (रियलिज्म)।
यथार्थवादी पुं० (सं) यथार्थवाद के सिद्धांत को मानने वाला।
यथालब्ध वि० (सं) जितना प्राप्त हो सके उसी के अनुसार।
यथालाभ वि० (सं) जो कुछ मिले उसके अनुसार।
यथावकाश अव्य०(सं) छुट्टी के मुताबिक।
यथावत अव्य०(सं) जैसा था वैसा ही। अच्छी तरह पूर्ण रीति से।
यथावसर अव्य०(सं) जैसा अवसर पड़े उसी के अनुसार।
यथाविधि अव्य० (सं) जिस प्रकार से।
यथाविहित अव्य (सं) विधि के अनुसार।

यहूदी पुं०(हि) १-यहूदी देश का निवासी। २-इसी जाति के अंतर्गत एक अनार्य जाति।
यांचा स्त्री० (हि) सविनय मांगना।
यांत्रिक पुं० (सं) वह जो यंत्रों को बनाना, चलाना या सुधारना जानता हो। (मैकेनिक)। वि० १-यंत्र सम्बन्धी। २-यन्त्र से चलाने वाला। (मैकेनिकल)।
या वि० सर्व० (हि) ब्रजभाषा में 'यह' का कारक चिह्न लगाने के पहले का रूप। अव्य (फा) अथवा या। यदि यह न हो।
या-इलाही पुं०(अ) (दुआ मांगने का शब्द) ऐ खुदा।
याक पुं० (हि) हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल जिसकी पूँछ का चँवर बनता है।
याकूत पुं० (अ) एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर। लाल।
याग पुं० (सं) यज्ञ।
यागसंतान पुं० (सं) इन्द्र पुत्र जयन्त का एक नाम।
याचक पुं० (सं) १-मांगने वाला। २-भिखारी।
याचकता स्त्री० (स) भीख मांगने का कार्य या भाव।
याचन पुं० (सं) दे० 'याचना'।
याचना क्रि०(सं) मांगना। कुछ पाने के लिए प्रार्थना करना। स्त्री० मांगने की क्रिया।
याचमान वि० (सं) मांगने वाला। याचक।
याचिका स्त्री०(सं) वह पत्र जिसमें कोई प्रार्थना लिखी हो। निवेदन पत्र। (पेटीशन)।
याचित वि० (सं) माँगा हुआ।
याचिता पुं० (सं) भिखारी। प्रार्थी।
याच्य वि० (सं) मांगने योग्य।
याज पुं० (स) १-अन्न। २-एक ऋषि का नाम।
याजक पुं० (स) १-यज्ञ करने वाला। २-राजा का हाथी। ३-मस्त हाथी।
याजन पुं० (सं) यज्ञ करना।
याजनीय वि० (स) यज्ञ करने योग्य।
याजि पुं० (सं) यज्ञ करना।
याजी पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
याज्ञवल्क्य पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशम्पायन के शिष्य थे। २-राजा जनक के गुरु का नाम। ३-एक स्मृतिकार ऋषि।
याज्ञसेनी स्त्री० (सं) द्रोपदी का एक नाम।
याज्ञिक पुं० (सं) १-यज्ञ करने या कराने वाला। २-गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।
याज्य वि० (स) १-यज्ञ में दी जाने वाली (दक्षिणा) २-यज्ञ कराने योग्य।
याञ्चा स्त्री०(सं) दे० 'यांचा'।
यात वि० (सं) १-लब्ध। पाया हुआ। २-ज्ञात।
यातना स्त्री० (सं) कष्ट। पीड़ा।
यातायात पुं० (सं) १-एक स्थान से दूसरे स्थान को आने जाने की क्रिया। (कम्यूनिकेशन)। २-यात्रियों या माल का गमनागम। (ट्रैफिक)।
यातुधान पुं० (सं) राक्षस।
यात्रा स्त्री० (सं) १-सफर। २-धार्मिक उद्देश्य से पवित्र स्थान पर दर्शन पूजा आदि के लिए जाना ३-प्रयान। प्रयाण। ४-उत्सव। ५-एक प्रकार का अभिनय जिसमें नाचना, गाना दोनों होते हैं।
यात्राधिदेय पुं० (सं) यात्रा में व्यय होने वाले खर्चे के बदले में मिलने वाला भत्ता। (ट्रैवलिंग अलाउंस)।
यात्रावाल पुं०(सं) तीर्थ स्थानों में दर्शन आदि कराने वाला पण्डा।
यात्रिक पुं० (सं) १-यात्रा का प्रयोजन। २-पथिक। यात्री। वि० यात्रा-सम्बन्धी। २-प्रथानुकूल।
यात्री पुं० (सं) १-यात्रा करने वाला। मुसाफिर। २-तीर्थाटन करने वाला।
याथातथ्य पुं०(सं) ज्यों का त्यों होने का भाव।
याथार्थ्य पुं०(सं) वास्तविकता। यथार्थ होने का भाव
याद स्त्री० (फा) १-स्मरणशक्ति। २-स्मरण करने की क्रिया।
यादगार स्त्री० (फा) स्मृति चिह्न। स्मारक।
यादगारी स्त्री० (फा) दे० 'यादगार'।
याददाश्त स्त्री०(फा) १-स्मरणशक्ति। २-स्मरण रखने के लिए लिखी हुई याद।
यादव पुं० (सं) १-यदु के वंश के लोग। २-श्रीकृष्ण
यादवी स्त्री० (सं) १-यदुकुल की स्त्री। २-दुर्गा।
यादवीय वि० (सं) यादव सम्बन्धी। पुं० गृहयुद्ध।
यादृश वि० (सं) जैसा। जिस प्रकार का।
यान पुं०(सं) १-किसी भी तरह की सवारी। वाहन २-विमान। ३-गति। ४-शत्रु पर आक्रमण करना
यानभत्ता पुं० (स) कोई यान या सवारी रखने के बदले मिलने वाला भत्ता (कन्वेयेन्स अलाउंस)।
यानांतरण पुं० (सं) माल या यात्रियों का एक यान या पोत से उतार कर दूसरे में पहुँचाया जाना। (ट्रांसशिपमेंट)।
यानाविदेय पुं० (सं) दे० 'यानभत्ता'। (कन्वेयेन्स अलाउंस)।
यानी अव्य० (अ) तात्पर्य यह है। अर्थात्।
यापन पुं० (सं) १-चलाना। २-व्यतीत करना। ३-निबटाना। ४-परित्याग। ५-मिटाना।
यापता वि०(फा) पाया हुआ।
याब पुं० (फा) पाने वाला (व्यक्ति)।
याभ पुं० (सं) मैथुन।
याम पुं० (सं) १-एक पहर या तीन घन्टे का समय २-काल। समय। स्त्री० (हि) रात। वि० (सं) यम-सम्बन्धी।
यामघोष पुं० (सं) मुर्गा।

यामाता पु० (सं) दामाद।
यामि स्त्री० (सं) दे० 'यामी'।
यामिक पु० (सं) पहरेदार।
यामित्र पु० (सं) दे० 'जामित्र'।
यामिनी स्त्री० (हि) दे० 'यामिनी'।
यामिनी स्त्री० (सं) १-रात। २-हल्दी। ३-कश्यप की पत्नी का नाम।
यामिनीचर पु० (सं) १-राक्षस। २-उल्लू।
यामी स्त्री० (सं) १-रात। २-कुलवधू।
याम्या स्त्री० (सं) १-दक्षिण दिशा। २-भरणी नक्षत्र
याम्योत्तर रेखा स्त्री०(सं) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर जाती है।
यायावर पु० (सं) १-सन्यासी। २-याचना। ३-खानाबदोश। ४-अश्वमेध का घोड़ा।
यायी पु० (सं) जाने वाला।
यार पु० (फा) १-मित्र। प्रेमी। २-हिमायती। ३-पर स्त्री से प्रेम करने वाला।
याराना पु० (फा) १-मित्रता। मैत्री। स्त्री पुरुष की अनुचित रूप से की गई मैत्री।
यारी स्त्री० (फा) मित्रभाव। मैत्री।
याल स्त्री० (तु) अयाल। घोड़े की गरदन के ऊपर के बाल।
यावक पु० (सं) १-जौ। २-जौ का सत्तू। ३-कुलथी ४-लाख। ५-महावर।
यावज्जीवन अव्य०(सं) जन्मभर। जब तक जीवन रहे
यावत् वि० (सं) १-जब तक। २-कुल। सब।
यावनी वि० (हि) यवन सम्बन्धी।
यावास पु० (सं) १-घास, कण्टक आदि का पुञ्ज। २-जवासे की मदिरा।
यास पु० (अ) १-नाउम्मेदी निराशा। २-चेष्टा।
यासु सर्व० दे० 'जासु'।
युक्त वि० (सं) १-किसी के साथ मिला हुआ। संयुक्त २-नियुक्त। ३-उचित। ४-पूर्ण। ५-आसक्त।
युक्तमना वि० (सं) दत्तचित्त।
युक्ताक्षर पु० (सं) संयुक्त वर्ण।
युक्ताहार पु० (सं) उचित आहार।
युक्ति स्त्री० (सं) १-उपाय। २-कौशल। ३-चाल। रीति। ४-न्याय। ५-अनुमान। ६-ठीक तर्क। ७-योग। ८-एक अर्थालंकार।
युक्तिकर वि० (सं) उचित। विचारपूर्ण।
युक्तिपूर्ण वि० (सं) दे० 'युक्तिकर'।
युक्तिमूलक वि० (सं) तर्कसंगत। (रेशनल)।
युक्तियुक्त वि० (सं) युक्तिपूर्ण।
युक्तिसंगत वि० (सं) तर्क के अनुकूल।
युक्त्याभास पु०(सं) वह तर्क जो ऊपर से युक्तियुक्त पूर्ण हो पर वास्तव में तथ्यहीन हो। (सोफिस्ट्री)।
युगंधर पु० (सं) १-गाड़ी का बम। २-कूबर।
युग पु० (सं) १-जोड़ा। युग्म। २-जुआ। ३-पीढ़ी। पुश्त। ४-समय। जमाना। ५-काल के चार भेद, कलयुग, सतयुग आदि। ६-इतिहास का कोई बड़ा काल जिसमें एक ही प्रकार की घटनाएँ होती रही हों। (एरा)।
युगचेतना स्त्री० (सं) किसी काल की कोई विशिष्ट प्रवृत्ति।
युगति स्त्री० (हि) दे० 'युक्ति'।
युगधर्म पु० (सं) समय के अनुकूल व्यवहार।
युगपत् अव्य० (सं) एक साथ। एक समय। जोड़े में
युगपुरुष पु०(सं) अपने समय का सबसे बड़ा आदमी
युगप्रतीक पु० (सं) युग का श्रेष्ठ पुरुष।
युगम पु० (हि) दे० 'युग्म'।
युगयुग अव्य० (सं) बहुत काल तक।
युगल पु० (सं) युग्म। जोड़ा।
युगलक पु० (सं) वह कुलक जिसमें दो श्लोकों अथवा पद्यों का एक साथ मिलकर अन्वय हो।
युगांत पु० (सं) प्रलय।
युगांतक पु० (सं) प्रलय।
युगांतर पु० (सं) दूसरा युग। दूसरा समय।
युगावतार पु० (सं) युग का श्रेष्ठ पुरुष या अवतार।
युग्म पु० (सं) १-जोड़ा। युग। द्वंद्व। युगलक।
युग्मक पु० (सं) जोड़ा। युगम।
युग्मचारी पु० (सं) जोड़े में चलने वाले।
युग्मज पु० (सं) जुड़वां बच्चे।
युग्मेच्छा स्त्री० (सं) समागम की इच्छा।
युग्य पु० (सं) १-दो घोड़ों की गाड़ी। २-गाड़ी जोते जाने वाले दो पशु। वि० जो जोता जाने के योग्य हो।
युग्यवाह पु० (सं) गाड़ीवान।
युत वि०(सं) १-युक्त। सहित। २-मिला हुआ।
युद्ध पु० (सं) दो पक्षों की सेनाओं में होने वाली लड़ाई। रण। संग्राम।
युद्धक वि०(सं) युद्ध करने वाला। युद्ध सम्बन्धी।
युद्धकारी वि० (सं) लड़ाई लड़ने वाला।
युद्धकाल पु० (सं) लड़ाई का समय।
युद्धक्षेत्र पु० (सं) दे० 'युद्धभूमि'।
युद्धपरिषद् स्त्री० (सं) युद्ध सञ्चालन करने के लिए मन्त्री मण्डल आदि की बनाई हुई समिति। (वार काउंसिल)।
युद्धपोत पु० (सं) लड़ाई में काम आने वाला पोत। (वार शिप)।
युद्धबन्दी पु० (सं) युद्ध का कैदी। (वार प्रिजनर)।
युद्धभूमि स्त्री० (सं) रणक्षेत्र।
युद्धमय वि० १-युद्ध सम्बन्धी। २-युद्ध प्रिय।

यहूदी पुं०(हि) १–यहूदी देश का निवासी। २–शामी जाति के अंतर्गत एक अनार्य जाति।
यांचा स्त्री० (हि) सविनय मांगना।
यांत्रिक पुं० (सं) वह जो यंत्रों को बनाना, चलाना या सुधारना जानता हो। (मैकेनिक)। वि० १–यंत्र सम्बन्धी। २–यन्त्र से चलाने वाला। (मैकेनिकल)।
या वि० सर्व० (हि) ब्रजभाषा में 'यह' का कारक चिह्न लगाने के पहले का रूप। अव्य (फा) अथवा या। यदि यह न हो।
या-इलाही पुं०(फा) (दुआ मांगने का शब्द) ऐ खुदा।
याक पुं० (हि) हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल जिसकी पूँछ का चँवर बनता है।
याकूत पुं० (अ) एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर। लाल।
याग पुं० (सं) यज्ञ।
यागसंतान पुं० (सं) इन्द्र पुत्र जयन्त का एक नाम।
याचक पुं० (सं) १–मांगने वाला। २–भिखारी।
याचकता स्त्री० (सं) भीख मांगने का कार्य या भाव।
याचन पुं० (सं) दे० 'याचना'।
याचना क्रि०(सं) मांगना। कुछ पाने के लिए प्रार्थना करना। स्त्री० मांगने की क्रिया।
याचमान वि० (सं) मांगने वाला। याचक।
याचिका स्त्री०(सं) वह पत्र जिसमें कोई प्रार्थना लिखी हो। निवेदन पत्र। (पेटीशन)।
याचित वि० (सं) माँगा हुआ।
याचिता पुं० (सं) भिखारी। प्रार्थी।
याच्य वि० (सं) मांगने योग्य।
याज पुं० (स) १–अन्न। २–एक ऋषि का नाम।
याजक पुं० (स) १–यज्ञ करने वाला। २–राजा का हाथी। ३–मस्त हाथी।
याजन पुं० (सं) यज्ञ करना।
याजनीय वि० (स) यज्ञ करने योग्य।
याजि पुं० (सं) यज्ञ करना।
याजी पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
याज्ञवल्क्य पुं० (सं) १–एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशम्पायन के शिष्य थे। २–राजा जनक के गुरु का नाम। ३–एक स्मृतिकार ऋषि।
याज्ञसेनी स्त्री० (सं) द्रौपदी का एक नाम।
याज्ञिक पुं० (सं) १–यज्ञ करने या कराने वाला। २–गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।
याज्य वि० (स) १–यज्ञ में दी जाने वाली (दक्षिणा)। २–यज्ञ कराने योग्य।
याञ्जा स्त्री०(सं) दे० 'यांचा'।
यात वि० (सं) १–लब्ध। पाया हुआ। २–ज्ञात।
यातना स्त्री० (सं) कष्ट। पीड़ा।
यातायात पुं० (सं) १–एक स्थान से दूसरे स्थान को आने जाने की क्रिया। (कम्यूनिकेशन)। २–यात्रियों या माल का गमनागम। (ट्रैफिक)।
यातुधान पुं० (सं) राक्षस।
यात्रा स्त्री० (सं) १–सफर। २–धार्मिक उद्देश्य से पवित्र स्थान पर दर्शन पूजा आदि के लिए जाना ३–प्रस्थान। प्रयाण। ४–उत्सव। ५–एक प्रकार का अभिनय जिसमें नाचना, गाना दोनों होते हैं।
यात्राधिदेय पुं० (सं) यात्रा में व्यय होने वाले खर्चे के बदले में मिलने वाला भत्ता। (ट्रैवलिंग अलाउंस)।
यात्रावाल पुं०(सं) तीर्थ स्थानों में दर्शन आदि कराने वाला पण्डा।
यात्रिक पुं० (सं) १–यात्रा का प्रयोजन। २–पथिक। यात्री। वि० यात्रा-सम्बन्धी। २–प्रथानुकूल।
यात्री पुं० (सं) १–यात्रा करने वाला। मुसाफिर। २–तीर्थाटन करने वाला।
याथातथ्य पुं०(सं) ज्यों का त्यों होने का भाव।
याथार्थ्य पुं०(सं) वास्तविकता। यथार्थ होने का भाव
याद स्त्री० (फा) १–स्मरणशक्ति। २–स्मरण करने की क्रिया।
यादगार स्त्री० (फा) स्मृति चिह्न। स्मारक।
यादगारी स्त्री० (फ) दे० 'यादगार'।
याददाश्त स्त्री०(फा) १–स्मरणशक्ति। २–स्मरण रखने के लिए लिखी हुई याद।
यादव पुं० (सं) १–यदु के वंश के लोग। २–श्रीकृष्ण
यादवी स्त्री० (सं) १–यदुकुल की स्त्री। २–दुर्गा।
यादवीय वि० (सं) यादव सम्बन्धी। पुं० गृहयुद्ध।
यादृश वि० (सं) जैसा। जिस प्रकार का।
यान पुं०(सं) १–किसी भी तरह की सवारी। वाहन २–विमान। ३–गति। ४–शत्रु पर आक्रमण करना
यानभत्ता पुं० (सं) कोई यान या सवारी रखने के बदले मिलने वाला भत्ता (कन्वेयेन्स अलाउंस)।
यानांतरण पुं० (सं) माल या यात्रियों का एक यान या पोत से उतार कर दूसरे में पहुँचाया जाना। (ट्रांसशिपमेंट)।
यानाधिदेय पुं० (सं) दे० 'यानभत्ता'। (कन्वेयेन्स अलाउंस)।
यानी अव्य० (अ) तात्पर्य यह है। अर्थात्।
यापन पुं० (सं) १–चलाना। २–व्यतीत करना। ३–निपटाना। ४–परित्याग। ५–मिटाना।
याफ्ता वि०(फा) पाया हुआ।
याब पुं० (फा) पाने वाला (व्यक्ति)।
याभ पुं० (सं) मैथुन।
याम पुं० (सं) १–एक पहर या तीन घन्टे का समय २–काल। समय। स्त्री० (हि) रात। वि० (सं) यम-सम्बन्धी।
यामघोष पुं० (सं) मुर्गा।

यामाता पु० (य) दामाद।
यामि स्त्री० (स) दे० 'यामी'।
यामिक पु० (सं) पहरेदार।
यामित्र पु० (सं) दे० 'जामित्र'।
यामिनी स्त्री० (हि) दे० 'यामिनी'।
यामिनी स्त्री० (सं) १-रात। २-हल्दी। ३-कश्यप की पत्नी का नाम।
यामिनीचर पु० (सं) १-राक्षस। २-उल्लू।
यामी स्त्री० (स) १-रात। २-कुलवधु।
याम्या स्त्री० (सं) १-दक्षिण दिशा। २-भरणी नक्षत्र
याम्योत्तर रेखा स्त्री०(स) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर जाती है।
यायावर पु० (स) १-सन्यासी। २-याचना। ३-स्नातकदोश। ४-अश्वमेध का घोड़ा।
यायी पु० (स) जाने वाला।
यार पु० (फा) १-मित्र। प्रेमी। २-हिमायती। ३-पर स्त्री से प्रेम करने वाला।
याराना पु० (फा) १-मित्रता। मैत्री। स्त्री पुरुष की अनुचित रूप से की गई मैत्री।
यारी स्त्री० (फा) मित्रभाव। मैत्री।
याल स्त्री० (तु) अयाल। घोड़े की गरदन के ऊपर के बाल।
यावक पु० (सं) १-जौ। २-जौ का सत्तू। ३-अहर ४-लाख। ५-महावर।
यावज्जीवन अव्य०(सं) जन्मभर। जब तक जीवन रहे
यावत् वि० (सं) १-जब तक। २-कुल। सब।
यावनी वि० (हि) यवन सम्बन्धी।
यावास पु० (स) १-घास, भरठस आदि का पूला। २-जवासे की मदिरा।
यास पु० (स) १-जास जवासा। २-चेष्टा।
यासु सर्व० दे० 'जासु'।
युक्त वि० (सं) १-किसी के साथ मिला हुआ। संयुक्त २-नियुक्त। ३-उचित। ४-पूर्ण। ५-आसक्त।
युक्तमना वि० (सं) दत्तचित्त।
युक्ताक्षर पु० (स) संयुक्त वर्ण।
युक्ताहार पु० (स) उचित आहार।
युक्ति स्त्री० (सं) १-उपाय। २-कौशल। ३-चाल। रीति। ४-न्याय। ५-अनुमान। ६-ठीक तर्क। ७-योग। ८-एक अर्थालंकार।
युक्तिकर वि० (सं) ...

[illegible]

युगंधर पु० (सं) १-गाड़ी का बम। २-कूबर।
युग पु० (सं) १-जोड़ा। युग्म। २-जुआ। ३-पीढ़ी। पुश्त। ४-समय। जमाना। ५-काल के चार भेद, कलयुग, सतयुग आदि। ६-इतिहास का कोई बड़ा काल जिसमें एक ही प्रकार की घटनाएँ होती रही हों। (एरा)।
युगचेतना स्त्री० (सं) किसी काल की कोई विशिष्ट प्रवृत्ति।
युगति स्त्री० (हि) दे० 'युक्ति'।
युगधर्म पु० (स) समय के अनुकूल व्यवहार।
युगपत् अव्य० (सं) एक साथ। एक समय। जोड़े में
युगपुरुष पु०(सं) अपने समय का सबसे बड़ा आदमी
युगप्रतीक पु० (स) युग का श्रेष्ठ पुरुष।
युगम पु० (हि) दे० 'युग्म'।
युगयुग अव्य० (सं) बहुत काल तक।
युगल पु० (स) युग्म। जोड़ा।
युगलक पु० (सं) वह कुलक जिसमें दो श्लोकों अथवा पद्यों का एक साथ मिलकर अन्वय हो।
युगांत पु० (सं) प्रलय।
युगांतक पु० (स) प्रलय।
युगांतर पु० (सं) दूसरा युग। दूसरा समय।
युगावतार पु० (सं) युग का श्रेष्ठ पुरुष या अवतार।
युग्म पु० (स) १-जोड़ा। युग। द्वंद्व। युगलक।
युग्मक पु० (स) जोड़ा। युगम।
युग्मचारी पु० (सं) जोड़े में चलने वाले।
युग्मज पु० (सं) जुड़वाँ बच्चे।
युग्मेच्छा स्त्री० (सं) समागम की इच्छा।
युग्य पु० (स) १-दो घोड़ों की गाड़ी। २-गाड़ी जोते जाने वाले दो पशु। वि० जो जोता जाने के योग्य हो।
युग्यवाह पु० (सं) गाड़ीवान।
युत वि०(स) १-युक्त। सहित। २-मिला हुआ।
युद्ध पु० (सं) दो पक्षों की सेनाओं में होने वाली लड़ाई। रण। संग्राम।
युद्धक वि०(सं) युद्ध करने वाला। युद्ध सम्बन्धी।
युद्धकारी वि० (सं) लड़ाई लड़ने वाला।
युद्धकाल पु० (स) लड़ाई का समय।
युद्धक्षेत्र पु० (सं) दे० 'युद्धभूमि'।
युद्धपरिषद् स्त्री० (स) युद्ध संचालन करने के लिए मन्त्री मण्डल आदि की बनाई हुई समिति। (वार ...

[illegible] ...म आने वाला पोत।

[illegible] ...ही। (वार क्रिजनर)।

[illegible] २-युद्ध प्रिय।

यहूदी पुं०(हि) १-यहूदी देश का निवासी। २-शामी जाति के अंतर्गत एक अनार्य जाति।
यांचा स्त्री० (हि) सविनय मांगना।
यांत्रिक पुं० (सं) वह जो यंत्रों को बनाना, चलाना या सुधारना जानता हो। (मैकेनिक)। वि० १-यंत्र सम्बन्धी। २-यन्त्र से चलाने वाला। (मैकेनिकल)।
या वि० सर्व० (हि) ब्रजभाषा में 'यह' का कारक चिह्न लगाने के पहले का रूप। अव्य (फा) अथवा या। यदि यह न हो।
या-इलाही पुं०(फा) (दुआ मांगने का शब्द) ऐ खुदा।
याक पुं० (हि) हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल जिसकी पूँछ का चँवर बनता है।
याकूत पुं० (अ) एक प्रकार का लाल रङ्ग का बहुमूल्य पत्थर। लाल।
याग पुं० (सं) यज्ञ।
यागसंतान पुं० (सं) इन्द्र पुत्र जयन्त का एक नाम।
याचक पुं० (सं) १-मांगने वाला। २-भिखारी।
याचकता स्त्री० (सं) भीख मांगने का कार्य या भाव।
याचन पुं० (सं) दे० 'याचना'।
याचना क्रि०(सं) मांगना। कुछ पाने के लिए प्रार्थना करना। स्त्री० मांगने की क्रिया।
याचमान वि० (सं) मांगने वाला। याचक।
याचिका स्त्री०(सं) वह पत्र जिसमें कोई प्रार्थना लिखी हो। निवेदन पत्र। (पेटीशन)।
याचित वि० (सं) माँगा हुआ।
याचिता पुं० (सं) भिखारी। प्रार्थी।
याच्य वि० (सं) मांगने योग्य।
याज पुं० (स) १-अन्न। २-एक ऋषि का नाम।
याजक पुं० (स) १-यज्ञ करने वाला। २-राजा का हाथी। ३-मस्त हाथी।
याजन पुं० (सं) यज्ञ करना।
याजनीय वि० (स) यज्ञ करने योग्य।
याजि पुं० (सं) यज्ञ करना।
याजी पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
याज्ञवल्क्य पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशम्पायन के शिष्य थे। २-राजा जनक के गुरु का नाम। ३-एक स्मृतिकार ऋषि।
याज्ञसेनी स्त्री० (सं) द्रौपदी का एक नाम।
याज्ञिक पुं० (सं) १-यज्ञ करने या कराने वाला। २-गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।
याज्य वि० (स) १-यज्ञ में दी जाने वाली (दक्षिणा) २-यज्ञ कराने योग्य।
याञ्जा स्त्री०(सं) दे० 'यांचा'।
यात वि० (सं) १-लब्ध। पाया हुआ। २-ज्ञात।
यातना स्त्री० (सं) कष्ट। पीड़ा।
यातायात पुं० (सं) १-एक स्थान से दूसरे स्थान को आने जाने की क्रिया। (कम्यूनिकेशन)। २-यात्रियों या माल का गमनागमन। (ट्रैफिक)।
यातुधान पुं० (सं) राक्षस।
यात्रा स्त्री० (सं) १-सफर। २-धार्मिक उद्देश्य से पवित्र स्थान पर दर्शन पूजा आदि के लिए जाना ३-प्रस्थान। प्रयाण। ४-उत्सव। ५-एक प्रकार का अभिनय जिसमें नाचना, गाना दोनों होते हैं।
यात्राधिदेय पुं० (सं) यात्रा में व्यय होने वाले खर्चे के बदले में मिलने वाला भत्ता। (ट्रैवलिंग अलाउंस)।
यात्रापाल पुं०(सं) तीर्थ स्थानों में दर्शन आदि कराने वाला पण्डा।
यात्रिक पुं० (सं) १-यात्रा का प्रयोजन। २-पथिक। यात्री। वि० यात्रा-सम्बन्धी। २-प्रथानुकूल।
यात्री पुं० (सं) १-यात्रा करने वाला। मुसाफिर। २-तीर्थाटन करने वाला।
याथातथ्य पुं०(सं) ज्यों का त्यों होने का भाव।
याथार्थ्य पुं०(सं) वास्तविकता। यथार्थ होने का भाव
याद स्त्री० (फा) १-स्मरणशक्ति। २-स्मरण करने की क्रिया।
यादगार स्त्री० (फा) स्मृति चिह्न। स्मारक।
यादगारी स्त्री० (फ) दे० 'यादगार'।
याददाश्त स्त्री०(फा) १-स्मरणशक्ति। २-स्मरण रखने के लिए लिखी हुई बात।
यादव पुं० (सं) १-यदु के वंश के लोग। २-श्रीकृष्ण
यादवी स्त्री० (सं) १-यदुकुल की स्त्री। २-दुर्गा।
यादवीय वि० (सं) यादव संम्बन्धी। पुं० गृहयुद्ध।
यादृश वि० (सं) जैसा। जिस प्रकार का।
यान पुं०(सं) १-किसी भी तरह की सवारी। वाहन २-विमान। ३-गति। ४-शत्रु पर आक्रमण करना
यानभत्ता पुं० (सं) कोई यान या सवारी रखने के बदले मिलने वाला भत्ता (कन्वेयेन्स अलाउंस)।
यानांतरण पुं० (सं) माल या यात्रियों का एक यान या पोत से उतार कर दूसरे में पहुँचाया जाना। (ट्रांसशिपमेंट)।
यानाधिदेय पुं० (सं) दे० 'यानभत्ता'। (कन्वेयेन्स अलाउंस)।
यानी अव्य० (अ) तात्पर्य यह है। अर्थात्।
यापन पुं० (सं) १-चलाना। २-व्यतीत करना। ३-निबटाना। ४-परित्याग। ५-मिटाना।
यापता वि०(फा) पाया हुआ।
याब पुं० (फा) पाने वाला (व्यक्ति)।
याभ पुं० (सं) मैथुन।
याम पुं० (सं) १-एक पहर या तीन घन्टे का समय २-काल। समय। स्त्री० (हि) रात। वि० (सं) यम-सम्बन्धी।
यामघोष पुं० (सं) मुर्गा।

यामाता पुं० (सं) दामाद।
यामि स्त्री० (सं) दे० 'यामी'।
यामिक पुं० (सं) पहरेदार।
यामित्र पुं० (सं) दे० 'जामित्र'।
यामिनी स्त्री० (हि) दे० 'यामिनी'।
यामिनी स्त्री० (सं) १-रात। २-हल्दी। ३-कश्यप की पत्नी का नाम।
यामिनीचर पुं० (सं) १-राक्षस। २-उल्लू।
यामी स्त्री० (सं) १-रात। २-कुलवधू।
याम्या स्त्री० (सं) १-दक्षिण दिशा। २-भरणी नक्षत्र।
याम्योत्तर रेखा स्त्री०(सं) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर जाती है।
यायावर पुं० (सं) १-सन्यासी। २-याचना। ३-खानाबदोश। ४-अश्वमेध का घोड़ा।
यायी पुं० (सं) जाने वाला।
यार पुं० (फा) १-मित्र। प्रेमी। २-हिमायती। ३-पर स्त्री से प्रेम करने वाला।
याराना पुं० (फा) १-मित्रता। मैत्री। स्त्री पुरुष की अनुचित रूप से की गई मैत्री।
यारी स्त्री० (फा) मित्रभाव। मैत्री।
याल स्त्री० (तु) अयाल। घोड़े की गरदन के ऊपर के बाल।
यावक पुं० (सं) १-जौ। २-जौ का सत्तू। ३-अन्न। ४-लाल। ५-महावर।
यावज्जीवन अव्य०(सं) आजन्म। जब तक जीवन रहे।
यावत् वि० (सं) १-जब तक। २-कुल। सब।
यावनी वि० (हि) यवन सम्बन्धी।
यावास पुं० (सं) १-घास, हरछड़ आदि का पूला। २-जवासे की मदिरा।
याम पुं० (सं) १-आस अवासा। २-चेष्टा।
यानु सर्व० दे० 'जासु'।
युक्त वि० (सं) १-किसी के साथ मिला हुआ। संयुक्त २-नियुक्त। ३-उचित। ४-पूर्ण। ५-आसक्त।
युक्तमना वि० (सं) दत्तचित्त।
युक्ताक्षर पुं० (सं) संयुक्त वर्ण।
युक्ताहार पुं० (सं) उचित आहार।
युक्ति स्त्री० (सं) १-उपाय। २-कौशल। ३-चाल। रीति। ४-न्याय। ५-अनुमान। ६-ठीक तर्क। ७-योग। ८-एक अर्थालंकार।
युक्तिकर वि० (सं) उचित। विचारपूर्ण।
युक्तिपूर्ण वि० (सं) दे० 'युक्तिकर'।
युक्तिमूलक वि० (सं) तर्कसंगत। (रेशनल)।
युक्तियुक्त वि० (सं) युक्तिपूर्ण।
युक्तिसंगत वि० (सं) तर्क के अनुकूल।
युक्त्याभास पुं०(सं) वह तर्क जो ऊपर से बुद्धिमत्तापूर्ण हो पर वास्तव में तथ्यहीन हो। (सोफिस्ट्री)।
युगधर पुं० (सं) १-गाड़ी का बम। २-कूबर।
युग पुं० (सं) १-जोड़ा। युग्म। २-जुआ। ३-पीढ़ी। पुश्त। ४-समय। जमाना। ५-काल के चार भेद, कलयुग, सतयुग आदि। ६-इतिहास का कोई बड़ा काल जिसमें एक ही प्रकार की घटनाएँ होती रही हों। (एपक)।
युगचेतना स्त्री० (सं) किसी काल की कोई विशिष्ट प्रवृत्ति।
युगति स्त्री० (हि) दे० 'युक्ति'।
युगधर्म पुं० (सं) समय के अनुकूल व्यवहार।
युगपत् अव्य० (सं) एक साथ। एक समय। जोड़े में
युगपुरुष पुं०(सं) अपने समय का सबसे बड़ा आदमी
युगप्रतीक पुं० (सं) युग का श्रेष्ठ पुरुष।
युगम पुं० (हि) दे० 'युग्म'।
युगयुग अव्य० (सं) बहुत काल तक।
युगल पुं० (सं) युग्म। जोड़ा।
युगलक पुं० (सं) वह कुलक जिसमें दो श्लोकों अथवा पद्यों का एक साथ मिलकर अन्वय हो।
युगांत पुं० (सं) प्रलय।
युगांतक पुं० (सं) प्रलय।
युगांतर पुं० (सं) दूसरा युग। दूसरा समय।
युगावतार पुं० (सं) युग का श्रेष्ठ पुरुष या अवतार।
युग्म पुं० (सं) १-जोड़ा। युग। द्वंद्व। युगलक।
युग्मक पुं० (सं) जोड़ा। युग्म।
युग्मचारी पुं० (सं) जोड़े में चलने वाले।
युग्मज पुं० (सं) जुड़वां बच्चे।
युग्मेच्छा स्त्री० (सं) समागम की इच्छा।
युग्य पुं० (सं) १-दो घोड़ों की गाड़ी। २-गाड़ी जोते जाने वाले दो पशु। वि० जो जोता जाने के योग्य हो।
युग्यवाह पुं० (सं) गाड़ीवान।
युत वि०(सं) १-युक्त। सहित। २-मिला हुआ।
युद्ध पुं० (सं) दो पक्षों की सेनाओं में होने वाली लड़ाई। रण। संग्राम।
युद्धक वि०(सं) युद्ध करने वाला। युद्ध सम्बन्धी।
युद्धकारी वि० (सं) लड़ाई लड़ने वाला।
युद्धकाल पुं० (सं) लड़ाई का समय।
युद्धक्षेत्र पुं० (सं) दे० 'युद्धभूमि'।
युद्धपरिषद् स्त्री० (सं) युद्ध संचालन करने के लिए मन्त्री मण्डल आदि की बनाई हुई समिति। (वार काउंसिल)।
युद्धपोत पुं० (सं) लड़ाई में काम आने वाला पोत। (वार शिप)।
युद्धबन्दी पुं० (सं) युद्ध का कैदी। (वार प्रिजनर)।
युद्धभूमि स्त्री० (सं) रणक्षेत्र।
युद्धमय वि० १-युद्ध सम्बन्धी। २-युद्ध प्रिय।

युद्धमंत्री पु० (सं) वह मंत्री जो विभाग का संचालन करता है। (वार मिनिस्टर)।
युद्धमार्ग पु०(सं) युद्ध से झगड़े निपटाने की पद्धति।
युद्धरंग पुं० (सं) १-कार्तिकेय। २-युद्धस्थल।
युद्धरत वि० (सं) लड़ाई में लगा हुआ। युद्ध में जूझा हुआ। (बेलिग्रेंट)।
युद्धलिप्त वि० (सं) युद्धरत।
युद्धविद्या स्त्री०(सं) युद्ध की विद्या।
युद्धवीर पुं० (सं) रण करने में निपुण।
युद्धशक्ति स्त्री० (सं) युद्ध करने का बल।
युद्धशाली वि० (सं) साहसी। वीर।
युद्धशास्त्र पुं० (सं) युद्ध का विज्ञान।
युद्धसार पुं० (सं) घोड़ा।
युद्धस्थगन पुं० (सं) लड़ाई का अस्थायी या स्थाई रूप से सन्धि होने से पहले बंद होना।(सीज फायर)
युद्धाचार्य पुं० (सं) युद्ध विद्या की शिक्षा देने वाला।
युद्धापराधी पुं० (सं) वह जिसने युद्ध में कोई बड़ा अपराध या कोई भेद शत्रु को दिया हो। (वार-क्रिमिनल)।
युद्धोत्तर-अर्थव्यवस्था स्त्री० (सं) युद्ध समाप्त होने पर उत्पन्न स्थितियों के अनुसार बनाई गई विशेष अर्थ व्यवस्था। (पोस्टवार एकॉनोमी)।
युद्धोत्तेजक पुं० (सं) युद्ध को बढ़ावा देने वाला। (वारमोंगर)।
युद्धोत्तेजन पुं० (सं) युद्ध की नीति को भाषणों आदि द्वारा बढ़ावा देना। (वारमोंगरिंग)।
युद्धोन्मत वि० (सं) १-लड़ाका। २-युद्ध करने के लिये उतावला।
युद्धोपकरण पुं०(सं) युद्ध की सामग्री। (एम्यूनीशन) (आर्मामेन्ट्स)।
युधिष्ठिर पुं० (सं) पाँच पांडवों में से सबसे बड़े का नाम।
युध्य वि० (सं) जिसके साथ युद्ध किया जाय।
युयुत्सा स्त्री० (सं) १-लड़ने या युद्ध करने की इच्छा।
युयुत्सु वि० (सं) जो लड़ने की इच्छा रखता हो।
युवक पुं० (सं) सोलह वर्ष से पैंतिस वर्ष की अवस्था वाला। युवा। जवान।
युवगंड पुं० (सं) मुँहासा।
युवति स्त्री० (सं) १-जवान स्त्री। २-प्रियंगु। ३-हल्दी।
युवती स्त्री० (सं) दे० 'युवति'।
युवराई स्त्री० (हि) दे० 'युवराज'।
युवराज पुं० (सं) राजा का सबसे बड़ा लड़का जो राज्य का उत्तराधिकारी हो।
युवराजी स्त्री० (हि) युवराज का पद।
युवराज्ञी स्त्री० (सं) युवराज की स्त्री।
युवरानी स्त्री (हि) युवराज्ञी।
युवा वि० (सं) युवक। जवान।
युवापिंडिका स्त्री० (सं) मुँहासा।
युष्मदीय वि० (सं) तुम लोगों का।
यूँ अव्य० (हि) दे० "यों"।
यूथ पुं० (सं) समूह। झुण्ड। (यूथ)। २-सेना। फौज।
यूथक पुं० (सं) दे० 'यूथ'।
यूथचारी वि० (सं) समूह या झुण्ड में चलने वा (हाथी इत्यादि)।
यूथनाथ पुं० (सं) १-सेनापति। २-झुण्ड का स्वा या सरदार।
यूथपति पुं० (सं) सरदार। सेनापति।
यूथपाल पुं०(सं) दे० 'यूथपति'।
यूथबन्ध पुं० (सं) १-समूह। २-सेना की टुकड़ी।
यूथभ्रष्ट वि० (सं) जो यूथ में से निकाल दिया ग हो।
यूथमुख्य पुं० (सं) किसी सेना की टुकड़ी का नायक
यूथिका स्त्री (सं) जूही का पौधा और उसका फूल।
यूथी स्त्री० (सं) दे० 'यूथिका'।
यूनानी पुं० (हि) १-यूनान देश की भाषा। २-यून देश का निवासी। ३-यूनान देश की एक चिकि प्रणाली। वि० (हि) यूनान देश का।
यूनियन स्त्री०(अं) सभा। संघ।
यूनिवर्सिटी स्त्री० (अं) विश्वविद्यालय। विद्यापीठ
यूप पुं० (सं) १-यज्ञ में वह खम्भा जिससे बलि दे वाला पशु बांधा जाता है। २-विजय स्तंभ।
यूरेनियम पुं०(अं) एक भारी रेडियो धर्मी खनिज त जो अणुबम बनाने के काम आता है।
यूरोप पुं० (अं) पूर्वी गोलार्द्ध का सबसे छोटा म द्वीप जो पश्चिम में काकेशस और यूराल के पार से आरम्भ होता है।
यूरोपियन पुं० (अं) यूरोप महादेश के किसी देश निवासी। वि० यूरोप का।
यूरोपीय वि० (हि) यूरोप सम्बन्धी। यूरोप का।
यूष पुं० (सं) मूंग आदि का जूस।
यूह पुं० (हि) समूह। झुण्ड। यूथ।
ये सर्व० (हि) दे० 'यह'। यह का बहुवचन।
येई सर्व० (हि) यही।
येऊ सर्व० (हि) यह भी।
येतो वि० (देश) इतना।
येन सर्व० (सं) जिससे।
येन केन प्रकारेण अव्य० (सं) जिस किसी भी ढ
येहू अव्य० (हि) यह भी।
यों अव्य० (हि) इस प्रकार।
यो सर्व० (हि) यह।
योक्तव्य वि० (सं) १-नियुक्त करने के योग्य। जोड़ने के योग्य।

योता पुं० (सं) १–गाड़ीवान। २–जोड़ने वाला। ३–उत्तेजक।

योत्र पुं० (सं) १–गाड़ी के जुए में बैल बांधने की रस्सी। २–रस्सी बांधने का पेंच।

योग पुं० (सं) १–संयोग। मेल। २–ध्यान। ३–धोखा ४–प्रयोग। ५–क्षेम। ६–लाभ। ७–नाम। ८–थैलगाड़ी। ९–नियम। १०–परिणाम। ११–अनुरक्तता १२–वैराग्य। १३–गणित में दो अथवा दो से अधिक राशियों का जोड़। १४–सुभीता। १५–दूत। १६–फलित ज्योतिष में सूर्य या चन्द्रमा का विशिष्ट स्थान पर आना। १७–हठयोग।

योगकन्या स्त्री० (सं) यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वह कन्या जिसे वसुदेव कृष्ण की जगह देवकी के पास रख आये थे।

योगक्षेम पुं० (सं) १–लाभ और उसकी रक्षा। २–गुजारा। ३–कुशलमंगल। ४–राष्ट्र की शांति तथा सुव्यवस्था। (पीस एण्ड ऑर्डर)। ५–वह संपत्ति जिसका बटवारा न हो।

योगगामी वि० (सं) योगबल से जाने वाला।

योगदर्शन पुं० (सं) १–पतंजलि ऋषि का दर्शन जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन करने का विधान है।

योगदान पुं० (सं) किसी कार्य में साथ देना।

योगनिद्रा स्त्री० (सं) १–सोने और जागने के बीच की स्थिति। २–योग की समाधि। ३–रण क्षेत्र में वीरों की मृत्यु।

योगफल पुं० (सं) दो या दो से अधिक संख्याओं का जोड़।

योगबल पुं०(सं) १–तपोबल। योग साधना से प्राप्त शक्ति। २–ऐन्द्रजालिक शक्ति।

योगभ्रष्ट पुं०(सं) वह योगी जिसके योग की साधना पूरी न हुई हो।

योगमाया स्त्री० (सं) १–योग की अलौकिक शक्ति। २–भगवती।

योगरूढ़ि पुं० (सं) दो शब्दों के योग से बनने वाला वह शब्द जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़ कर कोई विशेष अर्थ बतलाये।

योगवान पुं० (सं) योगी।

योगविद् पुं० (सं) १–योगशास्त्र का ज्ञाता। २–शिव ३–जो औषधियों के मिश्रण से दवाई बनाता हो।

योगवृत्ति स्त्री० (सं) योग द्वारा प्राप्त चित्त की शुभ वृत्ति।

योगशक्ति स्त्री० (सं) तपोबल।

योगशब्द पुं० (सं) सामान्य अर्थ देने वाला यौगिक शब्द।

योगशास्त्र पुं० (सं) पतञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ योग साधन पर एक ग्रन्थ।

योगशास्त्री पुं० (सं) योगशास्त्र का जानकार।

योगसिद्ध पुं० (सं) सिद्धि प्राप्त व्यक्ति। योगी।

योगसिद्धि स्त्री० (सं) योग की सफलता।

योगसूत्र पुं० (सं) सूत्रों का संग्रह।

योगांग पुं० (सं) पतञ्जलि के मत से योग के आठ अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

योगांजन पुं० (सं) एक प्रकार का आंखों का अंजन या लेप। सिद्धाञ्जन।

योगाभ्यास पुं० (सं) योगशास्त्रानुसार योग का साधन।

योगाराधन पुं० (सं) योग अभ्यास करना।

योगासन पुं० (सं) योग साधन के आसन या बैठने के ढंग विशेष।

योगिनी स्त्री० (सं) १–तपस्विनी। २–रण-पिशाचिनी ३–दुर्गा की सहचरी। ४–योगमाया। ५–उत्काल योगिनी।

योगींद्र पुं० (सं) बहुत बड़ा योगी।

योगी पुं० (सं) १–आत्मज्ञानी। २–योग साधन करने वाला। ३–शिव।

योगीश पुं० (सं) दे० 'योगीश्वर'।

योगीश्वर पुं०(सं) १–योगियों में श्रेष्ठ। २–शिव।

योगेश पुं० (सं) बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वर पुं० (सं) १–श्रीकृष्ण। २–शिव। ३–बड़ा योगी।

योगेश्वरी स्त्री० (सं) १–दुर्गा। २–शाक्तों की एक देवी।

योग्य वि०(सं) १–उपयुक्त। लायक पात्र। २–समर्थ। ३–उचित। ४–आदरणीय। ५–अधिकारी।

योग्यता स्त्री० (सं) १–बुद्धिमत्ता। २–उपयुक्तता। ३–सामर्थ्य। ४–अनुकूलता। ५–लियाकत।

योजक पुं० (सं) १–मिलाने या जोड़ने वाला। २–योजना बनाने वाला। संयोजक।

योजन पुं० (सं) १–योग। संयोग। २–परमात्मा। ३–आठ कोस का एक माप।

योजनगंधा स्त्री० (सं) व्यास की माता और शान्तनु की पत्नी का नाम। सत्यवती।

योजनगंधिका स्त्री० (सं) दे० 'योजनगंधा'।

योजना स्त्री० (सं) १–प्रयोग। व्यवहार। २–मिलान मेल। ३–रचना। ४–किसी बड़े कार्य को करने का विचार या आयोजन। (स्कीम)। ५–घटना। ६–कोई काम या उद्देश्य सिद्ध करने के लिए उपाय, साधन आदि की निश्चित रेखा। (प्रोजेक्ट,प्लान)

योजनीय वि० (सं) १–संयोग या मिलान करने योग्य २–योग का प्रयोग करने अथवा काम में लाने योग्य (एप्लीकेबल)।

योज्य वि० (सं) दे० 'योजनीय'।

स्थान। २-रणक्षेत्र। ३-अखाड़ा।
रंगमंच पु० (सं) १-नाट्यशाला। २-वह स्थान जहां नाटक खेला जाय या कोई उत्सव हो। (स्टेज)।
रंगमंडप पु० (सं) रंगभूमि।
रंगमहल पु० (हि) दे० 'रंगभवन'।
रंगमाता स्त्री० (सं) लाख।
रंगमार पु० (फा) एक ताश का खेल।
रंगरली स्त्री० (हि) आमोदप्रमोद। मौज।
रंगरस पु० (स) आनन्द-मंगल। आमोद-प्रमोद।
रंगरसिया पु०(हि) भोग विलास करने वाला व्यक्ति
रंगरूट पु० (हि) १-सेना या पुलिस में नया भर्ती होने वाला सिपाही। २-नौसिखुआ।
रंगरूप पु० (स) सूरत-शक्ल।
रंगरेज पु० (फा) कपड़े रंगने वाला।

...

आमनता। ... में प्रवाह हो।
रंगशाला स्त्री० (स) १-रंगभूमि। २-नाट्यशाला। ३-वह लम्बा चौड़ा भवन और उद्यान आदि जिसमें चलचित्र बनाए जाते हैं। (स्टुडियो)।
रंगसाज पु० (फा) रंग बनाने वाला।
रंगसाजी स्त्री० (फा) रंगसाज का काम।
रंगस्थल पु० (स) रंगभूमि।
रंगाई स्त्री० (हि) रंगने का कार्य या मजदूरी।
रंगाजीवी स्त्री० (सं) रंगसाज।
रंगाना क्रि० (हि) दूसरे को रंगाने में प्रवृत्त करना।
रंगालय पु० (सं) रंगभूमि।
रंगावट स्त्री० (हि) रंगाई।
रंगावतारक पु० (स) १-रंगरेज। २-अभिनेता।
रंगावतारी पु० (हि) अभिनेता। नट।
रंगिणी स्त्री० (हि) परिहास करने वाली स्त्री।
रंगी वि० (हि) १-मौजी। रंगीला। २-रंगीन।
रंगीन वि० (फा) १-रंगा हुआ। २-विलासप्रिय। ३-मजेदार।
रंगीनी स्त्री० (फा) १-सजावट। शृङ्गार। २-रसिकता। ३-बांकापन।
रंगीला वि० (हि) १-रसिक। मौजी। २-सुन्दर। ३-प्रेमी।
रंगोपजीवी पु० (सं) अभिनेता। नट।
रंच वि० (हि) अल्प। थोड़ा। तनिक।
रंचक वि० (हि) दे० 'रंच'।
रंज पु० (फा) १-दुःख। खेद। २-शोक।
... वि०(स)१-प्रसन्न करने वाला। २-रंगने वाला
... स्त्री० (हि) बत्ती लगाने के लिए बन्दूक के प्याले पर रखी जाने वाली बारूद।
रंजन पु० (स) १-रंगने की क्रिया। २-चित्त। ३-लाल चन्दन। ४-चित्त प्रसन्न करना। ५-रंगों से अङ्कित किया हुआ चित्र। (पेंटिंग)। वि० मन प्रसन्न करने वाला।
रंजनकारीसाहित्य पु० (स) मन बहलाव के लिए पढ़ाने की छोटी कहानियों आदि की पुस्तकें जिनके पढ़ने पर जोर नहीं पड़ता। (लाइट लिटरेचर)।
रंजना क्रि० (हि) १-रंगना। २-किसी को प्रसन्न करना।
रंजित वि० (सं) १-रंगा हुआ। २-अनुरक्त। ३-प्रसन्न।
रंजिश स्त्री० (फा) वैमनस्य। अनबन। मनमुटाव।
रंजीदगी वि० (फा) दे० 'रंजिश'।
रंजीदा १-दुःखित। २-अप्रसन्न। असन्तुष्ट।
... धूर्त। २-विकल। बेचैन।
...डे।

...

रंडीबाज पु० (हि) वेश्यागामी।
रंडीबाजी स्त्री० (हि) वेश्यागमन।
रंडुआ पु० (हि) वह आदमी जिसकी स्त्री मर गई हो।
रंता वि० (हि) अनुरक्त।
रंति स्त्री० (स) १-केलि। क्रीड़ा। २-विराम।
रंतिदेव पु० (स) १-बड़े दानी राजा का नाम। (पुराण)। २-विष्णु।
रंदना क्रि०(हि) रंदे से छील कर लकड़ी साफ करना
रंदा पु० (हि) एक बढ़ई का औजार जिससे लकड़ी छील कर साफ की जाती है।
रंधक पु० (सं) १-रसोइया। नाशक।
रंधन पु० (स) १-रांधना। २-नष्ट करना।
रंध्र पु० (स) १-छेद। सूराख। २-भग। योनि। ३-दोष।
रंभ पु० (सं) १-बांस। २-भारी स्वर।
रंभण पु० (स) १-गले लगाना। आलिंगन करना। २-रंभाना।
रंभन पु० (हि) दे० 'रंभण'।
रंभा स्त्री० (सं) १-केला। २-गौरी। ३-गाय का रंभाना या चिल्लाना। ४-वेश्या। ५-उत्तर दिशा।
रंभाना क्रि० (हि) गाय का शब्द करना।
रंभापति पु० (सं) इन्द्र।
रंभाफल पु० (स) केला।
रंभित वि० (सं) १-शब्द किया हुआ। २-बजाया हुआ।
रंभोरु वि० (सं) १-(वह स्त्री) जिसकी जांघें केले के समान उतार चढ़ाव वाली हों। २-सुन्दर।
रंहचटा पु० (हि) चसका। लालसा। आकर्षण

र पुं० (सं) १-अग्नि। पावक। २-कामाग्नि। ३-गरमी। ताप। ४-झुलसना। ५-सितार का एक बोल।
रअय्यत स्त्री० (अ) १-प्रजा। २-काश्तकार।
रअय्यत-आजार वि० (अ) प्रजा को कष्ट देने वाला।
रअय्यतदार वि० (अ) शासक। अधिकारी।
रअय्यतदारी स्त्री० (अ) शासन। राज्य।
रअय्यतनिवाज वि० (अ) प्रजा की रक्षा करने वाला।
रअय्यतपरवर वि० (अ) प्रजा का पालन करने वाला
रअय्यतवारी वि० (अ) १-अलग अलग। २-एक एक काश्तकार के साथ।
रइको अव्य० (हि) जरा भी। राई भर।
रइनि स्त्री० (हि) रात। रात्रि। निशि।
रई स्त्री० (हि) १-दही मथने की लकड़ी। मथानी। २-गेहूँ का मोटा आटा। सूजी। ३-चूर्णमात्र। वि० १-डूबी हुई। २-अनुरक्त। ३-युक्त।
रईस पुं० (अ) धनी। अमीर। बड़ा आदमी।
रउताई पुं० (हि) स्वामित्व। प्रभुत्व।
रउरे सर्व० (हि) आप।
रकत पुं० (हि) रक्त। खून। वि० लाल।
रकतकंद पुं० (हि) १-प्रवाल। मूँगा। रतालू।
रकतांक पुं० (हि) १-मूँगा २-कुंकुम। केसर। ३-लालचन्दन।
रकबा पुं० (अ) क्षेत्रफल।
रकम स्त्री० (अ) १-धन। सम्पत्ति। गहना। धन की राशि। ४-प्रकार। ५-धनवान। ६-धूर्त। ७-लगान की दर।
रकमी पुं०(हि) वह किसान जिसके साथ कोई विशेष रिआयत की जाय।
रकाब स्त्री० (फा) १-सवारी के घोड़े की काठी के नीचे पैर रखने के पावदान। २-तश्तरी।
रकाबदार पुं० (फा) १-हलवाई। २-साईस। ३-खासाबरदार जो बादशाहों के साथ खाना लेकर चलता है। ४-खानसामा। जो खाना परोसता या लगाता है।
रकाबत स्त्री० (अ) १-एक स्त्री के कई प्रेमी होना। २-प्रेम में होड़।
रकाबी स्त्री० (हि) १-तश्तरी। २-घोड़े के एक ओर लटकने वाली तलवार।
रक्त पुं० (सं) १-शरीर में बहने वाला लाल तरल पदार्थ। खून। रुधिर। २-कुंकुम। केसर। ३-तांबा। ४-कमल। ५-सिंदूर। ६-लाल चन्दन। ७-लाल रङ्ग। ८-पतंग की लकड़ी। ९-एक प्रकार का विषैला मेंढक।
रक्तआमातिसार पुं० (सं) एक रोग जिसमें खून के दस्त होने लगते हैं।
रक्तकंठ पुं० (सं) १-कोयल। २-बैंगन। वि० (सं) सुरीली आवाज वाला। जिसका कण्ठ लाल हो।
रक्तकुमुद पुं० (सं) कुईं।
रक्तकुष्ट पुं० (सं) विसर्प नामक रोग।
रक्तक्षय पुं० (सं) रक्तस्राव।
रक्तक्षेपण पुं० (सं) एक व्यक्ति का रक्त निकाल दूसरे रोग ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में पहुँचाने क्रिया। (ब्लड ट्रांसफ्यूजन)।
रक्तग्रीव पुं० (सं) १-कबूतर। २-राक्षस।
रक्तचंचु पुं० (सं) तोता। शुक।
रक्तचंदन पुं० (सं) लाल रंग का चन्दन।
रक्तचाप पुं० (सं) एक प्रकार का रोग जिसमें र वेग साधारण की अपेक्षा घट या बढ़ जाता (ब्लड प्रेशर)।
रक्तचूर्ण पुं० (सं) १-सिंदूर। २-कमीला।
रक्तज वि० (सं) १-जो रक्त से उत्पन्न हो। २-र विकार से उत्पन्न होने वाला (रोग)।
रक्तजवा स्त्री० (सं) जपाकुसुम।
रक्तजिह्वा पुं० (सं) सिंह। शेर।
रक्ततुंड पुं० (सं) तोता।
रक्तता स्त्री० (सं) ललाई। लालिमा।
रक्तदान-बैंक पुं०(हि) वह संस्था जो युद्ध में घा होने वाले या दूसरे रोगियों के लिए जिन्हें र की आवश्यकता होती है पहले से ही दूसरे स्व लोगों से रक्त लेने का प्रबंध करती है (ब्लडबैंक)।
रक्तदूषण वि० (सं) रक्त को दूषित करने वाला।
रक्तदृग स्त्री० (सं) कोयल। वि० लाल आंखों वाला
रक्तधातु पुं० (सं) १-गेरू। २-तांबा।
रक्तनयन पुं० (सं) १-कबूतर। २-चकोर।
रक्तनेत्र पुं० (सं) १-सारस पक्षी। २-कबूतर। ३-चकोर।
रक्तप पुं० (सं) राक्षस। वि० रक्त पीने वाला।
रक्तपट पुं० (सं) वह जो लाल रंग के कपड़े धारण करता हो।
रक्तपल्लव पुं० (सं) अशोक वृक्ष।
रक्तपात पुं० (सं) १-खून खराबी। २-लहू बहना। ३-ऐसा प्रहार जिससे रक्त बहे।
रक्तपायी वि० (सं) रक्त पीने वाला। पुं० खटमल।
रक्तपारद पुं० (सं) हिंगुल। शिंगरफ।
रक्तपाषाण पुं० (सं) १-लाल पत्थर। २-गेरू।
रक्तपित्त पुं० (सं) नाक से खून बहना। नकसीर का रोग।
रक्तपुष्प पुं० (सं) १-कनेर। २-अनार का पेड़। पुन्नाग।
रक्तप्रदर पुं० (सं) एक प्रकार का प्रदर जिसमें स्त्री की योनि से रक्त बहता है।
रक्तप्रमेह पुं० (सं) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें र के रंग का मूत्र आता है।

रक्तपुष्प पु० (हि) १-जपापुष्प। २-बटवृक्ष।
रक्तमोचन पु० (सं) शरीर का खून निकलना।
रक्तरोग पु० (सं) रक्त दूषित होने से उत्पन्न होने वाला रोग।
रक्तलोचन पु० (सं) कबूतर।
रक्तवसन पु० (सं) संन्यासी।
रक्तबीज पु० (सं) १-दाड़िम। अनार। २-रीठा। ३-एक राक्षस जो शुम्भ और निशुम्भ का सेनापति था।
रक्तवृष्टि स्त्री०(सं) आकाश से लाल रंग के पानी की वर्षा होना।
रक्तव्रण पु०(सं) ऐसा फोड़ा जिसमें मवाद की जगह रक्त बहता हो।
रक्तसम्बन्ध पु० (सं) वंश या कुल का सम्बन्ध।
रक्तस्राव पु० (सं) १-शरीर के किसी अंग या नस के फटने पर खून बहना। (हैमरेज)। २-घोड़ों की आंखों से लाल पानी बहने का रोग।
रक्तांबर पु०(सं) १-लाल रङ्ग का वस्त्र। २-संन्यासी।
रक्तांबु पु० (सं) रक्त का पारदर्शी और पतला भाग जो अभी लाल न हुआ हो। पेय (सीरम)।
रक्ताक्त वि० (सं) १-खून से लथपथ। २-लाल रङ्ग का।
रक्ताक्ष पु० (सं) १-चकोर। २-सारस। ३-कबूतर। ४-भैंस। ५-साठ सम्वत्सरों में से अट्ठावनवें का नाम।
रक्तातिसार पु० (सं) एक प्रकार का अतिसार जिसमें खून के दस्त होते हैं।
रक्तापरा स्त्री०(सं) किन्नरी।
रक्ताभ वि०(सं) लालरङ्ग की आभा से युक्त। ललाई लिए हुए।
रक्तार्श पु० (सं) खूनी बवासीर।
रक्तिम वि० (सं) ललाई लिए हुए।
रक्तिमा स्त्री० (सं) लाली। ललाई। सुर्खी।
रक्तोत्पल पु० (सं) लाल कमल।
रक्तोपल पु० (सं) गेरू नामक लाल मिट्टी।
रक्ष पुं०(सं)१-रक्षक। २-रक्षा। ३-लाख। ४-छप्पय छन्द का एक भेद।
रक्षक पु० (सं) १-रक्षा करने वाला। २-पहरेदार।

. . . . . .

... रक्षा)।
रक्षण पु० (सं) १-रक्षा करना। २-सुरक्षित रखना (कोई स्थान आदि)। (रिजर्वेशन)। ३-पालना पोसना।
रक्षणकर्ता पु० (सं) रक्षा करने वाला।
रक्षणीय वि० (सं) रक्षा करने के योग्य।

रक्षन पु० (हि) दे० 'रक्षण'।
रक्षना क्रि० (हि) रक्षा करना। बचाना।
रक्षस पु० (हि) असुर। दैत्य। राक्षस।
रक्षा स्त्री० (सं) १-आपत्ति, आक्रमण, हानि, नाश आदि से बचाव। (प्रोटेक्शन डिफेंस)। २-रेशम का धागा जो बच्चों की कलाई पर बांधा जाता है (भूत, प्रेत से बचाने या नजर लगने से बचाने के लिए)।
रक्षाइड स्त्री० (हि) राक्षसपन।
रक्षागृह पु०(सं) १-प्रसूतिगृह। २-युद्धकाल में हवाई हमले से बचने के लिए जमीन के अन्दर बनाए गये सुरक्षित स्थान। (शेल्टर)।
रक्षादल पु० (सं) आरक्षकों (पुलिस) की तरह का विपत्ति काल में देश में शांति बनाये रखने तथा सहायता करने के लिए नवयुवकों का बनाया गया एक दल। (होम गार्ड)।
रक्षामंत्री पु० (सं) देश की रक्षा की व्यवस्था करने वाले रक्षा विभाग का मन्त्री। (डिफेंस मिनिस्टर)।
रक्षाप्रदीप पु० (सं) भूत प्रेत आदि की बाधा से रक्षा करने के लिए जलाया गया दीप। (तन्त्र)।
रक्षाबंधन पु० (सं) श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होने वाला एक हिन्दुओं का त्यौहार जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है। सलोनो।
रक्षाभूषण पु० (सं) वह जन्तर या गहना जो भूत-प्रेत की बाधा से बचाने के लिए पहना जाय।
रक्षामणि पु० (सं) वह मणि या रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से बचने के लिये पहना जाय।
रक्षारत्न पु० (सं) दे० 'रक्षामणि'।
रक्षित वि० (सं) १-जिसकी रक्षा की गई हो। २-किसी व्यक्ति या कार्य के लिये अलग रखा हुआ (रिजर्व्ड)। सुरक्षित।
रक्षित-राज्य पु०(सं) वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राष्ट्र के संरक्षण में हो और उस राष्ट्र से केवल सीमित अधिकार प्राप्त हो। (प्रोटेक्टोरेट)।
रक्षिता स्त्री० (सं) रखैल। बिना विवाह किये वैसे ही रखी हुई स्त्री। (कीप)।
रक्षी पु० (सं) १-रक्षा करने वाला। पहरेदार। २-राक्षसों की पूजा करने वाला।
. । रक्षा करने योग्य। रक्षणीय।
. (सं) जिसकी रक्षा हो सकती हो या
.
रख,रखा स्त्री० (हि) वह भूमि जो पशुओं के लिए चरने के लिए छोड़ दी गई हो।
रखना क्रि० (हि) १-स्थिर करना। ठहराना। २-नष्ट न होने देना। ३-संग्रह करना। ४-सौंपना। ५-अपने अधिकार में लेना। ६-नियुक्त करना। ७-पकड़ या रोक लेना। ८-आघात करना। ९-स्थगित

करना। १०-धारण करना। ११-मदना। १२-ऋणी होना। १३-निवास करना। १४-उपपत्नी बनाना। १५-गर्भ धारण करना। १६-अंडे देना।
रखनी स्त्री० (हि) उपपत्नी। रखैल।
रख-रखाव पुं०(हि) १-पालन-पोषण। २-किसी वस्तु या काम की देख रेख रखते हुए उसे चालू रखना (मेन्टेन)।
रखला पुं० (हि) दे० 'रहँकला'।
रखवाई स्त्री०(हि) १-खेतों की रखवाली। २-रखवाली की मजदूरी। रखने की क्रिया या ढंग।
रखवाना क्रि० (हि) रखने का काम दूसरों से कराना।
रखवार पुं० (हि) रखवाला। चौकीदार।
रखवारी स्त्री० (हि) दे० 'रखवाली'।
रखवाला पुं० (हि) १-रक्षक। रक्षा करने वाला। २-चौकीदार। पहरेदार।
रखवाली स्त्री० (हि) रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।
रखाई स्त्री० (हि) रखने की क्रिया भाव या मजदूरी
रखान स्त्री० (हि) पशुओं के चरने के लिए छोड़ी हुई भूमि। चरी।
रखाना क्रि० (हि) १-रक्षा करना। २-पहरा देना।
रखिया पुं० (हि) १-रक्षक। रखने वाला। २-गांव में पूजा के लिए सुरक्षित वृक्ष।
रखियाना क्रि० (हि) बरतन आदि को राख से मांजना।
रखीसर पुं० (हि) १-नारद ऋषि। २-ऋषिवर।
रखेड़िया पुं० (हि) ढोंगी साधु।
रखेली स्त्री० (हि) उपपत्नी। बिना विवाह किये घर में रखी हुई स्त्री।
रखैया पुं० (हि) १-रक्षा करने वाला। २-रखने वाला।
रखैल स्त्री० (हि) दे० 'रखेली'।
रखौत पुं० (हि) गोचर भूमि। चरी।
रखौना पुं० (हि) दे० 'रखौत'।
रग स्त्री० (फा) १-शरीर की नस या नाड़ी। २-पत्तों में दिखाई देने वाली नसें।
रगड़ स्त्री० (हि) १-घर्षण। २-हलके घर्षण से उत्पन्न चिह्न। ३-झगड़ा। ४-भारी श्रम।
रगड़ना क्रि० (हि) १-घर्षण करना। २- पीसना। ३-परेशान करना। ४-अभ्यास के लिए कोई काम बार-बार करना। ५-अति परिश्रम करना।
रगड़वाना क्रि०(हि) रगड़ने का काम दूसरे से कराना।
रगड़ा पुं० (हि) १-रगड़ने की क्रिया या भाव। २-निरंतर चलने वाला। झगड़ा। ३-अत्यधिक परिश्रम करना।
रगड़ा-झगड़ा पुं०(हि) लड़ाई झगड़ा।
रगड़ान स्त्री० (हि) रगड़ने की क्रिया या भाव। रगड़
रगड़ी वि० (हि) १-रगड़ने वाला। २-झगड़ा
रगत पुं० (हि) रक्त। खून।
रगदना क्रि० (हि) दे० 'खदेड़ना'।
रगर स्त्री० (हि) दे० 'रगड़'।
रगवाना क्रि० (हि) चुप कराना। शांत करा
रगाना क्रि० (देश) चुप या शांत करना या हो
रगी स्त्री० (देश) एक प्रकार का मोटा अन्न जो ... में होता है।
रगीला वि० (हि) १-हठी। जिद्दी। २-दुष्ट।
रगेद स्त्री० (हि) १-दौड़ने या भागने की क्रि... पशुओं आदि के संयोग की प्रवृत्ति या अव...
रगेदना क्रि० (हि) भगाना। खदेड़ना। दौड़ा...
रघु पुं० (सं) १-अयोध्या के सूर्यवंशी प्रसि... जो दिलीप के पुत्र और श्रीरामचन्द्र जी के ... थे। २-रघुवंश में उत्पन्न।
रघुकुल पुं०(सं) राजा रघु का वंश।
रघुकुलचन्द्र पुं० (सं) श्रीरामचन्द्रजी।
रघुनंद पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
रघुनंदन पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
रघुनाथ, रघुनायक, रघुपति पुं० (सं) श्रीराम...
रघुराई पुं० (हि) श्रीरामचन्द्रजी।
रघुराय पुं० (हि) श्रीरामचन्द्रजी।
रघुरैया पुं० (हि) दे० 'रघुराय'।
रघुवंश पुं० (सं) १-महाराज रघु का कुल या... महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसि...
रघुवंशमणि पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
रघुवंशी वि० (सं) रघु के वंश का। पुं० क्षत्रि... एक उपजाति।
रघुवर पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
रघुवीर पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
रघुश्रेष्ठ पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
रघूत्तम पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
रचना स्त्री० (सं) १-रचने या बनाने की क्रि... भाव। निर्माण। (क्रिएशन)। २-बनाने का... कौशल। ३-निर्मित पदार्थ। ४-फूलमाला ब... ५-स्थापित करना। ६- उद्यम। ७-केश वि... ८-साहित्यिक कृति। क्रि० (हि) १-निर्माण क... २-विधान करना। ३-ग्रन्थ आदि लिख... (कम्पोजीशन)। ४-प्रस्तुत करना। ५-स... ६-अनुष्ठान करना। ७-रङ्गना।
रचनात्मक वि० (सं) १-जो किसी प्रकार की ... से सम्बन्ध रखता हो। (क्रिएटिव)। २-जो ... समाज की उन्नति से सम्बन्धित हो। (कन्स्ट्र...
रचयिता पुं०(सं) बनाने वाला। रचना करने...
रचवाना क्रि० (हि) १-रचने का काम दू... कराना। बनवाना। २-मेंहदी लगाना।

रचाना क्रि० (हि) १-आयोजन करना। २-रंगना। ३-हाथ पैर में मेंहदी लगाना।
रचित वि० (सं) रचना किया हुआ।
रचिवाचि श्रव्य० (हि) परिश्रम करके।
रच्छ पु० (हि) दे० 'रक्ष'।
रच्छक पु० (हि) दे० 'रक्षक'।
रच्छन पु० (हि) दे० 'रक्षण'।
रच्छस पु० (हि) दे० 'राक्षस'।
रच्छा स्त्री० (हि) दे० 'रक्षा'।
रज पु० (हि) १-चांदी। २-धोबी। (सं) १-फूलों का पराग। २-स्त्रियों के मासिक धर्म के समय निकलने वाला रक्त। स्त्री० धूल। गर्द।
रजक पुं० (सं) धोबी।
रजपूती स्त्री० (हि) वीरता। शूरता।
रजत स्त्री० (सं) १-चांदी। रूपा। २-हाथीदांत। वि० १-सफेद। २-लाल।
रजतजयंती स्त्री० (सं) किसी संस्था, मनुष्य या किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के होने के पच्चीस वर्ष पश्चात् मनाई जाने वाली जयन्ती। (सिल्वर जुबिली)।
रजतपट पु० (सं) वह श्वेत पर्दा जिस पर चल चित्र दिखाया जाता है। (सिल्वर स्क्रीन)।
रजतपर्वत पु० (सं) चांदी का पर्वत।
रजतपात्र पुं० (सं) चांदी का बरतन।
रजतभाजन पुं० (सं) रजतपात्र।
रजतमय वि० (सं) चांदी का बना हुआ।
रजताई स्त्री० (हि) सफेदी।
रजताकर पु० (सं) चांदी की खान।
रजताचल पु० (सं) कैलाश पर्वत।
रजतोपम पुं० (सं) हरताल।
रजधानी स्त्री० (हि) दे० 'राजधानी'।
रजन स्त्री० (सं) राल। (रेजिन)।
रजना क्रि० (हि) १-रंगा जाना। २-रंग में डुबाना।
रजनी स्त्री० (सं) १-रात। रात्रि। २-हल्दी। ३-नील। ४-लाख। ५-एक नदी।
रजनीकर पु० (सं) चन्द्रमा।
रजनीगंधा स्त्री० (सं) रात के समय फूलने वाला एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल।
रजनीचर पु० (सं) १-राक्षस। २-चन्द्रमा। वि० रात के समय घूमने फिरने वाला।
रजनीजल पुं० (सं) कुहरा। ओस।
रजनीपति पु० (सं) चन्द्रमा।
रजनीमुख पु० (सं) सन्ध्या। सायंकाल।
रजनीरमण पु० (सं) चन्द्रमा।
रजनीश पु० (सं) चन्द्रमा।
रजपूत पु०(हि) दे० 'राजपूत'।
रजपूती स्त्री० (हि) १-राजपूत होने का भाव। २-शूरता। वीरता।

रजब पु०(अ) मुसलमानों के साल का सातवाँ चान्द्र-मास।
रजबहा पु० (हि) किसी नदी या नहर से निकला हुआ बड़ा नल।
रजवती स्त्री० (सं) रजस्वला।
रजवती वि० (सं) रजस्वला।
रजवाड़ा पु०(हि) १-राज्य। देशी रियासत। २-राजा।
रजवार पुं० (हि) राजा का दरबार। राजद्वार।
रजस्वला वि० (सं) जिस का रज प्रवाहित होता हो। ऋतुमति।
रजा स्त्री० (अ) १-इच्छा। मरजी। २-अनुमति। ३-छुट्टी। ४-हुक्म। स्वीकृति।
रजाइस स्त्री० (हि) आज्ञा। हुक्म।
रजाई स्त्री० (हि) १-राजा होने का भाव। २-तोशक लिहाफ।
रजाना क्रि० (हि) १-राज्यसुख का भोग करना। २-बहुत सुख देना।
रजाय स्त्री० (हि) दे० 'रजा'।
रजिया स्त्री० (देश) अन्न नापने का भाव। डेढ़ सेर का एक मान।
रजिस्टर पु० (अं) १-वह बही या किताब जिसमें हिसाब किताब लिखा जाता है। २-हाजिरी की किताब। पञ्जी।
रजिस्टर्ड वि० (अं) पञ्जीबद्ध।
रजिस्ट्रार पु० (अं) वह अधिकारी जिसका काम दस्तावेजों या प्रतिज्ञा पत्रों को विधिवत् पञ्जीबद्ध करना होता है। पंजीयक।
रजिस्ट्री स्त्री० (अं) १-किसी प्रतिज्ञापत्र को विधिवत् पञ्जीबद्ध करने का काम। २-चिट्ठी आदि का डाकखाने में पञ्जीबद्ध कराने का काम जिससे चिट्ठी पते पर पहुँचाने का डाकखाने पर कानूनन उत्तरदायित्व होता है।
रजिस्ट्रेशन पुं० (अं) पञ्जीबद्ध कराना। पञ्जीकरण।
रजील वि० (अ) नीच। छोटी जाति का।
रजु स्त्री० (हि) दे० 'रज्जु'।
रजोकुल पु० (हि) राजवंश। राजा का घराना।
रजोगुण पु० (सं) जीवधारियों की प्रकृति का वह स्वभाव जिसमें उनकी भोगविलास तथा दिखावटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है।
रजोदर्शन पु० (सं) रजस्वला होना। स्त्रियों का मासिक धर्म।
रजोधर्म पु० (सं) स्त्रियों का मासिक धर्म।
रजोनिवृत्ति स्त्री० (सं) स्त्रियों के जीवन का वह परिवर्तन जब उनका मासिक धर्म अंतिम रूप से बन्द हो जाता है। (मेनोपॉज)।
रज्जाक वि० (अ) खुराक या रोजी देने वाला। पु०

रज्जु स्त्री०(सं) १-रस्सी। २-स्त्रियों के सिर की चोटी
रज्जुकण्ठ पुं०(सं) एक प्राचीन आचार्य का नाम
रटंत स्त्री०(हि) रटाई। रटने की क्रिया या भाव।
रट स्त्री० (हि) कोई बात या शब्द बार-बार बोलने का काम।
रटन स्त्री० (हि) रटने की क्रिया या भाव।
रटना क्रि० (हि) १-कोई शब्द या बात बारबार कहना। २-कण्ठस्थ करने के लिए बारबार पढ़ना।
रढ़ना क्रि० (हि) दे० 'रटना'।
रण पुं० (सं) १-लड़ाई। युद्ध। जंग २-रमण। ३-शब्द। ४-गति। ५-भेद।
रणकर्म पुं० (सं) लड़ाई। युद्ध।
रणकामी पुं०(सं) युद्ध की इच्छा करने वाला।
रणकारी पुं० (सं) युद्ध करने वाला।
रणकोष पुं० (सं) युद्ध की सहायता के लिए इकट्ठा किया गया धन। (वारफण्ड)।
रणक्षेत्र पुं० (सं) लड़ाई का मैदान।
रणखेत पुं० (हि) रणक्षेत्र।
रणछोड़ पुं० (हि) श्रीकृष्ण का एक नाम।
रणत्कार पुं० (सं) १-खड़खड़। झनकार। २-शब्द। गुञ्जार।
रणदुंदुभी पुं० (सं) युद्ध का नगाड़ा। मारू बाजा।
रणनीति स्त्री० (सं) युद्ध चलाने या किलेबन्दी करने का ढंग। (स्ट्रैटेजी)।
रणपंडित पुं० (सं) युद्ध कला में प्रवीण।
रणपोत पुं० (सं) युद्ध में प्रयोग किए जाने वाला पोत। (वारशिप)।
रणप्रिय पुं० (सं) १-विष्णु। २-बाज पक्षी।
रणभूमि स्त्री० (सं) लड़ाई का मैदान।
रणभेरी स्त्री० (सं) दे० 'रणदुंदुभी'।
रणमत्त पुं० (सं) हाथी।
रणरंग पुं० (सं) लड़ाई का उत्साह। २-युद्धक्षेत्र। युद्ध।
रणलक्ष्मी स्त्री० (सं) युद्ध की देवी। विजय लक्ष्मी।
रणवंदी पुं०(सं) युद्धवंदी। रण में पकड़ा गया शत्रु-सैनिक। (केप्टिव)।
रणवाद्य पुं० (सं) युद्ध में बजने वाले बाजे।
रणशिक्षा स्त्री० (सं) लड़ाई की शिक्षा। युद्ध का अभ्यास।
रणसंकुल पुं० (सं) घनघोर युद्ध।
रणसज्जा पुं० (सं) युद्ध की तैयारी।
रणसहाय पुं० (सं) युद्ध में सहायता करने वाला।
रणसिंघा, रणसिंहा पुं० (सं) तुरही।
रणस्थल पुं० (सं) युद्धक्षेत्र। रणभूमि।
रणांगण पुं० (सं) रणभूमि। लड़ाई का मैदान।
रत वि०(सं) १-अनुरक्त। आसक्त। २-लीन। लिप्त पुं० १-मैथुन। २-योनि। ३-लिंग। ४-प्रेम।
रतजगा पुं० (सं) १-रातभर होने वाला आनन्दोत्सव २-रातभर विवाह आदि पर जागना।
रतन पुं० (हि) दे० 'रत्न'।
रतनजोत स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की मणि। २-क्षुप। ३-बड़ी दन्ती।
रतनाकर पुं० (हि) दे० 'रत्नाकर'।
रतनागर पुं० (हि) समुद्र।
रतनार वि० (हि) दे० 'रतनारा'।
रतनारा वि० (हि) कुछ लाल। सुर्खी लिए हुए।
रतनारी स्त्री० (हि) एक प्रकार का धान। लाली।
रतनालिया वि० (हि) दे० 'रतनारा'।
रतनावली स्त्री० (हि) दे० 'रत्नावली'।
रतमुंहा वि० (हि) लाल मुख वाला। पुं० बन्दर।
रताना क्रि० (हि) १-रत होना। २-किसी को अप ओर करना।
रति पुं० (सं) १-कामदेव की पत्नी। २-मैथुन। प्रेम। ४-शोभा। ५-सौभाग्य। ६-साहित्य में शृङ्ग रस का स्थाई भाव। ७-रहस्य।
रतिक अव्य० (हि) रत्तीभर। बहुत थोड़ा।
रतिकर पुं० (सं) १-कामी। २-एक समाधि। जि जिसमें आनन्द की वृद्धि हो।
रतिकलह पुं० (सं) समागम। मैथुन।
रतिकांत पुं० (सं) कामदेव।
रतिकुहर पुं० (सं) योनि। भग।
रतिकेलि स्त्री० (सं) संभोग। भोगविलास।
रतिक्रिया स्त्री० (सं) मैथुन। संभोग।
रतिज-रोग पुं० (सं) स्त्री संभोग से उत्पन्न होने वा रोग। गर्मी। सूजाक। (वेनेरल डिजीज)।
रतिज्ञ पुं० (सं) १-वह जो स्त्री में अपने प्रति प्रे उत्पन्न करने में प्रवीण हो। २-जो रतिक्रीड़ा प्रवीण हो।
रतिदान पुं० (सं) मैथुन। संभोग।
रतिनाथ पुं० (सं) कामदेव।
रतिनायक पुं० (सं) कामदेव।
रतिपति पुं० (सं) कामदेव।
रतिप्रिय पुं० (सं) कामदेव। वि० कामुक।
रतिबंध पुं० (सं) मैथुन करने का ढंग। आसन।
रतिबंधु पुं० (सं) नायिक। पति।
रतिभवन पुं० (सं) १-योनि। २-सम्भोग करने क स्थान।
रतिभाव पुं० (सं) १-स्त्री और पुरुष का आपस क का आकर्षण। २-प्रेम। ३-दाम्पत्यभाव।
रतिमंदिर पुं० (सं) दे० 'रतिभवन'।
रतिभौन पुं० (हि) दे० 'रतिभवन'।
रतिराई पुं० (हि) कामदेव।
रतिवंत वि० (हि) सुन्दर।
रतिशक्ति स्त्री० (सं) रमण या सहवास करने का श

रती स्त्री० (हि) १-कामदेव की पत्नी। २-सौंदर्य। ३-तेज। कांति। ४-मैथुन। ५-एक हाई की आठ धान की तौल। वि० थोड़ा। कम। अल्प।
रतीको अव्य० (हि) रत्ती भर। जरा भी। अल्प।
रतीश पु० (सं) कामदेव।
रतोपल पु० (हि) १-लाल कमल। २-गेरू। ३-लाल सुरमा।
रतौंधी स्त्री० (हि) आँखों का एक रोग जिसमें रात को कुछ नहीं दिखाई देता।
रत्त पु० (हि) दे० 'रक्त'।
रत्तल स्त्री० (देश) एक तौल जो लगभग आधा सेर की होती है।
रत्ती स्त्री० (हि) १-आठ चावल की एक तौल। २-घुंघची का दाना। ३-शोभा।
रत्थी स्त्री० (हि) अरथी।
रत्न पु० (सं) १-बहुमूल्य चमकीले खनिज पत्थर जो आभूषण आदि में लगाये तथा पहने जाते हैं। मणि। २-मानिक। लाल। वि० सर्वश्रेष्ठ।
रत्नकर्णिका स्त्री०(सं) कान में पहनने का रत्न जड़ित आभूषण।
रत्नगर्भा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
रत्नगिरि पु० (सं) बिहार में स्थित पर्वत का प्राचीन नाम।
रत्नगृह पु० (सं) बौद्धों के स्तूप के मध्य की कोठरी जिसमें रत्न आदि सुरक्षित रहते थे।
रत्नच्छाया पु० (सं) रत्नों की चमक। दीप्ति।
रत्नदीप पु०(सं) १-रत्न जड़ित दीप। २-एक कल्पित रत्न जिससे पाताल में उजाला होता है।
रत्ननिचय पु० (सं) रत्नों की राशि।
रत्ननिधि स्त्री० (सं) १-समुद्र। २-खंजन। ३-विष्णु ४-मेरु पर्वत।
रत्नपरीक्षक पु० (सं) रत्नों को परखने वाला। जौहरी।
रत्नपर्वत पु० (सं) सुमेरु पर्वत।
रत्नपारखी पु० (सं) जौहरी।
रत्नप्रदीप पु० (सं) दीपक के समान चमकने वाला रत्न।
रत्नाकर पु० (सं) १-समुद्र। २-वह स्थान जहाँ से रत्न निकलते हैं। ३-बुद्ध का नाम। ४-वाल्मीकि मुनि का पहले का नाम। रत्नों का समूह।
रत्नागिरि स्त्री० (हि) दे० 'रत्नगिरि'।
रत्नाचल पु० (सं) दान के निमित्त लगाया हुआ रत्नों का ढेर जो पर्वत के रूप में होता है।
रत्नाधिपति पु० (सं) कुबेर।
रत्नावली स्त्री० (सं) १-रत्नों की श्रेणी। २-रत्नों की माला। ३-एक अर्थालंकार।
रत्नेश पु०(सं) १-समुद्र। २-कुबेर।

रथ पु० (सं) १-एक प्रकार की सवारी या गाड़ी जो दो या चार पहियों की होती है। वहल। स्यंदन। २-शरीर। पैर। ३-शतरंज का एक मोहरा जिसे ऊंट कहते हैं।
रथक्षोभ पुं० (सं) रथ में बैठ कर चलने का अनुभव होने वाला झटका।
रथचरण पु० (सं) १-रथ के पहिये। २-चकवा।
रथपति पु० (सं) रथ का नायक। रथी।
रथपाद पु०(सं) दे० 'रथचरण'।
रथमहोत्सव पुं० (सं) रथयात्रा का उत्सव।
रथयात्रा स्त्री०(सं) आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला उत्सव जिसमें जगन्नाथ जी, सुभद्रा और बलराम जी की प्रतिमाएँ रथ पर सवार करके निकाली जाती हैं।
रथवान् पु० (सं) सारथी।
रथवाह पु०(सं) १-सारथी। २-घोड़ा।
रथवाहक पु०(सं) सारथी। रथ हांकने वाला।
रथशाला स्त्री० (सं) अस्तबल। गाड़ीखाना।
रथशास्त्र स्त्री० (सं) रथ चलाने की विद्या।
रथसूत पु० (सं) सारथी।
रथांग पुं० (सं) १-रथ का पहिया। २-चकवा। ३-चक्र नामक अस्त्र।
रथांगपाणि पु० (सं) विष्णु।
रथिक पुं० (सं) रथी। जो रथ पर सवार हो।
रथी पु० (सं) रथ पर सवार होकर लड़ने वाला योद्धा।
रथोत्सव पु० (सं) रथ यात्रा का उत्सव।
रथोद्धता स्त्री० (सं) ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
रथ्य पु० (सं) १-रथ में जोड़े जाने वाला घोड़ा। २-रथ चलाने वाला। ३-पहिया।
रथ्या स्त्री० (सं) १-रथों के आने जाने का रास्ता या सड़क। २-चौराहा। ३-कई रथ या गाड़ियां। ४-नाली।
रथ्यायान पु० (सं) सड़क पर बिछाई गई लोहे की पटरी पर चलने वाली सवारी ले जाने वाली गाड़ी (ट्राम)।
रद पु० (सं) दाँत। वि० (फा) १-खराब। २-तुच्छ। निरर्थक।
रदच्छद पु० (सं) ओंठ। ओठ।
रदक्षत पु० (सं) १-ओंठ। २-रति के समय दांतों के लगने का चिह्न।
रददान पु०(सं) रति के समय दांतों का चिह्न बनाना।
रदन पु० (सं) दांत।
रदनच्छद पु० (सं) अधर। ओष्ठ।
रदपट पु० (सं) अधर। ओंठ।
रदी पु० (सं) हाथी।
रद्द वि० (फा) १-बदला हुआ। परिवर्तित। २-खराब

या निकम्मा ठहराया हुआ ।
रद्दा पुं०(देश) १-दीवार पर चिनी गई ईंटों की एक पंक्ति या मिट्टी की एक तह । २-तह । स्तर । ३-चिनी हुई मिठाइयों का स्तर । ४-कुश्ती का एक पेंच ५-भालू के मुख पर बांधने की चमड़े की थैली ।
रद्दी वि० (फा) निकम्मा । बेकार । स्त्री० पुराने और काम में न आने वाले कागज ।
रन पुं० (हि) १-रण । युद्ध । २-जंगल । पु० (देश) झील । ताल ।
रनकना क्रि० (हि) घुँघरू आदि का धीमा शब्द होना ।
रनछोर पु०(हि) दे० 'रणछोड़' ।
रनन क्रि० (हि) झनकार होना । बजना ।
रनबांकुरा पु० (हि) वीर । योद्धा ।
रनवास पुं० (हि) रानियों के रहने का महल । अन्तःपुर ।
रनित वि० (हि) बजता हुआ ।
रनिया पु० (हि) दे० 'रनवास' ।
रनी पुं० (हि) वीर । योद्धा ।
रपट स्त्री० (हि) १-फिसलना । २-दौड़ । ३-ढाल । उतार । स्त्री० (हि) आख्या । रिपोर्ट । सूचना ।
रपटना क्रि० (हि) १-फिसलना । २-झपटना । ३-कोई काम झटपट करना ।
रपटाना क्रि० (हि) १-फिसलना । २-खिसकाना ।
रपट्टा पु० (हि) १-फिसलने की क्रिया । २-झपट । चपेट । ३-दौड़-धूप ।
रफ वि० (अं) जो चिकना और साफ न हो । २-खुरदरा ।
रफते-रफते अव्य० (हि) दे० 'रफ्ता-रफ्ता ।
रफल पु (हि) ऊनी चादर । (रैपर) । स्त्री० (हि) दे० 'राइफल' ।
रफा वि० (फा) १-दूर किया हुआ । निवारित । २-शांत या दबा हुआ ।
रफू पुं०(अ) फटे या कटे हुए कपड़े पर फटे हुए स्थान को तागे की बुनावट से ठीक करना ।
रफूगर पुं० (अ) रफू करने वाला ।
रफ्तनी स्त्री० (फा) १-जाने की क्रिया या भाव । २-माल निकासी ।
रफ्तार स्त्री० (फा) चाल । गति ।
रफ्ता-रफ्ता अव्य० (फा) धीरे-धीरे ।
रब पुं० (अ) ईश्वर । परमेश्वर ।
रबड़ पु० (हि) १-वट जाति का एक वृक्ष । २-इस वृक्ष से निकलने वाले दूध का बनाया हुआ लचीला पदार्थ जो बहुत सी वस्तुओं के काम आता है ।
रबड़छंद पु० (हि) वह छन्द जिसमें मात्रा आदि का विचार न हो (व्यंग) ।
रबड़ी स्त्री० (हि) औटा कर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिली होती है ।
रबाना पु० (देश) एक प्रकार का छोटा डफ ।
रबाब पुं० (अ) एक प्रकार का सारङ्गी की तरह का बाजा ।
रबाबिया पु० (हि) रबाब बजाने वाला ।
रबी स्त्री० (अ) १-वसंतऋतु । २-वसंतऋतु में काटी जाने वाली फसल ।
रब्त पुं० (अ) १-अभ्यास । २-मेलजोल ।
रब्त-जब्त पु० (अ) घनिष्ठता ।
रब्ब पुं० (अ) दे० 'रब' ।
रभस पुं० (सं) १-वेग । २-हर्ष । ३-प्रेमोत्साह । उत्सुकता । ४-पछतावा । ६-रहस्य ।
रमक पुं० (सं) १-उपपति । यार । २-प्रेमी । स्त्री० १-तरङ्ग । २-झकोरा । ३-पेंग ।
रमकना क्रि० (हि) १-हिंडोले पर पेंग मारना । २ झूमते या इतराते हुए चलना ।
रमजना पु० (हि) दे० 'रामजना' ।
रमझोला पु० (हि) घुंघरू । नूपुर ।
रमण वि० (सं) १-सुन्दर । २-प्रिय । ३-रमने वाला पुं० १-विलास । क्रीड़ा । २-मैथुन । ३-पति । ४-कामदेव । ५-[illegible] । ६-जघन । ७-सूर्य का सारथी । ८-एक वर्णवृत्त ।
रमण-गमना स्त्री० (हि) साहित्य में वह नायिका जो यह समझ कर दुःखित होती है कि संकेत स्थान पर नायक आया होगा और मैं वहां उपस्थित न थी ।
रमणा स्त्री० (सं) दे० 'रमणी' ।
रमणी स्त्री० (सं) १-सुन्दर युवति स्त्री । २-स्त्री ।
रमणीक वि० (सं) सुन्दर । मनोहर ।
रमणीय वि० (सं) मनोहर । सुन्दर ।
रमणीयता स्त्री० (सं) १-सुन्दरता । २-साहित्य दर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे ।
रमता वि० (हि) जो बराबर घूमता फिरता रहता हो ।
रमन वि० (हि) दे० 'रमण' ।
रमना क्रि० (हि) १-आनन्द करना । २-भोग विलास के निमित्त कहीं ठहरना । ३-व्याप्त होना । ४-घूमना-फिरना । ५-लीन होना । ६-चल देना । पु० १-वह स्थान जहां चरने के लिए पशु छोड़े जाते हैं । २-बाग । ३-कोई रमणीक स्थान ।
रमनी स्त्री० (हि) दे० 'रमणी' ।
रमनीक वि० (हि) दे० 'रमणीक' ।
रमनीय वि० (हि) दे० 'रमणीय' ।
रमल पु० (अ) पासे फेंक कर अच्छा या बुरा होने वाला फल बताने की विद्या ।
रमसरा पुं० (हि) दे० 'रामशर' ।
रमा स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी । २-पत्नी ।
रमाकांत पुं० (सं) विष्णु ।
रमाधव पुं० (सं) विष्णु ।

रमानरेश पु० (सं) विष्णु।
रमाना क्रि० (हि) लीन या अनुरक्त करना।
रमापति पु० (सं) विष्णु।
रमारमण पुं० (सं) विष्णु।
रमित वि० (हि) मुग्ध। जिसका मन किसी में रमा हुआ हो।
रमेश पु० (सं) विष्णु।
रमेश्वर पु० (सं) विष्णु।
रमैती स्त्री० (हि) १-काम के बदले में काम करने की रीति। २-ऐसे काम का दिन।
रमैनी स्त्री० (हि) कबीरदास जी के चौपाइयों और दोहे में कहे गये कुछ शब्द।
रमैया पु० (हि) १-ईश्वर। राम। २-आत्मा।
रम्माल पु० (अ) रमल जानने वाला। नजूमी।
रम्य वि० (सं) १-सुन्दर। २-मनोरम।
रम्हाना क्रि० (हि) गाय का बोलना या रँभाना।
रय पु० (सं) १-धूल। गर्द। २-वेग। तेजी।
रयन स्त्री० (हि) रात।
रयना स्त्री० (हि) रात्रि। रात।
रय्यत स्त्री० (हि) दे० 'रैयत'।
रर स्त्री० (हि) रटन। रट।
ररना क्रि० (हि) दे० 'रटना'।
ररिहा वि० (हि) १-ररने वाला। २-बार-बार गिड़गिड़ा कर मांगने वाला।
रलना क्रि० (हि) मिलना।
रलाना क्रि० (हि) मिलाना। सम्मिलित करना।
रली स्त्री० (हि) १-विहार। क्रीड़ा। २-प्रसन्नता। आनन्द। पुं० (देश) एक प्रकार का वस्त्र।
रल्ल पु० (हि) रेला। हल्ला।
रव पु० (सं) १-ध्वनि। गुंजार। २-आवाज। शब्द। ३-शोर। पुं० (हि) १-रवि। २-सूर्य। ३-गति।
रवकना क्रि०(हि) १-दौड़ना। उछलना। २-उमड़ना।
रवण पु० (सं) १-कांसा नामक धातु। २-कोयल। ३-रव शब्द। ४-ऊंट। ५-विदूषक। वि० १-शब्द करता हुआ। २-तप्त। ३-चंचल।
रवणरेती स्त्री०(सं) यमुना तट की रेतीली भूमि जहाँ श्रीकृष्ण खेला करते थे।
रवताई स्त्री० (हि) १-राजा होने का भाव। २-प्रभुत्व
रवन वि० (हि) रमण करने वाला। पु० पति। स्वामी
रवना क्रि० (हि) १-क्रीड़ा करना। २-बोलना। शब्द करना। पु० (हि) रावण।
रवनि स्त्री० (हि) १-रमणी। सुन्दरी। २-पत्नी।
रवनी स्त्री० (हि) दे० 'रवनि'।
रवन्ना पु० (हि) १-वह कागज जिस पर भेजे हुए माल का ब्योरा लिखा होता है। २-वह आज्ञापत्र जिससे किसी रास्ते से जाने का अधिकार मिलता है। (ट्रांजिट पास)।
रवा पु० (हि) १-कण। दाना। २-सूजी। ३-बारूद का दाना। ४-घुंघरू में शब्द करने के लिए डाले के दाने। वि० (फा) १-ठीक। उचित। २-प्रचलित।
रवाज पु०(फा) परिपाटी। प्रथा। चलन।
रवादार वि० (हि) १-दानेदार। २-शुभचिंतक।
रवानगी स्त्री० (फा) प्रस्थान।
रवाना वि० (फा) प्रस्थित। जो कहीं भेजा गया हो।
रवाब पु० (हि) दे० 'रबाब'।
रवाबिया पु० (हि) १-लाल पत्थर। २-रबाबिया।
रवारव अव्य० (हि) जल्दी। बहुत थोड़ा।
रवायत स्त्री० (प) १-कहावत। २-कहानी।
रवारो स्त्री० (फा) १-शीघ्रता। २-दौड़ादौड़।
रवि पु०(सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-नायक। सरदार ४-आक। ५-लाल अशोक वृक्ष।
रविकर पुं० (सं) सूर्यकिरण।
रविकांतमणि पु० (सं) सूर्यकांतमणि।
रविकुल पुं० (सं) सूर्यवंश।
रविकुलमणि पु० (सं) श्रीरामचन्द्रजी।
रविज पु० (सं) शनि।
रविजा स्त्री० (सं) यमुना।
रवितनय पु० (सं) १-यमराज। २-शनैश्चर। ३-कर्ण।
रवितनया स्त्री० (सं) यमुना।
रवितनूजा स्त्री० (सं) यमुना।
रविनंद स्त्री० (सं) दे० 'रवितनय'।
रविनंदिनी स्त्री० (सं) यमुना।
रविपुत्र पु० (सं) दे० 'रवितनय'।
रविपूत पु० (सं) दे० 'रवितनय'।
रविबिंब पु० (सं) १-रविमंडल। २-मानिक।
रविमंडल पु० (सं) सूर्य के चारों ओर दिखाई देने वाला लाल गोला।
रविमणि पु० (सं) सूर्यकांतमणि।
रविवंशी पु० (सं) सूर्यवंशी।
रविवार पु० (सं) इतवार। शनिवार के बाद और सोमवार के पहले पड़ने वाला दिन।
रविश स्त्री० (फा) १-गति। चाल। २-ढंग। ३-बाग की क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।
रविसारथि पुं० (सं) अरुण।
रविसुवन पु० (हि) १-अश्विनीकुमार। २-दे० 'रवितनय'।
रविसुत पुं० (हि) दे० 'रवितनय'।
रवैया पु० (हि) १-चलन। चालचलन। २-ढंग।
रशना स्त्री० (सं) करधनी।
रशनोपमा स्त्री० (सं) रसनोपमा नामक अलंकार।
रश्क पुं० (फा) ईर्ष्या। डाह।
रश्मि पु० (सं) १-किरण। २-घोड़े की लगाम।

बगीची।

रस पु० (सं) १-स्वाद। २-छः की संख्या। ३-किसी पदार्थ का सार। ४-साहित्य के नौ रस और वात्सल्य रस। ५-सुख का अनुभव। ६-प्रेम। ७-काम क्रीड़ा। ८-उमंग। ६-गुण। १०-कोई तरल पदार्थ ११-वनस्पतियों, फलों आदि का निचोड़ा हुआ तरल अंश। १२-वीर्य। १३-भांति। तरह। १४-शरबत। १५-प्राणियों के शरीर से निकलने वाला कोई तरल पदार्थ। १६-पारा। १७-भस्म। १६ विष २०-दूध।

रसकर्म पु० (सं) वैद्यक में पारे आदि से भस्म आदि बनाने की रीति।

रसकेलि स्त्री० (सं) १-विहार। २-क्रीड़ा। ३-हँसी ठट्ठा। दिल्लगी।

रसखीर स्त्री० (सं) मीठा भात। शर्बत या ऊख के रस में पकाये हुए चावल।

रसगंधक पु० (सं) १-गंधक। रसौत। ३-शिंगरफ।

रसगुनी स्त्री० (हि) काव्य अथवा संगीत शास्त्र का ज्ञाता।

रसगुल्ला पु० (हि) छेने से बनने वाली एक बंगाली मिठाई।

रसघ्न स्त्री० (सं) सुहागा।

रसज पु० (सं) १-गुड़। २-रसौत। ३-शराब की तल छट।

रसजात पु० (सं) रसौत।

रसज्ञ वि० (सं) १-काव्य अथवा साहित्य के मर्म को समझने वाला। २-निपुण। ३-रस का जानने वाला।

रसज्ञा स्त्री० (सं) १-गंगा। २-जीभ।

रसज्येष्ठ पु०(सं) १-मधुर रस। २-शृङ्गार रस।

रसद वि० (सं) १-स्वादिष्ट। २-सुखद। पु० चिकित्सक। स्त्री० (फा) १-वह जो बांटने पर हिस्से के अनुसार मिले। २-कच्चा अनाज। जो अभी पकाया जाना हो। ३-सेना का वह खाद्य पदार्थ जो उसके साथ रहता है। (प्रोविजन्स)।

रसदार वि० (हि) १-रसवाला। २-स्वादिष्ट।

रसधातु पु० (सं) १-पारा। २-शरीर की रस नामक धातु।

रसधेनु स्त्री०(सं)१-जीभ। जिह्वा। २-स्वाद। ३-करधनी। ४-लगाम। रस्सी। ५-चन्द्रहार। क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे बहाना या टपकाना। २-ध्यान मग्न होना। ३-प्रेम में लीन होना। ४-स्वाद लेना। ५-प्रफुल्लित होना।

रसनाथ पु० (सं) पारा।

रसनायक पु० (सं) १-महादेव। २-पारा।

रसनाल पु० (सं) पक्षी (जिनके केवल जीभ होती है दांत नहीं होते)।

रसनीय वि० (सं) १-स्वाद लेने योग्य। २-स्वादिष्ट।

रसनेन्द्रिय स्त्री०(स) जीभ। जिह्वा।

रसनोपमा स्त्री० (स) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय आगे चलकर उपमान हो जाता है।

रसपति स्त्री० (सं) १-चन्द्रमा। २-पारा। ३-शृङ्गार-रस। ४-राजा।

रसपर्पटी स्त्री०(सं) वैद्यक में एक रसौषध जो संग्रहणी आदि में दी जाती है।

रसप्रबन्ध पु०(स) १-नाटक। २-वह कविता जिसमें एक ही विषय कई सम्बन्ध पद्यों में वर्णित हो।

रसभरी स्त्री० (हि) एक प्रकार का स्वादिष्ट फल जो वसन्त में आता है।

रसभस्म पु० (सं) पारे की भस्म।

रसभीना वि० (हि) १-आनन्द-मग्न। २-तर। गीला

रसमसा वि० (हि) १-आनन्द-मग्न। २-तर। ३-पसीने से भरा। श्रांत।

रसमाता स्त्री० (हि) जीभ।

रसमातृका स्त्री० (सं) जीभ।

रसमारण पु० (स) वैद्यक में पारे को मारने या शुद्ध करने की क्रिया।

रसमि स्त्री० (हि) १-किरण। २-आभा। चमक।

रसमुंडी स्त्री० (हि) एक बंगला मिठाई का नाम।

रसमैत्री स्त्री० (स) दो ऐसे रसों को मिलाना जिनसे स्वाद में वृद्धि हो।

रसराज पु०(सं) १-पारा। २-शृंगार रस। ३-रसौत ४-वैद्यक में तिल्ली की एक दवा।

रसराय पु० (हि) दे० 'रसराज'।

रसरी स्त्री० (हि) रस्सी।

रसवंत पु०(हि)रसिक। रसिया। रसज्ञ। वि० रसीला

रसवंती स्त्री० (हि) रसौत।

रसवत स्त्री० (हि) रसौत।

रसवत्ता स्त्री० (सं) १-रसीलापन। मिठास। २-सुन्दरता।

रसवाद पु० (स) १-प्रेमपूर्ण विवाद या झगड़ा। २-बकवाद। ३-प्रेम की बातचीत।

रसवान् वि० (सं) रसपूर्ण। जिसमें रस हो।

रसवाहिनी स्त्री० (सं) वह नाड़ी जो भोजन से बने रस को शरीर में फैलाती है।

रसविक्रमी पु० (सं) शराब बेचने वाला।

रसविरोध पु० (सं) रसों का ठीक मेल न होना। (सुश्रुत)। २-एक ही पद में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति।

रसशार्दूल पु० (सं) वैद्यक में एक प्रकार का रस।

रसशास्त्र पु० (सं) रसायन-शास्त्र।

रसशोधन पु० (सं) १-पारे को शुद्ध करने की क्रिया २-सुहागा।

रससंरक्षण पु० (सं) वैद्यक की वह चार क्रियाएँ

रससार पुं० (स) शहद। मधु।
रससिंदूर पुं०(स) वैद्यक में पारे और गंधक के योग से बनने वाला एक रसौषध।
रसा, रसा क्रि० (फा) पहुँचाने वाला—जैसे चिट्ठी-रसा।
रसांजन पुं० (स) रसौत।
रसा स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-जीभ। ३-रसातल। ४-अंगूर। ५-आम। पुं० (हि) तरकारी आदि का तरल अंश। झोल। शोरबा।
रसाइन पुं० (हि) दे० 'रसायन'।
रसाइनी पुं० (हि) १-रसायन विद्या का ज्ञाता। २-कीमियागर।
रसाई स्त्री० (फा) पहुँच। किसी तक पहुँचने का भाव या क्रिया।
रसात्मक वि० (सं) सुन्दर। रस से भरा हुआ।
रसातल पुं० (सं) पृथ्वी के नीचे के लोकों का छठा लोक।
रसाध्यक्ष पुं० (स) मादक द्रव्यों की जांच पड़ताल करने वाला सरकारी अधिकारी।
रसाना क्रि०(हि) १-रसपूर्ण करना। २-प्रसन्न करना।
रसाभास पुं० (स) १-साहित्य में रस का ऐसे अवसर पर आना जहाँ उपयुक्त न हो। ... कार।
रसायन पुं० (स) १-तांबे से सोना ... कल्पित योग। २-वह औषध जो मनुष्य को पुष्ट और स्वस्थ बनाये रखे। ३- पदार्थों के तत्वों का ज्ञान।
रसायनज्ञ पुं० (सं) रसायनशास्त्र का वेत्ता।
रसायनविज्ञान पुं० (स) वह विज्ञान जिसमें पदार्थों के तत्वों का अथवा उनमें होने वाले विकारों या परिवर्तनों का विवेचन होता है। (केमिस्ट्री)।
रसायनशास्त्र पुं० (सं) दे० 'रसायनविज्ञान'।
रसायनश्रेष्ठ पुं० (स) पारा।
रसायनिक वि० (स) दे० 'रासायनिक'।
रसायनी पुं० (हि) दे० 'रसायनज्ञ'। स्त्री०(सं) बुढ़ापे को दूर करने वाली औषध।
रसार वि० (हि) दे० 'रसाल'।
रसाल पुं० (सं) १-आम। २-गन्ना। ३-गेहूँ। ४- ...
... धनाम का स्थान। ५-आमोद-प्रमोद का स्थान।
रसाल-शर्करा स्त्री० (सं) गन्ने के रस से बनी हुई चीनी।

ऐसा करना। ३-खेत जोत कर और पाटे से बराबर करके छोड़ देना।
रसावर पुं० (हि) दे० 'रसौर'।
रसाष्टक पुं० (सं) आठ महारसों का समूह जिसमें पारा, ईंगुर आदि सम्मलित हैं।
रसास्वादी वि० (स) १-रस का स्वाद लेने वाला। पुं० (हि) भौंरा।
रसियाउर पुं० (देश) ईख के रस में पकाये हुए चावल।
रसिक वि० (स) १-रस या आनन्द लेने वाला। २-काव्य का मर्मज्ञ। ३-सहृदय। ४-रसिया। ५-घोड़ा ६-सारस। ७-एक छन्द।
रसिकता स्त्री० (सं) १-रसिक होने का भाव या धर्म २-हँसीठट्ठा।
रसिकाई स्त्री० (हि) रसिकता।
रसित वि० (सं) १-ध्वनि करता हुआ। २-बहता हुआ। ३-रसयुक्त। ४-जिस पर मुलम्मा चढ़ा हो
रसिया पुं० (हि) १-रसिक। २-फागुन में गाया जाने वाला एक गाना।
रसियाव पुं० (हि) गन्ने के रस में पके हुए चावल।
रसी पुं० (हि) दे० 'रसिक'।

रसील वि० (हि) दे० 'रसीला'।
रसीला वि० (हि) १-रसयुक्त। २-स्वादिष्ट। ३-रस लेने वाला। ४-बांका। ५-भोगविलास का प्रेमी।
रसीलापन पुं० (हि) रसीला होने का भाव या धर्म।
रसूम पुं० (फा) १-कानून। नियम। २-नियत कर या राजस्व। ३-नेग। नजराना। ४-रस्म।
रसूम-अदालत पुं० (फा) दावा दायर करते समय दिया जाने वाला धन। (कोर्टफीस)।
रसूल पुं० (फा) पैगम्बर। ईश्वर का दूत।
रसौत स्त्री० (सं) १-पारा। २-जीरा। ३-धनिया। ४-लोबिया।
रसे-रसे क्रि०वि० (हि) धीरे-धीरे।
रसेश्वर पुं० (सं) १-पारा। २-एक रसौषध।
रसोइया पुं० (हि) १-बनाने वाला। ... भोजन बनाने वाला। ... वस्तु। २-

रसोईखाना

रसोईदारी स्त्री० (हि) १-रसोइये का पद । २-भोजन बनाने का काम ।
रसोईबरदार पुं० (हि) भोजन ले जाने वाला ।
रसोदर पुं० (सं) शिंगरफ ।
रसोद्भव पुं० (सं) रसौत ।
रसोद्भूत पुं० पुं० (सं) रसौत ।
रसोय स्त्री० (हि) भोजन ।
रसौत स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध औषधि ।
रसौर पुं० (हि) रसिआउर ।
रस्ता पुं० (हि) दे० 'रास्ता' ।
रस्म पुं० (अ) १-रिवाज । प्रथा । परिपाटी । २-मेलजोल ।
रस्मि स्त्री० (हि) दे० 'रश्मि' ।
रस्मी वि० (हि) रस्म सम्बन्धी ।
रस्सा पुं० (हि) बहुत मोटी और बड़ी रस्सी ।
रस्सी स्त्री० (हि) डोरी । सूत आदि को बटकर बनाई हुई रज्जु ।
रस्सीबाट पुं० (हि) रस्सी बटने वाला ।
रहँकला पुं० (हि) १-एक तोप लादने की गाड़ी । २-एक हलकी गाड़ी ।
रहँचटा पुं० (हि) उत्सुकतापूर्ण लालसा । चसका ।
रहँचट पुं० (हि) कूएँ में से पानी निकालने का एक यन्त्र ।
रहँटा पुं० (हि) सूत कातने का चरखा ।
रहः पुं० (सं) १-निर्जन स्थान । २-यथार्थता । ३-रहस्य ।
रहचटा पुं० (हि) दे० 'रहँचटा' ।
रहचह स्त्री० (हि) चिड़िया की बोली ।
रहजन पुं० (फा) डाकू । लुटेरा ।
रहजनी स्त्री० (फा) डकैती । लुटेरापन ।
रहठा पुं० (देश) अरहर के पौधे का सूखा डंठल ।
रहन स्त्री० (हि) १-रहने की क्रिया या भाव । २-आचार । व्यवहार ।
रहन-सहन स्त्री० (हि) जीवन व्यतीत करने और काम करने का ढंग ।
रहना क्रि० (हि) १-स्थित होना । ठहरना । २-रुकना । ३-निवास करना । ४-ठीक ढंग से आचरण करना ५-नौकरी करना । ६-बाकी बचना ।
रहनि स्त्री० (हि) १-रहने की क्रिया या भाव । २-लगन । ३-आचरण ।
रहनी स्त्री० (हि) दे० 'रहनि' ।
रहम पुं० (अ) १-दया । २-करुणा । ३-कृपा ।
रहमत स्त्री० (अ) दया । कृपा ।
रहमदिल वि० (अ) कृपालु ।
रहमान वि० (अ) बड़ा दयावान । पुं० । ईश्वर ।
रहर स्त्री० (हि) दे० 'अरहर' ।
रहरी स्त्री० (हि) अरहर ।
रहल स्त्री० (हि) १-पुस्तक पढ़ने का लकड़ी का ढांचा २-सफर ।
रहस पुं० (हि) १-लीला । क्रीड़ा । २-आनंद । ३-एकांत स्थान ।
रहसना क्रि० (हि) प्रसन्न होना ।
रहसि स्त्री० (हि) १-रहस्य । २-एकांत स्थान ।
रहस्य पुं० (सं) १-गुप्त भेद । २-मर्म की बात । ३-गूढ़त्व । ४-मजाक ।
रहस्यवाद पुं० (सं) ईश्वर के प्रत्यक्ष संपर्क के लिए मनन या चिंतन करने की प्रवृत्ति । (मिस्टीसिज्म)
रहस्यवादी पुं० (सं) रहस्यवाद में विश्वास रखने वाला ।
रहासहा वि० (हि) बचाखुचा । बचा-बचाया ।
रहाइश स्त्री० (हि) १-रहने का स्थान । २-स्थिति । ३-बरदाश्त ।
रहाई स्त्री० (हि) १-रहना । २-कल । चैन । आराम
रहाना क्रि० (हि) १-रहना । २-होना ।
रहित वि० (सं) बिना । बहिव । फकीर ।
रहिला पुं० (हि) चना ।
रहीम वि० (अ) दयालु । कृपालु । पुं० १-एक मुसलमान कवि का उपनाम । २-ईश्वर ।
रांक वि० (हि) दे० 'रंक' ।
रांकव क्रि० (हि) दे० 'रंक' ।
रांगड़ी पुं० (देश) पंजाब में उपजने वाला एक प्रकार का चावल ।
रांगा पुं० (हि) सीसे के रङ्ग की एक मुलायम धातु ।
रांच अव्य० (हि) दे० 'रंच' ।
रांचना क्रि० (हि) १-चाहना । २-रङ्ग पकड़ना । ३-बनाना । ४-रङ्ग चढ़ाना ।
रांजना क्रि० (हि) १-काजल लगाना । २-रङ्गना । ३-टूटे हुए बरतन में टांका लगाना ।
रांटा पुं० (देश) टिटिहरी चिड़िया । पुं० (हि) दे० 'रहँटा' ।
रांड़ स्त्री० (हि) १-विधवा । २-वेश्या ।
रांध पुं० (हि) १-निकट । पास । २-पड़ोस ।
रांध-पड़ोस अव्य० (हि) आस-पास ।
रांधना क्रि० (हि) भोजन पकाना ।
रांपी स्त्री० (देश) चमड़ा काटने का खुरपी के आकार का औजार ।
रांभना क्रि० (हि) गाय का बोलना ।
राआ पुं० (हि) राजा ।
राइ पुं० (हि) १-छोटा राजा । २-सरदार । वि० (हि) उत्तम । श्रेष्ठ ।
राइता पुं० (हि) दे० 'रायता' ।
राइफल स्त्री० (हि) एक प्रकार की बंदूक ।
राई स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की छोटी सरसों । २-अल्प मात्रा । ३-राजसी ।

राईभर क्रि० वि० (हि) अल्प। बहुत थोड़ा सा।
राउ पुं० (हि) राजा।
राउत पुं० (हि) १-राजवंश का कोई व्यक्ति। २-सरदार। बहादुर। ४-क्षत्रिय।
राउर पुं० (हि) महल का अन्तःपुर। रनिवास। वि० श्रीमान्। आपका।
राउल पुं० (हि) १-राजा। २-राजकुल में उत्पन्न व्यक्ति।
राकस पुं० (हि) राक्षस।
राकसिन स्त्री० (हि) राक्षसी।
राकसी स्त्री० (हि) राक्षसी।
राका स्त्री० (सं) १-पूर्णिमा की रात। ३-चन्द्रमा। पूर्णमासी। ४-पहली बार रजस्वला होने वाली स्त्री
राकापति पुं० (सं) चन्द्रमा।
राकेश पुं० (सं) चन्द्रमा।
राक्षस पुं०(सं) १-दैत्य। असुर। २-आठ संवत्सरों में से एक। ३-कोई दुष्ट प्राणी।
राक्षसविवाह पुं०(सं) विवाह की वह प्रणाली जिसमें वधू के लिए युद्ध करना पड़ता है।
राक्षसी स्त्री० (सं) १-राक्षस की स्त्री। २-दुष्ट स्वभाव की स्त्री।
राख स्त्री० (हि) जले हुए पदार्थ का शेष चोश भस्म क्षार।
राखना क्रि०(हि) १-रक्षा करना। २-रखवाली करना ३-छिपना। ४-रोक रखना। ५-ग्राना।
राखी स्त्री० (हि) १-रक्षाबंधन का डोरा। २-सलोनों के त्यौहार पर कलाई पर मंगल सूत्र बांधना।
राग पुं० (सं) १-अनुराग। प्रेम। २-प्रिय या अप्रिय वस्तु के प्रति मन में उठने वाले भाव। ३-रंग। लाल रंग। ४-ईर्ष्या। द्वेष। ५-स्वर, ताल और लययुक्त संगीत। ६-सुगंधित लेप। ७-पद। अंगीत
रागना क्रि० (हि) १-अनुरक्त होना। २-रंगा जाना। ३-निमग्न होना। ४-गाना। अलापना।
रागिनी स्त्री० (सं) संगीत में किसी राग का भेद या पत्नी।
रागी पुं० (हि) १-अनुरागी। प्रेमी। २-गवैया। स्त्री० रागी। वि० रंगा हुआ।
राघव पुं० (सं) १-रामचन्द्रजी। २-दशरथ। ३-रघुवंश में उत्पन्न वस्तु। ४-एक समुद्री मछली।
राचना क्रि० (हि) १-रचना। बनाना। २-बनना। ३-अनुरक्त होना। ४-रंगा जाना। ५-लीन होना। ६-प्रभावान्वित होना।
राछ पुं० (हि) १-कारीगरी का औजार। २-करघे के भीतर का पक्का धेरा। ३-बरात। ४-चम्पी के बीच का खूंटा। ५-ठठेर का बड़ा हथौड़ा।
राछस पुं० (हि) दे० 'राक्षस'।
राज पुं० (सं) राजा का लघु रूप। (हि) १-राज्य। शासन। (गवर्नमेंट)। २-राज्य। ३-कुल। ४-बड़ी सम्पत्ति या अमीरदारी। (स्टेट)। ५-मकान बनाने वाला कारीगर।
राज पुं० (फा) रहस्य। गुप्त बात।
राजकरस्व पुं० (सं) राष्ट्र या देश के नाम पर उसके कार्यों के लिए सरकार द्वारा लिया गया ऋण। २-वह पत्र जो इस ऋण के बदले में ऋण देने वाले व्यक्तियों को दिया जाता है। (स्टॉक बोंड)।
राजकदंब पुं० (सं) स्वादिष्ट फलों वाला कदंब।
राजकन्या स्त्री० (सं) १-राजपुत्री। २-केवड़े का फूल
राजकर पुं० (सं) राजस्व। (टैक्स)।
राजकर्ता पुं० (सं) वह व्यक्ति जो किसी को राजगद्दी पर बैठने या उतारने की क्षमता रखता हो।
राजकाज पुं० (हि) राजप्रबंध। व्यवस्था।
राजकीय वि० (सं) राजा या राज्य से सम्बन्ध रखने वाला। सरकारी।
राजकीयदल पुं०(सं) वह दल जिसके हाथ में राज्य-शासन हो। (पॉलिटिकल पार्टी)।
राजकीयअभियोक्ता पुं० (सं) सरकार की ओर से मुकदमे चलाने वाला अभियोक्ता (गवर्नमेंट प्रोसी-क्यूटर)।
राजकुंवर पुं० (हि) राजकुमार।
राजकुमार पुं० (सं) राजा का लड़का।
राजकुमारी स्त्री० (सं) राजा की लड़की।
राजकुल पुं० (सं) राजाओं का वंश या खानदान।
राजकुष्मांड पुं० (सं) बैंगन।
राजकोषीय-नीति स्त्री० (सं) सरकार की आय या कोष सम्बन्धी नीति। (फिस्कल पॉलिसी)।
राजगद्दी स्त्री० (हि) १-राजसिंहासन। २-राज्या-भिषेक। ३-राज्याधिकार।
राजगामी स्त्री० (सं) जब्त की हुई सम्पत्ति या धन। (एस्चीट)।
राजगीर पुं०(हि) राज। मकान बनाने वाला कारी-गर।
राजगीरी स्त्री० (हि) राजगीर का पद या कार्य।
राजगृह पुं०(सं) १-राजा का महल। २-एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है।
राजचिह्न पुं० (सं) राजाओं के अधिकारसूचक चिह्न छत्र, दण्ड आदि। (इनसिग्निया)।
राजचिह्नक पुं० (सं) उपस्थ। लिंग।
राजतंत्र पुं० (सं) १-राज्य का शासन और व्यवस्था (पॉलिटी)। २-वह शासन प्रणाली जिसमें राजा ही प्रधान हो। (मोनार्की)।
राजता स्त्री० (सं) राजा का पद [illegible]
राजत्व पुं० (सं) राजता।
राजदंड पुं० (सं) १-राजा के हाथ में रहने वाला दंड। २-राजा का [illegible]

राजदंत पुं० (सं) दांतों की पंक्ति का वह बीच का दांत जो औरों से बड़ा और चौड़ा होता है।
राजदया स्त्री० (सं) किसी न्यायालय द्वारा मृत्यु दण्ड दिया जाने पर राष्ट्रपति का वह अधिकार जिससे वह अभियुक्त को क्षमा प्रदान कर सकते हैं। (क्लीमेंसी)।
राजदूत पुं० (सं) राज्य की ओर से किसी दूसरे राज्य या देश में भेजा या नियुक्त किया जाने वाला दूत (एम्बैसेडर)।
राजदूतावास पुं० (सं) राजदूत के रहने का स्थान। (एम्बैसी)।
राजद्रोह पुं० (सं) राजा के या राज्य के प्रति किया गया विद्रोह। (सेडीशन)।
राजद्रोही पुं० (सं) राज्य से द्रोह करने वाला। बागी
राजद्वार पुं० (सं) १-राजा का द्वार या ड्योढ़ी। २-न्यायालय।
राजधर्म पुं० (सं) राजा का कर्तव्य।
राजधानी स्त्री० (सं) किसी देश या राज्य का वह प्रधान नगर जहां से उसका शासन होता है। (कैपिटल)।
राजनय पुं० (सं) दो राष्ट्रों के बीच समझौता करने का राजनैतिक कुटिल व्यवहार। (डिप्लोमेसी)।
राजना क्रि० (हि) १-उपस्थित होना। २-सोहना। शोभित होना।
राजनीति स्त्री० (सं) राज्य की वह नीति जिसके अनुसार प्रजा का शासन और अन्य देशों के साथ व्यवहार होता है। (पॉलिटिक्स)।
राजनीतिक वि० (सं) राजनीति-सम्बन्धी। (पॉलिटिकल)।
राजनीतिज्ञ पुं० (सं) राजनीति को भली भांति समझने वाला। (पॉलिटीशियन)।
राजन्य पुं० (सं) १-राजा। २-क्षत्रिय।
राजपंखी पुं० (हि) राजहंस।
राजपटोल पुं०(सं) एक प्रकार का परवल।
राजपत्नी स्त्री० (सं) १-रानी। २-पीतल। धातु।
राजपत्रित वि० (सं) वह (अधिकारी)। जिसकी नियुक्ति, स्थानांतरण आदि सरकार द्वारा प्रकाशित विज्ञप्ति द्वारा हो। (गजेटेड)।
राजपथ पुं० (सं) मुख्य मार्ग। सब लोगों के प्रयोग के लिए बनाई गई लम्बी-चौड़ी सड़क।। (हाईवे)
राजपद्धति स्त्री०(सं) १-राजनीति। २-राजशासन की प्रणाली। (पॉलिटी)।
राजपुत्र पुं० (सं) १-राजकुमार। २-एक उपाधि। २-एक वर्णसंकर जाति।
राजपुत्रा स्त्री० (सं) राजमाता। (क्वीन-मदर)
राजपुत्री स्त्री० (सं) १-राजकुमारी। २-राजपूत की लड़की।
राजपुरुष पुं० (सं) १-राज्य का कोई कर्मचारी। २-राज्य या शासन की नीति को भलीभांति समझने वाला। (स्टेट्समैन)।
राजपूत पुं० (हि) क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।
राजप्रमुख पुं० (सं) राजस्थान, मैसूर, त्रावंकोर आदि राज्यसंघों में नियुक्त देशी रियासतों के राजा जिन्होंने राजपाल का पद ग्रहण किया हुआ है।
राजप्रसाद पुं० (सं) राजा का महल। राजमहल।
राजप्रेष्य वि० (सं) राज्य या राजा की ओर से भेजे जाने वाले। (ऑन सर्विस)।
राजबंदी पुं० (सं) वह कैदी या बन्दी जिसे सरकार ने बिना कोई मुकदमा चलाये संदेह के कारण कैद कर रखा हो। (स्टेट प्रिजनर)।
राजबाड़ी स्त्री० (हि) १-राजा की वाटिका। २-राजमहल।
राजबाहा पुं० (हि) बड़ी नहर।
राजभंडार पुं० (सं) राजकोष। खजाना।
राजभक्त वि० (सं) जो अपने राजा के प्रति निष्ठा या भक्ति रखता हो। (लॉयल)।
राजभक्ति स्त्री० (सं) राजा के प्रति प्रेम और निष्ठा। (लायल्टी)।
राजभवन पुं०(हि) १-राजा का महल। २-राजधानी का वह स्थान जहाँ राज्यपाल, उपराज्यपाल या राष्ट्रपति निवास करता है। (गवर्नमेंट हाउस)।
राजभाषा स्त्री०(सं) किसी देश की वह भाषा जिसका उपयोग उसके न्यायालयों या सब कार्यों में होता है (स्टेट लैंग्वेज)।
राजभोग पुं० (सं) १-वह उत्तम वस्तुएँ जिनका उपभोग राजा लोग करते हैं। २-एक प्रकार का चावल।
राजमंडल पुं०(सं) ऐसे राजाओं का राज्य जो किसी राज्य के आस पास हो।
राजमहल पुं०(सं) राजा का महल। प्रासाद।
राजमहिषी स्त्री० (सं) पटरानी।
राजमाता स्त्री० (सं) किसी देश के राजा या शासक की माता।
राजमार्ग पुं० (सं) राजपथ। चौड़ी सड़क।
राजमुद्रा स्त्री० (सं) राजा या राज्य की वह मुद्रा जो राजकीय पत्रों पर अंकित की जाती है। (रायल-सील)।
राजमुनि पुं० (सं) राजर्षि।
राजयक्ष्मा पुं० (सं) क्षय नामक रोग। तपेदिक।
राजयक्ष्मी वि० (सं) क्षय रोगी।
राजयान पुं० (सं) १-पालकी। २-राजा की सवारी का निकलना। ३-वह सवारी जो राजा के लिए हो
राजयोग पुं० (सं) १-योग शास्त्र में वर्णित पतंजलि का योग का उपदेश। २-किसी की जन्म-कुण्डली

का वह योग जिसके पड़ने पर वह राज या राजतुल्य होता है (फ० ज्यो०)।
राजरथ पु० (सं) राजा की सवारी का रथ।
राजराज पु० (सं) १-सम्राट। २-कुबेर। ३-चन्द्रमा
राजराजेश्वर पुं०(सं) १-राजाओं का राजा। अधिराज। २-एक रसौषध।
राजराजेश्वरी स्त्री० (सं) १-राजेश्वर की पत्नी। भगवती। २-दस महाविद्याओं में से एक।
राजरोग पुं० (सं) १-ऐसा रोग जो असाध्य हो। २-क्षय रोग। तपेदिक।
राजर्षि पुं० (सं) वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुलोत्पन्न हो।
राजलक्ष्मी स्त्री०(सं) १-राजश्री। २-राजा की शोभा
राजवंश पु०(सं) राजा का कुल या वंश। (डाइनेस्टी)
राजवर्त्म पुं० (सं) राजपथ। लम्बी चौड़ी सड़क। राजमार्ग।
राजवल्लभ पु० (सं) १-खिरनी। २-बड़ा आम। ३-पेबंदी बेर। ४-एक मिश्र औषध।
राजविद्या स्त्री० (सं) राजनीति।
राजविद्रोह पुं० (सं) बगावत। राजद्रोह।
राजविद्रोही पु० (सं) राजद्रोही। बागी।
राजवीथी स्त्री० (सं) राजपथ। चौड़ी सड़क।
राजवैद्य पु० (सं) १-राजाओं की चिकित्सा करने वाला वैद्य। २-कुशल चिकित्सक।
राजश्री स्त्री० (सं) राजा की शोभा या वैभव।
राजसदन पुं० (सं) १-दरबार। २-राजसभा। ३-वह न्यायालय जिसका न्यायाधीश राजा हो।
राजस वि० (सं) रजोगुण से उत्पन्न। पुं० क्रोध। आवेश।
राजसत्ता स्त्री० (सं) १-राजशक्ति। २-वह सत्ता जो किसी देश के संरक्षण, वर्द्धन तथा रक्षण के लिए स्थापित की जाती है।
राजसत्तात्मक वि० (सं) जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो।
राजसदन पुं० (सं) १-राजा का महल। २-(आधुनिक) राजधानी में वह स्थान जहाँ किसी प्रदेश का राज्यपाल रहता है।
राजसभा स्त्री० (सं) १-राजाओं की सभा। २-राजदरबार।
राजसमाज पुं० (सं) १-राजा लोग। २-राजाओं का दरबार या समाज।
राजसाक्षी पुं० (सं) अपराधियों में से वह व्यक्ति जो सरकार की तरफ से गवाह बन जाता है। (एप्रूवर)
राजसिक वि० (सं) दे० 'राजस'।
राजसिरी स्त्री० (हि) दे० 'राजश्री'।
राजसी वि०(हि)१-राजाओं के योग्य। २-दे० 'राजस' स्त्री० (सं) दुर्गा।
राजसूय पु० (सं) वह यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल सम्राट को होता है।
राजस्थान पु०(सं) १-राजपूताना। २-बीकानेर, जयपुर आदि कई रियासतों का संयुक्त प्रदेश।
राजस्व पु० (सं) कर, शुल्क आदि के रूप में सरकार को होने वाली आय। (रेवेन्यू)।
राजस्वमंत्री पु० (सं) राजस्व विभाग का मंत्री। (रेवेन्यू मिनिस्टर)।
राजहंस पु० (सं) १-एक प्रकार का बड़ा हंस। २-एक संकर राग का नाम।
राजांक पु० (सं) दे० 'राजचिह्न'। (इनसिग्निया)।
राजा पु० (सं) १-किसी देश या जाति का प्रधान शासक। नरेश। भूप। २-ब्रिटिश शासन काल की एक उपाधि।
राजाज्ञा स्त्री० (सं) राजा या राज्य की आज्ञा।
राजाधिदेय पुं० (सं) राजाओं को सरकारी खजाने से निजी खर्च के लिए दी जाने वाली बँधी हुई रकम। (प्रिवी पर्स)।
राजाधिराज पुं० (सं) सम्राट राजाओं का राजा।
राजाधिष्ठान पुं० (सं) १-वह नगर या स्थान जहाँ राजा का महल हो। २-राजधानी।
राजासन पु० (सं) तख्त। राजसिंहासन।
राजि स्त्री० (सं) १-पंक्ति। कतार। २-रेखा। ३-राई पुं० आयु के पुत्र का नाम।
राजिका स्त्री० (सं) १-राई। २-दे० 'राजि'।
राजिव पु० (हि) कमल।
राजी स्त्री० (सं) १-पंक्ति। श्रेणी। २-राई। ३-लाल सरसों।
राज़ी वि० (प) १-सहमत। अनुकूल। २-नीरोग। ३-प्रसन्न। स्त्री० अनुकूलता। रजामन्दी।
राजीनामा पु० (फ) वह लेख जो वादी तथा प्रतिवादी के समझौते होने के बाद लिखा जाता है और न्यायालय में पेश किया जाता है।
राजीव पु० (सं) १-कमल। २-नील कमल। ३-एक मृग जिसकी पीठ पर धारियाँ होती हैं।
राजेन्द्र पुं० (सं) १-राजाओं का राजा। २-सम्राट
राजेश्वर पु० (सं) सम्राट। राजाधिराज।
राजोपकरण पु० (सं) दे० 'राजचिह्न'।
राजोपजीवी पु० (सं) १-राज्य कर्मचारी। २-राजा की सेवा करके जीविका उपार्जन करने वाला।
राज्ञी स्त्री० (सं) १-रानी। २-सूर्य की स्त्री का नाम ३-नीलवृक्ष।
राज्य पुं० (सं) १-शासन। २-एक राजा या एक केन्द्रीय सत्ता द्वारा शासित देश। (स्टेट)।
राज्यकर्ता पु० (सं) १-शासक। २-अधिकारी। ३-राजा।
राज्यपक्षांश पुं०(सं) १-प्रदेश। [illegible] भाग जो किसी सत्ता के [illegible] हो।

३-स्त्रियों के लिए एक आदरसूचक शब्द।

राब स्त्री० (हि) पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।

राबड़ी स्त्री० (हि) रबड़ी। बसौंधी।

राम पुं० (सं) १-परशुराम। २-बलराम। ३-राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र। ४-ईश्वर। ५-तीन की संख्या।

रामकजरा पुं० (देश) एक प्रकार का (अगहनिया) धान।

रामचना स्त्री० (देश) एक प्रकार की तोप।

रामचंद्र पुं० (सं) अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र जो अवतार माने जाते हैं।

रामजननी पुं० (हि) १-कौशल्या। २-बलराम की माता। ३-रेणुका।

रामजना पुं० (हि) एक संकर जाति जिसकी स्त्रियां वेश्यावृत्ति या नाच गाने का काम करती हैं। २-वह जिसके माता पिता का कुछ पता न हो।

रामजनी स्त्री० (हि) १-रामजना जाति की स्त्री। २-वेश्या।

रामजमनी पुं० (हि) एक प्रकार का बहुत बारीक चावल।

रामतरोई स्त्री० (सं) भिंडी जिसकी तरकारी बनती है

रामतारक पुं०(सं) राम का तारक मंत्र-'ॐ रामायनमः'

रामति स्त्री० (हि) १-भिक्षुओं की फेरी। २-इधर-उधर घूमना।

रामदल पुं० (सं) १-रामचन्द्रजी की वानर सेना। २-बहुत बड़ी और प्रबल सेना।

रामदाना पुं० (हि) एक प्रकार का धान।

रामदास पुं०(सं)१-हनुमान। २-एक प्रकार का धान ३-छत्रपति शिवाजी के गुरु का नाम।

रामदूत पुं० (सं) हनुमानजी।

रामधाम पु [illegible]

रूप में वि [illegible]

रामनवमी [illegible]

की जन्म [illegible] है।

रामना क्रि० (हि) घूमना। फिरना।

रामनामी स्त्री० (हि) १-वह कपड़ा जिस पर राम-राम छपा होता है। २-एक प्रकार का हार।

रामपुर पुं० (सं) १-स्वर्ग। अयोध्या।

रामफटाका पुं० (हि) रामानुज-संप्रदाय के लोगों के तिलक।

रामफल पुं० (हि) १-सीताफल। २-शरीफा।

रामबांस पुं० (हि) एक प्रकार का मोटा बाँस।

रामबान वि० (सं) १-अचूक। २-तुरंत लाभकारी (औषध)।

रामभोग पुं० (सं) १-एक प्रकार का चावल। २-एक प्रकार का आम।

राममंत्र पुं० (सं) दे० 'रामतारक'।

रामरज स्त्री० (सं) एक प्रकार की पीली मिट्टी।

रामरस पुं० (हि) १-नमक। २-घोटी हुई भांग।

रामराज्य पुं० (सं) १-अत्यंत सुखदायक राज्य। २-श्रीरामचन्द्रजी का सुखदायक शासन काल।

रामराम पुं० (हि) प्रणाम। नमस्कार। स्त्री० साधारण मुलाकात।

रामरौला पुं०(हि) व्यर्थ का शोरगुल।

रामलवण पुं० (सं) साँभर। नमक।

रामलीला पुं० (सं) १-श्रीरामचन्द्रजी के चरित्र की लीला। २-एक प्रकार का [illegible]।

रामवाण वि० (सं) दे० 'रामबाण'।

रामशर पुं० (सं) एक प्रकार का सरकंडा।

रामशिला स्त्री० (सं) गया का एक तीर्थ स्थान।

रामसखा पुं० (सं) सुग्रीव।

रामा स्त्री० (सं) १-सुन्दर स्त्री। २- । नदी। ३-लक्ष्मी। ४-सीता। ५-हींग। ६-गायन कला में प्रवीण स्त्री।

रामातुलसी स्त्री० (सं) एक प्रकार की तुलसी जिसका डण्ठल सफेद होता है।

रामायण पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन हो।

रामायणी पुं० (हि) रामायण की कथा कहने वाला। वि० (हि) रामायण-सम्बन्धी।

रामायन पुं० (हि) दे० 'रामायण'।

रामायुध पुं० (सं) धनुष।

राय पुं० (हि) १-राजा। २-सरदार। ३-भाटों की उपाधि। वि० १-बड़ा। २-बढ़िया। स्त्री० (फा) सलाह। सम्मति। (ओपीनियन)।

रायकरौंदा पुं० (हि) बड़ा करौंदा जो बेर के बराबर होता है।

[illegible] या आदि।

[illegible] मादा।

रायरासि स्त्री० (हि) राजा का कोष।

रायल वि०(अं) राजकीय। स्त्री० एक प्रकार की छपाई की कलों या कागजों का माप जो २० इंच चौड़ी और २६ इंच लम्बा होता है।

रायसा पुं० (हि) एक काव्य जिसमें राजा के जीवन चरित्र का वर्णन होता है।

रायसाहब पुं० (हि) एक उपाधि जो अंग्रेजों के काल में रईसों और राजकर्मचारियों को दी जाती थी।

रार स्त्री० (हि) झगड़ा। विवाद।

राल स्त्री० (सं) १-एक प्रकार का वृक्ष। २-इस वृक्ष का निर्यास। ३-खाद्य पदार्थों के खाने वाला लसदार थूक।

राव पुं० (सं) १-राजा। २-सरदार। ३-दे० 'राय'

रावचाव पुं० (हि) १-राग-रंग। २-दुलार। प्यार।
रावटी स्त्री० (हि) १-कपड़े का बना छोटा डेरा। २-किसी वस्तु का बना छोटा घर।
रावण वि० (सं) जो दूसरों को रुलाता हो। पुं० लंका का प्रसिद्ध राक्षसराज जिसे श्रीरामचन्द्रजी ने मारा था।
रावणारि पुं० (सं) रामचन्द्रजी।
रावणि पुं० (सं) मेघनाद।
रावत पुं० (हि) १-छोटा राजा। २-वीर। ३-सरदार।
रावन पुं० (हि) दे० 'रावण'।
रावना क्रि० (हि) दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।
रावबहादुर पुं० (हि) अंग्रेजी राज्य की दक्षिणी भारत के रईसों को दी जाने वाली उपाधि।
रावर पुं० (हि) रनिवास। अन्तःपुर। सर्व० आपका
रावरा सर्व० (हि) आपका।
रावल पुं० (हि) १-रनिवास। २-राजा। ३-राजस्थानी राजाओं की एक उपाधि। ४-प्रधान। सरदार।
राशन पुं०(अ)१-खाने पीने की मिलने वाली सामग्री विशेषतः अन्न और चीनी। २-नियंत्रित मूल्य पर खाने पीने की सामग्री मिलने की व्यवस्था।
राशि स्त्री० (सं) १-एक प्रकार की बहुत सी वस्तुओं का ढेर। २-किसी का उत्तराधिकारी। ३-क्रांति-वृत्ति में पड़ने वाले तारों के बारह समूह-मेष, वृष, कन्या आदि। ४-मात्रा। (एमाउंट, सम)।
राशिचक्र पुं०(सं) ग्रहों के चलने का मार्ग। (जोडिएक)।
राशिनाम पुं०(सं)किसी का वह नाम जो उसके जन्म-काल की राशि के अनुसार होता है।
राशिप पुं० (सं) किसी राशि का अधिपति, देवता।
राशिभाग पुं० (सं) किसी राशि का अंश (ज्यो०)।
राशिभोग पुं० (सं) वह समय जो किसी ग्रह को किसी राशि के रहने में लगता है।
राष्ट्र पुं०(सं) १-राज्य। २-देश। ३-वह लोक समुदाय जो एक ही देश में बसता हो या एक ही राज्य या शासन में रहता हुआ एकताबद्ध हो। (नेशन)
राष्ट्र-कूट पुं० (सं) दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश।
राष्ट्रपति पुं० (सं) आधुनिक प्रजातंत्र-प्रणाली में देश का सर्वप्रधान शासक। (प्रेजीडेन्ट)।
राष्ट्रपतिभवन पुं० (सं) भारत में दिल्ली स्थित राष्ट्रपति का निवास-स्थान।
राष्ट्रपरिषद् स्त्री० (सं) किसी राष्ट्र के मुख्य प्रतिनिधियों की सभा। (काउंसिल आफ स्टेट)।
राष्ट्रभाषा स्त्री० (सं) किसी देश या राष्ट्र की वह प्रचलित भाषा जिसका प्रयोग वहां के अन्य भाषी लोग भी करते हैं। (नैशनल लैंग्वेज)।
राष्ट्रभेद पुं० (सं) प्राचीन राजनीति के अनुसार व[illegible] उपाय जिसके द्वारा शत्रुराजा के राज्य में उपद्रव य[illegible] विद्रोह खड़ा किया जाता था।
राष्ट्रमंडल पुं० (सं) कुछ ऐसे राष्ट्रों का समूह जिन[illegible] सबको समान अधिकार प्राप्त हों तथा सबके कु[illegible] निश्चित उत्तरदायित्व हों। (कॉमनवेल्थ)।
राष्ट्रवाद पुं० (सं) वह सिद्धांत जिसमें अपने र[illegible] के ही हित को प्रधानता दी जाय। (नैशनेलिज्म)
राष्ट्रवादी पुं० (सं) वह जो अपने राष्ट्र के हित औ[illegible] कल्याण का पक्षपाती हो। (नैशनेलिस्ट)।
राष्ट्र-विप्लव पुं० (सं) किसी देश या राष्ट्र में ह[illegible] वाला विद्रोह।
राष्ट्रसंघ पुं० (सं) संसार के कुछ प्रमुख तथा व[illegible] से अन्य राष्ट्रों का संघ जो द्वितीय महायुद्ध के ब[illegible] संसार में शांति बनाये रखने के लिए बनाया ग[illegible] था। (युनाइटेड स्टेट्स आर्गेनाइजेशन)।
राष्ट्रिक पुं०(सं) किसी देश का निवासी। (नेशन[illegible]) वि० राष्ट्र का। राष्ट्र-सम्बन्धी।
राष्ट्रीय वि०(सं) राष्ट्र-सम्बन्धी। राष्ट्र का। (नेशन[illegible])
राष्ट्रीयकरण पुं० (सं) देश के उपयोग और उ[illegible] के लिए कारखाने आदि बनाने के लिए भूमि[illegible] उद्योगों को सरकार द्वारा अपने हाथ में मुआव[illegible] दे कर ले लेने का कार्य। (नैशनेलाइजेशन)।
राष्ट्रीयता स्त्री० (सं) अपने देश या राष्ट्र का उ[illegible] प्रेम।
रास पुं० (सं) कोलाहल। हल्ला। स्त्री० १-कृष्ण[illegible] गोपियों के साथ लीला का अभिनय। २-शृंखल[illegible] ३-विलास। (फा) लगाम। बागडोर।
रासक पुं० (सं) हास्यरस का एक प्रकार का एक[illegible] नाटक।
रासचक्र पुं० (हि) दे० 'राशिचक्र'।
रासनशीन पुं० (हि) गोद लिया हुआ लड़का।
रासभ पुं० (सं) गधा। खच्चर।
रासभी स्त्री० (सं) गधी।
रासायनिक वि० (सं) रसायनशास्त्र से संबंध र[illegible] वाला। पुं० रसायन-शास्त्र का ज्ञाता।
रासायनिक-परीक्षक पुं०(सं) वह जो किसी पदा[illegible] रसायनिक तत्वों का विश्लेषण या जांच करता -(केमिकल-एक्जामिनर)।
रासि स्त्री० (हि) दे० 'राशि'।
रासु वि० (हि) १-सीधा। २-ठीक।
रासो पुं० (हि) किसी राजा के वीरतापूर्ण यु[illegible] विवरणों युक्त पद्य में लिखा जीवन चरित्र।
रास्त वि० (फा) १-सीधा। सरल। २-ठीक उचित।
रास्तबाज वि० (फा) निष्कपट। सच्चा।
रास्ता पुं० (फा) १-मार्ग। राह। २-प्रथा। ३-

राह स्त्री० (फा) १-मार्ग। रास्ता। २-प्रथा। नियम। ३-कोल्हू की नाली।
राहखर्च पु०(फा) यात्रा में होने वाला खर्च। मार्ग-व्यय।
राहगीर पु० (फा) पथिक। मुसाफिर।
राहचलता पु० (हि) १-पथिक। २-जिसका प्रस्तुत विषय से सम्बन्ध न हो।
राहचल स्त्री० (हि) रहदंग।
राहजन पु० (फा) डाकू। लुटेरा।
राहजनी स्त्री० (फा) डकैती। लूट।
राहत स्त्री० (अ) आराम। सुख। चैन।
राहदानी स्त्री० (फा) पारपत्र। (पासपोर्ट)।
राहदारी स्त्री० (फा) सड़क का कर। चुङ्गी।
राहना क्रि० (हि) १-चक्की के पाटों को खुरदरा करना। २-रेती को खुरदरा करना।
राहर पु० (हि) अरहर।
राहि स्त्री० (हि) राधा।
राहित्य पुं०(स) १-न होना। २-रहित होने का भाव
राहिन पुं० (अ) बंधक रखने वाला व्यक्ति।
राही पुं० (फा) पथिक। मुसाफिर।
राहु पु०(सं) नौ ग्रहों में से एक। (हि) एक प्रकार की मछली। राहू।
राहुग्रसन पुं० (स) ग्रहण।
राहुग्रास पु० (सं) ग्रहण।
राहुल पुं० (सं) गौतमबुद्ध का पुत्र।
राहुस्पर्श पु०(सं) ग्रहण।
रिंगण पुं०(सं) १-रेंगना। २-सरकना। ३-फिसलना।
रिंगन स्त्री० (हि) दे० 'रिंगण'।
रिंगाना क्रि० (हि) १-रेंगने में दूसरे को प्रवृत्त करना २-धीरे धीरे चलाना।
रिंद पुं० (फा) स्वेच्छाचारी तथा स्वच्छन्द व्यक्ति। वि० मतवाला। मस्त।
रिआयत स्त्री०(फा) १-नरमी। २-कृपा ३-छूट। कमी
रिआयती वि० (फा) कमी किया हुआ।
रिआयती छुट्टी स्त्री० (फा) ग्यारह महीने काम करने के बाद एक महीने की [illegible]
रिआया स्त्री० (फा) प्रजा

[illegible]

रिकाब स्त्री० (हि) 'रकाब'।
रिकाबी स्त्री० (हि) दे० 'रकाबी'।
रिक्त स्त्री० (हि) १-खाली। शून्य। २-निर्धन। गरीब पु० जंगल। वन।
रिक्तता स्त्री० (स) खाली या रिक्त होने का भाव।
रिक्तस्थान पुं० (स) किसी कर्मचारी अथवा अधिकारी के हट जाने पर खाली होने वाला स्थान। (वेकेन्सी)।
रिक्ता स्त्री०(स) चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां
रिक्ति स्त्री०(सं) १-खाली होना। २-दे० 'रिक्तस्थान' (वेकेन्सी)।
रिक्थ पु० (स) १-भू-संपत्ति या धन दौलत। (प्रोपर्टी) २-वह पूँजी जो किसी कारबार में लगाई हो और हटने वाली न हो। (एसेट्स)।
रिक्थ-पत्र पु०(स) इच्छापत्र। वसीयतनामा (विल)
रिक्थहारी पु०(सं) १-वह जिसे उत्तराधिकार धन संपत्ति मिले। २-मामा।
रिक्थी पु०(स) धनसंपत्ति का उत्तराधिकारी।
रिक्शा स्त्री० (हि) दे० 'रिकशा'।
रिक्ष पु० (हि) दे० 'ऋक्ष'।
रिक्षपति पु० (हि) दे० 'ऋक्षपति'।
रिखभ पु० (हि) दे० 'ऋषभ'।
रिखि पु० (हि) दे० 'ऋषि'।
रिग पु० (हि) दे० 'ऋक्'।
रिचा स्त्री० (हि) दे० 'ऋचा'।
रिचीक पु० (हि) दे० 'ऋचीक'।
रिच्छ पु० (हि) भालू।
रिजक पु० (अ) जीविका।
रिजाली स्त्री० (फा) निर्लज्जा।
रिजु वि० (हि) दे० 'ऋजु'।
रिज्क पु० (अ) रोजी। खुराक।
रिझवार पु० (हि) १-रीझने वाला। २-किसी गुण पर प्रसन्न होने वाला।
रिझवना क्रि० (हि) दे० 'रिझाना'।
रिझवार पु०(हि) प्रसन्न होने वाली। अनुरागी।
रिझाना क्रि० (हि) १-किसी को अपने ऊपर प्रसन्न करना। २-लुभाना।
रिझायल वि० (हि) रीझने वाला।
रिझाव पु० (हि) रीझने की क्रिया या भाव।
रिझावना क्रि० (हि) दे० 'रीझना'।
रितु स्त्री० (हि) दे० 'ऋतु'।

[illegible] 'ऋण'।
रिनिया वि० (हि) ऋणी। कर्जदार।
रिनी वि० (हि) ऋणी।
रिपु पु० (स) १-शत्रु। वैरी। २-जन्मकुण्डली में लग्न से छठा स्थान।
रिपुघातु वि० (स) शत्रुओं का नाश करने वाला।
रिपुघ्न वि० (स) रिपुघाती।
रिपुता स्त्री० (सं) शत्रुता। दुश्मनी।

जन्म । ५-उत्पत्ति । ६-ख्याति । ७-विचार । ८-बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा । (कस्टम) ।

रूप पुं० (सं) १-शक्ल । सूरत । स्वभाव । ३-सौंदर्य ४-शरीर । ५-वेष । भेस । ६-दशा । अवस्था । ७-समान । तुल्य । ८-चिह्न । ९-भेद । १०-रूपक । ११-चांदी ।

रूपक पुं० (सं) १-मूर्ति । प्रतिकृति । २-वह काव्य जो पात्रों द्वारा खेला जाता है । ३-एक परिमाण का नाम । ४-चांदी । ५-रुपया । ६-सात माशा की एक ताल ।

रूपक-कार्यक्रम पुं० (सं) आकाशवाणी द्वारा प्रसारित प्रहसन, नाटक आदि । (फीचर-प्रोग्राम) ।

रूपकातिशयोक्ति स्त्री० (सं) वह अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयों का अर्थ समझाया जाता है ।

रूपगर्विता स्त्री० (सं) वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व हो ।

रूपजीविनी स्त्री० (सं) वेश्या । रंडी ।

रूपजीवी पुं० (सं) बहुरूपिया ।

रूपभेद पुं० (सं) स्वरूप या अर्थ में आंशिक परिवर्तन या अदल बदल करना । (मॉडिफिकेशन) ।

रूपमनी वि० (हि) रूपवती ।

रूपमय वि० (हि) अतिशय सुन्दर ।

रूपरेखा स्त्री० (सं) १-किसी योजना का वह स्थूल अनुमान जो उसके आकार आदि का परिचायक हो । (प्लान) । २-वह चित्र जो केवल रेखा रूप में हो । (स्केच) । ३-किसी कार्य के सम्बन्ध की वह मुख्य बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक होती है । (आउट लाइन) ।

रूपवंत वि० (हि) सुन्दर । रूपमान ।

रूपव वि० (हि) दे० 'रूपवंत' ।

रूपवान वि० (सं) सुन्दर ।

रूपशाली वि० (सं) रूपवान् । सुन्दर ।

रूपांकक पुं० (सं) किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक तथा सुन्दर ढंग या नमूना निश्चित करने वाला । (डिजाइनर) ।

रूपांकन पुं० (सं) किसी वस्तु की रूपरेखा । बनावट आदि सुन्दर कलात्मक ढंग से बनाना । (डिजाइन) निश्चित करने वाला । (डिजाइनर) ।

रूपांतर पुं० (सं) किसी वस्तु का परिवर्तित रूप (ट्रांसफॉरमेशन, वेरिएशन्स) ।

रूपांतरण पुं० (सं) किसी वस्तु के रूप आदि का बदल दिया जाना । (ट्रांसफॉरमेशन) ।

रूपान्तरित वि० (सं) जिसका रूप आदि बदल दिया गया हो (ट्रांसफोर्म्ड) ।

रूपा पुं० (हि) १-चांदी । सफेद घोड़ा । २-घटिया चांदी ।

रूपाजीवी स्त्री० (हि) वेश्या ।

रूपाध्यक्ष पुं० (सं) टकसाल का प्रधान अधिकारी ।

रूपी वि० (सं) १-रूपधारी । २-तुल्य । समान । ३-सुन्दर ।

रूपोपजीविनी स्त्री० (सं) वेश्या । रंडी ।

रूपोपजीवी पुं० (हि) बहुरूपिया ।

रूप्यक पुं० (सं) रुपया ।

रूम पुं० (अ) तुर्की देश का एक नाम । पुं० (अं) कमरा ।

रूमना क्रि० (हि) झूलना । झूमना ।

रूमाल पुं० (हि) १-हाथ मुँह पोंछने का चौकोर टुकड़ा । पजामे की मियानी ।

रूरना क्रि० (हि) चिल्लाना । जोर से शब्द करना ।

रूरा वि० (हि) १-श्रेष्ठ । उत्तम । २-सुन्दर । ३-बहुत बड़ा ।

रूल पुं० (अं) १-नियम । कायदा । २-लकीर खींचने का डंडा । ३-सीधी खींची हुई लकीर ।

रूलर पुं० (अं) १-सीधी लकीर खींचने का डंडा । २-शासक ।

रूसना क्रि० (हि) दबा देना । २-रूठना ।

रूस पुं० (हि) दे० 'रूस' ।

रूसा वि० दे० 'रूसा' ।

रूसना क्रि० (हि) दे० 'रूठना' ।

रूसा स्त्री० (हि) एक सुगंधित घास जिसमें से तेल निकालते हैं ।

रूसी वि०(हि) रूस देश का । रूस देश सम्बन्धी । स्त्री० (हि) रूस देश की भाषा । २-रूस देश का निवासी । पुं० (देश) सिर के ऊपर की पतली झिल्ली जो टुकड़े हो-होकर झड़ती है ।

रूह स्त्री० (अ) १-आत्मा । जीव । २-सत्त । सार । ३-एक प्रकार का इत्र ।

रूहना क्रि० (हि) १-चढ़ना । २-उमड़ना । ३-चारों ओर से घिरना । ४-रूँधना ।

रूहानी वि० (अ) आत्मिक ।

रेंकना क्रि० (हि) १-गधे का बोलना । २-भद्दे या बे सुरे ढंग से गाना ।

रेंगटा पुं० (हि) गधे का बच्चा ।

रेंगना क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे चलना । २-धीरे-धीरे जमीन से रगड़ खाते हुए चलना ।

रेंगनी स्त्री० (हि) भटकटैया ।

रेंगाना क्रि० (हि) पेट के बल धीरे-धीरे चलाना ।

रेंट पुं० (हि) नाक का मल ।

रेंड़ पुं० (हि) एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है ।

रेंड़ खरबूजा पुं० (हि) पपीता ।

रेंड़ी स्त्री० (हि) रेंड़ का पौधा ।

रे अव्य० (सं) छोटे या तुच्छ आदमियों के लिये

सम्बोधन। पुं० (हि) सरगम का एक स्वर।
रेउड़ी स्त्री (हि) दे० 'रेवड़ी'।
रेख स्त्री० (हि) १-रेखा। २-चिह्न। ३-नई निकली हुई मूँछें।
रेख़ता पुं० (फा) १-एक प्रकार की गजल। २-उर्दू भाषा का आरम्भिक रूप और नाम।
रेखना क्रि० (हि) १-रेखा या लकीर खींचना। २-खरोंचना।
रेखा स्त्री० (सं) १-लकीर। २-लम्बा और पतला चिह्न २-वह जिसमें लम्बाई हो पर चौड़ाई या मोटाई न हो (रेखागणित)। ३-गणना। गिनती। ४-रूप आकार। ५-हथेली की लकीरें जिनसे ज्योतिषी भाग्यफल बताता है। ६-हीरे के बीच में दिखाई देने वाली लकीर।
रेखागणित पुं० (सं) गणित का वह विभाग जिसमें कोणों, रेखाओं और वृत्तों का विवरण होता है (ज्योमेट्री)।
रेखाचित्र पुं० (सं) किसी व्यक्ति या वस्तु का रेखाओं के रूप में बना चित्र। (स्केच)।
रेखापत्र पुं० (सं) १-आंकड़ों का सारिणीयुक्त विवरण। २-नौपरिवहन में प्रयुक्त होने वाला मानचित्र। रूपरेखा। (चार्ट)।
रेखित वि० (हि) १-खिंचा हुआ। अङ्कित। २-जिस पर लकीर पड़ी हो। ३-मसका हुआ।
रेखित-धनादेश पुं० (सं) वह धनादेश जिस पर एक ओर दो रेखा खिंची होती हैं और जिसका रुपया केवल बैंक के दूसरे हिसाब में जमा हो सकता है, नकद रुपया सीधा नहीं मिल सकता। (क्रासडचैक)
रेग स्त्री० (फा) बालू।
रेगिस्तान पुं० (फा) मरुथल। बालू या रेत का मैदान।
रेचक वि० (सं) जिसके खाने से दस्त आये।
रेचन पुं० (सं) १-दस्त लाना। २-जुलाब।
रेचना क्रि० (हि) वायु या मल को बाहर निकालना
रेजगारी स्त्री० (हि) १-छोटे सिक्के-इकन्नी, दुअन्नी आदि। २-छोटे टुकड़े।
रेजगी स्त्री० (हि) दे० 'रेजगारी'।
रेजा पुं० (फा) १-बहुत छोटा टुकड़ा। २-मजदूर का लड़का। ३-सुनार का एक औजार। ४-कपड़े आदि का खण्ड।
रेणु स्त्री० (स) १-धूल। २-बालू। ३-पृथ्वी। ४-कणिका।
रेणुका स्त्री०(सं) १-बालू। रेत। २-रज। धूल। ३-पृथ्वी। ४-परशुराम की माता का नाम।
रेत पुं० (हि) १-वीर्य। २-रज। ३-पारा। स्त्री० १-बालू। २-बलुआ मैदान।
रेतना क्रि०(हि) रेती से रगड़ कर काटना या छीलना।
रेता पुं० (हि) १-बालू। २-धूल। ३-बलुआ मैदान
रेती स्त्री० (हि) १-एक प्रसिद्ध औजार जिसे किसी धातु पर रगड़ने से महीन कण कट कर गिरते है। २-रेतीली भूमि। ३-नदी के बीच की भूमि।
रेतीला वि० (हि) बालुकामय। जिसमें या जहां रेत हो।
रेनु स्त्री० (हि) दे० 'रेणु'।
रेनुका स्त्री० (हि) दे० 'रेणुका'।
रेफ पुं० (सं) १-किसी अक्षर के ऊपर आने वाला हलंत रकार जैसे सर्प। २-रकार (र)। ३-राग।
रेरुआ पुं० (हि) बड़ा उल्लू पक्षी।
रेरुवा पुं० (हि) बड़ा उल्लू पक्षी।
रेल स्त्री० (अ) १-लोहे के शहतीर। २-वह रेल की पटरी जिस पर रेलगाड़ी चलती है। ३-भाप के इन्जन के द्वारा चलने वाली गाड़ी। (हि) १-बहाव २-आधिक्य।
रेलगाड़ी स्त्री० (हि) लोहे की पटरी पर चलने वाली गाड़ी। (रेलवे ट्रेन)।
रेलठेल स्त्री० (हि) १-भारी भीड़। २-मार-मार। ३-अधिकता।
रेलना क्रि०(देश) १-धक्के या दबाव से आगे बढ़ाना ढकेलना। २-अधिक होना।
रेलमंत्री पुं० (हि) मंत्रिमंडल का वह सदस्य जिसके आधीन रेल विभाग हो।
रेलपेल स्त्री० (हि) दे० 'रेलठेल'।
रेला पुं० (देश) १-तेज बहाव। २-समूह द्वारा धावा ३-जनसमूह का आगे बढ़ना।
रेवड़ पुं० (देश) भेड़ बकरी आदि का झुण्ड।
रेवड़ी स्त्री० (हि) तिल और चीनी की बनी मीठी टिकिया।
रेवतक पुं० (सं) कबूतर। परावत।
रेवती स्त्री० (सं) १-सत्ताइसवां नक्षत्र। २-बलराम की पत्नी का नाम। ३-दुर्गा। ४-गाय।
रेवतीरमण पुं० (सं) बलराम।
रेवा स्त्री० (सं) १-नर्मदा नदी का एक नाम। २-रति। ३-नील का पौधा।
रेशम पुं० (फा) एक प्रकार का महीन, चमकीला तथा दृढ़ रेशा जिससे कपड़े बनाए जाते हैं।
रेशमी वि० (फा) १-रेशम का बना हुआ। २-मुलायम।
रेशा पुं० (फा) महीन सूत। तंतु।
रेष पुं० (सं) १-क्षति। हानि। २-हिंसा। स्त्री० (हि) दे० 'रेख'।
रेह स्त्री० (हि) खार मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई जाती है।
रेहन पुं० (फा) किसी के पास कोई वस्तु इस शर्त पर रखना कि ऋण चुकाने पर लौटाली जायगी। बंधक

रेहनदार पुं० (फा) वह जिसके पास कोई वस्तु बंधक रखी जाय।

रेहननामा पु० (फा) वह कागज जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।

रेहल स्त्री० (फ) दे० 'रिहल'।

रेहुआ वि० (हि) जिसमें रेह अधिक हो।

रैअति स्त्री० (हि) दे० 'रैयत'।

रैतुवा पु० (हि) दे० 'रायता'।

रैदास पुं० (हि) एक प्रसिद्ध भक्त जो चमार जाति के थे।

रैन स्त्री० (हि) रात्रि। रात।

रैनि स्त्री० (हि) रात।

रैनी स्त्री० (हि) चांदी या सोने की वह गुल्ली जो तार खींचने के लिए बनाई जाती है।

रैमुनिया स्त्री० (हि) एक प्रकार की चद्दर।

रैयत स्त्री० (फ) रिआया। प्रजा।

रैयाराव पुं० (हि) १-छोटा राजा। २-सरदार।

रैल स्त्री० (देश) समूह। राशि।

रैवत पुं० (सं) १-शिव। २-एक पर्वत जो . . . में है। ३-मेघ। ४-एक दैत्य।

रोंआं पुं० (हि) दे० 'रोयाँ'।

रोंगटा पुं० (हि) लोम। रोयां।

रोंगटी स्त्री० (हि) खेल में बेइमानी करना।

रोंव पु० (हि) शरीर के बाल। रोम।

रोआब पु० (हि) प्रभाव। आतंक।

रोक स्त्री० (हि) १-रुकावट। अवरोध। २-प्रतिबंध (चेक)। ३-निषेध। ४-रोकने वाली बात।

रोकझोंक स्त्री० (हि) दे० 'रोकटोक'।

रोकटोक स्त्री० (हि) वह जांच जो कहीं आने-जाने या कुछ करते समय बीच में हो। मनाही। निषेध।

रोकड़ पु० (हि) १-नकद रुपया पैसा आदि (कैश) २-जमा। धन। पूँजी।

रोकड़-बही स्त्री० (हि) वह बही जिसमें प्रति दिन का आय-व्यय लिखा जाता है। (कैशबुक)।

रोकड़-बिक्री स्त्री० (हि) वह बिक्री जो नकद दाम लेकर की गई हो।

रोकड़िया पुं०(हि) वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ और जमा-खर्च का हिसाब होता है। (कैशियर)।

रोकथाम स्त्री० (हि) किसी अनुचित कार्य को रोकने का प्रयत्न।

रोकना क्रि० (हि) १-कहीं जाने से मना करना। २-होती हुई बात को बन्द करना। ३-मना करना। ४-बाधा डालना। ५-आगे न बढ़ने देना। ६-काबू में रखना। ७-बढ़ती हुई सेना या दल का सामना करना।

रोख पुं० (हि) दे० 'रोष'।

रोग पुं० (सं) शरीर के अस्वस्थ होने की अवस्था। बीमारी। मर्ज। व्याधि।

रोगकारक वि० (सं) बीमारी पैदा करने वाला।

रोगग्रस्त वि० (सं) रोग से पीड़ित।

रोगन पु० (फा) १-तेल। चिकनाई। २-चमकाने के लिए लगाया जाने वाला लेप (पॉलिश) (वारनिश) ३-लाख आदि से बना मसाला। ४-चमड़ा मुलायम करने का मसाला।

रोगनदार वि० (फा) जिस पर रोगन किया गया हो।

रोगनाशक वि० (सं) बीमारी दूर करने वाला।

रोगनिदान पु० (सं) रोग के लक्षण, उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान। (डायग्नोसिस)।

रोगनिरोधकद्रव्य पु० (सं) वह दवा जो रोगों की उत्पत्ति या प्रसार को रोकती हो। (प्रोफिलैक्टिक ड्रग)।

रोगनी वि० (फा) रोगन किया हुआ। रोगनदार।

रोगप्रतिबंधनिरोधा स्त्री० (सं) दे० 'निरोध'। (क्वारैन्टीन)।

रोगाक्रांत वि० (सं) व्याधिग्रस्त।

[illegible]

रोगिया पु० (हि) रोगी। बीमार।

रोगिहा पु० (हि) बीमार। रोगी।

रोगी वि० (हि) जो बीमार हो। जो स्वस्थ न हो।

रोगीवाहकगाड़ी स्त्री० (हि) दे० 'परिचारगाड़ी'। (एम्बुलेंस कार)।

रोगोत्तर-स्वास्थ्यलाभ पु० (सं) रोग के होने के बाद पूर्णरूप से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने की क्रिया। (कनवेलेसेंस)।

रोचक वि० (सं) १-रुचिकर। २-मनोरंजक।

रोचन वि० (सं) १-रोचक। २-शोभा देने वाला। ३-लाल। ४-प्रिय लगाने वाला। पुं० १-कमीला। २-प्याज। ३-अनार। ४-रोली। ५-गो रोचन। ६-कामदेव के पांच बाणों में से एक।

रोचना स्त्री०(सं) १-लाल कमल। २-श्रेष्ठ स्त्री। ३-आकाश। ४-वंशलोचन।

रोचि स्त्री० (सं) २-चमक। दीप्ति। २-किरण।

रोचिष्णु वि० (सं) १-चमकीला। २-अच्छे वस्त्र-भूषण पहने हुए।

रोज पु० (हि) १-रुदन। २-रोना-पीटना। विलाप।

रोज पु० (फा) दिन। दिवस। अव्य० प्रतिदिन। नित्य।

रोजगार पु० (फा) १-व्यापार। २-व्यवसाय। तिजारत।

रोजनामचा पुं० (फा) १-प्रतिदिन का काम लिखने की बही। २-रोकड़।

रोज-ब-रोज अव्य० (फा) प्रतिदिन। [illegible]

रोजमर्रा अव्य० (फा) प्रतिदिन। नित्य।
रोजा पुं० (फा) १-उपवास। २-रमजान मास में तीस दिन तक होने वाला उपवास (मुसलमान)।
रोजादार पुं०(फा) रोजा रखने वाला।
रोजाना अव्य० (फा) नित्य। प्रतिदिन।
रोजी स्त्री० (फा) १-जीविका। २-नित्य का भोजन। ३-जीवन निर्वाह का सहारा।
रोजीदार पुं० (फा) वह जिसे प्रतिदिन खर्च के लिए कुछ मिलता हो।
रोजीना वि० (फा) नित्य का। रोज का। पुं० दैनिक मजदूरी।
रोझ स्त्री० (देश) नील गाय।
रोट पुं० (हि) १-बहुत बड़ी और मोटी रोटी। २-देवताओं पर चढ़ाने की मीठी रोटी या पूआ।
रोटिका स्त्री० (हि) छोटी रोटी। फुलकी।
रोटिहा पुं० (हि) केवल भोजन पर काम करने वाला नौकर।
रोटी स्त्री० (हि) १-गुँधे हुए आटे की आग पर पकाई हुई लोई या चपाती। २-जीविका। ३-भोजन।
रोटी-कपड़ा पुं०(हि) खाने पीने की सामग्री या व्यय
रोठा पुं० (हि) दे० 'रोड़ा'।
रोड़ा पुं० (हि) १-ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला। २-एक प्रकार का धान।
रोदन पुं० (सं) रोना। विलाप करना।
रोदसी स्त्री० (सं) १-स्वर्ग। २-पृथ्वी।
रोध पुं०(सं)१-रुकावट। २-रोक। ३-तट। किनारा ४-चारी।
रोधक पुं० (सं) रोकने वाला।
रोधन पुं० (सं) १-रोक। रुकावट। २-दमन।
रोधना क्रि० (हि) रोकना।
रोना क्रि० (हि) १-दुखी होकर आंसू बहाना। २-बुरा मानना। ३-पछताना। पुं० १-दुःख। खेद। २-अपने दुःख का वर्णन। वि० जरा सी बात पर रो पड़ने वाला।
रोनी-धोनी वि० (हि) दुःख या शोकसूचक चेष्टा बनाए रहने वाली। स्त्री० रोने-धोने की वृत्ति।
रोपक वि० (सं) रोपने वाला।
रोपण पुं० (सं) १-ऊपर रखना। २-लगाना। जमाना। ३-स्थिर रखना। ४-मोहित करना। ५-घाव पर लेप लगाना।
रोपना क्रि० (हि) १-जमाना। २-लगाना। ३-अड़ाना। ठहराना। ४-बोना। ५-रोकना। ६-कुछ लेने के लिए हाथ बढ़ाना।
रोपनी स्त्री० (हि) रोपने का काम।
रोपित वि० (सं) १-लगाया या जमाया हुआ। २-स्थापित। ३-भ्रांत। मोहित। ४-रक्खा किया हुआ।
रोब पुं० (अ) शक्तिशाली होने या बड़प्पन की धाक प्रभाव। आतंक। दबदबा।
रोबदाब पुं० (अ) आतंक। तेज।
रोबदार वि० (अ) रोबीला। प्रभावशाली।
रोमंथ पुं० (सं) जुगाली।
रोम पुं० (सं) १-देह के बाल। रोआँ। २-छेद। छिद्र। ३-जल। ४-ऊन। ५-इटली की राजधानी।
रोमकूप पुं० (सं) शरीर के छेद। जिनमें से रोएँ निकलते हैं।
रोमन वि० (सं) रोम नगर अथवा राष्ट्र का। स्त्री० वह लिपि जिसमें अंग्रेजी आदि भाषाएं लिखी जाती हैं।
रोमद्वार पुं० (सं) दे० 'रोमकूप'।
रोमराजी स्त्री० (सं) दे० 'रोमावली'।
रोमलता स्त्री०(सं) दे० 'रोमावली'।
रोमहर्षण पुं० (सं) अचानक बहुत अधिक हर्ष या भय से रोएं खड़े होना। रोमांच। सिहरन। वि० भयंकर। भीषण।
रोमांच पुं० (सं) आनन्द या भय से रोएँ खड़े होना
रोमांचित वि० (सं) १-पुलकित। २-भय से जिसके रोंगटे खड़े हो गए हों।
रोमाग्र पुं० (सं) रोएँ की नोक।
रोमानी वि० (सं) जिसमें मुख्य रूप से शारीरिक प्रेम का वर्णन हो।
रोमाली स्त्री० (सं) दे० 'रोमावली'।
रोमावली स्त्री० (सं) रोमों की पंक्ति जो विशेष कर पेट के बीचोंबीच नाभि के ऊपर की ओर गई हो।
रोमिल वि० (हि) रोएँदार।
रोयाँ पुं० (हि) लोम। रोम।
रोर स्त्री०(हि) १-कोलाहल। रौला। हल्ला। २-उपद्रव उत्पात। ३-बहुत से लोगों का रोने का शब्द। वि० प्रचंड। तेज। २-उपद्रवी।
रोरा पुं० (हि) १-चूर। गाँजा। दे० 'रोर'।
रोरी स्त्री० (हि) रोली जिसका तिलक लगता है। २-चहल-पहल। वि० (हि) सुन्दर।
रोल स्त्री० (हि) १-कोलाहल। २-शब्द। ध्वनि। पुं० पानी का बहाव। पुं० (देश) एक नक्काशी का औजार।
रोला पुं० (हि) १-कोलाहल। २-घोर युद्ध। ३-एक छंद।
रोवनहार पुं० (हि) १-रोने वाला। २-किसी के मरने पर रोने वाला।
रोवना क्रि० (हि) दे० 'रोना'। वि० १-चिढ़ने वाला। २-तुरन्त रो पड़ने वाला।
रोवनिहारा वि० (हि) दे० 'रोवनहार'।
रोवनी-धोवनी स्त्री० (हि) रोने-धोने की चेष्टा। मनहूसी।
रोवाँ पुं० (हि) दे० 'रोयाँ'।
रोवासा वि० (हि) जो रो-देने को हो।

लंकलाट पुं० (हि) एक प्रकार का चिकना घुला हुआ कपड़ा। लट्ठा। (लौंग क्लॉथ)।
लंका स्त्री० (सं) १-भारत के दक्षिण का एक टापू जहां रावण राज्य करता था। २-काला चना। ३-शाखा
लंकाधिपति पुं० (सं) १-रावण। २-विभीषण।
लंकापति पुं० (सं) रावण।
लंकेश पुं० (सं) १-रावण। २-विभीषण।
लंग स्त्री० (फा) लंगड़ापन। वि० (फा) लङ्गड़ा। पुं० (सं) उपपति। जार। स्त्री० (हि) दे० 'लाँग'।
लंगड़ वि० (हि) लँगड़ा।
लँगड़ा वि० (हि) १-जिसका एक पैर काम न देता हो। २-जिसका एक पाया न हो। पुं० (हि) एक प्रकार का बढ़िया आम।
लँगड़ाना क्रि० (हि) लँगड़े होकर चलना।
लंगर पुं० (फा) १-लोहे का बड़ा और भारी कांटा जो नाव या जहाज को एक स्थान पर ठहरने में उपयोग किया जाता है। २-नटखट बछड़े आदि के गले में बांधने का लकड़ी का कुन्दा। ३-पैर में पहनने का चांदी का तोड़ा। ४-कोई लटकती हुई भारी वस्तु। ५-लङ्गोट। ६-वह स्थान जहां बहुत से लोगों का भोजन एक साथ पकता हो तथा भोजन गरीबों को बँटता हो। ७-कपड़े सिलाई से पहले कच्चा टांका। ८-कमर के नीचे का भाग। वि० (फा) १-भारी। २-वजनी। ३-नटखट।
लंगरखाना पुं० (फा) वह स्थान जहां गरीबों को पकाया हुआ भोजन बाँटा जाता है।
लँगराई स्त्री० (हि) शरारत। ढिठाई।
लँगराना क्रि० (हि) दे० 'लँगड़ाना'।
लँगरी स्त्री० (हि) शरारत।
लँगरैया स्त्री० (हि) शरारत।
लंगूर पुं० (हि) १-एक प्रकार का बन्दर जिसका मुँह काला और पूँछ लम्बी होती है। २-बन्दर। ३-दुम। पूँछ।
लंगोट पुं० (हि) रूमाली। कमर पर बांधने का वस्त्र जिससे केवल उपस्थ और चूतड़ ढके रहते हैं।
लंगोटबंद वि० (हि) ब्रह्मचारी।
लंगोटा पुं० (हि) दे० 'लंगोट'।
लंगोटिया-यार पुं० (हि) बचपन का साथी। बालमित्र
लंगोटी स्त्री० (हि) छोटा लंगोट।
लंघक वि० (सं) १-लांघने वाला। २-नियम भंग करने वाला।
लंघन पुं० (सं) १-अतिक्रमण। लांघना। २-उपवास
लंघनक पुं० (सं) १-लांघने वाला। २-पुल। सेतु।
लंघनट पुं० (सं) कलाबाजी का खेल दिखाने वाला नट।
लंघना क्रि० (हि) लाँघना। स्त्री० (सं) उपेक्षा। ला-परवाही।
लंघनीय वि० (सं) १-लाँघने के योग्य। २-उल्लंघन करने के योग्य।
लँघाना क्रि० (हि) १-पार करना। २-पार उतारना।
लंघित वि० (सं) १-पार किया हुआ। २-उपेक्षित।
लंजिका स्त्री० (सं) वेश्या।
लंठ वि० (हि) मूर्ख।
लँडूरा वि० (हि) बिना पूँछ का। कटी हुई पूँछ वाला (पशु, पक्षी)।
लँतरानी स्त्री० (अ) शेखी।
लँदराज पुं० (हि) एक प्रकार की मोटी चादर।
लंप पुं० (हि) दीपक। चिराग। (लैंप)।
लंपट वि० (सं) व्यभिचारी। विषयी। पुं० उपपति। स्त्री का यार।
लंपटता स्त्री० (सं) दुराचार। कुकर्म।
लंब पुं० (सं) १-किसी रेखा पर सीधी और खड़ी गिरने वाली रेखा। (परपैंडिक्युलर)। २-ज्योतिष में एक प्रकार की गति। ३-पति। ४-अंग। वि० लंबा (होरिजेन्टल)।
लंबकर्ण पुं० (सं) १-बकरा। २-हाथी। ३-गधा। ४-खरगोश। वि० लंबे कान वाला।
लंबकेश वि० (सं) लम्बे केश वाला।
लंबग्रीव पुं० (सं) ऊँट।
लंबजठर वि० (सं) तोंदल। मोटे पेट वाला।
लंबतड़ंग वि० (सं) ताड़ की तरह लम्बा।
लंबन पुं० (सं) १-झूलने की क्रिया। २-लम्बा करना। ३-कोई काम या बात कुछ समय के लिए टालना। (अबेयेन्स)।
लंबमान वि० (सं) विस्तृत। दूर तक फैला हुआ।
लंबर पुं० (हि) दे० 'नम्बर'।
लंबरदार पुं० (हि) दे० 'नम्बरदार'।
लंबा वि० (हि) १-जो एक दिशा में ही बहुत दूर तक चला गया हो। २-दीर्घ। ३-जो बहुत ऊँचा हो। ४-(समय) जिसका विस्तार बहुत हो।
लंबाई स्त्री० (हि) लम्बा होने की अवस्था।
लंबाचौड़ा वि० (हि) विस्तृत।
लंबान पुं० (हि) लम्बाई।
लंबान-चौड़ान स्त्री० (हि) लम्बाई-चौड़ाई।
लंबायमान वि० (हि) १-बहुत लम्बा। २-लेटा हुआ
लंबित वि० (सं) १-लम्बा। २-विचार, निश्चय आदि के लिए कुछ समय के लिए टाला हुआ। (पेंडिंग) पुं० मांस।
लंबू वि० (हि) लम्बा (व्यंग में आदमी के लिए)।
लंबोतरा वि० (हि) लम्बे आकार का। जो अपेक्षाकृत लम्बा हो।
लंबोदर पुं० (सं) गणेशजी। वि० बड़े पेट वाला।
लंबोष्ठ पुं० (सं) ऊँट। वि० लम्बे ओठ वाला।
ल पुं० (सं) १-इन्द्र। २-पृथ्वी।

लउ स्त्री० (हि) लगन । लौ ।
लउआ पु० (हि) दे० 'लौआ' ।
लउकी स्त्री० (हि) दे० 'लौकी' ।
लउटी स्त्री० (हि) दे० 'लकुटी' ।
लक्कड़दादा पुं० (हि) परदादा से बड़ा दादा ।
लक्कड़बग्घा पुं० (हि) एक भेड़िया से बड़ा हिंसक पशु
लक्कड़हारा पु०(हि) जङ्गल में लकड़ी काट कर बेचने वाला ।
लक्कड़ पुं० (हि) लकड़ी का मोटा कुन्दा । लक्कड़ ।
लकड़ाना क्रि० (हि) १-सूखी लकड़ी की तरह कड़ा हो जाना ।
लकड़ी स्त्री० (हि) १-वृक्ष का कटा हुआ कोई भाग । २-ईंधन । ३-छड़ी । लाठी । ४-गतका । पटा ।
लकदक पुं०(फा) वह पथरीला मैदान जहां पेड़ आदि न हों ।
लकब पुं० (अ) उपाधि । पदवी । खिताब ।
लकलक पुं०(अ) एक जल पक्षी जिसकी गरदन लंबी होती है । सारस । वि० लम्बी गरदन वाला ।
लकवा पुं० (अ) एक वात का रोग जिसमें कोई अंग सुन्न या बेकार हो जाता है । फालिज । (पोलिओ)
लकसी स्त्री०(हि) फल आदि तोड़ने की लग्गी जिस पर चन्द्राकार लोहे का फल लगा होता है ।
लकीर स्त्री० (हि) एक सीध में लगी लम्बी आकृति । रेखा । २-दूर तक रेखा के समान बना हुआ चिह्न ३-धारी । ४-पंक्ति ।
लकुच पुं०(स) बड़हर का पेड़ । पुं०(हि) दे० 'लकुट'
लकुट स्त्री० (हि) लाठी । छड़ी । स्त्री० (सं) १-लुकाट का वृक्ष । लुकाट ।
लकुटी स्त्री० (हि) लाठी । छड़ी ।
लकुरी स्त्री० (हि) लकड़ी ।
लक्कड़ पुं० (हि) दे० 'लकड़ा' ।
लक्का पुं० (हि) एक प्रकार का कबूतर विशेष जो नृत्य करता है ।
लक्का-कबूतर पुं० (हि) नृत्य की एक मुद्रा ।
लक्खी पुं० (हि) १-लखपति । २-घोड़ों की एक जाति वि० (हि) १-लाख के रंग का । २-लाखों से सम्बन्ध रखने वाला ।
लक्तक पुं० (सं) अलता जो स्त्रियां पैरों में लगाती हैं । २-चिथड़ा ।
लक्ष पुं० (सं) १-एक लाख की संख्या । २-किसी उद्देश्य से किसी बात या वस्तु का ध्यान रखना । ३-दे० 'लक्ष्य' । ४-तीर । ५-चिह्न । वि० एक लाख । सौ हजार ।
लक्षण पुं०(स) १ किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचानी जा सके । २-रोग की पहचान । ३-नाम । ४-परिभाषा । ५-शरीर के अंग में वह चिह्न जो शुभ या अशुभ के द्योतक होते हैं । ६-लक्षण ७-दर्शन । ८-सारस पक्षी ।
लक्षणकर्म पु० (सं) परिभाषा ।
लक्षणज्ञ पु० (सं) वह जो लक्षण जानता हो ।
लक्षणभ्रष्ट वि० (सं) भाग्यहीन । जिसके शरीर पर शुभ चिह्न न हों ।
लक्षण-लक्षणा स्त्री० (स) लक्षणा का वह भेद जिसमें एक का लक्षण दूसरे से ज्ञात हो जाता है ।
लक्षणा स्त्री०(स) १-शब्द की वह शक्ति जिससे उसका साधारण से भिन्न अर्थ प्रकट हो । मादा सारस । ३-मादा हंस । ४-उद्देश्य ।
लक्षणी वि० (स) चिह्नों को जानने वाला । लक्षण जानने वाला ।
लखना क्रि० (हि) देखना । लखना ।
लक्षपति पुं० (स) लखपती ।
लक्षवेधी वि० (स) निशाने का भेद करने वाला ।
लक्षि स्त्री० (सं) दे० 'लक्ष्मी' ।
लक्षित वि० (स) १-बतलाया हुआ । निर्दिष्ट । २-देखा हुआ । ३-लक्षणा शक्ति से समझा जाने वाला (अर्थ) ।
लक्षित-लक्षणा स्त्री० (स) एक प्रकार की लक्षणा ।
लक्षिता स्त्री० (स) वह नायिका जिसके पर पुरुष से होने वाले सम्बन्ध को और लोग जानते हैं ।
लक्षितार्थ पु० (सं) वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलता है ।
लक्षी स्त्री० (स) एक वर्णवृत्त जिसके चरण में आठ रगण होते हैं ।
लक्ष्म पु० (स) लक्षण । चिह्न । निशान ।
लक्ष्मण पु० (स) १-राजा दशरथ के एक पुत्र का नाम जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । २-चिह्न ।
लक्ष्मणा स्त्री० (स) १-श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक । २-एक जड़ी । पुत्रकन्दा ।
लक्ष्मी स्त्री० (स) १-धन की अधिष्ठात्री देवी जो कि विष्णु की पत्नी मानी जाती है । २-धन । संपत्ति । ३-शोभा । ४-गृहस्वामिनी । ५-वीर स्त्री । ६-दुर्गा का एक नाम । ७-चंद्रमा की ग्यारहवीं कला ८-सौभाग्य ।
लक्ष्मीकान्त पु० (स) विष्णु भगवान ।
लक्ष्मीनाथ पु० (स) विष्णु ।
लक्ष्मीनिधि पु० (स) राजा जनक [illegible]
लक्ष्मीपति पु० (स) १-विष्णु । [illegible]
लक्ष्मीपुत्र पु० (स) १-धनी [illegible] कामदेव । घोड़ा ।
लक्ष्मीपूजा पु० (सं) 'दीपावली' [illegible] वाला लक्ष्मी का पूजन ।
लक्ष्मीरमण पु० (स) देव ।
लक्ष्मीश पु० (स) १

लक्ष्य पुं० (सं) १-वह जिस पर निशाना लगाया जाय। निशाना (टार्गेट)। २-जिस पर किसी उद्देश्य से दृष्टि रखी जाय। ३-अनुमेय। वह जिसका अनुमान लगाया जाय। ४-बहाना। ५-उद्देश्य। ६-अभिधान। (डेजिग्नेशन)।
लक्ष्यभेद पुं० (सं) चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना साधना।
लक्ष्यवेध पुं० (सं) दे 'लक्ष्यभेद'।
लक्ष्यवेधी पुं० (सं) उड़ते या तेज दौड़ते या चलते पदार्थों पर ठीक निशाना लगाने वाला।
लक्ष्यसिद्धि स्त्री० (सं) उद्देश्य की प्राप्ति।
लक्ष्यहा पुं० (सं) बाण।
लक्ष्यार्थ पुं० (सं) लक्षणा से निकलने वाला अर्थ।
लखघर पुं० (हि) लाख का घर।
लखन पुं० (हि) राम के भाई लक्ष्मण। स्त्री० लिखने की क्रिया या भाव।
लखना क्रि० (हि) १-देखना। २-ताड़ना।
लखपती पुं० (हि) जिसके पास लाखों रुपये की संपत्ति हो।
लखपेड़ा वि० (हि) जिसमें बहुत अधिक पेड़ हों (बाग)।
लखराऊँ पुं० (हि) बहुत बड़ा बाग।
लखलुट वि० (हि) अपव्यय करने वाला।
लखलखा पुं० (अ) १-कोई सुगंधित द्रव्य। २-कस्तूरी आदि का बना एक विशेष सुगंधित द्रव्य जो मूर्छित व्यक्ति को होश में लाता है।
लखाई स्त्री० (हि) पहचान। लक्षण।
लखाउ पुं० (हि) दे 'लखाव'।
लखाना क्रि० (हि) दिखाई। २-दिखलाना। ३-अनुमान करा देना।
लखाव पुं० (हि) १-लक्षण। पहचान। चिह्न। २-निशानी के रूप में दी गई वस्तु।
लखिमी स्त्री० (हि) दे० 'लक्ष्मी'।
लखिया पुं० (हि) वह जो लखता हो।
लखी पुं० (हि) लाख के रङ्ग का घोड़ा।
लखुवा पुं० (हि) १-गेहूँ में लगने वाला एक रोग। लाही। २-लाल मुँह का बन्दर।
लखेदना क्रि० (हि) खदेड़ना।
लखेरा पुं०(हि)लाख की चूड़ियां आदि बनाने वाला उसकी जाति।
लखोट स्त्री० (हि) स्त्रियों के हाथ में पहनने वाली लाख की चूड़ी।
लखौटा पुं० (हि) १-चन्दन केसर आदि से बनने वाला उबटन। २-सिन्दूर आदि रखने की डिबिया।
लखौरी स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की भौंरी (कीड़ा) का घर। २-पुरानी चाल की छोटी, पतली ईंट। ३-किसी देवता पर उसके प्रिय वृक्ष की पत्तियां चढ़ाना।
लगन स्त्री० (हि) १-किसी कार्य या व्यक्ति की ओर पूर्णतया ध्यान लगाना। लौ। २-लगाव। सम्बन्ध स्नेह। पुं० १-विवाह का मुहूर्त। २-वे दिन जब विवाह होते हैं। (फा) एक प्रकार की थाली।
लगनपत्री स्त्री० (हि) विवाह की तिथिसूचक चिट्ठी।
लगनवट स्त्री० (हि) लगन। प्रेम। मुहब्बत।
लगना क्रि०(हि)१-दो पदार्थों के तल मिलना। सटना २-किसी वस्तु पर कुछ जड़ना। ३-मिलाना। ४-उगना। ५-ठिकाने पर पहुँचना। ६-खर्च होना। ७-ज्ञात होना। ८-स्थापित होना। ९-टकराना। १०-जलन आदि मालूम होना। ११-किसी लत का आरम्भ होना। १२-जारी होना। १३-आवश्यक होना। १४-सड़ना। १५-रगड़ खाना। १६-जलना १७-साथ होना। १८-चिमटना। १९-छूना। २०-बन्द होना। २१-फैलना। २२-चढ़ना। २३-ताक में रहना। २४-जहाज का किनारे पर लगना। २५-सम्बन्ध में कुछ होना।
लगनि स्त्री० (हि) दे० 'लगन'।
लगभग अव्य० (हि) प्रायः। बहुत कुछ। करीब-करीब
लगर पुं० (देश) चील के आकार का एक शिकारी पक्षी।
लगलग वि० (हि) बहुत दुबला-पतला। सुकुमार।
लगव वि० (हि) १-असत्य। झूठ। २-व्यर्थ।
लगवाना क्रि० (हि) लगाने का काम किसी दूसरे से कराना।
लगवार पुं० (हि) स्त्री का यार। जार।
लगातार अव्य० (हि) निरंतर। बराबर।
लगान पुं० (हि) १-लगने या लगाने की क्रिया। २-खेती या भूमि पर लगाने वाला कर। (रेन्ट)। ३-बोझ उतार कर सस्ताने का स्थान। ४-नाव ठहरने का घाट।
लगाना क्रि०(हि) १-सटाना। २-मिलाना। ३-चिपकाना। ४-सीना। जोड़ना। ५-जमाना। ६-व्यय या खर्च करना। ७-पोतना। ८-सड़ना। गलना। ९-जड़ना। १०-गाड़ना। ११-सटाना। १२-छुआना। १३-दांव पर धनादि रखना। १४-धारण करना। १५-अंकित करना। १६-दाम आंकना। १७-फैलाना। १८-करना। जहाज को पार लाना। १९-लागू करना। (इम्पोज)।
लगाम स्त्री० (फा) १-घोड़े के मुँह में लगाया जाने ढाँचा जिसके दोनों ओर रस्से या चमड़े बँधे होते हैं। रास। बाग।
लगाव स्त्री० (हि) १-लगन। २-प्रेम।
लगायत अव्य० (अ) आखीर तक। अन्त तक।
लगार स्त्री० (हि) १-नियमानुसार नित्य कार्य करना। बन्धेज। २-लगाव। ३-क्रम। सिलसिला

लछमी स्त्री० (हि) दे० 'लक्ष्मी'।
लछारा वि० (हि) लम्बा।
लज स्त्री० (हि) लाज। शर्म। हया।
लजना क्रि० (हि) लजाना। लज्जित होना।
लजवाना क्रि० (हि) दूसरे को लज्जित कराना।
लजाधुर वि० (हि) शर्मीला। जो बहुत ही लज्जा करे
लजाना क्रि० (हि) १-लज्जित होना। २-लज्जित करना।
लजारू पुं० (हि) छूने से सिकुड़ने वाला एक पौधा।
लजालू पुं० (हि) लजारू। छुईमुई का पेड़।
लजावनहारा पुं० (हि) लज्जित करने वाला।
लजावना क्रि० (हि) 'लजवाना'।
लजियाना क्रि० (हि) १-लजाना। २-लजवाना।
लजीज वि० (प) स्वादिष्ट (खाद्यपदार्थ)।
लजीला वि० (हि) जिसमें लाज हो। लज्जाशील।
लजुरी स्त्री० (हि) कूएँ से पानी निकालने की रस्सी।
लजोर वि० (हि) लज्जाशील।
लजोहा वि० (हि) लजीला। शर्मीला।
लजौना वि० (हि) लज्जित करने वाला।
लजौहाँ वि० (हि) लज्जाशील।
लज्जत स्त्री० (अ) स्वाद। मजा।
लज्जतदार वि० (अ) स्वादिष्ट। जायकेदार।
लज्जा स्त्री० (सं) वह मनोभाव जो संकोच आदि के कारण दूसरों का सामना नहीं करने देता। शर्म। मान।
लज्जाकारी वि० (सं) लज्जा उत्पन्न करने वाला।
लज्जाप्रद वि० (सं) दे० 'लज्जाकारी'।
लज्जालु पुं० (सं) दे० 'लजालु'। वि० लजीला। शर्मीला।
लज्जावंत वि० (सं) लजीला। पुं० लजालु का पौधा
लज्जावाह वि० (सं) दे० 'लज्जाकारी'।
लज्जावान् वि० (सं) लज्जाशील। शर्मदार।
लज्जाशील वि० (सं) जिसे स्वभावतः जल्दी लाज लगती हो।
लज्जाशून्य वि० (सं) जिसे लाज शर्म न हो।
लज्जाहीन वि० (सं) बेहया। बेशर्म।
लज्जित वि० (सं) लज्जा से वशीभूत।
लट स्त्री० (हि) बालों का गुच्छा जो नीचे की ओर लटके। केशलता। २-लपट। लौ। ३-ऐंठ।
लटजीरा पुं० (हि) चिचड़ा।
लटक स्त्री० (हि) १-अङ्गों की कोमल, मनोहर चेष्टा। २-लटकन। ३-ढलुवाँ जमीन।
लटकन पुं० (हि) १-लुभावनी चाल। २-लटकने वाली वस्तु। ३-नाक का गहना। ४-कलगी में लगे रत्नों का गुच्छा।
लटकना क्रि० (हि) १-किसी आधार से नीचे की ओर टांगना। लटकाना। २-खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ३-काम का अधूरा पड़ा रहना।
लटकवाना क्रि० (हि) लटकाने का काम दूसरे से कराना।
लटका पुं० (हि) १-ढंग। २-बनावटी कोमल चेष्टा ३-उपचार आदि की छोटी सहज युक्ति। ४-एक प्रकार का चलता गाना। ५-टोटका।
लटकाना क्रि० (हि) १-टांगना। २-लचकाना। ३-आसरे में रखना। ४-देर करना। ५-लटकाने में प्रवृत्त करना।
लटकीला वि० (हि) झूमता हुआ। लचकदार।
लटकौआ वि० (हि) लटकने वाला।
लटना क्रि० (हि) १-थक कर गिरजाना। २-दुबला और अशक्त होना। ३-शिथिल होना। ४-विकल होना। ५-लुभाना। ६-लीन होना।
लटपट वि० (हि) १-ढीलाढाला। २-अस्त-व्यस्त। ३-टूटाफूटा (अक्षर)। ४-जिसमें सिलवट पड़ी हो (कपड़ा)।
लटपटा वि० (हि) दे० 'लटपट'।
लटपटाना क्रि० (हि) १-लड़खड़ाना। २-विचलित होना। ३-लुभाना। ४-अनुरक्त होना।
लटा वि० (हि) १-लोलुप। लंपट। २-नीच। ३-तुच्छ। ४-पतित। बुरा।
लटापटी स्त्री० (हि) लड़ाई-झगड़ा।
लटापोट वि० (हि) मोहित। मुग्ध।
लटिया स्त्री० (हि) सूत आदि की छोटी लच्छी।
लटी स्त्री० (हि) १-गप। झूठी बात। २-बुरी बात। ३-साधुनी। ४-वेश्या।
लटुआ पुं० (हि) दे० 'लट्टू'
लटूरी स्त्री० (हि) दे० 'लटूरी'।
लटू पुं० (हि) दे० 'लट्टू'
लटूरी स्त्री० (हि) बालों की एक लट। अलक।
लट्टू पुं० (हि) १-एक प्रकार का गोल खिलौना जो रस्सी में बाँध कर जमीन पर फेंक कर नचाया जाता है। २-बिजली की बत्ती। (बल्ब)।
लट्ठ पुं० (हि) मोटी और मजबूत लाठी। बड़ा डंडा
लट्ठबंद पुं० (हि) लठैत लाठी बांधने वाला आदमी।
लट्ठबाज वि० (हि) लाठी चलाने वाला। लठैत।
लट्ठमार वि० (हि) १-लठैत। लट्ठ मारने वाला। २-कठोर (बात)।
लट्ठा पुं० (हि) १-लकड़ी का लम्बा बल्ला। २-एक प्रकार का कपड़ा। ३-लकड़ी का खम्भा। ४-धरन ५-शहतीर।
लठिया स्त्री० (हि) लाठी।
लठैत पुं० (हि) लाठी की लड़ाई में निपुण व्यक्ति।
लड़त स्त्री० (हि) १-लड़ाई। भिड़न्त। २-सामना।
लड़ स्त्री० (हि) १-एकसी वस्तुओं की माला। २-रस्सी या डोर के कई तारों का एक तार। ३-पंक्ति।

४-पंक्तियों में लगे मंजरियों या फूलों का छड़ी के आकार का गुच्छा।
लड़क पुं० (हि) लड़का।
लड़कई स्त्री० (हि) १-लड़कपन। बाल्यावस्था। २-नादानी। चंचलता।
लड़कखेल पुं० (हि) १-बच्चों का खेल। २-साधारण काम या काम।
लड़कपन पुं० (हि) १-बाल्यावस्था। २-चंचलता। ३-नासमझी।
लड़कबुद्धि स्त्री० (हि) १-अपरिपक्व बुद्धि। २-लड़कों जैसी बुद्धि।
लड़का पुं० (हि) १-बालक। छोकरा। २-पुत्र।
लड़काई स्त्री० (हि) दे० 'लड़कई'।
लड़काबाला पुं० (हि) सन्तान।
लड़किनी स्त्री० (हि) दे० 'लड़की'।
लड़की स्त्री० (हि) १-कम आयु की (स्त्री)। बालिका २-पुत्री।
लड़कीवाला पुं० (हि) १-कन्या का पिता या संरक्षक २-विवाह में कन्या पक्षवाला।
लड़कोरी वि० (हि) जिसकी गोद में बच्चा हो। बच्चे वाली।
लड़कैया स्त्री० (हि) लड़कपन।
लड़खड़ाना क्रि० १-डगमगाना। २-झोंका खाकर नीचे आना।
लड़खड़ी स्त्री० (हि) डगमगाहट।
लड़ना क्रि० (हि) १-भिड़ना। युद्ध करना। २-मल्ल-युद्ध करना। ३-तर्क करना। सेनाओं का युद्ध करना। ४-झगड़ा करना। तकरार करना। ५-मेल मिल जाना। ६-बिच्छू आदि का डंक मारना। ७-टकराना।
लड़बावरा वि० (हि) १-अल्हड़। २-मूर्ख। ३-गंवार
लड़बौरा वि० (हि) लड़बावरा।
लड़ाई स्त्री० (हि) १-भिड़न्त। युद्ध। २-मल्लयुद्ध। ३-झगड़ा। विवाद। ४-दोनों सेनाओं में युद्ध। वाद-विवाद। ६-टक्कर। ७-अनबन। विरोध। ८-प्रहार।
लड़ाई-बंदी स्त्री० (हि) समझौता करके युद्ध बन्द करना।
[illegible]
दबाव करना। ५-परस्पर उलझना। ६-प्रेम से पुचकारना।
लड़ायता वि० (हि) दे० 'लड़ैता'।
लड़ी स्त्री० दे० 'लड़'।
लड़ौना वि० (हि) दे० 'लाड़ला'।
लड़ुआ पुं० (हि) मोदक। लड्डू।
लड़ैता वि० (हि) १-लाड़ला। २ जो प्यार के कारण बिगड़ गया हो। धृष्ट। ३-प्रिय। ४-लड़ने वाला।
लड्डुक पुं० (सं) दे० 'लड्डू'।
लड्डू पुं० (हि) गोल बँधी हुई मिठाई। मोदक।
लढ़ियाना क्रि० (हि) दुलार करना।
लढ़ा पुं० (हि) बैलगाड़ी।
लढ़िया स्त्री० (हि) बैलगाड़ी।
लत स्त्री० (हि) बुरी आदत।
लतखोर वि० (हि) १-नीच। २-सदा लात खाने वाला।
लतड़ी स्त्री० (हि) दे० 'लतरी'।
लतरी स्त्री० (हि) केसारी नामक अन्न
लतहा वि० (हि) लात मारने वाला (पशु)।
लता स्त्री० (सं) वह पौधा जो जमीन या किसी आधार पर फैलता है। बेल। २-कोमल शाखा।
लताकुंज पुं० (सं) लताओं से छाया हुआ स्थान।
लतागृह पुं० (सं) लताओं से घिरा और घर के रूप में बना हुआ स्थान।
लताड़ स्त्री० (हि) दे० 'लथाड़'।
लताड़ना क्रि० (हि) १-पैरों से कुचलना। २-लातों से मारना। ३-फटकारना। झाड़ना।
लतापता पुं० (हि) बेल और पत्ते। जड़ी बूटी।
लताभवन पुं० (सं) दे० 'लतागृह'।
लतामंडप पुं० (सं) लताओं से बना मंडप या घर।
लताविनाल पुं० (सं) लताओं से बना मंडप।
लतिका स्त्री० (सं) छोटी लता।
लतियर वि० (हि) दे० 'लतखोर'।
लतियाना क्रि० (हि) १-लातें मारना। २-पैरों से दबाना।
लतीफ वि० (प) १-स्वादिष्ट। २-बढ़िया। मनोहर।
लतीफमिजाज वि० (प) खुशमिजाज।
लतीफा पुं० (प) १-चुटकुला। २-हँसी की बात। ३-अनूठी बात।
लतीफाबाज वि० (प) विनोदी। हँसाने वाला।
लत्ता पुं० (हि) १-कपड़ा। २-फटा पुराना कपड़ा। ३-चीथड़ा।
लत्ती स्त्री० (हि) १-पशुओं के पद प्रहार का लात। २-कपड़े की लम्बी धज्जी। ३-लात मारने की क्रिया। [illegible] की डोरी।
[illegible] (हि) १-भीगा हुआ। तर। २-कीचड़ [illegible] सना हुआ।
लथाड़ स्त्री० (हि) १-जमीन पर घसीटने की क्रिया। २-झिड़की। ३-पराजय। ४-हानि।
लथाड़ना क्रि० (हि) दे० 'लथेड़ना'।
लथेड़ना क्रि०(हि) १-कीचड़ आदि में लपेटना। २-मैला करना। ३-जमीन पर पटक कर घसीटना। ४-तंग करना। ५-डाटना।

लदना क्रि० (हि) १-वजन या भार ऊपर लेना। २-पूर्ण होना। ३-सामान ढोने वाले वाहन पर वस्तुओं का रखा जाना। ४-मरना। ५-किसी भारी वस्तु का अन्य किसी वस्तु पर रखा जाना।
लदवाना क्रि० (हि) लादने का काम दूसरे से कराना।
लदाउ वि० (हि) जो लादने को हो। पुं० लदाव। भराव।
लदाऊ पुं० (हि) दे० 'लदाउ'।
लदान स्त्री० (हि) लादने का सामान।
लदाना क्रि० (हि) दे० 'लदवाना'।
लदाव पुं०(हि) १-लदान। २-भार। बोझ। ३-बिना धरन की ईंट की छत की चिनाई का जोड़।
लदावना क्रि० (हि) माल लाद कर ले जाना।
लदुआ वि० (हि) दे० 'लदुवा'।
लदुवा वि० (हि) बोझ ढोने वाला।
लद्दू वि० (हि) दे० 'लदुवा'।
लद्धड़ वि०(हि) मोटा होने के कारण सुस्त। आलसी
लद्धड़पन पुं० (हि) सुस्ती। काहिली।
लद्धना क्रि० (हि) प्राप्त करना।
लप पुं० (हि) १-लपलपाने की क्रिया या भाव। २-छुरी तलवार की चमक की गति। ३-अंजलि। ४-अंजलि भर कोई चीज।
लपकना क्रि० (हि) झपट कर या शीघ्रता से आगे बढ़ना। २-टूट पड़ना। ३-कोई वस्तु पाने के लिए हाथ आगे बढ़ाना।
लपझप वि० (हि) १-चंचल। २-इधर-उधर की निरंतर बातें करने वाला। ३-तेज। फुर्तीला।
लपट स्त्री० (हि) १-आग की लौ। ज्वाला। २-गरम वायु का झोंका। ३-किसी गंध से भरा हुआ झोंका
लपटना क्रि०(हि)१-लिपटना। २-सटना। ३-फंसना। ४-[illegible] रहना।
लपटा पुं० (हि) १-लपसी। २-गाढ़ी वस्तु। ३-कढ़ी ४-थोड़ा लगाव।
लपटाना क्रि० (हि) १-लिपटाना। २-गले लगाना। ३-घेरना। ४-संलग्न। सटना। ५-उलझना।
लपटौआँ वि० (हि) १-सटा हुआ। २-लिपटने वाला
लपटौना पुं० (हि) कपड़ों पर चिपक जाने वाली एक प्रकार की घास।
लपना क्रि० (हि) १-झोंक के साथ इधर-उधर चलना। २-झुकना। ३-लपकना।
लपलपाना क्रि०(हि)१-बेंत, छड़ी आदि का एक तरफ से हिलाए जाने पर इधर-उधर झुकना। २-छुरी आदि का चमकना। ३-लपाना। ४-छुरी तलवार आदि को निकाल कर चमकाना।
लपलपाहट स्त्री०(हि) १-लपलपाने का भाव या क्रिया २-चमक।
लपसी स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का पतला हलुआ। २-गीली गाढ़ी वस्तु।
लपाना क्रि० (हि) १-लचीली छड़ी आदि को इधर उधर लचाना। २-आगे बढ़ाना।
लपेट स्त्री० (हि) १-लपेटने की क्रिया या भाव। २-बल। ऐंठन। ३-घेरा। ४-उलझन। ५-पकड़।
लपेटन स्त्री० (हि) १-लपेट। २-बल। फेरा। ३-ऐंठ ४-उलझन। पुं० १-लपेटने वाली वस्तु। २-बांध का कपड़ा। ३-पैरों में उलझने वाली वस्तु।
लपेटना क्रि० (हि) १-घुमाते हुए किसी वस्तु के चा[illegible] ओर लगाना। परिवेष्टित करना। २-कपड़े आदि अन्दर बंधना। ३-गीली या गाढ़ी वस्तु पोतना। ४-उलझन आदि में किसी को सम्मिलित करना।
लपेटवां वि० (हि) १-जिसे लपेट सकें। २-जिस सोने चांदी के तार लपेटे हों। ३-जिसका अ[illegible] छिपा हो। गूढ़। ४-घुमाव-फिराव का।
लप्पड़ पुं० (हि) दे० 'थप्पड़'।
लफंगा वि० (हि) १-लम्पट। व्यभिचारी। २-शोह[illegible]
लफना क्रि० (हि) दे० 'लपना'।
लफलफानि स्त्री० (हि) लपलपाहट।
लफज पुं० (अ) १-शब्द। २-बोल।
लफज-ब-लफज अव्य० (अ) शब्दशः।
लफजी वि० (अ) शाब्दिक।
लफ्जीमानी पुं० (अ) शब्दार्थ।
लफ्फाज वि० (अ) १-बातूनी। २-लच्छेदार बा[illegible] करने वाला।
लब पुं० (फा) ओष्ट। होठ।
लबझना क्रि० (हि) उलझना। फँसना।
लबड़धोंधों स्त्री० (हि) १-व्यर्थ गुलगपाड़ा। २-अंधे[illegible] कुव्यवस्था।
लबड़ना क्रि० (हि) १-झूठ बोलना। २-गप हांकना
लबनी स्त्री० (देश) १-ताड़ के पेड़ में बांधने की लम्बी हांडी। २-बड़ा कड़ाहा।
लबरा वि० (हि) १-झूठ बोलने वाला। १-गप्पी।
लबलबी स्त्री० (अ) बन्दूक में घोड़े की कमानी।
लबादा पुं० (अ) १-लम्बा चोगा। २-रुई का बड़ा कोट।
लबाब वि० (अ) विशुद्ध। खालिस। पुं० (अ) १-सारांश। २-गूदा।
लबार वि० (हि) १-झूठा। २-गप्पी।
लबारी स्त्री० (हि) झूठ बोलना। वि० (हि) १-झूठा ३-चुगलखोर।
लबालब अव्य० (हि) ऊपर तक या किनारे तक भरा हुआ)।
लबेद पुं० (हि) १-वेद के विरुद्ध वचन। दन्त कथा। २-प्रथा। ३-ओछी बात।
लबेदी स्त्री० (हि) १-छोटा डण्डा। लाठी। २-जबर-दस्ती।

२-लाली। ३-सुन्दरता।
ललित क्रि० (सं) १-सुन्दर। मनोहर। २-हिलता-डोलता हुआ। पुं० १-शृङ्गार रस में सुकुमारता से अंग हिलाना। २-एक वर्णवृत्त। ३-एक अलंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु (बात) के स्थान पर उसका प्रतिबिंब वर्णन किया जाता है। ४-एक राग।
ललितई स्त्री० (हि) दे० 'ललिताई'।
ललितकला स्त्री० (सं) वह कला जिसके व्यक्त करने में सौंदर्य की अपेक्षा होती है। जैसे—संगीत। (फाइन आर्ट् स)।
ललितपद पुं० (सं) अट्ठाइस मात्रा का एक छन्द। वि० जिसमें सुन्दर शब्द या पद हों।
ललितपुराण पुं०(सं) बौद्धों का ललितविस्तार नामक ग्रन्थ।
ललितलोचन पुं० (स) सुन्दर नेत्र।
ललितविस्तार पुं० (स) दे० 'ललितपुराण'।
ललिता स्त्री० (सं) १-रमणी। २-स्वेच्छाचारी स्त्री ३-दुर्गा। ४-कस्तूरी। ५-राधिका की एक सखी। ६-एक रागिनी। ७-एक वर्णवृत्त। ८-एक नदी (पुराण)।
ललिताई स्त्री० (हि) सुन्दरता। लालित्य।
ललितापंचमी स्त्री० (सं) आश्विन शुक्ला-पंचमी।
ललितोपमा स्त्री० (सं) वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय या उपमान की सेवा जताने के लिए तुल्य, समान आदि शब्द प्रयोग न करके मित्रता, निरादर, ईर्ष्या आदि का भाव प्रकट हो।
लली स्त्री० (हि) १-लड़की। २-लाड़ली लड़की। ३-नायिका के लिए प्यार का शब्द।
ललौहाँ वि० (हि) लाली लिए हुए।
लल्ला पुं० (हि) दे० 'लला'।
लल्लो स्त्री० (हि) जीभ। जबान।
लल्लोचप्पो स्त्री० (हि) किसी को प्रसन्न करने के लिए की गई चिकनी चुपड़ी बातें। खुशामद।
लल्लोपत्तो स्त्री० (हि) दे० 'लल्लोचप्पो'।
लवंग पुं० (सं) १-लौंग का वृक्ष। २-इस वृक्ष की सूखी कली। लौंग।
लवंगलता स्त्री०(सं) १-लौंग का पेड़ या उसकी शाखा २-एक बंगाली मिठाई।
लव पुं० (सं) १-बहुत थोड़ी मात्रा। २-लवा नामक पक्षी। ३-दो काष्ठा का समय। ४-लवंग। ५-काटना ६-विनाश। ७-ऊन। बाल (पशु)। ८-रामचन्द्रजी के दो पुत्रों में से एक।
लवकना क्रि० (हि) १-चमकना। २- दिखाई देना।
लवका स्त्री०(हि) १-चमक। २-बिजली। ३-कौंधा।
लवण पुं० (सं) १-नमक। (साल्ट)। २-पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक। ३-एक असुर का नाम। वि० (स) १-नमकीन। खारा। २-सलोना। सुन्दर
लवणत्रय पुं० (सं) सैंधव, विट् और सचल इन तीन प्रकार के नमकों का समूह।
लवणभास्कर पुं० (सं) वैद्यक का एक प्रसिद्ध हाजि चूर्ण।
लवण-समुद्र पुं० (सं) खारे पानी का समुद्र।
लवणांतक १-लवणासुर को मारने वाले शत्रुघ्न २-नीबू।
लवणालय पुं० (सं) १-लवणासुर द्वारा बसाई आधुनिक मथुरा। २-समुद्र।
लवणिमा स्त्री० (सं) सुन्दरता। सलोनापन।
लवणोदधि पुं० (सं) लवण समुद्र।
लवन पुं० (सं) १-काटना। २-खेत की कटाई। लौनी। खेत काटने की मजदूरी के बदले दिया हु अन्न।
लवना क्रि० (हि) १-पके हुए अन्न को खेती से अल कर इकट्ठा करना। वि० (हि) लोनी।
लवनाई स्त्री० (हि) लावण्य। सुन्दरता।
लवनि स्त्री० (हि) १-खेत की फसल काटने की क्रि २-खेत काटने की मजदूरी के बदले दिया अन्न
लवनी स्त्री० (हि) १-दे० 'लवनि'। २-नवनीत मक्खन। स्त्री० (सं) शरीफे का पेड़ या फल।
लवनीय वि० (सं) काटने के योग्य।
लवर स्त्री० (हि) अग्नि की लपट। ज्वाला।
लवली स्त्री० (सं) १-एक विषम वर्णवृत्त। २-हरफ रेवड़ी का वृक्ष।
लवलीन वि० (हि) तन्मय। तल्लीन। मग्न।
लवलेश पुं० (सं) १-अत्यन्त। अल्पमात्रा। २-जरा सा लगाव।
लवलेस पुं० (सं) दे० 'लवलेश'।
लव्य वि० (सं) दे० 'लवनीय'।
लवा पुं० (हि) १-अन्न का दाना जो भूनने से फू गया हो। २-एक तीतर की जाति का छोटा पक्षी
लवाई वि० (देश) हाल की ब्याई हुई गाय। स्त्री (हि) १-खेत की फसल की कटाई। २-कटाई क मजदूरी।
लवाजिमा पुं० (अ) १-बड़े आदमियों के साथ रहा वाले लोग। २-आवश्यक सामग्री।
लवारा पुं० (हि) गाय का बछड़ा वि० (हि) आवार
लवासी वि० (हि) १-लम्पट। २-बकवादी। ३-बद चलन।
लशकर पुं० (फा) १-सेना। फौज। २-सेना पु छावनी। ३-जहाज पर काम करने वाले मल्लाह
लशकरगाह पुं० (फा) छावनी। शिविर।
लशकरनवीस पुं० (फा) सेना (फौज) का वेतन बाँट वाला।
लशुन पुं० (सं) लहसुन।
लशून पुं० (सं) लहसुन।

असमर्थ। विवश।
लाचारी स्त्री० (फा) विवशता। मजबूरी।
लाची स्त्री० (हि) दे० 'इलायची'।
लाचीदाना पुं० (हि) इलायची के ऊपर चीनी चढ़ाकर बनाई गई मिठाई।
लाछन पुं० (हि) कलङ्क। लाञ्छन।
लाछी स्त्री० (हि) लक्ष्मी।
लाज स्त्री० (हि) १-लज्जा। शर्म। हया। २-प्रतिष्ठा। ३-धान का लावा।
लाजक पुं०(हि) धान का भुना हुआ लावा।
लाजना क्रि० (हि) लज्जित होना। शर्माना।
लाजभक्त पुं० (सं) लावा या खोई का पकाया हुआ भात।
लाजवन्त वि० (हि) जिसे लाज या शर्म हो। हयादार
लाजवर्द पुं० (फा) एक कीमती पत्थर।
लाजवर्दी वि० (फा) लाजवर्द के रङ्ग का। हल्के नीले रंग का।
लाजा स्त्री० (सं) १-चावल। २-धान की खील। लावा।
लाजिम वि० (अ) १-आवश्यक। २-उचित।
लाजिमी वि० (अ) दे० 'लाजिम'।
लाट पुं० (हि) १-ऊँचा और मोटा खंभा। २-इस प्रकार की बनावट या इमारत। ३-किसी प्रांत या प्रदेश का सबसे बड़ा शासक। (गवर्नर)। ४-बहुत सी वस्तुओं का समूह जो एक साथ बेचा जाय। (अ) १-एक प्राचीन देश। २-बांध। ३-अनुराग।
लाटरी स्त्री०(अ) वह योजना जिसमें लोगों को गोली उठा कर उनके भाग्य के अनुसार धन या कोई बहुमूल्य वस्तु दी जाती है।
लाटानुप्रास पुं० (सं) एक शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है परन्तु अन्वय में हेर-फेर के करने से अर्थ बदल जाता है।
लाटिका स्त्री० (सं) साहित्य में चार प्रकार की रचनाओं में से एक।
लाटी स्त्री० (हि) वह अवस्था जिसमें ओठ और मुंह का थूक सूख जाता है।
लाठालाठी स्त्री० (हि) लाठियों से आपस में प्रहार करना।
लाठी स्त्री० (हि) बड़ा डंडा। लकड़ी।
लाड़ पुं० (हि) बच्चों के साथ किया जाने वाला दुलार।
लाड़चाव पुं० (हि) प्यार। दुलार।
लाड़लड़ैता पुं० (हि) बड़े प्यार के साथ पला हुआ।
लाड़ला वि० (हि) दुलारा। जिससे लाड़ किया जाय
लाड़ू पुं० (हि) लड्डू। मोदक।
लात स्त्री० (हि) १-पैर। पद। पाँव। २-पदाघात। लात से किया गया प्रहार।
लाद स्त्री० (हि) १-पेट। आंत। २-लदाई। ३-माल लाद कर ले जाने वाले पशु।
लादना क्रि०(हि) १-किसी पर बोझ रखना। २-ढोने के लिए वस्तुओं को भरना।
लादिया पुं० (हि) बोझ लादकर ले जाने का काम करने वाला।
लादी पुं० (हि) पशु पर लादी गई गठरी या बोझ।
लाधना क्रि० (हि) पाना या प्राप्त करना।
लानत स्त्री० (अ) धिक्कार। भर्त्सना।
लानत मलामत स्त्री० (अ) १-धिक्कार। २-झिड़की।
लाना क्रि० (हि) १-कहीं से कोई वस्तु लेकर आना। २-उपस्थित करना। ३-देना या सामने रखना। ४-लगाना। ५-आग लगाना।
लाने अव्य० (हि) १-लिये। २-निमित्त। वास्ते।
लापता वि० (हि) जिसका पता न हो। (नोट ट्रेसेबल)।
लापता-चिट्ठीघर पुं० (हि) वह डाकखाने का विभाग जहां उन पत्रों को खोल कर और पढ़कर ठीक व्यक्ति को पहुँचाया जाता है जिन पर ठीक पता नहीं लिखा होता। (डेड लैटर आफिस)।
लापरवाह वि० (अ) बेफ़िक्र।
लापसी स्त्री० (हि) दे० 'लपसी'।
लाबर वि० (हि) दे० 'लबार'।
लाभ पुं० (सं) १-मिलना। प्राप्ति। २-उपकार। ३ कारोबार में होने वाला मुनाफा। (प्रॉफिट)।
लाभकर वि०(सं) १-दे० 'लाभकारक'। पुं० आयात कर। (इम्पोस्ट)।
लाभकरजोत स्त्री० (हि) काश्तकार या किसान द्वारा जोती हुई वह भूमि जिसकी उपज से होने वाली आय भरण-पोषण के व्यय के लिये पर्याप्त हो। (एकोनॉमिक होल्डिंग)।
लाभकारक वि० (सं) जिससे लाभ होता हो। लाभकारी।
लाभकारी वि० (सं) लाभजनक।
लाभदायक वि० (सं) दे० 'लाभकारक'।
लाभपद पुं० (सं) वह पद जिससे लाभ होता है। (ऑफिस आफ प्रॉफिट)।
लाभलिप्सा स्त्री० (हि) लाभ या मुनाफा कमाने की प्रबल इच्छा।
लाभ-विभाजन पुं० (सं) वह योजना [illegible] सार किसी संस्था में होने वाले [illegible] दारों तथा मजदूरों में वितरित [illegible] व्यवस्था की जाती है। (प्रॉफिट [illegible]
लाभालाभ पुं० (सं) दे० [illegible]
लाभस्थान पुं०(सं) कुंडली [illegible] कुण्डली में जन्म से [illegible]
लाभांश पुं० (सं)

कम्पनी) के लाभ का वह अंश जो हिस्सेदारों उनके लाभ के अनुसार मिलता है। (डिविडेन्ड)।
लाभालाभ पुं० (सं) हानि और लाभ।
लाम पु० (हि) १-सेना। फौज। २-बहुत से लोगों का समूह। ३-चिमटा। अव्य० (देश) दूर। (अ) अरबी भाषा की वर्णमाला का एक अक्षर।
लामकाफ पुं० (अ) अपशब्द। बेहूदा बात।
लामजेहब वि०(अ) नास्तिक। जिसका कोई धर्म न हो
लामन पुं० (देश) लँहगा।
लामा पु० (तिब्ब०) तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य तथा शासक। वि० (देश) लम्बा।
लामिसाल वि० (अ) अद्वितीय। बेजोड़।
लामें अव्य० (हि) दूर। अन्तर पर।
लाय स्री० (हि) १-लपट। ज्वाला। २-अग्नि।
लायक पु० (हि) दे० 'लाजक'।
लायक वि० (अ) १-योग्य। २-उचित। ठीक। ३-समर्थ। (फिट)।
लायकी स्री० (अ) सुयोग्यता। उपयुक्तता।
लायची स्री० (हि) इलायची।
लार स्री० (हि) १-मुँह से निकलने वाला थूक। २-कतार। ३-लुआब। अव्य० साथ। पीछे।
लारी स्री० (अ) वह लम्बी मोटर गाड़ी जिसमें बहुत आदमी बैठने तथा सामान रखने की जगह होती है
लारू पुं० (हि) लड्डू।
लाल पुं०(हि) १-पुत्र। २-छोटा और प्यारा बच्चा। ३-प्रिय व्यक्ति। ४-एक छोटी लाल रङ्ग की भूरी चिड़िया। ५-आधुनिक सोवियत-रूस, बोल्शेविक और बोल्शेविक क्रांति के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला शब्द। (रेड)। ६-क्रांतिसूचक शब्द। ७-चाह। ८-लालसा। ९-लाल चीन। वि० १-सुर्ख। रक्त के रङ्ग का। २-बहुत अधिक क्रुद्ध। ३-(वह खिलाड़ी) जो खेल में पहले जीत गया हो। (फा) मानिक नामक एक रत्न।
लालअंगारा वि०(हि)१-अत्यधिक क्रोध के कारण लाल २-बिलकुल लाल।
लालचंदन पुं० (हि) वह चन्दन जिसका रङ्ग लाल होता है।
लालच पुं० (हि) कुछ पाने की अधिक और अनुचित इच्छा।
लालचहा वि० (हि) लोभी। लालची।
लालची वि० (हि) जिसे बहुत अधिक लालच हो।
लालटेन स्री० (हि) प्रकाश का वह आधार जिसमें तेल, बत्ती और चारों ओर गोल शीशा होता है। (लैंटर्न)।
लालड़ी पुं०(हि) एक प्रकार का लाल रङ्ग का नगीना
लालन पु० (सं) प्रेमपूर्वक बच्चों को प्रसन्न करना। (हि) १-प्रिय पुत्र। २-बालक। ३-लाड़ या दुलार करना।
लालना क्रि० (हि) लाड़ या दुलार करना।
लालनीय वि० (सं) लाड़ या दुलार करने योग्य।
लालफीता पुं० (हि) १-सरकारी कागजों पर बांधने का लाल फीता। २-सरकारी कागजों में किसी विषय पर निर्णय पर पहुँचने में पेचीदा प्रणाली के कारण लगने वाली देर। (रेडटेपिज्म)।
लालबुझक्कड़ पुं० (हि) बातों का मूर्खतापूर्ण या अटकलपच्चू अर्थ लगाने वाला व्यक्ति।
लालमन पुं० (हि) १-एक प्रकार का बड़ा तोता। २-श्रीकृष्ण।
लालरी पुं० (हि) दे० 'लालड़ी'।
लालशक्कर स्री० (हि) बिना साफ की हुई चीनी। खाँड।
लालसमुद्र पुं० (हि) दे० 'लालसागर'।
लालसा स्री० (सं) १-कुछ पाने की बहुत इच्छा। उत्कट अभिलाषा। २-दोहद।
लालसाग पुं० (हि) मरसा नामक साग।
लालसागर पुं०(हि) भारतीय महासागर का भाग जो अरब और अफ्रीका के मध्य में पड़ता है।
लालसिखा पुं० (हि) मुर्गा।
लालसी वि० (हि) लालसा या इच्छा करने वाला।
लालसेना स्री० (हि) १-क्रांतिकारी सेना। २-सोवियत रूस की सेना। (रेड आर्मी)।
लाला पुं० (हि) १-एक आदरसूचक संबोधन। महाशय। २-कायस्थ और बनिया जाति का वाचक शब्द। ३-बच्चों के लिये संबोधन। पुं० (फा) गुलेलाला नामक पुष्प। वि० लाल रंग का। स्री०(सं) राल। थूक।
लालाप्रमेह पुं०(हि) एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें पेशाब के साथ राल जैसा पदार्थ आता है।
लालास्राव पुं० (हि) राल। थूक। मुखस्राव।
लालायित वि०(सं) जिसे बहुत लालसा हो। लोलुप।
लालालु वि० (सं) दे० 'लालायित'।
लालित वि० (सं) १-दुलारा। प्यारा। २-जो पाला पोसा गया हो।
लालित्य पुं० (सं) ललित का भाव। सौंदर्य। मनोहरता।
लालिमा स्री० (सं) लाली। अरुणता। ललाई।
लाली स्री० (हि) १-अरुणता। ललाई। २-प्रतिष्ठा। ३-सुरखी। पिसी हुई ईंट। ४-आसाम की एक नदी का नाम।
लाले पुं० (हि) लालसा। अभिलाषा।
लालो पुं० (हि) दे० 'लाले'।
लाल्य वि० (सं) दुलार करने योग्य।
लाल्हा पुं० (हि) मरसा नामक साग।
लाव पुं० (सं) १-लवा नामक पक्षी। २-लौंग। स्री०

(हि) १-अग्नि। २-मोटी रस्सी। ३-लगन।

लावक पुं० (सं) १-लवापक्षी। २-चरसा। ३-विभाजक।

लावणिक वि० (सं) नमक का। नमक सम्बन्धी। पुं० १-नमकदान। २-नमक बेचने वाला।

लावण्य पुं० (सं) १-अत्यंत सुन्दरता। २-स्वभाव का अच्छापन।

लावण्य-लक्ष्मी स्त्री० (सं) बहुत अधिक सुन्दरता।

लावदार पुं०(हि) तोप में बत्ती लगाने वाला तोपची।

लावनता स्त्री० (हि) अत्यधिक सुन्दरता।

लावना क्रि० (हि) १-लाना। २-स्पर्श करना। ३-जलाना।

लावनि स्त्री० (हि) सौंदर्य। लावण्य।

लावनी स्त्री० (हि) एक प्रकार का छंद जो प्रायः चंग बजाकर गाया जाता है।

लावनीबाज वि० (हि) लावनी गाने वाला।

ला-परवाली पुं०(फ) १-बेफिक्र। उच्छृंखल। स्त्री० (फ) लापरवाही। उपेक्षा।

लावल्द वि० (फ) सन्तानरहित।

लावा पुं०(सं) लावा नामक पक्षी। (हि) धान, ज्वार आदि के दाने जो भूनने पर फूल जाते हैं। खील। (सं) राख और पिघली हुई धातु मिला वह पदार्थ जो ज्वालामुखी से निकलता है।

लावापरछन पुं० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें कन्या का भाई उसकी डलिया में धान डालता है।

लावारिसी वि० (फ) १-जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। २-जिसका कोई मालिक न हो (वस्तु)।

लाशिक पुं०(स) भैंसा।

लाश स्त्री० (फा) किसी प्राणी का मृत शरीर। शव

लाष स्त्री० (हि) लाख। लाह।

लाषना क्रि० (हि) दे० 'लखना'।

लास पुं० (हि) एक प्रकार का नाट। नटक। (स) जूस।

लासक

देता।

लासकी स्त्री० (सं) १-आभनत्रा। २-नर्त्तकी।

लासा पुं०(हि)१-कोई लसदार वस्तु। चेप। २-किसी को फंदे में फंसाने का साधन।

लासानी वि० (अ) अनुपम। बेजोड़।

लासि पुं० (हि) दे० 'लास्य'।

लासिका स्त्री० (स) १-नर्तकी। २-वेश्या।

लासु पुं० (हि) दे० 'लास्य'।

लास्य पुं० (स) १-नृत्य। नाच। २-शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन करने वाला कोमल स्त्रियों का नृत्य।

लाहल वि० (अ) असाध्य। पुं० (हि) दे० 'लाहौल'

लाही स्त्री० (हि) १-लाख उत्पन्न करने वाला कीड़ा २-लाख खील। ३-फागुन की उपज को हानि पहुंचाने वाला कीड़ा।

लाहौरी-नमक पुं० (हि) सेंधा-नामक।

लाहौल पुं० (अ) एक अरबी वाक्य का पहला शब्द जिसे मुसलमान लोग भूत प्रेत या बला को भगाने के लिए प्रयोग करते हैं।

लिंग पुं० (सं) १-चिह्न। २-लक्षण। ३-पुरुषेंद्रिय ४-शिव की इस आकार की मूर्ति। ५-वह तत्त्व जिसके द्वारा पुरुष और स्त्री का भेद प्रकट होता है (व्याकरण)। ६-अठारह पुराणों में से एक। (सेक्स)।

लिंगदेह पुं० (सं) सूक्ष्म शरीर।

लिंगधर वि० (स) आडम्बरी। ढोंगी।

लिंगधारी वि० (स) चिह्न धारण करने वाला।

लिंगप्रतिष्ठा स्त्री० (स) शिवलिंग की स्थापना करना।

लिंगवृत्ति पुं० (स) आडम्बरी। ढकोसलेबाज।

लिंगशरीर पुं० (सं) दे० 'लिंगदेह'।

लिंगार्चन पुं० (सं) शिवलिंग की पूजा।

लिंगिनी स्त्री० (सं) वह स्त्री जो धर्म का आडम्बर करती हो।

लिंगी पुं० (सं) १-चिह्न वाला। २-आडम्बरी। ३-हाथी।

लिंगेंद्रिय पुं० (स) पुरुषों की मूत्रेन्द्रिय।

लिंफ पुं० (अ) शीतला का चेप जो टीका लगाने के काम आता है।

लिए हिन्दी का एक सम्प्रदान कारक। चिह्न जो किसी शब्द के आगे लग कर उसके निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है।

लिक्खड़ पुं० (हि) बहुत बड़ा लेखक। (व्यङ्ग)।

लिक्षा स्त्री० (स) १-जूँ का अण्डा। लीख। २-एक सूक्ष्म।

२-वह लेख
लिखी हो।

(इन्स्ट्रूमेंट)।

लिखतपढ़त स्त्री० (हि) लिखा-पढ़ी का कोई कागज।

लिखधार पुं० (हि) लिखने वाला। लेखक।

लिखना क्रि० (हि) १-कलम और स्याही से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपिबद्ध करना। २-अङ्कित करना। ३-काव्य, लेख आदि की रचना करना।

लिखनी स्त्री० (हि) कलम।

लिखवाई स्त्री० (हि) दे० 'लिखाई'।

लिखवाना क्रि० (हि) दे० 'लिखाना'।

लिखवार पुं० (हि) दे० 'लिखधार'।

लिखाई स्त्री० (हि) १-लिखने का ढंग। २-लेख। लिपि। ३-लिखने का

लिखाई-पढ़ाई स्त्री० (हि) विद्योपार्जन।
लखाना क्रि० (हि) १-लिपिबद्ध कराना। २-दूसरे से लिखने का काम कराना।
लिखापढ़ी स्त्री० (हि) १-पत्र-व्यवहार। २-लिखने और पढ़ने का काम। ३-किसी बात या व्यवहार का लिख कर पक्का होना।
लिखावट स्त्री० (हि) १-लिखे हुए अक्षर आदि। २-लेखशैली।
लिखित वि० (सं) १-लिखा हुआ। अंकित। २-जो लेख के रूप में हो। (डोक्युमेंटरी)। पुं० (सं) १-लिखी हुई बात। २-प्रमाणपत्र।
लिखित-पाठक पु० (सं) हस्तलिखित लेख या पत्र पढ़ने वाला।
लिखितव्य वि० (स) लिखने या अंकित करने योग्य।
लिखित-सूचना स्त्री० (हि) किसी बात को लिख कर दी गई सूचना। (नोटिस राइटिंग)।
लिख्या स्त्री० (सं) १-जूँ का अण्डा। लीख। २-एक परिमाण।
लिच्छवि पुं० (सं) एक इतिहास-प्रसिद्ध (राजवंश)।
लिटाना क्रि० (हि) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।
लिट्ट पु० (देश) अंगाकड़ी। बिना तवे आग पर सेकी मोटी रोटी।
लिट्टी पुं० (देश) बाटी। अंगाकड़ी।
लिडार वि० (हि) डरपोक। कायर। पुं० (देश) गीदड़।
लिपटना क्रि० (हि) १-गले लगाना। २-चारों ओर से घेरते हुए सटाना। ३-परिश्रम करना।
लिपटाना क्रि० (हि) १-सलग्न करना। २-आलिंगन [illegible]ना।
[illegible]पड़ी स्त्री० (हि) १-लेई या गीला चिपचिपा पदार्थ
लिपना क्रि० (हि) १-लीपा पोता जाना। २-रंग या गीली वस्तु का फैल जाना।
लिपवाना क्रि० (हि) लीपने का काम दूसरे से कराना।
लिपाई स्त्री० (हि) १-लीपने का काम या मजदूरी। २-दीवार पर घुली हुई मिट्टी आदि की तह फैलाना।
लिपाना क्रि० (हि) १-पुताना। २-घुली हुई मिट्टी या गोबर का लेप कराना।
लिपि स्त्री० (सं) १-अक्षर, वर्णों के अंकित चिह्न। २-वर्णमाला के शब्द लिखने की प्रणाली। (करेक्टर)। ३-लेख।
लिपिक पु० (सं) १-लेखक। २-कार्यालय में लिखा-पढ़ी का काम करने वाला। (क्लर्क)।
लिपिकर पुं० (स) लेखक। लिपिक। (क्लर्क)।
लिपिकर्म पुं० (स) चित्रकारी।
लिपिक-विभ्रम पुं० (सं) वह भूल जो लेखक या लिपिक द्वारा की गई हो। (क्लेरिकल मिस्टेक)।
लिपिकार पुं० (सं) दे० 'लिपिकर'।
लिपिज्ञान पुं० (सं) लिपि लिखने की कला।
लिपिफलक पुं० (स) वह पट्टी जिस पर कागज रख कर लिखा जाता है।
लिपिबद्ध वि० (सं) लिखित। लिखा हुआ।
लिपिसज्जा स्त्री० (सं) लिखने की सामग्री।
लिप्त वि० (स) १-लिपा पुता हुआ। चर्चित। २-लीन। तत्पर। काम में लगा हुआ।
लिप्सा स्त्री० (सं) लोभ। लालच। पाने की इच्छा।
लिप्सु पु० (सं) लोभी। लोलुप।
लिफ़ाफ़ा पु० (फा) १-कागज की वह चौकोर थैली जिसमें पत्र आदि लिखकर भेजे जाते हैं। (एन्वेलप)। २-आडम्बर। ३-दिखावटी। तड़कभड़क।
लिफ़ाफ़िया वि० (फा) १-दिखावटी। २-कमजोर।
लिबड़ना क्रि० (हि) कीचड़ आदि में लथपथ होना या करना।
लिबड़ी स्त्री० (हि) कपड़ा-लत्ता।
लिबड़ी-बारदाना पु० (हि) साधारण गृहस्थी का सब सामान। (तुच्छतासूचक)।
लिबास पुं० (अ) पहनने की पोशाक। वस्त्र।
लियाकत स्त्री० (अ) योग्यता। गुण।
लिलाट पुं० (हि) दे० 'ललाट'।
लिलार पु० (हि) १-भाल। माथा। २-कूएँ का वह सिरा जहां चरसे का पानी उलटते हैं।
लिलोही पुं० (देश) हाथ का बटा हुआ देशी सूत।
लिव स्त्री० (हि) लगन।
लिवाना क्रि० (हि) लेने या लाने का काम दूसरे से कराना।
लिवाल पुं० (हि) लेने वाला।
लिवैया वि० (हि) लेने वाला या ले जाने वाला।
लिसोड़ा पुं० (हि) एक वृक्ष जिसके फल गुच्छों में लगते हैं।
लिहाज पुं०(अ) १-व्यवहार में किसी बात या व्यक्ति का आदर करना। २-शील-संकोच। ३-सम्मान या मर्यादा का ध्यान। ४-लाज। ५-पक्षपात।
लिहाजा अव्य० (अ) अतः। इसलिए।
लिहाड़ा वि० (देश) १-नीच। गिरा हुआ। २-खराब निकम्मा।
लिहाड़ी स्त्री० (देश) निंदा। हँसी।
लिहाफ पु० (अ) जाड़े के दिनों में ओढ़ने का एक प्रकार का रूई भरा वस्त्र।
लिहित वि० (हि) चाटता हुआ।
लीक स्त्री० (हि) १-लकीर। रेखा। २-गाड़ी के पहिए से पड़ने वाली लकीर। ३-प्रतिष्ठा। ४-प्रथा। चाल पगडंडी। ५-सीमा।
लीख स्त्री० (हि) जूँ का अंडा।
लीग स्त्री० (अ) सभा। संघ।

लीचड़ वि० (देश) १-सुस्त। काहिल। २-निकम्मा।
लीचर वि० (देश) दे० 'लीचड़'।
लीची स्त्री० (हि) एक सदाबहार मीठे फल वाला।
लीढ़ वि०(सं) आस्वादित। चाटा हुआ।
लीथोप्राफ पुं०(अं) पत्थर का छापा जिस पर हाथ से लिखकर या चित्र खींचकर छापा जाता है।
लीद स्त्री०(देश) घोड़े, गधे, ऊँट, हाथी आदि पशुओं का मल।
लीन वि० (सं) १-किसी में समाया हुआ। तन्मय। २-ध्यानमग्न।
लीनता स्त्री० (सं) १-तन्मयता। २-किसी को दुख न पहुँचाना। (जैनमत)।
लीपना क्रि० (हि) गीली वस्तु का पतला लेप चढ़ाना। पोतना।
लीबर वि० (हि) कीचड़ आदि से भरा हुआ।
लीमू पुं० (हि) नीबू।
लीर स्त्री० (हि) धज्जी। पतला कपड़ा।
लील वि० (हि) नीले रंग का। पुं० नील।
लीलकंठ पुं० (हि) नीलकंठ पक्षी।
लीलगाय स्त्री० (हि) नीलगाय।
लीलगर पुं० (हि) दे० 'रंगरेज'।
लीलना क्रि० (हि) गले के नीचे पेट में उतारना। निगलना।
लीलया अव्य० (सं) १-खिलवाड़ में। २-बहुत सहज में।
लीलहिं अव्य० (हि) अनायास। खेल में।
लीलांबुज पुं० (सं) दे० 'लीलाकमल'।
लीला स्त्री० (सं) १-केवल विनोद या मनोरंजक के हे [illegible]

[illegible]

लीला।
लीलाकमल पुं०(सं) कमल का वह फूल जिसे लीला या क्रीड़ा के लिए हाथ में लिया गया हो।
लीलाकलह पुं० (सं) बनावटी झगड़ा।
लीलागृह पुं० (सं) खेल या लीला करने का भवन।
लीलाचतुर वि० (सं) खेल या क्रीड़ा में कुशल।
लीलापद्म पुं० (सं) दे० 'लीलाकमल'।
लीलाब्ज पुं० (सं) दे० 'लीलाकमल'।
लीलाभरण पुं० (सं) केवल खेल या क्रीड़ा के लिए पहना हुआ गहना।
लीलामय वि० (सं) क्रीड़ायुक्त।
लीलाभिन वि० (सं) खेल या अभिनय करने वाला
लीलावती वि०(सं) क्रीड़ा करने वाली। विलासवती। स्त्री० १-प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् भास्कराचार्य की पत्नी जिसने लीलावती नामक गणित की पुस्तक बनाई थी। २-दुर्गा। ३-एक रागिनी।
लीलावान् वि० (सं) क्रीड़ाशील। रमणीय।
लीलासाध्य वि० (सं) सहज में होने वाला।
लीलास्थल पुं० (सं) क्रीड़ा करने का स्थान।
लीलोद्यान पुं० (सं) १-क्रीड़ा उद्यान। २-देवताओं का उद्यान।
लुंगाड़ा पुं० (हि) लुच्चा। शोहदा। लफंगा।
लुंगी स्त्री० (हि) १-धोती के स्थान पर लपेटने का कपड़ा। तहमद। २-एक चिड़िया।
लुंचन पुं० (सं) १-चुटकी से झटके के साथ उखाड़ना नोचना। २-काटना।
लुंचित वि०(सं) नोचा या उखाड़ा गया।
लुंचितकेश पुं० (सं) जैन साधु जिनके सिर के बाल हाथों से नुचे होते हैं।
लुंचित-मूर्धज पुं० (सं) दे० 'लुंचितकेश'।
लुंज वि० (हि) १-लंगड़ा-लूला। २-बिना पत्ते का। ठूँठ (पेड़)।
लुंठन पुं० (सं) १-लुढ़कना। २-लूटना। चुराना।
लुंठित वि० (सं) १-जमीन पर गिरा हुआ। २-जो लूटा या खसोटा गया हो।
लुंड पुं० (सं) चोर। पुं० (हि) बिना सिर का धड़।
लुंडमुंड वि० (हि) १-जिसके हाथ पैर तथा सिर कट गये हों। २-लँगड़ा लूला। ३-ठूँठ।
लुंडा वि० (हि) १-जिसके दुम या पर झड़ गये हों। २-जिसके पूँछ के बाल झड़ गये हों। (बैल)। पुं० (हि) सूत की कुकड़ी।
लुंडिका स्त्री० (सं) लपेटे हुए सूत की गेंदी।
[illegible] वि० (हि) [illegible] को रस्सी आदि को पिंडी

[illegible] वि० (हि) जिसकी

[illegible] के पास का उपवन जहाँ गौतमबुद्ध उत्पन्न हुए थे।
लुआठ पुं० (हि) दे० 'लुआठा'।
लुआठा पुं० (हि) अधजली या जलती हुई लकड़ी।
लुआब वि० (अ) लसदार या चिपचिपा गूदा।
लुआबदार वि० (अ) १-चिपचिपा। लसदार। २-लसदार गूदे-वाला।
लुआर स्त्री० (हि) दे० 'लू'।
लुकअंजन पुं० (हि) एक अंजन जिसके लगाने वाला अदृश्य हो जाता है।
लुक पुं० (हि) १-चमकदार रोगन। वार्निश। २-ज्वाला। लौ। ३-उल्कामुख प्रेत।
लुकदार वि० (हि) जिस पर रोगन किया गया हो।
लुकना क्रि० (हि) १-आड़ में हो[illegible] २-छिपना।
लुकमा पुं० (अ) ग्रास। कौर[illegible]

लुकमान पुं० (अ) कुरान शरीफ में वर्णित एक प्रसिद्ध और बुद्धिमान हकीम।
लुकसाज़ पुं० (हि) रोग़न या लुक करने का काम करने वाला।
लुकाछिपी स्त्री० (हि) आंखमिचौनी का खेल।
लुकाट पुं० (हि) एक खट मीठे फल वाला वृक्ष।
लुकाठ पुं० (हि) दे० 'लुकाट'।
लुकाना क्रि० (हि) आड़ में आना। छिपाना।
लुकार स्त्री० (हि) दे० 'लुक'।
लुकेठा पुं० (हि) जलती हुई लकड़ी। लुआठा।
लुकोना क्रि० (हि) छिपाना।
लुक्कायित वि० (सं) लुका या छिपा हुआ। अदृश्य।
लुगड़ा पुं० (देश) वस्त्र। कपड़ा।
लुगत स्त्री० (अ) १-भाषा। शब्द। २-शब्दकोश।
लुगदा पुं० (देश) गीला पिंडा। लौंदा।
लुगदी स्त्री० (देश) छोटा गीला पिंडा।
लुगरा पुं० (हि) १-कपड़ा। वस्त्र। २-ओढ़नी। ३-जीर्ण वस्त्र।
लुगरी स्त्री० (हि) फटी पुरानी धोती।। स्त्री० (देश) चुगली।
लुगाई स्त्री० (हि) स्त्री। औरत।
लुगात पुं० (अ) १-शब्दकोष। २-शब्दावली।
लुगी स्त्री० (हि) १-फटी हुई धोती। तहमद। २-लहँगे का संजाफ।
लुग्गा पुं०(हि) कपड़ा। वस्त्र।
लुचवाना क्रि० (हि) नोचवाना। उखड़वाना।
लुचुई स्त्री० (हि) मैदे की पतली और मुलायम पूरी।
लुच्चा वि० (हि) १-दुराचारी। २-शोहदा। नीच। बदमाश।
लुच्ची स्त्री०(हि) दे० 'लुचुई'। वि० (हि) दे० 'लुच्चा'
लुटंत स्त्री० (हि) लूट।
लुटकना क्रि० (हि) दे० 'लटकना'।
लुटना क्रि० (हि) १-दूसरों के द्वारा लूटा जाना। २-बरबाद होना। ३-दे० 'लुठना'।
लुटरना क्रि० (हि) लुढ़कना।
लुटरा वि० (हि) घुँघराला।
लुटाना क्रि० (हि) १-दूसरों को लूटने देना। २-बहुत सस्ते दामों पर बेचना। ३-बहुत अधिक खर्च करना या दान देना।
लुटावना क्रि० (हि) दे० 'लुटाना'।
लुटिया स्त्री० (हि) छोटा लोटा।
लुटेरा पुं० (हि) लूटने वाला। डाकू। दस्यु।
लुठना क्रि० (हि) जमीन पर गिर कर लोटना।
लुठाना क्रि०(हि) भूमि पर डालकर लोटाना। २-लुढ़काना।
लुठित वि० (सं) गिरा हुआ। लुढ़का हुआ।
लुड़कना क्रि० (हि) दे० 'लुढ़कना'।
लुड़काना क्रि० (हि) दे० 'लुढ़काना'।
लुढ़कना क्रि० (हि) १-भूमि पर ऊपर नीचे फिरते हुए बढ़ना या चलना। २-गिर कर ऊपर नीचे हो जाना।
लुढ़काना क्रि० (हि) इस प्रकार छोड़ना कि चक्कर खाता हुआ दूर चला जाय।
लुढ़ाना क्रि० (हि) दे० 'लुढ़काना'।
लुढ़ियाना क्रि० (हि) गोल बत्ती के समान तुरपाई करना। गोल तुरपना।
लुतरा वि० (देश) १-चुगलखोर। २-नटखट।
लुत्थ स्त्री० (हि) लाश। शव। लोथ।
लुत्फ पुं० (अ) १-कृपा। २-उत्तमता। ३-आनन्द। ४-रोचकता।
लुनना क्रि० (हि) १-खेत से पकी फसल काटना। २-नष्ट करना।
लुनाई स्त्री० (हि) १-सुन्दरता। २-दे० 'लवनी'।
लुनेरा पुं०(हि) १-खेत की फसल काटने वाला। २-लोनिया नामक जाति।
लुपना क्रि० (हि) आड़ में होना। छिपना।
लुप्त वि० (सं) १-छिपा हुआ। गुप्त। अदृश्य। पुं० चोरी का माल।
लुप्ति स्त्री० (सं) वह भूलें जो लिखने में रह गई हों। (ओमीन्शस)।
लुप्तोपमा स्त्री०(सं) वह उपमा अलंकार जिसमें उसके चार अंगों में से उसका कोई अंग लुप्त हो।
लुबधना क्रि० (हि) लुभाना। लुब्ध होना।
लुबुध वि० (हि) दे० 'लुब्ध'।
लुबुधना क्रि० (हि) लुब्ध होना। लुभाना।
लुब्ध वि० (सं) १-पूरी तरह से लुभाया हुआ। २-मोहित। पुं० (सं) शिकारी। बहेलिया।
लुब्धक पुं० (सं) १-शिकारी। २-लोभी या लालची मनुष्य। ३-एक तेजवान तारा।
लुब्धना क्रि० (हि) दे० 'लबुधना'।
लुब्ब पुं० (अ) १-तत्व। सार भाग। २-गूदा।
लुब्बेलुबाब पुं० (अ) १-निचोड़। २-इत्र। ३-सार।
लुभाना क्रि० (हि) १-मोहित होना। २-लालच में पड़ना। ३-तनमन की सुध भूलना। ४-मोहित करना। रिझाना। ५-भ्रांत करना।
लुरकना क्रि०(हि) अधर में टँक कर झूलना। लटकना।
लुरका पुं० (हि) झुमका।
लुरकी स्त्री० (हि) १-कान की मुरकी। २-झुमका।
लुरना क्रि० (हि) १-झूलना। २-झुक पड़ना। ३-कहीं से एक बारगी आजाना। ४-प्रवृत्त होना। आकर्षित होना।
लुरियाना क्रि० (हि) १-प्रेम पूर्वक स्पर्श करना। आलिंगन करना। २-प्यार करना।
लुरी स्त्री० (हि) हाल की ब्याही हुई गाय।

लुनना क्रि० (हि) लटकते हुए हिलना। डोलना। लहराना।

लुलित वि० (सं) लटकता या मूलता हुआ।

लुलितकुंडल वि० (स) जिसके कुण्डल हिलते हों।

लवार स्त्री० (हि) लू। गरम हवा।

२-लुहार जाति की स्त्री।

लूँबरी स्त्री० (हि) दे० 'लोमड़ी'।

लू स्त्री० (हि) गरमी के दिनों में चलने वाली तपी हुई हवा। तप्त वायु।

लूक स्त्री० (हि) १-आग की लपट। २-टूटा हुआ तारा। ३-जलती हुई लकड़ी। ४-लू।

लूकट पुं० (हि) १-आग। २-जलती हुई लकड़ी।

लूकना क्रि० (हि) १-आग लगाना। २-जलाना। ३-लुकना।

लूका पुं० (हि) १-आग की लपट। २-सिरे पर से जलती हुई लकड़ी।

लूखा वि० (हि) दे० 'रूखा'।

लूगड़ पुं० (हि) १-कपड़ा। वस्त्र। २-चादर। ओढ़नी ३-पुरानी रजाइयों में से निकली पुरानी रुई।

लूगा पुं० (देश) १-कपड़ा। वस्त्र। २-धोती।

लूघर पुं० (हि) दे० 'लुआठ'।

लूट स्त्री० (हि) १-किसी का धन सम्पत्ति जबरदस्ती छीन लेना। २-लूटने से मिला हुआ माल।

लूटक पुं० (हि) १-लूटने वाला। २-डाकू। लुटेरा। ३-शोभा में बढ़ जाने वाला।

लूटखसोट स्त्री० (हि) लूटमार।

लूटलूँव स्त्री० (हि) लूटमार।

लूटना क्रि० (हि) १-किसी को डरा, धमका या मार-कर उसका धन ले लेना। २-बहुत दाम लेना। ठगना। ३-अनुचित रूप से ले लेना। ४-मोहित करना।

लूटपाट स्त्री० (हि) लूटमार।

लूटमार स्त्री० (हि) शारीरिक कष्ट या यन्त्रणा ... धन छीन लेना।

लूटि स्त्री० (हि) दे० 'लूट'।

लूत स्त्री० (हि) मकड़ी।

लूता स्त्री० (सं) १-मकड़ी। २-च्यूँटी। ३-मकड़ी के मूतने से होने वाले फफोले। स्त्री० (हि) लूका। आग

लूतामय पुं० (सं) मकड़ी नामक रोग।

लूनी स्त्री० (हि) लुआठी।

लूनना क्रि० (हि) दे० 'लुनना'।

लूम पुं० (सं) पूछ। दुम। पुं० (हि) एक राग। पुं० (अं) कपड़ा बुनने का करघा।

लूमड़ी स्त्री० (हि) दे० 'लोमड़ी'।

लूमना क्रि० (हि) लटकना।

लूम-विष पुं० (हि) वह जीव जो पूँछ से डंक मारते हैं-जैसे बिच्छू।

लूरना क्रि०(हि) दे० 'लुरना'।

लूह पुं० (हि) ... हुए मल का ...।

लूही स्त्री०(हि) १-बँधा मल। २-बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लूहर पुं० (देश) पशुओं का झुण्ड।

लूहड़ी स्त्री० (देश) भेड़,बकरी आदि का समूह।

लूँई अव्य० (हि) तक। पर्यन्त। स्त्री० १-अवलेह। २-लपसी। ३-कागज चिपकाने के लिए गाढ़ा उबाला हुआ मैदा। ४-चिनाई का गाढ़ा चूना।

लूई-मुँजो स्त्री० (हि) सारी जमा।

लेख पुं० (सं) १-लिखित अक्षर। लिपि। २-लिखाई ३-किसी विषय पर लिख कर प्रकट किये गये विचार मजमून। ४-देवता। ५-वह लिखी हुई आज्ञा या आदेश जो विधान के अनुसार किसी बड़े अधि-कारी ने दी हो। (रिट)। वि० (हि) लिखने योग्य स्त्री० पक्की बात।

लेखक पुं० (सं) १-लिखने वाला। लिपिकार। २-ग्रन्थ लिखने वाला। ग्रन्थकार। ३-लिपिक। ४-पत्रादि के लिए लेख लिखने वाला।

लेखक-प्रमाद पुं० (सं) लिपिक या लिपिकार की भूल

लेखन पुं० (सं) १-लिखने की कला या क्रिया। २-हिसाब लगाना। ३-वमन करना। ४-चित्र बनाने का काम।

लेखन सामग्री स्त्री०(स) कागज, कलम, दवात,स्याही, आदि लिखने की सामग्री। (स्टेशनेरी)।

लेखनहार वि० (हि) लिखने वाला।

लेखनिका स्त्री० (स) तूलिका। कलम।

... मनवाने के लिए कार्यालय में चुपचाप बैठकर लिखना पढ़ना बन्द करना (पेनडाउन स्ट्राइक)।

लेखनी-जिह्वा स्त्री० (स) विलायती ढंग की कलम के आगे खोंसने की लोहे या धातु की वह नोकदार वस्तु जिससे लिखा जाता है। (निब)।

लेखनीय वि० (स) लिखने योग्य।

लेखपद्धति स्त्री० (सं) दे० 'लेखप्रणाली'

लेखप्रणाली स्त्री० (सं) लिखने का ढंग

लेखपाल पुं० (सं) पटवारी।

लेखहार पुं० (स) पत्रवाहक। डाकिया।
लेखहारक पुं० (सं) दे० 'लेखहार'।
लेखहारी पुं० (सं) दे० 'लेखहार'।
लेखा पुं०(हि)१-गणना। हिसाब-किताब। २-आय-व्यय अथवा घटना का विवरण। (स्टेटमेंट, अका-उंट) ३-अनुमान। विचार। स्त्री० (सं) १-लिपि। लिखावट। २-लेखा। लकीर। ३-चित्र। ४-श्रेणी। पंक्ति। ५-किरण। रश्मि।
लेखाकर्म पुं०(सं)आय-व्यय आदि का हिसाब लिखने या रखने का काम। (अकाउन्टेन्सी)।
लेखाछलयोजन पुं० (सं) आय-कर आदि से बचने या और किसी कारण हिसाब तैयार करने में छल करना। (मैंनिपुलेशन आफ अकाउन्ट्स)।
लेखाध्यक्ष पुं०(सं)वह कर्मचारी या व्यक्ति जो आय-व्यय आदि का हिसाब-किताब या रोकड़ रखने के काम के लिए उत्तरदायी हो और इसी काम के लिए नियुक्त किया गया हो। (अकाउन्टेन्ट)।
लेखापत्तर पुं० (सं) वह कागज या वही जिसमें आय-व्यय का हिसाब लिखा जाता है। (अकाउन्ट बुक)।
लेखा-परीक्षक पुं० (सं) वह जो किसी के आय-व्यय के लेखे की जांच-पड़ताल करता हो। (ऑडिटर)।
लेखा-परीक्षण पुं० (सं) आय-व्यय के हिसाब की जांच पड़ताल। (ऑडिट)।
लेखापाल पुं० (सं) दे० 'लेखाध्यक्ष'।
लेखाबही स्त्री० (सं) दे० 'लेखापत्तर'।
लेखिका स्त्री० (सं) १-लिखने वाली। २-ग्रन्थ या पुस्तक बनाने वाली।
लेखित वि० (सं) लिखवाया हुआ।
लेखे अव्य० (हि) समझ में। विचार के अनुसार।
लेख्य वि० (स) लिखा जाने योग्य। पुं० १-लिखी हुई वस्तु या पत्रादि। लेखा। २-किसी विषय के सम्बन्ध में लिखी हुई बात। (रेकार्ड)। ३-दस्तावेज (डॉक्यूमेन्ट)।
लेख्यकृत वि० (सं) जिसकी लिखा-पढ़ी हो चुकी हो
लेख्यपत्र पुं० (सं) १-लिखने योग्य पत्र। २-दस्तावेज ३-ताड़ का पेड़।
लेख्यपत्रक पुं० (सं) दे० 'लेख्यपत्र'।
लेख्यारूढ वि०(सं) जिसके सम्बन्ध में लिखा पढ़ी हो गई हो।
लेजम स्त्री० (फा) १-धनुष का अभ्यास करने की कमान। २-कसरत करने की वह भारी कमान जिसमें लोहे की जंजीर लगी होती है।
लेजिम पुं० (हि) दे० 'लेजम'।
लेजुर स्त्री० (सं) कूएँ से पानी निकालने की रस्सी।
लेट पुं० (देश) चूने की वह परत जो छत या गच्च पर डाली जाती है। वि० (अं) जो ठीक समय पर न आए।
लेटना क्रि०(हि) १-पीठ को धरती पर लगा कर सारा शरीर उस पर ठहराना। २-मरजाना।
लेटरबक्स पुं०(हि) डाकखाने का वह सन्दूक जिसमें कहीं भेजने के लिए चिट्ठियां डाली जाती हैं। (लैटर बॉक्स)।
लेटाना क्रि० (हि) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।
लेडी स्त्री० (अं) १-भले घर की स्त्री। महिला। २-लार्ड या सरदार की पत्नी।
लेडी-डॉक्टर स्त्री० (अं) महिला चिकित्सक या डाक्टर
लेन पुं० (हि) १-लेने की क्रिया या भाव। २-लहना पावना।
लेनदार पुं० (हि) जिसका कुछ धन बाकी हो। महाजन।
लेनदेन स्त्री० (हि) १-आदान-प्रदान। २-बिक्री का माल या रुपया देने या लेने का व्यवहार।
लेनहार वि० (हि) लेने वाला। लेनदार।
लेना क्रि० (हि) १-ग्रहण करना। थामना। २-मोल लेना। ३-जीतना। ४-धरना। ५-अभ्यर्थना करना ६-भार ग्रहण करना। ७-सेवन करना। ८-स्वीकार करना। ९-काटना। १०-संभोग करना। ११-संचय करना।
लेप पुं०(हि) १-ऐसी वस्तु जो लीपी, पोती या चुपड़ी जाय। २-उबटन। ३-लगाव।
लेपन पुं० (स) लेई जैसी चीज की तह चढ़ाना।
लेपना क्रि० (हि) गाढ़े गीले पदार्थ की तह चढ़ाना
लेमू पुं० (फा) नीबू।
लेमूनिचोड़ पुं० (फा) वह व्यक्ति जो हर एक के साथ खाने में शरीक होजाय।
लेरुआ पुं० (देश) १-लड्डू। २-बछड़ा।
लेलिहान वि० (सं) ललचाया हुआ। पुं० १-सर्प। २-शिव।
लेव पुं० (हि) १-लेप। २-दीवार पर लगाने को गिलावा। ३-पतीली या हांडी की पेंदी पर जलने से बचाने के लिये चढ़ा हुआ मिट्टी का लेप।
लेवा पुं० (हि) १-दे० 'लव'। २-सिरे से पतवार तक का नाव की पेंदी का तख्ता। ३-गाय, भैंस आदि का थन। ४-वर्षा के पानी में मिट्टी का घुल जाना।
लेवादेई स्त्री० (हि) दे० 'लेनदेन'।
लेवाल पुं० (हि) लेने या खरीदने वाला।
लेश पुं० (सं) १-अणु। २-सूक्ष्मता। ३-चिह्न। ४-संसर्ग। ५-एक अलङ्कार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही अंश में रोचकता आती है। वि० अल्प। थोड़ा।
लेष पुं० (हि) दे० 'लेश, लेख'।
लेषना क्रि० (हि) दे० 'लिखना,' 'लखना'।

लेमनी स्त्री० (हि) लेमनी।
लेवें अव्य० (हि) दे० 'लेखे'।
लेस पुं० (सं) १-दे० 'लेश'। मिट्टी का गिलावा। २-लेप। स्त्री० (अं) फीता।
लेसदार वि० (अं) जिसमें लस हो। चिपचिपा।
लेसना क्रि० (हि) १-जलाना। २-पोतना। ३-चिप-काना। ४-चुगली खाना। ५-विवाद उत्पन्न करने के लिए किसी को उत्तेजित करना।
लेहन पुं० (सं) चखना। चाटना।
लेहाजा अव्य० (हि) दे० 'लिहाजा'।
लेहाड़ा वि० (देश) दे० 'लिहाड़ा'।
लेहाड़ी स्त्री० (देश) दे० 'लिहाड़ी'।
लेहरू पुं० (हि) दे० 'लिहरू'।
लेह्य वि० (सं) जो चाटा जाता हो। पुं० अवलेह। चाट कर खाई जाने वाली वस्तु।
लैंग वि० (सं) लिंग-सम्बन्धी (व्याकरण)।
लैंगिक वि० (सं) १-लिंग-सम्बन्धी। २-स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय से सम्बन्ध रखने वाला। यौन। (सेक्सुअल)। पुं० १-मूर्ति बनाने वाला। २-वैशे-षिक दर्शन के अनुसार प्रमाण।
लैंस पुं० (अं) शीशा। चिमन।
लैं अव्य० (हि) तक। पर्यन्त।
लैटिन स्त्री० प्राचीन इटली देश की साहित्यिक भाषा जो रोमन काल में प्रचलित थी।
लैन स्त्री० (हि) १-सीधी लकीर। २-कतार। पंक्ति। ३-सिपाहियों के रहने का स्थान। (लाइन)।
लैरु पुं० (हि) १-बछड़ा। २-बच्चा।
लैला स्त्री०(अ) १-प्रेमिका। २-सुन्दर स्त्री। ३-लैला-मजनूँ की प्रेम कथा की नायिका।
लैला-मजनूँ पुं० (अ) प्रेमी-प्रेमिका। आशिक-माशूक।
लैसंस पुं० (हि) वह प्रमाण पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाता है। (लाइ-सेंस)।
लैस वि० (हि) १-हथियार आदि से सजा हुआ। २-सब प्रकार से तैयार। पुं० १-कनाती। २-सिरा। (अं) फीता। (लेस)।
लों अव्य० (हि) तक। पर्यन्त।
लोंड़ी स्त्री० (हि) खाद का ढेलक।
लोंदा पुं० (हि) कच्चे के रूप में गीले पदार्थ का बांधा हुआ पिंड।
लोइ पुं० (हि) लोक। स्त्री० १-प्रभा। २-लौ। शिखा।
लोइन पुं० (हि) दे० 'लावण्य'।
लोई स्त्री० (हि) १-गुंधे हुए आटे का पेड़ा जिसे बेल कर रोटी बनाते हैं। २-ऊनी चादर।
लोकंजन पुं० (हि) दे० 'दुकंजन'।
लोकंदा पुं० (हि) विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।
लोकंदी स्त्री० (हि) कन्या के पहले-पहल ससुराल जाते समय भेजी हुई दासी।
लोक पुं० (सं) १-संसार। जगत। २-वह स्थान जिसका बोध प्राणियों को हो या उन्होंने उसकी कल्पना की हो। उपनिषदों के अनुसार दो लोक हैं इहलोक तथा परलोक। ३-स्थान। निवास। ४-लोग। जनता। समाज। सर्वसाधारण लोग। (पीपुल)। (पब्लिक)। ५-यश। ६-दिशा। वि० सर्व-साधारण जनता से सम्बन्धित।
लोक-अधिसूचना स्त्री० (सं) राज्य या शासन द्वारा जनसाधारण के लिए निकाली गई विज्ञप्ति या सूचना। (पब्लिक नोटिफिकेशन)।
लोक-अभिकर्ता पुं० (सं) जनसाधारण के लिए काम करने वाला अभिकर्ता। (पब्लिक एजेन्ट)।
लोक-अभियोक्ता पुं० (सं) सरकारी वकील। (पब्लिक प्रोसिक्यूटर)।
लोक-उधार पुं०(हि) जनता या जनसाधारण से सर-कार द्वारा लिया गया ऋण। (पब्लिक डेब्ट)।
लोक-उपक्रम पुं० (सं) जनता या जनसाधारण द्वारा चलाये गये कारखाने या धन्धे। (पब्लिक एन्टर-प्राइज)।
लोक-उपयोग पुं० (सं) जनसाधारण के उपयोग में आने वाली। (पब्लिक यूज)।
लोक-एकाधिकार पुं० (सं) वह व्यवसाय आदि जिनको केवल जनता या जनसाधारण को करने का ही अधिकार प्राप्त हो। (पब्लिक मोनोपोली)।
लोककंटक पुं० (सं) ऐसी बात जिससे जनसाधारण को कष्ट पहुँचे। (पब्लिक न्यूसेन्स)।
लोककलंक पुं० (सं) जनसाधारण द्वारा किया गया कोई अनैतिकता का कार्य। (पब्लिक इन्डीसेन्सी)।
लोककर्म पुं० (सं) जनसाधारण के काम में आने वाला सरकार द्वारा किया गया कार्य। (पब्लिक-वर्क्स)।
लोककर्मलेखा पुं० (सं) जनसाधारण के काम आने वाले कर्मों में व्यय होने वाले धन का लेखा। (पब्लिक वर्क्स एकाउन्ट)।
लोककर्ता पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु।
लोककथा स्त्री० (सं) जनसाधारण में प्रचलित कथाएँ (फोक स्टोरीज)।
लोककल्याण पुं० (सं) जनसाधारण के कल्याण के लिए किया गया कोई काम। (वेलफेयर आफ दि पीपल)।
लोककल्याणनीति स्त्री० (सं) सरकार द्वारा निर्धारित वह नीति जिसके द्वारा यह देखा जाता है कि कौन कौन से कानून लोक-कल्याण के विरुद्ध हैं और उनका संशोधन किया जाता है। (प[illegible]
लोककल्याण सिद्धांत पुं०(सं) [illegible]

कि जो जनसाधारण को हानि पहुँचाने वाले अधिनियमों को अनियमित ठहराया जा सकता है (पब्लिक पॉलिसी)।

लोककार्य पुं० (सं) जनसाधारण से सम्बन्ध रखने वाले काम। (पब्लिक अफेयर्स)।

लोकक्षेम-विधेयक पुं० (सं) जनसाधारण की रक्षा के लिए बनाया गया विधेयक। (पब्लिक सेफ्टी बिल)।

लोकगीत पुं० (सं) जनसाधारण में प्रचलित गीत। (फॉक सॉन्ग्स)।

लोकगुप्तचर पुं० (सं) जनसाधारण के लिए गुप्तचर का काम करने वाला व्यक्ति। (पब्लिक डिटेक्टिव)

लोक-घोषणा स्त्री० (सं) दे० 'नीतिघोषणा'। (मेनीफेस्टो)।

लोकजलवाहन पुं० (सं) जनसाधारण द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली नावें, जहाज आदि। (पब्लिक वाटर कन्वेयन्स)।

लोकजित् पुं० (सं) १-महात्मा बुद्ध। २-ऋषि। वि० लोक को विजय करने वाला।

लोकटी स्त्री० (हि) दे० 'लोमड़ी'।

लोकतंत्र पुं० (सं) वह शासन-प्रणाली जिसमें सत्ता जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में होती है। (डेमोक्रेसी)।

लोकतंत्रवादी पुं० (सं) १-लोकतंत्र के सिद्धांत को मानने वाला। २-अमेरिका के लोकतंत्र दल का सदस्य। (डेमोक्रेट)।

लोकतंत्रीकरण पुं० (सं) किसी शासन-प्रणाली को लोकतंत्र के सिद्धांतों के रूप में बदलना। (डेमोक्रेटाइज़ेशन)।

लोकतटबंध पुं०(सं)जनसाधारण के काम आने वाला तटबंध। (पब्लिक एम्बैंकमेन्ट)।

लोकत्रय पुं०(सं) तीनों लोक-स्वर्ग, मृत्यु और पाताल

लोकत्रयी स्त्री० (सं) दे० 'लोकत्रय'।

लोक-धन पुं०(सं)जनता का पैसा। (पब्लिक मनीज)

लोक-धुन स्त्री० (हि) अफवाह। जनश्रुति।

लोकना क्रि० (हि) १-ऊपर से गिरती हुई वस्तु हाथों में रोकना। २-बीच में ही उड़ा लेजाना।

लोकनाथ पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-राजा। ३-बुद्ध।

लोकनायक पुं० (सं) तीनों लोकों को देखने वाला (सूर्य)।

लोकनिक्षेप पुं०(सं) निक्षेप के रूप में सरकार के पास जनता द्वारा जमा किया हुआ धन। (पब्लिक डिपॉजिट)।

लोकनिगम पुं०(सं) जनता द्वारा बनाया गया निगम (पब्लिक कॉरपोरेशन)।

लोकनिधि स्त्री० (हि) जनता द्वारा कर रूप में दिया हुआ कोष। (पब्लिक फण्ड्स)।

लोकनिर्माणविभाग पुं० (सं) वह सरकारी विभाग जो लोक कल्याण के लिए सड़कें आदि बनाने की व्यवस्था करता है। (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट)।

लोकनिरीक्षण पुं० (सं) जनता द्वारा निरीक्षण। (पब्लिक इंस्पेक्शन)।

लोकनृत्य पुं० (सं) वह नृत्य जो देहातों आदि में नाचे जाते हैं। (फॉक डान्सेस)।

लोकनेता पुं० (सं) १-लोकप्रिय नेता। २-शिव।

लोकप पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-लोकपाल। ३-राजा।

लोकपति पुं० (सं) दे० 'लोकप'।

लोक-पथ पुं० (सं) सार्वजनिक व्यवहार करने का ढंग या तरीका।

लोकपद पुं० (सं) जनसाधारण से सम्बन्ध रखने वाला पद।

लोकपद्धति स्त्री० (सं) दे० 'लोकपथ'।

लोकपाल पुं० (सं) १-पुराणानुसार आठों दिशाओं के आठ दिक्पाल। २-शिव। ३-राजा। ४-विष्णु।

लोकप्रत्यय पुं० (सं) जो सब जगह ही प्रचलित हो (प्रथा आदि)।

लोकप्रवाद पुं० (सं) वह बात जो जनसाधारण में प्रचलित हो।

लोकप्रसिद्ध वि० (सं) विश्वविख्यात।

लोकप्रिय वि० (सं) जो सर्वसाधारण को प्रिय लगे।

लोकबंधु पुं० (सं) १-शिव। २-सूर्य।

लोकबांधव पुं० (सं) दे० 'लोकबंधु'।

लोकबाह्य वि० (सं) १-समाज से निकला हुआ। जातिच्युत। २-संसार से निराला।

लोकभर्ता पुं० (सं) संसार को पालने-पोसने वाला।

लोकभावन पुं० (सं) १-सबकी भलाई करने वाला। २-संसार की रचना करने वाला।

लोकभावना स्त्री० (सं) जनसाधारण की सेवा करने की धारणा। (पब्लिक स्प्रिट)।

लोकभावी पुं० (सं) दे० 'लोकभवन'।

लोकमत पुं० (सं) जनमत। किसी विषय पर जनसाधारण की राय। (पब्लिक ओपीनियन)।

लोकमात्रा स्त्री० (सं) १-व्यवहार। २-व्यापार। ३-आजीविका।

लोकरंजन पुं० (सं) जनता को प्रसन्न करने वाला। सर्वप्रियता।

लोकरव पुं० (सं) जनश्रुति। अफवाह। प्रवाद।

लोक-लीक स्त्री० (हि) लौकिक लाज या मर्यादा।

लोकलोचन पुं० (सं) सूर्य।

लोकवचन पुं० (सं) अफवाह। प्रवाद।

लोकवाद स्त्री० (सं) अफवाह। किंवदन्ती।

लोकवार्ता स्त्री० (सं) पुरानी प्रथाओं सम्बन्धी जनसाधारण में प्रचलित बातों का विवेचन। (फॉकलोर)।

लोकशासन पुं० (सं) जनसाधारण का शासन होने वाली सरकार । (पब्लिक रेजिम) ।
लोकविश्रुत वि० (सं) प्रसिद्ध । विख्यात ।
लोकविरुद्ध वि० (सं) जनसाधारण से अलग मत रखने वाला ।
लोकविश्रुत वि० (सं) संसार भर में प्रसिद्ध ।
लोकव्यवहार पुं० (सं) सर्वसाधारण में प्रचलित रीति ।
लोकशिक्षा-संचालक पुं० (सं) सार्वजनिक शिक्षा विभाग का संचालक । (डायरेक्टर ऑफ पब्लिक एजूकेशन) ।
लोकश्रुति पुं० (सं) जनश्रुति । अफवाह ।
लोकसंग्रह पुं० (सं) १-संसार के लोगों को प्रसन्न करना । २-संसार का कल्याण या सबकी भलाई ।
लोकसत्ता स्त्री० (सं) वह शासन प्रणाली जिसमें सब अधिकार जनता के हाथ में हो ।
लोकसत्तात्मक वि० (सं) सर्वसाधारण द्वारा चलाये जाने वाला । (शासन) ।
लोकसभा स्त्री० (सं) १-प्रतिनिधि सत्तात्मक राज्यों में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो विधान आदि बनाती है । (हाउस ऑफ पीपल) २-भारतीय गणराज्य का निम्न सदन ।
लोकसेवक पुं० (सं) वह जो राज्य की ओर से जनता की सेवा करने के लिये नियुक्त हो । (पब्लिक सर्वेंट) ।
लोक-सेवा स्त्री० (सं) १-जनसाधारण के हित के लिये सेवाभाव से किया जाने वाला काम । २-राज्य की सेवा या नौकरी । (पब्लिक सर्विस) ।
लोकसेवायोग पुं० (सं) प्रशासन का काम चलाने के लिये पदाधिकारी नियुक्त करने में परीक्षा आदि लेकर सहयोग देने वाला आयोग । (पब्लिक सर्विस कमीशन) ।
लोकसिद्ध वि० (सं) १-प्रचलित । २-समाज द्वारा स्वीकृत ।
लोकस्वास्थ्य पुं० (सं) जनसाधारण या जनता का स्वास्थ्य । (पब्लिक हैल्थ) ।
लोकहित पुं० (सं) सर्वसाधारण का लाभ । (पब्लिक गुड) ।
लोकांतर पुं० (सं) परलोक ।
लोकांतर-गमन पुं० (सं) मृत्यु ।
लोकांतरित वि० (सं) मृत । मरा हुआ । स्वर्गीय ।
लोकाचार पुं० (सं) लोकव्यवहार ।
लोकाट पुं० (अं) एक वृक्ष जिसके फल मीठे और बेर के समान होते हैं ।
लोकाधिप पुं० (सं) १-लोकपाल । २-बुद्ध ।
लोकाना क्रि० (हि) उछालना । ऊपर से फेंकना ।
लोकानुग्रह पुं० (सं) जनसाधारण का कल्याण ।

लोकापवाद पुं० (सं) लोकनिन्दा ।
लोकाभ्युदय पुं० (सं) जनता की उन्नति ।
लोकायत पुं० (सं) १-वह मनुष्य जो परलोक को न मानता हो । २-[illegible] ।
लोकायतिक पुं० (सं) नास्तिक । चार्वाक ।
लोकेश्वर पुं० (सं) १-लोकपाल । २-ईश्वर ।
लोकैषणा स्त्री० (सं) स्वर्ग-सुख प्राप्ति की कामना ।
लोकोक्ति स्त्री० (सं) १-कहावत । मसल । २-एक अलंकार ।
लोकोत्तर वि० (सं) अलौकिक । जो संसार में न होता हो ।
लोकोपचार पुं० (सं) सर्वसाधारण के साथ का व्यवहार
लोकोपयोगी वि० (सं) सर्वसाधारण के काम ।
लोकोपयोगी सेवा स्त्री० (सं) वह कार्य या व्यवस्था जो सर्वसाधारण के हित के या काम की हो जैसे नगर की सफाई आदि । (पब्लिक युटिलिटी सर्विस) ।
लोखड़ी स्त्री० (हि) दे० 'लोमड़ी' ।
लोखर पुं० (हि) १-नाई के कैंची, छुरा आदि औजार । २-बढ़इयों के औजार ।
लोग पुं० (हि) जनसमाज के सब आदमी ।
लोगबाग पुं० (हि) जनसाधारण । जनता ।
लोगाई स्त्री० (हि) दे० 'लुगाई' ।
लोच पुं० (हि) १-लचकदार । लचक । २-कोमलतापूर्ण सौन्दर्य । ३-अभिलाषा । ४-जैन साधुओं का अपने सिर के बाल उखाड़ना ।
लोचन पुं० (सं) आँख । नयन ।
लोचनगोचर पुं० (सं) दृष्टि की दौड़ । दिखाई पड़ने वाला क्षेत्र ।
लोचनपथ पुं० (सं) दे० 'लोचनगोचर' ।
लोचन-मार्ग पुं० (सं) दे० 'लोचनगोचर' ।
लोचनविषय पुं० (सं) दे० 'लोचनगोचर' ।
लोचना क्रि० (हि) १-प्रकाशित करना । २-रुचि उत्पन्न करना । ३-अभिलाषा करना । ४-कामना करने वाला । ५-तरसना । ६-शोभा देने वाला । पुं० (हि) १-नाई । २-दर्शन ।
लोट पुं० (हि) १-बाट । २-त्रिवली । स्त्री० लुढ़कना ।
लोटन पुं० (हि) १-एक प्रकार का कबूतर । २-जमीन पर लुढ़कने वाला कबूतर । ३-मार्ग की कंकड़ियाँ ।
लोटनसज्जी स्त्री० (हि) एक प्रकार की सज्जी ।
लोटना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु, आधार या भूमि पर चित या पट होते हुए इधर-उधर होना । लुढ़कना । २-कष्ट से करवटें बदलना । ३-लेटना । विश्राम करना ।
लोटनापोटना क्रि० (हि) विश्राम करना । सोना ।
लोटपटा पुं० (हि) विवाह में वर और वधू के पीढ़ा स्थान बदलने की रीति ।
लोटपोट स्त्री० (हि) विश्राम करना । लेटना ।
लोटा पुं० (हि) पानी रखने का एक पात्र ।

लोटिया स्त्री० (हि) छोटा लोटा।
लोडन पुं० (सं) १-हिलाने डुलाने की क्रिया। २-मंथन।
लोड़ना क्रि० (हि) आवश्यकता होना। जरूरत होना।
लोडित वि० (सं) १-हिलाया डुलाया हुआ। २-मथित।
लोढ़ना क्रि० (हि) १-चुनना। तोड़ना। २-ओटना।
लोढ़ा पुं० (हि) पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर चीजें पीसी जाती हैं। बट्टा।
लोढ़िया स्त्री० (हि) छोटा लोढ़ा।
लोथ स्त्री० (हि) मृत शरीर। शव। लाश।
लोथड़ा पुं० (हि) मांसपिंड।
लोथरा पुं० (हि) दे० 'लोथड़ा'।
लोथि स्त्री० (हि) दे० 'लोथ'।
लोन पुं० (हि) १-नमक। २-लावण्य। सौन्दर्य।
लोनहरामी वि० (हि) कृतघ्न। नमकहराम।
लोना वि० (हि) १-नमकीन। २-सलोना। सुन्दर। पुं० ईंट पत्थर का कमजोर हो कर झड़ना। २-दीवार से झड़ने वाली नमकीन मट्टी। क्रि० फसल काटना।
लोनाई स्त्री० (हि) लावण्य। सुन्दरता।
लोनिया पुं० (हि) नमक या लोन बनाने का काम करने वाली एक जाति। स्त्री० लोनी नामक साग।
लोनी स्त्री० (हि) १-कुल्फे की जाति का एक साग। २-चने की पत्ती पर का क्षार। ३-वह मट्टी जिससे लोनिया लोग शोरा बनाते हैं।
लोप पुं० (सं) १-नाश। २-गायब होना। ३-अभाव ४-व्याकरण में वह नियम जिसमें शब्द साधन में कोई वर्ण निकाल या छोड़ देते हैं। ५-विच्छेद।
लोपना क्रि० (हि) १-लुप्त करना। छिपाना। २-लुप्त होना। ३-नष्ट होना।
लोपविभ्रम पुं० (सं) भूलचूक (हिसाब आदि में) (एरर्स एण्ड ओमीशन्स)।
लोपांजन पुं० (सं) वह कल्पित अंजन जिसके संबंध में कहा जाता है कि लगाने वाला अदृश्य हो जाता है।
लोबान पुं० (अ) एक प्रकार का सुगन्धित गोंद जो जलाने तथा दवा के काम आता है।
लोबानी वि० (अ) जिसमें लोबान हो।
लोबिया पुं० (हि) १-एक प्रकार का सफेद घड़ा घोड़ा।
लोभ पुं० (सं) १-लालच। लिप्सा। २-कृपणता। कंजूसी।
लोभना क्रि० (हि) १-मुग्ध या मोहित होना। २-मोहित करना।
लोभनीय वि० (सं) १-जिस पर लोभ हो सके। सुन्दर। २-जो लुभाया जा सके।
लोभाना क्रि० (हि) मोहित या मुग्ध करना या होना।
लोभार वि० (हि) लुभाने वाला।
लोभित वि० (सं) लुभाया हुआ। मुग्ध।
लोभी वि० (हि) १-जिसे बहुत लालच हो। २-
लोम पुं० (सं) १-रोम। २-बाल। पुं० (हि) लोमड़ी।
लोमकीट पुं० (सं) जूँ।
लोमकूप स्त्री० (सं) शरीर का वह छिद्र जो रोएँ जड़ में होता है। लोमगर्त।
लोमगर्त पुं० (सं) दे० 'लोमकूप'।
लोमघ्न पुं० (सं) गंज नामक रोग।
लोमड़ी स्त्री० (हि) कुत्ते या गीदड़ के आकार एक प्रसिद्ध जंगली पशु।
लोमरंध्र पुं० (सं) दे० 'लोमकूप'।
लोमराजि स्त्री० (सं) दे० 'लोमावली'।
लोमविवर पुं० (सं) दे० 'लोमावली'।
लोमहर्ष पुं० (सं) रोमांच। पुलक।
लोमहर्षक वि० (सं) रोमांचकारी।
लोमहर्षण वि० (सं) हर्ष या भय के कारण खड़े करने वाला। पुं० (सं) रोमांच।
लोमा स्त्री० (सं) वच। वचा।
लोमालि स्त्री० (सं) दे० 'लोमावली'।
लोमाली स्त्री० (सं) दे० 'लोमावली'।
लोमावली स्त्री० (सं) नाभि से सीने तक उगे बाल।
लोय पुं० (हि) १-लोग। २-आँख। नयन। स (हि) लौ। लपट।
लोयन पुं० (हि) आंख। नेत्र।
लोर वि० (हि) १-चंचल। २-उत्सुक। इच्छुक। पु (हि) १-आंसू। २-कान के कुंडल। ३-लटकन
लोरना क्रि० (हि) १-चंचल होना। २-लपकना। झुकना। ४-लिपटना। ५-लोटना।
लोरवा पुं० (देश) आंसू।
लोरी स्त्री० (हि) १-वह गीत जो स्त्रियाँ बच्चों सुलाने के लिए गाती हैं। २-तोते की एक जाति
लोल वि० (सं) १-हिलता-डोलता। २-चंचल। ३ परिवर्तनशील। ४-क्षणभंगुर। ५-उत्सुक। ६-लो
लोलक पुं० (सं) १-नथों बालियों आदि की लटकन २-कान की लौल। लोलकी। ३-घन्टी की लटकन
लोलकी स्त्री० (हि) कान के नीचे का लटकने वाल भाग।
लोलचक्षु वि० (सं) जिसके नेत्र चंचल हों या चा ओर देखते हों।
लोलजिह्व वि० (सं) लोभी। लालची। पु० सांप।
लोलना क्रि० (हि) हिलना-डोलना।
लोलनेत्र वि० (सं) दे० 'लोलचक्षु'।
लोललोचन वि० (सं) दे० 'लोलचक्षु'।
लोला स्त्री० (सं) १-जीभ। २-लक्ष्मी। ३-एक वर

लोलिनी स्त्री० (सं) चंचल प्रकृति की स्त्री।
लोलुप वि० (सं) १-लोभी। लालची। २-बहुत उत्सुक।
लोलुपता स्त्री० (सं) लालच। लोभ।
लोलुपत्व पुं० (सं) दे० 'लोलुपता'।
लोवा स्त्री० (हि) लोमड़ी। पुं० एक तीतर की जाति का छोटा पक्षी।
लोष्ट पु० (सं) १-मिट्टी का ढेला। २-पत्थर।
लोहंडा पुं० (हि) १-लोहे की छोटी कढ़ाई। २-तसला।
लोह पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध काले रङ्ग की धातु जिसके यंत्र तथा हथियार बनते हैं। २-रक्त। ३-लाल बकरा।
लोहकार पुं० (सं) लोहार।
लोहकिट्ट पुं० (सं) लोहे का मोर्चा या जंग।

लोहवान पुं० (हि) दे० 'लोबान'।
लोहमहल पुं० (स) लोहे का मोर्चा या जंग।
लोहलंगर पु० (हि) १-जहाज का लंगर। २-बहुत भारी वस्तु।
लोहसार पु० (सं) फौलाद।
लोहाँगी स्त्री० (हि) वह लकड़ी या छड़ी जिसके सिरे पर लोहा लगा रहता है।
लोहा पुं० (हि) ... हथियार, यन्त्र आदि ... रङ्ग का बैल। ५-लोहे की बनी वस्तु।
लोहाकर पुं० (स) लोहे की खान।
लोहाना स्त्री० (हि) लोहे के बरतन में खाद्य पदार्थ रखने से लोहे का रङ्ग या स्वाद आ जाना।
लोहार पुं० (हि) लोहे का काम करने वाली एक जाति।
लोहारखाना पुं० (हि) लोहे के काम करने की जगह
लोहारी स्त्री० (हि) लोहे का काम।
लोहिया स्त्री० (स) लोहे का बरतन।
लोहित वि० (सं) लाल। रक्त। पु० (हि) मङ्गलग्रह।
लोहितग्रीव पु० (स) अग्नि।
लोहिया पुं० (स) १-लोहे की वस्तुओं का व्यापार करने वाला। २-मारवाड़ियों की एक जाति। ३-लोहे की बनी गोली। ५-लाल रङ्ग का बैल।

...यंग। २-समान। तुल्य ...दिखाई देना। २-चमकना। ...ना।
लौंग स्त्री०(हि) १-एक झाड़ की कली जो मसाले और दवा के काम आती है। २-लौंग के आकार की नाक की कील।
लौंगलता स्त्री० (हि) एक प्रकार की बंगाली-मिठाई।
लौंडा पुं०(हि) १-लड़का। छोकरा। २-सुन्दर लड़का वि० १-अबोध। २-छिछोरा।
लौंडी स्त्री० (हि) दासी।
लौंडेबाज वि० (हि) १-वह व्यक्ति जो सुन्दर लड़कों को अप्राकृतिक सम्बन्ध के कारण प्रेम करता है।
लौंडेबाजी स्त्री०(हि) लौंडों के साथ अप्राकृतिक कुकर्म।
लौंद पु० (हि) दे० 'मलमास'।
लौंदरा पु० (हि) वह वर्षा जो वर्षा ऋतु से पहले ग्रीष्मकाल में होती है।
लौ स्त्री० (हि) १-आग की लपट। २-दीप शिखा। ३-लगन। चाह। ४-आशा।
लौआ पु० (हि) कद्दू। घीया।
लौकना क्रि० (हि) दिखाई देना।
लौकायतिक पु० (सं) नास्तिक। लोकायत मत का अनुयायी।
लौकिक वि० (स) सांसारिक। ऐहिक। (सिक्यूलर)। व्यावहारिक।
लौकी स्त्री० (हि) घीया।
लौटपटा पु० (हि) दे० 'लोटपटा'।
लौटना क्रि०(हि) १-वहीं से वापिस आना। २-पीछे ...

लौट-फेर पु० (हि) उलट-फेर। हेर-फेर। भारी परिवर्तन।
लौटाना क्रि० (हि) १-पलटाना। २-वापिस करना। ३-ऊपर से नीचे करना।
लौटानी अव्य० (हि) लौटते समय या बार।
लौन पु० (हि) नमक।
लौना पु०(हि)१-पशु का एक अगला और एक पिछला पैर बांधने की रस्सी। २-ईंधन। ३-फसल काटने का काम। वि० सुन्दर। लावण्ययुक्त।
लौनी स्त्री० (हि) १-फसल की कटाई। २-लदना। ३-नवनीत।
लौरी स्त्री० (देश) गाय की बछिया।
लौल्य पु०(सं) १-चंचलता। अस्थिरता। २-उत्सुकता ३-उत्कट कामना।

वट।
लोह पुं० (सं) लोहा नामक धातु। (आयरन)।
लोहआवरण पुं०(सं) वह प्रतिबन्ध व्यवस्था या परदा जिससे एक देश में होने वाली घटनाओं का दूसरे देशवासियों को पता न चले (विशेष कर रूसदेश के लिए प्रयुक्त)। (आयरन कर्टेन)।
लोहकार पुं० (सं) लोहार।
लोहज पुं० (सं) मोरचा। जंग।
लोह-दीवार स्त्री० (हि) दे० 'लोह-आवरण'।
लोहबंध पुं० (स) लोहे की जंजीर।
लोहभांड पुं० (स) १-लोहे के बरतन। २-लोहे,पीतल आदि की बनी हुई अन्य वस्तुएँ। (हार्ड वेयर)।
लोहमल पुं० (सं) लोहे का जंग या मोर्चा।
लोहयुग पुं० (स) इतिहास में सभ्यता के विचार से वह युग जब अस्त्र, शस्त्र, औजार आदि लोहे के बनते थे। (आयरन एज)।
लोहविहीन वि० (सं) दे० 'लोहेतर'। (नोनफेरस)।
लोहसार पुं० (सं) एक प्रकार का लवण जो लोहे से बनाया जाता है।
लौहित्य पुं० (सं) १-लाल सागर। २-ब्रह्मपुत्र नदी वि० लोहे का। लाल रंग का।
लोहेतर वि० (सं) वह जिसमें लोहे की मिलावट न हो। (नानफेरस)।
ल्याना क्रि० (हि) दे० 'लाना'।
ल्यावना क्रि० (हि) दे० 'लाना'।
ल्यौ स्त्री० (हि) धुन। लौ। लगन।
ल्वारि स्त्री० (हि) लू। गर्म हवा।
ल्हासा पुं० (हि) दे० 'लासा'।

[शब्दसंख्या—४६५६४]

व देवनागरी वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण दांत और ओठ की सहायता से किया जाता है।
वंक वि० (सं) झुका हुआ। टेढ़ा। पुं० नदी का मोड़
वंकट वि० (हि) १-वक्र। टेढ़ा। २-कुटिल। ३-दुर्गम विकट।
वंकनाली स्त्री० (सं) सुषुम्ना नामक नाड़ी जो मध्य में मानी गई है।
वंकिम वि० (सं) टेढ़ा। वक्र।
वंक्षण पुं० (सं) मूत्राशय और जंघास्थल का संधि-स्थान।
वंग पुं० (सं) १-बंगाल प्रदेश। २-रांगा (धातु) ३-रांगे की भस्म। ४-कपास। ५-बैंगन।
वंगीय वि० (सं) बंगाल-सम्बन्धी। बङ्गाल का।
वंचक वि० (सं) १-धूर्त। २-ठग। ३-दुष्ट। खल
वंचकता स्त्री० (सं) १-धूर्तता। २-ठगी। ३-दुष्टता
वंचन पुं० (सं) १-छल। धोखा। २-ठगना। किसी योग्य वस्तु को भोग न कर पाना (प्राइवेश
वंचना स्त्री० (सं) धोखा। जाल। फरेब। क्रि० १-ठगना। पढ़ना।
वंचित वि० (सं) १-जो ठगा गया हो। २-विहु ३-अलग किया हुआ। ४-जिसे कोई वस्तु न गई हो।
वंजुल पुं० (सं) १-बेंत। २-अशोक का वृक्ष। एक पक्षी का नाम।
वंदन पुं० (स) स्तुति और प्रणाम।
वंदनमाला स्त्री० (स) वन्दनवार।
वंदनवार स्त्री० (हि) दे० 'बंदनवार'।
वंदना स्त्री० (स) १-स्तुति। २-प्रणाम। ३-तिल क्रि० (हि) स्तुति करना।
वंदनीय वि० (स) जो वंदना के योग्य हो।
वंदारु पुं० (स) १-स्तोत्र। २-वांदा। वि० १-प्रश करने वाला। माननीय।
वंदित वि० (सं) पूज्य। जिसकी वंदना की जाय
वंदितव्य वि० (सं) पूज्य। वंदना के योग्य।
वंदी पुं० (सं) दे० 'बन्दी'। (प्रिजनर)।
वंदीजन पुं० (सं) एक प्राचीन जाति जो राजाओं कीर्ति बखानते थे। चारण।
वंदीपाल पुं० (सं) बन्दीगृह का रक्षक। (जेलर)
वंद्य वि० (स) आदरणीय। पूजनीय।
वंध्य वि० (सं) १-निष्फल। २-जिसमें उत्पन्न क की शक्ति न हो।
वंध्या स्त्री० (सं) वह स्त्री या गाय जिसके संतान होती हो।
वंध्यातनय पुं० (सं) कोई अनहोनी बात।
वंध्यापुत्र पुं० (सं) दे० 'वंध्यातनय'।
वंध्यासुत पुं० (सं) दे० 'वंध्यातनय'।
वंध्यीकरण पुं० (सं) १-पुंसत्व से रहित कर दे २-किसी विशेष प्रक्रिया द्वारा भूमि को वंध्य देना। (स्टेरिलाइजेशन)।
वंश पुं० (सं) १-बांस। २-रीढ़। ३-नाक की ह बाँसा। ४-बाँसुरी। ५-परिवार। खानदान। बाहु आदि की लम्बी हड्डियाँ। ७-खड्ग के का भाग। ८-युद्ध सामग्री। ९-विष्णु। १०-पु ११-वंशलोचन।
वंशकपूर पुं० (सं) वंशलोचन।
वंशकर्पूर पुं० (सं) दे० 'वंशलोचन'।
वंशकर्म पुं० (स) बांस की टोकरी आदि बनाने

काम।

वंशज पु० (सं) १-किसी वंश में उत्पन्न सन्तान। पुत्र। २-औलाद। (डिसेन्डेन्ट)।
वंशजा स्त्री० (सं) १-कन्या। २-दे० 'वंशलोचन'।
वंशतण्डुल पु० (सं) बांस में का चावल।
वंशनालिका स्त्री० (सं) बांस का दुकड़ा।
वंशतिलक पु० (सं) एक छन्द का नाम।
वंशधर पु० (सं) १-वंशज। संतान। २-वंश की मर्यादा रखने वाला।
वंशधारी पुं०(सं) वंश धारण करने वाला। वंशधर।
वंशनाडिका स्त्री० (सं) बांस की नली।
वंशनाडी स्त्री० (सं) दे० 'वंशनाडिका'।
वंशनाथ पुं० (सं) किसी वंश का प्रधान पुरुष।
वंशनालिका स्त्री० (सं) दे० 'वंशनाडिका'।
वंशराज पुं० (सं) सबसे बड़ा बांस।
वंशरोचना पु० (सं) वंसलोचन।
वंशलोचन पु० (सं) बांस की अन्दर की नली में बनने वाला श्वेत पदार्थ। बन्सलोचन।
वंशवर्धन वि० (सं) कुल का गौरव या मर्यादा बढ़ाने वाला।
वंशवृक्ष पुं० (सं) वह लेख जो किसी वंश के मूल-पुरुष से लेकर परवर्ती विकास तथा उसमें उत्पन्न सब लोगों के स्थान आदि सूचित करता हो।
वंशवृद्धि स्त्री० (सं) वंश का विस्तार।
वंशस्थ पुं० (सं) एक वर्णवृत्त।
वंशहीन वि० (सं) जिसके वंश में कोई भी न हो।
वंशागत वि० (सं) परम्परा से चला आया हुआ।
वंशावली स्त्री०(सं) किसी वंश के लोगों की क्रम से बनी हुई सूची।
वंशिका स्त्री० (सं) १-बंसी। मुरली। २-अगर की लकड़ी।
वंशी स्त्री० (सं) मुँह से फूँककर बजाया जाने वाला एक बाजा। बांसुरी।
वंशीधर पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
वंशीरव पुं० (सं) वंशी की ध्वनि।
वंशीवट पुं० (सं) वृन्दावन का वह बरगद का पेड़ जहाँ कृष्ण वंशी बजाया करते थे।
वंशीवादन पुं० (सं) वंशी बजाना।
व पुं० (सं) १-वायु। २-बाण। ३-वरुण। ४-सान्त्वना। ५-समुद्र। वि० (सं) बलवान्। अव्य० (सं) और।
वक पुं० (सं) दे० 'बक'।
वकअत स्त्री० (अ) १-वक्त। २-प्रतिष्ठा। इज्जत।
वकालत स्त्री० (अ) १-दूत का काम। २-वकील का पेशा। ३-न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से जिरह करना।
वकालतनामा पुं० (अ) किसी मुकद्दमे की पैरवी करने का वकील को दिया ... ।

... वकालत।
वकुल पु० (सं) दे० 'बकुल'।
वक्त पुं० (अ) १-समय। काल। २-अवसर। ३-अवकाश। ४-मरने का नियत समय। मृत्युकाल।
वक्तन-फ-वक्तन अव्य०(अ) १-यदाकदा। कभी कभी २-यथासमय।
वक्तव्य वि० (सं) १-कहने योग्य। २-कुछ कहने योग्य ३-हीन। तुच्छ। पु० (सं) किसी विषय में कोई कही गई बात जो किसी बात को स्पष्ट करने के लिये हो। (स्टेटमेंट)।
वक्ता वि० (सं) १-बोलने वाला। २-भाषण करने वाला। पु० (सं) कथा कहने वाला।
वक्तृता स्त्री० (सं) १-वाक्पटुता। २-भाषण देने की योग्यता। ३-भाषण। व्याख्यान।
वक्तृत्व पु० (सं) दे० 'वक्तृता'।
वक्त्र पु० (सं) १-मुख। २-कार्य का आरम्भ। ३-एक प्रकार का छन्द।
वक्त्रासव पु० (सं) थूक। लार।
वक्फ पु० (अ) १-धर्मार्थ दान की हुई सम्पत्ति। २-किसी के लिये कोई वस्तु छोड़ देना।
वक्फनामा पु० (अ) दान-पत्र।
वक्र वि० (सं) १-टेढ़ा। बांका। २-कुटिल। ३-झुका हुआ। ४-निर्दय।
वक्रगति वि० (सं) १-उलटी चाल वाला (ग्रह आदि)। २-कुटिल।
वक्रगामी वि० (सं) टेढ़ी चाल चलने वाला। २-शठ कुटिल।
वक्रग्रीव पु० (सं) ऊँट।
वक्रचंचु पु० (सं) तोता।
वक्रता स्त्री० (सं) क्रूरता।
वक्रतुण्ड पु० (सं) १-तोता। २-गणेश जी।
वक्रत्व पु० (सं) दे० 'वक्रता'।
वक्री वि० (सं) १-अपने मार्ग को छोड़ कर पीछे हटने वाला। २-कुटिल।
वक्रोक्ति स्त्री० (सं) १-वह काव्यालंकार जिसमें श्लेष से वाक्य का कुछ और ही अर्थ निकलता है। २-चमत्कारपूर्ण उक्ति।
वक्षस्थल पु० (सं) छाती।
वक्ष पु० (हि) १-छाती। उरस्थल। २-बैल।
वक्षस्त्र पु० (सं) कवच।
वक्षोज पु० (सं) स्तन। कुच।
वक्षोरुह पु० (सं) स्तन। कुच।
वक्ष्यमाण १-वि० (सं) १-वक्तव्य। २-जिसे कह रहे

हो।
बगला स्त्री० (सं) दे० 'बगलामुखी'।
बगलामुखी स्त्री० (स) दस महाविद्याओं के अन्तर्गत एक देवी विशेष।
बगैरह अव्य० (म) इत्यादि। आदि।
बचन पुं० (सं) १-मुख से निकलने वाले सार्थक शब्द। २-उक्ति। कथन। ३-व्याकरण में वह विधान जिसके द्वारा शब्द के रूप से एक या अनेक का बोध होता है।
बचनकर वि० (स) अपने बचन पर दृढ़ रहने वाला।
बचनकारी वि० (सं) आज्ञाकारी।
बचनपटु वि० (सं) बोलने में प्रवीण।
बचनपत्र पु० (स) वह पत्र जो ऋण लेते समय उसे नियत समय पर चुका देने की प्रतिज्ञा का सूचक होता है। (प्रोमिसिरी नोट)।
बचनबंध पु० (सं) किसी से भविष्य में मिलने तथा कोई काम करने का आपस में निश्चित समय। (एंगेजमेंट)।
बचनबद्ध वि० (सं) जिसने किसी को बचन दिया हो
बचनविदग्धा स्त्री० (सं) वह नायिका जो अपने बचन की चतुराई से अपने उपपति का प्रेम साध लेती है
बचसा अव्य० (सं) बचन द्वारा।
बचस्वी वि० (स) जो भाषण देने में प्रवीण हो।
बच्छ पुं० (हि) छाती।
बज़न पुं० (म) १-भार। बोझ। २-तौल। ३-मान-मर्यादा। ४-चित्रकला की वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक रङ्ग दूसरे से विषम हो जाय।
बज़नकश पुं० (म) तोलने वाला व्यक्ति।
बज़नदार वि० (म) १-भारी। बोझिल। २-महत्व वाला।
बज़नी वि० (म) १-जिसमें अधिक बोझ हो। भारी। २-मानने योग्य।
बजह स्त्री०(म)१-कारण। हेतु। २-तत्व। ३-प्रकृति
बजा स्त्री० (म) १-बनावट। २-सजधज। चालढाल ३-रूप। आकृति। ४-दशा। ५-रीति। प्रणाली।
बजादार वि०(म) जिसकी रचना या बनावट सुन्दर हो।
बज़ारत स्त्री०(म) १-वजीर या मन्त्री का कार्य। २-मन्त्री का कार्यालय।
बजाहत स्त्री० (म) १-बड़प्पन। २-सुन्दरता।
बजीफा पुं० (म) १-विद्वानों आदि को दी जाने वाली आर्थिक सहायता। वृत्ति। २-मुसलमानों का धार्मिक पाठ।
बज़ीर पुं० (म) १-मन्त्री। २-शतरंज की एक गोट।
बजीरी स्त्री० (म) वजीर का काम या पद।
बज़ीरे-आजम पुं० (म) प्रधान मन्त्री।
बज़ीरे-खारजा पुं० (फ) परराष्ट्र-मन्त्री।
बज़ीरे-जंग पुं० (म) युद्ध-मन्त्री।
बज़ीरे-तालीम पुं० (म) शिक्षा-मन्त्री।
बज़ीरे-माल पुं० (म) राजस्व मन्त्री।
बज़ू पुं० (म) नमाज पढ़ने से पहले हाथ पैर धोने का काम।
बजूद पुं० (म) १-अस्तित्व। मौजूदगी। २-शरीर। ३-सृष्टि।
बजूहात स्त्री०(म) कारणों का समूह (बहुवचन शब्द)
बज्र पुं० (सं) १-इन्द्र का प्रधान अस्त्र। २-विद्युत। ३-हीरा। ४-भाला। ५-बरछी। ६-एक प्रकार का लोहा। ७-पत्थर। वि० १-बहुत कठिन। २-घोर। विकट।
बज्रघोष पुं० (सं) १-बिजली की कड़क। २-भारी शब्द।
बज्रतुंड पुं० (सं) १-गीध। २-मच्छर। ३-गरुड़। ४-गणेश।
बज्रपाणि पुं० (सं) १-इन्द्र। २-ब्राह्मण। ३-एक बोधिसत्व।
बज्रपात पु० (सं) १-बिजली का गिरना। २-सहसा कोई संकट आना।
बज्रलेप पुं० (सं) एक प्रकार का पत्थर की मूर्ति आदि में जोड़ लगाने का मसाला।
बज्रसार पुं० (सं) हीरा।
बज्रहृदय वि० (सं) कठोर दिल का।
बज्रांग पुं० (सं) १-सांप। २-हनुमान।
बज्रायुध पुं० (सं) इन्द्र।
बज्री पुं० (सं) १-इन्द्र। २-एक प्रकार की ईंट।
बज्रोली स्त्री० (हि) हठयोग की एक मुद्रा।
बट पुं० (सं) बरगद का पेड़।
बटक पुं० (सं) १-गोल बट्टा। २-पकौड़ा। बड़ा। ३-आठ माशे की एक तौल।
बटिका स्त्री० (सं) छोटी गोली या टिकिया।
बटी स्त्री० (सं) दे० 'बटिका'।
बटु पुं० (सं) दे० 'बटुक'।
बटुक पुं०(सं) १-बालक। लड़का। २-ब्रह्मचारी। ३-भैरव।
बटूपा पुं० (सं) दे० 'बटिका'।
बडवा स्त्री० (सं) १-घोड़ी। २-दासी। ३-वेश्या। ४-ब्राह्मणी। ५-नक्षत्र।
बडवामुख पुं० (सं) शिव।
बडवासुत पुं० (सं) अश्विनीकुमार।
बणिक पुं० (सं) १-जो व्यापार द्वारा अपनी जीविका चलाता हो। २-वैश्य। बनिया। व्यापारी।
बणिक-कटक पुं० (स) दे० 'बणिक्सार्थ'।
बणिक-कर्म पुं० (सं) बनिये का पेशा। व्यापार।
बणिक-क्रिया स्त्री० (सं) दे० 'बणिक् कर्म'।
बणिक-सार्थ पुं०(स) व्यापारियों का समूह। कारवाँ

वणिग्ग्राम पुं० (सं) व्यापारियों की सभा या मंडल।
वतन पु० (प) देशभक्ति।
वतनी वि० (प) अपने देश का।
वत अव्य० (सं) समान। तुल्य। सादृश्य।
वत्स पुं० (सं) १-लड़का। बच्चा। २-बत्सर। वर्ष ३-छाती। ४-कंस का एक अनुचर।
वत्सकामा स्त्री०(स) वह स्त्री जिसे पुत्र की कामना हो
वत्सतरी स्त्री० (स) तीन वर्ष की आयु की बछिया।
वत्सदन्त पुं० (स) एक प्रकार का तीर।
वत्सनाभ पुं० (सं) १-एक वृक्ष विशेष। २-एक वत्स-नाम नामक मीठा विष।
वत्सपालक पुं० (सं) १-बछड़ा पालने वाला। २-श्रीकृष्ण या बलराम।
वत्सपोता स्त्री० (सं) वह गाय जो अपने बछड़े को दूध पिला चुकी हो।
वत्सर पुं० (सं) १-वर्ष। साल। २-विष्णु का नाम
वत्सराज पुं० (सं) प्राचीन वत्स देश का राजा, उद-यन।
वत्सल वि० (सं) १-सन्तान के प्रेम से भरा हुआ। २-छोटों से स्नेह रखने वाला।
वत्सिमा स्त्री० (सं) बचपन।
वदती स्त्री० (सं) कथा। बात।
वदतोव्याघात पुं० (सं) कथन का वह दोष जिसमें एक बात कह कर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाय
वदन पु० (सं) १-चेहरा। मुख। २-बात कहना। बोलना। ३-सामना। अग्रभाग।
वदनपवन पुं० (सं) साँस।
वदनमारुत पुं० (स) साँस।
वदनामय पुं० (सं) मुँह का एक रोग।
वदन्य वि० (सं) दे० 'वदान्य'।
वदान्य वि०(सं) १-बहुत बड़ा दानी। २-मधुरभाषी
वदाम पुं० (हि) दे० 'बादाम'।
वदि पुं० (हि) कृष्णपक्ष।
वदी पु० (हि) दे० 'बदि'।
वदूसना क्रि० (हि) दोष देना। बुरा भला कहना।
वद्य वि० (स) कहने योग्य।
वद्यपक्ष पुं० (स) कृष्णपक्ष।
वध पुं० (स) किसी मनुष्य को किसी उद्देश्य से जान बूझ कर मार डालना। मारण।
वधक वि० (स) वध करने वाला।
वधकर्माधिकारी पु० (स) जल्लाद।
वधजीवी पु० (सं) १-व्याध। बहेलिया। २-कसाई।
वधदंड पुं० (स) प्राणदंड। शारीरिक दण्ड।
वधनिग्रह पु० (स) फाँसी की सजा।
वधभूमि स्त्री० (सं) १-वह स्थान जहां प्राण दंड दिया जाय। २-कसाईखाना।
वधस्थान पु० (सं) दे० 'वधभूमि'।
वधार्ह वि० (सं) वध करने के योग्य।
वधालय पुं० (स) वह स्थान जहां पशुओं का वध किया जाता है। (स्लाटरहाउस)।
वधिक पु० (स) दे० 'बधिक'।
वधिर वि० (सं) दे० 'बधिर'।
वधु स्त्री० (स) १-पुत्र की स्त्री। बहू। २-दुलहन।
वधुका स्त्री० (स) दे० 'वधु'।
वधू स्त्री० (सं) १-नव विवाहिता स्त्री। दुल्हन। २-पत्नी। ३-पुत्र की बहू।
वधूगृह प्रवेश पुं० (स) वधू के पति के गृह में प्रवेश करने की एक रीति।
वधूधन स्त्री० (सं) स्त्री-धन।
वधूटी स्त्री० (स) १-नवयुवती। २-वधू। दुलहन।
वधूत पुं० (सं) दे० 'अवधूत'।
वधोपाय पु० (स) वध करने के साधन या हथियार।
वध्य वि० (सं) मार डालने योग्य।
वध्यघातक पु० (स) प्राणदंड किये हुए व्यक्ति का वध करने वाला।
वध्यभूमि स्त्री० (सं) दे० 'वधभूमि'।
वन पु० (स) १-जङ्गल। (फारेस्ट)। २-बगीचा। ३-जल। ४-घर। ५-रश्मि। ६-फूलों का गुच्छा।
वनकदली स्त्री० (स) जङ्गली केला।
वनकुंजर पु० (स) जंगली हाथी।
वनगज पु० (सं) जंगली हाथी।
वनगमन पु० (स) संन्यास ग्रहण करना।
वनचर पु० (सं) १-वन में विचरने वाला। २-वन-वासी। ३-वन्य पशु। ४-शरभ नामक वन जन्तु।
वनचारी वि० (स) वन में घूमने वाला या रहने वाला
वनज पुं० (स) १-वन में उत्पन्न होने वाला पदार्थ २-कमल। ३-जंगली नीबू।
वनजात पु० (न) दे० 'वनज'।
वनजीवी पु० (न) लकड़हारा।
वनद पु० (न) मेघ। बादल।
वनदेव पु० (स) वन का अधिष्ठाता देवता।
वनदेवी स्त्री० (न) वन की अधिष्ठात्री देवी।
वननाशन पु० (स) किसी क्षेत्र के जंगल काटकर बहने या खेती योग्य बना देना। (डिफोरेस्टेशन)।
वनपाल पु० (स) जंगल की देखरेख करने का कर्म-चारी (रेंजर)।
वनप्रस्थ वि० (सं) तपस्वी। वन में वास करने वाला।
वनमहोत्सव पु० (सं) भारत सरकार [illegible] गया वन और वृक्ष लगाने का उत्सव।
वनमानुष पु० (स) जंगली [illegible]।
वनमानुष पु० (सं) [illegible] मनुष्य के आकार का होता है।
वनमाला स्त्री० (सं) १-[illegible] घुटने तक लम्बी

वनी माला।
वनमाली पुं० (सं) श्रीकृष्ण। वि० (सं) वनमाला धारण करने वाला।
वनरक्षक पुं० (सं) दे० 'वनसंरक्षक'।
वनसंरक्षक पुं० (स) वह सरकारी उच्चाधिकारी जो वनों को नष्ट होने से बचाने तथा उनकी रक्षा करने की व्यवस्था करता है। (कंजर्वेटर ऑफ फोरेस्ट)।
वनराज पुं० (हि) सिंह। शेर।
वनराजी स्त्री० (स) १-वृक्ष समूह। २-जंगल में होकर जाने वाली पगडंडी।
वनरुह पु० (स) कमल का फूल।
वनरोपण पुं० (सं) किसी भूमि में वृक्षादि लगाकर जंगल में परिणित करने का काम। (एफोरेस्टेशन)।
वनलक्ष्मी स्त्री० (सं) १-वन की शोभा। २-केला।
वनवास स्त्री० (सं) १-वन या जङ्गल में रहना २-बस्ती छोड़ कर जङ्गल में बसने का दण्ड।
वनवासी वि० (सं) वन में रहने वाला।
वनविज्ञान पु० (सं) वृक्षादि लगाने के तरीके आदि से सम्बन्धित विज्ञान। (सिल्वीकल्चर)।
वनव्रीहि पु० (सं) तिन्नी।
वनस्थ पु० (सं) १-वन में रहने वाला। २-वानप्रस्थ ३-मृग।
वनस्थली स्त्री० (सं) वनभूमि।
वनस्पति स्त्री० (स) १-वे वृक्ष जिसमें फूल न हों केवल फल ही हों। २-पेड़-पौधे। ३-वटवृक्ष।
वनस्पति-घी पु० (हि) मूँगफली के तेल में नारियल बिनौले आदि साफ करके यांत्रिक उपायों से जमाया हुआ तेल।
वनस्पति शास्त्र पु० (हि) वह शास्त्र जिसमें पेड़-पौधे की जातियों आदि का विवेचन होता है। (बोटैनी)।
वनहास पुं० (सं) १-काँस। २-कुँद का फूल।
वनांत पुं० (सं) जंगली भूमि या मैदान।
वनांतर पुं० (स) जङ्गल का भीतरी भाग।
वनाग्नि स्त्री० (सं) दावानल। जङ्गल में लगने वाली आग।
वनिता स्त्री० (सं) १-औरत। २-प्रियतमा। ३-छः वर्णों की एक वृत्ति।
वनी पुं० (हि) वानप्रस्थ। स्त्री० छोटा वन या जङ्गल।
वनोत्सर्ग पुं०(सं) मन्दिर, कुआँ आदि बनाकर जन-साधारण के लिए दान देना।
वनौषधि स्त्री० (सं) जङ्गल की जड़ी बूटी।
वन्य वि० (स) १-वन में उत्पन्न होने वाला। २-जङ्गली।
वन्या स्त्री० (सं) १-गहरा जङ्गल। २-जङ्गलों का समूह। ३-बाद।
वपन पुं० (स) १-केश मूँडना। २-बीज बोना।
वपित वि० (सं) बीज बोया हुआ।
वपु पुं० (सं) १-शरीर। देह। २-रूप।
वपुमान पुं० (हि) सुन्दर और हृष्टपुष्ट शरीर वाला।
वपुष्मान वि० (सं) १-सुन्दर। २-शारीरिक।
वप्ता पुं० (सं) १-पिता। २-कवि। ३-नाई। वि० बीज बोने वाला।
वप्र पुं०(सं) १-मिट्टी की दीवार। २-शहर। ३-धूल ४-टीला। ५-भवन की नींव।
वप्रक्रिया स्त्री० (स) दे० 'वप्रक्रीड़ा'।
वप्र-क्रीड़ा स्त्री० (स) सांड, बैल आदि का मिट्टी के ढेर को सींग से उछालने की क्रीड़ा।
वफा स्त्री० (प) १-वायदा पूरा करना। २- पूर्णता। ३-सुशीलता।
वफात स्त्री० (प) मरण। मृत्यु।
वफादार वि० (प) १-वचन या कर्त्तव्य का पालन करने वाला। २-ईमानदार। सच्चा।
वफादारी स्त्री० (प) वफादार होने का भाव या धर्म।
वफद पुं० (प) प्रतिनिधि मंडल। (डेपुटेशन)।
वबा स्त्री० (प) १-महामारी। मरी। २-छूत का रोग
वबाई वि० (प) १-महामारी-रूप। २-छुतही।
वबाल पुं० (प) १-बोझ। भार। २-आपत्ति। ३-आफत। ४-ईश्वरी प्रकोप।
वमन पुं०(सं) १-कै करना। उलटी करना। २-पीड़ा ३-आहुति।
वमना क्रि० (हि) कै या उलटी करना।
वमित वि० (सं) वमन या कै किया हुआ।
वयःपरिणति स्त्री० (सं) आयु की प्रौढ़ता।
वयःसंधि स्त्री० (सं) जवानी और लड़कपन के बीच का काल।
वयःस्थ वि० (सं) बलिष्ठ। जवान। पुं० एक ही आयु का मित्र।
वय स्त्री० (सं) १-आयु। अवस्था। २-बीता हुआ जीवन।
वयन पुं० (सं) बुनने का काम। बुनाई।
वयस पुं० (सं) १-अवस्था। उम्र। २-पक्षी।
वयस्क वि० (सं) १-उमर या अवस्था। २-बालिग।
वयस्क-मताधिकार वि० (सं) निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने का वह अधिकार जो किसी स्थान के सभी वयस्क निवासियों को बिना भेद भाव के प्राप्त होता है। (एडल्ट सफरेज)।
वयस्य पुं० (सं) १-समवयस्क। २-मित्र। दोस्त।
वयस्या स्त्री० (सं) १-सखी। २-ईंट।
वयोवृद्ध वि० (सं) जो अवस्था में बड़ा हो। बड़ाबूढ़ा
वरंच अव्य० (सं) १-अपितु। बल्कि। परन्तु। लेकिन
वर पुं० (सं) १-देवता आदि से मांगा हुआ मनोरथ। २-देवता से मिला हुआ मनोरथ का फल या सिद्धि। ३-वह जिसके साथ कन्या का विवाह

निश्चित हो। पति। दूल्हा। वि०(हि) १-उन्मत्त। २-उच्च कोटि का।

वरक पुं० (प) १-पुस्तक का पन्ना। पृष्ठ। २-पत्र। ३-धातु का पतला पत्तर।

वरकसाज पुं० (फ़) चाँदी या सोने का वरक बनाने वाला।

वरज वि० (स) श्रेष्ठ। बड़ा।

वरजिश स्त्री० (फा) व्यायाम।

वरण पुं० (स) १-किसी को किसी काम के लिए चुनना। (सेलेक्शन)। २-आवरण। ३-ऊँट। ४-पुल।

वरणस्वातंत्र्य पुं० (स) चुनने या वरण की स्वतंत्रता (फ्रीडम आफ चोइस)।

वरणी स्त्री० (स) मंगल कार्य में सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान।

वरणीय वि० (स) १-पूज्य। २-श्रेष्ठ।

वरद वि० (स) १-वर देने वाला। २-शुभ।

वरदक्षिणा स्त्री० (स) दहेज। २-वह धन जो लड़की वाले से विवाह के समय मिलता है।

वरदाता वि० (सं) वर देने वाला।

वरदान पुं० (स) देवता या बड़ों का प्रसन्न होने पर कोई अभीष्ट वस्तु या सिद्धि प्रदान करना।

वरदानी पुं० (स) मनोरथ पूर्ण करने वाला।

वरदायक वि० (स) वर देने वाला।

वरदी स्त्री (प) वह पहिनावा जो किसी विशेष विभाग के कार्यकर्त्ताओं के लिए नियत हो। (यूनीफॉर्म)।

वरना क्रि०(हि) १-वरण करना। २-विवाह के समय कन्या का वर को अंगीकार करना। ३-ग्रहण या धारण करना।

वरन् अव्य (हि) बल्कि। लेकिन।

वरपक्ष पुं० (स) १-बरात। २-लड़के वाले।

वरम पुं० (हि) दे० 'वर्म'।

वरयात्रा स्त्री० (स) बरात। वर का मित्रों, सम्बन्धियों के साथ कन्या के घर जाना।

वरही पुं० (हि) मोर।

वरांग पुं० (सं) १-मस्तक। २-गुदा। ३-योनि। ४-हस्ती। ५-विष्णु।

वरांगना स्त्री० (स) सुन्दर स्त्री।

वराक पुं० (सं) १-शिव। २-युद्ध। ३-पापड़ा। वि० १-शोचनीय। २-नीच।

वराट पुं० (सं) १-कौड़ी। २-रस्सी। डोरी। ३-पद्म-बीज।

वराटक पुं० (स) १-कौड़ी। २-कमलगट्टा। ३-रस्सी

वरानना स्त्री० (सं) सुन्दर स्त्री।

वरान्न पुं० (स) दला हुआ उत्तम अन्न।

वरार्थी वि० (स) वर चाहने वाला।

वरासत स्त्री० (प) १-वारिस होने का भाव। २-उत्तराधिकारी। ३-उत्तराधिकार से मिला हुआ धन

वरासतन अव्य० (प) उत्तराधिकार रूप में।

वरासतनामा पुं० (प) उत्तराधिकार-पत्र।

वराह पुं० (सं) १-सूअर। शूकर। २-एक मान। ३-एक पर्वत का नाम। ४-सांड। ५-भेड़।

वरिष्ठ वि०(स) १-श्रेष्ठ। बड़ा। २-उच्च कोटि का

वरीयता स्त्री० (सं) किसी वस्तु को दी गई अधिमान्यता। (प्रेफरेन्स)।

वरीयान वि०(स) १-श्रेष्ठ। बड़ा। २-माननीय।

वरुण पुं० (स) १-एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति माना गया है। २-जल। ३-पानी। (नेपचून)।

वरुणात्मजा स्त्री० (स) मदिरा। शराब।

वरुणावास पुं० (स) समुद्र। सागर।

वरूथ पुं० (स) १-तनुत्राण। बकतर। २-ढाल। ३-रथ को रक्षित करने के लिये पड़ी हुई लोहे की जंजीरों की चादर। ४-सेना।

वरूथप पुं० (स) सेनापति।

वरूथिनी स्त्री० (स) सेना। फौज।

वरेण्य वि० (सं) १-प्रधान। मुख्य। २-पूजनीय। श्रेष्ठ।

वरोरु वि० (स) १-सुन्दर जाँघ वाली स्त्री। २-सुन्दर स्त्री।

वरोरू वि० (सं) दे० 'वरोरु'।

वर्ग पुं० (स) १-एक ही तरह की वस्तुओं का समूह। कोटि। श्रेणी। (ग्रुप)। २-परिच्छेद। ३-दो समान अंकों का गुणनफल। (स्क्वेयर)। ४-शब्द शास्त्र में एक ही स्थान से उच्चारित होने वाले वर्णों का समूह जैसे कवर्ग। ५-वह समानान्तर चतुर्भुज जिसकी चारों भुजाएँ तथा कोण बराबर हों।

वर्गपद पुं० (स) वह अङ्क जिसके घात से कोई वर्गाङ्क बना हो। वर्गमूल।

वर्गपहेली स्त्री० (हि) वह पहेली जिसमें एक वर्गाकार चतुर्भुज में ऊपर से नीचे और बायें से दायें वाली छोटे वर्गों में खाली स्थान ठीक प्रकार दिये हुए संकेतों के अनुसार पूरा करने पर पारितोषिक दिया जाता है। (क्रॉसवर्ड पज़ल)।

वर्गफल पुं० (स) वह गुणनफल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो।

वर्गमूल पुं० (सं) किसी वर्ग का वह अंक जिसे उसी अंक से गुणा करने पर वही वर्गाङ्क आता है। जैसे २५ का वर्गमूल ५ है।

वर्गलाना क्रि० (फा) १-उकसाना। २-बहकाना। फुसलाना।

वर्गांक पुं० (सं) किसी अङ्क को उसी अङ्क से गुणा करने पर प्राप्त होने वाला गुणनफल।

वर्गीकरण पुं० (सं) वर्ग के [illegible] र बहुत वस्तुओं

या व्यक्तियों को अलग-अलग करना। (क्लासीफिकेशन)।
वर्गीय वि० (सं) वर्ग-सम्बन्धी।
वर्चस्व पुं० (सं) १-तेज। २-श्रेष्ठता।
वर्चस्वान् वि० (सं) तेजवान। दीप्तियुक्त।
वर्चस्वी वि० (सं) तेजस्वी। दीप्तियुक्त। पुं० (सं) चन्द्रमा।
वर्जक वि० (सं) त्याग करने वाला।
वर्जन पुं० (सं) १-त्याग। छोड़ना। २-मनाही। ३-हिंसा। मारण।
वर्जना स्त्री० (सं) दे० 'वर्जन'। क्रि० (हि) मना करना।
वर्जित वि० (सं) १-छोड़ा हुआ। २-निषिद्ध।
वर्ज्य वि० (सं) १-छोड़ने योग्य। त्याज्य। २-जो मना हो।
वर्ण पुं० (सं) १-पदार्थों के काले पीले आदि भेदों के नाम। रङ्ग। २-हिन्दुओं के चार विभाग ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ३-भेद। प्रकार। किस्म। ४-अक्षर। ५-बड़ाई। ६-सोना। ७-चित्र।
वर्णक पुं० (सं) १-अभिनेता के वस्त्र या पोशाक। २-नकाब।
वर्णक्रम पुं० (सं) १-वर्णव्यवस्था। २-अक्षरक्रम।
वर्णखंडमेरु पुं० (सं) पिंगल या छन्दशास्त्र में वह जिससे यह ज्ञान हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं तथा प्रत्येक वृत्त में कितने लघु या गुरु वर्ण होंगे।
वर्णगत वि० (सं) वर्ण-सम्बन्धी।
... स्त्री० (सं) दे० 'वर्णपट'।
वर्णन पुं० (सं) १-सविस्तार कहा जाने वाला हाल बयान। २-चित्रण।
वर्णना स्त्री० (सं) सराहना। गुणकथन।
वर्णनातीत वि० (सं) जिसका वर्णन न हो सके।
वर्णनाश पुं० (सं) किसी वर्ण का शब्द में से नष्ट हो जाना। जैसे—पृषतोदर से स्थान में पृषोदर।
वर्णपट पुं० (सं) किसी छिद्र में से आने वाले प्रकाश को त्रिपार्श्वकाच (प्रिज्म) में से गुजरने पर दिखाई देने वाले इन्द्रधनुष वाले सात रंग। (स्पैक्ट्रम)।
वर्णपताका स्त्री० (सं) छन्दशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा वर्ण वृत्तों के भेदों में आने वाली लघु और गुरु मात्राओं की गिनती या संख्या ज्ञात होजाती है
वर्णपरिचय पुं० (सं) १-संगीत या अक्षरों का ज्ञान २-ऐसे ज्ञान की कोई पुस्तक।
वर्णपात पुं० (सं) दे० 'वर्णनाश'।
वर्णप्रत्यय पुं० (सं) छन्दशास्त्र की वे क्रियाएँ जिनके द्वारा वर्णवृत्तों के भेद या स्वरूप जाने जाते हैं।
वर्णप्रस्तार पुं० (सं) छन्दशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा छन्दों के कितने भेद हो सकते हैं और इन भेदों के कितने प्रकार के स्वरूप हो सकते हैं।
वर्णभेद पुं० (सं) जाति या रंग के कारण होने वाला भेद भाव।
वर्णमर्कटी स्त्री० (सं) छन्दशास्त्र में वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं।
वर्णमाला स्त्री० (सं) किसी लिपि के सब अक्षरों की क्रम से लिखित सूची। (एल्फाबेट्स)।
वर्णराशि स्त्री० (सं) अक्षरों के रूपों की श्रेणी की लिखित सूची।
वर्णविकार पुं० (सं) निरुक्त के अनुसार एक वर्ण का बिगड़ कर दूसरा वर्ण बन जाना।
वर्णविचार स्त्री० (सं) आधुनिक व्याकरण का वह भाग जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण तथा संधि आदि के नियमों का वर्णन हो। (आर्थोग्राफी)।
वर्णविद्वेष पुं० (सं) वर्ण या रंग के कारण भेदभाव करना। विशेषतः श्वेत जाति के लोगों की काले रंग के लोगों से द्वेष करने की प्रवृत्ति। (कलर प्रज्युडिस)।
वर्णविपर्यय पुं० (सं) निरुक्त के अनुसार वर्णों का उलट फेर होना। जैसे—हिंसा से सिंह।
वर्णवृत्त पुं० (सं) वह छन्द या पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम एक से होते हैं।
वर्णव्यवस्था स्त्री० (सं) हिन्दू समाज के चार वर्णों में विभाजित करने की रीति।
वर्णसंकर पुं० (सं) वह जो दो अलग-अलग जाति के यौन सम्बन्ध से उत्पन्न हुआ हो।
वर्णांतर पुं० (सं) दूसरी जाति।
वर्णांध वि० (सं) जिसे रङ्गों का ज्ञान या भास न होता हो। (कलर ब्लाइण्ड)।
वर्णानुक्रम से अव्य० (हि) वर्णों के क्रम के अनुसार। (एल्फाबैटिकली)।
वर्णाश्रम पुं० (सं) चारों वर्णों का आश्रम।
वर्णाश्रम-धर्म पुं० (सं) चारों वर्णाश्रम में रहकर जिस कर्म द्वारा ऐहिक कल्याण प्राप्त हो सकता हो।
वर्णिक पुं० (सं) लेखक।
वर्णिकवृत्त पुं० (सं) दे० 'वर्णवृत्त'।
वर्णिका स्त्री० (सं) १-स्याही। २-सोने का पानी। ३-चन्द्रमा। ४-कुछ विशिष्ट रंगों का समवाय जो किसी चित्र या शैली में विशेष रूप से बरता जाय (चित्रकला)।
वर्णित वि० (सं) १-कथित। कहा हुआ। २-जिसका वर्णन हो चुका हो। (डिस्क्राइब्ड)।
वर्ण्य पुं० (सं) १-प्रस्तुत विषय। २-उपमेय। ३-केसर, कुंकुम। वि० वर्णन के योग्य।
वर्तका स्त्री० (सं) दे० 'वर्तकी'।
वर्तकी स्त्री० (सं) बटेर पक्षी की मादा।

वर्तन पुं० (सं) १-बरताव। व्यवहार। २-वृत्ति। व्यवसाय। ३-घुमाना। ४-परिवर्तन। ५-स्थिति। ६-स्थापन। ७-सिलबट्टे से पीसना। ८-वर्तमान ९-बरतन। १०-राज्यकंपन कर्म। ११-कीड़ा। १२-दलाली।

वर्तन-प्रभिकर्ता पुं० (सं) किसी व्यापार आदि में दलाली लेकर *किसी बड़ी व्यापारिक संस्था का माल* दुकानदारों को बेचने वाला। (कमीशन एजेंट)।

वर्तनी स्त्री० (सं) १-बटने या पीसने की क्रिया। पेषण २-रास्ता।

वर्तमान वि० पुं० (सं) १-जो इस समय हो या चल रहा हो। (एक्जिस्टिंग)। २-उपस्थित। विद्यमान। (प्रेजेन्ट)। ३-आधुनिक। पुं० १-व्याकरण के तीन कालों में से पहला। २-समाचार। ३-वृत्तांत। ४-चलता व्यवहार।

वर्ति स्त्री० (सं) १-बत्ती। २-अंजन। ३-वह बत्ती जो चिकित्सक घाव में देता है। ४-औषध बनाना। ५-उबटन। ६-गोली। बटी।

वर्तिग्रह पुं० (सं) किसी दीपक आदि का वह भाग जिसमें बत्ती पड़ी रहती है तथा जो उसकी लौ का नियन्त्रणभी करता हो। (बर्नर)।

वर्तिका स्त्री० (स) १-बटेर। २-बत्ती। ३-सलाई।

वर्तित वि०(स)१-संपादित। किया हुआ। २-चलाया हुआ। ३-ठीक किया हुआ।

वर्ती वि०(हि) १-बरतने वाला। २-स्थित रहने वाला पुं० १-बत्ती। २-सलाई।

वर्तुल वि० (सं) गोलाकार। गोल। पुं० १-मटर। २-गाजर।

वर्तुलाकार वि० (सं) गोल।

वर्तुलाकृति वि० (सं) *गोल।*

वर्त्म पुं० (सं) १-पथ। मार्ग। २-लीक। ३-किनारा ४-पलक। ५-आधार।

वर्दी स्त्री (हि) दे० 'वरदी'।

वर्द्धक, वर्धक वि० (स) १-बढ़ाने वाला। २-काटने वाला।

वर्द्धकी, वर्धकी पुं०(स) लकड़ी का काम करनेवाला बढ़ई।

वर्द्धन, वर्धन पुं० (सं) १-बढ़ाना। २-वृद्धि। ३-पशुओं आदि को पाल-पोसकर वृद्धि करना। (ब्रीडिंग)। ४-काटना। छीलना।

वर्द्धमान, वर्धमान वि० (सं) १-बढ़ता हुआ। २-बढ़ने वाला। पुं० १-सकोरा। २-बङ्गाल के एक *जिले का नाम।*

वर्द्धयिता, वर्धयिता पुं० (सं) बढ़ाने वाला।

वर्द्धित, वर्धित वि० (स) १-बढ़ाया। बढ़ाया हुआ। २-पूर्ण। ३-कटा हुआ।

वर्द्धिष्णु, वर्धिष्णु वि० (सं) बढ़ने वाला।

वर्म पुं० (सं) १-कवच। बकतर। २-घर। *निवासस्थान*

वर्मधर वि० (स) दे० 'वर्महर'।

वर्महर वि० (सं) कवचधारी।

वर्मा पुं० (सं) क्षत्रियों की एक उपाधि।

वर्य वि०(स) १-श्रेष्ठ। २-प्रधान। पुं० कामदेव।

वर्वट पुं० (स) लोबिया।

वर्वर *पुं० (सं) १-एक देश का नाम। २-इस देश के* निवासी। ३-पामर। नीच। ४-घुँघराले बाल।

वर्ष पुं० (स) १-एक बारह मास या महीने। साल बरस। २-वृष्टि। जल बरसना। ४-पुराणानुसार सात द्वीपों का समूह या विभाग।

वर्षक वि० (सं) जल को वर्षा करने वाला। २-बरसाने वाला।

वर्षगांठ स्त्री० (हि) जन्मदिन का उत्सव।

वर्षघ्न पुं० (सं) १-पवन। २-ग्रहों का योग *जिससे* वर्षा नष्ट हो जाती है।

वर्षण पुं० (सं) १-वृष्टि। बरसना। २-छिड़काव।

वर्षत्र पुं० (सं) दे० 'वर्षत्राण'।

वर्षत्राण पुं० (सं) छाता।

वर्षपति पुं० (सं) वर्ष के अधिपति ग्रह।

वर्षप्रवेश पुं० (स) नये वर्ष या साल का आरम्भ।

वर्षप्रिय पु० (सं) चातक पक्षी।

वर्षफल पु० (स) किसी व्यक्ति के वर्षभर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का वर्णन। (फ० ज्यो०)।

वर्षबोध पु० (स) वर्ष में एक बार प्रकाशित होने वाला एक ग्रन्थ जिसमें सारे साल की प्रमुख घटनाएँ सामाजिक तथा राजनीतिक बातों का विवरण होता है। (ईयरबुक)।

वर्षांग पु० (स) महीना।

वर्षा स्त्री० (स) १-बरसात। २-वृष्टि। ३-किसी वस्तु का अधिक मात्रा में ऊपर को गिरना।

वर्षाकाल पुं० (सं) वर्षा की ऋतु। बरसात।

वर्षागम पुं० (सं) वर्षाकाल का आगमन।

वर्षाधिप पु० (सं) वह ग्रह जो संवत्सर के वर्ष का अधिपति होता है।

वर्षाप्रिय पु० (सं) चातक। पपीहा।

वर्षाबीज पुं० (स) ओला।

वर्षाशन पु० (स) साल भर के लायक भोजन के रूप में दिया जाने वाला अन्नदान।

वर्षीण वि० (स) साल का।

वर्षीय वि० (स) साल का।

वर्षेश वि० (सं) दे० 'वर्षाधिप'।

वर्षोपल पु० (स) ओला।

वर्ह पु० (स) १-मोरपंख। २-ग्रन्थिपर्णी। ३-पत्र। पत्ता।

वर्ही पु० (स) १-मोर। मयूर। २-मुर्गा।

वलन पुं० (सं) १-घुमाव। फिराव। २-फेरा। ३-

विपथगमन । वक्रगति । ४-ग्रहादि का अपने मार्ग से विचलित होना ।

वलभि, वलभी स्त्री० (सं) १-सदर फाटक । २-अटारी । ३-काठियावाड़ प्रांत की एक प्राचीन नगरी का नाम ।

वलय पुं० (सं) १-मण्डप । घेरा । २-कंकण । ३-चूड़ी

वलयित वि० (सं) घिरा हुआ ।

वलाक पुं० (सं) बगला ।

वलायत स्त्री० (अ) १-दे० 'विलायत' । २-वली होना

वलाहक पुं० (सं) दे० 'बलाहक' ।

वलि स्त्री० (सं) १-रेखा । लकीर । २-सिकुड़ने के कारण पड़ी हुई लकीर । ३-बल । ४-देवता पर चढ़ाई जाने वाली वस्तु या पशु । ५-बवासीर का मस्सा । ६-गन्धक ।

वलित वि० (सं) १-लपका या बल खाया हुआ । २-मोड़ा हुआ । ३-परिवृत । घेरा हुआ । ४-जिसमें झुर्रियां पड़ी हों । ५-आच्छादित । ६-मिला हुआ । पुं० (सं) १-काली मिर्च । २-नाच की एक मुद्रा ।

वली स्त्री० (सं) १-झुर्री । सिलवट । २-श्रेणी । पंक्ति ३-रेखा । पुं० (अ) १-मालिक । स्वामी । २-शासक ३-साधु । ४-अभिभावक ।

वलीमुख पुं० (सं) बन्दर ।

वलीवर्द पुं० (सं) बैल ।

वल्कल पुं० (सं) १-वृक्ष की छाल । २-वृक्ष की छाल वस्त्र । ३-ऋग्वेद की एक शाखा ।

वल्द पुं० (सं) बेटा । पुत्र ।

... स्त्री० (अ) पिता के नाम का परिचय या पता

... स्त्री० (सं) १-चींटी । २-दीमक ।

... पुं० (सं) १-दीमक के रहने का स्थान । ... । २-वह मेघ जिस पर सूर्य की किरणें पड़ती हों । ३-वाल्मीकि मुनि ।

वल्लकी स्त्री० (सं) १-वीणा । २-एक वृत्त ।

वल्लभ वि० (सं) प्रियतम । प्यारा । स्त्री० (सं) १-पति स्वामी । २-अध्यक्ष । मनिक । ३-नायक ।

वल्लभा स्त्री० (सं) प्रेमिका । प्रेयसी ।

वल्लभी स्त्री० (सं) १-गोपिका । २-गुजरात का एक नगर ।

वल्लरि स्त्री० (सं) दे० 'वल्लरी' ।

वल्लरी स्त्री०(सं) १-वल्लीलता । २-मंजरी । ३-मेथी ४-एक प्रकार का बाजा ।

वल्लवी स्त्री० (सं) गोपिका ।

वल्लाह अव्य० (अ) ईश्वर की शपथ है । सचमुच ।

वशंकर वि० (सं) जो वश में करता हो ।

वशंवद वि०(सं)१-वशीभूत । २-आज्ञाकारी ।

वश पुं० (सं) १-अधिकार । २-अधिकार की सीमा । ३-इच्छा । ४-जन्म । ५-वेश्यालय । वि० १-आज्ञाकारी । अधीन ।

वशकर वि० (सं) वशीभूत ।

वशगा स्त्री० (सं) वह स्त्री जो किसी के वशीभूत हो ।

वशवर्ती वि० (सं) अधीन । किसी के वश में रहने वाला ।

वशा स्त्री० (सं) १-बांझ स्त्री । २-पत्नी । ३-गाय ४-ननद । ५-हथिनी ।

वशानुग पुं०(सं) आज्ञाकारी । अधीन । वि० वशीभू

वशिता स्त्री० (सं) १-अधीनता । २-मोहने की क्रि या भाव ।

वशित्व पुं०(सं) दे० 'वशिता' ।

वशिष्ठ पुं० (सं) दे० 'वसिष्ठ' ।

वशी वि० (सं) १-वश में किया हुआ । २-अपने के वश में करने वाला ।

वशीकर वि० (सं) वश में करने वाला ।

वशीकरण पुं० (सं) १-वश में करना । २-तंत्र मंत्र द्वारा किसी को वश में करना ।

वशीकृत वि०(सं) १-किसी प्रकार वश में किया हुआ २-मुग्ध । मोहित ।

वशीभूत वि० (सं) १-अधीन । २-दूसरे के वश में आया हुआ ।

वश्य वि० (सं) वश में आने वाला या रहने वाला । पुं० १-सेवक । दास । २-मातहत ।

वश्यका स्त्री० (सं) वश में रहने तथा आज्ञा में रहने वाली स्त्री ।

वश्यता स्त्री०(सं) वश में होने की अवस्था । अधीनता

वसंत पुं० (सं) १-चैत और बैशाख के महीने में होने वाली छः ऋतुओं में एक ऋतु । बहार का मौसम । २-एक राग ।

वसंतकाल पुं० (सं) वसंतऋतु ।

वसंतघोष पुं० (सं) कोयल । कोकिल ।

वसंतघोषी पुं०(सं) दे० 'वसंतघोष' ।

वसंततिलक पुं०(सं) दे० 'वसंततिलका' ।

वसंततिलका स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त ।

वसंतपञ्चमी स्त्री० (सं) माघ के महीने की शुक्ल पञ्चमी ।

वसंतबंधु पुं० (सं) कामदेव ।

वसंतमहोत्सव पुं० (सं) होलिकोत्सव ।

वसंतयात्रा स्त्री० (सं) वसन्तोत्सव ।

वसंतव्रण पुं० (सं) मसूरिका ।

वसंतसख पुं० (सं) कामदेव ।

वसंती वि०(सं) हलके पीले रङ्ग का । पुं० (हिं) सरसों के फूल जैसा हलका पीला रंग ।

वसंतोत्सव पुं०(सं) होली के अगले दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव । होलिकोत्सव ।

वसअत वि० (अ) १-विस्तार । २-समाई । ३-चौड़ाई ४-शक्ति । सामर्थ्य ।

वसति स्त्री० (सं) दे० 'वसती' ।

बसती स्त्री० (सं) १-वास। रहना। २-रात। ३-घर
बसन पुं० (सं) १-वस्त्र। कपड़ा। २-निवास। ३-आवरण। ४-स्त्रियों की कमर का आभूषण।
बसवास पुं० (फा) १-शंका। भ्रम। संदेह। २-प्रलोभन।
बसवासी वि० (फा) १-विश्वास न करने वाला। २-भुलावे में डालने वाला।
बसह पुं० (हि) बैल। वृषभ।
बसा स्त्री० (सं) १-मेद। २-चरबी।
बसित वि० (सं) १-पहना हुआ। धारण किया हुआ २-बसा हुआ। ३-जमा किया हुआ (अन्न)।
बसितव्य वि० (सं) पहनने योग्य।
बसिष्ठ पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित थे। २-सप्तर्षिमंडल का तारा।
बसी पुं० (फा) वह व्यक्ति जिसके नाम वसीयत की गई हो।
बसीका पुं० (फा) सरकारी खजाने में जमा किये हुए धन का वह सूद जो जमा करने वाले के वंशजों को मिलता है।
बसीकादार पुं० (फा) जिसने वसीका लिया हो।
बसीयत स्त्री०(फा) मरने से पहले अपनी सम्पत्ति आदि के बारे में किसी को देने के सम्बन्ध में लिखित या मौखिक इच्छा प्रकट करना।
बसीयतनामा पुं० (फा) वह लेख जिसमें वसीयत की शर्तें लिखी हों।
बसीला पुं० (फा) १-सम्बन्ध। २-आश्रय। ३-किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग।
बसुंधरा स्त्री०(सं) १-पृथ्वी। २-बासवदत्त की कन्या।
बसु पुं० (सं) १-वैदिक देवताओं का एक गण। २-आठ की संख्या। ३-जल। ४-स्वर्ण। ५-सूर्य। ६-कुबेर। ७-रश्मि। ८-शिव।
बसुदेव पुं० (सं) श्रीकृष्ण के पिता का नाम।
बसुधा स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-लक्ष्मी।
बसुमती स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-राज्य। देश।
बसुश्रेष्ठ पुं० (सं) १-चांदी। २-श्रीकृष्ण।
बसूल वि० (फा) १-मिला या लिया हुआ। प्राप्त। २-उगाहा हुआ।
बसूली स्त्री० (फा) उगाही। दूसरे से अपना धन प्राप्त करने की क्रिया। (रिकवरी)।
बस्तव्य वि० (सं) ठहरने योग्य।
बस्ति स्त्री० (सं) १-नाभि के नीचे का स्थान। पेडू। २-मूत्राशय। ३-पिचकारी। (एनीमा)।
बस्तिकर्म पुं० (सं) गुदेन्द्रिय आदि मार्गों में पिचकारी लगाना।
बस्तिकोश पुं० (सं) मूत्राशय।
बस्ती वि० (फा) मध्य का। बीच का।

बस्तु स्त्री० (सं) १-वास्तविक या कल्पित सत्ता। चीज २-वे साधन या सामग्री जिनसे कोई चीज बनी हो ३-किसी नाटक या काव्य का कथानक। ४-सत्य। ५-इतिवृत्त।
बस्तुजगत पुं० (सं) दिखाई देने वाला सारा जगत।
बस्तुज्ञान पुं० (सं) १-किसी वस्तु की पहचान। २-तत्त्वज्ञान।
बस्तुतः अव्य० (सं) १-वास्तव में। २-सचमुच। (एक्चुअली)।
बस्तुनिर्देश पुं० (सं) नाटक के मंगलाचरण का एक भेद जिसमें उसकी कथा की एक झलक दिखाई जाती है।
बस्तुप्रेषणादेश पुं० (सं) बाहर से माल भेजने के लिए आया हुआ लिखित पत्र। (इन्डेन्ट)।
बस्तुवाद पुं० (सं) वह दार्शनिक वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार जैसा दृश्य है उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है।
बस्तुविनिमय पुं० (सं) वस्तुओं की अदला-बदली।
बस्तुस्थिति स्त्री० (सं) वास्तविक स्थिति या परिस्थिति
बस्तूत्प्रेक्षा स्त्री० (सं) साहित्य में उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद।
बस्तूपमा स्त्री० (सं) उपमा-अलंकार का एक भेद।
बस्त्र पुं० (सं) कपड़ा।
बस्त्रगृह पुं० (सं) कपड़े का बना घर। खेमा।
बस्त्रग्रंथि स्त्री० (सं) १-नाभि के पास लगने वाली धोती की गांठ। २-नाड़ा। इजारबन्द।
बस्त्रदशा स्त्री० (सं) कपड़े या धोती का किनारा।
बस्त्रधारणी स्त्री० (सं) अलगनी।
बस्त्रपुत्रिका स्त्री० (सं) गुड़िया। पुतली।
बस्त्रपूत वि० (सं) कपड़े से छानकर शुद्ध किया हुआ
बस्त्रबंध पुं० (सं) नाड़ा। इजारबन्द। नीवी।
बस्त्रभवन पुं० (सं) कपड़े का बना हुआ घर। डेरा तम्बू। खेमा।
बस्त्रभेदक पुं० (सं) दे० 'वस्त्रभेदी'।
बस्त्रभेदी पुं० (सं) दर्जी।
बस्त्रविलास पुं० (सं) अच्छी वेशभूषा पहनने का शौकीन।
बस्त्रवेश्म पुं० (सं) डेरा। खेमा। तम्बू।
बस्त्रांचल पुं० (सं) कपड़े का छोर या किनारा।
बस्त्रांत पुं० (सं) दे० 'वस्त्रांचल'।
बस्त्रागार पुं० (सं) कपड़े की दुकान।
बस्ल पुं० (फा) मिलन। मिलाप।
बह सर्व० (हि) एक शब्द जिसके द्वारा वक्ता तथा श्रोता के अतिरिक्त तीसरे मनुष्य का सङ्केत किया जाता है। २-दूर के पदार्थों का सङ्केत करने वाला या परोक्ष वस्तुओं का सूचक शब्द। वि० (हि) बोझा उठाकर ले जाने वाला। वाहक। (यौगिक के अन्त में)

वहन पुं० (सं)१-ढोकर या खींचकर लेजाना। २-ऊपर उठाना। ३-कन्धे या सिर पर लेना। ४-खम्भे के नौ भागों में से सबसे नीचे का भाग। ५-विद्युत प्रसारण का द्रव्य पदार्थों आदि में से संचरण। (कनवेक्शन)।
वहनपत्र पुं० (सं) वह पत्र जो जहाज का प्रधान अधिकारी जहाज पर लदे हुए माल को प्रेषती तक माल पहुँचाने के प्रमाण रूप में माल भेजने वाले को देता है। (बिल ऑफ लेडिंग)।
वहनीय वि० (सं) उठा या खींच कर लेजाने योग्य। २-ऊपर उठाने योग्य।
वहम पुं० (अ) १-मन में होने वाली मिथ्या धारणा २-भ्रम। ३-झूठा सन्देह।
वहमी वि० (अ) १-वहम करने वाला। २-वृथा सन्देह द्वारा उत्पन्न।
वहशत स्त्री० (अ) १-असभ्यता। २-जङ्गलीपन। उजड्डता। २-पागलपन। ४-अधीरता।
वहशियाना वि० (अ) जङ्गली आदमी के अनुरूप। असभ्य।
वहशी वि० (अ) जङ्गली। असभ्य।
वहाँ अव्य० (हिं) उस जगह। उस स्थान पर।
वहिःशुल्क पुं० (सं) वह शुल्क जो देश की सीमा पर बाहर से आने या बाहर जाने वाले माल पर लगाया जाता है। (कस्टम ड्यूटी)।
वहित्र पुं० (सं) १-नाव। २-पोत। जहाज।
वहिरंग पुं० (सं) १-शरीर का बाहरी या ऊपरी भाग वह व्यक्ति जो अपने दल का न हो।
वहिर्गत वि० (सं) दे० 'बहिर्गत'।
वहिर्देश पुं० (सं) १-बाहर का स्थान। २-अज्ञात स्थान। ३-विदेश। ४-द्वार।
वहिर्द्वार पुं० (सं) दे० 'बहिर्द्वार'।
वहिर्मुख पुं० (सं) दे० 'बहिर्मुख'।
वहिर्लापिका स्त्री० (सं) दे० 'बहिर्लापिका'।
वहिर्विकार पुं० (सं) दे० 'बहिर्विकार'।
वहिष्कार पुं० (सं) दे० 'बहिष्कार'।
वहिष्कृत वि० (सं) दे० 'बहिष्कृत'।
वहीं अव्य० (हिं) उसी जगह।
वही सर्व० (हिं) जिनका उल्लेख हुआ हो। वह ही। पूर्वोक्त ही।
वहे सर्व० (हिं) वही।
वह्नि पुं० (सं) १-अग्नि। २-भूख। हाजमा। ३-जठराग्नि।
वह्निकुंड पुं० (सं) अग्निकुण्ड।
वह्निजाया स्त्री० (सं) स्वाहादेवी।
वह्निमित्र पुं० (सं) वायु। हवा।
वह्निमुख पुं० (सं) देवता।
वह्निशिखा स्त्री० (सं) १-कलियारी नामक विष। २-आग की लपट।
वांछनीय वि० (सं) १-चाहने योग्य। २-दुष्ट। ३-जिसका होना अनुचित न हो।
वांछा स्त्री० (सं) इच्छा। अभिलाषा।
वांछित वि० (सं) चाहा हुआ। अभिलाषित।
वांछितव्य वि० (सं) इच्छा करने योग्य। चाहने योग्य
वांछ्य वि० (सं) दे० 'वांछितव्य'।
वा अव्य० (सं) या। अथवा। सर्व० (हिं) वृजभाषा में वह का विकृत रूप।
वाइ सर्व० (हिं) उसको।
वाइदा पुं० (अ) दे० 'वायदा'।
वाक पुं० (सं) १-बगलों का समूह। २-वाक्य। स्त्री० (सं) १-वाणी। २-सरस्वती।
वाकई अव्य० (अ) वस्तुतः। सचमुच।
वाक़िआ पुं० (अ) १-घटना। २-वृतान्त। समाचार
वाक़िआनवीस पुं० (अ) समाचार या खबरें भेजने वाला।
वाक़िआनिगार पुं० (अ) दे० 'वाकिआनवीस'।
वाक़िआती वि० (अ) घटनास्थल से प्राप्त।
वाक़िआती-शहादत स्त्री० (अ) घटनास्थल से मिलने वाली शहादत।
वाक़िफ वि० (अ) १-जानकार। २-अनुभवी।
वाक़िफकारी स्त्री० (अ) जानकारी। परिचय।
वाक़िफीयत स्त्री० (अ) परिचय। जानकारी। ज्ञान।
वाके वि० (अ) १-होने वाला। असली। २-सामने आने वाला।
वाकोवाक्य पुं० (सं) १-बातचीत। २-आपसी तर्क-विद्या।
वाक् पुं० (सं) १-वाणी। २-सरस्वती। ३-बोलने की इन्द्रिय।
वाक्-कलह पुं० (सं) कहासुनी। झगड़ा।
वाक्-केलि स्त्री० (सं) हँसी-मजाक। ठिठोली।
वाक्चपल वि० (सं) १-बहुत बातें बनाने वाला। २-भड़भड़िया।
वाक्छल पुं० (सं) शब्दों का कुछ का कुछ अर्थ लगा धोखा देना।
वाक्पटु वि० (सं) बात करने में चतुर।
वाक्पति पुं० (सं) १-निर्दोष बात। २-विष्णु। ३-बृहस्पति।
वाक्पाटव पुं० (सं) भाषण देने में प्रवीणता।
वाक्पारुष्य पुं० (सं) १-वचन की कठोरता। २-मुँहजोरी।
वाक्प्रतोद पुं० (सं) ताना।
वाक्य पुं० (सं) व्याकरण के अनुसार क्रम से लगा हुआ सार्थक शब्द समूह जिसके द्वारा किसी पर अपना अभिप्राय प्रकट किया जाता है।
वाक्यखंडन पुं० (सं) किसी तर्क का खंडन।

वाक्यपद्धति स्त्री० (सं) वाक्य रचना की विधि।
वाक्यरचना स्त्री० (स) नियमों के अनुसार वाक्य बनाना।
वाक्यविन्यास पुं० (सं) पदों का ठीक स्थान पर रखा जाना। (व्या०)।
वाक्यविशारद वि० (स) जो भाषण देने में दक्ष हो।
वाक्शलाका वि० (सं) चुभने वाली बात।
वाक्स्तंभ पुं० (स) बोल न निकलना, अवाक् रह जाना।
वागना क्रि०(हि) १-चलना। २-दे० 'बागना'।
वागीश पुं० (सं) १-बृहस्पति। २-ब्रह्मा। ३-कवि। वि० अच्छा बोलने वाला।
वागीशा स्त्री० (सं) सरस्वती।
वागीश्वर पुं० (सं) दे० 'वागीश'।
वागीश्वरी स्त्री० (स) सरस्वती।
वागीसा स्त्री०(हि) दे० 'वागीशा'।
वागुरा स्त्री० (स) मृगों को फँसाने का जाल। फंदा।
वागुरिक पु० (सं) शिकारी। हिरन फँसाने वाला।
वाग् स्त्री० (स) वाक् का समासगत रूप।
वाग्जाल पुं० (सं) बातों का ऐसा आडंबर जिसमें अर्थ या तथ्य बहुत कम हो।
वाग्दंड पुं० (सं) डाँट। फटकार। बुराभला कहना।
वाग्दत्त वि० (सं) जिसे दूसरे को देने का वचन दिया जा चुका हो।
वाग्दत्ता स्त्री० (सं) वह कन्या जिसके विवाह की बात पक्की हो चुकी हो।
वाग्दान पुं० (स) १-कुछ देने या करने का वचन। (प्रॉमिस)। २-कन्या के पिता का वरपक्ष वालों को विवाह का वचन देना।
वाग्देवता पुं० (स) वाणी। सरस्वती।
वाग्देवी स्त्री० (स) सरस्वती।
वाग्दोष पुं० (सं) १-बोलने की त्रुटि। २-व्याकरण विषयक त्रुटि। निंदा या गाली।
वाग्मिता स्त्री० (सं) भाषण करने में दक्षता। पांडित्य।
वाग्मित्व पुं० (सं)-दे० 'वाग्मिता'।
वाग्मी पुं०(स) १-अच्छा वक्ता। २-पंडित। विद्वान। ३-बृहस्पति। ४-एक पुरुवंशी राजा।
वाग्युद्ध पु० (सं) कहासुनी। झगड़ा।
वाग्विदग्ध वि० (सं) बोलचाल में प्रवीण।
वाग्विभव पु० (सं) भाषा का विशेष ज्ञान।
वाग्विरोध पुं० (सं) कहासुनी। झगड़ा।
वाग्विलास पुं० (स) परस्पर प्रेम और सुख से बातें करना।
वाग्वीर पुं०(सं) वह व्यक्ति जो बोलने में बहुत चतुर हो।
वाग्वैदग्ध्य पुं० (स) १-बात करने में निपुणता। २-सुन्दर अलंकार तथा चमत्कारपूर्ण उक्तियों की निपुणता।
वाङ्मय वि० (स) १-वचन सम्बन्धी। २-वचन द्वारा किया हुआ। जो पठन-पाठन का विषय हो। पुं० साहित्य।
वाङ्मुख पुं० (सं) उपन्यास।
वाचक वि० (सं) बताने वाला। द्योतक। सूचक। बोधक। पुं० १-नाम। संज्ञा। २-किसी बड़े अधिकारी को कागज आदि पढ़कर सुनाने वाला। पेशकार। (रीडर)।
वाचकधर्मलुप्ता स्त्री० (सं) वह उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो।
वाचकपद पुं० (स) सार्थक शब्द।
वाचकलुप्ता स्त्री०(स) वह उपमालंकार जिसमें उपमा-वाचक शब्द का लोप हो।
वाचकोपमानधर्मलुप्ता स्त्री० (स) वह उपमा जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हों, केवल उपमेय भर ही हो।
वाचकोपमानलुप्ता स्त्री० (स) वह उपमा अलंकार जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है।
वाचकोपमेयलुप्ता स्त्री० (स) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है।
वाचन पु० (स) १-पढ़ने का काम। पठन। २-विधायिका सभा में किसी विधेयक (बिल) का तीन बार पढ़ा जाना। आवृत्ति (रीडिंग)। ३-कहना बताना। ४-प्रतिपादन।
वाचनालय पु० (स) वह स्थान जहाँ लोगों के पढ़ने के लिए समाचार पत्र, पुस्तकें आदि रहती हैं। (रीडिंग रूम)।
वाचस्पति पुं० (स) १-बृहस्पति। २-वाणी। वचन। बहुत बड़ा विद्वान।
वाचा स्त्री० (स) १-वाणी। २-वचन। शब्द।
वाचाट वि० (स) १-वाचाल। २-बकवादी।
वाचाबंध वि० (स) प्रतिज्ञा या वचन से बँधा हुआ।
वाचाबंधन पु० (सं) प्रतिज्ञाबद्ध होना।
वाचाल वि० (स) १-बोलने में तेज। २-व्यर्थ बकने वाला।
वाचालता स्त्री० (सं) १-बहुभाषिता। बहुत बोलना। २-बातचीत में निपुणता।
वाचाविरुद्ध वि० (स) जो कहने के योग्य न हो।
वाचिक वि० (स) १-वाणी-सम्बन्धी। २-वाणी से किया हुआ। ३-संकेत में कहा हुआ। पुं० (सं) अभिनय का वह भेद जिसमें केवल बातचीत तथा उसके ढंग से ही अभिनय का तात्पर्य समझा जा सकता है।
वाची वि० (स) प्रकट करने वाला। सूचक
वाच्य वि० (सं) १-कहने योग्य। २-शब्द जिसका बोध हो। ३-जिसे लोग मना

पुं० प्रतिपादन।
वाच्यार्थ पुं० (सं) वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो।
वाच्यावाच्य पुं० (सं) कहने या न कहने योग्य बात
वाजपेयी पुं० (सं) १-कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि। २-अत्यंत कुलीन व्यक्ति। ३-वह व्यक्ति जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो।
वाजिब वि० (अ) उचित। मुनासिब।
वाजिबी वि० (अ) उचित। ठीक। आवश्यक।
वाजी पुं० (सं) १-घोड़ा। २-फटे हुए दूध का पानी ३-हवि।
वाजीकरण पुं० (सं) वह प्रयोग जिससे मनुष्य का वीर्य बढ़ता है।
वाट पुं० (सं) १-मार्ग। रास्ता। २-वस्तु। ३-मंडप
वाटिका स्त्री० (सं) १-बाग। २-बगीचा। ३-इमारत
वाडव पुं० (सं) दे० 'बाडव'।
वाडव वि० (सं) घोड़ी से संबंधित। पुं० १-समुद्र के अन्दर की अग्नि। २-घोड़ों का समूह।
वाडवाग्नि स्त्री० (स) वह कल्पित अग्नि जो समुद्र में जलती हुई मानी गई हो।
वाडवानल पुं० (सं) दे० 'वाडवाग्नि'।
वाण पुं० (सं) दे० 'बाण'।
वाणिज्य पुं० (सं) १-व्यापार। रोजगार। २-बड़े पैमाने पर चलाया गया कोई व्यापार जिसमें बैलों का व्यापार, सीमित समवायों के हिस्सों की बिक्री आदि का काम होता हो। (कॉमर्स)।
वाणिज्यदूत पुं० (सं) किसी राज्य का वह दूत जो दूसरे देश में व्यापारिक सम्बन्ध सुरक्षित रखने तथा बढ़ाने के लिए रखा जाता है। (काउन्सल)।
वाणिज्यालय पुं०(सं) व्यापार या वाणिज्य का मुख्य स्थान। दुकान। बाजार। (एम्पोरियम)।
वाणी स्त्री० (सं) १-सरस्वती। २-वचन। मुख से निकले हुए सार्थक शब्द। वाक् शक्ति। ३-जीभ।
वात पुं० (सं) १-वायु। हवा। २-वैद्यक के अनुसार शरीर की वह वायु जिसके विकार से रोग उत्पन्न होते हैं।
वातचक्र पुं० (सं) १-ज्योतिष में एक योग। २-बवंडर। चक्रवात।
वातज वि० (सं) वायु द्वारा उत्पन्न।
वातज्वर पुं० (सं) एक प्रकार का ज्वर।
वातप्रकोप पुं० (सं) वात या वायु का शरीर में बढ़ जाना।
वातव्याधि स्त्री० (सं) गठिया रोग।
वातसख पुं० (सं) अग्नि। आग।
वातात्मज पुं० (सं) हनुमान।
वातापि पुं० (सं) एक असुर का नाम।
वातापिद्विट पुं० (सं) अगस्त्य।
वातापिसूदन पुं० (सं) अगस्त्य।
वातापिहा पुं० (सं) अगस्त्य।
वातायन पुं० (सं) १-झरोखा। खिड़की। २-घोड़ा ३-एक प्राचीन जनपद।
वातारि पुं० (सं) १-एरंड। २-शतमूली। ३-अज वायन। ४-जिमींकन्द। ५-सतावर। ६-नील का पौधा।
वातावरण पुं० (सं) १-वह हवा जिसने पृथ्वी को चारों ओर से घेरा हुआ है। २-आस-पास की परिस्थिति जिसका जीवन या अन्य बातों पर प्रभाव पड़ता हो। (एटमॉसफियर)।
वातावर्त पुं० (सं) बवंडर। चक्रवात।
वाताश पुं० (सं) सर्प। सांप।
वाताशी पुं० (सं) सर्प। सांप।
वातास स्त्री० (हि) हवा। वायु। बयार।
वातुल वि० (सं) १-वायु-प्रधान। २-जिसकी बुद्धि वायु-प्रकोप के कारण ठिकाने न हो। पुं० पागल आदमी।
वात्या स्त्री० (सं) चक्रवात। बवंडर।
वात्याचक्र पुं० (सं) बवंडर।
वात्सरिक वि०(सं) वार्षिक। सालाना। पुं० ज्योतिषी
वात्सल्य पुं० (सं) १-प्रेम। स्नेह। २-वह स्नेह जो माता पिता का सन्तान पर होता है।
वात्सल्यरस पुं० (सं) स्नेह का एक भाव जिसे दसवां रस माना जाता है।
वाद पुं० (सं) १-किसी तथ्य या तत्व के निर्णय के लिए होने वाला तर्क। शास्त्रार्थ। २-तत्वज्ञों द्वारा निश्चित कोई मत या सिद्धांत। (इज्म)। ३-बहस विवाद। ४-न्यायालय में उपस्थित किया हुआ अभियोग। मुकदमा। (सूट)।
वादक पुं० (सं) १-बाजा बजाने वाला। २-वक्ता। ३-तर्क-शास्त्र करने वाला।
वादक-दल पुं० (सं) दे० 'वाद्यवृंद'।
वादक-वृंद पुं० (सं) दे० 'वाद्यवृंद'।
वादग्रस्त वि० (सं) जिसके बारे में विवाद या मत-भेद हो। (डिसप्युटेड)।
वादन पुं० (सं) १-बाजा बजाना। २-बाजा।
वादपत्र पुं० (सं) न्यायालय में किसी के विरुद्ध होने वाली फरियाद या प्रार्थना। अभियोग। नालिश। (प्लेंट)।
वादपद पुं० (सं) न्यायालय में रखे गये विवाद या मुकदमें में वह विषय जो झगड़े के मूल कारण हो (इश्यू)।
वादप्रतिवाद पुं० (सं) १-उत्तर का उत्तर। उत्तर-प्रत्युत्तर। २-बहस। (डिसकशन)। ३-शास्त्रार्थ।
वाद-मूल पुं० (सं) वह मूल झगड़े का कारण जिसके लिए न्यायालय में मुकदमा चलाया गया हो। (कॉज

आफ दरान)।

वादयुद्ध पुं० (सं) १-झगड़ा। २-शास्त्रीय झगड़ा।

वादविवाद पुं० (सं) १-तर्क-वितर्क। बहस। २-किसी पक्ष के खंडन या मंडन में होने वाली बातचीत। (कन्ट्रोवर्सी)।

वादविषय पुं० (सं) वह विषय जिस पर विवाद किया जाय। विवारणीय विषय (मैटर आफ डिसकशन, मटर्सीवट मैटर)।

वादव्यय पुं० (सं) मुकदमे का वह खर्चा या व्यय जो मुकदमा जीतने वाले को न्यायालय द्वारा दिया जाय (कास्ट्स)।

वादसमाप्ति स्त्री०(सं) न्यायालय में उपस्थित किये गये मुकदमे का खारिज कर दिया जाना। (अबेटमेंट आफ सूट)।

वादहेतु पुं० (सं) दे० 'वादमूल'।

वादा पुं० (अ) १-वचन। इकरार। २-नियत समय या घड़ी। (अन्डरटेकिंग प्रोमिस)।

वादाखिलाफ वि०(अ) जो अपना वचन पूरा न करे।

वादाखिलाफी स्त्री०(अ) वचन देकर उसे न निभाना।

वादाशिकन वि०(अ) वचन को तोड़ने वाला।

वादानुवाद पुं० (सं) दे० 'वाद-विवाद'।

वादित्र पुं० (सं) बाजा। वाद्य।

वादित्र-लगुड पुं०(सं)नगाड़ा या ढोल आदि बजाने की लकड़ी।

वादी पुं०(सं) १-वक्ता। बोलने वाला। २-न्यायालय में कोई वाद या मुकदमा प्रस्तुत करने वाला। फरियादी। मुद्दई। (प्लैन्टिफ)। ३-विचार के लिए कोई तर्क उपस्थित करने वाला।

वाद्य पुं० (सं) १-बाजा। २-बजाना। ३-वह यन्त्र जिसके द्वारा संगीत के स्वर निकलते हों।

वाद्यमान वि० (सं) जिसे बजने या बोलने में प्रवृत्त किया जाय। पुं० वाद्य-संगीत।

वाद्यवृंद पुं० (सं) कई प्रकार के बाजों का एक साथ सुर में बजना। (आरकेस्ट्रा)।

वाद्यसंगीत पुं०(सं) वाद्य यन्त्रों को बजाने से उत्पन्न मधुर ध्वनि। (इन्स्ट्रुमेन्टल म्युजिक)।

वाद्यस्थान पुं० (सं) वह स्थान जहां वाद्यवृन्द बजाने वाले बैठते हैं। (नाट्यशाला आदि में)।

वानप्रस्थ पुं० (सं) प्राचीन भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से तीसरा जिसमें पचास वर्ष का हो जाने पर वन में रहने का विधान है।

वानप्रस्थ्य पुं०(सं) वानप्रस्थ की अवस्था या भाव।

वानर पुं० (सं) १-बन्दर। २-दोहे का एक भेद।

वानरकेतन पुं० (सं) अर्जुन।

वानरकेतु पुं० (सं) अर्जुन।

वानरध्वज पुं० (सं) अर्जुन।

वानरी स्त्री० (सं) १-बन्दर की मादा। २-केवाँच। ३-बन्दरों की सेना।

वानरेन्द्र पुं० (सं) सुग्रीव।

वानस्पतिक खाद स्त्री०(हि) गोबर, पौधों, घास आदि के मिश्रण से बनाई गई उपज बढ़ाने वाली खाद (कम्पोस्ट)।

वानस्पत्य वि० (सं) वनस्पति-सम्बन्धी। पुं० वनस्पतियों के तत्वों, वृद्धि तथा पोषण आदि से सम्बन्ध रखने वाला शास्त्र। (बाटनीकल्चर)।

वाना पुं० (सं) बटेर नामक पक्षी।

वानिक वि० (सं) वन में रहने वाला।

वानी पुं० (सं) १-दैत्य। २-सरकंडा।

वानीरक पुं० (सं) मूंज। दाभ।

वानीरगृह पुं० (सं) सरकंडे या बेंत का बना मंडप।

वापस वि० (फा) १-लौटकर अपने स्थान पर आया हुआ। २-मालिक को फेरा या लौटाया गया।

वापसी वि०(फा) फेरा या लौटाया हुआ। स्त्री० लौटने या लौटाने की क्रिया या भाव।

वापसीकिराया पुं० (हि) वापसी आने और जाने दोनों तरफ का किराया।

वापसीटिकट पुं० (हि) वह टिकट जो ... जाते समय तथा लौटते समय काम ...

वापसीमुलाकात स्त्री० (... किसी ... के बदले में की जाने वाली भेंट।

वापसीयात्रा स्त्री० (हि ... यात्रा के निर्दिष्ट स्थान से लौटने की यात्रा।

वापसीसफर स्त्री० (फा) दे० 'वापसीयात्रा'।

वापि स्त्री० (सं) ... ।

वापिका स्त्री० (सं) १-... तालाब। २-बावली।

वापी स्त्री० (सं) बावली। ...

वाम वि०(सं) १-बायां। उलटा। दाहिना। २-प्रति० कूल। ३-बुरा ... ।

वामक पुं० (सं) ... का भेद। वि० १-विरुद्ध। २-वमन करने वाला।

वामकरूरी स्त्री० (सं) दे० 'वामनयना'।

वामदेवी स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-सावित्री।

वामन वि० (सं) १-... डीलडौल का। बौना। २-नाटा। ... पुं० (सं) १-विष्णु का एक अवतार। २-विष्णु। ३-शिव।

वामनक वि० (सं) बौना। पुं० (सं) १-नाटे कद का आदमी। २-एक पर्वत। ३-नारायण।

वामनयना स्त्री० (सं) सुन्दर नेत्रों वाली ...

वामपक्षी पुं० (सं) दे० 'वामदली'।

वामदली पुं० (सं) उग्र विचार वाला ... (राजनीति में)। (लेफ्टिस्ट)।

वामभ्रू स्त्री० (सं) १-बाईं ... स्त्री।

वाममार्ग पुं० (सं) ...

आदि के सेवन का विधान है।
वाममोष पुं० (सं) बहुमूल्य आभूषणों तथा अन्य वस्तुओं की चोरी।
वामरथ पुं० (सं) एक गोत्राकार ऋषि।
वामशील वि० (सं) दुष्ट या बुरे स्वभाव का।
वामस्वभाव वि० (सं) अच्छे स्वभाव वाला।
वामहस्तिक वि० (सं) दे० 'बयँहत्था'। (लेफ्टहैंडर)।
वामांगिनी स्त्री० (सं) भार्या। पत्नी।
वामांगी स्त्री० (सं) पत्नी।
वामा स्त्री० (सं) १-शृगाली। गीदड़ी। २-घोड़ी। ३-गधी।
वामाक्षी स्त्री० (सं) दे० 'वामनयना'।
वामागम पुं० (सं) तांत्रिक मत का एक भेद।
वामाचार पुं० (सं) दे० 'वामागम'।
वामाचारी पुं० (सं) १-वाममार्गी। २-तांत्रिक मत को मानने वाला।
वामावर्त वि० (सं) बाँई ओर घूमा हुआ। २-बाँई ओर से आरम्भ होने वाला।
वामी स्त्री० (सं) १-शृगाली। गीदड़ी। २-घोड़ी। गधी वि० (सं) वामाचारी।
वामेक्षणा स्त्री० (सं) दे० 'वामनयना'।
वामोरु स्त्री० (सं) सुन्दर जङ्घा वाली स्त्री।
वामोरू स्त्री० (सं) दे० 'वामोरु'।
वाय पुं० (सं) १-बुनना। २-साधन। स्त्री० (हि) वायु। सर्व० (हि) उसको।
वायक पुं० (सं) १-बुनने वाला। २-जुलाहा।
वायदंड पुं० (सं) जुलाहों की ढरकी।
वायन पुं० (सं) देव पूजा या विवाह आदि के लिये बनने वाला पकवान।
वायरज्जु पुं० (सं) जुलाहों की करघे की बै।
वायव वि० (सं) १-पश्चिमोत्तर। २-वायु सम्बन्धी।
वायवी स्त्री० (सं) उत्तर-पश्चिम का कोण।
वायवीय वि० (सं) वायु-सम्बन्धी।
वायव्य स्त्री० (सं) पश्चिमोत्तर दिशा।
वायस पुं० (सं) १-कौवा। २-अगर का पेड़।
वायसराति पुं० (सं) उल्लू।
वायसारी पुं० (सं) उल्लू।
वायसी स्त्री० (सं) १-काकमाची। २-सफेद घुंघची। ३-कौवे की मादा।
वायु स्त्री० (सं) वात। हवा। (एअर)।
वायुग्रस्त वि० (सं) गठिया या उन्माद रोग से पीड़ित
वायुघट पुं० (सं) शीशे का बना वह बेलनाकार पात्र जिसमें वायव्य द्रव भरकर प्रयोग किये जाते हैं। (गैस जार)।
वायुतनय पुं० (सं) हनुमान।
वायुदंच पुं० (सं) वह पिचकारी जिससे हवा भरी जाती है। (ऐयर पम्प)।

वायुनन्दन पुं० (सं) हनुमान।
वायुपुत्र पुं० (सं) हनुमान। भीम।
वायुपंचक पुं० (सं) शरीर में स्थित पांच वायुओं का समूह।
वायुपथ पुं० (सं) आकाश में हवाई जहाजों के रास्ते (एयरवेज)।
वायुभक्ष वि० (सं) केवल वायु पीकर ही जीवित रहने वाला।
वायुभक्षक पुं० (सं) वह व्यक्ति या जन्तु जो केवल वायु पीकर ही रहे।
वायुभक्ष्य पुं० (सं) सर्प। सांप।
वायुभारमापक यंत्र पुं० (सं) वायुमण्डल में वायु का दबाव मालूम करने का यन्त्र जिससे मौसम के बारे में भविष्यवाणी की जाती है। (बेरोमीटर)।
वायुभुक वि० (सं) दे० 'वायुभक्ष'।
वायुभोजन वि० (सं) दे० 'वायुभक्ष'।
वायुमंडल पुं० (सं) १-आकाश। २-दे० 'वातावरण'।
वायुमार्ग पुं० (सं) दे० 'वायुपथ'।
वायुयान पुं० (सं) हवा में उड़ने वाला यान। हवाई जहाज। (एयरोप्लेन)।
वायुलोक पुं० (सं) १-पुराणोक्त एक लोक का नाम। २-आकाश।
वायुवर्त्म पुं० (सं) आकाश। आसमान।
वायुवाह पुं० (सं) १-धूआ। धूम। २-भाप।
वायुसंभव पुं० (सं) हनुमान।
वारंट पुं० (अं) वह आज्ञा पत्र जिसके द्वारा किसी सरकारी कर्मचारी को कोई विशेष अधिकार दिया जाय।
वारंटगिरफ्तारी पुं० (हि) न्यायालय का वह आज्ञा पत्र जिसके द्वारा किसी सरकारी अधिकारी को किसी अपराधी आदि को पकड़ कर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करने का अधिकार देता है।
वारंट-तलाशी पुं० (हि) किसी सरकारी कर्मचारी को किसी व्यक्ति के मकान आदि की तलाशी लेने का अधिकार-पत्र।
वारंटरिहाई पुं० (हि) अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी हवालात में बंद या गिरफ्तार व्यक्ति को छोड़ने की आज्ञा हो।
वारंवार अव्य० (हि) दे० 'बारंबार'।
वार पुं० (सं) द्वार। दरवाजा। २-अवरोध। ३-आवरण। ४-क्षण। ५-सप्ताह का दिन। ६-बार। ७-दफा। बारी। ८-अवसर। ९-शिव। पुं० १-चोट। आघात। २-आक्रमण। हमला। ३-नदी का वरला किनारा।
वारक पुं० (सं) १-वारण या निषेध करने वाला। २-रोकने वाला।
वारकन्यका स्त्री० (सं) दे० 'वारकन्या'।

वारवन्धा स्त्री० (सं) वेश्या । रंडी ।
वारण पुं० (सं) १-निषेध । मनाही । २-रुकावट । बाधा । ३-कवच । ४-हाथी । ५-अंकुश ।
वारणशाला पुं०(सं) हाथीखाना ।
वारणीय वि०(सं) निषेध करने योग्य ।
वारतीय स्त्री० (हि) वेश्या ।
वारद पुं० (हि) बादल । मेघ ।
वारदात स्त्री० (प) १-भीषण या विकट दुर्घटना । २-दंगा-फसाद ।
वारन स्त्री०(हि) निछावर । बलि । पुं० दे० 'वन्दन-वार' ।
वारना क्रि० (हि) निछावर करना । पुं० उत्सर्ग । निछावर ।
वारनारी स्त्री० (सं) वेश्या ।
वारनिश स्त्री० (प) वह रोगन जिसे किसी वस्तु पर लगाने से चमक आये ।
वारपार पुं० (हि) दे० 'आरपार' । अव्य० (हि) इस किनारे से उस किनारे तक ।
वारमुखी स्त्री० (सं) वेश्या ।
वारयुवती स्त्री० (सं) वेश्या ।
वारयोषित् स्त्री० (सं) वेश्या ।
वारांगना स्त्री० (सं) वेश्या ।
वारा पुं० (हि) १-लाभ । फायदा । २-खर्च की बचत ३-इस ओर का किनारा । वार । वि० १-निछावर किया हुआ । २-सस्ता ।
वाराणसी स्त्री० (सं) काशी । बनारस ।
वाराणसेय वि०(सं) बनारस में उत्पन्न या बना हुआ ।
वाराह पुं० (सं) दे० 'वराह' ।
वाराही स्त्री० (सं) एक मातृका का नाम । २-शूकरी
वारि पुं० (सं) १-जल । पानी । तरल पदार्थ । स्त्री० १-वाणी । सरस्वती । २-हाथी बाधने की जंजीर । ३-छोटा कलसा । हाथीखाना ।
वारिचर पुं०(सं) १-जलजन्तु । २-मछली । ३-शंख ।
वारिचामर पुं० (सं) शैवाल । सेवार ।
वारिचारी वि० (सं) जल में रहने वाला । (जीव) ।
वारिज पुं०(सं) १-कमल । २-मछली । ३-शंख । ४-घोंघा । ५-कौड़ी । ६-उत्तम स्वर्ण ।
वारिजात वि०(सं) जल में उत्पन्न । पुं० (सं) दे० 'वारिज' ।
वारिजीवक वि० (सं) जल से अपनी जीविका या निर्वाह चलाने वाला ।
[illegible]

वारित्रा स्त्री० (सं) छाता ।
वारिद पुं० (सं) १-मेघ । बादल । २-नागरमोथा ।
वारिदात स्त्री० (हि) दे० 'वारदात' ।
वारिदुर्ग वि० (सं) जो जल के कारण दुर्गम हो ।
वारिधर पुं० (सं) मेघ । बादल ।
वारिधानी स्त्री० (सं) जलाधार ।
वारिधारा स्त्री० (सं) वर्षा । जल की धारा ।
वारिधि पुं० (सं) समुद्र ।
वारिनाथ पुं० (सं) १-वरुण । २-समुद्र । ३-मेघ । बादल ।
वारिनिधि पुं० (सं) समुद्र ।
वारिप वि०(सं) जल पीने या उसकी रक्षा करने वाला
वारिपथिक पुं० (सं) जलयात्रा करने वाला ।
वारिपर्णी स्त्री० (सं) १-काई । २-जलकुम्भी ।
वारिपूर्णी स्त्री०(सं) दे० 'वारिपर्णी' ।
वारिप्रवाह पुं० (सं) जलप्रपात । २-जलधारा ।
वारिपृश्नी स्त्री० (सं) दे० 'वारिपर्णी' ।
वारिबंधन पुं० (सं) बाँध बना कर जल को इकट्ठा करना ।
वारिबालक पुं० (सं) एक गंधद्रव्य ।
वारिभव पुं० (सं) रसांजन ।
वारिमुक पुं० (सं) मेघ । बादल ।
वारिमूली स्त्री० (सं) दे० 'वारिपर्णी' ।
वारियंत्र पुं० (सं) फव्वारा । जलयंत्र ।
वारियाँ स्त्री० (हि) निछावर । बलि ।
वारिरथ पुं० (सं) नाव ।
वारिराज पुं० (सं) वरुण ।
वारिराशि पुं० (सं) समुद्र ।
वारिरुह पुं० (सं) कमल ।
वारिवदन पुं० (सं) पानी-आमला ।
वारिवर पुं० (सं) करौंदा ।
वारिवर्त पुं० (सं) एक मेघ का नाम ।
वारिवल्लभा स्त्री० (सं) विदारी ।
वारिवह वि० (सं) पानी या जल ले जाने वाला ।
वारिवाह पुं० (सं) १-मेघ । २-मोथा ।
वारिवाहन पुं० (सं) मेघ । बादल ।
वारिवाही वि० (सं) पानी ढोने वाला ।
वारिविहार पुं० (सं) जलक्रीडा ।
वारिश पुं० (सं) विष्णु ।
वारिशय वि० (सं) जल में शयन करने वाला ।
वारिशास्त्र पुं० (सं) फलित ज्योतिष का एक ग्रंथ जिसमें वर्षा सम्बन्धी बातें लिखी हैं ।
वारिसम्भव पुं० (सं) लौंग ।
वारिस पुं० (श) १-उत्तराधिकारी । २-दावेदार ।
वारीश पुं० (सं) समुद्र ।
वारीफेरी स्त्री० (हि) किसी व्यक्ति के ऊपर से द्रव्य या कोई वस्तु घुमाकर इसलिए [illegible] जिस से सारी बाधायें दूर हो जायें ।

आदि के सेवन का विधान है।
वाममोष पुं० (सं) बहुमूल्य आभूषणों तथा अन्य वस्तुओं की चोरी।
वामरथ पुं० (सं) एक गोत्रकार ऋषि।
वामशील वि० (सं) दुष्ट या बुरे स्वभाव का।
वामस्वभाव वि० (सं) अच्छे स्वभाव वाला।
वामहस्तिक वि० (सं) दे० 'खब्बहत्था'। (लेफ्टहैंडर)।
वामांगिनी स्त्री० (सं) भार्या। पत्नी।
वामांगी स्त्री० (सं) पत्नी।
वामा स्त्री० (सं) १-शृगाली। गीदड़ी। २-घोड़ी। ३-गधी।
वामाक्षी स्त्री० (सं) दे० 'वामनयना'।
वामागम पुं० (सं) तांत्रिक मत का एक भेद।
वामाचार पुं० (सं) दे० 'वामागम'।
वामाचारी पुं० (सं) १-वाममार्गी। २-तांत्रिक मत को मानने वाला।
वामावर्त वि० (सं) बाँई ओर घूमा हुआ। २-बाँई ओर से आरम्भ होने वाला।
वामी स्त्री० (सं)१-शृगाली। गीदड़ी। २-घोड़ी। गधी वि० (सं) वामाचारी।
वामेक्षणा स्त्री० (सं) दे० 'वामनयना'।
वामोरु स्त्री० (सं) सुन्दर जङ्घा वाली स्त्री।
वामोरू स्त्री० (सं) दे० 'वामोरु'।
वाय पुं० (सं) १-बुनना। २-साधन। स्त्री० (हि) वायु। सर्व० (हि) उसको।
वायक पुं० (सं) १-बुनने वाला। २-जुलाहा।
वायदंड पुं० (सं) जुलाहों की ढरकी।
वायन पुं० (सं) देव पूजा या विवाह आदि के लिये बनने वाला पकवान।
वायरज्जु पुं० (सं) जुलाहों की करघे की बै।
वायव वि० (सं) १-पश्चिमोत्तर। २-वायु सम्बन्धी।
वायवी स्त्री० (सं) उत्तर-पश्चिम का कोण।
वायवीय वि० (सं) वायु-सम्बन्धी।
वायव्य स्त्री० (सं) पश्चिमोत्तर दिशा।
वायस पुं० (सं) १-कौवा। २-अगर का पेड़।
वायसराति पुं० (सं) उल्लू।
वायसारी पुं० (सं) उल्लू।
वायसी स्त्री० (सं) १-काकमाची। २-सफेद घुंघची। ३-कौवे की मादा।
वायु स्त्री० (सं) वात। हवा। (एअर)।
वायुग्रस्त वि० (सं) गठिया या उन्माद रोग से पीड़ित
वायुघट पुं० (सं) शीशे का बना वह बेलनाकार पात्र जिसमें वायव्य द्रव भरकर प्रयोग किये जाते हैं। (गैस जार)।
वायुतनय पुं० (सं) हनुमान।
वायुदंच पुं० (सं) वह पिचकारी जिससे हवा भरी जाती है। (ऐयर पम्प)।
वायुनन्दन पुं० (सं) हनुमान।
वायुपुत्र पुं० (सं) हनुमान। भीम।
वायुपंचक पुं० (सं) शरीर में स्थित पांच वायुओं का समूह।
वायुपथ पुं० (सं) आकाश में हवाई जहाजों के रास्ते (एयरवेज)।
वायुभक्ष वि० (सं) केवल वायु पीकर ही जीवित रहने वाला।
वायुभक्षक पुं० (सं) वह व्यक्ति या जन्तु जो केवल वायु पीकर ही रहे।
वायुभक्ष्य पुं० (सं) सर्प। सांप।
वायुभारमापक यंत्र पुं० (सं) वायुमण्डल में वायु का दबाव मालूम करने का यन्त्र जिससे मौसम के बारे में भविष्यवाणी की जाती है। (बेरोमीटर)।
वायुभुक वि० (सं) दे० 'वायुभक्ष'।
वायुभोजन वि० (सं) दे० 'वायुभक्ष'।
वायुमंडल पुं० (सं) १-आकाश। २-दे० 'वातावरण'
वायुमार्ग पुं० (सं) दे० 'वायुपथ'।
वायुयान पुं० (सं) हवा में उड़ने वाला यान। हवाई जहाज। (एयरोप्लेन)।
वायुलोक पुं० (सं) १-पुराणोक्त एक लोक का नाम। २-आकाश।
वायुवर्त्म पुं० (सं) आकाश। आसमान।
वायुवाह पुं० (सं) १-धूआ। धूम्र। २-भाप।
वायुसंभव पुं० (सं) हनुमान।
वारंट पुं० (अं) वह आज्ञा पत्र जिसके द्वारा किसी सरकारी कर्मचारी को कोई विशेष अधिकार दिया जाय।
वारंटगिरफ्तारी पुं० (हि) न्यायालय का वह आज्ञा-पत्र जिसके द्वारा किसी सरकारी अधिकारी को किसी अपराधी आदि को पकड़ कर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करने का अधिकार देता है।
वारंट-तलाशी पुं०(हि) किसी सरकारी कर्मचारी को किसी व्यक्ति के मकान आदि की तलाशी लेने का अधिकार-पत्र।
वारंटरिहाई पुं० (हि) अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी हवालात में बंद या गिरफ्तार व्यक्ति को छोड़ने की आज्ञा हो।
वारंवार अव्य० (हि) दे० 'बारंबार'।
वार पुं० (सं) द्वार। दरवाजा। २-अवरोध। ३-आवरण। ४-क्षण। ५-सप्ताह का दिन। ६-बाण ७-दफा। बारी। ८-अवसर। ९-शिव। पुं० १-चोट। आघात। २-आक्रमण। हमला। ३-नदी का बरला किनारा।
वारक पुं० (सं) १-वारण या निषेध करने वाला। २-रोकने वाला।
वारकन्यका स्त्री० (सं) दे० 'वारकन्या'।

बारवन्ता स्त्री० (सं) वेश्या। रंडी।

[illegible]

बारतीय स्त्री० (हि) वेश्या।
बारद पुं० (हि) बादल। मेघ।
बारदात स्त्री० (अ) १-भीषण या विकट दुर्घटना। २-दंगा-फसाद।
बारन स्त्री०(हि) निछावर। बलि। पुं० दे० 'वन्दन-वार'।
बारना क्रि० (हि) निछावर करना। पुं० उत्सर्ग। निछावर।
बारनारी स्त्री० (स) वेश्या।
बारनिश स्त्री० (अ) वह रोगन जिसे किसी वस्तु पर लगाने से चमक आये।
[illegible]रपार पुं० (हि) दे० 'आरपार'। अव्य० (हि) इस किनारे से उस किनारे तक।
[illegible]रमुखी स्त्री० (सं) वेश्या।
[illegible]रयुवती स्त्री० (स) वेश्या।
[illegible]रयोषित् स्त्री० (सं) वेश्या।
[illegible]रांगना स्त्री० (सं) वेश्या।
[illegible]रा पुं० (हि) १-नाम। चयवा। २-नदी की धवल ३-इस ओर का किनारा। वार। वि० १-निछावर किया हुआ। २-सस्ता।
वाराणसी स्त्री० (सं) काशी। बनारस।
वाराणसेय वि०(स) बनारस में उत्पन्न या बना हुआ।
वाराह पुं० (सं) दे० 'वराह'।
वाराही स्त्री० (सं) एक मातृका का नाम। २-शूकरी
वारि पुं० (स) १-जल। पानी। तरल पदार्थ। स्त्री० १-वाणी। सरस्वती। २-हाथी बांधने की जंजीर। ३-छोटा कलसा। हाथीखाना।
वारिचर पुं०(सं) १-जलजन्तु। २-मछली। ३-शंख।
वारिचामर पुं० (सं) शैवाल। सेवार।
वारिचारी वि० (स) जल में रहने वाला। (जीव)।
वारिज पुं०(सं) १-कमल। २-मछली। ३-शंख। ४-घोंघा। ५-कौड़ी। ६-उत्तम स्वर्ण।
वारिजात वि०(सं) जल में उत्पन्न। पुं० (सं) दे० 'वारिज'।
वारिजीवक वि० (सं) जल से अपनी जीविका या निर्वाह चलाने वाला।
वारित वि० (स) १-जिसकी मनाही की गई हो। वर्जित। निवारित। २-छिपाया हुआ। आवरित।
वारितसाहित्य पुं०(स) वह साहित्य (लेख,पत्र, पुस्तकें आदि) जिन को पास रखने की या पढ़ने की सरकार ने मनाही करदी हो। (प्रोस्क्राइब्ड लिटरेचर)
वारितस्कर पुं० (सं) मेघ। बादल।
वारित्रा स्त्री० (स) छाता।
वारिद पुं० (स) १-मेघ। बादल। २-नागरमोथा।
वारिदात स्त्री० (हि) दे० 'वारदात'।
वारिदुर्ग वि० (स) जो जल के कारण दुर्गम हो।
वारिधर पुं० (सं) मेघ। बादल।
वारिधानी स्त्री० (सं) जलाधार।
वारिधारा स्त्री० (स) वर्षा। जल की धारा।
वारिधि पुं० (सं) समुद्र।
वारिनाथ पुं० (सं) १-वरुण। २-समुद्र। ३-मेघ। बादल।
वारिनिधि पुं० (सं) समुद्र।
वारिप वि०(सं) जल पीने या उसकी रक्षा करने वाला
वारिपथिक पुं० (स) जलयात्रा करने वाला।
वारिपर्णी स्त्री० (स) १-काई। २-जलकुम्भी।
वारिपूर्णी स्त्री०(सं) दे० 'वारिपर्णी'।
वारिप्रवाह पुं० (सं) जलप्रपात। २-जलधारा।
वारिपृश्नी स्त्री० (सं) दे० 'वारिपर्णी'।
वारिबंधन पुं० (स) बाँध बना कर जल को इकट्ठा करना।
वारिबालक पुं० (सं) एक गंधद्रव्य।
वारिभव पुं० (सं) रसांजन।
वारिमुक् पुं० (सं) मेघ। बादल।
वारिमूली स्त्री० (स) दे० 'वारिपर्णी'।
वारियन्त्र पुं० (सं) फव्वारा। जलयंत्र।
वारियाँ स्त्री० (हि) निछावर। बलि।
वारिरथ पुं० (स) नाव।
वारिराज पुं० (सं) वरुण।
वारिराशि पुं० (सं) समुद्र।
वारिरुह पुं० (स) कमल।
वारिवदन पुं० (स) पानी-आमला।
वारिवर पुं० (सं) करौंदा।
वारिवर्त पुं० (स) एक मेघ का नाम।
वारिवल्लभा स्त्री० (सं) विदारी।
वारिवह वि० (स) पानी या जल ले जाने वाला।
वारिवाह पुं० (स) १-मेघ। २-मोथा।
वारिवाहन पुं० (स) मेघ। बादल।
वारिवाही वि० (स) पानी ढोने वाला।
वारिविहार पुं० (स) जलक्रीड़ा।
वारिश पुं० (सं) विष्णु।
वारिशय वि० (स) जल में शयन करने वाला।
वारिशास्त्र पुं० (स) फलित ज्योतिष का एक ग्रंथ जिसमें वर्षा सम्बन्धी बातें लिखी हैं।
वारिसम्भव पुं० (सं) लौंग।
वारिस पुं० (फा) १-उत्तराधिकारी। २-दायद।
वारीश पुं० (सं) समुद्र।
वारीफेरी स्त्री० (हि) किसी प्रियजन के ऊपर कुछ द्रव्य या कोई वस्तु घुमाकर इसलिए छोड़ना जिस से सारी बाधायें दूर हो जायं।

वारुणी स्त्री० (सं) १-मदिरा। शराब। २-वरुण की पत्नी। ३-एक पर्वत का नाम। ४-पश्चिम दिशा। ५-उपनिषद् विद्या।
वारुणीश पुं० (सं) विष्णु।
वार्द पुं० (सं) १-जल। २-रक्षक।
वार्द्धासन पुं० (सं) जलाधार।
वार्ड पुं० (अं) १-रक्षा। २-विशिष्ट कार्य के लिये घेर कर बनाया हुआ स्थान। ३-नगर में मुहल्लों का समुदाय जो किसी विशिष्ट कार्य के लिये बनाया गया हो। ४-जेल या अस्पताल आदि के अन्दर के अलग-अलग विभाग।
वार्डर पुं० (अं) १-रक्षा। २-जेल का पहरेदार।
वार्तमानिक वि० (सं) वर्तमानकाल-सम्बन्धी।
वार्ता स्त्री० (हि) दे० 'वार्त्ता'।
वार्त्ता स्त्री० (सं) १-जनश्रुति। अफवाह। २-सम्वाद। वृत्तांत। हाल। ३-विषय। प्रसंग। बात। ४-दुर्गा। ५-पेशा। वृत्ति (वाणिज्यादि)। ६-अन्य के द्वारा क्रय-विक्रय होना। ७-बात चीत। (टॉक)।
वार्त्तायन पुं० (सं) वह समाचार पत्र जिसमें राज्य-सम्बन्धी बातें होती हैं और जो किसी सरकार द्वारा ही छापा जाता है। (गजट)।
वार्त्तालाप पुं० (सं) बातचीत।
वार्त्तावह पुं० (सं) सन्देश पहुँचाने वाला दूत। हर-कारा। २-नीतिशास्त्र का अपव्यय से सम्बद्ध भाग।
वार्त्ताहर पुं० (सं) दूत। सन्देशवाहक।
वार्त्तिक पुं०(सं) १-किसी ग्रंथ की टीका। २-वृत्त या आचार शास्त्र का अध्ययन करने वाला। ३-चर। दूत।
वार्त्तिककार पुं० (सं) कात्यायन।
वार्द्धक्य पुं० (सं) बुढ़ापा।
वार्धानी स्त्री० (स) घड़ा। मटका।
वार्धारा स्त्री० (सं) जलधारा।
वार्धि पु० (सं) समुद्र।
वार्धेय पुं० (सं) समुद्री नमक।
वार्वाह पुं० (सं) मेघ। बादल।
वार्षिक वि० (सं) १-वर्ष सम्बन्धी। २-जो प्रति वर्ष होती हो। (ईयरली एन्युअल)।
वार्षिक वित्तविवरण पुं० (सं) वार्षिक आर्थिक प्रकथन। वार्षिक आय-विवरण। (एन्युअल फाइ-नेन्शयल स्टेटमेंट)।
वार्षिकी स्त्री० (सं) १-प्रतिवर्ष दी जाने वाली वृत्ति या अनुदान। (एन्युइटी)। २-प्रतिवर्ष होने वाला कोई प्रकाशन। ३-चेले का फूल।
वार्हस्पत्य वि० (सं) वृहस्पति-सम्बन्धी। पुं० १-नास्तिक। २-अग्नि।
वालंटियर पु०(अं) वह व्यक्ति जो बिना किसी वेतन के कार्य में अपनी इच्छा से योग दे। स्वयसेवक।
वाल पुं० (सं) घोड़े की पूँछ के बाल।
वालधि पुं० (सं) १-पूँछ। २-भैंसा। ३-एक मुनि का नाम।
वालप्रिय पुं० (सं) गाय की जाति का एक पशु जिसकी पूँछ के बालों का चँवर बनाया जाता है।
वालमृग पुं० (सं) दे० 'वालप्रिय'।
वालि पुं० (सं) सुग्रीव का बड़ा भाई और अंगद का पिता।
वालिका स्त्री० (सं) १-दे० 'बालिका'। २-बालू। ३-इलायची। ४-कान का एक गहना।
वालिद पुं० (अ) पिता। बाप।
वालिदा स्त्री० (अ) मां। माता।
वालिदैन पुं० (अ) मां-बाप।
वालुका स्त्री० (सं) १-रेत। बालू। २-शाखा। ३-हाथ-पैर। ४-कपूर। ५-ककड़ी।
वालुकाब्धि पुं० (सं) मरुस्थल। रेगिस्तान।
वालुकार्णव पुं० (सं) रेगिस्तान।
वल्कल वि० (सं) वल्कल या छाल का।
वाल्मीकि पुं० (सं) एक प्रसिद्ध मुनि जो रामायण के रचयिता थे।
वाल्मीकीय वि० (सं) १-वाल्मीकि-सम्बन्धी। २-वाल्मीकि की बनाई हुई।
वात्सल्य पुं० (सं) १-लोकप्रियता। २-प्रिय होने का भाव।
वावैला पुं०(अ)१-विलाप। रोना-कलपना। २-कोला-हल। हल्ला।
वाष्प पुं०(सं) १-भाप। २-आंसू। ३-लोहा।
वाष्प-उत्तापक पुं० (सं) वस्तुओं को भाप की गरमी से गरम करना (स्टीम बाथ)।
वाष्पकंठ वि०(सं) जिसका गला भर आया हो।
वाष्पपूर पुं० (सं) आंसुओं की बाढ़।
वाष्पमोक्ष पुं० (सं) आंसू आना। अश्रु पात।
वाष्पमोक्षण पुं० (सं) दे० 'वाष्पमोक्ष'।
वाष्पवृष्टि स्त्री० (सं) आंसुओं की वृष्टि या वर्षा।
वाष्पशील वि० (सं) जो खुला छोड़ने पर शीघ्र ही वाष्प रूप में परिवर्तित हो जाय। (वोलेटाइल)।
वाष्पाकुल वि०(सं) जिसकी आखें आंसुओं के कारण धुँधली पड़ गई हों।
वाष्पीकरण पुं० (सं) किसी तरल पदार्थ का वाष्प के रूप में बदलना या बदलने की क्रिया। (इवो-परेशन)।
वासंतिक वि० (सं) वसन्त-सम्बन्धी। पुं० १-विदूषक। २-अभिनेता। ३-नट।
वास पुं० (सं) १-निवास। रहना। २-घर। मकान ३-सुगन्ध। बू। ४-अड़ूसा।
वासक पुं० (सं) १-अड़ूसा। २-दिन। वासर। ३-राग का एक भेद। वि० रहने के लिए प्रेरणा देने

या भेद।
वाहिनी स्त्री० (सं) १-सेना। फौज। २-सेना की एक टुकड़ी जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते हैं। (ब्रिगेड)।
वाहिनीनिवेश पुं० (सं) सेना का पड़ाव।
वाहिनीपति पुं० (सं) १-सेनानायक। २-वाहिनी का सेनापति। (ब्रिगेडियर)।
वाहिनीश पुं० (सं) सेनापति।
वाहियात वि० (फा) १-व्यर्थ। २-बुरा। खराब।
वाही वि० (ग्र) १-सुस्त। ढीला। २-निकम्मा। ३-मूर्ख। ४-आवारा। ५-बेहूदा। वि० (सं) वहन करने वाला।
वाहीतवाही वि० (ग्र) १-बेहूदा। २-आवारा। ३-बे सिर-पैर का। स्त्री० (ग्र) अण्डबण्ड बातें। गाली-गलौज।
वाहु स्त्री० (सं) दे० 'बाहु'।
वाह्य पुं० (सं) रथ। यान। सवारी। वि० १-वहन करने योग्य। २-जो वहन करता हो। ३-दे० 'बाह्य' (एक्सटरनल)।
वाह्य आक्रमण पुं० (सं) बाहर के किसी देश का आक्रमण। (एक्सटरनल अग्रेशन)।
वाह्यांतर वि० (सं) भीतर और बाहर का। अव्य० भीतर और बाहर।
वाह्येंद्रिय स्त्री० (सं) शरीर की पांच इन्द्रियां जो वाह्य विषयों को ग्रहण करती है-आंख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।
विंदक पुं० (सं) १-पाने या प्राप्त करने वाला। २-जानने वाला। ज्ञाता।
विंदु पुं०(सं) १-जल-कण। बूंद। (ड्रॉप)। २-बिंदी ३-वह बिंदी जो हाथी के मस्तक पर शोभा के लिए बनाई जाती है। ४-शून्य। ५-अनुस्वार। ६-कण ७-रेखागणित में वह जिसका स्थान तो हो पर जिसके विभाग न हों (पॉइन्ट)। वि० १-ज्ञाता। वेत्ता। २-दाता। ३-जानने योग्य।
विंदुपातक पुं०(सं) शीशे की एक नली जिस पर रबड़ लगा होता है और रबड़ दबाने पर एक एक बूंद करके तरल पदार्थ गिरता है। यह कान या आंख में दवा डालने के काम आता है (ड्रॉपर)।
विंदुर पुं० (हि) छोटे चिह्न। बुँदकी।
विंध पुं० (हि) विंध्य पर्वत। विंध्याचल।
विंध्य पुं० (सं) भारत के मध्य में पूर्व-पश्चिम में फैली हुई प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी।
विंध्यकूट पुं०(सं) १-विंध्य-पर्वत। २-अगस्त्यमुनि का नाम।
विंध्यकूटक पुं० (सं) दे० 'विंध्यकूट'।
विंध्यगिरि पुं० (सं) विंध्य पर्वत श्रेणी।
विंध्यनिवासी पुं० (सं) दे० 'विंध्यवासी'।
विंध्यवासिनी स्त्री०(सं) मिर्जापुर जिले के प देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति।
विंध्यवासी वि० (सं) विंध्य पर रहने वाला अगस्त्य मुनि।
विंध्याचल पुं०(सं) १-विंध्यपर्वत। २-वह प विंध्यवासिनी देवी की मूर्ति है।
विंध्याटवी स्त्री०(सं) विंध्याचल का जङ्गल।
विंध्याद्रि पुं० (सं) विंध्य पर्वत।
विंध्यारि पुं० (सं) अगस्त्यमुनि।
विंवक पुं० (सं) दे० 'बिंवक'।
विंव पुं० (सं) दे० 'बिंव'।
विंवा स्त्री० (सं) दे० 'बिंवा'।
विंवित वि० (सं) दे० 'बिंवित'।
विंवी स्त्री० (सं) दे० 'बिंवा'।
विंवोष्ठ वि० (सं) दे० 'बिंवोष्ठ'।
विंश वि० (सं) बीसवां।
विंशति स्त्री० (सं) बीस की संख्या।
विंशतिवाहु पुं० (सं) रावण।
विंशतिभुज पुं० (सं) रावण।
विंशवार्षिक वि० (सं) बीस वर्ष तक रहने वाला।
विंशोत्तरी पुं० (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य का शुभाशुभ फल जानने की रीति।
वि उप० (सं) एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे जोड़ने पर यह अर्थ देता है:- १-विशेष, जैसे - विहीन। २-अनेक रूपता, जैसे-विविध। ३-निषेध या विपरीतता, जैसे-विक्रय। पुं० (सं) १-अन्न। १-आकाश। ३-चक्षु। स्त्री० (सं) १-पक्षी। २-घोड़ा।
विकंपन पुं०(सं)१-कांपना। २-एक राक्षस का नाम।
विकंपित वि० (सं) हिलता हुआ। कांपता हुआ।
विकंपी वि० (सं) विकम्पित।
विकच वि० (सं) १-विकसित। खिला हुआ। २-जिसके बाल न हों। पुं० (सं) १-बालों की लट। २-एक प्रकार का धूमकेतु। ३-ध्वजा।
विकचित वि० (सं) १-विकसित। २-खुला हुआ।
विकट वि० (सं) १-भयङ्कर। भीषण। २-कठिन। ३-दुर्गम। ४-वक्र। ५-विशाल। ६-विना चटाई का
विकटाकृति वि० (सं) भयङ्कर आकृति वाला।
विकटाक्ष वि० (सं) भयङ्कर या डरावनी आँखों वाला
विकत्थन पुं० (सं) झूठी प्रशंसा।
विकत्था स्त्री० (सं) आत्म प्रशंसा।
विकरार वि० (हि) १-विकराल। भयङ्कर। २-विकट बेचैन।
विकराल वि० (सं) भीषण। भयानक। डरावना।
विकर्ण पुं० (सं) वह सरल रेखा जो चतुर्भुज के आमने-सामने के कोणों के शीर्षकों को मिलाती हो (रेखागणित)। (डायगोनल)। वि० (सं) भयङ्कर। डरावना।

विकर्म पुं० (सं) १-निषिद्ध कर्म। २-अवसर से लाभ उठाना। वि० (सं) दुराचारी। २-अच्छे कर्म न करने वाला।

विकर्षण पुं० (सं) १-व्याकुल। २-जिसमें कला न हो। ३-खण्डित। ४-अपूर्ण। ५-असमर्थ।

विकलन पुं० (सं) खाते या रोकड़ बही में किसी के नाम उसे दिया हुआ धन लिखना। किसी के नाम अथवा खर्च की मद में लिखना। (डेबिट)।

विकलांग वि० (सं) जिसका कोई अङ्ग टूटा या खराब हो। अङ्गहीन।

विकला स्त्री० (सं) १ चन्द्रमा की कला का सोलहवाँ भाग। २-वह स्त्री जिसका रजोदर्शन बन्द हो गया हो।

विकलाना क्रि० (हि) घबराना। व्याकुल या बेचैन होना।

विकलित वि० (सं) १-व्याकुल। २-दुःखी। पीड़ित

विकलीकृत वि०(सं) जो किसी अंगभंग होने के कारण कोई काम करने में असमर्थ हो गया हो। (डिसेबल्ड)।

विकल्प पुं० (सं) १-धोखा। भ्रम। २-मन में कोई बात सोचकर फिर उसके विरुद्ध और बातें सोचना। ३-व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों में से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण। ४-वह अवस्था जिसमें सामने आये कई पदार्थों में से मन पसन्द वस्तु को ले लेने की छूट हो। (ऑप्शन)। ५-विकल्पता।

विकल्पन पुं० (सं) १-सन्देह में पड़ना। २-अनिश्चय।

विकल्पित वि० (सं) १-संदिग्ध। २-अनियमित।

विकसन पुं० (सं) १-विकास होना। २-(कलियों आदि का) खिलना।

विकसना क्रि० (हि) १-विकसित होना। २-खिलना। ३-प्रसन्न होना।

विकसित वि० (सं) १-विकास को प्राप्त होने वाला। २-खिला हुआ।

विकस्वर वि० (सं) १-खिला हुआ। २-प्रसन्न। ३-कपट रहित। ४-स्पष्ट सुनाई देने वाला। पुं० काव्य में वह अलंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कह कर साधारण बात से उसकी पुष्टि की जाती है।

विकार पुं० (सं) १-बिगाड़। २-दोष। ३-मन में उत्पन्न होने वाला प्रबल प्रभाव या वृत्ति। ४-व्याकरण में उसके नियमानुसार किसी शब्द का रूप बदलना। ५-परिणाम। ६-हानि।

विकारी वि० (सं) १-जिसमें कोई विकार या बिगाड़ हो। २-जिसके मन में राग-द्वेष आदि विकार उत्पन्न हुए हों। पुं० साठ संवत्सरों में से एक का नाम।

विकाल पुं० (सं) १-अविकाल। देर। २-शाम। संध्याकाल। ३-जब देवता के निमित्त कार्य करने का समय बीत गया हो।

विकालक पुं० (सं) दे० 'विकाल'।

विकाश पुं० (सं) १-प्रकाश। रोशनी। २-विस्तार। ३-प्रस्फुटन। ४-आकाश। ५-काव्य में एक अलंकार।

विकाशित वि० (सं) दे० 'विकासित'।

विकाशी वि० (सं) १-प्रकट होने वाला। २-खिलने वाला।

विकास पुं० (सं) १-प्रसार। फैलाव। २-प्रस्फुटित होना। ३-विज्ञान की वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई वस्तु सामान्य अवस्था से धीरे-धीरे पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है। (इवोल्यूशन)। ४-किसी वस्तु में अच्छी बातें बढ़ाकर उसे उन्नत करना। (डेवलपमेंट)।

विकासक वि० (सं) बढ़ाने वाला। खोलने वाला।

विकासन पुं० (सं) १-विकसित होने का भाव या क्रिया। २-खिलना (कली आदि का)।

विकासना क्रि० (हि) १-प्रकट करना। २-विकसित करना। ३-खिलना। ४-प्रकट करना।

विकासवाद पुं० (सं) आधुनिक विज्ञान वेत्ताओं का एक सिद्धान्त जिसमें यह माना गया है कि आरम्भ में पृथ्वी पर एक ही मूल तत्व था तथा सब वनस्पतियां, वृक्ष, जीवजन्तु, मनुष्य आदि क्रमशः उसी से निकले फैले और बढ़े हैं।

विकासित वि० (सं) १-विस्तारित। २-प्रकाशित। ३-प्रस्फुटित।

विकिर पुं० (सं) १-पक्षी। चिड़िया। २-कुआँ। ३-अंशु।

विकिरण पुं० (सं) १-बहुत सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना। २-एक केन्द्र से ताप,आदि किरणों का प्रसारण होना। (रेडियेशन)।

विकीर्ण वि० (सं) १-चारों ओर बिखेरा या फैलाया हुआ। २-प्रसिद्ध। पुं० स्वर के उच्चारण का एक दोष।

विकीर्णकारी वि० (सं) चारों ओर फैलाने वाला।

विकीर्णकेश वि० (सं) जिसके केश या बाल बिखरे हुए हों।

विकीर्णमूर्धज वि० (सं) दे० 'विकीर्णकेश'।

विकुंचित स्त्री० (सं) मुड़ा हुआ। सिकुड़ा हुआ।

विकुंठ वि० (सं) जो कुंठित न हो। तेज धार वाला। पुं० (हि) वैकुंठ।

विकुंठित वि० (सं) १-निर्बल। २-भोथरा।

विकृत वि० (सं) १-बिगड़ा हुआ। २-जो मरा हो गया हो। ३-असाधारण। ४-अपूर्ण। ५-रोगी। ६-जो युक्ति तर्क के अनुसार ठीक न हो वरन उप

पूर्ण हो। (परवर्स)।
विकृतटंक पु० (सं) घिसा हुआ सिक्का जिसकी लिखावट न पढ़ी जाती हो। (डिफेसडकॉइन)।
विकृतदर्शन वि० (सं) जिसकी शकल या सूरत बिगड़ गई हो।
विकृतदृष्टि पु'० (सं) ऐंचाताना। भेंगा।
विकृति स्त्री० (सं) १-बिगाड़। विकार। २-रोग। ३-मूल धातु से बिगड़ कर बना हुआ शब्द। ४-शत्रुता। ५-मन में होने वाला क्षोभ। ६-सत्य, न्याय, तर्क नियम के सिद्धांतों से विपरीत होने की अवस्था। (परवर्शन, परवर्सिटी)।
विकृष्ट वि० (सं) १-खींचा या खींचा हुआ। २-जिसका अन्त कर दिया गया हो (विधान आदि)।
विकेंद्रीयकरण पु० (सं) सत्ता आदि को एक केन्द्र से हटा कर आसपास के भिन्न अंगों में बाँटना। (डिसेन्ट्रलाइजेशन)।
विक्टोरिया स्त्री० (सं) एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।
विक्रम पु'० (सं) १-पराक्रम। २-शक्ति। ३-गति। ४-प्रकार। ढंग। ५-साठ संवत्सरों में से एक। ६-दे० 'विक्रमादित्य'। वि० श्रेष्ठ।
विक्रमाजीत पु'० (हि) दे० 'विक्रमादित्य'।
विक्रमादित्य पु'० (सं) उज्जयिनी का एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनका विक्रम-संवत् चलाया हुआ है
विक्रमाब्द पु'० (सं) विक्रमादित्य के नाम से चलाया गया संवत्।
विक्रमी वि० (सं) १-जिसमें वीरता हो। २-विक्रम का। विक्रम सम्बन्धी। पु'० १-विष्णु। शेर।
विक्रय पु'० (सं) मूल्य लेकर कोई वस्तु देना। बेचना। बिक्री। (सेल, डिस्पोजल)।
विक्रयक पु'० (सं) विक्रेता। बेचने वाला।
विक्रयकला स्त्री०(सं) ग्राहकों को माल बेचने की कला। (सेल्समैनशिप)।
विक्रयण पु० (सं) बेचने की क्रिया। बिक्री।
विक्रयधन पु'० (सं) व्यापारी द्वारा एक दिन एक सप्ताह या एक माह की बिक्री से मिला हुआ कुल धन। (टर्नओवर)।
विक्रयपंजी स्त्री०(सं) वह बही या खाता जिसमें प्रतिदिन का लेखा लिखा रहता है। (सेल्सजनरल)।
विक्रयपत्र पु० (सं) १-वह पत्र जिसमें बेची हुई वस्तु का नाम, दाम और विक्रेता का नाम पता आदि लिखा रहता है। २-नकद बिक्री की दी हुई रसीद। (कैशमेमो)।
विक्रयप्रतिक्रोष्टा पु० (सं) नीलाम करने वाला। (आक्शनर)।
विक्रयप्रपंजी स्त्री० (सं) वह खाता-बही जिसमें बेची हुई वस्तुओं का पूरा विवरण हर वस्तु का अलग-रहता है। (सैल्स लैजर)।
विक्रयलेख पु'० (सं) बैनामा। वह लेखपत्र जिसमें भूमि, मकान आदि चीजों को बेचने का पूरा विवरण तथा कीमत आदि लिखी हो और जिसको पंजीबद्ध कर लिया गया हो। (सेलडीड)
विक्रयिक पु'० (सं) वह जो मूल्य लेकर किसी के हाथ कोई वस्तु बेचे।
विक्रयी पु'० (सं) (सेल्समैन) बेचने वाला।
विक्रिया स्त्री० (सं) १-विकार। खराबी। २-किसी क्रिया के विरुद्ध होने वाली प्रक्रिया। (रिएक्शन)।
विक्री स्त्री०(हि) १-वह धन जो बेचने पर प्राप्त हुआ हो। २-विक्रय।
विक्रीत वि० (सं) बेचा हुआ।
विक्रेतव्य वि० (सं) जिसे बेचा जा सके।
विक्रेता पु'० (सं) बिक्री करने वाला।
विक्रेय वि० (सं) जो बिकने को हो। बिकाऊ।
विक्रोध वि० (सं) जिसमें क्रोध न हो।
विक्लांत वि०(सं) १-थका हुआ। २-हतोत्साह।
विक्षत वि० (सं) चोट खाया हुआ। घायल।
विक्षिप्त वि० (सं) १- फैला हुआ। २-व्यक्त। ३-पागल। ४-पागलों का सा। पु'० १-जिसके मस्तिष्क में विकार हो पागल। (ल्यूनेटिक)। २-व्याकुल।
विक्षिप्तता स्त्री० (सं) १-व्याकुलता। २-पागलपन।
विक्षिप्तालय पु'० (सं) वह स्थान जहां पर पागल व्यक्तियों को रख कर उनकी देखरेख तथा चिकित्सा की जाती है। (ल्यूनेटिक असाइलम)।
विक्षुब्ध वि० (सं) जिसके मन में क्षोभ उत्पन्न हो। क्षुब्ध।
विक्षेप पु'० (सं) ऊपर या इधर-उधर डालना। ३-२-मन का भटकना। ३-बाधा। ४-छावनी। ५-धनुष की डोरी खींचना। ६-एक रोग।
विक्षेपण पु'० (सं) १-इधर उधर फैंकने की क्रिया। २-झटका देने की क्रिया। ३-विघ्न। बाधा। ४-चिल्ला चढ़ाने की क्रिया।
विक्षोभ पु'० (सं) १-मन की चंचलता। उद्वेग। २-अप्रिय घटना के कारण मन में होने वाला विकार।
विखंडन पु'० (सं) किसी किये हुए करार को तोड़ना। (एब्रोगेशन)।
विखंडित वि० (सं) विघटित किया हुआ। २-टुकड़े किया हुआ। ३-जिसका खण्डन किया हुआ हो।
विख पु'० (हि) विष। जहर।
विखाद पु० (हि) दे० 'विषाद'।
विखान पु'० (हि) सींग। विषाण।
विखायँध स्त्री० (हि) कड़वी गंध।
विख्यात वि० (सं) प्रसिद्ध। मशहूर।
विख्याति स्त्री० (सं) प्रसिद्धि। शोहरत।
विख्यापन पु'० (सं) कोई बात सबकी जानकारी के लिए सार्वजनिक रूप से प्रकट करना। (एनाउन्स-

मेंट)।

विगत वि०(सं) १-बीता हुआ (समय)। २-जो अभी तुरंत बीता है। ३-रहित। ४-निष्प्रभ। ५-जो कहीं इधर-उधर चला गया हो।

विगतकल्मष वि० (सं) पापरहित। शुद्ध।

विगतज्ञान वि० (सं) जिसकी अक्ल मारी गई हो।

विगतनयन वि० (सं) जिसकी आँखें नष्ट हो गई हों।

विगतभय वि० (सं) जो किसी से डरता न हो।

विगतभी वि० (सं) निर्भीक।

विगतराग वि० (सं) जिसमें राग न रह गया हो।

विगतार्तवा स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बन्द हो गया हो।

विगतायु वि० (सं) मरा हुआ। मृत।

विगति स्त्री० (सं) १-विगति का भाव। २-दुर्गति। खराबी।

विगद वि० (सं) जिसके कोई रोग न हो।

विगर्हणीय वि० (सं) १-जो निन्दा के योग्य हो। २-दुष्ट।

विगर्हित वि० (सं) १-बुरा। खराब। २-निषिद्ध। ३-जिसे डाटा या फटकारा गया हो।

विगलन पुं० (सं) १-शिथिल होना। २-कोई वस्तु का गलना या सड़ना। ३-बिगड़ना। ४-बह या गिर-कर अलग होना।

विगलित वि० (सं) १-टपक-कर निकला हुआ। २-गिरा हुआ। ३-शिथिल। ४-बिगड़ा हुआ।

विगुण वि० (सं) १-मूर्ख। २-बिना डोरी का। ३-खराब।

विग्रह पुं० (सं) १-दूर या अलग करना। २-विश्ले-षण के लिए प्रत्येक शब्द को अलग-अलग करना (व्या०)। ३-कलह। ४-युद्ध। ५-फूट डालना। ६-शरीर। ७-शृङ्गार। ८-शिव।

विघटन पुं०(सं) १-संयोजक अंगों को अलग-अलग करना। (डिसोल्यूशन)। २-बिगड़ना। ३-नष्ट करना।

विघटिका स्त्री० (सं) एक घड़ी का साठवा अंश जो चौबीस सैकण्ड के बराबर होता है।

[illegible]

आकार का हथौड़ा। घन। (हि) दे० 'विघ्न'।

विघात पुं० (सं) १-चोट। आघात। २-नाश। ३-हत्या। ४-बाधा। ५-विफलता।

विघाती पुं० (सं) १-प्रहार करने वाला। २-हत्या करने वाला। घातक।

विघूर्णन पुं० (सं) १-चारों ओर घुमाना। २-चक्कर देना।

विघूर्णित वि० (सं) चारों ओर घुमाया हुआ।

विघोषण पुं० (सं) चिल्ला कर घोषित करना।

विघ्न पुं० (सं) १-बाधा। रुकावट। २-विरोध।

विघ्नक वि० (सं) विघ्न या बाधा डालने वाला।

विघ्नकर वि० (सं) दे० 'विघ्नक'।

विघ्नकर्ता वि० (सं) दे० 'विघ्नक'।

विघ्नकारी वि० (सं) १-जो बाधा डालता हो। २-भयानक।

विघ्नजित पुं० (सं) गणेशजी।

विघ्ननाशक पुं० (सं) गणेशजी।

विघ्नहारण पुं० (सं) गणेशजी।

विघ्नांतक पुं० (सं) गणेशजी।

विघ्नेश पुं० (सं) गणेशजी।

विघ्नेशकांता स्त्री० (सं) सफेद दूब।

विघ्नेशवाहन पुं० (सं) चूहा।

विचकित वि० (सं) घबराया हुआ।

विचक्षण वि० (सं) १-चमकता हुआ। २-निपुण। ३-पंडित। ४-जो स्पष्ट न दिखाई दे।

विचच्छन वि० (हि) दे० 'विचक्षण'।

विचय पुं० (सं) १-एकत्र करना। २-जाँच पड़ताल करना।

विचयन पुं० (सं) १-इकट्ठा करना। २-परीक्षा करना।

विचरण पुं० (हि) १-भ्रमण। ३-घूमना फिरना।

विचरन पुं० (हि) दे० 'विचरण'।

विचरना क्रि० (हि) घूमना। चलना फिरना।

विचरनि स्त्री० (हि) दे० 'विचरण'।

विचर्चिका स्त्री० (सं) १-एक प्रकार का खुजली का रोग। २-छोटी फुन्सी।

विचल वि० (सं) १-अस्थिर। २-डिगा हुआ। ३-प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।

विचलना क्रि० (हि) १-घबराना। २-दृढ़ न रहना। ३-अपने स्थान से इधर-उधर होना।

विचलाना क्रि० (हि) १-हटा कर इधर-उधर रखना २-कोई घबराहट का काम करना।

विचलित वि० (सं) १-अस्थिर। चंचल। २-अपने स्थान, प्रतिज्ञा, सिद्धान्त आदि से हटा हुआ।

विचार पुं० (सं) १-संकल्प। २-मन में उठने वाली कोई बात। भावना। ३-सोचना-समझना। ४-[illegible] की सुनवाई तथा फैसला।

[illegible] पुं०(सं) १-विचार करने वाला। २-न्याया-[illegible]। ३-गुप्तचर। ४-पथप्रदर्शक।

विचारकर्ता पुं० (सं) १-न्यायाधीश। २-सोचने-विचारने वाला।

विचारज्ञ पुं० (सं) १-वह जो विचार करना जानता हो। २-न्यायाधीश।

विचारणीय वि० (सं) १-जिस पर विचार करना उचित या आवश्यक हो। २-संदिग्ध।

विचारधारा स्त्री० (सं) १-किसी स [illegible]

विशेष का कोई सोचने का ढङ्ग। २-किसी आर्थिक सिद्धान्त के अनुकूल विचार करने की पद्धति। (आइडिओलॉजी)।
विचारना क्रि० (हि) विचार करना।
विचारपति पुं० (सं) न्यायालय का वह उच्चाधिकारी जो किसी मुकदमे का निर्णय विचार करके देता है। (जज)।
विचारमूढ़ वि० (सं) जिसमें विचार करने की शक्ति न हो।
विचारवान् वि० (सं) जिसमें विचार करने की शक्ति हो। विचारशील।
विचारशक्ति स्त्री० (सं) वह शक्ति जिसकी सहायता से विचार किया जाय।
विचारशास्त्र पुं० (सं) मीमांसा-शास्त्र।
विचारशील वि० (सं) विचारवान।
विचारशीलता स्त्री० (सं) विचारशक्ति होने का भाव या धर्म। बुद्धिमत्ता।
विचारसरणी स्त्री० (सं) विचार करने का ढङ्ग या पद्धति।
विचारस्थल पुं० (सं) १-तर्क। २-वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार होता हो। न्यायालय।
विचार-स्वातंत्र्य पुं० (सं) किसी देश की ओर की वह स्वतन्त्रता जिसके अनुसार कोई भी अपने विचार बे रोकटोक प्रकट कर सके। (फ्रीडम ऑफ थॉट)।
विचाराध्यक्ष पुं० (सं) वह जो न्यायालय का प्रधान हो। प्रधान विचारक।
विचारित वि० (न) विचारा हुआ। जिस पर विचार किया गया हो।
विचारी पुं० (नं) १-विचार करने वाला। २-विचरण करने वाला।
विचार्य वि० (सं) विचारणीय।
विचिकित्सा स्त्री० (सं) १-सन्देह। २-वह जिसे दूर करके कुछ निश्चय किया जा सके।
विचित्त वि० (स) १-अचेत। बेहोश। २-जिसका चित्त ठिकाने न हो।
विचित्ति स्त्री० (सं) १-बेहोशी। २-चित्त ठिकाने न रहने की अवस्था।
विचित्र वि० (सं) १-कई रङ्गों वाला। २-सुन्दर। ३-विलक्षण। ४-विस्मित करने वाला। पुं० (सं) १-एक अर्थालङ्कार। २-मनु के एक पुत्र का नाम।
विचित्रता स्त्री० (सं) १-विलक्षणता। २-रङ्ग-बिरङ्गा होने का भाव।
विचित्रवीर्य पुं० (स) चन्द्रवंशी राजा शान्तनु के पुत्र का नाम।
विचित्रशाला स्त्री० (स) अजायबघर।
विचित्रांग पुं० (सं) १-मोर। २-बाघ।
विचुंरित पुं० (सं) १-छूआ हुआ। २-विशेष प्रकार से चूमा हुआ।
विचूर्णित वि० (सं) जिसे अच्छी तरह से पीसा हुआ हो।
विचेतन वि० (सं) १-बेसुध। बेहोश। २-विवेकहीन
विचेष्ट वि० (सं) जिसमें किसी प्रकार की चेष्टा न हो
विच्छित्ति स्त्री० (सं) १-टुकड़े करना। २-विच्छेद। ३-कमी। ४-कविता में यति। ५-साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री साधारण शृङ्गार से ही पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है। ६-वेष्टनापन।
विच्छिन्न वि० (सं) १-विभक्त। २-अलग। ३-जिसका विच्छेद हुआ हो। ४-कुटिल। पुं० (सं) योग में राग द्वेषादि क्लेशों की दशा जिसमें बीच में उनका विच्छेद होता है।
विच्छेद पुं० (सं) १-काटकर अलग करना। २-बीच में क्रम टूटना। ३-टुकड़े-टुकड़े होना। ४-वियोग। ५-नाश। ६-अध्याय। ७-अवकाश। ८-तोड़ने की क्रिया।
विछलना क्रि० (हि) १-फिसलना। २-विचलित होना
विछेद पुं० (हि) विछोह। वियोग।
विछोई पुं० (हि) वियोगी।
विछोह पुं० (हि) वियोग।
विछोही पुं० (हि) वियोगी।
विजन पुं० (सं) १-एकान्त। २-निराला। पुं० (हि) हवा करने का पंखा।
विजनता स्त्री० (सं) विजन होने का भाव।
विजना पुं० (हि) हवा करने का पंखा।
विजय स्त्री० (सं) युद्ध, विवाद, प्रतियोगिता आदि होने वाली जीत। जय।
विजयचिह्न पुं० (सं) दे० 'विजयोपहार'।
विजयदुंदुभि स्त्री० (सं) विजय होने पर बजाया जाने वाला नगाड़ा।
विजयपताका स्त्री० (सं) १-विजय प्राप्त करने के समय फहराई जाने वाली पताका। २-कोई विजय-चिह्न।
विजय यात्रा स्त्री० (सं) विजय प्राप्त करने के विचार से की गई यात्रा।
विजयलक्ष्मी स्त्री० (सं) विजय प्राप्त कराने वाली देवी
विजयशील वि० (सं) सदा जीतने या सफल होने वाला।
विजया स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-पार्वती की एक सखी का नाम। ३-भांग। ४-दस मात्राओं के एक छन्द का नाम। ५-आठ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
विजयादशमी स्त्री० (सं) आश्विन शुक्ला दशमी जो हिन्दुओं का बड़ा त्योहार है।
विजयार्थी वि० (सं) विजय की कामना करने वाला।
विजयास्त्र पुं० (सं) वह साधन या अस्त्र जिसके

कारण विजय हो। (ट्रम्फकार्ड)।
विजयी पुं० (सं) १-जीतने वाला। २-अर्जुन।
विजयोत्सव पु० (सं) १-विजयादशमी का उत्सव। २-वह उत्सव जो विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में मनाया जाय।
विजयोपहार पुं० (सं) क्रिकेट, हॉकी फुटबॉल आदि खेलों तथा किसी युद्ध की जीत में जीत होने पर प्राप्त विजय की स्मृति रूप रखने को कोई चीज। (ट्रॉफी, शील्ड)।
विजल वि० (सं) जलरहित। पुं० (सं) वर्षा का अभाव।
विजाति वि० (सं) १-दूसरी जाति का। २-दूसरी प्रकार का।
विजुली स्त्री० (हि) बिजली।
विजृंभ पु० (सं) १-भौं सिकोड़ना। २-जँभाई। उबासी।
विजृंभक पुं० (सं) एक विद्याधर।
विजृंभण पुं०(सं) १-जँभाई लेना। २-भौं-सिकोड़ना। खिलना। बढ़ाना।
विजृंभा स्त्री० (सं) जँभाई। उबासी।
विजेता पुं० (सं) विजय प्राप्त करने वाला। विजयी।
विजेय वि० (सं) जिस पर विजय प्राप्त की जाने को हो।
विजै स्त्री० (हि) दे० 'विजय'।
विजोग वि० (हि) वियोग।
विजोगी वि० (हि) वियोगी।
विजोर पुं० (हि) दे० 'बिजौरा'। वि० कमजोर। निर्बल।
विज्जु स्त्री० (हि) विद्युत। बिजली।
विज्जुलता स्त्री० (हि) विद्युत। बिजली।
विज्ञ वि०(सं) १-जानकार। २-बुद्धिमान। ३- विद्वान पंडित।
विज्ञता स्त्री० (सं) १-विद्वता। पांडित्य। २-बुद्धिमत्ता
विज्ञत्व पुं० (सं) दे० 'विज्ञान'।
विज्ञप्ति स्त्री० (सं) १-जतलाने या सूचित करने की क्रिया। (नोटिफिकेशन)। २-विज्ञापन। ३-अधिकृत रूप से निकाली गई सूचना। (कम्यूनिक)।
विज्ञात वि० (सं) १-जाना या समझा हुआ। २-प्रसिद्ध। मशहूर।
विज्ञान पु० (सं) १-ज्ञान। २-किसी विषय की जानी हुई बातों और तत्वों का वह विवेचन जो एक स्वतन्त्र शास्त्र के रूप में हो (साइन्स)। ३-कार्य-कुशलता। ३-कर्म। ४-अविद्या या माया नामक वृत्ति। ५-आत्मा। ६-ब्रह्म। ७-मोक्ष। ८-निश्चयात्मक बुद्धि। ९-आकाश।
विज्ञानमय वि० (सं) ज्ञानयुक्त।
विज्ञानमयकोश पु० (सं) दे० 'विज्ञानमयकोष'।
विज्ञानमयकोष पुं० (सं) वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों और बुद्धि का समूह।
विज्ञानवादी पु० (सं) १-योग मार्ग का अनुयायी। योगी। २-वह जो आधुनिक विज्ञान का पक्षपाती हो।
विज्ञानी पुं० (हि) १-वह जिसे किसी विषय का ज्ञान हो। वैज्ञानिक। २-विज्ञानवेत्ता।
विज्ञापक पु० (सं) वह जो विज्ञापन करता हो।
विज्ञापन पु० (सं) १-जानकारी कराना। २-इश्तहार ३-बिक्री आदि के माल या किसी बात की वह सूचना जो लोगों को विशेषतः सामयिक पत्रों द्वारा दी जाती है। (एडवर्टाइज़मेंट)।
विज्ञापनदाता पु० (सं) विज्ञापन देने वाला। (एडवर्टाईजर)।
विज्ञापन-पत्र पु०(सं) विज्ञापन का समाचार पत्र।
विज्ञापन-पुस्तिका स्त्री० (सं) सूचीपत्र।
विज्ञापित वि० (सं) जिसका विज्ञापन किया गया हो (एडवर्टाइज्ड)। २-जिसकी सूचना दी गई हो। (नोटिफाइड)।
विज्ञेय वि० (सं) जानने या समझने योग्य।
विट पु० (सं) १-कामुक। लंपट। २-धूर्त। चालाक। ३-वह जिसने कोई वेश्या को रख लिया हो। ४-चूहा। ५-मल। ६-वह नायक जो भोगविलास में सब कुछ खो बैठा हो।
विटप पु० (सं) १-वृक्ष। पेड़। २-वृक्ष या लता की नई शाखा। कोंपल।
विटपी पु० (हि) १-वृक्ष। पेड़। २-वट वृक्ष। ३-कोंपल। ४-अंजीर का पेड़।
विट् पु० (सं) १-वेश्या। २-मनुष्य। ३-वैश्य।
विट्ठल पु०(हि) दक्षिण भारत का एक विष्णु की मूर्ति का नाम।
विट्ठलकवच पु० (हि) एक कवच।
विट्पति पुं० (सं) दामाद। जमाई।
विडंब पुं० (सं) १-कष्ट देना। २-धोखेबाजी। ३-नकल उतारना। ४-चिढ़ाना।
विडंबन पुं० (सं) १-नकल करना। २-आडम्बर करना ३-उपहास करना।
विडंबना स्त्री० (सं) १-किसी को चिढ़ाने के लिए नकल करना। २-उपहास करना।
विडंबनीय वि० (सं) १-नकल उतारने योग्य। २-उपहास करने योग्य।
विडंबित वि० (सं) १-नकल उतारा हुआ। २-हँसी उड़ाया हुआ। ३-नीच। ४-निराश।
विडंबी पुं० (सं) विडंबना करने वाला।
विड पुं० (सं) काला नमक।
विडरना क्रि०(हि) १-तितरबितर होना। २-भागना। दौड़ना।
विडराना क्रि० (हि) १-तितर-बितर

भगाना। ३-तंग करना।
विडारना क्रि० (हि) दे० 'बिडराना'।
विडाल पु० (सं) १-बिल्ली। २-आँख की पिंड। ३-एक आँख की दवा।
विडालाक्ष वि० (सं) दे० 'विडालाक्ष'।
विडाली स्त्री० (सं) १-बिल्ली। २-विदारी-कंद।
विडोजा पु० (सं) इन्द्र का एक नाम।
विडौजा पु० (सं) इन्द्र का एक नाम।
वितंडा स्त्री० (सं) व्यर्थ का विवाद या कहा सुनी।
वितंडावाद पु० (सं) साधारण सी बात को व्यर्थ की कहासुनी में बढ़ा देना।
वितंत पु० (हि) विना तार का (बाजा)।
वित वि० (हि) १-जानकार। ज्ञाता। २-चतुर। निपुण।
वितत वि० (सं) विस्तृत। फैला हुआ। पु० १-वीणा या वीणा जैसा कोई वाद्य यंत्र। २-ढोल, मृदङ्ग आदि से निकलने वाले शब्द।
वितताना क्रि० (हि) व्याकुल या बेचैन होना।
वितति स्त्री० (सं) फैलाव। विस्तार।
वितथ वि० (सं) १-व्यर्थ। २-मिथ्या। झूठ। पु० आज्ञा निषेध। (डिफाल्ट)।
वितथी पु० (हि) जो आज्ञा, निश्चय, आभार आदि का ठीक प्रकार से उचित रूप से पालन न कर सका हो। (डिफाल्टर)।
वितन पु० (स) कामदेव।
वितनु वि० (सं) जो बहुत सूक्ष्म हो।
वितपन्न वि० (सं) १-निपुण। २-विकल। ३-व्युत्पन्न
वितरक पु०(सं) १-बांटने वाला। २-वह जो किसी के अभिकर्ता के रूप में थोक व्यापारियों को उसकी तैयार की हुई वस्तुएं देता हो। (डिस्ट्रीब्यूटर)।
वितरण पु०(सं)१-देना। अर्पण करना। २-बांटना (डिस्ट्रीब्यूशन)।
वितरन पु० (हि) दे० 'वितरण'।
वितरना क्रि० (हि) बांटना। वितरण करना।
वितरिक्त अव्य० (हि) सिवा। अतिरिक्त।
वितरित वि० (सं) बाँटा हुआ।
वितरेक अव्य० (हि) छोड़कर। सिवा।
वितर्क पु० (सं) १-तर्क के उत्तर में दिया जाने वाला दूसरा तर्क। (अर्गुमेन्ट)। २-सन्देह। ४-एक अर्थालंकार।
वितल पु० (सं) पुराणोक्त सात पातालों में से तीसरा।
वितस्ता स्त्री० (सं) झेलम नदी का प्राचीन नाम।
विताडन पु० (हि) दे० 'ताड़ना'।
वितान पु० (सं) १-विस्तार। फैलाव। २-बड़ा तम्बू या खेमा। ३-यज्ञ। ४-सिर पर या आघात आदि पर बांधा जाने वाला बंधन।
वितानना क्रि०(हि) १-खेमा या शामियाना। २-कोई वस्तु तानना।
वितिक्रम पु० (हि) दे० 'व्यतिक्रम'।
वितीत वि० (हि) दे० 'व्यतीत'।
वितुंड पु० (हि) हाथी।
वितुष वि० (सं) जिसका छिलका हटा दिया गया हो
वितृष्ण पु० (सं) निस्पृह। उदासीन।
वितृष्णा स्त्री० (सं) तृष्णा का अभाव।
वित्त पु० (सं) १-धन। संपति। २-संस्था या राज्य की आय और उस की व्यवस्था। ३-आर्थिक प्रबन्ध (फाइनैन्स)। वि० १-सोचा या विचारा हुआ। २-प्राप्त। प्रसिद्ध।
वित्तकाम वि०(सं) लोभी। लालची।
वित्तजाय वि० (सं) विवाहित।
वित्तद वि० (सं) धन देने वाला।
वित्तनाथ पु० (सं) कुबेर।
वित्तनिचय पु० (सं) धन की बहुत बड़ी रकम।
वित्तप वि० (सं) धन की रक्षा करने वाला।
वित्तपति पु० (सं) कुबेर का एक नाम।
वित्तप्रबंधक पु० (सं) किसी व्यवसाय में धन का प्रबन्ध करने वाला। (फाइनैन्शियर)।
वित्तमंत्री पु० (सं) अर्थमंत्री। किसी राज्य के अर्थ-विभाग की देखरेख करने वाला मन्त्री। (फाइनैन्स मिनिस्टर)।
वित्तवान वि० (सं) धनवान। रईस। पैसे वाला।
वित्तविधेयक पु० (सं) किसी राज्य का वह विधेयक जो आगामी वर्ष के आय-व्यय आदि से सम्बन्ध रखता हो और विधान सभा में स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाता है। (फाइनैन्स बिल)।
वित्तसाधन पु० (सं) किसी संस्था या राज्य के धन प्राप्ति करने के साधन। (फाइनैन्सेज)।
वित्तागम पु० (सं) धन प्राप्ति के साधन।
वित्ताढ्य वि०(सं) बहुत धन वाला।
वित्ताप्ति स्त्री०(सं) धन या रुपये-पैसे की प्राप्ति।
वित्तीय वि० (सं) वित्त से सम्बन्ध रखने वाला। (फाइनैन्शियल)।
वित्तेश पु० (सं) कुबेर।
वित्तेश्वर पु० (सं) कुबेर।
वित्तेहा स्त्री० (सं) लालच। धन की इच्छा।
वित्रप वि० (सं) निर्लज्ज। बेहया।
वित्रस्त वि० (सं) भयभीत। डरा हुआ।
विथकना क्रि० (हि) १-थकना। २-शिथिल होना। ३-चकित होकर चुप हो जाना।
विथकित वि० (हि) १-थका हुआ। शिथिल। २-मोह आदि के कारण कुछ न बोल सकना।
वियराना क्रि०(हि) १-फैलाव। २-बिखराना। छितराना।
वियारना क्रि० (हि) दे० 'बिथराना'।

विथा स्त्री० (हि) १-व्यथा। २-रोग। बीमारी।
विथित वि० (हि) दुःखी। व्यथित।
विथुर पुं० (सं) १-राक्षस। २-चोर। ३-नाश। वि० १-व्यथित। २-अलग।
विथुरा स्त्री० (सं) विधवा।
विदल स्त्री० (सं) एक प्रकार की खिड़ी।
विदग्ध पुं० (सं) १-पंडित। विद्वान। २-रसिक। ३-चतुर। वि० जला हुआ।
विदग्धक पुं० (सं) जलता हुआ शव।
विदग्धता स्त्री० (सं) विद्वता। पांडित्य।
विदग्धा स्त्री० (सं) वह परकीया नायिका जो बड़ी चतुरता से पर पुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।
विदमान अव्य०(हि) सामने। सम्मुख।
विदरना क्रि० (हि) १-फटना। विदीर्ण होना। २-फाड़ना।
विदर्भ पुं० (सं) १-आधुनिक बरार प्रदेश का पुराना नाम। २-एक प्राचीन राजा। ३-मसूड़े फूलने का एक रोग।
विदर्भजा स्त्री० (सं) १-अगस्त्य ऋषि की स्त्री लोपमुद्रा का नाम। २-दमयंती का एक नाम। ३-रुक्मणी।
विदर्भतनया स्त्री० (सं) दमयंती।
विदर्भराज पुं० (सं) दमयंती के पिता जो विदर्भ के राजा थे।
विदर्भसुभ्रू पुं० (सं) दमयंती।
विदलन पुं० (सं) १-मसलने-दलने या दबाने की क्रिया २-फाड़ना। टुकड़े करना। इधर-उधर करना।
विदलना क्रि० (हि) दलित करना। नष्ट करना।
विदलित वि० (सं) १-रौंदा हुआ। मला हुआ। २-टुकड़े किया हुआ। ३-फाड़ा हुआ।
विदा स्त्री० (सं) बुद्धि। ज्ञान। स्त्री० (हि) १-प्रस्थान रवाना होना। २-कहीं से चलने की आज्ञा या अनुमति।
विदाई स्त्री० (हि) १-विदा होने की क्रिया या भाव। २-विदा होने की अनुमति। ३-विदा के समय दिया जाने वाला धन।
विदार पुं०(सं) १-चीरना। फाड़ना। २-युद्ध। समर
विदारक पुं०(सं) १-नदी के नीचे की पहाड़ी या वृक्ष ३-नदी के गर्भ में खोदा हुआ कूप या गढ़।
विदारण पुं० (सं) १-फाड़ना। २-हत्या करना। ३-युद्ध। संग्राम। ४-कनेर का पेड़। ५-नौसादर।
विदारना क्रि० (हि) फाड़ना।
विदारिका स्त्री०(सं) १-एक प्रकार की डाकिनी जो घर से बाहर अग्निकोण में रहती है। २-कड़वी तूँबी।
विदारित वि० (सं) फाड़ा या विदीर्ण किया हुआ।
विदारी वि० (हि) फाड़ने वाला। स्त्री० (सं) १-कंठरोग। २-कान का एक रोग। ३-शालपर्णी। ४-मेदासींगी आदि औषधियों का एक गण। (वैद्यक)
विदारीकंद पुं० (सं) भुईकुम्हड़ा।
विदित वि०(सं) जाना हुआ। ज्ञात। पुं० कवि।
विदिशा स्त्री० (सं) १-वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २-एक नदी।
विदिसा स्त्री० (हि) दे० 'विदिशा'।
विदीर्ण वि० (सं) १-फाड़ा या फटा हुआ। ३-मार डाला हुआ। निहित।
विदीर्णमुख वि० (सं) जिसका मुँह खुला हो।
विदीर्णहृदय वि० (सं) जिसका दिल टूट गया हो। मर्माहत।
विदुर वि०(सं) चतुर। पुं० १-जानकार। ज्ञाता। २-पंडित। ३-पांडु के छोटे भाई का नाम।
विदुष पुं० (सं) विद्वान। पंडित।
विदुषी स्त्री० (सं) विद्वान स्त्री।
विदूर वि० (सं) जो बहुत दूर हो। पुं० १-एक पर्वत का नाम। २-एक देश का नाम। ३-एक मणि।
विदूषक पुं० (सं) १-कामुक। २-बातें वेष, चेष्टा आदि से दूसरों को हँसाने वाला। मसखरा (क्लाउन)। ३-नाटक का वह पात्र जो नायक का अन्तरङ्ग मित्र होता है। ३-भांड।
विदूषण पुं० (सं) दोष लगाना।
विदूषना क्रि० (हि) १-सताना। २-दुःखी होना। ३-दोष लगाना।
विदेश पुं० (सं) अन्य देश। परदेश।
विदेशगमन पुं० (सं) परदेश जाना।
विदेशज पुं०(सं) विदेश या अन्य देश का बना हुआ या उत्पन्न।
विदेशवास पुं० (सं) दूसरे देश में वास करना या रहना
विदेशवासी वि० (सं) दूसरे देश में रहने वाला।
विदेशस्थ वि० (सं) किसी दूसरे देश में स्थित होने वाला।
विदेशी वि० (हि) दूसरे देश या देशों से सम्बन्धित। (फारेन)। २-परदेशी।
विदेशीय वि० (सं) दूसरे देश का।
विदेह पुं० (सं) १-राजा जनक। २-प्राचीन मिथिला देश। ३-इस देश का निवासी। वि० १-जो शरीर रहित हो। २-बेसुध।
विदेहकुमारी स्त्री० (सं) सीता।
विदेहजा स्त्री० (सं) सीता।
विदेहत्व पुं०(सं) १-विदेह होने का भाव। २-मृत्यु।
विद्‌ वि० (सं) १-जानकार। २-पंडित। ज्ञानी। पुं० १-बुधग्रह। २-तिल का पौधा।
विद्ध वि० (सं) १-बीच में से छेद किया हुआ। २-फेंका हुआ। ३-घायल। ४-टेढ़ा। ५-सटा हुआ।
विद्यमान वि० (सं) उपस्थित। मौजूद।
विद्यमानता स्त्री० (सं) उपस्थिति। मौजूदगी।
विद्या स्त्री० (सं) १-शिक्षा द्वारा प्राप्त [illegible]

मोक्ष प्राप्ति करने वाला ज्ञान । ३-वे शास्त्र जिनमें ज्ञान की बातों का विवेचन होता है। ४-ज्ञान के विशेष विभाग । ५-गुण । ६-दुर्गा ।
विद्यागम पुं० (सं) विद्या की प्राप्ति या लाभ ।
विद्यादाता पुं० (सं) विद्या देने वाला गुरु ।
विद्याधन पुं० (सं) १-विद्या रूपी धन । २-अपनी विद्या द्वारा कमाया हुआ धन ।
विद्याधर पुं०(सं) १-देवयोनि विशेष । २-एक प्रकार का रतिबंध । ३-वैद्यक में एक प्रकार का यन्त्र ।
विद्याधरी स्त्री० (सं) विद्याधर जाति की स्त्री ।
विद्याधिराज पुं० (सं) वह जो परम पंडित हो ।
विद्यानुसेवन पुं० (सं) विद्या का अध्ययन करना ।
विद्यापति पुं० (सं) १-एक मैथिल कवि । २-राज-दरबार का सबसे विद्वान व्यक्ति ।
विद्यापीठ पुं० (सं) शिक्षा का बड़ा केन्द्र । महा-विद्यालय ।
विद्याबल पुं० (सं) १-शास्त्रों के ज्ञान का बल । २-जादू का बल ।
विद्याभाक् वि० (सं) विद्वान ।
विद्याभ्यास पुं० (सं) विद्या का अध्ययन ।
विद्यामंदिर पुं० (सं) विद्यालय ।
विद्यामठ पुं०(सं) १-वह मठ जहाँ साधुओं को विद्या सिखाई जाती है । २-महाविद्यालय ।
विद्यारंभ पुं० (सं) बालक की पढ़ाई या शिक्षा आरंभ करने का संस्कार ।
विद्यार्जन पुं० (सं) विद्या या ज्ञान द्वारा कुछ प्राप्त करना ।
विद्यार्जित वि० (सं) जो विद्या के द्वारा प्राप्त हो ।
विद्यार्थी पुं० (सं) छात्र । विद्या पढ़ने वाला ।
विद्यालय पुं०(सं) वह स्थान जहां विद्या पढाई जाती हो । पाठशाला ।
विद्यालाभ पुं० (सं) विद्या का प्राप्त होना ।
विद्यावान वि० (सं) विद्वान ।
विद्याविक्रय पुं० (सं) धन लेकर विद्या पढ़ाना ।
विद्याविद् वि०(सं) विद्वान । पंडित ।
विद्याविहीन वि० (सं) अपढ़ । मूर्ख ।
विद्यावृद्ध वि० (सं) जिसको बहुत अधिक ज्ञान हो ।
विद्याव्रत पुं० (सं) गुरु के घर रह कर विद्या प्राप्त करने के विचार से लिया गया व्रत ।
विद्याहीन वि० (सं) १-अपढ़ । अशिक्षित । २-मूर्ख ।
विद्युच्चालक वि० (सं) (वह पदार्थ) जिसके एक सिरे विद्युत लगते ही दूसरे सिरे तक पहुँच जाय ।
विद्युत् स्त्री० (सं) १-बिजली । (इलेक्ट्रिसिटी) । २-संध्या । ३-एक उल्का । वि० चमकदार ।
विद्युत्कण पुं० (सं) प्रत्येक परमाणु के गर्भ में ऋणविद्युत् से आविष्ट कण । (इलेक्ट्रोन) ।
विद्युत्कंप पुं०(सं) बिजली की कौंधना या चमकना ।
विद्युत्प्रतपन पुं० (सं) दे० 'विद्युत्पात' ।
विद्युत्पात पुं० (सं) बिजली का गिरना ।
विद्युदणु पुं० (सं) १-ऋणविद्युदणु । (इलेक्ट्रोन) २-धनविद्युदणु (प्रोटोन) ।
विद्युदुन्मेष पुं० (सं) बिजली का चमकना ।
विद्युदुघात पुं० (सं) १-बिजली की कुर्सी पर बिठा कर दी जाने वाली मौत की सजा । २-बिजली के कारण होने वाली मृत्यु । (इलेक्ट्रोक्यूशन) ।
विद्युद्दर्शकयंत्र पुं (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा यह मालूम किया जाता है कि किसी पदार्थ में विद्युत है या नहीं । (इलेक्ट्रोस्कोप) ।
विद्युद्दाम पुं० (सं) बिजली की कौंध या रेखा ।
विद्युद्द्योत पुं० (सं) विद्युत की चमक ।
विद्युद्धारक पुं० (सं) रेडियो, टेलीफोनादि में लगने वाला वह यन्त्र जो बिजली गिरने पर यन्त्रों को सुरक्षित रखता है । (लाइटिंग अरेस्टर) ।
विद्युन्मापक पुं० (सं) बिजली की शक्ति आदि मालूम करने का यन्त्र । (वोल्टामीटर) ।
विद्युन्माला स्त्री० (सं) १-एक छन्द । २-बिजली का कोई समूह ।
विद्युल्लता स्त्री० (सं) बिजली की दिखाई देने वाली टेढ़ी-मेढ़ी रेखा ।
विद्युल्लेखा स्त्री० (सं) १-वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं । २-बिजली ।
विद्योतक वि० (सं) दे० 'विद्योती' ।
विद्योती वि० (सं) प्रभावशाली ।
विद्योपार्जन पुं०(सं) विद्या का अध्ययन करना ।
विद्रधि स्त्री० (सं) पेट में का एक घातक फोड़ा । (केन्सर) ।
विद्रावक वि० (सं) १-पिघलाने वाला । २-भगाने-वाला ।
विद्रावण पुं० (सं) १-पिघलना । २-भागना । ३-उड़ना । ४-फाड़ना । ५-नष्ट करने वाला ।
विद्रावित वि० (सं) १-पिघलाया हुआ । २-भगाया हुआ । ३-इधर-उधर किया हुआ ।
विद्रावी पुं० (सं) १-भागने वाला । २-गलने वाला ३-फाड़ने वाला ।
विद्रुत वि० (सं) १-भागा हुआ । २-गला हुआ । ३-पिघला हुआ । पुं० (सं) युद्ध करने का एक ढंग ।
विद्रुम पुं० (सं) १-प्रवाल । मूंगा । २-कोंपल । वि० (सं) वृक्षरहित ।
विद्रोह पुं० (सं) १-द्वेष । २-वह बड़ा उपद्रव जो किसी राज्य को हानि पहुंचाने या उलटने के लिये किया गया हो । बगावत । (रिवोल्ट) ।
विद्रोही पुं० (सं) १-द्वेष करने वाला । २-बागी । बलवा करने वाला ।
विद्वज्जन पुं० (सं) १-चतुर या विद्वान मनुष्य । २-

मुनि। ऋषि।
विद्वत्ता स्त्री० (सं) पांडित्य।
विद्वत्त्व पुं० (सं) विद्वत्ता। पांडित्य।
विद्वान् पुं० (सं) १-जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। २-सर्वज्ञ। ३-जो आत्मा के स्वरूप को जानता हो। (नॉलेज)।
विद्विष्ट वि० (सं) दे० 'विद्विष'।
विद्विष पुं० (सं) शत्रु। दुश्मन। वि० (सं) शत्रुता रखने वाला।
विद्वेष पुं० (सं) १-शत्रुता। बैर। २-विरोध। विरक्तता। (रिपगनेन्सी)।
विद्वेषक पुं० (सं) जो द्वेष रखता हो। शत्रु।
विद्वेषता पुं० (सं) १-शत्रुता। २-शत्रु। बैरी। ३-एक तांत्रिक क्रिया जिसके द्वारा दो व्यक्तियों में बैर उत्पन्न किया जाता है।
विद्वेषणी स्त्री० (सं) १-यज्ञ की अन्तिम कन्या का नाम। २-क्रोध करने वाली स्त्री।
विद्वेष्य पुं० (सं) १-द्वेष का पात्र या भाजन। २-कद्दून।
विधंस पुं० (हि) विध्वंस। नाश।
विधंसना क्रि० (हि) नष्ट या बरबाद करना।
विध पुं० (सं) ब्रह्मा। स्त्री० (हि) प्रकार। तरह।
विधना क्रि० (हि) १-प्राप्त करना। २-साथ लगाना। स्त्री० (हि) होनी। होनहार। पुं० (हि) ब्रह्मा।
विधनुष्क वि० (सं) दे० 'विधन्वा'।
विधन्वा वि० (सं) जिसके पास तीर-कमान या धनुष न हो।
विधर्म वि० (सं) १-जिसमें गुण न हो। २-धर्म से निन्दित। पु० (सं) दूसरे का धर्म।
विधर्मी पुं० (सं) १-अधर्म करने वाला। २-जो दूसरे धर्म का अनुयायी हो। धर्मभ्रष्ट।
विधवा स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो बेवा। (विडो)।
विधवागामी वि० (सं) विधवा से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला।
विधवापन पुं० (सं) विधवा होने की अवस्था। रँडापा। वैधव्य।
विधवा-विवाह पुं० (सं) किसी विधवा से शादी या विवाह करना।
विधवाश्रम पुं० (सं) वह स्थान या आश्रम जहां विधवाओं के पालन-पोषण का प्रबन्ध हो।
विधसना क्रि० (हि) १-नष्ट करना। अस्त-व्यस्त करना।
विधाता पुं० (सं) १-जन्म देने वाला। २-विधान करने वाला। ३-सृष्टि की रचना करने वाला। ईश्वर। ब्रह्मा।
विधात्री स्त्री० (सं) १-रचने या बनाने वाली। २-

विधान पुं० (सं) १-अनुष्ठान। २-व्यवस्था। प्रबन्ध। ३-काम करने की प्रणाली। ४-उपाय। ५-हाथी का ग्रास। ६-पूजा। ७-धन। सम्पत्ति। ८-राज्य या शासन द्वारा किसी विशेष विषय में सामूहिक रूप से बनाये गये नियम। कानून। (एक्ट)।
विधानक पुं० (सं) १-विधान। विधि। २-रीति या विधि जानने वाला।
विधानज्ञ पुं० (सं) १-विधान का वेत्ता। २-आचार्य।
विधानपरिषद् स्त्री० (सं) १-वह परिषद् या सभा जिसमें देश के लिये कानून कायदे आदि बनते हैं २-भारत में विधान सभा को छोड़कर दूसरा सदन जिसमें अधिकतर सदस्य नामजद किये जाते हैं। (लेजिस्लेटिव काउन्सिल)।
विधानमंडल पुं० (सं) लोकतन्त्री शासन में प्रजा के प्रतिनिधियों की वह सभा जो नये कानून तथा पुराने कानूनों में संशोधन आदि करती है। (लैजिस्लेचर)।
विधानसभा स्त्री० (सं) लोकतन्त्री शासन में निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह सभा जिसमें देश के कानून आदि बनते हैं। (लेजिस्लेटिव असेम्बली)
विधायक वि० (सं) १-विधान करने वाला। २-रचने वाला। ३-निर्देशक। ४-वह पत्र, आज्ञा आदि जिसके द्वारा कोई विधान किया जाय या कोई आज्ञा दी जाय। (…)। पुं० १-निर्माता। विधान सभा का सदस्य। (लेजिस्लेटर)।
विधायन पुं० (सं) १-विधान बनाना। २-राज्य, शासन या विधायिका सभा का कोई कानून बनाना। (इनेक्टमेंट)।
विधायी वि० (सं) दे० 'विधायक'।
विधायीकार्य पुं० (सं) विधान निर्माण या कानून बनाने का कार्य। (लेजिस्लेटिव बिजनेस)।
विधारा पुं० (सं) एक लता जो दवा के काम आती है
विधावन पुं० (सं) विधान या कानून बनाना।
विधावित वि० (सं) दौड़ाया हुआ। [illegible]
[illegible]
विधि स्त्री० (सं) १-प्रणाली। (ढंग)। [illegible] शास्त्रोक्त। विधान। [illegible] के [illegible] जिसके द्वारा किसी को कोई [illegible] आज्ञा दी जाती है। ४-कानून [illegible] में वह [illegible] जिसमें [illegible] में विधान किया जाता है। [illegible]
विधिज्ञ [illegible] विधि का [illegible] का विधि के अनुसार [illegible]
विधिनिषेधपूर्ण स्त्री० [illegible]
[illegible]
[illegible]

विधिज्ञ पुं० (सं) १-विधि का जानकार। २-कानून बताने वाला वकील। (लॉयर)।
विधिनिषेध पुं० (सं) किसी कार्य को न करने की या करने की शास्त्रोक्त आज्ञा।
विधिपरामर्शी पुं० (सं) सरकार को कानूनी बातों की सलाह देने वाला परामर्शदाता तथा पदाधिकारी। (लीगल रिमेम्बरेन्स)।
विधिपालक क्रि० (सं) कानून या विधि का पालन करने वाला। (लॉ एबाइडिंग)।
विधिपूर्वक अव्य०(सं) कानून या नियम के अनुसार
विधिप्रयोग पुं० (सं) नियम का विनियोग।
विधिभंग पुं० (सं) कोई ऐसा कार्य करना जिससे कोई कानून या नियम टूटता हो। (ब्रीच ऑफ लॉ)
विधिरानी स्त्री० (हि) सरस्वती।
विधिलोक पुं० (सं) ब्रह्मलोक।
विधिवत् अव्य० (सं) दे० 'विधिपूर्वक'।
विधिवधू स्त्री० (सं) सरस्वती।
विधिवशात् अव्य० (सं) दैवयोग से।
विधिवाहन पुं० (सं) ब्रह्मा की सवारी, हंस।
विधिविज्ञान पुं०(सं) किसी देश या राष्ट्र की सामान्य विधि (कॉमन लॉ) तथा प्रविधियों की समष्टि (ज्यूरिसप्रूडेन्स)।
विधिविपर्यय पुं० (सं) भाग्य का उल्टा अथवा खराब होना।
विधिविहित वि० (सं) विधि या नियम के अनुसार।
विधिशास्त्र पुं० (सं) दे० 'विधिविज्ञान'।
विधिसचिव पुं० (सं) वह सचिव जो विधि अथवा कानून सम्बन्धी पत्रों आदि के उत्तर देता है। (लीगल-सेक्रेटरी)।
विधिस्नातक पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसने कानून की परीक्षा पास करके उपाधि प्राप्त करली हो। (बेचलर ऑफ लॉ)।
विधिहीन वि० (सं) विधिरहित। शास्त्र विरुद्ध।
विधुंत पुं० (सं) दे० 'विधुंतुद'।
विधुंतव पुं० (सं) राहु।
विधु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-वायु। ३-कपूर। ४-विष्णु। ५-जलस्नान। ६-पाप छुड़ाना।
विधुक्षय पुं० (सं) १-असित पक्ष। २-चन्द्रमा का क्षीण होना।
विधुदार स्त्री०(सं) चन्द्रमा की पत्नी, रोहिणी नक्षत्र।
विधुप्रिया स्त्री० (सं) दे० 'विधुहार'।
विधुबंध पुं० (सं) कुमुद का फूल।
विधुबैनी स्त्री० (हि) चन्द्रमुखी।
विधुमंडल पुं० (सं) चन्द्रमण्डल।
विधुमणि पुं०(सं) चन्द्रकांतमणि।
विधुमुखी स्त्री० (सं) चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली स्त्री।

विधुर पुं० (सं) दुखी। व्याकुल। २-असमर्थ। ३-... वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो। (विडोअ...
विधुरा पुं० (सं) १-व्याकुल। २-कानों के पीछे एक स्नायु ग्रन्थि।
विधुवदनी स्त्री० (सं) दे० 'विधुवदनी'।
विधूत वि० (सं) १-कांपता हुआ। २-छोड़ा हु... ३-दूर किया हुआ।
विधूतकल्मष वि० (सं) जो पापों से मुक्त हो गया
विधूतकेश वि० (सं) जिसके बाल बिखरे हुए हों।
विधूतपाप्मा वि०(सं) दे० 'विधूतकल्मष'।
विधूनन पुं० (सं) कांपना।
विधूनित पुं० (सं) कांपता हुआ।
विधूम वि० (सं) धूमरहित। बिना धूएँ का।
विधूम्र वि० (सं) मटमैले रङ्ग का। धूसर।
विधेय वि० (सं) १-जिसका करना उचित हो। २... नियम के अनुसार किया जाय। ३-आधीन। (वह शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी स... में कहा जाय।
विधेयक पुं० (सं) किसी कानून का वह प्रस्तावि... जो विधान सभा में पारित करने के लिए उप... किया जाता है। मसौदा। (बिल)।
विधेयज्ञ वि० (सं) जो अपने कर्त्तव्य को समझ...
विधेयता स्त्री०(सं)१-विधान की योग्यता। २-अ... नता।
विधेयत्व पुं० (सं) विधेयता।
विध्य वि०(सं)१-बिंधने योग्य। २-जो बेधा जा... जाने वाला हो।
विध्यनुकूल वि० (सं) जिसमें कानून या वि... अनुसार कोई भी कमी न हो। जो विधिवत्... (वेलिड)।
विध्यलंकार पुं०(सं) साहित्य में वह अलंकार ि... सिद्ध विषय का फिर से विधान किया गया है
विध्यलंक्रिया स्त्री० (सं) दे० 'विध्यलंकार'।
विध्याभास पुं० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें ... आदि की संभावना होते हुए भी विवश होकर बात की सम्मति दी जाती है।
विध्वंस पुं० (सं) नाश। बरबादी।
विध्वंसक वि०(सं) नाश करने वाला। पुं० ती... से चलने वाला लड़ाई का जहाज (डिस्ट्रॉयर)
विध्वंसन पुं० (सं) नाश करना। बरबाद करन...
विध्वंसित वि० (सं) नष्ट या बरबाद किया हु...
विध्वंसी पुं० (सं) नाश या बरबाद करने ... नाशकारी।
विध्वस्त वि० (सं) नष्ट किया हुआ।
विन सर्व० (हि) उस। अव्य० बिना।
विनत वि० (सं) १-झुका हुआ। २-नम्र। ३... चित। ४-वक्र। पुं० शिव।

विनती स्त्री० (हि) दे० 'विनति' ।
विनत वि० (सं) कुबड़ी । स्त्री० १-मधुमेह के रोगियों को होने वाला फोड़ा । २-दक्ष की एक कन्या ।
विनतानंदन पुं० (सं) गरुड़ ।
विनतासूनु पुं० (सं) अरुण । गरुड़ ।
विनति स्त्री० (सं) १-सुभाव । २-नम्रता । सुशीलता ३-प्रार्थना । विनती । ४-शासन दण्ड ।
विनती स्त्री० (हि) दे० 'विनती' ।
विनम्र वि०(सं) १-झुका हुआ । २-विनीत । सुशील ।
विनम्रकंधर वि०(सं) जिसकी ग्रीवा या गरदन झुकी हुई हो ।
विनय स्त्री० (सं) १-नम्रता का । प्रणति । २-प्रार्थना । ३-शासन । ४-नीति । ५-शिक्षा ।
विनयकर्म पुं० (सं) १-विनय विद्या । २-शिक्षादान ।
विनयन पुं० (सं) १-विनय । नम्रता । २-शिक्षा ।

विनयप्रमाथी वि०(सं) जो अनुशासन भंग करे ।
विनयवाक् वि० (सं) मीठा बोलने वाला ।
विनयवान् वि० (सं) जिसमें नम्रता हो । शिष्ट ।
विनयशील वि० (सं) नम्र । शिष्ट ।
विनयावनत वि०(सं) दे० 'विनम्र' ।
विनयी वि० (सं) विनययुक्त । विनयशील ।
विनशना क्रि० (हि) नष्ट या बरबाद होना ।
विनशन पुं० (सं) नष्ट होना । बरबादी ।
विनशाना क्रि० (हि) नष्ट होना ।
विनसाना क्रि० (हि) १-नष्ट करना । ३-बिनसना ।
विनश्वर वि० (सं) अनित्य । बहुत दिनों तक रहने वाला ।
विनश्वरता स्त्री० (सं) अनित्यता ।
विनश्वरत्व स्त्री० (सं) विनश्वरता ।
विनष्ट वि०(सं) १-नष्ट । मृत । २-बिगड़ा हुआ । ३-पतित ।
विनष्टचक्षु वि० (सं) जो अंधा हो गया हो ।
विनष्टदृष्टि वि० (सं) जिसकी दृष्टि नष्ट हो गई हो ।
विनष्टधर्म वि० (सं) (वह देश) जिसके नियम भ्रष्ट हो गये हों ।
विनष्टि स्त्री० (सं) १-नाश । २-पतन । ३-लोप ।
विनसना क्रि० (हि) नष्ट होना ।
विनसाना क्रि० (हि) १-नष्ट करना या होना । २-बिगड़ना ।
विना अव्य (सं) अभाव में । बगैर ।
विनानी स्त्री० (हि) विनीत ।
विनायक पुं० (सं) १-गणेश । २-गरुड़ । ३-बाधा । विघ्न । ४-गुरु । ५-देवी का स्थान ।

विनायकनेतु पुं० (सं) श्रीकृष्ण ।
विनायक चतुर्थी स्त्री० (सं) माघसुदी चौथ ।
विनाश पुं० (सं) १-नाश । २-लोप । ३-बिगाड़ । ४-तबाही । ५-हानि ।
विनाशक वि० (सं) १-विनाश करने वाला । २-बिगाड़ने वाला ।
विनाशधर्मा वि० (सं) जो नष्ट होने वाला हो । क्षण-भंगुर ।
विनाशन पुं० (सं) १-नष्ट करना । २-संहार करना । ३-शासन करना । ४-एक दैत्य ।
विनाशयिता वि० (सं) नष्ट करने वाला ।
विनाशी वि० (सं) १-नाश करने वाला । २-मारने वाला ।
विनाशोन्मुख वि० (सं) जो नाश की ओर अग्रसर हो

या होना । २-वध करना ।
विनिंदक पुं० (सं) अत्यन्त निन्दा करने वाला ।
विनिंदित वि० (सं) जिसकी बहुत निन्दा हुई हो । लांछित ।
विनिद्र वि० (सं) १-जागा हुआ । २-खिला हुआ या फूला हुआ ।
विनिद्रता स्त्री० (सं) १-जागरूकता । २-अनिद्रा की

विनिपातक वि० (सं) १-संहार करने वाला । २-विनाशकारी । ३-अपमान करने वाला ।
विनिपातित वि० (सं) १-नष्ट किया हुआ । २-जिसको बहुत नीचे गिरा दिया गया हो ।
विनिमय पुं० (सं) १-अदल बदल । परिवर्तन । २-वह प्रक्रिया जिसके अनुसार अलग-अलग देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य स्थिर होकर आपसी लेन-देन चुकाये जाते हैं । (एक्सचेन्ज) ।
विनिमय अधिकोश पुं० (सं) वह बैंक जिसमें एक की मुद्रा के स्थान पर दूसरे देश की मुद्रा का बदला करना होता है । (एक्सचेन्ज बैंक) ।
विनिमीलन पुं० (सं) बन्द होना । मुँदना ।
विनिमीलित वि० (सं) मुँदा हुआ । जो बन्द होगया हो ।
विनिमीलितनेत्र वि० (सं) जिसने आँखें बन्द करली हों ।
विनिमेष पुं० (सं) आंख के भपकने की क्रिया ।
विनिमेषण पुं० (सं) दे० 'विनिमेष' ।

विप्रतिकृत वि० (सं) जिसका विरोध किया गया हो।
विप्रतिपत्ति स्त्री० (सं) १-विरोध। २-परस्पर विरुद्ध वाक्य। ३-किसी बात का उलटा निरूपण। ४-बदनामी।
विप्रतिपद्य वि० (सं) १-जो कई प्रकार से सिद्ध किया जाय। २-जिसका विरोध किया जाय।
विप्रनष्ट वि० (सं) विशेष रूप से नष्ट।
विप्रमत्त वि० (सं) अति प्रमत्त।
विप्रमोहित वि० (सं) जिसकी बुद्धि मारी गई हो।
विप्रयाण पुं० (सं) भागना। पलायन।
विप्रयुक्त वि० (सं) १-वियोजित। २-बिछुड़ा हुआ। ३-मुक्त किया हुआ। ४-जिसका विभाग न हुआ हो।
विप्रयोग पुं० (सं) १-पार्थिक्य। बिलगाव। २-वियोग ३-झगड़ा। मनमुटाव।
विप्रयोगी वि० (सं) जो अलग होगया हो।
विप्रलंभ पुं० (सं) १-प्रिय वस्तु का न मिलना। २-वियोग। ३-छल। ४-धूर्तता। ५-बुरा काम।
विप्रलंभन पुं० (सं) छल या कपट करना।
विप्रलंभशृङ्गार पुं० (सं) वह जिसमें विरह का वर्णन होता है।
विप्रलब्ध वि० (सं) १-जिसे इच्छित वस्तु न मिली हो। २-प्रतारित।
विप्रलब्धा स्त्री० (सं) वह नायिका जो संकेत स्थान पर प्रिय को न पाकर दुःखी होती है।
विप्रलाप पुं० (सं) १-व्यर्थ की बकबक। २-झगड़ा। विवाद। ३-कटुवचन।
विप्र-समागम पुं० (सं) ब्राह्मणों के साथ उठने-बैठने वाला व्यक्ति।
विप्रस्व पुं० (सं) ब्राह्मणों का धन या सम्पत्ति।
विप्रेषक पुं० (सं) किसी दूर रहने वाले व्यक्ति को कोई वस्तु या रुपया आदि भेजने वाला। (रेमिटर)
विप्रेषण पुं० (सं) किसी दूर के स्थान पर कोई वस्तु या रुपया पैसा डाक, तार, रेलगाड़ी आदि द्वारा भेजना। (रेमिटैंस)।
विप्रोषित वि० (सं) बाहर भेजा हुआ।
विप्रोषितभर्तृका स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका पति या प्रेमी प्रवास में हो।
विप्लव पुं० (सं) १-उपद्रव। अशान्ति। २-विद्रोह। ३-विपत्ति। ४-बाढ़। ५-दूसरे राष्ट्र द्वारा कराया गया बलवा। ६-भभकी। ७-नाव का डूबना।
विप्लवी वि० (सं) उपद्रव करने वाला।
विप्लावक पुं० (सं) १-विप्लव या उपद्रव मचाने वाला। २-बलवाई। ३-जल की बाढ़ लाने वाला।
विप्लावित वि० (सं) १-घबड़ाया हुआ। २-बहाया हुआ। ३-जिसे नष्ट किया गया हो।
विप्लुप्त वि० (सं) १-बिखरा हुआ। २-घबराया हुआ। ३-व्यग्र। दुःखी। ४-पतित। ५-लत के कारण किसी वस्तु के अभाव से व्याकुल।
विप्लुप्तनेत्र वि० (सं) जिसके नेत्रों में आँसू हों।
विप्लुप्तभाषी वि० (सं) जो साफ न बोलता हो।
विप्लुप्ति स्त्री० (सं) हलचल। उपद्रव।
विप्सा स्त्री० (सं) दे० 'वीप्सा'।
विफल वि० (सं) १-जिसमें फल न आया हो। २-निष्फल। व्यर्थ। ३-जो न होने के समान हो।
विफाक पुं० (अ) १-एक राय होना। २-संघ।
विबंधन पुं० (सं) (फोड़े आदि को) कपड़े से विशेष रूप से बाधना। वि० जो कब्ज करे।
विबंधु वि० (सं) १-जिसके भाई बन्धु न हों २-अनाथ।
विबल वि० (सं) १-बल रहित। २-दुर्बल। ३-विशेष बलवान।
विबाधा स्त्री० (सं) कष्ट। क्लेश। पीड़ा।
विबुध वि० (सं) १-जाग्रत। जागा हुआ। २-विकसित ३-ज्ञानप्राप्त।
विबुधगुरु पुं० (सं) बृहस्पति।
विबुध-तटिनी स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
विबुधतरु पुं० (सं) कल्पवृक्ष।
विबुधद्विट् पुं० (सं) राक्षस। दैत्य।
विबुधधेनु स्त्री० (सं) कामधेनु।
विबुधरिपु पुं० (सं) दैत्य।
विबुधपति पुं० (सं) इन्द्र।
विबुधप्रिया स्त्री० (सं) देवी। भगवती।
विबुधबेलि स्त्री० (सं) कल्पलता।
विबुधमति वि० (सं) चतुर। दक्ष।
विबुधराज पुं० (सं) इन्द्र।
विबुधवन पुं० (सं) नन्दनकानन।
विबुधविलासिनी स्त्री० (सं) देवांगना। २-अप्सरा।
विबुधवैद्य पुं० (सं) अश्विनीकुमार।
विबुधसद्म पुं० (सं) स्वर्ग।
विबुधस्त्री स्त्री० (सं) अप्सरा।
विबुधाचार्य पुं० (सं) बृहस्पति।
विबुधाधिप पुं० (सं) देवताओं का राजा इन्द्र।
विबुधापगा स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
विबुधावास पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-मन्दिर।
विबुधेश्वर पुं० (सं) इन्द्र।
विबोध पुं० (सं) १-जागरण। जागना। २-अच्छा ज्ञान। ३-सावधान होना। ४-होश में आना। ५-विकाश। प्रफुल्लता।
विबोधन पुं० (सं) १-जागना। २-आँख खोलना। ३-समझाना-बुझाना।
विबोधित वि० (सं) १-जगाया हुआ। २-विकसित। ३-ज्ञापित।
विब्बोक पुं० (सं) दे० 'विब्वोक'।
विभंग पुं० (सं) १-गठन या रचना। २-टूटना। ३-

विभाग। ४-क्रम या परम्परा का टूटना। ५-भौं की चेष्टा। ६-मुख का भाव या चेष्टा। ७-चोट या आघात से शरीर की कोई हड्डी टूटना। (फ्रैक्चर)

विभञ्ज वि० (सं) १-टूटना। फूटना। २-ध्वंस। नाश।

विभक्त वि० (सं) १-विभाजित। बाँटा हुआ। २-अलग किया हुआ।

विभक्ता वि० (सं) १-विभाजन करने वाला। २-जो बँटवारा करे।

विभक्ति स्त्री० (सं) १-विभाग। २-अलगाव। ३-विभाजित या अलग होने की क्रिया या भाव। ४-शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिस से उस शब्द का क्रिया पद से सम्बन्ध ज्ञात होता है (व्या०)।

विभग्न वि० (सं) १-टूटा-फूटा हुआ। २-अलग हुआ।

विभव-कर पुं० (सं) वह कर जो किसी से उसकी धन सम्पत्ति या वैभव के विचार से लिया जाता हो। (मरकण्टाइलसेज-टैक्स)।

विभज्य वि० (सं) जिसका विभाग करना हो।

विभव पुं० (सं) १-धन। सम्पत्ति। २-शक्ति। ऐश्वर्य। ३-सौंदर्य। ४-आधिक्य। ५-साठ संवत्सरों में से एक। ६-मोक्ष।

विभवमद पुं० (सं) धन का मद या अहंकार।

विभववान् वि० (सं) [स्त्री० विभववती] १-धनी। अमीर। २-शक्तिशाली।

विभवशाली वि० (सं) १-धनी। २-ऐश्वर्य वाला।

विभवी वि० (सं) विभववान्।

विभाण्डक पुं० (सं) एक ऋषि का नाम।

विभाण्डिका स्त्री० (सं) आहुल्य वृक्ष।

विभाण्डी स्त्री० (सं) नीलापराजिता।

विभाँति स्त्री० (हि) प्रकार। भेद। किस्म। वि० (सं) अनेक प्रकार का। अव्य० अनेक प्रकार से।

विभा स्त्री० (सं) १-प्रभा। चमक। २-प्रकाश। ३-किरण। रश्मि। ४-शोभा।

विभाकर पुं० (सं) १-प्रकाश वाला। २-सूर्य। ३-अग्नि। ४-राजा। ५-आक।

विभाग पुं० (सं) १-बँटवारा। २-अंश। ३-पुस्तक का प्रकरण। ४-सुभीते के लिए कार्य का अलग किया हुआ क्षेत्र। (डिपार्टमेंट)। ५-पैतृक सम्पत्ति का अंश जो किसी को नियमानुसार दिया जाय। महकमा।

विभागक वि० (सं) विभाग करने वाला।

विभागकल्पना स्त्री० (सं) हिस्से बैठाना।

विभागतः अव्य० (सं) हिस्से के अनुसार।

विभागधर्म पुं० (सं) बँटवारे या विभाजन से सम्बन्धित कानून।

विभागपत्रिका स्त्री०(सं) वह पत्रक जिसमें बँटवारे का पूरा ब्योरा लिखा होता है।

विभाग भिन्न पुं० (सं) तक। छाछ।

विभागरेखा स्त्री० (सं) सीमा पर लगाई जाने वाली रेखा।

विभागवत् वि० (सं) विभाग के तुल्य।

विभागशः अव्य० (सं) विभाग के अनुसार।

विभागात्मक नक्षत्र पुं० (सं) रोहिणी आर्द्रा आदि आठ प्रकाशमय नक्षत्र।

विभागाध्यक्ष पुं०(सं) किसी विभाग का उच्च अधिकारी। (डिपार्टमेंटल हैड)।

विभागी पुं० (सं) १-विभाग करने वाला। २-हिस्सा पाने वाला। हिस्सेदार।

विभाजक पुं०(सं) १-विभाग करने वाला। २-बाँटने वाला। गणित में वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या को भाग दिया जाय।

विभाजन पुं० (सं) १-विभाग करने या बाँटने की क्रिया या भाव। २-पात्र। बर्तन।

विभाजनघंटी स्त्री० (हि) विधान सभा या संसद में किसी विधेयक पर बहस समाप्त होने पर उस पर मत जानने के लिए सदस्यों को अपने-अपने स्थान पर आ जाने की सूचना देने वाली घंटी। (डिवीजन बैल)।

विभाजनीय वि० (सं) विभाग करने या बाँटने योग्य।

विभाजित वि० (सं) जो बाँटा गया हो। विभक्त।

विभाज्य वि० (सं) १-बाँटा जाने योग्य। २-विभाग करने योग्य।

विभात पुं० (सं) प्रभात। सवेरा।

विभाति स्त्री० (सं) सुन्दरता। शोभा।

विभाना क्रि०(हि) १-चमकना। २-शोभा पाना। ३-चमकना। ४-शोभित करना।

विभारना क्रि०(हि) १-चमकना। २-भभकना।

विभाव पुं० (सं) साहित्य में रति आदि भावों को उनके आश्रय में उत्पन्न या उद्दीप्त करने वाली वस्तु या प्रत। रसविधान में भाव का उद्दीपक।

विभावन पुं० (सं) १-विशेष रूप से चिंतन। २-शिनाख्त। (आइडेंटिफिकेशन)।

विभावन-पत्र पुं० (सं) वह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहचान का सूचक हो और उसके पास इसी काम के लिए रहता हो। (आइडेंटिटी कार्ड)।

विभावना स्त्री० (सं) १-साहित्य में एक अलंकार जिसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति [illegible] होते हुए भी कार्य की सिद्धि या [illegible] का कारण नहीं हुआ करता [illegible] विरुद्ध कारण से किसी कार्य की [illegible] कार्य या कारण की उत्पत्ति [illegible] भाव धारना। ३-प्रमाण। ४-[illegible]

विभावनीय वि० (सं)

विभावरी स्त्री०

तारे चमकते हों। ३-हल्दी। ४-दूती। ५-बहुत बोलने वाली स्त्री।
विभावरीकांत पुं० (सं) चन्द्रमा।
विभावरीमुख पुं० (सं) सध्या।
विभावरीश पुं० (सं) चन्द्रमा।
विभावसु वि० (सं) जिसमें प्रकाश की अधिकता हो। पुं० १-सूर्य। २-आक। ३-अग्नि।
विभावित वि० (सं) १-चिन्तन किया हुआ। २-कल्पित। ३-निश्चित। ४-स्वीकृत।
विभाव्य वि० (सं) जिसके होने की आशा या संभावना हो। जो हो सकता हो। (प्रॉबेब्ल)।
विभाव्यता स्त्री० (सं) विभाव्य का भाव।
विभाषा स्त्री० (सं) १-व्याकरण में वे स्थल जहां ऐसे वचन पाये जायँ कि—'ऐसा न होता' आदि। २-विकल्प।
विभाषित वि० (सं) वैकल्पिक।
विभास पुं० (सं) चमक। २-सुबह का एक राग। ३-सप्तऋषियों में से एक।
विभासक वि० (सं) [स्त्री० विभासिका] १-चमकने वाला। २-चमकाने वाला। ३-प्रकाशित करने वाला।
विभासना क्रि० (हिं) चमकना। झलकना।
विभासिका वि० (सं) चमकने वाली।
विभासित वि०(सं) १-चमकता हुआ। २-प्रकट।
विभिन्न वि० (सं) १-प्रथक। २-अनेक प्रकार का। ३-उलटा। ४-हताश। ५-कटा हुआ।
विभिन्नता स्त्री०(सं) पार्थक्य। अलगाव।
विभीत वि० (सं) डरा हुआ। पुं० (स) बहेड़े का वृक्ष
विभीतक पुं० (स) बहेड़े का वृक्ष।
विभीति स्त्री०(सं) १-डर। भय। २-शङ्का। सन्देह।
विभीषक वि० (सं)डराने वाला। भयानक।
विभीषण वि० (सं) बहुत डरावना। भयानक। पुं० रावण का भाई जो रामचन्द्रजी की ओर से उससे लडा।
विभीषणा वि० (सं) [स्त्री० प्र०] डरावनी। भयानक स्त्री० एक मुहूर्त का नाम।
विभीषिका स्त्री०(सं) १-डराना। भयभीत करना। २-भयानक कांड या दृश्य।
विभु वि० (सं) १-बहुत बड़ा। २-सर्वव्यापक। ३-नित्य। ४-चिरस्थाई। पुं० १-ब्रह्मा। २-आत्मा। ३-प्रभु। ४-शिव। ५-भृत्य।
विभुक्ततु वि० (सं) शत्रु को डराने वाला।
विभुग्न वि० (सं) कुछ टूटा हुआ।
विभुता स्त्री० (स) १-प्रभुता। २-सर्वव्यापकता। ३-ऐश्वर्य। ४-अधिकार।
विभूति स्त्री० (सं) १-अधिकता। २-विभव। ३-धन-संपत्ति। ४-अलौकिक शक्ति। ५-लक्ष्मी। ६-प्रभुत्व ७-सृष्टि। ८-शिव के अंग में लगाने की भस्म।
विभूतिमान् वि० (सं) १-शक्ति-सम्पन्न। २-धनवान
विभूत्व पुं० (स) दे० 'विभुता'।
विभूषण वि० (सं) १-भूषण। गहना। २-गहनों से सजाना।
विभूषना क्रि० (हि) १-गहनों से सजाना। २-सुशोभित करना।
विभूषित वि० (सं) १-अलंकृत। २-(गुण आदि से) युक्त। ३-शोभित।
विभेंटन पुं० (हि) भेंटना। गले मिलना।
विभेद पुं० (सं) १-विभिन्नता। २-अनेक भेद। ३-विशेष रूप से किया किया गया भेद (डिसक्रिमिनेशन)। ४-भेदन करना। ५-कटाव। दरार। ६-मिश्रण।
विभेदक पुं० (सं) १-भेदन करने वाला। २-एक से दूसरे की विशेषता प्रकट करने वाला।
विभेदकारी वि० (सं) १-कटने वाला। २-भेद करने वाला। ३-फूट डालने वाला।
विभेदन पुं० (सं) १-काटना। तोड़ना। ३-धंसाना ३-अलग-अलग करना। ४-भेद दिखाना या डालना।
विभेदना क्रि० (हि) १-भेद न करना। २-काटना। ३-प्रवेश करना। ४-भेद डालना।
विभेदी वि० (सं) १-काटने या छेदने वाला। २-२-धँसने वाला। ३-भेद करने वाला।
विभेदीकरण पुं० (सं) व्यवहार आदि में एक की अपेक्षा दूसरे से भेद भाव करना। (डिसक्रिमिनेशन)।
विभेद्य वि० (सं) भेदने या छेदने योग्य।
विभोर वि० (हि) १-विह्वल। विकल। ३-मग्न। ३-मस्त।
विभौ पुं० (हि) दे० 'विभव'।
विभ्रम पुं० (सं) १-भ्रमण। २-भ्रम। ३-सन्देह। ४-घबराहट। ५-शोभा। ६-स्त्रियों का एक भाव जिसमें प्रियतम को देख कर हर्ष के कारण गहने उलटे पहन लेती हैं।
विभ्रांत वि० (सं) १-भ्रम में पड़ा हुआ। २-घूमता हुआ।
विभ्रांतमना वि० (सं) जिसकी बुद्धि मारी गई हो।
विभ्रांति स्त्री० (सं) १-चक्कर। फेरा। २-भ्रम। ३-घबराहट।
विभ्राजित वि० (सं) जो चमकाया गया हो।
विभ्राट पुं० (सं) १-आपत्ति। संकट। २-बखेड़ा। उपद्रव। वि० प्रकाशमान्।
विमंडन पुं० (स) १-शृंगार करना। सजाना। २-भूषण। अलंकार।
विमंडित वि० (सं) १-सजा हुआ। २-सहित। युक्त ३-सुशोभित।

विमथन पुं० (सं) खूब मथना ।
विमथित वि० (स) अच्छी प्रकार से मथा हुआ ।
विमत पु०(स)१-विपरीत सिद्धान्त । २-विरुद्ध में दिया जाने वाला मत ।
विमत-टिप्पणी स्त्री० (सं) किसी विषय की जांच आदि के लिए बनाई गई समिति के सदस्यों द्वारा किये गये प्रतिवेदन से अपना विरोध प्रकट करने के लिए किसी सदस्य या सदस्यों द्वारा अलग से जोड़ा गया वक्तव्य । (मिनट आफ डिसेंट) ।
विमद वि० (सं) १-जो मतवाला न हो । मद रहित । २-(वह हाथी) जिसमें मद न हो।
विमन वि० (स) १-उदास । खिन्न । २-अनमना ।
विमर्द पुं० (स) १-खूब मर्दन करना । २-उबटन करना । ३-स्पर्श । ४-नाश । ५-युद्ध । ६-ग्रहण ।
विमर्दक वि० (स) १-मसल डालने वाला । २-ध्वस्त करने वाला ।
विमर्श पुं० (स) १-किसी बात का विवेचन । २-आलोचना ।समीक्षा । ३-परामर्श । ४-परीक्षा ।
विमर्शन पु०(स) आलोचना अथवा विवेचना करना। तर्क ।
विमर्शी वि० (सं) आलोचना अथवा विवेचना करने वाला।
विमर्ष पुं० (स) १-विचार या विवेचन । २-आलोचना । ३-परीक्षा । ४-परामर्श । ५-नाटक की पांच सन्धियों में से एक ।
विमल वि० (स) १-स्वच्छ । २-पवित्र । ३-सुन्दर । ४-पारदर्शक ।
विमला वि० (स) निर्मल । स्वच्छ । स्त्री० (सं) १-एक भूमि । २-सरस्वती । ३-चांदी आदि का मुलम्मा ।
विमलावर्त पुं० (स) विष्णु ।
विमांस पुं० (स) अपवित्र या न खाने योग्य मांस ।
विमाता स्त्री० (स) सौतेली मां ।
विमातृज पुं० (सं) सौतेला भाई ।
विमान पु० (सं) १-उड़नखटोला । आकाश मार्ग से गमन करने वाला रथ । २-वृद्ध मनुष्य की धूमधाम से निकाली गई अर्थी । ३-हवाई जहाज । (एयरोप्लेन) । ४-रथ । घोड़ा । ५-सात खण्ड का मकान । ६-परिमाण । ७-अनादर ।
विमानकर्मी पु० (सं) विमान या हवाई जहाज पर काम करने वाले कर्मचारी । (एयर क्रू) ।
विमानघर पुं० (सं) विमान खड़ा करने का घर । (हैंगर) ।
विमानचारी वि० (स) विमान द्वारा यात्रा करने वाला ।
विमानचालक पु० (सं) हवाई जहाज या विमान चलाने वाला । (पाइलट) ।
विमानचालन पु० (स) विमान या हवाई जहाज चलाने की क्रिया । (एविएशन) ।
विमानचालन विज्ञान पु० (स) विमान या हवाई जहाज चलाने की विद्या । (एयरोनॉटिक्स) ।
विमानवाहकपोत पुं० (स) अनेक हवाई जहाजों को ले जाने वाला समुद्री जहाज जिसकी लम्बी चौड़ी छत पर हवाई जहाज उतर सकते हैं तथा ऊपर उड़ सकते हैं । (एयर क्राफ्ट कैरियर) ।
विमानवेधी तोप स्त्री० (हि) एक प्रकार की तोप जो हवाई जहाजों को गोली मारकर नीचे गिरा सकती है । (एंटी एयरक्राफ्ट गन) ।
विमान सेनाधिकारी पु० (स) किसी वायु सेना की टुकड़ी का नायक । (विंग कमांडर) ।
विमानना स्त्री० (स) १-तिरस्कार । २-अपमान ।
विमानास्थान पु० (स) हवाई जहाज के ठहरने या ठहरने का स्थान या केन्द्र । (एयरबेज) ।
विमानित वि० (स) जिसका आदर किया गया हो। तिरस्कृत ।
विमानीकृत वि० (सं) १-हवाई जहाज या विमान बनाया हुआ । २-अपमानित ।
विमार्ग पुं० (स) १-बुरी चाल या रास्ता । २-झाड़ू
विमार्गगा स्त्री० (स) बुरे मार्ग पर चलने वाली स्त्री । कुलटा ।
विमार्गगामी वि० (स) बुरी राह पर जाने वाला ।
विमार्जन पु० (स) १-साफ करना । २-पवित्र करना
विमुक्त वि० (सं) १-अच्छी तरह मुक्त । २-स्वतंत्र । स्वच्छन्द । ३-त्यक्त । ४-धरी । ५-दण्ड आदि से बचा हुआ ।
विमुक्तकंठ वि०(स)अधिक जोर से रोने या चिल्लाने वाला ।
विमुक्तशाप वि० (सं) जिसे किसी शाप से छुटकारा मिल गया हो ।
विमुक्ति स्त्री० (स) १-छुटकारा । रिहाई । २-मुक्ति मोक्ष । ३-अभियोग से छूटना ।
विमुक्तिपथ पु० (स) स्वर्ग या मोक्ष का पथ ।
विमुख वि० (स) १-विरत । २-जिसके मुख न हो । ३-विरुद्ध । ४-निराश । ५-जो अनुरक्त न हो ।
विमुग्ध वि० (स) १-मोहित । २-भ्रांत । ३-घबराया हुआ । ४-मतवाला । ५-पागल ।
विमुग्धक पु० (स) १-मोहित करने वाला । २-एक प्रकार का छोटा अभिनय । नकल ।
विमुग्धकारी पुं० (सं) १-मोहने वाला । २-भ्रम में डालने वाला ।
विमुद वि० (स) उदास । खिन्न ।
विमुद्रीकरण पु० (स) किसी नोट या सिक्के का ... के रूप में चलना बन्द करना । (डीमोनेटाइज़े
विमूढ़ वि० (स) १-विशेष रूप से मोहित । २-

३-ज्ञानरहित। ४-नादान।
विमूढ़क पु० (सं) नाटक में एक प्रहसन।
विमूढ़गर्भ पु० (सं) वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो।
विमूढ़चेता वि० (स) जिसमें समझ न हो। मूर्ख।
विमूढ़भाव पुं० (सं) अचेत होने की अवस्था या भाव।
विमूर्च्छ वि० (सं) जिसे होश आ गया हो।
विमूल वि० (सं) १-निर्मूल। नष्ट। ३-बिना जड़ का।
विमूलन पु० (सं) १-जड़ से उखाड़ना। २-ध्वंस।
विमृश्य वि० (सं) आलोचना या समीक्षा के योग्य।
विमोक्ता पुं० (स) मुक्त करने वाला।
विमोक्ष पुं० (सं) १-बन्धन का खुलना। २-मुक्ति। छुटकारा ३-निर्वाण। ४-उग्रह। ५-प्रक्षेपण।
विमोक्षण पुं० (सं) १-बन्धन आदि खोलना। २-मुक्त करना।
विमोघ वि० (सं) न चूकने वाला। अमोघ।
विमोचक वि० (सं) मुक्त करने वाला। छोड़ने वाला।
विमोचन पुं० (स) १-बन्धन आदि से छूटना। २-संदिग्ध प्रमाणों के कारण अभियोग से मुक्त होना। (एक्विटल)। ३-किसी आवर्तक भार देने से छूटने के लिए एक ही बार में कुछ इकट्ठा धन देना। (रिडम्पशन) ४-निकालना। ५-गिरना।
विमोचना क्रि० (हि) १-छुटकारा देना। २-निकालना। ३-गिराना।
विमोचनीय वि० (सं) छोड़ने योग्य।
विमोचित वि० (स) १-खुला हुआ। २-मुक्त किया हुआ।
विमोह पु०(सं) १-मोह। अज्ञान। २-एक नाटक का नाम। ३-बेहोशी।
विमोहक पुं० (स) १-मुग्ध करने वाला। २-साधु रहने वाला। ३-ललचाने वाला।
विमोहन पुं०(स) १-मुग्ध करना। २-सुधबुध भूलना ३-दूसरे को वश में करना। ४-एक नरक।
विमोहनशील वि० (सं) १-धोखा देने वाला। २-लुभाने वाला।
विमोहना क्रि०(हि) १-मोहित होना। २-बेसुध होना ३-धोखे में डालना। ४-बेसुध करना।
विमोहित वि० (सं) १-मुग्ध। लुभाया हुआ। २-मूर्छित।
विमोही वि० (सं) १-मोहित करने वाला। २-भ्रम में डालने वाला। ३-निष्ठुर। ४-बेहोश करने वाला।
विमौट पु० (हि) बाँबी। वाल्मीक।
वियंग पुं० (हि) शिव।
विय वि० (हि) १-दो। जोड़ा। २-दूसरा।
वियत् पुं० (स) १-आकाश। २-वायुमंडल।
वियत्पताक स्त्री० (सं) बिजली। विद्युत।
वियद्‌गंगा स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
वियन्मणि पुं० (सं) सूर्य।
वियुक्त वि० (सं) १-जिसका वियोग हुआ हो। २-अलग। ३-रहित। (माइनस)।
वियो वि० (हि) दूसरा। अन्य।
वियोग पु० (सं) १-अलग होना। २-विरह। ३-अलग होने का दुःख। ४-कम किया जाना।
वियोगशृङ्गार पुं० (सं) दे० 'विप्रलम्भशृंगार'।
वियोगांत वि० (स) जिसकी कथा का अन्त दुःखपूर्ण हो (नाटक, कथा आदि)।
वियोगावसान वि० (स) जिसकी मृत्यु या अन्त वियोग में हो।
वियोगिन स्त्री० (सं) दे० 'वियोगिनी'।
वियोगिनी वि० (सं) जो अपने प्रेमी से बिछुड़ गई हो।
वियोगी वि० (सं) अपनी प्रेमिका से बिछड़ा हुआ। विरही। पु० १-विरही व्यक्ति। २-चकवा।
वियोजक पुं०(सं) १-पृथक करना। २-गणित में संख्या जिसे दूसरी संख्या में से घटाना हो।
वियोजन पु० (स) १-किसी वस्तु के संयोजक भागों को अलग करना। २-गणित में बाकी। ३-युद्धकाल में बढ़े सैनिकों को सैनिक सेवा से हटाना (डिमिलिटेराइजेशन)।
वियोजित वि० (स) अलग किया हुआ। रहित।
वियोज्य वि०(सं) जिसे अलग करना हो। पुं० गणित में वह संख्या जो घटती हो।
विरंग वि० (हि) १-बदरङ्ग। २-अनेक रंगों का।
विरंच पुं० (सं) ब्रह्मा।
विरंचि पु० (स) सृष्टि रचने वाला ब्रह्मा।
विरंजन पु० (सं) वह प्रक्रिया जिससे किसी वस्तु के सब रंग निकल जायँ। (ब्लीचिंग)।
विरक्त वि० (सं) १-विमुख। २-अप्रसन्न। ३-उदासीन। पु० (सं) ऐसे बाजे जो केवल ताल देने के काम आते हैं।
विरक्ति स्त्री० (सं) १-विराग। २-उदासीन। ३-अप्रसन्नता।
विरचन पु० (सं) १-निर्माण। २-तैयारी।
विरचना क्रि० (हि) १-निर्माण करना। २-सजाना। ३-विरक्त होना।
विरचयिता पुं० (सं) रचने या बनाने वाला।
विरचित वि० (सं) १-निर्मित। २-रचा हुआ। ३-सजा हुआ।
विरजस वि० (सं) निर्मल। स्वच्छ। स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसे रजोदर्शन न होता हो।
विरजा स्त्री० (सं) दे० 'विरजस्'।
विरत वि० (सं) १-विमुख। २-निवृत्त। ३-विरागी। ४-लीन। ५-कार्य या पद से हटा।

(रिटायर्ड)।
विरति स्त्री० (सं) १-उदासीनता। २-विरत होने का का भाव। ३-कार्य, पद, या सेवा से अलग होना। (रिटायर्मेन्ट)।
विरथ वि० (सं) १-जिसके पास सवारी न हो। २-पैदल। ३-रथ से घिरा हुआ।
विरद पुं० (हि) १-बड़ा नाम। २-यश। स्त्रीलिं वि० (सं) बिना दाँत का।
विरदावली स्त्री० (हि) प्रशंसा या यश के गीत।
विरदैत वि० (हि) बड़े नाम वाला। यश वाला।
विरमण पु० (सं) १-रुकना। ठहरना। २-रम जाना।
विरमना क्रि० (हि) १-अनुरक्त हो जाना। २-रुकना। ३-वेगादि का थमना या कम होना।
विरमाना क्रि० (हि) १-अनुरक्त करना। २-मोहित करके रोकना। ३-फँसा रखना।
विरल वि० (सं) १-जो घना न हो। २-जो अधिकता से न मिले। ३-पतला। ४-अल्प। ५-दुर्लभ।
विरलित वि० (सं) जो घना न हो।
विरव वि० (सं) नीरव। शब्दरहित। पुं० (सं) अनेक प्रकार के शब्द।
विरस वि० (सं) १-नीरस। फीका। २-अरुचिकर। ३-(वह काव्य) जिसमें रस का निर्वाह न हुआ हो पुं० (सं) काव्य रसभङ्ग।
विरह पु० (सं) १-किसी से अलग होने का भाव। २-वियोग। ३-दुःख वि० (सं) रहित।
विरहज वि० (सं) विरह से उत्पन्न।
विरहजन्य वि० (सं) विरहज।
विरहज्वर पुं० (सं) वियोग से उत्पन्न ताप।
विरहाग्नि स्त्री० (सं) दे० 'विरहाग्नि'।
विरहाग्नि स्त्री० (सं) विरह की अग्नि।
विरहानल पुं० (सं) दे० 'विरहाग्नि'।
विरहिणी वि० (सं) जिसे अपने प्रेमी या पति का वियोग हो।
विरहित वि० (सं) रहित। शून्य। बिना।
विरही वि० (हि) वियोगी।
विरहोत्कंठिता स्त्री० (सं) वह नायिका जिसका प्रेमी नियत समय पर कारणवश न आ सके।
विराग पुं० (सं) १-रुचि या इच्छा का अभाव। २-उदासीन भाव। ३-वैराग्य। ४-एक में मिले हुए दो राग।
विरागी वि० (हि) १-जिसे चाह न हो। उदासीन। २-विरक्त। संसार त्यागी।
विराजना क्रि० (हि) १-शोभित होना। फबना। २-बैठना। ३-विद्यमान होना (आदरसूचक)।
विराजमान वि० (सं) १-प्रकाशमान। चमकता हुआ। २-उपस्थित। ३-बैठा हुआ।
विराजित वि०(सं) १-सुशोभित। २-प्रकाशित। उपस्थित।
विराट पुं० (सं) १-मत्स्यदेश। २-इस देश के राजा। ३-महाभारत का एक पर्व। ४-संगीत में एक ताल का नाम।
विराट् पुं० (सं) १-विश्वरूप ब्रह्म। २-विश्व। ३-क्षत्रिय। ४-कीर्ति। (सं) बहुत भारी।
विराम पु० (सं) १-रुकना। ठहरना। २-विश्राम। ३-वाक्य में वह स्थान जहाँ बोलते समय कुछ काल ठहरना पड़ता है। ४-यति।
विरामकाल पुं० (सं) वह समय या छुट्टी जो विराम करने के लिए मिलती है।
विरामण पु० (सं) रुकाव। ठहराव।
विरामसंधि स्त्री० (सं) किसी कारण से कुछ काल के लिए युद्ध बन्द करने की संधि। (ट्रूस)।
विराल पु० (सं) बिड़ाल। बिल्ली।
विराव पु०(सं)१-शब्द। बोली। कलरव। २-हल्ला-गुल्ला। वि० शब्दरहित।
विरास पु० (हि) दे० 'विलास'।

विरिक्त वि० (सं) १-बिलकुल साफ किया हुआ। २-जिसे दस्त कराये गये हों।
विरुज वि० (सं) स्वस्थ। नीरोग।
विरुझना क्रि० (हि) दे० 'उलझना'।
विरुझाना क्रि० (हि) १-उलझना। २-उलझाना। ३-मचलना।
विरुत वि० (सं) कूजित। रवयुक्त। गूँजता हुआ।
विरुद पुं० (सं) १-राजाओं की स्तुति। यशवर्णन। २-यश। ३-प्राचीन राजाओं की एक पदवी।
विरुदावली स्त्री० (सं) कीर्ति या यश का विस्तृत रूप में गान।
विरुद्ध वि०(सं) १-प्रतिकूल। खिलाफ। २-अप्रसन्न। ३-अनुचित। ४-विपरी। ५ खिलाफ।
विरुद्धता स्त्री० (सं) १-विरुद्ध होने का भाव। २ विपरीतता। उलटापन।
विरुद्धाचरण पुं० (सं) बुरा आचरण। बुरा या प्रतिकूल कर्म।
विरुद्धासन पु० (सं) वह आहार जिसे वर्जित कर दिया गया हो।
विरुद्धोक्ति स्त्री० (सं)१-झगड़ा। कलह। २-प्रतिकूल वचन।
विरुष्ट वि० (सं) जो हरा न हो।
विरूढ़ वि० १-चढ़ा हुआ। आरूढ़। २-उगा हुआ। अङ्कुरित। ३-खूब गढ़ा हुआ।
विरूप वि० (सं) १-अनेक रंग रूपों वाला। २-भद्दा

३-परिवर्तित । ४-शोभाहीन । ५-विरुद्ध । पुं० (सं) १-कुरूप शकल । २-पांडु रोग । ३-शिव ।
विरूपक वि० (सं) १-कुरूप । भद्दा । २-अनुचित ।
विरूपता स्त्री० (सं) १-विरूप होने का भाव । २-कुरूपता । भद्दापन ।
विरूपाक्ष वि० (सं) जिसकी आँखें डरावनी या भद्दी हों । पुं० (सं) १-शिव । २-एक नाग । ३-शिव का एक अनुचर ।
विरेचक वि० (सं) दस्तावर ।
विरेचन पुं० (सं) १-जुलाब । २-दस्त लाना । ३-निकालना ।
विरोद्धा वि० (सं) जो विरोध करता हो ।
विरोध पुं० (सं) १-मेल न होना । २-शत्रुता । ३-व्याघात । ४-किसी कार्य को रोकने का प्रयत्न । ५-भिन्न-भिन्न विचारों में होने वाला पारस्परिक विपरीत भाव । (रिपगनेन्सी) । ६- उलटी स्थिति । ७-नाश । ८-एक अर्थालंकार । ९-नाटक का वह अंग जिसमें विपत्ति का आभास दिखाया जाता है ।
विरोधक वि० (सं) विरोध करने वाला ।
विरोधकारक वि० (सं) झगड़ा पैदा करने वाला ।
विरोधकारी वि० (सं) कलह या मनमुटाव बढ़ाने वाला ।
विरोधकृत वि० (सं) जो विरोध करता हो ।
विरोधक्रिया स्त्री० (सं) कलह । झगड़ा ।
विरोधन पुं० (सं) १-विरोध करना । २-नाश । ३-असामंजस्य । ४-बाधा । वि० (सं) विरोध करने वाला ।
विरोधना क्रि० (हिं) विरोध, शत्रुता या लड़ाई करना
विरोधपरिहार पुं० (सं) विरोध या झगड़ा दूर करना
विरोधाभास पुं० (सं) १-दो बातों में दिखाई देने वाला विरोध । २-एक अर्थालंकार ।
विरोधित वि० (सं) जिसका विरोध किया गया हो ।
विरोधिता स्त्री० (सं) १-शत्रुता । विरोध । २-नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि । (फ० ज्यो०) ।
विरोधी वि० (हिं) १-विरोध करने वाला । २-विपक्षी । ३-शत्रु । पुं० (सं) साठ संवत्सरों में से एक ।
विरोपित वि० (सं) (पौधा) जो रोपा या लगाया गया हो ।
विरोपितव्रण वि० (सं) जो घाव भर गया हो ।
विरोमा वि० (सं) बिना रोम या रोएँ का ।
विलंघना स्त्री० (सं) १-लांघ कर पार करना । २-हराना ।
विलंघनीय वि० (सं) १-लांघने या पार करने योग्य । २-परास्त करने योग्य ।
विलंघ्य वि०(सं) १-पार करने योग्य । २-परास्त होने योग्य । ३-सहज ।
विलंब पुं० (सं) बहुत काल । साधारण या नियत से अधिक समय । देर । (डिले) ।
विलंबकारी-प्रस्ताव पुं० (सं) विधान सभा आदि में उपस्थित किया जाने वाला ऐसा प्रस्ताव जिसका उद्देश्य किसी विधेयक आदि या सभा के सामने उपस्थित विषय की कार्रवाई के समाप्त होने में देर लगे । (डाइलेटरी मोशन) ।
विलंबन पुं० (सं) १-विलम्ब या देर करना । २-लटकना । ३-सहारा पकड़ना ।
विलंबना क्रि० (हिं) १-देर करना । २-लटकाना । ३-सहारा लेना ।
विलंबित वि० (सं) १-जिसमें देरी हुई हो । २-लटकता हुआ । ३-मन्दगति से गाया जाने वाला (गाना) । पुं० चलने में सुस्त पशु जैसे—हाथी, भैंस तथा गैंडा ।
विलंब करना क्रि० (हिं) कोई प्रश्न,विचार आदि को किसी आने वाली तिथि या समय के लिए स्थगित कर देना । (पोस्टपोन) ।
विलक्षण वि० (सं) १-अद्भुत । अनोखा । २-असाधारण ।
विलक्षणता स्त्री० (सं) अपूर्वता । अनोखापन ।
विलक्षित वि० (सं) १-जो अच्छी प्रकार से सुना या समझा गया हो । २-जिसका कोई चिह्न न हो । ३-जिसका कोई भेद न किया गया हो ।
विलक्ष्य वि० (सं) १-लक्ष्य या निशाना चूक जाने वाला (बाण) । २-बिना किसी लक्ष्य के ।
विलखना क्रि० (हिं) १-दुखी होना । बिलखना । २-देखना । पता पाना ।
विलखाना क्रि० (हिं) विकल करना ।
विलग वि० (हिं) अलग । पृथक । पुं० अन्तर । फरक भेद ।
विलगाना क्रि० (हिं) १-अलग होना । २-विभक्त या अलग दिखाई देना । ३-अलग करना ।
विलग्न वि० (सं) १-चिपटा हुआ । २-घुमाया हुआ ३-बीता हुआ । ४-पतला । नाजुक । पुं० १-कमर २-कूल्हा ।
विलग्नमध्या स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसकी कमर पतली हो ।
विलच्छन वि० (हिं) दे० विलक्षण ।
विलज्ज वि० (सं) निर्लज्ज । बेहया । बेशर्म ।
विलज्जित वि० (सं) जो शर्मिन्दा हो । लजाया हुआ
विलपन पुं० (सं) विलाप । रुदन ।
विलपना क्रि० (हिं) रोना । विलाप करना ।
विलपाना क्रि० (हिं) रुलाना ।
विलपित वि० (सं) विलाप करते हुए ।
विलय पुं० (सं) १-लीन होना । २-एक वस्तु का दूसरी वस्तु में समा जाना । ३-घुल या गल जाना ४-विघटित होना । ५-किसी रियासत आदि का

पास के इलाके के साथ मिल जाना। (मर्जर)। ६-लीन होना।
विलयन पुं० (सं) दे० 'विलय'।
विलसन पुं० (सं) १-चमकना। २-क्रीड़ा। प्रमोद।
विलसना क्रि० (हि) १-शोभा पाना। २-क्रीड़ा करना। ३-आनन्द मनाना।
विलसाना क्रि० (हि) भोगना। आनन्द मनाना।
विलसित वि० (हि) १-हर्षित। २-शोभित।
विलाप पुं० (सं) रोकर दुःख प्रकट करना। रोना। क्रन्दन।
विलापना क्रि० (हि) १-विलाप या शोक करना। २-२-वृक्ष रोपना या लगाना।
विलापी वि० (सं) रोने वाला।
विलायत स्त्री० (प) १-विदेश। २-दूर का देश।
विलायती वि० (प) १-विदेशी। २-दूसरे देश का बना हुआ।
विलायती-डाक स्त्री०(प) योरोप से आने वाली डाक
विलायती बैंगन पुं०(हि) एक प्रकार के सफेद रङ्ग का बैंगन।
विलास पुं० (सं) १-मनोविनोद। २-आनन्द। हर्ष। ३-कोई मनोहर चेष्टा। ४-यथेष्ट सुख भोगना। ५-स्त्रियों की पुरुषों के प्रति अनुरागयुक्त चेष्टाएँ।
विलासक पुं० (सं) इधर-उधर फिरने वाला।
विलासकोदंड पुं० (सं) कामदेव।
विलासगृह पुं० (सं) प्रमोद या क्रीड़ागृह।
विलासचाप पुं० (सं) कामदेव।
विलासधन्वा पुं० (सं) कामदेव।
विलासन पुं० (सं) १-चमकने की क्रिया।
विलासमंदिर पुं० (सं) विलासगृह।
विलासिनी स्त्री० (सं) १-सुन्दरी युवा स्त्री। २-वेश्या ३-एक वर्णवृत्त।
विलासी वि० (सं) १-कामी। ...
लगा रहने वाला।
विलीक वि० (हि) अनुचित।
विलीन वि० (सं) १-लुप्त। अदृश्य। २-मिला हुआ। ३-नष्ट। ४-छिपा हुआ।
विलीयन पुं० (सं) १-पिघलना। २-घुलना।
विलुंठन पुं० (सं) १-चोरी करना। २-लूटना।
विलुंठित वि० (सं) १-जो चोरी किया गया हो। २-लोटा हुआ।
विलुप्त वि० (सं) १-अदृश्य। लुप्त। २-नष्ट।
विलुप्तवित्त वि० (सं) जिसका धन लूट लिया गया हो
विलुलित वि० (सं) १-चंचल। अस्थिर। २-कुह-लाया हुआ।
विलेख पुं० (सं) १-विचार। २-सोच-विचार। ३-वह साधन पत्र जिसमें दो पक्षों में होने वाला अनुबन्ध लिखा हो जो निष्पादक के द्वारा हस्ताक्षरित होकर दूसरे पक्ष को दिया गया हो। (डीड)।
विलेखन पुं० (सं) १-नदी का मार्ग। २-खरोंचना। ३-फाड़ना। ४-विभाग करना।
विलेप पुं० (सं) १-लेप। २-गारा। पलस्तर।
विलेपन पुं० (सं) १-लेप करना। २-लेप करने का पदार्थ।
विलेपनी स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसने सुगन्धित लेप लगा रखा हो।
विलेपी वि० (सं) १-लेप करने वाला। २-पलस्तर करने वाला। ३-लसदार।
विलेप्य वि० (सं) जिसका पलस्तर या लेप किया गया हो।
विलेवासी पुं० (सं) सर्प।
विलेशय पुं० (सं) १-वह जीव जो बिल या दरार में रहता है। २-सर्प।
विलोकन पुं० (सं) १-देखना। २-जानकारी प्राप्त करना। ३-विचार करना।
विलोकना क्रि०(हि) १-देखना। २-अवलोकन।
विलोकनि स्त्री० (हि) दे० 'विलोकना'।
विलोकनीय वि० (सं) देखने योग्य।
विलोकी वि० (सं) १-देखने वाला। २-जानकारी प्राप्त करने वाला।
विलोचन पुं० (सं) १-नेत्र। नयन। २-एक नरक का नाम। ३-आँख फोड़ने की क्रिया।
विलोचनपथ पुं० (सं) दृष्टिपथ।
विलोचनांबु पुं० (सं) आँसू।
विलोडक पुं० (सं) चोर।
विलोडन पुं० (सं) १-हिलना। डुलना। २-बिलोना। मथना।
विलोडना क्रि० (हि) दे० 'विलोडना'।
विलोडित वि० (सं) १-हिलाया हुआ। २-मथा हुआ
...
की क्रिया। २-रद्द करना। (कैंसलेशन)। ३-किसी वाक्य या रचना का कुछ अंश निकालना। (ओमीशन)। ४-बाधा। ५-आघात। ६-लोप। ७-नाश।
विलोपना क्रि० (हि) १-नष्ट या लुप्त करना। २-लेकर भागना।
विलोपित वि० (सं) १-लुप्त किया हुआ। २-नष्ट या भङ्ग किया हुआ।
विलोपी वि० (सं) नाश करने वाला। भङ्ग करने वाला।
विलोपीकरण पुं० (सं) रद्द या प्रभावहीन बना देना (रिपील)।
विलोप्य वि० (सं) भङ्ग करने या नाश करने योग्य।
विलोभन पुं० (सं) १-लोभ दिखाना।

आकर्षित करना। ३–ललचाना।
विलोम वि० (सं) विपरीत। उलटा। पुं० (सं) १–नीचे की ओर आने का क्रम। २–सर्प। ३–वरुण। ४–रहट। ५–कुत्ता।
विलोमा वि० (सं) १–नीचे की ओर या उलटा मुड़ा हुआ। २–जिसके केश न हों।
विलोमित वि० (सं) उलटा हुआ। नीचे की ओर मुड़ा हुआ।
विलोमी स्त्री० (सं) आंवला।
विलोल वि० (सं) १–चञ्चल। २–सुन्दर।
विलोलतारक वि० (सं) चंचल नेत्र वाला।
विलोललोचन वि० (सं) जिसकी आँखों में आंसू हों
विलोलहार वि० (सं) जिसका हार हिल रहा हो।
विलोलित वि० (सं) १–क्षुब्ध किया हुआ। २–हिलाया हुआ।
विलोलितदृक् वि० (सं) जिसके नेत्र चंचल हों।
विलोलुप वि० (सं) १–जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो। २–जो लालची न हो।
विल्व पुं० (सं) बेल का पेड़।
विषंघक पुं० (सं) १–कोष्ठबद्धता। २–रोकने वाला
विव वि० (हि) दे० 'विवि'
विवक्ता पुं० (सं) १–कहने वाला। २–संशोधन करने वाला। ३–किसी बात को प्रकट करने वाला।
विवक्षा स्त्री० (सं) १–कहने की इच्छा। २–अर्थ। तात्पर्य। ३–फल या परिणाम रूप में होने वाली बात (इम्प्लिकेशन)।
विवक्षित वि० (सं) १–जिसके कहने की इच्छा हो। २–इच्छित। अपेक्षित।
विवक्षु वि० (सं) बोलने या कोई बात कहने की इच्छा वाला।
विवदना क्रि० (हि) विवाद करना। झगड़ना।
विवर पुं० (सं) १–छिद्र। छेद। २–बिल। ३–दरार ४–गुफा। कन्दरा।
विवरण पुं० (सं) १–किसी बात या कार्य से संबंधित मुख्य बातों का वर्णन। वृत्तान्त। हाल। (आउट डिस्क्रिप्शन)। २–व्याख्या। टीका।
विवरण पत्रिका स्त्री० (सं) किसी विद्यालय, परीक्षा, आदि की नियमावली या पाठ्यक्रम आदि की सूचना देने वाली पुस्तक। (प्रोस्पेक्टस)।
विवरणिका स्त्री० (सं) सभा, संस्थाओं, या घटनाओं आदि का वह विवरण जो सूचना के लिये भेजा जाय। (रिपोर्ट)।
विवरणी स्त्री० (सं) पैदावार आदि की आंकड़ों के साथ तैयार की गई विवरणिका जो उच्च अधिकारियों के पास भेजी जाती है। (रिटर्न)।
विवरना क्रि० (हि) दे० 'विवरना'।
विवर्जन पुं० (सं) १–परित्याग। २–उपेक्षा। अनादर
विवर्जित वि० (सं) १–वर्जित। निषिद्ध। २–उपेक्षित रहित।
विवर्ण पुं० (सं) साहित्य में वह भाव जिसमें लज्जा, मोह क्रोध आदि के कारण नायक या नायिका का मुख रंग बदल जाता है। वि० १–बदरंग। २–कांतिहीन। ३–नीच। ४–कुजाति।
विवर्त पुं० (सं) १–समूह। नाच। नृत्य। ३–आकाश ४–रूपांतर। ५–भ्रम।
विवर्तन पुं० (सं) १–घूमना। चक्कर लगाना। २–घूमना-फिरना। ३–नृत्य।
विवर्तित वि० (सं) १–परिवर्तित। २–उखड़ा हुआ। ३–मोच आया हुआ। (अंग)।
विवर्धन पुं० (सं) १–बढ़ाना। २–किसी छोटी वस्तु के प्रतिबिंब को किसी विशिष्ट प्रक्रिया द्वारा बड़ा करना। (मैगनीफिकेशन)।
विवर्धित वि० (सं) १–बढ़ा हुआ। २–उन्नत।
विवश वि० (सं) १–बेबस। मजबूर। २–पराधीन। ३–जो काबू में न आवे। ४–अशक्त।
विवशता स्त्री० (सं) १–बेबसी। मजबूरी। २–पराधीनता।
विवस वि० (हि) दे० 'विवश'।
विवसता स्त्री० (हि) दे० 'विवशता'।
विवसन वि० (सं) वस्त्ररहित। नग्न। नंगा।
विवस्त्र वि० (सं) नग्न। नंगा।
विवस्वान् पुं० (सं) १–सूर्य। २–सूर्य का सारथी अरुण। ३–अर्कवृक्ष।
विवाद पुं० (सं) १–कोई ऐसी बात या विषय जिसमें दो या अधिक विरोधी पक्ष हों तथा जिसकी सत्यता निर्णय होना हो। (डिसप्यूट)। २–वाक्युद्ध। ३–झगड़ा। ४–मुकदमा (सूट)।
विवादनिवारक-समिति स्त्री०(सं) कारखानों के मालिक तथा मजदूरों के बीच होने वाले झगड़े को निबटाने के लिए नियुक्त समिति। (कंसीलियेशन बोर्ड)।
विवादशमन पुं०(सं) किसी झगड़े को निबटाना।
विवादांत-प्रस्ताव पुं० (सं) (विधान सभा या संसद आदि में) किसी विवाद को समाप्त करने के लिए सब सदस्यों द्वारा किया गया प्रस्ताव (मोशन आफ क्लोजर)।
विवादार्थी पुं० (सं) मुकदमा चलाने वाला। वादी। मुद्दई। (प्लेंटिफ)।
विवादास्पद वि० (सं) जिस पर या जिसके विषय में विवाद हो। (डिसप्यूटेड)।
विवादी पुं०(हि) १–झगड़ा करने वाला। २–मुकदमा लड़ने वालों में से एक पक्ष।
विवास पुं० (सं) १–प्रवास। २–निर्वासन। देश-निकाला।
विवासन पुं० (सं) दे० 'विवास'।

विवासित वि० (सं) निकाला हुआ। देश से बाहर निकाला हुआ।

विवाह पुं० (सं) धार्मिक तथा सामाजिक वह कृत्य जिसके द्वारा पति और पत्नी का सम्बन्ध स्थापित होता है। [illegible]

[illegible]

विवाहना क्रि० (हि) विवाह करना।

विवाहविच्छेद पुं०(सं) पति तथा पत्नी का वैवाहिक सम्बन्ध तोड़ देना। तलाक। (डाइवोर्स)।

विवाहसंबंध पुं०(सं) शादी के द्वारा होनेवाला सम्बन्ध

[illegible]

विविक्त वि० (सं) १-अलग किया हुआ। २-छिपाया हुआ। ३-निर्जन। ४-पवित्र। ५-एकत्र। पुं० संन्यासी। त्यागी।

विविध वि० (सं) अनेक प्रकार का।

विविर वि० (सं) १-खोह। गुफा। २-बिल। ३-दरार

विवीत पुं० (सं) १-वह स्थान जो चारों ओर से घिरा हुआ हो। २-ऐसी चरागाह।

विवीतभर्ता पुं० (सं) गोचरभूमि का स्वामी।

विवृत वि० (सं) १-विस्तृत। फैला हुआ। २-खुला हुआ। ३-जिसकी व्याख्या की गई हो।

विवृतद्वार वि० (सं) १-जो नियन्त्रित न हो। २-जिसका द्वार खुला हो। ३-असीम।

विवृतभाव वि० (सं) जो निष्कपट हो।

विवृतानन वि० (सं) जिसका मुख खुला हुआ हो।

विवृति वि० (सं) १-वह वक्तव्य जो अपने किसी कार्य को [illegible] के लिए [illegible] ३-चक्र [illegible]

विवृतोक्ति स्त्री० (सं) वह अलंकार जिसमें श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वयं ही प्रकट कर देता है

विवृत्त वि० (सं) १-चक्कर खाता हुआ। २-ऐंठा हुआ। ३-चलायमान। ४-प्रदर्शित।

विवृत्ति स्त्री०(सं)१-विकार। २-लुढ़कना। ३-चक्कर खाना।

विवृद्धि स्त्री०(सं)१-उन्नति। २-बढ़ोतरी। ३-तरक्की ४-समृद्धि।

विवृद्धिकर वि० (सं) उन्नत करने वाला।

विवेक पुं० (सं) १-भली-बुरी बातें सोचने समझने की शक्ति। (डिस्क्रीशन)। २-मन की वह शक्ति जिससे अच्छे या बुरे का ज्ञान होता है। (कोंशेंस)। ३-बुद्धि। ४-सत्यज्ञान

विवेकरहित वि० (सं) मूर्ख। अज्ञानी।

विवेकवान् वि०(सं) १-भले बुरे को पहचानने वाला। बुद्धिमान्।

[illegible]

हो। (इन दि डिस्क्रीशन)।

विवेकिता स्त्री० (सं) १-ज्ञान। २-सत् या असत् का विचार।

विवेकी पुं० (हि) १-भले बुरे का ज्ञान वाला। २-[illegible] विवेकी। [illegible] करना।

[illegible]

विवेचित वि० (सं) जिसकी विवेचना की गई हो।

विव्वोक पुं० (सं) दे० 'बिब्बोक'।

विशंक वि०(सं) निर्भय। निडर।

विशद वि० (सं) १-स्वच्छ। २-स्पष्ट। ३-व्यक्त। ४-प्रसन्न। ५-सफेद। ६-मनोहर।

विशल्य वि० (सं) कष्ट और चिन्ता से रहित।

विशल्यकरण वि० (सं) घाव भरने वाला।

विशल्या स्त्री०(सं) १-गडुच। २-नागदन्ती। ३-अग्निशिखा। ४-लक्ष्मण की स्त्री का नाम।

विशसिता पुं० (सं) १-काटने वाला। २-चाण्डाल।

विशस्त वि० (सं) १-जिसे मार डाला गया हो। २-काटा हुआ। ३-अपराधित।

विशस्त्र वि० (सं) जिसके पास कोई हथियार न हो।

विशाखा स्त्री०(सं) १-सत्ताइस नक्षत्रों में से सोलहवाँ २-एक प्राचीन जनपद। ३-सफेद गदहपूरना।

[illegible]

दार। ३-प्रसिद्ध।

विशालता स्त्री० (सं) विशाल या बड़ा होने का भाव।

विशाला स्त्री० (सं) १-वृन्दावन। २-पोई का साग। ३-दक्ष की एक कन्या का नाम।

विशालाक्ष पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु। ३-गरुड़। वि० जिसके नेत्र बड़े और सुन्दर हों।

विशालाक्षी स्त्री०(सं) १-बड़ी तथा सुन्दर आँखों वाली स्त्री। २-पार्वती। ३-एक योनि।

विशिख पुं० (सं) १-एक प्रकार की घास। २-बाण। तीर। ३-वह स्थान जहां रोगी रहता हो। वि० चोटी या शिखा रहित।

विशिष्ट वि० (सं) जिसमें कोई विशेषता हो। २-विल-

क्षण। ३-मिला हुआ। ४-मुख्य।
विशिष्ट-कुल वि० (सं) जो उत्तम वंश में पैदा हुआ हो
विशिष्टजनीनमत-संग्रह पुं० (सं) सर्वसाधारण द्वारा किसी विशिष्ट विषय पर प्रकट किये गये मतों का संग्रह जो प्रायः समाचार पत्रों द्वारा किया जाता है (गैलप पोल)।
विशिष्टता स्त्री० (सं) १-विशिष्ट का भाव या धर्म। २-विशेषता।
विशिष्टांग पुं० (सं) किसी लेख, वस्तु, नाटक आदि की विशेषताएँ। (फीचर्स)।
विशिष्टाद्वैत पुं० (सं) एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी अभिन्न माने गये हैं।
विशिष्टाधिकार पुं० (सं) १-प्रधान या राज्ञ का वह अधिकार जिस पर सिद्धान्ततः कोई प्रतिबन्ध न हो (प्रीरोगेटिव)। २-वह विशिष्ट अधिकार जिसका दूसरा कोई हिस्सेदार न हो।
विशिष्टीकरण पुं० (सं) १-किसी विषय के विशेष रूप से अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करना। २-किसी वस्तु को विशेष लक्षणों के कारण अलग करना। (स्पेशेलाइजेशन)।
विशीर्ण वि० (सं) १-सूखा हुआ। २-दुबला। पतला। ३-जीर्ण।
विशुद्ध वि० (सं) १-बिना किसी मिलावट का। २-सत्य। पुं० (सं) हठयोग के अनुसार शरीर के अंदर के छः चक्रों में से पाँचवां।
विशुद्धचरित्र वि० (सं) जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो
विशुद्धात्मा वि० (सं) जिसका आचरण शुद्ध तथा पवित्र हो।
विशुद्धि स्त्री० (सं) १-शुद्धता। पवित्रता। २-परिशोध। ३-सादृश्य।
विशुद्धिचक्र पुं० (सं) हठयोग के अनुसार शरीर में के छः चक्रों में से पांचवाँ।
विशुद्धिवाद पुं० (सं) कठोर धार्मिक जीवन व्यतीत करने का कुछ ईसाइयों का सिद्धान्त। (प्यूरिटैनिज्म) कठोरता भाव।
विशूचिका स्त्री० (हि) दे० 'विसूचिका'।
विशून्य वि० (सं) जो पूर्णरूप से खाली हो।
विशृंखल वि० (सं) १-जिसमें कड़ी या शृङ्खला न हो। २-जो किसी तरह न रोका जा सके।
विशृंग वि० (सं) जिसके सींग न हों।
विशेष पुं० (सं) १-अन्तर। २-प्रकार। ढङ्ग। ३-साधारण से अतिरिक्त। (एक्स्ट्रा)। ४-किसी विषय में अपनी सम्मति के रूप में कही जाने वाली बात (रिमार्क)। ५-एक अलंकार। वि० (सं) १-असाधारण। २-अधिक।
विशेषक पुं० (सं) १-तिलक। २-साहित्य में वह पद जिसके श्लोकों की एक ही क्रिया होती है। वि० (सं) विशिष्ट। विलक्षण। (स्पेशेलिस्ट)।
विशेषण पुं० (सं) १-वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो। २-व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञावाची शब्द की विशेषता सूचित करता हो।
विशेषता वि० (सं) १-विशेष का भाव या धर्म। २-विलक्षणता।
विशेषना क्रि० (हि) १-विशेष रूप देना। २-निश्चय करना।
विशेषविद पुं० (सं) दे० 'विशेषज्ञ'।
विशेषित वि० (सं) १-जो खास तौर पर पृथक् किया गया हो। २-जिसमें कोई विशेषण लगा हो।
विशेषितस्वीकृति स्त्री० (सं) किसी प्रस्ताव आदि को समिति द्वारा कुछ प्रतिबन्ध लगा कर दी गई सम्मति (क्वालिफाइड एक्सेप्टेन्स)।
विशेषोक्ति स्त्री० (सं) वह अलंकार जिसमें पूर्ण कारण रहते हुए भी कार्य न होने का वर्णन हो।
विशेष्य पुं० (सं) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो।
विशोक वि० (सं) जिसे कोई शोक न हो। पुं० शोक का न होना।
विशोणित वि० (सं) जिसमें रक्त न हो।
विशोध वि० (सं) विशुद्ध या साफ करने योग्य।
विशोधन पुं० (सं) १-भली भांति साफ करना। २-विष्णु।
विशोधनीय वि० (सं) विशुद्ध या साफ करने योग्य।
विशोधित वि० (सं) विशुद्ध या साफ किया हुआ।
विशोषण पुं० (सं) अच्छी तरह सोखना।
विशोषित वि० (सं) शुष्क किया हुआ।
विशोषी वि० (सं) अच्छी तरह सोखने वाला।
विश्‌ स्त्री० (सं) १-वह जिसने जन्म लिया हो। २-कन्या।
विश्रंभ पुं० (सं) १-दृढ़ विश्वास। (कॉन्फीडेन्स)। २-प्रेम। ३-प्रेम का झगड़ा। ४-आजादी से घूमना
विश्रंभकथा स्त्री० (सं) प्रेम की बातें।
विश्रंभण पुं० (सं) किसी का विश्वास प्राप्त करना।
विश्रंभी वि० (सं) दे० 'विश्वस्त'।
विश्रब्ध वि० (सं) १-शांत। २-निडर। ३-विश्वास के योग्य।
विश्रब्ध-नवोढा स्त्री० (सं) वह नायिका जिसका अपने पति पर थोड़ा बहुत विश्वास होने लगा हो।
विश्रांत वि० (सं) १-जो विश्वास करता हो। २-रुका हुआ। ३-थका हुआ।
विश्रांति स्त्री० (सं) १-विश्राम। आराम। २-थकावट ३-विराम।
विश्रांतिकाल पुं० (सं) काम करने के नियत समय में बीच में आराम करने की छुट्टी। (रेसेस)।

विश्राम पुं० (सं) १-श्रम मिटाना। आराम करना २-ठहरने का स्थान। ३-सुख। चैन।
विश्रामभवन पुं० (सं) वह स्थान जहां यात्री विश्राम करते हों। (रेस्ट-हाउस)।
विश्रामवेश्म पुं० (सं) आराम करने का कमरा।
विश्रामालय पुं० (सं) दे० 'विश्रामभवन'।
विश्री वि० (सं) १-जिसकी कांति जाती रही हो। २-मद्दा। कुरूप।
विश्रुत वि० (सं) १-प्रसिद्ध। २-जो जाना या सुना हुआ हो।
विश्रुति स्त्री० (सं) १-प्रसिद्धि। २-मरना या रसना। ३-कोई बात सब लोगों को कहाने का कार्य (पब-लिसिटी)।
विश्लथ वि० (सं) १-थका हुआ। २-जिसके बन्धन टूट गये हों। ३-ढीला।
विश्लथित वि०(सं) १-जिसके बन्धन टूट गये हों। २-क्लांत।
विश्लिष्ट वि०(सं) १-जिसका विश्लेषण हुआ हो। २-विकसित। ३-प्रकाशित। ४-शिथिल। ५-मुक्त।
विश्लेष पुं० (सं) १-अलग होना। २-वियोग। ३-शिथिलता। ४-विकार। ५-किसी तरफ से मन हटाना।
विश्लेषण पुं० (सं) किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों या किसी बात के सब अंगों को परीक्षा के लिए अलग-अलग करना। (एनेलेसिस)।
विश्लेषी वि० (सं) अलग किया हुआ। २-बिगाड़ने वाला।
विश्वंभर पुं० (सं) १-परमेश्वर। ईश्वर। २-विष्णु
विश्वंभरा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
विश्व पुं० (सं) १-समस्त ब्रह्मांड। २-संसार। जगत ३-विष्णु। ४-शरीर। ५-जीवात्मा।
विश्वकर्ता पुं० (सं) परमेश्वर।
विश्वकर्मा पुं० (सं) १-ईश्वर। २-ब्रह्मा। ३-एक शिल्पशास्त्र के देवता। ४-बढ़ई। ५-मेमार। राज। ६-लोहार।
विश्वकाय पुं० (सं) विष्णु।
विश्वकोश पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें संसार के सब विषयों का विस्तृत विवरण रहता है।
विश्वकोष पुं० (सं) दे० 'विश्वकोश'।
विश्वगुरु पुं० (सं) विष्णु।
विश्वगोचर वि० (सं) जो सबकी समझ में आजाय।
विश्वचक्षु वि० (सं) ईश्वर।
विश्वजनीय वि० (सं) जो सबके लिए लाभदायक हो
विश्वजयी वि० (सं) संसार को जीतने वाला।
विश्वविजित वि०(सं) जो समस्त विश्व पर विजय प्राप्त कर चुका हो।
विश्वनाथ पुं० (सं) १-विश्व का स्वामी। २-शिव। ३-काशी का एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग।
विश्वनाथपुरी स्त्री० (सं) काशी।
विश्वपा पुं० (सं) ईश्वर।
विश्वपाल पुं० (सं) ईश्वर।
विश्वपावन वि० (सं) सबका पालन करने वाला।
विश्वपावनी स्त्री० (सं) तुलसी।
विश्वपूजित वि० (सं) जो सबके द्वारा पूजा जाता है
विश्वपूज्य वि० (सं) जिसका सब लोग सम्मान करते हों।
विश्वप्रकाशक पुं० (सं) सूर्य।
विश्वभर्ता पुं० (सं) ईश्वर।
विश्वभोजन पुं० (सं) सब प्रकार की चीजें खाना।
विश्वमूर्ति पुं० (सं) विष्णु।
विश्वमोहन वि० (सं) सब को मोहित करने वाला।
विश्वलोचन पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।
विश्वविख्यात वि० (सं) जो सारे संसार में प्रसिद्ध हो
विश्वविजयी वि० (सं) सारे संसार को विजय करने वाला।
विश्वविद् पुं० (सं) १-जो सब कुछ जानता हो। २-ईश्वर।
विश्वविद्यालय पुं० (सं) वह बड़ा विद्यापीठ जिसमें उच्च शिक्षा देने के अनेक महाविद्यालय हों। (यूनि-वर्सिटी)।
विश्वविश्रुत वि० (सं) जो संसार भर में प्रसिद्ध हो।
विश्वव्यापक पुं० (सं) ईश्वर।
विश्वव्यापी वि० (सं) जो सब जगह व्याप्त हो।
विश्वश्रवा पुं० (सं) रावण के पिता का नाम।
विश्वश्री वि०(सं) जो सबके लिए उपयोगी हो (अग्नि, आग)।
विश्वसंभव पुं० (सं) परमेश्वर।
विश्वसंहार पुं० (सं) संसार का नाश।
विश्वसख पुं० (सं) सबका दोस्त या मित्र।
विश्वसनीय वि० (सं) जिसका विश्वास या एतबार किया जा सके।
विश्वसृक् पुं० (सं) ब्रह्मा।
विश्वस्रष्टा वि० (सं) १-ईश्वर। २-ब्रह्मा।
विश्वसृष्टि स्त्री० (सं) संसार की रचना।
विश्वस्त वि० (सं) जिसका विश्वास किया जाय।
विश्व-स्वास्थ्य-संघटन पुं० (सं) वह अंतरराष्ट्रीय संस्था जो विभिन्न देशों के लोकस्वास्थ्य की उन्नति करने के प्रयत्नों में सहायता देती है। (वर्ल्ड हेल्थ-ओरगेनाईजेशन)।
विश्वहर्ता पुं० (सं) शिव।
विश्वहेतु पुं० (सं) विष्णु।
विश्वात्मा पुं० (सं) १-ईश्वर। २-शिव। विष्णु। ब्रह्मा।
विश्वाद् पुं० (सं) अग्नि।
विश्वाधार पुं० (सं) ईश्वर।

विश्वाधिप पु० (सं) ईश्वर।
विश्वामित्र पु० (सं) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो बड़े क्रोधी थे और गौधज और कौशिक भी कहलाते हैं।
विश्वास पुं० (सं) यह निश्चय कि ऐसा ही होगा या अमुक आदमी ऐसा करेगा।
विश्वासकारक वि० (सं) १-विश्वास करने वाला। २-जिसमें विश्वास उत्पन्न हो।
विश्वासघात पुं० (सं) किसी के विश्वास के विरुद्ध की गई क्रिया।
विश्वासघातक वि० (सं) विश्वास करने पर भी धोखा देने वाला।
विश्वासघाती वि० (सं) विश्वासघातक।
विश्वासपात्र पुं० (सं) वह व्यक्ति जिस पर विश्वास किया जाय।
विश्वासप्रद वि० (सं) विश्वास पैदा करने वाला।
विश्वास प्रस्ताव पुं० (सं) वह प्रस्ताव जो किसी सभा संस्था के अध्यक्ष या मन्त्रिमण्डल में विश्वास प्रकट करने के लिये पेश किया गया हो। (वोट ऑफ कोन्फिडेन्स)।
विश्वासभंग पुं० (सं) किसी के विश्वास के विरुद्ध कोई काम करना।
विश्वासभाजन वि० (सं) विश्वासपात्र।
विश्वासिक पुं० (सं) वह जिस पर भरोसा किया जा सके।
विश्वासी वि० (सं) १-विश्वास करने वाला। २-जिस पर भरोसा किया जाय।
विश्वास्य वि० (सं) विश्वास करने के योग्य।
विश्वदेव पुं० (सं) १-अग्नि। २-देवताओं का एक गण।
विश्वेश्वर पुं० (सं) १-परमेश्वर। २-शिव की एक मूर्ति।
विश्वोत्पत्ति-विज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें विश्व की उत्पत्ति तथा विकास आदि का विवेचन होता है। (कास्मोगोनी)।
विष पुं० (सं) १-वह पदार्थ जिसके खाने पर मनुष्य मर जाता है। जहर। गरल। २-अतीस। ३-वच्छ-नाग।
विषकंठ पुं० (सं) शिव।
विषकन्या स्त्री० (सं) प्राचीन काल में वह युवती जिसके शरीर में बाल्यावस्था से ही इसलिये विष प्रविष्ट किया जाता था कि उसके साथ सम्भोग करने वाला तत्काल ही मर जावे।
विषकुंभ पुं० (सं) विष से भरा घड़ा।
विषघातक पुं० (सं) वह जिससे विष का प्रभाव हटता या दूर होता है।
विषघाती वि० (सं) विष के प्रभाव को दूर करने वाला।
विषघ्न पुं० (सं) जवासा। वि० (सं) विष को ना[श] करने वाला।
विषण्ण वि० (सं) दुःखी। खिन्न।
विषण्णचेता वि० (सं) उदास। दुःखी।
विषण्णता स्त्री० (सं) १-खिन्न या दुःखी होना। २-मूर्खता।
विषण्णमुख वि० (सं) जिसके मुख से खिन्नता म[ल]कती हो।
विषतंत्र पुं० (सं) वैद्यक में सर्प आदि के विष [को] दूर करने वाली तांत्रिक लकड़ी। २-कमलनाल।
विषदोषहर वि० (सं) विष के असर को हटाने वा[ला]।
विषधर पु० (सं) सांप।
विषधरी स्त्री० (सं) साँपिन।
विषपन्नग पुं० (सं) विषैला सांप।
विषपुच्छ पुं० (सं) बिच्छू।
विषप्रयोग (सं) पुं० औषधि में विष का प्रयोग।
विषभक्षण पुं० (सं) विषखाना।
विषभिषक् पुं० (सं) विष उतारने वाला वैद्य।
विषमंत्र पु० (सं) विष के प्रभाव को अन्त करने वा[ला] मंत्र।
विषम वि० (सं) १-असमान। २-(वह संख्या) [जो] दो पर भाग देने पर पूरी न बँट सके। ३-बहु[त] कठिन। ४-अति तीव्र। ५-भयंकर। पुं० १-संगी[त] की एक ताल। २-एक छन्द। ३-एक अर्थालंकार। ४-संकट। ५-चार प्रकार की जठराग्नियों में से ए[क]। ६-पहली, तीसरी, पांचवीं आदि तक संख्याओं प[र] पड़ने वाली राशियां।
विषम-कोण-समचतुर्भुज पुं० (सं) वह समानान्त[र] चतुर्भुज जिसके चारों कोण समकोण न हों प[र] उसकी दो भुजाएँ बराबर हों। (रोम्बस)।
विषमचतुर्भुज पुं० (सं) वह चतुर्भुज जिसकी चा[रों] भुजाएँ बराबर न हों।
विषमज्वर पुं० (सं) १-वह ज्वर जिसके आने [का] कोई समय न हो। २-जूड़ी-बुखार। ३-क्षय रोग।
विषमता स्त्री० (सं) १-असमानता। २-विरोध।
विषमत्व पुं० (सं) विषमता।
विषमत्रिभुज पुं० (सं) वह त्रिभुज जिसकी ती[नों] भुजाएँ बराबर न हों।
विषमदृष्टि वि० (सं) ऐंचाताना। भेंगा।
विषमनयन पुं० (सं) शिव।
विषमपाद वि० (सं) जिसके पैर बराबर न हों।
विषमबाण पु० (सं) कामदेव।
विषमबाहु-त्रिभुज पुं० (सं) वह त्रिभुज जिसकी [को]सी भी भुजा बराबर न हो। (स्केलीन ट्राइएँगल)।
विषमवृत्त पुं० (सं) ऐसा छन्द जिसको कोई भी च[रण] समान न हो।
विषमसंधि पुं० (सं) वह सन्धि जिसके अनुस[ार]

तत्काल सहायता न दी जाय।

विषमाक्ष पुं० (स) शिव।

विषमित्र वि० (स) १-जो मित्र शत्रु बन गया हो। २-असुव्यवस्थित।

विषमेक्षण पुं० (स) शिव।

विषमेषु पुं० (स) कामदेव।

विषय पुं०(सं) १-जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाय (सबजेक्ट)। २-सम्भोग। ३-सम्पत्ति। ४-राज्य। ५-वह जो इन्द्रियां ग्रहण करें।

विषयक वि० (स) किसी विषय से सम्बन्ध रखने वाला। सम्बन्धित।

विषयकर्म पुं०(स) सांसारिक काम धन्धे।

विषयज्ञान पुं० (सं) सांसारिक कामों से जानकारी।

विषयनिरति स्त्री० (स) विषयों में आसक्ति।

विषय-निर्धारिणी-समिति स्त्री० (सं) किसी सभा में रखे जाने वाले विषय प्रस्तावों को रूप से ही निश्चित करने वाली उपसमिति। (सबजेक्ट कमेटी)।

विषय-निर्वाचिनी-समिति स्त्री०(सं) विषय निर्धारिणी-समिति।

विषयपति पुं० (स) किसी छोटे जनपद या प्रांत का राजा।

विषयपराङ्मुख वि० (सं) जो सांसारिक विषयों से विरक्त हो।

विषयलोलुप वि० (सं) जो विषय-सुख का लोभी हो।

विषयसमिति स्त्री०(सं) दे० 'विषय निर्धारिणी-समिति'

विषयसुख पुं० (स) इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाला सुख।

विषयस्पृहा स्त्री० (स) विषय सुखों क[illegible]।

विषयांतर पुं० (स) प्रस्तुत विषय [illegible] इधर की बातें करना।

विषया स्त्री०(स) विषयवासना।

विषयात्मक वि० (सं) विषयरूप।

विषयाधिप पुं० (सं) दे० 'विषयपति'।

विषयानुक्रमणिका स्त्री० (सं) किसी ग्रन्थ के विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विषयसूची।

विषयाभिरति पुं० (सं) विषयभोग।

विषयासक्त वि० (स) जो विषयों में रत हो।

विषयासक्ति स्त्री० (स) विषयभोगों में लीन रहना।

विषयी पुं०(हि) १-भोगविलास में रत रहने वाला। कामी। २-कामदेव। ३-धनवान। ४-राजा।

विषवमन पुं० (सं) जहर उगलना।

विष-विज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें विषयों की का उत्पत्ति उनके गुणों आदि का विवेचन होता है। (टॉक्सिकॉलोजी)।

विषवृक्ष पुं० (सं) गूलर।

विषवृक्षन्याय पुं० (सं) एक न्याय जिसके अनुसार किसी वस्तु के बुरे होने पर उसे नष्ट नहीं करना चाहिए।

विषवैद्य पुं० (स) तन्त्र-मन्त्रादि की सहायता से विष के प्रभाव को नष्ट करने वाला।

विषव्रण पुं०(स) जहरबाद। जहरीला फोड़ा। (कैंसर)

विषहंता पुं० (स) जहर के असर को दूर करने वाला।

विषहर पुं० (स) १-विषनाशक मन्त्र या औषध। २-घोरक।

विषहा वि० (सं) विष को नाश करने वाला।

विषहीन वि० (सं) जिसमें जहर न हो।

विषहृदय वि० (सं) बुरे दिल का।

विषांतक पुं० (स) १-वह जिससे विष का प्रभाव नष्ट हो। २-शिव।

विषाक्त वि० (सं) विषयुक्त। जहरीला।

विषाण पुं० (स) १-हाथीदांत। २-पशु का सींग। ३-सूअर का दांत। ४-इमली।

विषाणी पुं०(सं)१-वह जिसके सींग हों। २-बैल। ३-हाथी। ४-सूअर। ५-सिंघाड़ा।

विषाद पुं० (सं) १-दुःख। खेद। २-काम करने की इच्छा न होना। ३-मूर्खता। ४-निश्चेष्ट होने का भाव।

विषानन पुं० (सं) सर्प।

विषान्न पुं० (सं) विष मिला हुआ भोजन।

विषापहरण पुं० (सं) जहर के असर को दूर करना।

विषायुध पुं० (सं) १-सांप। २-जहर में बुझा अस्त्र

विषास्त्र पुं० (सं) दे० 'विषायुध'।

विषुव पुं० (स) वह समय जब सूर्य के विषुवत् रेखा [illegible] समय में अन्तर नहीं रहता।

विषुवरेखा स्त्री० (स) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वीतल के पूरे मानचित्र पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम में चारों ओर जाती हुई मानी गई है। (इक्वेटर)।

विषूचिका स्त्री० (स) हैजे का रोग।

विष्कंभ पुं० (स) १-विस्तार। २-विघ्न। ३-[illegible]। ४-शहतीर। ५-नाटक का वह भाग जिसमें होने वाले अभिनय से पहले उसकी सूचना दी जाती है

विष्टप पुं० (स) भुवन। लोक।

विष्टि स्त्री० (स) १-बेगार। २-वेतन। ३-काम। ४-वर्षा।

विष्ठा स्त्री० (स) मल। पाखाना।

विष्णु पुं० (सं) १-हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि के पालन पोषण करने वाले माने जाते हैं। २-अग्नि।

विष्णुपदी स्त्री० (स) गंगा

विष्णुपुरी स्त्री० (सं) वैकुण्ठ। विष्णुलोक।
विष्णुप्रिया स्त्री० (सं) तुलसी का पौधा।
विष्णुयान पुं० (सं) गरुड़।
विष्णुवल्लभा स्त्री० (सं) तुलसी का पौधा।
विष्णुवाहन पुं० (सं) गरुड़।
विष्णुशक्ति स्त्री० (सं) लक्ष्मी।
विष्णुशिला स्त्री० (सं) शालग्राम।
विष्फार पुं० (सं) धनुष की टङ्कार।
विसंगत वि० (सं) असंगत। असम्बद्ध।
विसंवाद पुं० (सं) १-डाँट। डपट। २-विरोध। वि० (सं) विलक्षण अद्भुत।
विसंवाहक पुं० (सं) चीनी का बना हुआ वह पदार्थ जो ताप या विद्युत के प्रवाह को रोकने के लिये विद्युद्हीन तथा विद्युन्मय। पदार्थ के बीच में लगाया जाता है। (इन्स्यूलेटर)।
विसंवाहन पुं० (सं) विद्युत् या ताप के प्रवाह को रोकने के लियें विद्युन्मय पदार्थ तथा विद्युद् विहीन पदार्थ के बीच में कुचालक पदार्थ लगा कर अलग कर देना। (इन्स्यूलेशन)।
विस पुं० (सं) दे० 'विस'।
विसदृस वि० (सं) १-उलटा। विपरीत। २-असमान ३-विलक्षण।
विसयना क्रि० (हि) अस्त होना।
विसवना क्रि० (हि) अस्त होना।
विसर्ग पुं० (सं) १-दान। २-छोड़ना। ३-व्याकरण वह चिह्न जो किसी वर्ण के आगे लगाया जाता है और जिसका चिह्न (:) होता है तथा उच्चारण आधे ह के समान होता है। ४-मृत्यु। ५-प्रलय।
विसर्जन पुं० (सं) १-छोड़ना। परित्याग। २-विदा करना। ३-दान। ४-किसी कर्मचारी पर कोई दोष लगाकर अलग करना। (डिसमिसल)। ५-भंग किया जाना। (सभा आदि)।
विसर्जित वि० (सं) १-त्यक्त। छोड़ा हुआ। २-भेजा हुआ।
विसर्पिका स्त्री० (सं) विसर्प रोग। खुजली।
विसर्पी वि० (सं) फैलने वाला।
विसाल वि० (हि) दे० 'विशाल'।
विसूचिका स्त्री० (सं) दे० 'विषूचिका'।
विसूरण पुं० (सं) १-दुख। रंज। २-चिन्ता। वैराग्य।
विसृष्ट वि० (सं) १-विशेष रूप से बनाया हुआ। २-त्यक्त। ३-भेजा हुआ।
विस्तर क्रि० (सं) १-बड़ा तथा लम्बा चौड़ा। विस्तृत २-बहुत अधिक। पुं० (सं) दे० 'विस्तार'।
विस्तरणी स्त्री० (सं) हिलने-डुलने में असमर्थ रोगी या हताहत व्यक्ति को उठा कर लेजाने का ढांचा। (स्ट्रेचर)।
विस्तरणीवाहक पुं० (सं) विस्तरणी में रोगी को लिटा कर लेजाने वाले व्यक्ति। (स्ट्रेचर बेयरर)।
विस्तार पुं० (सं) १-लम्बाई-चौड़ाई। फैलाव। २-पेड़ की शाखा ३-गुच्छा। ४-विष्णु। ५-शिव।
विस्तारण पुं० (सं) १-विस्तार करना। २-फैलाना
विस्तारना क्रि० (हि) विस्तार करना।
विस्तारित वि० (सं) जिसका विस्तार किया गया हो। बढ़ाया हुआ। (एक्सटेन्डेड)।
विस्तारी विधेयक पुं० (सं) किसी पुराने अधिनियम आदि की अवधि बढ़ाने के लिये संसद या विधान सभा में उपस्थित किया जाने वाला विधेयक। (एक्सटेंडिंग बिल)।
विस्तीर्ण वि०(सं) १-विस्तृत। २-विशाल। ३-विपुल अत्यधिक।
विस्तृत वि० (सं) १-लम्बा-चौड़ा। २-यथेष्ट विवरण वाला। ३-दूर तक फैला हुआ। विशाल।
विस्तृति स्त्री० (सं) १-विस्तार। फैलाव। २-व्याप्ति। ३-वृत का व्यास।
विस्थापन पुं० (सं) किसी स्थान के रहने वालों को बलपूर्वक उस स्थान से हटाना। (डिसप्लेसमेंट)।
विस्थापित वि० (सं) जिसे अपने स्थान से बलपूर्वक हटाया गया हो। (डिसप्लेस्ड)।
विस्फार पुं० (सं) १-धनुष की टंकार। २-धनुष की डोरी। ३-विस्तार। ४-स्फूर्ति। ५-विकास।
विस्फारित वि०(सं) १-भली प्रकार फैलाया या खोला हुआ। २-फाड़ा हुआ। ३-कंपाया हुआ।
विस्फीति स्त्री० (सं) कृत्रिम रूप में फूले हुए पदार्थ या मुद्रा के फैलाव को फिर पूर्व स्थिति में लाना। (डिफ्लेशन)।
विस्फुटित वि० (सं) खुला या खिला हुआ।
विस्फोट पुं० (सं) १-किसी पदार्थ का अन्दर की गर्मी से बाहर फूट पड़ना। २-जहरीला फोड़ा।
विस्फोटक पुं० (सं) १-जहरीला फोड़ा। २-आग या गर्मी से भड़क उठने वाला पदार्थ। (एक्सप्लोसिव)।
विस्फोटन पुं० (सं) किसी पदार्थ का उबाल आदि के कारण फूट बहना। जोर का शब्द।
विस्मयंकर वि० (सं) आश्चर्यजनक।
विस्मयंगम वि० (सं) आश्चर्यजनक।
विस्मय पुं०(सं) १-आश्चर्य। २-साहित्य में अद्भुत रस का एक स्थायी-भाव जो विलक्षण पदार्थ के वर्णन से चित्त में होता है। ३-गर्व। ४-सन्देह।
विस्मयकारी वि० (सं) विस्मय उत्पन्न करने वाला।
विस्मयन पुं० (सं) विस्मय या आश्चर्य होना।
विस्मयाकुल वि० (सं) आश्चर्ययुक्त।
विस्मयी वि० (सं) आश्चर्यान्वित।
विस्मरण पुं० (सं) भूल जाना।
विस्मित वि० (सं) जिसे आश्चर्य या विस्मय हु

हो। चकित।
विस्मृत वि० (सं) भूला हुआ।
विस्मृति स्त्री० (सं) भूल जाना।
विस्मय वि० (सं) दे० 'विस्मय'।
विस्रस्त वि० (स) १-फैला या बिखरा हुआ। २-अशक्त। ३-जो ढीला पड़ गया हो।
विस्रस्त-बन्धन वि० (सं) जिसके बन्धन ढीले पड़ गये हों।
विस्रस्तवसन वि०(सं) जिसके कपड़े ढीले पड़ गये हों।
विस्रस्तहार वि०(सं) जिसका हार सरक कर गिर गया हो।
विस्राम पु० (हि) दे० 'विश्राम'।
विस्रावण पुं० (सं) १-रक्त चुआना या बहाना। २-आदि निकालना।
विस्तृत वि० (स) १-भूला हुआ। २-बहा हुआ।
विस्रुति स्त्री० (सं) बहना। रिसना।
विस्वर वि०(स) बेसुरा।
विस्वाद वि० (सं) फीका। स्वादहीन।
विहग पु० (स) १-पक्षी। चिड़िया। २-बाण। तीर ३-मेघ। ४-सूर्य। ५-चन्द्रमा। ६-ग्रह।
विहगम पु० (स) पक्षी।
विहंगमा स्त्री० (सं) १-बहँगी की वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर बोझ लटकाया जाता है। २-सूर्य की एक किरण।
विहंगमिका स्त्री० (सं) बहँगी।
विहगराज पु० (सं) गरुड़।
विहगाराति पुं० (स) बाजपक्षी।
विहंगिका स्त्री० (सं) बहँगी।
विहंडना क्रि० (हि) १-वध करना। नष्ट करना।
विहन्तव्य वि० (स) वध या नष्ट करने योग्य।
[illegible]

[illegible] फेरना। २-विरोध।
३-फैलाना।
विहरना क्रि० (हि) विहार करना। घूमना फिरना।
विहसन पु० (सं) मन्दहास। मुस्कान।
विहसित वि० (स) मुसकराया हुआ। पु० (सं) मंद-हास।
[illegible]

विहार पु० (स) १-टहलना। घूमना। २-सुख प्राप्ति के लिए होने वाली क्रीड़ा। ३-रतिक्रीड़ा। ४-बौद्ध भिक्षुओं का मठ। संघाराम।
विहारगृह पु० (सं) रति क्रीड़ा करने का स्थान।
विहारभूमि स्त्री० (स) १-चरागाह। २-क्रीड़ा भूमि।
विहारवन पुं०(स) क्रीड़ोद्यान।
विहारवारी स्त्री० (स) क्रीड़ा के निमित्त बना हुआ स्थान।
विहारस्थली स्त्री० (स) क्रीड़ा-स्थान।
विहारस्थान पु० (स) क्रीड़ा-स्थान।
विहारी पु० (सं) श्रीकृष्ण। वि० विहार करने वाला।
विहास वि० (स) हास्यरहित।
विहित वि० (स) १-जिसका विधान किया गया हो। (प्रेस्क्राइब्ड)।
विहितनिषिद्धकर्म पुं० (सं) १-वे कर्म जिनको करने का शास्त्रों में विधान हो। २-वे कर्म जिन्हें न करने का शास्त्रों में आदेश हो। (एक्ट्स् आफ कमीशन एण्ड ओमीशन)।
विहीन वि० (स) १-रहित। बिना। २-त्यागा हुआ।
विहीनजाति वि० (स) नीच या दलित जाति का।
विहीनवर्ण वि० (सं) विहीन जाति।
विहून वि० (हि) दे० 'विहीन'।
विहृत पु० (स) स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलंकारों में से एक।
विह्वल वि० (स) घबराया हुआ। व्याकुल।
विह्वलता स्त्री० (स) व्याकुलता। घबराहट।
विह्वलत्व पु० (स) विह्वलता।
वीक्ष पु० (स) दृष्टि। नजर।
वीक्षण पु० (स) देखने की क्रिया। निरीक्षण।
वीक्षणीय वि० (स) देखने योग्य। दर्शनीय।
वीचि स्त्री० (स) १-लहर। तरंग। २-अवकाश। ३-सुख। ४-चमक।
वीचिक्षोभ पु० (स) लहरों या तरंगों का उठना।
वीचितरंगन्याय पु० (स) लहरों के उठने के समान क्रमबद्ध एक के बाद दूसरे काम का होना।
वीचिमाली पुं० (स) समुद्र।
वीचि स्त्री० (सं) दे० 'वीचि'।
वीज पु० (सं) दे० 'बीज'।
वीजक पुं० (सं) दे० 'बीजक'।
वीजन पु० (स) पंखा झलना। २-पंखा। ३-चकोर ४-चँवर।
वीजांकुरन्याय पु० (सं) दे० 'बीजांकुर-न्याय'।
वीजित वि० (सं) १-पंखा झल कर ठंडा किया हुआ। २-जो जल से सींचा हुआ हो।
वीटक पु० (सं) पान का बीड़ा।
वीटा स्त्री० (सं) एक छोटे बच्चे का प्राचीन गुल्ली डंडे जैसा खेल।
वीटि स्त्री० (सं) पान का बीड़ा।
वीटिका स्त्री० (स) पान का बीड़ा।
वीटी स्त्री० (सं) दे० 'वीटिका'।

वीण स्त्री० (हि) दे० 'वीणा'।
वीणा स्त्री० (सं) १-एक सितार जैसा प्रसिद्ध वाद्य-यन्त्र जो सब बाजों में श्रेष्ठ माना गया है। बीन। २-बिजली।
वीणादंड पुं० (सं) वीणा का लम्बा डण्डा जो मध्य में होता है।
वीणापाणि स्त्री० (सं) सरस्वती।
वीणास्व पुं० (सं) वीणा का स्वर या संगीत।
वीणावादक पुं० (सं) वीणा बजाने वाला।
वीणावादन पुं० (सं) वीणा बजाना।
वीणावादिनी स्त्री० (सं) सरस्वती।
वीत पुं० (सं) १-घोड़ा या हाथी जो युद्ध के काम के अयोग्य हो। २-हाथी को अङ्कुश से मारना। वि० (सं) १-जो छोड़ दिया गया हो। मुक्त। २-जो समाप्त हो चुका हो। ३-सुन्दर।
वीतकल्मष वि० (सं) जो पाप से दूर हो।
वीतकाम वि० (सं) जिसे कोई इच्छा न हो।
वीतघृण वि० (सं) १-निष्ठुर। २-निर्दय।
वीतचिंत वि० (सं) जिसे कोई चिन्ता न हो।
वीतजन्म-जरस वि० (सं) जो जन्म या बुढ़ापे से मुक्त हो।
वीततृष्ण वि० (सं) जिसमें कोई वासना न रही हो।
वीतदंभ वि० (सं) जिसने अहङ्कार त्याग दिया हो।
वीतभय वि० (सं) जिसका भय छूट गया हो।
वीतभीति वि० (सं) जो किसी से डर न करता हो।
वीतमत्सर वि० (सं) जिसे किसी से द्वेष न हो।
वीतमल वि० (सं) १-पापरहित। २-विमल।
वीतराग पुं० (सं) १-जिसने सांसारिक सुखों या वस्तुओं के प्रति अनुराग या आसक्ति छोड़ दी हो। २-बुद्ध का एक नाम। ३-जैनियों के तीर्थङ्कर की एक पदवी का नाम।
वीतव्रीड वि० (सं) जिसमें लज्जा न हो।
वीतशंक वि० (सं) जिसे कोई भय या शङ्का न हो।
वीतशोक वि० (सं) जिसने शोक या दुःख का त्याग किया हो। पुं० (सं) अशोक नामक वृक्ष।
वीथि स्त्री० (सं) १-दृश्यकाव्य में रूपक का एक भेद जिसमें एक ही अङ्क और एक ही नायक होता है। २-मार्ग। ३-आकाशमार्ग। ४-आकाश में नक्षत्रों के रहने का विशिष्ट स्थान।
वीथिका स्त्री० (सं) दे० 'विथि'।
वीप्सा स्त्री० (सं) १-एक अर्थालंकार जहां एक शब्द को बार-बार कहा जाय। पुनरुक्ति। २-व्याप्ति।
वीर पुं० (सं) १-बहादुर। बलवान। २-योद्धा। सिपाही। ३-साहस का काम करने वाला। ४-पुत्रादि के लिये एक सम्बोधन। ५-कुशल। ६-निपुण। ७-कर्म। ८-लोहा। ९-कुश। १०-खस। पुं० (हि) भाई।
वीरकर्मा पुं० (सं) वीरोचित काम करने वाला।
वीरकेसरी पुं० (सं) वीरों में सिंह के समान।
वीरगति स्त्री० (सं) १-रणक्षेत्र में वीरतापूर्वक लड़कर मरने पर प्राप्त होने वाली गति। २-स्वर्ग।
वीरचक्र पुं० (सं) भारत गणराज्य की ओर से युद्धक्षेत्र में वीरता दिखाने वाले सैनिकों को दिया जाने वाला एक पदक।
वीरचक्रेश्वर पुं० (सं) विष्णु।
वीरजननी पुं० (सं) वीर पुत्र को जन्म देने वाली।
वीरधन्वा पुं० (सं) कामदेव।
वीरपट्ट पुं० (सं) प्राचीन काल में युद्ध में पहनी जाने वाली एक पोशाक।
वीरपत्नी पुं० (सं) वीर आदमी की पत्नी।
वीरपाण पुं० (सं) वह पेय पदार्थ जो वीर लोग युद्ध का श्रम मिटाने के लिये पीते हैं।
वीरपानक पुं० (सं) दे० 'वीरपाण'।
वीरपूजा पुं० (सं) वीरों या महापुरुषों का बहुत अधिक आदर सम्मान। (हीरोवर्शिप)।
वीरप्रजायिनी स्त्री० (सं) दे० 'वीरप्रजावती'।
वीरप्रजावती स्त्री० (सं) वीर पुत्र को जन्म देने वाली
वीरप्रसवा स्त्री० (सं) दे० 'वीरप्रजावती'।
वीरप्रसू स्त्री० (सं) वह स्त्री जो वीर सन्तान उत्पन्न करती है।
वीरभद्र पुं० (सं) १-अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। २-शिव का एक गण। ३-खस।
वीरभद्रक पुं० (सं) खस। उशीर।
वीरभार्या स्त्री० (सं) वीर पत्नी।
वीरमर्दल पुं० (सं) प्राचीन काल में युद्ध में बजाने का एक ढोल।
वीरमाता पुं० (सं) वीर जननी।
वीरमानी पुं० (सं) वह जो अपने को वीर समझता हो
वीरमार्ग पुं० (सं) स्वर्ग।
वीररस पुं० (सं) वह काव्य रस जिसमें वीरता से शत्रु का दमन या कठिनाई आदि पर विजय पाने का वर्णन हो।
वीरराघव पुं० (सं) श्री रामचन्द्र।
वीरव्रत वि० (सं) जिसका दृढ़ संकल्प हो।
वीरशयन पुं० (सं) युद्धक्षेत्र।
वीरशय्या स्त्री० (सं) रणक्षेत्र।
वीरश्रेष्ठ पुं० (सं) वीरों में श्रेष्ठ।
वीरसू वि० (सं) वीरों को उत्पन्न करने वाली।
वीरा स्त्री० (सं) १-वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हो २-शतावर। ३-ब्राह्मी। ४-एक प्राचीन नदी का नाम।
वीराचारी पुं० (सं) एक प्रकार के वाम मार्गी जो वीरभाव से उपासना करते हैं।
वीरान वि० (फा) उजाड़।

श्रेष्ठ हो।
वृद्धता-प्रधिदेय पुं० (सं) बुढ़ापे के कारण किसी कर्मचारी के काम करने में असमर्थ होने पर दी जाने वाली वृत्ति। (सुपर एनुएशन अलाउंस)।
वृद्धा स्त्री० (सं) १-बुड्ढी स्त्री। बुढ़िया। २-अंगूठा
वृद्धावस्था स्त्री० (सं) १-बुढ़ापा। २-मनुष्यों में साठ वर्ष से अधिक की अवस्था।
वृद्धाश्रम पुं० (सं) संन्यास।
वृद्धि स्त्री०(सं)१-बढ़ती। आधिक्य। २-सूद। ब्याज ३-समृद्धि। ४-वेतन में होने वाली बढ़ती। (इन्क्रिमेन्ट)।
वृद्धिकर वि० (सं) बढ़ती करने वाला।
वृद्धिकर्म पुं० (सं) नांदीमुख नामक श्राद्ध।
वृश्चिक पुं० (सं) १-बिच्छू। २-बारह राशियों में आठवीं राशि।
वृष पुं०(सं)१-सांड। २-श्रीकृष्ण। ३-बारह राशियों में से दूसरी। ३-पति। ४-गेहूँ। ५-चूहा। ६-चन्द्रमा ७-मोर का पंख।
वृषकर्मा वि० (सं) बैल की तरह परिश्रम करने वाला।
वृषकेतन पुं० (सं) १-गणेश। २-शिव।
वृषण पुं० (सं) १-इन्द्र। २-सांड। ३-विष्णु। ४-घोड़ा।
वृषपति पुं० (सं) १-शिव। २-हिजड़ा।
वृषभ पुं० (सं) १-सांड या बैल। २-साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद।
वृषभकेतु पुं० (सं) शिव।
वृषभध्वज पुं० (सं) शिव।
वृषल पुं० (सं) १-शूद्र। २-दासी से उत्पन्न पुरुष। ३-बदचलन। ४-घोड़ा।
वृषली स्त्री०(सं)१-वह रजस्वला कन्या जिसका विवाह न हुआ हो। २-शूद्र जाति की स्त्री। ३-रजस्वला स्त्री। ४-वह स्त्री जिसके मरी हुई सन्तान उत्पन्न होती हो।
वृषादित्य पुं० (सं) ज्येष्ठ की संक्रांति का सूर्य।
वृषोत्सर्ग पुं०(सं) किसी मृत पूर्वज के नाम पर बछड़े को दाग कर सांड बना कर छोड़ना।
वृष्ट वि० (सं) वर्षा के रूप में गिरा हुआ।
वृष्टि स्त्री० (सं) १-वर्षा। मेह। २-ऊपर से बहुत सी वस्तुओं का एक साथ गिराया जाना। ३-किसी क्रिया का कुछ समय तक अबाधगति से होना।
वृष्टिकर वि० (सं) वर्षा करने वाला।
वृष्टिकाल पुं० (सं) बरसात। वर्षाऋतु।
वृष्टिपात पुं० (सं) वर्षा का होना।
वृष्य पुं० (सं) १-बल तथा वीर्यवर्द्धक वस्तु। २-गन्ना। ३-उड़द की दाल। ४-आंवला। ५-कमलनाल।
वृहत् वि० (सं) बहुत बड़ा। भारी। विशाल।
वृहन्नला पुं०(सं) अर्जुन का अज्ञातवास के समय का नाम।
वृहस्पति पुं० (सं) अंगिरा के पुत्र जो देवताओं के गुरु हैं।
वेंकटेश पुं० (सं) विष्णु।
वेंकटेश्वर पुं० (सं) विष्णु की वेंकटगिरि में स्थित मूर्ति।
वे वि०(हि) वह का बहुवचन या सम्मानसूचक शब्द।
वेकट पुं० (सं) १-युवक। २-मसखरा। ३-जौहरी। ४-एक प्रकार की मछली।
वेक्षण पुं० (सं) भली भांति देखना। देखभाल। (इन्सपेक्शन)।
वेग पुं० (सं) १-प्रवाह। बहाव। मलमूत्र आदि शरीर के बाहर निकालने की प्रवृत्ति। ३-तेजी। जोर। ४-शीघ्रता। ५-प्रसन्नता। ६-उद्योग। ७-दृढ़ निश्चय।
वेगगा स्त्री० (सं) नदी।
वेगवान वि० (सं) तेज चलने वाला। पुं० विष्णु।
वेगवृद्धि स्त्री० (सं) चाल या रफ्तार तेज करना। (एक्सिलरेशन)।
वेगानिल पुं० (सं) आंधी। प्रचंडवायु।
वेणि स्त्री० (सं) १-बालों की चोटी। २-धारा।
वेणी स्त्री०(सं) १-स्त्रियों के बालों की गुँधी हुई चोटी २-जलप्रवाह। ३-भीड़भाड़। ४-भेड़।
वेणीदान पुं० (सं) प्रयोग में बाल उतरवाने का एक संस्कार।
वेणी-संवरण पुं० (सं) स्त्रियों का अपने बालों की चोटी गूँधना।
वेणीसंहार पुं० (सं) वेणी संवरण।
वेणु पुं० (सं) १-बाँस। २-बाँसुरी।
वेणुकार पुं० (सं) मुरली या बाँसुरी बनाने वाला।
वेणुमय वि० (सं) बाँस का बना हुआ।
वेणुवादक पुं० (सं) बाँसुरी बजाने वाला।
वेणुवादन पुं० (सं) बाँसुरी बजाना।
वेतन पुं० (सं) १-किसी को कोई काम करते रहने के बदले में दिया जाने वाला धन। तनख्वाह। (सेलरी) २-पारिश्रमिक। (वेजेज)। ३-चाँदी।
वेतनक्रम पुं० (सं) वेतन का दरजा। (ग्रेड ऑफ पे)
वेतनजीवी वि० (सं) वेतन लेकर काम करने वाला।
वेतनदाता पुं० (सं) सैनिकों, कर्मचारियों या मजदूरों आदि को वेतन वितरण करने वाला। (पे मास्टर)
वेतनफलक पुं० (सं) वह कागज जिस पर कर्मचारियों के वेतन का पूरा विवरण होता है। (पे शीट)।
वेतनभोगी पुं० (सं) वेतन लेकर काम करने वाला कर्मचारी।
वेताल पुं० (सं) १-द्वारपाल। २-शिव का एक गण ३-एक भूत योनि। ४-छप्पय छन्द का छटा भेद।

वैतपाल्य वि० (सं) कुबेर सम्बन्धी।
वैतक वि० (सं) वेंतदार।
वैतकीय वि० (सं) वेंत सम्बन्धी।
वैतामुर पु० (सं) एक असुर का नाम।
वैद वि० (सं) विद्वान या पंडित सम्बन्धी। पु० (हि) दे० 'वैद्यक'।
वैदक पु० (हि) दे० 'वैद्यक'।
वैदग्ध पु० (सं) १-पांडित्य। २-कार्यकुशलता। ३-रसिकता। ४-हावभाव।
वैदर्भी स्त्री० (सं) काव्य की एक प्रकार की रीति जिसमें कोमल वर्णों से मधुर रचना की जाती है।
वैदिक पु० (सं) वेदों का अनुयायी। वि० (सं) वेद-सम्बन्धी।
वैदिक कर्म पु० (सं) वेदों के अनुसार किया गया कर्म।
वैदर्य पु० (सं) [illegible]

[illegible]

पॉलिसी)।
वैदेशिक-व्यापार पु०(सं) किसी देश का दूसरे देशों के साथ होने वाला व्यापार। (फोरेन ट्रेड)।
वैदेही स्त्री० (सं) सीता।
वैद्य पु०(सं) १-पंडित। २-वह चिकित्सक जो वैद्यकशास्त्र के अनुसार चिकित्सा करता हो। ३-बङ्गाल की एक जाति। वि० वेद सम्बन्धी।
वैद्यक पु० (सं) चिकित्साशास्त्र। आयुर्वेद।
वैद्यराज पु० (सं) वह जो अच्छा वैद्य हो।
वैद्यविद्या स्त्री० (सं) चिकित्साशास्त्र।
वैद्यशास्त्र पु०(सं) चिकित्सा सम्बन्धी विद्या।
वैद्या स्त्री० (सं) स्त्री-चिकित्सक।
वैद्युत वि० (सं) विद्युत्-सम्बन्धी। बिजली का।

[illegible]

वैधव पु० (सं) बुध।
वैधवेय पु० (सं) विधवा का पुत्र।
वैधव्य पु० (सं) विधवापन। रंडापा।
वैधव्यलक्षणोपेता स्त्री० (सं) वह कन्या जिसमें आगे चलकर विधवा होने के चिह्न हों।

[illegible]

(नैनिडेशन)।
वैधुर्य पु० (सं) १-विधुर होने का भाव। २-भय। ३-कम्पित होने का भाव।
वैनतेय पु०(सं) १-विनता की संतान। २-गरुड़। ३-अरुण।
वैनयिक पु०(सं) १-विनय। प्रार्थना। २-जो शास्त्रों का अध्ययन करता हो। वि० विनय का।
वैनाशिक वि० (सं) १-विनाश-सम्बन्धी। २-पराधीनता।
वैपरीत्य पु० (सं) विपरीतता। प्रतिकूलता।
वैपारी पु० (हि) दे० 'ब्यापारी'।
वैपुल्य पु० (सं) अधिकता। विपुलता।
वैफल्य पु० (सं) विफल होने का भाव। विफलता।
वैभव पु० (सं) १-धन-सम्पत्ति। २-विभव। ३-ऐश्वर्य।

[illegible] बहुत धन हो।

[illegible] -विभाषा सम्बन्धी।

[illegible] २-एक पर्वत।

३-एक लोक।
वैभ्राजक पु० (सं) स्वर्ग का एक उपवन।
वैमत्य पु० (सं) १-मतभेद। २-द्वेष।
वैमत्यसूचक वि० (सं) असहमति सूचित करने वाला। (डिसकॉर्डेंट)।
वैमनस्य पु० (सं) शत्रुता। दुश्मनी।
वैमल्य पु० (सं) विमलता।
वैमात्र वि० (सं) विमाता से उत्पन्न। सौतेला।
वैमात्रक पु० (सं) सौतेला भाई।
वैमात्रा स्त्री० (सं) सौतेली बहन।
वैमात्री स्त्री० (सं) सौतेली बहन।
वैमात्रेय पु० (सं) सौतेला भाई।
वैमात्रेयी स्त्री० (सं) सौतेली बहन।

[illegible] १-जो [illegible] करने [illegible] न्धी।

व्यक्तिगत। (पर्सनल)।
वैयक्तिकबंध पु०(सं) किसी व्यक्ति द्वारा लिखा गया वह प्रतिज्ञापत्र जिसके अनुसार लिखित बात को पूरा न करने की अवस्था में उसे दण्ड दिया जा सकता है। (पर्सनल बॉंड)।

का मढ़ा एक प्रकार का रथ।
वैयात्य पुं०(सं) निर्लज्जता। बेहयापन।
वैरंकर वि० (सं) दुश्मनी दिखाने वाला।
वैर पुं० (सं) १-शत्रुता। दुश्मनी। २-प्रतिहिंसा।
वैरकारक वि० (सं) दुश्मनी करने वाला।
वैरकारी वि० (सं) झगड़ा करने वाला।
वैरप्रतिक्रिया स्त्री० (सं) वैर। प्रतिकार।
वैरप्रतिकार पुं० (सं) वैर का बदला।
वैरभाव पुं० (सं) शत्रुता।
वैररक्षी वि० (सं) शत्रुता दूर करने वाला।
वैरल्य पुं० (सं) १-विरलता। २-एकांत।
वैरव्रत पुं० (सं) शत्रुता की प्रतिज्ञा।
वैरशुद्धि स्त्री० (सं) शत्रुता का बदला।
वैरस पुं० (सं) इच्छा का न होना। अरुचि।
वैरस्य पुं० (सं) वैरस।
वैरागी पुं० (सं) १-विरक्त। जिसने वैराग्य ले रखा हो। २-एक प्रकार के वैष्णव साधु।
वैराग्य पुं० (सं) सांसारिक सुख भोगों तथा कामों आदि से होने वाली विरक्ति।
वैराज्य पुं० (सं) १-एक ही देश में दो राजाओं या शासकों का शासन। २-विदेशियों का शासन।
वैरि पुं० (सं) वैरी। शत्रु।
वैरी पुं० (सं) शत्रु। दुश्मन।
वैरूप्य पुं०(सं) १-विरूपता। २-विकृत होने का भाव
वैरेचन वि० (सं) विरेचन का। विरेचन-सम्बन्धी।
वैरेचनिक वि० (सं) दे० 'वैरेचन'।
वैरोचन पुं० (सं) १-बुद्ध का एक नाम। २-सूर्यपुत्र का नाम। ३-अग्निपुत्र का नाम।
वैरोचननिकेतन पुं० (सं) पाताल।
वैरोचनि पुं० (सं) १-बुद्ध। २-राजा बलि। ३-सूर्य के एक पुत्र का नाम।
वैलक्षण्य पुं० (सं) १-अभिन्नता। २-विलक्षणता।
वैवर्ण पुं० (सं) १-मलिनता। २-सौंदर्य का अभाव
वैवर्ण्य पुं० (सं) दे० 'वैवर्ण'।
वैवश्य पुं० (सं) १-विवशता। २-लाचारी। ३-दुर्बलता।
वैवाहिक वि० (सं) विवाह से सम्बन्ध रखने वाला।
वैवाह्य वि० (सं) १-विवाह सम्बन्धी। २-विवाह के योग्य हो।
वैशंपायन पुं० (सं) एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।
वैशद्य पुं० (सं) १-निर्मलता। २-विशदता।
वैशाख पुं० (सं) १-चैत्र के बाद और जेठ के पहले का महीना। २-मथानी का डंडा।
वैशाखनंदन पुं० (सं) गधा।
वैशाखी स्त्री० (सं) वैशाख मास की पूर्णमासी।
वैशारद्य पुं० (सं) १-पांडित्य। २-दक्षता।
वैशिक वि०(सं) वेश-सम्बन्धी। पुं० वेश्यागामी नायक (साहित्य)।
वैशिष्ट पुं० (सं) असाधारण। विशिष्टता।
वैशिष्ट्य पुं० (सं) १-विशिष्टता। २-विशेषता।
वैशेषिक पुं० (सं) १-छः दर्शनों में से एक। २-वैशेषिक-दर्शन का ज्ञाता। वि० किसी विशेष विषय से सम्बन्ध रखने वाला।
वैशेष्य पुं० (सं) विशेषता।
वैश्य पुं० (सं) भारतीय आर्यों की वर्ण व्यवस्था के चार वर्णों में से तीसरा जिसका काम कृषि, गो रक्षा और वाणिज्य है।
वैश्यकर्म पुं० (सं) वैश्य का पेशा।
वैश्यवृत्ति पुं० (सं) वैश्य का पेशा।
वैश्रवण पुं० (सं) १-कुबेर। २-शिव।
वैश्वजनीन वि० (सं) १-समस्त संसार के लोगों से सम्बन्ध रखने वाला। पुं० सारे जगत के लोगों का कल्याण करने वाला।
वैश्वदेव वि० (सं) सारे देवों से सम्बन्ध रखने वाला पुं० १-विश्वदेव के लिए किया जाने वाला यज्ञ।
वैश्वदेवत पुं० (सं) दे० 'विश्वदेविक'।
वैश्वदेविक पुं० (सं) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।
वैश्वमनस पुं० (सं) एक प्रकार का मास।
वैश्वयुग पुं० (सं) वृहस्पति के शोभकृत, शुभकृत् आदि पांच संवत्सरों का युग (फ० ज्यो०)।
वैश्वरूप वि० (सं) अनेक रूपों वाला। पुं० विश्व।
वैश्वरूप्य पुं० (सं) बहुरूपता।
वैश्वानर पुं०(सं) १-अग्नि। २-पित्त। ३-परमात्मा चेतन।
वैषम पुं० (सं) १-विषमता। २-संकट। ३-मूल।
वैषम्य पुं० (सं) दे० 'वैषम'।
वैषयिक वि०(सं) विषय सम्बन्धी। पुं० लंपट। विषयी
वैषुवत पुं० (सं) १-केन्द्र। २-संक्रांति।
वैष्णव पुं० (सं) १-विष्णु का उपासक तथा भक्त २-हिन्दुओं का एक विष्णु उपासक संप्रदाय।
वैष्णवी स्त्री० (सं) १-विष्णु की शक्ति। २-दुर्गा। ३-गंगा। ४-तुलसी। ५-पृथ्वी।
वैसा वि० (हि) उस तरह का।
वैसे अव्य० (हि) उस तरह से। उस प्रकार से।
वैहायस वि० (सं) व्योम या आकाश सम्बन्धी। आसमानी।
वैहासिक पुं० (सं) मसखरा। विदूषक। भांड।
वोक पुं० (हि) ओर। तरफ।
वोछा वि० (हि) दे० 'ओछा'।
वोट पुं० (अं) निर्वाचन में किसी उम्मीदवार के पक्ष में जाने वाली राय या मत।
वोढ़ना क्रि० (सं) फैलाना।
वोढव्य वि० (सं) ढोने योग्य

बौछ वि० (स) तर। आद्र'। भीगा।
बोदर पु० (सं) पेट। उदर।
बोढ़ पु० (सं) पेट। उदर।
बोर स्त्री० (हि) तरफ। ओर।
बौहित्य पु० (सं) १-बड़ी नाव। २-जहाज। पोत।
व्यंग्य पु० (सं) १-गूढ़ अर्थ। २-ताना। बोली। ३-मैंढक। ४-एक रोग जिसमें मुँह में छाले पड़ जाते हैं।
व्यंग्यचित्र पु० (सं) वह चित्र जो उपहास की दृष्टि से बनाया गया हो। (कार्टून)।
व्यंग्योक्ति स्त्री० (स) वह उक्ति जिसमें व्यंग हो।
व्यंजक वि० (स) व्यक्त या सूचित करने वाला।
व्यंजन पु० (सं) १-वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के बोला जा सके। (व्याकरण)। २-व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया। ३-पका हुआ भोजन। ४-चावल आदि के साथ खाये जाने वाला पदार्थ। ५-चिह्न। ६-अंग। ७-मूँछ। ८-दिन।
व्यंजनकार पु० (स) खाना बनाने वाला।
व्यंजनसंधि स्त्री० (सं) व्यंजन वर्णों के मिलने पर होने वाला विकार।
व्यंजना स्त्री० (सं) १-व्यक्त करने की क्रिया या भाव। २-शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ के सिवा कुछ विशेष अर्थ निकलते हैं।
व्यंजनावृत्ति स्त्री० (स) व्यङ्ग्यपूर्ण भाव में लिखने का ढंग।
व्यंजित वि० (स) १-व्यक्त किया हुआ। २-विहित
व्यक्त वि० (स) १-जो प्रकट किया गया हो। २-स्पष्ट ३-स्थूल। बड़ा।
व्यक्ति स्त्री०(स) व्यक्त होने की क्रिया या भाव। पु० (सं) १-मनुष्य। आदमी। २-जाति या समूह में से कोई एक। (इन्डिविडुअल)।
व्यक्तिगत वि० (सं) किसी व्यक्ति से सम्बन्ध रखने वाला। वैयक्तिक।
व्यक्तित्व पु० (स) वे विशेष गुण जिसके द्वारा किसी की स्पष्ट और स्वतन्त्र सत्ता सूचित होती है। (पर्सनेलिटी)।
व्यक्तीकरण पु० (सं) १-व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया। २-संपादन करना।
व्यक्तीभूत वि० (स) व्यक्त किया हुआ।
व्यग्र वि० (स) १-घबड़ाया हुआ। २-भयभीत। ३-व्यस्त।
व्यग्रमना वि० (सं) घबड़ाया हुआ।
व्यजन पु० (सं) हवा करने का पंखा।
व्यतिक्रम पु० (सं) १-क्रमभंग। उलटफेर। २-बाधा
व्यतिक्रमण पु० (सं) क्रम या सिलसिले में उलट-फेर करना।
व्यतिक्रमी वि० (सं) १-अपराधी। २-पाप करने वाला।
व्यतिक्रांत वि० (स) १-भंग किया हुआ। २-जिसमें विपर्यय हुआ हो।
व्यतिक्षेप पु० (सं) १-झगड़ा। २-अदल-बदल।
व्यतिचार पु० (स) १-पापकर्म करना। २-दोष। ऐब
व्यतिपात पु० (सं) बहुत भारी उत्पात।
व्यतिरिक्त वि० (स) १-भिन्न। अलग। बढ़ा हुआ। अव्य० अतिरिक्त। अलावा।
व्यतिरेक पु०(सं) १-अभाव। २-भेद। ३-अतिक्रम। ४-भिन्नता। ५-एक अर्थालंकार।
व्यतीत वि० (स) बीता हुआ। गत।
व्यतीतना क्रि० (हि) बीतना।
व्यतीपात पु० (सं) १-बहुत बड़ा उपद्रव। २-अपमान। ३-ज्योतिष-शास्त्र में सत्ताइस योगों में से सत्रहवाँ योग।
व्यत्यय वि० (स) १-उल्लंघन। २-रोक। अड़चन।
व्यथयिता वि०(सं) १-वेदना या कष्ट देने वाला। २-दण्ड देने वाला।
व्यथा स्त्री० (स) १-पीड़ा। वेदना। २-दुःख। क्लेश। ३-भय। डर।
व्यथाकुल वि० (स) १-कष्ट से व्याकुल। २-व्यथित।
व्यथान्वित वि० (सं) दे० 'व्यथित'।
व्यथित वि० (सं) १-दुःखित। २-भयभीत। ३-व्याकुल।
व्यपकर्ष पु० (स) १-निंदा। २-शिकायत।
व्यपगत वि० (स) १-गया हुआ। २-असावधानी के कारण भूला हुआ। ३-वह अधिकार या सुभीता जो समय पर उपयोग न आने के कारण हाथ से निकल गया हो। (लेप्ड)।
व्यपगतरश्मि स्त्री० (स) जिसकी किरणें विलीन हो गई हों।
व्यपगति स्त्री० (सं) १-असावधानी के कारण की गई छोटी भूल। २-नियत समय तक किसी अधिकार या सुभीते का उपयोग न करना। (लैप्स)।
व्यपदेश पु० (स) प्रधान।
व्यपयान पु० (स) दे० 'व्यपगति'।
व्यभिचार पु०(स)१-दुश्चरित्रता। २-पाप। ३-किसी नियम आदि को भंग करना। ३-किसी पुरुष का किसी स्त्री के साथ अनुचित सम्बन्ध।
व्यभिचारिणी स्त्री० (स) व्यभिचार करने वाली स्त्री
व्यभिचारी पु० (स) १-व्यभिचार करने वाला। २-वह जो अपने पथ से भ्रष्ट हुआ हो। ३-परस्त्री गमन।
व्यभिचारीभाव पु० (सं) साहित्य में वह भाव जो रस के उपयोगी होकर जलतरंगवत् उसमें सचरण करते हैं और समय-समय पर मुख्य भाव का रूप धारण करते हैं।

व्यय पुं०(सं) १-किसी वस्तु का विशेषतः धन आदि का इस प्रकार काम में आना कि वह समाप्त हो जाय। खर्च। (एक्सपेंडीचर)। २-खपत। ३-नाश
व्ययशाली वि० (सं) फजूल खर्च करने वाला।
व्ययशील वि० (सं) अपव्ययी।
व्ययित वि० (सं) व्यय या खर्च किया हुआ।
व्ययी वि० (सं) १-बहुत खर्च करने वाला। २-नष्ट होने वाला।
व्यर्थ अव्य० (सं) बिन मतलब के। यों ही। वि० १-अर्थ रहित। २-निरर्थक। ३-जिसका कोई फल न हो। (नल्ल)।
व्यर्थन पुं० (सं) आज्ञा, निर्णय आदि रद्द करना। (नलिफिकेशन)।
व्यलीक पुं० (सं) १-अपराध। २-डांट। ३-दुःख कष्ट। ४-विट। ५-विलक्षणता। वि० १-अप्रिय। २-अपरिचित। ३-विलक्षण। ४-कपट।
व्यवकलन पुं० (सं) गणित में घटाने या बाकी करने की क्रिया।
व्यवकलित वि० (सं) बाकी निकाला हुआ। घटाया हुआ।
व्यवच्छिन्न वि० (सं) १-अलग। २-विभाग करके अलग किया हुआ। ३-निर्धारण किया हुआ।
व्यवच्छेद पुं० (सं) १-पृथकता। २-विभाग। खण्ड। ३-छुटकारा। ४-ठहराना।
व्यवच्छेदक वि० (सं) अलग करने वाला।
व्यवदात वि० (सं) १-चमकीला। २-स्वच्छ। साफ।
व्यवदान पुं० (सं) किसी वस्तु को शुद्ध तथा साफ करना।
व्यवदीर्ण वि० (सं) १-जिसके खण्ड हो गये हों। २-२-हतबुद्धि।
व्यवधा स्त्री० (सं) १-वह जो बीच में हो। २-छिपाव ३-पर्दा।
व्यवधाता वि० (सं) १-अलग करने वाला। २-बीच में पड़ने वाला। ३-पर्दा करने वाला।
व्यवधान पुं० (सं) १-ओट। परदा। २-रुकावट। बाधा। ३-विभाग। ४-परदा। ५-विच्छेद।
व्यवधायक पुं० (सं) १-छिपने वाला। २-आड़ करने या छिपाने वाला।
व्यवसाय पुं० (सं) १-जीविका निर्वाह के लिए किया जाने वाला कार्य। धंधा। पेशा। (अकुपेशन)। २-रोजगार। ३-कामधंधा। ४-निश्चय। ५-प्रयत्न ६-विचार। ७-अभिप्राय। ८-शिव।
व्यवसायप्रशिक्षण पुं० (सं) किसी व्यवसाय या पेशे को सिखाने के लिए दिया गया प्रशिक्षण (वोकेशनल ट्रेनिंग)।
व्यवसायबुद्धि वि० (सं) जिसका दृढ़ निश्चय हो।
व्यवसायवर्ती वि० (सं) पक्के निश्चय से काम करने वाला।
व्यवसायसंघ पुं० (सं) किसी व्यवसाय या उद्योग में काम करने वाले कर्मचारियों की संघा जो संघठित रूप से उद्योगपतियों से अपनी मांग मनवाने का संघर्ष या प्रयत्न करती है। (ट्रेड यूनियन।
व्यवसायात्मक वि० (सं) उत्साहपूर्वक।
व्यवसायी पुं० (सं) १-व्यवसाय करने वाला। २-व्यापार करने वाला। ३-वह जो किसी काम का अनुष्ठान करता हो। वि० उद्यम करने वाला। २-परिश्रम करने वाला।
व्यवस्था स्त्री० (सं) १-किसी काम का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निर्धारित हुआ हो। २-प्रबन्ध। ३-स्थिरता। ४-शर्त। ५-निश्चित सीमा।
व्यवस्थान पुं० (सं) १-परस्पर होने वाला समझौता। २-सङ्गठित सभा या सङ्घ। (कम्पैक्ट)। ३-व्यवस्था
व्यवस्थान प्रज्ञप्ति स्त्री० (सं) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम। (बौद्ध)।
व्यवस्थापक पुं० (सं) १-प्रबन्ध-कर्त्ता। (मैनेजर)। २-शास्त्रीय व्यवस्था देने वाला। ३-व्यवस्थापिका-सभा का कोई सदस्य।
व्यवस्थापत्र पुं० (सं)वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्याख्या या वैचारिक विधान लिखा हो।
व्यवस्थापिका सभा स्त्री० (सं) किसी देश के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो देश के लिये कानून आदि बनाती है। (लेजिस्लेटिव काउंसिल)।
व्यवस्थापित वि० (सं) १-व्यवस्था किया हुआ। २-नियमित।
व्यवस्थित वि० (सं) १-जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था हो। नियमित। २-जिसका निर्णय हो चुका हो।
व्यवस्थिति स्त्री० (सं) १-उपस्थित या स्थिर होना। २-व्यवस्था। प्रबन्ध।
व्यवहर्ता पुं० (सं) किसी अभियोग आदि पर विधिपूर्वक विचार करने वाला। न्यायकर्त्ता।
व्यवहार पुं० (सं) १-कार्य। २-सामाजिक प्रबन्ध में दूसरों के साथ किया जाने वाला आचरण। (कंडक्ट) ३-रुपये-पैसे का लेन-देन का काम। (डीलिंग)। ४-कार्यान्वित करना। (एक्शन)। ५-मुकदमा। (केस)। ६-किसी मुकदमे की सारी प्रक्रिया। (प्रोसीडिंग्स)। ७-उपचार। (यूजेज)। ८-परिपाटी
व्यवहारक पुं० (सं) वह जो वकालत या न्याय करता हो। २-वयस्क। बालिग। ३-व्यापारी।
व्यवहारज्ञ पुं० (सं) १-व्यवहार शास्त्र का ज्ञाता। २-पूर्ण वयस्क।
व्यवहारतंत्र पुं० (सं) व्यवहारशास्त्र।
व्यवहारदर्शन पुं० (सं) व्यवहार या मुकदमों का विचार या सुनवाई करना।

व्याघात पुं० (सं) १-बाधा। विघ्न। २-किसी के अधिकार या स्वत्व पर होने वाला आघात। (इन-फ्रिन्जमेंट)। ३-मार। ४-एक काव्यालंकार जिसमें एक ही उपाय द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है।
व्याघ्र पुं० (सं) बाघ। शेर।
व्याघ्रचर्म पुं० (सं) बाघ की खाल।
व्याघ्रनख पुं० (सं) १-बाघ का नाखून। २-नख नामक गंधद्रव्य।
व्याघ्रपुच्छ पुं० (सं) बाघ की पूँछ।
व्याघ्रलोम पुं० (सं) बाघ की मूँछ।
व्याघ्रवक्त्र पुं० (सं) १-शिव। २-बिल्ली।
व्याघ्राण पुं० (सं) सूँघना।
व्याघ्री स्त्री० (सं) १-बाघ की मादा शेरनी। २-एक प्रकार की कौड़ी।
व्याज पुं० (सं) १-छल। बहाना। २-बाधा। ३-विलम्ब। पुं० (हि) दे० 'ब्याज'।
व्याजनिंदा स्त्री० (सं) १-किसी बहाने से की जाने वाली निंदा। २-वह काव्यालंकार जिसमें इस प्रकार से निन्दा की जाय।
व्याजस्तुति स्त्री० (सं) १-वह स्तुति जो साधारणतः देखने में स्तुति न जान पड़े। २-वह काव्यालंकार जिसमें इस प्रकार की स्तुति की जाती है।
व्याजी स्त्री० (सं) बिक्री में माप या तौल के ऊपर कुछ थोड़ा सा और देना।
व्याजोक्ति स्त्री० (सं) १-कपट भरी बात। २-एक अर्थालंकार जिसमें किसी स्पष्ट बात को छिपाने के लिये किसी प्रकार का मिस किया जाय।
व्याड पुं० (सं) १-सर्प। २-बाघ। ३-इन्द्र। वि० धूर्त।
व्यादान पुं० (सं) १-फैलाव। विस्तार। २-उद्घाटन
व्याध पुं० १-जङ्गली पशुओं को मार कर जीवन निर्वाह करने वाला। शिकारी। २-बहेलिया। ३-इस काम को करने वाली एक जाति। वि० दुष्ट।
व्याधि स्त्री० (सं) १-रोग। बीमारी। २-विपत्ति। ३-झंझट। ४-साहित्य में एक [illegible]
व्याधिकर वि० (सं) बीमारी [illegible]
व्याधिग्रस्त वि० (सं) रोगी [illegible]
व्याधित वि० (सं) रोगी [illegible]
व्याधिनिग्रह पुं०(सं) [illegible]
व्याधिपीड़ित वि०(सं) [illegible]
व्याधिभय पुं० (सं) [illegible]
व्याधिमंदिर पुं० ([illegible]
व्याधियुक्त वि० ([illegible]
व्याधिरहित वि० [illegible]
व्याधिहर वि० ([illegible] वाला।
व्याव पुं० (सं) [illegible]

सारे शरीर में व्याप्त होती है।
व्यापक वि० (सं) १-चारों ओर फैला हुआ। २-भरा या छाया हुआ। घेरने या ढकने वाला।
व्यापकपुरुषमताधिकार पुं० (सं) किसी देश या राज्य के सभी वयस्क व्यक्तियों को केवल पागल या अपराध में दंडित व्यक्तियों को छोड़ कर मत प्रदान करने का अधिकार (यूनिवर्सल मैनहुड सफरेज)
व्यापन पुं०(सं) फैलना। व्याप्त होना।
व्यापना क्रि० (हि) किसी वस्तु के अन्दर व्याप्त होना या फैलाना।
व्यापादक वि० (सं) १-दूसरों की बुराई की इच्छा रखने वाला। २-हत्या या विनाश करने वाला।
व्यापादनीय वि०(सं) मार डालने या नष्ट करने योग्य
व्यापाद्य वि० (सं) व्यापादनीय।
व्यापादित वि० (सं) मृत। मारा हुआ।
व्यापार पुं० (सं) १-कार्य। काम। २-काम करना। (ऑपरेशन)। ३-चीजें खरीद कर बेचने का काम (ट्रेड)। ४-सहायता।
व्यापारचिह्न पुं० (सं) वह विशेष चिह्न जो व्यापारी माल पर उसे अन्य व्यापारियों के माल से पृथक सूचित करने के लिये अंकित किया जाता है। (ट्रेड मार्क)।
व्यापारमंडल पुं० (सं) वह सभा जो व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करती है। (चेम्बर्स आफ कॉमर्स)।
व्यापारिक वि० (सं) व्यापार-सम्बन्धी।
व्यापारी पुं० (हि) व्यवसाय, व्यापार या रोजगार करने वाला। (डीलर, ट्रेडर)। वि० (हि) व्यापार सम्बन्धी।
व्यापी वि० (हि) व्याप्त होने या चारों ओर फैलने वाला।
व्याप्त वि० (सं) १-किसी वस्तु या स्थान में भरा, फैला या छाया हुआ। २-सीमा में या अन्तर्गत आया हुआ।
व्याप्ति स्त्री० (सं) १-व्याप्त होने की क्रिया, भाव या सीमा। २-न्यायशास्त्र में किसी पदार्थ का पूर्ण या एक रूप से मिला या फैला हुआ होना।
व्यामूढ़ वि० (सं) अत्यधिक घबड़ाया हुआ।
व्यामोह पुं० (सं) मोह। अज्ञान।
व्यायाम पुं०(सं) १-बल बढ़ाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक परिश्रम। कसरत (एक्सरसाइज)। २-पौरुष। ३-काम। ४-सैनिक कवायद [illegible]
व्यायामभूमि स्त्री० (सं) व्यायाम करने [illegible]
व्यायामशाला स्त्री० (सं) व्यायाम [illegible]
व्यायामी पुं० (सं) १-कसरत [illegible] श्रमी।
व्यायोग पुं० (सं) रूपक [illegible] कथा पौराणिक [illegible]

व्यूहरचना पुं० (सं) सेना को ठीक स्थान पर नियुक्त रखना।
व्यूहित वि० (सं) व्यूहबद्ध।
व्योम पुं० (सं) १-आकाश। २-मेघ। बादल। ३-जल। पानी।
व्योमकेश पुं० (सं) शिव।
व्योमगंगा स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
व्योमग वि०(सं) आकाश में उड़ने वाला।
व्योमगमनी विद्या स्त्री० (सं) आकाश में उड़ने की विद्या।
व्योमचर वि० (सं) आकाश में विचरण करने वाला
व्योमचारी पुं० (सं) १-वह जो आकाश में विचरण करता हो। २-देवता। ३-पक्षी।
व्योमपुष्प पुं० (सं) कोई असंभव बात या वस्तु।
व्योमयान पुं० (सं) हवाई जहाज। वायुयान।
व्योमरत्न पुं० (सं) सूर्य।
व्योमवर्त्म पुं० (सं) आकाशमार्ग।
व्योमसरिता स्त्री० (हि) आकाशगंगा।
व्योमसरित् स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
व्योमस्थली स्त्री० (सं) पृथ्वी। जमीन।
व्रज पुं० (सं) १-जाना या चलना। २-समूह। झुण्ड। ३-मथुरा तथा वृन्दावन के आसपास का क्षेत्र। जो श्रीकृष्ण की लीला भूमि थी।
व्रजक पुं० (सं) तपस्वी।
व्रजकिशोर पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रजन पुं० (सं) गमन। चलन।
व्रजनाथ पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रजभाषा पुं० (सं) एक प्रसिद्ध भाषा जो मथुरा आगरे आदि में बोली जाती है तथा जिसमें तुलसी बिहारी आदि अनेक कवियों ने ग्रन्थ लिखे है।
व्रजभू वि० (स) व्रज में उत्पन्न।
व्रजमंडल पुं० (सं) व्रज और उसके आसपास का प्रदेश।
व्रजमोहन पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रजस्त्री स्त्री० (सं) गोपिका।
व्रजांगना स्त्री० (सं) १-गोपिका। २-व्रज की स्त्री।
व्रजेंद्र पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रजेश्वर पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रज्या स्त्री० (सं) १-घूमना-फिरना। २-आक्रमण ३-जाना। ४-एक स्थान पर बहुत सी वस्तुएं एकत्रित करना। ५-दल। ६-रङ्गभूमि।
व्रण पुं० (सं) १-फोड़ा। २-घाव।
व्रणकारक-गैस स्त्री० (सं) एक प्रकार की विषैली गैस जिसके शरीर सम्पर्क से शरीर पर छाले पड़ जाते हैं (ब्लिस्टर गैस)।
व्रणग्रंथि स्त्री० (सं) फोड़े के ऊपर होने वाली गांठ।
व्रणपट्ट पुं० (सं) घाव या फोड़े पर बांधने की पट्टी।
व्रणपट्टिका स्त्री० (सं) दे० 'व्रणपट्ट'।
व्रणशोधन पुं० (सं) घाव या फोड़े की सफाई।
व्रणसंरोहण पुं० (सं) घाव का भरना।
व्रणित वि० (सं) १-आहत। जख्मी। २-जिसे घाव लगा हो। ३-जो फोड़े में परिणत हो गया हो। —(अल्सरेटेड)।
व्रणी पुं० (हि) व्रण का रोगी।
व्रत पुं० (स) १-भोजन करना। २-धार्मिक अनुष्ठान के लिये नियमपूर्वक उपवास करना। ३-प्रतिज्ञा। संकल्प।
व्रतग्रहण पुं० (सं) १-कोई धार्मिक कृत्य करने का संकल्प करना। २-संन्यास लेना।
व्रतचर्या स्त्री० (स) किसी प्रकार का व्रत करने या रखने का काम।
व्रतति स्त्री० (सं) दे० 'व्रतती'।
व्रतती स्त्री० (सं) १-विस्तार। फैलाव। २-लता।
व्रतपारण पुं० (सं) १-व्रत की समाप्ति। २-प्रतिज्ञा-भङ्ग।
व्रतभंग पुं० (सं) व्रतभंग होना।
व्रतलोपन पुं० (सं) दे० 'व्रतभंग'।
व्रतविसर्जन पुं० (सं) व्रत समाप्त करना।
व्रतसंरक्षण पुं० (सं) व्रत का पालन करना।
व्रतसमापन पुं० (स) व्रत की समाप्ति।
व्रतस्नान पुं० (सं) वह स्नान जो व्रत के बाद किया जाता है।
व्रतहानि स्त्री० (सं) व्रत को तोड़ना।
व्रती पुं० (हि) १-जिसने व्रत धारण किया हो। २-ब्रह्मचारी। ३-यजमान।
व्राचट स्त्री० (हि) १-अपभ्रंश भाषा का एक भेद जो सिन्ध (पाकिस्तान) में प्रचलित था। २-पैशाचिक भाषा का एक भेद।
व्राचड स्त्री० (हि) दे० 'व्राचट'।
व्रात पुं० (सं) वह परिश्रम जो जीविका के लिये किया जाय।
व्रातपति पुं० (सं) किसी दल या संघ का अध्यक्ष।
व्रात्य वि० (सं) १-व्रत-सम्बन्धी। व्रत का। पुं० (सं) वर्णसंकर। दोगला।
व्रीड पुं० (सं) लज्जा। शर्म।
व्रीडित वि० (सं) लज्जित।
व्रीहि पुं० (सं) १-धान। २-चावल।
व्रीह्यागार पुं० (सं) धान का गोदाम।
व्रैहेय पुं० (स) वह खेत जिसमें धान उग सकें।

[शब्दसंख्या—४११६२]

श ( )

श देवनागरी वर्णमाला का तीसवाँ व्यञ्जन जिसका उच्चारण स्थान प्रधानतः तालु है।

शंक पुं० (सं) १-भय। डर २-शङ्का। ३-बैल।

शकना क्रि० (हि) १-शंका या सन्देह करना। २-डरना।

शङ्कनीय वि० (सं) १-शंका करने योग्य। २-भय के योग्य।

शंकर वि० (सं) १-मंगलकारक। २-लाभदायक। पुं० १-शिव। २-कपूर। ३-एक राग जो रात्रि के समय गाया जाता है। ४-एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १६ तथा १० के विश्राम से २६ मात्राएँ होती हैं और अन्त में गुरु लघु होता है।

शंकरा पुं० (हि) १-एक राग। २-शिव। ३-पार्वती।

शंकराचार्य पुं०(सं) अद्वैतमत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य।

शंकरी स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-एक रागिनी। ३-शमीवृक्ष।

शंका स्त्री० (सं) १-अनिष्ट का भय। डर। २-सन्देह। ३-काव्य में एक संचारी भाव।

शंकाजनक वि० (सं) सन्देह उत्पन्न करने वाला।

शंकानिवारण पुं० (सं) शंका या सन्देह दूर किया जाना।

शंकानिवृत्ति स्त्री० (सं) दे० 'शंकानिवारण'।

शंकाशील वि०(सं)शंका करने वाला। शक्की मिजाज वाला।

शंकासमाधान पुं० (सं) शंका को दूर करना।

शंकित वि० (सं) १-डरा हुआ। भयभीत। २-जिसे सन्देह हुआ हो। ३-अनिश्चितता।

शंकु पुं० (सं) १-कोई नुकीली वस्तु। २-मेख। कील ३-खूँटी। ४-भाला। ५-विष। शिव।

शंकुला स्त्री० (सं) सुपारी काटने का सरौता।

शंख पुं० (सं) १-एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बजाया जाता है। २-सौ पद्म की संख्या। ३-कनपटी। ४-चरणचिह्न ५-हाथी का गंडस्थल।

शंखशीर पुं० (सं) असंभव बात। अनहोनी बात।

शंखचारी स्त्री०(सं) १-ललाट पर का चन्दन का टिका २-भाल। ललाट।

शंखधर पुं० (सं) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण। वि० शंख-धारण करने वाला।

शंखपाणि पुं० (सं) विष्णु।

शंखभृत् पुं० (सं) विष्णु।

शंखविष पुं० (सं) संखिया।

शंखासुर पुं० (सं) एक दैत्य का नाम जो ब्रह्मा से वेद चुरा कर समुद्र गर्भ में जा छिपा था।

शंखिनी स्त्री० (सं) १-एक औषध। २-कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक। ३-सांप। ४-बौद्धों की एक शक्ति।

शंगरफ पुं० (फा) दे० 'शिगरफ'।

शंजरफ पुं० (फा) शिगरफ।

शंड पुं० (सं) १-विनाहित। २-नपुंसक। ३-मूर्ख।

शंड पुं० (सं) १-नपुंसक। हिजड़ा। २-सांड। ३-पागल। ४-कर्मचारी।

शंपा स्त्री० (सं) १-बिजली। २-कमर। कटि।

शंब पुं० (सं) १-लोहे की जंजीर। २-इन्द्र का वज्र ३-नियमित रूप से हल जोतने की क्रिया।

शंबर पुं० (सं) १-युद्ध। २-मछली। ३-चित्रक। ४-एक दैत्य का नाम। वि० १-भाग्यवान। सुखी। २-बहुत बढ़िया।

शंबरसूदन पुं० (सं) कामदेव।

शंबरारि पुं० (सं) मदन। कामदेव।

शंबल पुं०(सं)१ सम्बल। पाथेय। २-तट। ३-कूल। ४-ईर्ष्या।

शंबु पुं० (सं) सीपी। घोंघा।

शंबुक पुं० (सं) सीपी। घोंघा।

शंबूक पुं० (सं) १-सीपी। घोंघा। २-हाथी की सूंड का अगला भाग। ३-एक तपस्वी शूद्र का नाम।

शंभु पुं० (सं) १-शिव। २-एक दैत्य का नाम। (रामकथा)। ३-एक वर्णवृत्त। ४-विष्णु। ५-ब्रह्मा

शंस पुं० (सं) १-शपथ। २-कविता। ३-इच्छा। ४-चापलूसी। ५-वक्तता। ६-प्रशंसा।

शंसा स्त्री० (सं) दे० 'शंस'।

शऊर पुं० (अ) १-बुद्धि। २-भली प्रकार काम करने का ढंग या योग्यता।

शऊरदार पुं० (अ) जिसमें शऊर हो। समझदार।

शक पुं० (सं) १-एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। २-शासक देश। (अ) शंका। सन्देह।

शकट पुं० (सं) १-बैलगाड़ी। २-भार। ३-शरीर। देह। ४-रोहिणी नक्षत्र।

शकटव्यूह पुं० (सं) सेना की ऐसी बनावट जिसमें आगे पतला और पीछे मोटी हो।

शकटहा पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

शकर स्त्री० (हि) दे० 'शक्कर'।

शकरकंद पुं० (फा) एक प्रकार का मीठा कंद।

शकरजबान वि० (फा) मीठा बोलने वाला।

शकरपारा पुं० (फा) १-एक प्रकार की घी

२-एक नीबू जैसा बड़ा फल।
शकल पुं० (सं) १-त्वचा। चमड़ा। २-छाल। ३-खांड। ४-टुकड़ा। स्त्री० (फा) १-चेहरा। स्वरूप। ३-मुख का भाव। ४-बनावट। ५-ढंग।
शकलसूरत स्त्री० (हि) मुख की आकृति।
शकांतक पुं० (सं) शक जाति का अन्त करने वाला
शकाब्द पुं०(सं) राजा शालिवाहन का चलाया हुआ एक शक-सम्वत्।
शकारि पुं० (सं) शकजाति का शत्रु। विक्रमादित्य।
शकुंत पुं० (सं) १-पक्षी। २-कीड़ा। ३-विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
शकुंतला स्त्री० (सं) १-महाकवि कालिदास का एक प्रसिद्ध नाटक। २-राजा दुष्यन्त की पत्नी, विश्वामित्र से मेनका के गर्भ से उत्पन्न पुत्री का नाम।
शकुन पुं० (सं) १-शुभ महूर्त्त। २-शुभ महूर्त्त में होने वाला कार्य। ३-किसी विशेष कार्य के आरंभ में दिखाई देने वाले शुभ या अशुभ लक्षण (सगुन) ४-मंगल अवसरों पर गाये जाने वाले गीत।
शकुनशास्त्र पुं०(सं) एक ग्रन्थ विशेष जिसमें शकुनों के शुभ या अशुभ होने का विवेचन होता है।
शकुनि पुं० (सं) १-पक्षी। २-गिद्ध। ३-दुर्योधन के मामा का नाम। ४-दुष्ट आदमी।
शक्कर स्त्री० (फा) १-चीनी। २-खांड। पुं०(सं) १-बैल। २-वृष।
शक्की वि० (म) हर बात में सन्देह करने वाला।
शक्त वि० (सं) समर्थ। ताकतवर।
शक्ति स्त्री० (सं) १-बल। ताकत। वह तत्त्व जो कोई काम करता, कराता या क्रियात्मक रूप में अपना प्रभाव दिखाता हो। (इनर्जी)। २-बड़ा और पराक्रमी राज्य जिसमें यथेष्ट धन और सोना आदि हो (पावर)। ३-प्रकृति। ४-अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करने वाले शाक्त कहलाते हैं। (तन्त्र)। ५-दुर्गा। ६-लक्ष्मी। ७-गौरी। ८-भग। ९-तलवार १०-अधिकार।
शक्तिकुमार पुं० (सं) कार्तिकेय।
शक्तिपरस्तात् अव्य० (सं) किसी अधिकार या शक्ति के बाहर। (आल्ट्रावायर्स)।
शक्तिपूजक पुं० (सं) १-शक्ति का उपासक। शाक्त २-तान्त्रिक।
शक्तिपूजा स्त्री० (सं) शक्ति का शाक्त द्वारा होने वाला पूजन।
शक्तिभृत् पुं० (सं) कार्तिकेय। स्कन्द।
शक्तिमत्ता स्त्री०(सं) शक्तिमान् होने का भाव या धर्म ताकत।
शक्तिमत्त्व पुं० (सं) शक्तिमत्ता।
शक्तिसंतुलन पुं०(सं) दो पक्षों का बल बराबर रखना या होना। (बैलेंस आफ पावर)।
शक्तिसंपन्न वि० (सं) बलवान्। ताकतवर।
शक्नु पुं० (सं) मधु।
शक्य वि० (सं) १-क्रियात्मक रूप से हो सकने योग्य सम्भव। २-जिसमें शक्ति हो।
शक्यार्थ पुं० (सं) शब्द की अभिधा शक्ति से मालूम किया जाने वाला अर्थ।
शक्र पुं० (सं) १-इन्द्र। २-ज्येष्ठा नक्षत्र। ३-रगण के चौथे भेद की संज्ञा (ऽ।ऽ)। वि० समर्थ। योग्य।
शक्रगोप पुं० (सं) बीरबहूटी।
शक्रचाप पुं० (सं) इन्द्रधनुष।
शक्रज पुं० (सं) काकपक्षी।
शक्रजात पुं० (सं) कौवा।
शक्रजित् पुं० (सं) मेघनाद।
शक्रनंदन पुं० (सं) अर्जुन।
शक्रवाहन पुं० (सं) मेघ। बादल।
शक्रसुत पुं० (सं) इन्द्र का पुत्र बलि।
शक्राणि स्त्री०(सं)१-शची। इन्द्राणी। २-निर्गुंडी।
शक्ल स्त्री० (हि) दे० 'शकल'।
शक्वर पुं० (सं) १-बैल। २-आकाश।
शख्स पुं० (म) व्यक्ति। मनुष्य। आदमी।
शख्सी वि० (म) व्यक्तिगत।
शख्सीहुकूमत स्त्री० (म) एकतन्त्र राज्य। (डिक्टेटरशिप)।
शख्सीयत स्त्री० (म) व्यक्तित्व।
शगल पुं०(म)१-व्यापार। कामधंधा। २-मनोविनोद
शगुन पुं० (हि) १-शकुन। २-भेंट। नजराना। ३-विवाह में बात पक्की करने की रस्म।
शगूफा पुं०(फा) १-कली। २-पुष्प। ३-कोई नई और विलक्षण बात।
शचि स्त्री० (सं) दे० 'शची'।
शची स्त्री० (सं) १-इन्द्र की पत्नी। २-सतावर। ३-बुद्धि। ४-वक्तृत्व शक्ति।
शचीपति पुं० (सं) इन्द्र।
शजरा पुं० (म) १-पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नकशा। २-वृक्ष।
शटा स्त्री० (सं) जटा।
शठ वि० (सं) १-धूर्त। चालाक। २-लुच्चा। ३-दुष्ट ४-मूर्ख। पुं० साहित्य में वह नायक जो पर स्त्री से प्रेम करते हुए भी अपनी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करें।
शठता स्त्री० (सं) १-धूर्तता। २-पाजीपन। बदमाशी
शठत्व पुं० (सं) शठता।
शण पुं० (सं) १-सन नाम का पौधा। २-भंग।
शत वि० (सं) सौ।
शतक पुं० (सं) १-सौ का समूह। २-शताब्दी। ३-एक तरह की सौ वस्तुओं का समूह।
शतकोटि पुं० (सं) १-सौ करोड़ की संख्या। २-हीरा ३-इन्द्र का वज्र।

शतक्रतु पुं० (सं) १-इन्द्र। २-वह जिसने यज्ञ किये हों।
शातकुंभ पुं० (सं) १-स्वर्ण। सोना। २-सोने की बनी हुई कोई वस्तु।
शतगु वि० (सं) सौ गाय रखने वाला।
शतपर्वा स्त्री० (सं) १-सफेद दूब। २-नीली दूब।
शतघ्नी पुं० (सं) १-एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र। २-एक प्राणघातक रोग जो गले में होता है। ३-तोप।
शतदल पुं० (सं) पद्म। कमल।
शतद्रु पुं० (सं) सतलज नदी का प्राचीन नाम।
शतधा स्त्री० (सं) दूब।
शतपत्र वि० (सं) १-सौ दलों या पत्तों वाला। २-सौ पत्तों वाला। पुं० (सं) १-कमल। २-मोर। ३-मैना। ४-सारस।
शतपद पुं० (सं) १-कनखजूरा। २-च्यूँटी।
शतपदी स्त्री० (सं) १-कनखजूरा। २-सतावर। ३-एक लता।
शतपाद पुं० (सं) दे० 'शतपद'।
शतपुत्री वि० (सं) १-सतावर। २-शतपुतिया तरोई।
शतमख पुं० (सं) १-इन्द्र। २-उल्लू।
शतमन्यु वि० (सं) १-[illegible]। २-क्रोधी। पुं० (सं)
[illegible]
(चैस)।
शतरंजबाज पुं० (फा) शतरंज का खिलाड़ी।
शतरंजबाजी स्त्री० (फा) शतरंज खेलने का व्यसन।
शतरंजी स्त्री० (फा) १-रंग-बिरंगे फूलों की बनी हुई दरी या बिछावन। २-शतरंज खेलने की बिसात। ३-शतरंज का खिलाड़ी।
शतवार्षिक वि० (सं) हर सौ साल पर होने वाला।
शतवार्षिकी स्त्री० (सं) सौ साल तक रहने वाली।
शतवीर पुं० (सं) विष्णु।
शतशीर्ष पुं० (सं) १-विष्णु। २-एक प्रकार का अभिमन्त्रित अस्त्र। (रामा०)।
शतशः अव्य० (सं) सौ प्रकार से।
शतह्रदा स्त्री० (सं) १-वज्र। २-बिजली।
शतांश पुं० (सं) सौवां भाग।
शतांशतापमापक पुं० (सं) वह तापमापक यन्त्र जो सौ भागों में विभक्त हो। (सेंटीग्रेड थर्मामीटर)।
शतानन्द पुं० (सं) १-विष्णु। २-ब्रह्मा। ३-श्रीकृष्ण। ४-गौतम मुनि।
शतानीक पुं० (सं) १-बुड्ढा आदमी। २-सौ सिपाहियों का नायक। ३-श्वसुर।
शताब्द वि० (सं) सौ वर्ष का। पुं० (सं) सौ वर्ष।
शताब्दी स्त्री० (सं) १-सौ वर्ष का समय। २-किसी संवत् के सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष का समय (सेन्चुरी)।
शतायु वि० (सं) सौ वर्ष की आयु वाला।
शतावधान पुं० (सं) वह मनुष्य जो बहुत सी बातें एक बार सुनने पर याद रख सकता है।
शती स्त्री० (सं) १-सौ का समूह। सैकड़ा। २-शताब्दी।
शत्रुंजय वि० (सं) दुश्मन या शत्रु को जीतने वाला।
शत्रु पुं० (सं) १-वैरी। दुश्मन। २-एक असुर का नाम।
शत्रुघ्न पुं० (सं) राम के छोटे भाई का नाम जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। वि० (सं) शत्रुओं को मारने वाला।
शत्रुजित वि० (सं) शत्रु को जीतने वाला।
शत्रुता स्त्री० (सं) दुश्मनी। वैरभाव।
शत्रुहन्ता वि० (सं) शत्रु का नाश करने वाला।
शत्रुहा वि० (सं) शत्रु का नाश करने वाला।
शर्वरी स्त्री० (सं) रात। रात्रि।
शद्रि पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-हाथी। स्त्री० १-खांड। २-बिजली।
शनाख्त स्त्री० (फा) १-परिचय। २-पहचान।
शनि पुं० (सं) १-सौर जगत के नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह। २-दुर्भाग्य। ३-शनिवार।
[illegible] नीलम। नीलमणि।
[illegible] र और रविवार के बीच का
[illegible]
शनैः अव्य० (सं) धीरे। आहिस्ता।
शनैश्चर पुं० (सं) दे० 'शनि'।
शनैः शनैः अव्य० (सं) धीरे-धीरे।
शपथ स्त्री० (सं) १-कसम। सौगन्ध। २-प्रतिज्ञा। (ओथ)।
शपथग्रहण पुं० (सं) कोई पद आदि ग्रहण करने से पहले गुप्तता की शपथ लेना।
शपथपत्र पुं० (सं) किसी बात की सत्यता प्रमाणित करने के समय। शपथपूर्वक लिखकर न्यायालय में उपस्थित किया जाने वाला पत्र। हलफनामा। (एफीडेविट)।
शपन पुं० (सं) १-शपथ। कसम। २-गाली।
शफकत स्त्री० (अ) १-कृपा। दया। २-प्यार। प्रेम।
शफर स्त्री० (सं) पोठिया नामक मछली।
शफरी स्त्री० (सं) एक प्रकार की मछली।
शफा स्त्री० (अ) १-आरोग्यता। २-तन्दुरुस्ती।
शफाखाना पुं० (अ) चिकित्सालय। अस्पताल।
शब स्त्री० (फा) रात्रि। रात।
शबनम स्त्री० (फा) १-ओस। तुषार। २-एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।
शबनमी स्त्री० (फा) १-मसहरी। २-ओस से बचने

लिए छत पर टांगने का कपड़ा।
शवर पुं०(सं) १-एक दक्षिण भारत की जङ्गली जाति २-हबसी। जङ्गली। ३-भील। शिव। वि० चितकबरा। रंगबिरंगा।
शवरी स्त्री० (सं) १-शवर जाति की एक रामभक्त स्त्री। (रामा०)।
शवल वि० (सं) १-चितकबरा। रंगबिरंगा। पुं० १-एक नाग। २-बौद्धों का धार्मिक कृत्य विशेष। ३-चित्रक।
शवला स्त्री०(सं)१-चितकबरी गाय। कामधेनु।
शवाव पुं० (अ) १-यौवन काल। २-पूर्ण विकसित या सुन्दर जान पड़ने की अवस्था। ३-अत्यधिक सौन्दर्य।
शवीह स्त्री० (अ) १-तसवीर। चित्र। २-समानता।
शब्द पुं० (सं) १-ध्वनि। आवाज। २-सार्थक ध्वनि। ३-सन्तों के बनाए हुए पद।
शब्दकार वि० (सं) ध्वनिकारक।
शब्दकारी वि० (सं) शब्द करने वाला।
शब्दकोश पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें अक्षर क्रम से शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची शब्दों का संग्रह किया गया हो। (डिक्शनरी)।
शब्दकोष पुं० (सं) दे० 'शब्दकोश'।
शब्दचातुर्य पुं० (सं) बोल-चाल की प्रवीणता। वाग्मिता।
शब्दचालि स्त्री० (सं) एक प्रकार का नृत्य।
शब्दचित्र पुं० (सं) १-शब्दों में किसी विषय या बात का इस प्रकार वर्णन करना जो देखने में उसके चित्र के समान जान पड़े। (स्केच)। २-अनुप्रास नामक एक अलङ्कार।
शब्दचोर पुं० (हि) वह लेखक जो दूसरों के लेख या कविताओं में से शब्द चुराकर अपने लेख में प्रस्तुत करे।
शब्दपति पुं० (सं) वह नेता जिसके अनुयायी न हों।
शब्दप्रमाण पुं० (सं) ऐसा प्रमाण जिसका आधार किसी का कथन हो।
शब्दभेद पुं० (सं) १-व्याकरण में शब्दों का वह विभाग जिसके अनुसार यह निश्चित किया जाता है कि कौन से शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, क्रिया या अव्यय आदि हैं। (पार्ट्स ऑफ स्पीच)। २-दे० 'शब्दभेद'।
शब्दभेदी पुं० (सं) दे० 'शब्दवेधी'।
शब्दविद्या स्त्री० (सं) व्याकरण।
शब्दवेधी पुं० (सं) १-केवल सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारने वाला व्यक्ति। २-दशरथ। ३-अर्जुन।
शब्दशक्ति स्त्री० (सं) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उस शब्द के द्वारा कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है।
शब्दशः अव्य० (सं) किसी के लिखे या बोले गये शब्द का ठीक अनुसरण करते हुए।
शब्दशास्त्र पुं० (सं) व्याकरण।
शब्दश्लेष पुं० (सं) वह शब्द जो दो या अधिक अर्थों में व्यवहृत किया जाय।
शब्दसंग्रह पुं० (सं) शब्दकोश।
शब्दसाधन पुं० (सं) व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की उत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन होता है।
शब्दसौन्दर्य पुं० (सं) शब्दों के उच्चारण की सुगमता
शब्दसौकर्य पुं० (सं) दे० 'शब्दसौन्दर्य'।
शब्दसौष्ठव पुं० (सं) किसी लेख या शैली में प्रयुक्त किये हुए शब्दों की सुन्दरता या कोमलता।
शब्दाडंबर पुं० (सं) बड़े-बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की कमी हो।
शब्दाढ्य पुं० (सं) कांसा (धातु)।
शब्दातीत पुं० (सं) वह जो शब्दों से परे हो। ईश्वर
शब्दाध्यहार पुं० (सं) किसी वाक्य को पूरा करने के लिए अपनी ओर से शब्द जोड़ना।
शब्दानुशासन पुं० (सं) व्याकरण।
शब्दायमान वि० (सं) शब्द करता हुआ।
शब्दार्थ पुं० (सं) किसी शब्द का अर्थ।
शब्दालंकार पुं० (सं) काव्य में वह अलंकार जिसमें प्रयुक्त होने वाले शब्दों से चमत्कार उत्पन्न हो तथा उनके पर्याय रखने से वह चमत्कार न रहे।
शब्दावली स्त्री० (सं) १-विषय अथवा कार्य सम्बन्धी शब्द-सूची। २-किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का प्रकार (वर्डिंङ्ग)।
शम पुं० (सं) १-शांति। २-मोक्ष। ३-अन्तःकरण तथा इन्द्रियों को वश में रखना। ४-शान्तरस का स्थायीभाव। ५-तिरस्कार। ६-हाथ।
शमई वि० (हि) १-शमा के रङ्ग का। २-शमा का।
शमन पुं०(सं)१-दोष, विचार, उपद्रव आदि दबाना २-यज्ञ के निमित्त पशुओं का दमन। ३-शांति। ४-तिरस्कार। ५-आघात। ६-दमन। ७-रात्रि।
शमलोक पुं० (सं) स्वर्ग।
शमशीर स्त्री० (फा) तलवार।
शमशीरजनी स्त्री० (फा) तलवार का युद्ध।
शमशीरदम वि० (फा) तलवार के वार की काट करने वाला।
शमशेर स्त्री० (फा) तलवार।
शमशेरबहादुर वि० (फा) तलवार का धनी।
शमा स्त्री० (अ) मोमबत्ती।
शमादान पुं० (अ) दीवट। वह आधार जिस पर मोमबत्ती रखी जाती है।
शमा व परवाना पुं० (अ) दीपक तथा पतंग।
शमित वि०(सं)१-शांत किया हुआ। २-जिसका शमन

बलवान बताया जाता है। अष्टपाद। २-हाथी का बच्चा। ३-टिड्डी। ४-विष्णु। ५-एक वर्णवृत्त।
शरम स्त्री० (सं) १-लज्जा। हया। २-सङ्कोच। लिहाज। ३-प्रतिष्ठा। इज्जत।
शरमाऊ वि० (हि) शरमीला। लजालु।
शरमाना क्रि० (हि) लज्जित होना या करना।
शरमाशरमी अव्य० (हि) लाज के कारण।
शर्मिंदा वि० (फा) लज्जित।
शरमीला वि० (हि) लजीला। लज्जालु।
शरवारण पुं० (सं) ढाल। (शील्ड)।
शरशय्या स्त्री० (सं) वाणों की बनी शय्या।
शरसंधान पुं० (सं) तीर या बाण द्वारा निशान साधना।
शरह स्त्री० (अ) १-दर। भाव। २-टीका। ३-किसी बात को स्पष्ट करने के लिये कही गई बात।
शरहबंदी स्त्री० (अ) भावों की सूची या तालिका।
शरहमुऐयन वि० (अ) जिसके लगान की दर निश्चित हो।
शरहलगान स्त्री० (अ) मालगुजारी की दर।
शरहसूद स्त्री० (अ) सूद या व्याज की दर।
शराकत स्त्री० (फा) साझा।
शराटि स्त्री० (सं) दे० 'शराडि'।
शराटिका स्त्री० (सं) दे० 'शराडि'।
शराडि स्त्री० (सं) टिटहरी।
शराति स्त्री० (सं) टिटहरी।
शराफ पुं० (अ) दे० 'सराफ'।
शराफत स्त्री० (अ) सज्जनता। भलमनसाहत।
शराफा पुं० (हि) दे० 'सराफा'।
शराफी स्त्री० (हि) दे० 'सराफी'।
शराब स्त्री० (अ) १-मदिरा। सुरा। २-पेय।
शराबखाना पुं० (अ) मदिरालय। (बार)।
शराबखोर वि० (अ) जिसे शराब पीने की लत हो।
शराबखोरी स्त्री० (अ) १-मदिरापान। २-शराब की लत।
शराबख्वार पुं० (अ) शराब पीने वाला।
शराबख्वारी स्त्री० (अ) दे० 'शराबखोरी'।
शराबी पुं० (अ) शराब पीने वाला।
शराबेतहूर स्त्री० (अ) स्वर्ग या बहिश्त में मिलने वाली पवित्र सुरा।
शराबोर वि० (फा) बिल्कुल भीगा हुआ। तरबतर। लथपथ।
शरारत स्त्री० (अ) दुष्टता। पाजीपन। नटखट होने का भाव।
शराश्रय पुं० (सं) तरकश। तूणीर।
शरासन पुं० (सं) १-धनुष। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
शरिष्ठ वि० (हि) श्रेष्ठ।
शरीअत स्त्री० (अ) मुसलमानों का धर्मशास्त्र।
शरीक वि० (अ) १-किसी कार्य में साथ देने वाल २-मिला हुआ। सम्मिलित।
शरीकजुर्म वि० (अ) अपराध में सहायता देने वा
शरीकेजलसा वि० (अ) सभा में उपस्थित (लोग)।
शरीफ पुं० (अ) १-भला आदमी। सज्जन। कुलीन। ३-मक्के के प्रधान की एक उपाधि पवित्रतासूचक शब्द।
शरीफजादा पुं० (सं) कुलीन तथा सज्जन पुरुष बेटा।
शरीफा पुं० (हि) १-मझोले आकार का एक वृक्ष २-इस वृक्ष का फल। श्रीफल।
शरीर पुं० (सं) १-प्राणियों के सब अङ्गों का समूह देह। बदन। तन। काया। २-किसी वस्तु का सार विस्तार या ढाँचा जिसमें उसके सब अंग सम्मिलित हों। (फ्रेम)। वि० (अ) दुष्ट। पाजी। नटखट
शरीरज पुं० (सं) १-रोगी। बीमारी। २-कामदेव ३-पुत्र। बेटा।
शरीरत्याग पुं० (सं) मौत। मृत्यु।
शरीरदंड पुं० (सं) शारीरिक दण्ड या कष्ट देना।
शरीरपतन पुं० (सं) १-धीरे-धीरे शरीर का क्षीण होना २-मृत्यु। मौत।
शरीरपात पुं० (सं) मौत। मृत्यु।
शरीरबंध पुं० (सं) शरीर या देह का ढाँचा।
शरीरभृत पुं० (सं) १-वह जो शरीर धारण किये हुए हो। २-जीवात्मा। ३-विष्णु।
शरीरयात्रा स्त्री० (सं) १-जीवन। २-शरीर। बनाए रखने के साधन।
शरीररक्षक पुं० (सं) अंगरक्षक।
शरीरवान् वि० (सं) देहधारी।
शरीरविज्ञान स्त्री० (सं) दे० 'शरीरशास्त्र'।
शरीरवृत्ति स्त्री० (सं) शरीर का पालनपोषण। जीविका
शरीरशास्त्र पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें शरीर के अंगों की बनावट तथा उनके कार्यों का विवेचन होता है।
शरीरांत पुं० (सं) मृत्यु। मौत। देहान्त।
शरीरी पुं० (हि) १-प्राणी। शरीरधारी। २-जीव। आत्मा। वि० (सं) शरीर वाला।
शरु पुं० (सं) १-क्रोध। २-वज्र। ३-बाण। ४-हथियार। ५-हिंसक। वि० १-बहुत पतला। २-जिसका अग्रभाग नुकीला तथा पतला हो।
शर्करा स्त्री० (सं) १-शक्कर। २-चीनी। खांड। २-पथरी रोग। ३-बालू। ४-कंकड़।
शर्कराधेनु स्त्री० (सं) दान के उद्देश्य से बनाई हुई खांड की गाय। (पुराण)।
शर्कराप्रमेह पुं० (सं) वह प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ शरीर की शर्करा भी निकल जाती है।

शवली स्त्री० (सं) दे० 'शवला'।
शवशयन पुं० (सं) श्मशान। मरघट।
शवसमाधि स्त्री० (सं) शव को जल में या जमीन में गाड़ने का कार्य या संस्कार।
शवसाधन पुं० (सं) शव के ऊपर बैठ कर तंत्रोक्त मन्त्र को सिद्ध करना।
शवाच्छादन पुं० (सं) कफन।
शवान्न पुं० (सं) १-वह अन्न जो खाने योग्य न रह गया हो। २-मृत शरीर का मांस।
शव्वाल पुं० (अ) मुसलमानों के हिजरी सन् का दसवाँ महीना।
शश पुं० (सं) १-खरगोश। २-चन्द्रमा का कलङ्क। ३ कामशास्त्र के अनुसार पुरुषों के चार भेदों में से एक। ४-बोल नामक गन्धद्रव्य। वि० (फा) पांच और एक छः।
शशक पुं० (सं) १-खरगोश। खरहा। २-दे० 'शश'
शशकविषाण पुं० (सं) अनहोनी बात।
शशघातक पुं० (सं) श्येन या बाज नामक पक्षी।
शशधर पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
शशपहलू वि० (फा) छः कोण वाला। षट्कोण।
शशमाही वि० (फा) छः माही। अर्द्धवार्षिक।
शशलक्षण पुं० (सं) चन्द्रमा।
शशलांछन पुं० (सं) चन्द्रमा।
शशांक पुं० (सं) १-चन्द्रमा। कपूर।
शशांकज पुं० (सं) (चन्द्रमा का पुत्र) बुध।
शशांकमुकुट पुं० (सं) शिव। महादेव।
शशांकशेखर पुं० (सं) शिव। महादेव।
शशांकसुत पुं० (सं) बुध।
शशा पुं० (सं) दे० 'शश'।
शशि पुं० (हि) दे० 'शशी'।
शशी पुं० (सं) चन्द्रमा।
शशीकर पुं० (सं) चन्द्रकिरण। चांदनी।
शशीकला स्त्री० (सं) १-चन्द्रमा का अंश। २-एक वर्ण-वृत्त।
शशीकांत पुं० (सं) १-चन्द्रकांतमणि। २-कुमुद।
शशीखंड पुं० (सं) १-शिव। २-चन्द्रकला। ३-एक विद्याधर का नाम।
शशीग्रह पुं० (सं) चन्द्रग्रहण।
शशीज पुं० (सं) बुधग्रह।
शशीतिथि स्त्री० (सं) पूनों। पूर्णिमा।
शशीधर पुं० (सं) शिव।
शशीपुत्र पुं० (सं) बुधग्रह।
शशीप्रभ पुं० (सं) १-मोती। कुमुद। वि० (सं) जिसमें चन्द्रमा के समान प्रभा हो।
शशीप्रभा स्त्री० (सं) चांदनी।
शशीप्रिया स्त्री० (सं) पुराणों के अनुसार सत्ताइस नक्षत्र जिन्हें चन्द्रमा की पत्नी कहा गया है।
शशीभाल पुं० (सं) शिव। महादेव।
शशीभूषण पुं० (सं) शिव। महादेव।
शशीभृत् पुं० (सं) शिव।
शशीमंडल पुं० (सं) चन्द्रमा का मंडल या घेरा।
शशीमणि पुं० (सं) चन्द्रकांतमणि।
शशीमौलि पुं० (सं) शिव। महादेव।
शशीरस पुं० (सं) अमृत।
शशीरेखा स्त्री० (सं) चन्द्रकला।
शशीलेखा स्त्री० (सं) १-चन्द्रकला। २-गिलोय।
शशीवदना वि० (सं) चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली स्त्री।
शशीश पुं० (सं) १-शिव। २-कार्तिकेय।
शशीशाला स्त्री० (सं) शीशमहल।
शशीशेखर पुं० (सं) शिव।
शशीसुत पुं० (सं) बुधग्रह।
शशीहीरा पुं० (हि) चन्द्रकांतमणि।
शस्ति स्त्री० (सं) प्रशंसा। तारीफ।
शसा पुं० (हि) खरगोश। खरहा।
शस्त्र पुं० (सं) १-वे साधन जिनसे शत्रु पर आक्रमण तथा आत्म रक्षा की जाती है। (आर्म्स)। २-औजार। ३-उपाय।
शस्त्रकर्म पुं० (सं) फोड़ों आदि को चीरने-फाड़ने की क्रिया।
शस्त्रकार पुं० (सं) दे० 'शस्त्रकारक'।
शस्त्रकारक पुं० (सं) शस्त्र बनाने वाला।
शस्त्रकोष पुं० (सं) शस्त्र रखने का कोष। म्यान।
शस्त्रक्रिया स्त्री० (सं) फोड़े आदि की चीरफाड़।
शस्त्रग्रह पुं० (सं) शस्त्रशाला। हथियारघर।
शस्त्रचिकित्सा स्त्री० (सं) चीर-फाड़ द्वारा चिकित्सा। शल्यचिकित्सा। (सर्जरी)।
शस्त्रजीवी पुं० (सं) योद्धा। सैनिक।
शस्त्रधारी वि० (सं) हथियार धारण करने वाला।
शस्त्र निर्माणशाला स्त्री० (सं) तोप, गोले, बन्दूक आदि शस्त्र बनाने का कारखाना। (आर्डनेन्स-फेक्टरी)।
शस्त्रन्यास पुं० (सं) हथियारों का परित्याग।
शस्त्रपाणि वि० (सं) शस्त्र से सुसज्जित।
शस्त्रपूत वि० (सं) युद्ध में शस्त्र से मारे जाने के कारण पापों से छूटा हुआ।
शस्त्रमहार पुं० (सं) हथियार साफ करने वाला।
शस्त्रविद्या स्त्री० (सं) हथियार चलाने की विद्या।
शस्त्रवृत्ति पुं० (सं) योद्धा। सैनिक। सिपाही।
शस्त्रशाला स्त्री० (सं) हथियार घर। शस्त्रागार।
शस्त्रशास्त्र पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें तलवार आदि चलाने का विवेचन हो।
शस्त्रहत वि० (सं) तलवार से मारा हुआ।
शस्त्राण्य पुं० (सं) पूर्वदिशा में दिखाई देने वाला केतु
शस्त्रागार पुं० (सं) शस्त्र रखने का स्थान। शस्त्र-

शाही स्त्री० (हि) १-शाही। २-एक मिठाई।
शहीद पुं० (फ) किसी शुभ प्रयत्न में अपने प्राण देने वाला व्यक्ति। अपने को बलि देने वाला व्यक्ति। (मार्टायर)।
शहीदी वि० (हि) १-लाल। २-शहीद होने को तत्पर
शहीदीजत्था पुं०(हि) शहीदी होने के लिए तत्पर लोगों का जत्था।
शहीदीतरबूज पुं० (हि) एक प्रकार का बढ़िया तरबूज
शांकर वि० (सं) १-शंकर सम्बन्धी। २-शंकराचार्य का। पुं० १-शंकराचार्य का अनुयायी। २-सांड।
शांख पुं०(सं) शंख की ध्वनि। वि० १-शंख सम्बन्धी २-शंख का बना हुआ।
शांत वि० (सं) १-जिसमें चिन्ता, क्षोभ, उद्वेग, दुःख आदि न हों। २-स्वस्थ। ३-हो-हल्ला से रहित। ४-निश्चल। ५-मृत। ६-(वह देश) जिसमें झगड़े आदि न हों। ७-धीर तथा सौम्य। ८-मौन। ९-अप्रभावित। १०-चुका हुआ। ११-उत्साहरहित। पुं० १-विरक्त व्यक्ति। २-काव्य के नौ रसों में से एक।
शांतनु पुं० (सं) १-भीष्म पितामह के पिता का नाम २-ककड़ी।
शांता स्त्री० (सं) १-महर्षि ऋष्यश्रृंग की पत्नी का नाम। २-रेणुका। ३-संगीत में एक श्रुति।
शांति स्त्री० (सं) १-चित्त की स्वस्थता। २-निश्चलता ३-स्तब्धता। सन्नाटा। ४-युद्ध, मारकाट आदि का अभाव (पीस)। ५-बाधा आदि दूर करने वाला धार्मिक उपचार। ६-विराग। ७-गंभीरता।
शांतिक वि० (सं) शांति सम्बन्धी। पुं० शांतिकर्म।
शांतिकर वि० (सं) शांति करने वाला।
शांतिकर्म पुं० (सं) बाधा, दुष्ट ग्रह आदि द्वारा होने वाले अमंगल का उपचार।
शांतिकलश पुं० (सं) शांति के उद्देश्य से रखा गया घड़ा।
शांतिगृह पुं० (सं) यज्ञ के अन्त में पापों की शांति के लिए स्नान करने का स्नानागार।
शांतिजल पुं० (सं) यज्ञ या पूजा का मन्त्रमय शांति देने वाला जल।
शांतिद पुं० (सं) विष्णु। वि० शांति देने वाला।
शांतिदाता पुं० (सं) शांति देने वाला।
शांतिदायक पुं० (सं) वह जो शांति दे।
शांतिदायी वि० (सं) शांति देने वाला।
शांतिनिकेतन पुं० (सं) १-शांति देने वाला स्थान। २-विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित बङ्गाल प्रदेश में जगद्विख्यात एक विश्वविद्यालय
शांतिपर्व पुं०(स) महाभारत ग्रन्थ का बारहवाँ पर्व।
शांतिपात्र पुं० (स) वह पात्र जो शुभ अवसरों पर ग्रहों आदि की शांति के लिए रखा जाता है।
शांतिप्रद वि० (सं) शांतिदायी।
शांतिप्रिय वि० (सं) जो शांति की इच्छा रखता हो।
शांतिभंग पुं० (सं) कोई ऐसा उपद्रव या अनुचित काम जिससे शांतिपूर्वक रहने वाले लोगों के सुख काम में बाधा पड़ती हो। (ब्रीच ऑफ पीस)।
शांतिमय वि० (सं) शांति से पूर्ण।
शांतिरक्षक पुं० (सं) (देश में) शांति की रक्षा करने वाला।
शांतिरक्षा स्त्री० (सं) उपद्रव आदि को रोकने वाला।
शांतिवाद पुं० (सं) वह सिद्धांत जो युद्ध और संघर्ष का विरोध करता हो और सब विवाद शांति से तय करने के पक्ष में हो। (पैसिफिज्म)।
शांतिवादी पुं० (सं) शांतिवाद सिद्धांत को मानने वाला। (पैसिफिस्ट)।
शांतिस्थापन पुं० (सं) शांति या अमन कायम करना
शांब पुं० (सं) एक राजा का नाम।
शांबर वि० (सं) १-शांबर दैत्य-सम्बन्धी। २-साँभर मृग का।
शांबरिक पुं० (सं) जादूगर। मायावी।
शांबरी स्त्री०(सं) १-माया। इन्द्रजाल। २-जादूगरनी पुं० १-चन्दन विशेष। २-लोध।
शांबुक पुं० (सं) घोंघा।
शांबूक पुं० (सं) घोंघा।
शांभव वि० (सं) शंभू या शिव सम्बन्धी। पुं० १-देवदार। २-कपूर। ३-शिवपुत्र। ४-गुग्गुल। ५-एक विष।
शांभवी स्त्री०(सं) १-दुर्गा। २-नीली दूब।
शाइक़ वि० (अ) दे० 'शायक़'।
शाइर पुं० (अ) दे० 'शायर'।
शाइरा स्त्री० (अ) दे० 'शायरा'।
शाइस्तगी स्त्री० (फा) १-विनय। २-शिष्टता।
शाइस्ता वि० (फा) १-सभ्य। २-शिष्ट। ३-विनीत। शिक्षित।
शाकंभरी स्त्री०(सं)१-दुर्गा। २-साँभर नमक। नगर।
शाकंभरीय वि० (सं) साँभर झील से उत्पन्न। पुं० साँभर नमक।
शाक पुं० (सं) १-साग। भाजी। तरकारी (वेजिटेबल)। २-भोजन। ३-सिरस वृक्ष। ४-शक राजा शालिवाहन का संवत्। ५-शक्ति। ६-सात द्वीपों में से एक (पुराण)। वि० शक जाति-सम्बन्धी। (अ) १-भारी। कठिन। २-दुःखदायी(काम)।
शाकतरु पुं० (सं) १-वरुण नामक वृक्ष। २-सागौन का पेड़।
शाकभक्ष वि० (सं) शाकाहारी।
शाकल पुं० (सं) १-खण्ड। २-एक प्रकार का सांप। ३-हवन की सामग्री। वि० टुकड़े से सम्बन्धित। (
शाकाहार पुं० (सं) १-मांसाहार का उलटा। २-अन्न

समूह ।
शादियाना पुं०(फा) १-खुशी का बाजा । २-वह धन जो विवाह के समय किसान जमींदार को देता है। ३-बधाई ।
शादी स्त्री० (फा) १-विवाह । २-आनन्दोत्सव ।
शाद्वल वि० (सं) हराभरा । पुं० १-हरी घास । २-बैल । ३-मरु प्रदेश की वह छोटी हरियाली जहां कुछ बस्ती भी हो ।
शान स्त्री० (फा) १-तड़क-भड़क । ठाट-बाट । २-करामात । शक्ति । ऐश्वर्य । पुं० (स) शाण । सान ।
शानगुमान पुं० (फा) दे० 'सानगुमान' ।
शानदार वि० (फा) १-तड़क-भड़क वाला । २-भव्य । विशाल । ३-वैभवपूर्ण । ४-ठसक वाला ।
शानशौकत स्त्री०(अ) तड़क-भड़क । ठाट-बाट ।
शाप पुं० (सं) १-वह शब्द या वाक्य जो किसी अनिष्ट की कामना से कहा जाय । २-धिक्कार । ३-ऐसी शपथ जिसके न पालन करने का कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय ।
शापग्रस्त वि० (सं) जिसे शाप दिया गया हो। शापित
शापना क्रि० (हि) शाप देना ।
शापनिवृति स्त्री० (सं) शाप से छुटकारा या मुक्ति ।
शापमुक्त वि० (सं) जिसका शाप छूट गया हो ।
शापांत पुं० (सं) शाप का अन्त होना ।
शापांबु पुं० (सं) वह जल जिसे हाथ में लेकर शाप दिया जाय ।
शापावसान पुं० (सं) शाप का अन्त होना ।
शापित वि० (सं) शापग्रस्त ।
शापोद्धार पुं०(सं) शाप या उसके प्रभाव से छुटकारा
शाफरिक पुं० (सं) मछली पकड़ने वाला । मछुआ ।
शाफा पुं० (फा) १-घाव में दवा में भिगोकर अन्दर रखने की बत्ती । २-दस्त लाने के लिये लगाई जाने वाली साबुन की बत्ती ।
शाबर वि० (सं) १-दुष्ट । २-पाजी । पुं० १-हानि । बुराई । २-अंधकार । ३-तांबा । ४-एक प्रकार का चन्दन ।
शाबरी स्त्री० (सं) शबरों की भाषा जो प्राकृत का एक भेद है ।
शाबल्य पुं० (सं) रंग-विरंगी वस्तुओं का मिश्रण।
शाबाश अव्य० (फा) एक प्रशंसासूचक शब्द- वाह ! वाह ! धन्य हो !
शाबाशी स्त्री० (फा) १-किसी काम की प्रशंसा । २-साधुवाद ।
शाब्द वि० (सं) १-शब्द सम्बन्धी । २-शब्द विशेष पर निर्भर । पुं० (सं) १-शब्दशास्त्री । २-व्याकरण
शाब्दव्यंजना स्त्री० (सं)किसी शब्द विशेष पर आधारित कीगई व्यंजना ।
शाब्दिक वि० (सं) १-शब्द सम्बन्धी । २-शब्दों में कहा हुआ । ३-एक एक शब्द का किया गया अनुवाद (लिटरल) ।
शाम स्त्री० (फा) सांझ । सन्ध्या । वि० (सं) शाम-सम्बन्धी । पुं० (सं) सामगान । पुं० (देश) अरब के उत्तर का एक प्राचीन देश जिसे सीरिया कहते हैं
शामत स्त्री० (अ) १-दुर्भाग्य । २-विपत्ति । दुर्दशा ।
शामती वि० (अ) जिसकी दुर्दशा होने को हो ।
शामियाना पुं० (फा) एक प्रकार का बड़ा तम्बू या खेमा ।
शामिल वि० (फा) सम्मिलित ।
शामिलमिसिल वि० (फा) (मुकदमे का कागज) मिसिल के साथ नत्थी किया हुआ ।
शामिलात स्त्री० (अ) साझा ।
शामिलाती वि० (अ) मिलाहुआ । संयुक्त।
शामी वि० (हि) शाम देश सम्बन्धी । पुं० (हि) छड़ी आदि की नोक पर लगाया जाने वाला ।
शायक पुं० (सं) १-तलवार । २-तीर । वि० (अ) १-शौकीन । २-इच्छुक ।
शायद अव्य० (फा) कदाचित् । सम्भव है ।
शायर पुं० (अ) कवि ।
शायरा स्त्री० (अ) कवयित्री ।
शायरी स्त्री० (अ) १-कविताएँ रचना । २-काव्य । ३-कविता ।
शाया वि० (अ) १-प्रकट । २-प्रकाशित । छपा हुआ ।
शायित वि० (सं) १-सुलाया या लेटाया हुआ । २-पतित । गिरा हुआ ।
शायी वि० (हि) सोने वाला । (यौगिक के अन्त में) ।
शारंग पुं० (सं) दे० 'सारंग' ।
शारंगी स्त्री० (सं) दे० 'सारंगी' ।
शारद वि० (सं) १-शरद्काल का । २-नवीन । ३-लज्जावान । पुं० १-वर्ष । २-बादल । ३-सफेद कमल । ४-हरी मूँग ।
शारदज्योत्स्ना स्त्री० (सं) शरद्ऋतु की चांदनी ।
शारदा स्त्री०(सं) १-एक प्रकार की वीणा । २-सरस्वती ३-दुर्गा । ४-ब्राह्मी । ५-एक प्राचीन लिपि ।
शारदीय वि० (सं) शरद्काल ।
शारद्य वि० (सं) शरद्काल का ।
शारि पुं० (सं) पासा खेलने की गोट । स्त्री० १-मैना २-छलकपट ।
शारिका स्त्री० (सं) १-मैना नामक पक्षी । २-शतरंज खेलना । ३-दुर्गा ।
शारीर वि० (सं) १-शरीर-सम्बन्धी । २-शरीर से उत्पन्न । पुं० १-बैल । शरीर को होने वाला दुःख
शारीरक वि० (सं) शरीर से युक्त । शरीरधारी ।
शार्कर पुं० (सं) १-दूध का फेन । २-वह स्थान जहां कंकर या पत्थर हों । वि० १-कंकरीला । पथरीला । २-शक्कर या चीनी का बना हुआ ।

(कूडेटा)।
शासनीय वि०(सं) १-शासन करने योग्य। २-सुधारने योग्य। ३-दंड देने योग्य।
शासित स्त्री० (सं) १-जिस पर शासन किया जाय। २-दण्डित। पुं० (सं) १-प्रजा। निग्रह। संयम।
शासिता वि० (सं) १-दण्ड देने वाला। २-शासन करने वाला। —
शासनिकाय पुं० (सं) १-शासन करने वाली सभा या परिषद्। २-राज्य संचालन करने वाले अधिकारियों का समूह। (गवर्निंग-बॉडी)।
शास्ता पुं० (सं) १-शासक। राजा। २-पिता। ३-गुरु।
शास्त्र पुं० (सं) सर्वसाधारण के हित के लिये विधान बताने वाले धार्मिक ग्रन्थ। २-किसी विषय का सारा ज्ञान जो क्रम से किया गया हो। (साइन्स) विज्ञान।
शास्त्रकार पुं० (सं) शास्त्र बनाने वाला।
शास्त्रकोविद वि० (सं) जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो।
शास्त्रचक्षु पुं० (सं) १-व्याकरण। २-ज्ञानी। पण्डित
शास्त्रचर्चा स्त्री० (सं) शास्त्रों का अध्ययन या उन पर विचार परामर्श।
शास्त्रज्ञ पुं० (सं) शास्त्रों का जानकार।
शास्त्रदर्शी पुं० (सं) शास्त्रज्ञ।
शास्त्रप्रवक्ता पुं० (सं) शास्त्रों का उपदेश करने वाला।
शास्त्रवक्ता पुं० (सं) शास्त्रप्रवक्ता।
शास्त्रविद् वि० (सं) शास्त्रों को जानने वाला।
शास्त्रविधान पुं० (सं) शास्त्र की आज्ञा।
शास्त्रविधि स्त्री० (सं) शास्त्रों में दिये गये आचार-व्यवहार सम्बन्धी नियम या आदेश।
शास्त्रविमुख वि० (सं) धर्मशास्त्र के अध्ययन से पराङ्मुख।
शास्त्रविरुद्ध वि० (सं) धर्मशास्त्र की आज्ञाओं का विरोध करने वाला।
शास्त्रविहित वि० (सं) जिसकी शास्त्रों में आज्ञा दी गई हो।
शास्त्रसंगत वि० (सं) शास्त्रविहित।
शास्त्रसम्मत वि० (सं) शास्त्रों के अनुसार।
शास्त्रसिद्ध वि० (सं) शास्त्रों के अनुकूल। धर्मशास्त्र द्वारा प्रतिपादित।
शास्त्राचरण पुं० (सं) शास्त्रों के आदेशों का पालन।
शास्त्रानुमोदित वि० (सं) दे० 'शास्त्रविहित'।
शास्त्रानुशीलन पुं० (सं) शास्त्रों का अध्ययन।
शास्त्रार्थ पुं० (सं) शास्त्रों का अर्थ, विवेचन तथा सिद्धान्तों पर वाद-विवाद।
शास्त्री पुं० (सं) १-शास्त्रों का ज्ञाता। २-एक उपाधि जो संस्कृत में इस नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय द्वारा दी जाती है।
शास्त्रीय वि० (सं) शास्त्र सम्बन्धी। शास्त्र का।
शास्त्रोक्त वि० (सं) शास्त्रों में कहा या बतलाया हुआ।
शास्य वि० (सं) १-शासन करने के योग्य। २-सुधारने योग्य। दण्ड देने योग्य।
शाहंशाह पुं० (फा) राजाओं का राजा। सम्राट्। महाराजाधिराज।
शाहंशाही स्त्री० (फा) १-शाहंशाह का कार्य या भाव २-व्याकरण का खरापन।
शाह पुं० (फा) १-महाराज। बादशाह। २-मुसलमान फकीर। वि० (फा) महान्। बड़ा।
शाहकार पुं० (फा) किसी कला की सर्वश्रेष्ठ कृति।
शाहखर्च वि० (फा) बहुत अधिक व्यय करने वाला।
शाहजादगी स्त्री० (फा) शाहजादा होने की अवस्था
शाहजादा पुं० (फा) बादशाह का पुत्र। महाराजकुमार।
शाहतरा पुं० (फा) पित्तपापड़ा।
शाहदरा पुं० (फा) किसी महल या किले के नीचे बसी हुई आबादी।
शाहबंदर पुं०(फा) किसी देश का प्रधान बन्दरगाह
शाहरग स्त्री० (फा) गले में से होकर जाने वाली बड़ी रग।
शाहराह पुं० (फा) राजपथ। (हाई वे)।
शाहाना वि० (फा) राजसी। पुं० वर को पहनाने का जामा। २-एक रोग।
शाहानाजोड़ा पुं० (फा) विवाह के समय वर को पहनाने का लाल रंग का जोड़ा।
शाहानामिजाज पुं० (फा) नाजुकमिजाज।
शाहिद पुं० (अ)१-साक्षी। गवाह। वि० (अ) सुन्दर
शाही वि०(फा) बादशाहों का। स्त्री० (फा) कुम्भ आदि पर निकलने वाली साधुओं की सवारी।
शिगरफ पुं० (फा) हिंगुल।
शिगरफी वि० (फा) शिगरफ के रंग का। लाल।
शिंघाण पुं० (सं) १-लोहमल। २-दाढ़ी। ३-फूटा अण्डकोष। ४-नाक में चेप जिससे झिल्ली बन रहती है।
शिंघाणक पुं० (सं) नाक का चेप। बलगम। कफ।
शिंजन पुं० (सं) १-मधुर ध्वनि। २-आभूषणों की झङ्कार। वि० (सं) मधुरध्वनि करने वाला।
शिंजित वि० (सं) झङ्कार करता हुआ।
शिंजिनी स्त्री० (सं) १-नूपुर। पैंजनी। २-अंगूठी। ३-धनुष की डोरी।
शिंबा स्त्री० (सं) १-फली। छीमी। २-सेम। ३-दाल द्विदल अन्न।
शिंबिका स्त्री० (सं) दे० 'शिंबा'।
शिंबी दे० 'शिंबा'।
शिंशपा स्त्री० (सं)१-शीशम का वृक्ष। २-अशोक वृक्ष
शिशुपा स्त्री० (हि) दे० 'शिंशपा'।

शिशुमार पुं० (सं) सूंस नामक एक जलजन्तु।
शिकञ्जबीन पुं० (हि) दे० 'सिकंजबीन'।
शिकंजा पुं० (फा) १-दबाने, कसने आदि का यन्त्र २-वह यन्त्र जिसमें जिल्दसाज किताब को दबाकर उनके पन्ने काटते हैं। ३-एक प्राचीन यन्त्र जिसमें अपराधी की टाँग कस दी जाती थी। ४-कोल्हू। ५-रूई दबाने का पेंच।
शिकन स्त्री० (फा) सिलवट।
शिकम पुं० (फा) उदर। पेट।
शिकमी वि०(फा) १-किसी के अन्तर्गत रहने वाला २-पेट सम्बन्धी।
शिकरम स्त्री० (हि) एक प्रकार की गाड़ी।
शिकरा पुं० (फा) एक प्रकार का बाज पक्षी।
शिकवा पुं० (फा) शिकायत। उलाहना।
शिकस्त स्त्री० (फा) १-पराजय। २-टूटना। ३-विफलता।
शिकस्ता वि० (फा) १-टूटा हुआ। भग्न।
शिकस्तादिल वि० (फा) भग्नहृदय।
शिकस्तानवीस पुं०(फा) जल्दी-जल्दी घसीट लिखने वाला।
शिकस्ताहाल वि० (फा) फटेहाल।
शिकायत स्त्री० (फा) १-निन्दा। २-चुगली। ३-उलाहना। ४-रोग। बीमारी।
शिकायती वि० (फा) शिकायत करने वाला।
शिकार पुं० (फा) १-आखेट। मृगया। २-मांस। ३-वह पशु जो आखेट में मारा जाय। ४-आहार खाद्य। ५-असामी। वह जिसके फंसने पर बहुत लाभ हो।
शिकारगाह स्त्री० (फा) १-शिकार खेलने की जगह। २-जङ्गल में पेड़ आदि पर बनाया हुआ वह मचान जिस पर बैठ कर शेर आदि का शिकार किया जाता है।
शिकारबंद पुं०(फा) घोड़े के चारजामे के पीछे सामान बांधने का तस्मा।
शिकारी पुं० (फा) शिकार खेलने वाला। व्याध।
शिकारी-कुत्ता पुं०(फा) शिकार में मदद करने वाला कुत्ता।
शिकारी-जानवर पुं० (फा) वह पशु जो आहार के लिये दूसरे पशुओं का शिकार करता है।
शिक्य पुं० (सं) दे० 'शिक्य'।
शिक्या स्त्री० (सं) १-छींका। २-बहँगी के दोनों छोरों पर बंधा हुआ रस्सी का जाल। ३-तराजू की डोरी।
शिक्षक पुं०(सं) १-शिक्षा देने वाला। २-विद्यार्थियों को पढ़ाने वाला। गुरु। उस्ताद।
शिक्षण पुं० (सं) पढ़ने का काम। तालीम। शिक्षा।
शिक्षणकला स्त्री० (सं) पढ़ने की कला।
शिक्षणशास्त्र पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें बच्चों को शिक्षा देने के ढंग का विवेचन होता है।
शिक्षणीय वि० (सं) शिक्षा देने योग्य।
शिक्षा स्त्री० (सं) १-विद्या पढ़ाने तथा कोई कला सीखने की क्रिया। तालीम (एज्युकेशन,इन्सट्रक्शन) २-उपदेश। ३-एक वेदांग जिसमें वेदों के स्वरों आदि का विवेचन होता है। ४-पाठ। सबक। ५-परामर्श। ६-शासन।
शिक्षागुरु पुं० (सं) विद्या पढ़ाने वाला गुरु।
शिक्षादीक्षा स्त्री० (सं) उपदेश या शिक्षा द्वारा चारित्रिक तथा मानसिक विकास।
शिक्षापद्धति स्त्री० (सं) विद्या पढ़ने का ढंग।
शिक्षापरिषद् स्त्री० (सं) १-शिक्षा का प्रबंध करने वाली सभा। २-वैदिक कालीन शिक्षा संस्था जो एक ऋषि या आचार्य के आधीन होती थी एवं उसी के नाम से प्रसिद्ध होती थी।
शिक्षाप्रणाली वि० (सं) शिक्षापद्धति।
शिक्षाप्रद वि० (सं) शिक्षा देने वाला।
शिक्षाप्रसार योजना स्त्री०(सं) स्त्रियों, प्रौढ़ों तथा बच्चों को साक्षर बनाने तथा शिक्षा फैलाने की योजना। (एज्युकेशन एक्सपेन्शन स्कीम)।
शिक्षामंत्री पुं०(सं) वह मन्त्री जिसके आधीन किसी राज्य या देश का शिक्षा विभाग हो। (एजुकेशन-मिनिस्टर)।
शिक्षार्थी पुं० (सं) वह जो किसी कला या विद्या को सीखने में लगा हुआ हो। छात्र।
शिक्षालय पुं० (सं) वह स्थान जहां शिक्षा दी जाय। विद्यालय।
शिक्षाविभाग पुं० (सं) वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है (एज्यूकेशन डिपार्टमेन्ट)।
शिक्षाशास्त्र पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें विद्यार्थियों को पढ़ाने के ढंग का विवेचन होता है। (डिडैक्टिक्स)।
शिक्षित वि० (सं) जिसने शिक्षा प्राप्त की हो। पढ़ा लिखा।
शिक्षिताक्षर पुं० (सं) वह जिसने विद्या पढ़ी हो।
शिक्ष्यमाण पुं० (सं) दे० 'पद शिक्षार्थी'। (एप्रेंटिस)
शिखंड पुं०(सं) १-मोर की पूँछ। २-चोटी। शिखा ३-काकुल।
शिखंडक पुं० (सं) १-दे० 'शिखंड'। २-मुर्गा। ३-एक विशेष रत्न। मानिक।
शिखंडिनी स्त्री० (सं) १-मोरनी। मयूरी। २-जूही। ३-मुर्गी। ४-द्रुपदराज की कन्या जो कुरुक्षेत्र में पुरुष रूप में लड़ी थी।
शिखंडी पुं० (सं) १-स्वर्ण यूथि... मोर। ३-मुर्गा। ४-मोर की पूँछ। ५-... एक पुत्र जिसे अर्जुन ने मह...

करके भीष्म का वध किया था।
शिख स्त्री० (हिं) दे० 'शिखा'।
शिखर पुं०(सं) १-सिर। चोटी। २-पहाड़ की चोटी ३-मन्दिर या मकान के ऊपर का नुकीला भाग। कलश। ४-मंडप। गुम्बद।
शिखरन स्त्री० (हिं) दही का बनाया हुआ एक प्रकार का पेय पदार्थ।
शिखरिणी स्त्री० सं) १-रोमावली। २-किशमिश। ३-दही तथा चीनी का रस। ४-सत्रह अक्षरों का वर्णवृत्त। ५-नारी रत्न।
शिखरी पुं० (सं) १-पर्वत। पहाड़ी। २-दुर्ग। ३-अपामार्ग। ४-वृक्ष। ५-लोबान। ६-ज्वार। मक्का एक प्रकार का मृग। वि० (सं) चोटी युक्त।
शिखलोहित स्त्री० (सं) कुकरमुत्ता। (फुंगस)।
शिखा स्त्री० (स) १-चोटी। २-कलगी। ३-आग की लपट। ४-दीपक की लौ। ५-प्रकाश-किरण। ६-नोक। ७-दामन। ८-पेड़ की जड़। ९-डाली। शाखा। १०-एक वर्णवृत्त।
शिखातरु पुं० (सं) दीवट।
शिखाधर पुं० (सं) मोर। मयूर।
शिखाबंधन पुं० (सं) चोटी बाँधना।
शिखामणि पुं० (सं) सिर पर पहनने का रत्न।
शिखावृद्धि स्त्री० (सं) प्रत्येक दिन बढ़ने वाला। सूद-दर सूद।
शिखावान वि० (सं) शिखा वाला। पुं० (सं) १-मोर मयूर। २-अग्नि।
शिखासूत्र पुं० (सं) ब्राह्मणों के चिह्न, चोटी तथा जनेऊ।
शिखिनी स्त्री० (सं) १-मुर्गी। २-मयूरी। मोरनी।
शिखी वि० (सं) शिखा या चोटी वाला। पुं० १-मयूर। २-मुर्गा। ३-सारस। ४-घोड़ा। ५-बैल। ६-ब्राह्मण। ७-अग्नि। ८-तीन की संख्या। ९-दीपक। १०-बाण। तीर। ११-पुच्छलतारा। १२-एक विष विशेष।
शिखीपिच्छ पुं० (सं) मोर की पूँछ।
शिखीपुच्छ पुं० (सं) शिखीपिच्छ।
शिखीवाहन पुं० (सं) कार्तिकेय।
शिगाफ पुं० (फा) १-छिद्र। दरार। २-चीरा।
शिगूफा पुं० (फा) १-कली। २-फूल। ३-चुटकुला।
शित वि० (सं) १-पतला। दुबला। २-नुकीला। ३-धारदार। पुं० (सं) विश्वामित्र के एक गोत्रज ऋषि
शिताफल पुं० (सं) सीताफल।
शिताब स्त्री० (फा) शीघ्र। जल्दी।
शिताबी स्त्री० (फा) १-तेजी। २-शीघ्रता।
शिति वि० (सं) १-श्वेत। २-काला। कृष्ण। पुं० (सं) भोजपत्र।
शितिकंठ पुं० (सं)१-जलकाक। मुर्गाबी। २-पपीहा। ३-मोर। ४-शिव।
शिथिल वि० (सं) १-ढीला। २-सुस्त। धीमा। ३-आज्ञा अथवा विधान। ४-(वह वाक्य) जिसकी शब्द योजना ठीक न हो। ५-जो थकावट के कारण धीमा पड़ गया हो।
शिथिलता स्त्री० (सं) १-शिथिल होने का भाव। २-वाक्य में शब्दों का ठीक या संगतयोजना न होना
शिथिलबल वि० (सं) जिसका बल कम होगया हो।
शिथिलाई स्त्री० (हिं) शिथिलता।
शिथिलाना क्रि० (हिं) १-शिथिल या ढीला होना। २-थकना। ३-ढीला करना।
शिथिलित वि० (सं) शिथिल या ढीला पड़ा हुआ हो
शिथिलीकरण पुं० (सं) शिथिल या ढीला करना।
शिथिलीकृत वि० (सं) शिथिल या ढीला किया हुआ
शिथिलीभूत वि० (सं) जो शिथिल हो गया हो।
शिद्दत स्त्री० (अ) १-तेज। उग्रता। २-अधिकता।
शिनाख्त स्त्री० (फा) १-पहचान। २-परख।
शिप्रा स्त्री० (सं) हिमालय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम।
शिफर स्त्री० (हि) ढाल।
शिफा स्त्री० (सं) १-एक वृक्ष जिसके रेशेदार जड़ के प्राचीनकाल में कोड़े बनते थे। २-कोड़े की फटकार या मार। ३-माता। ४-लता। ५-शंख। ६-कोड़ा। स्त्री० (अ) १-रोग का छुटकारा। २-स्वास्थ्य।
शिफाखाना पुं० (अ) हस्पताल।
शिबिका स्त्री० (सं) दे० 'शिविका'।
शिरःपीड़ा स्त्री०(सं) सिर या माथे की पीड़ा।
शिरःशूल पुं० (सं) सिर का दर्द।
शिर पुं० (सं) १-सिर। २-माथा। ३-चोटी। सिरा ४-सेना का अग्रभाग। ५-पद्य के चरण का आरम्भ ७-मुखिया। ८-शय्या।
शिरकत स्त्री०(अ) १-साझा। २-सम्मिलित होने का भाव। ३-किसी काम में योग।
शिरकतनामा पुं० (अ) वह पत्रक जिसमें साझे की शर्तें लिखी हों।
शिरकती वि० (अ) साझे का। मिला हुआ। संयुक्त।
शिरज पुं० (सं) केश। बाल।
शिरत्राण पुं० (हि) दे० 'शिरस्त्राण'।
शिरपेंच पुं० (हि) दे० 'सरपेंच'।
शिरफूल पुं०(हि) एक आभूषण जिसे स्त्रियां सिर में पहनती हैं। सिरफूल।
शिरश्छेद पुं० (सं) दे० 'शिरच्छेदना'।
शिरश्छेदन पुं० (सं) सिर काटना।
शिरश्छेदन-यंत्र पुं०(सं) एक यन्त्र जिसके द्वारा दंडित व्यक्ति का सिर धड़ से अलग किया जाता है (गिलोटीन)।

शिरसिज पुं० (सं) केश। बाल।
शिरसिरुह पुं० (सं) केश। बाल।
शिरस्क वि० (सं) मस्तक-सम्बन्धी।
शिरस्त्र पुं० (सं) युद्ध के समय सिर पर पहनने की लोहे की टोपी।
शिरस्त्राण पुं० (सं) दे० 'शिरस्त्र'।
शिरस्य पुं० (सं) १-नेता। अगुआ। २-प्रधान।
शिरहन पुं० (हि) १-तकिया २-सिरहाना।
शिरा स्त्री०(सं)१-शरीर में रक्त की छोटी नस जिसके द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों में होकर रक्त हृदय में पहुंचता है। २-कोई ऐसी नली। ३-जमीन के अन्दर बहने वाला सोता।
शिराकती वि०(हि) सम्मिलित। साझे का।
शिराकतीकारोबार पुं० (हि) साझे का।
शिरीष पुं० (सं) १-सिरस का वृक्ष। २-कोमल फूल वाला।
शिरीषक पुं० (सं) दे० 'शिरीष'।
शिरोगृह पुं० (सं) अट्टालिका। कोठा।
शिरोगृह पुं० (सं) दे० 'शिरोगृह'।
शिरोज पुं० (सं) बाल। केश।
शिरोदाम पुं० (सं) पगड़ी। साफा।
शिरोधार्य वि० (सं) आदरसहित ग्रहण करने योग्य।
शिरोपाव पुं० (सं) दे० 'सिरोपाव'।
शिरोभूषण पुं० (सं) १-सिर पर धारण करने का गहना। २-शिरो...
शिरोमणि पुं० (
शिरोमणी पुं०
सबसे उत्तम।
शिरोमाली पुं० (सं) शिव। महादेव।
शिरोरुह पुं० (सं) सिर के बाल। केश।
शिरोरोग पुं० (सं) सिर का दर्द।
शिरोवर्ती पुं० (सं) प्रधान। मुख्य।
शिरोवेष्टन पुं० (सं) पगड़ी। साफा।
शिर्क पुं० (अ) खुदा या ईश्वर में द्वैतभाव।
शिल पुं० (सं) खेत काटने के बाद उसमें अन्न एकत्र करने का काम। उञ्छ।
शिलक पुं० (सं) दे० 'शिल्लक'।
शिल्लक पुं० (सं) नकद रुपया।
शिला स्त्री० (सं) १-पत्थर। २-चट्टान। ३-चंद्रवृत्ति ४-पत्थर की पटिया। ५-मेरु। ६-कपूर।
शिलाज पुं०(सं)१-लोहा। २-शिलाजीत। ३-चट्टानों में से निकलने वाला पेट्रोल।
शिलाजतु पुं० (सं) शिलाजीत।
...
शिलात्मज पुं० (सं) लोहा।

शिलात्व पुं० (सं) शिला का भाव या धर्म।
शिलादान (सं) पुं० ब्राह्मण को शालग्राम की मूर्ति का दान।
शिलानिर्माणविज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें शिलाओं की रचना, स्वरूप आदि का विवेचन हो (पिट्रोलॉजी)।
शिलानिर्यास पुं० (सं) दे० 'शिलाजीत'।
शिलान्यास पुं० (सं) नींव का पत्थर रखा जाना।
शिलापट्ट पुं० (सं) १-मसाला पीसने की सिल। २-पत्थर की चट्टान।
शिलापट्टक पुं० (सं) दे० 'शिलापट्ट'।
शिलापुत्र पुं० (सं) सिल पर मसाला पीसने का बट्टा।
शिलाफलक पुं० (सं) पत्थर का पट्टा।
शिलाबंध पुं० (सं) पत्थरों का परकोटा या प्राचीर।
शिलाभव पुं० (सं) शिलाजीत।
शिलामुद्रित वि० (सं) एक विशेष प्रकार के पत्थर पर खोदकर मुद्रित या छापा हुआ।
शिलारस पुं० (सं) एक प्रकार का सुगन्धित रस जो लोहबान की तरह होता है।
शिलारोपण पुं० (सं) दे० 'शिलान्यास'।
शिलालिपि पुं० (सं) दे० 'शिलालेख'।
शिलालेख पुं० (सं) पत्थर पर खुदा हुआ या लिखा हुआ कोई प्राचीन लेख।
शिलावृष्टि पुं० (सं) आकाश से ओले गिरना।
...
की लकड़ी। देहली।
शिली स्त्री० (सं) १-देहलीज। २-केंचुआ। ३-भाला ४-मेंढक। ५-भोजपत्र।
शिलीपद पुं० (सं) फीलपांव नामक रोग।
शिलीमुख पुं० (सं) १-भ्रमर। २-बाण। ३-मूर्ख। ४-युद्ध।
शिलेय वि० (सं) शिला सम्बन्धी। शिला का। पुं० (सं) शिलाजीत।
शिलोद्भव पुं० (सं) १-पीला चन्दन। २-शैलेय।
शिल्प पुं० (सं) १-दस्तकारी। कोई हाथ का बना काम। कारीगरी। २-कल सम्बन्धी व्यापार।
शिल्पकला पुं० (सं) हाथ का बना काम। दस्तकारी।
शिल्पकार पुं० (सं) १-शिल्पी। २-राज। मेमार।
शिल्पकौशल पुं० (सं) दे० 'शिल्पकला'।
शिल्पगृह पुं० (सं) वह स्थान जहाँ बहुत से कारीगर ...
...
की विद्या।

करके भीष्म का वध किया था।
शिख स्त्री० (हि) दे० 'शिखा'।
शिखर पुं०(सं) १-सिर। चोटी। २-पहाड़ की चोटी ३-मन्दिर या मकान के ऊपर का नुकीला भाग। कलश। ४-मंडप। गुम्बद।
शिखरन स्त्री० (हि) दही का बनाया हुआ एक प्रकार का पेय पदार्थ।
शिखरिणी स्त्री० (सं) १-रोमावली। २-किशमिश। ३-दही तथा चीनी का रस। ४-सत्रह अक्षरों का वर्णवृत्त। ५-नारी रत्न।
शिखरी पुं० (सं) १-पर्वत। पहाड़ी। २-दुर्ग। ३-अपामार्ग। ४-वृक्ष। ५-लोबान। ६-ज्वार। मका एक प्रकार का मृग। वि० (सं) चोटी युक्त।
शिखलोहित स्त्री० (सं) कुकरमुत्ता। (फुंगस)।
शिखा स्त्री० (स) १-चोटी। २-कलगी। ३-आग की लपट। ४-दीपक की लौ। ५-प्रकाश-किरण। ६-नोक। ७-दामन। ८-पेड़ की जड़। ९-डाली। शाखा। १०-एक वर्णवृत्त।
शिखातरु पुं० (सं) दीवट।
शिखाधर पुं० (सं) मोर। मयूर।
शिखाबंधन पुं० (सं) चोटी बाँधना।
शिखामणि पुं० (सं) सिर पर पहनने का रत्न।
शिखावृद्धि स्त्री० (सं) प्रत्येक दिन बढ़ने वाला। सूद-दर सूद।
शिखावान वि० (सं) शिखा वाला। पुं० (सं) १-मोर मयूर। २-अग्नि।
शिखासूत्र पुं० (सं) ब्राह्मणों के चिह्न, चोटी तथा जनेऊ।
शिखिनी स्त्री० (सं) १-मुर्गी। २-मयूरी। मोरनी।
शिखी वि० (सं) शिखा या चोटी वाला। पुं० १-मयूर। २-मुर्गा। ३-सारस। ४-घोड़ा। ५-बैल। ६-ब्राह्मण। ७-अग्नि। ८-तीन की संख्या। ९-दीपक। १०-बाण। तीर। ११-पुच्छलतारा। १२-एक विष विशेष।
शिखीचिह्न पुं० (सं) मोर की पूँछ।
शिखीपुच्छ पुं० (सं) शिखीचिह्न।
शिखीवाहन पुं० (सं) कार्तिकेय।
शिगाफ पुं० (फा) १-छिद्र। दरार। २-चीरा।
शिगूफा पुं० (फा) १-कली। २-फूल। ३-चुटकुला।
शित वि० (सं) १-तेज। दुबला। २-नुकीला। ३-धारदार। पुं० (सं) विश्वामित्र के एक गोत्रज ऋषि
शिताफल पुं० (सं) सीताफल।
शिताब स्त्री० (फा) शीघ्र। जल्दी।
शिताबी स्त्री० (फा) १-तेजी। २-शीघ्रता।
शिति वि० (स) १-सफेद। २-काला। कृष्ण। पुं० (स) भोजपत्र।
शितिकंठ पुं० (सं) १-जलकाक। मुर्गाबी। २-चातक ३-मोर। ४-शिव।
शिथिल वि० (सं) १-ढीला। २-सुस्त। धीमा। ३-आज्ञा अथवा विधान। ४-(वह वाक्य) जिसमें शब्द योजना ठीक न हो। ५-जो थकावट के कारण धीमा पड़ गया हो।
शिथिलता स्त्री० (सं) १-शिथिल होने का भाव। २-वाक्य में शब्दों का ठीक या संगतयोजना न होना
शिथिलबल वि० (सं) जिसका बल कम होगया हो।
शिथिलाई स्त्री० (हि) शिथिलता।
शिथिलाना क्रि० (हि) १-शिथिल या ढीला होना। २-थकना। ३-ढीला करना।
शिथिलित वि० (सं) शिथिल या ढीला पड़ा हुआ है
शिथिलीकरण पुं० (सं) शिथिल या ढीला करना।
शिथिलीकृत वि० (सं) शिथिल या ढीला किया हुआ
शिथिलीभूत वि० (सं) जो शिथिल हो गया हो।
शिद्दत स्त्री० (अ) १-तेज। उग्रता। २-अधिकता।
शिनाख्त स्त्री० (फा) १-पहचान। २-परख।
शिप्रा स्त्री० (सं) हिमालय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम।
शिफर स्त्री० (हि) ढाल।
शिफा स्त्री० (सं) १-एक वृक्ष जिसकी रेशेदार जड़ के प्राचीनकाल में कोड़े बनते थे। २-कोड़े की फटकार या मार। ३-माता। ४-लता। ५-नदी। ६-कोड़ा। स्त्री० (अ) १-रोग का छुटकारा। २-स्वास्थ्य।
शिफाखाना पुं० (अ) हस्पताल।
शिबिका स्त्री० (सं) दे० 'शिविका'।
शिरःपीड़ा स्त्री०(सं) सिर या माथे की पीड़ा।
शिरःशूल पुं० (सं) सिर का दर्द।
शिर पुं० (सं) १-सिर। २-माथा। ३-चोटी। सिरा। ४-सेना का अग्रभाग। ५-पद्य के चरण का आरम्भ। ७-मुखिया। ८-शय्या।
शिरकत स्त्री०(अ) १-साझा। २-सम्मिलित होने का भाव। ३-किसी काम में योग।
शिरकतनामा पुं० (अ) वह पत्रक जिसमें साझे की शर्तें लिखी हों।
शिरकती वि० (अ) साझे का। मिला हुआ। संयुक्त
शिरज पुं० (सं) केश। बाल।
शिरत्राण पुं० (हि) दे० 'शिरस्त्राण'।
शिरपेंच पुं० (हि) दे० 'सरपेंच'।
शिरफूल पुं०(हि) एक आभूषण जिसे स्त्रियां सिर में पहनती हैं। सिरफूल।
शिरश्छेद पुं० (सं) दे० 'शिरश्छेदन'।
शिरश्छेदन पुं० (सं) सिर काटना।
शिरश्छेदन-यंत्र पुं०(सं) एक यन्त्र जिसके द्वारा दंडित व्यक्ति का सिर धड़ से अलग किया जाता है (गिलोटीन)।

शिल्पविद्या स्त्री० (सं) १-गृह-निर्माण कला । २-हाथ से बनाकर वस्तुएँ तैयार करने की विद्या ।
शिल्पविद्यालय पुं० (सं) वह पाठशाला या स्कूल जहाँ शिल्पविद्या सिखाई जाती हो ।
शिल्पशाला पु० (सं) शिल्पगृह ।
शिल्पशास्त्र पुं० (सं) दे० 'शिल्पविद्या' ।
शिल्पिक वि०(सं) शिल्प-सम्बन्धी । (टैकनीकल) ।
शिल्पी पुं० (सं) १-शिल्प का काम करने वाला । २-किसी शिल्प का अच्छा जानकार । (टैकनीशियन) ३-राज । ४-चित्रकार ।
शिव पुं० (सं) १-कल्याण । मङ्गल । २-रुद्र । ३-परमेश्वर । ४-हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करने वाले माने जाते हैं । ५-एक युग । ६-लिंग । ७-एक प्रकार का छन्द । ८-समुद्र लवण ९-गीदड़ ।
शिवकांता स्त्री० (सं) दुर्गा ।
शिवकारी वि० (सं) मंगल या कल्याण करने वाला ।
शिवता, शिवत्व स्त्री० (सं) १-शिव का भाव या धर्म २-मोक्ष ।
शिवधातु पुं० (सं) १-पारद । पारा । २-गोदन्ती नामक मणि ।
शिवनिर्माल्य पु० (सं) शिव पर चढ़ा हुआ पदार्थ जो ग्रहण करने योग्य नहीं होता । २-परम अग्राह्य वस्तु ।
शिवपुरी स्त्री० (सं) काशी नगरी ।
शिवप्रिया स्त्री० (सं) १-भांग । २-धतूरा । ३-स्फटिक ४-रुद्राक्ष । ५-दुर्गा ।
शिवबीज पु० (सं) शिव का वीर्य । पारा ।
शिवमौलिसुता स्त्री० (सं) गंगा ।
शिवरात्रि स्त्री० (सं) फाल्गुनकृष्णा चतुर्दशी ।
शिवरानी स्त्री० (हि) पार्वती ।
शिवलिंग पु० (सं) शिव या महादेव की पिण्डी जिसका पूजन होता है ।
शिवलोक पुं० (सं) कैलास ।
शिववल्लभ पु० (सं) आम का पेड़ ।
शिववल्लभा स्त्री०(सं) १-पार्वती । २-सेवती ।
शिववीर्य पुं० (सं) पारा । पारद ।
शिवा स्त्री० (सं) १-पार्वती । सती । २-दुर्गा । ३-वह स्त्री जो भाग्यशालिनी हो ।
शिवानी स्त्री० (सं) १-दुर्गा । पार्वती ।
शिवराति पुं० (सं) १-कुत्ता । २-कामदेव ।
शिवालय पुं० (सं) १-शिव का मन्दिर । २-कोई देवमन्दिर । ३-श्मशान ।
शिवाला पुं० (हि) शिव का मन्दिर ।
शिविका स्त्री० (सं) डोली । पालकी ।
शिविर पुं० (सं) १-सेना ठहरने का स्थान । डेरा । पड़ाव । २-वह स्थान जहाँ कुछ लोग किसी विशेष कार्य से रहें । (कैम्प) । ३-दुर्ग । किला ।
शिवेतर वि० (सं) अशुभ । हानिकारक ।
शिशिर पुं०(सं) १-जाड़ा । शीतकाल । २-माघ और फाल्गुन की ऋतु । ३-विष्णु । ४-हिम । ५-लाल चन्दन । वि० (सं) शीतल । ठण्डा ।
शिशिरकाल पुं० (सं) जाड़े की ऋतु ।
शिशिरकिरण पु० (सं) चन्द्रमा ।
शिशिरघ्न पुं० (सं) अग्नि । आग ।
शिशिरदीधिति पुं० (सं) चन्द्रमा ।
शिशिरमयूख पुं० (सं) चन्द्रमा ।
शिशिररश्मि पुं० (सं) चन्द्रमा ।
शिशिरांत पुं० (सं) वसन्त ।
शिशु पुं० (सं) १-छोटा बालक विशेषतः आठ वर्ष तक की आयु का बच्चा । (इन्फेन्ट) । २-पशुओं का बच्चा । ३-कार्तिकेय का एक नाम ।
शिशुकल्याणकेन्द्र पुं० (सं) वह स्थान या केन्द्र जहाँ शिशुओं के स्वास्थ्य की देख भाल तथा उनकी उन्नति का प्रयत्न किया जाता हो । (चाइल्ड वेल्फेयर-सेन्टर) ।
शिशुता स्त्री० (सं) बचपन । शिशु का भाव या धर्म ।
शिशुताई स्त्री० (हि) शिशुता । बचपन ।
शिशुत्व पुं० (सं) शिशुता ।
शिशुपन पुं० (सं) दे० 'शिशुता ।
शिशुपाल पुं०(सं) चेदि देश के राजा का नाम जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था ।
शिशुमार पुं०(सं) १-मगर की आकृति वाला नक्षत्र-मंडल । २-श्रीकृष्ण । ३-सूँस नामक जलजन्तु ।
शिश्न पुं० (सं) पुरुष की उपस्थेन्द्रिय । लिंग ।
शिश्नोदरपरायण वि० (सं) कामुक और पेटू ।
शिश्नोदरवाद पुं० (सं) उदर या जननेंद्रिय से सम्बन्धित शास्त्र या सिद्धान्त । २-फ्रायड का काम-सिद्धान्त ।
शिष पुं० (हि) शिष्य । स्त्री० १-शिखा । सीख । २-मूंडन के समय छोड़े जाने वाले बाल ।
शिषा स्त्री० (हि) शिखा । चोटी ।
शिषी पुं० (हि) मोर । मयूर ।
शिष्ट वि० (सं) १-सभ्य । अच्छे स्वभाव, आचरण तथा व्यवहार वाला । २-धर्मशील । ३-शांत । ४-श्रेष्ठ । ५-आज्ञाकारी । पुं० १-मन्त्री । २-सभ्य । ३-सभासद ।
शिष्टजीवनस्तर पुं० (सं) अच्छी प्रकार का रहन-सहन २-श्रेष्ठता ।
शिष्टत्व पुं० (सं) शिष्टता ।
शिष्टप्रयोग पुं० (सं) शिष्ट या सभ्य व्यक्तियों द्वारा काम में लाया जाना ।
शिष्टमंडल पुं०(सं) कुछ शिष्ट लोगों का वह दल जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए कहीं भेजा जाय (डेली-

खाद्य सामग्रियों का संग्रह। (कोल्ड स्टोरेज)।
शीतांशु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
शीताकुल वि०(सं) सर्दी से कांपने वाला।
शीतातप पुं० (सं) सर्दी और गर्मी।
शीताद पुं० (सं) दांत के मसूड़ों का एक रोग जिसमें मसूड़ों से मवाद आने लगता है। (पायोरिया)।
शीताद्रि पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
शीताभ पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
शीतोष्ण वि० (सं) ठंडा तथा गर्म।
शीत्कार पुं० (सं) संभोग के समय स्त्री द्वारा की गई सी-सी की ध्वनि। सीत्कार।
शीन पुं० (सं) १-मूर्ख। २-अजगर। वि० जमा हुआ। (अ) अरबी तथा फारसी वर्णमाला का एक वर्ण जिसका उच्चारण 'श' की तरह होता है।
शीभर पुं० (सं) वर्षा की झड़ी।
शीर वि० (सं) नुकीला। तेज। पुं० अजगर। (फा) दूध। क्षीर।
शीरखोर वि० (फा) दुधमुँहा (बच्चा)।
शीरख्वार वि० (फा) दे० 'शीरखोर'।
शीरा पुं० (फा) दे० 'शीरा'।
शीरा पुं०(फा) १-शरबत। २-चाशनी।
शीराज़ा पुं० (फा) १-धन। हुआ रङ्गीन या सफेद फीता। २-प्रबन्ध। इन्तजाम। ३-सिलसिला।
शीराज़ाबंद पुं० (सं) जिसकी जिल्दबन्दी हो चुकी हो (पुस्तक)।
शीराज़ी वि० (फा) शीराज नगर का। पुं० १-मीठा मधुर। २-प्रिय। प्यारा।
शीरीं वि० (फा) १-एक मीठा। मधुर। २-प्रिय। प्यारा। स्त्री० फरहाद की प्रेयसी का नाम।
शीरींकलाम वि० (फा) १-मीठा बोलने वाला। २-मधुर भाषा बोलने वाला।
शीरींबयान वि० (फा) मधुरभाषी।
शीरींबयानी स्त्री० (फा) मीठा बोलना।
शीरीनी स्त्री० (फा) १-मिठास। मीठापन। २-मिठाई ३-बताशा। सिरनी।
शीर्ण वि० (सं) १-छितराया हुआ। २-च्युत। ३-जीर्ण। पका पुराना। ४-दुबला। पतला। ५-मुरझाया हुआ। पुं० एक गन्ध द्रव्य।
शीर्णकाय वि० (सं) पतला-दुबला।
शीर्णता स्त्री० (सं) १-कृशता। २-टूटा फूटा होना।
शीर्णत्व पुं० (सं) दे० 'शीर्णता'।
शीर्ष पुं० (सं) १-सिर। कपाल। २-माथा। मस्तक ३-चोटी। सिरा। ४-अग्रभाग। ५-खाते आदि की मद या विभाग का नाम। (हैड)। ६-एक प्रकार की घास। ७ किसी त्रिभुज की आधार रेखा के ऊपर का वह बिन्दु जिस पर दो सरल रेखाएँ दो ओर से आकर कोण बनाएँ। (वर्टेक्स)।
शीर्षक पुं० (सं) १-दे० 'शीर्ष'। २-वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिए किसी लेख या निबन्ध के ऊपर लिखा जाय।
शीर्षच्छेद पुं० (सं) सिर काटना।
शीर्षत्राण पुं० (सं) शिरस्त्राण।
शीर्षपटक पुं० (सं) मस्तक पर बांधने की पट्टी।
शीर्षपदक पुं० (सं) १-सिर पर लपेटने का कपड़ २-साफा। पगड़ी।
शीर्षरक्ष पुं० (सं) दे० 'शिरस्त्राण'।
शीर्षबिन्दु पुं० (सं) १-सिर के ऊपर की ओर ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान। २-मोतियाबि
शीर्षस्थान पुं० (सं) १-सबसे ऊपर का स्थान। माथा। सिर।
शीर्षस्थानीय वि०(सं) १-प्रधान। २-श्रेष्ठ।
शील पुं०(सं)१-स्वभाव की प्रवृति। मिजाज। चा ढाल। (डिस्पोजीशन)। २-उत्तम स्वभाव या आ रण। ३-संकोच। ४-कोमल हृदय। ५-अजग वि० तत्पर। प्रवृत्त। यौगिक के अन्त में जैसे- दा शील)।
शीलता स्त्री० (सं) शील का भाव। साधुता।
शीलधारी पुं० (सं) शिव। महादेव।
शीलवान् वि० (सं) १-सुशील। २-अच्छे आचर का।
शीलवृत्त वि० (सं) सुशील।
शीश पुं० (हि) दे० 'शीर्ष'।
शीशम पुं० (हि) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी इमार तथा सजावटी सामान बनाने के काम आती है।
शीशमहल पुं०(हि)१-कांच का महल। २-वह कम या मकान जिसकी दीवार पर बहुत से शीशे ल हों।
शीशा पुं० (फा) १-कांच नामक पारदर्शी मिश्र ध २-दर्पण। आइना। ३-झाड़, फानूस आदि का के बने सजावट के समान।
शीशी स्त्री० (फा) शीशे का लम्बोतरा छोटा प जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं।
शुंग पुं०(सं) १-वटवृक्ष। २-कोंपल। ३-फूल के नी का आधार या कटोरी।
शुंठि स्त्री० (सं) सोंठ।
शुंठी स्त्री० (सं) सूखी अदरक। सोंठ।
शुंड पुं० (सं) १-हाथी की सूंड। २-हाथी का मद
शुंडक पुं० (सं) १-रणभेरी। २-शराब उतारने बेचने वाला।
शुंडा स्त्री० (सं) १-सूंड। २-मदिरा पीने का स्थान ३-वेश्या। ४-मदिरा।
शुंडापान पुं० (सं) शराबखाना।
शुंडाल पुं० (सं) हाथी।
शुंडिका स्त्री० (सं) १-वह स्थान जहां शराब मिल

है। २-एक प्राचीन जाति।

शुंडी पुं० (स) १-हाथी। [illegible] कौआ। घाटी।

शुंभ पुं० (सं) एक असुर का नाम [illegible] था।

शुंभघातिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।

शुंभनाशिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।

शुंभमर्दिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।

शुंशुमार पुं० (सं) सूँस नामक एक जलजन्तु।

शुऊर पुं० (अ) १-सलीका। ढंग। २-बुद्धि।

शुऊरदार वि० (अ) जिसे काम करने का ढंग आता हो।

शुक पुं० (सं) १-तोता। सुग्गा। २-सिरिस नामक वृक्ष। ३-वस्त्र। ४-कपड़े का आँचल। ५-पगड़ी। शुकदेव।

शुकतरु पुं० (सं) सिरिस नामक पेड़।

शुकतुंडक पुं० (सं) १-तोते की चोंच। २-तांत्रिकों की पूजन के समय की हाथों की एक मुद्रा।

शुकदेव पुं० (सं) वेदव्यास के पुत्र का नाम।

शुकद्रुम पुं० (सं) सिरिस का पेड़।

शुकनालिका-न्याय पुं० (सं) जैसा जिस प्रकार फँसाने की नली में लोभ के कारण फँस जाता है उसी प्रकार फँसने की रीति।

शुकनासिका स्त्री० (सं) तोते की चोंच जैसी नाक।

शुकपुच्छ पुं० (सं) १-गन्धक। २-तोते की पूंछ।

शुकवल्लभ पुं० (सं) अनार।

शुकवाहन पुं० (सं) कामदेव।

शुकादन पुं० (सं) अनार।

शुकी स्त्री० (सं) २-तोते की मादा। सुग्गी। ३-कश्यप की पत्नी का नाम।

शुकेष्ट पुं० (सं) सिरिस वृक्ष।

शुकोदर पुं० (सं) तालीश वृक्ष।

शुक्रिया पुं० (फा) १-कृतज्ञता। २-धन्यवाद। ३-तौब। ४-आतंक।

शुक्त वि० (सं) १-खमीर उठाया हुआ। २-खट्टा। ३-कठोर। ४-निर्जन। ५-अप्रिय। ६-मिला हुआ पुं० (सं) १-कांजी। २-मांस। ३-सिरका। ४-कठोर वचन। ५-खटाई।

[illegible]

९-एक ताल।

शुक्तिज पुं० (सं) मोती।

शुक्तिपत्र पुं० (सं) छतिवन का वृक्ष।

शुक्तिपर्ण पुं० (सं) दे० 'शुक्तिपत्र'।

शुक्तिपेशी स्त्री० (सं) सीप का खोल।

शुक्तिबीज पुं० (सं) मोती।

[illegible]

शुक्र वि० (सं) १-चमकीला। २-स्वच्छ। पुं० (सं) १-अग्नि। २-एक प्रसिद्ध ग्रह। ३-पुरुष का वीर्य। ४-जेठ का महीना। ५-चित्रक वृक्ष। ६-पौरुष। बल। ७-बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच में पड़ने वाला दिन। ८-रस्सी। ९-धन। सम्पत्ति। १०-आँखों में का फूला नामक रोग। पुं० (अ) धन्यवाद।

शुक्रगुजार वि० (अ) आभारी। कृतज्ञ।

शुक्रगुजारी स्त्री० (अ) कृतज्ञता।

शुक्रदोष पुं० (सं) नपुंसकता। क्लीवत्व।

शुक्रमेह पुं० (सं) धातुक्षीणता नामक एक रोग।

शुक्रभुक पुं० (सं) मोर। मयूर।

शुक्रभू पुं० (सं) मज्जा।

शुक्रल वि० (सं) १-जिसमें वीर्य हो। २-वीर्य उत्पन्न करने वाला।

शुक्रवार पुं० (सं) बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच का दिन।

शुक्रवासर पुं० (सं) दे० 'शुक्रवार'।

शुक्रस्तंभ पुं० (सं) ध्वजभंग अथवा नपुंसकता विशेष जो बहुत दिनों तक ब्रह्मचर्य पालन करने से होता है।

शुक्रांग पुं० (सं) मोर। मयूर।

शुक्रा स्त्री० (सं) वंशलोचन।

शुक्राचार्य पुं० (सं) महर्षि भृगु के पुत्र जो दैत्यों के गुरु माने जाते हैं।

शुकाना पुं० (फा) मुकदमा जीतने के बाद वकील को मेहनताने के अतिरिक्त दिया जाने वाला धन।

शुक्रिया पुं० (फा) धन्यवाद।

शुक्रीया पुं० (फा) धन्यवाद।

शुक्ल वि० (सं) उजला। सफेद। पुं० (सं) १-शुक्लपक्ष। सुदी। २-ब्राह्मणों की एक पदवी। ३-एक नेत्र रोग। ४-मक्खन। नवनीत। ५-चांदी। रजत। ६-योग। ७-विष्णु। ८-कुरुंड नामक पुष्पवृक्ष। ९-शिव। १०-सफेद अरण्ड का पेड़।

[illegible]

पूर्णिमा तक के पन्द्रह दिन।

शुक्लपोत पुं० (सं) समुद्रफेन।

शुक्ला स्त्री० (सं) १-सरस्वती। २-शक्कर। चीनी। ३-वह स्त्री जिसका रंग सफेद हो।

शुक्लिमा स्त्री० (सं) सफेद होने का भाव। श्वेतता।

शुक्लौदन पुं० (सं) एक प्रकार का चावल।

शुचि पुं० (सं) १-अग्नि। २-गरमी। [illegible]

ज्येष्ठमास । ४-आषाढ़ मास । ५-चन्द्रमा । ६-विप्र । ७-कार्तिकेय । स्त्री० १-पवित्रता । स्वच्छता । २-कश्यप की कन्या का नाम । वि० १-शुद्ध । पवित्र । २-स्वच्छ । साफ । ३-निर्दोष ।

शुचिकर्मा वि० (सं) सदाचारी । पवित्र करने वाला ।
शुचिता स्त्री० (सं) १-पवित्रता । २-वह स्वच्छता जो स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए आवश्यक है । (सैनिटेशन) ।
शुचिद्रुम पु० (सं) पीपल ।
शुचिरोचि पुं० (सं) चन्द्रमा ।
शुचिव्रत पुं० (सं) अच्छे तथा पवित्र काम का संकल्प या बीड़ा उठाने वाला ।
शुचिष्मान् वि० (सं) प्रकाशयुक्त ।
शुजा वि० (अ) बहादुर । वीर ।
शुतुर पु० (फा) ऊँट । उष्ट्र ।
शुतुरखाना पु० (फा) उष्ट्रशाला ।
शुतुरगाव पुं० (फा) जिराफ नामक जन्तु ।
शुतुरनाल पु० (फा) एक प्रकार की छोटी तोप जो ऊँट पर लादकर चलाई जाती है ।
शुतुरमुर्ग पुं०(फा) एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गर्दन ऊँट के समान होती है ।
शुतुरसवार पुं० (सं) सांडनी की सवारी करने वाला
शुदनी स्त्री० (फा) होनी । नियति । होनहार । भावी ।
शुदा वि० (फा) जो व्यतीत हो चुका हो (समास में) ।
शुद्ध वि० (सं) १-स्वच्छ । २-पवित्र । ३-ठीक सही । ४-खालिस । ५-निर्दोष । पुं० १-सेंधा नमक । २-काली मिर्च । ३-चांदी । ४-शिव । ५-एक राग । ७-सप्तऋषियों में से एक ।
शुद्धकर्मा वि० (सं) पवित्र काम करने वाला ।
शुद्धता स्त्री० (सं) १-पवित्रता । २-स्वच्छता । ३-निर्दोषता ।
शुद्धत्व पु० (सं) शुद्धता ।
शुद्धधी वि० (सं) पवित्र विचारों वाला ।
शुद्धमति वि० (सं) दे० 'शुद्ध धी' ।
शुद्धपक्ष पु० (सं) शुक्लपक्ष ।
शुद्धहृदय वि० (सं) कपट या छलरहित ।
शुद्धांत पुं० (सं) अन्तःपुर ।
शुद्धांतचारी पु० (सं) अन्तःपुर का द्वाररक्षक ।
शुद्धांतरक्षक पुं० (सं) शुद्धांतचारी ।
शुद्धा स्त्री० (सं) इन्द्रजव ।
शुद्धात्मा पुं० (सं) शिव । वि० पवित्र स्वभाव वाला ।
शुद्धापह्नुति स्त्री० (सं) एक काव्यालंकार जिसमें उपमेय को असत्य ठहरा कर उपमान की यथार्थता स्थापित की जाती है ।
शुद्धि स्त्री०(सं) १-स्वच्छता । सफाई । २-वह धार्मिक संस्कार या कृत्य जो किसी धर्मच्युत या विधर्मी व्यक्ति को शुद्ध करने के लिए होता है । ३-दुर्गा ।
शुद्धिपत्र पुं०(सं) १-ग्रन्थ का वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहां पर क्या अशुद्धि रह गई है । (एरेटा) । २-वह प्रमाण पत्र जो शुद्धि करने के बाद पंडितों द्वारा दिया जाता है ।
शुद्धपत्रक पुं० (सं) वह पत्र जिसमें अशुद्धियाँ तथा उनका शुद्ध रूप हो सकता है । (करक्शन स्लिप) ।
शुद्धोदन पुं० (सं) भगवान बुद्धदेव के पिता का नाम
शुद्धाशुद्धि स्त्री० (सं) अशुद्ध तथा शुद्ध का भाव ।
शुन पुं० (सं) १-कुत्ता । २-एक गोत्रकार ऋषि का नाम । ३-पिल्ला ।
शुनाशीर पुं० (सं) १-इन्द्र । २-वायु तथा सूर्य । ३-इन्द्र तथा वायु । ४-उल्लू ।
शुनी स्त्री० (सं) कुतिया ।
शुनीर पु० (सं) कुतियों का झुण्ड ।
शुबहा पुं० (फा) १-सन्देह । शक । २-भ्रम । धोखा
शुभंकर वि० (सं) मंगल या शुभ करने वाला ।
शुभकरी स्त्री० (सं) पार्वती ।
शुभ वि० (सं) १-भला । अच्छा । २-मंगलमय । पुं० १-कल्याण । भलाई । २-चांदी । ३-बकरा । ४-सत्ताइस योगों में से एक (फ० ज्यो०) ।
शुभकर वि० (सं) मंगलप्रद । कल्याण करने वाला ।
शुभकारी स्त्री० (सं) पार्वती ।
शुभकर्मा वि० (सं) पवित्र या अच्छे कर्म करने वाला
शुभग्रह पुं०(सं) अच्छा फल देने वाला ग्रह ।
शुभचिंतक वि० (सं) भला चाहने वाला । हितैषी ।
शुभदंती स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके सुन्दर दांत हों ।
शुभदर्शन वि० (सं) १-सुन्दर । जिसका मुख देखने से कोई शुभ काम हो ।
शुभदायी पुं० (सं) मंगल या शुभ करने वाला ।
शुभलग्न पुं० (सं) 'शुभमुहूर्त' ।
शुभशंसी वि० (सं) किसी मंगल बात की खबर देने वाला ।
शुभसूचक वि० (सं) कोई खुशखबरी सुनाने वाला ।
शुभसूचना स्त्री० (सं) खुशखबरी ।
शुभस्थली स्त्री० (सं) १-पवित्र स्थान । २-यज्ञभूमि
शुभांग वि० (सं) सुन्दर । मनमोहक ।
शुभांगी स्त्री० (सं) १-कामदेव की स्त्री रति का नाम २-राजा कुरु की पत्नी का नाम । वि० सुन्दर (स्त्री)
शुभा स्त्री० (सं) १-शोभा । २-कांति । चमक । ३-बकरी । ४-इच्छा । ५-देवसभा । पु० (हि) दे० 'शुबहा' ।
शुभाकांक्षी वि० (सं) शुभ या कल्याण चाहने वाला । हितैषी ।
शुभागमन पुं० (सं) मंगलप्रद आगमन । (वेलकम) ।
शुभानुष्ठान पुं० (सं) कोई शुभ या मंगलकारी कर्म
शुभावह वि० (सं) शुभ या कल्याणकारी ।
शुभाशीर्वाद पुं० (सं) भला चाहते हुए दिया गया

आशीर्वाद।
शुभाशीष पु० (सं) दे० 'शुभाशीर्वाद'।
शुभ्र वि० (सं) १-श्वेत। सफेद। उजला। २-चमकीला। पु० १-साँभर नमक। २-रूपा। चाँदी। ३-अबरक। ४-फिटकरी। ५-चीनी। ६-चन्दन। ७-अबरक। ८-सफेद रंग।
शुभ्रकर पु० (सं) चन्द्रमा।
शुभ्रता स्त्री० (सं) १-सफेदी। श्वेतता। २-उज्ज्वलता
शुभ्रभानु पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
शुभ्ररश्मि पु० (सं) चन्द्रमा।
शुभ्रांशु पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
शुमार पु० (फा) १-गणना। गिनती। २-लेखा। हिसाब।
शुमाली वि० (अ) उत्तरी। उत्तर का।
शुमाली हवा स्त्री०(अ) उत्तर की ओर से आने वाली वायु।
शुरुआत स्त्री० (अ) आरम्भ।
शुरू पु० (अ) आरम्भ (शुरुआत का एक वचन)।
शुल्क पु०(सं) १-वह देन जो किसी नियम या परिपाटी के अनुसार अनिवार्य रूप से लिया जाता है २-आयात, निर्यात, विक्रय आदि की वस्तुओं पर राज्य की ओर से लगने वाला कर (कस्टम, ड्यूटी) ३-वह धन जो किसी कार्य के बदले में लिया जाय (फी)। ४-शर्त। ५-दहेज। ६-मूल्य।
शुल्कग्राही पु० (सं) शुल्क उगाहने या एकत्र करने वाला।
शुल्कसीमान्त पु०(सं)किसी देश की सीमा पर वस्तुओं आयात या निर्यात पर लिया जाने वाला शुल्क। (कस्टम फ्रंटियर्स)।
शुल्काध्यक्ष पु० (सं) चुंगी का सबसे बड़ा अधिकारी या अध्यक्ष।
शुल्कार्ह वि० (सं) शुल्क लगाये जाने योग्य। जिस पर शुल्क लग सकता हो। (ड्यूटीएबल)।
शुश्रूषक पु० (सं) सेवा करने वाला। सेवक।
शुश्रूषा स्त्री० (सं) १-सेवा। टहल। २-रोगी की परिचर्या। ३-खुशामद। ४-कथन। ५-किसी से कुछ सुनने की इच्छा।
शुष्क वि० (सं) २-सूखा। खुश्क। जिसमें तरी न हो। २-नीरस। ३-निरर्थक। ४-जिससे मनोरंजन न होता हो। ५-निर्मोही।
शुष्कता स्त्री० (सं) १-सूखापन। २-स्नेहहीनता। ३-रसहीनता।
शुष्कवृत्त पु० (सं) धव का वृक्ष। धौ।
शुष्कव्रण पु० (सं) योनिकन्द नामक एक स्त्रियों को होने वाला रोग।
शुष्कांग पु० (सं) धव का वृक्ष। वि० दुबला पतला।
शुष्कार्द्र पु० (सं) सोंठ।
शुष्कार्द्रक पु० (सं) सोंठ।
शुहदा वि० (अ) लम्पट। बदमाश। बदचलन।
शुहदापन पु० (अ) लम्पटता। बदमाशी। बदचलनी
शुहरत स्त्री० (अ) १-प्रसिद्धि। २-ख्याति। ३-बदनाम। ४-नेकनामी।
शूक पु०(सं) १-जव। जौ। २-अन्न की बाल। ३-एक प्रकार का तृण। ४-शिखा। ५-कागज नत्थी करने की सुई। आलपिन। (पिन)। ६-एक प्रकार की गन्दगी में उत्पन्न होने वाला कीड़ा। ७-दया।
शूकधानी स्त्री०(सं) कागज नत्थी करने वाली सुइयाँ लगाने की डिब्बी। (पिनकुशन)।
शूकवत् पु० (सं) बिना विष वाला सर्प।
शूकशिम्बी स्त्री० (सं) किवाँच। कौंछ।
शूकर पु० (सं) सूअर। वाराह।
शूकरकन्द पु० (सं) वाराहीकन्द।
शूकरक्षेत्र पु० (सं) वह तीर्थ स्थान जहाँ विष्णु ने वाराह अवतार धारण किया था और जिसका वर्तमान नाम सोरों है।
शूकरी स्त्री० (सं) १-सूअर की मादा। सूअरी। २-सूँस नामक जलजन्तु।
शूकवती स्त्री० (सं) कौंछ। किवाँच।
शूकशिम्बिका स्त्री० (सं) कौंछ। किवाँच।
शूचिवेधन पु० (सं) सुई की सहायता से दवा शरीर में पहुँचाना। (इन्जेक्शन)। सूचीवेधन।
शूची स्त्री० (सं) सुई।
शूचि स्त्री० (सं) पत्तोवरी। शुद्धि।
शूतिकार्ए पु० (सं) समसवास।
शूद्र पु०(सं) १-आर्यों के चार वर्णों में से चौथा तथा अन्तिम वर्ण जिसका कर्म पहले तीनों वर्णों की सेवा करना बताया गया है। २-दास। ३-इस वर्ण का मनुष्य। ४-निकृष्ट। ५-हरिजन। अछूत।
शूद्रक पु०(सं) १-मृच्छकटिक का रचयिता। २-शूद्र।
शूद्रजन्मा वि० (सं) जो शूद्र से उत्पन्न हुआ हो।
शूद्रप्रिय पु० (सं) प्याज।
शूद्रयाजक पु० (सं) शूद्र के लिए यज्ञ कराने वाला पुरोहित।
शूद्रसेवा स्त्री० (सं) शूद्र की नौकरी या सेवा।
शूद्रा स्त्री० (सं) शूद्र जाति की स्त्री। शूद्री।
शूद्राणी स्त्री० (सं) शूद्रा।
शूद्रान्न पु० (सं) शूद्र वर्ण के स्वामी से प्राप्त अन्न
शूद्रावेदी पु० (सं) शूद्रों के अतिरिक्त वह व्यक्ति जिसने शूद्राणी के साथ विवाह कर लिया हो।
शूद्रासुत पु० (सं) शूद्रा माता और द्विज या ब्राह्मण पिता से उत्पन्न सन्तान।
शूद्री स्त्री० (सं) शूद्र की स्त्री। शूद्रा।
शून वि० (हि) दे० 'शून्य'।
शूना स्त्री० (सं) १-गृहस्थ के घर का वह स्थान जहाँ

अनजाने अनेक जीवों की हत्या होती है (चूल्हा, चक्की, झाड, जलपात्र और ऊखली)। २-तालु के ऊपर की छोटी जीभ।

शून्य पुं० (सं) १-वह स्थान जिसके भीतर कुछ भी न हो। (वोयड)। खाली जगह। २-आकाश। ३-बिंदु। ४-एकांत स्थान। ५-ईश्वर। ६-स्वर्ग। ७-अभाव। राहित्य। *वि०* १-खाली। जिसके भीतर कुछ न हो। २-निराकार। ३-असत्। ४-विहीन। रहित।

शून्यगर्भ पुं०(सं) पपीता नामक फल। *वि०* १-जिसमें कुछ भी न हो। २-सार रहित। ३-मूर्ख।

शून्यता स्त्री० (सं) शून्य का भाव या धर्म।

शून्यत्व पुं० (सं) शून्यता।

शून्यदृष्टि स्त्री० (सं) उदास तथा लक्ष्यहीन दृष्टि।

शून्यपथ पुं० (सं) १-निर्जन मार्ग। २-आकाश।

शून्यपदवी स्त्री० (सं) ब्रह्मरंध्र।

शून्यमध्य पुं० (सं) वह वस्तु जिसके बीच का भाग खाली हो।

शून्यमनस्क *वि०* (सं) जिसका किसी कार्य करने में मन न लगता हो।

शून्यवाद पुं० (सं) (बौद्धों का) एक सिद्धांत जिसमें ईश्वर या जीव किसी को कुछ भी नहीं माना जाता २-नास्तिकता।

शून्यवादी पुं० (सं) १-शून्यवाद सिद्धांत को मानने वाला। २-बौद्ध। ३-नास्तिक।

शून्यहृदय *वि०* (सं) जिसके मन में कोई सन्देह न हो

शूप पुं० (हि) शूर्प। सूप। फटकनी।

शूरंमन्य *वि०* (सं) जो स्वयं को शूर न होवे हुए भी शूर मानता हो।

शूर पुं० (सं) १-वीर। बहादुर। २-योद्धा। ३-सूर्य। ४-सिंह। ५-सूअर। ६-चीता। ७-कृष्ण के पितामह का नाम।

शूरण पुं० (स) जमीकन्द। सूरन।

शूरता स्त्री० (सं) शौर्य। वीरता। बहादुरी।

शूरताई स्त्री० (हि) दे० 'शूरता'।

शूरत्व पुं० (सं) शूरता। वीरता।

शूरमानी पुं० (सं) अपनी वीरता पर अभिमान करने वाला। जिसे अपनी वीरता पर पूरा भरोसा हो।

शूरविद्या स्त्री० (सं) युद्ध आदि करने की विद्या।

शूरवीर पुं० (स) सूरमा। अच्छा वीर और योद्धा।

शूरश्लोक पुं० (सं) वीरों के साहसपूर्ण कृत्यों की कहानी।

शूरसेन पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण के पितामह का नाम। २-मथुरा के आसपास के प्रदेश का प्राचीन नाम

शूरसेनप पुं० (सं) कार्त्तिकेय। *वि०* वीरों की सेना का पालन करने वाला।

शूरा पुं० (हि) १-वीर। सूरमा। २-सूर्य।

शूर्प पुं० (सं) १-सूप। २-एक प्राचीन तौल।

शूर्पकर्ण पुं० (सं) १-हाथी। २-गणेश। ३-सूप जैसा कानों वाला।

शूर्पणखा स्त्री० (सं) रावण की बहन का नाम जिसके नाक और कान लक्ष्मण ने काटे थे।

शूल पुं० (सं) १-बरछे की तरह एक प्राचीन अस्त्र। २-लम्बा तथा नुकीला कांटा। ३-वायु के प्रकोप से होने वाली एक प्रकार की वेदना। ४-पीड़ा। ५-सूली, जिसपर पहले अपराधियों को प्राणदंड दिया जाता था। झंडा। पताका। ७-मृत्यु।

शूलधन्वा पुं० (सं) शिव।

शूलधारी पुं० (सं) शिव।

शूलना क्रि० (हि) १-शूल या कांटे के समान गड़ना २-दुःख या पीड़ा देना।

शूलनाशन पुं० (सं) १-हींग। २-सौवर्चल लवण। ३-वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो शूलरोग में दिया जाता है।

शूलनाशी पुं० (सं) हींग।

शूलपाणि पुं०(सं) शिव। महादेव।

शूलहस्त पुं० (सं) शिव। महादेव

शूलहृत पुं० (सं) हींग।

शूलिका स्त्री० (सं) १-कबाब। २-वह सलाख जिसमें मांस खोंसकर भूनते हैं।

शूलिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।

शूली स्त्री०(सं) १-सूली। २-पीड़ा। ३-शूल। पुं०(हि) १-शिव। खरगोश।

शूल्य पुं० (सं) कबाब।

शूल्यपाक पुं० (सं) कबाब।

शूल्यमांस पुं० (सं) कबाब।

शृंखल पुं० (सं) १-कमर में पहनने की जंजीर। २-सांकल। ३-हथकड़ी। बेड़ी। ४-नियम। ५-सिलसिला।

शृंखला स्त्री० (सं) १-क्रम। सिलसिला। २-श्रेणी। ३-जंजीर। सांकल। ४-कटिवस्त्र। ५-कमर में पहनने की तगड़ी। करधनी। ६-एक अलंकार जिस में पहले कहे गए हुए पदार्थों का क्रम से वर्णन होता है (साहित्य)। ७-परम्परा।

शृंखलाबद्ध *वि०* (सं) १-सिलसिलेवार। जो क्रम से हो। २-बँधा हुआ।

शृंखलित *वि०* (सं) १-क्रमबद्ध। सिलसिलेवार। २-पिरोया हुआ। ३-शृंखला से बँधा हुआ।

शृंग पुं० (सं) १-शिखर। २-गाय, भैंस बकरी आदि के सींग। ३-सींग नामक वाद्ययन्त्र। ४-कंगूरा। ५-कमल। ६-अदरक। सोंठ। ७-प्रभुत्व। ८-उत्तेजना। ६-स्तन। छाती। १०-पानी का फौव्वारा। *वि०* तीक्ष्ण। तेज।

शृङ्गग्राहिकान्याय पुं० (सं) एक न्याय जिसका प्रयोग किसी कठिन कार्य का एक भाग हो जाने पर शेष अंश का संपादन इस प्रकार सहज हो जाता है जिस प्रकार सींग मारने वाले बैल का एक सींग पकड़ने पर दूसरा सींग पकड़ना सहज हो जाता है

शृङ्गज पुं० (सं) १-तीर। शर। २-अगर। वि० सींग का बना हुआ।

शृङ्गप्रहारी पुं० (सं) शिव।

शृङ्गमूल पुं० (सं) सिंघाड़ा।

शृङ्गार पुं० (सं) १-सजावट। सजाना। २-साहित्य के नौ रसों में से सबसे अधिक प्रसिद्ध तथा प्रधान रस जिसमें नायक-नायिका के मिलन तथा वियोग के सुखों तथा कष्टों का वर्णन होता है। ३-वह जिसमें किसी वस्तु की शोभा बढ़े। ४-वस्त्राभूषणों से स्त्रियों का स्वयं को सजाना। ५-अदरक। ६-संभोग। ७-लौंग। ८-सेंदूर। ९-चूर्ण। १०-स्वर्ण सोना।

शृङ्गारचेष्टा स्त्री० (सं) कामचेष्टा।

शृङ्गारण पुं० (सं) प्रेम दर्शन। (स्त्री के प्रति) प्रेम जताना।

शृङ्गारभावित पुं०(सं) प्रेमवार्तालाप।

शृङ्गारभूषण पुं० (सं) १-सिंदूर। २- हरताल।

शृङ्गारवेश पुं० (सं) वह सुन्दर वेश जिसे पहन कर प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है।

शृङ्गारिक वि० (सं) शृङ्गार-सम्बन्धी।

शृङ्गारिणी स्त्री० (सं) १-शृङ्गार करने वाली स्त्री। २-एक वर्णवृत्त प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं।

शृङ्गारिया पुं० (हि) वह जो अनेक प्रकार के रूप बनाता है। बहुरूपिया।

शृङ्गारी पुं० (सं) १-सुपारी। २-हाथी। ३-वासिक। ४-कामुक व्यक्ति। ५-शृङ्गार करने वाला व्यक्ति। वि० शृङ्गारिक।

शृङ्गिक पुं० (सं) सिंगिया विष।

शृङ्गी पुं० (सं) १-हाथी। २-वृक्ष। ३-सींग वाला पशु। ४-शिव। ५-एक सींग का बना एक वाद्य-यन्त्र। ६-पर्वत। ७-सींगिया विष। ८-एक ऋषि का नाम जिसके शाप से राजा परीक्षित को साँप ने डसा था। ९-स्वर्ण। ११-शिव। १२-सिंगी नामक मछली।

शृण पुं० (सं) दे० 'शृगाल'।

शृगाल पुं० (सं) १-सियार। गीदड़। २-वासुदेव। ३-एक दैत्य का नाम। वि० १-डरपोक। २-निष्ठुर ३-दुष्ट।

शेख पुं० (अ) १-मुहम्मद साहब के वंशजों की एक उपाधि। २-मुसलमानों के चार वर्गों में से एक पहला तथा श्रेष्ठ वर्ग। ३-आचार्य। पीर। बूढ़ा।

शेखचिल्ली पुं० (अ) १-एक कल्पित महामूर्ख व्यक्ति। २-व्यर्थ बड़े मन्सूबे बाँधने वाला। ३-मूर्ख। बकबकी।

शेखर पुं० (सं) १-सिर। शीर्ष। २-मुकुट। ३-शिखर पर्वत की चोटी। ४-रगण के पांचवें भेद की संज्ञा। (ISI)। ५-संगीत में ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद। वि० (सं) श्रेष्ठ।

शेखसद्दो पुं० (अ) अपढ़ स्त्रियों द्वारा पूजा जाने वाला एक पीर।

शेखी स्त्री० (फा) १-गर्व। घमण्ड। २-शान। अकड़। ३-डींग। बढ़-बढ़कर बातें करना।

शेखीखोर वि० (फा) डींग हांकने वाला।

शेखीबाज वि० (फा) १ घमण्डी। अभिमानी। २-डींग मारने वाला।

शेफालिका स्त्री० (सं) नील सिन्धुवार का पौधा।

शेफाली स्त्री० (सं) दे० 'शेफालिका'।

शेर पुं० (फा) १-बिल्ली की जाति का एक हिंसक पशु। २-बहुत बड़ा वीर तथा साहसी पुरुष।

शेरदरवाजा पुं० (फा) वह बड़ा दरवाजा जिसके दोनों ओर शेर की मूर्तियां हों।

शेरदहाँ वि० (फा) १-शेर के से मुख वाला। २-जिसके छोरों पर शेर का मुख बना हो।

शेरदिल वि० (फा) बहादुर। वीर। निडर।

शेरनुमा वि० (फा) शेर के आकार का।

शेरपंजा पुं० (फा) शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनहाँ।

शेरबच्चा पुं० (फा) १-शेर का बच्चा। २-वीर तथा साहसी पुरुष की सन्तान।

शेरवानी स्त्री० (फा) घुटने तक का एक प्रकार का बंद गले का कोट या अंगा।

शेल पुं० (हि) बरछी। शल्य।

शेवाल पुं० (सं) सेवार। शैवाल।

शेष पुं० (सं) १-बाकी। बची हुई वस्तु। २-(गणित) घटाने से बची हुई संख्या या रकम बाकी। (बैलेंस-रिमेण्डर)। ३-अन्त। समाप्ति। ४-परिणाम। फल ५-वह शब्द जो किसी शब्द का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय। ६-नाश। मरण। ७-एक दिग्गज। ८-हाथी। ९-जमालगोटा। १०-एक छप्पय छन्द ४६ गुरु, ६० लघु कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। वि० (सं) १-अवशिष्ट। बाकी। समाप्त।

शेषकाल पुं० (सं) मृत्यु का समय।

शेषधर पुं० (सं) शिव। महादेव।

शेषर पुं० (हि) दे० 'शेखर'।

शेषरात्रि स्त्री० (सं) रात का अन्तिम प्रहर।

शेषशायी पुं० (सं) विष्णु।

शेषांश पुं० (सं) १-बाकी बचा हुआ अंश। २ अन्तिम अंश।

शेषा स्त्री० (सं) देवता पर चढ़ा [illegible] का प्रसाद।

के रूप में बांटा जाता है।
शेषावस्था स्त्री० (सं) बुढ़ापा।
शेषोक्त वि० (सं) अन्त में कहा हुआ।
शेख पुं० (सं) १-पवित्र ब्राह्मण की सन्तान। पु० (अ) १-मुसलमानों की चार जातियों में से पहली। २-महन्त। ३-धर्मशास्त्र के ज्ञाता। ३-कबीले का सरदार।
शैतान पुं० (अ)१-इस्लाम, ईसाई आदि धर्मों में तमोगुण का प्रधान देवता जो मनुष्यों को ईश्वर के विरुद्ध चलाता है। २-भूत। प्रेत। ३-बहुत बड़ा दुष्ट ४-बहुत नटखट व्यक्ति।
शैतानी स्त्री० (अ) पाजीपन। दुष्टता। वि० १-दुष्टतापूर्ण। शैतान का।
शैत्य पुं० (सं) शीत। ठण्डक।
शैथिल्य पु० (सं) १-शिथिलता। ढिलाई। २-सुस्ती
शैदा वि० (सं) प्रेम से उन्मत्त होने वाला।
शैल पुं० (सं) १-चट्टान। २-पर्वत। पहाड़। ३-शिलाजीत। ४-रसौत। वि० १-शिला सम्बन्धी। २-पथरीला। ३-कठोर। कड़ा।
शैलकन्या स्त्री० (सं) पार्वती।
शैलकुमारी स्त्री० (सं) पार्वती।
शैलकूट पुं० (सं) पर्वत की चोटी।
शैलज पुं० (सं) छरीला।
शैलजा स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-दुर्गा।
शैलजात पुं० (सं) छरीला।
शैलतटी स्त्री० (सं) पहाड़ की तराई।
शैलतनया स्त्री (सं) पार्वती।
शैलधर पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
शैलनंदनी स्त्री० (सं) पार्वती।
शैलनिर्यास पुं० (सं) शिलाजीत।
शैलपति पुं० (सं) हिमालय-पर्वत।
शैलपुत्री स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-गङ्गानदी। ३-दुर्गा
शैलरंध्र पुं० (सं) गुफा।
शैलराज पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
शैलराजसुता स्त्री० (सं) पार्वती। २-गंगा। ३-दुर्गा
शैलबीज पु० (सं) भिलावां।
शैलसुता स्त्री० (सं) पार्वती।
शैलाधिप पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
शैलाधिराज पुं० (सं) शैलाधिप।
शैली स्त्री० (सं) १-चाल। ढब। ढंग। २-प्रणाली। तर्ज। ३-रीति। प्रथा। ४-वाक्यरचना का वह ढंग जो लेखक की भाषा सम्बन्धी निजी विशेषताओं का सूचक होता है। (स्टाइल)। ५-साहित्य।
शैलीकार पुं० (सं) किसी विशिष्ट शैली का निर्माण करने वाला लेखक।
शैलूष पु० (सं) १-नाटक अथवा अभिनय करने वाला। २-धूर्त। चालाक।
शैलेंद्र पुं० (सं) हिमालय।
शैलेंद्रसुता स्त्री० (सं) पार्वती।
शैलेय वि० (सं) १-पथरीला। २-पहाड़ी। ३-पत्थर से उत्पन्न। पुं० १-शिलाजीत। २-सेंधा नमक। ३-भ्रमर।
शैल्य वि० (सं) १-पथरीला। पत्थर का। २-कड़ा। कठोर।
शैव वि० (सं) शिव का। शिव सम्बन्धी। पुं० १-शिव का उपासक। २-शिव के उपासकों का एक संप्रदाय। ३-धतूरा। ४-वासुदेव।
शैवल पुं० (सं) १-पद्मकाष्ठ। २-सेवार। ३-एक पर्वत।
शैवलिनी स्त्री० (सं) नदी।
शैवाल पुं० (सं) सेवार।
शैशव वि० (सं) १-शिशु सम्बन्धी। २-बाल्यावस्था का। पुं० १-बचपन। (चाइल्डहुड)। २-बच्चों का सा व्यवहार। लड़कपन।
शैशिर वि०(सं) १-शिशिर सम्बन्धी। २-शिशिर ऋतु में होने वाला। पुं० १-एक ऋषि। २-काले रंग का पपीहा।
शोक पुं०(सं) प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या वियोग से या दुःखदायी घटना के कारण मन में होने वाला उत्कट कष्ट।
शोककारक वि० (सं) शोक उत्पन्न करने वाला।
शोकनाशन वि० (सं) शोक दूर करने वाला।
शोकपरायण वि० (सं) शोकग्रस्त।
शोकविह्वल वि० (सं) दे० 'शोकाकुल'।
शोकसंतप्त वि० (सं) शोक या चिन्ता से जला हुआ
शोकसूचक वि० (सं) शोक की सूचना देने वाला।
शोकहर वि० (सं) शोक दूर करने वाला।
शोकाकुल वि० (सं) शोक से व्याकुल।
शोकातुर वि० (सं) शोक से घबराया हुआ।
शोकाभिभूति वि० (सं) शोकातुर।
शोकार्त वि० (सं) शोक से व्याकुल।
शोकाविष्ट वि० (सं) शोक से पीड़ित।
शोकावेग पुं० (सं) बारम्बार शोक की अनुभूति का होना।
शोकोपहत वि० (सं) शोक से विकल।
शोख स्त्री० (फा) १-धृष्ट। पाजी। ढीठ। २-चपल। चंचल। ३-नटखट। ४-गहरा तथा चमकदार।
शोखी स्त्री० (फा) १-धृष्टता। ढिठाई। २-चंचलता। ३-चुलबुलापन। ४-चटकीलापन।
शोच पुं० (सं) १-दुःख। अफसोस। २-चिन्ता खटका।
शोचनीय वि० (सं) १-जिसकी दशा देखकर चिन्ता हो। २-बहुत हीन तथा बुरा।
शोच्य वि० (सं) १-विचार करने योग्य। २-शोच-

नीग।
शोण पु० (सं) १-लाल रंग। भरुणता। लाली। २-अग्नि। ३-रक्त। ४-सोन नामक नदी। ५-लाल घन्ना।
शोणपद्म पुं० (सं) लाल कमल।
शोणभद्र पु० (सं) सोन नदी।
शोणरत्न पु० (सं) मानिक। लाल।
शोणित वि० (सं) लाल। सुर्ख। पु० १-रक्त। लहू। २-वीर्यों का रस। ३-केसर। ४-तांबा।
शोणितचन्दन पुं० (सं) लालचन्दन।
शोणितोपल पुं० (सं) मानिक। लाल।
शोणिमा स्त्री० (सं) लालिमा। लाली।
शोथ पुं० (सं) १-सूजन। वरम। २-अंग सूज जाने का एक रोग।
शोथघ्नी पु० (सं) १-गदहपूरना। २-शालपर्णी।
शोथारि पुं० (सं) गदहपूरना।
शोध पुं० (सं) १-शुद्ध करने वाला संस्कार। २-दुरुस्ती। ३-(ऋण का) चुकता या अदा करना। ४-परीक्षा। जांच। ५-खोज। तलाश।
शोधक पुं० (सं) १-सुधार करने वाला। २-शोधने वाला। ३-खोजने वाला।
शोधन पुं० (सं) १-शुद्ध करना। (प्योरिफाइंग)। २-ठीक करना। सुधारना। ३-छानबीन। जांच। ४-ऋण चुकाना (पेमेन्ट)। ५-प्रायश्चित। ६-चाल सुधारने के निमित्त दण्ड। ७-साफ करना। विरेचन। ८-मल। ९-नींबू। १०-गणित में घटाने की क्रिया।
शोधना क्रि० (हि) १-शुद्ध या साफ करना। २-सुधारना। ३-औषध के लिए धातु का संस्कार करना। ४-खोजना। ढूंढना।
शोधनी स्त्री० (सं) १-झाड़ू। २-नील। ३-एक औषध ४-ताम्रवल्ली।
शोधनीय वि० (सं) शुद्ध करने योग्य। २-चुकाने योग्य ढूंढने योग्य।
शोधवाना क्रि० (हि) १-शोधने का काम कराना। २-तलाश कराना।
शोधाई स्त्री० (हि) शोधने की मजदूरी।
शोधित वि० (सं) १-शुद्ध किया हुआ। २-जिसका शोध हुआ हो।
शोधैया वि० (हि) शोधने वाला।
शोध्य वि० (सं) शुद्ध करने योग्य।
शोध्यपत्र पुं० (सं) छापे जाने वाली वस्तु का नमूना जो छापने से पहले अशुद्धियां ठीक करने के लिये तैयार किया जाता है। (प्रूफ)।
शोबदा पुं० (अ) १-हाथ की सफाई का काम। २-इन्द्रजाल का काम। ३-छल। धोखा। ४-जादू।
शोबा पुं० (अ) १-विभाग। शाखा। २-टुकड़ा।

शोभ वि० (सं) सजीला। सुन्दर। स्त्री० (हि) शोभा। चमक। दीप्ति।
शोभन वि० (सं) १-सजीला। सुन्दर। २-रमणीय। श्रेष्ठ। उत्तम। ४-उपयुक्त। मंगलदायक। पुं० १-ग्रह २-अग्नि। ३-शिव। ४-बृहस्पति का ग्यारहवां संवत्सर। ५-कमल। ६-राग। ७-आभूषण। ८-धर्म। पुण्य। ९-एक अलंकार।
शोभना स्त्री०(सं) १-हल्दी। २-सुन्दर स्त्री। ३-स्कन्द की अनुचरी एक मातृका। क्रि०(हि)सोहना। शोभा देना।
शोभांजन पु०(सं) सहिजन का पेड़।
शोभा स्त्री०(सं)१-कांति। चमक। २-सजावट। ३-वर्ण रंग। छवि। सुन्दरता। ५-एक वर्णवृत्त। ६-हल्दी का घन।
शोभाकर वि० (सं) शोभा करने वाला।
शोभायुत वि० (सं) सुन्दर। रमणीय।
शोभान्वित [illegible]

[illegible]

शोभिनी स्त्री० (सं) सुन्दर स्त्री।
शोभी वि० (सं) शोभा देने वाला। चमकने वाला।
शोर पु०(फा)१-जोर की आवाज। कोलाहल। २-धूम प्रसिद्धि।
शोरगुल पु० (फा) हल्लागुल्ला।
शोरबा पुं०(फा) उबली हुई तरकारी या मांस का रस जूस। रसा।
शोरा पु० (फा) मिट्टी से निकलने वाला एक प्रसिद्ध क्षार।
शोरिश स्त्री० (फा) १-खलबली। हलचल। २-बलवा बगावत।
शोला पुं०(देश) एक छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी हल्की होती है। पु० (अ) आग की लपट। ज्वाला।
शोशा पु० (फा) १-चुटकुला। २-निकली हुई नोक ३-व्यंग्य। ४-झगड़ा खड़ा करने वाली बात।
शोष पु० (सं) १-सूखने या खुश्क होने का भाव। २-क्षय। छीजने का भाव। ३-शरीर का क्षीण होना। ४ एक प्रकार का राजयक्ष्मा रोग। ५-सूखापन। खुश्की। ६-बच्चों का सूखा नामक रोग।
शोषक पु० (सं) १-सुखाने वाला। २-सोखने वाला ३-क्षीण करने वाला। ४-दूसरों का धन हरण वाला। (एक्सप्लॉयटर)।
शोषण पुं० (सं) १-सोखना। २-सुखाना। ३-

करना। ४-अधीनस्थ या दुर्बल के परिश्रम आय आदि से अनुचित लाभ उठाना। (एक्सप्लायटेशन) ५-सोंठ। ६-कामदेव का एक बाण। ७-सोनपाठा
शोषणीय वि० (सं) शोषण करने योग्य।
शोषयिता वि० (सं) शोषण करने वाला।
शोषित वि० (सं) १-जिसका शोषण किया गया हो २-जो सोखा गया हो।
शोषी वि० (सं) शोषक।
शोहदा पुं० (प) १-बदमाश। गुण्डा। २-लम्पट। व्यभिचारी। ३-बहुत बनाव-सिंगार करने वाला।
शोहदापन पुं० (हि) १-गुण्डापन। २-छैलापन।
शोहरत स्त्री० (प) प्रसिद्धि। ख्याति। धूम।
शोहरा पुं० (प) दे० 'शोहरत'।
शौंड पुं० (सं) १-मुर्गा। २-मत्त। मदिरा में मस्त। ३-देववाण्य।
शौंडिक पुं० (सं) कलवार। मदिरा बेचने या बनाने वाली जाति।
शौंडिकी स्त्री० (सं) शौंडिक जाति की स्त्री।
शौंडिनी स्त्री० (सं) दे० 'शौंडिकी'।
शौंडी पुं० (सं) मदिरा बेचने वाला।
शौआल, शौवाल पुं० (प) मुसलमानों के साल का दसवां चांद का महीना जिसकी पहली तिथि को ईद मनाई जाती है।
शौक पुं० (प) १-व्यसन। चस्क। २-किसी वस्तु की प्राप्ति या सुख के भोग की लालसा। ३-झुकाव। प्रवृत्ति।
शौकत स्त्री० (प) शान। प्रताप। गौरव।
शौकिया अव्य० (प) शौक पूरा करने के लिये। वि० शौक से भरा हुआ।
शौकीन पुं० (प) १-वह जिसे किसी बात का शौक हो। २-छैला। सदा बनाठना रहने वाला।
शौकीनी स्त्री० (प) १-तमाशबीनी। २-ऐयाशी।
शौकीया अव्य० (प) दे० 'शौकिया'।
शौक्तिक वि० (सं) मोती सम्बन्धी। पुं० मोती। मुक्ता
शौक्तिकेय पुं० (सं) मुक्ता। मोती।
शौक वि० (सं) शुक का। शुक्र सम्बन्धी।
शौक्ल्य पुं० (सं) उज्ज्वलता। श्वेतता। सफेदी।
शौच पुं० (सं) १-शुद्धता। पवित्रता। २-सब प्रकार से पवित्र जीवन बिताना। ३-मलत्याग, कुल्ला-दातुन आदि कृत्य जो सवेरे उठकर पहले किया जाता है। ४-पखाने या टट्टी जाना।
शौचकर्म पुं० (सं) शास्त्रानुसार शुद्धि की क्रिया।
शौचकूप पुं० (सं) संडास।
शौचगृह पुं० (सं) पखाना। पखाने की कोठरी आदि
शौचागार पुं० (सं) दे० 'शौचगृह'।
शौचाचार पुं० (सं) दे० 'शौचकर्म'।
शौचालय पुं० (सं) वह स्थान या कमरा जहां लघु-शङ्का आदि की व्यवस्था हो। (लैवेटरी)।
शौद्धोदनि पुं० (सं) बुद्धदेव।
शौध वि० (हि) पवित्र। निर्मल। स्त्री० (सं) सुधि।
शौनिक पुं० (सं) १-कसाई। मांसविक्रेता। २-शिकार मृगया।
शौरसेन पुं० (सं) आजकल के व्रजमण्डल का प्राचीन नाम। वि० शूरसेन-सम्बन्धी।
शौरसेनी स्त्री० (सं) शौरसेन प्रदेश की प्रसिद्ध प्राची अपभ्रंश भाषा जो नागर भी कहलाती थी।
शौर्य पुं० (सं) १-शूरता। वीरता। पराक्रम। २-शू का धर्म। ३-नाटक में आरभटी नामक वृत्ति।
शौल्किक वि० (सं) शुल्क सम्बन्धी। पुं० चुंगी विभाग का दरोगा। शुल्काध्यक्ष।
शौहर पुं० (प) स्त्री का पति। खाविंद।
श्मशान पुं० (सं) वह स्थान जहां मुर्दे जलाए जाते हैं। मरघट। मसान।
श्मशाननिवासी पुं० (सं) १-शिव। २-भूत। प्रेत।
श्मशानपति पुं० (सं) शिव। महादेव।
श्मशानपाल पुं० (सं) चांडाल।
श्मशानवैराग्य पुं० (सं) वह अस्थायी वैराग्य जो श्मशान में जाने पर होता है।
श्मशानसाधन पुं० (सं) आधी रात को मुर्दे की छाती पर बैठकर मन्त्र सिद्ध करना। (तांत्रिक)।
श्मश्रु पुं० (सं) मूँछ। दाढ़ी।
श्मश्रुकर पुं० (सं) नापित। नाई।
श्मश्रुमुखी स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके दाढ़ी मूँछें हों।
श्मश्रुल वि० (सं) दाढ़ी-मूँछों वाला।
श्याम पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-प्रयाग के अक्षयवट का नाम। ३-एक राग जो संध्या के समय गाया जाता है। ४-धतूरा। ५-सेंधा नमक। ६-बादल। ७-काली मिर्च। ८-कोयला। ९-श्याम नामक देश वि० १-सांवला। २-काला और नीला मिला हुआ (रंग)।
श्यामकण्ठ पुं० (सं) १-मोर। मयूर। २-शिव। ३-नीलकण्ठ पक्षी।
श्यामकर्ण पुं० (सं) काले कान वाला सफेद घोड़ा।
श्यामकांडा स्त्री० (सं) गाँडरदूब।
श्यामचटक पुं० (सं) श्याम नाम का पक्षी।
श्यामचूड़ा स्त्री० (सं) दे० 'श्यामचटक'।
श्यामटीका पुं० (हि) वह काला टीका जो बच्चों को नजर लगने से बचाने के लिए लगाया जाता है। डिठौना।
श्यामता स्त्री० (सं) १-कालापन। कृष्णता। सांवलापन। २-उदासी। मलिनता।
श्यामल वि० (सं) १-काले रंग का। काला। २-कुछ-कुछ काला। सांवला।
श्यामलता स्त्री० (सं) १-सांवलापन। २-कालापन।

श्रमिक-क्षतिपूर्ति-अधिनियम पुं०(सं) काम करते समय श्रमिकों को चोट आदि लगाने पर उनकी हानि पूरी करने के लिए व्यवसायिक संस्थाओं या मालिकों से हरजाना दिलवाने वाला अधिनियम। (वर्कमेंस कम्पन्सेशन एक्ट)।
श्रमिकदिन पुं० (हि) एक दिन में एक श्रमिक द्वारा किए हुए काम को इकाई मानकर तथा हड़ताल आदि के दिनों का हिसाब लगाकर प्राप्त की हुई दिनों की संख्या (मैन-डेज)।
श्रमित वि० (सं) थका हुआ। क्लांत।
श्रमी पुं० (हि) १-मेहनती। २-श्रमजीवी।
श्रवण पुं० (सं) १-शब्द का ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय। कान। कर्ण। २-सुनना। ३-धार्मिक कथाओं तथा वेदों का सुनना। ४-बीसवां नक्षत्र ५-टपकना। रसना। बहना।
श्रवणगोचर वि० (सं) जो सुनाई पड़ सके।
श्रवणपथ पुं० (सं) कान।
श्रवणपालि स्त्री० (सं) कान की नोक या ललरी।
श्रवणप्रत्यक्ष वि० (सं) दे० 'श्रवणगोचर'।
श्रवणविद्या स्त्री० (सं) वह विद्या जो श्रवणेन्द्रिय के सम्पर्क से मानसिक तृप्ति प्रदान करती है।
श्रवणविवर पुं० (सं) कान का छिद्र।
श्रवणविषय पुं० (सं) श्रवणगोचर विषय या वस्तु।
श्रवणीय वि० (सं) सुनने लायक।
श्रवणेन्द्रिय पुं० (सं) १-कान। २-सुनने की शक्ति
श्रवन पुं० (हि) कान।
श्रवना क्रि० (हि) १-बहना। चूना। टपकना। २-रसना। ३-गिरना।
श्रवित वि० (सं) बहा हुआ।
श्रव्य वि० (सं) १-जो सुना जा सके। २-सुनने योग्य
श्रव्यकाव्य पुं० (सं) वह काव्य जो केवल सुना जा सके पर जिसका अभिनय न हो सकता हो।
श्रांत वि० (सं) १-शांत। २-थका हुआ। ३-निवृत्त ४-जो सुख भोग कर तृप्त हो चुका हो। ५-दुःखी। ६-शांत।
श्रांति स्त्री० (सं) १-थकावट। २-खेद। दुख। ३-विश्राम। ४-परिश्रम।
श्राद्ध पुं० (सं) १-वह धार्मिक कृत्य जो पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। २-पितृ-पक्ष। ३-श्रद्धा-पूर्वक किया जाने वाला काम।
श्राद्धकर्ता पुं० (सं) वह जो श्राद्ध करता हो।
श्राद्धकर्म पुं० (सं) दे० 'श्राद्धक्रिया'।
श्राद्धक्रिया स्त्री० (सं) श्राद्ध के सम्बन्ध में होने वाले धार्मिक कृत्य।
श्राद्धदिन पुं० (सं) वह तिथि जिस दिन मृत व्यक्ति के लिए वर्ष में एक बार श्राद्ध कर्म किया जाता है
श्राद्धपक्ष पुं० (सं) पितृ-पक्ष।
श्राद्धिक वि०(सं) श्राद्ध सम्बन्धी। पुं० श्राद्ध में पितरों के उद्देश्य से भोजन करने वाला।
श्राप पुं० (हि) दे० 'शाप'।
श्रावक पुं० (सं) १-जैनी। जैनधर्म का अनुयायी। २-बौद्ध भिक्षुक। ३-शिष्य। ४-नास्तिक। ५-दूर का शब्द।
श्रावण पुं०(सं) १-आषाढ़ के बाद आने वाला मास २-सुनने की क्रिया या भाव। ३-शब्द। ४-पाखंड वि० १-श्रवणनक्षत्र-सम्बन्धी। २-श्रवण या कानों से सुनने से सम्बन्ध रखने वाला। (ऑडिटरी)।
श्रावणी स्त्री० (सं) १-सावन के महीने की पूर्णिमा रक्षाबंधन का दिन। २-घुण्डी। ३-एक अष्टवर्गीय औषधि।
श्रावस्ती स्त्री० (सं) एक प्राचीन नगरी का नाम जो कोशल में गंगातट पर बसी हुई थी।
श्रावा स्त्री० (सं) पीब। माड़।
श्रावित वि० (सं) १-सुना हुआ। २-वह लेख या दस्तावेज जिसे सुनकर लिखने वाले ने उस पर अपनी स्वीकृति को सूचित करने के लिए हस्ताक्षर कर दिया हो। (अटेस्टेड)।
श्राव्य वि० (सं) सुनने योग्य।
श्री स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। कमला। २-सरस्वती। ३-धन। ४-चमक। ५-चन्दन। ६-शोभा। ७-विभूति ८-उपकरण। ९-वृद्धि। १०-अधिकार। ११-लौंग १२-एक आदरसूचक शब्द जो लिखने में पुरुषों के नाम से पहले लगाया जाता है। १३-धर्म, काम तथा अर्थ। पुं० १-कुबेर। २-ब्रह्मा। ३-विष्णु। ४-एक राग। ५-एक वर्णवृत्त। वि० १-योग्य। २-श्रेष्ठ। ३-शुभ। ४-सुन्दर।
श्रीकंठ पुं० (सं) शिव। महादेव।
श्रीकर पुं० (सं) १-लाल कमल। २-एक उपनिषद्। ३-विष्णु। वि० सौंदर्य बढ़ाने वाला।
श्रीकांत पुं० (सं) विष्णु।
श्रीकारी पुं०(सं) एक मृग विशेष। कुरङ्ग।
श्रीक्षेत्र पुं० (सं) जगन्नाथपुरी तथा उसके आस-पास के प्रदेश का नाम।
श्रीखंड पुं० (सं) १-शिखरण। २-मलयगिरि का चन्दन।
श्रीगणेश पुं० (सं) शुरूआत। आरम्भ।
श्रीदामा पुं० (सं) १-सुदामा। २-श्रीकृष्ण के सखे का नाम।
श्रीधाम पुं० (सं) १-वैकुण्ठ। २-पद्म।
श्रीनंदन पुं० (सं) कामदेव।
श्रीनाथ पुं० (सं) विष्णु।
श्रीनिकेत पुं० (सं) १-लाल कमल। २-स्वर्ग। ३-स्वर्ण। ४-गन्धाविरोजा।
श्रीनिकेतन पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-विष्णु।

श्रीनिवास पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-विष्णु।

श्रीपञ्चमी स्त्री० (सं) माघ शुक्ला पञ्चमी। वसन्त-पञ्चमी।

श्रीपति पुं०(सं) १-रामचन्द्र। २-कुबेर। ३-श्रीकृष्ण ४-विष्णु। ५-राजा।

श्रीफल पुं० (सं) १-नारियल। २-बेल। ३-आँवला ४-धन। ५-चिकनी सुपारी।

श्रीभ्राता पुं० (सं) चन्द्र, अश्व आदि चौदह रत्न जो समुद्र से उत्पन्न होने के कारण लक्ष्मी के भाई माने जाते हैं।

श्रीमंत पुं० (सं) १-स्त्रियों के सिर की मांग। २-एक शिरोभूषण। ३-किसी फर्म के नाम से पहले लिखा जाने वाला शब्द। (मेसर्स)। वि० १-श्रीमान्। २-धनवान।

श्रीमती स्त्री० (सं) १-स्त्रियों के नाम से पहले प्रयुक्त होने वाला एक सम्मानसूचक शब्द। २-श्रीमान् का स्त्रीलिंग। ३-पत्नी का वाचक शब्द (मिसेज) ४-लक्ष्मी। ५-राधा।

श्रीमान् पुं० (सं) १-धनवान। २-पुरुषों के नाम से पहले प्रयुक्त होने वाला एक आदरसूचक शब्द। श्रीयुत्। (मिस्टर)। २-विष्णु। ३-कुबेर। ४-शिव

श्रीमुख पुं० (सं) १-वेद। २-सुन्दर मुख। ३-सूर्य। ४-साठ संवत्सरों में से एक।

श्रीमूर्ति स्त्री० (सं) विष्णु की मूर्ति।

श्रीयुक्त वि०(सं) १-जिसमें शोभा हो। २-दे० 'श्रीयुत'

[illegible]

श्रीरत्न पुं०([illegible]

श्रीराग पुं० [illegible]

श्रीराम पुं० ([illegible]
माने गये हैं।

श्रील वि० (सं) १-जिसमें शोभा हो। २-जिसमें अश्लीलता न हो।

श्रीवत वि० (सं) सम्पत्तिशाली। ऐश्वर्यवान्।

श्रीवत्स पुं० (सं) १-विष्णु। २-जैनमत के अनुसार अर्हतों का एक चिह्न।

श्रीवर पुं० (सं) विष्णु।

श्रीवल्लभ पुं० (सं) १-धनवान् व्यक्ति। २-विष्णु।

श्रीश पुं० (सं) विष्णु।

श्रीसहोदर पुं० (सं) चन्द्रमा।

श्रीहत वि० (सं) १-निस्तेज। २-शोभाहीन।

श्रीहरि पुं० (सं) विष्णु।

श्रुत वि० (सं) १-सुना हुआ। २-प्रसिद्ध। ३-जो परम्परा से सुनते आये हों।

श्रुतकीर्ति स्त्री० (सं) राजा जनक के भाई की कन्या का नाम जिसका विवाह शत्रुघ्न के साथ हुआ था

श्रुतशील वि० (सं) सदाचारी तथा विद्वान। पुं० विद्या और सदाचार।

श्रुताध्ययन पुं० (सं) शास्त्रों या वेदों का अध्ययन।

श्रुतानुश्रुत पुं०(सं) १-सुनी-सुनाई बात। २-कहावत (हियर-से)।

श्रुतानुश्रुत-साक्ष्य पुं० (सं) वह साक्ष्य जो बहुत लोगों से सुनी हुई बात पर आधारित हो। (हीयर से एवीडेन्स)।

श्रुति स्त्री० (सं) १-सुनना। २-सुनने की इन्द्रिय। कान। ३-सृष्टि के आरंभ से चला आया पवित्र ज्ञान। ४-संगीत का एक सप्तक। ५-विद्या। ६-विद्वता। ७-चार की संख्या। ८-श्रवणनक्षत्र।

श्रुतिकटु पुं० (सं) कर्कश वर्णों के प्रयोग से होने वाला काव्य रचना का एक दोष।

श्रुतिकीर्ति स्त्री० (सं) दे० 'श्रुतकीर्ति'।

श्रुतिगम्य वि० (सं) दे० 'श्रुतिगोचर'।

श्रुतिगोचर वि० (सं) १-जो सुना हुआ हो। २-जो सुना जा सके।

श्रुतिपथ पुं० (सं) १-कान। २-वेदविहित मार्ग।

श्रुतिप्रमाण पुं० (सं) वेदों द्वारा प्रमाणित।

श्रुतिभाल पुं० (सं) चार सिर वाले ब्रह्मा।

श्रुतिमंडल पुं० (सं) कान के बाहर की ओर घेरा।

श्रुतिमधुर वि० (सं) जो सुनने में मधुर हो।

श्रुतिमुख पुं० (सं) ब्रह्मा। वि० जिसका मुख वेद हो

श्रुतिमूल पुं० (सं) १-वेदसंहिता। २-कान की जड़।

श्रुतिरंजक वि० (सं) कान को मधुर लगने वाला।

[illegible]

शब्द।

श्रुतिवेध पुं० (सं) कर्णवेध संस्कार।

श्रुतिसुख वि० (सं) जो सुनने में मधुर हो। (संगीत आदि)।

श्रुतिसुखकर वि० (सं) दे० 'श्रुतिसुखद'।

श्रुतिसुखद वि० (सं) जो कानों को मधुर लगे।

श्रुतिस्मृति स्त्री० (सं) वेद या धर्मशास्त्र।

श्रुतिहर वि० (सं) दे० 'श्रुतिहारी'।

श्रुतिहारी वि० (सं) कानों को मधुर लगने वाला।

श्रुत्य वि० (सं) १-प्रसिद्ध। २-प्रशस्त। ३-सुना जाने योग्य।

श्रुत्यनुप्रास पुं० (सं) अनुप्रास अलङ्कार के पांच भेदों में से एक जिसमें एक ही स्थान से बोले जाने वाले शब्द दो या दो से अधिक बार आते हैं।

श्रुवा दे० स्त्री० (सं) 'स्रुवा'।

श्रूयमाण वि० (सं) जो प्रायः सुना जाता रहा हो।

का नाम।
षंडक पुं० (सं) नपुंसक।
षंडत्व पुं० (सं) हीजड़ापन। नामर्दी। नपुंसकता। (इम्पोटेन्सी)।
षंड् पुं० (सं) दे० 'षंड'।
षंढा स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसकी चेष्टा पुरुषों जैसी हो
षट् वि० (सं) छः (गिनती में) पुं० १-छः की संख्या)२-षाडव जाति का एक राग।
षट्क पुं० (सं) १-छः की संख्या। २-छः वस्तुओं का समुदाय।
षट्कर्म पुं० (सं) वे छः कर्म जो ब्राह्मण को जीविका चलाने के विहित बताए गए हैं- दान देना लेना, भिक्षा, व्यापार, खेती, उंछ। २-ब्राह्मण के छः काम- पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना। ३-झंझट। ४-झगड़ा।
षट्कोण वि० (सं) छः कोने या कोण वाला। पुं० १-इन्द्र। २-छः पहलू की कोई आकृति।
षट्चक्र पुं० (सं) १-षडयन्त्र। २-हठयोग में माने हुए कुण्डलिनी के ऊपर के छः चक्र।
षट्तिला स्त्री०(सं) माघ मास के कृष्णपक्ष की एकादशी
षट्पद वि० (सं) छः पैर वाला। पुं० १-भ्रमर। भौंरा। किलनी।
षट्पदी स्त्री० (सं) १-भ्रमरी। भौंरी। २-छप्पय छंद वि० छः पैर वाली।
षट्रस पुं० (हि) दे० 'षड्रस'।
षट्राग पुं० (सं) १-संगीत के छः प्रधान राग-भैरव मलार, हिंडोल, मालकोश, मल्हार तथा दीपक। २-बखेड़ा। झंझट।
षट्रिपु पुं० (सं) दे० 'षड्रिपु'।
षट्शास्त्र पुं० (सं) हिन्दुओं के छः दर्शन—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा तथा वेदांत।
षडंग पुं० (सं) १-वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। २—शरीर के छः अंग-दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़। वि० छः अंग वाला।
षडंघ्रि पुं० (सं) भौंरा। भ्रमर।
षडग्नि स्त्री० (सं) कर्मकाण्ड में बताई हुई छः प्रकार की अग्नियां—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य तथा औपसन्याग्नि।
षडानन पुं० (सं) १-संगीत में स्वरसाधन की एक प्रणाली। २-कार्तिकेय। वि० छः मुख वाला।
षड् वि० (सं) छः। षष्।
षड्ऋतु स्त्री०(सं) छः ऋतुएँ।
षड्ग पुं०(सं) दे० 'षड्ज'।
षड्गुण पुं० (सं) वह जिसमें छः गुण हों (ऐश्वर्य, ज्ञान, यश, श्री, वैराग्य तथा धर्म)।
षट्दर्शन पुं० (सं) दे० 'षट्शास्त्र'।
षड्दर्शनी पुं० (हि) छः दर्शनों को जानने वाला।
षड्धा अव्य० (सं) छः तरह से।
षड्यंत्र पुं० (सं) १-किसी के विरुद्ध गुप्त रूप से की जाने वाली कार्रवाई। भीतरी चाल। (कॉन्स्पिरेसी)। २-कपटपूर्ण आयोजन।
षड्योग पुं० (सं) योगाभ्यासकरने के छः तरीके।
षड्योनि पुं० (सं) शिलाजीत।
षड्रस पुं०(सं) छः प्रकार के रस-मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय तथा अम्ल।
षड्राग पुं० (सं) दे० 'षट्राग'।
षड्रिपु पुं० (सं) काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह तथा अहंकार मनुष्य के ये छः विकार।
षड्रेखा स्त्री० (सं) खरबूजा।
षड्लवण पुं०(सं) छः प्रकार के नमक-सेंधा, सामु आदि।
षड्वक्त्र पुं० (सं) कार्तिकेय।
षड्वदन पुं० (सं) कार्तिकेय।
षड्वर्ग पुं० (सं) छः वस्तुओं का समुदाय।
षड्विकार पुं० (सं) प्राणी के छः परिणाम या विकार उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालपन, प्रौढ़ता, वृद्धता तथा मृत्यु।
षड्विध वि० (सं) छः प्रकार का।
षण वि०(सं) छः। षष्।
षण्मास पुं० (सं) छः महीने।
षण्मासिक वि० (सं) छमाही। अर्धवार्षिक।
षण्मास्य पुं० (सं) छः महीने का समय।
षण्मुख वि० (सं) छः मुख वाला। पुं० कार्तिकेय।
षष्टि वि० (सं) साठ। स्त्री० साठ की संख्या। ६०।
षष्ट्यंशक पुं० (सं) एक प्रकार का यन्त्र जिसकी सहायता से नक्षत्रों को देख कर यह स्थिर किया जाता है कि जहाज की क्या स्थिति है।
षष्ठ वि० (सं) छठ।
षष्ठांश पुं० (सं) १-छठा भाग। २-अन्न का व छठवाँ भाग जो कर के रूप में दिया जाता है।
षष्ठी स्त्री० (सं) १-चन्द्रमास के किसी पक्ष की छठ तिथि। २-दुर्गा। ३-सम्बन्ध-कारक (व्याकरण) ४-छठी। बालक के जन्म से छठा दिन या उ दिन का उत्सव।
षष्ठीतत्पुरुष पुं० (सं) तत्पुरुष समास का एक भेद
षष्ठीप्रिय पुं० (सं) कार्तिकेय।
षाड्गुण्य पुं०(सं) १-दे० 'षड्गुण'। २-वह गुणन फल जो किसी संख्या को छः से गुणा करने प प्राप्त हुआ हो।
षाण्मातुर पुं० (सं) १-कार्तिकेय। २-वह जिसकी छः माताएँ हैं।
षाण्मासिक वि० (स) १-छःमाही। २-छःमास का। पुं० मृत्यु के छः मास बाद होने वाला श्राद्ध।

षोडंत वि० (सं) छः दांत वाला ।
षोडन पुं० (सं) छः दांत का बैल जो जवान माना जाता है । वि० छः दांत वाला ।
षोडश वि०(सं) सोलह । पुं० सोलह की संख्या '१६'
षोडशकला स्त्री० (सं) चन्द्रमा की सोलह कला ।
षोडशगण पुं० (सं) पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय, पांच भूत तथा मन इन सबका समुदाय ।
षोडश-दान पुं० (सं) सोलह प्रकार के दान-भूमि, आसन, पानी, कपड़ा, दीपक, अन्न, पान, छत्र, सुगन्धि, फूलमाला, फल, सेज, पादुका, खड़ाऊँ, सोना तथा चांदी ।
षोडशपूजन पुं० (सं) दे० 'षोडशोपचार' ।
षोडशमातृका पुं०(सं) सोलह देवियां—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातरः तथा आत्मदेवता ।
षोडशविध वि० (सं) सोलह प्रकार का ।
षोडश-शृङ्गार पुं० (सं) पूर्ण शृङ्गार जो सोलह प्रकार का कहा गया है ।
षोडश-संस्कार पुं० (सं) गर्भाधान से मृत कर्म के सोलह वैदिक संस्कार ।
षोडशावर्त पुं० (सं) शङ्ख ।
षोडशी वि० (सं) १-सोलहवीं । २-सोलह वर्ष की (युवती) । स्त्री०१-

प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य तप, मन्त्र, कर्म और नाम । ४-हिन्दुओं में मृतक सम्बन्धी वह कर्म जो मृत्यु के दसवें दिन या ग्यारहवें दिन होता है ।
षोडशोपचार पुं०(सं) पूजन के सोलह अंग—आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा तथा वंदना ।
ष्ठीवन पुं० (सं) थूकना ।
ष्ठीवित वि० (सं) जो थूका गया हो ।
ष्ठेवन पुं० (सं) १-थूक । २-थूकने की क्रिया ।
ष्ठ्यूत वि० (सं) थूका हुआ ।

[शब्दसंख्या—४१८७६]

स

स देवनागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यञ्जन

संइतना क्रि० (हि) १ बटोरना । बीनना । २-सहेजना ३-सञ्चय करना ।
संउपना क्रि० (हि) दे० 'सौंपना' ।
संक स्त्री० (हि) शङ्का । डर ।
संकट पुं० (सं) १-विपत्ति । आफत । (डेन्जर) । २-कष्ट । पीड़ा । ३-दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता ४-दर्रा । ५-जल अथवा थल के दो बड़े भागों को बीच से जोड़ने वाला तंग रास्ता । वि० १-तंग । सङ्कीर्ण । २-भयानक । ३-दुःखदायी ।
संकटनाशन वि० (सं) विपत्ति को हटाने वाला ।
संकटनिवारण पुं० (सं) किसी भय या विपत्ति को को रोकना । (प्रिवेन्शन ऑफ डैंजर) ।
संकटमय वि० (सं) जिसमें खतरा हो । भयानक । (हेजाडस) ।
संकटमुख वि० (सं) सङ्कीर्ण या तङ्ग मुख वाला ।
संकटसंकेत पुं० (सं) वह सन्देश जो विमान व जहाज के सङ्कटग्रस्त होने पर सहायतार्थ बेतार के यन्त्र द्वारा प्रेरित किया जाता है । (एस० ओ० एस०) ।
संकटापन्न वि० (सं) जो कष्ट प्राप्त हो । सङ्कटग्रस्त ।
संकत पुं० (हि) दे० 'संकेत' ।
संकना क्रि० (हि) १-डरना । २-शङ्का या सन्देह करना ।
संकर पुं० (सं) १-दो वस्तुओं को मिलाकर एक हो जाना । २-वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियों के माता पिता से हुई हो । दोगला । ३-आग के जलने का शब्द । ४-झाड़ू देने से उड़ने वाली धूल । पुं० (हि) दे० 'शंकर' ।
संकरघरनी स्त्री० (हि) पार्वती ।
संकरा वि० (हि) पतला । कम चौड़ा । तंग । स्त्री० साँकल । जंजीर । शृङ्खला ।
संकराना क्रि० (हि) सङ्कुचित होना या करना ।
संकरीकरण पुं० (सं) १-दो वस्तुओं को एक में मिलाने का कार्य । २-अवैध रूप से जातियों का मिश्रण ।
संकर्षण पुं० (सं) १-खींचना । २-हल जोतना । ३-बलराम । ४-वैष्णवों का एक सम्प्रदाय ।
संकर्षणविद्या स्त्री० (सं) एक स्त्री के गर्भ से बच्चा निकाल कर दूसरी स्त्री के गर्भ में रखने की विद्या
संकल पुं० (सं)१-सङ्कलन । २-मिलाना । स्त्री० (हि) दे० 'साँकल' ।
संकलन स्त्री० (सं) १-संग्रह करना । २-ढेर । संग्रह । ३-अनेक ग्रन्थों से अच्छे-अच्छे विषय या बातें चुनना । ४-इस प्रकार चुनकर बनाया हुआ ग्रन्थ (कम्पाइलेशन) । ५-गणित में जोड़ करना ।
संकलना स्त्री० (सं) १-इकट्ठा करना । जोड़ना । २-मिलाना ।
संकलप पुं० (हि) दे० 'संकल्प' ।

संकलपना क्रि० (हिं) १-दृढ़ निश्चय करना। २-मंत्र पढ़ कर दान देने का निश्चय करना। ३-विचार करना।
संकलित वि० (सं) १-चुना हुआ। २-इकट्ठा किया हुआ। ३-योजित। (कम्पाइन्ड)।
संकल्प पुं० (सं) १-इच्छा। इरादा। २-दान कर्म से पहले मन्त्र पढ़ कर दान देने का दृढ़ निश्चय प्रकट करना। ३-इस प्रकार उच्चारित मन्त्र।
संकल्पक वि० (स) विचार या संकल्प करने वाला।
संकल्पित वि० (सं) जिसका दृढ़ निश्चय या इरादा किया गया हो।
संकष्ट पुं० (सं) दे० 'संकट'।
संका स्त्री० (हि) डर। शङ्का।
संकाना क्रि० (हि) १-डरना। शंकित करना। २-डराना।
संकारना क्रि० (हि) संकेत करना।
संकाश अव्य० (सं) १-सदृश। समान। २-पास।
संकीर्ण वि० (सं) १-संकरा। कम चौड़ा। २-क्षुद्र। तुच्छ। छोटा।
संकीर्णता स्त्री० (सं) १-संकरापन। २-तुच्छता। नीचता।
संकीर्तन पुं० (सं) १-स्तुति। प्रशंसा। २-आराध्य देवता का जाप करना।
संकु पु० (स) छेद। पुं० (देश) बरछी।
संकुचन पुं० (सं) दे० 'संकोच'।
संकुचना क्रि० (हि) दे० 'सकुचना'।
संकुचित वि० (सं) १-जिसे संकोच हो। २-सिकुड़ा हुआ। ३-सँकरा। ४-अनुदार।
संकुपित वि० (सं)जिसे क्रोध आया हुआ हो। क्रोधित
संकुल वि० (सं) १-संकीर्ण। २-भरा हुआ। पुं० १-युद्ध। २-समूह। ३-भीड़। ४-असङ्गत वाक्य।
संकुलता स्त्री० (सं) सङ्कुलित होने का भाव।
संकुलित वि० (सं) १-घना। संकीर्ण। २-भरा हुआ परिपूर्ण।
संकेंद्रण पुं० (सं) १-इकट्ठा करना। २-केन्द्र की ओर लेजाना (जैसे शक्ति, सेना, ध्यान)। ३-एक स्थान पर एकत्रित करना। (कॉनसन्ट्रेशन)।
संकेंद्रण-सिद्धांत पुं० (सं) पूँजीपतियों से धन निकाल कर शक्तिशाली सरकारी न्यासों, गुटों आदि में लगाने का मार्क्सवादियों का सिद्धान्त। (थिअरी ऑफ कॉनसन्ट्रेशन)।
संकेंद्रितप्रयास पुं० (सं)वह प्रयास जिसमें सारी शक्ति केवल एक ही स्थान पर लगादी गई हो। (कॉन-सन्ट्रेटेड एफर्ट)।
संकेत पुं० (सं) १-अपना भाव प्रकट करने की कोई शारीरिक चेष्टा। इशारा। २-प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान। ३-पते की बातें। ४-चिह्न। निशान। ५-शृङ्गार चेष्टा। पुं० (हि) कठि-नाई। संकट या भय की स्थिति।
संकेतगृह पुं० (सं) दे० 'संकेतनिकेतन'।
संकेतचिह्न पुं० (सं) वाक्यों, पदों, नामों आदि के सूचक चिह्न जो संकेत के रूप में होते हैं। (एब्री वियेशन)
संकेतना क्रि० (हि) संकट या कष्ट में डालना।
संकेतनिकेतन पुं० (सं) प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का स्थान।
संकेतभूमि स्त्री० (सं) दे० 'संकेतनिकेतन'।
संकेतरूप पुं० (सं) दे० 'संकेतचिह्न'।
संकेत-लिपि स्त्री० (सं) किसी भाषा के शब्दों के बो[illegible] संकेत या चिह्न बनाकर तैयार की हुई लेख-प्रणाली जिससे भाषण बहुत शीघ्र लिखे जाते हैं। (शार्टहैंड)
संकेतस्थान पुं० (सं) दे० 'संकेतनिकेतन'।
संकेताक्षर पुं० (सं) वह अक्षर जो संकेत रूप में लि[illegible] गये हों। (साइफर)।
संकेतित वि० (सं) १-जो संकेत या इशारे से बताया गया हो। २-निश्चित।
संकेलना क्रि० (हि) समेटना।
संकोच पुं० (सं) १-सिकुड़ना। २-थोड़ी लज्जा ३-हिचक। आगापीछा। ४-भय। ५-कमी। ६-बहुत सी बातें थोड़े में कहना। ७-एक अलंकार।
संकोचकारी वि०(सं) जो लजाता हो। शर्मीला।
संकोचन पुं० (सं) १-सिकुड़ने की क्रिया। २-किसी वस्तु से दबाकर किसी वस्तु का आयतन कम करने की क्रिया। (कम्प्रेशन)।
संकोचना क्रि० (हि) संकोच करना।
संकोचनी स्त्री० (सं) लजालू लता।
संकोचरेखा स्त्री० (सं) झुर्री। सिलवट।
संकोची पुं० (हि) १-संकोच या शर्म करने वाला २-सिकुड़ने वाला।
संकोपना क्रि० (हि) क्रुद्ध होना।
संक्रम पुं०(सं) १-कठिनता से आगे बढ़ना। २-सेतु ३-किसी स्थान पर पुल बना कर पार करना। ४-प्राप्ति। ५-संक्रमण।
संक्रमण पुं०(सं) १-गमन। चलना। २-एक अवस्था से धीरे-धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचना (ट्रांजीशन)। ३-घूमना। पर्यटन। ४-सूर्य का एक राशि से निकल कर दूसरी में प्रवेश करना।
संक्रमण-काल पुं० (सं) एक युग से निकल कर दूसरे युग या स्थिति में धीरे-धीरे बदलते हुए पहुँचने का समय। (ट्रांजीशनल पीरियड)।
संक्रमणनाश पुं० (सं) रोग के फैलने से बचाव (डिसइन्फेक्शन)।
संक्रमित वि० (सं) १-स्थापित। २-प्रतिबिंबित। ३-पहुँचाया हुआ।

संक्रमित माल पु० (हि) वह माल जो एक जगह से रवाना कर दिया गया पर अभी रास्ते में हो हो। (गुड्स इन ट्रांजिट)।
संक्रांत पुं० (सं) वह धन जो कई पीढ़ियों से चला आया हो।
संक्रांति स्त्री० (सं) १-सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना। २-ऐसा समय (जो पर्व माना जाता है)। ३-प्रतिबिंब। ४-हस्तान्तरण। ५-मिलन
संक्रांतिकाल पु० (सं) दे० 'संक्रमण-काल'।
संक्रामक वि० (सं) छूत से फैलने वाला (रोग)। (इन्फेक्शियस)।
संक्रामित वि० (सं) १-जो हस्तांतरित किया गया हो। २-बताया हुआ।
संक्रामी वि० (सं) (रोग) फैलने वाला।
संक्रोन पुं० (हि) दे० 'संक्रांति'।
संक्षेप पुं० (सं) १-जिसे संक्षेप में कहा गया हो। खुलासा। २-थोड़ा। स्वल्प। ३-छोटा या फेंका हुआ।

संक्षेपीकरण पु० (सं) किसी विषय, कथन आदि को संक्षिप्त करना।
संक्षेप पु० (सं) १-कोई बात थोड़े में कहना। २-सार। रूप। ३-समाहार। ४-चुम्बक।
संक्षेपक वि०(स) १-छोटा रूप देने वाला। २-फेंकने वाला।
संक्षेपण पुं० (सं) १-संक्षेप रूप में प्रस्तुत करना। (एब्रिजमेंट)। २-काट-छांट करना।
संक्षेपतः अव्य० (सं) थोड़े में। संक्षेप में।
संख पु० (हि) दे० 'शंख'।
संखनारी स्त्री० (हि) एक छन्द।
संखिया पुं० (हि) एक सफेद उपधातु जो बहुत तीव्र विष होता है।
संख्यक वि० (सं) संख्या वाला।
संख्या स्त्री० (सं) १-गिनती। तादाद। २-अदद। ३-सामयिक पत्र का अंक। ४-बुद्धि। ५-विचार।
संख्यातीत वि० (स) बहुत सारे। अनगिनत।
संख्यान पु० (सं) १-संख्या। गिनती। २-लेने देने या आय-व्यय का लिखा हुआ हिसाब। (एकाउन्ट)
संख्या-लिपि स्त्री०(सं) एक लिखने की प्रणाली जिसमें अक्षरों के स्थान पर केवल संख्या लिखी जाती है।
संख्यावाचक वि० (सं) जिससे संख्या की जानकारी होती हो।
संख्येय वि० (सं) जो गिना जा सके।
संग अव्य० (हि) साथ। सहित। पुं० १-मिलना। मिलन। २-सहवास। ३-अनुराग। आसक्ति। (फा) पत्थर। पाषाण। वि० पत्थर के समान कठोर।
संग-अंदाज पुं० (फा) १-किले की दीवार पर शत्रु पर पत्थर फेंकने के लिए बने छिद्र। २-इन छिद्रों में से पत्थर फेंकने वाला।
संगचश्माक पु० (फा) एक प्रकार का पत्थर जिसकी रगड़ से आग निकलती है।
संगठन पु० (हि) दे० 'संघटन'।
संगठित वि० (हि) दे० 'संघटित'।
संगणना स्त्री० (सं) १-गिन कर हिसाब लगाना। २-आंकड़ों का हिसाब लगा कर अन्दाजा लगाना (कम्प्यूटेशन)।
संगत वि० (सं) हर प्रकार से मेल खाने वाला। (कन्सिसटेंट)। स्त्री० (हि) १-साथ। सोहबत। २-उदासीन या निरमले साधुओं के रहने का मठ। ३-सङ्ग। ४-सम्बन्ध। ५-बाजा बजा कर गाने वाले का साथ देना।
संगतरा पु० (पुर्त) सन्तरा।
३-प्रसंग। ४-सम्बन्ध। ५-ज्ञान। ६-आगे पीछे के वाक्यों से मेल खाने वाला। (कन्सिसटेंसी)।
संगती वि० (हि) १-साथी। २-गवैये के साथ बाजा बजाने वाला।
संगत्याग पु० (स) विरक्ति।
संगदिल वि० (फा) कठोर हृदय।
संगपुश्त पु० (फा) कछुआ।
संगम पुं० (स) १-मेल। मिलाप। सम्मेलन। २-वह स्थान जहां दो नदियां मिलें। ३-सङ्ग। साथ। ४-दो या दो से अधिक वस्तुएँ मिलने का भाव।
संगमरमर पुं० (फा) एक प्रकार का प्रसिद्ध चिकना सफेद पत्थर जो इमारत बनाने के काम आता है।
संगमित वि० (सं) मिलाया हुआ।
संगमुरदार पु० (फा) मुरदासंख।
संगमूसा पु० (फा) सङ्गमरमर की तरह का काला पत्थर जिसकी मूर्तियां बनती हैं।
संगर पु० (स) १-युद्ध। संग्राम। २-विपत्ति। ३-नियम। पु० (फा) १-मोरचा। २-सेना की रक्षा के लिए बनी हुई चारों ओर की खाई।
संगरण पुं०(स) योद्धा करना।
संगराम पु० (हि) दे० 'संग्राम'।
संगरेजा पु० (फा) पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े।
संगसाथ पुं० (हि) मैत्री। दोस्ती। मित्रता।
संगसार पु० (फा) प्राचीन काल में अरब देशों प्रचलित एक दण्ड देने की प्रणाली जिसमें

को आधा जमीन में गाड़ कर पत्थर मार-मार कर मार डाला जाता था।
संगसारी स्त्री० (फा) दे० 'संगसार'।
संगसुर्ख पुं० (फा) एक प्रकार का लाल रंग का पत्थर
संगसुलेमानी पुं० (फा) एक प्रकार का पत्थर जो काला तथा सफेद दोनों मिले जुले रंग का होता है
संगाती पुं० (हि) १-सङ्गी। साथी। २-मित्र। दोस्त।
संगायन पुं० (सं) साथ-साथ मिलकर गाना या स्तुति करना।
संगिनी स्त्री० (हि) १-सहचरी। २-भार्या। पत्नी।
संगिस्तान पुं० (फा) वह प्रदेश जो पथरीला हो।
संगी पुं० (हि) १-मित्र। दोस्त। २-साथी। पुं० (देश) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र वि० (फा) संगीन। पत्थर का।
संगीत पुं० (सं) १-स्वर, ताल, लय आदि के नियमानुसार किसी पद्य को मनोरंजक रूप से उच्चारण करना। गाना। २-बहुत से लोगों का एक साथ गाना। ३- नृत्य तथा बाजों के साथ गाने की कला। वि० (सं) साथ मिलकर गाया हुआ।
संगीतज्ञ पुं० (सं) वह जो संगीत विद्या में निपुण हो। गवैया।
संगीतवेश्म पु० (सं) संगीत भवन।
संगीतविद्या स्त्री० (सं) दे० 'संगीत-शास्त्र'।
संगीतशाला स्त्री० (सं) संगीत भवन।
संगीतशास्त्र पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें संगीत-सम्बन्धी विद्या का विवेचन होता है।
संगीन, वि० (फा) १-पत्थर का बना हुआ। २-विकट। ३-मोटा या भारी। ४-पेचीदा। स्त्री० (फा) वह बरछी जो बन्दूक के सिरे पर लगी होती है।
संगीनजुर्म पुं० (फा) वह अपराध जो कठोर दण्ड देने योग्य हो।
संगीनदिल वि० (फा) दे० 'संगदिल'।
संगीनदिली स्त्री० (फा) निर्दयता।
संगीनी स्त्री० (फा) १-विकटता। २-मजबूती। ३-ठोसपन।
संगुप्त वि० (सं) १-सुरक्षित। २-अच्छी तरह से गुप्त रखा हुआ।
संगेआतिश पुं० (फा) चकमक पत्थर।
संगेपा पुं० (फा) झामां। पैर का मैल साफ करने का पत्थर।
संगेमज़ार पुं० (फा) वह पत्थर जो कब्र पर लगा हो और उस पर मृत व्यक्ति का नाम खुदा हो।
संगेराह पुं० (फा) वह पत्थर जो रास्ते में पड़ा हो और जिससे राहगीरों को कष्ट हो।
संगृहीत वि० (सं) १-संग्रह किया हुआ। सङ्कलित। २-प्राप्त। ३-जो स्वीकार किया हुआ हो।
संगृहीता पुं० (सं) वह जो संग्रह करता हो।
संगोपन पुं० (सं) छिपाना।
संग्रंथन पुं० (सं) सङ्घटन। एक साथ मिलकर बांधना।
संग्रह पुं० (सं) १-जमा करना। सङ्कलन। २-वह पुस्तक जिसमें अनेक विषय एकत्रित किये गये हों। ३-ग्रहण करना। ३-सूची। ४-निग्रह। संयम। ६-रक्षा। ७-कब्ज। ८-सभा। जमघट। ६-शिव।
संग्रहकार पुं० (सं) संग्रह करने वाला।
संग्रहण पुं० (सं) १-स्त्री का हरण करके ले जाना। २-प्राप्ति। ३-नग जड़ना। ४-सहवास। ५-व्यभिचार। ६-स्त्री के कपोल,स्तन आदि वर्ज्य स्थानों का स्पर्श।
संग्रहणी स्त्री० (सं) एक प्रकार का रोग जिसमें खून और आंव के दस्त आते हैं।
संग्रहणीय वि० (सं) संग्रह करने योग्य।
संग्रहना क्रि० (हि) संचय करना। संग्रह करना।
संग्रहाध्यक्ष पुं० (सं) वह स्थान जहां अनेक प्रकार की वस्तुओं का संग्रह हो। (म्यूज़ियम)।
संग्रहालयाध्यक्ष पुं० (सं) वह पदाधिकारी जो किसी संग्रहालय का अध्यक्ष हो। (क्यूरेटर)।
संग्रही पुं० (सं) वह जो संग्रह करता हो।
संग्रहीता पुं० (सं) वह जो एकत्र या संग्रह करता हो
संग्राम पुं० (सं) युद्ध। लड़ाई।
संग्रामजित् वि० (सं) लड़ाई में जीतने वाला। पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
संग्रामतूर्य पुं० (सं) लड़ाई में बजाया जाने वाला बाजा।
संग्रामपटह पुं० (सं) लड़ाई में बजाया जाने वाला नगाड़ा।
संग्रामभूमि स्त्री० (सं) युद्धक्षेत्र।
संग्राममृत्यु स्त्री० (सं) रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त होना।
संग्रामांगण पुं० (सं) रणक्षेत्र। लड़ाई का मैदान।
संग्रामार्थी वि० (सं) युद्ध की इच्छा करने वाला।
संग्राहक पुं० (सं) संग्रहकर्ता। संग्रह करने वाला।
संग्राही पुं० (सं) १-वह पदार्थ जो कफ दोष, धातु मल आदि तरल पदार्थों को खींचता हो। २-कब्जियत करने वाली दवा।
संग्राह्य वि० (सं) संग्रह करने योग्य।
संघ पुं० (सं) १-समुदाय। समूह। २-संघटित समाज। ३-ऐसे राज्यों का समूह जो अपने क्षेत्र में कुछ स्वतंत्र हों पर कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए केंद्रियशासन के आधीन हों। (यूनियन, फेडरेशन) ४-बौद्ध भिक्षुओं का धार्मिक समाज या निवास स्थान। मठ। ५-प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य।
संघचारी पुं० (सं) १-बहुमत के अनुसार आचरण करने वाला। २-मद्दर्शी। ३-झुण्ड या समुदाय में चलने वाले—मृग, हाथी आदि।

संघजीवी वि० (सं) जो दल बनाकर रहता हो।
संघट्ट पु० (सं) १-संघटन। मिलन। २-युद्ध। झगड़ा। ३-समूह। ढेर।
संघटन पुं० (सं) १-मेल। संयोग। २-नायक और नायिका का मिलाप। ३-बनावट। रचना। बिखरी हुई शक्ति को किसी कार्य के लिए तैयार करना। (आर्गेनाइजेशन)।
संघटना स्त्री० (सं) १-शब्दों का संयोग। २-मिलना। संयुक्त करना।
संघटित वि० (सं) जिसका संघटन हुआ हो। (आर्गे-नाइज्ड)।
संघट्ट पुं० (सं) १-रचना। बनावट। गठन। २-संघर्ष।
संघट्टन पुं० (सं) १-रचना। बनावट। २-घटना। ३-टक्कर। भिड़न्त।
संघट्टना पुं० (सं) दे० 'संघटन'।
संघट्टित वि० (सं) १-गूँथा हुआ। २-इकट्ठा किया हुआ। ३-गठित। ४-चलाया हुआ। ५-घटित।
संघती पु० (हि) संगी। साथी।
संघन्यायालय पुं० (सं) संघ राज्य का सर्वोच्च न्याया-लय। (फेडरल कोर्ट)।
संघपति पुं० (सं) किसी दल या समूह का नायक। मुखिया।
संघभेद पुं० (सं) (बौद्ध) संघ में फूट डालने का अक्षम्य अपराध।
संघभेदक वि० (सं) (बौद्ध) संघ में फूट डालने वाला
संघरना क्रि० (हि) नाश करना। संहार करना। मार डालना।
संघर्ष पुं० (सं) १-रगड़। घिस्सा। (फ्रिक्शन)। २-प्रतियोगिता। ३-दो दलों में होने वाला विरोध। (कन्फ्लिक्ट)।
संघर्षण पुं० (सं) १-रगड़ने या रगड़ खाने की क्रिया २-रगड़ने की वस्तु-आभा, उबटन आदि।
संघर्षशाली वि० (सं) द्वेष रखने वाला।
संघर्षसमिति स्त्री० (सं) किसी आन्दोलन, या मांगों तथा मान्य अधिकारों को मनवाने के लिये किये जाने वाले संघर्ष का निर्देशन करने वाली समिति (कमिटी ऑफ एक्शन)।
संघर्षी वि० (सं) द्वेष रखने वाला। रगड़ खाने वाला
संघवृत्ति स्त्री० (सं) सहयोग।
संघसमाजवाद पुं० (सं) क्रांतिकारी श्रमिकों का वह आन्दोलन जो स्थापित राज्य को नष्ट करके व्यव-साय संघों (ट्रेड्यूनियन्स) की सत्ता स्थापित करना चाहता हो। (सिंडिकेलिज्म)।
संघात पु० (सं) १-समूह। झुण्ड। २-निवास स्थान ३-कुछ लोगों का समूह जो मिलकर काम करने के लिये बनाया गया हो। (बॉडी)। ४-वध। ५-गहरी चोट। ६-शरीर। वि० घना। सघन।
संघातचारी वि० (सं) दल या समूह बनाकर रहने वाला।
संघाती पुं० (सं) १-वध करने वाला। २-मार डालने वाला। पुं० (हि) १-साथी। २-मित्र।
संघार पुं० (हि) दे० 'संहार'।
संघारना क्रि० (हि) संहार करना। हत्या करना।
संघाराम पु० (सं) विहार। प्राचीन समय के वह मठ जहां बौद्ध भिक्षुक रहते थे।
संघोपसंविधान पुं० (सं) ऐसे राज्यों के संघ का संवि-धान जो कुछ विशिष्ट विषयों के अधीन हो। (फेड-रल कान्स्टीट्यूशन)।
संघोष पु० (सं) जोर का शब्द। घोष।
संच पुं० (हि) १-संचय। २-देखभाल। रक्षा। पु० (सं) लिखने की स्याही।
संचक पुं० (हि) इकट्ठा करने वाला।
संचना क्रि० (हि) १-एकत्र करना। २-रक्षा करना
संचय पु० (सं) १-समूह। ढेर। २-एकत्रीकरण। ३-अधिकता।
संचयन पु० (सं) संग्रह करना। जमा करना।
संचयिक पु० (सं) संचय करने वाला।
संचयी पु० (हि) १-जमा करने वाला। २-कंजूस।
संचरण पु० (सं) दे० 'संचार'।
संचरना पु० (सं) १-फैलाना। संचार करना। २-जन्म देना। ३-प्रचार करना।
संचान पु० (सं) बाज। शिकरा।
संचार पु० (सं) १-गमन। चलना। २-फैलना। ३-कष्ट। विपत्ति। ४-मार्ग प्रदर्शन। ५-चलाने की क्रिया। ६-उद्दीपन। ७-एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने आने के साधन। (कम्यूनिकेशन)।
संचारक पुं० (सं) १-संचार करने वाला। २-नायक दलपति। ३-चलाने वाला।
संचारजीवी वि० (सं) खानाबदोश।
संचारण पुं० (सं) १-मिलाना। २-पास लाना। ३-संचार करना।
संचारना क्रि० (हि) १-संचार करना। फैलाना। २-प्रचार करना। ३-जन्म देना।
संचारस्थ पु० (सं) हवाखोरी करने या टहलने का स्थान।
संचार-साधन पु० (सं) यातायात से सम्बन्ध रखने वाले साधन। (मीन्स ऑफ कम्यूनिकेशन)।
संचारिका स्त्री० (सं) १-दूती। कुटनी। २-नाक। ३-युग्म। जोड़।
संचारित वि० (सं) १-जिसका संचार किया गया हो २-चलाया हुआ। ३-फैलाया हुआ।
संचारी वि० (सं) १-संचरण करने वाला। २-गति-शील। पुं० १-साहित्य में वे भाव जो ...

की पुष्टि करते हैं। २-आगंतुक। ३-वायु। ४-संगीतशास्त्र के अनुसार गीत के चार चरणों में से तीसरा।
संचालक पुं० (सं) १-चलाने वाला। परिचालक। २-कार्य अथवा कार्यालय आदि का काम चलाने वाला। (मेनेजर)।
संचालन पुं० (सं) १-चलाना। २-ऐसा प्रबन्ध करना जिससे कोई काम लगातार चलता रहे। (कन्डक्ट)।
संचालनसमिति स्त्री० (सं) वह समिति जो किसी सभा आदि के संचालन करने के लिए बनाई गई हो। (स्टीयरिंग कमिटी)।
संचिका स्त्री० (सं) एक विषय के पत्रादि रखने की नत्थी। (फाइल)।
संचित वि०(सं) १-एकत्र किया हुआ। २-ढेर लगाया हुआ। ३-संचिका में लगाया हुआ (फाइल्ड)।
संचितकर्म पुं० (सं) पूर्वजन्म के वह कर्म जिनका अभी फल न मिला हो
संचितकोष पुं० (सं) दे० 'भविष्यनिधि' (प्रोविडेन्ट-फंड)।
संचिति स्त्री० (सं) एक पर एक रखना।
संचेय वि० (सं) संचय करने योग्य।
संजम पुं० (हि) दे० 'संयम'।
संजमी वि० (हि) दे० 'संयमी'।
संजय पुं० (सं) १-धृतराष्ट्र के मन्त्री का नाम। २-ब्रह्मा। ३-शिव।
संजात वि० (सं) १-उत्पन्न। २-प्राप्त। पुं० पुराणानुसार एक जाति का नाम।
संजातकोप पुं० (सं) क्रुद्ध।
संजातकौतुक वि० (सं) चकित। हैरान।
संजातनिर्वेद वि० (सं) विरक्त।
संजाफ स्त्री० (फा) कपड़े पर टकी हुई झालर। गोट मगजी।
संजाफी वि० (फा) जिसमें संजाफ लगी हो।
संजाब पुं० (हि) एक प्रकार का घोड़ा।
संजीदगी स्त्री० (फा) विचार या व्यवहार की गंभीरता।
संजीदा वि० (फा) १-शांत। गंभीर। २-बुद्धिमान्।
संजीवन पुं० (सं) १-जिलाने वाला। २-भली प्रकार जीवन बिताना।
संजीवनी वि० (सं) जीवन देने वाली। स्त्री० मृतक को जीवित करने वाली एक कल्पित [illegible]
संजीवनीविद्या स्त्री० (सं) मरे हुए व्य[illegible] की एक कल्पित विद्या।
संजीवित वि० (सं) जो मरने के [illegible] किया गया हो।
संजुक्त वि० (हि) दे० 'संयुक्त'।
संजुग पुं० (हि) संग्राम। लड़ाई।
संजुत वि० (हि) दे० 'संयुक्त'।
संजूत वि० (हि) तैयार।
संजोई अव्य० (हि) साथ में। संग में।
संजोइल वि० (हि) १-सुसज्जित। एकत्र।
संजोउ पुं० (हि) १-उपक्रम। तैयारी। २-साम[illegible]
संजोग पुं० (हि) दे० 'संयोग'।
संजोगिता स्त्री० (सं) राजा जयचन्द की पुत्री [illegible] राजा पृथ्वीराज ने अपहरण किया था।
संजोगिनी स्त्री० (हि) दे० 'संयोगिनी'।
संजोगी वि० (हि) दे० 'संयोगी'।
संजोना क्रि० (हि) अलंकृत करना। सजाना।
संजोवना क्रि० (हि) सँजोना। सजाना।
संजोवल वि० (हि) १-सजा हुआ। २-सा[illegible] ३-सेना सहित।
संज्ञा स्त्री० (सं) १-चेतन। होश। २-बुद्धि। [illegible] ४-नाम। ५-व्याकरण में वह विकारी [illegible] किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु का बोध [illegible] है। ६-संकेत। ७-गायत्री।
संज्ञाकरण पुं० (सं) नाम रखना।
संज्ञात वि०(सं) जो भलीभांति समझा या जा[illegible] हो।
संज्ञान पुं० (सं) संकेत। इशारा।
संज्ञापुत्री स्त्री० (सं) यमुना।
संज्ञासुत पुं० (सं) शनिदेव।
संज्ञाहीन वि० (सं) बेसुध। बेहोश
सँझला वि० (हि) १-संख्या या साँझ का। [illegible] से छोटा और सबसे छोटे से बड़ा।
सँझवाती स्त्री० (सं) १-संध्या के समय जला[illegible] वाला दीपक। २-इस समय गाया जाने व[illegible] क्रि० संध्या का।
संझा स्त्री० (हि) साँझ। संध्या
संझोखा पुं० (हि) संध्या समय।
सँझोखैं अव्य० (हि) संध्या समय में।
संड पुं० (हि) सांड।
संडमुसंड वि० (हि) हट्टाकट्टा। मोटाताजा।
सँडसा पुं० (हि) एक प्रकार का लोहे का ब[illegible] या औजार जो गरम या किसी वस्तु के [illegible] काम आता है।
सँड़सी पुं० (हि) छोटा सँड़सा। जँबूरी।
संडा वि०(हि) हृष्टपुष्ट। मोटाताजा। पुं० [illegible] बलवान मनुष्य।
[illegible] पुं० (हि) एक [illegible] खोदकर बना[illegible]
[illegible] (हि) दे[illegible]
[illegible] १-सा[illegible] मात्र[illegible]

लगातार। स्त्री० (हि) दे० 'संतति'।
संततज्वर पु० (स) निरंतर रहने वाला ज्वर या बुखार।
संतति स्त्री० (सं) १-बालबच्चे। औलाद। २-प्रजा ३-गोत्र। दल। ४-निरंतर किसी बात का होना।
संततिनिरोध पु० (सं) संयम या कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भदान न होने देना। (बर्थकंट्रोल)।
संतपन पु० (सं) १-भली प्रकार तपने की क्रिया। २-अत्यधिक दुःख देना।
संतप्त वि० (सं) १-दग्ध। जला हुआ। २-दुःखी। पीड़ित। ३-मलीन मन। ४-थका हुआ।
संतरण पु०(सं) १-अच्छी प्रकार तारने या होने की क्रिया। २-तारक। ३-नाश करने वाला।
संतरणशील-हिमशिला स्त्री० (स) पानी में तैरती हुई बर्फ की बड़ी चट्टान या शिला (आइसबर्ग)।
संतरा पु० (हि) एक प्रकार की बड़ी नारंगी जो मीठी होती है।
संतरी पु० (हि) पहरेदार। (सेन्ट्री)।
संतर्जन पु० (सं)१-डराना। धमकाना। २-कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
संतसमागम पु० (सं) संतों की संगति या साथ।
संतस्थान पु० (सं) साधुओं का निवास स्थान। मठ।
संतान पु० (स) १-बाल-बच्चे। सन्तति। औलाद। २-वंश। ३-विस्तार। ४-कल्पवृक्ष।
संतानकर्म पु० (स) सन्तान को जन्म देना। प्रजनन
संतानविग्रह पु० (सं) दे० 'संततिनिग्रह'।
संताप पु० (स)१-जलाना। २-अत्यधिक कष्ट देना ३-शत्रु। ४-मानसिक कष्ट। ५-दाह नामक रोग
संतापकारी वि० (सं) जो कष्ट देता हो।
संतापन पु० (सं) १-जलाना। २-अत्यधिक कष्ट देना। ३-कामदेव के पांच बाणों में से एक।
संतापना क्रि० (हि) सताना। दुःख या कष्ट देना।
संतापहारक वि० (स) कष्ट दूर करने वाला। आराम देने वाला।
संतापित वि० (सं) सन्तप्त। पीड़ित।
संतो अव्य० (हि) द्वारा। से।
संतुलन पु० (स) १-दो पक्षों का वजन बराबर होना या रखना। २-आपेक्षिक भार या वजन बराबर का ठीक करना।
संतुलित वि० (सं)जिन वस्तुओं, देश आदि का भार या बल आदि बराबर रखा गया हो।
संतुष्ट वि० (सं) १-तृप्त। २-जिसे सन्तोष हो गया हो।
संतुष्टि स्त्री० (स) १-तृप्ति। २-सन्तोष। ३-इच्छा का पूरा होना।
संतुष्टिकरण पु० (स) किसी को सन्तुष्ट रखने की क्रिया। (एपीजमेंट)।
संतोख पु० (हि) दे० 'संतोष'।
संतोखी वि० (हि) दे० 'संतोषी'।
संतोष पु० (सं) १-सदा प्रसन्न रहना तथा किसी बात की इच्छा न करना। सब्र। २-तृप्ति। ३-किसी बात की चिन्ता या शिकायत न होना।
संतोषक वि० (सं) सन्तुष्ट करने वाला।
संतोषण पु० (सं) सन्तोष। सन्तुष्ट करने का भाव या क्रिया।
संतोषना क्रि० (हि) १-सन्तोष दिलाना। २-सन्तोष होना।
संतोषित वि० (स) सन्तुष्ट।
संतोषी वि० (सं) जो सदा सन्तोष रखता हो।
संत्यक्त वि० (सं) १-त्यागा हुआ। २-रहित। ३-बिना।
संत्यजन पु० (सं) परित्याग।
संत्रस्त वि० (स) १-डरा हुआ। भयभीत। २-व्याकुल ३-पीड़ित।
संत्रास पु० (सं) १-कष्ट। २-डर। ३-आतङ्क।
संत्रासित वि० (सं) डराया हुआ।
संत्री पु० (हि) दे० 'संतरी'।
संथा स्त्री० (हि) पाठ। सबक।
संदंश पु०(स) १-चिमटी। २-सँड़सी। ३-एक विशेष प्रकार की चिमटी जो चीरफाड़ के काम आती है।
संदंशिका स्त्री० (स) १-चिमटी। २-सड़सी। ३-कैंची।
संद पु०(हि) देद। दरार। बिल। पु०(अं०) सनद (देश) दबाव।
संदर्भ पु० (स) १-निबन्ध। लेख। २-रचना। ३-वह पुस्तक जिसमें अन्य पुस्तकों में आये हुए गूढ़ शब्दों का स्पष्टीकरण हो। (रेफरेन्स-बुक)। ४-प्रकरण। प्रसंग। (कान्टेक्स)। ५-विस्तार।
संदर्भविरुद्ध वि० (स) जिसमें संदर्भ का निर्वाह न हुआ हो।
संदर्शन पु० (स) १-परीक्षा। अवलोकन। २-दृष्टि ३-आकृति।
संदल पु० (फा) चन्दन।
संदली वि० (फा) सन्दल या चन्दन का। पु० १-एक प्रकार का हाथी। २-एक प्रकार का [illegible] चौकी। तिपाई।
संदि स्त्री० (हि) मेल। संधि।
संदिग्ध वि० (स) १ सन्देहयुक्त [illegible] हो। २-जिसे सन्देह हो।
संदिग्धतनमुखी स्त्री० [illegible] कोई [illegible] हो। [illegible]
संदिग्धता स्त्री० [illegible]
[illegible]
[illegible]
संदिग्धत्व

संदिग्धबुद्धि *वि०*(सं) जो हर वस्तु को शक या सन्देह की दृष्टि से देखता है।
संदिग्धार्थ *वि०* (सं) जिसका अर्थ शंकायुक्त हो।
संदीपक *वि०* (सं) उद्दीपक। उद्दीपन करने वाला।
संदीपन पुं० (सं) १–उद्दीपन। २–कामदेव का एक बाण। ३–श्रीकृष्ण के गुरु का नाम।
संदूक पुं० (अ) लकड़ी या धातु की चौकोर पेटी। बक्स।
संदूकचा पुं० (अ) छोटा सन्दूक या पेटी।
संदूकची स्त्री० (अ) छोटा सन्दूक। पेटी।
संदूकड़ी स्त्री० (अ) छोटा सन्दूक।
संदूख पुं० (हि) सन्दूक।
संदूर पुं० (हि) दे० 'सिंदूर'।
संदेश पुं० (सं) १–समाचार। २–किसी उद्देश्य से कही या कहलाई हुई कोई महत्वपूर्ण बात (मैसेज) ३–एक बङ्गाली मिठाई।
संदेशवाहक पुं० (सं) समाचार लेजाने या पहुंचाने वाला। कासिद। दूत।
संदेशा पुं० (हि) दे० 'संदेश'।
संदेस पुं० (सं) दे० 'संदेश'।
संदेसा पुं० (हि) जबानी कहलाया हुआ समाचार।
संदेह पुं०(सं) १–किसी विषय में यह धारणा कि यह ठीक है या नहीं। शंका। संशय। २–एक अर्थालङ्कार।
संदेहवाद पुं० (सं) १–निर्णय करते समय मस्तिष्क की अवस्था। संशयवाद। २–सत्य के सम्बन्ध में किसी निश्चित सिद्धांत पर न पहुंचने की प्रवृत्ति। (स्केप्टिसिज्म)।
[illegible] *वि०* (सं) जिसका मन किसी बात पर [illegible] न करे। संशयात्मा।
[illegible] *वि०* (सं) जिसके बारे में सन्देह हो।
संदोह पुं० (सं) समूह। झुण्ड।
संधना क्रि० (हि) मिलना। संयुक्त होना।
संधाता पुं० (स) १–विष्णु। २–लोहे के टुकड़ों को जोड़ने वाला।
संधान पुं० (सं) १–संयुक्त करना। मिलाना। २–निशाना लगाना। ३–पता लगाना। ४–मदिरा। शराब। ५–मदिरा बनाना। ६–जमा खर्च करना। (एड्जेस्टमेन्ट)। ७–किसी वस्तु को सड़ाकर उसका खमीर उठाना। (फर्मेन्टेशन)। ८–अचार। ९–सौराष्ट्र का एक नाम। १०–मेलमिलाना।
संधानना क्रि० (हि) १–निशाना लगाना। २–तीर चलाना। ३–किसी अस्त्र को प्रयोग के लिए ठीक करना।
संधाना पुं० (हि) अचार।
संधानित *वि०* (सं) संयुक्त। जोड़ा हुआ। मिलाया हुआ।
संधि स्त्री० (सं) १–दो टुकड़ों या वस्तुओं के मिलने का स्थान। जोड़। २–मेल। संयोग। ३–दो राष्ट्रों में आपस में सद्भाव बढ़ाने तथा आक्रमण न करने का समझौता। सुलह (ट्रीटी)। ४–व्याकरण में वह विकार जो दो अक्षरों के पास-पास आने के कारण होता है। ५–सेंध। ६–भग। ७–साधन। ८–एक स्थिति के समाप्त होने पर दूसरी अवस्था आरम्भ का समय।
संधिचोर, संधिचौर पुं०(सं) सेंधिया चोर। सेंध लगा कर चोरी करने वाला।
संधितस्कर पुं० (सं) दे० 'संधिचोर'।
संधिभंग पुं० (सं) शरीर के किसी अंग के जोड़ का टूटना।
संधिविग्रहक पुं० (सं) पर-राष्ट्रों के साथ युद्ध अथवा संधि का निर्णय करने वाला मन्त्री या अधिकारी।
संधिविग्रहिक पुं० (सं) दे० 'संधिविग्रहक'।
संधिविच्छेद पुं० (सं) १–संधिगत शब्दों का अलग-अलग करना। २–समझौते का टूटना।
संधेय *वि०* (सं) जिसके साथ संधि की जा सके।
संध्या स्त्री० (सं) १–सायंकाल। शाम। २–आर्यों की उपासना जो सवेरे, दोपहर और सध्या को होती है ३–दो युगों के मिलने का समय। युगसंधि। ४–सीमा। हद। ५–सन्धान। ६–एक प्रकार का फूल।
संध्याराग पुं० (सं) १–श्याम-कल्याणराग। २–सिंदूर
संध्याराम पुं० (सं) ब्रह्मा।
संध्यावंदन पुं० (सं) संध्या के समय की उपासना।
संध्योपासन पुं० (सं) संध्यावंदन।
संन्यास पुं०(सं)१–हिन्दुओं के चार आश्रमों में से एक २–अपने कानूनी अधिकारों का परित्याग (सिविल सुइसाइड)। ३–त्यागी और विरक्त होकर काम करने का आश्रम।
संन्यासी पुं० (सं) संन्यास आश्रम में रहने वाला।
संपति स्त्री० (हि) दे० 'संपत्ति'।
संपत्ति स्त्री०(सं) १–धन। दौलत। जायदाद। (प्रॉपर्टी) २–ऐश्वर्य। वैभव। ३–लाभ। ४–अधिकता।
संपत्तिदान पुं० (सं) भूमिहीन किसानों को भूमि देने के कार्य के लिए सम्पत्ति का दान देना।
संपदा स्त्री० (सं) १–धन-दौलत। सम्पत्ति। वैभव। ऐश्वर्य।
संपरीक्षण पुं० (सं) किसी कार्य; लेख आदि के सम्बन्ध में भली प्रकार देखकर यह जांचना कि वह ठीक और नियमानुसार है या नहीं। (स्क्रुटिनी)।
संपर्क पुं० (सं) १–सम्बन्ध। वास्तव। २–स्पर्श। ३–मिलावट। ४–योग। जोड़। (गणित)।
संपर्क-पदाधिकारी पुं०(सं) सरकार या प्रजाजन में सम्पर्क बनाए रखने वाला पदाधिकारी। (लियेजन ऑफीसर)।

संपा स्त्री० (सं) बिजली। विद्युत।

संपात पु०(सं) १-मेल। संसर्ग। २-एक साथ गिरना। ३-संगम स्थान। ४-वह स्थान जहां एक रेखा दूसरी रेखा से मिले। ५-टूट पड़ना। ६-प्रवेश। ७-अवशिष्ट अंश।

संपाती वि० (सं) एक साथ कूदने या झपटने वाला। पुं० (हि) दे० 'संपत्ति'।

संपादक पुं० (सं) १-कार्य सम्पन्न करने वाला। २-प्रस्तुत करने वाला। ३-किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रम आदि लगाकर निकालने वाला। (एडीटर)।

संपादकीय वि० (सं) संपादक सम्बन्धी। पुं० समाचार पत्र का वह लेख जो किसी विशिष्ट विषय पर सम्पादक द्वारा लिखा होता है।

संपादन पुं० (सं) १-काम ठीक प्रकार से पूरा करना। २-ठीक करना। ३-किसी पुस्तक या समाचार पत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना। (एडीटिंग)।

संपादना क्रि० (हि) १-पूरा करना। २-ठीक करना।

संपादित वि० (सं) १-पूरा किया हुआ। २-(पुस्तक, समाचार-पत्र आदि को) क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। (एडीटेड)।

संपालक पुं० (सं) किसी की सम्पत्ति आदि की देख रेख करने वाला। अभिरक्षक। (कस्टोडियन)।

संपीडन पुं० (सं) १-खूब दबाना या निचोड़ना। २-अत्यधिक पीड़ा। ३-शब्द के उच्चारण का एक दोष।

संपुट पुं०(सं) १-खप्पर। ठीकरा। २-डिब्बा। ३-दोना। ४-अंजली। ५-प्याली। कटोरा। ६-खोल। [illegible]

[illegible]

संपूज्य वि० (सं) अत्यधिक आदरणीय।

संपूर्ण वि० (सं) १-समस्त। पूरा। २-समाप्त। पूर्ण ३-खूब भरा हुआ। पुं० १-वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। २-आकाशभूत।

संपूर्णतः अव्य० (सं) पूरी तरह से।

संपूर्णतया अव्य० (सं) पूरी तरह से।

संपृक्त वि० (सं) १-संसर्ग में आया हुआ। २-मिला हुआ। ३-संयुक्त।

संपृक्त-द्रावण पुं० (सं) ऐसा घोल जिसमें गर्म करने पर भी मिश्रित करने वाला पदार्थ और न घुल सके। (सेचुरेटेड सोल्यूशन)।

संपृष्ठ वि० (सं) जिसमें पूछ-ताछ की गई हो।

सँपेरा पुं० (हि) साँप पालने वाला। मदारी।

सँपै स्त्री० (हि) दे० 'संपत्ति'।

सँपोला पुं० (हि) साँप का बच्चा।

सँपोलिया पु० (हि) साँप पकड़ने वाला।

संपोषित वि० (सं) जिसका अच्छी प्रकार से पालन पोषण किया गया हो।

संपोष्य वि० (सं) पालने-पोसने योग्य।

संप्रज्ञात पुं० (सं) योग में समाधि के दो भेदों में से एक। वि० भली प्रकार जाना या समझा हुआ।

संप्रज्ञातयोगी पु० (सं) वह योगी जिसका विषय के प्रति बोध बना हुआ हो।

संप्रज्ञात समाधि स्त्री० (सं) एक प्रकार की समाधि जिसमें विषयों का बोध नष्ट नहीं होता।

संप्रति अव्य० (सं) अभी। इस समय।

संप्रदान पु० (सं) १-दान देने की क्रिया या भाव। २-मन्त्रोपदेश। दीक्षा। ३-भेंट। नजर। ४-किसी वस्तु को किसी के पास पहुँचाना। (डिलीवरी)। ५-व्याकरण में चतुर्थ कारक।

संप्रदाय वि० (सं) १-कोई विशेष धार्मिक मत। (कम्यूनिटी)। २-किसी मत के अनुयायियों की मण्डली। (सेक्ट)। ३-परिपाटी। रीति। ४-मार्ग। पथ।

संप्रदायवाद पु० (सं) केवल अपने संप्रदाय को महत्ता देते हुए दूसरे संप्रदायों से द्वेष करने का सिद्धान्त। (कम्यूनेलिज्म)।

संप्रदायवादी पु० (सं) वह व्यक्ति जो अपने संप्रदाय को अधिक महत्व देता हो और दूसरे संप्रदायों से द्वेष रखता हो। (कम्यूनेलिस्ट)।

संप्रसारण पु० (सं) फैलाना। य, व, र, ल का इ, उ, ऋ, लृ में परिवर्तन। (व्याकरण)।

संप्राप्त वि० (सं) १-उपस्थित। पहुँचा हुआ। पाया हुआ। २-घटित।

[illegible]

संप्रेक्षक पु० (सं) १-व्यवस्था या हिसाब किताब की जाँच करने वाला। (ऑडीटर)। २-दर्शक।

संप्रेक्षण पुं० (सं) १-हिसाब किताब जाँचने का काम (ऑडिटिंग)। २-जाँच करना।

संप्रेषण पु० (सं) एक व्यक्ति या स्थान से दूसरे व्यक्ति या स्थान तक विचार, समाचार, [illegible] आदि पहुँचाना। (ट्रांसमिशन)।

संबंध पु० (सं) १-जुड़ना। मिलना। २-संसर्ग। लगाव। (कनेक्शन)। ३-[illegible] ४-विवाह या सगाई निश्चय। ५-[illegible] ६-किसी सिद्धान्त का [illegible]

संबंधवाचक पु० (सं) वह शब्द जो दूसरे शब्द से [illegible]

संबंधातिशयोक्ति स्त्री० [illegible]

जाता है।

संबंधी वि०(सं) १-विषयक। २-सम्बन्ध रखने वाला ३-सिलसिले या प्रसंग का। पुं० १-समधी। २-रिश्तेदार।

संबंधी-शब्द पुं० (सं) वह शब्द जो सम्बन्ध प्रकट करता हो।

संबत् पुं० (हि) दे० 'संवत्'।

संबद्ध वि० (सं) १-सम्बन्धयुक्त। २-बाँधा या जुड़ा हुआ। ३-सहित। संयुक्त।

संबद्धीकरण पुं० (सं) १-किसी विद्यालय से सम्बन्ध हो जाना। २-किसी समाज का सदस्य बना लिया जाना (एफीलियेशन)।

संबर पुं० (हि) दे० 'संवरण'।

संबरण पुं० (हि) दे० 'संवरण'।

संबरना क्रि० (हि) १-नियंत्रण करना। २-रोकना।

संबल पुं० (सं) १-सहारा। २-जल। ३-शंबल।

संबाद पुं० (हि) दे० 'संवाद'।

संबुक पुं० (हि) घोंघा।

संबुद्ध वि० (सं) १-ज्ञानी। ज्ञानवान। २-जाग्रत। ३-ज्ञात। पुं० १-बुद्ध। २-जिन।

संबुद्धि स्त्री०(सं)१-पूर्णज्ञान। बुद्धिमान। २-आह्वान

संबोध पुं० (सं) १-पूरा ज्ञान या बोध। २-पूरी जानकारी। ३-धीरज।

संबोधन पुं० (सं) १-जागना। २-पुकारना। ३-व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिए प्रयोग सूचित होता है। ४-समाधान करना। किसी के उद्देश्य से कोई बात कहना।

संबोधना क्रि०(हि) १-सम्बोधन करना। २-समझाना बुझाना।

संबोधित वि० (सं) १-जिसका ध्यान आकर्षित किया गया हो। २-बोधित।

संबोध्य पुं० (सं) १-वह जिसे सम्बोधन किया जाय २-वह जिसे बनाया जाय।

संभर पुं० (सं) १-पोषण करने वाला। २-सांभर-झील। ३-रोकथाम। ४-समूह। ५-इकट्ठा करना।

संभरण पुं० (सं) १-भरण-पोषण की व्यवस्था या सामग्री। (प्रॉविजन)। २-रचना। ३-साथ रखना।

संभरण-निधि स्त्री० (सं) दे० 'भविष्यनिधि'। (प्रॉविडेन्ट फंड)।

संभरना क्रि० (हि) किसी सहारे पर रुका रह सकना २-सावधान होना। ३-बचा रहना। ४-कार्य भार उठाया जाना। ५-रोग से छूटकर स्वस्थ होना

संभव पुं० (सं) १-उत्पत्ति। संयोग। ३-सहवास। ४-हेतु। ५-शोभा। ६-हो सकने के योग्य होना। उपयुक्तता। ७-ध्वंस। नाश। ८-युक्ति। वि० जो हो सकता हो। (पॉसिबल)।

संभवतः अव्य० (सं) हो सकता है। संभव है।

संभवना क्रि० (हि) १-उत्पन्न करना। २-उत्पन्न होना। ३-संभव होना।

संभवनीय वि० (सं) १-संभव। मुमकिन।

सँभार पुं० (सं) १-एकत्र या संचय करना। २-भंडार। (स्टोर)। ३-तैयारी। ४-धन। संपत्ति। ५-पालन पोषण।

सँभारना क्रि० (हि) दे० 'संभालना'।

सँभाल स्त्री० (हि) १-देखरेख। रक्षा। २-पोषण या देखरेख का भार।

सँभालना क्रि० (हि) १-रोक कर वश में रखना। २-भार ऊपर लेना। ३-गिरने न देना। ४-बुरी दशा में जाने से रोकना। ५-किसी मनोवेग को रोकना

सँभाला पुं० (हि) मृत्यु से पहले कुछ चेतनता सी आनी।

संभावना स्त्री० (सं) १-हो सकना। (पॉसिबिलिटी)। २-कल्पना। अनुमान। ३-मान। प्रतिष्ठा। ४-एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी के आश्रित होने का वर्णन होता है।

संभावनीय वि० (सं) १-जो हो सकता हो। २-आदर-सत्कार के योग्य। ३-कल्पना के योग्य।

संभावित वि० (सं) १-विचारा हुआ। कल्पित। २-जिसके होने की सभावना हो। (प्रोबेबल)।

संभावितव्य वि० (सं) १-कल्पना या अनुमान के योग्य। २-संभव। ३-सत्कार के योग्य।

संभाव्य वि० (सं) १-जो हो सकता हो। २-कल्पना के योग्य।

संभाषण पुं० (सं) १-कथनोपकथन। २-बातचीत।

संभाषण-निपुण वि० (सं) बातचीत करने में प्रवीण

संभाषणीय वि० (सं) जो बातचीत करने योग्य हो

संभाषी वि० (सं) बातचीत करने वाला।

संभाष्य वि० (सं) जिससे बातचीत करना उचित हो

संभीत वि० (सं) अत्यधिक डरा हुआ।

संभु पुं० (हि) दे० 'शंभु'।

संभुक्त वि० (सं) १-काम से लाया हुआ। २-बहुत थका हुआ।

संभूत वि० (सं) १-उत्पन्न। २-युक्त। सहित। ३-एक साथ उत्पन्न करने वाले।

संभूय अव्य० (सं) एक साथ। साझे में।

संभूय-समुत्थान पुं० (सं) १-साझे का कारबार। २-साझियों में होने वाला वाद-विवाद।

संभृति स्त्री० (सं) १-इकट्ठा करने की क्रिया। २-सामान। सामग्री। ३-राशि। ढेर। ४-भीड़। समूह। ५-अधिकता।

संभेद पुं० (सं) १-खूब भिड़ना। २-आपस में मिले हुए तत्वों या पदार्थों का अलग होना (क्लीवेज)।

संभोग पुं० (सं) १-किसी वस्तु का होने वाला उप-

भोग या व्यवहार। २-मैथुन। ३-प्रेमी तथा प्रेमिका का होने वाला मिलाप।

संभोगी वि० (सं) संभोग करने वाला।

संभोजन पु० (सं) १-भोज। दावत। २-खाना। खाने की वस्तु।

संभ्रम पुं० (सं) १-फेर। चक्कर। घूमना। २-हलचल धूम। ३-उतावली। ४-व्याकुलता। ५-मान। गौरव। ६-[illegible]

[illegible]

हड़बड़ी।

संभ्राजना क्रि० (हि) भली भांति सुशोभित करना।

संयत वि०(सं) १-बँधा हुआ। बद्ध। २-दमन किया हुआ। ३-क्रमबद्ध। ४-निग्रही। ५-उचित सीमा में रोक कर रखा हुआ।

संयतचेता वि० (सं) जिसमें अपने मन को वश में रखने की क्षमता हो।

संयतात्मा वि० (सं) दे० 'संयतचेता'।

संयताहार वि० (सं) बहुत कम खाने वाला। मिताहारी।

संयति स्त्री० (सं) वश में रखना।

संयम पुं० (सं) १-रोक। दाब। २-इन्द्रियनिग्रह। ३-बन्धन में। ४-प्रलय। ५-प्रयत्न। ६-योग में-ध्यान, धारणा तथा समाधि का साधन।

संयमन पुं० (सं) १-रोक। दमन। २-निग्रह। ३-खींचना। कसना (लगाम आदि)। ४-बन्द रखना। ५-बल को वश में रखना।

संयमित वि० (सं) १-दमन किया हुआ। २-बंधा या कसा हुआ। ३-वश में लाया हुआ।

संयमी वि० (सं) १-वासनाओं तथा मन को काबू में रखने वाला। २-पथ्य में रहने वाला।

संयुक्त वि० (सं) १-जुड़ा या लगा हुआ सम्बन्ध। (कनेक्टेड)। २-समन्वित। एक में मिला हुआ। ३-साथ रह कर या मिल कर कार्य करने वाला। (ज्वाइन्ट)।

संयुक्तकुटुम्ब पुं०(सं) वह कुटुम्ब जिसमें माता-पिता, भाई-भतीजे सब एक साथ ही मिल कर रहते हों।

संयुक्तनिर्वाचकवर्ग पु०(सं) वह निर्वाचकों का समूह जो बिना किसी भेदभाव के साम्प्रदायिकता के आधार पर ही मत देने का अधिकारी हो तथा उसमें अनेक संप्रदायों के लोग शामिल हों। (ज्वाइन्ट इलेक्टोरेट)।

संयुक्तराष्ट्रसंघ पुं० (सं) द्वितीय महायुद्ध के बाद अन्तरराष्ट्रीय झगड़ों और समस्याओं पर विचार करने के लिए तथा सद्भावना बढ़ाने की संस्था। (यूनाइटेड नेशन्स ऑर्गेनाइजेशन)।

संयुक्तलेखा पुं० (हि) वह लेखा या हिसाब किताब जो एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा संयुक्त रूप से खोला जाता है। (ज्वाइन्ट एकाउन्ट)।

संयुक्तसरकार पुं० (हि) संकट काल या किसी विशेष स्थिति में दो या दो से अधिक दलों के सदस्यों द्वारा बनाई गई सरकार। (कोलिशन गवर्नमेन्ट)।

संयुक्तस्कन्धप्रमंडल पु० (सं) वह प्रमंडल जिसमें एक से [illegible] (ज्वाइंट स्टाक कम्पनी)।

[illegible] मिलान। २-लगाव। [illegible] ४-दो या कई चीजों का [illegible]। ५-दो या अधिक व्यंजनों का मेल। ६-मतैक्य।

संयोगशृङ्गार पु० (सं) साहित्य में शृङ्गार रस का एक भेद जिसमें प्रेमी-प्रेमिका के मिलन आदि का वर्णन होता है।

संयोगिनी स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका पति उसके साथ ही हो।

संयोगी वि० (सं) १-मिला हुआ। २-संयोग करने वाला। ३-विवाहित। ४-जो अपनी प्रिया के साथ हो।

संयोजक पु० (सं) १-जोड़ने या मिलाने वाला। २-सभा या समिति का वह प्रमुख सदस्य जो उसकी बैठक बुलाने तथा अध्यक्ष के रूप में उसका काम चलाने के लिये नियुक्त होता है। (कन्वीनर)। ३-व्याकरण में दो शब्दों को मिलाने के लिए आता है

संयोजन पु० (सं) १-जोड़ना। मिलाना। २-किसी छोटे प्रांत को बलपूर्वक बड़े राज्य में मिलाना। (अनक्सेशन)।

संयोज्य वि० (सं) १-मिलने योग्य। २-जो मिलाने या जोड़ा जाने वाला हो।

संवोना क्रि० (हि) सजाना।

संरक्षक पु० (सं) १-रक्षा करने वाला। २-आश्रय में रखने वाला। (पेट्रन)। ३-अभिभावक।

संरक्षकता स्त्री० (सं) १-संरक्षक का कार्य। २-संरक्षक होने का भाव।

संरक्षण पुं० (सं) १-हानि, विपत्ति आदि से बचाना। २-देखरेख। निगरानी। ३-अधिकार। ४-दूसरे देशों की प्रतियोगिता से अपने व्यापार आदि की रक्षा। (प्रोटेक्शन)।

संरक्षणकर पुं० (सं) दूसरे राष्ट्रों से व्यापार करने में अनुचित प्रतियोगिता से देशी उद्योगों की रक्षा करने के लिये आयात किये गये माल पर लगाया जाने वाला अतिरिक्त कर। (प्रोटेक्शन ड्यूटी)।

संरक्षणीय वि० (सं) संरक्षण के योग्य।

संरक्षित वि० (सं) १-अच्छी प्रकार बचाकर रखा हुआ। २-अपने संरक्षण में लिया हुआ।

संरक्षित राज्य पुं० (सं) वह छोटी रि[illegible]

जो सुरक्षा की दृष्टि से किसी बड़े राज्य के आधीन हो। (प्रोटेक्टोरेट)।
संरक्ष्य *वि०* (सं) संरक्षण या रक्षा के योग्य।
सँरसी *स्त्री०* (हि) मछली पकड़ने का कांटा। वंसी।
संराधन पुं० (सं) १-प्रसन्न करना। २-पूजा करना। ३-ध्यान। ४-जयजयकार। ५-किसी असंतुष्ट व्यक्ति को खुश करना। (रिकन्सिलियेशन)।
संराधित *वि०* (सं) जिसे पूजा आदि द्वारा प्रसन्न किया गया हो।
संराध्य *वि०* (सं) पूजा करने योग्य।
संलग्न *वि०* (सं) १-मिला हुआ। सटा हुआ। २-सम्बद्ध। ३-किसी दूसरे के साथ अन्त में जुड़ा हुआ। (अपेन्डेड)।
संलाप पुं० (सं) १-प्रलय। २-निद्रा। ३-पक्षियों का उतरना या नीचे बैठना।
संलिप्त *वि०* (सं) १-लीन। भलीभाँति लिप्त। २-खूब लगा हुआ।
संलेख पुं० (सं) १-पूर्ण संयम (बौद्ध)। २-वह लेख जो विधिपूर्वक लिखा हुआ तथा प्रमाणिक माना जाता हो। (डीड)।
संवत् पुं० (सं) १-वर्ष। साल। २-संख्या के विचार से चलने वाली वर्ष गणना में से कोई वर्ष। ३-वह वर्ष गणना जो राजा विक्रमादित्य के समय से चली आती है।
संवत्सर पुं० (सं) १-वर्ष। साल। २-शिव।
संवत्सरीय *वि०* (सं) वार्षिक। हर वर्ष होने वाला।
संवर *स्त्री०* (हि) १-स्मरण। याद। २-वृत्तान्त। हाल
संवरण पुं० (सं) १-चुनना। पसन्द करना। २-हटाना। दूर करना। ३-इच्छा को दबाना। ४-कन्या के विवाह के लिये वर को चुनना।
संवरणशील *वि०* (सं) जिसमें रोक सकने की सामर्थ्य हो।
संवरणशेष पुं०(सं) रोकड़बाकी। (क्लोजिंग बैलेन्स)
संवरणस्कंध पुं० (सं) गोदाम में वह बचा हुआ माल जो सारे दिन के लेन देन के बाद बचा हो। (क्लोजिंग स्टॉक)।
संवरना *क्रि०* (हि) १-सजना। २-बनना। ३-याद करना।
संवरिया *वि०* (हि) दे० 'साँवला'। पुं० श्रीकृष्ण।
संवर्ती-सूची *स्त्री०* (हि) एक ही समय में कई स्थानों से प्रकाशित होने वाली लिपि। (कॉनकरेन्ट लिस्ट)
संवर्द्धक, संवर्धक *वि०* (सं) बढ़ाने वाला।
संवर्द्धन, संवर्धन पुं० (सं) १-बढ़ाना। २-उन्नत करना। ३-पालना-पोसना।
संवल पुं० (सं) दे० 'संबल'।
संवाँ *वि०* (देश) समान। सदृश। (कबीर)।
संवाद पुं० (सं) १-वार्तालाप। बातचीत। २-समाचार। खबर। ३-विवरण। हाल। (रिपोर्ट)। ४-प्रसंग। कथा। ५-नियुक्ति। ६-सहमति। ७-स्वीकार
संवाददाता पुं० (सं) १-संवाद या समाचार देने वाला। २-वह जो किसी विशेष स्थान से समाचार लिख कर समाचार पत्र में छपने के लिए भेजता हो। कोरेस्पोन्डेन्ट, रिपोर्टर)।
संवादन पुं० (सं) १-बातचीत करना। २-सहमत होना। ३-बजाना।
संवादविलोपन पुं० (सं) समाचार पत्रों द्वारा किसी समाचार को सामूहिक रूप से न छापना। (ब्लैक-आउट ऑफ न्यूज)।
संवादी *वि०* (सं) बातचीत करने वाला। २-सहमत होने वाला। पुं० संगीत में वह शब्द जो वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलता है। तथा सहायक होता है।
सँवार पुं० (सं) १-छिपाना। अच्छादन। २-शब्दों के उच्चारण में कंठ का दबाव। ३-बाधा। अड़चन
सँवारना *क्रि०* (हि) १-सजाना। २-ठीक करना। ३-क्रम से रखना। ४-किसी काम को सुचारु रूप से सम्पन्न करना।
संवारित *वि०* (सं) १-मना किया हुआ। २-ढोका हुआ। ३-रोका हुआ।
संवार्य *वि०* (सं) १-मना करने योग्य। २-हटाने योग्य। ३-छिपाने योग्य।
संवावदूक *वि०* (सं) सहमत होने वाला।
संवास पुं० (सं) १-खुशबू। सुगन्ध। २-श्वास के के साथ निकलने वाली दुर्गन्ध। ३-मकान। ४-सहवास। प्रसंग। ५-सार्वजनिक स्थान।
संवाहक पुं० (सं) १-ले जाने वाला। २-ढोने वाला ३-शरीर दबाने या मलने वाला।
संवाहन पुं० (सं) १-ढोना। २-चलाना। ३-शरीर की मालिश। ४-गतिमान् करना।
संवित् *स्त्री०* (सं) दे० 'संविद्'।
संवित्-पत्र पुं० (सं) संधिपत्र।
संविद *वि०* (सं) चेतन। चेतानुयुक्त। पुं० वादा। समझौता।
संविदा *स्त्री०* (सं) कुछ निश्चित शर्तों पर दो पक्षों के बीच होने वाला समझौता। (कंट्रैक्ट)।
संविदान *वि०* (सं) १-जानकार। २-समझदार।
संविद् *स्त्री०* (सं) १-चेतना। बोध। ज्ञान। २-बुद्धि। ३-संवेदन। ४-वृत्तांत। ५-नाम। ६-युद्ध। ७-सम्पत्ति। ८-समझौता ९-मिलने का पहले से ठहराया हुआ स्थान। १०-रीति। प्रथा। ११-तोषण
संविधान पुं०(सं) १-व्यवस्था। २-रीति। ३-रचना ४-वह विधान या कानून जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन तथा व्यवस्था होती है। (कनस्टीट्यूशन)। ५-अनुष्ठापन

संविधानक पुं० (सं) अलौकिक घटना।

संविधान-सभा स्त्री० (सं) वह सभा या परिषद् जो किसी देश, जाति या राष्ट्र के राजनैतिक शासन की नियमावली बनाने के लिए संघटित हो (कन्स्टीट्यूएन्ट असेम्बली)।

संविधि स्त्री० (सं) १-विधान रीति। २-प्रबन्ध। व्यवस्था।

संविभाजन पुं०(सं) १-साझा। बाट। २-दाय आदि का दायित्व अलग-अलग सम्बन्धित व्यक्तियों में उचित रूप से विभाजित करना। २-बांटने के निमित्त अलग अलग अंश करना। (अपोर्शनमेन्ट)

संवृत वि० (सं) १-आच्छादित। २-रक्षित। ३-लपेटा हुआ। ४-(गला) बँधा हुआ। ५-चौमा किया हुआ।

संवृद्ध वि० (स) १-उन्नत। २-बढ़ा हुआ।

संवृद्धि स्त्री०(सं) १-समृद्धि। २-किसी वस्तु के बाहरी श्रद्धों में लगातार बाद में होने वाली वृद्धि। (एक्रीशन)।

संवेग पुं० (स) १-उद्विग्नता। घबड़ाहट। २-पूर्ण वेग। ३-भय। ४-जोर। अतिरेक।

संवेदन पु० (सं) १-सुख-दुःख आदि का अनुभव करना। जताना। २-ज्ञान।

संवेदनवाद पु० (सं) वह सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि ज्ञान की प्राप्ति संवेदना से होती है। (सेन्सेशनेलिज्म)।

संवेदना स्त्री० (स) १-मन में होने वाला बोध या अनुभव। २-सहानुभूति। किसी के कष्ट को देख कर मन में होने वाला दुःख।

संवेदनीय वि० (सं) १-बताया या जताया हुआ। २-अनुभव योग्य।

संवेदित वि०(सं) १-अनुभव किया हुआ। २-बताया हुआ।

संवेष्टक पुं० (सं) वह व्यक्ति जो पुस्तकें, दवाएँ तथा अन्य वस्तुएँ कागज आदि में ठीक प्रकार से लपेट कर बाहर भेजने के लिए तैयार करता हो। (पैकर)

संवेष्टन पु० (सं) १-लपेटना। २-घेरना। ३-बांधना।

संवेष्टन-व्यय पुं० (सं) किसी माल को बाहर भेजने के लिये उसको डिब्बे में बन्द करने तथा कागज आदि में लपेट कर तैयार करने पर आने वाला व्यय। (पैकिंग चार्जेज)।

संवेष्टिका स्त्री० (सं) १-गत्ते या लकड़ी की पेटी आदि में बन्द किया हुआ माल। २-किसी वस्तु का कोई छोटा बंडल (पैकेट)।

संवेष्टित वि० (स) जो किसी कागज आदि में बन्द या लपेटा गया हो अथवा साथ रखा गया हो। (एनक्लोज्ड)।

संशय पु० (स) १-...

संशयात्मा पु० (सं) जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करे। सन्देहवादी।

संशयालु वि० (सं) सन्देहशील। विश्वास न करने वाला।

संशयित वि० (स) संशय या दुविधा में पड़ा हुआ।

संशयिता पु० (स) संशय करने वाला।

संशयी वि० (स) शक्की। सन्देह करने वाला।

संशयोच्छेदी वि० (स) संशय या सन्देह दूर करने वाला।

संशयोपमा स्त्री० (स) एक उपमा अलङ्कार जिसमें कई वस्तुएँ एक साथ संशय रूप में कही जाती हैं।

संशिति स्त्री० (स) १-सन्देह। संशय। २-भली भांति सान पर चढ़ाना।

संशीलन पु० (स) किसी कार्य को नियमपूर्वक करना अभ्यास करना।

संशुद्ध वि० (स)१-शुद्ध किया हुआ। २-चुकाया हुआ (ऋण आदि)। ३-अपराध से मुक्त किया हुआ।

संशुद्धि स्त्री० (स) १-पूरी पवित्रता। २-शरीर की सफाई।

संशोधक पु० (सं) १-संशोधन करने वाला। २-चुकाने वाला। ३-बुरी से अच्छी दशा में लाने वाला।

संशोधन पु० (स) १-भूल आदि सुधारना। २-प्रस्ताव आदि में कुछ सुधार करने या घटाव-बढ़ाव करने का सुझाव। (अमेण्डमेन्ट)। ३-ऋण का पूरा भुगतान करना।

संशोधनीय वि० (स) सुधारने या ठीक करने योग्य।

संशोधित वि० (सं) १-शुद्ध किया हुआ। २-जिसका संशोधन हुआ हो।

संशोधी-विधेयक पु० (स) किसी अधिनियम आदि में कोई सुधार करने के लिये उपस्थित किया जाने वाला विधेयक। (अमेंडिंग बिल)।

संशोध्य वि० (स) सुधारने या ठीक करने योग्य।

संश्रय पु० (सं) १-मेल। संयोग। २-आश्रय। ३-सम्पर्क। सम्बन्ध। ४-अवलम्ब। ५-घर। ६-अंश ७-शरण। स्थान।

संश्रयण पु० (स) सहारा लेना। २-शरण लेना।

संश्रयी वि० (सं) सहारा या शरण लेने वाला।

संश्रित वि० (सं) १-जुड़ा हुआ। संयुक्त। २-संलग्न ३-आलिङ्गित। ४-आसरे या भरोसे पर रहने वाला।

संश्लिष्ट वि० (स)१-जुड़ा या सटा हुआ। २-मिश्रित ३-आलिंगित। पु० १-राशि। ढेर। २-एक प्रकार का मण्डप।

संश्लेष पु० (स) १-मेल। मिलाप। २-मे

सटाव ।
सश्लेषण पुं० (सं) १-एक में मिलाना । २-लगाना ३-कार्य के कारण या नियम सिद्धान्त आदि से उनके फल अथवा परिणाम पर विचार करना । (सिन्थेसिस) ।
संश्लेषित वि० (सं) १-जोड़ा या मिलाया हुआ । २-आलिंगन किया हुआ ।
सस पुं० (हि) दे० 'संशय' । पुं० (देश) बरकत । वृद्धि ।
ससइ पुं० (हि) संशय ।
संसक्त वि० (सं) किसी की सीमा के साथ लगा हुआ (कण्टीजियस) । २-सम्बद्ध । ३-लीन ।
संसक्तचेता वि० (सं) जिसका मन किसी विषय में लीन हो ।
संसक्ति स्त्री० (सं) १-किसी के साथ सटे होने का भाव । २-एक जैसे तत्वों का आपस में मिलकर एकरूप होना । (कोहीज़न) । ३-सम्बन्ध । लगाव । ४-प्रवृत्ति ।
संसज्जन पुं० (सं) सेना को युद्ध के लिए पूरी तरह शस्त्रों से सुसज्जित करना । (मोबिलाइजेशन) ।
संसज्जित वि० (सं) युद्ध के लिए शस्त्रों आदि से सुसज्जित (सेना) । (मोबिलाइज्ड) ।
संसद् स्त्री० (सं) १-सभा । समाज । राजसभा । दरबार । राज्य अथवा शासन सम्बन्धी कार्यों में सहायता देने तथा पुराने विधानों में संशोधन और नये विधान बनाने के लिए प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्यों की सभा । (पार्लिमेंट) ।
संसय पुं० (हि) दे० 'संशय' ।
संसरण पुं० (सं) १-चलना । २-सेना की अबाध यात्रा । राजमार्ग । ४-सराय । धर्मशाला । ५-भव-चक्र ।
संसर्ग पुं०(सं) १-मिलन । मिलाप । २-साथ । संगति ३-चपला । ४-लगाव । ५-परिचय । ६-घनिष्टता । ७-वह बिंदु जहां एक रेखा दूसरी रेखा को काटती हो । ८-स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध ।
संसर्गज वि० (सं) जो संसर्ग से उत्पन्न हुआ हो ।
संसर्गदोष पुं० (सं) सङ्गत से होने वाली बुराई या दोष ।
ससा पुं० (हि) संशय ।
संसार पुं० (सं) १-दुनिया । जगत् । मृत्युलोक । २-आवागमन । ३-मायाजाल । ४-घर । ५-निरंतर एक अवस्था में जाते रहना ।
संसारचक्र पुं० (सं) १-आवागमन । भवचक्र । २-मायाजाल ।
संसारबंधन पुं० (सं) दुनिया के बंधन । सांसारिक बन्धन ।
संसारयात्रा स्त्री० (सं) १-जीवन का निर्वाह । २-जीव ।
संसारसुख पुं० (सं) भौतिक सुख ।
संसारी वि० (सं) १-संसार सम्बन्धी । लौकिक । २-२-भौतिक । ३-लोक व्यवहार में कुशल । ४-बारबार जन्म ग्रहण करने वाला ।
संसिक्त वि० (सं) अच्छी तरह से सींचा हुआ । तर ।
संसिद्ध वि० (सं) १-प्राप्त । २-भलीभांति किया हुआ स्वस्थ । ४-उद्यत । ५-निपुण । ६-मुक्त ।
संसिद्धि स्त्री० (सं) १-सफलता । प्राप्ति । २-स्वस्थता ३-मोक्ष । मुक्ति । ४-स्वभाव । ५-मदमस्त स्त्री ।
संसूचित वि० (सं) १-प्रकट किया हुआ । २-डांटा-डपटा हुआ ।
संसृति स्त्री०(सं) १-जगत् । संसार । २-आवागमन ।
संसृष्ट वि० (सं) १-एक साथ उत्पन्न । २-मिश्रित । ३-रचित । ४-संगृहीत । ५-संबद्ध । ६-शामिल । ७-वमन आदि द्वारा शुद्ध किया हुआ । ८-बहुत परिचित । पुं० घनिष्टता ।
संसृष्टि स्त्री० (सं) १-एक साथ उत्पत्ति । २-मिश्रण । ३-रचना । ४-लगाव । घनिष्टता । ५-संग्रह ।
संसेवित वि० (सं) १-जो भलीभांति व्यवहार में लाया गया हो । २-जिसकी अच्छी प्रकार से सेवा की गई हो ।
संसौ पुं० (हि) प्राण । श्वास ।
संस्करण पुं० (सं) १-ठीक करना । संस्कार करना । २-पुस्तकों की एक बार की छपाई । (एडीशन) । परिष्कृत करना ।
संस्कर्ता पुं० (सं) संस्कार करने वाला ।
संस्कार पुं० (सं) १-दोषादि दूर करके पवित्र करना सुधार । २-पूर्वजन्म का मन पर पड़ने वाला प्रभाव ३-हिन्दुओं में धार्मिक दृष्टि से शुद्धि तथा उन्नत करने के लिए होने वाले सोलह विशिष्ट कृत्य । ४-मन, रुचि, आचार-विचार आदि को उन्नत करने का कार्य । ५-मृतक की अन्त्येष्टि क्रिया ।
संस्कारक पुं० (सं) १-शुद्ध करने वाला । २-संस्कार करने वाला ।
संस्कारकर्ता पुं० (सं) वह ब्राह्मण जो संस्कार करता है ।
संस्कारज वि० (सं) जो संस्कार से उत्पन्न हो ।
संस्कारपूत वि० (सं) जो संस्कार द्वारा शुद्ध या पवित्र किया गया हो ।
संस्कारवर्जित वि० (सं) (वह व्यक्ति) जिसका कोई न हुआ हो ।
संस्कारहीन वि० (सं) जिसका संस्कार न हुआ ।
संस्कृत वि० (सं) १-शुद्ध किया हुआ । २-परमार्जित ३-जिसका संस्कार हुआ हो । ४-पकाया हुआ । स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन तथा प्रसिद्ध भाषा ।
संस्कृति स्त्री० (सं) १-शुद्धि । सफाई । २-संस्कार ।

सकता पुं० (हि) १-बेहोशी। २-स्तब्धता। ३-कविता में विराम (।) यति भंग का दोष।
सकती स्त्री० (हि) १-शक्ति। बल। २-शक्ति नामक अस्त्र।
सकना क्रि० (हि) कोई काम करने में समर्थ होना। करने योग्य।
सकपक स्त्री० (हि) घबड़ाहट। हिचक।
सकपकाना क्रि० (हि) १-आगा-पीछा करना। घबड़ाना। २-चकित होना। ३-लज्जित होना।
सकर वि० (हि) १-जिसके हाथ हों। २-सूँड़युक्त। ३-किरणयुक्त। स्त्री० (देश) शक्कर।
सकरना क्रि० (हि) १-स्वीकृत होना। २-कबूला जाना।
सकरपाला पुं० (हि) दे० 'शकरपारा'।
सकरा वि० (हि) १-जूठा। २-तंग। संकीर्ण।
सकरुण वि० (सं) दयाशील। जिसमें करुणा हो।
सकर्ण वि० (सं) कान वाला। पुं० (सं) वह जो सुनता हो।
सकर्मक वि० (सं) १-काम में लगा हुआ। २-व्याकरण में कर्म संयुक्त।
सकल वि० (सं) सब। कुल। समस्त।
सकलपरिसंपत् स्त्री० (सं) वह सारी परिसम्पत् जिसमें ऋणादि की रकम भी लगा ली गई हो। (ग्रास-असेट्स)।
सकलप्रिय वि० (सं) जो सबको प्रिय लगे। पुं० (सं) चना।
सकलात पुं० (हि) १-ओढ़ने की रजाई। दुलाई। २-भेंट। उपहार। ३-मखमली कपड़ा।
सकलाती वि० (सं) १-श्रेष्ठ। २-मखमल का।
सकलाधार पुं० (सं) शिव।
सकसकाना क्रि० (हि) अत्यधिक भयभीत होना।
सकसना क्रि० (हि) १-डरना। भयभीत होना। २-अड़ना। फँसना।
सकसाना क्रि०(हि)१-डराना। २-भयभीत करना। ३-फंसाना।
सका पुं० (देश) दे० 'सक्का'।
सकाना क्रि० (हि) १-हिचकना। २-शङ्का करना। ३-दुखी होना।
सकाम वि० (सं) १-जिसके मन में वासना हो। २-कामुक। ३-प्रेमी। ४-फल की इच्छा से काम करने वाला।
सकारना क्रि० (हि) १-स्वीकार करना। २-महाजन का अपने नाम आई हुई हुंडी मान्य करना। (टू ऑनर ए बिल ऑर ड्राफ्ट)।
सकारा पुं० (हि) महाजनी में वह धन जो हुण्डी सकारने या उसका समय फिर से बढ़ाने के समय लिया जाता है।
सकारात्मक वि०(सं) स्वीकारात्मक।
सकारे अव्य० (हि) सवेरे। तड़के।
सकारे अव्य० (हि) दे० 'सकारे'।
सकाल अव्य० (सं) १-सवेरे। २-ठीक समय पर।
सकाश अव्य० (सं) पास। निकट। समीप।
सकिलना क्रि० (हि) १-फिसलना। सरकना। २-[illegible] होना। ३-सिमटना।
सकुच स्त्री० (हि) सङ्कोच। लाज। शर्म।
सकुचना क्रि० (हि) १-सङ्कोच करना। २-(फूलों का) बन्द होना।
सकुचाई स्त्री० (हि) संकोच। लज्जा।
सकुचाना क्रि० (हि) १-संकोच करना। २-सिकोड़[illegible] ३-लज्जित करना।
सकुचीला वि० (हि) शरमीला। संकोच करने वाल[illegible]
सकुचौहां वि०(सं) संकोच करने वाला।
सकुड़ना क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।
सकुन पुं० (हि) १-पक्षी। चिड़िया। २-दे० 'शकु[illegible]
सकुनी स्त्री० (हि) पक्षी। पखेरू।
सकुपना क्रि० (हि) दे० 'सकोपना'।
सकुल्य पुं० (सं) सगोत्र।
सकूनत स्त्री०(सं) १-पता। निवास स्थान।
सकूनती वि० (हि) दे० 'सकूनती'।
सकृत् अव्य० (सं) १-एक बार। २-सदा। साथ [illegible] १-काक। २-पशुओं का मल।
सकेत पुं० (हि) १-संकेत। इशारा। २-दुःख। क[illegible] वि० सङ्कीर्ण। सङ्कुचित।
सकेतना क्रि० (हि) सङ्कुचित होना। सिकुड़ना।
सकेरना क्रि० (हि) १-एकत्र करना। समेटना। बन्द करना।
सकेलना क्रि० (हि) इकट्ठा करना।
सकेला पुं० (हि) एक प्रकार का लोहा। स्त्री० लोहे से बनी हुई तलवार।
सकैतव वि० (सं) कपटी। धोखेबाज।
सकोच पुं० (हि) दे० 'संकोच'।
सकोड़ना क्रि० (हि) दे० 'सिकोड़ना'।
सकोपना क्रि० (हि) क्रोध या गुस्सा करना।
सकोपित वि (हि) क्रुद्ध। कोपित।
सकोरना क्रि० (हि) सिकोड़ना।
सकोरा पुं० (हि) मिट्टी का छोटा प्याला। कसोरा।
सक्का पुं० (फा) भिश्ती। सका।
सक्तु पुं० (सं) सत्तू।
सक्तुकारक पुं० (सं) सत्तू बनाने या बेचने वा[illegible]
सक्तुधानी स्त्री० (सं) सत्तू रखने का बरतन।
सक्थि स्त्री० (सं) १-एक गर्म स्थान। जङ्घा। २-ह[illegible] ३-गाड़ी का लट्ठा।
सक्र पुं० (हि) शक्र। इन्द्र।
सक्रधनु पुं० (हि) मेघनाद।
सक्रारि पुं० (हि) मेघनाद।

सक्रिय वि० (सं) १-जो क्रियात्मक रूप में हो। २-जिसमें क्रिया भी हो। ३-जिसमें कुछ करके दिखाया जाय।
सक्रिय-सेवा स्त्री० (सं) युद्धक्षेत्र में किसी सैनिक द्वारा किया गया कार्य या सेवा। (एक्टिव सर्विस)
सक्षत वि० (म) हारा हुआ। पराभूत।
सक्षम वि० (सं) १-जिसमें क्षमता हो। २-समर्थ। ३-किसी कार्य के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त। (कम्पीटेन्ट)।
सखर पु० (सं) एक राक्षस का नाम। वि० (हि) दे० 'सखरा'।
सखरच वि० (हि) अमीरों की तरह खर्च करने वाला शाहखर्च।
सखरज वि० (हि) दे० 'सखरच'।
सखरस पुं० (हि) मक्खन।
सखरा पुं० (हि) १-क्षारयुक्त। खारा। २-निखरा का उलटा। ३-कच्ची रसोई।
सखरी स्त्री०(हि) दाल रोटी आदि कच्ची रसोई। (डि०)पहाड़ी। छोटा पहाड़।
सखसावन पु० (हि) १-पालकी। २-पलंग। ३-आराम कुर्सी।
सखा पुं० (हि) १-साथी। २-सहयोगी। ३-मित्र। ४-साहित्य में नायक का सहचर जो उसके सुखदुःख में उसके समान ही दुःखसुख में प्राप्त होते हैं।
सखाभाव पुं० (सं) घनिष्ठता। गहरी मित्रता।
सखावत स्त्री० (म) १-दानशील। २-उदारता।
सखी स्त्री० (स) १-सहेली। सहचरी। २-साहित्य में नायिका के साथ रहने वाली वह स्त्री जिससे वह अपने मन की सब बातें कहती है। एक मात्रिक छन्द का एक भेद। वि०(फ) दाता। दानी।
सखीभाव पुं० (सं) एक प्रकार की भक्ति जिसमें भक्त अपने आप को इष्ट देवता की सखी या पत्नी मानकर उसकी उपासना करता है।
सखीसम्प्रदाय पुं०(सं) एक वैष्णव सम्प्रदाय जो सखी भाव को मानता है।
सखुआ पुं० (हि) शालवृक्ष।
सखुन पुं० (फ) १-बातचीत। कथन। २-उक्ति। ३-काव्य। कविता। वचन। कौल।
सख्त वि० (फ) १-कड़ा। कठोर। २-कठिन। ३-कठोर व्यवहार करने वाला।
सख्तगीर वि० (फ) छोटे से अपराध पर भी कड़ी सजा देने वाला। निर्दयी।
सख्तपड़ी स्त्री० (फ) कठिनाई का काम।
सख्तजबान वि० (फ) कटुभाषी।
सख्तदिल वि० (फ) निर्दय। जिसमें दया न हो।
सख्तपजा वि०(फ) लालची। लोभी।
सख्तमिजाज वि० (फ) क्रोधी।

सख्तलगाम वि०(फ)१-मुंहजोर। २-सरकश (घोड़ा)।
सख्ती स्त्री० (फ) १-कठोरता। कड़ाई। २-क्रूरता। कठिनता।
सख्य पुं० (सं) १-सखा का भाव। सखापन। २-मित्रता। दोस्ती। ३-भक्ति का वह भाव जिसमें इष्टदेव को भक्त अपना सखा मानकर उसकी उपासना करता है।
सख्यता स्त्री० (सं) सखापन। मैत्री। दोस्ती।
सख्यविसर्जन पुं० (सं) मित्रता भंग हो जाना।
सगंध वि० (सं) १-जिसमें गंध हो। २-अभिमानी। पु० सम्बन्धी।
सग वि० (हि) सगा। सम्बन्धी। अपना।
सगड़ी स्त्री (हि) छोटा सगड़।
सगण वि० (सं) दल या सेनायुक्त। पु० छन्दशास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होता है (IIS)।
सगन पु० (हि) १-दे० 'सगण'। २-दे० 'शकुन'।
सगनौती स्त्री० (हि) शकुन विचारना।
सगपन पुं० (हि) दे० 'सगापन'।
सगपहती स्त्री० (हि) वह दाल जो साग मिलाकर पकाई गई हो।
सगपैती स्त्री० (हि) दे० 'सगपहती'।
सगबग वि० (हि) १-सराबोर। लथपथ। २-चकित। ३-परिपूर्ण।
सगबगना क्रि० (हि) आर्द्र होना।
सगबगाना क्रि०(हि) १-लथपथ होना। २-सकपकाना।
सगमत्ता पु० (हि) साग मिलाकर पकाया हुआ चावल या भात।
सगर वि०(स) विषैला। विषयुक्त। पु० एक सूर्यवंशी राजा का नाम।
सगरा वि० (हि) सब। तमाम। कुल। पु० १-झील। तालाब।
सगर्भ वि०(स) सगा। सहोदर। एक ही गर्भ से उत्पन्न।
सगर्भा स्त्री० (स) १-सगी बहन। २-गर्भवती स्त्री।
सगल वि० (हि) दे० 'सकल'।
सगा वि० (हि) १-सहोदर। एक माता से उत्पन्न। जो अपने कुल का हो।
सगाई स्त्री० (हि) मंगनी। विवाह का निश्चय। २-नाता। सम्बन्ध।
सगापन पु० (हि) सगा होने का भाव।
सगारत स्त्री० (हि) दे० 'सगापन'।
सगुण वि० (स) गुण वाला। पुं० १-साकार ब्रह्म। परमात्मा का वह रूप जिसमें सत्व, रज और तम तीनों हों। २-सगुण ब्रह्म की पूजा करने वाला सम्प्रदाय।
सगुणोपासना स्त्री० (सं) सगुणब्रह्म की
सगुन पु०(हि) १-दे०'सगुण'। २-दे०'

सगुनाना क्रि० (हि) शकुन निकालना या देखना।
सगुनिया पुं० (हि) सगुन निकालने या बताने वाला।
सगुनौती स्त्री० (हि) शकुन विचारने का काम।
सगुरा वि० (हि) जिसके गुरु हो। जिसने गुरु से दीक्षा ले ली हो।
सगृह पु० (सं) सपत्नीक। घर गृहस्थी वाला।
सगोत वि० (हि) दे० 'सगोत्र'।
सगोती पुं० (हि) १-सगोत्र। २-भाई-बन्धु।
सगोत्र पुं० (सं) १-एक ही गोत्र के लोग। २-वंश। ३-एक ही साथ पिण्डदान आदि करने वाला।
सगोती स्त्री० (देश) खाने का मांस।
सगड़ पुं० (हि)बोझ ढोने वाली एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी खींचते हैं।
सघन वि० (सं) १-अविरल। सघन। २-ठोस। ठस
सघनता स्त्री० (सं) निविड़ता। सघन होने का भाव।
सच वि० (हि) १-सत्य। जैसा हो वैसा। २-ठीक। ३-वास्तविक।
सचकित वि० (सं) १-चकित। २-डरा हुआ।
सचना क्रि० (हि) १-संचय करना। २-पूरा करना। ३-सजना।
सचमुच अव्य०. (हि) १-वास्तव में। वस्तुतः। २-अवश्य। निश्चय।
सचर वि० (हि) गतिशील। चलायमान। सचल।
सचरना क्रि० (हि) १-फैलना। संचरित होना। २-बहुत प्रचलित होना।
सचराचर पुं० (सं) संसार के चर और अचर सभी पदार्थ तथा प्राणी।
सचल पुं० (सं) चलायमान। चर। जंगम पदार्थ। वि० १-चचल। २-जो अचल न हो।
सचलता स्त्री० (सं) गतिशीलता।
सचललवण पुं० (सं) साँभर नमक।
सचाई स्त्री० (हि) १-सत्यता। ईमानदार। २-यथार्थता।
सचान पुं० (हि) बाजपक्षी।
सचारना क्रि० (हि) फैलाना। संचारित करना।
सचारु वि० (सं) अत्यधिक सुन्दर।
सचावट स्त्री० (हि) सत्यता। सचाई।
सचित वि० (सं) जिसे चिन्ता या फिकर हो।
सचिक्कण वि० (सं) बहुत चिकना।
सचिक्कन वि० (हि) बहुत चिकना।
सचित्त वि० (सं) जिसका ध्यान एक ओर लगा हुआ हो।
सचित्र वि० (सं) जिसमें चित्र हों। जो चित्रों से संयुक्त हो।
सचिव पुं० (सं) १-सहायक। २-मित्र। ३-वह प्रधान अधिकारी जिसके परामर्श से राज्य के किसी विभाग के सब काम होते हों तथा जो उस विभाग के मंत्री के आधीन होता है। (सेक्रेटरी)। ४-वह व्यक्ति जो निजी पत्र-व्यवहार के लिए नियुक्त किया गया हो। ५-धतूरे का पौधा।
सचिवता स्त्री० (सं) मंत्रित्व। सचिव होने का भाव।
सचिवत्व पुं० (सं) दे० 'सचिवता'।
सचिवालय पुं० (सं) वह भवन जिसमें किसी राज्य या प्रादेशिक सरकार के सचिवों, मंत्रियों और विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय रहते हैं (सेक्रिटेरियेट)।
सची स्त्री० (सं) १-इन्द्र की पत्नी का नाम। अमर।
सचीनंदन पुं० (सं) १-जयन्त। २-श्री चैतन्यदेव।
सचु पुं० (देश) १-सुख। आराम। २-प्रसन्न।
सचेत वि०(हि) १-जो चेतनायुक्त हो। २-सावधान ३-समझदार।
सचेतक पुं० (सं) दे० 'चेतक'। (ह्विप)।
सचेतन वि० (सं) १-चेतनायुक्त। २-सावधान। चतुर। पुं० वह जिसमें चेतना या ज्ञान हो।
सचेती स्त्री० (हि) १-सावधानी। २-सचेत होने का भाव।
सचेल वि०(सं) जो वस्त्रों से आच्छादित हो।
सचेष्ट वि० (सं) १-जो चेष्टा करे। २-जिसमें चेष्टा हो।
सचैल वि० (सं) दे० 'सचेल'।
सच्चरित वि० (सं) जिसका चरित्र अच्छा हो।
सच्चरित्र वि०(सं) दे० 'सच्चरित'।
सच्चा वि०(हि) १-सत्यवादी। २-यथार्थ। वास्तविक ठीक। असली। पूरा।
सच्चाई स्त्री० (हि) सत्यता। सच्चा होने का भाव।
सच्चापन पुं० (हि) सचाई। सत्यता।
सच्चिक्कन वि० (हि) दे० 'सचिक्कण'।
सच्चिदानंद पुं०(सं) (सत्‌चित तथा आनन्द से संयुक्त) ब्रह्म।
सच्छंद वि० (हि) दे० 'स्वच्छंद'।
सच्छत वि० (हि) घायल। आहत।
सच्छाय वि० (सं) १-जो छायादार हो। २-चमकदार
सच्छास्त्र पुं० (सं) अच्छा या उत्तम शास्त्र या ग्रन्थ
सच्छिद्र वि० (सं) जिसमें दोष हो। छेददार।
सच्छी पुं० (हि) दे० 'साक्षी'।
सच्छील पुं० (सं) सदाचार। वि० शीलवान।
सज स्त्री०(हि) १-सजावट। २-गढ़न। बनावट। ३-शोभा। ४-सुन्दरता।
सजग वि० (हि) सचेत। सावधान। होशियार।
सजदार वि० (हि) सुन्दर।
सजधज स्त्री० (हि) सजावट। बनाव। शृङ्गार।
सजन पुं० (हि) १-सज्जन। भला आदमी। २-पति स्वामी। ३-प्रियतम। वि० (सं) जिसमें जन या लोग हों।

२-फटकारना ।
सटकारा वि० (हि) चिकना, मुलायम तथा लम्बा (बाल) ।
सटकारी स्त्री० (हि) लचकदार पतली छड़ी ।
सटक्का पुं० (हि) दौड़ । झपट ।
सटना क्रि० (हि) १-चिपकना । २-इस प्रकार आपस में मिलना कि तल एक दूसरे से मिल जायँ । ३-मारपीट होना ।
सटपट स्त्री० (हि) १-चकपकाहट । २-शील । संकोच ३-संकट ।
सटपटाना क्रि० (हि) १-सटपट की ध्वनि होना । २-सटपट शब्द होना ।
सटरपटर वि०(हि) १-तुच्छ । छोटामोटा । २-साधारण या मामूली । स्त्री० १-उलझन का काम । २-व्यर्थ का या तुच्छ काम ।
सट-सट अव्य०(हि) १-शीघ्र । तुरन्त । २-'सट' शब्द सहित ।
सटा स्त्री० (हि) १-जटा । २-शिखा । ३-केशर ।
सटाक पुं० (हि) 'सट' शब्द ।
सटाकी स्त्री० (हि) छड़ी में लगी हुई चमड़े की पट्टी
सटान स्त्री० (हि) १-मिलान । २-दो वस्तुओं के सटने या मिलने का स्थान । जोड़ ।
सटाना क्रि० (हि) १-दो वस्तुओं को मिलाना या जोड़ना । २-लाठी या डंडे से लड़ाई करना ।
सटियल वि० (देश) घटिया । रद्दी ।
सटिया स्त्री० (हि) १-सोने या चांदी की एक प्रकार की चूड़ी । २-मांग में सिन्दूर भरने की चांदी की कलम । ३-दे० 'साटी' ।
सटीक वि० (सं) जिसमें मूल के अतिरिक्त टीका भी हो । व्याख्यासहित । वि० (हि) बिलकुल ठीक ।
सटोरिया पुं० (हि) सट्टेबाज ।
सट्ट पुं० (सं) दरवाजे की चौखट में दोनों ओर की लकड़ियां । बाजू । (हि) सट्टा ।
सट्टक पुं० (सं) १-प्राकृत भाषा में रचित छोटा रूपक २-जीरा मिला हुआ मट्ठा ।
सट्टा पुं० (देश) १-इकरारनामा । २-सामान्य व्यापार से भिन्न खरीद-बिक्री का वह भेद जो केवल तेजी मन्दी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिए होता है । (स्पेकुलेशन) । ३-हाट ।
सट्टा-बट्टा पुं० (हि) १-मेल मिलाप । २-चालबाजी । ३-अनुचित सम्बन्ध ।
सट्टी स्त्री० (हि) वह बाजार जिसमें एक ही प्रकार की वस्तुएँ कुछ निश्चित समय के लिए आकर बिकती हैं । हाट ।
सट्टेबाज पुं० (हि) वह जो केवल तेजी-मन्दी के विचार से खरीद-बिक्री करता हो । (स्पेक्यूलेटर) ।
सठ पुं० (हि) दे० 'शठ' ।
सठता स्त्री० (हि) १-शठता । २-मूर्खता ।
सठियाना क्रि० (हि) १-साठ वर्ष का होना । २-बुढ़ापे के कारण बुद्धि का ठीक काम न देना ।
सड़क स्त्री० (हि) आने-जाने का चौड़ा और पक्का मार्ग ।
सड़न स्त्री० (हि) सड़ने की क्रिया या भाव । गलन ।
सड़ना क्रि० (हि) १-जल मिले पदार्थ में खमीर उठ आना । २-किसी वस्तु में ऐसा विकार होना कि वह गलने लगे और उसमें दुर्गन्ध आने लगे । ३-हीन अवस्था में पड़ा रहना ।
सड़सठ वि० (हि) साठ और सात । (६७) ।
सड़ान स्त्री०(हि) १-सड़ने की दुर्गन्ध । २-सड़ने की क्रिया या भाव ।
सड़ाना स्त्री० (हि) किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना ।
सड़ायँध स्त्री० (हि) किसी वस्तु के सड़ने पर उसमें से आने वाली दुर्गन्ध ।
सड़ाव पुं० (हि) सड़ने की क्रिया या भाव । सड़ान ।
सड़ासड़ अव्य० (हि) १-'सड़सड़' शब्द के साथ । २-शीघ्रता से ।
सड़ियल वि० (हि) १-सड़ा हुआ । २-खराब । ३-निकृष्ट ।
सण पुं० (हि) दे० 'शण' ।
सणतूल पुं० (हि) सन का रेशा ।
सणसूत्र पुं० (हि) सन की बनी हुई रस्सी ।
सत वि० (हि) १-सत्य । सच । २-वास्तविक । यथार्थ पुं० १-सत्यतापूर्ण धर्म । जीव । ३-किसी पदार्थ का सारभाग ।
सतकार पुं०(हि) दे० 'सत्कार' । आदर । सम्मान ।
सतकारना क्रि० (हि) आदर या सत्कार करना ।
सतकोन वि० (हि) सात कोनों वाला ।
सतगुरु पुं०(हि) १-परमात्मा । २-सच्चा और अच्छा गुरु ।
सतजुग पुं० (हि) सत्ययुग ।
सतत अव्य० (सं) १-सदा । सर्वदा । २-निरंतर । लगातार ।
सततगति पुं० (सं) हवा । पवन ।
सततज्वर पुं० (सं) एक दिन में दो बार आने वाला ज्वर ।
सततदुर्गत वि० (सं) जो सदा कष्ट में रहता हो ।
सतदंता वि० (हि) सात दांत वाला (पशु) ।
सतदल पुं० (हि) १-कमल । २-सौ दलों वाला कमल
सतनजा पुं० (हि) सात प्रकार के भिन्न-भिन्न अन्नों का मेल ।
सतनु वि० (सं) देह या शरीर वाला ।
सतपतिया स्त्री०(हि) १-सात पति करने वाली स्त्री । २-एक प्रकार की तोरई । ३-छिनाल ।

सतपत्र पुं० (हि) कमल।
सतपरब पुं० (हि) दाना।
सतपुतिया स्त्री० (हि) एक प्रकार की तरोई।
सतफेरा पुं० (हि) विवाह के अवसर पर होने वाला सप्तपदी नामक कर्म।
सतभाव पुं० (हि) १-सद्भाव। २-सचाई। ३-साधारन।
सतभौरी स्त्री० (हि) दे० 'सतफेरा'।
सतमख पुं० (हि) १-इन्द्र। २-सौ यज्ञ करने वाला।
सतमासा पुं० (हि) १-गर्भ के सातवें मास में उत्पन्न होने वाला शिशु। २-गर्भाधान के सातवें महीने में होने वाली एक रस्म।
सतमूली स्त्री० (हि) शतावरी। शतावर।
सतयुग पुं० (हि) सत्ययुग।
सतरंगा वि० (हि) सात रंगों वाला। पुं० (हि) इन्द्रधनुष।
सतरंज स्त्री० (हि) दे० 'शतरंज'।
सतरंजी स्त्री० (हि) दे० 'शतरंजी'।
सतर स्त्री० (अ) १-लकीर। रेखा। २-पंक्ति। कतार। ३-ओट। ४-स्त्री या पुरुष की गुप्त इन्द्रिय। वि० (अ) १-वक्र। टेढ़ा। २-क्रुद्ध। नाराज।
सतरपोश वि० (फ) (वह वस्तु) जिससे शरीर ढका जाय या लज्जा निवारण की जाय।
सतरपोशी स्त्री० (फ) १-तन ढकना। २-लज्जा निवारण करना।
सतरह वि० (हि) दे० 'सत्तरह'।
सतराना क्रि० (हि) १-क्रोध करना। कोप करना। २-कुढ़ना। चिढ़ना।
सतराहट स्त्री० (हि) क्रोध। कोप। गुस्सा।
सतरौंहाँ वि० (हि) १-क्रुद्ध। कुपित। २-कोपसूचक।
सतर्क वि० (सं) १-दलील के साथ। तर्कयुक्त। २-सचेत। सावधान।
सतर्कता स्त्री० (सं) १-सतर्क होने का भाव। २-सावधानी।
सतर्पना क्रि० (हि) १-सन्तुष्ट करना। २-भलीभांति तृप्त करना।
सतलज स्त्री० (हि) पंजाब की पाँच नदियों में से एक नदी का नाम।
सतलड़ी स्त्री० (हि) सात लड़ी वाली माला या हार।
सतलरी स्त्री० (हि) दे० 'सतलड़ी'।
सतवंती स्त्री० (हि) सती। पतिव्रता।
सतसंग पुं० (हि) दे० 'सतसंगति'।
सतसंगति स्त्री० (हि) अच्छी संगति।
सतसंगी वि० (हि) अच्छी संगति में रहने वाला।
सतसई स्त्री० (हि) किसी कवि के सात-सौ पद्यों का संग्रह। सप्तशती।
सतह स्त्री० (अ) १-किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल (सर्फेस)। २-रेखागणित के अनुसार वह विस्तार जिसमें लम्बाई चौड़ाई हो पर मोटाई न हो।
सतहत्तर वि० (सं) सत्तर और सात। (७७)।
सतांग पुं० (हि) रथ। यान।
सतानंद पुं० (सं) गौतमऋषि के पुत्र का नाम।
सताना क्रि० (हि) १-कष्ट पहुँचाना। २-तङ्ग करना।
सतार वि० (सं) तारों वाला। ताराओं से युक्त। पुं० (जैन) ग्यारहवाँ स्वर्ग।
सतालू पुं० (हि) दे० 'शफ़तालू'।
सतावना क्रि० (हि) दे० 'सताना'।
सतावर स्त्री० (हि) एक झाड़दार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम आते हैं। शतमूली।
सतासी वि० (हि) अस्सी और सात (८७)।
सति पुं० (हि) दे० 'सत्य'। स्त्री० (हि) १-अंत। २-नाश। ३-दान।
सतिवन पुं० (हि) एक सदाबहार का बड़ा वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम आती है। सप्तपर्णी।
सती वि० (सं) १-पतिव्रता। पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष का ध्यान मन में न लाने वाली। स्त्री० १-पतिव्रता स्त्री। २-पति की मृत देह के साथ जल मरने वाली स्त्री। ३-मादा (पशु)।
सतीचौरा पुं० (हि) वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर स्मारकस्वरूप बनाया जाता है।
सतीत्व पुं० (सं) सती होने का भाव। पतिव्रत्य।
सतीत्वहरण पुं० (सं) किसी सदाचारिणी स्त्री के साथ बलपूर्वक सम्भोग करना।
सतीन पुं० (सं) १-एक प्रकार की मटर। २-अपराजिता। ३-बांस।
सतीपन पुं० (हि) सतीत्व।
सतीपुत्र पुं० (सं) साध्वी स्त्री का पुत्र।
सतीर्थ पुं० (सं) एक ही गुरु से पढ़ने वाला। सहपाठी-ब्रह्मचारी। वि० तीर्थयुक्त।
सतीव्रत पुं० (सं) पतिव्रत्य।
सतीव्रता स्त्री० (सं) पतिव्रता स्त्री।
सतुआ पुं० (हि) सत्तू।
सतुआन स्त्री० (हि) दे० 'सतुआ-संक्रांति'।
सतुआ-संक्रांति स्त्री० (हि) मेष की संक्रांति जो प्रायः वैशाख में पड़ती है।
सतुष पुं० (सं) तुष या भूसीयुक्त अन्न। वि० भूसी वाला।
सतून पुं० (फा) स्तम्भ। खम्भा।
सतूना पुं० (हि) बाजपक्षी की झपट।
सतृट वि० (सं) दे० 'सतृष्ण'।
सतृष वि० (सं) दे० 'सतृष्ण'।
सतृष्ण वि० (सं) १-तृष्णा से युक्त। २-प्यासा। ३-इच्छुक।

सतेजा वि० (सं) तेजस्वी। शक्तिसम्पन्न।
सतोखना क्रि० (हि) १-सन्तुष्ट करना।
सतोगुण पुं० (हि) दे० 'सत्त्वगुण'।
सतोगुणी वि० (हि) सत्त्वगुण वाला। सात्विक।
सतोसर पुं० (हि) सतलड़ा।
सत् वि० (सं) १-सत्य। २-यथार्थ। ३-उचित। ४-उपस्थित। ५-वर्तमान। ६-साधारण। ७-सुन्दर। ८-विद्वान। पुं० १-सज्जन पुरुष। २-यथार्थता। ३-असत्यता।
सत्कथा स्त्री० (सं) अच्छी बात या कथा।
सत्करण पुं० (सं) १-सत्कार करना। २-मृतक की अन्त्येष्टि करना।
सत्कर्तव्य वि०(सं)१-सत्कार करने योग्य। २-जिसका सत्कार करना हो।
सत्कर्ता पुं० (सं) १-सत्कार करने वाला। २-सत्कर्म करने वाला।
सत्कर्म पुं० (सं) १-पुण्य कर्म। २-अच्छा संस्कार। ३-अच्छा काम।
सत्कर्मी वि० (सं) पुण्य या अच्छा कर्म करने वाला।
सत्कला स्त्री० (सं) ललितकला।
सत्कवि पुं० (सं) श्रेष्ठ कवि। सुकवि।
सत्कायवृष्टि स्त्री० (सं) बौद्धमत के अनुसार मृत्यु के उपरांत आत्मा, लिंग, शरीर आदि के बने रहने का सिद्धांत।
सत्कार पुं० (सं) १-आदर या सम्मान। आतिथ्य मेहमानदारी। २-धन आदि देकर किया जाने वाला सम्मान।
सत्कार्य वि० (सं) सत्कार करने योग्य। पुं० १-उत्तम काम।
सत्कार्यवाद पुं०(सं) सांख्य का एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें यह बताया गया है कि बिना कारण कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।
सत्कीर्ति स्त्री० (सं) यश। नेकनामी।
सत्कुल पुं० (सं) उत्तम कुल।
सत्कुलीन वि० (सं) बहुत अच्छे वंश का।
सत्कृत वि० (सं) १-अच्छी तरह किया हुआ। २-अलंकृत। ३-आदृत। पुं० १-सत्कार। आदर। २-सत्कर्म।
सत्कृति पुं० (सं) वह जो अच्छे काम करता हो। सत्कर्मी। स्त्री० (हि) उत्तम कार्य।
सत्क्रिया स्त्री० (सं) १-पुण्य। २-आदर। सत्कार। ३-आयोजन।
सत्त पुं० (हि) १-सार भाग। सत। २-सत्त्व।
सत्तम वि० (सं) १-सर्वश्रेष्ठ। २-परम पूज्य। ३-परम साधु।
सत्तर वि० (हि) साठ और दस। (७०)।
सत्तरह वि० (हि) दस और सात।
सत्तांतरित प्रदेश पुं०(सं) वह प्रदेश जिसका शासन किसी दूसरे देश को सौंप दिया गया हो। (सीडेड टेरिटरी)।
सत्ता स्त्री०(सं) १-अस्तित्व। २-शक्ति। सामर्थ्य। ३-वह शक्ति जो अधिकार, बल या सामर्थ्य का उपभोग करके अपना काम करती है। (पावर)।
सत्ताइस वि० (हि) बीस और सात।
सत्ताधारी पुं० (सं) वह अधिकारी जिसके हाथ में सत्ता हो।
सत्तानवे वि० (हि) नब्बे और सात।
सत्तार पुं० (अ) १-दोष छिपाने वाला। २-ईश्वर। ३-परदा डालने वाला।
सत्तावन वि० (हि) पचास और सात। ५७।
सत्तासी वि० (हि) अस्सी और सात। ८७।
सत्तू पुं० (हि) भुने हुए चने, जौ आदि का आटा।
सत्त्र पुं० (सं) १-यज्ञ। घर। ३-सदावर्त। ४-निरन्तर कुछ दिनों तक होने वाला संसद का एक बार का अधिवेशन (सेशन)। ५-वह नियत काल जिसमें कोई प्रतिनिधि या कार्यकर्ता काम करता है (टर्म)। ६-तालाब। ७-जङ्गल। ८-परिवेषण। ९-धोखा।
सत्त्व पुं० (सं) १-सार। मूलतत्व। २-जीवन। ३-स्वभाव। धर्म। ४-हवा। ५-प्राणी। ६-अस्तित्व ७-पनाह। ८-विशेषता। ९-संज्ञा। नाम। १०-धन। ११-जलाशय। १२-जङ्गल। १३-यज्ञ। १४-दान। १५-प्रकृति के तीन गुणों में से एक का नाम
सत्त्वकर्ता पुं० (सं) सृष्टिकर्ता।
सत्त्वगुण पुं० (सं) प्रकृति के तीन गुणों में से एक का नाम।
सत्त्वगुणी वि० (सं) जिसमें सत्त्वगुण हो।
सत्त्वधाम पुं० (सं) विष्णु।
सत्त्वपति पुं० (सं) प्राणियों का स्वामी।
सत्त्वप्रधान वि० (सं) दे० 'सत्त्वगुणी'।
सत्त्वलक्षणा स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसमें गर्भवती होने के लक्षण हों।
सत्त्वलोक पुं० (सं) जीवलोक।
सत्त्वशाली वि० (सं) १-जिसमें उत्साह हो। २-साहसी।
सत्त्वसंपन्न वि० (सं) जिसका चित्त शांत हो।
सत्त्ववान वि०(सं) १-जो जीवित हो। २-साहसयुक्त ३-जो मौजूद हो।
सत्पथ पुं० (सं) १-सदाचार। २-उत्तम मार्ग। ३-उत्तम सिद्धांत।
सत्पात्र पुं० (सं) १-अच्छा वर। २-दान आदि ग्रहण करने योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति।
सत्पुत्र पुं० (सं) योग्य पुत्र जो पितरों के निमित्त कर्म करे।

सत्पुरुष पु० (सं) सदाचारी पुरुष।
सत्यकार पुं० (सं) १-वायदा या वचन पूरा करना २-वायदा पूरा करने की जमानत के रूप में कुछ पेशगी देना।
सत्य वि०(सं) १-यथार्थ। ठीक। २-वास्तविक। स्त्री० १-यथार्थ तत्त्व। २-न्यायसंगत तथा धर्म की बात ३-पारमार्थिक सत्ता। ४-पीपल का पेड़। ५-विष्णु ६-शपथ। ७-प्रतिज्ञा। ८-चार युगों में से पहला।
सत्यकाम वि० (सं) सत्य का प्रेमी।
सत्यघ्न वि० (सं) वचन तोड़ने वाला।
सत्यजित् पुं० (सं) १-यज्ञ। २-वासुदेव के एक भतीजे का नाम। ३-एक दानव।
सत्यज्ञ वि० (सं) सत्य को जानने वाला।
सत्यतः अव्य० (सं) वास्तव में। सचमुच।
सत्यता स्त्री० (सं) १-वास्तविकता। २-सचाई। ३-नित्यता।
सत्यदर्शी वि० (सं) जो सत्यासत्य का विवेक करे।
सत्यदृक् वि० (सं) दे० 'सत्यदर्शी'।
सत्यधन वि० (सं) जिसका सत्य ही धन हो।
सत्यधर्म पुं० (सं) १-मनु का एक पुत्र। २-शाश्वत सत्य।
सत्यनामा वि० (सं) जिसका नाम सही हो।
सत्यनारायण पुं०(सं) विष्णु भगवान का एक नाम
सत्यनिष्ठ वि० (सं) सदा सत्य पर दृढ़ रहने वाला।
सत्यपर वि० (सं) ईमानदार।
सत्यपरायण वि० (सं) सच्चा।
सत्यपारमिता स्त्री० (सं) सत्य की (सिद्धि)।
सत्यपूत वि० (सं) सत्य द्वारा पवित्र किया हुआ।
सत्यप्रतिज्ञ वि० (सं) अपनी प्रतिज्ञा या बात पर दृढ़ रहने वाला।
सत्यभामा स्त्री० (सं) श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में एक।
सत्यभेदी वि० (सं) प्रतिज्ञा तोड़ने वाला।
सत्ययुग पुं० (सं) पौराणिक काल की गणना के अनुसार चार युगों में से पहला।
सत्ययुगी वि० (सं) १-सतयुग का। २-बहुत प्राचीन ३-सच्चरित्र। धर्मात्मा।
सत्यरत वि० (सं) सच्चा। ईमानदार।
सत्यलोक पु०(सं) सबसे ऊपर का लोक। जहां ब्रह्मा निवास करता है।
सत्यवक्ता वि० (सं) सदा सत्य बोलने वाला।
सत्यवचन पुं० (सं) १-सच बोलना। २-प्रतिज्ञा। वायदा।
सत्यवती स्त्री० (सं) मत्स्यगंधा नामक धीवर कन्या। २-नारद की पत्नी का नाम।
सत्यवाक पुं० (सं) सच बोलना।
सत्यवाक् स्त्री०(सं) दे० 'सत्यवचन'। पुं० १-प्रतिज्ञा। २-सत्य कथन।
सत्यवाच्य पु० (सं) सत्यवचन।
सत्यवाचक पुं०(सं) सदा सच बोलने वाला।
सत्यवाद पु० (सं) १-सत्य बोलना। २-धर्म पर दृढ़ रहना।
सत्यवादी वि०(सं) १-सत्य कहने वाला। २-प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला। ३-धर्म पर दृढ़ रहने वाला।
सत्यवान वि०(सं) १-सत्य बोलने वाला। २-वचन का पालन करने वाला। पुं० शाल्वदेव के राजा द्युमत्सेन के पुत्र का नाम।
सत्यवाहन वि०(सं) धर्म पर दृढ़ रहने वाला।
सत्यवृत्त पु०(सं) सदाचार। वि० सदाचारी।
सत्यवृत्ति स्त्री० (सं) सत्य आचरण।
सत्यव्रत पु०(सं)१-सत्य बोलने का नियम या प्रतिज्ञा २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। वि० सत्य के नियम का पालन करने वाला।
सत्यशील वि० (सं) सच्चा।
सत्यसंकल्प वि० (सं) दृढ़ संकल्प।
सत्यसंगर पुं० (सं) कुबेर। वि० प्रतिज्ञा का पालन करने वाला।
सत्यसंध वि०(सं) अपने वचन का पालन करने वाला
सत्यसंधा स्त्री० (सं) द्रौपदी।
सत्यसंरक्षण पु० (सं) प्रतिज्ञा का पालन करना।
सत्यसाक्षी पुं० (सं) वह गवाह जो विश्वसनीय हो
सत्यसार वि० (सं) बिलकुल सच।
सत्यस्थ वि० (सं) अपने वचन पर अड़ने वाला।
सत्यस्वप्न वि० (सं) जिसके स्वप्न सच्चे निकलते हों
सत्या स्त्री० (सं) १-सत्यता। २-दुर्गा। ३-सत्यवती ४-सीता।
सत्याग्रह पुं० (सं) किसी सत्य अथवा न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये शान्तिपूर्वक हठ करना।
सत्याग्रही पु० (सं) वह जो सत्याग्रह करता हो।
सत्यात्मक वि० (सं) जिसका सार सत्य हो।
सत्यात्मज पुं० (सं) सत्यभामा के पुत्र का नाम।
सत्यात्मा पु० (सं) वह व्यक्ति जो सदा सच बोलता हो। सत्यवादी।
सत्यानाश पु० (हि) सर्वनाश। बरबादी। ध्वंस।
सत्यानाशी वि० (हि) १-सर्वनाशी। २-अभागा।
सत्यानुरक्त वि० (सं) सत्यवादी।
सत्यापन पु० (सं) १-यह कहकर सिद्ध करना कि यह ठीक है (सर्टिफिकेशन)। २-मिलान या जांच करके सत्यता सिद्ध करना। (वेरिफिकेशन)। ३-लेख आदि पर ठीक होने की बात लिखकर प्रमाणित करना। (एटेस्टेशन)।
सत्यालापी वि० (सं) सत्यवादी।
सत्येतर पु० (सं) झूठ। असत्यता।
सत्र पु०(सं) दे० 'सत्त्र'।

सत्रन्यायालय पुं० (सं) वह बड़ी अदालत जहां जूरी की सहायता से हत्या, डाकेजनी, आदि के फौजदारी के मामलों की सुनवाई होती है। (सैशनकोर्ट)

सत्रप वि० (सं) शर्मीला। लज्जाशील। संकोची। पुं० दे० 'छत्रप'।

सत्रह वि० (हि) दस और सात। सत्तरह।

सत्रहीं स्त्री० (हि) मृत्यु के बाद सत्रहवें दिन किया जाने वाला कृत्य।

सत्रावसान पुं० (सं) विधान सभाओं आदि के अधिवेशन को अनिश्चित काल के लिये अधिकारक रूप में स्थगित करना। (प्रोरोगेशन)।

सत्रु पुं० (सं) दे० 'शत्रु'।

सत्रुघन पुं० (हि) दे० 'शत्रुघ्न'।

सत्रुहन पुं० (हि) दे० 'शत्रुघ्न'।

सत्व पुं० (हि) दे० 'सत्त्व'।

सत्वर अव्य० (सं) शीघ्र। जल्दी। तुरन्त।

सत्संग पुं० (सं) १-साधुओं या सज्जनों का संग, साथ। २-वह समाज जिसमें धर्म की चर्चा हो।

सत्संगति स्त्री० (सं) दे० 'सत्संग'।

सत्संसर्ग पुं० (सं) दे० 'सत्संग'।

सत्सन्निधान पुं० (सं) दे० 'सत्समागम'।

सत्समागम पुं० (सं) सज्जन या भले आदमियों का संसर्ग।

सत्सहाय पुं० (सं) अच्छा दोस्त या मित्र। वि० जिसके नेक साथी या मित्र हों।

सथर स्त्री० (हि) भूमि। पृथ्वी।

सथिया पुं० (हि) १-स्वस्तिक का चिह्न। २-भारतीय ढंग से फोड़ों की चीरफाड़ करने वाला।

[illegible] वि० (सं) बात करते समय जिसके मुँह से थूक निकलता हो। पुं० बात करते समय मुँह से थूक निकलना।

सद पुं० (सं) १-सभा। २-रहने का स्थान। अव्य० (हि) तुरन्त। तत्काल। वि० (हि) १-ताजा। २-नवीन। नया। स्त्री० (हि) आदत। प्रकृति।

सदई अव्य० (हि) १-मण्डली। सभा। २-एक प्रकार का छोटा मण्डप। ३-एक गड़रिये का गीत।

सदका पुं० (अ) १-निछावर। उतारा। २-दान। ३-उतारन। उतारा। ४-अनुग्रह। प्रसाद।

सदन पुं० (सं) १-घर। मकान। २-वह स्थान जहां किसी विषय पर विचार तथा नियम, विधान आदि बनाने वाली सभा का अधिवेशन होता है। ३-उक्त स्थान पर होने वाले लोगों का समूह (हाउस) ४-स्थिरता। ५-थकावट। ६-सभा।

सदमा पुं० (अ) १-आघात। चोट। २-मानसिक आघात। ३-नुकसान। ४-धक्का।

सदय वि० (सं) जिसके मन में दया हो।

सदयहृदय वि० (सं) रहमदिल। दयावान।

सदर वि० (अ) प्रधान। मुख्य। पुं० केंद्रस्थल। २-सभापति। वि० (सं) डरा हुआ।

सदरअमीन पुं० (अ) वह अधिकारी जो न्यायाध्यक्ष के नीचे काम करता हो।

सदरआला पुं० (अ) वह न्यायाध्यक्ष जो किसी दूसरे न्यायाध्यक्ष के आधीन हो। (सब-जज)।

सदरजहाँ पुं० (अ) एक जिन जिसकी मुसलमान स्त्रियाँ मनौती करती हैं।

सदरदीवान पुं०(अ) शाही खजाने का प्रधान अधिकारी।

सदरदीवानी-अदालत पुं०(अ) उच्चन्यायालय(हाईकोर्ट)

सदरबाजार पुं० (अ) १-बड़ा या मुख्य बाजार। २-छावनी का बाजार।

सदरबोर्ड पुं० (अ) माल की सबसे बड़ी अदालत या विभाग।

सदरमालगुजार पुं० (अ) सरकार को सीधे मालगुजारी देने वाला व्यक्ति।

सदरी स्त्री० (हि) एक प्रकार की बिना बाँह की कुर्ती।

सदर्पना क्रि० (हि) समर्थन करना।

सदर्प अव्य० (सं) अहंकारपूर्वक। वि० अहंकारी।

सदसद्विवेक पुं० (सं) अच्छे बुरे की पहचान।

सदसि अव्य० (सं) सदन या सभा में। पुं० (हि) १-घर। मकान। २-सभा।

सदस्य पुं०(सं) सभासद। सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। (मेम्बर)।

सदस्यता स्त्री०(सं) सदस्य का भाव या पद। (मेम्बरशिप)।

सदा अव्य० (सं) १-निरन्तर। २-नित्य। हमेशा। स्त्री० (अ) १-गूँज। प्रतिध्वनि। २-पुकार। ३-शब्द ध्वनि। आवाज। ४-रट।

सदाकत स्त्री० (अ) सचाई। सत्यता।

सदागति पुं० (सं) १-हवा। २-सूर्य। ३-ब्रह्म। वि० सदा गतिशील रहने वाला।

सदाचरण पुं० (सं) अच्छा चाल-चलन। उत्तम आचरण।

सदाचार पुं० (सं) १-शिष्ट व्यवहार। २-अच्छा आचरण।

सदाचारिता स्त्री० (सं) दे० 'सदाचरण'।

सदाचारी पुं० (सं) १-नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरण वाला व्यक्ति। २-धर्मात्मा।

सदात्मा वि० (सं) जिसका अच्छा स्वभाव हो। नेक

सदानंद पुं० (सं) १-वह जो सदा आनन्द में रहे। २-शिव। ३-विष्णु।

सदाफल पुं० (सं) १-गूलर। २-बेर। ३-नारियल। ४-कटहल।

सदाबरत पुं० (हि) दे० 'सदाव्रत'।

सदाबहार वि० (हि) १-जो सदा फूले। २-जो सदा

हुरा रहे।
सदार वि० (सं) सदीनक।
सदारत स्त्री० (प) प्र[illegible]
सदावर्त पु० (हि) १-[illegible]
भोजन मिलता हो। [illegible] दान।
सदावर्ती पुं० (हि) १-सदावर्त बांटने वाला। दानी।
सदाशय वि० (स) भलामानस। सज्जन पुरुष।
सदाशिव पु०(स)१-सदा शुभ और मंगल। २-महादेव। ३-सदा कल्याण करने वाला।
सदासुहागिन वि० (हि) जो सदा सौभाग्यवती बनी रहे।
सदिया स्त्री० (फा) एक प्रकार का लाल पक्षी।
सदी स्त्री० (फा) १-शताब्दी। २-सैकड़ा। ३-किसी विशेष सौ वर्ष के मध्य का समय। (सेन्चरी)।
सदुक्ति स्त्री० (स) अच्छे वचन या कथन।
सदुपदेश पु० (स) नेक सलाह। अच्छा उपदेश।
सदुपयोग पु० (सं) अच्छी तरह काम में लाना। अच्छा उपयोग।
सदूर पु० (हि) सिंह। शार्दूल।
सदृश वि० (स) १-अनुरूप। समान। २-उपयुक्त। ३-तुल्य। बराबर।
सदृशता स्त्री० (सं) समानता। अनुरूपता।
सदेह अव्य० (सं) १-बिना शरीर त्याग किये हुए। २-प्रत्यक्ष में।
सदैव अव्य० (सं) सर्वदा। सदा ही।
सदोष वि० (सं) दोष सहित। दोषी। अपराधी।
सदोषमानव-हत्या स्त्री०(सं) वह मानव हत्या जिसको अपराध समझा या माना जाय। (कल्पेबल होमीसाइड)।
सद् वि० (सं) दे० 'सत्'।
सद्गति स्त्री० (सं) १-मरने के बाद अच्छे लोक में जाना। २-उत्तम गति।
सद्गन्ध पु० (स) अच्छी नसल का सांड।
सद्गुण पु० (स) अच्छा गुण।
सद्गुरु पुं० (स) १-अच्छा गुरु। २-परमात्मा।
सद्ग्रन्थ पुं०(स)अच्छा ग्रन्थ या सन्मार्ग बताने वाली पुस्तक।
सद्ग्रह पुं० (सं) शुभ या कल्याणकारी ग्रह।
सद्द पु० (हि) शब्द। ध्वनि। अव्य० तुरन्त। फौरन।
सद्धर्म पु० (स) १-उत्तम धर्म। २-बौद्धधर्म।
सद्भाव पुं० (स) १-अच्छा भाव। २-मैत्री। ३-निष्कपट भाव।
सद्म पु० (सं) १-घर। मकान। २-युद्ध। ३-पृथ्वी और आकाश। ४-दर्शक।
सद्यः अव्य० (सं) १-आज ही। २-अभी। ३-तुरन्त। तत्काल। पुं० शिव।
[illegible] हो।
[illegible]
हो।
सद्यश्छिन्न वि० (सं) जो तुरन्त ही काटकर अलग किया गया हो।
सद्यस्तन वि० (सं) १-नया। २-ताजा। ३-हाल ही का।
सद्योजात वि० (सं) अभी का जन्मा।
सद्योजाता स्त्री० (स) वह स्त्री जिसने तुरन्त ही बच्चे को जन्म दिया हो।
सद्योत्पन्न वि० (सं) दे० 'सद्योजात'।
सद्योव्रण पु० (स) हाल ही में लगा हुआ घाव।
सद्योहत वि० (स) जो हाल ही में हत हुआ हो।
सद्र पु० (प)१-सबसे ऊँचा स्थान। २-प्रधान अधिकारी। ३-सीना। छाती। ४-शीर्षस्थान।
सद्रअदालत स्त्री० (प) सर्वोच्च न्यायालय।
सद्रमजलिस पु० (प) सभापति।
सद्रेआजम पु० (प) १-प्रधानमन्त्री। २-प्रधान न्यायाध्यक्ष।
सधन वि० (स) अमीर। धनी। पु० सामान्य धन।
सधना क्रि० (हि) १-पूरा होना। २-काम चलाना। ३-अभ्यस्त होना। मँजना। ४-प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल होना। ५-लक्ष्य ठीक होना। ६-घोड़े आदि को सवारी के योग्य बनाना।
सधर पु० (स) ऊपर का ओंठ।
सधर्म वि० (सं) १-समान गुण या क्रिया वाला। २-तुल्य। समान।
सधर्मी वि०(स) एक ही या समान धर्म का अनुयायी।
सधवा स्त्री० (हि) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।
सधाना क्रि० (हि) साधने का काम दूसरों से कराना।
सधावर पु० (हि) वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने दिया जाता है।
सधूम वि० (स) धूएँ से भरा हुआ।
सनंदन पु० (स) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम।
सन पु० (हि) एक पौधा जिसके रेशों से रस्सियां आदि बनाई जाती हैं। (जूट)। वि० (हि) सन्न। स्तब्ध। स्त्री० किसी चीज को तेजी से चलाने या घुमाने से उत्पन्न होने वाला शब्द।
सनअत स्त्री० (प) १-पेशा। हुनर। २-अलंकार। ३-कारीगरी।

सनग्रतगर पुं० (अ) कारीगर।
सनक पुं० (सं) ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक। स्त्री० पागलों की सी ध्वनि या आचरण।
सनकना क्रि० (हि) १-पागल होना। २-पागलों जैसी बातें करना।
सनकाना क्रि० (हि) पागल बनाना।
सनकारना क्रि० (हि) १-संकेत या इशारा करना। २-संकेत से बुलाना। ३-किसी काम के लिए इशारा करना।
सनकियाना क्रि० (हि) १-सनकना। २-सनकाना। ३-इशारा करना।
सनत् पुं० (स) ब्रह्मा।
सनत्कुमार पुं० (सं) १-ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम। २-जैनियों के तीसरे तीर्थ का नाम।
सनद स्त्री० (अ) १-प्रमाण। सबूत। २-भरोसा करने की वस्तु। ३-तकियागाह। ४-प्रमाण-पत्र (सर्टिफिकेट)।
सनदयाफ्ता वि०(अ) १-किसी परीक्षा में उत्तीर्ण। २-जिसे किसी कार्य का प्रमाणपत्र मिला हो।
सनदी वि०(अ) सनदयाफ्ता।
सनना क्रि० (हि) १-तर या गीला होकर किसी वस्तु में मिलना। २-लीन होना।
सनमान पुं०(हि) दे० 'सम्मान'।
सनमानना क्रि० (हि) सम्मान या सत्कार करना।
सनमुख अव्य० (हि) दे० 'सन्मुख'।
सनसनाना क्रि० (हि) १-सनसन शब्द सहित (हवा का) चलना या बहना। २-खौलते हुए पानी में सनसन का शब्द होना।
सनसनाहट पुं० (हि) १-हवा चलने का शब्द। २-सनसनी। ३-खौलते हुए पानी का शब्द।
सनसनी स्त्री० (हि) १-शरीर के सम्वेदन सूत्रों में होने वाली झनझनी। २-किसी विकट घटना के कारण लोगों में फैलने वाली उत्तेजना। उद्वेग। घबराहट (सेन्सेशन)।
सनहकी स्त्री०(अ) मिट्टी का एक पात्र जो बहुधा मुसलमान लोग काम में लाते हैं।
सनाढ्य पुं० (हि) गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।
सनातन पुं० (सं) १-अनादि काल। २-बहुत दिन से चली आई परम्परा। ३-ब्रह्मा। ४-विष्णु। वि० १-अत्यन्त प्राचीन। २-नित्य। शाश्वत। ३-बहुत दिनों से चला आया हुआ।
सनातनधर्म पुं० (सं) १-प्राचीन या परम्परागत धर्म २-आजकल का हिन्दू धर्म जिसमें मूर्तिपूजा आदि विहित है।
सनातनपुरुष पुं० (सं) विष्णु।
सनातनी पुं० (हि) सनातन धर्म का अनुयायी। वि० बहुत दिनों से चला आया हुआ।
सनाथ वि० (सं) जिसका कोई रक्षक या मददगार हो
सनाथा स्त्री० (स) वह स्त्री जिसका स्वामी जीवित हो
सनाभि पुं० (सं) १-सहोदर भाई। २-सपिंड। ३-नजदीकी रिश्तेदार।
सनाम्य पुं० (सं) एक ही कुल या वंश का पुरुष।
सनामा वि० (सं) एक ही नाम वाला। सदृश।
सनाय स्त्री०(सं) स्वर्णपत्री। एक पौधा जिसकी पत्तियां दस्तावर होती है।
सनाह पुं० (हि) बख्तर। कवच।
सनि पुं० (हि) दे० 'शनि'।
सनित वि० (सं) १-मिश्रित। २-सना हुआ। एक में मिला हुआ।
सनिद्र वि० (सं) सोया हुआ।
सनियम वि० (सं) नियमित।
सनिर्घृण वि० (सं) निर्दय। कठोर।
सनीचर पुं० (हि) दे० 'शनैश्चर'।
सनीचरी पुं०(हि) शनि की दशा जिसमें दुःख व्याधि आदि की अधिकता रहती है।
सनीड अव्य० (सं) पड़ोस में। समीप। वि० पास का। पड़ोस में रहने वाला।
सनील वि० (सं) दे० 'सनीड'।
सनेस पुं० (हि) दे० 'संदेश'।
सनेसा पुं० (हि) दे० 'संदेश'।
सनेह पुं० (हि) दे० 'स्नेह'।
सनेही वि० (हि) प्रेमी। स्नेह करने वाला। पुं० प्रियतम। प्यारा।
सनै-सनै अव्य० दे० 'शनैःशनैः'।
सन् पुं० (अ) १- संवत्। २-साल। वर्ष।
सन्-ईसवी पुं०(अ) ईसाइयों का ईसा के जन्म दिन से आरम्भ होने वाला संवत्
सन्न पुं० (स) चिरौंजी का पेड़। वि० हि) १- स्तब्ध। संज्ञाशून्य। ठक। ३-सहसा मौन या चुप। ४-डर या भय से चुप।
सन्नद्ध वि० (सं) १-तैयार। उद्यत। ६-लीन। काम में पूरी तरह से लगा हुआ।
सन्नाय पुं०(हि) १-नीरवता। स्तब्धता। २-निर्जनता। ३-चुप्पी। ४-जोर से हवा चलने का शब्द।
सन्नाह पुं० (सं) १-कवच। २-प्रयत्न।
सन्निकट अव्य० (सं) समीप। पास।
सन्निकर्ष पुं० (सं) १-लगाव। सम्बन्ध। २-नाता। रिश्ता। ३-समीपता।
सन्निधान पुं०(सं)१-निकटता। समीपता। २-रखना धरना। ३-स्थापित करना। ४-निधि। ५-किसी वस्तु को रखने का स्थान।
सन्निधि स्त्री० (सं) १-समीपता। २-अपने सामने की स्थिति। २-पड़ोस।

सन्निपात पु० (सं) १-एक साथ गिरना या पड़ना। २-संयोग। ३-जुटना। मिलना। ४-इकट्ठा होना। एक रोग जिसमें कफ, वात और पित्त तीनों बिगड़ जाते हैं। सरसाम।

सन्निविष्ट वि० (सं) १-किसी के अन्दर मिलाया हुआ। २-स्थापित। प्रतिष्ठित। ३-समाया हुआ।

समाना। ३-एकत्र होना। ४-घर। रहने की जगह। ५-चौपाल। ६-रचना। ७-बनावट। ८-स्तम्भ मूर्ति आदि की स्थापना।

सन्निवेशन पुं०(सं) १-सजा, जमा या लगाकर रखना। २-मिलाना। सन्निविष्ट करना। ३-स्थापित करना। ४-ठहराना।

सन्निवेशित वि० (सं) १-बैठाया या जमाया हुआ। २-स्थापित। ३-ठहराया हुआ।

सन्निहित वि० (सं) १-पास का। २-साथ या पास रखा हुआ। ३-ठहराया हुआ। ४-उद्यत। तत्पर। ५-रखा या धरा हुआ।

सन्न्यसन पु० (हि) (सं) १-सांसारिक विषयों का त्याग। २-धरना। रखना। ३-खड़ा करना। ४-जमाना। बैठाना। फैंकना। छोड़ना।

सन्न्यस्त वि० (सं) १-रखा या धरा हुआ। २-जमाया हुआ। ३-खड़ा किया हुआ। ४-फेंका हुआ।

सन्न्यास पु० (सं) १-त्याग। छोड़ना। २-वैराग्य। सांसारिक बंधनों को त्यागने की वृत्ति। ३-धरोहर। ४-सहसा शरीर त्याग। इकरार। ६-बाजी। होड़। जटामासी।

सन्न्यास ग्रहण पु० (सं) चारों के चार आश्रमों में अन्तिम आश्रम में प्रवेश करना।

सन्न्यासी पु० (हि) सन्यास आश्रम में प्रवेश करने वाला व्यक्ति। २-त्यागी। वैरागी।

सन्मान पु० (हि) दे० 'सम्मान'।

सन्मानना क्रि० हि) दे० 'सनमानना'।

सन्मार्ग पु० (सं) अच्छा मार्ग। सुपथ।

सन्मुख अव्य० (हि) दे० 'सम्मुख'।

सन्यासी पु० (हि) दे० 'सन्न्यासी'।

सपक्ष पुं० (सं) १-अनुकूल पक्ष। २-सहायक। ३-न्याय के अन्तर्गत वह दृष्टांत या बात जिसमें साध्य अवश्य हो। वि० १-तरफदार। पक्ष लेने वाला। २-पोषक। समर्थक।

सपक्ष्य पु० (सं) दे० 'सपक्ष'।

सपत अव्य० (हि) दे० 'सपदि'।

सपताक वि० (हि) जो भुजायुक्त हो।

सपत्न पु० (सं) शत्रु। दुश्मन। वि० शत्रुता रखने वाला।

सपत्नजित वि० (सं) शत्रु को जीतने वाला। पु० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सपत्नी स्त्री०(सं) सौत। सौतिन। पत्नी की दृष्टि से उसके पति की दूसरी स्त्री।

सपत्नीक वि० (सं) पत्नी के सहित।

सपना पुं० (हि) दे० 'स्वप्न'।

सपरदा पुं० (हि) नृत्य करने वाली वेश्या के साथ तबला या सारङ्गी बजाने वाला।

सपरदाई पु० (हि) दे० 'सपरदा'।

सपरना क्रि० (हि) १-काम का पूरा हो सकना। २-निपटाना। ३-तैयार होना।

सपराना क्रि० (हि) १-पूरा कर सकना। २-काम पूरा करना।

सपरिकर वि० (सं) अनुचरवर्ग के साथ।

सपरिजन वि० (सं) दे० 'सपरिकर'।

सपरिवार वि० (सं) बालबच्चों सहित।

सपरिवाह वि० (सं) ऊपर तक पूरा भरा हुआ। छलकता हुआ।

सपरिश्रम-कारावास पु० (सं) वह कारावास या कैद जिसमें अपराधी से खूब परिश्रम का काम लिया जाय। (रिगोरस इम्प्रिजनमेन्ट)।

सपाट वि० (हि) समतल। जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो।

सपाटा पु० (हि) १-दौड़। २-चलने या दौड़ने का वेग। झपट्टा।

सपाद वि० (सं) १-जिसमें एक चौथाई और मिला हो २-चरणसहित।

सपिंड पु० (सं) वंशज। एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितर को पिंड देता हो।

सपिंडीकरण पु० (सं) १-किसी को गोद आदि लेकर सपिंड होने का अधिकार देना। २-एक श्राद्ध विशेष।

सपुलक वि० (सं) पुलक या हर्ष सहित। रोमांचित।

सपूत पुं० (हि) अच्छा और योग्य पुत्र।

सपूती स्त्री० (हि) १-योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता। २-लायकी।

सपेत वि० (हि) सफेद।

सपेती स्त्री० (हि) सफेदी।

सपेद वि० (फा) सफेद।

सपेला पु० (हि) साप का बच्चा।

सपोला पु० (हि) साप का बच्चा।

सप्त वि० (सं) गिनती में सात।

राजदूत।

सफ़ील स्त्री० (अ) पक्की चहारदिवारी। परकोटा।

सफ़ूफ़ पुं० (अ) चूर्ण। बुकनी।

सफ़ेद वि० (फ़ा) १-उजला। श्वेत। २-सादा। कोरा।

सफ़ेददाग़ पुं० (अ) श्वेतकुष्ठ।

सफ़ेदपोश पुं० (फ़ा) १-साफ़ कपड़े पहनने वाला व्यक्ति। २-साधारण गृहस्थ पर भला आदमी।

सफ़ेदसियाह पुं०(फ़ा)१-अच्छा या बुरा। २-बनाना-बिगाड़ना।

सफ़ेदा पुं० (फ़ा) १-जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा के काम आता है। २-एक प्रकार का बढ़िया आम ३-एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष।

सफ़ेदी स्त्री० (फ़ा) १-सफ़ेद होने का भाव। २-दीवार आदि पर चूने या सफ़ेद रङ्ग की पुताई।

सबन्धमुक्ति स्त्री० (सं) किसी क़ैदी या अपराधी का कारागार से कुछ समय के लिए किसी विशेष कारण-वश इस शर्त पर छोड़ दिया जाना कि वह उस अवधि के समाप्त होते ही फिर जेल में वापिस आ जायगा (पैरोल)।

सब वि० (हि) १-समस्त। जितने हों कुल। २-पूरा। सारा।

सबक़ पुं० (फ़ा) १-पाठ। २-शिक्षा। नसीहत। ३-ऐसा दण्ड जो चेतावनी का काम दे। ४-एक दिन में गुरु द्वारा पढ़ाया हुआ पाठ का भाग।

सबज़ वि० (हि) दे० 'सब्ज़'।

सबद पुं० (हि) १-शब्द। २-किसी साधु महात्मा के वचन।

सबब पुं० (अ) १-कारण। हेतु। २-साधन।

सबर पुं० (अ) संतोष। धैर्य।

सबरा वि० (हि) सब। सारा। कुल।

सबरी स्त्री० (हि) १-दे० 'शबरी'। २-गड्ढा खोदने का एक औज़ार।

सबल वि०(सं)१-बलवान्। २-जिसके साथ सेना हो।

सबार अव्य (हि) शीघ्र। जल्दी।

सबारे अव्य (हि) शीघ्र। जल्दी।

सबील स्त्री० (अ) १-उपाय। युक्ति। २-प्याऊ।

सबीह वि० (अ) गोरा-चिट्टा।

सबू पुं० (फ़ा) गगरी। मटका।

सबूत पुं० (हि) दे० 'सुबूत'।

सबेरा पुं० (हि) दे० 'सवेरा'।

सब्ज़ वि० (फ़ा) १-कच्चा और ताज़ा (फलादि)। २-हरा। ३-शुभ।

सब्ज़क़दम वि० (फ़ा) जिसका आना मनहूस माना जाता हो (केवल व्यंग में)।

सब्ज़बख़्ती स्त्री० (फ़ा) सौभाग्य।

सब्ज़ा पुं० (फ़ा) १-हरियाली। २-भांग। ३-पन्ना नामक रत्न। ४-कान में पहनने का एक गहना। ५-कालापन लिए सफ़ेद रङ्ग का घोड़ा।

सब्ज़ी स्त्री०(फ़ा) १-हरापन। २-हरियाली। ३-साग-भाजी।

सब्ज़ीफ़रोश पुं० (फ़ा) साग-भाजी बेचने वाला।

सब्ज़ीमंडी स्त्री०(फ़ा) वह स्थान जहाँ सागभाजी तथा फल बिकते हों।

सब्र पुं० (अ) सन्तोष। धैर्य।

सभंग वि० (सं) खण्ड वाला। जिसके टुकड़े हों।

सभंगश्लेष पुं० (सं) शब्द का खण्ड करने पर बनने वाला श्लेष का एक रूप।

सभय वि० (सं) १-डरा हुआ। २-खतरनाक।

सभर्तृका स्त्री० (सं) सधवा।

सभा स्त्री० (सं) १-परिषद्। २-गोष्ठी। ३-समिति ४-वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिये बनाई गई हो। ५-द्यूत। जूआ। ६-मकान। घर। ७-समूह।

सभाकक्ष पुं० (सं) दे० 'प्रकोष्ठ'। (लॉबी)।

सभाकार पुं० (सं) सभा करने वाला।

सभागा वि० (हि) होनहार। भाग्यवान।

सभाग्य वि० (सं) भाग्यशाली।

सभागृह पुं० (सं) सभा भवन। वह स्थान या भवन जहाँ किसी समिति या सभा का अधिवेशन होता है

सभाग्रणी पुं० (सं) संसद् या विधान सभा आदि का सदस्यों द्वारा निर्वाचित वह नेता जो सभा का कार्यक्रम आदि निर्धारित करता है (बहुधा प्रधान मन्त्री या मुख्य मन्त्री ही इस पद के लिये रखे जाते हैं)। (लीडर ऑफ़ दी हाउस)।

सभाचातुर्य पुं० (सं) समाज या सभा में बोलने की वाक्पटुता।

सभात्याग पुं० (सं) सभा की किसी कार्रवाई या अध्यक्ष की किसी व्यवस्था के प्रति विरोध प्रकट करने के लिये किसी सदस्य का सभा से बाहर चला जाना। (वॉक आउट)।

सभानायक पुं० (सं) दे० 'सभापति'।

सभानेता पुं० (सं) दे० 'सभाग्रणी'।

सभापति पुं० (सं)किसी सभा का मुखिया या अध्यक्ष (प्रेज़िडेंट)।

सभामंडन पुं० (सं) सभा भवन में की गई सजावट।

सभार्य वि० (सं) सपत्नीक।

सभार्यक वि० (सं) सपत्नीक।

सभासचिव पुं० (सं) लोकसभा या विधान सभा का वह सदस्य जो किसी मन्त्री के साथ मिलकर उसके काम-काज में सहायता देता है तथा वेतन भी लेता है। (पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी)।

सभासद पुं० (सं) १-वह जो किसी सभा का सदस्य हो। (मेम्बर)। २-अदालत की पंचायत या जूरी का सदस्य।

सभेय वि० (सं) १-विद्वान। २-शिष्ट।
सभोचित वि० (सं) सभा के योग्य। विद्वान। पण्डित
सभ्य वि० (सं) अच्छे आचार-विचार रखने वाला। शिष्ट। (सिविल)। पुं० १-पंच। २-सभासद।
सभ्यता स्त्री० (सं) १-शील और सज्जन होने का भाव शराफत। ३-सदस्यता। ४-किसी राष्ट्र या जाति की वे सब बातें जो उसके सिद्धान्त, सौजन्य एवं उन्नति होने की सूचक होती है। (सिविलाइज़ेशन)
सभ्यत्व पु० (सं) दे० 'सभ्यता'।
सभ्येतर वि० (सं) उजड्ड। गँवार। अशिक्षित।
समंजस वि० (सं) प्रसंग, उल्लेख आदि के विचार से ठीक बैठाने वाला। उपयुक्त। ठीक।
समंत पुं०(सं) किनारा। सीमा। सिरा। वि० समस्त। कुल।
समंद पुं० (फा) अश्व। घोड़ा।
समंदर पुं० (हि) समुद्र।
सम वि० (सं) १-समान। तुल्य। २-जिसका तल ऊबड़-खाबड़ न हो। ३-(वह संख्या) जिसे दो पर भाग देने पर कुछ भी शेष न बचे। पुं० १-सम संख्या पर पड़ने वाली राशि-दो, चार इत्यादि। २-साहित्य में वह अलङ्कार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग का वर्णन होता है। ३-गणित में वह रेखा जो उस अङ्क पर बनाई जाती है जिसका वर्गमूल निकलता हो। ४-ताल का एक अङ्ग। (सङ्गीत)।
समकक्ष वि० (सं) समान। तुल्य। बराबर का (पैरेलल)।
समकक्ष सरकार स्त्री०(हि)वह नई सरकार जो पुरानी सरकार को अवैध या अयोग्य मान कर उसे नष्ट करने के लिए बनाई गई हो (पैरेलल गवर्नमेन्ट)।
समकालीन वि० (सं) जो (दो या अधिक में से) एक ही समय में हुआ हो। (कन्टेम्परेरी)।
समकोण पुं० (सं) ज्यामिति में ९० अंश का कोण (राइट एंगल)। वि० (वह क्षेत्र) जिसके सारे कोण बराबर हों।
समकोण त्रिभुज पुं० (सं) वह त्रिभुज क्षेत्र जिसका एक कोण समकोण हो (राइट एंगल्ड ट्राइएंगल)।
समक्ष अव्य० (सं) सामने। सम्मुख।
समक्षेत्र पुं० (सं) एक या अधिक वक्र या सरल रेखाओं से घिरा हुआ समतल का भाग। (प्लेन-फिगर)।
समग्र वि० (सं) सब। सारा।
समचतुरस्र पुं०(सं) वर्गक्षेत्र। वि० जिसके चारों कोण बराबर के हों।
समचतुरस्त्र वि० (सं) दे० 'समचतुरस्र'।
समचतुर्भुज पु० (सं) वह चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी सारी भुजाएँ बराबर हों।
समचतुष्कोण वि० (सं) जिसके चारों कोण बराबर अंश के हों।
समचर वि० (सं) सदा सबके साथ एक सा व्यवहार या आचरण करने वाला।
समचित्त पुं० (सं) दे० 'समचेता'।
समचेता पुं० (सं) वह जिसके चित्त की वृत्ति सब जगह एक सी हो।
समझ स्त्री० (हि) १-बुद्धि। अक्ल। २-ध्यान खयाल।
समझना क्रि० (हि) किसी बात को अच्छी तरह से जान लेना।
समझाना क्रि० (हि) किसी बात को किसी के मन में भली भांति बैठाना।
समझाव पुं० (हि) दे० 'समझावा'।
समझावा पुं० (हि) समझने या समझाने की क्रिया या भाव।
समझौता पु० (हि) व्यवहार, लेने देने आदि के झगड़ों या विवादों में सब पक्षों में आपस में मिलकर होने वाला निबटारा। (एग्रीमेन्ट, कम्प्रोमाइज)
समतल वि० (सं) जिसकी सतह या तल बराबर हो। सपाट। पुं० वह तल जिसके कोई भी दो बिंदु लेकर यदि रेखा खींची जाय तो इनमें मिलने वाली रेखा एक ही तल में रहती है।
समता स्त्री० (सं) समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। (इक्वेलिटी)।
समतुलित वि० (सं) जो समान भार का हो।
समतूल वि० (हि) समान। बराबर।
समतोलन पुं० (सं) १-महत्व आदि के विचार से सबको बराबर रखना। २-दोनों पक्षों या पलड़ों को बराबर रखना (बैलेंसिंग)।
समत्थ वि० (हि) दे० 'समर्थ'।
समत्व पुं० (सं) समता। तुल्यता। बराबरी।
समत्रिबाहु त्रिभुज पुं० (सं) ऐसा त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर हों। (इक्विलेटरल ट्राइएंगल)
समत्रिभुज पुं० (सं) वह त्रिकोण जिसकी तीनों भुजा बराबर हों।
समदन पुं० (सं) युद्ध। लड़ाई। स्त्री० (देश) भेंट। उपहार।
समदना क्रि० (हि) १-भेंटना। प्रेम सहित मिलना २-भेंट या उपहार देना।
समदर्शन पुं० (सं) सबको एक सा देखना।
समदर्शी पु० (सं) सबको बराबर या एक सा समझने या देखने वाला।
समदृष्टि पुं० (सं) समदर्शी।
समदाना क्रि० (हि) १-रखना। धरना। २-सौंप देना।
समद्युति वि० (सं) एक-सी या बराबर कांतिवाला।
समद्विबाहुत्रिभुज पु०(सं) वह त्रिकोण जिसकी केवल

दो भुजाएँ बराबर हों (आइसॉसिलीज ट्राइऐंगल)।
समद्विभाग करना क्रि० (हि) दो बराबर के भागों में विभक्त करना। (टु डिवाइड)।
समद्विभुज पु० (सं) वह चतुर्भुज जिसकी दो भुजाएँ बराबर हों।
समधर्मा वि० (सं) समान स्वभाव का।
समधिक वि० (सं) बहुत। अधिक।
समधियाना पु० (हि) समधी का घर।
समधी पु० (हि) पुत्र या पुत्री का ससुर।
समधीत वि० (सं) भलीभाँति अध्ययन किया हुआ।
समधौरा पु० (देश) विवाह की एक रस्म जिसके अनुसार समधियों की मिलाई होती है।
समध्य वि० (सं) जो साथ-साथ यात्रा करे।
समन पु० (हि) १-दे० 'सम्मान'। २-दे० 'शमन'।
समनता स्त्री० (सं) १-बिजली। २-सूर्य-किरण।
समनुज्ञा स्त्री० (सं) किसी विषय की पुष्टि या समर्थन करते हुए मान्य करना। (सैंक्शन)।
समनुज्ञात वि० (सं) १-पूरी तरह से मान्य। २-जिसे अधिकार दे दिया गया हो।
समन्वय पु० (सं) १-विरोध का अभाव। मिलाप। मिलाना। २-कार्य और कारण की संगति या निर्वाह।
समन्वित वि०(सं) १-संयुक्त। मिला हुआ। २-जिसमें कोई रुकावट न हो।
समन्वेषण पु० (सं) किसी प्रदेश में जाकर वहां की चारों ओर की स्थिति तथा नई बातों का पता लगाना। (एक्स्प्लोरेशन)।
समपरिधान पु० (सं) दे० 'विपरिधान' (यूनीफॉर्म)
समपहरण पु०(सं)दण्ड के रूप में किसी की सम्पत्ति, धन आदि का सरकार द्वारा जब्त किया जाना। (कनफिस्केशन)।
समप्रभ वि० (सं) एकसी दीप्ति या कांति वाला।
समबहुभुज पु० (सं) ऐसा बहुभुज क्षेत्र जिसके कोण तथा भुजाएँ दोनों बराबर हों। (रेगुलर पॉलीगन)
समबुद्धि पु० (सं) वह जिसकी बुद्धि, सुख, दुःख हानि, लाभ आदि सबमें एक ही समान रहती हो।
समभाग पु० (सं) समान भाग। बराबर का हिस्सा।
समभुज-बहुभुज पु० (सं) वह बहुभुज क्षेत्र जिसकी सारी भुजाएँ बराबर हों। (इक्विलेटरल पॉलीगन)
समभूमि स्त्री० (सं) वह जमीन जो हमवार हो।
सममितआकृति स्त्री० (सं) वह आकृति जिसकी बीच की रेखा के बल तह करने पर दोनों ओर के कोण रेखा या भाग ठीक ठीक उतरें (सिमिट्रिकल फिगर)
समय पु० (सं) १-काल। वक्त। २-अवसर। मौका। ३-अवकाश। ४-अंतिम काल। ५-प्रथा। ६-कौल करार। ७-सिद्धांत। ८-व्यवहार। ९-सामान्य रीति रस्म।
समयच्युति स्त्री०(सं) १-अवसर का हाथ से निकल जाना। २-चूक जाना।
समयज्ञ पु० (सं) १-समयानुसार चलने वाला। २-विष्णु।
समयदान पु० (सं) किसी से किसी विषय पर बातचीत करने के लिए मिलने का समय पहले से ही निश्चित कर लेना। (एंगेजमेंट)।
समयनिष्ठ वि० (सं) प्रत्येक काम ठीक समय पर करने वाला। (पंक्चुअल)। समय का पाबन्द।
समयबंधन वि० (सं) जो प्रतिज्ञा से बँधा हुआ हो।
समयभेद पु० (सं) वचन तोड़ना।
समयविपरीत वि०(सं) प्रतिज्ञा या वादा पूरा न करने वाला।
समयविभाग पु० (सं) दे० 'समयसूची'।
समयविभागपत्र पु० (सं) दे० 'समयसूची'।
समयसारिणी पु० (सं) दे० 'समयसूची'।
समयसूची स्त्री० (सं) कोष्ठकों की वह तालिका जिसमें भिन्न-भिन्न समयों पर होने वाले कार्यों का विवरण सूची के रूप में होता है। (टाइम टेबल)।
समयानुवर्ती वि० (सं) जो वर्तमान समय की रीति के अनुसार चलता हो।
समयोचित वि०(सं) जो किसी अवसर के उपयुक्त हो।
समर वि० (सं) युद्ध। लड़ाई।
समरकर्म पु० (सं) लड़ने का काम।
समरत्थ पु० (हि) दे० 'समर्थ'।
समरथ पु० (हि) दे० 'समर्थ'।
समरभूमि स्त्री० (सं) युद्धक्षेत्र। रणभूमि।
समरपोत पु० (सं) जङ्गी जहाज। युद्धपोत। लड़ाई में काम आने वाला जहाज।
समरविजयी वि० (सं) युद्ध में जीतने वाला।
समरशूर पु० (सं) लड़ाई में वीरता दिखाने वाला योद्धा।
समरस वि०(सं) १-एक ही तरह के रस वाले (पदार्थ)। २-सदा एक सा रहने वाला। ३-एक ही विचार के।
समरसीमा स्त्री० (सं) रणभूमि। युद्धक्षेत्र।
समरांगण पु० (सं) युद्धक्षेत्र। लड़ाई का मैदान।
समरागम पु० (सं) युद्ध का आरम्भ होना।
समराजिर पु० (सं) रणभूमि।
समराना क्रि० (हि) सजाना या सजवाना।
समरूप वि० (सं) समान रूप वाला।
समरूप प्रस्ताव पु०(सं) वह प्रस्ताव जो किसी दूसरे प्रस्ताव से मिलता-जुलता हो। (आइडेंटिकल-मोशन)।
समरोचित वि० (सं) जो युद्ध या लड़ाई के लिए उपयुक्त हो।
समरोद्यत वि० (सं) जो युद्ध के लिये तैयार या उद्यत हो।

समर्घ वि० (स) कम मूल्य का। सस्ता।
समर्चन पुं० (सं) अच्छी तरह पूजन करने का काम।
समर्चना स्त्री० (सं) अच्छी तरह की जाने वाली पूजा।
समर्थ वि० (सं) १-जिसमें कोई काम करने की शक्ति हो। २-दूसरे पदार्थों आदि पर प्रभाव डालने की शक्ति रखने वाला (एफेक्टिव)। ३-प्रयुक्त होने के योग्य। पुं० भलाई। हित।
समर्थक वि० (सं) समर्थन करने वाला। पुं० चंदन की लकड़ी।
समर्थता स्त्री० (सं) सामर्थ्य। शक्ति।
समर्थत्व पुं० (सं) दे० 'समर्थता'।
समर्थन पुं०(सं)१-किसी मत का पोषण। (सेकेन्डिंग) २-मीमांसा। ३-विवेचन। किसी वस्तु के बारे में उसके ठीक होने के बारे में निर्णय करना।
समर्थना स्त्री० (सं) १-किसी न होने वाले कार्य के लिए प्रयत्न करना। २-अनुरोध।
समर्थनीय वि०(सं) जिसका समर्थन किया जा सके।
समर्थित वि० (सं) जिसका समर्थन किया गया हो।
समर्पक वि० (सं) १-समर्पण करने वाला। २-किसी माल को कहीं पहुँचाने के लिए सौंपने वाला। (कन्साइनर)।
समर्पण पुं० (सं) १-भेंट या नजर करना। २-धर्म-भाव या श्रद्धाभाव से कुछ कहते हुए अर्पित करना। (डेडिकेशन)। ३-कहीं पहुंचाने के लिये किसी को सौंपा हुआ माल। (कन्साइन्मेन्ट)।
समर्पणमूल्य पुं०(सं) बीमा पत्र की अवधि पूरी होने से पहले ही उसे समर्पित करने पर उसके बदले में दिया जाने वाला धन। (सरेन्डर वेल्यू)।
समर्पना क्रि० (हि) सौंपना। समर्पण करना।
समर्पयिता वि० (सं) सौंपने या समर्पण करने वाला
समर्पित वि० (सं) १-जो समर्पण किया गया हो। २-(वह माल) जो कहीं बाहर भेजने के लिये सौंपा गया हो। (कन्साइण्ड)।
समलंकृत वि० (सं) अच्छी तरह से सजा हुआ।
समलंबचतुर्भुज पुं० (सं) ऐसा चतुर्भुज जिसकी आमने-सामने की भुजाएँ समानान्तर हों। (ट्रैपीजियम)।
समल पुं० (सं) मल। विष्ठा। वि० मैला।
समलोष्टकांचन वि० (सं) जिसकी नजर में मिट्टी का ढेला और स्वर्ण बराबर हो।
समवयस्क वि० (सं) बराबर की आयु या उमर का।
समवरोध पुं०(सं) नाकेबन्दी। किसी स्थान की सेना, युद्धपोतों द्वारा इस तरह घेरा डालना कि उस स्थान से आना-जाना रुक जाय। (ब्लाकेड)।
समवर्ण वि० (सं) १-एक ही जाति में उत्पन्न। २-एक ही रङ्ग का।
समवर्ती वि० (सं) १-सबके साथ एक सा व्यवहार करने वाला। २-किसी से पक्षपात न दिखाने वाला ३-जो एक ही दूरी पर स्थित हो। ४-साथ-साथ चलने वाला। (कॉनकरेण्ट)।
समवाय पुं० (सं)१-समूह। झुण्ड। २-न्याय में वह सम्बन्ध जो गुणी के साथ गुणी का तथा जाति के साथ व्यक्ति का होता है। ३-कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार व्यापारिक कार्य के लिये बनी हुई वह वह संस्था जिसके साझीदारों को उसके व्यापार में होने वाले लाभ का अंश मिलता है। (कम्पनी)।
समवायी वि० (सं) १-जिसमें समवाय का नित्य सम्बन्ध हो।
समवायीकारण पुं० (सं) वह कारण जो अलग न किया जा सके।
समवितरण पुं० (सं) कपड़े या खाद्यान्न की कमी होने पर निश्चित मात्रा में कपड़े या खाद्यान्न बांटने की व्यवस्था। (रैशनिङ्ग)।
समविभाग पुं० (सं) सम्पत्ति, धनादि का बराबर हिस्सों में बटवारा।
समविषम पुं० (सं) वह भूमि जो समतल न हो। ऊबड़-खाबड़ हो।
समवीर्य वि० (सं) जिसमें बराबर बल हो।
समवृत्त पुं० (सं) वह वृत्त या छन्द जिसके चारों चरण समान हों।
समवृत्ति पुं० (सं) धीरता।
समवेत वि० (सं) १-एकत्र। इकट्ठा किया हुआ। २-किसी के साथ श्रेणी में आया हुआ। ३-नित्य सम्बन्ध से बँधा हुआ।
समवेतन पुं० (सं) सेना, अनुयायियों आदि का एक साथ एकत्र होना। समागमन। (रैली)।
समवेत होना क्रि० (हि) १-एकत्र होना। २-सभा, समाज आदि के सदस्यों का एक स्थान पर इकट्ठा या जमा होना। (टु मीट)।
समवेष पुं० (सं) समान या एक जैसा वेष या पोशाक
समशीतोष्ण क्रि०(सं) (वह स्थान) जो न अधिक गर्म तथा न अधिक ठण्डा हो।
समशीतोष्ण कटिबन्ध पुं० (सं) पृथ्वी के भाग जो उष्णकटिबन्ध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक पड़ते हैं तथा जहां न तो बहुत सर्दी पड़ती है और न ही अधिक गरमी। (टैंपरेट जोन)।
समशील वि० (सं) समान आचरण वाला।
समष्टि स्त्री० (सं) १-जितने हों उन सबका समूह जिसमें उसके सारे अङ्गों का समावेश होता है। २-साधुओं का वह भण्डारा जिसमें स्थानिक साधु निमन्त्रित होते हैं।
समसंधि स्त्री० (सं) दो राष्ट्रों के बीच किया गया वह समझौता या सन्धि जो बराबर की शर्तों पर किया गया हो।

समसमयवर्ती वि० (स) साथ-साथ होने वाले।
समसर स्त्री० (हि) समानता। बराबरी।
समसामयिक वि० (स) (वह दो या दो से अधिक) जो एक ही काल या समय में घटित हुए हों।
समसेर स्त्री० (हि) तलवार।
समस्त वि० (सं) १-कुल। समग्र। २-समास के नियमों से मिला या मिलाया हुआ।
समस्या स्त्री० (स) १-वह उलझन वाली बात जिसका निर्णय सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसङ्ग (प्रॉब्लम)। २-सङ्घटन। ३-किसी छन्द आदि का वह अन्तिम चरण जो कवियों के आगे पूरा करने के लिये रखा जाता है।
समस्यापूर्ति [illegible]

[illegible] या भलाई

स [illegible]
समा स्त्री० (स) वर्ष। साल। पु० दे० 'समाँ'। पु० (स) आकाश।
समाई स्त्री० (हि) १-सामर्थ्य। शक्ति। २-बिसात। औकात।
समाज पु० (हि) निर्मोह। मुस्कराहट।
समाकलन पु० (सं) किसी खाते में प्राप्त रकम को उसमें जमा की ओर लिखना। (क्रेडिट)।
समाख्यान पु० (स) १-भली भांति कहना। २-किसी घटना की मुख्य बातें क्रम से कहना। (निरेशन)।
समागत वि० (स) १-आया हुआ। २-जो सामने मौजूद या उपस्थित हो।
समागति स्त्री० (सं) आगमन।
समागम पु० (स) १-आना। २-कुछ लोगों का किसी उद्देश्य को लेकर आपस में मिलना या सम्पर्क होना (एसोसियेशन)। ३-मिलना। ४-मैथुन।
समागमन पु० (स) दे० 'समवेलन'। (रैली)।
समाचार पु० (सं) संवाद। खबर। हाल। (न्यूज)।
समाचारपत्र पु० (सं) वह पत्र जिसमें सब देशों के अनेक प्रकार के समाचारपत्र तथा स्थानीय समाचार छपे रहते हैं। (न्यूजपेपर)।
समाचारप्रेषण पु० (सं) १-अनेक प्रकार की खबरों का भेजा जाना। २-समाचार के रूप में भेजी जाने वाली सामग्री (न्यूज-डिस्पेच)।
समाचारसूचना स्त्री० (स) वह सूचना जो समाचार के रूप में समाचारपत्र में छपने के लिए निकाली गई हो। (प्रेस नोट)।
समाज पु० (सं) १-समूह। गिरोह। २-एक स्थान पर रहने वाला या एक प्रकार का काम करने वालों का वर्ग या समुदाय। ३-किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा। (सोसाइटी)।
समाजवाद पु० (स) वह सिद्धांत जिसके अनुसार राज्य के समस्त उत्पादन साधनों पर समाज का अधिकार हो तथा उससे उत्पादित संपत्ति का जहाँ तक हो सके सबको बराबर मिलने की व्यवस्था हो। (सोशलिज्म)।
समाजवादी पु० (सं) जो समाजवाद के सिद्धान्त को मानता हो। (सोशलिस्ट)।
समाजविग्रह पु० (स) वर्गयुद्ध।
समाजशास्त्र पु० (सं) वह शास्त्र जो मनुष्यों को सामाजिक प्राणी मानकर उनके समाज तथा संस्कृति की उत्पत्ति, विकास आदि का विवेचन करता है। (सोशियोलोजी)।
समाजसेवक पु० (सं) [illegible] के या भलाई

[illegible] पु० (सं) किसी समाज (विशेषतः आर्यसमाज) का सदस्य।
समाजीकरण पु० (सं) १-उत्पादनों या साधनों को समाज के अधिकार के अन्तर्गत लाना। २-निजी तथा वैयक्तिक सम्पत्ति पर सामाजिक अधिकार होना (सोशेलाइजेशन)।
समाज्ञा स्त्री० (स) यश। कीर्ति। बड़ाई।
[illegible]

[illegible] २-किए गए व्रत की अपेक्षा। (जैन०)
समादृत वि० (सं) सम्मानित। जिसका खूब आदर हुआ हो।
समादेय वि० (सं) १-आदर करने के योग्य। २-स्वागत करने योग्य।
समादेश पु० १-वह आज्ञा जो न्यायालय कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है। (इनजंक्शन)। २-साधिकार किसी को कोई काम करने की आज्ञा देना।
समाद्रित वि० (स) दे० 'समादृत'।
समाधान पु० (स) १-किसी का सन्देह दूर करने वाली बात या काम। २-मतभेद या विरोध दूर करना। ३-निराकरण। निष्पत्ति। ४-नियम। ५-अनुसंधान। अन्वेषण। ६-समर्थन। ७-ध्यान। ८-तपस्या। ९-नाटक में कथा भाग की मुख्य घटना।
समाधानना क्रि० (हि) १-सांत्वना देना। २-किसी का सन्देह दूर करना।
समाधि स्त्री० (सं) १-ईश्वर के ध्यान में मग्न होना। २-वह स्थान जहाँ किसी का मृत शरीर या [illegible] गाड़ी गई हो। ३-योगसाधना जिसमें प्राणी

रिक क्लेशों से मुक्ति पाकर अनेक शक्तियां प्राप्त करता है। ४-एक अर्थालंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से किसी काम के सुगमतापूर्ण होने का वर्णन होता है। ५-नियम। ६-ग्रहण करना। ७-प्रतिज्ञा। ८-बदला। ९-समर्थन। १०-आरोप। ११-चुप रहना। १२-योग। १३-असाध्य काम करने के लिये उद्योग करना।

समाधिक्षेत्र पुं० (सं) वह स्थान जहां मृत योगियों, महात्माओं के शव गाड़े जाते हैं। कब्रिस्तान।

समाधित वि० (सं) जो समाधि में लीन हो।

समाधिदशा स्त्री० (सं) वह दशा जब योगी समाधि में परमात्मा में तन्मय होता है और स्वयं को भूल कर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

समाधिनिष्ठ वि० (सं) दे० 'समाधिस्थ'।

समाधिभंग पुं० (सं) किसी बाधा के कारण समाधि का टूट जाना।

समाधिलेख पुं० (सं) समाधि या कब्र के पत्थर पर स्मरणार्थ लिखा गया लेख (एपिटा)।

समाधिस्थ वि० (सं) जो समाधि लगाये हुए हो।

समाधिस्थल पुं० (सं) समाधिक्षेत्र।

समाधी वि० (सं) दे० 'समाधिस्थ'।

समाधेय वि० (सं) जिसका समाधान हो सके।

समान वि०(सं) रूप,गुण, आकार, मान, मूल्य, महत्व आदि के विचार से एक जैसे। बराबर। पुं० १-सत्। २-शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक। स्त्री० (हि) समानता। बराबरी।

समानकोणिक बाहुभुज पुं० (सं) वह बहुभुज जिसके समस्त कोण आपस में बिल्कुल बराबर हों। (एक्विएंग्यूलर पॉलिगन)।

समानता स्त्री० (सं) समान होने का भाव। तुल्यता। बराबरी।

समानत्व पुं० (सं) समानता। बराबरी।

समानधर्मी वि० (सं) समान या एक से गुण वाला।

समाननामा वि० (सं) नामरासी।

समानयन पुं० (सं) अच्छी तरह से या आदरपूर्वक लाने की क्रिया।

समानवयस्क वि० (सं) एक ही उम्र या आयु का। हमउम्र।

समानवर्ण वि० (सं) १-एक ही जाति का। २-एक जैसे रङ्ग का।

समानशील वि० (सं) एक जैसे स्वभाव का।

समानसंख्य वि० (सं) बराबर गिनती या संख्या वाला।

समानांतर वि० (सं) (दो या अधिक रेखाएँ आदि) १-जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर समान अन्तर पर रहें। २-साथ-साथ काम करने या चलने वाला। (पैरेलल)।

समानांतर चतुर्भुज पुं० (सं) ऐसा चतुर्भुज जिसकी आमने सामने की भुजाएँ समानांतर हों। (पैरेलेलोग्राम)।

समानांतर रेखाएँ पुं० (सं) वे रेखाएँ जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक दूसरे से समान अन्तर पर हों। (पैरेलल लाइन्स)।

समाना क्रि० (हि) भरना। किसी वस्तु के अन्दर पहुँच कर भर जाना या उसमें लीन होना।

समानाधिकरण पुं० (सं) १-व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आता है। २-एक ही या समान श्रेणी। ३-एक ही पदार्थ पर आधारित।

समानाधिकार पुं० (सं) बराबरी का अधिकार।

समानार्थ पुं० (सं) वे शब्द जिनका अर्थ एक ही हो अथवा एकसा हो। पर्य्याय।

समानार्थक वि० (सं) समान अर्थ वाला।

समानोदक पुं० (सं) ऐसा सम्बन्धी जिसे तर्पण में दिया हुआ जल मिले। जिसकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों।

समानोदर्य पुं० (सं) सहोदर।

समानोपमा स्त्री० (सं) उपमा-अलंकार का एक भेद।

समापक वि० (सं) समाप्त करने वाला।

समापन पुं० (सं) १-काम पूरा या समाप्त करना (डिस्पोजल)। २-विवाद, विचार आदि के समय उनका अन्त करने के लिए कोई विशेष बात कहना (वाइंडिंग अप)। ३-समाधान। ४-मार डालना।

समापनप्रस्ताव पुं० (सं) विवादग्रस्त विषय के विवाद को समाप्त करने के लिए कोई प्रस्ताव रखना। विवादांत प्रस्ताव। (मोशन आफ क्लोजर)।

समापनीय वि० (सं) १-समाप्त करने योग्य। २-मार डालने योग्य।

समापनीयपट्टा पुं० (हि) किसी निश्चित समय के बाद समाप्त हो जाने वाला पट्टा। (टरमिनेबल-लीज)।

समापन्न वि० (सं) १-समाप्त किया हुआ। २-मिला हुआ। ३-क्लिष्ट। कठिन। पुं० हत्या करना।

समापावन पुं० (सं) १-समाप्त या पूरा करना। २-मूल रूप देना।

समापिका स्त्री० (सं) व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त होना सूचित हो।

समापित वि० (सं) समाप्त या पूरा किया हुआ।

समापी पुं० (सं) वह जो समाप्त या खतम करता हो।

समाप्त वि० (सं) जो खतम या पूरा हो गया हो।

समाप्तप्राय वि० (सं) लगभग समाप्त।

समाप्तलंभ पुं० (सं) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम (बौद्ध)।

समाप्ति स्त्री० (सं) १-किसी बात या काम आदि का

समाप्त या पूरा होना। २-प्राप्ति। ३-विवाद का अन्त करना।
समाप्य वि० (स) समाप्त करने योग्य।
समायुक्त वि० (सं) आवश्यकता पड़ने पर दिया या पास पहुँचाया हुआ। (सप्लाइड)।
समायोग पुं०(सं) १-ऐसा प्रबन्ध करना कि लोगों की आवश्यकता की वस्तुएँ उन्हें मिल जायँ। (सप्लाई) २-संयोग। ३-बहुत से लोगों का एकत्र होना। ४-निशाना ठीक करना।
समायोजक पु० (सं) वह जो समायोजन करता हो अथवा लोगों को उनकी आवश्यकता की वस्तुएँ पहुँचाता हो (सप्लायर)।
समायोजन पु० (सं) दे० 'समायोग'।
समारंभ पु० (स) १-अच्छी तरह से आरम्भ होना। २-समारोह।
समारंभण पुं० (सं) गले लगाना। आलिंगन।
समारब्ध वि० (सं) आरम्भ या शुरू किया हुआ।
समारम्भ्य वि०(सं) समारंभ करने के योग्य।
समाराधन पुं०(सं)१-भली भांति आराधना या उपासना करना। २-खुश या प्रसन्न करना। ३-सेवा करना।
समारूढ़ वि० (सं) १-चढ़ा हुआ। २-भरा हुआ। (घाव)।
समारोप पुं० (सं) १-दे० 'आरोप'। २-स्थानांतरण ३-चढ़ाना।
समारोपक पु०(सं) १-उत्पन्न करने वाला। २-चढ़ाने वाला।
समारोपण पुं० (सं) दे० 'आरोपण'।
समारोपित वि० (सं) १-चढ़ाया या तना हुआ (धनुष)। २-स्थानान्तरित।
समारोह पु० (स) १-भारी आयोजन। धूमधाम। २-धूमधाम से होने वाला कोई ...
समार्हता स्त्री० (सं) समता। ... तुल्यता। (वैदिक)।
समालंबन पु० (सं) सहारा। टे०।
समालिंगन पु० (स) भली भांति ... आलिंगन।
समालोचक पु० (सं) १-समालोचना करने वाला। २-किसी पदार्थ के गुण, दोष आदि की विवेचना करने वाला। ३-किसी रचना या ग्रन्थ के गुण दोष आदि का प्रतिपादन करने वाला।
समालोचन पु० (सं) दे० 'समालोचना'।
समालोचना स्त्री० (सं) १-अच्छी प्रकार से गुण, दोष का पता लगाने के लिए ...

स ... भाव। आदना। २-

अध्ययन समाप्त कर लेने पर गुरुकुल में से स्नातक बनकर लौटने पर होने वाला समारोह या संस्कार
समावह वि० (सं) प्रस्तुत करने वाला।
समावाय पु०(सं) दे० 'समवाय'।
समावास पु० (स) १-रहने का स्थान। निवास स्थान। २-शिविर। पड़ाव।
समावासित वि० (स) बसाया या ठहराया हुआ।
समाविष्ट वि० (सं) १-समाया हुआ। २-एकाग्रचित्त
समावृत वि० (स) १-ढका हुआ। २-घेरा हुआ ३-रक्षित। छाया हुआ।
समावृत्त वि० (सं) जो गुरुकुल से विद्याध्ययन पूर्ण करके लौट आया हो।
समावेश पु० (स) १-एक साथ या एक जगह रहना। २-एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अन्तर्गत होना।
समाश्लिष्ट वि० (स) लीन। संलग्न
समाश्लेष पु० (सं) आलिङ्गन।
समाश्वस्त पुं०(स) १-जिसे भलीभांति आश्वासन मिल गया हो। २-प्रोत्साहित।
समाश्वासन पु०(स) १-उत्साहित करना। २-अच्छी प्रकार आश्वासन देना।
समासंग पु० (सं) मिलन। मिलाप। मेल।
समास पुं० (सं) १-संक्षेप। २-संग्रह। ३-समर्थन। ४-व्याकरण के नियमानुसार दो शब्दों का मिलाकर एक होना।
समासक्त वि० (सं) संयुक्त। मिला हुआ।
समासचिह्न पु० (सं) दे० 'समासरेखा' (हाइफन)।
समासन्न वि० (सं) निकटस्थ। पास का।
समासप्राय वि० (सं) जिसमें बहुत अधिक समास हों
समासबहुल वि० (सं) दे० 'समासप्राय'।
समासरेखा स्त्री० (स) दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर समस्त शब्द बनाने के ...

... किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।
समाहरण पुं० (स) दे० 'समाहार'।
समाहर्ता वि० (सं) १-जो किसी वस्तु का संग्रह करता हो। २-मिलाने वाला। पुं० संग्राहक।
समाहार पुं०(सं) संग्रह। राशि। २-ढेर। ३-कर चन्दा आदि उगाहना। (कलेक्शन)। ४-मिलाना। ५-ठीक ढंग से इकट्ठा होना। (कोलेक्शन)।

समाहूत वि० (स) १-जिसे ललकारा गया हो। २-

बुलाया गया।
समाहूता वि० (सं) १-बुलाने वाला। २-ललकारने वाला।
समाह्वान पुं० (सं) १-आह्वान। बुलाना। २-जूआ खेलने के लिये किसी को बुलाना या ललकारना।
समितिंजय पुं० (सं) १-वह जो युद्ध में विजयी हुआ हो। २-यम। ३-विष्णु। ४-वह जिसने किसी सभा आदि में विजय प्राप्त की हो।
समिति स्त्री० (सं)१-सभा। समाज। २-किसी विशेष काम के लिये बनी हुई छोटी सभा। (कमिटी)। ३-वैदिक कालीन वह सभा जिसमें राजनैतिक विषयों पर विचार होता था।
समिध पुं० (सं) अग्नि।
समिधा स्त्री० (सं) दे० 'समिधि'।
समिधि स्त्री० (सं) यज्ञ में जलाने की लकड़ी।
समिध् स्त्री० (सं) १-आग जलाने की लकड़ी। २-यज्ञकुण्ड में जलाने की लकड़ी।
समीकरण पुं० (सं) १-समान या बराबर करना। २-गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात-राशि जानी जाती है।
समीक्षक पुं० (सं) वह जो समीक्षा करता हो। छान-बीन और जांच-पड़ताल करने वाला। समालोचक।
समीक्षण पुं० (सं) १-आलोचना। २-देखना। ३-अन्वेषण। जांच-पड़ताल।
समीक्षा स्त्री० (सं) छानबीन या जांच-पड़ताल करने के लिये कोई बात अच्छी तरह देखना। आलोचना।
समीचीन वि० (सं) १-उपयुक्त। ठीक। २-न्यायसंगत ३-उचित। वाजिब।
समीचीनता स्त्री० (सं) समीचीन होने का भाव या धर्म।
समीति स्त्री० (हि) दे० 'समिति'।
समीप वि० (सं) पास। निकट। नजदीक।
समीपता स्त्री० (सं) निकटता। समीप होने का भाव या धर्म।
समीपवर्ती वि० (सं) समीप या पास का।
समीपस्थ वि० (सं) पास का।
समीर पुं० (सं) १-वायु। हवा। २-पथिक। बटोही ३-प्रेरणा।
समीरकुमार पुं० (सं) हनुमान।
समीरण पुं० (सं) १-वायु। हवा। पवनदेव।
समीहा स्त्री० (सं) १-प्रयत्न। उद्योग। २-इच्छा। ३-जांच। पड़ताल।
समुंद पुं० (हि) समुद्र।
समुंदर पुं० (हि) समुद्र।
समुंदरफल पुं० (हि) दे० 'समुद्रफल'।
समुचित वि० (सं) १-उचित। ठीक। २-उपयुक्त।
समुच्चय पुं० (सं)१-कुछ वस्तुओं का एक में मिलना (कम्बिनेशन)। २-समूह। राशि। ३-कुछ वस्तुओं का एक स्थान पर एकत्र होना। (क्यूमलेशन)। ४-वह आपत्ति जिसमें यह निश्चय हो कि इस उपाय के अतिरिक्त अन्य उपायों से काम हो सकता है। ५-साहित्य में एक अलङ्कार।
समुच्छ्रित वि० (सं) १-ढेर लगाया हुआ। २-संगृहीत।
समुच्छित्ति स्त्री० (सं) १-विनाश। २-टुकड़े-टुकड़े करना।
समुच्छिन्न वि० (सं) १-नष्ट। २-टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। फटा हुआ।
समुच्छेद पुं० (सं) १-जड़ से उखाड़ना। उन्मूलन। २-ध्वंस। नाश।
समुच्छेदन पुं० (सं) १-नष्ट करना। २-जड़ से उखाड़ना।
समुच्छ्वास पुं० (सं) लम्बी सांस। दीर्घप्रश्वास।
समुज्ज्वल वि० (सं) १-खूब उजला। चमकता हुआ। २-चमकीला।
समुझ स्त्री० (हि) दे० 'समझ'।
समुझना क्रि० (हि) दे० 'समझना'।
समुझनि स्त्री० (हि) समझने की क्रिया।
समुत्कंटकित वि० (सं) जिसमें रोमांच हो।
समुत्कंठा स्त्री० (सं) १-घबराहट। व्यग्रता। २-तीव्र इच्छा।
समुत्कीर्ण वि० (सं) टूटा हुआ।
समुत्थान पुं० (सं) १-उत्पत्ति। २-उठने की क्रिया या भाव। ३-आरम्भ।
समुत्थापक वि० (सं)जगाने या उठाने वाला। (बौद्ध)
समुत्सुक वि० (सं) १-अत्यन्त विकल या चिंतित। २-विशेष रूप से उत्सुक।
समुद वि०(सं) प्रसन्नतायुक्त। अव्य० प्रसन्नतापूर्वक
समुदय पुं० (सं) १-उदय। २-दिन। ३-लड़ाई। ४-ज्योतिष में लग्न। वि० सब। समस्त। कुल।
समुदलहर पुं० (हि) एक प्रकार का कपड़ा।
समुदाय पुं० (सं) १-समूह। ढेर। २-झुण्ड। गिरोह ३-वर्ग। (कम्यूनिटी)। ४-युद्ध। ५-उदय। ६-उन्नति। ७-पीछे की ओर की सेना।
समुदाथि पुं० (हि) ढेर। समूह।
समुदाव पुं० (हि) समूह। राशि। झुण्ड।
समुदित वि० (सं) १-उठा हुआ। २-उत्पन्न। जात। ३-उन्नत।
समुद्गीर्ण वि० (सं) १-वमन किया हुआ। २-जो उगला गया हो।
समुद्धरण पुं० (सं)१-वमन करने पर पेट से निकला हुआ अन्न। २-ऊपर की ओर उठाने या निकालने की क्रिया। ३-उद्धार।
समुद्धर्ता पुं० (सं)१-वह जो ऊपर की ओर उठाता या

जिसका हो। २-उद्धार करने वाला। ३-ऋण उतारने वाला।

समुद्धार पुं० (सं) दे० 'समुद्धरण'।

समुद्बोधन पुं० (सं) १-पूरी तरह जागृति करना। २-होश में आना।

समुद्यत वि० (सं) अच्छी तरह से तैयार।

समुद्र पुं० (सं) खारे पानी की वह जलराशि जो पृथ्वी के स्थल भाग को चारों ओर से घेरे हुए है सागर। उदधि। २-किसी विषय या गुणादि का बहुत बड़ा आगार। ३-एक प्राचीन जाति।

समुद्रगमन पुं० (सं) समुद्रयात्रा। (वोयेज)।

समुद्रगा स्त्री० (सं) १-नदी। २-गंगा नदी।

समुद्रगामी वि० (सं) समुद्री व्यापार करने वाला। समुद्र में जाने वाला।

समुद्रझाग पुं० (हि) समुद्र का फेन। समुद्रफेन।

समुद्रतटवर्ती प्रदेश पुं० (सं) समुद्र के किनारे का किसी देश का भूभाग। (मैरिटाइम प्रॉविन्स)।

समुद्रदयिता स्त्री० (सं) नदी।

समुद्रपत्नी स्त्री० (सं) नदी।

समुद्रफल पुं० (सं) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके फल दवा के काम आते हैं।

समुद्रफेन पुं० (सं) समुद्र के झाग जो इसके किनारे पर आया करते हैं तथा जो औषध के रूप में काम आते हैं।

समुद्रमथन पुं० (सं) दे० 'समुद्रमंथन'।

समुद्रमंथन पुं०(सं) १-समुद्र को मथना। २-पुराणानुसार एक दानव का नाम।

समुद्रमालिनी स्त्री० (सं) पृथ्वी।

समुद्रमेखला स्त्री० (सं) पृथ्वी।

समुद्रयात्रा स्त्री० (सं) समुद्र मार्ग से अन्य देशों में जाना।

समुद्रयान पुं० (सं) समुद्र में चलने वाला जहाज। जलपोत।

समुद्रलवण पुं० (सं) समुद्र के जल से तैयार होने वाला नमक।

समुद्रवल्लभा स्त्री० (सं) पृथ्वी।

समुद्रवसना स्त्री० (सं) पृथ्वी।

समुद्रवह्नि पुं० (सं) बड़वानल।

समुद्रवासी पुं० (सं) समुद्र में या समुद्र तट पर रहने वाला।

समुद्राम्बरा स्त्री० (सं) पृथ्वी।

समुद्री वि० (हि) १-समुद्र-सम्बन्धी। २-समुद्र की ओर से आने वाली। ३-नौ-सेना सम्बन्धी।

समुद्रीतार पुं० (हि) समुद्र में पानी के अन्दर से होकर जाने वाला तार। (केबल)।

समुद्रीय वि० (सं) समुद्र का। समुद्र सम्बन्धी।

समुद्वेग पुं० (सं) १-अत्यधिक घबराहट। २-डर।

भाव।

समुन्नत वि० (सं) १-बहुत ऊँचा। २-जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। पुं० एक प्रकार का खंभा। (वास्तु विद्या)।

समुन्नति स्त्री० (सं) १-यथेष्ट उन्नति। २-महत्त्व। बड़प्पन।

समुन्मूलन पुं० (सं) पूर्णरूप से नाश।

समुपकरण पुं० (सं) सामान। सामग्री।

समुपस्थित वि० (सं) १-आया हुआ। उपस्थित। २-प्रकट।

समुल्लास पुं० (सं) १-उल्लास। आनन्द। २-ग्रन्थ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

समुन्मेष पुं० (सं) १-खनन। खोदना। २-खींचना। ३-उन्मूलन।

समुहा वि०(हि)१-सामने का। आगे का। २-सामना करना। अव्य० सामने।

समुहाना क्रि० (हि) सामने आना। सम्मुख होना।

समुहैं अव्य० (हि) सामने।

समूचा वि०(हि) सारा। पूरा। साबुत।

समूढ़ वि० (सं) १-ढेर लगाया हुआ। संगृहीत। २-पकड़ा हुआ। ३-भोगा हुआ। ४-विवाहित। ५-ठीक।

समूर पुं० (सं) दे० 'समूरु'।

समूरु पुं० (सं) साबर नामक हिरन।

समूरुक पुं० (सं) दे० 'समूरु'।

समूल वि० (सं) जिसका मूल या हेतु हो। अव्य० जड़ से। मूल सहित।

समूह पुं० (सं) १ समुदाय। झुण्ड। २-एक जैसी बहुत सी वस्तुओं का ढेर।

समूहकार्य पुं० (सं) किसी वर्ग विशेष या समाज का कार्य।

समूहवाद पुं०(सं) १-भूमि आदि पर सामूहिक स्वत्व की आवश्यकता पर जोर देने वाला सिद्धांत। २-उद्योग में सामूहिक पूंजी का प्रतिपादन करने का सिद्धांत। (कलेक्टिविज्म)।

समूहोत्पादन पुं० (सं) दे० 'पुंजोत्पादन'। (मास प्रोडक्शन)।

समृद्ध वि० (सं) सम्पन्न। धनवान्।

समृद्धि स्त्री० (सं) १-धन आदि की अधिकता। सम्पन्नता। २-सफलता। ३-प्रभाव।

समेटना क्रि० (हि) १-बिखरी या फैली हुई वस्तुएँ एकत्रित करना। २-अपने ऊपर लेना।

समेत वि० (सं) संयुक्त। मिला हुआ। अव्य० सहित। साथ।

समै पुं० (हि) समय।

समैया पुं० (हि) समय।

समौ पुं० (हि) समय।

समोखना क्रि० (हि) बहुत ताकीद या ज़ोर देकर कहना।
समोना क्रि० (हि) मिलाना।
समोसा पु० (हि) सिंघाड़े के आकार का एक नमकीन पकवान।
समौ पु० (हि) समय।
समौरिया वि० (हि) समवयस्क।
सम् उप०(सं) शब्दों के पहले आकर—साथ, पूर्णता, अच्छाई आदि का सूचक एक उपसर्ग।
सम्मंत्रणा स्त्री०(सं) आपस में मशवरा करने का कार्य (कॉन्फ्रेंस)।
सम्मत वि० (सं) सहमत। जिसकी राय मिलती हो।
सम्मति स्त्री० (सं) १-राय। सलाह। २-आदेश। ३-मत। ४-किसी विषय में लोगों का एक मत होना। ५-किसी प्रस्ताव आदि को ठीक मानकर दी जाने वाली अनुमति। (कॉन्सेन्ट)।
सम्मन पु० (सं) न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है। (सम्मन्स)।
सम्मर्द पु० (सं) १-युद्ध। लड़ाई। समूह। भीड़। ३-आपसी लड़ाई-झगड़ा।
सम्मान पु० (सं) इज्जत। गौरव। प्रतिष्ठा। वि० १-मान सहित। २-जिसका मान पूरा हो।
सम्मानना क्रि०(हि) सम्मान करना। आदर करना।
सम्मानित वि० (सं) प्रतिष्ठित। इज्जतदार।
सम्मान्य वि० (सं) आदर करने योग्य।
सम्मार्जक पु० (सं) १-झाड़ने वाला। मेहतर। भंगी २-झाड़ू।
सम्मार्जन पु० (सं) झाड़ना। बुहारना।
सम्मार्जनी स्त्री० (सं) झाड़ू।
सम्मार्जित वि०(सं) १-भली भांति झाड़ा-बुहारा हुआ। २-नष्ट किया हुआ।
सम्मिलन पु० (सं) मेल। मिलाप।
सम्मिलन-विलेख पु० (सं) वह लिखित समझौता जिसके अनुसार किसी राज्य या प्रदेश को किसी बड़े राज्य में मिलाने की शर्त तथा सम्बन्धी पक्षों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर हों। (इन्स्ट्रूमेंट ऑफ सक्सेशन)।
सम्मिलित वि० (सं) मिला हुआ। युक्त। मिश्रित।
सम्मिश्रक पु० (सं) १-वह जो किसी प्रकार का मिश्रण करता हो। २-औषधियों का मिश्रण तथा रोगियों के लिए दवा तैयार करने वाला। (कम्पाउण्डर)।
सम्मिश्रण पु० (सं) १-मेल। मिलावट। कई तरह की औषधियां मिलाकर रोगी के लिए दवा बनाना (कम्पाउंडिंग)।
सम्मीलन पु०(सं) मुँदना। सिकुड़ना (पुष्पादि का।
सम्मुख अव्य० (सं) समक्ष। सामने।
सम्मुखकोण पु० (सं) दो सीधी रेखाओं के किसी एक बिंदु पर एक दूसरे को काटने पर बने आमने-सामने के दोनों कोण। (वर्टीकली ओपोजिट एंगल्ज)।
सम्मेलन पु० (सं) किसी विशेष उद्देश्य से या किसी बात पर विचार करने के लिए एकत्र होने वाला समाज (कानफरेंस)। २-जमघट। ३-मिलाप।
सम्मोदन पु० (सं) किसी नियम आदि की उच्चाधिकारियों द्वारा पुष्टि। (सैंक्शन)।
सम्मोह पु० (सं) १-मोह। प्रेम। २-भ्रम। संदेह। ३-मूर्छा। बेहोशी। ४-एक वर्णवृत्त।
सम्मोहक पु० (सं) १-लुभावना। २-एक प्रकार का सन्निपातज्वर।
सम्मोहन पु० (सं) १-मोहित करना। २-वह जिससे मोह उत्पन्न हो। ५-कामदेव के पांच बाणों में एक
सम्मोहित वि०(सं) १-मूर्छित। बेहोश। मुग्ध किया हुआ।
सम्म्राज पु० (हि) साम्राज्य।
सम्यक् वि० (सं) पूरा। सब। अव्य० १-सब तरह से अच्छी प्रकार। २-स्पष्टतः। ३-पूर्णतया।
सम्याना पु० (हि) दे० 'शामियाना'।
सम्रथ वि० (हि) दे० 'समर्थ'।
सम्राज्ञी स्त्री०(सं)सम्राट की पत्नी। २-किसी साम्राज्य की अधीश्वरी।
सम्राट पु० (सं) महाराजाधिराज। वह बड़ा राजा जिसके आधीन अनेक राज्य या राजा हों। (एम्परर)।
सम्हलना क्रि० (हि) दे० 'सँभालना'।
सय वि० (हि) सौ।
सयण पु० (हि) शयन। लेटने की क्रिया।
सयन पु० (हि) शयन।
सयान पु० (हि) बुद्धिमानी। चतुराई।
सयानपन पु० (हि) चतुरता।
सयाना पु०(हि) अधिक या पूरी आयु वाला। वयस्क वि० १-बुद्धिमान। २-चतुराई। धूर्त।
सरंजाम पु० (फ) १-कार्य की समाप्ति। २-व्यवस्था ३-सामग्री। सामान।
सरंड पु० (सं) १-गिरगिट। २-एक पक्षी का नाम। ३-लम्पट।
सरःकाक पु० (सं) हंस।
सरःकाकी स्त्री० (सं) हंसनी।
सर पु० (सं) १-जलाशय। तालाब। झील। (हि) १-तीर। २-चिता। (फा) १-सिर। २-सिरा। चोटी। ३-ताश का कोई बड़ा पत्ता। ४-सरदार। ५-शीर्षक। वि० १-जीता हुआ। अभिभूत। (अ) अंग्रेजों के शासन काल में उनके सहायक तथा

मुसाहिबों को दी जाने वाली एक बड़ी उपाधि।
सरअंजाम पु० (फ़ा) दे० 'सरंजाम'।
सरई स्त्री० (हि) सरपत का एक भेद।
सरकंडा पु० (हि) सरपत की जाति का एक पौधा।
सरक पु० (सं) १-सरकने की क्रिया या भाव। २-गुड़ की बनी मदिरा। ३-मद्यपान। ४-शराब का खुमार। स्त्री० (हि) बांस आदि की छोटी फाँस या सींक जो खाल आदि में धँस जाती है।
सरकना क्रि० (हि) खिसकना।
सरकश वि० (फ़ा) १-उद्दंड। उद्धत। २-शरारती। ३-शासन न मानने वाला।
सरकशी स्त्री० (फ़ा) १-उद्दंडता। २-शरारत।
सरकसी पु० (अ) वह दल जो पशुओं और कला-बाजी आदि का खेल दिखाता है।
सरकार स्त्री० (फ़ा) १-मालिक। २-देश का शासन करने वाली संस्था या सत्ता (गवर्नमेन्ट)।
सरकारी वि० (फ़ा) १-सरकार या मालिक का। २-राज्य का। राजकीय।
सरकारी अभियाचना स्त्री० (हि) जनता की अपनी आवश्यकता बतलाते हुए राज्य से की जाने वाली माग (पब्लिक डिमांड)।
सरखत पु० (फ़ा) १-वह कागज या दस्तावेज जिस पर मकान, दुकान आदि के किराये पर दिये जाने की शर्तें लिखी होती हैं। २-परवाना। आज्ञापत्र। ३-दिये हुए या चुकाये हुए ऋण का ब्यौरा।
सरग पु० (हि) स्वर्ग।
सरगना पु० (फ़ा) सरदार। अगुवा।
सरगम पु०(हि) सङ्गीत में सात स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम। स्वरग्राम।
सरगरोह पु० (फ़ा) अगुवा। मुखिया। सरदार।
सरगर्मी स्त्री० (फ़ा) १-जोश। आवेश। २-उमंग। उत्साह।
सरगही स्त्री० (हि) दे० 'सहरगही'।
सरगुन वि० (हि) दे० 'सगुण'।
सरगुनिया पु० (हि) वह जो सगुण का उपासक हो
सरजना क्रि० (हि) १-सृष्टि करना। २-रचना। बनाना।
सरजमीन स्त्री० (फ़ा) देश। राज्य।
सरजा पु० (हि) १-सरदार। २-सिंह।
सरजीव वि०(हि) जिसमें जान या जीव हो। सजीव
सरजोर वि० (फ़ा) १-जबरदस्त। २-उद्दण्ड। ३-विद्रोही। ३-बलवान।
सरण पु० (सं) सरकना। खिसकना।
सरणमार्ग पु० (सं) जाने का रास्ता।
सरणि स्त्री० (सं) दे० 'सरणी'।
सरणी स्त्री० (सं) १-मार्ग। रास्ता। २-लकीर। रेखा। ३-पगडंडी। ४-ढंग।
सरतराश पु० (अ) नाई। सिर के बाल काटने वाला।
सरताज पु० (फ़ा) दे० 'सिरताज'।
सरतापरता पु० (हि) बांट। बँटाई।
सरतारा वि० (हि) जो अपना काम करके निश्चिंत हो गया हो।
सरद वि० (हि) दे० 'सर्द'।
सरदई वि० (हि) सरदे के रङ्ग का। हरापन लिए पीला रंग।
सरदर अव्य० (हि) १-एक सिरे से। २-औसत में।
सरदर्द पु० (फ़ा) १-सिर का दर्द। २-कष्ट। दुःख।
सरदा पु० (फ़ा) एक प्रकार का बढ़िया काबुली खर-बूजा।
सरदार पु० (फ़ा) १-अगुवा। नायक। २-किसी प्रदेश का शासक। ३-धनी। ४-सिखों की पदवी।
सरदारनी स्त्री० (हि) १-सरदार की पत्नी। २-कोई प्रतिष्ठित सिख महिला।
सरदारी स्त्री० (फ़ा) सरदार का पद या भाव।
सरधन वि० (हि) धनवान्।
सरधा स्त्री० (हि) दे० श्रद्धा। पु० दे० 'सरदा'।
सरन स्त्री० (हि) दे० 'शरण'।
सरनदीप पु० (हि) लंका। सिंहलद्वीप।
सरना क्रि० (हि) १-खिसकना। चलना। २-हिलना। ३-काम चलना। ४-निपटना।
सरनाम वि० (फ़ा) प्रसिद्ध। मशहूर।
सरनामा पु० (फ़ा) १-शीर्षक। २-पत्र के आरम्भ का संबोधन। ३-लिफाफे आदि पर लिखा जाने वाला पता।
सरनी स्त्री० (हि) रास्ता। मार्ग।
सरपंच पु०(फ़ा) पंचायत का सभापति। पंचों में मुख्य
सरपंजर पु० (हि) बाणों का बना घेरा या पिंजड़ा।
सरप पु० (हि) दे० 'सर्प'।
सरपट पु० (हि) घोड़े की एक प्रकार की तेज चाल। अव्य० तेज चाल में।
सरपत पु० (हि) कुश की तरह की एक घास जिसमें बहुत लंबी पत्तियां होती हैं जो छप्पर आदि बनाने के काम आती है।
सरपरस्त पु०(फ़ा)१-अभिभावक। संरक्षक। २-रक्षा करने वाला।
सरपरस्ती स्त्री० (फ़ा) १-अभिभावकता। २-संरक्षा।
सरपि पु० (हि) घी।
सरपेंच पु० (फ़ा) दे० 'सरपेच'।
सरपेच पु० (फ़ा) पगड़ी के ऊपर लगाने की जड़ाऊ कलगी।
सरफराज वि० (फ़ा) १-उच्च पदस्थ। धन्य। कृतार्थ
सरफराना क्रि० (हि) व्याकुल होना। घबराना।
सरफ़रोश वि० (फ़ा) अपना शीश देने वाला। निडर

सरफरोशी स्त्री०(फा) १-निडरता। २-वीरता। जान पर खेल जाना।
सरफा पु० (हि) दे० 'सर्फ'।
सरव वि० (हि) दे० 'सर्व'।
सरवत्तरि अव्य० (हि) हर जगह। सर्वत्र।
सरवदा अव्य० (हि) सर्वदा। हमेशा।
सरवराह पु० (फा) १-प्रबन्धकर्ता। २-मजदूरों आदि का जमादार। ३-मार्ग में ठहरने तथा भोजन का का प्रबन्ध करने वाला।
सरवस पु० (हि) दे० 'सर्वस्व'।
सरवसर अव्य०(फा) सरासर। सोलहों आने। बराबर
सरवाज् वि० (फा) निडर। वीर। जान पर खेलने वाला।
सरवुलन्द वि० (फा) सम्मानित। प्रतिष्ठित।
सरवोर वि० (हि) दे० 'सराबोर'।
सरम स्त्री० (हि) शर्म। लज्जा।
सरमद वि० (प) १-नित्य। सदा रहने वाला। २-मस्त।
सरमा पु० (स) शीत काल। स्त्री० (स) १-देवताओं की एक कुतिया का नाम। २-कश्यप की एक पत्नी का नाम। ३-कुतिया।
सरमाई स्त्री० (फा) सर्दी के कपड़े। वि० जाड़े के।
सरमापुत्र पु० (सं) कुत्ता।
सरमाया पु०(फा) १-मूलधन। पूँजी। २-धन-दौलत संपत्ति।
सरमायादार पुं० (फा) धनी। अमीर। पूँजीपति।
सरमायादारी स्त्री०(फा) पूँजीपति होने का भाव।
सरयू स्त्री० (स) उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम।
सरराना क्रि० (हि) हवा में बहने या हवा में किसी वस्तु को वेग से हिलने या चलने से उत्पन्न शब्द।
सरल वि० (सं) १-निष्कपट। सीधा-साधा। २-सहज। सुगम। ३-सच्चा। पुं० १-चीड़ का पेड़ तथा इससे निकलने वाला गन्धाविरोजा। २-एक चिड़िया। ३-अग्नि। ४-एक बुद्ध का नाम।
सरलकाष्ठ पु० (स) चीड़ की लकड़ी।
सरलता स्त्री० (सं) १-सीधापन। निष्कपटता। २-सुगमता। ३-सादगी। ४-सत्यता।
सरलद्रव पुं०(सं) १-गन्धाविरोजा। तारपीन का तेल
सरलनिर्यास पु०(सं) १-गन्धाविरोजा। २-तारपीन का तेल।
सरलरेखा स्त्री० (सं) वह रेखा जिसकी दिशा सदा एक ही रहती हो। (स्ट्रेट लाइन)।
सरलित वि० (सं) सीधा। जो सीधा किया हुआ हो।
सरलीकरण पु० (स) किसी कठिन विषय को सरल करने की क्रिया या भाव। (सिम्प्लिफिकेशन)।
सरव वि० (सं) शब्दायमान।
सरवन पुं० (हि) दे० 'श्रवण'।
सरवनी स्त्री० (हि) दे० 'सुमिरनी'।
सर-व-पा अव्य० (फा) सिर से पैर तक। पुं० सर्वाङ्ग
सरवर पुं० (हि) दे० 'सरोवर'। पुं० (फा) अधिपति सरदार।
सरवरि स्त्री० (हि) १-समता। बराबरी। २-प्रतियोगिता।
सरवरिया वि० (हि) सरयू पार का। पुं० सरयूपारी।
सर-व-सामान पुं० (फा) सामान। असबाब।
सरवाक पुं० (हि) १-प्याला। सम्पुट। २-दीया। कसोरा।
सरवान पुं० (हि) तम्बू। खेमा।
सरवार पुं० (हि) सरयू पार का भू-भाग।
सरशुमारी स्त्री० (फा) मर्दुमशुमारी।
सरस वि० (सं) १-रस से भरा हुआ। २-स्वादिष्ट। रसपूर्ण। ताजा।
सरसाई स्त्री० (हि) १-सरस्वती देवी। २-सरस्वती नदी। ३-सरसता। ४-पहले पहल दिखाई देने वाले फल के अङ्कुर।
सरसठ वि० (हि) सड़सठ। सात और साठ।
सरसना क्रि० (हि)१-पनपना। हरा होना। २-बढ़ना ३-शोभित होना। ४-रसपूर्ण होना। ५-कोमल या सरस भाव में होना।
सरसर पुं० (हि) १-जमीन पर रेंगने का शब्द। २-वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि। अव्य० सरसर शब्द के साथ।
सरसराना क्रि० (हि) १-सनसनाना। २-जल्दी-जल्दी कोई काम करना। ३-सांप या किसी कीड़े का रेंगना।
सरसराहट स्त्री० (हि) १-किसी कीड़े आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २-सुरसुराहट। ३-वायु चलने का शब्द।
सरसरी अव्य० (हि) १-भली प्रकार ध्यान न लगाकर जल्दी में। २-स्थूल रूप में। ३-बिना समझे-बूझे। वि० जल्दी या लापरवाही का।
सरसरी तहकीकात स्त्री० (हि) वह जांच जिसमें पूरा साक्ष्य न लिया जाय।
सरसरी नज़र स्त्री० (हि) दे० 'सरसरी निगाह'।
सरसरीनिगाह स्त्री० (हि) चलती निगाह। विहग दृष्टि
सरसाई स्त्री० (हि) १-सरलता। २-शोभा। सुन्दरता ३-अधिकता।
सरसाना क्रि० (हि) १-रसपूर्ण करना। २-हराभरा करना। ३-सजना।
सरसिका स्त्री० (सं) १-छोटा ताल। २-बावली।
सरसिज पुं० (स) १-कमल। २-वह जो ताल में उत्पन्न हुआ हो।
सरसी स्त्री० (स) १-छोटा ताल। २-बावली। ३-एक वर्णवृत्त।

सरसुति स्त्री० (देश) दे० 'सरस्वती'।
सरसराना क्रि० (हि) सरसराना। २-भला बुरा कहना।
सरसों स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।
सरसौंहाँ वि० (हि) रस बनाया हुआ।
सरस्वती स्त्री० (सं) १-विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी। शारदा। २-विद्या। ३-पंजाब की एक नदी का नाम। ४-एक रागिनी। ५-गौ। ६-एक छन्द का नाम।
सरस्वती पूजा स्त्री० (सं) सरस्वती पूजा का उत्सव। जो वसन्तपंचमी को मनाया जाता है।
सरहंग पुं० (फा) १-सेना का अधिकारी। २-पहलवान। ३-कोतवाल। ४-चोबदार। ५-पैदल सिपाही।
सरह स्त्री० (हि) १-पतंग। २-टिड्डी।
सरहज स्त्री० (हि) साले की स्त्री।
सरहद स्त्री० (फा) १-सीमा। २-चौहद्दी बनाने की रेखा।
सरहदी वि० (फा) १-सीमा सम्बन्धी। २-सरहद पर रहने वाला।
सरहरा वि० (हि) सम्बोतरा। ऊपर की ओर सीधा बढ़ा हुआ।
सरहरी स्त्री० (हि) सरपत का एक भेद।
सरहिंद पुं० (हि) पंजाब के एक स्थान का नाम।
सरा स्त्री० (हि) १-चिता। २-सराय।
सराई स्त्री० (हि) १-सलाई। शलाका। २-सरकण्डे की पतली छड़ी। [illegible]

[illegible]

सराध पुं० (हि) दे० 'श्राद्ध'।
सराना क्रि० (हि) पूर्ण करना।
सराप पुं० (हि) दे० 'शाप'।
सरापना क्रि० (हि) १-शाप देना। कोसना। २-गाली देना।
सरापा पुं० (फा) नख-सिख। सर्वांग।
सराफ पुं० (अ) १-सोने चांदी का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। २-रुपये पैसे रखकर बैठने वाला वह दुकानदार जिससे रुपये नोट आदि भुनाते हैं।
सराफखाना पुं० (अ) बैंक। कोठी।
सराफा पुं० (अ) १-सराफ का काम। २-सराफों का बाजार।
सराफी स्त्री० (हि) १-सराफ का काम। २-वह लिपि जिसमें महाजन लोग लिखते हैं। मुड़की। ३-नोट आदि भुनाने का बट्टा।
सराफी परचा पुं० (हि) हुण्डी।
सराब पुं० (अ) १-मृगतृष्णा। २-धोखा देने वाली चीज। पुं० (हि) शराब।
सराबोर वि० (हि) बिल्कुल भीगा हुआ। तरबतर।
सराय स्त्री० (फा) १-यात्रियों के ठहरने का स्थान। २-रहने का स्थान।
सराव पुं० (हि) १-मदिरापान का प्याला। २-दीया ३-कसोरा।
सरावगी पुं० (हि) श्रावक धर्मावलम्बी। जैन।
सरावन पुं० (हि) वह पाटा जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करते हैं।
सरास पुं० (हि) मूली।
सरासन पुं० (हि) कमान। धनुष।
सरासर अव्य० (हि) १-सम्पक। २-बिल्कुल। पूरा-पूरा।
सरासरी स्त्री० (फा) १-आसानी। शीघ्रता। २-मोटा अन्दाज। अव्य० (फा) मोटे तौर पर।
सराह स्त्री० (हि) प्रशंसा। बड़ाई।
सराहना क्रि० (हि) प्रशंसा या बड़ाई करना। स्त्री० प्रशंसा। तारीफ।
सराहनीय वि० (हि) १-प्रशंसा के योग्य। २-अच्छा बढ़िया।
सरि स्त्री० (सं) झरना। निर्झर। स्त्री० (हि) १-बराबरी। समता। २-नदी। वि० (हि) समान। सदृश। बराबर।
सरिका स्त्री० (सं) १-मोतियों की लड़ी। २-मुख्य मोती। ३-रत्न। ४-छोटा ताल।
सरिगम पुं० (हि) दे० 'सरगम'।
सरित स्त्री० (हि) नदी।

[illegible] द्र।
[illegible] नदी।

सरित्वान् पुं० (सं) समुद्र।
सरिया स्त्री०(देश०) १-ऊँची जमीन। २-कोई छोटा सिक्का। पुं० (हि) पतली छड़। सरई।
सरियाना क्रि० (हि) १-तरतीब लगाकर इकट्ठा करना २-मारना। लगाना।
सरिवन पुं० (हि) १-एक दवा। २-शालपर्णी।
सरिवर स्त्री० (हि) समता। बराबरी।
सरिवरि स्त्री० (हि) समता। बराबरी।
सरिश्त स्त्री० (फा) १-रचना। सृष्टि। २-प्रकृति। स्वभाव।
सरिश्ता पुं० (फा) १-कार्यालय २-महकमा। दफ्तर
सरिश्तेदार पुं० (फा) १-किसी विभाग का प्रधान अधिकारी। २-मुकदमों की मिसल रखने वाला कर्मचारी।
सरिस वि० (हि) समान। सदृश।
सरी स्त्री० (हि) १-छोटा तालाब। २-झरना। सोत चश्मा।
सरी- [illegible]

सरीकता स्त्री० (हि) हिस्सा। साझा।
सरीखा वि० (हि) समान। सदृश।
सरीफा पु० (हि) दे० 'शरीफा'।
सरीर पु० (हि) दे० 'शरीर'।
सरीसृप पु० (सं) १-रेंगकर चलने वाले जन्तु। २-सर्प। ३-विष्णु।
सरीहन अव्य० (अ) खुले तौर पर।
सरुज वि० (सं) रोगी।
सरुप वि० (सं) कुपित। क्रोधयुक्त।
सरुहना क्रि० (हि) चंगा या अच्छा होना।
सरुहाना क्रि० (हि) सुधारना या अच्छा करना।
सरूप वि० (सं) १-एक ही रङ्ग रूप का। २-समान। ३-सुन्दर। पु० (हि) स्वरूप।
सरूपता स्त्री० (सं) १-समानता। एकरूपता। २-चार प्रकार की मुक्तियों में से एक।
सरूपत्व स्त्री० (सं) दे० 'सरूपता'।
सरूर पु० (हि) १-खुशी। आनन्द। हलका नशा। मादकता।
सरेइजलास अव्य० (फा) भरी कचहरी में।
सरेख वि० (हि) अवस्था में बड़ा और समझदार।
सरेखना क्रि० (हि) दे० 'सहेजना'।
सरेखा वि० (हि) दे० 'सरेख'।
सरेदरबार अव्य०(फा) खुल्लमखुल्ला। भरे दरबार में
सरेफ वि० (सं) रेफयुक्त।
सरे-बाजार अव्य० (फा) जनता के सन्मुख। खुले आम। सबके सामने।
सरे-राह अव्य० (फा) रास्ते में। बीच में।
सरे-लश्कर पु० (फा) सेनापति।
सरेश पु० (फा) एक प्रकार का लसदार पदार्थ जो चमड़े को उबाल कर बनाया जाता है तथा गोंद के समान होता है।
सरे-शाम अव्य० (फा) शाम होते ही।
सरेस पु० (फा) दे० 'सरेश'।
सरेह स्त्री० (हि) कपड़े में पड़ी सिलवट।
सरो पु० (हि) एक प्रकार का सीधा पेड़ जो बगीचे में शोभा के लिए लगाया जाता है।
सरोई पु० (हि) एक ऊँचा पेड़ जिसकी छाल से रस निकाला जाता है।
सरोकार पु०(फा) १-वास्ता। २-आपस के व्यवहार का सम्बन्ध।
सरोकारी वि० (फा) वास्ता रखने वाला।
सरोज पु० (सं) कमल।
सरोजना क्रि० (हि) पाना।
सरोजमुखी वि० (सं) कमल के सदृश मुख वाली। सुन्दरी।
सरोजिनी स्त्री० (सं) १-कमलों से भरा जलाशय। २-कमल का फूल। ३-कमलों का समूह।
सरोता पु०(हि) दे० 'सरौता'।
सरोद पु० (फा) १-बीन की तरह का एक बाजा। नाचने गाने की क्रिया।
सरोरुह पु० (सं) कमल।
सरोवर पु० (सं) १-झील। २-तालाब।
सरोष वि० (सं) कुपित। क्रोधित। अव्य० क्रोध से। क्रोध सहित।
सरोही स्त्री० (हि) दे० 'सिरोही'।
सरौता पु० (हि) सुपारी काटने का औजार।
सरौती स्त्री० (हि) १-छोटा सरौता। २-एक प्रकार की ईख।
सर्कस पु० (अ) दे० 'सरकस'।
सर्कार स्त्री० (हि) दे० 'सरकार'।
सर्ग पु० (सं) १-गमन। चलना या आगे बढ़ना। २-संसार। सृष्टि। ३-छोड़ना। फेंकना। ४-उद्गम। उत्पत्ति। ५-प्रवाह। ६-स्वभाव। ७-झुकाव। प्रवृत्ति। ८-प्रयत्न। ९-प्रकरण। परिच्छेद। १०-प्राकृतिक वस्तुओं, जीवों आदि का कोई स्वतन्त्र तथा पूरा वर्ग (किङ्गडम)। पु० (हि) दे० 'स्वर्ग'।
सर्गकर्ता पु० (सं) सृष्टि करने वाला। ब्रह्मा।
सर्गपताली पु० (हि) वह बैल जिसका एक सींग ऊपर की ओर उठा हो और दूसरा नीचे की ओर झुका हो। वि० ऐंचाताना।
सर्गबंध पु० (सं) वह महाकाव्य या ग्रन्थ जो सर्गों में बद्ध हो।
सर्गुन वि० (हि) दे० 'सगुन'।
सर्चलाइट स्त्री० (अं) एक तीव्र प्रकाश वाली बिजली की रोशनी जो हवाई अड्डों पर मार्ग-प्रदर्शन के लिये लगी रहती है। प्रकाश-प्रक्षेपक। अन्वेषक-प्रकाश।
सर्ज पु० (सं) १-राल। धूना। २-विजयसाल। ३-सलाई का पेड़। स्त्री० (अं)एक प्रकार का गरम ऊनी कपड़ा।
सर्जन पु० (सं) १-कोई वस्तु छोड़ना या चलाना। २-सृष्टि होना। ३-कोई वस्तु बनाकर तैयार करना (क्रिएशन)। ४-सेना का पिछला भाग। ५-साल का गोंद। पु० (अं) शल्यचिकित्सक।
सर्जनिर्यासक पु० (सं) राल। धूना।
सर्जू स्त्री० (हि) सरयू नदी।
सर्त स्त्री० (हि) दे० 'शर्त'।
सर्द वि० (फा) १-ठण्डा। शीतल। २-सुस्त। मन्द। ३-निरुत्साह।
सर्दई वि० (हि) कुछरापन लिये पीला। सर्दे के रङ्ग का
सर्दगर्म वि० (फा) १-समय का हेरफेर। २-ऊँच-नीच
सर्दमिजाज वि० (फा) जिसमें उत्साह न हो।
सर्दा पु० (फा) दे० 'सरदा'।
सर्दार पु० (हि) दे० 'सरदार'।

सर्वजाता वि० (सं) दे० 'सर्वज्ञ' ।
सर्वतः अव्य० (सं) १-चारों ओर । २-सब प्रकार से ३-पूर्णतया ।
सर्वतोदक्ष वि० (सं) १-जो सब बातों में चतुर हो । २-(ग्रह खिलाड़ी) जो बल्लेबाजी, गेंदबाजी तथा क्षेत्ररक्षणादि सब खेल के अङ्गों में दक्ष हो (ऑल-राउन्डर) ।
सर्वतोभद्र वि०(सं) १-सब ओर से शुभ । २-जिसकी मूँछ, दाढ़ी, सिर आदि के सब बाल मुँडे हों । पु० १-एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो देवता पर चढ़ाने वाले वस्त्र पर लगाया जाता है । २-एक प्रकार का चित्र काव्य । ३-एक प्रकार की पहेली । ४-बांस । ५-हठयोग का एक आसन ।
सर्वतोमुख वि० (सं) १-जिसका मुख चारों ओर हो २-व्यापक । पु० १-एक प्रकार की व्यूह रचना । २-जल । पानी । ३-जीव । आत्मा । ४-आकाश । ५-स्वर्ग । ६-अग्नि ।
सर्वत्र अव्य० (सं) सब जगह । हर जगह ।
सर्वथा अव्य० (सं) १-सब प्रकार से । २-सब । बिल्कुल ।
सर्वद वि० (सं) सब कुछ देने वाला ।
सर्वदमन वि०(सं) सब का नाश या दमन करने वाला पु० भरत ।
सर्वदर्शी पुं० (सं) सब कुछ देखने वाला ।
सर्वदा अव्य० (सं) हमेशा । सदा ।
सर्वदाता वि० (सं) सर्वस्व देने वाला ।
सर्वदान पुं० (सं) सर्वस्व दान ।
सर्वदिग्विजय स्त्री० (सं) विश्वविजय ।
सर्वदेवमय पुं०(सं) शिव । वि० जिसमें सब देव हों ।
सर्वदेशीय वि० (सं) सब देशों में पाया जाने वाला ।
सर्वद्रष्टा वि० (सं) सब कुछ देखने वाला ।
सर्वधन्वी पु० (सं) कामदेव ।
सर्वनाम पुं० (सं) व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के नाम पर प्रयुक्त होता है-मैं, तू, वह आदि ।
सर्वनाश पुं० (सं) सत्यानाश । विध्वंस ।
सर्वनियंता पुं० (सं) सब को वश में करने वाला ।
सर्वपावन वि० (सं) सब को पवित्र करने वाला ।
सर्वपूजित वि० (सं) जिसकी सब लोग पूजा करते हों पु० शिव ।
सर्वपूत वि० (सं) सब तरह से पवित्र ।
सर्वप्रद वि० (सं) सब कुछ देने वाला ।
सर्वप्रिय वि० (सं) सब को प्रिय या भला लगने वाला (पॉपुलर) ।
सर्वबंधविमोचन वि० (सं) सबके बंधन तोड़ने वाला पु० शिव ।
सर्वभक्षी वि० (सं) सब कुछ खा जाने वाला । पु० अग्नि ।
सर्वभोगी वि०(सं) सब कुछ भोगने या खाने वाला ।
सर्वभोग्य वि० (सं) जो सबके भोगने योग्य हो ।
सर्वमंगला स्त्री० (सं) १-दुर्गा । २-लक्ष्मी । वि० सब प्रकार का मङ्गल करने वाली ।
सर्वरक्षी वि० (सं) सबकी रक्षा करने वाला ।
सर्वरसोत्तम पुं० (सं) लवण । नमक ।
सर्वरी स्त्री० (हि) दे० 'शर्वरी' ।
सर्वरीस पुं० (हि) दे० 'शर्वरीश' ।
सर्ववल्लभ वि० (सं) जो सबको प्यारा या प्रिय हो ।
सर्ववल्लभा स्त्री० (सं) व्यभिचारिणी । कुलटा स्त्री ।
सर्वविद् वि० (सं) सर्वज्ञ । पु० परमात्मा ।
सर्वविद्य वि० (सं) सब विषयों में विद्वान ।
सर्ववेत्ता वि० (सं) दे० 'सर्वज्ञ' ।
सर्वव्यापक वि० (सं) सब पदार्थों में व्याप्त रहने वाला । पुं० १-शिव । २-ईश्वर ।
सर्वव्यापी वि० (सं) दे० 'सर्वव्यापक' ।
सर्वशः अव्य (सं) १-पूरा-पूरा । २-समूचा । ३-पूर्ण रूप से ।
सर्वशक्तिमान् वि० (सं) सब कुछ करने की सामर्थ्य रखने वाला । पु० ईश्वर ।
सर्वशून्य वि० (सं) १-बिलकुल खाली । २-सबको बिना अस्तित्व के मानने वाला ।
सर्वश्राव्य वि० (सं) जो सबको सुनने योग्य हो ।
सर्वश्री वि० (सं) एक आदरसूचक विशेषण जो बहुत से नामों के उल्लेख होने पर सबके नाम के आगे 'श्री' न लगा कर उन सबके सामूहिक सूचक रूप में लगाया जाता है ।
सर्वश्रेष्ठ वि० (सं) सबसे उत्तम ।
सर्वसंगत पु० (सं) साठी धान ।
सर्वस पु० (हि) दे० 'सर्वस्व' ।
सर्वसम्मत वि० (सं) जिसके पक्ष में सब सदस्यों का मत हो ।
सर्वसम्मति स्त्री० (सं) सब की राय ।
सर्वसह पुं० (सं) गुग्गुल । वि० सर्वस्व सहन करने वाला ।
सर्वसहा स्त्री० (सं) पृथ्वी ।
सर्वसाक्षी पुं० (सं) १-ईश्वर । २-अग्नि । ३-वायु ।
सर्वसाधारण पुं० (सं) सभी लोग । जनता । वि० जो सब में पाया जाय (कॉमन) ।
सर्वसामान्य वि० (सं) १-जो सब में सामान्य रूप में पाया जाय (कॉमन) । २-जो सब लोगों के लिए हो (पब्लिक) ।
सर्वसुलभ वि० (सं) जो आसानी से मिल सकता हो
सर्वस्व पुं० (सं) सारी संपत्ति या पूंजी । जो कुछ पास में हो वह सब कुछ ।
सर्वस्वदंड पु० (सं) सारी संपत्ति का हरण कर लेने का दण्ड ।

सर्वस्वयुद्ध पुं० (सं) वह युद्ध जिसमें सब साधनों का प्रयोग किया जाय। सर्वांगिक युद्ध (टोटलवार)।
सर्वस्वाहानीति स्त्री०(सं) सर्वसंहारनीति (स्कार्च्ड अर्थ पॉलिसी)।
सर्वहारा पुं० (सं) समाज का श्रमिक वर्ग (प्रोलिटेरियेट)।
सर्वांग पुं० (सं) १-सम्पूर्ण शरीर। २-समस्त अवयव।

सर्वांगसुन्दर वि० (सं) १-जिसका सारा बदन सुन्दर हो। २-जिसके सब अवयव या अंश सुन्दर हों।
सर्वांगीण वि० (सं) १-समस्त अंगों से सम्बन्धित। सम्पूर्ण। २-व्यापी।
सर्वांतक वि०(सं) सब का नाश या अन्त करने वाला
सर्वात्मा पुं०(सं) १-सम्पूर्ण विश्व की आत्मा। ब्रह्म २-शिव। ३-अर्हत।
सर्वाधिपत्य राष्ट्र पुं० (सं) वह राष्ट्र जहां की सत्ता केवल एक ही दल या शासक दल के हाथ में हो तथा जिसके अन्तर्गत व्यक्तिगत जीवन, नागरिकों के सार्वजनिक जीवन के अतिरिक्त शामिल हो। (टोटैलिटैरियन स्टेट)।
सर्वाधिक वि० (सं) सबसे अधिक या ज्यादा।
सर्वाधिकार पुं० (सं) सब कुछ करने का अधिकार। सारे अधिकारी।
सर्वाधिकार सुरक्षित पुं० (सं) किसी लेखक, कवि आदि की किसी रचना की प्रतियाँ छापने का वह स्वत्व जो कर्ता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता। (आल राइट्स रिज़र्व्ड)।
सर्वाधिकारी पुं०(सं) १-सारा अधिकार रखने वाला २-हाकिम।
सर्वाधिपत्य पुं० (सं) सबके ऊपर का प्रभुत्व।
सर्वान्नभक्षक वि० (सं) हर प्रकार का भोजन या खाद्य सामग्री खाने वाला।
सर्वाशय पुं० (सं) १-सबका आधार स्थान। २-शिव
सर्वाशी वि० (हि) सब कुछ खाने वाला।
सर्वास्तिवाद पुं० (सं) वह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तविक सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।
सर्वेश पुं० (सं) दे० 'सर्वेश्वर'।
सर्वेश्वर पुं० (सं) १-सब का स्वामी। २-ईश्वर। ३-शिव। ४-चक्रवर्ती राजा।
सर्वेश्वरवाद पुं० (सं) वह सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि ईश्वर एक है और वह विश्व के सभी प्राणियों और तत्वों में समान रूप से वर्तमान है। (पैंथीइज़्म)।
सर्वेसर्वा वि० (सं) जिसे किसी विषय अथवा कार्य में सब प्रकार के और पूरे अधिकार हों।
सर्वोच्च वि० (सं) सबसे ऊँचा या बढ़कर।
सर्वोच्चन्यायालय पुं० (सं) देश का सबसे बड़ा न्यायालय। (सुप्रीम कोर्ट)।
सर्वोच्चसत्ता स्त्री० (सं) देश की सबसे बड़ी शक्ति

चलाया गया एक आन्दोलन।
सर्वोपकारी वि० सबकी सहायता करने वाला।
सर्वोपरि वि० (सं) सबसे बढ़कर या ऊपर।
सर्षप पुं० (सं) १-सरसों। २-सरसों भर का मान या तौल। ३-एक प्रकार का विष।
सलई स्त्री० (हि) १-चीड़ का पेड़। २-चीड़ का गोंद
सलक्षण वि० (सं) लक्षणयुक्त।
सलग वि० (सं) पूरा। समूचा। जिसके टुकड़े न हुए हों।
सलगम पुं० (हि) दे० 'शलगम'।
सलजम पुं० (हि) दे० 'शलगम'।
सलज्ज वि० (सं) लज्जाशील। जिसमें लज्जा हो।
सलतनत स्त्री० (हि) १-राज्य। २-साम्राज्य। ३-प्रबन्ध ४-सुभीता।
सलना क्रि० (हि) छेद या छेदा जाना। पुं० लकड़ी में छेद करने का बरमा। पुं० (सं) मोती।
सलभ पुं० (हि) दे० 'शलभ'।
सलमा पुं०(हि) सोने या चांदी का वह तार जो कपड़े पर बेल-बूटे बनाने के काम आता है। बादला।
सलवट स्त्री० (हि) दे० 'सिलवट'।
सलवार स्त्री० (फा) १-पाजामे के नीचे पहनने का जांघिया। २-एक प्रकार का ढीला पाजामा जो विशेषतः पंजाब में पहना जाता है।
सलहज स्त्री० (हि) साले की स्त्री।
सला स्त्री० (अ) दावत के लिये दिया जाने वाला निमन्त्रण।
सलाई स्त्री० (हि) १-किसी धातु या लकड़ी की पतली छड़। २ दियासलाई। ३-सलाने की मजदूरी या भाव। ४-चीड़ की लकड़ी।
सलाए आम स्त्री० (अ) वह प्रीतिभोज जिसमें सब लोगों को बुलाया जाय।
सलाक पुं०(हि) बाण। तीर।
सलाखना क्रि० (हि) सलाई की सहायता से लकीर या कोई चिह्न बनाना।

सलाख स्त्री० (फा) १-धातु की मोटी तथा लम्बी छड़ २-लकीर।
सलाजीत स्त्री० (हि) दे० 'शलाजीत'।
सलात स्त्री० (अ) नमाज।
सलातीन पुं० (अ) 'सुलतान' के बहुवचन का रूप।
सलाद पुं० (हि) १-गाजर, मूली आदि का सिरके में बना हुआ अचार। २-एक प्रकार के कन्द के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे ही खाए जाते हैं। (सैलाड)।
सलाबत स्त्री० (अ) १-वीरता। २-कठोरता।
सलाम पुं० (अ) प्रणाम। बन्दगी।
सलाम-अलेकम स्त्री० (अ) मुसलमानों का नमस्कार करने का एक सम्बोधन जिसका अर्थ तुम सलामत रहो होता है।
सलामत स्त्री० (अ) १-हानि या आपत्ति से बचा हुआ रक्षित। २-सकुशल। ३-स्थित। कायम।
सलामती स्त्री० (अ) १-स्वस्थता। २-कुशलक्षेम। ३-जीवन। ४-एक प्रकार का मोटा कपड़ा।
सलामी स्त्री० (अ) १-सलाम करना। २-सैनिकों आदि की सलाम करने की प्रणाली। ३-इस प्रकार से बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति का अभिवादन करना। ४-जमीन के किराये से अतिरिक्त लिया गया धन। पगड़ी।
सलाह स्त्री० (अ) १-सम्मति। राय। २-परामर्श। स्त्री० (हि) मेल। सुलह।
सलाहकार पुं० (अ) वह जो परामर्श देता हो।
सलिंगी वि० (सं) १-आडम्बरी। २-केवल चिह्न धारण करने वाला।
सलि स्त्री० (हि) चिता।
सलिता स्त्री० (हि) नदी।
सलिल पुं० (सं) जल। पानी।
सलिलकुंतल पुं० (सं) शैवाल। सिवार।
सलिलकुक्कुट पुं०(सं) मुर्गाबी।
सलिलक्रिया स्त्री० (सं) जलांजलि। प्रेत का तर्पण।
सलिलज पुं० (सं) दे० 'सलिलजन्मा'।
सलिलजन्मा पुं० (सं) १-कमल। २-जल में उत्पन्न होने वाला।
सलिलपति पुं० (सं) १-समुद्र। २-वरुण।
सलिलप्रिय पुं० (सं) सूअर। शूकर।
सलिलभय पुं० (सं) जल या बाढ़ का भय।
सलिलभर पुं० (सं) तालाब। झील।
सलिलभुक् पुं० (सं) बादल।
सलिलयोनि वि० (सं) जल में उत्पन्न होने वाला।
सलिलराज पुं० (सं) १-वरुण। २-समुद्र।
सलिलराशि पुं० (सं) १-जलाशय। २-नदी।
सलिलांजलि स्त्री० (सं) मृतक के उद्देश्य से दी जाने वाली जलांजली।
सलिलाधिप पुं० (सं) वरुण जो जल के अधिष्ठाता देवता माने जाते हैं।
सलिलार्थी वि० (सं) प्यासा।
सलिलालय पुं० (सं) समुद्र।
सलिलाशय पुं० (सं) जलाशय। तालाब।
सलिलेचर पुं० (सं) जलचर। जीव।
सलिलेश पुं० (सं) वरुण।
सलिलेश्वर पुं० (सं) वरुण।
सलिलोद्भव पुं० (सं) १-कमल। २-जल में उत्पन्न होने वाली कोई वस्तु या जीव।
सलिलोपजीवी वि० (सं) केवल जल पीकर जीवित रहने वाला।
सलिलौका पुं० (सं) जोंक।
सलीका पुं० (अ) १-ठीक प्रकार से काम करने का ढंग। योग्यता। शऊर। २-शिष्टता। ३-हुनर।
सलीकादार वि०(अ) १-जिसे सलीका हो। शऊरदार २-सभ्य। ३-हुनरमंद।
सलीकामंद वि० (अ) दे० 'सलीकादार'।
सलीता पुं० (हि) मारकीन की तरह का एक प्रकार का मोटा कपड़ा।
सलीम वि० (अ) १-ठीक। २-विनम्र। ३-सभ्य ४-स्वस्थ। पुं० राजा अकबर के पुत्र जहांगीर का बचपन का नाम।
सलीमचिश्ती पुं० (अ) अकबर के धार्मिक गुरु का नाम जो फतहपुर सीकरी में रहते थे तथा अकबर ने जहांगीर का जन्म उनके आशीर्वाद के कारण मानकर सलीम रखा था।
सलीमशाही स्त्री० (अ) एक प्रकार का हलका तथा सुन्दर मुलायम जूती।
सलीस वि० (अ) १-सहज। सुगम। २-समतल। ३ मुहावरेदार तथा चलती हुई (भाषा)।
सलीसजबान स्त्री० (अ) वह भाषा जिसमें बहुत से मुहावरे आदि हों।
सलीपर पुं० (अ) १-वह जूता जिसका केवल पंजा ढका रहता है। २-रेल की पटरियों के नीचे बिछाने की लकड़ी या तख्ता।
सलूक पुं० (हि) दे० 'सुलूक'।
सलूका पुं० (हि) एक प्रकार की फतूही या बंडी
सलूनो पुं० (हि) दे० 'सलोनो'।
सलैनो क्रि० (हि) १-सलाना। २-काट या छीलकर ठीक बनाना।
सलैला वि० (हि) १-फिसलने वाला। २-चिकना।
सलोट स्त्री० (हि) दे० 'सिलवट'।
सलोतर पुं० (हि) घोड़ों की चिकित्सा करने वाला।
सलोतरी पुं० (हि) दे० 'सलोतर'।
सलोन वि० (हि) दे० 'सलोना'।

सलोना वि० (हि) १-नमकीन । २-सुन्दर । रसीला ।
सलोनापन पुं० (हि) सलोना होने का भाव ।
सलोनो पु० (हि) हिन्दुओं का रक्षाबन्धन नामक त्योहार । राखीपूनो ।
सलौना वि० (हि) दे० 'सलोनो' ।
सल्तनत स्त्री० (प) १-राज्य । हुकूमत । २-प्रबन्ध । व्यवस्था ।
सल्लकी स्त्री० (सं) सलई ।
सल्लम पुं० (हि) एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।
सव पु० (सं) १-जल । पानी । २-पुष्परस । ३-सूर्य ४-सन्तान । ५-चन्द्रमा । वि० अनाड़ी । पु० (हि) दे० 'शव' ।
सवत स्त्री० (हि) दे० 'सौत' ।
सवति स्त्री० (हि) दे० 'सौत' ।
सवत्स वि० (सं) जिसके साथ बच्चा हो ।
सवधूक वि० (सं) जिसके साथ पत्नी हो । सपत्नीक ।
सवन पुं० (सं) १-प्रसव । बच्चा जनना । २-चन्द्रमा । ३-यज्ञ । ४-अग्नि । ५-सोमपान ।
सवयस वि० (सं) दे० 'सवयस्क' ।
सवयस्क वि० (सं) समान वय या उमर वाले ।
सवर्ण वि० (सं) १-समान । सदृश । २-समान जाति या वर्ण का ।
सवर्णन पु० (सं) भिन्नों को समान हर वाले भिन्नों के रूप में बदलना (गणित)
सवाँग पुं० (हि) दे० 'स्वाँग' ।
सवा वि० (हि) जिसमें पूरे के अतिरिक्त चौथाई और जुड़ा हो ।
सवाई स्त्री० (हि) १-ऐसा ऋण जिसमें मूलधन का सवाया रुपया चुकाना पड़ता है । २-मूत्र संबंधी एक रोग । ३-जयपुर के महाराजों की एक उपाधि ।
सवाक्चित्र पु० (स) वह चलचित्र जिसमें पात्रों के अभिनय के अतिरिक्त उनका बोलना, गाना, रोना आदि भी सुनाई दे । (टॉकी) ।
सवाद पुं० (हि) दे० 'स्वाद'
सवादिक वि० (हि) दे० 'सवादिल'
सवादिल वि० (हि) स्वाद देने वाला । स्वादिष्ट ।
सवाब पुं० (प) १-भलाई । २-पुण्य ।
सवाया वि० (हि) सवागुना । पूरे से एक चौथाई अधिक ।
सवार पुं० (फा) १-अश्वारोही सैनिक । २-वह जो घोड़े, गाड़ी, ऊँट या किसी वाहन पर चढ़ा हो । वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ ।
सवारा पुं० (हि) सवेरा । प्रातःकाल ।
सवारी स्त्री० (फा) १-वाहन । वह चीज जिस पर सवार हों । २-वह व्यक्ति जो सवार हो । ३-[illegible]
सवारे अव्य० (हि) जल्दी । शीघ्र । पु० प्रातःकाल ।
सवारें अव्य० (हि) दे० 'सवारे' ।
सवाल पुं०(प) १-मांग । २-प्रश्न । पूछने की क्रिया ३-गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है । ४-परीक्षा में जाच के समय उत्तर पाने के लिए दिया जाने वाला प्रश्न ।
सवालनामा पुं० (फा) कचहरी में प्रार्थना पत्रों का पढ़ा जाना ।
सवालजवाब पुं० (फा) १-वाद-विवाद । बहस । २-झगड़ा । हुज्जत ।
सविकल्प वि० (सं) दे० 'सविकल्पक' ।
सविकल्पक वि० (सं) १-संदिग्ध । सन्देहयुक्त । २-जो किसी विषय के दोनों पक्षों को शुद्ध निर्णय न कर सकने के कारण मानता हो । पु० १-वेदांत के अनुसार ज्ञाता तथा ज्ञेय के भेद का ज्ञान ।
सविकार वि० (सं) जिसमें विकार हो ।
सविता पु० (सं) १-बारह की संख्या । २-सूर्य । ३-आक । मदार ।
सवितासुत पु० (सं) १-शनि । यम ।
सविद्य वि० (सं) १-विद्वान । २-एक ही समान विषय का अध्ययन या विवेचन करने वाला ।
सविधि वि० (सं) विधि या कानून युक्त । अव्य० कानून के अनुसार ।
सविनय वि० (सं) विनय सहित । विनीत भाव से ।
सविनय अवज्ञा स्त्री० (सं) राज्य अथवा अधिकारी की अनुचित आज्ञा या कानून न मान कर उसका उल्लंघन करना । (सिविल डिसओबीडिएन्स) ।
सविशेष वि०(स) असाधारण । जिसमें विशेष गुण हों
सविस्तर वि०(स) पूरे ब्योरे के साथ । अव्य० विस्तार-पूर्वक ।
सविस्मय वि० (स) आश्चर्यचकित । विस्मित ।
सवेरा पु० (हि) १-प्रातःकाल । दिन निकलने का समय । २-निश्चित या नियत समय के पहले का समय ।
सवैया पु०(हि) १-सवा-सेर का बाट । २-वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है । ३-एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है ।
सव्य वि० (सं) १-बायां । वाम । २-[illegible] दाहिना ३-प्रतिकूल । पु० १-यज्ञोपवीत । २-[illegible] सूर्य ग्रहण के दस प्रकार में [illegible] । ३-विष्णु
सव्यसाची [illegible] दोनों हाथों से [illegible] चला सकने के कारण ही अर्जुन का नाम पड़ा [illegible]
सव्येतर [illegible] दाहिना ।
[illegible] जिसमें शाखा हो । २-[illegible] हरण करने वाला ।
ससरना क्रि० (हि) १-[illegible] । २-[illegible]
सस्यक वि० (सं) [illegible] ।

सशरीर वि० (सं) १-देह या शरीर युक्त। २-मूर्त।
सशरीरप्रतिभू पु० (सं) वह व्यक्ति जो जमानत के तौर पर रखा गया हो (हॉस्टेज)।
सशस्त्र वि० (सं) हथियारों से युक्त।
सश्रमकारावास पु०(सं) सपरिश्रम कारावास (रिगोरस इम्प्रिजनमेन्ट)।
सस पुं० (हि) १-चन्द्रमा। २-खेतीबारी।
ससक पुं० (हि) खरहा। खरगोश।
ससकना क्रि० (हि) १-घबड़ाना। व्याकुल होना।
ससधर पु० (हि) चन्द्रमा।
ससना क्रि० (हि) १-घबराना। २-कांपना।
ससहाय वि० (सं) मित्रों या सहायकों के साथ।
ससा पुं० (सं) १-खरगोश। २-खीरा।
ससाना क्रि० (हि) दे० 'ससना'।
ससि पुं० (हि) चन्द्रमा।
ससिधर पुं० (हि) चन्द्रमा।
ससिहर पुं० (हि) चन्द्रमा।
ससी पु० (हि) चन्द्रमा।
ससुर पुं० (हि) १-किसी के पति या पत्नी का पिता। श्वसुर। २-एक गाली।
ससुरा पुं० (हि) १-ससुर। २-ससुराल।
ससुरार स्त्री० (हि) दे० 'ससुराल'।
ससुरारि स्त्री० (हि) दे० 'ससुराल'।
ससुराल स्त्री० (हि) पति या पत्नी के पिता (ससुर) का घर।
ससैन वि० (सं) दे० 'ससैन्य'।
ससैन्य वि० (सं) सेना के साथ।
सस्ता वि० (हि) १-साधारण से कम मूल्य का। २-मामूली। साधारण। ३-जो महँगा न हो।
सस्ताना क्रि० (हि) १-भाव सस्ता करना। २-सस्ता हो जाना।
सस्ता माल पुं०(हि) घटिया किस्म का माल।
सस्ता समय पुं० (हि) वह समय या काल जब सब माल सस्ते हों।
सस्ती स्त्री० (हि) १-सस्तापन। महँगी का अभाव। २-वह समय जब चीजें सस्ते दामों पर मिलती हैं।
सस्त्रीक वि०(सं) सपत्नीक। स्त्री या पत्नी के साथ।
सस्नेह वि० (सं) स्नेहसहित। प्रीतियुक्त।
सस्पृह वि० (सं) जिसको इच्छा हो। इच्छुक।
सस्मित वि०(सं) मुस्कराता या हँसता हुआ। अव्य० मुस्कराते हुए।
सस्य पुं०(सं) १-धान्य। शस्त्र। ३-गुण। ४-दाय। ५-वृक्षों का फल।
सस्यआवर्तन पुं० (सं) खेत में क्रम से एक के बाद दूसरी प्रकार की फसल बार-बार बदल कर तैयार करना। (क्रॉप रोटेशन)।
सस्यपाल पुं० (सं) खेत की रखवाली करने वाला।
सस्यरक्षक पुं० (सं) खेत की रखवाली करने वाला।
सहँगा वि० (हि) सस्ता।
सह अव्य (सं) समेत। सहित। वि० १-उपस्थित। मौजूद। २-सहनशील। समर्थ। पु० १-समानता २-शक्ति। बल। ३-सहायक। ४-सहयोग।
सहकर्ता पु० (सं) सहायक। मदद करने वाला।
सहकार पु० (सं) १-सहायक। २-औरों के साथ काम करने की वृत्ति या भाव। सहयोग। (कोआपरेशन)। ३-कलमी आम।
सहकारता स्त्री० (सं) सहायता। मदद।
सहकार-समिति स्त्री०(सं) वह संस्था जो कुछ विशिष्ट व्यापारी, उपभोक्ता आदि आपस में मिलकर सब के लाभ के लिए बनाते हैं (कोऑपरेटिव सोसाइटी)।
सहकारिता स्त्री०(सं) १-सहायता। मदद। सहयोग।
सहकारी पुं० (सं) १-साथ मिलकर काम करने वाला। सहयोगी। २-सहायक।
सहगमन पुं० (सं) १-पति के शव के साथ पत्नी का जल मरना। सती होना। २-साथ जाने की क्रिया
सहगवन पुं० (हि) दे० 'सहगमन'।
सहगान पुं० (सं) १-कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना। २-वह गाना जो इस प्रकार गाया जाय। (कोरस)।
सहगामिनी स्त्री०(सं) १-सहगमन करने वाली स्त्री। २-पत्नी। ३-सहेली।
सहगामी वि० (सं) १-साथ जाने वाला। २-समवर्ती
सहगौन पुं० (हि) दे० 'सहगमन'।
सहचर पुं० १-संगी। साथी। २-सेवक। भृत्य। नौकर। मित्र। सखा।
सहचरी स्त्री० (सं) पत्नी। २-सखी। सहेली।
सहचरिणी स्त्री० (सं) दे० 'सहचरी'।
सहज पु० (सं) १-स्वभाव। २-सगा भाई। वि० १-स्वाभाविक। २-साथ उत्पन्न होने वाला। ३-साधारण। ४-सरल।
सहजन पुं० (हि) 'सहिजन'।
सहजात वि० (सं) १-सहोदर। सगा (भाई)। २-जुड़वाँ (बच्चे)। यमज।
सहजारि पुं० (सं) सहज शत्रु (जिससे संपत्ति आदि में झगड़ा होने का डर हो)।
सहजे अव्य० (हि) १-अनायास। २-सरलता से।
सहजोदासीन वि० (सं) जो साधारण रूप से जान-पहचान का हो।
सहत पु० (हि) दे० 'शहद'।
सहताना क्रि० (हि) श्रम या थकावट दूर करना। सुस्ताना।
सहदानी स्त्री० (हि) पहचान। चिह्न। निशानी
सहदूल पु० (हि) दे० 'शार्दूल'।
सहदेई स्त्री० (हि) क्षुप जाति की एक वनौषध।

सहदेव पु० (सं) पाण्डु के सबसे छोटे पुत्र का नाम।
सहधर्मिणी स्त्री० (सं) पत्नी। भार्या। स्त्री।
सहधर्मी पु० (सं) पति। वि० समान धर्म वाला।
सहन पु० (सं) १-आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। (अबाइड)। २-क्षमा। ३-सहने का भाव या क्रिया। पु० (फा) १-घर के मकान का आंगन। २-एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। [illegible] प्रकार का गफ और मोटा कपड़ा।
सहनभण्डार पुं० (हि) १-खजाना। कोष। २- [illegible] धनराशि।
सहनशील वि०(सं) १-सहने या बरदाश्त करने वाला २-सन्तोषी।
सहना क्रि० (हि) १-झेलना। बरदाश्त करना। २-परिणाम भोगना। ३-भार वहन करना।
सहनाई स्त्री० (हि) दे० 'शहनाई'।
सहनीय वि० (सं) सहन करने योग्य।
सहपाठी पुं० (सं) वह जो साथ में पढ़ा हो। सह-अध्यायी।
सहप्रतिवादी पु० (सं) मुकद्दमे का वह व्यक्ति जो मुख्य प्रतिवादी के साथ गौण रूप में उत्तरदायी बतलाया गया हो। (को-डिफेंडेन्ट)।
सहबाला पु० (हि) दे० 'शहबाला'।
सहभोज पु०(सं) बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना। दावत।
सहभोजन पुं० (सं) एक साथ बैठकर भोजन करना।
सहम पुं० (फा) १-डर। भय। २-संकोच। लिहाज
सहमत वि० (सं) एक राय। जिसकी राय दूसरे से मिलती हो। (एग्रीड)।
सहमति स्त्री० (सं) सहमत होने का भाव या क्रिया। (एग्रीमेंट)।
सहमना क्रि० (हि) डरना। भयभीत होना।
सहमरण पुं० (सं) दे० 'सहगमन'।
सहमाना क्रि० (हि) भयभीत करना। डराना।
सहयोग पुं० (सं) १-साथ मिलकर काम करने का भाव। २-बहुत से लोगों का मिलकर काम करने का भाव। (कोऑपरेशन)। ३-मदद। सहायता।
सहयोगी पु० (सं) १-साथ मिलकर [illegible] साथी। सहकारी। [illegible] भारत में भारतीय राज [illegible] करने वाला व्यक्ति।
सहर पु० (अ) प्रातःकाल। सवेरा। पु० (हि) १-जादू टोना। २-शहर। अव्य० (हि) धीरे-धीरे। मन्द-गति से।
सहरगही स्त्री० (अ) वह हलका आहार या भोजन जो मुसलमान लोग रमजान के दिनों में व्रत रखने से पहले प्रातःकाल खाते हैं।
सहरगाह अव्य० (अ) तड़के। सवेरे।
सहरदम अव्य० (अ) तड़के। सवेरे।
सहराई वि० (अ) जङ्गली।
सहराना क्रि० (हि) १-सहलाना। २-भय से कांपना
सहरी स्त्री० (हि) सफरी नामक मछली। स्त्री० (अ) दे० 'सहरगही'।
[illegible] धीरे-[illegible] २-मसलना।
सहवर्ती वि० (सं) पास या साथ रहने वाला।
सहवास पु० (सं) १-साथ रहना। २-मैथुन। संभोग
सहविस्तारी वि० (सं) जो साथ-साथ फैला हुआ हो (कोएक्सटेंसिव)।
सहशय्या स्त्री० (सं) एक साथ सोना।
सहस वि० (हि) दे० 'सहस्र'। वि० (सं) जो हँसता हुआ हो।
सहसकिरन पु० (हि) सूर्य।
सहसगो पु० (हि) सूर्य।
सहसजीभ पु० (हि) शेषनाग
सहसदल पु० (हि) कमल।
सहसपत्र पु० (हि) कमल।
सहसफन पु० (हि) शेषनाग।
सहसमुख पु० (हि) शेषनाग।
सहसशीश पु० (हि) शेषनाग।
सहसा अव्य० (सं) अकस्मात्। एकाएक।
सहसाक्रमण दल पुं० (सं) सेना की वह सशस्त्र टुकड़ी जिसको शत्रु पर अकस्मात् भयानक आक्रमण करने की शिक्षा दी जाती है। (शॉक ट्रूप्स)।
सहसाक्षि पु० (हि) इन्द्र।
सहसाखी पु० (हि) इन्द्र।
सहसानन पु० (हि) शेषनाग।
सहसोपचार पु० (सं) मानसिक तथा अन्य रोगों के उपचार के लिए बिजली या ककमोर देने वाला उपाय (शॉक ट्रीटमेंट)।
सहस्र पु०(सं) दस-सौ की संख्या। हजार की संख्या
सहस्रकर पु० (सं) सूर्य।
[illegible]
[illegible] (सं) हजारगुना।
सहस्रघाती वि० (सं) एक हजार व्यक्तियों को मारने वाला (एक युद्ध-यन्त्र)।
सहस्रचक्षु पु० (सं) इन्द्र।
सहस्रदल पु० (सं) शतदल। कमल।
सहस्रदीधिति पु० (सं) सूर्य।
सहस्रगुणा वि०(सं) १-एक हजार प्रकार का। २ हजार गुना।

सहस्रधी वि० (सं) बहुत बड़ा बुद्धिमान।
सहस्रनयन पुं० (सं) १-विष्णु। २-इन्द्र।
सहस्रनामा पुं० (सं) १-विष्णु। २-शिव।
सहस्रनेत्र पुं० (सं) १-इन्द्र। २-विष्णु।
सहस्रपति पुं० (सं) हजार गांव का मालिक तथा शासक।
सहस्रपत्र पुं० (सं) कमलपत्र।
सहस्रबाहु पुं०(सं) १-शिव। २-राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र का नाम।
सहस्रबुद्धि वि० (सं) अत्यधिक चतुर।
सहस्रभानु पुं० (सं) सूर्य।
सहस्रभुजा पुं० (सं) दे० 'सहस्रबाहु'।
सहस्रमरीचि पुं० (सं) सूर्य।
सहस्ररश्मि पुं० (सं) सूर्य।
सहस्रलोचन पुं० (सं) १-इन्द्र। २-विष्णु।
सहस्रवक्त्र वि० (सं) जिसके हजार मुख हों।
सहस्रवदन पुं० (सं) १-विष्णु। २-शिव।
सहस्रशः अव्य० (सं) हजार बार।
सहस्रशीर्षा पुं० (सं) विष्णु।
सहस्रांशु पुं० (सं) सूर्य।
सहस्रांशुज पुं० (सं) शनि।
सहस्राक्ष पुं० (सं) १-इन्द्र। २-विष्णु।
सहस्राधिपति पुं० (सं) एक हजार गावों का शासन-कर्ता।
सहस्रानन पुं० (सं) विष्णु।
सहस्राब्दि स्त्री०(सं) किसी संवत् के हर एक से हजार तक के वर्षों का समूह। (माइलीनियम)।
सहा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
सहाइ पुं० (हि) सहायक। मददगार। स्त्री० सहायता।
सहाई पुं० (हि) सहायक। स्त्री० सहायता।
सहाध्यायी पुं० (सं) सहपाठी। वह जो साथ पढ़ा हो।
सहाना वि० (हि) दे० 'शहाना'।
सहानुभूति स्त्री० (सं) हमदर्दी। किसी का दुःख देखकर दुःखी होना।
सहापराधि पुं०(सं) किसी अपराध की अपराध करने में सहायता देने वाला अपराधी। (अकम्पलिस)।
सहाब पुं० (हि) दे० 'शहाब'। पुं० (अ) बादल।
सहाय पुं० (सं) १-मदद। सहायता। २-आश्रय। ३-सहायक।
सहायक वि० (सं) १-सहायता करने वाला। २-(वह नदी) जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो। ३-सहकारी। (असिस्टेंट)।
सहायक-आजीविका स्त्री० (सं) अपने मुख्य पेशे के अतिरिक्त खर्च को पूरा करने के लिए बचे हुए समय में किया गया कोई दूसरा काम या पेशा। (सब्सीडियरी ऑक्यूपेशन)।
सहायक-नदी स्त्री०(सं) वह छोटी नदी जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो।
सहायक-संपादक पुं० (सं) संपादक के संपादन-कार्य में सहायता देने वाला व्यक्ति। (असिसटेन्ट एडिटर)।
सहायता स्त्री० (सं) १-किसी के कार्य-सम्पादन में योग देना। मदद। २-वह धन जो किसी काम को आगे बढ़ाने के लिए दिया जाय। (एड)।
सहायतागृह पुं० (सं) संकटग्रस्त लोगों की सहायता के लिये बनाया हुआ गृह। (रेस्क्यू होम)।
सहार पुं० (हि) १-सहनशीलता। २-सहने की क्रिया। (सं) १-आम्रवृक्ष। २-महाप्रलय।
सहारना क्रि० (हि) १-सहन करना। सहना। २-सँभालना। ३-गवारा करना।
सहारा पुं० (हि) १-आश्रय। आसरा। २-भरोसा। ३-सहायता।
सहालग पुं० (हि) शादी या उत्सव आदि मनाने के शुभ दिन। लगन।
सहावल पुं० (हि) दे० 'साहुल'।
सहिंजन पुं० (हि) दे० 'सहिजन'।
सहिजन पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लम्बी फलियों की तरकारी बनती है।
सहिजानी स्त्री० (हि) पहचान। निशानी। चिह्न।
सहित अव्य० (सं) साथ। समेत।
सहिता वि० (सं) सहन या बरदाश्त करने वाला।
सहियो स्त्री० (हि) बरछी।
सहिदान पुं० (हि) चिह्न। निशान।
सहिदानी स्त्री० (हि) १-स्मृति के लिये किसी की दी हुई वस्तु। निशानी। २-पहचान। चिह्न।
सहिष्णु वि०(सं) सहनशील। बरदाश्त करने वाला।
सहिष्णुता स्त्री० (सं) सहनशीलता।
सहिष्णुत्व पुं० (सं) सहिष्णुता। सहनशीलता।
सही वि० (फा) १-ठीक। शुद्ध। २-सत्य। प्रामाणिक।
सहीसलामत वि० (फा) १-जिसमें किसी प्रकार की बाधा न हुई हो। २-स्वस्थ।
सहुँ अव्य० (हि) १-तरफ। ओर। २-सामने।
सहूलियत स्त्री० (अ) सुभीता।
सहृदय वि० (सं)१-दूसरों के दुःख-सुख को समझने वाला। रसिक। भावुक। २-दयालु।
सहृदयता स्त्री० (सं) १-सौजन्य। २-रसिकता। ३-दयालुता।
सहेजना क्रि०(हि) १-सँभालना। २-सँभालने या याद रखने के लिये कहना।
सहेट पुं० (हि) दे० 'सहित'।
सहेत पुं० (हि) प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट गुप्त स्थान।
सहेतु वि० (सं) दे० 'सहेतुक'।

हेतुक वि० (स) जिसमें कुछ उद्देश हो।
हेलरी स्त्री० (हि) सखी। सहेली।
हेली स्त्री० (हि) स्त्री के साथ रहने वाली कोई अन्य स्त्री। सङ्गिनी।
हैया पु० (हि) सहायता करने वाला। वि० सहन करने वाला।

माता से उत्पन्न।
सह्य वि० (स) १-जो सहा जा सके। २-आरोग्य। पु० १-समानता। २-सह्याद्रि। ३-साम्य। बराबरी
सह्याद्रि पु० (सं) एक पर्वत जो पश्चिमी घाट का एक भाग है तथा जो समुद्र तट से कुछ हट कर है
साँई पु० (हि) १-स्वामी। मालिक। २-ईश्वर। ३-पति। ४-मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।
साँकड़ पुं० (हि) १-जञ्जीर। शृंखला। २-दरवाजे की सिकड़ी।
साँकड़ा पु० (हि) पैर में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।
साँकर स्त्री० (हि) जंजीर। पुं० सकट। विपत्ति। वि० १-सँकरा।
साँकरा वि० (हि) दे० 'साँकड़ा'।
सांकर्य पु० (सं) मिलावट। मिश्रण।
साँकल स्त्री० (हि) जंजीर। शृङ्खला।
सांकेतिक वि० (स) जो सकेत के रूप में हो।
सांक्रमिक वि० (स) छूत से उत्पन्न होने वाला।
सांक्षेपिक वि० (सं) संक्षिप्त किया हुआ।
सांख्य पुं० (स) महर्षि कपिल कृत एक प्रसिद्ध दर्शन जिसमें प्रकृति तथा चेतन पुरुष ही जगत का मूल माना गया है। वि० १-संख्या-सम्बन्धी। २-गणना करने वाला।
सांख्यिक पु० (सं) जन्म-मरण, उत्पादन के प्रामाणिक आंकड़े इकट्ठे करने वाला विशेषज्ञ। (स्टैटिस्टीशियन)।
सांख्यिकी स्त्री०(स) किसी विषय की सच्चाई प्रामाणिक रूप से एकत्र करके उनके आधार पर कोई सिद्धांत या निष्कर्ष निकालने की विद्या। (स्टैटिस्टिक्स)।
सांख्यिकीय-मन्त्रणाकार पुं० (सं) उत्पादन, जन्म, मरण तथा अन्य विषयों के आकड़ों को प्रमाणित रूप में एकत्र करने के सम्बन्ध में सलाह देने वाला (स्टैटिस्टिकल एडवाइजर)।
सांग वि० (सं) १-सब अंगों से युक्त। २-सम्पूर्ण। स्त्री० (हि) एक प्रकार की बरछी।
सांगतिक वि० (सं) १-सामाजिक। २-सगति से सम्बन्ध रखने वाला। पुं० १-अतिथि। २-अजनबी।
सांगी स्त्री० (हि) १-बरछी। २-गाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान। ३-गाड़ी के नीचे लगी हुई जाली।
सांगोपांग वि० [illegible]

[illegible] (पटन)।
सांघिक वि० (सं) सङ्घ का। सङ्घ-सम्बन्धी।
सांच वि० (हि) सत्य। ठीक। पु० सत्य बात।
सांचर नमक पु० (हि) सोंचर नमक।
साँचला वि० (हि) सच्चा। सत्यवादी।
साँचा पुं० (हि) १-वह उपकरण जिसमें गीली वस्तु डाल कर उसी के आकार की दूसरी और वस्तुएँ ढाली जाती हैं। २-बेलबूटे का ठप्पा। छापा। वि० सच्चा।
सांचारिक वि० (स) जङ्गम।
साँचिया पु० (हि) १-किसी वस्तु का साचा बनाने वाला। २-साँचे में ढालने वाला।
साँचिला वि० (हि) सच्चा।
साँची स्त्री० (हि) पुस्तक की छपाई का एक तरीका। पु० एक प्रकार का खाने का पान।
साँझ स्त्री० (हि) सन्ध्या। सायङ्काल।
साँझा पु० (हि) दे० 'साझा'।
साँझी स्त्री० (हि) मन्दिरों में भूमि पर रंगीन चूर्णों से बनाई गई बेल-बूटों की सजावट जो प्रायः उत्सवों के समय की जाती है।
साँट स्त्री० (हि) १-छड़ी। २-कोड़ा। ३-शरीर पर कोड़े की मार का पड़ा हुआ निशान।
साँटा पु० (हि) १-कोड़ा। चाबुक। २-गन्ना। ३-करघे का वह डंडा जिसकी सहायता से सूत ऊपर नीचे होते हैं। ४-एँड़।
साँटिया पुं०(हि) डौंडी पीटने वाला।
साँटी स्त्री० (हि)१-पतली छोटी छड़ी। २-बाँस आदि की पतली कमची। ३-मेलमिलाप। ४-बदला।
साँठ पु० (देश) १-गन्ना। २-सरकंडा। ३-अनाज पीटने का डंडा। ४-मेलमिलाप।
साँठगाँठ स्त्री० (हि) १-मेलमिलाप। २-छिपा और दूषित सम्बन्ध।
साँठना क्रि० (हि) पकड़े रहना।
साँठि स्त्री० (हि) दे० 'साँठी'।
साँठी स्त्री० (हि) पूँजी। धन। पु० साठी नामक धान।
सांड वि० (सं) अण्डयुक्त। जो बधिया न किया गया हो।

सांड़ पुं० (हि) १-केवल सन्तान उत्पन्न करने के लिये छोड़ा गया गाय का नर। २-मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ा हुआ बैल।
सांड़नी स्त्री० (हि) तेज चाल चलने वाली ऊँटनी।
सांड़ा पुं० (हि) छिपकली की जाति का एक जङ्गली जन्तु जिसकी चरबी दवा के रूप में काम आती है।
सांड़िया पुं० (हि) १-साँड़नी पर सवारी करने वाला व्यक्ति। २-तेज चाल चलने वाला ऊँट।
सांत वि० (सं) १-जिसका अन्त अवश्य होता हो। अन्तयुक्त। वि० (हि) शांत।
सांतर वि० (स) झीना। अन्तयुक्त।
सांतापिक वि० (सं) सताप या कष्ट देने वाला।
सांति स्त्री० (हि) दे० 'शांति'।
सांत्वन पुं० (सं) १-आश्वासन। ढारस। २-प्रणय। प्रेम। ३-मिलन। ४-कुशल-मङ्गल पूछना।
सांत्वना स्त्री० (सं) १-आश्वासन। ढारस। २-सुख ३-प्रेम। प्रणय।
सांथरी स्त्री० (हि) १-चटाई। बिछौना।
सांदीपनि पुं० (स) श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा देने वाले आचार्य।
सांद्र पुं० (सं) वन। जंगल। वि० १-घना। घोर। स्निग्ध। चिकना। ३-सुन्दर।
सांध पुं०(हि) लक्ष्य। निशाना। वि० (सं) १-सन्धि-सम्बन्धी। पुं० (सं) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
सांधना क्रि० (हि) १-निशान साधना। २-मिलाना ३-पूरा करना। साधना।
सांधिविग्रहिक पुं० (सं) प्राचीन काल के राजाओं का वह अधिकारी जिसे संधि या विग्रह करने का अधिकार होता था।
सांध्य वि० (सं) सन्ध्या-सम्बन्धी।
सांध्यकुसुमा स्त्री०(सं)सन्ध्याकाल में फूलने या खिलने वाले पौधे, वृक्षादि।
सांध्यभोजन पुं० (सं) ब्यालू।
सांप पुं० (हि) एक प्रसिद्ध रेंगने वाला विषैला कीड़ा सर्प। भुजंग। विषधर।
सांपत्तिक वि० (सं) सम्पत्ति का। सम्पत्ति-सम्बन्धी।
सांपद वि० (सं) सम्पत्ति-सम्बन्धी।
सांपा पुं० (हि) दे० 'सियापा'।
सांपिन स्त्री० (हि) १-सांप की मादा। २-घोड़े के शरीर पर एक प्रकार की अशुभ भौरी।
सांपिया पुं० (हि) सांप के रंग से मिलता-जुलता काला रंग।
सांप्रत अव्य० (सं) तत्काल। इसी समय। अभी।
सांप्रतिक वि० (स) १-आधुनिक। २-जो इस समय चल रहा हो। (करेन्ट)।
सांप्रदायिक वि०(सं) किसी विशेष सम्प्रदाय से संबंध रखने वाला।
साम्प्रदायिकता स्त्री० (सं) १-साम्प्रदायिक होने का भाव। २-केवल अपने सम्प्रदाय की श्रेष्ठता तथा हितों का विशेष ध्यान रखना तथा दूसरे सम्प्रदा[य] की उपेक्षा करना।
सांबर पुं० (सं) १-दे० 'सांभर'। २-सांभर नमक (हि) सम्बल। पाथेय। राहखर्च।
सांभर पुं० (हि) १-भारतीय मृगों की एक जाति २-राजस्थान की एक झील। ३-उसके जल से ब[ना] नमक।
सांमुहें अव्य० (हि) सम्मुख। सामने।
सांवत पुं० (हि) १-योद्धा। सामन्त। २-एक राग
सांवत्सर पुं० (सं) गणक। ज्योतिषी।
सांवत्सर रथ पुं० (सं) सूर्य।
सांवत्सरिक वि० (सं) सम्वत्सर-सम्बन्धी। पुं० ज्योतिषी।
सांवत्सरिक श्राद्ध पुं० (सं) वह श्राद्ध जो हर साल किया जाय।
सांवत्सरी स्त्री० (सं) वह श्राद्ध जो मृत्यु के एक वर्ष बाद किया जाता है।
सांवर वि० (हि) दे० सांवला'।
सांवलताई स्त्री० (हि) दे० 'सांवलापन'।
सांवला वि० (हि) कुछ-कुछ हल्के श्याम वर्ण का। पुं० १-श्रीकृष्ण। २-प्रेमी या पति (गीत में)।
सांवलापन पुं० (हि) सांवला (रंग) होने का भाव।
सांवां पुं० (हि) चेना या कँगनी जाति का एक घटिया अन्न।
सांवादिक वि० (सं) सम्वाद या समाचार सम्बन्धी। पुं०१-समाचार या खबर भेजने वाला। (न्यूजमैन) २-सड़क पर समाचार-पत्र बेचने वाला।
सांव्यवहारिक पुं०(सं) वह व्यापारी जो किसी समवाय का हिस्सेदार के रूप में काम करता हो।
सांशयिक वि० (सं) संशय या सन्देह करने वाला।
सांस स्त्री० (हि) १-श्वास। दम। २-अवकाश। ३-समाई। ४-सन्धि या दरार। ५-दमे का रोग।
सांसत स्त्री० (हि) १-दम घुटने का सा कष्ट। २-झंझट। बखेड़ा। ३-अत्यन्त कष्ट या पीड़ा।
सांसतघर पुं० (हि) काल कोठरी।
सांसति स्त्री० (हि) दे० 'साँसत'।
सांसद वि० (सं) (कथन व्यवहार आदि) जो संसद या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो (पार्लमेन्टरी)।
सांसना क्रि० (हि) १-डांटना-डपटना। २-दण्ड देना ३-कष्ट देना।
सांसा पुं० (हि) १-श्वास। दम। २-अवकाश। ३-जीवन। ४-प्रमाण। ५-सन्देह। ६-डर। भय।
सांसारिक वि० (सं) संसार का। लौकिक। ऐहिक।
सांस्कारिक वि० (सं) संस्कार-सम्बन्धी।

सांस्कृतिक वि० (सं) संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाला ।
सांस्पर्शिक वि० (सं) छूत से फैलने वाला (रोग) । (कंन्टेजियस) ।
सा अव्य० (हि) १-समान । तुल्य । २-एक परिमाण-सूचक शब्द । पुं० सरगम का षड्ज स्वर । स्त्री०(सं) १-लक्ष्मी । २-पार्वती ।
साइक पुं० (हि) दे० 'शायक' ।
साइत स्त्री० (हि) १-पल । क्षण । २-मुहूर्त्त । ३-शुभ समय । ४-समय ।
साइबान पुं० (हि) दे० 'सायबान' ।
साइयाँ पुं० (हि) दे० 'साँई' ।
साइर पुं० (देश) दे० 'सायर' ।
साई पुं० (हि) दे० 'साँई' ।
साई स्त्री०(हि) १-वह . . .
काम करने से पहले . .
दिया जाता है । पेशगी । बयाना । (अर्नेस्ट मनी) । २-वह सहायता जो किसान लोग एक दूसरे को देते हैं ।
साईस पुं० (हि) घोड़े की देख-भाल करने वाला नौकर ।
साउज पुं० (हि) वे जानवर जिनका शिकार किया जाता है ।
साक पुं० (हि) सब्जी । तरकारी । साग ।
साकट पुं० (हि) १-शाक्त मत को मानने वाला । २-निगुरा । ३-दुष्ट । पाजी ।
साकर वि० (हि) संकीर्ण । तंग । सँकरा । स्त्री० १-साँकल । २-शक्कर ।
साकल्य पुं० (सं) दे० 'शाकल्य' ।
साकल्यवचन पुं० (सं) समस्त या पूरा पाठ ।
साकांक्ष वि० (सं) इच्छा करने वाला । इच्छुक ।
साका पुं० (हि) १-संवत् । २-प्रसिद्धि । ३-कीर्ति-स्मारक । ४-धाक । ५-समय ।
साकार वि० (सं) १-मूर्तिमान । २-रूप या आकार वाला । पुं० ब्रह्म का मूर्तिमान रूप ।
साकारोपासना स्त्री० (सं) ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना ।
साकिन वि०(प) १-रहने वाला । निवासी । २-गति-हीन ।
साकिनहाल वि० (प) वर्तमान काल में रहने वाला ।
साकी पुं० (प) १-मदिरापान कराने वाला । २-वह जिससे प्रेम किया जाय । प्रेमिका ।
साकूत वि०(सं) अभिप्राय सहित । जिसका गुप्त अर्थ हो ।
साकूतस्मित पुं० (सं) अभिप्राय सहित मुसकान ।
साकूतहसित पुं० (सं) दे० 'साकूतस्मित' ।
साकेत पुं० (सं) अयोध्यानगरी ।
साकेतक पुं० (सं) अयोध्या का निवासी ।
साकेतन पुं० (सं) अयोध्या ।
सात्त्विक वि० (सं) सत्त्व का । सत्त्व-सम्बन्धी । पुं० जौ, जिससे सत्तू बनता है ।
साक्ष वि० (सं) १-नेत्रवाला । २-प्रमाणयुक्त ।
साक्षर वि०(सं) शिक्षित । जो पढ़ना-लिखना जानता हो ।
साक्षरता स्त्री० (सं) पढ़े-लिखे होने का भाव ।
साक्षरतांदोलन पुं० (सं) अपढ़ों को पढ़ा लिखा बनाने के लिये चलाया हुआ आंदोलन । (लिटरेसी कैम्पेन) ।
साक्षात् अव्य० (सं) प्रत्यक्ष । सामने । सम्मुख । वि० साकार । पुं० मुलाकात । भेंट ।
. . .
. . .
का उसी समय का कारण ।
साक्षात्कर्ता वि० (सं) सर्वद्रष्टा ।
साक्षात्कार पुं० (सं) १-भेंट । २-ज्ञान । ३-अनु-भूति ।
साक्षात्कारी पुं० (सं) १-साक्षात् करने वाला । २-भेंट करने वाला ।
साक्षात्कृत वि० (सं) सामने आया हुआ । प्रत्यक्ष ।
साक्षाद्दृष्ट वि० (सं) (स्वयं) आंखों से देखा हुआ ।
साक्षिता स्त्री० (सं) साक्षी का काम । गवाही ।
साक्षित्व पुं० (सं) दे० 'साक्षिता' ।
साक्षी पुं० (सं) १-वह जिसने कोई घटना अपनी आंखों से देखी हो । २-गवाह । ३-दूर से देखने वाला । तटस्थदर्शक । स्त्री० गवाही । शहादत । (विटनस) ।
साक्षीकरण पुं० (सं) किसी लेख, दस्तावेज या बात के साक्षिरूप में हस्ताक्षर करना । सत्यापन । (अटे-स्टेशन) ।
साक्षीकृत वि० (सं) जिसको हस्ताक्षर द्वारा सच्ची नकल या प्रतिलिपि होने को स्वीकार किया गया हो । (अटेस्टेड) ।
साक्षीपरीक्षण पुं० (सं) गवाह या साक्षी से सच्ची बात मालूम करने लिए प्रश्न करना । (क्रॉस एग्जा-मिनेशन) ।
साक्षेप वि० (सं) जिसमें व्यङ्ग या ताना हो ।
साक्ष्य पुं० (सं) १-गवाही । शहादत । २-प्रमाण । (एविडेन्स) ।
साक्ष्यविधि स्त्री० (सं) गवाही या साक्ष्य-सम्बन्धी कानून । (लॉ आफ एविडेन्स) ।
साख पुं० (हि) १-साक्षी । गवाह । २-प्रमाण । ३-धाक । ४-मर्यादा । ५-लेन-देन का खरापन । स्त्री० दे० 'शाखा' ।
साख-पत्र पुं० (हि) सार्वजनिक ऋण-पत्र

ज़ामिन सरकार होती है तथा समवायों के हिस्सों की तरह जिसकी बिक्री होती है। (सिक्युरिटीज)।
साखना क्रि० (हि) साक्षी देना। गवाही देना।
साखर वि० (हि) दे० 'साक्षर'।
साखा स्त्री० (हि)१-डाली। टहनी। २-वंश या जाति की शाखा। ३-चक्की का धुरा।
साखी पुं० (हि) १-गवाह। २-ज्ञान सम्बन्धी दोहे या पद। ३-गवाही। ४-वृक्ष।
साखु पुं० (हि) शालवृक्ष।
साखोचार पुं० (हि) दे० 'शाखोच्चार'।
साखोचारन पुं०(हि) दे० 'शाखोच्चार'।
साख्य पुं० (सं) मित्रता। दोस्ती।
साग पु० (हि) शाक। भाजी। तरकारी।
सागपात पुं० (हि) १-रूखासूखा भोजन। २-तुच्छ और निकम्मी वस्तु।
सागर पुं० (सं)१-समुद्र। जलधि। २-बड़ा जलाशय ३-एक प्रकार के संन्यासी। ४-एक प्रकार का मृग ५-सात या चार की संख्या। ६-दस पद्म। ७-एक नाग का नाम। ८-बहुत बड़ी रकम या पुञ्ज। वि० समुद्र सम्बन्धी।
सागरगंभीर पुं० (सं) एक प्रकार की समाधि।
सागरगम वि० (सं) सागर या समुद्र में जाने वाला।
सागरगा स्त्री० (सं) १-गङ्गा नदी। २-नदी।
सागरगामी स्त्री० (सं) दे० 'सागरगा'।
सागरज पुं० (सं) समुद्र लवण।
सागरधीर वि०(सं) समुद्र की तरह गंभीर तथा शांत
सागरनेमि स्त्री० (सं) पृथ्वी।
सागरमेखला स्त्री० (सं) पृथ्वी।
सागरवासी पुं० (सं) समुद्र में या समुद्र के किनारे रहने वाला।
सागरशुक्ति स्त्री० (स) समुद्र से निकाला जाने वाला सीप।
सागरसूनु पुं० (सं) चन्द्रमा।
सागरांत पुं० (सं) समुद्र का किनारा। समुद्रतट।
सागरांता स्त्री० (सं) पृथ्वी।
सागरांबरा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
सागवन पु० (हि) दे० 'सागौन'।
सागवान पुं० (हि) दे० 'सागौन'।
सागू पुं० (हि) ताड़ की जाति का एक वृक्ष। (सैगो)
सागूदाना पुं० (हि) साबूदाना। सागू के वृक्ष के गूदे से तैयार किये हुए दाने जो शीघ्र ही पच जाते हैं।
सागौन पुं० (सं) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है तथा किवाड़ या मेज-कुर्सी बनाने के काम आती है।
साचि अव्य० (सं) तिरछे या टेढ़े रूप में।
साचिविलोकित वि० (सं) तिरछी नजर या चितवन।
साचिविक वि० (सं) सचिव या उसके कार्यालय से सम्बन्धित। (सेक्रेटेरियल)।
साचिविक स्तर पर वि० (सं)(वह बातचीत या समझौता) जो दो राज्यों के किसी विभाग के सचिवों के बीच की जाय। (ऑन सेक्रेटेरियल लेवल)।
साज पुं० (सं) पूर्वभाद्रपद-नक्षत्र। पुं० (फा) १-सजावट। ठाटबाट। २-वाद्ययन्त्र। बाजा। ३-सजाने अथवा कसने की सामग्री। ४-लड़ाई का हथियार। वि० (फा) १-मरम्मत करने या बनाने वाला। २-बनाया हुआ जैसे-दस्तसाज-हाथ का बनाया हुआ। (समास में)।
साजन पुं० (हि) १-पति। २-प्रेमी। ३-ईश्वर। ४-सज्जन।
साजना क्रि० (हि) १-सजाना। २-सजना।
साजबाज़ पुं० (फा) १-तैयारी। २-मेलजोल।
साजसामान पुं० (फा) १-उपकरण। सामग्री। २-ठाटबाट।
साजा वि० (हि) १-अच्छा। सुन्दर।
साजात्य पुं० (सं) १-एक ही जाति वाला। २-एक ही प्रकार की वस्तु।
साज़िंदा पुं० (फा) साज या बाजा बजाने वाला।
साजिद पुं० (अ) वन्दना या सिजदा करने वाला।
साज़िश पुं० (फा) १-किसी के विरुद्ध कोई कार्य करने में सहायक होना। २-मेलमिलाप। ३-षड्यन्त्र।
साज़िशी वि० (फा) साजिश या गुप्त मन्त्रणा करने वाला।
साजुज्य पुं० (हि) दे० 'सायुज'।
साझा पुं० (हि) १-हिस्सा। भाग। २-हिस्सेदारी।
साझी पुं० (हि) किसी व्यवसाय या काम में हिस्सा रखने वाला। हिस्सेदार।
साझेदार पुं० (हि) दे० 'साझी'।
साझेदारी स्त्री० (हि) साझेदार होने का भाव। शराकत।
साट स्त्री० (हि) १-छड़ी के आघात का दाग। २-छड़ी
साटक पुं० (हि)१-छिलका। भूसी। २-निरर्थक तथा तुच्छ वस्तु।
साटन स्त्री० (हि) एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा (सैटिन)।
साटना क्रि० (हि) १-मिलाना। २-किसी को किसी काम के लिये गुप्त रूप से अपनी ओर मिलाना।
साटमार पुं० (हि) हाथियों को लड़ाने वाला।
साटी स्त्री० (देश) १-सामान। सामग्री २-कमची। सौंटी।
साटोप वि० (सं) १-घमण्ड या अहंकार से फूला हुआ। २-बादल की तरह गरजता हुआ।
साठ वि० (हि) पचास और दस। पुं० (हि) तीस और तीस के योग की संख्या। ६०।
साठनाठ वि० (हि) १-निर्धन। दरिद्र। २-नीरस।

रूखा । ३-तितर-बितर ।

साठा पु० (देश) १-गन्ना । २-साठी नामक धान । ३-वह खेत जो बहुत लम्बा चौड़ा हो । ४-एक प्रकार की मधुमक्खी । वि० साठ साल का ।

साठी पु० (हि) एक प्रकार का धान ।

साड़ी स्त्री० (हि) १-स्त्रियों के पहनने की धोती । २-सारी ।

साढ़साती स्त्री० (देश) दे० 'साढ़ेसाती' ।

साढ़ी स्त्री० (हि) १-आसाढ़ में बोई जाने वाली फसल । २-दूध पर की मलाई । ३-साल वृक्ष का गोंद । ४-साड़ी ।

साढ़ू पु० (हि) पत्नी की बहन का पति ।

साढ़े वि० (हि) आधे के साथ ।

साढ़ेसाती स्त्री० (हि) शनिग्रह की अशुभ दशा या प्रभाव जो साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात माह या साढ़े सात दिन तक रहता है ।

सात वि० (हि) चार और तीन । पुं० चार और तीन की संख्या के योग की संख्या । ७ ।

सातत्य पुं०(सं) १-सतत का भाव । २-सदा निरन्तर होते रहना ।

सातपाँच पुं० (हि) १-धोखा । २-चालबाजी । ३-छिछ । बहाना । ४-झगड़ा । तकरार ।

साति स्त्री० (हि) शान्ति । दंड ।

सातिक वि० (हि) सात्विक ।

सातिग वि० (हि) सात्त्विक ।

सात्विक वि० (स) १-सतोगुणी । २-पवित्र । ३-सत्व गुण से उत्पन्न । पुं० १-... से उत्पन्न — स्तम्भ, स्वेद, रोम ... वैवर्ण्य, अश्रु तथा प्रलय यह आठ ... ३-विष्णु । ४-सात्विक वृत्ति । ... अभिनयों में से एक ।

सात्म्य पुं० (स) १-सारूप्य । २-वैद्यक के अनुसार वह रस जिसके पान करने से शरीर को लाभ पहुँचता है । ३-अभ्यास ।

सात्रिकपरीक्षा स्त्री० (सं) विद्यालय आदि में एक सत्र की पढ़ाई समाप्त होने पर ली जाने वाली परीक्षा (टरमिनल एक्जामिनेशन) ।

सात्विक पुं० (सं) दे० 'सात्त्विक' ।

साथ पुं० (हि) १-सम्पति । २-संगी । ३-घनिष्ठता । ४-कबूतरों का झुण्ड । अव्य० १-सहित । से । २-विरुद्ध । ३-प्रति । ४-द्वारा ।

साथरा पु० (हि) १-चटाई । बिस्तर । २-कुश की बनी चटाई ।

साथरी स्त्री० (हि) कुश की बनी चटाई ।

साथसाथ अव्य० (हि) एक साथ ।

साथी पुं० (हि) १-संगी । २-दोस्त । मित्र ।

साद पु० (स) १-विशुद्धता । २-क्षुब्ध । ३-नाश । ४-दोषता । ५-कलाति । पुं० (अ) किसी बात को ठीक मानने के चिह्न । वि० (अ) १-सत्य । सच । २-सज्जन । भला । शुभ ।

सादगी स्त्री० (फा) सादापन । सरलता । २-सीधापन निश्छलता ।

सादर अव्य० (सं) आदर या सम्मान के साथ ।

सादा वि० (फा) १-साधारण बनावट का । २-बिना मिलावट या आडम्बर के । ३-बिना बेल बूटे वाला । ४-सीधा । सरल । ५-जिस पर कुछ लिखा न हो । ६-सफेद । जिसका कोई रंग न हो ।

सादा-कपड़ा पु०(फा) वह कपड़ा जिसका खास रंग न हो या जिस पर बेल बूटे न कढ़े हुए हों ।

सादा-कागज पुं० (फा) वह कागज जिस पर कुछ लिखा न हो ।

सादाकार पु० (फा) सुनार । सोने चांदी का काम करने वाला ।

सादादिल वि० (फा) १-निष्कपट । २-सीधा । सरल ।

सादामिजाज वि० (फा) जिसके मिजाज में बनावट न हो ।

सादिक वि० (अ) ठीक । सत्य ।

सादित वि० (सं) छिन्न-भिन्न । ध्वस्त ।

सादी स्त्री० (फा) १-लाल की भांति की एक छोटी चिड़िया । २-बिना पिट्ठी की पूरी । पु० १-शिकारी २-घोड़ा । ३-दे० 'शादी' ।

सादूर पु० (हि) १-सिंह । शार्दूल । २-कोई हिंसक पशु ।

१५-संधान।
साधनता स्त्री० (सं) १-साधन का भाव या धर्म। २-साधने की क्रिया।
साधनत्व पुं० (सं) साधनता।
साधनहार वि० (हि) जो साधा जा सके।
साधना स्त्री० (सं) १-कोई काम सिद्ध करने की क्रिया या भाव। २-आराधना। ३-साधन। क्रि० (हि) १-पूरा करना। २-अभ्यास करना। ३-निशाना लगाना। ४-वश में करना। ५-एकत्र करना। ६-शोधना। ७-प्रमाणित करना। ८-नकली को असल जैसा कर दिखाना।
साधनीय वि०(सं) १-जो साधा जा सके। २-साधना करने योग्य।
साधयिता पुं० (सं) साधन करने वाला।
साधर्म्य पुं० (सं) एकधर्मता। समान गुण या धर्म होने का भाव।
साधस पुं० (हि) दे० 'साध्वस'।
साधार वि० (सं) जिसका कुछ आधार हो। आधार-युक्त।
साधारण वि० (सं) १-जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता न हो। सामान्य। मामूली। (आर्डिनरी) २-सरल। सहज। ३-बहुतों से सम्बन्ध रखने वाला। ४-सार्वजनिक। आम। (जनरल)।
साधारणतः अव्य० (हि) १-साधारण रूप से। २-बहुधा। प्रायः।
साधारणतया अव्य० (सं) दे० 'साधारणतः'।
साधारण-धर्म पुं० (सं) १-वह धर्म जो सबके लिये हो। २-चारों वर्णों के कर्त्तव्य कर्म। ३-वह धर्म जो साधारणतया सब पदार्थों में पाया जाता हो।
साधारण-निर्वाचन पुं० (सं) संसद आदि के सब सदस्यों का चुनाव। आम चुनाव। (जनरल इलेक्शन)।
साधारण स्त्री स्त्री०(सं) वेश्या।
साधित वि० (सं) १-साधा हुआ। २-शोधित। ३-जिसका नाश किया गया हो। ४-जिसे दण्ड दिया गया हो। ५-जो चुकाया गया हो (ऋण आदि)।
साधु पुं० (सं) १-कुलीन। आर्य। २-धार्मिक जीवन बिताने वाला सन्त व्यक्ति। ३-सज्जन। ४-जैन साधु। ५-मुनि। ६-जिन। वि० १-अच्छा। २-प्रशंसनीय। ३-उचित। ४-शिष्ट और शुद्ध (भाषा)
साधुता स्त्री० (सं) १-साधु होने का भाव या धर्म। २-साधुओं का आचरण। ३-सज्जनता। ४-भलाई ५-सीधापन।
साधुत्व पुं० (सं) साधुता।
साधुभाव पुं० (सं) सज्जनता। साधुता।
साधुवाद पुं० (सं) किसी को कोई भला काम करने पर 'साधु-साधु' कहकर उसकी प्रशंसा करना।
साधुवादी वि० (सं) सच बोलने वाला। सत्यवादी।
साधुसंसर्ग पुं० (सं) अच्छी सङ्गति। सत्सङ्गति।
साधुसम्मत वि० (सं) जो अच्छे लोगों को मान्य हो।
साधुसाधु अव्य० (सं) धन्य-धन्य। वाह-वाह।
साधू पुं० (हि) दे० 'साधु'।
साधो पुं० (हि) धार्मिक पुरुष। सन्त। साधु।
साध्य वि० (सं) १-जो सिद्ध हो सके। २-साधनीय ३-सरल। ४-जो प्रमाणित करना हो। ५-जान योग्य। ६-प्रतिकार करने योग्य। पुं०१-बारह गण देवता। २-देवता। ३-ज्योतिष में एक शुभ योग ४-सामर्थ्य। ५-न्याय में वह पदार्थ जिसका अ मान किया जाय।
साध्यता स्त्री० (सं) साध्य का भाव या धर्म।
साध्यपक्ष पुं० (सं) विवाद में वह पक्ष जिसे प्रम णित करना हो।
साध्यसिद्धि स्त्री० (सं) वह जिसे किसी कार्य सम्पादन करना हो।
साध्वस पुं० (सं) १-भय। २-व्याकुलता। ३ प्रतिभा।
साध्वाचार पुं० (सं) १-शिष्टाचार। २-साधुओं सा आचरण।
साध्वी वि० (सं) पतिव्रता या पवित्र आचरण वा (स्त्री)।
सानंद पुं० (सं) १-समाधि का भेद। २-सङ्गीत सोलह ध्रुवों में से एक। अव्य० आनन्दसहित।
सान पुं० (हि) वह पत्थर जिस पर अस्त्र, चाकू आ की धार तेज की जाती है।
सानगुमान पुं० (हि)१-इशारा। २-विचार। ख्याल ३-सुराग।
सानी स्त्री० (हि) १-चारे की सामग्री जो पानी मिलाकर पशुओं को खिलाई जाती है। २-गाड़ी पहिये में लगाई जाने वाली गिट्टक। वि० (अ) दूसरा। २-मुकाबले का।
सानु पुं० (सं) १-पर्वत की चोटी। २-सिरा। छोर ३-समतल भूमि। ४-वन। ५-मार्ग। ६-सूर्य। पल्लव। ८-पण्डित।
सानुकम्प वि० (सं) कोमल हृदय वाला। दयालु।
सानुकूल वि० (सं) अनुकूल।
सानुक्रमसंस्थान पुं० (सं) वह संस्था जिसके अधि कारी क्रमानुगत नियुक्त होते हों। (हायरैरकी)।
सानुक्रोश वि० (सं) दयालु।
सानुज वि० (सं) जिसके छोटा भाई हो।
सानुनय वि०(सं) शिष्ट। विनम्र। अव्य० विनयपूर्व
सानुनासिक वि० (सं) १-नाक से बोलने वाला। २ जिसके उच्चारण में नाक का योग हो (अक्षर)।
सानुप्रास वि० (सं) अनुप्रासयुक्त।
सान्नहनिक वि० (सं) कवचधारी।

सान्निध्य पुं० (सं) १-समीपता। २-एक प्रकार की मुक्ति या मोक्ष।
सान्निपातिक वि० (सं) १-सन्निपात सम्बन्धी। २-त्रिदोष से उत्पन्न होने वाला रोग।
सान्वय वि० (सं) वंश वाला। २-एक सा काम करने वाला।
साप पुं० (हि) दे० 'शाप'।
सापत्न वि० (सं) सौत की कोख से उत्पन्न। सौत-सम्बन्धी।
सापत्नक पुं० (सं) सौतों की परस्पर की शत्रुता।
सापत्नेय वि० (सं) सौतेला।
सापत्न्य पुं० (सं) १-सौत की दशा। सौतिया भाव। २-वैर-भाव। ३-सौत का लड़का।
सापना क्रि० (हि) १-शाप देना। कोसना।
सापवादक वि०(सं) जिसमें बुराई या अपवाद हो सके
सापिण्ड्य पुं०(सं) सपिंड होने का भाव या धर्म।
सापेक्ष वि० (सं) १-किसी से अपेक्षा रखने वाला। २-जो विचार, निर्णय या आज्ञा की अपेक्षा में रुका या पड़ा हुआ हो। (पेंडिंग)।
साप्ताहिक वि० (सं) १-सप्ताह-सम्बन्धी। २-प्रति सप्ताह होने वाला। ३-हफ्तेवार। (वीकली)। पुं० वह समाचार पत्र जो सात दिन में एक बार प्रकाशित होता हो।
साफ़ वि० (प) स्वच्छ। निर्मल। २-शुद्ध। खालिस ३-स्पष्ट। ४-उज्ज्वल। ५-चमकीला। ६-निष्कपट ७-सादा। कोरा। ८-समतल। हमवार। ९-रिक्त खाली। १०-जिसमें कोई झगड़ा-बखेड़ा न हो। ११-जिसमें कोई तत्व या सार न हो। १२-(लेन-देन) जो चुकता कर दिया गया हो। १३-जीवित न छोड़ना।
साफ़-इन्कार पुं० (प) स्पष्ट मुकर जाना।
साफ़गोई स्त्री० (प) स्पष्टभाषिता।
साफ़-जवाब पुं०(प) स्पष्ट रूप से दिया गया उत्तर।
साफ़दिल वि० (प) जिसके हृदय में कपट न हो।
साफल्य पुं० (सं) १-सफलता। सिद्धि। २-लाभ।
साफ़साफ़ अव्य० (प) स्पष्टतः।
साफ़ा पुं० (हि) १-सिर पर बांधने का पगड़ी। मुँडासा। २-कपड़े धोना। ३-जानवरों का शिकार के लिए अथवा कबूतरों का दूर तक की उड़ान के लिए तैयार होने के लिए उपवास करना।
साफ़िर वि० (प) यात्रा करने वाला। पुं० पतला दुबला घोड़ा।
साफ़ी स्त्री० (प) १-भांग छानने या सुल्फे की चिलम के नीचे लगाने का कपड़ा। २-हाथ में रखने का रूमाल। ३-कपड़छन करने का कपड़ा। ४-लकड़ी साफ करने का रन्दा।
साफ़ीनामा पुं० (प) राज़ीनामा।

साबर पुं० (हि) १-साँभर। २-एक प्रकार का मुलायम हिरन का चमड़ा जो मखमल जैसा मुलायम होता है। ३-शाबर जाति के लोग। ४-मिट्टी खोदने का एक औज़ार।
साबल पुं० (हि) बरछी। भाला।
साबिक़ वि० (प) पहले का। पुराना। प्राचीन।
साबिक़दस्तूर अव्य० (प) यथापूर्व। जैसे पहले था वैसा।
साबिक़ा पुं० (प) १-जानपहचान। २-सरोकार।
साबित वि० (फा) प्रामाणिक। सिद्ध। (प) १-पूरा साबुत। २-ठीक।
साबितक़दम वि० (प) अपने निश्चय पर अटल रहने वाला।
साबिर वि० (अ) बरदाश्त या सहन करने वाला।
साबुन पुं० (हि) दे० 'साबून'।
साबूदाना पुं० (हि) दे० 'सागूदाना'।
साबून पुं०(प) तेल,क्षार आदि के मिश्रण से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर तथा कपड़े साफ किये जाते हैं। (सोप)।
साबूनसाज़ी स्त्री० (प) साबुन बनाने का काम या व्यापार।
साभिप्राय वि० (सं) जिसका कुछ अभिप्राय या मतलब हो।
साभिमान वि० (सं) अहंकारी। घमंडी।
सामञ्जस्य पुं० (सं) १-औचित्य। २-अनुकूलता। ३-मेल।
सामंत पुं० (सं) १-वीर। योद्धा। २-शक्तिशाली ज़मींदार या सरदार। ३-समीपता। नज़दीकी।
सामंतचक्र पुं० (सं) आस-पास के राजाओं का मण्डल।
सामंततन्त्र पुं० (सं) दे० 'सामंतवाद'।
सामंतवाद पुं० (सं) किसी राज्य के अन्तर्गत वह प्रणाली जिसमें सामंतों या सरदारों आदि के सम्बन्ध में बहुत अधिकार या पूरे अधिकार होते हैं (फ्यूडलिज़्म, फ्यूडल-सिस्टम)।
सामंतेश्वर पुं० (सं) चक्रवर्ती। सम्राट।
साम पुं० (सं) गाये जाने वाले वेद मन्त्र। २-चार वेदों में से तीसरा वेद। ३-राजनीति में शत्रु को मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने की नीति। (हि) दे० 'शाम'। (प) नूह के बड़े बेटे का नाम जिसकी सन्तानें अरब, यहूदी लोग माने जाते हैं।
सामकारी पुं० (सं) १-सान्त्वना देने वाला। २-एक प्रकार का सामगान।
सामग पुं० (सं) १-साम वेद का पंडित। २-विष्णु
सामगर्भ पुं० (सं) विष्णु।
सामगान पुं० (सं) १-एक साम। २-सामवेद का अच्छा पंडित। ३-साम का गान।

सामगान-प्रिय पुं० (सं) शिव।
सामगाय पुं० (सं) सामगान।
सामगायक पुं० (सं) सामवेद का अच्छा पंडित।
सामगायी पुं० (सं) साम गाने वाला।
सामगीत पुं० (सं) दे० 'सामगान'।
सामग्री स्त्री० (सं) १-वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य में उपभोग होता है। २-असबाब। सामान। ३-जरूरी सामान। ४-साधन।
सामत पुं० (हि) दे० 'सामंत'। स्त्री० दे० 'शामत'।
सामत्रय पुं० (सं) हर्रे, सोंठ तथा गिलोय इन तीनों का वर्ग।
सामध पुं० (हि) समधियों का परस्पर मिलना।
सामध्वनि स्त्री० (सं) सामगान की आवाज या ध्वनि
सामना पुं०(हि) १-भेंट। मुलाकात। २-प्रतियोगिता। ३-आगे वाला भाग।
सामने अव्य० (हि) १-समक्ष। आगे। २-उपस्थिति में। ३-मुकाबले में। विरुद्ध।
सामयिक वि० (सं) १-समय से सम्बन्ध रखने वाला २-वर्तमान समय का। ३-समय को देखते हुए उपयुक्त। समय के अनुसार।
सामयिकपत्र पुं० (सं) १-कुछ निश्चित समय के बाद बार-बार प्रकाशित होने वाला पत्र। (पीरियॉडिकल)। २-वह इकरारनामा जिसमें बहुत से लोग अपना-अपना धन लगा कर अभियोग की पैरवी के निमित्त लिखा पढ़ी करते हैं।
सामयिकवार्ता स्त्री० (सं) आकाशवाणी द्वारा किसी सामयिक प्रश्न, विषय पर प्रसारित की जाने वाली वार्ता। (टॉपिकल टॉक)।
सामर पुं० (हि) दे० 'समर'। वि० समर का। युद्ध सम्बन्धी।
सामरथ स्त्री० (हि) दे० 'सामर्थ्य'।
सामराधिप पुं० (सं) सेनापति। (कमांडर)।
सामरिक वि० (सं) समर या युद्ध से सम्बन्ध रखने वाला।
सामरिकता स्त्री० (सं) १-युद्ध। लड़ाई। २-युद्ध के कामों में लगा रहना।
सामरेय वि० (सं) दे० 'सामरिक'।
सामर्थ पुं० (हि) दे० 'सामर्थ्य'।
सामर्थ्य पुं० (सं) १-कुछ कर सकने की शक्ति। २-योग्यता। ३-शब्दों की व्यंजना शक्ति। ४-व्याकरण में शब्दों का परस्पर सम्बन्ध।
सामर्थ्यहीन वि० (सं) निर्बल। कमजोर।
सामवाद पुं० (सं) मधुर वचन।
सामवायिक वि० (सं) १-समवाय सम्बन्धी। २-समूह या झुण्ड सम्बन्धी। पुं० वजीर। मन्त्री।
सामवायिकराज्य पुं० (सं) वे राज्य जो किसी युद्ध निमित्त मिल गये हों।
सामविद् पुं० (सं) सामवेद का अच्छा ज्ञाता।
सामवेद पुं० (सं) चार वेदों में तीसरा जिसमें गाये जाने वाले स्तोत्र हैं।
सामवेदी पुं० (सं) सामवेद का पंडित।
सामसाली पुं० (हि) राजनीतिज्ञ। साम, दाम, द और भेद अंगों को राजनीति में जानने वाला।
सामस्त वि० (हि) दे० 'समस्त'।
सामहिं अव्य० (हि) दे० 'समहिं'।
सामहि अव्य० (हि) सामने। सम्मुख।
सामां पुं० (हि) दे० 'सामा'।
सामा पुं० (हि) १-साँवाँ। २-सामान। स्त्री० दे 'श्यामा'।
सामाजिक वि० (सं) सारे समाज से सम्बन्ध रख वाला। समाज का। (सोशल)। पुं० काव्य नाट आदि का श्रोता या दर्शक।
सामाजिकव्यवस्था स्त्री०(सं) समाज के निर्माण आ का तरीका। (सोशल ऑर्डर)।
सामाजसुरक्षा स्त्री० (सं) चोर डाकुओं से सुरक्ष तथा बेकारी आदि दूर करने की व्यवस्था। (सोश सिक्यूरिटी)।
सामान पुं० (फा) १-सामग्री। असबाब। २-उपक्र आयोजन।
सामानग्रामिक वि० (सं) एक ही गाँव के रहने वा
सामानेजंग पुं० (फा) लड़ाई के काम आने वाल युद्ध सामग्री।
सामानेसफर पुं० (फा) सफर में काम आने वाल आवश्यक वस्तुएँ।
सामान्य वि० (सं) १-जिसमें कोई विशेषता न हो। २-साधारण। ३-मध्यक। पुं० १-समानता। बरा बरी। २-किसी जाति या प्रकार की सब वस्तुओं पाया जाने वाला एक सा गुण। ३-साहित्य में एव अलंकार विशेष।
सामान्यज्ञान पुं० (सं) मामूली बातों का ज्ञान।
सामान्यतः अव्य० (सं) दे० 'सामान्यतया'।
सामान्यतया अव्य० (सं) साधारण या मामूली तौर पर।
सामान्यनायिका स्त्री० (सं) वेश्या।
सामान्यभविष्यत् पुं० (सं) भविष्य-क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है।
सामान्यभूत पुं० (सं) क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है तथा भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती, जैसे—गया।
सामान्यलक्षण पुं० (सं) वह गुण जो किसी एक सामान्य को देख कर उसी के अनुसार उस जाति के अन्य सब पदार्थों को प्राप्त होते हैं।
सामान्यवनिता स्त्री० (सं) वेश्या।
सामान्य-वर्तमान पुं० (सं) वर्तमान क्रिया का वह

रूप जिसमें कर्त्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना सूचित होता है। जैसे—'खाता है'।
सामान्यविधि त्रि० (सं) साधारण कानून, विधि या आज्ञा। २-किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश या राष्ट्र के निवासियों का आचरण या व्यवहार प्रचलित होता है। (कॉमन लॉ)।
सामासिक वि० (सं) समास से सम्बन्ध रखने वाला। समास का।
सामिष वि० (सं) १-आमिष सहित। निरामिष का उल्टा। २-मांसयुक्त।
सामी पुं० (हि) दे० 'स्वामी'। स्त्री० दे० 'शामी'।
सामीप्य पु० (सं) १-समीप का भाव। निकटता। २-एक प्रकार की मुक्ति।
सामुम्हि स्त्री० (हि) दे० 'समझ'।
सामुदायिक वि० (सं) समुदाय का। सामूहिक।
सामुदायिक योजना स्त्री० (सं) शिक्षा प्रसार, पथ-निर्माण कुएँ या नल लगाने तथा कृषिसुधार संबंधी वह कार्य या योजनायें जिनको जनता सामूहिक रूप से पूरा करती हो। (कम्युनिटी प्रोजेक्ट)।
सामुद्र वि० (सं) समुद्र का। पु० १-समुद्र-फेन। २-समुद्र से निकला नमक। ३-समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला व्यवसायी। ४-नारियल। ५-नाविक।
सामुद्रक पुं० (सं) १-समुद्र से निकला नमक। २-दे० 'सामुद्रिक।
सामुद्रज्ञ पु० (सं) दे० 'सामुद्रविद्'।
सामुद्र बंधु पु० (सं) चन्द्रमा।
सामुद्रविद् वि०(सं) शरीर के चिह्नों को देखकर शुभा-शुभ बताने की विद्या जानने वाला।
सामुद्रिक वि० (सं) समुद्र सम्बन्धी। पुं० वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य के शारीरिक लक्षणों विशेषतः हथेली को देखकर शुभ या अशुभ फल बताए जाते हैं। २-इस विद्या का जानकार।
सामुहीं अव्य० (हि) सामने। सम्मुख। पुं० अग्रभाग सामना।
सामुहें अव्य० (हि) दे० 'सामुहीं'।
सामूहिक वि० (सं) समूह का। समूह से सम्बन्ध रखने वाला।
सामोद वि० (सं) १-प्रसन्न। २-सुगन्धित।
सामोपचार पुं० (सं) दे० 'सामोपाय'।
सामोपाय पु० (सं) कठोर उपाय काम में न लाकर नरम उपायों से काम निकालना।
साम्मत्य पुं० (सं) सम्मति का भाव।
साम्मुख्य पुं० (सं) दर्शनीय होने का भाव। विद्य-मानता।
साम्य पुं० (सं) समानता।
साम्यतंत्र पुं० (सं) दे० 'साम्यवाद'।
साम्यवाद पुं० (सं) मार्क्स द्वारा चलाया हुआ एक सिद्धान्त जिसके अनुसार ऐसे समाज की स्थापना होनी चाहिए जिसमें वर्गभेद न हो तथा सरकार की सम्पत्ति पर सब का समान अधिकार हो। (कम्यूनिज्म)।
साम्यवादी पुं०(सं) साम्यवाद सिद्धान्त का अनुयायी (कम्यूनिस्ट)।
साम्यावस्था स्त्री० (सं) वह स्थिति जिसमें परस्पर विरोधी शक्तियां इतनी तुली हुई हों कि कोई अपना प्रभाव डालकर कोई विकार उत्पन्न न कर सके। (इक्वीलिब्रियम)।
साम्यावस्थान पु० (सं) सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों की समावस्था।
साम्राज्य पु०(सं) १-वह बड़ा राज्य जिसके आधीन बहुत से देश हों तथा जिसमें एक राष्ट्र का शासन हो। सार्वभौम राज्य। (एम्पायर)। २-आधिपत्य। पूर्णाधिकार।
साम्राज्यलक्ष्मी स्त्री० (सं) तंत्र के अनुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी जाती है।
साम्राज्यवाद पु० (सं) साम्राज्य को बनाये रखने तथा उसको निरन्तर बढ़ाने के लिए दूसरे राज्यों को अपने आधीन करने का सिद्धान्त। सैनिक बल या छल कपट से दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिला लेने की नीति। (इम्पीरियेलिज्म)।
[illegible] साम्राज्यवाद के सिद्धांत पर
[illegible]
[illegible]
में ब्रिटेन के राष्ट्रमंडल के देशों में अन्य देशों की तुलना में आयात या निर्यात कर लगाकर अधि-मान्यता देने की नीति। (इम्पीरियल प्रिफरेंस)।
साम्हने अव्य० (हि) दे० 'सामने'।
सायं पुं० (सं) दिन का अंतिम भाग। संध्या। शाम २-बाण। तीर।
सायंकाल पुं० (सं) संध्याकाल। शाम। संध्या।
सायंकालिक वि० (सं) दे० 'सायंकालीन'।
सायंकालीन वि० (सं) संध्या के समय का। शाम का
सायंगृह पु० (सं) वह जो सन्ध्या समय जहां पहुँचता हो वहीं घर बना लेता हो।
सायनिवास पु० (सं) वह विश्रामघर जहां संध्या को ठहरा जाता है।
सायप्रात. अव्य० (सं) सुबह-शाम।
सायभोजन पु० (सं) ब्यालू।
सायसंध्या स्त्री० (सं) सायंकाल के समय की जाने वाली संध्या।
सायक पुं०(सं) १-बाण। तीर। खड्ग। ३-पांच की संख्या। ४-एक वर्णवृत्त।
सायकपुङ्ख पु० (सं) बाण का पङ्ख

सायत स्त्री० स्त्री० (हि) दे० 'सायत'।
सायन पुं० (सं) सूर्य की एक गति।
सायवान पुं० (फा) मकान के आगे धूप से बचने के लिए टीन आदि का छाजन। बरामदा।
सायम वि० (अ) रोजा या व्रत रखने वाला।
सायम् अव्य० (सं) शाम के समय।
सायर पु० (हि) सागर। पुं० (अ) १-वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २-अतिरिक्त फुटकर आय। वि० (अ) फुटकर। प्रकीर्णक।
सायरखर्च पुं० (अ) फुटकर खर्च।
सायल पु० (अ) १-प्रश्नकर्त्ता। २-भिखारी। फकीर ३-प्रार्थना करने वाला। ४-न्यायालय में प्रार्थना-पत्र देने वाला। ५-उम्मीदवार।
साया पुं० (फा) १-छाया। छांह। २-परछाईं। ३-भूत-प्रेत आदि। ४-असर। प्रभाव। पुं० (अ) १-एक जनाना पहनावा जो घाघरे जैसा होता है। २-पेटीकोट।
सायादार वि० (फा) छायायुक्त।
सायुज्य पुं० (सं) १-मिलन। योग। २-एक प्रकार की मुक्ति।
सारंग पुं० (सं) १-एक प्रकार का मृग। २-श्येन। बाज। ३-शंख। ४-मयूर। ५-सूर्य। ६-भ्रमर। ७-हंस। ८-कमल। ९-कपूर। १०-चन्द्रमा। ११-घोड़ा १२-स्वर्ण। १३-बाण। १४-दीपक। १५-श्रीकृष्ण १६-रात्रि। १७-स्त्री। १८-हाथी। १९-विष्णु भगवान का धनुष। २०-भूमि। २१-स्त्री। २२-बाल। केश। २३-सिंह। २४-सर्प। २५-मेंढक। २६-कामदेव। २७-कुच। स्तन। २८-छप्पय छन्द का एक भेद। २९-कोयल। ३०-कागज। वि० १-रङ्गा हुआ। २-सुन्दर। ३-सरस।
सारंगचर पुं० (सं) कांच। शीशा।
सारंगज पु० (सं) मृग। हिरन।
सारंगजदृशी स्त्री० (सं) मृग के समान नेत्र वाली सुन्दर स्त्री।
सारंगनाथ पुं० (सं) सारनाथ का प्राचीन पौराणिक नाम।
सारंगपाणि पुं० (सं) विष्णु।
सारंगपानि पुं० (हि) विष्णु।
सारंगलोचना वि० (सं) मृगनयनी स्त्री।
सारंगा स्त्री० (हि) १-एक रागिनी का नाम। २-एक प्रकार की नाव।
सारंगाक्षा स्त्री० (सं) मृगनयनी स्त्री।
सारंगिक पुं० (सं) १-चिड़ीमार। बहेलिया। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, यगण और सगण होते हैं।
सारंगिया पुं० (हि) वह जो सारंगी बजाता हो।
सारंगी स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध वाद्ययन्त्र।
सार पुं० (सं) १-तत्व। सत्व। २-तात्पर्य। निष्कर्ष ३-रस। अर्क। ४-जल। ५-मूद्दा। ६-वह भूमि जिस पर दो फसलें होती हैं। ७-मज्जा। ८-धन। ९-तलवार। १०-शक्ति। ११-शरीरस्थ आठ स्थिर पदार्थ त्वक, रक्त मांसादि। १२-एक वर्णवृत्त १३-एक अर्थालंकार। १४-अनार का पेड़। १५-मूंग। वि० १-उत्तम। २-दृढ़। ३-न्याय। पुं० (हि) १-मैना। २-पालन-पोषण। ३-शय्या। ४-साला। ५-संभाल।
सारखा वि० (हि) सदृश। समान।
सारगर्भ वि० (सं) दे० 'सारगर्भित'।
सारगर्भित वि० (सं) जिसमें सार या तत्व हो। तत्वपूर्ण।
सारग्राही वि० (सं) वस्तुओं या विषयों का सार ग्रहण करने वाला।
सारणि स्त्री० (सं) १-छोटी नदी। २-धारा। ३-ढंग रीति।
सारणिक पुं० (सं) पथिक। राहगीर।
सारणी स्त्री० (सं) १-छोटी नदी। २-तालिका। (टेबल)।
सारथि पुं० (सं) १-रथ चलाने वाला। २-समुद्र। सागर।
सारथी पु० (हि) दे० 'सारथि'।
सारद स्त्री० (हि) सरस्वती। शारदा। वि० (सं) सार देने वाली। शरद्-सम्बन्धी। शारदी।
सारदी वि० (हि) दे० 'शारदीय'। स्त्री० (सं) जल-पीपल।
सारदूल पुं० (हि) दे० 'शार्दूल'।
सारना क्रि० (हि) १-पूर्ण या समाप्त करना। २-साधना। बनाना। ३-सुशोभित करना। ४-प्रहार करना। ५-सँभालना।
सारनाथ पुं० (सं) बनारस से चार मील दूर उत्तर पश्चिम में एक स्थान जहां पर शिव का मन्दिर तथा एक बहुत बड़ा बौद्ध स्तूप है।
सारभाटा पुं० (सं) समुद्र में ज्वार आने के बाद उसके पानी का फिर से पीछे हटना।
सारमेय स्त्री० (सं) १-कुत्ता। २-सरमा की सन्तान। अक्रूर के भाई का नाम।
सारमेय चिकित्सा स्त्री० (सं) कुत्ते के काटने का इलाज।
सारमेयी स्त्री० (सं) कुतिया।
सारल्य पुं० (सं) सरलता।
सारवान वि० (सं) १-रसदार। २-मजबूत। कठोर। ठोस। ३-कीमती।
सारस पुं० (सं) १-एक प्रकार का लम्बी टांगों वाला बड़ा पक्षी। २-चन्द्रमा। ३-हंस। ४-कमल। ५-कमर में बांधने का एक स्त्रियों का आभूषण। ६-

छप्पय छन्द का एक भेद । ७-अनल।
सारसप्रिया स्त्री० (सं) सारसी।
सारसुता स्त्री० (हि) यमुना।
सारसुती स्त्री० (हि) सरस्वती।
सारस्य वि० (सं) बहुत रस वाला। पुं० रसदार होने का भाव।
सारस्वत पुं० (सं) १-पंजाब में सरस्वती नदी के किनारे प्राचीन देश का नाम। २-इस प्रदेश के निवासी। ३-इस प्रदेश में रहने वाले ब्राह्मण। वि० १-सारस्वत प्रदेश का। २-विद्वानों का ३-सरस्वती सम्बन्धी।
सारस्वत कल्प पुं० (सं) सरस्वती पूजा सम्बन्धी एक कृत्य विशेष।
सारस्वतव्रत पुं० (सं) सरस्वती देवी के उद्देश्य से किया जाने वाला व्रत।
सारस्वतोत्सव पुं० (सं) सरस्वती देवी की पूजा के उपलक्ष में मनाया जाने वाला एक उत्सव।

की इच्छा करने वाला।
सारि पुं० (सं) १-जुआ खेलने का पासा। २-चौपड़ खेलने वाला। ३-गोटी।
सारिउँ स्त्री० (हि) मैना।
सारिका स्त्री० (सं) १-मैना नामक पक्षी। २-सितार आदि का वह उठा हुआ भाग जिस पर तार टिके होते हैं।
सारिकामुख पुं० (सं) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।
सारिखा वि० (हि) दे० 'सरीखा'।
सारिणी स्त्री० (सं) १-कपास। २-[illegible] ३-घमासा। ४-रक्तपुनर्नवा।
सारिफलक पुं० (सं) १-चौपड़ [illegible] चौपड़ का पासा।
सारिवा स्त्री० (सं) अनन्तमूल
सारी स्त्री० (सं) १-मैना। २- [illegible] स्त्री० (हि) साड़ी। पुं० (हि) [illegible]
सारूप्य पुं० (सं) समानता। २- [illegible] जिसमें भक्त या उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है।
सारो पुं० (हि) एक प्रकार का धान। स्त्री० (हि) मैना।
सारोपा स्त्री० (सं) साहित्य में वह लक्षणा जिसमें एक पदार्थ का दूसरे में आरोप होता है।
सार्थ पुं० (सं) १-समूह। झुण्ड। २-वणिकों का दल। ३-जन्तुओं का झुण्ड। ४-व्यापारिक माल। वि० अर्थसहित।
सार्थक वि० (सं) १-अर्थसहित। २-सफल। ३-गुणकारी।
सार्थकता स्त्री० (सं) १-सफलता। २-सार्थक होने का भाव।
सार्थघ्न पुं० (सं) लुटेरा। डाकू। वि० कारवां को बरबाद कर देने वाला।
सार्थपति पुं० (सं) व्यापारी। वणिक।
सार्थपाल पुं० (सं) पथिकों या कारवां की रक्षा करने वाला।
सार्थभृत् वि०(सं) धनी। मालदार। पुं० कारवां का नेता।
सार्थहा वि० (सं) कारवां को लूटने वाला। पुं० डाकू। लुटेरा।
सार्थहीन वि० (सं) जो अपने कारवां से बिछुड़ गया हो।

हुआ।
सार्व पुं० (सं) १-बुद्ध। २-जिन। वि० सबसे सम्बन्ध रखने वाला।
सार्वकालिक वि० (सं) जो सब काला में होता हो।
सार्वजनिक वि० (सं) सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला।
सार्वजनिकनिर्माण-विभाग पुं० (सं) लोक-निर्माण-विभाग। (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट)।
सार्वजनिक व्यवस्था स्त्री०(सं) जनता या सर्वसाधारण में शांति बनाए रखने के लिए की गई व्यवस्था। (पब्लिक ऑर्डर)।
[illegible]
रखने वाला या उनमें होने वाला।
सार्वभौमिक वि० (सं) सारी पृथ्वी पर होने वाला। उस पर फैला हुआ।
सार्वरात्रिक वि० (सं) सारी रात होने वाला।
सार्वलौकिक वि० (सं) १-सार्वजनिक। २-जो सारे संसार में व्याप्त हो।
सार्वत्रिक वि० (सं) सब स्थानों में

सार्षप पुं० (सं) १-सरसों । २-सरसों का तेल । ३-सरसों का साग । वि० सरसों-सम्बन्धी ।
सालंकार वि० (सं) १-अलंकार युक्त । २-आभूषित सजा हुआ ।
सालंब वि० (सं) जिसे कोई सहारा हो ।
साल पुं० (फा) वर्ष । बरस । स्त्री० (हि) १-छेद । सुराख । २-घाव । पीड़ा । ३-शाला । ४-लकड़ी का चोकोर सूराख । (सं) १-जड़ । मूल । २-राल । धूना । ३-वृक्ष । ४-किला । कोट । ५-सियाल । ६-एक प्रकार की मछली ।
सालआइंदा पुं० (फा) आने वाला वर्ष ।
सालक वि० (हि) कष्ट देने वाला । सालने वाला ।
सालग्राम पुं० (हि) दे० 'शालग्राम' ।
सालगिरह स्त्री० (फा) जन्मदिन । बरसगांठ ।
सालगुजश्ता पुं० (फा) बीता हुआ वर्ष ।
सालतमाम पुं० (फा) वर्ष का अन्त ।
सालतमामी स्त्री० (फा) सालाना विवरण ।
सालन पुं० (हि) पके हुए साग-मांस की तरकारी । (सं) सालवृक्ष की राल ।
सालना क्रि०(हि)१-कसकना । २-चुभना । ३-लकड़ी आदि में छेद करके उसमें दूसरी लकड़ी फँसाना । ४-कष्ट देना ।
सालनामा पुं० (फा) किसी पत्रिका का वार्षिक अंक
सालममिस्री स्त्री० (हि) सुधामूली ।
सालरस पुं० (सं) सालवृक्ष से निकलने वाली राल धूना ।
सालवाहन पुं० (सं) शालिवाहन राजा का एक नाम
सालसा पुं० (अ) खून साफ करने का एक प्रकार का काढ़ा ।
साला पुं० (हि) १-अपनी पत्नी का भाई । २-एक गाली । (देश) मैना । सारिका ।
सालातुरीय पुं० (हि) दे० 'शालतुरीय' ।
सालाना वि० (फा) वार्षिक ।
सालार पुं० (फा) १-मार्ग दर्शक । २-अगुआ । प्रधान नेता ।
सालारेजंग पुं० (फा) सेनापति ।
सालि पुं० (हि) दे० 'शालि' ।
सालिग्राम पुं० (हि) दे० 'शालग्राम' ।
सालिम वि० (अ) पूर्ण । पूरा । सम्पूर्ण ।
सालियाना वि० (हि) दे० 'सालाना' ।
सालिस वि० (अ) तीसरा । तृतीय । पुं० पंच । दो व्यक्तियों में फैसला करने वाला तीसरा व्यक्ति ।
सालिसनामा पुं० (अ) दे० 'पंचनामा' ।
साली स्त्री० (फा) खेती के औजारों की मरम्मत के लिये दी जाने वाली सालाना मजदूरी । २-वह भूमि जो सालाना देन के हिसाब से ली जाती है (हि) पत्नी की बहन ।
सालोक्य पुं० (सं) १-दूसरे के साथ एक ही स्थान या लोक में निवास । २-वह मुक्ति जिसमें प्राणी भगवान के लोक को प्राप्त होता है ।
सावंत पुं० (हि) दे० 'सामंत' ।
साव पुं०(हि) दे० 'साहू' । (डिं) बालक । पुत्र ।
सावक पुं० (हि) १-दे० 'शावक' । २-दे० 'श्रावक'
सावकाश पुं० (सं) १-अवकाश । छुट्टी । २-अवसर अव्य० फुर्सत या सुभीते से ।
सावचेत वि० (हि) सतर्क । सावधान ।
सावचेती पुं० (हि) सावधानी । सतर्कता ।
सावज पुं० (हि) दे० 'साउज' ।
सावत वि० (हि) १-डाह । ईर्ष्या । २-सौतिया डाह
सावधान वि० (सं) सचेत । सतर्क । होशियार ।
सावधानता स्त्री० (सं) सतर्कता । होशियारी ।
सावधि वि० (सं) अवधियुक्त । जिसमें या जिसकी कुछ अवधि हो ।
सावधि-अधि स्त्री० (सं) वह गिरवी जिसे छुड़ा लेने की अवधि हो ।
सावधिक वि० (सं) निश्चित समय या काल के बाद होने वाला या निकलने वाला (पत्र) । (पीरिओडिकल) ।
सावधिक-पत्र पुं० (सं) वह पत्र जिसका प्रकाशन एक निश्चित काल के पश्चात होता हो । (पीरिओडिकल) ।
सावधिक प्रस्फोट पुं०(सं) वह बम जो एक निश्चित समय के बाद अपने आप ही फट जाता है (टाइम-बॉम्ब) ।
सावधि-निक्षेप पुं० (सं) बैंक का वह खाता जिसमें निश्चित काल तक के लिए धन जमा कराया जाता है । (फिक्स्ड डिपोजिट) ।
सावन पुं० (हि) १-अषाढ़ के बाद का महीना । श्रावण । २-इस महीने में गाया जाने वाला एक गीत । ३-कजली नामक गीत । (सं) १-यज्ञ की सामग्री । २-वरुण । ३-पूरे दिन और रात का समय ।
सावनी वि०(हि) सावन-सम्बन्धी । पुं० १-एक प्रकार का चावल । २-भादों में बोया जाने वाला तम्बाकू स्त्री० दे० 'सावन' ।
सावर पुं० (हि) १-एक प्रकार का लोहे का लम्बा औजार । २-एक मृग । (सं) १-अपराध । २-पाप ३-एक मृग विशेष ।
सावर्ण्य पुं०(सं)१-रंग की समानता । २-श्रेणी तथा जाति की एकरूपता ।
सावशेष वि० (सं) १-जिसमें कुछ शेष हो । २-अपूर्ण अधूरा ।
सावशेष-जीवित वि० (सं) जिसकी आयु शेष हो ।
सावशेष-बंधन वि०(सं) जिसके बन्धन अभी न टूटे

हो।

सावित्री स्त्री० (सं) १-गायत्री। २-सरस्वती। ३-सत्यवान की पत्नी जो अपने सतीत्व के कारण प्रसिद्ध है। ४-यमुना नदी। ५-सरस्वती। मुहागिन ६-आंवला। ७-ब्रह्मा की पत्नी।

सावित्रीव्रत पुं० (सं) ज्येष्ठ की अमावस्या को पति की दीर्घायु के लिये स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक व्रत।

सावित्रेय पुं० (सं) यम।

साश्चर्य वि०(सं)१-अद्भुत। विलक्षण। २-आश्चर्य-चकित।

साश्रु अव्य० (सं) आंखों में आंसू भरके। वि० जिसमें आंसू भरे हुए हों।

साष्टांग वि० (सं) आठों अङ्ग से।

साष्टांग प्रणाम पुं० (सं) सिर, हाथ, पैर, हृदय, आंख, जांघ, वाचा तथा मन इन आठों से पर लेटकर किया गया प्रणाम।

साष्टांगयोग पुं० (सं) वह योग जिसके नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि ये आठों अंग हों।

सास स्त्री० (हि) पति या पत्नी की माता।

सासति स्त्री० (हि) १-दण्ड। सजा। २-शासन।

सासन पुं० (हि) दे० 'शासन'।

सासना पुं० (हि) दे० 'शासन'।

सासरा पुं० (हि) दे० 'ससुराल'।

साहा स्त्री० (हि) १-सन्देह। शक। २-त्रास। सांस

सासु स्त्री० (हि) दे० 'सास'।

सासुर पुं० (हि) १-ससुर। २-ससुराल।

साह पुं० (हि) १-भला आदमी। साधु। २-साहू-कार। धनी। ३-शाह। ४-दरवाजे की चौखट का लकड़ी या पत्थर का लम्बा टुकड़ा जो दोनों ओर लगा होता है।

साहचर्य पुं० (सं) १-साथ। संग। २-सहचारिता।

साहजिक वि० (सं) १-स्वाभाविक। २-स्वभाव या सहज बुद्धि से होने वाला।

साहनी स्त्री० (हि) १-सेना। फौज। २-साथी। ३-संगी। पुं० मध्यकालीन भारत में एक प्रकार के राज कर्मचारी।

साहब पुं० (अ) १-प्रभु। स्वामी। २-मित्र। ३-ईश्वर ४-एक सम्मानसूचक शब्द। महाशय। ५-यूरोपियन गोरा।

साहबजादा पुं० (फ) १-भले आदमी का लड़का। २-पुत्र। बेटा।

साहब-बहादुर पुं० (फ) १-अंग्रेज पदाधिकारी। २-अंग्रेजों की तरह रहने वाला पदाधिकारी।

साहब-सलामत स्त्री (फ) आपस में मिलने के समय होने वाला अभिनन्दन।

साहबाना वि० (फ) साहब सम्बन्धी। साहब का।

साहबी स्त्री० (फ) १-प्रभुता। २-बड़ाई। ३-साहब होने का भाव।

साहबीयत स्त्री० (फ) अंग्रेजों की चालढाल।

साहबेकबूल स्त्री० (फ)एक प्रकार की सफेद रंगवाली बुलबुल।

साहस पुं० (सं) १-वह मानसिक दृढ़ता जो कोई बड़ा काम करने के लिये प्रवृत्त करती है। हिम्मत। २-बलपूर्वक दूसरे का धन लेना। ३-कोई बुरा काम

साहसिक वि० (सं) १-निडर। निर्भीक। २-हठीला। पुं० १-पराक्रमी। साहस करने वाला। २-डाकू। चोर।

साहसी वि० (सं) साहस अथवा हिम्मत रखने वाला। दिलेर।

साहस्र वि० (सं) सहस्र सम्बन्धी। हजार का।

[illegible] भाव [illegible] लेखों आदि का समूह जिसमें स्थायी तत्व और गूढ़ विचारों का सुन्दर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो। (लिटरेचर)। ३-वे सभी ग्रन्थ जिनका सौन्दर्य, गुण, रूप अथवा भावुकतापूर्ण प्रभावों के कारण समाज में आदर होता हो। ४-किसी विषय या वस्तु से सम्बन्ध रखने वाले सारे ग्रन्थों तथा लेखों आदि का समूह। ५-गद्य एवं पद्य की शैली तथा लेखों और काव्यों के गुण-दोष, भेद-प्रभेद, सौन्दर्य या नायिका-भेद तथा अलङ्कारादि से सम्बन्धित ग्रन्थों का समूह। ६-किसी विषय या वस्तु से सम्बन्ध रखने वाली समस्त बातों का विवरण जो प्रायः विज्ञापन के रूप में बँटता है (लिटरेचर)।

साहित्यकार पुं० (सं) वह जो साहित्य की सेवा या रचना करता हो।

साहित्यशास्त्र पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें साहित्य के विभिन्न अंगों की विवेचना की गई हो।

साहित्यादि महाविद्यालय पुं० (सं) वह महाविद्यालय जहां साहित्य इतिहास आदि विषयों की शिक्षा पढ़ाई जाती हो। (आर्ट्स कालेज)।

साहित्यिक वि० (सं) साहित्य-सम्बन्धी।

साहित्यिक उपनाम पुं० (सं) किसी रचना, ग्रन्थ आदि के लेखक द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला बनावटी नाम (पेन-नेम)।

साहिनी स्त्री० (हि) दे० 'साहनी'।

साहिब पुं० (हि) दे० 'साहब'।

साहियाँ पुं० (हि) दे० 'साँई'।

साहिल पुं० (फ) १-समुद्र या तट। २-किनारा।

साही पुं० (हि) एक प्रसिद्ध चौपाया जिसके शरीर पर लम्बे कांटे होते हैं।
साहु पुं० (हि) १-सज्जन। २-सेठ।
साहुल पुं० (हि) एक प्रकार का यन्त्र जिससे दीवार की सीध नापी जाती है।
साहू पुं० (हि) दे० 'साहु'।
साहूकार पुं० (हि) बड़ा महाजन या व्यापारी। कोठी वाला।
साहूकारा पुं० (हि) १-महाजनी कारबार। २-वह स्थान जहां ऐसा कारबार होता है।
साहूकारी स्त्री० (हि) साहूकार होने का भाव।
साहब पुं० (हि) दे० 'साहब'।
साहें स्त्री० (हि) भुजदंड। बाजू। अव्य० सामने सम्मुख।
सिउँ अव्य० (हि) दे० 'स्यों'।
सिकना क्रि० (हि) सेंका जाना। सिकना।
सिगरफ पुं० (फा) ईंगुर।
सिगरौर पुं० (हि) प्रयाग के पास एक स्थान जो शृङ्गवेरपुर माना जाता है।
सिगल स्त्री० (देश) एक प्रकार की मछली। पुं० (हि) दे० 'सिगनल'।
सिगा पुं० (हि) तुरही नामक बाजा। रणसिंगा।
सिंगार पुं० (हि) १-सजावट। सज्जा। बनाव। २-शोभा। ३-शृङ्गार-रस।
सिंगारदान पुं० (हि) एक प्रकार का छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृङ्गार का सामान रखा जाता है।
सिंगारना क्रि० (हि) १-सजाना। शृङ्गार करना। २-सजाया जाना।
सिंगार-मेज स्त्री० (हि) एक प्रकार की दराजदार मेज जिस पर एक बड़ा दर्पण लगा होता है। (ड्रेसिंग-टेबल)।
सिंगार-हाट स्त्री० (हि) वह बाजार जिसमें (सजकर) वेश्याएँ बैठती हैं।
सिंगारिया वि०(हि) देवमूर्त्ति का शृङ्गार करने वाला।
सिंगारी वि० (हि) शृङ्गार करने वाला।
सिंगिया पुं० (हि) हल्दी की तरह का एक पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है।
सिंगी पुं० (हि) फूँक कर बजाया जाने वाला एक बाजा। स्त्री०१-एक प्रकार की मछली। २-सींग की वह नली जिसके द्वारा जर्राह लोग दूषित रक्त चूस कर निकालते हैं।
सिंगौटी स्त्री० (हि) १-वह छोटी पिटारी जिसमें स्त्रियां शृङ्गार की सामग्री रखती हैं। २-बैल के सींग पर पहनने का एक आभूषण।
सिंघ पुं० (हि) दे० 'सिंह'।
सिंघाण पुं० (हि) १-नाक की रेंट या श्लेष्मा। २-लोहे का जंग या मुरचा।
सिंघल पुं० (हि) दे० 'सिंहल'।
सिंघली वि० (हि) 'सिंहली'।
सिंघाड़ा पुं० (हि) १-पानी में फैलने वाली एक लता जिसका तिकोना फल मीठा होता है। २-समोसा। ३-इस प्रकार का बेलबूटा।
सिंघाण पुं० (सं) दे० 'सिंघाण'।
सिंघासन पुं० (हि) 'सिंहासन'।
सिंघिनी स्त्री० (हि) शेरनी।
सिंघी स्त्री० (हि) १-सोंठ। २-एक छोटी मछली।
सिंघेला पुं० (हि) शेर का बच्चा।
सिंचन पुं० (सं) १-सींचना। २-जल छिड़कना।
सिंचना क्रि० (हि) सींचा जाना।
सिंचाई स्त्री० (हि) सींचने का काम या मजदूरी
सिंचाना क्रि० (हि) १-पानी छिड़कवाना। २-सींचने का काम कराना।
सिंचित वि० (सं) १-सींचा हुआ। २-भीगा हुआ तर।
सिंचौनी स्त्री० (हि) दे० 'सिंचाई'।
सिंजा स्त्री० (सं) गहनों आदि के आपस में टकराने से उत्पन्न होने वाला स्वर।
सिंजित पुं० (सं) दे० 'सिंजा'।
सिंदन पुं० (हि) स्यन्दन। रथ।
सिंदूर पुं०(सं) ईंगुर का पिसा हुआ चूर्ण जिसे हिन्दू सुहागनें मांग में भरती हैं।
सिंदूरतिलक पुं० (सं) सिंदूर का तिलक।
सिंदूरतिलका स्त्री० (सं) सधवा स्त्री।
सिंदूरदान पुं० (सं) विवाह के अवसर पर वर का वधू की मांग में सिंदूर भरना।
सिंदूरचंदन पुं० (सं) दे० 'सिंदूरदान'।
सिंदूरवंदन पुं० (सं) दे० 'सिंदूरदान'।
सिंदूरिया वि० (हि) सिंदूर के रंग का।
सिंदूरी वि० (हि)सिंदूर के रंग का। पीला मिला गहरा लाल। स्त्री० (हि) लाल हल्दी।
सिंदौरा पुं० (हि) सिंदूर रखने की डिबिया।
सिंध पुं० (हि)१-पाकिस्तान का एक प्रान्त। २-पंजाब की एक नदी। ३-भैरव राग की एक रागिनी।
सिंधी स्त्री० (हि) सिन्ध प्रान्त की भाषा। पुं० सिंध देश का निवासी।
सिंधु पुं० (सं) १-नद। बड़ी नदी। २-समुद्र। ३-सिन्ध प्रदेश। ४-एक राग। ५-सिन्धु प्रान्त का एक निवासी। ६-पंजाब के पश्चिमी भाग की एक प्रसिद्ध नदी। स्त्री० यमुना में मिलने वाली एक छोटी नदी।
सिंधुजा स्त्री० लक्ष्मी।
सिंधुज वि० (सं) १-सागर से उत्पन्न। २-सिंधु देश में होने वाला। पुं० १-शंख। २-सेंधा नमक। ३-

पारा।

सिंधुजा स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-सीप।

सिंधुजन्मा वि० (सं) १-समुद्र से उत्पन्न। २-सिंधु देश में उत्पन्न।

सिंधुर पु० (सं) १-हाथी। २-आठ की संख्या।

सिंधुरमणि पुं० (सं) गजमुक्ता।

सिंधुरवदन पुं० (सं) गणेश।

सिंधुरगामिनी वि० (सं) गजगामिनी। (स्त्री)।

सिंधुसंगम पु० (सं) नदी का मुहाना।

सिंधुसुता स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-सीप।

सिंधोरा पु० (हि) सिंदूर रखने का डिब्बा।

सिंधोरी स्त्री० (हि) सिंदूर रखने की छोटी डिबिया।

सिंसपा स्त्री० (हि) शीशम का वृक्ष।

सिंह पुं० (सं) १-बिल्ली की जाति में सबसे अधिक

बड़ा फाटक।

सिंहध्वनि पु० (सं) दे० 'सिंहनाद'।

सिंहनाद पु० (सं) १-सिंह की गरज। २-युद्ध में वीरों की ललकार। ३-एक वर्णवृत्त। ४-शिव। ५-रावण के एक पुत्र का नाम।

सिंहपौर पु० (हि) सिंहद्वार।

सिंहल पु० (सं) १-एक द्वीप जो भारत के दक्षिण में है जिसे लोग प्राचीन लंका मानते हैं। २-इस द्वीप का निवासी।

सिंहली वि० (हि) सिंहल द्वीप का। पु० सिंहल द्वीप का निवासी। स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।

सिंहवाहना स्त्री० (सं) दुर्गादेवी।

सिंहवाहिनी स्त्री० (सं) दुर्गादेवी।

सिंहाण पु० (सं) दे० 'सिंघाण'।

सिंहान पुं० (हि) दे० 'सिंघाण'।

सिंहानक पुं० (सं) नाक का मल। रेंट।

सिंहारहार पु०(हि) दे० 'हारसिंगार'।

सिंहावलोकन पुं० (सं) १-सिंह के समान आगे पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २-संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन। ३-पद्य रचना में एक युक्ति जिसमें पहले चरण के अंत में के कुछ शब्द या वाक्य लेकर अगला चरण चलता है।

सिंहासन पुं० (सं) १-राजा या देवता के बैठने का आसन। २-एक प्रकार का चंदन।

सिंहासनभ्रष्ट वि०(सं) जिसे राजगद्दी से उतार दिया गया हो।

सिंहासनस्थ वि० (सं) पदस्थनशीन।

सिंहिका स्त्री० (सं) १-राहु की माता का नाम जो एक राक्षसी थी। २-एक प्रकार का छंद। ३-टेढ़े घुटने वाली लड़की। ४-वनमटा।

सिंहिकातनय पु० (सं) राहु।

सिंहिकापुत्र पु० (सं) राहु।

सिंहिकेय पु० (सं) राहु।

सिंहिनी स्त्री० (हि) शेरनी। सिंह की मादा।

सिंही स्त्री० (सं) १-सिंहनी। शेरनी। २-आर्यावर्त का एक भेद। ३-कुटज। ४-सिंघा नामक बाजा। ५-पीली कौड़ी।

सिंहोदरी वि० (सं) सिंह के समान पतली कमर वाली (स्त्री)।

सिअनि स्त्री० (हि) सीवन। सिलाई।

सिअरा वि० (हि) शीतल। ठण्डा।

सिआना क्रि० (हि) सिलाना।

नरेश का पुत्र था तथा जिसने मिश्र, ईरान, अफगानिस्तान तथा हिन्दुस्तान के सिंधु प्रदेश तक का भाग जीत लिया था।

सिकंदरा पु० (हि) रेल का सिगनल जो आने या जाने वाली गाड़ी का रास्ता साफ होने का संकेत देता है।

सिकड़ी स्त्री० (हि) १-किवाड़ की कुण्डी। सांकल। जंजीर। २-जंजीर के आकार का आभूषण। ३-करधनी।

सिकत स्त्री० (हि) बालू। सिकता।

सिकता स्त्री० (सं) १-बालू। रेत। २-चीनी। शर्करा। ३-एक प्रकार का प्रमेह।

सिकतामय वि० (सं) बालू या रेतयुक्त। पुं० बालू से बना तट या द्वीप।

सिकत्तर पु० (हि) किसी संस्था या सभा का मंत्री। (सेक्रेट्री)।

सिकर पु०(हि) शृगाल। गीदड़। स्त्री० जंजीर।

सिकली स्त्री० (सं) अस्त्रादि मांज कर साफ करने की क्रिया।

सिकलीगढ़ पुं० (सं) दे० 'सिकलीगर'।

सिकलीगर पु० (हि) तलवार तथा छुरी आदि पर धार देने वाला कारीगर।

सिकहर पु० (हि) छींका।

सिकहरा पु० (हि) छींका।

सिकार पु० (हि) दे० 'शिकार'।

सिकारी पु० (हि) दे० 'शिकारी'।

सिकुड़न स्त्री०(हि) सिकुड़ने के कारण पड़ा हुआ शिकन।

सिकुड़ना क्रि० (हि) १-सिमटना। संकुचित होना। २-बल या शिकन पड़ना। ३-तनाव के कारण छोटा होना।
सिकुरना क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।
सिकोड़ना क्रि०(हि) १-संकुचित करना। २-समेटना ३-तंग या संकीर्ण करना।
सिकोरना क्रि० (हि) दे० 'सिकोड़ना'।
सिकोरा पुं० (हि) कसोरा। सकोरा।
सिकोही वि० (हि) १-वीर। २-गर्वीला।
सिक्कड़ पुं० (हि) १-जंजीर। २-सांकल। ३-सिकड़ी।
सिक्कर पुं० (हि) दे० 'सिक्कड़'।
सिक्का पुं० (हि) १-मुहर। मुद्रा। छाप। ठप्पा। २-मुद्रा। टकसाल में ढला हुआ निर्दिष्ट मूल्य का धातु का टुकड़ा जो विनिमय का साधन होता है। रुपया-पैसा। ३-अधिकार। प्रभुत्व।
सिक्ख पुं० (हि) १-शिष्य। चेला। २-गुरु नानक के पथ का अनुयायी। स्त्री० १-सीख। २-शिखा। चोटी।
सिक्त वि०(स) १-सींचा हुआ। २-तर अथवा भीगा हुआ।
सिक्थ पुं० (सं) १-उबाले हुए चावल का दाना। २-भात का पिंड या ग्रास। ३-मोम। ४-मोतियों का गुच्छा। ५-नील।
सिखंडी पुं० (हि) दे० 'शिखंडी'।
सिख पु० (हि) दे० 'सिक्ख'।
सिखना क्रि० (हि) दे० 'सीखना'।
सिखर पुं० (हि) दे० 'शिखर'।
सिखरन स्त्री० (हि) दे० 'शिखरन'।
सिखलाना क्रि० (हि) दे० 'सिखाना'।
सिखवना क्रि० (हि) दे० 'सिखाना'।
सिखा स्त्री० (हि) दे० 'शिखा'।
सिखाना क्रि० (हि) १-शिक्षा या उपदेश देना। २-पढ़ाना। ३-घमकाना। दण्ड देना।
सिखापन पुं० (हि) १-शिक्षा। उपदेश। २-सिखाने का काम।
सिखावन पुं० (हि) शिक्षा। सीख।
सिखावना क्रि० (हि) दे० 'सिखाना'।
सिखिर पुं० (हि) दे० 'शिखर'।
सिखी पुं० (हि) १-दे० 'शिखी'। २-मुर्गा। ३-मोर
सिगनल पु० (प्र) १- दे० 'सिकंदरा'। २-संकेत।
सिगरा वि० (हि) सपूर्ण। सब। सारा।
सिगरेट पुं० (प्र) तम्बाकू से भरी हुई कागज की बत्ती जिसका धूँआ लोग पीते हैं।
सिगरो वि० (हि) दे० 'सिगरा'।
सिगरौ वि० (हि) दे० 'सिगरा'।
सिगार पुं० (पं) चुरुट।
सिचान पुं० (हि) बाज पक्षी।
सिचाना क्रि० (हि) दे० 'सिचाना'।
सिच्छक पुं० (हि) दे० 'शिक्षक'।
सिच्छा स्त्री० (हि) दे० 'शिक्षा'।
सिजदा पुं० (प्र) प्रणाम। दण्डवत्।
सिजदागाह पुं०(अ) सिजदा करने का स्थान।
सिजादर पुं० (हि) नाव आदि में पाल चढ़ाने रस्सा।
सिझना क्रि० (हि) आंच पर पकाना।
सिझाना क्रि० (हि) १-कष्ट देना। २-आंच पकाना।
सिटकिनी स्त्री०(हि) किवाड़ बन्द करने के लिए लो या पीतल का एक उपकरण। चिटकनी।
सिटपिटाना क्रि० (हि) १-मंद पड़ जाना। दब जा २-भयभीत या सकुचा कर चुप होना।
सिट्टी स्त्री० (हि) १-बहुत बढ़चढ़कर बोलना। २ डींग मारना।
सिट्ठी स्त्री० (हि) दे० 'सीठी'।
सिठाई स्त्री० (हि) १-फीकापन। नीरसता। २ मन्दता।
सिड़ स्त्री० (हि) पागलपन की सी अवस्था। सनक उन्माद। धुन।
सिड़पना पुं० (हि) १-पागलपन। २-सनक।
सिड़बिल्ला स्त्री० (हि) १-शरीर, वस्त्रादि से गन्द और पागल। २-मूर्ख। भोंदू।
सिड़ी वि० (हि) १-पागल। २-सनकी।
सितंबर पुं० (अ) अंग्रेजी साल का नवाँ महीना जो तीस दिन का होता है।
सित वि० (सं) १-सफेद। श्वेत। २-स्वच्छ। निर्मल साफ। पुं० १-शुक्रग्रह। २-शुक्लपक्ष। ३-मूली ४-चन्दन। ५-भोजपत्र। ६-सफेद तिल। ७-चांदी
सितकंठ वि० (सं) जिसकी गरदन सफेद हो। पुं० मुर्गाबी। (हि) महादेव। शिव।
सितकर पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-भीमसेनी कपूर।
सितकर्णी स्त्री० (सं) अड़ूसा। वासक।
सितकर्मा वि० (सं) जिसने पवित्र कर्म किये हों।
सितकाच पुं० (सं) १-बिल्लौर। २-हलकी शीशा
सितकुंजर पुं० (सं) १-इन्द्र। २-ऐरावत हाथी।
सितखंड पुं० (सं) मिश्री का डला।
सितगुंजा स्त्री० (सं) सफेद घुमची।
सितच्छद पुं० (सं) १-हंस। २-लाल। सहिंजन।
सितता स्त्री० (सं) सफेदी।
सिततुरग पुं० (सं) अर्जुन।
सितदर्भ पुं० (सं) श्वेतकुश।
सितदीधिति पुं० (सं) चन्द्रमा।
सितद्रु पुं० (सं) एक प्रकार की लता।
सितद्रुम पुं० (सं) १-अर्जुन (वृक्ष)। २-मोरट।

सितद्विज पुं० (सं) हंस।
सितधातु पुं० (सं) १-शुक्ल वर्ण की धातु। २-खड़िया मिट्टी।
सितपक्ष पुं० (सं) हंस।
सितपच्छ पुं० (हि) हंस।
सितपद्म पुं० (सं) सफेद कमल।
सितपुंडरीक पुं० (सं) श्वेत कमल।
सितभानु पुं० (सं) चन्द्रमा।
सितम पुं० (फा) १-अत्याचार। जुल्म। २-अनर्थ।
सितमकश वि० (फा) अत्याचार सहने वाला।
सितमगर वि० (फा) अन्यायी। दुःखदायी।
सितमज़दा वि० (फा) सितमकश।
सितमणि स्त्री० (सं) बिल्लौर। स्फटिक।
सितमना वि० (सं) जिसका हृदय पवित्र हो।
सितमरसीदा वि० (फा) दे० 'सितमकश'।
सितयामिनी स्त्री० (सं) १-चांदनी रात। २-चाँदनी
सितरश्मि पुं० (सं) चन्द्रमा।
सितराग पुं० (सं) चांदी।
सितरुचि वि० (सं) सफेद रंग का।
सितवराह पुं० (सं) श्वेतवराह।
सितवल्लरी स्त्री० (सं) जंगली जामुन।
सितवाजी पुं० (सं) अर्जुन।
सितवारण पुं० (सं) दे० 'सितकुंजर'।
सितसर्षप पुं० (सं) पीली सरसों।
सितसिंधु पुं० (सं) क्षीर-सागर।
सितांग पुं० (सं) १-श्वेतरोहित। २-बेल।
सितांबर वि० (सं) सफेद वस्त्र धारण करने वाला। पुं० (सं) श्वेताम्बर जैन।
सिताब्ज पुं० (सं) सफेद कमल।
सिताम्भोज पुं० (सं) सफेद कमल।
सितांशु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
सितांशुक वि० (सं) सफेद वस्त्र धारण करने वाला।
सिता स्त्री० (सं) १-चीनी। शक्कर। २-ज्योत्स्ना। ३-मोतिया का फूल। ४-मदिरा। ५-शुक्लपक्ष। ६-सफेद दूब। ७-गोरोचन। ८-चांदी। ९-सफेद सेम।
सितातपत्र पुं० (सं) सफेद छत्र या छाता जो राजचिह्न होता है।
सितानन वि० (सं) सफेद मुख वाला। पुं० (सं) १-गरुड़। २-बेल का पेड़।
सिताब अव्य० (फा) तुरन्त। झटपट। जल्दी।
सिताबी स्त्री० (फा) १-चांदनी। २-शीघ्रता।
सिताम्भ पुं० (सं) सफेद कमल।
सितार पुं० (हि) तारों का बना एक प्रसिद्ध बाद्ययंत्र
सितारवाज़ पुं० (हि) सितार बजाने वाला।
सितारबाज़ी स्त्री० (हि) सितार बजाने की कला।
सितारा पुं० (फा) १-नक्षत्र। तारा। २-भाग्य। प्रारब्ध। ३-चमकीले पत्तर की छोटी गोल बिंदिया जो शोभा के लिये कामों आदि में टांकी जाती है। चमकी। ४-बन्दूक की टोपी का अगला सफेद भाग पुं० (हि) सितार।
सितारिया पुं० (हि) सितार बजाने वाला।
सितारेहिंद पुं० (फा) अंग्रेजी राजत्वकाल में सम्मानार्थ दी जाने वाली एक उपाधि।
सितासित पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-अर्जुन।
सितासित पुं० (सं) १-काला और सफेद। २-बलदेव ३-यमुना समेत गङ्गा। ४-शुक्र के समेत शनि।
सिति वि० (सं) दे० 'शिति'।
सितुई स्त्री० (हि) छाल की सीपी।
सितुही स्त्री० (हि) दे० 'सितुई'।
सितोत्पल पुं० (सं) सफेद कमल।
सितोद्भव पुं० (सं) चन्दन। संदल। वि० चीनी से बना हुआ या उत्पन्न।
सितोपल पुं० (सं) १-खड़िया मिट्टी। २-बिल्लौर।
सितोपला स्त्री० (सं) १-मिस्री। २-चीनी। शक्कर।
सिथिल वि० (हि) दे० 'शिथिल'।
सिदना क्रि० (हि) पीड़ा या कष्ट पहुँचाना।
सिदामा पुं० (हि) दे० 'श्रीदामा'।
सिदिक वि० (अ) सत्य। सच्चा।
सिताबी अव्य० (हि) जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक।
सिदक़ स्त्री० (अ) सच्चता। सच्चाई।
सिद्ध वि० (सं) १-जिसे अलौकिक सिद्धि प्राप्त हो चुकी हो। २-जिसकी आध्यात्मिक साधना पूर्ण हो चुकी हो। ३-सफल। प्रमाणित (मुक़द्दमा)। ४-कृतार्थ कामयाब। ६-जो योग में विभूतियां प्राप्त कर चुका हो। ७-निर्णित। ८-शोधित। ९-चुकता। १०-तैयार। ११-बना हुआ। १२-प्रसिद्ध। पुं० (सं) १-पूर्णयोगी या ज्ञानी। २-एक प्रकार के देवता। ३-व्यवहार। ४-गुड़। ५-काला धतूरा। ६-सफेद सरसों। ७-ज्योतिष का एक योग।
सिद्धकाम वि० (सं) १-जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। २-सफल।
सिद्धकार्य वि० (सं) सफल।
सिद्धगुटिका स्त्री० (सं) वह गुटिका जिसकी सहायता से कोई रसायन बनाया या कोई सिद्धि की जाती है
सिद्धजल पुं० (सं) १-कांजी। २-औटाया हुआ जल
सिद्धता स्त्री० (सं) सिद्ध होने की अवस्था। २-प्रामाणिकता। ३-पूर्णता।
सिद्धतापस पुं० (सं) वह तापसी जिसने सिद्धि प्राप्त की हो।
सिद्धत्व पुं० (सं) सिद्धता।
सिद्धदोष वि० (सं) जिसका अपराध प्रमाणित हो चुका हो। (कन्विक्टेड)।
सिद्धनर पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसे सिद्धि

गई हो।
सिद्धनाथ पुं० (सं) शिव। महादेव।
सिद्धपक्ष पुं० (सं) १-किसी बात या आज्ञा का वह अंग जो प्रमाणित हो चुका हो। २-प्रमाणित बात
सिद्धपुरुष पुं० (सं) दे० 'सिद्धनर'।
सिद्धप्राय वि० (सं) जो लगभग सिद्धि प्राप्त कर चुका हो।
सिद्धभूमि स्त्री०(सं) १-सिद्धपीठ। २-वह स्थान जहां योगियों को सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है।
सिद्धमंत्र पुं० (सं) सिद्ध किया हुआ मंत्र।
सिद्धयोगी पुं० (सं) शिव। महादेव।
सिद्धरस पुं० (सं) पारा।
सिद्धरसायन पुं० (सं) दीर्घजीवन तथा प्रभूत शक्ति देने वाली औषधि।
सिद्धलक्ष वि० (सं) जिसका निशाना न चूकने वाला हो।
सिद्धलोक पुं० (सं) सिद्धों का लोक।
सिद्धविनायक पुं० (सं) गणेश की एक मूर्ति का नाम
सिद्धसंकल्प वि० (सं) जिसकी सब कामनाएँ पूरी हों
सिद्धसारस्वत वि० (सं) जो सरस्वती को सिद्ध कर चुका हो।
सिद्धसिंधु पुं० (सं) आकाशगंगा।
सिद्धस्थाली स्त्री० (सं) सिद्ध योगियों की बटलोई जिसमें जितनी आवश्यकता हो उतना भोजन निकाला जा सकता है।
सिद्धहस्त वि० (सं) जिसका हाथ किसी कार्य के करने में खूब बैठा या मँजा हो। कुशल। निपुण।
सिद्धांगना स्त्री० (सं) सिद्ध देवताओं की स्त्रियां।
सिद्धांजन पुं०(सं)वह अंजन या सुरमा जिसके लगाने से भूमि के नीचे की वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं
सिद्धांत पुं० (सं)१-विचार एवं तर्क द्वारा निश्चित किया गया मत (प्रिंसिपल)। २-ऋषियों आदि के मान्य उपदेश (केनन्स, डॉक्ट्रीन्स)। ३-सार की बात। ४-किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित मत। (थियोरी)।
सिद्धांतकोटि स्त्री० (सं) तर्क का वह स्थल जो अन्तिम या निर्णायक होता है।
सिद्धांतकौमुदी स्त्री० (सं) संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसके रचयिता भट्टोजिदीक्षित थे।
सिद्धांतज्ञ पुं० (सं) सिद्धांत को जानने वाला।
सिद्धांतपक्ष पुं० (सं) वह पक्ष जो तर्कसंगत हो।
सिद्धांतवाद पुं० (सं) मतवाद।
सिद्धांती पुं०(सं) १-शास्त्रों आदि के सिद्धांत जानने वाला। २-अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहने वाला।
सिद्धांतीय वि० (सं) सिद्धांत सम्बन्धी।
सिद्धांबा स्त्री० (सं) दुर्गा।
सिद्धान्न पुं० (सं) पका हुआ अन्न
सिद्धापगा स्त्री० (सं) आकाशगङ्गा।
सिद्धार्थ पुं० (सं) १-गौतम बुद्ध। २-महावीर स्वामी के पिता का नाम। ३-साठ संवत्सरों में से एक। वि० सफल मनोरथ। जिसका अभीष्ट सिद्ध हो चुका हो।
सिद्धासन पुं० (सं) १-योगसाधन का एक प्रकार का आसन। २-सिद्धपीठ।
सिद्धि स्त्री० (सं) १-सफलता। २-प्रमाणित होना। ३-निर्णय। निश्चय। ४-पकना। सीझना। ५-योग साधन के अलौकिक फल। ६-निशाना मारना। ७-भाग्योदय। ८-भोग। ९-दुर्गा। १०-सङ्गीत में एक श्रुति। ११-मुक्ति। १२-नाटक के छत्तीस लक्षणों में से एक। १३-छप्पयछन्द का एक भेद। १४-बुद्धि
सिद्धिकर वि० (सं) सफल बनाने वाला।
सिद्धिकारक वि० (सं) मनोरथ पूरा कराने वाला।
सिद्धिकारी वि० (सं) कोई बात सिद्ध या पूरी कराने वाला।
सिद्धिद वि० (सं) सिद्धि देने वाला। मोक्ष देने वाला
सिद्धिदाता पुं० (सं) गणेश।
सिद्धिप्रद वि० (सं) सिद्धि देने वाला।
सिद्धिभूमि स्त्री० (सं) वह स्थान जहां योग या तप शीघ्र सिद्ध होता हो।
सिद्धिमार्ग पुं० (सं) वह रास्ता जो सिद्ध लोक को पहुँचाने वाला हो।
सिद्धियात्रिक पुं० (सं) वह यात्री जो योग की सिद्धि प्राप्त करने के लिए यात्रा करता हो।
सिद्धिलाभ पुं० (सं) सिद्धि की प्राप्ति।
सिद्धिवाद पुं० (सं) ज्ञानगोष्ठी।
सिद्धिविनायक पुं० (सं) गणेश की एक मूर्ति।
सिद्धिस्थान पुं० (सं) १-सिद्धि प्राप्त करने का स्थान २-तीर्थस्थान।
सिद्धीश्वर पुं० (सं) १-शिव। २-एक पुण्य क्षेत्र का नाम।
सिद्धेश्वर पुं० (सं) १-शिव। २-योगिराज।
सिद्धेश्वरी स्त्री० (सं) एक देवी विशेष।
सिध वि० (हि) दे० 'सिद्ध'।
सिधाई स्त्री० (हि) सीधापन। सरलता।
सिधाना क्रि० (हि) दे० 'सिधारना'।
सिधारना क्रि० (हि) १-जाना। गमन करना। २-मरना। ३-सुधारना।
सिधि स्त्री० (हि) दे० 'सिद्धि'।
सिधिगुटका पुं० (हि) दे० 'सिद्धगुटिका'।
सिध्मा स्त्री० (सं) १-कुष्ट का रोग। २-कुष्ट का दाग।
सिन पुं० (अ) उम्र। अवस्था।
सिनक स्त्री० (हि) नाक से निकलने वाला मल। रेंट
सिनकना क्रि० (हि) जोर से हवा निकाल कर नाक का मल बाहर फेंकना।

सिनी स्त्री० (स) गोरे रंग वाली स्त्री।
सिनीवाली स्त्री० (स) १-एक वैदिक देवी। २-शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा। ३-दुर्गा।
सिनेट स्त्री० (अ) विश्वविद्यालय समिति।
सिनेमा पुं० (अ) चलचित्र।
सिनेमाहाउस पुं० (अ) वह ... दिखाया जाता है। सिनेमागृह।
सिन्नी स्त्री० (हि) १-मिठाई। २-पीर या देवता पर चढ़ाई जाने वाली मिठाई।
सिपर स्त्री० (फा) ढाल।
सिपरा स्त्री० (हि) दे० 'सिप्रा'।
सिपह पुं० (फा) सिपाह। सेना। फौज।
सिपहगरी स्त्री० (फा) सिपाही का काम।
सिपहदार पुं० (फा) सेनानायक।
सिपहसालार पुं० (फा) सेनापति।
सिपाई पुं० (हि) दे० 'सिपाही'।
सिपारस स्त्री० (फा) दे० 'सिफारिश'।
सिपारसी वि० (हि) दे० 'सिफारिशी'।
सिपारिस स्त्री० (फा) दे० 'सिफारिश'।
सिपाह स्त्री० (फा) सेना। फौज।
सिपाहगरी स्त्री० (फा) सैनिकवृत्ति।
सिपाहसालार पुं० (फा) सेनापति।
सिपाहियाना वि० (फा) सिपाहियों का सा।
सिपाही पुं० (फा) १-सैनिक। योद्धा। २-पुलिस या रक्षा विभाग का एक छोटा कर्मचारी। ३-पहरेदार ४-वीर। बहादुर।
सिपुर्द वि० (फा) १-सौंपा हुआ। २-दिया हुआ।
सिपुर्दगी स्त्री० (फा) सौंपने का भाव।
सिपुर्दनामा पुं० (फा) सौंपने या सुपुर्द करने का लेख या समर्पण पत्र।
सिप्पर स्त्री० (हि) दे० 'सिपर'।
सिप्पा पुं० (देश) १-निशाने पर किया गया वार। २-कार्य साधन का उपाय। ३-प्रभाव। ४-धाक। सिक्का।
सिप्रा स्त्री० (स) १-भैंस। २-स्त्री की करधनी। ३-उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी।
सिफत स्त्री० (अ) १-गुण। २-विशेषता।
सिफर पुं० (अ) शून्य। बिन्दी।
सिफलगी स्त्री० (अ) ओछापन। कमीनापन।
सिफला वि० (अ) १-नीच। २-छिछोरा।
सिफलापन पुं० (अ) १-नीचता। २-छिछोरापन।
सिफली वि० (अ) नीचा। नीचे का।
सिफली अमल (अ) वह मंत्र जिसमें शैतान या प्रेतात्माओं से सहायता ली जाती है।
सिफा स्त्री० (हि) दे० 'शिफा'।
सिफारत स्त्री० (अ) १-दूत या सफीर का काम या पद। २-किसी दूसरे देश में भेजा हुआ प्रतिनिधि-मंडल।

... खुशामद। ३-जिसमें सिफारिश हो।
सिफारिशी टट्टू पुं० (फा) जो केवल सिफारिश या खुशामद से किसी पद पर पहुँचा हो या काम निकालता हो।
सिफाल पुं० (फा) मिट्टी का बरतन।
सिफाला पुं० (फा) मिट्टी का बरतन।
सिबिका स्त्री० (हि) दे० 'शिबिका'।
सिम्त पुं० (हि) दे० 'सीमन्त'।
सिमई स्त्री० (स) सिवई।
सिमटना क्रि० (हि) १-सिकुड़ना। २-शिकन पड़ना ३-इकट्ठा होना। ४-निबटना। ५-लज्जित होना। ६-सिटपिटा जाना।
सिमरना क्रि० (हि) सुमिरना। याद करना।
सिमल पुं० (हि) १-हलका जूआ। २-जूए में पड़ी खूँटी।
सिमाना पुं० (हि) सिवाना। हद। सीमा। क्रि० दे० 'सिलाना'।
सिमिटना क्रि० (हि) दे० सिमटना।
सिमृति स्त्री० (हि) दे० 'स्मृति'।
सिमेटना क्रि० (हि) दे० 'सिमटना'।
सिय स्त्री० (हि) जानकी। सीता।
सियना क्रि० (हि) १-रचना। उत्पन्न करना। २-सीना
सियरा वि० (हि) १-ठण्डा। शीतल। २-कचा।
सियराई स्त्री० (हि) ठण्डक। शीतलता।
सियराना क्रि० (हि) ठण्डा होना।
सिया स्त्री० (हि) जानकी। सीता।
सियाहत स्त्री० (अ) १-राज्य। २-चढ़ाई। ३-सम्प्रदाय-जाति।
सियान वि० (हि) दे० 'सयाना'। क्रि० दे० 'सिलाना'
सियापा पुं० (हि) मृत व्यक्ति के शोक में स्त्रियों के इकट्ठे होकर रोने की रीति।
सियार पुं० (हि) गीदड़।
सियार-लाठी पुं० (देश) अमलतास।
सियाल पुं० (हि) गीदड़। शृगाल।
सियाली स्त्री० (देश) एक प्रकार का विदारीकन्द। वि० जाड़े की ऋतु की (फसल)।
सियासत स्त्री० (अ) देश के शासनप्रबन्ध की व्यवस्था स्त्री० (हि) १-कष्ट। २-दण्ड।
सियासतदाँ पुं० (अ) राजनीतिज्ञ।
सियासी वि (अ) देश के प्रबन्ध की व्यवस्था से

सम्बन्धित।
सियाह वि० (फा) १-काला। २-अशुभ।
सियाहकार वि० (फा) १-बदचलन। २-व्यभिचारी।
सियाहकारी स्त्री० (फा) १-बदचलनी। २-पाप।
सियाहचश्म वि० (फा) १-बेवफा। २-काली आंखों वाला।
सियाहजबान वि० (फा) कटुवचन बोलने वाला।
सियाहपोश वि० (फा) १-शोक मनाने वाला। २-काले रंग के कपड़े पहनने वाला।
सियाहा पुं० (फा) १-आय-व्यय के लेखे की बही। रोजनामचा। २-मालगुजारी जमा करने की बही।
सियाहानवीस पुं० (फा) सियाहा लिखने वाला मुंशी
सियाही स्त्री०(फा) १-स्याही। रोशनाई। २-कालापन ३-अंधकार। ४-दोष।
सिर पुं० (हि) १-कपाल। खोपड़ी। सिर के सबसे आगे का ऊपर का भाग। २-ऊपर का छोर। सिरा। चोटी। ३-शरीर का गरदन के ऊपर का भाग। ४-सरदार। आरम्भ।
सिरई पुं० (हि) चारपाई के सिराहने की पट्टी।
सिरकटा वि० (हि) १-अनिष्ट या बुराई करने वाला २-जिसका सिर कट गया हो। ३-अपकारी।
सिरका पुं० (फा) धूप में पका कर खट्टा किया हुआ किसी फल का रस।
सिरकी स्त्री०(हि) १-सरकंडे का एक छोटा छप्पर जो प्रायः बैलगाड़ियों पर आड़ करने के लिए रखते हैं। २-सरकंडा। सरई।
सिरखप वि० (हि) परिश्रमी। २-निश्चय का पक्का। ३-सिर खपाने वाला।
सिरखपी स्त्री० (हि) १-परिश्रम। हैरानी। २-साहस-पूर्ण कार्य।
सिरखिली स्त्री० (देश) एक प्रकार की चिड़िया।
सिरगा स्त्री० (दे०) घोड़े की एक जाति।
सिरचंद पुं० (हि) हाथी के मस्तक का अर्धचन्द्राकार का एक गहना।
सिरचढ़ा वि० (हि) १-ढीठ। जिद्दी। २-मुँहलगा।
सिरजक पुं० (हि) १-सृष्टिकर्त्ता। परमेश्वर। २-रचने या बनाने वाला।
सिरजन पुं० (हि) सृष्टि करना। रचना।
सिरजनहार पुं० (हि) सृष्टि की रचना करने वाला परमेश्वर।
सिरजना क्रि० (हि) १-रचना। बनाना। २-संचय करना। ३-उत्पन्न या तैयार करना।
सिरजित वि० (हि) सिरजा या रचा हुआ।
सिरताज पुं० (हि) १-मुकुट सिरोमणि। ३-सरदार
सिरत्राण पुं० (हि) दे० 'शिरत्राण'।
सिरदार पुं० (हि) दे० 'सरदार'।
सिरदारी स्त्री०(हि) दे० 'सरदारी'।
सिरनामा पुं० (हि) १-सरनामा। २-लेख आदि का शीर्षक।
सिरनेत पुं० (हि) १-पगड़ी। चीरा। २-क्षत्रियों की एक शाखा।
सिरपाव पुं० (हि) दे० 'सिरोपाव'।
सिरपेच पुं० (हि) १-पगड़ी। २-पगड़ी पर बांधने की कलगी। ३-पगड़ी के ऊपर का कपड़ा।
सिरपोश पुं० (हि) १-टोप। कुलाह। २-बन्दूक के ऊपर का कपड़ा। ३-सिर पर का आवरण।
सिरफूल पुं० (हि) एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।
सिरफेंटा पुं०(हि) साफा। पगड़ी।
सिरबंद पुं० (हि) साफा।
सिरबंदी स्त्री० (हि) एक प्रकार का गहना जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं।
सिर-मगजन पुं०(हि) माथापच्ची।
सिरमनि पुं० (हि) दे० 'शिरोमणि'।
सिरमुंडा वि० (हि) १-जिसके सिर के बाल मुँडे हुए हों। २-निगोड़ा।
सिरमौर पुं० (हि) दे० 'सिरताज'।
सिररुह पुं० (हि) दे० 'शिरोरुह'।
सिरस पुं० (हि) शीशम के समान एक ऊँचा वृक्ष।
सिरहाना ०पु (हि) सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग।
सिरा पुं० (हि) १-अंतिम भाग। २-नोक। ३-लम्बाई का अंत। छोर। ४-ऊपर का भाग। ५-अग्रभाग। ६-शुरू का हिस्सा। स्त्री० १-रक्तनाड़ी। २-सिंचाई की नाली। ३-खेत की सिंचाई। ४-गगरा। ५-पानी की पतली धार।
सिराजाल पुं० (हि) १-आंख की पतली तथा सूक्ष्म धमनियों का शोथ। नाड़ियों का जाल।
सिराजी पुं० (हि) शिराज का घोड़ा या कबूतर।
सिरात स्त्री० (अ) इसलाम धर्म के अनुसार कयामत के दिन दोजख पर बनाया जाने वाला पुल।
सिराना क्रि० (हि) १-मंद पड़ना। २-समाप्त होना ३-शीतल या ठण्डा होना। ४-मिटना। ५-बीत जाना। ६-ठण्डा करना। ७-बिताना। ८-समाप्त करना।
सिराप्रहर्ष पुं० (हि) दे० 'सिराहर्ष'।
सिरावन पुं० (हि) वह पाटा जिससे जुता हुआ खेत बराबर करते हैं।
सिरावना क्रि० (हि) दे० 'सिराना'।
सिराहर्ष पुं० (सं) १-आंख की डोरी की लाली। २-२-पुतली।
सिरिख पुं० (हि) दे० 'शिरीष'।
सिरिश्ता पुं० (हि) दे० 'सरिश्ता'।
सिरिस पुं० (हि) दे० 'शिरीष'।

सिसकारी स्त्री० (हि) १-सिसकने का शब्द। सीत्कार
सिसकी स्त्री० (हि) १-धीरे-धीरे रोने का शब्द। २-सिसकारी। सीत्कार।
सिसिर पुं० (हि) शिशिर।
सिसु पुं० (हि) दे० 'शिशु'।
सिसुता पुं० (हि) दे० 'शिशुता'।
सिसुपाल पुं० (हि) दे० 'शिशुपाल'।
सिसुमार पुं० (हि) दे० 'शिशुमार'।
सिस्टि स्त्री० (हि) दे० 'सृष्टि'।
सिस्य पुं० (हि) दे० 'शिष्य'
सिहरन स्त्री० (हि) सिहरने की क्रिया या भाव।
सिहरना क्रि० (हि) भय या शीत से कांपना।
सिहरा पुं० (हि) दे० 'सेहरा'।
सिहराना क्रि० (हि) १-डराना। २-सरदी से कांपना।
सिहलाना क्रि० (हि) १-ठण्डा होना। २-ठण्ड पड़ना ३-सर्दी लगजाना।
सिहरी स्त्री०(हि) १-कँपकँपी। जूड़ीताप। ३-रोमांच। ४-भय।
सिहाना क्रि०(हि) १-ललचाना। २-मुग्ध होना। ३-ईर्ष्या उत्पन्न करना। ४-अभिलाषा या ईर्ष्या भरी दृष्टि से देखना।
सिहारना क्रि० (हि) १-तलाश करना। २-जुटाना।
सिहिटि स्त्री० (हि) दे० 'सृष्टि'।
सिहोड़ स्त्री० (हि) थूहर। सेहुड़।
सिहोर पुं० (हि) थूहर।
सींक स्त्री० (हि) १-सरकंडा। २-घास आदि का पतला डंठल। ३-तिनका। ४-नाक की कील। मूँज आदि की पतली तीली।
सींका पुं० (हि) १-छींका। २-पौधे की बहुत पतली टहनी। डण्डी।
सींकिया वि० (हि) सींक जैसा पतला। पुं० एक प्रकार का रङ्गीन कपड़ा।
सींकिया-पहलवान पुं० (हि) दुबला-पतला आदमी जो अपने को बहुत बलवान बताता हो।
सींग पुं०(हि) १-विषाण। खुर वाले पशुओं के सिर के दोनों ओर निकलने वाले अवयव। २-सींगी नामक सींग का बना बाजा।
सींगड़ा पुं० (हि) सींग का चोगा जिसमें बारूद रखी जाती है। सींगी नामक बाजा।
सींगी स्त्री० (हि) १-सुराखदार सींग जिससे शरीर का दूषित रक्त निकाला जाता है। २-हिरन के सींग का बना एक बाजा।
सींच स्त्री० (हि) १-सिंचाई। २-छिड़काव।
सींचना क्रि० (हि) १-खेती आदि में पानी देना। २-तर करना। ३-छिड़कना।
सींव स्त्री० (हि) सीमा। हद। मर्यादा।
सी वि० (हि) सदृश। समान। स्त्री०-१-सिसकारी। सीत्कार। २-बीज की बोआई।
सी. आई. डी. पुं० (अ) खुफिया विभाग। (क्रिमिनल इन्वैस्टिगेशन डिपार्टमेंट)।
सीउ पुं० (हि) शीत। ठण्ड।
सीकर पुं० (सं) १-पानी की बूँद। जलकण। २-पसीना। स्वेद। स्त्री० जंजीर। सिकड़ी।
सीकल पुं० (देश) जल। पकाया हुआ आम। स्त्री० (हि) हथियार की सफाई।
सीकस पुं० (देश) ऊसर।
सीका पुं० (हि) १-सिर पर पहनने का सोने का आभूषण। २-छीका।
सीकाकाई स्त्री० (हि) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी कलियां रीठे की भांति काम आती हैं।
सीख स्त्री० (हि) १-शिक्षा। तालीम। २-परामर्श। सलाह। ३-वह बात जो सिखाई जाय। (फा) १-सीखचा। २-लोहे की सलाख जिस पर कबाब बनाते हैं।
सीखन स्त्री० (हि) शिक्षा। सीख।
सीखना क्रि० (हि) १-काम करने का ढंग जानना। २-ज्ञान प्राप्त करना। ३-अनुभव प्राप्त करना। ४-सितार आदि बजाने का अभ्यास करना।
सीखा-पढ़ा वि० (हि) १-अनुभवी। २-शिक्षित। ३-जानकार।
सीखा-सिखाया वि० (हि) १-कुशल। २-शिक्षित।
सीगा पुं० (अ) १-विभाग। महकमा। २-सांचा। ढांचा। ३-व्यापार। पेशा।
सीजना क्रि० (हि) दे० 'सीझना'।
सीझ स्त्री० (हि) सीझने की क्रिया या भाव।
सीझना क्रि० (हि) १-आंच पर पकना या गलना। २-कष्ट सहना। ३-तपस्या करना। ४-सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि से भीग कर मुलायम होना।
सीटी स्त्री० (हि) १-वह महीन शब्द जो होठों को सिकोड़ने और वायु बाहर फेंकने से होता है। २-इस प्रकार का वाद्ययंत्रादि से निकला कोई शब्द। ३-उक्त वाद्ययन्त्र।
सीटीबाज पुं० (हि) सीटी बजाने वाला।
सीठा वि० (हि) फीका। नीरस।
सीठापन पुं० (हि) फीकापन। नीरसता।
सीठी स्त्री०(हि) १-रस निचोड़े हुए फलादि का नीरस अंश। खूद। २-सारहीन पदार्थ। ३-फीकी या बचीखुची चीज।
सीड़ स्त्री० (हि) तरी। नमी। सील।
सीढ़ी स्त्री० (हि) १-ऊँचे स्थान पर चढ़ने का साधन जिस पर एक के बाद एक पैर रखने के स्थान बने हों। निसेनी। जीना। पैड़ी। २-जीने का बना हुआ पैर रखने का स्थान। ३-घुड़िया के आकार का लकड़ी का पाटा जो खण्डसाल में चीनी साफ करने

क काम आता है।
सीत पु० (हि) दे० 'शीत'।
सीतकर पुं० (हि) चन्द्रमा।
सीतल वि० (हि) दे० 'शीतल'।
सीतलचीनी स्त्री० (हि) दे० 'शीतलचीनी'।
सीतलपाटी स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की बढ़िया चिकनी चटाई। २-एक प्रकार का धारीदार कपड़ा
सीतला स्त्री० (हि) दे० 'शीतला'।
सीतलामाई [illegible]
सीता स्त्री० [illegible]
हल की फा[illegible]
राजा जनक [illegible]
३-राजा र[illegible]
आकाशगङ्गा की एक धारा। ६-एक वर्णवृत्त।
सीताजानि पु० (सं) श्रीरामचन्द्रजी।
सीताध्यक्ष पु० (सं) वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी का कामकाज देखता है
सीतानाथ पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
सीतापति पु० (सं) श्रीरामचन्द्र।
सीताफल पुं० (सं) १-कुम्हड़ा। २-शरीफा।
सीतारमण पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
सीतारवन पुं० (हि) श्रीरामचन्द्र।
सीतारौन पुं० (हि) श्रीरामचन्द्र।
सीतावर पु० (सं) श्रीरामचन्द्र।
सीतावल्लभ पु० (सं) श्रीरामचन्द्र।
सीत्कार पुं० (सं) वह सी-सी का शब्द जो अत्यन्त पीड़ा या आनन्द के समय मुख से निकलता है। सिसकारी।
सीत्कृति स्त्री० (सं) दे० 'सीत्कार'
सीथ पु० (हि) पके हुए अन्न का दाना।
सीथि पु० (हि) दे० 'सीथ'
सीदना क्रि० (हि) कष्ट झेलना। दुःख पाना।
सीध स्त्री० (हि) १-सीधी रेखा या दिशा। २-लक्ष्य। निशान।
सीधा वि० (हि) १-अवक्र। सरल। जो टेढ़ा न हो। २-निष्कपट। भोलाभाला। ३-शिष्ट। ४-शांत प्रकृति का। ५-सहल। आसान। ६-दाहिना। ७-जो शीघ्र ही समझ में आजाये। ८-जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। पु० (हि) १-बिना पका अन्न। २-सामने का भाग। अव्य० (हि) सम्मुख। ठीक सामने की ओर।
सीधा उलटा वि० (हि) ऊटपटांग। गलत।
सीधापन पु० (हि) सरलता। भोलापन।
सीधासादा वि० (हि) १-जिसमें तड़क-भड़क न हो। २-भोलाभाला।
सीधी वि० (हि) दे० 'सीधा'।
सीधीतरह अव्य० (हि) १-सिधाई से। २-सज्जनता से।
सीधीनजर स्त्री० (हि) प्रसन्नतासूचक दृष्टि।
सीधीबात स्त्री० (हि) स्पष्ट रूप से कही गई बात।
सीधीराह स्त्री० (हि) भलाई का मार्ग।
सीधी लकीर स्त्री० (हि) सरल रेखा।
सीधे अव्य० (हि) १-सामने की ओर। २-बिना मुड़े ३-शिष्ट व्यवहार से।
सीधेमुह अव्य० (हि) १-शिष्टता से। २-अच्छी तरह [illegible]

[illegible]

आवश्यक वस्तुएँ।
सीनरी स्त्री० (अ) १-प्राकृतिक दृश्य। २-रङ्गमंच की सजावट का आवश्यक सामान।
सीना क्रि० (हि) टांका मारना। कपड़े को धागे से जोड़ना। पु० (फा) छाती। वक्षस्थल।
सीनाज़ोर वि० (फा) बलवान। जबरदस्त।
सीनापिरोना क्रि० (हि) सिलाई और बेलबूटे का काम करना।
सीनाबंद पु० (फा) १-अंगिया। चोली। २-गिरेबान का हिस्सा। ३-वह घोड़ा जो अगले पैर से लँगड़ाता हो। ४-घोड़े पर कसी जाने वाली पेटी।
सीप पु० (हि) १-शंखादि के समान कठोर आवरण वाला एक जलजन्तु। २-वह लम्बोतरा पात्र जिसमें तर्पण या देवपूजा आदि के लिए जल रखा जाता है। ३-उक्त जलजन्तु का कड़ा खोल जिसके बटन आदि बनते हैं।
सीपज पुं० (हि) मोती।
सीपति पु० (हि) विष्णु। श्रीपति।
सीपर पुं० (हि) ढाल। सिपर।
सीपसुत पु० (हि) मोती।
सीपिज पु० (हि) मोती।
सीपी स्त्री० (हि) दे० 'सीप'।
सीबी स्त्री० (हि) सीत्कार। सिसकारी।
सीमंत पु०(सं) १-स्त्रियों के सिर की मांग। २-वैद्यक के अनुसार अस्थियों का संधि स्थान। ३-हिन्दुओं में एक संस्कार जो गर्भस्थिति के आठवें माह में किया जाता है।
सीमंतकरण पु०(हि) सिर के बालों की मांग काढ़ना
सीमंतोन्नयन पु० (सं) द्विजों के दस संस्कारों में से तीसरा जो गर्भाधान के चौथे, छठे या आठवें महीने होता है।
सीम स्त्री० (हि) सीमा। हद। पराकाष्ठा।
सीमल पुं० (हि) दे० 'सेमल'।
सीमान्त पु० (सं) किसी देश

बटवारा करके हद की रेखा या चिह्न आदि बनाना (डिमार्केशन)।
सीमांत पुं० (सं) वह स्थान जहां सीमा का अन्त होता हो। (फ्रंटियर)।
सीमांतपूजन पुं० (सं) वर का पूजन जब वह बरात के साथ गांव की सीमा पर पहुँचता है।
सीमांतप्रदेश पुं० (सं) सरहद या सीमा का इलाका।
सीमा स्त्री० (सं) १-किसी प्रदेश या वस्तु के चारों ओर के विस्तार की अन्तिम रेखा या स्थान। हद। सरहद (बाउन्डरी)। २-नियम या मर्यादा की हद (लिमिट)। ३-मांग।
सीमागुल्म पुं० (सं) सीमा पर बनाई गई चौकी। (गैरिसन)।
सीमाचिह्न पुं०(सं) १-किसी देश या राज्य की सीमा को बताने वाला चिह्न या पदार्थ। २-किसी व्यक्ति, जाति या देश की वह मुख्य घटना जो परिवर्तन की सूचक हो। (लैंडमार्क)।
सीमातिक्रमण पुं० (सं) दे० 'सीमोल्लंघन'।
सीमापारण पुं० (सं) दे० 'सीमाप्रक्षेपण'।
सीमाप्रक्षेपण पुं०(सं) क्रिकेट या गेंदबल्ले के खेल में गेंद को इतने वेग से मारना कि वह खेल के मैदान की बाहरी सीमा तक पहुँच जाय या उसे पार कर जाय (बाउण्डरी)।
सीमाबद्ध वि० (सं) परिमित। जिसकी सीमा नियत हो चुकी हो।
सीमाशुल्क पुं० (सं) वह शुल्क जो देश के बाहर से आयात होने वाले या बाहर जाने वाले पदार्थों पर लगता है। (कस्टम ड्यूटी)।
सीमेंट पुं० (अं) एक प्रकार का पत्थरों का चूर्ण जो पलस्तर करने के काम आता है।
सीमोल्लंघन पुं० (सं) १-किसी राज्य पर आक्रमण करने के लिए अपनी सीमा पार करके उसकी सीमा में पहुँचना। २-मर्यादा के विरुद्ध काम करना।
सीय स्त्री० (हि) सीता। जानकी।
सीयन स्त्री० (हि) दे० 'सीवन'।
सीयरा वि० (हि) दे० 'सियरा'।
सीर पुं० (सं) १-हल। २-जोतने वाले बैल। ३-सूर्य। स्त्री० (हि) १-साझा। २-किसी के साझे में भूमि जोतने की रीति। ३-वह भूमि जिसे जमींदार के साझे में खुद बोता हो। ४-रक्त की नाड़ी। ५-चौपायों का एक रोग।
सीरख पुं० (हि) दे० 'शीर्ष'।
सीरधर पुं० (सं) बलराम। वि० हल धारण करने वाला।
सीरध्वज पुं० (सं) १-बलराम। २-राजा जनक।
सीरनी स्त्री० (हि) शीरनी। मिठाई।
सीरपाणि पुं० (सं) हलधर। बलराम।
सीरभृत् वि० (सं) हल धारण करने वाला। पुं० हलधर।
सीरवाह पुं०(सं) १-हलवाहा। २-जमींदार की ओर से काम करने वाला कर्मचारी।
सीरवाहक पुं० (सं) दे० 'सीरवाह'।
सीरा पुं० (हि) सिराहना। वि० १-शीतल। ठण्डा। मौन। चुपचाप।
सीरायुध पुं० (सं) बलराम।
सील स्त्री० (हि) भूमि की आर्द्रता। नमी। पुं० १-दे० 'शील'। २-एक लकड़ी का औजार जिस पर चूड़ियां गोल की जाती हैं। स्त्री० (अं) १-मुद्रा। ठप्पा। २-एक प्रकार की समुद्री मछली।
सीलवंत वि० (हि) शीलवान्। सुशील।
सीलवान् वि० (हि) सुशील।
सीला पुं० (हि) १-खेत में गिरे हुए दानों से निर्वाह करने की प्राचीन ऋषियों की वृत्ति। २-सिल्ला। वि० गीला। आर्द्र। नम।
सीवँ स्त्री० (हि) दे० 'सीमा'।
सीवक पुं० (सं) सीनेवाला।
सीवन स्त्री० (सं) १-सीने का काम। २-दरार। संधि ३-वह रेखा जो अंडकोश से लेकर मलद्वार तक जाती है। ४-सिलाई के टांके।
सीस पुं०(हि) १-सिर। माथा। २-कंधा। ३-अंतरीप पुं० (सं) सीसा।
सीस-अङ्कनी स्त्री०(सं) सीसे की बनी पेंसिल। (लेड-पेंसिल)।
सीसक पुं० (सं) सीसा।
सीसज पुं० (सं) सिंदूर।
सीसताज पुं० (हि) शिकारी जानवरों के सिर पर पहनने की टोपी।
सीसत्रान पुं० (हि) टोप। शिरस्त्राण।
सीसफूल पुं०(हि) एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।
सीसम पुं० (हि) दे० 'शीशम'।
सीसमहल पुं० (हि) वह कमरा या मकान जिसकी दीवारों पर चारों ओर शीशा लगा हो।
सीसा पुं० (हि) १-हलके काले रङ्ग की मूलधातु। २-शीशा। दर्पण।
सीसी स्त्री० (हि) १-सीत्कार। सिसकारी। २-दे० 'शीशी'।
सीसों पुं० (हि) शीशम।
सीसो पुं० (देश) शीशम।
सीह स्त्री० (हि) महक। गन्ध। पुं० (देश) साही नामक जन्तु।
सुँ अव्य० (हि) दे० 'सों'।
सुंगवंश पुं० (सं) मौर्यवंश अन्तिम सम्राट के प्रधान सेनापति पुष्यमित्र द्वारा प्रतिष्ठित एक प्राचीन राज-

पश।

सुँघनी स्त्री० (हि) सूँघने के लिये बनाई गई तम्बाकू की बुकनी। हुलास।

सुँघाना क्रि० (हि) किसी को सुँघाने में प्रवृत्त करना।

सुंड पु० (हि) सूँड। शुण्ड।

सुंडभुसुंड पु० (हि) हाथी।

सुंडा स्त्री० (हि) सूँड।

सुंदर वि० (स) १-रूपवान। खूबसूरत। २-अच्छा। भला। पु० १-कामदेव। २-एक वृक्ष विशेष। ३ एक नाग।

सुंदरता स्त्री० (स) सौंदर्य। खूबसूरती।

सुंदरताई स्त्री० (हि) सुन्दरता।

सुंदरत्व पु० (हि) सुन्दरता।

सुंदरम्मन्य पु० (स) वह जो स्वयं को सुन्दर समझता हो।

सुंदराई स्त्री० (हि) सुन्दरता।

सुंदरी स्त्री० (हि) १-सुन्दर स्त्री। २-हल्दी। ३-एक वर्णवृत्त। ४-एक प्रकार की मछली। वि० रूपवती।

सुंधाई स्त्री० (हि) सौंधापन।

सुंधावट स्त्री० (हि) सौंधापन। सौंधी महक।

सुंबा पु० (हि) १-तोप भरने का गज। २-खूँटी। ३-पत्थर फोड़ने का एक औजार।

सुंबुल पु० (फा) एक प्रकार की घास जिसकी उपमा फारसी साहित्य में घुँघराले बालों से की जाती है।

सुभा पु० (हि) दे० 'सुआ'।

सु उप० (स) सुन्दर या श्रेष्ठ वाचक एक उपसर्ग। वि० १-सुन्दर। २-श्रेष्ठ। उत्तम। ३-शुभ। भला। पु० सुन्दरता। २-हर्ष। ३-पूजा। ४-उत्कर्ष। ५-आज्ञा। ६-कष्ट। अव्य० (हि) तृतीया, पंचमी तथा षष्ठी विभक्ति का चिह्न। सर्व० सो। वह।

सुअ पु० (हि) पुत्र।

सुअटा पु० (हि) सुग्गा। तोता।

सुअन पु० (हि) पुत्र। बेटा।

सुअनजर्द पु० (हि) एक प्रकार का फूल।

सुअना क्रि० (हि) उगना। उदय होना।

सुअर पु० (हि) दे० 'सूअर'।

सुअरदंता वि०(हि)सूअर के समान दाँतों वाला। पु० एक प्रकार का हाथी।

सुअवसर पु० (स) अच्छा अवसर। अच्छा मौका।

सुआ पु० (हि) तोता। सुग्गा।

सुआउ वि० (हि) दीर्घायु।

सुआद पु० (हि) याद। स्मरण।

सुआन पु० (हि) दे० 'श्वान'।

सुआमी पु० (हि) दे० 'स्वामी'।

सुआर पु० (हि) रसोइया।

सुआस्य वि० (स) मीठे स्वर से बोलने या गाने वाला।

सुआसन पु० (सं) बैठने का सुन्दर आसन या पीढ़ा।

सुआसिन स्त्री०(हि)१-सहचरी। पड़ोसन। २-सधवा सुहागिन।

सुआसिनी स्त्री० (हि) दे० 'सुआसिन'।

सुई स्त्री० (हि) दे० 'सूई'।

सुकंठ वि०(सं)१-जिसका कंठ सुन्दर हो। २-सुरीला जिसका स्वर मीठा हो। पु० सुग्रीव।

सुकंदक पु० (स) १-प्याज। २-एक प्राचीन देश। ३-उसका निवासी।

सुक पु० (हि) १-तोता। शुक। २-सिरस का पेड़। ३-एक राक्षस का नाम जो रावण का दूत था।

सुकचाना क्रि० (हि) दे० 'सकुचाना'।

सुकड़ना क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।

सुकदेव पु० (हि) दे० 'शुकदेव'।

सुकनासा वि० (हि) तोते की सी नाक वाला। सुन्दर नाक वाला।

सुकन्या स्त्री० (सं) १-अच्छी कन्या। २-च्यवन-ऋषि की पत्नी का नाम।

सुकर वि० (स) १-जो सहज में हो सके। २-जो सहज में सुव्यवस्थित किया जा सके।

सुकरा स्त्री० (स) अच्छी और सीधी गाय।

सुकरात पु० (य) एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो प्लेटो (अफलातून) के गुरु थे।

सुकराना पु० (हि) दे० 'शुकाना'।

सुकरित वि० (हि) दे० 'सुकृत'।

सुकर्मा पु० १-ज्योतिष के अनुसार सत्ताइस योगों में से एक। २-उत्तम कार्य करने वाला व्यक्ति। ३-विश्वकर्मा। ४-विश्वामित्र।

सुकर्मी वि० (स) १-सदाचारी। २-सत्कर्म करने वाला।

सुकल्पित वि० (सं) १-अच्छी तरह से बनाया हुआ २-सुसज्जित।

सुकाना क्रि० (हि) दे० 'सुखाना'।

सुकाल पु० (सं) १-अच्छा समय। २-सस्ती का समय।

सुकावना क्रि० (हि) दे० 'सुखाना'।

सुकिज पु० (हि) शुभ या उत्तम कार्य।

सुकिया स्त्री० (हि) स्वकीया नायिका।

सुकीया स्त्री० (हि) स्वकीया नायिका।

सुकीर्ति स्त्री०(सं) १-यश। २-नेकनामी। वि० कीर्ति-युक्त।

सुकुमार वि० (हि) दे० 'सुकुमार'।

सुकुड़ना क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।

सुकुति स्त्री० (हि) सीप। शुक्ति।

सुकुमार वि० (स) १-कोमल। नाजुक। २-कोमल अङ्गों वाला। पु० १-कोमलाङ्ग बालक ... कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त काव्य

तम्बाकू का पत्ता।
सुकुमारता स्त्री० (सं) कोमलता। नजाकत। सुकुमार होने का भाव।
सुकुमारत्व पुं० (सं) सुकुमारता।
सुकुमारी स्त्री० (सं) १-चमेली। २-एक प्रकार की फली। ३-ईख। ४-बड़ा करेला। ५-कन्या। ६-लड़की बेटी। वि० कोमलांगी। कोमल अंगों वाली।
सुकुरना क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।
सुकुल पुं० (सं) १-उत्तम कुल। २-कुलीन। (हि) दे० 'शुक्ल'।
सुकुलज वि० (सं) दे० 'सुकुलजन्मा'।
सुकुलजन्मा वि० (सं) सद्व शजात।
सुकुवांर वि० (हि) दे० 'सुकुमार'।
सुकुवार वि० (हि) दे० 'सुकुमार'।
सुकूनत स्त्री० (अ) १-निवास। २-रिहाइश।
सुकूनती वि० (अ) रहने का (स्थान)।
सुकृत पुं० (सं) १-पुण्य। २-सत्कर्म।
सुकृति स्त्री० (सं) अच्छा काम। वि० पुण्य या अच्छा काम करने वाला।
सुकृत् वि० (सं) १-धार्मिक। २-उत्तम तथा शुभ कार्य करने वाला। ३-भाग्यवान।
सुकृत्य पुं० (सं) १-उत्तम कार्य। २-एक प्राचीन ऋषि का नाम।
सुकेशा स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों।
सुकेशी स्त्री० (सं) १-सुन्दर केशों वाली स्त्री। २-एक अप्सरा का नाम। पुं० वह जिसके बाल सुन्दर हों
सुक्ख पुं० (हि) दे० 'सुख'।
सुक्ति पुं० (सं) एक पर्वत का नाम। स्त्री० दे० 'शुक्ति
सुक्र पुं० (हि) शुक्र। पु० अग्नि।
सुक्रित पु० (हि) दे० 'सुकृत'।
सुक्ल वि० (हि) दे० 'शुक्ल'।
सुक्षम वि० (हि) दे० 'सूक्ष्म'।
सुखंडी स्त्री० (हि) बच्चों के शरीर सूखने का रोग। सूखा रोग। वि० बहुत दुबला-पतला।
सुखंद वि० (हि) सुखदायी।
सुख पुं० (सं) वह अनुकूल तथा प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की इच्छा हो। २-एक वर्णवृत्त। ३-आरोग्य। ४-जल। ५-स्वर्ग। ६-वृद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध। वि० १-प्रसन्न। २-धार्मिक। ३-उपयुक्त।
सुख-आसन पुं० (हि) पालकी। डोली।
सुखकंद वि० (सं) सुख देने वाला।
सुखकंदन वि० (हि) दे० 'सुखकद'।
सुखकंदर वि० (सं) सुख का घर।
सुखक वि० (हि) सूखा। शुष्क।
सुखकर वि० (स) १-सुख देने वाला। २-सुगम। सहज में होने वाला।
सुखकरण वि० (सं) सुख या आनन्द उत्पन्न करने वाला।
सुखकरन वि० (हि) दे० 'सुखकरण'।
सुखकारक वि० (सं) सुख देने वाला।
सुखकारी वि० (सं) सुखकारक।
सुखकृत वि० (सं) सहज में किया जाने वाला।
सुखग वि० (सं) आराम से चलने या जाने वाला।
सुखग्राह्य वि०(सं) जो सहज में लिया जा सके।
सुखजनक वि० (सं) सुखद। सुखदायक।
सुखदरन वि० (हि) सुख देने वाला।
सुखतला पुं० (हि) चमड़े का वह टुकड़ा जो के अन्दर रखा जाता है।
सुखता स्त्री० (सं) सुख का भाव या धर्म।
सुखत्व पु० (स) सुखता।
सुखथर पुं० (हि) वह स्थान जहां सुख मिले।
सुखद वि० (सं) सुख या आनन्द देने वाला। १-विष्णु। २-संगीत में एक ताल।
सुखदनियाँ वि० (हि) दे० 'सुखदायी'।
सुखदा वि० (सं) सुख या आनन्द देने वाली। १-गङ्गा। २-अप्सरा। ३-एक छन्द।
सुखदाइन वि० (हि) दे० 'सुखदायिनी'।
सुखदाई वि० (हि) सुख देने वाला।
सुखदात वि० (सं) दे० 'सुखदाता'।
सुखदाता वि० (सं) सुखद। सुख देने वाला।
सुखदानी वि० (हि) सुख देने वाली। स्त्री० (हि) वर्णवृत्त।
सुखदाय वि० (सं) दे० 'सुखदायक'।
सुखदायक वि० (स) सुखद। सुख देने वाला।
सुखदायिनी वि० (सं) सुख देने वाली। स्त्री० रोहिणी नामक लता।
सुखदायी वि० (सं) सुखद।
सुखदाव वि० (हि) सुख देने वाला।
सुखदास पुं० (देश) एक प्रकार का धान।
सुखदुःख पुं० (सं) आराम और कष्ट।
सुखदेनी वि० (हि) सुख देने वाली।
सुखदैन वि० (हि) दे० 'सुखदाई'।
सुखदोह्या स्त्री० (सं) वह गाय जो सहज में दुही सके।
सुखधाम पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-सुख का घर। जो सुखमय हो तथा दूसरों को सुख देता हो।
सुखन पुं० (अ) १-वार्त्तालाप। २-कविता। ३-उ
सुखनतकिया पुं० (अ) वह शब्द या लघु वाक्य निरर्थक होते हुए भी लोग वार्तालाप में प्रयो करते है। जैसे-'जो है सो' इत्यादि।
सुखना क्रि० (हि) दे० 'सूखना'।
सुखपाल पु० (हि) एक प्रकार की पालकी।
सुखप्रद वि० (सं) सुखद। सुख देने वाला।

सुखप्रश्न पु० (सं) कुशलता पूछना।
सुखप्रसवा स्त्री० (सं) सुख से प्रसव करने स्त्री।
सुखप्राप्त वि० (सं) सहज में ही मिला हुआ। सुखी
सुखभाक वि० (सं) सुख भोगने वाला।
सुखभागी वि० (सं) सुखी। सुख भोगने वाला।
सुखभुक वि० (सं) सुखी। भाग्यवान।
सुखभोगी वि० (सं) सुख का भोग करने वाला।
सुखभोजन पु० (सं) स्वादिष्ट भोजन।
सुखमन स्त्री० (हि) दे० 'सुषुम्ना'।
सुखमा स्त्री० (हि) १-शोभा। सुषमा। छवि। २-एक वर्णवृत।
सुखरात्रि स्त्री० (हि) १-सुहागरात। २-दीवाली की रात। ३-आनन्द मनाने की रात।
सुखराशि वि० (सं) जो सुख का भंडार है।
सुखरास वि० (हि) जो सर्वथा सुखमय हो।
सुखरासी वि० (हि) दे० 'सुखराशि'।
सुखवत वि० (हि) १-सुखी। प्रसन्न। सुखदायक।
सुखवन पु० (हि) १-सूखने के लिए धूप में डाली गई फसल। २-गीले [illegible]
बालू।
सुखवा पुं० (हि) सु[illegible]
सुखवाद पु० (सं) [illegible]
व्यक्तिगत सुख [illegible]
का सुख पहुँचाने [illegible]
सुखवान् वि० (सं) [illegible]
सुखवार वि० (हि) [illegible]। प्रसन्न।
सुखशयन पु० (सं) आराम या चैन से सोना।
सुखशय्या स्त्री० (सं) आराम की नींद या शय्या।
सुखशांति स्त्री० (सं) सुख और चैन।
[illegible]

सुखसाध्य वि० (सं) जो सहज में ही किया जा सके।
सुखसार पुं० (हि) मोक्ष।
सुखस्पर्श वि० (सं) छूने से सुख देने वाला।
सुखस्वप्न पु० (सं) सुखी जीवन की कल्पना।
सुखांत पुं० (सं) १-वह जिस का अन्त सुखमय हो। २-वह नाटक जिसके अन्त में कोई सुखपूर्ण घटना हो। (कोमेडी)।
सुखांतनाटक पु० (सं) वह नाटक जिसके अन्त में कोई सुखपूर्ण घटना हो। (कोमेडी)।
सुखाधिकारवाद पु० (सं) वह मुकदमा जो दूसरे की भूमि, पथ आदि का अपने आराम के लिए प्रयोग करने के कारण किया गया हो। (सूट आफ ईजमेंट)।
सुखाना क्रि० (हि) १-गीली वस्तु का गीलापन दूर करने के लिए धूप में या आग पर रखना। २-आर्द्रता दूर करना। ३-दुर्बल बनाना।
सुखानुभव पु० (सं) सुख का अनुभव।
सुखापन्न वि० (सं) जिसे सुख या आनन्द प्राप्त हो।
सुखारा वि० (हि) १-प्रसन्न। सुखी। २-सुखद।
सुखारी वि० (हि) दे० 'सुखारा'।
सुखार्थी वि० (हि) सुख चाहने वाला।
सुखाली वि० (हि) सुखदायक।
सुखावह वि० (सं) सुख या आराम देने वाला।
सुखासन पु०(सं)१-पालकी। डोली। २-वह आसन जिस पर सुख से बैठा जाय।
सुखासीन वि० (सं) सुख से बैठा हुआ।
सुखिया वि० (हि) दे० 'सुखिया'।
सुखित वि० (हि) १-प्रसन्न। सुखी। २-सूखा हुआ।
सुखिया वि० (हि) सुखी। जिसे हर प्रकार का सुख हो।
सुखिर पुं० (देश) सांप की बांबी।
[illegible]

सुखवादी पुं० (सं) विलास तथा सुखमय जीवन के प्रति उदासीन रहते हुए सदाचार मय सात्विक जीवन बिताने का उद्देश मानने वाला दार्शनिक। (स्टोइक)।
[illegible] म। कुमकुमा। पुं० भीम
[illegible]

सुख्याति स्त्री० (सं) १-यश। कीर्ति। २-ख्याति। प्रसिद्धि।
सुगंध स्त्री० (सं) १-अच्छी महक। सौरभ। खुशबू। २-चन्दन। ३-नील-कमल। ४-राल। ५-धना। ६-कसेरू। ७-बासमती चावल। ८-मरुआ। वि० सुगन्धित।
सुगंधबाला स्त्री० (सं) सुर जाति की एक प्रकार की वनौषधि।
सुगंधि स्त्री० (सं) १-अच्छी महक। सुगन्ध। २-आम ३-परमेश्वर। धनिया। वि० सुन्दर गन्ध वाला।
सुगंधित वि० (सं) सुवासित। खुशबूदार। जिसमें अच्छी गंध हो।
सुगठित वि० (सं) १-सुन्दर गठन वाला। २-कसा हुआ।

सुगणक वि० (सं) अच्छा ज्योतिषी।
सुगत पुं० (सं) १-बुद्धदेव। २-बौद्ध।
सुगति स्त्री० (सं) १-मोक्ष। २-शुभगति नामक एक छन्द।
सुगना पुं० (हि) १-सुग्गा। तोता। २-सहिंजन का पेड़।
सुगम वि० (सं) १-सहज। सरल। २-जो सहज में जाने योग्य हो।
सुगमता स्त्री० (सं) सरलता।
सुगर पुं० (स) सिंगरफ। हिंगुल।
सुगल पुं० (हि) बाली का भाई सुग्रीव।
सुगाध वि० (सं) १-(नदी) जिसे सहज में पार किया जा सके। २-(नदी) जिसमें सुख से स्नान किया जा सके।
सुगाना क्रि० (हि) १-दुःखी होना। २-बिगड़ना। ३-(किसी के मैलेपन आदि से) घृणा करना। ४-४-सन्देह करना।
सुगुप्त वि० (सं) अच्छी तरह छिपाकर रखा हुआ।
सुगुप्तलेख पुं० (सं) १-अत्यन्त गोपनीय पत्र। २-ऐसे चिह्नों या अक्षरों में लिखा हुआ पत्र जिसे पाने वाले के अतिरिक्त दूसरा समझ न सके।
सुगुरा पुं० (हि) वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो।
सुगृहीत वि० (सं) अच्छी तरह से ग्रहण किया हुआ।
सुगृहीतनामा वि० (सं) प्रातःकाल स्मरणीय।
सुगैया स्त्री० (हि) अंगिया। चोली।
सुग्गा पुं० (हि) तोता।
सुग्गापंखी पुं० (हि) एक प्रकार का अगहनिया धान
सुग्रीव वि० (सं) सुन्दर ग्रीवा वाला। पुं० १-वानर-राज बालि का छोटा भाई जो रामचन्द्र का सखा था २-इन्द्र। ३-शिव। ४-शंख। ५-राजहंस। ६-नायक। ७-विष्णु या कृष्ण के चार घोड़ों में से एक।
सुघट वि० (सं) १-सुन्दर। सुडौल। २-जो सहज में बन जाता हो।
सुघटित वि० (सं) अच्छी तरह से बना हुआ।
सुघड़ वि० (हि) १-सुन्दर। सुडौल। २-निपुण।
सुघड़ई स्त्री० (हि) १-सुन्दरता। २-चतुरता। निपुणता
सुघड़ता स्त्री० (हि) दे० 'सुघड़ई'।
सुघड़पन पुं० (हि) दे० 'सुघड़ई'।
सुघड़ाई स्त्री० (हि) दे० 'सुघड़ई'।
सुघड़ी स्त्री० (हि) शुभ घड़ी।
सुघर वि० (हि) दे० 'सुघड़'।
सुघरई स्त्री० (हि) दे० 'सुघरता'।
सुघरता स्त्री० (हि) १-सुन्दरता। २-निपुणता।
सुघरपन पुं० (हि) दे० 'सुघरता'।
सुघराई स्त्री० (हि) दे० 'सुघड़ई'।
सुघरी स्त्री० (हि) शुभघड़ी। वि० सुन्दर। सुडौल।
सुच वि० (हि) दे० 'शुचि'।
सुचक्षु पुं० (सं) १-शिव। २-गूलर। ३-ज्ञानी। वि० सुन्दर नेत्रों वाला। स्त्री० एक नदी का नाम
सुचना क्रि० (हि) संचय करना। इकट्ठा करना।
सुचरित पुं० (सं) उत्तम आचरण वाला। नेकचलन
सुचरिता स्त्री० (सं) पतिव्रता स्त्री।
सुचरित्र वि० (सं) उत्तम आचरण वाला।
सुचा वि० (हि) दे० 'शुचि'। स्त्री० ज्ञान। चेतना
सुचाना क्रि० (हि) १-दिखलाना। २-सोचने प्रवृत्त करना। ३-सुझाना।
सुचार स्त्री० (हि) अच्छी चाल। वि० सुन्दर। सु
सुचारु वि० (सं) अत्यन्त सुन्दर। पुं० श्रीकृष्ण एक पुत्र का नाम।
सुचाल स्त्री० (हि) अच्छी चाल। उत्तम आचरण।
सुचालक वि० (सं) ऐसी वस्तु या पदार्थ जिसमें विद्युत, ताप आदि का परिचालन आसानी से सके। (गुड कन्डक्टर)।
सुचाली वि०(हि) सदाचारी। उत्तम आचरण वाला
सुचाव पुं० (हि) १-सुझाने की क्रिया या भाव। २-सुझाव। सूचना।
सुचिंतित वि० (सं) अच्छी तरह सोचा या विचारा हुआ।
सुचि वि० (हि) दे० 'शुचि'। स्त्री० (हि) दे० 'सूई'।
सुचिकर्मा वि० (हि) दे० 'शुचिकर्मा'।
सुचित वि० (हि) १-निश्चिन्त। २-एकाग्र। स्थिर ३-पवित्र।
सुचितई स्त्री० (हि) १-निश्चिंतता। २-बे-फिक्री ३-एकाग्रता।
सुचितो वि० (हि) १-स्थिरचित्त। २-निश्चिन्त। बेफिक्र।
सुचित्त वि० (सं) दे० 'सुचित'।
सुचित्तता स्त्री० (सं) १-निश्चिंतता। २-एकाग्रता।
सुचित्र वि० (सं) १-अनेक रंगों का। २-अनेक प्रकार का।
सुचिमंत वि० (हि) शुद्ध आचरण वाला। सदाचारी
सुची स्त्री० (हि) दे० 'शुचि'।
सुचेत वि० (हि) सतर्क। चौकन्ना।
सुचेता वि० (सं) उदार आशय वाला।
सुच्छंद वि० (हि) दे० 'स्वच्छन्द'।
सुच्छ वि० (हि) दे० 'स्वच्छ'।
सुच्छम वि० (हि) दे० 'सूक्ष्म'।
सुजंघ वि० (सं) सुन्दर जांघों वाला।
सुजन पुं० (सं) सज्जन पुरुष। भला आदमी। पुं०(हि) स्वजन। परिवार के लोग।
सुजनता स्त्री० (सं) सौजन्य। भलमनसाहत।
सुजनी स्त्री० (फा) एक प्रकार की बड़ी और मोटी

चादर।
सुजन्मा वि० (सं) १-उत्तम रूप से जन्मा हुआ। २-अच्छे कुल में उत्पन्न।
सुजल पु० (सं) कमल।
सुजला वि० (सं) जहाँ जल की बहुतायत हो तथा कमी न हो।
सुजस पुं० (हि) दे० 'सुयश'।
सुजाक पु० (हि) दे० 'सूजाक'।
सुजागर वि० (सं) १-सुन्दर। २-प्रकाशमान।
सुजात वि० (सं) १-कुलीन। २-सुन्दर। पु० भरत के एक पुत्र का नाम।
सुजाता स्त्री० (सं) १-गोपीचन्दन। २-एक ग्रामीण कन्या का नाम जिसने भगवान बुद्ध को भोजन कराया था। ३-कुलीन सुन्दरी।
सुजान वि० (हि) १-चतुर। सयाना। २-निपुण। प्रवीण। ३-पंडित। ४-सज्जन। पु० (हि) १-पति प्रेमी। २-ईश्वर।
सुजानता स्त्री० (हि) सुजान होने का भाव या धर्म।
सुजानी वि० (हि) ज्ञानी। पंडित।
सुजिह्व वि० (सं) १-मधुरभाषी। २-जिसकी जिह्वा सुन्दर हो।
सुजेय वि० (सं) जिसे सुगमता से जीता जा सके।
सुजोग पु० (हि) १-सुयोग। २-अच्छा संयोग।
सुजोधन पु० (हि) दे० 'सुयोधन'।
सुजोर वि० (हि) दृढ़। मजबूत।
सुज्ञ वि० (सं) १-भलीभांति जानने वाला। २-पंडित
सुझाना क्रि० (हि) १-दूसरे की सूझ ध्यान में लाना २-दिखाना।
सुझाव पुं०(हि) वह बात जो सुझाई जाय (सजेशन)
सुटकना क्रि० (हि) १-सुकड़ना। २-सिकुड़ना। ३-चुपके से खिसक जाना। ४-चाबुक लगाना।
सुठ वि० (हि) दे० 'सुठि'।
सुठहर पुं० (हि) अच्छा स्थान।
सुठार वि० (हि) सुन्दर। सुडौल।
सुठि वि० (हि) १-सुन्दर। बढ़िया। २-बहुत अच्छा अव्य० १-पूरा। २-बिलकुल।
सुठौना वि० (हि) दे० 'सुठि'।
सुडकना क्रि० (हि) दे० 'सुरकना'।

[illegible]

[illegible] वा। सुन्दर।
सुडर वि० (हि) १-कृपालु। २-सुडौल।
सुडार वि० (हि) १-सुन्दर। सुडौल। २-सुन्दर बना हुआ।

सुतंत्र वि० (हि) दे० 'स्वतंत्र'।
सुत पुं०(सं) १-पुत्र। बेटा। २-दसवें मनु का पुत्र वि० १-उत्पन्न। जात। २-पार्थिव।
सुतदा वि० (सं) पुत्र देने वाली (स्त्री)। स्त्री० पुत्रद नामक लता।
सुतधार पुं० (हि) दे० 'सूत्रधार'।
सुतना पुं० (हि) दे० 'सुथना'। क्रि० सूतना।
सुतनु पुं०(सं) १-उग्रसेन का एक पुत्र। २-एक बन्दर वि० सुन्दर शरीर वाला। स्त्री० १-सुन्दर शरीर वाली स्त्री। २-उग्रसेन की कन्या का नाम। ३-अक्रूर की स्त्री का नाम।
सुतर पु० (हि) दे० 'शुतुर'। वि० (सं) सरलतापूर्वक पार करने योग्य।
सुतरनाल स्त्री० (हि) दे० 'शुतुरनाल'।
सुतरसवार पु० (हि) दे० 'शुतुरसवार'।
सुतरां अव्य० (सं) १-अतः। इसलिए। २-और भी ३-अत्यंत। ४-अवश्य।
सुतरी स्त्री० (हि) १-सुतली। २-सुतारी। ३-सुरती
सुतल पु० (सं) सात पाताल लोकों में से एक।
सुतली स्त्री० (हि) सूत या सन की बटी हुई डोरी।
सुतहर पुं० (हि) दे० 'सुतार'।
सुतहार पुं० (हि) दे० 'सुतार'।
सुतही स्त्री० (हि) सीपी।
सुता स्त्री० (सं) कन्या। पुत्री। लड़की।
सुतादान पु० (सं) कन्यादान।
सुतान वि० (सं) १-सुरीला। २-सुन्दर।
सुताना क्रि० (हि) दे० 'सुलाना'।
सुतापति पु० (सं) दामाद। जामाता।
सुतापुत्र पुं० (सं) नाती।
सुतार पु० (हि) १-बढ़ई। २-कारीगर। शिल्पी। वि० १-एक आचार्य। २-एक प्रकार की सिद्धि। (सं) १-अत्यंत। उज्ज्वल। २-जिसके नेत्र की पुतलियां सुन्दर हों। ३-अत्यंत उच्च।
सुतारी स्त्री०(हि) १-जूता सीने का सूआ। २-सुतार या बढ़ई का काम। पु० शिल्पकार।
सुतार्थी वि० (सं) जिसे पुत्र की अभिलाषा हो।

[illegible]

सुतिया स्त्री० (देश) हँसली नामक गले में पहनने का गहना।
सुतिहार पु० (हि) दे० 'सुतार'।
सुती वि० (हि) १-पुत्र वाला। २-पुत्र की कामना करने वाला।
सुतीक्षण वि० (हि) दे० 'सुतीक्ष्ण'।
सुतीक्ष्ण वि० (सं) बहुत तीखा या [illegible]

सुतीछन पुं० (हि) दे० 'सुतीक्ष्ण'।
सुतीच्छन पुं० (हि) दे० 'सुतीक्ष्ण'।
सुतीर्थ वि० (सं) जिसे सुगमता से पार किया जा सके। पुं० १-पवित्र स्नानस्थल। २-अच्छा मार्ग
सुतुही स्त्री० (हि) १-छोटे बच्चों को दूध पिलाने की सीपी। २-वह सीपी जिससे अचार के लिए कच्चा आम छीला जाता है।
सुतोत्पत्ति स्त्री० (सं) पुत्रजन्म।
सुतोष पुं० (सं) सन्तोष। सब्र। वि० १-प्रसन्न। २-सन्तुष्ट।
सुतोषण वि० (सं) दे० 'सुतोष'।
सुत्थना पुं० (हि) सुथना।
सुथना पुं० (हि) पायजामा।
सुथनिया स्त्री० (हि) दे० 'सुथनी'।
सुथनी स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का स्त्रियों के पहनने का पायजामा। २-पिंडालू। रतालू।
सुथरा वि० (हि) स्वच्छ। निर्मल। साफ।
सुथराई स्त्री० (हि) सुथरापन। स्वच्छता। निर्मलता।
सुथरापन पुं० (हि) दे० 'सथराई'।
सुदंत पुं० (सं) १-नट। २-नर्तक। वि० सुन्दर दाँतों वाला।
सुदंष्ट्र पुं०(सं) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-एक राक्षस। वि० जिसके सुन्दर दांत हों।
सुदक्षिण पुं०(सं) पौंड्रक राजा के पुत्र का नाम। वि० १-कुशल। २-विनम्र। ३-उदार।
सुदक्षिणा स्त्री० (सं) १-राजा दिलीप की स्त्री का नाम। २-श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम।
सुदच्छिन पुं० (हि) दे० 'सुदक्षिण'।
सुदती वि० (सं) सुन्दर दांत वाली (स्त्री)।
सुदरसन पुं० (हि) दे० 'सुदर्शन'।
सुदरसनपानि पुं० (हि) दे० 'सुदर्शनपाणि'।
सुदर्श वि०(सं) १-जो भली भांति देखा जा सके। २-जो देखने में सुन्दर हो।
सुदर्शन पुं० (सं) विष्णु भगवान के एक चक्र का नाम। २-शिव। ३-अग्निपुत्र। ४-मछली। ५-जैनमतानुसार वर्त्तमान अवसर्पिणी के अठारहवें अर्हत के पिता का नाम। ६-जैनों के नौ बलदेवों में से एक का नाम। ७-गिद्ध। ८-सुमेरु। वि० मनोरथ। देखने में सुन्दर।
सुदर्शनचक्र पुं० (सं) विष्णु का चक्र।
सुदर्शनचूर्ण पुं० (सं) वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक प्रसिद्ध औषध।
सुदर्शन-पाणि पुं० (सं) विष्णु।
सुदामा पुं० (सं)१-श्रीकृष्ण के एक सहपाठी जो बहुत दरिद्र थे। २-कंस के माली का नाम। ३-एक पर्वत ४-समुद्र। ५-बादल। स्त्री० उत्तरी भारत की एक नदी। वि० खूब देने वाला।
सुदि स्त्री० (हि) दे० 'सुदी'।
सुदिन पुं० (सं) अच्छा या शुभ दिन।
सुदी स्त्री० (हि) चन्द्रमास का शुक्ल पक्ष।
सुदीपति स्त्री० (हि) दे० 'सुदीप्त'।
सुदीप्ति स्त्री० (सं) अधिक प्रकाश। खूब उजाला।
सुदीर्घ वि०(सं) बहुत लम्बा या विस्तृत। पुं० चिचड़ा
सुदुःसह वि० (सं) जिसको सहन करना कठिन हो।
सुदुर्लभ वि० (सं) जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन हो
सुदुष्कर वि० (सं) जो बहुत ही कठिन हो।
सुदुष्प्राप वि० (सं) जिसका पाना बहुत कठिन हो।
सुदुस्त्यज वि० (सं) जिसको छोड़ना या त्याग करना बहुत कठिन हो।
सुदूर वि० (सं) बहुत दूर। (फार)।
सुदूरपूर्व पुं० (सं) अति पूर्व के देश-चीन, जापान, आदि। (फार-ईस्ट)।
सुदृढ़ वि० (सं) खूब दृढ या मजबूत।
सुदृष्टि पुं० (सं) गिद्ध। स्त्री० उत्तम दृष्टि। वि० दूरदर्शी।
सुदेश पुं० (सं) १-उपयुक्त स्थान। २-सुन्दर देश। वि० सुन्दर।
सुदेस पुं० (हि) दे० 'सदेश'।
सुदेसी वि० (हि) दे० 'स्वदेशी'।
सुदौसी अव्य० (हि) शीघ्रतापूर्वक।
सुद्दा पुं० (अ) कड़ा और सूखा मल।
सुद्ध वि० (हि) दे० 'शुद्ध'।
सुद्धि स्त्री० (हि) दे० 'शुद्धि'।
सुधंग वि० (हि) अच्छा ढङ्ग।
सुध स्त्री० (हि) १-स्मृति। याद। २-चेतना। होश। ३-खबर पता। वि० (हि) दे० 'शुद्ध'।
सुधन वि० (सं) अमीर। बहुत धनी।
सुधना क्रि० (हि) १-ठीक किया जाना। २-शुद्ध किया जाना।
सुधन्वा वि० (सं) अच्छा धुरन्धर। पुं० १-विष्णु। २-विदुर। ३-विश्वकर्मा। ४-कुरु का एक पुत्र।
सुधबुध स्त्री० (हि) ज्ञान। चेतन। होशहवास।
सुधमना वि० (हि) १-जो होश में हो। २-सतर्क सचेत।
सुधरना क्रि० (हि) १-दोष या त्रुटियां दूर करना। २-साकार होना। ३-बिगड़े हुए को बनाना।
सुधरवाना क्रि० (हि) १-दोष दूर करना। ठीक करवाना।
सुधराई स्त्री० (हि) सुधारने का काम या मजदूरी।
सुधर्म पुं०(सं) १-उत्तम धर्म। पुण्य कर्त्तव्य। २-जैन तीर्थङ्कर महावीर जी के दस शिष्यों में से एक। वि० धर्मनिष्ठ। धर्मपरायण।
सुधाँ अव्य० (हि) समेत। साथ।
सुधांग पुं० (सं) चन्द्रमा।

सुधांशु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
सुधा स्त्री० (सं) १-अमृत। २-जल। ३-पृथ्वी। ४-दूध। ५-बिजली। ६-आंवला। ७-विष। ८-चून। ९-एक प्रकार का वृक्ष। १०-पुत्री। ११-बहू। १२-मधु। १३-घर।
सुधाई स्त्री० (हि) १-सीधापन। २-शोधाई।
सुधाकंठ पुं० (सं) कोयल। कोकिल।
सुधाकर पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाकार पुं० (सं) सफेदी या चूना करने वाला। राज। मिस्त्री।
सुधाक्षालित वि० (सं) जिस पर सफेदी की हुई हो।
सुधागेह पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाधर पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाजीवी पुं० (सं) सफेदी करके निर्वाह करने वाला मजदूर।
सुधादीधिति पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाधार पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाधवल वि० (सं) चूने के समान सफेद।
सुधाधवलित वि० (सं) सफेदी किया हुआ।
सुधामी वि० (हि) सुधा या अमृत के समान।
सुधाना क्रि० (हि) १-ठीक करना। २-याद दिलाना।
सुधानिधि पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-समुद्र। ३-एक वृक्षवृत्त।
सुधापाण्डुर पुं० (सं) खड़िया।
सुधाभवन पुं० (सं) पलस्तर किया हुआ मकान।
सुधाभित्ति स्त्री० (सं) वह दीवार जिस पर सफेदी की गई हो।
सुधाभुक् पुं० (सं) देवता।
सुधाभोजी पुं० (सं) अमृत भोजन करने वाले देवता।
सुधामय वि० (सं) १-चूने का बना हुआ। २-अमृत से भरा हुआ। पुं० राजभवन।
सुधामयूख पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधार पुं० (हि) सम्हार। सुधारने की क्रिया या भाव।
सुधारक पुं० (हि) १-संशोधक। सुधार करने वाला। २-सामाजिक या धार्मिक सुधार के लिए प्रयत्न करने वाला।
सुधारना क्रि० (हि) दोष या बुराई दूर करना।
सुधार-न्यास पुं० (सं) वह समिति जो नगर की विकास योजनाएँ बनाकर इसके अनुसार नगर-सुधार या उन्नति के कार्य करती है। (इम्प्रूवमेंट-ट्रस्ट)।
सुधारश्मि पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधारस पुं० (सं) १-अमृत। २-दूध।
सुधारा वि० (हि) सरल। सीधा।
सुधारालय पुं० (सं) वह कारागार जहां अपराधी बालक दण्ड भोगने तथा नैतिक दृष्टि से सुधारे जाने के लिए भेजे जाते हैं। (रिफार्मेटरी)।

सुधावर्ष पुं० (सं) अमृत वर्षा।
सुधावर्षी वि० (सं) अमृत बरसाने वाला। पुं० बुद्ध का एक नाम। २-ब्रह्मा।
[illegible]
सुधासदन पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधासागर पुं० (सं) अमृत का समुद्र।
सुधासिंधु पुं० (सं) दे० 'सुधासागर'।
सुधासिक्त वि० (सं) अमृत से सींचा हुआ।
सुधि स्त्री० (हि) दे० 'सुध'।
सुधी वि० (सं) अच्छी बुद्धि वाला। पुं० [illegible] व्यक्ति। स्त्री० सुबुद्धि।
सुधीर वि० (सं) जिसमें बहुत धैर्य हो।
सुधौत वि० (सं) अच्छी प्रकार से साफ किया हुआ या धोया हुआ।
सुनकिरवा पुं० (हि) एक प्रकार का कीड़ा।
सुनगुन स्त्री० (हि) १-सुराग। टोह। २-कानाफूसी।
सुनत वि० (सं) झुका हुआ। स्त्री० (हि) दे० 'सुन्नत'।
सुनति पुं० (सं) एक दैत्य का नाम। स्त्री० (हि) दे० 'सुन्नत'।
सुनना क्रि० (हि) १-श्रवण करना। २-किसी प्रार्थना पर ध्यान देना। ३-विचारार्थ दोनों पक्षों की बात सामने आने देना। ४-अपनी बुराई, व्यंग्य, डाटफटकार आदि का श्रवण करना।
सुनबहरी स्त्री० (हि) फीलपा नामक रोग।
सुनयना स्त्री० (सं) १-जनक की पत्नी का नाम। २-स्त्री। औरत।
सुनरिया स्त्री० (हि) दे० 'सुनारी'।
सुनरी स्त्री० (हि) सुन्दर नारी।
सुनवाई स्त्री० (हि) १-अभियोग आदि का विचार जिसे सुना जाना। २-सुनने की क्रिया या भाव।
सुनवैया वि० (हि) सुनने वाला।
सुनसान वि० (हि) १-निर्जन। २-उजाड़। वीरान।
सुनहरा वि० (हि) दे० 'सुनहला'।
सुनहला वि० (हि) सोने के रंग का सा।
सुनहा पुं० (हि) कुत्ता।
सुनाई स्त्री० (हि) दे० 'सुनवाई'।
सुनाद पुं० (सं) शंख। वि० सुन्दर शब्द वाला।
सुनाना क्रि० (हि) १-श्रवण कराना। २-भला बुरा कहना। ३-जताना। ४-किसी को सम्बोधित करके कुछ कहना।
सुनाभ पुं० (सं) १-सुदर्शन चक्र। २-धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३-मंद पर्वत। वि० जिसकी नाभि सुन्दर हो।
सुनाभि वि० (सं) जिसकी नाभि सुन्दर हो।
सुनाम पुं० (सं) यश। कीर्ति।
सुनामा वि० (सं) यशस्वी। कीर्तिशाली। पुं० कंस [illegible]

सुपेद वि० (हि) सफेद।
सुपेदी स्त्री० (हि) १-ओढ़ने की रजाई। २-बिछर। ३-सफेदी।
सुपेली स्त्री० (हि) छोटा सूप।
सुप्त वि०(सं) १-सोया हुआ। २-सोने के लिए लेटा हुआ। ३-...

वाला। २-संसार। हिंस।
सुप्तज्ञान पु० (सं) स्वप्न।
सुप्तता स्त्री० (सं) १-निद्रा। नींद। २-सुप्त होने का भाव।
सुप्तत्व पु० (सं) सुप्तता।
सुप्तप्रबुद्ध वि० (सं) जो अभी सोकर उठा हो।
सुप्तप्रलपित पु०(सं) वह प्रलाप जो निद्रित अवस्था में किया जाय।
सुप्तवाक्य पु० (सं) वह वाक्य या शब्द जो निद्रित अवस्था में कहे जाएँ
सुप्तविज्ञान पु० (सं) स्वप्न। सपना।
सुप्ताङ्ग पु०(सं) चेष्टारहित अंग।
सुप्ति स्त्री० (सं) १-नींद। निद्रा। २-ऊँघाई। ३-विश्वास। ४-सुप्तांगता।
सुप्तोत्थित वि० (सं) जो अभी सोकर उठा हो।
सुप्रज वि० (सं) उत्तम और अधिक संतान वाला।

... की स्थापना। ४-अभिषेक।
सुप्रतिष्ठित वि० (सं) जिसकी श्रेष्ठ प्रतिष्ठा हो।
सुप्रयुक्त वि० (सं) ठीक प्रकार से प्रयोग में लाया हुआ।
सुप्रलाप पु० (सं) सुन्दर भाषण।
सुप्रसन्न पु० (सं) कुबेर। वि० १-अत्यन्त निर्मल। २-हर्षित। ३-बहुत प्रसन्न।
सुप्रसव पु० (सं) बिना किसी कष्ट के होने वाला प्रसव।
सुप्रसिद्ध वि० (सं) सुविख्यात। बहुत प्रसिद्ध।
सुप्राप वि० (सं) जो सरलता से मिल सके। सुलभ।
सुप्राप्य वि० (सं) सुलभ।
सुप्रिया स्त्री० (सं) १-सोलह मात्राओं का एक वृत्त। २-एक अप्सरा का नाम। ३-प्रिय स्त्री।
सुफल पु० (सं) १-उत्तम फल या ... ३-अनार। ४-मूँग। वि० १-सुफल फल वाला (कार्य)।
सुफलक पु० (सं) अक्रूर नामक यादव के पिता का नाम।
सुफलक सुत पु० (सं) अक्रूर।
सुफेद वि० (हि) दे० 'सफेद'।
सुबंत वि० (सं) (वह शब्द) जो प्रथमा से सप्तमी तक की विभक्तियों से युक्त हो।
सुबंतत्व पु० (सं) वह शब्द जिसमें कारक विभक्ति ...

... वि० (सं) जिसके उत्तम बन्धु या मित्र हों।
... पु० (हि) १-स्वर्ण। सोना। २-उत्तम रंग।
सुबल वि० (सं) अत्यन्त बलवान। पु० १-शिव। २-... २-शकुनि के पिता का नाम। ३-श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम।
सुबस वि० (हि) स्वाधीन। अव्य० आजादी से। स्वतंत्रतापूर्वक।
सुबह स्त्री० (अ) प्रातःकाल। सवेरा।
सुबहदम अव्य० (अ) बहुत तड़के। मुँह अँधेरे
सुबहसुबह अव्य० (अ) बहुत तड़के।
सुबहान पु० (अ) दे० 'सुभान'।
सुबास स्त्री० (हि) सुगन्ध। अच्छी महक। पु० १-सुन्दर वासस्थान। २-एक प्रकार का धान।
सुबासना स्त्री० (हि) सुगन्ध। सुवास। क्रि० महकना। सुवासित करना।

... १-सेना। फौज। २-एक अप्सरा। पु० (सं) ... नागासुर। २-एक बोधिसत्व का नाम।
... पु० (सं) श्रीरामचन्द्र।
... पु० (हि) दे० 'सुभीता'।
सुबीज पु० (सं) १-शिव। २-खसखस। पोस्तदाना वि० उत्तम बीज वाला।
सुबीता पु० (हि) दे० 'सुभीता'।
सुबुक वि० (फा) १-सुन्दर। २-हलका। पु० घोड़े की एक जाति।
सुबुकदस्त वि० (फा) शीघ्रता से काम करने वाला।
सुबुकदस्ती स्त्री० (फा) हाथ की फुर्ती।
सुबुद्धि वि० (सं) उत्तम बुद्धिवाला। स्त्री० उत्तम बुद्धि।
सुबू स्त्री० (हि) दे० 'सुबह'।
सुबून पु० (हि) दे० 'सबूत'।
सुबोध वि० (सं) सरल। जो सरलता से समझ में आ सके।

... तम। ४-सुहृद्।
सुभगा वि० (सं) १-सुन्दरी। २-सुहागिन। स्त्री०

१-वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। २-एक रागिनी। ३-चेला। ४-पांच वर्ष की कुमारी।
सुभग वि० (हि) दे० 'सुभग'।
सुभट पुं० (सं) महायोद्धा।
सुभटवंत वि० (हि) बड़ा योद्धा।
सुभट्ट पुं० (सं) बहुत बड़ा विद्वान या पण्डित।
सुभद्र वि० (सं) १-सज्जन। भला। २-भाग्यवान। पुं० १-विष्णु। २-सौभाग्य। ३-मंगल। कल्याण
सुभद्रा स्त्री० (सं) १-दुर्गा का एक रूप। २-श्रीकृष्ण की बहन तथा अर्जुन की पत्नी का नाम।
सुभद्रेश पुं० (सं) अर्जुन।
सुभर वि० (हि) दे० 'शुभ'।
सुभाइ पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'। अव्य० स्वभावतः
सुभाउ पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'।
सुभाग वि०(सं) भाग्यवान्। पुं० (हि) दे० 'सौभाग्य'
सुभागी वि० (हि) भाग्यशाली। भाग्यवान्।
सुभागीन वि० (हि) अच्छे भाग्य वाला।
सुभाग्य वि० (सं) अत्यंत भाग्यशाली। पुं० (देश) सौभाग्य।
सुभान अव्य० (अ) धन्य। वाह-वाह।
सुभाना क्रि० (हि) भला जान पड़ता। शोभित होना।
सुभानु पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-एक संवत्सर। वि० उत्तम या सुन्दर प्रकाश से युक्त।
सुभाय पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'।
सुभायक वि० (हि) स्वाभाविक। स्वभावतः।
सुभाव पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'।
सुभावित वि० (सं) उत्तम रूप से भावना की हुई (औषध)।
सुभाषित वि० (सं) १-सुन्दर ढंग से कहा हुआ। २-अच्छा भाषण करने वाला। पुं० एक बुद्ध का नाम २-सुन्दर उक्ति।
सुभाषित और विनोद पुं०(हि) विलक्षण उत्तर तथा अनोखी बात कहने की क्षमता। (ह्यूमर एण्ड-विट)।
सुभाषी वि० (हि) मधुर बोलने वाला।
सुभास्वर वि० (सं) चमकदार। दीप्तिमान। पुं० पितरों का एक वर्ग।
सुभिक्ष पुं०(सं) ऐसा समय जिसमें भोजन खूब मिले तथा अन्न की उपज पर्याप्त हो। सुकाल।
सुभी वि० (हि) मंगलकारक। शुभकारक।
सुभीता पुं० (देश) १-सुअवसर। सुयोग। २-सुगमता। (कनवीनियेन्स)।
सुभुज वि० (सं) सुबाहु। सुन्दर भुजाओं वाला।
सुभूषित वि० (सं) उत्तम रूप से भूषित।
सुभौटी स्त्री० (हि) दे० 'शोभा'।
सुभ्र वि० (हि) दे० 'शुभ्र'।
सुभ्रू वि० (सं) दे० 'सुभ्र'।
सुभ्रू वि० (सं) जिसकी भौं सुन्दर हों। स्त्री० सुन्दर स्त्री।
सुमंगली स्त्री० (सं) विवाह में। सप्तपदी के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा।
सुमंत पुं० (हि) दे० 'सुमंत्र'।
सुमंत्र पुं०(सं) १-राजा दशरथ का मंत्री तथा सारथी २-आय-व्यय का प्रबन्ध करने वाला मन्त्री।
सुमंत्रित वि० (सं) जिसे अच्छी सलाह या मंत्रणा दी गई हो।
सुम पुं० (सं) १-पुष्प। २-चन्द्रमा। ३-आकाश। (फा) घोड़े या अन्य चौपायों के खुर।
सुमत वि० (सं) ज्ञानवान। बुद्धिमान।
सुमति स्त्री०(सं) १-अच्छी मति या बुद्धि। २-आपस का मेलजोल। ३-भक्ति। प्रार्थना। वि० अच्छी बुद्धिवाला।
सुमदोन पुं० (हि) वह दोना जो फूलों से भरा हो।
सुमधुर वि० (सं) बहुत मधुर या मीठा। पुं० एक प्रकार का शाक।
सुमध्यमा स्त्री० (सं) दे० 'सुमध्या'।
सुमध्या स्त्री० (सं) सुन्दर कमर वाली स्त्री।
सुमन पुं० (सं) १-देवता। २-ज्ञानी। ३-पुष्प। वि० १-सुन्दर। २-सुहृदय।
सुमनचाप पुं० (सं) कामदेव।
सुमनमाल पुं० (हि) फूलों का हार।
सुमनराज पुं० (हि) इन्द्र।
सुमनस पुं०(सं) १-देवता। २-पंडित। ३-महात्मा। ४-पुष्प। फूल। वि० प्रसन्नचित्त।
सुमनस्क वि० (सं) सुखी। प्रसन्न।
सुमना स्त्री० (सं) १-चमेली। २-सेवती। ३-कैकेयी का असली नाम। ४-वीरव्रत की माता का नाम।
सुमनित स्त्री० (सं) सुन्दर मणियों से जड़ा हुआ।
सुमनोकस पुं० (सं) देवलोक। स्वर्ग।
सुमनौकस पुं० (सं) स्वर्ग। देवलोक।
सुमरन पुं० (हि) दे० 'स्मरण'।
सुमरना क्रि० (हि) १-स्मरण या ध्यान करना। २-नाम जपना।
सुमरनी स्त्री० (हि) जप करने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।
सुमात्रा पुं० (हि) मलयद्वीपपुञ्ज का एक बड़ा द्वीप।
सुमानस वि० (सं) अच्छे मन का। सुहृदय।
सुमानी वि० (सं) स्वाभिमानी।
सुमार पुं० (हि) दे० 'शुमार'। वि० चुना हुआ।
सुमार्ग पुं० (सं) सन्मार्ग। सुपथ।
सुमाली पुं०(सं) १-सुकेश राक्षस के पुत्र का नाम। २-एक वानर नाम। (फा) एक अरब जाति।
सुमित्र पुं० (सं) १-अभिमन्यु के सारथी का नाम।

२-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। वि० उत्तम मित्रों वाला।

सुमित्रा स्त्री०(सं) १-लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता का नाम। २-मार्कण्डेय की माता का नाम।

सुमित्रानन्द पुं० (सं) लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न।

सुमित्रानन्दन पुं० (सं) लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न।

सुमिरन पुं० (हि) दे० 'स्मरण'।

सुमिरना क्रि०(हि) दे० 'सुमरना'।

सुमिरनिया स्त्री० (हि) दे० 'सुमरनी'।

सुमुख वि० (सं) १-सुन्दर मुख वाला। २-सुन्दर। ३-प्रसन्न। ४-अनुकूल। पुं० १-शिव। २-गणेश आचार्य। ४-राई।

सुमुखी स्त्री० (सं) १- सुन्दर मुख वाली स्त्री। २-दर्पण। ३-एक अप्सरा। ४-एक वर्णवृत्त। वि० सुन्दर मुख वाली।

सुमृत स्त्री० (हि) दे० 'स्मृति'।

सुमृति स्त्री० (हि) दे० 'स्मृति'।

सुमेध वि० (सं) उत्तम बुद्धिवाला। सुबुद्धि।

सुमेधा वि० (सं) दे० 'सुमेध'।

सुमेरु पुं०(सं) पुराणवर्णित एक कल्पित पर्वत जो सब पर्वतों का राजा तथा सोने का बताया गया है। जप करने की माला का ऊपर वाला दाना। ३-उत्तरी ध्रुव। ४-एक छंद। वि० बहुत ऊंचा। २-बहुत सुन्दर।

सुय अव्य० (हि) दे० 'स्वयं'।

सुयवर पुं० (हि) दे० 'स्वयंवर'।

सुयश पुं० (सं) सुकीर्ति। सुनाम। वि० यशस्वी।

सुयशा वि० (सं) अच्छे यश वाला।

सुयुक्ति स्त्री० (सं) सुन्दर या अच्छा उपाय।

सुयोग पुं० (सं) अच्छा योग। सुअवसर।

सुयोग्य वि० (सं) बहुत योग्य। काबिल।

सुयोधन पुं० (सं) दुर्योधन।

सुरंग वि० (सं) १-सुन्दर रङ्गवाला। २-सुडौल। ३-रसपूर्ण। पुं० १-सिंगरफ। २-नारङ्गी। ३-रङ्ग भेद के अनुसार एक प्रकार का घोड़ा। स्त्री० (हि) १-जमीन खोद कर या बारूद से उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता। २-जमीन के नीचे खोद कर बनाई हुई नाली जिसमें बारूद भर कर किले की दीवार आदि उड़ाते हैं। ३-एक यन्त्र जिसके द्वारा समुद्र में शत्रुओं के जहाजों के पेंदे में छेद कर उन्हें डुबोया जाता है। ४-एक यन्त्र जिसे रास्ते में बिछाकर शत्रुओं का नाश किया जाता है। (माइन)। ५-सेंध।

सुरंगप्रसारक-पोत पुं०(हि) शत्रु के आक्रमण को रोकने के लिए समुद्र में बारूद की सुरंगें बिछाने का पोत (माइनलेयर)।

सुरंगमार्जक-पोत पुं०(हि) समुद्र में बिछाई हुई बारूद की सुरंगों को हटाने वाला पोत। (माइनस्वीपर)।

सुर पुं० (सं) १-देवता। २-सूर्य। ३-पण्डित। ४-मुनि। (हि) स्वर। ध्वनि।

सुरकंत पुं० (हि) इन्द्र।

सुरकना क्रि० (हि) दे० 'सुड़कना'।

सुरकानन पुं० (सं) वह वन जिसमें देवता विहार करते हैं।

सुरकारु पुं० (सं) विश्वकर्मा।

सुरकार्मुक पुं० (सं) इन्द्रधनुष।

सुरकुदाव पुं० (हि) धोखा देने के लिए स्वर बदल-कर बोलना।

सुरक्त वि० (सं) १-गहरे लाल रङ्ग का। २-गाढ़ा रंगा हुआ। ३-बहुत सुन्दर। ४-अनुरक्त।

सुरक्षण पुं० (सं) अच्छी प्रकार से रक्षा करने का काम।

सुरक्षा स्त्री०(सं) अच्छी तरह से की जाने वाली रक्षा सावधानी। हिफाजत।

सुरक्षापरिषद् स्त्री० (सं) संयुक्त राष्ट्र संघ की वह कार्यपालिका परिषद् जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस तथा चीन देशों के अतिरिक्त कुछ अन्य देश भी सदस्य होते हैं और जिसका उद्देश्य विश्व शांति बनाए रखना होता है। (सिक्यूरिटी काउंसिल)।

सुरक्षित वि० (सं) जिसकी ठीक प्रकार से रक्षा की गई हो।

सुरक्षित कोष्ठक पुं० (सं) किसी बैंक या अधिकोष के सुरक्षित कमरे में बने वह कोष्ठक या खाने जिसमें लोग अपने गहने तथा बहुमूल्य वस्तुएँ सुरक्षा के लिये बैंक को कुछ वार्षिक रकम देकर रखते हैं। (सेफ्टी वाल्ट)।

सुरख वि० (हि) दे० 'सुर्ख'।

सुरखा वि० (हि) दे० 'सुर्खा'।

सुरखाब पुं० (फा) चकवा नामक पक्षी।

सुरखिया स्त्री० (हि) लाल गरदन वाला एक पक्षी।

सुरखी स्त्री० (हि) दे० 'सुर्खी'।

सुरग पुं० (हि) दे० 'स्वर्ग'।

सुरगज पुं० (सं) इन्द्र का हाथी।

सुरगाय स्त्री० (हि) कामधेनु।

सुरगिरि पुं० (सं) सुमेरु पर्वत।

सुरगुरु पुं० (सं) बृहस्पति जो देवताओं के गुरु माने जाते हैं।

सुरधेनु स्त्री० (हि) कामधेनु।

सुरचाप पुं० (सं) इन्द्रधनुष।

सुरच्छन पुं० दे० 'सुरक्षण'।

सुरज पुं० (हि) दे० 'सूर्य'। वि० (सं) (वह फूल) जिसमें उत्तम पराग हो।

सुरजन पुं० (सं) देवताओं का वर्ग या समूह। वि० १-चतुर। चालाक। २-सज्जन।

सुरझन स्त्री० (हि) दे० 'सुलझन'।
सुरझना क्रि० (हि) दे० 'सुलझना'।
सुरझाना क्रि० (हि) दे० 'सुलझाना'।
सुरझावना क्रि० (हि) दे० 'सुलझाना'।
सुरत पुं० (सं) १-संभोग। मैथुन। २-एक बौद्ध भिक्षु। स्त्री० (हि) याद। ध्यान।
सुरतक्रीड़ा स्त्री० (सं) सम्भोग। मैथुन।
सुरतकेलि स्त्री० (सं) काम क्रीड़ा।
सुरतगुप्ता स्त्री० (सं) दे० 'सुरतगोपना'।
सुरतगोपना स्त्री० (सं) काम क्रीड़ा के चिह्न छिपाने वाली स्त्री।
सुरतग्लानि स्त्री०(सं) रति से उत्पन्न ग्लानि या शिथिलता।
सुर-तरंगिणी स्त्री० (सं) गङ्गा।
सुरतरु पुं० (सं) देवदारु।
सुरता स्त्री० (सं) १-देवत्व। २-मैथुन से प्राप्त आनन्द। ३-एक अप्सरा। स्त्री० (हि) चिन्ता। २-चेत। सुधि। वि० (हि) चतुर। समझदार।
सुरतात पुं० (सं) १-कश्यप जो देवताओं के पिता थे २-इन्द्र।
सुरतान पुं० (सं) दे० 'सुलतान'।
सुरति स्त्री०(हि) १-कामकेलि। २-चेत। स्मरण। ३-सूरत।
सुरतिगोपना स्त्री० (सं) वह नायिका जो कामकेलि करके अपनी सखियों से छिपाती हो।
सुरतिवंत वि० (हि) कामातुर।
सुरती स्त्री० (हि) सिगरेट, बीड़ी में पिया जाने वाला या पान के साथ खाया जाने वाला तम्बाकू।
सुरत्न पुं० (सं) १-स्वर्ण। २-माणिक्य। वि० १-सर्वश्रेष्ठ। २-उत्तम रत्नों वाला।
सुरत्राण पुं० (हि) १-विष्णु। २-इन्द्र। ३-श्रीकृष्ण
सुरत्राता पुं० (हि) दे० 'सुरत्राण'।
सुरथा स्त्री०(सं)१-एक अप्सरा। २-पुराणों में वर्णित एक नदी।
सुरथाकार पुं० (सं) एक वर्ष।
सुरदार वि० (हि) सुरीले कण्ठ वाला।
सुरद्रुम पुं० (सं) १-कल्पवृक्ष। २-देवदारु।
सुरद्विट् पुं० (सं) १-राहु। २-असुर।
सुरधाम पुं० (सं) स्वर्ग।
सुरधुनी स्त्री० (सं) गङ्गा।
सुरधेनु स्त्री० (सं) कामधेनु।
सुरनदी स्त्री० (सं) गंगा। आकाशगंगा।
सुरनाथ पुं० (सं) इन्द्र।
सुरनायक पुं० (सं) इन्द्र।
सुरनारी स्त्री० (सं) देवबाला। देवांगना।
सुरनाह पुं० (हि) इन्द्र।
सुरनिम्नगा स्त्री० (सं) गंगा।
सुरनिर्झरिणी स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
सुरप पुं० (हि) इन्द्र।
सुरपति पुं० (सं) १-इन्द्र। २-विष्णु।
सुरपतितनय पुं० (सं) १-अर्जुन। २-जयन्त।
सुरपथ पुं० (सं) आकाश।
सुरपर्वत पुं० (सं) सुमेरु।
सुरपादप पुं० (सं) कल्पतरु।
सुरपाल पुं० (सं) इन्द्र।
सुरपालक पुं० (सं) इन्द्र।
सुरपुर पुं० (सं) स्वर्ग।
सुरपुरी स्त्री० (सं) अमरावती।
सुरपुरोधा पुं० (सं) बृहस्पति।
सुरप्रिया स्त्री० (सं) १-एक अप्सरा। २-चमेली।
सुरफांकताल पुं० (हि) मृदंग की एक ताल।
सुरबहार पुं० (हि) सितार की तरह का एक बाद्य
सुरबाला स्त्री० (सं) देवता की स्त्री या कन्या। देवांगना।
सुरबुली स्त्री० (हि) एक पौधा जिसकी जड़ से प्रकार का सुन्दर लाल रङ्ग निकलता है।
सुरवृच्छ पुं० (हि) दे० 'सुरवृक्ष'।
सुरबेल स्त्री० (हि) कल्पलता।
सुरभंग पुं० (हि) दे० 'स्वरभंग'।
सुरभवन पुं० (सं) १-मंदिर। २-अमरावती।
सुरभान पुं० (हि) १-इन्द्र। २-सूर्य।
सुरभि स्त्री० (सं) १-गाय। २-पृथ्वी। ३-तुलसी ४-सुगन्ध। ५-सुरा। ६-सलई। वि० १-सुवासित २-श्रेष्ठ। ३-सदाचारी। पुं० (सं) १-स्वर्ण। २-वसंतकाल। ३-गंधक। ४-राल। ५-सफेद की
सुरभिचूर्ण पुं० (सं) वह बुकनी या चूरा जिसमें खुशबू मिली हुई हो।
सुरभित वि० (सं) सुवासित। सुगंधित।
सुरभितनय पुं० (सं) बैल। सांड।
सुरभिमांस पुं० (सं) १-वसंत। २-चैत का महीना
सुरभिमान वि० (सं) जिसमें सुगन्ध हो।
सुरभिमुख पुं० (सं) वसंत का आगमन।
सुरभिषक् पुं० (सं) अश्विनीकुमार।
सुरभिसमय पुं० (सं) वसंत।
सुरभी स्त्री० (सं) १-सुगन्धी। २-गाय। ३-चन्दन ४-वनतुलसी।
सुरभूप पुं० (सं) १-इन्द्र। विष्णु।
सुरभूरुह पुं० (सं) १-कल्पतरु। २-देवदारु।
सुरभोग पुं० (सं) अमृत।
सुरभौन पुं०(हि) दे० 'सुरभवन'।
सुरमई वि० (फा) सुरमे के रङ्ग का। हल्का नीला पुं० १-हल्का नीला रङ्ग। २-इस रङ्ग की वस्तु। ३-इस रङ्ग का घोड़ा। स्त्री० (सं) एक प्रकार की चिड़िया।

जिसकी पूँछ का चमर बनाया जाता है।
सुरागार पुं० (सं) १-शराबखाना। २-देवगृह।
सुरागृह पुं० (सं) शराबखाना।
सुराघट पुं० (सं) सुराकुम्भ।
सुराचार्य पुं० (सं) बृहस्पति।
सुराज पुं० (हि) दे० 'स्वराज्य', 'सुराज्य'।
सुराजा पुं० (हि) १-अच्छा राजा। २-सुराज्य।
सुराजीव पुं० (सं) विष्णु।
सुराजीवी पुं० (सं) कलाल। शराब बनाने वाला।
सुराज्य पुं० (सं) अच्छा तथा सुखद राज्य या शासन पुं० (हि) दे० 'स्वराज्य'।
सुराधानी स्त्री० (सं) वह गगरी जिसमें मदिरा रखी जाती है।
सुराधिप पुं० (सं) इन्द्र।
सुराधीश पुं० (सं) इन्द्र।
सुरानीक पुं० (सं) देवताओं की सेना।
सुराप वि० (सं) १-शराबी। २-ज्ञानी। बुद्धिमान।
सुरापगा स्त्री० (सं) गङ्गा नदी।
सुरापात्र पुं०(सं) मदिरा पीने या रखने का बरतन।
सुरापान पुं० (सं) १-मदिरा पीना। २-मदिरापान के समय साथ खाये जाने वाले पदार्थ।
सुरापीत वि० (सं) जिसने शराब पी हुई हो।
सुराप्रिय वि० (सं) जिसे शराब की लत हो। जिसे सुरा बहुत प्रिय हो।
सुराब्धि पुं० (सं) सुरा का समुद्र।
सुराभांड पुं० (सं) सुरापात्र।
सुराभाजन पुं० (सं) मदिरा रखने का बरतन।
सुरामंड पुं० (सं) मदिरा में खमीर उत्पन्न होने के कारण पड़े हुए झाग।
सुरामत्त वि० (सं) मदिरा के नशे में चूर। मदमस्त।
सुरामद पुं० (सं) मदिरा का नशा।
सुराय पुं० (हि) अच्छा राज।
सुरायुद्ध पुं० (सं) देवताओं का अस्त्र।
सुरारि पुं० (सं) १-राक्षस। २-एक दैत्य का नाम।
सुरारिहंता पुं० (सं) विष्णु।
सुरारिहा पुं० (सं) शिव।
सुरार्चन पुं० (सं) देवपूजा।
सुरालय पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-देव मन्दिर। ३-मदिरालय।
सुराव पुं० (सं) १-उत्तम ध्वनि। २-एक प्रकार का घोड़ा।
सुरावास पुं० (सं) सुमेरु।
सुराश्रय पुं० (सं) मेरु पर्वत।
सुरासमुद्र पुं० (सं) दे० 'सुराब्धि'।
सुरासार पुं० (सं) कुछ विशिष्ट पदार्थों में से भपके की सहायता से निकाला हुआ मादक तरल पदार्थ जो मदिरा बनाने तथा रासायनिक प्रक्रियाओं में काम आता है। शराब। (अल्कोहल)।
सुरासुर पुं० (सं) देवता और दानव।
सुराही स्त्री०(अ) १-धातु, मिट्टी आदि का जल रखने का पात्र जिसका मुख नली के आकार का दूर तक निकला होता है। २-सोने चांदी आदि का बना हुआ लम्बोतरा टुकड़ा। ३-पान के आकार का कपड़े की काट। ४-हुक्के के नीचे का चिलम रखने वाला भाग।
सुराहीदार वि०(अ) सुराही की तरह गोल तथा लम्बोतरा।
सुराहीदार-गरदन स्त्री० (अ) सुन्दर तथा लम्बी गरदन।
सुराहीनुमा वि० (अ) सुराही के आकार का।
सुरी स्त्री० (सं) देवांगना।
सुरीला वि० (हि) मधुर स्वर वाला। बोलने, गाने आदि में जिसका स्वर मीठा हो।
सुरुख वि० (हि) १-अनुकूल। प्रसन्न रह कर कृपा करने वाला। २-स्वरूप। ३-लाल। सुर्ख।
सुरुखरू वि० (हि) दे० 'सुर्खरू'।
सुरुचि स्त्री० (सं) १-उत्तम रुचि। २-बहुत प्रसन्नता। ३-ध्रुव की विमाता का नाम। वि० १-स्वाधीन। २-जिसकी रुचि उत्तम हो।
सुरुज वि० (सं) बहुत बीमार। पुं० (हि) सूर्य।
सुरुजमुखी पुं० (हि) दे० 'सूर्यमुखी'।
सुरूप वि० (सं) १-सुन्दर आकृति वाला। २-सुन्दर।
सुरूर पुं०(अ) १-हलका नशा। मादकता। २-सुमार। आनन्द।
सुरेंद्र पुं० (सं) १-इन्द्र। २-राजा।
सुरेंद्रगोप पुं० (सं) बीरबहूटी।
सुरेंद्रचाप पुं० (सं) इन्द्रधनुष।
सुरेश पुं० (सं) १-शिव। २-इन्द्र। ३-विष्णु। ४-श्रीकृष्ण।
सुरेस पुं० (हि) दे० 'सुरेश'।
सुरै स्त्री० (देश) एक प्रकार की अनिष्टकारी घास। (डि) गाय।
सुरैत स्त्री० (हि) रखेली। बिना विवाह किये घर में रखी हुई स्त्री।
सुरैतवाल पुं० (हि) सुरैत का लड़का।
सुरैतिन स्त्री० (हि) दे० 'सुरैत'।
सुरोचि वि० (हि) सुन्दर।
सुरोपम वि० (सं) देवता के समान। पूज्य।
सुर्ख वि० (फा) लाल। लाल वर्ण का। पुं० गहरा लाल रंग।
सुर्खपोश वि०(फा) जो लाल वस्त्र को धारण किये हुए हो।
सुर्खरू वि० (फा) १-तेजस्वी। २-प्रतिष्ठित। ३-काम में सफलता मिलने के कारण जिसके मुख पर लाली

हा गई हो।
सुर्खसर पुं० (फा) दे० 'सुर्खसार'।
सुर्खसार पुं० (फा) १-एक प्रकार की लाल रंग के सिर वाली चिड़िया। २-ईरानी।
सुर्खमकेद पुं० (फा) १-लाली लिए हुए गोरा रंग। २-सोना चांदी। वि० सुन्दर।
सुर्खी पुं० (फा) १-आंख में होने वाली लाली। २-लाल रंग का घोड़ा। ३-लाल रंग का कबूतर।
सुर्खाब पुं० (फा) चक्रवाक। चकवा-चकवी।
सुर्खी स्त्री० (फा) १-ललाई। लालिमा। २-लेखादि २-शीर्षक। ३-खून। लहू। रक्त। ४ दे० 'सुरखी'
सुर्खमायल वि० (फा) हलके लाल रंग का।
सुर्ती वि० (हि) समझदार। होशियार।
सुर्ती स्त्री० (हि) दे० 'सुरती'।
सुलंक पुं० (हि) दे० 'सोलंकी'।
सुलंकी पुं० (हि) दे० 'सोलंकी'।
सुलक्ष वि० (स) दे० 'सुलक्षण'।
सुलक्षण वि०(सं) १-अच्छे लक्षणों वाला। २-भाग्यवान। पुं० १-शुभ लक्षण। २-अच्छे चिह्न। ३-एक प्रकार का छन्द।
सुलक्षणा स्त्री० (सं) पार्वती की एक सखी का नाम। वि० शुभ या अच्छे लक्षण वाली।
सुलग अव्य० (हि) समीप। पास। निकट।
सुलगन स्त्री० (हि) सुलगने की क्रिया या भाव।
सुलगना क्रि० (हि) जलना। दहकना। अत्यधिक दुःखी होना।
सुलगाना क्रि० (हि) १दहकाना। जलाना। २-संतप्त या दुखी काम करना।
सुलच्छन वि० (हि) दे० 'सुलक्षण'।
सुलच्छनी वि० (हि) अच्छे लक्षणों वाली।
सुलछ वि० (हि) सुन्दर।
सुलझन स्त्री० (हि) सुलझाव। सुलझाने की क्रिया या भाव।
सुलझाना क्रि० (हि) उलझन या कठिनता को दूर करना।
सुलझाव पुं० (हि) सुलझना। सुलझाने की या भाव।
सुलटा वि० (हि) सीधा। उलटे का विपरीत।
सुलतान पुं० (अ) बादशाह। महाराज।
सुलताना स्त्री० (अ) १-महारानी। मलिका। २-सुलतान की मां।
सुलतानाचंपा पुं० (अ) पुन्नाग नामक वृक्ष।
सुलतानी स्त्री० (फा) १-बादशाही। राज्य। २-एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। वि० लाल रङ्ग का
सुलतानीबानात स्त्री० (फा) एक प्रकार की बढ़िया बानात।
सुलतानीबुलबुल स्त्री० (फा) एक प्रकार की बुलबुल।
सुलप वि० (हि) १-स्वल्प। २-मन्द। पुं० सुन्दर आलाप।
सुलफ वि० (हि) १-लचीला। २-नाजुक। कोमल।
सुलफा पुं०(हि) १-सूखा तम्बाकू जो गांजे के समान चिलम में पिया जाता है। २-चिलम में बिना तवा रखे भर कर पिया जाने वाला तम्बाकू। चरस।
सुलफेबाज वि० (हि) चरस या गांजा पीने वाला।
सुलभ वि० (सं) सहज में मिलने वाला। २-सरल। ३-साधारण। ४-उपयोगी। पुं० अग्निहोत्र की अग्नि।
सुलभमुद्रा स्त्री० (स) किसी देश की वह मुद्रा जो अन्य देशों में माल आदि भेजने के कारण उन देशों में अधिक मात्रा में इकट्ठी हो गई हो तथा जिससे उन देशों से सुगमता से आवश्यक माल मंगाया जा सकता हो। (साफ्ट करेंसी)।
सुलभमुद्राक्षेत्र पुं०(स) वह क्षेत्र जहां से सुलभ मुद्रा प्राप्त हो सकती है (साफ्टकरेंसी एरिया)।
सुलभ्य वि० (स) सहज में प्राप्त होने वाला।
सुललित वि० (सं) अत्यन्त सुन्दर। अति ललित।
सुलह स्त्री० (फा) १-मेल। मिलाप। २-लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर होने वाला मेल। सन्धि।
सुलहकुल वि० (फा) सबके साथ मेल रखने वाला।
सुलहनामा पुं० (फा) वह पत्र जिस पर सुलह या मेल की शर्तें लिखी हों।
सुलाखना क्रि० (हि) सोने या चांदी को तपा कर परखना।
सुलागना क्रि० (हि) दे० 'सुलगाना'।
सुलाना क्रि० (हि) १-किसी को सोने में प्रवृत्त करना २-लिटाना। डाल देना।
सुलाह स्त्री० (हि)दे० 'सुलह'।
सुलिपि स्त्री० (स) साफ तथा उत्तम लिपि।
सुलूक पुं० (अ) १-अच्छा बरताव या व्यवहार। २-प्रेम। ३-ईश्वर के प्रति अनुराग।

[illegible]

श्वर माना जाता है। २-एक पहाड़।
सुलेमान पुं० (फा) दे० 'सुलेमाँ'।
सुलोक पुं० (स) स्वर्ग।
सुलोचन वि० (स) सुनेत्र। जिसकी आंखें सुन्दर हैं पुं० (सं) १-हिरण। २-चकोर।
सुलोचना स्त्री० (स) १-रावण पुत्र मेघनाद की स्त्री का नाम। २-अप्सरा। ३-[illegible] का नाम।
सुलोचनी वि० (हि) सुन्दर [illegible]
सुलोम वि० (स) जिसके सुन्दर [illegible]
सुलोहित पुं० (स) सुन्दर [illegible]

वि० सुन्दर लाल रंग वाला।
सुव पु० (हि) पुत्र।
सुवक्ता पुं० (हि) अच्छा व्याख्यान देने वाला।
सुववत्र पुं० (सं) १-शिव। २-वनतुलसी। वि० सुन्दर मुँह वाला।
सुवक्षा स्त्री० (सं) विभीषण की माता। वि० चौड़ी छाती वाला। २-सुन्दर वचन।
सुवच वि० (सं) १-मिष्टभाषी। २-सुन्दर बोलने वाला। पुं० सुन्दर वचन।
सुवटा पुं० (हि) दे० 'सुअटा'।
सुवदन वि० (सं) जिसका मुख सुन्दर हो। पुं० वनतुलसी।
सुवदना स्त्री० (सं) सुन्दर स्त्री।
सुवन पुं० (सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-चन्द्रमा। पु० (हि) दे० 'सुअन'।
सुवना पुं० (हि) सुग्गा। तोता।
सुवनारा पुं० (हि) दे० 'सुअन'।
सुवपु वि० (सं) सुन्दर शरीर वाला।
सुवरण पुं० (हि) दे० 'स्वर्ण'।
सुवर्चक पुं० (सं) १-सज्जी। २-एक प्राचीन ऋषि का नाम।
सुवर्चल पुं० (सं) १-काला नमक। २-एक प्राचीन देश।
सुवर्चला स्त्री० (सं) १-सूर्य की पत्नी का नाम। २-ब्राह्मी। ३-तीसी।
सुवर्चस पुं० (सं) शिव। वि० कांतियुक्त।
सुवर्चस्क वि० (सं) १-चमकदार। २-कांतियुक्त।
सुवर्चिक पुं० (सं) सज्जी।
सुवर्ण वि० (स) १-सोने का। २-सुन्दरवर्ण या रङ्ग का। पुं० सोना। स्वर्ण। २-एक माशे की एक पुरानी मुद्रा। ३-सोलह माशे का एक मान। ४-धन सम्पत्ति। ५-धतूरा। ६-एक वृत्त का नाम।
सुवर्णकदली स्त्री० (सं) चम्पा-केला।
सुवर्णकमल पुं० (सं) लाल कमल।
सुवर्णकरनी स्त्री० (हि) एक प्रकार की जड़ी।
सुवर्णकार पुं० (सं) स्वर्णकार। सुनार।
सुवर्णकृत् पुं० (सं) सुनार।
सुवर्णगर्भा स्त्री० (सं) वह भूमि जिसमें सोना हो। वि० सोने की खान वाली।
सुवर्णगिरि पुं० (सं) राजगृह के एक पर्वत का नाम।
सुवर्णगैरिक पुं० (सं) लाल गेरू।
सुवर्णद्वीप पु० (सं) सुमात्रा टापू का प्राचीन नाम।
सुवर्णधेनु पुं० (सं) सोने की गाय जो दान के उद्देश्य से बनाई जाती है।
सुवर्णपद्म पुं० (सं) लाल कमल।
सुवर्णपृष्ठ वि० (सं) जिस पर सोने का पत्तर चढ़ा हुआ हो।
सुवर्णप्रतिमा स्त्री० (सं) सोने की मूर्त्ति।
सुवर्णमान पुं० (सं) एक मुद्रा-प्रणाली जिसके अनुसार कागजी मुद्रा या बैंकों के नोटों का भुगतान किसी भी समय, किसी निश्चित या निर्धारित दर के अनुसार सोने के रूप में किया जा सके। (गोल्ड-स्टैण्डर्ड)।
सुवर्णयूथिका स्त्री० (सं) दे० 'सुवर्णयूथी'।
सुवर्णयूथी स्त्री० (सं) पीली जूही। स्वर्ण जूही।
सुवर्णरंभा स्त्री० (स) सुवर्ण कदली।
सुवर्णलेखा स्त्री० (स) कसौटी पर पड़ी हुई सोने की लकीर।
सुवर्णसूत्र पुं० (सं) सोने का तार।
सुवर्षा स्त्री० (सं) मोतिया।
सुवस वि० (हि) जो अपने वश या अधिकार में हो
सुवह वि० (हि) १-सहज में वहन करने या उठाने योग्य। २-धीर। पुं० (सं) एक प्रकार की वायु।
सुवा पुं० (हि) दे० 'सुआ'।
सुवाग्मी वि० (हि) सुवक्ता। बहुत सुन्दर व्याख्यान देने वाला।
सुवाच्य वि० (सं) जो सुगमता से पढ़ा जा सके।
सुवाना क्रि० (हि) दे० 'सुलाना'।
सुवार पु० (हि) १-रसोइया। २-अच्छा वार या दिन।
सुवास पुं० (सं) १-सुगन्ध। खुशबू। २-शिव। ३-सुन्दर घर। ४-एक वर्णवृत्त। वि० सुन्दर वस्त्रों से युक्त।
सुवासित वि० (सं) सुगन्धयुक्त। खुशबूदार।
सुवासिन स्त्री० (हि) दे० 'सुआसिन'।
सुवासिनी स्त्री० (सं) १-युवा अवस्था में भी पिता के घर रहने वाली स्त्री। २-सधवा स्त्री।
सुवासी वि० (सं) बढ़िया मकान में रहने वाला।
सुविख्यात वि० (सं) सुप्रसिद्ध। बहुत मशहूर।
सुविग्रह वि० (सं) सुन्दर शरीर या रूप वाला।
सुविचारित वि० (सं) अच्छी तरह से सोचा हुआ।
सुविदग्ध वि० (सं) अत्यधिक धूर्त या चालाक।
सुविदित वि० (सं) अच्छी तरह जाना हुआ।
सुविद् पु० (सं) पंडित या विद्वान व्यक्ति। वि० विद्वान।
सुविद्य वि०(सं) सुशील। अच्छे या नेक स्वभाव का
सुविधा स्त्री० (हि) दे० 'सुभीता'।
सुविधाधिकार पुं०(सं) किसी का अपनी भूमि,पयादि का अपनी सुविधा के लिए प्रयोग करने तथा किसी दूसरे द्वारा दुरुपयोग होने से रोकने का अधिकार। (राइट आफ इजेक्टमेंट)।
सुविधायककोष पुं०(सं)दे० 'भविष्यनिधि'। (प्रॉविडेन्ट फण्ड)।
सुविधि स्त्री० (सं) १-अच्छा नियम या कानून। २-

अच्छा ढंग।
सुविनीत वि० (सं) १-बहुत नम्र। २-सुशिक्षित।
सुविस्मित वि० (सं) अत्यधिक चकित।
सुविहित वि० (सं) १-सुव्यवस्थित। २-भली भांति किया हुआ।
सुवीज वि० (सं) दे० 'सबीज'।
सुवीर वि० (सं) १-बहुत बड़ा वीर। २-महान योद्धा पुं० १-शिव। २-वीर। योद्धा। ३-स्कंद।
सुवृत्त पु० (सं) जमीकन्द। वि० १-सच्चरित। २-गुणवान। ३-सुन्दर। ४-साधु।
सुवृत्ति स्त्री० (सं) १-उत्तम वृत्ति। २-सदाचारी। सच्चरित्र।
सुवेल पु० (सं) त्रिकूट पर्वत का नाम। वि० १-बहुत झुका हुआ। २-शान्त। नम्र।
सुवेश वि० (सं) १-सुन्दर। रूपवान्। २-वस्त्रादि से समज्जित। पुं० सफेद ईख।
सुवेष वि० (सं) दे० 'सुवेश'।
सुवेस वि० (हि) दे० 'सुवेश'।
सुवैया पुं० (हि) सोने वाला।
सुव्यवस्था स्त्री० (सं) १-अच्छा प्रबन्ध। २-सुन्दर व्यवस्था।
सुव्यवस्थित वि० (सं) उत्तम रूप से व्यवस्थित।
सुव्रत वि० (सं) १-दृढ़ प्रतिज्ञा पालन करने वाला। २-धर्मनिष्ठ। पु० १-स्कंद के एक अनुचर का नाम २-ब्रह्मचारी। ३-वर्तमान अवसर्पिणी के बीसवें अर्हत का नाम।
सुव्रता स्त्री० (सं) १-वह गाय जो सहज में दुही जा सके। २-एक अप्सरा। ३-दक्ष की एक कन्या का नाम।
सुशस वि० (सं) १-प्रशंसनीय। २-प्रख्यात।
सुशब्द वि० (सं) जिसकी आवाज अच्छी हो।
सुशासन पुं० (सं) अच्छा तथा सुव्यवस्थित शासन।
सुशासित वि० (सं) भली भांति नियन्त्रित या शासित
सुशास्य वि० (सं) सहज में शासित या नियंत्रित करने योग्य।
सुशिक्षित वि०(सं) जिसने अच्छी शिक्षा प्राप्त की हो।
सुशील वि० (सं) १-अच्छे शील या स्वभाव का। अच्छे आचरण का। साधु। ३-विनीत। नम्र। ४-सरल।
सुशीलता स्त्री० (सं) १-सुशील का भाव। २-सच्चरित्रता। ३-नम्रता।
सुशीला स्त्री० (सं) १-श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम २-राधा की एक अनुचरी। ३-सुदामा की पत्नी। ४-यमपत्नी।
सुशोभन वि० (सं) १– [illegible] वाला।
सुशोभित वि० (सं) अच्छी तरह शोभित और सज्जित हुआ।
सुश्राव्य वि०(सं) जो सुनने में मीठा या मधुर लगता हो।
सुश्री वि० (सं) १-बहुत सुन्दर। २-बहुत धनी। स्त्री० एक आदरसूचक शब्द जो स्त्रियों के नाम से पहले लगाया जाता है।
सुश्रीक पु० (सं) सलई। वि० दे० 'सुश्री'।
सुश्रुत पु० (सं) १-आयुर्वेद के सुश्रुत संहिता नामक ग्रन्थ के रचयिता का नाम। २-उक्त आचार्य का ग्रन्थ।
सुश्रुतसंहिता स्त्री०(सं) सुश्रुत द्वारा रचित एक प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्र ग्रन्थ।
सुश्रूखा स्त्री० (हि) दे० 'शुश्रूषा'।
सुश्रूषा स्त्री० (हि) दे० 'शुश्रूषा'।
सुश्रोणि वि० (सं) सुन्दर नितम्ब वाली (स्त्री)।
सुश्लिष्ट वि० (सं) १-अविरुद्ध। २-अतिशय श्लेषयुक्त।
सुश्लोक वि० (सं) सुप्रसिद्ध। पुण्यात्मा।
सुष पु० (हि) दे० 'सुख'।
सुषमना स्त्री० (हि) दे० 'सुषुम्ना'।
सुषमनि स्त्री० (हि) दे० 'सुषुम्ना'।
सुषमा स्त्री० (सं) १-अत्यधिक शोभा या सुन्दरता। २-जैनमतानुसार काल का एक नाम। ३ दस अक्षरों वाला एक वृत्त।
सुषमाशाली वि० (सं) जिसमें बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता हो।
सुषाना क्रि० (हि) दे० 'सुखाना'।
सुषारा वि० (हि) दे० 'सुखारा'।
सुषिक्त वि० (सं) भलीभांति सींचा हुआ।
सुषिर पुं० (सं) १-बांस। २-अग्नि। ३-हवा के दबाव या जोर से बजने वाला। ४-बेंत। ५-छेद। ६-वायुमंडल। ७-लकड़ी। ८-काठ। ९-चूहा। वि० जिसमें छेद हो। खोखला। पोला।
सुषुप्त वि० (सं) गहरी नींद में सोया हुआ।
सुषुप्ति स्त्री० (सं) १-घोर निद्रा। २-अज्ञान। ३-योग साधन में एक अवस्था।
सुषुम्णा स्त्री० (सं) दे० 'सुषुम्ना'।
सुषुम्ना स्त्री०(सं) हठयोग के अनुसार शरीर की तीन मुख्य नाड़ियों में से वह जो नासिका से ब्रह्मरंध्र तक गई हुई मानी जाती है तथा वैद्यक में इसका स्थान नाड़ी के मध्य में माना जाता है।
सुषेण पु० (सं) १-विष्णु। २-एक यक्ष। ३-एक नागासुर। ४-करौंदा। ५-बेंत।
[illegible]
[illegible] २-दया-[illegible]। ३-भलीभांति। पुं० १-सत्य। २-प्रशंसा।

सुहागरात स्त्री० (हि) वर और वधू के प्रथम मिलन की रात।

सुहागसेज स्त्री० (हि) वह पलङ्ग जो कन्यादान में दिया जाता है तथा जिस पर वर और वधू साथ सोते हैं।

सुहागा पुं० (हि) एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधक के सोता से निकलता है।

सुहागिन स्त्री० (हि) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।

सुहागिनि स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।

सुहागिनी स्त्री० दे० 'सुहागिन'।

सुहागिल स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।

सुहाना वि० (हि) जो सहा जा सके।

सुहाना क्रि० (हि) १-अच्छा या भला लगना। २-सुशोभित होना। वि० सुहावना।

सुहावा वि० (हि) दे० 'सुहावना'।

सुहारी स्त्री० (हि) बिना पिट्ठी की सादी पूरी।

सुहाल पु० (हि) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का नमकीन पकवान।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वाला। प्रियदर्शन।

सुहावला वि० (हि) दे० 'सुहावना'।

सुहास वि० (सं) सुन्दर या मधुर मुस्कान वाला।

सुहासिनी वि० (सं) सुन्दर मुस्कान वाली (स्त्री)।

सुहृत् वि० (सं) स्नेहयुक्त हृदय वाला। पु० १-मित्र २-ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुण्डली में चौथा स्थान।

सुहृता स्त्री० (सं) मित्रता। सुहृत का भाव या धर्म।

सुहृत्याग पुं० (सं) मित्रता का भङ्ग हो जाना।

सुहृत्प्राप्ति स्त्री० (सं) मित्रता का होना।

सुहृदय वि० (सं) १-अच्छे हृदय वाला। सहृदय। स्नेहशील।

सुहृद् वि० (सं) दे० 'सुहृत'।

सुहृद्बल पु० (सं) मित्र राजा की सेना।

सुहृद्भेद पु० (सं) मित्र का अलग हो जाना।

सुहेल पु० (सं) एक कल्पित तारा जिसके उदय होने पर कीड़े मकोड़े मर जाते हैं तथा चमड़े में सुगन्ध उत्पन्न हो जाती है तथा जिसको कवि लोग शुभ मानते हैं।

सुहेलरा वि० (हि) १-सुन्दर। सुहावना। २-सुखदायक।

सुहेला वि० (हि) दे० 'सुहेलरा'। पु० १-मङ्गल गीत २-स्तुति।

सुहैल पुं० (सं) दे० 'सुहेल'।

सूँ अव्य० (हि) करण और अपादान का चिह्न 'से'।

सूँइस स्त्री० (हि) दे० 'सूँस'।

सूँघना क्रि० (हि) १-नाक से गन्ध का अनुभव करना। २-बहुत थोड़ा भोजन करना (व्यंग)। ३-(सांप का) काटना। डसना।

सूँघा पुं० (हि) १-भेदिया। जासूस। २-केवल सूँघकर भूमि में पानी या खजाना बताने वाला। ३-वह कुत्ता जो केवल सूँघ कर शिकार का पता लगा ले।

सूँड पु० (हि) हाथी के अग्रभाग का वह लम्बा अङ्ग जिससे वह नाक का वह का काम है। शुण्ड।

सूँडाल पुं० (हि) हाथी।

सूँड़ी स्त्री० (हि) अनाज या फसल में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

सूँस पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा जल जन्तु। शिशुमार। सूस।

सूँह अव्य० (हि) सामने। सन्मुख।

सूअर पुं० (हि) एक प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो जङ्गली तथा पालतू दोनों प्रकार का होता है। शूकर २-एक गाली।

[illegible] (हि) १-शूकरी। मादा सूअर। २-[illegible]ने वाली स्त्री।

[illegible] (हि) प्रति वर्ष बच्चा जनने वाली स्त्री।

सूआ पुं० (हि) १-सुग्गा। तोता। २-बड़ी सूई। ३-सीख।

सूई स्त्री० (हि) १-लोहे का एक पतला उपकरण जिसके एक सिरे में धागा पिरो कर कपड़ा सीया जाता है २-किसी विशेष परिमाण, अंक, दिशा आदि का सूचक तार या कांटा। ३-पौधों का छोटा पतला अंकुर। ४-पिन।

सूईकारी स्त्री० (हि) दे० 'सूचीकार्य' (नीडलवर्क)।

सूईडोरा पुं० (हि) एक मालखम्भ की कसरत।

सूक पुं० (सं) १-वायु। हवा। २-कमल। (हि) १-शुक्र। २-शुक्र नक्षत्र।

सूकना क्रि० (हि) दे० 'सूखना'।

सूकर पुं० (सं) १-सूअर। २-एक प्रकार का मृग। ३-सफेद धान। ४-एक नरक।

सूकरक्षेत्र पुं० (सं) १-एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो सोरों के नाम से प्रसिद्ध है।

सूकरखेत पु० (सं) दे० 'सूकरक्षेत्र'।

सूकरगृह पुं० (सं) सूअरों के रहने का बाड़ा।

सूकरी स्त्री० (सं) १-मादा सूअर। सूअरी २-एक प्रकार की चिड़िया।

सूका पुं० (हि) चवन्नी (सिक्का)। वि० दे० 'सूखा'।

सूक्त पुं० (सं) १-उत्तम। भाषण। २-वेद मन्त्रों का समूह। ३-महद्वाक्य। वि० अच्छी तरह कहा

सुहागरात स्त्री० (हि) वर और वधू के प्रथम मिलन की रात।
सुहागपिटारा स्त्री० (हि) वह पिटारा जो कन्यादान में दिया जाता है तथा जिस पर वर और वधू साथ सोते हैं।
सुहागा पुं० (हि) एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधक के सोतों से निकलता है।
सुहागिन स्त्री० (हि) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।
सुहागिनि स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।
सुहागिनी स्त्री० दे० 'सुहागिन'।
सुहागिल स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।
सुहाना वि० (हि) जो सहा जा सके।
सुहाना क्रि० (हि) १-अच्छा या भला लगना। २-सुशोभित होना। वि० सुहावना।
सुहाया वि० (हि) दे० 'सुहावना'।
सुहारी स्त्री० (हि) बिना पिट्ठी की सादी पूरी।
सुहाल पुं० (हि) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव वि० (हि) सुन्दर। सुहावना। पुं० सुन्दर हाव
सुहावता वि० (हि) भला लगने वाला। अच्छा।
सुहावन वि० (हि) दे० 'सुहावना'।
सुहावना वि० (हि) देखने में सुन्दर या भला लगने वाला। प्रियदर्शन।
सुहावला वि० (हि) दे० 'सुहावना'।
सुहास वि० (सं) सुन्दर या मधुर मुस्कान वाला।

सुहृत्पात पुं० (सं) मित्रता का भङ्ग हो जाना।
सुहृत्प्राप्ति स्त्री० (सं) मित्रता का होना।
सुहृद वि० (सं) १-अच्छे हृदय वाला। सहृदय। स्नेहशील।
सुहृद् वि० (सं) दे० 'सुहृद'।
सुहृद्बल पुं० (सं) मित्र राजा की सेना।
सुहृद्भेद पुं० (सं) मित्र का अलग हो जाना।
सुहृत पुं० (सं) एक कल्पित तारा जिसके उदय होने पर कीड़े मकोड़े मर जाते हैं तथा पत्तों में सुगन्ध उत्पन्न हो जाती है तथा जिसको कवि लोग शुभ मानते हैं।
सुंघरा वि० (हि) १-सुन्दर। सुहावना। २-सुगन्धक।
सुहेला वि० (हि) दे० 'सुहेला'। पुं० १-मङ्गल गीत २-स्तुति।
सुहेल पुं० (सं) दे० 'सुहेल'।

सूँ अव्य० (हि) करण और अपादान का चिह्न 'से'।
सूँघन स्त्री० (हि) दे० 'सूँघ'।
सूँघना क्रि०(हि) १-नाक से गन्ध का अनुभव करना। २-बहुत थोड़ा भोजन करना। (व्यंग)। ३-(साँप का) काटना। डसना।
सूँघा पुं० (हि) १-भेदिया। जासूस। २-केवल सूँघ कर भूमि में पानी या खजाना बताने वाला। ३-वह कुत्ता जो केवल सूँघ कर शिकार का पता लगा ले।
सूँड पुं० (हि) हाथी के अग्रभाग का वह लम्बा अङ्ग जिससे वह नाक का व हाथ का काम लेता है। शुण्ड।
सूँडाल पुं० (हि) हाथी।
सूँडी स्त्री० (हि) अनाज या कपड़े में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
सूँस पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा जल जन्तु। शिशुमार। सूस।
सूँह अव्य० (हि) सामने। सम्मुख।
सूअर पुं० (हि) एक प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो जङ्गली तथा पालतू दोनों प्रकार का होता है। शूकर २-एक गाली।
सूअरनी स्त्री० (हि) १-शूकरी। मादा सूअर। २-बहुत बच्चे जनने वाली स्त्री।
सूअरबियान स्त्री० (हि) प्रति वर्ष बच्चा जनने वाली स्त्री।
सूआ पुं० (हि) १-सुग्गा। तोता। २-बड़ी सूई। ३-सींक।
सूई स्त्री०(हि) १-लोहे का एक पतला छोटा तार जिसके एक सिरे में छेद होता है और दूसरा सिरा नुकीला होता है २-किसी विशेष परिमाण, अंक, दिशा आदि का सूचक तार या काँटा। ३-बीजों का छोटा पतला अंकुर। ४-पिन।
सूईकारी स्त्री० (हि) दे० 'सूचीकर्म' (नीडलवर्क)।
सूईडोरा पुं० (हि) एक मालखम्भ की कसरत।
सूक पुं० (सं) १-वायु। हवा। २-कमल। (हि) १-शुक्र। २-शुक्र नक्षत्र।
सूकना क्रि० (हि) दे० 'सूखना'।
सूकर पुं० (सं) १-सूअर। २-एक प्रकार का मृग। ३-सफ़ेद धान। ४-एक नरक।
सूकरक्षेत्र पुं० (सं) १-एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो सोरों के नाम से प्रसिद्ध है।
सूकरखेत पुं० (सं) दे० 'सूकरक्षेत्र'।
सूकरगृह पुं० (सं) सूअरों के रहने का बाड़ा।
सूकरी स्त्री० (सं) १-मादा सूअर। शूकरी २-एक प्रकार की चिड़िया।
सूखा पुं० (हि) पक्षी (डिंगल)। वि० दे० 'सूखा'।
सूक्त पुं० (सं) १-उक्ति। कथन। २-वेद मन्त्रों का समूह

३-कर्ण।
सूतपुत्रक पुं० (सं) कर्ण।
सूतरी स्त्री० (हि) दे० 'सुतली'।
सूतलड़ पुं० (हि) रहँट।
सूति स्त्री० (सं) १-जन्म। प्रसव। २-उद्गम। ३-पैदावार। उपज। ४-सीवन। सीना। ५-वह स्थान जहाँ से सोमरस निकाला जाता था। ६-सोमरस निष्कलन।
सूतिका स्त्री०(सं) १-वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चा जना हो। २-वह गाय जिसने हाल ही में बच्चा जना हो।
सूतिकागृह पुं० (सं) वह कमरा या घर जिसमें स्त्री बच्चा जनती है। सौरी। प्रसवगृह।
सूतिकागार पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह।
सूतिकागेह पुं० (सं) सूतिकागृह।
सूतिकाभवन पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह'।
सूतिकामारुत पुं० (सं) प्रसव के समय होने वाली पीड़ा।
सूतिकारोग पुं० (सं) प्रसूता को होने वाले रोग।
सूतिकाल पुं० (सं) बच्चा जनने का समय।
सूतिकावास पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह'।
सूतिगृह पुं० (सं) सूतिकागृह। जच्चाखाना।
सूतिमारुत पुं० (सं) दे० 'सूतिकामारुत'।
सूतिरोग पुं० (सं) दे० 'सूतिकारोग'।
सूतिवात पुं० (सं) प्रसव वेदना।
सूती वि० (हि) सूत का बना हुआ। स्त्री० १-साधी। २-डोंडे में से अफीम काढ़ने की सीपी।
सूती कपड़ा पुं० (हि) सूत का बना हुआ कपड़ा।
सूतीगृह पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह'।
सूतीघर पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह'।
सूत्कार पुं० (हि) दे० 'सीत्कार'।
सूत्र पुं०(सं) १-सूत। धागा। २-रेखा। लकीर। ३-नियम। व्यवस्था। ४-करधनी। ५-थोड़े शब्दों में कहा गया पद्य जिसका गूढ़ अर्थ हो। ६-सुराग। (क्ल्यू)। ७-वह संकेत पद या शब्द जिसमें कोई वस्तु बनाने के मूल सिद्धांत, प्रतिक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो (फार्मूला)। ८-एक वृक्ष।
सूत्रकंठ पुं० (सं) १-ब्राह्मण। २-कबूतर। ३-खंजन खजरीट।
सूत्रकरण पुं० (सं) सूत्रवाक्य का निर्माण।
सूत्रकर्ता पुं० (सं) सूत्रग्रन्थ का रचयिता।
सूत्रकर्म पुं० (सं) १-बढ़ई का काम। २-राज या मेमार का काम।
सूत्रकार पुं० (सं) १-सूत्र रचयिता। २-बढ़ई। ३-जुलाहा। ४-मकड़ी।
सूत्रकृत् पुं० (सं) दे० 'सूत्रकार'।
सूत्रक्रीड़ा स्त्री० (सं) एक प्रकार का सूत का खेल।
सूत्रजाल पुं० (सं) सूत का बना हुआ जाल।
सूत्रण पुं० (सं) सूत बनाने की क्रिया।
सूत्रदरिद्र वि० (सं) (वह वस्त्र) जिसमें सूत कम हो।
सूत्रधर पुं० (सं) दे० 'सूत्रधार'।
सूत्रधार पुं० (सं) वह नट जो नाट्यशाला का प्रधान तथा नाटक की व्यवस्था करता है। २-बढ़ई। ३-एक प्राचीन वर्णसंकर जाति।
सूत्रपदी वि० (सं) सूत जैसे पतले पैर वाली।
सूत्रपात पुं०(सं) नींव पड़ना। किसी काम के आरंभ में होने का पूरा आयोजन।
सूत्रबद्ध वि० (सं) सूत्र रूप में लिखित।
सूत्रभृत् पुं० (सं) सूत्रधार।
सूत्रयंत्र पुं० (सं) १-करघा। २-सूत का बना जाल।
सूत्रवाप पुं० (सं) सूत बनाने की क्रिया। बुनाई।
सूत्रविद पुं० (सं) सूत्रों का ज्ञाता या पंडित।
सूत्रवीणा स्त्री० (सं) प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा जिसमें तारों के स्थान पर सूत्र लगाये जाते थे।
सूत्रवेष्टन पुं० (सं) १-करघा। २-बुनाई।
सूत्रशाला स्त्री० (सं) सूत कातने या एकत्र करने का कारखाना।
सूत्रसंचालक पुं० (सं) वह राजनीतिज्ञ जो गुप्त रूप से घटनाओं का सूत्र-संचालन करता है (वायर-पुलर)।
सूत्रिका स्त्री० (सं) १-हार। माला। २-सैंवई।
सूत्रित वि० (सं) सूत्र के रूप में लाया या बनाया हुआ(फार्मूलेटेड)।
सूत्री वि०(सं) जिसमें सूत्र हो। पुं० १-काक। कौआ। २-सूत्रधार।
सूत्रीय वि० (सं) सूत्र-सम्बन्धी। सूत्र का।
सूथन पुं० (देश) १-एक तरह का पायजामा। २-एक जंगली वृक्ष।
सूथनी स्त्री० (देश) १-मुसलमान स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाला पायजामा। २-एक कंद।
सूद पुं० (फा) १-लाभ। फायदा। २-ऋण दिये गये धन के बदले में मूलधन के अतिरिक्त मिलने वाला धन। ब्याज। (इन्टरेस्ट)। पुं० (सं) १-रसोइया। भोज्य पदार्थ। व्यञ्जन। ३-पाप। ४-सारथी का काम। ५-दोष। ६-लोभ। ७-एक प्राचीन जनपद।
सूदक वि० (सं) नाश करने वाला।
सूदखोर पुं० (फा) सूद या ब्याज लेने वाला।
सूदखोरी स्त्री० (फा) सूद लेने काम या भाव।
सूदख्वार पुं० (फा) दे० 'सूदखोर'।
सूददरसूद पुं० (फा) ब्याज का भी ब्याज। चक्रवृद्धि (कम्पाउंड इन्टरेस्ट)।
सूदन पुं० (सं) १-वध करना। मार डालना। २-

क्षयीकरण। ३-छेदने की क्रिया। वि० विनाश करने वाला।
सूदना क्रि० (हि) नष्ट करना।
सूदशाला स्त्री० (स) रसोईघर। पाकशाला।
सूदशास्त्र पुं० (स) पाकशास्त्र।
सूदी वि० (फा) (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर दी गई हो। ब्याजू।
सूद्र पु० (हि) दे० 'शूद्र'।
सूध वि० (हि) १-सीधा। २-शुद्ध।
सूधना क्रि० (हि) १-सिद्ध होना। २-सत्य या ठीक होना।
सूधरा वि० (हि) दे० 'सीधा'।
सूधा वि० (हि) दे० 'सीधा'।
सूधे अव्यय (हि) सीधी तरह से।
सूत पुं० (स) १-प्रसव। जनना। २-पुत्र। बेटा। ३-फूल की कली। वि० १-विकसित। २-उत्पन्न। पु० (हि) शून्य। वि० १-सुनसान। निर्जन। २-रहित हीन।
सूनसार पु० (स) कामदेव।
सूनसान वि० (हि) दे० 'सुनसान'।
सूना वि० (हि) निर्जन। एकांत। जहां कोई न हो। स्त्री० (स) १-पुत्री। बेटी। २-कसाईखाना। ३-मांस की बिक्री। ४-गृहस्थ के घर में ऐसा स्थान-चूल्हा, चक्की, ओखली, घड़ा या झाड़ू, में कोई भी वस्तु या चीज जिससे हिंसा होने की संभावना रहती है। ५-हत्या। ६-हाथी के अंकुश का दस्ता।
सूनादोष पु०(स) वह दोष जो चूल्हा, चक्की, ओखली आदि से होने वाली हिंसा से होता है।
सूनापन पु० (हि) १-सन्नाटा। २-सूना होने का भाव
सूनिक पुं० (स) दे० 'सूनी'।
सूनी पुं० (स) मांस बेचने वाला।
सूनु पु० (सं) १-पुत्र। २-छोटा भाई। ३-नाती। ४-सूर्य। ५-आक। ६-सोमरस चुआने वाला।
सूनु स्त्री० (स) बेटी। पुत्री।
सूनृत पु० (सं) १-सत्य और प्रिय भाषण। २-मंगल। आनन्द। वि० १-सत्य तथा प्रिय। २-दयालु।
सूप पुं० (सं) १-पकाई हुई दाल उसका पानी। २-रसोइया। ३-बाण। ४-रसेदार तरकारी। पुं०(हि) अनाज फटकने का छाज।
सूपक पु० (हि) रसोइया।
सूपकर्त्ता पुं० (स) रसोइया। पाचक।
सूपकार पुं० (स) रसोइया।
सूपकारी पु० (हि) दे० 'सूपकार'।
सूपड़त पु० (स) दे० 'सूपकार'।
सूपच पुं० (हि) दे० 'श्वपच'।
सूपधूपक पु० (सं) हींग।
सूपधूपन पुं० (स) हींग।
सूपनखा स्त्री० (हि) दे० 'शूर्पणखा'।
सूपशास्त्र पु० (स) पाकशास्त्र।
सूपा पुं० (हि) छाज। सूप।
सूपिक पु०(स) १-रसोइया। २-पकी हुई दाल आदि का रेसा।
सूफ पु० (फा) १-पशम। ऊन। २-काली स्याही की दवात में डाला जाने वाला लत्ता या चीथड़ा। (देश) पु० (हि) सूप।
सूफिया पु० (अ) मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय
सूफियाना वि० (फा) १-सादा। २-सूफिया जैसा।
सूफी वि० (अ) १-मुसलमानों का एक धार्मिक सम्प्रदाय जो अपने विचारों की उदारता के लिए प्रसिद्ध है। २-इस संप्रदाय का अनुयायी।
सूफीख्याल वि०(फा) सूफियों जैसे विचार रखने वाला
सूबा पु० (फा) १-किसी देश का कोई भाग। प्रांत। प्रदेश। २-दे० 'सूबेदार'।
सूबेदार पु० (फा) १-किसी सूबे या प्रांत का प्रधान शासक। २-सेना विभाग का एक छोटा पद। ३-इस पद पर रहने वाला व्यक्ति।
सूबेदारी स्त्री० (फा) सूबेदार का पद या काम।
सूभर वि० (हि) १-सुन्दर। सफेद।
सूम वि० (हि) कृपण। कंजूस। पु०(स) १-जल। २-दूध। ३-आकाश। ४-स्वर्ग।
सूमड़ा वि० (हि) दे० 'सूम'।
सूमी पुं० (देश) एक बहुत बड़ा जंगली वृक्ष।
सूर पु०(स) १-सूर्य। २-आक। ३-पंडित। आचार्य ४-मसूर। ५-सूरदास। ६-अंधा। ७-छप्पय छंद का एक भेद। पु० (हि) १-सूअर। २-भूरे रंग का घोड़ा। ३-शूल। पुं० (देश) पठानों की एक जाति पु० (फा) तुरही।
सूरत पु० (स) जमींदार।
सूरकांत पु० (सं) सूर्यकांत।
सूरकुमार पु० (हि) वसुदेव।
सूरज पु० (हि) १-सूर्य। २-एक प्रकार का गोदना। ३-सूरदास। ४-सुग्रीव। ५-शूरवीर का पुत्र। ६-कर्ण। यम।
सूरजतनी स्त्री० (हि) दे० 'सूर्यतनया'।
सूरजबंसी (हि) दे० 'सूर्यवंशी'।
सूरजभगत पु० (हि) एक प्रकार की गिलहरी।
सूरजमुखी पु० (हि) दे० 'सूर्यमुखी'।
सूरजसुत पु (हि) १-सुग्रीव। २-कर्ण।
सूरजसुता स्त्री० (हि) यमुना।
सूरजा स्त्री० (स) यमुना।
सूरण पु० (स) सूरन। जमीकंद।
सूरत स्त्री०(फा) १-रूप। [illegible] २-उपाय। युक्ति। [illegible] बम्बई प्रांत का एक नगर

का विषैला पौधा। स्त्री० (अ) कुरानशरीफ का कोई प्रकरण। स्त्री० (हि) सुध। ध्यान। स्मरण वि० (हि) अनुकूल। मेहरबान।
सूरतआशना वि० (फा) मामूली जान-पहचान वाला।
सूरतआशनाई स्त्री० (फा) मामूली जान पहचान। अल्प परिचय।
सूरतशक्ल स्त्री० (फा) रूप। सुन्दरता।
सूरतहराम वि० (फा) जो भीतर से खराब तथा ऊपर से भला हो।
सूरता स्त्री० (हि) वीरता।
सूरताई स्त्री० (हि) वीरता।
सूरति स्त्री० (हि) दे० 'सूरत'।
सूरतेहाल स्त्री० (फा) वर्तमान अवस्था।
सूरदास पुं०(हि) व्रजभाषा के प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवि जो अन्धे थे।
सूरन पुं० (हि) जमीकंद।
सूरपनखा स्त्री० (हि) दे० 'शूर्पणखा'।
सूरपुत्र पुं० (सं) १-कर्ण। २-सुग्रीव। ३-शनि। ४-यम।
सूरवीर पुं० (हि) दे० 'शूरवीर'।
सूरमुखी पुं० (सं) १-सूर्यमुखी। २-शीशा।
सूरमुखीमनि पुं० (हि) सूर्यकांतमणि।
सूरमा पुं० (हि) वीर। बहादुर।
सूरवाँ पुं० (हि) दे० 'सूरमा'।
सूरसागर पुं० (हि) हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि सूरदास कृत एक ग्रंथ का नाम जिस में श्रीकृष्ण की बाल-लीला का वर्णन है।
सूरसावंत पुं० (हि) १-युद्धमंत्री। २-नायक। सरदार
सूरसुत पुं० (सं) १-शनिग्रह। -सुग्रीव। ६-कर्ण।
सूरसुता स्त्री० (सं) यमुना।
सूरसूत पुं० (सं) अरुण जो सूर्य का सारथी है।
सूरसेन पुं० (सं) दे० 'शूरसेन'।
सूरसेनपुर पुं० (हि) मथुरा।
सूरा पुं० (हि) अनाज के दाने में पाया जाने वाला एक कीड़ा।
सूराख पुं० (फा) १-छेद। छिद्र। २-शाला।
सूराखदार वि० (फा) जिस में छिद्र हो।
सूरी पुं० (हि) भारत का एक प्राचीन मुसलमानों का राज्यवंश। स्त्री० (सं) विदुषी। पंडिता। २-सूर्य की पत्नी। ३-राई। ४-कुन्ती। वि० (फा) सूर वंश का
सूरुज पुं०(हि) दे० 'सूर्य'।
सूरवा पुं० (हि) दे० 'सूरमा'।
सूर्प पुं० (सं) सूप। शूर्प।
सूर्पनखा स्त्री० (हि) दे० 'शूर्पणखा'।
सूर्य पुं० (सं) १-सौर जगत का वह सब से बड़ा और ज्वलंत पिंड जिससे सब ग्रहों को गरमी और प्रकाश मिलता है। प्रभाकर। दिनकर। २-बारह की संख्या। ३-आक। मदार। ४-बलि के एक पुत्र का नाम।
सूर्यकमल पुं० (सं) सूरजमुखी का फूल।
सूर्यकर पुं० (सं) सूर्य की किरण।
सूर्यकांत पुं० (सं) १-एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर। २-सूरजमुखी शीशी। ३-एक प्रकार का फूल। ४-एक पर्वत का नाम।
सूर्यकांति स्त्री० (सं) १-सूर्य का प्रकाश या दीप्ति। तिल का फूल। एक प्रकार का पुष्प।
सूर्यग्रहण पुं० (सं) पृथ्वी और सूर्य के मध्य चंद्रमा के आजाने तथा उसकी छाया से पड़ने वाला ग्रहण
सूर्यज पुं० (सं) १-यम। २-शनिग्रह। ६-सुग्रीव। ४-कर्ण।
सूर्यजा स्त्री०(सं) यमुना नदी।
सूर्यतनय पुं० (सं) दे० 'सूर्यज'।
सूर्यतनया स्त्री० (सं) यमुना नदी।
सूर्यतेज पुं० (सं) धूप। सूर्य का तेज।
सूर्यनंदन पुं० (सं) १-कर्ण। २-शनि।
सूर्यनगर पुं० (सं) कश्मीर के एक प्राचीन नगर का नाम।
सूर्यनारायण पुं० (सं) सूर्य देवता।
सूर्यपक्व वि० (सं) १-सूर्य के ताप से पका हुआ। २-अपने आप पका हुआ।
सूर्यपत्नी स्त्री० (सं) छाया। संज्ञा।
सूर्यपर्व पुं० (सं) वह पर्व जब सूर्य किसी नई राशि में प्रवेश करता है।
सूर्यपुत्र पुं० (सं) १-शनि। २-यम। ३-वरुण। ४-सुग्रीव। ५-कर्ण। ६-अश्विनीकुमार।
सूर्यपुत्री स्त्री० (सं) १-यमुना। २-बिजली।
सूर्यपुर पुं० (सं) दे० 'सूर्यनगर'।
सूर्यप्रभ वि० (सं) सूर्य से समान दीप्ति वाला।
सूर्यबिंब पुं० (सं) सूर्य का मण्डल।
सूर्यमंडल पुं० (सं) सूर्य का घेरा।
सूर्यमणि पुं० (सं) १-सूर्यकांतमणि। २-एक पुष्प-वृक्ष।
सूर्यमुखी पुं० (सं) एक प्रकार का पीले रङ्ग का फूल जो सूर्योदय के समय अपना मुख सूर्य की ओर तथा सूर्यास्त के समय मुख नीचे कर लेता है।
सूर्ययंत्र पुं० (सं) १-सूर्य के मंत्र और बीज से अङ्कित ताम्रपत्र जिसका सूर्य के उद्देश्य से पूजन किया जाता है। २-वह दूरबीन जिससे सूर्य की गति विधि का हाल जाना जाता है।
सूर्यरश्मि स्त्री० (सं) १-सूर्य की किरण। २-सविता।
सूर्यलोक पुं० (सं) सूर्य के रहने का लोक (कहते हैं कि युद्धक्षेत्र में वीर गति प्राप्त करने वाले इसी लोक में जाते हैं)।
सूर्यवंश पुं०(सं) भारतवर्ष के राजाओं का एक प्राचीन

वंश जिसकी उत्पत्ति मनु के पुत्र इक्ष्वाकु नाम से की जाती है।
सूर्यवंशी वि० (स) सूर्यवंश का।
सूर्यसंक्रम पु० (स) दे० 'सूर्यसंक्रमण'।
सूर्यसंक्रमण पु० (स) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।
सूर्यसंक्रांति पुं० (सं) दे० 'सूर्यसंक्रमण'।
सूर्यसिद्धांत पु० (स) ज्योतिष विद्या का भास्कराचार्य द्वारा रचित गणित का एक ग्रन्थ।
सूर्यसुत पुं० (सं) १-कर्ण। २-शनि। ३-सुग्रीव।
सूर्यांशु पु० (सं) सूर्य की किरण।
सूर्या स्त्री० (स) १-सूर्य की पत्नी। २-संज्ञा। ३-नव-विवाहिता स्त्री।
सूर्याणी स्त्री० (स) संज्ञा। सूर्य की पत्नी।
सूर्यातप पु० (स) सूर्य की गरमी। धूप।
सूर्यात्मज पु० (स) १-शनि। २-कर्ण। ३-सुग्रीव।
सूर्यावर्त पुं० (सं) १-आधासीसी नामक सिर की पीड़ा। २-एक प्रकार का जलपात्र।
सूर्यास्त पुं० (सं) १-सन्ध्या को सूर्य का डूबना या छिपना। २-सन्ध्या का समय।
सूर्योदय पु० (सं) १-सूर्य का उदय होना। २-सूर्य निकलने का समय।

सूर्योपासना स्त्री० (स) सूर्य की आराधना या पूजा।
सूल पुं० (हि) दे० 'शूल'।
सूलधर पुं० (हि) दे० 'शूलधर'।
सूलधारी पु० (हि) दे० 'शूलधर'।
सूलना क्रि० (हि) १-नुकीली वस्तु से छेदना। २-कष्ट देना। ३-पीड़ित होना। ४-नुकीली वस्तु से छिदना
सूलपाणि पुं० (हि) दे० 'शूलपाणि'।
सूली स्त्री० (हि) १-प्राणदण्ड। २-फांसी। ३-लोहे की नुकीली छड़ जिस पर बिठाकर अपराधी को प्राचीन काल में प्राणदण्ड दिया जाता था।
सूवना क्रि० (हि) बहना। प्रवाहित होना।
सूवर पुं० (हि) दे० 'सूअर'।
सूवा पुं० (हि) सुग्गा। तोता।
सूस पुं० (हि) सूँस नामक जलजन्तु जो मगर की तरह होता है।
सूसमार पुं० (हि) दे० 'सूस'।
सूसि पु० (हि) दे० 'सूस'।
सूहा पुं० (हि) १-एक प्रकार का लाल रङ्ग। २-एक संपूर्ण जाति का राग। वि० लाल रङ्ग का।
सूहाकान्हड़ा पु० (हि) सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग।
सूहाटोडी स्त्री० (हि) सम्पूर्ण जाति की एक सङ्कर रागिनी।
सूहाबिलावल पु० (हि) सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग।
सूहास्याम पुं० (हि) सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग
सूही वि० (हि) दे० 'सूहा'।
सृंखला स्त्री० (हि) दे० 'शृंखला'।
सृंग पु० (हि) दे० 'शृंग'।
सृंगवेर पुं० (हि) अदरक। सोंठ।
सृंगवेरपुर पु० (हि) दे० 'शृंगवेरपुर'।
सृंगी पु० (हि) दे० 'शृंगी'।
सृकण्डु स्त्री० (स) खाज। खुजली।
सृक पु० (सं) १-शूल। भाला। २-बाण। ३-वायु। तीर। पु० माला। गजरा। हार।
सृगाल पु० (स) १-शृगाल। गीदड़। २-धूर्त्त। ३-कायर। ४-वदमिजाज व्यक्ति।
सृगालिनी स्त्री० (स) गीदड़ी। सियारिन।
सृगाली स्त्री० (सं) दे० 'शृगालिनी'।
सृग्विनी स्त्री० (हि) दे० 'स्रग्विणी'।
सृजक पुं० (हि) सृष्टि करने वाला।
सृजन पु० (हि) १-सृष्टि रचना करने की क्रिया। २-सृष्टि।
सृजनशीलता स्त्री० (हि) रचना शक्ति।
सृजनहार पु० (हि) सृष्टिकर्ता।
सृजना क्रि० (हि) रचना करना। सृष्टि रचना।
सृज्य वि० (स) १-जो उत्पन्न किया जाने वाला हो २-जो छोड़ा या निकाला जाने वाला हो।
सृत वि० (स) चला या खिसका हुआ।
सृष्ट वि० (स) १-जिसकी सृष्टि या रचना की गई हो। निर्मित। रचित। २-त्यक्त। ३-युक्त। ४-निश्चित। ५-अलंकृत। ६-बहुत। पुं० तेंदू। तेंदुक
सृष्टि स्त्री० (सं) १-उत्पत्ति। पैदाइश। २-संसार। ३-संसार की उत्पत्ति। ४-उदारता। ५-प्रकृति। निसर्ग।
सृष्टिकर्ता पुं० (सं) संसार की रचना करने वाला। ब्रह्मा। ईश्वर।
सृष्टिकृत् पु० (स) सृष्टिकर्ता।
सृष्टिविज्ञान पु० (स) दे० 'सृष्टिशास्त्र'।
सृष्टिशास्त्र पुं० (स) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, बनावट तथा विकास का विवेचन होता है (कॉस्मोजेनी)।
सृष्ट्यन्तर पु० (सं) किसी दूसरी जाति की स्त्री से विवाह करने के बाद होने वाली सन्तान।
सेक स्त्री० (हि) १-सेंकने की क्रिया या भाव। २-ताप गरमी।
सेकना क्रि० (हि) १-आग पर या उसके सामने रख कर गरमी पहुंचाना। २-धूप में गरमी पहुँचाने वाली वस्तु के सामने रखकर उसकी गरमी उठाना।

सेंगर पुं० (हि) १-एक पौधा। २-इस पौधे की फली ३-क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।
सेंट स्त्री० (हि) दूह की धार। पुं० (अं) सुगन्धित द्रव्य। इत्र।
सेंत स्त्री० (हि) पास का कुछ खर्च न होना।
सेंतना क्रि० (हि) १-बटोरकर रखना। २-समेटना।
सेंतमेंत अव्य० (हि) १-मुफ्त में। २-व्यर्थ। फजूल
सेंति स्त्री० (हि) दे० 'सेंती'।
सेंती स्त्री० (हि) दे० 'सेंत'। प्रत्य० पुरानी। हिन्दी में करण और अपादान की विभक्ति।
सेंथी स्त्री० (हि) बरछी। भाला।
सेंदुर पुं० (हि) सिंदूर।
सेंदुरा वि० (हि) सिंदूर के रङ्ग का लाल।
सेंदुरिया पुं० (हि) एक सदाबहार पौधा। वि० लाल या सिन्दूर के रङ्ग का।
सेंदुरियाआम पुं० (हि) एक प्रकार का आम जो पकने पर कुछ-कुछ लाल रङ्ग का हो जाता है।
सेंदुरी वि० (हि) दे० 'सेंदुरिया'। स्त्री० लाल गाय।
सेंद्रिय वि० (सं) १-जिसमें इन्द्रियां हों। २-जिसमें मरदानगी हो।
सेंध स्त्री० (हि) चोरी करने के लिए दीवार तोड़ कर बनाया हुआ छेद। नकब।
सेंधना क्रि० (हि) सेंध लगाना।
सेंधा पुं० (हि) खान में से निकलने वाला नमक। सैंधव।
सेंधिया वि० (हि) १-सेंध लगाने वाला। २-दीवार में छेद करके चोरी करने वाला। पुं० सिंधिया।
सेंधमार पुं०(देश) एक प्रकार का मांसाहारी जन्तु।
सेंमल पुं० (हि) सेमल। सेंहुड़।
सेंवई स्त्री० (हि) गुँधे हुए मैदे से बनाये हुए पतले लच्छे जो दूध या पानी के साथ पका कर खाये जाते हैं।
सेंवर पुं० (हि) दे० 'सेमल'।
सेंहुआ पुं०(हि) एक चर्म रोग जिसमें शरीर पर श्वेत चित्ते पड़ जाते हैं।
सेंहुड़ पुं० (हि) थूहर।
से प्रत्य० (हि) करण तथा अपादान कारण का चिह्न वि० समान। सदृश। सर्व० ये। स्त्री०(सं) १-सेवा २-कामदेव की पत्नी।
सेई स्त्री० (हि) अनाज नापने का काठ का गहरा बरतन।
सेउ पुं० (हि) दे० 'सेब'।
सेकंड पुं० (अं) एक मिनट का साठवां भाग।
सेक पुं० (सं) १-पानी छिड़कना। पेड़ों को सींचना २-अभिषेक। ३-तेल लगाना या मलना।
सेकपात्र पुं० (सं) पानी सींचने का बरतन। डोल।
सेकभाजन पुं० (सं) दे० 'सेकपात्र'।
सेक्तव्य वि०(सं)१-सींचने के योग्य। २-[illegible] हो।
सेक्ता वि० (सं) सींचने वाला। तर करने [illegible] १-पति। २-सींचने वाला।
सेक्रेटरी पुं० (अं) १-वह उच्च कर्मचा[illegible] आधीन सरकार या शासन का कोई मन्त्री। सचिव। २-वह अधिकारी जि[illegible] संस्था के कार्य-सम्पादन का भार हो।
सेख पुं० (हि) १-अन्त। समाप्ति। २-शेष सर्पराज।
सेखर पुं० (हि) दे० 'शेखर'।
सेखावत पुं० (हि) राजपूतों की एक जाति।
सेखी स्त्री० (हि) दे० 'शेखी'।
सेगा पुं० (अ) विभाग। महकमा।
सेच पुं० (सं) छिड़काव। सिंचाई।
सेचक वि० (सं) सींचने वाला। पुं० बादल।
सेचन पुं० (सं) १-सिंचाई। २-छिड़काव। ३-[illegible] पेक। ४-धातु की ढलाई।
सेचनक पुं० (सं) अभिषेक।
सेचनघट पुं०(सं) वह बरतन जिससे जल [illegible]
सेचनी स्त्री० (सं) बाल्टी। डोलची।
सेचनीय वि० (सं) सींचने या छिड़कने योग्य
सेचत वि० (सं) १-जो सींचा गया हो। २-[illegible] छींटे दिये गये हों।
सेच्य वि० (सं) १-सींचने योग्य। जिसे सीं[illegible]
सेज स्त्री०(हि) शय्या। बिछौना।
सेजपाल पुं० (हि) शयनागार का रक्षक। शय्[illegible]
सेजरिया स्त्री० (हि) दे० 'सेज'।
सेजिया स्त्री० (हि) दे० 'सेज'।
सेज्या स्त्री० (हि) दे० 'शय्या'।
सेझदारि पुं० (हि) सह्याद्रि श्रेणी।
सेझना क्रि० (हि) हटना। दूर होना।
सेटना क्रि०(हि)१-मानना। २-महत्व स्वीकार
सेठ पुं० (हि) १-धनी और महाजन। बड़ा [illegible] २-धनी और प्रतिष्ठित वणिकों की उपाधि [illegible] खत्रियों की एक जाति।
सेढ़ा पुं० (देश) भादों के महीने में होने वा[illegible] प्रकार का धान।
सेत पुं० (हि) पुल। सेतु। वि० श्वेत। सफेद।
सेतदुति पुं० (हि) चन्द्रमा।
सेतबंध पुं० (हि) दे 'सेतुबंध'।
सेती अव्य० (हि) दे० 'से'।
सेतु पुं० (सं) १-नदी आदि पर का पुल। २-[illegible] की रुकावट के लिये बना हुआ बांध। (डैम) [illegible] सीमा। हद। ४-मर्यादा। प्रतिबंध। ५-[illegible] व्याख्या। ६-वह मकान जिसमें धरने [illegible] कीलों से जड़ी हुई हों।

सेतुक पु०(सं)१-पुल। २-बाँध। ३-वरुणवृक्ष।
सेतुकर पु० (सं) सेतु या पुल बनाने वाला।
सेतुकर्म पु० (सं) पुल या सेतु बनाने का काम।
सेतुपथ पु० (सं) दुर्गम स्थानों तथा पहाड़ों पर जाने का मार्ग।
सेतुबंध पु० (सं) १-पुल बनाने का काम। २-कन्याकुमारी के पास का वह पुल जो लंका पर चढ़ाई करने समय रामचंद्र जी ने बनवाया था। बंदर।
सेतुबन्धन पु० (सं) १-पुल बाँधना। पुल। २-बाँध।
सेतुभेत्ता पु० (सं) सेतु या पुल तोड़ने वाला।
सेतुभेद पु०(सं)१-पुल का टूटना। २-बाँध का टूटना
सेतुवा पु० (हि) दे० 'सत्तू'।
सेतुशैल पु० (सं) दो देशों के बीच में पड़ने वाला पहाड़।
सेथिया पु०(हि) आँखों का इलाज करने वाला।
सेद पु० (हि) दे० 'स्वेद'।
सेदरा वि० (हि) दे० 'स्वेदज'।
सेन पुं० (सं) १-शरीर। २-जीवन। ३-बङ्गाल की वैद्य जाति की एक उपाधि। ४-एक भक्त नाई का नाम। वि० १-सनाथ। २-अधीन। पु०(हि) बाज पक्षी।
सेनक पु० (सं) एक वैयाकरण।
सेनकुल पु० (सं) बंगाल का एक राजवंश।
सेनजित् वि० (सं) सेना को जीतने वाला। पु० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। स्त्री० एक अप्सरा।
सेनप पु० (सं) सेनापति।
सेनपति पु० (हि) सेनापति।

[illegible]

गमा पहुँचाने के लिए अड्डा पर बैठना।
सेनाकक्ष पु० (सं) सेना का पार्श्व या बाजू।
सेनाकर्म पु० (सं) १-सेना का नेतृत्व। २-सेना की व्यवस्था।
सेनाग्र पु० (सं) सेना का वह दल जो आगे चलता है
सेनाचर पु० (सं) सैनिक। सिपाही।
सेनाजीव पु० (सं) दे० 'सेनाजीवी'।
सेनाजीवी पु० (सं) सैनिक। सिपाही।
सेनादार पु० (हि) सेनानायक। फौजदार।
सेनाधिकारी पु० (सं) सेनानायक। फौज का अफसर या अधिकारी।
सेनाधिनाथ पु० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनाधिप पु० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनाधिपति पु० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनाधीश पु० (सं) दे० 'सेनापति'।

सेनाध्यक्ष पु० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनानायक पु० (सं) १-सेनापति। २-सेना का बड़ा अधिकारी।
सेनानी पु० (सं) १-सेनापति। २-कार्तिकेय। ३-एक रुद्र का नाम। ४-एक विशेष प्रकार का पासा।
सेनापति पु०(सं) सेना का बड़ा या प्रधान अधिकारी (कमान्डर-इन-चीफ)। २-कार्तिकेय। ३-हिन्दी के एक कवि का नाम।
सेनापति-पति पु० (सं) प्रधान सेनापति।
सेनापाल पु० (सं) सेनानायक।
सेनापृष्ठ पु० (सं) सेना का पिछला भाग।
सेनाभङ्ग पु० (सं) सेना को तितर-बितर कर भगा देना।
सेनाभिगोप्ता पु०(सं) सेना की रक्षा करने वाला।
सेनामुख पु०(सं)१-सेना का अगला भाग। २-सेना का एक दल जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ६ घोड़े तथा १५ पैदल सिपाही होते हैं।
सेनायत्त करना क्रि० (हि) सर्वसाधारण को सेना में भरती होने के लिये विवश करना। (कमांडियर)
सेना-रसद-विभाग पु० (सं) वह विभाग जो सेना के लिये खाद्य सामग्री आदि जुटाने की व्यवस्था करता है। (कमिसेरियेट)।
सेनावास पु० (सं) १-वह स्थान जहां पर सेना रहती हो। छावनी। २-डेरा। खेमा।
सेनावाह पु० (सं) सेनानायक।
सेनाव्यूह पु० (सं) युद्ध के समय भिन्न-भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के विभिन्न अंगों की स्थापना या

[illegible] —बाज पक्षी की

सेनी स्त्री० (फा) तश्तरी। (हि) १-पंक्ति। कतार। २-सीढ़ी। जीना। ३-बाजपक्षी की मादा। पु० (हि) सहदेव का अज्ञातवास का नाम।
सेनुर पु० (देश) सिन्दूर।
सेफालिका स्त्री० (हि) दे० 'शेफालिका'।
सेब पु० (फा) नाशपाती की तरह का एक प्रसिद्ध फल तथा उसका वृक्ष।
सेम स्त्री० (हि) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनाई जाती है।
सेमई पु० (हि) हलका हरा रंग। स्त्री० दे० 'सेंवई'।
सेमर पु० (देश) दलदली जमीन। (हि) दे० 'सेमल'
सेमल पु०(हि) एक बड़ा वृक्ष जिसमें लाल फूल आते हैं जिनके डोडों में गूदे के स्थान पर रूई होती है।
सेमलमूसला पु० (हि) सेमल वृक्ष की जड़।
सेमेटिक पु०(अ) नृवंश-शास्त्र के अनुसार एक मानव-

सेंगर पुं० (हि) १-एक पौधा। २-इस पौधे की फली ३-क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।
सेंट स्त्री० (हि) दूह की धार। पुं० (अं) सुगन्धित द्रव्य। इत्र।
सेंत स्त्री० (हि) पास का कुछ खर्च न होना।
सेंतना क्रि० (हि) १-बटोरकर रखना। २-समेटना।
सेंतमेंत अव्य० (हि) १-मुफ्त में। २-व्यर्थ। फजूल
सेंति स्त्री० (हि) दे० 'सेंती'।
सेंती स्त्री० (हि) दे० 'सेंत'। प्रत्य० पुरानी। हिन्दी में करण और अपादान की विभक्ति।
सेंथी स्त्री० (हि) बरछी। भाला।
सेंदुर पुं० (हि) सिंदूर।
सेंदुरा वि० (हि) सिंदूर के रङ्ग का लाल।
सेंदुरिया पुं० (हि) एक सदाबहार पौधा। वि० लाल या सिन्दूर के रङ्ग का।
सेंदुरियाआम पुं० (हि) एक प्रकार का आम जो पकने पर कुछ-कुछ लाल रङ्ग का हो जाता है।
सेंदुरी वि० (हि) दे० 'सेंदुरिया'। स्त्री० लाल गाय।
सेंद्रिय वि० (सं) १-जिसमें इंन्द्रियां हों। २-जिसमें मरदानगी हो।
सेंध स्त्री० (हि) चोरी करने के लिए दीवार तोड़ कर बनाया हुआ छेद। नकब।
सेंधना क्रि० (हि) सेंध लगाना।
सेंधा पुं० (हि) खान में से निकलने वाला नमक। सैंधव।
सेंधिया वि० (हि) १-सेंध लगाने वाला। २-दीवार में छेद करके चोरी करने वाला। पुं० सिंधिया।
सेंधुआर पुं०(देश) एक प्रकार का मांसाहारी जन्तु।
सेंमल पुं० (हि) सेमल। सेंहुड़।
सेंवई स्त्री० (हि) गुँधे हुए मैदे से बनाये हुए पतले लच्छे जो दूध या पानी के साथ पका कर खाये जाते हैं।
सेंवर पुं० (हि) दे० 'सेमल'।
सेंहुआ पुं०(हि) एक चर्म रोग जिसमें शरीर पर श्वेत चित्ते पड़ जाते हैं।
सेंहुड़ पुं० (हि) थूहर।
से प्रत्य० (हि) करण तथा अपादान कारण का चिह्न वि० समान। सदृश। सर्व० वे। स्त्री०(सं) १-सेवा। २-कामदेव की पत्नी।
सेई स्त्री० (हि) अनाज नापने का काठ का गहरा बरतन।
सेउ पुं० (हि) दे० 'सेव'।
सेकंड पुं० (अं) एक मिनट का साठवां भाग।
सेक पुं० (सं) १-पानी छिड़कना। पेड़ों को सींचना २-अभिषेक। ३-तेल लगाना या मलना।
सेकपात्र पुं० (सं) पानी सींचने का बरतन। डोल।
सेकभाजन पुं० (सं) दे० 'सेकपात्र'।
सेक्तव्य वि०(सं)१-सींचने के योग्य। २-जिसे सींचना हो।
सेक्ता वि० (सं) सींचने वाला। तर करने वाला। पुं० १-पति। २-सींचने वाला।
सेक्रेटरी पुं० (अं) १-वह उच्च कर्मचारी जिसके आधीन सरकार या शासन का कोई विभाग हो। मन्त्री। सचिव। २-वह अधिकारी जिस पर किसी संस्था के कार्य-सम्पादन का भार हो।
सेख पुं० (हि) १-अन्त। समाप्ति। २-शेख। ३-शेष सर्पराज।
सेखर पुं० (हि) दे० 'शेखर'।
सेखावत पुं० (हि) राजपूतों की एक जाति या शाखा
सेखी स्त्री० (हि) दे० 'शेखी'।
सेगा पुं० (अ) विभाग। महकमा।
सेच पुं० (सं) छिड़काव। सिंचाई।
सेचक वि० (सं) सींचने वाला। पुं० बादल। मेघ।
सेचन पुं० (सं) १-सिंचाई। २-छिड़काव। ३-अभिषेक। ४-धातु की ढलाई।
सेचनक पुं० (सं) अभिषेक।
सेचनघट पुं०(सं) वह बरतन जिससे जल सींचते हैं
सेचनी स्त्री० (सं) बाल्टी। डोल्ची।
सेचनीय वि० (सं) सींचने या छिड़कने योग्य।
सेचत वि० (सं) १-जो सींचा गया हो। २-जिस पर छींटे दिये गये हों।
सेच्य वि० (सं) १-सींचने योग्य। जिसे सींचना हो
सेज स्त्री०(हि) शय्या। बिछौना।
सेजपाल पुं० (हि) शयनागार का रक्षक। शय्यापाल।
सेजरिया स्त्री० (हि) दे० 'सेज'।
सेजिया स्त्री० (हि) दे० 'सेज'।
सेज्या स्त्री० (हि) दे० 'शय्या'।
सेझदारि पुं० (हि) सह्याद्रि श्रेणी।
सेझना क्रि० (हि) हटना। दूर होना।
सेटना क्रि०(हि)१-मानना। २-महत्व स्वीकार करना।
सेठ पुं० (हि) १-धनी और महाजन। बड़ा साहूकार २-धनी और प्रतिष्ठित वणिकों की उपाधि। ३-खत्रियों की एक जाति।
सेढ़ा पुं० (देश) भादों के महीने में होने वाला एक प्रकार का धान।
सेत पुं० (हि) पुल। सेतु। वि० श्वेत। सफेद।
सेतदुति पुं० (हि) चन्द्रमा।
सेतबंध पुं० (हि) दे 'सेतुबंध'।
सेतो अव्य० (हि) दे० 'से'।
सेतु पुं० (सं) १-नदी आदि पर का पुल। २-पानी की रुकावट के लिये बना हुआ बांध। (डैम)। ३-सीमा। हद। ४-मर्यादा। प्रतिबंध। ५-टीका। व्याख्या। ६-वह मकान जिसमें धरने लोहे की कीलों से जड़ी हुई हों।

वर्ग जिसमें अरब, मिस्री, यहूदी, सीरियन आदि जातियों को गिना जाता है।
सेर पुं० (हि) १-सोलह छटांक या अस्सी तोले का एक तौल। २-दे० 'शेर'। वि० (फा) तृप्त। (देश) एक अगहनिया धान।
सेरसाहि पुं० (फा) दिल्ली का बादशाह शेरशाह।
सेरवा पुं० (हि) १-वह कपड़ा जिससे अन्न बरसाते समय भूसा उड़ाया जाता है। २-सिरहाने की ओर की खाट की पाटी।
सेरही स्त्री० (हि) एक प्रकार का लगान जो काश्तकार को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पड़ता है।
सेरा पुं० (फा) सींची हुई जमीन। (हि) खाट के सिराहने की ओर की पाटी।
सेरी स्त्री० (फा) १-तृप्ति। सन्तोष। २-मन का भरना या अघाना।
सेर्ष्य वि० (सं) जो ईर्ष्यायुक्त हो।
सेल पुं० (हि) १-भाला। बरछा। २-सन का रस्सा ३-हल में लगी हुई नली जिसमें से होकर बीज भूमि पर गिरता है। (देश) वह काठ का बरतन जिससे नाव के अन्दर का पानी बाहर निकालते हैं
सेलखड़ी स्त्री० (हि) दे० 'सिलखड़ी'।
सेलना क्रि० (हि) मरजाना। चल बसना।
सेला पुं० (हि) १-रेशमी चादर या दुपट्टा। २-साफा ३-वह धान जो भूसी अलग करने से पहले कुछ उबाल लिया गया हो।
सेलिया पुं० (देश) घोड़े की एक जाति।
सेली स्त्री० (हि) १-बरछी। २-छोटा दुपट्टा। ३-गांती ४-बड़ी माला। ५-एक मछली। (देश) दक्षिण भारत में होने वाला एक छोटा पेड़।
सेल्ल पुं० (हि) दे० 'सेल्ला'।
सेल्ला पुं० (हि) १-भाला। २-बरछी।
सेल्ह पुं० (हि) १-भाला। २-बरछी। ३-भूमि।
सेल्हना क्रि० (हि) मर जाना।
सेल्हा पुं० (हि) एक प्रकार का अगहनिया।
सेल्ही स्त्री० (हि) दे० 'सेली'।
सेवँ पुं० (देश) एक प्रकार का ऊँचा पेड़
सेवँई स्त्री० (हि) गुँधे हुए आटे के बने सू... लच्छे।
सेवँर पुं० (हि) दे० 'सेमल'।
सेव पुं० (हि) १-एक बेसन का बना हुआ पक... जो सूत जैसा होता है। २-दे० 'सेब'। स्त्री० दे० 'सेवा'।
सेवक पुं० (सं) १-सेवा ... वाला नौ... सेवन करने वाला। २-... वाला दरजी।

सेवकाई स्त्री० (हि) सेवा। टहल। खिदमत।
सेवग पुं० (हि) दे० 'सेवक'।
सेवड़ा पुं० (हि) १-जैन साधु। २-एक ग्राम देवता। पुं० (देश) मैदा के मोटे सेव या पकवान।
सेवति स्त्री० (हि) दे० 'स्वाति'।
सेवती स्त्री० (सं) सफेद गुलाब।
सेवन पुं० (सं) १-परिचर्या। २-उपासना। ३-नियमित रूप से किया जाने वाला उपयोग। ४-उपभोग ५-एक प्रकार की घास।
सेवना क्रि० (हि) दे० 'सोना'।
सेवनी स्त्री० (सं) १-सूई। २-सीवन। टांका। ३-जूही स्त्री० (हि) दासी।
सेवनीय वि० (सं) १-सेवा के योग्य। २-व्यवहार के योग्य। ३-सोने योग्य।
सेवर पुं० (हि) दे० 'शबर'।
सेवरी स्त्री० (हि) दे० 'शबर'।
सेवांजलि स्त्री० (सं) भक्त या सेवक का दोनों हथेलियों के जुड़े हुए संपुट में स्वामी या उपास्य को कुछ अर्पण।
सेवा स्त्री० (सं) १-परिचर्या। टहल। २-नौकरी। ३-सार्वजनिक या राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जुम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो। ४-उक्त विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों का वर्ग। (सर्विस)। ५-उपासना। ६-आ... ७-रक्षा।
सेवाकाल पुं० (सं) वह अवधि जिसमें ... नौकरी की हो।
सेवाजन पुं० (सं) ...
सेवाटहल स्त्री...
सेवाती स्त्री...
सेवादा...

सेवारा पु० (हि) दे० 'सेंवड़ा'।
सेवाल पु० (हि) दे० 'सिवार'।
सेवाविलासनी स्त्री० (स) दासी। नौकरानी। सेविका
सेवावृत्ति स्त्री० (स) नौकरी।
सेवि पु० (स) १-बेर। २-सर्व. वि० (हि) दे० 'सेवित'
सेविका स्त्री० (स) दासी। नौकरानी।

योग्य।
सेविता स्त्री० (स) १-सेवा। नौकरी। २-उपासना। ३-आश्रय। पु० सेवक।
सेवी वि० (सं) १-सेवा करने वाला। २ पूजा करने वाला।
सेवोपहार पु० (स) वह धन जो किसी कर्मचारी को

जिसकी सेवा की जाय। ३-पूजा के योग्य। ४-रक्षण के योग्य। पु० १-स्वामी। मालिक। २-रक्षस। ३-जल। ४-सामुद्री लवण।
सेव्यसेवकभाव पु० (सं) भक्ति मार्ग में उपासना का एक भाव जिसमें देवता को स्वामी तथा अपने को सेवक माना जाता है।
सेश्वर वि० (सं) १-ईश्वरयुक्त। २-जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।
सेष पु० (हि) १-दे० 'शेष'। २-दे० 'शेख'।
सेस पु० (हि) दे० 'शेष'।
सेसनाग दे० 'शेषनाग'।
सेसर पु० (हि) १-ताश का एक खेल। २-चालबाजी
सेसरिया वि० (हि) छल से दूसरे का धन हरण करने वाला।
सेहत स्त्री० (स) दे० 'स्वास्थ्य'।
सेहतखाना पु० (अ) जहाज में मूत्रादि करने की कोठरी।
सेहतनामा पु० (अ) नीरोग होने का प्रमाणपत्र।
सेहतबख्श पु० (अ) आरोग्य करने वाली।
सेहरा पु० (हि) १-विवाह के समय वर को पहनाने का फूलों या सुनहरे तारों की बनी मालाओं का पुञ्ज। २-विवाह का मुकुट। मौर। ३-विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले मांगलिक गीत।
सेहराबंधाई स्त्री० (हि) नाई को दिया जाने वाला सेहरा बांधने का नेग।
सेहरी स्त्री० (हि) एक प्रकार की छोटी मछली।
सेही पु० (हि) लोमड़ी के आकार का एक जन्तु जिसकी पीठ पर नुकीले कांटे होते हैं।
सेहुंआ पु० (हि) एक प्रकार का चर्म रोग जिससे शरीर पर भूरे दाग पड़ जाते हैं।
सैंगर पु० (हि) बबूल की फली।
सैंतना क्रि० (हि) १-संचित करना। २-समेटना। ३-सहेजना। ४-मार डालना।
सैंतालिस वि० (हि) चालीस और सात।
सैंतीस वि० (हि) तीस और सात।

देश का घोड़ा
३-सिंध देश का निवासी। वि० १-सिंध देश में उत्पन्न। २-सिंध देश का।
सैंधवपति पु० (सं) जयद्रथ जो सिंध का राजा था
सैंधवी स्त्री० (सं) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।
सैंया पु० (हि) दे० 'सैयां'।
सैंह वि० (स) १-सिंह सम्बन्धी। २-सिंह के समान
...दे० 'सैंधी'।

। १-तत्व। सार। वीर्य। ३-बल। ४-वृद्धि।
सैकड़ा पु० (हि) सौ का समूह।
सैकड़े अव्य० (हि) प्रतिशत। प्रति सौ के हिसाब से
सैकत वि० (सं) १-रेतीला। २-बालू का बना। पु० १-बालुआ किनारा। २-रेतीली जमीन।
सैकतिक वि० (सं) १-सैकत सम्बन्धी। २-सन्देह-जीवी। पु० १-साधु। २-मंगलसूत्र।
सैकल पु० (अ) हथियारों को साफ करने तथा सान चढ़ाने का काम।
सैथी स्त्री० (हि) बरछी। छोटा भाला।
सैद पु० (हि) दे० 'सैयद'।
सैदगाह स्त्री० (हि) दे० 'शिकारगाह'।
सैद्धांतिक पु० (सं) १ सिद्धांत का ज्ञाता। विद्वान। पंडित। २-तांत्रिक। वि० सिद्धांत-सम्बन्धी।
सैन स्त्री० (हि) १-संकेत। इशारा। २-निशाना। चिह्न। ३-दे० 'सेना'। पु० (देश) एक प्रकार का बगला।
सैनपति पु० (हि) सेनापति।
सैनभोग पु० (हि) वह नैवेद्य जो रात के समय मंदिरों में चढ़ाया जाता है।
सैना स्त्री० (हि) दे० 'सेना'।
सैनापति पु० (हि) सेनापति।
सैनापत्य पु० (स) सेनापति का पद या काम। वि० सेनापति सम्बन्धी।
सैनिक पु० (सं) १-सिपाही। २-प्रहरी। ३-किसी का वध करने के लिए रखा हुआ व्यक्ति। वि० सेना का। सेना सम्बन्धी।
सैनिकता स्त्री० (स) १-सैनिक ... पद या काम। २-युद्ध। लड़ाई

सैनिकवाद पुं० (सं) नित्य भयंकर युद्धोपकरण बनाने या विराट् सेना रखने का सिद्धांत। (मिलिटरी-इज्म)।
सैनिकसहचारी पुं०(सं) किसी राजदूत के साथ उसके कार्यालय में काम करने वाला वह सैनिक अधिकारी जो उसे सैनिक विषयों पर परामर्श देता है (मिलिटरी अटेशे)।
सैनिकीकरण पुं० (सं) लोगों को सैनिक बनाने तथा सैनिक सामग्री से सज्जित करने का काम। (मिलिटिराइजेशन)।
सैनी पुं० (हि) नाई। हज्जाम। स्त्री० दे० 'सेना'।
सैनेय वि० (हि) सेना के योग्य। लड़ने के योग्य।
सैनेश पुं० (हि) सेनापति।
सैनेस पुं० (हि) सेनापति।
सैन्य पुं० (सं) १-सैनिक। सिपाही। २-सेना। फौज ३-पलटन। ४-प्रहरी। ५-छावनी। वि० सेना-सम्बन्धी। सेना का।
सैन्यकक्ष पुं० (सं) दे० 'सेनाकक्ष'।
सैन्यक्षोभ पुं० (सं) सेना का विद्रोह। फौजी बगावत
सैन्यद्रोह पुं० (सं) सेना का विद्रोह। (म्यूटिनी)।
सैन्यनायक पुं० (सं) सेनानायक।
सैन्यनिवेशभूमि स्त्री० (सं) वह स्थान जहां सेना पड़ाव डाले।
सैन्यपति पुं० (सं) सेनापति।
सैन्यपाल पुं० (सं) सेनापति।
सैन्यपृष्ठ पुं० (सं) सेना का पिछला भाग।
सैन्यवास पुं० (सं) सेना का पड़ाव। छावनी।
सैन्यविभागाध्यक्ष पुं० (सं) सेना-विभाग का वह प्रधान अधिकारी जो सेनापति के आदेश से विभिन्न सेना की व्यवस्था करता है तथा अन्य आदेशों का पालन करता है। (एडजूटेंट जनरल)।
सैन्यवियोजन पुं० (सं) सङ्गठित सेना को भंग करके सैनिकों को बरखास्त कर देना (डिमोबिलाइजेशन)
सैन्यशिक्षार्थी पुं०(सं) वह शिक्षार्थी जो सैनिक विद्यालय में शिक्षा पा रहा हो। (कॅडेट)।
सैन्यसंसज्जन पुं० (सं) सेनाओं का युद्ध के लिये शस्त्रों से सुसज्जित करके तैयार करना। (मॉबिलाइजेशन ऑफ दी आरमी)।
सैन्यसज्ज स्त्री० (सं) युद्ध के लिये सेना की तैयारी।
सैन्यादेशवाहक पुं० (सं) वह अधिकारी जो सेनापति की आज्ञाएँ युद्धस्थल तक तथा युद्धस्थल की स्थिति के बारे में विवरण सेनापति तक पहुँचाने का कार्य करता है (एडेकांग)।
सैन्याधिपति पुं० (सं) सेनानायक।
सैन्याध्यक्ष पुं० (सं) सेनानायक।
सैन्यावासपुं० (सं) सैनिकों के रहने के लिये विशेष प्रकार का स्थान। (बैरक)।
सैन्योपवेशन पुं०(सं) सेना का पड़ाव या डेरा डा
सैफ स्त्री० (अ) तलवार।
सैफी वि० (हि) तिरछा।
सैयद पुं० (अ) १-मुहम्मद साहब के नाती हुसै वंश का एक आदमी। २-मुसलमानों की जातियों में से दूसरी जाति।
सैयां पुं० (हि) स्वामी। पति।
सैया स्त्री० (हि) दे० 'शय्या'।
सैयाद पुं० (अ) १-बहेलिया। २-चिड़ीमार। व्य
सैरंध्र पुं० (सं) १-घर का नौकर। २-एक वर्ण जाति।
सैरंध्रिका स्त्री० (सं) परिचारिका। दासी।
सैरंध्री १-अंतःपुर में काम करने वाली दासी। दूसरे घर में रहने वाली स्त्री। ३-द्रौपदी का नाम जो अज्ञातवास के समय रखा गया था
सैर स्त्री० (फा)१-मौज। आनन्द। २-मन बहला लिये कहीं जाना। इधर-उधर घूमना-फिरना। मनोरंजक दृश्य। ४-बाग,बगीचे आदि में मित्रों का होने वाला खानपान तथा आमोद वि० (सं) हल या सीर सम्बन्धी।
सैरगाह पुं० (फा) सैर करने का स्थान।
सैरसपाटा पुं० (फा)मन बहलाव के लिये कहीं फिरने जाना।
सैरिंध्री स्त्री० (सं) दे० 'सैरंध्री'।
सैल स्त्री० (हि) १-सैर। २-सेल। ३-बाढ़। ४- बहाव।
सैलकुमारी स्त्री० (हि) दे० 'शैलकुमारी'।
सैलजा स्त्री० (हि) दे० 'शैलजा'।
सैलतनया स्त्री० (हि) पार्वती।
सैलसुता स्त्री० (हि) पार्वती।
सैला पुं० (हि) १-लकड़ी का छोटा डंडा। मे २-गुल्ली। ३-मुँगरी। ४-वह छोटा डंडा जो के छेद में डाला जाता है।
सैलात्मजा स्त्री० (हि) पार्वती।
सैलानी वि०(हि) सैर-सपाटा करने या मनमाना घ वाला।
सैलाब पुं० (फा) बाढ़। जलप्लावन।
सैलाबा पुं० (फा) वह फसल जो पानी में डूब हो।
सैलाबी वि० (फा) जो बाढ़ आने पर डूब जाता। स्त्री० सील। तरी।
सैलूख पुं० (हि) दे० 'शैलूष'।
सैव पुं० (हि) दे० 'शैव'।
सैवल (हि) दे० 'शैवाल'।
सैव्य पुं० (हि) दे० 'शैव्य'।
सैस वि० (सं) दे० 'सैसक'।
सैसक वि (सं) १-सीसे का बना हुआ। २-सीसा

सोदरा स्त्री० (सं) सगी बहन।
सोदरी स्त्री० (हि०) सगी बहन।
सोदरीय वि० (सं) दे० 'सोदर'।
सोध पुं०(हि०) १-खोज। खबर। २-संशोधन। ३-चुकता या बेबाक होना। पुं०(हि०) महल। प्रासाद।
सोधक पुं० (हि०) दे० 'शोधक'।
सोधन पुं० (हि०) १-खोज। तलाश। २-अनुसंधान करने की क्रिया। ३-ठीक करने का काम।
सोधना क्रि० (हि) १-साफ या शुद्ध करना। २-दोष दूर करना। ३-ढूँढ़ना। ४-कुछ संस्कार करके धातुओं को औषध रूप में काम में लाने योग्य बनाना। ५-निश्चित करना। ६-ऋण चुकाना।
सोधवाना क्रि०(हि) दे० 'सोधना'।
सोधाना क्रि०(हि) १-सोधने का काम दूसरे से कराना। २-तलाश करना।
सोन पुं०(हि) १-विहार का एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिलता है। २-दे० 'सोना'। वि० लाल। अरुण। स्त्री० एक प्रकार की सदाबहार बेल। पुं० (हि) लहसुन। पुं० (देश) एक जलपक्षी।
सोनकिरवा पुं० (हि) १-एक प्रकार का कीड़ा। २-जुगनू।
सोनकेला पुं० (हि) चम्पाकेला। पीतलकेला।
सोनचंपा पुं० (हि) पीले या सोने के रङ्ग की चम्पा।
सोनचिरी स्त्री० (हि) १-नट जाति की स्त्री। नटी। २-नर्तक।
सोनजरद स्त्री० (हि) पीली जूही।
सोनजर्द स्त्री० (हि) पीली जूही।
सोनजिरद स्त्री० (हि) पीली जूही। स्वर्णयूथिका।
सोनजूही स्त्री० (हि) एक प्रकार की पीले रङ्ग वाली जूही।
सोनभद्र पुं० (सं) सोन नदी।
सोनरास पुं० (देश) पका हुआ पान।
सोनवाना वि० (हि) सुनहला। सोने का।
सोनहला वि० (हि) सोने के रङ्ग का। पुं० भटकैया का कांटा।
सोनहा पुं० (हि) कुत्ते की जाति का एक जंगली जानवर।
सोना पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध बहुमूल्य उज्ज्वल पीले रंग की धातु जिसके गहने बनते हैं। स्वर्ण। कंचन २-राजहंस। ३-बहुत सुन्दर तथा बहुमूल्य पदार्थ। ४-मझोले आकार का एक पहाड़ी वृक्ष। क्रि० (हि) १-लेट कर शरीर तथा मस्तिष्क को विश्राम देने की अवस्था में होना। नींद लेना। शयन। २-शरीर के किसी अंग का शून्य होना। ३-किसी विषय या बात की ओर उदासीन होकर चुप अथवा निष्क्रिय रहना।
सोनागेरू पुं० (हि) अधिक लाल तथा मुलायम जाति का गेरू।
सोनाचाँदी स्त्री० (हि) धन। दौलत। माल।
सोनापाठा पुं०(हि) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसके फल, बीज तथा छाल दवा के काम आते हैं।
सोनामक्खी स्त्री०(हि) १-एक खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग दवा के रूप में होता है। २-एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।
सोनामाखी स्त्री० (हि) दे० 'सोनामक्खी'।
सोनामुखी स्त्री० (हि) स्वर्णपत्री।
सोनिजरद स्त्री० (हि) दे० 'सोनजर्द'।
सोनित पुं० (हि) दे० 'शोणित'।
सोनी पुं० (हि) सुनार। स्वर्णकार।
सोपकरण वि० (सं) उपकरणयुक्त।
सोपत पुं० (हि) दे० 'सुभीता'।
सोपाधि वि० (सं) दे० 'सोपाधिक'।
सोपाधिक वि० (सं) १-जिसमें कोई शर्त या प्रतिबन्ध हो (कण्डीशनल)। २-जो किसी सीमा या मर्यादा से बांधा हुआ हो (क्वालिफाइड)।
सोपान पुं० (सं) १-जीना। सीढ़ी। २-मोक्ष प्राप्ति का उपाय (जैन)।
सोपानकूप पुं०(सं) वह कूआं जिसमें नीचे तक जाने के लिए सीढ़ी लगी हो।
सोपानपंक्ति स्त्री० (सं) सीढ़ियों का क्रम।
सोपानपरंपरा स्त्री० (सं) दे० 'सोपानपंक्ति'।
सोपानपथ पुं० (सं) सीढ़ी। जीना।
सोपानपद्धति स्त्री० (सं) दे० 'सोपानपथ'।
सोपानमार्ग पुं० (सं) दे० 'सोपानपथ'।
सोपानिका स्त्री० (सं) मकान के नीचे के खण्ड से ऊपर तक के किसी खण्ड में पहुँचाने या वहां से नीचे के खण्ड तक पहुँचाने का बिजली का उत्थानक। उन्नयनयन्त्र। (लिफ्ट)।
सोपानिका-चालक पुं० (सं) उन्नयनयन्त्र को चलाने वाला। (लिफ्टमैन)।
सोपानित वि० (सं) सोपान या सीढ़ियों वाली।
सोपि सर्व० (सं) १-वही। २-वह भी। ३-दे० सोऽपि।
सोफता पुं० (हि) १-एकांत स्थान। २-रोगादि में कुछ कमी होना।
सोफा पुं०(अं)एक प्रकार का लम्बा गद्दीदार आसन कोच।
सोफियाना वि०(हि) दे० 'सूफियाना'। देखने पड़ने पर सदा अच्छा लगने वाला।
सोफी पुं० (हि) दे० 'सूफी'।
सोभ स्त्री०(हि) दे० 'शोभ'। पुं० (सं) गंधर्वों के एक नगर का नाम।
सोभन पुं० (हि) दे० 'शोभन'।
सोभना क्रि० (हि) शोभा देना।

सोभनीक वि० (हि) सुन्दर। जिसमें शोभा हो।
सोमर वि० (हि) सुनिद्रागृह। शयनागार।
सोभांजन पुं० (स) दे० 'शोभांजन'।
सोभा स्त्री० (हि) दे० 'शोभा'।
सोभाकारी वि० (हि) सुन्दर। शोभायुक्त।
सोभायमान वि० (हि) दे० 'शोभित'।
सोभार वि० (हि) जिसमें उभार हो। अव्य० उभार के साथ।
सोभित वि० (हि) दे० 'शोभित'।
सोम पुं० (स) १-सोमवार। २-चन्द्रमा। ३-अमृत ४-जल। ५-एक प्राचीन भारतीय लता जिसका सेवन वैदिक ऋषि मादक पदार्थ के रूप में करते थे ६-यम। ७-कुबेर। ८-स्वर्ग। ९-वायु। १०-आठ वसुओं में से एक। ११-एक पर्वत का नाम। १२-सोमयज्ञ।
सोमकर पुं० (सं) चन्द्रमा की किरण।
सोमकलश पुं० (सं) सोमरस रखने का पात्र या घड़ा।
सोमकांत वि०(सं) चन्द्रमा जैसी कांति वाला। चमकदार। पुं० चन्द्रकांतमणि।
सोमकाम वि० (स) जिसे सोमपान करने की अभिलाषा हो।
सोमखाजी पु० (हि) सोमयाजी।
सोमदेव पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-सोमदेवता।
सोमन पु० (हि) एक प्रकार का अस्त्र।
सोमनस पुं० (हि) दे० 'सौमनस्य'।
सोमनाथ पु० (सं) बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से एक जिसका मन्दिर काठियावाड़ में है तथा जिसे सन् १०२४ ई० में महमूद गजनवी ने लूटा था।
सोमप वि० (सं) १-यज्ञ में सोमरस पीने वाला। २-सोमरस पान करने वाला।
सोमपर्व पु० (स) सोमपान करने का उत्सव या पर्व।
सोमपा वि० (सं) दे० 'सोमप'।
सोमपात्र पुं० (सं) सोमरस पीने या रखने का बरतन।
सोमपान पुं० (सं) सोमरस पीने की क्रिया।
सोमपायी वि० (सं) सोमरस पीने वाला।
सोमपुत्र पुं० (स) चन्द्रमा के पुत्र, बुध।
सोमप्रदोष पुं० (सं) सोमवार को पड़ने वाला प्रदोष व्रत।
सोमप्रभ वि० (सं) सोम या चन्द्रमा के समान प्रभा वाला।
सोमबंधु पुं० (स) १-कुमुद। २-सूर्य। ३-बुध।
सोमबेल स्त्री० (हि) गुलचन्द्नी का पौधा।
सोममख पु० (सं) सोमयज्ञ।
सोममद पुं० (सं) सोमरस पान करने से होने वाला नशा।

सोमयज्ञ पुं० (सं) प्राचीन काल में एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पान किया जाता था।
सोमयाग पुं० (सं) दे० 'सोमयज्ञ'।
सोमरस पुं० (सं) सोमलता का रस।
सोमराग पुं० (स) सङ्गीत में एक राग।
सोमराज पुं० (स) चन्द्रमा।
सोमराज्य पुं० (स) चन्द्रलोक।
सोमरोग पुं० (सं) स्त्रियों का बहुमूत्र रोग।
सोमलता स्त्री० (सं) १-दे० 'सोम'। २-गिलोय। ३-ब्राह्मी।
सोमलतिका स्त्री० (सं) दे० 'सोमलता'।
सोमलोक पु० (सं) चन्द्रलोक।
सोमवंशीय वि० (सं) चन्द्रवंश का। चन्द्रवंश में उत्पन्न
सोमवंश्य वि० (स) दे० 'सोमवंशीय'।
सोमवती अमावस्या स्त्री० (स) सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या जो पुण्य तिथि मानी जाती है।
सोमवल्लरि स्त्री० (स) दे० 'सोमवल्लरी'।
सोमवल्लरी स्त्री० (स) १-ब्राह्मी। २-एक वर्णवृत्त। ३-सोमलता।
सोमवल्ली स्त्री० (स) १-सोमलता। २-गिलोय। ३-ब्राह्मी। ४-सुदर्शन।
सोमवार पु० (स) सात वारों में से एक जो रविवार और मङ्गलवार के बीच में पड़ता है। चन्द्रवार।
सोमवासर पुं० (स) दे० 'सोमवार'।
सोमविक्रयी पुं० (स) सोमरस बेचने वाला।
सोमसुत पुं० (स) चन्द्रमा का पुत्र, बुध।
सोमाष्टमी स्त्री० (स) वह अष्टमी तिथि जो सोमवार को पड़े।
सोमास्त्र पु० (सं) एक प्रकार का अस्त्र।
सोमाह पुं० (सं) सोमवार का दिन।
सोमाहुति स्त्री० (सं) सोमरस की आहुति।
सोमेश्वर पु० (स) दे० 'सोमनाथ'।
सोमोद्भव पुं० (स) श्रीकृष्ण। वि० चन्द्रमा से उत्पन्न
सोमोद्भवा स्त्री० (स) नर्मदा नदी।
सोम्य वि० (सं) १-सोमयुक्त। सोम का। २-सोमपान के योग्य। ३-सोम की आहुति देने वाला।
सोय सर्व० (हि) १-वही। २-सो। स्त्री० दे० 'सुभीता'
सोयम वि० (फा) तीसरा।
सोया पुं० (हि) दे० 'सोआ'।
सोर पु० (हि) १-शोर। हल्ला। २-सुप्रसिद्ध। नाम ३-तट। किनारा। स्त्री० जड़। मूल। पुं० (स) टेढ़ी चाल।
सोरठ पुं० (हि) १-भारत का सौराष्ट्र प्रान्त। २-एक राग का नाम।
सोरठमल्लार पुं० (हि) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
सोरठा पुं० (हि) अड़तालिस मात्राओं का [illegible] छन्द।
सोरठी स्त्री० (हि) एक रागिनी का नाम।

सौचि पुं० (सं) दरजी।
सौचिक पुं० (सं) दरजी।
सौचिक्य पुं० (सं) सीने का काम। दरजी का काम।
सौज क्रि० (हि) सामग्री। साज सामान। वि० शक्तिशाली।
सौजना क० (हि) सजना।
सौजन्य पुं० (सं) सुजनता। भलमनसाहत।
सौजन्यता स्त्री० (सं) सज्जनता। भलमनसाहत।
सौजा पुं० (हि) वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय।
सौत स्त्री० (हि) स्त्री की दृष्टि से उसके पति की दूसरी पत्नी।
सौतन स्त्री० (हि) दे० 'सौत'।
सौतनी स्त्री० (हि) दे० 'सौत'।
सौति स्त्री० (हि) दे० 'सौत'।
सौतिन स्त्री० (हि) दे० 'सौत'।
सौतिया-डाह स्त्री०(हि) दो सौतों में होने वाली ईर्ष्या २-ईर्ष्या। जलन।
सौतुक अव्य० (हि) दे० 'सौंतुख'।
सौतुख अव्य० (हि) दे० 'सौंतुख'।
सौतुष अव्य० (हि) दे० 'सौंतुख'।
सौतेला वि० (हि) १-सौत से उत्पन्न। जिसका सम्बन्ध सौत के रिश्ते से हो।
सौत्र वि० (सं) १-सूत का। सूत सम्बन्धी। सूत्र में वर्णित या कथित। पुं० (सं) ब्राह्मण।
सौत्रांतिक पुं० (सं) बौद्धों का एक भेद।
सौदा पुं० (फा) १-खरीदने या बेचने की वस्तु। २-खरीदने, बेचने या लेन देन की बातचीत या व्यवहार। ३-क्रय-विक्रय। पुं० (अ) पागलपन का एक रोग। सनक।
सौदाई पुं० (अ) पागल। बावला। दीवाना।
सौदागर पुं० (फा) व्यापारी। व्यवसायी।
सौदागरी स्त्री० (फा) व्यापार। व्यवसाय। सौदागर का काम।
सौदागरी माल पुं० (फा) व्यापार का या तिजारती माल।
सौदाबही स्त्री० (फा) वह बही जिसमें खरीदी या बेची हुई वस्तु लिखी जाती है।
सौदामनी स्त्री० (सं) १-विद्युत। बिजली। २-एक अप्सरा। ३-एक रागिनी।
सौदामिनी स्त्री०(सं) दे० 'सौदामनी'।
सौदायिक पुं० (सं) स्त्री-धन जो उसे विवाह के समय मिलता है तथा जो उसका निजी धन माना जाता है।
सौदासुल्फ पुं० (फा) बाजार से खरीदी जाने वाली वस्तुएँ।
सौदेबाज वि० (फा) अपने फायदे या काम का पूरा ध्यान रखकर सौदा खरीदने वाला।
सौध वि० (सं) सफेदी या पलस्तर किया हुआ। पुं० भवन। २-चांदी। रजत। ३-दूधिया पत्थर।
सौधकार पुं० (सं) प्रासाद या भवन बनाने वाला।
सौधतल पुं०(सं) भवन या प्रासाद का नीचे का तला
सौधर्म्य पुं०(सं) सज्जनता। साधुता। सुधर्म का भाव
सौन अव्य० (हि) प्रत्यक्ष। सामने। पुं० (सं) १-कसाई। २-कसाई के घर का मांस। वि० कसाई-खाने से सम्बन्ध रखने वाला।
सौनक पुं० (हि) दे० 'शौनक'।
सौनन स्त्री० (हि) कपड़ों को धोने से पहले उनमें रेह आदि लगाना। सौंदना।
सौना पुं० (हि) दे० 'सोना'।
सौनिक पुं० (सं) १-कसाई। २-बहेलिया।
सौनीतेय पुं० (सं) ध्रुव।
सौपना क्रि० (हि) दे० 'सौंपना'।
सौभद्र पुं० (सं) सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का नाम।
सौभद्रेय पुं० (सं) अभिमन्यु।
सौभांजन पुं० (हि) दे० 'शोभांजन'
सौभागिनी स्त्री० (हि) सुहागिन। सधवा स्त्री।
सौभागिनेय पुं० (सं) किसी सुहागिन का पुत्र।
सौभाग्य पुं० (सं) अच्छा भाग्य। २-सुख। आनंद ३-ऐश्वर्य। वैभव। ४-स्त्री के सधवा होने की अवस्था। सुहाग। ५-अनुराग। ६-सुन्दरता। ७-सफलता। ८-सिंदूर। ९-सुहागा।
सौभाग्यचिह्न पुं० (सं) १-अच्छे भाग्य का चिह्न। २-सधवा होने का चिह्न (सिंदूर आदि)।
सौभाग्यतंतु पुं० (सं) दे० 'सौभाग्यसूत्र'।
सौभाग्यतृतीया स्त्री० (सं) भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की तृतीया जो बहुत पवित्र मानी जाती है।
सौभाग्यवती वि० (सं) १-सधवा। सुहागिन। २-अच्छे भाग्य वाली।
सौभाग्यवान् वि० (सं) जिसका भाग्य अच्छा हो। सुखी और संपन्न।
सौभाग्यसूत्र पुं० (सं) मंगलसूत्र। विवाह के समय वर द्वारा वधू के गले में डाला हुआ सूत्र।
सौभिक्ष पुं० (सं) अन्न की अधिकता के विचार से अच्छा समय। सुकाल।
सौम वि० (सं) १-सोमलता सम्बन्धी। २-चन्द्रमा सम्बन्धी। (हि) दे० 'सौम्य'।
सौमन पुं० (सं) १-एक प्राचीन अस्त्र। २-फूल। पुष्प।
सौमनस वि० (सं) १-सुमनों या फूलों का। २-मनोहर। सुन्दर। पुं० १-प्रसन्नता। २-अनुग्रह। कृपा ३-जायफल।
सौमनस्य पुं० (सं) १-भलमनसाहत। २-प्रसन्नता।

३-प्रेम। प्रीति। ४-सन्तोष।
सौमिक वि० (सं) १-सोमरस से किया हुआ (यज्ञ) २-सोमयज्ञ सम्बन्धी। ३-चान्द्रायण व्रत करने वाला पु० सोमरस रखने का पात्र।
सौमित्र पुं० (सं) १-लक्ष्मण। २-मित्रता।
सौमित्रा स्त्री० (हि) दे० 'सुमित्रा'।
सौमुख्य पुं० (सं) १-प्रसन्नता। २-सुमुखता।
सौम्य ...

... उपासक। ६-ब्राह्मण। ७-बायाँ हाथ। रित। ८-साठ संवत्सरों में से एक। १०-सुशीलता। ११-हथेली का मध्य भाग। १२-एक दिव्यास्त्र। वि० १ सोम या चन्द्रमा से सम्बन्धित। २-नम्र। ३ सुन्दर ४-शुभ। ५-चमकीला।
सौम्यग्रह पुं० (सं) शुभग्रह।
सौम्यता स्त्री० (सं) १-सौम्य होने का भाव। २-शीतलता। ३-सुशीलता। ४-सौंदर्य। ५-उदारता। दयालुता।
सौम्यवार पुं० (सं) सोमवार।
सौम्यदर्शन वि० (सं) देखने में सुन्दर।
सौम्यमुख वि० (सं) सुन्दर मुख वाला।
सौम्याकृति स्त्री० (सं) जिसकी आकृति सुन्दर हो।
सौर वि० (सं) १-सूर्य सम्बन्धी। सूर्य का। २-सूर्य से उत्पन्न। ३-सूर्य के प्रभाव से होने वाला। (सोलर)। पुं० १-सूर्य का उपासक। २-सूर्यवंशी ३-शनिग्रह। ४-धनिया। ५-दाहिनी आँख। स्त्री० (हि) १-सौड़। चादर। ओढ़नी। २-सौरी नामक मछली।
सौरज पु० (हि) दे० 'शौर्य'।
सौरजगत् पुं० (सं) सूर्य तथा उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रहों (पृथ्वी मंगल ...) ...

... केसर। ४-धनिया।
सौरभित वि० (सं) सुगन्धित। महकने वाला।
सौरमास पुं० (सं) एक सौर संक्रांति से दूसरी सौर संक्रांति तक का महीना।
सौरलोक पुं० (सं) दे० 'सूर्यलोक'।
सौरवर्ष पुं० (सं) एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का वर्ष।
सौरसंवत्सर पुं० (सं) दे० 'सौरवर्ष'।
सौरस्य पुं० (सं) सुरसता।
सौराज्य पुं० (सं) सुराज्य। अच्छा शासन।
सौराष्ट्र पुं० (सं) १-गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २-इस देश का निवासी। वि० सौराष्ट्र देश का निवासी।
सौराष्ट्रमृत्तिका स्त्री० (सं) गोपीचन्दन।
सौराष्ट्रिक वि० (सं) सौराष्ट्र सम्बन्धी। पु० १-सौराष्ट्र देश का निवासी। २-काँसा नामक धातु।
सौराष्ट्र पु० (सं) एक प्रकार का विषास्त्र।
सौरि पु० (सं) १-शनि। २-हुडहुल का पौधा। पु० (हि) दे० 'सौरी'।
... ...का ...

सौर्य वि० (सं) सूर्य सम्बन्धी। सूर्य का। पु० (सं) १-शनि। २-एक संवत्सर।
सौर्यप्रभ वि० (सं) सूर्य की प्रभा या दीप्ति से कार्य करने वाला।
सौलक्षण्य पु० (सं) सुलक्षणता।
सौलभ्य पु० (सं) सुलभता।
सौवर्चल पु० (सं) सोचर नमक। २-सज्जी। वि० सुवर्चल सम्बन्धी।
सौवर्चस वि० (सं) कांतिमान। प्रभायुक्त।
सौवर्ण वि० (सं) १-सोने का। २-सोने से बना। पुं० स्वर्ण। सोना।
सौवर्णभेदिनी स्त्री० (सं) फूलप्रेंग।
सौवर्णिक पु० (सं) सुनार। स्वर्णकार।
सौवीर पु० (सं) १-सिंधु नदी के आस-पास का प्रदेश। २-उक्त प्रदेश का निवासी। ३-किसी एक प्रकार की काँजी जो जौ को सड़ा कर बनाई जाती है (बदर)।
सौवीराजन पु० (सं) सुरमा।
सौष्ठव पु० (सं) १-सुघरता। सुडौलपन। २-सौंदर्य ३-तेजी। ४-नाटक का एक अङ्ग।
सौसन पु० (फा) दे० 'सोसन'।
सौहैं ... (हि) सौगन्द। कसम। अव्य० सामने।
... (हि) दे० 'सौहद'।
... (सं) १-सुहृद होने का भाव। २-सज्जनता। ३-मित्रता।
सौहार्द पु० (सं) दे० 'सौहार्द'।
सौहीं स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की रेती। २-एक प्रकार का हथियार। अव्य० आगे। सामने।
सौहृद पुं० (सं) १-दोस्ती। मित्रता। २-मित्र। वि० मित्र सम्बन्धी।
सौहृद्य पुं० (सं) सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।
स्कन्ता वि० (सं) छलाँग मारने या कूदने वाला।
स्कंद पुं० (सं) १-निकलना। २-विनाश। ध्वंस। ३-कार्तिकेय। ४-शरीर। ५-पारा। ६-शिव। ७-पंडित। ८-बालक के नौ ग्रहों ... ग्रहों या ग्रहों में से एक।

एक वृत्त जिसमें दो गुरु होते हैं।
स्त्रीकुसुम पुं० (सं) रजःस्राव।
स्त्रीचरित्र पुं० (सं) औरतों के कर्म, आचार, व्यवहार आदि।
स्त्रीजन पुं० (सं) स्त्री जाति।
स्त्रीजननी स्त्री० (सं) वह स्त्री जो केवल लड़की ही जने।
स्त्रीजाति स्त्री० (सं) स्त्री वर्ग।
स्त्रीजित वि० (सं) जोरू का गुलाम।
स्त्रीतंत्र पुं० (सं) वह शासन व्यवस्था जो केवल स्त्रियों द्वारा चलाई जाये। (आइनैरकी)।
स्त्रीता स्त्री० (सं) दे० 'स्त्रीत्व'।
स्त्रीत्व पुं० (सं) १-स्त्री का भाव या धर्म। नारीत्व। २-व्याकरण में वह प्रत्यय जो स्त्रीलिङ्ग का सूचक होता है।
स्त्रीधन पुं० (सं) १-स्त्री को उसके मायके या ससुराल से मिला हुआ वह धन जिस पर केवल उसका ही अधिकार होता है। २-स्त्री की निजी सम्पत्ति।
स्त्रीधर्म पुं० (सं) १-स्त्री का मासिक धर्म। २-स्त्री का कर्तव्य।
स्त्रीधर्मिणी स्त्री० (सं) रजस्वला स्त्री।
स्त्रीनाथ पुं० (सं) वह स्त्री जिसकी रक्षा कोई स्त्री करती हो।
स्त्रीपण्योपजीवी पुं० (सं) स्त्री की कमाई खाने वाला।
स्त्रीपर वि० (सं) स्त्री-प्रेमी। कामी।
स्त्रीपुर पुं० (सं) अन्तःपुर।
स्त्रीप्रसंग पुं० (सं) मैथुन।
स्त्रीप्रिय पुं० (सं) १-अशोक वृक्ष। २-आम का वृक्ष
स्त्रीभोग पुं० (सं) संभोग।
स्त्रीरंजन पुं० (सं) पान।
स्त्रीरत वि० (सं) जो स्त्री की ओर बहुत अनुराग रखता हो।
स्त्रीराज्य पुं० (सं) दे० 'स्त्रीतंत्र'।
स्त्रीरोग पुं० (सं) स्त्रियों के योनि सम्बन्धी रोग।
स्त्रीलंपट वि० (सं) कामी। लंपट।
स्त्रीलक्षण पुं० (सं) स्त्री सम्बन्धी कोई भी चिह्न-भग, स्तन आदि।
स्त्रीलिंग पुं० (सं) १-योनि। २-हिन्दी व्याकरण के दो लिंगों में से एक जो स्त्री जाति के रूप का वाचक होता है।
स्त्रीलोल वि० (हिं) लंपट। कामी।
स्त्रीलौल्य पुं० (सं) स्त्री की इच्छा।
स्त्रीवश वि० (सं) स्त्री का कहना मानने वाला।
स्त्रीवित्त पुं०(सं) वह धन जो स्त्री से प्राप्त हुआ हो
स्त्रीवियोग पुं० (सं) स्त्री से जुदा होना।
स्त्रीविषय पुं० (सं) संभोग।
स्त्रीव्यंजन पुं० (सं) दे० 'स्त्रीलक्षण'।
स्त्रीव्रत पुं० (सं) एकपत्नी व्रत।
स्त्रीशेष वि०(सं) जिसमें केवल औरतें ही बच रही हों
स्त्रीसंग पुं० (सं) १-संभोग। २-स्त्रियों का संग या साथ।
स्त्रीसंग्रहण पुं० (सं) स्त्री के साथ बलात् सम्भोग करना।
स्त्रीसंज्ञ वि० (सं) जिसके नाम का अन्त स्त्रीलिंग-वाचक शब्द से हो।
स्त्रीसंभोग पुं० (सं) मैथुन। संभोग।
स्त्रीसंसर्ग पुं० (सं) मैथुन।
स्त्रीसमागम पुं० (सं) मैथुन।
स्त्रीसुख पुं० (सं) संभोग।
स्त्रीसेवन पुं० (सं) संभोग। मैथुन।
स्त्रीस्वभाव पुं० (सं) १-स्त्री की प्रकृति। २-अन्तःपुर रक्षक।
स्त्रीहरण पुं०(सं) किसी स्त्री को बलात् उठा लेजाना
स्त्रीहारी पुं० (सं) वह पुरुष जो स्त्री का बलात् हरण करता हो।
स्त्रैण वि० (सं) १-स्त्री सम्बन्धी। स्त्रियों का। २-स्त्री के योग्य। ३-जोरू का गुलाम।
स्त्र्यागार पुं० (सं) अन्तःपुर।
स्त्र्याजीव पुं० (सं) स्त्रियों की कमाई खाने वाला।
स्थंडिल पुं० (सं) १-भूमि। २-यज्ञ के लिये साफ की गई भूमि। ३-सीमा। हद। ४-मिट्टी का ढेर।
स्थंडिलशायी पुं० (सं) किसी व्रत के कारण भूमि पर सोने वाला।
स्थ प्रत्य० (सं) एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लग-कर ये अर्थ देता है-स्थित, कायम, उपस्थित, विद्यमान, निवासी, लीन, रत, मग्न आदि।
स्थगित वि०(सं) १-ढका हुआ। २-ठहराया या रोका हुआ। ३-मुलतवी (एडजर्न्ड)।
स्थपति पुं० (सं) १-राजा। सामंत। २-शासक। ३-अन्तःपुर रक्षक। ४-सारथि। वि० १-मुख्य। प्रधान २-श्रेष्ठ।
स्थल पुं० (सं) १-भूमि। २-जल से रहित भूमि ३-स्थान। जगह। ४-अवसर। मौका।
स्थलकंद पुं० (सं) जंगली सूरन।
स्थलकमल पुं० (सं) कमल की तरह का एक फूल जो भूमि पर उगता है।
स्थलचर वि० (सं) जमीन पर रहने वाला।
स्थलच्युत वि० (सं) किसी स्थान से हटाया हुआ।
स्थलदेवता पुं० (सं) किसी स्थान का देवता।
स्थलनीरज पुं० (सं) स्थलकमल।
स्थलपथ पुं० (सं) खुश्की का रास्ता।
स्थलमार्ग पुं० (सं) दे० 'स्थलपथ'।
स्थलयुद्ध पुं० (सं) भूभाग पर होने वाली लड़ाई।

स्थलवर्त्म पुं० (सं) दे० 'स्थलमार्ग'।

स्थलशुद्धि स्त्री० (सं) जमीन की सफाई।

स्थलसेना पुं०(सं) भूमि पर लड़ने वाली सेना (लैंड-फोर्सेस)।

स्थली स्त्री० (सं) जल रहित भूमि। २-स्थान। जगह ३-ऊँचाई पर समतल भूमि।

स्थलीय वि० (सं) १-जमीन सम्बन्धी। २-स्थानीय।

स्थलेशय वि० (सं) जमीन पर सोने वाला। पुं० स्थलचर जीव।

स्थविर पुं० (सं) १-वृद्ध पुरुष। २-पूज्य बौद्ध भिक्षु ३-ब्रह्मा। ४-एक बौद्ध सम्प्रदाय।

स्थविरता स्त्री० (सं) बुढ़ापा।

स्थाई वि० (हि) दे० 'स्थायी'।

स्थाणु वि० (सं) स्थिर। अचल। पुं० १-खंभा। २-वृक्ष का ठूँठ। ३-स्थावर या स्थिर वस्तु।

स्थातव्य वि० (सं) निवास करने या ठहरने योग्य।

स्थान पुं० (सं) १-स्थिति। २-भूमि। ३-मैदान। ४-स्थल। जगह। ५-पद। ओहदा। (पोस्ट)। ६-देवालय। ७-अवसर। मौका। ८-राज्य। देश। ९-किसी राज्य के मुख्य चार आधार। १०-भंडार गुदाम। ११-अवस्था। १२-कारण। १३-परिच्छेद १४-वेदी। १५-किसी अभिनेता का अभिनय।

स्थानग्राही-पदाधिकारी पुं० (सं) वह अधिकारी जो किसी बड़े अधिकारी के छुट्टी पर जाने से या अवकाश ग्रहण करने पर कुछ समय तक कार्य चलाने के लिए नियुक्त होता है। (ऑफिशिएटिंग-आफीसर)।

स्थानच्युत वि० (सं) अपने पद या स्थान से हटाया हुआ।

स्थानत्याग पुं० (सं) जगह को छोड़ देना।

स्थानपति पुं०(सं) १-किसी विहार आदि का अध्यक्ष २-किसी स्थान का स्वामी।

स्थानपाल पुं० (सं) १-स्थान या देश का रक्षक। २-चौकीदार। ३-प्रधान निरीक्षक।

स्थानप्राप्ति पुं० (सं) किसी स्थान या पद की प्राप्ति।

स्थानबद्ध करना क्रि० (हि) किसी व्यक्ति की गतिविधि एक ही स्थान के भीतर बांध देना (टु इन्टर्न)

स्थानभंग पुं० (सं) किसी स्थान का पतन होना।

स्थानमाहात्म्य पुं० (सं) वह स्थान जिसका किसी मन्दिर आदि के कारण महत्व हो गया हो।

स्थानवंचित वि० (सं) अनासीन। जिसे किसी पद पर से हटा दिया गया हो। (अनसीटेड)।

स्थानसीमन पुं० (सं) १-इधर-उधर फैलाए हुए व्यापार को एक स्थान पर ही इकट्ठा करना। २-किसी विशेष उद्योग आदि क्षेत्र का एक ही क्षेत्र विशेष के अन्दर सीमित करना। (लोकेलाइजेशन)

स्थानांतर पुं० (सं) प्रस्तुत से भिन्न स्थान। दूसरा स्थान।

स्थानांतरण पुं०(सं) किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटा कर दूसरे स्थान पर पहुँचाना। स्थान्तर या भेजना। बदलना करना। (ट्रांसफर)।

स्थानान्तरित वि० (सं) जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया गया हो।

स्थानाध्यक्ष पुं० (सं) वह जिस पर किसी स्थान की रक्षा का भार हो।

स्थानापन्न वि० (सं) किसी के उपस्थित न होने पर उसके स्थान पर बैठने वाला। (आफिशिएटिंग)।

स्थानाबद्धकारी अधिनियम पुं० (सं) वह अधिनियम जिसके अनुसार काले वर्ण की जाति को किसी विशेष क्षेत्र में रहने के लिए बाध्य होना पड़ता है। (पेगिंग एक्ट)।

स्थानाश्रय पुं०(सं) आधार। खड़े होने भर का स्थान

स्थानासेध पुं० (सं) किसी को किसी स्थान पर रोके रखना।

स्थानिक वि० (सं) १-उस स्थान का जिसकी चर्चा हो। २-उस स्थान का जहां से कोई बात कही जाय (लोकल)। पुं० १-राज कर उगाने वाला कर्मचारी २-वह जिस पर किसी स्थान की रक्षा का भार हो।

स्थानिक-स्वशासन पुं० (सं) किसी देश के नगरों को अपनी शासन व्यवस्था चलाने के लिए दिया हुआ अधिकार।

स्थानीय वि० (सं) १-उस स्थान का जहां से कोई बात की जाय। २-उस स्थान का जिसका कोई उल्लेख हो। पुं० १-नगर। २-आठ गांवों के बीच में बना हुआ किला।

स्थानीयकरण पुं० (सं) चारों ओर फैले हुए उद्यम, शक्तियों, वस्तुओं को घेर कर किसी एक स्थान पर एकत्र करना। (लोकेलाइजेशन)।

स्थानीय-स्वशासन पुं० (सं) राज्य या देश के नगरों में सफाई आदि की शासन व्यवस्था चलाने का अधिकार या ऐसे अधिकार देने की प्रणाली। (लोकल सेल्फ गवर्नमेंट)।

स्थानेश्वर पुं० (सं) एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम। थानेश्वर।

स्थापक वि० (सं) स्थापन करने वाला। पुं० १-मूर्ति बनाने वाला। २-संस्थापक। ३-अमानत रखने वाला।

स्थापत्य पुं० (सं) १-भवन निर्माण आदि की कला २-किसी मुल्क के शासन का पद।

स्थापत्यकला स्त्री० (सं) वास्तुविद्या।

स्थापत्यवेद पुं० (सं) वास्तुशास्त्र।

स्थापन पुं० (सं) १-दृढ़तापूर्वक जमाना। २-पुष्ट आधार पर स्थित करना। स्थायी रूप देना। ३-कोई नया व्यापारिक कारबार खड़ा करना। ४-

स्पर्शवर्ण पुं० (सं) 'क' से 'म' तक के सब वर्ण।
स्पर्शवेद्य वि० (सं) जिसका ज्ञान स्पर्श द्वारा हो।
स्पर्शसंचारी पुं० (सं) एक प्रकार का शूक रोग।
स्पर्शसुख वि० (सं) जिसका स्पर्श सुखदायक हो।
स्पर्शस्नान पुं० (सं) वह स्नान जो ग्रहण आरम्भ होने से पहले किया जाता है।
स्पर्शहानि स्त्री० (सं) शूक रोग में रक्त के दूषित होने पर चमड़ी में स्पर्श ज्ञान का अभाव होना।
स्पर्शी वि० (सं) स्पर्श करने वाला। छूने वाला।
स्पर्शेंद्रिय स्त्री० (सं) त्वचा। चमड़ा।
स्पर्शोपल पुं० (सं) पारस पत्थर।
स्पष्ट वि० (सं) १-साफ दिखाई देने वाला या समझ में आने वाला। २-जिसके सम्बन्ध में कोई धोका न हो (क्लियर)। पुं० १-ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का स्फुट साधन। २-व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न।
स्पष्टगर्भा स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसमें गर्भ के लक्षण साफ दिखाई दें।
स्पष्टतारक वि० (सं) (आकाश) जिसमें तारे साफ दिखाई दें।
स्पष्टभाषी वि० (सं) स्पष्ट रूप से कहने वाला।
स्पष्टवादी वि० (सं) दे० 'स्पष्टभाषी'।
स्पष्टार्थ वि० (सं) जिसका अर्थ स्पष्ट या साफ हो।
स्पष्टीकरण पुं० (सं) कोई बात इस तरह साफ करना कि उसके सम्बन्ध में कोई भ्रम न रहे। (एल्यूसिडेशन)।
[illegible]ीकृत वि० (सं) जिसका स्पष्टीकरण किया गया हो
[illegible]य वि० (सं) जो स्पर्श करने के योग्य हो।
[illegible] वि० (सं) जिससे या जिसका स्पर्श हुआ हो।
[illegible] पुं० (सं) व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रयत्न।
स्पृष्टास्पृष्टि स्त्री० (सं) छूआछूत। आपस में एक दूसरे को छूने की क्रिया।
स्पृहणीय वि० (सं) जिसके लिए कामना की जा सके २-गौरवशाली।
स्पृहयालु वि० (सं) १-जो कामना करे। २-लालची
स्पृहा स्त्री० (सं) १-इच्छा। अभिलाषा। २-किसी ऐसे पदार्थ की अभिलाषा जो धर्म के अनुकूल हो। (न्याय०)।
स्पृही वि० (सं) कामना करने वाला।
स्पृह्य वि० (सं) जिसके लिए कामना की जा सके। वांछनीय।
स्फटन पुं० (सं) दे० 'स्फटिकीकरण'।
स्फटिकीकरण पुं० (सं) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी वस्तु का स्फटिक रूप बनाया जाय। (क्रिस्टेलाइजेशन)।
स्फटा स्त्री० (सं) सर्प का फन।
स्फटिक पुं० (सं) १-एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर। बिल्लौर। २-सूर्यकांतमणि। ३-शीशा। कांच ४-कपूर। ५-फिटकरी।
स्फटिकप्रभ वि० (सं) स्फटिक जैसी चमक वाला। पारदर्शी।
स्फटिकमणि पुं० (सं) सूर्यकांतमणि।
स्फटिकाचल पुं० (सं) स्फटिक के समान दिखाई देने वाला बरफ से ढका हुआ कैलास पर्वत।
स्फटिकाद्रि पुं० (सं) कैलास पर्वत।
स्फटित वि० (सं) फटा हुआ। विदीर्ण।
स्फटी स्त्री० (सं) फिटकरी।
स्फरण पुं० (सं) १-कंपकंपाना। २-प्रवेश करना।
स्फार वि० (सं) १-प्रचुर। विपुल। २-विकट।
स्फारण पुं० (सं) दे० 'स्फुरण'।
स्फारित वि० (सं) बहुत अधिक फैलाया हुआ।
स्फालन पुं० (सं) १-कँपकँपाना। २-मलना। ३-हिलाना।
स्फीत वि० (सं) १-बढ़ा हुआ। २-फूला या उभरा हुआ। ३-समृद्ध।
स्फीति स्त्री० (सं) १-फूलना। उभारना। २-बढ़ना। अधिक बढ़ जाना।
स्फुट वि० (सं) १-व्यक्त। २-विकसित। ३-साफ। ४-सफेद। ५-फुटकर। पुं० ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली में ग्रहों की राशि में स्थान दिखाना।
स्फुटचंद्रतारक वि० (सं) चन्द्रमा तथा तारों से जगमगाती हुई (रात्रि)।
स्फुटन पुं० (सं) १-फटना। २-टुकड़े-टुकड़े होना। ३-विकसित होना। ४-चटकना।
स्फुटपुंडरीक पुं०(सं) खिला हुआ कमल (हृदय का)
स्फुटा स्त्री० (सं) सांप का फन।
स्फुटित वि० (सं) १-विकसित। २-विदीर्ण।
स्फुटीकरण पुं० (सं) १-स्पष्ट या प्रकट करना। २-ठीक करना।
स्फुत्कार पुं० (सं) फुफकार।
स्फुरण पुं० (सं) १-(अंग का) फड़कना। २-कुछ कुछ हिलना।
स्फुरति स्त्री० (हिं) दे० 'स्फूर्ति'।
स्फुरना क्रि० (हिं) १-व्यक्त होना। २-फड़कना। ३-कांपना।
स्फुरित वि० (सं) हिलने या फड़कने वाला।
स्फुर्लगा स्त्री०(हिं) १-किसी बात का अचानक प्रकाश में आना। २-साफ दिखाई पड़ना।
स्फुलिंग पुं० (सं) चिनगारी।
स्फुलिंगिनी स्त्री० (सं) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
स्फूर्ज पुं०(सं) १-इन्द्र का वज्र। २-बादलों की गड़गड़ाहट।

स्याल पुं०(सं) साला। पत्नी का भाई। (हि) सियार
स्यालक पुं० (सं) साला।
स्यालिका स्त्री० (सं) साली। पत्नी की छोटी बहन।
स्याली पुं० (हि) साली।
स्यालू पुं० (हि) स्त्रियों की ओढ़ने की चादर।
स्यावज पुं० (हि) शिकार।
स्याह वि० (फा) कृष्ण वर्ण का। काला। पुं० घोड़े की एक जाति।
स्याहा पुं० (हि) दे० 'सियाहा'।
स्याही स्त्री० (हि) साही नामक जन्तु। (फा) १-वह रङ्गीन तरल पदार्थ जो प्रायः काले रङ्ग का होता है और कागज पर लिखने के काम आता है। रोशनाई। २-कालिमा। ३-कालापन। ४-एक प्रकार का काजल।
स्याहीचट पुं० (फा) कागज पर की स्याही सोखने वाला मोटा गत्ता।
स्याहीसोख पुं० (फा) दे० 'स्याहीचट'।
स्यूत वि० (सं) सीया या बुना हुआ। पुं० मोटे कपड़े का थैला।
स्यूति स्त्री० (सं) १-सीवन। सीना। २-बुनना। ३-संतति। संतान। ४-थैला।
स्यूना स्त्री० (सं) १-कमरबन्द। २-किरण।
स्यूम पुं० (सं) १-रश्मि। किरण। २-जल।
स्यूमक पुं० (सं) आनन्द।
स्यों अव्य० (हि) १-सहित। २-पास। समीप।
स्योनाक पुं० (सं) सोनपाढ़ा नामक एक वृक्ष।
[illegible]ग पुं० (हि) दे० 'शृङ्ग'।
[illegible]त वि०(सं) १-ढीला किया हो। २-जिसे गिराया [illegible] हो।
[illegible]सी वि०(सं) १-गिरने वाला। २-असमय में गिरने वाला (गर्भ)। पुं० सुपारी का पेड़।
स्रक् स्त्री० (सं) १-फूलों की माला। २-एक वर्णवृत्त ३-ज्योतिष में एक योग।
स्रग स्त्री० (हि) फूलों की माला।
स्रगाल पुं० (हि) गीदड़।
स्रग्धरा स्त्री० (सं) १-एक वर्णवृत्त। २-एक बौद्ध देवी का नाम।
स्रग्विणी स्त्री० (सं) १-एक देवी का नाम। २-एक वर्णवृत्त।
स्रजन पुं० (हि) सृष्टि।
स्रजना क्रि० (हि) दे० 'सृजना'।
स्रद्धा स्त्री० (हि) दे० 'श्रद्धा'।
स्रम पुं० (हि) दे० 'श्रम'।
स्रमना क्रि० (हि) थकना।
स्रमित वि० (हि) दे० 'श्रमित'।
स्रवंती स्त्री० (सं) १-नदी। २-एक प्रकार की वनस्पति।
स्रव पुं० (सं) १-प्रवाह। बहाव। २-झरना।
स्रवण पुं० (सं) १-प्रवाह। २-झरना। ३-पसीना। ४-मूत्र।
स्रवन पुं० (हि) दे० 'श्रवण'।
स्रवना क्रि० (हि) १-टपकना। २-बहना। ३-गिरना। ४-बहाना। ५-टपकाना।
स्रष्टव्य वि० (सं) जिसकी सृष्टि की जा सके।
स्रष्टा पुं० (सं) १-सृष्टि करने वाला। २-ब्रह्मा। ३-विष्णु। वि० बनाने वाला।
स्रस्त वि० (सं) १-च्युत। २-शिथिल। ३-हिलता हुआ। ३-अलगाया हुआ।
स्राध पुं० (हि) दे० 'श्राद्ध'।
स्राप पुं० (हि) दे० 'शाप'।
स्रापित वि० (हि) दे० 'शापित'।
स्राव पुं०(सं) १-रसकर या बहकर निकलना। २-गर्भपात। ३-रस। निर्यास।
स्रावक वि० (सं) टपकने या चुआने वाला।
स्रावनी स्त्री० (हि) दे० 'श्रावणी'।
स्रावित वि० (सं) बहकर या चू-कर निकला हुआ।
स्रावी वि० (सं) स्राव कराने वाला।
स्राव्य वि० (सं) बहने योग्य।
स्रिंग पुं० (हि) दे० 'शृङ्ग'।
स्रिजन पुं० (हि) दे० 'सृजन'।
स्रुक् स्त्री० (सं) यज्ञ में घी डालने के लिये लकड़ी की बनी स्रुवा।
स्रुत वि० (सं) चुआ या बहा हुआ। (हि) दे० 'श्रुत'
स्रुति स्त्री० (सं) बहाव। क्षरण। (हि) श्रुति।
स्रुवा स्त्री० (सं) काठ की छोटी करछी जिससे हवन आदि में घी की आहुति देते हैं।
स्रेनी स्त्री० (हि) दे० 'श्रेणी'।
स्रोत पुं० (सं) १-जल प्रवाह। २-झरना। ३-वह आधार जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती आती हो (सोर्स)।
स्रोतस्वती स्त्री० (सं) नदी।
स्रोतांजन पुं० (सं) सुरमा।
स्रोता पुं० (हि) दे० 'सोता'।
स्रोन पुं० (हि) दे० 'श्रवण'।
स्रोनित पुं० (हि) दे० 'शोणित'।
स्लीपर पुं० (अं) १-चौपहला लकड़ी का लम्बा टुकड़ा जो प्रायः रेल की पटड़ियों के नीचे बिछाया जाता है। २-एक प्रकार की हल्की जूती।
स्लेट स्त्री० (अं) एक प्रकार की चिकने पत्थर की पटिया जिस पर विद्यार्थी अंक लिखते हैं।
स्वः पुं० (सं) स्वर्ग।
स्व वि० (सं) अपना। निजी। प्रत्य० जो शब्द के अन्त में लगकर भाववाचक अर्थ देता है-जैसे राजत्व।

स्वकीय वि० (सं) निजी। अपना।
स्वकीया स्त्री०(सं) अपने ही पति को प्रेम करने वाली नायिका (साहित्य)।
स्वच्छ वि० (हि) दे० 'स्वच्छ'।
स्वगत अव्य० (सं) दे० स्वतः। वि० १-आत्मगत। २-मन में आया हुआ। मनोगत।
स्वगृहस्मारी वि० (सं) जिसे बहुत दिनों तक विदेश में रहने के कारण घर की याद आवे। (होम सिक)
स्वच्छन्दचारिणी स्त्री० (सं) वेश्या।
स्वच्छन्दचारी वि० (सं) स्वतंत्र। अपनी इच्छा से काम करने वाला।
स्वच्छ वि० (सं) १-निर्मल। २-उज्ज्वल। ३-शुद्ध। पवित्र। ४-निष्कपट।
स्वच्छता स्त्री० (सं) निर्मलता। सफाई।
स्वच्छतावर्धक वि० (सं) गन्दगी दूर करके मकान आदि के चारों ओर की स्वच्छता। (सेनिटरी)।
स्वच्छत्व पु० (सं) स्वच्छता।
स्वच्छना क्रि० (हि) साफ करना।
स्वच्छी वि० (हि) साफ। निर्मल।
स्वजन पु० (सं) १-अपने परिवार के लोग। २-रिश्तेदार।
स्वजन-पक्षपात पुं० (सं) (नौकरी आदि या शासन व्यवस्था में) अपने रिश्तेदारों, मित्रों आदि का पक्षपात लेना। (नेपोटिज्म)।
स्वजनी स्त्री० (सं) सखी। सहेली।
स्वजा स्त्री० (सं) पुत्री। बेटी।
स्वजाति स्त्री० (सं) अपनी जाति। पुं० पुत्र। बेटा।
स्वतंत्र वि०(सं)१-स्वाधीन। आजाद (इन्डिपेन्डेन्ट) २-स्वेच्छाचारी। ३-अलग। ४-नियम आदि के बन्धन से मुक्त (फ्री)।
स्वतंत्रता स्त्री० (सं) स्वाधीनता। आजादी।
स्वतंत्रपत्रकार पुं० (सं) वह पत्रकार जो वेतन भोगी किसी संस्था का कर्मचारी न होकर स्वतंत्र रूप से समाचार पत्र में लेखादि लिख कर जीविका चलाता हो। (फ्रीलांस जर्नलिस्ट)।
स्वतः अव्य० (सं) स्वयं। आप से आप।
स्वतःसिद्ध वि० (सं) स्वयंसिद्ध।
स्वतोविरोधी वि० (सं) स्वयं अपना ही विरोध या खंडन करने वाला।
स्वत्व पुं० (सं) १-स्व का भाव। अपनापन। २-वह अधिकार जिसके आधार पर कोई वस्तु मांगी जाती है। हक। अधिकार। (राइट)।
स्वत्वसलेख पुं० (सं) वह संलेख या पत्रक जिसमें जमीन, संपत्ति आदि पर किसी का पूर्ण रूप से अधिकार माना गया हो। (टाइटिल डीड)।
स्वत्वस्व पु० (सं) स्वामित्व (रायल्टी)।
अधिकार किसी दूसरे को प्रदान करना। (असाइनमेंट)।
स्वत्वहानि पुं० (सं) किसी के स्वत्व या अधिकार का न रहना।
स्वत्वाधिकारी पु० (सं) स्वामी।
स्वदन पु० (सं) १-लोहा। २-स्वाद लेना। खाना।
स्वदार स्त्री० (सं) अपनी स्त्री या पत्नी।
स्वदेश पु० (सं) अपना देश। मातृभूमि।
स्वदेशप्रतिप्रेषण पु० (सं) किसी को उसके देश बलात् भेज देना। (रिपैट्रियेशन)।
स्वदेशी वि० (हि) दे० 'स्वदेशीय'।
स्वदेशीय वि० (सं) १-अपने देश से सम्बन्ध रखने वाला। २-स्वदेश में बना हुआ।
स्वधर्म पु० (सं) अपना धर्म या कर्तव्य।
स्वधर्मच्युत वि० (सं) अपने कर्तव्य का पालन न करने वाला।
स्वधा अव्य० (सं) एक मंत्र जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देते समय किया जाता है।
स्वधाधिप पुं० (सं) अग्नि।
स्वधाशन पुं० (सं) पितर।
स्वधीत वि० (सं) जिसका भली भांति अध्ययन किया गया हो।
स्वनंदा स्त्री० (सं) दुर्गा।
स्वन पु० (सं) शब्द। आवाज।
स्वनामा वि०(सं) अपने नाम से विख्यात होने वाला
स्वनि पुं० (सं) १-शब्द। आवाज। २-अग्नि।
स्वनित वि० (सं) ध्वनित। पु० १-शब्द। २-गर्जन ३-बादल की गड़गड़ाहट।
स्वपक्ष पु० (सं) अपना दल या पक्ष।
स्वपक्षत्यागी वि० (सं) अपने पहले विचार वालों या सिद्धांतों वाले दल को छोड़ देने वाला (रेनीगेड)।
स्वपच पु० (हि) दे० 'श्वपच'।
स्वपन पुं० (सं) दे० 'स्वप्न'।
स्वपना पु० (हि) दे० 'स्वप्न'।
स्वपनीय वि० (सं) निद्रा के योग्य।
स्वप्रकाश वि० (सं) जो अपने आप प्रकाशित हो।
स्वप्न पु० (सं) १-निद्रा। नींद। २-सोने के समय पूरी नींद न आने के कारण घटनाएँ आदि दिखाई देना। ३-मन में उठने वाली ऊँची कल्पना जो पूरी न हो सके। ३-नींद में दिखाई देने वाली घटनाएँ आदि।
स्वप्नकर वि० (सं) नींद लाने वाला।
स्वप्नदोष पुं० (सं) सोने में इच्छा न रहते हुए भी वीर्यपात होना।

रहने वाला।
स्वप्नशील वि० (सं) निद्रालु।
स्वप्नाना क्रि० (हि) स्वप्न देखना या दिखाना।
स्वप्नालु वि० (सं) निद्रालु। सोने वाला।
स्वप्नावस्था स्त्री० (सं) स्वप्न या सोने की अवस्था।
स्वप्निल वि० (सं) १-स्वप्न देखता हुआ। २-सोता हुआ। ३-स्वप्न का।
स्वप्नोपम वि० (सं) स्वप्न के समान।
स्ववंधु पुं० (सं) अपना मित्र या बन्धु।
स्ववरन पुं० (हि) दे० 'स्वर्ण'।
स्वभाउ पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'।
स्वभाव पुं० (सं) १-मुख्य गुण। प्रकृति। (नेचर)। २-आदत (हेबिट)।
स्वभाविक वि० (हि) दे० 'स्वाभाविक'।
स्वभावोक्ति स्त्री० (सं) एक काव्यालंकार जिसमें रूप गुण स्वभाव जैसे हों वैसे ही वर्णन किए जाते हैं।
स्वभू पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-शिव। वि० जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।
स्वयं अव्य० (सं) १-आप। खुद। २-आप से आप।
स्वयंकृत वि० (सं) १-अपने आप किया हुआ। २-गोद लिया हुआ।
स्वयंकृष्ट वि० (सं) जो अपने आप जोता हुआ हो।
स्वयंपतित वि० (सं) जो अपने आप पतित हुआ हो।
स्वयंप्रज्वलित वि० (सं) जो अपने आप ही जल रहा हो।
स्वयंप्रभा वि० (सं) इन्द्र की एक अप्सरा का नाम।
स्वयंप्रमाण वि० (सं) जिसके लिए अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं हो।
स्वयंभू पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-शिव। ३-वेद। वि० जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।
स्वयंभूत वि० (सं) अपने आप उत्पन्न होने वाला।
स्वयंवर पुं० (सं) १-प्राचीन काल की एक प्रथा जिसमें कन्या वर को अपने आप चुनती थी। २-वह स्थान जहां कन्या वर को चुने।
स्वयंवरण पुं० (सं) अपने आप पति का चुनाव।
स्वयंवरयित्री पुं० (सं) पति का चुनाव स्वयं करने वाली कन्या।
स्वयंवरा स्त्री० (सं) पति का चुनाव अपने आप करने वाली कन्या।
स्वयंसिद्ध वि०(सं) जो बिना किसी प्रमाण या तर्क के आप ही ठीक हो। सर्वमान्य।
स्वयंसिद्धि स्त्री० (सं) वह सिद्धांत जिसको प्रमाणित करने की आवश्यकता न हो। (एक्जियम)।
स्वयंसेवक पुं० (सं) वह जो अपनी इच्छा से आप ही आप किसी काम में विशेषतः सैनिक ढंग के काम में सम्मिलित हो। (वालेन्टियर)।
स्वयंसेविका स्त्री० (सं) स्त्री स्वयंसेवक।
स्वयम अव्य० (सं) दे० 'स्वयं'।
स्वयमर्जित पुं०(सं) वह संपत्ति जो स्वयं उपार्जित की की गई हो।
स्वयमागत वि०(सं) किसी बात में टांग अड़ाने वाला
स्वयमुद्घाटित वि० (सं) जो स्वयं खुल गया हो। (दरवाजा)।
स्वयमेव अव्य० (सं) आप ही। खुद ही।
स्वर पुं० (सं) १-कोमलता, तीव्रता या उतार-चढ़ाव आदि से युक्त वह शब्द जो प्राणियों के गले या वाद्ययंत्रों से निकलता है। २-संगीत में इस प्रकार के सात स्वरों का समूह। सरगम। ३-व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप स्वतंत्रता पूर्वक होता है। ४-नाक से निकलने वाली श्वास। पुं० (हि) आकाश।
स्वरकंप पुं० (सं) स्वर में कंप उत्पन्न करना।
स्वरग पुं० (सं) दे० 'स्वर्ग'।
स्वरग्राम पुं०(सं) संगीत में 'सा' से 'नी' तक के सात स्वरों का समूह। सरगम।
स्वरच्छिद्र पुं० (सं) बांसुरी के स्वर वाले छेद।
स्वरपात पुं० (सं) शब्द के उच्चारण करने में किसी अक्षर पर रुक जाना। (एकसेन्ट)।
स्वरप्रधान वि० (सं) (संगीत में) जिसमें स्वर की प्रधानता हो।
स्वरभेद पुं० (सं) आवाज़ या गले का बैठ जाना।
स्वरमात्रा स्त्री० (सं) उच्चारण की मात्रा।
स्वरलहरी स्त्री० (सं) स्वरों की तरंग या लहर।
स्वरलिपि स्त्री० (सं) संगीत में किसी गीत या ताल आदि में आने वाले सभी स्वरों का क्रमबद्ध लेख (नोटेशन)।
स्वरविज्ञान पुं० (सं) वह विद्या जिसमें स्वर सम्बन्धी सभी बातों का विवेचन हो।
स्वरशून्य वि० (सं) बेसुरा। जो सुर में न हो।
स्वरसंधि स्त्री० (सं) स्वर वर्णों में स्वर के अंत और स्वर के पहले पदों में होने वाली सन्धि।
स्वरसंपद स्त्री० (सं) (संगीत) स्वरों का मेल।
स्वरसंपन्न वि० (सं) सुरीला।
स्वरस पुं० (सं) पत्तियों आदि को कूट कर निकाला गया रस। (वैद्यक)।
स्वरसप्तक पुं० (सं) सरगम।
स्वरसाधन पुं० (सं) सरगम के विभिन्न स्वरों के उच्चारण का अभ्यास करना।
स्वरांत वि० (सं) (वह शब्द) जिसके अन्त में कोई स्वर हो।
स्वरांतर पुं० (सं) दो स्वरों के उच्चारण में मध्य का विराम।
स्वरांश पुं० (सं) संगीत में स्वर का आधा भाग।

स्वराजी वि० (हि) स्वराज्य के लिए कोई आन्दोलन करने वाला।
स्वराज्य पुं० (सं) वह शासन-प्रणाली ... देश किसी दूसरे देश के ... होता है। अपना राज्य।
स्वराट् पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-... शासनप्रणाली वाले देश का राज
स्वराष्ट्र पुं०(सं)१-अपना देश या राज्य। २-प्राचीन सुराष्ट्र नामक देश।
स्वराष्ट्रमंत्री पुं० (सं) किसी देश या राज्य के मंत्रिमंडल का वह सदस्य जिसके आधीन, पुलिस, जेलखाने, फौजदारी शासन-प्रबन्ध आदि हों। (होम-मिनिस्टर)
स्वरित वि०(सं)१-जिसमें स्वर हो। गूँजता हुआ। पुं० स्वर का वह उच्चारण जो न अधिक तीव्र और न ही अधिक मन्द हो।
स्वरुचि वि० (सं) अपनी इच्छा या रुचि।
स्वरूप पुं० (सं) १-मूर्ति चित्रादि। २-कठिन पदार्थ आदि की आकृति। ३-स्वभाव। ... ४-वह जिसने देवता का ... १-सुन्दर। २-...
स्वरूपप्रतिष्ठा ... शक्तियों से युक्त होना।
स्वरूपमान् पुं० (हि) सुन्दर।
स्वरोदय पुं० (सं) स्वरों या श्वासों से सब प्रकार के शुभ या अशुभ फल जानने की विद्या।
स्वरोपघात पुं० (सं) स्वरभंग।
स्वर् पुं० (सं) १-आकाश। २-स्वर्ग। ३-परलोक।
स्वर्ग पुं० (सं) १-देवलोक। हिन्दुओं के मतानुसार सात लोकों में से एक जिसमें सत्कर्म करने वाली आत्माएँ जाती हैं। २-इस प्रकार का अन्य धर्मों में आकाश में माना जाने वाला स्थान। ३-वह स्थान जहां बहुत सुख मिले।
स्वर्गकाम वि० (सं) स्वर्ग की इच्छा करने वाला।
स्वर्गगंगा स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
स्वर्गगामी वि० (सं) स्वर्ग में जाने वाला। मृत। स्वर्गीय।
स्वर्गतरंगिणी स्त्री० (सं) मदाकिनी। स्वर्गगंगा।
स्वर्गतरु पुं० (सं) पारिजात।
स्वर्गधाम पुं० (सं) स्वर्गलोक।
स्वर्गभर्ता पुं० (सं) इन्द्र।
स्वर्गलोक पुं० (सं) देवलोक।
स्वर्गवधू स्त्री० (सं) अप्सरा।
स्वर्गवास पुं० (सं) १-मरना। २-स्वर्ग में निवास करना।
स्वर्गवासी वि० (सं) १-जो मर गया हो। मृत। २-स्वर्ग में रहने वाला।
स्वर्गश्री स्त्री० (सं) स्वर्ग का वैभव।
स्वर्गसाधन पुं० (सं) स्वर्ग ...
... स्वर्ग की अभिलाषा करने वाला।
स्वर्गस्थ वि० (सं) स्वर्ग सिधारा हुआ। मृत।
स्वर्गारोहण पुं० (सं) स्वर्ग की ओर जाना।
स्वर्गिक वि० (सं) दे० 'स्वर्गीय'।
स्वर्गी वि० (सं) स्वर्गवासी।
स्वर्गीय वि० (सं) १-स्वर्ग सम्बन्धी। २-जो मर कर स्वर्ग गया हो। मृत।
स्वर्ग्य वि० (सं) १-स्वर्ग सम्बन्धी। २-स्वर्ग दिलाने वाला।
स्वर्जिका स्त्री० (सं) १-सज्जी। २-शोरा।
स्वर्जी स्त्री० (सं) १-सज्जी। २-शोरा।
स्वर्ण पुं०(सं)१-सोना ...
... सुनार।
स्वर्णगिरि पुं० (सं) सुमेरु पर्वत।
स्वर्णचूड़ पुं० (सं) नीलकंठ नामक पक्षी।
स्वर्णचूल पुं० (सं) दे० 'स्वर्णचूड़'।
स्वर्णजीवी पुं० (सं) सुनार।
स्वर्णमुद्रा स्त्री० (सं) सोने का सिक्का।
स्वर्णरेखा स्त्री० (सं) (कसौटी पर पड़ी) सोने की लकीर।
स्वर्णविद्या स्त्री० (सं) कीमियागरी। सोना बनाने की विद्या।
स्वर्णिम वि० (सं) सुनहला। सोने के रंग का।
स्वर्णोपधातु पुं० (सं) दे० 'सोनामक्खी'।
स्वलक्षण पुं० (सं) गुण। विशेषता।
स्वलिखित वि० (सं) स्वयं का लिखा हुआ।
स्वल्प वि० (सं) बहुत थोड़ा। बहुत कम।
स्वल्पक पुं० (सं) कसेरु।
स्वल्पकंदुक पुं० (सं) लोमड़ी।
स्वल्पभाषी वि० (सं) कम बोलने वाला।
स्वल्पव्यक्तितन्त्र वि० (सं) कुछ लोगों का शासन। (ओलिगार्की)।
स्वल्प शरीर वि० (सं) ठिगना। छोटे कद का।
स्वल्पस्मृति वि०(सं) जिसे बहुत कम स्मरण रहता हो
स्वल्पायुषी स्त्री० (सं) वनिस्पका।
स्वल्पायु वि० (सं) अल्पायु वाला।
स्वल्पाहार वि० (सं ... करने वाला।
स्वलिप्त वि० (सं ... होता।

स्वल्पेच्छ वि० (सं) जिसकी इच्छाएँ बहुत ही कम हों
स्ववंश्य वि० (सं) अपने ही वंश का।
स्वबरन पुं० (हिं) दे० 'स्वर्ण'।
स्ववासिनी स्त्री० (सं) अपने पिता के घर रहने वाली स्त्री।
स्ववृत्ति स्त्री० (सं) आत्मनिर्भरता।
स्वशुर पुं० (हिं) ससुर।
स्वश्लाघा स्त्री० (सं) अपनी बड़ाई अपने आप करना आत्मप्रशंसा।
स्वसंभूत वि० (सं) आत्मसम्भव।
स्वसंवेदन पुं० (सं) अपने आप प्राप्त किया हुआ ज्ञान।
स्वसचिव पुं० (सं) निज सचिव। (प्राइवेट सेक्रेटरी)।
स्वसा स्त्री० (सं) बहन। भगिनी।
स्वस्ति अव्य० (सं) कल्याण या मङ्गल हो। भला हो। (आशीर्वाद)। स्त्री० मंगल। कल्याण।
स्वस्तिक पुं० (सं) एक प्रकार का मंगलसूचक चिह्न।
स्वस्तिमती स्त्री० (सं) कार्त्तिकेय की एक मातृका।
स्वस्त्ययन पुं० (सं) अशुभ बातों का नाश करके शुभ की स्थापना के विचार से किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।
स्वस्थ वि० (सं) १-नीरोग। चंगा। २-सावधान। ३-जिसमें कोई दोष न हो। (हेल्थी)।
स्वस्थचित्त वि०(सं) जिसका चित्त ठिकाने हो। शांत-चित्त।
स्वस्थित वि० (सं) स्वाधीन।
स्वस्रीय पुं० (सं) बहन का बेटा। भानजा।
स्वस्रीया स्त्री० (सं) बहन की पुत्री। भानजी।
स्वहंता वि० (सं) आत्महत्या करने वाला।
स्वहरण पुं० (सं) धन सम्पत्ति का हरण।
स्वहस्त पुं० (सं) हस्ताक्षर।
स्वहस्तिका स्त्री० (सं) कुदाल।
स्वहाना क्रि० (हिं) दे० 'सुहाना'।
स्वहित वि० (सं) अपने लिये लाभप्रद।
स्वांग पुं० (सं) अपना ही अंग। पुं० (हिं) १-परिहासपूर्ण खेल या तमाशा। नकल। २-आडंबर। ३-किसी के अनुरूप धारण किया जाने वाला बनावटी रूप।
स्वांगना क्रि० (हिं) स्वाँग बनाना। बनावटी रूप धारण करना।
स्वांगी पुं० (हिं) वह जो स्वांग भरकर जीविका चलाता हो। वि० बनावटी रूप धारण करने वाला
स्वांगीकरण पुं० (सं) किसी वस्तु को अपने शरीर में पूर्णतया मिला कर लीन या एक करना। आत्मसात् करना। (एसिमिलेशन)।
स्वांतः सुखाय वि० (सं) केवल अपने सुख या लाभ के लिये।
स्वांत पुं० (सं) १-अन्तःकरण। मन। २-मृत्यु। ३-अपना राज्य या प्रदेश। ४-गुफा।
स्वांतज पुं० (सं) १-प्रेम। २-कामदेव।
स्वांस स्त्री० (हिं) दे० 'साँस'।
स्वांसा पुं० (देश) तांबे का खोट मिला हुआ सोना पुं० (हिं) दे० 'सांस'।
स्वाक्षर पुं० (सं) १-हस्ताक्षर। दस्तखत। २-किसी बड़े नेता या प्रसिद्ध व्यक्ति के स्वहस्ताक्षर (ऑटोग्राफ)।
स्वाक्षरयुक्त वि० (सं) जिसमें हस्ताक्षर किये हुए हों।
स्वागत पुं० (सं) किसी प्रिय या मान्य के आने पर उसका अभिवादन करना। अभ्यर्थना। आगवानी (वेल्कम)।
स्वागतकारिणी समिति स्त्री० (सं) वह सभा जो किसी सम्मेलन आदि में आने वालों का स्वागत-सत्कार के लिये बनाई गई हो। (रिसेप्शन कमिटी)
स्वागतकारी वि० (सं) स्वागत करने वाला।
स्वागत प्रश्न पुं० (सं) किसी से भेंट होने पर उसके स्वास्थ्य आदि का हाल पूछना।
स्वागत भाषण पुं० (सं) स्वागत-समिति के अध्यक्ष का स्वागत के रूप में दिया हुआ भाषण।
स्वागतम पुं० (सं) सुस्वागमन।
स्वागतिक वि० (सं) स्वागत या अभ्यर्थना करने वाला
स्वाच्छंद्य पुं० (सं) स्वच्छन्दता।
स्वातंत्र्य पुं० (सं) दे० 'स्वतंत्रता'।
स्वातंत्र्ययुद्ध पुं० (सं) विदेशी शासन से छुटकारा पाने के लिये किया गया युद्ध।
स्वातंत्र्य संग्राम पुं० (सं) आजादी की लड़ाई।
स्वात स्त्री० (हिं) दे० 'स्वाति'।
स्वाति स्त्री०(सं) सत्ताइस नक्षत्रों में से पंद्रहवां नक्षत्र जिसको वर्षा के जल से मोती की उत्पत्ति मानी गई है।
स्वातिकारी स्त्री० (सं) कृषि की देवी।
स्वातिपंथ पुं० (सं) आकाशगंगा।
स्वातियोग पुं० (सं) आषाढ़ के शुक्लपक्ष में स्वाति-नक्षत्र का चन्द्रमा के साथ योग।
स्वातिसुत पुं० (सं) मोती। मुक्ता।
स्वाती स्त्री० (हिं) दे० 'स्वाति'।
स्वाद पुं०(सं) १-किसी बात में मिलने वाला आनन्द २-चाह। इच्छा। कामना। ३-जायका। खाने पीने से मुँह या जीभ को होने वाला अनुभव।
स्वादक पुं० (सं) जो भोज्य पदार्थों के तैयार हो जाने पर चखता है।
स्वादन पुं०(सं) १-स्वाद लेना। चखना। २-आनन्द लेना।
स्वादनीय वि० (सं) १-स्वाद लेने योग्य। २-आनन्द

लेने योग्य।
स्वादित वि० (सं) १-स्वाद लिया हुआ। २-प्रसन्न। ३-जायकेदार।
स्वादिष्ट वि० (सं) सुस्वादु। जायकेदार।
स्वादी वि० (हि) स्वाद लेने वाला।
स्वादीला वि० (हि) दे० 'स्वादिष्ट'।
स्वादु पु० (सं) १-मधुरता। २-गुड़। ३-महुआ। ४-दूध। सेंधा नमक। ६-अगर। वि० १-मीठा। २-जायकेदार। स्वादिष्ट। ३-सुन्दर।
स्वादेशिक वि० (सं) स्वदेश सम्बन्धी।
स्वाद्य वि० (सं) स्वाद लेने या चखने योग्य।
स्वाधिकार पु० (सं) १-अपना अधिकार। २-स्वाधीनता। स्वतंत्रता।
स्वाधिकार-पत्र पु० (सं) राज्य से प्राप्त अधिकार, जिससे किसी आविष्कारक का सर्वाधिकार सुरक्षित रहे। (पेटेन्ट लेटर्स)।
स्वाधिष्ठान पुं० (सं) हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के एक चक्र का नाम।
स्वाधीन वि०(सं) जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र। आज़ाद।
स्वाधीनता स्त्री० (सं) स्वतंत्रता। आज़ादी।
स्वाधीनपतिका स्त्री०(सं) पति को वशीभूत करने वाली नायिका।
स्वाधीनी स्त्री० (हि) आज़ादी। स्वतंत्रता।
स्वाध्याय पु० (सं) १-वेदों का नियमपूर्वक या ठीक अध्ययन। २-किसी विषय का अनुशीलन। अध्ययन।
स्वाध्यायार्थी (सं) वह विद्यार्थी जो अध्ययन काल में अपनी जीविका स्वयं चलाने का प्रयत्न करे।
...ी वि० (सं) स्वाध्याय करने वाला।
...पु०(सं) शब्द। आवाज़। पु०(हि) दे० 'श्वान'।
...वि० (हि) दे० 'सुलाना'।
...स्त्री० (सं) अपना अनुभव।
... वि० (सं) १-सहज। आसान। २-अपने
... ।
...पु०(सं) १-निद्रा। २-स्वप्न। ३-निश्चेतता।
... ।
...वि० (सं) नींद लाने वाला।
...पु० (सं) १-नींद लाने वाली औषध। २-...का एक अस्त्र जिसे चलाने पर शत्रु ...निद्रा अवस्था में हो जाती थी। वि० नींद ...वाला।
...पु० (सं) स्वयं के प्रति अपराध।
...वि० (सं) नींद लाने वाला।
...वि० (सं) १-अपने प्रयत्न से प्राप्त। २-अप...।
...पु० (सं) वह महत्व वाला समाचार ...किसी संवाददाता ने अपने प्रयत्न से खोज

निकाला हो तथा पहले उसी के पत्र में छपा हो। (स्कूप न्यूज़)।
स्वाभाविक वि० (सं) १-अपने आप ही होने वाला। प्राकृतिक। नैसर्गिक। २-स्वभाव से सम्बन्धित।
स्वाभाविक-वर्णन पुं० (सं) वह वर्णन जिसमें कोई बनावट न हो।
स्वाभिमान पु० (सं) अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान।
स्वामि पु० (हि) दे० 'स्वामी'।
स्वामित पु० (हि) दे० 'स्वामित्व'।
स्वामिता स्त्री० (सं) स्वामित्व।
स्वामित्व पु० (सं) स्वामी होने का भाव। (ओनरशिप)।
स्वामिनी स्त्री० (सं) १-मालकिन। २-गृहिणी। ३-अपने स्वामी की पत्नी।
स्वामी पु० (सं) १-वह जिसे किसी वस्तु पर पूरे तथा सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों। (ओनर) २-पति। ३-साधु-संन्यासी आदि का संबोधन। ४-सेना का नायक। ५-शिव।
स्वामीभक्त वि० (सं) वफादार।
स्वामीस्व पु०(सं) किसी ग्रंथ के लेखक को या किसी आविष्कार के आविष्कारक को लाभ होने वाले धन में से मिलने वाली निश्चित रकम। (रायल्टी)।
स्वामीहीनत्व पुं० (सं) किसी वस्तु के मिलने पर उसका कोई भी स्वामी न मालूम पड़ना। (बोना-वेकेंशिया)
स्वाम्य पु० (सं) स्वामित्व।
स्वाम्युपकारक पुं० (सं) घोड़ा। अश्व। वि० अपने स्वामी का भला करने वाला।
स्वायम्भुव पुं० (सं) पुराणोक्त चौदह मनुओं में से पहले जो ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।
स्वायंभू पुं० (सं) दे० 'स्वायंभुव'।
स्वायत्त वि० (सं) १-जिस पर केवल अपना ही अधिकार हो। २-जो किसी दूसरे के शासन में न हो और स्वयं कार्य संचालन करता हो। (ऑटोनोमस)।
स्वायत्तशासन पु०(सं) वह शासन जो अपने अधिकार में हो। (ऑटोनॉमी)।
स्वायत्तशासी वि० (सं) (वह राज्य या देश) जिसे अपना शासन स्वयं चलाने का अधिकार मिला हुआ हो। (आटोनोमस)।
स्वारथ पुं० (हि) दे० 'स्वार्थ'।
स्वारथी वि० (हि) दे० 'स्वार्थी'।
स्वारस्य वि०(सं)१-सरसता। २-[illegible] विद्या।
स्वाराज्य पुं० (सं) १-वह रा[illegible] संचालन का भार लोगों पर हो
स्वारी स्त्री० (हि) दे० 'सवारी'।

स्वार्जित वि०(सं) अपने आप कमाया हुआ।
स्वार्थ पु०(सं) १-अपना उद्देश्य या मतलब। २-ऐसी बात जिसमें अपना हित हो। ३-प्रयोजन।
स्वार्थत्याग पुं० (सं) किसी अच्छे काम के लिए अपने लाभ या हित को छोड़ देना।
स्वार्थपरायण वि० (सं) स्वार्थी। मतलबी।
स्वार्थसाधन पुं० (सं) अपना मतलब साधना या काम निकालना।
स्वार्थसाधनतत्पर वि० (सं) जो अपना मतलब साधने के लिए तत्पर हो।
स्वार्थसिद्धि स्त्री० (सं) अपना काम निकालना।
स्वार्थांध वि० (सं) अपने हित के सामने किसी दूसरे के हित या किसी और बात का विचार न करने वाला।
स्वार्थी वि० (सं) मतलबी। अपना काम निकालने वाला।
स्वाल पुं० (हि) दे० 'सवाल'।
स्वावमानन पुं०(सं) आत्मभर्त्सना।
स्वावलंबन पुं० (सं) अपने भरोसे पर ही रह कर अपने बल से काम करना।
स्वावलंबी वि० (सं) जो अपने भरोसे या सहारे पर रहता हो।
स्वाश्रय पुं० (सं) अपने ही भरोसे पर रहना।
स्वाश्रित वि० (सं) स्वावलंबी।
स्वास पुं० (सं) सांस। श्वास।
स्वासा स्त्री० (हि) श्वास। सांस।
स्वास्थ्य पुं०(सं) निरोग रहने की अवस्था। आरोग्य तंदुरुस्ती। (हेल्थ)।
स्वास्थ्यकर वि०(सं) तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाला।
स्वास्थ्यनिवास पुं०(सं) वह स्थान जहां लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए रहते हैं। (सेनिटोरियम)।
स्वास्थ्य-विज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें शरीर को निरोग बनाये रखने के नियमों तथा सिद्धांतों का विवेचन होता है। (हाइजीन)।
स्वास्थ्यविभाग पुं० (सं) किसी राज्य, नगरपालिका आदि का वह विभाग जिसमें जन-स्वास्थ्य की रक्षा का प्रबन्ध किया जाता है। (हैल्थ डिपार्टमेंट)।
स्वास्थ्यसदन पुं० (सं) दे० 'स्वास्थ्यनिवास'।
स्वास्थ्यहानि स्त्री० (सं) तन्दुरुस्ती का बिगड़ जाना।
स्वाहा स्त्री० (सं) हवि। अव्य० एक शब्द जिसका प्रयोग हवन की हवि देते समय होता है। वि० जो जलकर राख हो गया हो। पूर्णतया नष्ट।
स्वाहाप्रिय पुं० (सं) अग्नि।
स्विदित वि० (सं) १-जिसे पसीना आ गया हो। २-पिघला हुआ।
स्विन्न वि० (सं) १-पसीने से युक्त। २-उबला हुआ
स्वीकरण पुं० (सं) १-मानना। स्वीकार करना। २-विवाह करना।
स्वीकरणीय वि० (सं) स्वीकार करने योग्य।
स्वीकर्तव्य वि० (सं) स्वीकार करने के योग्य।
स्वीकर्ता वि० (सं) स्वीकार करने वाला।
स्वीकार पुं० (सं) १-ग्रहण या अंगीकार करने क क्रिया। मंजूरी। अंगीकार। २-वचन। ३-पत्नी रूप में ग्रहण करना।
स्वीकारना क्रि० (हि) स्वीकार करना। मानना।
स्वीकारात्मक वि० (सं) ऐसा कोई वाक्य, उत्तर आदि जिसमें कोई बात मान ली गई हो (अफर्मेटिव)।
स्वीकारोक्ति स्त्री०(सं) अपना अपराध आदि स्वीका कर लेना।
स्वीकार्य वि० (सं) ग्रहण करने या मानने योग्य।
स्वीकृच्छ्र पुं०(सं) प्राचीन काल में किया जाने वाल एक व्रत।
स्वीकृत वि० (सं) स्वीकार किया हुआ। मंजूर।
स्वीय वि० (सं) अपना। निज का। पुं० आत्मीय स्वजन।
स्वे वि० (हि) दे० 'स्व'।
स्वेच्छा स्त्री० (सं) अपनी इच्छा या मर्जी।
स्वेच्छाकृत वि० (सं) जो केवल अपनी इच्छा से किया या दिया गया हो। (वालंटरी)।
स्वेच्छाचार पुं०(सं) भला बुरा जो मन में आये वा करना।
स्वेच्छाचारिता स्त्री० (सं) निरंकुशता। उच्छृङ्खलता।
स्वेच्छाचारी वि० (सं) मनमाना काम करने वाला।
स्वेच्छासैनिकदल पुं० (सं) अपनी इच्छा से ही सै सेवा में अपना नाम देने वाले लोगों का दल (वालंटियर कोर)।
स्वेत वि० (हि) दे० 'श्वेत'।
स्वेद पुं० (सं) १-पसीना। २-भाप। ३-ताप। गर ४-पसीना लाने वाली दवा। वि० पसीना लाने वाल
स्वेदक वि० (सं) पसीना लाने वाला।
स्वेदचूषक पुं०(सं) ठण्डी हवा।
स्वेदज पुं०(सं) पसीने से उत्पन्न होने वाले जीव-ज खटमल आदि।
स्वेदजल पुं० (सं) पसीना।
स्वेदजलकणिका स्त्री० (सं) पसीने की बूँद।
स्वेदन पुं० (सं) १-पसीना निकलना। २-एक वैद्य यंत्र जिससे औषधियां शोधी जाती हैं।
स्वेदनी स्त्री०(सं) तवा।
स्वेदबिंदु पुं० (सं) पसीने की बूँद।
स्वेदांबु पुं० (सं) पसीना।
स्वेदित वि० (सं) १-पसीने से युक्त। २-भफा दिया हुआ।
स्वेदोदक पुं० (सं) पसीना।
स्वै वि० (हि) अपना। निज का। सर्व० दे०'सां'

स्वैर *वि०* (सं) १-स्वेच्छाचारी। २-स्वतंत्र। ३-मनमाना। ४-धीमा। मन्द। पु० स्वच्छन्दता। मनमानी।

स्वैरकथा स्त्री० [illegible]

[illegible] स्वच्छन्दता।

स्वैरवृत्ति *वि०* (सं) इच्छानुसार काम करने वाला। स्त्री० मनमानापन।

स्वैराचार *वि०* (सं) स्वेच्छाचार।

स्वैराचारी *वि०* (सं) स्वेच्छाचारी।

स्वैरिणी स्त्री० (सं) व्यभिचारिणी।

स्वैरी *वि०*(सं) स्वेच्छाचारी।

स्वोपार्जित *वि०* (सं) अपने आप कमाया हुआ।

स्वोरस पु० (सं) तैलीय पदार्थों का छापने के बाद बचा हुआ तलछट।

स्वोदर्क पु० (सं) आनन्द। सुख। वृद्धि (विशेषकर भविष्य जीवन संबंधी)।

स्वौजस पु० (सं) अपना तेज या ओज।

[शब्दसंख्या--४८८६३]

ह

ह देवनागरी वर्णमाला का तैंतीसवाँ तथा अन्तिम व्यञ्जन जो उच्चारण के विचार से ऊष्मवर्ण कहलाता है।

हक स्त्री० (हि) दे० 'हाक'।

हकड़ना *क्रि०* (हि) १-ललकारना। २-जोर से चिल्लाना।

हँकड़ान पु० (हि) ललकारने की क्रिया।

हँकरना क्रि० (हि) दे० 'हँकड़ना'।

हंकराना क्रि० (हि) पुकारना। बुलाना।

हँकवा पु० (हि) शेर, चीते आदि को बहुत से लोगों का घेर कर लाना।

हँकवाना क्रि० (हि) १-हाक लगाना। पुकारना। २-चौपायों को आवाज देकर हटवाना।

हँकवैया पु० (हि) हाँकने वाला।

हँका स्त्री० (हि) डपट। ललकार।

हँकाई स्त्री० (हि) हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी

हँकाना *क्रि०* (हि) १-हाँकना। २-पुकारना। ३-हँक वाना।

हँकार स्त्री० (हि) जोर से बुलाने की क्रिया या भाव पुकार। पु० (हि) १-अहङ्कार। २-ललकार।

[illegible] ना। २-

२-पुकार [illegible] बुला कर

[illegible] लाने वाला व्यक्ति। २-बुलाहट।

हंगामा पु० (फा) १-उत्पात। उपद्रव। २-शोरगुल। ३-भीड़भाड़।

हंटर पु० (अं) लम्बा चाबुक। कोड़ा।

हंडना *क्रि०* (हि) १-घूमना। चलना। २-इधर-उधर ढूँढना। ३-वस्त्र का व्यवहार आने पर कुछ समय चलना।

हंडा पु० (हि) पानी रखने का पीतल या ताँबे का बरतन।

हंडिका स्त्री० (स) पतीली जैसी मिट्टी की हांडी।

हंडिया स्त्री० (हि) १-मिट्टी का एक प्रकार का बरतन २-विवाहोत्सव आदि पर ऊपर से लटकाया जाने वाला शीशे का झाड़-फानूस। ३-चावल से बनाई मदिरा।

हंडी स्त्री० (हि) दे० 'हंडिया'।

हंत अव्य० (सं) एक दुःखसूचक शब्द।

हंतव्य *वि०* (स) मार डालने योग्य।

हंता पु० (स) मारने या वध करने वाला।

हंत्री स्त्री० (स) वध करने वाली।

हंथोरी स्त्री० (हि) दे० 'हथेली'।

हंथोरा पु० (हि) दे० 'हथौड़ा'।

हंथोरी स्त्री० (हि) दे० 'हथौड़ी'।

हंफनि स्त्री० (हि) हाफने की क्रिया।

हंबा अव्य० (हि) हाँ (राजस्थान)।

हंभा स्त्री० (स) गाय आदि पशुओं के रँभाने का शब्द

हंस पु० (सं) १-बत्तख के आकार का एक जल पक्षी जो बड़ी-बड़ी झीलों में पाया जाता है।२-जीवात्मा ३-विष्णु। ४-प्राणवायु। ५-शिव। ६-ईर्ष्या। ७-भैंसा। ८-कामदेव।

हंसक पु० (सं) १-हंस पक्षी। २-पैर में पहनने का बिछुआ।

हंसगति स्त्री० (स)१-हंस जैसी मन्द चाल। २-ब्रह्मत्व प्राप्ति। ३-एक छन्द।

हंसगामिनी स्त्री० (स) हंस जैसी [illegible] स्त्री।

हंसजा स्त्री० (सं) यमुना।

हँसन स्त्री० (हि) १-हँसने की। [illegible] हँसने का ढंग।

हँसना *क्रि०* (हि) १-प्रसन्नता प्रकट [illegible] के लिये। किसी का मुँह खोलकर ध्वनि कर [illegible] हास

फसना। ३-रमणीय लगना। ४-खुशी मनाना।
हँसनामुह पुं०(हि) प्रसन्न मुख।
हँसनि स्त्री० (हि) दे० 'हँसन'।
हँसनी स्त्री० (हि) हंस की मादा।
हँसमुख वि० (हि) १-सदा हँसते रहने वाला। २-विनोदशील। मसखरा।
हंसराज पुं० (सं) १-एक प्रकार का अगहनी धान। २-एक पहाड़ी बूटी।
हँसली स्त्री० (हि) गले के पास छाती के ऊपर की दोनों धन्वाकार हड्डियां।
हंसवाहन पुं० (सं) ब्रह्मा।
हंससुता स्त्री० (सं) यमुना नदी।
हँसाई स्त्री० (हि) १-हँसी। २-लोक में होने वाली निन्दा या बदनामी।
हंसाधिरूढ़ा स्त्री० (सं) सरस्वती।
हँसाना क्रि० (हि) किसी को हँसाने में प्रवृत्त करना।
हँसाय स्त्री० (हि) हँसाई।
हंसारूढ़ पुं० (सं) ब्रह्मा।
हंसारूढ़ा स्त्री० (सं) ब्रह्मा।
हंसावली स्त्री० (हि) हंसों की पंक्ति।
हंसिका स्त्री० (हि) दे० 'हंसिनी'।
हंसिनी स्त्री० (सं) हंस की मादा। हंसी।
हँसिया पुं० (देश) खेत की फसल, तरकारी आदि काटने का एक अर्द्धचन्द्राकार औजार। स्त्री० (हि) गरदन के नीचे की धन्वाकार हड्डी।
हंसी स्त्री० (सं) १-हंस की मादा। २-कुयार भाव की अच्छी नस्ल। ३-एक वर्णवृत्त। (हि) १-हास २-परिहास। दिल्लगी। ३-लोक में होने वाली उपहास पूर्ण निंदा।
हँसीखेल पुं० (स) १-दिल्लगी। २-सरल काम।
हँसीठठोली स्त्री० (हि) हास-परिहास। दिल्लगी।
हँसुली स्त्री० (हि) दे० 'हँसली'।
हँसोड़ वि० (हि) विनोद करने वाला।
हँसोर वि० (हि) दे० 'हँसोड़'।
हँसोहाँ वि० (हि) १-मुख। हँसी लिये हुए। २-शीघ्र हँस पड़ने वाला।
ह पुं० (सं) १-जल। २-आकाश। ३-हास। ४-शिव ५-शून्य। ६-रक्त। ७-कारण। ८-शुभ। ९-भय। १०-वैद्य।
हई पुं० (हि) घुड़सवार। स्त्री० अचरज।
हउँ अव्य० (हि) दे० 'हौं'।
हक पुं० (हि) सहसा घबरा जाने से दिल में लगने वाला धक्का। वि०(अ)१-सत्य। २-वाजिब। उचित १-अधिकार। २-कर्तव्य। ३-वह वस्तु जो न्यायानुसार प्राप्त की गई हो। ४-उचित या ठीक बात या पक्ष। ५-ईश्वर। ६-लेन-देन में संयोग के अनुसार मिलने वाला धन।
हकअसफ़ाइश पुं०(अ) पड़ोसी की भूमि पर आने जाने का रास्ता पाने का अधिकार।
हकतलफ़ी स्त्री० (अ) किसी का अधिकार या हक मारना। अन्याय।
हकबक वि० (हि) चकित। आश्चर्यान्वित।
हकदार पुं० (अ) हक या अधिकार रखने वाला।
हकनाहक अव्य० (अ) १-जबरदस्ती। २-व्यर्थ।
हकपरस्त वि० (अ) १-सच्चा। २-ईश्वर भक्त।
हकबकाना क्रि० (हि) घबरा जाना।
हकमौरूसी पुं० (अ) वह अधिकार जो बाप दादों से चला आता हो।
हकरसी स्त्री० (अ) न्याय पाना।
हकला वि० (हि) रुक-रुक कर बोलने वाला।
हकलाना क्रि० (हि) शब्दों का ठीक प्रकार से उच्चारण कर सकने के कारण रुक-रुक कर बोलना।
हकलापन पुं० (हि) हकलाने का भाव या क्रिया।
हकलाहट स्त्री० (हि) हकलापन।
हकलाहा वि० (हि) दे० 'हकला'।
हकशुफ़ा पुं० (अ) मकान, भूमि आदि को खरीदने का वह हक जो गाँव के हिस्सेदारों को या पड़ोसियों को प्राप्त होता है।
हकार पुं० (सं) 'ह' अक्षर का वर्ण।
हकारत स्त्री० (अ) तुच्छता। हलकापन। नीचता।
हकीकत स्त्री० (अ) १-वास्तविक बात। असलियत। २-सच्चा वृत्तांत।
हकीकतन अव्य० (अ) वास्तव में।
हकीकी वि० (अ) १-सच्चा। २-खास। ठीक। ३-भगवत्संबन्धी।
हकीम पुं० (अ) १-विद्वान। पंडित। २-यूनानी चिकित्सा पद्धति से इलाज करने वाला। चिकित्सक।
हकीमी स्त्री० (अ) १-हकीम का काम। २-यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। वि० हकीम सम्बन्धी।
हकूक पुं० (अ) कई प्रकार के स्वत्व या अधिकार।
हकरु पुं० (हि) पक्षी को बुलाने का शब्द।
हक्काक पुं० (अ) १-नग जड़ने वाला। २-मुहर खोदने वाला।
हक्काबक्का वि० (हि) बहुत घबराया हुआ। चकित
हक्कार पुं० (सं) पुकार। जोर से बोल कर बोलने का शब्द।
हक्कारना क्रि० (हि) ललकारना।
हक्केमालिकाना पुं० (अ) मालिक का अधिकार।
हगना क्रि० (हि) १-मलत्याग करना। २-कोई वस्तु दबाव के कारण दे देना। ३-अत्यधिक मात्रा में दे देना। वि० अधिक मलत्याग करने वाला।
हगनेटी स्त्री० (हि) शौचालय। पाखाना।
हगनौटी स्त्री० (हि) दे० 'हगनेटी'।

हगाना क्रि० (हि) १-मल त्याग कराना। २-किसी को हगने पर विवश करना।
हगास स्त्री० (हि) हगने की इच्छा।
हगोड़ा वि० (हि) बहुत हगने वाला।
हग्गू वि० (हि) हगोड़ा।
हचक पुं० (हि) झोंका। धक्का।
हचकना क्रि० (हि) धक्के से हिलाना।
हचका पु० (हि) दे० 'हचक'।
हचकाना क्रि० (हि) धक्के या झोंके से हिलाना।
हचकीला वि० (हि) झोंके से हिलने वाला।
हचकोला पु० (हि) धक्का। गाड़ी आदि का हिलने-डोलने वाला धक्का।
हचना क्रि० (हि) हिचकना।
हज पुं० (अ) मुसलमानों की मक्का की तीर्थ यात्रा।
हजम पु० (अ) पचने की क्रिया या भाव। वि० पेट में पचा हुआ।
हजरत पुं० (अ) १-महापुरुष। महात्मा। २-आदर-सूचक एक सम्बोधन। ३-नटखट या खोटा आदमी
हजामत स्त्री० (अ) १-बाल काटना या मूँडना। २-सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल जो कटवाने हों।
हजार वि० (फा) १-सहस्र। दस सौ। २-अनेक। पु० दस-सौ की संख्या का अंक १०००। अव्य० बहुतेरा। चाहे जितना अधिक।
हजारहा वि० (फा) १-हजारों। सहस्रों। २-बहुत से
हजारा वि०(फा) (वह पुष्प) जिसमें बहुत सारी दल दिया हो। पु० एक प्रकार की आतिशबाजी।
हजारी पुं० (फा) एक सहस्र सिपाहियों का सरदार। २-व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र। दोगला।
हजारों वि० (हि) दे० 'हजारहा'।
हजूम पु० (अ) भीड़भाड़। जमघट।
हजूर पु० (हि) दे० 'हुजूर'।
हजूरी स्त्री० (हि) दे० 'हुजूरी'।
हजो स्त्री० (अ) निंदा। अपकीर्ति।
हज्ज पुं० (अ) दे० 'हज'।
हज्जाम पु० (अ) हजामत बनाने वाला। नाई।
हज्जामी स्त्री० (हि) हज्जाम का पेशा।
हटक स्त्री० (हि) १-वर्जन। २-गायों या चौपायों को हाँकने की क्रिया या भाव।
हटकन स्त्री० (हि) १-पशुओं को हाँकने की लाठी। २-मना करने की क्रिया।
हटकना क्रि० (हि) १-मना करना। रोकना। २-पशुओं को किसी तरह हाँकना।
हटका पुं० (हि) किवाड़ों को रोकने की बारेंज।
हटतार पुं० (हि) माला का सूत।
हटताल स्त्री० (हि) दे० 'हड़ताल'।
हटना क्रि० १-अपना स्थान छोड़कर इधर उधर को होना। खिसकना। २-टलना। ३-अपने स्थान से पीछे की ओर हटना। ४-न रह जाना। ५-बात या प्रतिज्ञा आदि से विचलित होना।
हटवया पु० (हि) दूकानदार।
हटवाई स्त्री० (हि) हाट में जाकर सौदा लेना या बेचना। २-हटाने की मजदूरी।
हटवाना क्रि०(हि) किसी से हटाने का काम कराना।
हटवार पुं० (हि) दूकानदार।
हटवैया वि० (हि) हटाने वाला।
हटाना क्रि० (हि) १-सरकाना। २-दूर करना। ३-स्थान छोड़ने पर विवश करना। ४-जाने देना। ५-प्रतिज्ञा तोड़ना।
हटुवाई स्त्री० (देश) दूकानदारी।
हट्ट पु० (स) १-बाजार। हाट। २-मेला।
हट्टाकट्टा वि० (हि) बलवान। मोटाताजा। हृष्टपुष्ट
हट्टाध्यक्ष पुं० (स) बाजार का निरीक्षक।
हट्टी पु० (हि) दूकान।
हठ पु० (स) १-किसी बात की होने वाली अड़ या जिद। २-दृढ़ प्रतिज्ञा। ३-जबरदस्ती। ४-अवश्य होने का भाव।
हठकर्म पु० (स) बल प्रयोग का कार्य।
हठधर्मी स्त्री० (हि) अनुचित बात पर अड़े रहना। दुराग्रह।
हठना क्रि० (हि) १-हठ करना। २-दृढ़संकल्प।
हठयोगी पु० (हि) हठयोग करने वाला व्यक्ति।
हठात् अव्य० (स) १-हठपूर्वक। २-अचानक। ३-जबरदस्ती।
हठात्कार पु० (सं) बलात्कार। जबरदस्ती।
हठादेशी वि० (स) किसी के खिलाफ बल प्रयोग का आय बताने वाला।
हठाक्षेप पु० (स) जबरदस्ती अभिलिंगन करना।
हठी वि० (हि) हठ या जिद करने वाला। जिद्दी।
हठीला वि० (हि) १-जिद्दी। २-दृढ़प्रतिज्ञ। ३-बात का पक्का।
हड़ स्त्री० (हि) १-एक बड़ा वृक्ष जिसका फल दवा के काम आता है। २-उसके फल के आकार का एक गहना।
हड़कंप पुं० (हि) लोगों में घबड़ाहट फैलाने वाली भारी हलचल। तहलका।
हड़क स्त्री० (हि) १-पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए होने वाली व्याकुलता। २-कुछ पाने की उत्कट लालसा।
हड़कना क्रि० (हि) कोई वस्तु न मिलने पर बहुत व्याकुल होना।
हड़का पु० (हि) तरसने या हड़कने का भाव। तरस
हड़काना क्रि० (हि) १-तंग करके जिससे किसी के पीछे लगना। २-तरसाना।

हड़काया वि० (हि) १-पागल (कुत्ता)। २-किसी वस्तु के लिये उतावला।
हड़ताल स्त्री० (हि) १-दुःख, विरोध, असन्तोष आदि प्रकट करने के लिये, कल-कारखानों, बाजारों तथा दूकानों आदि का बन्द होना। २-हरताल।
हड़ताल तोड़क पुं० (हि) वह कर्मचारी जो किसी कारखाने आदि में हड़ताल होने पर मालिक का काम करने के लिये तथा हड़ताल को विफल करने के लिये कटिबद्ध हों। (ब्लेक-लैग)।
हड़प वि० (हि) १-खाया या निगला हुआ। २-अनुचित रूप से लिया हुआ।
हड़पना क्रि० (हि) १-निगल जाना। २-अनुचित रूप से ले लेना।
हड़प्पा पुं०(हि)१-दे० 'हड़प'। २-सिन्ध (पाकिस्तान) में स्थित एक स्थान जहां पर खुदाई करने से बहुत प्राचीन चिह्न मिले थे।
हुड़बड़ स्त्री० (हि) दे० 'हड़बड़ी'।
हड़बड़ाना क्रि०(हि) १-जल्दी मचाना। २-किसी को जल्दी करने के लिए कहना।
हड़बड़िया वि०(हि) जल्दबाज। हड़बड़ी करने वाला
हड़बड़ी स्त्री० (हि) १-जल्दी। उतावली। २-जल्दी होने के कारण होने वाली घबड़ाहट।
हड़हड़ाना क्रि० (हि) जल्दी करने के लिए किसी को उकसाना। २-घबराहट पैदा करना।
हड़हा पुं०(देश) जंगली बैल। पुं०(हि) वह जिसने किसी पुरखे की हत्या की हो। वि० दुबला-पतला।
हड़ावरि स्त्री० (हि) १-हड्डियों का ढांचा। ठठरी। २-हड्डियों की माला।
हड़ीला वि० (हि) १-जिसमें केवल हड्डी शेष रह गई हो। २-बहुत दुबला-पतला।
हड्ड पुं० (सं) १-अस्थि। हड्डी। हाड़।
हड्डा पुं० (सं) भिड़ की जाति का एक कीड़ा।
हड्डी पुं० (हि) मनुष्यों पशुओं के शरीर में वह कड़ी वस्तु जो भीतरी ढांचे के रूप में होती है। अस्थि। २-वंश।
हत वि० (सं) १-मारा हुआ। २-ताड़ित। ३-रहित। विहीन। ४-जिसे ठोकर लगी हो। ५-बिगड़ा हुआ नष्ट। ६-हैरान। ७-पीड़ित। ८-निकृष्ट। ९-गुणा किया हुआ
हतक स्त्री० (अ) बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। हेटी। वि० १ जिसे चोट पहुँचाई गई हो। २-दुःखी। पापी।
हतकइज्जती स्त्री० (अ) मानहानि।
हतकिल्विष वि० (सं) जिसके पाप नष्ट होगये हो।
हतचित्त वि० (सं) घबड़ाया हुआ। बेसुध।
हतत्रप वि० (सं) जिसमें लज्जा न हो। निर्लज्ज।
हतध्वांत वि० (सं) जिसमें अंधकार न हो।
हतना क्रि०(हि) १-मारना। पीटना। २-मार डालना। ३-न मानना।
हतपुत्र वि० (सं) जिसका पुत्र मर गया हो।
हतप्रभाव वि० (सं) जिसका प्रभाव न रह गया हो।
हतवाना क्रि० (हि) मरवाना। वध करवाना।
हतश्री वि० (सं) १-जिसके चेहरे पर कांति न रह गई हो। २-उदास। मुरझाया हुआ।
हता क्रि० (हि) होने का भूतकाल 'था'। वि० (सं) व्यभिचारिणी।
हताना क्रि० (हि) मरवाना। वध करवाना।
हतावशेष क्रि० (हि) जो जीवित बच गया हो।
हताश वि० (सं) जिसकी आशा नष्ट हो गई हो।
हताश्रय वि० (सं) जिसका सहारा न रहा हो।
हताहत वि० (सं) मारे हुए और घायल।
हते क्रि० (हि) 'होना' का भूतकालिक रूप 'थे'।
हतोज वि० (हि) दे० 'हतौजा'।
हतोत्तर वि० (सं) जो कुछ उत्तर न दे सके।
हतोत्साह वि० (सं) जिसमें उत्साह न रह गया हो।
हतोद्यम वि० (सं) जिसका प्रयत्न विफल हो गया हो।
हतौजा वि० (सं) ओज या तेजहीन।
हत्थ पुं० (हि) हाथ।
हत्था पुं० (हि) २-मूठ। दस्ता। १-केले के फूलों का गुच्छा। ३-लकड़ी का बल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारों ओर उलीचा जाता है। ४-हाथ की छाया। ५-निवार बुनने की कंघी। ६-दण्ड निकालते समय हाथ के नीचे रखने की ईंट या पत्थर।
हत्थि पुं० (हि) हाथी।
हत्थी स्त्री० (हि) १-औजार की मूठ। दस्ता। २-दे० 'हत्था'।
हत्थे अव्य० (हि) हाथ में। द्वारा। हाथ से।
हत्या स्त्री० (सं) १-मार डालने की क्रिया। खून। २-झंझट। बखेड़ा। ३-अनजाने या संयोगवश किसी के प्राण ले लेना।
हत्यारा पुं०(हि) हत्या करने या मार डालने वाला।
हत्यारी स्त्री० (हि) हत्या करने वाली स्त्री।
हथ पुं० (हि) हाथ शब्द का संक्षिप्त रूप।
हथउधार पुं० (हि) अल्पकाल के लिये दिया हुआ कर्ज या उधार।
हथकंडा पुं० (हि) १-हाथ की चालाकी। २-गुप्त चालबाजी।
हथछुट वि० (हि) जिसका हाथ मारने के लिये जल्दी उठता हो।
हथनाल पुं० (हि) वह तोप जो हाथियों पर रखकर चलाई जाती है।
हथनी स्त्री० (हि)१-हाथी की मादा। २-घाटों आदि पर बड़ी तथा ऊँची सीढ़ियों की बनावट।
हथफूल पुं० (हि) एक प्रकार का गहना जो हथेली

की दाढ़ पर पहुंचाया जाता है।
हथफेर पु० (हि) १-प्यार से शरीर पर हाथ फेरना। २-चालाकी से किसी का माल उड़ाना।
हथलपकार पु० (हि) आंख दबाकर चोरी से कोई वस्तु गायब कर देना।
हथवांस पु० (हि) नाव चलाने की डाड़।
हथवांसना क्रि० (हि) व्यवहार या काम में लाना।
हथसांकर पु०(हि) हथफूल नामक गहना।
हथसार स्त्री० (हि) हाथीखाना। गजशाला।
हथाहथी अव्य० (हि) तुरन्त। झटपट।
हथिनी स्त्री० (सं) हाथी की मादा।
हथिया पुं० (हि) हस्तनक्षत्र।
हथियाना क्रि० (हि) १-अधिकार में लेना। हाथ में लेना। २-हाथ में पकड़ना। ३-धोखा देकर लेना।
हथियार पुं० (हि) १-हाथ में लेकर चलाया जाने वाला अस्त्र। २-औज़ार। उपकरण।
हथियारघर पुं० (हि) शस्त्रागार।
हथियारबंद वि० (हि) सशस्त्र। जो हथियार धारण किये हुए हो।
हथुईरोटी स्त्री० (हि) हाथ से गढ़ कर बनाई हुई रोटी।
हथेरा पुं० (हि) हत्था।
हथेली स्त्री० (हि) १-हाथ की कलाई का वह भाग जिसमें उँगलियां होती हैं। २-चरखे की मुठिया।
हथोड़ा पुं० (हि) दे० 'हथौड़ा'।
हथोरी स्त्री० (हि) दे० 'हथेली'।
हथौटी स्त्री० (हि) हाथ से काम करने का ठीक ढंग।
हथौड़ा पुं० (हि) एक प्रकार का उपकरण जिससे कारीगर लोग कोई वस्तु तोड़ते, पीटते, ठोकते या गाड़ते हैं (हैमर)।
हथ्याना क्रि०(हि) दे० 'हथियाना'।
हथ्यार वि० (हि) दे० 'हथियार'।
हद स्त्री० (हि) १-सीमा। २-मर्यादा। ३-वह परिमाण जहाँ तक कोई बात ठीक हो सकती हो।
हदका पुं० (हि) धक्का। हचका।
हदस स्त्री० (हि) वह भय जिससे मनुष्य किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाय।
हदसना क्रि० (हि) डरना। मन में भय उत्पन्न होना।
हद्द स्त्री० (प) दे० 'हद'।
हनन पुं० (सं) क्रि० (प) १-वध करना। २-मार डालना। ३-आघात करना। ३-गुणा करना।
हननशील वि० (स) निष्ठुर। जिसको वध करते हुए संकोच न होता हो।
हनना पुं० (सं) क्रि० (हि) १-मार डालना। २-चोट मारना। ३-ठोकना। पीटना।
हननीय वि०(सं)१-मारने योग्य। २-जिसे मारना हो
हनवाना क्रि० (हि) १-मरवाना। २-नहवाना।
हनाना क्रि० (हि) नहाना।
हनिवंत पु० (हि) हनुमान।
हनु स्त्री० (स) १-ऊपर का जबड़ा। दाढ़ की हड्डी। २-ठोड़ी।
हनुमत पु० (हि) हनुमान्।
हनुमज्जयंती स्त्री०(स) चैत्र पूर्णिमा या कार्तिक की कृष्ण चतुर्दशी जिसे हनुमान जी का जन्म दिन मानते हैं।
हनुमत पु० (हि) दे० 'हनुमान्'।
हनुमान पु० (हि) दे० 'हनुमान्'।
हनुमानबैठक स्त्री०(हि) कसरत में एक प्रकार की बैठक
हनुमान् पु० (सं) एक वीर बानर जो पवन के पुत्र तथा अंजना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और राम के परम भक्त थे। महावीर।
हनुमान-कवच पुं० (सं) १-हनुमान स्तुति। २-एक मंत्र जिससे हनुमान जी प्रसन्न होते हैं।
हनुव पुं० (हि) दे० 'हनुमान्'।
हनू स्त्री० (सं) दे० 'हनु'।
हनूमान पु० (स) दे० 'हनुमान्'।
हनोर पु०(हि) एक प्रकार का संपूर्ण जाति का राग।
हन्यमान वि० (सं) वध करने योग्य। हननीय।
हफ्त वि० (फा) सात।
हफ्ता पु० (फा) सप्ताह।
हबकना क्रि० (हि) किसी फल आदि को दांत से काट कर खाना। चट कर जाना। २-व्यक्ति को झपट कर बन्दर की तरह काटना।
हबड़ा वि० (देश) बड़े बड़े दांतों वाला। २-कुरूप।
हबरदबर अव्य० (हि) उतावली से। शीघ्रता से। शीघ्रता के कारण। ठीक प्रकार से नहीं।
हबरहबर अव्य० (हि) दे० 'हबरदबर'।
हबराना क्रि० (हि) दे० 'हड़बड़ाना'।
हबश पु० (फा) अफ्रीका का एक देश।
हबशा पु० (फा) दे० 'हबश'।
हबशी वि० (फा) काला-कलूटा। भद्दा। पुं० १-हबश देश का निवासी। २-एक जाति। जामुन की तरह काला अंगूर।
हबीब पु० (प) १-मित्र। दोस्त। २-प्रिय। प्यारा।
हबेली स्त्री० (हि) दे० 'हवेली'।
हब्बा पु० (प) १-रत्ती। अनाज का दाना। ३-बहुत थोड़ी मात्रा। ४-पैसा-कौड़ी।
हब्बाडब्बा पु० (प) बच्चों की पसली चलने की बीमारी।
हब्बाभर वि० (प) रत्तीभर। अल्प।
हब्बा-हब्बा वि० (प) पैसा-पैसा। कौड़ी-कौड़ी।
हब्स पुं० (प) १-कारावास। कैद। २-अवरोध।
हम सर्व०(हि) मैं का बहुवचन। उत्तमपुरुष का बहुवचन सूचक सर्वनाम। पुं० (हि) [illegible] अव्य०

(फा) १-संग। साथ। २-तुल्य। समान। यौगिक के आरम्भ में जैसे-हमसफर।
हमअसर वि०(फा) एक जैसे प्रभाव या असर वाले।
हमउम्र वि० (फा) समवयस्क। बराबर आयु का।
हमक़ौम वि० (फा) सजातीय।
हमख्वाबा वि० (फा) साथ शयन करने वाली। स्त्री० पत्नी। स्त्री।
हमजिंस वि०(फा) एक ही वर्ग या जाति के (प्राणी)।
हमजोली वि०(फा) १-समवयस्क। २-बचपन में साथ खेला हुआ।
हमदर्द वि० (फा) जो सहानुभूति रखता हो।
हमदर्दी स्त्री० (फा) सहानुभूति।
हमन सर्व० (देश) दे० 'हम'।
हमपेशा वि० (फा) स-व्यवसायी। एक जैसा पेशा करने वाले।
हमबिस्तर वि०(फा) एक ही बिस्तर पर साथ सोने वाले
हमबिस्तरी स्त्री० (फा) एक ही बिस्तर पर साथ सोने वाली स्त्री। पत्नी।
हममज़हब वि०(फा) सहधर्मी। एक ही धर्म को मानने वाले।
हमरा सर्व० (हि) दे० 'हमारा'।
हमराह वि०(फा) साथ सफर करने वाले। साथ चलने वाले। अव्य० साथ में।
हमराही वि० (फा) साथ चलने वाले। सहगामी।
हमरो सर्व० (हि) दे० 'हमारा'।
हमल पुं० (अ) गर्भ।
हमला पुं० (अ) १-चढ़ाई। आक्रमण। २-प्रहार। वार। ३-शब्द द्वारा आक्षेप।
हमलावर वि० (अ) आक्रमणकारी।
हमलेहराम पुं०(अ) वह गर्भ जो व्यभिचार से हुआ हो
हमवतन वि० (फा) स्वदेशवासी।
हमवार वि० (फा) सपाट। समतल।
हमसफर वि० (फा) साथ में यात्रा करने वाला।
हमसबक वि० (फा) सहपाठी।
हमसाया पुं० (फा) पड़ोसी।
हमसिन वि० (फा) समवयस्क।
हमाकत स्त्री० (अ) नासमझी। मूर्खता।
हमायल स्त्री० (अ) गले में पहनने का एक गहना।
हमार सर्व० (देश) दे० 'हमारा'।
हमारा सर्व० (हि) 'हम' का सम्बन्धकारक रूप।
हमाल पुं० (अ) १-रक्षक। रखवाला। २-बोझ ढोने वाला मजदूर।
हमाहमी स्त्री०(हि) १-अपने लाभ के लिए होने वाला २-आतुर प्रयत्न। ३-अहंकार।
हमीर पुं० (हि) दे० 'हम्मीर'।
हमें सर्व० (हि) हमको। 'हम' का सम्प्रदानकारक रूप
हमेल स्त्री० (हि) गले में पहनने की एक प्रकार की माला जिसमें सिक्के जैसे गोल टुकड़े लगे होते हैं
हमेव पुं० (हि) अभिमान। अहंकार।
हमेशा अव्य० (फा) सदा। सदैव।
हमेस अव्य० (हि) हमेशा। सदा। सदैव।
हमेसा अव्य० (हि) दे० 'हमेशा'।
हमें अव्य० (हि) दे० 'हमें'।
हम्द पुं० (अ) ईश्वर की स्तुति।
हम्माम स्त्री० (अ) चारों ओर से बन्द कोठरी जिसमें गरम जल से स्नान करते हैं।
हम्मार सर्व० (हि) दे० 'हमारा'।
हम्माल पुं० (अ) बोझ उठाने वाला मजदूर।
हम्मीर पुं० (सं) १-संपूर्ण जाति का एक राग। २-रणथम्भोरगढ़ के एक प्रख्यात वीर चौहान राजा।
हम्मीरनट पुं० (सं) नट और हम्मीर राग के योग से बना एक संपूर्ण जाति का संकर राग।
हयंद पुं० (हि) बड़ा तथा उत्तम कोटि का घोड़ा।
हय पुं० (सं) १-घोड़ा। २-इन्द्र। ३-धनुराशि। ४-कविता में सात की मात्रा सूचित करने वाला एक शब्द। ५-चार मात्राओं का एक छन्द।
हयकोविद वि० (सं) घोड़ों के पालन-पोषण करने तथा सिखाने में निपुण।
हयगृह पुं० (सं) घुड़साल। अश्वशाला।
हयग्रीव पुं० (सं) १-विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक। २-एक असुर जो ब्रह्मा की निद्रित अवस्था में वेद चुराकर ले गया था।
हयज्ञ पुं० (सं) १-घोड़ों का व्यापारी। २-साईस।
हयना क्रि० (हि) दे० 'हनना'।
हयनाल स्त्री० (सं) वह तोप जो घोड़ों द्वारा खींची जाती है।
हयनिर्घोष पुं० (सं) घोड़े की टाप का शब्द।
हयप पुं० (सं) साईस।
हयप्रिय पुं० (सं) जौ। यव।
हयविद्या स्त्री० (सं) घोड़े से सम्बन्धित विद्या।
हयशाला स्त्री० (सं) घुड़साल। अश्वशाला।
हयशास्त्र स्त्री० (सं) घोड़े को शिक्षा देने की विद्या।
हयशिक्षा स्त्री० (सं) दे० 'हयशास्त्र'।
हयशीर्ष पुं० (सं) विष्णु का हयग्रीव रूप।
हयांग पुं० (सं) धनुराशि।
हया स्त्री० (अ) लाज। शर्म।
हयात स्त्री० (अ) जीवन। जिन्दगी।
हयादार वि० (अ) शर्मदार। लज्जाशील।
हयादारी स्त्री० (अ) लज्जाशीलता। शर्मदारी।
हयाध्यक्ष पुं० (सं) १-घोड़ों का निरीक्षक। २-अश्वपाल।
हयानन पुं० (सं) १-हयग्रीव। २-हयग्रीव के रहने का स्थान।
हयायुर्वेद पुं० (सं) घोड़ों की चिकित्सा का शास्त्र।

हयारूढ़ पुं० (सं) घुड़सवार। घोड़े पर सवार होना।
हयारोह पु० (सं) दे० 'हयारूढ़'।
हयालय पुं० (सं) घालवल। घरवशाला।
हयी स्त्री० (सं) घोड़ी। पुं० (हि) घुड़सवार।
हर वि० (सं) १-छीनने या हरण करने वाला। २-मिटाने वाला। ३-वध या नाश करने वाला। ४-वाहक। ले जाने वाला। पुं० १-शिव। २-भाजक (गणित)। ३-भिन्न के नीचे की संख्या। ४-अग्नि ५-छप्पय छन्द का दसवां भेद। (हि) हल। (फा) प्रत्येक। एक-एक।
हरएं अव्य० (हि) ...
...२-क्रम क्रम से।
हरएक वि० (फा) प्रत्ये...
हरकत स्त्री० (अ) १-हलना। गति। डोलना। २-क्रिया। चेष्टा।
हरकना क्रि० (हि) रोकना। अवरुद्ध करना।
हरजगह अव्य०(फा) हर जगह।
हरकारा पु० (फा) पत्रादि पहुँचाने वाला दूत। पत्र-वाह।
हरख पु० (हि) दे० 'हर्ष'।
हरखाना क्रि० (हि) प्रसन्न होना।
हरगिज अव्य०(फा) कभी। कदापि।
हरगिरि पु० (सं) कैलास पर्वत।
हरगौरी स्त्री० (सं) शिव की अर्धनारीश्वर मूर्ति।
हरचंद अव्य० (फा) १-यद्यपि। २-बार-बार। बहुत बार।
हरज पुं० (अ) १-काम में पड़ने वाली अड़चन। बाधा। २-क्षति। हानि।
हरजा पु०(फा)मगनदासों की चौरस करने की छैनी चौरसी। १-हरजाना। २-हरज।
हरजाई पु० ...
...
हरजा... पु० (फा) १-क्षतिपूर्ति। हानि के बदले में दिया जाने वाला धन। (कम्पन्सेशन)।
...हृष्ट वि० (हि) हृष्टपुष्ट।
हरण पुं० (सं) १-दूर करना। हटाना। २-जिसकी वस्तु हो उसकी इच्छा के विरुद्ध ... विनाश। ४-...
...ना (गणित ...
...जाने वाल...
हरणीय वि० (सं) हरण करने योग्य। छीनने योग्य।
हरतरह अव्य० (फा) हर हालत में।
हरता पु० (हि) दे० 'हर्ता'।
हरता-धरता पु० (हि) १-सर्वशक्तिमान। २-बनाने बिगाड़ने वाला।

हरतार स्त्री० (हि) दे० 'हरताल'।
हरताल स्त्री० (हि) पीले रङ्ग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो दवा के काम आता है। गोदन्त।
हरताली वि० (हि) हरताल के रंग का। पुं० एक प्रकार का गन्धकी पीला रंग।
हरद स्त्री० (हि) दे० 'हल्दी'।
हरदम अव्य० (फा) सदा। सदैव। हमेशा।
हरद्वार पुं० (हि) दे० 'हरिद्वार'।
हरदिया वि०(हि) हल्दी के रंग का। पीला। पु० (हि) पीले रङ्ग का घोड़ा।

...कुमारसिंह का छोटा भाई जो वीरता के लिये तथा मातृभक्ति के लिये प्रसिद्ध है।
हरना क्रि० (हि) १-हरण करना। २-हटाना। ३-मिटाना। नाश करना। ४-ले जाना। वहन करना ५-हराना।
हरनाकस पु० (हि) दे० 'हिरण्यकशिपु'।
हरनाच्छ पु० (हि) दे० 'हिरण्याक्ष'।
हरनी स्त्री० (हि) हिरन की मादा।
हरनौटा पु० (हि) हिरन का बच्चा।
हरपा पु० (देश) १-सिंदूर रखने की डिबिया। २-डिब्बा।
हरपुजी स्त्री० (हि) कार्तिक में किसानों द्वारा किया जाने वाला हल पूजन।
हरफ पु० (अ) अक्षर। वर्ण।
हरफनमौला वि० (फा) हर एक फन जानने वाला।
हरफारेवड़ी स्त्री० (हि) १-कमरख की जाति का एक पेड़। २-उक्त पेड़ का फल।
...
हरबाज पु० (सं) १-पारा। २-शिव का वीर्य।
हरबोंग वि० (हि) १-मूर्ख। २-उद्दण्ड। गुण्डा।
हरबोंगपुर पुं० (हि) अन्धेरनगरी।
हरम पु० (अ)१-अन्तःपुर। जनानखाना। २-विवा-...
...
हरयें अव्य० (हि) दे० 'हरुएं'।
हरवल पु० (हि) हलवाहे को बिना ब्याज दि... हुआ धन।
हरबाना क्रि० (हि) उतावली या जल्दी करना।
हरवाह पु० (हि) दे० 'हलवाहा'।

हरवाहन पुं० (सं) शिव की सवारी। बैल।
हरवाहा पुं० (हि) हल जोतने वाला।
हरवाही स्त्री० (हि) हलवाहे का काम या मजदूरी।
हरशेखरा स्त्री० (सं) (शिव के सिर पर रहने वाली) गंगा।
हरष पुं० (हि) दे० 'हर्ष'।
हरषना क्रि० (हि) १-प्रसन्न होना। २-पुलकित होना।
हरषाना १-हर्षित करना। २-प्रसन्न करना।
हरषित वि० (सं) दे० 'हर्षित'।
हरसना क्रि० (हि) दे० 'हरषना'।
हरसाना क्रि० (हि) दे० 'हरषाना'।
हरसिंगार पुं० (हि) मझोले कद का एक वृक्ष जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं।
हरसूनु पुं० (सं) कार्त्तिकेय। गणेश।
हरहट वि० (सं) नटखट (बैल)।
हरहा वि० (सं) नटखट (बैल)। पुं० (देश) भेड़िया
हरहाई वि० (हि) नटखट (गाय)।
हरहार पुं० (सं) (शिव के गले का हार) सर्प। सांप
हरांस पुं० (हि) १-भय। डर। २-चिन्ता। दुःख। ३-थकावट। ४-हरारत।
हरा वि० (हि)१-घास या पत्तियों के रंग का। सब्ज २-प्रसन्न। प्रफुल्ल। ३-ताजा। ४-हरे रंग का। चौपायों के खाने का हरा चारा। स्त्री० (सं) पार्वती
हराना क्रि० (हि) १-परास्त करना। २-थकाना। ३-शत्रु को विफल-मनोरथ करना।
हराभरा वि० (हि) १-जो सूखा न हो। २-हरे पेड़ पौधों से भरा हुआ।
हराम वि० (ग्र) १-जो इस्लाम धर्मशास्त्र में वर्जित हो। २-बुरा। दूषित। पुं० (ग्र) १-अधर्म। पाप। २-स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध। व्यभिचार। ३-बदकारी।
हरामकार पुं० (ग्र) १-बुरा काम करने वाला। २-व्यभिचारी। लंपट। पापी।
हरामकारी स्त्री० (ग्र) १-पाप। बुराई। २-व्यभिचार
हरामखोर पुं०(ग्र)१-किसी के सिर मुफ्त खाने वाला २-धन लेकर भी काम न करने वाला।
हरामखोरी स्त्री० (ग्र) हरामखोर बने रहने की क्रिया या भाव।
हरामजादा पुं० (ग्र) १-वर्णसंकर। दोगला। २-बड़ा पापी। दुष्ट।
हरामजादी स्त्री० (ग्र) १-दोगली स्त्री। २-व्यभिचारिणी स्त्री।
हरामी वि० (ग्र) १-दुष्ट। पापी। २-व्यभिचार से उत्पन्न।
हरारत स्त्री० (ग्र) १-ताप। गरमी। २-हल्का ज्वर।
हरावर पुं० (हि) दे० 'हरावल'।
हरावरि स्त्री० (हि) दे० 'हरावल'।
हरावल पुं०(तु०) सेना में सबसे आगे चलने वाला सिपाहियों का दल।
हरास पुं० (हि) १-भय। डर। २-आशंका। ३-दुःख निराशा। ह्रास।
हराहर पुं० (हि) दे० 'हलाहल'।
हराहरि स्त्री० (हि) थकावट। क्लांति।
हरि वि० (सं) १-भूरा बादामी (रङ्ग)। २-पीला। ३-हरे रङ्ग का। पुं०१-विष्णु। २-शिव। ३-चन्द्र ४-अग्नि। ५-विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण। ६-श्रीराम। ७-इन्द्र। ८-घोड़ा। ९-सिंह। १०-सूर्य। ११-चन्द्रमा। १२-गीदड़। १३-शुक। तोता। १४-कोयल। १५-हंस। १६-मेंढक। १७-सर्प। १८-वायु। १९-यम। २०-अठारह वर्णों का एक छन्द। २१-एक संवत्सर का नाम। अव्य० (हि) धीरे। आहिस्ते।
हरिअर वि० (हि) हरा। सब्ज़ (रङ्ग)।
हरिअराना क्रि० (हि) दे० 'हरिआना'।
हरिअरी स्त्री० (हि) १-हरे रङ्ग का विस्तार। २-हरियाली।
हरिआना क्रि० (हि) १-हरा होना। २-मुरझाया न रहना।
हरिआली स्त्री० (हि) दे० 'हरियाली'।
हरिकथा स्त्री० (सं) भगवान या उसके अवतारों के चरित्र का वर्णन।
हरिकीर्तन पुं० (सं) भगवान या उनके अवतारों के गुणों का गान।
हरिगण पुं०(सं) घोड़ों का समूह।
हरिगिरी पुं० (सं) एक पर्वत का नाम।
हरिगीतिका स्त्री०(सं) अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द
हरिचंद पुं० (हि) दे० 'हरिश्चन्द्र'।
हरिचंदन पुं० (सं) १-एक प्रकार का चन्दन। स्वर्ग के पांच वृक्षों में से एक। ३-कमल का पराग। ४-केसर। ५-चांदनी।
हरिचाप पुं० (सं) इन्द्रधनुष।
हरिजन पुं० (सं) १-ईश्वर का भक्त। २-पद-दलित तथा अस्पृश्य जातियों का सामूहिक नाम।
हरिजाई स्त्री० (हि) दे० 'हरजाई'।
हरिजान पुं० (हि) दे० 'हरियान'।
हरिण पुं० (सं) १-हिरन। मृग। २-सूर्य। हंस। ३-हिरन की एक जाति। ४-विष्णु। ५-शिव। ६-एक लोक का नाम। ७-एक नाग। वि० भूरे या बादामी रङ्ग का।
हरिणकलंक पुं० (सं) चन्द्रमा।
हरिणचर्म पुं० (सं) मृगछाला।
हरिणनयनी वि० (सं) हिरन की आंखों के समान सुन्दर नेत्रों वाली।

हरिवर्ष पुं० (सं) जम्बूद्वीप के नौ खण्डों में से एक
हरिवल्लभा स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-तुलसी। ३-मलमास की कृष्ण-एकादशी।
हरिवास पुं० (सं) पीपल।
हरिवासर पुं०(सं) १-रविवार। २-विष्णु का दिन। एकादशी।
हरिवाहन पुं० (सं) १-गरुड़। २-सूर्य। ३-इन्द्र।
हरिशयनी पुं० (सं) आषाढ़-शुक्ला-एकादशी।
हरिश्चंद्र वि० (सं) स्वर्ण जैसी चमक वाला। पुं० सूर्यवंश के एक प्रसिद्ध सत्यवादी राजा का नाम।
हरिसंकीर्तन पुं० (सं) विष्णु के गुणों का गान।
हरिस स्त्री० (हि) हल का वह लट्ठा जो एक सिरे पर जुआ और दूसरे सिरे पर फाल वाली लकड़ी रहती है।
हरिसिंगार पुं० (हि) दे० 'हर सिंगार'।
हरिसुत पुं० (सं) १-कृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न। २-इन्द्र-पुत्र अर्जुन।
हरिसूनु पुं० (सं) अर्जुन।
हरिहय पुं० (सं) १-इन्द्र का घोड़ा। २-सूर्य। ३-गणेश।
हरिहर पुं० (सं) शिव तथा विष्णु।
हरिहरक्षेत्र पुं० (सं) बिहार क्षेत्र का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान।
हरिहाई वि० (हि) दे० 'हरहाई'।
हरी वि०(हि) हरित। सब्ज। स्त्री०(सं) एक वर्णवृत्त। स्त्री०(हि) जमींदार के खेत में आसामियों का सहायता देना। पुं० दे० 'हरि'।
हरीक्षणा स्त्री० (सं) मृगनयनी।
हरीत पुं० (हि) दे० 'हारीत'।
हरीतकी स्त्री० (सं) हड़। हर्रे।
हरीतिमा स्त्री०(सं) १-हरापन। २-हरियाली।
हरीफ पुं० (प) १-शत्रु। २-प्रतिद्वंद्वी। विरोधी।
हरीरा स्त्री० (हि) दूध में मेवे-मसाले डालकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ। वि० १-प्रसन्न। २-हरा।
हरीश पुं० (सं) १-हनुमान। २-सुग्रीव। ३-बन्दरों का राजा।
हरीसा स्त्री० (सं) मांस का बना हुआ एक व्यंजन।
हरीस स्त्री०(सं) दे० 'हरिस'। वि०(प) लोभी। लालच
हरुआ वि० (हि) जो भारी न हो। हलका।
हरुआई स्त्री० (हि) १-हलकापन। २-फुरती।
हरुआना क्रि० (हि) १-हलका होना। २-फुरती करना। ३-जल्दी मचाना।
हरुए क्रि० (हि) दे० 'हरुएँ'।
हरुवाई स्त्री० (हि) दे० 'हरुआई'।
हरू वि० (हि) हलका।
हरूफ पुं० (प) अक्षर। हरफ। वर्ण।
हरें अव्य० (हि) दे० 'हरुएँ'।
हरें-हरें अव्य० (हि) धीरे-धीरे।
हरे अव्य० (हि) धीरे-धीरे। शनैः-शनैः।
हरेक वि० (हि) दे० 'हरएक'।
हरें अव्य० (हि) दे० 'हरे'।
हरैना पुं०(हि) हल में लगी वह मोटी लकड़ी जिसमें लोहे की फाल ठुकी होती है।
हरैया पुं० (हि) १-हरण करने वाला। २-दूर करने या हटाने वाला।
हरोल पुं० (हि) दे० 'हरावल'।
हरौती स्त्री० (हि) दे० 'हलपत'।
हर्ज पुं० (प) १-अड़चन। बाधा। २-हानि। नुकसान।
हर्तव्य वि० (सं) हरण करने योग्य।
हर्ता पुं० (हि) १-हरण करने वाला। २-नाश करने वाला।
हर्दी स्त्री० (हि) दे० 'हलदी'।
हर्फ पुं० (प) दे० 'हरफ'।
हर्ब पुं० (प) युद्ध। लड़ाई।
हर्बगाह पुं० (प) रणभूमि।
हर्बा पुं० (हि) दे० 'हरबा'।
हर्म्य पुं० (सं) १-प्रासाद। महल। २-हवेली। ३-नरक।
हर्र पुं० (सं) दे० 'हड़'।
हर्रे पुं० (सं) दे० 'हड़'।
हर्रैया स्त्री० (हि) १-हाथ में पहनने का एक गहना। २-माला के दोनों छोरों पर का चिपटा दाना। जिसके आगे सुराही होती है।
हर्ष पुं० (सं) १-प्रसन्नता या भय के कारण रोंगटे खड़े हो जाना। रोमांच। २-प्रसन्नता।
हर्षक पुं० (सं) आनन्ददायक।
हर्षकारक वि० (सं) आनन्द देने वाला।
हर्षगद्गद वि० (सं) जिसकी आवाज आनन्द के कारण भरी गई हो।
हर्षचरित पुं० (सं) सम्राट हर्षवर्द्धन के चरित्र का बाणभट्ट द्वारा रचित गद्यकाव्य में वर्णन।
हर्षज वि० (सं) हर्ष या प्रसन्नता से उत्पन्न।
हर्षण पुं०(सं) १-भय या प्रसन्नता के कारण रोंगटे खड़े होना। २-प्रसन्न होना। ३-आंख का एक रोग।
हर्षदान पुं० (सं) वह दान जो प्रसन्नतापूर्वक दिया गया हो।
हर्षध्वनि स्त्री० (सं) दे० 'हर्षनाद'।
हर्षना क्रि० (हि) प्रसन्न होना।
हर्षनाद पुं० (हि) आनन्दसूचक ध्वनि या शब्द।
हर्षमाण वि० (सं) प्रसन्न। आनन्दयुक्त।
हर्षवर्द्धन, हर्षवर्धन पुं०(सं) विक्रम संवत् की सातवीं

समों में होने वाले भारत के अंतिम सम्राट।
हर्षविवर्धन वि० (सं) प्रसन्नता अथवा आनन्द बढ़ाने वाला।
हर्षविह्वल वि० (सं) आनन्दविभोर।
हर्षसमन्वित वि० (सं) आनन्दयुक्त।
हर्षस्वन पुं०(सं) आनन्द ध्वनि।
हर्षातिरेक पु० (सं) अत्यधिक आनन्द।
हर्षाना क्रि० (हि) प्रसन्न होना या करना।
हर्षान्वित वि० (सं) प्रसन्न। आनन्दयुक्त।
हर्षाश्रु पुं० (सं) अत्यधिक आनन्द के कारण निकले आँसू।
हर्षित वि० (सं) आनन्दित। प्रफुल्ल। प्रसन्न।
हर्षोत्फुल्ललोचन वि० (सं) जिसके नेत्र अत्यधिक आनन्द के कारण खिले हुए हों।
हलन्त वि० (सं) जिसके अंत में स्वररहित व्यंजन हो
हल पु० (सं) १-भूमि जोतने का एक प्रसिद्ध उपकरण। २-जमीन नापने का लट्ठा। ३-पैर की एक रेखा या चिह्न। पु० (अ) १-हिसाब लगाना। २-किसी समस्या का समाधान करना।
हलकंप पु० (हि) दे० 'हड़कंप'।
हलक पु० (अ) गले की नली। कंठ।
हलकई स्त्री० (हि) १-ओछापन। हलकापन। २-अप्रतिष्ठा।
हलकन स्त्री० (हि) हिलना-डुलना।
हलकना क्रि० (अ) १-पानी का हिलकोरे मारना। २-हिलना-डोलना।
हलका वि० (सं) १-जो कम वजन का हो। २-जो तेज या चमकीला न हो। ३-जो गहरा न हो। ४-कम। थोड़ा। ५-ओछा। ६-सरल। सहज। ७-प्रसन्न। ८-महीन। पतला। ९-घटिया। १०-खाली ११-जो उपजाऊ न हो। पु०(अ) १-वृत्त। गोलाई २-घेरा। परिधि। ३-झुण्ड। समूह। ४-किसी विशेष कार्य के लिये निर्धारित कुछ गांवों का समूह ५-हाथियों का झुण्ड।
हलकान वि० (हि) दे० 'हलाकान'।
हलकाना क्रि० (हि) १-बोझ कम होना। हलका होना। २-हिलोरा देना।
हलकापन पु० (हि) १-लघुता। २-ओछापन। ओछापन। ३-अप्रतिष्ठा।
हलकारा पुं० (हि) दे० 'हरकारा'।
हलकुकुर पु० (सं) हल के नीचे का वह भाग जिसमें फाल जड़ा होता है।
हलकोरा पुं० (हि) तरंग। हिलोरा। लहर।
हलग्राही वि० (सं) हल पकड़ कर खेत जोतने वाला। पु० किसान।
हलचल स्त्री० (हि) १-जन-साधारण में घबराहट फैलाने वाली दौड़ धूप। २-हिलना-डोलना। वि० डगमगाता हुआ।
हलजीवी पुं० (सं)किसान। हल चलाकर खेती करने वाला।
हलजुता पु० (सं) १-मामूली किसान। २-गँवार।
हलदंड पु० (सं) दे० 'हरिस'।
हलदिया पुं०(हि) एक रोग जिसमें आँखें तथा सारा शरीर पीला पड़ जाता है।
हलदी स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़ गाठ के रूप में होती है तथा मसाले और रंगने के काम आती है।
हलद्दी स्त्री० (सं) हलदी।
हलधर पुं० (सं) बलराम।
हलना क्रि० (हि) १-हिलना। २-घुसना। पैठना।
हलपाणि पु० (हि) बलराम।
हलफ पु० (अ) ईश्वर को साक्षी मान कर कही गई बात। शपथ।
हलफन् अव्य० (अ) शपथपूर्वक।
हलफनामा पु० (अ) शपथ-पत्र।
हलफा पु० (हि) हिलोर। तरंग। लहर।
हलफी वि० (अ) शपथ या हलफ लेकर दिया हुआ (बयान)।
हलब पु० (देश) फारस की ओर का देश जहां का कांच प्रसिद्ध था।
हलबल पुं० (हि) हड़बड़। खलबली।
हलबी वि० (हि) हलब देश का (कांच)।
हलब्बी वि० (हि) दे० 'हलबी'।
हलबलाना क्रि० (हि) १-घबड़ाना। २-दूसरों को घबड़ाना।
हलबली स्त्री० (हि) हलचल।
हलभल पु० (हि) खलबली। हलचल।
हलभली स्त्री० (हि) १-खलबली। २-घबराहट। ३-हड़बड़ाहट।
हलभूति स्त्री० (सं) किसान का पेशा या काम।
हलमार्ग पु० (सं) हल के फाल से बनी हुई लकीर।
हलमुख पु० (सं) हल का फाल।
हलराना क्रि० (हि) बच्चों को थपक कर तथा हिला-कर सुलाना।
हलवश पु० (सं) दे० 'हरिस'।
हलवत स्त्री० (हि) वर्ष में पहले-पहल खेत में हल चलाने की रीति।
हलवा पु० (हि) १-एक प्रसिद्ध मीठा खाद्य पदार्थ। २-गीली तथा मुलायम वस्तु।
हलवाई पु० (हि) मिठाई बनाने या बेचने वाला।
हलवासोहन पु० (हि) घी या मैदे से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पकवान जिसमें मेवे पड़े होते हैं।
हलवाह पु० (हि) हल जोतने या चलाने का काम।
हलवाहा पु० (हि) किसान।

हलाना क्रि० (हि) १-झकझोरना। जोर से हिलाना। २-कांपना। थरथराना।
…ला स्त्री० (स) १-पृथ्वी। २-जल। ३-सखी। ४-…दिरा।
…ाक वि० (प)वध किया हुआ। मारा हुआ। हत।
…ाकान वि० (हि) परेशान। तंग। हैरान।
…ाकानी स्त्री० (हि) परेशानी। हैरानी।
…ाकू वि० (हि) मार डालने वाला। हलाक करने …ाला।
…ाना क्रि० (हि) दे० 'हिलाना'।
…ाभला पुं० (हि) निपटारा। निर्णय।
…ायुध पुं० (सं) बलराम।
…ाल वि० (प) जो इस्लाम शास्त्र के अनुकूल हो। …ायज। पुं० वह पशु जिसका मांस खाने की …स्लाम से आज्ञा हो।
…ालखोर पुं० (प)१-हलाल की कमाई खाने वाला। …-मेहतर। भंगी।
…ालखोरी स्त्री० (प) १-हलालखोर स्त्री। भंगन। …-हलालखोरी का काम या भाव।
…ाहल पुं० (सं) १-समुद्रमंथन के समय निकला …ुआ भयंकर विष। २-भयङ्कर विष। ३-एक जह-…ीला पौधा।
…ी पुं० (सं) १-बलराम। २-किसान।
…ीम पुं० (सं) केतकी। पुं० (देश) मटर का डंठल …वि० (प) सुशील तथा शान्त। पुं० (प) मुहर्रम के दिनों में खाया जाने वाला एक खाद्यान्न।
…ुआ पुं० (हि) दे० 'हलवा'।
…ुका वि० (हि) दे० 'हलका'।
…ोर स्त्री० (सं) तरंग। लहर।
…ोरना क्रि० (हि)१-पानी में लहर उत्पन्न करना। …२-अनाज फटकना। ३-दोनों हाथों से समेटना।
…ोरा पुं० (हि) लहर। तरंग।
…् पुं० (सं) स्वरहीन व्यञ्जन (जिसके नीचे) …चिह्न लगाया जाता है।
…का पुं० (प) दे० 'हलक़'।
…का वि० (हि) दे० 'हलका'।
…दी स्त्री० (हि) दे० 'हलदी'।
…्य वि० (सं) हल चलाने योग्य।
…ला पुं० (हि) १-कोलाहल। शोरगुल। २-आक्र-…मण। चढ़ाई। ३-लड़ाई के समय की ललकार या …ोर।
…ा गुल्ला पुं० (हि) कोलाहल। शोरगुल।
…ीश पुं० (सं) १-मंडल बांधकर होने वाला एक …कार का नाच। २-एक प्रकार का रूपक जिसमें …त्य-गान प्रधान होता है।
…ीसक पुं० (सं) स्त्रियों का मंडल बांधकर होने …ाला नृत्य।

हवन पुं० (सं) १-होम। मंत्र पढ़कर घी, जौ, तैलादि अग्नि में डालने का कृत्य। २-अग्नि। ३-अग्निकुण्ड ४-हवन करने का चमचा। स्रुवा।
हवनीय वि० (सं) जो हवन करने के योग्य हो। पुं० हवन करते समय अग्नि में डाला जाने वाला पदार्थ।
हवलदार पुं० (हि) १-सेना या पुलिस का छोटा अधिकारी। २-बादशाही जमाने का वह कर्मचारी जो कर-संग्रह आदि का निरीक्षण करता था।
हवस स्त्री० (प) १-लालसा। चाह। २-तृष्णा।
हवा स्त्री० (प) १-वह तत्व जो प्रायः सर्वत्र चलता रहता है तथा जिससे प्राणी सांस लेता है। वायु। पवन। २-यश। कीर्ति। ३-भूत। प्रेत। ४-महत्व या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख। ५-किसी बात की सनक। ६-आडंबर। ७-चकमा।
हवाई वि० (प) १-वायु सम्बन्धी। वायु का। २-हवा में चलने वाला। ३-कल्पित। झूठ। निर्मूल। ४-तीव्र गति वाला। ५-चालाक। आवारा।
हवाई-अड्डा पुं० (हि) वह स्थान जहां हवाई-जहाज यात्रियों को उतारने-चढ़ाने के लिए ठहरते हैं। (एयरो ड्रोम)।
हवाई-आंख पुं० (हि) वह आंख जो एक स्थान पर न रहे।
हवाई-किला पुं० (हि) ख्याली पुलाव।
हवाई-जहाज पुं० (हि) हवा में उड़ने वाला जहाज। वायुयान। (एयरोप्लेन)।
हवाई-डाक स्त्री० (हि) वह डाक जो वायुयान द्वारा भेजी जाती है। (एयरमेल)।
हवाई-तोपची पुं० (हि) वायुयान में लगी हुई तोप को चलाने वाला कर्मचारी। (एयरगनर)।
हवाईपत्र-चित्र पुं० (हि) हवाई जहाज द्वारा भेजी जाने वाली डाक का लिया गया लघुचित्र। (एयर ग्राफ)।
हवाईफैर पुं० (हि) डराने या धमकाने के लिए हवा में किया गया फायर।
हवाई-बंदूक स्त्री० (हि) नकली बन्दूक।
हवाई-बात स्त्री० (हि) दे० 'हवाई-किला'।
हवाई-मार्ग पुं०(हि) वायुयानों का वह मार्ग जिससे वह एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं।
हवाई-मुठभेड़ स्त्री०(हि) लड़ाकू वायुयानों की भिड़न्त।
हवाईलड़ाई स्त्री०(हि)वायुयान द्वारा लड़ी जाने वाली लड़ाई।
हवाई-हमला पुं० (हि) शत्रु के वायुयानों द्वारा किसी नगर की जनता तथा सार्वजनिक उपयोग के स्थानों या वस्तुओं पर की जाने वाली हवाई बमबारी। (एयररेड)।

हवाखोरी पु०(फ) टहलना। हवा खाने के लिए मैदान में घूमना।
हवाचक्की स्त्री० (हि) हवा की शक्ति से चलने वाली आटे की चक्की। इस प्रकार का कोई यन्त्र। (विंड मिल)।
हवादार वि० (फा) जिसमें हवा आने जाने के लिए खिड़कियां हों। पु० सवारी के काम आने वाला एक प्रकार का तख्त।
हवाबानी पु० (हि) आसहना।
हवाबाज पु० (फ) वह जो हवाई जहाज चलाता हो उड़ाका। (पाइलट)।
हवारोक पु० (फ) जिसमें से होकर वायु आ या जा न सके (एयर टाइट)।
हवाल पु० (फ) १-हाल। दशा। २-वृत्तान्त। ३-परिणाम।
हवालदार पु० (हि) दे० 'हवलदार'।
हवाला पु० (फ) १-दृष्टान्त। मिसाल। २-प्रमाण का उल्लेख। ३-जिम्मेदारी।
हवालात स्त्री० (अ) १-वह स्थान जहां विचार होने तक अभियुक्त को पहरे में रखा जाता है। २-पहरे में रखा जाना।
हवालाती वि०(अ)१-हवालात-सम्बन्धी। २-हवालात में रखा हुआ (अभियुक्त)।
हवाली पु० (अ) आसपास के स्थान विशेषतः नगर के आसपास के गांव आदि।
हवास पु० (अ) १-इन्द्रियां। २-चेतना। सुध। होश ३-संवेदन।
हवासबाख्ता वि० (अ) घबड़ाया हुआ।
हवि पु० (सं) आहुति देने की वस्तु या सामग्री।
हविर्धानी स्त्री० (सं) हवनकुण्ड।
हविष्मती स्त्री० (सं) कामधेनु।
हविष्य वि० (सं) १-जिसकी आहुति दी जाने वाली हो। २-हवन करने योग्य। पु० देवता के उद्देश्य से अग्नि में डाली जाने वाली बलि। २-हविष्यान्न।
हविष्यान्न पु० (सं) व्रत, यज्ञ आदि के दिन किया जाने वाला विशिष्ट भोजन।
हविस स्त्री० (हि) दे० 'हवस'।
हवेली स्त्री० (अ) १-पक्का बड़ा मकान। २-पत्नी। स्त्री। ३-महल।
हव्य पु० (सं) हवन की वस्तु।
हव्यकव्य पु० (सं) देवताओं तथा पितरों को क्रम से दी जाने वाली आहुति।
हव्याद वि० (सं) हव्य खाने वाला।
हव्यवाह पु० (सं) अग्नि।
हव्याशन पु० (सं) अग्नि।
हश्र पु० (अ) १-प्रलय। कयामत। २-झगड़ा। उप-द्रव।

हसद पु० (अ) ईर्ष्या। डाह।
हसन पु० (सं) १-हँसना। २-परिहास। दिल्लगी। (अ) अली के दो बेटों में से एक जिनके शोक में शिया मुसलमान मुहर्रम मनाते हैं।
हसनीय वि० (सं) उपहास या हँसने योग्य।
हसरत स्त्री० (अ) १-दुःख। अफसोस। २-हार्दिक कामना।
हसरतभरा वि० (अ) लालसाओं से युक्त।
हसित वि० (सं) १-हँसने वाला। २-जिस पर लोग हँसते हों। ३-खिला हुआ। पु० १-हँसना। २-उपहास। ३-कामदेव का धनुष।
हसिता वि० (सं) हँसने वाला।
हसीन वि० (अ) बहुत सुन्दर। लुभावना।
हस्त पु० (सं) १-हाथ। २-हाथी की सूँड। ३-एक नक्षत्र जिसमें पचास तारे हैं। ४-हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ५-संगीत या नृत्य में हाथ हिलाकर भाव बताना। ६-छन्द का एक चरण। ७-समूह। गुच्छा। ८-वासुदेव के एक पुत्र का नाम
हस्तक पु० (सं) १-हाथ। २-सङ्गीत की ताल। ३-करताल। ४-नृत्य में हाथों की मुद्रा। ५-हाथ से बजाई हुई ताली।
हस्तकला स्त्री० (सं) १-हाथ से की गई कलात्मक रचना। (मैन्युअल आर्ट)। २-हाथ के हुनर।
हस्तकार्य पु० (सं) १-दस्तकारी। २-हाथ का काम।
हस्तकौशल पु० (सं) हाथ की कारीगरी।
हस्तक्रिया स्त्री० (सं) १-दस्तकारी। २-हस्तमैथुन।
हस्तक्षेप पु० (सं) किसी होते हुए या चलते हुए काम में कुछ हेर फेर करने के लिए हाथ डालना या कुछ कहना। दखल देना। (इन्टरफियरेन्स)।
हस्तगत वि० (सं) १-प्राप्त। हासिल। २-हाथ में आया या मिला हुआ।
हस्तग्रह पु० (सं) १-हाथ पकड़ना। २-पाणिग्रहण। विवाह।
हस्तचापल्य पु० (सं) हाथ की सफाई।
हस्तचालन पु०(सं) हाथ से भाव या इशारा करना
हस्ततल पु० (सं) हथेली।
हस्तत्राण पु० (सं) अस्त्रों के आघात से बचने के लिए हाथ में पहनने का दस्ताना।
हस्तदीप पु० (सं) हाथ की लालटेन।
हस्तदोष पु० (सं) हाथ से कोई मारने या मारने में अन्तर डालने का अपराध।
हस्तधारण पु० (सं) १-हाथ पकड़ना। २-विवाह करना। ३-हाथ का सहारा देना। ४-वार या हाथ पर रोकना।
हस्तपाद पु० (सं) हाथ पैर।
हस्तपुस्तिका स्त्री०(सं) वह छोटी पुस्तक जिसमें किसी छपने वाले विषय का संक्षिप्त विवरण हो।

सुगमता से हाथ में ली जा सके। (मैन्युअल)।
हस्तपृष्ठ पुं० (सं) हथेली का पिछला या ऊपरी भाग।
हस्तप्रद वि० (सं) (हाथ का) सहारा देने वाला।
हस्तप्राप्त वि० (सं) दे० 'हस्तगत'।
हस्तमणि पुं० (सं) कलाई में पहनने का रत्न।
हस्तमुद्रा स्त्री० (सं) नृत्य आदि में भाव बताने के लिए हाथ को किसी विशेष स्थिति में रखने का ढंग।
हस्तमैथुन पु० (सं) हाथ द्वारा इन्द्रिय का संचालन। (मास्टरबेशन)।
हस्तरेखा स्त्री० (सं) हथेली पर की रेखाएँ जिन्हें देख कर सामुद्रिक के अनुसार किसी के जीवन की मुख्य घटनाएँ बताई जाती हैं।
हस्तलक्षण पुं० (सं) १-हथेली की रेखाओं द्वारा शुभाशुभ बताना। २-अथर्ववेद का एक प्रकरण।
हस्तलाघव पुं० (सं) हाथ की चालाकी। फुर्ती या सफाई।
हस्तलिखित वि० (सं) हाथ का लिखा हुआ। (ग्रन्थ लेखादि)।
हस्तलिपि स्त्री० (सं) किसी के हाथ की लिखावट या लिपि। (हैन्डराइटिंग)।
हस्तलेख पु०(सं) हाथ की लिखावट या चित्र आदि।
हस्तविज्ञापनक पुं०(सं) दवाओं, सिनेमाओं आदि के वे छोटे विज्ञापन जो प्रचार के लिए हाथ से बांटे जाते हैं। (हैंडबिल)।
हस्तविन्यास पुं० (सं) हाथों की स्थिति।
हस्त-विषमकारी पुं० (सं) हाथ की सफाई से बाजी जीतने वाला।
हस्तश्रम पुं० (सं) १-हाथ का श्रम। २-शारीरिक परिश्रम। (मैन्युअल लेबर)।
हस्तसंवाहन पु० (सं) हाथ में मालिश करना या दबाना।
हस्तसिद्धि स्त्री० (सं) १-शारीरिक श्रम। २-मजदूरी। वेतन।
हस्तसूत्र पुं० (सं) हाथ की कलाई पर बांधा जाने वाला डोरा। (मंगलसूत्र)।
हस्तसूत्रक पुं० (सं) दे० 'हस्तसूत्र'।
हस्तांकितऋणपत्र पुं०(सं) वह हस्तलिखित जो ऋण लेते समय लिखा जाता है तथा जिसमें ऋण की अवधि तथा राशि लिखी जाती है (प्रोनोट, हैंड-नोट)।
हस्तांजलि स्त्री० (सं) हाथों की वह स्थिति जिसमें दोनों हथेलियां मिली हुई होती हैं।
हस्तांतर पुं० (सं) १-दूसरे हाथ में जाना। २-दूसरा हाथ।
हस्तांतरण पुं० (सं) (संपत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में दिया जाना। (ट्रान्स-फरेन्स)।
हस्तांतर-पत्र पुं० (सं) सम्पत्ति आदि के हस्तांतरण-सम्बन्धी पत्रक। (कन्वेयन्स)।
हस्तांतरित वि०(सं) १-किसी दूसरे के हाथ में दिया हुआ (ट्रान्सफर्ड)। २-(वह सम्पत्ति आदि) जो दूसरे को दी गई हो।
हस्ता स्त्री० (सं) हस्तनक्षत्र।
हस्ताक्षर पुं० (सं) लेख आदि के नीचे अपने हाथों से लिखा हुआ अपना नाम जो उस लेख के अथवा उसके उत्तरदायित्व की स्वीकृति का सूचक होता है। (सिगनेचर)।
हस्ताक्षरकर्ता पुं०(सं)वह जिसने किसी संधिपत्रादि पर हस्ताक्षर किये हों। (सिग्नेटरी)।
हस्ताक्षरित वि० (सं) जिस पर हस्ताक्षर हुए हों।
हस्ताग्र पुं० (सं) उंगली। हाथ का अगला भाग।
हस्तामलक पुं० (सं) १-वह वस्तु या बात जिसके सामने आते ही सब अंग स्पष्ट प्रकट हो जाते हैं। २-आंवला।
हस्ताहस्ति स्त्री० (सं) हाथापाई। चपत या घूंसे की लड़ाई।
हस्ताहस्तिका स्त्री० (सं) लड़ाई। गुत्थमगुत्था।
हस्तिनापुर पु० (सं) दिल्ली से लगभग ५० मील उत्तर-पूर्व के कोने में अवस्थित नगर जो चन्द्र-वंशियों या कौरवों की राजधानी था।
हस्तिनी स्त्री० (सं) १-हाथी की मादा। २-कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में से एक।
हस्ती पुं० (सं) १-हाथी। २-चंद्रवंशी राजा सुहोत्र के एक पुत्र जिन्होंने हस्तिनापुर बसाया था। स्त्री० (फा) १-अस्तित्व। व्यक्तित्व।
हस्तीपाल पु० (सं) पीलवान। महावत।
हस्तीराज पु० (सं) १-बहुत बड़ा हाथी। २-हाथियों के झुण्ड का मुखिया।
हस्तीव्यूह स्त्री० (सं) हाथी की सूंड।
हस्तीशाला स्त्री० (सं) हथीसार। फीलखाना।
हस्तीशुंड पुं० (सं) हाथी की सूँड।
हस्ते अव्य० (सं) हाथ से। मारफत। के द्वारा।
हस्त्य वि० (सं) १-हाथ संबन्धी। २-हाथ से दिया या लिया हुआ।
हस्त्यध्यक्ष पुं० (सं) हाथियों का निरीक्षक।
हस्त्यायुर्वेद पुं० (सं) हस्तिचिकित्सा संबन्धी शास्त्र।
हस्त्यारोह पुं० (सं) पीलवान। महावत।
हस्त्यारोही वि० (सं) हाथी पर सवार होने वाला।
हस्ब अव्य० (अ) अनुसार। मुताबिक।
हस्बजाबिता अव्य० (अ) यथानियम। कानून के अनु-सार।
हस्बे-हैसियत अव्य० (अ) अपनी हैसियत के अनुसार

हहर स्त्री० (हि) १-कँपकँपी। थरथराहट। २-डर। भय।
हहरना क्रि० (हि) १-थरथराना। दहलना। थर्राना। ३-चकित होना। ईर्ष्या या डाह करना।
हहराना क्रि० (हि) १-कांपना। २-दहलना। ३-दह-लाना। ४-भयभीत करना।
हहल स्त्री० (हि) दे० 'हहर'।
हहलना क्रि० (हि) दे० 'हहरना'।
हहलाना क्रि० (हि) दे० 'हहराना'।
हहा स्त्री० (हि) १-हँसने का शब्द। ठट्ठा। २-हाहा-कार। ३-दीनता प्रकट करने का शब्द।
हाँ अव्य० (हि) १-स्वीकृति, समर्थनादि का सूचक शब्द २-दे० यहाँ। स्त्री० (हि) स्वीकृति।
हाँक स्त्री (हि) किसी को जोर से पुकारने के लिये कहा गया शब्द। पुकार। २-ललकार। ३-दुहाई। ४-बढ़ावा।
हाँकना क्रि० (हि) चिल्लाकर बुलाना। २-ललकारना। ३-बढ़बढ़कर बोलना। ४-गाड़ी रथ आदि चलाना। ५-जानवरों को चलाने या हटाने के लिये आगे बढ़ाना या इधर-उधर करना।
हाँका पुं० (हि) १-पुकार। टेर। २-ललकार। ३-गरज।
हाँकारी पु० (हि) किसी प्रस्ताव को समर्थन करने के लिये 'हाँ' कहने वाले सदस्य। (आयज)।
हाँगर पु० (देश) एक प्रकार की बड़ी मछली।
हाँगा पु० (हि) १-शरीर का बल। २-अपर-दारी। ३-अत्याचार।
हाँगी स्त्री० (हि) स्वीकृति। हामी।
हाँडना क्रि० (हि) आवारा घूमना। व्यर्थ इधर-उधर घूमना। वि० आवारा फिरने वाला।
हाँड़ी स्त्री० (हि) १-पतीली या कटोली के आकार का एक मिट्टी का बरतन। हँडिया। २-काँच प्रकार का शीशे का पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाते हैं।
हाँता वि० (हि) १-अलग हुआ। २-हटाया हुआ। दूर किया हुआ।
हाँपना क्रि० (हि) दे० 'हाँफना'।
हाँफना क्रि० (हि) परिश्रम करने या दौड़ने के कारण जोर जोर से साँस लेना।
हाँफा पु० (हि) हाँफने की क्रिया या भाव।
हाँफी स्त्री० (हि) दे० 'हाँफा'।
हाँसना क्रि० (हि) दे० 'हँसना'।
हाँसल पुं० (देश) लाल रंग का वह घोड़ा जिसके पैर कुछ काले हों।
हाँसी स्त्री० (हि) दे० 'हँसी'।
हाँसु स्त्री० (हि) १-हँसली। २-हँसी।
हा अव्य० (स) १-दुःख, शोक, भय आदि का सूचक शब्द। २-आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द। प्रत्य० (सं) हनन करना। मारने वाला (यौगिक अन्त में)।
हाट स्त्री० (हि) १-दशा। हालत। २-घात। ३-दौर दम। वि० (पं) ऊँचा। बड़ा।
हाइल वि० (हि) दे० 'हायल'।
हाई स्त्री० (हि) १-दशा। हालत। २-ढंग। तौर। वि० (अं) ऊँचा। बड़ा।
हाईकोर्ट पुं० (अं) किसी प्रांत या राज्य की दीवानी या फौजदारी की सबसे बड़ी अदालत।
हाईस्कूल पुं० (अ) अंग्रेजी पढ़ाने की वह बड़ी पाठशाला जहां दसवीं तक पढ़ाई होती है।
हाऊ पुं० (हि) छोटे बच्चों को डराने के लिये एक कल्पित डरावने जीव का नाम। हौवा।
हाकिम पुं० (अ) १-शासक। २-बड़ा अधिकारी।
हाकिमाना वि० (अ) १-शासक जैसा। २-अधिकारी के योग्य।
हाकिमी स्त्री० (अ) शासन। हाकिम का काम। वि० हाकिम सम्बन्धी।
हॉकी स्त्री० (अं) १-एक खेल जो नीचे की ओर मुड़ी हुई लकड़ी तथा गेंद से खेला जाता है। २-वह लकड़ी या डण्डा जिससे वह खेल खेला जाता है।
हाजत स्त्री० (अ)१-आवश्यकता। २-चाह। ३-हिरा-सत। ४-शौचादि का वेग।
हाजतमन्द वि०(अ) प्रार्थी। जिसे आवश्यकता हो।
हाजतमन्द वि० (अ) इच्छुक।
हाजतरवाँ वि० (अ) आवश्यकता पूरी करने वाला।
हाजतरवाई स्त्री० (अ) किसी की आवश्यकता पूरी करना।
हाजती पु० (अ) १-प्रार्थी। २-फकीर। स्त्री० (हि) वह बरतन जो रोगी के पास शौचादि के लिये रखा रहता है।
हाजमा पु० (अ) पाचन क्रिया या शक्ति।
हाजिर वि० (अ) १-उपस्थित। मौजूद। २-प्रस्तुत।
हाज़िरजवाब वि० (अ) हर बात का तुरन्त और उपयुक्त उत्तर देने वाला।
हाज़िरजवाबी स्त्री० (अ) चटपट और उपयुक्त उत्तर देने की कला।
हाज़िरजामिन पुं० (अ) वह जो किसी को अदा-लत में पेश करने का उत्तरदायित्व ले।
हाज़िरनाज़िर वि० (अ) उपस्थित और देखने वाला।
हाज़िरात स्त्री० (अ) एक प्रक्रिया जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति पर कोई आत्मा बुलाकर उससे कुछ बातें पूछी जाती हैं।
हाज़िरी स्त्री० (अ) १-उपस्थिति। मौजूदगी। २-भोजन, विशेषतः दोपहर का। ३ हाजिर होने की क्रिया या भाव।
हाज़िरीन पु० (अ) (सभा आदि में) उपस्थित जन। श्रोतागण।

हाज़िरीने-जलसा पुं० (अ) सभा या जलसे में उपस्थित जन।
हाजी पुं० (अ) वह जो हज कर आया हो।
हाट स्त्री० (हि) १-दूकान। २-बाजार। ३-बाजार लगने का दिन।
हाटक पुं० (सं) १-स्वर्ण। सोना। २-महाभारत में वर्णित एक देश का नाम।
हाटकगिरि पुं० (सं) सुमेरुपर्वत।
हाटकपुर पुं० (सं) लंका।
हाटकलोचन पुं० (सं) हिरण्याक्ष दैत्य।
हाटकेश पुं० (सं) शिव की एक मूर्ति या रूप का नाम।
हाटकेश्वर पुं० (सं) दे० 'हाटकेश'।
हाटव्यवस्था स्त्री० (सं) उत्पादन की हुई वस्तुओं को बेचने की व्यवस्था। (मार्केटिंग)।
हाड़ पुं० (हि)१-अस्थि। हड्डी। २-वंश की मर्यादा।
हाड़ा पुं० (हि) १-लाल ततैया। २-क्षत्रियों की एक शाखा।
हातव्य वि० (सं) छोड़ने योग्य। त्याज्य।
हाता पुं० (हि) अहाता। रोक। वि० अलग या दूर किया हुआ। पुं० वध करने वाला। (समास में)।
हातिम पुं० (अ) १-निपुण। २-उस्ताद। ३-एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार था। ४-बहुत बड़ा दानी।
हातिमताई पुं० (अ)१-हातिम। २-हातिम का किस्सा।
हात्र पुं० (सं) वेतन। मजदूरी। पारिश्रमिक।
हाथ पुं० (हि) १-कन्धे से पंजे तक का वह भाग जिससे चीजें पकड़ते और काम करते हैं। कर। हस्त। २-कोहनी से पंजे तक की लम्बाई का नाप। ३-दांव। ४-दस्ता। मुठिया।
हाथकंडा पुं० (हि) दे० 'हथकंडा'।
हाथतोड़ पुं० (हि) कुश्ती का एक पेच।
हाथपान पुं० (हि) हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।
हाथफूल पुं० (हि) दे० 'हाथपान'।
हाथा पुं० (हि) १-दस्ता। मूठ। मंगल अवसरों पर दीवार आदि पर लगाई जाने वाली पंजों की छाप
हाथाछांहो स्त्री० (हि) लेन-देन के व्यवहार में कपट करना।
हाथापाई स्त्री० (हि) भिड़न्त। हाथ पैर से परस्पर खींचने तथा ढकेलने की क्रिया।
हाथाबांहो स्त्री० (हि) दे० 'हाथापाई'।
हाथी पुं० (हि) १-एक बहुत बड़ा स्तनपायी चौपाया जो अपनी सूँड के कारण सब जानवरों में विलक्षण होता है। २-शतरंज की एक गोट।
हाथीखाना पुं० (हि) वह स्थान जहाँ पालतू हाथी रखा जाय। पीलखाना।
हाथीदांत पुं० (हि) हाथी के मुँह के दोनों ओर निकले हुए लम्बे दांत जिनकी कई प्रकार की वस्तुएं बनती हैं।
हाथीपांव पुं० (हि) फीलपांव नाम का एक रोग। २-एक प्रकार का बढ़िया कत्था।
हाथीवान पुं० (हि) पीलवान। महावत।
हादसा पुं० (अ) दुर्घटना।
हादिसा पुं० (अ) दुर्घटना।
हान पुं० (सं) दे० 'हानि'।
हानि स्त्री० (सं) १-टूटने-फूटने आदि से होने वाला नाश (डैमेज)। २-आर्थिक क्षति। नुकसान (लास) ३-टोटा। घाटा। ४-अपकार। ५-स्वास्थ्य को पहुँचने वाली खराबी।
हानिकारक वि० (सं) १-जिससे नुकसान हो। २-स्वास्थ्य बिगाड़ने वाला। (इन्जूरियस)।
हानिलाभ पुं० (सं) व्यापार आदि में होने वाला या और किसी प्रकार का नुकसान और लाभ (प्रोफिट-एण्ड लॉस)।
हाफ़िज़ पुं०(अ) वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान-शरीफ कंठस्थ हो। वि० रक्षक।
हामिल वि० (अ) बोझ उठाने वाला।
हामिला स्त्री० (अ) गर्भवती स्त्री।
हामी स्त्री० (हि) स्वीकृति। वि०(अ) हिमायत करने वाला। सहायक।
हाय अव्य०(हि)१-दुःख, शोक, पीड़ा आदि का सूचक शब्द। स्त्री० (हि) कष्ट। पीड़ा। तकलीफ। व्यथा।
हायन पुं० (सं) वर्ष। साल।
हायल वि० (हि) १-घायल। २-मूर्च्छित। ३-थका हुआ। वि० (अ) बीच में आड़ करने वाला।
हायहाय अव्य० (हि) शोक दुःख आदि प्रकट करने का शब्द। स्त्री० कष्ट। दुःख।
हार स्त्री० (हि) १-पराजय। २-शिथिलता। थकावट ३-हानि। पुं० (सं) १-राज्य द्वारा हरण। २-विरह ३-गले में पहनने की माला। ४-अंकगणित में भाजक।
हारक वि० (सं) १-मनोहर। सुन्दर। २-हरण करने वाला। पुं० १-चोर। लुटेरा। २-गणित में भाजक ३-हार। माला।
हारगुटिका स्त्री० (सं) माला के दाने।
हारजीत स्त्री० (हि) जय-पराजय।
हारद वि० (हि) दे० 'हार्दिक'। पुं० मन की बात, अभिप्राय, वासना आदि।
हारना क्रि० (हि) १-युद्ध, प्रतिद्वंद्विता आदि में पराजित होना। २-थक जाना। ३-प्रयत्न में असफल होना। ४-खोना। गँवाना। ५-न रख सकने के कारण जाने देना।
हारमोनियम पुं०(अ) सन्दूक के आकार का एक बाजा,

यन्त्र जिस पर उँगली रखने से अनेक प्रकार के स्वर निकलते हैं।

हारल पु० (हि) दे० 'हारिल'।

हारसार स्त्री० (हि) दे० 'हड़वड़ी'।

हारा प्रत्य० (हि) 'वाला' अर्थ सूचक एक प्रत्यय। स्त्री० (देश) दक्षिण-पश्चिम की ओर से आने वाली हवा।

हारावलि स्त्री० (स) दे० 'हारावली'।

हारावली स्त्री० (स) मोतियों की लड़ी।

हारि पु० (स) १-पराजय। हार। २-पथिकों का दल कारवाँ। ३-हरण करने वाला। ४-मन को हरने वाला।

हारिल पु०(देश) एक हरे रङ्ग की चिड़िया जो प्रायः पंजुल में तिनका लिए रहती है।

हारी वि० (सं) १-ले जाने वाला। २-हरण करने वाला। ३-दूर करने वाला। ४-चुराने वाला। ५-छीनने वाला। ६-मन हरने वाला। ७-हार पहनने वाला। ८-चगाहने वाला। पु० (स) एक वर्णवृत्त

हारीत पु० (सं) १-चोर। २-डाकू। ३-कबूतर।

हारील पु० (हि) दे० 'हरावल'।

हार्दिक वि० (सं) १-हृदय सम्बन्धी। २-हृदय से निकला हुआ। ठीक और सच।

हार्य वि० (सं) १-हरण करने योग्य। २-हिल जाने योग्य। ३-वश करने योग्य। ४-भाज्य (गणित)। ५-दूर होने योग्य। ६-जिसका अभिनय किया जाने वाला हो (नाटक)।

हाल पु० (अ) १-अवस्था। दशा। २-समाचार। वृत्तान्त। ३-विवरण। ४-तन्मयता। लीनता। वि० वर्तमान। मौजूद। अव्य० अभी। तुरन्त। स्त्री०(हि) १-कम्प। २-झटका। धक्का। झोंका। पहुत चक्र कमर।

हालगोला पु० (हि) गेंद।

हालडोल पु०(हि) १-हलचल। २-कम्प। ३-हिलना-डोलना।

हालत स्त्री० (अ) १-आर्थिक स्थिति। २-दशा। अवस्था। ३-परिस्थिति।

हालना क्रि० (हि) दे० 'हिलना'।

हालरा पु० (हि) १-झोंका। २-लहर। हिलोर। ३-बच्चे को गोद में लेकर हिलाना-डुलाना।

हालाहल पु० (सं) दे० 'हलाहल'।

हालाँकि अव्य० (हि) यद्यपि।

हाला स्त्री० (सं) शराब। मद्य। मदिरा।

हालात पु० (अ) १-परिस्थिति। २-समाचार। ३-'हाल' का बहुवचन।

हालाहल पु० (स) दे० 'हलाहल'।

हालाहली स्त्री० (स) मदिरा। शराब।

हालिक वि० (सं) १-हल सम्बन्धी। पु० १-किसान

हलक। २-कसाई। ३-एक छन्द विशेष।

हालिनी स्त्री० (स) एक प्रकार की छिपकली।

हाली अव्य० (हि) शीघ्र। जल्दी। वि० (अ) हाल का। वर्तमान काल का।

हाव पु०(सं) १-संयोग के समय नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं। २-पास बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। बुलाहट।

हावन पु० (फा) कूटने का पात्र। खल।

हावनदस्ता पु० (फा) खलबट्टा।

हावभाव पु० (स) पुरुषों को मोहित करने के लिए स्त्रियों की मनोहर चेष्टाएँ। नाज़-नखरा।

हावी वि० (अ) दबा कर रखने वाली।

हाशिया पु०(अ) १-किनारा। २-गोट। मगजी। ३-लिखने के समय कागज के किनारे खाली छोड़ी हुई जगह। हाशिया। ४-किसी बात पर की गई टीका टिप्पणी।

हास पु० (स) १-हँसी। २-दिल्लगी। ठठोली। ३-उपहास। वि० उज्ज्वल। श्वेतवर्ण।

हासक वि० (स) हँसाने वाला।

हासिल वि०(अ) मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध। पु० १-जोड़ में किसी संख्या का वह अंश जो अन्तिम अंक के नीचे लिखे जाने पर बच रहे। २-पैदावार। उपज। ३-लाभ। ४-जमीन का लगान।

हास्तिक वि० (सं) हाथी का। हाथी-सम्बन्धी। पु० १-पीलवान। महावत। २-हाथियों का समूह।

हास्य वि० (सं) १-हँसने के योग्य। २-उपहास के योग्य। पु० १-हँसी। २-नौ स्थायी भावों या रसों में से एक, जिसमें हँसी की बातें होती हैं। ३-दिल्लगी। मजाक।

हास्यकथा स्त्री० (सं) हँसी की बात।

हास्यकर वि०(सं) हँसाने वाला। जिससे हँसी आये

हास्यकौतुक पु० (सं) १-खेल-तमाशा। हँसी खेल

हास्यजनक वि० (सं) हँसने वाला।

हास्यरस पु० (सं) नौ स्थायी भाव रसों में से एक जिसमें हँसी की बातें होती हैं।

हास्यरसात्मक वि० (स) वह काव्य जिसमें हास्यरस हो।

हास्यरसिक वि० (स) विनोदप्रिय।

हास्यास्पद वि०(स) जिसके बेढंगेपन को लोग हँसी उड़ावें। हँसी उत्पन्न करने वाला।

हास्योत्पादक वि०(स) जिससे लोगों को हँसी आये।

हा हंत अव्य०(स) हे ईश्वर यह क्या हो गया।

हाहा पु०(स) एक गन्धर्व। अव्य० १-हँसने का शब्द २-गिड़गिड़ाने का शब्द। पु०(हि) ठठाकर हँसने की आवाज। २-गिड़गिड़ाने की आवाज।

हाहाकार पु० (स) घबराहट के समय बहुत से लोगों

हाहा-ठीठी स्त्री० (हि) हँसी-ठट्ठा।
हाहारव पुं० (सं) हाहा का शब्द करके चिल्लाने की आवाज।
हाहाहीही पुं० (हि) दे० 'हाहा-ठीठी'।
हाहाहूहू पुं० (हि) हाहा करके हँसने की क्रिया। हँसी-ठट्ठा।
हाहो स्त्री० (हि) कुछ पाने के लिए बहुत हाय-हाय करना। चरम सीमा का लोभ।
हाहू पुं० (हि) १-शोरगुल। कोलाहल। २-हलचल
हिकरना क्रि० (हि) १-घोड़ों का हिनहिनाना। २-रँभाना।
हिंकार पुं० (सं) गाय के रँभाने का शब्द। २-बाघ के गरजने का शब्द। ३-व्याघ्र। ४-सामगान का एक अंग।
हिंग पुं० (हि) दे० 'हिंगु'।
हिंगु पुं० (सं) १-एक प्रकार का वृक्ष जो विशेषतः खुरासान तथा मुलतान में होता है। २-इसके मूल का निर्यास। हींग।
हिंगुक पुं० (सं) हिंगु वृक्ष।
हिंगुल पुं० (सं) सिंगरफ। ईंगुर।
हिंगोट पुं० (हि) एक कटीला जङ्गली पेड़ जिसके फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।
हिंछा स्त्री० (हि) इच्छा।
हिंडक वि० (सं) घूमने वाला। भ्रमणशील।
हिंडकपोत पुं० (सं) गश्ती जङ्गी जहाज। (क्रूज़र)।
हिंडन पुं० (सं) घूमना-फिरना।
हिंडोरना पुं० (देश) दे० 'हिंडोला'।
हिंडोरा पुं० (हि) दे० 'हिंडोला'।
हिंडोरी स्त्री० (हि) छोटा हिंडोला।
हिंडोल पुं०(हि) १-संगीत में एक राग। २-हिंडोला।
हिंडोलना पुं० (हि) दे० 'हिंडोला'।
हिंडोला पुं० (हि) १-पालना। २-झूलना। ३-काठ का बना हुआ बड़ा चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिए छोटे-छोटे चौखटे लगे होते हैं।
हिंडोली स्त्री० (सं) एक रागनी।
हिंताल पुं० (सं) एक प्रकार की जङ्गली खजूर।
हिंद पुं० (फा) भारतवर्ष। हिंदुस्तान।
हिंदवी स्त्री० (फा) हिंद या हिंदुस्तान की भाषा।
हिंदी वि० (फा) हिन्द या हिन्दुस्तान का। भारतीय। पुं० (फा) भारतवासी। स्त्री० १-हिन्दुस्तान की भाषा। २-उत्तरी और मध्यभारत की वह भाषा जिसके अन्तर्गत कई उपभाषाएँ या बोलियां हैं और जो भारत देश की राष्ट्रभाषा है।
हिंदुत्व पुं० (हि) दे० 'हिन्दूपन'।
हिंदुस्तान पुं० (फा) १-भारतवर्ष। २-हिंदुओं का निवास स्थान। ३-दिल्ली से पटने तक का भारत का उत्तरी और मध्य भाग। ४-आधुनिक भारत जो उत्तर में कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक फैला हुआ है। (इण्डिया)।
हिंदुस्तानी वि० (फा)हिन्दुस्तान का। पुं० भारतवासी स्त्री० (फा) १-हिन्दुस्तान की भाषा। २-बोलचाल या व्यवहार की वह भाषा (हिन्दी) जिसमें न तो बहुत अरबी-फारसी के शब्द हों न संस्कृत के।
हिंदुस्थान पुं० (हि) भारतवर्ष। हिन्दुस्तान।
हिंदू पुं० (फा) भारतीय आर्यों के वर्तमान भारतीय वंशज जो वेदों, स्मृति पुराण आदि को अपना ग्रन्थ मानते हैं और उन पर चलते हैं।
हिंदूकुश पुं०(फा) वह पर्वतश्रेणी जो अफगानिस्तान के उत्तर में है और हिमालय से मिली हुई है।
हिंदूपन पुं० (हि) हिंदू होने का भाव या धर्म।
हिंदोल पुं० (सं) १-हिंडोला। झूला। २-हिंडोल नामक एक राग।
हिंदोलक स्त्री० (सं) १-हिंडोला। २-पालना।
हिंदोस्तानी स्त्री० (हि) दे० 'हिंदुस्तानी'।
हिंयाँ अव्य० (हि) यहाँ।
हिंवार पुं० (देश) हिम। बर्फ।
हिंस स्त्री० (हि) हिनहिनाहट। हींस।
हिंसक पुं० (सं) १-हिंसा करने वाला या मार डालने वाला। घातक। २-दूसरों की हानि चाहने वाला।
हिंसन पुं० (सं) १-जीवों का वध करना। २-जीवों को हानि पहुँचाना। ३-बुराई या अनिष्ट करना।
हिंसना क्रि० (हि) १-हिंसा या हत्या करना। २-बुरा-भला करना।
हिंसा स्त्री० (सं) १-प्राणियों को मारने-काटने और शारीरिक कष्ट देने की वृत्ति। २-किसी को हानि पहुँचाना।
हिंसाकर्म पुं० (सं) १-मारने या सताने का काम। २-तंत्र प्रयोग द्वारा किसी को मारने का कर्म।
हिंसात्मक वि० (सं) जिसमें हिंसा हो। हिंसा से युक्त
हिंसालु वि० (सं)हिंसा करने वाला। हिंसा की प्रवृत्ति वाला।
हिंस्र वि० (सं) हिंसा करने वाला। खूँखार।
हिंस्रक वि० (सं) दे० 'हिंस्र'।
हिंस्रजंतु पुं० (सं) खूंखार जानवर।
हिंस्रपशु पुं० (सं) खूंखार जानवर।
हि प्रत्य० (हि) एक प्राचीन विभक्ति जिसका प्रयोग पहले सब कारकों में होता था। पर बाद में 'को' के अर्थ में रह गई थी। अव्य० (हि) ही।
हिअ पुं० (हि) दे० 'हिआ'।
हिआ पुं० (हि) हृदय। छाती।
हिआउ पुं० (हि) दे० 'हिआव'।
हिआव पुं० (हि) साहस। हिम्मत
हिकमत स्त्री० (अ) १-विद्या। [illegible] कौशल। ३-उपाय। ४-चाल।

(पालिसी)। ४-यूनानी चिकित्सा का शास्त्र या पेशा हकीमी।
हिकमती वि० (अ) १-कार्यपटु। २-चतुर। चालाक।
हिकारत स्त्री० (हि) दे० 'हकारत'।
हिक्का स्त्री० (सं) १-हिचकी। २-एक रोग जिसमें हिचकी आती है।
हिक्किका स्त्री० (सं) हिक्का। हिचकी।
हिचक स्त्री० (हि) आगापीछा। कोई काम करने से पहले मन में होने वाली रुकावट।
हिचकना क्रि०(हि) कोई काम करने से पहले आशंका, अनौचित्य, असमर्थता आदि के कारण कुछ रुकना २-हिचकी लेना।
हिचकिचाना क्रि० (हि) दे० 'हिचकना'।

से निकलने का प्रयत्न करती है। २-इसी प्रकार का शारीरिक व्यवहार अधिक रोने पर होता है।
हिचर-मिचर पु० (हि) १-सोच-विचार। २-आगा-पीछा। टालमटोल।
हिजड़ा पु० (हि) खोजा। नपुंसक।
हिजरी पु० (अ) मुसलमानी संवत जो मुहम्मद-साहब के मक्के से मदीने भागने या हिजरत करने की तिथि। (१५जुलाई ६२२ ई०) से चला है।
हिजाब पु० (अ) परदा। २-शर्म। लाज। हया।
हिज्जे पु० (अ) किसी शब्द में आये हुए अक्षरों, मात्राओं आदि का क्रम। वर्तनी।
हिज्र पु० (अ) वियोग। जुदाई।
हिडिंब पु० (सं) १-भैंसा। २-एक राक्षस जिसे भीम ने वनवास के समय मारा था।
हिडिंबजित् पु० (सं) भीम।
हिडिंबद्विट् पु० (सं) भीम।
हिडिंबरिपु पु०(सं) भीम।
हिडिंबा स्त्री०(सं) हिडिंब नामक राक्षस की बहन जो भीम की पत्नी थी।
हिडिंबापति पु० (सं) भीम।
हिडिंबारमण पु० (सं) भीम।
हित वि० (सं) १-कल्याण। मंगल। भलाई। २-लाभ फायदा। ३-स्नेह। मुहब्बत। ४-वह जो किसी की भलाई चाहता या करता हो। सम्बन्धी। रिश्तेदार। अव्य० (सं) (किसी की भलाई, प्रसन्नता आदि के) लिए। वास्ते।
हितकर वि० (सं) १-भलाई या उपकार करने वाला २-उपयोगी। ३-स्वास्थ्यकर।
हितकर्ता पु० (सं) भलाई करने वाला।
हितकाम पु० (सं) १-भलाई या उपकार करने वाला २-उपयोगी। ३-स्वास्थ्यकर।
हितकारक वि० (सं) दे० 'हितकर'।
हितकारी वि० (सं) हित या भलाई करने वाला।
हितचिंतक पु० (सं) भला चाहने वाला। शुभचिंतक हितैषी।
हितचिंतन पु० (सं) किसी की भलाई की कामना या इच्छा।
हितबुद्धि स्त्री० (सं) मैत्रीपूर्ण कामना।
हितमित्र पु० (सं) १-सम्बन्धी। भाईबन्द। २-उदार मित्र।
हितवचन पु० (सं) कल्याण का उपदेश।
हितवना क्रि० (हि) दे० 'हिताना'।
हितवाक्य पु० (सं) कल्याण का परामर्श।
हितवादी वि० (सं) हित की बात कहने वाला।
हितवार पु० (हि) प्रेम। स्नेह।
हिताई स्त्री० (हि) १-सम्बन्ध। रिश्तेदारी। २-हितचिंतन।
हिताकांक्षी वि० (सं) हित या भलाई चाहने वाला।

२-प्रेम या स्नेह करना। ३ उपकार या भलाई करना
हितार्थी वि० (सं) भलाई चाहने वाला।
हितावह वि० (सं) हितकारी। कल्याणकारी।
हिताहित पु० (सं) भलाई और बुराई। नफा और नुकसान।
हिती पु० (हि) १-हितैषी। २-रिश्तेदार। सम्बन्धी। ३-स्नेही।
हितु पु० (हि) दे० 'हिती'।
हितू पु० (हि) दे० 'हिती'।
हितेच्छा स्त्री० (सं) उपकार का ध्यान। भलाई की चाह।
हितेच्छु वि० (सं) भला चाहने वाला।
हितैषिता स्त्री० (सं) भलाई चाहने की वृत्ति।
हितैषी वि० (सं) भला चाहने वाला। पु० सुहृद। मित्र।
हितोक्ति स्त्री० (सं) नेक सलाह।
हितोपदेश पु० (सं) भलाई का उपदेश।
हितौना क्रि० (हि) दे० 'हिताना'।
हिदायत स्त्री० (अ) १-आदेश। निर्देश। २-बड़े का छोटे को यह उपदेश देना कि अमुक काम इस प्रकार होना चाहिए।
हिदायतनामा पु० (फ) आदेश या हिदायतें आदि की किताब।
हिनती स्त्री० (हि) हीनता।
हिनवाना पु० (हि) तरबूज।
हिनहिनाना क्रि० (हि) घोड़े का बोलना।

हिना स्त्री० (अ) मेंहदी।
हिनाई वि० (अ) मेंहदी के रङ्ग का। पु० १-पीलापन लिए लाल रङ्ग। २-हीनता।
हिनाबंदी स्त्री० (अ) मुसलमानों में विवाह की एक रीति।
हिफ़ाजत स्त्री० (अ) रक्षा। रखवाली।
हिब्बा पु० (अ) १-कौड़ी। २-दान।
हिब्बानामा पु० (अ) दानपत्र।
हिमंचल पु० (हि) दे० 'हिमाचल'।
हिमंत पु० (हि) दे० 'हेमन्त'।
हिम पु० (सं) १-पाला। तुषार। २-जाड़ा। ठंडा। ३-जाड़े का मौसम। ४-चन्द्रमा। ५-कपूर। ६-मोती। ७-राँगा। ८-कमल। ९-ताजा मक्खन। वि० ठंडा।
हिमउपल पु० (सं) ओला। पत्थर।
हिमऋतु स्त्री० (सं) जाड़े की मौसम।
हिमकण पु० (सं) तुशार या पाले के बहुत छोटे-छोटे कण या टुकड़े।
हिमकर पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
हिमकरतनय पु० (सं) बुध।
हिमकिरण पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमकूट पु० (सं) १-शीतकाल। २-हिमालय पर्वत।
हिमखंड पु० (सं) हिमालय-पर्वत।
हिमगर्भ वि० (सं) वर्फ से भरा हुआ।
हिमगिरि पु० (सं) हिमालय-पर्वत।
हिमगिरि-सुता स्त्री०(स) पार्वती।
हिमगु पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमगृह पु० (सं) घर में सब से ठण्डी कोठरी अथवा कमरा।
हिमगृहक पु० (सं) दे० 'हिमगृह'।
हिमगौर वि० (सं) वर्फ जैसा सफेद।
हिमघ्न वि० (सं) हिम का निवारण अथवा दूर करने वाला।
हिमजा स्त्री० (सं) पार्वती।
हिमज्वर पु०(सं) जाड़ा-बुखार।
हिमदीधिति पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमदुर्दिन पु० (सं) १-पाला। २-बहुत ठंड पड़ने के कारण बुरा मौसम।
हिमद्युति पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमधर पु० (सं) हिमालय-पर्वत।
हिमधामा पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमध्वस्त वि० (सं) पाले का मारा हुआ।
हिमपात पु० (सं) १-पाला पड़ना। २-वर्फ गिरना।
हिमभानु पु०(सं) चन्द्रमा।
हिममय-वृष्टि स्त्री० (सं) वह वर्षा जिस के साथ ओले या वर्फ भी गिरे। (स्लीट)।
हिममयूख पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमरश्मि पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमरुचि पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमरेखा स्त्री० (सं) पर्वतों की ऊँचाई की वह रेखा जहां निरन्तर वर्फ गिरती रहती है और गर्मी के कारण पिघलती नहीं। (स्नो लाईन)।
हिमर्तु स्त्री० (सं) जाड़े का मौसम।
हिमवान वि० (हि) जिसमें वर्फ या पाला हो। पु० १-हिमालय। २-चन्द्रमा।
हिमवान्-सुत पु० (सं) मैनक।
हिमवान्-सुता स्त्री०(सं) १-पार्वती। २-गंगा।
हिमवृष्टि स्त्री० (स) १-वरफ का गिरना। २-ओले गिरना।
हिमशिलास्खलन पु० (सं) हिमराशि का पत्थर, मट्टी आदि के साथ चट्टान के रूप में बन कर गिरना। (एवेलांश)।
हिमशीतल वि० (सं) जमा देने वाली ठण्ड।
हिमशुभ्र वि० (सं) हिम जैसा सफेद।
हिमशैल पु० (सं) हिमालय पर्वत।
हिमसंघात पु० (सं) वर्फ का ढेर या राशि।
हिमसंहति पु० (सं) वर्फ का ढेर।
हिमांक पु० (सं) वह तापमान जिस पर पानी जम कर वर्फ बनने लगता है। यह ३२ अंश फारेनहाईट और शून्य अंश सेंटीग्रेड होता है। (फ्रीजिंग पॉइन्ट)।
हिमांत पु०(सं) सर्दी के मौसम का अन्त।
हिमांबु पु० (सं) १-ओस। २-शीतल जल।
हिमांभ पु० (सं) दे० 'हिमांबु'।
हिमांशु पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
हिमाक्त स्त्री०(हि) दे० 'हमाकत'।
हिमाचल पु० (सं) हिमालय पर्वत।
हिमाच्छन्न वि० (सं) वर्फ से ढका हुआ।
हिमाद्रि पु० (सं) हिमालय पर्वत।
हिमाद्रिजा स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-गंगा।
हिमाद्रितनया स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-दुर्गा। ३-गंगा।
हिमानिल पु० (सं) वर्फीली हवा।
हिमानी स्त्री (सं) १-तुषार। २-पाला। ३-वरफ की वह बड़ी चट्टानें जो ऊँचे पहाड़ों पर होती हैं (ग्लेशियर)।
हिमाब्ज पु० (सं) नीलकमल।
हिमायत स्त्री० (अ) १-पक्षपात। २-किसी पक्ष का समर्थन।
हिमाती वि० (फा) पक्ष लेने या समर्थन करने वाला।
हिमाराति पु०(सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-चित्रक-वृक्ष।
हिमारि पु० (सं) अग्नि।
हिमार्त वि० (सं) ठिठुरा हुआ। पाले से जमा हुआ।

हिमाल पु० (हि) दे० 'हिमालय'।
हिमालय पु० (सं) १-भारत के उत्तर का प्रसिद्ध तथा संसार में सब से बड़ा और ऊँचा पर्वत। २-सफेद खैर।
हिमालयसुता स्त्री० (सं) पार्वती।
हिमि पु० (हि) दे० 'हिम'।
हिमिका स्त्री० (सं) घास पर गिरी हुई बर्फ।
हिमीकर वि० (सं) हिम या बर्फ की तरह ठण्डा बना देने वाला। पुं० (सं) वह यंत्र जो ठण्डा बना कर खाद्य पदार्थों को सड़ने से बचाता है। (रेफ्रिजरेटर)

हिया पु० (हि) दे० 'हियरा'।
हियाव पुं० (हि) साहस।
हिरकना क्रि० (हि) १-पास आना। २-सटना। ३-परचना।
हिरकाना क्रि० (हि)१-निकट लाना। २-पास करना ३-भिड़ाना। सटाना।
हिरण पु० (सं)१-स्वर्ण। सोना। २-वीर्य। ३-कौड़ी पुं० (हि) हिरन।
हिरण्मय वि० (सं) सोने का। सुनहरा। पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-एक ऋषि। ३-संसार के नौ खण्डों में से एक।
हिरण्मयकोश पुं० ... में से अन्तिम। २
हिरण्य पु० (सं) ... कौड़ी। ४-नित्य। ५-ज्ञान। ६-अमृत। ७-प्रकाश
हिरण्यकंठ वि० (सं) सोने के कण्ठ वाला।
हिरण्यकर्त्ता पुं० (सं) सुनार।
हिरण्यकवच वि० (सं) सोने के कवच वाला।
हिरण्यकशिपु पुं० (सं) एक दैत्य जो प्रह्लाद भक्त का पिता था जिसे नृसिंह अवतार में विष्णु ने मारा था।
हिरण्यकश्यप पुं० (सं) दे० 'हिरण्यकशिपु'।
हिरण्यकार पुं० (सं) सुनार।
हिरण्यकेश पु० (सं) विष्णु।
हिरण्यगर्भ पु० (सं)१-ब्रह्मा। २-वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा तथा समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई। ३-सूक्ष्म शरीरयुक्त आत्मा। ४-विष्णु। ५-एक मंत्रकार ऋषि।
हिरण्यपुरुष पुं० (सं)सोने की बनी मनुष्य की प्रतिमा।
हिरण्यरेता पुं० (सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-शिव। ४-बारह आदित्यों में से एक

हिरण्यवर्चस वि० (सं) सोने की जैसी चमक वाला।
हिरण्यवाहु पुं० (सं) १-शिव। २-सोन नदी।
हिरण्यवीर्य पुं० (सं) १-अग्नि। २-सूर्य।
हिरण्यस्रक् स्त्री० (सं) सोने की माला।
हिरण्याक्ष पुं०(सं)१-हिरण्यकशिपु के भाई का नाम वासुदेव के छोटे भाई का नाम।
हिरदय पुं० (हि) दे० 'हृदय'।
हिरदा पु० (हि) हृदय।
हिरदावल पुं० (हि) घोड़े की छाती पर की एक भौंरी जो शुभ मानी जाती है।

हिराती पुं० (सं) अफगानिस्तान के उत्तर में स्थित हिरात नाम के देश का घोड़ा।
हिराना क्रि० (हि) १-अभाव होना। २-खो जाना। ३-मिटना। दूर होना। ४-दंग रह जाना। ५-अपने को भूल जाना। ६-खेत में गोबर आदि खाद के लिए रखना। ७-भूल जाना।
हिरास स्त्री० (फा) १-भय। २-नैराश्य। ३-खिन्नता। खेद। वि० १-हताश। २-खिन्न।
हिरासत स्त्री० (अ) १-किसी व्यक्ति पर रखा जाने वाला पहरा। चौकी। २-हवालात।
हिरासाँ वि० (फा) १-निराश। २-भीत। हिम्मत हारा

हिर्साहिर्सी अव्य० (हि) देखा-देखी।
हिर्सी वि० (फा) लालची।
हिलकना क्रि० (हि) १-हिचकियाँ लेना। हिचकना। २-सिसकना।
हिलकी स्त्री० (हि) १-हिचकी। २-सिसकने का शब्द
हिलकोर पु० (हि) दे० 'हिलकोरा'।
हिलकारना क्रि०(हि) पानी को हिलाकर तरंगें उत्पन्न करना।
हिलकोरा पुं० (हि) हिलोर। तरंग। लहर।
हिलग स्त्री० (हि) १-प्रेम। लगन। २-परिचय। ३-लगाव। सम्बन्ध।
हिलगना क्रि० (हि) १-टँगना। अटकना। २-फँसना ३-हिलमिल जाना। ४-समीप होना।
हिलगाना क्रि० (हि) १-अटकाना। २-टाँगना। ३-फँसाना। ४-सटाना। ५-घनिष्ठता स्थापित करना।
हिलना क्रि०(हि) १-अपने स्थान से इधर उधर होना। २-सरकना। ३-काँपना। ४-ढीला होना। ५-

भूमना। ६-घुसना। पैठना। ७-(मन) चंचल होना। ८-हेलमेल में होना।
हिलमोचि स्त्री० (सं) एक शाक।
हिलमोचिका स्त्री० (सं) एक शाक।
हिलसा स्त्री० (हि) एक प्रकार की मछली।
हिलाना क्रि० १-चलायमान करना। २-हटाना। ३-कँपाना। ४-घुसाना। ५-घनिष्टता स्थापित करना
हिलाल पुं० (प्र) नया चांद।
हिलोर स्त्री० (हि) पानी की लहर। तरङ्ग।
हिलोरना क्रि० (हि) १-जल को तरंगित करना। २-लहराना।
हिलोरा पुं० (हि) हिलोर। तरंग।
हिलोल पुं० (हि) दे० 'हिल्लोल'।
हिल्लोल पुं० (सं) १-पानी की लहर। तरंग। २-आनन्द की तरंग। मौज। उमंग। हिंडोल नामक राग।
हिल्वला स्त्री० (सं) वह छोटे पांच तारे जो मृगशिरा-नक्षत्र के सिर के पास दिखाई देते हैं।
हिवँ पुं० (हि) हिम। पाला। बर्फ।
हिवंचल पुं०(हि) १-तुषार। हिम। पाला। हिमालय।
हिवाँर पुं० (हि) हिम। पाला।
हिस स्त्री० (प्र) अनुभव। ज्ञान। संज्ञा। चेतना।
हिसाव पुं० (प्र) १-गिनकर लेखा तैयार करने का काम या विद्या। लेन-देन, आय-व्यय आदि का लिखा हुआ वर्णन। ३-गणित सम्बन्धी प्रश्न। ४-भाव। दर। ५-धारणा। समझ। ६-अवस्था। ७-मितव्यय।
हिसाव-किताव पुं० (प्र) १-आय-व्यय का ब्योरा। २-व्यापारिक लेन-देन का ढंग। ३-रीति। ढंग।
हिसाव-चोर पुं०(हि) वह जो हिसाव किताव में बेई-मानी करता हो।
हिसावदाँ पुं० (प्र) गणितज्ञ।
हिसावदार वि० (प्र) हिस्सा रखने वाला।
हिसाव-बही स्त्री० (हि) आय-व्यय के विवरण वाली बही।
हिसावी वि० (प्र) हिसाव सम्बन्धी। पुं०(प्र) हिसाव या गणित का जानकार।
हिसार पुं० (फा) १-फारसी संगीत की २४ शोभाओं में से एक। २-घेरा। परकोटा।
हिंसिया स्त्री० (हि) १-स्पर्द्धा। होड़। २-समता। ३-ईर्ष्या।
हिस्सा पुं० (प्र) १-समष्टि या समूह का कोई अंश। अवयव। २-खंड। टुकड़ा। ३-बँटने पर मिलने वाला अंश। भाग। ४-व्यापार आदि में होने वाला साझा।
हिस्सा-बखरा पुं० (प्र) अंश। भाग।
हिस्सारसदी अव्य० (प्र) जितना जिसके हिस्से में आये।
हिस्सेदार पुं० (प्र) १-अंश या हिस्से का मालिक। साझेदार। २-वह जिसे कुछ हिस्सा मिलने को हो।
हिस्सेदारी स्त्री० (प्र) साझा।
हिहिनाना क्रि० (हि) (घोड़े का) हिनहिनाना।
हींग स्त्री० (हि) दे० 'हिंगु'।
हींछना क्रि० (हि) चाहना। इच्छा करना।
हींछा स्त्री० (हि) इच्छा।
हींताल पुं० (सं) हिंताल वृक्ष।
हींस स्त्री०(सं) घोड़ों का हिनहिनाना या गधे की रेंक।
हींसना क्रि० (हि) दे० 'हिनहिनाना'।
हींस पुं० (हि) दे० 'हिस्सा'।
ही अव्य०(हि) एक अव्यय जिसका प्रयोग निश्चय, स्वीकृति आदि सूचित करने या किसी बात पर जोर देने के लिए होता है। पुं० हृदय। क्रि० (हि) ब्रजभाषा के 'हो' (था) का स्त्रीलिंग रूप।
हीश्र पुं० (हि) दे० 'हिय'।
हीक स्त्री० (हि) १-हिचकी। २-हलकी अरुचिकर गं
हीचना क्रि० (हि) दे० 'हिचकना'।
हीछना क्रि० (हि) चाहना। इच्छा करना।
हीन वि० (सं) १-छोड़ा हुआ। परित्यक्त। २-ओछा। नीच। ३-रहित। शून्य। ४-तुच्छ। ५-दीन। ६-पथभ्रष्ट। ७-कम। अल्प। ८-नम्र।
हीनकर्मा वि० (सं) १-बुरा काम करने वाला। २-अपना निर्दिष्ट कर्म करने वाला।
हीनकुल वि० (स) अकुलीन। नीच या बुरे कुल का
हीनक्रम पुं० (सं) काव्य का वह दोष जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाए गये हों उसी स्थान पर उसी क्रम से गुणी न गिनाये गये हों।
हीनचरित वि० (सं) बुरे आचरण वाला।
हीनता स्त्री० (सं) १-अभाव। कमी। २-तुच्छता ३-ओछापन। ४-बुराई।
हीनत्व पुं० (सं) हीनता।
हीननायक वि० (सं) (वह नाटक) जिसका नायक नीच या अधम हो।
हीनपक्ष पुं० (सं) १-गिरा हुआ पक्ष। २-कमजोर मुकदमा।
हीनबल वि० (सं) शक्ति रहित। कमजोर। दुर्बल।
हीनबुद्धि वि० (सं) मूर्ख।
हीनमति वि० (सं) मूर्ख।
हीनयान पुं० (सं) बौद्ध धर्म की वह शाखा जिसका विकास बरमा, स्याम आदि देशों में हुआ था।
हीनयोनि वि० (सं) नीच कुल या जाति का।
हीनरस पुं० (सं) काव्य का वह दोष जिसमें कि रस का वर्णन करते हुए उस रस के विरुद्ध दूसरा रस प्रयोग किया जाता है।
हीनरोमा वि० (सं) जिसके बाल न हों। गंजा।

हीनवर्ग पुं० (स) दे० 'हीनवर्ण'।
हीनवर्ण पु० (सं) नीच जाति या वर्ण।
हीनवाद पु० (स) १-मिथ्या तर्क। व्यर्थ की बहस २-झूठी गवाही जिसमें पूर्वा पर विरोध हो।
हीनवादी पुं० (स) १-वह जिसका लगाया हुआ अभियोग गिर गया हो। २-विरुद्ध बयान देने वाला गवाह।
हीनांग वि० (सं) १-खण्डित अंग वाला। २-अधूरा
हीनोपमा स्त्री० (स) काव्य में वह उपमा जिसमें बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लाया जाय।
हीय पु० (हि) हृदय।
हीयरा पु० (हि) हृदय।
हीया पुं० (हि) हृदय।
हीर पु० (हि) १-किसी वस्तु का तत्व या सार भाग २-शक्ति। बल। ३-वीर्य। पु०(सं) १-हीरा। रत्न २-वज्र। ३-शिव। ४-एक वर्णवृत्त। ५-छप्पय छंद का एक भेद।
हीरक पु० (सं) हीरा नामक रत्न। २-हीर छंद।
हीरकजयंती स्त्री० (स) किसी व्यक्ति, संस्था, महत्व-पूर्ण कार्य आदि की वह जयन्ती जो उसके जन्म या आरम्भ के ६० वें वर्ष होती है। (डॉयमण्ड जुबिली)
हीरा पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो चमक तथा कठोरता के लिये प्रसिद्ध है। २-नररत्न ३-बहुत उत्तम वस्तु। ४-कद्दू की एक जाति।
हीरा-आदमी पु० (हि) नर रत्न। बहुत नेक आदमी
हीरा-कसीस पु० (हि) गंधक के योग से लोहे का एक विकार जो हरे तथा मटमैले रंग का होता है।
हीरामन पु० (हि) एक प्रकार का तोता जिसका मन सोने की तरह का माना गया है।
हीलना क्रि० (हि) दे० 'हिलना'।
हीला पुं०(प) १-मिस। बहाना। २-निमित्त। साधन
हीला-हवाला पुं० (प) बहाना।
हीलेगर पुं० (प) बहाने बनाने वाला।
हीलेबाज पु० (प) हीलेगर।
हीलेसाज पुं० (प) हीलेगर।
हीसका स्त्री० (हि) १-ईर्ष्या। डाह। २-प्रतियोगिता। होड़।
हीही स्त्री० (हि) हँसने का शब्द।
हुँ अव्य० (हि) १-दे० 'हू'। २-दे० 'हाँ'।
हुँकना क्रि० (हि) दे० 'हुंकारना'।
हुंकरना क्रि० (हि) दे० 'हुंकारना'।
हुंकार पुं० (सं) १-ललकार। २-गर्जन। भयभीत करने के लिये जोर से किया गया शब्द। ३-चीत्कार।
हुंकारना क्रि० (हि) १-ललकारना। २-चिल्लाना। ३-डरने के लिये जोर का शब्द कहना।
हुंकारी स्त्री० (हि) १-'हूँ' करने की क्रिया। २-स्वीकृति सूचक शब्द। ३-घुमाव के साथ मुड़ी हुई लकीर जो अंक के आगे रकम सूचित करने लिये लगा दी जाती है। जैसे रु॥।
हुंकृत पुं० (सं) १-सूअर के गुर्राने का शब्द। २-मेघ का गर्जन। ३-हुंकार।
हुंकृति स्त्री० (सं) दे० 'हुंकार'।
हुंडार पुं०(हि) भेड़िया।
हुंडावन पुं०(हि) हुंडी से रुपया भेजने का पारिश्रमिक या दस्तूरी।
हुंडी स्त्री० (हि) १-महाजनी क्षेत्र में वह पत्र जो ऋण देते समय प्रमाणस्वरूप ऋण देने वाले को दिया जाता है जिस पर यह लिखा होता है कि इतना धन इतने समय में ब्याज सहित चुका दिया जायगा। २-अपने धन को प्राप्त करने का वह पत्र जिस में यह लिखा होता है कि इतना धन अमुक व्यक्ति बैंक आदि को दे दिया जाय। (ड्राफ्ट)।
हुंडीबही स्त्री० (हि) वह बही जिसमें सब प्रकार की हुंडियों की नकल रहती है।
हुंते अव्य० (हि) से (पुरानी हिन्दी की पंचमी और तृतीया की विभक्ति)। लिए। वास्ते। निमित्त।
हुंते अव्य० (हि) दे० 'हुँत'।
हुँ अव्य० (हि) भी।
हुआँ अव्य० (हि) दे० 'वहाँ'। पु० गीदड़ों के बोलने का शब्द।
हुआ क्रि० (हि) 'होना' क्रिया का भूत।
हुआना क्रि० (हि) गीदड़ों का बोलना या हुआँ-हुआँ करना।
हुक पु०(प) १-टेढ़ी कील। २-अँकुसी। स्त्री० (देश) एक प्रकार का नस का दर्द जो प्रायः पीठ में सहसा बल पड़ने पर होता है।
हुकरना क्रि०(हि) दे० 'हुंकारना'।
हुकुम पु० (हि) दे० 'हुक्म'।
हुकुर-पुकुर स्त्री० (हि) भय या शारीरिक दुर्बलता के कारण दिल का जल्दी-जल्दी धड़कना।
हुकुर-हुकुर स्त्री० (हि) दे० 'हुकुर-पुकुर'।
हुकूक पुं० (अ) हक का बहुवचन।
हुकूमत स्त्री० (अ) १-शासन। आधिपत्य। अधिकार ३-राजनैतिक शासन या आधिपत्य।
हुक्का पु० (अ) तम्बाकू का धूआँ खींचने के लिए विशेष रूप से बना एक नल यन्त्र। गुड़गुड़ी।
हुक्कापानी पुं० (हि) बिरादरी का बरताव। एक बिरादरी के लोगों का आपस में, मेलजोल पानी, हुक्का आदि पीने का व्यवहार।
हुक्का-बरदार पु० (प) हुक्का लेकर साथ चलने वाला नौकर।
हुक्काबाज वि० (प) बहुत हुक्का पीने वाला।
हुक्काम पु० (प) हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग।
हुक्म पु० (प) १-आज्ञा। आदेश। २-शासन।

प्रमुत्व। ३-तारा का रङ्ग। ४-जन साधारण के लिए राज्य या शासन द्वारा निकली हुई आज्ञा। ५-धर्मशास्त्रादि में बतलाई हुई विधि।
हुक्मकतई पुं० (अ) आखिरी फैसला।
हुक्मगश्ती पुं० (अ) वह आज्ञा जिसको सब तरफ फिराया जाय।
हुक्मदरमियानी पुं०(अ)वह आज्ञा जो अंतिम निर्णय से पहले दी गई हो।
हुक्मनामा पुं० (अ) आज्ञापत्र।
हुक्मबरदार पुं० (अ) आज्ञाकारी। सेवक।
हुक्मबरदारी स्त्री० (अ) १-आज्ञा पालन। २-सेवा। नौकरी।
हुक्मरान वि० (अ) १-शासन करने वाला। २-आज्ञा देने वाला।
हुक्मरानी स्त्री० (अ) शासन।
हुक्मी वि०(अ)१-आज्ञा के अनुसार काम करने वाला। पराधीन। २-अव्यर्थ। अचूक। ३-लाजमी। जरूरी
हुक्मीबंदा पुं० (अ) आज्ञा के आधीन। हुक्म का बन्दा।
हुचकी स्त्री० (हि) दे० 'हिचकी'।
हुजूम पुं०(अ) भीड़ (जमावड़ा)।
हुजूर पुं० (अ) १-किसी वड़े का सामीप्य। समक्षता। २-कचहरी। ३-बहुत वड़ों का संबोधन का शब्द।
हुजूरवाला पुं० (अ) एक सम्मानसूचक संबोधन।
हुजूरी स्त्री०(अ) समक्षता। किसी वड़े का सामीप्य। पुं०। १-नौकर। २-दरबारी। वि० (अ) सरकारी। हजूर का।
हुज्जत स्त्री० (अ) व्यर्थ का विवाद। तकरार।
हुज्जती वि० (अ) बहुत झगड़ा करने वाला। झगड़ालू।
हुड़क स्त्री० (हि) हुड़कने की क्रिया या भाव।
हुड़कना क्रि० (हि) १-वियोग के कारण बहुत दुःखी होना। (विशेषतः छोटों का)। २-भयभीत या चिंतित होना।
हुड़का पुं० (हि) वियोग के कारण होने वाली मानसिक व्यथा (बच्चों की)।
हुड़काना क्रि० (हि) हुड़कने का सकर्मक रूप।
हुड़दंग पुं० (हि) दे० 'हुड़दंगा'।
हुड़दंगा पुं० (हि) उपद्रवयुक्त उछलकूद।
हुडुंब पुं० (सं) भूना हुआ चिउड़ा।
हुडुक पुं० (हि) एक प्रकार का छोटा ढोल।
हुडुक्क पुं० (सं) १-एक प्रकार का छोटा ढोल। २-मतवाला आदमी। ३-अर्गल।
हुढुक्क पुं० (हि) दे० 'हुडुक्क'।
हुत वि०(सं) १-हवन किया हुआ। २-आहुति के रूप में दिया हुआ। पुं० १-हवन की सामग्री। २-शिव वि० (हि) था (पुराना रूप)।
हुतभक्ष पुं० (सं) अग्नि।
हुतभुक् पुं०(सं) अग्नि।
हुतशिष्ट पुं० (सं) दे० 'हुतशेष'।
हुतशेष पुं० (सं) हवन करने के उपरांत बची हुई सामग्री।
हुता क्रि० (हि) 'होना' क्रिया का प्राचीन रूप 'था'।
हुताग्नि पुं० (सं) १-अग्निहोत्री। २-हवन की अग्नि
हुताशन पुं० (सं) अग्नि। आग।
हुति अव्य० (हि) १-करण और अपादान का चिह्न से। द्वारा। २-ओर से। तरफ से। स्त्री० (सं) हवन यज्ञ।
हुतो वि० (हि) था।
हुदकना क्रि० (देश) उभारना। उकसाना।
हुदना क्रि०(हि) १-स्तब्ध होना। २-चकपकाना। ३-ठिठकना।
हुदहुद पुं० (अ) एक प्रकार का पक्षी।
हुदूद पुं० (अ) सीमा। हद।
हुन पुं० (हि) १-अशरफी। मोहर। २-सोना। स्वर्ण
हुनना क्रि० (हि) १-आहुति देना। २-हवन करना।
हुनर पुं० (फा) १-कला। कारीगरी। २-गुण। करतब। ३-कोई काम करने का कौशल।
हुनरमंद वि० (फा)१-कलाविद्। हुनर जानने वाला २-निपुण। कुशल।
हुनरमंदी स्त्री० (फा) कला-कुशलता। निपुणता।
हुन्न पुं० (हि) दे० 'हुन'।
हुन्ना पुं० (हि) दे० 'हुन'।
हुब्ब पुं० (अ) १-प्रेम। २-श्रद्धा। ३-हौसला। उमङ्ग
हुब्बलवतन स्त्री० (अ) स्वदेश-प्रेम।
हुब्बेवतन स्त्री० (अ) स्वदेश प्रेम।
हुमकना क्रि० (हि) १-दे० 'हुमचना'। २-ठमकना (बच्चों का)।
हुमगना क्रि० (हि) दे० 'हुमचना'।
हुमचना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु पर चढ़कर उसे जोर से नीचे दबाना। २-उछलना। कूदना।
हुमसाना क्रि० (हि) १-ऊपर की ओर जोर से उठाना उछालना। २-दबाना।
हुमसावना क्रि० (हि) दे० 'हुमसाना'।
हुमा स्त्री० (फा) एक कल्पित पक्षी (जिसकी छाया पड़ने पर कहा जाता है कि व्यक्ति राजा होजाता है)
हुमेल स्त्री०(हि) १-रुपयों अथवा अशर्फियों को गूँथ कर बनाई हुई माला। २-घोड़ों के गले का एक गहना।
हुरदंग पुं० (हि) दे 'हुड़दंग'।
हुरदंगा पुं० (हि) दे 'हुड़दंग'।
हुरमत स्त्री० (अ) आबरू। इज्जत। मर्यादा। मान।
हुरमति स्त्री० (हि) दे० 'हुरमत'।
हुरहुर पुं० (सं) दे 'हुलहुल'।
हुरिहार पुं० (हि) होली खेलने वाला।

हुलकना क्रि० (हि) उल्टी करना। कै करना।
हुलकी स्त्री० (हि) १-उल्टी, कै। २-हैजे की बीमारी।
हुलना क्रि० (हि) लाठी आदि को ठेलना।
हुलसना क्रि०(हि) १-बहुत प्रसन्न होना। २-उभरना। ३-उमड़ना।
हुलसाना क्रि० (हि) १-आनन्दित करना। २-प्रसन्न होना। ३-उभरना।
हुलसी स्त्री० (हि) १-हुलास। २-उल्लास। ३-कुछ लोगों के मतानुसार तुलसीदास जी की माता का नाम।
हुलहुल पु० (देश) एक प्रकार का बरसाती पौधा।
हुलास पुं० (हि) १-विशेष आनन्द। उल्लास। २-उत्साह। ३-बढ़ना। उमगना। स्त्री० सुँघनी।
हुलासदानी स्त्री० (हि) सुँघनीदानी।
हुलासी वि० (हि) १-आनन्दी। २-उत्साही।
हुलिया पुं०(अ) १-आकृति। रूप। २-किसी व्यक्ति के रूप रंग का विवरण जिससे वह पहचाना जाता है।
हुलियानामा पु० (अ) आकृति या रूप आदि का विवरण-पत्र।
हुल्लड़ पु० (हि) १-कोलाहल। होहल्ला। २-उपद्रव। उत्पात।
हुश अव्य० (हि) एक निषेधवाचक शब्द।
हुश्कारना क्रि०(हि) कुत्ते को हुशहुश करके उकसाना
हुशियार वि० (हि) दे० 'होशियार'।
हुसैन पुं०(अ) मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गये।
हुस्न पुं० (अ) १-सौन्दर्य। उत्तम रूप। २-उत्कर्ष। खूबी। ३-अनूठापन।
हुस्नपरस्त पुं०(अ) [illegible]

[illegible]

कालिक क्रिया 'है' का उत्तमपुरुष एकवचन रूप।
हूँकना क्रि० (हि) १-बछड़े की याद में या और कोई दुःख सूचित करने को गाय का धीरे-धीरे बोलना। २-बैलों का ललकारना। ३-सिसक कर रोना।
हूँकार पुं० (स) दे० 'हुँकार'।
हूँठ वि० (हि) साढ़े तीन।
हूँठा पु० (हि) साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूँड़ स्त्री० (हि) खेतों की सिंचाई में किसानों का परस्पर योग देना।
हूँस स्त्री० (हि) १-ईर्ष्या। जलन। २-आस लगाना। ३-बुरी नजर। टोक।
हूँसना क्रि० (हि) १-नजर लगाना। २-बराबर डाँट सुनाते रहना। कोसना। ३-ललचाना।
हू अव्य०(हि) भी। पुं० गीदड़ के बोलने का शब्द।
हूक स्त्री० (हि) १-हृदय की पीड़ा [illegible]

३-आशंका।
हूकना क्रि०(हि) १-सालना। कसकना। २-पीड़ा से चौंक उठना।
हूटना क्रि०(हि) १-हटना। टलना। २-मुड़ना। पीठ फेरना।
हूठा पु० (हि) १-ठेंगा। २-भद्दी या गँवार चेष्टा।
हूड़ वि० (हि) १-हुड़। उजड्ड। २-असावधान। ३-अनाड़ी। ४-हठी।
हूण पु० (स) दे० 'हुन'।
हूत वि० (स) बुलाया हुआ।
हूति स्त्री० (स) १-संज्ञा। नाम। २-पुकार। ३-ललकार।
हूतो अव्य० (हि) दे० 'हुति'।
हूदा पुं० (हि) १-धक्का। २-पीड़ा। शूल।
हून पु० (सं) १-एक स्वर्ण मुद्रा। २-एक म्लेच्छ जाति जिसने विक्रमादित्य के राज्य काल में भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग पर आक्रमण किया था।
हूनना क्रि० (हि) १-आग में डालना। २-विपत्ति में फँसना।
हू-बहू वि० (अ) ज्यों का त्यों। बिलकुल समान या अनुरूप।
हूर स्त्री० (अ) मुसलमानों के धर्मानुसार स्वर्ग की अप्सरा।
हूरना क्रि० (हि) १-चुभाना। गाड़ना। ठेलना।
हूरा पु० (हि) लाठी आदि का किनारा।
हूल स्त्री० (हि) १-भोंकना। हूक। २-टीस। ३-कोलाहल। ४-ललकार। ५-हर्षध्वनि। ६-लाठी, तलवार आदि की नोंक तेजी से भोंकने की क्रिया।
हूलना क्रि० (हि) लाठी आदि का [illegible]

[illegible]

बेहूदा।
हूह स्त्री० (हि) हुङ्कार।
हूहू पुं० (स) एक गंधर्व का नाम। पु० अग्नि के जलने का शब्द।
हृत वि० (स) १-लिया हुआ। हरण किया हुआ। २-पहुँचाया हुआ। पुं०(स) हिस्सा। भाग।
हृतदार क्रि०(स) जिसकी पत्नी न हो।
हृतद्रव्य वि० (स) सम्पत्ति रहित।
हृत प्रतिदान पु० (स) जब्त की हुई या छीनी हुई सम्पत्ति फिर वापिस लौटा देना। (रेस्टीट्यूशन)।
हृतप्रत्यर्पण पु० (स) छीनी हुई वस्तु, राज्य आदि का पुनः उसी व्यक्ति को लौटा देना। (रेस्टोरेशन)।
हृतवास वि० (स) वस्त्ररहित।

लिया गया हो।
हृताधिकार वि० (सं) पदच्युत।
हृति स्त्री० (सं) १-ले जाना। हरण। २-लूट। ३-नाश।
हृत वि० (सं) (समास में) हरण करने वाला। पुं० हृदय।
हृत्कंप पु० (सं) १-जी दहलना। दिल की धड़कन।
हृत्तल पुं० (सं) हृदय या दिल।
हृदयंगम वि० (हि) मन में आया हुआ।
हृदय पुं० (सं) १-छाती के भीतर बाँई ओर का एक अवयव जिसके द्वारा शुद्ध रक्त शरीर की नाड़ियों में पहुँचता है। दिल। २-किसी वस्तु या स्थान का भीतरी भाग। ३-तत्व। सारांश। ४-मन। ५-विवेक। बुद्धि। अंतःपुर।
हृदयक्षोभ पुं० (सं) मन की चिंता।
हृदयगत वि० (सं) हृदय-संबन्धी। हार्दिक।
हृदयग्रंथि स्त्री० (सं) हृदय को कष्ट देने वाली बात।
हृदयग्राही पु० (सं) मन को आकृष्ट करने वाला।
हृदयचोर पुं० (हि) मन को मोहने वाला।
हृदयच्छिद् वि० (सं) मन को छेदने या कष्ट पहुँचाने वाला।
हृदयज वि० (सं) अन्तःकरण से उत्पन्न।
हृदयज्ञ वि० (सं) मन के भावों को जानने वाला।
हृदयज्वर पुं० (सं) मन की जलन।
हृदयदाही वि० (सं) हृदयपीड़क।
हृदयदौर्बल्य पुं० (सं) दिल की दुर्बलता।
हृदयनिकेतन पुं० (सं) कामदेव।
हृदयप्रमाथी वि० (सं) १-मन को मोहने वाला। २-मन को चंचल या क्षुब्ध करने वाला।
हृदयप्रिय वि० (सं) १-स्वादिष्ट। २-मन को प्यारा लगने वाला।
हृदयरोग पुं० (सं) दिल की बीमारी।
हृदयवल्लभ पुं० (सं) प्रेमपात्र। प्रियतम।
हृदयवान वि० (सं) १-रसिक। भावुक। २-सहृदय।
हृदयविदारक वि० (सं) १-मन को अत्यधिक कष्ट देने वाला। २-करुणा या दया करने वाला।
हृदयविध् वि०(सं) १-मन को अत्यधिक मोहित करने वाला। २-अत्यंत कटु।
हृदयव्यथा स्त्री० (सं) मानसिक पीड़ा।
हृदयव्याधि स्त्री० (सं) दिल या हृदय का रोग।
हृदयशल्य पुं० (सं) दिल का कांटा।
हृदयशून्य वि० (सं) हृदयहीन।
हृदयस्थ वि० (सं) दिल में रहने वाला।
हृदयस्थली स्त्री० (सं) वक्षःस्थल।
हृदयस्थान पुं० (सं) वक्षस्थल।
हृदयस्पर्शी वि० (सं) दिल पर असर करने वाला।
हृदयहारी वि० (सं) मनोहर। मन को हरने वाला।
हृदयहीन वि० (सं) निष्ठुर।
हृदयालु वि० (सं)१-साहसी। २-उदार। ३-सहृदय।
हृदयिक वि० (सं) दे० 'हृदयवान्'।
हृदयी वि० दे० 'हृदयवान्'
हृदयेश पुं० (सं) दे० 'हृदयेश्वर'।
हृदयेश्वर पु० (सं) १-प्रियतम। प्रेमपात्र। २-प्यारा
हृद् पुं० (सं) १-हृदय। २-किसी वस्तु का भीतरी भाग। ३-हीर।
हृद्य वि० (सं) १-भीतरी। हृदय का। २-सुन्दर। ३-मन भाने वाला। ४-स्वादिष्ट। पुं० (सं) १-कैथ। २-सफेद जीरा। ३-दही। ४-महुए की शराब।
हृषीकेश पुं० (सं) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण। ३-पूस का महीना। ४-एक तीर्थस्थान जो हरिद्वार से आगे है।
हृष्ट वि० (सं) १-प्रसन्न। हर्षित। २-उठा हुआ (रोयाँ)।
हृष्टचित्त वि० (सं) प्रसन्नचित्त।
हृष्टपुष्ट वि० (सं) मोटा-ताजा।
हृष्टमना वि० (सं) प्रसन्नचित्त।
हृष्टरोम वि०(सं) रोमांचयुक्त।
हृष्टवदन वि० (सं) प्रसन्न मुद्रा वाला।
हृष्टि स्त्री० (सं) १-हर्ष। प्रसन्नता २-इतराना।
हेंगा पुं० (हि) वह पाटा जिस से जुते हुए खेतों में मिट्टी बराबर करते हैं। मड़ा।
हेंहें पुं० अव्य० (हि) १-धीरे-धीरे हँसने का शब्द २-गिड़गिड़ाने का शब्द।
हे अव्य० (सं) सम्बोधन सूचक एक अव्यय। क्रि० (हि) थे।
हेकड़ वि०(हि) १-मोटा-ताजा। हृष्टपुष्ट। २-प्रबल। प्रचंड। ३-अक्खड़पन।
हेकड़ी स्त्री० (हि) १-अक्खड़पन। उग्रता। २-जबरदस्ती।
हेच वि० (फा) तुच्छ। हीन।
हेचपोच वि० (फा) निकम्मा। घटिया।
हेठ अव्य० (हि) नीचे। वि० १-नीचा। २-कम। पुं० (सं) १-विघ्न। बाधा। २-हानि। ३-चोट।
हेठा वि० (हि) १-नीचा २-घटिया। ३-तुच्छ।
हेठी स्त्री० (हि) अप्रतिष्ठा।
हेडिंग पुं० (अं) शीर्षक।
हेत पु० (हि) १-हित। २-हेतु।
हेति स्त्री० (सं) १-वज्र। २-अस्त्र। ३-लौ। आग की लपट। ४-घाव। ५-अंकुर। ६-धनुष की टंकार। ७-यंत्र। औज़ार।
हेती पुं० (सं) १-संबन्धी। रिश्तेदार। २-मित्र।
हेतु पुं० (सं) १-वह बात जिसको ध्यान में रख कर कोई कार्य किया जाय। उद्देश्य। अभिप्राय। २-वह बात जिसके होने से कोई बात घटित हो। ३-

तर्क। दलील। ४-प्रमाणित करने वाली बात। ५-मूल कारण। ६-कारण। वजह। सबब। ७-एक अर्थालंकार। पु० (सं) १-लगाव। २-प्रेम।
हेतुता स्त्री० (सं) कारण का होना।
हेतुत्व पु० (सं) हेतुता।
हेतुमान वि० (सं) जिसका कुछ हेतु या कारण हो। पु० वह जिसका कुछ कारण हो। कार्य।
हेतुयुक्त वि० (सं) कारण युक्त।
हेतुवादी वि०(सं) १-तार्किक। २-दलील करने वाला।
हेतुविद्या स्त्री० (सं) तर्कशास्त्र।
हेतुशास्त्र पु० (सं) तर्कशास्त्र।
हेतुशून्य वि० (सं) निराधार।
हेतुहेतुमद्भूत पु० (सं) व्याकरण में क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का न होना सूचित होता है जिसमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है।
हेतूत्प्रेक्षा स्त्री० (सं) वह उत्प्रेक्षा अलंकार जहाँ हेतु द्वारा उत्प्रेक्षा होती है।
हेत्वपह्नुति स्त्री० (सं) वह अलङ्कार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाय।
हेत्वाभास पु० (सं) कोई बात सिद्ध करने के लिये बतलाया जाने वाला ऐसा कारण जो देखने में ठीक जान पड़े पर वास्तव में ठीक न हो।
हेमंत पु० (सं) जाड़े का मौसम जो अगहन और पूस में होता है। शीतकाल।
हेमंतसमय पु० (सं) जाड़े का मौसम।
हेम पु० (सं) १-हिम। पाला। २-सोना। स्वर्ण। ३-दीप। ४-एक माशे का तौल। ५-बादामी रंग का घोड़ा। ६-नागकेसर।
हेमकार पु० (सं) सुनार।
हेमकूट पु० (सं) हिमालय के उत्तर का एक पर्वत।
हेमतरु पु० (सं) धतूरा।
हेमप्रतिमा स्त्री० (सं) सोने की मूर्ति।
हेममाली पु० (सं) १-सूर्य। २-एक राक्षस जो खर का सेनापति था।
हेमरूप वि० (सं) सोने से भरपूर।
हेमाद्रि पु०(सं) सुमेरु पर्वत।
हेय वि० (सं) १-छोड़ने योग्य। त्याज्य। २-तुच्छ। ३-खराब।
हेरंब पु० (सं) १-गणेश। २-भैंसा। ३-एक बुद्ध का नाम। ४-धीरोद्धत नायक।
हेर पु० (सं) १-किरीट। २-हलदी। ३-आसुरी माया। स्त्री० (हि) तलाश। खोज।
हेरना क्रि०(हि) १-खोजना। ढूँढ़ना। २-ताकना। देखना। ३-जाँचना। परखना।
हेरफेर पु० (हि) १-चक्कर। घुमाव। फिराव। २-दाँवपेंच। चालबाजी। ३-अदल-बदल। ४-कुछ बेचना और कुछ खरीदना।
हेरवाना क्रि० (हि) १-खोना। गँवाना। २-तलाश करना।
हेराना क्रि० (हि) १-खो जाना। २-लुप्त हो जाना। ३-किसी के सामने फीका या मंद पड़ना। ४-सुध बुध भूलना। ५-गँवाना। कोई वस्तु खोना।
हेराफेरी स्त्री० (हि) १-अदल-बदल। २-बराबर आना-जाना। ३-इधर का उधर होना या करना।
हेरो स्त्री० (हि) पुकार। टेर।
हेलन पु० (सं) तिरस्कार या अवज्ञा करना। २-तुच्छ समझना। ३-अपराध। ४-क्रीड़ा करना।
हेलना क्रि० (हि) क्रीड़ा या मनोविनोद करना। २-मन बहलाना। ३-पैठना। ४-तैरना। ५-तुच्छ या हेय समझना। ६-अवहेलना करना। उपेक्षा करना।
हेलनीय वि० (सं) उपेक्षा के योग्य।
हेलमेल पु० (हि मेलजोल।
हेला स्त्री० (सं) १-तिरस्कार। २-क्रीड़ा। ३-प्रेम की क्रीड़ा। केलि। ४-सरल कार्य। ५-साहित्य में नायिका की वह विनोदपूर्ण चेष्टा जिसमें वह नायक पर अपने मिलने की चेष्टा प्रकट करती है। पु० (हि) १-पुकार। हाँक। २-धावा। चढ़ाई। ३-रेला। धक्का।
हेली अव्य० (हि) हे सखी ! स्त्री० (हि) सखी। सहेली।
हेलीमेली वि० (हि) जिससे हेलमेल हो।
हेवन्त पु० (हि) दे० 'हेमंत'।
हैं अव्य० (हि) एक अव्यय जो आश्चर्य, असम्मति आदि का सूचक है। क्रि० (हि) 'होना'। क्रिया के वर्तमान रूप 'है' का बहुवचन।
हैंडबेग पु० (अं) चमड़े का छोटा सन्दूक जिसे यात्रा में हाथ में रखते हैं।
है क्रि० (हि) 'होना' का वर्तमानकालिक एकवचन रूप। पु० (देश) दे० 'हय'।
हैकड़ वि० (हि) दे० 'हेकड़'।
हैकल स्त्री० (हि) १-घोड़ों के गले में पहनने का गहना। २-गले मे पहनने का गहना।
हैज़ पु० (अ) स्त्रियों को होने वाला मासिक धर्म।
हैजा पु० (अ) एक घातक तथा संक्रामक रोग जिसमें दस्त और कै आती है। (कोलेरा)।
हैट पु० (अं) अङ्गरेजी ढंग की टोपी जिससे धूप का बचाव होता है।
हैदर पु० (अ) शेर। सिंह।
हैना क्रि० (हि) मार डालना।
हैफ अव्य० (अ) खेद या शोक सूचक शब्द-अफ़सोस। हा। हाय।
हैबत स्त्री० (अ) भय। त्रास।
हैबतज़दा वि० (अ) डरा हुआ।
हैबतनाक वि०(अ) भयानक। डरावना।

हैमंत वि० (सं) हेमंत संबन्धी।
हैम वि० (सं) १-स्वर्णमय। सोने का। २-सुनहरा। ३-हिम या पाले-संबंधी। ४-जाड़े में होने वाला। ५-वर्फ में होने वाला। पुं० १-पाला। २-ओस। ३-शिव। ४-चिरायता।
हैम मुद्रिका स्त्री० (सं) स्वर्ण की मुद्रा।
हैमवल्कल वि० (सं) सोने का पत्तर चढ़ा हुआ।
हैरत स्त्री० (अ) आश्चर्य। अचंभा।
हैरतअंगेज वि० (अ) विस्मयजनक।
हैरतजदा वि० (अ) विस्मित। भौचक्का।
हैरान वि० (अ) चकित। आश्चर्य से स्तब्ध। २-परेशान। व्यग्र।
हैरानी स्त्री० (अ) १-आश्चर्य। २-परेशानी। ३-विस्मय।
हैवान पुं० (अ) पशु। जानवर।
हैवानियत स्त्री० (अ) जंगलीपन। पशुता।
हैसियत स्त्री० (अ) १-सामर्थ्य। शक्ति। २-आर्थिक योग्यता। ३-बिसात। ४-धन-संपत्ति।
हैसियतदार वि०(अ) जिसके पास धन या संपत्ति हो।
हैहय पुं० (सं) १-एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है। २-सहस्रार्जुन।
हैहयराज पुं० (सं) सहस्रार्जुन।
हैहै अव्य० (हि) अफसोस। हाय।
हों क्रि० (हि) 'होगा' क्रिया का संभाव्यकाल का बहुवचन रूप।
होंठ पुं० (हि) ओंठ। ओष्ठ।
होंठल वि० (हि) मोटे होठों वाला।
हो पुं० (स) पुकारने का शब्द या संबोधन। क्रि० (हि) 'होना' क्रिया के अन्यपुरुष, संभाव्यकाल और मध्यमपुरुष बहुवचन के काल का रूप।
होटल पुं० (अ) वह स्थान जहाँ मूल्य लेकर लोगों के भोजन तथा रहने का प्रबन्ध होता है।
होड़ स्त्री (सं) १-शर्त। बाजी। २-प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। ३-हठ। जिद्। पुं० (सं) नाव।
होड़ाबादी स्त्री० (हि) दे० 'होड़ाहोड़ी'।
होड़ाहोड़ी स्त्री० (हि) १-प्रतियोगिता। २-शर्त। बाजी।
होतब पुं० (हि) होनहार।
होतव्य पुं० (हि) होनहार।
होतव्य पुं० (सं) हवन करने योग्य।
होता पुं० (हि) १-यज्ञ में आहुति देने वाला। २-यज्ञ कराने वाला पुरोहित।
होनहार वि०० (हि) १-जो अवश्य होने को हो। होनी। भावी। २-अच्छे लक्षणों वाला। स्त्री०(हि) वह बात जो अवश्य होने को हो। होनी।
होना क्रि० (हि) १-सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति आदि सूचित करने वाली सबसे अधिक प्रचलित क्रिया। उपस्थित रहना। २-पहला रूप छोड़ कर दूसरों में आना। ३-कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से आना। ४-बनना। निर्माण किया जाना। ५-कार्य का सम्पन्न किया जाना। सरना। भुगतान। ६-रोग, व्याधि, अस्वस्थता, प्रेतबाधा आदि का आना। ७-बीतना। गुजरना। ८-परिणाम निकलना। ८-प्रभाव या गुण दीख पड़ना। ९-जन्म लेना। १०-प्रयोजन साधन।
होनिहार पुं० (हि) दे० 'होनहार'।
होनी स्त्री० (हि) १-पैदाइश। उत्पत्ति। २-अवश्य होकर रहने वाली घटना या बात।
होम पुं० (सं) यज्ञ। हवन।
होमकर्म पुं०(सं) यज्ञ से सम्बन्धित विधियाँ।
होमद्रव्य पुं० (सं) यज्ञ की सामग्री
होमधान्य पुं० (सं) तिल।
होमधूप पुं० (सं) होम की अग्नि का धूआँ।
होमना क्रि० (हि) १-होम या हवन करना। २-नष्ट करना।
होमभस्म स्त्री० (सं) होम की राख।
होमशाला स्त्री० (सं) यज्ञशाला।
होमाग्नि पुं० (सं) यज्ञ की अग्नि।
होमियोपैथ पुं० (अं) होमियोपैथिक पद्धति के अनुसार चिकित्सा करने वाला।
होमियोपैथी स्त्री० (अ) पाश्चात्य चिकित्सा का एक सिद्धांत जिसमें विष की अल्प से अल्प मात्रा द्वारा रोग दूर किये जाते हैं।
होरसा पुं० (हि) पत्थर का वह चकला जिस पर चन्दन घिसते हैं।
होरहा पुं० (हि) चूट। चने का हरा पौधा।
होरा स्त्री० (यू०) १-दिन का चौबीसवाँ भाग। घंटा २-जन्मकुण्डली। पुं० (हि) दे० 'होला'।
होराविद् वि० (सं) जन्मपत्री देखने में कुशल।
होरिल पुं० (हि) बहुत छोटा बच्चा अथवा बालक। शिशु।
होरिला पुं० (हि) दे० 'होरिल'।
होरिहार पुं० (हि) होली खेलने वाला।
होरी स्त्री० (हि) १-होली। २-एक प्रकार की बड़ी नाव जो जहाज पर माल उतारने या चढ़ाने के काम आती है।
होला पुं० (हि) १-सिक्खों की होली जो होली जलाने के दूसरे दिन होती है २-आग में भुने हरे चने या मटर। ३-चूट। होरहा। पुं०(हि) होली का त्यौहार।
होलाका स्त्री० (सं) होली का त्यौहार।
होला खेलना पुं०(हि) फाग खेलना।
होलाष्टक पुं० (सं) होली से पहले आठ दिन जिनमें विवाह नहीं होते।